আৰাসী, ৪৭শ ভাগ, 'বিতীয় গও. ১৩৫৪ গুটাগর্ত শাবিদ—হৈত্ত সম্পাদক—বীকেদারনাথ চট্টোপাধ্যায়,

(मधकन्य ७ कैशिएम वहना

विभागांचनक स्थ			वैकारीन सर		
বাৰবাহন ও চলাচন ব্যবস্থায় অৱশিক্ষা	100	345	वांटवत हैं।कां (शब)	400	34 n
—पराटकर मापमा		143	विक्रिक्क्यां नाग		
केमपुर्वक्रम क्षेत्राची			অন্তরাং ও হুলাহাজহা (সচিত্র)	944	340
নিজা-নীয়ৰ ছাতের খত (কৰিকা)) +44	2.4	विविद्यक्षका बृद्यांगीयाध		•
बिजवनीक्षमांच शंकृत	•		বিটাট দ (সচিত্ৰ)	***	194
"इशंगनन जीवनी"	11 ₀ 300	4+>	विवीरणमा प्राप्त		
बिचारमप् प्रक	•		—ব্ৰথজেয় ব্যক্তব্ধ প্ৰাথমিক শিক্ষার কাৰ্য্যকরী পরিষ	1841	***
লবর্ণণ (ক্লবিভা)	***	290	विद्योगनकु । दांग		
ক্ৰিশা বুণী			जोत्रजनर्द मजूत वर्तवर्ष		t þa
র'ট্রের লোড়ার কথা	eed	378	विवेदनमञ्ज चंडावर्ग		
এ লাপ্তভোগ সা ভাগ			—"कुकानक जानगराधिन" (जांदर्गाहमा)	***	2+1
—বিদায়ী (কবিডা)	100	201	বাল্য-প্রভিতা	444	111
विदेणाताचे प्रवाशायात			—সমীত গাৰোগৰ	***	*
—जन्मि (मा)	•••	-	বাৰীৰ বিপুৰাৰ সাক্ষালা	***	834
बैडना टाम			विरीयनमध्य गर्कात		
ৰাট্ৰ (ও মানেলের সদান-বৰ্ণন	***	446	—कुकांतम जांगवाबिन (जारगांडना) •••	₹•8,	#15
। विवेदनगडम क्यांडावा			विद्युरवञ्चनांव इटोलांचांव		
যান্ত্ৰ ও বুন্লবান	***	-	वाटानी शंबारत क्यां	***	400
- क्रिक्शनीर्वेष पेष्ट			विद्यारमञ्ज्य गोभ		
ভূবি আৰ আমি (কবিভা)	***	3+8	—ইউলোপের পরৎ (কৃণিডা)		••
विक्वतंत्रीय मानुदानी			• —সোনাম সন্মা (পর)	***	429
বাত্ৰনভাৱ ভূত, ভবিতৰ ও কৰ্তনাৰ	***	824	बैदीरवस्त्रक व्य		
व्यक्तारमान भीवा			—কে বাঁপী বাৰাম (কবিডা)		242
ৰটি স্বাধিৰ বুনের দিয়ের গায়া (সচিত্র)	166	204	—চিন্তনী পিডি (ঐ)	•••	449
विष्युक्तक्षय गतिक			—সাধ (ঐ)	-	EVR
–শাৰ্ট্যনত নাম (ক্ষিডা)	100	467			
वामानम् इद्योगानात्र (के)	***	487	नैरीरब्बनाय म्ह्याणायाय —याणुबी (कविष्ठा)	240	444
,गर्ग दादा गर्ड (वे)	***	283	•		
किल्मियां प्रांप			श्रमनीमार्य क्रोनूरी		
कार्तिशंच मान्याई वरीक्षकांच	***	2	—"নিউ ইভিয়ান কাল্চয়াল জালায়স্ট (গম)	***	•
Alfanet flanger igil		-	—दिशास चार्र ७ चरेनरिक चार्र	***	>1
व्यक्तिकारण वास्तिव सम	100	*>*	—সিন্ধ দুগ বইডে বৈষ্টিক দুগ	pin	>40
ा व्यक्तिक्षांत्रिक वांक्ष्यंत्रच	***	***	সিশ্ব সজ্ঞতা ও বেলোগটেনিয়া	+	car
Month tunin ar			क्षेत्रिक्तांत का		
Chiefe when wighten	***	145	वर्ष ७ पार्थ (१९६)	944	W 1
- Called the Called	***	-	पांशावापि (नंत)	***	
Britished and			र्क्त्याद्धे कृषिक्दर्व विद्यालय कर्वकांत्रिका (नविद्य)	-	
- Plantice quantities		878	नित्री व्यानकृताव मुद्दर्गमानुद्रात व्यवनी-निव	467	491
A Charles and the second			Swinter vis		
and a distriction of the state	شقن	999	mulation (which	PAR	
A to the second of the second second	منيه ، منيه ،	19k	, ल्ल्प्याची पंचा (से ३	880	
LEAST A STATE STATE	,				•

•		***	4a		
শিলালাচন্দ্র কুশারী			बैबरमकारक चंडीहार्यः		
	· ·		— সামাসা (সচিত্র)	•••	>84
शंन (महिब)		>8>	 अभाष बहानाशस्त्र वाहिय विवासी (व) 	400	84,9
)নিৰ্মাল্য বাদ্ভত	•	• ,	वैक्टनवनाथ बरमानियात		
वाकानी-विहासी विस्ताप	•••	910	কালীপ্ৰসন্ন কাৰ্যবিশান্ত (সচিত্ৰ)	+00	876
निरवक्त क्रहीशीयात	•	-	কালীগ্ৰসর ঘোষ (ঐ)		>69
—বেশবাইড সোল (গল) 🔑	•••	219	—ল্যোতিবিজ্ঞদাৰ্থ ঠাকুৰ (ঐ)	•••	**
হৈপ্তানৰ চক্ৰবৰ্ত্তী			विद्यालान द्वात्र (वे)	***	473
—বিশ্বধূ আৰু কাঁগে ধরধর (কবিজা)	•••	>>0	– নগেন্দ্ৰনাথ ছণ্ড (ঐ)	•••	418
क्षेत्रियन त्राचाया			—রসরাজ অমৃতলাল ব ল্ল (ঐ)	***	493
—আ সরি বাংলা ভাবা (সচিত্র গর)	•••	86	विमनेत चर		
विभिनाकीत्रश्रम कर्तकात्र			—মুখ (কৰিতা)	•••	463
—প্রাদ্ধীর চরে (ক্বিডা)	***		—यंविका (बे)	•••	re
ঞানানন, খানী			विमनेवक्त ७७		
—ভারতীর সহীতে সাত বরের বস্তবশা	***	cur	निरुभिका ७ वांशीन बा डे	•••	43.
ী প্ৰভাত বহু			विमध्यक्न घरशियाशाव		
—সং-হারাদের কবি (কবিডা)	•••	3>>	—বাণিজ্ঞা-বারু (কবিতা)	•••	**
ইএভাৰতী রায়			क्षेत्रत्नादम् व द्यार		
সম্বাহ	•••	4.5	—ক্ষা-ফুলর (কবিতা)		634
<u>ট্রশাস্থ্যার বিজ্</u>			विगान क्य		•
चारवहम (कविष्ठा)	•••	277	— যুক্ত এদেশের প্রাশ্তিক লোকসঞ্জীত	•••	84
ম্বপ্রাক্ষার মনুষ্ণার			मृहक्षर भरोष्ट्रतार		
—হইলারগ্যাতের সমৃতি	***	3.4	—ভরত, কর ও বিশ্বমিত্র	***	
(बन्द दरीन, এ. এन. এन.			শ্রীদুণানকান্তি দাশ		
—बक् बाएड (कविका)	B-4	455	—্যুৰ (ক্ৰিডা)	•••	रध्य
সিৰি কৰি শাহ আৰম্ভন নতিক	•••	4.7	ঞ্জীৰভীক্ৰৰিমণ চৌধুয়ী		
वैदिकद्र ् क्ष् वस			—সংস্কৃত-সাহিত্যের প্রচার	•••	242
সুৰ ও শান্তি •	900	846	कैरवारागहता वांत्रव		
ইবিৰয়গোণাল বহু		•	—ওহাৰী আনোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি	•••	₹⊹8
রেথাগণিতে পঞ্চিত জগন্নাথ	•••	3• ₹	—ইউরোপের নিম্ভূমি—বেলজিয়ন ও হল্যাও (সচিত্র)	***	re
নিবিজয়ভূবণ খোব চৌধুরী			क्रद्रशादशानध्या वाय, विकानिधि		
विरोतीसम बागामवा		>>+	ভন্নের প্রাচীনভা	***	884
শ্রীবিধুশেশর ভটাচার্ব্য			ছুৰ্গাদেবীয় বোধন ও বিসৰ্জন (আলোচনা)	•••	492
রবীক্রসংগাপ ক্ৰিকা	•••	88	ইবিবাস্মাৰ ৰহ		
विविववर्ग गामक्य			বর (গর)	***	>4.
—বিমানে ভূ-গ্ৰহুদ্ধিণ (সচিত্ৰ) •••	16,500	, 275,	শ্ববীজনাথ ঠাকুর		
	4>8, 6>6	l, 40r	প্রাবলী ••• ৩	09, 88	, est
बै्रियन प्राप्त			শীর্ষণীকুষার গড়ওও		
— শিল ও শিলী (সচিত্র)	•••	42.	—কুটীদের সেবার আত্মবলিধান	•••	9.9
विवनहरू इक्नची			केवया महकाव		
" — রবীক্র-চিত্তের ভূমিকা	•••	415	—ওক্তারা (গণ)	•••	690
व िविभक्षांच्यन स्थव			विद्याचानच्या मान		
—"ৰনষ্ উপাস্থ"	•••	4	—কোডনপুৰ ধানাৰ খাখ্য	100	444
এ বিৰণাচনশ লাহা			क्षित्राम्हरमान्य माप		
- वान स्वाधिन	•••	•••	(१वीव व्यापन ७ विश्रव्यन	•••	910
ৰীবিত মুক্ত	•		শীৰাষ্ণৰ সুবোপাধ্যার		•
—বিবাক বুগ (কবিতা)	•••	222	The second of th	r, 500	
विक्नार यत्याणायात्र		,		88. 84	
—রগান্তর (কবিতা)	***	> 10	—छन्त्रस्य (१६)	- -,	. 24
बिदर् त्रद्यांभाषाः				•	- 4#
—"ব্যবাহতঃ গুড়ার ভবত্ব" (কবিড়া)	***	>49	वैनविज्य रामक्य		
—-विमानस (वे)	***	8340	— পূर्वश्यमम हिन्दुव मक्छ।	***	4.4
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•				

বিষয়-স্থচী

শ্রীপান্তিরপ্রন চত্রবর্তী			শীক্ষণীর সেমগুর্থ		
—টানের সাম্রতিক অর্থনীতি	•••		শরণাগভা (পর)	***	213
विनांचित्रश्चन व्यनग्रांभाषा	•		क्षेष्ट्रभीनक्षां वस्		
—ব্রিষ্টাপ মিউন্লিয়াম মন্দিত পুরাতন বাংলা পত্র পত্রিকা		448	এশরার কথা	•••	-
শীলবদাস চক্রবর্তী			শ্ৰীস্ণীলপ্ৰকাশ সোম		
—চ্ৰিত চাহৰি (ক্ৰিজা)	•••	824	—বাধীন ত্রিপুর: (সচিত্র)	***	466
बीरेनालकङ्ग नाहा			এ ক্বৰ্ণক্ষণ রায়		
—বাত্তৰ ও ৰক্ষনা (কৰিডা)	.:.	२७७	ক্ষরমেণ্টেশন	•••	>25
—মৃত্যু অমৃত করে;দান	***	658	अर्थावव्य शतकोषां भारत		
পাৰত বৰ্ত্তমান (কৰিডা)	•••	260	— রক্ষদেশের স্বাধীনতা লাভ (সচিত্র)		847
খাণীনতা তীৰ্ষে (🗿)	•••	88	— সিংহলের বাধীনতা লাভ (ঐ)	***	475
শ্রীসত্যক্ষির চটোপাধার			শ্ৰীসুৰদা সেনগুণ্ড		
—ইন্দোনেশিরা ও তাহার বৃক্তি <i>-সং</i> গ্রাম (সচিত্র)	•••	82	—क्ष्णे,। रम द्र स्मिकांम	•••	3#3
শ্রীসমীর কান্ত ওপ্ত			-	-	
—দুরাতীতের পটভূমিকার বাংলা-কাব্যের সূচনা ও			শ্রীস্থাপ্সর বাজপেরী চৌধুরী	•••	-
শ্রগতির স্বাভাস	•••	75	— আটের তিধারা	***	•••
वी मदबोटकव्यनाथ बाब			—সীভাকুণ্ড (সচিত্র)	•••	9.0
—কবি শিব নাথ শাল্লী	***	>44	🖺 হরপোপাল বিষাস		
শ্ৰীসাৰিত্ৰী বোধাল			— শাষ্য ও পণ্য বিজ্ঞাট		22
ं नहीम (अब)	•••	२७৮	পাথুরিয়া করলা হইছে বাংলাম রাসারনিক লিজের	•	
শ্ৰীপ্ৰাংগুৰিষল মুখোপাধাায়			महाबना	***	746
সংগ্টীনের এক দশক (১৯২৭-৩৭)	***	4>8	শ্রীহেমণতা দেবী		
- সান হ্রাং-সেনের সাধনা	•••	398	—ভুমার আবিতাৰ (কৰিডা)	•••	4~>
	•				
	f	বৈষয়	-সূচী		
অভি আদিয় বুগের শিবের ধারা (সচিত্র)	f	ব্ষয়	_	•••	ęc
জতি আদিষ ৰূপেৰ শিলের ধারা (সচিত্র) জীকানাইলাস সাহা	f:		উপনয়ন (গল)—শ্রিধামণদ মৃথোপাধ্যার	•••	15
শ্ৰিকানাইলাল সাহা	f:		_	•••	ę: 232 94
— শ্ৰীকানাইলাল সাহা অমৃতগাল বহু (সচিত্ৰ) শ্ৰীব্ৰজেক্সৰাৰ ৰন্দ্যোপাধাৰ	•••	28r •	উপনয়ন (গল)গ্রামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রাস্তে (কবিডা)এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ	•••	4s 433 44 834
শ্ৰিকানাইলাল সাহা	•••	₹8₩ 0 ₹1>	উপনয়ন (গল)গ্রিরামপদ মূথোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিতা)এ. এন. এম. বস্তপুর রশীণ এশিরার কথাগ্রীফ্নীলকুমার বস্ত	•••	88 832 832
— শ্রীকানাইলাল সাহা অনুতগাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাগ বন্দ্যোগাধান "অরমারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু রজোগাধান অর্থ ও অবর্ধ (গল্প) —শ্রীনালনাকুমার ভত্ত অন্তরাং ও তুলাহাজরা (সচিত্র)—শ্রীক্ষতেক্সকুমার নাস		287 0 21)	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ এশিয়ার কথা—শ্রীফ্নীগকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কভিপন্ন হন্ত্র—শ্রীগোপীনাথ সেন	•••	24 233 94 832 298
— শ্ৰীকানাইলাল সাহা অমৃত্তগাল বহু (সচিত্ৰ) শ্ৰীব্ৰচেক্সৰাপ ৰন্দ্যোপাধাৰ "অৱমায়তঃ গুভাৱ ভবতু" (কবিতা)—শ্ৰীবেণু গ্ৰোপাধাৰ অৰ্থ ও অৰ্থ (গল)—শ্ৰীনলিনীকুমার ভয়	•••	286 0 213 308 60	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বস্কল্ব রশীণ এশিয়ার কথা—শ্রীফ্নীগকুমার বস্থ ঐতিহাসিক খননের কতিপয় হ্যা—শ্রীগোপীনাথ সেন ওচাবী খান্দোদন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি	•••	26 233 94 832 298 330
— শ্রীকানাইলাল সাহা অনুতগাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাগ বন্দ্যোগাধান "অরমারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু রজোগাধান অর্থ ও অবর্ধ (গল্প) —শ্রীনালনাকুমার ভত্ত অন্তরাং ও তুলাহাজরা (সচিত্র)—শ্রীক্ষতেক্সকুমার নাস	•••	2800 293 208 50 510 605	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ এশিয়ার কথা—শ্রীফ্নীগকুমার বন্ধ ঐতিহাসিক খননের কতিপন্ন হ্যা—শ্রীগোপীনাথ সেন ওহাবী আন্দোদন ও মুসলমান সমাজের নাজনীতি —শ্রীবোগেশচন্দ্র বাগল	•••	26 233 96 8)2 298 296
শ্রীকানাইলাল সাহা অনুতলাল বহু (সচিত্র) - শ্রীব্রচেক্সনাল বন্দ্যোপাধ্যার "অরমারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা) শ্রীবেণু গলোপাধ্যার অর্থ ও অবর্থ (গল) শ্রীনলিনীকুমার ভয় অন্তরাং ও ফুলাহালয়া (সচিত্র) শ্রীনিতেক্সকুমার নাম আন্তল্পারী কাল (উপভাস)শ্রীনামণদ মুখোণাধ্যার		2800 293 208 50 510 605	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ এশিরার কথা—শ্রীস্থনীগকুমার বস্প ঐতিহাসিক খননের কতিপার হাত্র—শ্রীমোপীনাথ সেন ওচাবী আন্দোচন ও মুগলখান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচন্ত্র বাদল কণ্ট্রোলের দিনকাল—শ্রীস্থবমা সেনগুপ্ত কবি শিবনাথ শান্ত্রী—শ্রীমনোধ্যেক্রনাথ রাম ক্ষা-ফ্রুর (কবিডা)—শ্রীমনোধ্যেক্র বাব্	•••	200 200
শ্রীকানাইলাল সাহা অনুতলাল বহু (সচিত্র) - শ্রীব্রচেক্সনাগ বন্দ্যোপাধার "অরমারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা) শ্রীবেণু রন্দোপাধার অর্থ ও অবর্থ (গল) শ্রীনালিনীকুমার ভত্ত অগুরাং ও তুলাহালয়া (সচিত্র) শ্রীনাবেণদ মুখোপাধার ১৩৫, ২৫০, ৬৪৪ আবর্ণ নিক্ষার আব্যবিক চিত্রাছন ও হত-নিজের দান (সচিত্র) শ্রীনারাগ্রিক্স কুলারী		2800 293 208 50 510 605	উপনয়ন (গল) — শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা) — এ. এন. এম. বন্ধপুর রশী র এশিরার কথা — শ্রীফ্রীগকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপশ্ন হ্যা — শ্রীমোপীনাথ সেন ওচাবী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি — শ্রীবোগেশচক্র বাদাল কণ্ট্রোলের দিনকাল — শ্রীফ্রমা সেনওও কবি শিবনাথ শাল্লী — শ্রীমনোমেজনাথ রাস ক্ষা-ফ্রার (কবিডা) — শ্রীমনোমোইন খোষ কালিদাস-সম্পর্কে রবীজ্ঞাবাধ — শ্রীকুদ্রিরাম দাশ	000 000 000 000 000	200 200
শ্রীকানাইলাল সাহা অসুতলাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাপ বন্দ্যোপাধার "অর্মারম্ভ: শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু রন্দোপাধার অর্থ ও অবর্ধ (গল)—শ্রীনালিনীকুমার ভত্ত অগুরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র)—শ্রীলতেক্সকুমার নাম আল—আরামী কাল (উপস্থান)—শ্রীমানপদ মুখোপাধার ১৩৫, ২৫০, ৬৪৪ আ্বার্ণ শিক্ষার প্রাথমিক চিত্রাছন ও হন্ত-সিজের নান (সচিত্র) —শ্রীনারার্ণচন্ত কুলারী অারবেদন (কবিতা)—শ্রীপ্রশান্তক্সার মিত্র অনুব্রার (কবিতা)—শ্রীপ্রশান্তক্সার মিত্র অনুব্রার (কবিতা)—শ্রীপ্রশান্তক্সার মিত্র অনুব্রার বিত্র অনুব্রার বিত্র অনুব্রার মিত্র অনুব্রার বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্রার বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিত্র অনুব্র বিতর অনুব্র বিতর অনুব্র বিতর অনুব্র বিতর অনুব্র বিতর অনুব্র বিতর অন	 	2810 213 308 510 310 665	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ এশিরার কথা—শ্রীস্থনীগকুমার বস্প ঐতিহাসিক খননের কতিপার হাত্র—শ্রীমোপীনাথ সেন ওচাবী আন্দোচন ও মুগলখান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচন্ত্র বাদল কণ্ট্রোলের দিনকাল—শ্রীস্থবমা সেনগুপ্ত কবি শিবনাথ শান্ত্রী—শ্রীমনোধ্যেক্রনাথ রাম ক্ষা-ফ্রুর (কবিডা)—শ্রীমনোধ্যেক্র বাব্		#94 244 544
শ্রীকানইবাল সাহা অন্তলাল বহু (সচিত্র) - শ্রীব্রচেক্সনাপ বন্দ্যোপাধান "অর্মারত: শুভার ভবতু" (কবিতা) শ্রীবেণু রজোপাধার অর্থ ও অবর্ধ (গল) শ্রীনালিনাকুমার ওজ অন্তরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র) শ্রীনাবেল মুখোণাধার অাল আরামী কাল (উপভান) শ্রীনাবেল মুখোণাধার ১৩৫, ২৫০, ৩৪৪ আঘর্ণ শিক্ষার আঘ্যামিক চিত্রাছন ও হত-শিলের বান (সচিত্র) শ্রীনারামণ্টক কুশারী আধ্বনন (কবিতা) শ্রীপ্রশাস্কুমার মিত্র আামরি বাংলা ভাষা (সচিত্র গল) শ্রীপরিমল গোখামী		287 0 273 308 570 607 , eco	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ এশিরার কথা—শ্রীফ্নীলকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপর হুত্র—শ্রীকোপীনাথ সেন ওচাবী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেণচন্দ্র বাগল কটোলের দিনকাল—শ্রীফ্রমা সেনওও কবি শিবনাথ শান্ত্রী—শ্রীসরোপ্রেক্রনাথ রার ক্ষা-ফুলর (কবিডা)—শ্রীমনোমোহন ঘোর কালিদাস-সম্পর্কে রবীজ্ঞানাথ—শ্রীকুদিরাম দাশ কালী এসর কার্যবিশার্থ (সচিত্র) —শ্রীব্রেক্সনাথ বক্ষ্যোপাধ্যার		\$08 \$00 \$00 \$00
শ্রীকানইলাল সাহা অন্তলাল বহু (সচিত্র) - শ্রীব্রচেক্সনাল বন্দ্যোপাধান "অন্নানতঃ গুড়ার ভবতু" (কবিতা) শ্রীবেণু গলোপাধার অর্থ ও অনর্থ (গল) শ্রীনালিনার তত্ত অন্তরাং ও তুলাহাজরা (সচিত্র) শ্রীনালেল মুনোপাধান ১০০, ২০০, ৩৪৪ আন্তল্পনার আ্থানিক চিত্রাছন ও হত-শিলের নান (সচিত্র) শ্রীনারাপ্তক্র কুলারী অন্তব্যব (কবিতা) শ্রীপ্রশাস্ত্রমার নিত্র আনরি বাংলা ভাষা (সচিত্র গল) শ্রীপরিনল গোখানী আন্তির ত্রিধারা শ্রীপ্রথাক্সর বাজপেনী চৌধুনী	 	287 287 298 708 588 0	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীর একি প্রান্তে কথা—শ্রীফ্রীলকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপর ফুত্র—শ্রীকোপীনাথ সেন ওচারী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচন্দ্র বাগল কটোলের দিনকাল—শ্রীফ্রমা সেনওও কবি শিবনাথ শাস্ত্রী—শ্রীমরোওঞ্জনাথ রার ক্ষা-ফুলর (কবিডা)—শ্রীমনোমোহন খোব কালিদাস-সম্পর্কে রবীজনাথ—শ্রীকুদ্বিরাম দাশ কালী প্রসর কার্যবিশার্থ (সচিত্র) —শ্রীব্রেজ্ঞানাথ বিজ্ঞাপাধ্যার কালীপ্রসর ঘোব (সচিত্র)	***	208 200 200 200 200 200
শ্রীকানইবাল সাহা অন্তলাল বহু (সচিত্র) - শ্রীব্রচেক্সনাপ বন্দ্যোপাধান "অর্মারত: শুভার ভবতু" (কবিতা) শ্রীবেণু রজোপাধার অর্থ ও অবর্ধ (গল) শ্রীনালিনাকুমার ওজ অন্তরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র) শ্রীনাবেল মুখোণাধার অাল আরামী কাল (উপভান) শ্রীনাবেল মুখোণাধার ১৩৫, ২৫০, ৩৪৪ আঘর্ণ শিক্ষার আঘ্যামিক চিত্রাছন ও হত-শিলের বান (সচিত্র) শ্রীনারামণ্টক কুশারী আধ্বনন (কবিতা) শ্রীপ্রশাস্কুমার মিত্র আামরি বাংলা ভাষা (সচিত্র গল) শ্রীপরিমল গোখামী	 	280 0 213 208 50 210 60% , eco 283 200	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামণদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীর একি প্রান্তে কথা—শ্রীফুনীলকুমার বস্তু ঐতিহাসিক খননের কতিপর হুত্র—শ্রীলোগীনাথ সেন ওহারী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচন্ত্র বাগল কট্যোলের দিনকাল—শ্রীফুমরা সেনওপ্ত কবি শিবনাথ শাল্লী—শ্রীমরোওজ্ঞানাথ রার ক্যা-ফুলর (কবিডা)—শ্রীমনোমেহন খোব কালিদাস-সশার্কে রবীজ্ঞানাথ—শ্রীজুদিরাম দাশ কালী এসর কারাবিশারদ (সচিত্র) —শ্রীব্রেজ্ঞানাথ বন্দোপাধ্যার কালী এসর ঘোব (সচিত্র) শ্রীদের সেবার আব্যাবিদান—শ্রীরম্পীকুমার দভঙ্গত	•••	\$08 \$60 \$50 \$50 \$50
শ্রীকানইলাল সাহা অন্তলাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাল বন্দ্যোপাধার "অরমারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু গলোপাধার অর্থ ও অবর্ধ (গল)—শ্রীনলিনীকুমার ভয় অন্তরাং ও ফুলাহালরা (সচিত্র)—শ্রীনিতেক্সকুমার নাস আল—আগামী কাল (উপভাস)—শ্রীমানপদ মুখোপাধার ১৩৫, ২৫০, ৬৪৪ আবর্ণ শিক্ষার প্রাথমিক চিত্রাছন ও হন্ত-সিত্রের নান (সচিত্র) শ্রীনারাপ্তক্র কুলারী আমেবদন (কবিতা)—শ্রীশাভকুমার মিত্র আ সরি বালো ভাষা (সচিত্র গল)—শ্রীপরিমল গোখামী আটের ত্রিধারা—শ্রীপ্রত্রেক্সর বালপেরা চৌধুরী আলাকা (সচিত্র)—শ্রীব্রনেক্সকর ভটাচার্বা আলোচনা ২০০ স্বিলিক্সাল স্বান্তান্তনা স্বান্তান্তনা স্বান্তান্তনা স্বান্তনা স্বান্তান্তনা স্বান্তান্তনা স্বান্তনা স্বা	 	287 0 293 208 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখেপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীর এশিল্লার কথা—শ্রীফুনীগকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কভিপার হাত্র—শ্রীমোণীনাথ মেন ওচারী আন্দোলন ও মুগলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচক্র বাদাল কর্টোলের দিনকাল—শ্রীফুবমা সেনওও কবি শিবনাথ শাল্লী—শ্রীমনোমেজনাথ রাম ক্যা-ফুলর (কবিডা)—শ্রীমনোমেজন খোব কালিদাস-সম্পর্কে রবীজ্ঞনাথ—শ্রীজুদিরাম দাশ কালী প্রসর কার্ডিলারদ (সচিত্র) —শ্রীবজ্ঞেনাথ বজ্যোপাধ্যার কালীপ্রসর ঘোব (সচিত্র) শ্রীজ্যের সেবার আন্ধর্যাপ্রশিক্ষার ক্ষত্তওও শ্রুক্টানের সেবার আন্ধর্যাপ্রশিশ (আলোচনা)	•••	200 200 200 200 200
শ্রীকানইলাল সাহা অনুতলাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাল বন্দ্যোলাধান "অরমারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু রন্দোলাধার অর্থ ও অবর্ধ (গল্প)—শ্রীনালিনুকার ওজ অগুরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র)—শ্রীলিতেক্সকুষার নাল আল—আগানী কাল (উপভান)—শ্রীরাবলদ বুখোলাধার ১৩৫, ২৫০, ৬৪৪ আন্তর্ণ নিকার প্রাথমিক চিত্রাছন ও হন্ত-নিজের বান (সচিত্র) —শ্রীনারামণ্ডল কুলারী আবেরন (কবিতা)—শ্রীপ্রশান্তক্সার মিত্র আ মরি বালো ভাষা (সচিত্র গল্প)—শ্রীপরিমল গোখামী আচের ত্রিধারা—শ্রীপ্রথমের বালপেরা চৌধুরী আলাখা (সচিত্র)—শ্রীব্রক্সকল ভটাচার্যা আলোচনা ২০০ আন্তর্মার্থী (গল্প)—শ্রীনলিনীকুমার ভক্ত	 	287 548 548 548 548 548 548 588 588	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বস্কল্ব রশীণ এশিয়ার কথা—শ্রীফ্নীগকুমার বস্থ ঐতিহাসিক খননের কতিপপ্ন হ্যন্ত—শ্রীমোণীনাথ সেন ওচাবী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচক্র বালল কণ্ট্রোলের দিনকাল—শ্রীফ্রমা সেনওও কবি শিবনাথ শারী—শ্রীসনোপ্রেক্তনাথ রার ক্ষমা-ফ্রম্মর (কবিডা)—শ্রীমনোমোহন ঘোষ কালিদাস-সম্পর্কে রবীজনাথ—শ্রীকুদিরাম দাশ কালী প্রসর কারাবিশারদ (সচিত্র) —শ্রীব্রেক্তর্জনাথ বন্দোপাধ্যার কালীপ্রসর বোধ (সচিত্র) শ্রীক্রিক্রের সেবার আন্ধর্গলিহান—শ্রীর্ক্রমার দভত্তও শ্রুক্তানন্ত জ্যাচার্ব্য	•••	2 0 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8
শ্রীকানইলাল সাহা অন্তত্যাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাল বন্দ্যোপাধান শ্রমানত: শুভার ভবতু (কবিতা) শ্রীবেণু গলোপাধান শ্রুর বিজ্ঞা শ্রীবলিনীকুমার শুল আল-আগানী কাল (উপভাস) শ্রীবাবল মুখোপাধান ১০০, ২০০, ৩৪৪ আন্তর্গ কিনার প্রাথমিক চিত্রাছন ও ক্ত-শিলের বান (সচিত্র) শ্রীনারাপ্তক্র কুশারী আবেরন (কবিতা) শ্রীবালো ভাষা (সচিত্র গল) শ্রীবালা ভাষা (সচিত্র গল) শ্রীবালা ভাষা (সচিত্র গল) শ্রীবালা ভাষা (সচিত্র) শ্রীবালাবা (সচিত্র) শ্রীবালাবার শ্রীবাল্যার শ্রীবালাবার বিজ্ঞা শ্রীবালাবা (সচিত্র) শ্রীবালাবার প্রাথমিক প্রাথমিক প্রাথমিক প্রাথমিক প্রাথমিক বিশ্বীবার শ্রীবালাবার বিজ্ঞান শ্রীবালাবা (সভা) শ্রীবালানীকুমার শ্রীবালাবার শ্রীবালাবার বিজ্ঞান শ্রীবালাবার বিজ্ঞান শ্রীবালাবার প্রাথমিক প্রাথমিক বিজ্ঞান শ্রীবালাবার বিজ্ঞান শ্রীবালাবার প্রাথমিক বিজ্ঞান শ্রীবালাবার প্রাথমিক বিজ্ঞান শ্রীবালাবার বিজ্ঞান শ্রীবালাবার প্রাথমিক বিজ্ঞান শ্রীবালাবার বিজ	 	287 0 293 208 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20	উপনয়ন (গল)—শ্রীরামপদ মুখেপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ এশিরার কথা—শ্রীফ্নীগকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপপ্ন হ্ন-শ্রীমোণীনাথ সেন ওচারী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচক্র বাগল কণ্ট্রোলের দিনকাল—শ্রীফ্রমা সেনওও কবি শিবনাথ শারী—শ্রীসনোপ্রেক্রনাথ রার ক্ষমা-ফ্রম্মর (কবিতা)—শ্রীমনোমোহন খোব কালিদাস-সম্পর্কে রবীজনাথ—শ্রীকুদিরাম দাশ কালীপ্রসর কারাবিশারদ (সচিত্র) —শ্রীবেজ্রনাথ বন্দোপাধ্যার কালীপ্রসর বোধ (সচিত্র) ঐ কুলীদের সেবার আন্ধর্গলিদান—শ্রীরম্পীকুমার দভঙ্গও ক্র্মানন্দ আগ্রমান্ত্রশ ভটাচার্য্য —শ্রীবিন্দাচক্র ভটাচার্য্য —শ্রীবিন্দাচক্র সরকার	•••	200 200 200 200 200 200 200 200
শ্রীকানইলাল সাহা অন্তত্ত্বাল বহু (সচিত্র) "এরচেক্সনাল বল্লোপাধান "এরমানত: শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু গলোপাধান অর্থ ও অবর্থ (গল)—শ্রীবালিনাকুমার ওল অন্তরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র)—শ্রীকতেক্রকুমার নাম আল—আগামী কাল (উপভাস)—শ্রীরামপদ মুখোপাধান ১০০, ২০০, ৩৪৪ আমার বিলার প্রাথমিক চিত্রাছন ও হত-নিজের মান (সচিত্র) —শ্রীনারাগ্রতক্র কুশারী আমেরদন (কবিতা)—শ্রীপ্রশাস্ত্রমার মিত্র আ মরি বাংলা ভাষা (সচিত্র গল)—শ্রীপরিমল গোখামী আটের ত্রিধারা—শ্রীপ্রতিসর বাজপেরী চৌধুরী আলামা (সচিত্র)—শ্রীব্রেক্তক্র ভটাচার্থা আলামা (সচিত্র)—শ্রীব্রিক্রার ভক্র ইউরোপের নিম্কৃমি —ক্রাজিয়ম ও হল্যান্ড (সচিত্র) —শ্রীবোপেনচক্র বাজল বিভাগিনাক্র বাজল ইতারোপের নিম্কৃমি —ক্রাজিয়ম ও হল্যান্ড (সচিত্র) —শ্রীবোপেনচক্র বাজল	 	287 0 293 208 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20	উপনয়ন (গৱ)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীণ এশিরার কথা—শ্রীহনীগকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপার হ্রান্ত শ্রীনাথ সেন ওচাবী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেশচন্ত্র বাগল কট্রোলের দিনকাল—শ্রীহ্রবার সেনওও কবি লিবনাথ শাল্লী—শ্রীসরোগেক্রানাথ রার ক্ষমা-ফুলর (কবিডা)—শ্রীমনোযোহন ঘোষ কালাদাস-সম্পর্কের বীক্রানাথ—শ্রীকুদিরাম দাশ কালী প্রসার কারা-বিশারদ (সচিত্র) —শ্রীবেক্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কালী প্রসার ঘোষ (সচিত্র) ক্রীনেল সেবার আন্ধার্থিলিলালনা) —শ্রীবেল্ক ভটাচার্থ্য —শ্রীবেশচন্ত্র সরকার ক্রেবালী বালার (কবিডা)—শ্রীধীরেক্রক্ক চন্দ্র ক্রিবালার (কবিডা)—শ্রীধীরেক্রক্ক চন্দ্র	004 004 000 000	208 200 200 200 200 200 200 200 200 200
শ্রীকানইলাল সাহা অন্তত্তাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাপ বন্দ্যোপাধ্যার "অর্মারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু গলোপাধ্যার অর্থ ও অবর্থ (গল)—শ্রীনালিনার ভদ্র অতরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র)—শ্রীনিতেক্সকুষার নাগ আল—আগামী কাল (উপভান)—শ্রীনারপদ মুনোপাধ্যার ১৩৫, ২৫০, ৩৪৪ আবর্ণ শিক্ষার প্রাথমিক চিত্রাছন ও হন্ত-শিলের নান (সচিত্র) —শ্রীনারাগণিক কুশারী অাহবেদন (কবিতা)—শ্রীপ্রশাস্তক্সার মিত্র আ মরি বাংলা ভাষা (সচিত্র গল)—শ্রীনারদার গোখামী আচিন ত্রিধারা—শ্রীপ্রশাসর বালপেরা চৌধুরী আলাকা (সচিত্র)—শ্রীপ্রশেক্সচক্র ভট্টাচার্ধা আলোচনা ইতরোপের নির্ভূষি — ক্রেক্সিরম ও হল্যান্ড (সচিত্র) —শ্রীবোপেনচক্র বাগল ইন্দোনেশিরা ও ভাষার মৃত্তি-সংগ্রাম (সচিত্র)	, 855	687 789 789 66 787 787 787 780 780 580	উপনয়ন (গৱ)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীও এশিরার কথা—শ্রীফ্নীগড়ুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপয় হুত্র—শ্রীগোপীনাথ সেন ওচাবী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেচক্র বাগল কটোলের দিনকাল—শ্রীফ্রমার সেনওও কবি শিবনাথ শারী—শ্রীসারোগ্রেক্রনাথ রার ক্ষা-ফুলর (কবিডা)—শ্রীমনোমোহন ঘোষ কালিদাস-সম্পর্কে রবীজ্ঞানা শ্রীক্রিরাম দাশ কালী প্রসন্ন কারাবিশারদ (সচিত্র) —শ্রীব্রেক্রেক্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কালী প্রসন্ন আর্থানিদান শ্রীমনশ্রীকুমার ক্ষত্তওও ক্রিনেন সেবার আ্রথানিদান শ্রীমনশ্রীকুমার ক্ষত্তওও ক্রিনিন্দানক্র ভটাচার্থ্য —শ্রীদীনেশচক্র সরকার কে বাশী বালার (কবিডা)—শ্রীধীরেক্রক্রক চক্র কোত্রগুর খানার বাছা—শ্রীরাখালক্র নার	••• ••• ••• ••• •••	208 200 200 200 200 200 200 200 200 200
শ্রীকানইলাল সাহা অন্তত্তাল বহু (সচিত্র) - শ্রীব্রচেক্সনাল বল্যোপাধ্যার "অর্মারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু গলোপাধ্যার অর্থ ও অবর্থ (গল)—শ্রীনালিনার ভত্ত অন্তরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র)—শ্রীনিতেক্সকুষার নাগ আল—আগামী কাল (উপভান)—শ্রীমানল মুনোপাধ্যার ১৩৫, ২৫০, ৩৪৪ আঘণ নিকার প্রাথমিক চিত্রাছন ও হত্ত-নিজের নান (সচিত্র) —শ্রীনারাগণত কুলারী অাধ্যের (কবিতা)—শ্রীপ্রশাস্ত্রমার মিত্র আ মরি বাংলা ভাষা (সচিত্র গল)—শ্রীনার লালামী আচির ত্রিধারা—শ্রীপ্রশাসর বালপেরা চৌধুরী আলামা (সচিত্র)—শ্রীপ্রশেক্ষকর ভট্টার্যার আলামা (সচিত্র)—শ্রীপ্রশেক্ষর ও হল্যান্ড (সচিত্র) —শ্রীব্রেলিরা ও ভাষার মৃত্তি-সংগ্রাম (সচিত্র) —শ্রীনভাক্ষর চটোপাধ্যার স্বিরানের ত্রাক্ষর চট্টাপাধ্যার স্বিরান্তর চট্টাপাধ্যার স্বিরান্তর চট্টাপাধ্যার স্বিরান্তর চট্টাপাধ্যার স্বিরান্তর ব্যাধ্যার স্বিরান্তর চট্টাপাধ্যার স্বিরান্তর ব্যাধ্যার স্বিরান্তর চট্টাপাধ্যার স্বিরান্তর ব্যাধ্যার স্বিরান্তর ব্যাধ্যার স্বিরান্তর ব্যাধ্যার স্বিরান্তর চট্টাপাধ্যার স্বিরান্তর স্বিরাধ্যার স্বিরান্তর ব্যাধ্যার স্বিরান্তর স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার স্বিরান্তর স্বাধ্যার	, 855	687 789 789 66 787 787 787 780 780 580	উপনয়ন (গৱ)—শ্রীরামণদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীও এশিরার কথা—শ্রীফ্নীগকুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপর হুত্র—শ্রীলাগীনাথ সেন ওচারী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেচক্র বালল কটোলের দিনকাল—শ্রীফ্রমার সেনওও কবি শিবনাথ শারী—শ্রীমরোরেক্রনাথ রার ক্ষা-ফ্রম্বর (কবিডা)—শ্রীমনোমোহন ঘোর কালিদাস-সম্পর্কে রবীক্রনাথ—শ্রীকুদিরাম দাশ কালী প্রসর কারাবিশারদ (সচিত্র) —শ্রীব্রেক্রনাথ বক্ষ্যোপাধ্যার কালী প্রসর ঘোর (সচিত্র) শ্রুক্তানের সেবার আত্মধলিখান—শ্রীমনশ্রীকুমার কভঙ্ও শ্রুক্তানের সেবার আত্মধলিখান—শ্রীমনশ্রীকুমার কভঙ্ও শ্রুক্তানের সেবার আত্মধলিখান —শ্রীদীনেশচক্র সরকার কে বালি বালার (কবিডা)—শ্রীধীরেক্রকুক চক্র কোত্রলপুর খানার বাছা—শ্রীবাপালক্র নার খার্ছ ও পথা বিজ্ঞান—শ্রীহরগোপাল বিবাস	•••	208 200 200 200 200 200 200 200 200 200
শ্রীকানইলাল সাহা অন্তত্তাল বহু (সচিত্র) শ্রীব্রচেক্সনাপ বন্দ্যোপাধ্যার "অর্মারতঃ শুভার ভবতু" (কবিতা)—শ্রীবেণু গলোপাধ্যার অর্থ ও অবর্থ (গল)—শ্রীনালিনার ভদ্র অতরাং ও তুলাহালরা (সচিত্র)—শ্রীনিতেক্সকুষার নাগ আল—আগামী কাল (উপভান)—শ্রীনারপদ মুনোপাধ্যার ১৩৫, ২৫০, ৩৪৪ আবর্ণ শিক্ষার প্রাথমিক চিত্রাছন ও হন্ত-শিলের নান (সচিত্র) —শ্রীনারাগণিক কুশারী অাহবেদন (কবিতা)—শ্রীপ্রশাস্তক্সার মিত্র আ মরি বাংলা ভাষা (সচিত্র গল)—শ্রীনারদার গোখামী আচিন ত্রিধারা—শ্রীপ্রশাসর বালপেরা চৌধুরী আলাকা (সচিত্র)—শ্রীপ্রশেক্সচক্র ভট্টাচার্ধা আলোচনা ইতরোপের নির্ভূষি — ক্রেক্সিরম ও হল্যান্ড (সচিত্র) —শ্রীবোপেনচক্র বাগল ইন্দোনেশিরা ও ভাষার মৃত্তি-সংগ্রাম (সচিত্র)	, 833	287 0 293 200 200 200 200 200 200 200 200 200 20	উপনয়ন (গৱ)—শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যার এক প্রান্তে (কবিডা)—এ. এন. এম. বন্ধপুর রশীও এশিরার কথা—শ্রীফ্নীগড়ুমার বহু ঐতিহাসিক খননের কতিপয় হুত্র—শ্রীগোপীনাথ সেন ওচাবী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি —শ্রীবোগেচক্র বাগল কটোলের দিনকাল—শ্রীফ্রমার সেনওও কবি শিবনাথ শারী—শ্রীসারোগ্রেক্রনাথ রার ক্ষা-ফুলর (কবিডা)—শ্রীমনোমোহন ঘোষ কালিদাস-সম্পর্কে রবীজ্ঞানা শ্রীক্রিরাম দাশ কালী প্রসন্ন কারাবিশারদ (সচিত্র) —শ্রীব্রেক্রেক্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কালী প্রসন্ন আর্থানিদান শ্রীমনশ্রীকুমার ক্ষত্তওও ক্রিনেন সেবার আ্রথানিদান শ্রীমনশ্রীকুমার ক্ষত্তওও ক্রিনিন্দানক্র ভটাচার্থ্য —শ্রীদীনেশচক্র সরকার কে বাশী বালার (কবিডা)—শ্রীধীরেক্রক্রক চক্র কোত্রগুর খানার বাছা—শ্রীরাখালক্র নার	••• ••• ••• ••• •••	2

8	• •		স্থ	1-13		
'নোনা'র ভাবের আধুনিকতা	এলোগাললাল দে	•••	443	বন্মদেশের ঘাণীনতা লাভ (সচিত্র)		
যুষ (কবিছা) মুৰ্ণালকাভি দ		• • •	412	अश्रवायक्रम श्रामानामाम	•••	847
চকিত চাহনি (কবিভা) — 🖣 শিব	দাস চক্ৰবৰ্তী	•••	844	ব্ৰিট্টপ বিউজিন্ত্ৰ বন্ধিত পুৱাতন বাংলা পত্ৰ-পত্ৰিকা		
চিন্তৰী দীচি (কৰিতা)—জীধীয়ে			***	—ইপান্তিয়নৰ মন্দোপাধ্যায়	***	148
টানের সাম্রতিক অর্থনীতি— শ্রী	শান্তিৰঞ্জন চক্ৰবন্তী		89+	ভরত, কণ ও বিখানিত্রমুহুলাদ শহীছুলাহ	***	
স্যোতিরিজনাথ ঠাকুর (সচিত্র)	- बिडरम्सनाथ वस्त्रानाथात्र	•••		ভাঙা-গড়া (কবিডা) শ্লীনারারণ দত্ত	100	2.0
ভরের প্রাচীনভাশ্রীবোগেশচন্ত	। बाब			ভারতীর সঙ্গীতে সাত বরের লক্ষকথাবামী এঞানানদ	•••	105
ডুৰি আৰু আমি (কবিডা)— শ্লী	স্পাস য় বহু	•••	> 8	कांबल्डरर्व मसूत्र धर्त्रघठेवै.मोमरक् मान		453
নিষ্যু আৰু কাঁপে ধরধর (ঐ)		•••	790	बहाडीटमब এक मनक (১৯२१-३१)		
ছুৰ্গাদেৰীয় ৰোধন ও বিসৰ্জন—		•••	695		•••	458
- বুৰাভীতের পটভূমিকার বাংলা-ব	দাবোর সূচনা ও অস্তির আ	ভাস		महिना-तर्शन •⊶ ১९७	g . 3	
শ্রীসমীরকাত গুপ্ত		•••	49	মানুষ ও মুসলমানশ্রীউমেশচন্দ্র ভট্টাচাধা	•••	•••
দেবীর বোধৰ ও বিদৰ্জন-জীৱা	ৰেমেৰিন না থ	•••	૭ (ર	মৃত্যু অমৃত করে দ¦ন—শ্রীশৈকেন্দ্রকৃষ কাহা		638
	··· ১১२, २১६, ७५ ৯, ४२७,	624	402	वृष्ट्रा चव्रुष्ट करत्र गाना-सार्टाराम्याच्या करा यबनिको (कविष्ठा) क्षेत्रवीद्धा करा		¥8
ইজেক্সলাল স্বায় (সচিত্ৰ) – জীব্ৰ			140	বৰ্ণকৰা (কাৰ্ডা)আৰম্ভ জয় ৰাহ্ৰাছন ও চগাংল ব বছায় অৱাজকতা—		745
समिक्षारम श्वमित क्या—चैतिति			478	বাহবাহন ও চলাংক ব বহার অরাজকতা—আপনাশবরু গড় বুক্তরাদেশের প্রাক্তিক কোকসলীত—শ্রীমারা ওপ্ত	•••	364
নগেক্সনাথ শুশু (সচিত্র)—শ্রীরে			998	ৰুক্তঅদেশের আন্তেক লোকসলাত—আনায়া কত যুক্তরাট্টে কুৰিকর্মে বিষাদের কার্যাকারিতা (সচিতা)	•••	~ ∌
नवरकात व्यक्ताव श्रापंत्र कि						348
🕮 को वनमत जात	······································	•••	134	— শ্ৰীনলিনীকুমার ভন্ত ১৯৮ জন্ম ক্ৰিয়েল শ্ৰীন্তৰ্ভন স্থানি	•••	993
'নিউ ইভিয়ন কান্চরাল ভাালা	경기" (영화)		•	রবীক্স-চিত্রের ভূমিকা- শ্রীবেমণ্ডেজ চলবন্ধী	•••	82
শীননীমাধৰ চৌধুমী		•••	eee	রবীক্রসংগণে ক'ল্কা—জীবিধুশেধর ভট্টাটোৰ্য	•••	
ৰঞা-শীৰৰ হাজের মত (কবিতা)		•••	2.0	রামা-স্চট্টোগাধ্যার (ক্ষিতা)গ্রীকুস্দরঞ্জন মন্ত্র		487
নপালীদের খাছদ্রব্যজীবিলর			300	"রামানশ-দীবনী"— শীক্ষবনীজনাথ ঠাকুর	•••	₹ ₽ }
गळावनी—बरीक्षनांच ठाङ्ग	••• @: [4] edid coldin			রামের টাকা (গণ)—শ্রিকগণীশ গুণ্ড	***	84-
ভোৰতা—হবাজনাৰ চাত্ৰৰ ভোহনীয় চয়ে (ক্বিডা)—≌ি	•		8:5-	রাষ্ট্রের পোড়ার কথা—গ্রীশালা সূলী	•••	184
		•••	8.20	ন্ধপান্তর (কবিতা)—শ্রীবিকুশদ বন্দোপাধাার	•••	> 9 4
পাৰ্বিলা কল্পনা হইতে বাংলার ব	। ग। प्रानिकः चित्रते यक्षापनाः			রেখাপুণিতে পণ্ডিত জগরাধু – জীবিজগগোপাল বঞ্চ	***	٥•١
—শ্ৰীহরগোপাল বিধাস			>>1	শভাবী চলে (কবিভা)	•••	4 8
).e, २.», ७३८, 8১৭,			শরণাগতা (গল) - শ্রিহণীর দেবওও	•••	3917
पूर्ववरक्षत्र हिन्तृत्र मध्याश्रेणनि		•••	***	শহীদ (গঞ্জ) — জ্ঞানিক্তী খোৰাল	•••	3 DF
मणाच महामात्रदेव जाहिय जार्थ	ধ্যমা (স'চত্ত)			শাখত ৰৰ্জমান (কৰিতা)জিলৈকেজকৃষ্ণ লাহ।	***	२७३
क्षेत्रस्थ क्षेत्रः होति।			849	শিল্পী ক্ষীলকুষার মুখোপাধাার ভাত্তব্য-লিক্স (সচিত্র)		
धान्याहिय— विवयमात्रात्र म		•••	***	ज्यानाणनाष्ट्रनात्र कवा	•••	£ > £
धारेशिकिशामिक बारमारमण-मिनि	माञ्चभावा बाबरठाथुवा	•••	०७२	পিয়া ও পিঞ্জী (সচিক্র)জীবিষণ রার	•••	٥)
गत्रामण्डेनन विक्रवर्गकवन द्वाद		•••	>><	শি জশিক্ষা ও বাধীন রা ট্র—ইন্ননীরাভূ ৰণ গুপ্ত	***	62.
ক্ষিক্ত (কবিতা)—শ্ৰীবেণু গলে		***	629	শুক্তারা (গ¢)— শু রুষা সর্কার	•••	690
वनम् छेनान्य"—श्रीविमनाव्यन (•••	44.7	এবেংগে শচন্দ্ৰ রার (কবিন্তা)—এগোপাললাল দে	•••	७∙ २
क्टिन्ब माम (कविटा)— चिकूम्		•••	987	সন্ধীত দাৰোদ্যজিদানেশচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য	•••	*
क्षिनी हाजल । क्षा-विस्तरव		••••	5.49	সভা (6েলে বড় (কবিভা)——ইংকুৰ্লরপ্লন মলিক	100	283
াণিজা-বায়ু (কৰিডা) - গ্ৰী ৰধুসুৰ		•••	44	স্থ-হারাদের কবি (কবিতা)—শ্রীপ্রভাত বন্ন	•••	4 42
ision-विहाती विद्याप		•••	485	সমর্গন (কবিতা)—স্মিত্মমনেন্দু দত্ত	•••	₹9 ¢
ल्बो (कविछा)—वैद्यासन्यनान		•••	454	সরলা রালজ্ঞভাবতী রাল	•••	٠.>
it∑ie নালেবেৰ সমাল-দৰ্শন—া		•••	474	मःइट-महिट्छात्र धातविवशीखविमन क्रोधूत्रो	•••	>49
ালা-প্রতিকাশ্রীদীবেশচন্দ্র ভটা		•••	२८२	সাধ (কৰিতা) — শ্ৰীধীয়েশ্ৰকুক চন্দ্ৰ	***	445
ান্তৰ ও কল্পনা (কৰিতা)—স্মীৰৈ			240	সাম हेबार-म्यान्य गायमा	•••	394
�াটুৰ (সচিত্ৰ)—ঐবিভেন্তচন			648	जिकि कवि नांश्र जांबहन मिठक	* ***	1.9
ৰদানী (কৰিতা)—শ্ৰীৰাপ্ততোৰ	সাভাগ .	0.04	241	जिल्लूम स्ट्रेंट्ड देशिकपूरा - कीननीशांश्व (डोयुडी	***	75.
ৰিবিধ প্ৰসঞ্চ	3, 334, 239, 425,	82¢.	443	সিদ্ধু সঞ্চাতা ও মেশেপটেমিয়াজীমনীমাধৰ চৌধুৱী		482
বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ (সচিত্র)ম				जिल्हा विकास का को का जिल्हा के अधिक के जिल्हा के जिल्ह		492
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	4>8, 4>8 ,			नीकारूक (महिन)—बिल्वां धमत वांबरनी कोष्ट्री		8.1
বিবাক বুল (কংগ্ৰু)— ঞ্চ বিক্ত।		***	373	नाकाष्ट्रक (नाक्य)—व्यार्थ। यनत्र नाकरणता द्वानुता सुरुक्षात्रकारकत्र सृत्युक्ति—व्यानुत्रकान्यात्र सञ्जयनाय	•	>•1
नगर पुरु हुए २००० का वर्षा । विक् या र्व ७ जरेवनिक जार्द-				त्रकात्रकारकत गृहाकावायत्रकाकूनात सञ्चनाय त्रुव (कविद्या)विश्वतिक कुछ		96
বোৰক আৰ ও অব্যোক আৰ- বভচারিক (গল)—ইইলারাকী গু		•••	31 • 6 0	मून (कारका)मानग्रत कुछ कुर्व छ नाकिवैरिकाहरु वह		841

াভ্ভাৰা ও এদেশ বিভাগ	*** #83	শ্ৰমিক বিৰোধের সমাধান	••• ১২১
विद-द्वारामण	*** 88*	সৰ্দাৰ বলভভাই প্যাটেলের অভাঞ্জলি '	14.
(क) वि. क्ष्म े.	485	সর্কোদ্ধ সমাজ	*** ***
ন্দীৰ শীগের ভবিছৎ	**** 120	স্থীরকুষার লাহিড়ী	*** 245
শালকান্তি ঘোৰ	*** 4	श्रुद्धकांच बरमार्गागांच	*** 443
वार्राभवस्य त्राप्त, ष्यांवर्षा	••• २२४	সেচনের বাঁধ ও পৃক্ষিত্রী	••• ३२६
লপত্রে যাল বুকিং আলিলে ছুর্নীতি	•••	পাধীন ভারতে কারা-সংখ্যার	••• રફ્લ
াঞ্চলিয়োহৰ বিজ	••• २७•	হরিণঘাটা পরিকল্পনা	••• •••
দ্যাকৎ আলি থানের প্রতিষ্ঠানে সন্দার প্যাটেল	··· 22A	रात्रपत्रां वार्षा	. ••• 899
ন্মাকং আদি থানের ২ক্কব্য	>>•	হাসপাভালের অবস্থা 	••• >48
,	চিত্ৰ	-मृठौ	
রঙীন চিত্র		বিজেমালা রার ও তাঁহার পত্নী	473
		নপেজনাৰ ভগু	i 1976
ৰ্ষায় আৰিৰ্ভাব—শীৰীহায়গঞ্জন সেনগুপ্ত	*** ***	পদীগ্রামের দৃষ্ঠ	(43
বাপুন্ধী—শ্ৰীনসভাগ বহু	··· हर् द ••• १ २३	भिना : किर्मात्र-मरम त्र हिव्य	456
মা ও ছেলে—ইন্সভোক্তনাথ ৰন্যোপাধার		ৰীবাসনা সেন	1 2.
বৰন ছরিদাসের মহাপ্ররাণ —শীসভোব সেন্ধ্র	••• •• •>	বিজয়পদ্মী পণ্ডিত	4 2
শ্রাবাবীনী হাররপ্রন সেনগুর স-রস্বতক্ষ - শ্রীষাণিকলাল বন্দ্যোগাধার	••• ₹37	বিটাটুৰ যা	698-9
গ-গ্ৰগ ভন্ন - আৰাণিকগাল ৰূপোণোৰাগ একৰৰ্গ চিত্ৰ	,,•	বিষল রার-অঞ্চিত চিঞাবলী	4)-8
		व्यवित्रमाद्ययो ठळवर्षी	७७ २
অতি আদিম বুগের শিল	२८३-६२	वक्राम्ण : हिवाबनी	७३२- •
অমূতলাল বহু	299	ঐসাধীনতা উৎসবের চিত্রাবলী	871
অপু জনাৰ্থ কলে।পিথায়	236	ৰ্হীশুর: পল্লীপথে	२३१
অপোক চটোপাথার আছিম অধিবাসী, এশান্ত মহানাগরের	••• 32•	শাক্ষিয়া: চাৰী-গৃহস্থ	••• २३७
न्यापन न्यापनाम, व्यापक वर्गनाम्यत्रत्र न्यानान्त्राः हिजावनी	\$69-50 >80-82	মাৰ্কিন বৃক্ত-ৰাষ্ট্ৰ:	
चानाका ३ (ठवावना हेस्ट. बन्. छ. (चश्चि-পরিবং)		ওয়াশিংটন	230 , 032
रेड. जन्. ७. १ राजनात्रपर / हेरमारनित्राः हिजारमी	82-40	জন্ম ওয়াশিংটন বিশ্ববিদ্যালয়	*** ***
ওয়ায়াং নাট্যের অভিনেত া	111 90	निड देवक, विमान हरेएछ	>6.
वाहास्त्रिता वाहास्त्रिता	*** 40	ভাশনাল গ্যালায়ি অব আর্ট	••• ৩৯৭
क्नावि धर	8•3	বিষানের কার্যাকারিতা	*** 276
কাৰ্যিক কৰা বহু, ভাঃ	*** ***	মীনাকী সেবছপ্তা	*** >94
कानीध्यत्र कार्यायमात्रम	*** 896	ৰাচীঃ 'শান্তিখাৰ'	··· 4>
ं कांगी-धना (पांच	*** 389	রাগ্যোহন রায়ের সমাধি, ত্রিষ্টল	*** 13
কাশ্মীর:—নিলমিট ও হন্দা অঞ্ল	4.3	লগুন : ইন্পিরিয়াল এরারগুয়েন	16
বিলাস নদীতীয়	••• 250	পাৰ্ল্যমেণ্ট ভবন	12
अ मना च	330, 343	লবণ এন্ডতির দৃষ্ঠ, ছুগাহাজরা ও অন্তরাং	39 1Q
ভূন্ <u>না অকলে শস্তাকেত্</u> ৰ	, २ >1	লিক্ষনের স্পারস্থি	કેલ્છ ⊷
কাষেলের মডেল ডেপুট (বাল্টির)	२98	শ্ৰীশাস্তা দেবী	••• 42•
शासीयो :	١, ٩٥, ٤૨٤	শিলী স্পীলকুষারের ভাত্র্যা	634-4
অভিস শরনে	***	সাইক্লোটুন বয়	
লোকবাত্রা	*** ***	जि: रव — अ टमम्बि र व	2.6.4
জবাহরলাল নেহক	ಅಕ್ಕಿ ೩೩೨	সীভাকুও, মৃদ্ধের	83.
জেকারস্ব ঃকর্মনৃতি	436	ৰ ীগাতা দেবী	900 4 2 a
—-ছতিভাৰ	*** ***	হুণীরচন্দ্র শাহিড়ী	ec
স্বাদ্ধান দেবারতন	*** ***	श्ववाना (प्रयो	*** 676
विश्वा: विवासनी	: 66- 5 •	সেনানায়েক, ডদ টিকেন	178
द्ववीक्षमार बाबकोपूबी : स्वात चामात्वत क्षिपृष्टि	··· *	रमाधः विवासनी	*** 16.9

বিবিধ প্রসম

্সেখনাইড গোল্ (গল)—শ্বীনানম চটোপাখ্যায়	***	299	पारीन जिल्लात शामनामा-विरोदननक्य क्यांनांत्र	 	170
নোনার,সন্মা (গ্রন্থ) - জীদেবেশচন্ত্র হাশ	•••	624	বাধীনতা ও বাংলা ভাষা—ইটিভাইন্নণ চক্রবর্তী		46
चर्च (त्रक)—श्रिवीञ्चक्षात्र वदः	•••	>6.			
यशरकत्र माधना	•••	84)	বাধীনত্তাৰ্থে (কবিভা)—জীলেনেজকুক লাহা	444	81
খাণীন ত্রিপুরা (সম্মি)—ব্রীর্নীনপ্রকাশ সোহ	•••	444	ভূষার আবির্ভাষ (কবিজা) - হেষদভা দেখী	•••	473

বিবিধ প্রসঙ্গ

Articials a miseos fils			III. N. Alvalla Alalia Mari	***	44:
অসমীয়াগণের সমগ্র আসাবে এতুম প্রতিষ্ঠার তেটা	•••	•	"পাকিছাৰ" মৰোভাৰ	•••	44:
व्यानगीत दत्रशाह.	•••		ণাকিছানীয় এতাাবর্তন	•••	48.
শাসামে ৰাঙাৰী	•••	•	পাৰ্কতঃ স্বাতিদের বার্ব	***	:
ইউবোপে কৃষির উন্নতি	***	7.0	পুনৰ্বাস্থাতির বিরাট আহেলাজন	•••	42
এদি বেশা ত দ্বন্ শতবাৰ্ধিকী	***	24	পুলিস কৰ্তৃক "ৱাকে মাৰ্কেট গমন"	***	•
"কৰ্লি নেহি ছোড়্ডা—"	•••	२२€	পূর্ববংশের প্রকৃত ক্ষরত্বা		**
ক্য়ানিষ্ট পাটি কে আইনী		(41	পূর্কবঙ্গের সমস্তা সমাধানের উপায়	***	
ক্রলার অভাব	•••	>•	পূর্ববঙ্গের হিন্দু	•••	42 (
কলিকাতা কৰ্পোৱেশন	•••	600	পূৰ্বাৰকে হিন্দুর ভবিছং	•••	(2)
কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সমাধর্ত্তন উৎসব	***	685	পূৰ্ব্ব বাংলাৰ একটি চিত্ৰ	•••	९२।
কংগ্রেদের ভবিষ্ণৎ	***	લ્ટ્રક	পূৰ্বসীমান্ত রক্ষার ব্যবহা	***	223
কিরণশন্তর রারের বিবৃত্তি	•••	٠	धवात्री रव-माहिका मृत्यनम	•••	401
्राष्ट्र-ममक्षा न्यांबान	° •••	993	প্ৰবাদে পণ্ডিত নেহৰুৰ বভূতা	***	803
नाची यहाव्यदान	•••	8 20	কিলিন্ডিন	•••	424
গাৰীলীয় অভি পশ্চিত করাহরলাল নেহক্ষর অবাঞ্চলি	•••	892	বরিশালে হুর্গাঞ্জভিষা নিয়ন্ত্রনে বাধা	•••	251
গাৰীজীর শেব রচনা, কংগ্রেস সম্পর্কে	***	827	বক্সমূল্য নিরম্ভণ	•••	45.
গুলু নামক স্কান্ত নিয়াছিলেন		400	কালা ও আসাম ব্রাহ্ম-সন্মিলনী	•••	224
বোৰ-মন্ত্ৰীসভাৱ অপস্থতি		૭૨૭	रांखा दमाम केर्म्		456
ঘোৰ-মন্ত্ৰীসভার চার মাস		232	বালোর অবস্থা ও প্রতিকার	***	>
हिम्मलाल मोल्लबार	***	202	यारमात्र शंक-मध्या	•••	120
অমিদারির কভিপুরণ দানের উপার		58	वाःनात्र वादक्षे	***	603
জমিলারি লোপেয় পর ভারতবর্ষের কর্মবঃ	•••	78	বাংলার সমস্তা	•••	>>4
क्रात्रहत्वः जन्नान वावश	•••	:26	বিশাতে হল্লের উৎপাদন বৃদ্ধি	101	77
ভার্মানীর ভবিসং		ર્શ્ય	বিশেষ ক্ষমতা আইন	•••	२२ •
চাকার বি: জিলা	•••	10.	বিৰেন্ন দ্বৰান্তে ভাৰতবৰ্ষেক কাল	***	900
विश्व। होना व्यस्ताव	***	4 60	वृहर छरकन	***	005
দ্রোদর উপভাকা	***	२२॥	বেশীলাধৰ বড়ুখা	***	48 8
ছুৰীতি দমনের পৰী	•••	*	उम्रास्त्रं वाधीयका	***	400
নিষ ডানিম' নৃতন শিকা		00)	ভাই প্রমানন্দ	***	543
নরসিংহ চিন্তামন কেলকার	•••	547	णात्रक-रेजियात्मत ८ शतना	***	4*2
नात्री-छेदारव निर्माष	•••	844	ভারতীর পাল্বিফ্টে পৃঞ্জিত নেহত্তর ভাষণ .	***	14.
निद्धार नाक कांग्रेस जगरतः वाळाचन		02 h	ভারতীয় ব্রুলাট্রের লাইনিনি	***	806
मुख्य पश्चिमका	***	024	कांत्रक्यापेत "में किए"	441	484
পৃতিত নেহুদৰ অভিহোদ		338	कान्नक्षर्वन पूननवान	104	451
প্রতিত নেহরর সংক্রম প্রীয়ানীর সামরিক শিকা		454	ভারত-বুজুরাটে বেডুখ-লবজা	949 .	. 431
		•	ভারত-রাষ্ট্রের প্রকৃতি	***	443
প্ৰিয় বন সুগ্ৰহাৰ সংগ্ৰহ	•••	34.	ভারতে বল্লের উৎপাদন দ্রাস	600	34
গভিষ্যকের ব্যলমান	144	449	ভাৰার ভিক্সিতে প্রদেশ ও বিশ্ববিভালয়	***	327
প্ৰতিষ্ণলের সহিত বৃদ্ধ হইবার বভা বাবভূষবানীলের গাবি	•••	•	নহাপ্তাৰীয় প্ৰশ্ন হতের স্বাতি	•••	æ
পশ্চিৰ বাংগাৰ উপ্তৰৰ শ্যবস্থা	900 ·	440	বহাস্বানীর অতি বড়লাটের অন্তান্ত্রনি	***	\$45

これをおりませるこれが出



মহাত্মা গান্ধী



'সত্যৰ্শিবম্ সুন্ধম্ নামমান্ধা বলহীনেন লভাঃ'

892 SIS

কাত্তিক, ১৩৫৪

<u> সংখ্যা</u>

বিবিধ প্রসঙ্গ

বাংলার অবস্থা ও প্রতিকার

বাংদার অবস্থা ও প্রতিকার সম্পর্কে গত মাসে আমরা স্বিশেষ লিবিয়াছিলাম। উহাতে আমরা দেবাইতে চেটা ক্রিয়াছি যে বলীয় প্রাদেশিক কংগ্রেস ক্ষিটর বর্ডমান প্রতীর মধ্য ছইতে ভাল লোক পাওয়া অগন্তব। ঐ ক্ষিটর কর্ণবার-দিৰের মধ্যে নিজের স্বার্থ ও নিজের দলের স্বার্থ চিম্বা ভিন্ন আর काम ७ (b) हो व िक् वारमारमण विशेष्ठ विभ वरभटदव मर्दा পায় নাই বলিলেও চলে এবং উহার কার্যপদ্ভির আৰুল পরিবর্ত্তন না হইলে আগামী বিশ বংসরেও ঐ অবস্থার অবন্তি ভিঃ আর কিছুই হওয়া সম্ভব নছে। সম্প্রভি যে ভাবে শৃতন ক্মিটির গভাও কংগ্রেসের দলর্ভির চেটা চলিতেছে ভাষার মধ্যেও ঐ একই পুরাতন কার্যাপছতি পাওরা ইছারও সংস্কার প্রয়েজন। বর্তমানে সারা বাংলাদেশের প্রতিনিধি নির্বাচন তিন চারি খন লোকের হাতে। ইহাদের মধ্যে ব্যক্তিগত সততা কাহারও কাহারও আছে, অৰ্থং অসং উপায়ে অর্থোপার্কন বা পরস্থাপহরণ তাঁহারা করেন মা। কিছ নিজ দলের ক্ষমতা বা প্রতিষ্ঠা वृद्धित क्या (मान्य मन्मिक्षा कथम्छ विभव्यम (भ्या मार्ट अवश्र अक्षमक ईंशामित मर्था मारे। निक मरनत बाळावारी চর নছে এরপ সং ও কর্ম্বঠ লোক ঘাহাতে বি. পি. সি. সি.তে প্রবেশ ও প্রতিষ্ঠালাভ করিতে না পারে ইহার জন্য ইহারা সকলেই সভত চেইভ এবং দেখের মুল্পকামনার নিক দলের স্থার্থ বলিদান দিতে ইিহারা কেছই প্রস্তত নহেন। বরঞ অধিকাংশ ক্লেটে ইছারা দেশের ও দশের কল্যাণের বিষয় জ্লাঞ্জী দিয়া নিজেদের স্বার্থরকার ব্যবস্থাই এডদিন করিয়া चानिशास्त्र । ईशास्त्र विषय (सव क्या अहे व. ईशास्त्र भारता वास्क्रितंत्रकारव मश्वास्क्रितंत सामने विरक्षांतरमात व्यापनेत কাতীয় লোক এবং ইহাদের প্রভাকেরই গোইতে মার্কার শ্ৰেণীয় নীচ লোক আছে, বাহাদের পক্ষে এমন কোনও সদং कांक नाहे वांश अम्बद, अतः छाशातहे करण वारणात আৰু এই ছুৰ্বনা, বাহার আও প্রতিকার না হইলে ক্রিফু বাঙালী জাতি অতি শীঘ্ৰই চন্নয় চুৰভিত্ন পৰে চিন্ন দিনেত্ৰ মত माविश यदित।

এম্লপ অবস্থায় দেশবাসীর কর্মতা কি 🤊 দেশবাসীর সর্ব্য-প্ৰথমে আনিয়া রাখা প্রয়োজন যে কংগ্রেস কাছারও পৈড়ক ক্ষিদারী মহে। যদি কোনও ক্ষেত্রে কোনও কোনর নগরে বা মহকুমায় দেখা যায় যে দং বা কর্মাঠ লোকের পরিবর্জে অদং বা অকর্মণ্য পোক প্রাদেশিক ক্ষিটতে ভান পাইয়াছে ----ঘাছা পশ্চিমবলের সকল জেলায় সর্বাত্তই এতদিন হইয়া আসিয়াছে -- তাহা হইলে পেই অঞ্চের বাহারা কর্মী বা দেশ-হিতকামী তাঁহারা সল্ববদ্ধ ভাবে ভাহার প্রতিকারের বছ যেন जबबर देखा करेश देश देश । अत्याखन करेल (पर अला वन ভখনই একট পুৰক কংগ্ৰেদদল গঠিত হয় যাহা কেন্দ্ৰীয় नमिणिय निकृष्ठे প্রতিকার প্রার্থন করে এবং সেবানে স্থবিচার মা পাইলে নিবিল ভারতীয় কংগ্রেদে প্রভিকার क्षार्यमा कृतिर्व । याकावा कर्मार्व (माक छारायत मकरणतहे অবিধায়ে কংগ্রেসে যোগদান করা প্রয়োক্ত এবং পরিচিত সকলকেই কংগ্রেস দলভুক্ত করা প্রয়োজন। আজাবাহী ভিন্ন আফ কেংই বাহাতে কংবেসের দলভূক না হয় এইকণ ্ অপচেষ্টা নানা অজুহাতে বহুদিন হইতেই এই প্রদেশে চ্লি-তেছে। লোক মনোমভ হইলে ভাহার কর্ম পাইভে বা (यश्व इटेटल अक मुट्र्लंड लाल मा। समाबाध अक मान (हैं। कडिलिश किहेरे कल एम ना देश शूर्वांश तिमार এবং এখনও দেবা যায়। এতদিন এই সকল গহিত পছতি সম্ভ কিছু বলা বা লেখা যায় নাই কেননা ভাহাভে বিদেশী ও বিশক্ষের সমূবে কংগ্রেসকে অপদস্থ করার পথ খোলা হইত, কিছু এবন এই সকল অনাচার দূর করিয়া পশ্চিম বাংলার কংগ্রেসকে সভাগভাই দেশের কল্যাণকর ভাতীয় প্রতিষ্ঠানে পরিণত করিতে হইবে। অন্যথায় বাংলা ক্রমেই अक्न पिटक निष्ठादेश निष्ठित ।

আৰু বাংলাদেশ ভাৱত মুক্তরাষ্ট্রের মধ্যে অতি অথম ছানে পজিয়া রহিরাছে। বিহারী চোধ বাঙাইতেছে, আসামে বাঙালীর উপর মধ্যেছাচার ও ছুর্ব্যবহার চলিতেছে, অন্য প্রদেশের লোকে কুপা, অবজ্ঞা বা অবহেলার সহিত বাংলা ও বাঙালীর ক্থা মনে আনে। আহাদের অবন্তি কি এভদ্ব সভাইনাছে যে ইহাতেও আমাদের চৈতন্য হইবে না, দৈনিক কাশকের

ত্মণাড়ানো মাদক অববা ভবাকবিত বাইচালকগণের ভবভতি-প্রশন্তিতে সম্ভই হইয়া আমরা দেশের অবস্থার দিকে ভাকাইব না ? দেশের পূর্বগৌরবের স্থৃতিতে বা চতুর প্রদেশপরিচালকের ভোকৰাক্যে ভূলিয়া অৰঙ ও আওকৰ্ডব্য কাজে হাত না দিলে चाव इ'भिन भरत रहरमंत्र कि एहरम रत्र विश्वाद रिष्टमा चाना-(मद करन स्टेरन ?

यहीत खारमिक कररबंत्र क्यिकेट खबू चावून मरामावन बार्याक्त मरह देश प्रेटिंड वह विनिद्रेकांची छेशानारमंच विकाब अच्छावक स्टेश विकास । अरे नकन देवामान বাহাদের হাতের অল্ল. যে অল্লের সাহায্যে তাঁহার৷ এডদিন स्मान सन्नाबाद्यक कार्य थना विद्या स्मा जानार छात्र. कांशास्त्र अक्र श्रीका श्रीका वास्त्र शास्त्र शास्त्र श्रीका अत्राचन : महिरान পূর্ববদের সংখ্যালখিউদল তো ভূবিবেই, পশ্চিমবদের श्रीकं वर्णवन पानवार्या एटेवा छितिर । अटे छेणातान-क्षानित मर्या नर्या अस्य एरेन कर्रायन श्रीकिनिवि मर्यामसम । বাঙালী ক্ষমবাধারণের এত্থিম একটা ধারণা ছিল যে তাঁহাদের প্ৰভিনিৰি হিসাৰে নিৰ্বাচিত ইইয়া যে সকল ব্যক্তি বিবিধ ব্যবস্থাপক বা কাৰ্য্য-মিৰ্কাহক সভা সমিতি ও প্ৰতিঠানে স্থান नाच करवन ठांशायत नकर्नरे क्रायान नगणासिक निव-মাত্মসারে মনোনীত ও নির্কাচিত হন। এই তুল শোৰরাইবার जबन्न स्टेनारट, रक्षमा अटे कृष्ण्टे शिलान मर्कामा स्टेल्ड्र । बढ्छ: भक्ष छिम- हावि चन हळाडकावी किनवाब लाक. ज्यात्नारव विनिधा, मर्व्यक्षया निक्ष भिक्ष घरनव अक्षम विनारव कारां क्रम्बन (हना-हामुख (मायद नारकद मायाय कांश्रेन ভালিবার পুৰোগ পাইবে ইহা দ্বির করেন। ভাহার পর ভাছার। নিজ নিজ দলের বার্ব অভ্যায়ী যথাসংখ্যক করেক ুল্কতা অসাধারণ এবং চরিত্র নিজ্ঞত। মি: কেসী উপযুক্ত ব্যক্তির পিঠে কংশ্রেসের সেবেল আঁটিয়া জনসাধারণের প্রতি-মিৰিলপে ভোটের বাজারে ছাড়িয়া দেন। এই প্রভিনিবি ছলের মধ্যে চোরাকারবারী ছান পার পার্ট-কতে মোটা টাকা বেওয়ার দক্ষৰ---যাহা লে বেশের লোককে আরও क्रंकारेका केन्न कविया नव अवनित्मरे-- अवर शाम शांव पूर्व, চালবাৰ, পেণাবার "বেশভঞ", বাহাবের মহিবার আৰু बारनांत वह चर:गडन , वर त्मरे मत्न चामनाच करतम ক্তিপর সুক্ববিরপ্রায় অভ্তক্ত। ছান পার না ভবু সে, ্বে প্রকৃত নিভান কর্মী, নির্বাচিত হয় না সে-ই বাহার সভ্যা-সভ্য জান লোগ পায় নাই অৱভক্তির প্রভাবে এবং বন্ধিভ হয় সে জন বাহার পৌরুষ আছে, কার্য্য নির্কাহের ক্ষতা আছে, পাছে বে শক্তিমান দেশপরিচালকরণে প্রতিঠালাভ করে দেশের লোকের কাছে ! বলা বাহল্য, দেশের লোক विक्राप्टरम्ब ममझ कर्त्वरमञ्ज चाम्टर्मत छेनव चाना रम्बादेवाव व्यम् बाठारे नः कविश्वा ७५ लायन व्यविश्वा, এर मकन विकी अपन करव वीके (मानाव परव । अ.स वारमाव समागावावरक সভৰ্ক করার বিদ আগিরাছে, ভাগাদের অবিদ্যুদ্ধ আদা

প্ৰয়োজন যে কংগ্ৰেদ নামের এমন কোন আলোকিক মাহান্ত্য नारे वाराट चुठी नाका रह, चट्ड खाव चारत। दरानह লোকের আব্দ বুবিবার সময় হইরাছে যে বাহারা ভাঁহাছের প্ৰতিনিধি দাৰিয়া দিল্লীতে ও কলিকাতার বিরাজ করিতেছেন, ভাষাদের অধিকাংশ প্রকৃতপক্ষে কাষার প্রতিমিধি ও ভাষার चार्यंव हिन्ना छांचावा कविवा बारकम ।

ছুনীতি দমনের পথ

ছুৰ্নীতি দৰনের জন্য ডাঃ বোষ অভিনাপ করিতেছেন, निर्विष्ठे णावित्वत मत्या नवकावी कर्यकावीत्वत जन्मकित हिनाव ষাবিল ক্রিবার ক্র্যা সাকুলার দিয়াছেন। কিছু পুলিস বে ভাবে এই সব অভিনাপ ও সাকুলার প্রভৃতি কার্য্যে পরিণত করিবার দৃষ্টান্ত দেখাইতেছে ভাষা গভীর হভাশাব্যঞ্জক।

সরকারী কর্মচারীদের ছুর্নীভি নিবারণের ব্যবস্থা না হইলে চোরাকারবার কিছতেই বন্ধ হইতে পারে মা। সরকারী চাউল অন্যাহভাবে সরাইবার যে কর্মী চেঠা ইভিমব্যে ধরা পভিয়াছে ভাষার সহিত নিবিলিয়ান কর্মচানী পর্যন্ত কেছ কেছ ভড়িত রহিরাছেন বলিয়া প্রকাশ পাইয়াছে। মি: কেনী ধর্ম বাংলার প্ৰৰ্ণৱ ছিলেন তথ্ন তিনি একবার এই চুনীতি বন্ধ করিবার ব্বছ চেষ্টা করিয়াছিলেন। ভাষার আগে রোলাও কমিট ছুনীভি নিবারণের কভকভাল উপায় নির্বেশ করিয়াছিলেন। রোলাভ ক্ষিটির পুণারিশগুলির পরিসর ক্ষ ছিল বলিয়া মি: কেসী গ্রীযুক্ত বিশ্বরবিহারী মুবোপাব্যারকে আহ্বান করিয়া তাহাকে ছুৰ্নীভি নিবারণের উপযুক্ত একট পূর্ণাল পরিকল্পনা দাংবল করিতে অন্বরোধ করেন। এর্জ মুবোপাব্যায় দীর্থকাল ক্ষম করীপ বিভাগের ভিরেটর হিলেন, লাসনকার্ব্যে তাহার লোককেই ভার দিয়াছিলেন এবং ভিনিও অল্ল দিনের মধ্যেই তাঁহার রিপোর্ট প্রস্তুত করিয়া দাবিল করেন। মি: কেলি यथम छोहारक निवृक्त करतम छथम ৯७ बातात (नरवत पिरक। ब्रिट्गार्टे यसम छिनि पासिन करबन छस्न नौत महौत्रका कार्या-ভার এছণ করিয়াছে। বলা বাহল্য, যে লীগ বঙ্গীগভা ঐ विर्णिष्ठं जश्मारत कांच करतम गारे, अमम कि छेश क्षेकांचक क्रवन मारे। विर्णापिक बाबावाना पश्चितारक।

সরকারী কর্মচারীদের মুর্নীতি নিবারণে ডা: বোষের আছৱিকতা যদি সত্য হয় ডাঃ খোবের মডিছ পরণ ঞ্রীক্ষমণ চৌধুরী বলি সভাই এ বিষয়ে আঞ্ছলীল হন তবে তাঁহালের সর্বা-প্ৰথম ও সৰ্বাহ্যধান কৰ্ডব্য ঐ ত্তিপোটট বাছিত্ৰ কৃত্ৰিয়া অভিনিবেশ সহকারে উহা পাঠ করা এবং তদমুসারে অবিলয়ে কার্য্যে ব্ৰতী হওৱা। বিপোট দেবিবার সৌভাগ্য ভাষাদের হর মাই কিছ এইক মুৰোপাণ্যায়কে আমন্ত্ৰা ব্যক্তিগত ভাবে ভাবি, বাংলার শাসন ব্যবস্থা সহছে জানার বচনা পাঠ করিরাছি। আমন্ত্ৰা কোন কৰিব। ৰাগতে পান্তি যে ডাঃ বোৰ এবং জীয়ুক कोरूबी दिरुगाँके गार्क कवित्म गःवत मवाम गारेरवन ।

শ্রীযুক্ত কিরণশক্ষর রায়ের বিবৃতি

শ্রীযুক্ত কিরণশক্ষর রায় এক বিশ্বতিতে বলিয়াছেত বে,
উত্তর ও পূর্বাবদ হইতে বহু লোক চলিয়া আসিতেছে। পূর্বা বলের কোবায়ও কোন বছ ঘটনা না ঘটনেও সীগ ভাশনাল গার্ডদের অভ্যাচার এবং অভাত করেকট কারণে ভাহায়া আর পূর্বা পাকিয়ানে নিজেদের জীবন এবং বনসম্পত্তি নিয়াপদ মনে করিতেছে না।

এবুক্ত কিরণশতর রাষের বিবৃতির মূল বক্তব্য এইরূপ:

"क्ममाबादन अक्षा कार्यन (स. छेख्द अवर भूर्सरावद হিন্দুদের মনে বিশেষ আসের ভাব দেখা দিয়াছে। ভাহারা चानका कतिएक एवं, भक्षार्य यांचा चहैतारक जांचा भूके अवर উন্তর বঙ্গেও ঘটতে পারে। সেই কারণেই অনেকে পশ্চিমবঙ্গে চলিরা আনিতেতে। ইহার বভ তাহাদের দোষ দেওরা যার না। কারণ ভাহারা আশঙা করিভেছে যে, ভাহাদের ধন-সম্পত্তি, জীবন এবং তাহা অপেকাও অবিকতর মুলাবান তাহা-প্রের স্ত্রীপোক্ষের সন্মান পূর্ব্যক্ষ সরকারের অধীনে নিরাপর मश्च। अर्वहामयूर्मत छेनत चात्कमन, खेक्टहेत ताकात छेनत জ্যতীয়ভাবাদী মুসশমানদের উপর অভ্যাচার, মুবভীদের পিভার নিকট কুপ্ৰভাব কবিয়া পত্ৰ প্ৰেয়ৰ এবং লীগ ভাশনাল গাওঁদেৱ धादा स्थवान स्थ्यात वरु विचानस्याना जरवान भाषता निधारस। এই সৰ বিষয়ে অ'ভবোগ করা সত্ত্বে কোন ব্যক্তিকে ঞেপ্তার করা ভ্রয়াছে বলিয়া ভূমি নাই। শাভি এবং পুথলা একার কণ্ঠাৱা হয় এবিষয়ে উদাপীন, মা হয় বিশুখলা সমলে অভ্যন্ত ছুর্বল। তাহার উপর এক দল মুসলমানের মধ্যে একটা মার-बूर्या कार वर्षमान । विश्वत, शिक्षयक अवर खडाड अरमण क्टेंटिज चात्रज भूजनमानदां अ अक्टानांन किंदिजाहा। अहे अवस्त ° व्याणादवत क्षारे पूर्व धवः উछत वटकत विष्त्रा निकाम निजा-পঞ্জা সম্বন্ধে অভ্যন্ত সন্দিহান হইখা পঢ়িয়াছে। বছ রক্ষের ঘটনা কোখাও ঘটে নাই, সে কৰা সভ্য; কিছ লোকেরা কি ষ্টনাৰে ভাষার ভঃ ভর পাইভেছে না; ভাষারা ভর পাইতেহে कि ঘটতে পারে গেই কৰা ভাবিয়া। ভাহারা আশহা করিতেছে যে, পূর্বে এবং উত্তর বলে পূকার সময় যদি কোন প্ৰপোদ হয় তবে গ্ৰছে কি ভাষা আয়তে আনিতে স্বৰ্থ स्ट्रेटव मा ।

শপ্র্বিক পরিজ্ঞনণ করিব। এবং সেধানকার অবহা
পর্যালোচনা করিব। আনার মনে ক্রবাছে বে, অবিকাংশ
ক্লগনানই হিন্দুদের সহিত লাভিতে মিলিরা মিলিরা থাকিতে
চার। কিছ ৩৩। প্রস্কৃতির লোকেরা—তাহাদের সংখ্যা কম
ক্রনেও—অবিকাংশ লোককে আতক্তপ্ত করিব। ভূলিতেছে
এবং পবর্বেন্টকে সম্পূর্ণ অসহার অবহার মধ্যে আনিব।
ক্লোতেছে। ওভাদের কাজকে সহক করিব। ভূলিতেছে ব্যবের
কাগকভলির মিধ্যা সংবাদ প্রচার। আনার এ বিষয়ে কোন
লক্ষেই নাই বে, গবর্ষেন্ট যদি ওভা, মিধ্যা সংবাদপ্রচারক

এবং সমাজের অভাত অহিতকারীদের বিরুদ্ধে কঠোর ব্যবস্থা অবলখন করেন তবে এই অবস্থা সহজেই আরত্তে আনা সভব।

भर्क जबर छेरुद्र बर्क्ड स्थान स्थान मध्याक्त भन्मार्क মিঃ নাজিমুদিন এবং তাঁহার করেকজন সহকর্মীর সহিত আমি বোলাবুলিভাবে আলাণ-আলোচনা করিয়াহিলাম। অভাত फेक्ष्मचन्न भवकादी कर्यकावीत्मव अवत्य चावात्मव बावना वारे ৰাতৃক না কেন, এ কৰা আমি বিনা দিবার বলিতে পারি বে বিশৃথদা দ্বন এবং সাম্প্রদায়িক এক্য প্রতিঠার কল মিঃ নাকি-মুদ্দিন এবং তাঁহার সহক্ষীরা সভাই আঞ্রহালিভ। তাঁহাদের আন্তরিকতা সম্পর্কে কোন সন্দেহ থাকা উচিত নর। তবে चन्न्विया अहे हा. भूक्त्रस्य भवता के अवस्थ विक्वारि हानू रुप्र मारे। ভारामित निरम्हामत अভिक्षी कविर् कि**र्म** अमस्यव প্রয়েশন। যি: নালিয়্দিনের সহিত আমার আলোচনার অভভম প্ৰধান বিষয় ছিল, লীপ ভালনাল গাৰ্ডদেৱ কাৰ্য্যকলাপ বিশেষ করিয়া ভাহাদের ভন্নাগীর ব্যাপার। তিনি স্বীকার করেন যে, বে-সরকারী প্রতিষ্ঠান কর্ত্তক এইরূপ ভ্রানী তাঁহারা অস্থ-(बाएम करतन नारे अवर छैश (व-चारेनी। अरेज्ञ (व-चारेनी কাৰ্য্যকলাপ বন্ধ করার ক্ষ ভিনি নির্দেশ দিবেন বলিয়া প্রতিঞ্জতি দেন। তিনি আরও বলেন যে শাভি রক্ষার পুলিসকে সাহায্য করার ৰঙ তাঁহার গবর্ষেণ্ট সকল সম্প্রদায়ের লোককে লইয়া ছোম গার্ডের ভার একট বক্ষিবাহিনী গঠন করার কথা ভাবিরাছেন। লীর ভাশনাল গার্ডদের কাব্য-কলাপের পরেই যে বিষয়ট সবচেয়ে বেশী অসুবিধা ৰ্ট্টাইতেছে সেট হইল বিনিষ্পত্ৰ এবং যপ্তপাতি সৱান সম্পৰ্কে গৰ্বৰে টের কোন সুস্পষ্ট নীভির অভাব। এ বিষয়ে গৰ্বৰে উ তাছাদের নীভি সম্পর্কে কোন কথা বলেন মাই। তবে মিঃ মাজিমুদিন বলেন যে, এই বিষয়ট সম্পর্কে তিনি ডাঃ প্রকৃষ্ণ খোষের সহিত আকোচনা করিবেন এবং প্রত্থেতির নীতি পরিভারভাবে জানাইয়া দিবেন।

সরকারী কর্মচারীরা কোন্ রাস্ট্রে যাইবেন সে সম্পর্কে তাঁছাদের মত পুনর্বিবেচনা করার জভ জার একট প্রযোগ দিবার যে জন্মরোর জামি করিরাছিলাম পূর্ববিশ্ব সরকার ভাষাতে সন্মতি দিতে পারেন নাই। জামার মত পূব মনে হর এ রিষরে প্রক্রের জন্মবিশ্ব হলৈ এই যে, ছিল্ অকিনারা চলিরা যাওরার কলে যে সব মুসলিম কর্মচারার চাক্রীতে উরতি হইরাছে, ছিল্ কর্মচারীরা কিরিরা পেলে তাছাদের জাবার নামিরা যাইতে হইবে। পূর্ববিশ্ব পরকে ইছাকে কার্যকরী বা ভাল প্রভাব ধলিরা মনে করেন না। তবে প্রধান মন্ত্রী জামাকে এ কথা বলেন বে বর্তমানে তাঁছারা কোন সম্প্রদার হইতেই অফিনার লইতেছেন না। এই পদপ্তলি এক বিভাগ হইতে জাহ বিভাগে বললীর ঘারা পূর্ব করা বাইতেছে। তাঁছারা শীন্তই পাবলিক সার্ভিগ কমিশনের ঘারা সাম্প্রদারিক ছার অধ্বায়ী অফিনার নিরোপের ব্যবস্থা করিবেন বলিরা জানান।

क्राध्यम-श्रेषाको উत्सामम अवर वर्णमाणसम् स्वीम मन्मार्क

প্রধানমন্ত্রী বলেন যে, ইহাতে বাধা দেওয়া কাহারও উচিত নহে। বিভিন্ন ছান পরিভাষণের সময় এ বিষয়ে তিনি আঁহার মভাষত পরিকারভাবে জানাইয়া দিবেন।

বাদ্যনীতি এবং গৃহ দখল সম্পর্কে তিনি বলেন বে, এই ছুইট বিষয়ে প্রতি শহর, জেলা এবং মহত্যার বে-সরকারী ক্ষিট গুলির পরামর্শ অহ্যায়ী পূর্ববদ গবরে উ কাজ করিতে প্রস্তুত্ব

क्षयानमञ्जी अवर छाहात महकर्मीत्वत मत्या महत्यानिकात মনোভাব বহিষাতে, কিন্তু করেকট জেলা হইতে আমি ববর পাইয়াছি যে, সেৰামকার উচ্চপদত্ব করকারী কর্মচারীরা कर्द्धम अवर हिन्दुरम्ब मह्यानिकात अखाव छेट्यका कविदा-ছেন। এই সৰ কৰ্মচাৱীৰ কৰা বলিয়া আমি সকল অকিগারকেই দোষ দিভেছি না। উহারও ব্যভিজ্ঞন আছে সভ্য: তবে সাধারণভাবে অকিসারদের যথ্যে একটা উপেকা বা অসহাথের ভাবই দক্ষিত হয়। আমরা স্বীকার করি যে, পূর্ববদে একট শক্তিশালী শাসন-ব্যবস্থা প্রতিঠার জন্ম উত্তর ও পূর্বে বছের হিন্দুদের গবর্ছেণ্টকে সাহায্য করা কর্ত্তব্য। আমরা সহযোগিতা করার জঞ্জ সব সময়ই আঞহায়িত। ভবে সেই সহযোগিভার মূলে সংখ্যালগুলের রক্ষার কথা ৰাকিবে না-ৰাকিবে ভাহাদের অধিকার স্বীকৃতির অগীকার। अवन भवात चारत (य भवाता (भिष्ठ क्रेल चारेन अवर मुचला। যদি ভাষা প্রতিষ্ঠিভ হয় এবং সমস্ত রক্ষের বিশুখলা কঠোর-ভাবে দম্ম করা হয়, তবে অভাভ সমন্ত বিষয় পরে করা সম্ভব হইবে।

পূর্ববদের সংখ্যালঘুদের সম্পর্কে ছই-একটা কথা ৰলিতে চাই। তাহাদের অবণ রাখা উচিত যে, কংগ্রেস পূর্ববদে ক্ষতার অধিকারী ময়। সেইজ্জ সেখামে কংগ্রেসের পক্ষেতার অধিকারী ময়। সেইজ্জ সেখামে কংগ্রেসের পক্ষেতাহাদের রক্ষার নিশ্চয়তা দেওয়া সন্তব নর। এইরপ অবস্থার পূর্ববদ বাহার। ত্যাগ করিরা আসিতে চান তাহারা আসিবেন। ইহাতে আমাদের বলার কিছু যার আলে না। তবে সকলেই চলিরা আসিতে পারেন না। তাহাদের প্রতি কংগ্রেস তাহার কর্তব্য করিবে। তবে বাহারা পাকিয়ামে বা্কিবেন তাহাদের প্রধানতঃ নিজেদের শক্তির উপরই নির্ভর করিতে হইবে। এ কথা আমাদের অবন রাখা উচিত যে, প্শিচ্ম বদে ১ কোট ৩০ লক্ষ্ হিন্দুর জারগা নাই। আর যদি জারগাও থাকে তাহা হইলেও এইরপ স্থানাভরক্ষণে করেক বংসর সময় লাগিবে। আমি সেইজ্মা একট মধ্য-প্রেক্ষ কথা বলিতেছি।

গবলে তেঁৱ সহযোগিতার একট জেলা, মহকুমা, এমন কি
থানার মধ্যে পোকবিনিময়ের ব্যবহার জন্য আমাদের চেঙা
করা উচিত। এই কাজট কঠিন হইলেও মুইট রাষ্ট্রের মধ্যে
লোক-বিনিময়ের কাজ অপেকা অনেক সহজ।

পূর্ববঙ্গের সমস্থা সমাধানের উপায়

পূৰ্ববদেৱ সংখ্যালঘুদিনের আশহা উদ্বেশের কথা ছিল্ল ভাবে বিবেচনা করিলা ঐ সমভার সমাধানের কোন যথাবধ চেঙা এত দিন হইবাছে বলিরা আমহা অবগত নহি। হিন্দুনহাস্তা যে তাবে সে প্রশ্নের সমাবানের পথ দেবিরাছেন তাহা আছের ও অবিবেচকের পথ। কিরপবাবুর বিবৃতিতে স্পষ্ট বৃকা যার বে তিনি নিজের দায়িছ ফালনের চেটাই করিরাছেন অবিক, তবে কিছু সুর্জিও দিয়াছেন। সভ্য কথা বলিতে কি, বৃক্তপ্রদেশের বুললমানদিপের জন্য চৌবুরী খালিকুজমান বা পশ্চিমবদের বুললমানদিপের জন্য হোবার্থী খালিকুজমান বা পশ্চিমবদের বুললমানদিপের জন্য হুরাবর্ধী বাহা করিবান্ছেন ও করিতেছেন পূর্ববদের হিন্দুদিপের জন্য কোনও হিন্দুনতাকে ভাহার এক-শভাংশ চেটা করিতে বা দায়িছনপ্রহণ করিতে প্রস্তাত দেবিতেছি না।

প্লায়নের পথ দেখান অতি সহজ কেননা পরে যদি কিছু ঘটে তবে নেতা মহাশয় আফালন করিয়া বলিতে পারিবেন, "আমি ভ আগেই বলেছিলাম।" নেভৃত্বানীয় সকলকেই আমরা একথা ভাবিতে ও বলিতে দেবিতেছি। কিছ 'যঃ পলাহতি স জীবভি" ইছা কি সম্পূৰ্ণ সভ্য ? যাহাৱা পলাইহা আসিবে ভাহাদের পবের ও পাথেরের ব্যবস্থা করিবে কে ? তাহাদের আশ্রয় ও ভবিয়তের কবা ভাবিতেছে কে 🤊 শ্রসময়ের "নেডা" হু:সময়ে সব্বাত্যে ভীতচকিত এবং কিংকঙৰাবিষ্চ হইয়া হাল ছাভিবেন, ইছা ত বাংলা দেশের নিয়থই দীভাইয়াছে। তাঁহাদের স্পষ্ট ভাবে একবা বলিবারও সাহস মাই যে বাহারা ঐ আড্ডিড লোকদের বলিবেন, "ম'ডে: নিজের জোরের উপর দাড়াও। চলিয়া আসিলে পবের বিপদ --- याचा मरण परम भगावेरण चादस कतिरावे ४५ मिरक राज्या मिर्य-काष्ट्रीहेश यमिहे-वा अभिरक शीबाहरण शावा यास. एरव এবানে পৰের ভিবারীর মত বৃরিতে হইবে। পিতৃ-পিতামহের অবিজ্ঞ ধনসম্পত্তিত চির্দিনের মত যাইবেই, নৃতন ভাবে জীবন আহত করার কোন উপায়ও পাওয়া যাইবে না। অভএব দলবদ্ধ হইয়া নিজের অধিকার, নিজের স্বর্থনিত্ব রক্ষার কম্ম কিরিয়া টাড়ানে। ভিন্ন অন্য কোনও উপায় নাই।"

পূর্ববদ্ধে ভয়ের আশস্তা এখনও দারার মত রহিরাছে। তাহা যে ঘনীভূত হইবে মা, একথা কেছই বলিতে পারে না। কিছ বিপদ হইতে পরিজাণের একমাএ পথ কি পলারন ? আমরা জানি ঢাকা, বরিশাল, বিক্রমপুর, কুমিলা ইত্যাদি অঞ্চলে এখনও এরপ লোক আছেন বাহারা চিরাচরিত পৌরুষের পথই একমাএ পথ বলিরা জানেম। ইহাদের সহায়তা করাও ভার লাথৰ করাই আমাদের প্রথম কর্ম্বর। নোরাধালিতে সভীশবাবুর উদ্ধানুইান্তে সক্ষেত্র উদ্ধান্ত উদ্ধান ইট্যা

পূর্ববেদর বর্তমান সমসার মুইট দিক আছে। পূকা ও ইদের
সময়ে বে গোলবোগের আশকা মুইভেছে ভবিষরে অবিলয়ে
সভর্কতা অবলয়ন এবং খারীভাবে হিন্দুরা বাহাতে সেবানে বাল
ক্রিতে পারে ভাহার ব্যবহা করা। প্রব্যটির সমাবানের কর্ত হিন্দু-বুললমান নেভারা একলে প্রচারকার্ব্যে বাহির মুইবার
সম্প্র করিয়াছেন এবং ঢাকার কংপ্রেল, মুস্লিম লীগ, হিন্দুমহালভা প্রভৃতির এক মিলিত বৈঠকে কেলা ম্যাকিট্রেটের
সভাশভিত্বে বিম্নলিভিত কর্ম্বন্তী সর্ব্যসম্ভিক্তমে গৃহীভ
সুইবাক্তে—

- (১) পূজা এবং বকর ইন চিনাচরিত প্রধায় স্বাভাবিক ভাবে উদ্বাশিত হইবে, কেছ ভাছাতে বাবা দিবে না।
- (২) মদৰিদ হইতে ১০০ গৰ দ্ববৰ্তী বাড়ীতে পূৰার বাড়ভাঙে আপতি হইবে না।
- (৩) মদজিদ হইতে ১০০ গজের মধ্যে যে সব বাছী অবস্থিত দেওলিতে নমাজের সমর বাজনা বঙ্গ থাকিবে।
- (৪) নমান্দের সময় নিষ্ঠি থাকিবে এবং সকলকে ভাষা জামাইয়া থেওয়া হইবে। বে সব লাইসেল দেওয়া হইবে ভাহাভেও নমাজের সময়ের উল্লেখ থাকিবে।
- (৫) বিজয়ার শোভাষাত্রা বাহির করা হইবে কিছ পুর্বের ভাষ কোন মগজিনের ১০০ গজের মধ্যে বাজনা হইবে না। শোভাষাত্রীদের সঙ্গে কোন অস্ত অববা আঘাতের উদ্ভেশ্যে ব্যবহৃত হইতে পারে এরপ কোন বস্ত থাকিবে না। পটকা হাউই ব' বোম কাটানো হইবে না।
- (৬) ৰক্ত ইদের সময় গো-কোরবানী হইবে কিছ ক্লিরাচরিত প্রধায় অপরের মনে আখাত না দিয়া বাহিবের লোকের চক্ষের অস্তরালে কোরবানী করা হইবে।
- (৭) কেবলমাত্র আনন্দ-উংসব প্রকৃতিতে হিন্দুরা মুসল-মানদের নিমন্ত্রণ করিতে পারিবেন এবং মুসলমানেরা উহা গ্রহণ করিবেন। বকর ইন্দ উপলক্ষে উভয় সম্প্রদায়ের লোকেরা পরস্পর শুভেচ্ছা জ্ঞাপন করিবেন।
- (৮) পূজার কর দিন সমগ্র জেলার ১৪৪ বারা জারী করিরা প্রকাশে জন্ত্রণ লইরা চলাকেরা নিষিদ্ধ করা হইবে। এই আদেশ কঠোরভাবে প্রয়োগ করা হইবে এবং যাহার। উহা ভদ করিবে ভাহাদিগকে ভংকণাং মামলার সোপর্ক করা হইবে।

গ্রীবৃক্ত কিরণশঙ্কর রায় বলিভেছেন যে কলিকাতা যদি বিশ্বরা এবং ইদে শাস্ত থাকে তবে পূর্ববঙ্গেও কোন অশান্তি स्टेटव ना । आधारमञ्जूष विद्यान क्लिकाला मास बाकिटव। **শেণ্টেগরের প্রথম** সপ্তাতে ইহা নি:সংশয়ে প্রমাণিত হইরাছে যে কলিকাভার লোক দেখাইয়াছেন যে তাঁহারা অশান্তি চান नां, (काम इहेर्डि लाक शकामा वाबाहेबात हाही कदिल ছাত্র ও তরণেরা বুকের রক্ত ঢালিয়া ভাছা বামাইয়াছেন, **ভবিশ্বতেও প্রয়োভন হইলে তাহারা পিছাইয়া থাকিবেন** मा। ভবে এবার প্রথম হইতেই ভাহাদের সতর্ক থাকা ভাল। वजीय প্রাদেশিক হিন্দুমহাসভা পূর্ববন্ধ সমূদে যে প্রভাব প্রহণ ক্রিয়াছেন ভাষা বিজ্ঞানোচিত হয় নাই। পূর্ববস হইতে হাঁছারা জন্তপশ্চাৎ বিবেচনা না করিয়া আসিতে আরম্ভ করিয়া-**(इन डांशांस्त्र शिवान क्रिक्स काम काम काम "मिर्हार"** উদ্ধানি রহিয়াছে ইহা জমশ: প্রকাশ হইরা পছিভেছে। মাছবের চুর্ভাগ্যের ও অসহায়ভার স্থোগ দইয়া ভাহাকে শোষণ করা ষেষ্ম ৰোৱ জনার, উহার বারা রাজনৈভিক জভীট নিছিও তেথনি অন্যার। আড়ক প্রচারের ছারা পশ্চিম্বর

ও কলিকাভার বহু লোক আমিলা ভেলিলা গবর্ষে উক্তে विज्ञ कवित्रा वाक्रेन्जिक छैरक्ण निवित्र (ठेडी कविरण्डिक এরণ লোক অনেক বহিয়াকেন হিত্যহাসভা বর্ত্তয়ানে कौशारित अरे कार्यात (कक्षा माश्रुश्य क्षांच भवप देशारित ৰাকিলে আমৱা এই সকল লোককে ৱাৰাঘাট, নৰধীপ প্ৰভৃতি ছানে সেবাকার্য্যে ব্রভী দেখিতে পাইভাষ। হিন্দুমহাসভার নামে এইরপ কার্যকলাপ এবং প্রচারকার্য্য হাহারা করিতে-ছেন তাঁহাদের উপর বাঙালীকে এখন তীক্ষ দৃষ্ট রাখিতে ষ্টবে। ইহারা দেশের মদল করিতে পারেন না কিছ भनिष्ठे कविदाव क्रमण घटवडेरे बार्यम । গण अक वरमदाब দাসায় এবং তৎপূৰ্বে ছণ্ডিকের সময় ইহাদের হাতে সক্ষ শক্ষ টাকা আসিয়াহে, ভাহার সদায় হটয়াছে কিনা সে বিষয়েও লোকের সন্দেহ আছে। বেলিয়াঘাটা পানীশিবিরের ঘটনাতেও ইহাদের স্থনাম বাড়ে নাই। এই সঞ্জ "মেডা" এখনও যদি প্রকৃত দেশদেবার ত্রতী না হন, গুভিক্ষে ও রাষ্ট্রবিপ্লবে ব্যক্তিগত ও দলগত সুবিধা সঞ্য যদি এখনও ইহাদের মূল উদ্বেশ্ব শাকে তবে ইহাদের কার্য্যকলাপের পূর্ণ বিবরণ সংবাদপত্তে প্রকাশ করা আবঞ্চক হয়। উঠিবে।

পূর্ব্ববিদ্ধ বছ 'পকেট' স্পষ্ট করিয়া হিন্দুদের স্বস্থি সহকারে বাঁচিবার স্থান্য করিয়া দিবার জন্ধ শ্রীষ্ট্রন্থ কিরণশন্ধর রায় যে প্রভাব করিয়াছেন তাহা সম্পূর্ণ সমীচীম। অগ্রপন্চাং বিবেচনা না করিয়া বাস্ত্রভাগে কোন লাজ নাই, আর্থিক সর্ব্বনাশ নিশ্চিত। তবে বাঁহারা আসিয়া পঢ়িতেছেন তাহারা যাহাতে বেল-প্রেশনে বা বাজারে অসহায় ভাবে বাস করিতে বাব্য না হন তংপ্রতি বোষ মন্ত্রিসভার দৃষ্টি রাবা উচিত। আমাদের বিশ্বাম পূর্ববিদ্ধে পূঞা ও ঈদ নিরুপদ্রবে কাষ্ট্রদের প্রার্থ সকলেই কিরিয়া যাইবেন। আপাততঃ কিছুদিমের জন্ম ইইদিগকে একটু নিরাপতাও সাক্ষ্ম্য দানের ব্যবহা করা হইলে মানবভার মন্ত্রালা রক্ষিত হইলে।

পুনিদ কর্তৃক "গ্রাক্মার্কেট দমন"

ভাঃ ঘোষের মন্তিগভা ষেষ্ট প্রথমি প্রথমির মীরব উদাসীত দেবাইয়া আসিয়াছেন এবার ঘোষণার পর ঘোষণা, অভিনালের পর অভিনালের বিপুল সমারোহে ও কোলাহলে তাহা পোষাইয়া লইতে চাহিতেছেন। কিন্ধ ওড ইন্ধা কার্য্যে পরিণত করিবার বাত্তব আঞ্রহের অভাব আগেও যেমম ছিল এবনও তেমনি রহিয়াছে। বস্তুতা ও অভিনালেই যদি রাজ্য-লাসন চলিত তবে প্রবাবর্গী সাহেবের পত্ন কোমকালেও হইত না।

ভা: বোষ ব্লাক্ষাকেট অভিনাজের হারা চোরাকারবারী-দের পাঁচ বংগর সঞ্জম কারাদও হইবে, যাবজীবন হীপান্তর, বিরাট জরিমানা, ব্যবসাহের লাইসেল বারিজ, প্রচেশ হইভে বহিচার প্রভৃতি বছ বছ ভর দেবাইয়াহেন কিছু অভিনাল

প্রয়োগের ভার দিয়াছেন পুলিসের সেই বিভাগের সেই সব नुब्रामा कर्षकाबीरमब छेनव बाहाबा अछिम काबाकाबनाबी-দের হাতে হাত বিলাইরা চলিরাছে। বিভিওয়ালা দেশলাই-ওয়ালা প্ৰভৃতি ধরিয়া ইহারা কেল দেখাইয়াছে এবং অঞ্চাত কিছ অভ্যানযোগ্য কারণে বছ বছ অগাধু ব্যবসায়ীদের बिर्किवार वात्रमात्र हामादेवात क्रायान्यक्रीका प्रिवार । এवात्रध ঠিক ভাষাই হইভেছে। লোকের বাদী বাদী চড়াও হইরা পাঁচ দশ সেৱ বা এক মৰ অভিবিক্ত চাউল বাহিয় করিবার ভত ইছানের উৎসাহ অতি প্রচত, কিছ বড় ব্যবসায়ীদের অধবা অসাধু সরকারী কর্মচারীদের নিক্টবর্ডী ছইতে ইহারা একাম্ব পরায়ব। অভিনাজের কবা প্রকাশ হইবার সময়েই কলি-কাভার একট দৈনিক পদ্ধিকা লিবিয়াছিলেন যে এনফোর্স মেণ্ট ভ্ৰাঞ্চ পুলিশ এই অভিনাল প্ৰয়োগ কৱিবে ভাষার কর্মচারীরা এ বিষয়ে উপযুক্ত অববা নির্ভরযোগ্য কিনা ইছাদের সার্ভিদ বেকর্ড দেবিয়া ভাষা দির করা হটক। সীগ আমলে এই লোক দেবামো বিভাগটর কর্মচারীরা ছুর্নীতির প্রচুর অবসর পাইয়াছে, বড় বড় চোরাকারবারীদের সহিত ইহাদের খনিষ্ঠ পরিচয় ও বন্ধত্বের সুযোগও ঘটয়াছে. ইছারা এবন সেই সব ব্যবসায়ীর বাভী ভল্লাস করিবে ইছা चाना कराहे चमाहि। प्रार्ভित त्वकर्छ शहाहे कहिटन बहे বিভাগের প্রায় দেভ শত কর্ম্মচারীর মব্যে ভর্মবানেকও উপযুক্ত এবং নির্ভরযোগ্য লোক বাছির ছইবে কিনা সে বিষয়ে আমাদেরও বোরতর সঞ্চে আছে। এবনই ইছারা পুরমো পদভিতে চ্ণাপুট ধরিবার চেষ্টায় নাচিয়া উঠিয়াছে। সরকারী দোকানে প্রায়ই চাউল বা আটা পাওয়া যায় না বলিয়া যাহারা बार्श करेश करतक (भव का अक बार यन कांडेन वा बाकी प প্রাণের দায়ে ও শিশু পুত্র-কন্তার মুখ চাছিয়া সংগ্রহ করিয়া রাবিরাছে, এন্কোর্স মেণ্ট ত্রাঞের পুলিসদল পরমোৎসাহে ঘটা কবিয়া ভলাসী কবিয়া ইহাদের এই সঞ্চিত চাউল উদার কবিয়া বাহাছরি দেবাইতেছে। সারাদিন ২৫ জারগার ভল্লাসী স্ক্রিরা তিন মণ চাউল উদার করিখা যাদারা বাদাগুরী দেবায়, चन्छ २० मिर्निक (हर्देशक नदेश अक चन श्रक्तक हाजारायभाषी ৰমীকে আদাসভের কাঠগড়ার হাড় করাইতে পারে না ভাষাদের প্রশংসা করার আমরা কিছু ভো দেবিই না, উপরত্ত মল্লিমণ্ডলের উল্লাস ও কোরাবার মত উদ্ধানের কারণও কিছুই পাই না। পুরাবর্দীর ছকুমকে আইমের মর্য্যাদা দিয়া খাবীন ভারতে হাপোষা পুর্থকে ভারও বিত্রত করিয়া, নষ্টের সুল ৰাহাৱা ভাহাদিগকে নিশিন্ধ থাকিতে দেৱ যে মন্ত্ৰীসভা, ভাহা কৰমও মদলকের কান্ধ করিতে পারিবে মা। বান্ধসংগ্রছের দারিভ লইয়া ইহারা খাদ্যদানে অসমর্থ, দরকারী দোকানে প্রায়ই হয় চাউল भा एवं चाही बाटक मां, अरे चवश्रंत बाधतात चक्र बाहाता শামাল চাউল সংগ্ৰহ কবিয়াছে ভাহাদের মুখের প্রাস কাছিয়া লওয়ার হীতি ডাঃ বোষ অবিলয়ে বছ করুন। ভূমির কাটকাৰাকী, ৰাজীয় বেলামী, মাহের পলাকাটা দর, ভাল

তেল ৰি কাপড় প্ৰতৃতিৰ বছ বছ চোৱাকাৰবাৰী বৰিবাৰ চেটা তিন্তি কক্ষন, বাধ্যক্ষব্যে তেকাল বছ কৰিবাৰ ক্ষম অঞ্জনৰ ছউন। লোকে বাওয়াৰ ক্ষম মাৰাপিছু দশ সেৱ চাল বাবিতে পাৰিবে এইটুকু বলিয়া দিলেই পুলিনেৰ এই অভ্যাচায় বছ ছইয়া যায়।

বেলওয়ে মাল বুকিং আপিসে তুর্নীতি দৈনিক 'ভারভ'-এর ১৫ই আধিন ভারিবের দংব্যার নিয়-লিখিত পঞ্জানি প্রকানিত হইয়াছে, উহার উপর মন্তব্য নিপ্রবাদন কিছ প্রতিকার আবশ্বক,—

আমাদের দেশে কি ঘুষ নেওবার চিরাচরিত প্রবা কোন-प्रिमक यह एटेटर भा १ जामि दिमक्टम वृक्ति-এর कथारे ৰলিভেম্বি। যে-কোন ভদ্ৰলোক যে-কোন বুকিং আপিদে হান, (एबिएम अफ्डी मालब উপब कान वावू ठाव चाना, कान वाद बाहे बामा कान वादू ১,, २, महेल्डरम्। बाद यपि পেই মাল গৰৰেণ্ট কৰ্ত্তক পাঠান নিষি**ছ হয় ভবে ভা**ছাৱা উহার ভিন গুণ হইতে চতু ৰণ শইষা পাকেন। ২াবসাধীর; अञ्चानवर्गाम छेषा पिश्वा थान । किन्न छैँ शहा कि अननाशाहरणह উপর হইতে চক্রবৃদ্ধি হারে সেই টাকা আদার করেন না গ वुकिर चानिरमञ्जन नायुरे 'बंबान किन' करे विवश चानाश ক্ষেন। ব্রচাটা কিসের ? কোম্পানী কি ইহাদের মাহিনা দেন ৰাণ সমস্ত দিনে যে টাকাটা আদায় হয়, দাবোহাৰ इटेट वड़ मार्ट्य **पर्वाक्ष मकरमत मर्था कांग इस--(महें बड़** যবনই কোন উপরওয়ালা ভদারকে যান ভবনই ইছারা সাবধান इट्रेंटि शादन। अठी जामात निरमत कार्य (नर्या। अट्रे ছনীতি কম বেৰী সমন্ত বুকিং আপিদেই চলিতেছে।

কিছুদিন পূর্বে নিজের ব্যক্তিগত প্রযোজনে 'আহমানি আট' হইতে (বি এন আহ গুড়স্) রাচীতে এক বঙা (১ হলর) নাট বন্দু পাঠাই। করওয়াডিং পাস করিতে ২,, ছাপ মারিতে 1০, গুজন করিতে 1০, মার্কা দিতে 1০, ইনচার্জ্ঞ দিতে 1০, 'এ' কর্ম সাগাইতে 1০ (ছাবি 1০), রেছিট্ট করিতে 1০, রসিদ আনিতে ১০, এক্নে আঠ০—মনে রাবিতে হইবে একটা মালের উপর—স্বাচ ভাড়া ২, টাকার মব্যে।

হয়ত বলিবেন মুশায় দেন কেন ? কিছু এমনই কল পাতিয়া রাধা হইয়াছে বে, না দিলেই বা উপায় কি ? - যিনি এই সব দক্ষিণা না দিবেন, পঢ়িয়া থাকিবে তার মাল অনিষ্ঠিই ডালের জ্ঞা প্রভাগে এই কলটাকে বিগ্ঞাইয়া দেওখা ঘরকার।

প্রভাৱে ঘণন ১০টার সময় কাবে আসেন তথন পুত পকেট। কিন্তু বেলা ৪টার সময় পকেট এবং তেল সার্চ্চ করুম এক এক কন্দের নিকট ক্মপক্ষে ৫০, হইতে ২০০, পর্যান্ত পাইবেন। এরপ প্রভাৱ হুইডেছে।

ধনগাৰারণকে এরণ অহেতুক কভির হাত হইতে রকা করার কর সরকারের নিকট আবেদন করিতেহি এবং খন-সাবারণকে অবহিত হইতে অনুরোধ করিতেহি। বাঃ গবেজ নাধ বিজ, ৪৭-এ, বীতন হীট।

পরলোকে মুণালকান্তি ঘোষ

ত্ৰীযুক্ত মুণালকান্তি বোৰ গত ২৪শে আবিন সাভাশী বংগৱ বয়পে পরলোকগমন করিরাছেন। অমৃত বাজার পত্রিকার অভতম প্ৰতিঠাতা, শিশিবকুমার বোষের মধ্যমারত হেমভুকুমার ৰোৰ মহাশবের তিনি ক্যেঠপুত্র। পত্তিকার প্রায় প্রথমাবছা ছইতে ইহার সঙ্গে তাঁহার খনিষ্ট যোগ খাপিত হয়। যে সব ক্ষীর অক্লান্ত পরিপ্রয়ে পত্রিকা আৰু এত প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছে জাহাদের মধ্যে মুণালকান্তি ছিলেন অভতম। তিমি ৰিজে পরম বৈষ্ণব ছিলেন। বৈষ্ণবশালে তাঁহার অগাব পাণ্ডিতা हिन। यभी प्राविका-भविषय श्रेष्ठ श्रेकानिक 'त्रीवर्ण-ভর্ঞিণী'র সম্পাদনায় এবং 'লোবিন্দদাসের করচা' নামক चारमाज्या-नृष्ठक बहनाश हेराव विरमय প्रविष्ठश भाषता यात्र। তাঁহার 'পংলোকের কথা' আর একবানি সুপাঠ্য এছ। তিনি পৰেষক ও সাহিত্য-সেবাদের প্রকৃত বন্ধু ছিলেন। বদীর লাভিত্য-পরিষদের সঙ্গেও তাঁহার গভীর যোগ ভিল। তাঁহার স্থ্যায়িক বাবহার সকলকে মুগ্ধ করিত। তাহার মৃত্যুতে স্থামরা এককন আত্মীয় বিয়োগের বেদনা অনুভব করিতেছি।

পশ্চিমবঙ্গের সহিত যুক্ত হইবার জন্ম মানভূমবাসাদের দাবি

সত ৫ই অস্টোবর পুর-পিয়ার হরিপদ সাহিত্য-মন্দির হলে
মানভূম জোবাসীদের এক বিরাষ্ট সভা হয়। সভার দাবি
করা হয় যে সমগ্র মানভূম জোলা, সিংভূম জোর বলভূম
মহন্দা, হমকা সদর মহন্দার দক্ষিণ-পূর্বে অঞ্চল এবং পূশিরা
কোর কিষেণগঞ্জ মহন্দা পশ্চিমবল প্রচেশের সংলগ্ন। এই
সক্ষা অঞ্চা সম্পূর্বিশে বাংলাভাষাভাষী। বাংলার সহিভ
ইহাদের সর্বপ্রকার যোগভূম রহিষাহে। কাজেই গণপরিষদ
বেন এই সকল অঞ্চা পশ্চিমবলের সহিভ মুক্ত করিবার ব্যবহা
ভবেন।

পুরুলিয়ার ভরণ সাহিত্য সত্ম ও মাল্লিক সাহিত্য-বীধির উদ্যোগে এই সভা হয়। সভাপতিত্ব করেন প্রবীণ ও বিশিষ্ট শিক্ষারতী শ্রীচারচন্ত্র দাস। বক্সভাপ্রসলে ভিনি বলেন,

ভাষাদের এই ভারসঙ্গত দাবি তুলবার সলে সলেই পাটনার করেকট সংবাদপত্র বেভাবে আমাদের বিপ্রছে বিষ উদ্গীরণ করতে আরস্ত করেছেন ভাতে চুপ করে বাকা বা বল কবা বলার কওবোর এক ইকি ভূমিও তারা কাকেও দেবেন না। বিহার সাংবাদিক মহলের এই যুদ্ধ বোষণা অলোভন। বিহারবাসী অনুসাবারশের ওপর আমাদের পূর্ণ আয়া আছে। আমাদের দাবির বৌজিক্তা ও ভারাত্রপত্য বীকার করে বাতে আমাদের এই ভারসঙ্গত দাবি সাকল্যমিতিত হয় সেবিষয়ে তারা উদারতার সহিত যম্মীল হবেন। আমাদের সংক্ষারাও বোগ দেবেন। বিহার ও বিহারীদের সহিত আমান

কোন রকম ভিজ্ঞভাবের স্ক্রী করতে চাই মা। আমরা মাজ্র কিরে বেভে চাই আপন মাধের স্বেধের ক্রোড়ে, এতে রাগ করার কোন স্থান মেই।

ভাষা, সংস্কৃতি, শ্রীতিনীতি ইত্যাদিল ভিভিতে বর্তমান প্রদেশগুলির সীমামা নির্দারণ করতে হবে-এ কথা ভারতের ৰাতীয়, কংগ্ৰেস বছবার আতুঠানিকভাবে বলে এসেছেন। এ ছাড়া গণ-পরিষদ একট সীনানা নির্বারণ কমিটও গঠন करवर्षम अवर लाव आवश्यक कांक लूक हरवरहा। अस्व সমক্ষে বস্তুজির আশা-আকাজার দাবি যুক্তি ও প্রমাণসহ छेगशानिज कराज स्टर । काटकरे चामारक्य हुन करत शाका **চলে मः। आयात्रित प्रांवित्य आयत्रा अवेल । आयत्रा आवश्र** প্রাদেশিক মৈত্রী ও সংখ্যর কথা ভেবে, নিরপেক্ষ বিচার ও বিষেধ-বিহীন চিত্তে পরস্পরের সঙ্গে যুক্তিবাদসূলক আলোচনায় প্রবৃত্ত হতে রাজী আছি। এ বিষয়ে বিহারের প্রধানমূলী ত্রীযুক্ত ত্রীকৃষ্ণ সিংখের আপোষ-মনোভাববৃদক আবেদনের আমি সমৰ্থন কবি। বিহারী ভাইদেরও উচিত আমাদের প্রতি चयवा मायादवान ७ विरश्य श्रवात मा कदा। अहे श्रमहरू अकड़ हः रवंद व्याभारदद छे हार्च करण वाद्य एकि । भहरदद ছু-এক ক্ষম বহিরাপত বণিক মানভূমবাসীর মধ্যে শ্রেণী-বিছেয়ের বিষ হভাবার **চেটা করছেন। বাংলার সঙ্গে মানভূ**মের নাড়ীর আছেড বোৰের কথা যদি অগীকার করতে হয় তা ছলে चशीकांत कत्राण हरत निरक्षामत्रहे माज्ञाया वाश्मारक। মানভূমবাসী যদি বাংলাকে অধীকার করে তা ছলে ভার নিজের প্রকৃতি ও সন্তাকেই স্বধীকার করা হয়। মানভূম প্ৰিচম বাংলার আর পশ্চিম বাংলা মানভূমের। এ ছুয়ের

সভার মানভূম জেলার বিভিন্ন ছান হইতে বছ প্রতিনিধিছানীর ব্যক্তি আসিয়া যোগদান করেন। এই আন্দোলন
আরও তীর ও ব্যাপক করিয়া ভোলা একাছ আবন্ধক। প্রবল
আন্দোলন ভিন্ন বাঙালীদের এই ভাষসদত দাবি গণ-পরিষদের
কর্ণগোচর করা কঠিন হইবে। এ কথা মনে রাবিতে হইবে
যে, বাঙালীদের তরক হইতে কথা বলিবার মতু যোগ্য ব্যক্তি
বর্জমানে গণ-পরিষদে বাংলার প্রতিনিধি দলের মধ্যে নাই বলিলেই চলে। তুতরাং বাহিরের আন্দোলনের ছারাই বাঙালীর
ক্রা গণ-পরিষদকে শুনাইতে হইবে।

আসামে বাঙালী

আসামে বাভাগীদের উপর উংশীদন পূর্ণোদ্যমে চলিতেছে।
সৌহাট হইতে বাভাগী সমিতির সম্পাদক কানাইতেছেন বে বু
৪ঠা অটোবর সক্যা সাজে সাতটার সময় এক অসমিরা কনতা
শহরের প্রবান প্রবান রাজপ্রের বাভাগী দোকানসমূহ হইতে
বাংলার লেবা সাইনবোর্ড কোর করিয়া টানিয়া নামাইরাছে।
ভাহাদের আশুভি এই বে, সাইনবোর্ড বাংলার না লিবিরা

অসমিয়ার লিখিতে হইবে। লাত দিন আগে ইহারা সাইনবোর্ড বণলাইবার জভ নোটল দিয়া গিয়াছিল। জেলার তেপ্ট ক্ষিণনারকে উহা জানানও হইয়াছিল কিছ তিনি এই গুঞামি বছ ক্ষিতে পারেন নাই।

चानारम मोर्चकान यावर 'वनान-(वंग' चार्त्नानन চলিতেছে। আসাম রেলওয়েকে বি-এ-আর হইর্ভে পূথক করিয়া উহার হেড আপিদ গৌহাটতে স্থানাত্তরিত হওয়ায় বহু বাঙালী কৰ্মচায়ী দেখানে গিয়াছেন। ইঁহায়া কেন্দ্ৰীয় সরকারের কর্মচারী। কেন্দ্রীর সরকার ইচ্ছা করিলে গৌছাট হেড আপিলে বাঙালী কৰ্মচাৱী না পাঠাইয়া মান্তাৰী বা অভ প্রদেশের লোক পাঠাইতেও পারিতেন। এই বাঙালী কর্ম-চারীরা অস্মিয়াদের চকুশুল হইয়াছেন এবং তাঁহাদের উপর নানা ভাবে নিৰ্যাভন চলিভেছে। জীঅম্বিকাণিরি বায় চৌবুরীর নেতৃত্বে আসাম ভাতীয় মহাসভা নামক একট প্রতিষ্ঠান এই বঢ়াল বেঢ়া আন্দোলনের নায়ক এবং বেলের চাকুরি অসমিয়া-(बन्न बिट्ड स्टेट्न टेस्ट्रे वैशामन व्यवान पार्ति। वैशामन चार्त्मानम ७५ मधा मिलिए चायद बारक मारे, वाहाशी দোকানে টিল ছ'ভিয়া ক্ষতি করা, বাঙালীদের আক্রমণ করা প্রভৃতির সংবাদও আসিয়াছে। এই সব নিশ্নীর কার্ব্যের প্রভিবাদ ক্টলে আসামের প্রধান মন্ত্রী একটা ভাষা ভাষা वकायव क्यांव पिवाहित्मन अवर विनवाहित्मन (य आपानव লোকের অভিবোগ থাকিলে তিনি আর কি করিতে পারেন। অস্মিয়া সরকারী কর্মচারীদের মধ্যে কেছ কেছ এই আন্দো-ল্নের স্থিত ভড়িত এরণ সংবাদও প্রকাশিত হইয়াছে। এছিক বরদলৈর মন্তব্য ঠিক মত রিপোট হইয়াছে কি না স্থানি मा छद्द बहेहेकू (पदा यहिएछह य बहे भर क्वांबि दह कवि-বার জন তিনি উল্লেখযোগ্য কোন চেঠা করেন নাই।

वाहाजीरमञ्ज विकृष्ट चियाम अवर वारण एवरण चानिए অস্থিয়াদের পঞ্চে বিচিত্রই বটে। আসাথের থিক্স কোন चक्द माहे, वारमा चक्दहे छाशास्त्र चक्द, छकार खबू हरेंहै বর্ণের---র এবং য। অসমিয়া ভাষার মিক্স কোন ব্যাকরণ নাই, चारमा वाक्तिभेटे जाराद्र वाक्तिन। चामाय्यत खिल वारमा-দেশের দানের পুরমো কথা না ভূলিয়া গভ করেক বংসরের क्राइक्षे वहेनाव উল্লেখ कवा याथ । बीयुक्त शांशीनाथ वदमरेन প্রধান মন্ত্রীর জাসনে বসিবার সুযোগ লাভ করিরাহিলেন মেতাকী পুঞাষচজের চেষ্টার। বাংলা ও আলার লইয়া গুল গঠনের যে প্রভাব ক্যাবিষেট মিশন করিয়াছিলেন ভাষাতে যাংলার লাভ হিল, কভি হিল আগামের। আলাম এপে বসিতে আপত্তি করে এবং আসামের প্রতি অস্তার হইয়াছে ইহা ভাবিহা বাংলাদেশ নিজের খার্থের ক্ষতি করিয়াও আগায়কে সমর্থন করে। বাঙালী ও গ্রীষ্ট্রাসীরা আগায়কে ब दियात ममर्थन मा कविटल, वांश्लाव मश्वामणबनपुरक् जानाराज जानां है विनूत जादन सर्वाज्ञ मा रहेल रहे

ভারতের রাজ্মীতি আজ সম্পূর্ণ ভিন্ন আজার বারণ করিত।
উহাতে আসামের অভিত্ব লোপের ব্যবহাও হয়ত হইতে
পারিত। মহমনসিংহে পূর্ব্ধ পাকিহান ভিন্না হাপন করিরা
আসামের ববন পাকিহান অভিযান আরম্ভ হয় তবন বাংলা
ও প্রহিট ভাহাকে সবচেরে বেশী সাহায্য করিয়াহিল।
আসামের যে স্ব্যাভ লাইন প্রধার বিপ্লছে পণ্ডিত নেহর
পর্যাভ মন্তব্য করিয়াহিলেন, বাংলা ও প্রহিট ভাহাও সমর্থন
করিয়াহে এবং সমর্থন করিয়া আসামকে মুগলমান অভিযান
হইতে বাঁচাইয়াছে। গত সাভ বংসরের মধ্যে বাংলার নিকট
হইতে এত উপকার লাভ করিয়াও বাংলা ও প্রহিটের নিকট
অসমিয়ারা যে কৃতঞ্জভার অভাব প্রদর্শন করিলেন, তাঁহাদের
সহিত যে ভিক্তভার সম্পর্ক পৃষ্টি করিলেন ভাহার পরিণাম
তাঁহাদের পক্ষেই অভত হইবে।

এছিটবাসী সরকারী কর্মচানীদের সহিত বরদলৈ প্রন্তে উ ষে ব্যবহার করিয়াখেন ভাহ: অভিশন্ত নিজনীয়। তরা জুনের পর আগামের এইটবাসী সরকারী কর্মচারীরাই সরকারী সারকুলার অনুসারে ভারতীর ইউনিয়নে কাঞ্চ করিবার ইঞ্ছা জ্ঞাপন করেন। এছটে প্রভাটের ফল বাহির হওয়ার সঙ্গে সজে বরদলৈ গবদ্বে উ ইহাদের সকলকে আসামের বিভিন্ন স্থান হইতে গ্রীহট জেলায় বদলী করেন। জঞার প্রধেশ এ বিষয়ে যাতা করিয়াতে তদমুদারে ইতাদিদকে আসামে রাখিয়া শ্ৰীহটে কৰ্ম্মৰত যে সৰ্ব কৰ্ম্মচাৱী ভাৰতীয় ইউনিয়নে যাওয়ার ইচ্ছা প্ৰকাশ কৰিয়াছিলেন তাঁহাদিগকেও আসামে বলগী করা উচিত ছিল। বরদলৈ গবন্মেণ্ট ইছার ঠিক বিপরীত ভাত করিলেন এবং এই বলিয়া সাক কবাব দিলেন যে জীহটের বাছতি লোক লইয়া তাঁহারা স্থানীয় লোকম্বের সরকারী চাকুরিতে প্রবেশের পথ সম্কৃতিত করিতে পারিবেন না। এ पिटक शांकिश्वान महकाद है शांकिशक छनिया याहेटल विज्ञाल- (हन। अप्टे चवशास श्रीकृषेवाभी कर्यां कारी त्व कृष्णां क्र क्रांचा হইয়াছে ৷ ব্ৰদ্ধৈ গ্ৰন্থে ণ্টের এই কাৰ্য্য অভিলয় অসাধুভাৱ নামান্তর এবং এ বিষয়ে ভারত-সরকারের হভক্ষেপ করা উচিত। ভারত-সরকার এপগ্যন্ত যাহা করিয়াহেন ভাষাতে विष्य किष्ट्रे कन एवं मारे।

অসমিয়াগণের সমগ্র আসামে প্রভুত্ব প্রতিষ্ঠার চেন্টা

অসমিরারা সমগ্র অসামে এক্ছজ আবিপতা ছাপনের ভেটা করিতেছেন। তাঁহাদের কথার ও কাকে এই ভাবটিই সূচীয়া উঠিতেছে যে আসাম অসমিরাদের, অপর সকলে অবাজিত আগন্তক মাত্র। এইটি ঐতিহাসিক সত্য মর। আসামের বাসিঙা, গারো, মাগা, মিরি, মিশমি, আবর, কুকি, গুসাই, কাছাছী প্রভৃতি অসমিয়াদের ভেরে অনেক প্রাচীন অবিবাসী, অসমিয়ারা মাত্র করেক শতালী পূর্বের আসামে প্রবেশ করিয়াকে। ইংবেজ এই প্রদেশের নাব বিরাছে আসাম এবং তাহারই ভ্রু

অগ্ৰিৱাৱা সম্ভ্ৰ আসাম ভাহাবেৱই দেশ এই মনোভাব পোষণ ७ धनाव कविवाब प्रयोग नाक कविवाद । जीवक व्यवदेन कामादेशास्त्र त्य कामात्म कमिश स्टेट्य ब्राह्मका अवर प्रसाह হইবে শিক্ষার বাহন। তবে পার্ম্বত্য অঞ্চলভলিতে পার্মত্য-জাভিবের ভাষা বিভীর ভাষাত্রণে গণ্য হইবে। গোরালগাড়া, কাছাত ও প্রীহটের বাংলাভাষাভাষীদের দাবি কোন কেতেই चीकांत कवा एवं नार्वे यिष्ठ वेदावा अविवासित (हार আগাৰের পুরাতন অবিবাসী। ভাষার দিক দিয়া দেখিতে পেলে ৰেখা যায় আসামে শতকরা প্রায় ২০ কন অসমিয়া ভাষী, ২৫ জন বাসিয়া, গাবো, নাগা, মণিপুরী, কাছাড়ী প্রভৃতি ভাষা-ভাষী এবং বাংলাভাষাভাষী শতকরা ৪৩ জন। औरই বাহির হইয়া যাওয়ার পর বাংলাভাষাভাষীর সংখ্যা কমিয়া গিয়াছে বটে, ভবে যে অসমিয়া ভাষীদের চেমে ধুব নীচে নামিয়া বিরাছে ভাষা বলা কটিন। ছাডি হিসাবে দেবিলেও দেবা যাইবে ত্রীহট বিদায়ের আগে আলামের এক-ততীরাংশ হিল বিদ্ধ 🚜ক-ড়ভীয়াংশ পাৰ্বভা ভাভি এবং এক ভূতীয়াংশ মুসল-মান। হিন্দর মধ্যে অসমিয়া ও বাঙালী উভরই আছে। ঞ্রীহট বাহির হইরা যাওয়ার পর আসাবের লোকসংখ্যা এবন হইবে लांत १) नकः छत्र(य) ७) नक वानिता, शास्त्रा, मात्रा श्रक्ष পাৰ্বতা জাতি, ২২ লক অস্থিয়া এবং প্ৰায় ১৮ লক বাঙালী। এদিক দিয়াও অস্থিয়াহা আসাহের উপর একছত কর্তৃত্ব দাৰি ক্রিভে পারে না, সে অধিকার বরং পার্বভাষাভিদের কভকটা আছে। আসাম ব্যবস্থাপক সভার অসমিয়াদের বতওলি সম্প্র আহে-অপর সকলের মিলিত প্রতিমিধি সংখ্যা ভার প্রার দ্বিওব। পার্ব্বত্য কাভিদিগকে বাঙালীদের বিরুদ্ধে মানা মিখ্যাপ্রচারের ধারা উভেন্সিত করিয়া অসমিরায়। • বিবেচনা করিয়ারিশোর্ট দেওয়ার ক্রচ গণপথিধর একট সাব-छारायत अकारमञ्ज देश्यक ठा-क्यापत माराया निरम्पत আৰিপত্য বজার রাবিয়া চলিয়াছেন। এখন পার্বাত্য ভাতিরা **এই ভ**াওতা বৃদ্ধিতে ভারত করিরাছেন, ইংরেজ চা-করদের ক্ষতাও অনেক কৃমিরা গিরাছে। এই অবস্থাতেও **এর্জ** वत्रवटेन (कान ध्वभाव वाढानीटमव विकटक ध्वनिवादमव অভিবাৰে পরোক্তে সহায়তা করিতেহেন তাহা উপলব্ধি করা व्यक्तः इत्रहः व्यवदेन मधीनकाद देवदाहाद, अजीर्नका ध ছুৰ্মীতির বিরুদ্ধে পরিষদের অগ্নিয়া ভিন্ন অপর সকল দল মিলিত হইলে ত্রীযুক্ত বরণলৈ কিরুপে তাঁহার মন্ত্রীসভা বজার बाबिद्यम छारा वृद्धा प्रकृत ।

খাসিরা নাগা প্রভৃতি কাতিরা বিদ্যার ও বুরিতে जनविदारम्य क्टर विरम्य निवर्त मारे। योनिया ७ मानारम्य উপযুক্ত নেতা এবং কর্মীরও অভাব নাই। বাঙালীদের সহিত ইঁহাবের কোন বিরোধও নাই। আসাবের উপর অসমিরারা व अविकास वावि करवन, छांशायत अविकास देखिशान, कन-নংৰ্যা এবং প্ৰণতিশীলতা, কোন দিক টুৰিয়াই তার চেবে কন 44 1

পার্নত্য জাতিদের স্বার্থ

১৯০৫ সালের ভারত-শাসন আইনে পার্বাভ্যভাতি অধ্যুবিভ কতকওলি অঞ্লকে বারভ্যাননের বহিত্তি করিয়া দেওয়া रदेशियन। अरे जब अमाकात अधिवानीयात निक्र निक्र थारिनक चारेन मणात खिलिनिन निकाहरमत चनिकात रहरता হর নাই। এখানভার শাসনভার নামে ভিল গবর্ণভের ভাভে কিছ কাৰ্যাভ: জেলা ম্যাজিটেটরা ছিলেন সর্ব্বেদর্বা। পার্বভা-ৰাভি অধ্যুষিত এলাকাওলিভেই সাধারণতঃ বনিত্ব পদাৰ্থভলি পাওরা বার এবং বনিওলি ইংরেজ বণিকদের ছাতে। স্থানীয় লোকদের ঘারা খনির কাল করানো হর এবং লাভ যার ইংরেজের পকেটে। ম্যালানিজের ধনিতে কার করিয়া পুরুষ-শ্ৰমিক বেৰানে পার চারি আনা এবং শ্রী-শ্রমিক দশ পরসা ইংৱেছ কোম্পানীয় অংশীদায় সেবানে পায় চৌছ টাকা এবং ৰ্ষমির ইংরেক পরিচালক পায় ভিন শভ টাকা। মহাক্ষমের হাত হইতে অশিক্ষিত আদিন অবিবাসীদের বাচাইবার ভয় ইংৱেক এত ব্যাকুল যে ভারত-লাসন আইনে একটা ভালাঘা वावद्या कविवा वेशायव बच्चाविक्याव चाव व्याप माहे गार्ट्यरम्ब सार्च बाचिया विदार्ट । अक्टे महान वहालहे দেবা বাইবে যে দেবী মহাজনের হাত হইতে হকা করিবার मार्ग देशायित्रक देश्यक लायरकत कराम शाल-भा वीविज्ञा निक्लि कहा स्टेहार । अहे जब चक्न क्षरमान बाह जब ছানের ভার আইন সভার অধীনে থাকিলে প্রামিক আন্দোলন এবানেও হড়াইরা পড়িভ এবং ভাষার ক্ষতি হইত ইংরেজ वनिकटप्रत ।

শাসম-সংস্থার-বহিত্তি এই সৰ অঞ্চ সম্প্রকিত সম্প্র তমিট গঠন করিরা দিরাছিলেন। এই সাব-ক্ষিট ভারাদের রিপোর্টে যে সকল সুপারিশ করিয়াছেন তথ্যে নিমলিবিত-क्रि श्रिधाय:

(১) শাসমভৱে পার্বভা ভাভিদের মদলের ভর পুৰক বিভাগের ব্যবস্থা, (২) পার্বেভ্য অঞ্চলর খোট অনসংখ্যার ভিভিতে মুক্তরাহীয় আইন সভায় ভাষাদের বস্ত কভাগ আসন সংবৃদ্ধ (৩) অভুন্নত ও পাৰ্বত্য আভিদের অবস্থা অভুসভানের হত একট বিশেষ ক্ষিণৰ নিহোগ।

উক্ত বিবরণতে আরও বলা হইরাছে যে, পার্বাত্য অবি-ৰাসীদের সৈত্বাহিনীতে এহণ করিবার ক্ত বিশেষ মনোযোগ रमध्या छेकिछ। मनाधारमम, छेक्डिम अवर विद्याद नार्क्सछा ভাতিদের বল্লের বভ এক বন বতর নত্রী নিব্রু করা উচিত। बाळाच, त्याचारे, विश्वात, मश्राधारम धनः छेडियात भाक्तिण ভাতিখের একট উপদেধা ক্ষিট গঠন করা উচিত।

ষে দৰ অঞ্চ শাসন-বহিত্তি মহে সেধানকার পার্বভ্য জাতিদের সংব্যালয় বলিয়া গণ্য করা উচিত। তাহাদের বভ জ্মসংখ্যার অসুপাতে এবং বরত্ব লোকের ভোটাবিকার সমেত दीव निक्षाहम वानशात करतक**डे शुवक जा**नम ताबा **डे**डिछ ।

প্রাবেশিক গবর্ষে তেঁর উন্নয়ন পরিক্রমাণ্ডলি কার্যকরী করার কান্ধে কেন্দ্রীর সরকারের লাহাব্যের প্রবোজন হইবে। লাব-ক্ষিটির অভাভ সুপারিশগুলি নিয়ে বেওরা হইল :—
(১) পার্বাভ্য আভি সম্পর্কিত উপবেটা পরিবলের পরামর্শ ব্যতীত পার্বাভ্য অঞ্চলে ক্ষমি ও সামাজিক রীতিনীতি সম্পর্কে কান্ম আইন প্রধান করা উচিত হইবে না; (২) পার্বাভ্য অঞ্চলে বেধানে বেধানে সভব লেধানে পঞ্চারেং গঠন করা উচিত; (৩) মহাজনদের ব্যবসা নিমন্ত্রপের ব্যবস্থা করা উচিত;
(৪) পার্বাভ্যকাতীর লোকদের নিকট হইতে ক্ষমি সইবা অভ লোকদের দেওবা বছ করা উচিত।

আছিবাসী নেতা জরণাল সিং এই সম্পর্কে বলিয়াছেন বে, ভারত-সরকারকে পার্বভ্য চট্টগ্রাম কিরিয়া পাওরার বাবি ভানাইতে হইবে। র্যাডক্লিফ বাটোরারার পরিবর্তন করিতে হইবে।

রিপোর্টে প্রকাশিত সারাংশে ধনিতে ইংরেছের শোষণ বংগর কোন কথা নাই; মূল রিপোর্টে আছে কি না তাহা জানিবার সুযোগ আমাদের হয় নাই। না থাকিলে উহা সংবোধিত হওরা উচিত এবং বাংলা হইতে থাহারা গণ-পরিষদে গিরাছেন তাঁহারা অনারালে উহা করিতে পারেন।

পাৰ্বভ্য চটু থাৰের প্ৰভি ব্যাভক্লিক বোরেলালে যে অভার করা হইরাছে ভাষার ভূলনা নাই। ভৌগোলিক হিসাবে পাৰ্বভা চটগ্ৰাম বাংলার সীমামার অভভূতি, কিছ সেধানকার काम क्षेष्ठिमिवि वकोइ वावश-शविवास विराम मा. वक-विकाश সহতে আইন সভার যত প্রকাশের অধিকার তাঁহার। পান मारे। ভারতবর্ষের অভাত শাগন-সংভার-বহিতৃতি অঞ্জ-श्रीवद मार्क नार्क्ज हारेबायल बक नर्वादि नाक बन्द रन विक विका जनान शास्त्र जान भार्काण इवेतामक अवभविषय कर्कुक मिन्नुक मानम-সংस्रोत विकृष् सक्त नाव-स्थितित चरीम । अरे चनशास के (क्लाक्टिक चार्यचर्च प्रेटिक क्राक्टेश পাকিহানে ভুড়িরা দেওরা বোরতর অভার কার্য্য হইরাছে। পূৰ্বত্য চটুঞাৰ ব্যাভক্লিক বোৰেদাদের এই অভার সিভাত यानिया नरेएण पशीकांत कतियार अवर **छ**रात शाकियान ভূক্তিতে বাৰাদানের সংগ্রামের হুত প্রস্তুত হুইতেছে। হুতায়ের বিক্লবে প্রতিরোধের চেটা সকলের সহাত্তত্তি ও সাহায্যসাভ ক্রিবেই, পার্কভা চট্টরামের নেভারাও উহাতে বঞ্চিত হইবেন मा देश मिनिष्ठ।

কয়লার অভাব

বিহায় ও বাংলার ক্ষলার তীত্র আভাব দেখা দিয়াছে।
ব্যৱিষা হইতে প্রেরিভ ইউনাইটেড প্রেনের এক সংবাদে জামা
সিয়াছে বে মালগাড়ীর অভাব এই সহটের কারণ। মালগাড়ীর অভাবে মাল ছানাছরে প্রেরণের ব্যাঘাত স্কট হওয়ার
বিহার ও বাংলার প্রার সমত বনিতে ক্ষলা ক্ষিরা বাইতেছে।
ইহার কলে রাইগঞ্জের চুইট ক্ষলার প্রির মালিক প্রির

কাজ বৰ বাৰিবাহেন বলিবা জানা বিবাহে এবং জবিসংহ করল্য চালান দেওয়ার বজোবভ না হইলে জারও অনেক বনি বৰ হইবার জালতা রহিরাহে।

বাৰীমতা লাভের পরও আনাদের গতাসুগতিক মনোবৃত্তি व पूर्व एवं मारे अरे (अवैश मरवाद छान्। क्रमणः क्षमण गारे-एक्ट। यानगांकी विनित्न करन करना बनि क्टेंक उथमा क्टेंटर मट्टर बेमिएल शक्ति। शहिटर अवर बेमिल काम रह वाकित्व अरे बरमावृष्टि अवम् बहिबार देशरे चाक्या । मान-গাড়ী ছাড়া আর কি কোন উপায় নাই ? কলিকাভা শহরে হাজার হাজার লরী রহিরাছে। 🛮 ছই বা ভিন দিনের 🕶 ভার व्यक्ति नदी दिक्रेक्निम क्वियाध कि काव नवाना क्या याद ना ? यिनिनीशृद्ध मञ्जीद्यत क्रिक्षेत्र वह ठाउँन मरबूरील स्टेशाद्य কিছ ৰোলা জায়গায় বান ও চাউল পঢ়িয়া পচিতেছে। কৈছিলং লেই সমাভন, মালগাড়ীর অভাব। আজকের গিনে একট চাউলের হানা অধব: এক টুকরা করণা নই হওয়া অমাৰ্কনীয় অপৱাৰ---খাছাদেৱ দোখে ইছা ঘটবে ভাছাৱা यक फेक्स मध्ये को एकम जानामिशक अभवानी विनवा भना कविष्ठ एटे(र) जनमासद विकृष्ट दाष्ट्रेर भरवाय রাশিরার বিরুদ্ধে ভার্মানীর যুদ্ধ বোষণার চেয়ে কোন অংশে क्य अक्रवर्शन सरहा अब अ देवरमव अश्वारमव माबिए स बाद्धे पराच अर्व कविवाद अवर नित्क अरे हुरे वस अववशास्त्र ভার লইয়া স্বাভাবিক ও সাধারণ উপায়ে ঐতলি প্রাণ্ডির পর দকলের নিকট বন্ধ করিয়াছে ভাষার পক্ষে উহা গরবরাছ कविटल मा नावा ७५ हजाब वार्यलाव नविहत्र मरम्, जनवायक यकि। हाछेन कबना श्रम्भा चानियात पाविष नवस्व छित. बानशानीत चलारवत हानावे नित्रा भिरमहत्त्व चरवानाला णांकियात (bil) ना कतिया कर्डुंगक यनि नकनरक नदी अरः নৌকা প্রভৃতি কেওয়ার ভ্রুচ অমুরোধ আমাইতেম ভবে লোকে সৰ্থ হইত।

ভারতে বস্ত্রের উৎপাদন হ্রাস

া বোৰাই বছলিছের কেন্দ্রহান। বর্তমানে এবানে মিলের বালিকদের লহিত প্রমিকদের প্রবল বিরোধ চলিতেছে এবং ধর্মবটের কলে লক্ষ্য লক্ষ্য কম উংগর হইতেছে। বলি এবনও এই বিরোধ বছ করা না হর, তাহা হইলে জাচরেই ভারতবর্ষ অতি কঠোর বল্পসহটের সন্মুখীন হইবে। ইহার কারণ অহুসভান করিলে মনে হর বে, কিছুদিন পূর্বের বোষাই ইন্ডাইরাল কোর্ট প্রমিকদের বেতন সন্সর্কের মেলিহান্ত প্রহণ করিয়াছেন তাহার প্রতিবাদক্ষেই প্রমিকদের বন্ধুবীর হার নির্বিষ্ঠ করিয়া দিয়াছেন। এই কমিট প্রমিকদের মন্ধুবীর হার নির্বিষ্ঠ করিয়া দিয়াছেন। ক্রিটির বির্বেশে প্রমিকদের জাপ্রসাতে মন্ধুবী নির্বাহিত হইরাছে। বেনন, বত গঞ্জ ভাগত বোনা হইবে, প্রমিকেরা সেই অন্থণাতে নির্বিষ্ঠ হারে তত পরসা পাইবে। বোলাই বিল্যালিক সমিতির পরায়র্গজনে

বিলমালিকেরা ক্ষিটর লিখাত কার্যাকরী ক্ষিবার জ্বা শ্রমিকদের মাসিক বেতদের পরিবর্তে মাসিক উংপন্ন ক্রের লাধারণ হার অঞ্চারে প্রতিটি কার্য্যের মজুরী নির্দিষ্ট ক্ষিত্র। দিরাছেন, এবং ইহার কলে বোঘাইরে বহু মিলে প্রামিকেরা ব ব বিভাগে কার্য্য ক্যাইয়া দিয়াছে। ভাহার। ইহা ঘারা নালিকদের দেধাইতে চাহিতেছে বে ভাহাদের কার্য্যের অঞ্পাতে মাহিনা ক্য দেওরা হইতেছে।

अरे क्रांच अविद्वां कांक क्य क्यांच (वांचारे कर्डेन মিলে একমাত্র কুলাই মাসেই ২৭ লক ৰণ্ডা কাকের কল পাওয়া যায় নাই। হিসাব কবিয়া কেবা গিয়াছে যে আগঠ মালে গড়ে ১৫০ট তাঁতের কাছ বছ ছিল। প্রমিকদের কার্য্যে শিবিশভার জন্য যেখানে মাধাপিছ ৮৬ পাটভ সূভা ভৈয়ারি হইত, সেৰামে জুলাই মালে মাত্ৰ ৪৮'১ পাটও সুভা প্ৰস্তুত হইবাছে। শ্ৰহিকদের কার্ব্যের শিবিলভার বুলে আছে শ্ৰমিকৰেভাবের উদ্ধান। ইন্ডাট্টিয়াল কোট শ্ৰমিক ও মালিকদের মধ্যে বিরোধ মীয়াংসা করিবার জন্য যে চেঠা করিয়াহিল, তাহ। নই করিয়া দিবার জনাই প্রমিকনেতাদের এই প্রচেষ্টা। বোখাই গবর্গে এই সকল সমস্ভার সন্মধীন হইয়া শ্রমিকদের কার্য্যে শিধিপভার তীর নিন্দা করিয়া সম্প্রতি এক প্রেদনোট বাহির করিয়াছেন। ইনভাষ্টিয়াল কমিটর সুপারিশে এমিকদের যদি আপতিজ্বক কিছু থাকে তবে পৰ্যে উক্তৰ যে অহায়ী ক্ষিট (Ad Hoe Committee.) স্থাপিত হইয়াছে তাহাতে প্ৰতিমিৰি পাঠাইবার ক্ষম উপদেশ দেওবা হইয়াছে। কিন্তু ভাষাদের কোন প্রতিনিধি না ৰাওয়ার মনে হয় যে প্রতিষ্ঠানের সভ্যকার অভাব অসুবিধা किइ नारे।

মুদ্ধপুৰ্বালে সাৰায়ণ সময়ে শ্ৰমিকদের কাৰ্যালিবিলভার क्या यारिया क्यारेश पितिर छाराश क्यमः निरम्पात कृत ৰ্বিভে পারিভ। কিন্তু বর্তমানে সভটপূর্ণ পরিবিভেভে ইহা कता यात्र मा। किष्टपिम शृद्धि शिक्षण चल्द्रवनान स्मर्दक বলিয়াছেন যে বর্তমান অন্টন অবস্থার উৎপাদন বৃদ্ধি করা অভ্যাবভক। এখন উংপাদন হ্রাস করা কেবলমাত্র মুর্বভা महरू अक्रजब ज्ञाना । छेर्नामन द्वान कविनांव रेष्ट्रा সংক্রায়ক ব্যাবির ন্যায় ছেলের সর্বাত্র ছড়াইয়া পড়িভেছে। ইছা দেশের পক্ষে অভ্যন্ত অনিপ্রকর। ইনভাট্টরাল ক্ষিটর बाब्राक वामहान क्विवाब ध्या (य प्रनश्यक, वृह श्रीहि চলিভেছে ভাষাতে আপদা হয়, প্রমিক্ষের বনে একবার যদি হারণা ভবিষা যার যে নিরপেক বিচারকদের অভিনত যে কোন क्न देखा कतित निकन कतिए भारत. छाए। एटेल करियाफ অবিক্ষের কোন সমভারই শান্তিপূর্ণ ভাবে সমাধান করিবার चाना अक्वांत्व वाकित्व मा । नवस्य किंव अवन किंचा कवा बार्याक्य व यांचाता निर्कारकत चार्च करनत लारकत जनिहे ও বিদেশীর পুৰিবা করিয়া এইরূপ উচ্চানি দিতেছে ভাষাদের विक्रा कि चारवद्य नावश रखना केरिक।

বিলাতে বস্ত্রের উৎপাদন রুদ্ধি

ভারতীর শিরের ভাগ্যাকাশে বর্ষন নিত্যবৃত্তন সরস্ভার আবির্তাব বন ক্ষাটকার স্ক্রী করিরা জনসাবারণকে বিপর্বাক্ত করিরা তৃলিতেছে, তর্ষন বিদেশের দিকে তাকাইরা আনরা বেনিতে পাই যে ল্যাফাশারারের কটন নিলপ্তলি বীরে বীরে আবৃনিক যন্ত্রপাতি প্রতৃতি স্থাপন করিয়া অতি সহক্ষে জনসাবারণের চাহিলা নিটাইতেছে। এমন কি বুরের সরহেও বিভিন্ন কার্যামাঞ্চলি প্রাভন যন্ত্রপাতী বদলাইরা বৃত্তন যন্ত্র ভাগনের বিরাট বায়ভার বহুন করিয়াছে। এই সকল পরিবর্জন ও পরিবর্জনের শক্তাতে ছিল ল্যাফাশারার কটন কর্পোরেশনের উৎসাহ ও পরিকল্পনা। পত ভিসেশ্বর মাসে পথত্যেক যে পরিকল্পনা প্রহণ করের, ভাহার বহুপ্রেই কর্পোরেশন ১,৫০০,০০০ পাউও ব্যয়ে একট সাভ বংসরের পরিকল্পনা প্রহণ করিয়াছে। কর্পোরেশনের ম্যামেশিং ভিরেটার ও ভাইপ-চেরারম্যাম বিধ্যাভ শিল্পতি সার প্রয়াহ প্রাট।

ক্ষলার সাহায্যে যে সকল মেসিন চলিত, তাহাদের পরিবর্জে এবন ক্রুত্রতিশীল বৈচ্যুতিক যথের আমদানী হইতেছে। ক্সু মিল, মাজেট্রক মিল, হক মিল, কেওঁ বিল প্রভৃতি স্থানে প্রচুর অর্থবারে নৃতন মেসিন হাপন করা হইয়াছে। ম্যানর মিলে নৃতন যপ্ত প্রবর্তনের কলে যে সকল শ্রমিক কর্মচ্যুত হইয়াছিল, তাহাদের আছাত কাজে নিরোগ করা হইয়াছে।

কর্পোরেশনের ভিরেক্টরবর্গ শ্রমিকদের স্থ-স্বিধার জ্ঞ আর্থ ব্যর করিতে কোনরূপ বিধাবোধ করেন নাই। মিলের অভ্যন্তরে বৈছাতিক আলো, ক্যান্টিন, শিশুধের জ্ঞ বিভাগর এপ্রতির বন্দোবন্ড রহিরাছে।

শিল্প কেন্দ্রপালিতে উৎপত্ন ক্রব্যের পরিবাধ বাড়াইবার ক্র चरनव नवदा कांक कविवाद (नांक (part-time worker) मिरवांश कवा स्टेर्फरम ७ जी मनुबरम्ब बाधवादेवांव वावमा করা হইরাছে। ম্যানচেপ্তার সম্পর্কে প্রবিক মধী এক বিবৃতিতে বলিয়াহেন, যে সকল বিবাহিতা খ্রীলোক মিলে কাল করিতে উৎসুক, ভীহাথের স্থবিধা মত কাম করিবার বন্দোবভ করিবা (एश्वत एटेर्ट) करण, वहनश्याक अधिक वसनी कारक स्थान मिट्डिक विकासित मरबा सात ३६०० अवर देशाता मधारक ১৯ হইতে ২০ ঘন্টা কাল করিভেছে। গ্রালিভেগ্ন ভাঁভ চলিতেছে। একট মিলে সোমবার হইতে শুক্রবার পর্যায় সভ্যা ৬টা ছইতে বাত্রি ১০টা পর্যন্ত ৪০০ শত ব্যক্তী কাক্ ক্রিভেছে এবং আরও ২০০ ছন ক্রেক করিবে বলিয়া আগ্রহ क्षकाभ कृतिएएए। चाद अरुडे बिर्म वर्षमान ১२० चन কাক করিতেছে এবং তালিকার এবনও ৫০০ জনের নাম বহিবাছে। দীৰ্থ নেৱাদী পরিকল্পনাকে কাৰ্য্যকরী করিবার भूटक बड़े भक्त खबकीविभीएक विका काक कवादेवाद यदबड़े चन्नुविश चार्क वर्ती, किन्नु चन्नविन भारतक शतिकन्नवात शरक

ইহাদের হারা যথেষ্ট উপকার হয়। তুলা নিরমণের হারা ব্যান্তর মূল্য নির্বাহিত হইরাছে। গত ক্রেক বংসর বরিরা বণিক সম্প্রধার রথানী মালের উপর বে লাভ করিতেছিল, তাহার কিয়লংশ বর্তমানে শ্রমিকরা পাইবে বলিরা ছির করা হইরাছে।

গবর্ষে তুলা ললার্কে বে পছা অবলয়ন করিবেন বলিরা ছির করিবাছেন তাহার লহিত বাণিজ্য লপ্তরের (Board of Trade) তুলা কর করিবার, নীতির নামঞ্জ থাকিবে না। এবন পর্যান্ত প্রাান নহছে কোন স্থনির্কিষ্ট বিবৃতি প্রকাশিত হয় নাই; কিছ তুলা লছকে পরামর্শনাতা কমিট এই সমস্ত: সম্পর্কে বছ চিছা করিবাছেন। গত মুছের লমর মিশর হইতে প্রচুর তুলা আমন্তানী হইরাছিল। বর্তনানে ব্যর-সংলাচের কল সকল সামাজেই তুলা অবিক পরিমাণে উৎপর করিবার মিমিত চেষ্টা চলিতেছে। স্থান প্রাানটেশন লিতিকেট নারা পরিচালিত এক পরিকলনা পূর্ক-আফ্রিকাতে কর্ত্যকরী হইতেছে। তাহা ১৯৫০ সালে গবরেক্ট ছহতে গ্রহণ করিবেন বলিতা ছির হইরাছে। উগাভার যে বৃত্ন গবেষণাগার প্রতিষ্ঠিত হইবে তাহাতে স্থানের করেকজন অভিজ্ঞ লোককে পাঠান যাইতে পারে।

বিদেশের বিলঞ্জনির উর্তির দিকে লক্ষ্য রাখিরা আমাদের দেশের মিল গুলির সংস্থার করিতে ছইবে ও উংপাদন বৃদ্ধি করিরা জনসাধারণের চাছিদা মিটাইতে ছইবে। তৃলার ব্যবসার অথবা কাপড় উংপাদন সহছেই আমাদের দেশ অত্যবিক পশ্চাতে রছিয়াছে। বৃদ্ধের পর গত ছই বংসরে বে লমর ও প্রবার্গ পাওরা বিরাহিল তাহার উপস্কু সন্ম্যবহার বিদি হইত, গবর্দ্ধে প্রতি লক্ষ্য রাখিরা কাল করিতেন তবে বিলাতের ভার আহলাও আনক উন্নতি করিতে পারিতার। হেশের এই তীয়ণ বল্লাভাব বাক্তি না। আহেরিকা, বিটেম ও জাশান ছইতে বে পরিরাণ বন্ধ আমদানী পুরু হইরাছে তাহাতে ভারতীর বল্পাল্পর অবস্থা কি ইণ্ডাইবে তাহাও চিতার বিষয় হইরা উঠিয়াছে।

অষ্ট্রেলিয়ার ও ভারতের কৃষি

দক্ষিণ-অষ্ট্রেলিয়ার রাজধানী এডেলেড পৃথিবীর সর্ব্বাণেকা রনোয়ন ও অ্সন্ধিত শহরওলির মধ্যে অভতন। শহ্রটর চতুপার্শ্বে বিহারত্বি; ইহার পরেই দেখা বার অবিভূত আবুনিক শহরতলী। শীতৃকালে এখানে বাবে মাঝে বৃষ্টি হর, আবার ভারপরেই দেখা দের চমংকার চক চকে রৌর। কৃষিকার্য্যের পক্ষে ইহার জলবায়ু অভ্যন্ত অস্ত্র্ল। এডেলেড শহরের চতুপ্পার্শ্বের জ্লোগুলিতে বংসরে বিশ হুইতে ব্রিশ ইঞি বৃষ্টিপাত হর। ইহার মধ্যে যে হুইতে লেপ্টেরর রাস পর্যান্ত অবিভ্ন বারিপাত হয়। দক্ষিণ-অষ্টেলিরাতে ক্রম্কর্য ও প্রপাদক্পণ ভাষাদের বোদ্যভা ও নৈপুণ্যের কল বর্ণেই পুনাম অর্জন করিবাছে।

অপ্রেলিরার উপত্যকা ও চাল্ হানওলি ইত্রক, বালার, জলপাই প্রকৃতি কলের বাগানে পূর্ণ। ইহার জেলাওলির ক্রিক্সের বিশেষ সমূহ। তৃণভূমিতে গরু ও বেব পালন করা হয়। বিভূত জমিতে গম-চাব হর এবং প্রচুর গর পাওরা বার। এহানে ৫০০ একর জমির এক কার্মে ৯০০ ভেনী, ৫০ট গাভী ও প্রায় ৭০ট শুকরশাবক পালন করা হয়। এই জোতজ্মির মাত্র ১৪ একর ভূমি চাব করা হয়; ইহার মধ্যে আবার বার্লিও ওট ওচ করা হয়। বাকি অংশটতে প্রচারণ ভূমি আহে। প্রত্যেক বংগর ভূমিতে জমিক পরিষাধে সার দেওরা হয়। কলে নানা জাতীর তৃণ করার প্রচুর।

ওবেট এঞিকালচারাল বিলার্চ ইন্টিটেট ই ইন্টিনিটির বিক-আইলিয়ার বৃহত্তম ও প্রেট গ্রেমণাগার। এবানে যে বৈজ্ঞানিক গবেষণা চলিতেতে, ভাষার কর্মট দক্ষিণ-আইলিয়াতে কৃষিকার্গ্যে এত উন্নতি সভ্তবণর ক্ষরাছে। এই প্রতিষ্ঠান ক্ষতে কৃষক্রণ ভাষাদের জাতব্য বিধর্মলি কানিতে পারে ও উৎসাহ পাইয়া বাকে।

अर्फरनफ महरवत कांत्र माहेन पूरत अरवके देनक्रिकेके অবস্থিত। মি: পিটার ওবেট এডেলেড বিশ্ববিভালয়কে যে আৰ্থ দাম কৰিয়াছিলেন ভাষার ছার! ১৯২৪ সালে এই বিভালম্বট গঠিত হয়। এই প্রতিষ্ঠানের পাঁচ শত একর ক্ষি আছে এবং ভাল পবেষণাগার, কাঁচের ঘর ও আবুনিক ভোত-বাড়ীসকল রহিয়াছে। ইহার প্রধান উদ্বেশ্ব হইতেছে, যে সকল লোক পশুপালন ও কৃষিকাৰ্য্য করে ভাষাদের জানবৃদ্ধি করা। ওরেট বিভাগরে প্রধানতঃ বৃক্ষাদি ও জমি সহতে প্ৰেষ্ণা করা হয় বটে, কিন্তু ইহা বাতীত এবানে একট ভূষি বিদ্যালয় আছে এবং এবান হইতে ভিনী পরীকাও (B. Ag. Sc.) দিতে পারা যায়। এই বিদ্যালয়ের অব্যাপক্রণ ভূষি-বিভাগের মন্ত্রী ও জনসাধারণকে ভূষি বিষয়ে নামাবিৰ উপদেশ দিয়া থাকেন। এই প্ৰতিঠানের সহিত Agronomy, Agrostology 438 Plant Breeding ভিমট্ট অৰীভব্য বিষয় আছে। ভবিষ্যতে ভারভে যে কৃষি-বিষয়ক গবেষণাগার প্রতিষ্ঠিত ক্ইবে, তাকার সহিত এই ডিনট ৰ্মুৰীভবা বিষয় অৰ্ডাই ৱাৰিতে হইবে।

ওবেট প্রতিষ্ঠানে বে বৈজ্ঞানিক গবেষণা চলিতেকে ভাষার কার্যাবলী নিম্নলিখিত তিনট ভাগে বিভক্ত। যথা—(১) ছামী ও অহামী পশুচারণ ভূমির উন্নতিসাধন, (২) কৃষিক্ষেত্রে ও উল্যানে উংপন্ন শক্তে এবং বমন্তক্ষে বে সব অনিষ্টকর কীটপতক্ষেত্রে লে সকতে গবেষণা এবং (৩) বিভিন্ন সমস্ত বীক্ষ বপনের কলাকল, সার ও শভ্রের বিশেষতঃ গমের বীক্ষ বপনের মানা-বিধ সমতা সকতে পরীক্ষা। দক্ষিণ-অষ্ট্রেলিয়াতে সম্বর্ঞ শত্তেরের মুই-ভূতীয়াংশ ভূমিতে গম উংপন্ন হয়। ডাঃ ইয়াকল

দেবাইরা দিয়াছেন বে. ভিন-চার বংসর গন উংপাদনের পর (करब क्लाइक के बाक्कि दूर काल केश्यत वह अवर हैवाद হারা ক্ষেত্রের উৎপাধিকা শক্তি বৃদ্ধি হয়। অভাভ কৃষিকাত ত্ৰব্যের মধ্যে শণ, ভিসি ও ভাক ফ্লাওয়ার নামক তৈল্থীক **উলেব**বোগ্য।

ওবেট ইন্টটিউটের পার্বে একট কৃষিবিদ্যালয় স্থাপিত श्रदेशांच्य अवर अरे विमानत्वत्र भार्थवर्धे शामक रेमक्रिकेके পরীকার্ত্ত কার্য্যের হত লীক লইরাছে। ইহার কলে কৃষি-विमा ७ क्विविवास शायमात माना मिक्के मन्नर्क शामिक দুইৱাছে এবং বাঁছাদের এই সকল বিষয়ের সহিত সংযোগ আছে তাঁহাদের বৰেই সুবিধা ঘইতেছে। ভারতে উক্ত ব্যবহা সম্ভৱ ছইলে গৰুৰে ভেঁৱ কাৰ্দ্ম ও গৰেষণা প্ৰভিনিবিভলির নাম ও খক্ৰত্ব বৃদ্ধি পাইবে। ওবেট ইন্ষ্টিটটের অমি পত্নীকার কলে ভ্ষির সম্প্রাঞ্জির উপর আলোকপাত হইরাছে এবং ক্ষেত্রের छे९कर्द जाबरमञ्जू कुनावाम छवापि अकाभिछ स्रेजारह। টুহার একট বৃল্যবান ভব্য হইভেছে এই যে ভূষির অভুর্বরভার সহিত চারাগাছের এবং পশুর রোগের সহিত সহয় আছে। वरे जवाद चादा नर्द्यमा कृता वादाक्य।

অটেলিয়ার বিভিন্ন পদ্মীঞামে এঞিকালচারাল ব্যরোর नावा चारह । कुश्तकताह बहे नावा धनि गर्ठन करत । निर्दिष्टे नबार देशां कविद्यान एवं अपर (नवीदम मका ७ डिफ्रानपृष्ट সরকারী কর্মচারীরা কৃষিকার্য্যের সমস্তাঞ্জির আলোচনা करतन । मिन-चरहेनिशाए बहेन्न ७१० है मार्थ जारह । बारे मक्न माना एरेटल श्रीकिमिन गरेवा श्रीक वरमद बक्के वार्तिक स्वविद्यम्य प्रदेश शिक्तः।

চনাতেও একট ভূষি শিকা ও গবেষণার উচ্চ প্রতিষ্ঠান গঠিত হইল না। কলল বৃদ্ধির আন্দোলনের নামে কোট কোট চাকা जनव स्टेशास किस शारी काक किहरे एवं मारे। अपन সময় আসিয়াছে। আমেয়িকা, রাশিরা, কামাড়া, ত্রিটেন, অট্রেলিরা প্রভৃতি যে বড় ও উদ্যানের সহিত স্থবিসমভা সমা-ৰানে এতী হইবাহে আমাবেরও তাহা করিতে হইবে। এতেলেড আমাদের নিকট একট ছোট দুটাভ মান।

ইউরোপে কৃষির উন্নতি

चारमक विन क्रेटिक क्रिवादि धावाद विकास क्रमनावादन আন্দোলন করিভেছে। বর্ত্তমানে দেশের রাখনৈভিক সম্ভার ज्ञाबान स्टेशाटा। अवन जाना कहा बाद ज्ञाबात अवा बाइडि चर्रमिछिक मम्बाक्षित ब्रिडि बार्रामिक भेगर्स के जक्रम बरमारवान निर्दम । विश्वादात बढी छाः रामक्रम बाब्रम अकड़े अवरक कविषाति अव। विस्तारणत नव कि कर्ववा अरे সম্বন্ধে একট প্ৰচিত্তিত প্ৰিক্ষণা দিয়াহেন। বহু দিন ব্ৰিয়া আন্দোলন কৰিবাৰ কলে কৰিবাৰি প্ৰধান বিলোপ সন্নিকটবৰ্তী হইবাবে। এবন ভবিতং কর্তব্য সহতে চিতা করিবার সময় আনিয়াছে। আয়াছের সমূবে নানা প্রকার সমস্যা হেবা বিয়াছে। ক্ষলংখ্যা অভ্যন্ত বৃদ্ধি পাইরাছে, ফলে ক্ষিত্র বুল্য বাড়িয়া নিয়াছে। ভূমিহীন লোকের সংখ্যা অভ্যবিক বৃদ্ধি পাইতেছে: বালিকগণ অভার ভাবে অমি দৰল ক্রিভে-(धम अवर (वनीत जान क्षत्रक क्शर्यक्ष्मूच, चन-(जहम वा कन-নিভাশন করিবার কোন উপারই ভাষাদের নাই। এই সকল অব্যবস্থার হলে কৃষিকার্ব্যে কোনই লাভ হয় না। অবিহারি क्षवा विरमाण नावरनद नरक नरक अरे नकन कुकावहात क्षठि- कांत्र कतिएण स्टेर्टर, नष्ट्ररा श्रमतात्र कमियाति क्षेत्रा (वर्ष) विदय এবং কুষকদের চুর্গভিত্র অন্ত থাকিবে না। কুষিকার্গ্যের আবুল পরিবর্ত্তন দরকার। কুষকের সহিত অবিদারের এবং পবর্বে পের কিব্ৰণ সম্বৰ থাকিবে এবং ভাষাৱ আৰু ইভ্যাদি প্ৰৱেৱ উপর কৃষিকার্যোর ভাল মন্দ নির্ভর করে।

ক্ষিকাৰ্যোর উন্নতি এক দিকে বেরপ ক্ষকের সামাজিক ও चर्नरेमिछक चरष्टा अवर चाह्मश्रेष्ठ चिकारवार छेशव मिर्कर করে, অপর দিকে সেইরূপ কৃষিকার্বোর উপকরণ ও প্রভিত্ত देशक विर्वत करता। कावजवर्द वह विव बविद्या देवलानिक উপাত্তে কৃষিকাৰ্য্যের উন্নতির চেষ্টা চলিতেকে, কিন্তু এখন পর্যান্ত **ভাছা आमामुद्रश कन अन्य एव गाँदे। इकिक- उपस क्**मिन्दनद विट्नाटर श्रीविकारभव अक क्य विरूक्ष छिरवर्डेव विनवास्य य अपूर्व भण है शामानद भार अवामण्य वावा स्टेरण्य स्वय-(एवं रेएड) जाशास्त्र मिक्डे देश चर्मका (वने कनन चाना করা হার মা। আর এক হুম বিশেষজ্ঞও বলিয়াছেন যে কৃষিকার্ব্য ক্রিবার যে পছতি প্রচলিত আছে ভাহার উন্নতি অবিলয়ে बार्याक्त । किंस कुष्ठवर्ग अंचर स्थान व चारायि विकर्ष আর আমাদের দেশে ? বাংলার বহু আন্দোলন ও আলো- ৯ এই সকল কথা বলা রখা। উনবিংশ পতাখীতে ইউরোপে क्रम छेर्भारतय क्रम (व दिकानिक भविवर्तम क्रेसिक अवर কৃষিব্যবসাতেও যে সুতন পরিবর্তন আসিরাছিল, তাহার যুদে ছিল কমি সহতে পুৱাতন আইনওলির মূতনরপে সংস্কার। এই-क्रम प्रश्वाद ना व्हेरन कृषिकार्दा कान भविवर्धनहे व्हेस मा। কৃষিকাৰ্ব্যের উন্নতি পরিকল্পনার ক্ষমি সম্বাহীর আইনগুলির পুনৰ্গঠন বে একাভ প্ৰৱোজন ভাষা চিছা করিতে হইবে।

नूर्क ७ एकिन-नूर्क देखेरबारन कृषिकार्द्य आवृत निवर्षम स्टेबाट्य। क्षत्रिमादि अया, क्ष्य, कृष्टक्य ध्रवस्था अकृष्टिव **चन्न** क्षिकार्द्शित नकन श्रकात खेत्रिक साहक स्टेरिका। এই পরিবর্ত্তনের মূলে ছিল এক শক্তিশালী বাবীন কুমকলতা-দায়ের স্ষ্টি ও ক্ষিতে অধিক কসল উৎপাদনের ইক্ষা। মিয়-লিখিত নীতি অসুসারে এই পরিবর্ত্তন হইয়াছে :

(১) क्षत्रिक्षणि कृषकरणत गर्या वर्तम कतिया स्था एव । ইহাতে ভাহারা হ'ল ক্ষিত্র উচ্চতির শ্বভ সর্বাঞ্চলার চেটা ক্রিতে থাকে। ক্ষিদারের পরিবর্ত্তে কুষক ক্ষির প্রকৃত মালিক হওৱার হাবীন কুষকের সংখ্যা বাছিতে থাকে। (২) কুষক ৰাজীত অভ কেহ বাহাতে কৰিয় বালিক বা হইতে পাৱে বে বিষয় সক্ষ্য রাধা হয়। (৩) ধেশের ও দলের মদলের ক্ষ এই ক্ষার উপর কাছারও ব্যক্তিগত অধিকার (private ownership) থাকিতে কেওরা হয় নাই। এই সকল মীতির প্রবর্তনের ক্ষ পূর্ক-ইউরোপ কৃষির উন্নতিতে অভ্তপূর্ক সাফল্য লাভ করিরাছিল। পশ্চিম-ইউরোপে ১৯১৯-৩৮ সালে বেধামে শন্যাদি ও আলু শতকরা ৩৪°৫ উৎপন্ন হইত, পূর্ক-ইউরোপে সেধানে ক্ষাত শতকরা ৪৯°৫ ট

১৯১৮ माल किलाक्षां काकियात भवत्व कि एव भश्कात रु, ভारात करन ताकरेमिछकं कमछ। चारम बमगाबातर्गत হতে। অবিশয়ে ভাছার। কৃষিক্ষের প্রতি মনোযোগ দেয় এবং কৃষকেরা ভ্যার প্রকৃত মালিক বলিয়া নির্ভারিত स्य । ১৯১৯ नार्याय Land Restriction Act-अव पण আরও সুবিধা হয়। বড় বড় ক্ষমিঙলি ভাগ করিয়া কৃষকদের দেখনা হয় এবং কৃষ্কেরা প্রাপ্ত ক্ষা ভাগ করিছে, ইজারা দিতে বা ৰছক ৱাৰিতে পাৱিবে না বলিয়া দ্বিরীকৃত হয়। পরবর্তী আইনের ফলে ভ্রমকের) যে পরিমাণ ভূমি বাছিরের সাহায্য ব্যতিবেকে নিৰেৱা চাষ করিতে পারিবে সেই পরিমাণ ক্ষার ভাষারা মালিক হইতে পারিবে বলিয়া থিৱ হয়। ১৯১৩ হইতে ১৯১৫ সালের মধ্যে ভ্রমির যে ৰুল্য ছিল, জ্বিদাৱণৰ জ্ভিপ্রণ স্বস্ত্রপ ভাতাই পাইলেন। পৰ্যেক শভকরা চার চাকা হিসাবে সুদ্ধিতে লাগিলেম बबर वरमदा श्रावत चल्ला भाषा बक-छणीहारम त्मान विदिन ৰলিৱা ঠিক করা হয়। ইহার কলে, ভবির উন্নতি হইল এবং সেই সংক্রমাজিক পরিবর্তনও সাবিভ হইল। কুষকের। निषय स्विट्छ क्षेत्र क्ष्म हैश्लोक्ष क्षिट्छ बादक।

ক্রমানিরাতেও ক্রমিবিষয়ে পরিবর্তম হর এবং ইহার কলে উংপর ক্যালের পরিমাণ রৃত্বি পার। ইউরোপের দেশসমূহ বে সকল উপার অবলখন করিরাছিল ভাহাদের মধ্যে এইগুলি প্রধান ঘর্থা—(১) বড় বড় জমিগুলি ক্রম করিরা দরিত্র ক্রম্বনবিগকে লেই স্থানে প্রভিত্তিত করা, (২) জমি হন্ডান্তর বিষয়ে আইন প্রণরন করা, (৩) জমি ক্রম করিবার জন্ত প্রজাবিদকে
আ্রিক সাহায্য করা এবং (৪) কৃষিকার্ব্যের উর্ভির জন্ত প্রবোগ-স্থবিধা লাম করা।

ে ভূবক বেশে অমিদারদিগকে ২০ট কিভিতে শক্তর। চার টাকা স্থাদ ক্তিপূরণ দেওৱা হইবে বলিয়া ১৯৪৫ সালে ভূন বালে একট আইন পাস হইবাছিল। যাহারা অমি পাইল ভাহারা বিনা স্থাদ ২০ কিভিতে এই টাকা দিবে। ভাহাদের একট প্রবিধা করিছা দেওৱা হইল যে ভাহাদের ছেলেনেছেলের বর্ধন প্রাথমিক শিক্ষার বয়স হইবে তর্ধন ভাহাদের শতক্রা পাঁচ টাকা করিছা কম দিতে হইবে।

জমিদারি লোপের পর ভারতবর্ষের কর্ত্তব্য ভারতবর্ষে আমরা কেবলমাত্র অমিলান্তি প্রধার ছানে রোইওভয়ারি প্রধা চাহিতেছি না, কামণ এই উভয়বিধ প্রধাতেই ভূষকব্যে অবস্থা প্রায় স্থান। বেশের মন্ত্রের অন্যা প্রায়ে লমবার সমিতি প্রতিষ্ঠিত করিতে হইবে। কৃষক ও ক্ষিণারের মধ্যবৃত্তী সম্প্রদারের লোপ করিরা সর্ব্যন্ত সমধার সমিতি প্রতিষ্ঠিত করিতে হইবে। এখন হইতে কৃষিকার্য্যের সর্ব্যান্ত উন্নতিসাধন এবং নিক্রেরের ক্ষীবনরাপ্রার উৎকর্বসাধন করিবার ক্ষত সমবার সমিতিগুলিকে নির্ক্ত রাখিতে হইবে। প্রামের সমবার সমিতিগুলিকে নির্ক্ত রাখিতে হইবে। প্রামের সমবার সমিতিগুলি প্রতিষ্ঠিত করিবে। সমবার সমিতিগুলি এই ভূসম্পত্তি, পরিচালনা করিবে, বীক্ষ, সার, কৃষিকার্যের ব্যক্তি সংগ্রহ করিবে, ক্ষাসেচের বন্দোবন্ত ক্রিবে, এবং প্রামের কৃষিকান্ত প্রবা বিক্রেরের ব্যবস্থা করিবে। ইহা কৃষক্ষিপকে সক্ষর্যক্ষ করিবে এবং প্রেল্ড প্রবিশ্বিক প্রবাধিতিক প্রবাধিতিক ক্ষর্যান্ত করিবে।

১৯৩৮ সালে বল্পেলে ক্লাউড ক্ষিণন ও মান্তাক প্রদেশ ল্যাও এটেটস্ এই ক্ষিট নামক হুইটি ক্ষি-ব্যব্থা তদন্ত ক্ষিট হাপিত হয়। এই হুইট ক্ষিটই ক্ষমিদারি প্রবা বাহাতে ক্ষি পায়, এবং প্রকৃত মালিক ক্ষকেরা বাহাতে ক্ষমি পায়, ভাহার ক্ষমা স্থাবিশ ক্ষিয়াছেন—ক্ষিদারগণ ক্ষতিপূরণ পাইবেন বলিয়া ইয় হইয়াছে তবে খব অল্পিনে ইহা নিপার হুইবে না বলিয়া তাহার। ঘোষণা ক্ষিয়াছেন। কারণ ভাহা হুইলে তাহাদের মতে পেশের আর্থিক অবস্থার অবনতি হুইবে। বিহার প্রদেশেও ক্ষিদারি প্রবা রহিত হুইবে এবং ক্ষিদার প্রেষ্টক ক্ষিত্রণ দেওলা হুইবে বলিলা স্থিয় হুইয়াছে। কিছ আর্থিক সমস্থার স্থাবান হুইতে সম্বর লাগিবে।

ক্ষিণারি প্রবা রহিত হইবে বলিরা বীকার করা হইরাছে বটে, কিন্তু ক্ষমিলারগণের কথা বিশেষতাবে চিন্তা করিতে হইবে। কারণ এক এক কন ক্ষমিলারের আপ্রিত লোকের সংখ্যা অত্যন্ত বেশী। পরিবারবর্গ ও আপ্রিতগণ লইরা এই ক্ষিলারগণের সংখ্যা প্রায় ৫০ হইতে ৭৫ লক্ষের মধ্যে। ইহালের মধ্যে অনেকেই আবার প্রকৃত পক্ষে কৃষক। সুতরাং ইহালের যদি অর্থ দিরা সাহায্য করা যার, তাহা হইলে তাহারা কৃষিকার্য্যের উন্নতি করিবার চেঙা করিবে এবং তাহালের সলে প্রীতির সম্পর্ক অটুট বাকিবে। তাহালের পরিচালনা ক্ষমতার সহায়তার প্রায়ে বায়ন্ত্রশাসম প্রতিষ্ঠিত করা এবং ব্যবসায় চালান সহক্ষ হইবে। কিন্তু অপর পক্ষে এই সম্প্রদারকে যদি শক্র হিসাবে দেখা হয় তাহা হইলে দেশের ও দশের ক্ষতি হইবে।

ক্ষির থাক্ষমা ভাষারের জন্য যে সকল সরকারী কর্মচারী
নির্ক্ত ক্ষরে তাকারা ক্ষরকদের উপর যথেক্ত জত্যাচার
করিতে পারে। সমবার সমিতি মারকং থাক্ষমা ভাষারের
ব্যবস্থা ক্ষরে এই সম্ভাবনা থাকিবে না।

জমিদারির ক্ষতিপূরণ দানের উপায়

নির্লিখিত উপারে ক্ষিয়ারবের ক্তিপ্রণ দেওরার ব্যবস্থা করা যায়। কৃষিকাত ক্ষেত্র মূল্য বৃদ্ধির লক্ষে কলে কৃষকদের আর বৃদ্ধি পাইবাছে। অবঙ্গ জীবিকানির্বাহের
জন্ম ভালাদের যথেষ্ট ব্যরগ করিতে হর। তথাপি তাদ্ধারা
কিছু লাভ করিরা থাকে। গত করেক বংসরে তাদারা
ইহার ঘারা তাহাদের প্রায় সমভ গণ শোধ করিয়া
দিরাছে। প্রাবের উন্নতির জন্ম তাহাদের লভ্যাংশ ব্যয় করা
উচিত। তাহা না হইলে এই চাকা মামলা মোকদমা প্রভৃতিতে
অপব্যয় হইবে প্রথম মহাযুদ্ধের পর ঠিক এইরপ হইরাছিল।
সেইজন্ম এই অর্থহারা আগামী তিন বংলরের মধ্যে ক্রি
জন্ম করা ও জনিদারের ঝণ শোধ করিয়া দেওরা উচিত।
প্রাবের সম্বায় করিতে পারে। ইহার ঘারা বার
বংলরের জনির থাক্ষা তিন বংলরে আদার করা যাইবে।

বুৰের পূর্বে প্রভি একর খমির বাখনা পাঁচ টাকা করিয়া দিবার বাত কুষ্ককে দেও মণ চাউল বিক্রয় করিতে **হই**ত। वाहे एक अब हाडिन विशे वर्षभारत (म करवक वरभरतत बाकना দ্ৰিতে পাৱে এবং ভাষারও দিন্তৰ ৰাজনা দিতে ভাষার ভিন ষণ চাউল লাগিবে। প্রৱাং এবন ভাষার চাউল প্র্যাপেকা অবিক লাগিতেছে না: যতদিন চাউলের মূল্য এইরূপ থাকিবে তভদিন পৰ্যান্ত সে নিয়মিত ৰাজনা দিতে পারিবে এবং আগামী ক্ষেক বংসৱেঞ ৰাজনা দিয়া রাখিতে পারিবে। ইহার পর যধন চাউলের দাম কমিয়া যাইবে তখন সে যে কয়েক বংসবের আগাম ৰাজ্যা দিয়া বাৰিবে ভাষা হইতে প্ৰতি বংগর প্ৰকৃত बाक्षनाव चार्कक कविया बाक्षना विभारत मध्या स्टेरन । युख्यार ভাছাদের ছক্সংসরে কিছু সুবিধা ভাছার। পাইবে। এই প্রকারে অবশ্র প্রামের সমবার সমিতির আহের পরিমাণ যথেষ্ট ক্ষিয়া ঘাইৰে, ভ্ৰাপি চাউলের মুল্য ও পারিশ্রমিক হাস পাইলেও কৃষকাৰ পূৰ্বের মত কমির উন্নতির কচ কাক করিতে পাইবে। প্রবর্তী কালে যে কুষকের নির্দ্ধারিত পরিষাপের ক্ৰমি অপেকা কম ক্ৰমি আছে ভাহাকে বাকনা হইতে আংশিক মুক্তি দেওয়া সম্ভব ক্ইতে পারে। ইকা না ক্ইলেও সমবায়-সমিতি ৰাজনাত্ৰ পত্নিমাৰ কমাইয়া দিতে পাৱে। এইকপে এাহ্য সহবার-সহিতি কৃষকদের সাহাত্তিক ও আর্থিক স্থ-সুবিধা দিতে ও পাইক-পেরাদাদের অভ্যাচার হইতে বকা করিতে পারিবে।

ভ্যিবারদের পক্ষে কৃতিপ্রণের অর্থেক টাকা পাইরা ও বাকী অর্থেক কাতীর শিবপ্রতিঠানের শেরার ক্ষর করিবা শোধ লইলে ভাল হইবে। নতুবা কাঁচা টাকা মানলা মোকখনা ও বাকে বরচে উভাইরা দিবার সভাবনা অধিক। শেরার ক্ষো থাকিলে তাহারা প্রতিবংসর নির্মিত টাকা পাইতে থাকিবে। ইহার হারা প্রবাদ প্রধান প্রম-শিল্পকে ভাতীরকরণ, ভ্যাবিশ্যর উন্নতিসাধন প্রভৃতি কার্ব্য করিতে পারা বাইবে।

বেশের জনসংখ্যা জন্মনঃ বৃদ্ধি পাইতেছে। এই পরিকল্পনা কার্য্যকরী হইলে কেবলমাত্র তাহাবেরই বে জনসংখ্যান
ক্ষমে ভাষা নহে, মুর্থনাঞ্জ প্রান্য জীবনেরও উন্নতি হইবে।
কেশে প্রম্ম প্রকৃষ্টি আবহাওয়ার স্কৃষ্টি হইবে বাহাতে নেতৃবর্গ

ভাষাদের শক্তির উপর নির্ভর না করিরা নিজেদের প্রচেষ্টাতেই বেশের উর্লিড করিতে পারিবেন। প্রামের লোকেরা সঞ্জবদ্ধ ইইলা প্রামেরই কল্যাণ করিবে এবং গবর্ষেন্ট ইইলে প্রবৃত্তিত থে কোন কল্যাণকর নীতি ভাষারা ক্রুত কার্য্যকরী করিতে পারিবে। উৎপন্ন প্রবেরর বৃত্তির সলে সঞ্চে ভাষা বিক্রম করিরা লভ্যাংশও বৃত্তি পাইবে; এবং প্রামের সম্বায়র সমিভিগুলি এই প্রকারে ক্রমশঃ শক্তিশালী হইরা প্রামের শিক্ষাবিভার, বাহ্যরক্ষা, সামাজিক ও আর্থিক সক্ল প্রকার উন্নতি করিতে সমর্থ হইবে। এইরূপে সম্বায় সমিভিগুলি ক্রমানার্বের হুন্তে প্রকৃত অর্থনৈতিক ও রাজনৈতিক ক্ষমতা ভূলিয়া দিরা প্রকৃতিত্ব শাসন গঠন করিতে পারিবে।

এনি বেশান্ত জন্মশতবার্ষিকী

গত ১লা অক্টোবর ভারতবর্ষের নানাছানে ভারতের বৃক্তি-সংগ্রামের অভতম অব্রগৃত এনি বেশান্তের ক্রণভবার্ষিকী **অম্**টিত হইয়াহে · ভারতের ভাবধারার সহিত নিবিভ্ভাবে युक्त सरेशा (य करशककन विषयी नशनाशी अरमान कनान সাধনে ত্রতী হইয়া ভারতবাসীর প্রভা অর্জন করিয়াছেন, এমি বেশান্ত ভাষ্ট্রের মধ্যে এক জন। "भরনারী সকলের সমান অধিকার, যার আছে শক্তি পাবে মুক্তি নাছি আছবিচার"---এই তত্ত্বে প্রত্যক্ষ প্রমাণ বেশান্ত ৷ বালিকা বয়সে বর্দ্মপ্রবণতা ইঁছার জীবনের বৈশিষ্টা ছিল। যৌধনের বিকাশের সলে সঙ্গে বর্ত্থবিষয়ে প্রথমে একেখরবাদী ভয়েসির শিখা হন। পরে সংসার হইতে মুক্ত ছইবার জল ব্যাকুল ছইরা প্রেম। আছ-न'त मरम्मटर्न चानिया देनि नाचिकाबादम चाक्रके स्न। ব্রাড ল'র প্রভাবে জীবনের নানাক্ষেত্রে ই হার কর্ম-পরিবি বিশ্বত হয় এবং নিজের জান-ভাণারের জীর্ষির শ্বন্থ এই সময়ে বিজ্ঞানচর্চার মনোনিবেশ করেন। ইছার কিছু দিন পর ভিনি সাম্যবাদের প্রতি আক্র হন এবং ইংসভের ফেবিয়ান লোসাইটির সহিত রুক্ত হইয়া সাম্যবাদ প্রচার **ভারত্ত** করেম। এই মতবাদ প্রচারের সময়েই তাঁদার অপূর্ব্ধ বাগ্মিতার ব্যাভি লৰ্কত হড়াইয়া পড়ে।

এই সময়ে তিনি যে সব কল্যাপকর কর্মে রত হন তথ্যের মনীয়া লেখক অর্জ বার্গার্ড ল'কে আবিদার করিয়া তাহার প্রথম দীবনের রচনা ''ইররেশন্যাল নট্ট" নামক পুত্তক প্রকাশ করা অঞ্জম। কোন প্রকাশক না পাওয়াতে বার্গার্ড ল' এই সময়ে তর্মোদ্যম হইয়া পঢ়িতেছিলেন। বেশান্ত এই তরুপ লেখকের রচনার মুক্ত হইয়া তাহার পুত্তক প্রকাশের দারা বার্গার্ড ল'র প্রতিভা বিকাশের সহারক হইলেন।

১৮৮৯ এটাকে বেশান্তের জীবনে বিপর্যরকর পরিবর্তম বটে। এই বংগর তিনি ব্যাভাষ গ্রাভাট ্ডির লাজাং লাভ করেন এবং অভি সহজেই জাহার বৃহ্ব ভক্ত হইরা পড়েন। তাঁহার ল্গু বর্গুবোৰ পুনরার মব আফারে ফিরিরা আলাভে তিনিএক নৃতম নাকুব হইরা উঠেন। গ্লাভাট্ডির প্রভাবে

ভারতীর সংস্থতির সন্ধান লাভ করিরা এই বারার রসে নিজের भीवनाम निक महिना पूर्णन। धारात गान स्टेर्फ पाएक हत्, এই বাহার সহিত বেন জাভার কর-করাভারের বোগ আছে। ভিনি বিওস্কিয়াল লোগাইটর কালে উংসাহের সহিভ ৰোগদান করেন। এই স্বিভিত্ন মৃত্যাদ প্রচারে মার্কিণ बक्क बार्क्स वर्षन किमि खम्ब कहिरकहिरलम क्यन वि: कि. बम. চক্রবর্তী নামক এককন অব্যাহতত ও প্রেডভরজের সহিত পরিচিত হওরাতে ভারতবর্বে আসিবার অভিনাধ করে। माणिय ब्राजिनिय ब्रहाद शव कर्तन जनकी विश्वनिकान নোনাইটর নভাপতি পদে বৃত হইলেও বার্ত্তাবশত: তাঁহার কিছ করিবার ক্ষতা ক্ষতাৰ ক্ষিত্র বাধ্বাতে বেশাহুই উজ স্মিতির প্রকৃত কর্ণবার হন ও ১৯০৭ মীধানে কর্নেল অলকটের ৰ্ড্য হইলে বেশাভ এই সমিভিত্ৰ সভাবেত্ৰী পৰে বুড হইছা चारेमछ: ७ कार्याछ: এर देख्य श्राकारके चित्रवादिक स्वती जाविशादा (शाखाक) विश्वनिकाल (नानावृक्षेत्र (य বিরাট কর্মান্ত প্রতিষ্ঠিত ব্ইরাহে ভাষার বুলে রবিয়াছে বেশাভের কর্ম্বরুল । ইঁহার অভত কর্ম্বন্দতা ও কার্য-পরিচালনক্ষতার অভতম নিদর্শন হইতেতে কাশীর সেনটাল বিশু কলেছ। এই কলেজকেই মধ্যবিশুরূপে পাওরাতে পভিত वस्यास्य याण्यीय त्रवादम स्कि विश्वविद्याणस्य अदि विद्यो লিকা আৰতন গছিবা ছলিতে পারিবাছেন।

১৯১৪ বিঠাক ক্টতে বেলাক ভারতের বৃক্তি-সংখ্যানের जिल्ल पुरू एव । "काम केरेल" 'e "निके रेलिया" मायक পত্ৰিকা প্ৰকাশ করিয়া উচার হারা অভি অছদিন পরেই "হোর-का" चार्त्मानायन लडी करिया काराजन नयर-मामायन वरि-কার ভাবি অভাত ভোরের সভিত প্রচার করিতে থাকেন। ১৯১৫ এইাবে ভারতীয় কংরেস আন্দোলনের প্রথম উল্লেখ-যোগ্য ইতিহাস বচনা করিবা তিনি "হাউ ইভিয়া বট কর হার For (How India wrought for her Freedom) ৰামক পুথক প্ৰকাশ কৰেন। ইংলভের 🕏 স্মাও সি স্মাক কোম্পানী প্রকাশিত "পিপলন সিরিছ" নামক বিষের জান-প্রচারক পুস্তকাবলীর অভতন "ইভিয়া এ নেরুন" নামক भूषक श्रकाम कविवा **चावछी**य वाद्वीय कावनाय कथा।वर्ष बाहार करिए महारका करतन। ১৯১७ बैडीएम "रहानकन লীগ" নামক সংখা খাপন করিয়া তিনি অসমত রাইনৈতিক আন্দোলনের হারা ভারতের রাষ্ট্রক প্রগতির সহায়তা করেন। এই আন্দোলনে ভীত হইবা ভারতের আমলাভন্ত নির্বাতন कविश काशब कर्यश्रक्ति वह कविष्क श्रेशकी एवं। ১৯১৬ মীঠাবের ২৬লে বে ভারিবে 'নিট ইভিরা' প্রিকার নিক্ট ছুই হাজার টাকা জাবানত চাওয়া হয়। তাহার কিছুদিন পরেই অর্থাৎ ১০ই জুলাই ভারিবে বোগাই-সরকার এক निर्विशामाव नाम त्रमाराच द्याचारे धारात्म धारम निर्विष क्रांवम । त्नर्रकेषव मार्ग्न मन्। ब्राह्मण-नवकांवश चक्र्यण चारमण कार्ति करवन। तमाक प्रविचात भावी विरामन ना. कारे अरे

সৰ নিৰ্বাভনে উচ্চার উৎসাহ আরও বাছির। সেল । ১৯১৭
ইউদেশ্ব ১৬ই জুন বাজাজের গবর্ণর পর্ড পেউল্যাও শ্রীবভী
বেশাজের সহিত লাজাং করিরা উচ্চাকে হোবরুল বা অভ
কোনও রাষ্ট্রিক আন্দোলনে প্রবুভ না হইতে অভ্রোধ করেন।
বেশাভ উচ্চা বছ রাখিতে অস্থীকার করেন। ইচার কল কি
হইবে বুঝিতে পারিরা বেশাভ 'নিউ ইভিরা'তে উচ্চার বিচারবাদী প্রকাশ করেন। তাহার ক্রীকর্ব্য অভ্নাদে নই না করিরা
উচ্চার ভাবাতেই বলি—

"I write plainly for this is my last word. I go into enforced silence and imprisonment because I love India and have striven to arouse her before it was too late. It is better to suffer than to consent to wrong. It is better to lose liberty than to lose honour. 1.....God save India, Vande Materam."

বেশান্তের আশহা সত্যে পরিণত হইতে বিলব হইল থা।
গবর্ণরের সহিত লাকাং পরিস্বান্তির এক ঘণ্টা পরেই আনি
বেশান্ত ও তাহার কর্মসহচর মিঃ বি. পি. ওরাভিরা ও মিঞ্চার
জি. এস. আরুতেলের বিপ্লবে অন্তর্নীপের পরোয়ানা বাহির
হইল। তাহার এই বন্ধিতে ভারতে হোমক্রণ আন্দোলন
আরও উপ্লব্ধা উঠিলে বিপ্লেশ সরকার প্রমাণ গণিলেন এবং
লর্ড মন্টেও ভারতে আসিরা অসুস্থান করিয়া শাসন-সংখ্যার
লাধন করিবেন প্রতিশ্রুতি দিলেন। ইহার অল্পদিন পরেই
জনমতের চাপে ভারত-সরকার বেশান্ত প্রভৃতিকে মুক্তি দিতে
বাবা হইলেন।

কৃতিকাভার কংগ্রেগের অধিবেশন তথন আগর। বাংসার প্রগতিপন্থী হল সদ্যুক্ত ভারতের এই বুক্তি সংগ্রামিকাকে সভানেত্রী করিতে চাহিলেন কিন্ত নরমণন্থী দল ভাবার বিরোধিভা করেন। প্রগতিপন্থী দল কবিসন্তাট রবীক্রনাথকে অভ্যর্থনা সমিতির সভাশতি নির্মাচন করিয়া বেশান্তকে সভা-নেত্রী করিতে উদ্যোধী হইলেন। নরমণন্থী দলের সহিত প্রকটা রকা হয় বাহার কলে বেশান্ত সভানেত্রী হইলেন বটে, কিন্ত রবীক্রনাথ অভ্যর্থনা সভার সভাশতি পদ অভত্য মরমণন্থী সায়ক বৈষ্ঠুগার্থ সেমকে হাছিয়া দিলেন।

এ পর্যন্ত বেশাভের কর্ষবারা ভারতের রুক্তি আন্দোলনের সহিত এক হিল, কিছ রাউলাট আইন ও জালিনওরালাবার হত্যার পর ভারতের রাষ্ট্রক আন্দোলনের বে নবরপান্তর মহাত্মা গানীর নেতৃত্বে বটে এই ইংরেজ-রমনী ভাহার সহিত রুক্ত বাক্তিতে পারিলেন না। এই দিন হইতে বেশাভের রাষ্ট্রক ক্ষেত্র হুট্তে প্রভাব ক্ষিতে বাক্তে। ১৯৩০ বিটাক্তের ২০শে নেপ্টেবর ভারতহিতৈরী এই নারীর বেহাবলান বটে।

পূজার ছুটি

শাৰণীয়া পূজা উপলক্ষ্যে প্ৰবাসী কাৰ্য্যালয় ২বা কাৰ্ত্তিক (২০শে অক্টোবর) হইছে ১৫ই কাৰ্ত্তিক (২বা নবেশ্বর) পৰ্যন্ত বন্ধ থাকিবে। এই গৰছে প্ৰাপ্ত চিট্টপত্ৰ-চীক্ষাকৃতি প্ৰভৃতি সক্ষয়ে ব্যবহা কাৰ্য্যালয় পূলিবার পর করা হইবে।

रिविषक जार्य ও जरिविषक जार्य

শ্রীননীমাধব চৌধুরী

পূর্বের এক প্রবন্ধে (বৈদিক আর্য ও আবেন্ডিক আর্য, প্রবাসী, কৈটে ১০৫০) বৈদিক ও অবৈদিক আর্যজাতি সম্বন্ধে মতবাদের উল্লেখ করা হইগাছে। বর্তমান প্রবন্ধে এই মতবাদের বিস্তাবিত আলোচনা করিয়া আর্যজাতি সম্বন্ধে আন্দোচনা শেষ করা হঠবে।

বৈদিক ও তবৈদিক আষজাতি সম্বন্ধে মতবাদকে নৃতত্ত্বৈজ্ঞানিক মতবাদ আখাা দেওয়া যায়। এই মতবাদের জন্মবৃত্যক্ত সংক্ষেপে বর্ণনা করা প্রয়োজন।

স্থাৰ হাৰবাট বিশ্বলেৰ People of India প্ৰকাশিত হইলে এদেশে প্রতিখাদের একটা বাদ উঠে। এই বিতর্ক এখন পুলতন ইইয়া গিয়াছে। রিক্লে সাহেব নৃত্ত্ব-ণবিজ্ঞানের স্থাম:ত মাপজ্ঞোথ করিয়া এ দেশের অধি-বাদীদের মধ্যে তুর শ্রেণীর লম্বঃ মুগু ও তুই শ্রেণী পোল মুগু টাইপ আবিষ্কার করেন। সমামুত্ত টাইপের একটি আর্য ও অপরটি ভাবিড়, গোল মুণ্ডের একটি মোপলীয়ান ও অপরটি দিথিয়ান (Sey-biau)। মাপছোগ করিয়, যে দকল সংখ্যা ভিনি পান তাহ: বিশ্লেষণ করিয়া ভিনি বলিয়া দিয়াছেন, कान अक्टन कान होहेरनत श्रीक्षाल । कान अक्टन বিভিন্ন টাইপের সংমিশ্রণ হর্যাছে। উত্তর ভারতের পঞ্চাব व्यक्त हे स्मा-क्षियान वा व्यार्थ है। हेरा বাদে দেশের প্রাধ সর্বত্র প্রাচীন অধিবাদী চিল ভাবিড জাতি। জাবিড় ভাতির সহিত কোথাও গোল মুণ্ড সিথিয়ান, ° কোথাও গোল মৃত্ত মোললীয় সংমিশ্রণ ইইয়াছে। ক্যেক্টি অঞ্চলে জাবিড় ও সিধিয়ানের সহিত আর্য টাইপের সংমিশ্রণের কথা তিনি বলিয়াছেন। বাঙালী মোশলীয় গোদ্ধীর প্রতিবেশী। কাজেই তাঁহার মতে দ্রাবিড টাইপের সাহত মোক্ষলীয় টাইপের সংমিশ্রণে বাঙালী টাইপের উৎপত্তি হুইয়াছে।

আর্থকৃষ্টির উত্তরাধিকারী দলের মধ্যে পরিগণিত এবং আর্থভাষাভাষী বাঙালী হিন্দু স্বভাবতঃই রিজনে সাহেবের এই সিদ্ধান্থে আপনাকে অপমানিত জ্ঞান করিল প্রতিবাদ অনেক হইল। কিন্তু নৃতত্ববিজ্ঞানের স্ত্রমতে মাপজোথের ফলে যে গোল মৃত্তের প্রাধান্থ বাঙালীদের মধ্যে নির্ণিত হুইয়াছে তাহা শুরু উচ্ছাসের তোড়ে উড়াইয়া দিবার নহে। তথ্যের উপর প্রতিষ্ঠিত এবং বৈজ্ঞানিক সিদ্ধান্ত বলিয়া প্রচারিত সিদ্ধান্তের প্রভাব শিক্ষিত মনের উপর বেশী হুইয়া থাকে। এক্ষন্ত দেখা ষায় যে বিজ্ঞানে সাহেবের গবেষণার ফলে বাঙালীর আর্থন্ধ উড়িয় গেলে একদল ক্রাহুইয়া

আপতি তুলিলেন কিন্তু আর এক দল বাঙালীর মধ্যে এই মোকল-দ্রাবিড সংমিশ্রণের থিওরী মানিষা লইয়া বাঙালীর জাতীয় বৈশিষ্টোর ধ্যা তুলিয়া তাহাতেই আত্মপ্রসাদ লাভের বাবস্থা করিয়া লইলেন।

বাঁগারা ক্ল হইলেন উগোরা প্রতিকারের উপায় চিম্ভা করিতে লাগিলেন। প্রতিকারের উপায় চোথের সমুধে ছিল কিছু দেশে নৃত্তবিজ্ঞানের আলোচনার তথনও বিশেষ প্রচার হয় নাই। প্রতিকারের উপায় হইল বাঙালীর মধ্যে এই গোল মুণ্ডব্যের উৎপত্তির অন্য প্রকার ব্যাখ্যা।

বিজলে সাহেবের দিল্লাপ্তের ক্ষেক্টি বাহিরের ক্রাটর উল্লেপ করা ইইয়াকে: প্রথমতঃ, ভাষাবিজ্ঞানের এ সম্পর্কে যাগা বক্তব্য আছে তাহা তিনি সম্পূর্ণ উপেক্ষা করিয়াছেন। তারপর পঞ্চাবের ক্রমান্ত টাইপকে আর্ঘ টাইপ বলিয়া ঘোষণা করিবার মূলে রাহ্যাছে যুরোপীয় আর্ঘবাদের প্রবল্প প্রভাব। আ্যজ্জাতি যে লখামূপ্ত গোণ্ঠা ইই। যুরোপীয় আ্যবাদের স্বভাগিন্ধ সিদ্ধান্ত, যদিও যাহারা বাস্তবিক আদনাদিগকে আ্যব বলিত ভাহাদের মাধার মাপ লওয়া কোন নৃত্ত্ববিজ্ঞানীর পক্ষে এখন আর সম্ভব নহে। তারপর, যে সিধিয়ান টাইপের উল্লেখ তিনি করিয়াছেন সে টাইপটি আ্যালে কি তাহা অজ্ঞাত, কারণ সিধিয়ান কথাটির মত আ্রনিন্ট, অস্পত্র ও যথেক্ত ব্যবহারে জর্জবিত জ্ঞাতীয় সংজ্ঞাবাচক পদ প্রাচীন ইতিহাসে আর ঘিতীয়টি আছে কিনা সন্দেহ।

সে যাহা হটক, পূব-ভারতের মত পশ্চিম-ভারতেও গোলমুণ্ড টাইপের প্রাধান্ত দেবা যাব। রিজলে সাহেবের মতে এই অঞ্চলে জাবিড্গোণ্ডীর সহিত দিখিয়ানগোঞ্জীর সংমিশ্রণের ফলে এই গোলমুণ্ডের প্রাধান্ত আদিয়াছে।

তাহা হইলে দাঁড়াইতেছে পঞ্চাবে ও আরও উত্তরে আর্থ, যুক্তপ্রদেশে আয় ও লাবিড় সংমিশ্রণ, পূর্ব-ভারতে প্রাবিড়ের সহিত মোললীয় সংমিশ্রণ, পশ্চিম-ভারতে প্রাবিড়ের সহিত সিথিয়ান সংমিশ্রণ হইয়াছে ও দক্ষিণ ভারতে প্রাবিড় টাইপের প্রাধান্ত যে বৈদিক ও অবৈদ্ধিক আম্ব্রাতি সম্বন্ধে মতবাদের কথা বলা হটবে তাহা প্রদানতঃ পূর্ব ও পশ্চিম ভারতের অধিবাসীদিগের মধ্যে গোলমুগু টাইপের উৎপত্তির একটি নৃতন নৃত্ত্ববৈজ্ঞানিক ব্যাথা।

বিজ্ঞানের সিকান্ত প্রকাশিত হইবার পর বে প্রতিবাদের কলরব উথিত হইল ভাহ। বৈজ্ঞানিক রূপ পাইল প্রায় দশ বংসর পরে রমাপ্রসাদ চন্দের হাতে। তাঁহার প্রসিদ্ধ গ্রন্থে (Indo-Aryan Races, 1916) তিনি এই মত বাজ করিলেন যে পূর্ব ও পশ্চিম তারতে গোলম্ও টাইপের (brachycephaly) উৎপত্তি মোললীয় ও দিখিয়ান সংমিশ্রণ হইতে হয় নাই। হিন্দুকুশ পর্ব:তের উত্তর পামীরের উপত্যকাসমূহে বর্তমানকালে গোলম্ও আর্যভাষাতারী জাতি দেখা যায়। পামীরের পূর্বে তারিম অববাহিকায় ও আরও পূর্বে লপ মকভূমির বালুকান্ত,পের নিম্নে এক কালে সমৃদ্ধিশালী মহযা-বসতির যে সকল ধ্বংসাবশেষ আবিদ্ধৃত হইয়াছে তাহা আর্য গোষ্ঠার জাতির কীর্ত্তি বলিয়া ত্বীকৃত হইয়াছে তাহা আর্য গোষ্ঠার জাতির কীর্ত্তি বলিয়া ত্বীকৃত হইয়াছে। এই আর্ব গোষ্ঠা গোল মৃত্ত টাইপ এই আলপাইন টাইপ, ইহা দিখিয়ান নহে, মোকলীয়ও নহে। এই আলপাইন জাতি হইতেছে অবৈদিক আর্য জাতি।

ইতিহাস সাক্ষ্য দেয় অতি প্রাচীনকাল হইতে বিভিন্ন জাতি নানা অঞ্চল হইতে হিন্দুকৃশ অতিক্রম করিয়া ভারত-বর্ষে প্রবেশ করিয়াছে। বৈদিক আর্যজাতির সহিত ভাষা ও ক্লাষ্টর সম্বন্ধের দিক দিয়া এবং নৃতত্ত্বিজ্ঞানের স্ব্রেও দিক দিয়া পূর্ব ও পশ্চিম ভারতীয় গোলম্ও টাইপের উৎপত্তি সম্বন্ধে চন্দের এই ব্যাখা। এরপ সন্তোষজনক যে নৃতত্ত্ব-বিজ্ঞানীস্মাক্তে উহা সম্পূর্ণরূপে গ্রাহ্থ হইয়াছে।

বমাপ্রসাদ চল্দের প্রচারিত এবং প্রসিদ্ধ বৈদেশিক নৃতত্ত্বিজ্ঞানীদিগের খারা গৃহীত এই মতবাদ অন্তসারে ভারতবর্ধে তুই টাইপের ব! শ্রেণীর আর্যকাতি রহিয়াছে, এক শ্রেণী লম্বামুণ্ড ও অপর শ্রেণী গোলমুণ্ড। গোর্চালকণ বা ethnic stock হিসাবে এবং অক্যান্ত বিষয়ে পাথকা থাকিলেও এই তুই টাইপের জাতিকে আর্য বলিয়া বণনা করিবার হেতু কি পরে দেখা যাইবে। এখানে এই মাত্র বলিয়া রাখা যাইতে পারে যে চন্দের বক্তবা হইতে দেখা যায় যে গোলমুণ্ড জাতিকে ভিনি round-headed invaders of Aryan speech বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন।

যে ভাবে চন্দ স্বীয় মতবাদ প্রতিষ্ঠা করিবার চেটা করিয়াছেন তাহা হইতে যাঁহারা তাঁহার পরবর্ত্তী রচনার সন্দে বিশেষ পরিচিত নহেন তাঁহাদের সন্দেহ হইতে পারে যে তাঁহার পূর্ব ও পশ্চিম ভারতে alpine brachycephalyর মতবাদ সর কর্জ গ্রীয়ারসনের ভাষা সম্বন্ধ মতবাদের নৃতন্ত্ববৈজ্ঞানিক ভাষা মাত্র। চন্দ গ্রীয়ারসনের ভাষাতান্ত্বিক মতবাদের কাঠামোকে নিব্দে কাকে লাগাইয়াছেন ইহা সভ্য, কিছু ভারতবর্ষের ইতিহাসের এক অংশের যে ব্যাখ্যা ভিনি দিয়াছেন ভাহা মৌলক। এখন যে মতবাদ বৈজ্ঞানিক সমাজে সাগ্রহে গৃহীত হইয়াছে সংক্ষেপে ভাহার পটভূমির কিছু পরিচয় দেওয়া প্রয়োজন।

চন্দ শ্রুতি, স্থৃতি, পুরাণ হইতে প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়া দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছেন যে মধ্যদেশ ও ভাহার চারি-দিকের প্রতিবেশী অঞ্চলগুলির মধ্যে জাভিগত ও ভাষাগত পার্থক্য এবং সমাজ-ব্যবস্থার পার্থক্য অতি প্রাচীনকাল হইতে বর্তমান। এই পার্থক্য উহোর মতবাদের ভিত্তি। প্রকৃত অবস্থা কি দেখা যাউক।

মহুর মতে উত্তরে হিমালয়, দক্ষিণে বিদ্যাগিরি ও এই উভয় পর্বতের মধ্যস্থানে বিনশন দেশের পূর্বে ও প্রয়াগের পশ্চিমে যে অঞ্চল ভাহাকে মধাদেশ বলে। (মহু ২।২১)। বিনশন দেশ বলিতে যে অঞ্জে সরম্বতী নদী অভ্তিত হইয়াছে তাহা বুঝায়। সরস্বতী অম্বালার নিকটে সিরমুর রাজা হইতে বহির্গত হইয়া পাতিয়ালা রাজ্যে ঘাঘরের সহিত মিলিত হুইয়াছে। এখানে সুরুষ্টীর অন্তর্ধানের অর্থ সম্ভবতঃ ঘাণরের সহিত মিলন। ঐতরেয় ব্রাহ্মণের মতে (৮০১) মধ্যদেশের অর্থ কুরুপঞ্চাল দেশ। ধর্ম, সমাজ-সংগঠন ইত্যাদি এই কুরুপঞ্চাল দেশে সম্পূর্ণতঃ প্রাপ হয় এবং এই কেন্দ্র হইতে ব্রাহ্মণা কৃষ্টি পুর, পশ্চিম ও দক্ষিণে প্রসারিত হয় পত্তিতগণ এইরপ মত প্রকাশ করিয়া-ছেন। প্রধান আহ্মণগুলি কুরুপঞ্চাল দেশে বচিত ইইয়া-ছিল। এই দেশের ভাষা যজ্ঞামুষ্ঠান বিধি, আচার প্রভৃতির উচ্চ প্রশংসা, এই দেশের ব্রাহ্মণদিগের পাণ্ডিতোর খ্যাতি প্রাচীন শাল্পগ্রন্থাদিতে অনেক স্থানে বিধোষিত হইয়াছে। শতপথ ব্রাহ্মণের মতে বিদেহ রাজ্ঞদভার প্রসিদ্ধ ঋষি যাঞ্জ-বন্ধা পঞ্চাল দেশের বিখ্যাত পণ্ডিত উদ্দালক আফুণির শিষা৷

ব্রাহ্মণ্য রুষ্টির এই কেন্দ্রের পণ্ডিভগণের কেহ কেহ প্রাচ্য, পাশ্চাত্য ও উদীচ্য সকল দেশের সম্বন্ধে উপেকার ভাব প্রকাশ করিয়াছেন। ইহার মধ্যে প্রাচা দেশের প্রতি উপেক্ষাটা বেশী প্রকট। প্রাচ্য দেশ বলিতে পরবর্তী কালে কাশী, কোশন, বিনেহ ও সম্ভবতঃ মগধ বুঝাইত। কিন্তু প্রাচীনতম ব্রাহ্মণ শুলিতে বৈদিক ক্লষ্টির কেন্দ্র ছিল উদীচ্য বা সিল্পু উপত্যকা। কুরুপঞ্চাল বা মধ্যদেশ তথন ছিল প্রাচ্য। ভারপর বৈদিক কৃষ্টির কেন্দ্র কুরুপঞ্চাল দেশে সরিয়া আসিলে পূর্ব-ভারতীয় অঞ্চনগুলি প্রাচ্য দেশ বলিঘা পরিগণিত হইল। একদিকে কুরুপঞ্চাল ও অন্তদিকে কাশী. कानन, विरमह ও मगध-- এই हुई खकानत मध्य दाक-নৈতিক ও ক্লষ্টিগত বিবোধের ইন্সিড করা হইয়াছে কিছ রাজনৈতিক বিরোধের স্পষ্ট উল্লেখ বিশেষ পাওয়া হায় ন'। কাশীর রাজা ধুতরাষ্ট ভরতবংশীয় রাজা শতানীক সাত্রাব্যিতের হল্ডে পরাব্দিত হইলে কাশ্রগণ শতপথ বান্ধণের সময় পর্যন্ত পবিত্র অগ্নির প্রজ্ঞান বন্ধ রাখিয়াছিলেন এইরূপ একটা किश्ववसीय উল্লেখ পাওয়া यात्र। त्य यादा इक्टेक.

রাজনৈতিক বিরোধকে, অস্ত প্রত্যক প্রমাণের অভাবে, জাতিগত পার্থক্যের ফল বলিয়া গ্রহণ করা যায় না।

প্রাচীন ভরত ও পুরু গোষ্ঠী মিলিয়া পরবর্তীকালে কুক গোষ্ঠীর উৎপত্তি হয়। পাঞ্চাল জাতির উৎপত্তি প্রাচীন কবি, তুর্বশ, কর্ময়, কেশিন ও সোমক গোঞ্চীর ममराह्म। अवस्तिम देवकर्ग भाष्ठी कृति ও कूक्रिशक লইয়া গঠিত ছিল এইরূপ বলা হইয়াছে। ইহারা বাতীত মন্ত্র, উশীনর, চেদি, মৎস্য প্রভৃতি গোষ্ঠীকে यपारमर्भव यरपा (कह (कह धरवन। (कक्ष्रभन भोकारव বাস কবিতেন। প্রাচ্যদেশের গোষ্ঠীগুলি যে কুকুপাঞ্চাল গোষ্ঠা হইতে ভিন্ন জাতীয় ছিলেন তাহার কোন উল্লেখ पिथा यात्र नाः भाकि (फारनिकात यक अहे (य कुक्न भारति त লোক প্রাচ্যদেশগুলিতে অগ্রসর হইয়া উপনিবেশ স্থাপন করিয়াভিল: ডা: হেমচক্স রায় চৌধুরীর মতে জনমেজ্বয়ের অধন্তন কুৰু-রাজাদিগের আমলে কুৰুরাজ্য ভাশ্বিয়া পড়িতে থাকে এবং কুরুপাঞ্চাল গে'গ্রীর বহু সাধারণ লোক ও বাজ-বংশীয়গণ প্রাচ্যদেশে বদাত স্থাপন করে। এই সময়ে কুরু বা এরত বংশের রাজধানী কৌশাস্বীতে স্থানাস্তরিত হয়। কুফরাজবংশের পতনের পরে বিদেহ রাজবংশের আভাুদ্য হয় বিদেহের গাজা জনকের বংশীয়গণের হাত হইতে রাজশক্তি লিজুবীদিগের হাতে চলিয়া হায় ৷ কাশী, কোশল ও মগধের অভ্যুদয় ইহার পরের ইভিহান।

শতপথ বাদ্ধণের মানলে বাদ্ধণা কৃষ্টির কেন্দ্র কুরু-পঞ্চাল দেশ হইলেও দেশা যায় যে প্রাচ্য দেশ তথন এই কেন্দ্রের প্রভিদ্দিতা করিতে আরম্ভ করিয়াছে। বিদ্যার (বিদ্যের প্রাচীন রূপ) রাজা ও তাঁহার পুরোহিত গোতম রাজগণের সঙ্গে মন্ত্রি-বৈশানরের সরস্বতী নদীর অঞ্চল হইতে পূর্বদিকে আগমন ও সদানীর (গওক) নদীর তীরে আসিয়া অবস্থিতির যে পুরাণ শতপথে বণিত হইয়াছে ভাহাকে প্রাচ্নদেশে আর্থকৃষ্টি প্রচারের ইতিহাস বলিয়া পণ্ডিতগণ গ্রহণ করিয়াছেন। সদানীর বিদেহ ও কোশলের সীমনো বলিয়া পরিচিত ছিল। শতপথের আমসে বাদ্ধণাকৃষ্টি সদানীরের অপর তীরবর্তী অঞ্চলে প্রসারিত হইয়াছিল এইরূপ উল্লেখ পাওয়া যায়।

কিন্ত দেশ যায় যে অপেক্ষাকৃত আধুনিক শভপণেও প্রাচানেশেব মৃত দেই সংকার করিবার প্রথার নিন্দা করা হুইরাছে। ঐতরেয় আন্ধণে (৮।১৪) দেখা যায় পশ্চিম দেশীয় বাজানিগকে নীচ বৃত্তিরা উল্লেখ করা হুইরাছে। প্রাচাদেশের মধ্যে মগধের প্রতি উপেক্ষার ভাব বেশী প্রকাশ শাইয়াছি বলা হুইয়াছে। ম্যাক্ডোনেলের মতে বাজসনেতী সংহিতার পর্যন্ত এই উপেক্ষার পরিচয় পাওয়া যায় এবং করেকটি ভৌত স্ব্রে বিবেশের ভাব প্রকট হুইয়াছে। অথব্বেদের অক ও মগধ এবং বিভিন্ন শ্রোভ স্ত্রে বাভ্যন্তোমের বর্ণনায় মগধের অধিবাসীর উল্লেখ উপেক্ষা ও ঘুণার পরিচায়ক। একটি কৌতুকজনক ব্যাপার এই যে অর্বাচীন ও অথ্যাত পুরাণকার পর্যন্ত প্রাচীন যুগের মধ্যদেশ বাসীর অক্যান্ত অঞ্চলর প্রতি এই অবজ্ঞার ভাব অমুকরণ করিয়াছে:

অধ্ব বন্ধ কলিখাশ্চ পৌরাষ্ট্রং গুরুরিং তথা
আভীরং কৌম্বনিষ্টব দ্রাবিড়ং দক্ষিণাপথম্
জ্ঞাশ্চ মাগধশ্চৈব দেশনেতাংশ্চ বর্জয়েং।
কেন এই সকল অঞ্চল বর্জন করিতে হইবে তাহার উল্লেখ
নাই।

প্রাচ্যদেশ, বিশেষ করিয়া মগধের প্রতি মধ্যদেশবাদীর অবজ্ঞা ও বিরূপভার কারণ নানারূপে ব্যাখ্যা করা হইয়াছে। বাজনৈভিক কারণের উল্লেখ উপরে করা হইগছে।
একটি ব্যাখ্যায় বলা হইয়াছে যে এই অবজ্ঞার কারণ
মগধের লোকের আচার অন্তর্গানে নিষ্ঠার অভাব। ওলভেনবার্গের মতে মগধের অধিবাদী কোন কালে ব্রাহ্মণ্য-ধর্ম
পুরাপুরি গ্রহণ করে নাই। ম্যাকভোনেল ও কীথের মতে

"It is probable that the East was less Aryan than the West, and that it was less completely reduced under Brahmanical supremacy."

এখানে "less Aryan" সন্তবত: জাতিবাচক অথে ব্যবহার করা হইয়াছে। ওয়েবার মগধ সম্বন্ধে এইরপ মত পোষণ কবিছেন। তিনি বলেন যে মগধে আদিবাদীর প্রাধাক্ত ছিল। পাজিটরের মতে মগধে আর্থগণ সমুক্রপথে আগত এক দল ভিন্ন জাতির আক্রমণকারীর সমুখীন হইয়াছিল। মাাকভোনেল অক্তর্জ বে মত প্রকাশ করিয়াছেন ভাষা উপরে উল্লেখ করা হইয়াছে। এই মভামুসারে কুরুপাঞ্চাল জাতির লোক প্রাচ্য প্রদেশগুলিতে অগ্রসর হইয়া বসভি স্থাপন করে কিন্তু দ্রুতের জন্ম এবং আদিবাদীদিগকে সম্পূর্ণ বশীভূত করিতে অসমথ হওয়াতে তাহারা আগ্রনাদিশের প্রাচীন রাম্বণারুষ্টি হারাইয়া ফের্লিয়াছিল।

তাহা হইলে মোটাম্টি এ সম্বন্ধে পণ্ডিতগণের মত এই দাঁড়াইতেছে যে আঘন্ধাতি প্রাচ্যদেশগুলিতে বসতি স্থাপন করিয়াছিল কিছ নানা কারণে ব্রাহ্মণ্যকৃষ্টির কেন্দ্র কর্তৃক ভাষারা ব্রাভ্য বা পভিত বলিয়া গণ্য হয়। ম্যাকভোনেল ও কীথের ভাষারা একটি ইন্ধিত এধানে উল্লেখ করা প্রয়োজন।

"That the Kosala-Videhas were originally settlers of an adder date than the Kuru-Pancalas is reasonably obvious from their geographical position."

অন্তৰ্ভ

"The geographical position of the Kuru-Pancalas renders it probable that they were later immig ants into India than the Kosala-Videhas or the Kasis, who

must have been pushed into their most eastward territories by a new wave of Aryan immigration."

এই ই।খতের উল্লেখ পরে আবোর করা হঠবে।

এইবার রমাপ্রসাদ চন্দের মহবাদের আলোচনায় ফিরিয়া আসা যাউক। প্রাচীন সাহিত্যে প্রাচাদেশবাসীর প্রতি মধ্যদেশীয়দিগের অবজ্ঞার উল্লেখ, গ্রীয়ারসংনর ভাষা তাত্মিক গবেষণার ফলে Midland ও Outer Band এই তুই অংশে ভারতীয় আর্যভাষা অঞ্চলগুলির বিভাগ ও রিজ্লের আবিষ্কৃত পূর্ব ও পশ্চিম ভারতে গোলম্ও গোলীর প্রাধান্ত এইগুলি মিলাইয়া চন্দের মৃত্বাদ গঠিত হইয়াছে।

নিক্ষের মতবাদের ভিত্তি পত্তন করিতে গিয়া চন্দ বলিতেছেন,

"Not only social institutions and language but an important physical feature also, the shape of the skull, lends support to the testimony of the Sruti, Sairiti and Purana that the Indo-Aryans of the outer countries originally came of an ethnic stock that was different from the stock from which the Vedic Aryans originated."

এখানে বৈদিক আথ বলিতে তিনি সম্ভবতঃ মধ্যদেশবাদী কুকপাঞ্চাল জাতির কথা বলিতেছেন। কিন্তু শ্রুতি, শ্রুতি ও পুরাণের সাক্ষ্য হইতে এই পুণক জাতীয়তার মত্বে বিশেষ সম্পতি হয় না উপবে ভাষা খানিকটা দেখা গিয়াছে, পরে আরম্ভ বিশ্বভাবে দেখা ঘাইবে। অভ্যন্ন বৈদিক আয়াজাতির প্রিবতে তিনি "হিন্দুখানী" কথাটি ব্যবহার করিচাছেন। তিনি বলিত্তেন,

"To account for the linguistic, social and physical difference between the Hindusthanis on the one hand and the Indo-Aiyans of the outer countries on the other, we have to assume the immegration of round and medium-headed invaders of Aryan speech in the pre-historic period."

ভাষা, স্থান বাবাৰ ও দৈহিক লক্ষণের যে পাথকার উল্লেপ করা হইতেছে তাহার সম্বন্ধ সংক্ষেপে তুই একটা কথা বলা দরকার। ভাষার পাথকা প্রাচীন সাহিত্যের সাক্ষের ছারা বিশেষ প্রমাণিত হয় না, ইহা প্রমাণিত হয় পরবাহী সাহিত্যের সাক্ষ্যে ও গ্রীয়ারসনের ভাষার শ্রেণী বিভাগের ছারা। ভারতীয় ভাষাসমূহের শ্রেণী বিভাগের বিভারেত বর্ণনার মধ্যে না ষাইয়া সংক্ষেপে বলা ষায় হে ভারতবর্ষের ভৌগোলিক সীমানার মধ্যে ব্যবহৃত আর্য ভাষা ছইটি প্রধান শাখায় ভাগ করা হইয়াছে। ইন্দো-এরিয়ান ও দিকি । দর্দিক-শাখার খোয়ার, দরদ ও কাফ্রিয়ী ভারতবর্ষের উত্তর-পশ্চিম অঞ্চলের চিত্রাল প্রভৃতি অঞ্চলে, কাশ্মীরে, নিলনিট এক্ষেণ্টী অঞ্চলে, কোহিছানে এবং হিন্দুক্শের কাফ্রির উপলাভির মধ্যে প্রচলিত। এই দরদ শাখার প্রচলিন নাম পিশাচ ভাষা। ইন্দো-এরিয়ান শাখার উপশাখাওলির মূল সংস্কৃত, ইহাদের পরস্পরের সম্বন্ধের মধ্যে

বিভিন্ন শুব আছে এইমাত্র বলা যায়। প্রাচীন সাহিত্যে ক্যন উদীচ্যের ভাষার বিশুদ্ধভার প্রশংসা, কথন মধ্যদেশের ভাষার প্রশংসা দেখা যায়। প্রাচ্য নেশাদির ভাষা সম্বন্ধে স্থে অবজ্ঞার ভাব লক্ষ্য করা যায় তাহা ব্রাহ্মন্যকৃষ্টির কেল্কের পত্তিতগণের পক্ষে তেমন অমার্জনীয় নহে এবং তাহাকে ভাষার শুক্তর বা মৌনিক পাথক্যের প্রমাণ বলিয়া গ্রহণ করা যায় না।

সমজে বাবস্থাঃ দিক দিয়া ইহা স্বীকার্য যে চারি বর্ণের বিভাগ পূর্ব ও পশ্চিম ভারতে ত্বল দেখা যায়। ইহাকে পুথক জাভিত্বের প্রমাণ বলিয়া বহোৱা মনে কংলে তাহাদের দৃষ্টি প্রাঠীন সাহিত্যে উল্লেখিত ছুই একটি ঘটনার প্রতি আঞ্চ করা ঘাইতে পারে। বিশা মতের বংশীয়গণ কি করিয়া পুলিন্দ, শবর, অন্ত্র, পুণ্ড ও সুভিবনিগের পুণ-পুরুষ হইতে পারেন ভাগো ব্যাথা পাওয়া যার না, কিন্তু ঐতবেয় ব্রাহ্মণ ২ইতে আরম্ভ করিয়া অনেক গ্রন্থে এই করা वना बहेबारक . यवन, भहा भावत, भरूत, ठीन (मान्यक्र ক্ষত্রিয়ের করা মন্ত্র কি নিসারে বলিতেতেন গুভারপর একটি निर्मिष्ठे अकृत्न উপनिविष्ठे आरकाल्य १०वि अल्ला भारता হে সমাজ-বাবজা গড়িয়া ডঠিগছিল বলিগা মনে করা ২য় অক্তাক্ত অংশে সেই ব্যবহা পুমাপুরে গুণত বইছা না থাকিলে উচা দেই সকল অংশের বিজ্ঞাত ঘল প্রমাণিত করে ইলাকি কবিলা মানিয়া লওৱা যাত্র গুভাষা ও সন্দি ব্যবস্থার পর্যেক্যের উপর চন্দ এত জোর দিয়াচেন কেন भद्र (म्या शहेर्य।

ভারণর নৈহিক লক্ষণের পাথকা। আনে রাগা প্রয়োজন যে, যে দৈহিক লক্ষণের পাথকার কথা বলা হয় ভাহা শুরু মন্তকের আঞ্চিত্তে সামাবদ্ধ, গাগ্রবর্গ, নাদিকার আকৃতি, কেশ, চক্ষু ভারকার বর্গ, দৈঘা প্রভৃতি লক্ষণের পার্থকার কথা বলা হয় না। কিন্তু এখানেও দেখা ঘাইভেছে যে চন্দ্রখীকার কবিভোছন যে, গোলমুগু আর্যজ্যতির মন্তকের আঞ্চিতি নিষাদ, বৈদিক আর্য ও জাবিভূগণের সংমিশ্রণে পরিবভিত ইইয়াছে। "In India this type (অর্থাৎ আল্লাইন টাইপ) has turned into mesaticepyalio Indo-Aryan of the outerland by Nisada, Vedio Aryan and Dravida admixture."

এখন চন্দের গোল এবং মধ্যমাকৃতি মুণ্ডের আর্থ-ভাষাভাষী আক্রমণকারীদিগের প্রসঙ্গে আসা যাউক।

এই গোলমৃত আক্রমণকারিগণ বিভিন্নদলে ভারতবর্ষে প্রবেশ করে। এ সম্বন্ধে চন্দের বক্তব্য সংক্ষেপে এইরপ: প্রথম দল গাল্বেয় উপত্যকার প্রবেশ করে। অপর একটি দলের মধ্যে রাষ্ট্রিক বা রাষ্ট্রগণ ছিল। ইহাদের নাম হইতে মহারাষ্ট্র ও সৌরাষ্ট্র দেশের নাম আসিয়াছে। আর একটি

দলের মধ্যে ছিল পঞ্চাবের বাহীকগণ। সর্বশেষে আসে পিশাচ নাষাভাষী কাশ্মীর, দর্দিন্তান ও কাফিরান্তানের অধিবাদী ৷ এই গোলকুও আক্রমণকারীরা দিল্প উপত্যকার বৈদিক ক্লষ্টি প্রায় ধ্বংস করিয়া দেয়। পরবর্তী একখানি গ্ৰাম্ব (Inclus valley in the Veclic Period) চ-ৰ সূত্ৰ সাহিত্য হইতে কতকগুলি বচন উদ্ধৃত ক্রিয়া এই আক্রমণ-কারীদিগের তালিকা আরও সম্পূর্ণ করিতে চাহিয়াছেন। বৌধায়ন শ্রেভি সংক্র (১৮/১০) অর্ট্র, গান্ধার, সৌবীর, কারস্কার, কলিক্ষের নাম আছে। চন্দের ব্যাখ্যা মতে ইহারাই alien immigrants, যাংগদের আক্রমণে উभौट्डाव देवनिक कृष्टि विम्रहे अग्र अवर भशासम आमाना कृष्टिव কেন্দ্র ইইয়া দাঁড়ায়: বৌধায়ন ধর্ম ক্রেছে (১.১.৩২-৩১) বলা ২ইভেচে যে অন্ত, অন্ত, মগ্ৰ্ম, সৌৱাই, দক্ষিণ উপবৃত, ফিন্ধু ও দৌবীরগণ মিশ্র জ:তি। যতারা অরট, কারস্থার, পুড়, দৌবাৰ, বন্ধ, কলিন্ধ ইত্যাদি দেশে গমন করে তাহা-দিগকে দ্বপৃত্তি যাগ করিছে ইইবে।

্ণন অক্রেন্ধারাদ্দের যে স্কল জাতি গালেয় উপতাকায় প্রবেশ করে ভাগেদের নাম চন্দ উল্লেখ করেন নাটা সভবত: ইহারাই খল, বল, মগধ, কলিজ প্রভৃতি পুর্ব দেশীয় জাতি। সংস্কৃত স্থাইতো ইহাদের স্থিত গান্ধাবের একর উল্লেখ দেখা যায় এই ছেত্তে তাঁহার মতে গ্ৰেপ্ৰপূপ ও ইহাকা সম্ভাৰতঃ এক গোষ্ঠায় ("of the same stock)।" अथ्य (व्यन् (क्यन्) नाम (त्र व भूष भूमा कनिक, वास्त्रीक, भगतून । भूकवर्रामात्रत उत्सव (मधा यात्र । ছিতীয় দলের মধ্যে চনৰ শুধু রাষ্টিকগণের নাম করিয়াছেন। আলোকের শিলালিবিছে (Asoka Edicts V and XIII) রাষ্টিক পণের সঙ্গে ভোজ, আদ্ধাও পুলিন্দগণের নাম উল্লাখিত हरेबाह्य। धे रदाब बाकान (११४৮) याबात अस अ পুলিন্দের দলে পুগু, শবর ও মৃতিংদিগের উল্লেখ याय। भार्क ७५ भूबार्ग भूनिन्ना मर्गिय मरन भू छ क, रक्तन, কলিখ, আছু, আভীৱ, বিদর্ভ ও কুগুল প্রভৃতির একত্র উল্লেখ দেখা যায়। বিষ্ণু পুরাণ পুলিক্দিগের সঙ্গে এক मित्क (डाइ, म्यार्न, ८५कन, छेरकन ও अन्न मित्र अ করুষের একত্র উল্লেখ করা হইয়াছে। ভোদ্ধাণ বিদর্ভে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল এবং সাত্তর্গণ তাঁহাদের অধীন ছিল। সাত্বত, বৃষ্ণি ও অন্ধকগণ এক জাতির শাখা। বৃষ্ণিগণের উল্লেখ ঋগেদে পাওয়া যায়। মংস্ত পুরাণের মতে ভোজ-গণের সব্দে হৈহয়গণের সম্বন্ধ ছিল। মহাভারতের মতে (১৮৫) ভোগগণ (বৈভোগ) ঋষেণীয় জ্বা গোষ্ঠী হইতে উদ্ভত। জ্বন্ধাতির পুত্র। অপর তিন পুত্র যহ, অহ ও পুরু হইতে যবন জাতি, শ্লেক্ত জাতি ও পৌরব বংশের छेर पछि इहेबाहि। वीधावन श्रुत्वत अवदेशान कथा উপরে উল্লেখ করা হইয়াছে। মহাভারতে স্বারট, জর্তিক, বাহীক প্রভৃতির এক সঙ্গে উল্লেখ করা হই-য়াছে। বাহীকদিগের একটি নাম জ্ঞতিক। ইহাদিগের প্রধান নগর শাহল। মহাভারতে বাহীকদিগের বিশেষ করিয়া বাহীক স্ত্রাদিগের বর্ণনা ঘোরতর বস্তুভান্তিক। বাহীকগণ গৌড়ী স্থরা, লগুনের সহিত ভূট ঘব, অপুপ ও গোমাংস ভক্ষণ করিত। (৮.৪৪,১১) বাহীক কামিনী-গণ মন্ত, বিবস্ত্র ও মাল্যচন্দ্র বৃহিত ইইয়া নগরের গৃহপ্রাচীর সমীপে নৃত্যা এবং গর্দত ও উদ্বের ক্যায় চীৎকার ক্রিয়া অল্লাল স্থাত ক্রিয়া থাকে। বাহীক্দিগের বর্ণনা, বাতাানাং দাস্মীঘানাং বাহীকানাম্ছান্ম। যাইতেছে বাহীকলিগকে ব্ৰাভ্য, দাধ ও অ্যজান বা যজ্ঞীন বলা ইইভেছে। ঋগেদে। ঋগেনাগোর কালে অংজান কথাটির দহিত বিশেষ প**্রতয় হইয়াছে। বাহীকদিগের সঞ্চে** कादखाद, माहिषक, कालप, द्यदन, कटकाउँकिमिनटक धर्म-বজিত বলা ইইয়াছে। বাহীক্দিগের মত কুংসিত আচার প্রাত্ত্র, মানু, গান্ধার, ধশ, বণাতি, সিন্ধু ও দৌবীর দেশেও প্রচলিত।

दाशोकिनिराग्य मश्रद्ध अकडी। वर्ष्ठ मःवान मशानाद्रत्ज দেওয়া হল্পাছে। আরইদিগের প্রেরা ধনাবিকারী না হইয়া ভাগিনেমঝা ধনাধিকারী হয় (ভাগহর। ভাগিনেমান श्वतः)। वःशोद, भएक छ भाक्षतमित्रित छूलनाम कूक, প্ৰাল, খাল, মংজ, নৈমিষ, কোশল, কাশী, পৌও, কলিঞ্চ, মগ্ৰ ও চেনি প্ৰভৃতি দেশের অসাধু বাজিবাও ধর্মজ ইইয়া থাকে এইরূপ বলা হইতেছে। পানিনি বাহাক সঙ্গের (republic) সঙ্গে মালবা ও খৌছকাদিলের উল্লেখ করিয় ছেন। ইহারা গ্রাক ঐতিহাদিকদিগের Mulloi ও Oxydrakoi ; শতপথ ব্রহ্মণে বাহীক্দিগের উল্লেখ ক্রিয়া বলা হট্যাছে যে ভাহারা আগ্রকে ভব নামে উপাদনা কারত এবং প্রাচ্যানশে দ্ব নামে অগ্নি উপাসিত হইতেন। মহাভারতের কয়েকটি তালিকার্য বাংলাক জাতির উল্লেখ দেখা যায়। কেহ কেহ এই বাহলীক ও বাহীক অভিন্ন মনে করেন। দিগের সঙ্গে কোন কোন তা লকায় কাশ্মীর, দির গৌবীর, গান্ধার, দর্শক, উলুত, অভীণার ও শৈবল দেশীগদিগের উল্লেখ দেখা যায়। জ্যোণপর্বে কাশ্মীরকগণের দঙ্গে মুদ্যাল, কাথোজ, দরদ, ত্রিগর্ড, মালব প্রভৃতি দেশ এবং ধশ, শক ও যবনগণের উল্লেখ পাওয়া যায়। এই ভালিকায় পিশাচ বলিয়া একটি জাতির উল্লেখ পাওয়া যায়। বিষ্ণুপুরাণে দরদদিগকে আভীর ও কাশ্মীরকের সঙ্গে একত্র উল্লেখ করা इडेशरङ ।

এই বিবরণ আব না বাড়াইয়া বলা ধায় যে দকিণ

ভারতীয় বৌধায়ন মতের ধর্ম ও শ্রোত স্ত্রের যে ধরণের প্রমাণকে তৃষ্টি পৃথক গোটীর আর্থজাতির ভারতবর্ধ আক্রমণের মতবাদ প্রতিষ্ঠার অক্সতম স্ত্রেরণে রমাপ্রদাদ চন্দ গ্রহণ করিয়াছেন সেই প্রমাণের মৃল্য খুব বেশী নহে। বৌধায়ন স্তরেসমূহ ধর্মন রচিত হয় সন্তবতঃ সেই সময়ে উত্তর ভারতের রাজনৈতিক কর্মকেন্দ্র মগুধে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। ব্রাহ্মণাক্রম্ভির কেন্দ্রগুলি একটি নির্দিষ্ট ভৌগোলিক অঞ্চলে আবদ্ধ না থাকিয়া অতি প্রাচীনকাল হইতে দেশের বিভিন্ন অঞ্চলে ছড়াইয়া ছিল। এইরপ না হইলে ১০০০ বংসর দেশের প্রধান রাজশক্তি অভারতীয় ধর্মাবলন্ধীদিগের হত্তগত থাকিবার পরে দেশের প্রাচীন ধর্ম ও কুষ্টির ধারা প্রাণ্যক্ষ থাকিত না।

রাম্বলা কৃষ্টির কেন্দ্রসমূহ বিভিন্ন অঞ্চলে প্রতিষ্ঠিত থাকিলেও প্রাচীন ঐতিহ্যের ক্লাসরক্ষরণ আচার অফুষ্ঠানে নিষ্ঠার উপর সতর্ক দৃষ্টি রাখিতেন এবং দকল রকম ব্যতিক্রমকে শ্লেচ্ছাচার বলিয়া আক্রমণ করিতেন। উপরে একত্র উল্লিখিত বিভিন্ন জাতির তালিকায় যে গ্রহিল চোথে পড়িবে দন্তবতঃ তাহার কারণ এইরূপ। এই ধরণের আক্রমণ ও নিন্দাকে বৈজ্ঞানিক হিসাবে race বলিতে যাহা ব্রায় ভাহার পার্থকাস্চক প্রমাণরূপে ব্যবহার করিলে ভল করা হইবে কিনা ভাহা বিচার্য।

সে যাহা হউক, দেখা যাইতেছে যে গালেয় উপভ্যকার व्यक्षितानी, शक्षारवद ताशीकरान अ निनाह ভाষাভাষী प्रवहरान আক্রমণকারী দলস্মূহের মধ্যে ছিল এইরূপ চন্দের মত। हेशवा मकलारे जालमुख, व्यायं जायाजायी व्याक्रमणकाती। ইহাদের সহিত আর কে:নু কোনু দল ছিল ভাষা নির্দাংণ ক্রিতে গিয়া "একত্র উল্লেখে"র :য পুত্র চন্দ বাবহার করিতেছেন সেই সুত্রাকুসারে বিচার করিলে দেখা যায় যে ঠক বাঙিতে গাঁ উজাড হট্যা যায়। মহাভারত ও রামায়ণের ্ষুণে সিদ্ধনদের পশ্চিম ও পূর্বভীরবভী আভিঞ্জলি, পঞ্চাব হিমালয়ের বিভিন্ন জাতি, পশ্চিমের ফিল্পােরীর প্রভৃতি জাতির ভালিকা ও অ্যার অঞ্চলের জাতিসমূহের সহিত ভাহাদের সম্বন্ধের ইতিহাস বিচার করিলে এ সম্বন্ধে নির্ভর-যোগ্য স্তর পাওয়া কঠিন। মধ্যদেশের শুর্দেন গোষ্ঠীয়গণ পশ্চিম ভারতে উপনিবেশ স্থাপন কবিয়াছিল ইহা প্রসিদ্ধ কিন্ধ দেখা যায় যে বৃষ্ণি ও অন্ধকদিগকে মহাভারতে ব্রাভ্য বলিয়া বৰ্ণনা কৰা হইতেছে।

এই বিচার ছাড়িয়া দেখা যাউক নৃতত্ত্বিজ্ঞানীদের মতে কোন্ পথে গোলমুগু আর্থ আক্রমণকারিগণ ভারতে প্রবেশ করিয়াছিল। এই প্রসঙ্গে শ্বরণ রাখিতে হইবে যে গোল-মুপ্তের প্রাধান্ত যে অঞ্চলে দেখা যায় সেই দকল অঞ্চলের মধ্য দিয়া আক্রমণ ঘটিয়াছিল এইরূপ অস্থমান করা হইয়াছে।

দেখা যায় যে পগুতগণের এক দলের মত এই যে গোলমুগু গোষ্ঠীর জাতিগুলি, বেল্চীস্থান ও সিদ্ধ হইতে কচ্ছ, अकवार, मिक्किन भावाठी स्मर्मात्र भेषा मित्रा मिक्किन भन्तिरभ কুর্গ পর্যন্ত অগ্রসর হইয়াছিল। ভারপর দক্ষিণের মাল্ডুমির मधा निया कुरू। ও গোদাবরী নদীর মধাবতী অঞ্চলে পূর্ব উপকৃল পর্যন্ত পৌছে। পূর্ব উপকৃলের এই অঞ্চল হইতে ভাগারা বন্ধ ও বিহারে অগ্রসর হয় ৷ চন্দের মত এই যে ইহাদের প্রথম দল গালেয় উপত্যকার উত্তর অংশ বৈদিক আর্যগণের অধিকৃত দেখিয়া মধ্য ভারতের মালভমি অতিক্রম করিয়া বিহারে উপস্থিত হয়। ডা: ২।টনের ব্যাখ্যা এই ষে এই গোষ্ঠার কয়েকটি দল পশ্চিম উপকৃল বাহিয়। কুর্গ পর্যস্ত অব্যাসর হয়। অপর কয়েকটি দল অগ্রগ্রামী বৈদিক আর্যদিলের চাপে গাজের উপতাকা বাংয়া বঙ্গদেশ পর্যন্ত অগ্রসর হয়। "Where the Bengali element seems very definitely intrusive, forming a wedge between Assam and Orissa," এপানে লক্ষ্য করিছে इहेरव करेविषक व्याध्यान रेविषयः कार्यशालव शूर्व के शरत ভারতবর্ষ আক্রমণ করিয়াছিল ইহা লইয়া মন্ট্রেধ দেখা याहेरल्टा । अभवस्य भारत वन्ना इहेरल्टा अहे अमरक স্মরণ রাখিতে চইবে যে নৃতত্তিজ্ঞানীদিগের মত এই যে যাহাদিগকে গোলমুও ইন্দো-এরিয়ান জাতি নামে অভিচিত করা হইয়াছে ভাষারা ছাডাও তেলেজ, কানাডী ও ভামিল ভাষাভাষীদিণের মধ্যে বছসংখাক গোল বা মধামাকৃতি (round or medium-headed) মুখের লোক দেখিতে পাওগে যায়।

উপরে উল্লিখিত মঞ্লগুলির বর্তমান অধিবাসীদিগের মধ্যে কাহারা এই গোলমুও বা অবৈদিক আর্বজাতির বংশধর কোন কোন নৃতত্ত-বিজ্ঞানী তাহাও বলিয়া দিয়াছেন। হাটনের মতে প্রস্থু, মারাঠা, কুনবী, বিল্লবা, কুমী, কাপু প্রভৃতি এই গোলমুও আর্যদিগের বংশধর। হাটনের আর একটি মত উল্লেখযোগ্য। তিনি বলেন কুনবী, কুমী কাপু প্রভৃতি কৃষিজীবী জাতি যাহারা গোলমুও আক্রমণকারী-দিগের বংশধর তাহারা ইরাণের প্রাচীন অধিবাসী তাজিক জাতির প্রতিনিধি। এগানে চন্দের অবৈদিক আর্যদিগকে তাজিকদিগের সহিত সম বা এক গোঞ্ঠার বলিয়া মত প্রকাশ করা ইইতেছে ইহা লক্ষ্য করিতে হইবে। চন্দ্ অবৈদিক আর্যদিগকে প্রাচীন ইরাণীদিগের সহিত সম্পর্কিত বলিয়া মনে করেন না।

व्यतिमिक व्यक्तिरावं ভाরত व्याक्रमावंत्र मध्य मध्य

মত হৈখের কথা বলা ছইয়াছে। এ সম্বন্ধে বলা যায় যে একা বুমাপ্রসাদ চন্দ বাড়ীত এঞায় নৃতত্বিজ্ঞানী, যাহ্মবা তাঁহার অবৈদিক, গোলমুও মার্যজাতির ভারতবর্ষ আক্রমণের মতবাদ গ্রহণ কবিলাছেন, উাহাবা এই মত পোষণ করেন যে এই জাতি প্রথমে ভারতবর্ষে প্রবেশ করে তার পরে বৈদিক আর্থগণ ভারতবর্ষ আক্রমণ করে। হাটন প্রমুগ একদদ পণ্ডিতের মতে এই গোলমুগু খার্যভাষা ভাষা ভাতির আক্রমণে দিল্প উপত্যকার ভাশ যুগের সভাতা ধ্বংস হয়, পরে বৈদিক আর্যজাতি ভারতবর্ষে প্রবেশ করে। রমা প্রসাদ চন্দের মত কভকটা এইরূপ যে সিন্ধসভাতা ধ্বংস হয় বৈদিক আর্থগণের আক্রমণে এবং উত্তর ভারতে বৈদিক कष्ठि विमन्ने वय चरिविषक चार्यभागत क्यांगल चाक्यांगत ফলে: বর্তমান প্রবন্ধে এ সম্বন্ধে আলোচনায় আর অধিক অগ্রসর ন। হইয়া এইমাত্র বলা ঘাইতে পারে যে উপরের তুইটি মতের মধ্যে যে মতই গ্রাহ্ম হউক ইহা বুঝা ঘাইডেছে বে আৰ্থ জড়ি সিন্ধুসভাতার সংস্পর্শে আসিয়াছিল।

চন্দ মধ্য দেশ ও চতুপার্যবতী অঞ্চলের (Outer Band) এধিবাসীদিগের মধ্যে লাষা ও সমাজব্যবস্থার পার্থক্যের উপর শতঃধিক জোর দিয়াছেন উপরে এই কথা বলা হইয়াছে। এইরূপ করিবার একটি কারণ বৈদিক আর্ধগণ, অবৈদিক আর্ধগণের পূর্বে ভারতবর্ষে প্রবেশ করিয়াছিল, এই মত প্রতিষ্ঠা করিবার প্রস্থাস।

গোলমুগু অবৈদিক আর্বজাতি একদা ভারতবর্ষ আক্রমণ ক্রিয়াছিল এই মতবাদের পটভূমির ও আহুষ্কিক প্রশ্ন-শুলির পরিচয় দেওয়া হইল। এই মতবাদের ফলে মন্তকের গঠন, ভাষা, সমাজ ব্যবস্থায় ও কৃষ্টিতে পরস্পর হইতে ভিন্ন তুইটি আর্ধগোষ্ঠীর পরিচয় পাওয়া হাইতেছে। এই তুইটি আর্যজাতির গোষ্ঠী (ethnic stock) ভিন্ন, উৎপত্তির স্থান ভিন্ন, ভারতবর্ষে প্রবেশের সময়ও ভিন্ন। এখন প্রশ্ন উঠে, এই তুইটি গোষ্ঠীৰ মধ্যে এত পাৰ্ধক্য সত্ত্বেও উভয় লোগ্রীকেই আর্য বদা হইতেছে কেন ? বৈদিক আর্থগণের সম্বন্ধে বলা যায় যে ঋথেদে তাঁহারা আপনাদিগকে আর্থ বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। কিছু অবৈদিক আর্থগণের আর্যন্তের ভিত্তি কি ? গোলমুগু আক্রমণকারীদিগকে যে সকল পশুত আর্য বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন তাঁহাদের বক্তব্য विश्लावन कवितन मिथा यात्र छाहाता आर्थ-ভाষাভाষী हिन, ইহাই ভাহাদের আর্যন্তের একমাত্র দাবি। ভাহা চইলে চন্দ ভাষার পার্থক্যের উপর যে জোর দিয়াছেন তাহা অনাবশুক ব্লিয়া দেখা যাইডেছে। ইহার পর অঞ্জ প্রশ্ন উঠিবে। ছুইটি এডগুলি বিষয়ে পুথক গোঞ্জীর জ্বাভির মধ্যে এই ভাষার ঐক্য কি ভাবে আসিল? সমাজ ব্যবস্থা, কৃষ্টি ও ধর্ম—নিরপেক ভাষার ঐক্য কি ভাবে সম্ভব ? ছইটি

পৃথক গোষ্ঠীর জাতির যদি দে কালে এক ভাষাভাষী হওয়া সম্ভব ভিল তাগা হইলে ভাষা বিজ্ঞানের দিকান্তের সাহায়ে নৃত্তবিজ্ঞানের মতবাদ গঠন করা কি নিরাপদ ৫ ইত্যাদি।

এই সকল প্রশ্ন এড়াইয়া বৈদিক ও অবৈদিক আর্থ জাতির মতবাদের আলোচনায় কিবা থাউক। এই মত-বাদের পটভূমির যে থালোচনা উপরে করা হইয়াছে ভাহাতে আর এই একটি কথা যোগ করিতে হইবে।

বৈদিক ও অবৈদিক আর্থজাতির নৃতত্ত্বৈজ্ঞানিক সংজ্ঞালঘমুগু এবং গোলমুগু (dolichocephalic ও brachycephalic)। রমাপ্রসাদ চল ও তাহার মতের সমর্থনকারী নৃতত্ত্বিজ্ঞানীগণ পূব ও পশ্চিম ভারতীয় গোলমুগু গোষ্ঠীর ছাতিসমূহ যে সিথিয়ান বা মোজলীয় নহে তাহা প্রতিপন্ন করিতে গিয়া প্রচলিত আর্থাদে বা আ্যদিগের নৃতত্ত্ব-বৈজ্ঞানিক সংজ্ঞাটি মানিয়া লইয়াছেন। বিনা প্রশ্নে ইহা স্থীকার করিয়া লওয়া হইয়াছে যে বৈদিক আ্যগণ লম্বামুগু গোষ্ঠীয় এবং উত্তর ভারতের লম্বামুগু গোষ্ঠীর আ্রথভালাভাষী জ্ঞাভিগুলি ইহাদের বংশধর। বৈদিক আ্যগণিত সম্বন্ধে এই প্রচলিত মতবাদ প্রাপ্রি গ্রহণ করিবার ফলে গোলমুগু গোষ্ঠীকে আ্যজাতি কিন্ত "অবৈদিক" বলিয়া প্রতিপন্ধ করিবার জন্ম অনেক কথা বলিতে হইয়াছে।

এই মতবাদের নৃতন্তবৈজ্ঞানিক ভিত্তি পরীক্ষা করিবার অবদর এথানে নাই। এ সম্বন্ধে বিন্তারিত আলোচনা বর্তমানে মূলতবী রাধিয়া সংক্ষেপে এইটুকু বলা যাইতে পারে যে বৈদিক অংগগণ,—ঠাহাদের ৩০০০ বংসরের পুরের উত্তর-ভারতীয় বংশধরদিগের কথা ছাড়িয়া দেওয়া যাউক, যে লম্বামুগু গোষ্ঠায় ছিলেন এই মত নৃতন্ত্বিজ্ঞানের ভথার দ্বারা প্রমাণিত নহে, ইহা দাড়াইয়া খ্যাছে ভুগু প্রেষ্টকের উপর। যদি মন্তকের গঠনের মত একটি প্রধান গোষ্ঠায় লক্ষণে ছুইটি দল পুণক বলিয়া স্বীকার করা হয় ভবে প্রকৃত আর্য কাহারা ছিল গু নৃতন্ত্বিজ্ঞানীগণের ভাব এ সম্বন্ধে অত্যন্ত অম্পন্ত। মনে হয় একটিকে তাহারা racially আর্য ও অপরটিকে ভাষায় আর্য বলিয়া মনে -করেন। তাহাদের হাতে আর্যপদের এইরপ ব্যবহার বিজ্ঞানসম্বত নহে, সম্ভোষজনকও নহে।

আধদাতির দৈহিক লক্ষণ (ethnic characteristics)
সম্বন্ধে সঠিক ধারণা করিতে হইলে বাহারা আপনাদিগকে
আর্থনামে অভিহিত করিত তাহাদের প্রাচীন বাসম্বানের
দিকে দৃষ্টি ক্রাইতে হইবে, উরল পর্বতের দক্ষিণপূর্বে দৃষ্টি
আবদ্ধ রাখিলে বিশেষ ফল হইবে না। আর্থজাভির এই
প্রাচীন বাসভূমির নাম আইরিয়ানা। এই আইরিয়ানা
হইতে আর্থপদ আসিয়াছে।

অভুমান করা যায় যে অভি প্রাচীন মুগে, ঝাখেদ ও

জেন্দাবেন্তা রচিত হইবার বছ পূর্বে, এই বাসভূমি হইতে আর্বজাতি পশ্চিম, দক্ষিণ ও পূর্ব অঞ্চল ছড়াইয়া পড়িয়া-ছিল। ঝথেদের প্রমাণ হইতে এইরূপ অনুমান কর: যায় বে ঋরেদীয় ঋষিকুল যুখন ষমুনার পশ্চিমে বাস করিতেন আর্বনাতি ও আর্যকৃষ্টি তাহার পূর্বে পূর্বভারতে প্রসারিত इरेबाहिन। गाकर्षात्म ७ कीरथव कानी, कानन ७ বিদেহ এবং কুরুপঞ্চালের আর্যবস্তির প্রাচীনত্ব সম্বন্ধে যে ইলিভের উল্লেখ উপরে করা হইয়াছে ভাহা এই প্রসঙ্গে বিশেষ তাৎপর্যপূর্ণ। যজীয় দক্ষিণাসম্ভার লইয়া বিশামিত্তের পূর্বদিক হইতে শতুদ্রি ও বিপাশা অতিক্রম করিবার কাহিনী ভাৎপর্যহীন বলিয়া উড়াইয়া দেওয়া যায় না। শতপথ ব্রান্ধণের অগ্নিবৈশ্বানরের পূর্বদিকে অভিযানের কাহিনীকে প্রচলিত ব্যাখ্যা মতে আর্যসভাতা বা আর্যজাতির বিস্তৃতির ইতিহাস বলিয়া গ্রহণ না করিয়া মনে করা যাইতে পারে ষে এই প্রাচীন কাহিনীর ভিত্তি একটি প্রাচীনতর কিম্বন্তী এবং যাহাকে আর্থসভাতা বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে উহা বাষ্টবিক ব্রাহ্মণ্যকৃষ্টি: ব্রাহ্মণ আয় হইতে পারেন কিন্তু সকল আর্থই ব্রাহ্মণ নহেন। পারখ্যের হাকামণি শ্রাট প্রথম দারিযুদ খ্রীঃ পৃ: ৫ম শতকে আপনাকে আর্থ বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন।

দির্সভ্যতার প্রাচীনত্ব সহত্বে পণ্ডিতগণ যে সিদ্ধান্তে আদিয়াছেন তাহা সঠিক হইলে দেখা যায় যে চন্দ যাহানিগকে গোলম্ও অবৈদিক আর্য বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন
এবং বৈদিক আর্যদিগের পরবর্তী বলিয়া মত প্রকাশ
করিয়াছেন তাহারা দির্সভ্যতার অভ্যুদয়কালে অর্থাৎ
ঝংখন রচনার সহস্রাধিক বৎসরের পূর্বে (ঝ্যেদ রচনার
কাল সহত্বে প্রচলিত মতাহুসারে) দির্ উপত্যকায় বর্ত মান
ছিল। গোলম্ও আর্যভাষাভাষী জাতি দির্ সভ্যতার
মুগে মোহেলো দারো, হ্রাপ্লা প্রভৃতি নগরে বাস করিত
এই তথ্য বৈজ্ঞানিক মহলে শীকৃত হইয়াছে। কিছু
বৈজ্ঞানিক মহলে শীকৃত হইলেও ইহার অ্লুবপ্রসারী তাৎপর্য
উপেন্দিত হইয়াছে, প্রচলিত, প্রাচীন মুরোপীয় আর্যবাদ
সহত্বে দৃষ্টিভঙ্গী পরিবর্তন করিবার প্রয়োজন অফ্ভৃত হয়
নাই। দির্সভ্যতার আলোচনা প্রসঙ্গে এ সহত্বে বিস্তারিত
আলোচনা করিবার অবকাশ পাওয়া শ্বাইবে।

া গোলমুপ্ত অবৈদিক আর্যন্ধাতি কোন অঞ্চল হইডে আসিয়াছিল দে সমধ্যে চন্দের মতের উল্লেখ করা হইয়াছে। এ সম্বন্ধে চন্দের মন্তের ভিত্তি প্রসিদ্ধ নৃতত্ত্বিজ্ঞানী উজ-ফালভি (ujfalvy) ও ইংরেঞ্চ প্রত্মত্ত্বিজ্ঞানী সর অবেল

ষ্টাইনের সংগৃহীত নুভত্ববৈজ্ঞানিক তথ্যসমূহের ভ্যেস (T. A. Joyce) কৃত বাাখা। কিছু দেখা যায় বে জ্বেসের নৃত্ত্ববৈজ্ঞানিক তথ্যের বিশ্লেষণের ফলে বে সিদ্ধান্ত অপ্রিহার্য তাহা গ্রহণ না ক্রিয়া চন্দ ভাকলা-মাকান মঞ্জুমির প্রাগৈতিহাসিক যুগের অধিবাসীদিগ্রেই ष्ट्रेविक लानमुख षार्यक्तात्र भूवंश्रूक्य वनिया वर्गमा করিয়াছেন যদিও এই অধিবাদীদিগকে একটি নিসম্পর্কিত মহুষ্যগোষ্ঠা বালয়। মনে করিবার কোন কারণ দেখা যায় না। এই গোষ্ঠা প্রাচীন পামীরী বা ইরাণী গোষ্ঠা, ইহাই জয়েসের সিদ্ধান্ত। আরেকটা কথার উল্লেখ করা ষায়। ভালকামাকান ও লপ মকভূমির বালুকান্ডুপের নিমে প্রোখিত নগর সমূহের যে সকল ধ্বংসাবশেষ আাংম্বত इहेग्राट्ड लाभ हान चामरलद (यु: शृ: २४ महाकी) दा ভাহার কিছু পূর্ববভী বলিয়া পণ্ডিভগণ মনে করেন। সে যাহা হউক, জ্বেদ ও অন্ত পণ্ডিতগণ ডাকালামাকানের প্রাচীন অধিবাসী ৬ পানীরের অধিবাদী:দগতে ইরানা গোষ্ঠাভুক্ত বলিয়া মনে করেন। অতি প্রাচীনকালে পূর্ব ইরাণ অঞ্চল হইতে এই গে:গ্রার লোক পুরদিকে চীনের रहानान ७ भाक्ष्रिया भर्षेष्ठ अध्यय इट्टेशां ६न, भिंडिए १० এইরপ বলেন। এই প্রদক্ষে রমাপ্রসাদ চন্দের ব্যবহৃত যুক্তিকে অভি তুর্বল মনে না করিয়া উপায় নাই। এই তুর্বলভার কারণ তিনি বৈদিক আয় ও এংবেভিক বা ইরাণী আর্থ লম্বামুগু গোষ্ঠার এই মত গ্রহণ করিয়াছেন। ইহার পরে দেখা ঘাইবে বৈদিক ও আবেত্তিক আর্য যে লম্বানুত গোষ্ঠীর ছিল ইহার কোন নুহত্তবৈজ্ঞানিক প্রমাণ নাই।

এ সহদ্ধে আর আলোচনা না করিয়া সংক্ষেপে বলা যায় যে গোলমুগু অবৈদিক আর্ঘ বলিয়া যাংছিলকে বর্ণনা করা হইয়াছে ভাগারা তারিম অববাহিকার কোন শুভন্ত মহুষ্যগোটা নং, ভাগাদিগকে, পামীরের আলাই, রোশান, সিগনান, ভন্নাথান উপত্যকা, তাসকুরগান, সাহিকোল, বাদাকসান, বালগ, হিরাট, বোখারা, খোরাশানের ইরাণী ভাষাভাষী তাজিক নামে পরিচিত যে গোটা দেখা যায় ভাগাদের সম বা এক গোটীয় বলিয়া মনে করা হয়।

ত্তবাং গোলমুগু অবৈদিক আর্থদিগকে নি:সন্দেহে
পূর্ব ইরাণীয় আর্থগোষ্ঠী হইতে অভিন্ন বলিয়া মনে করা
বাইতে পারে। বে পামীরী আলপাইন জাতি—সিন্ধুসভ্যতার যুগে ভারতবর্ধ আক্রমণ করিয়াছিল ভাহার।
তাজিকনিপের প্রতিনিধি,—ভা: হাটনের উপরে উল্লিখিত
মত হইতে এই কথার সমর্থন পাওয়া বায়।

ট্টপনয়ন

শ্রীরামপদ মুখোপাধাায়

•

প্ৰের বৃত্তাত ভবে হরিষ্তীর মুখ হাসিতে ভবে উঠল। খললেন, তাহলে কালই তো যাত্রা করতে হয়।

যজেখন বললেন, কাল কিংবা পরস্ত। কতক্থলি জিনিন আবার বোগাড় করে নিমে বেতে হবে তো? হোমের জ্ঞাবেল কাঠ—বেউড় বাঁশ—এক মালনা বালি—

হরিমতী বললেন, ভারি ভো—আজই যোগার্চ হরে যাবে'খন। স্থুদেকে বলে দাও না।

ওঁর তর সইছে না আর। শহর দেখার কৌতৃহল ঠিক ना रामध---इपिराय क्र ठीरेमाका श्वाय अक्षे रेष्ट्रा यरनव মধ্যে বলবভী হয়েছে---পঞ্জের মন্দ্রার্থ ক্ষেমে। বৌবনের প্রান্ত-শীয়ায় সংসার কায়েমীভাবে কাঁবে চেপেছে। রোজকার বোৰ একবেয়ে কাৰু-এক রকমের কথাবার্ডা--ভাই পারি-शासिं कि चाल्हों ने जाति। क्षयम योवत्न क्रें कांद्र किन বাপের বাড়ি গিয়ে স্থান বদল আর কাজ থেকে অবসর নেবার আনন্দ কিছু বা ভোগ করা যেত। তারপর মাবে মাবে দ্র দুরান্তরের দেবতার মানত শোবের ব্যাপারে পুরো একট দিন বৈচিত্র্যে অপরূপ হরে উঠত। কংনও কোন মেলার বা রথ-দোল-ছুর্গাপুলা উপলক্ষে একটানা সংগারের স্রোতকে এক বেলার ভ্রম্ভ হাত দিয়ে ঠেলে একটুবানি লোভা--কিছু वा भक्ष-अभारताच् जक्ष करत मर्ग वृणित तर बत्र । अधन প্রেচিছের বালু-বেলার দাঁভিয়ে এদিক-ওদিক চাইবার অবসর-हुकू (का श्राह्य स्थापक मजून तर बात मा। जबू रेविका-লোভী মন কোৰাও যাবার জন্ত উদ্বৃদ্ করে---নছুন কিছু (पर्यवाद क्षत्र व्याज्ञ इत। मान्यवाद मन (णः !

যজেশ্ব বললেন, ছেলেলের নিয়ে যাবে ভো ?

গুমা—গুদের কোৰার রেখে খাব। একে ভো বাছারা কোৰাও বেভে পার মা—ভাল মন্দ কিছু বেভে পার মা—

ৰজেশ্বর মাৰণণে বাৰা দিয়ে বললেন, সংসার দেশবে কে? ৰেনী?

তা ছুটে। দিন আর পারবে না ? আমাদের দেশ বর—তর ভীত তেমন নেই। আর বাছির পিঠে ভ্রবোরা রয়েছে— জোরে হাই ভূললে ওয়া ভূচি বিতে পারে— কান ?

পুভরাং বিধবা থেরে মেনকাকে রেবে উপনরনের কর্ম বাহ্নিক জিনিসগুলি সংগ্রহ করে পরের দিন ছপুরের ট্রেনে ব্যক্তেশ্বর সপরিবারে শহর বাজা করলেন।

টেশলে লেৰেই বৃষ্টি আটকে বায়—ঠাসাঠানি বাছির ভূণে। আবার বাছির মধ্যেও এক ভারগার ছহির হয়ে বাছাবার বো নেই ! সামাত পৌটলা-পুঁটলি আর ছেলে মেরেদের নিরে বাঁডাতেই ছোট উঠোনটুত্ব ভর্তি হরে পেল । কাজের আগের দিনের বাডি---আত্মীর-কুট্র সমাগমে বই বই করছে । ভোজ রায়ার অভিকার বাসনকোলনগুলি অনেকবানি জারগা জুড়ে পড়ে আছে---কেমা আনাজপাতি আর উপমর্মের আবগুক জিনিসপরে একটা বর আকঠ বোঝাই । ন'মাসে ছ'মাসে নিমন্ত্রণ পেরে ভোজ বেরে দরিন্ত্র রাজ্ঞপের বেরন অবহা হয় তেমনি আর কি ! তবু বাডিট! নেহাং ছোট নয় । উঠোন সঙ্গীর্থ বটে, উর্দ্ধির ; চার ভলা পর্বান্ত পারা মেরে উঠেছে আকাল ছোঁবার জভ । আকাল ছুঁতে পারে নি বলেই বৃধি চিলে কোঠার ভর্জনী উঁচিয়ে মাহ্মকে নির্দেশ দিচ্ছে---আর একটুবানি ভূলে দেবার ভভ ।

উঠোনে ইাছিরে হরিমতী ও যজেরর উপর পানে চাইলেম, অবস্থ বাছি দেববার কোতৃহলে মর—যদি কোবাও চেন। মূর্থ নজরে পছে এই আশার। এক তলার এবরে ওবরে বারা ররেছে—যারা সিঁছি দিরে নামছে কিংবা উঠছে, যারা হুটনো ফুটছে—বাটনা বাটছে—বাসনকোসন বৃচ্ছে কি লোরগোল করছে তাদের কেউ এঁদের পরিচিত মর। এদের অবিকাংলই স্ববেশ;—অলফারে কাপড় ছামার প্রসাবিতা মেরেয়া ছাছুন দিনের অপরাত্রে তেনে-বেড়ান প্রভাপতির মতই বিভিন্ন—আর ছেলেরা গলা কভিঙের মত লাকিরে লাকিরে অপর বেকেলার হোলের বাছে—সদর বেকে লিভি ইপ্তে উপত্রে উঠছে। বি চাকর ছাতীর বারা কাছ করছে তাদের মনোবোগও এই নবাগত হলটের উপর পড়ল না—আকর্ব্য। বরং কাজের অস্ববিবা হওয়ার একজন বললে, একটু সরে ইাড়াও না গা—বাসন বোরা জল গারে লাগলে তথন বলবে—

কিছ সরে ইাভাবার ভারগা কোণার ? বরে ভারগ।
নেই, সিঁভির মূবে ভনজোত ভাটকে ইাভাগো চলবে না;
সহীর্ণ বারান্দার তো ভতিকার বাসনকোলন—ভলের বালভি—
ভার দালামটার ভূতোর রাশি। ইাভাবার ভারগা কোণার !

অবশেষে একজন বৰ্ষিয়লী বিধবা ভাঁচার দর থেকে বেরিরে ছরিমতীকে সামনে পেরে বিজ্ঞাসা করলেন, ভোমাদের ভো চিনতে পারছি না বাছা—

আমরা ভণ্ডিপাড়া বেকে আসচি।

ও—গিরির বাপের বাড়ির লোক ভোষরা ! ভা এবামে বাড়িয়ে কেন মা—ওপরে যাও। একেবারে ভেডগার গিরি বেবানে আছেন।

অভাৰ্থা না হোক—ভবু ভাল বে এভভবে একটা নিৰ্দেশ পাওৱা গেল। বাহিনী সমেভ বজেশ্ব আৰু হয়িমতী উৰ্দৃধী হলেন। সম্পর্ক এককালে হরত নিকটই ছিল, দূরত্ব নিবছন লেটিয় বাঁবন ক্ষমণ: শিবিল হ্রেছে। গুণ্ডপালা বেকে কলকালা এমন বেশী দূর নর, কিছ সম্পাদের সপ্তয়োজন পাহাছের জ্ঞরালে সে দূরত্বের পরিবাপ চলে না। বাজনিক রাজপের ক্ষর আর পদত্ব অকিসারের প্রানাদ জাতিগোলে বর্গ রলাভ্যনের মতই সম্পর্কহীন। তবু বাঝবানে বর্জার হোঁরা একট্ট্রানি আছে বলেই নিমন্ত্রপানের হুলে উদের শহরে আসবার সৌজাগ্য হ্রেছে। এই বাভির গৃহিণী পিরালর সম্পর্কার লোকদের একেবারে বিশ্বত হন নি। সম্পাদের চুড়ার উঠবার আগে বে ক'ট সিঁভি ছিল তা তাঁকে অভিক্রম করতে হয়েছে, এবং উপরে উঠেও সেই পুরাতন বাপগুলির দিকে মাবে মাবে তিনি চেরে বাকেন। কলে প্রামন্থ বা দূরত্ব আত্মীর বজনেরা বাভির ক্রিরাকর্মের্থ নিমন্ত্রিত হন। সকলে না হোক কেউ ক্রেজ আন্সন্ম বৈকি।

লাল সিমেন্টের মেবের পা ছড়িরে বলে মেলমরী পৃহিন্দি কি হিসেব ক্ষরছিলেন। তার পাশে ক্যাসবাল কোলে করে বসে রয়েছে অলছারবহল। একটি পৌরী মেরে—আর লামনে কর্ম হাতে ইাভিয়ে আছে একটি স্থবেশ মূবক। যজেশর এবের চেনেন বলেই সম্ভোচ করলেন না, সরাসরি খরে চুকে গৃহিনীর পারে হাত দিয়ে প্রশাম করলেন।

ওরাও এসেছে দিদি।

দিদি বাভ কিরিরে দেবলেয—বারাক্ষা উপচে পড়তে।

যজ্ঞের কাউকে-না-আনার অন্থবোগ করবার প্রথাগ দেন

নি। অন্থবোগ না করতে পেলে মান্থবের বভাবের অক্থানি

হর বুবি—আর সেই কারণে গাছের-মাধার-ক্ডিরে-ধাকা

কুরাগার সবুক পাভা কেমন ধুসর কিকে রোধ হয়। ভবু

ভিনি বুব কিরিরে হাগলেন।

এস ভাই এস---বস।

ছরিমতী পাষের ধূলো নিলে—ছেলে মেরেরাও মারের বেবাদেবি পাছুঁরে ভিছ করে গাঁছাল ঘরের মব্যে। মাবার ঋপর পাবা চলছে বন বম করে, ভরু মনে ছল—বাইরের বাতালের সক্ষে ঘরের বাতালও বুবি অসহবাস করলে।

ক্যাস বান্ধ কোলে করে ব্যেছিল যে যেরেট লে ইাটু
মুক্তে উঠবার উপক্রম করলে—ছেলেটও কর্মবানি গুটরে
পক্তেট রাখলে। গৃহিণী ওলের মনোভাব বুবে গলা ছেডে
ভাক্লেন, ও মনোর মা—মনোর মা। মানী মরেছে নাকি ?

एक विक्ति। वान (बान कि कि र्कंटन वारेटा बन।

ৰনোৱ ৰা ৰা আসা পৰ্যাত গৃহিৰ ৱাগে গল গল করতে লাগলেন ৷ এরা যে ভিড় করে খরের মধ্যে রয়েছে—সেদিকে বুৰি ভার নক্ষ নেই, কিয়া বাপের বাড়ির সক্ষে আরও বহ কথা বিজ্ঞাসা কয়বার ছিল—ভাও তুলে গেছেন। হরিষতী ছোট বেরেটাকে কোলের কাছে টেনে নিরে কাঠ হয়ে ইাছিরে ছইলেন। কোথার বা বাবেন—মাস্থ্যের মত— বর্তনিও অপরিচিত অবিনয়ী।

ননোর মা আগতেই কেটে পছলেন গৃহিনী, বলি নবাব-নদিনীর কি রাজকার্ব্য হচিল। দালী বাদীর কথা—

মনোর মা নাকে কাঁদতে আরম্ভ করলে, আমার কপালের ৄ দোষ মা। তাবজু চড়চড়ে রোদে বেলকাঠগুনো ডড়েঃ গেছে—এই বেলা ভূলে কেলি। ছাদের ওপর বেকে হাঁক ভাক সেঁহর বল্লে ?

আহ্বা—আহ্বা—এবন বভূতা রেবে এদের বসবার কারগা করে দে দিকি। দোতদার কলবরের পালে—

ওমা--- লেখানে যে কুটুম রয়েছেন। কাল হাজারীবাঞ্চ থেকে এল---

ও—তা কোৰার এদের জারগা দিই —বলত। গরম কাল, রাভিরে না হর ছালে শোবে'বন। দিনের বেলার জিনিসটা পভরটা—

আর কোন বর তো বালি নেই মা। তোমার পীচ।
মেয়ে— তিন নাতনী সবাই এয়েছেন। একটা বর তো দৃতি
বর হবে। আর নীচের রায়া তাঁভার বৈঠকবানা। বউদের
বরগুলো আর তোমার বরটা তো দেয়া চলবে না। বাকে
একটা বর। তা এসোজন বসোজন—আছে—কোন কুটুন
হট করে কোবে এসবেন—

গৃহিণী বললেন, যে যত্তে খুঁটে রাখা হয়—সেটায় কে আহে ?

ওমা— খুঁটে কি কম ভোষার। বর বোকাই।

না-না-সরিয়ে কেল ওসব। গরম কাল এখন বিট্ট হকে না। যদিই হয়—ছাদের একধারে সান্ধিয়ে তেরপল ঢাকা দিয়ে রাখগে। ভাই বলে কুটুমেরা বর পাবে মা—এ কেমফ কবা গ

বনোর মা হলটর দিকে অপ্রসর কটাক নিকেপ করে বল্লে,— আহম আগনারা— হাদে বলবেম— আমি ভ্যাভক্তে । মুক্ত করে কেলি ভারগাটা।

ু ধৃহিণী বললেন, ভোর যদি একটু আছেল থাকে ননোর না । একথানা বাছর নিরে বা—পেতে দে হাদে। বালভি করে জল দিল পা ধোবার জড়ে, আর—

বারালা থেকে একটা আবপুরানো বাহর ঠেনে নিজে
মনোর যা বললে, লে আর বলতে হবে নি হা—কুট্মকে
আদর বছু করতে হয় কি করে—আছই না হয় কপাল
পুড়েছে—আছম গো আপনার।।

8

আকাশের দিকে আঙুল-উঁচানো চিলে কোঠার দেওরাল বেঁষে বললেন হচিমতী। ঘেলেরা কেট বসলে—কেট বটু আলনের বুক দিরে। বুঁকে পকে এদিক থাকিক বেবতে লাগন। বিরবিরে বাভানে। বেংহর খান গুকিরে বেতেই শরীরটা ঠাওা
বোধ হ'ল।

হরিষতী জিলাসা করলেন, হাঁগা—সিরির ক'ট ছেলে ? পাঁচট। বজেধর উত্তর ছিলেন।

স্বাই উপাৰ্ক্ষ করে তো ?

না হলে সংসারের আর এবন এ। বছট উকিল— বেল্ট ইঞ্নিরর—সেক ডাজার—ন কোন আগিসে ভাল চাকরি করে—আর হোটট বুবি এম-এ পছতে।

ছরিমতী উদ্ধ্যমূপে বগলেন, আহা—তা হোক ভগমান যাকে দেন—গন দিক দিয়েই ভরিছে দেন। সবাইর বিরে হরেছে তো?

ছোটটো এখনও হয় নি। কেন — চিটার কাইলে ওদের বিষের নেমপ্তর চিটা ছলো গাঁধা আছে দেখ নি ? কোন জিয়া-কর্মে আমাকে কানাতে ভুলতেন না রমুবাবু — আহা কি আহুমই ছিলেন!

রি দ্বিও বুব ভাল। কেমন হাসি-হাসি মুখ। আমাদের কঠ হবে বলে বুঁটেখলে। বার করে দিতে বললেন।

যজেশ্বর কথা কইলেন না। সন্ত্যি বলতে কি এরক্ষ জ্বর্থনা উনি প্রত্যালা করেন নি। যথনই বে কোন কাজে উনি এপেছেন---প্রপ্র না হোক পরিষিত আদর-আপ্যায়ন পেয়েছেন। সংসারের মধ্যে ওঁর ঠাই ছরেছে আর সংসারের সূব হুংবের কাহিনীর আদান-প্রদানে বেশ সহজ্ব হরে বাস ক্রবার স্বোগ লাভ করেছেন।

থগার কর্তার তুগনা হর না—একথা একশো বার বীকার করেন যজেশর। এমন কি কর্তার প্রান্থে ঘণন আলেন—তথনও । লংলার থেকে ছালে নির্মাণিত হন নি। এ কথা সত্য—ছেলে মেরে নাতি নাতিনীতে বরগুলি ক্রমশঃ করে উঠছে—বাছতি লোকের মাথা গুরু বার ছান সহুলান হওরার কথা নর। ছান-সহুলান নাই বন্ধি হর তো ঘটা করে নিমন্ত্রণ করার অর্থ কি? তিনি একলা হলে কথা ছিল না। যেখানে হোক ভরে বলে—যা কিছু হোক থেরে কাকের বাভিতে থেকে বুটি—হৈ চৈ করে কাটরে বিতে পারতেন। কিছু ছেলে মেরে পরিবার খন্না তো তেমন ভাবে শ্রোতে কুটোর মত ভেসে ভেসে বেছাতে পারবে মা। ওলের কুবা ত্র্মা আছে—সমরে অসমরে ঘুম আছে—নানান রক্ষের আখার অভিবার্গ আছে—সংলার-বহিত্ত এই ভারগাটতে বাদ করে এইসব ঠেকানো রীভিমত ছুম্ব।

ह्रियजीत (काल्यत (क्लिक) ब्रेंड क्रांड नामन ।
व्यंड भारतम वित्त (भारतह । अवस मनव वक्रांड भरत(सर्वा (भव करत-मारवह काविक वित्त वमन । वा व्यंडनमकर्मव नीतन कावा । (क्रेंसिव वाक्षा क्रमंगित वव । सङ्ग वक्षम क्ष्य स्थात कावम यङ्गे वाक्षम क्ष्मों क्रमं विवा वयानवर्त ভাদের দাবি জানাবেই। বরং ট্রেমে আসভে আসভে ওদের দাবিটা অভিবিক্ত বলে বোধ হয়। হরিমভীর পর্যাত মনে হচ্ছে এক রাস ঠাতা জল পেলে মল হ'ত মা।

ছুঁটে সরাতে সরাতে মনোর মা একবার এদিকে এল।
বললে, হাত পা অট্যে বসে রইলে কেন মা—উই হোবা ট্যাকর
কল ররেছে—মগ ভূব্যে বেশ করে হাত পা মূব বুরে মাও—
শরীল স্বস্থ হোক।

বাহিনী সমেত ছরিমতী ট্যাছের ছিকে অঞ্জনর ছলেন। ছেলেরা কেউ লাফিরে উঠল—ট্যাছের মাধার কেউ বা—গুর গারে হাত চাপড়ে বাজনার স্থর তুলল—কেউ কেউ জলেভাগা বলটাকে চেপে ধরে ছড় ছড়াং জলের শব্দ শুনে টেচিরে উঠল আনকে।

মনোর মা মুব কিরিরে বললে, ওমা একি কাও গো, চীকর দকা গরা করবে নাকি! অমন দল্যিবিত্তি করলে—মাহুব ক্যার হরে যার—ভার টাক! নাব—মাব শীগ্রির। গিরি দেবলে আমাকে আভ রাববেক নি—মাইনের ট্যাকা বে যদি না কাটে তো—

ध्रुष्ट्रक करत भवारे (नर्म श्रृप्ट ।

মনোর মা বলগে—মধ্যে করে করে কল নেসে ছাত পা বোও। ধুয়ে বসগে উই—হোধায়।

হাত পা মূব বুরে শরীর ঠাঙা হ'ল—উঞা হরে উঠল পেটের ক্রা। আকাশ আর শহর পুরানো হরে পেছে কিংবা কাক দেবিরে ছোটদের আর ভূলিয়ে রাবা সম্ভব নয়; বছরাঙ বুঁত বুঁত্নির রূপ শাই ভাষায় ব্যক্ত করছে—মা বিদে পেরেছে। হরিমতীর মনে হচ্ছে, একটুবানি গুড়—আর ঠাঙা জল পেলে এদের বানিকক্ষণের জন্ধ শাভ করা বেত। কিছে কাকেই বা বলেন লে কবা।

মনোর মার ভঙ্গি ভেমন সাজ্বাদায়ক নয়। মনিব বাছিতে
কর্তব্যপরায়ণা বলে ভার ব্যাতি আছে বলে যে কাকটি ও
বরেছে সেট শেষ না করে কর্মান্তরে মনোযোগ দেবে না বুরি।
বর ঠাগা রয়েছে মুঁটেভে—সবগুলি বার করতে আরও কতকণ লাগবে কে জানে।

উপায় না দেবে যজেখনকে বললেন, একবার নীচের নেবে দেব না---এক ঘট কল যদি আনতে পার।

বজেশর মনে মনে যথেষ্ট উক হরে উঠহিলেন। এই কথার উন্না প্রকাশ করে বললেন, হু— কাজের বাডিতে বট বোগাড় করা সোজা নাকি। খল বললেই খল পাওরা বার ? যত সব বঞ্চি।

হরিমতী বরবে মরে গেলেন। সভ্যি বকাট ভিনিই বাবিবেছেন। কোন বারই বিদেশে ধাবার মুর্যভি তার হয় না—এবার কেন যে হ'ল। সলে সলে মনে হ'ল—তার ইছোকে বলবভী করার মধ্যে যজেবরের সহবোসিতা আছে বৈকি। প্রতি নিমন্ত্রণের শেবে বাছি কিরে যে সমারোহ
শহরের ও ভোজবাছির—বে আগর-আগ্যারনের— যে তুরিভোজের— যে লোক-সমাগরের বর্ণনা তিনি থিরেছেন—তঃ
সহজে মন থেকে রুছে যাবার নর। যেনন ছেলেবেলার শোনা
রামারণ-মহাভারতের কাহিনী মনের কোলে অক্ষর হরে আছে
—আর প্রতিথিন আকর্ষণ করে সেই পৃণ্য তীর্ণ-ভূমির থিকে।
হরত তীর্থনালার স্বপ্প সকল হবে না কোন থিন—তর্ তাগের
আকর্ষণ শিবিল হয় না—এক বৃহুর্ভের ক্রন্তও। তবে এ সব
ক্যা বলে লাভ নেই; গার দোষ যারই হোক—একবার এসে
পত্তেকের বর্ণন—রুণ বুজে সবই সরে যেতে হবে। নিজের
বাছি হলে খ্যান খ্যানানির ক্ষম ছেলেফের হুটো চড়চাপড়
দিতে পারতেন—এবানে সে উপায় নেই।

যজেশর বুবলেন—এদের কোন দোব নেই। এদের ব'কে
—বেরে কিংবা ছরিমতীর বাড়ে দোব চাগিরে দিলেই
ব্যাপারটীর আন্ত নিম্পত্তি হবে না। একটা মিট্ট আর এক
রাস ঠাতা কল—তার ইচ্ছাকেও কি উদীও করে ভূলছে না ?
তিনি গালোখান করলেন।

এদিকে যজেবরের কিরে আসতে যত দেরী হচ্ছে—ছেলেরাও বর উচ্চপ্রানে তুলছে। এই এল—এই এল করে আরাস দিয়েও যথম তাদের বর্ডিত কোলাহল রোধ করা গেল মা—তথম হরিষতী যে ক'টাকে হাতের নাগালে পেলেম—ছ্বদাম করে শিটরে দিলেন।

ধর---মর ভোরা---ভাপদ যা।

ৰনোৱ মা খুঁটে হাতে এদিকে এগিরে এসে চোৰ উল্টে বললে, ওবা কেমন পোৱাতি গা আপনি—হেলেওলোকে না-হক পিটতেছ।

ছরিমতী রাগ করে বললেন, কি করব—শ্বল খাব বলে সেই বে বারনা বরেছে—

আহা বাহারে । বিভে তাগুতে সহাত্ত্তিখনক চুক্ চুক্
শব্দ করে মনোর মা বললে, এই আর ক'বান বুঁটে সইরেই
—এনে দিছি বল। আহা ।

হরিষতী উকি যেরে দেবলেন—ভবনও আব বর বুঁটে ররেছে—সরাতে অনেক সময় বাবে। বলকেন, আমি সরাব বুঁটে ?

মনোর মা আঁতকে উঠে বললে, ওমা, রুট্য মাছ্য—
আপনি সরাবে কি গে! আমিই এই বট করে---বাভের
ব্যুবার হাত পা বেন আড়ঃ তাই---। আহা—হা—আবার
আপনি হাত লাগালে? তা মা নিরী মেন আনতে না পারে।
ভাষতে পারলে আমার পেটে পা বিবে দেবে মা।

এমৰ সময় নীচে বেকে সিমীয় গলা শোনা গেল, মনোর মা—খ মনোর মা—বলি মরে গেলি নাকি !

মনোর না এতে যুঁটে কেলে হাঁক বিলে, বাই বা। বানিক পরে লে কিরে এসে বললে, এন না নাবোর এন--- গিনী কল থেতে ভাকতেতে ভোষানের। ওষা—সব খুঁটে ধে সইবে রেথেত ? যাও—যা—যাও; ঘরটা বাঁট বিবে যুবে দিচ্ছি আর্মি।

এক্সাশ আনন্দ-নাভূ আঁচলে করে হরিবতী হাদে এলেন । তাকলেন হেলেদের, থরে— ব্যাদা—ভটকে—ভোহল—প্টি ভৌদভ—মিন্ট্—ট্বলি—অপন্—হাবা—ট্রু—ইদিকে আয়, বাবার থেরে বা।

যজেশর এক কলগী কল নিরে ইাগাতে হাঁগাতে এই সময়ে উপরে উঠলেন। গোটা-চুই মাটর রাস আর কলগীটা হাদে নামিরে দিয়ে বললেন, কল আনা কি কম বক্ষারি! কলে এক কোঁটা কল নেই—সেই পথের উটবওরেল থেকে—

হরিমতী তভক্ষণে ছেলে মেরেখের বৃষ্ধক হয়ে থাবার বক্টম করে দিক্ষেম। বললেন—ভূমিও হুটো নাড়ু মিরে একটু কল থাও।

নাগুতে কামছ দিয়ে যজেশ্বর আঁতকে উঠলেন, ওরে স্কৃতি:
---এযে লোহার কলাই---এর নাম আনন্দ-নাগু !

हिट्याख-मिद्रे मागादव'यन।

ভূমি চিবোও। বয়স আমার কম নয়—লাভের গোঞ্চ একেই তো আল্গা মেরে গেছে—

বছ ছেলে বাঁদা বললে— রসগোলা আনলে না কেন মা ? রসগোলা ৷ সে কাল বাবি পেট ভৱে।

খাঁদা বললে, বাঃ রে, ভাঁভারে এক গামলা রড়েছে দেখ-লাম। পিলিয়া তো একটা বউকে আর ভার ছেলেদের বেভে দিলেন।

হরিষতী রেগে উঠলেন, দিরেছেন—বেশ করেছেন
পরের বাছি এসে আক্রটেনিরি করিস—কোন্ সজার ব্যাদা
কবনও কি বাসনি রসগোলা
?

ভাভা বেরে বাঁদা বললে, এই মিন্ট,—দেখবি একটা মজা ? উই যে কাকটা বসে ররেছে না চিলের হাদে, ওকে বাঁটুল মারি দেখ্। বলে ঠাই করে একটা নাভু ছুভে দিলে সেমিকে। - কাকটা কা—কা করে উচ্চে সেল।

যজেশ্বর বললেন, ছেলেটা মন্দ বলেছে কি ! কভকওলো ভকনো কট্কটে নাভ, না নিবে--একটা করে বসপোরাও বদি বিভ---

हुन कद-बत्नाद मा चानरह ।

ম'নোর মা নেহাং হাবাগোবা নর। এ বাছির হালচাল আর কুটুছ লাজাতের আদর বছের বছর দেবে বুবে নিরেছে কে লোন হরের লোক। ছাদে উঠে একবানা হেঁছা নরলা কাপক হরিমতীর দিকে কেলে হিছে বললে,—বর্টা বুছে নিও বা—আমার আবার নাবোর কাক করতে হবে। তোমাকেরই তো বাছিবর—হেবে গুনে নিও বা। আর উই বে কোবে তের-পল রবেছে গুটা মুঁটেগুলোর ওপর চাপা দিও। যদি একবানঃ

पूँ हैं जार एका पदाय कदार विश्वी--विश्व धनाद नर्वाखदाई बरबर्ध किमा।

খর যোহা খার ঘূটে ঢাকা হবা মাত্র মনোর মা কিরে এসে বললে-একবার নাবোর এগ মা-পিন্নী ভাকতেতে। বলভেতে --- কুটনোওলো বদি কুটে দেয় সকাই বিলে-তো উবগায় एस । अन मा---

রাভ ছটো পর্যন্ত কুটনো কুটে শরীর ক্লান্ত হয়ে পড়ল। সকলের অহুরোধে ভাতের ধালাটা টেনে নিয়ে বসলেন বটে --ক্লচি হ'ল না আহারে। কোন বিকেলে রারা ভরকারি--বেঁটে বেঁটে বিবাদ আর টক হরে গেছে। ভাতথলো क्रमा शाकारमा, चार छात्मद वर्ष वा चाकारत बुवा क्रहर कि ভাতীর ভিনিদ ওটা। বাহ নাকি কুরিয়ে গেছে-মিট্ট একটা করে দেবার কথা ছিল, কিছ রাভ বেশী হরেছে বলে ভাঁড়ার বন্ধ করে গিন্ধী গেছেন ভতে। তাঁকে জাগিরে বরাছের মিষ্ট বার করে নেওরা মানে...

মনোর মা চোধ কপালে তুলে বললে, ভার চেয়ে পেটে একটা কিল যেৱে মিষ্ট খেন্থ বলে মনকে পেরবোৰ দেয়া ঢের जान मा। बाउराय भाई अरे भक्क बाक-अक्ट्रे महित्य नि **हम । काम जाराद अलद जम करद बाहिए एरव---नरेरम** পুচির আশা নবভরা। উচ্ছিষ্ট বুড়ো আঙুল উ চিয়ে লে হাসভে হানতে উঠে পছল।

रविमणी चारम अरम (मन्द्रमन, भवादे मात्र (वेंद्र पूर्वास्त्र) कादा माइव चाट्य-कि वा लाहात्व बुरनाव। वानिन মন্ত বড় বিলাগ বলেই কারো ত্রিগীমাতে নেই। কাজের চাপে পড়ে খোঁজ নেওয়া হয়নি এরা খেয়েছে কিনা। না ধেলে কি আর অকাভরে বুরুছে সব !

মেটে রং জ্যোৎমার। ওদের কারো মুখে-কারো বা পিঠে পড়েছে সেই রং। অভুত দেখাছে যাসুষ্ণলিকে। ওরা ৰেন হরিমতীর কেউ নয়। এই অপরিচিত বাভির মতই मिदानक मिर्किकाद। कनकाणाद वाक्रिक्षन अवनि वृति। মাত্রকে আশ্রর বের-ভালবালে না।

देशमहत्मद्र श्रीतक अक्षेत्र एक्टि अ वाक्षित्र शास्त्र अस्य नागन । अत मात्र ७०० कर्य-- डेरनद । (वटल वृत्का-धी-शूक्य नवारे আৰু উঠল চঞ্জ। স্বাই একসলে চাইছে কাৰ করতে---अक्नरक (हैं होटि --- अक्ट नरक वाच स्टा अवात ख्वात स्तरः । পুরোহিতের উচ্চারিত সত্তে আর হোমের বোঁরার বাড়িটা প্র প্র করছে। সেই সদে মিশেছে ভিরানশালার বিরের প্র আরু যঞ্জিশালার মাছের গছ। কলভলার বাসনের খন খন বৰু বনু খদর খদর শব্দের সক্ষে ভরকারি সাঁভলানোর শব্দ बिट्न वटन एटक शाहिकदामय जामाम अटन दाराव अधिनहीं श्रेव शक्रत जनर्गन । वाच बाल्ड मत्म स्वाहिन-अवामकात ৰাভিন্ন কোন ভাষা নেই—সে সৰ বিষয়ে উহাসীয় নিৰ্ক্ষিকার : क्षि और बुद्रार्श गत्न राष्ट्र छैरनवाक नकील प्रकार करवार कर এ-ও টেচাভে পারে অপরিমিভ।

উপর থেকে হাঁকছেন একজন পিন্নী গোছের মহিলা :---ওপে। কে কে ভিক্তে দেবেন---আন্মন। ছোন শেষ ছয়েছে---বৰ্ষচারীকে কে ভিক্তে দেবেন আছন।

মাহুষের অবিচ্ছিত্ব প্রবাহে সিভিতে উঠল চেট। বাবা वर्षत--माना शाब्बत ७ विक्रिक वम्रत्यत स्वरत शुक्रस्य जान উঠোন থেকে দেখলে ঢেউ বলেট মনে ছবে। কল্কান্ডা শহরের মাহ্য বুবি মিলেছে এবানে। বুটু বুটু বটাস---অগণিত জুতোর শব্দ উঠছে। নামা প্রকার অভূচ্চ আলাপ আর নানা ভাতীয় পুলাসায় সৌরভ উঠোন খেকে সিঁছি---দিঁভি থেকে দোভলার ধর আর সেধান থেকে বাভিটার সৰ্বাদে ছভিবে পড়ছে। গারের ভিতর কেমন যেন পাক मिटक्- ७१ एविमणे जनकार कांচ्टनव (नदाके। अकवाद ডান হাত দিয়ে টপে ধরে সেই স্রোতে গা চেলে দিলেন।

ৰুভিতমন্তক গৈরিকবসনপরিহিত কুশতভু গৌরবর্ণের **(बर्जिंड एक जात रेगरिक वृत्रि भिरत गरित माववारम है। जिस्स** আছে। নিৰ্বাণিত হোমারি থেকে ভবনও সামাত খোঁৱা উঠছে আর গাওয়া বিরের পুগদ্ধে বরের বাতাস মহর। বরের এক কোণে সাজানো রয়েছে মাললিক স্রব্য-নৈবেদ্য পামছা কাপড়। তেলভর্ত্তি পিতলের বালতি—হরিষতী ঋণলেন কুভিটাই খবে। আল্মায় রয়েছে গরদের চেলি-ক্সলের ওপর রয়েছে টোপর ছাতা—এগব রাজ্বেশ নেবার সময় प्रवकात श्रव ।

ঘরের মধ্যে একবানি বড় আরম্য আর অনেক রকষের কৃষণক-বেঁদা ভিবি—মাঝরাতে চাঁদ উঠেছে। মেটে [®]ছবি—আলোর বে শেডটা ঝুলছে ভা-ও বানিককণ চেয়ে দেখবার মত। তা ছাড়া বরের মধ্যে ভরে ভরে ভরে ইঠছে ভিকার ভিনিস। বেন মনোহারী দোকান সাজানো হরেছে। একবানি কুলকাটা মিনে করা রূপোর বালে ক্ষতে নোট আর शकार्व

> বহুদিন আগের একটা ছবি ধনের কোণে ভেগে উঠল হরিষভীর। ভবন তিনি বালিকা মাত্র। ভগৰতীয়াত্ৰার দিন নতুন খাতা মহরতের নিমন্ত্রণে বাপের সর্পে এ-দোকান সে-দোকান বুরতেন। করসা চাধর বিছিরে ভার ওপর প্রক-চক্ষন-শোভিত কাঠের বাল্পট রেবে করদা লামা কাপভ পরে বসভেদ দোকানের মুছরি। দোকানী চাকাট নিয়ে নাম হেঁকে হেঁকে কেলভেন একথানা বড় বালার (সেটা পিভলের কি কাঁসার ঠিক বনে নেই)। ভার বৃহত্তি লাল ধেরো-বাধানো বাডাইতে ক্ষার ক্ষপাত করতেন। ভারপর হাতের বাছনটাতে ক্ষমে উঠত নিঠাই বা ঐ ছাতীর কিছু নিষ্টি। কোৰাও বা কলবোৰ নমাৰা করতে হত। বালার ওপর বোট ও টাকা ক্ষে উঠতে দেৰে হরিমতীর স্থতি পুরানো ও হারানো:

দিবের বব্যে পাক থেরে কিরতে লাগল। থেরো-বাঁবানো বাঁভাটা শুর্ নেই—কিন্ত গেরুরা বুলি নিরে বাঁভিরে আছে হারিপুলী করা একট ছেলে। ব্রহ্মচারী ছেলে—র্ভিত্যকক কামে বীরবোঁলি, গলার ক্ষত্র হজোপবীত, পারে বোলো দেওরা বক্ষর, রূবে সংস্কৃত পক—'ক্তবভি ভিক্ষাং দেহি'। এই কিছুক্ষণ আগে লাজবিবি-অভ্সারে সে বিকল্পে উরীত হরেছে—নতুন কর্মবলতে পারা বার। তিন রাজি, তিন দিন এই দঙী-বরে হুর্য্য-বক্ষিত হরে আরও অনেক অভ্যাসন যেনে নিরে হবিষ্য ও কলবুলাহারে তাকে কঠোর ব্রহ্মচর্য্য বাত পালন করতে হবে। সর্ব্যক্রার হুর্থবিলাসসমূদ্ধ সৌবের একট হুক্ষরতম কক্ষে পুরাকালীন উপন্যন-বজ্রের অভ্যবর্ত্তন-ক্ষানালা দিরে দেবতে লাগলেন হরিষতী।

থেলের পাপে ইাছিরে আছেন গৃহিন। ছেলের হাত থেকে
নিরে তিনি গাগচের ওপর সাজিরে রাবছিলেন ভিজা-উপহারের
সামগ্রীগুলি। বুলিচা ভারি হোক আর না হোক একজন
ভিজা দেবার সকে সকেই সে জিনিস বালার বা গালচের ওপর
করা হচ্ছে। হরিমতীর বার বার মনে হচ্ছে—লাল থেরোবাঁবানো বাভাট নেই ভগ্—জমার হরে অন্ধ পড়ছে নির্ভুল।
বুহুরী করেছেন বেশ বদল।

ক্ষমশং ভিড় কমে এপ—জানালা থেকে গরে ঘরের সামনে ইড়াতে সাহস হ'ল না হরিষতীর। তাঁর জনভাত হৃষ্টতে ও প্রায়ারীতিপৃষ্ট মনে কোণার সংশয় কেপেছে, কেপেছে লক্ষা। বহুত্ব প্রজারীকে ভিজা দিয়ে পুণা সক্ষরের জাকাক্ষা বহিত সংশয় আর লক্ষার ভাবে চাপা পড়ে গেছে। এ একটা উৎসবের ব্যাপার—উপহারে তার হাপ আই; লক্ষা সংশয় কাটরে উঠা হৃত্বর। অঞ্চপ্রহিচ্যত একটি টাকা ঘর্মসিজ্ঞ হাতের মুঠোর ক্রমশংই তেতে উঠছে।

ভিড় সরে গেছে। এ বাড়ির করেকট থেরে ও বউ এসে ইাড়িরেছেন ধরের মধ্যে। ওঁদের মূবে চোবে ধুদীর ছটা। উপহারের জিনিসগুলি গালচের উপর থেকে ভূলে ভূলে দেবছে গুরা—প্রশংসা করছে, হিদাব-নিকালও হচ্ছে সেই সঙ্গে।

अदे कार्यक्षांका कि पिल मा ? वाः कि चलव त्रकार्ज व

ক্ষনটা ! এভারসার্থ আর পার্কারের জিনিসটাই বা নক্ষ কি !
রিষ্ট্রপ্রাচটা ভূমি দিলে বুলি না ? নাভি কিনা ! আংটর তো দেখ দি বুলাবন ! বারটা না চোকটা ? আবার বইও একরাশ দিয়েছে কারা । টাকা খনেছ ?

একট বেরে বেঁট হরে টাফা গুনতে লাগল। গোনা শেষ হলে সে বললে, একশ' নিরেমকাই আর একট হলেই হ'শ হয়। তামার কোশাকৃশি বুবি বড়দি দিলে? মাগো, কি বুজুটে বরণ। আংট দিরেছিলে—দিরেছিলে—গুলব আবার কি হবে ? দণ্ডী-বর পেকে বেরিরে ছেলে সভ্যে আফিক বা করবে।

ভূই চূপ কর দিকি। মা সম্প্রেছ ব্যক্ত দিলেন। ওওলো এক পালে সান্ধিয়ে রাব। রাত্রে অনেকে আসবেন বেভে— অনেকে ভিন্দে দেবেন।

মোট বনক বেরে ছেলে উঠল। বললে, তা যাই বল মা—নাতির পৈতে দেওয়ার লাভ আছে। যা কিনিস পেয়েছ তাতে আর একটা পৈতে দেওয়া চলে।

ওর শিশু-সুলভ মশ্বব্যে স্বাই ছেনে উঠল শব্দ করে।
ভানালা থেকে সরে আস্ছিলেন ছরিমতী এর্গৃহণীও সেই
সময় হর থেকে বার হয়ে এলেন। সামনা-সামনি পড়ে
পেলেন।

গৃহিণী ছাসিম্ধে বললেন, জিক্ষে দেবে বউ ? তা বেশ তো—যাও থরের মবেঃ। এতথানি বেলা হয়েছে—ভিক্ষেনা দিয়ে তো জল খেতে পাবে না, যাও, জিক্ষে দিয়ে এল।

হরিষভীর মুধ চোধ তথম অত্যন্ত শুক্ষণে বোধ হচ্ছে—
কানের গোড়ার আলা তো করছেই—আর ভোঁ ভোঁ শম্ম
হচ্ছে—গলাচা শুকিরে কাঠ হরে গেছে। কোম রক্ষে

চাকাচা ভিনি ব্রহ্মচারীর প্রসারিত ঝুলিতে কেলে দিলেন।
ভারপর আর চেরে দেখলেন না কোম দিকে, শুল দেহটাকে
টেনে কোমক্রমে ভেতালার সিঁভিটার কাছে এসে বলে
পড়লেন। সিঁভির বাপের উপর একটা শ্রুপর্ণ ঘট বসানো
ছিল। হরিষভী সেট ভুলে নিরে চক্ চক্ করে শ্রুপাদ
করতে লাগলেন।

ইয়োরোপের শরৎ

গ্রীদেবেশচন্দ্র দাশ

বভাৱন পৰে আলে সাহাছের শেষ রশ্নি রেবা কম্পিত বিহন্দসন মুহু শান্ত তীরু; বার দেবা নিয়ে পথে পদচারী কীড়াক্লাভা বালিকার হানি দিনাভের অন্তরাগে তরা। তরুর ঐথব্যুরাশি বরে পড়ে উদাস বিশ্বর; ক্রু হ'তে ক্রুতর দিনগুলি রেবে যার আনবনে স্থীর্ণ হাক্র দীন কক্কাণে নোর; নগরীর দ্ব কোলাহল অসাই আনিতে তেনে তরীতলে বীরে হল হল

সুদ্র তরদসম; অলক্ষিতে তরল আঁবার হুড়াইছে পথ 'পরে; অতীতের সুধবৃতি ভার ব্যাক্ল নি:খাস কেলি' বুরিছে আমারি চারি পাশ বিগতের বর্ণনানিমার; চিন্তালীন এ প্রবাদে কত অতীতের সূধ, কত প্রীতি, বিস্মরের দান শরতের মততলে সভিত্তে ক্রণ অবসান।



माहित कथा (जया एव क्रांजि, (ल्लात ७ नमस्त कथा লেবা হয় ইভিহালে, মাত্র প্রকাশিত হলে দেশের প্রকাশ। रेजिरांग किश्वा कृत्भात्म ब्रह्मा थात्क मा। खबू पर्हमा ख बहेमा बादक। मान्य या बहमा करब ७ एडि करब, जांब প্রকাশেই দেশেরও প্রকাশ। শিল্প, সাহিত্য, কবিতা ও বিজ্ঞান এই সব এক এক খেলে এক এক সময়ের বিচিত্র ভাবের স্ট্রতৈ অপান্তরিত হয়। আমরা সাবারণত: যা কিছু চোখে দেবি, মনের উপর ভার যে ছারা পঞ্চে ভাকেই ছবি বলি। যা किह कारन छनि छारक सरम सरम राचि । क्रम, तम, नक, नक, नक, ७ प्पर्न बरे प्रदर्शनाटक निष्ट बाध कथात वार्गा कहा प्रस्त मञ्जू जर्द मक्म च्रूष्ट्रिहे बक्हे क्वार्श्य दौरा । चूजवार बहे দেখা-শোনার মধ্যে যে ছবি গছে উঠে ভাকে প্রকাশ করাই र'न তার २७ १ कि इ इवि । नर्क्ष कल, निःनर्क्ष इस । **मक्ट वा बाल्य करत (म बाया, नि:मस्य या हरन (म बरि)** ভাষার সুর নিয়ে যে ঝপ পায় সেমনের ভর্কই শুরুরচনা करत मा, त्र चामत्म हिव शक्त । जात्कर वना रह गाम।

যে কথা বলতে চাই এবং যা দেখাতে চাই, তার বিষরবন্ধর প্রকাশ-ভদীই হচ্ছে তার 'আট'। প্রাচীন কালের বিধ্যাত শিল্পী অথবা কবিরা যে নিদর্শন রেখে অমর হরেছেন, তার প্রকাশ-ভদীর পরিবর্তম যদি কোন দিন না হতে দেওরা হ'ত, তবে আজ লাহিত্য কিংবা শিল্পের অপ্রগতি থেমে বেত। কারণ, আবৃনিক কালের কোন কবি কিংবা লেখক পুরমো লেখার নকল না করে বদি সূত্রন তাবে প্রকাশ করেই থাকেন তাতে তাঁদের স্করির মাধুর্য্য কিছুমাত্র ক্ষে মাই। শিল্পী বিভিন্ন রক্ষমে চিরকাল বরে একই কথাকে ভিন্ন ভিন্ন রূপে প্রকাশ করে আগত্রেশ।

বিজ্ঞানের দিক বেকেও এ কবা বলা চলে যে, বৈজ্ঞানিক প্রকৃতির যে সব নিরম আবিছার করেছেন সেওলোকে কাজে লাগিরে তারা তাদের ক্লনাকে বাভবে পরিণত করেন এবং তার মধ্যেই রয়েছে তাদের ক্রির পথ। সেইরূপ সকল



বনের ভিতর গরীবের ঘর

ক্ষেত্ৰেই শিল্পে সভ্যের স্পৰ্শ থাকা নিভাশ্বই প্ররোজন। স্ববস্থ বৰন 'রূপ কথা' নানে 'রূপ ও কথা' তথন কথা দিয়েই যে রূপ স্কৃত্রি করা হয় সেটা নেহাং রূপক হলেও সভ্যের কাঠাযোটা কিছু থেকেই যায়। স্বপ্যতে সব লোকের কাছেই ভাল লাগ! এবং না লাগার কথা আছে। ছতরাং পৃথক পৃথক ভালর প্রকাশ ভিন্ন ভিন্ন নিজীর হাতে বিভিন্ন রক্ষে হয়। আগলে নাছ্য কত সুকর ক'রে যে বাঁচতে জানে, এই আদ্প্রসাদ আছে সকল রচনার পিছনে। বিজ্ঞানের কল এবং কলে গড়া নাছ্যকে প্রত্তী বলা চলে না। ভগবান ও নাছ্যকেই গুণু প্রত্তী ও প্রত্তী চুই-ই] বলা চলে।

হবি আঁকা সহছে এবন গুটক্তক কথা বলতে চাই। নোটাবৃট ভাবে ভা হচ্ছে এই:

ল্যাওকেণ পোরে ট এবং সামাজিক পৌরাণিক ও কাজনিক বিষয়বন্ধ এই কয় বরণের ছবিই সচরাচর আঁকা হয়। কি করে ল্যাওকেণ আঁকলে ভাল দে বাবে ? দেবা গেল—বিরাট আকাল, মাট-জল এবং ভার পারিপার্থিক সব কিছুকে নিয়ে ভাল লাগছে। এই বে দেবছি আরও এবন দেবছি কিনা ? আর এর ভেভর নৃত্যম্ম কি ? নৃত্যম বভাবতই চোবে আগে পড়ে। নৃত্যম কিছু বাকলে যমে একদেরে লাগে না এবং লাগে না বলেই বৃত্তী হই।

আকাশ এবং নাটর ভিতর যা আছে
তার সব কিছুকে নিরে ছবি আঁকলে
নাবারণতঃ ভাল না লাগবারই কথা।
বর্থন ট্রেনের কামরার বসে জানালা দিয়ে
একই দৃশুকে টুকরো টুকরো করে দেবি,
বনে হয়, হাঁভিয়ে দেবার চেয়ে গভিশীল



ৰীবিজয়লকী পণ্ডিত



ভাক্ষর : রবীক্রবাধ, গরনেক্রনাথ

অবহার দেবাটাই ভাল লাগছে। একটা
গাহ, দিগছ ও হেঁটেচলা একটা লোক
—এইটাই চোবে পড়ল বেশী। এই
গায়াল দুগুকে ছবিতে পরিণত করে
যখন দেখি, তখন দেখা ও অদেখা অনেক
কিছু তার সদে বোগ জরে দেখি। মনের
চোথ দিয়ে চাওরা এবং চোবে দেখা এই
হই ইছারই পরিতৃত্তি হয়। তবহু সবচূত্
আকলে মনে মনে আর দেখা হয় না,
মন তাতে বালি বাকে। ভাই বলে
বীধিকার মব্যে গৃহস্থ-নারীকের সংসারযাত্রার ছবি আঁকলে বে অনেকভলো
গাহপালা, বর ও করেকট লোকছনের
ছবি বাপহালা হবে, তাও নয়। আবার
হাটের অধ্যা রাভার ছবি আঁকলে বে



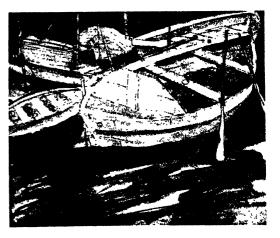
প্রিড জবাহরলাল নেহক

একট মাত্ৰ লোক দিয়ে হাট কিখা ৱাভাকে পৱিপূৰ্ণ বুবাবে, ভেষন কৰাও বলি না!

উদ্ধেশ্যর অপুপাতে যা দরকার এর বাইরে যেওলো থাকবে তাকে বর্জন করতে হবে। আবর্জনাযুক্ত না করে যুক্ত করতে হবে। সাধারণত: সকল ক্ষেত্রেই এই রক্ম একটা নিরম গড়ে তোলা হ'ল বলে ব্যতিক্রম যে হওয়া নিষেধ এমন কোমও আইন নেই। নৌকাকে গতিশীল ও হিতিশীল উভয় অবস্থায় দেথায় একই ধরণের আনন্দ।

পর্যাবেক্ষণ করলে দেখা যায় যে ক্পথাপী সব কিছুই ফ্রন্ড প্রতিতে চলেছে। চল্লিশ বছর যার আয়ু অর্থ্রেক জীবন ভার সুমে কাটে, দশ বছর ভার শৈশবকাল, লেখা-পভা, মাঠের বেলাব্লা, আড্ডা দেওরা ইত্যাদিতে লাভ বছর, পেটের বাঁধার বোরাকেরার আভাই বছর। এই উন্দিশ বছর ছর মাল

क्वित्व याचाव शव वर्षम (मर्ट्स (व. বৰ্ণতের কোনও কাবে লাগে নাই--ভৰন হতাশার অনেকের ভীবন-প্রদীপ ভিমিত-প্ৰায় হয়ে ভাগে। আভ স্বাইতে ৰগতের অনেক সমস্তার বোঝা মাধা পেতে নিভে হচ্ছে। সময়ের অপবারকে मरक्ष्म ना करान (वैटि शक् इस्त। এ বুগের শিল্পীর পক্ষে এ কেন স্থকর, এ কিলে খুকর, এ সকল ঘণ্টার পর খণ্টা বিচার করে দেখার সময় ও সম্ভাবনা क्य। भगत चन्न, किन्न मिए श्राव (वनी. এমন ভাগিদে সকলের পক্ষেই গভিনাল না হয়ে আর উপায় রইল কই ? খুলে ও জলে গরুর গাড়ী ও নৌকার চেয়ে বর্তমানে মোটরগাড়ী ভাহাত ও উড়ো-काशक (वने श्रीकाशका । अभ्य क्या वर्ण. जब क्यार. जब (त्रवीत छाव-श्रकारमञ ধরণে পরিবর্ত্তন দেখা দিয়েছে, ভার **जानगटभव विघाद अध्यक्ष १८०६. भट्दर्श** হবে। অল সময়ের দেখাকে ছবিতে হিজিবিজি লাইন টেনে প্রকাশ করা হয়। অবশ্র প্রকাশ করতে বেবার উপর অনেকৰানি দৰল थाका भवकाव। উদ্দেশ্যের নিয়মামুক্তিতা ও লক্ষণ লাইনেয় Stroke बदर Force चटनक्यानि कृष्टिय ভোগে। ভারই মধ্যে 'চার্ম্ম' অভ্যন্ত ্বেশী ক্ষেদ্ধলতে ঐ বক্ষই বুকার। একে অসম্পূর্ণ বলব, সম্পূর্ণ বললেও ক্তি থেই। কিন্তু সম্পূর্ণের সঙ্গে অসম্পূর্ণের প্রভেদ যেমন গুরুতর বলে মনে হয় আসলে ভেমন নয়। কারণ অপূর্ণকে মন



খাটের কোলে



বাহর শক্তি

বিষে পূরণ করে নিলেই, দর্শককে বঞ্চিত করা হয় না; বরং তৃত্তি বেশী দেওরা হয়। মনের ভেতর সাড়া বেশী জাগায়। রং বিশ্বেও এই পছতি কার্য্যে পরিণত করা যায় কিনা? এই প্রশ্নের উভরে বলব বং তৃলির চানে এটা ওটার সঙ্গে সঙ্গে এদিক ওদিক গিরে যেনুকণ স্কট্ট করে, ভার মধ্যে স্বলভা (boldness) প্রচুর ও বেগ (speed) অভ্যন্ত প্রশ্ন ।

ছবির মধ্যে আলো-ছারার (Light and Shadow) দিকে নজর না রাখলেও ক্ষতি নাই। চাদকে অনেকে কালো করেও আঁকে। শুলু বন্ধ কালোভে পরিপত হওরার ভাগ লাগে, এও দেশা পেছে।

লামাজিক ছবির বেলায় যথম মধুর ও চাষীদের হবি আঁকা হবে, ভা দেৰভে ক্ষেম হবে ? জীবিকা নিৰ্মাহ ভাৱা कि करत क'रत ? महरवत वाहरत अरमत বন্ধি। এরা দৈলে কর্করিত এবং মাসুষের মভ এদের বেঁচে থাকা নয়, ধনীর দরকায় শক্তি ব্যয় করে এরা উদরপৃত্তি করবার ८० इ.स. १ अहे अन्य (contrast) দৈৰাতে হবে সমুদ্দিশালী নগর অৰবা শহরের পাশে অভ্যম্ভ নোংরা অপরিজ্ঞ বভির ছবি এ কৈ। গণ-আন্মোলমকে যদি ছবিতে ল্পায়িত কঃতে হয় তা হলে কি করতে হবে ? গণ-আন্োলনের चिव एरव---'बामा, चर्च ও वस ठाडे,' बहे मामाचारवत सकानक। बता (क्यन ভৱে এবং কি ভণীতে নিজেদের

দাবি জানাচ্ছে—তা হবচ দেবনা চাই।

কাহাক অথবা কল-কারবানা করলার সাহায্যে চলে, নৌকা চলে বাহুর শক্তিতে। পুঁজীবাদীর সক্ষেত্রমকের এই যে তকাং তা দেখিরে তার জীবনযান্তার প্রতিষ্ট ঘটনার বহু রক্ষমের ছবি আঁকা যায়। তেমনি দালাল ও মহাজন বাদ্য-শস্ত মন্ত্ত রেখে যে প্রকারত্তর হবে এই বরপের যেন তা মর্ম্ম করে। এ বরপের ছবির উদ্দেশ্য তা এবং কারা এবং কারা এবং কারা এবং কারা এবং কারা এবং দায়ী তা দেখিয়ে দেওয়া।

বৰ্ষমান পরিভিতিতে দেখে

ও দেশের জনগণের মব্যে ব্যাপকভাবে ওলটপালট চলেছে।
মাহ্য ভাই নিয়ে যে সারাক্ষণ ব্যাপৃত। শিল্পীরও সমসাময়িক
প্রতিটি ঘটনার ছবি আঁকা প্রয়োজন। অভীত কালের
শিল্পকলা পর্যালোচনা করলেও দেখি, যথন যা ঘটেছিল
ভাই নিয়ে বহু ছবি আঁকা হয়েছিল। আলকের দিনে
শিল্পকলার বারা সমাজের কল্যাণে নিয়োজিত হওয়া



प्रक्रिक ଓ प्रक्रिकाती राजान

অত্যাবঞ্চক, কারণ শিল্পই মাহুষের মনে অহুপ্রেরণা কাগিরে তুলতে পারে। মহুষ্য-সমাক্ষে একটা বিশ্বার ব্যাপন্ধি ধে বর্ষরভাষুলক মমোরভির দারা সংঘটত হচ্ছে তার পুনরারভি প্রতিরোধ করতে শিল্পীদের আৰু দেশকর্মী হতে হবে। যত দিন পর্বান্ত সকলে মাধা তুলে দাছানোর ক্ষমতা না পাছে, তত দিন শিল্পীর তুলিতে গণ-আন্দোলনের ছবি কৃষ্টিরে তুলতে হবে। আসপে news and views যে ছবির একটা প্রধান অল এইটাই আৰু বিশেষ করে উপলব্ধি করবার সময় এগেছে। পোটেট ও পৌরাণিক ছবি সম্বন্ধে বিশেষ কিছু লেখার প্রয়েশ্বন কম। তবে প্রতিরূতির অর্থ প্রতিবিদ্ধ নয়, কোনো

লোকের মুখের আবল ও বরণ-বারণ কোন্ প্রকারের তার উপর কোর দিয়ে, তার প্রকৃতিগত বিশেষত্ব কুটরে তোলাই প্রতিকৃতির মোটামুট অর্থ। জোর করে সুক্ষর করাটা স্থাসমঞ্জন বিজ্ঞানের পরিচায়ক নয়।

পৌরাণিক ছবিতে পুরনো গলের ব্যাব্যা করাই প্রধান কাক। কাপ্সনিক ছবি ও পৌরাণিক ছবি বর্তমানে ছইই সমান, কাপ্সৰ অতীতের ঘটনাকে বর্তমানে কলনা করেই নিতে হয়।

সামাৰিক ছবি ছাড়া ভাৱ যে সৰ ছবি আঁকা হয় ভারও প্ৰয়োজন সমাজের কাছে বেশ আছে।

স্বাধীনতা ও বাংলা ভাষা

অধ্যাপক শ্রীচিন্তাহরণ চক্রবর্তী

শীর্থনাগের পরাধীনতার বন্ধন হইতে দেশ আছু মুক্ত। কলে গুরাদারিত্ব আরু তাহাকে মাঝা পাতিয়া লইতে হইল। সকল বিধয়ে আছু তাহাকে ধাবলথী হইতে হইবে—পরের মুখ চাহিয়া থাকিলে আর চলিবে না—বিদেশের অছু অপুকরণ আর তাহার পক্ষে শোভা পাইবে না। কেবল বাহির হইতে নয়, অগুর হইতে তাহাকে বিদেশী পরগাছা উপভাইয়া কেলিতে হইবে। বিদেশ হইতে নানা উপকরণ তাহাকে সংগ্রহ করিতে হইবে নিজের পরিপুষ্ট ও শোভার্থির জন্ধ—তাহারই চাপে যাহাতে নিজের আকৃতি ও প্রকৃতি বিকৃত না হইয়া য়য় সেদিকে সভক গৃষ্ট রাধিতে হইবে।

चामार्थित रेपनिकिन वावशास्त्रत च्छ-चामार्थित कून ● কলেৰ আপিস আদালত সভাসমিতির কাৰকরে এখন হইতে যথাসধৰ দেশীয় ভাষার আত্রয় লইতে হইবে। বিদেশী ভাষাকে অবঙ্গ ভ্যাস করিব না। বিদেশের সহিভ দেশের মৰো বিভিন্ন প্রদেশের সহিত ভাবের আদান-প্রদানের আ विरमणे काशास्त्र अर्व कृतिए रहेर्द, विरमणे कानविकात्नत ষারা নিজের দেশীয় সাহিত্যকে সমূদ্ধ করিয়া ভূলিতে বিদেশী ভাষা ও সাহিত্যে প্রসাচ পাঙ্জিতঃ অর্জন করা অনেকের পক্ষে वित्मय धाराबनीय हरेत. किंद्र छाहे विश्वा अकरे धारावन মধ্যে পরস্পর কথা বলায়, চিটিপত্র লেবায় যে ইংরেখী-মিশ্রিত দেশীয় ভাষাপ্রযোগের ব্যাবি দেশের সর্বত্ত ছড়াইয়া প'ভয়াছে ভাহার আণ্ড প্রতিবিধান অবশ্রকতব্য। চিটিবানি যদি বা বাংলায় লিখি, ভাহার শিরোনামা ইংরেজী অঞ্চরে লিখিবার লোভ আমরা কয়জন সংবরণ করিতে পারি ? কয়জনে নিজের বইয়ে মালিকের নাম হিসাবে নিজের নাম বাংলায় লিবিয়া बाचि ? वाड़ीय नाम छ मानिटकब नाम देश्टबकी स्वटक বিজ্ঞাপিত করাই মর্বাদাস্থচক বলিরা ধারণা করি। অতি-দাবারণ ব্যক্তিও চিটির কাগদের শিরোভাগে ইংরেণী অকরে

নিক্ষের মাম বৃদ্ধিত করিয়াই গৌরববোৰ করেন। ব্যাধির ব্যাপকতার ইহাই হইল প্রধান দক্ষণ। সকলকে সমবেত ভাবে একাঞ্জচিত্তে সংকর করিয়া এই মানসিক ব্যাধি হইতে বৃক্ত হইবে। ব্যাধিজনিত মোহ কাট্রা গেলেই নিজের দেশের ভাষা ও সাহিত্যের প্রতি প্রকৃত প্রভা জাগিয়া উট্টবে এবং তাহার উৎকর্ম সাবনের কল ঐকাভিক আএই ও চেঠা দেখা দিবে।

ज्यासिक्य बावना निष्क्रत माजुकाया निकात क्या विरम्ब यक् ७ अशास्त्रत अरबाक्न नारे। करण रेश्टबकी निकाब क्या আমরা যে পরিমাণ পরিশ্রম করি হাত্ভাষা শিক্ষার ক্ষ্যা ভদুপুপাতে কিছুই করি না। ভাই যধন মাতৃভাষার মধ্য দিয়া কোন প্রক বিধয়ের আলোচনা করি তখন ভাষার অপ্তরালে বিদেশ ছাপ লক্ষ্য করা যায়। ইহার বিকট রূপ, ইহার দেশীয় আঞ্তি ও বিদেশী প্রকৃতি সাধারণ পাঠকের চিত্তকে বিভাস্থ ক্রিয়া ভূলে। কারণ বিদেশী চিভাবারা দেশীয় বরণে প্রকাশ করিবার ক্মতা আমাদের অনেকেরই নাই। অসুবারের বেলা এই অক্ষমতা চরমমানার উঠে। তাই°অনেক ক্ষেত্রে বাংলা সংবাদপত্তের ইংরেকী সংবাদের যে অপুবাদ প্রকাশিত হর তাহা পাঠকের নিকট ছর্বোণ্য হইয়া পঞ্চে—ভাহা পঢ়িরা অনেক সমরই মুলের তাংপর্য ঠিক বরিতে পারা যায় না। সেইজনা অনেকে বাংলা সংবাদপত্র না পভিয়া ইংরেজী সংবাপত্র পভিতে বাধ্য হব। ক্রসাধারণকে কোন ক্লণে ছবের আয়াদ খোলে মিটাইয়া সঙ্গু থাকিতে হয়। विद्यानी ७ (मनी छेण्य णायांतरे (भीवर्ष ७ मापूर्वत जायान হইতে তাঁহাদিগকে বঞ্চিত থাকিতে হয়।

এই অসুবিধা দূর করিতে ছইবে—দেশের জনসাধারণের মধ্যে দেশবিদেশের জানভাঙার উন্তুক্ত ও সুধগ্রবেশ করিয়া ভূগিতে ছইবে। স্বাধীনতাসৌধের ভিত্তিপত্তন এইরূপ ভাবেই 96

করিতে হইবে। দেশীর ভাষা ও সাহিত্যের উৎকর্বসাধন বাতীত দেশের প্রকৃত উন্নতি হইতে পারে না, একবা ভূপিলে চ্লিবে না। ছবের বিষয়—দেশের শাসমব্যবস্থায় ভার বাঁহারা এহণ করিয়াছেন তাঁহারা এ বিষয়ে উলাসীন নছেন। দেশের শিক্ষাব্যবস্থা সর্বেচ্চে বান পর্যন্ত দেশীর ভাষার মধ্য দিরাই হওয়া উচিত। পশ্চিম বাংলার প্রধান মন্ত্রী बहानव जाहा न्यहेडरे बीकाव कविवादन। कनिकाजा বিব:বিদ্যালয়ও এ বিষয়ে উচ্চাদের আগ্রহ বাক্ত করিয়াছেন। কলিকাতা কৰ্পোৱেশনের অবিক্নায়ক প্রতিশ্রুতি দিয়াছেন যে আহ্বদিক ব্যবস্থা সম্পন্ন হইলেই পৌর সভার কার্য বাংলা ভাষাতে নিৰ্বাহিত হইবে। বাংলা ভাষার অপুরাইদের প্রম আখাদের কথা সঞ্জেহ নাই। কিন্তু সর্ব বিষয়ে বাংলা ভাষার প্রয়োগ সম্প্রদারণের পূর্বে বা সঙ্গে সঙ্গে বিভিন্ন বিধয়ে আধ্নিক **ভাবপ্রকাশের উপধোরী শব্দ সংক্ষানের মুবাবস্থা অবঞ্চ**-कर्षीय । अवेत्रण वारशाद चलात्व वेशत्वकात्रकि काशा चारवक क्ष्या देश्यको ना काना वाश्कित शक्क इर्र्शवा वा जन्नार्थयावक ছইয়া পভিয়াছে। লেৰকগণ যে যাহার প্রয়োজন ও বেয়াল-मछ देश्यको मास्यद वारमा প्राण्यस स्क्री कदिया शास्त्रस---चार्मक (काब धक कामब नाम चार धक कामब कामब काम हिम পাকে না। কোন কোন কেত্ৰে ভাল মল বিচার না ক'বেয়া এক বনের স্ট শব্দ অপরে গড়চালিকা প্রবাহের মত অফুকরণ করিয়া চলেন--বহু স্থলে অগ্রসিদ্ধ লেখকের স্টে উৎকুট শব্দ-সাহিত্য-ব্যবসাথীর দৃষ্টি এড়াইয়া যায়। ফলে এ বিষয়ে বাংলা লাহিত্যে এক বিরাট বিশুখলার রাজত্ব দেবিতে পাওয়া যায়। 'সাহিত্যের হটগোলে এমন শব্দের আমদানি হয়, যা ভাষাকে **চিরদিনই পীড়া দিতে পাকে ।' রবীজনাথের এই উক্তির যাধার্থ্য** আমরা পদে পদে অমুভব করিতেছি। মনীযিবর্গের দুষ্ট अभित्क चाइडे एव नारे वन। यात्र मा। वस प्रिम शूर्व धर्मछ গিরিশচজ বসু মহাশয় বিদেশী শব্দের আক্ষরিক অভ্বাদের অপুবিধার উল্লেখ করিরাছিলেন। এই প্রসঙ্গে তিনি আধুনিক বাংলায় ব্যবহৃত এই জাতীয় শব্দের একটি তালিকা সংকলম कतिशाधितन। वनौक्रमाथ अ प्रश्रक कृष्टे अथव निविधा-হিলেন 'অপুৰাদ-চৰ্চা' প্ৰবদ্ধে তিনি ইংৱেশীর অমুৰাদে সাধারণত: বেরণ ফ্রটবিচ্যুতি পরিলভিত হয়, चालाहमा कविदाधिलम । 'मचहद्यम' क्षवद्ध जिमि देशदक्षी শব্বের অপুরাদ হিসাবে বাংলায় ব্যবহৃত কভকণ্ডলি শব্দের मोधक है प्रविद्यास्य अवर अपूर्वाद्य मधुमा विज्ञाद अरङ्ग्छ শক্তাভার হইতে কতকভুগি শব্দ সংকলন করিয়া দিয়াছেন। ভাহা হাছা, বিভিন্ন পুশুকে ভিনি নানা প্রসঙ্গে অনেক উংকুট উংকৃষ্ট মৃতন শব্দ ভৈয়ার ক্রিয়াছেন।

বিভিন্ন ব্যক্তি ও প্রতিষ্ঠানও এই বিষয়ে অনেক কাক করিরাছেন। প্রীষ্টার উনবিংশ শতাব্দীর শেষণাদ হইতে প্রার নির্মাতভাবে বিভিন্ন বিজ্ঞানের শাহিতায়িক শক্তের বাংলা প্রতিশন্ধ সংক্লনের চেটা হইতেছে। এই চেটার কল নানা
সময় দীনা পত্রিকার স্বতন্ত্র পৃত্তকাকারে প্রকাশিত হইরাছে।
প্রকাশিত প্রস্থাত নিবছের একট তালিক। কিছুদিন পূর্বে প্রিয়ক্ত
জানেপ্রলাল ভার্ছী নহাশর প্রকাশ করিরাছেন।১ এই
তালিকা যে স্বাংশে সম্পূর্ণ তাহা বলা যায় না। তাহা ছাছা,
বলীর সাহিত্য-প্রিষদে অপ্রকাশিত সংক্লমও প্রচুর রহিরাছে।

কিছ কার্য যতদ্বই অঞ্জের হইরা থাকুক না কেন এ
বিষয়ে এবনও প্রচুর কাক বাকী রহিয়াছে। বৈজ্ঞানিক প্রছের
অপ্রচুর্বশতঃ অনেক পরিভাষা অব্যবহৃত রহিরা নিমাছে—
অনেকগুলির ব্যবহারযোগ্যতা ও অর্থপ্রকাশক্ষমতা এখনও সম্যক্
আলোচিত হয় নাই। পরিভাষাগুলি সাধারণত বৈজ্ঞানিকেরাই
তৈয়ার করিয়াছিলেন। ভাষা ও সাহিত্যের দিক হইতে
ভাহাদের উপযোগিতা বিচার করা হয় নাই। একল চাই
সাহিত্যিক ও সংস্কৃত্ত পশ্তিতদের সহযোগিতা। বস্ততঃ
পরিভাষা-রচনা কোন বিষয়বিশেষে পারদশী বা'শুবিশেষের
কার্য নহে। এই প্রসঙ্গে রাজ্ঞান্তর বস্থ মহাশার তাহার
প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞা হইতে যাহা বলিয়াছেন তাহা বিশেষ
প্রাবান্যায়। বস্থ মহাশয় বলেন—

বিলা বাহুল্য এই কাকে বিভিন্ন বিদ্যায় বিশারদ বহুলোক চাই। তাদের মৌলিক গবেষণায় হার্ণত অনাবংক, কৈছ বাংলা ভাষায় দখল খাকা একান্ত আবহুক। এব সমিতি সংকলন করবেন তাদের মধ্যে ছ-এক জন সংগ্রহত ঘাকা দরকার। এমন লোকও চাই যিনি হিন্দী উন্ন প বভাষার খবর রাখেন। সবোপরি আবহুক এমন ওণী এল ক থিনি লাখের সৌঠব ও স্প্রভাক্যতা বিচার করিতে পারেন, বিশেষত সঙ্গতি সংগ্রহ শব্দের।

এই জভই প্রবেশিকঃ পত্রীক্ষায় সমস্ত বিষয়ের পঠনপঠেনে মাতৃভাষার প্রবর্তনের ছচনায় কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্তৃপক্ষ বিজ্ঞানের পরিভাষা সংকলনে যে ব্যবহা ক'রয়া-ছিলেন ভাছাতে কেবল বৈজ্ঞানিকদিগের উপরই সমন্ত ভার अस इव नावे। दिखानिकान च च विषय পরিভাষা সংকলন করিয়া কেন্দ্রীয় সমিতি বা সমন্তর সমিতির নিকট উপগ্রাপিত করিতেন। এই সমিতির সভ্য ছিলেন বৈজ্ঞানিক, সাহিত্যিক ও সংস্কৃতব্যবসামী। ধেৰা সিধাছে-এই সমিতির আববেশনে অনেক সময় এক একটি শব্দ লইয়া ধাৰ্কাল আলোচনা চলিয়াছে। বৈজ্ঞানিকের প্রভাবিত দক সম্বন্ধে সাহিত্যিক ও সংস্থত পভিতের সন্মতি পওরা হইত। কোন শব্দ সন্থাৰ তাহাছের আপন্তি থাকিলে তাহারা অধানুসারে নৃতন শব্ গঠন করিয়া দিতেন এবং বৈজ্ঞানিকের সম্বতি হইলে উহা গুহীত হইত। এই অতিসুশ্র পদ্ধতি অসুসারে কাল হইলেও অবস্থ সৰ্বত্ৰ স্থকৰ পাওৱা যায় নাই---প্ৰভাবিত সম্ভ শব্দ প্ৰহণৰোপ্য বা নিৰ্দেখি হয় নাই। তবে সেক্ত পছতির ফ্রট দেওৱা চলে না। এই পছভিকে দৰ্বধা কাৰ্যকর ও সুকলপ্রস্থ ক্রিতে হইলে পরিভাষাসমিতির সকল সমস্তের ঐকাভিকতা ও কৰ্মনিঠা অবঞ্চল্লোকনীয়—ইহার অভাবে প্রতিপদে ক্রষ্টয়

১ श्राष्ट्रकार्याः ।

সভাবনা খাভাবিক। বিবিধ কর্মের মধ্যে বিশ্বিপ্ত চিন্ত লইরা অবদরবিনাদনের অভ সভার বসিরা কান্ধ করিবার উপ্পার নাই। এই সমিভির কার্বের উপর দেশীর সাহিত্যের ভবিশ্বং শীবৃদ্ধি নির্ভর করিভেছে। স্কুভরাং ব্যস্তভাসহকারে দারিছ উপেন্দা করিবা 'বেন ভেন প্রকারেণ' কান্ধ করিলে চলিবে না, করেকজনকে এই কার্বের গুরু ধারিত্ব মাধা পাভিরা লইতে হইবে—ইহাকে জীবনের ব্রভহিসাবে, সাধনা হিসাবে প্রহণ করিতে হইবে।

क्या विकिन्न विकामितियस्य गयः नस् विकारमञ्ज्य असम्ब অনেক সাধারণ শব্দেরও সার্থক প্রতিশব্দ উদ্বাবন করিতে ष्टित । दिखानिक नम **चार्यका हैशायत रिम्मिन अस्तास**न অনেক বেৰী। প্ৰতিদিন ধবরের কাগৰ মারকত এই কাতীয় বছ শব্দের সাক্ষাৎকার ধটে-ক্রিছ সুষ্ঠু অসুবাদের অভাবে অনেক ক্ষেত্ৰে প্ৰকৃত অৰ্থ বুৰিতে পাৱা যায় না। যুদুছাক্ৰমে करमकि উদ্ধ कराव প্রশোভন সংবরণ কবিতে পারিতেছি না। নিশ্চল অবস্থা বা স্থিতাবস্থা (Standstill arrangeneent), विज्-भरकानिविधे चक्न (Hindu majority area), বাহুৰী চল (air-conditioned), প্ৰাৰ্থনান্তিক বস্তুতা (post-prayer speech), পণপরিষদ (Constituent Assembly), विश्वापि विका (basic education), यम <पू ((reezing point) । अहेवन चावन वर नक चाटक, विष्ठ डामिका উপशायिड क्याद व्यवकान बनात मारे। অবভানি:সংশয়ে বলা চলে যে একটু চিছা করিবার অবসর भारेश बरे मकन एता मुख्यत्व चवर्तक मस निव्रमन करा द्व कठिन जानाव नरह। अहे अनरक वरीखनाव याहा जनवारहन ভাষা अत्रव दांचा प्रतकात। ভিনি বলিয়াছেন-'ইংরেজীতে যে সব শব্দ অভ্যন্ত সহক ও নিভাপ্রচলিভ, দরকারের সময় বাংলার তার প্রতিশন্ত সহসা বুঁলে পাওরা বায় না, তবন ভাছাভাছি যা হয় একটা বানিয়ে দিতে হয়। সেটা খনেক সময় বেৰাপ্লা হয়ে ইাড়ার, অনেক সময় মূল ভাবটা ব্যবহার করাই ছবিত থাকে। অবচ সংস্কৃত ভাষার হয়তো ভার অবিকল বা অভুক্রণ ভাবের শব্দ চুর্লভ নর।' বস্তুতঃ সংস্কৃতের भाराया **अक्रार्वायक नयअवयन इः**नारा मरह। **উদ্ব**ত শব্দপ্রলির খলে আমি কয়েকটার কিছু কিছু পরিবর্তন এই প্রসংশ প্রভাব করিতে পারি। যথাপুর্ব বা ষ্ণাছিত ব্যবস্থা, हिन्दरम वा दिन्छृतिर्ध चनम, जाननिष्ठश्चित, आर्यनाष्ट वर्ष्णा, मर्थिन **পরিষদ বা গঠন পরিষদ—এই শব্দ**র্থলি বোৰ হয় निकल खरश वा विভावशा, हिन्दू जरबात्रविक खक्क, वाश्मीण्य, প্রার্থনান্তিক বক্তৃতা, গণ-পরিষদ প্রভৃতি নবপ্রবৃতিত শন্ধ হইতে चरिक वर्षाणां क क काराव पिक स्टेटल (पायबूक्क ।

তবে এই ব্যাপারে আমরা সম্পূর্ণ উদাসীন হইরা পঞ্চিয়াছি।
বাংলা লক্ষ্ট ভাল হইল কি মন্দ্রইল তাহাতে সাবারণের কিছু
আসিরা যায় না, লাহিত্যিকেরাও অনেক ক্ষেত্রেই ইহা সইরা
আলোচনা করার প্রয়োধন অমুভব করেন না—অনেকে
ক্ষান্তিকে বাংলা গেপকদের মধ্যেক্চারিতার ইলিত করি-

রাই পরিভৃত্তি লাভ করেন। জীবিভ ভাষার দোহাই দিয়া ও এইরণ খালোচনাকে পাভিত্যের খাভ্রুরমাত্র বলিয়া উপহাস করিয়া আলোচনার মূব বছ করিবার লোচেরও অভাব নাই। আমরা নিশিচত হইয়া বসিয়া আছি---জীবিত ভাষার নির্বাধ খতপ্ৰ গভিকে নিম্নপ্ৰিত কৱিবাৰ চেষ্টা বাড়লভামাত্ৰ---উচ্ছুখলতাই ইহার শোভা, নিয়মনিঠা ইহাকে পছু ও বিকৃত কৰিয়া কেলিবে। তবে খাতপ্তাকে শ্রদা করিলেও উচ্ছ,খলতার আৰিপত্য কোনও ভাষাই উপেক্ষা করে বলিয়া মনে হয় না। ভাই পণ্ডিভগমাৰে ভাষার বুঁটনাট লইয়া আলোচনার প্রচলন সৰ্বত্ৰ দেখিতে পাওয়া যায়। ছ:বের বিষয়, প্রায় দেড় শভ वरमब स्टेन निक्षिण वामानी बारमा चायाब हुई।ब बीटब बीटब মনোনিবেশ করিতে থাকিলেও এ বিষয়ে ভাষার ভেমন দ্ব পড়ে बारे। अ विश्वता वाहामीत मत्माकाद्वत विद्राप्त कविश्व वरौधनाय भण्डहे विश्वाद्यन---'প्रबद्दन म्रखकद्वोभय वारमा-ভাষার বানান এবং ব্যাকরণ জীড়াচ্চলে প্রদর্গিত করিতে शादिन चर्क जमकरम देश्द्रकीत (माँही वा माजाव विहाछ मिटिल बदबीटक धिना श्रेटिक प्रश्ना'

কিছ আৰু আমাদিদকে এ মনোভাব ভাগে করিভেই হইবে। বাংলা ভাষার বিভঙ্কিরকা ও বিকাশপাধনের কচ আমাদিগকে মনে-প্রাণে চেষ্টা করিভে হইবে। বিদেশী-ভাববারাকে নিজের ভাষার নিজের মভ করিয়া গ্রহণ করিভে হইবে।

এই कार्यात क्रम विरामधक्रापत यहाक यवावमद (bilia छेना নির্ভৱ করিয়া থাকিলে চলিবে না। আৰু দেশের শাসম ও রক্ষণের ভার বাহারা গ্রহণ করিয়াছেন তাহাদিপকে এ বিষয়ে অএণ হইতে হইবে---শিক্ষা-বিভাগের সহযোগিতায় বিশেষজ-্দের লইমা। একট স্থায়ী সমিতি গঠন করিতে হইবে। সমিতির সদত্তপণের একমাত্র কাজ হইবে বাংলা ভাষায় আধুনিক ভাব-क्षकात्मत छेगरावि मक भरक्षन कता। अक्ष ठाशांतिवरक জাপান তুকী প্রভৃতি দেশের ব্যবস্থা আলোচনা করিতে স্ইবে --- আভান্ত প্রদেশের অত্রপ প্রতিষ্ঠানের সহিত সংযোগ স্থাপন क्रिए इरेरन-अक्षाक अर्पान अनुक्रम अर्थाक्रन वावक्ष नस् भवदः स्थालाहनः कृतिए इहेरतः। সংস্কৃত সাহিত্যের বিভিন্ন বিভাগ মন্থন করিতে হইবে— সম্পূর্বপে এই কালেই **छाराधिगटक बाखनिट्याग कविटल हरेटव---बन काटबव खा**व ভাছাদের আর বহন করা চলিবে না-কারণ অভ কাজের অবসত্ত্বে এ কাৰু করিবার মত সময় স্থবিধা ও মানসিক অবস্থা ৰুব ক্ষ লোকেরই হইতে পারে। কলিকাডা বিশ্ববিভালক্ষে প্রিভাষা-সমিতির কর্মবারার প্রভাক অভিজ্ঞতা হইতে এটুকু নিঃসলোচে বলিতে পারি যে ঐ সমিতির কার্ষের বাছা কিছ ক্রাষ্ট্র দেখা পিয়াছে বা যাইবে ভাষার কারণ সমিভিত্র সমস্তদের অন্তক্ষী ও নিশ্চিত ছইয়া কাল কবিবার প্রবাবের অভাব। ভবিষ্যতেও অনুক্রণ ব্যবস্থা অবসমন করিলে অনুক্রণ ক্রটির ছাত হইতে নিভুতি পাইবার উপায় নাই—ইহা ঞৰ সভ্য।

সঙ্গীতদামোদর

(বালালীর রচিত চিরপুর্ত্ত দলীত এছ) শ্রীদীনেশচক্ষ ভট্টাচার্য্য

ষর্গত হরপ্রদাদ শাস্ত্রী মহাশয় একবার হৃ:ব করিরাছিলেন, বাঙালী এক আত্মবিশ্বত জাতি। সংস্কৃত সাহিত্যের বিরাট্ ও সমূহ জান্তারে বাঙালীর অবদান বিষয়ে বাংলার শিক্ষিত সমাক্ষের অন্তর্ভা ও ওঁদানী এই ওাঁহার ঐরণ উল্পির নিদান। বর্তমানে বাংলাদেশে সংস্কৃত্যকর্চার শোচনীর হুর্গতি ও হুর্জনার আর একট ভয়াবহ পরিণতি দেবিরা আমাদের আশহা হইরাছে, বাঙালী আত্মবাতী জাত্মির মধ্যের কালে পরিগণিত হইতে পারে। কোন প্রসিদ্ধ সংস্কৃতপ্রস্থকার বাঙালী ছিলেন বলিরা উল্লেবযোগ্য প্রমাণ আবিস্কৃত হইলে কোন কোন বাঙালী মনীবা ঐ প্রধাণ উপেকা ও বন্ধন করিতে আগ্রহ প্রকাশ করিরা থাকেন। প্রাকৃতিসভাষ্ট্রের একক্ষণ বাঁটি বাঙালীর রচিত সদীতশান্তের বিবরণ প্রকাশ করিয়া আমরা ঐরণ আত্মহত্যাও আত্মবিস্কৃতির কলক বংক্টিকং মোচন করিতে প্রমাণ পাইব।

"সঙ্গীত দাৰোদৰ" এছের তিন্ট মাত্র পৃথি এযাং আবিস্থৃত হইয়াছে বলিয়া আমরা আনি। তগ্রের নবঙাপারিপতির প্রহাগারে রক্ষিত ও রাজা রাজেজলাল মিত্র বর্ণিত সম্পূর্ণ পৃথি (L. 369, পত্রসংখ্যা ১২১, লিপিকাল ১৬৪০ শক) এখন অপ্রাপ্য। কলিকাতা সংস্কৃত কলেকেও একট সম্পূর্ণ পৃথি ছিল (Des. Cat., No. 30, 1913 pp. 420-24 অপ্রবা, পত্রসংখ্যা ৫৬, লিপিকাল ১৬০০ শক)। ছাবের বিষয়, বহতর মুল্যবান পুরির সহিত ইহাও কলেকের পৃথিশাল। হইতে অপুশু হইয়াছে। আমাদের নিকট একট থতিত পৃথি আছে (পত্রসংখ্যা ৪৭)—তপ্টে এই বিবরণ সঙ্গলিত হইল। প্রস্থৃতি পাঁচ "ভবকে" বিভক্ত। প্রস্থারতে প্রতিপাছবিষয় বর্ণনাজলে "কৃষ্ণনীলা" (১য় শ্লোক) ও "হ্রি"য় ভৃষ্টি প্রার্ণনা (২য় শ্লোক) করিয়া প্রমাণপঞ্জী উলিবিত হইয়াছে (Des. Cat., ঐ, পু, ৪২১ আমাদের পৃথিতে এই অংশ পৃথ্য)। যথা—

জনম্বতি সত্তমিলমতীৰ মোদং লোচনমো:।

সঙ্গীতক্ষম্বক্ষে দশন্ধণে নাট্যদৰ্শণে মফ ।০

সঙ্গীতক্ষম্বক্ষে দশন্ধণে নাট্যদৰ্শণে মফ ।০

সঙ্গীতক্ষম্বনি-নম্বক্ষাৰ-সঙ্গীতসৰ্বস্ব-মটোমসীমু।

বসন্ধি সৰ্ব্বেচ ওপা: প্ৰযুক্তা ভাবাৰণী-নামদসাগ্ৰদাসু ।৪

যদ্যক সামং ভৱতাদিকেযু তত্তং সমাকৃষ্য মসান্ধ্ৰাজং।

. "ওতহব:" সপ্ত ত্যাদরেণ সদীতদাযোদর্যাত্নাতি । ৫

"সদীত সর্ব্যর্থ" মৈশিল মহাপণ্ডিত অসম্বর্গতিত বটে।
অসমরের কালনির্ণয়ে ইহার উপযোগিতা সক্ষীয়। গ্রন্থবার্গ সর্ব্যর উলাহর্শছলে যমুনাবিহারী শ্রীকৃষ্ণের লীলা নিব্দ ইয়াছে।

প্রথম ভবকের প্রতিপাভ বিষয় নাট্যভাব। তংগ্রসঙ্গে হয়
কম আফি নাট্যলাঞ্জকারের নাবোল্লেব আছে:—

বিরিক্শারদো রভা হুহুর্তরভতুব্র ।
বভেতে নাট্যভাবানাং বঞারো লোকবিঞ্চতাঃ ।
ছারিভাব (১) ব্যভিচারিভাব (৩৩) ও থাছিকভাব (৮)
সমূহের নাম ও লক্ষণাদির পর চতুর্কশপ্রকার "হাবে"র নাম ও
লক্ষণ এবং অঞ্চাব ব্রণিড হইয়াছে—

শুজরোক্তা ধ্যন্তি চিত্রং নদন্তন্ত্রং।
হ্রমতি স্ম হ্রমীকেশোং স্কাবৈর্ণবীকৃতৈ:।
তংপরে ক্রমান্তরে অভিসারিকাদের সমনকাল (১২),
নারিকাদের দশবিৰ মনোভব দশা, সঙ্গেত্ত্বান, ধাংশপ্রকার
দৃতী ও বিবিৰ বিভাবের ব্যাখ্যা শেষ করার পর সমাপ্তিস্ক্রক
প্রিচয়ন্নাকে লিপিবছ আছে:—

খ্যাভো যঃ কৰিচ ক্লবন্তিপদভো বিজ্ঞাচনৈর ক্লিভঃ
পৌত দেই মিনং মনন্দ্রন্থশাঃ সোহজীকনং আইরঃ ।
তথ্য আগত ভরৱত তাণতো সদীতদামোদরে
সদীতঃ তথকোহ ভিলাক্ষণতথা (१) ভাবাদিনামাদিমঃ ।পৃষ্ঠ
ত্ববিং তভকরের পিতা ছিলেন বিদ্বপ্দিত ভ্রথশাঃ আবর
কিবিচক্রবৃদ্ধি আতা স্ক্রা। এই শ্লোকটিই কেবল শেষ
পঙ্জি পরিবর্তন করিয়া প্রভ্যেক ভবকের শেষে গিশিব্দ্দ্

বিভারী ভবকো বকারিচরিতৈকার বিভীয়ো গভ: ॥ পু ১২ তানাদ্য: ভবকোহ চ্যুতভবনুতো যাতত্তীয়: পট্: ॥ ১৯ বংহীয়াংভবকোহদহারনটনোচ্ছাইম্বস্ত্রীয়ো গভ: ॥ ৬২ সাভোগ: ভবক: প্রপঞ্চিতরস: শ্রীমানমং পঞ্চয়: ॥ সর্বাশেষে বিভীয়ভবকে (৪-১২) নানাবিধ নামিকা (মোট সংখ্যা ৩৮৪, পু, ৫।২), চতুর্বিধ নামক, নাদ ও বহুবিধ শীভের বিবরণ আছে। ভবে হলে বরাং আছে:

"এতেষামেলাদীনাং প্রবন্ধতানাং লক্ষণসহিতো ভেদঃ সঙ্গীতচ্ছামণি-সঙ্গীতরতাকরাদে) বিলেখেণ বোছবাঃ।" (৭।১ "অভো লক্ষণমেতেষাং জেহং তৃত্তনাটকে" (ঐ)। গ্র-কাদির বিশ্বত ব্যাব্যার পর গ্রন্থকার গেবকের প্রতি সাব্ধানোজ্ঞিকরিরাছেন,

অবলেপানুৰে মান্ত্ৰার ওজনাঃ।
সাবধানৈরিদং পেবাং লিপিধোবো বমঃ থমং ।
কুঞ্চিনিএকাচাতা তিমিরং বমনীপটঃ । (১১।২)
এছকার বছস্থানে মনোহর স্লোকে কৃষণীলা বর্ণন করিয়াছেন। বিতীয় ভবক হইতে একটি শ্লোক উদ্ধৃত হইল :--ক্বং-ক্নক্তিমিন্ত্রনিতলাকি বুলাবনে।
ম্বংশম্ব্রাব্রস্ক্রিভন্তল্বিক্রতঃ
কুম্নম্যনামনো বভ জ্বার হারী হরিঃ । (১২।১)

তৃতীয় ভবকে: (১২-১৯) বর, বরপ্রভার, গমক, গণ, ফুলনা, বর্গ, তান, প্রাম, রাগ রাগিনী, দীতপাদ, তাল, তালুল-প্রভার ও তালবাতনপ্রকার বর্ণিত হইয়াছে। ভবকসমান্তির একটি প্লোক উদ্ধৃত হইল:

শ্রীরক্ষা মণিবছকত্বপবছো মুক্তাবদীমভন:
ক্রীড়াত্তেত্বসম্ভরক্তক্তরা গ্রহ্মনীলাহত:।
সাক্ষান্দ্রাক্পতিক্তৃমূর্বনতো যো বাতচ্ডামণি:
সোধং তালময়ড়গেচু ত্ণবং সংসারবছং হরি:।

চতুৰ শুবক: (১৯-৩৯) সৰ্বাপেক্ষ, দীৰ্ষ। ইহাতে শ্ৰুতি, বিদ্যকালি নামকস্চিব, পূত, কলা, নানাবিধ বাদা, অঙ্গার, বিষ্মাঞ্চ, নৃত্যা, নাটোণেতি প্রভৃতি নাটকীয় বস্তু বণিত চইয়াছে। এক ৮লে (২৫০১) স্বর্চিত "হত্তমুক্তাবলী" গ্রন্থের উল্লেখ আছে: "এতেয়াং লক্ষণং মনৈব হত্তমুক্তাবলীগ্রন্থে জাতবাং।"

"অভো মংঞ্চহত মুক্তাবল্যাং সকলানি বিশেষতো বোষবায়নি।

• পক্ষ তবকে: (৩১-৪৭) প্রবানত: রসের সক্ষণাদিবিচার
দৃষ্ট হয়। প্রস্থার বঙ্গলে অলবিতার নৃতন কবা বলিয়াকেন,
যাহা গনাত্র পাওয়া যায় না। রুপকের উদাহরণগলে,
"প্রহসন"মব্যে "ভহং ক্রীড়াশকরাব্যং সংকীর্ণং ভবদক্ষং।"
যবা চ "দুর্ভুসমাসমং" নাম প্রহসনং (৩৪:২), উপরপক্ষের
উদাহরণমব্যে "দমস্কন্তীসংহার" ও "বালিব্য" (প্রেক্ষ্ণ) (৩৬:২),
"সভাভামা" (পোঞ্জ) ও "মাহাকাপালিক" (সংলাপ)
(৩৭-১) উল্লেখযোগা। বিভীয় ভবকে নৃত্যে "রুদ্ধা"র উল্লেখ
কালে ক্রোত্রক্ষনক কবা লিবিত হুইয়াছে: "অব "বাঢ়া"দিদেশভোদন ক্রিদ্ধের ব্রা প্রবিশ্তি। সা যবা;

চক্ষ্ত্যাং কোটরাকী চ নাদয়া চৈব ছেংপরী। দম্ভক্ষ'ভকাপাটী হস্তিকর্ণ্যা তথা ।" ইত্যাদি (৫।২)

রস্বিচারের শেষে আছে, "কশ্চিদন্তাই প্রেমনামাহণরো রস্বোভি তথতে দশ রদা ভবছি। তেওঁসাব প্রেমনামার দশু "মালতীমাববটীকারাং" বংসল ইতি নাম। অধান কেচিছ, উদাছো বললৈবত: উ৯ত: পরশুরামদৈবত ইতি বচনম্বিক্না কাঞ্চনমিব চার্বাকা: কশ্ভদ্মিব কদাচিং প্রাক্ষোন মুক্ছি চেং ভদানীং রদানাং ঘাদশুং ন ব্যভিচরতি। (৪৫।১) অধাং প্রেম অধবা বংসলরদ, উদান্ত ও উছভর্মের সংযোগে মোট রসের সংখ্যা প্রাচীনমতে ঘাদশ, যদিও গ্রহকার শ্বং উদান্ত ও উছত রসকে বীর্বোন্তের অন্তর্ভুত ধ্রিয়াছেন। রসের বিচারে এক ক্ষম প্রাচীন আচার্যের নামও প্রস্থার উল্লেখ ক্রিয়াছেন:—

> অতএবাহুৱাচার্যা-"ভালুকি"প্রমুখা ইছ। অনৌচিত্যাদৃতে নান্যসভগত কারণং ॥(৪০।২)

গ্রন্থবিষ বসবিচারের পর একট মূল্যবান অক্সভিধান সংযোগিত হইরাছে: "এক: শান্তবলো শুক্তলোচনো ব্রন্থনীমণি:।" প্রভৃতি হইতে "রম্ভি.দবস্থ নৃপ.ত: পুআ: কোট ভবোদিতা:।" পৰ্যন্ত (৪৫।৬)। ছংখের বিষয়, একট বাজ পুৰি অবলম্বনে এই এম্বন্ধ মুক্তিত করা যায় না।

প্রছকারের পরিচয়: শেষভবকের পরিচয়শোকে একটি বিশেষণ পদ আছে 'গাভোগঃ' ভবক:। আভোগ ইত্তরি একটি অংশবিশেষ—"যত্রৈব কবিনাম জ্ঞাং স আভোগ ইত্তীরিভ:।" (৭।২) প্রেমিজ অরাভিয়ানের পর এইফার সবিভার আত্ম-পরিচয় দিয়াহেন।

নারায়ণানিরছ-শ্রীধরকুলনিজুকুযুদিনীবস্থু:। দোষাকরডাড়ভোংনজঃ স ক্ডজরে! কয়তি॥

অর্থাৎ নারায়ণ, অনিক্ষ ও ঐবরের বংশের অগভারসক্ষণ কলঙ্গীন চল্ল ভাতথ্যের ক্ষম হইভেছে। শ্লোকে ভিন ক্ষন পুর্বাপুক্ষধের নাম আছে।

আঁদেবকীনদন-রাজ্যশেষতে সুষ্ণে-দামোধরকো সংখ্যদতে। এবাং মদীয়াকপুরাং চতুরাং গ্রেড কুডিং বিশ্ব রুদেন পুরাং ॥

অর্থাৎ ছই পাণ্টাতে এছকাবের ৪ পুঞ হয়—দেবকীনক্ষ ও রাফশেধর, সুথেশ ও দামোদর। ইহাদের জন্মই এই রসপুর্ণ এছ রচিত হয়। সুত্রাং লক্ষ্য করিতে হইবে এছকার বার্কক্যে এছ রচনা করিয়াছিলেন।

অপুনর্ভব এবাস্ত ভবশ্চেদিতি ভগ্নহ:।

"লাহাড়ীয়"-কুলে জন্ম কবিতা-ছবিভঞ্য:।

অৰ্থাং ক্বিতা ও হ'ৱভজ্ঞ নামক দেবতা "লাছাড়ীয়" বংশে জন্মগ্ৰহণ করিলেন এই জাবিয়া, যদি জন্মই হয় আৱ যেন পুনৰ্জন না হয়। ধুবা যায় এই বংশে অবিভিন্নবারায় বহু কৰি ও বৈফাব জন্মগ্ৰহণ করিয়াছিলেন।

স্ত:পর হুই শ্লোকে এছে কোন কোন স্ফুট কিখা স্থানর বস্তর স্প্রণাধিকেন পরিত্যক্ত হুইল ভাহার কারণনির্দ্ধেশ স্থাছে। তৎপর এছকারের কৃত্বিদ্যভাস্থাক শ্লোক যথা,

> ব্যাকার-খৃতি-কাব্য-কোষ-ভরতালয়ার-তর্কাগম-ক্যোতিঃপিলল-নাটক-গ্রহণন-জীলায়ুদানীখরঃ। যো বৈপায়নবর্ণিতেংমুভক্ষোলারে নিমগ্রান্তরঃ স শ্রীমানকরোৎ শুভক্ষক্ষি: সলীভদাযোদরম ।

অৰ্থাং কবি শুভছর ব্যাকরণাদি ১০ট শাস্ত্রের চর্চারী (পার্ব্বভীতে শিবের ন্যায়)রত ছিলেন। তংপর রচিত এছত্বের নাম:

সঙ্গীতদামোদর-ছত্যুক্তা-বলী খ্বাদেবনমেব দেববি:।
সঙ্গীতশাবৈপ্রদিতৈ: কিমনৈয়্বনাবিদ্যক্তেয়ু পুলাকসিব্বৈ:।
অর্থাং গ্রন্থয়ে যে অয়ত সঞ্চিত ছইল ভাষাই নিবিশ্বস্থা,
ভাষাতে তৃপ্ত বাজির নিকট অন্য সঙ্গীতশাগ্রের প্রয়োজন নাই
ভূক্তব্যক্তির নিকট পোলাও যেমন নির্থক। অভঃপর ছুই
প্লোকে সঙ্গীতদামোদর গ্রন্থের প্রশান্তি ও খ্যাতিপ্রার্থনা
আহে। গ্রন্থের শেষ পুশিকা, "ইতি জ্ঞীলভক্তরকৃতং সঙ্গীতভাষোদরং সমান্তং।"

इरायक्षणान्य भाग्नाकाश्रकार्यत्र अक्षे कृष्ण वारमा

দেশে ব্যাপকভাবে দেখা দিয়াতে, পূৰ্বপুরুষের নামকীর্ডনে ও कीर्तिशानस्य चरळा। अरे लाहमीत चरळात करन चन्ना প্ৰাব্ন ১০০ বংসৱ মৰো ঘটকসম্প্ৰদায় ও তাঁহালের কুলপঞ্জী-সমূহ লোণ পাইরাছে। ভভহরের উপরিধৃত পরিচর অভি সামাত চেষ্টার বারেন্দ্র শ্রেণীর মৃত্রিত ও হত্তলিবিত সমস্ত তুল-পঞ্জী হইতে যবাষৰ উভাৱ করা যায় এবং তদারা অবি-সংবাদিতকপে তাঁহার অভ্যুদ্ধ কালও নিণীত হয়। আমরা সংক্ষেপে ভাষা বিরুত করিভেছি। গুড়্মরের উরিবিত "লাহাড়ীয়"-কুল স্থপ্ৰসিদ্ধ বাৱৈন্তভোষীয় কুলীন "লাহিড়ী"-বংশই वर्षे । এই वरत्नव चानि क्नीन वक्रणांचां विवाण भागांचिक নেভা উদয়নাচার্য্য ভাছ্ডীর কলা লীলাবভীকে বিবাহ করেন (মগেন ব 😗 : বঞ্চের জাতীয় ইভিছাস, বারেন্দ্র শ্রাহ্মণ বিবরণ, পু. ৫১)। তাঁহার বিভীয় পুত্র "কেশাই গেলেন নকৈড়" (যাদৰ চক্ষবর্তী : কুলশাস্ত্রদীপিকা, ২য় সং, ১৩১৩, পৃ. ১৬৪)। কেশাইর পুত্র খ্রীনারায়ণ "তদ্য নাম ধেবাই" (হন্ডলিবিজ পুৰি), তাঁহার ভোঠ পুত্র "আহ্যাই" অর্থাং অনিরছ (নগেন वन्न, के, पृ. ७१)। ভজ্যেईপুত্র "এ। বরাই", ভংপুত্র "বাপি नवारे भटक वर्ताभरक प्रकटकर कायरकर, जरू भटक ७७७३ চক্ৰবৰ্তী, আৰু পক্ষে কোকাই" (হন্তলিবিত লাহিড়ীকুলের ব্যাৰ্যা, ২।২ পত্র)। অর্থাৎ শুভঙ্গরের পিতা এবরের ৪ পত্নী ছিল, তৃতীয় পত্নী স্ভদার একমাত পুত্র ভভতর। ভভতরও **अंभिद क्लीन हिल्लन**— "कांभित मांग" चरभाम छांश हरेएछ উৎপদ্ধর (নগেন বন্ধ, পু ৭১-২)। শুভয়নের ৪ পুত্রের बार्या क्लभञ्जीरा ७ भूरकत छेरबर्य मृद्धे एस--रमधत, ६ईड, षात्यापर (क्षमाञ्जभीभिका, १. ১७७)। त्यस्य वर्षार दाव-শেৰৱের পৌত্র গলাদাসের মামে "তের আনি" অবসাদ (নগেন বন্ধু, পু. ৮৩) এবং তংপুত্র মহেশের নামে "মুদাধানী" অবসাদ ছইয়াছিল (এ, পু. ৮৭)। মহেলের পুত্র শিবনারায়ণ পর্যাত্ত কুলপঞ্চীতে নাম পাওয়া যায়। লাহিছী বংশের এই বারা এবনও বিদ্যমান আছে কিনা অনুসন্ধানযোগ্য।

ভ্ৰমনের অত্যদরকাল: উক্ত বংশ পরিচরের আলোচনা ধারা ভ্রমনের অত্যদরকাল ও এছনচনাকাল সহকেই নির্ণর করা যার। প্রাকৃ-শিরোমণি মুপের বিখ্যাত নৈরাধিক "প্রগল্ভাচার্য্য" (বাহাকে সকলেই, এবং বাংলার মনীধীগণও এতকাল "মৈবিল" বলিরা বরিতেছিলেন) পরচিত বঙনবঙ-বাদ্যের টীকার প্রারম্ভে ভ্রমনের ভাষার সহিত আন্তর্গ্রমনক সাল্ভ দেবাইয়া বংশের নাম ও পিতার নাম উরেধ করিয়া-ছেন: যদ্মিন্ দেবা অপি প্ররপ্রীবাসমাসাদরভো

ৰভা: শ্ব: কিং ব্য়মিভি জনিং পাদরং কাষয়তে।
"লাড়ী"বংশে কল্যরহিতে তত্ত্ব পুণ্যপ্রভাবাং
বীর: "শ্রীমচরপতি-মহামিশ্র"-বর্থ্যে বভূব ॥

অর্থাং (প্রসন্তের পিডা) মরপতি মহামিত্র পুণ্যবলে সেই "লাড়ী" বংশে ক্রিয়াহিলেন, যে বংশে অমরাবডীতে বাস

করার সুধ আহাদন করিরাও দেবভারা "আমরা কি বছ হটুব ?" এই ভাবিরা সাদরে ক্ষম কামনা করেন।

এই মহামিশ্ৰের পিতা "মাৰাই" (অর্থাৎ মাৰব) শুভঞ্জ ভ্ৰমক ঞ্ৰীৰর ক্ৰিচক্ৰবৰ্তীর পিতা ভ্ৰমিরছের সংখ্যাদর দ্বিতীয় ভাতা ছিলেন এবং প্রগল্ভের মাতা "ৰাহ্নবী" মহামিশ্রের ৰিতীয় কিখা তৃতীয় পত্নী ছিলেন (নপেন বন্ধ, পু. ৮১, সাহিত্য পরিষং পত্রিকা, ১৩৪৭, পৃ. ৭১-৭৩)। স্থভরাং শুভঙ্কর ও প্রসল্ভাচার্য ভাড়দম্পর্কিত ও সম্বয়ন্ত ছিলেন নি:সন্দেহ। वानम्बार्गार्या रेमबिन नक्षत्रीयात्र किकिर नववर्षी अवर वान्यप्तव সার্ব্বভৌষের কিঞিং পূর্ববভী ছিলেন (সাহিভ্যপরিষং পঞ্চিকা, ১৩৪৭, পৃ. ৭৫)। আমরা সার্বভৌমের ব্যবদাল ১৪০০-৪০ ঐটাক মধ্যে অনুমান করিয়াছি (ঐ, ১৩৫৩, পু ১)। তদকু-সারে প্রপল্ভাচার্যোর জন্ম ১৪১৫-২৫ সন মধ্যে অনুমান করিবা তাঁহার এছরচনাকাল ১৪৫০-৭৫ সন মধ্যে স্থাপনীয় (ঐ, ঐ, পু. ১১)। প্রগল্ভের পিতা "লাসপ্রকাশ" নামক ব্যাকরণ-দীকার রচরিতা মহাপণ্ডিত নরপতি মহামিশের অভ্যদয়কাল্ও ১৪০০-৫০ সন মধ্যে আমরা নিরূপণ করিয়াছি (পুরুষোত্তমের পরিভাষারতি প্রভৃতি, রাজ্গাহী সংস্করণ, ভূমিকা, পু. ১৬)। প্রগল্ভের ভাতৃদম্পর্কিত ও সমবয়স্ক শুভঙ্করের ক্ষম ১৪১৫-২৫ সনে ৰ্বিলেও শেষ বয়দে গ্ৰন্থ হচনা করায় তাঁহার বচনাকাল ১৪৭৫-১৫০০ সনের মধ্যে স্থাপন করিতে হটবে। শুভরবের প্রছে 'প্রেম'-রসের উল্লেখ থাকিলেও ভাষা 'বংসল'-রসের নামান্তরক্রপে ধরা ভ্ইয়াছে, গৌভীরবৈক্ষব সম্প্রদায়ের গোগানী-গৰ যে "উজ্ল"-রস স্থাপনা করেন, ভাছা কভকরের স্পঞাত। এবানে উল্লেখযোগ্য যে ভিন পুরুষে এক শতান্দী ধ'রয়ং পগল্ভ ও ভঙ্গবের অভিবন্ধপ্রনিভাষ্য বল্লভাচার্যের গভর প্রবিধ্যাত উদয়নাচাৰ্য্য ভাছতীও ভেদীয় সহক্ষী কুলুকভট প্ৰভৃতি 💐: ১৩শ শতাশীর প্রথম পাদে ব্যবহণ করিয়া ঐ শতাশীর ৩য় ও 8र्थ भारमः ১२४०-১७०० जन) कर्षछरभद्र हिर्णम निःगरक्राः বলা যার, ভাছার পরেও নছে পুর্বেও নছে। ইহাও উল্লেখ-ষোগ্য যে উক্ত প্রগল্ভাচার্য্যেরও প্রকৃত নাম ছিল "ওভয়র" (সাহিত্যপরিষং পত্রিকা, ১৩৪৭, পু ৭০-১)। উপরুক্ত ভাতার সহিত বিবোৰাশকায় বোৰ হয় প্রগল্ভ নামই অবিক প্রচারিত করা হইরাছিল। প্রপল্ভের বংশ এবনও নানাছামে বিদ্যমান ভাছে।

বাঙালীর আদ্ধবিশৃতি যদি শোচনীর হর বাবেক্ত শ্রেণী রাজ্পণের আদ্ধবিশৃতি অধিকতর শোচনীর। মহামিশ্রের "গ্রান্থ বাবাল করিছিল নব্যক্ষারের নানা গ্রন্থের উপরি টাকা (যাহা হইতে ৺কাশ্বিবামে একশতান্ধী বাবং নব্যক্ষারের একট পূবক্ সম্প্রদার গঢ়িরা উঠিয়াছিল) এবং শুভর্থের "সদীতদামোদর" ও "হত্তমুক্তাবলী"—একটনাত্র বাবেল্ল-পরিবারের এই বর্ণীয় অবদান বাংলার শিক্তিত সমাক্ষ এতকাল পরের বিনিন বলিয়া করীয় ভাঙারে গ্রহণবোগ্য বনে করে

ৰাই। মিৰিলার শিক্তি সমাজ গুড়ুরনেড বৈৰিল বলিয়া দাবি কৰিবেল (S. N. Sinha: Hist. of Tirbut, 1922, p. 172), তাহা লোটেই আক্রেয়ার বিষয় নহে। অভ্যানেশিক শান্তিকামনায় আনাদের অকাট্য দাবীও এ সমরে উবাপন করা অন্তচিত বলিরাই হয়ত কোন কোন বাঙালী মনীধী মন্তবা করিবেন!

হত্তমুক্তাবলী: অভিনয়শাল্লের এই এছট বহুল প্রচার লাভ করিয়াছিল। শেপালরাক্ষ্যের গ্রন্থলালার ইহার প্রতিলিপি রক্ষিত আছে (বলাক্ষরে লিখিত, পত্রসংখ্যা ৪২)। নেপালাবি-পতি कर्गका जिन्द्र सार देव (১৬১१-०० खे:) तो दिख चन एवत ৰত "খনপ্ৰাম" নামক পৰিত হত্তমুক্তাবলীর এক বিভূত দীকা রচনা করিরাছিলেন। ভাষারও প্রতিলিপি উক্ত এছশালায় चार्ष (भवत्रश्या २७०, निनिकान १३४ त्नभानाय चर्वार วษาย : H. P. Sastrig: Darbar Lib, Cat., 1905, pp. 27()-73 अर्डेना)। बाक्यबरादा अरे अरस्त भगावत শুভ স্বাভাবিক। নবখীপাবিপতি রাকা রাখব রায় (১৬২৫-१७ बी:) श्रश्र विधान अवर विधरत्मवी विश्वन । जिनि "रूज-মুক্তাবলী" অবলম্বন করিয়া "হন্তরতাবলী" নামে এক এছ রচনা ক্রিয়াছিলেন। বলাক্রে লিবিত ইহার প্রতিলিপি (প্র সংখ্যা ৪০) এখন অকৃসকোর্ডে রন্দিত আছে (Aufrecht : Oxf. Cat. pp. 201-2)। अश्वरक्षय प्रकृष भावकि विक्रण হইল :---

শ্রীহণ্ডমুক্তাবলীঞ্ব-প্রবন্ধে প্রো যত্ন্তান্ বিষয়ান্ ববৰ।
শ্রীরাধবল্টোণিপভিডপেতাং শ্রীহন্তরত্বাবলীমাত নোতি ।
রাজা রাধব অভিনয় সহজেও একট ক্ষুত্র গ্রন্থ রচমা করাইয়াছিলেন। ইহার একটি প্রতিলিপি আমরা নবধীপে পরীক্ষা
করিয়াছিলাম (নবধীপ এংলো-সেন্স্কিট পাঠাপারে রক্ষিত
২৪৩ সংব্যক পুনি, প্রসংব্যা ৩১— গ্রন্থমন্যে গ্রন্থকারের নাম
নাই)। শেষাংশ এই:—"ইতি সর্ব্যাভিনয়নির্মণণং।
ব্রাহ্মণাসূর্তিঃ কুরুদেকুকীন্তিঃ, শ্রীরাধবো রায় ইতি কিতীশঃ।
কীয়াং স দার্ঘং বিকিতারিবর্গো গ্রন্থঃ সমাপোষ ম্বাজ্ঞরা মরা।

হত্তবৃদ্ধাৰলী আসানে বুলিত হইতেছিল—Journal of Assam Research Saciety Vol. VIII-IX-এ ৰাজ ১১৩ প্ৰাক এবাবং প্ৰকাশিত হইৱাছে। নিবিসায়ও হত্তবৃদ্ধাৰলীর পূবি আবিষ্কৃত হইৱাছে (Mithila mss. Vol. II pp. 170-2), ভৱিষিত্তই ভূত্তবের উপর মিবিসার দাবী উঠিয়া বাকিবে। প্রহের শেষ প্লোকে প্রস্কারের প্রার্থনা জনেকাংশে সার্থক হইৱাছে। প্লোকট এই—

কীন্তিদিগভবিশ্রাভা পুত্রপৌত্রেযু • • *। সর্ব্বলোকাশ্ররাগত নৃপচিতে সবাস্থিতিঃ ।

আরভের চারিট প্লোক ব্যতীত সমগ্র গ্রন্থই সরগ অস্ট্রণ্ ছলে শ্বচিত। সদীতদামোদর এক সময়ে পূর্বাঞ্চো অতি প্রামাণিক এছ মধ্যে পরিগণিত হইরাছিল, এইরপ নিবর্ণন পাওয়া যার। কোচবিহারের নিববংশীর রাজা মল্লবের নর-নারারণ অভি বিবংশেবী ছিলেন এবং তাঁহার সময়ে (১০০০-৮৭ ঞ্জী:) তংগ্রদেশে সংস্কৃত্যকার যেরপ উন্নতি সাবিত হইয়াছিল পূর্বাক্ষণে তাহার তুলনা হর না। মল্লবেরের আতা ব্ররাক্ষ ভক্লবেরে আধ্যেশ "সদর্শকর্শণ" নাবে কামশালের একটি উংক্লই এছ রচিত হইয়াছিল। এছপেথের সমান্তিপ্লোক ও পূল্পিকা এই—

"बाखामवाणा वश्वववद्यस्यम्गार "क्रम्यक"-

ক্ষিতিপতেৰ্বিবংসলস্থ । ব্যক্তীকৃতং সকল্যধ্বতপ্ৰসাৱ (মারা) বিভাব্য কৃতিনো নমু ভূষয়**ত ঃ**"

"ইতি মহামহোপাধ্যার-ঞ্জিতবানকঠাকুরবিরচিতে সংগ্ৰ-কলপে পঞ্চয়ো বাণ: সমাপ্ত:।"

(কলিকাতা রয়েল এসিরাটক সোপাইটর পুৰির পু. ২৩-২৪ জইব্য)

গ্রহকার কামলাম্নে কুভবিভ ছিলেন এবং বহুতর প্রাচীন গ্রহের বচন উদ্ধৃত করিয়া গ্রহুটকে আলোকিত করিয়া রাখিয়া-ছেন। আমরা একট বর্গাহুক্তমিক প্রমাণপঞ্জী সকলন করিয়া দিলাম—মোগল-পাঠানের সংঘর্ষকালেও ভারতের পূর্বপ্রান্তে নিভ্তে বসিরা ভবানন্দ ঠাকুর কি কি গ্রহু পাঠ করিভেছিলেন আমরা বিশ্বিভচিত্তে ভানিতে পারিব।

অধক। আচার্য্য। কঠাতরণ। কথাসংগ্রহ (কামকবিকল্পহারো বিদ্যাপতিঃ কথাসংগ্রহে, পু, ২)। কামনীপিকা।
কাব্যপ্রকাশ। শীতগোবিন্দ। গুণপতাকা। ঘোটকর্ব।
কাব্যপ্রকাশ। শীতগোবিন্দ। গুণপতাকা। ঘোটকর্ব।
কাব্যপ্রকাশ । ভাংপর্যার্টাকা। দামোদরভট্ট। দামোদরে।
বস্তুরিস্করং (পৃ ২)। নাগরসর্বাধা। নাট্যলোচন। নারদ
("রপ্তা-নারদ-বিরিক্ষি ভূষ্কক্ক্-ভরতাচার্য্যপ্রভূতীনাং মতং"
পু. ৭)। নিবর্ব। পঞ্চশারক। ভরত। ভাস্থা ভোকরাক।
মঞ্চরী। মদনোধর। মাগভাাং ভরভূতিঃ। মূলদেব। রভিকল্পন। রতিরহুপ্ত। রুক্তই। বর্ত্তমানচরবাঃ (পু. ১৫
নৈরাধিক)। বাংখারন। বিদ্যাপতি। শারদাভিক। শুলারভিলক। শ্রীপর্তাচার্য্য। সনীভদামোদর। সারদ্যা। স্বভ্তসর্বাধ্য। শারদীপিকা।

এন্থের 'তৃতীয়বাবে' রগপ্রকরবে নিম্নিবিত সম্পর্ক উদ্ধৃত ক্ষয়াছে (পু. ১১) তথাচ "সদীতদামোদরে"

শৃদারে চ রতিঃ স্থায়ী বীরে চোংসাহসংজ্ঞক:।
জ্ঞানকে ভয়ং ভাতি হৌজে ক্রোবগুণোদয়: য
বীজংসে চ জ্ঞাপা; ভাং জ্যুণে শোক উচ্যতে।
জ্ঞুতে বিশ্ববোনায় শাঁতে শাভিসমূধব: ।
হাতে হাস ইতি স্থায়িভাবা এমু রলেম্বনী।

হারিভাবের গণনা সাহিত্যধর্ণণাদি প্রাচীনভর এছের প্রিবর্তে ভভররের অংশক্ষাকৃত আধুনিক এছ হইতে উদ্ধৃত হওৱার বুবা যায় ওতকর তংকালে পরবর্ত্তাবিকরণে প্রতিষ্ঠা লাভ করিরাছিলেন এবং হাল্যরদের বর্ণনাকালে ললীভদাবোদর প্রছে ওক্লবর্ণ বন্ধনর্হের উংক্ট পরিগণনামব্যে ওতকর স্বক্ত-প্রছের বে উল্লেখ করিবাছেন—"হত্তমুক্তাবলীকর্ত্ বিরং কবিমুদ্দ ফুডিঃ" (৪১)২)—ভাহাও সম্পূর্ণ সার্থক হইরাছিল। বলা বাহল্য হত্তমাবলী সলীভদাযোদ্যের পূর্বে রচিত হইরাছিল। পরিশেবে আমরা ৩৩ হররচিত সদীতদাবোদর এছের সহিত সদীতদর্শন এছের সাবীকাবিরে অবহিত হইব। সদীতদর্শকার করিবাবের পরবর্তী এবং সভবত: ৬৩ হরেরও পরবর্তী এবং ভিন্নবেশীর। এছ ও গ্রন্থলারে প্রার্থ পরিভাবের প্রার্থ পরিভাবের প্রার্থ করিতে পারে।

রবীন্দ্রসংলাপ কণিকা

শ্রীবিধুশেখর ভট্টাচার্য্য

•

"ৰাজী মৰাধের মীনাৰন !"

তথন আমি কাশীতে। ছাত্রাবস্থা। এক দিন বসিয়া আছি, হঠাৎ মনে হইল ব্রাহ্মণের মাছ-মাংস খাওয়া ঠিক নহে। সংশ-সংশ ছাড়িয়া দিলাম।

শান্তিনিকেডনে আসিবার কয় মাস পরেই আমার পেটের অহুথ হয়। বছ দিন হইলেও ইহা আর ভাল হইতে চায় না। আমার পরের "ফ্যামিলী ফিব্দিশিয়ন" শুক্লবে আমাকে মাছ পাইবার জন্ত বলিতে লাগিলেন। কিছ আমার মন ভাহাতে রাজি হইতেছিল না। এদিকে অত্নখটাও বাড়িতেছিল বৈ কমিতেছিল না। শেবে আমার পরাজ্য হইল। গুরুদেবের সঙ্গে আমার এই একটা দর্ত হইল যে, তাহার কথায় আমি এক মাদ মাত্র মাছ বাইব। যদি ইহাতে অত্বৰ সাবে তবে আবে। কিছু দিন থাইব। অন্তথা সঙ্গে দলে বর্জন করিব। গুলুদেব ইহাতে থুব খুদি হইলেন। আমি মাছ খাইতাম না, পরে খাইতে যাইতেছি, ইহা লইয়া তথনকার কুদ্র আশ্রয়টির মধ্যে সকলেরই বেশ একটা কৌতুকের সৃষ্টি হইল। ইহার মধ্যে বেশী উৎসাহ ছিল স্বয়ং গুরুদেবেওই। তিনি বলিতে नानित्नन "नाञ्जो मनात्यत मौनानन शहरत, हेशत छेनयुक ব্যবস্থা চাই " নিজেই তাহা করিলেন। ব্যবস্থা হইল, প্রতিদিন দিনে ও বাত্তে এক-একটি মাগুর মাছের ঝোল। ইহার ভার দেওয়া হইয়াছিল, বোধ হয়, আমাদের **म्बर्ये कालायित कर्यश्री कृ**ष्टियायवार्व উপরে, এবং ইহা ঠিক মত চলিতেছে কি না, তাহার তত্তাবধান করিতেন স্বয়ং গুরুদেব। এক মাসে বাটটি মাগুর মাছের জীবন গেল, কিন্তু ভাহাতে আমার জীবনের কোন কিছু ভাল হওয়ার কোন লব্দণই দেখা গেল না। আমি ওর-**एक्ट्रक हेडा कानाहेबा मर्छ-अञ्चमाद्य छेडा मरक मरकडे वर्कन** ক্রিলাম। ভাহার পর আমার নিরামিষ আহার অব্যাহত

আছে। আমি মনে করি ইহাতে আমি খুব ভাল আছি।

নিরামিষ আহারের আর একটা গুণ আমার মনে হয়।
যখন মাছ থাইতাম তখন এক দিন তাহা না থাকিলে মনটা
কেমন করিত, ভাল লাগিত না। কিছু ভাহা বর্জন করিবার
পর ভূলেও কখনো সেজল আমার মনে ঐ অস্বস্তিভাব
আদে না। শাস্ত্রে পড়িয়াছি, কামনাই হইতেছে বন্ধন, অল বন্ধন নাই—"কামবন্ধনমেবেদং নাল্ডদন্তীহ বন্ধনম্ন" এ বেমন ছোট বন্ধনের সম্বন্ধে তেমনি বৃহৎ বন্ধনেরও সম্বাধ্যে।

পরে আমি দেশী ও বিদেশীদের সেথা নিগমিব আহারের অমুক্লে ছোট-খাট অনেক বই পড়িয়াছি। এই সমস্ত বই-এর কোন-কোন থানিতে বৈজ্ঞানিক দৃষ্টিতে দেখান হইয়াছে যে, মামুষ মাংসালী (carnivorous) জাব নহে, ফলালী (frugivorous)। একথানি পৃত্তিকায় পড়িয়াছিলাম যে, বৈজ্ঞানিকেরা ভো বছ বিষয় বিচার করেন, কিন্তু তাঁহারা প্রায়ই বিচার না করিয়াই আহার করেন, যাহা ভাল লাগে ভাহাই তাঁহারা থান।

ર

কাছে বস৷

আমি গুরুদেবের কাছে প্রায়ই সন্ধার সময় বাইডাঁম।
গুরুদেবও প্রায় দেই সময়ে রাত্রির আহার গ্রহণ করিতেন।
তিনি থাইতেন, আমি কাছে বসিয়া গল্প করিতাম। এক
দিন তাঁহার কাছে গেলেই তিনি বলিলেন "শাল্পী মশায়,
আজ আপনি নিঃশন্ধচিন্তে আমার খুব কাছে বসিতে
পারেন।" তিনি কী বলিতে চাহিতেছেন, আমি ব্ঝিলাম। সেদিন তাঁহার থাদ্যের মধ্যে মাংস ছিল না।

শুরুদের কথনো মাংস খাইতেন, কথনো বা আনেক দিন খাইতেনও না। কথনো কথনো খান্ত সহজে পরীক্ষাও করিতেন। কথনো কথনো কাঁচা খান্ত খাইতেন। একটা অভ্ত থাছের কথা বলি। ছিরের ময়ন দিয়া কটি-লুচির কথা সকলেই আনেন, কিছু শুক্লদেব কথনো কথনো রেড়ির তেলের ময়ন দিয়া করা কটি থাইতেন। একদিন তিনি ইহা নৃতন-নৃতন থাইয়া কতই না ইহার প্রশংসা করিলেন। আমি কিছু এ পর্যন্ত ইহার স্থাদ গ্রহণ করি নি, করিবারও আশা রাখি না। কোন রসজ্ঞ পার্ঠক পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পারেন। আমি যেদিনকার কথা বলিতেছি সেদিন প্রশাস্তবাব্ কলিকাতা হইতে শান্তিনিকেতনে আসিয়াছিলেন। গুক্লদেবের জন্ত বে কয়থানি কটি হইয়াছিল তাহা হইতে তিনি কিছু ভাগ পাইয়াছিলেন।

মাংসাহার

মহযি দেবেন্দ্রনাথের পাস্তিনিকেতন আশ্রমে আমিষ আহার নিষিদ্ধ। ইহা একথানি প্রস্তরফলকে থোদাই করা আছে। প্রথমে ইহা ঠিক পালন করা হইত, ভারণর, ধেমন হইয়া থাকে, ইহা উল্লভ্যন করা হয়, বা আঙ্লের আড়াল দিয়া পালন করা হয়। মাঝে মাঝেই ইহা লইয়া আশ্রমে বাদান্থবাদ হইত। দেখা গিয়াছে, কখনো ইহা বন্ধ করা इरेबार्ट्ड, कश्वता वा **आवाद ठानान इरेबार्ट्ड**। **अक्टल्टव**द यन এ বিষয়ে দৃঢ় ছিল ना। এক দিন কথা হইল, এই বিষয়ে একটা আলোচনা কবিয়া কিছু স্থির কবিতে इटेर्ट । दार्क मृज्य इटेर्ट । निक-निक शक मूर्यरन्त्र অামরা প্রস্তুত হইতেছি। আমি ছিলাম নিরামিষ-ভোজীর পক্ষে। সকলেই ভাবিতেছেন, সেদিন তুমুল তর্ক হইবে। কিন্তু গুরুদের অতি শাস্ত ভাবে চমৎকার মীমাংশা করিলেন। তিনি বলিলেন, আমিষ আহার ভাল कि यन हैश नहेंगा छक कतिया कांक नाहै। যে হেতু আমাদের দেশে অনেকে ইহা চান না, সেই ৰুৱা তাঁহাদের মনে যাহাতে কোন আঘাত না লাগে ইহাই ভাবিষা আমাদের উহা ত্যাগ করাই উচিত। সকলে ইহা মানিয়া লইল। সেদিন যে রূপেই হউক জ্বলাভ কবিয়া **আমি উন্ন**সিত হইয়া উঠিয়াছিলাম।

ইছা লইয়া গুরুদেবের সঙ্গে আমার একাধিকবার তর্ক ছইয়াছে। ইহা যে সব সময় খুব শাস্ত ভাবে হইয়াছিল ভাহা নছে। আমি যেন ভাহাতে কিছু মনে না করি গুরুদেব ইছাও আমাকে বলেন।

আধুনিকদের মধ্যে অনেকেই ডিমকে নিরামির থাছের
অন্তর্গত মনে করেন। তাঁহারা আরো বলেন যে, ভাহাতে
জীবহুত্যা করার পাণও হয় না। আমার মত ছিল সম্পূর্ণ
বিপরীত। আমি বলিভাম, বদি ডিম থাইলে জীবহুত্যার
পাপ না হয়, ভবে জ্রণহুত্যায় পাপ হয় না, ইহা বলিতে
হুইবে। যে সুৰ ডিমে বাচ্চা হয় না সেই সুব ডিমই খাওয়া

হয়, তাঁহাদের এই যুক্তিবও মূল্য অতি অল্প। কারণ, এইরপ বাছিয়া বাছিয়া ডিম আনা হয় না। ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ পান্তিনিকেতনেই সেই সময়ে পাওয়া গিয়াছিল। এণ্ডুজ সাহেবের এক প্রিয় ও প্রাচীন বাব্টি ছিল, নামটি মনে আদিতেভে না। এণ্ডুজ সাহেব ঐ সময়ে "বেণুক্লে" থাকিতেন, পরে তিনি তাহা আমাকে থাকিবার জন্ত দেন। একদিন দেখা যায় সেই ঘরে ঐ বাবৃটি তাঁহার জন্ত যে সব ডিম আনিয়াছিল তাহার মধ্যে একটি ফুটিয়া গিয়া বাচ্চা হইয়াছে।

আজকাল দেখানে এ প্রশ্নের কোন বালাই নাই।

^৪ সন্যাসগ্রহণের কল্পনা

যথনকার কথা বলিতেছি তথন আমাদের আশ্রমের আর্থিক অবস্থা বড় ধারাণ। এ জন্ত খুব ভাবনায় থাকিতে হইত। কিন্তু তাহা হইলেও, আ শ্রমের দিক্ হইতে বলিতে হইলে বলা যাইতে পারে তাহাই ছিল দেখানে উৎকৃষ্ট কাল। আমরা শান্তি নি কে ত নে বাস করিতাম। অর্থের চিন্তায় আমাদের মনে হইত, বদি আশ্রমে ১০০টি মাত্র ছাত্র হয় তবে আমাদের আর কোন শুভাব থাকিবে না। কিন্তু পরে দেখা গিয়াছে, ছাত্র-সংখ্যার বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে আমাদের অভাবও নানামুথে বাড়িয়া গিয়াছিল। যাহাই হউক, একদিন গুরুদেবের সঙ্গে কথাকৌতৃক হইতেছে; প্রসক্তমে আশ্রমের আর্থিক অবস্থার কথা উঠিল। আমি বলিলাম একটা কাজ করুন। তা যদি করিতে পারেন, তবে আর কোন অভাব থাকিবে না। তা কেবল আশ্রমেরই নহে, আপনারও নহে, এই আমাদের সকলেরই। পরম স্থেথ আমাদের দিন যাইবে।

'वनिया (यन्त्र।'

'সেটা খ্ব সোজা। আপনি ষদি সন্ন্যাস গ্রহণ করিতে পারেন। একটা কৌপীন আঁটিয়া যদি কাশীর দশাখমেধ ঘাটে একবার বসিতে পারেন, তবে আর ভাবনা কী ? আপনার দাড়ি-চূল ভো লম্বা-লম্বা আছেই। চেহারা খানাও স্থার। লোকে যখন জানিবে, রবিঠাকুর সন্ন্যাস লইয়াছে, কৌপীন আঁটিয়া, ছাই মাথিয়া দশাখমেধে বসিহাছে, তখন টাকাকড়ি ফল-মূল ও অগ্রাম্ম খাদ্য সামগ্রীর কথাকী, দেখিতে-দেখিতে খেতপাথরের একটি মন্দির করিয়া ভাহাতে আপনাকে স্থাপন করিবে।* সেখানে ভক্তদের শিশুদের ভিড় ঠেলা আসাধ্য হইয়া প্ডিবে।'

'কিন্তু আমি যে, সংস্কৃত বচন ঝাড়িতে পারিব না।' 'সেকন্য চিন্তা কী ? ক্ষিতি ও আমি আপনার চেলা

আমি এইরপ একটি ঘটনার কথা লানি

হইয়া সদ্ধে সদ্ধেই থাকিব, থাকিতেই হইবে, অন্যথা ভক্তদের দানগুলি সামলাইবে কে? কিভির বপুথানিও তো অয়ংই একটি সন্ন্যাসীরই মত। তাহাকে বেশ মানাইবে। তা ছাড়া, আশনি মৌনী থাকিবেন। যাহ। কিছু বলিবার-কহিবার থাকে আমবা ছই ছনে তাহা করিব।'

'তা ভালই হৃঁইবে। আমি মৌনী থাকিয়া একটা আঙুল তুলিব, আর আপনারা তাহা দেখিয়া তুইটি আঙুল তুলিয়া উহার এটা দেট। বা হয় একটা ব্যাখ্যা করিয়া, সমবেত ভক্ত ও শিশ্ব-মগুলীকে তাক করিয়া দিবেন!'

আমাদের মনে করা ভাল, শত-সহস্র অ-রবীন্দ্রনাথের মধ্যে ষেমন একটি মাত্র রবীন্দ্রনাথের আবির্ভাব "বহুজন হিতায় বহুজন স্থায়" হইয়াছে, শত-সহস্র ভণ্ডের মধ্যে একটি মাত্র শাধুর আবির্ভাবও তেমনি হইয়া থাকে।

অনাবৃত স্থানে মৃত্যু

একদিন গুরুদেবের সঙ্গে কাশীর কথা হইতেছিল। কাশীর গলার ঘাটের সম্বন্ধে তিনি বলিতেছিলেন। তিনি বলিলেন 'দেখিলাম মাঝ গলায় ছোট একধানি নৌকায় একটি আসম্মত্যু সম্যাসীকে মণিকর্ণিকার ঘাটে লইয়া যাওয়া হইতেছে। নৌকাধানি তব-তব করিয়া চলি-যাছে। সন্যাসী চিৎ হইয়া আকাশের দিকে মৃথ করিয়া বহিষাছেন।' আমাদের সমাজে কালীতে মৃত্যু, বিশেষতঃ মণিকর্ণিকায় মৃত্যু প্লাঘনীয়।

শুক্রদেব বলিতে লাগিলেন 'সন্ন্যাসীকে ঐ ভাবে লইয়া বাওয়া হইতেছে দেখিয়া আমাকে খুবই ভাল লাগিয়াছিল। মরণের সময় এইরূপই মৃক্ত অনাবৃত্ত আকাশের দিকে তাকাইয়া থাকাই ভাল। চোথের সামনে বেন কোনরূপ আবরণ না থাকে। আমার মৃত্যু বেন এইরূপেই হয়। আপনার কাছে আমার অন্তরোধ, আমাকে ঘরের মধ্যে মরিতে দিবেন না।'

ধবের মধ্যে মরিতে না দেওয়া আমাদের স্মাজের বীতি।

গুরুদেবের মৃত্যুর সময়ে এই কথাটি কভ্পক্ষের করেকজনকে জানাইয়াছিলাম, কিন্তু কাজে ইহা হয় নি। তাঁহার ঐ অস্থরোধ আমি রক্ষা করিতে পারি নি! তাঁহার জোড়াগাকোর বাড়ীতে ঐ সময়ে এত জনতা, এত ভিড় যে বলিবার নহে। কবির ন্যায় ব্যক্তির মৃত্যুতে সাধারণের যে সংয়ম ধৈর্য, গান্তীর্য ও ভ্রমতা পালন করা স্বভাবতই কর্তব্য ছিল, তাহা বিন্দুমাত্রও দেখা যায় নি। ঐ উচ্চুন্থলতা এতদ্র উঠিয়াছিল যে, তাঁহার চিতায় তাঁহার একমাত্র পুত্র রখীজনাথ অগ্নিসংযোগ করিতে পারেন নি, যদিও তিনি কাছেই ছিলেন। পুত্রই পিতার চিতায় অগ্নিসংযোগ করিবেন ইহাই সামাজিক পদ্ধতি।

স্বাধীনতা-তীর্থে

শ্রীশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

আসিরাছি পথপ্রান্তে।—বেমা না, বেমা না, তীর্বানী, যানা তব হর নাই শেষ, হে বিপ্রান্ত, বাকি আছে আরো কিছু ক্লেণ, গতি প্লব কোরো না কো, হোরো না বিষমা। বিচারের কাল নাই, নাই বিবেচনা, বিজ্ঞপ করেছে অভে, সরেছ লে প্লেষ, তবুলে চলার ছলে আলে নি আবেশ, কিছু পথ বাকি আজো,—মিটবৈ কাষনা।

গভব্যের সীমা এল, তবু উচ্ছু খল !
মন্দিরের চূড়া ওই দেখা যার হোধা।
বৈধ্য হারাঝো না, আজ হোরো না চকল,
সেধার বিরাজ করে আমার দেবতা।
চেনো তারে, হে দিগ্রাভ ব্যধ্র বাত্রীদল ?
সে কোনু দেবতা ভানো, সে বে স্বাধীনতা!

শোন, শোন বিশ্ববাসী থেবেছি উচ্চারে, থেবেছি সে মন্দিরের অপূর্ব্ব দেবতা। প্রাক্তন মিলেছে আসি অগণ্য জনতা প্রবেশের অবিকার লকি' মুক্ত হারে, উত্তীর্ণ হরেছে তারা পরীক্ষার পারে। লুপ্ত হোক্ পর্যপ্রম, প্রতীক্ষার ব্যথা, মোছ অতীতের প্রামি, কোরো না অভবা, ভোল দৃষ্টি, নহু নত লুখনের ভারে।

চেরে দেব প্র্কাকাশ নির্দ্বের, নির্দ্বর,
কোন বিভীবিকা পারে দেবাইতে ভর ?
এল দিন, এল দিন, হোরো না বিজ্ঞান,
ভিড হোক বিবাহীন, হও স্থমিভর।
ভাবার ভারত হবে আলোকে উজ্জ্ল,
শোদ, শোদ সে দেবতা দিব্য জ্যোতির্দ্ধর।



প্ৰকাপ সভায় মাৰে মাৰে বাৰা স্ট্ৰ হওৱায় সপ্ৰতি ধৱোৱা বৈঠকেই আন্দোলনই চালানো হজিল।

ধরণীকান্তের মৃষ্টি ক্রমশই জোরালো হয়ে উঠছিল। বহুদিন প্রবাসে বাল করেও বাঙালীথের অভিমান ভার অভি
প্রবল। নানা নির্বাচন সহ করেছে সে একছে। সে চার
প্রবাসে থেকেও বাঙালী বাংলা ভাষার কথা বলুক, বাংলা
নাহিতা বেশি ক'রে চর্চা করুক, বাংলার সংস্কৃতিকে আরও ই
উক্ল করে ভূলুক। বলা বাচলা অবাঙালীরা এটাকে বাঙালীর
ওছত্য ভিন্ন আর কিছু ভাবতে পারেনি, ভারা বলে, বরণীকান্তের এই বাঙালীছবোৰ ভারতবর্ষের পক্ষেই বিপক্ষনক।
কারণ সমন্ত ভারতবর্ষ যধন দিল্লী ভাষা এবং দিলী সংস্কৃতির
অধীন হতে চলেছে ভখন ভার মধ্যে বাংলা ভাষা ও
সংস্কৃতির কীলক প্রবেশ করালে হিবভিত ভারত আরও কত
বতে ভাগ হয়ে যাবে কে ভানে।

কিছ এ সৰ কৰার মধ্যে কোনও মৃক্তি নেই। ধরণীকান্তর এ বাধা ঠেলে চলার উৎসাধ আছে।

সে দিন প্রবাসী বাঙালীদের আহুত সভায় সে এই কণা-খলো বলহিল---

"বাংলা লাহিত্য ভারতবর্ষের অভাভ প্রদেশের সাহিত্য থেকে খতন্ত, উন্নতও বটে। রবীক্ষনাথ পর্বস্ত যে মুগ এলে খেষ হ'ল, শুধু সেই মুগের হিলাব বরলেও দেখা যায় বাংলা ভাষায় যে সাহিত্য রচিত হরেছে তা পৃথিবীর যে-কোন সাহিত্যের সঙ্গে সমান আসন দাবি করতে পারে, এবং সে দাবি তার বীকৃতও হরেছে এক দিক দিয়ে। কিছু একা রবীক্রনাথের রচনার মধ্যে দিয়ে আমাদের এই গৌরব লাভ হলেও রবীক্রনাথের ধারা উধ্ধ মুগে বাংলা ভাষার যে উৎস্কৃত্ত উপজাস, ভোট গল্প, কাবা এবং নাটক রচিত হরেছে তা ইউরোপে প্রচার না হলেও, বাঙালীর জাতীর জীবনে এই উপলক্ষে যে সাহিত্যযোগ ক্ষেপ্তেই, বাঙালী বিশ্বসাহিত্যের সঙ্গে পরিচিত হরে সাহিত্যযুল্য যাচাই করার যে ক্ষমতা লাভ করেছে, তার সাহাযো সে স্পপ্ত উপলব্ধি করতে পারে যে সেওলাও বিখের শ্রেষ্ঠ সাহিত্যের সম্বর্গায়ভূক্ত। আর এই উপলব্ধি রবীক্রনাথের আবির্ভাবকেই সার্থক করেছে। এ থেকে আমরা আর একটি সিছাজে গৌছছি। সে হচ্ছে বাংলা ভাষা সম্পর্কে। আমাদের গল্প উপলাস-কাব্য-নাটক বাংলা লাহাও এমন উৎকর্ম লাভ করেছে যাতে প্রাথাণ হর যে বাংলা ভাষাও এমন উৎকর্ম লাভ করেছে যাতে তা শৈষ্ঠ সাহিত্যের বাহন হবার উপযুক্ততা লাভ করেছে।

"কিন্ত বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের এটাই শেষ কথা নর।
সম্প্রতি বাংলা ভাষার শিল্প-দর্শন বিজ্ঞান-ইতিছাস বিষয়ে বছ
গ্রন্থ রচিত হয়েছে এবং পৃথিবীর অভাভ দেশের জানভাখার
থেকে আশুত বিষয়গুলিও অনুবাদ গ্রন্থরণে বাংলা ভাষার
উৎকর্ষ প্রমাণ করছে।

"কিছ এর চেয়েও বড় কথা হচ্ছে এই যে সমন্ত ভারতবর্ষে বাংলাভাষীর সংখ্যা অগুত সাত কোট । অতএব বাংলাভাষাকে রাষ্ট্রায় ভাষার অভতম ভাষাক্রণে গ্রহণ না করার কোনও মুক্তি নেই। একাধিক ভাষা রাষ্ট্রীয় ভাষা হওরার আইনত কোন বাবাও নেই, এবং শ্বিধার দিক বিবেচনা

করে, সাত কোট বাঙালীর ঐকান্তিক আকাক্রার দিক বিবেচদা করে, এবং বল তলের কৈছিবং মা দেখিরে এ দাবি পূরণ করা উচিত। বিভক্ত বলের ক্রতে বাঙালীয় বিভক্ত হয় নি, তা হাড়া আমরা সবাই আশা করহি এই বিভাগ সামহিক মাত্র, এবং ভবিভ্ততে সে কথা সবাই উপলব্ধি করে আবার আমরা এক সলে মিলব একথা প্রত্যেক চিন্তাশীল ব্যক্তিই কর্মছেম।"

এ ভিন্ন আরও অনেক যুক্তি সে দেবাল। বাংলা ভাষাকে রাইভাষা করতেই হবে এই দাবির চাপ দিতে হবে পণসভার উপরে—উপস্থিত সবাই এ বিষয়ে দৃচপ্রতিক্ত হ'ল। সবাই উৎসাহিত এবং উল্লেস্ড বোব ক্ষল সভার সাক্ষ্যো।

বরণীকাছ উঠে পড়ে লাগল তার বল্প সকল করতে। হিন্দি ভাষা সে ব্ব ভালই জানে, কিছ তবু সে অবাঙালীর সদে বাংলা ভাষার কথা বলতে চেটা করে। হিন্দু হানীরা বাংলা-দেশে এসেও হিন্দি ছাড়ে না, ইংরেজরা আমাদের দেশে এসে ইংরেজী বলে, গুবু বাঙালী ঘরে বাইরে সর্বএ বাংলা বলতে লক্ষা পার। এ লক্ষার ছাত থেকে সে সমন্ত বাঙালীকে উদ্বার করবে এই তার রভ। এ রভ সে অনেক দিন এছণ করেছে। কিছ পদে পদে বাধা। বাঙালীরাই অনেক সময় নিজেদের উদ্বেশ্ন ভূলে যার, অর্থাং আত্মসন্মান-বোধ হারিরে কেলে।

वत्रविकाच नवारेटक वात वात वरनाए क्षवारन (बंदक হিন্দিভাষীদের মধ্যে বাংলা ভাষার প্রচার করতে, তাদের উপর ভাষার প্রভাব বিভার করতে। বাংশা শুনে শুনে বাতে खवाडानीता वारमः जावादक विकाजीत मत्म मा करत अ वकम আবহাওরা গড়ে তুলতে, কিছু অনেকেই ভার মত সাহস পার না। অসুবিধা বোধ করে খনেকে এবং সেই অসুবিধা সহ করতে চার না। বিজ্ঞাপ করে হিসুখানীরা। এ বিজ্ঞাপ অনেকে সহ করতে পারে না। কিছ তবু বরণীকান্ত বৈর্থের সঙ্গে, অধ্যবসায়ের সঙ্গে, ভার সক্ষ্য পথে এগিয়ে চলার সাধনা করে। বাংলাদেশের কোনো অপমান সে সহ করতে পারে ना। वांक्षानीत्वं (क्षे एवांके कदान तम पन करत बरन अर्छ. ভার মাধা যুরে যার। এ কভে সে অনেকবার লাঞ্ডিও হয়েছে অবাধানীর হাতে। ভার সভা আক্রান্ত হরেছে কয়েক-বার। ভাষার ভিত্তিতে নতুন ক'রে প্রদেশ বিভাগ হওয়া উচিত এ ক্ৰার সহিংস প্রতিবাদ হরেছে। একটা সভার মারপিটও एर्स शिख ।

প্রবাসী বাঙালীদের মধ্যে ধরণীকান্তের এই আন্দোলন অনেক দিনের হলেও ভারত থাবীন হওয়ার আগে অবাঙালীর বাঙালী বিদেয় কথনও এখন প্রবল আকার বারণ করেনি। কিন্তু ভারত থাবীন হওয়ার সলে সদে বধন ভারত বিভাগ হ'ল প্রবেশ বিভাগ হ'ল, তথন প্রাবেশিকতা নামক এক নতুম ব্যবেশ উপ্র "ভাশভালিক্ষ্য" ভাগতে লাগল অনেক্সলো

প্রবেশে। বরশীকান্তের মনেও ক্রমণ মৈছার্ড জাগতে লাগল ভার ধনে।

বাঙালী বিষেষ সর্বত্ব অবশু অহেতৃক নয়। বরণীকাত তা কানে। কারণ সব বাঙালী সব জারণার অবাঙালীর সক্ষে ধোলাবুলি বছুত্ব করেনি, তাদের স্বাতস্ত্রবোৰ অনেক সমর অতি-অহুরারে পরিণত হরেতে এবং সে অনেক সমর অবাঙালীকে ভোট নকরে দেশেতে। কিন্তু তার ক্ষেত্রতার আগত ইউনিরতৃক্ত প্রবেশগুলির মধ্যে হঠাং এ রক্ষ সত্তীর্ণতা জাগল কেন তা ধরণী বুবতে পারে না। সে এসব ভাবতে গিয়ে আরও হনে যার।

এমন সমর এক সমাজভন্তীনেতা প্রচার করলেন ভাষার ভিভিতে প্রদেশ পূন্ধিভাগ আজভবি করনামার, কারণ ভারত ভাগ হরেছে, প্রদেশ ভাগ হরেছে, এর পর যদি আরও ভাগ হতে বাকে ভাষার ভিভিতে তা হলে ভারতবর্ষের আর কোন আশা নেই।

বরণ প্রথম বেশ লক্ষা বোধ করল এ রকম মুক্তি শ্বনে। এ রকম নির্বোধ যে কোনো নেতা থাকতে পারে তা তার বারণার হিল না। প্রদেশের কোনা অনলবদল করা আর প্রদেশ বহু বঙে বিভক্ত হওরা থার মুক্তিতে এক, তিনি কি বিচার-বৃহিকে বিসর্জন দিয়ে হুইবৃহির খারা চালিত নন ?

এই কৰা কোনো নেতা সম্পৰ্কে ভাৰতে গেলে গজা হওৱা বাতাবিক। কিছ গৱনী লজা পেয়ে পিছিয়ে যাবার পাত্র নর। সে বরুক আরও নিতাঁক হয়ে উঠল তার হত প্রচারে। সে সমস্ত প্রবাসী বাঙালীকে ঐক্যবদ করে বাংলা ভাষা ও সংস্কৃতিকে প্রাণপণে রক্ষার আবেদন প্রচার করে বেড়াতে লাগল। বহিম বিবেকানক্ষ রবীক্ষনাথের ভাষার মানরক্ষা বাঙালী পৃথিবীর সর্বত্র করবে, কাউকে ভার লজা পাবার কারণ নেই।

এই তাবে নামা অপ্রীতিকর ঘটনা ও বাবাকে অপ্রাহ্ ক'বে বরণ এগিয়ে বেতে লাগল তার আদর্শণণে । বাংলা ভাষাকে রাইভাষার আগনে বলাতে হবে। কিছ রাষ্ট্রীয় পরিবলৈ তার আবেদন গ্রাহ্ন হ'ল না। এক্ষাত্র হিন্দুয়ানী হ'ল রইভাষা।

ধরণী প্রচণ্ড আঘাত পেল তার এই ব্যর্থতার। রাগে কোভে অপমানে লে অহির হবে উঠল। বরণী বিবাগ্রত হ'ল। সে ক্রমে বৃষ্ঠতে পারল এ আক্ষোলন তথু প্রবাসী বাঙালীদের মধ্যে সীমাবছ রাখলে আর চলবে না। বাংলাদেশে গিল্লে সেখানে প্রচার চালাতে হবে। সমস্ত বাঙালীকে এই আক্ষোলনে ঠেনে আমতে হবে। এ কথা মনে হওরার আরও কারণ এই যে বাংলাদেশ থেকে তার সমর্থক কোনো প্রতিক্ষনি দে এবদও পর্যন্ত কিছু শোনে নি।

কিছ বাংলাদেশে আসার ভার কিঞ্চিং বাবা ছিল। ভার কর্মছল হ'ল প্রবাদে, লেখানে ভার ছীবিকা উপার্জন। সংসার চালাতে হয় দেখানে। বাংলাদেশে এনে দীৰ্ঘ দিন থাকায় দ্বকায় হবে। কায়ৰ এলে সপরিবারেই আসতে হবে, এবং ভাতে বহুদিনের হুছে প্রবাসেয় সংশ্রহ ভাগে করতে হবে।

এটা কটিন কাজ। ধরণী ভাবতে লাগল।

কিছ এর পিছনে যে মহৎ উৎছঞ্জাহে, সেই উদ্বেশ্জরই জর হ'ল। এই উদ্বেশ্জরই জর হ'ল। এই উদ্বেশ্জ মরণ করে বরণী শেষ পর্যন্ত বাংলাদেশে আসাই ঠিক করল। বাংলাদেশের, বাংলা ভাষার এবং বাভাগীর সংস্কৃতির এত বড় অপমান সে আর সহ্যকরবে না। যারা সহ্যকরেছে ভারা বাংলাদিশের ক্ষতি করেছে, ভারা বাংলাদেশের ক্ষতি করেছে। ভাদের অনেকে এখন আর বাংলা ভাষার কথা বলতে পারে না, ভাদের পরিবারের মেধেরাও হিন্দি বলে এবং হ'কো টানে। অনেকে

কিছু বিছু বাংলা বলতে পাৱে কিছু ভাদের উচ্চারণ বিকৃত। বরণী অনেক ধিনের চেষ্টার এদের অনেকের মনে চেডনা-সঞ্চার করতে পেরেছে যে ভাষার পরাক্ষর মানেই জাতির পরাক্ষা।

ধরণীর প্রবাস ছেছে আসায় স্বভাবতই একটু দেরি ছ'ল।
এর মব্যে একটি বছর কেটে গেছে। ১৯৪৮ সাল এপেছে।
একটি বছর ধরে লে আঠার উনিশ বছরের প্রবাস বছন একটু
একটু করে ছিন্ন করল। কট ছচ্ছিল খুবই, কিছ ধরণী কর্মী,
লে কোবায়ও চুপ করে কেবলমাত্র ঘটনার প্রোতে গা ভাসিয়ে
চলতে পারে না। নিক্ষ ছাতে তার কিছু গড়ে ভোলা চাই,
নিক্ষ ছাতে তার পারিপার্থিকের পরিবর্তন ঘটান চাই, নইলে
সে বীচতে পারে না।

স্তরাং তার সক্স ছু:খ সে তার সঙ্গের ধার। অভি সহকে অভিক্রম করে সেল। তার দৃষ্টি নিবছ হল ভবিষ্যতের দিকে।

পে চলেছে বাংলাদেশে বেবানে বাংলা কথার বাংলা গামে সমস্ত আবহাওরা মুবরিত।

কিছ একট কৰা ভাৱ মনকে বড় বিষয় করে ভূলল।

বাংলাদেশ বড় অসহায়। সেবানে ছর্ভিক্ন গেগে আছে বারো মাস। বাল্য নেই, পরিবের নেই, আছে বড়া, মহামারী আর ব্যাপক বৃত্য। এ বিবরে ভারতবর্বের অভ সব দেশ বেক্কেও বেন বাংলাদেশ একটু বেশি ভাগ্যহীম।

এই অভিনপ্ত প্রদেশে বাংলা-সংস্কৃতির আন্দোলন রুধা ছবে মা ভো ?

ভার এক্ষাত্র ভরসা বাংলার সাহিভ্যিকেরা। ভারা হ:ব-



দৈখের মধ্যে বসে ছঃবলৈতের সান গেয়েই তাকে অভিক্রম করে যায়।

ধরণীর মনে কিছু আশা জাগল। হয়তো সে সফল হবে, হয়তো গৌর্ছদিনের পরিভ্যক্ত বঞ্চলনী ভাকে স্থান থেবেন।

আপাতত তাকে সপরিবার তার কাকার বাঢ়িতেই উঠতে হবে। কাকার অবস্থা ডাল, কোনো অহবিধা হবে না। পাঁচ বছর আগে কাকাও সপরিবারে বরনীদের বাঢ়িতে নিয়ে উঠেছিলেন। রওনা হবার আগে সে ববর জানিয়ে দিল, এবং রওনা হয়ে 'ভার' পাঠাল।

শরংকালের এক আধোরসমল প্রভাতে এগে গৌছল ওরা হাওড়া ষ্টেশনে।

দেবে বুশি হ'ল যে তার কাকা কাকীমা ও তাঁদের ছোট ছেলেমেরেরা ঔেশনে এসেছেন ওদের অভ্যৰ্থনা করতে।

কাকা ও কাকীমা ওদের দেবে বুলি হয়ে এগিয়ে গেলেন ওদের কামরার দিকে।

কাকা বললেন, "রাভাষেঁ কোই তক্সীক ন'হী হন্দী ?"
কাকীয়া ধরণীর জীকে বললেন, "যব ভূম ইতনে লখে
অসেঁ বাধ বংগালমে আইছো, ভো কুছ অধিক সময় তক ঘছা
রহো ন "

ছোট ছেগে বলে উঠল, "ভৌশী, ভূষ্যারে গোণী মে চচেলে।"

ৰৱৰ পুৰ ছেপে উঠল এখের ছিলিতে কথা বলতে ওনে, বলল, "আমরা বাঙালীই আছি, ছিলুছানী ব'নে যাই নি—— বাংলাতেই বলুন।

কাকা হিন্দিতেই বললেন, "নহী শায়ণ ভূষ্ণোগ নহী হয়ে

শগ্ৰহ হৰ্লোগ কৰে ইটায়। অধ্হৰ্লোগ ৱাইভাষা মেঁহী বাত্টীত ক্ৰতে ইটায়।"

ধরণী ডভিত হয়ে প্রস্ন করল, "কেন ?"

কাকা বগলেন, "নহী কছনে সে অসন্থান হোতা হায়।" বরণ কটিন হয়ে উঠল। বগল "তা ছোক আপনি বাংলার বলুন।"

কাকা এদিক ওদিক চেয়ে চাপা গণায় বাংলা ভাষাতে বলনে, "বেশ, ভাগাডত বলছি।"

ধরণী গঞ্জীরভাবে কিন্তাসা করল, "সবাই কি ছিলি বলছে ?"
"শিক্ষিতেরা সবাই। ঐ দেব না, বাংলা ববরের কাগকও
কেউ বিশেষ পড়ে না। এক পরসা দামের একবানা করে
বাংলা কাগক ছাপা হয়, কিন্তু দেব, ইংরেজী কাগকওলো সব
বিশ্রুছানীতে ছাপা হচ্ছে।"

বর্থী স্টলের দিকে চেয়ে দেশল, অয়ুত্বাজার প্রিকার গালু দেশদাগরী ছাপ।

ভার আর কথা বলার প্রবৃদ্ধি হিল না। ভবু বিজ্ঞাসা করল "বাংলা দেশের সাহিত্যিকেরা কি করছে ?"

"ভাৱা সবাই ৱাইডাযায় লিবতে স্থক্ন করেছে।"

ৰৱণী বলল, "কাকাৰাবু, আগমাণের কট দিলাম টেশনে টেনে এমে। আমি আর যাব না।"

"সে কি কথা, যাবে না কেন ? সে হর না"--ইত্যাদি বলে ওদের টানতে লাগলেন সবাই যিলে।

श्वनी व्यक्ति ।

কাকা খণ্টাবানেক গাধালাবি করেও ওদের সম্প্রচ্যুত করাতে পারলেন না। ওরা সদ্ধা পর্যন্ত ঠার প্ল্যাটকর্মে বসে থেকে কেরত গাড়িতে কিরে চলে গেল পুরাতন প্রবাসে।

ইন্দোনেশিয়া ও তাহার মুক্তি-সংগ্রাম

শ্রীসত্যকিম্বর চট্টোপাধ্যায়

মালম উপদ্বীপের দক্ষিণ-পূর্ব ধিকছ উপনিবেশট বিধের ক্ষুসমূহ উপনিবেশগুলির মধ্যে অঞ্চতম। উহা ওলজাক-অবিকৃত। এরপ ঐশব্যমভিত দেশের অবিকারী বলিরা ওলজাক-অবিকৃত। এরপ ঐশব্যমভিত দেশের অবিকারী বলিরা ওলজাকদের প্রতিক্ষপতের প্রেষ্ঠ শক্ষিগুলি বিশেষ ঈর্যায়িত। ইহার কাঁচা মাল ও প্রাকৃতিক সম্পদ-আহরণ-লোভে উচ্চাকাজ্ঞী জাপান সহক্ষেই প্রকৃত্ব হইরা পভিল। যাতারাত-ব্যবহা সহক্ষ্পাব্য বাকার উহার ঐশব্য অপহরণের লোভ বিহাৎ-পতিতে বর্তিত হইল। আপশক্তি যথন 'বৃহত্তর পূর্ব্ব-এসিয়া' গঠনের ক্ষম্ব সংগ্রামে উন্নত তথম ওলজাক্তেরা তিলমাত্র বাবা দিতে সমর্ব হয় নাই। সদূর প্রাচ্যের মূলশেষে ওলজাক্তেরা ইন্যোনেশিয়ার পটভূমিতে অবতার্গ হইরা তাহাদের অভিলাষাত্রণ কাজক্রিতে লাগিল।

থিক থ নাবিক্পৰ এই বাশপুঞ্জেরই অন্তর্গক সন্তর্গক লভানীর প্রথমেই এই সাথ্রাজ্য সঠন করিয়াছিল। হু:সাহসী ভাচ বিণিক ও নাবিক্পন এই বাশপুঞ্জেরই অন্তর্গত ইভিহাস-প্রসিদ্ধ মললাদ্বীপ বা মলাজার ছোটবাট ব্যবসায় আরম্ভ করিল। ইংরেজ-ভাচ বাশিজ্য-প্রভিদ্দিভায় এবং ভাচদের একচেটীরা মললা-ব্যবসারের কলেই মুদ্র প্রাচ্যে ইভিহাস-বিব্যাত এম-বেরনা (Amboina) হত্যাকাও সংঘটত হয়। ভারণর বিটিশেরা ভারতে আসিয়া প্রভিষ্ঠা লাভ করে আর ভাচরা প্রারাভ লাভ করে ইন্দোনেলিয়ায়। হল্যাতের রাজবানী হেল নগরে অবস্থিত ভাচ-মন্ত্রিগণের অবীনে ও ভত্তাববানে একজন ভাচ-প্রপর-ক্রনারেল দারা পূর্ব্য-ভারতীয় দীপপুঞ্জ লাসিভ হইতেছে।

বিম্বরভের প্রায় সমন্তরে এপিয়া হইতে অট্রেলিয়া পর্যাপ্ত মালয় দ্বীপপুঞ্জ নামে যে অচ্রপ্রসারী দ্বীপমালা রছিয়াছে পূর্বকেভারতীয় দ্বীপপুঞ্জ ভাছারই এলাকাভূক্ত। উছাতে অমান্ত্রা, জাতা, বোর্ণিও, সেলিবিল, বাকা, বিলিটন, বলী, লমবোক, সামবাওয়া, সোয়েমবা, ফ্লোরেল, টিমর, মলজা ইভ্যাদি আরও বছ কুন্দ ক্ষুদ্র দ্বীপ রাছয়াছে, ভদ্ভিন্ন নিউলিনির প্রবিভীণ ভূ-ভাগও ইছারই অন্তর্ভুক্ত। উছাদের মব্যে ছোট ছোট দ্বীপ-গুলিও কুন্দা দ্বীপশ্রেশী এবং টমর, মলাকা ও নিউলিনি প্রভৃতি লইয়া সম্প্র ভূভাগকে মালয়েসিয়া বলা হয়। এই দ্বীপশ্রেশী ক্ষুদ্র প্রাচ্য ও অঞ্জেলিয়া পর্যান্ত বিভূত থাকায় ইছার ভৌরোলিক অব্যান ও পারিপার্শিক অব্যা সম্বন্ধে সহ্লেই একটা উচ্চ বারণা হয়। বিটিল সামান্ত্রের রাজ্যানী লক্ষ্ম হইতে পোট ভারউইন ছইয়া সিভনী পর্যান্ত যে বিমান-প্রশ্ন আছে বিমান-প্রশ্নের বিমান-প্রশ্ন আছে বিমান-প্রশান আছে বিমান-প্রশ্ন আছে বিমান-প্রশ্ন আছে বিমান-প্রশ্ন আছে বিমান-প্রশ্ন আছে বিমান-প্রশালয় আছে বিমান-প্রশ্ন আছে বিমান-প্রশালয় আছে বিমান-প্রশ

পূর্বভারতীর ধীপপুঞ্জের আরতন সর্ব্বসাঞ্চ্যে ৭৩০,০০০ বর্গনাইল। এই ধীপপুঞ্জ সুবিতীর্ণ নহাসাগরের উপর দিরা প্রার্থ ২০০০ নাইল বিভ্ত। পিভারপুল হইতে নিউইরর্ক পর্যান্ত যতটা দূরদ্ব, মোটাষ্ট এই ধীপপুঞ্জেরও পূর্বে হইতে শক্তিন প্রান্থ পর্যান্ত ততটা দূরদ্ব বরা যাইতে পারে। বোর্ণিগুর উত্তর-পশ্চিম স্বংশের বৃহত্তম ধীপগুলিকে স্কা ধীপপুঞ্জ বলা হয়। এইগুলি বিটিশ লাসনাধীন এবং তহবে সারাবাক ও কানি বিটিশের আপ্রিভ রাক্য। এক কান শ্বেভকার রাক্য সারাবাকের এবং এক কান মাগ্র-স্বভান ক্রনির শাসনকার্য্য চাগাইয়া বাকেন।

লভনত্ব সনক্ষাত্ত কোন একট কোন্দানী ধানা বিটাদের উত্তর-বোর্ণিও পাসিত হয়। কেবলমান্ত নিউসিনীর পশ্চিমাইল ভাচদের অবিকৃত। টীমর খাপট ওলজাত্ত ও পর্ত্ সৃত্ত উত্তরের নাসনাবীন। নিউসিনী যদিও এই পূর্বভারতীর দ্বীপ্র্যুক্তর এলাকাভুক্ত তথাপি ইছা অপ্তেপেসিয়ার একট প্রাকৃতিক অংশ-মধ্যে পরিস্থিত। ইছার বর্ণ, পেট্রোলিয়ম প্রভৃতি মৃল্যবান বনিত্ব ও প্রকৃতিক সম্পদ আছিও সম্পূর্ণ অক্তাত বহিয়া সিয়াছে। ইছার অবিকাংশ স্থলভাগই নিবিভূ বনভ্মিসমাছের। রুধের কলাপে ইছার কোন কোন অংশ আই আর পূর্বের মত অপরিঞাত নর বটে, তবে অভ্যন্ত ভাস সম্বত্তে বিশেষ কিছু প্রাত্তর জানা যায় নাই। ইছার অবিবাসিস্পাক্ত পাপুষা বলা হয়। ইহাদের রাতিনীতি ও জীবনমান্ত্রালালী দৃষ্টে বৃধিতে পারা যায় যে, ইছারা আদিম জাতি এবং ইছাদের মধ্যে অব্যাহ্র এবনও নরবাদক।

ইন্দোনেশিষ্যা সমগ্র বিশ্বের মধ্যে একটি সম্বৃদ্ধিশালী দেশ।
উল্লাপ্তাক সম্পদে সুসমুদ্ধ। উহার বন-সম্পদে আজিও
কেহ হস্তক্ষেপ করে নাই। উহার স্থবিস্তীর্ণ বনভূমি নানাপ্রকার কাঠে, বিশেষতঃ সেঞ্জন ও বাহাছরি কাঠে পরিপূর্ণ।



মাহ্যের মাধার চুল এবং পক্রলোমশোভিত চাল ও বলাবারী ভাষাক যোগা

এট দেশট খনিক সম্পদেও তবপুর। এখানে কয়পা, লোহা, টন, নিকেল, ম্যালানীক, খণ, গৰুক, তাম প্রভৃতি বাওব এব্য প্রচুর পরিমানে উৎপর হয়। এই প্রসাদে এখানকার ক্ষির উপ্রতা এবং আবহাওয়ার কবা উল্লেখযোগ্য। কেমনা এইজপ আব হাওয়ার দরানই এখানে রবার, তামাক, বান, ইক্ল্, দিনকোনা-ছাল, সাও, তুলা, ভঙ্ক নারিকেল-শাঁদ, শণ, মললা, কফি, চা প্রভৃতি মানাবিধ প্রীয়মন্তলীয় ক্রব্য প্রভৃত পরিমানে উৎপন্ধ হয়। ইছা স্পষ্ট প্ৰতীয়মান হয় যে, ইন্দোনেশিয়া কয়লা, লোহা, টন, ববাৰ, ভেগ, উংক্ট কাঠ প্ৰভৃতি শ্ৰমশিলের কাঁচা মালে



'প্ৰাট' বা ভোগে নৌকায় ডায়াক কেলের মংখ-নিকার

সম্ব । সম্প্রতি এই দেশ লেট্রালিয়ম উৎপাদকরপেও প্রসিদ্ধি লাভ করিষাছে। পূর্বভারতীয় ধীপপুঞ্জেও ভারতের বাজারে দৈলা কচুর পরিমাণেই বিক্রীত হয়। দক্ষিণ-পূর্বে বোণিওর বালিক-পাপান তৈল-খনি এবং তারাকানের তৈল-খনিজলি গত মুদ্ধের সময় হইতে বিশেষভাবে পরিচিত হইয়াছে। ইন্দোনেশিয়া প্রচুর টিন ও রবার-উৎপাদনকারী একটি দেশ। টিন প্রধানত: সিংগাপুরের দক্ষিণ-পূর্বেম্ব বাক। ও বিলিটন হইতে এবং কয়লা যবখীপ ও বোণিওর খনিজলি হইতে উত্তোলিত হয়। যবখীপে প্রচুর পরিমাণে উত্তমগুলীয় কৃষিক্রবা উৎপাদিত ও সংরক্ষিত হয়। যবখীপের পরেই স্থমাত্রাকে উত্নত বরণের বৃধি-স্পাদে সমুদ্ধ অঞ্চল হিপাবে বরা যায়। স্থমাত্রায় খনিজ্ঞবাও বিভার। উহা উক্তমগুলীয় ফলল প্রচুর পরিমাণে রপ্তানী করিয়া থাকে। মলাকা ও গেলিবিল ভালিপুঞ্জে ললা, জায়কণ, লবল প্রভৃতি মললা এবং সেলিবিলে কার্চ, মূর্ণ, লৌহ, স্বক্ষ ও চিন প্রভৃতি খনিজ্ঞব্য যবেষ্ট্র পাওয়া যায়।

ইন্দোনেশিয়া তবু উৎপাদনকারী দেশ নয়, উৎপন্ন ক্রেরের প্রাচ্থানিবখন উহা রপ্তানীও করিয়া বাজে। যদি ইহার সম্পদ ঘবাঘবভাবে আহ্রেণ করা যায় তবে বিশ্বের মব্যে উহা সর্বান্তেই কাঁচামাল ও বাদ্যক্রবা রপ্তানির অঞ্চল বদিয়া পরিগণিত হইতে পারে। বর্তমানে যুবগীপ ছাড়া



বোর্ণিও দ্বীপের আদিবাসী ভারাকদের বিবাহ-বাসরে প্রান্তের পর্কার বরকভাকে
আশিকাদ করিতেছে

ইন্দোনেশিরার সমত্র অঞ্চলের অনেকাংশ প্রায় অপরিঞাত এবং বছবিব উদ্ভিক্ষে সমাছের। পূর্বাভারতীয় দীপপুঞ্জের শোষণকার্য্য সবেষাত্র সুক্ষ হুইয়াছে। ইন্দোনেশিয়ার স্বাভাবিক স্ববোগ-স্থবিধা বাহা আছে তাহা যদি পরিপূর্বভাবে কার্য্যকরী করিয়া ভোলা যায় তবে ভাহার কৃষিণপদ শভত্তব বর্দ্ধিত করা বাইতে পারে। শাসন-ক্ষরতা নিজেদের হাতে পাইলে এবং উপর্ক্ত মুগরনের ব্যবহা হুইলে দেশলাই, রবার, তামাক, রাসায়নিক ক্রবা ইত্যাদি শ্রমশিল্পেও ভাহাদের প্রচুর উন্নতি-সাবিত হুইতে পারে।

যত দূর কানা যায়, ইন্দোনেশিয়ার মধ্যে যবদীপই সর্বাপেক্ষ্ণ উন্নত বরণের দেশ। উক্বার সমীপবজী মাধ্রা প্রভৃতি দীর্ণ সইয়া উক্বার আয়তন প্রায় ৫০,০০০ বর্গ মাইল। উক্বার লোক-সংখ্যা ৫ কোটা। পৃথিবীর ঘনবস্তিপূর্ণ দেশগুলির মধ্যে যবদীপ অঞ্জম। উক্বা আয়েরগিরিসপ্রশাদেশ। বক্ষুংপাত ফ্রতে উক্বার উৎপত্তি। উক্বার উৎক্ষেপ ফ্রতেই যবদীপের ক্ষণ্ট ও আংশিক ক্ষাক্ষতি চলিয়া আসিতেদে এবং ইক্বার উর্বেরণা ভাষাতেই রুদ্ধি পাইতেচে। আদিম অরণ্যাদির অধিকাংশ পরিদ্ধত ক্ষরাছে এবং তাহাতে চায়-আবাদ চলিতেদে। যবদীপে যখন সর্ব্বপ্রথম মক্ষ্ণবস্তি গ্রাণিত হইল তথন উক্বার বহু আগাদ্যা বিষষ্ট করা হয়। এখানে সারা বংসর ব্রিহা প্রচুর পরিমাণে রঞ্জিণাত কয়। সাগরের আবহাওয়ার প্রকাবে এবানকার ক্লবায়র প্রক্তা অনেকটা ক্ষিয়া থাকে।

যবদ্বীপ ও পূর্বকারতীয় দ্বীপপুঞ্জের আংগ্রেমপিরি-উৎক্ষিপ্ত দ্বস্তিক। অতীব উৎপ্রষ্ঠ ও উর্ব্ধর। আবহাওয়ার স্লিগ্রভা দ্ববিদ্যালয় শ্রমশীলভায় যবদ্বীপ ছনিয়ার একটি কৃষিপ্রধান দেশে পরিণত ছইয়াছে।
এবানে আপানের মত ব্যাপক্ষাবে প্রিকার্য্য চলিতেছে।

পাহাড়ের শীর্ষে ও পার্যদেশে লাকল দিরা চবিরা মাটর টিবি ভৈত্তি কর: स्त्रः स्क्रीर बृष्टि स्टेटन छेरा पुरेशा নামিলা ঘাইতে পারে না। এখানকার ভাবাদী ভমিঞ্জি সাধারণত: ওলকাভ ও চীনাদের অধিকৃত। ষৰধীপৰাণীদের অধিকারে অভি অল পরিমাণ ভূমিই আছে। ধৰ্মীপের কৃষিণাত প্রব্যের মব্যে রবার, ধান, ভাষাক, জনার, ৩% নারিকেল-শাস, চা, সিনকোনা-ছাল, কৃষি, নীল, সাভ, চীনাবাদাম, শণ, গমজাতীয় জবাও নানাবিং কল প্রভৃতি উলেখযোগা। এই স্থানট উফ্যভগীয় 🕏ংশঃ দ্রুব্যের বিপুল কাভার। উহা লোহা, কমলা, টন প্রভৃতি বছবিব খনিক ক্রব্যের আগার। ইন্দোনেশিয়ার जवापि १७ यटबर्ड भाषश याश्व ना दरहे.

কিন্তু যবনীপে ঐ সকল গৃহপালিত জীবক্ষর যোটেই অভাব নাই।

এখনা ও সংস্কৃতি উভয়েরই জল যবখীপের খবেষ্ট প্রসিধি আছে। তাহার নিভাগ্ধ অনুমুত অংশগুলিতে পর্যন্ত যে খনবসতি ও বিশ্বয়কর উন্নয়ন-ব্যবস্থা দেবা যায় ভাষা ইন্দোনেশিয়ার দ্বীপাৰ্শীর অভ্য বিরল। অনবলই ভাহার প্রেচবল। এই ঘন-বসভিপূৰ্ণ ভাৱতীয় দ্বীপপু:ঞ্চৱ ৭ কোটি বা ভদূৰ্দ্ধ সংবাক সোকের ছুই-ড়ভীয়াংশই এবানে বাস করে। ধ্রধীপ্রাসিগ্র বিভিন্ন জাভিত্র সংমিত্রণে উৎপদ্ধ হওয়ায় মালবেসিয়া মেলামেসিয়া ও পলিনেসিয়ার সমন্ত লোকের অপেকা তাহারা অধিক পরিশ্রমী ও কর্ম্মত। কর্মদক শ্রমিক এবানে প্রচর পাওয়া যায়। এই শ্রমশীলতা সমত ইন্দোনেশিয়ার সাধারণ ভাবে এবং যবদীপে বিশেষভাবে পরিদক্ষিত হয়। ইহা মারণ রাখা দরকার হে. লোকসংখ্যা অনেক সময় জাতির সবলভার কারণ না ছইয়া ছুর্মলভার কারণ ফটয়া থাকে। পূর্ম-ভারভীয় অপরাপর খীপের সলে রাজনৈতিক ও অর্থনৈতিক পার্থকাই এই ভ পটর বিপদের কারণ ছইয়াছে। যদি কোনপ্রকারে উভার অধিবাসি-গণ ঐ বিপদ কইতে মুক্ত হইতে পারে ভবে ভাছারা যথেই উন্নতিলাভের সুবোগ পাইবে। উত্থার অধিবাদীদের সান-পরিবর্জন, শ্রমশিলের উল্লিখাবন, সমন্ত কর্ষণযোগ্য ভূমির চাম-আবাদ ও সম্প্রণারণ, বৈজ্ঞানিক কুষিপ্রণালীর প্রচলন, জনসংখ্য-সমস্ভাৱ সমাধান প্ৰভৃতি কাৰ্য্য সভোষক্ষমক ভাবে ক'বুভে পারিলে উহা উন্নতির চরম সীমায় পৌছিবে। ধ্বদীপের অবস্থিতি ইন্দোনেশিয়ার মবাস্থলে এবং বিশ্ববাশিক্ষার চৌরাল্ডায় বলিয়া উহার প্রাঞ্জিক সম্পদ সহকেই আহ্রণ ও পুৰিবীর সর্ব্যক্র প্রেরণ করা যার। বড় বড় রাখা, রেলপণ ও তংসহ বিভর बान ও পর প্রবালীর সংযোগ बाकाর এই দ্বীপট্টর সর্বজ্ঞ

যাভাষাতের উৎবর্প কার্ডা কভিষ্যাত । बरे नम्छ कांद्र(न ब्रेवर अनमास्त्रक শ্রমশীলভার এই দ্বীপটি একট বিলেধ इविश्ववान (पट्म পविन्छ इवेशार । छवुछ र्भवात्म चात्रे चत्मक किहू कविवाद আছে। অভাল খীপের কথা ছাভিয়া দিলেও প্রম-লিয়ের উহতির জল আবহুক कैं। होशान हमाहरनद श्रुविश, एक अधिक, বাজার ও সমুদ্রপথের সালিখ্য থাক! मदब्ख अहे धीमके खब-निर्व शर्बके পিছনেই বছিয়া গিয়াছে: স্বাভ্যাই देशांत छेन्निकत ध्रमाम व्यवसाय व्हेशः দাভাইয়াছে, কারণ সুষাত্রা প্রভৃতি কয়েকট দ্বীপ বনিক ও তৈল সম্পদে ইহা অপেকা অনেকাংশে সমুদ্ধ। কভর-গুলি ছোট ছোট শিল্পপ্ৰতিষ্ঠান এখানেই व्यक्षिण धर हैत्यात्वनिश्चात करे অংশটিও খনবসতি পূর্ণ ও বিশেষভাবে

সুদয়ত। বিগত দশ বংগরের অর্থনৈতিক অবন্তির পরে এই সকল শিল্প, বিশেষতঃ বয়ন- ও চিনি-শিল্প এবং রবার, তাষাক, রাসায়নিক দ্রবা ইত্যাদি করেকটি বছ শিল্পও বিশেষতাবে গভিষা উঠিয়াছে। দ্বিতীয় বিশ্বহুদ্বের পরোক্ষ প্রভাব এই সব শিল্প-প্রস্তুতিতে বিশেষ কার্যাকরী ভ্রমাছে। বুদ্ধের দরণ ভাঙন, কাপানীদের সাম্বিক অধিকার এবং আভ্যন্তরিক বিশৃঝলা উহার শিল্পোন্নতির পথে অভ্যায় হইছা ইলেও ভবিগতে এখানে প্রম-শিল্পের প্রচুর উন্নতির স্বিধা রহিরাছে।

चवधीरभव अविवाभीरमव अवाम (भना क्रिकार्य) : अवध কেছ কেছ প্রমালিল, বিলেধভাবে হণ্ডলিলে নিযুক্ত । বছগংখ্যক लाक युष्य-मिकाद्विश्व त्राश्च । वादभा-वाविश्वा मार्वाद्वपणः चात्रव ७ हीनात्मत शाला इत्नात्नियावाभीत्मत भरवर होनावा अवानकाव क्षवान व्यविवाही : अवादन काशारमव भरवा क्षांच भण जका। क्रकांक मन्द्रभारत्वत मर्था हांकांत हांकांत ইউবোপীয় ও ভারতীয় এখানে বাস করে। যুগ্ধের পূর্বে अहे कमवर्ण अरमम्हे स्नार्श्व हैर्नन निव्धाना अवर जाशास्त्र ल्यमित्वत कर बारकक काँगायालत राकात-प्रक्रभ विम : यर-দ্বীপ ভাছার নিজ খাভদ্রব্য উৎপাদন করিয়াও চিনি, চা. ককি, সিনকোনা-ছাল, এবার, ওছ নারিকেল-শাস ইত্যাদি প্রচুর পরিমাণে রপ্তানি করিয়া থাকে। মুদ্ধের পূর্বে ভারভের व्यासमीत हिस्ति स्विकाश्मेर वर्षाम एरेट अन्नवश्रेष एरेड । সিনকোনা ছাল হইতে কুইনিন প্ৰস্তুত হইয়া সম্প্ৰ প্ৰিবীর চাছিলা নিটার--তাহার বেশীর ভাগই ভারতীয় ধীপপঞ্জ. विरामश्चः यवदीश इहराउह बार्म । श्रीमाश्चरान स्मरमञ्जूष শক্ত স্বালেরিয়া দমনের অমোঘ ও স্বাবান ঔষধ হইতেছে



সুমাত্রার অন্তর্গত ডেলির রাজ্যানী মেডান। এখানে ডাচ রেসিডেন্সী এবং সুলতানের আধুনিক প্রাসাদ বিদায়ান

কুইনিন: উহা প্রীয়প্রধান দেশে যথেষ্ট বিজ্ঞীত হুইয়া থাকে।

যুদ্ধের পূর্ব্বে ভারতবর্ষ পূর্ব্ব-ভারতীয় খীপপুঞ্জ হুইতে প্রচুর

কুইনিন আমদানী করিত। ঐ প্রাম জাণানের হুডগত হুওয়ায়
ভারত ইংগ হুইতে বঞ্চিত হয়। ঐ সময় ছানীর উৎপাদন
আপ্রচুর হুওয়ায় ভারতবাসীদের অপরিসীয় ক্টজোগ করিতে

হুইয়াছে। যুদ্ধকালীন প্রবল অপরিসীয় ক্টজোগ করিতে

হুইয়াছে। যুদ্ধকালীন প্রবল অপরিসীয় ক্টজোগ করিতে

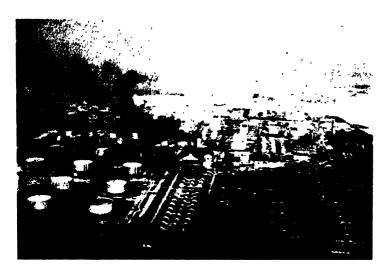
হুইয়াছে। যুদ্ধকালীন প্রবল অপরিসীয় দেখা দিয়াছিল।

য়ুদ্ধেছের যুগে আবার উহার উন্নতি হুইবে বলিয়া আলা করা

য়ায়। বর্জমান সময়ে এবং কিছু দিন পরে এবানকার অবিবাসীয়া ভারতের বাজারে যথেষ্ট উৎপন্ন প্রবাদ করিতে
পারিবে।

যদিও ভারতের মত যবরীপের গ্রামগুলিতেই অধিক সংখ্যক লোক বাস করিয়া বাকে তথাপি অবুনা দেখানে অনেক শহর গছিয়' উঠিছাছে। রহুং নগরী বাটাভিয়া যবদীপ এবং ইন্দোল্লিমার রাজ্বানী ও প্রধান বন্দর। প্রয়োজনীয়ভার দিক দিয়া দেখিলে পূর্ব-যবদীপথ প্রধান বন্দর ও পোভাশ্রর সুরাবায়ার ছান বাটাভিয়ার পরেই। উহার অভ্যন্তরভাগন্ত বাভেয়ং একটি বিখ্যাত নগরী ও পার্ববিভানিবাস: সাম্বেরাং এবং ম্যাজ্বেলং নামে আর্থা হইট প্রসিদ্ধ নগরী বহিয়াছে। ইহার অভ্যন্তরে ঘোগনাকর্তা ও পোর্যেরাকর্তা নামে আরও হুইট অভিপ্রাচন ও প্রসিদ্ধ নগরী বিভ্যান। তুই জন সুলভানের নাম হইতেই শেষেক্তি নগরী হুইটির নামকরণ হইয়াছে।

ইন্দোনেশীয়গণ মালয়-বংশ হইতে উন্তৃত। তাহারা অপরা-পর জাতির সংশার্শে যথেষ্ট সভ্য ও উন্নত হইনাছে। আদিন মালয়ের অবিবাসিগণ হিন্দু ও অপরাপর জাভিদের ধনিষ্ঠ সংশ্রবে আদিয়া শ্রমশীল হইয়া উঠিয়াছে। ইন্দোনেশীয়গণের



পালেমবাড়ে তৈল উৎপাদন ও পরিশ্রুত করিবার ভারবান!

সংস্কৃতি ও সভাত। হিন্দু সংস্কৃতি ও সভাতা হারা যথেই প্রভাবাহিত। যদিও তাহাদের অনেকেই মুসলমান বর্দ্ধ বীকার করিয়া লইয়াকে তথাপি মুগত: যে তাহারা হিন্দুই ছিল ভাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওয়া যায়। তাহারা বর্দ্ধ সম্বদ্ধে অভিশয় গোড়াবা ভাবপ্রবদ নছে। কোনো কোনো দিক দিয়া মুসলমান সংগ্রভির বিরুদ্ধভাবাপন্ন হইলেও সকলেই নিজেদের মুসলমান বলিয়া পরিচয় দের প্রবং মন্ধায় তীর্ধ্যানী হইতে পারিলে দেইবর বোধ করে।

কৃষিকার্য্যে এবং কাঞ্শিলেও ইন্দোনেশীয়দের দক্ষতা আছে। তাহারা সাবারণত: বাঁশের তৈরি গৃছে বাস করে এবং সাধাসিবা ভাবে জীবিকা নির্বাহ করে। ভাত ও মাছই তাহাদের প্রবান বাছ। ঐ দেশের অনেকগুলি ছীশে সাহও বাছরণে ব্যবহৃত হয়। তাহাদের প্রাচীন ইতিবন্ধ পাঠে জামা যায় যে, তাহারা মুদ্ধপ্রিয় ও শক্তিশালী জাতি ছিল। তাহারা অতি শান্তনিষ্ঠ, সরল, পরিশ্রমী, দক্ষ নাবিক এবং মংক্তশিকারী। মালয়, পলিনেসিয়া ও পাণুয়ার লোক-দের চেয়ে ভাহারা অধিকত্র সভাও উন্নত।

দক্ষিণ-পূর্বে এলিয়া এবং মালয় খীপপুঞ্জের প্রাচীন ইভিহাসের পূঠার একটু দৃষ্টিপাত করিলেই বুবা যাইবে যে বহু শভ
বংসর পূর্বে হিন্দু সংস্কৃতির প্রভাব এই সকল দেশে বিভারলাভ
করিয়াছিল। ইন্দোনেশিয়ার বিভিন্ন হান এবং কাখোজে গিয়া
হিন্দুগণ বছু বছু রাজ্য ও উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিল। প্রস্কুভাত্তিক আবিভার, প্রাচীন স্মৃতিভন্ত, মন্দির, ভাষা, আচার-ব্যবহার এবং ঐতিহাসিক ঘটনাবলী হইতে ইন্দোনেশিয়ায় হিন্দুকৃষ্টির প্রভাবের স্পষ্ট পরিচয় পাওয়া য়ায়। অভীতের হিন্দুসভ্যভার বহু চিহু ইন্দোনেশিয়ায় নানাহানে হুড়াইয়া য়হিয়াছে।
য়বয়ীপের পূর্বাদিকস্থ চুইট কুল্র বীপ, বলী ও লাখকের অধি-

ৰাসীৱা এখনও হিন্দ সভ্যভাৱ উত্তৱাৰি-কারী বলিয়া গৌরব করিয়া থাকে। এই इट्डे दीट्य व्यविवानिन्नत्व व्यविकाश्यह হিন্দুৰৰ্শ্বের অনুপামী এবং হিন্দু আচার-ব্যবহারই ভাহারা অনুসরণ করিয়া থাকে। ইহা হইতে স্পষ্টই বুঝা যায় যে ভারতবর্ষ ও ইন্দোনেশিরা বছ শতাকী পূৰ্ব্ব হইতেই আধ্যাণ্ডিক ও সাংস্কৃতিক ছত্তে আবদ্ধ ছিল। বলীধীপে ও যবধীপে যে সম্ভ ঐভিহাসিক গ্রভিচিঞ্ ও বিরাট দেবমন্দির বহিয়াছে ভন্মব্যে বোজে৷ বুছুত্ব সর্বাপেকা বুহুৎ ও জাকজমকপূর্ব। ইহা পুথিবীর খাপভ্য-শিলের অঞ্চম শ্রেষ্ঠ নিদর্শন। আথেয়গিরি-সম্বিত বহু প্রস্তর কাট্টয়া নির্দ্বিত ঐ মন্দিরট এবং উহার খোদিত মুর্তিখনি সমগ্রবিশ্বের বিশ্বর-সরূপ হইয়া রহিয়াছে।

পঞ্চদশ শতাকীর প্রারন্তে মুসলমানদিগের আঞ্জমণের পর যবধীপের ইতিহাসে ধিতীয় পর্যায়ের ছচনা হইল। ঐ সময়ের শেষের দিকে ওবানকার মোলাপাহিতের বৃহৎ হিন্দুরাজ্যের পতন এবং বিরিউইজোয়া ও মাতরম্প্রভৃতি অপবাপর হিন্দুরাজ্যোর অবনতির সলে সলে ইলোনেশিয়ার মুসলমান প্রভাব প্রদার লাভ করিল। এইরপে বহু ছোটবড় রাজ্য সভিয়া উঠিল। চতুর্জন ইলিক প্রান্ত সেবানে যে হিন্দু ও বৌধপ্রভাব বিজ্ঞান ছিল তাহা বিপর্যান্ত হইরা পঞ্চিল এবং তংপরিবর্তে ব্সলমান-প্রাবাদের বিজয়-বৈজয়াও উন্তীন হইল।

থোড়শ শতাকীতে ইউরোপারগণ, বিশেষতঃ পর্কানুক্রা, মালয় ধীপপুঞ্জে আনিয়া উপিতিত হইল। সপ্তদশ শতাকীয় প্রারম্ভে ওলনাধাণ ইকোনেশিয়ায় আগমন করিয়া প্রায় ছই শতাকীবাাশী চেষ্টায় উহার অবিকাংশ অঞ্চলে নিকেদের প্রভুত্ব প্রতিষ্ঠিত করিল। বিটেশ ও অপরাপর ইউরোপায় শক্তির প্রতিষ্ঠিত করিল। বিটেশ ও অপরাপর ইউরোপায় শক্তির প্রতিষ্ঠিত করিল। বিশ্বত শতাকীর ভয়াবহ অপ্রবিপ্রব সভ্তেও তাহারা পূর্বভারতীয় ধীপপুঞ্জের অবিকাংশ রাজ্যে প্রারাছ বিস্তার করিল। ১৮৬০ ইউান্সে তাহারা দাসত্বপ্রথা উচ্ছেদ্ধ করিল বটে, কিন্তু তংপরিবর্ত্তে বলপ্রয়োগে প্রথমক নিরোগ-প্রথা প্রবর্তন করিল। স্থান্যল ও সমুন্তত শাসন-প্রণালীর প্রচলন না করিয়া ঔপনিবেশিকদিলের উপর আর্থিক শোষণ-নীতি চালানোই তাহাদের প্রথমন উদ্ভেশ্জ বিল। যদিও ওল্লাক্রাইন্দোনেশিয়ায় তিন শত বংসরেরও অবিক্রকাল অবস্থান করিতেছে তথাপি ক্রমাধারণের উন্নতির ক্রম্ন তাহারা বিশেষ ক্রিয়ার করে নাই।

মুছের পূর্বে দেশরকী বাহিনী, শাসকসপ্রদার ও অপরাপর কর্মচারীর সহারতার পূর্বভারতীর হীপপুঞ্জের অধিকাংশ রাজ্যই একজন ওললাক প্রথর-ক্ষেনারেল হার।

শাসিত হইত। ওল্লাক্ষের জ্বীনে चानक (कांके (कांके अन्नमान ताका प्र অভার রাজ্য ছিল। সেবানে ইন্দোনেশীয় अम्माक विशेषक नवेशा अकड़ क्यानिश्वरूष পঠিত হইয়াছিল বটে, কিছ উহার কার্যা কেবলমাত পরামর্শ দানেই সীমাবছ প্রাক্-যুদ্ধকালে हिन। ব্ৰাক্টনতিক অগ্ৰগতি অতিশয় মন্তব ছিল। সমস্ত ক্ষমতা ও কর্ত্তপ অল্পংখ্যক ঔপনিবেশিক ওলনাক্ষ্যের হাতে ১ও हिल এবং नामनकार्य। পরিচালনায় ভবাকার জনগণের কোনো হাভ ছিল না : শাসনকাৰ্যো ওলন্দাৰ্ভের ভিল্মাত ভাষপরায়ণভার পরিচয় পাওয়া যায় নাই : প্রকাগণকে শোধণ করিয়া তাছারা কেবল নিকেদের ভোগ-বিলাগের মানের উন্নয়ন ও ধনসম্পদ বৃদ্ধির জঞ্চ বাও

থাকিত। শাসন-সৌকর্য্যের দিকে ভাহাদের মোটেই সক্ষ্য ছিল না। সেখানে মুদ্রায়প্তের সাধীনতা, ব্যক্তিসাধীনতা এবং সভা-সমিতি প্রতিষ্ঠারও সাধীনতা মোটেই ছিল না। শাসকসম্প্রদায় জনসণকে দরিত্র, অঞ্চ ও শিলের ক্ষেত্রে সম্পূর্ণ জনপ্রসর করিয়া ভারিয়াছিল।

মুখের প্রার্থ্য ভূর্মৰ স্থাপানীরা যখন ধীরে ধারে সমগ্র দক্ষিণ-পৰ্ব্ব এশিয়া অধিকার করিয়া লইভেছিল ভৰন ওলখাকেরা ভাষাদিগকে বাধা দিয়া দেশরক্ষা করিবার ক্ষম তংপর হইরা উঠিয়াছিল, কিন্তু তাহাদের সামরিক শক্তি যথেই না থাকায় ভাহাদের চেষ্ট্রণ বার্থভায় পথ্যবসিত হয়। মুদ্ধের শেষ অবস্থায় কাপানী শক্তি ভাতিয়া পড়ায় দক্ষিণ-পূৰ্বে এশিয়ায় কাপ সামাকাবাদের ব্জম্প্র শিবিল হইরা আসিল। তথ্য चक्यार क्यार्गात प्राप्ता अकि शारीयका चार्यायन चार्यस ছইয়া ভাছাদের সম্ভ পরিকল্পনা উণ্টাইয়া দিল। উছাতে এমন একট পরিভিতির উদ্ধব হুইল যাহা ছিল ওলকাক্রদের সম্পূৰ্ণ অপ্ৰভাগশিত। এই অবস্থায় ওলন্দাকের আবার যবখীপে নিজেদের শাসন প্ন:প্রতিষ্ঠার চেষ্টা সুক্র করিল- সেখানকার অধিবাসীয়া তৰন ধাৰীনতা-আকাঞায় অনুপ্ৰাণিত হটয়া वाबा अमान कविषा । जाशास्त्र वाबीनजा-भरकारमञ्जूषाम আছও হয় নাই। বিখের সকলের দৃষ্টি এখন উচ্বার উপর নিবছ। মুক্তি-সংগ্রামে ব্যাপৃত এশিয়ার বিভিন্ন দেশের পরাধীন জনগণ ইলোনেশীয়গণের মৃক্তিযুদ যথেষ্ট সহামুভ্তি ও ওংখকোর नहिल नका कतिएल्ड। लागाएमा बनव्यात "बाबएमका" (বাধীনতা) আৰু এশিয়ার এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যাত্ম প্রতিধ্বনিত হইতেতে।

বর্তনাম সমরে ইন্সোচীনেও বে অত্তরণ মুক্তি-আন্দোলন চলিতেছে ভাহাও ভূলিরা যাওবা উচিত ময়। আমামীরা যে



প্রশা প্রণালীতে ক্রাকাটাউ দীপে ১৮৮০ ইটোমের অগ্নাদ্গার

ভীষণ প্রতিকৃত্ত গ্রহার মধ্যে যুদ্ধ করিতেছে তাহ! তাহ!-भिन्नत्क हत्रम त्रीवर्यद अधिकात्री कृतिया कृतिया । बिरहेम. ক্রান্স প্রভৃতি সাঞ্জাক।বাদী শক্তিকলির অর্থনৈতিক ও রাজ-रेनिक हाम छ हात्मद करणहें हेटकारनमोह स बानाभीरमद মৃক্তি-সংগ্রামের উদ্ভব হুইয়াছে: এই মুদ্ধের অভনিহিত অর্থ ও তাংপর্যা পুরাবর্ণিত ঘটনাবলী হইতে সহজেই অভুনেয়। বস্তমান যুদ্ধের তাংপধ্য জ্ঞান্ধ্রম করিতে হইলে বেশীদুর অনুসু-সভান করিতে হইবে না। ইহার এর পরিভার ভাহা হই-তেছে সাগ্রাজ্যবাদীদের উপনিবেলিক লে'ধণকার্যা। ওললাজ-্দের কুশাসন্ জনগণের বিজ্ঞাপ্ শাপানীদের আগমনজনিত বিশ্বাদা ও সেক্ত ইন্দোনেশীয়দের অঞ্জলার প্রাপ্তির স্থোপ, ওলকাজদের প্রতিশ্রুতিতে অনাধা ওলকাজ ও অপরাপর ইউবোপীয় শক্তির সাময়িক সাম্বিক প্রতিপ্রিহানি প্রভৃতি खबरित बाबा कारायश्व रह्यांच खाल खरशांच अक्षे क्रेशिक বলিয়া ধরা যাইতে পারে। কিছ সবল ও সুসংহত ওলকাল-কাভি চুৰ্বলৈ ও পদানত ইন্দোনেশীয়দিগের প্ৰতি দীৰ্ঘকাল নিষ্ঠৱ লোষণ-কাষ্য চালাইয়া আসিতেছিল বলিয়াই গোড়ায় এইরপ ভিক্তার উদ্রব হট্যাখিল। তাহারা সায়ত শাসনের উপযুক্ত কি অনুপযুক্ত সে বিষয়ে ওলকাৰরা কিছুমাত্র ভাবিয়া দেৰে নাই। এইরূপ অবস্থায় ভাছারা যদি বস্কুভাবাপর ছইয়া যুৰ্থীপ্ৰাসীদের অধিকার স্বীকার করিয়া লয় কেবল-মাত্র ভবেই ইন্দোনেশিয়ায় স্থায়ী শান্তি প্রতিষ্ঠা ও উন্নতি সম্ভবপর ছইতে পারে।

ইন্দোনেশিয়ার প্রাকৃতিক সম্পদ ধলি সাভাবিকভাবে রছি-প্রাপ্ত হইতে পারে তবে উহা ভবিয়তে আরও অবিকতর সমৃদ্বিশালী একট দেশে পরিণত হইবে এবং বিখের বাজারে উহা বিভার কাঁচা মাল, বাদাশস্ত ও অভাভ প্রীমমঙলীয় উৎপন্ন ন্তব্য রন্তানি করিতে সমর্থ হইবে। এই এীম্মওগীর প্রদেশটির বিশেষত্ব এই যে, এবানকার লোক আন পরিপ্রমে যথেই আর করিতে পারে। বাভবিকই পূর্বজারতীর দ্বীপপুত্ব প্রাকৃতিক পরিবেশে ও কাঁচামালে এত সমৃদ্ধ ও শক্তিশালী যে ইহাকে বিশ্বের একট সক্ষাপার বলিলেও অভ্যক্তি হয় না। স্বন্ধানীপুত্র আগলে প্রবালদ্বীপ—ইহা সৌন্ধর্যমন্তিত সাগর অঞ্চলে অবহিত। এই দ্বীপশ্রের পদ্যান্তাপে বিভার পর্বতশৃত্ব রহিয়াছে; তাহাদের কতকভালি হইতে এবনও অগ্নি উদ্বীরিত হইতেছে এবং কতকভালি চিরসবৃত্ব মন তক্রমান্তিতে পরিপূর্ণ। নামা বর্ণ-সমন্তিত পূর্বদেশীর এই দ্বীপভালির স্থামসমারোহ যেমন আমাদের নম্নমনারাম্মকর সেইয়প এই খানের স্বদেশতক্ত অনপ্রের মুক্তি-সংগ্রামন্ত আমাদিপের স্থামের প্রতিবর্ত্তক। ইন্ধোনেশিয়া এবং ইন্দোচীনে সাসাজ্যবাদীদের প্রস্তুত্ব ও শোষণ-কার্যের দিন কুরাইয়া আসিরাছে এবং

ভবিষ্ণুতে ঐ সমন্ত ভবাঞ্চিত ব্যাপারের পুনরাবৃত্তি ছইবে বলিয়া মনে হয় না।

বর্ত্তমান সময়ে ত্রিচিশ ও মার্কিন গবর্ণমেন্ট পৃথিবীর প্রতিক্রিমানীল শক্তিসমূহের সমর্থন করিয়া চলিয়াছে এবং দক্ষিণপূর্ব্ব এলিয়ার তথাকথিত টুম্যান-নীতির বিভার লাভের
কলে ওলনাক্রা ইন্দোনেলিয়ার বিক্রছে মুহ্ন করিতে সুবিধা
পাইয়াছে। ইন্দোনেলিয়ার মুহ্ন, তথাকার কনগণের বিক্রছে
আভকাতিক প্রতিক্রিয়ানীলদের মুহ্ন। কেবলমাত্র ওলনাক্রাই
মহে, পরস্ক ইল-মার্কিন প্রতিক্রিয়ানীল দলও এই মুহোদ্যমে
সাহায্য করিয়াছে। আতীর সাধীনতা কক্ষার কর্ভ ইন্দোনেশীয়নের প্রাণপাত মুক্তি-সংখ্রাম সামাক্র্যাদী দলকে, তথা
মার্কিন বণিকসম্প্রধায়কে আত্তিত করিয়া তুলিয়াছে।
এই সংগ্রাম মীমাংসার তার বর্ত্তমানে স্বত্তি-পরিষ্ণের উপর
পত্তিয়াছে। ইহার কলাকল তবিয়তের গর্তে নিহিত।

শতাকী চলে

শ্রীনারায়ণ দও

শভাকী চলে, শভাকী চলে, ভেকে ভেকে পড়ে শৃভির পাড়, শোশিত কোরার রাঙা ইভিছাস বাস্চরে লেখা আছে এই বৃষ্টির শীরব সাক্ষী মরা মাছ্যের হাড়— ইভিরুদ্ধের মরু অক্ষর পাড়ুর ভার কাছে।

অবাদা হাতের মারা-সংক্ষতে স্থপ্ন যে পুতুল থেলা জীবনের পথে আলা-নিরালার থেলা রাডা সকালের পাবীর কাকলি আর সারাহ্ণবেলা সহসা ভাতিরা পেছে—
লভাকী বুকে দিনের চাওরার অবসাদ ঘনারেছে; আকালে আকালে সীমাহীন হাহাকার পথে পথে ভবু মহারতার গাঙীব চংকার বুকে বুকে ভবু রক্তের বলকানি এই জীবনের প্রতি বাঁকে বাঁকে মাসুষের হানাহাদি হারানো মুগের প্রেমর মন্ত্র আঁবার পাধারভলে হিংল্র কনতা চুটিরাছে দলে দলে এাসিত রিক্ক শভাকী চুটে চলে।

শতাকী চলে—

অনাহারীদের জ্বার আগুনে দিগ দিগত রাঙা

খরে ববে অবা সাটির পাত্র ভাঙা

কারধানা-মিলে ধুমেল বাভালে পেশীহীন হাভগুলি

ৰ্ঠো ষ্ঠো ভব্ কুডার পাধর-বৃদ্ধি
তাপচৌচির ক্ষেত্রে প্রান্ধে মৃদ্ধিত মানবতং—
পৃঙ নরনে ধিগপ্ত কেরে আছে—
বাঁচিবার এক তীর মেশায় মিশে গেছে সব কবা
সোনার কগল জলীক তাহার কাছে।
গাছের আভালে নগ্নতা ঢাকি ভীক চাহনীট মেলি
শক্ষিত চোবে এই পৃথিবীরই খেয়ে
অঞ্চারণে আছে চেয়ে
চোব ছটো ভব্ ক্লের নেশায় বেকে বেকে ওঠে অলে
শতাকী যার চলে।

চলে শতাকী চলে—
তবু তার পবে মহামানবের যাক্ষর কৃটে ওঠে
একাকী চলার চরণচিক্ত লোটে
হর্গন অভিযানে
আশানের বুকে লাহসভন্ত জীবনের বাদী আনে।
অহতান্ত্রসী রক্ষনীর বুকে জেলে ওঠে দীপশিধা
বুলে গছে যার নিরাশার ধ্বনিকা
মাতাল জ্মতা সহলা কেন বে থানে
কোন্ লাপুছের যাহ্র ময়ে, কোন্ দেবতার নামে ?
দিগভলীন পাহাড় চূড়ার শতাক্ষ রবি বানে।

জ্যোতিরিন্দ্রনাথ ঠাকুর

শ্ৰীত্ৰজেন্দ্ৰনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

'হামচুপামূহাফ' বা 'সঞ্জীবনী সভা'

১৮৭৭ সমে (१) খ্বক জ্যোভিরিজ্ঞনাথ ঠন্ঠনের এক পোড়ো বাড়ীতে ছামচুপাম্বাক বা সঞ্জীবনী সভা নামে মাংসিলীর 'কার্বোনারি'র অক্তরণে একট হুও সভা স্থাপন করেন। ইহার সভাপতি ছিলেন— খণেশপ্রেমিক বুঙ রাজনারায়ণ বস্থ। কিলোর রবীজ্ঞনাথ ও হিন্দুমেলার প্রবান উভোক্তা নবগোপাল মিত্র সভার সভা ছিলেন। নিরমাখ্যায়ী সভাসপকে তাহা-দের আরের দশ্যাংশ সভাকে দিতে হইত। এই সভা সম্বত্বে রবীজ্ঞনাথ বলিয়াছেন:—"জ্যোভিদাদা এক গুণ্ডসভা হাপন করেছেন, একট পোড়ো বাড়ীতে তার অবিবেশন, ঝ্রেদের পুঁথি মড়ার মাথার বুলি আর খোল। তলোয়ার নিয়ে তার অফ্রান, রাজনারায়ণ বস্তু তার পুরোহিত; সেথানে আমরা ভারত-উভারের দীক্ষা পেলেম" ('আগ্রুপরিচর,' গৃ. ৮৭)। সঞ্জীবনী সভা সম্বত্বে জ্যোভিরিজ্ঞনাবের জীবনামুভিতে বেটুকু সংবাদ পাওয়া যায়, নিয়ে তাহা উদ্ধৃত করিতেছি:—

"কাতীয় হিতকর ও উন্নতিকর সমস্ত কার্যাই এই সভায় অন্প্রতিত হইবে, ইহাই সভার প্রধান উদ্দেশ্য ফিল। যেদিন নুভন কোনও সভ্য এই সভায় দাঁক্তিত হইতেন, সেদিন অবাক্ষ নহাশ্য লাল পট্রপ্র পরিয়া সভায় আসিতেন। সভার নিরমানবলী অনেকই ছিল, তাহার মবে। প্রধান ছিল, মন্ত্রপ্রিট্ট আর্বাং এ সভায় বাহা ক বত হইবে, যাহ; কুত হইবে এবং যাহ। শ্রুত হইবে, তাহ। অ-সভ্যদের নিকট কর্বনও প্রকাশ করিবার কাহারও অবিকার ছিল না।

"আদি প্রাথ্যসমাজ-পৃত্তকারার হইতে লাল বেশমে কণান বেদমরের একবানা পূবি, এই সভার আনিয়া রাবা হইয়ছিল। টেবিলের ছই পাশে ছইটি মড়ার মাবা বাকিত, ভাহার ছইটি চক্ষুকোটরে ছইটি মোমবাতি বলান ছিল: মড়ার মাবাটী মৃত ভারতের সাজেভিক চিক্লা বাতি ছইটি আলাইবার অব এই যে, মৃত ভারতের প্রাণসকার করিতে হইবে ও তাঁহার জানচক্ষু কুটাইরা তুলিতে হইবে। এ ব্যাপারের ইহাই মৃত্ত কল্পনা। সভার প্রারম্ভে বেদমন্ত্র গান করার পর, তবে সভার কার্যা (অবাং কি না গল-গুজুব) আরম্ভ হইত। কার্যাবিবরশী জ্যোতিবাবুর উদ্লাবিত এক গুপ্ত ভাষার লিবিত ছইত। এই অন্ত ভাষার 'সঞ্জীবনী সভা'কে 'হামচুপাম্হাফ' বলা ছইত।—ইহার দীকা অন্তর্গান একটা ভাষণ গান্তীয় ছিল। দীকাকালে, নবদীকার্মর সর্বাদ একটা ভাষাত ভাবা-বেশে শিহ্রিয়া উঠিত।

"প্রথম প্রথম সভার কাব্দ পূর। দমেই চলিতে লাগিল। নিত্য নুভন প্রভাব ধুহীত হইত, কিছু কালে পরিবত করা পর্যায় বৈষ্য কোনও বিষয়েই বড় কাহারও থাকিত না। যাহার (यद्म कक्ष्म) (विनिष्ठ, (भ मिवेद्मभेदे श्रीष्ठांत कद्मिष्ठ । अदेद्मभ কালনিক সুবে এক রক্ম দিন বেশ কাটিয়া যাইভেছিল। একদিন সভায় আমি প্রস্তাব করিলাম যে, ভারভবর্ষে সার্বজাতিক ঐক্য-সাধন করিতে গেলে, একটা সার্বজনিক (नाशक रुख्या चारकक । এ श्रेखिक मकरम अक्वादका व्यथ्यापन कतिए, चांबल्ड वांबर्कालिक चारी केका-विवाधी. সাক্ষভৌম মিলনোপযোগী পোধাকের পরিকলনা করার ভার পভিল আমারই উপর। লেখে খ্রি হটল যে, মালকোচা মারিয়া কাপড় পরিলে যেমন হয়, ঐত্তপ একটা পোধাক ও মাৰায় যাছাতে বৌদ্ৰ-বৃষ্টি না লাগে এইত্ৰপ একটা সোলায় টুপির উপর পাগড়ী বসাইয়া একটা শির্জ্ঞাণ, বেশ সাক্ষত্দনীন পরিচ্ছদরশে গুলীত হইতে পারে । সকলেই পোংসাহে মহা-কলরৰ করিয়া এব: বিচিত্র অঞ্চলীতে বলিল--'ঠিক ঠিক।'... তংক্ষণাং দক্ষিত্ৰ দোকানে গিয়া, মালকোঁচা-মাত্ৰা কাপড় নেলাই ও পুর্বোঞ্জন শিরস্তান প্রস্তুত ক্রিতে **হ**রুম দেওয়া হইল। যথাকালে পোষাক প্রস্তুত হইয়া আসিল: কিছ এ অভিনৰ পোষাক পৱিষা প্ৰথমে পৰে বাহিত ছইবে কে গ আমিই প্ৰথম বাহিত্ৰ ছইব। একদিন মৰ্যাফের প্ৰথম আলোকে দাৰ্ব্বধনিক ঐকাদাৰক এই পোধাক পৰিষ্যা, আমি কলিকাতা সহর ঘুরিয়া আসিলাম। লোকে এ পোষাকের অঞ্চর্ট हिलकत छ एक बुविन ना क्वम পরিशान-विक्र पर्दे करिन. কিছ আমি সেদিকে জক্ষেপত করিলাম না। ... একমাত্র আমি ছাড়া কেছই এ পোষাক কৰণও পরিধান করেন নাই। সভাগণ যৰন দেবিলেন থে, আঞ্জাতিক পোষাক ছাড়িয়া দিয়া, আমরা দেশে নিলবানিকোর কল প্রভৃতি প্রতি-क्षांत প্রতি বিশেষ ভাবে মনোযোগী ছইলাম। সর্বাপ্রথম भिवाममार्टेखन कम अणिष्ठिण रहेम । चटनक चावाटम अवः वर वर्षवादा करवक वाच पिशाममारे श्रवण स्ट्रेंग वर्षे, किन्न अ भवार्य भाषावास्यत भाषा व्यवसाया या वावसायव व्याटिके উপযোগ চইল ন। একে ভ বরচ বুব বেশী পঞ্চিত ভাছ: ব্যতীত দেশে কাঠির অভাব, সেজনা যে-সে কাঠের কাঠি বাবজত হওৱাতে দিয়াশলাই মুখ্ৰ খলিতও না। এই কনা लाक बरे विदाननार शक्त कतिछ न:। यथन शक्त शक्त এইরপ অসুবিধা হইতে লাগিল, তখন সভাগণ দেখিলেন খে, अभाशा-भारत भग्न नहे कता चर्णकाः (भर्मत चना (कामक) সহভ্যাধ্য মঙ্গকর কার্য্যে হস্তক্ষেপ করাই উচিত।

"এই সৃষ্ঠির ফলে, সভায় এক নৃতন কাপছের কল আনানো হইল। আবার প্রবলভাবে নানাবিব জলনা-কলনা সুকু হইল। সভাদেরও উত্তম আবার বিশুণ বাছিলা উঠিল। সভায় ইহাও স্থির হইল যে, ভবিগতে আরও করেকবানি ওাত বদাইতে হইবে এবং একনা একবানি বাছীও প্রস্তুত করিতে হইবে। সভারা টালা দিতেন, ভাহাদের আবের দশমাংশ। এইরণে যে সামানা কিছু টাকা ক্ষমাহিল, ভাহাতেই এইরণ এক বিরাট কলনা কর। হইল। দেবিতে দেবিতে নবপ্রতিষ্ঠিত কাশছের কলে একদিন একবানি সামহ। প্রস্তুত হইল। এক বারু সেই গামহাবানি মাধার বাঁহিয়া উন্তের মত ভারব নৃত্যু পুরু করিয়া দিলেন। সভার লে এক অবশীম দিন। একে একে প্রারু সকল সভাই শেষে ওাহার সকল নৃত্যু যোগ দিলেন। ভারপর কল উঠিয়া লেল। এই গামহাবানি হাছা, অনা আরু কিছুই সে কলে প্রস্তুত হয় নাই।

"এই 'সঞ্জীবনী সভা'র সভাসবের মধ্যে জাতিবর্ণনিনিচারে আহারেরও একটি বিবি ছিল। আমাদের মধ্যে নানা জাতিবর্ণর পোক ছিল। কুলীন রাহ্মণ হইতে ভ ভী পর্যন্ত। কোন এক রাহ্মণ কমিদার-সভার গলার বারের একটি বাগান-বাছীতে একবার আমাদের একটি। প্রীতি-ভোক হয়। জমিদার-সভাট একটু নিঠাবান্ হিন্দু হইলেও, তিনি সভার সভাদিগের সঙ্গে একর আহারাদি করিতে একেবারেই কুণ্ডিত হইলেন না। বোর হয়, তিনি সভার গভীকে জগলাব-জেএরই সামিল মনে করিভেন। বাওয়া-দাওয়া হইয়া গেলে বুব এক বছ উঠিল। রাজনারায়ণ বাবু সেই সময় গলার খাটে দাভাইয় টীংকার করিয়া "আজি উর্মণ প্রন্ধেন ।"

এই সময়ে জ্যোতিরিজ্ঞনাথ "বাঙ্গালীদের মধ্যে সংসাহস বৃত্তিত করিবার জন্য··বন্দুক-ছোঁড়া ও শিকারের প্রবর্তন করিতে সিয়াছিলেন।"

সঞ্চীবনী দণ্ডা অল্ল দিনই কীবিত ছিল। রবীক্রনাথ 'কীবনশ্বতি'তে লিবিয়াছেন:--"অবশেষে চ্ট-একট স্থব্ছি লোক
আদিয়া আমাদের দলে ভিছিলেন, আমাদিগকে প্রানরকের
কল বাওয়াইলেন এবং এই স্বর্গলোক ভাতিয়া গেল।"

পাট ও নীলের ব্যবসঃ

আত.পর জ্যোতিরিপ্রনাধ ভগ্নীপতি জানকীনাধ ধোষাদের স্বযোগে হাটবোলায় একটি পাটের আড়ং খুলিয়াদিলেন। অল্ল দিন পরেই এ কার্য্য বন্ধ করিয়া তিনি লাভের টাকায় শিলাইদং নীপের চাধ আরও করেন। তিনি গুতিকবায় বলিয়াছেনঃ—- "এইরপে চার পাঁচ বংসরেই আমার নীলের চাথে বুধ উন্নতি হইল। কিন্ত হঠাং নীলের বাজার পড়িয়া গেল। শুনা গেল, কার্মানেরা রাসায়নিক প্রক্রিয়া দারা এক রকম কৃত্রিম নীল প্রপ্তত করিতেছে, তাছাতেই আসল নীলের বাজার একে-বারে বারাপ হইয়া বেল। আমিও কাজ উঠাইয়া দিয়া কলি-কাতায় চলিয়া আসিলাম।"

জ্যোতিরিজনাধ এই সমধে 'ভারতী'তে (লৈঠ ১২৮৯, মে ১৮৮২) "নীলের বাণিজ্য" নামে একটি প্রবন্ধ লিখিরা-ছিলেন। ইহাতে প্রকাশ :—"কিছ নীলের বাণিজ্য বোধ হয় আর থাকে না। সম্প্রতি একজন কর্মান পণ্ডিত রসায়ন-বিভার সাহাযো এক প্রকার নীল রঙ্গের স্কট্ট করিয়াছেন।… নীলকর্মিপের এক্সনে সমূহ আশ্বার কারণ উপপ্রিত।"

সারস্বত সমাজ

কলিকাভায় ফিরিয়া ক্যোভিরিজনাথ এবার বাংলা ভাষার প্রীর্দ্ধির কন্ধ একট সাহিত্য-সমালোচনী সভা ভাগনে উভাই হুইলেন। এই কলনা মাথায় প্রবেশ করিবামাত্র তিনি রবীজ্ঞ-নাথকে সঙ্গে লইয়া বিভাগাগর মহাশনের পরামর্শ লইভে ছুটলেন। সকল কথা ভূনিয়া বিভাগাগর বলিলেন, "ভোমরা বড় মাসুষের ছেলে, কোনও বদধেয়ালিনা করিয়া এই সব লইয়া যদি সময় কাটাও ত লে ভালই। কিও, বাবা, একটা কথা আমি ভোমাদের বলিয়া দিভেছি। বড় বড় ছোম্রা-চোম্রা লোকদের ইহার মধ্যে লইও না– ভাহা হইলেই সব মাটি হইলা যাইবে।"

রবীপ্রনাধ বল্প কথায় সভার উদ্দেশ্য 'জীবন-স্থতি'তে এই-রূপ বির্ভ করিয়াছেন :—

"বাংলার সাহিত্যিকগণকে একর করিয়া একট পরিষং প্রাপন করিবার কলন। ক্যোভিদাদার মনে উদিত হইয়াছিল। বাংলার পরিভাষ। বাঁবিরা দেওয়া ও সাবারণত সর্ব্যপ্রকার উপায়ে বাংলা ভাষ। ও সাহিত্যের পুষ্টসাবন এই সভার উদ্বেশ্ন ছিল। বর্ত্তমান সাহিত্য-পরিষং যে-উদ্বেশ্ন কর্যয়া আবিভূতি হইয়াছে ভাহার সঙ্গে সেই সংকল্পিত সভার প্রায় কোনে; আনকা ছিল না।"

১৭ জুলাই ১৮৮২ তারিবে রাজেক্রলাল মিত্রের সভাপতিথে ঠাকুর-বাড়ীতে সভার প্রথম অবিবেশন হয়। উপস্থিত অবিকাশে সভার নামকরণ হয়—সারস্বত সমাজ। আরও স্থির হয় :-- :

"বিভার উন্নতি সাধন করাই এই সমাজের উদ্দেশ । ... বাহারা বলসাহিত্যে ব্যাতি লাভ করিয়াছেন এবং বাহারা বাংগা ভাষার উন্নতি সাধনে বিশেষ অন্তরানী, তাঁহারাই এই সমাজের সভ্য হইতে পারিবেন। ... বর্তমান বর্বের অন্ত শিন্ন-লিবিত ব্যক্তিগণ সমাজের কর্মচারীক্রপে নির্বাচিত হইলেন-...

পানটি প্রথমে ১২৮০ সালের আবিন (সেপ্টেম্বর ১৮৭৭) সংগ্রা ভারতীতৈ (ভালুসিংহের কবিতা) প্রকাশিত হয়।

সভাপতি—ভাজার রাজেজগাগ মিত্র।
গহবোদী সভাপতি—শ্রীবহিমচজ চটোপাব্যার। ভাজার
শৌরীজনোহন ঠাকুর। শ্রীবিজেজনাব ঠাকুর।
সম্পাদক—শ্রীকৃফবিহারী সেন। শ্রীরবীজনাব ঠাকুর।

২ ডিসেম্বর ১৮৮২ তারিবে আলবাট-ছলে সারস্বত সমাজের বিতীয় অবিবেশন ২য়। ইছার আর কোন অবিবেশনের সংবাদ আমরা পাই নাই। রবীপ্রমাধ 'জীবন-মৃতি'তে লিবিরাছেন:---

"বিষেষবাবু সভা ছইয়াছিলেন, কিন্তু ভাঁছাকে সভার কাজে যে পাওয়া সিয়াছিল ভাছা বলিতে পারি ন:। বলিতে গেলে যে-ক্ষদিন সভা বাঁচিয়া ছিল, সমন্ত কাজ একা রাজেঞ্জনাত মিত্রই করিতেন। ভৌগোলিক পরিভাষানির্ণয়েই আমর। প্রভাষা হওজেপ করিয়াছিলাম। পরিভাষার প্রথম বসভা সমন্তটা রাজেঞ্জনাত ঠিক করিয়া দিয়াছিলেন। সেট ছাপাইয়া আলাই সভাদের আলোচনার জন্ম সকলের হাভে বিভরণ করা হইয়াভূজা। পৃথিবীয় সমন্ত দেশের নামগুলি সেই সেই দেশে প্রচলিত উচ্চারণ অনুসারে লিপিবঙ্ক করিবার সংকল্পও আমাদের ভিল।"

সারখত সমাজ মুকুলিত হইবার পূর্বেই অন্তরে বিনষ্ট হইর।
ভিল্ । ক্যোতিরিজনাথ জীবনগুতিতে বলিয়াছেন : --

"আহবা কিছ ছোম্বা-চোম্বা লোক গইরাই কাক আবন্ত করিলা: :---ছই ভিন অবিবেশন পর্যান্ত বেশ কাক চলিয়া-ছিল --কিছ ভাতার পরেই নামা কারণে সভা বন্ধ হঠয়: গেল: বিভাগারর মহাশ্যের কথা বর্ণে বর্ণে কলিয়া গেল:"

পত্নীবিয়োগ

কার্ত্তিক

১৮৮৪ সনের ১৯০ এলিজ (১২৯১, ৮ বৈশাৰ)
জ্যোভিরিজনাথের পত্নী কাদমরী দেবী অক্সাং আশ্বহত্যা
করেন। বৌ-ঠাকুরাণীর মৃত্যু যুবক রবীক্ষনাথের মনে গভীর
রেখাপাত করিয়াছিল। এই চুর্ঘটনার অব্যবহিত পরে
লক্ষাশিত 'প্রকৃতির প্রতিশোষ' (২৯ এপ্রিল ১৮৮৪), 'বৈশ্বর
পশীত' (১৯ মে) ও 'ভাশ্বসিংহ ঠাকুরের পদাবলী' (১ জুলাই)
ভিনি পরলোকগভা বৌঠাকুরাণীকেই উৎসর্গ করিয়াছিলেন।

সাহিত্যাসুরাগিণী কাদখরী দেখীর অন্তর্গানের গলে সংল জ্যোতিরিজ্ঞনাথ, থিজেজ্ঞনাথ, অক্সচন্দ্র প্রমুখ 'ভারতী'র পরি-চালকগণ পত্রিকার প্রচার রহিত করাই সাবান্ত করেন। বিশেষকারণে ভার প্রকাশিত হইবে না।" কবি অক্সচন্দ্রের সহ্বর্দ্ধিশী শরংকুমারী চৌধুরাণী বধার্থই লিখিয়াছেন :—

শক্ষের ভোড়ার কুলগুলিই লবাই দেবিতে পার, বে-বাঁবনে ভাছা বাঁৰা থাকে ভাছার অভিত্বও কেছ জানিতে পারে ন। । ফছবি-পরিবারের গৃহলক্ষী শ্রীর্জ জ্যোভিরিঞ্জনাথ ঠাকুরের পত্নী ছিলেন এই বাঁৰন। বাঁধন ছিড়িল—ভারতীর সেবকেরা

আর কুল ভোলেন না, ভারতী ধুলার মলিন। এই ছর্বিনে
নামতী প্রণকুমারী দেবী নারীর পালন-শক্তির পরিচর দিলেন।"
বিরশালে স্বদেশী প্রীমার

নীদের বাবসায়ে জ্যোতিরিজনাথের মন্দ অর্থাপম হয় মাই।
এই টাকায় তিনি একট নৃত্য ব্যবসায়ে ব্যাপৃত হইলেন; উহা
ব্যবসায়ে গ্রায় প্রিচালনা। তিনি শ্বতিক্থায় ব্যবিষ্টাহন:----

"নীপে আমি বেশ লাভ করিয়াছিলায়। এবন এই চীকা লইয়া আমি কি করিব ? এই চিন্তা তথন আমার মনে ধ্ব প্রকাল চংয়া উঠিল। এই সমর এক দিন হঠাং 'এলচেল্ল গেলেটে' দেখিলাম, একটা কাহাজের খোল নিলাম হইবে। ভালই হইল, এই খোলটা কিনিয়া একখানা লাহাজ তৈরি করাইয়া লাহাজ চালান যাইবে, হির করিলায়। এই সমরে আবার, কলিকাতা হইতে বুলনা পয়স্ত রেলও হইবে, কথা ছিল। তাহা হইলেই বুলনা হইতে বরিশাল পর্যায় বেশ লাহাজ চালান যাইতে পারে। খোল কেনার পক্ষে এ একটা বেশ ক্ষুক্তিও হইল। শেটেই খোলে যে প্রথম লাহাজ প্রস্তুত হইল, তাহার নাম রাখিলাম 'স্বোজনী'।"

২০ মে ১৮৮৪ ভারিবেক কোভিরিদ্দাণ প্রথমে 'সরোজিনী' দইরা কর্মক্তেরে জবতীর্ণ হন। কার্য্য জারস্থ করিবার পর ডাহাকে যে প্রতিযোগিতার সন্মুখন হইতে হইয়া-ছিল, তাহা উাহারই জাযায় বর্ণনা করিতেছি:

"'পরোজিনী' তৈরি হইতেই এত বেশী বিলগ হইয়া গেল যে, আমি আসিবার অব্যবহিত পুরেই ফ্রোটসা কোম্পানি ক্তার ফারিয়া বলিয়াছিল। আমার আহার গদি ঠিক সময়ে তৈরি হইত, তাহা হইলে জামি ইহার জনেক আগেই কার্য্য ীচাপাইতে পাবিতাম : তাহা হইলে হয়ত এ কোম্পানি এদিকে ন্-ও আসিতে পাবিত। কিন্ত তাহা হয় নাই। এখন আমরা হুই পৃষ্ট এই একই লাইনে ঠামার চালাইতে গানিলায। কাৰেই টুক্তর দলে পুর প্রতিযোগিতাও আরম্ভ হইল। একখানি মাত্র প্ৰমাৱ গ্ৰহা কাৰ্যো অপুবিধা হওয়ায় আমি আৱও চারখানি ভাছাক ক্ৰমে ক্ৰমে ক্ৰম করিলাম। এ ভাছাকণ্ডলির মাঞ্ हिन 'वक्षमधी' 'यामी' 'कावज' अवर 'मर्ड विभा'। जनम এই পাঁচবানি ভাহাত বুলনা হইতে বরিশাল প্রান্ত যাত্রী লইছা প্রনাপ্রন ক্রিভ এবং সময় সময় মাল লইয়া কলিকাভাও আপিত। এ সময় আমি কাহাকেই বাগ করিভাষ। বাগালীর ভাছাজ-চালনায় তৰ্ণ ব্রিশালের ছাত্রস্থাক এবং নবা-पराम भरता अकृष्ठे अवन घरश्यनात प्रष्टे व्वताविम निर्म এইরপে আমার কারু বেশ দিন দিন লাভখনক হইয়া উন্নতির পৰে চলিতে লাগিল। আমার এই ব্যবসাকে যেন সমস্ত

২২>> সালের আবণ-ভাগ ও অগ্রহারণ-সংখ্যা ভারতীতে
প্রকাশিত "সরোজিনী প্রবাণ" এটবা।

[†] এই প্রসঙ্গে 'বালকে' (প্রাবণ ১২৯২) প্রকাশিত জ্যোতিরিন্দ্র-বাধের লিখিত "বরিশালের পত্রে" পঠিতবা।

জাতির উদায় ভাবিয়া বরিশালবাসিগণ নিয়তই ইছার দীর্ঘটীবন কামনা করিভেম। কিছু এভ কুখ আমার সহিল মা। ইংরেক্ষের ব্যবসায়ে ব্যাখাত লাগিয়াছে, আর কি ভাছারা চুপু করিরা বাকিতে পারে ? ব্যবসারী সাহেবেরা আমার যং-প্রোমাভি বিপক্ষতাচরণ করিতে লাগিল। ভাষারা যথন দেবিল যে যাত্ৰী আৰু হয় না, তৰ্ম তাহাৱা ভাড়া ক্ষাইতে আরম্ভ করিল, আমিও ক্যাইলাম। এইরূপে কৃতি খীকার কৰিবাও আমি প্ৰতিযোগিতার প্ৰবৃত্ব ভ্ইলাম। ... এই সমর ৰুলনা ঘইতে মাল বোৱাই লইয়া 'হদেনী' কলিকাভা আসিতে-ছিল। সারা পথ বেশ নির্কিন্ধে কাটিয়া গেল--- আলোকমালা-महद्यांनिक कनिकाका वसद्वत श्रदिन कविन। किस निध হাওড়ার পুলের নীচে দিয়া যাইবার সময় একখানা কেটভে না-किएन शक नानिया श्रीमात्रवानि निरमध्यात् ननानार्छ निमन्न হইল। এক ভাহাত মালের এক কণাও উঠিল না।...একে ভ প্রতিযোগিতার ভঃ কিছু দিন হইতেই আমি ভৃতিথীকার क्रिकाणाम, यशि कान अ क्रांत क्रिका यात्र- अहे ज्यानाय . কিছ এবার এই ছ্বটনার বভ এক ক্তিপুরণ ব্যাপারেই আমি অত্যন্ত কের্বার্ হইয়া পঞ্লিমি, কিন্তু তবুও নিজে হইতে উঠাই কিন্ত্ৰণে ? . . . এমন সময় ফ্লোটলা কোম্পানীর পক্ষ হইতে बाक्ष भग्रतीरमाञ्च भूर्याभागात (ज्यमक बाक्ष इन नाहे) আমার নিকট এক স্থির প্রভাব সইরা আসেন। তিনি विमानम, 'डेक्स भक्ष्म जात अत्रथ द्वा वर्षराध माक कि १ আপনি নিজেই একটা মূল্য ধার্য করিবা দিউন্। ফ্লোটগা কোম্পানী আপনার সমন্ত কারবার কিনিতে প্রন্থত আছে ৷' আমি দেবিলাম যে, এ একটা মহাসুযোগ উপস্থিত।... আমি মহাবলিষ্ঠ চারিধানি আহাত ও তৎসংক্রান্ত সমন্তই ফোটলা কোম্পানীকে বিক্রম্ব করিয়া দিলাম। ক্লোটলা কোন্দানীর নিকট হইতে যাহা ভাষ্য ভাহাপেকা অনেক বেৰী টাকা পাইলেও, আমি আমার খণ-পরিলোধ করিতে পারিলাম না।

রবীজনাথ 'জীবনমৃতি'তে সিধিয়াছেন, জ্যোতিরিজনাথের সাত হাজার টাকায় জীত শৃষ্ঠ খোল "একদা ভরতি হইরা উঠিল শুরু কেবল এঞ্জিনে এবং কায়য়ায় নছে— এণে এবং সর্বানাশ। কিছ তবু একথা মনে রাখিতে হইবে, এই-সকল চেষ্টার ক্ষাতি যাহা সে একলা তিনিই শীকার করিয়াছেন আর ইহার লাভ যাহা তাহা নিভ্রুই এখনো তাঁহার দেশের বাতার জ্বা হইয়া আছে। পৃথিবীতে এইএপ বেছিসাবি অব্যবসায়ী লোকেরাই দেশের কর্মক্ষেত্রের উপর দিয়া বারংবার নিজ্ল অব্যবসায়ের বঙা বহাইয়া দিতে থাকেন; সে বঙা হঠাৎ আলে এবং হঠাৎ চলিয়া যার, কিছ তাহা ভরে ভরে যে-পলি রাধিয়া চলে ভাহাতেই দেশের মাটকে প্রাণপূর্ণ করিয়া তোলে—ভাহার পর ক্সালের জিন বর্থন আলে ভবন ভাহাতের মান বিবাহের ক্যা কাহারও মনে বাকে

না বটে, কিছ সমস্ত জীবন বাহারা ক্ষতিবহন করিয়াই আংসিয়াছেন, মৃত্যুর পরবর্তী এই ক্ষতিটুক্ত ভাহারা আনারাসে বীকার করিতে পারিবেন।"

ফ্রেনলজি বা শিরোমিতি-বিচ্ঠা

ন্তীমার-পরিচালন কার্য্যে ব্যস্ত থাকিলেও জ্যোতিরিজনাথ সাহিত্যের প্রতি একেবারে উদাসীন ছিলেম না। এই সমরে তিনি ক্রেনলজি বা শিরোমিতি-বিদ্যার রীতিমত চর্চা করিতেন। তাঁখার করেকট রচনার নির্দেশ দিতেছি:——

- (क) "শিরোমিভি-বিদ্যা" (সচিত্র)— 'কলনা', ৪র্থ বর্ষ (ইং ১৮৮৫)।
 - (व) "बूबर्रामा" (प्रक्रिक)--- 'वानक', देवणांच ১२>२।
- (গ) "আধুনিক মণ্ডিছতত্ব ও ফ্রেনলজি"—'সাবনা', আধাচ ১২৯৯।

শিরোমিতি বিদ্যার চর্চাকালে জ্যোতিরিজ্ঞনাথ বন্ধুবাছব আনেকের মাথা পরীকা করিয়াছিলেন৷ "পণ্ডিত কৃষ্ণকমল ভটাচার্য্য মহাশয়ের একবার মাথা দেখিয়াছিলেন৷ উাহার নিজের চরিত্র, বর্ণনার সঙ্গে মিলাইয়া পণ্ডিত মহাশয় বলিয়াছিলেন যে, ভাঁহার সভাবের সহিত এই বর্ণনা আনেকটা মেলে বটে।"…"ক্যোতিবাবুর সঙ্গীতপ্রিয়তা, ফ্রেনলঙ্কিও চিত্রাফন-পটুতা লক্ষ্য করিয়া থিজ্ঞেনাথ একবার একট ব্যল-কবিতারচনা করিয়াছিলেন, তাহা হইতে একটু উদ্ভূত করিয়া দিলাম:—

বেশ্বাপা কি মিঠে অন্বতের ছিটে ঐ হাভটতে শুনায়

শিরামো তং তং তং তং তং তং তং তং তেওঁ ক্ষাৰ ।

মাৰার ভত্ত বুঁজি, পুঁৰি করেন পুঁজি,

মাৰা পেলে আর কিছু চান না।

ল'ন যবে ছবি মনে ভাবে কবি

"হুইরাছে, বামো—আরা,

চক্ষে আসিরাছে মোর কারা।"

এই সময়ে জ্যোতিরিজনাথ "অভিলৌকিক ব্যাপার" উদ্ঘাটনের কল আঞাহায়িত হইয়াছিলেন। তাঁহার জীবন-স্বভিতে প্রকাশ :---

"কোৰাও কোনও প্ৰসিদ্ধ গণংকার বা ভবিষ্যছক্তা বা ঐ ভাতীয় একটা-কিছু আসিরাছে শুনিলেই, তিনি অমনি বছু-বাছবসহ সেইবানেই সিরা হাজির হইতেন। কিছ পনের-আনা ভাগই আনাজ ও বাকিটুকু কাঁকি দেবিয়া অবিসাহেই তাঁহার সে সব মিটুরা সিয়াহিল। কোন্তীর কলাকলেও তিনি আর বিধাসহাপন করিতে পারেন নাই। তিনি বলেন, 'এ সমন্ত ব্যাপার বৈজ্ঞানিক পছতি-অহুসারে পরীক্ষিত হওয়া উচিত।'

প্লাকেটের কাও দেখিয়া, তিমি কথমও কথমও খুবই আক্তর্য বোধ করিয়াছেন।" অতঃপর জ্যোতিরিজ্ঞমাধ পৃমরার সদীতে মনোনিবেশ করেম—সে কথা পরে আলোচিত হববে।

পুনা-প্রবাদ ও মরাচী শিক্ষা

১৮৯৪ সনের মার্চ হইতে ১৮৯৭ সনের প্রথম ভাগে অবসরগ্রহণ পর্যান্ত সভোজনাথের কর্ম্মল ছিল সাভারা।

জ্যোতিরিক্রমাথ এই সময়ে যেজদাদার পুনার বাসায় কিছু দিন অবস্থান করিয়াছিলেন। সেথানে তিনি একজন মরাঠী পাঙিতের সাহাযো মরাঠী ভাষা অব্যয়ম করেম: ১৩০২ সালের (ইং ১৮৯৫) 'সাধনা' পত্রিকার প্রকাশিত তাঁহার "মারাঠাও বাললা", "তুকারামের অভঙ্গ", "থাশির মহারাণী শ্রীমতী লক্ষীবাই" প্রভৃতি রচনা এই মরাঠী শিক্ষারই কল।

পুনাং অবস্থানকালে মেজ-বোঠাকুরাশ্বীর পীড়াপীড়িতে জ্যোতিরিজ্ঞনাথ
অনেক দিন পরে 'হিতে বিপরীত' নামে
একবানি কৌতুক-নাটকা কয়েক ঘণ্টার
মধ্যে রচনা করিয়াছিলেন। ইহা
ভোঙ্গোলেলা ঠাকুর-বাজীতে ও
পরে ভারত-সঙ্গীতসমাজে অভিনীত
হইয়াছিল।

সঙ্গীত সাধনা

ক্যোভিরিজনাথ কেবলমাত্র সঙ্গীত-রচয়িত্য ছিলেন না — স্বালিলীও ছিলেন। সঙ্গীতে তাছার বিশিষ্ট দান— বাংলা গানে নৃতন রীতিতে স্ব-সংযোজনা। এই রীভির পূর্ণ বিকাশ দেখিতে পাই রবীক্ষনাথে। 'জীবন-মৃতি'তে রবীক্ষনাথ লিখিয়াছেন:—

"জ্যোতিদাদা তথ্য প্রভাহই প্রায় সমন্ত দিন ওভাদি গানভলাকে পিরানো যন্ত্রের মধ্যে কেলিরা তাহাদিগকে বংশছো
মহন করিতে প্রস্তু ছিলেন। তাহাতে ক্ষণে ক্ষণে রাগিনীভলির এক-একটি অপূর্বার্ত্তিও ভাবব্যঞ্জনা প্রকাশ পাইত।
বে-সক্ল পুর বাঁধা নিরমের মধ্যে মক্লগভিতে দত্তর রাধিরা
চলে তাহাদিগকে প্রথাবিক্রছ বিপর্ব্যভভাবে দৌচ করাইবারাত্র
নেই বিপ্লবে তাহাতে আমাদের চিন্তকে সর্বান্ধা বিচলিত
করিরা ভূলিত। প্রস্তুলা বেন নানা প্রকার কথা কহিতেহে
এইরূপ আমরা আই ভনিতে পাইতাম। আমি ও অক্ষরবার্
অনেক সম্ব্রে জ্যোতিদাদার সেই বাক্ষনার সঙ্গে প্রে
কথাবোক্ষনার চেষ্টা করিতাম।"

স্থব্নজিপিকার ৷—স্যোতিবিজ্ঞনাবের চরিত্নার নিবিয়া-ছেন :—"স্যোতিবিজ্ঞনাবের চেষ্টার 'ভারতী' ও 'লাবনা' বাসিকণত্তে দর্বপ্রথম বালালা গাবের স্বর্লিণি প্রকাশিত হর।" এই উক্তি ঠিক নহে। যাসিকপঞ্জের পৃঠার কথা ও স্বর-সহলিত বরলিগি প্রথম প্রকাশের গৌরব ফ্যোভিরিজ-নাবের অঞ্জ হিজেজনাবের। তিনি ১৭৯১ শকের কার্তিক (১৮৬৯, অটোবর) মাসের 'তত্ববোধিনা প্রিকা'র শেষে অতিরিক্ত ৬ পৃঠার "সঙ্গীত লিপিবছ করিবার প্রধালী" ও পাঁচট ব্যাহ্যসঙ্গীতের সর্বালি প্রকাশ করেন। । হিজেজনাবের



' 'শাভিধাম'---র'াচী

খরলিপি-প্রণালী 'বালকে'ও (১২৯২) অনুস্ত ছইয়াছিল (আখিন-কার্ত্তিক সংখ্যার ধিজেজনাথের "নৃতন হরলিপি" প্রবন্ধ মাইবা)। জ্যোতিরিজনাথের ক্রতিভ্—সর্নিগি-প্রশালী শিক্ষার্থর পক্ষে অধিকতর সহস্ববোধ্য করা। তিনি 'বালকে' প্রকাশিত খ্রলিপি-প্রণালীর সংস্থার করিয়া সংখ্যা-মাত্রিক স্বর্লিপি উদ্বাবন করেন (১২১৫ সালের পৌষ-সংখ্যা 'ভারতী ও বালকে' একাশিত "গামের খর-লিপি" প্রবন্ধ পটিতব্য)। ইহার তিন বংগর পরে তিনি অধিকতর সহত ও সরল আকার-হাত্রিক वर्राणिन-१६ छि श्रांत्र कर्राया । अहे संगत्न ১२৯৮ माल्य অএহারণ-পৌষ সংখ্যা 'সাধনা'র প্রকাশিত তাঁহার ''সার্গম ^{*} यत्रनिनित्र 'बाकात-माबिक' मूखन **१६७**° ७ ১७०৯ সালের ভাত্ৰ-সংব্যা 'সমালোচনী' পত্ৰে প্ৰকাশিত "আকাৰমাত্ৰিক-খনলিপির চিহ্নাবলী" (রবীজনাবের 'মায়ার বেলা'র ১ম দৃষ্ঠ, ও ২র দুঞ্চের প্রথমাংশের হরলিপি সহ) ক্রইব্য। ক্যোভিরিজ-নাৰের উদ্বাবিত আকার-বান্ত্রিক স্বরলিপিই বর্তমানে প্রচলিত : ইহা ধারা মাসিকপত্রে স্বরলিপি-প্রকালের পব প্রথম হইরাছে।

অরলিপি-গীভি-মালা। -- ১৮১৭ সনের ভ্ন বাসে বিব্যাত বাভযধ্র-বিক্রেতা ভোরাজিন এও সন জ্যোতিরিল্ল-

১২১২ সালের বৈশাধ-সংখ্যা 'বালকে' প্রকাশিত প্রতিভাক্ষণরী দেবীর "সহজ্যোদা-শিক্ষা" প্রথক্তের ১৩ প্রভার পাদটাকা ক্রষ্টবা ।

নাধ কর্ত্বক "সঙ্কলিত ও ব্যাধ্যাত" 'শ্বলিপি-সীতি-মালা' প্রকাশ করেন। ইহাতে দিক্ষেনাধ, বর্ণকুমারী, অক্ষচন্ত্র চৌধুরী, রবীক্ষনাধ, ক্যোতিরিক্ষনাধ প্রকৃতির রচিত মোট ১৬৮ট গানের আকার-মাত্রিক প্রনিপি আছে। ক্যোতিরিক্ষনাধ ও রবীক্ষনাধ, এবং ১ট ক্যোতিরিক্ষনাধ ও ববীক্ষনাধ, এবং ১ট ক্যোতিরিক্ষনাধ ও অক্ষয়চক্ষের সন্থিতির রচনা।

'বীণা-বাদিনী'— 'দ্বলিণি-দীতি-মালা' প্রকাশের অবাবহিত পরেই ১৩০৪ সালের আবন (১৮২৭, জুলাই) মানে জ্যোতিরিজ্ঞনাব 'বীণা-বাদিনী' নামে সঙ্গীতপ্রকাশিনী একবানি মালিক পত্রিকা প্রকাশ করেন। ভোরাকিন্ এও সন ইহার প্রকাশক ছিলেন। সঙ্গীত-বিষয়ক প্রথম মালিক পত্রিকার গৌরব 'বাণা-বাদিনী'রই প্রাণ্য। তৃতীয় সংখ্যা পত্রিকার শিরোভাগে "লাহিত্য সঙ্গীত ক্লাবিহীনঃ সাক্ষাংপত্তঃ পুজ্ঞ-বিষাণহীনঃ" মৃত্রিত হইরাছে। পরবর্তী সংখ্যাগুলিতে পত্রিকার শির্মাণহীনঃ" মৃত্রিত হইরাছে। পরবর্তী সংখ্যাগুলিতে পত্রিকার শির্মাণহীনঃ" মৃত্রিত হইরাছে।

'ভারত-সঙ্গীতসমাজ':—পুনার অবস্থানকালে স্থানীক "গায়ন-সবাদ" দেখিরা জ্যোতিরিজনাথের মনে কলিকাতার অস্ত্রপ একট প্রতিষ্ঠান গড়িয়ঃ ভূলিবার বাসনা হয় ৷ 'বীণ'-বাদিনী'র ১ম সংখ্যায় ভিনি এই বিজয়ি প্রকাশ করেন ঃ—

"কলিকাতা সদীত-সমাদ ।—উৎসাহদাতার অভাবে, হিন্দুসদীতের জ্বলই অবমতি ও লোপাপিও হইতেছে। ইহার প্রতিবিবামার্থ সদীত-সমাদ নামক একটি সভা যাহাতে আমাদের
মধ্যে স্থাপিত হব, ভাহার চেঙা ও উদ্যোগ চলিতেছে। হিন্দু
সদীতের সংরক্ষণ, ও উন্নতি সাধনই এই সভার বুখ্য উদ্দেও!
এই সমাজের অবীনে, একটি সদীত-লালা থাকিবে। সদীতনিপুণ সদীতালুরাই সোধান ব্যক্তিগণ প্রতিদিন কিছা আপাতেতঃ
সপ্তাহের মধ্যে একদিন সামাকে, তথার একত্র সম্ববেত হইরা
সান বাদ্য এবং সদীত সম্ববে আলাপ ও আলোচনা করিবেন।
সভার বেতনপুক একজন উংকৃষ্ট গায়ক ও বাদক সদীত-লালায়
নিয়ত উপন্থিত থাকিবেন। উপন্থিত সভাদিগের মধ্যে বিনি
যাহা পারেন, কেছ বা কোন যন্ত্র বাদ্যাইবেন, কেছ বা সান
গাহিবেন, কেছ বা সদীত সম্ববে জোন প্রবন্ধ পাঠ করিবেন;
মধ্যে মধ্যে, কোন প্রাদার অবীক্ষক আহ্বান করিবা তাহার

গান-বাদ্য শুনা যাইবে। কথন কথন উৎস্থ হানা, কীর্ছন, কৎক্রতা প্রভৃতির বন্দোবন্ত করিয়া সভাসপের চিন্ত বিনোদন করা হইবে। বর্ষে বর্ষে, সভার সাহ্বংসরিক উৎসবের দিন, কিছা সরস্বতী পূজার দিন, দেশ-বিদেশ হইতে সঙ্গীত গুলীগণকে আহ্বান করিয়া সদীত-উৎসবের অস্কুটান ও তাঁহাদিগকে পারিভোধিক বিভরণ করা হইবে। ২ টাকা মাসিক টাদা ও ছই টাকা প্রবেশ-মুদ্রা প্রদান করিলে এই সভার সভা হওৱা বাইবে। আপাততঃ দেভ শত সভ্য ভূটিলেই সভার কার্য্য আরম্ভ হইবে। বাহারা এই সভার সভা হইতে চাহেন, তাঁহারা সম্পাদকের ঠিকানায় পত্র লিবিয়া বাবিত করিবেন।" (শ্রাবণ ১৩০৪)

ইহার আন দিন পরে জ্যোতিরিন্দ্রনাধের চেটার কলি-কাতার 'ভারত-সঙ্গীতস্থাক' স্থাপিত হয়। বিশুদ্ধ সঙ্গীতের চর্চা হইবে শুনিয়া মহাধি দেবেন্দ্রনাথ এই প্রতিষ্ঠানের ক্ষম সহস্র মুলা টাদা দিয়াছিলেন। এ ঠাকুর-পরিবারের আরও আনেকে অর্থসাহায় ক্রিয়াছিলেন, ইহার পরিমাণত বছ ক্ষ ছিল না। জ্যোতিরিক্তনাথ ক্রিনান্ততে ভারত-সঙ্গীতস্থাক্ত সহতে এইরূপ বলিয়াছেন:—

"প্রথমে সমান্ত স্থলীয় কালীপ্রসর সিংহ মহালতের বাটাভেই ৰ্দিত: সকল্যেণীর লোকেই এই সমাক্ষের সকা হইতে आशिक्षित । अभिनिष्ठ **উ**लाय खर केकाछिक आखर (यन কান্ত চলিতে লাগিল , সমান্ত নিকের উদ্বেশ্রণ ক্রত অগ্রসর ছইতেছিল। কোনও খনবাজি কলিকাতার আসিলেই, এই সমাজে তাঁহার গানবাজনা হইত। কলিকাভার অনেক বড়-লোক এবং মধাবিত গৃহত্ব নিয়মিতভাবে সভায় যোগদান ক্রিতেন এবং পরতার বেশ মেলামেশাও হইত। বালালীর সমবেত কার্যো দেবতার অভিশাপ আছে, সেই অভিনাপের ফলে জনভিবিল্য সভাৱে বটল এবং সমাজও ছই ভাবে বিভক্ত হইয়া পড়িল। ... অঞ্জ বাড়ী ভাড়া লইয়া শেইবানে 'ভারত-সদীতগ্যাদ' নামে স্মাধ্যে পুন:প্রতিষ্ঠা হইল। ... এ দলের পুঠপোষক হইলেন, কুমার মগ্রনার মিছ। " · জ্যোতিবিশ্রনাবই ভারত-সঙ্গাতসমাজের প্রথম সম্পাদক: পরে অভ্যয় সভাপতিও নির্বাচিত হইয়াছিলেন। প্রথমাবস্তার এই প্রতিষ্ঠানের ক্ষা তাঁহাকে বিশেষ পরিপ্রম করিতে হইয়া-ছিল। উছোর 'অঞ্মতী,' 'পুনর্বসন্ধ,' 'বসন্তলীলা,' 'ব্যানভক', 'হিতে বিপরীত,' 'অলীক বাবু' প্রভৃতি নাট্যপ্রস্থ এবানে বহুবার আভনীত হুইয়াছে।

সঙ্গীত-প্রকাশিক। — 'বীণা-বাদিনী' রছিত ছইবার তিন বংগর পরে জ্যোতিরিজ্ঞনাথ, ত্রিপুরাবিপতি রাথাকিশোর মাণিক্য দেববর্দ্মণের অন্থরোবে ও মাসিক ৫০, অর্থসাহায্যের

 ^{*} জ্যোতিবিক্রনাথ ঠাকুর: "পিত্রের সম্বন্ধে আমার জীবনমৃতি"—
'প্রবাসী', মার ১৩১৮।

প্রতিশ্রুতিতে, ভারত-সদীতসমাজের মুখপত্র-স্বরূপ 'সঙ্গীত-প্রকাশিকা' নামে একধানি মাসিক পত্রিকা ১৩০৮ সন্থালর আরিন (গেণ্টেম্বর ১৯০১) মাসে প্রকাশ করেন। ইহার কণ্ঠে নিয়লিবিত প্লোকট শোভা পাইত :—

নাহং বদামি বৈকৃঠে যোগিনাং কাদের ন চ।

মদৃত্তা যত্র গায়ন্তি তত্র তিঠামি নারদ ।
পত্রিকা-প্রকাশের "প্রয়েজন ও উদ্ভেশ" সহছে প্রথম সংখ্যায়

এইমণ জিবিত হয়:—

"আত্মকাল শ্রুতিযুতি পুরাণ-কাব্য প্রভৃতি বিষয়ক সংস্কৃত গ্রন্থদকল অমুবাদিত হটয়া জনদাবারণের মবো বছলরূপে প্রচারিত হইতেছে। কিন্তু ছুবের বিষয় এ পর্যন্ত সঙ্গীত বিষয়ক প্রাচীন গ্রন্থাদির অত্বাদ কার্য্যে কেছ হন্তক্ষেপ করেন नार्वे । ननीष-निर्वेश्व, मनीष-पर्वेष, मनीष-पारमापत तान-विद्याव, রাপস্কিদ-লার রাপাণ্ড নারদ-লংছিতা, ধ্বনি-মঞ্জী, প্রভৃতি विविध मझील-अर्थद सर्था अधिक स्मेरे भाकृतिभे व्यवशास ৰহিয়াছে - ছই একবানি পুভক মুক্তিত হইয়াছে মাত্ৰ। অনেক র্ম্বলি প্রস্তের পাওলিপিও এখন ছম্পাপ্য এবং আরও কিছুকাল পরে একেবারে বিশুপ্র ছটবারট সন্তাবনাঃ এটা দক্ষ এছ সংগ্রহ করিয়া মূল ও অনুস্থান আম্বা প্রমুশ এই প্রিকায় প্রকাশ করিব এটক্রপ সকল করিয়াছি: ইহার ছারা, 'গ্রহ', 'ऋरम', 'क्वाम', 'दार्थ, 'वृष्ट्या', 'दाशी', 'भवाशी,' 'वाकर', 'র্যভব্' প্রশুতি আর্হ্য দঙ্গীত-বিষয়ক পারিভাষিক শক্ষের প্রকৃত অৰ্থ বোৰপম্য ছইবে এবং পূৰ্বের রাগ-রাগিণ্টত কিন্তুপ ষৃষ্টি ছিল ও কালক্রমে কিরপ পরিবর্তন ঘটয়াছে, ভাছাও ভবগত হওয়া याहेट्य ।

"আমাদের আর একট উদ্ভেক্ত,—তানসেন প্রভৃতি প্রসিদ্ধ • ওভাদ্দিগের পুরাতন গীতগুলি ধর্মলিশিবদ্ধ করা। সংলিশির অভাবে, অনেক হুলি পুরাতন গান বিলুপ্ত হুইরাছে এবং যাহা এবনও প্রচলিত আছে, ভাহাও কালক্রমে মুধ-পরস্পরায় বিকৃত হুইরা যাইতেছে। অভএব, এ বিষয়ে আমাদের আর উদাসীম থাকা উচিত নহে; যাহাতে পুরাতন গীতগুলি সরলিশিবদ্ধ হয়, সনীত-বেভা মাত্রেই সে বিষ্তে চেষ্টা করা কর্ত্ব্য ।…

"ৰাষাদের ভারতবর্ষট সঞ্চীত-কলার জ্বাস্থান। কোন কোন পণ্ডিত বলেন, এইবানেই সংগ্রন্থর প্রথমে উদ্ভাবিত দইয়। পরে দেশবিদেশে প্রচারিত হয়। আমাদের সঙ্গীত-পঙ্তিতে, বিশেষতঃ আমাদের রাগ-রাগিনীর স্বর্বিঞ্চাসে ও মৃতি-কল্পনায় যেরপ একট কল্পা-নৈপুণা ও প্রপানা দেখা যায়, তাহা অভ কোন সভাজাতির মবাে দৃষ্ট হয় কি না সন্দেহ। এই সঞ্চীত-বিভা আম্বা কোন জাতির নিকট হইতে বার করিয়৷ পাই নাই—ইছা আমাদের নিজস সন্পতি। এই জ্ঞা বলিতেছি, বাহাতে আমাদের প্রাতন সঞ্চীত-বিভা ও সঞ্চীত-কলার বহুল প্রচার ও ভারিত্বিধান হয়, সে বিষয়ে ওব্ সঞ্চীতাল্পরাগী কেন বল্পান্থ্রাগী বাভি মাজেরই উৎসাহ প্রদান করা কর্তব্য।" সংস্কৃত নাটকের অনুবাদ

ভারত-সঙ্গীতসমান্তের সহিত সংশ্লি**ট থাকা ভালেই** ভ্যোতিরিজনাথ সংস্কৃত নাটকগুলির বলামুবাদে **হতক্ষেণ** করেন। তিনি মুতিকথায় বলিয়াছেন,—

"একদিন মেক'বোঠাকুরাণী আমাকে 'লকুগুলা' পড়িতে বলিলেন। ইহার আবে আমি সংগত নাটক একথানিও পড়ি নাই। 'লকুগুলা' পঢ়িয়া আমি বাত্যিকই মুগ্ন হইয়া পেলাম। ভাবিলাম, এ কিনিষ এখনও কেন বাললা আমার তর্জমা হয় নাই। ছই-এক জনকে অনুবাদ করিতে অনুবোধও করিয়া-ছিলাম। কিন্তু কেহই তেমন গরক করিলেন মা। আমি নিজেই আয়ন্ত করিয়া দিলায়।"

অক্লান্ত পরিশ্রমের কলে ১৮৯১ হইতে ১৯০৪ সনের মধ্যে ক্লোভিরিজনাথ ১৭খানি সংস্বত নাটকের বলাহ্যাদ প্রকাশ করেন—এই প্রবছের 'গ্রহ্মস্কী'-বিভাগ ১৯বা। গাঁচকভি বন্দ্যোপান্যায়ের ভাষায় ইহা 'উাহার স্থতির, উাহার বোগ্য-ভার, উাহার হেবার, ভাহার পান্তিভার, উাহার কবিছের অক্সর ক্রিভান্ত হুইম' গাকিবে" ('রলাগম', ৪ মাখ ১৩০৮)। বৃদ্ধীয় সাহিত্য-পরিসং

১০০৯-১০ বসাব্দে (ইং ১৯০২-০) জ্যোতিরিজনাথ এক বংসবের জন বলীধ-সাহিত্য-পরিষদের জনতম সহকারী সভা-পতির পদ অল্ডত করেন। তিনি ১০ জ্যৈ ১০১০ তারিখে পরিষদের মাসিক অবিবেশনে "ভারতে নাট্যের উৎপত্তি" নাথে একটি সুলিবিত প্রবন্ধ পাঠ করিমাধিলেন।

চিত্ৰাঙ্কন

হিস্কলে পঠকশার জ্যোতিরিজনাথ শিক্ষকদের ছবি আঁকিতেন। চিত্রাকনের অভ্যাস ভাঁহার বরাবরই ছিল। ইহাতে অধুরাগবদতঃ তিনি পরিচিত-অপরিচিত অনেকেরই খৰাকৃতি ৰাভাৱ আঁকিয়া ৱাৰিতেন ৷ ইছার ফলেই আমরা 'দারদায়ঙ্গলে'র কবি বিহারিলাল চক্রবর্ত্তী এবং রবীজনাবের বিভিন্ন বন্ধদের রেবাচিত্রগুলি লাভ করিয়াছি। ১৩১৮ সালের काञ्चन (कब्दबादि ১৯১२) भरदाः 'खादछी'राज- भदना (प्रवीद `কবি-সম্বৰ্জনা' প্ৰবাদ প্ৰকাশিত, ক্যোতিরিজ<mark>নাবের অ</mark>ভিত_ু इबीखनात्यद विधित वहरमद (১৮११-৮७-৯)-৯२-১৯०१ मार्ट ববীজনাথ ৷ পাঁচখানি ব্লেখাচত দেখিয়া বিলাতের বিধ্যাত किळनिकी (दारहेवशेकिन (Rothenstein) आकृते एन । जिनि তংকালে-বিলাভ-প্রবাসী রবীক্ষনাথকে জ্যোতিরিক্ষনাথের অন্বিত কজকগুলৈ বুল চিত্ৰ আনাইয়া দিবার অন্ধ অসুরোধ করেন: চিত্রওলি বিলাতে পেছিলে ববীজনাৰ ও রোচেন-**ইাটন উভাষে ১৪ গেপ্টেম্বর ১৯১২ ভারিবে জ্যোভিরিজনাথকে** যে হুইবানি পত্ৰ লেবেন, 'ক্যোভিত্ৰিজনাৰ' পুত্ৰক হুইতে ভাহা উছত করিভেছি :----

ভাই জ্যোভি দালা,--জাপনার ছবির বাভা আমি

Rothensteinকে দেবিয়েছি। ভিনি এখানকার একজন বুৰ বিখ্যাত artist : তিনি দেখে অতাত্ত আক্ৰয় হোৱে গেছেন। ভিনি আমাকে বল্পেন,—আমি ভোমাকে বল্ছি, ভোমার দাদা ভোমাদের দেশের সর্বভ্রেষ্ঠ চিন্তী। ভামাদের দেশের প্রথম শ্রেণীর ডুইং যারা করেন জালের সঙ্গেই ওঁর ভুলনা ছ'তে भारतः । এए पिन (य जागारमत प्राप्त अ प्रतित कारमा नमामत হয় নি, এর ২ত এনন অন্তত ঘটনা কিছু হ'তে পারে না। Most marvellous, most magnificent—এই ভ তার মত। তিনি বলেছেন, এখানকার সব চেয়ে বিব্যাত art criticকে তিনি এই ছবি দেখাবেন, এবং এর একটা ছোট সমালোচনা ডিনি নিজে লিখবেন। Portfolios আকারে একটা selection তোমাদের করা উচিত। --- যেটা যথার্থ আপনার নিজের জিনিষ এবং যাতে আপনার লক্তি এমন আকর্ষাক্রণে প্রকাশ পেরেছে, সেটাকে লুপ্ত হ'তে দেওয়া উচিত एक ना। चालनाव अडे एरि अवाटन शांबारे (प्रतिएम, प्रकाण) বুব প্রশংসা করছেন: সোটেনটাইন বুব একজন ঋণজ লোক, এর মতে আপনার চিত্রশক্তি একেবারেই প্রথম শ্রেণীর স্থাীর উপযুক্ত: এ কথা চাপা রাখলে চল্বে না। আপনার সেংহর दिशि २३ कास ५७५३।

My dem sir,-Let me thank you for your kindness in sending over the three books containing your drawings. As I expected from the reproductions I saw in an article on your brother, they are admirable. I know of few drawings which show at the same time so much sensitiveness of line and sincerity in characterisation, and there is a beauty and nobility in the expression ; you give to your sitters which it would be difficult to match. I do not know which I prefer, the drawings of the men or of the women. Your drawing of ladies remind me of the early drawings by Dante Gabriel Rossetti and the admirable drawings by the great French artist, Puvis de Chayanes. Indeed the books have been-and still are a source of great delight to me, and all to whom I have shown them have had similar feelings regarding them. ..(Sept. 14, '12.)

১৯১৪ সনে রোটেনটাইন একট সংক্ষিপ্ত ভূষিকা সহ ক্যোভিরিজনাথের অভিভ ২০বানি রেণাচিত্র বিলাতে মুন্তিভ করেন: এই চিত্র-পুভকের নাম – Twenty-five Collotypes from the original Drawings of Jyotirindra Nath Tagore, 1914.

জাতীয় সঙ্গীত

বিগত প্ৰথম মহাধুছের সময় জ্যোতিরিজনাথ করাসী রাষ্ট্র-সলীত "লা-মাসে ইরেজ" এবং ইহার মূল স্থরের অস্থপত বদাসুৰাদ ও স্বরলিণি 'প্রবাসী'র পৃঠার (ভাজ ১৩২২) প্রকাশ করেল্ল। উহা এইরূপ :---

আয় রে আয় দেশের সন্তান
পৌরবের দিন এসেছে;
অভ্যাচার ঐ দ্যাধ — গগনে
রক্ত-ধ্রকা ভূলেছে।
ভূনিছ না ক্লেত্র-মারে
ভীষণ সৈডের হুছার ?
ওরা আসে বুকের পরে
ক্রিভে জী-পুত্র সংহার।
বর অস্ত্র পৌরক্তন
কর বুছে সংগঠন;
৮লো—চলে'—মোদের ক্লেত্রে
শঞ্জ-বক্ত হোক সিঞ্চন:

পুনায় অবস্থানকালে জ্যোতিরিক্রনাথ যে মৌলিক কাতীয় সদীতট রচন! করিয়াছিলেন, এবানে তাহা উদ্ধৃত করিকে অশোভন হইবে না : এই ভারত-গানটি স্থর্বজিপি সহ প্রথয়ে ১০০৪ সালের হৈত্র-সংখ্যা 'বীণা-বাদিনী'তে প্রকাশিত হয়।---

শকর-- কাওয়াগী
চল্ রে চল্ সবে ভারত-সন্ধান
মাড়ভূমি করে আহ্বান!
বীর-দর্গে পৌরুষ-গর্কে
সাধ রে সাধ্ সবে দেশের কল্যান।

পুত্ৰ ভিন্ন মাড়-দৈক কে করে মোচন ? উঠ, কালো, সবে বল-- মা গো ৷ ভব পদে সঁপিফ পরাব ৷

এক তল্পে কর তপ, এক নম্ভে কপ ্; শিক্ষা দীক্ষা পক্ষ্য মোক্ষ এক, এক কুরে গাও সবে গান।

দেশ-দেশান্তে যাও রে আন্তে নব নব জান নব জাবে, নবোৎসাহে মাভো উঠাও রে নবভর তান।

লোক-রঞ্জন লোক-গঞ্জন না করি দৃক্পাভ যাহা ভড়, বাহা প্রব, ভার ভাহাতে জীবন কর দান। দলাদলি সব ছুলি হিন্দু-মুগলমান ; এক পথে এক সাথে চল উচাইত্তে একডা-নিশান।

জীবন-দায়াহে

জ্যোভিরিজনাথ জীবনের শেষ পভের বংসর রাঁচীতে যাপন করিরাছিলেন। তথার তিনি বোরাবাদী নাবে একটি স্থ্য পাহাছে "লান্তিবাম" এবং পর্বাতশীর্বে উপাসনা-মন্দির রচনা করাইরাছিলেন। শহরের কলকোলাহল হইতে বহু দূরে এই নিরালা পদ্ধীতে নিঃসদ অবস্থার জ্যোভিরিজনাথের শেষ দিনগুলি পাহিতা সদ্ধীত-চিক্রবিদ্যার অপুনীলনে ও ভগবংভারাবনার অভিবাহিত হইরাছে; মাবে মাবে আগ্রীয়-বয়ুবিহোগের বাঙা আসিরা তাঁহার মনে গভীর রেবাপাত করিরাছে। তিনি ভরী বর্ণক্ষারীকে একখানি পত্রে লেখেনঃ—
র্বিবার [৯ ডিসেম্বর ১৯২৩]

ভাই বর্ণ,—ভোমার আছারিক শুভ কামনা পেরে খুব ভার করলুম। মেজদাদা হিলোক্রনাথ বিলেশ, দিদি ইছার বিশাসনিনী বিশেলন, শরং কুমারী চৌধুরাণী বিশেলন, প্রবীজনাথে একে একে সবাই আমাদের ছেন্ডে চলে যাচ্ছেন, আমার পুরাজন বন্ধুবাছর আম একজনও নেই। এইবার আমার ৪। পালা। বোনের মব্যে ভূমি আর বর্ণ - ভোমরা দীর্থকীবী হয়ে ১৯০০ করে মংসারে লোক-ভাল পাওয়া যাচ্ছে, ভাতই সেহ-ভাল বাসার লোকদের আঁক্রেড বরে থাক্তে ইছেছ করে। বোনদের বাসার কোক্রেড বরে থাক্তে ইছেছ করে। বোনদের ক্রিছ ভালবাসার মর্য্যাদা এবন আরও বুবভে পারছি। এমন ভূ ২০৪। নিংখার্থ ভালবাসা কেউ দিতে পারবে না। ভূমি দীর্থকীবী ইছালে হরে প্রবে থাক্,ভগবানের কাছে আমার এই প্রার্থনান।—স্রেহের শর্মান কুমান দিলাভরিক্রনাথ, পূ ১৭৯-৮০)

ৰ্ত্যু

৪ মার্চ ১৯২৫ (২০ শ্বাস্থান ১০০১) তারিখে সায়াক্রে জ্যোতিরিজনাথ বাঁচীতে পরপোকগমন করেন। তাঁহার মৃত্যুতে ঘটা করিয়া একাধিক স্মৃতিসভার অন্তর্গন হইমাছিল। কিছ কেবলমাত্র বক্তৃতা বা হা-হতাশ স্মৃতিরক্ষার প্রকৃষ্ট পশ্বা নহে। তাঁহার সমন্ত্র রচনাবলীর একট স্মৃত্যু সংস্করণ (জীবনী সহ) প্রকাশ করিলে তাঁহার স্মৃতির প্রতি যথার্থ সন্থান প্রকাশ করা হইবে। এই কার্যো বিশ্বভারতী জ্ঞানী হইবেন।

গ্রন্থপঞ্জী

ক্যোতিরিজনাথের সমগ্র গ্রন্থের প্রথম-প্রকাশকাল-সহ একট কালালুক্ষমিক ভালিকা সংকলন করা সহজ্ঞসাধ্য নর। ভাহার কোন কোন গ্রন্থে প্রকাশকাল মোটেই বৃদ্ধিত হর নাই। বস্থাতী-কাৰ্য্যালয় হইতে 'জ্যোতিরিজ্ঞনাথ গ্রহাবলী' প্রকাশিত হইয়াছে সভা, কিন্তু ভাহাতে সকল গ্রহ স্থান পায় নাই, এনন কি কোন গ্রন্থ কোন লালে প্রথম প্রকাশিত ভাহারও নির্দ্ধেশ নাই। প্রথম ব্যবদাশ লাভ গারেন নাই। প্রথম সকল গ্রহের লঠিক প্রকাশকাল দিতে পারেন নাই। এই সকল কারণে আমরা বিশেষ পরিপ্রম সহকারে একট নির্ভরযোগ্য গ্রহুপঞ্জী প্রপ্তত করিয়াছি; ভালিকায় বহনী-মব্যে প্রদত্ত ইংরেছা প্রকাশকাল বেদল লাইত্রেরি-সঙ্কলিত মুদ্রিত-পুত্তকভালিকা হইতে গৃহীত।

- ১। কিঞ্চিং ক্লাযোগ (প্রচ্সন)। ১৭৯৪ শক (২০ গেপ্টেম্বর ১৮৭২)। পু. ৮৬।
- २। পুরুবিক্রম নাটক । ১৭৯৬ শকাকা (৯ ছুলাই ১৮৭৪)। পু.১৪৭।

ইছার ২য় সংস্করণে (ইং ১৮৭২) মুক্তিত "এক খতে বাবিয়াছি সহস্রট মন" গান্ট রবীশ্রনাধের রচিত।

৩। সরোকিনী বা চিভোর আঞ্চনণ নাটক। ১৭৯৭ শকাকা (৩০ নবেধরী ১৮৭৫)। পু.২৪০।

ইছার অন্তর্গত ''জপ্ এল্ চিতা। ধিশুণ, দ্বিশ্বণ' সানট যে রবীজনাবের রচন', 'জ্যোতিরিজনাবের শীবনস্থতি'তে ভাছার উল্লেখ আছে।

৪। এমন কথা আর ক'রব না (প্রছলন)। আয়াচ ১৭১৯ শক (৭ জুলাই ১৮৭৭)। পু. ১১৬।

১৯০০ সনের এপ্রিণ মাধ্যে এই প্রক্সনবামি 'অলাক বারু' নামে প্রকাশিত হয়।

৫। অঞ্মতী নাটক : প্রায়ণ ১২৮৬ (৪ নবেশ্ব ১৮:৯)। • প ২০৪।

ইহাতেও ববীক্ষনাধের রচিত গান আছে; দৃষ্টান্তগর্মণ
"গহন কুমুম-কুম্ব মাৰে" গানটির উচ্চের করা যাইতে পারে।

৬। মানমনী (গীভি-নাটকা)। ১৮০২ লক (ইং ১৮৮০)। প্. ১২।

ইহাতেও রবীজনাথের গান, যথা, ''আয় তবে, সহচ্রিট আছে।

৭। প্রথমী নাটক। ১২৮৮ শাল (২৪ মার্চ ১৮৮২ 🕍 🤊

ইহাতে রবীক্রনাথ কর্তৃক দ্বিভীয় বার হিন্দুমেলায় পাঁঠত কবিভাটি — দৈখিছ না অগ্নি ভারত-সাগর" কিঞাৎ পরিব্যিত্ত আকারে স্থান পাইয়াছে।

৮। হঠাৎ-নবাব (প্রহ্মন, করাসী হইছে)। বৈশাধ ১৮০৬ শক (২৫ এপ্রিল ১৮৮৪)। পু. ১২৬।

মলিয়ের-কৃত 'লে বুর্জোয়া কাঁভিয়ন্' হইতে।

১। ছিতে বিপরীত (কৌছুক-নাইক)। ২৬ বৈশাধ
 ১৩০৩ শক (৭ মে ১৮৯৬)। পৃ. ৩০। গানের শর্রদিশি-সহ।

১০। ব্যক্তিশি-দীতি-মালা। ১৩০৪ সাল (১২ জুন ১৮৯৭)। পু.৩২০।

১১। পুনর্বপন্ধ (গীতিমাট্য)। ১ চৈত্র ১৩০৫ (১৪ মার্চ ১৮৯৯)। পু. ৩০ 🕂 🗸 ০

১২। অভিজ্ঞান শকুন্তলা (নাটক)। ১০০৬ সাল (১৮ অক্টোবর ১৮৯৯)। পু. ১৪৬।

১৩। বসস্তু-জীলা(শীভি-নাটকা)। ১৩১৬ সাল (२৯ মার্চ ১৯০০)। পু. ৩২।

১৪। ব্যান-জ্ঞ্গ (প্রতি-নাটকা)। ১৩০৬ সাল (১৫ এপ্রিল ১৯০০) পু. ৪৮।

১৫। উত্তর-চরিভ (নাটক): কোঠ ১০০৭ (৭জুন ১৯০০)। পু.১৫২।

১৬। রপ্লাবলী নাটক। ভান্র ১০০৭ (২৬ লেপ্টেম্বর ১৯০০ / । পু. ৯৫।

১৭। মাপতী-মাধব (নাটক)। ১৩০৭ সাল (২৯ গেপ্টেম্বর ১৯০০)। পু. ১৫১।

১৮। মুছেকটক (নাটক)। ? 🔑৮ মাচ ১৯০১): পু. ২৩১:

১৯। মুদ্রাক্স (নাটক)। ১০০৭ সাল (১০ মাচ ১৯০১)। পু. ১৫৭।

২০। বিজ্ঞােবলী (শাটক)। ১৮৮ সাল (৪ জুন ১৯০১)। পু. ৮৪।

২১। মালবিকায়িমিত (নাটক)। ১ আখাচ ১৬০৮ (১৫ জুন ১৯০১)। পু. ১৫।

২২। মহাবীর-চরিত (নাটক)। ১৩০৮ সাল (৮ আকৌবর ১৯০১)। পু.১৮৫।

২৩। চন্ধকৌশিক (নাটক)। ১৩০৮ সাল (৪ ভিনেন্তর ১৯০১)। পু.৮৮।

২৪! বেশীসংহার নাটক। ১৩০৮ সাল (১৪ ডিসেগ্র ১৯০১)। পু. ১৫৯।

ন ২৫। প্রবোধ-চজ্যোদর (নাটক)। ১৩০৮ সাল (২৪ মাচ ১৯০২)। পু. ১১৭।

ৈ ২৬। নাগানক (নাটক)। ১০০৯ সাল (১ আগই ১৯০২)। পুচ্ধ।

২৭। দায়ে পড়ে' দার-এছ (প্রহসন, করাসী হইতে)। ১৩০৯ সাল (১৬ গেপ্টেম্বর ১৯০২)। পু. ৫৯।

ৰোলিয়ের-কৃত 'মারিয়াব্দ কোলে' অবলয়নে।

২৮। ভারতবর্ষে (ভ্রমণ, করাসী হইতে)। ১৩১০ সাল ১ সেপ্টেম্বর ১৯০৩) পু. ৬৫।

कांत्य (मक्षिरभाँ-३७ अह व्यवस्य ।

২১। ঝাঁশির রাশী (জীবনী, মরাসি হইভে)। ১৩১৩ গাল (৩০ সেপ্টেম্বর ১৯০৩)। পৃ. ৭৩। ৩০। বি**৬-শালভঞ্জিক। (মাটক)। ১৩১০ সাল** (২০ ভিনেম্বর ১৯০৩)। পু.৭৩।

৩১। বন্ধত-সিরি (ব্রহ্মদেশীর নাটক)। ১৩১০ সাল ২১ ফেল্ডেয়ারি ১৯০৪)। পু. ৫৯।

তৰ ! ধনঞ্জ-বিশ্ব (নাটক)। ১০১০ সাল (৩ মাচ ১৯০৪)। পু.৩৬।

৩০। কপুর-মঞ্চরী (নাটক)। ১৩১১ লাগ (২৩ এপ্রিল ১৯০৪)। পু. ৬৪।

ভর। প্রিয়দশিক। (নাটক)। ১৯১১ সাল (২৩ জে ১৯০৮)। পুরুষ।

ত্র। করাগী-প্রথম (গল্প-কবিভা, ফরাসী হইভে)। ১৬১১ সাল (২৪ সেপ্টেম্বর ১৯০৪)। পু. ২৫৮।

৩৬। প্রেছ-মঞ্জনী। ১০১২ দলে (১২ আগষ্ট ১৯৮৫)। পু. ৫৮৬।

৩৭: অপিক্টেটপের উপদেশ (ইংরেকা ছইছে)। ১৩১৪ সাল (১৮ জুন ১৯০৭)। পু.৪০+৮০।

৩৮। জুলিয়স গীশ্বার (নাটক, ধংরেশ্রী হওতে)। ১০১৮ সাল (২৮ অক্টোবর ১৯০৭)। পু.১৩০।

৩১ । ইংরাজ-বিজ্ঞিত ভারতবর্ষ। পিরের লোটির ফরাসা হইতে)। পু. ১২ মাচ ১৯০১)। পু. ৬৭৫।

৪০ : মার্কাস অৱিলিয়সের আগ্রচিত্তা (ইংরেজী হুরতে । আয়াচ ১৩১৮ (১০ নবেশ্বর ১৯১১)। পু. ৯৫।

৪১। সতা, স্থার, মালল (ভিডির কুঞ্গার কর:সী হইতে)। ? (২০ ডিসেখর ১৯১১)। পু. ॥/০ 🕂 ৩৬১।

৪२ । জ্যোভিরিজনাথের জীবনমূতি। কাস্ক্রন ১৩২৬ (ইং ১৯২৮)। পু. ২৪০ ।

জ্যোতিবিজ্ঞনাথ কর্তৃক বিশ্বত ও ঐবসম্ভকুমার চটোপাধ্যার কর্তৃক লিখিত। জ্যোতিবিজ্ঞনাথের লিখিত "পিতৃদেব সম্বন্ধে আমার জীবনস্থতি" ('প্রবাসী', মাথ ১৩১৮) প্রবন্ধটি এই পৃত্তকের পরিশিষ্ট-স্বরূপ মুদ্রিত হওরা উচিত।

৪০। শোণিত-সোপান (গ্রন্ধ, করাসী হইছে)। ক্রের্চ ১৩২৭ (ইং ১৯২০)। পু. ১০৪।

৪৪। অবভার (**উপভাস, গ**ভিনের-এর ফরাসী **হইভে**)। শ্রাবণ ১৩২১ (ইং ১৯২২)। পূ. ১৩২।

৪৫ : মিলিভোনা (উপঞাস, গতিমের-এর ফরাসী হইতে)। বৈশাধ ১৩৩০ (৭ জুন ১৯২৩)। পু. ১৫৫।

৫৬। শ্রীমন্তর্গবদ্ধীতা রহস্ত অববা কর্মবোরশাল। ইং ১৯২৪। পূ. ৮৭২।

বালগলাধর ভিলক-হত 'গীতারহ্ড' নামক মরাঠা এছের অভ্যাদ।

জ্যোতিবিজনাথ গ্ৰন্থাৰ্কী, ১ম-৫ম ভাগ (বসুষ্তী)। ইং১৯৩৬।

এশিয়ার কথা

এ সুনীলকুমার বস্থ

ৰানব-সভ্যভাৱ আদিন ক্রভূমি এশিয়া আৰু শীভান্তের পুনন বীভূত সর্পের মত সমগু কড়িমা, সকল আবিইভা কেড়ে কেলে নৃত্ন অপ্রগতির অপ্রতিহত আবেগ নিম্নে কেগে উঠেছে। এক দিন ইতিহাসের এক আদিম উধার এই এশিয়ার পর্বত-সঙ্গল বঞ্চ বেকে বেরিয়ে এসেছিল অভিযানী যাহাবর দল---ষধ্য এশিয়ার 'প্রেট হেডন্' থেকে সেই প্রথম অভিযানের বিচ্ছিনীকৃত ৰাৱা একে একে বিশ্ব-ইতিহাসের বিশ্বত সমতলকে সমুদ্ধ করেছে-পুর্বে জাপান জেকে সুক্র করে পশ্চিমে বছদুর পर्याक, प्रक्रित शक्तरप्रद जीत, देखेरबार्यद क्रम्त्रीक्रम भाद হয়ে, ভূমব্যদাগরের কুলে কুলে এসিয়ার আমামাণ আত্ম नित्कटक छिट्ड लिट्डट्स, मिनिट्ड लिट्डट्स, एकट्डट्स, जावात পভেছে। এত বৈধ্যা, এত বৈচিত্রা, তবু কোৰায় যেন সুকিয়ে আছে এশিয়ার প্রাণ – প্রতীচ্য 'Rayonean mind'-এর অংষিকা নিষ্ণে প্রাণকে বুঝতে চায় নি, বুঝতে পারে নি। এই[®] भक्त- वर्क्ज- खदगाठा ही आयायात्मद यस वर्षाणन (**४८७** কি কৰে হলক্ষণ শিৰ্ল, লুওন হত্যা ছেছে গড়ে তুলল জনপদ, यारनंद शास्त्र हिल ध्वररभंद्र भशभाती, रकाशः रवरक जारमदह হাতে এল 🕫 ষ্টির বরাভয়, অগ্নিবধী অগ্রের ফলকে কি করে **কুটল শাভির বাট, সে কথা মানব-সভ্যভার এক মুতাহীন** भशकावा: दख्यान भयभा अहे (य अहे विवार्ट महाराहन्द भगख देवथमा, विष्कृत देवभावक छाछिए। भगछ आवर्छ यञ्चन করে যে আফ্রোডিটর মত মানসমূর্ত্তি উঠেছে, কি তার এপ কোৰায় তার সংহতির অদুভ স্ত্র।

এশিয়ার বৈশিষ্ট্য তার বৈ চিত্রে, তার বিভেদে। 'ইইরোশীয়' শক্টি যে একা এবং সমতা ছচিত করে, সে ধরণের
বাহিক সমতা এশিয়ার বিভিন্ন ভাষা, গোগ্র, ধর্ম ও ক্টির মধ্যে
সপ্তব নম। এশিয়ার সমতা তার আলায় ও আদর্শে। এশিয়ার
প্রাণ সংখ্যাম ও প্রতিধন্দিতার ভিতর দিয়ে অপ্রসর হতে চায়নি,
চেয়েছে শান্তি ও নিরুপদ্রব জীবন্যাত্রার ভিতর দিয়ে এগিয়ে
যেতে;—যেমন চীন ও ভারতবয়। তাই প্রপুত্র ইউরোপকে
সে বাহির খেকে বিদায় দেয় নি। বহু পাল্টান্তা পর্যাইক, ধর্মযাজক, এমন কি, পুঠনকারীও প্রাচ্যের আভিখ্যের সংখ্যা
অহণ করেছে। মাত্র কিছু দিন পুর্বের টি, ই, সরেও ধ্র্ম্ম আরব
জাতির অপ্তরে সাদরে অবিশ্রিত হয়েছিলেন। এশিয়ার ধ্র্ব্রেলতা
ভার মহন্ত্র স্থাস নিয়ে ইউরোপ ভার সর্ব্রেন্
ন্ত্র না থাকায় এশিয়া ইউরোপের দাব। থেলার ছকে পরিণত
হয়েছে। জন গান্তার এ বিষয়ে বলেছেন্

"The history of mode n Asia has been that of Western Powers struggling among themselves for the rich and postrate body of the eastern continent. Geographically Europe is an appendage of Asia. The appendage has wagged,—and perhaps poisoned the main body."

ইউরোপের যে সব আম্মাণ দল ইংলত, ফ্রান্ড, পর্ত্যাল, হল্যাও প্ৰভৃতি দেশ বেকে নবাবিগ্নত সমুদ্ৰপৰে যাত্ৰা করে-ছিল প্রাচ্যের দিকে, তাদের মধ্যে এক দল ছিল ব্যবসায়ী যারা প্রাহ্নামুসারে ক্লদ্মু হয়ে উঠতে পারত, আর এক দল হিল বৰ্ণহাৰক, অশিকিড প্ৰাচাকে অৰকার বেকে যাৱা আলোতে আনতে চেয়েছিলেন। কিছ এদের স্বারই আছরিক উদ্দেশ ছিল প্রাচ্যের অনুষ্ঠিত সমৃদ্ধি হওগত করা। তাই ঐট রাজ্যের তানে ধাপিত হ'ল ইটোন রাজা। তাই ভবদুরে সাৰুজিক দ্বা হয়ে উঠল নৌ-সেনাপতি, নিত্ৰীহ বৰিক হয়ে উঠল রাজ্যাধিকারের প্রধান সহায়। দল্লা, বনিক ও পাদরীর আবিস্কৃত মুখুণ পরে এল সাঞাজ্যবাদ। ভারতের উপকূলে করাগী ও ওদলাকদের বিয়োগান্তক নাটকের অবদানে শোনা শেল ব্রিটিশ সিংছের গর্জন। মালয় উপধীপে ভাচ, পর্জ্যীক ও ইংরেন্দের প্রতিধন্তিতার ভিতর দিয়ে সাঞাভাবাদ কায়েম इंगः पश्चित्रीकदः काालेट्या वावभाष-व्यविष्यं नीयम पृष् করে। এদেরই বাণিক্যতরী চীনের কুলে এদে লাগল আগ্নেয়ান্ত্র আফিং আর মিশনরির সওদা নিয়ে। অনভিবিস্তে কাপান পৰ্যন্ত বিভুত হ'ল তাদের প্রাবাত। কিন্তু এই এশিয়া चिवादन हेरदबक विकि दिवाद क्या प्रविधादमक বাবস্থা অবলম্বন করতে সমর্থ হয়েছিল। তাই যুখন আছা ইউরোপীয় ভাতিওলি এশিয়ার কুলে কুলে মাত্র আংশিক প্রাধান বিভার করতে পেরেছিল ইংরেক তথন রলমকে আবিভূতি হয়ে অক্ষাং অনেক পরিমাণে রাজনৈতিক' শক্তি ও বাণিক্যিক অধিকার করতলগত করেছিল –ধেমন ভারতবর্ষে ও চীনে। এই অধিকার প্রকা করতে ইংরেজ বারবার অভ্রধারণও করেছে। চীনের বেলায় সে জন্ত জাফিং ও জাগেয়াল্ল। প্রথমটা অহিংস অন্ত কিছ অভ্যন্ত ফলপ্রদ। ভাই নানকিঙের প্রির পঙ্গে সঙ্গে দূর প্রাচ্যে ইংরেজের সাধ্যভীমত্ব দুরু ভাবে প্রতিষ্ঠিত হয়েছিল।

সাত্রাজ্য-প্রতিযোগিতার হিংশ্র রূপ আজও বদ্দে যার নি। এপিরা কিও আজ আর নিজেকে প্ঠের ভাঙার হিসাবে দেখতে প্রস্তুত নয়। এশিয়ার সঙ্গে ইউরোপের বিজ্ঞেদ এইবানে থে দেখার প্রস্তিত চার, সাত্রাজ্যপ্রতিত চার না, সংগ্রাম চার না, চায় লাভি, খেত জাতির অভার প্রাবাভের অবসান ঘটরে চার সংহতি। পঙিত নেহের দেখারে বলেছিলেন, "এই আপবিক বোমার মূরে শাভিরক্ষার ক্ষন্ত এশিয়াকে তাই সাকলোর সহিত কার্য্য করিতে হইবে।" সঙ্গীর ও সংগ্রামশীল থে জাতীরতাবাদ ইউরোপকে দাহস্তুপে পরিণত করেছিল, এশিয়ার সোজারভাবাদ শীকার করে না। রেস বিওরিকে সম্পর্ক করেইরোপ এই দাভিক জাতীরতাবাদের কাছে আল্বন্মর্পণ করেছিল, যদিও জীবতান্ত্রিকগর এক্বাক্যে প্রমাণ করেছেন যে রক্তের অবিষিপ্রতার করা কবি-ক্রনা মারা। সম্প্র ইউরোপ

এই কাতীয় আভিকাত্যের অহমিকার রাহপ্রত। কিছু অসংখ্য কাতির বাসভূমি এই এশিয়ার ঐ বরণের কাতীর আভিকাত্যের ও অবিমিশ্রতার অবকাশ নেই। প্রশান্ত মহাসাগর থেকে লোহিত সাগর পথ্যন্ত বিরাট ভূখতে, বিভিন্ন ভাষাভাষী, বিভিন্ন আফুতি-প্রকৃতিবিশিষ্ট নর-নারী বারবার কত বিভিন্ন বরণের সভ্যতা স্কট করেছে। সেই সভ্যতার হুট শাখা পৃথিবীর নব-বসন্তে ভারত ও চীনে পৃঞ্জিত হয়ে উঠেছিল; দর্শন, শিল্ল, কৃষি ও বাণিজ্যের মদসময় পথে অপ্রসর হয়েছিল শান্তির প্রব

এশিয়ার জাতীয়তা যেমন বিকাশগাত করতে পারে নি. ঐক্যের অভাবেও তেম্বি দেখানে গভীয় ভাবে বর্ত্তমান। একই এশিয়ার মধ্যে আর্থ্য দ্রাবিড় থেকে পুরু করে কত বিভিন্ন बाण्डि वभवाभ अक्षिरक गर्कादी बादव ब्राह्मितक नर्क्षण हाती যোলন। আবার সিদ্ধ-গলার শস্যায়ন উপত্যকায় শান্তি-প্রির ভারতবাসী, তাই 'রেগ' বিওরি বা উপ্র নররাকালোলুপ ৰাতীয়তা এবানে বিকশিত হয় নি। বিংশ শতাৰীর প্রথম ৰেকে এবানে সেই জাতীয়ভাবাদ গড়ে উঠেছে প্ৰথম যুদ্ধ যাকে উৰ্ধ করেছিল। বিভীয় বিশ্বযুদ্ধ থাকে দুচপ্রতিষ্ঠ করেছে --সে এক সম্ভ ভার্নকত ভাতীর আত্মপ্রতিষ্ঠার দাবি। উদাহরণ-শ্রপ, আরব-সম্পের উল্লেখ করা যেতে পারে। ইউরোপে এইবর্দ্ধ বিভিন্ন দেশ ও জাতির মধ্যে একটা বাহ্যিক সমতা লাৰন করতে পেরেছিল - এশিয়ায় বর্ত্তমতের বিভিন্নতার জল যা গল্পৰ হয় নি। আৰু অবঙ বিজ্ঞানের প্রভাবে, উদ্রভতর बाक्टेनिकिक विवर्श्यमञ्जल वर्ष जांद मुद्री निवित्र करवर्ष । भाग-देनजायात शास्त्र अरुगार प्राम-चात्रत । (शाकिरक्रे-এশিলা থেকে ধর্মাত্তা দূর হয়েছে। ভারত ও চীন উদারভার ঐতিহ্ নিয়ে অগ্নসর হতে স্থক্ত করেছে:

দ্সু, বণিক ও ধর্মাজকের পদাক অসুসরণ করে এল যে সামাজ্যবাদ, ভার আধিপত্যে বিহু ঘটল কি করে ? এশিয়ার বুকে খেত জাতি তো দেবতার মত বাস করছিল, ওলিমপাস নিবাসী উদাসীন দেবভার মত সাম্বন্থিত প্রাচ্যের পানে তাকিরে ্ল ঋরু কুপাৰ হাসি হাসছিল। কি করে ভার এই নিরাপতা क्ष्रीर (कार्ड त्रेज ? एवंड कांडिय और श्वरापय वीक ल्यान विज ভার নিজেরই আত্মগ্রিষার মধ্যে। যে সংহতির পর্বানিয়ে (म श्राहाटक करायात कराय (बारविष्ण, (मर्था (अभ छ। कमार्थियय मदः अल्बा ध्वरमाचित्र्यो । मृत लभमाद् व मनापूत्र (वरक ,বাণিজ্যের অধিকার নিয়ে ভাতিমঙগীর মধ্যে যে প্রতিধন্দিতা চলে আগছিল ভারই একটা উপ্রক্ষণ দেবা গিয়েছিল আধুনিক काल। इंछेद्धारभव अधमव बाहेश्वीम धारेम छेमनिर्दम, উৎপর অব্যস্তারের উপযুক্ত বিক্রয়ন্তান, বৃদ্ধিরু কন্সত্থের **ভ্**ত আহার্য। বিরাট অনুঠিত এশিয়ার দিকে চলল তাদের অভি-যান। প্রথম মহাসমরের পর পাশ্চাছ্য ছাতির কলাল বেরিয়ে প্ৰুদ্ৰ অভিকাত্যের ছয়বেশ বিদীৰ্ণ করে। এশিয়া দেবল,

নিছক সাত্রাক্য নিয়ে স্পক্ত্য পালান্ত্য কাভিঙলি কি পরিমাণে হিংন, অমাকৃষিক হয়ে উঠতে পারে। এশিরা বুবল বে খেত কাতি গুণু দান্তিক ও হিংল্ল-ই নয়, প্রতারকও — মুবে তাদের বিশ্বমৈন্ত্রীর রঙীন প্রলাপ, অপ্তরে তাদের কেণায়িত হিংসার বিষ। সেই দিন এশিরার কাগ্রত বুকে ইউরোপের মৃত্যু হ'ল।

এশিয়ায় খেতাবিপত্য অবসানের আর একট কারণ পাশ্চান্তা লিকা। এই লিকার ভিতর দিয়ে সমগ্র এলিয়ায় এক বিরাট আলোকপ্রাপ্ত বুব-সম্প্রদারের উদ্ধব হরেছিল, ভার ও নীতি যাদের একমাত্র আদর্কলো-ভণ্টেয়ার যাদের অন্তরকে উদ্বোধিত করেছে, মিল-ক্ষেতারসন যাদের চোবে অয়তের পর্শ विभिद्धाह, वार्क भिद्धाह यात्मत बृद्ध वारे । अहे बूब-मध्यमाब দেখতে পেল কি করে পাশ্চান্তা রাজনীতি ও বাণিজানীতি---খীন প্রতারণার পথ, প্রয়োজন হলে বর্পরতার পথ অবলগন করে সামাজ্য-সার্থ কাষেম করে রাখবার চেষ্টা করছে: পাশ্চান্ত্যের এই বিরাট বিশ্বব্যাপক প্রতারণা ক্ষুদ্ধ করণ যুব-এশিয়াকে, যে ধুব-এশিয়া পাশ্চান্তোর কাছে শিংবছে ব্যক্তি-খাৰীনতঃ, গণতল্প ও মানবভাৱ আদৰ্শ, পাশ্চাড্যের আলোডেই পেৰেছে সাম্যু, স্বাধীনতা ও ভাষের উচ্ছল মৃতি। এর পর এই विक्रक, लाक्षित्रक श्रूब-अभिवाद शाष्ठ अन वेखेंद्रांत्यत गादनाश्च. সে তার সমর-বিজ্ঞান। তাই প্রথম মহাযুদ্ধের অত্তে এশিয়ার অনেকভুলি রাষ্ট্র রণশ্রান্ত ইউরোপের শিবিল মুঠি থেকে (विदिक्ष चानवांक चार्शमक नक्स क्षेत्राम करविष्टिम। भवीक्ष्य रें है दिश्री अथम महामभदिद श्रेत वक्क स्माक्त महास हत्य है। করল এশিয়ার উপর তার আধিশত। বভায় রাবতে। প্রথম মহাযুদ্ধের পর তাই ত দেখা যায় সামাজ্য নিয়ে, অধিকার নিয়ে এত হিংল্ল ছানাহানি কাড়াকাড়ি বিভিন্ন শক্তির মধ্যে। সামাভাবাদকে প্ৰথম মহানমত্ত ছোতাৰ প্ৰচত থাকালি দিলে. তাতে করে ইউরোপ বুখতে পারল যে তার কাষেমী খার্থের দিন ফুরিয়ে এসেছে। এদিকে মুদ্ধের পর তুর্থ নিজেকে সম্পূর্ণ ক্রপাশ্বরিত করে শক্তিশালী খাধীন রাষ্ট্র হিসাবে প্রতিষ্ঠিত চল। এমনই পরিবর্ত্তিত ভার রূপ যে প্রাচা বলে ভাকে আর চেনা যার না। পশ্চিম এশিয়ার ভৌগোলিক অবস্থান, বাণিক্য ও সামরিক গুরুত্ব উপলব্ধি করার কলে ইউরোপের শক্তিগুলি স**হজে** তাকে মুক্তি দেয়নি, বকানের মত কেটে কেটে ছোট ছোট বাঙে ভাগ করে দিয়েছে, কাষেম পাৰ্থকে অব্যাহত ৱাৰ্থতে। প্ৰাচ্য বাৱবার অগীকার করেছে এই কার্পণ্যের দান নিভে। ইবন সাউদের নৃভন আরব রাষ্ট্রের মধ্যে, সিরিয়া ও লেবাননের পণ্ডন্তের মধ্যে, ইরাকের বাধীনতার ব্যপ্ন আত্মপ্রতিষ্ঠার নৃতন দাবি ও আংশিক সক্ষতা বৃৰ্ত্ত হয়ে উঠেছে। ভারতবর্বে কি করে এই সাধীনভার স্বপ্ন লাব্য বিক্ষোভ প্ৰষ্ট করেছিল তা সবারই জানা আছে। চীনে দীর্থ আত্মকদহের অবসানে সান-ইয়াট-সেন স্ভন ভাতীয়ভাবাদের বনিয়াদ দুচু করেন। দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিয়ায়, ষেধানে বলিকের মানদও কার্যাতঃ রাজ্যওরণে বছদিন প্রতিষ্ঠিত, দেধানেও বর্দা থেকে স্থক করে কার, যালর, ইন্দোনেশিরা প্রভৃতি হানে জাতীয়তার তীর স্ক্রণ স্থক হ'ল। জাশান খেতজাতির জাবিশতা ধ্বংস করবার জন্ম কৃটনৈতিক সামরিক প্রচেষ্টা হক করল, মহা-এশিরার মামে। কোরিয়া উইলদনের চতুর্জণ প্রেণ্ট নিয়ে স্বাভন্তারকায় ব্রতী হ'ল।

ইউরোপের মৃষ্টি শিবিল্ডর ক্রল সামাবাদ ও রাশিয়া। প্রথম মহায়খের পর ইংলভে প্রমিক্দল স্ক্রিথম সামাল্যবাদের তীব্ৰ বিৰোধিত। সূত্ৰ করেছিল। কিছু সামাবাদের ভীবন্ধ मार्गतदार्वेति वार्निया जनमञ्ज देवेदवारम् समारत्कव भीम-सन-<u>ধের্মনসের বহিভূতি এবং ইউরোপীয় সমাব্দের অযোগ্য</u> বলে পরিগণিত। ইউরোপ থেকে এই নির্বাসন রাশিয়াকে এশিয়াভিমুখী করবার জন্ত অনেক পরিমাণে দায়ী। তা ছাড়া এশিরার রাজনৈতিক ও সামরিক সপ্তাবনার যে আয়োজন ছিল তা বালিয়ারও দৃষ্ট এড়ায় নি। আরও একট কথা এই ে, জাতি ও সংস্কৃতির দিক দিয়ে রাশিরা এশিয়া-সংশ্লিষ্ট। এত্রন মার্কিনী লেবক, বলছেন, "Russia is essentially Asiatie"- चारमविका ७ इंडेटवान यमन वानिवादक অর্দ্ধোরত দেশ হিদাবে অবছেলিত মনে করত, সেইরূপ वालिहात क्रमग्रंभत क्रमत बीट्र शिट्र अभिशांत आप-अपनटक अञ्च करत निरम्रत्छ । अभिशात अक्षी विताष्ठे अश्म, सांतरमत অধীনে যা 'Prison house of nations বলে কৰিত হ'ত, পেই অভ্যাচারিত, অধুরত মানবসমা**লের অভিন**প্ত বাদভূমি পোভিয়েটের শাসনাধীনে ক্রমর ছোট ছোট রাট্টে পরিণত स्टब्स् रहिम्दान क्यामि ७ क्यांनिदिद कर्मात् यस কল্যাণময় দভাতা ও সংস্কৃতির ধারায় মুক্তিস্বান করে উঠেছে।

পরবাষ্ট্রীভির দিক দিয়ে দেবতে গেলে নিরাণভার चभित्रहार्या खिक्कारन दानिश्वारक अनिश्वास्त्रिश्वी एटल एरअधिन। কোন লেখিকা বলেছেন যে, বালিয়ার পরবার্ট্রনীতির পিছনে কোন আদৰ্শগত অঞ্গতি নেই আছে সেই শাখত এবং মৌপিক "Search for safety" (Oxford Pamphlets, no. 34)। अ कथा अत्नकारण ठिक, किस सर् कृष्टेनीणित অভীত একটা সোভাত্যের ভাব ভার পররাধ্রনীভিতে দেখা যার---যৰন রাশিয়া উপযাচক হয়ে খেতজাতির চক্রাত্ত ৰাৰ্থ করে 'ক্যুওমিণ্টাং' গঠনে চীনক্টি সহায়তা করে। द्याणिश्वाद्वरे अनु अधिताच नान-देशहि-(नत्व Pan-Asianism শক্তিশালী হয়ে উঠে এবং অনেকটা বগুপেভিক ভলিতে 'কুডিমিন্টাং' পুনর্গটিত হয়। সেইরূপ ভূরস্ক, পারসা, আফ্সানিভান ও ভারভবর্ষ প্রভৃতি দেশে রাশিরার প্রেরণায় জাতীয়তাবাদ, গণভন্ধবাদ ও খেতবিবোৰী মনোভাব ধৃচপ্ৰতিষ্ঠ হয়। মুন্তাকা কামাল যধন খেতসাত্রান্ত্যকে অঞাহ করে ভুরস্ককে সুপ্রতিষ্ঠিত করেন, তর্বন তাঁর পিছনে ছিল রাশিয়ার সহামুভূতি। ইরাণে ভাতীরতা, ভারতে গণ-আন্দোলন, এবং আফ্রানিস্থানে ব্রিষ্টণ বিরোধী মধোভাব অনেক পরিমাণে রাশিরার আদর্শে উঙ্গুছ হয়, বলা বেতে পারে। রাশিয়ার এই নুতন "live and let live" নীতি,—অনেকে যার নাম দিতে চান "enlightened imperialism,"—সেই নীতি এশিরার অবংশিত এবং নিপীড়িত দেশভগির কাছে অত্যন্ত প্রিয় হয়ে ওঠে।

এশিয়ার এক প্রান্ত ভূবস ও অপর প্রান্ত কাপান, চান এবং ভারতের মত লাপ্তিও প্রেমের বাদী নিয়ে বিদেশীকে অভার্থনা করে নি, তরবারির সহায়তায় পররাজ্যলোতী বিদেশীকে বিভান্তিত করার চেটা করেছে। প্রথম মহায়ুছের অবসানে কাপান শক্তিলালী ও অগ্রগামী ক্যান্তি হিসাবে শেত-ভাতির সমকক হয়ে দেখা দিলে এবং দূর প্রাচ্যে এশিয়ার নেতৃও গ্রহণ করলে। তুরস্ক যদিও প্রথম মহাসমরে লাভবান হয় নি, তর্ বেশী দিন তাকে আর 'Siek man of Europe' হয়ে থাকতে হয় নি। মুন্তাফা কামালের নেতৃত্বে পশ্চিম এশিয়ার নেতৃত্ব পে গ্রহণ করেছে।

খাজ এশিয়ায় খেতনেত্ত্ব নিৰ্মম গাখাত পেতে বসেছে, অবচ এই এবিয়ায়ই আবার তিন্ট প্রধান খেতজাতির মধ্যে পুনরায় সেই প্রতিহন্তিতার প্রাচীন নাটক অভিনীত হতে স্কুর্ফ হয়েছে ৷ একদিকে দেখা যায় ভারতবর্ষ ও দক্ষিণ-পূর্বর এশিয়ার নবভাঞ্জ ভাতীয়ভাবাদের সভীব সপৌরব আত্মপ্রতিষ্ঠা: খন্য দিকে পরিলক্ষিত হয় খামেরিকা, ইংলও ও রাশিয়ার মধ্যে সাক্ষভোমত নিষে কৃটল বেঘাবেঘি। আমেরিক। क्रवन्त्र अभिवादक छान्यार्थ नि । উপরভ বিভিন্ন अभिवा-বিবোৰী আইনের দার! এশিয়াবাসীর স্বাধীনতা বর্জ করতে চেষ্টা করেছে, যেমন Immigration Act of 1917 t ঞাণিজ্যের একটা বিরাট ক্ষেত্র হিসাবে গ্রামেরিকা চিরদিনই এশিয়াকে দেৰেছে। ভাছাড়া আমেরিকা হচ্ছে পুৰিবীর ব্যাস্কার এবং এশিয়াকে ভার কাছে থেকে সবচেয়ে বেশী ন্ত্ৰৰ কৰেছে হাষ্টে : তাই ইটাৰোপীয় বাক্তৰজিকালিৰ মত প্রভাক্ষ সাম্রাজ্যবাদ বিভার না করলেও আমেরিকার এশিয়া-নীভিকে 'enlightened imperialism' ছাড়া আর কিছু বলা চলে না। ধিতীয় মহাসমৱের পর ইংলভের আবিপভ্য অনেক পরিমাণে ধর্বা ছওয়ায় এশিয়ায় আৰু মার্কিন-প্রাধান্ত श्रुक स्टब्र्ट्स ।

দিপ্লীর প্রাণ কিলার নৃতন করে এশিরার প্রাণপ্রতিষ্ঠা হ'ল। এশিরাকে যদি আৰু বাঁচতে হয়, তবে এই সংহতির মধ্য দিয়ে বাঁচতে হবে। এশিরাকে এই মহারত গ্রহণ করতে হবে যে এশিরা থেকে খেতজাতির সমন্ত আধিশত্য নই করে দিয়ে 'Asia for Asiatics' এই নীতি অকরে অকরে প্রতিশালন করতে হবে। এশিরার যা প্রাঞ্জিক সম্পদ, এশিরার যে ক্ষনান্তি,তাকে পাশ্চান্তা জাতির লোভ ও খার্থের যজে আর ইছন দেওরা চলবে না। এশিরার প্রাকৃতিক সম্পদের প্রতিক কণা নিরোক্তিত হবে তার কোট কোট অমুন্নত, অর্জোন্নত নরনারীর কলে, আর তার সভ্যতা ও সংকৃতির উদ্বেশ্ত।

আজ—আগামী কাল

প্রীরামপদ মুর্খোপাধ্যায়

ধ্মেপতার প্রকাশ-বেদনা সুরু হ'ল। মুলাকিনী ও স্থান্তর বউ—বাইরের মন-বোচক খবর রঙ কলিয়ে বিভার করে রোক হ'ভিন বার বলে যে সান্ত্রনা লাভ করবে—লে ভো হাতের পাঁচ রইলই—বাইরের রটনা না হলে আপাভত ভিনি সুস্থ হন কি করে। স্থান্তর্জা খবরটা ভনলে—কোন মন্তব্য করলে না। মুলাকিনী মন্তব্য করলে বটে—কথাটাকে বিভার করবার প্রায়াস পেল না—কাকেই তিনি লোভার কৌটো আঁচলে বেঁথে—বউদের উদ্দেশ করে বললেন, সদর দরকাটা দাও বউথা— আমি একবার আগুর মারের বাড়ি বেকে গুরে আসি।

পথে বেরিষে মনে হ'ল—আগুর মাষের কাছে না গিয়ে প্রশান্তদের বান্ধিতেই প্রথমে গেলে ভাল হয় না কি: ধবর বতটুকু ভনেছেন—ভাতে সবিভার পরিবেশনে বাবা ক্লাবে না—তবু সবচুকু বুঁটিয়ে ভনতে—রসবিভারে গাঁচ ক্লকে ত্ববী করে নিকেও পরিতৃপ্ত হবেন ভো: ভাই ভাল:

প্রশাস্তর মা ঘরের ভিতর কুলোয় করে ভাগ বাছছিলেন— মেরে শান্তি রোয়াকে ইট সান্ধিরে বুরি মৃচি নিয়ে আসল সংসারের মক্স করছিল . দলিক পেরিয়ে হেমলতা রোয়াকে উঠে বললেন, কিলো শান্তি—কি রাঁধলি ? মা কোধায় লো ?

শাস্তি উত্তর দেবার আগেই দরের ভিতর থেকে প্রশান্তর মা বললেন, এস দিদি।

কুলো রেবে তাভাতাভি তিনি একথানি আসন পেতে দিলেন। কিজাসা করলেন, পান বাবে দিদি ?

ওমা—পান আবার বাব না—বলে পান দোভা চা এই নিয়ে কোন রক্ষে বেঁচে আছি। নইপে বছ শন্ত্র যে দাগা দিয়ে পেছে তারই ছালার দিন রাত ভালে যাছে বুকের ভেতরটা। স্বর্ট অশ্রুর আভাসে করণ হয়ে উঠল—চোবে ভালে ব্যে একটি দীর্ঘনিখাস কেললেন তিনি।

প্রশান্তর মা বললেন, তুমি ভেবনা দিদি-মধ্রা ভোমার ফিরে আসবে।

ভোমরা সভীগত্মী সেই আশীর্কাণই কর মা। আর একবার চোবে আঁচল ঘধে তিনি ভাল হরে বসলেম।

প্রশান্তর মা ছুট পান সেক্তে—ছোট রেকাবিতে করে তার সামনে দিয়ে বললেন, দোক্তা লাগবে ?

না ভাই---ওট আমার কাছ হাড়া হলে চলে না। এই দেব সক্ষের সাবী। বলে অঞ্চএছি মোচন করে কৌটাট বার করলেন।

ह्य (पर ?

না ভাই--তোষার হাতের পাল এমন চমংকার যে চুন

ব্যারে সব সমান সমান থাকে। এ গাঁষে এমন পান সাক্ষতে তো আর কাউকে দেখি না। বলে—বাইরে উঠে গিয়ে বার ছুই পিক ফেলে ঘরে এসে বসলেন:

ভারণর—ছিজাসাবাদ ছ'ল রায়া নিয়ে। মুগের ডাল থেকেই পেটে অগল গোলা ওঠে ভাই সবিভাবে আনিয়ে হেম-লভা বললেন, ভা অহলের আর গোষ কি ভাই—ভাবনায় চিন্তের দেহ পাভ হয়ে গেল। ছেলে না হগৈ এক আলা—হলে লভেক জালা! এই দেব না—নিভুধী মধুরা—। নজার ক্ষিণারের পালার পড়ে বাছা যে কোধায় গেল! ছেটিটা ভাও চাকরিতে স্থিভভিত হ'ল না! ভনি ভো—যোক্ষাম করে হ'হাতে—ভোকলা গিরিও ভেমনি! অযন্তল গরচ ভাই! কি সব থদেনীর দল-ভাদের পেছনেই চালতে টাকা! বাড়ীতে যখন দেয় তালে দেয়—একেবারে হলো পাচলে! ভবে ন'মাসে ছ'মাসে ভো! পেটের বলতে নেই সংগার ভো! ছোট নয়—মাস গেলে চারশো-পাচলো টাকা খরচ। রোক বাজার খরচই যলে - জিন টাকা! কর্ত্তাদের যাই বিষয় সম্পতি কিছু ছিল ভাই এতগুলি হাত মুবে উঠছে—নইলে কি হত ভাই!

ভাত বটেই ৷ নিজেদের দিয়েই তো দেখছি ভাই---

এই বোঝ ভাই, নিজে হাতে সংসার না করলে কেট বরচের মন্ম ব্রুতে পারে ৷ সে দিন আত্তর মা বললে—রোজ তিন টাকা বাকার বরচ এ তোমার বচ্চ বেন্দ্র ভাই ৷ বড়চ বেন্দ্র হ'ল ? এক টাকার জিনিমটা পাঁচ টাকার কিনতে হচ্ছে, বেন্দ্র হ'ল ? তবে যদি ছাই পাঁল বেয়ে পেট ভরাতে হয় সে হলো গিয়ে আলালা কবা ৷ আলু কলি না হলে কেট ভরকারি পাতে পাড়বে না—চুনো মাছ আনবার যো নেই, শেষ পাতে ছব স্বারই একটু চাই—

তাত বটেই !

. এই যাত্রা ধুবদার--- তাদের ছ্বার বলতে হয় না ৷ ক্থায়
আছে না---

প্ডপ কথা সভাৱ মাবে ভ্যার কথা ভার গায়ে বাজে 1

আভর মার হলো গিরে তাই। বাণের বাছির বেষন হছি খেতে গছি নেই—শশুরবাহিতেও তেমনি। তোরা ভাল বাওরা ভাল পরার মায় কি বুকবি লা।

ल्यांचर या याचा त्यक् जास पिर्वन ।

হেমলতা বললেন, তাই বলছিলাম না—ছেলের মত পরম মিত্রও নেই—পরম শভুরও আর নেই। এই তোনার প্রশান্তর ক্থাই ধর—রূপে তথে বিদ্যের এমন ছেলে এ প্রামে ক্মই দেখতে পাই। সোনা এক দিকে আর ছেলে এক দিকে— ওজন করণে তুগ্য-ৰূগ্য তবু এ হেন সোনার হেলের এখন মতিগতি হগ কেন ভাই !

लगान्य मा ७६ परत रमरमन, रक्न पिपि---

না অভ কিছু নয়। সভাব-চরিপ্তির আচার-ব্যাভার প্রসবে ছেলে তোমার তামার পাগুরে গদান্দল। শুনলাম ভাল একটি চাকরিও পেরেছে। কিছু ছেলের নাকি চাকরিতে মতিগতি নেই ?

প্রশান্তর হা বললেন, আমাদের ঘরে চাকরি না করলে চলে ? ও সব খেরালের কথা দিদি। কতা বলছিলেন— সেধানে গিয়ে বুকিয়ে প্রজিয়ে ছেলে যাতে চাকরি করে সেই ব্যবহা করবেন।

বেল বেল ভাই, মাধার বামিক না থাকলে ছেলে ভাল হয়।
বেল ভাই---ভগমান ওর স্থাতি দিন। তাই শুনলাম কিলা--কথা ছচ্চিল পালা খেলতে খেলতে। মনটা খারাপ ছয়ে
পেল। বলি ওলের তো আর ক্ষিক্ষা বিষয় আশা নই---চাুক্রি না করলে খাবে পরতে কি? আর একটি পান চেয়ে
নিয়ে তিনি উঠলেন। আসল কথাটা কানা হয়ে পেছে-----আশুর
মার ওখানে এখন না গেলেই নয়।

সঙ্গা বেলার বেভিয়ে এসে ছুগামোধন পত্নীকে ভেকে বললেন---এ সব কি কথা বলেছ ভূমি মধুরার মাকে ?

भुषा (दवाक्राशिक्त) भाक्ताया वन्नामन, कि वरमहि ?

ষে প্রশাস্ত আমার কথা না ভানলে—পামি ওকে ভ্যাক্য-পুত্র কংব।

বিরাজনোহিনী বিশ্বরে করেক মুহর্ত ব মেরে রইলেন।

হুপামোহন বললেন, মথুরার মাকে তুমি ভাগই জানভব সজে কোন কথা---

বিরাজমোহিনীর অত্যক্ত অভিযান হ'ল ৷ মূখ ফিরিয়ে ভারি পলায় বললেন, ছেলেকে ভাজাপুত করবে—এই কথা আমি বলেছি— ভূমিও বিরাপ করলে ৷

ভূপামোহন অপ্রপ্তত হয়ে বললেন, বিশাস অবিখাসের কথা নয় -এ সধুৰে আলোচনাটা --মানে সংসারের ভেতরের খবর বার করা---

ভোষার বৈঠকধানার উত্তর দিকের জানালাওলো আপে বছ কর দিকি---

ছুপামোহন অপ্রতিত ভাবে হেসে বললেন, ঠিক--ঠিক---বেলতে বেলতে মাধার ঠিক থাকে না---তা কালকেই কলকাতার বাই--কি বল ?

वाश-विश्व धक्ते क्या।

कि १

মণ্যের সঙ্গে দেখা করতে পারবে না—বা কোন জহুরোধ ভাকে করবে না। নিজের ছেলেকে শাসন কর—উপদেশ দাও নিজেই করবে।

ভূগামোহন বলদেন, ভূষি মিছে রাগ করছ। মলবের মাতে আর মলরে আকাশ পাভাল ভকাং। ভা জানি। কিন্তু পরের খোঁটা সইতে পারব না ভোষা। জানিয়ে দিজি:।

হুৰ্গামোহন হেদে বললেন, আছে। তাই হবে।

দোতলার সিভি দিয়ে উঠবার মূবে মলমের সক্তে প্রথমেই দেবা হয়ে সেল। মলয় হেঁট হয়ে প্রবাম করতেই জিজালা করলেন, জাল আছ ত বাবা ?

মাৰা নেডে মলম বললে, হাঁ। জাপনি হঠাং এলেন যে ? কাকীয়া ভাল আছেন ?

ভাল। চল ভোষার খবে। বলেই ভার পাষে পুণ দৃষ্টিভে চেয়ে কি ভেবে ভিজালা করলেন, ভূষি কি আপিলে চলেছে?

স্থাপিস। অল্পণের মধ্যে বিশ্বর কাটিয়ে মধ্য হাসি মুখে বলদে, আমার ভাড়া নেই--- আসুন।

মেসের ঘর---লছায় চওছায় বাসগৃহের মত নর--কোন রক্ষে ছট সিটের ব্যবস্থা লাছে। যারা সে ঘরে বাস করে তারাও গোছালো নয়--সারাধিন খাটুনির পর সভাায় একটু বিপ্রাম ও রাজিতে নিলা এই হট কাজ অসম্পন্ন হলেই এর প্রোজন মিটে যায়। প্রয়েজনের বেশী কিছু করতে সেপে নিজ্য কটিও শিক্ষার সাধীনতা চাই--বারো রাজপুত্রের তের ইাছির ব্যবস্থায় সে ত সভব নয়, কাকেই ওগু দিন যাপনের ওগু প্রাণ বারদের মানিট্রু সায়ে না মেখে ধিনের পারে দিনকে আর রাজির পিঠে রাজিকে ঠেলে দেবার আন্মানন করে এরা। কর্মাক্ষের জগং--বিপ্রামক্ষের জগং--বাইরের জগং বা বাছীর জগং--এই ভিন্ন জিল ক্ষাত্র বাস করে যারা--ভার। কোন দিক দিয়েই অবও একটি সভা -তা সে কচির হোক বৃত্তির বা চিডারই হোক গড়ে তুলতে পারে না। স্রোত্তে ভাগা শেওলার মত্ত--কিংবা শরংকালের বায়ু ভরবাছী ছালকা মেধের মত্ত--ভারা চলেছে ত চলেছেই।

হাতের ব্যাপটকে মাটতে নামিরে শিমুল কাঠের তন্ধার উপর আসন গ্রহণ করপেন হুগামোহন। বলপেন, জানি চুমি আপিস যাছে না—বৃদ্ধের জামা গাবে দিয়ে কেউ আপিস যার না।

भनत्र विनोज शास्त्र वनल, यात्र देविक काकावाद्। भारत्रवर्गा किष्ट्र वरण ना ?

সায়েবদের আপিস নয় ত। তাকে বিশ্বয়ের অবকাশ্ না দিয়ে মলয় বললে, ওসব কথা থাক—, আপনার নিক্ষয় বাওয়া হয় নি—ঠাকুরকে বলে দিই।

না-- আৰু একাদশী, ভাত বাব না। রাত্রিতে ফগনিষ্ট কিছু আনিয়ে নিগেই চলবে। কিন্তু ভোষার কথা ত আমি বুরতে পারহি না বাবা। বছর পরে আপিসে গেলে---

ও किছू नव--- वक्त अवन किছू मात्राचक वस वद या तिवटन

সায়েবরা কেপে উঠবে। তা ছাড়া পঁচিশ বছর একই দিনিস দেখে দেখে চোৰস্থা বা ৰাতস্থা হয়ে গেছে কাকাবারু।

মলয়ের হাসির বরণে ছুর্গায়োহন প্রীত হলেন না।

স্বাধ গভীর করে বললেন, যাই কোক চাকরি যারা করে ভাষের এসব কেদ ভাল ময়।

रूरत । मनश्च अक्रमनश्च कारत देखन जिल्ला।

ৰেবানে উন্নতি করবে—সেবানে একট পথই বেছে নেয়া ভাল। না খাটের না খরের এতে কোন দিকেই সামগ্রভ বাকে না।

মলর চুপ করে রইল।

ছুৰ্গামোহন বললেন, প্ৰশাপ্ত কি করছেন? চাকরি, না না খৰুর পরে হদেশী ?

ওঁর ক্থার বরণে মলম ছেসে কেললে। সংযত খরে বললে, এই দশ মিনিট আগে সে আপিলেট ত গেল।

সে নাকি চাকরি করবে না ? ববে ঈষং কোর দিরে বললেন, চাকরি না করে কি করবে বলতে পার ? আমি এমন কিছু তালুক মূলুক রেখে যাব না যাতে করে পারের উপর পা দিয়ে বসে ভার দিন চলে যাবে।

ষদর কেলে বললে, ভালুক মূলুক রেখে গেলেও পারের উপর পা দিরে বলে ধাবার স্থোগ কারও থাকবে না কাকাবারু।

কেন হে ছোকরা—নিজের স্বসির ধান নিজের সংগারে আসবে—

না কাকাবাৰু- — কমি তারই যে চাষ করবে। চাষার রক্ত তাষে কমিলারদের দেছ মোটা হবার দিন চলে যাছে, ওসব উদাহরণ নারাধাই ভাল।

হুৰ্গামোহন সজোৰে বহুলে, ভবে সে করবে কি ভনি ? ঘোড়ার খাস কাটবে ?

···বে খা পারে পে ভাই করবে। যার যোগ্যভা খোদার খাস কাটার সে ভাই করেই বেঁচে থাকবে। পরের শ্রমে পরিপুষ্ট হবার দিন চলে যাচছে।

আছে। —্লাছ্ডা -দেখা হোক তার সকে সে বোৰাপছা তথন হবে। আছো তুমি যে বড় লখা লখা লেকচার দিলে— ভিনি ত তোমাদেরও কমি আছে—যার আরে পরিবার প্রতি-পালন হছে, কমি গেলে তোমাদের দশা কি হবে ভনি ?

यनत रामरन--- (कान छेखद पिरन ना।

্ মলন্বের হাসিতে হুর্গামোহন বেশী মান্নার উঞ্চ হরে উঠলেন। সেই সঙ্গে তিনি বুবলেন—এদের সঙ্গে তর্ক করে কোন লাভ নেই। এরা চড়া কথা বলে তর্ককে শাণিত হবার অবকাশ দের না—বেকাস বললেও হাসিমুখে জবাব দের। সেকালের হেলেদের জিদ বা এক ও রেমি একালের হেলেদের মধ্যেও যথেষ্ট আছে—রূপান্তর থানিকটা হরেছে গুরু। ওদের ওই নত্রতা বা হাসি-হাসি ভাবের মধ্যে দিয়ে উর্থাককে

আৰক্ষা করার ভাৰট সুস্পই। নিজের আপিস-জীবনের শেষ ভাগে এই রক্ষ নত্ত-গুলুতার নমুনা ভিনি যথেই পেরেছেন।

যাই হোক, কথা মা বাভিষে কেঁট হয়ে ভিমি ছুভোর কিতে খুললেন—কাঁথের চালরটা তজ্ঞাপোষের উপর রাধলেন। ভারপর বুকু পকেট থেকে হড়িটা বার করে সময় দেধলেন।

मनश बिखाना करान, काषां वार्यन कि ?

যাব ! ই। ছই-এক ভাষগায় বুৱে প্রশান্তর ভাগিসে একবার যাব ভাবছি।

ভা হলে এক কাষ করুন—চাবিটা রেখে দিন, আমি ক্বন ফিরব—

না—না চাবি তুমি রাব। প্রশান্ত ওই সামনের বরেই থাকে ত ? ওকে সঙ্গে করে একেবারে আসব।

্মুৰে ছাতে জল দিয়ে একটু বিশ্ৰাম করন।

ভূমি ব্যস্ত হয়োনা----জামাদের হাড় জন্ত পলকানর যে
আন্ধান্ত্যে পড়বে।

তিনি ধরের চার দেয়ালে চোব পুলিরে নিলেন। একটি তেরশো ছেচরিশের ইংরেজী ক্যালেণার ছাড়া কোন ছবিশত্র কোথাও টাঙানো নেই। কোনের দিকে একটা কেরোসিন কাঠের ব্যাকের উপর জুপাকার বই অগোছালো পড়ে ররেছে—একটা বইরেরও নাম পড়া বার না এমনি অগোছালো। মেসের ঘর কোনকালে গোছানে। হয়--না তিনি জানেন তর্—এরা যেন বেশীমাত্রার বিশৃথাল। তাঁদের সময়ে নিবিয়ে চাকরীতে আর সংসার চালনার দায়িতে যে জীবন বাঁবাবরা ছকের মত সরল ছিল আজ সেই কেন্দ্র থেকে সে বিচাত হয়ে পড়েছে। এদের দেখে ছংব হব তর্ এদের ওপর মমন্থবোধও পোষণ করা ছয়হ। ছটি য়ছ দেশের ওপর যে ফাডিফ রেখে গেল—সমাজও সে আঘাত থেকে আল্পরকা করতে পারে নি! কিছ আল্পরকা করা আন্ত প্রয়োজন। পল্টিমের রাইম্বী মন প্রের সমাজমুবী মনের থেকে পৃথক নয় কি ?

ভাবলেন এখন থাক—ফিরে এসে এ নিয়ে ওদের সংস্তর্ক করা যাবে ! মানে ওদের বৃদ্ধির ঘট ছাড়াতে হলে কিছু লাণিত যুক্তির প্রয়োজন।

পথে বেরিয়ে মনে হ'ল বাহত শহরের কোন পরিবর্তন হয় নি। ই' একটা বাভির সংখার হরেছে— হ' একটা পথের স্কট হরেছে এই মাত্র। সনাতন ট্রাম, বাস, সনাতন প্রথায় চলছে, মোডের মাথার সনাতন ট্রাফিক পুলিস—তার উদ্যুত্ত করের ইলিতে বানবাহনের স্রোত কর্বনও সচল ক্রমণ্ড বা তর্ব হরে যাছে। মুছের মরগুমে যে বিদেশী লাল মুর্বের প্রাচ্ব্য পথে, কুটপাথে বা বিচিত্র যানবাহনে দেখা বেত আক তা নেই বললেই হয়। অতিকায় ট্রাক্সলিতে ক্রচিং লালমুর্বো নর্গদেহ, গোরা দেখা যার নত্বা সবই দেশীরদের রাজত। এবনও ট্রাকের পর ট্রাক ক্রমতর প্রধার চলে তবে

ষ্টার পর ষ্ঠা ধরে অসামরিক মালুষের অসুবিধা ঘটার মা। বুছ-ক্ষের ভাটাটা পা≵-প্রভাক।

তৰু ৰুছ যে থামেনি সেটা নিত্যকার জীবন যাণনের মধ্যে বুবতে পার। যায়। আহারে, পরিজ্ঞানে—দ্রব্যৰূল্যে ওরা ক্রেশভার বছন করছে সেটাও বাইরের, আর মনে জাগছে যে অভাববোধ—ভা প্রাকৃ-যুছের সমাজ-স্থলার সলে যুছোওর সমাজ-বিপ্লবের সংঘাত ছাড়া আর কিছুই নয়।

গোলগীঘতে পৌছবার মুখে মিটং ভালা ভিছ তাঁকে প্রাপ্ত করলে। কি ধেম একট। প্রতিবাদ সভা বসেছিল এলবার্ট হলে—কমপ্রোতের সঙ্গে যথেষ্ট উপ্তেজন। পথের মাকে আছড়ে পছল। ও দলে প্রেটি বা রজের অভিত নাই, সবাই তরুণ—মেরে আর পুরুষ। সবাই এক একটা দিক নিয়ে উত্তেজনার প্রোত স্পষ্ট করে পথের চার দিকে ছভিয়ে পছছে। বিত্তীর্ণ বাধ্যু-বেলার সমুদ্রের ভালা ৮েউ শেষ হয়েও থানিকটা গছিরে যার যেমন অতমনি। এখের ভঙ্গি দেবে মনে হয়—কোন একটা মীয়াংসা করতে এরা এক জারগার মেলে নি। হয়তো এটা প্রতিবাদ সভা ছিল। কিও প্রতিবাদের মধ্যে প্রতিকার প্রার্থনার স্বর্গট শোনা গেল না তো! কি চার এরা ? এ রুগের যৌবন—বিনয়ে উছত—ন্যুতার অহুগারমন্ত স্বাধিকারপ্রয়ও ঘৌবন— কিসের প্রতিবাদে আছ আর কাল, কাল কিথা পরভা দিনের পর দিন ব্যরে বিল্লোহ ধোষণা করেছে ? কার বিরুদ্ধে বিল্লোহ ?

একটা কথা কানে গেল—ইংরেজকৈ ভারত ছাড়তেই হবে। সাম্রাজ্যবাদের নাভিখাস উঠেছে। বেরনেট বন্দুক—
আকাশচারী লোহভেন অথবা অভিকার ট্যার কি মৃত্যুবীকবাহী মেদিনগান এসব সাম্রাজ্যবাদকে আসর মৃত্যু থেকে
বাঁচাতে পারবে না। ওদের বনবল, জনবল কাঁকা
লোগানের চীংকার ধ্বনিতে হতবল হরে গেল। ছুগামোহন
অবিখাসের ভঙ্গিতে মাধা নাড়লেন। ইখং উচ্চবরে হেপে
উঠলেন।

পালের একজন তরুণ উঞ্ছরে উঠল, কি মশাই---হাসছেন যে ৷ ব্রিটশ ভারত ছাড়বে এ বুঝি বিশ্বাস হ'ল না ?

একট মেয়ে বললে, ওঁরা ক্ষর্লের মূপের গোক---তার মূখের দাপটই কানেন।

ভূপামোহন বাছা বাছা প্রমাণ প্রয়োগ করতে যাজিলেন—
কি ভেবে বিরত হলেন। তথু বললেন, ওরা যতক্ষণ না কথা
রাধ্যে—

হেলেট উঞ্ছৱে বললে, কথা ৱাৰতে বাব্য করাব আমরা। ভাবছেন ওদের অস্ত্র আহে—

হুৰ্গামোহন বগলেন, সে ভাবনা ভো ভোষাদেৱও রয়েছে— ছেলেট বললে, আছে। আর বিধাসও করি আমরা যে একদিন-না-একদিন নিজেদের অবিকার আমরা ফিরে পাবই। আরও করেকট ছেলে মেরে হুর্গামোহদের চার্যাক্তি ছড়ো হয়েছে দেখে উনি তর্ক করলেন না। তবু বললেন, আষরা হয়ত তেমন দিন চোখে না দেখেও যেতে পারি।

লে আপনার ভাগ্য । একজন পরিহানের ভালতে বললে। আর সে সৌভাগ্য এলেও উপভোগ করতে পারবেন কি ? একট তরুগী বললে, বাবা কিসের !

দেশছেন না -- বিটিশ দপ্তরের আব্যাড়াই কলে--কেমন সহকে হক্ষ হরে গেছেন উনি।

হো হো করে ওরা হেলে ছিট্কে ছড়িয়ে পছল এপালে ওপালে।

ছুৰ্গামোছনের চোৰ জালা করে উঠল-- সামনে গোলদীবির বেফে আশ্রয় না নিলে একটা ছুৰ্গটনা ছুগুরা বিচিত্র ছিল না।

বেকের আর এক প্রান্তে একজন যুবক বসে ছিল। পরণে ভার আবমরলা কাপড়—জামার কাবের কাছটার একটা ভালি দেওরা—একটু অভমনত্ম ভাব। একটা বিভি বরে সেকরেকবার টান দিলে—একবার কাগলে—হুর্গামোহনের দিকে একটু নভে সরে বসলে। ভারপর মুহ্বরে বসলে, সর একটা খবর জানেন ? সাগ্রাই আপিদের স্থাহিংটন সারেব আজকাল কোন সেকশনের চার্জ্ঞ নিয়ে আহ্লেন ?

ছুৰ্গামোৰৰ নিজের জগতে কিরে এগেন। সেই সঞ্চে কিরে এল তাঁর আহত পৌরুষ। বললেন, আমার দেবে কি মনে হয় যে আমি সাপ্লাই আপিসের বছবার ?

भूतकृष्ठे चंद्रिष्ठिक ना श्रव वन्नात, कि कार्तनम् प्रव चर्नक् विकासक्य शास्त्र एका काकविरक क्रूक्ट्रस्य कार्याचान अकस् स्निक्रतरम्य वार्त्यन वरणस्य

ছুগামোহন নরম গলার বললেন, চাকরি করতে চান ?

ь চাইব না কেন। চাকরি করতেকে না চায়। প্রতিবিশ্বয়ে সুবক তার পানে চেয়ে রইজ।

ছুর্গামোহন বললেন, একটু আগে ওট হলে মিটিং হয়ে রেল ববর রাখেন কি ? আপনার মত যুবকরা তো বোড়াই কেয়ার করে চাকরির।

ও কথা বগবেন না আর, এখনও বুড়ো বাপ মা বেঁচে— , ভাইদের মাথ্য করতে হবে—বোন আছে একটি তার বিয়ে—

শহর সম্প্রথপে বদলার মি তা হ'লে। ছর্গামোছন পূর্ব-দৃষ্টিতে চাইপেন সুবক্টর পানে। দেছের প্রত্যেক্ট ভদি প্রাক্-মুদ্ধ মুগের ক্লান্তিতে জভান্ত মান। কণ্ঠখরে ভিন্দার বিমন্ত্র—খা জাপিলের চেয়ারে বলে বহু বছর ধরে ভনে ভনে ক্লান্ত হরেছেন তিনি। কথং কৌতৃহল হ'ল ছেলেটকে ভাল' করে জানতে।

বগগেন, চাকরি তে। অমনি হর নঃ বাপু--কিছু দক্ষিণ। দিতে হর।

ছেলেটর চোবে উৎসাহের দীন্তি দেখা গেল। বললে, বেশি তো পারব মা—অবস্থা দেখাদেনই ভো—-

তৰু কত ?

শ্ববিদ্যক চাক।—বলেই এসিরে এসে হেঁট হরে সে ছর্গামোহনের পায়ের দিকে হাত নামালে।

ছুর্গামোহন ব্যতিবাস্ত হয়ে ওয় হাত ছ্বানি হয়ে কেললেন। কি কোমল অসহায় হাত। কি জানি কেনদেহ তার বিন্ বিন্ করে উঠল---ক্রেয়াক্ত পিচ্ছিল সরীস্থেপর
কার্নি বেমন সায়ুকেক্তে আবাত লাগে। বলতে লেল---এটি
তার অতীত স্থৃতিয় কণ---তার সমাকে পরিবার-প্রতিশালনে।ছু
এমনি এক বাব্য হেলের স্বপ্ন কে না দেখেন। তিনি যে
কলকাতায় এসেছেন---তার মৃলেও ছেলের রাষ্ট্র চৈতলকে
সমাজ-স্বর্গর সামনার পানে পূর্ণ বিক্লিত করে তুলবার
কামনা। অবচ এই মৃত্তে এই ছেলেটির ভান সহ করতে
পারছেন না কেন ?

নিক্ষে বিরক্তি দখন কয়তে প্রশ্ন করলেন, কতদূর পঞ্ছেছ ভূমি ?

মাট্ক পাশ করেছি:

মান্ত্রিক ! মন সাপুনা লাভ করপে ! তাঁর ছেলের সঙ্গে এর ভঙ্গাং অনেকধানি । কিছু আপিসে যথন ক্ষমতা তাঁর ছাতে ছিল—তথন তাঁর ছেলের চেয়েও কত গুণী জ্ঞানী কিংবা নানী বংশের ছেলেরা তাঁর পারের কাছে এমনি ভিক্নার আশার নত হয়ে প্রার্থনা-বাদী উচ্চারণ করেছিল—তা তো তিনি ভোলেন নি । তাদের কাতর প্রার্থনায় মন তাঁর আত্মপ্রসাদে ক্ষীত হয়ে উঠত না কি ! বিদ্যাকে—ক্ষমতার সেবার কৃতার্থনায় দেশে—ক্ষীত হওয়াই তো ক্ষমতার বর্ম । আপিসে উট্ গদিতে বসে স্বর্শেই অনেকগুলি বছর কেটে গেছে—সেই বুসির হর্গে বাস করে আত্মও তিনি সেই হর্গকে সমন্ত কামনার ধ্বার রেবেছেন । তবু মলিনবেশী এই ছেলেটকে তিনি সহ করতে পারলেন না । বললেন, শোন বাণু, চাকরি গোলদ্দীয়ের বেকিতে বসে লাভ করা যায় না । আপিসে যাও—ববর নাও—কে কোণার আত্মীয়ে আছে ধর—

আপনি কিছু সাহায্য করতে পারেন না সার গ

না। অভান্ত গন্তীর ভাবে কথাট উচ্চারণ করে তিনি বেকি ছেড়ে উঠে দাঁভালেন।

গোলদীখির অলে—ছপুরের রোদ ছোট ছোট ভরদের মাধার ছিটরে পড়েছে। মাছগুলো লাফাচ্ছে বলেই বীচি-বিক্ষোভ, নভুবা শ্রোভহীন জলে বিনা বাভাসে চেউ ওঠে না।

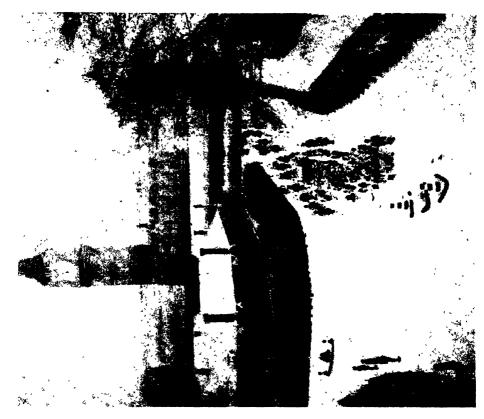
অবঞ্চ ছেলের সলে এ ভাবে সাকাং হবে হুগামোহন আশা করেন নি।

গোলদীবি থেকে গেলেন নিজের আপিসে। নিজের আপিস হাড়া অঙ কথা তাঁর মনেই আসে না। জীবনের চল্লিশটি বছর—জীবনের সেরা দিনগুলি যে বিরাট সৌথের জঠরে নির্বিধে কেটেছে তাকে নিজম নয় ভাবতেও কট বোধ হয়। যারা সহক্ষী ছিল তারা আজু নেই। কেট অবলর

নিয়েছে সংসার থেকে--কেট বা আপিস থেকে। বে ঘরে বদে কাৰু করতেন সে ধরের চেহারাও বংলে গেছে আমূল। ্যে র্যাকের মাধার কাইলের ভূপ থাকভো আর র্যাকের গোড়ার টুলের ওপর বসে বিহুভো দপ্তরী রহমং—ভারা কাঠের भार्षेनत्मत क्रमारिक अनुक स्टब्स्स । अ परत वक्षपावृद शिम আবিপত্য---আক্ষকাল কাঠের ছোট খরের মধ্যে রিভগভিং চেয়ারে বলে একজন নডুন গোঁক-ওঠা ছোকরা সায়েব ঘন খন পাইপ টানে আর কলিং-বেল বাজায়। স্থইং ভোর ঠেলে বাৰুরা আর চপরাসীরা মিনিটে মিনিটে যাওয়া আসা করছে। বাবুরা সব ভরণ। ফিট্ফাট্ চট্পটে। ফাইল সাজিয়ে শেষার ছরন্ত রেখে--টেবিল সাফ্করে সিগারেট টানছে। তাদের কালের কাল্ডলো তাদের যতটা কাবু করে রাবতো এদের কাথের কাথগুলে! সে অমুপাতে লঘু বলতে হবে। এরা এত খেঁষাখেঁষি বসে যে কোণের লোকের কাছে পৌছতে হলে মাবের বা পাশের পোকগুলির চেয়ার সরিয়ে কাত হয়ে হেলে দশ হাত দূৱে যেতে রীতিয়ত পরিশ্রম হয় আর সময়ও मार्ति। जतू बदा मान्यत मः--(माक (वर्ष्ट्रा वर्ष আপনাদের কালে কান্ধের অত ফৈঞ্চ ছিল না সার। এত নোটের পর নোট-এন্কোয়রি, ডি ও পেটার এসবের হাঙ্গামা ছিল না। যুগ্ধ যেমন পতি এনে দিয়েছে--তেখনি জটল করে ভূলেছে সৰ বিভাগকে।

বেশীর ভাগ লোকই তাঁকে চেনে না- কেট কেট খাতির করে। ভবে বাভির করে বলে যে মুধ থেকে চুরুট নামিয়ে যেমন গোলগাঁথির ছোকরাট প্রার্থী ধা কাৰায় তা ৰয়। হয়েও সিগারেটে সব শেষ টান দিতে কার্ণণা করে নি। পুকিষে ধুম পান করাটা এ কালের নীতিতে শ্রদ্ধাজ্ঞাপনচিহ্ন বলে ধীকুত না হলেও---সেকালের আচার-অভ্যন্ত মনে বিশেষ করে এই আপিসের পরিমণ্ডলে বেশী করেই দোলাদেও। তবু কলকাভায় এলে কাৰ না থাকলেও আপিনে ভিনি একবার আসবেনই। যে টানে মাথুষ দূর প্রবাসী হয়েও ৰদ্বভিটা দেৰতে আসে—পেই অলক্ষ্য-প্ৰসাৱিত ৱজু তাঁকে আকর্ষণ করে কিনা বুঝা ছম্বর—তবে এই পরিভ্যক্ত কর্মক্ষেত্রকে সর্ব্যভোভাবে আপনার করেই নিরেছেন ভিনি। তার যৌবন এই আপিলের কর্মস্টের সার্থকভার নিবেধিভ **দ্যেদিণ একদা--- ক্বভূমির চেয়ে এই কর্মভূমি তার কাছে** ভাই এত প্রিয়।

আপিদের পথ তদায় পুরে খুরে দেশলেন—পরিচিত করেক জনের সলে আলাপ করলেন—কাজের ব্যবস্থা সম্বত্ত কিছু কথা হ'ল—সায়েবরা তাঁকে আপ্যায়িত করলেন। তার পর এলেন বভ পথুজ্ওয়ালা জি, শি, ও, আপিলে। তেলে কাজ করে যে বিভাগে জানা ছিল—কিছ সে বিভাগে কেউ তার সভান দিতে পারলে না। জনেক স্কলেন—তবুলে বিরাই আপিলে ঠিক্ষত সভান পাওয়া পেল না। একবার

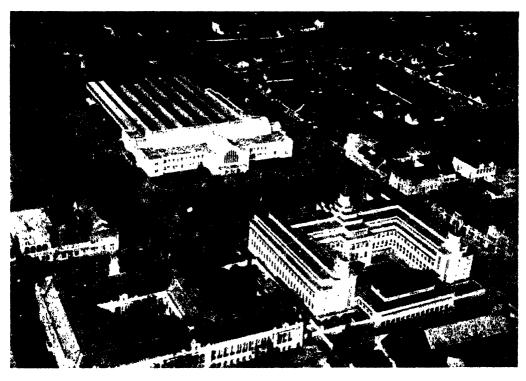




সোদপুর আশ্রমে প্রার্থনারত মহাত্রা গাখী (প্রার্থন-সভাষ শ্রহিম্য লায় কর্তৃক অফিভ)



বৰদীপের 'ওয়ায়াং' নাট্যের অভিনেভাগণ



यवरीत्मव बाक्यामी बाह्रीक्षिता-हैमटत निहे द्वमश्रद होनन, मीह्र द्वमद्वमाध होकि क्यानामित अवन

মৰে হ'ল এই আপিসটৰ বিবাট কঠবে আশ্ৰয় নিচে
মাহুৰকে পুৱাতন পৰিচয়ে বুঁকে পাওৱাই দুশকিল।

অবশেষে এক জন বুড়ো মত লোক বললে, বেশ করসা রঙ কিটকাট ছোকরা—প্রায়ই নিগারেট টানছে—বুকে কাউন্টেন পেন সেই তো ? সেত পরত একবানা বেকিগনেশন লেটার স্থাবিন্টেকেটের আপিসে দিয়ে পেল।

সভাসিত্য যাচাই করতে উর্দ্ধতন কর্ম্মচারীর কাছে যাওরা
নিরপ্ত ভেবে তিনি পথে বার হরে পছলেন। লালদীঘির
বেকাগুলো মুছের সময় থেকেই ভেলে দেওয়া হরেছিল—
দীঘিটা পথের সলে মিশে—লালেকার আভিজ্ঞাত্য হারিয়েছে।
নানান দিক দিরে তার পথ বেরিয়েছে—মাগুষের চলক্ষেরার
খাস নিশ্চিক হয়ে গেছে— মরম্মী সুলের কেয়ারীগুলি হত্তরী—
বিলাতী পাম কুল্প ছাড়া ত দীঘিটার হু'দও বলে ক্লান্তি পুর
করবার জায়গাও বড় একটা নেই।

পেইবানে বসেই ছুর্গামোছন ভাবতে লাগলেন—অভঃপর
কি কর। কণ্ডব্য । দেশে কিরে যাবেন — না প্রশাপ্তকে ভূল
পর্ব বেকে ফিরিয়ে আনবার চেষ্টা করবেন গুলিভ্ডের লাবিতে
এই চেষ্টা সার্থক হবে কি গুমার্থা নেডে গৃচ্নিভ্র হলেন— অবপ্ত হবে। উপার্জন না করলে ছেলেদের ভরদা ত পিতৃবিত্ত।
কাকেই তার আদেশের ভরশ্ব অধীকার করা প্রশান্তর পক্ষে

कि भि अ-त विकित्य हात्राहे वास्त्री- जनन (बरकरें অনেক লোক বাড়ি কিরতে পুরু করেছে। এরা নিশ্য আপিস (बद्ध नामार्थ्य। पूर्वीयार्थ काम करत अरमत (मर्वाक नागरनम्। हैं। -- चानिम (बरक नानारक बदा। मिरनमाव एवा मा রেসের তাড়া। আসে শ্থিবার ছাড়া রেস হতে। বা, আজ কাল ≝हित पिन मारखरे (तम एत । यूरधत वाष्ट्रारत है।काहेः (कॅरण ৰা। ভবে ব্ৰেমের প্ৰস্তুতি আছে তো। সবাই তো বহুতে ইকিট कित्न वाक आकेत्व वरन हिहासिक करन ना-वृक्ति मानकर (बनाड़े। हरन राजरे चाड़े चानात (बनुएए (कवाव अकवाना वरे কিনে বা ধবরের কাগক থেকে নিকের ইচ্ছামত ধোড়ার নাম টকে বুকির একেটদের দেয়। এই ভাবে টিকুলি কোটা মিলিয়ে অব কৰে অৰের জাতি নির্ণয় করতে বীতিমত সময় নষ্ট হর না কি ? আর সিনেমা ? রেসের মত ভারও সার্থ-क्मीयप् चार्ष देविक ? क्म चारतत मास्यरे (७) क्टेरक অপ্রাহ্ম করবার সোকা প্রতি বেছে নেম। রে ভোরার বলে श्रद्ध अर्द्ध हा वावश अव वाककानकात (नना वा कामान। चार जिनादा ? अक वहत जिनादा छान करण वराष चान्नद्य अ श्रामाचनक अक्षिन एवश्य स्टाहिन। करन त्य বেগ পেদিনকার প্রতিক্রা পালনের ভাটার দেবা গিয়েছিল---আৰু এহণের কোয়ার দেবলে ভাবা আশ্রহা ময় যে ভারত-বৰ্ষের আর কোণাও না হোক অন্তত আপিন কোরাটারে

আহার-পানীরের সলে প্রধানতর রসদ হচ্ছে ঐ সিগারেট।
ফুর্গারোহন গুনতে আরম্ভ করলেন—এই দীঘির পর্ব দিয়ে যারা
যাচ্ছে তাদের মধ্যে ধুমপানীর সংখ্যা কত।

গুনতে গুনতে জাঁৱ নেশা চেপে গেল—কাছের লোক-গুলিকে গুনে দ্রের লোকগুলিকেও স্থা করতে লাগলেন। খার তারই কলে—যা খালা করেন নি ভাই ঘটে পেল খুকুমাং।

দূরে ঐ বিধ্বন্ত মরত্বনী ফুল-বাকটার ওপিঠে একট মেরের সঙ্গে থেঁবাৰ্থেষি করে যে লখা আর ফর্সা মত গুৰকট সিগারেট টানতে টানতে আসংজ--- ওই প্রশান্ত না । প্রশান্ত ভো।

আর একটু এগিয়ে এসে সক্ষ্য করলেন— বেঁষাবেঁহি মন্ত্র— মেরেটর ডান হাডের সক্ষে ওর বাঁ হাডবানি সংযুক্ত। পথ ওরা চগছে বটে—লক্ষ্যটা পথের আলেপালে বা সক্ষুবে মন্ত্র। ছাসি আর গল আর সিগারেট বাওরা এই নিরেই ওরা মন্ত্রণ। ওবারে লালগীবির কল—এবারে বিশ্রামরত মাল্য কিছুই ওলের লক্ষ্যে গৌছক্ষে না—ওরা বরংগলপুর্ব।

হুৰ্গামোহনের মনে হ'ল—পাধের তলা বেকে হাতের তালু বেকে সব রক্ত মাধার উঠে আগছে—চন্চন্ করছে যাধাটা। রগের রক্তবাহী শিরাঞ্লি রক্ত চলাচলের ক্রততার দশ্দপ্ করছে—চোবেও হুপুরের বোদ লেগে মুছে এক হরে গেল। অনহু ক্রোবে চীংকার করে উঠলেন—প্রশাস্ত-প্রশাস্ত।

একটা চাপা ৰিক্ত কৰি বাব হল গলা দিয়ে---কেউ চেখে দেশলে—কেউ চেখে দেশলৈ মা। প্ৰশাস্থ তার সন্দিনীর হাত ধরে নির্ক্ষিকার চিত্তে তার সামনের বাতা দিয়ে মাত্র হল পনের হাত ব্যবধানে গটু গটু করে চলে গেল।

অনেকক্ষণ পরে হুর্গামোছনের সধিং কিরে এল । আকাশ
ইতিমধ্যে খোলাটে বোধ হচ্ছে—গাছের ছারা হয়েছে খীর্থতর
আর লালগীধির চারবারে বরে চলেছে মাধ্যের বজা । মাধার
গুণর সেই সলে ভেগে চলেছে ধোঁরার একটা ধন জর—
শীতের সন্ধার শহরের বল্ডিপ্রধান ক্ষারণাগুলি থেকে থেমন
ধোঁরার কুয়াসা ক্ষার অনেকটা সেই রক্ষ । ক'টা মাধ্যু
লিগারেট টানছে—এ নিগর করা সন্তব নয়—সারা শহরটাই
ধুম্পায়ী হয়ে উঠেছে ।

ৰীরে ধীরে তিনি চোৰ বুজলেন।

চোৰ চেৰে দেবলেন তৰনো পৃথিৱী উজ্জ্বন নৱ। এটা কাঁকা ৰোলা ভাষপা নৱ, মাৰাটাও বেশ ভাৱি বোৰ কছে। একট সকীৰ্ণ বাবে তিনি ভাৱে আছেন—ৱাকেটে টক্ টক্ করে টাইমপিস চলছে। অগুৱে ভাষা কিস কিস করে কি যেন বলছে। ঘরটার তরল ৰোঁৱার স্রোভ—নিঃখাস নিতে কট ক্ছে। পাশ-কেরার চেটা করে অভিকটে ইাপাতে ইাপাতে বললেন, আমি কোৰার ?

এক অচেনা ব্ৰক তাঁর সামনে এসে দীড়াল। ২ললে, ভয় দেই—একটু হুধ বাবেন। ভার হাতে ফিভিং কাপ দেখে হুর্গামোহন আছেরের মত বললেন, না—না—আমি সিগারেট বাই না!

बुदक्कै बिडेवरव चलाल, जिशारके ना-- इव।

ছ্পাঁষোদ্ন মাথা নাড্লেন। সুবকট এগিয়ে এসে তার মুখে কাপটা ধরলে। গলাটা ভকিয়ে গেছে---ভরল পানীয় এক নিঃখাসে শেষ করপেন। একধানি ভোরালে দিয়ে মুখক তার মুখ মুছিয়ে দিলে।

ধূৰ্গামোহনের নাসিকায় নাভিতীত্র একটা পদ্ধ ভেলে আসতেই তিনি প্রায় চীংকার করে উঠলেন--- পুনি দিগারেট বাও গ

মুবক চম্কে উঠে বললে, এবন তো বাইনি ?

না—ৰেহেছ ? ভোমার গায়ে সিগারেটের গৰ-—ভোমার খাতে—

যুবক কি বলতে যাঞ্জিল—ছুগামোহন টেচিয়ে উঠলেন, গেট আউট, গেট আউট।

তার উচ্চ চীংকারে আর ছ'বন মুবক গুরার ঠেলে খরে চুকল। তার মধ্যে এক কন মলয়।

মলয় বলদে, ব্যাপার কি সুশীল ?

মনে হয় ভিলিরিয়ম। আবার সেই দিগারেট---গছ---মলয় বললে, প্রশাস্ত্র নাম করেন নি গ

ৰা ।

ছুর্গামোছনের কানে প্রশাস্তর নাম গেল। যেন কত দূর থেকে কারা—পরম বার্ড। ববে নিধে এল। খাড় কিরিবে তিমি বললেন— প্রশাস্ত কট ? প্রশাস্ত।

मनश्च काट्य परंग पंगतम्, तम आभार्य काकः। पातू ,

বউমাকেও আগতে বল- আমি ওদের আশীবাদ করব। রূপক ক'জন পরস্পরের পানে চেরে কি ইঞ্চিভাভিনর করেল। মধ্য বাইরে এপে বললে, এর মানে কি সুশীল, উনি নিশ্চর ভাবেন যে প্রশাভ বিধে করে নি।

স্থীল বললে, ফ্রায়েড বলেছেন—মাধ্যের অবচেডন মনের ভরে যে চিছা—

মলর বিরক্ত হয়ে বললে, মেছিকেল লাইনে ভোষার ক্রেডিয় গ্রেষণা উপকার দেবে—আপাতত--

সুৰীল বগগে, এই প্ৰশাস্ত আগছে—একেই বিজ্ঞাগ। কর।

প্রশান্ত সব ভবেন বললে, বাবার মাধা বারাণ হরেছে।

সুশীল বিজ্ঞাপা করলে, তোমার কাছ বেকে কোন দিন কি উনি ইঞ্চিত পেরেছেন---

প্ৰশাভ ছেসে বলগে, আয়ের পথ বোলা না থাকলে মাহ্যবের বিলাগ-চিভা আগে গ

সুৰীল বললে, বিবাহ বিলাস ?

মলর বললে, বাই হোক—ভোমার বাবা ভোমাকে খুঁখ-ছেই—একবার যাও।

প্ৰশান্ত খৱে এলে ভাকলে, বাবা ?

হুৰ্গামোহন পাশ কিবে ভলেম—কোন উত্তর দিলেন না।
আছের অবহার তার নাক ও জ হু'ট বার করেক কুঞ্চিত হয়ে
উঠল।

জ্ঞান কিরে আগতে আরও করেকদিন গেল। যে দিন বালিশ ঠেস দিরে বিছানার উঠে বসলেন—সেদিন বাইরের আকাশটা ভারি ভাল লাগল জার। পৃথিবীর রূপ আর রঙ মনের মধ্যে মতুম করে প্রলেপ লাগিরে দিলে। সেই সঙ্গে কিরে এল প্রাতন কামণাগুলি। প্রশান্তর পানে কিরে ভিনি বৃহ পরে বগলেন, চাকরি ছেডে দিয়েছ—কেমন ?

পে মর্মজেদী দৃষ্টপথ থেকে নিজেকে আড়াল করে অবাং মূব ফিরিয়ে প্রশান্ত মুছ খনে বললে, হাঁ।

ভারপর কি করে চলবে - কিছু ঠিক করেছ ?

थमाथ अक्र नक् रमन-कान क्वार भिरम ना।

ভূমি নিশ্চয় জান উপযুক্ত ছেলেকে বলে ৰাওয়াবার জঞ্জামি লেনসন পাই না—নে প্রত্যাশা ভূমিও কর না নিশ্চয়।

अभाष भाषा (नर्फ मर्क्तित क्वाव मिरम, ना ।

ভবে করবে কি ভনি ? ইষং উষ পরেই ভিনি প্রব্ন করবেন।

ষা হয় কিছু করব - কেরাবীগিরি হাড়া।

মানে—কেরাণীদিরিট। ভোমার কাছে সব চেয়ে নীচু চাকরি। প্রশাস্থর উপ্তর না দেওয়াতে তিনি অসহিস্কৃ হয়ে উঠলেন। থাজের সঞ্চে বস্পেন, থাগীনতা বসতে কি বোর ভূমি? চাকরি না করা ? সিগাবেট টানা আর অনাথীয়া মেয়েকে নিয়ে প্রে পরে আড্ড! মারা ?

প্রশাস্ত সহসা ঘূরে ইন্ডাল। তার চোর মুণ্টতে অস্বাভাবিক দীন্তি—বুরবানা লাল টক্টকে হয়ে উঠেছে—ঠোটের কাছটা কাঁপছে। একটা কঠিন প্রভাতরকে অভ্যন্ত সংযমের সঙ্গে সে ওঠচাত হতে দের নি বেশ বোরা গেল।

্ হুৰ্গামোহন বুৰলেন- মান্তাটা বেলি হয়ে পেছে। হয় ত
লাগীনভার গভি ছাড়িয়েছে—কিছ বৈর্য্যের কি লোম সে যদি
আযৌবন প্রভ্যালার লেম ভূগগাই হতে অবল্যমূচ্য হয়ে
পঙ্গে।

মিনিট ছই একদৃষ্টে বাপের মুবের পানে চেয়ে বেকে প্রশাস্ত মর বেকে বেরিয়ে গেল।

সিঁছির মূধে মধর হাছিবেছিল। ভিজাসা করলে, কাকাবাবু কি ধুব রেগে উঠেছেন ?

প্রশান্ত বললে, ওঁকে আঞ্চ বেশে পাঠাবার ব্যবস্থা কর ভাই—মইলে রাড প্রেশার বেডে বাবে। ক্রমণ:

বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

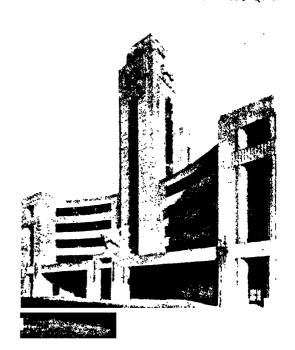
শ্রীবিনয়ভূষণ দাসগুপু

১৭৫৭ প্রীশ্রীকে পলাপীর বৃদ্ধের সময় লগনে মুশিলাবাদ অপেক্ষা কম লোকের বাদ ছিল। সেদিন হইতে আৰু পর্যাপ্ত হুই শত বংসরও হয় নাই, ইহার মধ্যে গঙ্গন পৃথিবীর বৃহত্তম শহরে পরিণত হুইয়াছে: ইংলঙ পৃথিবীর শ্রেষ্ঠতম শক্তিতে পরিণত হুইয়াছিল, কিছা পর পর ভুইট মহারুছের কলে সে সেই গৌরব হারাইয়া কেলিয়াছে: ইঙািইয়াল বিভালিউন্সন বা শিল্প-বিপ্লবের কলে যন্ত্রশক্তিতে ইংলঙ অপ্রথম হুইয়াছিল; যন্ত্রশক্তির সহায়তাপৃষ্ঠ ইংরেজ-মত্ত্রের উংপাদনীশক্তি স্বাইকে ছাড়াইয়া পিরাছিল; নির্ভাক, নির্পাস ইংরেজ বণিক পৃথিবীমর ছড়াইয়া পভিরা বিটিশ সাথাজ্যের জিওিগন্তম করিয়াছিল। লঙ্কন হুইয়াছিল সমস্ত পৃথিবীর বাণিজ্যান মাল বহুম করিত লঙ্গনের জাহাজ। লঙ্গনের সে পৃথিবীর বাণিজ্যের মাল বহুম করিত লঙ্গনের জাহাজ। লঙ্গনের সে প্রেয়ার আজ্বার নাই। মুছোপ্তর লঙ্গনের রূপ, সমস্তা ও সমাধান-প্রয়াস বিশেষ্ণপ্রপ্র প্রিণানের বিষয়।

लक्टबंद एक बनाकांत्र (वामावर्षां वर्ष भरन प्रश्वित विश्वत ক্ষতি আক্ত দেবিতেছি। মধ্য-লওনের অক্সকোর্ড প্লাট এলাকারও কিছু কিছু বিঅভ পুহু দেখিতেছি। পালামেটের কমল ভবনের এখনও পুন্নির্মিত হইতেছে। ইহা বাতীত জন্তবের বাহ্যিক রূপের বিশেষ কোন পরিবর্তন দেখি না। কিত্ৰ ইংলভের অৰ্থনৈতিক ভিডি একদম ভাঙিয়া প্ৰিয়াছে। भुद्ध भुवियो बाभिया वेरलाइय मुलबन बाष्टिए ; छाहाद ज्ञप हिल हेरल्डवामीर अक्टें। यह चारबर छेलाव । अपक रम ब्लब्स बाहे : हेशदक (भ बाब) कांछिद बिक्ट पादिक । अबद स्टेट्ड কোন স্থদ আর ইংলঙে ভাগে না : ভাছার নিজের গায়ের এক অংশ ঋণশোধের জন্ম বাহিরে পাঠাইতে ছইতেছে। পুর্বেং সে যত জিমিধ বাহিরে পাঠাইত, বাহির হইতে **আ**নিত তার অনেক বেৰী। কারণ খুদ প্রভৃতি বাবদ সে অনেক মাল পাইত: এখন সেই বুল্যের মাল বাহির হইতে আনিতে হইলে ভাহাকে পূৰ্ব্বাপেকা অনেক বেশী মাল বাহিত্তে চালান দিতে হইবে। ভারপর দেনাশোধ ভ আছেই। কাৰেই পুৰ্বের চাল বজার রাখা ভাহার পক্ষেকটকর হইয়াছে। भटका हान तकाद वाविताव अक्याब छेगाव त्मान छैरगामन-বৃদ্ধি এবং ভংসছ বহিবাণিজ্যের উংকর্য সাবন। প্রচর জিনিয উৎপাদন করিয়া বিদেশে বিজয় করিতে না পারিলে ভাষার পর্ব্বেকার অবস্থা ত কিরিয়া আসিবেই না, পরস্ক বিদেশ হইতে ষ্বেই পরিমাণ খাভবন্ধ আমদানী করাই তাহার পক্ষে কষ্টকর ছইবে। ইংলণ্ড এ বিষয়ে সম্পূর্ণ অবহিত এবং এ গিকে ভাৰার চেষ্টার অববি নাই।

क्षवमण: देशमण निष्माक नर्वाणांचा नश्यामत मृथान

বাঁৰিখা বাৰিবাছে। খাদ্য এবং বন্ধের রেশন প্রাদ্যে চলি-বাছে। প্রত্যেকের পরিমিত খাছ বরাছ আছে। রাট, মাখন, মাধ, মাংস, ডিম, তরকারী, চিনি সবই নিঃমিত বরাজপ্রধার অবর্গত। প্রাতরাশ, মধ্যাক্ষজোজন এবং নৈশভোজন সাধারণের এই ত্রিবিব আহার। প্রতি বারে ছ্-এক টুকরো রুটি পাওরা হার। মাখন নাম্যাত্র। তিম সপ্তাছে ছুটো।



অধ্নিক বিমান-কেপ্ৰ—'ইন্পিরিয়াল এয়ারওয়েক', সঙ্গ

মাংসের মধ্যে মেধ-মাংসই বেশী। মুগী ছুর্গ্ । ভরকারীর মধ্যে আছু প্রচুর। অন্ধ তরকারী বুব কম। কুগকণি ছুর্গ্ । বাধাকণি জ্বাইতে সময় বেশী লাগে; তার বদদে বুব ছোট বাধাকণি জাতীর রাসেল্স আউট দেওয়া হয়। এওলি বুব ভাটাভাড়ি জ্বার। মধ্যাক ও নৈশভোজনে তিনটি পদ পাওরা যায়। সাধারণতঃ একট ভাল বা ঝোল; ধিতীর পদে এক টুকরা মাহ বা এক টুকরা মাংস, সদে কিছু ভরকারী-সির এবং ভৃতীর পদে এক টুকরা কেক, পৃত্তিং বা আন্ধ লাতীর মিইটার। পরে আব কাপ কবি বা এক কাপ চা দেওয়া হয়। ইহাই প্রত্যেকের প্রভাছিক খাদ্য। আইনতঃ কোন হোটেশে ৫ লিলিঙের বেশী দাম লইতে পারে না। বছ বছ হোটেলে অবশ্র ব্যৱভাছা, বাসনভাছা প্রভৃতি বাবদ আরও কিছু আদার করিরা লয়। খাদ্য একবেরে এবং অপ্রচুর। চকোলেট

কিনিতেও কুপন লাগে। স্বাইকে এই আহারে সম্বাই পাকিতে হয়। স্কালে বিকালে গৃহিণীদের বেশনের দোকানে লাইন বিতে হয়।

মণ্যাক-ভোজনের সময় আশিসবছল অঞ্চল হোটেলের नाम्त्म नवा नाहेन (पर्व: यातः। क्वनंत क्वनंत अक वर्ता অপেকা করিছা তবে বালা মেলে। কল অপ্রাপা। পিও ৰা বোৰত জভ বেশী ছব লাগিলে ভাষার জভ আলাখা কুপন সংএহ করিতে হয়। বল্লের কুপনও প্রচুর নয়। মোজা, জুডা, টুৰী, ট'ই, লাট, কোট, ১ট, বৰ্ষাভি প্ৰভ্যেক জিনিয়ট কিনিতে कूपन हारे। तर जमम नकन किनिय भारता यात ना । रक् रक श्लोकान अक अक नमरद मान्युष्ठ क्षेत्रा यात्र । श्रुटिय चर्छा द দিলে তিন মাসের কম পাওয়া যার না। তৈরি জিনিষ্ট বেশীর ভাগ কিনিতে হয়। সাধারণত লোকের প্রযোজনীয় বস্তাদির দাম অবঙ বুবই কম। ৫ পাউও হইতে ১০ পাউতের মধ্যে স্থট এবং । পাউতে ওভারকোট পাওরা যায়। প্ৰহের অভাব অভ্যন্ত বেশী। হোটেলে প্ৰান নাই। মুদ্ধ হইভে किविवा विवाहित वास्त्रित्रं वारमान्याम त्रह नाहरत्व मा। সরকার প্রথিপথি এবং ক্যান্টনের জন্ত হথেই চেটা করিতে-ছেন। সাধারণতঃ সরকার স্থানীয় স্বায়ত্তপাসন-প্রতিষ্ঠানের মারকতে গুরু নিশ্বাণ করাইরা বিলি করিতেছেন। রক্ষণীল मन এर अवाद राष्ट्रपाठी मन। छारादा मत्म करदम मनी-দিপকে পুহনিশ্বাণের খাবীনতা দিলে বেশী পুহ নির্শ্বিত হইত। সরকার এ যভ যানেন মা। ইছা লইরা তুমুল বিভর্ক চলি-(अरह । याहित छेन्ड चन्न, यञ्च अवर चालात्रहरू जबहे अपन अबकाब कर्डक मिश्रश्चिष्ठ बावर (कानकार श्रह नव ।

অন্নবস্ত্র ভিন্ন অভাভ দ্রব্যও অপ্রাপ্য বা হুপ্রাপ্য। আমদানী ब्रुखामी अवर मूखाविनिमय्यव छेनव मबकारवव करू। मामन । विटम्ब क्षांब्रमीय क्षेत्र वा निष्यत वह वावक्रीय यञ्जालि ও কাঁচামাল ভিন্ন অভ দ্রবা বিদেশ হইতে আমদানী করিতে विश्वा एवं मा। वर्षाण श्वेष्ठ स्वापित मत्वाश विरामश व्यक्षांचनीय स्वता वाणील यहारन (विविदाद चन्नमणि मिरल ना । चामाद नक्षत् चरशानकारन अक विदार्ग श्रवनी व्हेबाहिन। क्षण्ड विभश्यां वाक अद्यम्बा प्रश्न और क्षम्भी ছেবিত। শিল্পতাত সর্বাবিধ জব্য এবং গৃহস্থের প্রয়োজনীয় যাবতীয় ক্ৰবা ইছাতে দেখান ছইয়াছিল। সৰই ইংলঙে खरू । अपनेंगीकेंद्र मात्र (पश्चा क्रेबाबिन "हेश्नश्च हेका रेखि कतिरख शारत" क्षप्रचेती। किस देशाव कान सिनिधरे हेश्मर् विकारवा का नार : जवने विराम जानान निवाब क्या। नाराज्य लाटक देशांच नाम विज्ञाहिन "देशन७ देश পাইতে পারে না" প্রদর্শনী। অর্ত্তেক বিলিতী ভিনিয় আমরা ক্লকাভার পাই, কিছ ভাষা বিলাভে অপ্রাণ্য। ভাল ফাউন্টেম পেন, নাইজন প্রভৃতি কিনিষ বিলাতে খবু ছুপ্রাণ্য নৱ, चलाना । जानाम ७ (छात्रात्मध जन्दक नाधवा बाद मा।

সরকারের দিতীর প্রচেষ্টা হইতেছে সর্বতোতাবে দেশের উপোদনর্থি। এ বিষয়ে মল্বদের নিকট প্রধানমন্ত্রী এটগীর বন বন আবেদন আমরা প্রারই শুনি। পূর্ব্বোক্ত প্রদানীট এই উপোদনর্থির প্রেরণা দিবার বছই করা হইমাছিল। বিলিতী মালের অভাভ বিষয়ে স্থাম বাক্তিগও ভিত্তাইনের বিশেষ স্থাম নাই। তাই এবা এবার ভিত্তাইনের দিকে বিশেষ নক্ষর দিরাছেন। যাবতীর ব্লিনিষের কত রক্ষারি ভিত্তাইন হইতে পারে তাহাই এই প্রদর্শীর প্রমারি ভিত্তাইন হইতে পারে তাহাই এই প্রদর্শীর প্রমারি ভিত্তাইন হইতে পারে তাহাই এই প্রদর্শীর প্রমারিল। সেট প্রাস্টক্স প্রদর্শী। কত রক্ষরের প্রাষ্টিক্স হইতে পারে, প্রাষ্টিক্সের কত রক্ষর ব্যবহায়ে কিমিয় হতে পারে এবং দেই সক্স ক্ষিনিষের তণ কি, ইহা দেখানোই ছিল এই প্রদর্শীর উদ্বেশ্য। আক্ষরাল প্রাষ্টিক্স দিরা হতেছে এবন কিনিষ ক্ষ। কাপড় পর্যান্তর্গ দিরা তৈরি হইতেছে।

ভিত্তবিপ্রবেষ কলে যালকৌশল এবং সংগঠনশক্তিতে ইংলও পুৰিবীর মধ্যে অঞ্জলণা হইয়াছিল। বিশাল সাত্রাক্য ভাষাকে কাঁচামাল যোগান দিত এবং তাহার বিপুল শিল্পজাত দ্রবাসস্থার ব্রিদ ক্রিড। এশিয়া তব্দ অব্ধত। শৈল-বালিভার কেতে আমেরিকা শিল্পাতা। ইউরোপের উঠত এবং প্ৰচ্ছ ভাতিগণের মধ্যে শক্তিগামা রক্ষা করিত ইংলঙের প্রবাইনীতি। তথন উৎপাদন যন্ত্রপক্তির সাহায্যে ফ্রুত বাছিয়া চলিয়াছিল: কাকেই আভ্যন্তরীণ অশান্তির সন্তাবনা ছিল क्या कादन अकालद जात्त्रहे यात कृष्टि अपर अवालदे वाद বাভিয়া চলিয়াছিল। ইংলগু ছিল তথন ৰগতে অপ্ৰতিষ্ণী। किंद क्यवन आकृष्ठिक अन्त्रम, यश्चरकोणन ७ मर्श्वरेमणकि---সৰ দিকেই আৰু ইংলভের অৱপতি ব্যাহত হটয়াছে। বালিয়া এবং আমেরিকা ফ্রন্ত বাছতির পরে চলিয়াছে। জনবল এবং প্রাকৃতিক সম্পদে উভয় দেশই আৰু ইংলভের অপ্রগামী। यञ्च को मन बबर मरनर्रम निकाल चारम्बिका भवाहतक वह পশ্চাতে কেলিয়া পিরাছে। রাশিরা ভাহার বলিঠ সংগঠন-শক্তির পরিচয় দিয়া ভগংকে চয়ংকত করিয়াছে। ইংলভের ঠপনিবেশিক প্ৰধার বুলে কিছ ভালন ধরিয়াছে। আমেরিকা বহু পুর্বেই ইংলভের অধীনতাপাশ ছিন্ন করিয়াছে। ক্যানাডা ও অষ্ট্রেলিয়া এবন সাত্রাক্ষাের বৃঢ়তম অংশ। কিছ ভাষ্টাদের নিজেদেরই সাহায্য-প্রয়েজন বৃব বেৰী। ভারতবর্ষ প্রভৃতি (म्थ क्यवर्षमान माजिकावर्ष इर्सन । दे**डे**रबार्टन थकिनारमाव দিনও ফুরাইরা বিয়াছে। কালেই আৰু ইংলও নিবের উপর আছে হাধাইয়া কেলিয়াছে, কগতে একছেত্ৰ প্ৰভুত্ব বকায় ৱাৰা সহতে ভাহার মনে সংশয় জাগিরাছে। মব মব যন্ত্র-কৌশলের উত্তাবনী শক্তিতে পিছাইয়া পড়ার ইংলতে উৎপাদন वर्षके वाण्टिकाल मा । करन चाणावदीन वन्त रामी विदास । দীৰ্থকালীন কঠোৱভাৱ কলে এই বন্ধ বাভিভেছে এবং কৰ্মেৱ

উৎসাহও কমিয়া যাইভেছে। যদি বেশী কান্ধের কলে বেশী ভোগ্যবন্ধ না পাওয়া বায় তবে কাজে হত:ই উৎসাধ পাঁকে না। ধর্মবটের মীমাংসা করা এ অবস্থার কঠিন হটয়া পভে। শিলপতিগণ এ অবহার উৎসাহতীন হট্যা পভিতে পারেন। ইংগও আৰু সর্বাপ্রকারেই বেতন্তৃক্রণের প্রতন্ত্রে পরিণত হইরাছে। বেতনভূকের প্রধান খার্ব ভাছার বেতনের পরিমাণে এবং কর্মের অবস্থায় : উৎপাদন-বাবস্থায় ভার প্ৰভাক স্বাৰ্থ নাই। অৰচ উংপাদন না বাছিলে ভার ভাগ वाष्ट्रान ७ कहेकत । अधिक भवर्गायके यम यम बहुद्रापत श्रिक चार्यमभ कानावेश अवर कान कान निल्ल अबकाशी निश्चल আনিয়া এই ধন্দের মীমাংসা করিতে চেষ্টা করিতেছেন। কিছ ज्यांशि चाक रेरमा ७ व मर्वा वह विवा ७ वन्द्र शक्ति । वह cbs। प्रदेश केच्छा वा श्रीद्याचमायुक्तभ छेरभाष्ट्रभ वा प्रिटलास ना । যদিও কঠোর বাবস্থার বিশুমাত লাখব করা ছইতেছে না তথাপি ইংলও ভাষার পূর্বের চাল ভিরাইয়া আনিভে পারিবে ফ্রিনা সন্দেহ। ভাই ভাছার ধেচ্ছাকৃত কঠোরভা এবং অভিনর फेल्लामन लात्रहे। विश्वश्वकद स्ट्रान्थ कर्मनावर केटलक करता।

चाक देशकरक मूजन चामार्न यह चहाहेटल एटेरव । পরবর্জী বিশ্বযুদ্ধের পুরুষ পর্বান্ধ ভাহার সময়: ভারতব্য ও সাত্রাজ্যের অভাপ অংশ বলি আৰু দারিন্তা ও তেম-श्रवर्षक-नामन-५क रहेश श्रावीम ७ श्रावनश्रीचारव क्रम-বৰ্ষমান শক্তি ও সম্পদে সমূভ হইয়৷ ইংলভের বছুভাবে দাভাইতে পারে তবেই পুৰিবীর ভবিয়ং ইতিহাদের परिवाधनाए देश्लाका अञ्चल एटेटल शास्त्र । कांत्रकार्य বিটিশ সামাজ্যের মধ্যে রহিল বা বাহিরে পেল সে কৰা এবাৰে অবাধ্য। সামাজ্যভূঞ আহাৰ্যত অপেকা সাত্রাকাবহিত্ব আমেরিকাই পত যুদ্ধে ইংলভের অধিকতর मिश्रण कविशाद । भक्न विश्वपृष्ट हेश्म्र ७ वर्षभाव । हाहे সাহস্দুরন্ট এবং সর্কভোদুখী প্রচেষ্টা। ভারতবর্ষের প্রভি देश्मा के मुख्य मौजि बहे मृत्रमृष्टि ध भारत्मत्रहे कम । देश আক্ষিক উদায়ভাও নয় বা ভাষার চুর্বলভার পরিচায়কও নর। তবে এইরপ দূরদৃষ্টি ও সাহস ইংলভের বিশেষত। শেষ প্ৰয়ন্ত নিজ শাসনাধীন দেশতে নিঃখেছে শোষণ করিবার চেটা মা করিয়া কালের ইনিড মানিয়া লইয়া অধীন দেশকে अवर यामास्य भूनक्रकीविष्ठ एवेवात अवेक्षण प्राथान मिवात মত দুৱদৃষ্টি, সাহস ও উদারতা অভ কোন সাঝাল্যবাদী কাতির আছে কিনা সম্পেছ।

এ বুগসভিক্ষণে ভারতবর্ষেও আন সাহস, উৎসাহ ও
দূরদৃষ্টি প্রয়োজন । এই অপ্র্র প্রয়োগের সন্তাবহার ভাহাকে
করিভেই হইবে। কালের ইলিভ আন ভাহার অহুক্ল। এ
ইলিভে সাজা না দিলে নে আন্থহভ্যার পাপ করিবে। বে আন
অন্তঃকলহে ইন্দ্র যোগাইরা বাধা স্ট্রই করিবে লে দেশের শত্রু।
সভানে অবস্থানসময়ে ববিধার ভলি প্রায়ই বাহিত্রে ভাটাই-

ভাম। এইরূপে চারিট রবিবার কেখিল, অল্পকোর্চ, বিট্রাল ও বাইটনে কাটাই। এওলি সঙ্গের অনভিদূরবর্তী সুলর ছোট ছোট শহর। সঙ্গের অগাব ক্ষমসমূল হইতে এখানে আসিলা বেন বৈ পাওয়া যায়।

क्षि च ७ जबारकार्ड करलब-धवाम नश्य । नश्य हरेके लखन হইতে ঘৰাক্ৰমে প্ৰায় ৬০ ও ৫০ মাইল দুৱে অবস্থিত। রাভার বাটে ছাত্ৰই বেশী নকরে পড়ে। কলেকছলি বাগুবিকই দর্শনীয় বটে। সেগুলির ভিতরে হৈ চৈ কম-সভা সভাই विमानकात छेशक निरक्छन । शक्राक्त त्मेकाविश्दा ৰুও আগ্ৰহ। শীৰ্ণকাষা ক্যান্নগী কেছি ছেৱ মধ্য দিয়া প্ৰবা-हिल। महीके अभक्षतात काशीवारहेत मनात कर्दक। नवा नया (भीकात क्षिता देशांखर बाळतन वाक (बाल। महीलाब ৪া৫ মাইল অভিক্রেম করিলে 'এয়াও চেপ্তার' নামক স্থানে 'রেডলারন' হোটেল ও বাররন্স লব্দে পৌছানো বার। লৰ্ড বায়ৱন নাকি এই বাছীতে থাকিতেন এবং এই হোটেলের পানীয় প্রক করিতেন। বাজীটির বছয়ান অবিবালিনী এক তরুণীর সহিত আলাপ করিলাম। তিনি এ বিষয়ে ধুব সচেতন বলিয়া বোৰ হইল না। লর্ড বায়ব্রম এ বাছীতে থাকিতেম কিনা বিজ্ঞাস। করার ভিনি শ্বিত হাজে সংক্ষেপে উত্তর क्रिलिभ, '(मारक राम ।' अनुरक्ष कर्च ऋगा है खरकत वाक्षी। অংশে পাশে অনবদতি বুব বেশী নয়! বাভার ছ'পাশে কিছ किश्ल भाष्या प्रमा । अञ्चरकार्ष्टंड अक भारन हिम्म मही चन्द्र भार्म (हदछरस्य नभी । (हदछरस्य काम स्टेट्फ (सहि। টেম্স ন্ধীর এবান্কার গ্রু ন্মনান্দকর : নাভিপ্রশন্ত ছচ্ছ-भाजिका अदर मजीवनम्याः नवीक्षर भारत यक यक कार पर । ুনদীতে বহু বাচের নৌকা: নদীর পাছ দিয়া ভ্রমণ খুব লোভ-भीव। नरदाव मर्या दिधवनकारण मिली शक्षेत्र, अकिर शक्षेत्र প্রভৃতি মনের ঔংগুক্য বাছার। এবানকার বিব্যাত বছলিয়ন लाहेरबादी अक्षेत्र (इनदीय आधरण निर्मिष्ठ एयः। वर्षमारम আমেরিকার রক্-কেলার ফাউভেছনের অর্বপাহায্যে লাইত্রেরী-গুছের আয়তন বাভান হইতেছে। পুতক্পকালের বর্তমান হার অপরিবভিত বাকিলে আগামী পাঁচ শত,বংসরে পুত্তক প্রকাশিত হইবে তাহা রাবিবার পক্ষে এই বহিত অংশ (extension) প্রাপ্ত। আমার লওনে অবস্থান কালে ৱাৰী স্বয়ং এই বাহিত অংশের উল্লোধন করেন। তথ্য ছাত্রগণ সেশ্বপীয়রের একট নাটক অভিনয় করে।

এই প্রাচীন বিশ্ববিভালর ছবঁট খ্রী-শিক্ষা বিষয়ে ভাছাদেব গোঁভামি আজও সম্পূর্ণ ছাভিতে পারে নাই। পূর্ব্বে খ্রী-লোকের বিভার অধিকার ছিল না। এখন স্ত্রীলোকদিগকে পভিতে দেওরা হয় এবং পরীক্ষা দিতেও দেওরা হয়। কিছ পাল করিলে ভাছাদিগকে অনেক বিষয়ে উপাধি দেওরা হয় না; একটি ভিপ্লোরা দিয়াই বিদার করা হয়। বিভার অধিকায় হীকৃত হইলেও ভিপ্রির অধিকার আজও বীকৃত হয় নাই। বিট্রল লণ্ডন হইতে ১১৬ মাইল। বাইতে তিন খণ্ট। লাগে। বোমাবিজ্ঞত অনেক বাজীর অংগাবশেষ এখানে দেবিলাম। ভারতবাসীর নিকট বিট্রল তীর্বস্তুপ। এবানে রামনোহ্ম রায়ের সমাবি-মন্দির বিদ্যানা।

একন নদীর তীরে ছোট ছোট পাহাড়মর ব্রিপ্টপ শহরট দেবিতে বনোরম। পাহাড়ের গারে ও উপরে গৃহতাক। শহরের বাহিরে একট গুলানো লেডু প্রকৃতির লীলানিকেতনের শোভা বর্জন করিতেছে। ছুইট শ্লামল পাহাড়ের উচ্চ শৃক্ষকে সংযোগ করিয়াছে এই সেডু। নীচে পর্য্যভয়ের মধ্য দিরা একন নদী প্রবাহিত। তাহার পাড় দিরা রেদ লাইন চলিরা গিরাছে। পোলের উপর দিরা আঁকিয়া বাঁকিয়া রেলগাড়ীকে চলিতে দেবিরা বক্তগতি অকগরের কবা মনে

वामरमास्ट्रान्य समाविधानके सहरवत मरवा सर्वार्यका মনোরম অংশে অব্ভিত। একট অর্থরভাকার পাহাত। শিৰৱ হইতে পাদদেশ প্ৰান্ত ঢালু প্ৰতিগালে সমাধি-ৰন্দিবের শ্রেম্ব। পাহাভট খাড়া নয়। ধীরে বীরে উচু হুইয়া উঠিয়াছে। বিশ্বরে অনেকটা সমতল-ভূমি। ঢালু অংশ সমাৰিতে সমাৰিতে ভতি হইৱা গিৱাছে। এবন শিবরঃ সমতল অংশ ব্যবহৃত ভুইতেছে: রাম্মোহনের স্মারি भाराएक भारताय- कठेक विश्व कृकिश कारेटन। यक्तिरवर विकि जात्रश्रीश्वरायत निक्षे प्रतिष्ठित । **अर्यामा**ख प्रपतिष्ठित ছবির বান্তব যুক্তি দৃষ্টপথে পভিত হয়। রামযোহনের স্বত্য হয় ১৮৩৩ এটাকে। তংপুৰ্ববস্থী কোন সমাধি দেবিলাম না। मिन विविधा ३० है कार्षिक, २१८म **क्षिक्रा** । अनवास-चर्रा शक्तिय (श्रिया वर्षद्वाकात शर्वाख्या भ्रमादिमस्ति - . শ্ৰেণীর চুড়ার সর্গক্তিরণ ঢালিভেছিল। কত নরনারী ভাতাদের প্রিয়জনের সমাধিপার্থে বসিরা দীর্ঘনিংখাস ত্যাগ করিতেছে। কেছ সমাবিমন্দিরের গাত্র সন্মাজিত করিয়া পুস্পত্তবকে माकारेटिए । भारास्त्र भारतिम (माक्स्मान्य नारे। भ সমাবিভলি শতাবিক বৰ্ষের। শিৰুরে লোকসমাসম সর্বাপেকা বেৰী। সেৰানকার সমাধিগুলি আধুনিক। অপরাত্র-সুব্যের ক্ষৰিণীয়মান কিরণ-দেখার প্রাকৃতিক শোভার অপূর্ব পরিবেশে, পর্বভগাত্রত্ব সহস্রাধিক সমাধিশ্রেণীর মধ্যে শত শভ নৱনারীর নীরব আফুতি যখন জীবন ও মরণের মধ্যে দেড় নিশ্বাণ করিভেছিল, ভখন এক অভিনৰ অভ্ভৃতিতে হাদয় প্রিপূর্ণ হইরা উঠিল। বেদনাকাতর চিত্তেই সে দিন লওনে কিরিয়াছিলাম।

বিষ্টলে ছুইট ভদ্ৰলোকের আচরণ বেশ ধনে পঞ্চ। সেবিন পূর্বাছে আকাশ মেখাছর ছিল। রাভার লোক ধূব কন।
ছনৈক পথচারীর কাছে রাভার কথা ছিল্লানা করিবা বুলছ
সেভূর বিকে চলিরাছি। থানিক দূর গিরা রাভা ছিল্লানা করিবার লোক আর পাইভেছি না। এবন সমরে একট পথিক

সেই পৰে আসিরা উপস্থিত। তাহাকে রাভার কথা বিজ্ঞান করিলান। তিনি বলিলেন—"আমি মুছের সময় জনক দেশে গিরাছি। কলিকাভাও ছিলান! বিদেশে বিজ্ঞানা করিরা করিরা জনানা পথ চলার অমুবিবা আমার তালই জানা আছে। আমার সঙ্গে আমুন।" আমার আপতি সত্তেও ভদ্রলোক জনক দূর পর্যান্ত আমাকে রাভা দেখাইয়া বিলেন। শেষে একট পারে চলা পথের উপর বাছাইয়া বলিলেন—"এই পথ ঘুরিয়া ঘুরিয়া কেছু পর্যান্ত উঠিয়াছে। আপনি এই পথ ছাভিবেন না। তাহা হইলেই যথাছানে পৌছাইতে পারিবেন। সেছু কাছেই।" পাহাকটির নাম ক্লিকটন। আকা বীকা পাহান্তের রাভার খানিকদূর উঠিয়া আবার সাহান্ত্যের প্রভান বোধ করিলাম। সহসা একট ম্বকের সহিত সাজাং হবল। রাভা ক্লিজাস। করিভেই ব্রকট আমাকে প্রশ্ন করিল—"আপনি ভারতীর ?"

আমি—"ইনা"

যুবক- আমি যুদ্ধের সময় ভারতবংগ ছিলাম। কিছুদিন করাচীতে কাটাইয়াছি।

আমি- করাচী ভাষার সুক্তরতম সংশের নাম আপনাদের শহর হউতেই বার করিয়াছে দেখিতেছি।

মূৰক – ইাণ, করাচীতে ক্লিকটনের সন্দ্রাসকত সভাই যনেক্ষম।

স্বকটি আমাকে দেড়ুত খুব নিকট পর্যান্ত আগাইয়া দিল। ভারপর আর কাছাতো দাছায়।বিনাই দেড় প্রান্ত পিয়াছিলাম।

লভনে পৌছিল একমাস বেশ ভাল আবহাওলা পাইলাছিলাম। গোটা অক্টোবর মাসটাই বুব রৌল ছিল। ক্ষাশা, মেথ বা বৃষ্টি মোটেই ছিল না : ভাপ সাধারণতঃ ১৫০ হইতে ৫৫০ ভিন্নী পর্যান্ত উঠা-নামা করিত। নবেশরের প্রথমে রৌজ কমিরা আসল। কুরাশা, মেথ ও বৃষ্টি দেখা দিল। ভাপ কমিরা চ০০ ভিত্রীতে নামিল; ক্ষমও বা আরও নীচে সাইতেছিল। দিন ছোট হইলা আসল। আমার কামও তখন শেষ হইলা আসিলাছে। আমেরিকা যাত্রার মার প্রথম্ভ ইইলাছি। কবে বিমানে ছান ছুটবে সেই সংবাদের প্রতীক্ষা করিতেছি। বারাণ আবহাওয়া এবং ভবিভং আনিক্রতার মধ্যে মন বৃষ্ প্রকৃত্র নাই। এই অবহায় এক রবিবারে ত্রাইটন্ দর্শনে বহির্গত হইলাম। ত্রাইটন্ গঙ্কা হইতে ৫০ মাইল দক্ষিণে। বেলে ঘাইতে এক ঘণ্টা লাগে।

ত্রাইটন নগর আটলান্টিক মহাসাগরের তীরে অবছিত।
সন্ত্রাট চতুর্ব কর্জ সমুদ্রবাসের জন্ত এবানে একটি প্রাসাদ নির্দ্ধান
করান। প্রাসাদট ১৯১৪-১৮ প্রীষ্টান্থের বুছে ভারতীর সৈচদের
হাসপাতালরপে ব্যবহৃত হয়। ভারতীর সৈচদের প্রতি এই
শহরের লোকেরা যে সহ্যবহার করিরাছিলেন ডক্ষণ কৃতজ্ঞতার
চিত্ত্বরূপ পাতিরালার মহারাজ প্রাসাদ্টির দক্ষিণে একটি স্থলর
বিলানস্কুত্ব কটক তৈরী ক্রুইরা দেন। সেট আজিও হান্টির

শোভা বৰ্ণন করিতেছে। ত্রাইটনের নাগরিকগণও ভারতীয় লৈচগণের প্রতি কৃতজ্ঞতার চিহ্নস্বরণ একট খৃতিভয় নির্থীণ করেন। শুয়ুট খুণুট। শহর হুইতে দূরে।

এবানে সমুদ্রের তীরে বালি নাই! তীর অর্থণত। ছোট
বন্ধ নানারণ স্কৃতিত ভটি: প্রশত বাঁবানো রাভা তীর
বরিয়া বরাবর চলিরা সিয়াছে। বেড়াইবার বেশ সুবিবা।
ছুইট বন্ধ বন্ধ ভাট বা 'পায়ার' আছে; বেশ সুমর। কাঠের
মঞ্চ তীর ছুইতে সমুদ্রের মব্যে অনেক দূর পর্যান্ধ সিয়াছে।
তার উপরে বন্ধ বন্ধ কাঠের ধর ও অঞ্চন। বোলা আলিনার
বেড়াইতে ব্ব আল লাগে। বসিবার ক্ষ চেয়ার পাভা আছে।
বসিলে তিন পেনি ভাড়া দিতে হয়। একট বরে বাইবার
স্থ-বন্ধোবন্ধ আছে। বন্ধ হলবরে সমুদ্র দেখিতে দেবিতে
আহার চলে। অঞানা বরে আমোদ-প্রমোদের নানারপ
বন্ধোবন্ধ। সর্ব্ধদাই উৎসব চলিতেছে। বেশ সেক্রের
ভিন্ন সমুদ্রের মন্ত টেট নাই। তীরের কাছে হংসশ্রের
গাভার কাটিভেছে। বেড়াইবার ক্ষনা ছোট ছোট নৌকাও
ভাড়া পাওয়া যায়:

সেইদিন সকালে আকাশ মেখাছের ছিল। বৈকালে বেশ রোদ উঠিল। 'পায়ারে'র উপর দাঁড়াইরা দিগন্তবিভূত সমুদ্র দেখিতেছি। অপরাহ্ন ভূষ্য আকাশের গায়ে ছেলিয়া পড়িয়াছে। কবি কল্পনা যেন চোধের সামনে মুগ্ত হুইয়া উঠিয়াছে---

> "ৰাগিতেছে কল তৱল জনল গলিয়া পড়িছে জন্বৰ-ভল দিক্বৰু যেন ছল ছল আঁবি জঞ্জতে।"

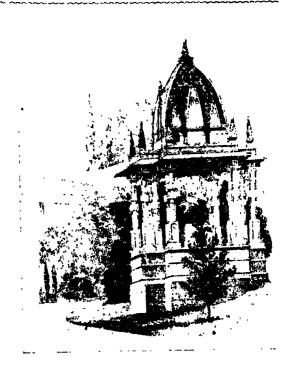
দিগজের পরপারে এই উপ্রিম্পর মহাসমূল পাছি দিয়া শীঘ্রই আমাকে আমেরিকায় যাইতে হইবে। কেবলই মনে হইতেছে

> কি আছে হোগায়—চলেছি কিসের অবেষণে ?

কিছ "সংশয়ময় খননীল নীর" নিরুতর।

ভপন নীরবে দ্রে পশ্চিমে গগনকোপে ডুবিতেছেন। রবীজনাথের "নিজকেশ যাত্রা" কবিভাট মনে মনে আর্ডি ক্রিতে ক্রিতে ষ্টেশনাভিয়ুবে কিরিলাম।

তরা মতেখর (১) রবিবার আইটন যাই। ১৪ই নভেখর লভন হইতে আমেরিকা যাত্রা করি। এই কয়দিনে আব-হাওরার অবছা ক্রমশংই বারাণ হইল। দীত বাছিল। রৌফ অবল্পুর হইল। কুয়াশা ও মেবে সর্বাদাই আকাশ আছেল। মাবে মাবে ইণ ইণ করিয়া বৃষ্টি গড়ে।



जाबरमाञ्च बारस्य प्रमायि-भक्तित, यहेश

লোকজন ক্ৰভ কাজ সাৱিয়া গৃহে ফিরিয়া আগুন পোহায়। পাক কনশুনা। আফিসের পর রাভাও প্রায় জনশুন্য ৷ সাভ আট ভারিবের মধ্যে আমার কাল শেষ হইয়া গেল। তথন এই আবহাওয়ার মনের এফুলতা রাখা केरेकर इंटेज। ১०३ नत्यक्ष द्विताद कि छैपारन त्रणाम। কিছা দে পুরুষ্য উভান আৰু রিক্ত। গাছে পাতা নাই, ফুল নাই। বৃষ্টিপ্লাবিভ হওয়ায় খালে ঢাকা মাঠওলিবও আর সে মাট। সভাৰের অবিশ্রাম কন্মোতের মধ্যেও আর স্কীবতা নাই বলিয়া মনে হয়। যেন যন্ত্ৰ-চালিতের মত পৰাই আপিসে যার আবার আপিদের কার্যা অত্তে দ্রুত সূত্রে ফেরে। মাঝে। হাবে হবে হইত চিভিয়াবানায় গিয়া শীবৰ্ষৰ গভিবিৰি ও সকীবভা দেৰিয়া আসি। এই সময় প্ৰায়ই নালন্যাল আট গ্যালারীতে যাইভাম। এই গৃহট সন্ধীবতা ও আনন্দের নিত্য-লীলাভূমি; শীত ৰতুর ৰজতা আনৱনকারী প্রভাবের অভীত। প্রবেশমাত মনের সমস্ত প্লানি গুর হইয়া যায় ! সম্ঞ মানব-ক্ৰাভিত্ৰ পূৰ ও ছ:ৰ, প্ৰেম ও ঘুণা, দম্ভ ও বিনয়, বীৱন্ধ ও জীকুতা, আঞ্তি ও প্ৰত্যাৰ্যান, দয়া ও ছিংসা প্ৰভৃতি বাৰতীয় ভাব ও রস শিল্পিপের প্রভিভায় যেন পরিপূর্ণ মহিমার এই ধ্যত বিভাক্তমান।

অর্থ ও অনর্থ

শ্রীনলিনীকুমার ভদ্র

বিষেধ্য অনতিকাল পৰে যশোগ ধৰন বিনাদোৰে সামীসৃহ বেকে বিভাছিত হ'ল ভবন পাপের পিছিলে পৰে পা
বাভাষার প্রচ্ব প্রলোভন ভার সামনে এসে উপস্থিত হয়েছিল।
কিন্তু বশোদা সকল প্রলোভন জয় করে মুড়াকরি প্রামে পিয়ে
প্রভ্যাক্ষন গোষামীর নিকট দীকা প্রহণ করলে। প্রথম
যৌবনেই পে ঘোরিনী-বেশ বারণ করলে। গলায় কটা, পরণে
বানবৃতি, ললাটে ও নাসিকায় চলনের অলকাভিলকা--- এই
ভক্ত বৈক্ষী বৈক্ষী যেদিন য়ামচক্রপুরের কাছারীতে এসে হাজির
হ'ল সেদিন ভার সহতে কাছারীর লোকদের কৌতুহলের আর
অন্ধ হিল না।

णाव नव त्कर्ट (मन मोर्कान । बोरव बीरव मार्यभाव ৰালের পাছে কেমন করে যশোধার আশ্রমট গছে উঠল সে चात्रक कवा-चात्र छ। ना कानरमध चाननारमत कारना कि (वह । किन काबाबीत प्रक्रिय पिक पिरम (य त्यार्ठ। वाश्वाहे। बद्धायत स्थम। नहीत छो। जिस्टा हाम निरम्ब अपे निरम स्थ একবার ঘশোধার আগ্রমে সিয়ে হাজির হন তা হলে চডুম্পার্শের প্রাকৃতিক পরিবেশ আগনার যনে এক অভিনব অগুভূতির मकाब कबार । यान राव भागूर्व अक नृजन कराज अरम ছাজির হরেছেন-জাপনাদের পরিচিত পৃথিবীর সঞ্চে তার কত লোকালবের কোন কোলাহল সেই নিভুত নিকেতনে এদে পৌছর না। যে টগার ওপর আশ্রমট অবস্থিত ভার পাদদেশ বৌভ করে মাবলার বালের রক্তভত ক্ষীণ क्रमवाना विनाहे कामन श्रासदान श्रास्थान पिट्य वट्य हरनाय---টলার শীব্দেশ থেকে ভাকালে মনে হয়, পুৰিবার বুকের ওপর ক্ষরির পাড় দেওয়া একবানি সবুক মবমসের সাভি বিহানে।। बाबनात बान निरत बिर्लाए स्वयात गरम । निःभीय भीन আকালের নীচে যেখনার দিগভগ্রসারিত মসীবরণ বারিরালির . अमस विस्ताद मनत्क कृष्ट्याद नशौ (बर्क पृद्ध हिंदन निर्ध यांव, ছদ্বে ভাগার অসীমের আভাস।

লোকালয়ের বাইরে এই পারিপার্থিকের মধ্যে থেকে থেকে বলোকার প্রকৃতিও গিরেছিল বদদে; সে বাল করত এক স্টেইটা ক্ষণতে আপনার চতুন্দার্দে এক বিরাট শৃঞ্ভার পরিষ্ঠিত রচনা করে। প্রথবা ভাকে রীভিষ্ঠ জয় করত। ভার তথেকাকনারিত গৌরবর্ণ অনেকের চোব বলসে দিরেছিল; ভার প্রদীও ছই চকুর অলম্ব দৃষ্টিকে ভারা সহ্য করতে পারে নি। সেই ভীর দৃষ্টিতে ছিল বিভিত ভোগ-শীবনের বিভ্লতার ভীর আলা।

কিন্ত যেরেমহলে তার বাতিরের অন্ত হিল না। কাহারীর প্রত্যেক পরিবারের অন্ত:পুরে তার অবাব গতারাত। পাহাডের পারাব ওছাছিত বরণাবারার যত তার কঠোর অন্তরেও সুবের অমিরবারা ছিল স্কিত। হশোদার মূবে আসমনী গান আর কীর্ত্তন গান ভানে গাঁরের মেথেরা তবর হরে যেতেন, অঞ্চ সম্বরণ করতে পারতেন না।

বাইবে থেকে ধেবলে অবঞ্চ মনে হর যে, যশোদার জগতে ধরামারা ইত্যাদি প্রক্রার র্তির বালাই নেই। তার রুক্ষর্তি জগরের ভীতিরই উদ্রেক করে, কিন্তু প্রতি সভাার বর্ধন সে আশ্রমে প্রতিন্তিত বালগোপালের মৃত্তিটির সামনে আর্ভি করে, ভোগ দের ভবন পে যেন সম্পূর্ণ আলাদা মাপুষ হয়ে ওঠে। তার মুবের কঠিন রেবা ছলো যেন আ্চম্কা মিগিয়ে বায়, সারা মুববানি স্লেছে মমভার কর্পায় মেছ্র হয়ে ওঠে। সেই সময় তার আ্লু-বিশ্বতি তুচে যায়। ভার বুকের ভেতর কেপে উঠে চিরস্কনী মা। ঐ পাধরের মৃত্তিটকে অবলথন করেই সে মাতৃত্বের অপরিসীম বুডুকাকে প্রশমিত করবার প্রয়া পায়ণ

এমনিবারা যশোদার দিনগুলো কেটে যাচ্চিত্র একথেরে ভাবে, এমন সময় দেবা দিলে পকাশের মধন্তর । ভানাহারে ভার রোগে ভূগে লোকেরা মরতে লাগল। যশোদার পাধাণ-বুকে যে এত সেহবারা পুঞারিত ছিল ভার পরিচর পেরে স্বাই বিশ্বিত হ'ল।

ভক্ম মঙলের বিৰবা বৌট ধৰ্ম বাধিতে ভূগে ভূগে মূলুপ্ৰযান্ত্ৰী হ'ল ভবন মলোলা আহার-নিপ্রা বাদ দিরে দিনরাভ ভার দেবা-ভুজ্রয়া করতে লাগল। কিন্তু প্রাণপণ চেটা করেও ভাকে দে বাঁচাতে পারদে না। মরবার সময় হকুমের বৌ ভার একমাত্র অনাব ছেলেটকে মুলোলার হাতে সঁপে দিরে বললে, "বোইমী দিদি, আমি চলে বান্ধি—কিন্তু এটাকে ভোমার হাতেই দিরে গেলাম। বুলোহা ভোমার গোপালকে ভূমি দেবো।"

ধ্কুমের বে) মালা গেলে যশোদা গোপালকে কোলে করে আশ্রমে কিরে এল।

রক্ত-মাংসের গোণালের আগমনে ঘণোদার আশ্রমে পাধরের গোণালের সেবায়প্রের ক্রট ছতে লাগল। এই জীবন্ত গোণালটই অনুক্ষণ তার কোল ভূড়ে রইল। এতদিন পরে যশোদা মর্গ্রে উপলব্ধি করলে যে, পাধরের ঠাত্রের সেবার সবটা মন ভরে না, যদিও তার পেট ভরাতে ভিজালম্ব ক্রেক্টাই যথেই। কিছ যে রক্ত-মাংসের ক্রে শিশুট তার সমস্ভ অন্তর্বেক অনির্বাচনীর মানুর্ব্যে পূর্ণ করে ভূলেতে তার উদরপৃত্তি করতে ছলে ভবু ভিজার্ঘ্রির উপর নির্ভর করণে চলবে মা। অভ ব্যবহার মরকার। কিছ কি করা যার।

অনেক তেবে চিতে বলোগা ছিত্ৰ কললে বে, সে কাহালির

শারেবের বাসার চাকরি নেবে। একবিদ দকালবেলা ুদে নাৰেবপিয়ীয় কাছে পিয়ে হাজিয় হ'ল। নাম্বেবগিয়ী ভো ভাকে ल्टब यहांबुनी, बनालम-"अटना, वाहेबी विवि वन, क्रिही গোপালের গান গাও।" পূকা আসলপ্রার। শরভের এক কালি সোনালী রোদ উঠানের একপার্যন্থ পেরারা গাছের माबाद यन त्माना माबिदा पिराहर । গাছের ছারার यम् इ'बनाए क्यावाडा इक्ति। দূৱে মাৰ্লার বালের পেছনে মেঘনার কালো বারিরাশির অনন্ত প্রসার নক্ষে পড়ে। সুনীল আকাশে শেফালি সুগের মত শাদা মেখওলো **स्थिनात वृत्कत छेलत क्रिय छलादात छएक्टम लाक्ट्रिक्टिश** মাৰ্লার বালের উপর দিয়ে ভেসে চলেছে নীল পাল ভোলা একট ছৈওয়ালা নৌক।। মাবি পিছনে হাল ধরে বলে ভার-चरत जाविशांभी गान जुर्फ पिरश्रात । गारमत करती कनि मारबन-গিন্নীর কানে ভেগে এল---

> "মেখনা নদীর ঐ পারে খানা নাছিরনগরে…"

— ভনে নামেবগিলীর বুকের ভেতরটা যেন কেমন করে উঠল, "মেঘনা নদার ঐপারে, বানা নাছিরনগরেই" যে ভার কন্যার খন্তরবাদী ৷

নারেবগিরীর অপ্রোবে কণ্ঠের সবচুক্ মাধুর্ব্য চেলে দিয়ে যশোদা গাইতে ক্রুকরলে—

"ওন একরাক বপনেতে আক দেবা দিয়ে গোপাল---

গোণাল পৰ্যান্ত বলেই যশোদা খেনে গেল···ভার নিরুদ্ধ
আবেগ অশ্রুগাবনের মধ্যে মুক্তি পেল—ভার গোণাল যে
আৰু ভিন দিন যাবং আধুপেটা খেরে আছে !

নায়েবগিল্লী অবাক—সমবেধনার হুরে বললেন— "কি হ'ল বোষ্টমী দিদি, ভোমার আবার ছঃব কিসের, মাও চোব মোছো —ছটো বন্মকথা শোমাও দিকি।"

ষলোদা আঁচলের বুঁটে চোৰ মুছে বললে—"না দিছি, বশ্বকৰা শোনাবার মত অবছা এবন আমার ময়—আমার পোণাল আৰু অভূক্ত। আছো দিদি, আমাকে তোমাদের বাজীতে চাক্রাই রাধবে—মাইনে যা ধুনী দিয়ো—গোপালকে যে আমি ছ'বেলা পেটভারে ধেতে দিতে পারি নে।"

নারেবসিগ্রীর মুখে রা নেই। যশোদা বোইমী তাঁর কাছে
চাকরিপ্রাথিনী হয়ে এসেছে—সেই যশোদা জীবনে যে
ক্রমণ্ড কারও কাছে হাত পাতে নি।

শেষ পর্যন্ত নামেবগিনী রাজী হণেন। সবেতনে বশোদা নামেববাড়ীতে কাজে নিযুক্ত হ'ল। কল তোলা বাসম নাজা কাপড় কাচা—এ সমস্ত টুকিটাকি কাজের ভার পড়ল ভার ওপর।

এদিকে মৃতদ প্ররিবেশে এগে বীরে বীরে বশোদার মুদোজগভেও বটন বিরাট পরিবর্তম। এদের ঐপর্যোর ছটা, বধুবের বেশত্বার বাহার, অলহারের প্রাচ্ব্য তার চোধ বলসে দিলে। দিজের নারী-সভা বেদ এক দুত্দ তাংপর্ব্যে রভিত হরে তার কাছে বেখা দিলে। এতদিন পরে তার মনে হ'ল সংসারে তার যা পাঞ্চমা, দে তার কিছুই পার নি। সারা জীবন দে তবু বহিত হরেই এসেছে। ঐ বিভ্তশালী অভিনাত পরিবারের ঐথব্যসভার অনবরত তার মনকে প্রস্কুর করতে লাগল। তার সর্বস্থবহিত জীবনের রিভ্ততা অস্কুল তার মনকে পিড়া দিতে লাগল। অতাত বেদনার সহিত তার মনে পড়ল—বদী পরিবারে তার বিরে হরেছিল, কিছ ঐবর্ব্যের পানপার তার ওঠের সামনে আসবার সলে সক্রেই বেদ কার অভিশাপে দুরে সরে গেল। একট স্বেধ্বর্ষপূর্ণ শেহনীভের মধ্যে কেন তার ঠাই হ'ল মা। তার

ক্রমে অর্থের প্রতি ক্রাল যশোগার উৎকট লোহ, ভার প্রমাণ পাওরা দেল ঘণন ভার হাতে প্রথম মাইনের টাকা ক্রমট এল সেদিন। বাছীতে এসে সে টাকা ক্রমটকে বে ক্তবার নেকে চেকে টুংটাং করে বাজিরে দেশতে লাগল ভার আর অন্ত নেই, বার বার ব্কের উপর চেপে বরে সেওলোর ল্পার্থির সে অভ্তব ক্রতে লাগল; ভার পর এক টুকরো কাপড় দিরে মুক্তে থরের বুঁটির মধ্যে সূটো করে ভাতে রেপে দিলে।

হত্তনপরিত্যক্তা যশোদা আবার গোণালকে কেন্দ্র করে বর-সংসারের, নীয়-রচনার হুপ্র দেশতে লাগল। তার হাতে প্রচুর চীকা হয়, তা বহু হলে গোণালকে বিরে করিছে সে বরে আনবে টুকটুকে রাঙা বৌ, তার সর্কান্ধ দেবে সে সোনার গরনার মুড়ে। তারনি ভাবে চলল তার দিবা-হপ্রের জালবোনা। তারকট সংসারের সে হবে সর্কায়ী কর্ত্তী। ভার নীয়রচনার আকাজনা ভবিষাতে সার্থক ও সকল হয়ে উঠবে।

যশোদাকে পেরে বসল সক্ষের মোহে—প্রাণ পেলেও লে ঐ টাকা থেকে পাই পরসাট খরচ করবে না এই হ'ল ভার পন। গোপালের কর্তেই সে নারেববাড়ীতে চাকরি নিরেছিল।, কিছু গোপালের ভবিস্ততের কবা ভাবতে ভাবতে ভার বর্তমান সক্ষে সে হরে উঠল উনাসীন। টাকা জ্মানোর বাভিক্ষ ভার মাধার এমনভাবে চেপে বসল যে প্রাণাছেও সে ভার মাইনের টাকা থেকে একট পরসা বরচ করত না—কলে, আবপেটা বেরেই গোপাল গোকুলে বাড়তে লাগল। এমনি করে লক্ষ্যের চেয়ে উপলক্ষই যশোদার কাছে বড় হরে উঠল।

এমনি ভাবে কাটল করেক মাস। যশোদার হাতে জমল টাকা আিলেক। এবন এই টাকাকে কি ভাবে বাঢ়াগে। বার সেই হ'ল ভার বিষক ভিছা। কেউ কেউ খনে টাকা বাটাবোর প্রামর্শ দিলে—কিড লে টাকা কবে পাওয়া যাবে ভাষ কোনো হিবভা নেই স্তরাং প্রভাবটা ভরে মনঃপৃত হ'ল না। সে শুবু ভাবতে লাগল, এমন কোন উপার বহি বাকত বাতে রাভারাতি অচেল টাকার মালিক হওরা বার।...

যশোদার একাছ মনের প্রার্থনা ভগবান বোর করি, ভনলেন। হঠাং কাছারীতে গটারীর টকিট বিক্রীর হিছিক শঙ্গে গেল। কাছারীর করেকজন ছোকরা ত্রিপুরা লটারীর টকিট এনে ধনী গরীব সবাকারই কাছে বিক্রী করতে লাগল। বে যার সাব্যয়ত টকিট কিনতে লাগল।

যশোধা ধৰ্ম গুনলে ধে বরাতে বাকলে এই লটারীর পোলতে সে লাব টাকার প্রয়ন্ত মালিক হরে যেতে পারে তবন সেও টিকিট কিনলে—একবানা হ'বানা নর হ'টাকা করে পনেরবানা ত্রিশ টাকার টিকিট। এই কর মাস হাড়ভাঙা বাটুনি বেটে যা সে কমিয়েছিল, তার বুকের পাঁকরের মত সেই ত্রিশটি টাকা বরচ করে সে কিনলে পনেরবানি ছোট ছোল। কাগজের টুকরো। সেওলো সে সেই বাঁশের বুঁটির মধ্যেই স্বত্বে বেবে দিলে।

ভারপর প্রভি রাত্রে নিকের নিভ্ত কুটরে হেঁড়া কাঁধার ভয়ে ভয়ে যশোদা লাব টাকার স্থপ্ন দেবতে গাগল।

যাকে পার ভাকেই সে খুঁটিয়ে খুঁটিয়ে লটারীর কথা জিল্লাসা করে। লোকেরা ভাকে নিয়ে একটু মন্ধা করবার প্রলোভন সম্বরণ করতে পারে না, বানিয়ে বানিয়ে ভারা লটারী সম্পর্কিত নানা কাহিনী বলতে সুরু করে। কোথায় কবে কোন পথের ভিখারী সটারীর টিকিট কিনে সম্প্রতি হরেছিল মন্ত্রমুক্তের মত সে কাহিমী শুনতে শুনতে যালোগ একেবারে ভারর হয়ে যায়। ভার ভাবান্তর দেখে গাঁমের লোকেরা ভার মুভন নামকরণ করলে লটারী-বৈফ্বী।

লাৰ টাক। হাতে পেলে যশোদা কি করবে তাই নিষে
কে সময় লাবতে বলে। কিছ কি করবে সে সম্বন্ধে
কোনও সুস্পাই বারণা তার মনে দানা বেঁবে ওঠে না। বানিকক্ষণ চিন্তা করবার পর তার মনের মধ্যে সব বেন তালগোল
পাকিয়ে যায়। মহাসমুদ্রের সামনে বলে তার বিরাটভের
ক্ষা চিন্তা কলে মাহুব বেমন ভাবনার অতলে তলিয়ে যায়,
মশোধার মনের অবস্থাও অনেকটা তেমনিবারা।

এখনি করে কাটল ভিনট মাস। শেখে গটারীর ফল বেরুল, অবিকাংশেরই অদৃষ্টে অটরভা। ভাগ্যবান ছ'এক জনের মামে টিকিট উঠল বটে, কিছ কারুর প্রাপ্তির অফই লাখ ভো দুরের ক্লা, শভের কাছ বেঁষেও গেল না।

यत्नामात्र जिन्ही होकारे करन त्रम ।

লটারীর কল বেরিয়েছে শুনে যশোদা বুলী হরে উঠদ, তার ধ্রুব বিশ্বাস টাকা তার নামে নিশ্চয়ই উঠেছে। হস্তদন্ত হরে দে থে ছোকরাট তার কাছে টিকিট বিক্রী করেছিল তার বাড়ীতে গিয়ে হাজির হ'ল। সামনে তাকে পেরেই জিল্ঞানা করলে— "আমার নামে কত টাকা উঠল ?" হোকরাট প্রথমে ব্যাপারটা

व्राप्त भारतम मि, अन्न कत्राम, "किरमत है।का वाहेमी ?" যশোদা এবার রীভিন্নত চটে গিরে বললে—"কিলের ভাবার ! ভোষার কাছ বেকেই ভো টিকিট কিনলাম গো—সেই যে কি বলে লটরী না কি।" ছেলেটর নিকট এতক্ষণে ব্যাপারটা বোলসা হ'ল। যশোদার লাখ টাকার স্বপ্ন দেখার কথা তার অকানা ছিল না, রুদ দেববার ক্রডে সে বললে---"ভোমার নামে भाव छ।कारे (छ। উঠেছে।" "भाव छ।क। "- आनत्क गत्माम। चाकान काहिएस ही एकात करत छे हेंन । शूनरक रन रघन छै भरह পভেছে--- নিজেকে জার যেন ধরে রাখতে পারছে না। গুলীভরা সুৱে বললে—"ভা টাকাটা কৰন কোখায় পাবো বল না পো।" (ছाकदाक छावरल त्वाडेगोरक निष्य अकट्टे भका करा याक्, वनाम--- वन कि, ही काही अवनश्व एकाशीय शास्त्र चारम नि। সে তো অনেকক্ষণ হ'ল নাথেব বাবুকে দিয়ে এসেছি, ভা ভূমি পাওনি বুবি।" ভূমে যশোদা সেবানে আর মুহূওকালও দাভাল না, একছুটে চলে এল নাম্বে-বাড়ীতে: হাঁপাতে হাঁপাতে নাথেব-মুলায়ের সামনে হাজির হয়ে বললে— "আমার भाव है। का । " नारबवममारे एका एक छन्न । व्यापादयान, कि १ যশোদার মাধাটা কি শেষ পথ্যত খারাপ হয়ে গেল নাকি ৷ তিনি চুপ করে রইলেন, তাকে নীরব দেখে যশোদা আবার বললে--- "সেই যে লটনীর টাকা গো---স্ভু বললে, আপনার कार्ष्य नाकि साभाव है। काहै। शाहिरब्रह्म । अवन है। काश्याना আমায় দিয়ে দিন।" এবার আগল ব্যাপারটা কি তা বুকতে मारश्चमणारश्च चाद राकी दरेश ना, म्हूद इंडोरिय कर: চিত্তা করে তিনি হঠাৎ উচ্চহান্ত করে উঠলেন। দেবে যশোদার মন সন্দেহে পূর্ব ছয়ে উঠল, এ বিষয়ে তার মনে লেশগাত্র সংশয় রইল নাহে, নাহের টাকাটা বাপ করবার মতলবে আছেন। সে মনিব-চাক্রাণী সম্পর্ক ভূগে গিয়ে ইাভ-মুখ ৰি চিয়ে বলে উঠল - "হয়েছে আৰু দাত বের করে হাসতে হবে না, ভালোয় ভালোয় আমার টাকাওলো দিয়ে দাও एवि ।" नारश्य (मर्वाम चाक्का विश्वभा । जिनि वभाक जारक বিদায় করলেন।

কুর মনে যশোদা নিকের বাড়ীর পানে রওনা হ'ল। মনে মনে সে নায়েবের মুঙ্গাত করতে লাগল।

এবন কি করে টাকাটা পাওরা যার তাই হ'ল তার একমাত্র চিন্তা। নারেবমশাই টাকাটা মেরে দিয়েছেন, একবা
ভারতে ভারতে তার মাধা প্রার বিক্ত হবার উপক্রম হ'ল।
নারেব-বাভীর চাকরি সে ছেড়ে ছিলে, নাওরা-বাওয়াও এক
রক্ষ বহু হবার যোগাড়়। যেদিন মন-মেছাছ ভাল থাকত
সেদিন বালগাপালের ভোগ দিত—ভারপর রালা-বাড়া
কয়ত। কিছু প্রারই তার উননে হাড়ি চড়ত না, পাধরের
দেবতার অনৃষ্টে ভোগ ছুটত না—আর একদিন যে সন্তামাত্হারা অনাব শিভাটকে পরম স্নেহে সে নিছের বাড়ীতে
ভাশ্রর দিঙেছিল ভার সেই আদ্যের গ্লেণাদের অনৃষ্টে

ভূটত চূড়াও ছৰ্ভোগ---কৃষীরের আভিনার পড়ে /স ক্ৰার খালার বুঁকত।

বোপাল ষখন ক্ষার আলার আক্লভাবে কাদত তখন
যশোলা তার দিকে কেমন যেন অসহায়ভাবে ক্যাল করে
তাকিরে থাকত। তারপর তাকে কোলে টেনে নিয়ে তার
গারে মাথায় হাত বুলিয়ে বলত—"গোপাল বাপ আয়ার,
কাঁদিসনে—আর ক'টা দিন। লটরীর টাকাটা হাতে এলেই
আর আমাদের পায় কে ? বছ হলে তোকে বিয়ে করাব,
রাঙা বৌ দরে আসবে।" রাঙা বৌরের আখালে গোপালের
ক্ষার যাতনা তিল্যাত্র প্রশমিত হ'ত কিনা কে জানে।

দিনকতকের মধ্যে তার বয়দ যেন দল বংগর বেছে গ্রেল। শেষ পর্যান্ত তার মনে এ বিষয়ে আর দেশমাত্র সংশ্বর রইল না যে, তার পাওনা লাখ টাকা এ জীবনে তার হাতে আদরে না। তার ধর্ম তে। সকল হ'লই মা, বরং অসপ্তবের পত্যালার তার এত করে সঞ্চিত সবওলো টাকা জলে গ্রেল একণা ভাবতে ভাবতে যশোদার মন্তিছের সায়ু-কেলের মধ্যে কি যেন একটা বিশহার হয়ে গেল। ঠিক প্রেল গ্রেছ লাব বেট, কিছ তার চেহারায় আচরনে উভিতে সর্বার্বেল প্রভাবিক স্বস্থ মানুষ্যের কোনো লক্ষণই রইল না। দিন-রাজ লে ভর্মু হাতের আহ্লো ছলে কি হিসাব করে, জার মুখে বিভ বিভ করে আওভার---শলাখ টাকা--এককুছি দশ টাকা আর এককুছি-----

ক্ৰকুড়ি দল টাকার অৰ্থাৎ ত্রিশ টাকার কত ঋণ লাখ টাক। ভাই ভাষতে ভাবতে বোধ কহি সে দিশেহার। হয়ে যেত।

পাপল বাওবকে ভূলে যায়। সে বাদ করে তার কল্পনার জগতে, কিন্তু কঠোর বাঙ্গব সভা যশোদার মনে সদ। জাগ্রত—তার পুকের রক্ত জল করা ত্রিশট টাকা হারানোর হংব তার জীবনের মর্ম্মপুলে বাদ। বেঁবেছে, তার সমন্ত সভাকে বিষিয়ে ভূলেছে।

মাহ্মের ছর্ভাগ্য নিছে কৌতুক করা মাহ্মের চিরন্তন প্রবৃত্তি --এতে মাহ্ম একটা উৎকট উল্লাস অন্তব করে। মহাপ্রথদের কথা আলাদা। কিছু কারো সর্বনাশ হয়েছে ভনলে সাধারণ মাহ্মের মনে প্রথম হভঃট যে অমুপুতি ভাগে সে হছে পুলকামুপুতি। ছংশবেদনার ভরা নিয়েট ভাকে জীবন-নদীতে পাঞ্চি কুমাতে হয়, তাই কারুর ভরাডুবি হতে দেখগেই সে মনে থানিকটা সাধ্বনা লাভ করে।

মালীপাড়ার বা মালী একদিন ছাটে বাচ্ছে, ছঠাং যশোদা বোষ্টমী ভার পথ আগলে কিন্তাস: করলে সেই একই প্রশ্ন-লটারীর টাকাটা কি করে পাওয়া যায়। নামেবকে ধে ঘশোদা সন্দেহ করভ সেটা লোকের মূথে মূথে সারা আমে প্রচারিত হয়ে বিমেছিল। মকা করবার ক্তে বহু বললে— ভাষাও না গো, পেসিডেন্ বাবুর কাছে। ভার কাছে বিরে নালিশ কর, তথন দেখা বাবে নাথেবের কত ব্রদ—টাকা বা দিয়ে তিনি কি করে পার পান।"

যশোদা তেবে দেবলৈ পরামর্শ**টা মুক্তিযুক্ত ঘটে।** মারেবের বিরুদ্ধে নালিশ করবার মতলবে সে সোকা সিবে হাজির হ'ল রুনিয়ন বোডের প্রেলিডেন্ট সুরেশবাধুর কাছে।

নালিশ তনে প্রেসিভেন্ট একটুবানি মুচ্ছি হাসলেন। বছ হুর্ভাবনার পড়ে গেল বশোদা—ভা'বলে টাকাটা ভাগাভাগির ব্যাপারে ইনিও আছেন নাকি। বানিক বাদে প্রেসিভেন্ট বললেন— "তা বোটমী, ভূমি হলে সন্ত্যাসিনী, ভোমার আবার টাকার দরকার কি ? বর না যে টাকাটা ভোমার হাভছাভাই হরে পেছে, ভাভেই বঃ কভি কি ?

আগুনে যেন গুডাগতি পছল। যশোদা গলা একেবারে সগুষে চড়িয়ে গর্ফে উঠল "কি বল্লে আমি সন্নিসী। আমি সন্নিসী হতে যাব কেন? প্রামার বাড়ী-খর নেই—আমার ছেলে নেই। গোপাল বড় হ'লে ভাকে বিয়ে করিয়ে বে আনতে হবে না। সে কি চাট্টবানি কথা। ভাতে কত টাকাব দরকার ভেবে দেখেছ? তুমি সন্নিসী হওনা গো—মা কাঁড়ি কাড়ি টাকা জমিয়ে ভোমরাই ভবু মজা লুটবে—আর—" যশোদা আর কিছু বলভে পারলে না, উত্তেজনায় ধর ধর করে কালতে লাগল।

ষ্ঠাৎ যেন প্রেসিভেন্টের দিবানৃষ্টি খুলে পেল—যশোদার অবচেতন মনের চেফারাটা যেন তিনি সুস্পটক্রপে দেবতে পেলেন, ব্রলেন কলার সর্গলোক রচনা করে যশোদা তার বিভ্ছিত রিক্ত জীবনের বাধাবেদনা ভূলবার জ্বভেপ্রাণণণ প্রয়াস পাছে। তিনি তেবে দেবলেন, যশোদার এখন কেন্ড। তাকে আশাহত করে লাভ নেই। বরং এমন কর্বা ভাকে বলে দেওৱা যাক্ যাতে টাকাটা এক সময় তার হাতে আসবে এই আশা নিয়েই সে দীর্বকাল কাটিয়ে দিতে পারে। বানিক বাদে খুব দরদ ভ্রা স্থরে তিনি বললেন—"বোট্টমী, তোমাকে ওরা ভূল ব্যর দিয়েছে। টাকা ভূমি পেয়েছ বটে, কাগজে ভোমার নামও বেরিয়েছে আমি নিজে দেবেছি, কিন্ত টাকাটা এবনো আসে নি। ভা সাসবে পোট্ট আপিসে ভোমার নামে। তোমাকে ওরা ভূল ব্রিয়েছে। ভোমাকে ছাড়া আর কাউকে ভো টাকা দেবে না।"

ভানে যশোধার মনের ওপর থেকে একটা ছার্ভাবনার বোঝা যেন নেমে গেগা। এক মুহুর্ছেট সে সহজ্ব ও থাভাবিক • ছয়ে উঠল। প্রাবণের আকাশ থেকে বরু দিনের পুঞ্জীকৃত মেঘভার কেটে গিয়ে ছঠাং একদিন যেমন সারাটা আকাশ উজ্জ্প হুর্ঘাকিরণে বাসমল করতে থাকে ভেমনি প্রসন্ত হাস্তে যশোদার সারা মুব্বানি উদ্বাসিত হয়ে উঠল।

এর পর থেকে যশোদার কান্ধ ছ'ল রোম্বই একবার বিকালের দিকে পোন্ট আশিসে ছান্ধিরা দেওয়া। প্রায়-প্রান্তে বাঁশবাদের ভলার ছারানিভ্ত পোন্ট আপিসটতে রোছই বৈকালিক আড্ডা করে, এক একজন করে প্রানের লোকেরা সেবানে এসে কজে। হর—পদ্ধ-গুজুবে সেই নিরালা জারগাট বুবরিত হরে ওঠে। সঙ্যার প্রাকালে পিরন আসে ডাক বাড়ে করে। চিটি বনি অর্ডার ইভ্যাদি লোকেরা পোন্ট আপিস ব্রুক্তেই নিরে বার।

প্রতিদিন বিকালের পড়ত রোদে বাঁলগাছের মগভালের মহন-চিকন পাতাগুলো ব্রন সবুজে সোনার মেলানো
বালরের মত বলমল করতে থাকে তর্বন নিরমিত ভাবে
পোস্ট আশিলে এসে হাজির হুর যশোদা। যতক্ষন চিট্ট মনি
অর্তার ইত্যাদি বিলি হুর ততক্ষন লে ভাকের টেবিলের উপর
বুঁকে পড়ে নিশ্চলভাবে ইাভিরে থাকে—চোখে ভার একাপ্র
প্রস্কুর মুট্ট। যথম এক এক কম মনিঅর্তারের টাকা নের তর্বম
ভার ভোটরগত চোথ ছুট্টো খাপদের মতো গুলে গুঠে, সে
ভাবে এবার ভার পালা—লাব টাকা হাতের মুঠোর মধ্যে
এল বলে। কিছ শেব পর্যন্ত য্বন্ম চিট্ট মনি অর্তার ইত্যাদি
বিলি শেব হরে যার—স্কুর হুর ভাকবর বুর করবার ভোডভোড় তর্বম ভার চোবের সে অ্বাভাবিক দীপ্তি নিবে যার।
ভার মুখে বনিরে আলে হুলাশার কালো হারা।

রোকই সে নিরাশ হর, কিছ তাই বলে হাল ছেছে দের না। নিত্যনির্মিত সময়ে ভাকথরে এসে হাজিরা দেওয়া তার চাই-ই।···

সভ্যার ছারা ভাকবর সংগ্র বাঁশ-বনে ছনিরে এসেছে।
সবেষাত্র পোষ্ট আপিস বছ হ'ল। স্বাই যে যার ঘরে কিরে
গেছে। যশোদা তথনো ঠার বসে আছে পোস্ট আপিসের
বারান্দার পৈঠার উপর। থানিক বাদে সে উঠে গিড়াল, তার
পর ছারাছকার বাঁশবনের ভেতর খানিকক্ষণ অকারণে ঘুরে
বেড়াল—শেষে মার্থলার থালের পাড়ের স্থৃটি পথ বরে
রঙনা হ'ল বরাবর মেখনা নহীর পানে।

সাৱারাত হয় তো সে সক্ষাহীন ভাবে বেবনায় তীরে বিচঁরণ করেই কাটিয়ে দেবে। অসম্ভব অবান্ধবের আশা তার দিনের শান্ধি, রাজের ঘূষ সব কিছুই হরণ করে নিবেছে।

উর্দ্ধির মেখনার কৃষ্ণে বলে স্যারাজ সে হয় ভো স্থপ্প দেশবৈ—লাধ টাকার স্থপ —টাকাওলো তার হাতে এসে পদ্ধা। আর ভার অভাব নেই। দেশতে দেশতে গোণাল বছ হবে উঠল—ঘরে এল রাঙা বৌ। বনজনপরিপূর্ণ শান্তিভরা একট পরিবার—আর যশোদার সেই পরিবারে এক্ছ্র আবিপত্য।

বশোদার রাতের পর রাত ছর তো এমনি করে ছপ্প দেবেই কাটবে, কিন্তু তার কৃষ্টরে ব্যবিক্লিপ্ট ক্লালসার যে শিশুট ক্লার ভয়ে রুতপ্রায় হয়ে বাল গোণালের রৃতির পাশে পাছে গুঁকছে, বাকে কেন্দ্র করে যশোদার এই প্রশ্ননীর রচনা—তার এ রাত ছর তো কাটবে না। চারদিকে য়ৃত্যুপুরীর নিভকতা, বনের ভেতর বেকে ভেসে আগছে একটা পেঁচকের কর্মশ কঠের ভীতিজাগানো চীংকার। খরের ভেতর মিট মিট করে ঘলছে একট মাটর প্রদীপ। সেই ক্ষীণ আলো চারদিকের নিরানক্ষ পরিবেশকে যেন শতগুণে ভ্যাবছ করে ভূলেছে। গোণাল অভি কপ্তে রাভ দেহটাকে টেনে নিয়ে গেল বাল-গোণালের রৃত্তির সামনে। একটা পাণরের বাটতে থানিকটা চালকলা মাধানো ভকনো মুর্গবন্ধুক্ত পদার্থ— যাকে প্রসাদ বললে প্রনাদ কথাটার অপমান করা হয়। ভাতে পোকা কিলবিল করছে।

কবে যে যশোদা বালগোপালকে এই ভোগ দিয়েছিল ভা গবেষণাত্ৰ বিষয়।•••

ষরে এক কণাও ৰাজ্ঞবা শেই।

চার দিনের অভ্জ গোপাল সেই মহাপ্রসাদই গোপ্রাদে গিলতে লাগল।

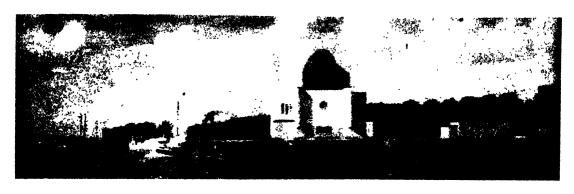
যবনিক!

শ্ৰীমণীশ্ৰ গুপ্ত

ধু বৃ করা পথে রৌদ্র বধন করে পড়ে দক্ষ করে নীল পুৰিবাটা কোট বরে; ভারি ভালো লাগে ভারতে তথন মনে মনে ভোমার যে কথা কুল করে লোগে মন-বনে।

কৰনো প্ৰভাত চাৱ না ভোষায় ভালোবাসি, বিৱাট আকাশে ভাসেনাকো ভাই ৱাঙা হাসি; অৰচ ক্যোহ না জীবনে আসে না একবাৰো ভাইতো আমার নয়া হপন-ব্ৰে গাচ। এদিকে ভোষার মৃক্লিভ দেবি মন্ত্রী, একট কুমুন ছির হয়ে চার শর্কারী; অদনে হারা, কাঞ্চন হড়ানো নীল চোবে, হোট কুটর ভবু ভরা যেন মারালোকে।

অথচ আমার পৃথিবী কেন বে শেষ হোলো, মালতী লভার কুল বরে গেল হলহলো; ভূমি হারা হ'লে প্রদীপে হভালে বিভীষিকা, পারে পারে ভাই এঁকে দিরে গেলে যবনিকা।



রটারভাষের নিকটবর্তী মাস নদীর নীচেকার স্থানের একট আলোবাতাসমুক্ত গৃহ

ইউরোপের নিয়ভূমি—বেলজিয়ম ও হল্যাও

গ্রীযোগেশচন্দ্র নাগল

र्देश्टरको 'त्नशाबन्गा'कम' गात्न निप्तन्ति व! निप्तन्ति। 'নেদারজ্যাওদ' বলিতে পূর্বে ছল্যাও ও বেলজিয়ম ও ইদানীং রাজনৈতিক কারণে মাত্র হলাভিকে বুবায়। কিছ এই উভয় অঞ্চতে নৈস্থিক অবস্থার পতিকে ঐ নাম দেওয়া হইয়াছিল। भग्नभूष्टे व्हेट्ड व्हेर्ट क्रिन्स निर्म क्रिक्ड हे व्हाइ के नाम। वह ছুইট দেশ সমুদ্রতীরে অবস্থিত ছুইয়াও কেন জলে প্লাবিত হয় না, বা ভূবিয়া যায় না ? ইহার কারণ সমুদ্রতীর বরিয়া উঁচু বাঁৰ নিৰ্মিত রহিয়াছে। বাঁৰের কোন অংশ ভাঙিয়া গেলে যে উছা জলে প্লাবিভ বা নিময় হইয়া যাইভে পারে ভাহা স্থাত মহাসমরকালেই বুঝা গিয়াছে। জার্মান নাংসীপ্র মুদ্ধের মধ্যে বাঁৰ ভাঙিয়া দিয়া হল্যাভের বহু অঞ্চ ভলে একেবারে ভাগাইয়া দেয় এবং সেধানকার জীবজন্ধ, কৃষিক্ষেত্র সমন্তই বিনষ্ট করিয়া ফেলে। গত মহাসমরে বেলজিয়ম হল্যাও উভয় দেখেরই বিশুর ক্ষতি হইয়াছে। ভাছাদের এই ক্ষতির পুলনাই হয় না। তবে মুদ্ধ থামিবার তিন বংগরের মধ্যেই ছুইটি (দশ পুনক্ষার ও পুনর্গঠন কার্য্যে আশ্চর্যা-রকম অঞ্সর হইয়াছে। বিধ্বস্ত নগরী পুনর্গঠন, রাভাগাট, ষরবাড়ী পুননিশ্বাৰ, ব্যবসা-বাবিজ্যের উন্নতি, বাদ্যসম্ভার সমাবান প্রভৃতি কার্য্যে ছুইটি দেশই যেরপ সাফল্য অর্জন করিয়াছে তাছা শুনিলে বিশায়ের অবধি থাকে না। অবচ চুইটুই ইউৱোপের অতি কুল রাজ্য প্রত্যেকটিরই জনসংখ্যা कार्डिक श्रेट्य ना । चात्रण्याक चात्रापद अवीनकात ছুই তিম্বট্ট কেলার সমান। এক কন প্রত্যক্ষদর্শীর বিবরণ इटेट देख्य प्रत्येत वर्षयाम काश्यक्तां प्रवृद्ध अवाद्य किहे विभव । अवस्य हे स्मार्टका कथा विम ।

रुन्गा ७

নাংগীদের উপদ্রবের বিষয় একটু ভাগেই উল্লেখ

कविश्वाचि । अभूत्वव वाँव चाकिश पिश छैरावा रुम्मार्श्वव অবিবাদীদের যে ভীষণ ক্ষতি করিয়াছিল তাহা নিঃসন্দেছ। কিছ জার্দ্রামীর পভনের সঙ্গে সঙ্গে স্বাধীনতা ফিরিয়া পাইবার আৰু সময়ের মধ্যেই তাহারা এই ক্তি অনেকটা পূরণ করিতে नमर्थ इहेबारह। व्यक्तिज्व व्याक्तर्रात विषय, शृद्धकांत यान-বাহন ব্যবস্থা একেবারে বাতিল করিয়া দিয়া আধুনিক্তম বিজ্ঞানের সহায়তা গ্রহণপূর্বকে মৃতন ব্যবহা করা হইয়াছে ও হইতেছে। হলাঙের রেল লাইনের ছই-ডুডীয়াংশ নাংসীরা ষুদ্ধের মধ্যেই ভূলিয়া লইয়া যায়। এবন রেল লাইনও পুন:-স্থাপিত হইয়াছে এবং পূৰ্ব্ব ব্যবহা বাতিল করিয়া দিয়া বৈদ্যাতিক ৱেলপথ স্তাপিত হুইয়াছে। ১৯৫৩ সন নাগাছ ছল্যান্তের পর্বাক্রই বৈচ্যাতিক রেলগাড়ীর প্রচলনের পরিকল্পনা कांशक्ती कता इट्टा विश्वा भवकात आयाम विश्वास्थन। হল্যাভের মোরারজিক সেতু ইঞ্নীরারিং বিদ্যার একট প্রকৃষ্ট निवर्णन । नारशीदा देशादश कलकी श्ररण कविया वियासिन। সেড়টির ভয় অংশ ইধানীং সম্পূর্ণ মেরামত হইয়া বিয়াছে।

হল্যাণ্ডের নগরাঁ-পুনর্গঠন কার্যাও একট প্রঠ্ পরিকরনা অস্থারী পরিচালিত হকতেছে। 'দি হেগ' নগরী বিখ্যাত ছপতি উইলিরম মেরিনাস ভাতকের নির্কেশে পুনর্নির্মিত হইতে আরস্ত হইরাছে। সাবারণে পুরাতন রীতি-পরতি আর প্রক্ষাকরে না, তাহারা নৃতনেরই পক্ষণাতী। হেগ নগরী একট নৃতন বরণের শহর হইবে, না গভাহগতিক পুরাতন প্রবাহ্যায়ী ইহাকে গড়া হইবে এ বিষয় লইরা সেবানে কোর তর্ক চলে। ভাতক বলেন, মাহুমের কর্ম ও বাসোপযোধী করিতে পারিলেই নৃতন নগরী নির্মাণের সার্থকতা। বেশের সংস্কৃতি ও সরকারী কর্ম্ব-কেন্দ্র হবৈ এই নৃতন শহর। শহরের কেন্দ্রহলে থাকিবে একট প্রকাণ পার্ক, প্রতিট অঞ্চলেও এক একট হোট পার্ক



হুল্যাভে বৈহ্যভিকশক্তি চালিত আধুনিক ট্ৰেন

পাকিবে। খুপতি ৬াডক পুরাতন রীতির মধ্যে যাহা ভাল ভাহা এইংৰ করিয়া সম্পূর্ণ নৃতন ভিভিতে শহর গড়িতে লাগিরা গিরাছেন।

নাংসী আক্রমণ হইতে আমুধ্রীভাষ আক্ষিকভাবে রক। পায়। এ শহরট হইল "Venice of the North" অর্থাৎ উভবের ভেনিস। এই নগরীর মধ্যে বহু খাল্ প্রত্যেকট ৰালের ছই তীরে ভক্ষবীৰি। গৃহাদি প্রাচীন শিলের निधर्मनयस्य अवन्य अवाटन विक्रमान । जावादनज्ञा शार्क বা উদ্যানও বিশ্বর। উদ্যানে উদ্যানে কুপের কেরিওরাপার প্রাচুষ্য অবিবাসীদের গৌশহ্য-প্রিয়ভার হ্যোভক। এবানকার বিশ্ব ক মিউ শিষ্ম বা খাছখনট হল্যাভের খ্যাতনামা শিল্পীদের চিত্রে সমন্ত। নাৎগীদের আমলে এই সকল নিলীর চিত্রভাতার বিশ্বর বিনষ্ট হইয়াছে, আবার বহু চিত্র দেশান্তরিত হইয়া তবে আপন অভিত বভার রাবিরাছে। রেমর্ত্রা, ফ্রাঞ্চ-হলম, মেইজ, জিন-প্ৰান প্ৰভৃতি প্ৰব্যাত শিল্পীদেৱ কত চিত্ৰ যে নাই ছইয়াছে তাহার ইয়ন্তা নাই। জ্যান গগের বহু জাল জাল ছবি কোপেন-হেপেনে চলিখা বিয়াছে। ত্রাদেল্য এবং প্যারিদেও কিছু কিছু शिबाटक। विरम्पण युक्त निज्ञीरे भाजीत्मत्केव अम्भ, विनक প্রভৃতি অপেকা উৎকৃষ্টতর রাজদূত বা দেশ-প্রতিনিবি !

প্রাচীন হল্যাভের অন্তিত্ব যা কিছু আমাইার্ডামেই অগুপুত হয়। কিও রটার্ডাম সহত্বে তাহা আদে প্রয়োজ্য নয়। এই বন্দর্গীর ডকে আগে কিছু কম করিয়াও প্রতি মাসে অন্ততঃ হালারধানা কাহাল নলর করিত। নাংলী আক্রমণে, বিশেষতঃ ১৯৪০ সনের ভীষণ বোমাবর্ষণের ফলে এই ডকটি চুণবিচুর্ণ হইয়া যায়। রটার্ডাম্ম বন্দরটি পুনর্গঠনের কল বর্ত্তমানে সেধানে অতি দ্রুত কাল হইতেহে। কিন্তু এখনও পূর্ব্বাবস্থা প্রাপ্ত হইতে বেশ সময় লাগিবে। প্রত্যহ সকালে বিকালে মোটর বালে করিয়া লোকে বটার্ডান্তের পুনর্গঠন কার্য্য হেবিতে যায়। প্রথম বার দেখিবার ক্ষেক দিন
অন্তর আর এক বার লেখানে
পেলে বুঝা যাইবে পুনর্গঠন
কার্য্য কৃত ক্রুত অগ্রসর ছইতেছে। যেখানে ক্ষেক দিন
পূর্বেও কোন ঘর-বাড়ী দেখা
যার নাই, বিতীয় বারে সিয়া
দেখানে মৃতন মৃতন বড় বড় বাড়ী
দৃষ্টিগোচর ছইবে নিশ্চয়।

রটার্ডামের ইঞ্জিনীয়ার ছইলেন
ভ্যান টা। রট নদীর উপর এই
বন্দরট অবস্থিত। ইহাকে সম্পূর্ণ
আবুনিক বন্দর ও শিল্পনগরীর
মত করিয়া গঠন করা তাহার
উদ্দেশ্ন। শহরের একাংশে
উন্তুক্ত অঞ্চলে শিল্পকারবানাংগি

প্রতিষ্ঠিত হইবে। ইহাতে শ্রমিকগণের খারা অটুট বাকিবে। তাহাদের নিমিত অভ নানা রকম এব-জুবিবারও ব্যবহা করা ঘাইবে। কাহাকওলি নগরীর মধ্যে রেল-ট্রেশন এবং ব্যবসায়-কেপ্রের নিকট ঘাহাতে পৌছিতে পারে এইকভ সমুদ্র হইতে শহরের মধ্য দিকে কিয়দংশ গভীরভাবে কাটবারও ব্যবহা করা হইতেছে। ব্যবসায়-কেপ্রে লাকের বালগৃহ খুব কমই পাকিবে। লোকের বালগৃহ খুব কমই পাকিবে। লোকের বালগৃহ হুব ক্যাক ব্যবহা হুবিতছে।

হল্যাতে যে পুনর্গঠন কার্যা এত ক্রত অপ্রসর হইতে পারিয়াছে তাহার একটি প্রধান কারণ লোকজনের আবিক স্থ-স্বিবার দিকে সরকার পক্ষ হইতে প্রথম দিকেই বিশেষ দৃষ্টি রাধা। প্রমিক সক্ষপ্রলি ধাদ্যশন্ত, প্রয়োজনীয় ক্রব্যাদির মৃল্যা এবং প্রমিকদের বেতনের হার উভয়ই কঠোরভাবে নিয়প্রণের সম্মতি দেওয়াতে ইহা সপ্তরপর হইরাছে। কারণ তাহারা বৃক্তিত পারিয়াছে যে, এরপ ব্যবহা ক্রা না হইলে হুংছদের অভাব কোন মতেই মিটতে পারে না। শিক্ষপ্রবার উৎপাদন ও রপ্তানি, নগর ও রাভাধাট পুননির্মাণ এবং আত্মকিক কার্যাদি একট চতুর্বাধিক পরিক্লনাম্থায়ী নিয়মন্দ্রলার সহিত সম্পন্ন করা হইতেছে।

বছই সুৰের বিষয়, হল্যাতে চোরাকারবারের মাধ ভূলিবার আর সাব্য নাই। আমাধের- ভারতবাসীধের পক্ষেত্ত ইহা অনেকটা আশার কথা বটে। কারণ হর্মত এক দিন হল্যাতে যাহা হইয়াছে এখানেও উপযুক্ত পদ্মা অবল্যিত হুইলে তাহা সম্ভব হুইবে। এখনও হ্রত হল্যাতে কাণ্ডচোপড়, রেডিও-যন্ত্র, সিগারেট প্রভৃতিতে ক্তকটা চোরাকারবার চলি-তেহে, কিছ তাহা একেবারেই নগণ্য। ছুইট উপারে হল্যাতের কর্তুপক্ষ চোরাকারবারের পথ বছ করিয়াহেন--প্রথমতঃ, কৰ দামে প্ৰচুৱ বাদ্য প্ৰবিধান কৰা দামে কিছিছে। চোৱা-বাদ্য কৈছিছে কিছিছে বেভনের হার বাদ্য হৈয়া দাইছে এই ক্রপে, —অভ্যাবগুক বাদ্য প্রবিভ করা হইরাছে এই ক্রপে, ক্রাব্য করা হাদ্য করা হাদ্য করা করা হাদ্য করা হা

প্রচুর খাদ্যলভার থানী করিষাও হল্যান্তে থবেট খাদ্যল্য মজুত রহিষাহে। এখানকার হোটেল রেভরীতেভ আহারাদির কঞ্চায্য দাম্মই পওয়া হয়। খাদ্যন্তব্যর

স্থবিধা হেছু বিদেশ হইতে বিশুর লোক হল্যাও ভ্রমণে যার। এবারে লাধধানেক মার্কিনীও হয়ত সেধানে গিয়া ভিড় ক্যাইবে।

বেলজিয়ম

হল্যান্তের প্রতিবেশী হইল বেলজিয়ন। এই ছুইটি স্কুদ্র রাজ্য ১৮১৫ হটতে ১৮০০ সন পর্যন্ত এক রাজারই অধীন ছিল। শেষ্যোঞ বংসতে বেলভিয়ানতা বিজেপি হয় এবং হলাঙ হইতে আগা।। হইয়া খতপ্ৰ রাজ্য ও রাজ্তর প্রতিষ্ঠা করে। जनवि यज्ञ भाष प्रतिमान अक्षे विधाय छेणस्यवरे मिन রহিয়াছে, তাহা হইল আন্তভাতিক ক্ষেত্রে বিভিন্ন রাষ্ট্র কর্ত্তক উহাদের নিরপেক্ষতা (neutrality) নীতি স্বীকৃতি। প্রথম ষ্ট্যসম্বে ছার্মানী এই নীতি অধীকার করিয়া বেগৰিয়ন আক্রমণ ও অধিকার করে। দিতীয় মহাসময়ে কার্মানী ঐ अकरे चनदार चनदारी एव। विजीव महाबुद्ध दनिकारम বসিয়া ব্রিটাশ সেনা জার্দ্রানীর সজে ঘর্ণন আর কিছুভেই পারিয়া উটিল না তখন তাছারা কিরুপে এখানকার সেতু ভাঙিয়া, রাভা কাটিয়া, সৰুদ্রের বাঁব ভাঙিয়া দিয়া বেলকিয়মকে জলে প্লাবিত করিয়া দের এবং ফ্লাভার্স ছইতে সগর্কে পলায়ন करत (म कवा अवनश्व जामारमत बरम जारह । दनक्षित्रमश् হল্যাভের মত নিমুভূমি বলিয়া তথন জলে প্লাবিত করা সম্ভব হইয়াছিল।

নাংগী কার্দ্রানীর পরাক্ষরে পর বেলক্ষিমও পুনরার বাধীনতা লাভ করিয়াছে এবং বিধ্বন্ত অঞ্চলসমূহের পুনর্গঠনে কর্তৃপক্ষ সম্যুক্ত অবহিত হইয়াছেন। কিছু তাহাদের পথ হল্যাতে অবল্যিত পছা অপেকা অনেকটা হতন্ত। চোলাকারবার দমনেও বেলক্ষিম ভিন্ন পথা অবল্যন করিয়াছে।
বেলক্ষিয়ে বিদেশী মূলব্য বহিয়াছে প্রচুর। তাহার বিধান



হল্যাভের রেলপবে যুব্ধর সময় আংশিকভাবে তথ আগেকার আমলের একট রেলগাভি

मुल्यनहे अकुम मण काहि वर्ग-अं। मार्किनी लगावल ষ্ব্ৰম বেলজিয়মে অবস্থিতি করিতেছিল সেই সময়ে বিশেষ করিয়া ঐ দেশে বরচ করিবার জন্ম প্রভাক গৈছকে "সেনা ডলার" দেওয়া হইত। নাংশীরা বেলভিয়মে ক্রত রবন এার করার ভার যে স্ব কাঁচামাল ও রসলপত্র আমদানী করিয়াছিল ভাহারা চলিয়া যাইভে ব:বা হইলে ঐ সকল বেলবিয়ানদের অধিকারে আসে। তথন তাছারা চড়া দামে বুক্তরাষ্ট্র বাহিনীর নিকট ঐপব বিক্রম করিয়া প্রচুর অর্থ লাভ করে। ইহা ছাড়া আফ্রিকাখ বেলজিয়ান न्यामा । तनिवास्य अक्षेत्र वक्ष प्रभाव । अवस्य ভাষা ও রবার এবং ইউরেনিয়াম বাড় প্রচর আছে। ইউরেনিয়াম বাত এবানে যে পরিমাণে আছে এমনট चार काषां मारे। बरे नकन कारत व्यव्य लाहुर्य হেতৃ কারবানায় দুভন করিয়া দ্রব্যাদি প্রস্তুত হইবার পুর্বেই বেলজিয়ম বিজেশ হইতে জব্যাদি আমদানী করিতে जक्य रहा

অর্থের প্রাচ্থ্য হেড়ু বেলজিরম সরকারের কর্মণছভিও অনেকটা বডর রূপ পরিগ্রহ করিয়াছে। চোধাকারবারের বিগ্রহে অবলখিত পর্যতির কর্যাই এখানে বরা যাক। গাবীমতা পুনর্লান্ডের অব্যবহৃত পরেই ব্যাহে টাকা আবঙ্ধ করিয়া রাখার ব্যবহা হয়। দৈনন্দিন প্রয়োজনের অভিবিক্ত সামার টাকাই ভাহারা ব্যার হইতে ভূলিতে পারিত। দেন-পাওনা ওবু কাগকে-কলমে এক ব্যাহ হইতে আর এক ব্যাহের মারহুত চুকাইরা দেওয়া যাইত। ইতিমধ্যে বাজারে মাল ছাছিয়া দেওয়া হইল। বাহির হইতে বেশী পরিমাণ কাগজ-চোপড় এবং অন্ত ব্যবহার্য্য জিনিবপঞ্জ আম্বামী করা হইল। ইহার কলে লোকের জ্বরশক্তির অন্ত্র্পাতে অভিবিক্ত মাল পাওয়া যাইতে

লাগিল। রেশন-ৰূল্য হিল লাগা ভ ত্ইলই না, বলং ফ্রালের লভ বব্যে স্বাহর দেওলাই ত্ইভেছে।

লোকের ক্ষরণতি ব্রাস এবং প্ররোজনাতিরিক বালের আমলানী এই হুই কারণে চোরাবাজারের জিনিবের মূল্য ক্ষনা: ক্ষিতে ক্ষিতে এবন প্রার ইবার উচ্ছের বটরাছে। ক্ষি বিলেশ হুইতে এভার্শ অতিরিক্ত বাল আমলানীতে বেলজিরনে শিল্পরা উৎপালনে ভাটা পড়িরাছে, লোকের ক্ষরণক্তিও ক্ষমে ক্ষিরা যাইতেছে। অবুনা বাসেলসের বিপশিসমূহে নরন-মনোহারী মালের অভাব নাই, কিছ কিনিবেকে? লোকের হাতে যে বরচ করিবার মত পর্যাপ্ত টাকা নাই! বেলজিরানরা বিজয় লাভের প্লকে তবন আমেরিকা হুইতে বিজর জিনিয় ক্ষর করে। আজু কোন আমেরিকান বেলজিরনে তাঁহার স্বদেশকাত স্তার্য কম দামেই কিনিতে পারিবে!

লাবোচ বেলজিরমের একট হোট শহর, ছোট হইলেও
বহু বিষেষী এবানে যুদ্ধের আগে আগমন করিত এবং এবানকার প্রাঞ্চতিক গৌন্ধর্য প্রাণ ভরিষা উপভোগ করিত।
আমেরিকান পর্যাইকের নিকট এই শহরট বছুই প্রিয় ছিল।
আফ কিছ ইহার রূপ একেবারে বদলাইরা গিরাছে।
ভার্মান নাংগীরা বেলজিয়ন অধিকার করিবা এই ছোট
শহরটতে একট বাট করে। এই বাটটি ছিল গুরুত্পূর্ণ। এই
হানট শ্রুত্ত হুইতে অধিকার করা মিত্রশক্তির পক্ষে একাছ
আবঞ্চক হুইরা পড়ে, এ কারণ মার্কিণ বাহিনী এবানে
উপর্যাণরি বোষাবর্ষণ করিতে বাধ্য হয়। আফ নাংগীদের
নামগছও নাই, বেলজিরমণ্ড ভাহার খাবীনভা কিরিয়া

পাইরাবে, কিছ সারোচ শহরটর পূর্বলৌদর্ব্য একেবারে অভ্যতিত হইরাতে।

এই লাবোচ নগরীকে কেন্ত্র করিয়াই বেলজিরমের মুক্তি-কৌজ গভিয়া উঠে। গীর্জার রোমান ভাগলিক পুরোহিত, হোটেলের মালিক ও জভাত উদ্যোগীছের লইয়া এই বাহিনী গঠিত হয়। নাংসী-গুরুচরের চক্ষে ধূলি দিয়া জার কত কাল হদেশে বিচরণ করা যায় ? তাই তাহারা একে একে লাবোচ হাছিয়া নিরা ক্রান্তে আশ্রের লয়। এবানে থাকাও নিরাপদ ছিল না। কেননা এ দেশটিএ তখন নাংসী তাঁবেদার। তথাপি এখানে বসিরাই হদেশ উদ্বারের আয়োজন করিতে লাবোচের রোমান কাগলিক গর্জার পুরোহিত রত ছিলেন। এই পুরোহিতটি এখন জনবিরল লাবোচে বসিরা লোকহিতে আল্থনিয়াগ করিয়াছেন এবং প্রত্যাবৃত্ত নরমারীর বাসস্থান ও থাওয়া-পরার ব্যবহা করিতে তংপর প্রহিয়াছেন। লাবোচের এই কাগলিক গির্জাটি নাংসী বোমার বিধ্বত হয় নাই।

শক্র বার। বেগজিয়মের যেমন অশেষ ক্ষতি ইইরাছে, এক লারোচ ইইতেই দেখা যার মিত্রবাহিনীর পুনরবিকার কার্য্যেও ভাহার কম ক্ষতি স্থীকার করিতে হর নাই। বেলজিয়মের বহু নরনারী-শিশু, বরবাদী, হাসপাতাল, শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান মিত্র-শক্তির বোমায়ও নই হইরা গিয়াছে। কিছু আজু এ কথা মিতাছই অবাছর। এহেন স্বার্থতাগের কলে বিশ্ববাদীর সলে বেলজিয়মের যে যোগস্কু হাপিত হইয়াছে ভাহা অবিচ্ছেদ্য। হল্যাও ও বেলজিয়ম নৃতন কগং স্কৃতিত নিজু নিজু ভাবে সচেই রহিয়াছে। ইহার মধ্যে চোরাকারবার উচ্ছেদে ভাহাদের কৃতিত্ব আমাদের রাষ্ট্র-পরিচালকদের বিশেষ অধবানের বিষয়।

বাণিজ্য-বায়ু

John Masefield-এর Trade Winds কবিতার তর্জমা শ্রীমধুস্দন চট্টোপাধ্যায়

বন্ধরে আর হীপে-হীপে, স্পেনীর সাগর পারে ভেসে ভেসে ওঠে সাদা বাছীগুলি--ক্মলা-দেব্র বন, বাণিদ্য-বারু পেথায় এখন তুলিছে শুরুরণ!

শোনীর সুরা যে লাল হ'ল হোধা, ভালিমের রঙে রাচা;
নেশার বিভোল নওকীকূল, নোন্তা দেহ ও মন;
হলনা-কলার অভ্রাগে হ'ল কত কি যে গছা-ভাঙা;
বাণিজ্য-বারু সেধার এখন ভূলিছে অঞ্রণ!

ৱাত্তে যেবানে কোমাকীরা খলে, আকাশে হল্লে টান, ভৌতিক বডো বেবদার গাছ ব্যার হংশাসম ; বাণিজ্য-বারু দেধার এখন ভূলিছে ওঞ্জব ;

দ্রাতীতের পটভূমিকায় বাংলা-কাব্যের সূচনা ও প্রগতির আভাস শুসমীরকান্ত গুল্ব

আমানের পরম গৌরবের সামগ্রী এবং প্রির কাব্য-সাহিত্য কোন এক বৃহুৰ্ছে আক্ষিকভাবে আবিভূতি হয় নি অথবা প্রথম প্রকাশেই পূর্বভারণ গ্রহণ করে নি। অপু-পরমাণু পরিষাণ সকর জ্ঞারত্বে পৃঞ্জীভূত হয়ে যেমন প্রবালয়ীপ বিশাল বারিবির অঙ্কে আঞ্জি ও আয়তন লাভ করে ভেম্নিভাবে পুষ্ট ও স্থৃত্তি হয়েছে বাংলা কাব্যের---বিশ্বভঞ্জার অভীতে কড কবির রচনা, কত কবকের হড়া ও বাণীবিভাগ, কত গায়কের, ৰাউল চারণের গান ভার মধ্যে চেলে দিরেছে ভাদের অভবের আবেগ, প্রাণের নিভ্তপুরের মধুর ও স্লিম্বর মুর্জনাট, ভাদের नितर्कात भएक भारतात कन। এই चनरना कवित चननिष्ठ কাব্যের কটপতা অভিক্রম করে প্রাচীনের কাব্য-প্রাণ কি অপত্ৰণ উল্লাসে আপনার অভিত্ব-ভদিট সমুদ্ধ রেখায় টেনে নিয়ে এল পরিচিত কালের কলোলিত মহাসমুদ্রের মধ্যে, তার ইভিছাস বিচিত্র। এই ভারভবর্ষে, কত বিবিধ মানবের সম্মেলন यटिट बहे पूर्वाजीत-देवतम्मिक चात श्वादमितक, श्रीतिष्ठिण चार चनविहित्ल, खरीन चार नरीटन ("नक इन-पन नार्शन মোগল এক দেহে হ'ল দীন"); কভ বিচিত্ৰ ভাবৰাৱা বাহিত্ৰ হতে এসে আপনাদের মিলিবে দিয়েছে ভারতীয় ভাবধারা ও শংস্থতির সম্পে; কভ বিভিন্ন ভাষার নিবিত্ব সালিব্য এবং সংশিশ্রণ ঘটেছে এবানে-পারস্পরিক ব্যবহারিক আদান-लात्म जात्व कान्येव उधवकात्म परहेत् अविकृतिकात्म হয়ত হয়েছে বিপুল পরিবর্ত্তন, আবার কোনট হয়ত ঘটনার রচ ৰিপেষণে হারিয়ে বসেছে প্রাণশক্তি। পালি, প্রাঞ্ত, চর্যা-চৰ্ব্য অপত্ৰংশের ভাষা আৰু ভাতির প্রগতিশীল চিম্বাশক্তি ৰেকে বিযুক্ত হয়ে অভীভের সামগ্রী রূপে স্বৃতির কল্পে গিরে স্থান লাভ করেছে। অপর পক্ষে প্রদীপ্ত সংস্থাতর স্বেহরসপুষ্ঠ বাংলার প্রাবনীধারা আৰু বলগীয়াত অভিক্রম করে ভারতে এবং বহিজাইতে পৌছে দিয়ে চলেছে তার অভনিহিত রসের, অমৃতত্বের বাবী। এই রসের উৎস অসুসহাম করতে হলে व्यवस्रहे शास्त्रको स्टाइ हम्दर मा. जाद वसःभूदर जेपश्मिक ক্ষের ভিতর উপস্থিত হওয়া চাই। কি কারণে ভার উল্লেখ সাধারণ দৃষ্টিভে দেখি ভারতবর্ষের বিপুদ-বিস্থত ছলভূমি, এক প্রান্ত বেকে আর এক প্রান্তের সূদ্র ব্যববাদ, এক সীমাত্তে ব্যবস্থত লিপিছভির লঙ্গে আর এক প্রান্তের লিপির বৈসাৰ্ভ, ভার উপর একের পর এক বহিঃশক্তির

উপৰুৰ্বপত্নি আধিপত্য, চিত্ৰকাল এক বৰ্মবীক্ষান্ত অনুগত বাকান্ত পরিবর্তে কভ বিভিন্ন বর্ণ্দের আবির্ভাব প্রভিন্ন ও বিভন্ন এবানে : কাল যেন এবানে বেষে বেষে চলেছে, বঙিভ গভিভে, মভি টেনে টেনে। এই ভাবে ভারতবর্বের শতবাবিদীর্ণ ইভিহাস क्षमा क्वल, जारक जरकीर्य द्याम अवर कारनव मरवा निवह करव रम्बरण, वारणा कारवाद प्रध्याद क्षेत्ररण जरपूरणव चारणाहमा মা করলেও চলে। ভবে এই কালসংখেপের সার্বভার একটা বিশেষ সীমান্নিভ কালের উপর খত্যবিক লক্ষ্য বা মনোবোপ নিবছ করার সহায়ক হতে পারে, কিছু আমরা বেখানে দেখছি ভারতবর্ষের বিপরীত রূপ, ভামরা যেখানে সাহিত্যের স্থল্ভয ৰুল ধারাট অবলখন করে ভার বহিঃপ্রকাশকে নির্ণয় করতে, চিত্রিভ করভে চাই দেখানে এই কালের সল্প পরিসরের সীরা मध्यन करत हमात वांश (नहें। एविरवहमात धामता अवारम বৈদিক কাব্যের থেকেই আলোচনার খচনা করতে চাই। ভবে পূৰ্বাহে ভার সপত্ে ভার একট কথা বলা প্রয়েছন মৰে হয়। ছট জিনিষের উপর লক্ষ্য দিতে হবে। প্রথমত, সভ্যতা-সংস্থৃতির ক্ষুৰণ হয়েছে বিক্রিপ্তাবে, এবানে ওবানে, ক্ষেক্ট স্থপরিগর ভূমির আয়তনকে ক্ষে করে-বেমন প্রাচীন পঞ্জাব বা গালের উপত্যকা। পরবর্তী কালে যে সকল সাংস্কৃতিক প্রতিষ্ঠান আত্মপ্রকাশ করল ভাদের মধ্যে ভক্ষীলা, मानका विश्वाद वा विक्रमनीनात नाम चणः हे मत्म एत । अहे সাংস্কৃতিক ক্ষুরণ যে বিভিন্ন স্থানে বটেছে তাদের প্রত্যেকের মধ্যে একটা একাভভাবে নিজন্বতা বা বৈশিষ্ট্য আছে। অৰ্থাৎ अकरे किनिरवद शिष्ट्रांदा जनदश्री मद। **जरद भिर्दे** निष् আর একট মহামূল্য বস্তু সকল প্রকার বিভিন্নতা, বৈশিষ্ট্যের वरा पिरबंध এक चार्य चारश्याम काम हरन अरमाह, मकरनव মধ্য একট মর্শ্বরাহী ঐক্যের স্থর বেঁবে দিয়ে—সেট ভারতীয় চেতনার সুর। আমি ভারতীয় এই মূল অভ:প্রেরণার, বিকাশের যিকে লক্ষ্য রেখেই বর্তমান আলোচনায় অঞ্চমই হব। ভারতীর চেতদার গভীর রহভের যে অপুর্বা लकान स्टब्सिन क्रांसिक कार्या, जावरण्य जान्य केन्द्र्याच যে প্ৰথম ক্ষুৰণ হয়েছিল ধবি-কবির মন্ত্রে, ভার রেশ আৰু পর্যন্ত চলে এলেছে। তাই ভারতের ভাষাগভ বিভিন্নভার ভিতরেও তার চিত্রকলা ও শিল্পাহিত্যকে আশ্রর করে একটা দেশব্যাপী সভ্যকার ঐক্য ভিভরে ভিভরে রূপ নিয়েছে। ভাকে

বিশুদ্ধ প্রশ্নজাত



দি, স্থগারমংচেটিল, একস্পোটারস্, ইম্পোট্রারস্ ও জেনারেল অভার সাপ্লায়ারস্

প্রমথনাথ পাল এও সন্স্
২িদ, রামক্মার বন্ধিত লেন, ক্লিকাডা— গ

সহকে দেবা বার বা বলে অধীকার করা চলে বা। সৌকর্যছুফা বা রূপবোৰ বললে তার ব্যাব্যা হর না, তার প্রকৃতির
বিশেষত্ব, অলৌকিক কিছুর প্রতি আকর্বন—মানবিক্তার
পার্বিবের মব্যেই, ক্ষণিকের ভূক্তের মব্যেই আপনাকে নিঃশেবে
তারিরে কেলা নর। আগুনিক ক্ষির কঠে তারই প্রতিধ্যনি
ভূমি—

শ্বেণা নয়, অভ কোপা, অভ কোপা, অভ কোন্ বানে। তি কোন পুদ্র অতীতে বে মাসুষ পেরেছিল উচ্চতর জান তা চিন্তা করনে বিশ্বহকর মনে হর। বৈদিক কবির বে প্রষ্ট তা থেকে প্রাচীন নামব-মনের এবং মানবসমান্তের যে বহান চিত্র পাই তার মহিনার ভূলনা হয় না। তবু লাহিত্যের কথা নয়, প্রাচীন সমান্তের যে পূর্ব এ ত পুঝলা ছিল, প্রপ্রতান্তিকের কাছে বিংশ শতাকীতে তার অলভ প্রমাণ বরা পড়েছে। হয়য়া, মোহেঞ্জো-লারো তার বৃষ্টান্ত। হয়ত তবিয়তে এয়প বৃষ্টান্ত আরো পাওয়া যাবে। এখন, মান্ত্রের ভাষাকে আপ্রয় করে ভারতের আল্লার প্রথম বে সমর্থ প্রক্রর প্রকাশ বৈদিক সংগ্রুত তারই বাহন হরেছিল; সেই বেলগত আল্লার বাই অলাপি ধ্রনিত হয়ে চলেছে, কিন্তু যে আক্লার, সংস্কৃত ভাষার রূপে, এক বিশেষ সৃত্তিতে সে একলা আপনাকে প্রকটকরে বরেছিল আন্ধ্র তার পরিবর্তন ঘটেছে। কিন্তু বলতে

পারি, বিবিধ রূপের মধ্যে আপনাকে এখন সে বেল ঢেলে দিবেছে। বৈধিক কবির ভাষা একটা বিশেষ ধরণের চেডমারই শভিভাগ নিৰে আগে। ভাৱভের চেতনার কেন্দ্রব্যু বর্ণন এসেছিল একটা সভ্যের বহুতা, বছতা, বৃচ্চা, তবন সেই রূপ व्यकारनंत जावा बाहीन मरप्रज। दिविक कावा तहना करत-ছিলেন বাঁৱা তাঁৱা পেছেছিলেন মানসোত্তর লোকের আলো, मरमत जनामर्गारक जिल्हा करत शिराहिरमम धरे कविता । बन्नि-কৰির মন্ত্রকাব্যের মধ্যে ছিল এমন অনিব্যচনীয়তা যে তা ঘণাৰ্থই হরে উঠেছিল দেবভার ভাষা বা দেব-ভাষা— উপলব্ধির গভীর-তম রহস্তাবলী ভাতে সম্পূর্ণ ধরা যেত, অপার্থিব অলোকিকের সভ্য যেন তার মধ্যে নেমে এসেছিল অক্লেশে। উপনিষদের কাব্যেও রয়েছে লোকোন্তর প্রতিভার স্পর্ণ। তবে উপনিষদের कवि रुख উঠেছেन वृष्टित चात्र भिक्टेयको । পুরাণে वृष्टि বেন আরো আছের হয়ে এসেছে-- ভার সঙ্গে বছল পরিষাণে মিশেছে মামদেভর ভবের ছগং। বাল্মীকি একটা সভ্যকারের পুনৰ্কীবন কিরিয়ে আনলেন এই ভাব্যবগতের চেতনাডে। ষন এবং ছদয় বেন ভার মব্যে এক হয়ে মিশে গিয়েছে , শ্রেষ্ঠ কাব্যের এই একটা নিশ্চিত শুভ লক্ষণ। মন বলভে এবানে দৈনব্দিন জীবনের খুল প্রয়োজন মিটারে চলে যে মন ভার কৰা বলছি না, ভার এক ৰে মন, মনলো মনঃ, ভাৰ্বের ক্ষতার উর্বে বিশ্ববাণী বৃহত্তর সভ্যের সঙ্গে একাছ ভাবে

• 'वनाक!'---वरीलमाव ।

নেতাজীর অনুসরণে

বাংলার বিখ্যাত স্থত ব্যবসায়ী শ্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহালয় ও তাঁহার "শ্রী" মার্কা স্থতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিস্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি সৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীষ্ক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা স্থত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

ষাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বসু

বেকে যে বেবে ভাষই কথা বলছি। ফ্রেকিনিপুনের কাহিনীর কভাটা সভ্য ভা নিয়ে ভক চলতে পারে, কিছ কবির ক্ষমরাজ্ত্ভির বে সাক্ষ্য ভার মরের প্রকাশ করা হরেছে সমগ্র রামারণ ভার সপক্ষে সভি হাম করবে। কবিসভার এই ছই কেফ্র বরে রামারণে দেখা দিরেছে এক মহাম কীবমাদর্শ ও ভাষার অস্থাম ললিভ ক্ষমিশিল্প। পুনিবীর বে-কোম ভাষার বাত্মীকির সমভূল্য কবি বিষল। রামারণে মহাভারতে এসেও কবিচেতনা চলছিল উর্লোক্টেরই আবহাভারতে এসেও কবিচেতনা চলছিল উর্লোক্টেরই আবহাভারতে প্রবেশ। রামারণ বা মহাভারতে দেখি সে রুপের কবির অ্ত্মবোধকে আপ্রের করে সমষ্ট্রপত চেতনারই একটা আভ্যন্তরিক প্রভিক্লন। ভাই এই ছই মহাকাব্য প্রকাশ হরেছে সম্পূর্ণ স্বাভাবিক ভাবে, কবিষ্বাকে আদর্শের জভ কোবাও ক্রইক্সনার আপ্রর নিতে হয় নি।

মাহ্যবের চেডনার ভারপর এল আর একটা পরিবর্তন।
পক্ষ শতাকীর কাছাকাছি সংস্কৃত সাহিত্যে আর সেই বৈদিক
ক্রির উর্থনোক্সামিভার ইদিত পাওরা যার না, তবন ভার
মব্যে এসে পড়েছে সুলসভাতার চাক্ষতা ও মার্ক্তনা, মননভাত
সক্ষতিবোধ এবং পারিপাট্য। কালিদাসের বীবর পর্যান্ত ক্তবানি আপ্রম্য্যাদাবোধ নিয়ে কবা বলছে। বাণভট্টের
রচনার মব্যেও এই মানসিক আভিকাত্য, সর্ব্যন্ত ভার স্পুনিধ

"या नियान প্রভিত্তাৎ ত্মগর: শাখতী: সমা: ।"

† "क्षेत्र या अवर क्ष"---क्षं: या अवर क्ष्य ।

राखत नवच न्मर्भ (मार्श सरवास । धायत (बारक बाक्रावस প্রচন্দ্র পতির ইভিহাস নেমে এল বেন আর এক যোহের শক্তির টানে,—শক্তির, শুখলার, সৌন্দর্ব্যের রাজ্য ছেকে নীতিন্থলের আচার-বিচারের বিবানের মধ্যে। বাহিরের ইভিহাসেও অহরণ একটা বিপর্যায় সভ্য করা বার। ওওরুগের অবসাবের সকে সকে ভারভবর্বের রাজনৈতিক অবস্থা শনিশ্চিত হরে উঠন। বলোবর্দ্র, দলিভানিভা প্রভৃতি কর্ত্তক भीनः प्रिक चाक्रमा ७ चर्डाववायत करन परम धन বিশুখলা। বাহিরাগত আরবজাতি ইতিমধ্যে সিম্বুদেশে এসে উপস্থিত হয়েছিল। জ্বমশঃ বৈছেশিকরা ভারতীয় জীবনের একেবারে অভভালে এলে উপনীত হ'ল। এই বাহনৈতিক विभूषनाव यदा पिरत वांश्नाकारवाव चानिवृत्भेत क्रमा। रम्भ ७ रम्पन मरना जीमांना यनम चनच्या मह. रम्भ ७ रम्पन শীমা খাশিয়ে মধন ক্ষতার বছা সর্বান্ত করে কেলছে. জাতীয় জীবনে এমনই যথন একটা বিশুখলিত প্রাণের খেলা. তখন খেকেই বাংলাবাকোর আদিধুগের আরম্ভ। এই নৃতম ৰূপের বিশিষ্টভার কথা বিচার করে দেখা যাক।

অতীতে বৈধিক মুগের সংশৃত ছিল অব্যাদ্দ-সাৰক্ষেত্র ভাষা। তারপরে বহুদ্র পথ অতিক্রম করে এসেও লংক্ষ্ড হরেছে অতিরপভূষিষ্টের ভাষা, শিক্ষিত বিদ্যাল্থনের ভাষা, রাজসভার অলঙার-হরুপ। বে শিক্ষা, বে উপলব্ধির গাভীর্যা, ভাষার যে গরিষা একলা এক ষহা কৌলীতবোধ নিবে আপনার

आर्अस स्वय

শিশুপালনের সম্যক জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ভি, বি১, বি১র সহিত মৃল্যবান উদ্ভিজ্ঞ ও রাসায়নিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাঞ্চ টনিকটি প্রজ্যেক শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দক্ষোদ্যমের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিম্নিখিত রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুদের যুক্তের পীড়া, অঞ্জার্গতা, হুখ তোলা, গেট কালা, কোটকাঠিক, রুক্তেজা, ক্রয়তা, বুখাইটিস, রিকেটস ইত্যাদি।



আছকে প্রিক বৃত্তের মধ্যে আছবদা করে চলছিল তার একটা পরিবর্তম ঘটল বৃত্তের সমস্তে। বৃত্তমের ভাষাকে, তার সাহিত্যের ভাষাকে, আপামর সাধারণের কাছে ক্লভ্য এবং সহক্রোধ্য করে ভূললেন, জনসাধারণের ভাষাকেই মর্ণ্যাদা দিলেন ভিনি। এইরূপে প্রাকৃত্তমন ভাব ও ভাষার মরবারে এলে আছপ্রতিষ্ঠা দ্বাপন করল। একটা উলাহ্যণ প্রহণ করছি—

"আইএ অণুমাত হল বে ভাংতি এঁলো পঢ়িহাই রাজনাপ দেবি ছো চমকিই যাবে কিং ভং বোঢ়ো বাই । অকট জোইআ রে মা কর হে বা বোলা আইন সভাবেঁ ছই হল বুববি ভূট বাষণা ভোৱা। মক্র মরীচিগছন ইরীদাপতি বিদু ছইনা বাতাবতেঁলো দিট অবেঁ পাবর ছইনা। ।"।

• ক্পং ৰে অহুংশন্ধ, পরমার্থক থারা, তাঁরা একথা জানেন।
তাঁরা কানেন বে, ক্পংকে সং বলা আছি মাত্রা। দভিকে রাজসাপ বলিয়া যাহারা চম্বভিয়া ওঠে, সভ্য সভ্যই কি বোড়া
লাপে ভাদের খার ? অন গেলেই সভ্য প্রকাশ হয়। কি
আক্র্যা, হে বালবোগিন, ইহাতে হাত লোনা করিও না, যদি
ক্ষপতের শ্রমভাব অবগত হও ভাহা হইলে ভোমার বাসনা
চ্র হইবে। মরীচিকা, গছর্ম-নগর, দর্পন-প্রভিবিদ্ধ যেরূপ,
ক্সংও সেইরূপ।

—ৰহামহোপাব্যায় হরপ্রসাদ শালী কৃত অন্থ্রাদ

बवादम जावात, छेनत्रक जादवत छेनद्रक, व्योक्श्य कि जनीय क्षर्णां विश्वात करविष्म शांतश हिस् शतिकृष्टे। क्रार्य क्य-·লাধারণের ভার বেকে ঘণন কবি মুধর হয়ে উঠল ভাগন সাৰাত্ৰণেত্ৰ সহজ ৰশ্ববিদ্বাস, অক্তিৰ বোৰ, মানস অগতেত্ৰ অথবা প্রাণ্ডগড়ের ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়াই ভার বিষয়বস্তর রূপ পরিএছ করল। এই সম্পাষ্থিক রচনার মধ্যে ছানে ছানে विकित बर्लात विद्यारी केंकि निभिन्द चार्ट । जरब रन नव्यव भीवज्ञ वृक्तिकट्टकंब छेनव निर्कत करत नि. चरमक नरव मेचन খণ্ডের যে সরস প্লেষাত্মক রচনা দেখি এ জিনিষ ভা-ও নর, এবানে মূল অসহিফুডা, ক্র প্রাণাবেগের খাবর্ডই প্রেরণা-দাতা। এই যে কাবোর একটা পরিবর্তনের বারা নিম্নে নেমে আসার উল্লেখ করলাম, আমাদের পক্ষে মনে রাখা ভাল, সেট থজু বারায় বটে নি ; অনেক বিচিত্রতার মব্য দিরে তাকে খাসতে হয়েছে, কখনো একই উপলব্ধির পুনরুক্তি করে। হয়ত তার অন্তঃশক্তির সারবতার পরীক্ষার প্রয়োকনে এই পুনরাবৃত্তি ঘটে। সেই হেডুই সপ্তবভ সময়ের দীর্ঘ ইতিহাসে এক যুগের বহুল প্রতিচ্ছারা আর এক যুগে কুটে উঠতে দেবি। উপনিষ্ধের আবহাওয়াও ভাবরাশি রবীক্ষণাব খেমন প্রচুর নিয়ে এসেছেন বিংশ শতাঝীর পুৰক জগতে। তা হলেও সব মিলিয়ে আসলে কিন্তু ঘটতে থাকে কোন একটা অভিয পরিণতির সার্থকতার দিকে অঞ্রপতি। একটা ভাতির যে

স্বাধীন ভারতে

অর্থনৈতিক এবং সামাজিক সংগঠনে জীবন-বীমা অপরিহার্য উপাদান। ভ্রেন্থ জাতীয় জীবন সংগঠনে বীমাকর্মীর স্থান মহান।

ণ্যালেডিয়াম এফ্যাণ্ডৱেণ্স কোং লিঃ

১৷১, ভ্যান্সিটার্ট রো, কলিকাতা ১

कान: किनः ৯৭২

গ্রাম: "প্যালেডিয়ামস্" কলিঃ

প্রতিতা, যে বিশেষত্ব, কলা-সাহিত্য-শিল্পকে আশ্রয় করেও তার রখি বিকীর্ণ হতে বাকে। ভারতে শিল্পনাবনার অন্তর্কেশে ছিল ভারতের অন্তরাস্থারই সমর্থন এবং অস্থাপ্রবশ্।

তা হলেও এই সমরকার বাংলাকাব্যের স্ট্রী উপযুক্ত ভরের হতে পারে নি। তার হেতু কি ? সাহিত্য লিল্ল কাব্যের জীবন হট দিক নিরে তৈরী—ভিতরের ভাব এবং বাহিরের জাকার-গভ রূপ। বাংলা কাব্যের শৈশবে এই পর্যন্ত জামরা বেংবহি, একটা ক্রভ রূপ পরিবর্ত্তন এবং আকৃতির পরীক্ষা চলহিল, হল্পত পরিবর্ত্তন নর, ভাষাগত পরিবর্ত্তনের কথাই বলহি। প্রাচীন প্রাকৃত-কর্জরিত পালাগানকাল হল্পের নিতুলতা বা স্ফুর্ এবং বহুবিব বিকাশের দিকে লক্ষ্য রেবে চলহিল না। কৃতিবাস, কাশীরাম দাস, গোবিক্ষদাসের হাতে পরার ক্রমে শ্রীর্থিলাভ করতে থাকে। প্রতিভার সংস্পর্ণে, লম্ব-সন্তারের ধ্ববে, ভাষা যতই পূর্বতা পেয়ে ওঠে ভাবকে নিপুণভাবে প্রকাশ করার ততই ভার স্থিবা।

এই পূর্ণতার সার্থকতার অতে আবার চাই নৃতন উপলবির উন্নেষ (খবেদের খবিরা যেবন বিচিত্র উধার বার বার আগমন হতে বলেছেন খীবনে)। সংস্কৃতে জয়দেব 'গতগোবিন্দে'র ফুললিত পদে (কবির নিজের তাধার, 'মঙ্গলমুজ্লসইতি') এক নৃতন তাবরদের প্রবাহ নিয়ে এসেছিলেন। ত তারই অস্থতাবে বাংগা-কাব্যে চতীগাগ এবং বিভাগতি নবযুগের উল্লেখ্য কর্লেন। † প্রেমের, ভক্তির, ফ্রদরের উচ্ছোনে, এই নবযুগ হরেছে অপূর্ব্ব শ্রী-মভিত। আমরা পড়েছি বেহলা-লবিন্দরের কথা, লাউপেনের কথা, বোপীটালের কথা, কালকেতৃ-নিশাপতি-শ্রীমন্তের কথা; বিশেষ করে বেহলা-লবিন্দরের কথার মধ্যে যে ফ্রদরের কথা, কারুণ্যশ্রী, নেই তা নয়, তবে তার এক রহদংশ চলেছে প্রাণের অস্কৃতিতেই আক্রর হয়ে,ঞ্

কাশীরাম দাস এবং কৃতিবাল যথন এলেন বাঙালীর কবিচিত্তে প্রেমাজ্বাস তথন যেন মদীভূত হরে এলেছে। মানবভীবনকে আরও বিভূততর পরিসরের মব্যে এহণ করা প্রয়োজন
তথন। রামারণ মহাভারতের বিচিত্র সমূদ্ধ অমূভূতি, বহুবিব
ভাবের প্রাচ্চ্যা এই অভাব পূর্ণ করে দিল—যদিও ভাষার দিক
বিবেচনা করলে বাংলা কাব্য পূর্ণতার মহত্তের থেকে তথনও
আনেক দুরে। উনবিংশ শতাকীতে এলেন মধুখদন। মধুখদনের
মধ্যবর্তিভার প্রথম পাল্চাভ্যের প্রভাব বাংলা-কাব্যের উপর
পদল। মধুখদনে আরভ হ'ল কাব্যের অত্যাবশ্রক ভণাবলীর
একটা গাচ সমন্বরের প্ররাস—ভাবাবেন, ভাষাশক্তি এবং
অফ্যঠন—এই প্রয়ীর একশ্রীকরণের ভুরুছ সাধনা। কিছ

• "তব বিরহে বনমালী পৰি সীদতি।"—করদেব
† "মাবব, সো অব সুক্ষী বালা।
অবিরত নরনে বালি বকু দীকর অসু বন সাঙ্গন বালা।"—বিদ্যাপতি
"অভাসিনী বেহুলার সহার কেবা আছে"—বিশ্ব হও বলতে হবে মহুত্বন এই আন্দ্রণিয়েন পূর্ণাল সকলত। লাভ করতে পারেন নি । এই নাত্র বে ত্রিগুণের উল্লেখ করা হ'ল কবির চেতনার তারা একেবারে নিশে এক অভিয়াল হরে বার নি । মবুত্বনে হিল যার শুভ ত্বনা রবীক্রনাথে হরেছে তার পরিপতির সকলতা । বর্তনান মুগে মধুত্বনই প্রথম আবুনিকের দাবি নিরে (অতি আবুনিকেরা আবার এক পূথক প্রেটীর বলে পন্য), আবুনিক মনোরুত্তির প্রতিনিধি হরে বাংলা-কাব্যের সভার প্রবেশ করেছিলেন । মাইকেলের পরবর্তী ইতিহাল আমাদের নিরে এল পরিচিত সম্পাম্যিক কালের নিবিভ সংশার্শের মধ্যে, প্রাচীনের প্রসঙ্গে যার আল্যোচনা অপরিহার্য্য নর ।

বাহির হইল ঐকেদারনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের ভীনহাতী (২য় সংস্করণ)

প্রকাদের অপেক্ষার শ্রীবিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়ের নৃতন বই

অন্তক

কলিকাতার সমস্ত সম্ভান্ত পুস্তকালরেই পাওয়া যাইবে।

বিহার সাহিত্য•ভবন ক্রিকাতা

मा'-(गाँनारे ७ जाता नन्न

• শ্রীস্থরেশচন্দ্র মুখোপাধ্যায়-সম্পাদিভ

বাংলাসাহিত্যে এমন সর্ব্বাঙ্গথন্দর ছোট গল্প এ পর্ব্যস্ত বের হয় নাই। মৃল্য—তিন টাকা

মহামানব-প্রস্থমালা—১ম বভ

এস্বিশচন্দ্র মুখোপাধ্যায় প্রণীত

বাঁরা নিজে বড় হরে জাতি ও দেশকে বড় করেছেন, ভাঁদের সাহিত্যরসপুষ্ট গৌরবমর কাহিনী। মুল্যা—দেড় টাকা

মহারাপ্ত জীবন-প্রভাত

শ্রীমুরেশচন্তর মুশোপাধ্যায়-সম্পাদিত অগীর রমেশচন্ত্র দন্ত মংগদেরের 'মহারাষ্ট্র জ'বন-প্রভাত'-এর সংকিতা কিশোর সংকরণ। মুল্য-পাঁচ সিকা

ক্যালকাটা বুক প্রেয়ারস্

যুক্তপ্রদেশের প্রান্তিক লোকসঙ্গীত

এমায়া গুপ্ত

বিবাহ-সদীত বর ও বরু উভরের গৃহেই গাওরা হর। অবভ কভার গৃহেই সদীতের, তথা অভ সমারোহের ব্যাপার অধিক থাকে। কিছু কিছু গান উভর পরিবারেই সীত হয়। এখানে ক্ষেকট বিবাহ-সদীতের উল্লেখ করা হবে—যা বরের গৃহেই গাওরা হয়। প্রবাসীর বিগত এক সংখ্যার বিবাহের যাবতীর অহুঠানেরই কিঞিং পরিচয় দেওয়া হয়েছে। বরের বিবাহের গানও বিশেষ বিশেষ অহুঠানে গীত হয়।

নিম্নপিৰিত গান্ট পুরাজন—দেকালে বরকে কছার সভানে ঘূরে বেছাতে হ'ত এবং সবিনরে ক্টার পাণিপ্রার্থনা করতে হ'ত। পশ্চিম ভারতের খারীদের সেই গৌরব্যয় রূপের গাম এট:

কেছি কেরা পৃত তপদিরা আদন নোরে তপ করৈ রে একি কেছি কেরী বেটি কুজারী সুক্ষর বর মাঁগৈ রে। বাপ ক পৃত তপদিরা আদন মোরে তপ করে রে একি বাপ কী বেটি কুজারী সুক্ষর বর মাঁগৈ রে। ভিতরাদে নিকগো সাদকী আর তর মোতী লিবে রে একি লেভ তপদী আপনি ভিছো আদন যোর ছোড়ট রে।

> বিমল সিংহের প্রাধনায় শ্বি বৃদ্ধিন্দ্রের

ः: আনন্দমঠ

পরিচালনা: সভ্যেম হাজরা

চিত্রনাট্য—অনাথ মুখোপাধ্যায়

চিত্রগ্রহণ— রাইমোহন দত্ত
প্রধান ব্যবস্থাপ হ — বিখল মুখার্জিল

শির নির্দেশক—বিমল দেব

রূপায়নে ঃ-

সত্যানন্ধ—কৃষ্ণ সরকার ভবানন্দ—দীনেশ অধিকারী মহেক্র—অহু মুধাচ্জী জীবানন্দ—কালী ব্যানাজ্জী শাস্তি—সীতা দেবী কল্যাণী—মণিমালা নিমাই—চিত্ৰা দেবী আবো অনেকে

একমাত্র পরিবেশক: ফিলাস এও ষ্টুডিও লিগ্র যোতিয়া তে অপনী বরকৈ বরো অপনী নৈতী বরো বে লাকু ভূমবর কভা কুবারী তপভা বোর পুরুত্ত রে।

"কার তপদী পুত্র আমার অকনে তপস্যা করছে আর কার কুমারী কথা সুক্ষর বর চার ? অবুকের পুত্র আর অবুকের কথা এরা। বরের ভিতর হতে খুপ্রমাতা বালা তরে রত্ব-ভিকা দিতে এসেছেন—'ভিকা নিরে আমার অধন ত্যাগ কর।' বর বলছেন, 'ভোমার বন রত্ব ভিকা চাইতে আমি আসি নি, এসব ধরেই রাব। ভোমার কুমারী কভাকেই আমি ভিকা চাই'।"

ৰোৱে পিছবরবা বাস বসেরী কোইলী লীন্ধ বসের ছোড়উ ন কোইলী মোরা পিছ বরবা ছাও নক্ষম বন লেউ মঁড়বম মঁড়বন ছুবৈ ছুলছে রাম বাপ কোইলী হম লেব কোইলী বেটে ন মাট কী মিলিইে না চঢ়ি ছাট বিকার। কোইলী তো হোইইে সম্বীলীকে মঁড়রে বিন বর কভা কুজারী

গলিৱন গলিৱন মুনৈ হলতে রাম কৌন হৈ সম্মার হুআর।
সোনেকে কলন পর দিবনা করত হৈ বহু দেখো সম্মার হুয়ার।
মঁকবে কী পুনী লাগে ঠাচি হুলহিন দেই হুলহে জো পুছত বাত
ভূম হরে দাহলিকীকে সোনে ধৌরাহর হয়ই কা দেব বলের।

"আমার গৃহের পিছনে কোকিল বাসা নিরেছে। হে কোকিল, নক্ষম-বনে বাসা মাও, এবন এ ছাম ত্যাগ কর।' ওধিকে অযুক বর ক্ষে ক্ষে কোকিল গুঁছে বেডাচ্ছে—'হে পিতা আমি কোকিল মেব।' পিতা বলছেম, 'কোকিল মার্টী দিরে তৈরী হর মা এবং বাজারেও বিজয় হর না। বৈবাহিক মহাশরের বাড়ীর পিছনে কোকিল আছে—বার ঘরে কড়া কুমারী। বর গলি গলি খুঁছে কিরছেম—'বতর মহাশরেহ ঘর কোবার?' যেবানে সোমার ভাঙে দীপ ফলছে সেইবানে। ঘারের কাছে কড়া ছিলেন, বর তাকে অসুবোব করছেম—'তোমার পিত্রেবের বর্ণমভিত ঘর, আমার সেইবানে বাস ভরতে ছাও।'

প্রকৃতির কোলে লালিত, প্রান্থ জীবনের উপর্ক্ত গান।
কোন আড়বরের কথা অবঞ এ গাবে নেই, তবে বর্ণপ্রস্থ
ভারতের সমত প্রদেশের লোকসদীতে বর্ণের তৃরি তৃরি উল্লেখ
আহে। অবঞ তাই বলে একখা ভাষবার কোন কারণ নেই
বে, সেকালে প্রানের বরে বরে বর্ণবার শাক্ত।

কোইলী কো বোলৈ অমবা কেয়া কণিয়া

তেঁীয়া বোললে কচনায় কী
বোলৈ ছুলুমুইভা ছুলুহা সম্মুম্বনীকে বাণিয়া

হাবে তলেল মূব পাব কী।

কাহে লোভ গৈলি বৰুবা অব্বা কী বাগিয়া কাহে লোভ গৈলি সহরার দী। অৰ্থা লোভে গেলু অন্থা অৰ্থা কি বাগিয়া ধনী লোভে গেলুঁ সহয়ায় খী। का का देवला। बाबू अववा की वातिश का का रिश्ता नक्ष्माव की चनवा क्लम देवनु चनवा कि वानिश वाष्ट्र देवम् त्रश्चाव को। মওই মহীমা ভোহি বাবু কোৰিয়া ৱৰলুঁ चरक पन इस्ता निनाद की इर शामि बारू अरको म पिरुटन কৈলে চিন্হল সমুৱার भী। ছৰ পানী জন্ম জবে হম দীহব कर्दी धनौ रेनर्दा निकास की হমহ ছে হোইবো জন্ম বাৰু জী সেবকিয়া ধনী হইবো দাসী ভোহার भी।

"কোকিল আবের শাবার গান গাইছে, জমর কচমারের উপর অঞ্চন করছে। আদরের বর শুভরের বরে কথা বলছে—ছাডে কুল এবং মুখে পান। না বিজ্ঞাসা করছেন 'পুত্র ভূমি কিলের লোভে আমের কৃষ্ণে যাও এবং কিলের লোভে বভর-গৃহত্ আন।' পুত্র উত্তর নিজেন, 'আমের লোভে বাই বাগানে, আর পদ্মীর স্থানে আসি বভরগৃত্ত।' বা আবার কিল্লাসা করছেন 'কি বাও সেবানে গ' উত্তর হ'ল, 'বাগানে আন এবং বভরগৃত্ত্ ভড় ও হব'।"

মা বল্ছেন 'আমি ভোষার নর মাল গর্ভে বারণ করেছি এবং পরে দশ যাল ছব্ব পান করিছেছি। ভূমি ভো আমার হ্ব-কল কিছুই দিলে না। ভূমি খভরের গৃহ চিনলে কি করে ?' পুত্র বল্ডেন, "জীকে আনলে ভবেই আমি ভোষার হ্ব-কল দিভে পারব। আমি পিভার পেবা করব এবং আমার স্ত্রীভোষার দালী হবে থাকবেন'।"

পুত্ৰের বিবাহে কমনীর আশকাবর্দ্মী স্নেখপ্রবৰ চিরক্তম মনোকাবের ইন্দিত এই গানটতে আছে। পুত্রট পাছে পর হয়ে যার এই আশকার বিচলিত কননীর স্থাও অভিযানের স্থুর এই গামটিতে অধুর্বিত।

এবার একট মন্ধার গানের পরিচর দিছি। গানট নিশ্চর লোকশিক্ষার কম রচিত হয়েছিল। দীর্থদিন বরে কচাপক্ষকে শোষণ করার যে রীতি চলে আসছে তারই বিরুদ্ধে যেন একট আমর্শ স্থাপিত করার কম কোন নারী-কবি গানট রচনা করে-

৺শারদীয়ার আনন্দোৎসবে– জনগণের স্বাস্থ্য, শক্তি, কম্নীয় শ্রী ও কল্যাণ কামনায়— छेरव • नथा • धानावनी ম্যালেরিয়ায় ভারতীয় ভৈষ্ডাসমূহের সারাংশ ও ম্যাশানিজ তিকৈলিশ প্রভৃতি বহু মুগ্যবান খনিক পদার্থের সংমিশ্রণে শ্বতিকল্যাণে— বহু গ্রেষণায় প্রস্তুত। একদিনে জর উপশম হয়, পুনরাক্রমণের ভয়ত্থাকে না। ম্পি-ভ্ৰাপ হুমিধ কেশ তৈল ০ চর্মারোগে ঃ ০ শক্তিদায়ক ঃ कप्रदलम प्रम्य ৰলকলিকষায় কেশত্রী সম্পাদনে আয়ুর্কেদোক্তঃ ০ রক্তপরিশোধক ঃ ट्रांपयांचा याका মধুলীন মকরধ্রজ মহাৰলকলিক্ষায় लक्की निला न • সঞ্জীৰনা শটি • কোন্মেল বালি • মধুমেল ভালমিছরী সর্বতে সম্রান্ত একেন্ট আবস্তক ডি, কে, পাল এণ্ড কোং

৭৪-এ নলিনী শেঠ রোড, বড়বাজার, কলিকাতা--

ব্রীজ,গার্চু ও ফুল্ন গ্লোব নার্শরীতেই ভার

শাখা:— কলেজ ষ্ট্রীট মার্কেট•নিউ মার্কেট হাওড়া ষ্টেশন•শিয়ালদহ ষ্টেশন কলিকাতা ৪

ক্বাৰিক্সা পত্ৰিকার সম্পাদক ও গ্লোব নার্লরীর স্বত্তাধিকারী শ্রীষ্ক্ষরনাথ রায়, এফ, আর, এই5, এদ (লণ্ডন) প্রণীত

ক্ষেকখানি উৎক্কষ্ট ক্লবি পুস্তক

۱ د	বাংলার সক্রী	२॥•
۱ ۶	চাষীর ফসল	२॥०
9	আদর্শ ফলকর	२॥०
8	পুস্পোত্তান	२॥∙
• 1	সরল পোল্টি পালন	२॥•
	সরল সারের ব্যবহার	7110
11	শাছের:চা ষ	>11-
b 1	পক্ত খাত্তের চাব	200

সবে বের হল

শ্রীমতী বাণী বায়ের অভিনব পল্লের বই

"শূন্যের অঙ্ক"

ভূমিকা নিথেছেন—ব্রীমতী স্তুচেতা ক্রপালনী কিন্তু কেন ? নোয়াধানীর পটভূমিকায় "রমার" চিন্তু শুদ্ধির জন্ম, না, জারও কিছু যা দৈনন্দিন জাবনে "কুমারী", "বধ্" ও "জননী" মনকে পীড়া দেয়'তার জন্ম! দাম—২॥০ টাকা

মানবেজনাথ বাষের—ভারতীয় নারীতের আদর্শ (শ্রীমতী মারা ৩৩ অন্থিত) দাম—১॥•

চীনে কংগ্রেস মেডিক্যাল নিশনের বিবরণ ডাঃ কোটনিসের অমর কাহিনী

ফেরে নাই শুধু একজন

अनुवादक-**बीटबशामनस्त्र मत्**कातः। हार ० होका

ছি জা সা

পুস্তক-প্রকাশক ও বিজ্ঞেতা ১৩৩এ, রাদবিহারী এভিনিউ, কলিকাতা—২> ছিলেন। কভাপকের হাতে শোষণরোবের ক্ষতা বেই, বরণকের বা বরের উলারভাই একমাত্র কর্মা।

সন্তবত সম্প্রদানের সময়কার গান এট :—
কনক দিয়ট দিয়না বরৈ; দিয়না বরা হৈ আকাশ
আহো হলহ হলহী গল চৌকী

ছুলছকে চীৱা লোনছলা কৈলে সন্বা পলাস কৈ ঢৈত্ব অহে। রঙ্গুড় ন বাবুল বিচ্ছিয়া।

"বর্ণ-দেউটতে দীপ অলছে,—-সু-উচ্চে আকাশের উপর যেন প্রদীশ অলছে, বরক্ডা গলচৌকির উপর আসীন। বরের নিরস্তাণ কনকবর্ণের—-বেন সভ্যাকালে পলাশের কুল। 'হে শিতা, ঐ কনক-নিরপ্রাণ বিভিন্ন বং দিয়ে রঙিন করে দাও।'

ভারপর হ'ল কি— বর বেঁকে বসেছেন:—
সন্ত্র মনাবন বৈ চলে বাবুল
লেজ ন গৰুবা পচাল
দে হাথ উঠাবছ ন ।
গৰু বরি রাবহ গৰু সার মেঁ
হযর গৰু হৈ অমেক
বাবা নাছিঁ ভ্রল হাণী হউদকে।
সার মনাবন বৈ চলে জীজা লেছ ন ভরল পচাল
আছো হাভ উঠাবছ ভই দের সে।
বরি রাবহু বোড় বোড়সার মে
হমরে খোড়ে হৈ অমেক
বাবু ভূবে মহী হম খোড়ে জীন কো।

খণ্ডর এসেছেন স্থানাইকে প্রলোভন দেখিরে ভোলাভে—বলছেন, 'হাতীশালা হতে পঞ্চালট হাতী নিরে নাও এবং হাত তোলো।' স্থানাই উত্তর দিছেন 'হে শিতা, হাতী আপনার হাতীশালার থাক—আমার শিতার অনেক হাতী আছে, তিনি গল্ডের কাঞাল নন।' তারপর এলেন স্থালক—এবারে লোভ দেখালেন পঞ্চালট ঘোডার। বড়ই বিলম্ব হরে যাছে, লর্ম সমাগত। উত্তর হ'ল, ঘোডার কাঞাল তিনি নন, তাঁর শিতার আলবে বছ ঘোড়া আছে।"

' এবার এলেন শাওড়ী---

সাকু মনাবন বৈ চলে বাব্ল
লেছন মানিক মুঁদরিরা
সে হববা উঠাবছ ন ।
ধরি রাবছ হীরা মোভী সাক্ষী
হীরন ভরা হৈ জমার ।
আহো নহাঁ ভূবে মুঁদরী মালকে ।
সরহজ মনাবন বৈ চলী বাব্ল
লেছ ন হবনা বিজায়ট
সে হাব উঠাবছ ন ।
ধরি রাবছ আগনা বিজায়ট
সহন ন ভরি হৈ সন্তুক,
বীবী নাহী বিজায়ট সাব হৈ ।



W.

শিল্পীমাত্তেই সৌন্দর্যশ্রষ্টা। রূপদক শিল্পীর ষাত্ত্মার্শে কঠিন প্রস্তর্থগুও অপরূপ ংয়ে শঠে।

তেমন, সৌন্দর্থের পূজাবিণী আধুনিকা তরুণী যদি শিল্পীর মন নিয়ে নিত্যপ্রসাধনে যদু নেন, তবে তিনিও আপন তরুশীর অপরুপ রুপান্তর ঘটাতে পারেন। কেবলমাত্র উচ্চাব্দের স্থপ্রসাধনীই যে-কোন নারীকে অমরঞ্জ ঘন চিকন কেশরালি, অঙ্গে অঙ্গে ক্মনীয় কান্তি, তন্ততটে যৌবনোজ্জল লাবণোর অপূর্ব স্থমা, কুন্ধবল দ্ভাপাতিতে মৌক্তিক ছাতি এনে তাঁর তন্ত্শীর রূপণ্ডর ঘটাতে সাহায্য করতে পারে।

ক্যালকেমিকোর অতুলনীয় প্রসাধনসম্ভাবে তঞ্গীদের ক্লণায়নের সব কিছু উপকরণ³ সঞ্চিত আছে: অঙ্গরাগে—মার্গো সোপা, দশন শোভায়—নিম টুথ পেষ্ট, তমুহ্বমায়—লাবনি ক্রীম ও স্থো, ক্লদীপনে—রণুকা পাউডার, কেশমার্জনে—সিলট্রেন স্থান্ত, ক্রীর্চনায়— স্বভিমিয় কেশ তৈল ক্যান্টরল এমনি আরও কত কি।



শাশুণী এলেন, বেঁকে বসা ভাষাইকে বাস মানাতে মানিক মুন্দী হাতে—'বাছা এই মাও অপদার, এবার হাত তোলো।' উত্তর হ'ল 'হে মাতা, হীরা যোগী তোষার ব্যেই রাব, আমার ও বন্ধ যথেষ্ঠ আছে—আমি অপদারের কালাল নই।'

তথ্য এলেদ ভালক-পত্নী 'বিশাষ্ট' হাতে—বর বলছেন, 'অলফারে আমার বাল্প তথা আছে, আপনার 'বিশাষ্ট' রাধুন আমার ও জিনিখের লাব নেই।'

भवत्यस्य अत्मन श्रामिका, चिनस्यत्र भरक वम्रामन्--

সারী মনাবন বৈ চলী
ভীকা হমরে ম স্ট্রী কউভিয়া
কা ভোহরে ভেটি গে।
ভীকা আপন মাদু দেই ভাছ
ভবে। ভীকা অপনে পরেম
ভেটি দেউ দে হথবা উঠাবধ ন।

ইতমা বচন নোসে তুনলৈ আছে। তুনক ম প্ৰলৈ সে চৌকী বইঠ কেবনা লৈ কেবলৈ লে পান গেই যায়ে গয়ে।

ভালিকা বলছেন, 'হে জীজা, আমার কাছে ভো কুটো কৃতিও নেই, ভোমাকে আর আমি কি উপহার দেব? ভোমার স্বৃতি এবানে রেখে বাও। আমার স্নেহ-ভালবাসার দান এহণ কর এবং হাত ভোলো।

ত্ত এত কৰে বৰ বিগলিত হলেন, এবার তিনি হার মানিলেন। ভালিকার কৰা শেষ হতে না হতেই 'চৌকার' বসে ভোজন করলেন এবং পান বেরে বাইরে গেলেন।

বিবাহের পর রহনের ছানে (চৌকা) বসে আহার করার
রীজি আছে। গানটি সম্ভবতঃ সম্প্রধানকালে, আর নর তো
বিবাহের পর চৌকার বসে ভোজনের সমরই গাওরা হয়।
এ গানটি ছেলের বাড়ীতে কেন গাওরা হয় তা বুবতে পারা
যার না---আসলে এটতো মেরের বাড়ীতেই গত হওরা
উচিত।

পশ্চিম বাংলার বর্দ্ধমান জেলায়

চাষের ও বাসের জিমি

ক্র পালাক্স পাপুল স্যানাতৌ বিভাগ বাংলার সীমান্তে গাঁওতাল পরগণার বাস্থাকর ও মনোরম প্রাকৃতিক সৌন্দর্যান্তিত শত শত ব কানী অধ্যুহিত হাসার হাজার বিঘা ভ্রমির উপর প্রতিষ্ঠিত আদেশ স্বাস্থানিবাস।

জমি

মৌরদী মোকবরী শর্কে প্রতি বিবার মূল্য ৩৫০, ও তদুদ্ধে প্লটের অবস্থান অধ্যায়ী। বিভারিত বিবরণসহ
জমিঃ নক্ষা প্রভৃতির জ্ঞা
১ অগ্রিম পাঠাইতে
হয়:

এই জমি এবং আমাদের গৃহ - নিম্ম ণ - বিভাগের শেধারের বিস্তারিত বিব-রণের ভল্ল পত্র লিখুন।

ভনবদ্বীপ উপকটে নৃত্য কলোমি:

দগণাভীরে এবং নবধীপ হইতে মাত্র আ মাইল দূরে ই, আই, রেলওয়ের পূর্বস্থলী টেশন-সংলগ্ন কয়েক শত বিঘা জমির উপর বিদ্ধি পরিবারবৈষ্টিত।

ভনবদ্বীপধামের যাবতীয় স্বধ্যবিধাসই স্থাবায়ে স্বাস্থ্যক স্থানে স্থায়ী বসবাসের আদশ স্থান। থানা, ডাক্ষর, ছেলেমেয়েদের স্থানকলেজ, ডাক্তার, বৈচ্চ, হাসপাভাল, দেবালয়, সমন্তই অদুরে অবস্থিত, কৃষির যোগ্য জমিও সংক্লাভ্য। বাসের জমি প্রতি প্রতি ৪ – ৮ কাঠ: মূল্য অবস্থান সম্বামী প্রতি কাঠা ২৫ ্ টাক্: ও তদুছো।

रेपेनियन रनए श्रेपिक निमिर्हेष

৫, কমাশিধাল বিভি:স
 ১০২, নেডাঞ্জী স্থভাষ বোড,
কলিকাডা।
ফোন—ক্যাল ৫৭৭৮

খাত্য ২ও পথ্য বিভাট

শ্রীহরগোপাল বিশ্বাস, এম, এসসি

যে সময় অৱসকট চরমত্ম অবস্থায় উপনীত সে সময় বাধ্যের গুণান্দেব আলোচনা সাধারণত: অগ্রীতিকর হওয়াই থাজা-বিক। তথাপি বাদ্য সম্বন্ধে করেকটি আগ্রবারণার নিরসন জাতির প্রকৃত কল্যাণের ধিক হইতে অস্মীচীন হইবে না বলিয়াই মনে হয়।

আবহুমানকাল হইতে আমাদের গারণ। আছে যে, আওপ চাউল সিহু চাউল অপেকা উংকৃষ্ট; কিন্তু বর্জমান বৈজ্ঞানিক বিশ্লয়ণে সে বারণা আছে বলিয়া প্রমানিত হইয়ছে। দিয় চাউলে আতপ চাউলের চেয়ে ভিটামিন বি,, নিকোটনিক এসিড প্রস্থৃতি উপকারী ভিটামিন বেশী বাকে বলিয়া আনা পিয়াছে। অনেকেই অবগত আছেন যে, বি-প্রেণীর ভিটামিন-ক্রাণ সহজেই জলে এবীতৃত হয় এবং এগুলির অবিকাশেই বানের তুষের ঠিক নীচেই চাউলের উপরের পর্যাতে। গান সিরু করিবার সময় ভিটামিনভাল কলে প্রবীতৃত হয় এবং চাউলের গানা নরম হইয়া কুলিয়া উঠিলে ভাহার মধ্যে ভিটামিনস্ক্রু কল শোষিত হয় এবং বান ভকাইলে ভিটামিন-ভলি চাউলের ভিতরে আটকা পড়িয়া যায়। এবন একই

ভাতীয় সিত্ত কর। এবং অসিত্ব বান স্থি সম্ভাবে ইটি! বা ভানা হয় ভবে সিত্ত চাউলের মধ্যে আভপের অপেকা অবিক্রণ পরিমাণে ভিটামিন থাকিবে, ভাহা সহত্তেই বুবা যাইভেছে। কেহু কেহু শুনিয়া থাকিবেন যে, আমেরিকার ব্যবসাধীপণ নাসার্যনিক উপায়ে প্রস্তুত বি-ভিটামিন মিপ্রিত চাউল বিক্রয়ের চেটা করিভেছেন, ইহাকে মাকি 'রি-এনকোর্স্ড রাইস' আখা। দেওয়া হইবে। আখাদের কথা এই যে, প্রভাবিত এই চাউলের অপেকা আমাদের সিত্ত চাউল, বিশেষতঃ টেকি-ইটাটা সিত্ত চাউল আছে। নিক্রই হইবে না; প্রভাবে বাংলা দেশে এ চাউল কাট্ভির আশা ক্য। আর একটি কথা এই যে হুই বার সিত্ত বালিয়া সিত্ত চাউলের ভাত আভপ অন্তের চেয়ে সহ্বপাচ্য।

চাইগ-প্রসঙ্গে পথ্য সহত্বেও একট বৰার উরেব আবছক।
অসুবের পর অনেক চিকিৎসক প্রথম পথ্য হিসাবে আটা
বা মহদার প্রটির ব্যবহা পিয়া থাকেন। ঐ প্রটির চেয়ে সঞ্চাউপের ভাভ অনেক সহকে হক্ষম হয়; প্রভরাব প্রচলিত
বারণার পরিবর্তনি ব্যপ্তনীয়।

) S 8 U

আর একতি সাক্ল্যপূর্ণ বৎসর

୬୪୯୯	भारम	नृडम	জীবন	বীমার	ক জ		•••	• •	५२, ७३, १ ५, ००० (
2984	19	99	17	17	**				b, eb, 0),000,
2>88	17	17	"	**	19		•••		5,01, 20,000
7280	17	79	77	**	**	•••		•••	8, 48, 25,000
\$8 <i>5</i> 6	**	"	99	**	••	•••			۶,50, ৮ ৬,००٠,

निष्ठ देखिया अञ्चारतन कान्यानी निमिर्छष

—হেড অফিস— বোজাই —্⊄লিকাতা অফিশ— ৯, নেতাজী স্মভাষ রোড

স্ৰপ্ৰকার বীমার বৃহত্তম ভারতীয় প্ৰতিষ্ঠান

জীবন • অগ্নি • নৌ • দুর্ঘটন

পারিবারিক জীবনে প্রোণ্টিভিস্কস

মৃণ ও গ্লাদেশের স্থাদীণ সাম্ব্যক্ষা প্রাক্তিরস্থা কুলির শ্রেষ্ঠ ঔষধ, প্রতিবেধক ও বীজাগুনাশক। ইংার বীজাগুনাশক শক্তি মুখগহরে ও গ্লাদেশকে পরিকৃত, তৃপ্পিপ্রদ ও রোগমুক্ত রাখে এবং হালিকে মধুর ও উচ্ছল করে। মাড়ীয় স্ফীতি বেদনা বা ক্ষয়ে, জিহবাক্ষত বা গলক্ষতে ইহা কুলি করিবার প্রেষ্ঠ ঔষধ।

পোড়াক্ষত, ভেৰুক্ষত, কাঠাকল, দ্বিত ক্ষত, গ্রীম-প্রদাংজনিত ক্ষত বা চর্মবোগ, সেলুলাইটিস, আঘাত-আঁচড়-হাড়ভালা বা পোকা-মাকড়ের দংশন প্রভৃতি জনিত ফ্রীড়ে, বেদনা বা প্রদাহ **এ্যান্টিভিয়স** আন্ত নিবাময় করে।

পোড়াক্ষতে সহর জালা প্রশমিত হয় এবং কোন্ধা পড়ে না



Antivios Ideal healing antiseptic and gargle

নাম-ঠিকানাসহ এই বিজ্ঞাপন পাঠাইলে বিনামূল্যে নমুনা পাইবেন।

I. C. & Co., Calcutta.

বাহির হইল !

ৰাহির হইল !!

ভারতের স্বাধীনতা সংগ্রামের-

সংক্ষিপ্ত ইতিহাস

শ্রীউপেন্দ্রচন্দ্র ভট্টাচার্য্য প্রণীত

জাতীয় কংগ্রেসের ইতিহাস, বৈপ্লবিক যুগের ইতিহাস, আহিংস আন্দোলনের ইতিহাস, আজাদ হিন্দু ফৌজের ইতিহাস, স্বাধীনতা দিবসে জননায়কগণের বাণী, স্বদেশী যুগ হইতে আজ অবধি ভাল ভাল জাতীয় সঙ্গীত এবং বিশিষ্ট জননায়কগণের ছবি সম্বলিত এই পুন্তক পাঠ করিলে স্বাধীনতা সংগ্রামের সমস্ত তথ্য পাওয়া যাইবে! গ্রহকার নিজে ১৯০২ সাল হইতে আজ অবধি বাংলার প্রায় সমস্ত জননায়ক ও বিপ্লবীদের সঙ্গে মিশিবরে স্থোগ পাওয়ায় এই ইতিহাস প্রশাসন সম্ভব হইয়াছে। কাগজ তৃত্যাপ্যহেতু অল্পাংধ্যক ছাপা হইল। মুগ্য তুই টাকা মাত্র।

মডার্ন বুক এজেন্সি ১০নং কলেজ জোয়ার, কলিকাভা—১২ কৃতিবিদ আমরা মহর ভাগকেই আমির বলিয়া বরিয়া আগিতেছি। বৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণে কিছ বেবা বার, রুগ মটর হোলা মায়কলাই অভ্নর বেলারি প্রভূতি ভালের আগিষের অংশ ও মহর ভালের আগিষের পরিমাণেরই (শতকরা ২৫). কাছাকাছি। এ বিষরে একট শৃতন তব্য এই বে, মহর ভালের আমিয়-পদার্থ অপরাপর ভাল অপেকা আমাদের শরীরের পক্ষে যে অমেক কম উপকারী ভালা ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ের বারোক্ষেক্যাল বিভাগের ভূতপূর্ব অব্যাপক ও বর্তমানে বাদালোরের রাজনীয় ভেরারি রিলার্চ প্রতিষ্ঠানের অব্যক্ষ ভট্টর কালীপদ বহু মহাশার পরীকা করিয়া হির করিয়াছেম। ভাল সম্বন্ধে একট অবক্তর্জাতব্য বিষর এই বে, রায়ার সময় উল্লাহ্ম করিবার উদ্দেশ্যে কদার সোভা দেওরা উচিত ময়, কারব ভালাতে ভালের উপকারী বি-ভিটামিনগুলি মই হুইয়া বার।

ভিন্ন কলাচ কাঁচা ৰাওয়া উচিত নয়। অনেক ৰাদ্যতন্ত্ৰিদেয় পানীক্ষায় ইছা নিঃসক্তেৰে প্ৰমাণিত ক্ইয়াছে যে, ডিম কাঁচা ৰাইলে উহায় খেতাংল বা আ্যালবুমিন আদে ইক্ষম হয় না। চিকিংসকগণের ইছা বিশেষভাবে শ্রণ রাধা দরকার।

অনেক কেত্রে ডিমের মধ্যে এক প্রকারের ব্যাক্টেরিয়া বিদানান থাকিতে দেখা যার—উহা অর উভাপেও মরে না, কলে উহা থাইলে এক প্রকার সংকানক রোগ থেখা দেয়। প্রভাগ কাঁচা ডিম কোনও করেই থাওয়া উচিত নয়। আমাধের প্রচলিত বারণা, মহিষের হব গলের হবের চেয়ে হজম করা কৃটিন। এই বারণাবশতঃ কলিকাতা প্রভৃতি শহরে অনেকে আর্থিক সামর্থ্য থাকা সত্তেও বাঁটি গোহুন্ন চুর্পত বিবার হ্য থাওয়াই ছাড়িয়া দেন। মহিষ ও গোহুন্দের প্রধান প্রধান উলাদান ওলি নিয়ে উল্লেখ করা হইল—

হুল আমিষপদার্থ মাধ্য হুলক্রা স্বর্ণপদার্থ জ্ঞ প্রেছ ৩'৪ ৪ ৫ ০'৭ ৮৭ মহিষ্মুল্ল ৪'৪ ৭'৩ ৪'৫ ০'৮ ৮৩

উপরের তালিকার দেখা ঘাইতেতে যে, বহিষ্কুটো একমার মার্থনের পরিমাণই অনেক বেশী। গোচ্ছের সহিত ইহার অন্যান্য উপাদানের পার্থক্য তেম্ব অধিক নয়। বৈজ্ঞানিক পরীক্ষার কিছ দেখা গিলাছে বে, মাধ্যের পরিমাণ বেশী থাকা গড়েও মহিষ্কুটা গোচ্ছের মতই সহকে পরিপাক হয়।

বাহারা অগ্নিমান্যবশতঃ পাতলা হব সহ করিতে পারেম না তাঁহারা হব বম করিরা বা হানা কাট্টরা বাইলে উহা সহকে হজর করিতে পারিবেন। এই প্রসক্তে একটি কথা সম্মন রাবা কর্তব্য যে, হামার ফল বেন তাঁহারা কেলিয়া না দেম; কারব হামার হলে ল্যাক্ট অ্যালব্যিম নামক হবের একটি উপকারী আমিষপলার্থ, হ্যালব্যা, লবব-পদার্থ এবং রিবো-ফ্যাভিন, এনিউরিন, অ্যালকরবিক এলিড (বিহু, বিহু, সি,) প্রস্তুতি অভ্যাবস্তুক ভিটাবিন বাকে।

তৈল সধ্যে একট আন্ত বারণার উল্লেখ করা বাইভেছে। তিটামিন ভালিকার কোনও নিদর্শন না দেখিরা অনেক নিদিত লোকেও সরিবার ভেলে দেহপুট্টকারক কিছুই নাই বলিয়া মন্তব্য করেন। হই-একবানি বাদ্ধ-বিষয়ক পুতকেও ইহা দেবা গিরাহে। এ কবা সর্বদা শ্বন রাবা উচিত বে, উপ্লিফ তৈলে সচরাচর ভিটামিন না বাকিলেও স্নেহপদার্থের প্রধান যে গুল দক্তি সরবরাহ করা ভাহা সরিবার ভেলে পুরামান্তার আছে।

পূৰ্ব্ব-বাংলার কলিকাভা-প্রবাসী মধ্যবিত্ত সঞ্চল পরিবারের বাঁহারা বালো ও কৈশোরে পদা রক্ষপুত্র, আছিয়াল বাঁ ৰলেশবী, মেঘনা বা মধুমতীর অবাছ টাট্কা মংস্থ পাইমা আসিয়াছেন— রবীজনাবের একট পঙ্জি ইয়ং পরিব্রতিত कविशा वैशासिक मथ्राह वना साह--- "बन्दाना दम मव मर्च चहुछ-শিশাসা মুখেতে রয়েছে লাগি"—ভাঁছারা বরক দেওয়া ইলিশ প্ৰভৃতি মংস্ত ভালবাদেন না। 'এ বেন মাছ ৰাওৱাই নয়' বলিৱা ভাঁহারা কেহ কেহ অপুযোগ করিয়া থাকেন। ভাঁহাদের অনুযোগ অধীকার করা যার না তবে তাঁহাদের একবা মনে तार्थः উচিত या. वदरक मार्चित मरत्राच महे एत मा। छैरांद আমিষ-পদাৰ্থ অকুৰ্ই বাকে, বাদের কিঞ্চিং ভারতম্য হয় মাত্র। অবভা তাই বলিয়া সমূহে বরক মা দেওয়ায় যে মাছ পচিয়া গিয়াতে ভাষা ধাইবার পরামর্শ কেম্ট দিবেন না। কাহাকের শীতল ককে রক্তি অষ্ট্রেলিয়া, নিউছিল্যাও প্রভৃতি ছানের আমদানী মাংস বিলাতের লোকেরা পরম পরিতোষের সহিতই বাইয়া থাকে। ভুতরাং গোয়ালন্দের ইলিশ বরক দেওয়া विनद्धाः भाक निष्ठेकारेटम जामाद्यत हिनदि मा : वदश बाहाटज মাছ অধিকতর সুৱক্ষিতভাবে ও প্রভুত পরিবাবে কলিকাতায় আমদানীর ব্যবস্থা হয় প্রব্মেন্টের তর্ক হইতে ভাষার ব্যবস্থা

করার মন্ধ আন্দোলন মাবন্ধক। প্রবাহের গোড়াতেই ভালের মামিয-পদার্থ মানাদের শরীর রকার্থে যথেষ্ট নয় বলা হইরাছে। উহার সহিত উপযুক্ত পরিমাণে হব বা হাবা থাইলে শরীরের যথায়থ পরিপুষ্ট হইতে পারে; মঙ্গা উপযুক্ত পরিষাণে মাহ বা মাংস না থাইলে সুহলেহে মাসুষের মত বাঁচা মগন্তব। হ্ব যথন হুর্গভ তথন মাহের প্রতি অবিক্তর মনোবাগ দেওরা ভিন্ন গড়াছর মাই।

কিঞ্চিং অবাছর হইলেও একট বিষর উরেব করিতে হই-তেছে তাহা পূর্ববেলবালীদের ছানত্যাগ সম্পর্কিত। পূর্ববেলর অপর্বাপ্ত মাছ-ছণে স্থান্তিত দেহ, সবল মন ও সতেজ সর্ব্যাহী মেবা লইরা একদা বাহার! কালকাতার আসিরা বিভিন্ন কর্মন্তের প্রতিষ্ঠালাত করিরাছিলেন, তাহাদের তবিষ্ণহণীছেরা হুগলী বর্জনান প্রভৃতি কেলার বাসা বাঁহিরা অপ্রচ্ন মংস্যাহার করিরা আর কত দিন নিজেদের বাখ্যসম্পদ নকার বাবিতে সমর্থ হইবেন ? এক্ষেত্রে ছটি পছার নির্দেশ দেওবা যাইতে পারে। যদি অপত্যা মাটর মারা ছাছিরা আসিতেই হয় তবে বাঁহারা আসিবেন তাহাদের প্রচির আর্ল পরিবর্তনপূর্বক প্রচ্ন পরিমাণে মাংসাহারের অভ্যাস করা; থিতীর এবং প্রকৃষ্ট পছা হইতেছে অসীম মনোবল ও আত্মত্যাগ বনন করিরা সংখবছতাবে পৈতৃক ভিটা আক্রাক্টারা বাকা।

ৰাভপ্ৰসভে বৰ্ডমান প্ৰবন্ধে যে বিষয়গুলির উল্লেখ করা হইল আশা করা যায়, ভাহাতে দেশবাদীর উপকার সাহিত হইবে।

 প্রবৃদ্ধী পেরার নির্দেশগানে প্রবৃদ্ধ রাজ্পের বস্তুর্গাধয় আমার ক্রতজ্ঞভাজালন ভ্ররাছেন।

মফ:ম্বলের অর্জার ভি:পিতে পাঠান হয়। আমাদের তৈরি N. J. ষ্ট্যাম্পাযুক্ত গহনা ব্যবহারাস্থে গিণি সোনার মূল্যে ধরিদ করি।

বালীগঞ্জ আৰু :--১৬১|১এ, রাসবিহারী এভিনিউ
(সভিরাহাটা জংসনের নিকট)



সুইজারল্যাণ্ডের সমৃদ্ধি

🖹 বগলাকুমার মজুমদার

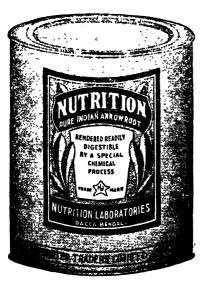
আর্থিক উন্নতির উৎকট আকাজ্ঞা যে তীব্র প্রতিযোগিতার শৃষ্ট ক্রেছে ভাতে করে একদিকে যেমন কালনিক অভাবের মাত্রা বেছে চলেছে, অপর দিকে তেমন অনর্থের আগুন মাণা চাড়া দিয়ে উঠেছে এবং আঞ্চিকতা একেবারে বিদায় মিতে বসেছে। বিজ্ঞান এর ইম্বন যোগাচ্ছে। বিনিক ও শ্রমিকের মধ্যে বিরোধ আৰু মামাভাবে মামবীর সংগ্রেক কল্বিত করছে। অর্থোপার্ক্সনের চেরে অর্থবন্টনে সামগ্রস্ত বিবাম করা অটল বাপার। ক্ষিপ্রধান দেশে এই সম্ভা তত্টা ডিক্সডা এনে त्मन्न नि यण्डी मृष्टिरशांहत एवं निज्ञशनांनरमन्ध[®]नरण । ब्हारनन কুৰবার উদ্যাচন করেছে বিজ্ঞান-ভাতে ভার দানও অসুরস্ত ও বিশ্বরকর। কিন্তু অর্থোপার্জন ও শক্তিপ্রবোদের যগ্ন ছিলেবে यर्ग अटक वावशांत कता २'न यत अकिन नम्छा जर्म अटन কুটল। মানুষে মানুষে সৰৰ কটল হবে উঠল। ভাততীয় গভ্য-ভার মূলগভ আদর্শ হ'ল শান্তি ও সংযয়। প্রাণের প্রাচুর্য্য এনে एव (शय । व्यर्थंद क्षापृत्री विलाखि अत्य एवस वाद्वे **७ नमाव-**कौरता। मामशीय वर्षात्क वाम मिर्द्य यांचा क्रणवस्तर सावाम মেনে মের ভারা মছতী বিনষ্টর পথ প্রশন্ত করে দেৱ।

এমন স্ক্রী পৃথিবী স্ক্রভর হরেছে মাস্থের জান ও বিজ্ঞানের আলোকে। যে বিঞানের বিমারকর আবিকার সমূহের হার। বিভিন্ন দেশ সমৃতি লাভ করেছে ও জাভিতে জাভিতে হনিষ্ঠতম সম্বন্ধ স্থাপিত হতে চলেছে, ভার ক্রংগতি প্রভিরোধ করার মানে মাস্থাহের মনীধা ও স্ক্রীশন্তির বিক্রছাচারণ করা।

বিজ্ঞানের দান ব্যবসায় ক্ষেত্রে প্রযোগ করে যে আকাশ-পাভাল আর্থিক স্পমভার স্পষ্ট করা হরেছে ভার দামক্ষণ্ড বিধান করবার ক্ষত চেষ্টা চলেছে সভ্যঃ কিন্তু সান্ধ্যিকভার স্থালো এবনও পথের সহান দেয় নি।

বনভন্তী দেশগুলির মধ্যে ক্ষুত্র সুইজারল্যাত যে ভাবে বনিক ও প্রথিক উভরের সার্বরক্ষার ব্যবস্থা করেছে ভাতে বিশ্বিত হতে হয়। সুইজারল্যাতে কৃষির উপযোগী এমন কমি নাই বা দেধানকার ক্ষিবাসীদের ক্ষেক্তকেও বাঁচিয়ে রাখতে পারে। না আছে ভার কয়লা, না আছে লৌহখনি বা তথাজ ধনিক পদার্থ, এমন কি কাঁচা মাল পর্যাত্ম নেই। সমুদ্রে হ্বার প্রধানিই ভার। তবু মুদ্রের মুর্কাংসরেও ভার

একটী বলকারী খান্ত!



বিলাভ প্র আংমরিকার লি শুবিদ্যায পারদর্শী ডান্ডারগণ বলেন যে হুংধর সহিত সহতঃ ৮/১০ কার্কো-হাইডেট যোগ मित्री निस्टामब ধাইজে দেওয়া । ভবীর্ভ "নিউটি শ ন" একটা পরিপূর্ণ কাৰ্কোহাইডেট क्छ्।

বাহারা ছুখ হল্পস করিতে পারে না অথবা আমাশর বা অনীর্ণ রোগে ভোগে তাহাদের পক্ষে বিশেষ উপকারী। সর্ব্বত পাওরা বার।

> ইনকর্সোরেটেড ট্রেডার্স লিঃ হুভাষ এভেনিউ: ঢাকা

মহান্মা গান্ধীর আশীর্কাদপৃত ও আদর্শপবিত্র অভিনব উপন্তাস

স্থূনীল বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত

হিন্দু-মুদলমান

ছন্দ্র ৬ কিংসার মাঝে নিলনের সেতৃ বাণিয়াছে। করুণ ও বান্থব বর্ণনা ভবিষাতের পথ দেশাইবে। বিভিন্ন ভাষায় অনুদিত হইভেচে। আক্রই সংগ্রহ করুন।

ব্যান্করে, ব্যবসায়ী ও অর্থনীতির ছাত্রগণের ব্যবশুশাঠা গ্রন্থ দেবেশ রায় প্রণীত

ভারতীয় ব্যাঙ্ক ও অর্থনীতি

সৰল পত্ৰিকায় উচ্চপ্ৰশংসিত। সঞ্মীর বন্ধুতুল্য।

হিন্দী ভাষা শিকা করিবার একটি শ্রেষ্ঠ পুস্তক

হিন্দুস্থানী টিচার

वाश्मा ও ইংরাজি ভাষাসহ হিন্দি পরিচয়

সরস্বতী বুক ভিতেপ।
৮১নং সিমলা বাট, কলিকাডা
এবং সকল পুন্তকালয়।

আর্থিক অবস্থা কটিল হরে উঠে নি—বেকার-সমস্থা দেখা দের নি। ১৯২৮ ইটালে আমেরিকার মাধাপিছ ২০১৮ টালিং ^ব আয় হিল, অধ্য সুইকারস্যাতে ছিল ৩১২৬ টালিং।

শিলের কাতীয়করণের পুরা ঘরন চারদিকে উঠছে তবন ৰণভন্তী অইকারল্যা● ব্যক্তিগভ শিল্পনিয়ন্ত্ৰের সাহাযে৷ শিরপতি ও শ্রমিকের মধ্যে অনেকটা সম্ভা রক্ষা করতে পেরেছে। এটা সম্ভব হয়েছে ভার রাজনৈতিক স্বাধীনভার পহিত বিশেষ অর্থনৈতিক দৃষ্টিকগীর সমধ্যের অঞ্চ। ধনতন্ত্রী-দেশে ধনিকগণ অবিকভর ধনী হয় এবং দরিলেরা আরও ধরিত্র হয়--এটা মার্কণ ও অভাত সমাজভারীদের মত। বছত अरेकादमारिक वह मुमयन चार्क ७ अपग्रीक्ष मा**फ ए**ख পারে এমন শিল-প্রতিষ্ঠান বুব কমই আছে। সুইজারস্যাতের অৰ্নীতি আধিক প্ৰাচুৰ্ব্যের স্ট্র করে না। প্রভাক খভি-শ্রমিক ১০ টালিং হতে ২০ টালিং আয় করে বাকে। অঞান শিল্পেও শ্ৰমিকগৰ অনুদ্ৰপ আৰু কৰে বাকে ৷ বভ বভ কোশানীতে ১০০ বা ভার কিছু বেশী শ্রমিক কাম করে बारक । जा बाका त्वनीय जान श्रीतिकारिन र व्यक्तिय क्य त्माक काक करता। त्कान त्कान आपने शांडवीक वा वक विक-निज्ञश्री केशान 50 दश्यक 50 कर लाक दश्ये शास्त्र खबर महारमकाबर ए'ल के भक्त क्षितिब मालिक। मालिक ও কর্মীর মধ্যে বড় একটি। তঞ্চাৎ দেবা যায় না। কোন সুহদ-দহরে পেলে দেবতে পাওয়া যায়, মালিক ও কথীরা अकह वाष्ट्रीएण वाम कदाल अवर प्राकृति बहेदर घरफ काव-बाबाय शटक ।

সুইশারণ্যাণ্ডের প্রতিষ্ট অধিবাদী যে কিরুপ আন্থানির্ভরণীপ ও কর্ম্মঠ তা সেবানকার পোয়াণাদের করা পর্যালাচনা করণে জ্ঞাত ছওয়া যায়। সু-উক্ত আপ্পদের গায়ে তারা বাদ করে। সাধারণতঃ ৭ বা ৮ একর ক্ষমির মালিক হচ্ছে এক-একটি গোয়ালা। পাধর, হুছি ইত্যাদি পরিষ্কার করে সেবানে দার্মাটি দিয়ে সে অব্যাপ্ত বিচালী ক্ষায়। এই যাদ সে সর্ভালিকে বাওয়ায়। মুর্লিছানা ও শুক্র পুষে বাকে। শুজু মাটিতে ক্লমেচন ক্রবার ক্য নিক্টবর্তী একট পার্হাছিয়া নদীর ক্ষপ কৌশলে ক্ষেতে নিয়ে আগে।

শীতকালে সেই গোৱালা ও তার পরিবারত্ব সকলে নীচে সমতগভূমিতে নেমে আগে। তাদের একটা ছোট কারধানা আছে। মনীর জলের ধারা পরিচালিত একটা ক্ষত আছে। ঘঢ়ির বিভিন্ন অংশ, কাঠের পাত্রাদি এবং চুগ্রন্ট প্রভৃতি ভার: ভৈরি করে। মেরেরা স্ফাক্স করে ও তৃণাদি ধারা বেন, বোঁগা ও ভালা প্রস্তুত করে। যভির অংশগুলি অল কারধানা হতে এনে সম্পূর্ব রূপে জোড়া দিয়ে দেয়। এ কাজেও ভাদের বিশেষ দক্ষতা পরিষ্ঠ হয়। ভাদের মনুবীও বেনী।

সুইসরা পরিবার নিয়ে একত্রে বাক্তে ভাগবাসে। তা বলে ভারা উপভাকার অভাভ পরিবারের সহিত দেলাবেশা বে করে না তা মর—বাছবিক নাথাভাবেই উপত্যকাবাদীলের সহিত তারা সংযোগ রক্ষা করে থাকে। প্রীম্মকালে সকলের সমবেত চেষ্টায় নির্ক্ত রাখালের তত্তাবথানে সকলের গরুণাছাক্ষের তৃণবঞ্চল সাহুদেশে পাঠান হয়। প্রামন্থ পনিরের কারখানা সমবায়-প্রতিষ্ঠান বিশেষ। প্রত্যেক চাষীয়ই তাতে অংশ আছে। অংশের অনুপাতে দে লাভ ও ব্যরদারি করে থাকে। সমবার সমিতিতে প্রত্যেকের বোগদান করা ব্যক্তিণত ইচ্ছার ওপর নির্ভর করে। তাকে পনিরের কারখানায় ছয় দিরে আগতে হয় না। ক্ষক নিক্ষে অভের সহিত কাক করে; বংগরাত্তে কিছু ক্ষমাতেও পারে।

এই মণ জীবন কঠোর কিছ শাভিদায়ক। দিনাছে টেবিলের একপাশে মেরে ও মা, অঞ্চ পালে ছেলেরা বলে এবং ভাদের মাঝবাদে সব্জির বোল, শুকর-মাংস, পনির ও লাগক্রমী বাকে।

ক্রমকের বেলার যা বলা হ'ল সুইণ শ্রমিকদের বেলারও তা সত্য । কঠের পরিশ্রম ও ব্যক্তিগত কর্মকুললভার ধারা ভারা বেল ভালভাবে কাঁবিকা-নির্বাহ করতে পারে। ভারা বেলীকন পরিশ্রম করে, দক্ষভাও ভাদের জ্ঞানর চেয়ে বেলী। ভাদের জ্ঞানিষ ওলো এত খাসা যে প্রভিবেদী দেশের কাঁচা মাল থেকে তৈরি পাকা মালগুলো সেই সেই দেশই জ্ঞানার কিনে নিয়ে থাকে। রপ্তানীর ওপরই ভাদের কাঁবিকা নির্ভিব করে। বড় খড়ি, ছোট খড়ি, মাল্যার, রাসারনিক ক্রেয়, বারি-বিক্রান যর প্রভৃতি ভাদের প্রস্তুত ক্রিন্ম ওলির উরতির বৃলে।

ু সুইস-সংকার বৈজ্ঞানিক ও অঞাভ আবিঝারের অঞ্জ বেশ উৎসাহ দিয়ে বাকেন। আমেরিকা প্রতি বংসর ১০ লক্ষে ত০০টি পেটেন্ট মঞ্ব করে বাকে। অপর পক্ষে সুইস-সরকার করে ১০০টি পেটেন্ট। নুতন আবিঝারের অঞ্জ প্রত্যেক কারিসর অনবরত গবেষণা ও পরীক্ষা করে বাকে। এটা কেবল বড় বড় কর্পোরেশনের গবেষণাগারে সীমাবদ খড়ে, ছোট ঘোট বাবসায়-কেন্দ্র ও ব্যক্তিবিশেষও এ বিষয়ে, উৎসাহী। প্রতিবেশী দেশের আবিসামীদের অপেক্ষা সুইসদের উদ্বাধনীশক্তি চের বেশী। অবঞ্জ সুইজারল্যাতে শিষ্কের জগতে রামরাক্য প্রতিষ্ঠিত এক্ষা মনে করবার কারণ নেই; এবানেও বর্ষ্যট, কারবানা-বছ, ভিক্ততা স্কিও মারামারি চলে বাকে। তবে অঞ্জ দেশের ভূলনায় অপেক্ষাকৃত ক্ষা।

এ দেশের শ্রমিকসন্থ বেশ কোরালো। আবার অভ্রন্ত কারিগর-সমিভিও আছে। কোনট্টই অপরের অধিকারে হুডক্ষেপ করতে পারে মা। প্রভ্যেক শিল্পপ্রভিঠানেই মহুরি, কালের সমর, ব্যবসায়ের অবস্থা ও বিরোধ সমাধানকলে কড়াক্টি ব্যবস্থা অবস্থিত হয়ে বাকে। প্রভ্যেক কোন্দামীতে শিল্পী ও শ্রমিকের মধ্যে যমিঠ স্বন্ধ রক্ষা করার ব্যবহা আহে। বিলিভ সমিভিডে উভর পক্ষের সমসংখ্যক সমস্থ থাকে। এই সকল সভার মালিকরা শুধু প্রমিকদের সমমে আলোচনা করে না, নিল্লের আর্থিক অবস্থা, নীভি, ভার অস্থবিবা ও সভাব্যভা এই বিধরগুলি নিরেও আলোচনা হরে থাকে।

সুইল সরকার সামাজিক নিরাপতা বিষয়ক আইন প্রণয়ন করে থাকে। এ বিষয়ে সুইসগণ তিনটি নীতি দারা পরিচালিত—প্রথম, ব্যক্তিগত আন্ধনির্তরশীগতা কুর করতে পারে এমন কোন আইন প্রণয়ন করা বাবে না; দিতীর, স্বেছার প্রত্যেকে নিরাপতা রক্ষা করবে; ভৃতীর, স্থানীয় অবস্থা দৃট্টে আইন বিবিধ্ধ হবে।

একট বছ কথা হ'ল এই যে সুইসরা নিক্ষোই সাধারণের উপযোগী আইন প্রণয়ন করে থাকে—এর কচ্চ সরকারের কাছে আবেগন নিবেদনের বার বারে না। প্রভ্যেক শিল্প-প্রভিটানেই রুছের বীমা, বেকার বীমা, রুয়ের স্থবিধাদান ইত্যাধি বিষয়ের স্থবাবধা আছে। এতে মালিক, প্রামিক এবং সরকারও টাদা দিয়ে থাকেন। প্রচলিত নিয়ম এই যে, বে রক্ষা-ব্যবহা না চার, তাকে টাকা দিতে হবে না, আর এই স্বিধা থেকেও লে বঞ্চত হবে। সুইসগন ব্যক্তিগত প্রতি-

বোগিভাবৃদক শিলে বিখাসী, কিন্তু একচেটরা বাজিগত ব্যবসায়ের বিরোধী। যথম কোন শিল্পপ্রতিষ্ঠান বিশেষ কারণে একচেটরা হতে বাধ্য হয় তথম সুইস-সরকার তাকে নিজের হাতে নের অথবা নির্মিত করে।

খইকারল্যাকে একটনাত্র বেলগুরে আছে এবং সেটি
সরকারের অধীনে। চলাচল বিভাগ, পূর্থবিভাগ, খানীর থাবতশাসনবিভাগের অধীনে পরিচালিত হরে থাকে। শিলপ্রতিষ্ঠানগুলিকে নির্মিত করার জন্ত সরকার থেকে পরিকল্পনা করা হয় না। বেক্তে এ দেশের উংপর জিনিষপত্রের
শতকরা ১০ ভাগ বিদেশে রপ্তানি হয় সেইজন্ত তারা অদ্যান্ত
দেশের রুলানুল্যের সমতা কামনা করে। শুইসগণ থানীনতা
ও সঞ্চপতা অবিভাল্য বলে মনে করে—তাদের মতে একট
অপরটির পরিপ্রক। খদিও সমাক্তান্তিক অর্থনীতির দিকে
আাব্নিকদের ঝোক বেশী এবং তার মুক্তিসঙ্গত কারণও আছে
তব্ও বনতান্তিক দেশ শিল্পে ব্যবসাহে উদারনীতি অন্থসরন
ও ব্যক্তিগত নিয়ন্ত্রণ ব্যবহা অবলয়ন ঘারা যে বনিক এবং
ব্যবসারের ও কারখানার মালিকদের লাভ কম হরে শ্রমিকদের উন্নতি হতে পারে, পুইজারল্যান্ডের সম্বৃত্তির কারণ খতিয়ে
দেশলে সেটা উপলব্ধি করা যায়।

তুমি আর আমি

একিকণাময় বস্থ

সোমালি পাৰার মতো ভোমার শাড়ীর প্রান্ত উভায়েছ চ্ব মত পারে, গৌলংগ্র গিরিশুলে চলো যাই ছ'কনাতে, গেবা আছে বদন্ত আকাশ, আববানি বাঁকা টাধ পাজুক মেরের মতো দেবা দেবে ছারা অন্কারে, নিব'র বব'র ছলে বাজিবে ভোমার চুড়ী, শালবনে ববে দীর্ঘাস।

চলে। যাই লখ্নী মেরে, পৃথিবীতে কাজ নাই, এ খীবন পিছে পড়ে থাক, বিকীর্ণকুত্বম বনে হ'জনে গাঁথিব বালা, কভো কথা হ'বে চোৰে চোৰে, পছিৰ করণ থরে রবীজের সুথাকাব্য, সে বৃহুত চকিতে মেলাক, ভালো যদি লাগে ভবে কুলুম-মঞ্চরী কটি বেঁবে বিব ভোষার খলকে।

ধৌৰাছি শুশ্বন ক্লান্ত বদন্তের ছাখা-রৌক্রে নীলপুঞ্চ নিংশপ আকাশ, ভার নিয়ে বহে যাবে মিংলগ নদীয় বারা, ভার ভীরে বাঁবিব কুটর ; দিলগুলি উচ্চে যাবে বেন কোন পথভোলা প্রদেশী শ্ন্যচারী হাঁল, নায়ক নায়িক। মোরা একান্ত নেপথ্যে র'বো, কেছ আসি করিবে না ভিচ।

চলো যাই, কিন্তে যাই টাণের সোনালি দেশে, রচ গল্য পৃথিবী কি হবে ? এসো বেথা হাজ বরি রুখোর্থি রু'জনাতে, যদি মরি, মরিব নীরবে।

পুশুক - পার্চয়

চারশ' বছরের পাশ্চাত্তা দর্শন—অধ্যাপক এটবেশ-চম্র ভটাচার্য। নংস্কৃতি বৈঠক, বালিগঞ্জ, কলিকাতা। মূল্য ২। ।

স্মালোচা পুশুক্টি স্থকে কিছু বলিতে ইইলে এখনেই বলিতে হর প্রছকারের ভাষার কথা। তথু সরল নয়, এমন সরস বাংলা ভাষার বে দর্শনশারের বিবরবস্তু সম্পন্ধ আলোচনা করিতে পারা যার তাহা নিশ্চরই অনেকেরই ধারণার এটাত। অধ্যাপক মহাশরের বলিবার ভঙ্গাও এরপ মনোরম বে ভাল গলের বইরের মত পড়িরা যাইবার একটি আগ্রহ শেব পর্যান্ত বভঃই জাগরাক ধাকে।

দর্শনশান্তের চিরয়ন বিষর্বপ্ত সম্বাদ্ধ পাশ্চান্তা দার্শনিকগণ গত চারি শত বংসর ধরিরা যে ভাবে গবেবণা করিরা আসিরাজেন তাহারই একটি সংক্ষিপ্ত পরিচর প্রায় গল্পের মাত করিরাই প্রস্কার এই পুস্তকে দিরাজেন। বিষয়বস্তু সম্বাদ্ধ মৌলিক কোন কথা বলিবার অবস্তা তাঁহার অবসর ছিল না, বলেনও নাই। তথু শেষের নিকে ঈবর সম্বন্ধে তাঁহার অক্রিপত ধারণা কিছু জানাইয়াছেন। পাশ্চান্তা দর্শন হইতেও যে প্রছাভিত্তির সহিত প্রহণ করিবার অনেককিছু লাছে উপসংহারে এই কথা তিনি বলিয়াছেন। সমালোচক এ বিষয়ে সম্পূর্তিকে তাঁহার সহিত প্রক্ষত। পাশ্চান্তা দর্শন তড়বাদা বা পদার্থবাদা (materialistic) বলিয়া নাসিকাক্রনের সাহাযো তাহার প্রতি অবজ্ঞা প্রদর্শন করা এই দেশীর অনেক তথাক্ষিত দার্শনিকের প্রায় ফালোন ইইরা দাঁড়াইরাছে। ইহার বিরুদ্ধে

অভিযত প্ৰকাশ করিয়া জ্ব্যাপক ষ্ঠাশর সংসাহদের পরিচয় দিয়াছেন।

এই ধরণের প্তকে খতঃই অনেক বিবরেরই বধাবধ আলোচন অসভব, অনেক বস্তুই অপুলিখিত থাকিরা বার। মূল গবেৰণা কিছু বাং না পড়িলে এই অপুলেখ ক্রটি বলিরা ধরা বার না। একটি কথা তংবলিতে চাই। গ্রন্থকার মনোবিজ্ঞানের আবির্তাবের কথা বেখানে আলোচনা করিয়াছেন স্থোনে ভূগুট্-এর (Wundt) নামোলেধের বিশ্বেরোরন ছিল। লাইপ্রিকা বিশ্ববিভালের দর্শন-শান্তেরই অব্যাপধ ভূগুট্ মনোবিভাকে বিজ্ঞানের আনহন করেন। মনোবিজ্ঞানের ইতিহাসে প্রন্থেত্বে আগিরা পড়া একটি আক্রিক ঘটনা।

ছাপার ভূলের কথা প্রস্কার নিজেই স্বীকার করিবাছেন। আশা করি ছিতার সংক্রণে এগুলি আর থাকিবে না। Epinozaর উচ্চার স্পিনোঞা, স্পাইনোজা নয়। ৭০ পৃষ্ঠার যে ইংরেজী কবিভাটি উদ্ব করিবাছেন, তাহা এইরপ—

But let a lord once own the happy lives, How the wit frightens! How the style refines! —Pope's Essay on Criticism. Lines 420—2

প্রাচ্য দর্শন সম্বন্ধে এইরূপ একথানি মনোরম পুস্তক প্রস্থকারের নিক' দাবি করিলে নিশ্চমই অসঙ্গত হইবে না।

গ্রীস্কংচন্দ্র মিত্র

मी र्था **21** য়া পু **U** ব্ৰ ভা র অ প্রমোদকুমার চট্টোপাধ্যায় কবি সভ্যেন্দ্রনাথ দত্তের যোগেশচন্দ্র চৌধুরী দানেশ্রকুমার রায়ের ঐতিহাসিক উপভাস নুডন সংশ্বপ সত্মপ্রকাশিত অভিনব সংস্করণ সামাজিক নাটক পতিৰতা 210 নানাদাহেব ৩. হিমালয় পারে (अंडे कोरा-अध वाश्लाब भारत 110 কৈলাস ও মানস সরোবর চরণদাস ঘোষের পরিণীতা অভিনৰ উপস্থাস চার টাকা 7110 ভেপান্তর তন্ত্ৰাভিলাষীর সাধুসঙ্গ 🗠 যাক্ডসার জাল Mo. 'ভাবে, ভাবার, অলম্বরে, ছংশে, বকারে—কবির অন্তদুষ্টির পরিচয় পতেথর সাথী সৌরীন্দ্র মুখোপাধ্যায় 2110 অমুরূপা দেবী এ প্ৰছে পদে পদে।'—ব ল বাসী শ্ৰেষ্ঠ উপস্থাস ভূপেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধাায় 'বেণুও বীণা পাঠু করিয়া অনেক **ডভুৱাখাণ্ডের পত্র** ৰহ্নিশ**খা** ZNO সামাজিক নাটক দিনের পর একটু খাঁট কবিছ রস কেদারবদরী সম্বদ্ধে অভিজ্ঞভাপূর্ণ প্রবোধকুমার সাক্যাল উপভোগ করিলাম।' বাসালা 7110 পাইডবুক। দাম: ছুট টাকা 2110 যায় বর -ছ্যোভিজনাৰ ঠাৰ পৌরাণিক নাটক অতমু গুপ্তের ডা: নরেশ সেনগুপ্ত ক্ষত্ৰবীর 2110 রোমাঞ্চকর এডভেঞ্চারের বই **\$10** শিবপ্রসাদ কর चयुरामधनि धन समार লুপ্তশিধা আন্তি-ভাষা এক দেহ হইতে অ পৌরাণিক নাটক ۶, আরুদ্রি-ধারা 2110 দেহে সঞ্চারিত হইয়াছে—ইহা শি চমৎকার রেসিটেসনের বই खनलका ১h٥ লক্ষীছাড়া ₹√ कार्या नरह, देश शृक्षिकाया।' মিহির আচার্য্যর রূপের অভিশাপ ২ --- त्रवीळनाथ आऱ ভালুমুখের প্রথম অভিযান বেলাকেব্রের পান ৬ নগেন্দ্ৰনাথ ভট্টাচাৰ্য্য ভাবিজ অভিষেক 2110 2110 এछ जन ८ २-८ वर कर्नस्यालिज द्वीरे, कलिकाण १ द्योगानी बर्ह,

পদব্ৰজা—গ্ৰীণগুণতি ভটাচাৰ। ভি. এম নাইরেরী। মূল্য চার টাকা। পু. ২০০।

খনের বখন কাট্যা গেলে বাসুৰ বখন বাহিবে আসিরা বিভার ভখনই ভার সম্মুখন পথ নব নব বৈচিত্রের সভান বের। নিরাসভ দৃটিতে সেই পথের ছু-ধারে ভাকাইবার কালে নন কথন বে ভারাতেই অভাইরা পড়ে—সে ভখা সে নিজেও জানে না। এই ভাবে দেশ-দেশান্তরে অবশ্বালে শোকভারতক অভ্যাের বেদনাকে সমু করিবার প্রয়াসের বধ্যেই অলক্যা-প্রসামিত গ্রেহ-ভালবাসার প্রত্তে নৃত্ন করিবা প্রছি পড়ে। নব-প্রস্তির কামনার আবার সে চক্ষ্য হুইরা উঠে।

নারক রাসবিহারীর জীবনে এই ধরণের বৈরাগা ও বছনের চিআট লেখক দক্ষভার সঙ্গে কুটাইরা তুলিরাছেন। তার প্রধ-চলার সঙ্গে বাংলা, বিহার ও বুক্তপ্রদেশের থানিকটা অংশ—সেথানকার বিভিন্ন নর্মারীর চরিত্র, আচার-অফুটান বিধি-বিধান সব মিলাইরা বে ছবিগুলি পাওরা বার ভাহা চমংকার। কোষাও অভিরক্তন চোথে পড়ে না, কোন চরিত্রই প্রাণহীন বলিরাও মনে হর না। বিশেব প্রশংসার কথা—উন্নত ধরণের ইক্-চাব ও শর্করা-লিল্ল প্রভিষ্ঠার কথা সল্লাংশকে ব্যাহত করে নাই। শেব পর্যান্ত ঐবর্ধার ব্যক্তিণে প্রস্কানী মামুবকে অবস্থ করিলা দিলা বিরোপের ক্রটি লেখক পরিক্ট করিলা তুলিরাছেন।

জ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

হে নারী রহস্তময়ী—এগোলগোল বিভাবিনোদ। ব্যৱেল লাইবেরী। ২০৪, কর্ণগুরালিশ ট্রাট, কলিকাভা। পুঠাসংখ্যা ১৫৮, মূল্য ২০০।

বিশ্বসাহিত্য এখ্যালা

मन्नामना: कशमिन् वागठी

১৪ই ডিসেম্বর

মোরক কোব্দীর হবিখাত উপজানের অহুবাদ করেছেন ঐচিন্তরপ্লন বার ও ঐঅপোক থোব। কারের অপসারণের কল্পে প্রথম বারা দান করেছিল বক্ষণোপিত, বার্থ হয়েছিল তারা, তবুও তাদেরই রক্তের আভার রালিরার আক্ত রক্তরবির অভ্যাদর। তারই মর্ম বদ কাহিনা। দাম—৩।•

পঞ্চিল

আলেকজাভার কুগরিশের হৃষিখ্যাত উপভাগ 'ইরাষা'র অনুবাদ। গণিকা-বৃদ্ভির বাত্তব কথাচিত্র। নর্গ বার:এ বোঙরা খাটা কেন ?—নিজেবেরই বাহারকার জন্ত। দাম—৩০০

মৃতন চীনা গল্প-শ্ৰীগোৱাৰপ্ৰদান বস্থ কত্ ক অন্নিত

শ্রকুমারেশ ঘোষের ভাঙাগড়া

আধুনিক সমস্তাম্পক উপস্থাস। বিশ্ববিদ্যালয়ের কৃতী ছাত্র হয়েও কলমের বলনে সমর্বে বে ধরতে পারে ছেনি-হাড়ুড়ি ওধু সেই বলতে পারে দোবী কে ? আমি ? না, অমুকা ? না, আমাদের তীর সমার । দাম—২।•

ম্যানিয়া

প্রীভূমিকা ও দৃশ্রপটবর্কিত ছেলেমেয়েদের অভিনয়োপবোদী মসনাচিকা। ১১

পদ্মনাভ-রচিত বাহলার বিপ্লবী সহীদের কাহিনী। ১০ ক্রীডার্স কর্মার ঃঃ ৫, শহর ঘোষ লেন, কলিকাতা—৬ উপন্যান। আহুক বিদ্যাবিদোধ মহাশন ইতিপূর্ব্বে বছবের, কিশোর এবং হোটদের বছ বছ নানা বাতীর পূষ্ক নচনা চরিরাহেন। কিছু আলোচ্য উপন্যানবানিকে পাকা হাতের বুলীরানার বিশেব অভাব পরিক্ষিত হইল। হাবে হাবে আনাদের বর্তনান সামাজিক জীবনের বছ ঘটন অংশ নইরা তিনি নাড়া বিবার প্রহাস পাইয়াহেন, কিছু বত্থানি শক্তির প্রহাজন হিল ভার অভাবে ঘটনগুলি শাই এবং গভীর হইরা উট্টবার অবকাশ পার নাই।

উপভাসের প্রধান নারিকা করতী এবং নৈত্রেরী। নৈত্রেরীকে
চিনিতে কঠ হর না। ভালবাসা ভাকে আত্মতারী করিবাছে।
সে ত্যাগ দরিতকে স্থী দেবিতে সভাগ এবং সক্রির হইরা উটিরাছে। কিছ করতীকে আগাগোড়া বে পরিবেশের মধ্যে পাইরাছি—বে তেকবিতা এবং আত্মনির্ভরতা ভার প্রতিটি কাজ্মে
এবং কথার আপন বাভন্তা বকার রাখিরা আসিয়াছে, উপভাসের
শেবে বেন সে করতীকে বুঁকিরা পাওরা যার না। অমিতাভকে
সে ভালবাসিত এবং উভরের মধ্যে বিবাহের কথাবার্ডাও বহ-.

ইর অঞ্জনর হইরাছিল। কিছ বেহেত্ অমিভাভ লোভা ভাষার
করতীকে বিবাহ করিতে থিবা দেবাইরাছে সেই হেতু করতী
ভাহাকে প্রভাগান করিবাছে। প্রভ্যাখ্যান করিবাছে
এই আশলার পাছে ভার নির্দ্দল ভালবাসার কোথাও এতটুক্
দার্গ লাগে। ভাল কথা—কিছ শেষ পর্যান্ত সে শেবরকে বিবাহ
করিল কিসের অভ্যন্তরধার ? নারীবনের রহত কি লেওক
এই পথেই দেবাইবার চেঙা ভ্রিরাছেন ?

উপভাসে চন্দার আক্ষিক আবির্ভাব এবং তিরোধান বটান হইরাছে নিভাছই উপভাসের গতি ভিন্ন পথে চালনা করিবার বভ। কিছু অনিভাভের ভূল ভালাইবার প্রয়োজনে চন্দার চরিত্রের যে দিক্টা আত্মপ্রকাশ করিয়াছে ভার প্রকাশ-ভলি চিছাকর্বক হয় নাই।

ইভিয়ম সহত্তেও বলিবার আছে—বেমন "গোঞাসে চা গেলা"। এরণ অপপ্রয়োগ আশা করি পরবর্তী সংকর্ষণে সংশোধিত হইবে।

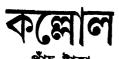
🎒 বিভৃতিভূষণ গুপ্ত

দৃষ্টিপাত-নাৰাবর। নিউ এক পাবলিশাস লিঃ, ২২ ক্যানিং ট্লাট, কলিকাতা। মূল্য ৩১ টাকা।

বাংলা ভাষার গভ করেক বংসরে যে আর করেকথানি উৎকৃষ্ট পূক্তক প্রকাশিত হইরাছে 'গৃষ্টপাত' ভাহাদের মধ্যে একটি, ইহা নি:স্কোচে বলা বাইভে পাবে। ইংরেজী সাহিত্যে বাহাকে বেলেলটার্স বলা হয়, 'গৃষ্টপাত' সেই বরণের বই। চৌন্দটি পরের সমষ্টিতে বইথানি সম্পূর্ণ। প্রত্যেকটি পরের নিজম বিশেষত আছে, আবার সরগুলি পরের সমষ্টি এই বইথানিকে একটি সর্বাদস্থান প্রছের রূপ লান করিরাছে। প্রশুলির বচনাছল নরা দিল্লী এবং উপলক্ষ্য ক্রিপস মিলন। প্রলেশক সাংবাদিক। সমাজের মুর্মু-

১৩/৪-তে যে কয়টি মূতন ব<u>ই প্</u>রকাশিত চয়েছে

সঞ্চয় ভট্টাচার্ষ্যের উপজ্ঞাস



'In the novel under review we hear the echoes of the foot-steps of the marching millions of India in quest of freedom through the falling debris of a collapsing empire. Mr. Bhattacharyya sweeps his brush with great freedom on a vast canvas. This significant novel will make you think.'—Amrita Bazar.

'সঞ্জয়বাব্ৰ লড়িয়াণুল ভাষার গুণে ইতিহাসের গতির সজে নায়ক প্রতীপের ভাষধারার কোন সংঘাত ঘটে নাই। সঞ্জয়বাব্ বনেল উপজাসিকের মনোরম সংঘ্য অক্র রাখিরাছেন। এই উপজাস্থানি গতামুগতিক পৃত্তক-তালিকার বাহিরে একটি বিশেষ ছান দাবী করিতে পারে।'—আনক্ষবাজার 'সঞ্জয়বাবু ছোটগল আর উপজাসের একটা সিন্ধেসিস বের করতে পেরেছেন এই প্রয়ে—আবিদ্বার করেছেন এক নতুন কর্ম। অর্থাৎ অল্পারিসর সহর কোলকাতার মধ্যে তিনি ফুটিরে তুলেছেন সারা ভারতবর্ষ, দেড় বছর কি তারও কম সম্প্রের মধ্যে ছবি একছেন ভারতের তথা সারা পৃথিবীর চিনন্তন অভিযানের—বাবীনতার পথে, লাভির পথে, ইন্টেলেকচ্যুলালিল মের পথে। আর 'ক্রোলে'র করেকটি মাত্র চিরিত্র চোথের সামনে উপস্থিত করেছে সারা ভারতের অগণিত দল আর মতের মামুখকে।'—বস্তুমন্ত্রী

''কলোল' খাধীন বাংলার নূতন উপস্থাস।···জাতীর আন্দোলনের কাহিনী দইরা উপস্থাস রচনার এডদিন অনেক বাধা ছিল, সে বাধা অপুনারিত হইরাছে বলিয়াই হরতো বাংলা সাহিত্যে এমন একখানি হুম্মর উপস্থাস পাঠের স্থ্যোগ পাওয়া গেল।'—মুসীস্তার

नदब्धनाथ मिट्डब

• ছোটগল্ল-সংকলন

পতাকা

সাহিত্যক্ষেত্রে নেমে পুর জর ছিনের মধ্যেই বাঁরা পাঠকসাধারণের কাছ ধেকে অকুণ্ঠ অভিনন্ধন লাভ করতে সমর্থ হন, তাঁণের সংখ্যা সাম্প্রতিক বাংলা-সাহিত্যে খুব বেদা নর, কিন্তু নরেন্দ্রবাধ সেই ম্বরুমধ্যক লেওকরের অক্সতম।

ছুই টাকা সেই অবসংখ্যক লেখকদের অক্সতম। ছোটো ছোটো ঘটনার মধ্য দিয়ে মানবমনের যে আবর্ত্তন, তাই নিপুঁৎ-ভাবে ধরা পড়েছে নরেম্রনাথ মিত্রের রচনার। পতাকা তার সর্বাধনিক গরগ্রহ। 'করোল' ও 'প্রগডি'র বুগকে কেন্দ্র করে বে করজন কবি-সাহিত্যিক একঞালে' বাংলা-সাহিত্যক্ষেত্রে আত্মপ্রকাশ করেছিলেন, এবং দেদিন কিকিৎ প্রশংসা পেরে এবং অপর্যাপ্ত অপ্রশংসার বাধা ঠেলে অবশেবে নিশ্চিতন্ত্রপে নিকেদের প্রতিষ্ঠিত করতে পেরেছিলেন, কবি

क्विषात वह

অভিত দছের

অক্সিত দন্ত তাঁদের অক্সতম। তাঁর সাহিত্য-সাধনার সর্বাধৃনিক ফল এই কবিতা-সকলন। স্বতরাং আধুনিক বাংলা কাব্যসাহিত্য সহজে সম্পূর্ণ পরিচয় পেতে হলে 'পুনর্ণবা' কাব্যগ্রন্থের প্রয়োজন অপরিহার্য্য।

ডাঃ লোকনাথন সম্পাদিভ

মুদ্ধোত্তর অর্থনীতি

वाद्वा जाना

বুছকালীন অৰ্থনীতি কেমন করে শান্তিকালীন অৰ্থনীতিতে লপান্তর লাভ করতে পারে বিশ্বভাবে তারই প্রমাণনিদ্ধ ব্যাখ্যা করা হয়েছে এই গ্রন্থে। গৃই ফিশারের সহাজিভাসা (খন্তম)

বর্ত্তমান জগতে বাঁরা প্রথাত রাইনায়ক বলে পরিচিত, তাঁদেরই বধার্থ বরণ উপধাটিত হরেছে এই এছে। তীক্ষ দৃষ্টিভলীর সঞ্জে বিলেছে হুম্মর বাচনভলী।

'বছর বিরেবণ্ট ক্ষমতা, বিচারবুদ্ধি এবং নিরূপিত সত্যকে প্রমাণসহ পাঠকের নিকট উপস্থিত করবার সংসাহস প্রবোধচন্তের রচনার বিশেষত। ভাষাও বেষন মরল, প্রাঞ্জন ও ক্রর্মাহী, প্রকাশভন্তিও তেমন মনোহর ও ফুলর। তার এই কৈশোরাগত ভণগুলি 'বর্দ্ধবিজ্ঞরা আশোক' পুক্তকেও সর্পত্র কুটে উটেছে। •••লেথকের বছত তথ্য এবং মৌলিক যুক্তি ও বিচারগুলি আমার ধুবই উপাদের মনে হরেছে। আমার বিশাস গ্রন্থটি বে-গ্যাবে লেখা ভাতে এটি সকল শ্রেকীর পাঠকের কাছেই সমাণুত হবে। — শ্রীবেশীমাধ্যক বড় রা

व्यक्तिकार (मत्ने



ভিন টাকা

'Though there are several excellent books on the great Mauryan Emperor, we have long been looking of or a monograph like the present one which is comprehensive, yet not big satisfying yet not boring. The students of Indian history will accord warm welcome to Prof. Sen's volume.'—Amrita Baxar

পূৰ্বাশা লিমিটেড—পি)৩, গণেশচন্ত এতে হ্যু, কলিকাতা ১৩

ছলে তাঁহার অন্তর্জেদী দৃষ্টি বেমন সঞ্চালিত হইরাছে, তেমনি ইভিহাসের প্রানো পাতার উপরেও প্রতিফলিত হইরা প্রাতন কাহিনীকে নৃতন আলোকে উজ্জল করিরা তুলিরাছে। দিনীর ইভিহাসপ্রসিদ্ধ হুর্গ, দরগা, দীবি অথবা মিনারের বর্ণনার সহিত উহাদের প্রাচীন ইতিহাস এত গভীর দরদ দিরা ফুটাইরা তোলা হইরাছে বে, প্রভিটি ন্মতিনীধ বেন জীবস্ত হইরা চোথের সামনে ভাসিরা উঠে। চতুর্থ পরে সমাট সাজাহানের নন্দিনী জাহানারার সমাধিক্ষেত্রে গাঁড়াইরা লেথক বলিতেছেন, " াহানারার অন্তর্প্রেইংবেছেরা বাণিক্ষ্য নিরকুশ করলেন ভারতবরে, সামাজ্যের ভিত্তিভাপনা করলেন সকলের অলক্ষ্যে। সেই ভাহানারার চরিত্রেই কলক আরোপ করে ইতিহাস রচনা করেছে ইংবেছ । এতে বিশ্বিত হই নে। যে সিভিলিরান ভারতবর্ষের পেলনে ইাফোর্ডশায়ারে বাড়ী হাকিরে আছেন, ভিনিই ভারতের নিন্দা করেন সবচেরে জোর প্রলার। লিওপোক্ত এষারীই ভারতবর্ষের খাবীনতার সবচেরে বড় শক্ষ, কারণ তাঁর জন্মছান গোরখপুরে।"

ভাৰতবৰ্ষের বিভিন্ন প্রদেশের লোকদের জাতীয় চরিতের উপর লেখকের দৃষ্টি অস্তর্ভেদী। দশম পত্রটিতে ব্রিটিশ প্রব্যেত কর্তৃক ভাৰতবাসীকে সামবিক ও অনামবিক লাভিতে ভাগ করার উদ্দেশ্য ও তাহার কুকল আলোচনা করিয়া লেখক বলিতেছেন, "কোন বিশেব অঞ্চ থেকে সৈত সংগ্ৰহের স্থবিধা এই বে, ভার ফলে একটা নতুন স্বাতি প্রথা সৃষ্টি করা চলে। ---পুক্রায়ুক্রমে পিডামহ থেকে পিডা এবং পিডা থেকে পুত্রে সেই বৃত্তি প্রসারিত হয় এবং একই বাহিনীতে বংশপরশপরা চাকুরির ছারা বাহিনীর প্রতি একটা কারেমী স্বার্থবোধ ভালে। ...বিদেশী শাসকের পক্ষে শাসন-ষ্ট্রের প্রতি শাসিতদের এই মম্ববোধস্ট্রর সার্থকতা সাধার নর।" সাম্বিক জাতির প্রতি এই পক্ষপাত বৃটিশ শাসনের পক্ষে সহারক হইরাছে সম্পেহ নাই। পঞ্চাবের বর্ত্তযান অধ:পভনের অভতম মূল কারণও ইহাই। সিপাহী বিজ্ঞোহের সমর পঞ্চাব क्रिन अक्यां व्यापन रवशान है राजाक्य विकास प्रमीय क्रमान অল্পবে নাই। আধুনিক কালেও পঞ্চাবে ভাতীয় জাগ্রণের চিহ্ন অনেকটা কীণ। সাধারণ পঞ্চাবী সজ্জ কীবনধাতা, মোটা আর, অজল আচার ও দামী পোশাক পাইলেই খুনী থাকে, দেশ লইরা বড় একটা মাধা খামার না। ভগৎ সিংহেরা সাধারণ 'নিষ্মের ব্যক্তিক্ম মাত্র। সেনাবাহিনীর সংহিতার বাঙালীরা 'হরিজন' এবং কেন ভার কারণ সকলেরই জানা আছে।

প্রভাবটি চিঠি এক দিকে বেমন ঐতিহাসিক তথ্যের সমাবেশে সাবগর্জ, তেমনি অপর দিকে সামাজিক ও ব্যক্তিগত চরিত্রচিত্রণে উজ্জল। গাভীর্ব্য ও তরলভা, ইতিহাস ও প্রেমের কাহিনীকেমন করিয়া এক একটি পত্তের স্বন্ধপরিসরে অপূর্ব্য রসস্টিকরিতে পাবে 'দৃষ্টিপাভ' তার শ্রেষ্ঠ নিদর্শন।

এদেব**ভা**গতি বৰ্মণ

জয়হিন্দ বা সোনার অপন (নাটক)—এজ্ঞানেজ নাব চৌৰুরা। আগবাট লাইরেরা। নবাবপুর রোড, ঢাকা। বৃল্য—১।
'লর হিল' বা 'সোনার বপন' একথানি প্রতীক-নাট্য (Symbolic Drama)। নাটা, সাগর, বারু, আতন প্রভৃতিকে ব্যাক্রমে চাবী, নাবিক, প্রমিক ও শৃত্যলিত ভারতীয় রূপে করনা করিয়া লাতির পরবস্ততার হুংধ, বিবেশ শাসনের নিঠুর শীয়ন এবং শেব পর্বান্ত প্রকৃত্যক লাতির বাবীনতা

লাভেট্ন কাছিনাই নাট্যকার এই নাটকে রূপকক্ষলে বর্ণনা করিরাছেন। আল নাট্যকারের 'সোনার খপন' বাত্তব রূপ পরিপ্রহ করিতেছে। সম্সামরিক রাষ্ট্রীর আন্দোলন চিরকাল লেথকদের কর্মাকে উব্ ছ করিরাছে। বর্তমান নাট্যকারও জাতির মৃত্তি-সংগ্রামের বিপুল আবেগকে রচনার মধ্যে দিরা পাঠকের মনে সঞ্চালিত করিতে সচেট হইরাছেন এবং কিছু সাফল্যও লোভ করিরাছেন। এইজন্ত তিনি প্রশাসার বাধি করিতে পারেন। কিন্তু পাত্রপাত্রীর মুখে, সংলাপের ভিতর দিরা কাহিনীর প্রত্থিতার বা কোন মহৎ তব প্রচারই নাটকের বড় কথা নর। নাটকের নিজ্য একটা ধর্ম আছে। গঠন-পছতি পরিবেশন-কৌশলে নাট্যকার বেমন খুশি নৃত্রত্বের আমদানী কর্ম ক্ষতি নাই, কিন্তু তাঁহাকে নাটকের সেই বিশিষ্ট 'ধর্ম' ফুটাইয়া তুলিতে হইবে। আলোচ্য নাটকে নাটকীয় সংঘ'তের জ্বভাব এবং দার্ম বক্ততা-গলী সংলাপের দক্ষন নাট্যক কথা প্রব্র ইইরাছে—লেথককে নাট্যরচনার এই মূল নীতির কথা প্রবর্ণ রাথিতে বলি। সঙ্গীতাংশ চমৎকার। শেবের গান্টতে বিশেষ শক্ষির পরিচয় আছে।

তরিক—এদিগিশ্রচন্দ্র বন্দোপাধ্যার। পুতকালর, ২> বাহুড় বার্গান রো, কলিকাডা। মূলা—ছই টাকা।

সাম্প্রতিক বাংলা সাহিত্যে দেশের রাঞ্নৈতিক মৃক্তি-আন্দোলনকে উপলক্ষ্য করিরা উপস্থাস ও নাটক রচনার হিডিক পড়িরা সিয়াছে। কিন্তু, ছুঃখের বিবর তক্মধে। বেশীর ভাগই প্রচারমূলক হওরার সাহিত্য-সৃষ্টি हिनार्व मार्थक इट्टेबा উठिएड श्रांबिएएड ना। 'एवक' नाउँक्शनिल রাজনৈতিক ঘটনাকে কেন্দ্র করিয়া লিখিত হইলেও, ঠিক সেগুলির সগোত্র नरह। लाश्क निरक्षक काहिनी इट्रेंटि निर्मिश ब्राशिए शाबिमाह्न ৰলিয়া নাটকটি রসোভীৰ্ণ হইয়াছে। পৃধ্ববঙ্গের এক পল্লাকে পটভূমিকা क्तिया लिथक এই नांहेक बहुना क्तियारहन । निर्माय क्नियां क्रिया मुक्किकता भन्नोवामी हिन्तु-मुमलमात्वद मिलिक हिष्ठो, मबकात्वत्र प्रमननी कि, হিন্দু-মুসলমান বিরোধের পূর্বাভাস, এই সমস্ত বিষয়কে একটি সুন্ম, স্বদুঢ় নিরবন্দির স্ত্রে বিধৃত করিয়া তিনি কাহিনীটিকে গড়িরা তুলিরাছেন। পোপাল, নন্দ, মইফুফীন প্রভৃতি গ্রাম্য লোকের মুথে পূর্ববঙ্গের কথ্য ভাষা ৰাবহার করায় সংলাপ অভাস্থ খাভাবিক হইয়াছে এবং নাট্যকারের পক্ষে বিশেষ কৃতিছের কথা বে ইহাতে রসস্টি কোথাও বাাহত হর নাই। এই ভাষা নাটকের চরিত্রগুলির ভাষাবেগ প্রকাশের পক্ষে সম্পূর্ণ উপবোরী হইরাছে। দিগিল্রবাবু পূর্কবঙ্গের কথা ভাষাকে সাহিত্যের আসরে ফাডে তলিয়াছেন। নাটকের শেব দৃষ্ঠট স্বচেয়ে বেশী উৎরাইয়াছে এবং काहिनोहि এकि अपूर्व नार्वे कोत्र पत्रित्वरणत मरथा ममाश्चि नाक कतिवारक। গোণালের শেষ উক্তিটি সর্বপ্রকার বাহলাবর্জিড, লেখক ঐ দুপ্তের গোড়ার দিক হইতে এমন চমৎকার 'সিচুরেশান' সৃষ্টি করিরা আনিরাছেন যে, ভাহা মনকে বিশেষভাবে নাড়া দের। ভূমিকার শ্রীবুক্ত শ্রীকুষার বন্দ্যো-পাধার নাটকের মর্থ-কথাট বড় ফুলরভাবে বলিয়াছেন।

গ্রীসন্মথকুমার চৌধুরী

জগতের সেরা মামুষ (সচিত্র)—এএভাত বহু। ইঙিয়ান এনোসিরেটেড পাবলিনিং কোং। ৮সি রমানাথ মঞ্মণার ট্রাট, কলিকাতা। পৃ. ৩৯, মূল্য ৮০।

ছেলেনের উপবোদী সহজ সরল ভাষার বুছদেব, বাণ্ডগ্রীট, হলরত মোহত্মদ, ভক্ন নানক ও থীচৈতত জগতের এই পাঁচ জন জেট মহামানবের জীবনকৰা ফুলরভাবে বর্ণিত চইয়াছে। জীবাসকৃষ্ণ ও মহালা গানীব

নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায় আশাপূৰ্ণা দেৰী স্তুবোধ বস্তু 'ৰনফুল' ৰিভূতি বক্ষ্যোপাধ্যায় অচিন্ত্য সেনগুপ্ত বিভৃতি মুখোপাধ্যায়



मदबाक बाबदहोधुबौ গভেন্দকুমার মিত্র মাণিক ৰদেশ্যাপাধ্যায় অন্নদাশক্ষর রায় প্রবোধকুমার সাম্যাল ভারাশহর বল্যোপাধ্যায় ৰাণী রায়

বাংলার কথাশিপ্প দাহিত্যে নুতন অভিযান

গ্রীরাধারানী দেবী ও গ্রীনরেক্স দেব সম্পাদিত

"বাধাবাণী দেবী ও নবেক্স দেব 'কথাশিল্ল' নাম দিয়ে আধুনিক প্রথাতনামা গল্পকদের যে গল কয়টি প্রকাশ করেছেন, প্রত্যেক লেখকের নিজম বৈচিত্রাগুণে তা বিচিত্র হয়েছে। বইটিকে চিন্তাকর্ষক বলতে পারি।"

— শ্রীসজনীকান্ত দাস (বেতার সমালোচনা)

"আধুনিক কালের বিভিন্ন লেখকদের লেখা চৌদ্টি ছোট গল্প আছে। বচনার সঙ্গে সম্পাদক্ষয় লেখকদের জীবনেরও কিঞ্চিং পরিচয় দিয়াছেন। প্রগুলি স্থানিবাচিত, গ্রন্থ স্থপাঠা, স্থান্তিত ও স্থান্তিত।"

"বইটিকে আধুনিক বাংলা গল্পের একটি সম্পূর্ণাক সকলনরূপে পণা করা যাইতে পারে। বইটির সম্পাদন ও বিকাস লক্ষণীয় পরিচ্ছন্নতা ও জ্কতির পরিচায়ক। প্রভ্যেক গল্পের প্রারম্ভে লেখকের বেখাচিত্র, স্বাক্ষর ও জীবন-পরিচি'ত দেওয়া হইথাছে। আমরা প্রকাশক ও সম্পাদকবর্গের উত্তোগের প্রশংস। কবি।"

"এই গল্পসংগ্ৰহের অধিকাংশ গল্পই স্থলিখিত, স্থপাঠ্য এবং লেখকলেখিকাগণের প্রায় সকলেই লন্ধ-প্রতিষ্ঠ কথাসাহিত্যিক। এই হিসাবে এই পল্পান্ত হৈশিলির বৈশিল্পা অসংকাচে স্বীকার করিতে হয়। পল্পানির অঙ্গজ্জা, মূশ্রণ ও বাঁধাই মনোজ্ঞ ও ফুক্চিসমত।"

"বাংলা সাহিত্যের চৌদ্দ্রন বিখাতি শিল্পীর রচনাসম্ভাবে এই গ্রম্বধানি সমৃদ্ধ। প্রত্যেক গল্পের প্রারম্ভে বচয়িতার প্রকৃতি, হত্তাক্ষরে নাম স্বাক্ষর ও সংকিপ্ত জীবনী পাঠকের সঙ্গে পরিচয়ের হুবিধা করিয়া দিয়াছে।" —দৈনিক বস্তুমতী

"প্রত্যেকটি সল্লের মধ্য দিয়া লেখকের রচনাভ শির বৈশিষ্ট্য অনেকথানি প্রেফ্টিত হইয়াছে। সেদিক দিয়া

. এই গল্প महम्बद्ध मार्थक वमा हरन।" -ভারত

মূল্য মাত্র সাড়ে ভিন টাকা হাজার টাকা পুরস্কার

যে পল্লটি অধিকাংশ পাঠকের মতে শ্রেষ্ঠ বলে গণ্য হবে সেই গল্পের লেখককে ক্যালকাটা কেমিক্যাল কোম্পানী এক হাজার টাকা পুরস্কার দেবেন বলে ঘোষণা করেছেন। আশা করি, পাঠকপাঠিকারা এই স্কযোগ গ্রহণ করে প্রত্যেকেই ভোট পাঠিয়ে তাঁলের রদবোধের পরিচয় লেবেন। ভোটের কার্ড বইয়ের মধ্যেই পাওয়া যাবে।

কার্টে মুদ্রিভ ভোট গ্রহণের শেষ ভারিখ ৩০০শ ভারের পরিবর্তে ৩০ েশ চৈত্ৰ ১০৫৪ পৰ্য্যস্ত ভোট নেওয়া হবে।

> এম, সি. সরকার এও সম >৪, কলেজ ক্ষোয়ার, কলিকাতা।

बीवनी এই माल अधिक हरेला बहेंक्रि खात्रल छेगाएक हरेल। वाहारक चन्न वन्नम रहेरछ (इरलाइन मान वर्षाणको अवर भागव-कोवानन केप्पन छ মহানু আহর্ণ সম্বন্ধে সুস্পষ্ট জ্ঞান জয়ে, তংগ্রন্তি লক্ষ্য রাখিরা এই ধ্রণের পুতকের বতই প্রচার হয়, ততই দেশের মঙ্গল।

অভয়-বাণী---- 🗣 ক্ণীভূষণ বিখাস। প্রকাশক--- 🗣 স্কর্শকুমার বস্থ, বিখাস,নিকেডন, কুঞ্বপর। পু. ৩২, মূল্য।•

ক্ৰিডার বই। ঘুষ-ভাঙানো, দেশ-ভাগানো মুক্তিমন্ত্রের অভর-বাণী ৰিবোৰক কবিভাগুলি পড়িরা মুগ্ধ হুইলাম। ছল্কের উপর লেখকের বেশ ম্বল আছে, কবিভাগুলিতে নচত্ত্বল ও রবীক্রনাবের প্রভাবের ছাপ পুর বেশা ধরা পড়ে। করেকটি বানান ভূল বিসদৃশভাবে বইটির সৌন্দর্যাহানি क्षित्राट्य ।

শ্ৰীবিজয়েন্দ্ৰকৃষ্ণ শীল

ত্ৰিত মক্ল--- এৰপূৰ্বকৃষ্ণ ভটাচাৰ্য। রবীক্র পাবলিশিং राष्ट्रेम : ••. भटेनडामा द्वीहे, कनिकाला। मूना--- दोका।

উপক্রাসটির আথানেবস্ত জটিক অনেকগুলি নরনারীর চরিত্র এবং বচ-ৰিচিত্ৰ ঘটনাৰ সমাবেশ হইরাছে পুস্তকটিতে। তবে মুগত: কৰবীৰ সহিত कवि मनोर्भव बानार धम महेवा हेहात बात्रख এवः कत्रवीत बाहरतत अक्टि মহান আদর্শের মুধ্যে ইহার সমাপ্তি—লেখক নিপুণ চার সহিত আছিত করিয়াছেন। অণিকাও প্রদীপের স্নেহের আবেট্টনীতে করবীর অন্তরের পরিপৃষ্টি এবং ছলার সাহচর্যো সলাপের জীবনে বৈচিত্তার বিকাশ विरम्प छेन्द्रकाता । निवादन नामक करेनक वास्त्रित क्यांद्रित क्यांद्र

শ্রীশিশিরকুমার আচার্য চৌধুরী সম্পাদিত

वारला वर्श

১৩৫৪ (৪র্থ বর্ষ) সালের বর্ষলিপি—অধিকতর তথ্যসম্ভারে সমুদ্ধ হইয়া বাহির হইয়াছে। দৈনন্দিন জীবনের প্রয়োজনীয় তথ্যে পূৰ্ব। মূল্য ছই টাকা, ভি-পি-ভে ২া৵•

অভিন্ন মনোবিদ ও কলিকাতা বিজ্ঞান কলেজের উপাধ্যায়

छाः नरगञ्जनाथ हरहाशाधात्र । । 😘

ডাঃ গিরীক্রণেধর বস্থর মুধবদ্ধ সম্বলিত। এই এবে সহজ ভাষায় মনের বিচিত্র ক্রিয়া-কলাপের পরিচয় দেওয়া হয়েছে। মনোবিভার একথানি উপাদের গ্রন্থ। আড়াই টাকা

अशाशक खरमणहत्त्व छहोडार्ट्यत

সহৰ ভাষায় গভ চার শ' বছরের ইউরো-আমেরিকার বছরের হড়রে-আনোরফার দর্শনের আলোচনা সরল **অব**চ তথ্যপূৰ্ব। আড়াই টাকা

চারশ' বছরের

সংস্কৃতি বৈঠক—১৭, পণ্ডিডিয়া প্লেস, বালিগঞ্জ, কলি: ক্লিকাভার পরিবেশ্ক: ভিজ্ঞাসা-ক্লিকাভা ২৯

নীৰৰে হব্দপতনের শুচনা ইত্যাদির মধ্যে যে মনতাত্তিক নিগুঢ়তা আছে ভাষা পাঠকের অন্তরকে স্পর্ণ করে। সালবিকার চরিত্রটিও ভালই স্ট্রাছে--- ক্রি তাহার অভিত বাংলার পল্লীর সমাজ-জীবনের চিত্র, সংখা এবং সংখার খারা প্রভাবিত গিতার চরিত্র বেন একটু অবাভাবিক ও বিসদুশ মনে হয়।

শেষের দিকে পরাগের চরিত্রে বে দৃঢ়তা এবং নিষ্ঠা লেখক দেখাইরা-ছেন, ভাষা প্রশংসনীয়। কয়েকটি মারাত্মক ছাপার ভুল নকরে পড়িল। এছণণ্ট হলর।

व्यक्तिका मृत्याभागात्र

বিপ্লবী যতীক্সনাথ— প্রনাদভকুমার চটোপাধ্যার। (रक्षत्र भावनियार्भ) ४, विद्यम हापूरक श्रीतं, कनिकाका--)२। মুল্য--- ১५०।

ভাৰতবৰ্ণ আৰু উপনিবেশিক স্বায়ন্তশাসনের মৰ্ব্যাদা লাভ ক্ৰিয়াছে। পূৰ্ণ খাধীনতা এখনো আমাদের করায়ত হয় নাই বটে, কিন্তু স্বাধীনভাৱ পথে আমরা যে অনেকদূর আগাইরা আসিরাছি ভাষাতে সন্দেহ নাই। পোড়া হইতেই এই স্বাধানতা আবোলন গুইটি পথ ধরিয়া চলিয়া আদিয়াছে--একটি নিয়ম-ভাষ্ট্রিক আন্দোলনের পথ, আর অপর্টি বৈপ্লবিক পয়। এই বৈপ্লবিক আন্দোলনে বাংলাদেশ সমগ্র ভারতে শীর্ষধান অধিকার कविशा चार्छ।

वारमात्र विश्वव चार्त्मामनस्य पृष्टे च्याहार विভक्त करा वाय। वजीखनाथ (बालाबाय, अविवय, वाबीख अञ्चि अध्य अवादिव নায়ক। ১৯১৪ সাল হইতে বিপ্লব আন্দোলনের ঘিতীয় অধ্যায় ক্ষক হয়। ১৯১৫ সালে ব্রিটন বাজনজ্ঞির বিক্রে সমগ্র ভারত-बाानी विक्षाद्व य পविक्रमना कवा इत्र, मर्व्यमचिक्रम विभवी ষ্ঠীক্ষনাথ মুখোপাধ্যার ভাহাতে বাংলাদেশের নেতৃপদে বুত হন। वारनात देवश्रविक चार्त्मानस्मत्र विकीय च्यारायव चरिनायकत्ररण ষতীজনাথ ইতিহাসে অৱশীয় হইয়া থাকিবেন। বালেখবেৰ— কোপভিপোদার জললে পুলিব ও বৈশ্ববাহিনীর সঙ্গে সবল্ল নংগ্রামে তাঁৰ মৃত্যুবৰণেৰ গৌৰবোজ্ঞল কাহিনী যুগ বুগ ধৰিয়া সকল দেশের স্বাধীনতা-সংগ্রামের সৈনিকদের অভুগ্রাণিত করিবে ।

বৰ্জমান পুস্তকে বাংলার এই বিপ্লবা বীর সম্ভানের আংশিক ভাবনকাহিনা প্রায়ল ভাষার বর্ণিত হইরাছে। লেখক বভাল-নাথের মাতৃল। তাঁহার সংক্রমারণে বৈপ্লবিক আব্দোলনে সংগ্লিষ্ট ৰাকিয়া ডিনি যথেষ্ট নিষ্যাতন ভোগ কৰিয়াছিলেন এবং ষ্ঠীক্ত নাথকে বুঝিবার ও জানিবার ছব্ল ভ প্রবোপ লাভ করিরাছিলেন। এই পুস্তকে ভিনি বিপ্লবী ষভীস্ত্রনাথের প্রকৃত সমপটিকেই ফুটাইরা তুলিবার প্রয়াস পাইরাছেন। পুস্তকের ভাষা ওলবিনী এবং বর্ণনা আবেগমূধর। পড়িতে পড়িতে মনে হয়, একটা भूक्वित्रारक्व कोवनकारिकी भिष्किक वरहे !

এই কাহিনীতে বৰ্ণিত ষভীক্ৰনাথের জীবনের বাবভীয় ঘটনা এই কথাই আমাদের শ্বৰণ ক্যাইয়া দেয় যে ভার "বাখা বভীন" উপাধি সর্বভোজাবে সার্থক হইয়া হিল। বে বৈগবিক আন্দো-ল্নের প্রভূষিকায় যভাজনাথের জাবন-দর্শন ও জাবনাদর্শ ক্রম-

घूग ठा ड़ा नौ इड़ा

অ্কান্ত ভট্টাচার্য, জ্যোভিরিক্ত মৈত্র, मजनान्त्रण न्दशिभाषाात्र, विकृ दर

খুমপাড়ানী নর, খুমতাড়ানী ছড়া। ঠাকুমা, দিদিমার মূবে শোনা বিগত বুগের স্বৃতি-মলিন দিনের হুখ-ছু:খের গান নয়; হাল-আমলের ঘটনার ওপর ছড়া কেটেছেন চার জন কবি। সিপাহী বিল্রোহ থেকে মন্ত্রীমিশন-সব কিছুই অপরপ রসোন্তীর্ণ কবিতার আকারে সালান। পুর্য রাষের অজন্র রঙীন ছবি। দাম---৩১

পুতृ न ना हित रे िक था

মানিক বন্ধোপাধ্যায়

আমাদের চেনা প্রতিদিনের এই আদিম পৃথিবী নানা কবির চোপে কত ভাবেই না প্রকাশ পেয়েছে। সেকৃস্পীয়র বলেছেন পৃথিবী একটা রক্ষঞ্চ। যেন এক অদৃশ্য হুতোর টানাপোড়েনে আপন দখা বিসন্ধ্র দিয়ে কয়েক দিনের জক্তে মাতুষ এই বন্ধমঞ্চে দেখা দেয়। এই সব মাতুষ-পুতুলের যান্ত্রিক জীবনের নিখুঁত ছবি। বিতীয় সংশ্বন। দাম---৬-

210

8

পারীর পতন

रेनिया अदयमवृत्री **১**२८२ गाल हेर्निन - शुक्काव পাওয়া উপঞালের বাংলা অন্থবাদ। সভ্যতার প্রাণকেন্দ্র পারীর বুকে নাৎসী অধিকার কাষেম হওয়ার মর্যান্তিক কাহিনী। ফ্রান্সের ধনী ও অভিজাতদের শত্রুর সঞ্চে স্হযোগিতা. দিকে জনগণের প্রতিরোধ-আন্দোলন-এই ছয়ের বৈপরীতা পারীর পতনের বৈশিষ্ট্য। তিন ৰতে সমাধ। অমুবাদ করেচেন: व्ययन मान्त्रम, त्रवीख भक्षमात्, অনিলকুমার সিংহ।

माम: ३म बड--- ८, २व अख---৩য় গণ্ড--ত তিন খণ্ড একত্রে—১০১

— অন্যান্য ৰই —

সমুদ্রের স্বাদ (গর-সংকলন) 91.

মানিক বন্দোপাধ্যায়

ধানকানা (গল্প-সংগ্ৰহ)

ননী ভৌমিক 24.

সোভিয়েট বিজ্ঞান

ডাইসন কার্টার

মতুন দিনের আলো (উপন্তাস) निও विद्याराजी 810

বিপ্লবোত্তর রাশিয়া

প্যাট স্নোন

সোভিয়েট রাশিরার শিক্ষাব্যবস্থা

ভিয়ানা লেভিন .10

ছোটদের সোভিয়েট দিলীপকুষার মৃখোপাধ্যায় সম্পাদিত ৩া-

হাড়পত্ৰ (কবিডা)

হুকান্ত ভট্টাচাৰ্য

वाधुनिक होना शब्र

লু স্থন, লাও চাজ, ডিঙ লিঙ এবং অক্সায়

বর্তমান চীনের আটক্তন সেরা সাহিত্যিকের লেখা এগারোট সমাজ-সচেতন গরের সংকলন। ভারতের প্রতিবেশী মহাচীনের সমান্তিক এবং রাজনৈতিক জীবনে সম্প্রতি গণচেতনার যে জোয়ার এমেছে তারই প্রতিফলন এই গল কটিতে। সাম্প্রতিক চীনাসাহিত্যে প্রগতির যে লক্ষণ পরিক্ষুট দে পরিচয়ের সেতৃ আধুনিক চীনা গল্প। অফুবাদ করেছেন অমল দাশগুপ্ত। দাম---।।

ন ব জা ত ক

ম্যাক্সিম গোর্কী

বচু যুগের পুঞ্জীভূত অবহেলায় বারা মান, বারা অবঞ্চাত, তাদের প্যাশা-আকাজ্বনা, সুধ-তৃ:ধের ওপর লেখা গোকীর সাঙটি শ্রের গকের সংকলন। যে মাতৃষ চাব করে আর হাতৃড়ী পেটে-সমাজের নিচ্তপার বন্ধ অন্ধকার धरत यात्रा खोवन कांग्रेष-मक्तिमान आत विख्नानीत वक्षना यात्रव मञ्जूष्ट আবু দাবিয়ে বাথতে পাবছে না আগামীদিনের গণশক্তির বাহক সেই সব মান্তবের রসোত্তীর্ণ কাহিনী। অভবাদ করেছেন নীহার দাশগুর। দাম-৩০

সচিত্র ভালিকার জন্ম চিঠি লিখুন रेफोबन्जाननाल भावलिनिः राजेन लिभिएरेज ৩০, চৌরন্সী রোড, কলিকাতা—১৬ ; কোন—কলিকাতা ৩১০৮ বিকলিত হইনা উঠিনাছিল, প্রস্থাবন্তে তাহার বন্ধণ-বিল্লেখনে লেধক নিব্দের বৃক্তিবাদী মন ও বিল্লবণ-নৈপুণ্যের পরিচয় দিরাছেন। পুত্তকের উপসংহারটি চমৎকার—ভাহা সাহিত্যিক সৌন্দর্য্যে ভরপুর।

লেপক বভীজনাথের জীবনের বডটুকু কাহিনী জামাদের তনাইরাছেন সেজনা তাঁহার নিকট জামবা কৃডজ্ঞ, কিন্তু মনে হর
—তিনি জামাদের কুদকুঁড়া দিরা বিদার কবিবাছেন। সাধারণ
পাঠক তথু বডীজনাথের বিমব-প্রচেটার কথা লানিবাই পরিত্তা
হটবে না—সবলভা-তুর্বলভা, দোব-ওণ সবকিতু লইরা 'মালুব'
বডীজনাথকে পুবাপুরি জানিবার জন্য ভাহার আগ্রহের অল্প
নাই। এই পুস্তকের সেই জাকাজ্জার পরিতৃত্তি কিন্তু হইবে না।

যুযুৎসু জাপান---- জীৱামনাথ বিখান। বেঙ্গল পাবলিশার্ম। ১৪, বঙ্কিম চাটুজে ফ্রীট, কলিকাতা---১২। মূল্য তিন
টাকা।

ষ্ঠীর বিষয়ক জাপান হঠাৎ পার্ল হারবার আক্রমণ করিয়া সমস্ত পৃথিবীর বিশ্বরের উল্লেক করিয়াছিল। সাম্রাজ্যবাদের বৃত্তুকাই বে সেদিন ভাহাকে মিত্রশক্তির বিহুক্তে সংগ্রামে প্রবৃত্ত করিয়াছিল ভাহাতে সন্দেহ নাই। যুর্ৎস্থ জাপানের প্রবাজ্যনামের উৎকট মনোবৃত্তির পরিচর কিন্তু পাওরা বার ১৯০১ সাল হইতেই বর্ধন সে মাঞ্চ্রিয়া আক্রমণ করে। বিখ্যাত ভূপর্যুটক রামনাথ বিবাস এই সমরেই সাইকেলে জাপানে বেড়াইতে ব ন। ভিনি জাপানের কোবে, ওসাকা, নারা, ইরাকোচামা, টোকিও প্রভৃতি নগরীতে প্রাটন করিয়া জাপান ও জাপানীদের সংক্

সদ্য-প্রকাশিত ! বিভৃতিভ্বণ মুখোপাধ্যারের নৃতনতম গল্প-সংগ্রহ

হাতে থড়ি ৩

কায়ক**শ্প**ভিন টাকা
বামপদ মুখোপাধ্যায়ের

শর্মিশু বন্যোপাধ্যায়ের চুয়াচন্দ্রর ৩. জাভিন্মর ২. দক্তরুচি ২.

মায়াকাল ৪১ পটভূমিকা ২০০ বৈছ্যালয়ৰ ব্যৱসাধান

শৈকভানন্দ মুখোপাধ্যায় ভাতসী ২॥০

বিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায় ভালনবনী ১॥০

अकानक: दरमन (पायान: ००, द्रामानन ठााँगिक शिंह, कनि:

বেত্যক অভিজ্ঞতা অর্জন করেন। ইতিপূর্বে বিদেশে জাণানীদের
জাচার-ব্যবহার দেখিরা ভাহাদের সথকে তাঁহার বে ধারণা হয়
থাস জাপানে সিয়া ভাহা বদলাইরা বার এবং লোবক্রটি হুর্মলতা
সব্বেও জাপানীদের জাতিগত মহন্দ্র এবং প্রেইন্স সবকে তিনি
সচেতন হইরা উঠেন। একটা জাতিকে প্রাপুরি ভাবে জানিতে
হইলে দেশের বারা প্রাপ, জাতির বারা মেরুদ্ধ সেই সমস্ত পরীর
লোকদের সক্রেই প্রাণ খুলিরা মেলামেশা করা দরকার। রামনাথ
বাব্ একদা ভিকার খুলি হাতে লইরা নি:সম্বল অবছার
ভূপর্যাটনে বাহির হইরা ছিলেন, জন্যান্য স্থানের ন্যার জ্ঞাপানের
দবিক্র লোকেরাই তাঁর খুলি পূর্ণ কবিরা দিয়াছিল। ভাদের
সক্রে ঘনিষ্ঠ ভাবে মিশিরা তিনি জ্ঞাপানের সমাজ-জাবনের ভিতরের
কথা যভটা জানিতে পারিরাছিলেন কেবলমাত্র পুক্তক পাঠ কবিরা
বা বাহির হইতে ভাসা ভাগা ভাবে দেখিরা ভাহা জবগত হওরা
সন্তব্ন নহে।

যুব্দ জাপানের কথা বামনাথবাবু বছ চিন্তাকর্বক ভাবে বলিয়াছেন। তাঁহার জ্রমণ-কথা গলের মত মনকে শেব প্র্যুক্ত টানিরা
লাইনা বার। ভাষার মারপ্যাচ নাই, বিজ্ঞা কগানোর উৎকট প্রহাস
নাই—নিজের চোধে যেমনটি ভিনি দেখিয়া থাকেন এবং নানা
মুনির মুখে নানা মত ও পথের বে সমস্ত ব্যাখ্যা প্রবণ করেন
কেবলমাত্র ভাহাই বর্ণনা করিয়া যান। তাঁর চোথ দিয়া একটা
দেশের জ্ঞাসল চেহারিটিকে বেন জ্ঞামর। তু পাইরপে দেখিতে
পাই।

পুস্তকটিতে বর্ণনা আছে, চিন্তা আছে—কতকণ্ডল কাহিনী বচনাকে আবো সবস কবিবাছে। 'জাপানের বাহাছুর ছেলের বীরত্ব-কথা' আব 'বাসবিহাবী বস্তুর বোমঞ্চকর জীবন কথা' এই স্থন্ধর জ্রমণ-কাহিনীকে অধিকতর উপভোগ্য করিবাছে।

ঞ্জীনলিনীকুমার ভদ্র

পুরোহিত-দর্পণ — পণ্ডিত ফ্রেক্সমোহন ভটাচার্য সহলিত এবং কলিকাতা, ২০৪, কর্ণগুলালিস ট্রাটছ জ্রীগুক্ত লাইত্রেরী হইতে প্রকাশিত। পৃ. ১০১০। মূল্য নর টাকা।

পুরোহিত ত্রাহ্মণদের এবং ধর্মনিষ্ঠ হিন্দু নরনায়ীদের একা**ন্থ** প্ররোজনীর নিত্যকম, দেবদেবীপূলা, ত্রতক্**ষা তবমালা এবং ক্রিরাকাণ্ডের বিধিস্থলিত** এই বিরাট্ প্রস্থের ২৮তম সংক্রণ প্রকাশিত হইতে দেখিরা আনন্দিত হইলাম।

প্রীউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

(मम-विरमरमंत्र कथा

বিবেকানন্দ স্মৃতি-মন্দির ও ভবন

কলিকাতা বিবেকানক লোনাইট ইংবেকী ১৯০২ সলে
তদিনী নিবেদিতা কর্তুক ছাশিত একট ধর্ম ও সেবা প্রতিঠান।
চল্লিশ বংসৱের অধিক কাল বাবং এই প্রতিঠান ভারতের
ভাতীর আফর্শ—ত্যাগ ও সেবার মহান্ ভাবে উর্ছ হইছা
ভ্রমণবের সেবার আছনিয়োগ করিবাছে। লোনাইট বেল্ড
ভারতুক বিশবের সহবোগিতার বাইকাল বাবং বিবিধ কনহিত্তকর ভার্য করিবা আনিতেহে। হারী বিবেকানকের

মৃতি-রক্ষাকরে কলিকাতা নগরীতে একট উপর্ক্ত মৃতিব্লিয় ও তবন নির্মাণ নোনাইটর অন্যতম উদ্বেপ্ত। এই বহং উদ্বেপ্তর নাক্ষা বেশবাসীর অর্থ-সাহাব্য, অর্থ্ সহাত্ত্ত্তিও সহবোলিতার উপর নির্ভ্তর করিতেছে। প্রভাবিত পরিক্রনাটর অন্য প্রায় হুই লক্ষ্ণ ভাকা আবস্তক। তরব্যে প্রায় ক্ষানাকাহি ইতিবব্যে সংগৃহীত হুইরাছে। এই মৃতি-বলিবের অন্য বিনি বাহা লান ক্রিবেন তাহা সম্পাহক, বিবেকানক সোনাইট, ২১, বুকাবন বহু লেব, কলিকাতা—এই ট্রকাবার প্রেরিজন্য।



স্রস্তক প্রবাদী প্রেদ, কলিকাতা শ্রীমাণিকলাল বন্দ্যোপাধ্যায়



काशीरवद वाक्यांनी जीमनव--- नारादन मृत्र



বিলাম মনীতীতের দল



"সভ্যৰ্ শিবৰ্ স্বশ্বৰ ৰাহ্যাত্বা বলহীদেন সভ্যঃ"

89**~**1 ©131

অপ্রহারণ, ১৩৫৪

্ৰ সংখ্যা

বিবিধ প্রসঙ্গ

বাংলার সমস্তা

বাংগার সম্ভা ক্রমেই ক্ষ্টলতর হুইয়া উঠিতেছে। এমনিই লেশে নিদারণ অন্নয়ের অভাব, বালি ব্রবাড়ী তো মাই বলিলেই হুব, উপরন্ধ উবাপ্ত ও সম্ভন্ত আশ্রমপ্রমি দল বাড়িরাই চলিরাছে। কাক্করের বিশৃথলা, শ্রমিকনেতা ও ভবাকবিত ক্যুনিই দলের কুপার বাড়িরাই চলিরাছে। বাংলা দেশের আর্ব্যরের হিলাব-বভিরানের কৈকিবং এবন্যার মত ভাল, কেননা কেন্দ্রীর সরকার এত দিন হ'হাতে বে টাকা ঢালিয়াছেন ভাহা হুইতে লীগ্রম্রীদলের লুইপাট সম্ভেও কোষাগারে কিছু রুগ বাজিরা সিমাছিল, স্থতরাং পশ্চিম্বদের ভহবিলে বংসরের শেষে তিন কোট টাকাও উব্ভ বাজিতে পারে বলিরা আশা ধেওরা হুইহাছে। অবঙ কেন্দ্রীর সরকারের বন পরিশোধের কথা এবন ভাবিতে হ্র মাই, নহিলে অবছা বিপরীত টাড়াইত। কিছু তিন কোট টাকার দেশের গঠন ও বুক্তবের ভাল কওটাই বা অপ্রসর হুইবে ?

ৰাদ্যাভাবের জন চাবের জমি বাদাইতে হইবে, নলে নদে জমির উংপাদম শক্তিও অনেক বাদাইতে হইবে। অভান্য অভাব প্রপের জন্য লৈশের লোকের আয় বাদাইতে হইবে, শিলে, বাণিজ্যে, কৃষিতে, বমিতে ও জরণ্যে অতি শীঘই আয় বৃদ্ধির ও উন্নতির পথ বাহির করিতে হইবে; কেমমা দেশের ছুর্গা বৃদ্ধি যে ভাবে হইতেছে তাহাভে বাংলার ও বাঙালীর চরম হুর্গতির দিম আসিতে আয় বেশী দেরি মাই। কিছ সে পথ খুঁজিবেই বা কে এবং সে কথা ভাবিবেই বা কে ? বে বাক্যবাদীশ বুদ্ধিনানের মনের হাতে কেশ এবম রহিয়াছে ভাহারা কৃষ্কি দিয়া সার্বসিদ্ধিতেই পটু এবং তভোবিক পটু ভোভাগাবীর মন্ত উর্জ্বন নেতৃবর্গের শিখানো কৃষ্কা বুলি আওভাইতে।

আৰু প্ৰায় হয় বাস বাবং ইহায়া পশ্চিমবদেয় কৰ্ণবাহ-মণে আৰিছুত হইয়াহেন। প্ৰথম আছাই বাস কাটাইয়া- ভেষ লীগদলের সঙ্গে ছারারণে অর্থাং "ল্যাডো ক্যাথি-নেটে"—এবং তংপরে, কারাপ্রাপ্তি ঘটনার পর, বিরাক করিরা-ছেম আরও তিম মাসের উপর। অবক্ত আমরা অনেকেম্ব রুবেই গুনিতেছি বে কাক দেখাইবার মত সমর ইঁলারা এবলো পাম মাই। কিন্তু বোগাতার পরিচর মাজ দিবার পক্ষেও কি ছর মাস সমর মথেও মর ? বলীর ব্যবহাপক সভার অধি-বেশন সবেমাত্র আরত হইরাছে; মুভরাং এই লভার সভাগণের বাতিয়ে আমাদের আরও কিছু সমর হরত দেওরা উচ্চিত, যাহাতে তাঁহারাই এই বাচাইত্রের কাঞ্চী। করিরা অভতঃশক্ষে নিজেদের বোগ্যভার প্রমাণচীও দিতে পারেম। অভএব আমরা আরও এক মাস পরে পশ্চিমবদের মন্ত্রীমওলের বোগাভার বিবরে বিশ্বভাবে আলোচনা করিব এবং দেই সঙ্গে বাঁহারা দেশোভারে রতী বলিরা বিভিন্ন লেবেল লাগাইরা দেশের প্রতিনিধিরণে ব্যবহাপক সভার আসন লাভ করিরাছেন্দ্ ভাহাদেরও ফুভিড্রের আলোচনা করিব।

সময়ের বিষয়ে বাঁহারা উদারভাবে লহা করমাইল করেব এবং দেশে শাভি-দুখলা ও রামরাজ্য হালিত হইবার আশার বৈর্য়ের সহিত বলিরা থাকিতে বলেন উহাদের প্রতিও আমান্তের কিছু নিবেবন আছে। ভারতীর মুক্তরাষ্ট্রের শক্রর অভাব নাই, মিত্রের একাছ অভাব। বরের ভিতরে বিধাসবাতকের ফল বার্থানিতির কর্চ নিত্যই চতুর্বিকে গোলমালের স্কট্ট করিভেছে, বাহার কলে দেশের লির ও কুবির উৎপাহন-ক্ষমতা ক্রয়েই ক্রিরা থাইতেহে ও প্রবার্ত্যর বাভিরা চলিরাহে, উপরক্ত আছে অর্থনিশাচ চোরাকারবারির ফল বাহাদের চক্রান্তে আফ চচুর্বিকে অভাব-অবটন বাভিরাই চলিভেছে। দেশের পুরুত্ব সাধারণের মুর্বা। বিন বিন বাভিরাই চলিভাতে, করিবায় ক্রোবই লক্ষণ নাই, অবস্ত বক্তৃতা ও উপরেশের আছে বিরেশী লক্ষ্য ও পুরাত্র, বাহাদের অর্থন ও প্রক্রমান্ত্রির প্রতির ও পর্কর্যাহিনী

আমরা কেবলমাত্র কালীরের জন্তই এই সভটপুর্ণ বিন্দ্র কালীই নাই, সমগ্র ভারতবর্ধের জন্তও। সেই বিশহ বর্ত মানে কম কিন্তু এইনও ভালা কাটে নাই। আমাদের সন্মূর্ব অনেক বিশল আনিভেছে। বে কোন অবছার জন্ত আমাদিগকে অভ্যন্ত নজান ও প্রস্তুত বাকিতে হইবে। প্রস্তুতির প্রথম বাপ হিসাবে ভারতে সর্বোপারে সাক্রানিক বিরোধের অবসান বটাইতে হইবে এবং আমাদের বাবীনতা রক্ষার জন্ত সমস্তুত্বিপদের সন্মূরীন হইতে গেলে এক ঐক্যুবন্ধ জাতি হিসাবে বাজাইতে হইবে। আভ্যন্তরীণ শান্তি ও শৃথলা বন্ধার থাকিলে এবং জাতি সুগঠিত হইলেই কার্যকরীভাবে বাহিরের বিশদের সন্মুবীন হওৱা বাম।

আৰৱা কালীরে আক্রমণকারী ও হানাদারদের কথা বনিরা বাকি; কিও এই সমন্ত লোক সশস্ত ও স্থানিকত এবং তাহা-বের উপরুক্ত নেতা আছে। এই সমন্তই পাকিস্থান হইতে ও তাহার মধ্য দিরা আসিরাছে। ইহারা কেন এবং কি করিরা নীমান্ত প্রদেশ ও পঞ্চাব অভিক্রম করিরা আসিতে সমর্গ হইল এবং কিরপে তাহারা অপ্রসক্ষিত হইল তাহা পাকিস্থান প্রবর্ধ কিলেশ তাহারা অপ্রসক্ষিত হইল তাহা পাকিস্থান প্রবর্ধ কিলেশ করার অধিকার আমাদের আছে। ইহা কি আন্তর্শান্তক আইমভল মর্গ ইহা কি প্রতিবেশী লেশের বিরুদ্ধে অস্ক্রদের কাল মর গ পাকিস্থান প্রবর্ধ কি কিন্তু ক্রমণ্ড আলা বহু করিতে পারেন মা গ অব্যা ইহাই কি তাহাদের ইছা গ তৃতীর কোন কারণ নাই।

হানাদারদের আসা বছ করিতে এবং বাহারা আসিরাছে তাহানিগকে সরাইরা লওবার জন্ধ আমরা পাকিছান গবরে উক্তেবার বার অন্ধরোর করিরাছি। ইহাদের আসা বছ করা উাহাদের পক্ষে নহজ। কারণ কাশ্মীরে যাওরার পথ ব্ব কর এবং কভক্পলি পুলের উপর দিরা যাইতে হয়। আক্রমণের বিপদ কাইরা গেলে কাশ্মীরে আমাদের সৈচদলকে কাজে লাগানোর ইছে। আমাদের মাই। আমরা প্রেই বলিয়াছি বে, কাশ্মীরের ভাগ্য জন্দগাবারণই নিয়ন্ত্রণ করিবে।

কেবলুমাত্র কাশ্মীরের জনগণের নিকটই আমরা এ প্রতিশ্রুতি দিই নাই, সমগ্র বিধের নিকটই দিরাছি। মহারাজণ্ড তাহা সমর্থন করিরাহেন। আমরা এই কথা থেলাপ করিতে পারি না এবং করিব না; পাত্রি-পৃথলা প্রতিষ্ঠিত হউলে পর সম্মিলিত মুক্তরাষ্ট্রের ভার আন্তর্জাতিক প্রতিষ্ঠানের সাহায্যে গণভাট গ্রহণ করিতে আমরা প্রস্তত। আমরা জনগণের নিকটই ইহা প্রেরণ করিতে চাই এবং তাহাদের সিহাত্তই আমরা মানিরা লইব। আরি ইহা হইতে অধিকতর মুক্তিসকত প্রভাবের কথা ভাবিতে পারি না। ইতিমধ্যে আক্রমণ-কারীদের হাত হউতে কাশ্মীরকে রক্ষার বে প্রতিশ্রুতি আমরা কাশ্মীরেল্ল প্রবিবাদীধিগকে দিরাছি তাহা আমরা রক্ষা ভবিব। লিয়াকৎ আলি থানের বক্তব্য

মিঃ লিরাকং আলি বামের পূব বেভার-বক্তভাট নিয়রপঃ
অভ রাত্রে আনি আপনাদের নিকট রোগশব্যা হইতে এই
আলোচনা করিতেছি। আপনাদের নিকট আমি কাশীর
লম্পর্কে আলোচনা করিব, কারব ভাগ্রীরের পরিছিতি
বর্ত রানে এক সভটকনক পর্বাবে উপস্থিত হইরাহে এবং আভভাতিক অরুত্ব লাভ করিরাহে। আনি আনি, আনার ভার
আপনাদেরও রনে ভাগ্রীর স্বাবিক অরুত্ব লাভ করিতেহে।

নিকেদের বছবিবোষিত শৌর্য ও বীর্ষে আত্মহারা হইরা কাল্পীরের নির্বাভিত জনগণের কভিণর তথাক্ষিত অভ্যুৎসাহী সহাত্মতৃতিশীল ব্যক্তি এই মনোরর জনপদের ইতিহাস তুলিয়া গিরাছেন বলিয়া মনে হয়। সুতরাং ভাহাদেরই হিতার্ধে আমরা সংক্ষেপে উহার আলোচনা করিতে পারি।

কাখীরের পর্বত ও উপত্যকার অবিবাসীসহ আলার স্থার এই মনোরম জনপদ কুব্যাত অয়তসর-চূক্তি অহুসারে বিচিশ কর্তৃক সামাত ৭৫ লক্ষ টাকার বিমিন্নরে এক ডোগরা প্রবাদের নিক্ট বিক্রীত হয়। কাখীরের বর্তমান মহারাক্ষা কাখীরের জনগণকে গো-মহিষাদি শশুর ভার পূর্বপূর্ণেরে নিক্ট হইতে উত্তরাধিকারস্থকে পাইয়াহেন। বিটিশ কর্তৃত বিক্রীত নির্যাতিত ভাসদের রক্তপ্রোত বহাইরা বর্তমানে ভারতীর সৈপদল শৌর্ব-বীর্ণের পরিচয় দিয়া এই নীতি-বিক্রছ ও বে-আইনী মালিকানা রক্ষা করিতেছে।

অভীত শত বংসরের ভোগরা শাগনে অভাত সৰ্ভিশালী ও সর্বাধিক আকর্ষীর কালীরী কাতি তুর্ভাগ্যের চরম পর্বারে উপনীত হইরাছে। সাম্প্রতিক করেক বংসরে তাহারা খাবীনতা-সংগ্রামের বঙ চেষ্টা করিরাছে। বারংবার তাহা-ফিণকে দমন করা হইরাছে এবং বারংবার তাহারা অভ্যাচার মুক্ত হইবার ভক্ত শাগ্রত হইরা উঠিরাছে।

অক্টোবর বাদের প্রারম্ভ হইতে কাশ্মীরের নিতপরাধ জন-গণের উপর পৈশাচিক অভ্যাচারের ছিঁটেকোঁটা সংবাদ পাথরা যাইতে থাকে। অনভিকাল মবোই এইরূপ সংবাদ স্রোভবারার মত পৌছিতে থাকে। মারি পাছার্ক ফইডে প্রম্মতিক প্রায়সমূহের দৃষ্ঠ দেবা যাইতে থাকে। সহস্র সহস্র আভ্যন্ত প্রশাস্ত পাকিছানে প্রবেশ করিতে থাকে।

এইরপ অবস্থার কাশ্মীরের অনগণ মরিয়া হইরা আলেবদের বিরুদ্ধে কিরিয়া গাঁভার। হাজরা ও পাল্টির পঞ্চাবে কাশ্মীরী-দের ও বিশেষভাবে পুঞ্বালীদের বহু আশ্মীরবন্ধন রহিগছে। কলে পাকিছানের কোন কোন অংশের মনোভাব বিশেষ উভেজিত হইরা উঠে এবং উত্তর-পশ্চিম লীমান্ত ও উপজাতীর অঞ্চলের কতক লোক কাশ্মীরের জ্লুমে বিচক্দ হইরা ভাষাদের আভ্রন্তের সাহাব্যের জঙ অঞ্জন হর। ইহা কাশ্মীরের নির্যাভিত, দাগতে আবর ও জালবহু জনগণের হাধীনভার সংগ্রাম্ এবং ভাষ্টানের ও ভাষাদের গ্রিভ সহাত্ত তথালীকের জীবনরকার সংগ্রাম—যাহাদিগকে নিচ্ছিত্বর জন্মর জন্ম ভারত-সরকার সাহায্য করিতেহেন। ভারত-সরকার সাহায্য করিতেহেন। ভারত-সরকারে নিহামিত নীতি হইতেহে মহারাজার হস্তকে বলিঠ করা। এই হস্ত বে কন্ডটা শোণিতসিক্ত, ভারতীয় নেতৃত্বজ্ব ভাহা ভালভাবেই ভানেন, যদিও তাঁহারা বর্ড নিনে স্ববিধাষত উহা ভূলিবার চেঠা করিতে পারেন।

তথাকৰিত হামানারদের উপর ইক্ষা করিরাই অভ্যবিক
শক্ষণ আরোপ করা হইতেছে, যেন কান্মীরের জনগন আকশিকভাবে পতালীর নির্বাতনের স্মৃতি য়ম হইতে মুছিরা
কেলিরাছে এবং জালের নির্বাতনের স্মৃতি য়ম হইতে মুছিরা
কেলিরাছে এবং জালের নির্বাতনকারীর প্রেমে রাভারাতি মন্ত
হইরা উঠিয়াছে। দাসত্বপুথলে আবদ্ধ জনগণের বিজোহকে
বাহিরের কভক লোকের সহামুভূতি আছে বলিয়াই বহিরাক্রেমণ বলিয়া ঘোষণা করা ইতিহাসের অসাধু পুনলিখন বাতীত
আর কিছুই নয়। সৈভবাহিনীর বিক্লে আবুনিক অল্প
প্রোগের অভিযোগ করিয়া বহু আলোচনা করাইনইয়াছে এবং
ইতার বুঁইনাই বিষব সইয়া অব্যাননা ও পরোক্ষ ইলিভের
একটা বিরাই কাঠামো ভৈরি করা হইয়াছে। ইহা অবশ্প
ভূলিরা যাওয়া হটয়াছে যে ভারতের আক্রমণকারী সৈভবাহিনীর সহিত সংপ্রামরত বাজিদের মধ্যে অনেকে পঞ্চালযাই হাজার প্রাক্তন দৈনিকের অভ্যূক্তি, যাহায়া শক্রদের
নিক্ট হলতে অক্র কাডিয়া লইতে যোটেই অসমর্থ নছে।

হামাদারদের বিক্ষে কাশ্মীরের মনোরম কনপদ ও উহার অবিবাদীদের রক্ষার অভ "সাহসী" ভারতীয় সৈনিকদের বাাপকভাবে চিত্রিত কট্ট-কল্লিড চিত্র দর্শনে আমাদের বিভাগ্ত ইলে চলিবে না, ভারতীয় বাহিনী কাশ্মীরের দেশপ্রেমিকদের উপর ওলি ও বোমাবর্বণ করিয়াছে—হানাদার দলের উপর নহে। ভারত-সরকার ও তাঁহাদের তাঁবেদার দল কাশ্মীরকে ক্ষা করার চেটা করিতেছে মা—এক খৈরাচারী পতনোপুধ সরকাবের রক্ষার চেটা করিতেছে।

ভারতের প্রধানমন্ত্রী উছার বেভার-ভাবণে বার্চালিত বল্লের মত ক্রমাগত খোঁচা দিরা চলিরাছেন। জুনাগড় ও মান-ভাদার রাজা পাকিয়ানে মুক্ত হওয়ার পর ভারতীর সৈরবাহিনী বেমন খে-কোন অঙ্হাতে ঐ সকল রাজ্যের মধ্যে অপ্রসর হুইয়াছে, পাকিয়ান বাহিনী ভেমন কাশ্মীর রাজ্যে প্রবেশ করে নাই। ভারত-সরকার জ্নাগড়ের পাকিয়ানে যোগদানকে ভাহাতের নিরাপতার বিরুদ্ধে বিপদ-সভাবনা বলিরা মনে করেন। কাশ্মীরের ভারতে যোগদান পাকিয়ানের নিরাপতার পক্ষে বুছত্তর বিপদ-সভাবনার করেন। আবরা এই ঘোগদান খীকার করিয়া লইতে পারি না। কাশ্মীরের ভারতে যোগদান ভারত-সরকারের আক্রমণবৃদ্ধক সাহায্য লইয়া কাপুরুষ মনো-ভারসন্তর শাসক কাশ্মীরী জনগণকে প্রভারণা করিয়াছেন। ভারত-সর রাজনোহের অপরাবে কারারছ শেব আবহুলার মুক্তি প্রস্থানী জনগণকে প্রভারণা করিয়াছেন। ভারত রাজনোহের অপরাবে কারারছ শেব আবহুলার মুক্তি প্রস্থানী জনগণকে সাহায়ত সংগ্রহণর মেড্যুক্তের

ক্ষমণত কারাবাস ব্যব্ধের অংশ রায়। এই বিরোগান্থ
বটনাবলীর ইভিহাস যথন লিশিব্র হুইবে, তথন বহু আন্তপ্রভারণাকারী দেশপ্রেমিক ও বিচারপ্রেমিকের বিধাসবাভক্তা
প্রকাশ পাইবে, কিছু কাশ্মীরের প্রকৃত দেশপ্রেমিকরণ শীম
হউক বা বিলবে হউক, এই বছবল্লের ব্রোস বুলিরা কেলিতে
সমর্গ হুইবেন—ভাছাদের বিপ্রুম্নে বছ বেশী শক্তি সবাবেশ
করা হউক। এই মৈডিক সংগ্রামে আমাদের অন্তর আমাদের
আছ্রুম্পের সক্ষেই রহিরাহে, কারণ উাহাদের বর্তমান নির্বাচনীর বিষয় খানীনতা অথবা রুত্যু। শক্তদের পরিক্রমা সার্গক
হইলে ভারতের বিভিন্ন খানের মুসলমানদের হার ভাহারাও
নিশ্চিক্ হুইরা যাইবে। সপ্তবভঃ এই পরীক্ষার পরেই ভারতসরকার পণভোটের ব্যবহা করিতে চাহেন। ভোটারপণকে
গৃহ হুইতে বিভান্ধন বা মুল্যুর কবলে কেলিয়া পণভোট গ্রহণে
কি লাভ হুইবে প

কাখীর-সরকারের সহিত সন্মানক্ষক শীঘাংসার কর আমরা সুসমগ্রসভাবে বারংবার চেষ্টা করিয়াছি, ভাষা বিশ্বের নিকট বিভিত। কাখাঁথ-দৰকার সকল অনুরোধ অবছেলা বা অঞ্জান্ত করিয়াছেন। ২রা অক্টোবর তারিবে আবি কাশীরের প্রধান মন্ত্রীর নিকট প্রস্তাব করি যে, ছই রাষ্ট্রের অবশিষ্ট প্ৰস্নাবদী ভিভাবস্থা চুক্তিভে ক্ষপণের সমস্থা ও সীমাস্ত হানা সম্পর্কে পারম্পরিক অভিযোগ সহছে ছই সরকারের প্রতিনিবিবুন্দের মব্যে আলোচনার প্রয়োজন। কালীরের প্ৰধান মন্ত্ৰী উভৱে স্থানান যে, ভিনি বৰ্ত মানে এত ব্যস্ত বে, ভিনি এই সব ব্যাপারের আলোচনা করিতে পারিভেছেন না। এতংগতেও আমরা কাশ্রীর রাজ্যের সহিত আলোচনার জন স্মামাদের প্রতিনিধিকে জীমগরে প্রেরণ করি। অবর্ভ প্রধান মন্ত্ৰী ভাৰার সহিত আলোচনায় অসীকৃতি জ্ঞাপন করেন, এবং আমাদের প্রতিনিধিকে কিরিয়া আসিতে হয়। ১এই অক্টোবর ভাশীরের প্রধান মন্ত্রী আমার নিকট প্রেরিড ভারবার্ডার इसकी तम त्य भाकियान निवरणक उपरक्ष मन्नज मा एकेटन কাশ্মীর সীমান্তে পাকিস্তানের কমগণের বন্ধতবিরোধী কার্ব-কলাপ প্রতিরোধের ভর্গ তিনি বাহিবের সাহধ্যা চাহিতে वांबा इहेरवम । जरक्रवार जामि निवरणक जमरसद असारव স্ত্রতি জ্ঞাপন করি এবং এই উচ্চেক্তে একজন প্রতিনিধি মনো-महामद क्रम चामि कामीदाद श्रवान महीदक चन्नदाव कति। কাখীর-সরকার অতঃপর এ সম্পর্কে আর কোন প্রানাপ কৰেৰ ৰাই। ২০শে অক্টোৱ কাশ্মীৰ-সহকাৰেৰ এক ভাৰ-* বাৰ্ডার উত্তরে কায়েদে-আত্মৰ কালীয়ের মনোযোগ আকর্ষণ করিয়া বলেন যে, কাশ্মীরের সহিত সম্পর্কের উন্নতিবিধানের ভ্ৰম্ভ বাৰংবাৰ চেষ্টা চলিভেছে এবং কাশ্মীরের প্রধান মন্ত্রীকে করাচীতে আদিয়া আলোচনা করার অগুরোধ করেন। এই चक्रदारित काम छेछत (मध्या एव मारे। कारतरा-चाक्रम चारक विर्द्धन करतव रव, वास्तित मानावा मक्तात स्वकी

অনেকটা চরমপ্রের অভ্রপ এবং উহাতে ধেবা বার বে, কাশ্মীর-সরকারের নীতির প্রকৃত সক্ষ্য বে-আইনী অবরুগতি-বৃলক শাসনব্যবস্থা প্রবর্তন হারা ভারতীর ইউনির্মের সহিত বোগদানের প্রবিধা বোঁজা।

কাশীর সমভার আলোচনার কর প্রতিনিধি প্রেরণ ও
নিরপেক তদত্তর কর প্রতিনিধি মনোনরনে কাশীর-সরকারের
আনীরুতি, করাচীতে আগমনের কর প্রধান মন্ত্রীর নিকট
কারেদে-আক্ষের আমন্ত্রপর উত্তরদানে কাশীর-সরকারের
আগমর্থা, তাঁহাদের সৈচদল বারা, মুসলমানদের উপর আক্রমণ
চালাইরা ক্রেকারুত উপদ্রব স্কট, ভারতীর ইউনিরনে কাশীরের
যোগদানের দিন প্রাপ্ত ১টার বিষামবাহিত ভারতীর সৈর
দলের শ্রীমগরে অবতরন ইত্যাদি হইতে সুস্পপ্ররণে প্রমাণিত
হব যে, ক্মগণের ইচ্ছার বিরুদ্ধে ইউনিরনে যোগদানের পরিক্রমণ পূর্ব হইতেই চলিরাহিল এবং উহা ভারতীর সৈওদল
কর্তৃক কাশীর দর্শন হারাই মান্ত্র সংগ্রহতে পারে।

বদিও কাদ্মীর-সরকার পাকিস্থানের বিরুদ্ধে সর্বপ্রকার দোষারোপ করিষাছেন (এবং এই তথাক্ষিত অভারের প্রতিকারের ক্ষল্ল ভারত-সরকারের নিকট সামরিক সাহায্য প্রেরণের দাবি কাদ্মীর-সরকার করিভেছেন) তথাপি কোন ভবেই ভারত ভোনিনিয়ন এই সব দোষারোপ সম্পর্কে পাকিস্থান-সরকারের নিকট কোনরূপ প্রশ্ন করেন নাই বা মুক্ত আলোচনা ঘারা এই সমস্তা স্বাবানের কোনরূপ চেটা করেন নাই। ভারত কর্তৃক কাদ্মীরের যোগদান প্রভাব গৃহীত হওয়ার ও কাদ্মীরে সৈত প্রেরণের পরেই মাত্র পাকিস্থান-সরকারকে অবস্থিত ব্যবহা সম্পর্কে জানান হয়।

ভারত-সরকার কর্তৃক কাশীর রাজ্য অবাঞ্চিভভাবে দর্ধলের । পর কারেদে-আব্দ প্রভাব করেন বে অবিলয়ে লাছোরে এক সম্বেদন অপুষ্ঠিত হওৱা প্রহোজন। উহাতে উভয় ভোষি-निवटनव भवर्गव-(समारवन, श्रवान मञ्जीवव अवर कामीरवव মহারাকা ও তাঁহার প্রধান মন্ত্রী যোগদান করিবেন। তাঁহার चामञ्जन मुरीक एव अवर २৯८म चार्कावत मार्यमामत कातिन .. ৰাৰ্ব হয়। শেষ যুহুতে পিঙিত নেহক পীড়িত ৰাকায় সম্মেলন ত্বিত বাকে। অভ:পর ব্যবস্থা হর যে, ১লা নবেশর সম্মেলন चन्छैड स्टेर्ट अवर डेक्स नवर्वत-त्क्यादिन छ श्रवान मञ्जीवत छेरार्ड (वानवान कविद्वन। अरे जत्मनश्च अपूर्वेड एव नारे. कांवन आ नरवन्त भूगाङ्क भूनवात त्यम मृह्छ चार्यामगरक খানাণ হয় যে, পভিত নেহত্ন লাহোৱে আসার মত সুস্থ নহেন। এইভাবে ভারতীয় ভোষিনিয়ন কর্তৃক সম্মেলনের ৰাৱণা পশ্চাতে নিক্ষিপ্ত হয়। ভারত-সরকার যদি প্রকৃতপক্তে এই সৰ্বাধিক অজহপূৰ্ব ও অজহী ব্যাপাৱের আলোচনা ক্রিতে চাহেন, ভাহা হইলে পঞ্জিত মেহরুর খলে সহকারী প্রধান মন্ত্রাও আসিতে পারিতেন। ১লা নবেহর কেবল লর্ড মাউউ-बार्टिन मार्शित पूर्क रमनेबका भविष्ट र्यानेशासिक एक

আদেৰ এবং কাৰেছে-আক্ষেত্ৰ সহিত লাকাং কৰেন। এই সাকাংকাত্ত্বের সময়ে লগু নাউন্ট্রাটেনের নিকট কতিপর প্রভাব করা হয়, কিছু আরি বা কারেছে-আক্ষর ভারত-সরকাত্ত্বের নিকট হইতে আর কোন সংবাদ পাই নাই। তংপরিবর্তে সভ্য ঘটনা বিবেচনা না করিরা পণ্ডিত নেহম্ম নিবিচারে পাকিছান সরকাত্ত্বের বিক্লছে দোঘারোপ করিছে-ছেন। লগু নাউন্ট্রাটেনের দিল্লী প্রভ্যাবর্তনের পর ভাষার বেভার-ভারণের ব্যবস্থা হয় এবং ভাষার অভিবাসের ভাংপর্য আমি পূর্বেই আপনাদিপকে বলিয়াছি। ভারত-সরকাত্তের বর্তনান পরিছিতি ইহাই। এই সমন্তার বিচার ভার আপনাদের ও বিশ্ববাসীর উপর নাভ রহিলছে।

লিয়াকৎ আলি খানের প্রতিবাদে সদ্দার পাটেল

নর্গরেকী বলেন, বরস্থার ধর্মবাক্কশ্রেণীর কৃতিপর বিটিশকে নৃশংসভাবে হত্যা এবং করেকট ইউরোপীর পরিবারকে অতি নির্মন ভাবে নিহত করার মধ্যে এই সব তথাকবিত মুক্তিকামী সৈনিকের চরিত্রের আগগ রপট স্পইতঃ প্রকাশ পাইরাছে। উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশের প্রধান মন্ত্রী ক্রমান্তরে ব সব প্রগাপোক্তি করিতেছেন এবং আরু মণ্কারীরা বে সব গোক লইরা গঠিত ও তাহারা যে সব আন্তর্শরে সক্রিটা একট রাষ্ট্র এ সম্পর্কে বিদ্যা আহন করিয়াছে, তাহা স্পইতঃ প্রতীধনান হইতেছে। অবচ সেই রাষ্ট্রের নেতৃর্লই একদিন সার্বভৌম ক্ষমতার অংস'নের পর শেশীর রাষ্যর্ভাবের বাধীন সভা এবং যে কোন ডোম্বিনিধনে যোগদানে হেশীর রাজ্যগুলির পূর্ব বানীনতার কথা পুনঃ পুনঃ বলিয়াছিলেন।

পাকিছানের প্রধান মন্ত্রী তবু যে কাশ্মীরের বিরুদ্ধে বিযোলগার করিরাছেন, তাহা নহে, তিনি তরতপূব, পা'তেরালা, করিরছেনাট এবং কপ্রতলা রাজ্য সম্পর্কের অভিযোগ করিরাছেন। অথচ এই রাজ্যগুলি ভারতীর ইউনিরনে যোগদান করিরাছে এবং পাকিছানের সহিত ভারতীয় ইউনিরনের সোহার্দের সম্পর্ক রহিরাছে। প্রধান নত্রী যে উনিরনের সোহার্দের ক্রমাছেন, তাহাতে তিনি নিজের স্থিবা অস্থারী সত্যকে এড়াইয়া বিরাছেন অথবা সম্পূর্ণ বিকৃত্ত করিরা দেখাইয়াছেন।

আলোৱার ও ভরতপুর রাজ্যে বর্ণন গোলখোগ হর, ভবন, পাকিহানের প্রথান মন্ত্রী আরতীর শাসন-পরিষদের প্রকৃত্ব বিশিষ্ট সমস্ত হিলেন এবং ইহাও তাঁহার আনা উচিত বে, ভবন দেশীর রাজ্যসমূহের ব্যাপার রাজ্পপ্রতিনিধি কর্তৃক পরিচালিত হইত। ঐ সকল গোলবোগ প্রবন্ধ মেওরা আরভ্য করে। আঠ ও রাজপুতদের লহিত সমর লমর ভাহারের কলে হুইত। এই সকল গোলবোগের কলে অধুসলবান্দের

ৰাকীখন ভন্নীভূত ও গৰাদি পশু স্ঠিত হয় এবং ক্ষেত-বাহায়ে আঙ্গ লাগাইয়া দেওৱা হয়।

এ বিষয়ে আমার কোমই সন্দেহ মাই যে, যুসলিম লীগ যদি ছই-কাতি সভবাদের প্রচারভার থারা আভির মজার মজার সাইলারিকভার বিষ চুকাইরা না দিত, তবে এই জাতীর সম্ভ বিবাদই আপোষ-আলোচনা হারা সভোষক্ষক-ভাবে মিটাইরা কেলা যাইত। কিছু বাহিরের বার্বসংগ্লিপ্ট ঘলগুলির কারসান্ধিতে এমন অবস্থা দেখা দেয়, যাহার কলে উভর পক্ষই প্রস্থারের বিরুদ্ধে নির্মুহ ইয়া উঠে।

ভাষা সংৰও মেওৱা পুনৱায় হাজারে হাজারে এই সকল বাজো ফিরিয়া আসিয়াছে। যাহার। চলিয়া যাইতে ইচ্চুক ভাষাধিগকে কোন যুক্তি ভারাই আটকাইয়া রাধা যাইবে না, কারণ অমৃগলমানদের বাড়ীবর ও সম্পত্তির কি পরিমাণ ভাষারা ধ্বংল করিয়াছে, ভাষা ভাষারা ভাষে।

পাকিখানের প্রবাদ মন্ত্রীর যদি কোন গোপন অভিসন্তি না থাকিয়া থাকে, ভবে পাভিয়ালা, করিদকোট ও কর্প্রভলা রাজ্যের গোলখোগকে উল্লের পূর্ব ও পশ্চিম পঞ্চাবের সাবারণ হালায়। হইভে পূথক করিয়া দেখার কি কারণ আছে আমি বুবিভে পারি না। পঞ্চাবের গোলঘোগের কচ কোন একট মাত্র সম্ভাগের উপর সমস্ভ হোষ চাপাইয়া দেওয়া যাইভে পারে য়া। ঐ সকল রাজ্যের শালনকর্ভারা সাম্প্রদান্তিক গোল্যাগ বন্ধ করিয়া মুসলমানদের হানান্তর সমন বন্ধ করিছে লা পারায় যদি কলকভাকন হইয়া থাকেন, ভবে পাকিছানসহ অভাত গব্যে তিও সেই কলক হইভে মুক্ত নহেন। পাকিছানসহ অভাত গব্যে তিও সেই কলক হইভে মুক্ত নহেন। পাকিছানও অধ্যাক্যানদের স্থানান্তর স্থানাত্র গমন বন্ধ করিছে পারে নাই।

পাকিছানের প্রবান মন্ত্রী মুসলমানদের নির্ভ করিবার

অভ এক ব্যাপক পরিকল্পনার কথা বলিলা থাকেন, কিছ

যে রাজ্যটি পাকিছানের সম্পূর্ব প্রভাবাধীন এবং যাহা কিছুকাল
পূর্বে পাকিছানে যোগ দিয়াছে—সেই ভাওয়ালপুর রাজ্যে
অমুসলমানদের উপর অন্থন্তিত অবর্ণনীর অভ্যাচারের কথা
ভিনি নিজের স্বিধার্বে চাপিরা গিয়াছেন। ঐ রাজ্যে বছ

অমুসলমান নারী, পুরুষ ও শিশু হভাহত হইয়াছে এবং
ভাহাদের বনসম্পত্তি বিনষ্ট হইয়াছে। পাকিছান গবর্ষে উ

মিক্ষাই বনে ক্রেম যে, পাকিছানের বাহা করিতে দোষ

মাই, ভারতীর ইউনিরনের পক্ষে ভাহা দোষাবহ।

পাকিছান ও উহার প্রতিবেনী দেশীর রাজ্য হইতে অনুসল্যানদের বর্ধবভাবে উৎসাদন করার ভারতীর রুঞ্চরাষ্ট্রে উহার অনিষ্টকর প্রতিজ্ঞিরা দেখা দের; কারণ ভারতীর রুঞ্চরাষ্ট্রের অবিবাসীরা পূর্বোক্ত রাষ্ট্রে তাহাদের ব্যর্থারা ব্যরণভাবে ভাগ্যের নিক্ট-নতি দ্বীকার করিবাহে, তাহারা আলে তাহা নানিয়া লর নাই। এই বিকৃত রুক্তির উপর পাকিছান প্রবর্গতির সমগ্র নীতি ও তত্ব প্রতিষ্ঠিত, এই বিকৃত রুক্তিভর্কই পাকিছানের প্রধান মন্ত্রী তাহার প্রোভা ও বিশ্ববাসীকে বিচার করিতে বাসরাধেন।

পাকিছানের প্রধান মন্ত্রী নিয়োক্ত বিবৃতিও বিরাহেন—
"আমরা বৰন ঐ সব কেশীর রাজ্যের মুগলনানকের রক্ষার
কচ ভারত গবর্ষে উক্তে অন্ত্রোধ ক'র তখন আনালের বলা
হর বে, উহা দেশীর রাজ্যের আভ্যন্তরীৰ ব্যাপার এবং
ভারত গবর্ষে উ ইহাতে হন্তকেপ করিতে অপারগ।"

ষ্থনই উভয় গৰ্থে তেঁৱ মধ্যে এ ছাতীয় প্রসদ উথাপিত হইরাছে তথনই দেশীর রাজ্যের ব্যাপারে হস্তক্ষেপর সীমাৰছ অবিকার বীকার করিয়া লওয়া হইয়াছে। ১৯৪৭ সালের ১৯শে সেপ্টেম্বর শেষবার উভয় গ্রপ্রেতির প্রতিমিধিদের বৈঠকে এই প্রশ্ন আপুরীমিকভাবে পেশ করা হয়। প্রকৃতপদ্ধে অতীতে গীগ মেতৃর্পই ব্রিটেনের অধিবাদ্ধ ক্ষভার অবলানে দেশীয় রাজ্যসমূহের আভ্যন্তরীণ ও বৈদেশিক ব্রাপারে সর্বভৌমত্ব ও স্বাধীনতা আছে বলিয়া সরবে ঘোষণা করিয়াছেন।

এখন পাকিছানের প্রধান মধীর মুখে ভারতীর মুজরাই ও উহাতে বোগদানকারী দেশীর রাজ্যের শাসনভান্তিক সম্পর্ক বিকৃত করিয়া দেখান শোভা পায় না। তিনি যদি আছরিক—ভাবে অথবা অক্তমপূর্ণ ভাবে এ সব কথা বলিয়া থাকেন ভাহা হইলে তিনি যেন নিজের ঘর প্রথম গুরুইয়া পাকিছানে যোগদানকারী ভাওয়ালপুর রাজ্যের বিরুদ্ধে ব্যবস্থা অবলম্বন করেন। ভারতীয় মুক্তরাট্রে যোগদানকারী যে সব দেশীর রাজ্যে অঞ্চিত অভ্যাচারের বিষয় তিনি উল্লেখ করিয়াছেন, ভাওয়ালপুর এ ক্ষেত্রে ভাহাদের চেয়ে কম দোখী নয়।

শ্ব তৈ ই দেখা যাই তেছে যে, সংবাদের বিঞ্জি, ভূল সংবাদ প্রচার, গোপনীয়তা ও ঘটনার এক তরকা বিবরণ প্রদান পাকিস্থান গবর্মেণ্টের পক্ষে একটি প্রচার-কৌশল হইরা উঠিতেছে। গত মহাযুছের পূর্বে ও যুছ চ'লবার সময় ভাঃ গোম্বেলসের প্রচারকার্যের সহিত ক্ষণধাসীর পরিচয় আছে। ভাঃ গোম্বেলস পরলোকগত হইলেও ভাহার প্রচার-পছতির পুনর্জন হইয়াছে। কিছু এ বিষয়ে আমার সন্দেহ নাই যে, পাকিস্থানের প্রধান মন্ত্রী সমন্ত ব্যাপার বিচারেছ ভার যে ক্ষণধাসীর বিবেচনার উপর ছাড়িয়া দিয়াছেন, সেই ক্ষণধানীকে তিনি প্রতারিত করিতে পারিবেন না।

পূর্বদীমান্ত রক্ষার ব্যবস্থা.

নববদ সমিতির সভাপতি ডা: এদ কে গায়ুলী ভারতীর যুক্তরাষ্ট্রের পূর্বগীমাত রকার ব্যবহা সহতে নিয়লিবিত মর্বে এক বিরতি দিয়াদেন:

"পঞ্চাবের হালায় ও কাখীরে হানা প্রদান হইতে আমর।
এই শিক্ষাই গাভ করিবাছি যে, আন্ত সম্প্রান্তলি সম্পর্কে
আমাদের স্থান কর্মপন্থা অবল্যম করা প্রয়োজন। ভারতীর
মুক্তরাষ্ট্র ও ভারতীর জনসাবারণের নিরাপতা দইরা আমরা এই
ধরণের হিনিনিনি বেলা চলিতে দিতে পারি না।" বির্ভিটতে
আরও বলা হইরাহে, "ভারতীর মুক্তরাষ্ট্রের পূর্ব সীমান্তে শশ্চিম
বলই ভাহার সীমান্ত-প্রদেশ। এই বৃত্য সীমান্তের রকার অভ
উপরুক্ত ব্যবহা অবল্যম করা অভ্যাবর্ডক। অভ্যার, উত্তর ও

পশ্চিম দীমাতে আমাদের যে বিপাৰের সন্থীন হইতে হইরাতে,
পূর্ব দীমাতে আমাদিগকে তাহা অপেকাও ব্যাপক বিপাৰের
সন্থীন হইতে হইবে। পশ্চিমবদের রক্ষাব্যবহাকে প্র্চৃ
করিয়া ভূলিবার ব্যাপারে এ যাবং কিছুই করা হর নাই।
সাম্প্রদারিক সম্প্রীতি খাপনের মধুর বাই বেন আমাদের প্রকৃত
বিপদ সম্পর্কে উদাসীন না করিয়া তোলে। চুর্বগভার প্রযোগে
বিপদ আরও ঘনাইয়া আলে।

এ সম্পর্কে নববল সমিভির পাঁচ দকা কর্মনীভি বর্ণনা প্রসাদ ভা: গালুগী ভারও বলিয়াছেন, "উপর্ক্তসংখ্যক সদস্র সৈষ্ট দিয়া ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রের পূর্বদীমান্ত রক্ষার ব্যবহা করিছে হইবে। বাণিল্য ও বোগাযোগ অক্ষর রাখিবার জভ শীমান্তে নাত্র একট পথ উন্মৃত্ত রাখিরা অভাভ পথ অবিলথে বছ করিয়া দিতে হইবে। একট বাঙাগী সৈভবাহিনী গঠন করিয়া উহাতে লোক ভাত করিবার ব্যবহা করিতে হইবে। এই সৈভবাহিনীর সহায়তার জভ একট গৃহরক্ষী দল গঠন করিছে হইবে এবং ২১ বংগর হইতে ৪০ বংগর বরস্ক প্রত্যেক ক্মন্থ ব্যক্তিকে উহাতে বাধ্যভাব্দকভাবে হোগদান করাইতে হইবে। তাহা ছাড়া পশ্চিমবঙ্গে ভারত-সরকারের নৌ ও বিয়ানবাহিনীর করেকট স্থারী ঘাঁট খাণন করিতে হইবে।"

এই দাবি কলিকাভাষ এক বিবাট জনসভাতেও ধ্বনিভ হইয়াছে কিছ এবনও পর্যন্ত উহা কার্যে পরিণত করিবার কোন লক্ষণ দেখা যায় নাই।

ভাঃ প্রস্কা খোষের ষণ্ঠীগভা তিন মাস যাবং বহাল রহিরাছেন। পশ্চিম বাংলঃ এখনও ভারতের পূর্ব সীমান্ত প্রদেশ। এই তিন মাসের মধ্যে সামান্ত রক্ষার ব্যবহা তো করাই হয় নাই, বরং বাঁহারা এই দাবি করিরাছেন উাহা-বিগকে 'ওয়ার-মংগার' বাগরা অভিহিত করা হইরাছে। ভাবী বিপদের সংবাদ না রাখা এবং তাহার ক্ষ্ণ প্রভত না হওয়া যে ক্ত বড় মারান্ত্রক পোকক্ষরকর হইতে পারে, কলিকাভার প্রভাক্ত সংগ্রামে এবং পঞ্জাবে তাহা মিঃসংলরে প্রমাণত হইয়াছে। পশ্চিম পঞ্জাবে আক্রমণের প্রভৃতি কিভাবে ভলিতেছিল ভাহার সংবাদ রাখা হয় নাই বলিরাই হিন্দু ও শিখদের বাস্তভাগে না করিবার ক্ষ্ণ উপদেশ দেওয়া হইয়াছিল, ভার পর কি ঘটয়াছে ভাহা সর্বক্রবিদিত।

পাকিছান অস্ত্র সংবাদ করিতেছে গত এক বংসর বাবং।
ভারত-সরকার সে সংবাদ রাবিয়াছিলেন এমন কোন পরিচর
পাওরা যার নাই। পাকিছান প্রতিষ্ঠার সক্তে সক্তে পশ্চিম
পাকিছান গবর্ষে বিটিশ আইন বাতিল করিয়া সবল দেহ
প্রত্যেক মুসলমানের হাতে অস্ত্র দিয়াছেন। ভারত-সরকার
এ বিবরে প্রত্ত বাকিলে পশ্চিম পঞ্চাবের আক্রমণ আরভ
হওরার সন্তাবনা বৃবিতে পারিতেন এবং তথাকার হিন্দু ও
শিবদের আত্মরকার অস্ত্র দিলে এত লোককর হইত না।

পূৰ্বক্ষেও এইওপ ক্ৰমণ্ড ঘটৰে কিনা ভাষার কোন নিচ্ছত। নাই। পাকিশ্বান ভাষায় বাইনৱিট সনভা কিভাবে সমাধান করিবে শঞ্চাবে ও সীনাতে ভাষার পরিচর বিবাছে। পশ্চিমবলে করেক লক লোক বলি অন্ত চালনার দক্ষতা অর্জন করে
এবং অন্তের লাইলেক দানের কুপণতা বাভিল করিব। উপর্ক্ত
লোকদের হাতে বলি পর্বাপ্ত পরিমাণ অন্ত দিরা রাধা যার তবে
পূর্ববেদর পাকিহানীরা হিন্দুদের উপর উপত্রব করিবার পূর্বে
চিন্তা করিতে বাধ্য ক্টবে। পূর্ববেদর হিন্দুদের স্বপৃত্ব ক্রেশে
বাস করিবাপ্ত প্রথাস দানের সর্বপ্রেক্ত উপাপ্ত পশ্চিমবল কর্তৃক
শক্তি সংগ্রহ। ভাঃ খোষ এই সহক পথে পদার্শবের লক্ষণ
দেখানো তো বহু দূরের কথা, তার সাবের পূলিস-বাহ্নিরীর
স্থাপ্রিশকে বেদবাক্য জ্ঞান করিবা অন্তের লাইলেল দান বহু
করিবা বাসরা আছেন এবং ধে-আইনী অন্ত আদারের ক্রম্ব
বর্গিস্ কর্ল করিবা কর্তব্য স্থাপন করিতেছেন।

অদ্রদশী ও অযোগ্য দেভারা কংগ্রেসী চক্রান্তের দারা গবর্ষে ও ধবল করিতে পারেন কিন্তু অন্তের মত ইংাদিগকে অন্ত্যরবের পরিণাম কি ভয়াবহ হইতে পারে দেশ কি আছও ভাহা বুকিবে না ? নিরপ্র দেশ কখনও কোন সমস্ভার সমাধান করিতে পারে না এই সহজ সভ্য ভাঃ ঘোষের মভিছে প্রবেশ করাইতে না পারিলে বাঙালীকে আরও ভয়াবহ লাগ্যার ও রক্তপাতের সশ্মুখীন হইতে হইবে।

বিশদের সময় এই শ্রেণীর কংগ্রেস বেভারা কোৰায় বাকেন কনৈক প্রপ্রেরক মহালা গাড়ীকে ভাহা দিবিয়া জামাইলে গাড়ীলী এক প্রার্থনা সভায় ভাহার উল্লেখ করেন। প্রদেশক দিবিয়াছেন—

"জনসাধারণকে ধালার মুখে কেলিয়া রাখিরা পশ্চিম পঞ্চাব ও পাকিস্থানের জভাভ বহু স্থানের বিশিষ্ট কংগ্রেস-নেভারা নিরাপন স্থানের পলাইরা আলিয়া সেখান হুইতে আভঙ্কএন্ত না হুইবার এবং সাক্ষাদাহিক মৈত্রী রক্ষার ক্ষভ জনসাধারণের উচ্চেন্ত বন্ধ বৃদ্ধ ও লখা লখা কভোৱা বান্ডিভেনেন। আশ্রেরপ্রার্থিনের সলে থাকিরা ভাষাদের হুংখ-চুর্জনার অংশ প্রহণ করা ভো দ্রের কথা এইসব কংগ্রেলী নেভ্রুক্ত লালাহালামা হুইতে বন্ধ দ্রের পলাইরা আসিরা প্রাসাদোশম অইনিকার নিশ্চিত্ত আশ্রেরপ্রার্থিনের মাথা ও জিবার স্থান নাই। স্থিরিছির খাভ নাই, শীত নিবারণের উপযুক্ত বন্ধ এখন কিব্রুলানোর মত ছুথানি বন্ধ পর্যন্ত নাই।"

বাংলাদেশেও ঠিক ইছাই ষ্ট্রাছে। কলিকাভার প্রভ্যক্ষ সংপ্রাম এবং মোহাধালীর বীভংগভার দিনে বাঁছারা মিরাপদ দূরত্বে অবহাম করিরা আত্মরকা করিয়াছিলেন, আত্ম তাঁহারাই বাংলা-লরকাররূপে বদদেশের রাজনৈভিক ও সামাজিক জীবনের কর্ণবার । আমরা মনে করি ক্ষমগারাবের অপরার ইছাদের চেয়েও ওরভর। বার বার একই ব্যাপার দেখিরাও বাহাদের চোব বোলে নাই, অকর্ষণ্য "মেতা" এবং তাঁহার হার্থাবেষী দলকেই ভোটের সমর ভোট দিরা বাহারা ক্ষমভার আগনে প্রভিত্তিত করে, প্রার্ভিত্ত ভাহাদেরই ক্রিভে হুইবে।

শ্রমিক বিরোধের সমাধান

বোৰাই গবৰে তেঁৱ প্ৰথমন্ত্ৰী আৰুক্ত ওলজাৱীলাল মক্ এক বেতার বক্তৃতার প্ৰমিকদের নিকট প্ৰম সংক্ৰান্ত বিরোধ লক্ষতে আপোবরকার আবেদন জানাইরা জাতীর জীবনের এই নকটন্ত্র মৃতুর্জে উংপাদন বৃদ্ধিতে সাহায়্য করিবার জন্ত প্রমিকদের অপুরোধ করিবাছেন। তাঁহার বক্তৃতার সারাংশ এইবল :—

(১) अधिक एव (नज्-भिर्वाहरम अपनिद्युष्टमात श्री हिम দিতে হইবে। অভিবিক্ত দাবি উবাপন করিয়া যাছারা শ্রমিক-দের সমর্থন লাভ করিতে চায় এবং শ্রমিক বিরোধ সম্পর্কে একটা মীমাংসায় আসা অপেকা বিরোধকে জীয়াইয়া রাখিতে এবং গোলমাল পাকাইতে যাহারা ভালবালে সেইলব এেড-বৃক্ষ হইতে শ্রমিকদের দূরে থাকিতে হইবে। (২) উপযুক্তসদত্ত नरेवा मक्तिमानी रेकेनिश्चम गर्रेन, जानियेव दावा खिवक বিরোধ মিটান যতকণ দত্তবপর ততকণ ধর্মবট সর্বভোভাবে ক্রানের নীতিই শ্রমিকদের এছণ করা উচিত। (৩) শ্রমিক-দের অভাব-অভিযোগ দূরীকরণের এবং বিরোধ মীমাংসার যে সকল বাবধা সরকারী আইনে আছে ভাছার পূর্ব সন্তাবহার শ্রমিকদের করিতে হটবে। শ্রমিক বিরোধ সংক্রাভ বিষয়ের মীমাংসার কোনরূপ দেরি বা অসুবিধা দেবা দিলে তংপ্ৰতি সংশ্লিষ্ট কৰ্তপক্ষের দৃষ্টি প্ৰমিক্সৰ আকৰ্ষৰ ক্রিবেন। (৪) অনিবার্য্য কারণ ব্যতীত শ্রমিকগণ কালে যোগধানে বিরভ থাকিবেন না। (e) কাজের সময় মনোযোগ দিয়া কাভ করিবেন: (৬) মহর গতিতে কাভ করা অত্যন্ত खबाद । अधिकनन या दनी मस्त है शोबान महाई स्टेरन । (4) बिर्णिशासिक कमारि याशास्त्र छेरशामन मन्मर्स् अक्षे যুক্ত ক্ষিট গঠন সম্ভব হয় শ্ৰমিকদেয় সে সম্বৰে তংপৰ হইতে ছইবে। এই ক্ষিট বাহাতে কুভকাৰ্য্য হইতে পাৱে ভজ্জ শ্রমিকদের সচেষ্ট্র ছইতে হইবে। (৮) শ্রমিকদের মনে রাখিতে হইবে যে, প্রতিষ্ঠানের কলকলা এবং অভাত সম্পত্তির অপচর ও ভভিতে ভাতিরই ভতি এবং (১) উংপাদন বৃদ্ধির সন্তাব্য উপান্ন সম্পৰ্কে শ্ৰমিকদের যদি কোন প্ৰভাব থাকে ভাষা ছইলে ভাঁছারা ইউনিয়ন বা উৎপাদন কমিটর নিকট ভাছা ८१५ कविद्यम ।

পশ্চিম বাংলা গবলে উও এক প্রেস নোটে জানাইতেছেম যে অবস্থান বর্মণটকারী এবং "সভ্যাএই"গণ কর্তৃক কর্তৃ ব্য সম্পাদনে ইচ্চুক শ্রমিক ও কর্মচারীদিগকে কারধানা বা আপিসে প্রবেশে বাবা দানের জভ কম কাজ হইতেছে এবং ইহাতে দেশের ক্ষতি হইতেছে। এই বরণের বাবা দান বছ ক্ষরিবার জভ গবর্ষে উ অভঃপর কঠোর ব্যবস্থা অবলম্বন ক্ষরিবার জভ গবর্ষে বিরাহেন।

ভারতবর্ষের বিশেষতঃ বাংলাদেশে প্রত্নিক আন্দোলন এক অভি কর্ণস্থা অবহার আসিরা গৌহিরাহে। এই প্রবেশে

আন্দোলনের নেভারা প্রার সকলেই বাঙালী মধাবিভ পরি-नारवंद महान अन्य देशारवंद वादा यात्रादा विश्वक व्हेरकाह ভাষাল্লা প্ৰায় সকলেই অবাধালী, বাংলাল্ল অৰ্থ লোহৰ ভিন্ন वारनारकरन जानारक जात रकाम वार्य माहे। कनकातवाबात শ্ৰমিক হইতে খুৱ করিয়া বিভিওয়ালা, ঠেলাওয়ালা, কেরি-अज्ञाना, विज्ञ ब्याना, युटि श्रक्ति देवेनियम्ब गर्रम श्रानीव প্ৰতি ভাকাইলেই দেখা ঘাইবে ইউনিয়নের কর্মকভারা वाहानी अवर अभित्कता चवाहानी, चानामरनारन भा विवादे যাহাত্ৰা 'কমজোত্ৰিকা পানি' বলিয়া বাংলাদেশকে কটজি বৰ্ষণ করিতে আরম্ভ করে, ইউনিয়নের দৌলতে মুখুরি বুদ্ধি করিবা नरेवा प्रत्म (यन कविवा है।का भार्शव अवर अ प्रत्म अकहै। প্রদা বরচ করিতে চার না। কেন্দা বাংলা ও বাঙালীর সর্বাশেও ভাষাদের কিছুই আসে যার না। টেশনে মালে হাত দিৱাই এক টাকা, বিজা ছ' পা গেলে আট আনা, ঠেলা গাড়ীভে মাইলবানেক দুৱে যোট পাঠাইলে ভিন টাকা बाकृष्टि देशासित सावि, ना बिटनरे कर्हेकि । शिवान रेके-নিৱান অভ্যাচাৱের সাট্ডিকেট দইরা বসিরা আছে, বাবা शास्त्र हेशाह गाँहे। काक शाहण्याक कतिरव गा. कहिराध यवामच्चर कांकि भिरत, यक्तित रामा राम वामा, छात छैनव क्याद क्याद (वामान नावि। कन नान्दिशास धरे (व नृजन (कर बाब कनकावबाना वावना-वावित्का नामिएक हारर मा।

বাঙালী ব্যবসা করে সকলের শেষে, কমিউনিজম করে সৰার আবে। কমিউনিজ্য করিবার আবে ভাবিরা কেৰে মা চাপটা কাহার উপর পড়ে। শ্রমিকের বেপরোয়া মছুরি বৃদ্ধিত জিনিষপত্ত্রে দাম চড়িতেছে, অবাধালীর লাভ ছইভেছে কিন্তু মল্লিভেছে বাঁৰা আন্তের গৃহস্থ-সাৰারণ, ক্রিউ-নিষ্টদেরই আত্মীরবৰ্ম, স সমাজের লোক। মঙ্রি বাছিতে বাভিতে এখন এক কোঠার ভাগিরা ঠেকিতেছে বে শ্রবিককে আর পুরা সর্বাছ কান্ধ না করিলেও চলে। কান্ধে উপস্থিত হুইয়া কাঁকি ভো নিভ্যকার ব্যাপার। মালিকের কিছু বলিবার है भार मार्ड, समिन वर्षके बदर कनकलात गर्वमाम । बहे , অভ্যাচারে একে একে কারধানা বর হইভেছে, বিদেশী মাল चावनामी इ इ कविता वाकिएण्ड, मिटनव निध-वानित्काव সংশাশ হইতেছে। ক্ষিউনিইদের ইহা কাষ্য হইতে পারে কিছ দেশের সদ্যালক বাধীনতা বন্ধার এত বড় পরিপছী আর কিছ ছইতে পারে না। স্বাধীনতা লাতের পর যে সময়ে দেশের প্রভাকট নাগরিকের উচিত ছিল সর্বশক্তি প্রয়োগ করিছা ष्ठेरशाहन वृष्ट (मरे मगद छेरशाहम द्वारमव (be) 'मारवारहैक' ভিন্ন আৰু কিছু নহে।

হাৰীনতা লাভের পর প্রমিক্ষের আলাহা প্রতিঠানেরও কোন প্ররোজন আর নাই, তাহারা ইক্ষা করিলেই কংপ্রেলে খোগদান করিতে পারে। কংগ্রেস প্রকান্তিক প্রতিঠান, সর্ব-সাবারণের উহাতে যোগদানের অধিকার আছে এবং কংগ্রেলের

क्षवनीचि, कृषिनीचि, चर्गीचि अकृचि नवरे निर्वाद्यतन्त्र অধিকার আছে সাধারণ সমস্তদের। ক্ষিট্টনিষ্টদের পরিচালনার দেশের বহুত্বর স্বার্থ কইতে নিজেদের স্বার্থ আলাদা করিবা কেলিয়া শ্রমিকেরা এবনও যে তুল করিভেছে ভাষা ভার বেশী দিন চলিলে তাহাদিগকে তার হুত ভবিয়তে গভীর অমুভাগ করিতে হইবে। মুছের সময় ধর্মন কুষক এবং অভাত দরিজের। অনশনে ও বিনা চিকিৎসার লাবে লাবে মরিয়াছে, প্রমিকদের का छन्न बाहा ७ र्थस्यत प्रताक बटकावक स्टेशांकिन। कातन সে দিন ভাহাদের সাহায্য ইংরেছের একাছ প্রয়োজন ছিল। খাৰীৰভা-সংগ্ৰাৰে লেশমাত্ৰ সাহায্য ক্ষিউনিষ্ট-পরিচালিভ শ্রমিক সন্দেরা করে নাই, অবচ যুদ্ধের সমর, বিশেষতঃ বিরালিশের বিপ্লবে ত্রিটিশ সাত্রাজা চিরভরে ধ্বসাইয়া দেওয়ার ক্ষতা ইহাদেরই হাতে আসিরাছিল। দেশের স্বাধীনতার চেত্রে बक्ति बदर द्राम्य प्रिमिन देशायत निकृष्ठे वर्ष स्टेश शिकाटेश-ছিল একৰা সাৰাৱণ দেশবাসী যেন কখনও না ভূলে। ক্ষমক ভূলিতে পাৱে না যে ভাহাকে ভাষ্য প্রাণ্য হইতে বঞ্চিত করিয়াই সভার শ্রমিকের প্রাস কোগানো হইয়াছে এবং ভার ধেসারত ট্যাক্সের আকারে তারই বাড়ে চাপাইয়া দেওয়া হুইয়াছে। পিতিল সাপ্লাইয়ের ডাইতার বর্ষটে দেশবালী যে কঠোর মনোভাব দেখাইয়াছে ভবিয়তে সর্বপ্রকার শ্রমিক ৰৰ্মনটের চেষ্টার সেক্সপ ঘটবে: লক্ষণ জমল: পরিভার ছইয়া আসিতেছে। ধর্মবটের বা উৎপাদম ব্রাসের হারা দাবি আদায়ের চেষ্টার কোন প্রয়েখন এখন আর নাই কারণ नवर्ष केटक अथम क्रमण मामिश्र हिलाल स्टेटर ।

সোভিয়েট রালিয়ার উৎপাদন হ্রাস সাবোটেক বলিয়া গণ্য হয়। বাংলাদেশেও এরণ আইন এইত হওয়া আবশুক বাহাতে শ্রমিকদের অঞ্চার প্রবাগ সইয়া কোন রাজনৈতিক দল উৎপাদন হ্রাসের হারা গবর্ষে তিকে বিত্রত করিবার কচ দেশের অনিষ্ট সাধন করিতে না পারে। রালিয়ার সাবো-টেকের কচ স্বত্যুদভের বিধি আছে, আমাদের দেশে অভতঃ বীপাভরের বিধান ধাকা আবশুক।

পিশ্চিম-বঙ্গ মুসলমান সম্মেলন

কলিকাভার ডাঃ আর আহমদের সভাপতিতে পশ্চিমবদের মুসলমানদের এক প্রকাণ্ঠ সম্মেলনে স্পষ্ট ভাষার বলা হইরাহে যে সঙ্গীর্ব ছই কাভিতত্ব পরিভ্যাগ করিরা মুসলমানদিগকে এবন কংগ্রেসে যোগ দিভে হইবে এবং ভারতের সংখ্যালমু মুসলমানদের বার্ব কোন সাম্মেলারিক প্রভিষ্ঠান বা রাজনীভির বারা রক্ষিত হইতে পারে না। ঐ দিন মিঃ সুরাবর্ধীও একট গোপন বৈঠক আহ্বান করিরা উহাতে মুসলমানদের ভবিষ্যং কর্মপত্ম সম্বদ্ধে আলোচনা করেন। উহাতে বাঙালী মুসল-বানেরা উপথিত ছিলেন না। সুরাবর্ধী সম্মেলনে হই ভাতিতত্ব লখকে কোন মুবরা প্রকাশ না করিরা উহা একাইরা বাঙরা

হৰ এবং লীগকে আৱণ্ড শক্তিশালী করিব। নৃত্য তাবে গড়িয়া ভূলিবার দিকেই ব্যোক দেবা যার।

ৰুগলিৰ লীগ পতিত্যাগের জন্য বুসল্মানদের আহ্বান জানাইরা ভাক্তার আর আহ্মদ যে অভিভাষণ প্রদান করেন ভাহার সার্ম্ম এইরপ:

"হুই ভাতিতত্ত্ব ভিত্তিতে ভাষত বিভক্ত হইয়াছে। লীগ-বেতারা মুসলমানদের বুঝাইরাছিলেন যে, পাকিছান প্রতিষ্ঠিত হইলেই তাহাদের প্রমার্থ লাভ হইবে। কিছু বাভবন্দেরে আমরা কি দেখিতেছি ? পাকিছানের সংগঠনে পর্যন্ত বিষ্ঠিশ ও বাকিন বিশেষজ্ঞদের শ্রণাপন্ন হইতে হইয়াছে। এই সকল বিদেশী ব্যবসামীরা আর যাহাই করুক না কেন, জনসাধারণের কোন উপকার করিবে না—এ কথা নিঃসন্দেহে বলা চলে।

শ্বাপ্তধারিক সীপথয়ালারা বলিভেছেন যে তাঁহারা ঐ প্রতিষ্ঠানের মারকতে ভারতের মুসলমানদের স্বার্থকা করিবেন। ভাবার এ বিষয়ে নাকি পাকিস্থান-সরকারের সাহাব্যও পাওয়া বাইবে।

"এদিকে চৌণুরী খালেকুজমান ভারত রাষ্ট্রের প্রভি একান্ত আথগত্য জ্ঞাপন করিরাছেন। ভাষার উপর একট পুথকরাট্র হইতে লীগনায়করা ভারতীয় মুসলমানদের চালিত করিবার নির্দেশ দিয়াছেন। ভারতরাষ্ট্র ও মুসলিম দীগ এই ছুইটর প্রভি একযোগে আখুগত্য রক্ষা করিতে গিরা মুসলমান-গণ নিজেদের বিরুদ্ধে সঞ্জেই করিভেছেন।

'এই সুযোগ লইবা সাম্প্রদায়িকতাবাদী হিন্দুরা মুগলমানদের পাকিয়ানের পঞ্চম বাহিনী বলিয়া প্রমাণ দাখিলের স্থবিধা পাইতেছে। মুগলিম সাম্প্রদায়িকতাবাদীনা হিন্দু সাম্প্রদায়িকতাবাদীদের স্থবিধা করিয়া দিতেছে। ইহাতে হিন্দুমুগলমান উভরের ক্তি হইতেছে। কিন্তু মুগলমানদের ক্তি
হইতেছে বেশী।

"এই অবহার আমাদের অধিকার রক্ষার উপায় কি ? উপায়
অভি সহজ। দেশের গণভাগ্রিক শক্তিগুলিকে আরও বলশালী
করিবা ভূলিলেই আমাদের অধিকার সুরক্ষিত হুইবে। এই
অভ আমরা মুগলমানদের কংগ্রেসে যোগ দিতে আহ্বাম
আমাইরাছি। আমরা আমি যে, কংগ্রেসেও কিছু প্রগতিবিরোধী আছে। কিছ কংগ্রেসে প্রগতিপহীরাই শক্তিশালী,
এই কথা কেছ অধীকার ক্রিতে পারিবে না। প্রতি মেহ্নস্থ নেতৃত্বই এই কথার প্রধান।

"কলিকাভার সাম্প্রতিক ধটনাবলীতেই প্রমাণ ক্রিয়াছে থে, সমিলিত গণতান্ত্রিক শক্তি ছারাই সকল সম্প্রদারের বিপরীত-পহীদের পরাজিত করিয়া মুসলমানদের এবং অপর সকলের ভার্যকা করা যার।

"বাৰীনতা দিবলের ঐক্য ও বৈত্রীর পর সেপ্টেম্বরে ব্ধন কলিকাভার মুসলমানবের সঙ্কী উপছিত হইল তথ্য ভাহাবের মুসলিব সীস বা পাকিহান রকা করিতে আসে নাই। মহাদ্ধা গাৰীর ভাকে শাভিকামী হিন্দু-রুগলয়ান ভাহাদের রক্ষা করিতে অঞ্জন হইরাহিল—লেই চেঙার শচীন যিত্র, স্বভীশ ব্যানার্কা শহীদ হইরাছেন।

"আমরা বাৰীন ভারতের নাগরিক হিসাবে পূর্ণ অধিকার লইয়া বাঁচিতে চাই। আমরা উপর্ক্ত বেতন, কার্ব, ব্যক্তিবার বাৰীনতা ও নিরাপভার অধিকারী হইয়া বাছষের মত বাঁচিবার লাবি করি। এই লাবি হিন্দু-মুসলমান সকলের। এই লাবি আলার করিতে হইলে দেশের সকল গণতান্ত্রিক শক্তির সহিত হাতে হাত মিলাইরা ক্মিলার, সামন্তরাক, পুঁলিপতি, হিন্দু-মুসলমান সাম্প্রদায়িকতাবাদী প্রভৃতি বিপরীতপদ্বীদের সহিত সংগ্রাম করিতে হইবে।

"আষরা চিরদিন পাকিস্থান প্রতিষ্ঠার বিক্রোবী হইলেও এখন উভয় রাষ্ট্রের মধ্যে শান্তির পক্ষপাতী। কান্সীর ও দেশীররাজ্য লম্পর্কে ভারত-সরকারের নীতি ও কার্বাবলী আমরা সর্বাতঃ-করণে সমর্থন করি। পাকিস্থানের প্রগতিশহীদের আমরা ক্ষুতিনক্ষন জ্ঞাপন করিতেছি।

"আমরা বিশাস করি যে, ভারত ও পাকিছামে প্রগতি-বিরোধী ও সাঝাজ্যবাদীরা পরাভ হইলে পর গণতন্ত ও সমাজতন্ত্রের ভিণ্ডিতে আবার এই ছুই রাষ্ট্র যুক্ত হইবে। এই গণতপ্রসম্মত সমাজতাপ্তিক অবও ভারতই আমাদের লক্ষ্য ও আদর্শ। কর হিল।"

লৈষদ নৌশের আলি বলেন যে মুসলমানদিগকে এ কথা আৰু বীকার করিতেই হইবে বে মুসলিম লীগের অন্সরণ করিয়া তাহারা অপরাধ করিয়াছে। লীগ গুধু মন্ত ক্তিয়া তাহারা অপরাধ করিয়াছে। লীগ গুধু মন্ত ক্তিয়াছে। লীগের পভাকা তলে ভাহারা মুখলান্তি সমূহ আবাসভূমি লাভ করিবে—এই অলীক স্থপ্নের পিছনে যাহারা ষ্ট্রইয়াছিল আৰু ব্রিভেছে ভাহারা মহা ভূল করিয়াছে। কাকেই বিভক্ত ভারত যাহাতে পুনরায় ঐক্যবহ হইতে পারে ভঙ্গদেকে সমাক্তান্তিক রাই গঠনের করু ভাহাদিগকে দেশের প্রগতিলীল দলভিলিতে যোগ দিতে হইবে।

সংখ্যলনে করেকট প্রভাব গৃহীত হয়। একটতে বলা হয় বে, মুসলিম লীগের পাকিছানের দাবি মিধ্যা ধিলাতি তত্ত্বে উপর প্রতিষ্ঠিত; দেশ বিভাগের কল এবং দেশ বিভাগের কলে বে বিপর্বরের স্কটি হইরাছে তচ্চত ইহাই দারী। মুসলমান-দিগকে ধিলাভিতত্ব ভূলিরা গিরা মুসলিম লীগের সহিত সকল সম্পর্ক ছিল্ল করিয়া তাহাদের নিজৰ নিরাপপ্তার কল এবং তাহাদেরও সমগ্র দেশের উন্নতি বিবানের ক্ষত কংগ্রেসে যোগ দিবার আহ্বাম কামানো হয়। সাম্প্রদারিকতা দেশের পক্ষেত্রতান কারণ হইরাছে। এই অবস্থায় যে কোন সাম্প্রদারিক প্রতিষ্ঠান গঢ়িলে তাহা আত্মহুভ্যার সামিল হইবে। অত্যার প্রগতি বিরোধী শক্তিকে দমন করিয়া গণতান্তিক ও প্রগতিদীল শক্তিকে সম্পর্ক করিবার ক্ষত সুসলমানদিগকে

কংশ্রেসেই বোগ দিতে হইবে। আর একট প্রভাবে বলা হয় বে মিঃ সুরাবর্দী উচ্ছার কার্বের হারা ১ুসলমান-সমাজের ধ্বংস সাবন করিয়াছেন। পাকিছানের প্রতি তিনি আহুগত্য বীকার করিয়াছেন। কাজেই তারতীয় মুক্তরাষ্ট্রের মুসলমানদের সম্মেলন আহ্বাম করিবার কোন অবিকার তাঁহার মাই। মুসলমানদিগকে মৌলামা আজ্বাদের নেতৃত্ব প্রত্ন করিতেও বলা হয়।

মি: খুৱাবর্দী ভাছার পৃথক বৈঠকের বক্তার ভবু বে আগল সম্ভা এড়াইরা যান ভাছা নহে, লাভাগারিক গাবিতে সেনাবাহিনী, পুলিশ, সরকারী চাকুরি, এমন কি মন্ত্রীমওলে লীগ মুসলমান লওরার গাবিও তিনি গুলিরাছেম। টেন আফ্রমণ, নরহত্যা, নারীহরণ, নারীবর্ষণ, বলপূর্বক বর্মান্তরকরণ প্রভৃতি যে সব কার্স পাকিছানে অবাবে চলিতেছে লেওলি চাপা দিবার অভ তিনি এমন ভাব ধেবান যেন উভয় ভোমিনিয়নেই এই সব ব্যাপার চলিতেছে। ভারতীয় মুক্তরাই সম্বর্ধে ইছা যে কভ দূর মিধ্যা ভাছা মি: খুরাবর্দী ধূব ভাল ক্রিয়াই জানেন।

কলিকাভার পৰ করবানি লীগ পত্রিকা মি: সুরাবর্গীর সম্মেলনকে সমর্থন করিয়া ডাঃ আহমদ ও তাঁহার সহক্ষীদের প্ৰতি বজোকি করেন। লীগ পত্ৰিকাখলি দাবি করিয়াছেন ষে বাংলাদেশে ভাতীয়ভাৰাদী বা কংবেদী মুসলমান বলিভে অভি সামাল কয়েকজন মাত্র আছেন তাঁহারা মুসলমানদের श्रीविधि नर्दन, भौत्रश्रामा यूमनयार्थवार यूपनिय न्यास्यव প্রকৃত প্রতিনিধি। অদুর ভবিশ্বতে পশ্চিমবদের ব্যবছা-পরিষদের কোন বুগলমান আগন শুভ না ২ইলে বাঙালী ্ৰুস্ল্যানেৱা সভাই লীগ অথবা কংথেস কোন্ট চাহেন ভাছার ঘণার্থ যাচাই করা যাইবে না। বাঙালী মুসলমানদের ইহাই হইবে চরম পরীকা। ছই-কাভিতত্তে বিশাসী মুসল-মানের দ্বান ভারতবর্ষে হইবে না ইহা এতদিনে পরিভার ভাবেই ভাঁছাদিলকে উপলব্ধি করিবার প্রবোগ দেওৱা क्टेबारकः। ध्वम भवीकाव पिन काव पूर दननी पृरव स्थ। ক্ৰায় ও কান্ধে, মনে ও মূৰে গ্ৰমিলের অবসান হইয়াছে ভারতীয় মুসলমানদিগকে এবার ইহা সপ্রমাণ করিতে হইবে। वक लायान्त बनवका चारमन नरानावनी विरमव विकर्द বক্ততাপ্রসঙ্গে প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত গোবিন্দবন্ধত পথ সরকার-বিবোৰী লীগ সদস্যদিপকে বলেন, "পাছিরকার বাতিরে ज्यानमाता जतकात अवर मरनग्राक्षक मध्यमारस्त छेनत स्माय • চাপাইবার পুরাতন নীতি পরিছার করুন এবং মুসলিম লীপ ভালিয়া দিন। কারণ সমস্ত সাম্প্রদায়িক হালামার বুল इहेटलाइ यूननिय नौत । **अहे श्रा**णिकीनहिंदे (प्राप्त विराध्य छ গুণার বীক ৰপন করিয়াছে। আমি চাই মুসলিম সীর ভাঙিরা দেওৱা হউক । যদি একট বর্ম নিরপেক্ষ গণ-রাষ্ট্র গছিয়া ভূলিতে হয় তবে সাম্প্রদায়িক প্রতিষ্ঠানের অভিছ সহ করা অসম্ভব।

ৰে সৰ সীগণছী পাঞ্চিছাৰে বাইভে চার ভাহার। অনারাসেই বাইভি পারে।"

বরিশালে তুর্গাপ্রতিমা নিরপ্তনে বাধা

লংখ্যালমুদ্ধর ধর্মকর্মের অধিকার পূর্ববলে কি ভাবে ব্যাহত হইতেহে ভাহার কিছু কিছু নিদর্শন পাওরা বাইতেহে। চাকার অবাইনীর মিছিল শেষ পর্যন্ত বর্জন করিতে হইরাছিল। বরিশালে হুর্গাঞ্জিলা নিরপ্তনের শোভাষাত্রাও বাভিল করিতে হুইরাছে। এ বিষবে বাখরগঞ্জ জেলা কংগ্রেল ক্ষিষ্টর সভাপতি যে বিবৃতি দিরাছেন ভাহা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। সংখ্যালমুদ্ধের প্রাথমিক অধিকার কি ভাবে সেখানে ভূর হুইরাছে বিবৃতিষ্ট পাঠ করিলেই ভাহা বুঝা যাইবে:

পূর্বে ও পশ্চিমবদ প্রবর্ণমেন্টের প্রবানমন্ত্রিপ এবং প্রাদেশিক মুগলিম লীগের প্রেসিডেন্ট মৌলানা আক্রাম বাঁ স্থানিন্দিত ও সুস্পইভাবে এই বোষণা করিয়াছিলেন বে, ইব ও পূজার শোভাষাত্র। সম্পর্কে পূর্বে প্রবাই বলবং বাকিবে।

পূৰ্ববদের মন্ত্ৰী মি: আক্ষল বাদ ভাঁহার শাভি
মিশন সম্পর্কে বহিশাল আসিরাছিলেন, তবন তিনিও এই
বিষয়ের উপর জোর দেন।

এমন কি ১৯২৮ লালে মি: ভোনোভান বধন ম্যাজিট্রেট ছিলেন সেই সময় শোভাষাত্রার অধিকার সম্পর্কে এই বংসরের এই জুলাই ছিলু, মুসলমান ও এইানদের মধ্যে এক চুক্তি হয়।

বিভিন্ন সভার শোভাষাত্রা সম্পর্কে হিন্দু-মুসলমানদের মধ্যে আলোচনা হয়। বিঃ আফজল ইহার একটিভে বোগদান করিয়াছিলেন। প্রার উটিয়াছিল বে, চক্ষাভার দিয়া (ইহার পাশে একট মস্ভিদ্দ আছে) শোভাষাত্রা ঘাইতে পারে কিনা। হিন্দুরা তাঁহাদের চিরাচরিত অধিকারের দাবি করিলে মুসলিম নেভারা ভাহাতে আপত্তি করেন। ফলে কর্তুপক্ষ চক্ষাভার দিয়া শোভাবাত্রা ভাহির হুইতে দেন না।

এই চক্ৰাদার দিয়া দ্যাইনীর শোভাষাত্রা বাহির ভরিতে বেওরা হয় নাই, গাড়ী-জয়তী সন্তাহেও শোভাষাত্রা বাহির করিতে দেওর; হয় নাই। তার পর আলিল হুগাপুজার নিরঞ্জন শোভাষাত্রা।

বরিশাল পাভ ছিল। কোন হালাযার আশহা ছিল
না। হিন্দুরা হভাবভঃই ভাবিয়াছিল বে, চক্বালার দিরা
শোভাষাত্রা বাহির হইবার কোন আপত্তির কারণ
বাহিতে পারে না। যথন এই অধিকার অধীকার করা
হর, তথনই লোভাষাত্রা বাহির করিবার প্রভাব বর্জন
করা হর। প্রতিয়াসমূহ নিকটবর্ডী পুত্র, বাল অধবা
নবীতে বিসর্জন দেওয়া হয়।

হাসপাতালের অবস্থা

क्रिकाका महरदद वक वक शामभाकामध्रमिक धारम पवित्र बदर मश्रादिक द्वानिष्मद शक्त बकाद मिनिष स्टेबा উঠিতেছে। ভালপাভালের অনাচারের প্রতিকারকরে অধেক দিন আগেই আন্দোলন আরম্ভ হওরা উচিত হিল কিছ সংবাদপত এবং নেত্রুক সকলেই এ বিষয়ে এবনও নীরব রহিরাছেন। প্রবের বিষয়, 'রুগাছর' প্রিকা এই অভ্যা-বঙ্গীর সমস্তাটর প্রতি জনসাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে শারন্ত করিবাছেন। মেডিকেল কলেক, মারোয়াড়ী হাস-পাতাল, হাওড়া হাসপাতাল প্রভৃতির কার্বলাণ সহছে কিছ কিছ অভিবোগ উহাতে সম্প্রতি প্রকাশিত হইয়াছে। ২০শে কাভিকের 'রুগান্তরে' যে মন্তব্য প্রকাশ হইয়াছে ভাহার কিয়দংশ এবাবে উছত করা যাইতেছে। ছাসপাডালছলির অবস্থা কিত্ৰপ দাভাইখাছে উচা হটতে তাচা কতকটা হৃদ্ধক্ষ করা বাইবে। মনে রাখিতে হইবে যে ১৫ই আগটের পর হাসপাতালগুলির বিবি-বাবলার কোন পরিবর্তন ত হয়ই নাই, ডাঞ্চার নাস বাচুদার প্রভৃতির মনোর্ধিও টিক अकरे वरिवाद ।---

লহায়সম্বলহীন দীন-দরিদ্র রোগীর পক্ষে অভ্যন্তরবাসী রোপ্রপে হাসপাতালে প্রবেশই ছ:সাধা---সাধারণতঃ বিশেষ বিশেষ ওয়ার্ডের ভারপ্রাপ্ত ডাক্তার বাঁহারা থাকেন छांशामिनदक चारन वाशोरछ 'कन' मिश्रा छांशामद अन ও পদবী अञ्चात्री पिक्ना (कात्राहरण, ভবেই छाशास्त्र আদেশে হাসপাভালে সিটের ব্যবস্থা হয়, নতুবা সিট बाकुक बाब ना बाकुक, ठाँहे माहे विश्वा विश्वाब (अध्याहे रहेन क्षत्रिक दीकि। अ दीकि चार्यक हिन, अवस्थ আছে, মুডন রাজনীতিক পরিবর্তনের কলে এ মুলুকে কোন পরিবর্ত ন হয় নাই। এই বাধা অভিক্রম করিয়া वैश्वादा द्यानकृष्य शामभाषात्म माना मनाहेत्व भारतम्, তাঁহারাও যে যথেই ভূচিকিংসা ও সহাবহার পান, ভাৰাৰও কোন উল্লেখযোগ্য নজীর নাই। চিকিৎসক, নাৰ্ল হইতে কুক কৱিয়া ৰাখড়, মেধৱ পৰ্যাত সকলেৱই बाबार्यात्र एकिनावारम अवर् क्रिविनवात्री वात्रीरमञ् উপর নিবছ-পদাছরে ওয়ার্ডে অবস্থিত অবৈতনিক दानिएव जन्मदर्क नकरनहे हैमानीय, हैराक्मानवावन, উহত। ভাষাদের হল হুভিপ্রেড ঔষণ হুদেক সময়ই ষেলে না, ইঞ্কেলন, অস্ত্রোপচার ইত্যাদি ব্যাপারে य(बाहिक मत्नारबान रमख्या एवं मा. काशायत कडे छ অস্থবিধা লাখবের উপর বিশেষ গুরুত্ব আরোপ করা হয় ৰা, সমত দাবি-দাওয়ায় কৰ্ণাত কয়া হয় ৰা, ইত্যাহি ইত্যাদি বত অভিবোগ প্রতিনিরত পাওয়া যার, ভাহার पुर क्य परमहे स्वतंत सामिए शास्त्र ।

হাসপাভাল হইল আহোগ্য-শালা---রার আভ

বাত্ৰপঞ্জি নৱনারী সেবানে বার রোগরুক্ত হইতে।
বাঁহাদের হাতে উহারা গিরা পড়েন, উহারা বিদ নানবকরণাবোববিশ্বিত হন, যদি হন বেতনভূক চার্রিরা
মাত্র, ববারীতি হাজিরা বজার রাবা, যেন তেন প্রকারে
ডিউট হাসিল করা এবং যা পান তাহা পকেটে পোরাই
যদি হয় উহাদের একমাত্র লক্ষ্য, তাহা হইলে উহাদের
বারা হালপাতালের কাজ চলিবে না, চলিতে পারে না।
উহাদের ক্ষ বিবিদম্বত প্রাসাক্ষাদনের ব্যবহা ক্ষরুত্ত
করিতে হইবে, কিছ তাহাদিগকেও দারিঘ্নীল, কর্তব্যনিঠ সেবক মনোভাবাপর হইতে হইবে। বিপর, শীভিত
মান্থযেক বিপদযুক্ত করিবার ক্ষ যে বিজ্ঞানের উত্তব দেই
বিজ্ঞানের প্রাত্তাহিক প্রখ্যোগে বাহারা নিয়োজিত তাহারা
যদি নিছক ক্ষীবিকার্থীর মনোভাবাপর হইরা পক্ষেন, তাহা
হইলে তাহা ক্ষপেক। পরিতাপের বিষর ক্ষার ক্ষি আছে ?
এতদিন এই সব ক্ষনাচারের দোষ লীপের বাড়ে চাপান

ইত্ত্বাছে। কিছ এখনও উহা চলিতেছে কেন ? এইজ অন্নগাপ্রসাদ চৌব্রী অর্গ, স্বাস্থ্য ও স্থানীয় স্বায়তশাসন এই তিনটি বড় বড় বিভাগের পরিচালন ভার স্বহুতে এইণ করিয়ান্দ্রন এবং মেডিকেল কলেক ও অভাভ হাসপাতালে নিক্রের প্রিয়পাত্রদের উচ্চতম পদে অবিষ্ঠিত করিয়াছেন। নিক্রের দেখার সময় নাই বলিয়াই হয়ত তিনি নিক্রের লোক বসাইয়ান্দ্রন কিছ তিন মাসের পরেও ইহারা একট হাসপাতালেরও সামান্য উন্নতি মাত্র দেখাইতে পারিতেছেন না কেন ? মেডিকেল কলেছে আর একট মূতন ভিনিয় অনেকে লক্ষ্য করিতেছেন। মন্ত্রীদের প্রিয়পাত্র এবং ব্যবহা-পরিষ্ণের সম্ভাগের লক্ষ্য মৃতন আর একটা বিশেষ প্রেট্র গছিয়া উঠিতেছে। ইহাদের এবং ইহাদের প্রিয়পাত্রদের জন্য বিশেষ ব্যবহা ও বিশেষ মনোযোগ লাভ সহক্ষেই মিলিতেছে।

বাংলার থান্ত-সমস্তা

সংবাদপত্রে প্রকাশ যে বাংলা-সরকার বাদ্যসমস্ভার সমাবান করিবার জন্য চাষের জমি বিভৃতির চেঙা করিতে-ছেন। পশ্চিমবদ আদ এক সঙ্গটনর অবস্থার সমূবীন হুইরাছে। ব্রিষ্টপ ও সম্প্রতি লীগ-পাসনের কলে সুজলা সুকলা পদ্যভাষলা বদদেশে বাদ্যপদ্যেরও বাট্ভি হুইরাছিল; এবং রন্ধদেশে বিষ্টপবাহিনীর পরাজ্যের কলে এই বাট্ভি ওক্তর আকার বারণ করে। সেই অবধি আমরা ওক্তর অরসম্ভার মধ্য দিয়া চলিরাছি।

সম্প্রতি ব্যাত্ত্রিক সাংহবের অভূত বোরেণাদের কলে অবিক উবঁর কেলাঙলি পূর্ব-পাকিহামতৃক্ত ক্ইরাছে এবং যে সকল অঞ্চল সইরা পশ্চিমবল গঠিত ক্ইরাছে তাহা অপেকা-ক্ত অন্তর্ম ।

গভ পাঁচ বংসর বাররা চাউল ও অন্যান্য থাদ্যপভের বৃদ্য চতুর্ভ বৈর অধিক বাছিরা গিয়াছে। স্বভরাং বে কমি পুর্বে চাৰ হইত না, তাহাতে কলল উংপন্ন করিবা লাভবান হইবার ইক্ষা কৃষকগণের পক্ষে বাভাবিক। এই কারণে চাষের দীরা বিভূত হইরাছে; সুত্তহাং এবন বে লকল চাষের ক্ষরি অনাবাদী হইরা আছে তাহার আবাদ না হওৱার কারণ বিশেষতাবে আলোচনা করিবা আইন বা অভিনাল ঘারা সেই মত ক্ষিতে হতক্ষেপ করা কর্তবা।

বিটিশ শাসক সম্প্রদারের মধ্যে বাঁহারা এই দেশের প্রতি কৃশাপরবশ হইরা ভারতবর্ষের অর্থনীতির বিষয় আলোচনা করিয়াছেন উহাহার। বিটেশ শাসনের কলছহীনভার কৈছিলং দিবার উদ্দেশ্যে ভারতীয় কৃষকের বৃদ্ধিনীনভা ও উদ্যামের অভাব বিশেষ করিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। ভারতীয় অর্থনীতিকারপণ উভয়াবিকার হত্রে এই মনোবৃত্তি লাভ করিয়াছেন। আমাদের মনে হয় সাবারণ বাঙালী কৃষকের ভথাক্ষিত উল্লেখহীনভার উপর ভিত্তি করিয়াই বর্তমান বাংলা-সরকার এই অক্ষিত ভূমি এইণ অভিনাল লিপিবছ করিতে মনস্থ করিয়াছেন।

এই ব্যবস্থাকে চলতি ইংরেছী ভাষার "ঘোড়ার সামৰে গাড়ী ছুতিরা দেওয়া"—অভিহিত করা চলে। পশ্চিমবলের যে সকল অংশে ভূ-ভাগ অসমতল, অমূর্বর ও প্রভর ক্ষরব্যর ভাছা আবাদের চেপ্তা করিবার পূর্বে যথোপগুক্ত সেচের ব্যবস্থা করা প্রয়েজন। যে সকল উদ্যোগী পুরুষের চেপ্তার এই সকল অঞ্চল কৃষির প্রবর্তন হইয়াছিল তাঁহারা এই সত্য মর্মে মর্মেই উপলব্ধি করিবাছিলেন, এবং তাঁহাদের সাব্য ও সামর্থ্য অভ্নসারে স্ব্রুই ক্ষেম্রে সেচনের জন্য ক্ষেরে ব্যবস্থা করিয়া কৃষ্ণির স্থচনা করিবাছিলেন।

শ্বন রাখিতে হইবে যে সেই সময় রেলযোগে দক্ষিণ বা পুলিম ভারত হইতে বা প্রমারযোগে বর্ষা বা অন্য দূরদেশ হইতে বাদ্যশন্ত আমদানী করিবার উপায় ছিল না এবং সময় মত প্রথি র্ট্রপাত না হইলে যথন প্রামের ফলল ভ্রনইয়া যাইত তথন রাজার যথালাধ্য চেপ্তা সত্তে সহত্র লোক প্রাণতাার করিত। এই ভ্রাবহ ছ্ভিক্ষের চিত্র আনক্ষমঠের প্রথম অধ্যারে উদ্যাইত হইবাছে।

সেচনের বাঁধ ও পুক্ষরিণী •

কৃষির সকলতার কন্য বিভিন্ন দেশে বিভিন্ন ব্যবহা অবলহন করা হইয়াছে। বিহার, যুক্ত-প্রদেশ ও পঞ্চাবে কৃপ হইতে কল লইয়া ভূমি সেচন করা হয়। কিন্তু বাংলাদেশের বে অংশে সেচনের আবঞ্চততা আছে সেধানে বহু শত বংসর হুইতেই বাব ও পুছরিবীর ঘারাই সেচনের প্রবা প্রচলিত আছে। সেচনের করা কৃপ এই অঞ্চলের উপযোগী নয়। প্রায় পাঁচিশ বংসর পূর্বে অরুসদয় দত্ত মহাশয় বধন বাঁকুতা কেলার কলেইর ছিলেন তবন তিনি এই সকল সমতা পুখালুপুখরণে আলোচনা করিয়া গবর্ষে ও অংকালীন সম্বায় সমিভিন্ন বেজিট্রার বামিনীযোহন বিক্র মহাশব্রের সহায়তার সম্বায়

প্ৰতি অহুসারে এই সক্স ম্বাও নাঠ বাঁব পুকুরের প্রোবারের চেঠা করা হর। কিছু কাব্বও হইমাছিল কিছু মিত্র
নহাশরের পরবর্তী রেজিট্রারগণের অকর্মণ্যতা ও ওঁদাসীন্যের
কলে এই চেঠা প্রসারগাভ করে নাই। যে সক্স সমিতি
দঠিত হইমাছিল তাহাও কর্তৃপক্ষের তত্বাববানের অতাবে
কালক্রমে নাঠ হইমা সিরাছে। ইহার প্রার পনর বংসর পরে
সরকারী মহলে আলোচনা হয় যে, সম্বার প্রধা এই ক্ষেত্রে
কলপ্রস্থ হইবে না; কারণ প্রতি প্রামেই দলাদলি আছে এবং
যাহাদের স্বার্থ আছে তাহারা সকলে স্থ-ইচ্ছার সমিতিতে
বোগদান না ক্রিলে অচল অবহার উত্তব হয়। পরে বল্পদেশে
প্রচলিত সম্বার আইন সংশোধন ক্রার সম্র ইহার প্রতিকারের ব্যবহা হইমাছে।

যাহা হউক, উলিবিভ আলোচনার কলে ১৯৩৯ সালে সেচনের পুক্রের পকোছারকলে একট আইন লিপিবছ হয়।
১৯৪০-৪১ সালে বীরভ্য ভেগার শুরুতর ছভিন্দের সময়
ভদানীশুন কালেইর শ্রীর্জ্ঞ বিনোদবিহারী সরকার এই আইন
ভারী করিয়া প্রার পাঁচপত বাঁব ও পুক্রের পকোছার করেন
এবং পূর্ব-পূর্ব ছভিন্দের সময় সরকারী ও বেসরকারী সভকের
পার্বের আনাবঞ্জ মাট কাটয়া সাধারণের টাকার যে অনর্বক
ভাপবার ছইত ভাহা নিবারণ করেন।

তথন বাংলাদেশে লীগ মন্ত্রীমণ্ডলী অপ্রতিহতভাবে কর্তৃত্ব করিতেছিল। পশ্চিমবদের হিন্দু-প্রধান অঞ্চলের প্রতি তাঁহাদের কোনও দরদ হিল না, প্রতরাং এই আইন অফ্সারে বিশেষ কোনও কাজ হয় নাই। ১৯৪৫ সালে মন্ত্রীমণ্ডলা অপসারণের পর যথম বাংলার গবর্ণর স্বহুত্তে শাসনভার প্রহুণ ভরিয়াছিলেন এবং পশ্চিমবদে পুনরায় ছভিক্ষের আশহা দ্বো দিয়াছিল তথন এই আইন পরিচালনা করিবার জভ এক জন পুণক কর্মচারী নিমুক্ত করা হইয়াছিল, কিছ নানা কারণে আশাস্ত্রপ কাজ হয় নাই এবং এখনও হইভেছে না। সংবাদশ্যের রিপোটে প্রকাশ, দেশের উন্নতিকর নানাবিধ পরিক্ষানা ঘোষ-মন্ত্রীমণ্ডলীর বিবেচনাধীন আছে। তাঁহারা কার্যক্ষে শীরই অপ্রসর হইবেন এইরপে আখাল দেওবা হইয়াছে।

বাৰ-পৃত্বের প্রভাধার ও মেরামতের বভ কোনো পরিকল্পনা, আলোচনা বা পরীক্ষার প্রয়োজন নাই। জেলায় জেলায়
এই কার্ষের অভ যথেষ্ট কর্মচারী নিমুক্ত আছে এবং পূর্বক
হইতে আভক্ষাত বহু কর্মচারীর আগমনে ইহাকের সংখ্যার্ছি
হইয়াছে। কিন্তু মন্ত্রীয়ওলীর নির্দেশ এবং কলিকাতা হইতে
পরিচালনার অভাবে এই কার্ষে নানাপ্রকার অব্যবস্থার উপ্পর্
হইয়াছে। প্রতরাং বোষ-মন্ত্রীয়ওলী বলি বাংলার প্রকৃতই
বাদ্যশন্যের উংপাদন বৃদ্ধি করার ব্যাপারে কৃতসক্ষ হন
ভাহা হইলে এই বিষয়ে কালক্ষেপ করা অঞ্চিত। কারণ
হেমজের প্রারম্ভ হইতে বজা ও তরাট পুরুষ্কালীর প্রভাষার

ক্রার সমর আসিবে এবং হৈমভিক বাভ গৃহভাত হইলে প্রামের ক্ষমিকুরগণের কোন কাভ থাকিবে না।

জলসেচনের অন্যান্য ব্যবস্থা

কৃষিক্ষেত্রে সেচনের জন্য সাবারণতঃ বাঁধ ও পুরুষের ব্যবস্থা বাকিলেও এই অঞ্চলে কৃষক ও জমিদারগন সাব্যাস্থসারে আচ ব্যবস্থাও করিতেন, তাহার অনেক নিদর্শন পাওরা
বার । বিফুপুর রাজসরকারের দেওরান বিব্যাত গণিতশাস্ত্রবিদ ভত্তর তাঁহার নিজ্ঞানে ও সমীপ্রতা অঞ্চলে জলসেচনের জ্ঞু দামোদর নদের সমান্তরালে যে প্রণাদী প্রস্তুত্বনে তাহা এবনও বিদ্যান আছে ক্ষিত্র কালক্রমে বেরামতের জ্ঞাবে অকেজো হইরা সিরাছে।

পশ্চিমবদের যে সকল অঞ্চলের কথা আমরা আলোচনা করিতেছি তাহার মধ্য দিয়া বহুসংখ্যক ছোট ছোট স্রোত্যতী বা ভোড় প্রবাহিত হইয়া নিম্নদেশে ছোট বড় নদীর সহিত সংমুক্ত হইয়াছে। ইহারা বর্বার সময় গৈরিক কলপ্রবাহে পরিপূর্ণ হয় কিছু অভ সময়ে শুকাইয়া যায়। কোথাও বা বালির মধ্য দিয়া শীণ অভ্যারা প্রবাহিত হয় এবং কোথাও বালি বুঁড়িলে সামান্য কলের সন্ধান পাওয়া যায়।

প্রাচীন কালে এই সকল জোড় বাঁধিয়া বাঁধে আবঙ জল-প্রণালীর ঘারা পরিচালিত করিয়া আপন আপন কৃথিক্ষেত্রে সেচন করিত এবং অনেক ছলে নিম্নতালে অবহিত পৃষ্ধনিশতে সক্ষ করিয়া শীতকালের আবাদের ব্যবস্থা করিত। পূর্বে উল্লেখ করা হইরাছে যে তংকালে রেল বা প্রনারের উত্তাবন হর নাই। স্নতরাং সন্ধ, ভাল, ইকু ও সরিষা ইত্যাদি নিত্য ব্যবহার্য দ্রবাদেশ হইতে বহন করিয়া আনিবার উপায় ছিল না: প্রযোজন মত দেশেই উংপর ক্রিতে হইত।

বিটিশ শাসনের কল্যাণে ও চিরছারী বন্দোবভের কলে
কমিদার সম্প্রদার ক্রমে ক্রমে কৃষকদের বার্ণের প্রতি উদাসীন
হইলেন এবং শিক্ষিত ও সক্তিশালী ব্যক্তিগণ প্রাথাকল হাছিরা
চাকুরী ও ব্যবদা করিছে শহরে বাসহাপন করিলেন। স্থভরাং
দেশের কৃষি পন্নীসমাজের নিয়তম ভরের অশিক্ষিত, নক্তিহীন কৃষকগণের হাতে থাকিল। তাহাদিগকে সাহায্য,
উৎসাহ ও সংহতি দিবার লোক প্রান্থে রহিল না বলিলেই
হয়।

বিটিশ সরকার কৃষির উন্নতির জন্য কোণাও কিছু করে নাই বলিলে সভ্যের অপলাপ হয়। পঞ্চাব ও সিন্ধুর্বাদেশে নদ ও নদীতে বাঁব দিয়া জনিতে জলসেচন করার জন্য বহু কোটি টাকা ব্যার হুইরাছে। ইহার কলে ঐ সব অঞ্চের প্রভূত উন্নতি সাবিত হুইরাছে এবং পঞ্চাবের অভর্গত লাবাল-পুর জেলার অঞ্বর ও বালুকামর ভূমি আক এসিরা মহাদেশের মধ্যে সর্বপ্রেট কৃষিক্ষেরে পরিণত হুইরাছে। দক্ষিণ ভারত-বর্ষেও হানে হানে বহু অর্থ ব্যারে জলসেচনের ব্যবহা হুইরাছে।

কিছ এ কথাও সভ্য বে বাংসাদেশের সরকার চিরকান্ট্র বেশবাসীর হার্বের প্রতি ওলাসীন্য প্রকাশ করিয়াহেন এবং ফলসেচনের অসংখ্য বাঁব ও প্রবিশ্বতী মজিয়া মই হইরা সিরাহে। উহাদের উহারের কোনো চেটাই হব নাই, এবং গভ প্রিশ বংসরে বাহা হইরাহে ভাহা অভ্যন্ত অসভোষজনক।

শ্বক্রসদর দত্ত মহাশর যথন পশ্চিমধন্দের ছুর্ভিক্ষ সমন্তার সহিত সেচন-ব্যবহার খনিষ্ঠ সম্পর্ক সাধারণের পোচরীভূত করিলেন তথন সরকাররূপী কৃত্তকর্ণের নিজাতক হইল এবং সেচ-বিভাগের কৃত্যাদের আক্ষিক কর্মতংপরতা লক্ষিত হইল। কল যাহা হইরাছে তাহা 'পর্বতের বৃষিক্ষ প্রসব' বলিলেই চলে।

সরকারী দপ্তরের বাবতীর সংবাদে আমর: ওরাকিবহাল
নহি কিছ আমাদের নিজেদের কেলা বাঁকুড়া হইতে বাহা
ভানি তাহা হইতে সরকারী কার্যপ্রতির কিঞ্চিৎ পরিচর
পাওরা বাইবে।

ু দত্ত মহাশরের প্রাণপণ চেষ্টার কলে ১৯২২ সালে বাঁক্ডার সেচ-বিভাগের একটি আপিস স্থাপিত হয় এবং গত পঁচিশ বংসর বরিষা এই আপিস চালানো হইতেছে। বাঁহারা এই আপিসের ভার-প্রাপ্ত কর্মচারী ছিলেন তাঁহাদের মধ্যে চুই ক্ষন বিলাতে শিকালাভ করিয়াছিলেন এবং এক ক্ষন বাংলার চীক ইঞ্জিনীরারের পদ হইতে অবসর গ্রহণ করিয়া সম্প্রতি দামোদর-পরিকল্পনার উপদেষ্টা রূপে নির্ক্ত আছেন। এই সকল কর্মচারী গত পঁচিশ বংসরে ছোট বড় অনেক স্কীর পরীক্ষা করিয়া ও তংসংজ্ঞান্থ আমুপ্রিক তথ্য সংগ্রহ করিয়া নত্মা ও এটিমেটসহ পরিকল্পনা প্রস্তুত করিয়াছেন। কিছ ১৯২৩ সালে আমবোড় ও শালবাঁর নামক ছইটি ক্লে বাঁব ব্যতীত অভাববি আর কোন কাক্ষ এই ক্ষেলার হয় নাই। এবন আমাদের ক্ষিলায় এই যে, দরিশ্র ক্রণাতাগণের অর্থেছোট বড় কর্মচারী সম্বিত বাঁক্ডার সেচ-আপিস কি কারণে চালানো হইয়াছিল গ

কিছ বাহালিগকে জিজাসা করিব সেই সকল বিটিশ ও
লীগ শাসকগণ আমাদের প্রশ্নোভরের সীমার বাহিরে চলিয়া
গিরাছেন। স্তরাং প্রশ্ন করা মিরর্থক। মবনিযুক্ত মন্ত্রীমওলী
আমাদিগকে বার বার আখাস দিতেছেন যে উাহারা দরিজ
ক্ষ্মক মজ্মরগণের খার্থের জন্য যথাসাধ্য চেষ্টা করিবেন
এবং যাহাতে দেশবাসী সকলে পেট ভরিয়া থাইতে পার
ভাহার ব্যবহা করিবেন। করেক দিম পূর্বে প্রবান মন্ত্রী ডাঃ
ঘোষ বক্তভার বলিরাছেন যে, বিদেশ হইতে ভিকা করিয়া
বাজনস্য সংগ্রহ করিলে চলিবে না, আমাদের প্রদেশকে
নিজের পারে ভর করিয়া ইাছাইতে হইবে অর্থাং আমাদের
প্রয়োজনমত বাল্যন্স্য বাহাতে আমরাই উংপর করিতে
পারি, ভাহার ব্যবহা করিতে হইবে। ইহা যদি ডাঃ ঘোষের
অন্তরের কর্যা হর, তবে গ্রাহার মত বিলিষ্ট বৈজ্ঞানিকের জানা

উচিত যে সেচনের সুব্যবস্থার অভাবই আমানের কৃষির পরে প্রবাদ অভ্যার।

স্তরাং প্রধান মন্ত্রী মহাশর ও তাঁহার সহকর্মী-কৃষীমন্ত্রী ও সেচ-মন্ত্রিগণের বর্ত মান অবছার বিশেষ জন্মন্ত্রী কর্তব্য এই বে পশ্চিমবদের সেচ-ব্যবহার অভাব দ্রীকরণার্থ কি করা হইবে তাহা পরিভার ভাবে বিশ্বত করা এবং সেচ-বিভাগের বে সকল ছোঁট বড় কর্মচারী প্রকৃতপক্ষে কোন কাজ না করিয়া বিরাট শাসন্যন্ত্রের অলপ্রত্যাদরণে বিরাজমান ছিলেন তাঁহা-দের পঁচিশ বংসরব্যাপা কার্যক্ষাপের একটি হিসাব-নিকাশ তগব করা।

যদি এই ক্থাই সত্য হয় যে, প্রাকৃতিক অবস্থার তারভষ্য হৈছু ভারতের অন্যান্য প্রদেশের মত পশ্চিমবলের মদী-নালার উপর বাঁব নির্মাণ করিয়া সেচ-ব্যবস্থার উন্নতি সাধন অসভ্যব হয় তবে নির্মাণ করিয়া সেচ-ব্যবস্থার উন্নতি সাধন অসভ্যব হয় তবে নির্মাণ এই সকল কর্মচারীকে পোষণ করিয়া কোন লাভ নাই। অনতিবিলম্বে ইল্বাদের অবসর প্রহণের ব্যবস্থা করা কর্তব্য। কিছ যদি সন্তব হয় প্রবং বিভাগীয় কর্মচারী-গণের অকর্মণ্যতা ও শাসক সম্প্রদারের ওলাসানেয়র কলেই এত দিন কোন পরিক্লমা বাভবে পরিণত না হইয়া থাকে, তবে আশা করি মন্ত্রীমঙ্গী এই বিভাগের ক্র্মচারীগণের প্রতি তীর মৃষ্টি রাবিবেন প্রবং উল্লেখিসকে বিশেষভাবে সতর্ক করিয়া দিবেন।

মন্ত্রিগণের আরও একটি কর্ডবা আছে। সংবাদপত্তে প্রকাশিত হইরাছে যে বর্তমান বংগরের মধ্যে ২২টি জল-সেচনের কীম প্রশাসন সম্পূর্ণ করা হাইবে, কিছ ভাহার কোন ভালিকা প্রকাশিত হয় নাই। একবার ভনিলাম যে বাঁকুছা জ্বোর মধ্যে ভভত্বরী দাঁছা ও বিভাই বাঁধের নির্মাণ কার্য শীন্তই আরপ্ত হাইবে কিছ এখন ভনিতেছি যে বিলম্ব হাইতে পারে। সংবাদপত্তে ইহাদের কোন উল্লেখ পাওয়া যায় না। জ্বো ম্যাভিট্রেটের নিক্ট আবেদন করিয়াও সকল সমন্ত্র সংবাদ সংগ্রহ করা যায় না। বাংলা-সরকারের প্রচার-বিভাগের দারা এই সকল প্রয়োজনীয় সংবাদ সাবারণের নিক্ট প্রকাশিত হওৱা বাঞ্চনীয়।

ভাষার ভিত্তিতে প্রদেশ ও বিশ্ববিত্যালয় মহাল্পা গানী 'হরিলন' পঞ্জিলার "শৃতন বিশ্ববিভাগন" শীৰ্ষক এক প্রবছে দিবিয়াহেন যে শৃতন বিশ্ববিভাগন প্রভিঠার আগে ভাষার ভিত্তিতে প্রদেশ পুনর্গঠন আবঞ্জক। গানীনী দিবিতেহেশ—

"প্রত্যেক প্রদেশে মৃতন নৃতন বিশ্ববিভালয় প্রতিঠার একটা হিছিক পভিয়া গিয়াছে। অভরাট অভরাটদের অভ, মহারাই মারাসিদের অভ, কণাট কয়ডদের অভ, উভিয়া উভিয়াছের অভ, আসাম আসামীদের অভ এক-একটা বিশ্ববিভালয় চাহিতেছে। কে যে চাহিতেছে না আমি মা। আমি মনে করি, এই সকল সমৃত্ত প্রাদেশিক ভাষাকে ও এই ভাষাভাষী লোক্ষিপকে স্বতি মধ্যোচিত উন্নতি লাভ করিতে হয়, ভাহা হইলে এইরূপ বিশ্ব-বিভালয়ের বিশ্বিই প্রয়োজন আহে।

"কিছ দেই দলে আমার এ কথাও যমে ব্ইভেছে বে. আমরা অভ্যন্ত বেশী ভাড়াভাড়ি করিভেছি। এ বিষয়ে প্রবয় কত ব্য হইল ভাষা অভুলাৱে এদেশ চলির পুনর্গঠন। ভাষা অহুসাৱে পুৰক পুৰক প্ৰচেশ গটত হইলে, বেখাৰে বিখ-বিভালর নাই সেবানে স্বাভাবিকভাবেই এক-একট বিশ্ববিভালত निका देवित । त्याचारे श्राप्तन अवदावि, मादावि ७ क्यूड वरे ভিনট ভাষাকে ভাত্মসাং করিয়া রাধিয়াছে এবং সেইজন্য कामिके के के कि के के किए का शाम का का कि का का ভামিল ভেল্প, মালয়ালম ও কন্নড। সুভরাং ছুই প্রদেশে এক ভাষাও আছে। অন্তদেশে একট অন্ত বিশ্ববিভাগর আছে কিছ আমার মতে অন্ত বিদেশীশাসময়ভ একট **अबक अपन मा एउदाद वरे नियनियानद प्रदेश উद्देश्या**क করিতে পারিত তাহা করে নাই। মাত্র ছই মাগ হইল ভারত-বর্ব বিদেশী পাদন হইতে মুক্তি লাভ করিয়াছে। আল্লামালাই বিশ্ববিভালয় সহত্তেও সেই একই কথা। এই বিশ্ববিভালরে ভাষিত্ৰ কি ভাছার প্রাণ্য অবিকার পাইরাছে ?

শন্তন বিশ্ববিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা করিতে ছবলৈ তাছার জন্য উপর্ক্ত ক্ষেত্র চাই। বিশ্ববিদ্যালয়ের জন্য সূল-কলেজের প্রয়োজন। এই দকল সূল-কলেজে প্রাদেশিক ভাষার নব্য বিশ্ববিদ্যালয়ের উপর্ক্ত ক্ষেত্র হিছিব। তাছা ছইলেই বিশ্ববিদ্যালয়ের উপর্ক্ত ক্ষেত্র রচিত ছইবে। বিশ্ববিদ্যালয় তো উপরের জিনিদ। উপরের জিনিদকে বড় তথ্নই করা বার বর্থন নীচের তিত শক্ত ছর।

"আমার মতে, বিশ্ববিদ্যালয় প্রতিঠায় ক্ষ্য লোকায়ত बार्डिय है। काब निविष्ठ विषाद श्रीयायम माहे यथि लाएक विष-বিদ্যালয়ের প্রধান্দ অমুভব করে, ভাষা হইলে ভাষারাই ইছার ক্যা টাকা দিবে। এইজাবে প্রতিষ্ঠিত হইলে সে বিশ্ব-विशामित (महे (मान क्षमाद्व क्षम कहेर्त । (वर्षाय (मानद শাসনভার বিদেশীদের হাতে থাকে, সেথানে যাহা কিছু লোকের কাছে আলে ভাষাই উপর ঘইতে আলে এবং ভাষার কলে লোকে ক্ৰমণাই বেৰী প্ৰনিৰ্ভৱপৰাৰৰ হইছা পভে। ছেলের শাগন যেখানে ছেশের লোকের ইচ্ছার ছারা নির্ভ্তিত হয় সেধানে সমন্তই শীচে হইতে উপরে যায় এবং তাহা স্বায়ী एत। देश विविद्धिक जान एत अवर देशात करन लात्कित শক্তিও বৃদ্ধি পার। উর্বর অমিতে একটা বীক পুঁতিলে ভারাতে বেখন কল ভাগ হয়, ভেমনই এইত্রপ লোকায়ত্ত শাসন-ব্যবস্থার শিকা বিভাৱের ক্ষা যে কর্ব বাহিত হয় তাহা দশ্রণ ক্ল विश बादक। विदिविश প্রভূषाबीय य जनन विश्वविद्यानन **अ**चिक्रिक स्टेशांटर जासीय कन छेन्हेरि स्टेशांट । अमास्र কল হওয়া বোৰ হয় সভবও ছিল না। এইকন্য যত দিব না चावदा चावारमय मरमद वाबीयला एक्स क्दिएल शादिरलहि. ভত দিন নৃতন বিশ্ববিদ্যালয় প্ৰতিঠায় বিষয়ে সাববান হইয়া ज्यारे दुष्टिक्छ ।"

গাঙীশী বলিতেহেন বে, আমন্তা আপাততঃ রাজনীতি ক্ষেত্রে বিবেশীশকুত্ব কৃষ্টিত বুক্তি পাইবাহি বলিয়াই বে আমন্ত্রা বিশেষ তাবা ও বিশেষ চিন্তার ক্ষ প্রতাব হইতে বৃক্ত হইরাছি একণা হরত কেই বলিবেন না। বৃত্তন বিশ্ববিদ্যালয় প্রতিষ্ঠার পূর্বে নবলর বাবীনভার বাহ্যপ্রদ নির্বল বাহ্তে বৃক্টা ভরিরা লওরাই কি বৃক্তিযুক্ত নর ? আমাদের দেশের প্রতি কর্তব্যান্তার কি এই কথাই বলে না ? বিশ্ববিদ্যালয় প্রতিষ্ঠায় ক্ষণ্ড বড় অটালিকা এবং রাশি রাশি অর্থের প্রবোধন নাই। এক্ষণ বাহা সকলের চেবে বেনী প্রবোধন ভাগা ইইতেছে কাঞ্জ ক্ষমতের স্থাচিন্তিত সমর্থন। বিশ্ববিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা করিতে ইইলে বছ শিক্ষকের প্রয়োজন এবং বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাভাবের দুরদর্শী হওরা আবঞ্জন।

एरामत मुक्किमश्कारम विचविष्णमहत्तत विकित एराम वि ভূমিকা অভিনয় করিবা বাকে, ভারতবর্ষের বিশ্ববিভালয়-मबुर छारा कविष्ठ भारत मारे। हामरमरम धरमध निध-বিভালয়ঙলি চিয়াং কাই-লেককে অভূতপূৰ্ব সাহায্য করি-তেছে। দেশের বিভিন্ন সমস্তার তথ্য সংগ্রহ, আলোচনা ও সমাবান চেষ্টার অসাবারণ সুযোগ বিশ্ববিভালয়ভলির হাতে चाट्य। बागामबचाद कथारे बढा बाहेक। "कृष क्षेत्रिक" বলিয়া বে বভট প্রভাত করা হবরা থাকে এবং যাহার উপর ভিত্তি করিয়া ভারতব্যাপী কণ্টোল বাড়া করিয়া লাবারণের অৰ্থ স্বাস্থ্য, সময় ও শক্তির বিপুল অপচয় চলিতেছে ভাৰার বুলে আছে অশিক্ষিত চৌকিদারদের আআজী হিসাব। প্রামাঞ্চের ক্সল সহতে তথ্য বিশ্ববিদ্যালয়ের ছারা দেশের ছলের শিক্ষক ও ছাত্রদের হারা সংবহীত হইলে উহা নিরক্ষর চৌকিয়ার সংগৃহীত 'হ্যাটস্টন্ধ' অপেকা সহস্তপ্তবে সঠিক ও निर्ध्वत्याना स्टेर्ट ट्रेसाल अल्स्साब नारे। विश्वविद्यानव-গুলি ইছা করিলে এই কাল করিতে পারিতেন না বা এবনও পাৱেৰ ৰা ইছা অবিখাসখোগ্য কৰা।

ভাষার ভিভিতে প্রদেশগুলির পুনর্গঠন করিয়া প্রভ্যেক बारमान विकास विकित्तामा गर्रम चारक देश विक्षामा क्षि विश्वविद्यानित श्रीष्ठ वरनत अक्षण: करक्कि कतिता তত্ত্বকৈ উপযুক্ত করিয়া গভিয়া দিবে ইছা কি আলা করা यात मा ? कनिकाण विश्वविद्यानदा अणि वश्मत शकाम-या হাভার হাত মাটিক পাস করিরা থাকে এবং এম-এ পাস করে করেক হাজার। কিছ বাংলাদেশের যে কোন বিভাগে কাৰ্ডের ভঙ্গ উপযুক্ত লোকের একাছ ভঙাব দেখা যার ইহা কেহই অধীকার করিতে পারিবেন না। লাসন-কাৰ্বে, অব্যাপনার, শিক্ষকভার, সাংবাদিকভার বা ব্যবস্থা পরিষদের দদত পদের উপর্জ একট বালও কি কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে আৰুকাল বাছিয় হয় ? বিশ্ববিদ্যালয়ের कर्डनक ७ चर्यानकदम चांचविक (हर्ड) कविरम बरभरत प्रमेडे হক ও উপযুক্ত চরিত্রবাদ হাত্র কি দেশকে লিভে পারেন মা 🤊 রাশি রাশি অর্থবারে অটালিকা নির্মাণ করার চেরে মাছুর नकात पिटक बरबारवान पिटल विश्वविद्यालस्त्रत देशस्त्रातिका সৰ্বসাধারণ উপল্ভি করিয়া উহাকে সাহাত্য করিভে ভঞ্জর रहेक ।

সিন্ধু যুগ হইতে বৈদিক যুগ

শ্রিননীমাধব চৌধুরী

সিদ্ধুসভাতা সহয়ে এ পর্যন্ত যে আলোচনা হইয়াছে তাহার বৈজ্ঞানিক অংশ, অর্থাৎ পূর্বে হরাপ্পা হইতে পশ্চিমে বেলুচাস্থানের প্রাগৈতিহাসিক যুগের বিভিন্ন ধ্বংসভ্তুপ হইতে যে সকল বস্তু উদার করা হইয়াছে তাহাদের বিস্তৃত বিবরণ বাদ দিলে যাহা থাকে ভাহা হইতেছে প্রস্তৃত্ব-বিজ্ঞানীগণের তথ্য বিশ্লেষণ, তুলনামূলক আলোচনার এই আংশ হইতে প্রেরণা সংগ্রহ করিয়া আপনার মতামত গঠন করিয়া থাকেন। বর্তমান আলোচনায় এই অংশের প্রভি দ্বি নিবদ্ধ রাগা হইবে!

দিন্দুসভাতা দম্ব আলোচনার এই বিতীয় অংশ দেশ্লকৈ দকল জিল্লান্থ বাজির শ্বনে বাধিতে ইইবে যে বাংগাকে Indus Script বলে তাহার বৈজ্ঞানিক মহলে দর্বস্মতভাবে গ্রাহ্ম পাঠোদ্ধার এখনও হয় নাই। স্ক্তবাং দিন্দুসভাতার বৈশিষ্টা, প্রকৃতি, অক্লাক্ত প্রাংগৈতিহাদিক সভ্যতার সঙ্গে উহার সম্বন্ধ ইত্যাদি সম্বন্ধে যে দকল ব্যাখ্যা শক্তিবাণ প্রচার করিয়াছেন যে কোন দিন উহার একটা বছ অংশ বাতিল হইয়া বাইতে পারে। গোড়ার এই ফেটির প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়া দিন্দুসভাতা সম্বন্ধে আলোচনায় অগ্রস্র হওয়া বাইতে পারে।

সিন্ধ্-উপত্যকার এই প্রাগৈতিহাসিক তাম গের
(Chalcolithic) সভ্যতা সম্বন্ধে আলোচনাকে মোটাম্টি
ঐতিহাসিক, ধর্মসম্বন্ধীয় ও নৃতত্ত্বৈজ্ঞানিক, এই কয়টি
ক্রেণিতে ভংগ করা বাইতে পারে। শ্রেণী বিভাগ করিছা
আলোচনায় অগ্রন্থর ইইবার ফলে আশা করা যায় যে,
বিভিন্ন বিভাগের ক্রাতব্য তথ্য ও মতবাদগুলি বিশ্লেষণ
করিয়া সমগ্র সিন্ধ্সভ্যতা সম্বন্ধে পরিচ্ছন্ন ধারণা করিবার
অবকাশ পাওয়া বাইবে। ঐতিহাসিক, ধর্মসম্বন্ধীয় এবং
নৃতত্ত্ববৈজ্ঞানিক আলোচনার মূল ভিত্তি বিভিন্ন ধ্বংসন্তপুপ
ইইতে প্রস্তত্ত্ববিজ্ঞানীগণ যে সকল বস্ত উদ্ধার করিয়াছেন।
এই সকলের বিস্তাবিত পরিচয় সর জন মার্শাল, ডাঃ
ম্যাকে ও মাধো স্বন্ধ ভাটসের গ্রন্থে এবং প্রস্তত্ত্ববিভাগের
১৯২৩-২৪ ইইতে আবস্ত করিছা বার্ষিক রিপোটগুলিতে
পাওয়া বাইবে। এ সম্বন্ধে পৃথক কোন আলোচনা
বাইল্য।

সিন্ধুসভাতা সহক্ষে ঐতিহাসিক আলোচনা সাবস্ত করা শাইতে পাবে সিন্ধুযুগের সহিত বৈদিক যুগের সম্পার্কের প্রসক্ষ স্থাবদ্ধন করিয়া।

প্রচলিত মত এই যে সিন্ধুগুণ ও বৈদিক যুগের মধ্যে যে ব্যবধান বভূমান কোন প্ৰকাৰ সেতৃবন্ধন দাবা ভাহাদের মধ্যে সংযোগ সাধন করা সম্ভব নহে। কোন কোন প্রত্তব্যজ্ঞানী মত প্রকাশ করিয়াছেন 'the gulf is unbridgeable'। ইহার অর্থ এই যে বৈদিক যুগ হইতে ভারতীয় সভ্যতার যে ধারাবাহিকতা লক্ষ্য করা ধায় বৈদিক যুগের পূ:র্ব দেইরূপ কোন ধারাবাহিকতা লক্ষ্য করা যায় না। সিদ্ধুসভাতা প্রাক্-বৈদিক ও প্রাক্-আর্থ, বৈদিক সভাতার সহিত সম্পর্কবিহীন। এই তৃই যুগের মধ্যে ১০০০ হইতে ১৫০০ বংসরের ব্যবধান বর্ত্তমান। সিদ্ধ-সভাতা ধ্বংস হইবার সহস্রাধিক বংসর পরে আর্বজাডি দুর অঞ্ল হইতে আনিয়া একটি নৃতন সভাতার পত্তন করে। দিন্ধ-উপত্যকার তাম্রযুগের সভ্যতা দম্পূর্ণ ধ্বংস হইয়া গিয়াছিল, নৃতন যে সভ্যতা থ্রী: পু: ২০০০-১৫০০ বৎসরের মধ্যে সিন্ধু-উপত্যকায় গড়িয়া উঠে ভাহার সহিত উহার কোন সম্পর্ক নাই।

এই মত কতথানি যুক্তিসহ বর্তমান প্রবাদ্ধে সংক্ষেপে তাহার আলোচনা কবা হঠবে। প্রথমে সিন্ধুষ্প ও বৈদিক
যুগের যে কাল নির্ণয় করা হইয়াছে তাহার উল্লেখ করা
প্রয়োজন।

দিশ্বযুগের কাল নির্ণয় করা হইয়াছে প্রধানতঃ তুই প্রকার প্রমাণের সাহায়ে। একটি প্রমাণ geological stratification, অৰ্থাং প্ৰাচীন ধ্বংগ ন্তুপ খননকালে বৈজ্ঞানিক মডে ভ-ন্ত:বের বিক্তাস হইতে কোন নির্দিষ্ট গুরের বয়স বিচার করিবার যে স্ত্র আছে, দেই স্তর অন্নগারে প্রাপ্ত হিদাব। দিতীয় প্রমাণ dating of analogical archaeological finds from pre-historic sites in other countries, অধাৎ অন্তান্ত দেশের প্রাগৈতিহাসিক যুগের স্ত্রুপ হইতে প্রাপ্ত অত্বরূপ দ্রব্যাদির যে বয়দ নির্ণয় করা হইয়াছে সেই ব্যুদের হিসাব। সর জন মার্শাল তাঁহার প্রসিদ্ধ গ্রন্থে এই ছুইটি প্রমাণ ব্যবহার করিয়াছেন এবং দ্বিভীয় প্রমাণটি তিনি দিল্পুণভাতার, বিশেষতঃ দিল্লুযুগের ধর্মের ব্যাখ্যা क्तियात्र काटक्ष वावशात क्तियाह्न। देविषक यूर्वत কাল নির্ণয় করা হইয়াছে কতকটা অস্মানের দাহাযো এবং কতকটা খ্রী: পৃ: ১৬শ হইতে ১৫শ শতাব্দীর মধ্যে পশ্চিম এশিয়ার বিভিন্ন অঞ্লে বাহাদের মধ্যে আর্যভাষা-ভাষী লোক ছিল এইরূপ কয়েবটি জাতির অভ্যুদ্যের প্রমাণ অবলম্ব করিয়া। বে অহমানের সাহায্য লভয় হটয়াছে তাহার ভিত্তি দক্ষিণ-পূর্ব ক্রশিয়ায় আর্বজাতির আদি বাসস্থান হইতে ইরাণ ও ভারতবর্ষের দিকে আর্থ-জাতির সম্প্রসারণের মৃত্যাদ।

সিদ্ধুযুগের কালনির্ণয় সম্বন্ধে যে geological stratification এর প্রমাণের কথা বলা হইয়াছে ভাষা সম্পূর্ণরূপে বিশেষজ্ঞদিগের ব্যাপার। স্বতরাং এ সম্বন্ধে কোন মত প্রকাশ করা বাহলা। মার্শালের হিসাবমতে মোহেঞো-দারোর অুণ হইতে প্রাপ্ত নিদর্শ্ন শুলি হইতে বে সভাতার পরিচয় পাওয়া যায় তাহা মোটামৃট औ: পু: ৩২৫০ অন্দের। এই সভ্যতার বাহকগণ অহুমান ৫০০ বংসর মোহেঞ্ছো-দারোতে ব্যবাস করিয়াছিল এবং এই সভ্যতা সম্পূর্ণরূপে গড়িয়া উঠিতে অনুমান হাজার বংসর লাগিয়াছিল। (M.I.C.I, pp. 107-108) ৷ এই ছিদাবের মধ্যে যে ফাঁক तिथा यात्र तम मशस्य भारत वना इहेरव । नका कतितन तिथा যায় যে geological stratification এর প্রান্তে পণ্ডিত-গণ ঘূরিয়া ফিরিয়া দিতীয় প্রমাণের উপর অধিক নির্ভর করিতেছেন। প্রত্নতন্ত্রিভাগের ১৯২৩-২৪ সনের বিবরণীতে भूत खुन মাৰ্শাল ১৯২১-२२ खीहोटस दाथानमान वत्नाभाषाां प्राट्यक्षा-দারোর ভূপ খনন করিতে আরম্ভ করেন "it is to him that we mainly owe the subsequent discoveries that have been made." তারপর তিনি বলিতেছেন মোহেঞোণারো ও হরাপ্লার মত পরস্পর হইতে দূরবতী ও সমুদ্র হইতে দূরে অবস্থিত অঞ্লে স্মেরীয় টাইপের সীল (seal) ইত্যাদি ভূপুষ্ঠ হইতে শ্বন্ধ নিয়ে পাওয়া গিয়াছে। যে স্তব্বে এই প্রকাবের সীল পাওয়া গিয়াছে তাহার নীচে অনেকঞ্জি ভর দেখা যায় ("clear evidence of multiple strata lower down.") ইহাতে প্রমাণ হয় যে মেশোপটেমিয়ার ফমেরীয়লিগের ইতিহাস যাহাই হউক সিদ্ধ-উপত্যকান্ব স্বমেরীয় সভ্যতার অনুরূপ একটি সক্তাতা বহু বিস্তৃত ছিল এবং এই সভাতা আরও প্রাচীনযুগে অগণিত শতান্ধী ধরিয়া ভারতবর্ষের ভূমিতে বিকাশ লাভ করিয়াছিল ("undergone a development reaching back incalculable ages") |

Geological stratification এর প্রমাণ হইতে দাঁড়াই-তেছে যে স্থমেবীর সভ্যতার সহিত সংযোগ সিদ্ধু-সভ্যতার পরিণত অবস্থায়, ঐ সভ্যতার বাহকগণ মোহেঞাদারো ও হরাপ্পা পরিত্যাগ করিবার বা ঐ ছই নগর ধ্বংস হইবার কিছু পূর্বে ঘটিয়াছিল। স্থমেরীয় সভ্যতার সহিত সংযোগ ইতিহাসের হিসাবে ঞ্জী: পৃ: কোন সহ্লকে ঘটিবার স্থাবনা পরে তাহা দেখা যাইবে। এখানে এই তথ্য পাওয়া যাইতেছে যে সিদ্ধু-সভ্যতার আদিমুগ ও মধ্যমুগ

পশ্চিম এশিয়ার প্রাচীনতম সভ্যতার সহিত হয়ত সম্পর্ক-হীন ছিল। এই তথ্যের বিশেষ তাৎপর্য আছে। পণ্ডিছ-প্ৰের মতে স্থমেরীয় সভাতা প্রাচীন বাবিলোনীয়, আসিরীয় ও সাধারণ ভাবে পশ্চিম এশিয়ার প্রাচীন সভ্যতার ভিন্তি এবং প্রাচীন ইতিহাসের ষতথানি উদ্ধার করা হইয়াছে তাহার সাহায়ে এ কথা মোটামৃটি প্রমাণিত ষায়। মার্শাল নিঞ্জেও এই কথা ক বিষা বলিগ্নাছেন ধে Goddard-এর মতে ক্রমেরীয়গণ মেশোপটেমিয়ার গিগ্নাছিল একথা সত্য হয় তবে ইহা অসম্ভব নহে যে ভারতবর্ষই স্থমেরীয় সভাতার জন্মভূমি ("the possibility is clearly suggested of India proving ultimately to be the cradle of their civilisation,'')। কিন্তু সিন্ধু-সভ্যতাৰ ব্যাখ্যাতা অনেক শণ্ডিত এই সম্ভাবনা উড়াইয়া দিয়া পশ্চিম এশিয়ার ভূমধ্য সাগরীয় অঞ্চল হইতে সিন্ধু-সভ্যতার আমদানীর ২খা বলেন, geological stratification এব ইঞ্চিতকে তাঁহাবা পাশ কাটাইয়া গিয়াছেন ৷

পূর্বের এক প্রবন্ধে (বৈদিক আর্যগণ কি সেমিটিক গু প্রবাদী, পৌষ ১৩৫২) প্রাচীন মেশোপটেমিয়ার সভাতা অর্থাৎ হুমেরীয়, বাবিলোনীয় ও আসিরীয় সভ্যতার সম্বন্ধে সংক্ষেপে কিছু বলা হইয়াছে। সিদ্ধুসভ্যতার সহিত মেশোপটেমিয়ার সম্পর্ক এ প্রবন্ধের আলোচ্য বিষয় নঙ্কে, স্তমেরীয়গণের ইতিহাস সম্বন্ধে আলোচনা করিবার স্থান এখানে নাই। কিন্তু সিদ্ধ সভ্যতার কালনির্ণয় প্রসঞ্চে যে স্থমেরীয় সুন্যভার সহিত সংযোগের কথা উঠে ভাহা প্রথম সারগণের পূর্ববর্তী স্থমেরীয় সভ্যতা, অথবা স্থমেরীয় সাম্রাজ্যের মভাদয় কালের সভাতা, অথবা পরবর্তী কালের অর্থাৎ বাবিলোনীয় আমলের পরিবতিত স্থমেরীয় সভ্যতার ভগ্নাবশেষের সহিত সংযোগ, তাহ। সঠিক নির্ণয় করিবার উপায় নাই। মার্শাল এই মত পোষণ করেন বে কতক-গুলি এরপ নিদর্শন বা বস্তু পাওয়া গিয়াছে যাহা "prove active intercourse between Mesopatamia and the Indus valley in pre-Sargonic or relay Sargonic times." (एथा यात्र दर नि ९-वाविटमानी व কিম্বল্ডী মতে আফাদের অধিপতি সারগণ বা সাক্যকিনের (Sharrukin) অভাদয় কাল এ:পু: ৩৮০০। কেই কেই वर्णन य हेश बी:भु: १४०० हहेर्द । तम याहा हर्छक, মার্নালের উপরে উদ্লিখিত মত হইতে অহমান করিতে হয় যে সিদ্ধ সভ্যতার পরিণত অবস্থা সারগণের অস্ততঃ সমসাময়িক, অর্থাৎ ঞ্রী: পূ: ৩৮০০ বৎসরের ব্যাপার। বলি সিদ্ধ সভাতা পরিণত অবস্থা লাভ করিতে পূর্বের হিসাবমত

>••• বৎসর লাগিয়াছিল ধরা বায় তাহা হইকে
অহমান করিতে হন ঐ সভ্যতার পত্তন হয় খ্রী: পৃ: ৪৮০০
অব্দে।

বলা বাছলা এই প্রকারের হিনাব সম্পূর্ণ অন্তুমানমূলক ষ্দিও এই অনুমানের একটা বৈজ্ঞানিক ভিত্তি দেখা যায়। পণ্ডিতগণের অনুমান অনুসারে সিদ্ধ সভাত। কত প্রাচীন হইতে পারে তাহা দেখান ছাড়। আর একটি উদ্দেশ্যে এই हिमात (मध्या हहेन। भिन्नु-छेभ्छाकाय थर्बद (य व्याचा পণ্ডিতগণ ক্রিয়াছেন ভালা আলোচনা ক্রিবার স্ময় দেশা যাইবে যে সিন্ধু সভাতার এই আন্ত্রমানিক কাল নির্দেশের কথা স্মরণ রাপা তাঁহারা আবশুক মনে করেন নাই। তারপর পশ্চিৎ এশিয়া, ভূমধ্যসাপ্র, ঈজিলান শাগর প্রভৃতি অঞ্চলের প্রালৈতিহণদিক সভাতার যে সকল analogical finds বা অভুরূপ নিদর্শন আবিদ্বারের প্রমাণে দিল্প দভাতার বিভিন্ন অধের ব্যাধ্যা করা হইয়াছে দেট সক্ষু সভাত। বিশ্ব সভাতার সম্বাম্যিক বলিয়া প্রমাণিত না হটকে ভাঁহাদের সিদ্ধান্তে অনেক ক্রেট আদিয়া হয়ে ৷ দেখা ঘাইবে যে গোড়ার এই ক্রটি ভাঁহা-দিগকে িবস্ত যা দ্বিধাগ্রন্থ করিতে পারে নাই।

উপরে যাহ। বলা হইল ভাহার মোটামূটি তাংপ্য এই যে ছই প্রকার প্রনাণের বলে দিল্লু সভাতার যে কাল নির্ণয় করা হইয়ছে তাহার নধ্যে অনেকখানি অনিশ্চয়ত। রইন্যাছে। এই প্রস্থান্ত আরও কলা ঘাইতে পারে যে, অভারতীয় প্রাণিতিহাসিক সংগ্রহার সহিত তুলনামূলক আলোচনায় বে জাতীয় যুক্তি ব্যবহার করা হইয়াছে তাহাতে ভারতবর্ষের সভাতার ইতিহাসের সম্পূর্ণ ম্যাপের মধ্যে সিন্ধু যুগের প্রকৃত স্থান কোখায় তাহা অস্পষ্ট রহিষা বিয়াছে।

বে সকল যুক্তির বলে বৈদিক যুগের কাল নির্ণয় করা হইয়াছে তাহার বিভারিত আলোচনা ইতিপ্রের কত্তবশুলি প্রবাদ্ধ করা হইয়াছে। এপানে সংক্ষেপে বলা যায় বে পশ্চিম এশিয়ার মিটানী, কাসাইট, হিটাইট প্রভৃতি জাতির কতকগুলি দলিলের প্রমাণ ও উত্তর-পশ্চিম থির্নিজ্ অঞ্জন বা দক্ষিণ-পূব রুশিয়ায় আর্যজাতির আদি বাসভূমি হইতে আর্যজাতির বিভিন্ন দলের পশ্চিম ও পূর্ব দিকে অভিযান করিবার কাল্পনিক ইতিহাস মিলাইয়া যে মতবাদ প্রচারিত হইয়াছে এবং এই মতবাদের সহিত সঙ্গতি রাখিয়া বৈদিক যুগের যে কাল নির্ণয় করা হইয়াছে তাহা সজ্যোজ্ঞনক নহে। গ্রীঃ পৃঃ ২৫০০ বা ২০০০ হইতে ১৫০০ বংসরের মধ্যে আর্যজাতি ভারতবর্ষে প্রবেশ করিয়া সিন্ধু উপত্যকায় আপনাদিগকে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিল ধরিয়া লইলে পশ্চিম এশিয়ার উপরে উলিথিত আভিসমূতের

বৈদিক আর্থদিগের সহিত সম্পর্কের সম্ভোষজনক ব্যাখ্যা পাওয়া ধায় না, আবেন্ডা ও বেদের এবং আবেন্ডিক আর্য ও বৈদিক আর্থদিগের সম্পর্কের সম্ভোষজনক ব্যাখ্যাও পাওয়া যায় না।

मिन्न घून ७ देविकक घूरभेत्र मुल्लार्क निर्मरम् वाभारत প্রধান ক্রটি স্থাসিয়াছে পণ্ডিতগণের স্বপ্রমাণিত যুক্তির উপর প্রতিষ্ঠিত এই ধারণা যে বৈদিক সভাতা ভারত-বর্ষের পক্ষে কভকটা exutic বা বিদেশীয়। ইহা যে অত্যক্তি নহে ঋধেদের অধিকাংশ স্কুত ভারতবর্ষের বাহিবে বচিত হইয়াছিল ওলডেনবার্গ প্রমুখ পণ্ডিভগণের মতবাদ ভাহার প্রমাণ। আর্যন্তাতির ভারতবর্ষে আগমন এবং ঝরেদের রচনা আরম্ভ অনেক পণ্ডিতের মতে সম্পাম্মিক: এই মত ও বৈদিক সভাতা যে থানিকটা exotic এই দারণার উপর প্রভিষ্ঠিত। ইহার পরে দেখা যাইবে যে সংগ্ৰ দিন্ধু সভাত। বিদেশীয়—কোন কোন পণ্ডিত এইরূপ মত প্রকাশ করিছে দিলা করেন নাই: বৈদিক সভাতা সম্বন্ধে যে মতের উল্লেখ করা হইল তাহা পত্ন করিবার একটি প্রধান উপায়ের অভাব দেখা ষায়। বৈদিক সভাত। বা বৈদিক মুগের সঙ্গে যুক্ত করা ষায় এরপ কোন প্রত্নাত্তিক আবিষ্কারের দাবি এ প্রয়ন্ত कदा हम नाहे। दल बाह्मा, अहे अनारवद करन मिक्स-সভাজার সৃহিত বৈদিক সভাতার সম্পর্ক নির্ণঃ করিবার ব্যুপারেও ধানিকটা সম্ভার উদ্ভব হট্যাছে।

সিদ্ধু যুগ ও বৈদিক যুগের কালনিপর সম্পর্কে থে অনিশ্চয় দেশা যায় এবং সেই অনিশ্চয় তার দক্ষণ এই ছই যুগাঁর পরস্পারের সহিত সম্বন্ধ বিচারে যে সমস্তা দেখা যায় সে প্রস্ক নাপাততং ত্যাগ করিছা বাধ্ব দৃষ্টিভলী দিয়া সমগ্র বিষয়টির বিচার করিবার চেষ্টা করা যাইতে পারে। এই চেষ্টার ফলে কি তথা পাওছা হায় দেখা যাউক। এই তথাের আলোকে ছই যুগের ব্যবধান কিরপ মনে হয় দেখা যাইবে।

উপরে বলা হইয়াছে শে পণ্ডিতগণের কেই কেই
মত প্রকাশ কবিয়াছেন যে মোহেছোলারে। ও ইরাপ্পার
স্কুণের বিভিন্ন শুর ইইতে যে সকল নিদর্শন পাওয়া গিয়াছে
তাহা ইইতে খনে করা ঘাইতে পারে যে সিমু সভ্যতা
গড়িছা উঠিতে হাজার বংশর সময় লাগিয়াছিল। এই ছুই
নগরের অুপ ইইতে প্রাপ্ত নিদর্শনসমূহ যে সমুদ্ধ ও বলিষ্ঠ
সভ্যতার পরিচয় দেয় ইয়ত প্রাক্তিক ছুর্যোগের অথবা
শক্রু আক্রমণের কলে মোহেঞ্জোদারো ও ইরাপ্তারিক
ইইবার পরেও যে ভাষা ধ্বংস ইইয়া গিয়াছিল ভাষা মনে
করা কঠিন। এই সভ্যতার উত্তরাধিকার যাহাদের উপর
বৃত্যিছিল ভাষারা কাহারা ?

কোন একটি বিশেষ ধরণের প্রাগৈতিহাসিক সভ্যভার

population of the Indus valley")। আর্যজাতির প্রতিনিধি ছিল ঋষিকুলগুলি। কৃত্র কৃত্র দলে ইক্র, বরুণ, আরি প্রভৃতি দেবভার উপাসনার প্রচারকরণে তাঁহারা ভারতবর্ধে প্রবেশ করিয়। সিদ্ধু উপভাকার ঐ সকল দেশীয় রাজার আপ্রয়ে বসবাস কথিতে আরম্ভ করেন। দেশীয় রাজারগাটীকে তাঁহারা আর্য দেবভার উপাসনায় দীক্ষিত কবেন। ভিনি আরপ্ত মত প্রকাশ করিয়াছেন ধে প্রাচীন বৈদিক সাহিত্যে যে যতির উল্লেখ দেখা যায় ভাহারা ছিল সিদ্ধু উপভাকায় প্রাকৃ-আর্য অদিবাদীদিগের পুরোহিত শ্রেণী, ("priests of non-Vedic rites practised by the indigenous pre-Aryan population of the Indus valley."। বৈদিক ধর্ম প্রচারিত হইলে এই পুরোহিত শ্রেণী রাভ্য নামে পরিচিত হন। পণি নামক প্রথেদে উল্লিখিত দম্য জাতি ভাহার মতে তার যুগের সেন্ধু উপভাকার বণিক শ্রেণীর প্রতিনিধি।

উপরে লিখিত চন্দ মহাশয়ের প্রতিমতের মধ্যে একটি বিষয়ের প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করা ষাইতে পারে। তিনি ভাত্র-যুগের সিম্ধু উপত্যকার অধিবাসীদিগকে প্রাকৃ আয় বলিয়া বর্ণনা করিতেছেন আবার ঝরেদের প্রাদম্ব ভরত, পুরু, ধতু প্রভৃতি গোষ্ঠাকে এই ভাম্বুগের সিদ্ধু উপত্যকার শাসক-**ट्य**नीय প্রতিনিধি বলিয়। বর্ণনা করিয়াছেন। ইহার অর্থ এই সকল ঝার্থনীয় গোষ্ঠাও প্রাক্-আর্য এইরূপ মনে হইতে পারে। হাটন, ল্যাংডন, হেডন, জিউফ্রিডা কগু গেরী প্রভৃতি পণ্ডিতের মতে যে দরদ ভাষা (আর্য ভাষা)ভাষী গোলমুণ্ড পামীরী বা ইরাণী জাতি দিরু সভাতার অভাদয়ের যুগে ভারতব্যে প্রবেশ করিয়াছিল এবং Indo-Aryan Races গ্ৰন্থে যাহাদিগকৈ অবৈদিক আৰ্য জাতি বলিয়া চন্দ মণাশ্য বর্ণনা করিং।ছেন ভাত্রযুগের দিন্ধ উপত্যকার অধিবাদী দিপের কথা বলিবার সময় তিনি তাহাদিগকে ভূলিয়া গিয়া-ছেন। ইহার একটি হেতু এই যে ইহারা তাঁহার মতে বৈদিক - আর্যদিগের পরে ভারতবর্ষে প্রবেশ করিয়াছিল। নৃত্ত্ব-বিজ্ঞানের সিদ্ধান্ত অন্তরপ এবং অধিকাংশ পণ্ডিত এই মত অগ্রাহ্য করিয়াছেন।

সে যাগা ইউক, উপরে উদ্ধৃত অভিমত্তসমূহ হইতে সিম্ধু
যুগ ও বৈদিক যুগের মধ্যে সংযোগ ছিল ইহা সহজে অফুমান
করা যায়।

জাতি, রাজন্তগোষ্ঠী ও অক্যান্ত সম্প্রদায় (পুরোহিত ও বণিক সম্প্রদায়), ধর্ম এবং ভাষার দিক দিয়া সিদ্ধু যুগ ও বৈদিক যুগের মধ্যে যে সংযোগের কথা শগুভগণ বলিয়া- ছেন, তাহার পর সিদ্ধুসভাতাকে প্রাক্-আর্থ সভাতা বলিবার কি বিচারসহ বৃক্তি আছে । নৃতত্তবিজ্ঞানীগণ দে মত প্রকাশ করিয়াছেন ভাহার প্রার বেদসমূহ বা ঋর্মেদ রচিত হইবার পূর্বে ভারতবর্ষে আর্যজাতি ছিল না এ কথা কি করিয়া বলা সম্ভব । প্রাক্-আর্য ও প্রাক্-বৈদিক যে একার্থবাচক নহে ভাহা উপলব্ধি করা প্রয়োজন। ভারপর বৈদিক ধর্ম ও কৃষ্টি বলিয়া যাহা পবিচিত আর্যজাতির প্রাচীন কৃতিত্বের ভাহাই একমাত্র বা প্রথম নিদর্শন ইহা কি কারণে মনে করিতে হইবে ।

দিন্ধ যুগ ও বৈদিক যুগের যে সময় নির্দেশ কবা হইয়াছে তাহার ভিত্তি ষভটা অফুমান ততটা প্রমাণিত তথ্য নতে একথা বলা হইয়াছে। দিন্ধু যুগ বৈদিক যুগের পূর্ববর্তী মোটাম্টি এই মত গ্রহণ করিয়া অফুমানমূলক সময়নির্দেশের ফলে তুই যুগের মন্যে যে কাল্পনিক বাবধানের প্রাচীর তোলা হইয়াছে এই তুই যুগের মধ্যে যান্তবিক ঐ প্রকার কোন ব্যবধান ছিল না এ কথা মনে ক্যা যাইতে পারে: যদি তর্কের থাভিরে এই ক্যা খীকার করা যায় ভাগে হইলে কি দেখা যায় প্

আফুমানিক সন ও তারিখের উপর অন্ধ বিশাস, ভারতবর্ষের প্রাগৈতিহাসিক আয় এবং প্রাক-আয় বা অনাধ সভ্যতা সম্বন্ধে প্রচলিত মতবাদ ও আধ্জাতি সম্বন্ধে কতকগুলি বন্ধমূল সংস্কার ত্যাগ করিয়া ভারতবর্ষের সভাতা ও ক্ষ্টির পরিচিত ইতিহাস হইতে অপরিচিত ইতিহাসের যে সন্ধান মিলে ভাহার প্রতি দৃষ্টি ফিরাইলে উপলব্ধি করা ষায় যে পণ্ডিভগণ ভারতবর্ষের ইতিহাপের পৃষ্ঠায় ভাহার তুইটি প্রাগৈতিহাসিক রুষ্টির—সিন্ধ রুষ্টি ও বৈদিক রুষ্টি— ষে চিত্র অঙ্কন করিয়াছেন ভাষা নতন করিয়া অঙ্কন করি-বার প্রয়োজন হট্যাছে। এই নব অঙ্কিত চিত্তের পট-ভূমিতে দৃষ্ট হইবে হিমালয় ও হিন্দুকুশের তুষারমণ্ডিত শৃঙ্গ-সমূহ অতিক্রম করিয়া আমুদ্রিয়ার আরলগামী জলপ্রবাহ। দক্ষিণে সিম্ব-গাকেয় উপভাকা ও উত্তরে অকসাস উপভাকা এই সীমানার মধ্যে মধ্য এশিয়া বা ব্যাকৃটি, যার সভাতা, দিন্ধ সভাতা, বৈদিক সভাতা ও আবেন্তিক সভাতার উদ্ভব হইয়াছিল। এই সকল সভ্যতার সম্মেলনের ফল ফুটাইয়া তুলিতে ২ইবে এই নব অন্ধিত চিত্তে। পূর্বগামীদিগের অপ্রমাণিত বা :যথেচ্ছ সিদ্ধান্তের গুরুষ্ঠারে বাঁহাদের বল্পনা- শক্তি ও অমুসন্ধিৎসা পিষ্ট ও ক্লিষ্ট হয় নাই সেই সকল নবীন পণ্ডিভকে এই কাৰ্যে অবহিত হইছে: इटेरव ।

আজ--আগামী কাল

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

•

ষ্ঠীভকে গম্পূৰ্ণ মুছে কেলে—নৃতন করে নিৰেকে প্রভিষ্ঠা করা—সমন্ত্র বাক্যে ছার কার্য্যে ছানকবানি ভঙ্গাং।

প্রশাভ পথ চগতে চগতে ভাবছিল, চাকরিট। হেছে দিয়েও উপার্জনের চিন্তা মন থেকে বার না—এ বছ আশ্রহা ! যে বিভা লে অর্জন করেছে—ভার বুলে রয়েছে এই প্রেরণা। না হলে হাতে কলমে গে এমন কিছু লিখল না কেম—ঘা বইয়ের হরপের চেরে বেশী কার্যকরী। ছুল সংগারকে অরাহ্য করা চলে না—যেহেতু কুথা-ভূজা-ভারাম-শরনের দাবি নিরে দেহ প্রতি দতে মাখ্যকে ভালনা করছে। তার ধাবি মিটারে যে উদ্ভা সময় পাওয়া যায়—ভাই নিরেই ভো জানের বদ্ধাই ভাল লাগে।

হুৰ্গামোহন এই ভাবের কচ কথা বলবেন—সে অনুমান কর! কঠিন নয়। নিক উপার্জনের উপর আগ্রহ না করলে—পূথিবী সভ্যকার রূপে বারবার দেখা দেবেই। স্নেখ-ভাগবাসার রঙীন উন্তরীয়ে নিজেকে শোভন করে রাখা সহক ভভক্ষণ—মতক্ষণ না বক্ব উঠে সব বিপর্বান্ত করে দেয়। যে কোন প্রকারে উপার্জনের দারিছ নিয়ে সংসার প্রতিঠার আগু করনা তার হিল না—অবচ বৈবচক্ষে সংসার গুটিয়ে আগছে ভার চার দিকে।

কালও ভভার সংক ভার কথা হরেছে। নীয়-বীৰার ভাগিদ কোন দিক থেকেই নেই—ভবু ছোট মত একট বাসা চাই। ভভা করবে উপার্জন—সেও বলে বাক্ষের না। কি কি দিয়ে সাকাবে গৃহ—কোবার কোন্ বিনিশ্ট রাবলে মানাবে—ভার একটা ছক প্রশান্ত বুবে মুবেই দিতে পারে।

ভভার ভাতেই আগতি। এই নিরেও বছবার পরিহাস করেছে। বলেছে, ক্মরেড, ধুব বড় খরের ছেলে ভূমি নও —ভবু বুর্জোরা মনোভাব ভোমার কেম ?

প্ৰশাস্ত কৰাৰ দিয়েছে, নিজৰ একথানি ব্যৱর দাবিকে ভূষি কি বলতে চাও—

द्रित स्वाव विद्विष्ट छण, किह्नरे वनव ना क्यद्रिण ।
यक नामाण्डे एका —गूँ किंद्र वोक द्यन मत्मद्र मत्म । वाद्य ।
सामाण्य नामाचारम्य द्यानाम—वनीरम्य विश्ना कृद्य देखि
इस्र मि—मिरक्राम्य छक कृद्य त्नवाय यह छहे। छरम्य वम स्कित्य मिरक्राम्य सामाम्य होरे ना सामया—नमक स्वनश्रक सनामा त्याक वीकारमा है स्टब्स सामारम्य नीजि ।

ভাকি করে হবে। ধনটা কমিবে না বাছিরে অসান্য দ্ব করবে ? ধন কমবে কেন—ব্যক্তিগত বুনাকা ভবু বাকবে না। ভোমার বোটা দেহের চর্কি বৃদ্ধি করতে আনরা দেহের রক্ত ব্যর করব কেন ৷ ভোমরা চড়বে মোটর আমরা পড়ব তার তলার চাপা—এ কেমন বিবাদ ক্ষরেড ?

তা হলে সকলের একথানি করে মোটর থাকুক এই চেটাই করতে হবে জে! ?

না কমরেড, মাসুষের মনের খবর বারা জানেন তার। বলেন—বনকে রাধতে হবে লোভের গীমানার বাইরে। ব্যক্তিগত জারাম বিলাগ একটুতেই মাসুষকে পেয়ে বসে— ওটা একেবারে বাছতে না দেওয়াই ভাল।

যাক্ষের বৃত্তিকে ছেঁটে কেলবার ব্যবস্থা। এতে ভোষর। বৃত্তি পোতে পার -- কাং ক্ষু বাক্ষে তো।

(春年 9

এই বর, প্রতিভাষীনের পর্যারে যদি প্রতিভাবানদের কেলা যায়---জগৎ জাবার পিছিরে যাবে না কি:

ভূমি হাগালে—এতিভাকে অহীকার করবে কে? সোভিরেটে এর প্রথম পরীকা কি হয় মি? সোভিরেট কি শিছিরে পড়েছে কগতের অঞ্জগতি থেকে!

তাকেও খনেক জিনিস বৰ্জন করতে হরেছে তোষা তোমাদের নীতিভূক্ত ছিল না।

তাও না। নীতির পরিমার্জন মানে আযুল বদল নয়।
পরীক্ষার কট্ট-পাধরে যাচাই না করলে কান্দের সোনাটুক্
বার করবে কি করে। তেএকটু বেনে বলেছে, তোমার পৃথিবী
ভোষার ক্ষা করবে না ক্ষরেড বলি নীতিকে কয়ে মেকে
কীবনবান্তার উপযোগি করে না নাও। হোট খর বাঁধবার
আহাস দিরেছ কিছ—বড় খর যথন ডাক দেবে তথন সে
বরের মারা তোমাকে ছাড়তেই হবে। বন হচ্ছে নদীর ক্ষ
ভবে কোর্থাও আটকে রাবলে চলবে না।

তা হলে নোটর থাকবে না কারও ? পরিহাসের ভদিতে প্রনাম্ভ কথাট উচ্চারণ করেই হেলে কেলেছে। গুভাঞ্জ হেলেছে সেই সঙ্গে।

না—না প্রশান্ত, আমাদের মটো মরিতে চাহি না আমি স্থার জুবনে—মাল্যের মত 'বেঁচে থাকিবারে চাই। একটু পরিবর্তন করলাম—মানেটা সূর্ত্ হ'ল না ?

হাঁ, বে মাল্লয় কীৰ্ডিহীন ভার পক্ষে ববেঙ স্থলর বলা বেভে পারে।

একটু একটু করে এগিরে এগেছে প্রশাস্ত। শিরার ভার নীল রক্ত ছিল না কিছ নীল রক্তের নোহ তো ছিল বথেষ্ট। বে বিদ্যা সে লক্ষ করেছে—উপকর্বা তনে দৃষ্টাত লেবে ত্বব লৌভাল্যের নিরিব নির্ণর করে—ভারই বাবে আত্মনিরক্ষন করা সহক্ষ ছিল না কি ! একটু চেষ্টা—হরতো বিশেষভাবের চেঠা—তা কে না করে থাকে। উচ্চপদ, বটালিকা, যোটর, ব্যাহ-ব্যালাল, কেলবতী রাজকভা, গোনার পালহ, এর বব্যেই তো রয়েছে সামাজ্যবাদের ছোট একট বীজ। এর সংব্যই কি ছিল না জীবনের শ্রেষ্ঠ কামনা—চরম ধর্গবাদ কয়না ? ভতুলে কেল থেকে সরে এল কিসের গ্রেষ্টার ? ভতার ?

700

अनाष बद्दीकात करत मा—:धोवरमत मौक्रिक। स्ट्र সঙ্গে অধীকার করে বেহুগভ বিলাসকে। বিভীব নহাবুছের সর্বোত্তর পরীকা হয়ে যায় নি কি সোভিয়েট রণভূমিতে ? क्रांभिवायरक स्तर्भ क्रांट , ७वा बन्दांच श्रातार्थ क्रांटिंग। সে ব্ৰহ্মান্ত্ৰ স্থানৰ কোন বিব্যান্ত নৰ-- নীভিমত তপভাৱ ছারা বায়ত্ত করতে ক্রেছে। কড বিপ্লব-কত বনর্বপাত, চুৰ্যজ্য বাধা আর রক্তনদী অভিক্রম করে একে আরত্ব করতে হয়েছে। একট অনুপ্ৰসন্থ বছৰাতি অধ্যুখিত, বছৰৰ্ম ও কুসংখ্যার পোষিত দেশে যা সম্ভব হয়েছে--পৃথিবীতে তাকে পুপ্রতিষ্ঠিত মা বলে অপ্রাহ্ত করবে কে ? তবে এ কবা ঠিক, এক মাটতে যে গাছ যে কল প্রদৰ করে আন মাটতে তার ভারতন্য ধটবেই। বারা জানী গুণী তারা বুল নীভিকে অখীকার করেন না; উপযুক্ত পার দিবে আবহাওয়াকে অমুক্ল করে নামাত অফল বদল করে তসলকে তাকা রাধবার coडोरे करव बारकम। अनाख्य अवमठी माम राउधिन---ৰাহুষের স্বাধাত বৃত্তি কিংলাকে সহকে লালন করা যায় বলেই ৰুবি সাম্যবাদকে সে অভ শীৰ বেনে নিভে পারলে। চিছাটার ভলার কিছু সভ্য যে মেই ভা মর ভবে ওওলিকে লাবনার পৰে বাধা বলে কয় কয়ায় চেঠা কয়তে কভি কি ৷ ক্ৰমে সভ্য আলোকের পুণ্যভূষিতে সে পৌহবে আশা হচ্ছে। সন্দেহ এবনও লেগে রয়েছে মনে--- एव সবছে সন্দেহ নর--- প্রকৃত ক্ল্যাৰ বা সভ্য এই পৰে লাভ হবে কিনা এবং এই মীভিডে আহাবান পুৰিব বৰ্গভূমি হয়ে উঠবে কিনা ৷ একটু সকেহ বেকে बाब बरे कि । कार्यामी (बरक मारशीवा रेक्सि विजानम अम्पूर्व ক্রে তেবেছিল-মুছ করের বাধা সম্প্রণে অপনারিত হ'ল ! গারের কোরে নাহ্যকে কোন কিছুতে আটকে রাধা---ভা সে व्छारे क्लांक्-श्रप्त थ वेष्य क्षेत्रं (राक---नचन वह । प्र थ क् क्षत्रचित्र पत्य कौरम (पानाशिष्ठ) हिद भाषि-कौरमरक चदीकांत कतात चात अक्षे चानशेव लाकाशेव देविकाशीन দিক নর কি ৷ তা বাড়া রক্তবাদলোপুণ রভিকে বিল্প করতে হলে আরও কঠিন ও বৃহত্তর পরীকা দিতে হয়।

ভভার প্রতি লোক্—যার কর এই নীতিতে তার অস্থাপ বেছেক্—এটা ঠিক নর। বে নীতিতেই সে বিশাস করক— বৌবন ভার বর্দ্ধ পালন করবেই। আর যৌবন ভার বর্দ্ধে বে প্রভাব বিভার করে তাতে চোব কান বুলে বাঁপ বেওয়াকেই বলে বোহ। এবন বোহ সনের কোবাও হায়াপাত করে নি। ভভা বহি বলত—একশো টাকার চাকরি না হাজলে আনার পাবে না—ভা হলে বোলা চোবে বোহের একটা রূপ বেবা বেড। ওয়া বলে লা বে চাকরি করো না—ভবু বুলে বদ উপার্জনে সকরের নেপা বেল না লাগে। তর্ক হরেছিল পুঁজিবালীর চাকরি করে পুঁজিবালকে জংল করার চেটা চলে কি না। চলবে না কেন। টাকাটাকে অধীকার করছে না কেউ — জীবন যাত্রার মানে ওট অপরিহার্য্য বলে—কিছ যাহ্যমের প্রতি নাহ্যমের যে অভার অভ্যাচার—বে লোভ বছলমকে নামিরে এক ব কেউ চুতে ভোলে—বহু অন্থিচুর্ণ সারে পরিবর্দ্ধিত একট সুক্ষর গোলাপ গাছ—এ কোন কল্যাপ্রামীই চাইবে না। একে বনীর প্রতি বনহীনের হিংসা বলে না—যাহ্যমের ভাষ্য অবিকারে বেঁচে বাকবার সহক ও স্থাপত একট দাবি।

ভৰু সে চাক্ষি ছেছে দিলে। চাক্ষি অসহ বোৰ হ'ল। চাটুবৃত্তি---দাসমনোভাব সকলের বাতে দর না। ছ'পুরুষের दुष्टि--- तकीद तकना घाषा कि। जानिमरक अध्यक्षी मरन হয়েছিল---নিরাকার একট প্রতিষ্ঠান। ধনিকতাবাদের উদ্বভ অহমিকায় সে কারও ছুর্গতিকে বাছাজে না বরং বাঁচিয়ে রাখার চেষ্টাই করছে। কিন্তু সে প্রতিষ্ঠানের চাকায় ভেল দিতে গিয়ে বুকলে দেখের রঞকে বিশুদ্ধ রাখা সম্ভব নয়। এই প্রতিষ্ঠানের মূলে—সহস্রটা শিক্ত রয়েছে, রস শেংধণ-ক্রিয়া চলেছে বলক্ষিতে। অভ্যন্ত শান্ত ও নিয়মাধুগ বিভাগ---তবুকিছুদিন আগে নিরুপায়ের শেষ অঞ্জ ধর্মঘট ঘোষণা করেছিল। ধর্মধট সাকল্য লাভ করে নিঃ পুলিবাদ স্থ্য কৌললে ভেদনীভিত্র প্রয়োগে তা বার্ব করে দিয়েছে। अक्डी लाक श्रक्तरक अहे याचा मानगाश्मात्र काच बूरक इ:च चकावत्क चारक निरम्न मध्य कदक कर्तवास्त्र मान---कर्षकल---किश्व! चर्डे- जावाच अर्हेड् यूवरण य माध्य चरनक किहूरे मिर्किवारि श्रीकांत करत चात्र निर्काहार स्थान स्थान वर्षि সেওলি চির্কালের সভ্য নর। আর একটা মহৎ শিক্ষা ভারা পেরেছে বে-সব ভাষগার নির্বাভিতরাই এক গোতের। वर्षमी (हाक किश्वा विरम्भीहे हाक-विमक्षक शाबरण নেই। ছুই গোত্ৰকে সমভূষিতে গাঁড করাবার চেঠাই ছ'ল সাম্যবাদের মূল নীভি।

্ৰসপ্লানেত ভাল অংশকা করছিল। প্রশান্তকে আলতে থেবে চীংকার করে বললে, হালো কমরেত— এত ভাবছ কি ? বর একটা টিক করলে বৃধি ?

প্রশান্ত দ্লান বেবে বললে, তা করলাম। আকাশ তার আছোলন।— কুলোবে না আমাদের হ'কনকে ?

७७ वनान, वन्छ । किंद वन श्रादक मान स्टब्स् !

প্ৰশান্ত বললে, শিত্ৰিভের যত নিকাই করি— আহার আর আঞ্চানন থেকে দে যে নিশ্চিত করে রাখে।

ভুজা বললে, নিৰের উপর নির্জনতা কমে গেলেই বাছ্ব সর বিকে উপারহীন যনে করে। নিজেকে স্কট করে নাও না কমরেক—জীবনে সম্পদ কিছুমান্ত কমবে না। ম। ভভা--পুঁজিবার বে বাভেরই বোক--বিষুবং পবিভালা।

হ'বনে হেসে বাসের ওপর বসলে। মাধার ওপর একটা
পূলাকীর্ণ অকানা গাছ ছারা বিভার করেছে—ছপুরের রোদ
গরব লাগছে। ওদিকে চলছে ট্রায়—বিছাংবাহিত রঙ করা
কতকওলি সরীস্পার মত একেবেকৈ চলেছে—এদিকে
অতিকার বাস—খার মস্প গতি মোটর। বালকীর উভান
পরিক্ষার এরা পরস্পারের সলে প্রতিবোদিতার নেমেছে।

বিটিশ পভাকা লাইভবনের মাধার পভ্ পভ্ করে উভ্ছে।
সামনের ও হ'বারের সৌধশ্রেইকে—ইামকে, নোটর ও
অভিকার বাসকে প্রভিযোগিভার—উৎসাহিত করছে। এদের
সৌলাত্রকে ধাগত জানাছে আরও উপরের আকাশ। খাসের
আসনে বলে ভভা বগলে, পরিভ্যাগ করলে ভোমার
বাহাছরিটা কি! ওদের কর করে নিজের করে নিতে হবে।

আপাতত আমার আশ্রহ দাও।

ু ভভা বগলে, দিলায় আশ্রয়। ভবে এ আশ্রয়ে এলে নিজ্যেক মনে রাবলৈ চগবে যা ক্যরেছ।

গুড়া পরিহাস করছে মনে করে প্রশাস্ত সব খুলে বললে। গুড়া বললে, ওঠ।

क्षनाम देश्रेरन ।

্ভত ভার হাত ধরে বললে, এস।

(काषाय ?

ওভা হাসতে হাসতে বললে, রগাতলে।

ভাষগাটা বলাভলের কাছাকাছিই বটে। চপ্রস্থর্য-লাঞ্চিত এক গলির গহরের নোনাবরা সাঁগভর্নতে দেওরাল-বেরা একবানি বাভি। এবন জীর্ব বাভি কি করে যে পৌর আইনকে বছাকুঠ দেবিয়ে আজও বাভা ব্যৱহে ভাবলে আভর্ব্য হতে হয়। অবচ লে বাভিতেও মাসুষ বাল করছে।

ভঙা বদদে, আমার একট অফুরোব—এবানে যা কিছু হোবে পড়বে ভাতে আচ্চর্য হবে না—কোন কবা জিজাদা করবে না। ভধু আমবে পৃথিবীতে এবন অনেক জিনিস আছে বা ভোমার করনার বাইরে। অবচ ভা সভ্য।

থলিতদন্ত ব্ৰষ্কে মত গিঁভি একটা পাওয়া গেল। কিছ একতলার সদে দোতলার পাৰক্য ব্য কম। সেই পলভরা-বলা ইট-বার-করা বেওয়াল—দেওরালের গারে জল চুঁইরে পভতে—ছু' পাশের বাভির পক্ষপুটে ঢাকা পভে শীত না বাকা সভেও বাভিবানা বেন কাঁপতে। ব্যাধিগ্রন্থ বাভিবানা বেন কাঁপতে। ব্যাধিগ্রন্থ বাভিবানা বেন কাঁপতে। ব্যাধিগ্রন্থ বাভিবানা

প্তরই মধ্যে চওড়া একথামি ঘরে প্রবেশ করে ভঙা বললৈ,বস।

প্রশান্ত ইতততঃ চাইলে—বসবে কোধার। ধরের অঞ্চুর আলো তেয় করে গৃষ্ট বেশী দূর অঞ্চমর হচ্ছে না। মনে হচ্ছে একটও কানালা নেই—আলো আসবে কোনু কাঁকে। শুলা ওর হাজ বরে বেবের ওপর বসালে। একটা বাহ্রের ওপরই বসলে--- যদিও সেটার চেহারা পাই নয়। শুলা ভাকলে, নানিয়া রে---

একটা যোমবাতি নিবে আববুড়ি গোছের একট বেরে বরে চুকলে। বাতিটা বেবের বসিরে বললে, নেকুর বোধার হরেছে দিনিজী। বহুং তাঁত আহে—

जाका जामि शक्ति।

নেহেট চলে গেলে প্ৰশান্ত বিজ্ঞানা করলে, ওট কি বি ? বি ৷ এই বাহিতে বি ৱাৰা চলে—না আবাহের বি রাবা সম্ভব !

শুভার হাসিতে অপ্রতিভ হয়ে প্রশান্ত বললে, কিন্তু ওছে। বালালী নয়।

বালালী পরিবারের সলে এক হ'ল কি করে এই চাইছ জানতে ? একটু বিভাম কর ১ৰ জামতে পারবে।

প্ৰশাভ যৱের চারি দিকে চাইছে দেবে হেংল বললে, প্ৰহম্ম তা এই বরবানি নিতে পার। বাহ্নির এক টেরে—কেট ভোষার বিরক্ত করবে মা।

প্ৰশাভ মনে মদে বগলে, সৰ সময়ে মাতৃষ্ট ৰাজ্যকে বিষক্ত করে কি !

এই ঘর—। কারাকন্দের সঙ্গে ভার সাক্ষাং পরিচর নেই তবু এর চেরে নিরুপ্ত বন্দীনিবাস কল্পনাতে আলে না। এ ঘরের কোন দিকে একটি মাত্র দরকা হাছ। আর হিত্র নেই কেন। ঘরে দিনের বেগার আলো ত্রেলে পরিচিভকে সম্ভাবণ না করলে ভন্তভার বাবে। ত্বর মন বা ত্বর দেহ নিরে এ আশ্রেরে একটি রাত্রি কাটানো চ্ছর।

ু ওজা বললে, এ ঘরটি পৃথিবীর আরও বহু অক্সিড আশ্চর্যা বিনিদের অন্তর্গত। অথচ এদের পারহার করবার উপায় নেই।

অসামোর এই রূপ প্রশাস্ত কর্থনো দেবে নি। এ বছ অক্সিডই বটে। সে বললে, চল না হাদে দিয়ে বসি।

হাদ ৷ এত বঢ় বিদাস খাশা কর তৃষি কমবেত ৷

ভবে মাসুষ থাকে কি করে এথানে। সাক্তর্যা প্রশাস্ত প্রস্তু করণে।

महरवद शब निवाशन वद रहा।

ৰুছিটা ছট ঠোঙা নিয়ে কিবে এপ। বললে, লাই চামা আছে দিবিলী। ঠোঙা ছটো নাছ্যের ওপর নামিরে দিলে।

নাভা কর কমরেড—মুডি ভার ছোলা। একটা ঠোঙা সে ভূলে মিলে।

প্রশাস্থ তবু সহজ হতে পারছে না। এই ভাবের জীবন যাপন—সে পারবে কি ? এ বাভিতে আলো রোল নেই— আঞ্চাশ দেখা যায় না, ভবু নোনাবহা নির্মন ইটের দেয়াল চার বারে শান্তীর মত বাড়া হরে পাহারা নিজে।

বললে, তুৰি বিশ্বৰ—এই বাছিতে বাক না খলা ?

ভভা হাসলে, যাত অটালিকা কোবার পাব কমরেত।
ভা বলে এই বোংয়া বাছিতে—, বানিকটা কোবযুক কোতে বে প্রভিবাদ করলে।

উপার কি । ক্রপোর চামচে রূপে পুরে জ্বাবার গৌভাগ্য সঞ্চলের হয় মা।

কিছ ছুমি---

বাভিটার দোষ কি ? এবানে মাহ্বকে বোংবা মনে হচ্ছে—বিজী মনে হচ্ছে কিছ অপরিকার এর কোবাও নেই। এই বাভি বেকে বেকলেই তো পবে চলা মাহ্যবের গোত্রে অনুত ভাবে বাপ বেরে বাই কমবেড। আযার পাড়ী—চালচলন—কোবাও এই বাভির হাপ লেগে বাকে কি ?

তবু এবানে মাতৃষ সুত্ত ছোবে বাস করতে পারে মা।… এই বন্ধ ব্যার সঙীর্গ হয়ে যাওয়া কিছু আন্দর্যাও নয়।

হাসালে—তোমরাই গীতা আওছাও—-হু:বেযু অহ্ছির-মনা—স্বেযু বিগওস্থক্—]

প্ৰশাভ কোন কৰা বললে না।

मुक्ति बाख कमदब्छ।

चिए (मरे।

ু বৃদ্ধি বেছে ক্ষিণে মেটে কৰ্মও ! বার বার এত ভূল ক্ষছ কেন প্রশান্ত ! ওংহা—একটু ব'ল—নেন্ট, কেমন আছে দেবে আসি ।

সে চলে গেলে প্রশাস্থ নিরুপার সৃষ্টিতে খরের পানে চাইলে। না—এই অবারিত নির্লক্ষ দারিজ্যে কোবাও এতটুকু সন্থান বা গৌরব নেই। এর বেকে পরিআন না পেলে মাছমের বৃত্যই বা কি। ওভা ভার সকে পরিহাস করছে না ভো।

ভঙা কিবে এবে বললে, বাং বে—খুভির ঠোডাট হোঁও নি ? সভিয় কি ভাল লাগছে মা প্রশান্ত ?

প্রশান্ত মদকে সন্ধোৱে শাসন করে ঠোঙাট টেনে নিরে বললে, ভূমি পরীকা করছ কিনা--ভাই ভাবছি।

পরীকা।—এমন নির্ব পরীকা করে আমার সাত।
ভূমি কান না প্রশাভ —যার মাধার ওপর পুরুষ অভিভাবক
নেই—হোট ছট ভাই বে:ম —রুর বা — বধর্ম ঠাকুরমা এবের
নিয়ে জীবনের বুড চালাভে হর—ভাবের এ ছাড়া গভিই বা
কি
। এ বাভির চারদিকে যে বালিখনি বাবা ওঁচু করেছে—
ভাবের নিরুপার হরে মাধা ভূলবার অধিকার বিরেছিলেন
বাবা। ভবন ভার উপার্জন ছিল না—আমরা বুল্ছি গলার
এ ছাড়া পভ্যন্তর ছিল না।—বলবার সময় একটুও গলা
কাপন না—মুবের ভাব বদলাল মা— অভ ভারও ছ্রভাব্যের
কর্মা অভ্যন্ত সহক ভাষার গলগুলে বেন বলে গেল।

প্রশান্ত বিচলিত হ'ল যথেই। ছট ছোট অনহার ভাই-বোন--রাধা মা---অথবা ঠাকুরমা অবচ ঘাইরে কোন দিন ভভা এ নিয়ে আক্ষেপ করে নি। কি করে চালার সে সংগার ! পার্টর কাজ করে জভই বা পার ! পার্টতে কাজ করে কি না ভাই বা কে জানে । কোন আপিসেই কি কাজ করে ! বনে ভো হর না । পরিকার পার্কী লব সমরেই পোজন করে পরে—সব লবরে অপরিমিভ হালে—ভর্ক করে— সিনেবাভেও ভার অক্লচি নেই । রেভোরাঁর চুকে কভ বিম চা বেরেছে—প্রশাস্তর সকে । ভার সকে অন্তর্যকা কি বন্ধুছের অভিনর যাত্র নর ?

আৰবুছি নানিরা কিরে এসে বললে, ছিবিছী—মাজী বোলাতা আগকো।

মা—। প্রশান্তর পানে কিরে বললে, এন প্রশান্ত— এ বাছিতে থাকবেই ঘর্ষম—সকলের সলে পরিচয় করে রাধান্তাল।

পরিচয়ের আঞ্চহশত ময়—এই বর থেকে পরিআধ পাবার আলাতে প্রলাভ উঠে ইছালে। বরের বাইরে সরু রত একটা পথ—ছ্বারের দেরাপের দোলতে এটকে সুভ্দবলা বেতে পারে। তার পরে বে ঘরটার এসে পৌছল ওরা—সেটা অপরিসর আর অহকার আর আসেকার ঘরখানির বতই স্টাতসৈতে ও নিরামলময়। খরের এক পালে ছোট খাটরায় এক ছবিরা অনীতিপর রুছা ভরে ছিল। বাতির আলোটা তার জরা-লিবিল বহুবা-কুঞ্চিত বুখখানিতে পছেছিল—চোবের ছুট্ট বোব হ'ল ভাবলেশহীন। এক হাতে মাধার বালিশটা ঠিক করছিলেন—অভ হাতে গারের খানচ্যত কাপছখানিটেনে দেহ আরুত করার চেটা করছিলেন। এটা সম্ভ্রমন্ত্রার অভ্যাসবশতই হয়ত ঘটছিল। করেণ হুটি বা ক্রতি কোনটাই নতুন আগভ্রমকে দেবে সত্তর্গত হবে ওঠার অমৃকূল নয়।

৩৬: পারের শত করে বলগে, এট ঠাক্ষার খর--- আই-বে উনি---

বুৰার কামে হয়তে। শব্দী প্রবেশ করল কিংব। অভ্যাপ বণতই ভি.নি বললেন, কে ? নানিরা ? আৰু আমাকে বেভে বিবি মে ভোরা ?

় ঠাক্ষা—আমি ! শিষকে এগে ভভা বৃদ্ধাকে সচকিত কললে।

কে মাতনী ? বলি ইটালা—তোদের আছেল কি—আৰু সারাধিন কল্পর্শ করলার বা—

শেষের দিকে তার হর অঞ্চর আভাগে কেঁপে উঠন।

প্রশান্ত বেদনা রোধ করলে। চলচ্ছজ্জিনীন করে বেঁচে
থাকার বিভ্যনা কেউ ঠেকাতে পারে না। কুবা-ভূকা—কালকালা ভারই মাঝে মির্ছন করার আঘাত—মির্কুর বিশ্বতি।
এ বেঁচে থাকার মত করণ ব্যাপার পৃথিবীতে বেই। তবু
বুধা একবারও আক্ষেপ করলে না—মন্তব প্রার্থনা করলে না।

ভোষায় থাবায় দিছি। স্থানের কাছ থেকে রুব **উটিছে** শুভা বললে, আহুন। ন পিঠোপিট বর। এ বরেও একবানি বাটরা পাতা, ছুবে বাটরার থপর কেউ ভবে নেই—বেবেতে বলে এক বর্ষীরগী কি বেদ করছিলেন। ওভা ভাকলে, যা। এই এবই কথা ভোষার বলেছিলায়—প্রশাস্ত।

প্রশাভ অনুরেই ইাভিত্রে রইল—প্রথম পরিচরের ক্ষেত্রে একটা প্রথাম—অন্তত কিছু সংঘাধন করা উচিত এ তার মনেই হ'ল না। বর্ষারদী এদিকে মুখ কিরিরে মুহুসরে কি যেন বললেন—প্রশাভ অর্থহীন দৃষ্টিতে তার পানে চেরেই রইল। বর্ণহীন, অব্যবহীন এমন অন্থি-কাঠামো তার চোবে পড়ে নি এর আবে। মুখের সাবব্য মারীচিছে নিংশেষিত— ক্রতে বাঁ চোবের পাতার নেই লোম—গভান্বিতে চোব হুট অপ্রকৃষ্ট—প্রতিদী ছাড়া এ মুর্ডিকে কিছু বলা যার না।

বর্ষীয়সী হতথাক প্রশান্তর মনোভাব বুবলেন কিনা—কে ভানে। তথু বললেন, ছেলেকে ও বরে নিয়ে সিরে বলা— কিছু বেতে দে।

ওবরে মানে আগের বরধানিতে। প্রশান্তই এবার প্রথম

শা বাড়ালে। মনে হ'ল আগের বরধানি এ বাড়ির মব্যে

সভ্যই ভাল। ইযং প্রশন্ত বলে নর—নির্কান বলেও নয়—

ভীবনের বিরুত রূপ ওবানে অন্ততঃ চোবে পড়বে না—এই
আখালে ও ফত পা চালালো।

ভঙা বললে, আভে হাঁট প্রশাস্ত—এ বাড়ি সহক মানুষের পক্ষে ধরপাক তো বটেই।

শুজা হাসলে কি নিঃশব্দে ? হাসুক। বাজির লকে নতুন পরিচয়টা কোন দিক দিয়েই জ্ঞাতার গভিতে বাঁববার উপযুক্ত নয়। স্টার মাথে স্টাছালা এই সব বছ--এরা মাহুষের সহজাত আচার-ব্যবহার আগর-আপ্যাহন এ সব দাবি করতে পারে না নিশ্চয়।

আগেকার ধরে কিরে আসতেই জীবনের আভাস পাওয়া গেল। দশ-বারো বছরের একট মেরে ধকান অভকারের গহার থেকে বেরিয়ে এল। বেরিয়ে এসে সে শুভার কোল বেঁষে গাভিয়ে ভিচ্ছাস্থ গৃষ্টিতে প্রশাস্তর পানে চেয়ে অস্ট্রুর বললে, দিদি—

ভঙা হেসে বললে, ভোর দাদা--প্রণাম কর বুকি।

মেরেট সদকোচে এপিরে এসে প্রশান্তর পারে হাত রাধলে। প্রশান্ত তাকে মু'হাতে তুলে বরতেই ও কলকঠে হেসে উঠল। সেই হাসিতে যুত্যপুরীর মিন্তরতা ভেলে টুকরো টুকরো হয়ে কোধার হিটারে পড়ল---প্রশান্ত কিরে এল কীবনের রাজ্যে।

ক্ষমণ সহজ হয়ে এল পাত্রিপার্থিক। গভীর অংকারে পথে নামলে প্রথমটা বিখাস রোব হয়ে আসে বৃষ্টি অংকারে বাজা বেছে ভিত্তে আসে—এক পা এসিছে বাওয়া প্রায় অসম্ভব বোধ হয়—সে মাত্র ক্ষেক্ যুক্তের ব্যাপার। ভারপর বৃষ্টিতে নবে বার অবকার—অবকার তরল হয়—র্জ প্রায়য় হাত-হানি বিবে তাকে বহতপুরীর অভিযুবে। একবার চলা ত্রু হলে সভোচ তর, ইতভত: তাব কিছুই বাবা জ্বার না।

তবু একটা কিছু করা দরকার। সংগারে ভার হয়ে বাক্ষে চলে না। এট পরের দিন সকালে মনে হ'ল।

পরের দিন সকালে সবে দুম ভেঙে সে উঠে বসেছে বিছানায়—গুজার মা এসে ইাঞ্চালেন বরের সামনে। গুঁৱা এ ববে বড় একটা আসেন না।

ভাষাভাষ্টি বিহামা খেকে উঠে ও বিজ্ঞাসা করলে, আমার কিছু বলছেন ?

গুভার মা বললেন, একটা টাকা দিতে পার বাবা—গুভা কোণার বেরুল—সে এলেই দিয়ে দেব।

করেকট টাকা মাত্র পকেটে আছে—ভা থেকে একট টাকা অনারাসে দেওরা যার। ভার নিজের বরচও ভো আছে। কিছ টাকাটা বার দেওরার মত করে চাইলেম কেন ভভার মা। উনি কি আনেন না—ভগু করেক দিনের অভ প্রশাস্ত এ বাভিতে বাস করতে আসে নি।

টাকাটা দিয়ে আরও তার মনে হ'ল—উপার্জন চাই প্রইকি। সাম্যবাদী হওয়ায় আপত্তি করবে না কেউ (বাবাম্যরের কথা বাদ দেওয়া যাক—ওঁয়া নিজ বার্থবিরোধী যে কোন সংকাজেই আপত্তি তোলেন!) কিছ যে নীতিতেই আহাবান থাকুক—অলস হয়ে বলে থাকলে মুথে প্রবিশত্তি মুগাঃ হয় ন!। জীবন রাখতে জীবিকা বেছে নিতেই হবে। রেজিগনেশন-পত্রটা আপিসের উর্গতন কর্তার কাছে যদি না পৌছে থাকে গো কিরিয়ে নিতে হবে। আত্মসন্মানে বাববে হ লেখানে কিংবা এখানে সর্বত্র আত্মসন্মানকে অক্রে রাখা চলে না।

শুভা এলে গে বললে, আমি যদি আপিলের চাকরিটা কিরে পেতে চেষ্টা করি—অভায় হবে কি ?

ক্তা বললে, নিক্তর নর। বাঁচবার দাবিটা আমাদের ক্ষুপ্ত দাবি।

প্রশান্ত ইতন্তত করে বলগে, একবার রেম্বিগনেশন দিয়ে— শুকা বলগে, পুরাতন বৃত্তিকে শেষ করে যাও কমরেছ। মান-সন্মান ভক্তি ওপর নতুন পুথিবীতে মানাচ্ছে না—অনেক দিমের পুরনো জিনিস।

প্রশাস্ত বলগে, তাই বলে মান্ত্র আত্মসন্থান বিদর্জন দেবে?
ততা বললে, আগ্র-সন্থান তো পরের কাছ থেকে ধার
করা জিনিস নর যে নই হবে। যা তোমার মনের সলে
জড়িরে বেডে উঠেছে—তা মনেরই জিনিস, কিছ কমরেড, বড়
সাংঘাতিক জিনিস ওই আত্ম-সন্থান। ওকে বডই বাড়তে
দেবে—অহ্লার ডডই প্রবল হবে। সামাজিক মূল্য আলারের
চেটা করে বারা ওই আত্ম-সন্থানের লাবি জানিরে তামের
মনোভাব জনকল্যাণ-প্রবুদ্ধ নর।

প্ৰশাভ বললে, পৰের ধুলোর সব মিশিরে হীন হরে বাওরা সেও ভো ভাল নয়।

কে করবে কাকে হীন! বিভ নিয়ে এক দিন সমাজবিধান ভৈরি হয়েছিল—শ্রেণী বিভাগে বুছির বা প্রতিভার ইভরবিশেষ প্রভেগ স্থাকীকার করি না—কিন্ত বিভবানেরা কি ভগাকবিভ মর্ব্যাদা মাম পূজা ভক্তি এ সবের বিধান দেন নি ? তাঁরা পূথক হয়ে গভলেন রাজাকে—দেবভাকে। প্রেণী ভাগ হ'ল। স্থারত হ'ল মাসুষের হংগ-ছর্জা।

প্রশান্ত বললে, আৰু এসৰ তর্ক করব না — মানুষের বিধি-বিবানে যথেষ্ট গলন ছিল বলেই এতবঢ় প্রমান ঘটতে পেরেছে আৰু। এসৰ দূর করা কর্মবা এও বুবি, কিছু পুরাতন ছিনিস মাত্রেই যে ধারাপ এ সধ্যে আমার যথেষ্ট সক্ষেত্ত আছে।

কি জান কমরেছ—শ্রেণীয়ার্থ—বাজিয়ার্থ বেকে দানা বেঁবেছে। ভঙা হ্বারে হট টোকা বেরে হাদলে। পূঁর্তি বিবানকে আটকে কেদতে পারলেই—ব্যবহা পাকা হরে সেল—কিংবা আপেকিবের কিছু লাভ করলাম এ ভাবা উচিত নর। দেশের সঙ্গে দেশ মিশছে—মহাদেশে—মহাদেশে আছ কোলাকুলি—পৃথিবীর বিভার কষে যে এসেছে দে ভো জয়ীকার করে লাভ নেই। নানাম দেশের সেরা মাহুষরা চেটা করছেন কিলে মাহুষ সুত্ব থাকতে পারে—যাহুবেছ চলতে পারে—বার বার বুকের নামে বে নরহুতাার অভিনর হয়—ভা বেকে নিছুতি লাভ করতে পারে। সভ্য কিনা গ

প্ৰশাভ বললে, যাই হোক—তুমি বলছ পুঁজিবাদীর ছুরোরে বর্মা দিতে আমার লক্ষা হওয়া উচিত নয়।

ভঙা বললো, যা ভোষার প্রাণ্য—তা আদার করতে বিবং করবে কেন ? পুঁজিবাদকে ধ্বংস করতে হলে তাথ মধ্যে না নিরে উপার কি ; দূর বেকে আগুন অলছে দেখে হার হার করা—আর ভাল ভাল সোগান আউছে—জনমূহ জর করা—একই বরপের।

ভৰ্ককে চালিরে যেতে উৎসাহ আসহে না। মনের সম্বন্ধে আইট বেকে প্রদান্ধ বললে, একবার ঘ্রে আসি।

বাাসে কয়েকটা টাকা ছিল—সোজা সিয়ে উঠল একটা নাকারি গোজের রেস্ভারীয়। একই রাজিভে জিলার ক্লচিত বোৰ প্রবল হয়ে উঠেছে।

অধেক ঘুরে সে এল আগিসের সামনে। কত লোকই ফলে গোল গমুকশোভিত আগিলের বিরাট ফঠরে প্রবেশ করছে—বেরিয়ে আগছে। রামায়ণের একটা বর্ণনা মনে পড়ল। নিপ্রিত কুলকর্ণের বিরাট দেছ ঘুমে আচেতন—ভার ব্যাদিত বদনের মধ্যে নিয়ালের টানে যে সব প্রাণী মুহুর্ত্তেকে অদুভ হয়ে যাক্ষে—ভারাই নাসিকা- ও প্রবেশনিয় পথে প্রোভের মভ বার হয়ে আসছে। বন্ধ প্রহণ ও বর্জনের লীলার নিস্তা ভালই জনেছে কুভকর্ণের। জি. পি. ও'র পোল গমুম্ব ওরালা লালা বাছিটাকে তথনি মনে হচ্ছে। স্বরেশ্ব সঙ্গেত ভার ভিন

পিঠি গ্রহালা বভিষ্টায়—ভিন্সট বুড়ুক্ চোবে—বাহা আগছে—আর বাহা বাজে—ভানের পেবন করতে—গ্রহ বিরাট কঠিছে বাহা উদরাভ কলম চাল বা করে—ভারাই কি বাজরণে পরিপ্রট করতে না কৃতকর্বকে। রাজকীয় উপচারে কৃতকর্বের দেবে করতে বেল—চোবে অলতে বিশ্বপালী ক্বা—মিখালে বেজে চলেতে কালের ক্রডরা—কভ এল আর কভ গেল—এক পুরুষ—হই পুরুষ—বহু পুরুষ রাজাগুরক্তির প্রমাণ রেবে পেল—ধূলো-ক্ষমা পুরাভন কাইলে ভানের কাভি লোক লেবা আতে। অল মূল্যে কীবন বিকিরে বার—পথুকের বভিত্তে টুং টাং করে শথ করে মহাকাল—মাত্ম মুন্ধ হরে শোক্তে আর এপিবে বার।

প্রশাভ কিরে এল। আছসখান বটগাছের শিক্ত ও পুরাতন ইমারতের প্রতিট অগ্নিপঞ্জর—ভার দাত স্থাচ হয়ে অভিয়ে আছে—উপড়ে কেলব বললেই উপভানো সহক ময়। অভ আশিসে চেটা দেবা ভাল ভাত চেয়ে।

হুছ বেষে গেছে-পৃথিবীতে শান্তি কিরে এসেছে কি ? হয়ত লাছি আগবে এই আখাসে খভির নিয়াস ফেলভে সবাই; সন্মিলিত জাতিপুত্ৰ চেষ্টা করছেন যাতে স্বায়ী লাভি প্রতিষ্ঠিত ৰয় বিৰে। কিৰ ৰাভিতে ৰাভিতে দৱক্ষাক্ষির ব্যাপারটা চলছে প্রোদ্ধে। যাত্রা যা প্রাস করে আছে-তারা তা ক্ৰামাত্ৰও ছাত্ৰে মা। সাত্ৰাকাৰাদ শিবিদ ক্ৰবে মা ভাত্ৰ হাতের বু:ঠা---গণ-ভন্তীয়া নড়ন পুৰিবীর নড়ন বিধান ভৈরি करत निकार सामित का कि का का का का का का का का का আমেরিকা করের পরে গৌতাগোর সভান পেয়েকে--- নিকেছের विशानशाद (मांशाहे मिट्ट करन परन चल्दों एक लागांवल करल চাইছে---রাশিষা মুরোপে সাম্যবাদের ভিগির ভুলছে-- আর ৰুট্ৰ সৰ্বন্ধিত দ**্ব**তে সম্ভেছ-দোলায়িত মনে একবার চাইছে রাশিয়ার পানে আর বার সন্তি উচ্চারণ করছে মন্তুন পুথিবীয়। ভার উপনিবেশে যুদ্ধ দোলা দিয়াছে প্রচণ্ড ভাবে-ভার স্বধীন রাষ্ট্রন্তলি মর কামমার বহিং বেদনায় বিপ্লবোশ্বর। এশিয়ার পণ-বিজোদের বীক মধীরুছে প্রিণত হতে চায়। আভদ জলতে ভারতবর্বে--ত্রক্ষে--ইন্সেচিব---ইন্সেবেশিয়ায়। ছীপ-ষয় ভারতের সমুদ্রে ধাবানল প্রসারিত হচে। পুদুর কিলি-পাইনে ভার অধনামী পিবা পৌৰে দেহে—কোরিয়ায় ভার अक्षे क्लिन विहेटक भएका। भारत्य---भारमकेश्वेष---ষিশরে-প্রশাস্ত মহাসাগর থেকে ভারত মহাসাগরে-প্রথম (बरक--बाबर मागरब---छमरामागरब (बीरब (बरब रार्ध)। (नक् नाक्रमान-नक्षय---नाबोर्ड---कानाबाक:--- (छर्बाक --- देशानीय श्राणिकिया हमास । अंक अक्षी (वायनाव व्यव्याद-भारण्य शैक्षि विराय चाकाम वावित्य विराय-विम जावरवय ওঁর ত্যাপেই শাভিপ্রতিষ্ঠা-ট্রনি ভাবছেন-রবমে প্রাস করেছেন বলেই সম্পতিটা চিত্রকার্গের পাকবে এই বা কোন ক্ষা---পুতরাং হাড় ভার বন্ধ---দাভি আনবে। ইহুরী আর

আন্তর লগার আর আবারবাইকন—কংগ্রেস আর লীগ—
রক্ষের লাতীর দল ও লীয়াত দল—ক্ওমিন্টাং ও ক্যুনিষ্ট—
লাঞ্জার নীতির দাবার হকে চালের পর চাল দিরে বাছে।
আপে-আলার দাবিতে ও ভলার পাউতের মর্প ভারে—
পুমিরীকে ভাইনে থেকে বারে—আর উর্জ্ব থেকে নীচে
কোন্তে বারা—ভাবের গোঞ্জ মর্প চিহ্নিত হলেও—অবশিষ্ট
বে ক্ষরতা ভাদের হাতে আছে—ভাতে দাবার হকে ধেলাটা
আরও বানিক চলবে। ভবে লব ধেলারই ফ্রেম শেষ আছে
—এ খেলাও এক দিন ধামবে। সামান্ত্রাদ ভেঙে পভ্বার
আরে বে চরম আবাত হানবে—ভারই স্ক্রনা দ্বিতীয় মহা—
ব্রহের শেষে ধেবা দিরেছে।

কতকণ মন্ত্ৰমুদ্ধের মত বসেছিল প্রশান্ত জানে লা। পাছে
পারে সে অনেক দূর এগিছে এসেছে মহুমেক্টের তলার—
স্নোগানবিও পতাকা হাতে অপরিমিত টেচাচ্ছে—মক্তর দল।
ওদের ক্ষোভ অভিযোগ প্রকাশ করবার দিতীর রাভা নাই।
মাঠের চারবারে যে সব প্রাসাদ কেলা প্রমোদ-উভান চোর্ব
রাছিয়ে শাসন করছে—এই অল্প পরিসর মাঠকে আর অবারিত
আকাশকে—ভারা কেঁপে উঠছে কি ধ্বংস কামনার উফ
নিবাসে ? ওবাই হানবে শেষ আঘাত শাজিপ্রিয় মাহ্যকে—
আর ওরাই মিশে যাবে এই নব ভারত জীবনের উলোবন

মত্তে পুলিই লাগছে। দিবাখপ্রের মন্ত মবুর— আবেগ-নদির চিন্তা। এ চিন্তা লকণ হবেই—আলিবে সে দিক আলিবে।

কিলের মিছিল ভোষাদের ? চাক্রি ইটিট্রের। কিলের অভিযোগ করছ ভোষরা ? মাগুলি ভাডা—বেডম বুছির পু বর্ষঘটের হুষ্কি কেন ? সামুষের নিয়ত্ম পর্যায়ে বেঁচে পাকবার অবিকারটুও চাই আমর। আমাদের বাচতে দাও তব। বেশনে অহাহায়-বসনে আদিন মুগের ব্যবহা--**१७८**एव छटव मानावाद श्रान्य चारबाक्य रक्य । रखानारवर्षे ছাই সভাতাকে তোমবা হমন করছ। হর্ণ সঞ্জের বাসমাকে मिक्षक कब-विद्याल आमारम्य । पूर्व करण बार्ट्स करकरक (यांचेत---(यांचेदवंद अर्छनांधी (कांग प्रत्य-- यांच्य ८४८%) (स्थास मध्यात्मत मित्क मत्की इत्यह । त्वरक्षातीत्र वाक्रास কল টটের হাকা প্র---মেটোর নিষ্ণ লাইটের নীলিয়ার অলি-অক্তরে 'বেদিং বিউটি'র ঘোষণা---আর বেড ভেলটমের প্রায়-मध निर्मक (पश्किमा) भगामधारत (ठोतमो क्लेक्जि. দোকানে কত বক্ষের ধাবার--- লাব্দে সঞ্জার নব নব ক্যাসানের রীতি---সাম্রাজ্যবাদ শেষ আঘতে দেবার **জভ প্রছ**ড ₹CRCE I

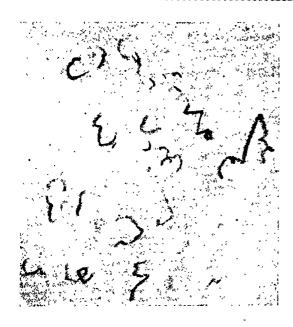
(क्यमः)

আদর্শ শিক্ষায় প্রাথমিক চিত্রাঙ্কন ও হস্ত-শিপ্পের দান

শ্বীনারায়ণচন্ত্র কুশারা

আনর্শ শিক্ষার মাহ্যমের বৃত্তিগুলি এমন পরিমাজিত হয় বে, সংসারে মাধা উ চু করে ইাছাবার শক্তি সে লাভ করতে পারে! চার্লস ডারউইন তার নিজের অভিজ্ঞতা থেকে প্রমাণ করে দেখিয়েছেন যে, মাহ্যমেকে কেবল বৃদ্ধিনীবী করবার চেটা করলে তার অভান্ন উংকৃষ্ট সুকুষার বৃত্তিভলি নট হয়ে বার এবং বছয়ুখী শিক্ষালাভে বঞ্চিত হওরার এক-থেরেনিতে ও অবসাদে তার জীবন পূর্ণ হয়ে ওঠে।

আমাদের শিকা-প্রণাগীতে বহুমুবী শিকার অভাব এত বেশী যে, বৈচিত্রাহীন জীবনে সূতনত্বের উহীপনা সঞ্চার করবার এতটুকু সামর্থ্য তার নেই। মনের সকে মাংসপেশীর যোগাযোগ ছাপদের প্রতি সক্ষ্য রেখে আমাদের শিকা-পছতি গছে ওঠে নি, তাই আক পরের মুবের দিকে চেরে আমাদের দিন কাটে। আমাদের বিভালঃসমূহে শিক্তশিকা বে আন উপযুক্ত মর্বাাদালাক করছে না, বিদেশী শিকামারকগণই চোবে আকুল দিরে তা আমাদের দেবিরে দিয়েছেন। প্রত্যক্ষরাম ও প্রাবেক্ত্র-শাক্ত বে চিত্রাক্ষম ও ক্ত্র-শিক্ত শিকার মূল্ভি-ব্রুপ বৈদেশিক শিক্ষাতাত্তিক- (सर्व कांक (पदक चाक छ। चामारभद निवरण एटक : (अरमंद्र हेर्लक कें हामाल विष्ट्र ए यात्र । (मनामकाद कांद्रनामाद्र (महें भव भाग (परक विवासित मांस्थी सञ्च श्रह भारम. আম্বালিতা বাবহার করে সব মেটাই। উত্তাবনী-শক্তি ও হত-শিল্প শিক্ষায় জগতের অধান হেশের তুলনায় আহরা যে व्यानक निव्दान नाए जाहि जाल मान्य तहे। लाविक निकात कवारे बता याक मा। अ पिक पिरव देखेरबान. चार्यातक। शंकृष्टि (प्रामध माम कि चार्यापात कुनमा करन १ अक चार्यदिकाश लाश २,००,००० मण लार्यभिक ७ हैक विकालस आहर । अधिक विकालस कर्त्रभक साम्राज्य शाबीन মনোর ভ বিকালের উপযুক্ত ব্যবস্থা করেছেন। এইসব বিদ্যালয়ের শিক্ষার ভিত্তি হ'ল ভবিষ্যৎ জীবন পঠনোপবোই काश्वकती निकासन। जात्मत निकालत्स जात्व (मनान्त). ভাষাশিকা সংখ্যা ও রাশিকান, ইভিহাস, ভূগোল চিত্র-কলা, সলীত, সমাজনীতি, বিজ্ঞান, স্বাস্থ্যক্ষা ও ব্যাহামচন্চা इन्तापि वर्ष विषय (नवावात वावशः। भारमक (कर्म विम-কলার সকে বাকে অভাত হাতের কাক শিকাদানের ব্যবহা।



শহনের প্রথম শবহা সভারত কুশারী, বয়স ২ বংসর, ১০ মাস । কেজযায়ী—-১৯৪৫

ছবি আঁকা, ছাতের কাজ ও গান-বাজনা আমাদের বিদ্যান্ধনিরে এত কাল অপাঙ্জের ছিল একথা বললে অত্যুক্তি হয় না। এখন এওলো বিদ্যালয়ে প্রবেশাবিকার পেয়েছে বটে, কিছ উপযুক্ত মর্ব্যাদালাত করেছে, একথা বলা চলে না। অনেকের বারণা, সাবারণ বিদ্যালয়ে এ সকল শিক্ষার ব্যবস্থা থাকলে ছেলেদের বিদ্যাচর্চার ব্যাঘাত হবে। এ বারণা বে কতদ্র অ্যাত্মক তা আজ বিশেষ ভাবে উপলব্ধি কর্মার্থনাকন।

ৰমাসন বাসেন, "The healthy growth of the mind is just in proportion to the activity of thoughts on the study of outward objects."

অর্থাৎ---বান্তব পদার্থের বিচার-জ্ঞানের অসুপাতে মানসিক উৎকর্ব বৃদ্ধি পায়।

দৃষ্টপক্তি ও অর্পনিভিন্ন দৌলতে বাভবের আন আমহা
লাভ করে পাকি। মনোবিদ্গণ বলেন শিশু প্রথমে লাভ
করে অর্পন্তান। শুরু বস্তর গুণ বাবর্ধ কেনে নিলে সে বন্ধ
গলবে পূর্ণ জান লাভ হয় না। তার ব্যবহার: আনতে হয়।
প্রত্যক্ষ জান লাভ হয় দৃষ্টিশক্তি ও অর্পনিভিন্ন বোগাযোগ
হলে এবং এই জান বর্ধন সক্রিম্ন হয় তর্ধনই বাহ্ন অগতের সদে
আমাদের যোগাযোগ ছাপিত হয়। অভ্যান ও অন্থীলন
বারা দৃষ্টি ও অর্পনিভিন্ন মধ্যে সহযোগিতা হাপন করা বায়।
ন্যবহারিক ভীবনে এই রুগ্ন শক্তিই আমাদের চিন্তা-রাজ্যের
ভিত্তিকরপ।

পৃথিগত আম লাভ করে বৃদ্ধিশীবী হওয়া বার, কিছ তা

বারা পর্যবেক্ষণ শক্তি লাভ করা অসন্তব। সার্মধলীর উপর শিশুদের কর্তৃত্ব না বাকার ভাবের মাংসপেশীখলো অনিমন্তিত গভিতে চলতে বাকে। ভাই ভারা ভালমন্দ্র বিচার-সম্ভাকে অগ্রাহ্ম করে কলম বা পেলিলের সাহায্যে পর্যবেক্ষণশভিক্ষে কাজে লাগাবার চেটা করে।

১ নং চিত্রে দেখা বাচ্ছে শিশুট কভকওলি ভিষাকৃতি দাগ কেটেছে বার কোনই অর্থ হয় না। শিশুটর বয়স ৩৪ মাস। তার হ-বংসর বরসের সমর ছবি আঁকাবার চেঠা করেছি, কিছ কাগজের কোন নির্দিঠ সীমার মধ্যে আঁকা তার পক্ষে সভবপর হয় নি। এ চিত্র দেখলে মনে হবে তার পর্য্যবেক্ষণশক্তিকে দে কাজে লাগার নি অথবা কাজে লাগাতে পাবে নি, তথু থেলা হিসাবেই ঐরপ এঁকেছে। এগুলো তাদের সহক জানের প্রেরণা বারা সম্পন্ন হয়।

শিশুগণ কতকণ্ডলি সংস্কার নিয়ে ত্মিঠ হয়। হিন্দুশাস্ত্র মতে এই সংকার বা সহক জান পূর্বকথাকিত। অভ্যাসের ঘারা এই জানের পরিবর্তন হয়। শিশুদের তবিয়ং ক্ষীবন গঠনে এর প্রয়োজন অধীকার করা যায় না।

শিশুগণ বালক বহলে পা দিবার পূর্বে পর্যন্ত নিরবছির মন:সংযোগ দারা কোন বস্ত নিরীক্ষণ করতে পারে না, তাদের অভিত রেখা বা বর্ণ সমাবেশে তার কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না। মনের চিত্র অপরিকৃট হলে অভিত চিত্রে তারই ছাহা-পাত হবে। তাদের হাতের মাংসপেশী প্রথমে থাকে অনিয়য়িত, মনের ছবিকে অন্ধনের ভাষায় ব্যক্ত করতে গিরে তাদের হাতে পেলিল ইত্যাদির তগার হিকিবিক্তি রেখাই কেবল কৃটে ওঠে। স্কৃতিশক্তির অভাব ও ভাব প্রকাশের অক্ষনতাই এর কারণ।

২ মং চিত্রে দেখা যাছে শিশুর ব্যারন্থির সদে সদে ভার
পর্যাবেক্ষণশক্তিও বাছছে। বলা অপ্রাস্ত্রিক হবে না বে,
ছবিট্ট লেখকের লাড়ে ভিন বংসর বরস্ক পুরের আঁকা।
এক সমর আমি ইংরেকীতে একট প্রবন্ধ লেখার মনোবার্গ
দিরেছিলাম, দেই সমর শিশু আমার কাছে এসে আমি কি
কর্ছি ভা নিরীক্ষণ করতে লাগল। আমিও ভার কৌতৃহল
ভাগাবার অভিপ্রায়ে আমার লেখার অভ্করণ করে লেখবার
চেঠা করতে উপদেশ দিই। এ ভাবে কিছু দিন গেলে এক
সমর দেখতে পেলাম আমারই নিকটে মেব্রের উপর বভিমাট
দিরে লে হিজিবিজি আঁকছে এবং মাবে মাবে আমার লেখার
হ্রক্তলো দেখে নিজে। কালবিল্ড না করে আমি ভাকে
ছিরে হ্'তিনখানা চিত্র আঁকিরে নিরেছি। চিত্রট বে ইংরেজী
হরকের অভ্করণে আঁকা হয়েছে ভা বুরতে কঠ হয় না।

হবি আঁকা, হাতের কাজ এবং গেবা ইত্যাধি বারা পর্য্য-বেক্ষবশক্তি বৃদ্ধি পার এবং বছর বাহরূপ সহছে জান লাভ হর ৮ পৈনিক স্পর্নাক্তি বাড়িরে দিতে এদের ক্ষমতা অপরিসীন। become so self-evident that it provides a most excellent means of training the eye to an accurate perception of form and its beauty and of cultivating a habit of exact observation."

পর্বাবেক্ষণ হারা মনের ক্তেত্রে বহুর রূপ এহুণ করা ও হুত্বারা তা প্রকাশ করা—এ উত্তরবিধ কার্ব্যের মধ্যে অবিরত প্রেরণা যোগার একটা শক্তি—মন সে শক্তির বাহুন এবং প্রেরণা চালিত হুর স্নার্হারা। বহির্ঘী ও অন্তর্গী স্নার্হারর লালান-প্রদানে সর্বাই বান্ত থাকে। অন্তর্গী স্নার্হারর রূপ দর্শনিক্রের ভিতর বিরে বরে নিরে যার মন্তিম্বক্রের। সেখান থেকে বহির্ঘী স্নার্ক্ত ব্যের প্রেরণা বরে নিরে এসে হাতের সাংসপেনীকে সক্ষাগ করে দের। এ তাবেই বাস্থাতের সাংসপেনীকে সক্ষাগ করে দের। এ তাবেই বাস্থাতের সাংসপেনীকে সক্ষাগ করে দের। এ তাবেই বাস্থাতর সাংসপেনীকে প্রকাশ করে প্রেরণা যার মন আপনাকে প্রকাশ করে অনুভূতি, ইচ্ছাশক্তি ও ক্রানের ভিতর দিরে।

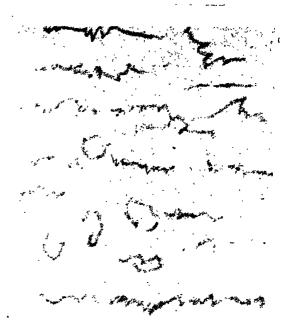
ক্ষবি জাঁকতে হলে প্ৰথমে আছদীর বস্তুকে মনে টেমে আনতে হবে— অৰ্থাং তার রূপ অফুব্যান করতে হবে একাবিক বার তাকে নিরীক্ষণ করে। এই নিরীক্ষণ করার ফলে বস্তুর বর্ণ ও আফুডি সম্বন্ধ সুম্পষ্ট বারণা হয়।

ভাই বগছিলাৰ মাহুধকে আদৰ্শ শিক্ষা দিতে হলে ভার যাবভীয় জ্ঞানেজিয় ও কর্ম্মেজিয়ের অসুশীলনের ব্যবস্থা করে দেওয়া আবশুক।

মনোবিদ্পৰ সমন্বরে বলছেন, "The factual sense is the basis of all sense." কিছ এ কৰার যাধাৰ্য সহছে আন্তর্না এবনো সচেভন হয়ে উঠি নি। স্পর্ননিজ্ঞির ও মর্শনিজ্ঞিরের অঞ্পীলন বাদ দিয়ে আমাদের শিক্ষানীভি চলে আসছে দীবকাল বরে।

চিত্রাহন বাতীত শিশুর মন ও মন্তিখের শক্তি এবং জ্ঞানবৃত্তির সহায়ক আরো কতকওলো বিষয় আছে যেওলোকে
উপেকা করা চলে না। আমাদের দেশের শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানসমূহ
চিত্রাহনকে একটু হান বিষে থাকেন বঠে, কিছ মাটির
কালকে নিভাভ অবজা ও অনাদরের চক্ষে দেবে থাকেন।
কোন কোন ক্ষেত্রে ধেশা যার মাটির কাল শিক্ষার প্রয়োজন
চিত্রাহনের চেয়েও বেশি। সমতল পূর্তে কতিপর রেখা, বর্ণ
অববা আলোহারা প্রতিক্লিত করে একটি কলের প্রতিরূপ
অহন করার তুলনার নয়ন মাট দিয়ে তা প্রস্তুত করা অনেক
সহল এবং কলের স্বাভাবিক আফ্রতি ও ঘনত্ব বিকাশের কল
শিক্তদের কাছে এটা বেশ চিত্রাক্রক হয়।

প্রাথমিক হন্তলির শিক্ষা সহছে আমানের দেশের শিক্ষাবিদ্পণ একান্ত উদাসীন। এই শিক্ষা ব্যবহারিক রভিত্নক শিক্ষার ভিভিত্তরণ। কভিপর টেক্নিক্যাল বিভালর ব্যতীত ষ্ণাবোগ্য ভাবে এ শিক্ষার প্রবর্তন ব্য অর হানেই হরেছে। এ দেশের বিভালরসমূহে বে পরিয়াণ হার

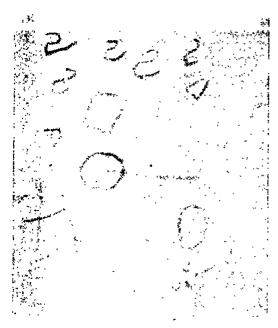


আহনের হিডীয় অবস্থা সভ্যৱত কুশারী, বয়স ০ বংসর, ৬ যাস। অক্টোবর--- ১৯৪৬

শিকাগত করে তরব্যে শতকর। প্রায় ৪০ জন বার হতশির, চিত্রশির, কারশির, প্রমশির প্রভৃতি বিষয়ে বংলায়াত শিকাগত করেই জীবিকা জর্জনে রত হয়। জায়াধের যে শিকাপ্রধালী নির্দিষ্ট জাতে ভাতে দেখা যার, ছাত্রগধ্প প্রকৃত ব্যবহারিক র্ভিষ্ক শিকার ক ব গ জারভ করে প্রায় ১৬ কি ১৭ বংলর বর্মে। ভাতেও প্রনির্দ্ধিত প্রাথমিক শিক্ষা-ব্যবহা ধূব জন্তই দেখা যায়। জাবার কতক তেগে জভিতাবককে সঙ্গাই রাধার জন্ত বছরের পর বছর, কে ভাবেই ছোক ক্লাস ভিদিরে যাজে, পাগ দিতে হবে বলে। কেট ভাদের মনের দিকে, কর্মশক্তির দিকে, প্রচির দিক্ষে ভালায় না। জভিতাবক্রপও এ বিষয়ে সম্পূর্ণ উদাসীম।

নিকার অবগানী প্রভাক ধেলেই প্রাথমিক হওলিয়া নিকাবিষরে ব্যাপক আন্দোপন চলছে। তথার নিকাবিদ্ ও মনোবিদ্পণ গমিতি গঠন করে এ বিধরে মৃত্য পৃত্তন পরিকল্পনাকরছেন। সে সমন্ত পরিকলনাকে কার্য্যে পরিণত করবার ক্তেও সাব্যবত প্রশাস চলছে। এমনিকাবে পরীক্ষা ও গবেষণা ভারা নিকার মব নব অব্যার বচিত হক্ষে। আর আবরা সকল সমন্তাকে বামাচাপা দিয়ে গতাহুগতিক বীতি-প্রতিরই অভুসরণ করে চলছি।

অধুনা কোন কোন বিভালত্তে প্রাথমিক-হন্তণির শিক্ষার প্রচলন হয়েছে। এটা আশার কবা। আনাদের দেশে প্রাথমিক ও উচ্চবিদ্যালয়লমূহের শিক্ষাতত্ত্বে অসম, মাটির কাক ও প্রাথমিক হন্তশির শিক্ষা, অভাভ বিষয়ের মন্ত বাব্যভার্লক



আছনের তৃতীয় অবস্থা
সভ্যৱত কুশারী, বয়স ৪ বংসর, ২ মাস। জুন--- ১৯৪৭
বাহান্ত্রির সঙ্গে শিশুর প্রকৃতিগত পর্যবেক্ষণ শক্তি কিরুপ
বৃদ্ধি পার এই চিত্রে ভার মিদর্শন পাওয়া বাবে!

শিক্ষা হিপাবে নি।দাই হলে, শিক্ষা সম্পর্কিত ব্যবহারিক কীবনের এক বড় সম্ভাৱ সমাবান হয়। প্রাথমিক হত-শিক্ষ শিক্ষার হড় পৃথক বিভাগের ছাপনের কোনই প্রবোজন কর্মা।

অনেকের বারণা লেখা-শভা শিক্ষাদানের বিদ্যালয়ে শিল্প শিক্ষার ব্যবহা রাখা শুধু অবসর বিনোদনের কভ—অর্থাং শিক্ষার একখেরেমিকে পরিহার করার কল। কিছু সভ্যি কি ভাই ? অবসর বিনোদনের কভ আছে থেলা ও সদীতা। অবন্ধ শিশুদের চিত্রাছন ও হাতের কাক্ষ অনেকটা সে পর্যারে পড়ে। কিছু বালকদের কভ শুধু অবসর বিনোদনের উচ্চেশ্রে শিল্প শিক্ষাদানের ব্যবহা করলে আদর্শ শিক্ষার উচ্চেশ্র

এবার প্রাথমিক চিত্রাহন ও হস্তলিক্ষের ব্যবহারিক দিকটা শহরে একটু বলব।

অভ্য শিক্ষা দেবার বভ ছাপানো আদর্শ চিত্রের প্রচলম আছে। একটু বয়ত্ব বালক-বালিকাদের শিক্ষার কোন বিশেষ শ্রেণীর পক্ষে এ সব চলতে পারে কিছ কচি শিল্ত-ব্যর এ সকল আদর্শ চিত্র দৃষ্টে আঁকতে উৎসাহিত করা অকৃচিত। হবির অঞ্করণ করা শিক্ষার আদর্শ হতে পারে না। প্রাকৃতিক বস্তুকে আদর্শরণে প্রহণ করাই দর্বশ্রেষ্ঠ উপার, বিশেষত শিশুলিকার। আদর্শ চিত্র সর্বাক্ষমন্থর

হওল উচিত। বাজারে এমন কডকওলি আহর্শ চিলারন-পুত্রক চালু হয়েছে যাতে আমর্শ চিল্ল বলে কিছু নেই।

শিও কি আঁকতে পারে, ভার মনের অবস্থা প্রবশ্ভা কোন ৰৱৰের ছবি আঁকার দিকে, প্রৰুষে তা পরীক্ষার দারা বুৰে নিতে হবে। কোনরপ হদিল না দিয়ে ভাদের ইক্ষারভ चाकरण मिर्लरे निष्क वृत्व निर्ण भावत्वन, त्कान बद्धत्व वरित पिटक छाटबर चाकर्रन, पर्नदिखा । पटखर देशन কভটা অধিকার ভাদের আছে, পর্যবেক্ষণাক্তি কি পরিমাণ আছে ইভ্যাদি। প্রীকার পর মৃত্ন মৃত্ন বিষয় ভাষের শাষনে উপস্থিত করতে হবে এবং সতর্কভার সহিভ লেগ্রনো তাদের দিবে আঁকাবার ব্যবস্থা করতে হবে থেন ভাষের कोज्रम किष्ट्रमाज क्र्म नः एव । निश्तरम्य अम्म काट्य छेशस्य দিতে হবে যেন তারা সে উপদেশ অভুসারে নিজেরাই श्रादाबनम्ब न च हित्कद मरामाबन करद निर्ण भारत। একান্ত অপারণ হলে শিক্ষক সাহায়। করবেন। অভিরিক্ত উপদেশ বা একই চিত্র নিষে ভাদের বৈর্যাচ্যতি ঘটান অসকত। উপদেশের ভিতর দিয়ে শিশুদের সহজাত সংস্কার তাদের चिंतर केंद्र चामर इता

ছাত্রণৰ সাধারণত যন্ত্রদি ব্যবহারের যোগ্যতা অর্জন করে ১২ বংসর বহসে। এই সময় বেকেই তারা প্রাথবিক হন্তনির শিক্ষা আরম্ভ করবে। বিদ্যালয়ের অন্যান্য পাঠ্য বিষয়ের সঙ্গে, সকল দিক বন্ধার রেখে, কি প্রকারে প্রাথমিক হন্তনির শিক্ষার ব্যবহা করা যায় নিয়ে সেইরূপ এক্ট পরিকল্পনা দিলার :---

)म वरमद (वद्यम)२)

١ د	হন্তনিৰে প্ৰৱোদনীয় ভাষা ও অঃ নিকা—		
		अक्षारक	२ चन्छे।
Q [অধন শিক্ষা	•	২ ৰকা
७।	মাট্র কাক—	,,	২ বৰ্কী
8 1	কাঠের কাজ	•	२ वकी
e 1	রঙের কাজ	,	२ वर्डी
रंब र	বংসর (বয়স ১৩)		
5.1	444	বংসয়ে ৪	লঙা হ
R I	বডের কাজ	8	*
91	মাটির কাব্দ	•	**
8	কাঠের কাক	8	
4 1	দপ্তবীৰ কাজ—	•	*
• 1	সেলাইয়ের কাজ—	8	
9 1	মেসিন লগ	. 8	,
b 1	শ্বিধি	છ	
> 1	বেলনা ভৈৱি	•	
.a.	- 	i festra ete i	5 973 1

७व वरमब---(वहम ১৪)

- ১। উপরিউক্ত > ট বিবরের বে কোন ৩ট বিবর এছণ করে তার প্রত্যেকট বিবরের ক্ষ ১০ সপ্তাদ করে শিক্ষার সময় নির্দিষ্ট থাকবে।
 - २। (मकानिकान कुठेर---भन्नात्व् २ चकी

হত্তশিল ব্যবহাতিক বৃত্তিমূলক শিক্ষা হিসাবে বারা এছণ করবে কেবল তারাই ৩র বংসরের শিক্ষাপ্রণালী অন্সরণ করবে। বারা শিল্ল বিভাগের শিক্ষক, সুপাওভাইজার, সুপারিটেকেট ও ভিরেইর তারাও উপরি-উক্ত পাঠ্যভালিকা অনুযায়ী শিক্ষাপাত করে অভিন্তত। সক্ষয় করবেন। ছাতে কলমে কান্ধ শিক্ষাপাত করে অভিন্তত। সক্ষয় করবেন। ছাতে কলমে কান্ধ শিক্ষাপার শিক্ষা অনেক। অমজিজ শিক্ষকের হাতে ছাত্রদের শিক্ষা অন্ধবা তত্তাবানের দায়িত্বভার দত্ত করলে তার পরিধান অক্ষতান। হয়ে যাহ না। বলা বাহল্য যে ১ম ও ২য় বংগরের শিক্ষা-ব্যাহ্যা সক্ষাের পক্ষেই বাব্যভামূলক হত্তা বাহ্বনীয়।

অনেকে যনে করণে পারেন প্রাথমিক হন্তশিল্প শিক্ষার
নির্বাচিত বিষয়ণ্ডিত পরিমাণ অর্থের হন্তয়ার ফলে এ শিক্ষা
আশাপ্রপ ফল শন হার না। এ বারণার বুলে কোন সভ্য
নেই। প্রাথমিক শিক্ষা কেবল পূর্ণ শিক্ষালাভের সহারভা
করে ম'ত্র। বালকবালিকাদের সভাব, একটা বা হুটো
আনিস নিরে বেশী সময় ভারা ব্যাপ্ত থাকভে ভালবালে
না। এর আর একট দিক সাছে। এ বিষয়গুলি কার্যো পরিশত
করতে গিয়ে পৌনঃপুনিক অভ্যাপের হারা ভারা বে
অভিজ্ঞভা লাভ করবে সেই ভভিজ্ঞভ' ভাদের ভবিশ্বং জীবন
গঠনে সাহায়া করবে। হারণাট বলেছেন, "Interest is
the keystone of instruction."

কোতৃহগ জাগিরে দিতে না পারলে শিক্ষা সকল হবে না। এই কোতৃহল স্কটির অভাবই হ'ল আমাদের শিক্ষার গলগ। বালাশিকা থেকে আরম্ভ করে সকল শিক্ষাতেই এই ফ্রট কায়ের হয়ে বসেছে। বালকবালিকাদের এবন শিক্ষা দিতে হবে যেন ভবিষাং কীবনে আনের সকল বিষয়েই ভাগের কৌতৃহল উলিক্ত হয়।

ভূইং শিক্ষকের শিক্ষাপঙ্ তি বিষয়ে কিছু বলা আবঙক।
লেখা পঢ়া শিশলে যেমন বৃদ্ধিবীই হওৱা যায়, হাতের কাজ
শিখলে তেমনি কারিগর হওৱা যায়। এই উভয়ের সামপ্রত
হক্ষা কয়ে যিনি অভিজ্ঞতা সঞ্চয় করবেন ভিনিই আবর্গ শিক্ষক

হবার উপর্ক্ত। সাবারণতঃ দেবা বার, বাঁরা শিল্পকা। প্রকৃতি হাতের কাজ শিক্ষা করেন, পূঁবিগত বিব্যার বিকে তাঁরা বিশেষ নজর দেন না। এবংশ হওরা বোটেই বাজনীয় নর। কাজ যেমনই বাজ, আবর্শ শিক্ষার ভিছি কোনক্রমেই শিবিল হওরা সদত নয়। নির্লিধিত বিষয়প্তলো ফুইং শিক্ষকের শিক্ষীয়:—

- ২। মনোবিদ্যা (ডুইং এবং হাতের কাকের উপবোদী যতটা প্রয়োজন) শিক্ষা করতে হবে।
- ২। বৈজ্ঞানিকদের নির্বেশিত পথে গবেষণা করে বৈজ্ঞানিক তথ্যাদির সভ্যতা ধামাণিত করবার চেঙ্কা করতে হবে।
- ৩। দেশ-বিদেশের শিক্ষাবিদ ও মনোবিদ্রগণ কি বলেন দে সকল বিবরণ পড়ে প্রয়োজনীয় তথ্য অবগত হতে হবে।
- ৪। চিত্রাক্তনের যাবতীয় বিষয়ে সাধারণ জ্ঞানগাভ করতে হবে এবং অভ্যাসের হারা অঙ্কন-বিদ্যায় পারদর্শিতা লাভ করতে হবে।
- ধে পাঠ্যভাগিক। প্রাথমিক হন্দ্রণিয়ের ক্ষয় নির্দিষ্ট হবে, হাতেকলমে তা শিক্ষা করতে হবে।

ৰুক-বৰির শিক্ষাপ্রতিষ্ঠানে শিশু ও বালকদের সঙ্গে প্রায় ২৫ বংসর ঘনিষ্ঠ ভাবে মেলাদেশা করে যে অভিজ্ঞতা লাভ করেছি তারই উপর নির্ভর করে চিত্রাঙ্গন ও হন্তশিল্প শিক্ষা সহকে ছুচারট কথা বললাম।

সপ্রতি বৈশাবের 'প্রবাগী'তে শ্রীর্জ্ঞ অর্চেক্র্যার গলোপাব্যার "ভারতের শিক্ষাভন্তের কগালিরের হান" শীর্ষক প্রবাহ শিক্ষার উদ্বেশ্ব, সৌক্ষর্যজ্ঞান, সুরজ্ঞান প্রভৃতি বিষয়ে বিভারিত আলোচনা করেছেন। প্রবাগীতে যি: এস, এম, হদ্রাহিন "হাইর্গ ও শিল্পশিক্ষা" নামক প্রবাহে এ বিষয়ে আলোচনা করেছেন। আমাদের দেশের শিক্ষিত সমান্ধ যে এ সকল বিষয় নিয়ে মাথা ঘামাতে আরম্ভ করেছেন এটা বৃষ্ট আশার কথা। আমাদের শিক্ষানীভিকে প্রকৃত পর্বে পরিচালিত করবার কন্যে আরু সকলের সম্বেভ চেষ্টাই প্রয়েজন।

ভবিষাং বংশধরদের অগ্রগতির পথ আমাদের দর্কপ্রবছে পূলে দিতে হবে। দেশের আশাভরসা শিশুসমান্দ। দর্কাঝে ভাদের আদর্শ শিক্ষার ব্যবহা না হলে কোন শিক্ষাই সার্থক হবে না।

আলাঞ্চা

শ্ৰীব্ৰজেকচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য্য

বিংশ শতাকীতে পৃথিবীতে যে ছইট মহাসময় হটরা গেল ভাহার কল প্রভ্যেকট দেশকে ভোগ করিতে হটয়াছে। বিশেষ করিয়া লভাভা-বিধ্বংশী বিভীয় মহাসময়ের বাজা এত প্রবল হটয়াছিল যে এখনও ভাহার যন্ত্রণা হটতে পৃথিবী মুক্তি-লাভ করিতে পারে নাট ; জনুব.ভবিয়তে যে পারিবে ভাহারও



খোদিত কাঠনিবিত ভত। কবে কাহার বারা নিবিত হুইয়াহিল ভাগা কাবা বার নাই

বিশেষ কোন সভাবনা বাই। কিছ আমেরিকাই একমান্ত্র লোভাগ্যশালী নহাদেশ বাহাকে সর্ব্বপ্রাণী নহাদ্ধ আংশিক ভাবেও বিশ্বন্ত করিতে পারে নাই। হুইট নহাসমরেই আমেবিকা (অর্থাং নার্কিন মুক্তরাই) অভিভাবকের ভূমিকা এহণ ভবিরাহে এবং এবনও অভিভাবকত কলাইতেহে। প্রকৃতির বিবাবে আমেরিকার অবস্থিতি এমন এক ভারণার বেবাবে প্রবেশ সংক্ষরাব্য নহে। অল্পার এইবারের ভার্মান বোমার হাত হুইতে ভাহারও বিহৃতি হিল না।

কিছ আমেরিকার এবার চিছা চুকিরাছে। এইবার যদি महाबुध वार्य, वाका कृषिम चारत चात शरत रहाकृ वार्यित्वहै, ভবে আমেরিকার প্রভিপক্ষ যে রাশিরা হইবে ভাষা সকলেরই জানা আছে। সম্রতি মাকিন যুক্তরাষ্ট্রের সমরবিভাগের স্কাৰিনায়ক এক বিভাৱি বাহির করিয়া মাকিন সেনা-বাহিনীতে আমেরিকার জৌগোলিক বিবরণ প্রদান করিয়া-ছেন। ঐ বিবরণে দেখা যায় যে, রাশিয়ার পক্ষে আলাফার পবে बार्किम बुक्क बांद्वेदक चाक्रमन करा वार्किक किन বাংপার মহে ৷ প্রকৃতপক্ষে গত মহারুছের সময়ই এমন একটা क्या छेठ्रेबा दिन प्र कार्याम कामान्त्रः प्रिया कार्यादिका-श्राद्यामब চেষ্টার আছে। আলাভা হউতে মার্কিন সরকারের নিকট এমন অভিযোগ পিয়াছিল যে ভাপানী ধীবরেরা মাছ ধরিবার ছলে আলাস্কার উপকলের মানচিত্র গ্রহণ করিয়া বেড়াইডেছে। ভবনই স্থান্ত্র প্রতাশ সভাশপতের পৃষ্টি আলান্তার উপর পভিভ হয়। ভবে ভাপামের পরাভয়ের কলে ঐ প্রসদ তথ্নকার মভ



খণোডোপন কাৰ্য্যে নিরভ শ্রমিক

বিশেষ কোন সন্তাননা বাই। কিন্তু আমেরিকাই একমান ্টিচাপা পড়ে। বর্তমানে আন্তর্জাতিক জাকাশ মেধাক্ষর হওয়ার লৌভাগ্যশালী নহাবেশ বাহাকে সর্ব্যনানী নহায়ত আংশিক জাবার জালাভার কথা উঠিয়াছে। কাজেই এই প্রার-জর্গর-জাবেক বিশেষ করিতে পাবে নাই। চইট নহাসন্তাই জাবেল চিত বেশ্টির পরিচয় প্রথমি চেটা জ্ঞাস্থিক হইবে না।

> কানাভার উভর-পশ্চিবে গা, বেঁৰিবা বে দেশট ইভাইবা ছহিরাছে তাহাই আলাভা। এশিরার নার্নাচত্ত পুলিলে ভাপানের আরও অনেকটা উভরে হাতীর ভঁডের নত বে ছানটকে আনরা দেবিতে পাই তাহার নাম হইল কানচাটকা। কামচাটকার আরও একটু উভর-পূর্ব্বে গেলে সাইবেরিবার

লীমা শেষ ঘইরা গিরাছে বলিরা রনে হয়। ঐ সীমারেখা হইতে আলাফার চুরছ মাত্র ৫৬ মাইল। ঐ ৫৬ মাইল ছাল ছুভিরা বেরিং উপদাদর অবছিত। এডটা বাববামের ছুভিরা বেরিং উপদাদর অবছিত। এডটা বাববামের ছুভিরা বেরিং উপদাদর অবছিত। এডক হইরা পঢ়িরাছে। অভ্যার এশিরা হুইতে পদরক্তে ওগালিংটনে গিয়া পৌহান যাইত। ভৌগোলিক এবং ভূতত্ত্বিদরা বলেন যে প্রকৃতপক্তে এশিরা এবং আমেরিকা একই ভূতাগে অবভ্রিত। ৫৬ মাইলের বাবধানকে তাঁহারা খীকার ক্রিতে চালেন না। ভাছারা মনে



अक्षकांत्र नीमरार्वत पृथाम । पृषितीत चात्र (काषाध्य वेशास्त्र सामत नावे

করেন যে পৃথিবীর অমন্ত কলরাশি মধন গুড় হইরা ছুলভাগ-লবুছের স্পৃষ্ট হইভেছিল ভখন যদি ঐ গুড় হওয়া কাই। আর ক্ষেক দিন যাত্র চলিত ভবে ঐ ব্যবহানের কোন চিছই আছ আমরা দেবিতে পাইভাম না। যাহা হোক, এই আগবিক বোলার বুলে ৫৬ মাইল বাবহান কিছুট নহে। আর বে'বং উপলাগরের কল এভ অগভার বে নৌকাযোগে পর্বান্ত ইহা অভিক্র করা যার। কাজেই মার্কিন মুক্তরাট্রের শিবঃশীভার কারণ আছে বৈশিক ?



বাগামী ব্ৰভেৱ ভাগুক। পৃথিবীর অংব কোবায়ও ইহাণিগকে
বৈধিতে পাওয়া যায় না

আলাছা প্রকৃত্যক একটি পুরুষ্ ই শিশুন্ত। আলাছার আন্তম সমগ্র মাকিন মুক্তরাষ্ট্রের এক-পঞ্চমাংশ। ইমার উপকূলরেশা ৩০,৯০৪ মাইল। মাকিন মুক্তরাষ্ট্রের উপকূল-রেশা মইতেছে ৫৩,৪১৩ মাইল। এই প্রবিদ্ধীন উপকূলবেশার উপর তীক্ষ্ণান্ট রাখা মাকিন মুক্তরাষ্ট্রের পক্ষে এক প্রবৃত্য সমস্থ মুইরা সাজ্যরাছে। এলুসিয়ান, আটু, মাক্রাথ প্রকৃতি আলাক্ষার অন্তর্ভুক্ত অঞ্চলম রুল্থ গাণ। আলাছায় সর্কল্ড চারিটি পোতাশ্রের আছে। ১৯৪৪ সাল হইতে মাকিন মুক্তরাষ্ট্র ইয়াধিপকে সুক্তিত রাখিবার ব্যবহা করিভেছে।



পেলুইনের মত একপ্রকার পাই। আলাফার উপকৃলে অহরহ ইহালিগকে দেবিতে পাওয়া বার



সিটকা সহরের একট রাভার দৃষ্ঠ

আলাখার প্রধান সম্পদ হইতেছে শীল ও তিনি মংস্ক।
১৯৪১ লালে আলাভা প্রার ১৫ কোট টাকার মংস্ক
লরবরাহ করিয়াছিল। মংস্কের তৈল সরবরাহ করিয়াও
আলাভা প্রতি বংসর কয়েক কোট টাকা পাইরা বাকে।
এবানে নামাবিব লোমশ অন্ধ আছে। এই স্বত্তে এবানে
করেকট বৃহৎ শলমনিজ-প্রতিঠান সভিয়া উঠিয়াছে। আলাভার
আরব্যসম্পদ্ধ কম নহে। তবে প্রায় মেক্ল-অঞ্চলে অবস্থিত
বলিরা ক্রমিসম্পদ্দ এবানে বিশেষ নাই। তবে মার্কিমরা
আলাভাকে ক্রমিসম্পদ্দ পূর্ণ করিবার ক্ষম্ম প্রাণশন চেটা
করিতেছে। স্ববিই আলাভার এক্যাত্র বনিক্রসম্পদ।

আলাদার কলবারু যোটেই অধাধ্যকর নহে। তবে ইহার উভরাংশের অর্থাৎ মেরু-অঞ্চের সংলগ্ন হানের কলবায়ু মধ্যবাদের উপধোধ নচে।

আলাভার মোটামুট গোটা ত্রিশেক
শহর আছে এবং সমন্ত অবিবাসী শহরে
বাস করিবা বাকে। ১৯০৯ সালের
আদমসুমারীতে দেবা যায় বে, আলাভার
অমসংবার্গী মাত্র ৭২,৫২৪ জন। ইহার
মব্যে ৩৯,১৭০জন বিদেশী অর্থাং বেড তালার
এবং অবলিঠ অভাভরাল রেড ইভিয়ান,
এজিনো প্রকৃতি স্থানীর অবিবাসী।
বেডকারদের অবিকাংশই হইতেছে
মত্রওরে, সুইডেন এবং কিনলাভের
বাসিকা। সুবের বিষয়, সেবানে এক
অমও ইংবেজ নাই।

আলাফার লাসনকাব্য মার্কিন প্রতিতেই হইরা থাকে। আইনপ্রপারন ও লাসনকাব্য পরিচালনার ছভ একট সেবেট সভা আছে। ইহার সদ্ভসংব্যা

মাত্র আট ক্ষ। সর্কোপরি আছেন এক ক্রন প্রবর্ষ। লেনেটের পরামর্শক্রমে প্রতি পাঁচ বংগর অভর মার্কিন মুক্ত-রাষ্ট্রের প্রেসিডেন্ট প্রবর্তন নিমুক্ত করিয়া আইন-আদাসত মিউনি-भिन्ता निष्ठी, कुल-करण्य, गिर्व्हा, दिल्हरह. এমন কি যাহুখর ও প্রশালা প্রায় এখানে আছে। আলাডাকে পুৰিবীয় উগ্নন্ত দেশগমুহের था के अब कर के स्व মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র ভাষার বিলুল मन्त्र एवं সাহায্যে আলাস্কার স্বাদীণ উন্নতি-সাধনে ভংপর রহিয়াছে। অবঞ ইছা নিছক স্বাৰ্থত্যাগ নছে। আলাফার প্রচর প্রাকৃতিক সম্পদ ঐথব্যশালী মার্কিন बुक्त हो देश परक्ष है एक विश्व नरहा भिट्टेका चामाधाद अवाभ नगर ।

আনেকে হয়তো জানেন না যে এক শত বংসর প্রের্থ আলাখা মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের অধীনে ছিল নং। কি করিয়া ইছা মার্কিনের হাতে যায় ভাহার ইভিহাস বছই চিন্তাক্থক।

রালিয়ার সর্কাশ্রেষ্ট সম্রাট মধানতি পিটার তাঁধার মৃত্যুর (১৭২৫ ম্রীরাক) কিছুদিন পূর্বে অজ্ঞাত সাইনেরিয়ায় এক বিভূত অভিযান চালাইবার অফ রেলিয় একাডেমী অব সারেজ এবং ক্লীয় মৌবাহিনীকে নির্দেশ দেন। পিটার অবর স্বচক্ষে এই অভিযানের ফলাফল দেবিয়া যাইতে পারেন মাই।

পিটারের নির্দেশগুমে ১৭২৮ ইইান্সে ডেন ভাইটাস বেরিং-এর নেতৃত্বে এক দল অভিযানকারী সাইবেরিয়ার পান্ত-সীমার আসিয়া উপনীত হন এবং এক উপসাধ্যের সন্ধান পান। বেরিং-এর নামান্ত্রণারে ইছার নাম হয় বেরিং



আলামার বিশ্বত অরণ্যানার একাংশ

উপসাগর। ওবানকার ছানীর অবিবাসীরা বেরিংকে জানার যে ঐ উপসাগর অভিক্রম করিলেই এক বিভীর্ণ ভূতাগের সভান পাওরা ঘাইবে। কিছু বেরিং ভাহাদের কথা বিশ্বাস না করিয়া কিরিয়া আসেন। এইজাবে ভবনও আলান্তা সভ্যক্রগতের নিকট অঞাত বাকিহণ যার।

১৭৪১ মীটান্দে বেরিং পুনরায় কামচাটকা ছইতে এক অভিযান চালান এবং মান মনে প্রতিক্রণ করেন যে ঐ উপসাগরের অপর পার্থে কি আছে তাতা না দেখিয়া তিনি ক্ষিরিয়া আসিবেন না। ঐ অভিযানের ক্রছিনী বড়ট রোমাক্ষর। বহু বড়বঞ্চা এবং বিশদ আপন অভিক্রম করিয়া বেরিং আলাক্ষার



্দেশীয় ছেলেয়েংহরা মার্কিন শিক্ষকের ভরাবধানে বিদ্যাভাগে করিভেছে

ষ্ঠিপ্তকুলে বিশ্বা ক্ষরজীর্ণ হন। ফিরিবার পথে এক গুরস্ক আসিয়া প্রশীয় সংকারের নিকট আলাফার প্রাকৃতিক ব্যাহিত্য বেরিং প্রাণ হারান। হাঁহার দলের লোকেরা সম্পধ্যে বিবরণী দাবিল করেন। শ্লীয় সরকার কিছ



জসংবা দাগ মংভ আসোধার সমূদ্রৈ কতে রৌল পোছাইভেছে। ইয়ারা আসোধার এক অমুগ্য সম্পদ

প্রায় পঞ্চাশ বংস র কাল চেষ্টা করিয়াও
আলাড়ার সম্পদ আহরণের বিশেষ
কোন অবিধা করিয়া উঠিতে পারেন
নাই। অবশেষে অনেক চেষ্টা করিয়া
১৮০০ সালে সিট্পাতে একট বন্ধর
ছাপন করিলেন এবং আমেরিকাকে
বন্ধরের অংশীদার করিয়া দিলেন।
এইভাবে প্রায় ৬০ বংসর কাটিয়া
যায়।

ভারপর টাকার গোভেই হোক
অববা অন্য যে কোন কারণেই হোক
১৮৬৭ সালে রাশিয়া মাবিন মুক্তরাষ্ট্রের
নিকট মাত্র ২১ পক্ষ টাকায় সম্ম্র
আসাকা বিক্রের করিয়া দেয়। ভদববি
আসাকা মাকিন মুক্তরাষ্ট্রের হাতেই
আহে।



জীরবীক্রকুমার বস্থ

١

আছে পর্বতে এী আবিক্য অস্তৃত হর। মনে হয় এগুনি
নিঃখাস রুছ হরে বাবে। আবি সারাদিন ঘুরেই বেডাছি,
এবং সেইবছ আমার আপাদম্ভক বর্দাক্ত। পা হুটতে
কোন্ধান্ত পড়ে সিয়েছে। আর পারা বার না। অবসাদে
টুসমন্ত দেহ শক্তিহীন। বিশ্রাম এহণ না ক্রলে মৃত্যু অনিবার্য্য
বলেই যেন আমার মনে হতে লাগল!

অবশেষে এক সময়ে পর্বভের এক ক্রমনির হলে উপনীত হলাম। ক্রমাররে নীচে নামতে নামতে একটা হল আমার দৃষ্টপথে পড়ল। তংতিং হ্রদ। পর্ব্য তথন অভোত্মব। বিহ্ন-মন্দ শীতল বাতাস বইছে। এই হ্রদের আশেপাশে কোবাও আশ্রমপ্রার্থীর সমাগম দেবা যার না। পথে ঘাটে লোক চলাচলের একটুও ভিড় নেই। এ ছাড়া জাপানী বিহানকেও মাবার উপর বুংতে দেবা যার না। আমার নাসারস্ক্রের মধ্য দিয়ে একটা পরম পরিত্পির দীর্থাস পড়ে।

ক্ষণাশধের অপর প্রান্ত বেকে শ্রুতিমধুর একটা ক্ষণপ্রবাহের ধর্মনি কানে এল। কিন্তু সেটা ক্ষণকালের তরে। সেই ক্ষণ-কালট অতিবাহিত হবার পর ইন্দের চারদিকে বিরাক্ষ করতে বাকে প্রাণাচ্ মিন্তরতা।

আমার পিঠের উপর একটা পুঁটুলি বাবা। এই পুঁটুলির বব্যে আছে—ছিন্ন-বিভিন্ন কতকগুলি জামাকাপড়। পুঁটুলিটা পিঠ বেকে নামিয়ে বাসের উপর রাবলাম। বাসের উপর রোবলাম। বাসের উপরেই লখা হয়ে ভয়ে পড়লাম। মাধার উপরেই হছে নীলাকাশ—
ঠিক আকাশের নীচে ঐ জলাশধের নির্মাণ নীলকলের মডোই।

পশ্চিমাকাশের দিকে এক থাক হাঁগ ব্রণটার উপর দিয়ে উঠে পেল। বোৰ করি এরা কিরে যাচ্ছে নিজেগের নীছে।

উচ্চে যাবার সমর ওদের ডাক কানে আদে। সেই ডাকে আনম্মের কোনো রেশ নেই; আছে বিযাদের করণ সূর। সূর্য্য গিরেছে অভাচলে।

ক্ষেক মৃত্তের ভচ এবানে কোনো শসই শোনা বার

বা। এমনকি এবানে আসবার পবে বে গদাফভিঙের শক্
ভনেছিলাম, তাও আর কামে আসে না। কিছ ক্ষমাহরে
একটা ফীণ খুর বঙ্গুর বেকে ভেসে এসে আমার কামে
প্রবেশ করে। খুরটা এভ ফীণ যে প্রথমটা বঙ্কণ কাম

পেতে থাকলে তবে হয়: পড়ে।
কিন্ত শেষ পৰ্যন্ত এই স্থায়ী যে কি, তা আমার কাছে

ৰৱা পড়ে। গান---গামের স্থর এটা। একটা সভ্যস্থ বির

গান। মনে হ'ল, এই গান আমি মধ্য-চীনের দিগভগ্রসায়িত গোচারণভূমিতে নারীদের মুবে বহুবার ভুনেছি। ভুনেছি তথন, যথন আমি ছিলাম রাখাল, মাঠে মাঠে গরু চরিবে বেড়াভাষ। এই গানটা আমাকে ব্যথিত করে ভুলত—

'ভোমার সঙ্গে আমাকে আকাশপথে নিয়ে চল, ভোমার সঙ্গে আমাকে সমুদ্রের শেষপ্রান্তে নিয়ে চল সমুদ্র যেতে পারে শুক্ত হতে, পর্বাত হতে পারে বিল্পু; কিছ হুদ্র আমার কভু হবে না পরিবর্ত্তিত,

ওৱে । আমার ঋষষ কভূ হবে না পরিবর্ত্তিত।'

এই গান, এই জনপুত, নির্জন দ্বানে ?—আমার বিশ্বদের

অন্ত রইল না। চিন্তা করতে লাগলাম, এই অতি সাধারণ

সদীতের মধ্যে মানবতার কৃত বড় না পরিচয়ই পাওয়া যায় !

মানবতা ! আকর্ষা, যে মুহুর্ত্তে এ সম্বন্ধে নিবিপ্ততিত চিন্তা করতে
পেলাম, সেই মুহুর্ত্তে সহসা আহার্যোর কথা আমার মনে পড়ল।

মলা এই যে, যতই আহার্যোর কথা ভাবতে থাকি, ততই

আমার ক্ষার আধিক্য অন্তুণ্ত হতে থাকে। আর ক্ষারই

বা অপরাধ কি ? আন্ত সারাদিমই আহি উপবাসী। পেটে

কিছু পড়ে নি।

ৰাই নি, বেতে পাই নি, আৰু সমন্ত দিন গৱে এই কৰাটা বাৰংবার আমার মনে হচ্ছিল। তবু আৰু বলেই নয়, এক সপ্তাহ আমি অভুক্ত আহি।

কিছ নির্কোবের মতো আর কভকণ এই বাসের উপর ভবে আকালের দিকে চেয়ে বাকব ? ওদিকে আকাল ভো সভার আগমনে বুদরবর্ণ বারণ করছে। না—আর এমনি ভাবে নিশ্চেই বাকা যার না। স্থতরাং গানোবান করলাম। বেদিক বেকে সলীভের স্লাগিত স্বর আগহিল ভেসে, বোচকা লিঠে বুলিরে সেই দিক পানে পা বাছালাম।

ব্যাপেল-রক্ষের পশ্চারাপে, রুদের যদিও দিকে একটা প্রাম আমার গৃষ্টপোচর হ'ল। এই প্রামে এক দল চাবী মেরে-প্রুম্বের দেখা পেলাম। এদের মব্যে আছে বৌবনভারে অবম্মিত বহু নারী। ছীর্ণ-শীর্ণ শিশুকুল। বুড়োদের সভা পাইপের লাহায্যে গুম্পান করতে দেখা গেল। এরা স্বাই একটা প্রাম্য বাগের মব্য থেকে ধীরে বীরে আস্মিল বেরিয়ে। আমি এই বাগটর দিকে এগিরে গেলাম। পেবানে ভবনো ভটকয়েক নর্ভকীর চারপাশে অনেকগুলি লোক ইাভিয়ে। মনে হ'ল, লবে মর্ভকীরা ভালের নৃত্যু থানিরেছে। গুদের মুব্রুর্ভলিতে বিষয়ভার বেখাসমূহ অপরিস্ট, কারো বা প্রান্ত ক্লান্ত বুবে চোবের কল গভিরে পড়ছে। বাগ থেকে বেরিয়ে আলতেই ভিন্ন ক্ষের লক্ষে একেবারে সামনাসামনি দেখা হয়ে গেল। এরা প্রত্যেকেই অপরিচিত। একক্ষম বৃদ্ধ। একে দেখলেই মনে হয় অত্যক্ত সরল প্রকৃতির লোক। লোকা কথার যাকে আমরা বোকা বলি। ভবদুরে। সঙ্গে আর ছ'ক্ষন ভরুষী। একক্ষন একটু মুলকারা, কিছ চোবে মুবে বেশ ক্ষমীয়ভা। অপরট শাবাপ্রয়ী লভার মভোই কীণ। এই নিরভিশ্ব ক্ষাব-কারা ভরুষ্টি অ্যুবের পানে হির গৃন্ধিতে ভাকিয়ে বোব ক্ষি ভাবে বিভার হয়েই আছে।

আমরা পরশারের মুখের দিকে চেরে থাকি কিছুক্দণ।
কিন্তু বৃদ্ধ লোকটি সহসা এক সমরে বেশ সহজ কঠেই
আমাকে লক্ষ্য করে প্রশ্ন করে, ভূমি বৃধি আমাদেরই মতো
হল্লহায়ণ ভবপুরে ?

একটা কৃত্ত দীর্ঘনিঃখাদ কেলে বলি, ইটা, খাপানীদের হাতু বেকে কোনো মতে পরিএল পেয়েছি। মব্য-চীনের রাজবানী ওয়াচাং কাপানীয়া দবল করেছে।

'ভা হলে বলো, আমরা সকলেই সমগ্নী। কিছ আমাদের একটা আত্রর ধূকিতে হবে যে, রাত কাটাবার মতো আত্রর।'

এই বলে বুরু আগ্রসর হয়। আমি ওকে অসুসরণ করি।

ঠিক যেন সন্মোহিত সাপ, সাপুছেকে অসুসরণ করে।

আমার পিছনে-- সেই ছট তরুণী।

কিছ আমার মনট। এক অব্যক্ত অস্থিতে পরিপূর্ণ হয়ে
উঠল। ছটি অপরিচিতা তরুণী আমার পিছন পিছন আসছে।
এতে আমি অত্যন্ত সংখ্যাচ বোধ করতে পাগলাম।

ষাই হোক, যুগ হঠাং কথা বদতে শুরু করে। ভার কথাঞ্জি অস্টা কারণ, সমূবভাগের অনেকওলি ইাত ওর পভে গিমেছে।

বৃদ্ধ বলে, বুবেছ ছোক্রা, আমি একজন বাজিয়ে, বুবেছ ? উল্লয়ে জানালাম, ইন, বুবেছি।

পত্ৰ কাঁবের উপথ দিবে প্ৰায় হাত চুই সখা আৰু চু' আচুল চওড়া একটা চামড়ার জীৰ্ণ বছনী নীচের দিকে নেষে এসেছে। একটা ছোট ড্ৰাম বাঁবা ঐ চামড়ার বছনীতে। লাইই বোঝা গেল—বুছ একজন বাদক এবং এই ড্ৰামই ও বাজার, তথাপি ইছা করেই ওকে প্রশ্ন করলাম, বুড়ো, কি বাজমা আপনি বাজাম বলুন তো ?

বৃদ্ধ বললে, আমি ড়াম বাজাই। আমার কাঁবে কোলানো ছামটা দেবে কি বুবতে পারছ মা ?

এই বলে ও এক মুহূর্ত নীৱৰ থেকে দৃচকঠে পুনশ্চ বললে, আত্তি একটা দলের স্যানেশারও বটে !

বিশ্বরে জিজাসা করলাম, ম্যানেজার ? কোন্ দলের ম্যানেজার ?

बुद्ध ७९व्यनीर यनतन, विरद्यवीरतव मार्गियकात वानि । सा

বিরেটারের ম্যানেজারই তো বটে । ভোমার পেছনে ছট বেরেকে দেখতে পাঞ্চ না । ওরা আমার বেরে। ওরা নাচিরেও বটে। কি চবংকারই না নাচতে পারে। একেবারে চবংকার। যাকে বলে চমংকার, স্কুলর, অপুর্বে।

কৰার কৰার আমরা আর একট হোট-বাটো পাহাছের পাদদেশে একে পৌছলাম। এবানে একটা অভি প্রাভন মন্দির দেখা গেল।

র্ছ লোকট আমাকে উদ্দেশ করে বললে, এই মন্দিরেই আমাদের বাকতে হবে।

সকলেই ভিভৱে প্রবেশ করলার।

সম্পূৰ্ণ নিৰ্কান, নিভাৰ, আৰক্ষার ছান। কিছুই দেখা যায় না।'

বৃষ্ণ এক সময়ে বললে, তোমার কাছে দেশলাই আছে ছোক্রা ? দেশ দিকিম, কি মুশকিলেই পঢ়া পেল। দেশলাই, একটা দেশলাই তো আমার কাছে ছিল বলেই মনে হছে। বিমা বাক্যবারে একটা দেশলাই বের করে একটা কাঠি কস্করে ছেলে দেবি, পুরুবেই একটি কাচের চিম্নির ভিতর একটা বছ মোমবাতি। বাতিটার পল্ডেতে আমার হাতের প্রছলিত কাঠিটা শর্লা করাতেই বাতিটা উঠল ছলে। কিছু আলো হ'ল। কিছু এই স্বলালোক ম্বেইনয়। বিশাল মন্দিরের কত্টুকু অংশই বা এ দিয়ে দেখা যেতে পারে ?

আমার সুমুখে নেই সুলাদী তর্মীট দাঁড়িয়ে ছিল। মুধ ওর দিকে একটা আঙুল দেখিয়ে আমাকে উৎদশ করে বললে, ও আমার বড় মেয়ে। ভারদেট ওর নাম। একটু চুপ করে বেকে আবার বললে, আর ও হ'ল প্রিং---আমার ছোট মেয়ে। এই বলে মুদ্ধ ভোট মেয়েটকে দেখিয়ে, নিজে একগাদা ভঙ্গতের উপর বীরে বীরে উপবেশন করল। ভারপর পরিভৃত্তির একটা দীর্থ নি-মাগ মোচন করলে।

কিছুক্তৰ নীৱৰতার মধ্যে অভিবাহিত হয়।

এক সময়ে বলি ভগবানকে গছবাদ যে, দিন অবদান হয়েছে। নওকী চুটির মুখের পানে চেরে নিঃশক্তেই হাসি। ওরাও হাসে। নীববেই হাসি বটে, কিছু এই মৌন হাসির মধ্য থেকে প্রতির আভা বিজুরিত হয়ে এল। ওদের হাসি দেবে মনে হ'ল, ওরা আমার সক্লাভ করে অতিযাত্তার প্রস্কু হয়ে উঠেছে।

সহসা বৃহত্তে লক্ষ্য করে বললাম, পুড়ো, আপনাদের দলে আমি ভণ্ডি হড়ে পারি ?

ভাষে বৃদ্ধ পরন বিশ্বরে আমার মুবের পামে ছিরলুইভে ভাকার। বলে, সে কি? ভোনার বরেল আর। মনে হচ্ছে ভূমি এবনো লেবাপটা চাড় নি। না না, ভোমার এ-কাজ সহু ছবে না। লভ্যি কথা বগতে কি, এ অভি ছোট কাজ। এ কাজের বোগা ব্যক্তি আম্বাই। ভূমি নও, বাবা।

দুচ কঠে বলি, বোকৰে ছোট কাজ। আমি হু' ভারেছ

'এর' বাখাতে ভাবি। আপনি নিজে একজন ওভাদ বাজিরে, মনে হর আপনার কিছু কাজে আনিও আসতে পারি। আপনার কাজে আমাকে নিয়োজিত করতে পারেন অনারাসে। আমাকে বাজিরে হিসেবে আপনার বসভুক্ত করলে আপনি ঠকবেন না, এটা স্থানিতত।

বৃদ্ধ আমার এই দৃঢ় উক্তিতে সম্ভবতঃ মনে মনে ধুশী হরে উঠলেন। বললেন, ভাল কথা, ভূমি যদি ভাই চাও, আমার আপত্তি করবার নেই কিছুই। আমার কাছে সব সাজ্যই ভাই। সবাইকে আমি ভাই বলৈই ভানি।

সভ্য কথা বলতে কি, বুঙের এই আন্তরিকভাপূর্ণ উক্তিতে আৰি সাভিশ্ব আনন্দিত হলাম। পূর্বেনে মেরে ছুটর সম্বরে বেটুকু বিভ্যার ভাব আমার মনকে আশ্রম করেছিল, এখন পেটুকুও অপসারিত হরে পেল। ওদের রহনকার্থ্যে মৃতঃপ্রবৃত্ত হরে সাহাধ্য করতে সূক্ষ করলাম।

ক্রমে আমাদের কথাবার্তা, আলাপ-আলোচনা চলতে থাকে। চলতে থাকে প্রাণথোলা ভাবে। ঢাক্-ঢাক্ গুড়-গুড় ভাব থাকে না মোটেই। বেশ সোলাত্মকি পরিকার আলো-চনা—বড় তৃত্তি হ'ল আমার।

আহারাদির পর বৃদ্ধ বিশা বাক্যব্যয়ে বড়ের গাদার উপর শরন করলেন এবং ক্ষণকাল পরেই তঞালু হয়ে পড়লেন। কিন্তু আক্ষর্যক্ষনক ব্যাপার এই যে, নিফ্রিভানস্থায়ও উর জিহ্বা ওঠন্বর লেহন করতে সুক্র করে। ওঁর মুবের দিকে নিজাগকচক্ষে চেরে আমি বেশ মজা উপভোগ করতে লাগলায়। পুমন্ত অবস্থায় কোন লোককেই আমি ইতিপুর্বে এরক্ম করতে দেখি নি। এই প্রথম।

ভারতেটের কঠবরে আমার চমক ভাঙে। ও আমাকেই লক্ষ্য করে কোমল কঠে বলছে, ওরকমভাবে ওর দিকে দেশবেম না। চাঁদের পানে চোব কিরিয়ে দেখুন ভো, কি সুক্ষর চাঁদ, আর কি নির্মাণ ওর কোংসাবারা।

মাধা তুলে দেবলায— যদ্দিরের প্রাক্তণে এসে পড়েছে কুট্কুটে জোংখা। মেখপুর আকাশে পরিছার টাদ। প্রাণের ভিতর একটা অব্যক্ত আনক আনার সর্বদেহ রোমাঞ্চিত করে ভূললে। এমনতর বিমল জ্যোংখ্রাথারা বছদিন আমার চক্ষে পড়েনি। চক্ষে পড়েনি—বেদিন থেকে আপানীরা মধ্য-চীনে আক্রমণ আরম্ভ করেছিল।

আমন্দের আভিশয়ে চীংকার করে উঠি, অপূর্ব্ব, সভিয় অপূর্ব্ব এ।

কিছ প্রিং আমাকে বাবা দেয়। একটু ক্রথয়ে বলে, চুপ। দেবুন, ওবানে কি হরেছে।

ৰদার সদে সদে প্রাদণের প্রাচীন দেবদার স্বস্টার পানে অনুসি নির্বেশ করে।

বছ প্রাচীন দেবদার বৃষ্ণ। বোধ করি একশো বছরের পুরাধো গায়। বৃষ্ণটার পানে পদক্ষীন দুষ্টতে বছকণ নিংশবেই চেরে থাকি। শুনতে পাই—ঐ দেবদার স্থকের দাবার উপর একটা পাবীর ভাষা বাগটা মারার দক। হার রে! বেচারা বৃকি দুষের মধ্যেই হঠাং কোন কারণে দ্বতিমান্তার সম্ভাত হয়ে উঠেছে!

প্রিং প্রাপেকা কোমল কঠে বললে, প্রবাদ আছে, কেট যদি একটা ঘুমন্ত পানীকে ভিন বার ভাষা বাছতে শোমে, তা হলে ঘুমের সময় সে স্থ-বর্গ দেবতে পায়। আর সেই স্থা ভার কীবনে সন্থ্যি হয়ে দেবা দেয়।

অভিশয় ব্যথ্যতা সহকারে প্রশ্ন কর্মান, কিছ আপনি ক'বার ভনতে পেরেছেন ৭ ক'বার ৭

- —ভিন খার। ভিন বার শুনেছি। ঠিক ভিন খার।
- – ভবে জো জাপনি স্থ-সপ্ন দেধবেনই।

প্রিং অভিযানয়ক্ত বিষয়তার স্থীণকঠে বললে, তিনট বছর ববে আমরা রাত্রিবেলা কেবল ভয়ন্তর ত্রেপ্র দেবেই এলেছি। বোবার পাওয়াছবেপ্র।

—সুৰ-স্থ আদে এতকাল দেৰেন নি আপনাৱা ? জাৱি আক্ষ্যা বিভ কেন বসুন তো ?

আমার এই প্রশ্নের প্রভান্তরে প্রিং কিছুই বল্পে পারলে মা। তারু নিভের একজোড়া কালো হরিণ-চোলের ছির চাহনি আমার মুখের উপর নিক্ষেপ করলে। ওর চেহারা দেখে মনে হ'ল, কি একটা হুর্কোধা জিনিয় বুসতে না পেরে ও ধিবার মধ্যে পড়ে গিয়েছে।

শ্রিং-এর এই অবস্থা দেবে আমার নিত্তের বুক্থানা দহলা টন্-টন্ করে উঠল। টন্-টন্ করে উঠল অসহ বেলনার। থর নিজের অসহায়তার জহু আমার অস্ত:করণ কেন থে এত-ধানি আকুল হয়ে উঠল, বুকতে পারলায় না।

কিছ চালাক মেয়ে— ভাষতেট। সে নিভরভা ভক্ করে বলে উঠল, প্রথ-সপ্ন দেবি মি এই কারণে যে, আমাদের জীবন-মন চকল, বিক্তম্ম এবং উদ্বেলিজ। আৰু থেকে চার বছর পুর্কে ভাপানীরা আমাদের প্রাম পুছিয়ে ছাই করে কেলে। সেই থেকে আৰু প্রান্ত একটি দিনের ভবেও শান্তি কাকে বলে, বুবাতে পারি মি।

বলতে বলতে ভারলেটের চোব ছট অঞ্সিক্ত হয়ে ওঠে।
চোব মুহবার কোন চেটা মা করে পুনর্কার বলে, যেবামেই
আমরা যাই না কেন, ছাপানীরা, আমাদের লক্ত জাপানীরা,
আমাদের অসুসরণ করে।

ন্তিং সহসা বলে উঠল, কিছ এবন আমরা বেশ পাছিতে আহি। আহু তিন দিম হতে চল্ল, এবানে ভাপানীদের কোন উপদ্রবের কবা শোনা বার নি।

ওর ক্থাটা আমার মনে লাগল না। তবুও ওকে উং-লাহিত করে বললাম, তা হলে পুথ-স্থা আপমারা দেখবেন। দেখবেন নিশ্চর। কিছ কি বরপের পুথ-স্থের প্রতীকা করেন আপনারা? একটা বাহুদ্ধ হাতের মধ্যে পাবেন, আর ভাই বিষে নারা পৃথিবীটাকে লোনার পরিণত করবেন ? কিংবী একজোড়া ভানা, বার সাহাব্যে আপনারা নক্ষনভাষনে বিষেক্ষে সংখ্যই নিজে লৌজবেন ?

আমার এই উভিতে তিং একটা দীর্থ নিঃখাদ ভাগ করলে। ভারপর আগভ বুবে বললে, ভবলুরের বেরে আমরা— আকাশ কুক্ষের আশা আমরা করি না। আবার একাভ মনের কামনা চিয়কাল হাতী করে থাকা। আকীব্য লেখা-প্রভার চর্চা বিরে থাকব, এই আমার কামনা, এই আমার প্র-হর্ম।

একটুবানি মৌন বেকে বললে, আপনি এটা ভাল করে কেনে রাব্ন, গানের রস উপলবি করতে পারা এবং গান হচনা করতে পেবা আমার বহুদিনের ইছো। মনে পড়ে, মা ঘবন মূবে মূবে আর্ডি করে আমাদের গান পেবাতেন, তবন কি ভালই না লাগত। মা বিব্যাত নাচিত্রে ছিলেন। তার কোজ-গার আমাদের বালীর চেবে অনেক বেশী ছিল।

ভারতেট এতকণ কোন কথা কর নি। কিন্ত এইবার পে কথা কইতে তুরু করে। একটা কুর দীর্থবাল পরিত্যাগ করে উদাদকঠে বদলে, প্রিং-এর মত আয়ারও গান শেববার আফাজন আছে।

শোষ্ঠা ভানিনীর কৰা ভানে প্রিং বৃহ্-ভর্ণ সানা করে। বলে, ভূমি থামো দিছি। কত আগেই তো ভোনার সকল সাব মিটতে পারত। আজ ভোনার মনের ইচ্ছা পূর্ণ করম। কিছ মনে কর দেদিনের কথা বেদিম প্রামের বাগে ভোমার নাচ থেবে, প্রামের কমিদার যথন ভোমাকে নাহ্ম করবার ইচ্ছা প্রকাশ করে ভোমাকে নিয়ে যাবার জভে বাশীর কাছে মিনভি করলে, তথম ভূমি রাজী হওনি। ভোমাকে ভূলে পাঠিরে লেখা-পড়া শেবারারও ভার প্রবল্গ বাদনা হিল। কিছ ভূমি কি ভাবলে, ভূমিই কান। বলে বললে—ভূমি ওসব চাও দা! বাশীয় হুংখের জীবনের সলে নিজের জীবনতে মিলিরে দিতে চাও।

ক্ৰিষ্ঠা ভগিনীয় কথা ওলে ভাষলেটেয় সাথা মুৰে বিয়ভিত ছায়াপাত হ'ল। একটু পরে রুছকঠে বললে, ভিত্ত সেই বুছ ক্ষিয়ায়ের মনে ভিয়ন্ত্রপ অভিস্থি ছিল। ছুবভিস্থি বলা বেতে পারে অনায়াসে। ভূমি তাকে ভাল মান্ত্র ভেবেছ ? আগলে গে কিছ ঠিক এয় বিপরীত।

এই সময় অক্সাৎ একটা অধিবর কামে এল :---রক্ষা কয়। রক্ষা কর। আমার লীকে দাও কিরিবে।

चक्की अरमार्थ बादव कर्श (बादक ।

ভবদত্ত লে বড়ের গায়ার উপর শরম করে মাসিকাধ্যমি করতে।

ভাৰদাৰ, বোধ করি সাণ-বোণ ভিছু ওকে দংশন কথতে উভত হবেছে। একটা দাটির বোঁক করবার কল ব্যস্ত হবে উঠে পড়লাব।

কিছ ভারনেট আবাকে নির্ভ করলে। বললে, ভর পাবেন না। ভাপানীরা বেদিন বেকে আবাকের আব হতে বাকে ধরে নিরে গিয়েছে, দেইদিন বেকে বানী রোজ রাজে এই বক্ষ চীংকার করে উঠে। গুনিরে গুমিরে চীংকার করে। এই বলে কণকাল ও নীরবে বস্ত হবে বসে রইল। ভারপর এক নমরে সজল চক্ষে বললে, আপানীরা আবার মাকে বরে নিরে বাবার পর বেকে আর আবরা কোকো সংবাদই ভার পাই নি। মনে হব, মা আর ইবজগতে নেই।

নবই ব্ৰলাম। ব্ৰতে আর কিছু বাকী রইল না। ওদের জীবনের সকে যে ওতঃপ্রোত তাবে জড়িবে আছে একটা বেদনাক্ষণ শোচনীর কাহিনী। ওদের বনকে ভিরু দিকে নিরে যাবার উচ্চেশ্যে বললার, আর নর। রাজি বোর করি অনেক হয়েছে। এবন ওবে পঞ্চরার আছোজন করা যাক। কাল নকালে আশনাদের আবার কাজের চাপ পড়বে। কেননা, আমি একটা বাড়তি বাছ্য। আমার বাওয়া দাওরার দায়িছ পড়েছে আপনাদের উপর। বেলা রাজি করে মুমালে সকালে উঠতে পারবেন না।

বলে অল্পণের বছ খৌন বেকে ওলের মধ্যে আশার সকার করবার উদ্দেশ্যে বলি, আমাদের দেশ ধর্ম পক্ষকবল-মুক্ত হবে, ধরন আমরং হাবীন হবে।, তর্বন প্রত্যেকর অভে আবৈতনিক বিদ্যালর আমরা প্রতিষ্ঠা করবো। তর্বন সকলেই স্বাধীনভাবে বিদ্যার্জন করবে, সকলেই স্বাধীনভাবে গাদ প্রচনা করতে পারবে।

.

পরদিম প্রভাত বেলার এই প্রামের নিকটবর্তী ভির প্রামের প্রকৃষ্টি বালে আমর! সকলে উপনীত হলার। আমি ছুভারের 'এরু' বাজাতে সূত্র করতেই, যুব ভার ড্রাম বাজিরে
সক্ত আরম্ভ করলে। সকতের দৌপতে আমার বাজনার
হাত বুলে পেল, এরু বাজনা চলল চমংকার ভাবে। মধে
হ'ল, এমনি নির্ভূত ভাবে বছকাল 'এরু' বাজাতে পারি নি।
নিজের বাজনার নিজেই মুক্ত হয়ে সেলাম।

ওদিকে আবার ভারলেট মৃত্য ক্ষম করে দিবেছে। আমার পুরবুর বন্তুসদীতে বোৰ করি ও বৃঙ্ক করে নাচ পুরু করে দিবেছে। ওর দেহ যদিও কিন্দিং খুল, ভবুও নৃত্যক্ষায় ওর যথেষ্ট নৈশুণ্য পরিল্পিত হ'ল। বাসা মাচে ও। নৃভ্যের সদ্দে সদ্দে ভারলেট গান গাইতে আরম্ভ করলে। প্রাণশ্রনী সে গানের করা। ওর অপ্র্যু কঠমর আমাকে বোহিভ করে।

কিছ আশাল্ডণ দৰ্শক স্থাসৰ হয় যা। বেচারা ভাষতেটের হুড আযার কট হ'ল। ম্যোর্থকর স্থীড ও সূত্য উপভোগ করবার যত কি কেউ এ প্রায়ে যেই ? এতথানি পরিপ্রয় করা সভ্যেও কারুর হাত্রতালি পর্যান্ত ভারতেট পাত্র মা ? সক্ষতাল্য বৃহু শেষের বিকে বিনিট ক্ষেক ব্যান্ত পার্যান্তর ৰত একটাৰা থাৰ বাৰিছে গছদা এক সৰছে প্লামের কাটি ছুট বুৱে বিজেপ করে একটা পাধরের উপর বিজে বসল।
ইাপাতে ইাপাতে টেনে টেনে বলে, ভারলেট যা, ভূমি অভ্যত্ত ইয়াত হয়েছ। আরু বহু। এইবার ভূমি বিপ্লাম করগে, যাও যা:

ভারতেট ভিক্তি না করে বীরে বীরে গিছে পিভার পাশে বসে। তথনও ওর নাগাংক্রের মধ্য দিয়ে বন বন উক্ নিংবাদ-প্রধাস কটছে।

কিছুকাল পরে আমবা বাদ্যমন্ত্রাদি থেবছেকে নিয়ে আবার আর একটা কামের দিকে পা বাদ্যালার । মধ্যাক্র-কাল: পথে বক্ত পর্বচারীর দেব। পেলাম । এদের মার্থ সূত্র্যক পানে দ্বরে পরেছে। পুঠে এদের গুড়ি বারা, আর দেই কুডিছে বসে আছে ছেলেপুলে। গোটা কয়েক কুডুরকেও এদের সক্ষে বেজে দেবা গেল। কুডুরকলির কিছ মুর্থের ঘাইরে এই এজবানি বেরিয়ে আলে। ইস্-টস্ করে ক্লিড দিয়ে বিভিন্ন করেছে লালা: পর্বচারিদের জানাটে ললাটে প্রবর্গ বির্বাহ করেছ। ক্লান্তবিপ্রাক্ত ভাষেত্র করের পরেছ লালা: কর্তানার জানার ভারে দেহ। ক্লিক্রাক্ত একর ব্রাক্তিছে সেটা আনুষান করলান। ভরু নিঃসম্পেদ্ ক্রার ক্লিও এককন বৃত্ত ক্লেক্রকে কাছে ডেকে ব্যাশারটা কি ক্লিজাল করি।

ঋ খললে, আপানীরং আহালের খাকে এসে পঞ্চল বলে। আৰু সকাল বেলার প্রকাত একটা লোভায় ইপলপাবী আমামের পাঁরে অসংব্য ভিত্র প্রদান করে। ঐ ইপল পাবীর ভিত্র জমা পাঁচণ বছত্র লোক, ছট শিশু এবং ভিনট গাভীর ভবনীলা সাক করেছে।

শুনে ভারলেটের বাবা দকোরে একটা দীর্বনিঃ দাদ পরিত্যাপ করলে। বললে, একবার ছনিয়ার বিচারটা দেবো। আৰু চার বছর ধরে এই ভরেই আমি পালিয়ে বেড়ান্সি, অবচ এবনও পর্যন্ত কোবাও একটুবানিও শান্তির আলো দেবতে পেলাম না, কোনো ভরসাও পেলাম না।

বলেই ও কভাদের মুখের পানে ভাকাল, বললে, কি করে যে ভোমাদের আমি রক্ষা করম, কেবে পাইনে। আমার ছাড়ের ভেতর পর্যান্ত খুণ বরে গিরেছে। ভোমরা বঞ্ছরে উঠেছ—ভোমাদের কি করেই বা রক্ষা করা ধাবে ?

থবা উভৱেই কোন কৰাৰ দিতে পাৱে না। আনতমূৰে নীয়ৰে নিখন ভাবে ৰলে থাকে।

আহেছ পর রাষ প্রদক্ষিণ করণায়। কোন প্রামেই লোকজমের চিত্রারও ধেবা গেল না। সব রাম কনপুত। কেন প্রশাম। বাঁ বাঁ করুছে। আরম্বা তবনও পর্যাত করুতে। কাছৰ আছু এক ক্পর্কত উপার্ক্তন হয়নি। গুৰু এক সময়ে বললে, গতকাল বে মন্দিরে আনহা রাজি বাপন করেছিলায়, চল লকলে নেবানে। গুবান বেকে বেরিয়ে এলে কোনই লাভ হ'ল না। আয় আয়ি য়য়য়ি পারি নে। একেবারে ভেঙে পড়েভ আয়ি।

থব কৰাৰত আমহা চলতে আহন্ত করলায়। বুছ বাছ
এগিছে। আমহা তাকে অনুসরণ করি। ক্রমে আমহা
মলিরে এসে শৌধলায়। ক্লাছিতে আমহা এত অবলর হছে
পতেনিলায় যে ইাছিরে বাকা আমানের পক্ষে অসভব হছে
উঠিল। আর ইাছিরে বাকতে পারলায় না। তর্মবীরা ছো
বাকের গালার উপরই উপবেশন করলে। ওবের একটু তকাতে
একটা প্রান বেছে নিয়ে আমিও বলে প্রকাশ। বুছ আমানের
বিপরীত বিকে আগন এক্ করলে। আমহা স্বাই চুল
করে রইলাং, কবা বলি না কেউ। যেন আমানের কিভটা
বলে গিরেছে

কিন্ধ সেই সরলপ্রাণ ভরুষী ছুটির নিজ্পুর চক্ষে কঠাং এখন একটা কিনিয় আগ্রহণত করলান, যার আর্থ আবিস্থানিত স্থান উলারত বাকোর অপেকাও স্থানিই, পরিষণর । ওলের থির দৃষ্টি রুছের মুখের উপর চন্তা; রুছ ভার কেশ্বিরল নাথায় বীরে বীরে হাত বুলাভে বুলাভে হঠাং এক সহধে লাভিয়ে উঠল; বললে, আরু অর চাই আমালের : বে ক্রেই হউক আমালের সামাচ কিছু পেটে পড়া দরকার ৷ এই বীরের অমিগরের কাছ থেকে কিছু চাল বার করে নিয়ে আদি । রুছ আমলেটের মুখের পানে দৃষ্টি নিক্ষেপ করলে : পুনন্ড গললে, ভরণোককে ত থারাণ লোক বলে মনে হয় না ৷ বর্ষক ভাল বলেই বারণা হুলে। ভোমার ভরণণোধ্যের ভার উনি স্থোর নিভে চেবেছিলেন ৷ সক্ষন হুলে। কিক্টে অনাখীরের সম্ভ গারিছ নিক্ষের কাবে নিভে চার গ

এই বলে বৃদ্ধ ভার এক মুহুও অপেক্ষণ করে না। বাভাগের বেগে মন্দির থেকে বেরিয়ে যায়।

প্রায় ঘন্টা ছই পরে বৃথ কিরে এল। ছাতে একটা থলি।
বলিতে চাল জরা। জামাদের সকলেরই মনে জালার সঞার
হ'ল। বাক, তা হলে জাল কিছু পেটে পছরে। তাড়াতাভি
বুখের হাত থেকে থলিটা প্রহণ করে মাটতে নামিয়ে রাবি।
বেশ জারি বলেই মনে হ'ল। ওদিকে স্থিং ওকে হাত বরে
বিসরে দের। ভায়লেট বাতাল করতে থাকে বীরে বীরে।

কিছুক্প বিশ্রাম করবার পর, বুছের বুক ভেদ কথে বেরিয়ে আগে একটা দীর্থবাস- হুংবের নিঃখাস। বলে, ভারলেট, প্রিং বস ভোমরা। একটু বেমে গুরু ভারলেটের রুবের পানে একদুটে ভাকায়। বলে, মা ভারলেট, ভোমার একটা বাবছা আমি করে এসেছে। ভাল ব্যবছা, ইয়া নিশ্চরই ভাল উপায়। ভাল, ভাল—ধ্ব ভাল, গুব ভাল উপায়।

कारता कि वृत्रक शांद मा। वाकाय वक वार्शय

বুৰের বিকে ক্যাল-ক্যাল কলে চেবে বাকে। একটা ঢোক দিলে প্রশ্ন করলে, তুবি কি বলহ বাবী ?

বৃদ্ধ বরাপলার থেবে থেমে বললে, ভূমি বৃষ্তে পেরেছ, কার কাছ থেকে আমি চাল এনেছি ভিচ্ছা করে। লেই ক্ষিদার, বিনি এক সময়ে ভোষার জরণপোষ্ণের ভার নিতে চেরেছিলেন, সেই ক্ষিদায়ের কাচ থেকে ঐ থলি ভর্তি চাল পেরেছি: কিছু এখন ভিনি চান ভোষাকে বিকে ক্রভে। ভোষার ত্বধী করবেন, এ প্রক্ষিকতি আয়ার আজু দিয়েছেন।

ভারলেটের ছট চোবে ক্য এল। বাস্পর্ভয়রে জিজালা করলে, ডুমি কি ডাকে কথা দিয়েছ, বাপি ?

-- विकट्टे

বাপী) আমি ভোমার সঙ্গেই বাক্তে চাই ৷ ভোমাকে বেকে আমি কোবাও যেতে পারব ন

ভারতোটের চোবের জল আবণের ধারার মত গাল বেয়ে নিঃশত্তে বাবে পড়তে লাগল।

বুছ এত হয়ে কর্কশ কণ্ঠে বললে, আহাত্তক কোথাক।র।
নিজের কীবনটা আমার সলে থেকে মাটি করবে ? না, এ
কোনমতেই আমি হতে দেব না।--এই বলে সুমুর্জনাল
নীরব থেকে মেহার্ড কণ্ঠে বললে, জার ব্যয়স হয়েছে দের
সভিয়া ভোমার ব্যাসের অনুপাতে জাঁকে ভোমার পালে
মানার না কিন্তু মা, তেবে দেখো, আমার সলে এ ভাবে
থেকে তুমি কোন দিনই প্রথী হবে না। জোমার অবস্তার পরিবজম আর এ কীবনে হবে না। কিন্তু অমিদার হচ্ছেন রভ্ত বছলোক। থাওয়া-পরার কর জার ওবানে লেগাপড়া লিবে
হবে না। জাইছেন জোমার হেলেবেরেরা লেগাপড়া লিবে
মাহার হবে । কিন্তু আমি ভোমার কি করতে পেরেলি ?
অবস্থারের নেয়ে ছাড়া ভোমার আর কি পরিচর আলে ?

- -खर्च चाश्रत्मके माना (वैके करत शाश्रात्येत मरणा सब १८६ वरम बरेंग । वार्यात किरण जाकारणक क्षत्र चतमा श्रीम मा ।

বৃদ্ধ কণকাল হৃণ করে খেকে আবার বলতে প্রক্র করলে, ক্ষারার ভোষাকে তার বাঙীতে নিয়ে বেতে চান । শক্তর। এপিয়ে আগছে। আর সময় নেই। অধর্ণক কাশকেশ করা আর সমীচীন ময়। ক্ষায়ার একটা নিরুশক্তর অঞ্চল চলে হাবেম। বোকামি করো না। তুমি প্রস্তুত হও।

খণাসময়ে মশ্বিধারে একটা লাল রভের খের'-টোপ খেওরা কোরা এলে থামল। খ্যাজিত কোরা। ভিতর থেকে বেরিছে এল একট রুবাপুক্ষ। অতি ক্রফ চেখারা ওর: লোকট মাকি অনিদারের দেওরান।

(क्श्राम म्किट्यत मृट्या **टा**टनम् स्वरम् ।

বৃত বেধলে থকে। কিছ সাগত করলে না। উধাস মধে ব্যক্তন বৌদ ভাবে বলে থেকে ঘঠাং এক সময়ে বলে উঠল, আবাকে মৃত্যু কুমি কোমো দিন মুম্বার্ডর ভারেও ভালবেদে বাক ভারতেট, তা হতে আনার কথা বোব। কেয়ারা এলেছে কনিগারের কাছ বেকে। উঠে বল ওডে। আনি ভোগার বাবা। ভোগাকে সংসাধে আনিই এনেছি। আনারট চোবের সামনে কেসন ভাবে একটু একটু করে বেকে উঠে এড বছট ব্যেক, তাও দেবেছি। ভোগার স্থবৈংগ্য আনার একবাক কামনা। ভগবানের কাছে প্রার্থনা করি—ভূমি কনিয়ায়-পরিবারে প্রস্থিকিই করে প্রপ্রের কননী হও।

বৃদ্ধ প্রাণপণে উল্লাভ অক্র দ্বন করতে চেটা করে। কিছ পারে নাঃ হ-ছ করে শিশুর মতই কেঁলে কেলে।

ভাষলেটের ২ংখ কখা খেন্ , ট্রিক যেন সম্বোহিতের মভো উঠে নেট কেধারার কাছে গিয়ে ভিতরে চুকলে।

সঙ্গা নেমে আগছে। আফাশের পূর্ব্ব বিক্তে একটা অসম্পূর্ণ চমংকার রামধ্য দৃষ্টিগোচর হ'ল। বোধ করি কোধাও বছ উঠেছে। বাতাসে শৈতা অনুভূত হচ্ছে।

ভাষলেট চলে পেল: জীবনে আর হয়ত দেখা হবে না: আমার অন্তরাত্ম চীংকার করে বলতে চাইল- এই আমার দেশের সমাজ, এই আমাদের জীবন।

মধ্মে মধ্মে উপলব্ধি কর্মণান, প্রতিকৃত অবস্থা থেকে পরিক্রাণ পাবার কোনো পথ আপাততঃ আমাদের নেট। আর কোথাও আগ্রয় মিধবার সন্তাবনা নেট। এবানকার মাটতে আমি ক্ষমেচিলায়। এই মাটর বুকেই আমাধ্যে জীবিকা অর্জনের ব্যবস্থা করতে হবে।

ৰুদ্ধের কাছে এগিয়ে আগি ৷

র্থ ছটি চোল মুদিত করে জন্য পাষাপের মত এক পাশে ভয়ে ছিল! বললাম, জমা করুন: জাপনার খুমের বাাধাত করপায়। একটু থেনে জাবার বললাম জাপানীলের বাঁবা দিতে জামি পরিলা বাহিনীতে ভোগদান করখো। জাপনাকে ছেতে যেতে জামার ইক্ষা হচ্ছে না, কিন্তু না গিছের উপায় নেই। জাগানীলের বাবা গিতেই হতে।

বৃদ্ধ ব্যক্তর বীরে বীরে চোব মেলে আমার দিকে চাইল

ত ভারণর আনার ভীন কঠে বললে, ভাল কবা। ছুনিয়ার
আগাহের বিরুদ্ধে, অভ্যাচারের বিরুদ্ধে জাভাবার মত লোক
ভো ভোমরাই। যাক দে কবা। কিও আবা এবনী পর্যাভ ভোগার কিছুই বাওরা হয় মি। বাওয়া-গাওয়া কয়ে হাডিটা এবানে বাক। কাল বেও, কিছ আবা মহা অভুক অংহার আমি কোনো অভিবিকে হাজি মে। কাল বেয়ো।

बुद्ध चार्यात (हांच दुवन ।

ভ্ৰিং-এর কামে কিবে এলাম :

ধনে হংগ্ৰিল বিধিও ছংগে যুক্তমান হয়ে গোপনে কে অঞ্চণত কয়ছে। কিছ তার সভিকটে বিধে বুবলায়, আলায় অনুযান সত্য নয়। তিং যা।গেল বুক্তের ছাঙ্গায়-লোল-বাঙ্গা পাতাখলির চিকে অপলক নেত্রে চেয়ে বেকে আপন বনেই কিসু কিয়ু করে বলছে, আক্ষয়। গত রাজে আতি ভো কোনো দশ্ধ বেৰদান না । অবচ শাইই আনি পাৰীটাকে ভিন বার ভানা নাডতে ওবেছিলান।

ः यममात्र, ७३१ क्ष्मरकाञ्च ।

আনার এই নডব্যে ভিং-এর চনক ভাঙে। ভিরে ভাকার আনার পানে। বলে, কি বললেন ?

वनविनाव ७है। कुनरकातः।

ভিং-এর চেহারা বেবে বনে হ'ল, আমার এই ক্রাটা ও মেনে নিতে পারহে না। গৃচ কঠে আমার কবার প্রতিবাদ করলে, বললে—আপনি কি বলহেন ? কুলংকার এটা হতেই পারে না। বদি কুলংকার হবে, তা হলে আমার না কেন এই প্রচলিত বিশ্বাসকে অমান্ত বলে মনে করতেন।

ভাজামিনে। কিছ ওটা কুলংখার হাডা আর কিছুই না।

আপৰি ভাষণেষ কি করে ?

श्राह्य भ्रमान्त्रां क्याल अनव कामा याद ।

আপনি তা হলে বুব লেখাপভাৱ চৰ্চা করেছেন বলুন ? তা করেছি বৈকি !

ভিং বেন হাতে টাল পেলে। নিঃসভোচে আবার এক-বানা হাত বরে আমাকে পাশে বসালে এক প্রকার ভারে করেই। তার পর নিনভিত্রা হরে বললে, তা হলে রুখা সময় মই না করে ভিন্ন ভিন্ন বস্তু কি করে বিপ্লেবণ করে বেবতে হর, আমাকে ভাই আপনি একটু ভাল করে বৃত্তিরে বিন।

প্রিং বাছোছবাকা। অগত্যা বাসুর উপর একটা কঞির মাহাব্যে রাষবহুর ছবি,এঁকে তার স্বরূপ বিশ্লেষণ করতে লেগে গেলার।

আমি অবেকটা বভ্তাব ভনীতে একটু উচ্ছুলিত ভাবেই ব্যাবা করহিলাম। ভনতে ভনতে প্রিং হঠাং বলে উঠল, আমারের ভাষা কি হুকর। কি চমংকার, কবিছমর ভাষা। মাভূতায়া ভাল করে শেববার ইক্ষা আমার প্রবল । আমার বা বে লখ গাম আমাকে গেরে শোষাতেন, লেই সব গাম রাগার উক্তরে পড়তে আমার ভারি ইক্ষা হয়। আমাকে আপনি পড়তে শেবাম।

ভিং-এর হেলেনাস্বের মত কথা তলে আমার রাগ হ'ল। এবিকে শেটের অর ক্টবার উপার নেই, ভাবা শিকার উপযুক্ত সমরই বটে এটা !

আৰি ভাৱ কৰার কোন কৰাৰ বিলাম না। ভৱে পড়লাৰ অভ এক ছালে—ভিং-এর ভাছ বেকে বেশ একটু ব্যববানে। নিজ্ঞায় চেটা করতে লাগলাম। কিড কোবার নিজ্ঞা ? চোব বুজনেই বে ভাষতেটের সেই কল্প ব্ৰহ্মবি চোবের উপর বৃষ্ট বলৈ থঠে।

পর্যাদশ লক্ষাত্রে আষিই মুব থেকে উঠলাব। রঙৰা হবার পূর্ব্বে ভাবলাম—মুদ্ধের এবং ভার কচার কাছ থেকে বিহার নিরে বাঙরাটাই লমীচীন। ভিন্ত মুদ্ধের মুখের পানে চোধ কেরাভেই দেবলায— ওর চক্ষুষ্ট মুদ্দিত, বর্ণাধারার মৃতই অঞ্চবারা ওর ওকনো গালের উপর দিরে গছিরে প্রত্থে। মৃষ্ চাইল না ওকে আবার মৃত্যু করে মুংব দিতে। প্রিং-এর দিকে চোব কেরালায়। দেও নিমীলিভ চক্ষে নিশ্চল ভাবে এক পার্থে পড়ে আছে।

স্থুতরাং বিদার মা নিষ্কেই চলে আগবার বাচ বাইতের দিকে পা বাড়ালায়।

হঠাৎ কানে এল :---চলে বাচ্ছেন ? ভন্ন---কাল রাঝে কিছ আমি শ্বপ্ন লেখেছি।

লেই কঠখন অসুসন্ধ কৰে ভিং-এর মুৰণামে গৃষ্টপাত কলনাম। ওব চোৰেন কোণে অঞ্চ সঞ্চিত দৰে উঠেছে।

বললাম, স্থ-স্থ ভো 🔊

গঠপ্রাত্তে একটা কীণ হাজরেবা কোর করে টেনে এনে প্রিং করার বিজে—ক্যা, প্রথ-সপ্তই বটে ৷ সপ্র দেখলায়—প্রকার একটি শিক্ষিত বেলের সংক্ষ ভাষলেটের বিষ্ণে ক্ষেত্তে এবং সে এবন গান পড়ে ভার মানে ব্রুতে এবং গান রচনাও করতে পারে :

বলতে ইক্ষা হ'ল, আহা, তাই বেন হয়। হগ্ন যেন তোমার সত্য হরেই দেবা দেৱ। কিন্তু শত চেটা করেও বুব দিয়ে একটা কবা বেরুল মা। কি একটা অভানা শক্তি আমার কঠায়েব করে আমাকে নির্মাক করে ছিলে। নির্মোবের মত ওর দিকে চেয়ে নির্মাক্যে ইণ্ডিয়ে বইলাম।

অবশেষে এক সমতে শ্রিং-ই বেজার আমাকে বিবার দিলে। ভার মুখ দিরে বিদার-সভাষণ-বাক্যটিই ভবু উচ্চারিভ হ'ল।

ওর চোবের দৃষ্টি করে উঠন অরণ্যামীর মত গভীর, সেই দৃষ্টির তাংপর্যা আমি উপলব্ধি করতে পারলাম লা।

ব্ৰছ এবং ভাৱ কভাকে মন্দিরে ছেখে আমি চির্কাণের ব্রছ চলে একাম।

ভবন বহুবার প্রিং-এর দেই দৃষ্টির মানে বুক্তে যথেষ্ট চেষ্টা করেছিলান। কিছু দে চেষ্টা আমার ব্যর্থ হয়েছিল।

কিছ আৰু ভার অৰ্থ আৰার নিকট কলের বড়ই পরিকার। আৰু ভাতে হুর্বোবাভা কিছুই বেই।

• होमा लिचक हर हार देखब शब चवलपटन ।

কালীপ্রসন্ন ঘোষ

2P8<-227.

গ্রীব্রজেশ্রনাথ বন্দ্যোপাখ্যায়

TT:

চাকা কেলার বিজ্ঞাপুর পরণণার অন্তর্গত ভরাকর আবে এক সম্রাপ্ত কারত পরিবারে ২৩ কুলাই ১৮৪৩ (৮ প্রাবণ ১২৪৩৬) কালীপ্রসরের কর কর। উচ্চার শিভার বার শিবনার বার।

বাল্য-ৰিকা

বদবাদী-কাব্যালয় হউতে ১৯১১ সালে প্রকাশিত 'বদ-ভাষার লেখক' প্রছে কালীপ্রসন্তের জীবিতকালে তাঁহার সংক্রিপ্ত জীবনী মুদ্রিত হয় ৷ ইহা হইতে তাঁহার বাল্য-শিক্ষার ক্যা উদ্ধৃত ক্রিতেছি :---

ভালীপ্রসয়ের শিভা শিবনাৰ বছ প্রগাচ বিখাসী ও क्किमान विल् विरामन । शांक कामीक्षमत देशवामी निविद्या वर्षकडे स्म, जिनि और रस्कृ छोशांदक रेशदाकी अक्रिए पिरवम দা বলিয়া প্ৰতিজ্ঞা করিলেন, এবং বাড়ীতে যে একট কাৰ্মীয় মক্তৰ বিল, ভাছাতেই কালীপ্ৰসন্নক ভিন বংসর ব্যুদের সময় প্ৰথম শিক্ষাৰ্থ প্ৰথিষ্ট করিয়া দিলেন ৷ - - উচ্চার বছল धर्म नीं वरभद्र जर्म 'भट्ममामा'द वदार ७ की हिंवाम्ब भवाव छोहाद कर्शह ।··· जब किह भित्नद मर्रा कामेवाम मार्गद ৰহাভাৱতও কালীপ্ৰসন্নের কণ্ঠত হইল।...ভরাকর প্রায়ে তথ্য क्लाम वाक्रियान अक्षेत्र बहर होन हिन । ... वर्ष वरमहत्र কালীপ্ৰস্থ কলাপের শক্ষণ অর্থাৎ চতুইয় বৃদ্ধি পড়িতে আরম্ভ कवित्तन। वाक्रीत चक्राक वानत्कवा छन्न देश्यकी शक्ता কালীপ্ৰসম্ম ইংরেকী পড়িতে প্ৰবোগ পাইতেকেন বা বলিয়া मध्य मध्य मधान-रदछिएतर निक्र । इस्त क्रम क्रिल्ड । ক্রব্যের ইচ্ছার, অল্প দিনের মধ্যেই তাহার প্রাধিত পুষোদ বটল ।···ভিনি বরিশালে তাঁহার ছোঠভাত শতুনার বোষ बहानरबंद वानाव ... वाकिया [शाकीरबंद करन] देशदकी পভিতে লাগিলেন। ... छोहात नवम वर्ष वस्तात नमत विनास वर्गायके इन खिल्लिंक रहेन । कामीक्षमद इहे वरमद मिनाय व्यवादम कृतिया कांकाद प्रमुद्र वर्ष वर्ष वर्ष अवस्ति । कालकिएक पान वारेका खिरिडे परेलम बर्द रमवारम प्रके वरमञ् कान विरामय केवन ७ जाअरहत महिल हेररवकी विकास । अरे हरे वरमत जिमि रेरातकी **७ वारमा माहि**ला এবং ইতিহাস ও ভূগোলের পরীকার সর্বাধ্য হইরা অনেক बनावाम गुक्तक क्षांदेक गारेबावितम । . . . कानीक्षपद व वरपद अमृक्षेण क्रारम छेडिएमम् (मरे वरमत छोशात युक्ति विम्हारेण)

e"ভালি": শ্ৰীপভিপ্ৰদন্ত বোৰ।—'ঢাকা বিভিট ও দল্মিলন,' প্ৰাৰণ ১৩২৮। তিনি ধীনবদ্ধ গোৰামী নামক প্ৰসিদ্ধ বৈৰাক্ষণের নিকট বৃষ্টবোৰ, বৰুবংশ ও বেবলূত এবং শব্দুক্ত ভটাচার্য নামক আৰ একট পভিতের নিকট ভট্ট পদ্ভিতে আরম্ভ ক্রিলেন, এবং পাঠ্য প্তকে উপেকা ক্রিয়া সংখত শিকার পুনক্ষণীও



কালীপ্রসম্র হোষ

छैरनार्ट कृषिका (नाम । चाहे नव बारन नरकरू छोहाक कांन श्रादम करेंन, बदः बरे नगरत कांकात ब्रह्मि इ-बक्डे বাংলা প্রবন্ধ পরিভাগিরে প্রীভি আকর্ষণ করিল। ভিছ কলেকের শিক্ষা এক প্রকার বার্ট কইবা গেল। ঐ সবহে চাক্ষা करणाय Lewis Society गारम अपने अनिक मानिनिक সমিতি হিল। --- কালীপ্রসন্ত্র সেই সভার তাঁহার তের বংলর वहरमञ्ज मबद "नवार्विवारा अध्यानारमञ्जूषा अवर "वद्यका वा क्षप्रब-वक्षम" अरे मार्थ क्रेडि भीष क्षप्रब लाई कृतिया पूर विषे बानरमा भारेशांबितम ।...किन कारमाक शैलियल समाध्य করিলেন না বলিরা ভাঁহার অভিভাবকাদদের হব্যে কেই কেই कांशास को जिन्नात कतिराम । और जिन्नकात कांशात आहे। সহিল না। ভিনি কিছু কাল পরেই কলিকাভা চলিয়া গেলেন अवर---वेरद्वकी निविष्ठ मात्रितमः। तम प्रवह क्रमिकाकाव বাংলা সাহিত্যের প্রতি লোকের তেবন অপ্রতাগ ছিল মা ১০০০ কালীপ্ৰদন্ন সামন্ত্ৰিক লোভে প্ৰবাহিত কইবা ইংৰেজী প্ৰয়ন্ত্ৰটো একেবারে ছবিয়া গেলেব; এবং কএক বংগর ভাল ইংরেডী

নাহিত্য, ইতিহান, মধোবিজান, নীতিবিজান এবং বর্ষতত্ত্বে ইতিহান বা বিরলজি প্রভৃতি প্রস্থানি পাঠ করিয়া ইংরেজী ভাষার অসাধারণ ব্যুংপত্তি লাভ করিলেন। তিনি এ সমরে প্রতিবিদ বিবা য়াঞ্জিতে অতি কম হইলেও চৌধ পনর বঙা অব্যাহন করিতেম।…

"ভাছার বয়স ঘৰদ সবে বিশ বংগর, দেই সময় ভিনি ইংবেজী বক্তা বলিয়া বিৰাণত হন। তাহার বক্তভার প্রথম আছত ভবাৰীপুৱে। সে সময় ভবাৰীপুৱে একট স্থপৱিচিত नाविकामका विमा :-- क्यांनीनुबद्द वक्यांक्यनंत्रव अनुद्याद कानीधनम् ... रनवारम The Christianity of Christ and the Christianity of Church অবাং গুইবর্ম ও প্রচলিত इक्षेत्रक अरे श्रुटेरबार भावका विश्वत्य अक शीव वक्षणा करवन । লোভ্ৰৰ্গ ভিন ৰতা কাল মন্তৰ্গ্বৰং উপৰিষ্ট ছিলেন। . . . ৰকুভাৱ भव--- महर्षि (वरतस्थान क्रज्ञात निक्रे चानिया काणीक्षमद्दक বাচু আলিজন ও ললাটে চুখন দানে স্কুডার্ক করিলেন। আর মেডারেও ভল্ক ([)all) জাহাকে নানারণ প্রিয় বাকে: অভিনাভিত করিছা ভাঁছার সহিত সাক্ষাং করিতে উপদেশ बिटनम । এकप्रिम कम जारकरवत अकडे कवात काकात कीवरमद ভোতে এক আক্ষা পরিবর্তন ঘটন : তল সাত্তব ভাঁচাকে विनाम, "त्यव काजी धनन हैरदबकी आभागितन वस । छेरा ट्यामाभिरतत माकुणामा नरकः ट्यामता वेश्रतकीत कड यख কেন পরিশ্রম না কর উহা কর্মও ভোষাবিদের নাম-মুন্রায় ব্ৰফ্রিত ছইবা পৃথিবীতে প্রচলিত ছইবে না। যদি খলেশের ক্ত প্রকৃত কিছু কার্য্য করিতে চাও, ভাহা হইলে **আপ**নার ষাতৃভাষার সেবা কর। পৃথিবীর বে লক্ষ মহালা মানব আভিকে হাসাইয়। কিংবা কালাইয়া ভাতীয় ভীবন খ্ৰোতে প্রিবর্তম প্রীট্রাছেন, তাঁহার: সকলেই মাতৃভাষার সেব করিবাছেন।" ভল সাহেবের করাওলি কালীপ্রসরের অভিতে অন্তিতে লিবিত হুইল এবং ভিনি কিন্তুপে বাংলা সাহিত্যের केर कर्यमायन कवित्यम ७ वर्षमाम कात्मव भ्रष्यिकविक व्यक्ति बारनाड पक्कि क वेकीपमाड अक्का जबक ध्रवाविक करियय--क्षे किया है जारा ह किटबर संशाम किया एवेल । जिन्न केवाद পৰ একখিন অতি গভাৱ কজিত নহিত সহয় ও প্ৰতিজ্ঞা কৰিব। नारना जानांव (न्यांवर बर्व कवित्नम । वारनांव जरकारन যে সকল ভাল পুত্তক পাওছা গেল, ভাষা বিশেষ মনোখোগের भरिष्ठ भूम: भूम: भिक्तम अवर मरप्रष्ठ व्याक्त अभाव बारमिक मा क बाम बारमा कावाद केमद वर्षा कादिमका वर या पनिश्व अवाद किमि भाविमि भक्तिक चादक कवित्रम । পাৰিনি অষ্ট'ব্যাহী, বৃতি ও বাতিকের সহিত বিশাস এছ। हैना निकार करेंक का अब अबर करोबी बीकिएव अकिया-বিশ্বতি প্ৰৱে প্ৰৱে বিলাইয়া পভিতে হয়। ভিনি উহায় সহিত चानाव कनाम ७ वहरवारयत पत्र विनावेश मिल्रामय अवर कटबर क्रमदारे भावित गाक्डात चनावादव चविकांत जांक

ভারতের। এবন হইতে বাংলা উল্লেছ চকে আর এক বছর নত হইল। তিনি বাংলা ভাষার প্রজ্ঞবন-ছামে প্রভিষ্কা, উল্লেফ ইচ্ছানত চালনা করিবার শক্তি লাভ করিলেন। এবং ভালার সংস্কৃত অব্যয়ন শেষ হইবার প্রেই, তিনি বালালায় এছ রচনা আরম্ভ করিলেন।"

সরকারী চাকুরী

বাইশ বংসর বয়সের সময় কালীপ্রদার ঢাকা ছোট আলালতের ক্লাব অন দি কোটা পদে নিযুক্ত হন। এই সময় হউতেই তিনি ছায়ী ভাবে ঢাকায় বাস করিতে বাকেম।

"খোষ মহাশহ তাঁহার অগাবারণ বাগ্যিতার প্রভাবে ও বিদ্যাবন্তার গৌরবে ঢাকার সাহেবদিপের নিকট বড় সম্মানিত ছিলেন। তথন এ দেশে কংক্রেস ও কন্কারেল হয় নাই; সাহেবের! এ দেশের প্রায় সমন্ত সভাসমিতিতেই বাঙালীর সহিত মিশিতেন; কোন কোন সভার নামত: পুঠভূমিতে বাকিয়া সভার সমন্ত কার্যা কর্তুত্বের সহিত চালাইতেন। এরপ সভাসমিতিতে ধোষ মহাশয়ই তাঁহাদিসের অর্থাক্সপে কার। করিতেন; এবং সভার বক্তৃতা ও সভাসংক্রান্ত আলাল কার। সম্পাদনের ধার! বাঙালীর সহিত সংহেবদিসের সেই।জন্মিনিনের মুক্রির ভ্রতিক। এই সকল কারণে দেশের একজ্বন উচ্চেশ্রের সমাজ্যালকের ছার সাহেবদিসের নিকট তাঁহার প্রতিপত্তি ছিল।"

চাৰুৱীতে নিযুক্ত বাংকলেও কালীপ্ৰসন্ত কৰনও অব্যয়নে বিরত হন নাই। তাঁহার অধ্যয়নের প্রথম কল 'নারীকাভি-विश्वक लक्षाव' २६ वरभव वश्वत ३५५३ मान । कि कहे एक প্রকাশিত হয়: biকায় অবস্থানকাঞেই তিনি ১৮৭৪ সলে 'वादव' शक्ष क्षकान करवम । अहे नगरश कार्यानकरक सकाश আগত বহু প্রদাহিত্যিক-- দীনবছু মিল্ল, অমুভলাল বলু, গলা-চরণ সরকার ও ওখার পুত্র অক্ষয়চন্দ্র প্রকৃতির স্থিত তিমি প্রিচিত হরবার প্রোগ লাভ করিয়াললেন। অকরচন্দ্র সরকার "পিড়া পুর" প্রবহে লিবিয়াছেন :---"পিড়া যবন প্রবহ हाकार (शत्मन | ১৮९६-৮३] खबम माहिका-दवी **विद्रक** কালীপ্রসম্ন বোধ সরকারী চাকরী করিভেডিলেন। ভিনি नर्वाशह निवाद कार्य चानिएवन। नाविका, चनाहिका, व्यानक विचारके श्रामन अवन कविराज्य । वाकावक समारक কালীপ্ৰদন্ন বাধুৰ কীৰ্ছি প্ৰদাৱিত হইদ ৷ ভিনি খদেৱ সৰ্ব্বঞ কীর্ত্তিবাদ বলিক। প্রবিভ হউলেন।" ('বল-ভাষার লেখক,' 9. 160)

কালীপ্ৰদন্ন ১১ বংগর চাকা ছোট আধালতের বেড্ ক্লার্টের কর্মে বিমৃক্ত ছিলেন। কর্মনক্ষতাগুণে চামুনীকে ভারার মুনাম ক্রমায়িক।

खानगान

कानीक्षतः नृर्वकः जायनगरकः भवन विरेक्ती विरामः।

ঢাকা আৰু স্থানর সম্পানক-ত্রপে ১৭ আন্থারি ১৮৯৯ তারিখের 'ঢাকাপ্রকাশে' উচ্চার একট বিজ্ঞাপন বুরিত স্ট্রাছে। ১৮৬৯ সমের এই ভিসেত্বর পূর্ববাললা প্রশানস্বাধ্বর প্রতিত হয় পর-বংশরের ২০শে আন্থারি (১১ রাষ ১২৭৬) এই পুরুহ অন্থটিত প্রাক্ষণরাক্ষর অবন্ধির টিংলর উপলক্ষে শ্রাজাসমান্দের পরর হিত্রী প্রস্কুত বাবু কালীপ্রসন্ধ বােষ মহাশার একট স্থাবি উংল্ট বক্তা করেন, বক্তু গাট্ট আলোপাণ্ড প্রাক্ষ বর্ষের গৌরর ও মহিমার কথাতে পরিপূর্ণ এবং অগীর প্রতিমন্থর বিল । প্রাক্ষ বর্ষের ক্ষেত্র বিল । প্রাক্ষ বর্ষের ক্ষামনা ও প্রতিক করিবার প্রাক্ষ বর্ষ হয় বর্ষ বক্ত গাহ তাহা বিশেষরূপে বলিত হইরাছে' (ভারাঞ্জন্ম, তে ১-৭০)।

রাজ ব্বকগণের চারা ঢাকায় পূর্ববদ শুভলাবিনী নামে একটি সভা প্রতিদিত হয় (কাছন ১২৭৬)। সভার মুখণত্ত-বন্ধা ১২৭৭ সালেই বৈশাখ (১৮৭০, এপ্রিল) মালে ভিত্তনাবিনী নামে হলভ বুলোর একবানি সাঞ্চাহিক পত্রিকা প্রকাশির হছ। কালীপ্রদার এই সাঞ্চাহিক পত্রিকা সন্পাদম করিচাছিলেও বলিয়া ভাষা যায়। ভিত্তনাবিনীয় প্রমায় এক বংসক।

41514

ব্যিনচভাষ বিদ্যালয় আগদেশ পুর্ববৃদ্ধ ইতে একথানি উচ্চাত্রর মাসক্ষম প্রকাশের সভল করিব। কালীপ্রসর ১০৮১ সালের প্রায়াচ (১৮৭৪, জুন। মাসে চাকা হইতে সুক্ত বুলো (সভাক বার্যিক ১ ৫০) 'বাভব' প্রচার করেন। এই মাসকল্পন্তের কার্যাবাক্ষ হিলেন, আন্সচল রায়। প্রথম সংখ্যার মুক্তিত "অবভ্রনিকা"র সম্পাদক সেখেন। তাবন ঃ…

"বাছৰ পাক হউতে বলীয় বিভাল্নাসিদিপের অথ্যাপের ভিবাবী হইয়া রহিল। ইহার ভবিয়ং ও তরসা উহিদিপের হঙে। ইহা অবঞ্চই, অথ্যত স্থাজনেবর হার সতত সাববান বাকিয়া, নানাবিব বিষয়ের প্রসাদে পাঠকসনাক্ষের ননোমোদনে যত্নীপ হউবে,—বাংলার প্রতি যাহাতে বাঙালার অত্যাপ রহি পার এবং বংশা বলিয়া বাহাতে দেশীরদিপের ননে মমতার সঞ্চার হয়, অবঞ্চ তদর্ব ইহার নিয়ত চেটা বাজিবে; কি পরিষাণে কৃতকার্যা হইবে, তাহা বলা আমাদিগের সাব্যায়ন্ত নহে। মন্ত্রের ইচ্ছা ও আশা যে গগনে উত্তীন হয়, ক্ষতা তাহার অর্চ পথে আবোহণ করিতে সমর্গ হয় কি না, সন্তেহের বিষয়।"

প্ৰথম সংখ্যা 'বাজ্যৰ'র সমালোচনা প্ৰসতে বভিষ্চত 'বল্লন্ত্ৰ' (প্ৰাৰণ ১২৮১) যে অনুকৃত মন্তব্য করিয়াছিলেন, ভাছা উদ্ভুত ক্রিভেছি:-

"ইহা একবাৰি উংকট বাসিকণত ।···আকাছে ভূত ঘটলেও অনে, অভ কোন পঞাপেকা নৰু বলিবা আনানিগের বোৰ হইল না। ছচনা অভি পুজর এবং লেবকলিগের চিন্তাপতি অগানাত। ইহা বে বাংলার একবানি সর্বোংকট পঞ্জবো পণ্য হইবে, ভবিহরে আনানিগের সংগর নাই।"

শ্বাদিক প্ৰের সম্পাদকের যারিত বছর করিব এবং ওচতর বলিরা কালীরলরের বারণা রিল। এ সকতে তিরি একট প্রুক্তর করা বলিতেন, তাহা এই—'সম্পাদক কেবল উলোর পরে প্রকাশিত প্রবভানির ভাষার ভবির লভ বারী, তাহাই নহেন। প্রত্যেক প্রেরই একটা সম্পাদকীর বারা প্রর বাকা চাই। বারাদান কিংবা বিরেটারে বেয়ন প্রবহেই একটা স্ব বাঁবিরা সওরা হর এবং ভারণর থি-ই বা পা'ন না কেন, সেই প্রেই গানিতে হয়। তেয়নই প্রত্যেক মানিক্ত পরেই সম্পাদকের একটা প্রর বাকা আবক্তম। নেবকেয়া বার বে প্ররেই কা বিরো ঘাইবেন, ইহা ঠিক নহে।' বালাকা রাসিকপ্রের নধাে তিনি 'সাহিত্য'কে বছ ভালবানিকেম।"——
চক্তব্যের কর: 'পরলোকগত কালারলয় বিধ্যাসার্যাণ (১০১৭) পূ. ১৫।

'বাত্ব' কালীপ্রলয়ের অভুলনীর কীর্ত্তি। ১৭৮২ লালের চিত্র বালে "বত্তপ্রিনর বিভার প্রত্ন" প্রলম্ভের লি'বরা-ছিলেন :—"বে অভাব পূর্ব করিবার ভার বত্তপর বারা ভাতা প্রিত হরবে। অভাব ব্লমণ্ডন রাখিবার আর প্রয়োজন নাই।" লক্ষ্যভিত্ত পেবকরণের রচনা 'বাহ্বে'র পূর্বা অলম্ভত করিত। রবেশ্চন্তের 'জীবন-প্রভাত' ইত্তিই প্রথম প্রকাশিত হর। পুতকাকারে প্রকাশিত কালীপ্রসরের অবিকাশে রচনাই 'বাহ্বে' প্রকাশিত প্রবদ্ধের মার্কিভ রূপ। 'বাহ্ব'-সম্পাদ্ধ-কালে কালীপ্রসরের বহু ভাওরাল রাজ্যের অক্তার ভঙ্ক হয়; ইত্তার কলে 'বাহ্ব' কিছুকাল অনির্নে প্রকাশিত ত্রহা প্রেম লোপ পাইমাছিল। ভাওরাল হত্তিভ অবসর প্রত্ন বিভিন্ন বিভ্রমণ প্রথমিত করিবাছিলেন। 'বাহ্বে'র বিভিন্ন বঙ্গল এইভাবে প্রকাশিত হয়:--

১ম বর্গ ... ১২৮১, আঘাড়- টেল্ল। ২ল বর্গ ... ১২৮২, বৈশাধ-টেলা। তল বর্গ ... ১২৮৩, বৈশাধ-টেল। ৪র্থ বর্গ ... ১২৮৫; ধন বর্গ ... ১২৮৭। ৬র্চ বর্গ ... ১২৮৮। শল বর্গ ... ১২৮১। ৮ম বর্গ ... ১২৯১। ৯ম বর্গ ... ১২৯০ (বৈশাধ-আছিম) ... ১২৯০ (কার্ডিক-টেল্ল)। ১০ল বর্গ ... ১২৯৪, ১ম-ধন লংখ্যা। ১১ল বর্গ ... ১২৯৫, ১ম-২র (?)। (পুনঃপ্রচাল) ১ল বর্গ ... ১৬০৮ কাল্প ... ১৩৯ নাখ। ২ল বর্গ ... ১৬১০ (বৈশাধ-টেলা)। তল বর্গ ... ১৩১১। ৪র্থ বর্গ ... ১৬১২। ধন বর্গ ... ১৬১৯, বৈশাধ-ভালে।

ভাওয়াল-রাজ্যের কর্মসচিধ

जारबारमञ्जाबन जुमानिकाची चरमन्दरमञ काजीनाबादन

লাৰ বৃদ্ধ হণ্ডৱাৰ একজন বোগ্য প্ৰতিনিধির সন্ধান করিতে-क्रिलम .--विरम्बल: छाश्व बक्शव शृब, बार्काव चारी উভয়াবিকাতী, তুলার রাজেজনারারণ তথন অপ্রার্থবয়ক। 'বাৰব'-সম্পাদক কালীপ্ৰসংহর বিভাবতা ও প্ৰথন্ন বৃত্তিমভার কৰা ভাষায় কৰ্ণগোচয় হইয়াছিল, ভিনি এক দিন কালী-প্রবাহকে আবল্লণ করিয়া ভাওয়ালের কর্মান্যকের পদ এছপের क्ष जन्नदार कदिला। "कामीमादास विक्रांकिमास्ट শ**হিভ বলিলেন—আনার কার্যভার এহ**ণ করিলে আপনার গাহিত্যদেবার বিশ্ব হইবে না, অবচ আমার রুহং উপকার बहैरव । जानि जाननात कर्षका त्याय जन्नात्त, वयन हेळा ভৰ্ম ঢাকায় ঘাইভে পাৱিবেম এবং জয়দেবপুর বাকিয়া **हाकाश क्षित्रद एकावशान कदिए प्रदान भारे द्वा । भद्रक** चार्गन बंगारन रकान चनीनचात क्रम गाहेर्यन ना । चारि একৰে কৰে অণ্টু, ভাই আমি আপনার হাভে সমন্ত সঁপিয়া ৰিতে ইছা কৰি। আপনি আমার প্রতিনিধিরণে জীমান ধাব্দেক্তের সহিত পরামর্শ করিয়া কার্য্য করিবেন। এই ভাবে আপনি বাহা করিবেন, ভাহাই আমার কার্যারূপে পরিগণিভ क्रे**रिय ।" काणीश्रमत प्रदाद अ अमृ**रदाय श्रेकाानाम क्रदान मंदि: चिनि २৮ मार्ड ১৮११ (১৬ हिन्न ১२৮७) श्रवान कर्य-চাষীর পদ এহণ করেন। ভাষার ভার প্রবী ও বিচক্ষণ ব্যক্তির च्छांबबाटम क्याब बाटकक्षमाबायन व चित्रवार चलिक्छ रहेश छैंदिया, युक्त कालीनातायन अवेजन चानावे कविशाहितन : এমন কি পুত্র বাহাতে বিষয়কার্য্যে পারদলী হইয়া উঠিতে পারে, একচ ডিনি ভাহার হন্তে রাজকাব্যের কতক কতক **चावक इक्ष कविवादित्यन । अब पिन शर्वार वाका काली-**नावादन भवरणाक्त्रमम करवन (३७ कून ३৮१৮)। वाका-व्याबित मरम भरम दारकलनातात्रम (७४४ ८७ वर्ष वश्व) छेकाम एरेवा छेडिएमन : छिनि चहन विदार्भ बारकाव अन्तुर्व ক্রত-ভার প্রতিনিধি কালীপ্রসংগ্রর উপর হস্ত করিয়া নিশ্চিত बार विविधनक्षण चनाव चार्याप-धार्याप मध रन । काली-প্রসর দীর্থ ২৫ বংসর কাল ভাওয়াল-রাজ্যের ওরভার বহন क्रिशिक्षित्म । ১৯০১ मामद २७७ अधिम दाका दास्य-নাৱারণের মৃত্যু হয়। ইহার অব্যবহিত পরেই তিনি ভাওয়াল-রাজ্য হুইতে অবসর এছণ করিতে বাব্য হুইয়াছিলেন।

"১৩০৮ সমের ১৩ই বৈশাব রাজা রাজেঞ্জনারারণ পর-লোক গমন করিলে, তদীর বিববা রাশী বিলালমণি দেবী চাকার থিতীর সবজক আদালতে কালীপ্রলর বোর মহাশরের নামে কিঞিমবিক দশ লক্ষ সাকে বাবটি হাজার টাকার দাবীতে এক অভিবাস করেন। রাজার র্ভার অব্যবহিত পর রাজ্যের শোচনীর অবহা দর্শনে রাশী বিলালমণি দেবী রাজকার্য্যের আভাজরীণ অনেক বিষ্কের অসুসভান করিরাভিলেন। তিনি প্রধার বৃত্তিরতী রমশী ভিলেন বলিরা রাজার জীবিভাবরাতেই রাজ্যের বিভারিত বিবরণ সরুষ অবগত হিলেন। ভারার অধনভাবের কলে রাজ্যসংক্রান্ত অবেক থওকথা ব্যক্ত ক্ষরা পঢ়িল। তার পর···১৩০৮ সনের ১৪ই অঞ্চারণ [৩০ নবেধর ১৯০১] খোর মহালরকে ব্যানেজারের পদ ক্ষতে অপস্ত করেন। বোর মহালরও নামা বিক্রাটে পতিত ক্ষরা ভাওরাল পরিত্যাপ করিলেন। পরে বহু চেঠার সেই বোকর্ষমা আপোষে বিটিয়া বার ।" •

সাহিত্য-সমালোচনী সভা

ভাওৱাল-হাজসংসারে কার্যকালে কালীপ্রসর একট বহুৎ কর্মের অন্থটান করিরাছিলেন। তাঁহারই ঐকাছিক বতু-চেপ্টার ও বাজেনারারণের আন্তর্গ্যে অবদেবপুরে 'সাহিত্য-সমালোচনী সভা' প্রভিন্তিত হয়। প্রভিন্তাবি কালীপ্রসর এই সভার নারক ছিলেন। 'বাছবে' বৃক্তিত নিয়েছত বিজ্ঞাপন হবঁতে সভার উচ্চের পরিক্ষুট ভ্রবে:—

সাহিত্য-সমালোচনী সভার বিজ্ঞাপন।

নির লিখিত মহাশরগণ জরদেবপুরস্থ গ্রীয়ক্ত কুমার হাকেন্দ্রমারারণ রায়ের প্রতিষ্ঠিত সাহিত্য-সমাগোচনী গভার অবাজ্ কমিটীর সভ্য হইলেন। এই কমিটীর কোন সভ্য কোন বালগা প্রান্থ বালগা ভাষার উন্নতি কি জীর্ভির অনুকৃত আন ভ্রির। সম্পাদকের নিক্ট পত্র লিখিলে, সভা ভিন্ন ভিন্ন সানের পৃত্তকালয়ে কিংবা বিভংসমাজে-বিতরণের জ্ব সেই প্রছের বহু বঙ্জ ক্ষম করিয়া লইবেন, অববা অভ প্রকারে প্রস্থারের সাহায্য করিবেন। এইরূপ পুরস্কার বিতরণ কিংবা সাহায়া দানে সম্পাদকের পৃক্ষবং অধিকার বাকিবে এবং সম্পাদকও উল্লিখিত অব্যক্ষ ক্ষিটির অভ্তম সভ্য বলিয়া পরিস্থিত হুইবেন।

অব্যক্ষ কমিটির সভ্যাদিপের নাম।

শ্রীর্ক্ত বাবু রাজকৃষ্ণ মুখোণাব্যার এম এ, বি এল্। শ্রীর্ক্ত বাবু বজিষচন্ত্র চটোণাব্যার। শ্রীর্ক্ত বাবু বজিষচন্ত্র চটোণাব্যার। শ্রীর্ক্ত বাবু বজাচরণ লরকার। শ্রীর্ক্ত ভাক্তার রাজেলাল মিল রামবাহাছ্র (C. I. E). শ্রীর্ক্ত বেবাবেও ভাক্তার ক্ষকমোহন বন্দ্যোণাব্যার। শ্রীর্ক্ত বাবু অক্ষচন্ত্র সরকার। শ্রীর্ক্ত বাবু ইক্রমার বন্দ্যোণাব্যার বি, এল। শ্রীর্ক্ত বাবু বোগেঞ্জনার বিধ্যাত্বণ এম, এ। শ্রীর্ক্তবাবু রক্ষনীকার করে।

ঢাকা করদেবপুত, শ্রীকাদীরানর থোষ । ২৮ এ কান্ত্রন, ১২৮৮ সম্পাদক

১৮ ছাত্ৰাৱি ১৮৮৯ ভাৱিবের 'মূলভ স্বাচার ও সুপদহ'



বিৰাশ হইতে নিউ ইয়ৰ্কেঃ গৃঞ্চ



अमनद : (हमाद वान बाल्ब वृत्र



পুরদো সাঁকো,--- জীনগর

পত্ৰে প্ৰকাশিত কৰি রাজকৃষ্ণ হাৰের একবানি পত্ৰ উচ্চুত করিতেছি। ইহা হইতে সাহিত্য-স্মানোচনী সভার বলাচতার পরিচর পাওয়া বাইবে। রাজকৃষ্ণ সেবেন:—

"আমি ফদরের কৃতজ্ঞতার সহিত বীকার করিতেতি বে, ভাওয়ালাবিশতি ও সাধিত্য সমালোচনী সভার প্রতিষ্ঠাতা জীল জীযুক্ত রাজা বাজেজনারারণ রার বাছাত্র মহোদর আমার পদ্যাল্বাধিত মহাভারতের রাজকীর সংস্করণের সমস্ত মুক্রণ-ব্যয় ১২,০০০ বার হাজার টাকা দান করিতে অকুসীত হইরা, অপ্রহণ্ঠাক সংখ্যাপ্রকমে টাকা পাঠাইতেতেন। আমি তক্ষণ ভাছাকে এবং তাছার স্থোগ্য প্রধান মন্ত্রী ও বাজব পজের সম্পাদক জীযুক্ত বারু কালীপ্রসর বোষ মহাশয়কে শত শত বছবাধ প্রদান করিতেতিছি।"

'দাহিত্য-সমালোচনী সভা'র দারা কালীপ্রসর বহু
সাহিত্যিকের ক্বভক্ত। অর্জন করিরাছিলেন। কিছ "দেঁরো
যোগী ভিব পার না" এই প্রবাদ-বাক্যের সার্থকতা ভাওরালের
স্বভাব-কবি গোবিন্দচন্দ্র দাদের জীবনে দেখিতে পাই। তাঁছার
ফুর্তাগাময় জীবনের ইভিহাদ কালীপ্রসরের কর্তৃথাধীন
ভাওরালের দহিত ক্ষিত হইয়া আছে।

বাগ্যিতা

কালীপ্রসর বাগী ছিলেন। তিনি ইংরেছী ও বাংলা উভয় ভাষাতেই অনর্গল বস্তুতা করিতে পারিভেন। তাঁছার কঠপর মধুর এবং ভাষা মার্কিত ও আবেরময়ী ছিল। ১৩১০ সালের ৩১৫ কার্ট বলীয়-সাহিত্য-পরিষদের আমন্ত্রণে তিনি ইউনিভার্নিট ইন্টিটেউটে (সভ্যেন্ত্রনার্গ ঠাকুরের নেতৃত্বে) "বল্লভাষার ক্রমোন্নতি" বিষরে যে বক্তৃতা করেন, তাহা ভূনিবার দৌভাগ্য বাঁছার ঘটরাছে তিনিই ভানেন কালীপ্রসর কি অপুর্ব্ব বাগ্যিতা-শক্তির অবিকারী ছিলেন।

গুণের সম্মান

বলীয়-সাহিত্য-পরিষং সাহিত্যের একনিষ্ঠ সাধক কালী-প্রসন্নকে ১৩০১ সনে "বিলিপ্ত সদস্য," ১৩০৪-৫,-৭ সালে অঞ্চতম সহকারী সভাপতি, ও ৪ আঘাঢ় ১৩১০ ভারিবে সম্বর্জিত করিয়া যবার্থই গুণগ্রাহিতার পরিচয় দিয়াছেন।

'ৰস্পৰান'-কাৰ্য্যাব্যক চুৰ্গাণাস লাহিন্টার ঐকান্তিক বড়ে, "বিধিব বিবানে বলভাষার শ্রীব্রতিকরে," ১৩০৬ সালের ৯ই প্রাবণ কলিকাভার 'লাহিত্য-সন্মিলনে'র কর হয়। কালীপ্রসন্ন এই প্রভিষ্ঠানের স্বামী সভাশতি নির্বাচিত হম।

লাহিত্যিক প্রতিভার জন্য কালীপ্রসর শেষ জীবনে বলের পণ্ডিতন্তলীর নিকট হইতে "বিদ্যাসাগর" উপাবি লাভ করিষাহিলেন।

মৃত্যু

কালীপ্রসন্থ ২৯ কুলাই ১৯১০ (১৩ প্রাবণ ১৩১৭) ভারিবে চাকার পরলোকগমন করেন।† স্বৃত্যকালে ভাঁহার বয়:ক্রম ৬৭ বংসর হুইয়াহিল।

গ্ৰন্থা বলী

কালীপ্রসংগ্রের রচিত গ্রন্থাবলীর একট কালাস্ক্রমিক ভালিকা দিভেছি। ভালিকায় বন্ধনী-মধ্যে প্রদন্ত ইংরেছী প্রকাশকাল বেলল লাইত্রেরি-স্কলিত মুক্তিত-পুশুক্তের ভালিকা ক্ষতে গুণীত।

১। নাত্ৰীকাতি-বিষয়ক প্ৰস্তাব। আখিন ১৯২৬ সংবং (৫ ডিসেশ্ব ১৮৬৯)। পু. ২৪২।

"ইহা কোন পুশুক বিশেষ অবলখন করিবা লিখিত হয় নাই। কিছু যে সকল ঐতিহাসিক বিবরণ ইহাতে পরিবেশিত হইয়াছে তংসমুদয়ই ইংগ্রু ও আমেরিকার নানাবিব পুশুক ও প্রবন্ধ হইতে সংগৃহীত এবং কজিপর প্রধান ব্যক্তির বাস্ক্যুপ্ত ইহার স্থানে স্থানে অনুবাদিত হইয়াছে।"

- ২। সমাজলোধনী। (১৩ মার্চ ১৮৭২)। পু. ২৬ কৌলীজ-প্রধার সমালোচনা ।
- ৩। সঙ্গীতমঞ্চরী। (২৪ সেপ্টেম্বর ১৮৭২)। **গু. ৭১** ভঞ্জিরসাত্মক শীভাবলী।
- ৪। প্রজাত-চিছা। ২২ আবেশ ১২৮৪ (৭ আর্রার্ট ১৮৭৭)। পু. ১৩০।

শ্বচী: নীরব কবি, অভিমান, প্রকৃতিভেদে ক্রচিভেদ, মন্থার জীবনচরিত, ক্লিওপেটা, শক্তি, ভালবালে কে? লোকারণ্য, রাজা ও প্রজা, হরদৌরী, রিশিল্, বিনয়ে বাবা, সাবনা ও পিছি।

৫। আভিবিলোগ।ইং ১৮৮১ (২৫ আগষ্ঠ)। পৃ. ১৩৬। স্চী: রসিকভা ও রসের কথা, স্বার্থপরভার স্ক্রভেদ, চাটুকার, ষ্ট্রকারক, সামাজিক নিএছ, চোরচরিভ, প্রচলিত

† কালীপ্রসন্ন সেধিন দেহত্যাস করিয়াছেন বলিলেই হয়, প্রায় সকল সাম্থ্রিক-প্রেই তাঁহার মৃত্যু-লংবাদ প্রচারিত হুইয়াছে, কিছু ইতিমধ্যেই তাঁহার হুত্যু-ভারিব গ্রেষণার বিষয় হুইয়া ইাছাইয়াছে। কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয়ের অব্যাপক ও বালালা সাহিত্যের ইতিহাসকার—ছঃ প্রকৃমার সেনের মতে তাঁহার মৃত্যু-লন "১৯০৭," আবার প্রবল মিজের অভিবান অন্নারে উহা "১৯১১"!

৬ বৈশাৰ ১৩০৭ ভারিবের 'অধুসভান' পত্তে "সাহিত্য-সন্মিলন" প্রবন্ধ প্রটব্য।

ভ অগ্রচলিত বিশ্যা কথা, কাখারত বর্ণ, দেবতার বাহন, বুংপভিবাদ, বানবজীবন, দিনভবিদন।

৬। বিভ্ত-চিল্লা। ১২৮৯ সাল (২৯ বার্চ ১৮৮০)। পু. ১৪২।

স্চী: অয়ত, ঐহিক অনরতা, বিরাট পুরুষ, রাজা ও রাজ-শক্তি,জীবনের ভার, মৃত্যু ও নিতবার, গোক্রঞ্ন, আঙ্ন আর আকাজন, সাহিত্য ও জাতীর বিকাশ।

१। প্রমোদলহরী অধবা বিবাহ-রহস্য। ১৮ চৈত্র ১৩০১ (ইং ১৮৯৫)। পৃ. ১৮০।

স্থচী: বিধাদ (প্রদাপ), বিবাদ (ব্যাকরণ-রহস), খোষটা, মুধরা ভাষ্যা অধবা সুদ্বিবাদ, বিধাদ কভ প্রকার।

৮। जिल्हा वह जरना रहिशास्त्रत कीन्य-रखः। ১৮ स्रायन ১७०२ (১१ जाग्रे ১৮৯৫)। शृ. २२२।

ঠাকুর ছবিভাগের ভক্তিলীলাম্বক বিচিত্র জীবন-কথা।

>। নিশীধ-চিন্তা। আহিন ১৩০৩ (২১ সেপ্টেম্বর ১৮৯৬)। পু. ১৮০।

স্থচী: বাত্রিকাল, নদীর কল, ছংবে সুব, ভারা স্থার সুল, বিরহ, স্থাপার হলনা, চপ্রবদ্ধ।

১০। বা না বহাশক্তি। আরহারণ ১৩১১ (১৪ আল্ডারি ১৯০৫)। পু. ১০৪।

১১। कानकोर जरि-नरीका। कासन ১७১১ (२० अधिम ১৯০৫)। नु. ১७৪।

১২। ছারাদর্শন (The Philosophy of Apparitions)। বাব ১৩১৬ (ইং ১৯১০)। পু. ৩৮/০+২৭৬।

"এট্যেশচন্ত্র বস্তু কর্ত্তক সম্পাদিত।"

পাঠ্য পুত্তক ।—কালীপ্রসর করেকবানি শিওপাঠ্য পুত্তক বচনা করিয়াহিলেন; সেওলি—'কোমল কবিতা' (ইং ১৮৮৮); 'বর্ণপাঠ' (ইং ১৮৯৬); 'আঘর্ল' (বড় অক্তরে বুল্লিত ঘেবিরা লিবিবার বিবিদ্ন পাঠ); 'ভারতবর্ধের ইতিহাল,' ১ম ও ২র বঙ (ইং ১৯০৯) ও 'সুপ্রভাত'।

অপ্রকাশিত রচনা

কানীপ্রসংঘৰ কতক গুলি অপ্রকাশিত রচনা,—প্রবন্ধ, ক্ষিতা ও গান তাঁহার স্বৃহার পরে 'ঢাকা রিভিউ ও সন্মিলন' (১৩২২, ১৩২৫-২৮) ও 'বানদী ও মর্ম্মবাদী'তে (১৩২৫) প্রকাশিত ভ্রমছে। এগুলির মধ্যে "নাটক" প্রবন্ধটী ('ঢাকা রিভিউ ও সন্মিলন,' কার্তিক-পৌর ১৩২৮) বিশেষভাবে উল্লেখবাল্য।

ক্লালীপ্ৰসন্ন ও বাংলা-সাহিত্য

ৰাংলা-সাহিত্যে কালীপ্ৰসহ তাহার চিতা ও ভাষার অপুর্ব नमब्द करन व्यव स्वेश वार्यन । काराव व किल 'क्षवाल-क्रिका' 'मिक्क-हिका' 'निकीय-हिका' वारना-नावित्काद व्यवना नन्नम । কালীপ্রসম্মের রচনার বৈশিষ্ট্য সম্বন্ধে আলোচনা করিতে সিরা क्खार्मचत कर निविद्यास्य :-- "प्रकृत प्रावशादके अकृति अरक्खा **ब्रवर ब्रक्डि वृत्रभञ्ज पारक। कालीश्रमदश्च मश्क्र विल**----মাতৃভাষার দেবা, আর মৃগমল্ল ছিল--ভৃদ্ধি এবং দৌ ংহার अयादिन । - - स्थान-द्वर आहिए। भावक अक विम आयादिक किशाबितन-'बाबाद कीरानद दल रक-मारिएल क्रि बर সৌশর্ষ্যের একত সমাবেশ করা।--- ভব্দি বিভাগাগতের, আর (मोरूश देशदकी निवम्धितंत्र चर्चार विकाहसः, चक्रश्रसः, চন্দ্রনাথ প্রভৃতির।' বাহারা কালীপ্রসল্লের তত্ত্বভাল এবং छाशाब बिह्छ खरवामि शार्र कविबार्यन, छाशाबार बारनन रव. ভিনি ভাষার ভভ-সংক্রজণে কেমন যথুবান ছিলেন। সেই-ইা-স্ট্রীতেও তাহার চেটা যথেই ছিল। কালীপ্রসর তথিত উপাত্ত দেবভার ভার ভভি করিভেন, আর পৌশ্ব্যকে প্রিয় প্রথদের ভার ভালবাসিতেন। সৌক্রা ভ'ছর বিরোধী হইলে ভিনি কখনই তাহার প্রশ্রম দিতেন না। ফলত: ইছাই কাগী-প্রসল্লের বিশেষত্ব। ...ভিনি সর্বাদাই বলিতেন, 'মাত ভ:ধার मिता करिएक कहेरन, ककिस महिक कहा कर्सता अवर मरू-अरहार्थ विरमध मावश्वका चावश्रक। चन्छ मरू ব্যবহার করিলে, মায়ের অবমাননা করা হয়।' মাতৃভাযার প্রতি কাদীপ্রসংহর প্রবাচ তক্তি এবং একাম্বিক অমু-রাগের নিদর্শন-খরণ 'সাছিত্য-স্থিলন'-স্পাদক ছুর্গাদাস লাহিডীকে দিবিত তাঁহার একবানি পত্রের অংশ উদ্ভত করিয়া প্রসলের উপদংখার করিভেছি :----

"বাদালা ভাষা বেমন আপনার, ভেমন আমার এবং
সেইত্রণ আমাদিনের প্রভ্যেকেরই মাতৃধকণা। বিখ্যাত
দার্শনিক অগন্ত কোন্ সম্প্র মানব ভাতিকে একট মন:ক'লত
দেবতা-জানে ব্যান ও আরাবনা করিতে উপদেশ করিয়াছেন।
আমার মন:কলিত দেবতা মাতৃর্বাণী বলভাষা। আমি প্রায়
অর্জ শতাকী কাল বলভাষাকে মনে মনে মা বলিয়া ভাকিরাছি—না বলিয়া ভাল বাসিয়াছি, এবং মাতৃজানে—আমার এ
কুল ভাদরের পরিমানে পূলা করিয়াছি। আরু বাহায়া ভক্তি ও
প্রভার সহিত বাদালা ভাষার দেবা করিয়াছেন, উাহাদিগকেও
নায়ের স্পভান মনে করিয়া প্রাতৃসভাষণে সন্ধান করিয়াছি।
১ই কার্ডন ১০০৬।" ('অন্তস্কান', ৬ বৈশার ১০০৭)

বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

শ্রীবিনয়ভূষণ দাশগুপ্ত

তৃতীর অব্যাধ : আইলান্টিক মহাসাগর অভিক্রম
স্থেনি ২৮শে কার্ত্তিক, ১৪ই নবেশ্বর বৃহস্পতিবার । সারা
বিষ টপ টপ করিরা বৃষ্টি পঞ্চিতেছে। ছুকিনে প্রিক মাত্রই
পৃহ-প্রত্যাবর্ত্তনে ভ্রান্থিত। জীল ও জ্পধারী দিবালোক
নির্বাণ হইবার অনতিকাল পরেই আমি হোটেল হইতে বিদার
প্রহণ করিয়া বিমান কোম্পানীর সহরের আশিসে উপনীত
হইলাম।

কোম্পানীর বাস যাত্রিদল লইয়া ৭টা ৩৫ মিনিটে আপিস ত্যাগ করিল। প্রায় সাঞ্চে আটটার আমরা পুল বিমানঘাটতে পৌহাই। পূলিশ ও ৩%-ঘাট অভিক্রম করিয়া, চা
পানে পরিভ্রম হইয়া রাজি দশটায় বিমানে উঠি। সাঞ্চে
দশটার বিমান উভিতে আরম্ভ করে। কুকা মজির মেখে ঢাকা
"বিশ্বণ রাভ"। সাঞ্চে হ' হাজার কুট মঁটু দিয়া ঘণ্টার ২৭৪
মাইল বেগে উভিয়া রাজি বাংটার আইরিশ হানীন হাষ্ট্রের
ভানন বিমান-ঘাটতে অবভ্রম করি। ভানন আটলানিক
মরাসাগরের তীরে অবস্থিত। এবান হইতে বিমান মহাসাগর
অভিক্রম স্কু করিবে। এবানে যাজীখের প্রচুর বাইবার
বাবধা ছিল। ভিন্মাবন, চিনি ও বিধে ভালা মেষমাংসের
প্রাচুর্যা দর্শনে অনটন-ক্রিষ্ট ইংরেজ নরনারীগণ আনক্ষ চাপিয়া
রাবিবার চেটা সম্পূর্ণরূপে পরিভাগে করিলেন।

রাত্রি প্রায় আড়াইটায় বিমান উভিতে সুক করিল।
বিমানটি ম্পিড্বার্ড শ্রেণির। ইরক প্রেণীর বিমান অপেকা
অনেক বড়; কিন্তু গর্জন কম। চারিটি ইন্তিন। চল্লিটি
আদনে কৃত্তিকন যাত্রী। প্রত্যেককে পাশাপালি চুইটি করিয়া
আদন কৃত্তিকন যাত্রী। প্রত্যেককে পাশাপালি চুইটি করিয়া
আদন কেওরা স্ইরাছে। আদন গুলি বেশ প্রশাভ। চুইটি
আদনের মর্বার্ছা হাজলটি উঠাইয়া লওয়া যায়। প্রত্যেক
আদনের পিঠ ইক্ষামত উঠান বা নামান যায়। যাত্রিগ
কর্মণ উল্লেখন আদানের পিঠ নামাইরা আরাম করিভেছেন,
কর্মণত বা আদনব্যের মধাবর্জী ছাতলটি ভূলিয়া লইয়া ছুইটি
আদনের উপর একট্ট লগা হইভেছেন। একটি ইুয়ার্ড ও
একটি ইুয়ার্ডেণ যাত্রিগণের স্থা-খাক্ষ্যা ও আহার সম্বন্ধে

আইগানিক সহাসাগরের উপর দিরা উভিতে ই। আই
হাজার কুই উচ্চে ঘন্টার প্রার হুই শত মাইল বেগে
বিষান সগর্জনে মুটরাছে। একঘেরে গর্জন ও পুচীতেল্য
অভকারের মধ্যে গুবাইরা পভিয়াই। যাত্রিগণ সকলেই
নিরাক্ষর। যধন বুম ভালিল তখন আমার যভিতে সাভটা।
উপরে যক্ষ উলার নীলাকাশে কৃষ্ণা যতীর টাল উজ্লেল
লাবণ্য বিভায়ন করিতেছে। কালপুরুষ ও অভ হু' একট

ভাৱা পরিকার দেখা বাইভেছে। মীচে পুঞ্জীভূত মেদ ও কুয়াশা মহাসাগরকে আবৃত কবিয়া বাৰিয়াছে। এত পরিকার আকাশ পূর্বে কবনো দেবিয়াছে বলিয়া মনে হয় লা। বিমানে বে মহাসাগর অভিক্রম করা কভিণর বংসর পূর্বেছ:সাহসিক মুবকের বর্গমান্ত হিল, আল ভাহা ভন্তা-চুহিত-দেত্রে এ প্রসন্ম আকাশেরই মল প্রক্রাচিতে অভিক্রম করিতেছি।

সাক্তে আটটা বাজিতে প্রাধিগতে ইধং রভিমাতা বেধা দিল। টাদ ও তারাগুলি বীরে বীরে নিতাত ত্ইতে লাগিল। নীচে মেখ্যালার মধ্য দিরা নীলাযুৱাশি গৃষ্টগোচর ত্ইল। সাড়ে ন'টা বাজিবার আগেই পুবের লাল আভা কাটবা গেল।

পुर्काप्तराष्ट्र जाकारमञ्ज गामिक्छै। जश्म शतिकात स्टेन। णाशां किकिर छेर्छ मामा वर्तत दका कि त्या (मन मिन। ক্ষমশ: এ বৃষ্ণাত মেৰে লাল রঙ কৃষ্টয়া উঠিল। বিভিন্ন রভের (बना कुरू इहेन। छक्ष-काक्यवर्ग (धवक्रवामन (यस चूवर्ग-मिकिक क्रेका प्रशासिकारक अकारमा करियात अक नमारमा ৰ্ণাঞ্চ বিহাইভেছেন। কি হডের বেলা আর কি সাব্দের আড়বর। চোব কেরানো যার না। ঠিক দণ্টার শীলাবুংশি (कप्र करिय पूर्वा केशर बाज-श्रकान करिएन। प्रद्यांत नरहै। क्षक्षेत्राहत इट्टल नाह विभिन्न नानिन । एवनक पूर्व देवर नवा আকারের। সম্পূর্ণ গোলাকার হইতে আরও ছ-ভিন বিনিষ্ট লাগিল। তথ্য বাল-সুৰ্ব্যোদ্ধাসিত আটলাণ্টিক মহাসাগ্য 📽 আকৃশের সুনীল রূপ সম্পূর্ণ সুপ্রকট। চারি দিকে প্রবছত। বিরাজ করিভেছে। আকাশ্ মহাদাগর ও সমন্ত প্রকৃতি শাস্ত। इहे भुछ माहेन (वर्ष हम्ब विमान्ध (यन वित । नाकानस्त वस्तृत्व चाकाम-(धर्वा महाभागत्वत मत्त्र चाहे शावात कृष्टे উৰ্ত্তে প্ৰকৃতিৰ অৱ:পুৱে বসিয়া আছি। বাত্ৰে চঙ্গকিরণ-বিধোত নীলাকাশ যধন হাস্যক্ষটা বিভাৱ করিতেখিল, তথ্য ষেঘলোকের উর্ধ্বেবসিয়া ভাবাবেলে সেই ক্লণরালি উল্ভোপ ক্রিভেছিলার। প্রাভ:কালে সমুদ্রমাতা বরিত্রী ধবন বালপ্রব্যের शिक्तत-विक भीमाकाण-भीमास बातव कदिया मवकरण **जाय-**क्षकान कविरमन, उपम स्मारमारक के र्यं वाकिशाय-"अञ्चय कट्य इट्यक्टि काङ्गारम ज्ञात कावशक (मारम ।"

লঙন সময় দশটার ঠিক অর্বোদরকালে বিমানে প্রাভবাশ পরিবেশিত হউল। মহাসাগরের উপর দিয়া চলিরাছি। শীচে মন্থ শীলাখুবাশি। উপরে ও চারি দিকে শীলাকাশ। নাবে বাবে পাতলা মেবের সক্ষা। সহসা ছলভাগ দৃষ্টিপোচর হউল। বুলর বছুব প্রাভর। মহাসম্ম বেন পৃথিবীর সমভ মানি বোয়াইরা দিয়া ভাহাকে বীরে বীরে আদর ক্রিভেছেন। লঙ্গ-সময় একটা প্রর বিনিটে আটলান্টিক মহাসাগরের প্রিম্বার্টি পেঙার বিমান-বাটিতে অবভরণ ক্রিলাম।

পেতার নিউফাউওল্যাতে অবস্থিত। সমুদ্র-তীরবর্তী অমুর্বার ভূমি। ইভভভ: ছোট ছোট পাছাড়। সবুৰের রেখা দেবা যায় না। বহুক্ত ক্লের উপর দিরা উভিবার পর পৃথিবীর পর্বত-সঙ্গ ধুসর রূপ বেশ লাগিতেছে। গেভারে মধ্যাহ-ভোজন সমাপন করিয়া লঙন-সময় আড়াইটায় পুনরায় উড়িলাম। **শীচে ভবু সাধা যেবের হাশি বিভীর্ণ সমতল ক্ষেত্রে বিছালো** একট বিরাট করাদের মত পভিষা আছে। উপর হইতে ভাহার 'পর এবর রৌদ্র পতিত হওয়ায় মেধমালা ভারও ভত্র দেবাইভেছে। উপরে পরিষ্কার নীলাকাশ। ভাজার কুট উচ্চে ঘণ্টার দুই শত শীর্ষটি মাইল বেলে উভিতেছি। নিট শাউওলাও পাড়ি দিয়া একট সমুদ্রের ৰাভিত্ৰ উপত্ৰ আসিলাম। ৰাভি পাত্ৰ হটতা নোভাঞাটয়াত্ৰ উপকৃদ দিয়া উভিতেছি। দূরে সমূদ দেবা যাইভেছে। উপকৃষভার জ্পা, স্যাত্সেতে, অকুর্বর ও লোক্বস্তিপুত। আর একট প্রুটের বাড়ি পার ছইরা আমেহিকার যুক্তরাষ্ট্রে পভিলাম। লওন সময় প্রায় সাতে পাঁচটায় নিউ ইয়কের লাগাড়িয়া বিমান-ঘাটতে অবভরণ করিলাম :

তক, পুলিদ ও স্বাস্থ্য বিভাগের ঘাট অতিক্রম করিতে প্রায় আব্যকী পেল। আমার ক্ষম ওয়াশিংটনের টেকিট লইরা এক কন আমেরিকান তর্মগোক বাহিরে অপেকা করিতেছিলেন। বাহিরে আসিয়া তাঁহার সহিত দেবা হইল। আমার ব্যাতিত তবন বৈকাল লোৱা হয়টা। তবন হানীয় লমর সওয়া একটা। ঘড়ি পাঁচ ঘন্টা পিছাইয়া দিলাম। পার্শ্ববর্তী একটি ভদ্রলোক বালয়া উঠিলেন —আপনি দেবিতেছি কাঁকি দিয়া পাঁচ ঘন্টা সমহ লাভ ক্রিয়া লইলেন।

আমি (সহাত্তে)---আবার আগামী মাসেই অস্ট্রেপিয়া বাইবার সময় সুদসহ এই লাভ শোব করিতে হইবে।

ভদ্রলোকট (সহাজে)—এত নীড়া এই বলিয়া চলিয়া গেলেন।

যে ভদ্রলোকট আমাকে অভ্যৰ্থনা করিতে আলিমাছিলেন তিনি বলিলেন, এখন মাত্র দেড়টা। আপনার গুরালিংটনের বিমান চারটার ছাভিবে। এখন মধ্যাহ্নভোজন সমাপনাছে খানিকটা বেড়াইয়া সইতে পারেন। এই বলিয়া গুরা-লিংটনের টিকিট আমাকে দিয়া দিলেন। আমি বলিলাম, এখানে এখন মধ্যান্ত-ভোজনের সময় বটে, কিছু আমার মধ্যান্ত-ভোজন গেড়ারে হইয়া গিয়াছে, আমি সুধার্ড নই। মালের বঞ্চছা করিয়া বানিকটা ছুরিতেই চাই। অন্তলোক আমার লগেক লগুনের বিমান হইতে বালাস করিয়া ওয়াশিংটনের বিমান-কর্ম্মচারীদের ক্লেকতে দিলেন। ভারণর আমাকে চা ও "হট্-ভগ্" বাওরাইয়া আগ্যায়িত করিলেন। "হট-ভগ্" ছোট এক টুকরা পরমবরাহ-মাংস সহ ছোট এক টুকরা রুদ্ধী। রাভার বা মাঠে যাইয়া আমরা বেমন চানাচুর বা আল্ভাক্ষা বাই, আমেরিকানরা সেইরুপ "হট-ভগ্" বায়। করেকদিন পরে কাগকে দেবিয়াছিলাম যে প্রেসিভেন্ট টুন্নান বেলা দেবিতে গিয়া বেলার মাঠে সবার সদে "হট্-ভগ্" বাইপেন।

"र्हे-छन" बाहेश अधालाकहैत महिल देलखल: पूर्वणाम। নির্ম্মল আকাশ। চমংকার হোটা। এমন সুকর দিন ভারতবর্ষ ছাভিবার পর দেবি নাই। সাগাভিয়া বিমান-ঘাট পুৰিবীর বুহুত্তম বিমান-খাট ৷ এক অংশ বিদেশে যাতায়াতের বিমানের क्रम अवर खन्न खन्न खाकास्त्रीन दिश्हरात क्रम निधि । জনবরভই যাত্রী লইখা বিমান উড়িতেছে বা নামিতেছে। चार्यिको बुहर (४५। चाइछान चांद्रकरार्वेद (४५६न। प्रान ख बादभारम व्यादशेदकावाभीका शृश्वितारण अस्तरक्र । कारकरे এবানে বিমানের যাতায়াভ খুব বেশী। নিউ ইয়ক সহরের (कक्षप्रम विभाव-चाष्ठि कहेर्ड ১২।১० भावेश कहेर्व। दिशाव-बाहित हाति शिटक युविका क्षप्रशाक्त कि विके विभाव अथन कतिशा श्रवाणिश्वेदनव विमादन हरिश्राम । विमानक विदाह কন্টিলেক্সন শ্রেমীর। এই শ্রেমীর বিখানই নাকি এখন সর্কল্রেষ্ঠ বলিয়া পরিগণিত। বিয়ানটিতে চারটি ইপ্লিন। পঞ্চাশটি আসনে পকাশ ক্ষম যাত্রী। এক ক্ষম ওতাববাধিকা যাত্রীদের সর্বদা তভাবৰান করিতেছেন ও আহারাদি পরিবেশন করিতেছেন। নিউইয়ৰ্ক হইতে ওয়ালিংটন ছই লত মাইলের কিছ বেৰী। যাইতে এক ঘণ্টা লাগিল। চাবিটায় রওনা ধইয়া ঠিক পাঁচটায় श्रमानिरहेन (नीकिमाय।

লঙন হইতে নিউইয়ৰ্ক পৰ্যান্ত তিন সক্ষে ৩২৭৩ মাইল পৰ্য উছিয়াছি। গণ্ডন হইতে জানন ৩৭২ মাইল এবং জানন হইতে পেঙার ১৯৭৫ মাইল এবং গেঙার হইতে নিউইয়ৰ্ক ১২৬ মাইল। জানন ও গেঙার আটুলান্টিক মহাসাগরের উভয় ভীরে আৰ্ছিত। জানন হইতে মহাসাগর অভিক্রম পুরু হর এবং মহাসাগর পাছি দিয়াই গেঙার। নৈশভোজনের পর সঙ্গ ভ্যাণ করিষা প্রধিন মব্যাক্ত-ভোজনের সময় বিমান নিউ ইয়র্কে উপনীত হইল।



কবি শিবনাথ শান্তী

শ্রীসরোকেশ্রনাথ রায়

বীহার। পভিত শিবনাধ শাস্ত্রী মহাশয়কে দেবিয়াছেন ও ভাঁহার উদ্ধাত আবেগময়ী বক্তৃতা প্রবণ করিয়াছেন, কিখা ভাঁহার অলপিত রচনাবলী বা উপদেশমালা পাঠ করিয়াছেন, ভাঁহাদের মনে স্বভাবতঃই এই কথা উপস্থিত হইয়াছে যে, শাষ্ট্রী মহাশর যদি আক্ষামান্তের প্রচারকাথ্যে ভাঁহার সমন্ত শক্তি নিয়োগ না করিয়া ভাগার কিয়দংশ সাহিত্যে একট অভি স্পরিভিত স্থান অবিকার করিতেন এ বিষয়ে কোন সংশয় নাই।

হেমণতা সরকার লিখিত শাস্ত্রী মহাশধের জীবনচরিত হইতে কানা যায় যে, রাজনারায়ণ বসু মহাশয়ও এইকপ খেদ প্রকাশ করিয়াছিলেন। বস্তু মহাশয় শাখ্রী মহাশয়কে नवीनहृक्षः अक्षत्रक्षात् बाक्क्ष यूर्याभावाशः अद्व छत्रानीहृत वाक्षाणी कविरामन भगकण गरन कदिएएन, अवर स्वरेणण তিনি বলিয়াছিলেন, "হায়, কি পরিতাপ, সাধারণ ত্রান্ধ-সমাজের যাভায় পড়িয়া লিবনাবের সাহিত্যিক জীবন বর্ব हरेश। এত वर्ध कविक बाक्षमभाक माविया किलिल।" দাহিভার দিক দিয়া দেবিতে গেলে ইহা সভাই পরিভাপের বিষয় মনে হয়। কিছ শালী মহাশরের নিজের এ বিষয়ে (काम (काक किल ना । जिनि लिविशास्त्र - "जामात कैवरमत লক্ষ্যপ্রাধ মুবক্ষুবভীর মনে নৈভিক্বল, বর্মানুরাগ উভীও कविया याख्या। विवाणां (गर्वे बिटकरे व्यामाटक महेशा আসিয়াছেন। আমার বক্তা, আমার এছাবলী, আমার कविछ। भक्तबहर बहे बिटक शिंछ। आधि स्थान वाद स्थानभाव मत्न मत्न अहेक्ष्ण अर्थ क्विशाष्टि, चाम्ना, यनि चाभाव अधिक সমুদ্ধ এছ পুঞ্জিয়া ধায় এবং আমার নামগৰ না বাকে তাতে আমি ছ:বিত হই কিনা। আমি যনকে বেল পরীকা করিয়া দেবিয়াছি, ভাতে আমার হ:ব হয় না, কারণ আমি যে পরি-মাৰে জাতীয় জীবনে নৈতিক বলের সকার করিতে পারিয়াছি শেইটুৰু আমি। আমার নাম বাকুক না বাকুক, সেই পরিমাণে আয়ার জীবন সার্থক হইয়াছে।"

সূতরাং এই শ্রেণীর ক্লোভের বিশেষ কোন অর্থ নাই।
লিবনাবের শ্রেষ্ঠ কাব্য হইতেছে তাঁহার জীবন। জীবনের
প্রারম্ভ হইতেই তিনি প্রতি মৃহুর্ছে তাঁহার জীবনবীশার তারপ্রতি বাঁৰিয়া আসিয়াহেন, যাহাতে তাঁহার সমগ্র জীবনের
সভীরতন্ব আকাজ্ঞা ও প্রতীত্র অন্নভূতিসকল পরিপূর্ণরূপে
বাহত হইয়া উঠে। তিনি চাহিয়াছিলেন, সত্যের যে জুর
আহ্বান, প্রেমের যে নিবিছ বিনিমন, পবিত্রতার যে উন্নভ স্পর্ল,
সক্লেই বেন হানিজ হ্ন সেই বীণার। তাঁহার ক্লনা, সাধনা

ষারা তিনি চাহিষাহিলেন আমাদের বাঙালী সমাধকে একট শ্রের্ড কাব্যে রূপাছবিত করিতে। তাই রূপলোকের ক্ষরচনাকে পশ্চাতে কেলিয়া তিনি সমূবে চলিয়া গিয়াছিলেন এই বস্তলোকের মব্যে তাঁছার জীবনের পরম স্থন্দরকে প্রতিষ্ঠিত করিতে। তাঁছার কাব্য ছিল তাঁছার প্রতিদিনের আশা ও আকাক্ষার প্রতিষ্কৃতি। জীবনে তিনি হিলেন প্রচারক। অলক্ষিতে তাই তাঁছার রচনাও অনেক ক্ষেত্রে ছইরা উঠিয়াছিল প্রচারেরই আর একটা অলবত্রপ। সেই জ্বা তোঁক তাঁছার কাব্য অপেকা তাঁছার জীবনকে বেশী মূল্য ধিয়াছিল।

অবরু এ কবা সত্য যে, সাহিত্যক্ষে উচ্চার যা দান তাহার সমুচিত মৃল্য তিনি লাভ করেন নাই। তাহার কবিতা, ইতিহান ও জীবনী, তাহার উপলাপ ও বর্ম এছসমূহ বাংলা-সাহিত্যের ইতিহাসে তাহাকে একটি প্রবৃত্তী ছান দিতে বাবা। কিছ সে-খান যে তিনি লাভ করেন নাই তাহার হুইট কারব আছে। প্রথম, বাংলা সাহিত্যের যাহারা পসারী তাহারা খনেক বিষয়ে জল্প-মোহাছও বটে। বাংলা সাহিত্যে রাজ্ম-সমাজের দানের কবা উল্লেখ না করিয়াও বাংলা সাহিত্যের "সম্পূর্ণ" ইতিহাস প্রকাশিত হুইতেছে। দ্বিতীয়, শাল্লী মহাশব্যের বর্মপ্রস্থ সকল পাওয়া যায় বটে, কিছ ভাহার কবিতা ও উপলাস হুল্ভ হুইলা পড়িয়াছে।

যাহাই হোক শান্তীমহাশরের রচনা যে কতবানি আদরশীয় তাহা বিচার করিবার সময় আসিয়াছে। এই উদ্দেশ্ডেই বস্তমান প্রবছে আমি তাহার কবিতার কিঞ্চিৎ আভাস দিব বলিয়া অভিপ্রায় করিয়াছ। কিছু তাহার কবিতা ও অপরাপর দেবার মহ্যে এত অদাসি যোগ আছে যে প্রসম্পত্ত সেন্প্রনির উল্লেখ না করিলে তাহার কবিতার রলোণসন্ধি সম্পূর্ণ হুইবে না।

শালী মহাশয় একাবারে কবি, ওপভাসিক, এবছকার, ঐতিহাসিক, ব্যাব্যাতা ও ধন্মতাত্ত্ব হিলেন। নৈতিক প্রেরণা ও আব্যান্থিক উদ্দাপনা তাহার সকল রচনাকে অস্থাবিত করিরছে। নৃতন সভ্যের উদ্দেশ আলোকে স্থা চেতনাকে লাপ্রত করা ও মানব-মনকে উচ্চ প্রামে উগ্লীত করাই তাহার সকল প্রচেটার বৃশ হিল। প্রের মধ্যে যে পবিত্রতা, বিচ্ছিল্লের মধ্যে যে প্রত, বজের মধ্যে যে ব্রহৎ এবং সত্য, প্রেম, পবিত্রতা তাহার সকল লেবার বৃশ উপাধান।

সাধারণত: তিনি "ৰেক বট", "রামতত্ম পাহিণী ও তং-কালীন বদ সমাক" ও উচ্চার "আত্ম-ছরিতে"র কচ ছণনি চিত। কিছ এতন্যতীত তিনি আন্ত করেকবানি উপনাস ও বর্ত্মপ্রার রচনিতা, ববা—মরনতারা, র্গান্তর ও বিববার ছেলে, বর্ত্মণীর রচনিতা, ববা—মরনতারা, র্গান্তর ও বিববার ছেলে, বর্ত্মণীবন, গৃহবর্ত্ম ও প্রবহাবলী। তাঁহার বহ উপনেশ এবং বস্তৃতাও অন্থানিত হইরা প্রভাকারে প্রকাশিত হইরাছে। কাব্যপ্রহের মধ্যে "নির্বাসিতের বিদাপ," "পুশান্তা", "পুশান্তাল", "হিমান্তিক্সম" ও "হানামনীর পরিপর" উল্লেখনাগা। তিনি ইংরেজীতে যে সকল লেখা প্রকাশ করিরাছেন ভালার মধ্যে The Man I have seen ও The Histroy of the Brokmo Samaj স্প্রাণিত।

তাঁহার কবিতাদকল পাঠ করিলে বভ:ই এই কথা মনে আসে যে তিনি বভাবকবি ছিলেন। কবিপ্রতিভা তাঁহার জনগত। তাঁহার কবিতার আর যত দোষই থাকুক কেছ বলিতে পারিবে না যে ইছা চেষ্টাপ্রস্ত ও কটকল্পনালামে ছুই। তাঁহার কবিতা ছিল বতকুঠ, বেগবতা, আরেমগরির গলিত বাতুলোতের মত নিকান, অধমনীয়। তাঁহার সতের বংগর বয়সের লেখা 'নির্কাদিতের বিলাপ' ছইতে আরম্ভ করিয়া তাঁহার সকলেম কবিতাপ্রস্থ 'ছায়ামরীর পরিশর' পর্যান্ত সর্কার্মই এই বাধাহীন গতিশীলতা তাঁহার রচনার প্রধান লক্ষণ মনে হয়। নির্কাদিতের বিলাপের শেষ পর্কা 'হরিষে বিষাদে'র করেকটি পঙ্জি দেখুন:

শৃষ্ঠ শৃষ্ণ নেত্রে ছেবে পাণলের প্রায়;
আঞ্, কেশ, পরিক্ষণ ধূদর ধূদায়।
এদিকে দিবদ শেষ ডুব্ ডুব্ রবি,
আঁথি-মুছ-মুছ যেন প্রাঞ্জির ছবি।

উাহার শ্রেষ্ঠ কবিভাগ্রছ 'পুপামালা'র প্রায় প্রভা্তক কবিভাতেই এই স্বভ:ক্ষ্ট গভি লক্ষিত হয়। এই প্রছের "উংসর্গে" প্রায় প্রভােক কলিই এই সাক্ষ্য বহন করিতেছে:

চাই না সভ্যভা, চাষা হয়ে থাকি
থেও ধৰ্মধন প্ৰাণে পুৱে ৱাবি!
হায় জনভ্যি | পুণাভ্যি ভূমি
থেও পুণাবারি দক্ষ প্রাণে মাবি!

তাঁহার কবিভাগকলের মধ্যে 'হারাম্যীর পরিণয়' সর্বা-শেকা নিঃই। ইহা ১৮৮১ সালে দিবিত। কবি এখন প্রৌচ্ছে উপনীত ও সহস্র কাবের চাণে তাঁহার কাবাচর্চা উপেক্তিও। কবির প্রাণ সকীব বটে, কিন্তু কবিকঠ অভ্তাপ্রস্থ। কবিতা এখন নিরাভ্রণ হইষা উঠিয়াছে:

ক্লের বনে ক্ল-পুষারী বেড়ার সেখেনে,
লাকি ভারে বতন করে কতাই ক্ল তোলে।
ক্লের ডালা, ক্লের মালা, কাণে ক্লের ছল,
সোণার হাতে ক্লের বালা, খোপ:-ভরা ক্ল।
কিন্ত এই নিরাভরণভার মধ্যে প্রাণাঞ্জির মাণ হর নিঃ
নির্কাষে—নির্কাষে—ধোর গভীর নির্কাষে,
নির্কাষি গাইছে যখার;

উপলে শৈবাল-শয়া পাতিয়া গোপৰে, তাতে ৬য়ে প্ৰকৃতি ঘুৰায়।

শিবনাথ যে মুগে কবিতা গিবিতে আরম্ভ করেন সেই
মুগ ছিল ছেনচন্দ্র-নবীনচন্দ্রের । মাইকেল মধুত্দধের প্রভাব
তথনও জীবস্ত । এই সকল প্রভাব ও সংস্পর্শের মধ্যে মাধ্য
হুইয়া শিবনাথও তাহার সমলামধিকদিগের মত নৃতন নৃতন
ছুল, পদসম্বী ও পদছেদ বাংলা কবিতার প্রয়োগ করিয়াছেন । পরার, অনিফ্রাক্র, ত্রিপদী, প্রভৃতি ছুল ও বটুপদী,
অইপদী, দলপদী প্রভৃতি বছবিধ পদভছে ব্যবহার করিয়া
বাংলা কবিতাকে সমুদ্ধ করিয়াছেন । মেখনাদবধ কাবোর
উদান্ত গলীর সূর তাহার কবিতার মেনন আমরা পাই, তেননি
পাই হেমচন্দ্রের বিব্যাত ছুল:

কোট বিশ্ব, কোট চল্ল ভারা, কোট পুথী, কোট শীব, গুরু থার ভয়ে, দেই তুমি ! শামি কাট কি শার বণিব !

4441

ক্ষাত্রের ভরবার সঞ্করে সাধ্য কার ।

ভূতলে স্টাবে আক ভূবর নিবর ।

গক বাকী রব রবী কে পাবে নিভার বে

কে পাবে নিভার ?

ইংরাজী কৰিভার সঞ্চে নুভন পরিচিত এই ৰূপ বছবিধ পাশ্চান্তা হব্দ বাংলা কবিতায় আমদানী করিতে আরম্ভ করে। क्नज: এই पूर्वा वह अन्दि । ज कविजा देशदाकी एक छ অলম্বারের অনুবৃত্তি মাত্র। কিন্তু এই যুগেই আবার নৃতন নৃতন ভাব আসিয়া শাতীয় শীবনকে প্রভূতভাবে শালো'ড়ত করিভে আরম্ভ করে, কলে বাংলা সাহিত্যও নুতন ভাবধারা ছারা व्यवशानिक एषा। अहे पूर्व अरकारद्व पूर्व। अहे अमर्थ नृष्टन ৰৰ্শ্বভাব ও স্বদেশপ্ৰীতি বলীয় সমাৰকে আন্দোলিত কৱে ও বাংলা সাহিত্যকৈ ভাহার নিড়ত কুপ্পত্ হইতে লোকালয়ের কোলাহলের মধ্যে আনিয়া উপগ্রিত করে। মধুম্বনের कावादक कलको नशकिनदर्शक चाहित चकिवास वाना ৰৱা যাইতে পাৰে, কিন্তু হেমচলের "বান্ধ রে শিকা বান্ধ बहे ब्राट्ट का नवीनहरक्षत "भगामित पृष्ट"रक खब् (भोक्याविमानी कवित कवना विमान मत्न करा याह ना। যাছা হেম্যজ্ঞ থ নবীনচজের পক্ষে সভ্য ভাছা শিবনাথের পকে অবিকতরভাবে সভ্যু কেন্দা তিনি ছিলেন সেই শৃতন **ट्यानवादाद अक्यन विभिक्षे जावाहक, मिरे जाल्लामध्यद विभिक्षे** ৰেতা, সেই সংগ্ৰাষের বিশিষ্ট যোগা। বৃহক্ষেত্রের অভ্যতা বসিল্লা ভিনি কাব্য রচনা করিলাছেন। কাজেই তাঁখার ক্ৰিভাৰ তাহার সংগ্রাম্মর প্রাণের গভারতম বাবীট মূর্ড क्रेश क्षेत्रिशास ।

বাল্যকাল হউতেই শিবনাথ একটা গভীৱ ভাবাবর্ডের মধ্যে বর্ডিত হইরাহেন যাহার হবি পাই আমরা নর্মভারার ও বুগাভরে, এমন কি মেজবৌ-এ। ইংরেজী নিজার প্রভত্তর ও ভাজবর্ণের আবাতের কলে প্রাচীন সমাতন সমাজের বুর্তেল্য প্রাচীর ভাতিরা পভিতেছিল। যাহা চিরক্তম, সমাতন ও অনভিক্রমণীর বলিরা এতকাল সমাগৃত হইরা আসিতেছিল তাহা হঠাং চারিবার হইতে আক্রাভ হইরা ব্যাকুল আদ্বন্ধনে ব্যাপুত হইল। যাহা এতকাল শৈলভিত্তর উপর স্থাচভাবে প্রতিষ্ঠিত ছিল তাহাকে একদিন বভার কলে ভাগিতে দেবা পেল ও প্রসাহিত্যাক হইরা আবার সৈক্ত-ভূমির নিশ্চিত আপ্রান্ধ সভান করিতে উদ্যত হইল।

वाडामी विश्व प्रशास्त्रत अहे श्रीवनप्रशास्त्रत, अहे शामिश যাওৱার যুগে, বাহারা ভাবনের ভিরত্মির উপর প্রতিষ্ঠিত হইতে চাহিথাছিলেন তাহাদের মধ্যে শিবনাৰ এককন ल्यबान । ज्यापर्न-इन्द्र छाशायात्र निक्षे कि ज्याकात शत्र ক্রিরাছিল তাহার প্রকৃত রূপ বুর্বিতে হইলে আবাদের कितिया घाटेट इटेट डाइाव 'यूनाक्षदा'। निक निक चाचाव मुख्दित भर शाम डी हारियत लाग वासूत कर्शदान कतिवात छेणकम ক্রিয়াছিল। শাল্লী মহাশয় বলিতেন যে তাঁহার জীবনে এমন বছদিন সিয়াছে ঘৰন বিষয়/ফ সোখামী প্ৰমূব বন্ধুণৰে সহিত গোলদীখির আলোক-ভঞ্জ বরিয়া আলোচনা করিতে করিতে রাত্রি প্রভাত হইয়া গিয়াছে। এই সত্য-সভানের যুগে এই ধ্বসিয়া-পড়া ভিতের উপর নৃতন স্ট্রর যুগে বাহারা নিজ निक कौदान चश्रदात चास्तान लाफ कृतिशाहरलन निवनाय জালানের অভতম। এক দকে করাসী মেতিবাদ ও অপর্যিকে অভ প্রাচীনাস্তির মধ্যে মৃত্যু স্কনের আক্তরায় উদুছ লিব-নাৰ ভাৰার কীবনের যাহা কিছু প্রেট ভাষা বিসক্ষন দিতে প্ৰছত হইলেন :----

যার আছে ভাষা, দিক সে রসনা;
কবি যদি বাকে দিক সে কল্পনা;
শিবরাত্মি মত বাক অবিরত
ভালায় সলিতা বসে যত জনা।
হবে না ক্থাতে কেবল লেবাতে
কবিতে হইবে কঠোর সাধনা।

তিনি দরিদ্রের সন্থান। তাঁহার শিতামাতা আঁথুীয়সকল আশা করিয়াহিলেন, বিশ্ববিদ্যালয়ের কৃতী সন্থান তিনি, উপার্জন করিয়া সকলের ছংগ খুচাইবেন। কিন্তু কি ফ্রল ? যে-হারিদ্রের মধ্যে ক্রলাভ করিয়াহিলেন "ক্লবির-শোধিশী পৈতৃক দেবতা"কেই তিনি আলিলন করিয়া লইলেন। কেন্দা তাহার মধ্যে তিনি শ্রেঠতর স্থের সন্থান পাইয়াহিলেন:

আমি বঢ় হংব তাতে হংব নাই
পরে প্রী করে প্রবী হতে চাই;
নিজেত কাঁদিব কিছ মুহাইব,
অপরের আঁবি এই ভিন্সা চাই।

পভ্য,—বন নাৰ চাহে না এ প্ৰাণ,
বনি কাজে আসে ভবে বেঁচে যাই;
বাটতে বাঁচিব বাটনা মন্ত্ৰিব
এই বড় আশা, পূৰ্ব কয় ভাই।

এই আকাজন তাহার জীব-কে এমনভাবে পূর্ব করিয়াছিল বে নির্জন ইন্যানে পানীর ব্রৱ-প্রবাতনিতে ভনিতে প্রকৃতির শোভা তাহার চিত্তকে আবিষ্ট করিয়া রাবিতে পারিল মা। বনেশের আগরণ, বাধীনভার সংগ্রাম ও আগ্রিক বন্ধের সমাবানের প্রর তাহার প্রাণতে ব্যাকৃত করিয়া ভূলিল:—

নির্জন কাশনে আপনার মনে
কি হবে ভাকিলে ? কি হবে ভনিলে
একা এই হর ? ইছো দেশবাসী
ভথক সকলে ; ইছো দলে হলে
উঠক সকলে নয়ন বিকাশি।

দেশপ্রেম হইতেই শিবনাথের ভ্যাগৈধণার কর। দেশকে ছুলিরা বরিতে এমন কিছু হিল না যাহা তিনি করিতে প্রস্তুত্ত হিলেন না। ইহার ক্ষম আদের কোন বন্ধ হিল না, আহংবীর কোন পণ হিল না। তাহার উপভাস ও কাব্যে তাহার জীবনের একট প্রতিবিহ্ন প্রতিজ্ঞানত:

জীবন-আকাল, বিপদ-ছর্ভিনে থেরিয়া আমার ছোক্ অভ্নকার; সব কট্ট সারে রব খির ছয়ে, কে পায় পৌরুষ ছাখ কট বিনে ?

তাহার জীবন সহতে নিরাশ হইয়া যধন সকলে ধিকার দিতেছিল, তথন কোন সাপ্তনা তাহার বল কোনাইতেছিল ?

ে রস্ক-বিশ্ হতে শুনি এ কগতে

শত রক্ত-বীক কলে যে প্রকার !

ভীবন সংগ্রামে ভারতের নামে

যত রক্ত-বিন্দু পড়িল এবার

শত পুত্র হবে বীর অবতার !
ভারত আঁবার ভারতের ভার,
ভুচাইবে ভারা, ভেবে মতে যাই । ~

তাহার হৃচ প্রতীতি এই হিল যে বিধাস, বৈরাগ্য ও শুঙ্ চরিত্র ব্যতীত এদেশের সাধীনতা কবনও আসিবে না:

> ই(জাহের দাস, হেবা বার মাস, দেশের উধার ভার কর্ম্ম নয়:

তাহার 'উংলর্গ' নামক ক'বতা, যাহাতে এই সবল উচ্চ শ্রেণীর ভাব সহিবছ আছে লেখলিকে রবীজনাথের "এবার কিবাও মোরে"র লমবর্মী বলা বাইতে পারে। রবীজনাথের মন্ত শিবনাথও এই কবিভার মধ্য দিয়া দেশের কাজে তাহার সকল শক্তি সমর্পন করিতেছেন। আর্টের রূপলোক হইতে অবভর্ম করিয়া দেশের সেবাতে তাহার সর্ব্ধে বিসর্জন দিতেছেন। কেবলা ভিনি দেশিরাছিলেন ঃ—

[বহ দূর নর]

ভবু বাংগাদেশ লইয়া তাঁহার এই আকাক্ষা ছিল না।

অবও ভারতের পরিপূর্ণ যুক্তি তাঁহার অন্ধকে আকৃষ্
করিয়া তুলিল। ভাই তিনি ভাকিলেন বোহাই, নালাক্ষ্
ভাকিলেন মহারাপ্র, রাজপুত, শিবকে বাহাতে সকলে পরস্পরের
প্রতি বিষেষ ভূলিরা একপ্রাণ হইয়া, ভাই ভাই হইয়া দেশের
বাধীনভা-সংগ্রামে উন্ধ হইতে পারে:

আর রাজপুত আর প্রির শিক্, ভাতি-গর্ম-ভেদ সকলি অলীক, ভারত ক্ষবির সবার শরীরে ভাই বলে মিতে তবে শখা কিরে।

["বছ দূব নৱ এই ৰ্ক্তিত বিপুল আহবে তিনি ৰুগলবানকেও ভূলেন নাই

শেষে ভেকে বলি
থারে যুন ভাই
প্রাচীন শক্রতা
প্রাচীন শক্রতা
পদের তুর্জনা
ভোৱা ত সন্ধান
প্রোল তার্বার ক্রান
প্রেল ক্রান কর্মান
বল শুর্—"নোরা
প্রির ভারতের"।

["वर पृत मः"]

সমাছক্ষেত্র তথাক্ষিত সভ্যকীবন হইতে চাষার সরল সাধু
ভীবন তাঁহাকে অধিকতর আকৃষ্ট করিয়াছিল। "চাষার
অহুয়ার" ও "নহেশ" নামক কবিভাঘরে তিনি দারিস্ত্রের মধ্যে
সাধুভার গৌল্বর্য বিক্লিত করিয়াছেন। ইউরোপীর লিক্ষা
আমাদের যে নৈতিক অবনতি আনরন করিয়াছে তাহার স্বরূপ
উক্ষত।বে কুটরা উঠে ববন আমরা সরল চাষার জীবনের
মহন্ত উপলব্ধি করি। বীর্যা ছিল তাহার জীবনের সর্বশ্রের্ত্ত
সাবনা। এইক্ছ যেখানে বীরত্বের কাহিনী পাইরাছেন
সেইবানেই আকৃষ্ট হইরা পড়িয়াছেন। এইক্ছ রাণী চুর্গাবতীর
বীরত্ব তাহাকে মুগ্ধ করিয়াছে:

কের হের বধ যাকে নাচিছে, স্ক্রনী বে
নাচিছে স্ক্রনী।
করে অসি ধরশাণ সুবে ডাক হান হান
পদতলে কাঁপে ধরা ধর ধর করি।
রপমধ্যে মন্ত সভী পাস্যান্ধী প্রার বে
পাস্তিনী প্রার ।

ৰীয়দ্বে ভার পৰিশ্রভা ও বর্ত্তপ্রাণতা ভাতার অবরকে অভি

স্ত্ৰেই আৰ্ল কৰিব। তুলিত। তাই এক দিকে সীতাৰ পৰিএতা, অপৰ দিকে আঁচৈতন্যের প্রেৰাজ্বাল তাঁহার কবিতার বিষয়বন্ধ হইবা পছে। তাঁহার অধিকাংশ কবিতা যদি বাংলা দেশ তুলিবা যার তবু তাঁহার "চৈতন্যের সন্থ্যাল" কবনও বিশ্বত হইবে না।

ঐতিহাসিক বিষয় সইয়া তিনি কতক্ত্রি অতি উপাদের গাণা রচনা করিয়াছেন এই সকল গাণার মধ্যে "মোহিনী", "মহেশ" ও "বিধবার হরিণ" অভুলনীয়।

মোহিনী একট কুংসিত আৰু রম্মী। শহরের একট গাছ-তদার বসিরা সে গান বরিয়াছে। তাহাকে এমনি দেখিলে মুণা হয়। কিছ তাহার গান মেই কানে আসে অমনি লোকে স্তব্ধ হইরা গাঁড়াইরা যার। একটি ভারবাহী খাঁকাপুঠে সেই দিক দিরা যাইভেছিল। কিছ যেই তার গান ভনিল অমনি

> বাঁকা পূঠে এক দৃষ্টে আনদ্দে মগন, সর্ব্বেলিয় সে বলে ডুবিল। তার শ্রম, তার কট, তার অনাহার, কোবা আজ। আজ রাজপবে দেহ তার, প্রাণ কিন্তু গগনে বিহার করে যেন কল্পনার রবে।

এই রপে সেবানে আসিল একজন বৃদ্ধ খ্যাবর, "বিশ্বতম্ ফুফবর্ণ-কার" কর্মকার, ভারপর ভিনজন কেরাণ, একজন বার-বিলাসিনী "হেলে ছলে উড়ায়ে অঞ্চল।" কিছ "চারিনেত্রে ভব্ বহে জল।" এই রপে যেই আসে দেই মগ্ন হইয়া যায়:

কাণা, থোঁভা, ধনী, ভত্য, বার-বিলাসিনী
আৰু অঞ্চ বহু শত মুখে।
সে পদীত, যোগীবর ভ্রহ্মাধাদ সম,
ভাবে ভাবে উঠার লছরী;
গভীর অফুট খুব দের নিরুপম,
ভোবে ভীব আপনা পাসরি।

উাহার "বিধবার হরিণ" একট করণ মর্মপর্শী কাহিনী। হতভাগিনী বিধবা একমাত্র প্রির পুত্র হারাইরা একট হরিণ শিশুর মধ্যে ভাহাকে ফিরিয়া পাইরাহিগ।

পীযুষ-পুরিত শুন দিল তার বৃধে,
মুগলিও মহানলে বার;
কোলে করি যেন নারী পাসরিল ছবে,
হ'কপোলে চুছিল তাহার!

বিৰবা মাতা কভি গাঁৰিয়া তাছার গলায় বুলাইল, কচি তৃণ কাটীয়া তাছাকে বোদ বাওয়ার, তাছাকে বাবা বলিয়া ডাকে। মুগলিত পারে পারে বুরিয়া বেডার, কম্কম্ করিয়া বাদে তাছার পারের নূপুর। এইভাবে তাছার বৌবন উদ্গত হয়, আর ভার লৌকাই। বিভ্ৰ বভিত হয়।

> কিবা চকু ! কিবা গতি । সৰ মনোহর, পুলৱেবা মডক উপর।

বাহিরে শেলে বালকেরা ভাছা করিয়া বরিভে আসে আর লে ভিন লাকে থানাথক বাঁপাইয়া ভাহার নাভার কাছে আলিরা হাছার। এইরপে নিরস্কর পুর্বে দিন কাট্টরা যার। একদিন সন্ধা হইরা গেল অথচ পেই রুগ আর কিরে না। ভীত নাভা পথে পথে কাঁদিয়া বেডার। কেছ থবর দিতে পারে না। অবশেষে সন্ধার অন্ধনারে এক হিংল্ল কন্ধ ধারা ভাছিত গু আহত হইরা হড়-মুভ করিরা লে বাভীর মধ্যে আলিরা পছে। বিশ্বার দেহে প্রাণ আদিল বটে, কিন্তু লে দেখে মুগের সর্বাল রুগিরারা,ত ও দংগ্রাহত। সে আবার ভাহার বৃধে কচি খাস থবে, হুব আনিরা মুখে ঢালিরা দেয়। কিন্তু কিছুতেই সুগের প্রাণ রক্ষা পার না। ভখন সে নারীর দশা যে কি হুইল ভাহা বর্ণনা করা কঠিন।

> কচি খাস কচি পাতা, লইৱা যতনে, পৰে পৰে ডাকিয়া বেছায়। ধূলা মাট কেলে মারে যত শিশুগণে, "ক্ষেথী ক্ষেণী" বলিয়া ক্ষেণায়।

শান্ত্রী মহাশারের "হিমাপ্রি-কুত্রমা"ও একটি পদ্যে বিরচিত ক্থিকা। ১৮৮৬ সনে কার্ণিরাঙে বাসকালে এই ক্থিতা লিখিত হয়। কবি এখন নামাপ্রকার সদস্টানের মধ্যে রাণাইয়া পভিষাছেন। তাহার নায়কও এইরপ নানাবিধ ভাগে, সংস্থার ও সংকর্মের মধ্যে নিময় হুইয়া জীবনের নষ্ট শান্তি কিরিয়া পাইল। নায়কটি ধনীর সন্থান ও পত্নীপ্রেমে আত্মহার। কির হুউগোর বিষয় এই যে, ভাহার পত্নী ভাহার প্রেমের ব্যাযোগ্য সমাদর করিতে না পারিয়া একদিন ভাহাকে ভাগে করিয়া চলিয়া গেল। ভাহার জীবনে আসিল ঘোর আয়ায়ানি, লোকবিত্যা ও নিরাশা। সংসারের প্রতি মুণার পূর্ণ হাদর লইহা বাড়ীখর ছাড়িয়া সে দেশশ্রমণে চলিল। সঙ্গে চলিল ভাহার স্কেহময়ী ভন্নী। ভাহারা অবশেষে হিমালয়ে আসিয়া গৌছিল ও প্রকৃতির মনোরম দৃষ্টের মধ্যে

প্রাণ জ্ডাইল। একদিন ভরী ভরবি বেমন জীবনের বোরভন ছবিনে আভা ওরার্ডবার্থকে প্রকৃতির মধুর স্পর্নের মন্য দিরা স্থা করিরা ভূলিয়াহিলেন, দেইরূপে এই নায়কের ভরীও আবার ভাষার আভাকে নিরামর করিরা ভূলিল। আবার ভাষার আত্মার মুদিত চকু উনীলিত হইল। মান্ন্রকে আবার ভাল-বাসিবার ইছো ভারত হইল এবং মান্থ্রের কল্যাণকর্মে আভা ও ভরী জীবন উৎসর্গ করিল।

তাহার শেষ কবিতাপুত্তক হইতেতে 'হারামনীর পরিণর'-कावा। इंदा ১৮৮৯ भन्न इष्टिण। इंदा मश्कणायक कविणा. পাঠকালে বানিয়ানের পিলপ্রিম্স প্রোপ্রেসের কথা স্মরণ হর। বর্মপাৰন সথছে শাল্পী মহাশয়ের বহু 🕶 কবিতা আছে। যথা "আসক্তি, বির্ক্তি ও ভক্তি", "ব্রহ্মবিদ্যা" প্রভৃতি। এইবার ভিনি ধর্মকীবনের পথে যত প্রকার পরীক্ষা, বাধা ও প্রলোভন আছে ও তাহা কি ভাবে হয় করা যায় তাহা বিন্যাস করিয়া এই কবিভা রচনা করিলেন। কবিভা বিগাবে ইবা তাঁছার কবিতাসকলের মধ্যে সর্বাপেকা মুর্বল। কবিভার ছন্দ পরু, ভাষা গদ্যপ্রধান ও নিরলভার, ভাবও পুরাতন। মনের মধ্যে বিশেষ বিশ্বর বা পুলকের সঞ্চার হয় না। কবিভার বেশীর ভাগ পরার ছন্দে লেখা। ত্রিপদী ও ক্মচন্দ্রীর হন্দও বিলেষ বিলেষ ভাবে বাবজত হইশ্বাছে এবং এইওলিই একমাত্র समराक चाकरंग करत। जरत श्रीकात कतिए परेरन (प ইহার অন্তনিহিত শিকা চিরন্তন ও কবির নিক জীবনের সাধ্যার সাক্ষী-সত্তপ।

উপসংহাথে এই কথা বলিতে হইবে বে, তাঁহার কবিতার আনেকঞ্জি বিশেষ আনন্দ ও অফুপ্রেরণা দের ও দেওলি বাঁচিয়া থাকিবে। বিগত শতাকীর বাংলা কবিতার ইতিহালে পণ্ডিত লিবনাথ শাস্ত্রীর বিশেষ উল্লেখ যদি না থাকে তবে লে ইতিহাদ অল্থীন হইবে।

"অয়মারম্ভঃ শুভায় ভবতু"

শ্রীবেণু গঙ্গোপাধ্যায়

রাশবর্ত্ত রাভিয়াহে তাকা রক্ত-মোতে, দেশ-রতী সভানের আছ-বলিদানে। বঞ্চিত বেদনাত বীর ক্ষপণ তবু চল্ছেল বেরে মুক্তির সভামে। তাই ছুই শতাধীর তমিন্রা কেদিরা ভাতিল নবীন আছু পূর্ব দিগলনে। দ্রিবর্ণ পতাকা উচ্চে প্রতি বরে বরে, সমাগ্র স্বাধীনতা ত্ত-শথবনে। সাবনা লভেছে সিভি লক্ষ শহীদের।
বৃচ্ অনগণ আৰু পাইরাছে আয়া।
হংব এক, মাড্ছ্নি হলেন বভিডা,
পুরোপুরি নিটল না হাবীনতা-আনা।
ভঙ্গ হোক, জব হোক, এ যাত্রার পথ।
একভার বীর্ষ-বৃত্ত হউক ভারত।

অন্তরাং ও তুলাহাঙ্গরা

ঞ্জিতে বুমার নাগ

কোৰাৰ অন্তরাং আর কোৰাৰ ছুগাছালয়, কিছ ছুট বনোরৰ ছানের ছুতি বাবে মাবে এক সংস্ট আগিয়া উঠে—কারণ পশ্চিম বাংলার সম্ক্রতটের পুনবিকশিত লবণশিল্পের ক্যা ভাবিতে গিরা সহযোপক্লবর্তী এই ছুট ছানের উন্নত লবণশিল্পের ক্যা মনে পড়ে। 'বোব হুর অতি অর লোকের নিক্ট ইছাদের প্রকৃত পরিচয় জানা আছে। ভাগাক্রমে গভ বংসর আমার এই ছুট জারগা পরিদর্শন ক্রিবার সুযোগ ঘটনাছিল।



চটপ্রামের তুলহাকরার ব্রহ্ম দশীয় প্রতিতে লবণ প্রস্তৃতি

অভবাং হিল্মানের অভগত, কিন্ত বদবিভাগের কলে আছু ছুলাহাজর। পাকিয়ানের মধ্যে পভিয়াছে। সেইজত ছুলাহাজরাকে এবন বিশেষ করিছা মনে পড়ে। অভবাং পুরী জেলার কোণারক মন্দিরের কিছু উভবে সমুদ্রতীধের নিকট একট অবপাভাগা। ভাক পৌছিতে সপ্তাহের উপর লাগে। ইহা কাকটপুর বানার অভর্বতী একট লবণ প্রভৃতির ক্ষেত্র। এবানে ভ্রমণের গল্প পরে বলিভেছি।

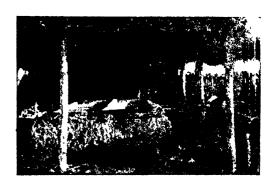
ছুলাংশিকা চট্টনাম কেলার, কল্পবান্ধারের ১৬ মাইল উত্তরে ।' চট্টরাম শংর হইতে বোব করি ৭০ মাইল ছইবে; একেবারে পার্বত্য চট্টরামের সীমানা বেলিছা ইহার অবস্থিতি। কল্পবান্ধার রোভের প্রার পাশেই বলা চলে। ছুলাহান্ধরা নিভান্ধ অল্পত অব্যাত প্রীরাম নর। বিগত মহাযুহের সমর ইহা বেশ প্রীয়হি লাভ করিবাছে। এবানকার অবিবাসীদের অবহাও উহত। ইহার এক পাশে বদত্বিতে আবিশ্য সম্পাদের প্রাচুর্ব, অপর পাশে মহিমবালির তীরে নিম্নত্রিতে পৌর হইতে বর্বার পূর্ব পর্বন্ত বিপুল পরিবাবে লবণ প্রস্তুত হয়।

ছুলাবাৰবার প্রাকৃতিক দৃশুদেশকর্ম আনাকে মুখ করিছা-ছিল। বিশেষ্ড: বমবিভাগের ভাকবাংলোট এমন সুন্দর জারগার অব্ধিত যে ইচ্ছা করে বিন কতক্তের ক্ষত সেবানে আবার গিয়া এমিবালীবের সলে নেলামেশা করিয়া আগি। ভবন বাংলার ভাগ্যাকাশ লাজ্ঞদায়িক বিবেষের মেখে সম্বাজ্ঞদ্ব বিল না। নিভিত্ত মনে চটু প্রামের খানীয় অবিংগি দৈর সংশ্ রাজি ১টা ১০টা পর্বন্ধ টাদের আলোর গর্জন গাছের তলায় বিগ্রা আভ্যা দিয়াছি, গল-অভবে মাভিয়া উঠিয়াছি এবং লংগ-শিল্পের প্রগাহের জন্ত কবাই না ক্লিয়াছি। চটু প্রামের স্থাবিধ্য ভাষা আমাদের পারল্পরিক ভাববিন্নিময়ের প্রে প্রতিবৃদ্ধক সৃষ্টি করিতে পারে নাই।

এবার ভ্রমণ-কর্বা সুকু করা যাক---

সে সময়ট বোৰ হয় কাল্পনের শেষ বা চৈত্রের প্রারন্ত হটবে। চটগ্রাম পৌছিয়া সকাল সাড়ে মহটার পটিং। লাইনের একটি টেন বরিলায়। এই লাইনের শেষ টেলন দোহ ভারীতে পৌছিয়া বেলা বারটায় রামুর একটি বাদ বরা লেল। পণ্টুনে শর্ম নদী পার হইয় অটোবাদখানি ভরজায়িত পাহাছের চড়াই উবেট ভাজিয়া কল্পবালার রোডের উপর দিয়া ফ্রভবেগে ছুইয়া চলিল। কি মনোরম দৃগা রাভার এক দিকে সমভলভ্রি, মাবে মাবে চয়া ক্ষেত্র, আর অর দিকে বনাকীর্ণ গিরিম্মালা। বহুদ্রে স্থ-উচ্চ পাহাছের ধুদর হেবাগ্রিভ শৃংরালি পাতুনীল আকাশের গায়ে মিলিয়া হহিয়াছে যেন।

কাঠের সাঁকোর মাভারমতি পার হইয়: চক্চিভিন্পা। পৰে চুনটা, এটামধরা প্রভৃতি বৃদ্ধিয়ু গ্রামগুলি অভিক্রম ক্রিয়া আসা ধেল।



नवन-अन ख'न निवाब अकृष्टि हूमो-- +द.व.अ:ब

মাবে মাণে বৃষ্টপাত হইবা গেছে—মেখলা দিনের প্রছ অপ ফ্ বেলার ঘনবনাছের পংগ্রুতা পংগর দুক্ত মনোরম লাগিল। কল্পবালার পৌছিলাম সন্ধার—বন্ধুবর শ্রীবিফ্ রিলিক অফিলার, সবে চা বাবার আরোক্ষন করিতেভিল।

কল্পবাধার রোভের অমণ, চইগ্রাম কল্পবাধার জীমার অমণ অপেকা কিছু ক্ষ ভাল লাগে নাই। ভাত যাংগ কৃষি মা পাওরা গেলেও চা কলা বিহুট প্রারই বিলিটারি রোভের পার্যন্ত द्भाकात्म भावता यात । खबळ ककार दम्म— अक खमन कम्प्रूचं, ख॰ है द्रम्मदम्— अवादन भावाच खमादम् अवादम् अञ्चल्यः । कञ्चताकात्त्रं क्रिक खामात्रं भूते (मामामभूद्रवत् मण्डामा मात्रं नात्रे, अमूस्य वक्षरे खमळोत — यमिव भावे पृथंभकात्रं गितिमामात्र पृष्ठं मदमात्रमः । छहे पृथिद्रण वाणिशांकि अमण्डा कितियां, त्रामक्ततः देखते कृत्राद्रक जम्बद्ध दोनिकां मित्रे प्रवाद्य । अव्यत्ति कृत्राद्य अव्यव्धान स्व विक्रम् विकादकः । अव्यत्ति स्व विकादकः । त्रक्षीम मूली ख्रामाक्ष भवा कृष्ठं व्यव्यव्यः विकादम्भा मदान्त्रतः वृत्रिद्धं विद्याय-खादकं खादकर्व कृति वृत्री वृत्राद्रकं खादकर्व कृति वृत्री वृत्राद्रकं खादकर्व कृत्रिकं वृत्राद्रकं खादकर्व कृत्रिकं वृत्राद्रकं खादकर्व कृत्रिकं वृत्राद्रकं खादकर्व कृत्रिकं वृत्राव्यक्षर्व वृत्रिकं वृत्राव्यक्षर्व वृत्रिकं खादकर्व कृत्रिकं खादकर्व कृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व कृत्रिकं खादकर्व कृत्रिकं वृत्राव्यक्षर्व कृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व कृत्रिकं खादकर्व कृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व वृत्रिकं खादकर्व वृत्रकं खादकर्य वृत्रकं खादकर्व वृत्य खादकर्व खादकर्व खादकर्व वृत्य खादकर्व वृत्य खादकर्व वृत्य खादकर्व वृत्य खादकर्व ख



ननन-(अंति उष्टेर

कुलाशकराय करतहे वांश्राल खायांत खरस्य करांत है कि ছিল --কি ভাবে প্রধানকার স্বপ্রির সম্বি লাভ করিয়'ছে ष्टांको अवादिक्त करो। योडार्यम[्]क हारिन्ति कन (दन লোণ---দেই কল কোয়ারের সময় নিম্নভূমিতে বহু বাভি দিয়া सारम् करत्। आध्वाभीश (महे चन हारिही करिया चान-দেওয়া চাত্তরে (Condenser) বৌদ্র-ভাপের সাহায্যে খনীভূত করিয়া জ্মাকরে। নিকটেই চুলী বদাইয়া लाइ'व कहारह अहे यन बाहेन दा लागा জাল দিয়া পরিভার দানা দানা লবৰ প্রস্তুত করে। এই প্রণালীটা মাত্র ৪।৫ বংগর ওই অঞ্চল চালু হয় বর্ষা देखाक्रेट्पर कलाएन। निक्रेड स्थम स्ट्रेट खानानी कार्य ভাছারা বিনা বায়েই পায় দেবিলাম। কি বাাপক ভাবে ইছাত্রা লবণ প্রস্তুত করিভেছে ভাষা না ছেবিলে বিশ্বাদ कृदा यात मा। देशालय अक अकृष्ठ यह देवैनिट के देशालत्मय সহিত বোৰ কবি পশ্চিম বাংলার কোন কারবানার তুলনা করিতে পারা যায় না।

আৰ্চ ঐ অঞ্পের বারিপাতের পরিমাণ পশ্চিম বাংলার সমূলতীরত ত্বানগৃহের তুলনার বিশ্বণ এবং মে মাস পঢ়িতে না পঢ়িতে এমন বর্গা আরম্ভ চ্ট্রা যায় বে লবণ প্রস্তুত্বত রাবিতে হয়। মাত্র ৪।৫ মাস কাম্ব করিয়া প্রাম্বাসীরা প্রায় মুই সম্মণ লবণ প্রথক করে। ইহারা বছ বছ উচ্চ বাধ দিয়া বা বছ বছ জ্ঞাবার নির্মাণ করিয়া

আর্থ প্রথম উভয়েরই আববা অপবায় করে না। উভারা ভাবে
বভার হাত হইতে রক্ষা পাইলেও বর্ধার অবিপ্রান্ত বারিশাত

হইতে সবন বাঁচানো সন্তব নয়। অভএব বর্ধনের সমর কাক্ষ বভ রাবাই সমীচান। বর্ধান্তে সামান্য বাঁব দিয়াই আবার বধারীতি ভাছাদের কাক্ষ চলিতে বাকে।

প্রবাসী বাঙালী প্রভের খ্রীপরং চক্র দত্তের সহারতা ও আতিব্য না পাইলে বোৰ করি অন্তরাং যাওথা বহুতি না। এক দিন সকালে তিনি তাহার নিজৰ মোটরে আমাদের পুরী হউতে নিমাপাছা ভাকবাংলায় লউখা গেলেন। এই নিমাপাছা হউতে একটা পথ কোবারকের দিকে চলিখা গিয়াছে, আর একট পথ কাকটপুর হইয়া অন্তরাং নিয়াছে।



(बोल्याब लव्य अज धनो इंड कविदात व्यायाव

নিমাপাভার রাভাট পুথী রোড ছইতে পিপজীরে নিকট ভাবারপে দক্ষিবাভি।বে চলিয়া নিমাপাভা বাওরা থার । পুথী-ভূবনেশ্র বাদ সার্ভিদে পিপজাতে নামিয়া নিমাপাভা বাওরা যায়। পুর্বে একবার এই পরে কোলারক ফাইবার স্থান্য আমার ঘটনাছিল। নিমাপাভার এক দিন থাকিয়া পর্দিন প্রভূষে অত্তরাং যাই। রামসাহেব ইন্স্পেক্সনে বাহির হইমাছেন। আবেগারী বিভাগের সক্স কর্মচারী পুর ব্যন্ত। অভ্যাৎ পৌলাইতে বেল বেলা হইয়া গেল। পর এতই চুর্গন যে মোটবের গতি বাভান অসম্ভব। কাঁচা হেঠো পর অভ্নপুর, কাকটপুর হইয়া ভভরাতে দেবী মদীর মুব পর্যন্ত আসিয়াছে।

অন্তরাং অনুহত পল্লীপ্রাম হইলেও লবণ-শিল্পের জ্বােছিতে ইহার গুরুত্ব যথেষ্ট বাডিয়া গিয়াছে। উডিয়ার প্রথম লবণ প্রস্তুতির সম্বায় প্রতিষ্ঠানট এই স্থানে কি ভাবে সাকল্য অর্জন করিয়াছে ভাহা বিশেষ করিয়া প্রবিধানযোগ্য। পুরীর এই সমস্ত সমুস্তভীরবর্তী অঞ্লে কেবলমান্ত গৌধ-সাহায্যে কিল্পেল্পন্তপ্রতির প্রসায় বইভেছে ভাহাও ধেবিবার কিনিষ্ব বটে।

পুণলী হইতে পুৱী যাত্র ২৫ যাইল। পিশলী ইটান নিশ্বরীধের একট কেল।

এই অঞ্লের দীয়ানা অভিজ্ঞয় করিবার পর হইতেই উত্তর দিকে दिना यात्र, वारमध्य, त्यमिमीनृत, २८ भवनना रेज्यामि अर्थकरे জাল দিয়া পালা লবণ প্রস্তুত হয়। কোম্পানীর একেজীর चबीरम अवारमञ्जूषान भिवारे नवन श्रवण रहेण, किस ১৯৩১ नत्मत नाची-चात्रहेरेम हिकत भत्र श्रेट्ड अवारम मासारकत वनानी हान स्रेवार्छ।

এবং এই প্রবাদী কি উপাত্তে বাংলার চালু করা যায় ভাষা অভুসদান করিতেই আমার অভরাং আসা।



নৌপদার লবণ-প্রস্তুতি কেন্দ্র

ভালানীর ভভাবে ভাষাদের বাংলাদেশের লবণ-শিল श्राप्त महे स्टेट्ड विभागत. किस जामारमंत्र नवन छेरमामनकाती आयवानीया यनि अरे विशव भूबी (क्लाब मुट्टीक क्यूनवर्ग करव, ভাষা ষ্টলে বোৰ করি এই ফংলোগুৰ শিল্প আবার উন্নতি লাভ করিতে পারিবে।

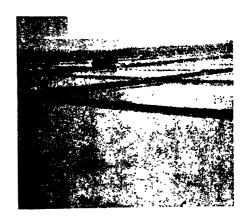
चलवार एवं शाक्षणिक शति दिन इनाराक्याय मन्पूर्व विश्वीछ। बाज्यस, अस ८०६-(बजारमा १४ वदावद पृरवद পানে চলিরা বিরাহে। ছ'বারে মাবে মাবে বানের কেত, चारमभारम भारारण्य रमममाय नारे। प्रमृत चाकारमव भरहे পূর্ববাটের গিরিমালার বেবাগুলি অম্পষ্ট দৃষ্ঠমান হয় মাত্র। রাভা এত কাঁচা যে অল বর্ষণ হইলেই মোটরে পার হওরা বিপক্ষমক। দেইক্স নৈৰত কোণে খন মেখের উদয় হওয়াতে चलतार २वेटल तमहे भिमहे चामारमय कितिएल एवेन।

নিভাল পাভাগা হইলেও ওখানে ভাকবাংলো দাভব্য **क्रिक्शामय अवर अक्ट्रा फाक्यब च्यारह । जाराब देशब नवन** প্রস্তুতি ও বিক্লয়ের সমবায় প্রতিষ্ঠানটির ক্রম সরকারী কর্মচারী ७ चारनादी हेन्ट्यक्रेड करवक्षम अवास्य नाम करतम । श्रेती स्हेट अबुद्धात बात विता त्रांण अवर कांगांत्रक चाना यात. আর একট উন্তরে আগিলেই অভরাং। গোপের নিকট কুণভদ্রা मनी भाव स्ट्रेंट स्व।

প্রাচী নদীর কোলে কাকটপুর। আমরা কিছুক্ষণের অভ দাভবা চিকিৎসালয়ের ভাক্তার বাবুর আভিধ্য গ্রহণ করিলাম। अवादन क्रीकृताने मन्त्रित है है है । अवादन क्रीकृति महिल वह **जीर्याबी नमर्यक एव ।**

্ অন্তরাং গৌছিতে অৱ বেলা হইল। সূর্বের তেক রীতিবত প্রবঁর। ভাকবাংলোর আদিয়া চা পান করিয়া ভাঞার বাবু ও সমবাম প্রতিষ্ঠানের রেজিট্রার প্রভৃতি কয়েকজন সহ 'দণ্ট পার্ডন' দেবিভে পেলাম। অন্তরাংডের লবণ-ক্ষেত্র দেবিরা কেবলট মনে হইতে লাগিল আমাদের বাংলাদেশ] এ বিষয়ে क्छरे ना निवटन निव्या चारव । वारमात मवरनत कांत्रवामा-বৌল-সাহায্যে কি ভাবে ইহারা সবৰ প্রস্তুত করিভেছে [সমুহের কর্তৃণক্ষের উভ্যহীনতা আমার মনে হতাশার সঞ্চার করে। এই অন্তরাং প্রতি বর্ষায় ভাগিয়া যায়, কিছ মাৰ কান্ত্রন ছইভে আঘাটের বর্ষণ পর্যন্ত প্রামবাসীরা তারই বুকে লক্ষাবিক মণ লবণ প্রস্তুত করে।

> ब दरमब बदव भारेबाबि, मबदाब अणिकामि ३२० अकत ক্ষতি তিন মাস মাত্র কাক কহিয়া প্রায় ৫০ হাকার মণ লবৰ প্ৰস্তুত ক্রিয়াছে। আসা-যাওয়ার সুবাবস্থা না বাকার এবং লবৰ প্রেরণের অস্থবিধার ছঙ্ট ইছারা গত কয়েক বংসর যাবং দে রক্ষ প্রচার পরিমাণ লবণ প্রস্তুত ক্রিতে পারে নাই। সমবাম প্রতিষ্ঠানটি ছাড়া ব্যক্তিগতভাবেও কাছারও কাছারও কুল্ল কুল্ল লবণকেত্ৰ আছে। ইছাতা নিকটি বাজাবে বা দূর ৰ্যবগায়-কেন্ত্ৰেপ্ত লবণ বিক্ৰয় ক্তিয়া আগে।



নৌপদার আর একটি দৃশ্য

ইছা যুৰ্ন সম্ভব ২ইয়াছে তখন আশা করা যায় উভিয়ার গঞ্জাম, ইচ্ছাপুরম হইতে অভ্যাৎ এবং অভ্যাৎ হইতে বালেখ্য-ভালপাদা পর্যন্ত বৌদ্রভাপে লবণ প্রস্তুতি এক দিন না এক দিন বিস্তার লাভ করিবে। এই সমস্ত অঞ্লের তুলনায় কাৰির বৃষ্টিপাতের পরিমাণ বুব বেশী নছে। কাঁৰির সমুদ্রোপ-কুলে এই প্ৰণালী প্ৰত্যেক লবৰ উংপাধন কেন্দ্ৰে চালু হওরা চাই। আলানী পুড়াইরা এত খরচ করিরা লবণ প্রস্তুতি আৰিক দিক দিয়া আশামুৱণ লাভৰনক নহে। অভৱাঙে মান্তাকের মত ভার একট ভিনিখের রেওয়াক হইয়াছে। এবানেও উনুক্ত ছানে লবণের পাহাত করিয়া প্রত্যেকট ভুপকে বড় চাটাই বা ভালপাভাৱ আবরণী দিয়া ঢাকিং৷ রাবা एवं। अवासकात अवन छेरमामसकातीता त्रामात कथ वित्मय ওলামের ব্যবস্থা করিয়া ব্যৱের পরিমাণ রুডি করে না।

সান ইয়াৎ-দৈনের সাধনা

অধ্যাপক শ্রীসুধাংশুবিমল মুখোপাধ্যায়

धारम विश्वतुष्कव व्यवनारमञ्ज পর রাষ্ট্রপতি উইলসমের খোষণা এবং বিশ্ব-শাভিত্র জন্ত জাতি-সন্দের প্রতিঠা নিপীজিত জাতিপুঞ্জের মনে আশা এবং আমন্দের দীপশিবা প্রছলিত कविश्वाद्यिम । देशांद श्रद यथन चाखर्षाणिक माखिटेर्दर्शक बूब-কালে কাপান চীনের যে অংশ প্রাস করিয়াছিল, ভাহার উপর ভাপানের অধিকার স্বীকার করিয়া লওয়া হইল এবং ভাতি-সাম্য সথকে জাতি-সজ্ব তৃফীভাব অবলখন ক্রিল তংলও এই আশাদীপ নিৰ্কাপিত হয় নাই।

चार्यनिक ही(नद सनक जान देशार-(जन खरर चडाड অনেকেই প্ৰথম বিশ্বাস করিতেন যে, প্রতিক্রিরাপখীদিগের এই শ্বয় খাত্রী ছইতে পারে ন!। সান বিখাস করিতেন যে বৈদেশিকণণ চ'নের উপর ভবিহাতে আর জুলুমবাজি না করিয়া ভাহাকে ভাবুনিক রাষ্ট্রে পরিণত করিতে সর্ব্ধেপ্রকার সহায়ভা कदिर्वन । 'जि वेक्वीतकानमान (करकन्याके खर हाधना' নাধক গ্রাপ্ত তিনি এই মত প্রকাশ করিয়াছেন যে, শ্রম-শিল্পে উল্ল'ত দেশসমূহের পক্ষে চীনে পণ-ওল্লের প্রতিষ্ঠা ও তাছার শিলে::তির সহায়তা করা একান্ত কওঁবা—কলে সংশিষ্ট किन देशमा जार यार्किन प्रकृत्भत्वह देशकात एरेट्र । बुक्ट हो है छा: भागरक देवाच कल्ल निवा निवा देवाच कविन । हीन जस्द इंशियत्व भीषित काम शतिवर्धन पिक्र मा

ইছারই ফলে সান ইয়াং-সেন সোভিয়েট রুশিয়ার প্রতি আকুট্ট ভ্টয়াছিলেন এবং চীন-সোভিষেট মৈত্ৰী খাণিত ভ্টয়া-ছিল (১৯২৩)। সোভিষেট রাষ্ট্র খোষণা করিয়াছিল খে. দে চীনকে সর্বাপ্রকারে নিজের সমকক বলিয়া খীকার করিতে लख । क्विशांत चर्खांदरताव करन मरवशांक (नव व्वेशांक। চীনের শিল্পোয়তির মুলবন জোগাইবার বা চীনকে কোন প্রকার আধিক সহায়তা করিবার ক্ষমতা ভাহার হিল না। তবে ক্যান্টন ৰাতীয় সরকারের ৰঞ্জ ক্রশিয়া হইতে পরামর্শদাতা এবং কিছু অপ্রশন্ত প্রেরিভ ছইল। সোভিরেট বিরোধী প্রভি-ক্রিব্রাপস্থিপ কোরগলায় প্রচার করিতে লাগিলেন যে ক্যাণ্টন जबकाद वजामिक किरोब निवास वार्षाम कविशासमा ।(১)

ভাঃ সান এবং ক্যান্টনে প্রেরিভ সোভিত্রেট প্রভিনিবি बि: (कारकद अवह विद्वांक एदेरक म्पंडे वृका यात्र स्व अदे

অভিযোগ একেবারেই ভিতিহীন। এই বির্ভিতে বলা দ্বৈলাহে যে ভাঃ লান মনে করেন চীনে লান্যবাদ ভাৰবা সোভিয়েট শাসন প্রতিষ্ঠা করা কোনক্রমেই সম্ভব নছে: কারণ চীনের অবস্থা সাম্যবাদ বা সোভিষ্কেটভন্ত স্থাপনের অধুকৃদ নছে। মি: ভোকও তাহাই মনে করেন। তাহার (মিঃ কোফের) মতে ভাতীয় ঐক্য স্থাপন এবং পূর্ব স্বাধীনতা প্রতিষ্ঠা চীনের সর্বাপেকা স্বঞ্চর সমস্যা। এই দ্বিৰ সমস্যার স্মাধানকলে ভিনি চীনকে গোভিষ্ণেট সরকারের পক্ষ হইতে সর্বপ্রকার সাহাধ্যের প্রতিশ্রুতি দিলেন।(২)

ডা: সানের আশুরিকভার সন্দেহ করিবার কোন ৰ্জ্তি-সঙ্গত কারণ খুঁজিয়া পাওয়া যায় না। রুলিয়া কি কারণে চীনকে সহায়তা করিতে সন্মত হইয়াহিল তাহাও সহকেই বুৰা যায়। ক্লিয়া চীনের একাছ নিকট-প্রতিবেট। স্থতরাং চীন যদি পূৰ্বের ভাষ সাত্রাজ্যবাদী রাষ্ট্রসমূহের শোষণের ক্ষেই বাকিয়া যার, তাহা হইদে অদ্ব ভবিগ্যতে সামাবাদী ক্ৰিয়ার বিশল অবভন্তাবী। এইকচই ক্ৰিয়া মনে প্ৰাৰে কামনা করিতেছিল যে চীন ঐক্যবন এবং বৈদেশিক প্রভাব-মুক্ত হটয়া একট শক্তিশালী, প্রস্তিশীল রাষ্ট্রে পবিণত হোক। এই অবস্থায় উন্নীত চীন কোন দিনই যেক্ষায় ক্ৰমাৱ বিক্ৰাচৰণ কৰিবে না। সোভিষ্টে কণ্ডপক্ষ ডাঃ সাম প্রতিষ্ঠিত ক্যান্টন সরকারকে প্রগতিশীল মনে করিতেম ৰলিয়াই ইহাকে সহায়তা করিতে সম্মত হইয়াছিলেন।

এই সময়কার ক্যাণ্টন সরকারকে কোনক্রমেই সাম্যবাধী ষনে করা চলে না। বয়োভিনের মতে কয়েক শতাকী পূর্ব্বে অভার দেশে রাম্রিক, সামাধিক এবং অংনৈতিক অপ্রগতির জল যে সংগ্রামের অবসান ঘটিয়াছে, ক্যাণ্টন সরকারের অধীনত্ব অঞ্চসমূহে সেই সংগ্ৰাম তথন স্বেমাত আরম্ভ इहेशाह्य ।(७)

^{(3) &}quot;Shanghai journalists like Rodney Gilbert manufactured tales in which both Sun and his military lieutenant, Chiang Ki-Shok, were assailed daily as bloodmankind. Actually, nebody had gone over to anybody."- other countries have gone through several hundred years The Unfinished Revolution in China by I. Epstein, p. 41. ago."-Borodin.

^{(8) &}quot;Dr. Sun Yat-Sen holds that the communistic order or even the Soviet system cannot actually be introduced into China, because there do not exist here the conditions for the successful establishment of communism or socialism, This view is entirely shared by Mr. Joffe, who is further of the opinion that China's paramount and most pressing problem is to achieve national unification and attain full national independence, and regarding this task he has assured Dr. Sun that China can count on the support

^{(4) &}quot;Canton is not communistic; there is a hard strugstained anarchists, who had gone over to the enemies of gle for political, economic, and social progress such as

ভাঃ সামের চরমপত্র পাঠে শাই প্রভীর্মান হর যে বিংশ শভাষীর প্রথম পাদে এক্যাত্র ক্ষণিয়াই চীনকে সমকক রাষ্ট্রের মর্যাদা দান করিতে প্রস্তুত ছিল বলিয়াই তিনি ক্ষণিয়ার সহিত্ত মৈত্রী স্থাপন করিয়াছিলেন। যে-কোন রাষ্ট্র চীনকে এই মর্যাদা দান করিত বা নিকে এই মর্যাদা লাভের কভ সচেই হইত, ভাহার সহিত্ই তিনি মৈত্রী স্থাপন করিতে প্রস্তুত ছিলেন। স্থতাং তিনি চীনের সামাবাদী এবং অভাভ দেশে প্রতিক্রিয়াবিরোধীদিশের সহ্যোগিতা কামনা করিতেন।

রুশিয়ার দৃহীত্ত হলৈত সাম এই শিক্ষা লাভ করিয়াছিলেন যে যুক্তর কল কনগাবারণকে সংগ্রামে অবতীর্ণ হলতে হলৈ। চীন-গোভিষেট মৈনী স্থাপনের পর তিনি কাওমিণ্টাং দলকে আবার ঢালিয়া সাজিলেন। প্রতিক্রিয়াবিরোধী বে-কোন ব্যক্তির পক্ষে দলের সদস্য হওয়ার পবে আর কোন বাবা রহিল না। সামারাদীগণ ইতঃপুর্বেই প্রমন্ত্রীবিদিগের মবো মবেই প্রতিষ্ঠা এবং প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিলেন। বারোভিনের পরামর্শে সান ইহাদিগকে কুপ্রমিন্টাং দলের সদস্য হইবার অন্থমতি প্রদাম করিলেন। কুপ্রমিন্টাং এবং ক্যানিষ্ট এই উভয় দলের গ্রহণ্টার্য একটি কর্ম্মণ্টী গৃহীত হইল। কুষ্কদিগের মব্যেরাজনৈতিক প্রচার কার্য আরম্ভ করা হইল।

কেছ কেছ বলেন যে ডাং সান মৃহার পূর্বে সাম্যবাদ
নীতি এবং আদর্শ পরিত্যার করিয়ছিলেন। প্রকৃত কৰা এই
যে তিনি কোন দিনই সাম্যবাদী ছিলেন না। তবে এ কথা
সত্য যে তিনি সামস্ত-তপ্র এবং সাম্রাক্ষাবাদের ধ্বংস সাধন
করিয়া এক নৃতন রাষ্ট্র সৃষ্টি করিবার স্বপ্ন দেবিতেন। সাম্যবাদীর্গনও তাল করিয়াই কানিতেন যে প্রতিক্রিয়ার সুইটি প্রধান
বাহুন সামস্ত-তপ্র এবং সাম্রাক্ষাবাদের ধ্বংস সাধন বাতীত
ভাহাদের স্বপ্ন কোন দিনই সকল ফুইবে না। ডাং সাম
ব্রিয়াছিলেন, ক্যুওমিনীং ও ক্যুদ্রিই দলকে বহুদিন
এক্যোগে কাক্ষ কিত্তে ছুইবে, আর আদর্শনি দিক ছুইতেও
তাহাদিগের বিয়োধ শীল্প প্রক্র আক্রান ধারণ কিত্রে না।

১৯২৫ সালে যথন সান ইয়াং-সেন যুড়াযুৰে পভিড হন,
কেই মনয় চীন বিপ্লবের পৰে অনেক দ্ব অঞ্জন্ম হইহা পেলেও
ভখন পর্যন্ত বৈপ্লবিক আদর্শ ক্ষয়ুক্ত হয় নাই। তিনি নিজেও
ইছা ভাল করিয়াই জানিতেন। তাহার অভিয পত্রে তিনি
লিবিয়া নিয়াছেন—৪০ বংসর কাল আমি স্ব-বিপ্লয় আন্দোলনে আয়নিয়োগ করিয়াছি। চীনের সাবীনতা অজ্ঞন এবং
অঞ্জাল রাপ্লের সহিত ভাহার সমক্ষতা খাপন আমার উদ্বেশ।
৪০ বংসরের অভিজ্ঞতা হইতে আমি এই শিক্ষা লাভ করিয়াছি
যে, লক্ষ্যে পৌছিতে হইলে আমাদিনকে মহাচীনের স্ব-চেতনা
জাত্রত করিয়া, যে সমন্ত জাতি আমাদিনকৈ নিজেধের সমক্ষ
মনে করে ভাহালিগের সহিত মিত্রতা ভাপনপ্রক ভাহাদের
সম্বন্ধ এবং সহযোগিতার সংখ্যাম পরিচালনা ক'রতে হইবে।
আলও বিপ্লবের অবসান ঘটে নাই। আমার সহক্ষীরক্ষ

েন আমার ভাতীর প্নর্গঠন পরিকল্পনা অহুসারে কার্য্য করেন। তাঁহারা যেন আমাদের দলের প্রথম ভাতীর অবিবেশন কর্তৃক প্রকাশিত ঘোষণা অহুসারে কার্য্য করিবা এই বোষণা এবং ভাতীর পুনর্গঠন পরিকল্পনাকে বাভবে রূপায়িত ক'রতে সচেই হয়েন। চীনের জনশাবারণের ভাতীর সন্দেলন আহ্বান এবং অসম সভিবভনসমূহ ছিল্ল করা সদতে আমার সাম্প্রতিক ঘোষণাবলী অবিলয়ে যেন কার্য্যে পরিশত করা হয়।(৪)

ডা: সামের জাতীর পুনর্গঠন পরিকরনায় সরকাংকে জনসাধারণের আরু বস্তু বাসধান এবং যাভায়াভ বাবসার জভ দায়ী করা হটয়াছে। অনুসাধারণ যাহাতে রাজনী'ততে স্ক্রিয় चर्म अहन करत अवर याहाएल आम्भालाक्षत ऐस्व श्रेटल मा পারে সেইবাচ ভিনি প্রভাক বেলার নির্মাচনমূলক শাদন-ব্যবস্থা এবং কেলা কর্ত্তপক্ষের হাতে খানীয় লাসনব্যবধার স্ক্ৰিয় কণ্ডত অৰ্ণৰ ক্তিবার কৰা ব্লিভেন। ডা: সান জাতীয় মুলবন নিয়ন্ত্ৰিত ক্ৰিবার স্থাও দেবিতেন এবং ধেলপৰ जरवाम चांभानधमान-दावश खदर श्रभान श्रदाभ श्रम्भाव श्राम উপর রাষ্ট্রকর্ত্ত ত্থাপনের পক্ষপাতী (ছলেন। তাঁহার 'সান্-মিন্চই' বা অনগণের ভিনটি নী'ভের উদ্দেশ : চ'নের ঋণতীহতা-বোৰের বিকাশ, গণতন্ত্র স্থাপন এবং জনসাবারণের ভীবন-যাত্ৰার সৌক্র্যাপাৰন। এই লেষ্যেক ক্র্যান্টকে ভিনি ক্রমণ্ড क्षेत्र भ्राक्षण्याम या 'भ्राक्षा मक्ष्यत' भ्राद्यक भ्राद्यात করিতেন। ভিনি আরও ব্লিভেন যে, সাম্লাকারার বিধােবভা সোভিয়েট হাষ্ট্রে সাহত সহযোগিতা এবং ব্যক্ত এতিক चाट्यालटन हैरभाष्ट्रपान करिया 'मान-धिनहरूदिय चापन्टक वास्त क्रमान कविवाद (है। कविट स्टेंटिन

চীনের অধিবাসী বিভিন্ন আভিকে একভাবদ্ধ করিছা ভাষাদের মধ্যে প্রাষ্ট্রক, সংমাধিক এবং অবনৈভিক সাম্য স্থাপন ডাঃ সান পরিক্ষিত জাতীয়ভার আনর্শ। জাতীয়ভার আদর্শে অঞ্ঞানিত চানের অধিবাসিগন চিরাচরিত প্রাণ

^{(6) &}quot;For forty years I have devoted myself to the cause of the people's revolution with but one end in v.ew; the elevation of China to a position of freedom and equality among the nations. My experiences during these lotty years have convinced me that to attain this we must bring about an awakening for our own people and ally ourselves in a common struggle with those peoples of the world who treat us as counts.

The Revolution is not yet finished. Let all our comrades follow my plan for National Reconstruction and the Manifesto issued by the First National Convention of our party, and make every effort to carry them out. Above all, my recent declarations in favour of holding a National Convention of the people of China and abolishing the unequal treaties should be carried into effect as soon as possible."—The Will of Dr. Sun Yat-Sen.

অত্যায়ী কেবলমান খ-খ পরিবার এবং বংশের প্রতি অত্যান্ত্রনা বাকিরা সমন জাতির প্রতি কর্তব্য সহতে সচেতন হইবে। তিনি জানিতেন যে জাতীরতাবোরের বিকাশ হইলে চীন বৈদেশিক রাষ্ট্রপুঞ্জের চাপ হইতে মুক্তিলাভ করিরা প্রকৃত স্থানীনতা লাভ করিতে সমর্থ হইবে।

লোকার র বা ব্র এবং সরকারের প্রতিষ্ঠা ডাঃ সান পরিক্ষিত গণভারের উদ্দেশ । এই বরণের রা ব্র এবং সরকারই
জন-কলাণে সর্বাপ্তি নিরোগ করিতে সমর্ব । জীবনযাত্রার
সৌকর্বাসারন বলিতে তিনি বুবিতেন প্রমিক্ষিপ্রকে অন্নার
উংগীক্ষাের হাত হইতে হক্ষার বাবস্থা । তিনি বলিতেন যে
ভূ'ম বাবস্থার আমুগ সংস্কার্মাব্য পূর্বক কৃষক এবং প্রমিকদের আন্দোলনকে শক্তিশালী করিয়া উভ্যেরই রাজনৈতিক
শিক্ষার বাবস্থা করিতে হইবে । তিনি সর্বাদাই বলিতেন,
কৃষককে ক্ষাির মালিক বলিয়া স্বীকার করিতেই হইবে
("The land must belong to the tillers") ।

১৯২৪ সলে যে জাতীয় সংখ্যালনের (The First National Convention) অবিবেশন হয় ভাহাতে চীনের মু'ক্র জগ 'সান্-মিন্ ই'যের আদর্শে কার্যালটী দ্বিনীকৃত হয়, এই অবিবেশনেই ক্যান্তিনিটাং এবং ক্যান্তি এই ছই দলের মধ্যে সহযোগিতার পথ প্রশন্ত এবং অসম হয়।

'গান মন্ত্রির কথা বিশ্লেষণ করিলে দেখা যাইবে যে ইছার আদেশ সামাবাদবিরোধী নছে। বিনা প্রয়োজনে বৈদেশিকগণের বিরুধাচরণ করাও ইছার উদ্দেশু নছে। চীনে গণতাপ্তক শাসনপথ তর প্রবর্ধন করিয়া ভাষাকে আভাজ প্রস্তিশীল এবং প্রথম শ্রেণীর রাষ্ট্রের সমকক করিয়া ভোলা ইছার লক্ষা।

ডাঃ দান বলতেন যে শুতন চীনৱাই গঠন করিতে ছইলে পর পর তিনট বাপ অতিক্রম করিতে ছইবে। সর্ব্বারের বিপ্লবী সৈলবা ছনীকে দেলে একতা প্রতিষ্ঠার জ্বল সংগ্রাম করিতে এবং বৈপ্লবিক আদর্শের প্রতি জনসাবারণের মনোযোগ আরুই করিয়া তাহাদিগকে তংপ্রতি শ্রদ্ধাসন্দল্ল করিয়া ভূলিতে ছইবে। ইহার পর প্রচার এবং সংগঠনে আজ্বর কুরিবীং সম্প্রাদিগকে ক্যবন্ধতাং সৈন্ধালি কর্ত্ব অবিকৃত অকলসমূহে প্রেরণ করিয়া জনসাবারণকে স্বায়ন্ত শাসন পছতি শিবাইতে ছইবে। এই শিক্ষাদানকাহ্য সমাপ্ত ছইবার পর প্রত্যেক জেলা হলতে প্রতিনিধি আহ্বান করিয়া স্বানীর প্রবাহ্যযার প্রাদেশক আইন প্রবহন এবং গণভোট্যারা প্রাদেশিক শাসনকর্তা নিক্রাচন ক্রিতে ছইবে। সমগ্র চীনের অর্থেকের অবন্ধ প্রদেশে মধন এই প্রবৃত্তা করা সন্ধ্র হুইবে তব্দ গণ-পরিষদ আহ্বান করা যাইবে। এই পরিষদ সমগ্র চীনের জন্ত একটি রাই-বিধি প্রবন্ধ করিয়া দেশে নিয়ম্না হক শাসন প্রবর্তন করিবেন।

সান ইয়াং-সেনের মুহার পর জাহার পরিক্লিত প্রণালীতে কাক হর নাই সভা, কিও ভাহার নির্দেশ অহুলারে কোন কাকই যে হয় নাই এবন ক্যাও বলাচলে না। এক দিক হইতে দেখিতে গেলে ডাঃ নাম উদ্লিখিত প্রথম সোপান অর্থাৎ
বুবের বুগ এখনও অতিক্রান্ত হর নাই। রণ-নারকগণের
সহিত কাওিনিউটাং বাহিনীর সংগ্রাম শেষ হইতে না হইতেই
কাওিনিউটাং-কর্মানিউ সংঘর্ষ আরম্ভ হইরা যার। আবার এই
ছুই দলের মধ্যে একা প্রতিষ্ঠিত হইবার সলে সভেই প্রক
হইল আপানের বিশ্লুতে চীনের জীবন-মর্শ সংগ্রাম। দীর্ঘ
১ বংসর্বাাগী অবিবাম মুড্জনিত ক্ষম্মভিত পূর্ণ হইতে
না হইতেই আবার ক্যানিউ-ক্তেমিটাং বিত্রোবের আক্রম
সর্ক্রেণ্টী গৃত্যুত্তের আকারে আয়প্রকাশ ক্রিয়াছে। এই
জ্ঞুই খীকার করিতে হয় যে ডাঃ সান-ক্ষত সংগ্রামের
অব্যায় এখনও শেষ্থ হয় নাই।

কিছ তাহা হইলেও ধিতীয় এবং তৃতীয় ভবের কাৰ আরম্ভ হয় নাই এমন কথা বসং চলে না। কয়ানিই কৃতি ফিটাং সংধর্বের প্রথম পর্ব্দ হইভেই এই চুই বি:রাধী দল ভিন্ন ভিন্ন উদ্দেশ্য চীনের অবিবাসীরুশকে রাজনীতির দিক হইভে সচেতন এবং সঞ্জিয় করিয়া তৃলিবার চেইং করিয়া আসিয়াছে। চীন-জাশান হুছের অবার্বহত পূর্ব্দে যথন কয়ানিই এবং কৃতিমন্টাং দলের মধ্যে একটা আপোষ কে; হয় (ভিসেম্বর, ১৯০১), তথন শাসন্যপ্রের উপর জনদাবারণের আংশক কর্তৃত্ব স্থীকৃত হইয়াছিল। এই সময় সঠিত পিপল্স্ কাউজিলের সহায়ভায় জনসাবারণকে প্রকৃত প্রভাবে না হইলেও মারে শাসন সংক্রান্ত বিভিন্ন বিষয়ে মভামত প্রকাশ করিবার অবিকার দেওয়া হইয়াছিল। সাম্প্রভিক চীন রাইবিধি পূর্ণনাত্রার সণ্ডান্তিক না হইলেও ইহা পূর্ববিত্তী হেন্ডান মুর্গে চীনে প্রচল্লত শাসন-ব্রেয়া অপেকা অবিকত্র গণ্ডান্ত্রিক তাহা অবীকার করিবার উপায় নাই।

 णाः সাবের চরমপতের একট প্রধান কথা এই যে "The revolution is not yet finished" we're acre रिপ्लार्थ्य व्यवभाग याहे नावें। ১৯२८ मानद कांत्र व्याक ১৯৪१ সনেও এই উভিত্র সভাভা অন্ধীকার্য। বিগত হাবিংশভি वरभारत कक भारक सम्म (कान रकान एक एक होरभद व्यवशिष्ठ इहेडाट्ड (**७**शनहें जावाद (काम (कान (कास व्यवसंख्य ঘটিয়াছে। সদাণত যুধের ফলে চীন আন্তর্জাতিক ক্লেয়ে বাহ্যতঃ প্রহাণেক অনিক প'রমাণে অহার রাষ্ট্রের সম্কর্মতী লাভ করিলেও বাভব ক্ষেত্রে ইহা এবনও সম্প্রভাবে স্বীকৃত হয় নাই; সাধ ইয়াং খেনের ছানীয় শাসনবাবলা সংক্রাছ চীনের কোন কোন অঞ্চল রূপ পরিএছ कविरम् कविकारम पारम देश अवन्त क्यानार द्रविश পিয়াছে। তিনি যে বহণের জাতীয় মহাদশ্যেলন আহ্বান করিবার কথা বলিমাহিলেন আৰু পর্যায় সে প্রকার সংযালন আছত হয় নাই। ১৯৪৬ সনের নবেশ্বর বাদে চিয়াং কাই-শেক উ'লবিত শাসন-বাবস্থা প্রণয়নের উদ্দেষ্টে যে সমিতি অংহবান করিয়াছিলেন, ভাষা ভাতির সক্তেশীর প্রতিনিধিছের দাবি ক্রিভে পারে মা। অর্থনৈভিক ক্রেওে সাম ইয়াং-সেমের पत्र चाक नदीव मम्म एवं नोटे।

মহিলা-সংবাদ

কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের ১৯৪৫ সনের এম-বি পরীকার বীমতী মীনাকী সেমগুল্পা বাবতীয় ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে প্রথম ছান অবিকার করিরাছেন। বিভিন্ন বিষয়ে প্রথম ছণ্ডরায় দরন কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের বিগত সমাবর্ত্তন উৎসবের লমর ইহাকে নিম্নলিখিত চারিট স্বর্ণপদক প্রদান করা ছইয়াছে: (১) রার ডাঃ সরোক্ষ্মার সর্ব্বাবিকারী বাহাছর স্বর্ণপদক, (২) বাত্রীবিদ্যা সম্পর্কিত স্বর্ণপদক, (৩) ডাঃ মছেক্সনার গাসুলি অবপদক ও (৪) রমাপদক। এতদ্বতীত তিনি স্বাহানীতি এবং জনসাধ্য বিষয়েও 'গার্টফিকেট অব অনাস' লাভ করিরাছেন। পরীক্ষার শ্রীমতী মীণাকী যেরূপ স্থতিত প্রদর্শন করিরাছেন নেডিক্যাল কলেজের ইতিহাসে তাহা বিরল। সম্প্রতি তিনি চিত্তরঞ্জন সেবা-সদনে সিনিরর হাউদ সার্ম্বনের পদে নিযুক্ত ছইবাছেন।

ভা: মীনান্দী সেনগুপ্তা এডভোকেট মি: বি. পি. সেনগুপ্তের বিতীয়া কভা। ইংগর মাতা শ্রীর্ক্তা স্থমা পেনগুপ্তা এম-এ এককন বিহুষী মহিলা। তিনি লেক বালিকা বিভালয়ের শ্রিলিপ্যাল ও সেকেটারী।



ডাঃ মীনাকা দেনতথা

রপান্তর

শ্রীবিষ্ণুপদ বন্দ্যোপাধ্যায়

ছট ভারা,—ভরা মুখোমুখী আছে টাছিরে
নীলিমার পথে ভরা যাবে কি গো হারিছে।
কালো দাগ কেটে উচ্চে চলে পাখী,
উলটো দোয়াত, কালি মাধামাধি,
আকাশে কৈ বুবি লেপে দিলে ভ্যা
অদেধা হন্ত বাছিরে।
ছট হাতে ঢাকে ভলভরা চোধ,
ভরা চোধোচোখী টাছিরে।
গগনের নীল হারিয়ে যাবে কি এখুনি—
আকাশের মেয়ে, কার কাছে খেলে বকুনি।
ছট ভারা ডাকে অভ ভারারে,
রভের কললী বালি কি ভাঁছারে—
ফলে স্লে-স্লে, শাধার শাধার,
কলী মাধামাধি পাখীর পাধার,

বলেছে বুঝি সে নামহারা কোন
কাল্যে পাধারের শক্নি—
রক্ত অধরে বং নিজে গেছে
কার কাছে থেলে বক্নি।
কালো বোছা চ'ছে ছুটে ছুটে বুঝি আলে ঐ—
উলটো দোয়াত, দিকে দিকে কালী ধৈ ধৈ,
পোবাক পরেছে কালো পদার,
কালো খোড়া চ'ড়ে আসে সর্ঘার;
কোন ভারা ধরা, হার নামহারা
সাচা প'ড়ে গেছে এ পাড়া ও পাড়া—
কালো ঘোড়া চ'ড়ে আসে সর্ঘার,
অহর ভরা, বরা ধৈ,
বরপের অসবি উবলিয়া ওঠে
ভ্বেধিজয়ী আলে ঐ।

সেমসাইড গোল

শ্রীনীরেক্স চট্টোপাধ্যায়

আমার যে একটা ভাল মাম ভাছে, সে ভামি কেন, ভামার মাতাপিতারও বাবে হর মনে নেই। ক্টবলের মাঠে, চাহের পোকানে, আরীষবস্থ সকলের কাছেই আমি ভাক মামে পরিচিত। ভাল নামটি আমার সেই কোন্ ভাতীতে একবার ইপুলের খাতায় প্রবেশ করেছিল, তার পর ভার একবার কলেছের খাতায়--- বাস্, তার পর দেই সীমাবছ গঙী খেকে বেরিয়ে বাইরের মুক্ত বায়তে এসে ছাক্রাবভায় আর কোন দিনই আমার সকে আমার নামের গুড সংযোগ ঘটতে পারে নি। ভবত এখন আমি ভাল নামেই পরিচিত, খবরের কাগক ধুগুন, কোন ভাইবেইরী দেখুন, বাতীর দেয়ালে মার্বেল-পাথরে বচিত আমার পরিচয়পত্র দেখুন, সর্বক্রই আমি ভক্তর স্ক্রেম্প ভাট্, বামিংহামের পাস করা বিখ্যাত ভাক্তার।

অনেকের ভাগ নাথের সঙ্গে ভাকনামের একটা সম্ব বাকে যেমন সভোন ভাগ নাম হগে ভাকনাম সাধারণত হয় সভু গণপতি ভাগ নাম হলে গনা বা বহু হতে পারে ভাক-নাম ৷ অনেকের আবার নাম নির্ভর করে জন-মুহুর্ভের পারি-পারিক অবস্থার ওপর। পুনিমার রাভে টালের ছাসি প্লাবন এনেছে পৃথিবীর বুকে, এমন মুহুর্তে নবলাভকের ভাল নাম भूर्वभूषे खबर **फाक्साम प्रशक्काल मुख्या विकिस स्था** আবার আয়াচের আর্ন সভায় ক্যুগ্রহণ করলে শিশুর বাদলা नामरे जाबाद वेज स्टार बाटक । आवाद सामाद्वा नामकदन হয় আঞ্জির পৌগালুকের ওপর, স্থামবর্ণ নিয়ে করায় যে শিশু ভার নাম কালো হতে পারে, ক্ষের সময় মাধায় চুল না থাকলে ডাক নাম গ্ৰ' হ'ডেও শোনা যায়। আর এক শ্রেণীর নামকরণের বছর দেখে মনে হয় বাঙালী সম্বত্ত মাতা-পিতাই কবি। এক একটি পুত্র যেন তাঁদের কবিভার এক একট চরব। প্রবম পুরের নাম বারেশ্র হলে, বিভায়, ডুভীয় পুত্রের মাম যবাক্তমে বীরেন্দ্র, হীরেন্দ্র হতে পারে, কবিভার লহরী ডাকনামের পাহাজেও বাবা পায় না, হল বজায় রেবে ভাকনাথের কবিতা গেরে চলে বীরু, ধীরু, হীরু।

কিছ ওপবের কোন করব্লাভেই আমার নামের কোন পরিচর পাওরা যাং না, না ভাল নামের, না ভাকনামের। ভাকনাম আমার ভালনামের খলিত অংশবিশেষ ভো মরই, এমন কি বর্গ ও মর্ভোও এত পার্বকা বোব করি নেই। ভাল নাম আমার আগেই ভনেছেন, এখন ভাবভে পারেম আমার ভাকনামটা কি হতে পারে? কোনই কুলকিনারা পাবেন না ভেবে—ভাকনাম আমার বটু। বটু যদি সব সময় বটুই বাছত ভাহলেও হ'ত, মাতাপিতার মনোভাবের ভারতম্যের ওপর আবার বটুর প্রকারভেদ বটিত। লল্পী হেলে হরে পদাভনা শেষ করে উঠলান, যা আদর করে ভাকলেন, বচুমনি, ছব বাবি আয়। ধ্ব বাওয়ার পর ছোট বোনটর গালে এক চড় কসিয়ে দেওয়ার কভে গে যদি ভুকরে কেনে ওঠে, মায়ের কঠে বটু তবন হয় বটা।

याक (य भगश्यत कवा वशकि छवन चामात चामावछा। বটু নামেই পরিচিত। মেডিক্যাল কল্লাকে পঞ্জি থাকি (शार्टेशन । (शास कामरे किमाय, मिला कथा रमाफ कि कृष्टे-राभव यार्ट, ठारवत । जाकारन करलाकत (अकठात एए) भारक क क्या कहे थि। **का**बर खड़ खाक्काबि-नारश्चय मञ्जा महम করার পর, বিলাতের চিকিৎদা-শান্তের সমূদ্রেও ডুব দেবার ইচ্ছাটা আমার প্রবৃদ, বাড়ীর অবভাও ভাল পিভা ইচ্ছা করণেই বিলাতে পাঠাতে পারেন, কিছু তার বারণা বিলাভের কলেৰ শিক্ষার দিক খেকে কলকাভার কলেৰ অপেকা কোন অংশেই উন্নত নয়। প্রচুর অর্থ নাই করে এদেশের যাবভীর क्मानकत व्याष्ट्रात-वावशात श्रीतेष्ठान करत अस्मान विमानन অভত দোধওলি আয়ত করতে যাধার কোনই মানে হয় না। অবহা একবাও বীকার করেন, ওদেশের ডিগ্রির দাম আছে চাকরির বাজারে, কিন্তু চাকরির প্রয়োজনে আমি ডাক্টারি পভ়ছি না আমার ভবিখাং নিউর করবে নিজের শিকাও পারদশিতার ওপর। বিলাভী ডিঞ্জির প্রলেপে চাক্তরি স্থলত হতে পারে, কিন্ধ রোগী আরোগা হয় নিন্ধের শিক্ষার খন্ধভার ধারা, যা ইচ্ছা বাকলে কলকাতাতেই আয়ত্ত করা সন্তব। সুভরাং পিড় অর্বে যে বিলাভ যাওয়া আমার অদৃষ্টে নেই, ভা পূর্বদিকে ত্বর্গ ওঠার নির্মাণ সভ্যের মতই বুধতে পেরেছিলাম।

বিলাত যাওয়ার রঙীন নেশা কিছ কাটে না। চিছাতেও আনন। বংগতে জালাকে উঠলান, আরবোপাগাগরের নীল টেটয়ের দোলার হুলছি, দূর থেকে এডেন বশ্বের সাল নীল আলোকলো হাতছানি দিয়ে ভাকহে, লোহিত সাগরের ভিনিত শ্রোভবারার চাঁদের প্রকাচ্বি, প্রেভের ছুলীভেক্ষ ভাল-বেজুরের তীরভ্নি, ভূমব্যলাগরের তরজায়িত কেনিল উজুলি।

যৌবনকালের উজ্লোগ, জাগেও যেমন হঠাং, নিবেও যার ভেমনি অভাকতে। ক্রয়েড অবক বলেন, নিবে সে যার না, জাগ্রত চেতনা থেকে বিদার নিরে চলে যার মনের অপর এক কুঠরিতে, বিশিষে থাকে দেখানে, মাঝে মাঝে উঁকিবুঁকিও মারে, লাকিষে আবার বেরিয়ে আগে সুযোগ পেলেই।

যাই ছোক, বিলাভ যাওয়া ছবে না এইটাই ধরে নিবে-ছিলাম। আর এক চিছার সময় কটোবার হুবোরই বা কোবার বটু দত্তের। ফুটবল মাঠে বটু দত্ত না হলে ইলিরট শীক্ষ বিধাসাগর কলেকেরই মেরে নেবার সন্থায়না। আমার বেলার তারিক সকলেই করে, তবে আ্যানাটমির রছ প্রকেসর জানবারু ক্লাসে একবার যা বলেছিলেন, তা ক্লামিক হরে আছে। আপের দিন বিধ্যাসাগর কলেককে তিন লোনে হারিরে ইলিরট শীক্ষ পেরেছি আনরা, তিনটি লোলই করে-ছিলাম আমি। ক্লামে বেলার কথাই হজিল, জ্ঞানবারু বললেন, বেলে তো বই দত্ত, স্কোর করতে করতে বল নিয়ে যায়। দেই বেকে কুটবলের কথা উঠলেই সকলে বলত, বটুর সকলে চালাকি নধ, স্বোর করতে করতে বল নিয়ে যায়।

हारबद (माक्श्रमद चांड्डा—वहें भड़ वां क्रम तदम हा-ख षामव मदय कदाल भारत ना । अहे हारश्व (पाकान (बरकहे আদিগ গলের স্থান। রবিবারের সকাল, পূর্ব রাজে নাইট-ডিটট দেতু ঘুষ ভেঙেখে বেলায়, দেৱি করেই এপেছি माकारन। पिन है। पित्र हा है चार्न (चटकरे चर्न तथ्छ निणीयहे ध्रवान वद्धा, अक शास्त्र अकति। भिनारबहे, छदमत बतात्नः एम नि. जात अक शास्त्र अकडे। किंद्रे, मूच क्रमास व्यवर्गमः। नकनत्क छैर्दिन कर्दा श्रमि नगर्दात्मत पिर्क बिट्मय मृष्टि दार्थ रमास, पृष्टे अकठे; भिडे करत रक्षम, रक रक याद्य, छेश्वनाका त्या शास्त्रक कार्यहे, अक्षाद्यका त्रिय बाद्यहे (कवा यार्य।----अवर्श्वरणव सार्ष्य (नवा कान, (अवाव काव ভার ওপরেই পড়ে। ভাতে আশ্চয় হবার কিছু নেই, কিছু ভেবে পেলাম না, এমন কি ঘটল যাতে লিপ্ত তৈরি করতে হৰে, উত্তৱপাড়া সৰ্যাবেদা গিয়ে আবার রাত্রেই ফিরে আসভে ছবে। আর এত আহগা থাকতে উওরপাড়াই বা কেন ? সকলেই বটনার আকম্মিকভাষ বা অভিনবত্বে এভই বিভার থে, বটু দভের আগেমনও যেন লক্ষ্য করবার মত নয়।

(६)(हेन (बरक हारश्व कारश्व कारल वामर वामर वास्त्र कारल है ল্লিপাৰের একটা খ্রাপ্ বিশ্বাস্থাতকতা করায় পাথের বুড়ো আঙুল আর ভার পাশের আঙুল দিয়ে সাঁভালিবাুছ তৈরি क्र च च व ह्या न हो कि क्या क्र व व व व আমাকে একটু আলগা ভাবে খুঁছিয়ে চলতে হছিল। সেই चवहांव हास्वत साकारन हृत्क, चनिश्व नात्मत बानि ह्वाइहै। ৰৰণ কৰে বদে চায়ের অভার দিলাম। নিশীৰ ভভক্ৰে शास्त्र निनारविष्ठे। बितास (बीस) (श्रष्ट परन प्रत्यक्त (श्राप्तके मद्यर-मा चार वर्डे मस (वन्न (है! र (वर्क किर्म विदय चान्नक । चार तरीम (यम फिडेकि-च्यातिक्टिफक्टित महम हम्ब करत बात्कत छिडेके त्यत्क चामारशय-चामि कारश कृत्क शिरम भिनीत्वत क्वात माववारम चात्र्षि क्तात च्योर्ड वर्ण डेर्ज्याम -- "बाब कठ मृद्र निष्य यादि स्थादि ए जुल्बि, वन कान् পাৰে ভি'ভবে ভোষার গোমার ভরী"—ভার পর আর্ডির ভাষ্য করে বললাম, আমি বে কিছুই বুৰতে পারছি না, লিই উভরপাড়া যাওয়া, কিয়ে আসা, প্রেকেউ, বেদল টোয়--আয়

শরং-দা বেলল টোরে প্রেকেট কিনতে যাওয়ার পার্টনার। মেডিক্যাল কলেকে চুকেছে লেই দূর অভীভের কোন এক শুভ बिकारक, तम बिकारक त महा। कांत्र की वरम कांत्र अम मा। বৈগ্যের অভ্রম্ভ বিষাচল শরৎ-দা। স্ত্রী, পুত্র, কভা নিয়ে ক্রকাভাতেই বাদ করেন। পিডাও ডাক্তার, বেশ বড় ভাঞার, মামডাক আছে। পিভার ইচ্ছা বাড়ী, গাড়ি, অর্থ-সমেত উত্তরাধিকার হতে পুত্রকে ডাঞারি বিভারও কায়েম करव पिरम्र यान । भवर-पा कि इ वरण, वाकाव (करण वाका হয়, তা সে বুর্থ হোক, রোপা হোক, অহঃ হোক; রাক্কার্য চালানো বিভার পাসই করক আর ফেলই করক। येण (श्रीमभाग छाउमादिव (हर्मव (येणार । दावश्रव (ये प्रदेव वाका रत् काकादशुद्ध अरू पर्य काकाद स्वाद व्यक्तिदी। यशि यन। एवं, फारकादित शास्त्र निर्कत करत (भारकद कीवन) স্তরাং এ শাস্ত্র ঠিক্মত না শিবলৈ তোমায় লেণকের জীবন **बिराइ (चना कदाल (मर्टर (कन, लाद छेखदल नदर-माद** তৈরি—বলে, রাজ্যর খাতেও তো রাজ্যের লোকের জীবন নির্ভর করে, আমরা এক একট ডাঞার শীবনে অ'র কভ লোককেই বা পরপারে পাঠাতে পারি, কিছ ভাষ দেখি এগ-বার রাজ্যে কথা, তার ভাষাগ্নোসিলের ভূলে এজার্ড লোক যে পরপারে যেতে পারে, এবং বিয়েছেও কঙবার। --- बरे र'अ महर-भाव अर्क्छ अ'टाइ!

শংশ-দা আমার আর্থির উত্তর দিলে একট গানের ক্ষেক্টি চরণ আর্থি করে, 'বসুহে চল চল, মিলিভ প্রাণের উ-সবে, প্রির পুল্পের ঘন গৌরভে, নিবিল দিনের সামগানে, বসুছে চল চল।' আর্থি শেষ করে আমার দিকে তাকিয়ে বদলে, মিলিভ প্রাণের উৎসব উত্তরণাড়ায়। একটি প্রাণ নিবিলের, আপর প্রাণ গীভারাশীর, এইমান্ত চিটি এলেছে নিশীবের কাছে।

আঙুলের গাঁভালির মধ্যে শ্লিপারটকে কাষণা কঃতে করতে শরং-দার পালে সিরে বলে বলগান, তা উত্তরপাভার কেন, নিবিলের যাতায়াত তো হিল বালীগঞ্জে দক্ষিণ পাভার দিকে।

শরং-দা হিউমার ছাড়া কবা বলে মা, এক মিনিট ভেবে বললে, তুমিও তো প্রবমে উত্তরপাড়ার গোল আগলে দক্ষিণ দিকের গোলে স্কোর করতে করতে বল নিয়ে যাও। কিছ ছাকটাইমের পর দক্ষিণ পাড়া ভ্যান করে উত্তরপাড়ার দিকে বাওরা কর কেন ? মিবিলেরও তাই, দক্ষিণ পাড়া ছাকটাইমের আগে, এখন লক্ষ্য উত্তরপাড়ার গোল।

আমার আৰু সকালের অহন্তি ঐ ই্র্যাণ-ট্ডো প্লিপার পারের নীচে থেকে কখন দূরে সরে সেছে, সাঁড়াশির মধ্যে ওটাকে বাগ মানাবার চেটা করতে করতে অভ্যনস্থ ভাবে বলে উঠলান, লে তে। বিপক্ষকে বিরক্ত করবার অভ্যে। মুবের কথা কেছে নিবে শরং-দা বললে, নিবিলও কিছু বিগক্ষকে আছ রাখবে না, ভবু বিধ্বন্ত কেন, ভাকে সম্ভন্ত করে ছাছবে, গোলের বালা পরিয়ে দেবে দেখে নিও। হাসির বুম পড়ে পেল। একটু খেবে আবার বললে, বছু নিবিল আবার উদ্যবাদার পর পশ্চিম পাড়া যাত্রা করবেন, টাকা দেবেন পৌথী সেন।

আবার সমন্ত অবহাটা ছবোৰ্য হয়ে উঠল, পশ্চিমু প্ৰাণ আবার কোৰায়, ভাভে টাকারই বা প্রয়েজন কিদের, আর গৌরী সেমই বা কে ? আমি বললাম, নাঃ, আৰু দেরি করে আসায় সব বিষয়েই আমার প্রাক্ষয়, হেঁয়ালির পর হেঁয়ালি !

আমার মূবের দিকে ভাকিরে শরং-দার বোধ হয় একটু মারা হ'ল, চায়ে চূর্ক দিয়ে বললে, নিবিল এবার এখানকার পাঠ সাক কবে নরবেধ-যঞের বিলাতী উপায় শিবতে যাছেন, রসদ যোগাবেন (লগাল-ভাদার, ফাদার-ইন্-ল।

নিবিশের বিপাত যাওয়ার কথার ফরেছের মতে আছ কুর্নীতে পর আয়ার বিপাত যাওয়ার কলনা তভিলেন একটা অথভিকর প্রের আকারে আমার লাগত মনের পর্ণায় কুটে উঠল। নিবিশের পক্ষেয়া সভাব হ'ল, তা কি আমার হয় মা ? কিছ লে নেহাতই ক্ষণিকের ভরে, চাফের দোকানে চাঁদের হাট এমন কলনার পরিপোষক নয়, তাই বুহুর্ভেই আবার ভলিবে গেগাম ট্রুড়া প্রিপারের বির্ভিকর অক্তির ভিতর।

নিবিলের বিষে হরে পেছে। তার বিলাত যাওয়ার সভাবনাকে বিরে আমার মনের যে স্পুরাসনা প্ররের আকারে মনের হয়রে একবার উকি দিরে চাধের দোকামের প্রতিকৃত্য আবহাওয়ার মিলিয়ে দিয়েছিল, সেই প্ররের উপ্তরে নিবিলের কাছে এইটুকু তথা সংগ্রু করতে পালোম যে, খবরের কাপুনের পাএগাতীর বিজ্ঞাননের তালিকার মধ্যে গীতারাধীর শিতার মত অর্থ্যেক রাজ্যপমেত রাজকলা প্রদানকারী পিতার সহান মিলতে পারে। বিলাত কৃত দিনের স্প্র আমার, সে কি ভাব স্থাই থেকে যাবে।

বব্যের কাপক লোকে পড়ে বব্যের ক্ষেপ্, আমি পড়তে লাগলায় পাত্র পাত্রীর ভালিকা। ভগবানের কুপার ভিন-চার দিনের মধ্যেই উপর্জ এক কছার পিতার স্বান্ধ মিলে গেল। ক্ষার পিতার স্বান্ধ মিলে গোল—ক্ষার পিতা চান কাষ্ধ ডান্ডার অববা ইঞ্জিনিয়র পাত্র—মনোনীত হলে নিক ব্যুক্ত বিলাভ পাঠাবেন। এ যেন আমাকে লক্ষ্য করেই শ্রুপদান। ভবে ঠিকানা দেওয়া নেই, চিঠি বিতে হবে পোই-বল্প নহরে।

শরং-দার গঙ্গে একবার আলোচনা করতে ছবে। একে ভো এত বছ ব্যাপরে অভিযান পিতার মত না নিয়ে, এমন কি তাকে গোপন ক'রে। গোপন অবঞ্চ থাকবে না তিনি জানবেনই, তবে লে একেবারে একাদশ ঘটকার, যবন মত তাঁকে দিতেই ছবে। আর মত না দেবারই বা কি আছে, পুরের বিবাহে ভার আশতি নেই, বরং বিজে করার অগ্নোস ইভিনধ্যেই ছ্-চার বাস্ত মার দিক বেকে এসেছে, আমিই ছেসে উভিন্নে দিরেছি। বিলাভ যাওয়াতেও শিভার দেরকম আশন্তি নেই, আপত্তি তাঁর নিজের অর্থ মষ্ট্র করে বিলাভ যাওয়া, প্রভরাং বে অর্থ বিলাভ সমনে মষ্ট্র ছবে, ভা যদি তাঁর বৈবাহিকের হর, ভা হলে ভিমি আপত্তি করবেন কেন ?

শরং-দার বাড়ী গেলাম। যেমন শরং-দা তেমনি তার স্ত্রী, চু'জনেই স্থান। তিম জনে পরামর্শ করা গেল। বউদি উনিলাকে শরণ করে বললেন, বিলাভ ভো যাবে, কিছ সানমুখী সেই তর্মণী যিনি একবার মাত্র ভোমার জীবনে উদিভ হয়ে মাললিক রচমা ক'রে চোপের জলে পরদিন ভোমাকে ভাগিরে দেবেন সাগর-দোলার বিলাভের পথে, ভারণর কোণায় ভার উদ্বাচল আর কোণায় অভাচল সে কথা ভূলে যাবে না ভো ?

আমি ছেলে কাবোর সর বজার রেখেই বলগাম, বালীকির হাতে উপে কিতা হয়ে যেটুকু হংব উমিলার ছিল, রবীজনাথের করন্দর্শে তা বোব হয় আর নেই। বালীকির উপেকা নাপেলে রবীজনাথের লেখনীম্পর্গের গর্ম তার থাকত কোবায় দু আমার উমিলা উপেকিতা হরে রবীজের আনীর্বাদ না পেলেও লাবং চজের ক্যওল্য বারিসিঞ্চও কি পাবে না—বলে হেলে লাবং-দার দিকে তাকালাম।

এত কাব্য আলোচনার মাবে চুপ করে থাকতে শরং-দার কট্টই হচ্ছিল, এতক্ষণে কথা বলবার অবকাশ পেরে যেন বেঁচে গেল, বললে, শরং চন্দ্র ওচন কাবোর উপেকিতার বার বারে মা, সমাজের উপেকিতা, পরিতান্তা, এদের ওপরই আমার ঘরদ বেশী। তোমার উনি যদি উনিলান। হয়ে সাবিত্রী হন তোকেটা করতে পারি।

আমি কৃত্রিম কোপ দেবিছে বউ দিকে মধাধ মেনে বললাম, দেবছেন বউ দি, ভদ্র-কণাকে উনি সাবিত্রী বানাজ্যেন। বউ দিও উভর নিষে প্রস্তুত, বললেন, সাবিত্রীও ভো ভদ্রকণ ছিল বলেই মনে হয়, ভবে সভাবান ডাক্তারী পছতে বিলাভ গিছে-ছিল কিমা ফানি না।

বল্পান, বটিদি, আমি প্রাক্তি, এখন আমার কার্যে-ভারের উপায় ঠিক করে বাত্তে দিন, নাইট ভিটট আহে, উঠতে হবে এবার।

বইদির মতে ঠিক হ'ল পাত্রীর পিতার নিকট চিঠি আমিই লিখব, তবে ঠিকানা থাকদে শরং-দার। কাংণ, হঠাং যদি আমার উমিলা বা সাবিত্রীর পিতা যথারীতি পাত্র দেবে ব্যবস্থা করতে আমার ঠিকানা অথ্যাথী পোলা হোটেলে এদে ওঠেন, সেটা আমার পক্ষে অস্থাক্তর হয়ে উঠতে পারে। চিঠিতে ভাকে গোপমও করা হবে না কিছু, ভবু একটি মাত্র অস্তরোধ থাকবে, আমার পিতার সদে তার কথাবাত — পাত্র দেখার পর তার প্রন্দ যদি হয়, ভবন হবে, ভার আপে নয়।

क्रानाटमब माथ करब नवर-याब विकास पिटव विवे पिनाम

ছেতে। বছদিন পরে ভাগ নামটা ব্যবহার করবার প্রবোগ
ঘটল। চিটি দেওয়ার পর প্রক হ'ল আলা-নিরাশার ঘন্দ।
প্রথমে মনে হরেছিল, বিলাভ যাওয়া বুবি হথেই পেল, করেক
লপ্তাহের বাংশার মাত্র। কিছু যভই দিন যার আলার আলোক
ক্রমেই ফীণভর হয়ে আলো। এখন কি, বিগাভ যাওয়ার রঙীন
ক্রমা মনের পর্দার আবার যেন বাংশনা হয়ে এল।

আশা প্রার ছেডেই দিয়েছি, এমন সময় একদিন শরং-দা এসে হাসতে হাসতে বললে, একট্রা টাইমে হলেও, কাই-রাটতে জিত। এই দেব চিঠি, বলে একবানা বাম আমার হাতে দিলে। চিঠি এসেছে দিল্লী থেকে, ভদ্রলোক সেবানে বেলওরের বড় জকিদার, সিবেছেন, কচা তার শিক্ষিতা, স্করী কিনা সে বিচার পাত্রের ওপর, পাত্র মনোনীত হলে অর্থার করতে কার্পণ্য নেই। শীর্মই কগকাতা আসবেন, পাত্র দেববেন, অভাত বিষয়েও বিবেচনা করবেন। আরও ছ্তুঞ্জন্ট উপযুক্ত পাত্রের সভান কলকাতায় পেয়েছেন, তাদেরও দেববেন—সংক্ষিপ্ত চিঠি।

আরও ক'দিন পরে। বোর হয় মেডিসিনের ফ্লাগ। আনরা সবাই হাঁ ক'রে ভেষভতত্ত্ব কথা শুনরি, এমন সময় ডাক এল শরং-দার, কোন এমেরে। কোন শুনে, শরং-দা কিরে এসে গ্যালারিভে আমার পাশে বসে বললে, সেই ভদ্রলোক দিল্লী থেকে এসেকেন, আমার মিসে এখনি কোনে বললে। আদর-আপারনের কোন কট হয় নি, গ্রীমতীকে ভো জানিসই, সব সুর্ভুভাবে পালন করেছে, আমাকে যেতে বলেছে এগুনি। আমি ভদ্রলোককে নিয়ে ঠক পাঁচটার সময় ভোর ওবানে আসব। ঘরটা শুহিরে রাখিদ, বড্ড নাকি সাহেব আবার, বিলাভ কেরভ।—প্রিলিপ্যালের কাছে সেদিনকার মৃত ছুট নিয়ে শরং-দা চলে পেল বাড়ী, আমি ছোটেলে।…

बरतत अ कि व्यवशा। हिविद्यत छेलत होडे प्रमत ক্যাণেতারে এপ্রিলের তিন তারিবের পর **ভার হাত পছে** নি ৰদিও সেদিন জুন মাসের মাঝামাঝি। ময়লা ভোয়ালের দদে কোলাকুলি ক'রে অগুত শরীরের প্নরটা বিভিন্ন ্ ছাংলেত্র পরিবেয় বছ, আলনায় নয়, চেয়ায়েও নয়, বিছানায় শারিত। বে ভাবে বইওলো থাকা উচিত নঃ ঠিক সেই ভাবেই রয়েছে; কতক বিছানায়, কতক টেবিলে, কতক চেষারে, এমন কি টেবিলের তলায়ও ছ-একটা। ভুডো चांव श्लिगात्वत वाचि विकास चांच परवत मर्वक किये আপন আপন বুগল মৃতিতে নয়। সে বেন এক সৈৱাচারের রাজ্য-ব্রিসিরান্ রিপার কেড সের আলিদনে, অরকোর্ড शा-बर बरुगांडे किएत श्राहर जानवार्टेंद जाद बरु পাটকে। এবেন ধরকে পরিভার করভে হবে। এভবার ভাৰতাৰ, বিলাভ গিছে দলকার নেই, বরক ভয়ে খানিকৃক্ণ বিশ্ৰাৰ কৰা যাক! কিছ তা হয় না, উঠে লেগে গেলায कार्दकं, क्षेत्रे राष्ट्र यक्त्री मचन धत्रवानात मरकात क्रवनात ।

পরে নিজেই অবাক হরে পেলাম ধরের পরিপাট মৃতি দেবে, দেয়ালে টাঙানো মরকলাগটা পর্যায় জন্ত দেবাজে।

নমন্দার মেরেদের। কোমল শরীরের মব্যে এত কটিন
শক্ত মন থাকে কি ক'রে, অবগীলাজ্ঞমে হল আর ওবের
পরিচর দিতে বসে কুতৃহলী পুরুষের চোথের সামনে।
পাঁচটার সময় শরং-দা আসবে দিল্লীর সেই সাহেবকে নিরে,
রূপের পমীকা দিতে হবে না, চুল বুলে চুলের বহরও দেবাতে
হবে না, হাত বমে পাউডার তুলে প্রকৃত বর্ণের পরিচয়ও
দিতে হবে না, তবু আমার অবহা সদীন, করণ।

ইয়ারে শব্দ হ'ল। মুখে পাইপ, ছাতে ভাকিনিয়া টোবাকোর টন, পরনে সাছেবী আট, শরং-দার সঙ্গে প্রবেশ করপেন গিলির পিতা, আমার পিসেমলাই। তবে কি—। হঠাং আসা কালবৈশাবীর বড়ের মত কি যেন আমার সমস্ত মনটাকে প্রচন্ড নাড়া দিরে পেল, সমস্ত পৃথিবীটাকে সামাহীম একটা অভকার গ্রাস করতে আসহে আর সেই সর্ব্যাসী অভকারে মব্যে অসহায় আমি ভেসে চলেছি। মধিরত্ব পাবার নিশ্চিত আলা নিমে হাত বাড়িয়ে হাতে যেন গাগল সাপের লীতল পিজন পর্ব। সন্মুবে ইণ্ডিয়ে পিসেমলাই, পাত্র ধেবতে এসেছেন—আমাকে। পাত্রাল-প্রবেশের পূর্বের সীতার মানসিক অবহা এর চেরে বারাপ হয়েছিল কি না জানি না।

লিদেমলাই ঘরের মধ্যে স্থকোমদকে না পেরে তার জারগার জামাকে বদে থাকতে দেখে একটু জ্বাক হলেন। আমার দিকে চেরে বললেন, হালো বটু, ইউ জার হিয়ার!
—আমার উত্তর দেবার মত জবস্থা নয়। লরং-দাও জ্বাঞ্চ, ক্লার শিতা বটুকে জাগে থেকে চিনলেন কি করে ? পিলেম্লাই একটা চেরার টেনে বদে লরং-দাকে জারও বিশিজ্জরে জ্লিজালা করলেন, স্থকোমল কোথার, আই মিন, পাত্র ? তারপর আমার দিকে তাকিয়ে জাবার বলতে লাগলেন, হ'বছর পর দেশে এলাম, তুই ত বেল বভ হরেছিল! চিটিশ্রত লেখা হয় মা, রওয়ালাপিত থেকে যে দিল্লী বদলী হয়েছিলে ধ্বরটাও ভোদের দেওয়া হয় নি। এবার টিক করেছি, বাংলাদেশে যথম এলেছি, সব দেখাতনা করে তবে যাব। ভোর পিসিমা, লিলি, এরাও এসেছে।

শিসেমশাই কি বকে যাচ্ছেন, ভার একটা বর্ণও আমার কানে প্রবেশ করছে না, তার কবা বলার এক অসভর্ক মুহুর্ছের স্ববোগ নিরে ভবু ইসারার নিজের ঠোটে আঙুল রেবে শরংদাকে কবা বলতে বারণ করে দিয়েছি। শরং-দা সব কিছু পরিছার বুবতে না পারলেও, কোবাও যে একটা গোলনাল রয়েছে ভা বুবে নিয়েছে। ভগবান বাঁচিয়েছেন ভাল নামটার আমার ব্যবহার হয় না। শিলেমশাই চুণ করতেই, শরং-দা কিছু বলার আগেই আমি বলে উঠলাম, স্কেমল এই বলেই বাকে, ভলেছ বেকে কিরে এক টেলিএার পার,

বাবার অসুখ, এই চারটের ট্রেনে দেশে চলে গেছে। আপনি আদবেন, ভাই আমাকে ভার হয়ে বেবে গেছে এবানে—বলে করণ মিনভিজরা চোবে শরং-দার দিকে ভাকালাম। শিসেমশাই বললেন, পুষোর চ্যাপ, বাট দাইলি ইন অস্পিসাস্কর নিলোসিয়েসন্স্টু টাট (বেচারি, ভবে বিয়ের কবা-বার্ভার স্কভেই এটা অভ্তত)।

শরং-দা এতক্ষণে মূব বুলবার অবসর পেলে, পিসেমশাইয়ের দিকে তাকিয়ে বললে, আপনি বটুকে চেনেন নাকি ? পাইপটা ভাল করে টেনে লিসেমশাই হিউমার করে বললেন, চিমি না, এ যে আমার শালার ছেলে । শবং-দা এবং লিসেমশাই হো হো করে হেসে উঠলেন । ভাতি সক্ষরনক পরিস্থিতিকেও তরল করতে শরং-দার তুলনা নেই, শরং-দার কূপার সে যাজা মানরকা হ'ল । ভগু লিসেমশাই যথন নিবে যাওয়া পাইপটা ধরাতে ব)ভ, সেই সুযোগে একধার চুলি চুলি আমার বললে, শেষে সেমসাইভ গোল !

কে বাঁশী বাজায়

बीधीरतसक्ष हस

ডাকিছে নিকট লোনে। ডাকিছে খদুর, প্রিয় বাধে বাহ-ভোৱে, অজানা বঁধুর উদান্ত আহ্বান আদে সীমাহীন স্রোতে সীমাছারা আকালের ভট-প্রাপ্ত হতে নিভত অপ্তরে। চকিতে কিরিয়া চাই। छाकिन (य (म कि (इबा चाट्ड किया नारे ! খপ্ৰ যেন, মোহ যেন, যেন কিছু নয়। তবু যেন ভাৱ চেয়ে বড় পরিচয় বিক্ৰিয়া ওঠে নিভা প্ৰভাত-সমীয়ে. উধার উদয়-তটে, রশ্নী-তিমিতে, निवदाद नैर्द नैर्द, मध्य (रमाध्र, বিচিত্র আকাশ-বঙ্গে মেধের লীপায়, কুতুমিত কাননের পঞ্জবে পঙ্গবে, পাপিয়ার কল-কণ্ঠে পিক-কলরবে। কামনাষ উদ্বেশিত প্রান্ত হৃদয়ের নিমীপিত আঁবি-পাতে রথ পরশের কমণীয় স্পৰ্ণটুকু খেন ছু যে যায় সুৰাজীত সুৰে ভৱা হৃদয়-বেলায়। শুৰেছি আহ্বান। অঞাত পুলিনে ৰসি' কে বাৰী বাৰায়। তাই ছোটে ধৰি শৰী এহ উপএছ আর ছটে যার ভারা ইগত প্ৰিবী ছোটে আছি-ক্লাছিছার।। অই যে ধুসর বালু, ভ্রান্ত মরীচিকা, জ:বেরে নিবিড় করি' আসে কুঞ্চকা, উল্লাদ প্ৰন আসে ছনিবার বেগে বক্ত-অপ্নি গর্ভে নিমে খন নীল মেখে,

সেও শোলে সে আহ্বান উদাও গম্ভীর। ভাই এ বিপুল বিশ্বে কেছ নছে দ্বির। পাধাণ কারায় রঙ নিক হৈর কানে. माष्ट्रि चाड़ारम मुख पूछ दौब-आरन. পূৰে দে আহ্বান। তাই পাধাণ পঞ্চৱ ৰূপে দেয় এছ দাব, মাটির অন্তর স্নেংতে সর্থ হয়ে মুকুলেরে ডাকে। भाव पुराल करन करन बकारेटल बारक চির্ভন সে আহ্বান। প্ৰের ধুলায় প্ৰতিধানি পদচিষ্ণ এঁকে ৱেখে যায় অধত্বদিত আল লতার ও ত্থে বরা পত্তে ঢাকি পথ রাত্তি আর দিনে। যাত্ৰা আদে ভাৱা যায়, কেছ নাহি কানে কোন লোকাভীত লোকে অমৃত-সন্ধানে। কৰে যাতা হ'ল খুৱা –সে এক বিশায় ৷ কৰে যাত্ৰা হবে শেষ, ভার পরিচয় কেহ নাহি ভানে। তথু ভনি সে আহ্বান-বাঁৰে লেমে আর সাহে বৈরাগ্যের গান। ভাই যাত্রা এলেছিল, যাত্রা আদে নাই, এখানে পেয়েছে যারা ক্ষণেকের ঠাই. যারা আপনার, 'পার যারা কেই নয়, **हिनि बाहारमब, य अळा**ख श्रीबहस, সকলের সাবে ভূমি বাবিলে যে মোরে বাণীশনা সীমাধীন আহ্বানের ভোৱে।

যানবাহন ও চলাচল ব্যবস্থায় অরাজকতা

শ্রীঅন প্রকু দত্ত

বিভিন্ন দেশের উৎপন্ন জ্লব্যাদি যাহাতে স্পৃত্যুবে খাদকগণের (consumers) নিকট পৌচায় ভাছার উপর্ক্ত বন্দোবন্ধ খাকার প্রয়োজন। এজন উৎপাদক ও খাদকের উভয়ের স্বার্থের ক্ষম্ভ উন্নত যানবাহন চলাচল-ব্যবস্থা বাঞ্নীর। ইছাতে বাধা হউলেই ক্ষভি। কিছ এ ক্রেডে চলাচল নির্থণকারিগণ লাভের দিকে দৃষ্ট রাবিয়া কাজ ক্রেন, সাধারণের স্বার্ণ ভাছাদের কাম্য নহে।

চলাচল যাহাতে সুষ্ঠু ভাবে হয় এবং যাহাতে কোনরপ অপচর বা অসবিবা না হয় এজল হল, স্থল ও আকাল যানের চলাচল সম্পর্কে পারম্পরিক সহযোগিতার প্রয়োজন। কিছ তাহা না হইয়া পরস্বর প্রতিযোগিতার দরন প্রতিপদেই অপচয় সাগিহাই আছে। বিভিন্ন গর্থনেটের সাহাযো আহাজ কোম্পানীগুলি খোলাইলিভাবে অপবাহের প্রতিযোগিতা চালাইতেছে। মদী ও খালের অস্থানগুলি রেলের সঙ্গে অথবা নিজেনের মধ্যে এবং ক্থনও ক্থনও স্থলপথের নানবাহনের সহিত প্রতিযোগিতা চালাইতেছে। ইতিমধ্যেই বিভিন্ন দেশের মধ্যেও আকাশ্যানের আন্তর্জাতিক প্রতিযোগিতা স্থান হটরাছে।

আন্তর্গানিক বাবসা-বাণিজ্যের ক্ষেত্রে আকও জাহারের প্রযোজন সর্বাপেকা বেনী: কৃষিও লিজে কোন ভূবও উন্নত ভূইলে স্থলপথের উন্নতি সাধন করিয়া উহাকে নিকটবর্তী সামুদ্রিক বন্ধবের সহিত যোগ করিয়া দেওরা হয় এবং দেবান হইতে বন্ধ বন্ধ জাহাকে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশের মধ্যে বাণিজ্য চলে।

আৰু পৃথিবীয় সপ্ত সমুদ্র অর্থনোতে ছাইয়া বিয়াছে।
কিন্তু আপুর্জাতিকভ'বে কোবার সকলে সহযোগিতা হারা
অপবার ক্ষাইবে, না তাহার বদলে বিভিন্ন রাষ্ট্রগর্হ বহু
অন্ত্রিশ্বক লালাল চাল্ রাবিয়াছে। আন্তর্জাতিকভার দিক
দিয়া এই নীতি একটি শুরুতর অপরাধ এবং ক্রাসীদেশ
এই বিষয়ে বহু অপবাধী। পৌহ-শিরকে সাহায্য দিবার
অকই আহাল নির্মাণ ও আহাক চলাচলে সরকারী সাহায্য
দেওয়া হয়। এই উৎেক্তে রাজকোয় হইতে জাহাজের
মালিকণণকে অর্থ দেওয়া হুই, অবচ স্বর্গমেন্ট ইহার বদলে
কিছুই পান না।

এইরপ অর্থ সাদাযোর পরিমাণ ক্রমে বাভিয়া বাভিয়া বর্ত্তমানে অসন্তর বক্ষম ফীতি লাভ করিয়াছে এবং শেষে ঐ সাহাযা বহু করিয়া দিতে হইয়াছে। সাহায্য আবার নূতন ভাবে অরু হটল ডাক বহিবার জভ। জাহাজ কোপানীগুলিকে—বিশেষতঃ মালাগাছার, লোমালীলাভ, ইলোচীম এবং নিষ্ট কেলিভোনিয়া অভুভি দেশের জভ প্রচুত্ত অর্থদাহায় দেওরা হইল। এই সকল ছামের মেল
চলাচল কার্হ্যের জন্য অসপ্তবরক্ষ বেশী অর্থদাহায়া দেওরা
হইত। ভৌগোলিক অবস্থান ও আর্থিক অবস্থা বিবেচনা
করিলে করাণী দেশের পক্ষে বিরাট নৌবছর অমাবঞ্জ।
করাণী দেশ নিজের বাগ্য নিজেই উৎপাদন করে আর বাহির
হইতে কাঁচা মান্যের আমদানীর আব্রেক্তাও ভাহার ক্ষ।

ইটালীও সীয় সাথের প্রয়োজনে বহু অর্থ অপথায় করিয়া বিরাট নৌবছর পোষণ করিত। বিধেশের বাণিজ্ঞাকেন্দের সহিত স্বদেশের ও আফ্রিকাস্থিত উপনিবেশের সহিত যোগাযোগ রাধিবার জন্ধ ইটালীকে বহু অর্থ ব্যয় করিতে হইত।

প্রশাস্ত মহাসাগবের দেবিহুরের কথা আফোচনা করিছে দেবা যায় যে ১৮৯৬ হরৈতে ১৮৯৯ সন পর্যন্ত এই চারি বংসরে আপান আহাজ নির্মাণ, আহাজ চলচল ও আরু বহুনের জন্ম ছয় ওব বরচ বাড়াইহাছিল। কেবদমাত্র লাভের আপাতেই আহাজী ব্যবসা বাড়িয়া চলহাছিল। প্রতিযোগিতার ফলে মালের মান্তলও বুব ক্ষিয়া সেল এবং আহাজ কোন্দানী জলির যথেষ্ট লোকসান হর্ততে সাগিল। পরে যথন আহাজ তৈরির উপরে সরকারী সাহাযা বহু করা হঠল, তবনও প্রোক্তাবে ভাহাজে ব্যবহৃত ইন্পাত্রির্ম্মত জ্বাদি সরকারী সাহাযা পাইত। এইরূপে সংকারী লাহাযাপ্রাপ্ত ভাহাজ কোন্দানী জলি প্রস্থাতের সহিত ও বিদেশী বাণিক্য-আহাজের সহিত প্রতিযোগিতা করিত। এইরূপ ব্যবহা থাকার দরন অল্পিনের মধ্যেই আপান সমুত্রে পৃথিবীর তৃতীয় শক্তিরূপে প্রাণাভ লাভ করে। থিতীয় মহাত্রে আপানের নৌশক্তি পত্ন হুইয়া গিয়াছে।

মার্কিন মুক্তরা
রও প্রশাভ মহাসাগরে ঐ একই পছা
হরিয়াছে। ইহারই ফলে আনেহিকার আহাজ-বাবসা ক্রমেই
বাভিয়া চলিয়াছিল। বিগত হিতীয় মহায়হের পূর্বে পহাত্ত
আমেরিকা এই নীতি অস্থায়ী বহু বাণিকা আহাজ তৈথার
করিয়া নিজেদের মাল সদেশী কাহাজে চালান করিয়াছে এবং
সরকারী সাহায্যপুই আহাজ কোম্পানী হারা অট্রেলিয়া ও নিউ
কিলাক লাইনে যোগাযোগ রক্ষা করিয়াছে। এই কার্য্যে
মার্কিম সরকার কোটি কোটি ভলার বরচ যোগাইয়াছে।
মার্কিম ভলারের ও আইনের প্রভাবে কেবল বিদেশী আহাজী
কোম্পানী ক্রিপ্রত্ত হয় নাই। আমেরিকার সম্প্রতীর এবং
দেলের হয়কার নদীসমূহ হইতে বিদেশী আহাজীরা বিভাছিত
হুইয়াছে। প্রশান্ত মহাসাগরে মার্কিম প্রভুত্ত প্রশ্বিতি
ভূইয়াছে—অর্থাং আবেরিকা এবং আলাভা, হাউয়াই, মার্কিন

সামোরা, টুট্ইলা ও প্রশান্ত সাগরত অন্যান্য বৰুরে বিঞ্লিশী
জঃহাজের যাতায়াভ নিধিত হইবাতে।

নিজের বিরাট জাহাজ-বিদ্ধ ও ব্যবসায়ের উপর থুব বেশী
নির্ভর করিতে হয় বলিরা আমেরিকার 'স্বদেশী' নীতিতে
ইংলঙই অবিক ক্ষতিগ্রন্থ হইয়াছে। শতাজীকাল ধরিরা বুটশ
বাণিজ্য-পোত পৃথিবীর মধ্যে সর্ব্বাশেকা অবিক আন্তর্জাতিক
বাণিজ্য-সন্তার বহন করিয়াহিল।

ইংলভের ভৌগোলিক অবস্থান কাছাক-শিল্পের উর্থিতর সহারক কইরাছিল। কাছাক নির্মাণে অভ্যাবপ্রক কর্মপার ক্ষিত্র কাছারক কইরাছিল। কাছাক নির্মাণে অভ্যাবপ্রক কর্মপার ক্ষিত্র কালার দক্ষন এই সুবিধা হর। ইংলজের সমুস্বভাউও বহুবিস্থুভ এবং বক্ষরখালর অবস্থানও উহার পৃথিবীব্যাপী বাণিক্য বিভাবের অপ্রকৃতে। কিন্তু ইহা সংযুৱ প্রভাক দেশ লোকসান দিয়াও নিক্ষ নিক্ষ নৌ শিল্পকে দাঁও করাইবার চেপ্রা করিছে থাকার ইংলভের নৌ-বাণিজ্যের কভি হইভেছিল এবং এইকল বংসরের বিভিন্ন সম্বাধ বহু কাছাক করার দক্ষ কাছাকের হারা অলাভ কাভির বাণিজ্যে সহায়ভা করার দক্ষ ইংলভের যে লাভ হুইভ ভাহা প্রাপ্ত সহায়ভা করার দক্ষ ইংলভের যে লাভ হুইভ ভাহা প্রাপ্ত পান্তরার ইংরেক কাভির এতংশপ্রীয় অনেশ্ব কেন্দেনের গভি ইংলভের বিশক্ষে যাইভেছিল। বঙ্গানে ইংরেক কাভি এই ক্ষত্র চর্ম আর্থিক মুর্গভির সন্মুনীন হুইয়া খণের কন্য মাকিনের ধারস্থ হুইয়াছে।

অবস্থার উপ্পতির ক্ষয়া গবগ্যেক প্রথমে কাহাক নির্মাণ ক্ষাণতে চেটা করে, কিন্তু তাহা সন্তব না হওয়য় কাহাজ কোম্পানী প্রপ্রেক বংসরে ২০ সক্ষ পাউও দান (bounty) করিবার ব্যবস্থা করে। অভলানিক মহাসাগরের কেম্পোনী-প্রলিক ভাক-চলাচলের ক্ষম ব্যবস্থার মোটা টাকা নিবার ব্যবস্থা হয়। আমেরিকাও এই উপায়ে উহার কাহাক কোম্পানী প্রলিক চাফা করিতেছিল। ইহা ব্যতীত প্রবস্প পার্মান প্রভিয়েগিতা এড়াইবার ক্ষম নামমাত্র প্রদে কোম্পানী-প্রপ্রেক বিত্তর মূলবন বোগানো হইয়াছিল। বিতীয় মহাস্থানের পূর্বেম এই ব্যবস্থা পূর্বমাত্রার চলিভেছিল। সামাজ্যবাদী নীতি হিসাবেও ইংলঙ মাহাতে সমন্ত সমুক্রপরে প্রস্তুত্ব করিতে পারে সেদিকে প্রব্যানেতির স্থতীক্ষ দৃষ্ট ছিল। ভারতবর্বে ঘাইবার পর ছিল ইংলঙের পক্ষে 'সব লাল' (ull red) অর্থাং কিরাগটার, মাপ্টা, এডেন, সাইপ্রাদ এবং প্রয়েক বাল সমন্তই ছিল ইংরেজের ক্ষরতলগত।

কৃষ সমুদ্রের সংযোগকারী হিসাবে প্রয়েশবালই হিল পুৰিবীর সর্বশ্রেট কলপথ। ইংলও এই বাণিক্য-সরণী ধর্বলে রাধিবার ক্ষমই মিশর ধেশকে তাবে রাখিরাছে এবং বালটা করাসীদের কাটা হইলেও স্থাকোশলে ইয়ার বছ অংশীধার হইয়াছে।

के अकरे कादान मार्किन मुख्याद्वे भागामा बान व्यावत पृष्ट

ভাবে দৰ্শ করিয়া বসিয়াছে। আমেরিকার প্রশাস্থ ও অভলাত্তিক মহালাগরের মধ্যে যাতায়াতের ইহাই এক্সাত্র কণেপথ। দেশরকার অনুহাতে এই বালটা আমেরিকা বুব প্রক্রিক করিয়া রাধিয়াছে এবং ক্ষেক্ষ বালে বিভিন্ন কাতির জংগাক চলাচলের যে আন্তর্গাতিক ব্যবস্থা আছে এবানে সে বালাই নাই। এই বালে এলাকা (canal zone) সম্পূর্বক্রণে করায়ন্ত রাধিবার ক্ষনা আমেরিকাকে ম্যালোরিয়া, চতুপার্থের প্রমন্তর্গানিয়ার ক্রমণ্ডত নিজে ক্রমণ্ডা এবং নিক্র দেশের ও বহিরগেত প্রমাক্ষরে প্রতিযোগিতা প্রভৃতি মানা সমস্তার সমুখীন হ্রতে হ্রয়াছে। বহু অব্বাহ্ন করিয়া ভবে পানামা অহালে বাট মাকিন উপান্বেশে গ্রাপন করা হুইয়াছে

যদিও জাহাকের বাবসা আছেডাভিক হওচাই বাছনীয় ভরু लाक का जिसे देशांक विश्वस्थात कि कि बाहर के बाबवाब bেষ্টা করিভেছে। উদ্বেশ অধান সকল জাভিকে তারে রাধা। ইহা ব্যত্তীত রেল কোন্দানী অল দুরটের পরে কারাজ-काष्मानीक कार् कदिवाद एन्ट्री करत, कादन भारादनणः क्लभरवर प्रचास मान bलाbरलय यारका करा मास। ४०भरव म'ल हलांक्रेस (यमेंद्र कांग ecte द भाशायांके एरवा पारका क्नभर्ष क्रांचक हार्य दूर दूरिया गार्टेख एया (द्रमभर्ष দূরত কম হল কিছ বরচ বেলাপড়ে। রেলপণ নির্দ্ধানেও বরচ বুব বেশা পড়ে। বড় ছাহার কোপানী আঙ্জাভিক হিগাবে গঠিত হুইয়াছে কিছ বেলপৰভাল দেশের মুরোই वक जाराव चाराव दए लाज्यां नधाता महिलाज्य । अक्न (एटम अरम्ख (बर्मद भागिक मन्बर्भके नट्छ। ष्यवञ्च श्रेष्ठ क्रिक वर्ष्यदेव याचा सम्बद्ध (दलहे स्वकादिव साहक भागिकारम् । त्कान त्कान (मर्ग अवर्गामके (दर्शद भार्गक মালিক মাত্র, জাবার কোবাও নিহক কোম্পানীর হাতে ८६म भविष्ठामानव गरिष आक्ष बारसारका अहे लादाको द्वालक रहे। अ १ के व्यक्ति इर मार्किन (दल्या । व्यक्तिकाध चाकांके लक्ष महिल दिल्लय दिन्दाहर । देश देशल ७ पुविशीद क्षकां अप्राप्त द्यां हे दिल्ला (यद एवं अन्। व्याद्यदिकां व्याक्त व्याक्त SeeB विकिन दिन कालानी चाट्य। दशहरत वरमहत खान्न एन अक छनात भूनाका स्ट्या पाटकः द्रशदाक्षा श्रीख-যোগিত: ধারা কিরপ আবিক কাত হয় তাহার অঞ্চম দুৱাছ ইংগ্র। এবানে কোন মানি বা জাতীয় পরিকল্প। না করিয়া विक्रित अधिकान (देश लाहेन दभाहेदार्ष, खदर 'क्शर खपहसर'। ১৮৪৪ ছইতে ১৮৪৭ সালের মধ্যে ইংশতে অনুনে ৬৩৭ রেল कान्नानी दिक्षित दश बदर बदार क्षितार्गात क्षेत्र इशा ৰাল, বান্তা, কমি দৰ কিছুৱ মালিকগণই প্ৰতিখোগিতায় বাতি-বান্ত হয়। অবশ্র এই কোম্পানী থলির সংখ্যা পরে অনেক ক্মিয়া যায়, কিন্তু রেল ব্যবসা গোড়ার অপব্যমের ও অপচ্ছের বোৰা এবনও বহন কবিভেছে। এইৰঙ থিভায় মহাৰুদ্ধের वह भूर्त्सरे भाद छैर्रे निषय अक द्यार्थ (तम क्लामानी क्लाक

জাতীরকরণের সপক্ষে মত বিরাহেন। ইহা অপচর নিবারণেরই পরা বলিরা বর্ণিত হয়।

ইংগঙ বা আমেরিকা অপেকা পশ্চাংপদ বেশে প্রতি-বোগিতা বারা আরও বেশী ক্ষতি হইতেছে। অনেক সময় পরন্পর প্রতিবোগী কোম্পানীগুলি বেশরোযাভাবে বরচ করিয়া এবং অনাবঞ্জ রেল-লাইন নির্দ্ধাণ করিয়া অপচয়ের পরাকাঠা দেখাইয়াছে।

চীন দেশে ভিনট পুৰক পুৰক রেল-লাইন আছে। দক্ষিণ माध्विया (राज्यबार नारेट्यवियात (तज्यव्यत विचात राज्य চলে—ইহা চওছা গেৰের (Broad gauge)। কিছ চাইনিজ केक्षेत्रं त्वम चार्त अक शिव्यतः। होन-महकारवद निक द्वमभव আবার অন্ত মাপের। পুতরা: কোন রেলপথের সহিত অপর (बज-नर्षद (यात्रार्यात्र भारे, करन हमाहरन जन्निवा) नाना বিদেশ পুলিপভিগণকে রেলপথ নিশাণ করিতে দেওয়ায় आवेक्रण चन्ठरवत रही ध्वेदार्छ। ১৮>৪->৫ मध्यत होस-ভাপান যুদ্ধে চীন পরাভিত হইলে বিদেশী শঞ্জিঞ্জি চীনকে माना चुनिवात कर है। किया रात । (मास अमाक छेडर मार्थ्यकार রেললাইন নির্বাণ করিতে, কার্বানীকে উক্ত লাইন পোট আৰাৱের সহিত মুক্ত করিতে, ইংরেজ কোপানীকে ইরাংদাট্র উপভ্যকায় বেলজিয়ান কোম্পানীকে পিকিং হইতে হাকাও, মার্কিন কোম্পানীকে স্থাধাও হইতে ক্যাওঁন প্রথম্ভ বেলপৰ নিৰ্দ্ৰাণ কৰিতে অনুমতি দেওয়া হইল। ১৯২০ সনে আবার क्याभी, हेश्टबक, मार्किन ७ कार्यानी श्रीक्रपांचनरक बूक्कचारन ভবিষাতের রেললাইন নির্শানের স্থবিধা দেওয়া ছইল।

দক্ষণ আষেরিকায় এই একই অব্যবস্থা। আরকেটাইনে বেলপথ অপেকারুত বেনী, কিন্তু এখানে ইংরেক্ষ, জরাসী ও দেশীর পুঁজিপতিগণের হাতেই সমন্ত কর্তৃও। একমাত্র ইংরেক্ষ কোশানীগুলির হাতেই ১৫০০০ মাইল রেপপথ। দশচী রেলপথ দশচী এলাকায় যাভায়াত নিয়ন্ত্রণ করে, এবং সমন্ত লাইমই বিয়ানো আয়ার (Buenos Aires) বা অপর সমৃত্রনকারে গিগ্রা পভিয়াছে। রেল-লাইনগুলি তিন মাপের (gauges), স্তরাং দেশের মব্যে অবাধ চলাচল বিশেষভাবে স্থান্ত ইংলাছে। অবচ রেল-ব্যবস্থা রাষ্ট্রনিয়ন্ত্রিত হইলে এই পরশার প্রতিম্বাণী পুঁলিপতিদের খার্থ রিক্ষত না হইয়া দেশের সর্বসাধারণের পুর্থ ও সুবিধাই দেখা হইত।

ভারতের রেলপথেও ফ্রটর অভাব নাই। এবানে বিদেশী গবর্ণমেন্ট বেশীর ভাগ মূলগনের মালিক হইলেও বিভিন্ন ইংরেজ কোম্পানীকে ভাহাদের মার্লিকিই উপযোগী মধ্যেজভাবে রেল-লাইন নির্মাণ করিতে অভ্যাতি দিরাছে। ইহাতে এক দিকে পরিকল্পনার অভাব এবং বিভিন্ন মাণের রেল-লাইন হওয়ায় চলাচলের অস্থবিবার স্টে হইয়াছে। অব্যাব বর্জমানে ভারতের অধিকাংশ রেলপথ আতীর গবর্ণমেন্টের হাতে আলিয়াছে এবং ভবিষ্যতে এওলির উন্নতির আলা করা যায়।

আইেলিরার রেলপথ প্রার ২০,০০০ বাইল অর্থাৎ ভারতের প্রার অর্থেক। এবানেও বিভিন্ন টেটে বিভিন্ন মাপের রেলপথ ও ভজ্জনিত অসুবিধা বিভন্ন। বংসরের পর বংসর বিভিন্ন টেটের মধ্যে ব্যবসা-বাণিজ্যের হার বাভিতেত্তে এবং সেই সলে রেল চলাচলের যাভারাতেও অসুবিধাও বৃদ্ধি পাইতেত্তে।

আষ্ট্রেলিরার যানবাছন চলাচল ব্যাপারে বিপর্যার দেখা
দিরাছে। বেলগুলি বিভিন্ন ষ্টেটের মধ্যে যাভারাভ ব্যাপারে
ইমারের সহিত প্রভিযোগিতা করে। মোটর-যান মাল
আমদানী রপ্তানীতে রেলের সহিত প্রতিযোগিতা চালার।
আকাশ-যান রেল, ভাছাভ ও ঘোটরের সহিত প্রতিযোগিতা
চালাইরা ভাক ও যাত্রী বহন করে। যানসমূহের মধ্যে দর
ক্যাক্ষি লাগিরাই আছে। বিভীর মহারুছের পূর্বে দেখা
গিরাছিল রেল কোম্পানী, ভাছাভ কোম্পানী ও মোটর
কোম্পানীগুলি সকলেই লোকসান দিতেছে, আর আকাশযান কোম্পানীগুলি সরকারী সাহায্যে বাঁচিয়া আছে। এইরপ
অন্তত ব্যাপার পুঁজিপতি-সমাজেই সন্তব।

রেলে এবং মোটরে প্রতিযোগিতা আৰু পৃথিবীব্যাপী । যে नकन राम निवयनान रामारन छेरकहे चरहा यथा--चारमित কান যুক্তরাষ্ট্র। যুক্তরাষ্ট্রে ত্রিশ লক্ষ মাইল পথ-- পথিবীর মোট রাভার প্রায় এক-ভতীয়াংশ এবং সে দেশের যোটর চলাচলও পৰিবীর সকল দেশ অপেকা বেশী। যোটর চলাচলের দক্তন প্রব বংসরে আমেরিকার রেল-রাজ্যে শতকরা ৬৬ ভাগ কমিয়া গিয়াছিল। ছুই কোটি সম্ভৱ লক প্রাইভেট মোটর গাড়ী বাকার বেল্যান্ত্রীর ভাড়ার ঘাট্ভি প্রভিয়াছিল এবং প্রিল লক্ষ্ মোটর-লরী রেলের মাওল ক্মাইরা দিয়াছিল। ছোট ছোট বেলপৰগুলি শুম্পূৰ্ণ লোকসান দিয়া চালাইতে হইরাখিল। গ্রেষ্ট ব্রিটেনেও মোটর প্রতিযোগিতার আদ রেল কোম্পানী ছলি বংসৱে এক কোট যাট লক্ষ্পাটভ লোকসান দিয়াহিল। অবচ ভার্মানীতে বেলরাভার্ভলি পুবিভন্ত ও রাষ্ট্র-ৰাহকদের হারা পরিচালিত বলিয়া লেখানকার অধিবাসীরা এই সকল অপচয় হইতে বক্ষা পাইত। ইহাতেই প্রমাণ হয় যে স্থপরিচালিত রেলপথ ও যোটরলরী কম ক্ষতিপ্রস্ত হয়। व्यवक्र व्यव पृत्वत भारत नहीं द्वादार महात काक एवं अवर पृद्रभाष (द्रम-भाष्ट्रेस प्रविश्वासम्सः ।

আবার রেলণথের সহিত দেশাভাছরত্ব ভলপথেরও প্রতিবাদিতা হইরা থাকে। ভারী ও সহজে নই হর না এরুণ দ্রব্য জলপথেই পাঠানো সহজ ও বলব্যরসাপেক। কোন কোন অঞ্চল নদী, হল ও থালের ভিতর দিরা বুব সভার মাল চালান হয়। জার্মানীর জলপথভাল অতি উংকুই, কিছ রেলের ভালা কমানোর প্রতিযোগিভার এই অলপথভালও ক্তর্জিত ইংবাছে। রাইনের জলপথ কেবল ইউরোপে নয় পৃথিবীর মধ্যে সর্কোংকুই জলপথ। কিছ বেলজিয়ান ও ক্রানী বেল কোন্দানীগুলির প্রতিবোগিভার (ভালা

ক্ষাইয়া) এই ক্লপণের বাশিল্য ক্তিএক হইরাছে। সাষ্ট্রপত্যকার করলা, আল্লেসের তুলাকাত ক্রবা,এবং লেঁরির লৌহ-প্রতর রস্তানী এবং নানা বাক্তপত্য আমলানী এই রাইনের ক্লপণেই হইত। কিছ বেল-কোম্পানীগুলি ভালা ক্রতর রকম ক্যাইবার ক্ল রাইনের বাশিল্য আল্পন্তরার্গ ক্রের হানাল্যরিত হইরাছে এবং ঐ পথেই ক্রাসী ও লক্ষারার্ বেরেলে সুইক্লারলঙগামী বিদেশী বাশিল্য-ক্লাহাক বাতারাত ক্রিতেছে। দানিউব নদীপথের বাশিল্যও রেলের প্রতিবাশিতার ক্রিতেছে। দানিউব নদীপথের বাশিল্যও রেলের প্রতিবাশিতার ক্রিরোপের অভ্যন্তরন্থ দেশগুলি নদীর মারকতই সমুক্রের সঙ্গে তথা বহির্দ্ধানের বিহত যোগাযোগ রাখিত এবং নদী-ক্রের আর্জ্জাতিক যাতারাতের পথ বলিরা স্ক্রীকার করা হইত। কিছু ক্লার্মানী যথন নিক্ল এলাকার নদীগুলিকে নিক্ষের বলিরা লাবি করিরা ইহালের আন্তর্জাতিক চলাচল বছু করিল তথম এক বিপর্যরের স্ক্রী হুইরাছিল।

ঐটবোপের নদীসমূহের যোগাযোগের অভ যে সকল বাল কাটা হইৱাছে দেই সকল বাণিজ্য-পৰঙলিও প্ৰতিযোগিতার বাত্ৰায় কভিপ্ৰস্ত চইয়াছে। অনেকগুলি বালে বাণিকা-দ্ৰব্যের हजाहज अटकवादा वह इहेशा शिशास्त्र । देश्जर् अहे बाज ৰমনের চরম অপবাষের দুৱান্ত পাওয়া যার। রেল-লাইনওলি ব্যাপক ভাবে ভৈত্তি হইবার প্রায় পঞ্চাশ বংসর পূর্বে এই ৰাল গুলি পুঁজিপভিগৰ ব্যক্তিগত দায়িতে ধনৰ করে। নানা-लाटकत कांक विनेत्रा वह जकन बान चाकात-सकारत, नक्-বলোব্তে গভীৱতায় ও অলাভ বিষয়ে বিভিন্ন রকমের ছিল अवर अवस भनास्त्रा हमाहम वावष्टांच भए भए वावांच एक्टि ছইত । কুত আদায়েরও বহু ঘাঁট ভিল। কিন্তু এত অসুবিধা লভেও অৱ বরচ এবং সোভাপথে ভারি মালগুলির চলাচলের ব্যবস্থা করা হইত এবং বালের মালিকগণও যথেষ্ঠ লাভ भाइछ । प्रक्रिय न्याप्रामाञ्चाद ७ ७८३ई दावेकिएव निक्वेवर्छी স্থানসমূহে কয়লা ও লোহ-প্রস্তুত চালান দেওয়ার সহায়তা कतिया के बालक्षणि निब-विश्वविद प्रशासक रहेशाहिल। किन्न বেলপথের বেপরোহা প্রতিযোগিতায় শেষে ক্রপণবঞ্চলি অভেজে ভইয়া পড়ে। কোন কোন বেল কোম্পানী নিজেদের লাভ বাড়াইবার জন্ত জলপবঙলি কিনিয়া লইয়া কেলিয়া রাবে अभवारश्वत हदम एडीक (प्रवीद । आत्मिकिकाद मुक्कार्डिक) ৰাল ও বেলের প্রতিযোগিতার ঐ একই ব্যাপার দেখা যার। অবর প্রেট লেক অঞ্চল জলপবের বাণিক্যকে বেললাইন ছঠাইতে পারে নাই। কিন্তু দরক্ষাক্ষি করিছা বেল কলপথের বাণিকাকে বেশ কিছু ক্ষতিগ্রন্থ করিরাছে। बाजनाय हजाहरमद क्य यह मुख्य प्रविवाद (हड़ी करा स्टेबार्ड, अवन कि २० कांक्रे छनात बंबक कविवाध विरम्ध ভোন উন্নতি সম্ভৱ হয় নাই। জলপৰ ও বেলপৰ পারস্পত্তিক প্ৰতিবোদিভার অপব্যর বাড়াইরা চলিরাছে মার।

চলাচল-পৰে বুজন প্ৰতিবোগিতা আনিৱাছে আকাশ-বাৰ। ষ্ট্ৰীমার ও ছেল উভয়ের সহিত ইহার প্রতিযোগিত। চলিয়াছে, खात अपन पर्शास श्रीखातिका वांबी **७ छाक अ**वर क्छकाराय बुनावान खराानिक हनाहरनक घटवार नीयावक। हनाहन-ব্যবস্থার এই ক্ষেত্রে ক্রত পরিবর্ত্তন হইতেছে। সদ্যুগত বিতীয় बशायकरक माना क्षिक कियारे प्रशासकाती वना यारेटल नारव । প্রথম মহামুছের শেষ ভাগেই আকাশ-যামের বিপুল সম্ভাবনা দেবা যায়। ছুই মহাযুদ্ধের মধ্যেই সমস্ত সাঞাজ্যবাদী দেশে ইহার প্রভূত উর্তি হয়। রুণ দেশে ও আর্থেরিকার বুক্তরাপ্টে আকাশ-যামের উপ্লের পরাকার্চা পরিলক্ষিত হয়। क्षांज, रजाां अर्ज्ञ छेपिन्दिय द्वापनकादी (प्रमेत्रदृष् पूज्र সাত্রাজ্যে বোগাযোগ রক্ষার কর বিরাট আকাশপর রক্ষা করিতে বাবা ও মনোযোগী হন। প্রথম মহায়ছের পরই বছ মনীৰী ভবিগালাণী কবিয়াছিলেন যে প্ৰবৰ্তী মহায়ত আক্ষাল-**गर्स हरेरद अदर रय का**जि जाहारज मक्कियान हहेरद (म-हे ক্ষী হইবে। দে ভবিগ্ৰধাৰী সভা ছইখাছে। ভিছ এই সকলভার পশ্চাভে কোট কোট সরকারী মুদ্রার অপবায় দেবা যার। অনেক পুঁজিপভির দ্বারা বরচ হইলেও ইহার পশ্চাতে बार्डिय (वशरवाया माराया विम । आस्मिविकाय युक्रवाहे अवना প্ৰত্যক্ষ ভাবে কোন কোন্দানীকে সাহায্য দেয় নাই ভবে ভাক প্রভৃতি বহিবার অভ যে বরচ দিয়াছে তাহা সাধারণের নিকট स्वेटल क्षांश्व मालामा वह छन। महायूद्ध मिळानक कडी হওৱার আকাশপৰে যাভাৱাভের মৃতন নৃতন সমভা দেবা দিয়াছে। আৰ্থানী, ইতালী ও আপান একেবারে ঘমিয়া পেলেও বর্তমানে আমেরিকা ও গোভিয়েটের মধ্যে প্রতি-যোগিতা মারাত্মক আকার বারণ করিতেছে। দূরবর্তী দেশের স্থিত যোগাযোগের আকাশপথঙলি বহু দেশের উপর সম্প্ৰসাৱিত হইৱা বাকে। কিছ কোন বিবাদের কারণ ঘটলে সংশ্লিষ্ট যে কোন দেশ চলাচলে বাৰা দিতে পাৱে: সম্প্ৰতি ভারতীয় ভোষিনিয়ন ভারতবংগর আকাশপরে ওপলাক বিষানের চলাচল নিষিত্ব করিয়া দিয়াতে কারণ ভাচ ও हेटकाटनश्चांत्र विवास कार्यक्ष अभागक्षात्र भरक रकामक्रम সহযোগিতা করিতে প্রস্তুত নহে

অন্ধানের মব্যে ভারতবর্ষেও ক্ষেক্ট এরোপ্লেম কোম্পানী ছাপিত হবরছে। গবর্গমেন্ট অন্থ্যতি দিবার পূর্বের্ অবক্ত অনুসভাম ও তথাদি সংগ্রহ করিব! কার্য্য করিতেছেন। তব্ও এ বিষয়ে কভাকভি ব্যবস্থা না করিলে অবাব প্রতি-যোগিতার কলে অপচয়ের সন্তাবমা রহিষাছে। আকাশপথের ব্যাপার একেবারে রাষ্ট্রের নিজের অবিভাগে রাখা বাছনীয় কিনা তাহাও বিশেষ ভাবে চিন্তার প্রযোজন। সৌভাগাক্তমে রেলপথ ভলি রাষ্ট্রের নিজের মালিকামায় আসার সরকার তথা দেশবাসী লাভবান হইয়াছে এবং কোম্পানীগুলির পরক্ষয় প্রতিযোগিতার অপচয় ও অপব্যর বছ ইইয়াছে। আকাশ- বানের শৃত্য প্রতিবোগিতার কেত্রে বাহাতে অপচরের আনদানী না হয় রাষ্ট্রকে সেই দিকে দৃষ্ট রাখিতে হইতে সুষ্ঠ্তাবে ভাতীয়করণ হারাই সকল অপবায় নিবারণ হইতে পারে, কিছ নামা অবস্থা ও বার্ণের চাণে পঢ়িয়া সকল রাষ্ট্রের

ণ কে তাহা সভব হয় না। কিছ বেশরোরা প্রতিযোগিতা বর্তমান কালে কোন রাষ্ট্রই বরদান্ত করে না, কারণ একালে ব্যক্তির বাধীনতা ও বার্থ কাতির ও সমষ্ট্রর বার্থের নিয়ে এ কর্বা সকল সভা দেশই বীকার করিয়া লইয়াছে।

নেপালীদের খান্তদ্রব্য

🗐 বিজয়ভূষণ ঘোষ চৌধুরী

শেশালী ল্লী-পুরুষ উভয়ে রছমকার্য করিয়া থাকেন। কাঠমাণ্ড সহরে সম্পন্ন ভদ্রলোকের বাসীতে কেবল জীলোকেরা হারা করেন। মেপালী ত্রান্থণ মাত্রেই রহন ও ভোকনকালে ৰুভি পরিধান করেন। • ধেবানে রঙন করা হয়, সেই श्रामक '(कोक)' वर्षा। तस्म-श्रामक अक्ट्रे के कृ करिया मध्या एक। तदमकारम '(ठोका' वाक्रिया काशव व वाक्रिय २७३) দেশাচারবিক্ত। চৌকার পার্যে আর একট 'চৌকা' থাকে। ষিনি রন্ধন করেন, সেধানে তিনি বছমধ্য রাধিয়া দেন এবং সেবান হইতে উহা বন্টন করা হয়। নেপালে এক ভাতি অপর ছাভির লোককে হেঁলেলে প্রবেশ করিতে দেয় না, কিংবা এক ছাতি অপর ছাতির প্রস্তুত অর আহার করে না। অভ জাতিকে স্পূৰ্ণ করিয়া জলপান করা কিংবা 'চৌকা'র বাছিরে বসিয়া প্রস্তুত অন্ন ভোক্ষ করা চলে না। সকলে স্ব च 'क्रोकाय' (काक्न क्रिया बाक्न। প্রত্যেক সংসারে ছুই-ভিন্ট করিলা 'চৌকা' থাকে। যদি বজাতীয় কাহারও 'চৌকা' ব্যবহার করিবার আবশ্যক হয়, তিনি শুদ্ধ বস্ত্র পরিধান করিয়া পরিক্রভাবে ভাষা করিতে পারেন।

নেপালে ভাত রাঁবার যে-কোনও ইাছিকে 'ভসলা' বলে।
এবানে পিতলের ইাছি ভিন্ন মাটির ইাছিতে কেছ রছন করে
না। নেপালে ভাল পিতল পাওরা যার। চাউল নেপালীলিগের প্রথান বাভদ্রবা। তাছারা প্রবানতঃ আতপ চাউল
সেতে করিরা ভোজন করিরা বাকে। নেপালে প্রচলিভ
পাহাছিরা ভাষার আতপ চাউলকে 'বেভ চারল' এবং
নেওয়ারী ভাষার 'জাকি' বলে। নেপালে সিছ চাউলের
প্রচলম বাকিলেও পেথানকার কোনও সদাচারী হিন্দু উহা
ক্যাচ ব্যবহার করে না। নেপালীরা ভাতের কেম গালে
না। নেপালে অনেক রক্ম চাউল দৃষ্ট হয়, বধা—মলিনা,
ছ্ভরাজ, বাপাচিলা, থাপামালি, চিনিয়া চামল, পঠুরা
চামল, বৈরা চামল (ইহা ভাল, আবিন মানে হয়), গোলমালি প্রভৃতি। বাপাচিলা দেবিতে একটু লাল বর্ণের। চিনিয়া

চামল দাবারণত: ভাজিরা থাওরা হর। এই চাউলের ভাত ভাল হয় না। বৈয়া চামলে মেপালীরা বেশীর ভাগ চিঁছা প্রস্তুত করে। থাপামাদিতে চিঁছা এবং ভাত ছই-ই প্রস্তুত হইতে পারে। ছ্রের বাম, থাপা চিলিয়া বাম, মাদি বাম কিংবা গোল মাদি বানেও এই হয়! মেপালীরা চাউল ভাজাকে 'বটে' এবং থইকে 'লাভা' বলে। মেপালে জালচল মেওয়ার জাভির লোকেরা মুছি ভাজে; কিছ রাজাণ ও ছারি (ক্রিয়) জাভির মব্যে ইহার রেওবাঞ্চ নাই। সেখানে চিঁছাকে 'চিউছা' বলে। রাজাণ হইতে ভোটে পর্যান্ত সকল জাভির লোকেরা 'চিউছা' প্রস্তুত করে।

শেশালীরা আটাকে 'শিঠো' বলে। সে দেশে গ্রুট্টা (মকা) ও ফাপর হইতে ভিনট বিভিন্ন প্রকারের 'পিঠে।' প্রস্তুত করা হয়। তল্পধ্যে ভূটার 'পিঠে।'ই বেশী তৈরি হয়। ৰেপালে 'কাপর' কম কলে। উহা দেখিতে খেসারীর ডাংগের মত, কিছ গোল ও কাল বর্ণের। নেপালীরা 'ভাপকে' নামক লৌহ-কটাহে খল গরম করিয়া উহাতে মুঠা মুঠা 'ভূটার পিঠো' (মকার গুঁড়া) কেলিয়া দের। এক এক বার নিকেপ করিবার কালে ভাষারা 'পানিউ' (ভাড়ু অধবা হাতা) বা ৰভা দিয়া যৰাশক্তি মাছিয়া লয়। মাছিবার পূৰ্বে বাম হাভ দিয়া 'ভাপকেয়' দঙট হুচ ভাবে ৰাৱৰ করিতে হয়। উক্ত গরম জলে নিক্ষিপ্ত ভূটার ভাঁড়া সক্ত **অনবর্জ মাড়ার কলে কাইরের আকারে পরিণ্ড হয়।** এই কাইকে নেপালীয়া 'ঢি'ছো' বলে। পাৰ্ব্বভ্য অঞ্চলন্ত বে সক্ত হানে শীভের প্রকোপ অধিক, ভথার ভাভ রাদ্ধা করা অত্যন্ত কঠকর। এ কারণ 'চি'ছো' কেবল শীতপ্রধান অঞ্সহ নেপাসীধেরই প্রিয় বাভ নত্, ভিত্তত ও ভূটানের অবিবাসীরাও ভাতের পরিবর্ডে 'চি'ছো' বাইভে ভালবালে। আবিন হইভে চৈত্র মাল পর্যান্ত নেপাল, ভূটান ও ভিকাভ অঞ্চলর সাবারণ লোকেরা ঢিঁছো আহার করে। নেপালীরা वारेमारकव त्वारम हिंद्या क्यारेबा महेबा बाहेबा बारक। কঠিমতু উপত্যকার লন্দর ভত্ত পুরুত্তদের মধ্যে চিত্তার धानम पूर्व क्य।

আংবের সময় মারাঠা বৃহত্তের। 'সোলা' (রেশমের প্রথম) পরিবাম করিয়া বাকেন।

শেশালীর। বুক্রী (ভোজালী) দিরা কুটনা কোটে, বঁটীর ব্যবহার ভাহাদের মব্যে বুবই জয়। ভাহারা প্রভ্যেক ভরকারিতে যথেষ্ট লয়া এবং আবশ্যক্ষত জিরা, মরিচ, ছত বা তৈল ও লবণ ব্যবহার করে। পার্বত্য ভাষার ঘূতকে বিট' এবং নেওরারী ভাষার 'বির' বলে। নেপালে লবণ উংপর হব না। পূর্ব্বে পূটান হইতে নেপালে লবণ আমদানি হইত। নেপালীরা ইহাকে 'প্র'লো লবণ' বলে। এবন বাংলা এবং অঞাল প্রদেশ হইতে নেপালে লবণ রপ্তানি হয়। নেপালীদের রামা ভরকারিগুলিতে মারাঠাদিলের মত বালের আবিক্য। ভাহারা মারাঠাদের মত ভূই তিনটি ভরকারি মিশ্রিত করিয়া রাহিতে জানে না—প্রত্যেক ভরকারি প্রভপ্ত ভাবে রাবিয়া বাকে। কেবল সম্পন্ন নেপালীদের বাটাতে অবুনা পাঁচমিশালী রাহা হইয়া বাকে।

অভ্যুব এবং মাধকলাই হোর ভাল নেপালীদের অভ্যন্ত প্রিয় বাদা। এই ছইটি ভাছারা প্রচুৱ পরিয়াণে বার। নেপালীটা কলাবের ভালকে 'মাবকো ভাল' বলে। ভাছারা কলাই ভাল প্রথমে বুইয়া সিদ্ধ করে। সিদ্ধ ছইলে উহাতে লবণ দিয়া একটু মূটান হয়। ভংপরে উহাকে উথন ছইতে নামার। যুভ পরম করিয়া উহাতে 'জিল্মু' (ভিন্তত দেশীর এক প্রকার শুকনা শাক) ফেলিয়া দেওয়া হয়। সেই 'জিল্মু' কণা হইলে ভালে ফেলিয়া দিয়া অলক্ষণ পরে নামান হয়। জিল্মু দেওয়া না হইলে ভালে কেলিয়া দিয়া অলক্ষণ পরে নামান হয়। জিল্মু দেওয়া না হইলে পর উহাতে কাঁচা বনেপাভা ও সঙ্গা কুটি ক্রিয়া দিয়া 'পানিউ' (হাভা) ধারা নাছিয়া লওয়া হয়। উহা কণা হইলে উহাতে ভাল ঢালিয়া দের। সেই ভাল নামাইয়া একটু সূচীটিয়া লওয়া হয়। নেপালীদের মধ্যে মন্তব খ মুগের ভাল বাওয়ার রেওয়াক্ষ নাই। কোন কোনও দেশালীর বাটাতে মন্তব ভাল ভো অভ্যন্তা বলিয়া গণ্য।

নেপাদীরা সচরাচর যে সকল লাক বাভরণে ব্যবহার করিয়া থাকে, লেগুলির নাব—পালং, ফর্সি লাক, (কুমছা লাক), কেরাউ (মটর লাক), তুরি (সরিয়া লাক), চমপ্প, বভুয়া, ভালেরাক প্রভৃতি। লেখোক্ত লাক ভিনষ্ট বাংলা দেশে কথে না। কুমছার ভাঁটা বাগুরার প্রথা নেপালীদিরের মধ্যে প্রচলিত থাকিলেও ভাহারা কদাচ উহার কচি পাতা বার না এমন কি সক্ষকেও বাইতে দেয় না। ভুক্যা লাক পাতা বাগুয়ার রেগুরাক্ত নেপালীদের মধ্যে ঘথেই আছে। ভাহারা উহাকে 'গুণজ্রক' বলে। কেহ 'গুণজ্রক' ভালা বার না। নেপালীরা ইহার সহিত 'বছি' (বছবট্ট কড়াই) দিরা মসলা সংযোগে প্রপ্র বোগদিক করে। 'গুণজ্রক' ধারা চাটনিও হয়। ভিষ্যত ও ভূটান হইতে এক জাতীয় ভুক্যা লাক প্রচুর পরিমাণে নেপালে আম্বানি হইয়া থাকে। কাঠমভূতে অবস্থান কালে ক্রেক্তন নেপালী ভ্রমলোক্তর নিকট অসুস্থানাছে আম্বা

বলে নেপালীরা ভাষা অবগত নছে। ভাষারা উথাকে বিখু বা কিছু বলে। নেপালী মাত্রেই ভৃত্তি সহকারে কিছু বাইরা বাকে। সরিধার ভৈলে উহা কোভ্য দিলে উহা হইভে পিরাক্ষের গছ বেশ পাওয়া যার। নেপালীরা ভালে, মাংসে ও চাটনিভে কিছু ব্যবহার করিয়া বাকে।

আপুর বড়া করিয়া বাওয়ার বহুল প্রচলন বেশালীদের মধ্যে আছে। মেশালীরা ভাজাভুজি জাভীর জিনিষকে বলে ভারে, যবা---আপু ভাষা -- আপু ভারে, নাক ভাষা -- নাক ভাৱে। পরীব নেপালীরা ভটমাস (swabean) নামক এক धकात कर्णारे शास्त्रा किया भवता भूगे। किरवा नामत जाम ৰাইয়া ৰাকে। ভট্নাসের আচারও প্রপ্ত হয়। বাংলা দেশে যাখাকে 'বটবট কডাই' বলে, নেপাল উপভাকায় তাহাকে বজি বলা হয়। বভিত্র গাছ লভানে। নেশালীরা বভিত্ৰ ব্যবহার যথেষ্ট করিয়া থাকে। বাংলাদেশের পদতি অপুষামী নেপালের ভন্তসমাজেও বাটা ডাল ছইভে 'বড়ি' প্রস্তুত করিয়া ব্যবহার করা হয়। নেপালীয়া এই বড়িকে भरभावा वरण। त्नभारण मायकलाहे छारलव विक ब्रह्भवा सहव পরিখাণে প্রস্তুত করিয়া থাকে। সে দেশে কলার থোড় ভৱকারি রাবিয়া বাইবার রীভি নাই। নেপাণীরা খঞ **अक्षण क**दिए बार्स ना। कामक स्मामी हिरहा किःवा পলভার ব্যঞ্জন করিয়া খান না। শভমূল আভীয় কুলিরা নামক গাছের এবং ভূসা নামক এক ভাতীয় বাঁশের ডগা নেপাণীদের উপাদের বাদ্য। 'ভুসা' কাটয়া চাকা চাকা করিয়া শুকান হয়। ইহা হইভে মেপালীয়া চাটনিও

 কোনও নেপালী সিদ্ধ বা ভাজা কাঁচকলা এবং ওল ভাজা দিয়া ভাত বায় না। কাঁচকদা কেবল পূজার অর্ব্যে আবঞ্চ হয়। ওল পিছ কবিয়া উহাতে কিৱাবাটা ও লবণ মাধাইয়া ভাতের সঙ্গে বাইবার রীতি ভাহাদের মব্যে প্রচলিত ভাছে। ভাহারা ওলের ভালনা বাইয়া থাকে। ওল চাকা চাকা করিয়া काहिया छेख्यकरण वृदेवा यजना याचान स्व अवर जरनात जिल्ल ভাজিয়া লইয়া আলুও পিঁয়াক সহ সিদ্ধার হয়। যথা প্রায়ে উহা নামাইয়া দ্বত সংযোগ করা হয়। নেপালীরা এই-ব্রণে ওলের ভালনা প্রভাত করে। পার্বভ্য ভাষার ভালনাকে রগভন্নকে। ভরকারি বলে। নেপালীরা মানকচু ও বলকচুর ভৱকারি র'াবিষা থাকে: পাহাছিষা ভাষার অপকচুকে প্রভালো এবং নেওয়ারী ভাষায় বিবি বলে। নেওয়ার ভাতির লোকেরা ভরকারিভে খলকচুর বাবহার খবিক করে। এই कृत्क जाहांदा 'कृतक' वरण। स्वध्याददा धूक्ष ७ ज्याजन নামক ভবকারি বাইভে ধ্ব ভালবাসে। কচু গাছ প্রথমে কৃচি কৃতি করিয়া কাটিয়া বৌলে ওকাইয়া লওয়া হয়। वाशास्त्र (कानक्षण बद्दला ना बारक, स्वत्र संस्कृतिक वन विदा बूदेश जदेश टेफन-नरशात काकिश नक्श एत । देशांकर

'ছুকুনির ভরকারি' বলে । ছুকুনিতে কল দিয়া মকার ঋঁড়া সহ ভরকারী রাঁবিলে উহাকে 'ভ্যাতন' বলে।

অম ও চাটনি:--্ৰেণালীৱা অম বাইতে অত্যন্ত ভাল-বাসে। পূৰ্বে শীভকালে ঘটা করিয়া অনুবাইবার জভ একট বিশেষ দিন নির্দিষ্ট ছিল। তছপলকে নেপালীরা কালকৰ বন্ধ করিত এবং বিভালর ইত্যাহিরও চুট ভ্ইত। কাৰ্ত্তিক মালে ভাছাৱা পাভি ও কাগৰি নেবুৱ আচার বা চাটনি যথেষ্ট ব্যবহার করিয়া থাকে। নেপালীরা অভ্যন্ত চাটনি প্রিয়। ভাষারা ক্ষলা লেবুর বোলা দিয়া এক প্রকার চাটনি করে। উহা বাইতে বছ উপাদের। নেপাণীরা ৰত প্ৰকাৰ চাটনি প্ৰস্তুত কৰে, তত প্ৰকাৰ চাটনি ভাৰত-বভের অভন আনাদের দৃষ্টবোচর হর নাই। কতকওলি চাটনির নাম, ঘণা :---আমের চাটনি, অমিলির (উভুলের) চাটনি কমলা লেবুর চাটনি, পাতি নেবুর চাটনি, আলুর हाहैनि, (वश्यानद हाहैनि, हैबाहि।द हाहैनि, कहि नदाद हाहैनि, जित्मव काकेनि, कि वक्षत्मव काकेनि, बत्न भाषाव काकेनि, কালতরি পাকের চাটনি, দুর্বার চাটনি, কর্বলোর (কচু शास्त्र) हाडेनि, क्षेत्राटनद हाडेनि, क्षित्र क हेबारहाद हाडेनि ইভাগি।

मरण :--(मी-इटबंब कांच मरमाख (मनाटन इन्धाना)। একারণ মংস্থাহারে নেপানীদিগের আগঞ্জি কম। বর্ধাকাল ভিন্ন অভ সময়ে কাঠমণ্ডতে ও অভন্ন মংস্য পাওয়া যার না। त्म ममत (मणात्मत अपनक शास करे, वार्डा, पूँछे, भावपा, নিদি প্রভৃতি মাহ পাওরা যার। নেপালে প্রচুর পরিমাণে তপলে মার পাওয়া যায়। এত বছ আকারের তপলে বল-দেশের কোৰায়ও মিলে কি মা সক্ষেত। মেপালী আন্দ্রণ ও ছত্তি বাতীত অঞ্চানা ভাতির লোকের। তপলে ভোতন করে। উচ্চ শ্ৰেণীর নেপালী হিন্দুরাও 'বাম' (বাম মাছ)ও সিদি माष्ट्र वात । (मणानी बाध्य ७ फबिटबर (बबिर) विववादक्र ৰব্যে ৰংস্য ভোজনের রীতি আছে। গুকুনা বাছ আছারের वर्ण क्षाणम चामता त्मणाल त्मविशावि । त्मणालत चंडी बाह (प्रविष्ठ किर्म बारकत बर्फ । अहे बारकत तर काम अवर লখাটে আকাবের। হিলে মাহ সাবারণতঃ এক হটাকের (वनी रत ना। हिला बाद अक्ट्रे कान बढ्डा। शहाकी चाराध बाहरक 'बाहा' अवर त्नलवादि चाराद 'निदा' वर्ण ।

মাংস ভোক্ষম:—একাদশী তিবিতে এবং অমাবভা (নিতৃপক্ষ বা প্রেতপক্ষ বনিরা) এই ছুই তিবিতে মাংসভোক্ষম করা বেশালী হিন্দু মাত্রেই বর্দ্মবিপ্রছ বনিরা মনে করে। পূর্বিয়া ভিবিতে মাংসভোক্ষমের প্রধা ভাষাদের সমাক্ষে প্রচলিত আছে। মেশালী মাত্রেই মাংসাহারী। কেবল মেশাল রাজ্যের লর্জার্ব্, উপাব্যায় এবং ভঙ্গু উপাবিবারী আন্তর্গেরা কোনও প্রকার জীবক্ষর মাংসভোক্ষম করেন মা। ভাষায়া নিরা-মিবালী। ব্রেবানকার জন্যান্য আক্ষেপ্রা কিছ পাঁঠা, হবিণ,

উ্টে, ভেড়া, হেঁড়া (এড জাতীর হরিণ), কালিজ, কর্তর, তিতির প্রভৃতি পক্ষীর বাংস ও হাঁসের বাংস তক্ষণ করেব। নেপালে তক্ষা বাছের ভার তক্ষা বাংসেরও বহুল প্রচলম আছে। সাবারণত: নেপালীরা বাংলের তক্ষ্ট, বাংলের কাবাৰ, বাংলের ভালনা (আলু ও পিরাক সংযোগে), বাংলের মুণ, বাংসের বন্দিকী, বাংসের চপ, বাংলের শিক্ষি এবং বাংলের লড়েছু বাইরা বাকে। বিয়ে কয়েক্টর প্রভৃত প্রণালী বিয়ত করা হইল:—

(ক) মাংলের শুক্ট---মাংস আগুনে কিংবা রৌজে वनगहेदा नवदा एद। ७९भदा यजनामर विभावेदा ভৈল সংযোগে ভাজিয়া লওয়া হয়। মাংলের শুকুটির बनमानि एटेट्डिट प्रिया, नका, किया, जाना ७ तक्या। बहेबरण मार्राय ७० मध्य कता एव। (व) मार्राव काबाव---हेबाएक मकल बक्य मनना ७ हिर (मध्या ह्या। মাংদের স্থপ---সম্রান্ত লোকেরা মাংদের কোলকে 'স্থপ'ও बरमन। शीर्वात याचात मुक्त किरवा देश विश्व देश প্ৰস্তুত হয়। মুড়; হইতে চকু ও কিহনা ভূলিয়া কেলা হয়। মাতা অৰবা পিতা বিদ্যমান ৰাকিতে কোনও সদাচাত্ৰী নেপালী हिन्दू हेश कक् करवन ना। कश्वाप्त थे इरेडे अधान ভাষাদের নিষিত্ব বাদ্য নছে। পর্ব্বোক্ত প্রতিবঙ্কাদি না ৰাকিলে জিহবা ও চকু সহ হড়াট কাটারী ধারা কাটাটায়া টুকরা টকরা করিবার পর সেগুলিকে সিম্ব করিবার জভ গরম কলে ছাভিয়া দেওয়া হয়। সিদ্ধ হইলে উহাতে মসলা দেওয়া হয় এবং অল্প বোল থাকিতে নামাইয়া লওয়া হয়। পাঠা-খালীর ঠাাং দিয়া খণ প্রস্তুতপ্রণালী নিম্নলিবিভ রূপ :---খাদীর ঠ্যাং ছাল সহ তুচি কুচি করিয়া কাটয়া অন্যন ছই ৰকা কাল জলে দিও করা হয়। তংপরে উহাতে মসলা দিয়া সভর পাত্রহারা চাপা দেওয়া হয়। বোল অয়ির উভাপে মরিয়া সামাত পরিমাণে থাকা পর্যান্ত উহাকে উনানে চভাইষা বাৰা হয়। ভংপৱে উহা নামাইষা টুকরাওপি इटें एक बाम बामाटेश किया किया क्या करा देता। ্ৰামৱা ভনিয়াছি-পাঠ। বা ৰাগীর মুক্তি হইতে উক্ত প্ৰকারে প্ৰথভ 'সুপ' বলবৰ্ছক এবং ঠ্যাং হইতে প্ৰথভ সুপ এবং ৰোল বোগার পক্ষে বিশেষ উপকারী।

মাংসের বন্দিকী—ইহা প্রস্তুত করিতে অবিক পরিমাণ আলা, জিরা, লকা, হরিলা, থনিরা ও ছোট এলাচ-চূর্ণ—এই এই কর্মট সংশিশ্রিত প্রব্য, রক্ত এবং গ্রুত আবজুক। স্থাই অল্লটর অভ্যন্তরভাগ সর্বপ্রথম জল দিয়া উত্তমরণে পরিকার করা হয়। তংপরে ঐগুলি দিয়া ভাউ করিবার পর উহার হুই প্রান্ত হুতার লাহাব্যে বহু করা হয়। তংপরে সেটকে গরম জলে ফোলিয়া সিহু করা হইলে ভূলিয়া সইয়া প্রায় এক অভূলি পরিমাণ মাণে কাটিয়া সরিষার তৈলে ভাজিয়া গওয়া হয়।

মাংগের সভচু---দা দিয়া মাংসৰও বুৰ কুচি কৃচি করিয়া

কর্তম করা হয়। তংশরে একসদে উত্তমরপে বাটা ধনীয়া পাতা, জিরা ও ছোট এলাচ সহ ঐ কণ্ডিত মাংল এবং পরিমাণমত পবণ সংমিশ্রিত করিয়া তালি পাকান হয়। ইহার পর সেঙলিকে গইরা দ্বি মাবাইরা হৃত দিয়া তাজিবার পর প্রাতম আচারের মব্যে কেলিয়া দেওয়া হয়। হুই দিম পরে ঐতলিকে হতন্ত্র পাত্রে তুলিয়া রাবা হয়। নেপালীরা এইরপ প্রণালীতে মাংসের সঞ্জুপ্রত করিয়া বাকে।

শুকর ও নহিষ-মাংস---ব্রাগ্রণ ব্যতিরেকে ছঞ্জি, নেওয়ার প্রস্তুতি ভাতির লোকেরা বঙ বরাহের মাংস ভোত্তন করিয়া পাতে। উহা ভাহাদিগের উপাদের বাভ। উৎসবের করেক বিন পূর্বে হইভে নেপালী ছফিরাবভ বরাহ বরিয়া রাখে। ভোজনের জভ উহাকে ভাল করিয়া মারা হয়। বাংলা (मर्म मृकदरक (यद्मभ नृमश्य ७ वीक्श्य कारव एका करा एत. নেপালে ভদ্ৰণ প্ৰধা অজ্ঞাত। ব্যাহের মাংগকে নেপাণীরা বঁদেশ বলে। বেপালে নেওয়ার ছাতির মধ্যে চাধী, কুলাই ওপুণা-তে-এই তিন শ্রেণীর গোক ও লিমু বা রাই আছি जबाक कालित (नाटकत' जुखि नक्काटन महिरान मार्थ वाहेश) খাকে। কাঠনতু সহরের মধ্যে মহিষের মাংস বিজয় করিবার অবিকার কাছারও নাই। সহবের বাহিরে প্রাাপ্ত পরিমাণে উল্। বিক্রম্ব হয়। সহরের মব্যে মহিষের মাংস আনিতে হইলে উহাকে বড় অধ্বা অত কিছুর ধারা উত্তয়রণে আচ্ছাদন क बिक्षा महेट इहेटिन, (यन बढ़ा প क्रिवांत अस्तावना ना पाटक, নতুবা অৰ্থত অনিবাধা।

নেপালে পো-হভারে রীভি নাই, তবে যশর, ভাষাং ও ভোটে এবং হিন্দুভাবাপন্ন নেওয়ার ভাভির অন্তর্গত অন্তঃজ্ব শ্রেমীর লোকসিপের মধ্যে কালী, দমাই ও সার্কি—এই তিন শ্রেমীর লোকের। মরা গন্ধর মাংস ভক্ষণ করিয়া থাকে। মেপাল হিন্দুরাজ্য বলিয়া এথানে গে!-হভ্যা করিলে প্রাণদ্ভ হইয়া থাকে।

নেপালের রাদ্ধবেরা 'কালিক' নামে এক কাতীয় পঞ্চীর বাংস বাইয়া বাকেন। এই পাবীর আকৃতি অনেকটা মুগীর

মত। এতহাতীত অভাত কাতির বহু লোক কর্তর, তিতির আদি পঞ্চীর যাংস বাইতে ভালবালে। নেপালের ব্রাহ্মণেরা হংস কিংবা উহার ভিছ বান না। সেবানকার ছবি ও অভাত আভির লোক্ষিপের কিন্তু এই চুইট দ্রব্য ভোত্তম করা সাধাজিক বীভিবিক্ত নছে। কোনও নেপালী ভাগাণ বা ছজি কুরুট মাংসও ভোজন করেন না। অভাভ প্রেণীর হিন্দুরা অবভ কুকুট-মাংদ ও কুকুট-ভিদ ভব্দণ করিয়া বাকে। পার্বাভ্য ভাষার হংসভিম্বকে ইালেমূল এবং নেওয়ারী ভাষায় ইাহেখে বলে, প্রথমোক্ত ভাষায় যুগীর ভিছকে কুর্বাফুল এবং নেওয়ারী ভাষায় बाँदि वना एक । Sir Edward Blunt डाएाक The Social Economy of Himalayan नायक आছে (পু. ১২৬) निविधारणन :--"Poultry farming in Kumayan is confined to depressed classes only but in the neighbouring kingdom of Nepal. Conditions are quite different and every household owns a lew hens and ducks." এই প্ৰসংগ একট বিষয় উল্লেখ-যোগ্য যে বিগভ ১৩৫২ বলাখে কাঠমতু উপভ্যকার বহু হিন্দুর বাটভেও আমরা জাদরেল চেছারার মোরগ ও মুগাঁ দেবিয়াছি।

কোনও ভন্তগোক বাছীতে আগিলে তাহাকে তামাকু ও পানের মগলা দিরা অভার্থনা করাই ঐ দেশের চিরন্থন রীতি। সক্ষল অবহার বাজির বাজীতে একটি রেকাবে করিরা জলবাবার দেওরা হর। এই জলবাবারের উপকরণ হইতেছে মিপ্রার, হ্রম্ব ও ঘবি, চিউড়া (চিউড়া), আল্ডাজা, ভিষের মামলেট ও আচার। এতহুপলকে তুলার বিহানা পাতিয়া দেওয়া হয়। অভাগত উহাতে উপবেশনপূর্বক ভোজন করেম। উক্ত রোলের হুই পার্থে চুইট জলের প্লান দেওয়া হয়। তলব্যে একটি প্লানের মললা জন্ম হয় এবং আর একটি প্লানের মললা দেওয়া হয়। এই মললাকে হয়াহয় বয় পানের মললা দেওয়া হয়। এই মললাতে হুপারি, গবল, দার্রাচিনি, হুক্ষেল (মোট এলাচ), জিভান, কাজু, ওবর, সোপ, হোরা, পেজা, মনকা, মিছরির কুচি বা টুকরা ও মাবন—এই কয়ট ফব্য বাকে।

বিষাক্ত যুগ ^{শ্ৰীবিশ্ব} দন্ত

নগরীর বৃক্তে বোলাটে চাঁদের মান আলো পড়ে নামি, শেষ টাম চলি গেছে চুলি তার ঘর্ষর কোলাহল। দূরে বহুদূরে হয়তো রয়েছে যুগ-অন্তর্যামী, কাঞ্চ নাই কিছু, তথু আছে তার বিচার করার হল। পথ-ভিবারীরা রাজপথে পড়ি পোহাইছে কাল রাতি, আলামী কালের দিনের আলোতে আছে কিছু আবাস? হয়তো সহিবে স্থার বাতবা, হয়তো নেলার যাতি' ভেবিতেও পারে নবীন যুগের ক্ষণিক পূর্মাভাস। কারাপ্রাচীরের অন্তরালেতে এবন কারিছে কারা ?
এ ব্গকে তথু যেনে নিতে হবে, যদি বিষাক্ত তার
বাহ ছট মেলি ক'রে কেলে প্রাস। হে কবি আগ্রহারা,
আমাদের তবু তার কাছে আক্ষ নিগুতি মাই আর।
লাগর-বেলার কুঁলিতেছে তথু নীল সাগরের চেউ,
কোধার লাভি ? কবে হবে বলো এ বুলের সব শেষ ?
ক্ষনপ্রন্ম উটিয়াছে কোভ, ভোষহা দেবেছ কেউ ?
এ ব্লের শেখে হয়তো ধেবিব "গকল পাওয়ার হেল।"

কণ্ট্রোলের দিনকাল

শ্রীসুষমা সেনগুপ্ত, এম-এ

ৰোপার সংশ হিসাবটা কেবল যেলাভে আরম্ভ করেছেন সিম্রী -- "ब, (क्नर, पृथि एए। (धाराटर तारा बहे (बनटनं पिटन, এ বোপেও বাবুর খুভি একবানা দাও নি, গভ বোপের বাকী গেঞ্জিটা ভো বলছ এ বাবেও আন নি. এ ভাবে ভো চলে না वाष्ट्र, वाबू (छ) कन्टम द्वारत केनर्थ कदारान ।" इंडीर नकाद चाएान (परक चाउदाक जन-"मा जनम जरमधि, कावाद बायव वरण पिन नीन निव, कारकव है। हैन हरण यादा।" (वि-**धाकदेवा चाक्काम मध्यदक वर्ष्म है। हैक विद्यस्त** रखरे छेखर (पन निधी "दार्गा नाथा, अध्याद महीकरण, এড দিন ব্য়ে কাল করছিল, এর এড বলাবলি কি ? আমার (७) पन्छी हाछ (नदे।" ठाकद ठल यात्र। इठार कि मत्न পড়ে, গিলী চুটে যান পাশের খরে ৷ ছরি সবে মটকির ওপর থেকে সারি সালানো ভিনটে সম্প্যান নামিয়েছে, সেদিক পাৰে হাজ বাভিয়ে বলেন, "ও হ'ৱি, থামু বাম্ বাবা ৷ বেৰি কি চাল দিয়েছে, ভূলেই পেছলাম ধৃতি ছারানোর তালে।" একটু বেমে: "ওমা, এ যে দেবছি चाजन हाम परदाह, काला, काला, महेकिए हानिम मा वाला, দেবি একট্"-এই না বলে পিল্লী সারি সারি টন্ সস্প্যান এগবের ঢাকা খুলে নড়ন আনা চালের সলে মিলিয়ে দেখেন, कानकार पर परन ना। एति यावारना छटन वरन ७८%, "মা, একটু ভাঙাভাঙি কঞ্ন, চায়ের বাসন পড়ে আছে, ধর মুছতে বাকী।" সংগার যেন ভারই। সিন্নী বলেন অপরাখীর ষভ, "ভা বাবা ৷ একটু দেৱি হ'ল, কিছ কোনটার সলেই ভো मिनए मा. या नश्री (भागा कोएए मीएइ एएक चार अकरें। **हैन निरम्न जाइ।" "हैन जाद द्वावाय भाव या ? এই তো** अ पदारे भाजके बरबरम । अपदा काव बक्रस्य महाना आहे। চারট টনে বেখেছি, ভারপর ১ রক্ষের চিনি আছে আলাদা ্ৰেলাৰা টৰে, গত বার আপনি তাই তো সম্পানে চাল আটা भव बाबरमन, जुरम अरमन नाकि ?" अञ्चल हरस मिन्नी वरमन "ভাই ভো, ভাই ভো, মনের কি আর কিছু ঠিক আছে বাবা नामात्रकम बटक, जाव्हा क्षेष्ठा अकट्टे, ७ (कनव, घटन (यद्या ना, अक्ट्रे रामा वाष्टा"-- हिंदक वामन (वामादक केएक्म करता। ় ভারণর চলে যান নীচে। বাগনের সিন্দুক খুলে বের করে আনেম দাগৰৱা একটা বড় পেতদের হাঁড়ি ৷ বাপ দিয়েছিলেন বিষের সময়, সেকালের ভারী জিনিষ, আত্কালকার হাড়া এব্যিনিয়মের বাসনের আমলে কাম্পে লাপে না, তোলাই चार्छ। अत्म पदा माधान, दीशार्छ दीशार्छ दर्शन, "त्म वावा हान बर्छ।" धरतत भरता नाकारना चक्य हैन, देंहि, भागन, अक्षेत्र अभव स्वाव अक्षेत्र । स्कानकाटक अक दशा काम,

কোনটাতে আৰ দেৱ, কোনটাতে এক দেৱ, সব ভিন্ন ভিন্ন রক্ষের চাল, মেলাতে পারেন না দিনী। লে কালে ছিল বটে, চিনিও ভো চাল, বাডাসাভোগ, দোবিভভোগ, কাটারী— ভোগ, কড কি, কি তাতে ত্বগৰ, আর কি ভার বাদ। ভা দে সব চলে কোৰা ? ভাবেন গিন্নী, এবনকার রেশনের পঞ্চাল রক্ষের চাল, সবই অবাদ, ভবু একটার সঙ্গে আর একটাকে মেলাতে প্রবৃত্তি হয় না।

ঘবের এক কোবে টেবিলে বসে মেয়ে পঞ্চা করছিল। শেততেও ইাড়ি দেবে কেপে ওঠে "আছা মা ভোমার কি হরেছে বলত ? পড়ার খরটাকে ভে: ভাঁড়ার করে ভুললে বরং ভাঙারটাই পরিষার করে দাও সেবানেট পিয়ে প্রা-ভানোকরি।" মাবসেন, "তাকি করবে মা, যখনক:র যে হাল, তাবুকে তোচলতে হয়। তোমরা হলে পিয়ে মেয়ে-ছেলে, এটুকু বুদ্ধি-বিবেচনা ভো ভোমাদের থাকা উচিত। এই इर्रभाव हान कामारत ताबरन कि बात हु। कुरमाछ १ ওপরে রাখি বঙ্গেই না কিছু ক্ষেছে। নইলে সব সাবাভ হয়ে যেত।" "ভা ভাছারে তোমার অভ বড় ভালাটা বুলছে এ অবস্থায় চুরিই বা হবে কেমন করে।"--- ক্বাব দেয় মেয়ে। "जाना पिरन कि स्टव ? जानात पिरम, कृष्टेना कूरहे अन्दर्व ভো এলাম। সঙ্গে সংক্ষেই হয় ছুটো ভেক্পাভা চাই, নয় গরম-ममना, यश (रमन, अर्थन अक्ही ना अक्ही प्रत्ना करत वात वात वि-ठाकबच्दमा ७१दव चाभदबर्-- ठावि ७८५व शास्त्र भए छर হয়, পারি না থাবা বার বার ওপর নীচ করতে।...তা মশলা-পাতি किছু তো ওপরে আনি নি, চাল ছ'ল গিয়ে मधौ, তাকে অপ্রভা করতে নেই, আছে এক পালে, ভাতে ভোষার পড়ার क्षिणि कि स्टब्स् रम ? राज राज शांति ना राणू अशव नौह করতে মোটা শরীর নিম্নে।" "না, ক্ষতিটা আর কি, তবে আরওলা আর ইছবের উৎপাতে খরে টেকা দার হ'ল যে। তা চাল ঘৰন হ'ল গিয়ে লগাঁ, এক কাব্দ কর না কেন্, ভূরিং-্বিমের এক পটিশ সাজিয়ে রেখে দাও। সঙ্গার অবিঠান ঠিক ভাষণায়ই হবে:" লেখাপড়া ভানা মেয়ের লছা লেকচার अभवात जबन (महे, शास ताहार मा काक, कतवात जबन (महे, धत (बाक द्वितिक यान त्रिती। ७१३ व्य स्वास्तर वामात धारत छ। नव निरम्बन्ध (मानात धारत, धारतेत मोरह, परकार बाजारम, बानमातीर सारक तरहर बाहार हैन. খিয়ের টন, চিনির বয়াম, বাভাসার কোটা, খড়ের ভাড়, ভবে খভটা চোৰের উপর ময়, কর্ডার নকর এছিয়ে। मार्च मार्च कंडा वरमन बक्ट्रे (भवामधात ठका कंडा ड. भवद् भवद् करव छैर्छ (ब्रह्माश्च भावरमाना—हिश्वरम फेट्टेम

কর্তা, "ভোষার ভাঁড়ার নীচে সরাবে কিনা বল। মরটো ভাঁড়ারখর পরিকার করে লাও। আমি না হয় লেখামে বিরেই আশ্রের নিই।" এসব কথার কবাব দেন না বিষ্ণী, লংসারে বাক্তে হলে এসব কথার কান দিলে কি আর চলে।

কর্তার পাঞাবী সব ছিঁতে গেছে। কিন্ত কালোবাজারে কাপড-চোপড় কেমবার পক্ষপাতী মম তিনি। গিন্নী আর ছেলেমেরে বাড়ীগুছ সবাইকে স্পষ্টাক্ষরে একথা জানিরে দিরেছেম—ওসব চলবে না।

সবাই বেরে-দেয়ে বেরিরে গেলে, কাপভের কার্ড ক'বানা হাতে নিয়ে গিয়া বীর মহর গভিতে রওনা হন রেশনের কাপড় আনতে। এবারে লোকানে এসেছে শুরুই ড্রিল। তাই কেনেন ১২ গন্ধ, কিছু পাওনা কাপড় বাকি রেখেই কিরে আসেন, কর্তার পাঞ্জাবী না বানালেই নয়। অবচ ওমাসে উনি টাউজার বানাবার জল বাজারে কাপড় বুঁজে না পেয়ে, লোকান থেকে অর্ডার দিয়ে বানিয়ে আনকেন, তাতে বরচ পড়ুল টের বেশী।

বিকেপে ইকুল থেকে বাছী এসে মেরে বলে, "মা, ভূমি ভেপেল, ডিল দিয়ে পাঞাবী হবে কি করে ?" "তা কি করি মা, সব তো আর ইচ্ছেমত পাওয়া যার না, যা দিনকাল পড়েছে।" কণ্ডা দেবে বলেম, "ঠিক আছে, ওটা সংস্কার বই তো ময়। যে কাপড়ে পাটে কোট তৈরি হয় তাতে পাঞাবী হবে না, এ কোন শাস্ত্রে লেখা আছে ? লবাই পরতে স্থপ্ত করেলে হু'দিনেই চালু হয়ে যাবে।"—সপ্তাহ বানেক বাদে কণ্ডার গায়ে চড়ে ডিলের পাঞাবী।

আর ভিনধানা কার্ডের কাপড় পাওনা আছে। সামনের সপ্তাহে বেভে বলে দিয়েছে, মিহি কাপড় আগভে পারে। নিভিত্ত ভারিৰে গিন্নী গিমে ফাড়ান লাইনে, বৈধাের চরম পরীক্ষার উত্তীর্ণ হয়ে পান বেশ চর্ষৎকার মিহি মলমল। ভাবেন, चारा कि हुनिन चाराका कदार है ए'ज याही माध्य नदाय बारे जांदी भाशांदी नारा जिस्स त्वजान, जा स्वानस्व काभण-ওয়ালারা শুধু মিব্যা আখান দেয় এটাই তো হামেলা দেখে আগছি, এরা যে আবার সভা কথা বলবে ভাকে কানভ ! মল্মল নিয়ে আসতে কণ্ডা বলেন, "পাঞ্চাবী ভো হ'ল, এখন চারটে পায়কামা করিয়ে নিই এবারকার কাপড় দিয়ে ৷" বুড়ি পরা ছেড়েছেন বহুকাল, আপিলে যান প্যাণ্ট কোট পরে, বাভীতে পায়জামা। পিন্নী বলেন, "সে কি পো, এই পাতলা কাপড়ে পায়কামা ?" কণ্ডা বলেন, "ভাতে কি হয়েছে, কিন্-কিনে ঢাকাই, শাভিপুরে বৃতি পরতে দেব নি বাব্দের ? এত পাডলা কাপড় পরা যদি চলভে পারে ভো পায়ভামার ভৰাৰ চমকাবাৰ কি আছে ?"

হাকা মল্মলের পায়কামার ওপর যোটা কিনের পাঞাবী চভিত্রে মির্ফিকার চিত্তে ছরে বেভাম কর্তা, হাটে বাজারে পার্কে। ছুবামা ধৃতি আহে, ভদ্রবেশবারী হবে নিমন্ত্রণের আসর ইত্যাদিতে সিয়ে দৌকিকতা রক্ষার সেই একমার সংল।

"মা, একটা টাকা দিও, আৰু সেলাইরের কাপড় দেবেম বলেছেন টচার" মেয়ে এসে জামায়। হঠাৎ নিমী প্রশ্ন করেম, "আছা ভোলের ইন্দুণেও বেশম কার্ড দেয় মাকি রে ? কাপড় কেনে কোথা থেকে ?" "ও, লে আমাদের সরকার থেকেই দেয়, দর্যান্ড দিজে হয়।"—বিজ্ঞের মন্ড জবাব দেয় মেয়ে।

ষেরে বিকেলে ইঙ্গ থেকে হু' টুকরো কাপড় এমে দেখার, চমংকার মিলের শাড়ী-কাটা একটা টুকরো, একটা টুকরো, ধুডি-কাটা। "এ কিরে! আহা, এমন কাইন শাড়ী ধুডি কেটে এ দশা করলে গা! তোদের ইচারদের এ কি কাঙ ?" "বাঃ বে, এ ছাড়া কি জার করবে, জামাদের যে সেলাই শেববার জনা সরকার থেকে কাপড় বলতে পাঠিয়েছে গুবু ধুডি জার শাড়ী, তাই দিয়েই নাকি ক'জ চালাতে হবে। তাই তো কেটে কেটে দিছে জামাদের সব, এক টুকরো দিছে হবে রাউজ, জার এক টুকরোতে প্রমাল করতে হবে জামাদের।" গিমীর শ্বনে বঙীন লংক্লবের শাড়ী, পুরমো পাড় বগামে। তিনি জাবেন মনে মনে, হাড় ডালানে সরকার, ব্যবসা যদি ঠিকমত করতেই না পারবি তো কভি নেওয়া কেন ছাড়ে গুলামাদেরও হুবানি।

এদিকে ভোৱের বেলা চায়ের টেবিলে বনে ছেলেয়েরো একসলে টেচিয়ে ওঠে, "মা, মুড়ি কেন সকালেই ?" কর্তা বলেন, "ঘুম খেকে উঠেই মুড়ি চিবোবার মত দাতের জোর কি আর আছে ? চা দাও এক শেয়ালা, গিলে উঠি।" "গাঁউরাটী পাওয়া যাজে না।"—বললেন নিরী। কর্তা বলেন, "হাতে গড়া রুটি জো চলতে পারে।" "রেশনে আটাই মেই ক' হুঙা বরে, তা হাতগড়া রুটি।"

ছপুরে থেতে বসেন কর্না, গিনী সামনে বসেন ছাত-পাঝা
মিয়ে, এটা দীর্ঘকালের জন্মাস। পাতে পড়ে ডেলা ডেলা
ভাতের দলা, গর্ম হয়ে ওঠেন কণ্ডা, "ঠাকুর ভাত চড়িয়ে
কোর্যার ব্যোৎসর্গ প্রাথ সারতে গিয়েছিলে, ভাত যে একেবারে
প্লিপিঠে হয়ে উঠেছে।" ঠাকুর উত্তর দেয়—"তা কি কর্ন্ব
বার্, একে জাতপ চাল তায় জাবার নয়া পুরোনো ফোলানা,
প্রোনো চাল সের হতে হতে নয়া চাল যায় গলে, তা জামি
কি কর্ব।" গিনীর ওপর চটে ওঠেম কর্না "বলি ইনে ইন্দে
রক্ষারি চাল সান্ধির তো গোটা বাজীটাকে চালের একটা
প্রদর্শনী করে চুলেছ। এবনকার রেশনের চালের সাক্ষ সারু
চাল না থেশাবার ক্ষে রোজ তারস্বরে ঠাকুরকে যে নির্কেশ
দিয়ে বাক তাও কানে জাগে। ও সরু চাল রেবেছ কি জায়ায়
প্রাত্রের কল গে গিন্নী বলেন, "ক্ষার ছিন্নি কেব না, ওই কুট
তো যোটে চাল, জন্ব-বিপ্রব আছে, লোকজনকে বাওয়ানো—
ছাত্রানো আছে, মেরে জায়াই জালীর কুটুর আসে—ও ছুট

चन मा बाबरण करन कि करत ?" कुन करत वान कर्छा, সেই ভাতের ওপর ডাল ঢেলে নিয়ে গর্জে ওঠেন---"তা ভাতের মাৰে ভোমার পুলিপিঠেই না হয় গিলতে হবে কিছ ভালে এখন বোঁৱাটে বোঁৱাটে গছ কেন ? এসৰ কি ভূমি পিভি हिकास ठीक्त।" यूच कीह-शह करत वरण ठीक्त, "शक ! পোড়া তে। লাগে নি।" নির্বিকার ভাবে ডালের বাট নাকের कारक कुरन राम, "७: । (बाँबांद नव करत, वायू ७ किছू मा, ভালটা হতে হতে আঁচটা নিবে গেল কিনা, ভা ছট কয়লা দিরে হাওরা করে আঁচটা ঠিক করে নিলাম, নইলে ভো আপনাদের টাইনের ভাভ হবে মা। ভা কণ্টোলে এবার क्वन पिरबर्ट अकाम कांठा, दिकाब (बांबा फेर्रेन, छान्छ। উত্তৰের থারে হিল কিনা তাই একটু গৰ হ'ল বটে, ভা খেরে निम् कि चाब कराराम ? करके राजर राजारत अभन अक्ट्रे चावहे एव ।"---वान ठीकृत निर्विकातचारव পतिरवणान माम-নিবেশ করে। অনেক দিনের পুরোমে। লোক, কডার ৰ্মকানি ভার গা-সভয়া হয়ে গেছে। কণ্ডা ভার কণা বলেন মা, ভালের ওপর বোল ভরকারি লব ঢেলে নিয়ে কোনমভে

গলাবংকরণ করেন নিংশকে। বাওয়া শেষ হলে উঠতে উঠতে গিয়ীকে বলেন, "দেব, এক কাফ করা যাক, কি দরকার এত সব বাবেলার ? সকালে উঠে এক ইাভি জলে চাল, ভাল, তেল, সুন, তরকারি, মশলা একত্র মিশিরে বেঁটে ামলেই লাঠো চুকে যার আর ঠাকুর চাকরের বরচ্টাও বাঁচে।"

সবাই খেরেদেরে চলে বার। গিন্তীর চোথে জল এসে পছে।
কর্তা চিরকাল বাইরে লোক, তাঁকে যে অবাত গলাবংকরব
করে কোন মতে পিতরকা করতে হয় এ চুংব তাঁর মনে বড়
বাজে। মনে মনে কণ্ট্রোলের দিনকালকে তিনি অভিসম্পাত
কেন। বেরে উঠে তাবেন, বিকেলে কি জলবালার করি ?
হঠাং মনে পড়ে রেভিরোতে ভবেছিলেন কুমড়োর হালুরা,
আর চালকুমড়োর পোলাও, এ চুইর প্রস্তত-প্রবালীর কবা।
অবৈ জলে বেন ডাঙার আপ্রয় পান গিন্তী। রাগ্রাথরে
গিয়ে বসেন তরকারির ভালা নিয়ে। কুচি কুচি করে
কাইতে বাকেন কুমড়ো আর চালকুমড়ো—তাই দিরে
তৈরি হবে কণ্ট্রোলের গিনের ত্তিনের হালুয়া ভার
পোলাও।

ফারমেণ্টেশন

অধ্যাপক শ্রীস্থবর্ণকমল রায়

এ বিশ্বকাতে প্রাণিদেছ এবং বিভিন্ন বছর রূপাছরের মূলে যে রাসারনিক প্রক্রিরা বিভয়ান সাধারণের ভাছা জানা নাই। কুল্ল উদ্ভিদ-বীকের বিশাল মহীক্রছে পরিণত হওরার মধ্যে রাসারনিক বিজিয়ার একট প্রশন্ত জহাার নিহিত আছে। পাছাডের জ্বরবির্দ্ধন বা জ্বন-সংকোচন, হুগ্ণের অমুত্প্রাপ্তি, পচ্মনীল বুজালি মরলভাগাভা, জীব-কছর পৃতিগ্রমর অবদ্বা, বাভব পদার্থের মরিচা, জরি-কর্তৃক কার্ট্রাহন প্রভৃতি প্রাকৃতিক বিশ্বার—ঐ রাসায়নিক প্রক্রিয়ারই বৈচিল্লোর সাজ্য প্রদান ক্রিতেছে। জলক চিনি বেদিন স্বরালারে পরিণত হইরাছে সেই দিন হুইতে রুসারন-শাজের কিগ্ন বা কার্যেনেউপন অব্যায়ের স্ক্রমা হুইরাছে। ইহা রুসারনশাল্পবিদ্যুগ কর্তৃক প্রিবর্তনের দিক দিরা বিশ্বেষ স্কর্মপূর্ণ বলিরা বিব্রেচিত হুইরা বাকে।

প্রকৃতির মহলে লংখোজন ও বিরোজন জনবরত প্রকট।
কারনেটেশন সাধারণতঃ রাসারনিক বিরোজনের জল।
ইহার কলে উভাপ বৃদ্ধি পার জাবার কথন কথন গাাস স্পষ্টি
হয়। ইহার প্রকৃত স্বরূপ কি, ইহার কাজই বা কি এ প্রশ্ন
সভাবতঃ মনে উদিত হয়। এক প্রকার হল জীবাপু বা উদ্ধিদদারীর কারনেটেশনের উৎপাদক বিদ্যা প্রবাণিত হইবাছে।

উহারা নিজেরা অথবা উহাদের প্রতিনিবিগণ কারমেন্টেশন উৎপাদমকার্য্য সাধন করে। এ প্রতিনিবিগণ রাসায়নিক জৈব পদার্থ এবং প্রোটন প্রেণীর অর্ভ ভূক্ত। বিজ্ঞানীরা উহাদের এনজাইন বলিরা অভিহিত করিবাছেন।

কার্মেনেউলন কথাট কিন্তু বহুদিন আপেকার। প্রাচীনকালে চিনি বা গুড় ফইন্ডে পুরাপ্রন্তত-পদ্ধতির মাম ছিল
কার্মেনেউপন ' উক্ত ব্যাপারে একট গ্যাস উপিত হইতে
দেখিয়া সন্তবতঃ এ নামচা দেওরা হইরাছিল। উক্ত গ্যাসের
উৎপত্তি ও ক্রম্বিলীরমানতাই কার্মেনেউপনের পরিচল দিত।
পুরাতন মিশরীরগণ মদ তৈরার করিবার প্রণালী কানিতেন।
ক্রমে করাসীদেশ ইহা বিশেষ করিরা প্রহণ করে এবং প্রশুতপ্রণালীটির লমাক্ উন্থতিসাধন করে। বর্ডমানে পৃথিবীর লম্প্র
সভ্যদেশে মদ প্রস্তাতের কার্ধানা ছাপিত হইরাছে। আশ
বা সেলুকুল, খেতুলার ও পর্করা প্রভৃতি পদার্থকে লাধারণতঃ
পুরার পরিণত করা যার যদি আর্ক্র ভ্র বাধান্ত ক্রার্মারাধা ছর, ক্রিছুলন পরে দেখা
যাইবে উহালের মধ্যে পচন আরম্ভ ইয়াছে। প্রমন্দ ক্রেমান ক্রেমান ক্রেমান করে দেখা
বা ক্রেমান ক্রেমান বাধা ছর, ক্রিমান করে ক্রেমান ক্রেমান করে দেখা
বাইবে উহালের মধ্যে পচন আরম্ভ ইয়াছে। প্রমন কি কোন
ক্রেমান ক্রেমান বাধান করে, স্বল, পরি, স্কুল ইত্যাদি পদার্থেরও একই

পরিণতি হয়। জীবদায়ীরও ঐ অবস্থার পলিতগলিত পৃতিগম্মুক্ত হয়। এওলি সবই কার্মেন্টেশনের বৃষ্টাছ। বুক্চাত
পত্র বা ভালপালা ভোষা বা পুকুরে পতিত হইলে ক্রমশঃ পচিয়া
একটি গ্যাস উৎপাদন করিয়া থাকে। ইহা কার্মেন্টেশনের
আর একটি উদাহরণ। এবনকি ভূগর্ভে করলার উৎপত্তিও
কতকটা কার্মেন্টেশনের দরুদ হইয়া থাকে।

ফারমেন্টেশনের স্ক্রীর রাগায়নিক ভাৎপর্যাটা কি 🤊 কোন चनुत्र अरबन्धे देशांत राष्ट्रात चार्क किमा । अ ममछ क्षत्र महेता चातक चल्लनाक बना करेशात्व । अधिक वह विख्नामी निर्वासित অভিজ্ঞতার কলাফল ব্যক্ত করিয়াছেন। উক্ত প্রেয়ক্দের মব্যে বৈজ্ঞানিক লাভোগি ও, পে-লুজাক, পাছর, ট্রবে, বুকুনার প্রভৃতির নাম উল্লেখযোগ্য। লাভোপিও প্রমাণ করেন যে ষদ প্রস্তুতির সঙ্গে সঙ্গে যে গ্যাস্ট উবিত হয় তাহা অসার গ্যাস ৷ পে-লুকাক দেবাইলেন যে, ফারমেন্টেশনে বায়র বিদ্যা-ষাণতা একাল আবশ্বক। কগনিয়ার্ড প্রমাণ করেন যে ইট্র নামক যে ক্ষম কৈব পদাৰ্থ দাৱা চিনি পচান হয়, ভাছা একট অভি খণ্ড এক-কোষ উদ্বিদশরীর। তিনি ইছাও প্রমাণ করেন, अवटम अक्ररतालाम घटेश हैंडे क्रमणः दक्ति भाषा। बनीयी পাপ্তর বলেন ফারমেটেশনের পিছনে ক্র জীবাবুর ক্রিয়া বর্তমান। উহাদের পরিবর্ত্তনে কার্যেটেশন সম্ভাত পান্তরের গবেষণা বিশের জ্ঞানভাঙারের প্রষ্টিসাধন করিয়াছে। কিছ তিনি ফার্মেটেশ্যের রাসায়নিক ব্যাখ্যার দিকে বিশেষ অবহিত হন নাই। ১৮০৮ मध्य द्वेरव (य বিল্লেখণ উপভাপিত করেন তাহার মোটামুট মুক্তিমুক্ততা বৈজ্ঞানিক জগং এছণ করিয়াছে। प्रेंदर वर्णनं स्य छेखा लक्षिशक्रित निष्टान अक्षेत्र वामात्रनिक भगार्थ भक्तिय शास्त्र । এই পদাৰ্থট নিজ দেছ হইতে কুন্দ্ৰ জীবাৰ সৱবৱাছ করে। कावरमार्केनात्मव अक्रम ७ किया मध्य हैर वर वार्का मनीयी ৰুক্নার কর্তৃক বিশেষভাবে সমর্বিত হয়। বুক্নার ইষ্ট পিধিয়া नियान अर्ग करान अवर अवान करान स्य छेक तम वाताल ফার্মেটেশন সমুংপর হইতে পারে। তিনি ইট্রের মধ্যে 'ভাইমেন' নামক এমকাইমটির বিদ্যমানতা নির্ভাৱন করেন। এমভাইম পোন্তির মধ্যে ভাইমেভের সকেই প্রকৃতপক্ষে আমাদের প্ৰথম পৱিচয় স্থাপিত হয়।

এনজাইম সরবরাহের জভ জীবাণুসকল উপর্ভু আরোজন
করিয়া রাবিয়াহে। এই জীবাণুদের সহারতা হাড়া এনজাইম
পাওয়া কঠিন। উহাদের সরবরাহের ব্যবস্থা অভি চমৎকার।
উহায়া অভি শাভ আবহাওয়ার মধ্যে ফারমেন্টেশন স্কন
করে। অভ্যন্ত কঠিন জটিল রাসায়নিক প্রক্রিয়ার মধ্যে পর্যাভ

উহারা তাপের সরতা রকা করিতে পারে। বেখা সিরাছে, কারবেকেশন বা পচন-জিরাকেত্রে সাধারণতঃ উক্তা থাকে ৩০°—৪৫° নার। মাহবের রাসায়নিক বিজিয়া ও প্রাকৃতিক রাসায়নিক বিজিয়ার মধ্যে পার্থক্য এক্ষণে সমাকৃ অভুভূত হয়।

रेडे कांवर्शन जनकारेय (कारेट्यक रेज्यानि) कांगाम पिया हिमिटक भएम পविष्ठ करता कात्रसार्कमम वार्शित এনভাইবের এরণ আরও অনেক প্রকার কর্মতংগরভা বেখা গিয়াছে। কিন্তু কৃত্ৰ কৃত্ৰ কীবাগুৱাতা যে বছবিৰ ফারমেক্টেশন সঞ্জাত হয় ভাহার প্রমাণও বিরল নহে। সেখানেও সম্ভবতঃ अनुकार्यक्रिय किया विभागाम बाटकः वृह्याचे अनुकृष् এসিটোন, এসেটক এসিড প্রভৃতি কভকগুলি কৈব পদার্থ প্ৰস্তুতিতে কুম কীবন্ধ কোষের ক্রিয়া আমহা প্রত্যক্ষ দেখিতে পাই। কারণ ঐ সমন্ত রাসায়নিক পদার্থ তৈয়ার করিবার ৰুত জীবাণুদের সাহায্য লওয়া হয়। উদ্ভিদ জাতীয় স্থন্ম কোষের কর্মতংপরতা ইটের মধ্য দিয়া প্রমাণিত হয়। অনুরিত বালি বা মণ্টদারা খেতসার যে কার্মেণ্টেড হয় ইহারও প্রমাণ পাওয়া বিয়াছে। আজকাল মদ প্রস্তুতিতে কাঁচামাল হিলাবে খেতগারই বাবৰত হয়। ইহা মণ্ট ও ইছের মিপ্রপঞ্জাত প্রক্রিয়ায় জেহল: মঢ়ে পরিণত হর। এক প্রকার ব্যাভের ছাতা বা মউছ (mould) वादाश्व कादरमर्क्तन छेरशामम मस्य एव । कार्यानी. বেলজিয়াম, ফ্রান্ ইটালী ও লেন প্রভৃতি হানে মদ প্রভৃতিতে এই মউল্ডই ব্যবস্থাত হয়। মিউকাৰ বিটা বা রিকোপাসু নামক এক জাতীয় ছত্ৰাক (nmshroom) খেতসারকে বিচুৰ করিয়া মদ প্রথত করে। সে সমস্ত জীবাধু বা কোয় ফারমেণ্টেশনের ৰুলাৰাত্ৰ ভাহাদিপকে কাত্ৰমেণ্ট নামেও অভিহিত কতা হয়: क्षावत्मकेनन উপर्क आशांत भारति इक्षिश्री छ एत। সाबातनकः উহার৷ নাইট্রোকেন, কক্ষরস, পটাসিয়াম, ক্যালসিয়াম ও ম্যাপনেসিয়াম ঘটিত বাদা প্রক করে। উজ মৌলিক भूमार्थमुक्क चामा भद्रवदाङ कविष्टः वंडे वावभाषीम् अनुब देडे তৈয়ার করেন: এনাকাটমন্তলি প্রোটনকাতীয় রাসায়নিক পদার্থ। কার্থেন্ট নামক স্থা কোষ ওলিতে মথেই এনকাইম থাকায় আত্কাল ঐলপ কোন কোন যাদায়নিক পদাৰ্মছয়-খাদ্য ছিদানে ব্যবস্তুত হইতেছে: বলবৰ্দ্ধক বাদ্য বা ওখৰ किशाद हेरे विका वाकादा नाम कविशास ।

কারমেন্টেশন ধারা ল্যাকটক এসিত ও সাইট্রক এসিত প্রচ্ব পরিমাণে প্রত্তত হয়। ল্যাকটক কারমেন্ট নামক একট কীবাণু ছব হইতে ল্যাকটক এসিত আহরণ করে এবং এলপার নিলাস নাইসার কাতীয় হাতা প্লুকোককে সাইট্রক এসিত রূপ দিয়া থাকে।

রাষ্ট্রের গোড়ার কথা

প্ৰীআশা মূলী

বাষ্ট্রের গোড়ার কথা বলতে গেলে মাহ্নবের লামাজিক জীবনের ক্রমবিকালের কথা প্রথমে বলতে হয়। মাহ্নব লামাজিক জীব, সমাজ হাড়া তার চলে না! রাষ্ট্র সমাজেরই একট বিশেষ আল। প্রার আড়াই হাজার বহর আগে প্রীক লাপনিক প্রায়িন্টটল রাজনীতি বিষয়ক তার বিব্যাত প্রছে লিবেছিলেন, 'মাহ্নম রাষ্ট্রার জীব' (political animal)। প্রীক-সমাজে তথমকার দিনে সমাজ বলতে রাষ্ট্রই বোঝাত। সমাজ ও রাষ্ট্রের মব্যে যে বিশেষ কোমও পার্থক্য আহে তা প্রীক মদীবীরা মানতেম না। রাষ্ট্রের যথম স্কট্ট হয় মি, তথমও মাহ্নম ছিল লামাজিক জীব। সমাজে এক একট গোজার অন্তর্ভুক্ত হয়ে তারা বাল করতে। রাষ্ট্রের গোড়াল্ডন করে বেকে হ'ল, দে বিষয়ে স্কুল্টে বারণা লাভ করতে হলে সমাজের ক্রমোন্ততি কি করে হ'ল, লেইটে আগে দেখতে হয়।

मक्षत्रम अवर प्रदेशनम मजाकीएज नार्निस्कदा भरवर्ग। করে এই সিহাত্তে উপনীত হরেছিলেন, মাতুষ রাষ্ট্রের ভিছি **পত्न करत शांतव्यतिक চृक्तित दाता । চृक्तिक मिन्यत दरात** আগে মানুষ ছিল নিছক প্রঞ্তির সম্ভান। যে ক্পতে সে বাদ করত তাকে বলা চলে প্রকৃতির রাজ্য। সে রাজ্যে মাসুষ প্রকৃতির নিরমের দাস ছিল। মাসুষের তৈরী আইন ভাতুন মেনে চলবার কোনও বাধাবাধকতা সেধানে ছিল না। त्म ब्रांच्य ना दिन बाका, ना दिन अवा। विकिन्न मार्निक को क्षकित द्वारणात विणित्न क्षकांत वर्गमा करतरणम । देश्रतक मार्निक हैवान स्तुन छात्र यह Levialhan-अ अहे अंक्षित রাজ্যের যে বর্ণনা করেছেন, তা জয়াবছ। তার মতে তথ্ন মানুষের একমাত চিত্তা ছিল কি করে আর একছনের সর্কনাশ করা যার। তিনি বলেছেন গেই আদিম রুগে—'A life was solitary, poor, short, brutish, nasty'! विवेदार्गद की वन यागम करत यवन मान्य चित्र है एत है हैन, তখন সৰাই মিলে নিয়লিবিত মৰ্প্লে এক চুক্তি করলে। তারা সন্মিলিত ভাবে বললে, 'আমাদের প্রত্যেকের শক্তি আমরা আৰু থেকে একৰনের হাতে দিবে দিলান, আমাদের সন্মিলিত শক্তি সেই একজমকে মহাশক্তিশালী করে ছলবে। আৰু থেকে লে হ'ল আমাদের রাজা,আর আমরা হলাম তার প্রজা। अहे बाकाब चारम्य निर्मिकारत त्यस्य निर्ण चायता वादा।' রাজা হলেন সর্বাক্তিমান, ভার বিরুদ্ধে প্রজার আর কোনও শক্তিই রইল না, হবুসের মতে এই হ'ল রাষ্ট্রের ভিত্তিপত্নের वन कर्।। श्रकृत्रिय प्रारम्भार योवनीय अनीय अन मासूर्यय ৱাৰা বা ৱাই। পৰ ভাৰ Treatise of Civil Govern-

ment-अ चार्वाद क्षेत्रचित्र द्वारकाद चण्डल राज्या करतरहम । তিনি বলেন, নাছৰ প্ৰকৃতির রাজ্যে যোটের ওপর প্রবেই ছিল, কিছ ভালের শাস্য কয়বার কেট ছিল না বলে, মানা রক্ষ অপুবিধা ভাষের ভোগ করতে হ'ত। সবাই মিলে তৰ্বৰ ভাৱা এক চুক্তি করে একট পাসনভন্ন ভৈরী করলে। সকলের সন্মিলিভ শক্তি এই শাস্থভন্ত বা প্রথ্মেউকে ক্ষভা-শালী করে তুললে। কিছু গ্রথমেন্টের এই দায়িত রইল যে, ভার সকল শক্তি সর্বাধারণের হিভক্ত কাভে লাগাভে হবে। ক্ষতার অপব্যবহার হলেই তার ক্ষতা কেছে নেওয়া रूरत । यज्जिन नवर्गायके अहे नई स्मात हमार जल्जिम नवाहे তার নির্দেশ বা আইন মেনে চলতে বারা। এমনি ভাবেই প্র হ'ল শাসক ও শাসিত এই ছুই সম্প্রদায়—যাদের লিয়ে গঠিত र न बाहे । कवानी मार्निक करना छोड (ontrart Social-अ লিখেছেন, প্রকৃতির রাজ্যের মুগ ছিল প্রবৃত্ত মাসুষ সে-बूर्त निक्कालक शतम शूबी मान कत्रछ । खराव श्रादीमछा ছিল ভার, কোনও রকম সামাজিক বিবিদিয়ের ছিল না। অত হবের রাজ্যেও এমন কয়েকটি অমুবিধা দেখা দিলে যাতে মাত্র্য উপলব্ধি করলে যে, ভার শক্তিকে নির্ম্লিভ করবার चर्ड मानरकत श्रादाचम चारेश्य श्रादान । जनम जाता निक्स्प्रत मत्या अक हुन्छि करत, अकरमत देखा वा will प्रिय স্বিলিভ এক ইছাশজ্ঞি বা General will গড়ে ভুলল , ছিৱ र'न बहे (leneral will कांशाकवी एरव नवर्गायरणेत एक লিছে, যার আদেশ বা আটন মেনে নিতে স্বাট বালা। মাহবের অবাধ স্বাধীনতা পেল, কিছ গড়ে উঠল রাষ্ট্র—যার ভেতরে হাত্রহ হ'ল আইনের নিগতে আবদ।

ঐতিহাসিকেরা কিন্ত রাষ্ট্রের গোড়াপত্তম সম্পর্কিত এই
মতবাদ মেনে নিতে রাজী নন। তাঁদের মতে রাষ্ট্রের উংপত্তি
একট চুক্তির ওপর মির্তর করে হরেছে, এ বরণের উক্তি কোনও
ইতিহাসের পাতার দেবা ঘার না। তাঁরা বলেন, রাষ্ট্রের
ক্রমবিকাল হরেছে—তা হঠাং গজিয়ে ওঠে নি। মুক্তিবাদীরা বলেন, চুক্তি-মতবাদ গ্রহণবোগ্য নয়। তাঁরা এই
মুক্তি উবাপন করেন বে, সাহ্মর চুক্তি করেই বদি রাষ্ট্রের স্পষ্ট করে বাকে, তা হলে তবন রাষ্ট্র সম্বন্ধে নিজরই তার সম্পূর্ণ
ক্রান হিল। কিন্ত রাষ্ট্রের ক্রমই যদি চুক্তির পর হরে বাকে
তা হলে চুক্তির আগে মান্তবের রাষ্ট্র সম্বন্ধে ক্রান এল কোবা
বেকে ? এই সমন্ত মুক্তি প্রবর্গনের দক্ষম এবং আরো নানা
কারনে চুক্তি-মতবাদ আর ইকল না।

মৰাৰ্গীয় ইউরোপে লোকেদের বারণা বিল রাই ইপরের ফট, যালা ইপরের প্রতিনিধি। প্রকার পুণ্যকর্মাত্রীয়ে সৰ্ভ হবে দীখন ভাষবাৰ, দয়ালু বাজা পাঠাতেন। আৰীন প্ৰজান পাপের শাভিষরপ আনতেন অভ্যাচারী বাজা। বৈজ্ঞানিক বুগে বাজ্য রাষ্ট্রের উংপত্তির এত সহজ ও আজগুণি নীবাংসাতে সৰ্ভ নর। তা ছাড়া রাজাকে নিবিচারে ইবরের প্রতিনিধি বলে মেনে নেবার মত মনোভাবও আর লোকের নেই।

यादिय छैर पछि मस्दद चात अक्षे मजनाम चाटब--- चाटक वना इस Theory of Force वा वन धरशानवीचि । এই मचवान अञ्जादा मिण्ड बार्ड दिन्हिक अक्ति वा बाह्यन बाडा एर्ड हर । कि करव रत. अर्थनशाम कांच वह 'मि (हैंहे'-अ कांच वर्षना क्रांद्रस्य। छिमि वर्णम, बानव-ज्ञांछात्र क्रमविकार्ण क्रांत्रकृष्ट ৰাপ বা ধুগ আছে। দেই আদিম মুদে মানুষ বনে-জনলে বিচরণ করত আর শিকার করে জীবিকা অর্জন করত। এই ৰূপে মানুষ ছারীভাবে কোনও এক ভারগায় বসবাস করত না। শিকারের অবেষণে ইভন্তভ: ঘুরে বেড়াভ। ভারপর এল পদ্ধ-প্লেম্বর মুগ। সে বুগে মাতুষ, যভদিন পর্যান্ত এক ভাষগার পশুর আহার মিলভ, ভভদিন পর্যন্ত সেবানেই আল্লানা গেছে বাস করত। পশুর আহার সুরিয়ে এলেই, যেখানে পশু-बीटकर आह्रश (७मन (काटना कासनात नटत (यछ। छात्रभत এল চাষবাদের যুগ, এই যুগে মাসুষ বে ক্ষমি চাষ করভ, সেই ক্ষির নিকটেই স্বায়ীভাবে বাদ করতে লাগল কারণ তা মা হলে ছমি চাষ করে বীত্র বপন করে ক্ষমল তে:লা সম্ভবপর मश् ।

মামুখের সামাজিক জীবনের উরতি সকল ভারগার সম-ভাবে হয় নি। কোৰাও কেউ এগিয়ে গেছে আবার কোৰাও ৰা কেউ পিছিয়ে পড়েছে। এক ছায়াগায় যথন একদল গুৰু শিকার করে জীবনধারণ করছে, অন্ত জান্নগান্ন ভখন জার একদল পশুপালন করছে, আবার আর এক কারগায় হয়তো ভৰন আৰু একদল চাষ্বাস করতে পুরু করেছে, এই সব বিভিন্ন দলে প্ৰায়ই সংঘৰ্ষ বাৰত। একদল শিকাত্মী এসে হয়তো একপাল প্রপালক বা চাষীকে আক্রমণ করলে, বা এক দল প্রপালক হয়তে চাষী বা গৃহত্বদের এলাকায় এলে চড়াও र'न। अरे भव भरपर्वत करन विश्वत खानश्मि । अर्हत क्छि ए'छ। क्षपत्र क्षपत्र विषयी यम विकिष्ठ यमाक क्षाविवाद निर्मान कदा निद जात्व या किए श्रीक्षिणा जे विद हान दे । बीद्ध बीद्ध बाग्यस्य बरे बान र'न त्य बरे निर्म्य रूणाकात्वद वाता चारवरत छाता वृद माण्याम स्टब्स् मा। शताविखरक একেবারে মির্দ্দ না করে যদি বাঁচিয়ে রাখা বার, ভা হলে ভবিশ্বতে তাৰের নামাভাবে বাইরে নিজেবের মতলব হাসিল করবার আশা থাকে। এরপর স্থক হ'ল পরাজিতের উপর विक्रीय शक्य क्लार्याय श्रीकृष्टि । विक्रिक्त प्रकृत राष বেকে অব্যাহতি পেল বটে, কিছ এই অভুঞ্জ লাভের পরিবর্ডে ভালের প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হতে হ'ল বে, নির্বিষ্ট সমরের মধ্যে মধা-

निर्विष्ठे वसत्रष्ट्र वा श्राद्धान्त्रीय वक छात्रा विरक्ष्णात्य छाठारव अस्य क्या कदाव । अदेवारम विष्कृष्ठा ए'न अलू, विक्रिष्ठ ए'न ভার দাস। এবমোভের দারিত রইল, বাইরের আক্রমণ ৰেকে শেষোক্তকে ভার রক্ষা করতে হবে। পরাক্তিভেরা ভবন বিজেতাদের অধীনে বেকে ভাষের আহেল অনুসারে চলতে বাধ্য হ'ল। Theory of Force বা বলপ্রয়োগনীতি অসুসায়ে এমনি করে রাষ্ট্রের উৎপত্তি হ'ল। বলপ্ররোপনীতির বুলকবা---তুর্মলের ওপর সবলের অভ্যাচারই হচ্ছে রাষ্ট্রের ভিছি। এবনও রাষ্ট্রের পেছনে অনেকবানি ক্ষডা আছে বলেই আমরা হাষ্ট্রের আদেশ মেনে চলতে বাধ্য হই। ঐতিহাসিকেরা বীকার করেন, এই মভবাদে যথেষ্ঠ সভ্যভা আছে। কিছ ভবু তারা এটাকে পুরোপুরি ভাবে যেমে নিভে রাজী নন। তারা ৰলেন, চুৰ্বলের ওপর সরলের অভ্যাচার রাষ্ট্রস্কীর একটা कांत्रव एएल भारत किन्द्र अवेटहेरे अवशास कांत्रव मत--- तांड्रेश्क्रीय बूल चार्ता मानादिश कावन कार्यक्री स्टाइन। बार्ड्डेव रुष्ठि नश्रा क्रमिविकान महत्रापरे मुक्तिमुक राम माम स्त्र। এই মতবাদই আক্ষাপকার পভিতরণ স্বীকার করে নিয়েছেন. চলেন, তারা বলেন, রাষ্ট্রের 🕫 আক্ষিক নয়। মাসুষের সমাজ-জীবনে মানা অবস্থার খাতপ্রতিখাতের ভিতর দিয়ে ৰাষ্ট্ৰের ক্ষমবিকাশ সাধিত হরেছে। মাতৃষ পুৰিবীর বুকে জন্ম বেবার পর থেকেই নিজেকে ভার পারিপার্থক - অবহার সঙ্গে बाल बाबबाट लाननन (हर्ड) करत बाटक । दून-यूत्राव्यत बरव (भवे (हर्ष) हरन चांत्राष्ट्र अवर अवहे करन क्यांविकारनंत्र १९ बद्ध बार्छव रहे स्टब्स्

মাপুষের দলে পশুর একটা মুলগত পার্বকা এই যে ১শ্যোভটির ভুলনার মাথ্যের লৈশবকাল দীর্ঘ। মানবলিওকে দীৰকাৰ অনহার অবহার কাটাতে হয়। এই সময়টা ভাকে মাভা পিতা বা অভের ওপর সম্প্রভাবে নির্ভর করে ৰাকতে হয়। দীৰ্থকাল একসদে বাস করার কলে মভাবতই ্রের প্রভীরতর হয়: এই সেকের করেই শিশু ধর্ম সাংস্থী হয় তথ্য সে ভার মাতাপিতা বা প্রতিপাদকদের সহকে ভাগ করে যেতে পারে না। মাতাপিতা ও সম্বানকে নিয়ে এমনি करत পরিবারের সৃষ্টি হয়। নৃতাত্তিক তথ্যাধুনহানের কলে দেবা যায় যে এই পরিবার থেকেই রাষ্ট্রের প্রাথমিক ভিত্তি স্থাপিত হয়। মাভাপিতা ও সম্ভানকে নিয়ে পরিবার क्रमण: त्योष भविवादव वा Clan-ध मध्यमाविक एव । करतका भाकी (Clan) मिरत अरू अरू के कांच्य (tribe) एक स्व । দৰ্মজ্যেষ্ঠ পুরুষ বিনি ভিনিই খন এই বুখং পরিবারের কর্ডা। ভার আদেশ মেনে চলভে আর সকলে বাবা, এইবানে আমরা ব্রাষ্ট্রের স্ক্রীয় মূলখ্রের সভান পাই । মানব-সভ্যভার ইভিহাসে এমন ৰুঠান্ত দেবা যাত্ৰ, যেবানে একট tribe বা ভাতি পরিচালিত হ'ত একট বয়ন্তবের লভা (Conneil of Elders) वाडा--- अबरे मत्या नानमण्ड वा नवन्यत्वित वीक

শাৰাভৱিত ও স্থাপাভৱিত হয়।

जानक (कावा जावाद (एवं) याद, याद छेलद वर्षमध्याधः ক্ষিয়াক্লাপ লভার করবার ভার ছিল, তিনিই ক্ষমে একাবিপ্ত্য বিভার করে সকলের উপর কর্তৃত্ব কলাভে বসভেন। আদিম বুৰে প্ৰকৃতির হহস্য মাত্ম বুৰে উঠতে পারত না। কালেই তাবের মনে প্রকৃতি-ভীতি বিভয়ান হিল। যে-কোনও বুছিয়ান লোক বদি প্রকৃতির উপর ধানিকটাও আবিপত্য লাভ করে শোককে ভর দেবাভে বা ভোলাতে পারভ, ভা হলে ভার কৰ্ছৰ ভাৱা অবমত মন্তকে খীকার করে নিত।

কৌৰও কৌৰও ক্ষেত্ৰ মামুষকে সংখবধ ছভে ছয়েছিল প্রকৃতির বিরুদ্ধে সংগ্রাম করবার ক্ষ্যে। ভবু প্রকৃতি নয়, ষাহুষের বিরুদ্ধে লভাই করবার ভভেও ষাত্র্যকে এক্যবদ হতে হয়েছিল। আদিব কালে মাত্র্যকে বুদের খণ্ডে প্ৰায়ই প্ৰস্ত থাকতে হ'ত। মুধ করতে হলে সুখলা বৰ্ষায় ৱাৰ্যা একান্ত আবন্তক। দুখলা বন্ধা হাতে হয় ভা বেশবার জভে বা দলবিশেষকে তুশুঝল ভাবে পরিচালিভ করবার ব্যক্ত দলপতির প্রয়োক্তন, দলপতির আদেশ নির্ক্তিচারে यस्य मा हनतन मुखना रकाइ शास्त्र मा, मुखना मा शाकरन শক্তবল বেকে আধারকা করা যায় না, কাকেই আধারকার

ৰিবিত। কালক্ৰমে কাউলিল অব এলভাৰ ই প্ৰথমেকে কৰে বাহ্বকে সংখ্যত হয়, দলপ্তির আহুপ্তা বীকার করতে হয়। এক পক্ষে আবিপভ্য ও অন্ত পক্ষে আত্মগভ্য এর বেকেই রাষ্ট্রোৎপত্তির খচনা, কাকেই এবন আমরা এ লিছাছে পৌহতে পারি যে, অতীতে মাতৃষ প্রয়োজনবশতঃই প্রথমে जन्दर स्टाइ दाद्धित र्गानाशन्य करतियन। अरे श्रासम হচ্ছে ভার শীবন বারণের বাবছা করা, ভার আহার সংগ্রহের তার আত্মরকার উপায় নিভারণ। এই প্রয়োজন বেকেই উৎপত্তি তার দলে থাকবার প্রবৃত্তির বা gregarious instinct-এর। মাত্র একা বাকতে পারে না, সমাবে বা भरत बाक्यांव बाकाका छाद प्रकारकाछ। अरे बाक्कांव क्षा विकित्र परमञ्ज, शिक्षेत्र वा अमार्क्त एक । अमारक्त यथम एक्के ए'ल, मानूय जयन अवन अक्के श्रीकिशासन श्रासम বোৰ করলে, যে প্রতিষ্ঠান সমগ্র সমাজে শান্তি ও শৃথলা বৰায় রাখতে পারে, মানুষকে বাইরের ও ভেডরের আক্রমণ ৰেকে ব্ৰহ্ম ক্রতে পাতে, মাতৃষ যাতে নিরূপদ্রবে জীবিকা व्यर्कन कराए भारत जात वावस् करत (प्रयः। मञ्ज-नमात्क এ বরণের প্রতিষ্ঠানের প্রয়োজনীয়তা উপলব্ধ হওয়ার সলে সক্ষে বাষ্ট্রেবও ভিভিপত্তন ছ'ল। রাষ্ট্রের গোড়াকার ক্লা দছতে এইটাই সর্বাণেকা যুক্তিপূর্ণ দিখাত বলে मान एवा

দিম্বধূ আজ কাঁপে থরোথর

শ্রীপঞ্চানন চক্রবত্ত

ম্বিবেদী হ'তে দেবতা আমার আৰু কি এসেছ নেমে ? অতীত বুগের শুঠৰ হ'তে ব্যান কি গিয়েছে ভেঙে। ক্ষাসুদ্ধর দেবতা আমার কোবা আৰু তব বাবী, কোৰা আৰু ক্ষমা, কোৰা ভালবাসা, তবু ফ্লেমাক্ত প্লামি। आध कि त्यरशं वायकी माराव महत्रहा कर्ग. কুটল কিহনার লেলিহ শিবার বিষবান্দের কণা; ब्दरबंद वनने निन्धित्य निर्मेत वार्यकारन विश्वषु चाक काँटन बरवाबत चक्न नरक बूरन।

इ:भागत्मत्र कामना त्यापट भागानी कारर बका, নিবিভ তিমিরে অহানিশা রাতে ভালে গুমকেভুলেবা। অবদলের কালো শহতান উকি বের ঘরে ঘরে ব্দুর পুতুল ক্ষনী ধরণী ভিভিত্তে রক্তনীরে।

ब्रमानशास्त्र हाएक (क्यूनान क्या गारे, क्या गारे মণিবেদী হ'তে দেবতা আমার আৰু কি নেমেছ তাই ?

ভূমি এস আৰু স্বাকার মাবে ভাষল চক্রপাণি দূর করে। ভূমি কাল ভেদাভেদ দীনতা হীনতা প্লামি। দূর ক'বে দাও কেরুপালে সব, টুটবা নিবিভ অভকার শভদীপালোকে আলোকিড হোক সবার প্রাণের গোপন হার. সামসামোর দবীন খড় ভরিয়া ভূসুক বরণীতল ७७ क्यांव बर्विश्वाब कांश्व नरक वृक्ष्तन ; নিলনাত্বত সিঞ্চন করো ধরণীর গেছে গেছে ভব আগষদ উজ্বল হোক বৃক্তির সমারোহে।

পাপুরিয়া কয়লা হইতে বাংলায় রাসায়নিক শিপের সম্ভাবনা

শ্রীহরগোপাল বিশ্বাস, এম-এসসি, ডি-ফিল

भक्रानरे चारमम चात्रज्यर्दत मरना चारमारमप्टे नाबृतिश्व করলা-সম্পদ সবচেয়ে বেশী। আমরা পাধুরিরা করলাকে **७**९ डेडान डेरनाव्यस्य क्षराम डेरमक्टनडे काबि-कांद्रव दिनशाणी क्षेत्रांत श्रेष्ठांत कालामा अवर चात्रारम्ब देवसम्बन র্মনকার্ব্যে পাধুরিয়া কয়লার ব্যব্ছার প্রভাক্ষ করিয়া পাকি। কিন্তু পাণুবিয়া করলা বে রাসারনিক শিলের अभविश्वि अकड मून छेभानान छरजवट आमात्तव अत्मत्कवरे বারণা নাই। বারণা না বাকার ছভ আমাদের দোষী করা यात मा ; कांत्र जामारमत रमरण तामात्रिक निल, विरम्बछ: রাসায়নিক শিলের যে বিভাগ পাণুরিয়া কয়লার উপর প্রভিষ্ঠিত তাহা বুব বিকাশলাভ করে নাই। ভারপর সাধারণের বোৰগম্য মাতৃভাষার মাধ্যমে শিল্পবিজ্ঞান সম্বধীয় পুস্তকাদিরও আমাদের দেশে যথেষ্ট অভাব। দেশের শতকরা দশ কন মাত্র লোক লেখাপভা ভাষেন। শিশুরা যেমন রসনাড্রিকর খাবারের প্রতিই বেশী আকুট্ট হয় আমাদের মধ্যেও বাঁছারা বর্ণজ্ঞান লাকের গোভাগ্য অর্জন করিয়াছেন তাঁহারাও লগু সাহিত্য कार्यानित्रहे (रानी अनुबक्त । कृतिन स्नामन्छ विषद् मधनिष्ठ পুস্তকাদি পাঠে আৰৱা এখনও ভভটা আরহায়িত হইরা উঠি নাই। যাহা হটক, আলা করা যায় দেলের পাৰীনভালাভের मर्म भरम क्रममाबाद्र वह सर्माकारवद शहिदक महत्व बार वर्षकानमण्यत लाटकदा निव्वविकाम विषयक शृक्षकशार्क অবিকতর মনোযোগ ছইবেন। এতদিন আমরা ভুনিতাম कश्रमा श्रेटण छैरभन्न स्थ क्यूरमत चुक्मात वर्गक्षीएक शांत মানায় একপ অসংখ। কৃত্রিম রং, বিবিধ সুগছি পূলা ও কলের গ্ৰুলার, কালাক্র, ম্যালেরিয়া, আমাশ্র প্রভৃতি বছবিধ न्तावि প্রতিষেক ও্বর, है-এন-है, পিকৃত্রিক এলিড প্রভঙ্জি প্ৰসময়ৰ বিস্ফোৱক পদাৰ্থ আবের চিনির চেৰে গাঁচ সভ धन चिक विदेशांद्रक नाकादिन। वर्षमात्म माना क्षकाद्वद शामकेकन, बरदारक्षन, साहित खक्छि हानमात्र (शहीन চিনির চেরে চার হাজার ৩৭ মিষ্ট এম-প্লোপোক্লি নামক ত্রব্য, বিবিধ ভিটামিন এবং শরীর রক্ষার জনাতম অপরিচার্য্য উপাদান স্বেহ-পদাৰ্থত (কৃত্ৰিম মাৰ্থন) প্ৰকৃত প্ৰভাবে ক্যুলা হুইতেই প্ৰস্তুত হুইতে আরম্ভ হুইয়াছে।

আমি এক নিবাসে যে বিষয়গুলির উল্লেখ করিলাম তাহা কার্য্যে পরিণত করিতে লাগিরাছে হাজার হাজার বৈজ্ঞানিকের শতাবিক বর্বব্যাপী অক্লাভ পরিপ্রমাণ্ড অসাবারণ অধ্যবসার। পাব্রিরা করলা হইতে যে রাসারনিক শিল্প গড়িরা উঠিয়াছে তাহার পিছনে রহিরাছে লিবিগ, ক্যারাভে, হক্ষান, পার্কিন, উইলিরম্বন, শিটার প্রিস, কেকুলে, ব্যাসন, বেরার, কারো,

कियात, वार्यरमा, वार्तितम अञ्चि अविकश्मा त्रामात्रविकशर्यत ৰীবনব্যাপী সাধনা। বুক্তের পত্রপুলাভেড লৌক্বাই আমাদের চোবে পড়ে, কিছ যে বুল নিৱত নিতৃতে পুষ্ট বোগায় তাহার কৰা সাধারণত: আমরা ভাবিয়া দেখি মা। পাধ্রিয়া ক্ষুলাকাভ বাসাধনিক শিল্পের গৌরবম্ভিত বিরাটডেই আমবা মুল্ক হই; কিছ দেই গৌরবের মূলে যে একাএডা, य ज्या मारमा अरर य मजा ७ साम निनामा तरि-য়াহে ভাহার ধবর আমরা কয়জনেই বা রাখি ? যে সব মনীমীর নামোরের করা হইল ভাঁহাদের কালাকে বাদ দিয়া काशांत कथा विभव ? जत्य दैशांतात मधाब हुदै-अके कथा না বলিয়া পারিভেছি না। মহামতি কেকুলে বলিভেন---রসায়ন-শান্তের পুত্তকাদি পড়িতে পড়িতে খাহাহানি मा बहारेल के भारत (कर भारतमिंछ। अर्कन कविरछ পারেন না। আর পঞ্চিতেও ছইবে বিভিন্ন ভাষার, বিশেষ করিয়া জার্দ্ধান জায়ার মাধ্যমে। কেকুলে এই বাক্য জকরে বৃদ্ধরে পালন করিতেন। ডিনি বলিতেন এক রাজি পড়া-শুনায় কালিয়া কাটানো ভিনি বর্ড বোর মধ্যেই মনে করি-এতন না। যথন পর পর চুই তিন রাজ্ঞি একাধিজ্ঞমে ছাগিয়া পাঠে নিময় বাকিয়া কাটাইভেন ভবনই ভিনি অনেকটা আত্মপ্রদাদ লাভ করিতেন। আর ল্যাবরেটরিতে পরিশ্রমণ্ড ক্রিভেন ভিনি অসাধারণ বৈহা সহকারে। অনেকেই कात्मम बहे (क्क्रामद (वमकिन क्रब्रुका काविष्ठक ना श्रेर्म আৰু কৈব রসায়নশাস্ত্র তংসংশ্লিপ্ত শিল্পুটা এত দুর উন্নতি লাভ করিভে পারিভ কিনা ভদবিষয়ে বোরভর দৰেছ রহিরাছে। অধ্যাপক বেয়ারের সখদে কবিত আছে, নির্সোভ নিস্পৃহতাবে তিনি ল্যাব্রেটিরিতে পরীক্ষার পর পরীক্ষার আন-निरम्राचिक बाकिएक--कांश्व श्रत्थवात करण जानिकातिम. मीन श्रकृष्ठि बुनावाम दश्चन-भनार विदार भित्तव त्रभ भवित्रक् করে কিছ ভিনি কখনও কোনও বিষয় ণেটেউ করিয়া লইবার পঞ্পাতী ছিলেন না। বিশ্বার্থীদেরও তিনি সাহায্য ক্তিভেন প্ৰাণ দিয়:--ভাহাদের দতত পৰ দেশাইয়া আৰ-রাজ্যের পরিচিত সীমা হইতে অজানা রাজ্যের ভিতর সইয়া ষাইভেন, কিছ ভাহাদের দাফল্য-পৌরবে ভিনি ক্থন कैर्वादांव कविष्ठम मा। निकृष्ठ नावमा कविष्ठम द्वाव---প্রকার সভাসমিভিতে নিজের কাজের প্রচারে ভিনি সভত कुर्शादान कतिएलम । कनल: अहे ममीशीत निर्देश ७ हतिबादार्न चावारवय वर्षमाम विकासरभवीरवय चन्नशानिक एक्सा विकासके वादावनीय रदेश परिवाद । जामवा कांच कवि कम किन्द क्या वनि वह वना।

এই প্রসংক আছ এ কথা নিঃসংলহে বলা চলে বে, উনবিংশ শতাকীতে বে লব ভারতবাসী কালাপানি পাছি বিবার সোভাগ্য লাভ করিরাহিলেন উচ্চারা বহি উচ্চ রাজপবের মোহে ইংলভে না নিরা জার্মানীর ভদানীখন বিকপাল রাসারনিক্সপের নিকট শিক্ষার সুযোগ এছণ করিতেন তবে রসারনশাস্ত ও রসারনশিলে জারাদের দেশ আছ এত শোচনী ভাবে পিচনে প্রিয়া থাকিত না।

এখন রাসায়নিক শিলের ক্রমবিকাশ ও আমাদের দেশে ভাহার কি কি সন্তাবনা রহিয়াহে তৎসম্বত্তে সংক্রিত আলোচনা করা মাইতেছে।

পাধুরিয়া করলা পোড়াইরা যে কোক প্রছত হয়, আলানিরণে ব্যবহৃত হওয়া ছাড়া উহা ৰাভৰ লৌহ विकामस्यत अक्षे क्षानिकार्या छेनकत्व । अहे दकांक कहेराज चार अकड़ विशाह शामाश्यक निम्न मण्डा विद्वारह---ভাষা प्रेटिए कानिनियाम कार्वारेष निवा। हम ७ काक বৈহাতিক চুলীতে এক্তে নিৰ্বিষ্ট অপুণাতে নিশ্ৰিত অবস্থায় देखक कविटन छैरभन्न इन कानिजिन्न कार्वादेख। बहुविद অভ্যাবন্তক রাসায়নিক শিলের কাঁচামাল প্রস্তুত হয় এই ক্যালসিয়ম কাৰ্বাইভ হইতে। আমৱা কেবলমাত্ৰ পাড়া-গাঁৱের মেলায় বা বিবাছাদি ব্যাপারে ক্যালসিয়াম কার্বাইড ৰাৱা বাভি আলাইতে দেখিতে অভ্যন্ত, কিছ ইহা হইতে যে কত বিচিত্ৰ বক্ষের বাসায়নিক পদার্থ সঞ্চাত হয় खरमश्रद्ध खाबारवद १० माडे वादना नाहे विज्ञान हरन। কাৰ্বাইভের উপর নাইটোভেন গ্যাসের ক্রিরাভে উৎপর क्ट कार्गिक्य माराय-सामावेष । वेका स्थित शत्क একট উংক্র সার : সারাখ-জ্যামাইত হইতে জ্যামোমিয়া গ্যাস এবং ভাষা হইতে ক্ষিত্র জ্পত্র একট স্থপরিচিত সার আমেনিয়ম সালকেইও প্রবত করা বার: সায়ান-স্যামাইড ७ जाबादन जरन अकटक देख्य कदिएन देश्या एव माधिया সাহামাইড। সোভিত্তম এবং পটাস সাহামাইভ ভীত্র বিষ বলিৱা সকলেই কাৰেন। কিছ ধনি হইতে বৰ্ণ নিভাপনে এই সাহানাইত একমাত্র শ্রেষ্ঠ উপকরণ। একমাত্র দাক্ষিণাত্যের জোলার বর্ণধনির জনাই প্রতি বংসর আমাদের দেশে তিন লক টাকার সারামাইড আর্যানী করিতে হর। প্রভরাং কাালসিয়ৰ কাৰ্বাইড শিল্প প্ৰতিঠা করা বে আমাদের দেশে অপরিহার্য্য ভাষা সহকেই বুবা বাইভেছে। ভাষার পর দেশের ভূমির উর্বরভাশক্তি বৃদ্ধি করিয়া অধিক শভ-কলানোর ব্যাপারেও কার্বাইড শিল প্রতিঠার ওক্ত উপলব্ধি করা বার। বেশে চুম বা কোকের অভাব মাই, এবম সুলভ বৈছ্যতিক শক্তি ও উপযুক্ত বন্ধপাতি বোগাৰু করিতে भावित्नरे कार्यारेष भिन्न श्राणिकांत नामा निष्ट्रविष्ठ एत । **अ**रे কারণেই দাযোদ্ধ-পরিকল্পনা যত শীত্র কার্ব্যে পরিণত হয় ७७६ (स्टापन शटक मन्त्र)।

আক্ষাল এবেশে প্ল্যাসটকুস্, কুত্রির রেশন প্রভৃতি निवाद विविश्वसम्बद्ध का वार्यक वार्यक वृत्री गृष्टिरे ৰাণা গামাইভেছেন--- বেভার বক্তভাতেও এই বিষয়ের খন্ত বোষিত হইতেৰে, কিছ এই সৰ শিল্পে কাঁচাৰালও উংপত্ন হয় ক্যালসিয়ম কাৰ্বাইড হইতে। ক্যালসিয়ম कार्व किएव केलव करमव किवारण करन जारमङ्गीमन গ্যাস। এই আাসেইলিম গ্যাস আক্ষাল আলাদীমের প্রদীপের মত আক্ষর্য বস্তুতে পরিণত হইয়াছে। কারণ देश स्टेटल्ट छेरभव स्व--बानिहे बानिएसारेष, बारमहैक এণিড, জ্যানেটক জ্যানহাইড়াইড, জ্যানেটোন, ইবাইক স্যাসিটেট প্রভৃতি বুল্যবান রালায়নিক প্ৰতিবাইৰ আসিট্যাৰ ভাতীয় প্ল্যাস্ট্ৰুস । আসিটোন আাসিটক এসিড ও আাসিটক আামহাইড়াইড প্রভৃতি পদার্থ যে তথ কৃত্তিম শ্ৰেশমশিলেরই অপবিভাগ উপাদান ভাষা নছে, विविध तक्षम-भगार्थ, श्रेयर ७ विट्यातक भगार्थत्व अश्रीम অভ্যাবঙ্ক উপাদান ও দ্রাবকরণে পরিচিত।

जातिक कार्या क्ष्मण (शाहारित कार्य कार्र जनारेड নামে ব্যাস ক্ষে। মাত্র্য এবং প্রাণ্ট্রমাত্রেই প্রতিনিয়ত এই গাস মি:খাসের সঞ্চে ছাভিতেছে: উত্তপ্ত কয়গার উপত্রে জনীয় বাষ্প চালিত ক্রিলে ক্ষে হাইড্রোজেন ও কার্বন মনজ্ঞাইত। এই মিশ্র গ্যাসের কার্বন মনজ্ঞাইতকে প্রক্রিয়া বিশেষ দারা কার্বন ভাইঅক্সাইছে পরিণত করা হইয়া থাকে : এই কাৰ্বন-ভাইজন্ধাইড জলে ম্ববীভুত জবস্থায় সংগ্ৰহ করা হয় এবং বিশ্বর হাইডোকেন পাওরা বায়। এই হাইডোকেন গ্যাস বছবিধ রাসায়নিক শিল্পের অপরিহার্ব্য উপাদান। হুর্গড ভেলকে গছহীন কঠিন পদার্থে পরিণত করিতে, নাইট্রোজেন গ্লাসের সন্মিদ্ধে এমোনিয়া প্রথত করিতে এবং কয়লা হইতে পেটোল ভাতীয় তেল প্রভত করিতে হাইডোভেনের বাবহার সুপরিচিত। শেষাঞ উপায়ে ক্রলা হইতে প্রভত প্যারাকিন শ্ৰেণীর হাইডো-কার্বন হইতে চর্বিক কর (fatty acid) ভৈয়াহী করিভে এবং সেঞ্চলিকে বিসারিনের রাসায়নিক সন্মিলনে কল্লিম চবিতেও পরিণত করিতে ভারান রাসাহনিক-প্ৰ প্ৰত যুদ্ধের সময় সমৰ্থ ছইয়াছেন। এই কৃত্তিম চবি ফে क्वम जावामनिष्यंहे बाबबण स्टेशांट जाना नरह , शब्द জারানীর চরম বাভসংকটের দিনে ইছা হইতে মার্গারিন এছত কৰিয়াও লোকেয়া বাইয়াছেন। কলত: কয়লা হইতে ৰাভ প্ৰস্তাভৱ ব্যবসা এই সৰ্বপ্ৰথম হয়।

হাইড়োজেন তৈরির সময় যে কার্থন-ভাইজ্ঞাইড গ্যাদ ক্ষে উহা যে কেবল সোডা-ওয়াচীর এওতেই লাগে তাহা নহে; কার্থন-ভাইজ্ঞাইড লবপজ্ল হইতে এয়োনিরা সাহায্যে সোডা তৈরি করিতে ইহা প্রবাদ উপাদান রূপে ব্যব্দ্ধত হয়। তত্তির কার্থন-ভাইজ্ঞাইড ও এয়োনিরার রাসায়নিক সন্মিলনে উংপর হয় ইউরিরা। ভাকার উপেক্ষমাধ প্রশ্নচারী আবিছক কালাধরের র্থবৰ ইউরিরা ট্রবামিনের কল্যাবে ইউরিরা কথাটি
শিক্ষিত বাঙালী বাজেরই পরিচিত। বুরের প্রবিধ পূমিনাল প্রভৃতিরও ইউরিরা একটি প্রবাম উপাদান। ইউরিরা কর্ম্যালভিছাইড রেজিন নামক প্লাস্টক্সের জড় ইউরিরা একটি অভ্যাবঞ্চক রাগারনিক পদার্থ হটরা বাঁভাইরাছে। বর্ভবানে জমির সাররূপে ইউরিয়ার ব্যবহারের পরীক্ষা চলিভেছে। স্নভরাং কার্বন-ডাইজল্লাইড রাসারনিক শিলের বে একটি বিশিষ্ট কাঁচামাল-সরুপ ব্যবহৃত হতৈ পারে ভাছার সভাবনা দেখা যাইভেছে।

পূর্বেই উরেধ করা হইরাছে উত্তপ্ত করলার উপরে জলীয় বালা চালিত করিলে হাইড্রোজেন ও কার্বন-মনজ্ঞাইত গ্যাস করে। অনেক ক্ষেত্রে কার্বন-মনজ্ঞাইতকে কার্বন-ডাই-জ্ঞাইতরপে পূর্বক না করিয়া বিশেষ প্রকার প্রক্রিয়া সাহায্যে প্রথমোক্তেইকে হাইড্রোজেন গ্যাস হইতে বিযুক্ত করিয়া বিশুভ অবস্থার সংগ্রহ করা হইরা থাকে। এই কার্বন-মনজ্ঞাইতও কথেকট বিশিষ্ট রাসায়নিক শিলের কাঁচামালে পরিণত হইয়াছে।

এতদিন আমরা শুনিরা আসিতেছি ভাত শুড় প্রভৃতি
পচাইরা কোহল বা পুরা প্রশুত হইরা বাকে। কিছ রাসারনিকগণের চেষ্টার এই কার্বদ-মনজ্জাইছ গাাল হইতে হাইছোলেন গ্যালের লাহায্যে অপ্রাপ্ত পরিবাণে পুরা প্রশুত
ভারম্ভ হইরাছে। সাধারণ পুরাকে রাসারনিক্গণ বলেন

देशहेन बनकरन । दनायन-नाट्य बनकरन चानक क्षेत्री-রের আছে। আমাদের প্রপরিচিত প্ররা বা কোহন এই শ্ৰেণীর বিভীয় স্থানীয়। প্রথম কইভেছে মিবাইল अनक्षन । देश शूर्व कार्ड distil (शविरणायम) कविवा পাওৱা বাইড, কিছ কয়লা হইতে ক্যাটালিটক উপাৱে কাৰ্বন-মন্ত্ৰভাইত ও হাইছোজেন প্ৰভ্ৰপালী আবিদ্ভ ছত্ত্বার ইছা বাবেই পরিমাবে পাইবার প্রবিধা ভইরাছে। चारबविकात बस्कतारहे ১৯৩० मत्मरे अक कांक्र भागम विवादेन अनक्षम श्रद्ध स्टेशांबिन विनश साना यात्र। অনেকে জিজালা করিতেন এত বিধাইল এলকংল কোন কাজে লাগে ? অনেকেই কর্ম্যালিন বা কর্ম্যালভি-कारेट्य नाम क्रियाद्यमः वीक्य क्रियाद क्रमानित्यद ব্যবহার সুপরিচিত। রঞ্জন-পদার্থ ও কৃত্রিম আবুনিক श्रेष्ठवणकामिएण यापडे श्रीबार्य मिर्दार्वेण अनक्ष्ण । कर-ল্লালভিত্তিত বাবজত ত্ইয়া থাকে। তত্তির ইউরিয়া কর-ম্যালভিত্তিত কিনোল করম্যালভিত্তিত প্রভৃতি শ্রেণীর প্লাস-हैक्न श्राप्त करन हैन हैन करमानिष्टिश्रिष चाक्कान मत्रकार

পাধুরিরা কয়লা ছইতে প্রক্রিয়াবিশেষ ঘারা কোক করিবার সময় করেক প্রকার তেল ও আলকাতরা পাওরা যায়। আলকাতরা আধুনিক অনেক ঔষৰপত্র, ফুত্রিম রঞ্জন ও বিক্ষোরক পদার্থ এবং ফুত্রিম সুগতি-প্রব্যের মূলাগারস্করণ।

সবহারাদের কবি

🗃 প্রভাত রুমু

সোৰার রবে যে রাজকুমার আচে আমার ভূপি আঁকে না ভার ছবি; ব্যর্থ যারা, সদাই কাঁপে আদে আমি যে সেই সবহারাদের কবি!

করের তিলক যাদের ললাট 'পরে কত্যাচারী পর্মী সমাক্ষতি----যশের কেরী যাক্ষার লাক্ষরে, তাদের পায়ে কামাই মে ক' মতি।

রভ্যাবা কটিন রণভূমে
রভূার্বে পড়ে আছে যারা ,
আনার এ মুব তাবেরি পির চুমে,
কাবো আমার অমর হবে তারা।

দেশের মাবে বিখ্যাত লোক যিনি, বিলাত-ফেরত সিবিলিয়ান দেলে আচেনা মোর—আমি কেবল চিমি
ছপতদের, বন্দী যারা কেলে।
গাঁরের মাঝি, তাঁতি, মন্ত্র, চামী,
প্রান্তদেহ ক্লাভ কলের কুলি;
ভারা আমার কর্জুবনবাসী,
ভাদের হবি আঁকে আমার ভুলি।
পুরা, নারী, চাঁদের হাসি নিষে
অঞ্চ লোকে রচুক কাবাকলা;
কণ্ঠ ভরে' ছংসহ বিষ পিয়ে
মিখ্যা আমার মধুর বানী বলা।
ঘর্ণপ্রদীপ অলুক ভাদের মতে
সোনার রঙে যারা ছবি আঁকে;
বর-ভাড়া ঐ সবহারাদের ভরে
ইাড়িয়ে আমি রইছ প্রের বাঁকে।

মেসকীক্ষের অভুসরবে

কালিদাস-সম্পর্কে রবীক্রনাথ

অধ্যাপক 🗐 কৃদিরাম দাশ

বাচীম ভারতের শ্রেষ্ঠ কবি সম্পর্কে ইতিহাস ভন্ধ বাকিসেও ক্ৰিপৰ নীৱৰ নহেন। ভবভুতি মাধ হইতে আৱম্ভ ক্রিয়া चगार्वि मश्क्र ७ श्राङ्क चाराद कृत-दृर् क्र वर्वि যে কভ বিচিত্ৰ ভাবে কালিদাসের কথা আমাদিগকে শ্বরণ कवारेवा विवादिन जाहाव रेवछ। नारे। अञ्चलत्न, जाहरण, ভাৰান্তরে রূপান্তরে এই মহাক্বি ভারতীয় ক্বিচিত্তকে অভি-ভুত ক্রিয়া অধিষ্ঠিত রহিয়াছেন। এরপ ব্যক্তিখুশালী কবির প্রভাব অভিক্রম করা সহত্বসাধ্যও নহে। কিন্তু এই উনবিংশ শতাকীতে স্বরোপীয় সংস্কৃতি ও সাহিত্যের বিষয়গৌরবের কালে কোনো কোনো দিক দিৱা ভাঁছার সমবর্ষী ও সম্বক্ষ অপর এক মহাক্বির দৃষ্টিতে যতক্ষ না তাঁহার স্ত্রপের পরিচর পাওরা গেল ততক্ষণ আয়াদের নিকট ভাঁছার পরিচর অসম্পূর্ণ হিল। সংস্কৃত অলভারশাল্লের ইভভত: বিকিন্ত আলোচনায় এবং মন্ত্রিনার প্রমুখ পভিত-গৰের ব্যাব্যায় কাব্যরসিক্রণ যে রসাধাদ করিয়া আসিতে-ছিলেন ভাছাকে রবীজনাথ এক অভিনৰ উন্নত ভারে দ্বাপন করিলেন। এক বিরাট কবিপ্রতিভা অতীতের অপর এক অপূর্ব্ব কবিপ্রতিভার অভিনব রূপ আবিভার করিণ ! ইভিপুৰ্বে কালিদাস-সম্পর্কে এরণ খন্দ্র অবচ ব্যাপক রস-বিচার আর কেছই করেন নাই, এরপ অফুরাপের স্থিত কালিদাণের যুগকে চিত্রিত করিতেও কেহ সাহ্সী इम भारे।

উন্বিংশ শতকের বাংলা-সাহিত্যের স্বর্গ্রের কথা প্রারণ করা যাক। ছোমার-মিণ্টন এবং সেক্ষণীয়র-স্কটই তৰ্ম সাহিত্যিকণণের আদর্শ ও শিক্ষিত বলবাসীত্র পুরু। ব্যাদ-বাত্মীকি-কালিদাসের নাম প্রভার সহিত প্রবণ कविरम् वर्ष्यम् कावा-स्वित्रभाव क्ष भागारिकाव अन লক্ষতোভাবে এছণ করিয়াছেন। সেকালে আইনের বলে মাড়ভাষা বিকৃত হুইল, সংস্থত-শিক্ষার প্রতি ওঁদাসা অহ-মাননার প্রাব্সিত হইল। মেধদুত ও নৈধৰ চরিত, পাণিনি ও রতুনাধ বিজ্ঞা পদীর হুংকুটরে রসবোধ্ছীন লাখ্যকারদিদের ভাষ্যে শাদ্রোধ হইতে কর্বকিং আত্তরকা ভরিতে লাগিল। শিকা, ধর্ম, দর্শন, রাষ্ট্রমীভি, লোকবাবছার -- সৰ্ব্যত্ৰ পাশ্চাছোৱ প্ৰভাব বিশ্বত হইল। এ সম্পৰ্কে বিশ্বত वर्गमा बाएना माख । क्यन बहें कू वनित्न रे यर्प हे स्टेट्ट व भाकारकार व रहन विकासिशमायर कारण व्ययम वक चमक-সাবারণ প্রতিভার আবিঠাব হইল যাহা স্বাভাবিক প্রবণতা-বলেই স্বদেশের প্রাচীন নাহিত্যের প্রতি আরুষ্ট হইল। এই প্রতিভাই কবিভার, গামে, প্রবর্ধে, এবং সভা-সম্বিভিতে বাঙালীর তথা ভারতীরদের সাজাত্যবোধ জাঞ্জত করিয়া ভূলিল।

রবীজ-প্রতিভার এই বৈশিষ্ট্য বিশেষ ভাবে অমুধাবন করিতে হইবে। প্রাচীন ভারতীর মানস-প্রকৃতির সহিত ववीव्यनात्वव कवियानत्भव अक्षे कवित्रक्षमा वांत्र विश्वाद. এবং যেখেড় কালিদাসের কাব্যে ভারতীয় সংস্কৃতির বৈশিষ্ট্য সর্বাপেকা সুষ্ঠু ও ব্যাপক ভাবে রূপময় ভাষায় প্রকাশ লাভ করিয়াছে সেই হেড় রবীজনাৰ কালিনাসকে লইয়া এত কবিতা ও প্রবন্ধ রচনা করিয়াছেন এবং প্রসঙ্গ-ক্রেমে বন্ধ স্থানে আশ্বরিক অনুরাগের সহিত কালিদাসের কবি-প্রকৃতি ও কাব্যসৌদর্য্য সম্বন্ধে আলোচনা করিয়াছেন। আমরা অবশ্র একবা মনে করি না যে রবীরানাবের সমগ্র कवि-वाक्तिश्रहे कानियात्र छव। श्राष्ट्रीय छात्रएव श्राम । উন্বিংশ শতাকীর রোমানিক পৌন্দর্যা-চেতনা, নুতন জীবন-(वह क्र: व ७ वृक्त अन्नार्क चांक्रेनर बांब्रगा, विविध कन्ननार वर्ष রঞ্জিত ছইয়া তাঁছার কাব্যকে থবার্ণ ভাবে ভাবুনিক মনের উপযোগী করিয়া ভূলিয়াছে। এমন কি কয়েকট বিশেষ কেত্রে ভিনি অভ্যাৰ্থিকও বটেন। কিছু সেই সঙ্গে ইহাও মেৰিভে ছইবে যে প্রাচীন ভারতের তপোবনের আদর্শ ও মহিমা কবি কেবল কবিতা ও প্রবন্ধের মধ্যে বর্ণনা করিয়াই ক্লাম্ভ হন নাই, কাৰ্যোও ভাষাৰ ৰূপ দিতে চাহিয়াছেন। অভি প্ৰাচীন ভারতের তণোবনের চিত্র শকুভলা, কুমারসভাব ও রলুবংশে যেলপ মনোলম ও পরিপূর্ণ দেরপ অভ কোবাও মতে, অপর कामक कविहे ज्ञानमामार्ग (प्रमण चाक्टे हम माहे। कानि-দালের পর বর্তমান কালে একমাত্র বর্ণজনাথেই সেই আদর্শের পুনরাবৃদ্ধি দেখিতেছি: শান্তিনিকেতনে ত্রম্মচর্ব্যাশ্রম স্থাপনের পূর্ব্ব হইতেই কবির চিত্ত কালিদাস ও প্রাচীন ভারতের তপোৰনের জীবনাদর্শের প্রতি আকুই হইতেছিল ৷ অতঃপর ठाँहार कर्श प्रहेट वह जाएर्निय जयगान नानाजार है श्राविक হইরা উঠিল। কবি আধুনিক সভ্যভার দান--এই ভোগসর্বান্থ সমীৰ্ণ অধচ অটল জীবনযাত্ৰা হইতে মুক্তি চাহিলেন---

> দাও সেই তপোবন পুণ্য হারারানি, ্লানিহীন দিনগুলি, গেই সহ্যাত্মান, সেই গোচারণ সেই লাভ সামগান, নীবার বাভের মৃষ্টি, বহুল বসন, মর্গ হয়ে আছ্মাবে বিভা আলোচন মহাভত্তভলি।

ক্ৰমণ্ড বিশ্বদেৰতাকে প্ৰাচীন ভারতের আদর্শের মধ্যে প্রতিষ্ঠিত করিয়া দেখিলেন—-

ভৰিত্ব ভোষার অবের মন্ত্র অভীভের তণোবদেতে।

অমর পবির কদর ভেদিরা ক্ষমিতেকে ত্রিভ্বনেতে।

মববর্ষের দিনে কবি প্রাচীন ভারতের মন্ত্রে দীকা দইরা
ভাষার আদর্শ অভুসরণের কর প্রতিফাবর হইদেন—

বে জীবন ছিল তব তপোবনে যে জীবন ছিল তব রাজাসনে মুক্তদীপ্ত সে মহাজীবনে চিন্ত তরিয়া লব। মুক্তাতরণ শকাহরণ দাও সে মন্ত্র তব।

এইরপ বহু কবিভার এবং ধর্ম, খ্রমেশ প্রভৃতি নামা প্রবন্ধে কবি কালিদাস-বর্ণিত তপোবন ও জীবনাদর্শের প্রতি অনুবাৰ জাপন করিয়াছেন। ব্যাপক দৃষ্টিতে দেখিলে পুরা-ভাষের প্রতি এই অন্তরাগ কবির রোমাণ্টিক কবিসভার বিরোধী নছে : যাহা আমাদের যুগ হইতে বহু পশ্চাতে, যাহা আমা-(प्रद निकार के का का का का का बाबा (मनारमा, वेलिहान ও কল্লমান্ত মিশ্রিত সেই মুগ আধুনিক কবির নৃতন বর্ণসম্পাতে चार्यात्मव हरक त्यांचाक्षण लात्रांचेवा तम्ब कवनाव अपूर्वत्क নিকটে আনিয়া ভাহার সহিত চিত্তের ভাবসন্মিলন সাবিভ করে। কবিভাগর মেখণ্ড, খার্র, সেকাল প্রভৃতি কবিতা खबर 'कवा 'ड काहिनी' कावा बहे मिक मिश्रा नार्वक रही। এতহাতীত ইহাও মন্তব্য করা অগঞ্চ হইবে না যে, কালিদাস क्रांतिकान कवि स्टेटन्ड फाँशाव कार्या आयुनिक समस्क মুদ্ধ করিবার উপধোগী উপকরণ প্রচুর র^{হি}রাছে। হয়ত मक्रम एक कवित्र कार्या है अवेशन बारक : (अध्यूष्णव वित्रक् কুমারগভাবের ও শকুভাগার প্রেম, কবির বিশিষ্ট প্রকৃতিপ্রীতি এবং আহো নানা বিষয় কবিগণের চিলা ও অনুভূতির একার উপযোগ । ভাই প্রাচীন কালের কালিদাস ও আধুনিক আমলের রবীজনার সমর্বর্ম।

রবীক্রনাথ শান্তিনিকেতনে ঋতৃ-উৎসব ও ব্রক্ষরোপণ উৎসব প্রবর্ত্তিত করেন। ইহার প্রেরণা হয়ত তিনি কালিদান হইতে পাইয়াছিলেন। হৃক প্রকৃতির সহিত মানবের ঘনির্হ সম্পর্ক ভারতীর সংকৃতির বৈশিষ্টা। ইহা কালিদান শকুন্তলা ও পার্কাতীর বৃক্ষপালনের চিত্রে পরিক্ষৃত্তী করিরাছেন। রবীক্ষ-মাধ-প্রবৃত্তিত ব্রক্ষরোপণ উৎসব হইতে ও উপ্তরকালে রচিত উহাহার 'বনবাদী'র কবিতাগুলি পাঠ করিয়া মনে হয় কবিত্ত ভীবন ও কাব্যের উপর কালিদাসের বিশেষ প্রভাব রহি-যাছে। কিন্তু এ সকল বর্তমানে আমাদের আলোচ্য মহে। কালিদাসের সহিত খীর চিত্তের ঘনিষ্ঠ যোগ আবিদ্ধারের পথে কবিগুরু কালিদাস ও তাহার কাবা-সম্পর্কে কোথায় কি আলোচনা করিয়াছেন সর্কপ্রথম তাহাই দেখিতে হইবে। এই পথেই উভয়ের মানসিক যোগস্ত্রে আবিদ্ধার করা সহক

কালিদাস ও তাঁহার কাবাসম্পর্কে কবিশুর যে সক্ত কবিতা লিধিয়াছেন এবং সময় সময় গলে আলোচনা করিয়াছেন ভাষা মোটাযুট উল্লিখিত হইভেছে।
(১) মেবদুত, চৈভালির করেকটি কবিতা, দেকাল, বিচ্ছেদ
এবং যক প্রভৃতি কবিতা, (২) শক্তলা ও কুমারসভব
সম্পর্কে আলোচনা এবং The message of the forest
প্রবদ্ধ, (৩) আন বহু ইংরেজা ও যাংলা প্রবদ্ধে ও শক্তে
প্রাস্থিক আলোচনা।

'চৈভালি'-কাব্যে ঝড়সংহার, কুমারসম্ভব ও মেবদুভ সম্বৰে একট করিয়া এবং কালিদাস সম্বন্ধে ভিন্ট চচুর্বলপদী কবিভা রহিরাছে। সবগুলিভেই কালিদাস ও তাহার কাব্য সম্পর্কে কবির মুখ্র হৃদয়ের অমুভূতির প্রকাশ। ঋড়সংখারের যৌবনঞী, মেষদৃতের প্রকৃতি, আর কুমারসম্ভবের প্রেমের মাধুর্যোর বর্ণনা ক্ৰিকে কি প্ৰিমাণ আৰু ক্ৰিয়াছিল ভাভাৱ প্ৰিচৰ পাওৱা যায় এই কবিভাঞ্পিতে। এগুলিতে মুগ্ধ কবিভাগয়ের ছতিগান আছে। কালিদাস-বর্ণত প্রাচীন ভারতের মহিমা-ম্বিত ভীবনহাত্রা ও তপোবনের আমর্শ সম্পর্কত আরও করেকট কবিতা '১৮তালি'তে বহিষাছে। একচর্যাশ্রম প্রতিষ্ঠার পর্বের রবীন্দ্রনাথের চিত্ত প্রাচীন ভারতের প্রতি কিম্বপ আঞ্ট হইতেছিল এথাল ভাহারই প্রভাক প্রমাণ। 'তপোৰন' কবিভাট শকুন্তলার এথমাঙ্কের একট মনোরম শন্ত-চিত্ৰ। গোষ্টা চৈতালি কাবোই রবীলনাথের গভীর প্রস্কৃতি-প্রীতির পরিচয় পাওয়া যায় : তপোবনে মানবের সহিত রক্ত-লতা, পশুপক্ষীর সম্পর্ক অভিশয় খনিষ্ঠ হিল। সেধানে যেমন চৈতালি কাবোও তেম্বি প্রকৃতির সব কিছুই কবির অভিশয় श्रिष्ठ इहेश छेडिशास । अक्षुमा-बच्चरत्म चाराप्रव व्याठीम কবি ষেমন বুক্সতা প্রপক্ষীর সহিত মানবের আত্মীরতার চিত্ৰ আঁকিয়াছেন এখানেও আধুনিক যুগের শ্রেষ্ঠ কবি ভাহারই অনুগামী। ভাষা-ধর্ম শীর্ষক কবিভার কবি বলিভেছেন---

হৃদয় পাষাণভেগী নিক বির প্রার,
কড়কর স্বাপানে নামিবারে চার।
মধ্য দিনে দক্ষদেকে কাপ দিয়া নীরে।
মা বলে পে তেকে উঠে স্লিক্ষ ভট্টনীরে।
যে চান ধরের মাবে হেসে দের উঁকি,
সে যেন বরেরি মেরে শিশু সুবায়ুখী,
বৈ সকল তরুলভা রচি উপবন
গৃহপার্যে বাভিয়াহে ভারা ভাইবোন।
যে পশুরে কর হ'তে আপনার আনি,
হাধয় আপনি ভারে ভাকে পুঁটুরাদী।

'ছুই বছু' কবিভার মাহ্য ও পশুর মেহ্দম্পর্ক কবি পুনদ্দ ব্যক্ত করিভেছেন—

লে দিনের আগ্নীয়তা গেছে বহুদ্যে—
তব্ও সহসা কোন কথাহান প্রে
পরাবে কাগিয়া উঠে কান প্রস্থিত,
অন্তরে উহলি উঠে সুধাময়ী গ্রীতি,

মুদ্ধ মৃচ প্লিক্ক চোৰে পশু চাহে মুৰে
মান্ত্ৰৰ ভাগাৱে হোৱে প্লেছের কৌচুকে।
বেন ছই ছন্ধবেশে ছ' বছুর মেলা—
ভার পরে ছই কীবে অপরূপ ধেলা।

কালিদাসের কবিপ্রকৃতির সহিত 'চৈডালি'র রবীক্ষনানসের সমর্থ প্রত্থাই তে অবিক উলাহরণের প্রবাহন নাই। কালিদাসের রচনার সহিত পরিচিত পাঠক 'চৈডালি' পাঠ করিলেই উহা দেখিতে পাইবেন। তথাপি সমবর্ষী উভয় কবির আর একট বিশেষ সাবৃত্তের উল্লেখ না করিলেই নর। কালিদাস লপাকে বর্ণনা করিছে গিয়া কবিখন উছার কাব্যের আনন্দরণের উল্লেখ করিয়াছেন। রচ বাভব ক্পংকে অবলয়ম করিয়া কালিদাস তাহার কাব্যকে রসোভীণ করিছে চাহেন নাই। ব্যবহারিক কবিনের নৈরাভ ও মুখকে অভিক্রম করিয়া ভাহার কাব্য অপাধিব আনন্দ ও দৌলব্যের বাদী বহুন করিছেছে। বাভব ক্রপ্রতের জীবনসংখাত ও কোলাহলকে দুরে পরিহার করিয়া তিনি কাব্যস্ত্রীকে দৌলব্যের ইললাকের আপিত করিয়াছেন; কবিশ্রের মতে ইহাই কালিদাসের কাব্যের বৈশিষ্ট্য।

ভবু সে সবার উর্জে নিলিপ্ত নির্মাল
ফুটিয়াছে কাব্য ওব সৌন্ধর্য-ক্ষণ
আনন্দের অর্থাপানে , তার কোনো ঠাই
ছ:খদৈছ ছবিনের কোনো চিক্ নাই।

রবীক্ষমাথের কাব্য-শৃষ্টি সম্পর্কেও আমরা তো একই কথা বলি। বাওব অগতের ছংবদৈত এবং কদর্য নরম্বল রবীক্ষ-মাথের কাব্যস্টীর প্রেরণা যোগার নাই একবা সত্য নহে, কিছ ভবাক্বিত বাওবতা তাহার সাহিত্যে আসন লাভ করিতে পারে নাই। জাতীর জীবনের সহীর্ণতা, মুর্থনা ও ছাহাকারের বেদনা তাহার চিত্তে প্রবেশ লাভ করিয়াছে, এবং তিনি এ সকলের উর্দ্ধে কালিধাসের মতই এক সৌন্ধর্যলোকে ভাহার শৃষ্টিকে ভাগন করিয়াছেন।

মানগা-পর্বাধের মেবদুত কবিতাই কালিদালের কাব্য সম্পর্কের রিচত কবিওরর সর্বপ্রথম কবিতা। ইতিপ্রের কৈশোরে তিনি রল্বংশের অরোদশ সর্পের পর্যাল্লবাদ করিয়াছিলেন বার। 'মেবদুত', কি প্রাচীন, কি আধুনিক—বিরহের এক অনুসনীর কাব্য। কবিওরর তংকালীন সৌকর্ব্যস্তীর প্রেরণার বৃলে কালিদাশের এই কাব্য কত দূর সহারতা করিয়াছিল তাহা কবিতাট পাঠ করিলেই পাঠ উপলছ হর। একট পুদূর অনির্বাচনীর সৌকর্ব্যলোকের প্রতি অবরুদ্ধ মানবচিন্তের চিরন্তন আরহ, সীমাহীন বিবহু ও ব্যাকুল কল্মন এই ক্বিতাটতে অনিত হইরাছে। পরবর্ত্তীকালে রচিত 'লোনার তরী' ও 'নিরুদ্ধেশ বারা' কবিতার ও 'চিরা' কাব্যে এই সৌকর্ব্য-বেহনা ভিত্রপ পরিপতি লাভ করিয়াছে তাহা আন্বাধিবিয়াছে। 'নেবদুত' ক্বিতার এক দিকে অলকার চিরন্তন

পৌষ্ঠালোকে বিশ্বধিৰ দৌষ্ঠা-এভিনা এবং ঋণন্ত দিকে বিশ্বধী নামৰ চন্ত এই ছুইয়ের বিশ্বধ্যাকুলভা বৰ্ণিভ। ক্ৰিয় মতে একনাত্ত কালিয়াস ব্যতীভ ঋণন কোন ক্ৰিই দৌষ্ঠ্য-লোকের একণ ঋণুর্ব্ব চিত্র ঋতন ক্রিতে পালিভেন না।

সেধা কে পাতিত

লরে বেতে ভূমি ছাড়া করি অবারিত---শত্মীর বিলাসপুরী---তমর ভূবনে।

এই লৌকর্য্য-লোকের বিরহিনীর সহিত যকের বিরহক্ষণ। হইতে কবির চিতে এই সৌপর্য্য-বিচ্ছেদ-বেদমা সঞ্চারিত ইইমাহিল। কালিদাসকে উদ্দেশ করিয়া কবিশুরু বলিতে-ছেম—

> কৰি, তব মধ্যে আদি মুক্ত হয়ে যায় ক্লছ এই স্থলমের বছনের ব্যবা। স্বাহামি বিরহের ব্যব্যাক—

পরবর্তীকালে রচিত মেখদুত প্রবাদ কবি এই বিরহ-বেদনাকে বিল্লেখণ করিতে চেষ্টা করিয়াছেল। ক্রিভার শেহে কবির যে বেদনার প্রকাশ, উক্ত প্রবদ্ধেও ভাছারই আ্লাস পাওয়া যায়।

"আমরা যাহার সহিত মিলিত হইতে চাহি, সে আপনার মানস সরোবরের অসমাতীরে বাস করিতেছে, সেখানে কেবল কলমাকে পাঠানো যায়, সেখানে সদরীরে উপনীত হইবার কোনও পথ নাই।"

পরিশেষে কালিদাস-বর্ণিত যক্ষের বিরহ্যবস্থার কথা বর্ণন্দ করিয়া আবেগতরে কবি বুলিতেছেন—

"হে মির্ক্রন সিরিশিবরের বিরহী, যথে যাহাকে আলিজন করিতেছ, বেঘের বুবে যাহাকে সংবাদ পাঠাইতেছ, কে ভাষাকে আলাস দিল বে, এক অপুর্ব্ধ সৌন্ধর্য-লোকে আরং-পূর্ণিমা রাজে ভাষার সহিত চির-মিলন হইবে। ভোমার ভো চেতন-অচেতবে পার্থক্য জান নাই, কি আনি বদি সভ্য ওক্ষনার মব্যেও প্রভেদ হারাইরা থাক।" কবিভাটির মধ্যে কবিওক পূর্ব্ধমেদে বর্ণিত নদী-সিরি-ক্ষণণদের রে সংক্ষিপ্ত চিল্ল দিরাছেন ভাহা অভি অপূর্ব্ব হইয়াছে। কবিওকর চোবে আমরাও পূর্ব্ববেদকে নৃত্মরূপে দেবিলাম। মেষ্ট্তকে অবলম্বন করিয়া 'বিজ্ঞ্ব'ও 'বফ' নামক আরও ছুইট কবিভা রবীক্রমাণ উত্তরকালে রচনা করেন। এই কবিভা ছুইটতে পরিপূর্ণভার পথে বিষেয় যালা, পথের আনক্ষ্পের জদবের ক্রমণ বিলাপ বর্ণিত হুইয়াছে।

'সেকাল' কবিভাট কালিয়াসের বুগ সম্পর্কে কবিগুরুত্ব কাব্যাহস্থতির শ্রেট প্রকাশ এবং তাঁহার রচিত প্রেট লিরিক্ কবিভাগুলির অভতম। কবিভাইতে বৈশিষ্ট্য আছে। ইহার প্রউত্মিকার কাব্যের অবাবিল আমন্ত্রর অগং। জীবন ও লগং সহতে কোনও চিভা নাই, কোনও আমর্শবাহের ক্চক্তি নাই, নিহক আমন্ত্রের লকুপর্লে 'কবিকা'র এই ক্বিভাট এবং অভাভ কবিতাপতি তাঁহার কবি-প্রকৃতির প্রকৃত পরিচর তিতেছে। কালিদাপের কাব্যে তংকালীন ভারতের জীবন-বাজার যে চিত্র দেখিতে পাওরা যার তাহা বেরণ অনাক্ষর লেরণ আনক্ষর। ভাহাতে অভাব-অভিবোণের হন্দ্র নাই, জীবনর্থেরও কয়-ক্তির হিদাব-নিকাশ নাই। মেবচুতের ভাষার—

चानत्कां पर सहनम्बिकार वृद्ध सार्ट्शिसिटिशः सःक्ष्णां १ : कृष्ट्रसमहक्षां कि मरद्यानभाशार ।

হঃর্থ যেটুকু আচে ভালাকে অহীকার করিয়া প্রেম ও
সৌলব্যস্পৃহাকে সকলের উর্জে হান দিরা উাহার কাব্যে চিত্রিভ
নরনারী কাবন-রদ উপভোগের যে দৃষ্টান্ত দেবাইরাছে ক্ষণিকার
ক্ষরি ভাহার হারা সহকেই আক্সপ্ত ক্ষাবনের হবিই ক্ষরি
ক্ষরিভালন। ক্ষরিভালি পাঠকালে বেবহুভের ক্ষাবন-চিত্র
মুহুর্থ স্থৃতিপথে উন্নিভ হয়। ভংকালীন নারক-নারিকার
মানগুলির প্রভি কবিগুরুর কি অপরিসীন মোহ! প্রাচীন
নামগুলির প্রভি কবিগুরুর কি অপরিসীন মোহ! প্রাচীন
নামগুলির মধ্যে যে এভ মাধুর্যা আছে ভাহা কবিগুরুই
আনাদের সর্ব্যাপ্রথম দেবাইরা দিলেন। কালিলালের রুগে ক্ষ
স্থানিক ক্ষরিভালির ভাবনাহীন ক্ষাবন ক্ষিত্রণ ক্ষরিভাল
পারিভেন ভাহার অবনাহীন ক্ষাবন ক্ষিত্রণ ক্ষরিভালিক। ক্ষরিভালির প্রকাশিক পরিবেশের অভাবে সেকালের ক্ষ আক্ষেপ হওয়াই
হাভাবিক। ক্ষরিভালির শেষের দিকে একপ আক্ষেপের
আভাসপ্ত রহিয়াছে।

হায়রে কবে কেটে গেছে কালিদাসের কাল এবং

যাদের সঙ্গে হয়নি মিলন সে সব বরাজনা বিজেদেরই হুংবে আমায় করেছে অভযনা

কিছ বর্তমান কালের আনজর সাধাদনের জয়গান গাছিয়াই কবিভক্ত কবিভাট শেষ করিয়াছেন—

> ষরব না ভাই নিপুণিকা চতুরিকার শোভে ভারা স্বাই অভ্নামে আছেন মন্তালোকে।

'অভিজানপত্তল' ও 'কুষারসভবের' গভীরভার প্রবেশ করিয়া ক'ব যে নিগৃচ সৌক্র্যা উপলব্ধি করিয়াহেন ভাষা আমাধিগকে বিনিত করে। এই আলোচনা চুটতে আছে ভারতীর আগর্দের সহিত নিলাইরা সরপ্রভাবে কালিবাদের অনিক্রমীর রসস্টি অহ্বান করিবার প্ররান। সৌক্র্যা ও প্রেমের জরগান গাছিরা পরিস্বাব্রিতে ভাষাকে কল্যাণের নাব্যে রাপন করা ইছা কালিবাদের কাব্যের একটি বৈশিষ্ট্য। বিবের কল্যাণই ভারতীর বর্ষ ও সংমৃতির মূল কথা। পান্চাভা সাহিত্যে কল্যাণের রূপ ভারতীর নাহিত্যে কল্যাণের মৃত্য বিকাশ লাভ করে নাই। ভারতীর নাহিত্যে কেবল রাজ্য নহে, অভ্যান্ততির সহিতও কিরপ অব্যের স্থান করা বাইতে পারে ভাষার আবর্ষ দেশাইরাছে। ক্রিক্রর 'পাকুছলা' সম্পর্কে আলোচনা প্রাচ্য ও পান্চাভ্যের

এই বলগত পার্থক্যের উপর প্রতিষ্ঠিত। টেলেই ও শক্ষলা নাটকের আলোচনা প্রদক্তে তিনি বলিতেছেন—"টেলেটে পীভ্ন, পালন, দমন--- শকুভলার গ্রীতি, পাভি, সন্থাব। টেপ্লেটে প্রকৃতি মানুবের আকার ধারণ করিয়াও ভাষার সহিত ক্ষরের नवाद यह वह माहे--- नकुलनात शावशाना शत्रभकी व्याप्रकार রকা করিরাও বালুবের সহিত মধ্র আলীয়ভাবে মিলিত হইয়া तिहा विश्वकृष्ठिक विशेष मृद कृष्टिया भव कृष्टिया चार्य, বেবানে মাতৃষ আপনার চারিদিকে প্রাচীর ডুলিরা কগভের সর্ব্বত্র কেবল ব্যবহান রচনা করিতে থাকে, সেধানকার সাহিত্যে अवन रहे महर्गद एरेट भारत ना ।" The Message of the Forest প্ৰবৃদ্ধে এ সম্পূৰ্কে অপেক্ষাকৃত বিশ্বত আলোচনা আছে। দেবানে কবিগুরু শেকস্পীয়র ও বিলটনের त्रहमात्र मामन ७ श्रकृष्टित अरे विद्यान मिनेना इःव क्षकांच क्रियादम अवर छाहात कातन मिर्द्य क्रियादम. "At the bottom of this gulf between man and মিশং সক্ষৰ-- know all that is, as enveloped by (lod-" অৰ্থাং "মাত্ৰ ও প্ৰকৃতির এই পাৰ্বক্যের बूटन अरे नामेश चकान बिह्याट्य,--'मेनानाक मिनर नक्तव'--वित्व वांका किছू वर्षवान छात्रा नवस्तरे स्थवात्मव नक्षि बादा चादु विवास मान किंदिए स्टेर्स ।" বোমাটিক যুগে ওভার্ডস্ওয়ার্থ কোলবিজ कविजाब एठा९ अहे पृष्ठिककित शतिवर्धन स्व एरेडाविक---"ভাছার বুলে রহিরাছে জার্মানীর মধ্য দিয়া নবাপভ श्रीहा पर्नेत्वत श्रेषार :"

कृषांबप्रस्य ७ मक्षमा अप्रत्म कविश्वत कामिनारमञ् রসমৃষ্টি সম্পর্কে বিশেষ আলোচনা করিরাছেন। সৌন্দর্বা ও শ্ৰেম বৰ্ণনায় কালিদাদেৱ অনামাত ক্ততিয়ের কৰা কবিওক্লয় অপূর্ব্ব আলোচনায় উচ্ছল হইয়া উঠিয়াছে: কিছ এ সকলের উর্চ্চে কালিদাসের কবিপ্রকৃতি যে মহতব ও পরিপূর্ব-ভার আনুৰ্বে অভুপ্ৰাণিত বিশ্লেষণের হারা কবিওক ভাষা -ब्बाहेश प्रिश्नाट्य। कानिपारमय कार्या मदमावीव ध्वेम সম্বন্ধে আলোচনা-প্ৰসক্ষে তিনি বলিয়াছেন, "যে প্ৰেমের কোনও वस्त्र मारे, क्लाम नियम नारे; याश जनजार नवनावीटक चिक्क कतिया मध्यम-इर्जित वर्ष आकारवत छेनत चानमात ব্যৱহা নিৰাভ করে, কালিয়াস ভাষার শক্তি খীকার कविद्यादम, किंद्र जाहार कार्य चात्रभवर्गन करवम मारे। ভিনি দেবাইয়াছেন, বে আৰু প্ৰেমগণ্ডোগ আনাদিগকে দাৰিকারপ্রবন্ধ করে, ভাষা ভর্তপাশের ছারা বভিত্ এতিখাণের বারা প্রতিহত ও দেবরোবের বারা ভলসাং **হ**ইরা ৰাকে।" দৌন্দৰ্য্য ও আৰ্ট সহতে কবিওল শ্ৰেহবাদী। ভারতীয় প্রাচীন সাহিত্যও কল্যাণাপ্রহী। কবিওকর বতে সৌকর্ষোর সহিত 'শিবৰে'র অর্থাৎ কলাপের বোগ বেবানে বেবানেই

সাহিত্যকট্ট লাৰ্ক। সৌন্ধ্যবোধ সহতে আলোচনায় কবি কুমারসম্ভব ও পতুরুলার এই বিকের কথা বিশেষভাবে উল্লেখ করিয়াছেন (সাহিত্য)।

বলা বাহল্য, এই শৃতন রসনৃষ্ট অলছার-পাজে মিলিবে না, কিছু আধুনিক কালের মহাক্বি অভিনব দৃষ্টতে করেকগানি সংস্কৃত কাব্যের বে বিচার করিলেন ভাষার সূত্যনাম্ব পূর্বাম্বরিগবের বিচার রান হইয়া পভিষাছে। কবিঞ্জির টিপর সূত্র আলোক সম্পাত করিয়া পাঠকের চিত্তকে উর্ক্তরের রসলোকে আকর্ষণ করিবার এই প্ররাস চিরকাল সাহিত্যের অধুল্য সম্পদ্ধরূপে গণ্য হইবে।

আলোচনা

"কৃষ্ণানন্দ আগমবাগীণ"

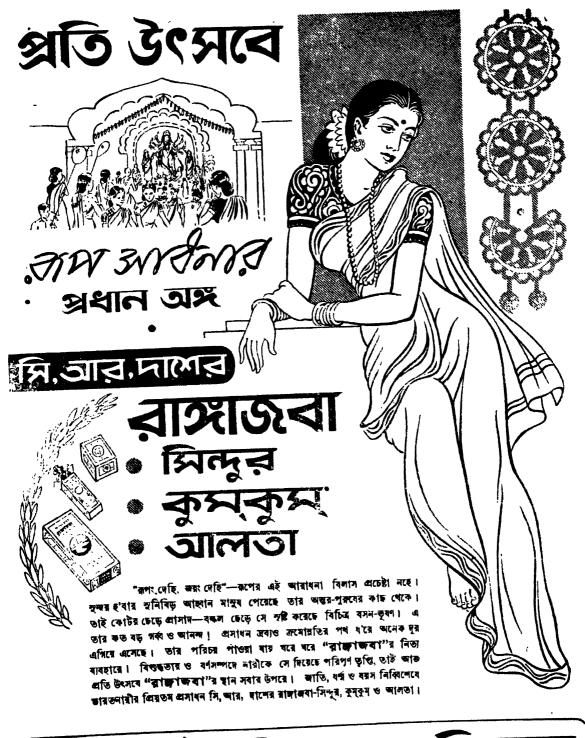
অধ্যাপক শ্রীদীনেশচন্দ্র সরকার, এম-এ, পিএচ-ডি

পত প্ৰাবৰ সংখ্যা প্ৰবাসীতে (পু. ৩৮২-৮৫) আমি ভন্তগার-রচয়িতা ক্ষানন্দ আগ্রবাদীশ সম্পর্কে একট প্রবন্ধ প্রকাশ ক্রিয়াছিলাম। উহাতে প্রসদক্রমে দেখানো হইয়াছিল যে. কৃষ্ণানন্দের অবস্তন সভান পুরুষ রামভোষণ ১৮২০ এটাকে প্রাণভোষণীতপ্র রচনা করেন, সুভরাং প্রবীণ ঐভিহাসিক-গণের সিহাত অনুযায়ী ২৫ বংসরে এক পুরুষ গণনা করিলে, ঐ সময়ের প্রায় ১৫০ বংসর পূর্বে অর্থাৎ আফুমানিক ১৬৭০ এটান্বের নিকটবর্ডী কোম সময়ে কুফানন্দ ভন্তসার রচমা कविश वाकित्वन। अधिकड, ১৫৮० मकास वा ১৬৫৮ औंश्रीरम অভুলিখিত ভন্নগারের একখানি পুৰির কথা শুনা যায়। একখা ज्ञ इहेटन, क्र्यानच शोवत्व वर्षार ज्ञात्रकः अक्षरण म्हासीय মৰ্ভাগে ভন্তসার রচনা করিয়া থাকিবেন। ভবে এ বিষয় নিশ্চিত হইবার পূর্বে উক্ত পুথির ভারিবট পরীকা করিথা দেবা প্রয়োজন। এতং সম্পর্কিত তথ্য নির্ণয়ে কেহ আমাকে সাহায্য করিলে অনুপূর্ণীত হইব।...ইত্যাদি। উক্ত ভারিব পরীকা বিষয়ক প্রয়োজন বোবের কারণ এই যে. ঐতিহাসিক ভব্যমিণ্ড ও লিপিবিভ: বিষয়ে বাঁহারা বিশেষ শিক্ষা পান माहे छांशामिश्रक चरनक नमय हैहल शार्किय मुनास्त्रका সম্পর্কে সমাকু সচেত্রন দেবা যায় না। এইক্স ভার্নদের উচ্চত ভাৰ বা কাল্পনিক পাঠ অনেক সময় প্ৰকৃত তথ্য নিৰ্ণয়েয় चक्क् रह मा।

ভালসংখ্যা প্রবাসীতে (পৃ. ৫০৬-৮) শ্রীষ্ট দীনেশচল ভটাচার্য্য আহার প্রবন্ধীর সমালোচনা করিয়াছেন। ভটাচার্য্য মহাশরের করেকট মুক্তির সারবভা স্বীকার করা বার না। কৃষ্ণানন্দ যদি গোঁছা শাক্ত ছিলেন, তবে তিনি কেন কৃষ্ণবন্দনা বারা প্রছ স্কচনা করিলেন, ইহার বাাখ্যার তিনি যে মুক্তি দিয়াছেন, তাহার আলোচনা বাধ্যায়র। ভটাচার্য মহাশর মুক্তপঞ্জিকাগুলির অন্থ্রামী গবেষক; তাহার মতে এগুলি অন্তান্ধ এবং বেবানেই কৃল্পান্তোভ্রত বংশলভার সহিত ভাগর প্রাপ্ত নাম্যের অমিল দেবা বার, লেবানে কোন কোনটাকে

প্রকৃত নাম, কোনটকে রাশিনাম ও কোনটকে বা ভাকনাম हेलापि कब्रमा कविया नामक्षण चानिए स्टेरन। इःस्थव विश्वस् अहेक्श वार्यास ज्यारयशैत मचडे रश्या समस्य अवर সেইজ্ভ তাঁহাকে সংস্কৃত্যবীশের বিরূপ সমালোচনা সহ ক্রিভেই হইবে: বছকাল পূর্বে খগীর পণ্ডিত ভগবান্লাল ইজনী এবং ব্যুলার সাহেব দেবাইথাছিলেন যে, "in India the duration of a generation amounts, as the statistical tables of the life-insurance companies show, at the outside to only 26 years", we're কোন বংশের অনেক পুরুষের কালগণনা ব্যাপারে ভারভবর্ষে नक्षणकृष्ठा अक्षुकृत्य २७ वरमत्वत व्यविक वदा हत्न मा । व्यवसा ভটাচার্য মহাশয় এবং এয়ুক্ত ষভীক্রমোহন দত প্রেষণা করিয়া একণুরুষে ৩০।৪০ বংগর খির করিলে ভাষাভে কাষারও কাহারও আপণ্ডি না হইতে পারে। কিছ দেই অভিনৰ সিম্বাস্থ কেং এহণের অযোগ্য মনে করিলে, ভাহাকে অর্বাচীন ৰলিয়া উপহাস করা অশোভন। ভাষণাল্লের ইভিহাস রচয়িতা সতীশচন্দ্র বিভাত্যণ মহাশয় রবুমাৰ শিংৱামণির কংকাল লিবিয়াছেন আছুমানিক ১৪৭৭ এটাজ ; ভটাচাৰ্য্য মহালয় बर्लम (य. छेरा ১৪৬०-७८ ऑडीस स्ट्रेंटि । अर्थन क्रिस् यनि विजीय अनुवासक अधाल कतिका क्षप्रव अनुवासित अध्वर्धी হয়, ভবে উহাতে নিশ্চয়ই প্ৰমাণ হয় না যে, সে ব্যক্তি কাত-আনহীন এবং ঘিতীয় অসুমানটির প্রবর্তকের ভার পভিত ব্যক্তি বলবাসী প্রকাশিত ভন্তসার-সম্পাধনায় বাবৰ্ড সমস্ত অৰঙ পুৰিতেই এক ছলে পুৰ্ণানকের এবং অপর এক স্থলে তংকৃত ঐতহচিত্বামণির (১৫৭৭ এইাস) উচ্চেব আছে। ভন্নসারের কোন দম্পূর্ণ এবং নির্ভরযোগ্য পুর্বিভে এই ছুট উল্লেখ্যে অনভিত্ব প্ৰমাণিত না হওয়া পৰ্যাত্ত ইহাকেই ভয়সায় রচনাকাল দল্যকিত আদি দীমাবোধক অকাট্য ও শ্রেষ্ঠ প্রমাণ খীকার করিতে হইবে। ভটাচার্ব্য মহাশর ইহা অপেকা উংক্ট প্রমাণ কিছই দিতে না পারিসেও আনাকে ইপভাস করিতে কৃষ্ঠিত হন নাই।

ভটাচাৰ্য্য মহাশর ভরসারের ভিন্যানি প্রাচীন পুৰিত্ব পরিচর দিয়া ঐতিহাসিক সমাজের ক্লভভাভাজন হইয়াবেক

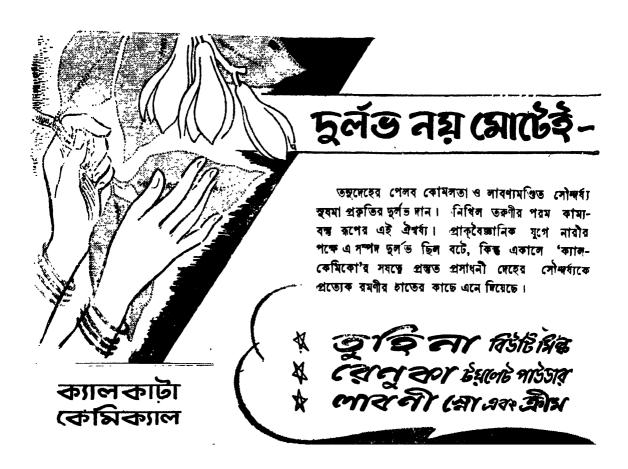


অনুম্পা কেমিক্যাল: কলিকাতা

সন্দেহ নাই। চাটগ্ৰাৰ হইতে ভিনি একবানি পুৰি পাইৱা-হেন: উবার লিপিকাল "রপাখর্য ইন্দের চ ভটো মালে চ ভাৰ্গৰে। দিবিভা পুভিকা চৈব একুকবন্ধভবীমভা।" অৰ্থাং ১৬০১ मकास वा ১৬৭৯ खेडीच करन देविविक एवेदारह। च्छोडार्यः मरामध्यत **छेई**लम नवम नुस्रव वनित्र। कृषिल सद्दनिरक् বাচস্ভি মহাশয়ের নামাছিত ভদ্রসার পুৰিবানির ভারিব निविच रहेबाट ১৫৬৮ मकाच चर्वार ১৬৪৬ ब्रेडीच । चल:नब তিনি বলীর সাহিত্য-পরিষ্ণ সংগৃহীত এবং ১৫৫৪ প্রাক্ অৰ্থাং ১৬৩২ এটাজের ভাত্মিৰ সংবলিত একবানি ভছ্নার পুৰিকে ঐ গ্ৰন্থের সর্ব্ধপ্রাচীন পুৰি বলিয়া প্রকাশ করিয়াছেন এবং আহাকে উচ্চ ভারিবট পরীকা করিয়া দেবিতে অমুরোব করিরাছেন। সম্রতি বদীর সাহিত্য-পরিষদের এছাব্যক্ষ শ্রীযুক্ত ব্ৰক্ষেমাৰ বন্দ্যোপাৰায় এবং তহতা পুৰিশালার ভড়াংবায়ক পভিত মহাশরের অভ্রেচে আমি ঐ পুৰিবানি পরীকা করিবার স্যোগ পাইরাছি। আক্ররোর বিষয়, যে ভারিবট ১৫৫৪ পকাৰবণে পঢ়া হইরাছে, উদার ভূতীয় অঞ্চীর নিয়াংশ অব-

নুধ এবং উহার অধুনা বর্ত্তবান উর্বাংশের আকার বিভীর অষটের উর্বাংশের অহুরূপ নহে। চহুর্ব অষটেরও নির্ভাগ অব-দুধ বেধা যায়। সুভরাং ঐ ভারিখের পাঠ অনিশ্চিত। অবঙ আমি বলিভেছি না যে ভটাচার্য্য মহাশয়ের প্রবাদে উদ্ধৃত সমস্ত পাঠিই বর্ত্তবান ভারিব পাঠের অহুরূপ কালনিক; কারণ ভাহা ঐ সকল পুবি পরীকা না করিবা বলা সম্ভব নহে।

বাহা হউক, কুঞানক আগমবাসদের জীবনকাল বৰি
আস্মানিক ১০১৫-১৬৮০ এটাক হর এবং তিনি বৰি জীবনের
প্রধাতি তন্ত্রগার প্রত্থানি রচনা করিরা থাকেন, তাহাতে
আগতি করিবার মত আমি কিছু দেবিতে পাইতেছি না।
আমি পুর্বলিতে চাই বে, তন্ত্রগারের তথাক্ষিত প্রাচীন
প্রিসমূহের তারিব পরীকা করিরা এ সম্পর্কে নিশ্চিত
হওরা প্রবাক্ষন। সেই পরীকাকার্ব্যে ভটাচার্য্য মহাশর
আমাকে সাহাব্য করিলে আমি উপকৃত হইব। প্রকৃত তথা
নিশ্রই ঐতিহাসিকের উদ্ভেক্ত; আমি কোন তুল করিলে
আমিই স্কাপ্রে উহার সংশোধন কামনা করিব।



যৎকিঞ্চিৎ বক্তব্য শ্রীদীনেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

তঃ সরকারের বিতীর আলোচনাটর তাবার যে উদ্বা প্রকাশ পাইরাছে তাহাতে আমরা অভান্ত কৌচুক বোধ করিবাছি। মন্ধা এই যে, এই বিরশ সমালোচনার অন্তরালে বুল বিষয়ে উাহার নিজের ভ্রম বীকার প্রারিভ আছে। বৌভাই হউক আর কোমলই হউক "শাঞ্চ" অর্থ শভি-মন্ত্রে ঘীন্দিত তান্ত্রিক, বৈকব মন্ত্রে ঘীন্দিত তান্ত্রিক মহে। তঃ সরকার এবার ফুফানন্দের জীবনকাল আমুমামিক ১৫৯৫-১৬৮০ প্রীষ্টান্থ ও ভন্নগারের রচনাকাল তাহার "প্রথমার্জে" বরিয়াছেন। অর্থাং রচমাকাল হয় ১৬০৭ প্রীষ্টান্থের পূর্ব্বে, কিখা-'যৌবন' অর্থে ভানবিক ৩০ বংসর বয়স বরিলে হয় ১৬২৫ প্রীষ্টান্থ। তদগুলারে এক পুরুষের গড়পড়তা কিন্তু ২৫-২৬ বংসারের বেন্দ্র হয় এবং ডঃ সরকারের নিন্ধ পক্ষট "প্রপ্রাক্ত" হইয়া যায়।

পরিষদের জীর্ণ পৃথিচির লিপিকাল (১৫৫৪ শক)। ডঃ
সরকার 'অনিশ্চিড' কিথা 'কালনিক' বলিয়াছেন, অবচ বরং
অপর কোন পাঠ দেন নাই। 'আশ্রমা' না হইয়া বীর ভাবে
পরীক্ষা করিলে তিনি দেবিতে পারিতেন (আমরা উাহাকে
লাদরে আহ্বান করিতেছি) তৃতীর অকটির বিভ্নান উর্দাংশ
০ হইতে ১ পর্যান্ত ১০টি অবের মধ্যে একমান্ত ৫ অবের সহিত
মিলে। ৫ অক্রের হুইট পৃথক রূপ পৃথিচির শেষ পত্রের স্থিতি
এবং অভন্ত বহুছলে বিভ্নান আছে—৫৫ পাতার ক্রাটিত
পত্রাকে ও পাশাপাশি হুইটি ৫ কিকিং বিভিন্ন। তৃতীয় অকটি
বে ৭ নহে তাহা ৫৭ পত্রাক্রের সহিত বিভাগিলৈ ম্পাই বুবা যায়।
অভ কোন অক্রের সহিত ঘুবাক্রের লাগুল নাই।

ডঃ সরকার আমাদের বহু কথার বিক্বত ব্যাখ্য। করিরাং পাঠকদের বিআছ করিবার প্রবাস পাইবাছেন। "এ ছলে ব্ল কুলপঞ্জীতে কোনই ভূল নাই" বলার তিনি ব্বিরাছেন, আমার মতে সব কুলপঞ্জীই "অআছ"। গড়পড়তা বিষয়ে আমরা উহাকে "অর্বাচীন বলিয়া উপহাস করি" নাই, আছ বলিরাছিলাম। শিরোমণির কালনির্দেশ বিনা ব্ভিবিচারে "অগ্রাহ" করা "কাওআনহীনে"র কাল—ইহা আমাদের বক্তবাও নতে, এবছিব ভাষা প্ররোগও আমাদের নতে, তিনি অকারণ উল্লা প্রকাশ করিরা নিজেকে হাতাল্যদ করিরা ভূলিরাছেন।

ভন্নসারে পূর্ণামশের ও ভাষীর ঐভত্বচিন্তামণির উল্লেখ বলবাসী ভিন্ন অপর কোন মুদ্রিত সংস্করণে নাই-- রাসকলোহন
চটোপাধ্যারের ১২৮৫ সনের সংস্করণ পৃ. ১৫৮ ও ৩৯৫-৬, প্রসন্ধ কুষার শাল্লীর চত্ব সং (১৩১৮) পৃ. ১০৪ ও ৩১৫, বছমতীর
তর সং পৃ. ৮৪ ও ২৪২-৩ প্রভৃতি প্রইব্য-- এবং কোন পুর্বিভেও
আমরা পাই নাই। তথাপি এবনও ঐ উল্লেখ "অকাট্য ও প্রেট প্রমাণ" বাসরা খীকার করিতে ডঃ সরকারের ধিবা নাই।
অবচ বলবাসী সংস্করণে ব্যবহাত ১৫৮০ শকান্থের পুরি সম্পর্কে
মহামহোপাধ্যার পঞ্চানন তর্করত্ব প্রমুখ পাওতগণের শকান্ধ
গাঠ, "ভ্রান্থ বা কাল্লনিক" বাসরা সন্দেহ কবিরাহেন। কারণ,
"ঐতিহাসিক তথ্য নির্গন্ধ ও সিপিবিল্যা বিষয়ে তাঁহারা বিলেম্ব
শিক্ষা পান নাই।"

ভঃ সরকার যদি ১৬০১ শকের পুষিট ধেবিতে চান কিছা কুফানন্দের কাল নিগরে অপরাপর উপকরণ রাজি আলোচনা ক্রিতে চান, আমরা তাঁহাকে আমাধের বাসগৃহে সাধ্রে আইনাম ক্রিতেছি।



ভাঙা-গড়া

শ্রীনারায়ণ দত্ত

এই তো সেদিন জয়বানার পথে

মক্র-প্রান্তরে দিগভব্যাপী বড় · · ·

জার বিছ্যং · · ·

লাগিত হাসিতে এসেছিল ভারা বৃভ্যুদ্ভ,
এই সেদিনো ভো ক্রুভ বাবমান রখে
খন বেদাক্ত জবের ব্রে ব্রে;
কালবোলেবীর বঞ্চা-ভঠিন প্রের
বেজেতে প্রভাগেদ
এই পৃথিবীর যা-কিছু প্রষ্ট আরু হ'তে হোক শেষ।

কঠিন প্রভাগেদ
নারার কলল চেকেছে সহুদা মাসুষের কংকাল;
বোমারে বোমারে এ আকাশ উত্তাল
রেখার রেখার কেশে কেশে মিলে-বিশে গেছে কভ দেশ
মানচিত্রের বৃক্তে কুটরাছে রক্তরভীন মহা মুড়ার রেশ
নহাসময়ের সংকেতভ্রা গভীর প্রভাগেদ।

বত তমসার শিচ্চালা হোক সেদিনের পেই নিশা মাহুষের বুকে ক্ষেপে তবু ছিল স্থান কিন্দীবিয়া। অসীতা ধরার বৃত্তিকা চিরে চিরে শত সংহারের অলক্ষ্যে বীরে বীরে শহিত ভাবে তবু ক্ষেপেছিল স্ক্রমের অন্ত্র মবলাতকের আতক্ষ নিয়ে—কম্পিত ব্যবাতুর।

নে দিনের দেই স্ক্টি-প্রভাতে দেখেছিলে চেয়ে ভূমি
দিগত ভূডে অটুট সভাবনা,
ব্যাথিনিন বর্মীরে আছে চুমি ?
নব আতকের কঠে শোন নি সেদিনের বন্ধনা।
শোন নি মান্ত্র ভূমি
বরণাতকে দেখ নি ভক্তাভূর
অঞ্জানা সংগ্ল কৈপে উঠেছিল সেদিনের অকুর ?

আজি দিকে দিকে জীবনের সাড়া আবার উঠেছে জেগে বেবার রেবার তপন উঠেছে বঞ্চার কালো মেদে; অঙ্বে আজ বনম্পতির ছারা আশহা নেই অনাগত দিনে এ ছারাও পাবে কারা ব্যর্থ হবে না কবনো বিবর্তন শভাকীব্যাণী ইতির্ভের এ বারা চির্ভন।

নিজা-নীরব রাতের মত

🗐 অপূর্বাকৃষ্ণ ভট্টাচার্য্য

নদীতীবের স্থামল ছারা তুলার আমার মন, আন্দেপাশে কিললবের গান। সভ্যাপ্রাতে স্নেহের পরশ বুলার সমীরণ, কানে আলে প্রোতের কলভান। ঘাটের বারে চুল্ছে ভরী আলোবারার নেরে, পারে যাবার সার হয়েছে বইঠাবানি বেরে।

নিজ্ঞা-নীবৰ বাতের মত শান্তি পেলেম মনে,
বনতলে বেড়ায় প্রাণের মারা।
সালা মেনের টুক্রোগুলো নীল আকালের কোনে
কালো খলে পড় ছে তাদের ছায়া।
বাউয়ের বীবি ভূপের বাবে গাইছে খবিরত,
বেণুলাবার অভ্যালে ব্যায় শ্বতি কত।

সুদ্রে ওই দেউলচ্চা বনের শিরে কালে,
পথ-রেখা পাইনে পুঁকেতো ভাই।
পলকহারা নয়নভারা পারের অহুরাগে;
কানা শোনা প্রায় ভো কোনো নাই।
পারে-চলা পথের সনে নেইকো পরিচয়,
ভবু আমার যেতেই হবে দিনটি মধুষয়।

বাৰ্ই পাৰী বাঁৰ ছে বাসা ভৱা ছপুৱ বেলা, ভক্ষুলে কুলের পরাগ করে। আনন্দেভে বকের সাথে গাঙ্ শালিকের বেলা নদীকুলে নির্ম পথের 'পরে। খুভচরে হাঁসের দল ছ'ল যে আন্মনা, ভূপের আলে ভভিরে আহে কুলের আল্পনা।

ভূমি হেৰাৰ একেলা বহু তেউ-দোলামো বাঁকে,
পাভাৰৱা ভাঙা বাটের কোলে;
বন্ধু আমার আস্বে যথম বুবিরে বলো ভাকে',
আলোভরা পারে পেলাম চলে।
এ পার হ'ত ও পারে মোর মুট্বে ভরী বেগে,
বহুরে যোর তেউ উঠেছে উভল হাওয়া লেগে।

পুশুক - পারিচয়

ভারত-মুক্তি-সাধক রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় ও অর্দ্ধ শতাব্দীর বাংলা—গ্রীশস্তা দেবী। পঃ ১৪+৩-২। প্রাপ্তিস্থান—পি ২৬ রাজা বসস্ত বায় বোড, কলিকাভা। ১৯৪৭ অক্টোবের। সচিত্র মৃল্য—চর টাকা।

এই বইখানি বিশেষ সময়োপধোগী হুইয়াছে এবং একাধারে স্নেঃশীলা ও গুণজা ক্সার দারা লিখিত পুণ্যচরিত পিতার জীবন-কথা বলিয়া এই বই বাঙ্গাগা সাহিত্যে চিরকাগ নিজ বিশিষ্ট আসনে বিধাক্ষমান থাকিবে। বামানন্দ চট্টোপাধ্যায়ের ভিবোধান ঘটিয়াছে চারি বৎসর পূর্বে ৷ কিন্তু যাহার ভঙ্গ ভিনি সারা জীবন ধ্রিয়া সাধনা ক্রিয়া গিয়াছেন, সেই ভারতব্যের মুক্তি, পুরাপুরি না হোক, আংশিক ভাবে ঘটিয়াছে, মাত্র ছুট মাস ছটল। এই মুক্তি বা মুক্তির আভাস আমবা পাইয়াছি যে সমস্ত ত্যাগী অক্লাস্ত-ক্ষ্ণীদেশদেবকের ভাবতদ্ধি নিষ্ঠা ও শ্রমের ফলবর্রপ, রামানক্ষ চট্টোপাধায় ভাঁচাদের মধ্যে অক্তম প্রধান পুরুষ ছিলেন। কুভজভার সঙ্গে উ:চাদের প্রতি সমগ্র জাতির প্রজানিবেদন করি-বার উপযুক্ত অবনর এখনট। জনীবনের বঞ্বিভিন্ন ও বিচিত্র পথে আমাদের দেশের মৃক্তি-কামীরা তাঁচাদের অবদান ছারা ভারতের সাধুনিক ইতিহাসকে পৌরবময় করিয়া গিয়াছেন। কেহ জ্ঞান-সাণনাৰ পথে গিয়াছেন, কেই বা আমাদের অমুভূভি-শক্তিৰ উদ্বোদন ক্রিয়াছেন, অথ নৈতিক প্রবশতা হইতে মুক্তি দিছে কেচ ১টটা কৰিবাছেন, কেছ বা সক্রিয় প্রতিবোধেৰ দ্বারা অভ্যাচার অব্যাননার কংল চইতে স্বভাক্তিকে বাঁচাইতে চেষ্টা করিয়াসজানে ও কোনও রূপ কোভ না করিয়া আংশ বিসৰ্জ্জন ক্ষিয়াছেন। রামানক চট্টোপাধ্যায় শিক্ষার মাধ্যমে দেশের व्याननक्षिद উष्पांत्रात्र वाश्रुष्ठ क्रिक्तन ; সाधावन निक्रक विमार्ट ভिনি প্রথম ভক্রণদের চিত্তবৃত্তির উলোম কবিয়া দিবার জন্য আত্ম-निरवाक्षित्र हम बदः भरत बहे स्वधाभक खौरम छाष्ट्रिया पित्रा, মাদিক পত্তের সম্পাদক রূপে জনগণের শিক্ষায় গ্রন্থী। হল। এই পথে জাঁচাৰ সমস্ত শক্তিৰ পূৰ্ণভম প্ৰকাশ ঘটে এবং বাঙ্গলাৰ ও ভারতবর্ষের জনগণও তাঁচার এই সেবার খাবা খাবীনভার পথে অপ্রসর চই গার উপগোগী পাথের বছল পরিমাণে অর্জন করে। দেশের সাধারণ পত্তিক'-প'ঠক, রাজনীতির অথবা রাষ্ট্রীর ঘটনা-বলীর পতিব সচিত দাক্ষাং বা ঘনিষ্ঠ পরিচর বাহাদের পক্ষে সম্ভব-পর ছিল না ভারাদের জন্য নিরপেক ভাবে তথ্য সংগ্রহ করিয়া দিয়া, ও অবস্থা সম্বন্ধে যুক্তিপূর্ণ মনোভাব গড়িয়া তুলিতে সাহাষ্য

করিয়া, মানের পর মাস বৎসরের পর বৎসর ধরিয়া অভক্র ভার্বে পরিশ্রম তিনি করিয়া গিয়াছেন। তাঁহার "প্রবাসী" ও "মডার্গ-রিভিউ" পত্রিকা হুইটি এই রাক্ষনৈভিক বোধকে দেশের শিক্ষিক্ত সমাজের মধ্যে দৃঢ় করিয়া দিতে অপূর্বে কাক্ষ করিয়ছে। কেবল রাক্ষনৈভিক ব্যাপারে বাহা এই হুই পত্রিকা দারা সংগঠিত হুইয়ছে, ভাহার কুভিত্ব মুখ্যতঃ রামানক্ষ চট্টোপাগায় মহাশ্রের প্রাপা। বাক্ষনৈভিক বাতীত, সাহিত্যিক ও সাংস্কৃতিক ব্যাপারে রামানক্ষ বাব যে সমস্ত শিল্পী ও সাহিত্যিক, ঐতিহাসিক ও বৈজ্ঞানিক প্রভৃতির সহসোগিতা লাভ করিয়াছিলেন, তাঁহাদের সহায়তায় ভিনি বঙ্গদেশ তথা ভারতবর্ষের চিত্তকে স্কুসংস্কৃত ও সমুদ্ধ করিবার ক্লক্ষ পঞ্চাশ বংসর ধরিয়া শ্রেষ্ঠ মানসিক ও সাংস্কৃতিক বসবস্থ উপস্থাপত করিয়া গিয়াছেন। বাঙ্গলার ও ভারতবর্ষের ভারব্যু গোকহিতকর চিন্তা ও কর্মের সঙ্গে রামানক্ষ বাবু জীবনের অর্দ্ধশতক ধরিয়া ঘনিষ্ঠ ভাবে যুক্ত ছিলেন।

এ হেন কমীও চিস্তা-নেভা মহাপুক্ষের প্রসঙ্গ দেশের মধ্যে যত হয় ভাতই ভাল। স্থাধের বিষয়, রামানশ-স্থান্ধে প্রথম এই ষে লক্ষণীয় বইখানি বাহির হইল, এখানি ডাঁচার কন্যারই লেখা। ঞীযুক্তা শাস্তা দেবী স্থসাহিত্যিকা, বাঙ্গালা ভাষার সাহিত্য তীহার দানের ধারা অলগ্নত চইয়াছে। একপ মহৎ চরিত্রের পিতার সারিণ্য তাঁহার দৃষ্টি ও লিখনভঙ্গাকে যে এই পুণালোক **পুরুষের জীবনী লিখিবার জন্য উপযোগী করিবে, ভাচা সংজেই** আশা করা যায়। প্রস্তুত রামানক-জীবনীতে বধা-আবশুক তথ্যের সমাবেশ আছে। রামানন্দ-জীবনীর পারিপার্বিকের উপযুক্ত বিচার-বিল্লেখণ্ড আছে এবং রামানশ-চবিত্রের মংখ ও বৈশিষ্ট্য প্রকাশ করিবার সার্থক প্রয়াসও আছে। এই বই বিশেষ ক্ষৃতিকর ভাবে লিখিত হুইয়াছে এবং ইঙা হুইতে রামানন্দ-চরিত্রের বভূম্বিতার একটি ভাল পরিচয় পাওয়া যাইবে। ভাক্তর অসংষত উচ্চাসে লেখিকা এবং চাঁচার পিতা উভয়েরই ফুডিম্বকে ক্ষুণ্ণ করা হয় নাই, লেখিকা ষ্পাদস্তৰ নিবৈয়জ্ঞিক ভাবেই এই চাৰত্ৰকথা লিপিবদ্ধ করিয়াছেন। বাঙ্গালাদেশ তথা ভারতবর্ণের শতকার্ধের বাভনৈতিক ও সাংস্কৃতিক ইতিহাসের একটা মনোজ দিগ্রুশন এই বই হইতে পাওয়া যাইবে এবং ইহা হইতেছে এই বইয়ের ঋন।ভম উপধোগিতা। व्यामा कवि এই दहैरबद रशेशा সমাদৰ বাঙ্গালার পাঠক সমাজে হইবে।

🗐 স্থনীতিকুমার চট্টোপাধ্যায়

বিশুদ্ধ তুমজাভ

বাসন্তী ঘ্ৰত

टिनि:—बानडो पि कान—वि,वि, ६९७৮ ली: वस ७৮७७ कनि

দি, স্থ্যারম:চেটিট্রন, একন্পোটারন্, ইম্পোটারন্ ও জেনারেল অভার সাপ্লায়ারস্

প্রমথনাথ পাল এও সন্স্
২িদ, রামকুমার বন্ধিত লেন, কলিকাডা—1

সাহিত্য-সাধক-চরিতমালা—পঞ্ম থও। বলীয় সাহিত্য-পরিষৎ, ২৪০,১ আপার সারকুলার রোড, কলিকাতা। ১৩৫০।

শ্রীকু বক্ষেলাথ বন্দ্যোপাধ্যারের অনুস্কিংনা ও অধ্যবসারের অন্ত নাই, এবং বর্তমান সমরের নানাবিধ সঙ্কট ও চিত্তবিক্ষেপের মধ্যেও তাঁহার একারাতার ব্যাঘাত নাই। এই রন্থমালার এ পর্যান্ত আলী জনেরও অধিক খ্যাতিমান বাঙালী সাহিতা-সাধক ও তাঁহাদের রান্থাবলীর যে সংক্ষিপ্ত অপচ তথ্যবতল পরিচর নিপিবছ করা হইরাছে, তাহা মূলপ্রস্থ ও সামরিক নিপিঅাদি হুইতে বঠ বঙ্গে উদ্ধার করা হইরাছে বলিয়া যেমন আমাণা তেমনই মূল্যবান্। অক্যান্ত খণ্ডের বিপ্তত সমালোচনার আমারা যাহা বলিয়াছিলাম তাহার পুনরুলেখ নিস্প্রেরাকন, কিন্তু বর্তমান প্রক্ম খণ্ড প্রথম চারি খণ্ডের মধ্যাদা ও গৌরব অক্ষুর রাখিয়ছে। এই খণ্ডের একটি আকর্ষণ এই যে, ইহাতে যে-সকল লোকপ্রিয় লেগকের প্রতিষ্ঠা পুনঃপ্রতিষ্ঠিত করা হইরাছে, তাঁহারা সকলেই অপেক্ষাকৃত নিক্টবন্তী সময়ের—যণা, প্রভাতকুমার, ভারকনাথ, গিরীপ্রমাহিনী, অক্ষয় বড়াল, দেবেন্ত্র সেন, কামিনী রায়, সভোক্র দন্ত, খ্রেশ সমাজপতি, অক্ষয় মৈত্রের প্রভৃতি।

একনিষ্ঠ ও অক্লান্তকন্মী ব্ৰেক্লেনাথ বাংলা-সাহিত্যের যে বত অজ্ঞাত ও বিক্লিপ্ত উপাদান এই কুম পুতিকাগুলিতে সংগ্ৰহ করিয়া দিলীখেন, ভাহার মূলা বাংলা-সাহিত্যের ভবিষাং ঐতিহাসিকের নিকট পুন হইবে না। কিন্তু এ সংকলন গুধু বিশেষজ্ঞের জন্ম নয়, সাধারণ পাঠকের জন্মও রচিত বলিয়া, গত বুগের বিশ্বতপ্রায় সাহিত্যিক কীর্ত্তি-কাহিনী সকলেরই ডিভাকর্ষক ইইবার কথা।

জ্রীসুশীলকুমার দে

রাত্রির যাত্রী—গ্রীলঞ্চানন চটোপাধার। দেবলী সাহিত্য সমিধ। ১৯এ, তারক প্রামাণিক রোড, কলিকাতা। যুলা ৩০।

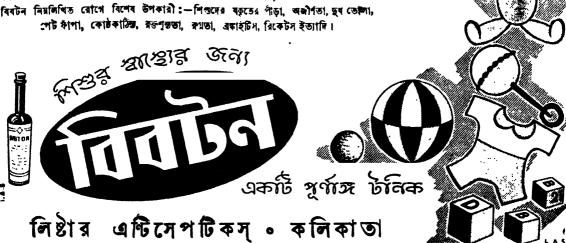
রাজনৈতিক উপজ্ঞাস। বর্ত্তমানে বাজনৈতিক বাংলা-সাহিত্যে উপজ্ঞাসের প্লাবন আাসরাছে। কিন্তু পঢ়িবার মত বই সংরাচর চোধে পড়েনা। আলোচা উপজ্ঞামখানি কিন্তু ভাল লাগিল। পঞাননবাব বাংলা সাহিত্যজ্ঞগতে নিভান্ত অপরিচিত নহেন। ইতিপুক্ষে খানকরেক কাব্যক্সন্থ রচনা করিয়া তিনি কবি পরিচিতি লাভ করিয়াছেন। উপজ্ঞাস রচনারও ভার পাকা হাতের পরিচর পাওয়া গেল।

উপক্তাদের আরম্ভ হইরাছে শিবানী গ্রামকে কেন্দ্র করিয়া। मार्लिविया कर्छविक अञ्चलाकोर्ग आमधानि य ममय कनकरवक वर्गिरकव [ইংরেজ] শ্রেনদৃষ্টিতে পড়িরা একটি শিরাফলে পরিণত হটরাছে, সেই সময় হহতেই কাহিনীর আরম্ভ। ইক্রদেব এই গ্রামের ভেলে--বার মনের বিকাশ ঘটিয়াছে এই গ্রামের পরিবস্তনশীল আবিধাওয়ার এবং চবিত্তের প্রকাশ দেখা গিয়াছে গানীজীর লবণ-আইন ভঙ্গ আন্দোলনকে কেন্দ্র করিরা। বিপিন বাবু এ আমের লোক নন, কিন্ধু বাবসা উপলক্ষে এখানে আসিয়া শেষ প্যাস্ত রহিয়া গিয়াছেন। শাখতী এর কলা। উপজ্ঞাদের প্রধান নায়িকা। বলদেব, আভারার, ছুগা, দ'লোগা বাবু, পুলিস সাহেৰ মি: লাছিড়া, রাইচরণ আরও বহু বিচিত্র চরিত্র উপস্থানে ভিড় করিয়া আছে, কিন্তু প্রধান চরিত্রগুলি গ্রাপন আপন বৈশিষ্ট্যে উজ্জ্ব হইয়। ফুটিয়া উঠিয়াছে, ভিড়ের মধে। হারাইয়া যায় নাই। শাখভীর চরিতা বিশেষভাবে ভাল শাগিল। ইন্সদেবের প্রতি ভার আনভিত্র কোধাও টফান প্রকাশ নাই, ফর্গারার মতই ভাষা নিঃশব্দে বহিরা গিরাছে। কোখাও সফীণ স্বার্থের ভন্ম সে আদর্শচাত হয় নাই। লেখকের ভাষা সাবলাল, সংলাপ প্রসংসনীয়।

শ্রীবিভূতিভূষণ গুপ্ত

31173/3/71/3/3/

শিশুপালনের সম্যক জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভরাবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক সর্বাদ্ধীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ডি, বি১, বি১র সহিত মৃল্যানা উদ্ভিক্ষ ও রাসায়নিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাঙ্গ টিনিকটি প্রভাকে শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দন্তোদ্যামের সম্ম, সেবন করান উচিত। বিবটন নিম্নিধিত রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুদের স্কৃত্যের পাড়া, অঞ্জীণতা, মুধ ভেক্ষা, প্রট কাপা, কোটকাঠিয়া, রন্ত্রণগুতা, ক্ল্যান্তা, ব্রহাইটিগ, রিকেটস ইত্যাদি।



পুৰ্বাশা-প্ৰাশিত করেকেটি গভারে বই

সঞ্জয় ভট্টাচার্য্যের

क ज न

ব্যানারীতিকে অভিক্রম করিয়া সম্ভলি এক
বৃত্তন সেপিবে উন্নীত হইয়াচে। পঞ্জে
বিভীষ স স্থাপ্ত
এক টাকা চার আনা ও দৃষ্টিভাগর প্রমাণ পাওরা বার।--ভাব
ভাবা ও রসপরিবেশ পঞ্জে বেধানে বাহা অপরিহার্যা, লেগক
ভাবা প্রকৃত আটিটের মত সম্পাদনা করিয়াচেন।'- আনশ্ববাজার

या १

বাঙালীর সমাঞ্চ ও পারিবারিক জীবনের পারম্পরিক সম্বন্ধের মধুরতা অস্তর্গিত হতে চলেছে, বিশেষ করে

'বর্ত্তমান বাক্তলা-কথাসাহিত্যের প্রচলিত

এক টাকা সাচে ভয় আনা অগনৈতিক কারণে। যে আধিক সাচ্ছলা পারিবারিক শান্তিও মাধুষ্য রক্ষা করিবার পক্ষে অপরিহার্ঘা তার অভাবে পিতামাতার প্রতি ভক্তি, আমী-স্তীর ভালবাসা, অপতা মেহ, বঞ্গীতি সবই ধীরে ধারে কমে আসচে। বাংলার এই পদ্যিদত্ত সমাক্ষরীবনের রূপটিই প্রতিফ্লিত হরেছে 'গণ' গ্রম্ভান্ত।

नकुन पिरनं कारिनी

'গলগুলির উপাদান
প্রধানতঃ আধুনিক
প্রধানতঃ আভিলাত
ও সম্পন্ন পরিবারের
ব্যক্ত-যুবাতীর মন-

্চুট টাকা শুবক-যুবতীর মন-ভাজেৰ অপিসক্ষ বিশ্লেষণ। ভাষা বলিষ্ঠ, বর্ণনাভঙ্গী চিডাকর্থক।' আনন্দৰাজার 'চিরাচরিত পরিবেশে গলঞ্জলি দাঁড করান হউরাছে বটে, কিন্তু ভাষার দৌক্যা এবং রচনা-শৈলীর নিশুণভার সেগুলি আকর্ষণীর।'—বুগাস্তুর যে কয়জন লেগকের সাধনার মধো ছিরে আধুনিক বাংলা সাহিতোর প্ৰপরিক্রমা ফুলু হরেছিল প্রেমেক্র दश्यस्य मिट्डन

মিত্র উাজের অক্সডম। সকল দ্বিতীয় সংস্করণ। তুই টাকা গ্রন্থনার দাঁর প্রতিষ্ঠা বছদিনের। সব কড়িরে তিনি তার গলে বে ভারটি পরিস্ফুট করে ভোলেন তা এমনি অনিব্রচনীয় রসে পরিপূর্ণ যে আপনি যদি রসের অভিসারী হন এবং জীবনে দার্শনিক তাংপায় উপলব্ধি করবার দিকে যদি আপনার মনের সহজ প্রবণতা থাকে, সোজা কথার আপনার যদি জীবন-বোধ থাকে, ভাহলে তার হারা আপনি অভিত্ত হবেন ই হবেন ই

সৈয়দ ওয়ালীউল্লাহের

'লেখকের নধ্যে যে সঞ্চাৰনা রহি-ছাচে গল্পগুলি পাঠে ভাষার পরিচয় মিলিবে। ঘটনার বিস্থাদ, ফল্ল মনোবিল্লেখণ ও আবহু সৃষ্টিভে

আরকের দিনের উদ্প্রাস্ত অনিশ্চরতার ঠুন্কো খেলনার মতোই দেখার আরু नश्ना

বল্ধ পরিবেশের মধ্যে মুক্তীরানার পরিচয় আছে।'—আ ন কা বা জার
'মন্বস্তবের পউভূমিকার নয়নচারার পরতলো বণার্থ গল্পের
রূপ নিরেছে। জাহান্ডের সারে: এবং নৌকার দাঁড়ি মাঝিমালার অপরিচিত ভগতে লেথক স্বিস্তার প্রবেশ করেছেন
এবং ভালের সক্তে আমাদের সার্থক পরিচর ঘটিরেছেন।'—বুগান্তর
'ন র ন চা রা য় ক্রেকটি গল্প আছে যা সভাি রূপ পেরেছে
রোপের দংকে, বেদনাময় সমুভূতির সৌক্ষায়ে।'—ম ক্লিরা

ম্ববোধ ঘোষের

শরশুরামের কুঠার

দ্বিতীয় সংশ্বন। তুই টাকা

'সমস্ত চরিত্রের সঙ্গে লেথকের পরিচর নিবিড় বলিরাই পাঠকের অনুযোগের অভাব মিলেনা।'—প্রবাসী

'রবীন্দ্রনাথের পর কি বিষয়বস্তুতে কি রচলাশৈলীতে বাংলা ছোটগঞ্চের মোড়কে তিনিই দিয়েছেন নৃতন যাত্রাপথের ইঙ্গিত। স্থবোধবারুর গল ছুংগ বিলাদের কালা নয়, মৃ'ক্তর বাণীর অধ্যা প্রেরণাতেই সেগুলি গতিবান, কলে শিক্ষচাতুগ্যের অপুধ্য নিদশন।'- চ তুর স

শুক্লাভিদার

ক্ষরোধবারর গলঞ্চলির মধো আমরা
এক নতুন সন্ধান পাইরাছি এবং তাঁহাকে
অবলম্বন করিয়া বাজলা সাহিত্যের
গতানুগতিকভার মোড় ফিরিতেছে
এবং ফিরিবে।—আন নদ বা জার

তুই টাকা চার আনা এবং ফিরিবে।—আন ন ন বা জার
'হুবোধ বা বুর দৃষ্টি আধুনিক তার দৃষ্টি—সতোর প্রত্যক্ষতার
ভাষার লেখা সরস এবং সমৃত্তি লাভ করিয়াছে।'—দেশ
সমাজ বিজ্ঞানের স্তাকে কাজে লাগিরে অমন প্রাক্ত বিভার কর।

—পরি চয়

জ্যোতিরিজ নদীর

(थलन

মধ্বিত্তের নইত্রই জীবনের ছবি।
স্ফোভিরিক্ত নন্দী সাপ্ততিক গল- দেড় টাকা
সাহিত্যে এ-জড়াই বিশিষ্ট বে তার নায়ক-নায়িকার চরিজে বিদেহভাবে ফুটে উঠেচে ভসুর খেলনারই করণ প্রতিভাস।
নিনী ও নারী, সিংহরাশি, সস্থতি, থাকি ও খেলনা বাংলা সাহিত্যের চোট
গল্পুলির মধ্যে বিশিষ্ট আসন লাভ কথিবে। ভাষা ও ভঙ্গি ফুলার।
——আনন্দ্রবাধার

नदब्सनाथ निद्धत

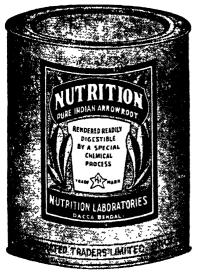
সাহিত্যক্ষেত্রে নেমে বৃব অপ্ত দিনের মধ্যেই ব্যারা পাঠকসাধারণের কাছ থেকে অ⊄ুঠ অভিনম্পন লাভ করতে সমর্থ কেন, তাঁগের পতাক

সংখ্যা সাম্প্রতিক বাংলা-সাহিত্যে গুব বেশী তুই টাকা নর, কিন্তু নরেন্দ্রনাথ সেই শ্বল্পংখ্যক লেণকদের অক্সতম। ছোটো ছোটো ঘটনার মধ্য দিয়ে মানবমনের যে আবর্ত্তন, তাই নিখুং ভাবে ধরা পড়েছে নরেন্দ্রশাধ মিত্রের রচনার। পতাকা তার সক্ষাধুনিক গরাগছ।

একাশক 8

পूर्वा मा निमि ए ७— नि । ७, न त म ह स ब ए मू, क नि का छ । ७

একটী বলকারী খান্ত!



বিলাভ 😉 আমেরিকার শিশুবিভার

পারদর্শী
ভান্তারগণ বলেন
বে ছুধের সহিত
ভান্ত কার্কোহাইডেট বোল
দিরা শিশুদের
বাইডে দেওর:

উচিত।
"নি উট্টি শ ন্"
একটা পরিপূর্ণ
কার্বোহাইডেট
কুড়্।

বাহারা ছব হওম কৰিতে পারে না অথবা আআশর বা অজীর্ণ রোগে ভোগে ভাহাদের পক্ষে বিশেষ উপকারী। সর্ব্যর পাওয়া বার। ইনকর্সোনেরটেড ট্রেডার্স লিঃ

স্থভাষ এভেনিউ : ঢাক।

সেবে বের হল শ্রীমডী বাণী রায়ের অভিনব গরের বই

"শূন্যের অঙ্ক"

ভ্মিকা শিখেছেন-জ্রীমতী স্কুচেতা রূপালনী

কিন্তু কেন ? নোয়াধালীর পটভূমিকায় "রমার"
চিন্ত ভদ্ধির জন্ত, না, আরও কিছু যা দৈনন্দিন
জীবনে "কুমারী", "বধ্" ও "জননী" মনকে পীড়া
দেয় তার জন্ত ! দাম—২॥০ টাকা

মানবেজনাথ রায়ের—ভারতীয় নারীতের আদর্শ (শ্রীমতী মারা ৩৩ অনুদিত) দাম—১॥•

চানে কংগ্রেস মেডিক্যাল মিশনের বিবরণ ডাঃ কোটনিসের অমর কাহিনী

ফেরে নাই শুধু একজন

অনুবাদন-জ্রীতমপালশস্কর সরকার। দাম ৹ টাক

পুত্তক-প্ৰকাশক ও বিজ্ঞেতা
১৬০এ, নাগবিহানী এভিনিউ, কলিকাতা—২১

স্থরাজ ও গান্ধীবাদ— এনির্দ্নকুষার বহ । আই, এ, পি, কোং লি:। ৮সি, রমানাধ মজুমদার ট্রাট, কলিকাতা। পৃ: ২১৫, মূলা—তিন টাকা মাত্র।

ভারতীয় জনগণের আত্মশক্তির উদোধন করিরা বরাজলাভ ও বিধ্নানবের কল্যাণ সাধনই মহাত্মা গান্ধীর শীবনের ব্রত। এই উদেশ্যে তিনি বে পথা অবলখন করিয়াছেন তাহাও পৃথিবীতে অভিনব এবং বুগান্তরকারী সভাবনার পূর্ব। মৃষ্টমের বিপ্লবী সশস্ত্র বিদ্যোহের ঘারা রাষ্ট্র-ভি ধূলিসাৎ করিরা দিরা উপর হইতে জনসাধারণের অন্ধে বরাজ চাপাইরা দিবে না, বরং অহিংস বিপ্লবের ঘারা জনসাধারণ রাষ্ট্রের পূর্ব কর্তৃত্ব লাভ করিবে, আহিংস অসহযোগের প্রয়োগে শোবিত মানব শোবক সম্প্রদারের জনরের পরিবর্তুন ঘটাইয়া পরশ্বরের মধ্যে প্রীতির সম্বন্ধ গড়িয়া তুলিবে ইচাই মহাত্মাঞ্জার অভিপ্রার।

গান্ধীজা বর্তমান জগতের সর্বল্রেট মানবপ্রেমিক। হিসাবেদ-কল্মিত পৃথিবীতে তিনি অটল শান্তিসাধক; ভারতভূমিতে সাম্প্রদায়িক হানাহানি নিধারণে জীবন পণ করিয়া শ্রশানের প্রেডন্তোর মধ্যে তিনি যে, শীশরের মত শান্তিব সাধনার হত।

ভারত আছ স্বাধীন, কিন্তু মহাস্থাজীর অভিপ্রেত প্রকৃত স্বরাধ এধনো বচদুরে। ইহার জক্ত জনসাধারণকে আত্মগুড়িছি, মাননিক বল ও নিংবার্থপরতা অজ্ঞন করিত্যে চইবে। আলোচা প্রস্কে গান্ধাজীর সহচর জধাপিক বসু মহাস্থার রাজনৈতিক মতবাদ মনোজ্ঞভাবে সালোচনা করিয়াছেন। 'শনিবারের চিটি'তে প্রকাশিত প্রান্ত বিমলচন্দ্র সিংহের একটি প্রবন্ধ সম্পুটি দুর্ত করিয়া তত্ত্ত্যে নিশ্মগুণার গাঞ্চীর অহিসে বিপ্রবের আদেশ, সরুপ ও পত্মা বিত্ত করিয়াছেন। লেগকের ভাষা সজ্ঞ ও সাবলীল। বাঙ্গণার রাজনৈতিক সাহিতো 'স্বরাজ ও গান্ধাবান' এক বিশিষ্টভান প্রহণ করিবে, সন্দেহ নাই। মহাস্থা গান্ধীর স্থাইনেতিক ও অর্থনৈতিক মতবাদের নিপুণ বিশ্লেষণ হিসাবে বাংলা ভাষার পুত্কখানির জুড়িনাই। মহাস্থাজীর মত ও পথের সহিত ভালভাবে পরিচিত হইতে হইলে এ প্রপ্র প্রত্যেক বাঙালীর স্বর্গপাঠ্য।

बीनात्राय्न हत्म हन्म

নিঝুম রাতের প্রেম—এউমাণদ দাশ। একাশক— রাউনী ভাই পাটেন, পশুপতি বুক ডিপো, ২৮৷২, অপার চিংপুর রোড, ক্লিকাতা। পৃষ্ঠা ১২৪, মূল্য ১৮০।

আলোচা এমখানি উপস্থাস। বন্ধু নববিধানের দুরসম্পর্কীরা বিধবা বোন মীনাকে শৈলেন ভালবাসে,—বাধা দের সমাজ, বাধা দের আত্মীয়ম্মজন,—নববিধানের স্ত্রীর মনে হিংসার আন্ধন হুলে উঠে। বার্ধ-প্রেমিক শৈলেন শেষে এক বিভিন্ন বাবসায়ীর অর্ধ-সাহায্যে বিলাতে ভান্ধারী পড়তে যায়। ফিরে এসে সে মেডিক্যাল কলেজের ভিজিটিং সাজ্জন হয়। ঘটনাচক্রে মীনা 'ট্রাম-একসিডেন্টে' আছত হয়ে মেডিক্যাল কলেজে এসে তাব শৈলেনদার সামনেই মারা যায়।

তর্নী বিধবাদের প্রতি গ্রন্থকারের গভীর সহামুক্তি আছে। কাহিনী কিন্তু সাধক হরে ওঠে নি। মাঝে মাঝে ইন্তট বানান ও শক্ষররোগে রচনা প্রাত ও দৃষ্টিকট্ হরে উঠেছে,—ছ'একটি বধা,—অস্যাধাতে, না হেসে পারলাম না, ছলের অধিবধি থাকে না, তাত এতদিন করি গী, বল দিকি গী•••

ঞ্জীতারাপদ রাহা

প্রেমানন্দ — প্রথম ভাগ (২র সং) ১৯৬ পৃ. এবং ছিটার ভাগ (১ম সং) ১৯৮ পৃ. আমা ওঁকারেখরানক সর্বলিত ও বৈছনাথ বাব দেওঘর, পোঃ কুডা, বীরামকৃক সাধন মন্দির হইতে বীশৈনেজ্ঞনাথ বলোপায়ার কর্তৃক প্রকাশিত। মূল্য বর্থাক্রমে ২০৬ ও ২৮০।

বাঁহার নামাতিত এই এছ, তিনি পরসহসে জীজীরাসকুকের সাক্ষাৎ

শিক্তদের অক্সতম। তাঁহার সন্নাস আশ্রমের নাম বামী প্রেমানন্দ হইলেও জন- সাধানণের কাছে তিনি বাবুরাম সহারাজ বলিরাই বিপাত ছিলেন। এই সর্বাক্রাণী সরাাসী বেলুড়মঠাগত ব্রহ্মচারীদের সর্ব্ববিবরে দোবক্রেটিইন ও স্থালিকিত করার জন্ম প্রাণাণাত চেষ্টা করিতেন। এই মানার নামানি দেবী একদা বলিরাছিলেন,—'মঠের শক্তি, ভক্তি, মৃক্তি সব আমার বাবুরামরূপে গঙ্গাতীর আলো করে বেড়াত।'

এই গলাতীর আলোকরা শ্রীরামকৃষ্ণ লালাস্ক্চর বার্রাম মহারাজ বা শ্রেমানন্দ বামার সংশানে গিয়া জালার মুখনি: তত যেদব অমুলা আলোচনা শুনিবার ও লানিবার সোঁভাগা সকলনকারীর হইরাছিল তৎসমূদর এই ছই থও প্রন্থে সম্লিবার চিত্রাবলী এডিডের প্রোবলী, উপদেশাবলী, ঠাকুর ও মা ঠাকুরাণীর চিত্রাবলী ঘারাও প্রস্তুত্ব ভাষার সরলভায়, ঘটনার বিচিত্রভায়, ঐতিহাসিক তথা বর্ণনার, সাম্প্রদায়িক সম্ভা স্মাধানের সভা পরিক্লনার, হাক্সরসের মধ্রতায় এবং মানব মহরের উচ্চ চিত্তাধারার সকলকেই এই প্রস্তুত্বি নান ক্রিবে।

গ্রীউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

কেরে নাই শুধু একজন—(সচিত্র অমুবাদগ্রহ)—
 অনুবাদক: বিলোলগর সরকার। কিজাসা ১৩৩-এ, রাস্বিহারী
 এভিনিউ, কলিকাতা। বুলা তিন টাকা।

১৯০৮ সনের আগন্ত মাসের শেব দিকে জাপানী আক্রমণে বিপর্যন্ত চীনের সাহাব্যার্থে ভারতীয় কংগ্রেস কর্তৃক যে মেডিকেল মিশন প্রেরিত হয় ডাঃ এটল, ডাঃ চোলকার, ডাঃ মৃথাঞ্জি, ডাঃ বিজয়কুমার বহু এবং ডাঃ ঘারকানাথ কোটনিস এই পাঁচ জন ছিলেন তার সদস্ত । এ দের মধ্যে চার জন চার বংসর চীনপ্রধাসের পর দেশে ফিরিয়া আসেন—ফেরেন নাই শুধু এক জন; তিনি মারাঠী যুবক, ডান্ডার কোটনিস । তিনি কমরেড বুও চিন লাঃ নামক একটি চীনা মেরেকে বিবাহ করেন এবং চীনেদেশেই ১৯৪২-এর ৯ই ডিসেম্বর জাহার মৃত্যু হয় । উক্ত মিশনের সদস্ত ডাঃ বহুর ডারেরি এবং তাহার প্রদন্ত উপকরণাদি অবলম্বনে ইংরেজী ভাষায় স্থলেকক থালা আহিশ্রন্থ আক্রাস And one who did nat come back: নামক যে বিখ্যাত পুশুক্রণানি রচনা করেন তাহা প্রস্তুত জনপ্রিয়তা অর্জন করে। সমালোচ্য পুশুক্রণানি ইহারই বঙ্গামুবাদ।

পুত্তকথানি আরাগোড়া সত্য ঘটনামূলক হইলেও ইহাতে ছানে ছানে উপস্থাসের চমংকারিত আছে। ইহাতে "নরকের রাঞ্চপথ" প্রভৃতি

অধ্যারে বুদ্ধের ধ্বংসলীলার যে চিত্র অবিভ হইরাছে ভাহা হলয়ে ভীভির সঞ্চার করে। ৬৪ নং শিবির হাসপাতালের বর্ণনা, রিমার্কের "অল কোরারেট অন দি ওরেরার্ণ ফ্রন্টে"র হাসপাভালের কথা প্ররণ করাইরা দেয় এবং যুদ্ধক্ষেত্রে আহত দৈনিকদের অবস্থা অবগত হুইরা রিমার্কের কথার অভিন্তুৰি করিয়া বলিতে ইন্ডা হয়--'A single hospital alone shows what war is l' दा प्रश्न प्रदक निक्षे अवः नत्र जानन করে তাহা এই পুস্তকের প্রতিটি অধায়ে ফুটিরা উঠিয়াছে এবং সেইফস্তই মি: এলে প্রভৃতির লিপিচিত্রও স্থেক হইরাছে। মেডিকাল মিশনের যে কয়জন সদস্য চীনে গিরাছিলেন জাঁহারা সে দেশের প্রকৃতি ও মামুষের সঙ্গে একান্ত হইয়া গিয়াছিলেন। ভারত ও চীনের মধ্যে মৈতী স্থাপন ছিল তাঁহাদের বত। পুশুক্থানি পড়িয়া চীন ও ভারতের চিরক্তন মৈত্রীর সম্পর্কের কথাই নৃত্ন করিয়া মনে উদিত হয়। ডা: বহুকে লেখা ডাঃ কোটনিদের মৃত্যুর পুর্বোকার কত্তকগুলি চিঠি, উত্তরচীনের একে অজ্ঞাত অধ্যাত পনীগ্রামে মাটির কুটিরে কোটনিদের মৃত্যুর মর্মপর্নী বর্ণনা এই সবের দক্ষন ভ্রমণ-কথার উপসংহারে বিরোপাস্ত উপক্তাদের হুর বাজিয়া উঠিয়াছে। অনুধাদকের ভাষা যেমন বুলাকুর ভেমনি শ্রীমণ্ডিত। '(lood earth'এর বাংলা রূপান্তর 'নীম্মী ধরিত্রী' বদ্ধ ভাল লাগিল।

রাজজোহিতামূলক বলিয়া গভর্ণমেণ্ট কর্ত্ক 'বাজেয়াপ্ত'

व न्य ना

সম্বন্ধ : শ্রীসাবিত্রীপ্রসন্ন চট্টোপাধ্যায়

"ৰদেশী" যুগ হইতে বৰ্তমান বাঙলার নবযুগ পথান্ত দেশের জাতীর সঙ্গীতের পরিবর্জিত অপুঠ্ব সঞ্চরন। বিশ্বজাতির জাতীয় সঙ্গীতের পরিশ্রেকিতে বাঙলার ডথা ভারতের জাতীয় সঙ্গীতের ক্রমপরিণতির তথ্যস্থালিত ৫২ পূঠাবাাশী ভূমিকা। থাাত, অথাাত, অজ্ঞাত ও বিশ্বত ক্রিদের অসংখা সঞ্গীতে সমৃদ্ধ। প্রকাশিত ইইল মুল্য পাঁচ টাকো

প্রকাশক—উষা পাবলিশিং হাউস ৩৪নং মহিম হালদার ষ্টিট, কালিঘাট, কলিকাতা

ভারতের নব অভ্যুদর, সাহিত্যিক ও সাংবাদিক **শ্রীগোপালচন্দ্র রায়** প্রণীত, একথানি গৌরবময় জাতীয় গ্রন্থ

ভারতে রটিশশাস্নের অবসান

দাম 🗢 টাকা

মন্ত্রীমিশন কেন ভারতে আসিতে বাধা ছইল তাছার কারণসং, মন্ত্রীমিশনের ভারত-আসমনের পর হইতে ভারতীরদের হাতে ক্ষমতা হস্তান্তর কাল পরস্ত দেশের রাজনীভিতে যে বুগান্তকারী পরিবর্তন ঘটে, তাহারই এক সম্পূর্ণ নিপুঁত ও প্রবৃৎ ইতিহাস। এছের সমন্ত বিবর ২০টি স্থচিত্তিত প্রবন্ধে ক্রমামুসারে, নিপুণ ও স্মন্ত্রতারে প্রথিত। অনেকগুলি মুল্যবান চিত্রও গ্রন্থখনির সোঠব বৃদ্ধি করিয়াছে। স্কুল, কলেজ ও সাধারণ লাইব্রেরিতে এবং প্রতি শিক্ষিত পরিবারে রাখিবার মত একথানি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ।

প্রাপ্তিস্থান :---

দি সেন্টাল বুক একেন্সি :: ১৪, বহিন চ্যাটার্জী **ট্রাট** :: কলিকান্তা

ছাড়পত্ৰ—- শ্ৰীস্কান্ত ভটাচাৰ্য। দি বুক্ষ্যান, ৮৭ চৌৰলী ৰোড। মূল্য দেড় টাকা।

এই কাব্যপ্রস্থানি প্রকাশিত হইবার পূর্ব্বেই মাত্র উনিশ্ বংশর বয়সে লেখক প্রলোকগ্যন করিয়াছেন। প্রস্থানিতে লোকান্তবিভ করির মোট পরিত্রেশটি কবিতা স্থান পাইরাছে। অধিকাংশ কবিতাতেই ফুটনোমুখ প্রেভিতার স্থাক্ষর রহিয়াছে। তম্মধ্যে 'ছাড়পত্র' 'আগামী' 'চারা পাছ' 'প্রস্তুত্ত' 'প্রার্থা' 'আগ্রেয় গিরি' ঠিকানা, বিকুতি, চট্টগ্রান ১৯৪০ 'প্রতিহাসিক ও 'বোধন' এই করটিকে আমরা নি:সংশ্রে প্রথম শ্রেণীর কবিতা বালতে পারি। পূথ্যালী বচনাভঙ্গী স্ক্রকান্তর কবিতার একটি লক্ষণীর বৈশিষ্ট্য। ভাঁর প্রকাশভঙ্গার দৃছতা ও বলিষ্ঠতা মনকে পভীরভাবে নাড়া দেয়:

> আমি বাবাবর কুড়াই পথের মুড়ি, হাজার জ্পন চা বেবানে, দেখানে আমি প্রতিদিন ঘূরি, বন্ধু, ঘরের খুঁজে পাইনাকো পথ, ভাইতো পথের মুড়িতে গড়বো মজবুত ইমারত।

বন্ধু, আজকে আঘাত দিও না ভোমাদের দেওৱা কতে আমার ঠিকানা থেঁকে ক'বো শুধু স্বোদয়ের পথে।" (ঠিকানা)

হুকান্ত ছিলেন আশাবাদী কবি। এই আশাবাদ পরিপূর্ণ আশ্ববিদাও আদর্শবাদ সঞ্জাত। উনিশ বংসর বয়সেই কবি বলিতে পারিরাছেন; "হুম্পাই আমার কাছে জীবনের হুতীব্র সংকেত" (ফুললের ডাক: ১৩৫১)। আশাবাদে উদীপ্ত কবি বলিরাছেন—

"ৰিপশ্ন পৃথীপৰ আৰু শুনি শেষ মৃত্যু / ছু ডাক আমাদের দৃপ্ত মুঠি আৰু ভার উত্তর পাঠাক। ফিকুক হরার থেকে সন্ধানী মৃত্যুর প্রোয়ানা, ব্যর্থ হোক কুচফ্রান্ত, অবিরাম বিপক্ষের হানা," (বিবৃত্তি)

বাঁচিয়া থাকিলে এই প্রতিভাশালী কবিব বচনাথারা বাংলা সাহিত্য যে বিশেষ সমৃদ্ধ হইত ভাহাতে সন্দেহ নাই।

শ্রীনলিনীকুমার ভদ্র

निडाकी बनुभवत्

বাংলার বিখ্যাত স্বত ব্যবসায়ী শ্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "শ্রী" মার্কা স্থতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিষ্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জ্জন করিয়াছে, তাহা স্বত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

ষাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বসু

त्य-शिल्लास स्था

পাটনায় "কিশোর-সপ্তাহ"

সম্প্রতি পাটনা বোটাবি ক্লাবেব সহযোগিন্তার ও পাটনা কেন্দ্রের "কিলোর দলের" উদ্যোগে ১৫ই অক্টোবর হইতে ২০লে অক্টোবর প্রয়ম্ভ "কিলোর-সপ্তাহ" উদ্যাপিত হইরাছে। স্থানীর ছাত্রবৃক্ষ ও প্রাদেশিক প্রতিনিধিরা এই কিশোর সপ্তাহের প্রাদেশিক আন্ত:-বিদ্যালয় বজ্জা প্রতিযোগিতা, ছোটদের সিনেমা এবং কিশোব-কর্মী-পরিষদের অধিবেশন প্রভৃতি করেকটি অনুষ্ঠান দর্শকদের বিশেষ প্রশংসা অর্জান করে। পাটনার ও অন্যান্য প্রদেশের যে সকল বিশিষ্ট শিক্ষাত্রতী সাংবাদিক, সমাজ-কর্মী ও সাহিত্যিক এই অনুষ্ঠানে সহযোগিতা করেন তন্মধ্যে অধ্যাণক হরিপদ মাইভি, ফাদার মোবান, ডাঃ জে, সি,



ভারতীয় বহু হাউট দল পরিচালিত কিশোর শোভা-যাত্রা

বিভিন্ন অনুষ্ঠানে যোগদান করে। এই সম্মেলনের একটি বৈশিষ্ট্য এই যে, কিলোররাই ইহার যাবতীয় কম্ম পরিচালনা করে। ভারতীয় বয় স্বাউট পরিচালিত কিশোর-মিছিল, কিশোর-কল্যাণ-সম্মেলন, কিশোর-পাটি, কিশোর-সামাজিক-বৈঠক, বিহার



ক্ষলা সমান্দার পরিচালিত কিশোরপাটির মিছিল

মুখোপাধ্যায়, ডট্টব শচীন সেন, ডট্টব বিনয় দাশগুপ্ত, বিচারপতি বি. পি. সিংহ, মণীজ্ঞচক্ত সমাদার, শিবকুমার মিত্র, মিসেস কাম-কৃল্লিসা বেপম প্রভৃতির নাম বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য। এই ধরণের "কিশোর-স্প্রাহের" আবোজন আমাদের দেশে ইহাই স্ক্রিপ্রথম।



পাটনা মিডজিরম পরিদর্শনে কিশোর-দলের সভাাগণ

বিশ্ববিশ্যাত "সোম মহাস্কক" সেবন কঞ্চন, ব্যাধি পুগাতন ও জটিল হইলেও ইহা সেবনে সম্পূৰ্ণ বোগমুক্ত হইবেন। ইহা বোগের মূল কাবণগুলি নাশ করিয়া অতিরিক্ত মৃত্রনিঃসরণ, প্রস্রাবে স্থগার ও এলবুমেন হ্রাস করে এবং দেহয়ন্ত্রকে স্বলও স্থন্থ করে। বিনা ইঞ্কেশ্নে স্থায়ী ফলসাধনে "সোমমহাস্কক" অতুলনীয়। ইহা রন্ধ ও চিস্তাশীল ব্যক্তির শ্রেষ্ঠ টনিক। মূল্য ৫০০ (১০ দিনের), ১৫০ (১ মাসের) মান্তলাদি ৫০ আনা। ক্রিরাক্ত এন্দ, ভট্টাচার্য কাব্যব্যাকরণতীর্থ ভিষগাচার্য—১২০।১১১, (পি) আপার সারকুলার রোড, কলিকাতা—১।

অমুজনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

পত ১০ই কার্ত্তিক, মদলবার, মাত্র ৪৯ বংগর বরলে অভুত্তনাথ বন্দ্রোপাধ্যায় পরলোকগনন করেছেন। জার এই
শোচনীর অকালয়ভূার সংবাদ বাঙলাদেশের বিভিন্ন সংবাদপত্রে প্রকাশিত ভ্রেছে।



অস্ত্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

বাঙলাদেশের অনেকেই অযুক্নাথকে জানতেন; অনেকে জানতেনও না। জানি তাঁর একজন নিকট-আলীর বলেই বে তাঁকে জানতাম তা নর; ব্যক্তিগত প্রয়োজনের অভিক্রান্ত ক্ষেত্রেও বহু বার তাঁর সংস্পর্শে আসতে হরেছিল বলে আনি তাঁর পরিচয় পাবার কিঞিং সুযোগ লাভ করেছিলাম।

স্বিধ্যাত কথাসাহিত্যিক শ্রীযুক্তা অন্তরণা দেবীর তিনি ছোঠ পুত্র ছিলেন। কলিকাতা বিশ্বিদ্যালয়ের ফুতী ছাত্র, দর্শন-শাল্লে স্পতিত শ্রীযুক্ত শিবরনাধ বন্দ্যোপাধ্যার মহাশধ তাঁর শিতা; নিজে তিনি প্রাচীন তারতীর ইতিহাসের ছুই বিভিন্ন বিভাগে হ'বার (তর্থাে একবার প্রথম বিভাগে প্রথম হান অধিকার করে) এম্-এ পরীক্ষার উত্তীর্ণ হরে পরে মূল্যবান গবেষণাত্মক আলোচনার কলে শি-আর-এস সন্মান লাভ করেন। ইতিহাসের বৈঞানিক তত্ত্ব, মূল্যতত্ত্ব, মূর্তিতত্ত্ব প্রভৃতি বিষয়েতিনি সভীর পাতিত্য অর্জন করেছিলেন, এ সক্তল পরিচর নগণ্য পরিচয় না হলেও ইহা অপেকাও হুর্গত এবং পৌরবজনক বে

পরিচরের ভিনি অধিকারী হিলেন, সে পরিচয় অনেকেরই নিকট অবিধিত হিল। সে পরিচয় হিল, তার প্রবল কর্ম-প্রচেটার মধ্যে নিজেকে পরিপূর্ণভাবে নীরব এবং নিমিরীক্ষ্য করে রাধবার ঐকাভিক সংব্য এবং নিঠা।

বাছ বেমন তার মূল সভাকে ভ্যির মব্যে স্কারিভ রেপে
লাখা-প্রলাখাকে আকালের বার্তে ভ্লে দের, অনুভ্যাবঙ ভেমনি কর্মের মব্যে আর্ড হরে থেকে নিজেকে লোকচভূর বহিত্তি করে রাখভেন। সভানী গোকেরা কিন্তু অনুভ্যাবের জ্ঞানরক্ষের সভান রাখত এবং প্রয়োজনকালে রুক্ষভলে উপস্থিত হরে নাজা দিরে অভীঠ কল লাভ করত। এই সভানী দলের মব্যে দেশবিধ্যাত ঐতিহাসিক, হাইকোটের বিচারপতি একনিঠ দেশসেবক প্রভৃতি সকল শ্রেণীর লোককেই দেখা যেত।

ইংবনীতে একটা কথা আছে, No man is educated until he has forgotten his Latin । অপুনাৰ তার Latin অবাং বিদ্যার কচকচি সম্পূর্ণরূপে ভুলেছিলেন । তাই আনেকেই তার শিশুস্পত সরসতা এবং অকৃত্রিম নিরহুলার ভাব দেবে তুল করত, তিনি বুলি এক বঙ নিভেক তামার তার; কিছ ম্পূর্ণ করবার প্রয়োজন হলে চমকিত হরে দেবত, সেতারের মধ্যে প্রবহ্মাণ বিদ্যা এবং জ্ঞানের উচ্চ ভোল্টের বৈহ্যুতিক শক্তি।

সর্বদিক দিয়ে আমাদের দেশকে গছে ভোলবার প্রচেষ্টায় যে সকল নীরব কর্মীর কর্মসাধনা প্রতিনিয়ত সক্তিয় আছে, সেই ক্যীদের অভতম ছিলেন অনুজনাধ এ কথা বললে একটুও অত্যক্তি হবে না।

ॐউপেশ্রনাথ গঙ্গোপাগ্যায়

গোরীহর মিত্র

স্থাহিত্যক গোৱীহয় মিত্র গভ ২০এ আখিন প্রলোকগমন করিরছেন। দীর্ঘকাল একনিষ্ঠ ভাবে ভিনি সাহিত্যসেবা করিয়া গিয়াছেন। প্রবাদী প্রভৃতি বিভিন্ন মাসিক পত্রিকার উাহার প্রবাদি প্রকাশিত হইত। উাহার লিখিত পুস্তকসমূহের মধ্যে "বীরভূমের ইতিহাস", "চরিত কার্ডন", "জ্ঞানের আহাজ্ম", "ভারত কথা", "মহাপুরুষ প্রসঙ্গ", "বিজ্ঞানের বাহাত্ত্বী", "ছেলেদের উপকথা" ইত্যাদি উল্লেখযোগ্য। বীরভূমের ইতিহাস, পুরাতজ্ব প্রভৃতির গবেষণার উছার ঐকাজ্ঞিকতা সকলেরই দৃষ্টি আকর্ষণ করিত। "বীরভূমের ইতিহাস" নামক পুস্তক্থানি তাহার সম্প্রজীবনের সাধনার কল। ত্থবের বিবর, তাহার জীব্তাবছার উহার ছইখণ্ড মাত্র প্রকাশিত হইবাছে, বাকী বিরাট ত্রবণ্ডের পাত্রালি অপ্রকাশিত অবস্থার পড়িয়া রহিয়াছে।

खन-नररमाधन ३—-१. ३६१, ११कि ३, "১२३७०" इल "১२६०+" १५७७ इहेरव ।



कुश्म ब्रिजीशवस्थ्य स्माक्ष রবীন্দ্রনাপের 'পরিশোধ' হউতে





"সত্যৰ্ শিবষ্ পুন্দৱৰ্ - নায়মান্থা বলহীনেন লভা:"

8**9**~1©131 23|21©

পৌষ, ১৩৫৪

বিবিধ প্রসঙ্গ

ভারত-বৃক্তরাষ্ট্রে নেতৃত্ব দমস্রা

পশ্চিম-পঞ্চাবে, কাশ্চীৱে, হাধদবাবাদে ও আচাল ব: প্রভাবিত প্রদেশে বাহা ঘটরাছে পাকিস্তান সংখ্য ও ঘটতেছে ভাষাতে ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রের শক্ষণিগের প্রকৃত পরিচয় পাওয়া গিয়াছে এবং ভাহাদের মনোর্ভি এবং কার্য্য-ক্ৰমের অভান্ত ও সুস্প**ই নিৰ্কেশও পাওয়া গিয়াছে। সেই** স্থে আমাদের বুবিবার ও বিচার করিবার সময় আসিয়াছে त्व कररशास्त्र गरमांमील स्वलदर्शन के नकविरान पुष्प ७ वर्ष चित्राम यार्ट कविश बहे बार्डेड गर्रम ७ श्रीकाममाद क्ष त्रमाक ও यवार्व दृष्टिविद्यहमा ७ कमला आहर किना । जाहारी কুপালনী জাছার ইভক্ষেদ্র দ্বিল করার সময় যে বিবৃতি দিয়াখেন ভাষাভে লাইট বুবা বাহু যে পরং রাষ্ট্রপতিই সে বিষয়ে বিশেষ স্পিষ্ট। যে বিশেষ উদ্দেশ্য ও সংকল লইয়া বর্তমান কংগ্রেম গঠিত চালিত ও উদ্দীপিত হইয়াছিল ভাহা ছিল বিটিশ পাঞ্জাজাবাদের উচ্ছেদ সাধন করিছা ভারতে স্বাধী-मछ। ७ माछपा প্রতিঠা করা। আঞ সে উদেশ সফল स्टेशाटर कि अम्मूर्वकाल नहर । (कनना जातज लात्तव शृद्ध ब क्षान्त विक्रिन नामक ७ लाधकवर्ग क्षन विकान कविया. আশেষ মৃতন সম্ভাৱ স্ষ্টি করিয়া এমন এক পরিছিতির ভুচনা করিয়া পিয়াছে যাহা অভি বিচক্ষণ, অভি নিপুণ রাষ্ট্র-নীতিজ রাষ্ট্রপরিচালকবর্গের পক্ষেও বিষম কটল। উপরস্ক এবন বিবের রাইনৈতিক পার্ডিভিও জনেই অত্যন্ত লকাকনক ও সমস্তাৰতৰ ছইয়া পঞ্জিতে । এরণ অবসায় ভারত-রাষ্ট্রের পরিচালন ও নিয়ন্ত্রের ভার বহন করিবার যোগ্যতা ও ক্ষতা আমাদের নেতবর্গের কাছার কভটা আছে ভাছার বিচার ब्रावाह सारायन क्रमा विभाष बहेब्र कडीर्किंड शारीमडा ও স্বাভন্তা বিপাকে পছিয়া নইপ্ৰায় হটভে পায়ে।

অনেকের বারণা, সময় পাইলে এই মেতৃবর্গ সমভ সামদাইরা অনেক অলাবা সাবনে দেশকে ঠিকপথে চালাইরা সইরা গগুৱা ছলে পৌহাইরা দিতে পারিবেন। এইরপ বারণা বে তথু প্রান্ত তাহা নহে, বর্জনান প্রিহিজিতে উহা অত্যভ বিশক্ষনক। আমাদের বুবা উচিত বে আমরা সমর দিতে প্রশ্বত থাকিলেও বিশক্ষ তাহাতে রালী ইইতে পারে না। পাকিয়ান ও কাশ্বীবের ঘটনাবলী ভাহার শালল্যমান প্রমান। व्यायात्मव कामा छै। छछ दव विद्यान त्यायक वर्तव विकारक আমাদের ধ্বংস ও পরাক্ষ বত শীত্র হয় তত শীত্রই ভাষ্চের मक्त, अवर देशांश कामा केठिक य कामारमूब किसाना क দুরণ্টির অভাব, দীর্ষপুত্রিতা ও অহার মুক্সলভা যভ দিন আছে তত দিনই আমাদের শত্রুপক্ষের পুর্ব প্রযোগ। ভাষারা य म प्रवान जान कतिया, जामारमय श्राक महा-माकिना मिनाहेबा आमारमब कामकृषि-विरवहमा छेट्याकब अरमभाव অগ্ৰদংবৰণ কৰিবা হাভ ওটাইয়া বসিৱা থাকিবে একণা মনে স্থান দেওরাই বাতুলভার পরিচায়ক। অভ দিকে ভাঁছারা भिरे ऋसात्र पूर्व भोकाञ्च अरूव कृतिया चामारमत हुर्यनचात्र অবকাশে ভাগাদের উদ্দেশ্ত পিছি করিলে যদি আহলা **षरिश्ता, जापर्गताम ता जल अल्हाएक (क्तनबाद्ध जाएकन क** निकारीय क्षेत्रं कदिशा एशयनगैजित भाषहे हिमाज बाकि তবে সময় যতই বহিষা ঘাইবে বিশক্ষ তত্ত সৰল সক্ষ হইৰে अवर बाभदा ७७३ इस्न ७ सक्त इहेट बाकित। बाहुमी छिन्न ক্ষেত্র সময় অক্ষের সহায়ক নহে, সংহারক ৷

বস্তত:পক্ষে ভারত-মুক্তবাব্র এবন যে পরিবেশের মধ্যে রহিয়াছে, তাহাতে রাইনেত্তে গৃচচেতা, অভিজ্ঞ বাস্তবাধীর প্ররোজন চতুর্নিকে, কেবলমাত্র আন্তর্ণবাদ সবল করিরা কলমা-ক্ষেত্রে বিচরণ করার অবকাশ আর নাই। দেশের বাহিরে শক্ষণ ও দেশের ভিতরেও মানাপ্রকারের অসংখ্য প্রক্ষেপ্র শক্ষ রাষ্ট্রের সর্বনাশের চেপ্রার কিরিভেছে। এবন বাবাবিদ্ব সন্ত্বেও অভি ক্রভ গতিতে রাইকে সবল ও সক্ষম করিয়া তৃলিতে হইবে। নচেৎ দেশের উন্নতির আশা ত স্প্রশাহতে হইবেই, দেশকে ব্যংসের মুব হইতে রক্ষা করাই অসম্ভব হইরা উঠিবে। দেশের লোক বাহাদিগকে রাইনেত্তে বরণ করিয়াছে তাঁহাদের ব্রিতে হইবে বে দেশ এবন প্রতি পদে প্রতি বৃত্তে তাঁহাদের নিকট হইতে কার্য্যতঃ যোগ্যভার পরিচর ও সবল সক্ষমভার বিদর্শন চাহিতেতে। ভোকবাক্যে অন্যাধারণ আর তৃলিবে মা। দেশ এবন চাহিতেতে প্রতিক্রতির পূরণ।

বৰ্ডমান গণতভ্ৰের যুগে বেশের জনসাধারণের সমষ্ট্রগভ সন্ধতিই (sanction) রাষ্ট্রের প্রবল্ভম শক্তি। এই শক্তিকে

সংৰক্ত ও নিৱমান্থৰতী করিয়া চালমা করিতে পারিলেই রাষ্ট্রের मनन, मा स्ट्रेल विभव। सममज्ञा । अवस्ता করিয়া চলিলে হয় সে শক্তি করপ্রাপ্ত হইয়া রাইকে ছুৰ্বাল ক্ষাত্ৰা কেলিবে নচেং লে শক্তি বিপৱীভগানী ধ্ইয়া রাষ্ট্রবিপ্লবে দেশকে বিশন্ন করিরা ছুলিবে। চীনদেশে আঞ **এই इकिनाट्य नृ**र्व निवर्षन भावता वाहेरल्ट । जाबाट्य तथ বিচারের সমর আসিরাছে বে আমাদের মেতৃবর্গই বা রাইকে क्मिन भर्त महेता बाहेरछर्डन। छाहाता (बरनत क्मेनावादर्यत যে গরিষ্ঠ অংশের সম্বৃতি, সহারতা ও সমর্থনের ফলে আক রাষ্ট্র-পরিচালনার অবিকার লাভ করিয়াছেন, কার্যাক্তমে অবভীর্ণ হুইয়া সেই সমূৰ্ক্দিসের পূৰ্ণ বিশ্বাস ও অবিমিশ্ৰ সম্মতি ভাছাৱা রাবিভে পারিভেছেন কিনা। রাষ্ট্রে এবন চতুর্বিকে অভাব-অভিযোগের দ্রোভ বহিতেছে। পক্ষ পক্ষ সর্বাহার হা-হতাৰ ও অভিনাপে লোকের মন ক্লিষ্ট্র শত-সহস্র ধর্মিতা ও অপত্নতা নারীর শোচনীয় অবস্থার চিস্তায় অন্মত বিচলিত विकृतः। देश द्याला चाट्ट इंडे वार्यादायी ठळाडकात्रीत खकां ७ बाब्द विश्वन-श्रद्धो । अक्ष चवधां वारक्षेत्र ठानक-দিবের যোগ্যভার অগ্নিপরীকার দিন খনাইরা আসিতেছে।

বাংলায় জনবিক্ষোভ ও তাহার কারণ

বাংলার পরিছিতি বিচার ইভিপুর্বেই করেক সংখ্যার আমরা করিবাছি। এই সংখ্যার আমর বিভারিত বিচার করিবার ইক্ষা আমাদের ছিল কিন্তু সম্প্রতি 'নিরাপভা বিল' লইরা বে ক্ষাবিক্ষাত ও আন্দোলন হইয়া সিয়াছে ভাহাতে আমাদের দেরপ বিচার সামরিক ভাবে ছণিও রাবিতে হই-তেছে। নিক্ষের বৃত্তিবিচারের উপর অপরিসীম বিখাসের কলে প্রক্রাবার পশ্চিম বলের ক্ষমণাবারণের প্রভা ও বিখাস হারাইতে বনিরাছেন দেবিয়া তাঁহার প্রতিঘন্দ্বী দলসমূহ তাঁহার গদী-দবলের চেপ্তার এইরূপ ক্ষমিক্ষেতির স্তুষ্টিক্ষিরাছে। এই চক্রান্ধে বাংলার অপরিণত রভিত্ত যুবশক্তিও শেলাধার বিক্ষোক্ত ও আন্দোলনকারীদিগের নিরোগ করিরা বাছারা এই গোলমাল বাভাইছা ভূলিরাছেন দেই মহাশের ব্যক্তিপথের হাতে রাপ্তের ক্ষমণা যাওয়ার আর্ধ দেশের সর্ব্বনালের চুক্তাক ব্যবহা করা। দেরপ অবস্থার আমরা প্রথমেই বলিতে বাব্য যে এই ব্যাপারে দেশের লোক ভূল পথে চলিরাছে।

রাই এবন আমাদের হাতে। রাইচালক যদি ভূল বা আভার করে তবে তাহাকে শে ভূল সংশোধনে বা পদত্যালে বাব্য করিতে হইবে। কিছ তাহাকে শান্তিবিধান করিবার অভ্যতে রাটের নিরম-পূর্যাণ ভল করিয়া দেশে বিপ্থলার শ্রোত বহাইতে যে চাহে লে ছরাচার রাটের আরও বিষম শল্প। বাংলার মুবক ও ভরুব দলের এবন বুবিতে হইবে যে, তাহাদের এইবল উদান উদ্ধানের কলে কিছুকাল যাবং দেশের অবনতিই হইতেছে এবং তাহাদের শিশ্লেদের ভবিয়ংও বোরভর অছ-কারাছের হইতেছে। বাংলার ছাএমঙলী কৃষ্টল চক্রাভকারী বাজেরই হাতে কলের পুভূল হইরা ইাভাইতেছে ইহা নিভাভই হুংখের বিষয়।

কিছ খাল দিকে ইংগও ঠিক কথা যে প্রক্র্যারু দেশের লোককে সন্দেরের অবকাশ না দিলে ভালাদিলের বিশ্বাস ও আহা পূৰ্ব্বেকার মতই তাঁহার প্রতি থাকিত এবং সে অবহার ঐশ্বপ অমবিক্ষোভ স্কট করিতেও কেহ নাহন পাইত না।

ঘোৰ মন্ত্ৰীসভার চার মাস

ভা: বোষের মন্ত্রীসভা আৰু চার মাল বাবং পশ্চিম বলের পরিচালক। ইহার মধ্যে বক্তভা ও বিরভির ভ্রতীবাজী অনেক চুটয়াহে কিছ ছাভির কল্যাণকর একট কাজভ হুইয়াছে বলিয়াও আমরা দেবিতে পাইভেছি না। দেশের চড়ৰ্ছিকে যে সৰ বিপদ ধনাইয়া উঠিতেছে ভার ৰভ প্রভতি, দরের পাশে পূর্ববদের হিন্দুদের মনে সাহস ও বিধাস স্কারিত করিবার আরোজন, উৎপাধন বৃদ্ধি, শিক্ষাব্যবস্থার আৰ্ণ সংস্কার প্রভৃতি কোন গঠনৰূলক কাক আরম্ভ হইবার নিদর্শনটুকুও এই চার মালে পাওয়া গেল না। শিক্ষা সংখার সম্বৰে দেবা যাইতেহে ক্ষেক খন মামুলী লোক লইয়া একট ৰামুলি কৰিট পঠিভ হইয়াছে এবং ভাছাৱাও যবাৱীভি "অভিয়ত" সংগ্রহের সদ্ভিগ্রার ব্যক্ত করিছে আরম্ভ করিয়া-ছেন। ইভিমধ্যে সার্জেন্ট স্থীম অসুসারে কয়েক জনকে বিলাভে ও ভারতে ট্রেনিং দিয়া প্রাধনিক শিক্ষা বিভারের যেটুকু আবোৰৰ লীগ আমলে ইইয়াছিল-ভাষা বাভিল কৱিয়া দিয়া অভয়াপ্রমের ত্রিকাল্ড মহাজানীদের প্রপারিশক্ষমে তাঁহাদের মধ্য হইতে কন ছয়েককে আবার নৃতন করিয়া শিকা পাতের ৰুণ্য ওয়াৰ্ছা পাঠানো হইয়াছে। সাৰ্ক্ষেন্ট স্বীম অসুসায়ে যভটা কাদ অপ্ৰসর হইয়াহিল ভাহাতে এই ভাবে বাধা না পঢ়িলে প্রাথমিক শিক্ষার ব্যবস্থা এত দিনে অনেকটা আগাইয়া যাইতে পাৱিত। প্ৰাৰ্থিক শিক্ষার বৃদ কথা উপযুক্ত 'শিক্ষিত' শিক্ষ ভাষার অন্য সর্বাব্দে দরকার টিচার্স টেনিং কলেজ। ভারত-সরকারের চাপে পড়িয়া লীগ গবছে উ এইরপ ছুইট কলেজ প্রতিষ্ঠা করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। ডা: খোষ সর্বপ্রথমে উহার বুলোচ্ছেদ করিয়া উহার শিক্ষিত, অভিজ্ঞ ও টেনিংপ্রাপ্ত অব্যাপকদের করেক জনকে ওয়ার্ছা পাঠাইখাছেন। শোনা যাইতেহে ইহাদিগকে বিশেষভাবে হিন্দীর মাধ্যমে প্রাথমিক भिकामात्मव कावमा कावक कविष्ठ **क्टेर्ट्स । वाहानी हा**वर्णव ভাষাতে লাভ-লোকদান কি হইবে ভাষার বিচার বিভারোজন, चरक क्षम वाद्व "छेपवधवाना"वा पुनी स्टेट्ड भारतम ।

প্রদেশের বিভার সমস্যা শান্তিরক্ষা এবং পশ্চিম বদ ক্ইতে পাকিছানে চাউল চিনি করলা কাপত অল্লখন্ত প্রভৃতির বে-আইনী চালান নিবারণ। শান্তিরক্ষার কলিকাভার তর্নণ-তর্মন্বী চালান নিবারণ। শান্তিরক্ষার কলিকাভার তর্নণ-তর্মন্বী চালান নিবারণ। শান্তিরক্ষার কলিকাভার তর্নণ-তর্মন্বী চালান এবং প্লিসের মধ্যে বাহারা ভাঃ বোষের বিরপাত্র—ভাহানিগকে বেই সংখ্যার উচ্চতম ও ক্ষতাপূর্ণ পদে অবিষ্ঠিত করা আরম্ভ ক্ইরা নিরাছে। প্লিসে যে করেক কন দক্ষ ও সং কর্মচারী ছিলেন উন্থোদিগকে এমন না কালে দেওরা ক্ইতেছে যাহাতে কোনরপ দক্ষতা প্রদর্শনের স্থানা উহারা না পান। কিছু যোগ্যতা চাপা থাকে না বলিরা বর্জনান অবহাতেও ইহারা ম ম ক্ষেত্রে মক্ষতা প্রদর্শন করিতেছেন। ভাঃ বোর এবার বেকল প্লিস ও কলিকাভা প্লিস এক্স করিয়া কলিকাভা প্লিসের কর্মনিপুণভার দকা নিকাশ করিতে উভোই ক্ইরাহেন। লীগ আরলে কলিকাভার ২৪টি

बागांत बर्पा ১৪। बर्पाना बुननवान कर्यहाबीरम्य राज्य पश्चास শহরবাসীর সাঞ্নার একশের হইরাছিল। এবারও ১৪ট বানার বেদল পুলিসের অবভিত্ত ও অবোগ্য লোক আহদানী হওৱার শহরে ছর্ ভের উপএব ধুব বেশী বাছিয়া সিয়াছে। মুসলিয লীপের যে সব কর্মচাত্রী ভারতে থাকিয়া ইসলামের সেবা ক্ষিবার আঞ্জাব্দ পশ্চিম্বলে গ্রহিয়া সিয়াছে, পুলিসের উচ্চভ্য পদপ্ৰলিতে ভাৰাদিগকে অবিষ্ঠিত হাবা হইয়াছে। পোৰ্ট এলাকা चन्नम ७ चनामा (य-चारमी स्वाधित चाममामी-तथानीत क्टि । (मर्गाम भवत्वत्व वृद्धन ७ मीत्रव शास्त्र गामावर्ग এক বন হিন্দু ডেপুটি কমিশনার দেওয়া হইয়াছে এবং তাহার পালে দক্ষিৰ কলিকাতার ওয়াইগঞ্জ বিভাগে ইন্স সাম্প্র-দায়িকভাবাদী দীগওয়ালা একজন মুসলমান এয়াসিট্টান্ট ক্ষিণনার নিযুক্ত করা হইয়াছে। পোট এলাকার ইনি স্থারিচিত এবং উহার অতি নিকটেই তিনি বাস করেন। ভোভাগাকো ভাকেবিয়া খ্ৰীট প্ৰভতি লীগ খাঁট যে এলাকায় चदश्चि (नदीत्मध अक चन मुननमान आनिक्राकि क्यिननाइ দেশবা হইয়াছে।

এক সাংবাদিক সন্মিলনে ডাঃ খোষ বলিয়াছেন যে কলি-কাতার পাকিস্থানী অপ্তচরবৃত্তি চলিতেছে এবং তাহা বরিবার कना नाकि (हडी ७ स्टेटिंग्स । हिडी व कि मन्ना एक छैपरा (मर्चा (नेन । वावशांत नियमेंन चांत्रक प्रमुख्यम । मरूटरत कर्य সংবাদ সংগ্রহের দায়িত স্পোদাল ত্রাঞ্চ পুলিলের। এই ত্রাঞে আগে চুই জন ভেপুট কমিশনার ছিলেন, এখন আছেন ভিন জন। তথ্যে আছেন লীগওয়ালা ভেগুটী কমিলনার হনামবছ বেছা সাংহ্ব, এক सम ইংরেজ আসিয়াছেন, উপরস্থ ইংরেজ ও লীগ উভর শাসককেই বিনি ভূষ্ট করিতে পারিবাছিলেন ভেষনি अक क्न हिन्छ कामहानी हदेशात्वन । त्यानान डाटके नीटा পদৰ্শনতেও বেলল পুলিল ছইতে লোক আনিয়া ভণ্ডি করা হুইয়াছে। ইহারা বেদল পুলিলের সর্বাপেকা কৃতী পুরুষ নলিমী मधुममादात ग्रेष्टिभम वकात त्राविद्यम । त्य भाकिश्वामी क्षत्रहत বৃত্তি বন্ধ করা এবং উহার সংবাদ সংগ্রহ করা স্পোশাল ত্রাঞ্চের এবন সর্বাহ্রবান কাজ হওয়া উচিত বিবিধ্যবস্থার ভাহার विभवीखरे सरेटलाह मान स्त । अक्षेत्र महोश दम्यता यारेटल পারে। পত আগই মালে বর্মতলা প্রতিট এক জন মুদ্দমান মাৰিক বহু অন্তৰ্ভাৱত ধৰা পড়ে। উহাৰ নিকট ভিনামাইট এবং ভদপেকা ভৱানক বিজ্ঞোৱকও পাওৱা যায়। লোকট ৰৱা পৰে ভাৰতলা বানার এলাকায়। ভাৰতলায় ভবন বেলন পুলিসের এক জম সাব-ইনসপেট্টরকে অফিসার-ইন-চার্জের পদে ৰিব্ৰক্ত কুৱা হইৱাছে। তিনি ঐ নাৰলাট বেনাৰুম চাপিরা ৰাম। ম্যাকিটেট বার বার ভাঁহাকে ভাগাদা দেওৱা সভেও ভিমি উহাকে হাছতে ৱাৰিবার অনুষ্ঠি প্রার্থনা করিলেন না बार शाकित्रे के जानाक मानियां निष्क वांधा नहें जन। श्रीनाम वाहाता छा: बारवत वित्यव श्रिक्षणाव चारवय छेक चिक्रमावक

ভাঁহাদের বিশেষ অভ্ঞহভাত্ম, কাতেই ইহার পর ভাঁহার শাভি না হইয়া প্রয়োপনের বন্ধোবভ হইভেছে। এভ বড় वह वारिकारदर भर हैना वरमध्य करिया त्मामा बाक পুলিস আরও কোন বাড়ী তলাসী বা কাছাকেও ধ্রেপ্তার করি-রাহে বলিরা আহবা অবগত নহি। কলিকাতা করপোরেশন মিৰ্ব্বাচন সম্বদ্ধে ধৰাপুৰ্বাৎ শীগভোষণ চলিভেছে। মিৰ্ব্বাচক-ৰঙলী ও প্ৰাৰ্থী আসনের প্ৰবয় যে তালিকা প্ৰকাশিত হয় ভাছাতে একট ওয়ার্ডে ৮০০ মুললমানের জন্য একট জালন ও এক नक हिन्द कर अकड़ जानन निर्देश एवं। देश প্ৰহা আন্দোলন হইলে তালিকা পরিবাছিত হয় এবং উহাতে সম্বন্ধ ক্রাট সংশোষিত হয়। দ্বিতীয় তালিকা অলুসায়ে মির্বাচন হইলে ভাভীয়ভাবাদী বৃগলমানদের সুবিবা হইত। भीन देशांत लिजाम करत बातर जान जान जिल्लामिश्र চলিতে থাকে। ইছার কল কলিতেও বিলয় হয় নাই। সৈয়দ নোলের আলি, ডা: আর আহমদ প্রমূব কংরেস ও ভাতীরভা-বাদী মুসলিম নেড়বুন্দের অভিযত অগ্রাহ্ম ক্ইয়াছে এবং মুসলিম লীগের আবদার খোল আনা বনাম রাবিয়া ডাঃ ঘোষের ডভীর পরিবর্ত্তিত ভালিকা প্রকাশিত হইয়াছে।

শাসন বিভাগের বিভিন্ন ক্ষেত্রত শৈবিদ্য এবং বে-বন্ধোবভের জন বিশ্বলা ক্রমশ:ই বাভিয়া উঠিতেছে। বাডভি কর্মচারীদের ভিন মাপের মধ্যেও কাল দেওয়া বার নাই এবং বাছা দেওৱা হইৱাছে ভাছাতে কালের চেরে অকান্ধ এবং ক্ষতি বেশী হইবে। সেলস ট্যাক্স আপিসে নম্বার विकारमध केंद्र अधिकाद अधिकारिका किया । ভংস্বলে দেওয়া হইয়াছে এক দল সাব-ৱেব্দিট্টার। ইঁহারা ভূমি-আইন কতকটা ছানেন এবং হাকিমী করিতে পভাও। হিনাব পথীকার কটিন কাজ ইঁহাদের নিকট আশা করাই রখা। ইছার কল হইয়াছে এই যে জনগাধারণ প্রভাকট জিনিয চার ঋণ দামে কিনিয়া ভার উপর টাকায় ভিন পরসা হারে ট্যাল্ল দিতেতে কিন্ত উহার অধিকাংশই সরকারী তহবিলে ক্রা পভিজেছে না। গত কয়েক বংসর বাবং ব্যবস্থা-পরিষদের ल्यानमानी प्रष्टक अवदा एक हाकृतीशास्त्र आधीशकारमहारे व्यक्ति পরিমাণে সাব-বেভিপ্তার পদে নিষ্কু स्टेबार्टन। দেদিক দিয়া ইছাদের অনেকেরই মুক্রবীর জোর এভ বেশী ৰে ভাছাদিগকে মকঃবলে পাঠাইতে চাছিলে সেক্ষেটারিয়েটের উচ্চত্য পদাধিকারীদের টেলিকোন পাইরা সেল্স ক্ষিশ্মারকে काशावक काशावक वमलीत जाएमम मांकठ कविएक सरेवाटस । এই অবস্থার আণিদের শৃত্রণা বাকে না এবং বিক্রম্ব-কর আলিলের দুখলা নই হওয়ার অর্থ অসাধু ব্যবসায়ী ও চুর্নীতি-প্রায়ণ অফিসারদের পৌষ যাস এবং অনসাধারণের সমুভ্ 🕶তি ধটতেছে।

সামরিক শিক্ষা প্রবর্তনের ঘারা দেশের ব্ব-সমাভকে ভা: বোষ কাল দিতে পারিতেন, কিছ ভিনি ভাষা করেন নাই। পূর্ববদ্ধে হিদুদের বাস সম্ভব করিতে হইলে পশ্চিমবলকে শক্তি সকর করিতে হইবে ও শক্তির বাহিক প্রকাশ
দেবাইতে হইবে—ইহা আমরা বহু বার বলিয়াটি। পশ্চিমবলের শক্তির উপর পূর্ববদ্ধে ও বদের বাহিরে বাঙালীর মর্ব্যাপ্থ
ও বার্থ বছার বাকা নির্ভর করে। প্রিপুরার ব্যাপারে দেবা
পিরাহে পাকিছানী কর্ডারা একমান্ত্র করাই মানেন।

বিশেষ ক্ষমতা আইন

পশ্চিষ্যকের সমূপে যথম সহল্র সমস্তা বিভ্যান, সেই সময়েও ডাঃ বোষ বিশেষ ক্ষমতা বিল ব্যবহা-পরিষদে উপস্থিত করিবা আর এক নৃত্য অপাত্তি পৃষ্টি করিতে কুঠিত হন নাই। এই বিল আইনে পরিণত হইলে পৃলিসের হাতে অপরিমিত ক্ষতা আলিবে এবং ব্যক্তিশ্বাধীনতা সম্পর্কে হাইকোর্টের ক্ষমতা একেবারে সমূচিত হইয়া যাইবে। বিনা বিচারে প্রেরার, আইক, সংবাদপত্রের কঠরোব প্রভৃতি ব্যক্তিশ্বাধীনতার হানিকর সর্কাবিদ ক্ষমতা ডাঃ ধোষ এই আইনের বলে নিক্ষের হাতে আনিতে চাহিতেছেন। শাসন্যন্তের গঠম, লাসক ও পূলিস নিযোগ ও ব্যবহার যে সব নিদর্শন প্রকাশ পাইতেছে তাহাতে সাধারণের এই সক্ষেরণীরা যাহাতে প্রভাবিক যে ডাঃ ঘোষ নিক্ষ দলের বিক্রওবালীরা যাহাতে প্রভাবিক যে ডাঃ ঘোষ নিক্ষ দলের বিক্রওবালীরা যাহাতে প্রভাবিক পাল ক্রাইয়া সাহাতে চাহিতেছেন।

বীরভ্য নির্বাচনে ডাঃ খোষ ভোটে ভয়লাভ করিয়াছেন বটে, কিছ নৈতিক দিক হইতে দেখিতে গেলে তাঁহাৱই সম্পূৰ্ণ পরাশ্বর ক্ইরাছে। প্রথমতঃ তিনি তাহার প্রতিহন্দীকে সপ্তাহৰানেকের বেশী লচারকার্যোর ভূষোগ দেন নাই। তাহা সম্ভেও বিশদের আদলায় ভংগ্রেস-মভাপতি আচার্য্য क्यानमीत मिक्के बहेटल अहे मार्च करलावा चामाहेटल एव य काराव विद्यायिका कतात वर्ष (मर्पत विक्रबाह्य । जयक जरवाहरू कर्दावरमव ব্ৰকাৰ বৰু ভাষাকে সমৰ্থন কৰিয়াছে। মন্ত্ৰীয়াও কেছ কেছ সম্বাস্থ্য থাকা করেন। ইহাতেও অবস্থা স্থান দেৰিয়া ভিনি হুগলা ও বৰ্ষমানের যে সব নেভাকে অভিনয় অভায় ও অসমত ভাবে ভানীয় মন্ত!গভা পঠনের সময় : বাদ দিয়াছিলেন তাহাদের শরণাপর হন। সপ্ততিপর রঙ জীযাদৰেজনাৰ শাঁকার প্রতে ডাঃ খোষ সবচেয়ে বেলী অভায় করিয়াহিলেন কিছ ভাহা মনে না রাবিয়া পালা মহালয়কে লইয়া যাওয়া হয় নিৰ্বাচন-কেন্তে এবং ভাছার যাওয়ার পর ঐ ভোটদাভাদের মন ফিরিতে আরম্ভ করে। হর্নদীর শ্রীপ্রকুর সেন প্ৰায়ুৰ নেড্বুৰ অকুঠভাবে ডাঃ খোষকে ভোট দেওয়ার ছত আবেধন প্রকাশ কবেন। কথানিষ্ট কর্মী, পুভাষ্ত্রিগেড দল প্রভৃতি এবং অনেক ছাত্রকেও বীরভূষে পাঠানো হয়। এইরপ এবদ চেষ্টার পর প্রধানমন্ত্রী ডাঃ খোষ তাঁছার প্রতি-ধন্দীকে পরাজিত করিতে সমর্ব হন। কিন্ধ তাঁহার হিন্দু

মদালতা নির্বাচিত অভাতনামা প্রতিঘন্তী প্রার এগার হাজার তোট পান। এত দিন দেশের নিয়ম এই ছিল যে কংপ্রেস্প্রার্থীর বিরুদ্ধে যিনি ইন্ডাইতেন তাহার ভাষানতের টাফা বাজেরাও হইত। কেন্দ্রীয় ব্যবস্থা-পরিষদের গত বির্বাচনে তাঃ ভাষাপ্রপ্রাদ্ধ মুখোপাবার হগনী জেলার একজন অল্প পরিচিত কর্মীর নিকট অল্পরণ তাবেই পরাজিত হন আনাদের যত দূর মনে পড়িতেতে, বীরভ্নে যে আসমে তাঃ ঘাম নির্বাচিত হইয়াছেন উল্লে প্রীরভ্নে যে আসমে তাঃ ঘাম নির্বাচিত হইয়াছেন উল্লে প্রীরভিন্ন চটোপাব্যায় বিনা বাবার নির্বাচিত হইয়াছেন উল্লে প্রীরভিন্ন চটোপাব্যায়কে অযথা প্রশ-পরিষদে উত্তীত করিয়া প্র আসমট থালি করা হয় এবং উল্লেই সর্বোপেকা নিরাপদ মনে করিয়া তাঃ ঘাম সেখানে গিয়াছিলেন। সেখানে প্রিরপ নাভানার্দ হইয়াও বিলি প্রস্কাব্য ক্রমণ্ডের গভি না ব্রিয়া থাকেন তবে উল্লেক ক্র্যান্তর ক্রমণ্ডের গভি না ব্রিয়া থাকেন তবে উল্লেক ক্র্যান্তর ক্রমণ্ডের গভি না ব্রিয়া থাকেন তবে উল্লেক্তির ব্যবস্থাইবে প্

সৌযোম ঠাকুরকে ক্রেপ্তার করা হইয়াছে বিশেষ ক্ষমতা ৰলে অপ্তৰণে প্ৰশ্ৰেতির উল্লেদ সাধন চেপ্তার বড়যন্তের चित्रात्न, किन्न खर्रास्ट विकामा होत्यत्नव मक्ति कर्किक १ करकन (लाक अरेर करते। श्रम्भ काश्रम प्रत्म श्राह्म वा प्रकास भाषदा निवारक १ फेटान हान। अक्टी करत्यम गरता के ध्यरम कवित्र वाद्वे एवन कवा कि एकास भाननामित कथा नार १ टक-দেশে ট স সোমোন ঠাকরের চেয়ে অনেক শক্তিশালী, অনেক (वनी बाधनाध माजकन कांशांत बाह्य, हिर्मात अक्षे) रफ भगक ভাঁছার সমর্থক। তংগতেও তিনি আটকসান ও অপর করেক क्य मन्नीत्क रूला कदिए शादिशास्त्र माम नवार्य के प्रथम क कृतिएक शाद्यमह मार्टे : बद्रक पूर्णिय पाद्य काह्य कार्वत्रकाव দ্বাভাইতে হইহাছে। আউল্লামের কথা যথে করিয়া আলের কথা ক্ষমিদেই ডা: খোষ যদি প্রাণের ভারে বিচলিত इम खर्ब खबक खालाको कवा. किंग्र खिन यकि नास्टमंत्र ध নিঠার সহিত প্রধানমন্ত্রী বাকিয়া দেশ শাস্ত্র করিছে চাতেন তবে ভাষাকে খীকার করিতেই ঘটবে যে আংশিক ষে কোন গৰছে টের শক্তি ও খারিত নির্ভর করে জন-প্রিছভার উপর অন্ধের বা পুলিসী সভচরের উপর নর। चाक विक छा: । याथ शर्तनदृशक कारक श्रद्धक स्टेर्डिंग, দেশের সক্ষম বিচক্ষণ লেংকের সংপরাধর্শ শইয়া কাক করিতেন কর্মা লোকদের উৎসাধ ও কাজ দিতেন, শিক্ষা বিভার ও উংপাদনর্থির ৩৬ আগুনিয়োগ করিতেন, ভাষা ছইলে দেৰিতেন সৌয়েন ঠাকুর বা ঐশ্বপ কাছারও ছারা জাহার প্রথেণ্ট ভাভিবার চেপ্তা হইভেছে ইহা জানিবামাত্র দেশের ক্ষণক্তিই ভাষাদের সংযত করিবার বা শাভিদানের ভার সইত। অববা বিশেষ ক্ষতা এহবের নিভার আবর্তক হুইয়াছে এবং সেই ক্ষমতা প্রয়োগের ক্ষ বিশ্বন্ত লোক নিযুক্ত হট্যাছে ইহা বুকিলে দেশের লোক বিনা বাবায় লে ক্ষতা মন্ত্ৰীয় হাতে ভূলিয়া ৰিত।

পশ্চিম বাংলার সীমান্ত রক্ষা

वारमारमण प्रदे जान एकेका निवारक । भूकी वारमाव महन পশ্চিম বাংলার সম্বন্ধ আৰু বন্ধুত্বে ময়। যে ভাবের প্রেরণায় वारमारमा अहे भूकन बार्डेड एडि इहेडारक, कांद्र मरना प्रश्नाव ৰকু ভাব ছিল না, এবনও নাই। সুভৱাং আৰু যদি পূৰ্বা বাংলার প্রধান মন্ত্রী বাজা নাজিবৃদ্ধিন চীংকার করিতে বাকেন যে তাদের নৃতন হাষ্ট্র শত্রুপরিবেট্লিত এবং টাকার জোরে শত্রুপক ভার গলা ট্রপিয়া মারিবার চেঠা করিতেছে, ভাষা र्रेल चाम्पर र्रेवाड (कान काडर नारे। किस bिस्ड **इटेरांत जाशास्त्र कांद्रण चार्ट्स, ४४म स्मृति । य अभित्य वांग्लांद्र** बश्चिमक्त्री करें भक्टे-श्विवर्कानद खरशा प्रयाद क्रक श्वकार निर्दि-काद । ब्रिक्टिम मागत्नद अध्दक्ष चारभारमञ्जू रूक्तनारकन সম্বৰে প্রাদেশিক শাসন কর্ত্তপক্ষের কোন দায়িও ছিল না। वारमारम्या । जारक भारवत छेभत भा जुनिया निरमत रहामत রকা সহত্যে নির্বিকার থাকিব'র শিক্ষা পাটয়াছিল কর্যা, শিক্ পাঠানের উপর নির্ভৱ কবিয়া। সেইরুণ ১৫ই আগটের পরেও দেঁশিতেটি সদার বলদের সিংখের মুখের দিকে চাছিয়া ডাঃ প্রকৃত্রন্তরে (খায় আপনার কর্ত্তরা সম্পত্ন করিতেছেন। ভানীর লোক পূৰ্বে---বিটিশ মুৰ্গে--- ্যম্ম দেশের সীমান্ত-বক্ষা সম্বদ্ধে ব্বজ্ঞ ও নিঞ্পোহ হিল, আমও সেই তুরীয় ব্যবসায় আছে। भूक्ष बार वार्य मधी जार हारहेर मुम्मिर भन्यक्रिक छन्। क्विएक (हरे) क्विएक्स (मनद्रकात क्रम क्रिक छा: अक्रूब्रहत খোষ এরপ কোন কিছুই করিতে পারিতেছেন না। পুরবাদ ৰাভাভাব আছে, ভাৱ তুলনায় পশ্চিম বলের অবহা ভাল। পুর্ববের বল্ল-শহট আরও কঠিন। মুসলিম জনভার মনে এই বিষয়ে কোন খোভ যে নাই ভাষা নহে , কিছ ভাষারা बार्ट्रेड बका मधरक मरहजन: जाराजिक काममान गार्ड करमक ক্ষেত্র পুলিদের কাম করিতেছে, ভাষাদের উৎসাহের चार्किनया माक्शिक्य महिम्क्नीरक चरमक नमप्त नका लाहेट एव: किन बहे देश्यां डांबावा प्रम करतम मा। बारे हिरभाष महाध रख रहेश बारहेब आर्थरका करत : महाध ठक সন্ধাৰ বাখিয়া বাষ্ট্ৰের শত্ৰুর গভিথিবির প্রতি দৃষ্টি বাবে। পশ্চিম বাংলায় ঐক্লপ প্ৰ-জাগরণ নাই : ১০ই আগতে যাতা কুটিয়া উঠিয়াখিল, ভাষা ডাঃ প্রসূত্রচন্দ বোষের অববেলার ওকাইয়া দিয়াছে, পণশক্তি আৰু পশ্চিম বাংলার হাটের পরিচালক-एव निकृष्टे विकासिका एवेशा शासावेशाया। य निशायका विम श्रेषात करा स्वैद्वारम् जासाव वेसाव। चयह धरे প্ৰশক্তিৰ উৎসাহ-উদ্বীপনা কত সহতে আপ্ৰের সেবায় সাগান ষাইভ। দেশবাদীকে সংযত হইয়া হতুম তামিল করিবা খাইতে বলা হইতেছে। কিছ কোন কৰ্মের নিৰ্দেশ নাই। ৰাঙালী ধূবক আৰু দেও শভ বংগৱের অলাম্বিক কাতি ৰণিয়া ভাহায় কণালে যে কলফের দীকা টলিয়া দেওয়া হুট্যাছে, ভাহার অপমান মুদ্ধা, দেশ-রক্ষায় সৌরবের পদ

অবিকার করিবার প্রবোধ পাইতে চার। সে বে অবৈর্ব্য হইবা. ভাক ভনিতে না পাইরা, কাবে-অকাবে নাভিরা উটিরাছে ভাষার জন রাষ্ট্রে কর্ণবারপণ দারী। তাঁহারা এই মুব-শক্তির সন্মৰে কোন আন্তৰ্শ ৰবিভে পাৰিভেছেন না বাহার মধ্যে বাধালী যবক শুনিতে পাইবে বুণ্ডেৰভাৱ চুৰ্জ্ব আহ্বান। এভদিন পে লোপনে এই আদর্শের সেবা করিতে বিয়া প্রাণ দিয়াছে। আৰু সে চার সৌরবে মাতৃত্বির সীমাত বকার ল্লাৰ দিতে। চাৱি শত মাইল বিভুত সৰ্ণিল শীমান্ত বেপার आद्य आद्य नश्मित्रका वार्यक्ष क्टरन बारनात त्र्वनिक अकी ক্ষ্যোর সধান পাইত : কলিকাতা মহানগরীর রাভার রাভার লোগান তুলিয়া নিজের শক্তিক্ষয় করিত না। পশ্চিম পঞ্চাবের শাসক-সম্প্রদার স্থিত্ত করিয়াছেন যে, তাহাদের পূর্ব্ব সীমান্তে মুজন মুজন গ্রামের পর্যন করিতে হইবে : খৈব্যে ভাছা হইবে প্রায় ভিন শত মাইল ভাওয়ালপুর রাজ্য পর্যায় : প্রছে হইবে দশ হইতে প্ৰৱ মাইল। এই প্ৰামে ক্ষাৱেত ক্ষা ছইবে দৈনিক প্রিবার। পশ্চিম বঙ্গের পূর্ব্ব সীয়াভের আহে क्षारम अक्षेत्र अक्षेत्र रावस्य कविएक स्टेर्स अवर अरे सकलाब প্রাথবাদীকে নৃত্তন রঞ্চল গড়িয়া ডুলিতে হইবে।

ভারত-রাষ্ট্রের প্রকৃতি

বর্ষের নামে পাকিছানীরা আয়াদের দেশকে ভাগ-বাঁটেয়োৱা কবিষা লইয়াছে। এই ভাবে ভাছাৱা মুদলিম নেশনের খাবীনতা প্রতিষ্ঠা করিয়াছে বলিয়া বছাই করে। ভাষার জন্ম ভাষাদের ইংরেজের বিরুদ্ধে কোন আন্দোলন ক্রিতে হয় নাই: ইংরেজ সাহায্য ক্রিয়া ভাষাদের এই খাৰীনতা দিয়া দিয়াছে। ভাষালা হিন্দু নামে আচ একট নেশনের বিরুদ্ধে আন্দোলন করিয়াছে, ভাষাদের রক্তশাভ ক্রিয়াছে, তাহাদের বম-সম্পদ পুটরাছে, ভাষাদের অপমান करिश्राद्यः अदे जनकार्या प्रेरमाशी विभ म्मामकात प्रभगवासता বেৰাৰে ভাৰাৱা গংখ্যা-লখিষ্ঠ : বেৰানে কোন ভায়ের যুক্তিভ মুস্তিম প্রাধানা প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে না। আৰু সেই श्वारम्य प्रमुख्यानरम्य व्यवस्य क्षेत्रास्य (नाम्भीयः। स्व क्षिम् প্রাধান্তের বুয়া ভূগিয়া ভাষারা দেশের বুকের উপর বিভাগের ফালি কাট্যা দিয়াছে, সেই হিন্দু প্ৰাৰাত অটুট, অন্ত চ্ইয়া প্রতিষ্ঠিত দ্বীয়ালে ভাষ্টদের উপর। ভারতবধের বুক ষ্টভে ভাহার: ক্ষেক টুকরা প্রদেশ ছেনাইয়া পইয়া সিয়াছে এই যুক্তিতে যে ভাষারা সেই সব অঞ্জে সংখ্যা-গরিষ্ট, এবং द्धे भरका:-श्रविशेषारे षारभद स्वन्यरपुद श्रादक्ष **श्र**वान । আৰু তাহাৱা সেইৰল শাহহত মতে তাহাদেৱ পাকিলানে ब्राका-भागम-वावधा धारणन कविर्ण भारत । धात हरे काहि भ-यूम्मभाग जाशास्त्र अप्राप्त भारतः । जाशास्त्र अविकाश সম্বন্ধে কোন স্পষ্ট বারণা করা কঠিন। স্থিতত মতে অমুসল-যান্দের অবিকার কি ছইতে পারে ভংসময়ে পাকিসামের নাসকসম্ভাদার নারব। পশ্চিম পঞ্চাব ও উত্তর পশ্চিম সীমাভ

বাদেশের অভিক্রতায় আলোকে ইহা নির্ণন্ধ করিতে চেটা

করিলে বলিতে হয় বে পাকিছানে মুসলনান হাড়া কাহারও

বন-জন-মান রজা পাইতে পারে না। বর্তমান জগতে নাগরিক
বলিতে বাছা বুবার সেই অবিকার সেখানে মুসলমান হাড়া

অপর কাহারও প্রাণা নর। এই অবস্থার এই সমস্তা হভাবতই

দেখা দিরাছে—ভারভবর্ধে যে পাকিছানীয়া রহিয়া সিয়াছে

তাহাদের অবিকার ও কর্ডব্য সম্বন্ধ পাই বারণা এবনই হওয়া

হয়নার। ভারভবর্ধের প্রধান মন্ত্রী পভিত জ্বাহরলাল নেহরু

অক্ট ভাষার বলিতেছেন যে ভারভ-রাট্রে কোন বর্ম্ম সম্ভাগায়ের

একচেটয়া অবিকার থাকিবে না। ভারভ-রাট্রের প্রকৃতি হউবে

বর্ম্ম-প্রভাব মুক্ত (secular)। প্রলাহারাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের

সমাবর্জন উপেন উপলক্ষে ভিনি সেই কথারই পুনরুক্তি

করিছাছেন।

গাড়ীজী চুই বিক্লছ নেশনের মীতি-কথা সীকার করেম না। তিনি ভারত রাপ্টে পাকিস্থানীদের অবিকার সম্বন্ধে নাম্যের কথা বলেন; ভারত-রাপ্টে তাখাদের অবিকার অন্য কাছারও অপেকা নিকুট হইবে, এই কল্পনা সহ্য করিতে পারেম না। এই বিষয়ে পাকিস্থানীদের মনোভাব অনিশ্রিত বিবার অন্য করাচী নগরীতে সর্ক্ত-ভারতীয় মুসলিম লীগের কেন্দ্রীর পরিচালক সভার অবিবেশন হয়। এই মন্থব্য লিবিবার সমর ইহা প্রকাশিত হয় নাই। পভিত নেহুকুও গাঙ্গীজী যে নীতি প্রচার করিতেছেম ভাহার সন্দে বর্তমান অবস্থার সম্বতি আছে বলিরা মনে হয় না। পাকিস্থানীরা অ-মুসলমামের মুঙ্গাভ করিবে এবং স্থানা পাইলে ভারত-রাষ্ট্রের প্রতি বিশাস্থাতকতা করিবে, এই আচরণ সহু করিয়া চলিলে আমালের রাষ্ট্র বিপর হউবে, কথনও সবল হইয়া উঠিতে পারিবে না।

শাকিস্থানীদের পরীকা ভইরা সিরাছে কাশ্মীরের উপর তাহাদের আক্রমণ উপলক্ষে। আরু পর্যান্ত কোনা মুসলিম লীগ নেতা অরুঠ ভাষায় ইছার নিন্দা করেন নাই। ভারতবর্ষের মুসলমানদের কর্জব্য সম্বন্ধে ইছাদের মধ্যে অনেকেই ছ্-মৌকার পা ধিরা ইছার কেশিল আরম্ভ করিবার চেটা করিতেছেন। মুসলিম লীগের ভবিশ্বং সম্বন্ধে মিঃ আবছর রহমান সিভিকির বিরুতি এই মনোভাবের পরিচায়ক। লিছিকি লাহেব সিম্পুদেশবাসী; গত পঁটিশ বংসর কলিকাতায় ব্যবসায়-বাণিজ্যের দৌলতে গণমান্ত ছইরাছেন। তিনি কলিকাতা করপোরেশমের মেরর নির্কাচিত ছইরাছিলেন। তিনি একজন নামজালা পাকিস্থানী। ১৬ই ভিলেছর (১৯৪৭) এক বিরুতি-প্রসক্তে ভিনি আমাদের জন্ধ দেশাইতে চেটা করিয়াছেন। সুতরাং ভারত ভোমিনিয়নের মুসলমানদের কর্তব্য সম্বন্ধে যে অংশে নির্কাশ আছে বিরুতির সেই অংশট নিয়ে উদ্ধৃত হইল :

ভারত ভোষিনিয়নের মুসলমানগণ বিভাগ ব্যবহার

দকলোভূত পরিছিতি বিবেচনা করিবেন এবং ঐক্যবভভাবে তাঁহাদের অবলখনীয় ব্যবস্থা নির্ভাৱন করিবেন।

সংক্রামক ব্যাবির ভার ক্রমবৃত্তিত আতক ও উদ্বেশ-এত্যাই বর্ত্তমান শাসকদের সামাত করণা লাভের ভত चाच-चत्रीकृष्टिवृत्रक ७ तम्मूर्व चाच-विकारमी मीणि नवर्षम ক্রিতে পারেন। আমার মনে হয়, এই মনোভাব হতাশার ফলোড়ত। বর্তমান কটল পরিখিতি সহক হইরা আলিবেট। অনিবিট্ট কালের কর এই অবস্থা চলিতে भारत मा। সংখ্যার আমরা চারি কোট এবং আমাদের শাসকরণ যদি দেশের শাসনকার্য্যে আমাদের ভারসকত অধিকার দিতে সম্মত নাও হন, তাহা হইলেও শীম হউক অধবা বিলম্বে হউক, তাহারা দেশের আভ্যন্তরীৰ ও वाहित्तत्र সমস্তাत जाभागित अत्याकन উপनित कतित्वन । হুভরাং আমাদের হুসলিম বলিয়া পরিচয় দেওয়ার কোন मकात कारन नारे, वित्मय चारत यथन करटान त्मण्डम আমাদিগকে প্রতিশ্রুতি দিয়াছেন যে, কংগ্রেস যত দিন ভারত ভোমিয়নের ভাগ্যমিয়গ্রণ করিবেন, ভত দিন উর্ ছিল রাষ্ট্রে পরিণত হইবে না।

মিঃ সিভিকি "দেখের আভ্যন্তরীণ ও বাহিরের সম্ভা" সম্বদ্ধে বাহা বলিরাছেন ভাহার অর্থ সুস্পষ্ট। এই সম্ভা সমাবানের সন্মধীন হইরা ভারত-রাষ্টের কর্ণবারবর্গ চারি কোট ভূসল-बात्यत "बाद्याक्य छेनलकि कतित्य ।" अरे छत्रमात मर्या बक्टी जीज-अपन्यात देविक जारब, नीां विवास किह আদারের ভাব আছে। এই ইঞ্জিরে প্রকৃত উদ্দেশ, আশা করি, আমরা সকলে বুরিব। পাকিছানে সেইরপ "श्राचन" छेपनिक कवियाद श्रादाचन स्टेर्ट मा। कांद्रव পাকিয়ান হইতে সকল অ-মুসলমানকে ভিটে মাট-ছাড়া করি-বার ব্যবস্থা ত ইতিমধ্যেই হইয়া পিয়াছে। এই নীতি ভারত-রাষ্ট্রে চলিতে পারে না। এক শভ বংসর পূর্বের রামযোহন রার বলিয়াভিগেন যে হিন্দুরা "অতি ভঞ" হইয়া ভাহাদের স্বাধীনতা হারাইয়াছিল: "excess of civilization"-এর কল্যাণে হিন্দুর শক্তি-কয় হইয়াছিল। আৰু হিন্দুর অনিকার ভারতবর্ষ বিভক্ত ভ্রয়াছে : ছিন্দু প্রধানগণ মুসলমান-নিরপেক রাষ্ট্র প্রতিষ্ঠার নিজেই বাবা দিতেছেন। এই চেষ্টার পরিপতি কোৰায় এবন পরিছার দেবা ঘাইতেছে না। এই বিষয়ে च्या वादना चायककी निर्धद करद शाकिशास्त्र कार्या-কলাপের উপর; ভভোবিক নির্ভর করিবে ভারত-রাঞ্জে भक्तिश्वामी मत्याकाराभव मुजनमामत्तव कर्ष-चकर्षव **উ**भव। ज्ञान, जलक मुद्री मित्रा चारीन बार्छित मानविक भीवरमत লকল দায়িত আমাদের পালন করিয়া যাইতে ছইবে। অসাবধান হইবার চুর্বলভা বেন আমাদের ভীবনে না আলে : প্লব চিতা আমাদের কর্ম-প্রচেষ্টাকে যেন কুর मा करव।

মুদলীম লীগের ভবিয়াৎ

নিবিল-ভারত মুসলীম লীগ ছুই ভাগ হুইল। পাকিছানে বে লীগ কার্য্য করিবে ভার নাম ছুইবে পাকিছান ভালনাল লীগ; ভারতবর্ধে যে লীগ কার্য্য করিবে, ভাহার পূর্ব্য নামই বহাল থাকিবে। পাকিছানে লীগের নাম ভালনাল হুইলেও ভাহাতে লকণ লোকের অধিকার থাকিবে না, কারণ পাকিছানে মুসলমাম ছালা আর কেহুই নেজন মর্যাদার দাবি করিতে পারে না। এই পরিবর্ত্তম গভ ১৫ই ভিসেম্বর ভারিবের লীগ কাউলিপের ৩র প্রভাব অমুসারে সম্পাদিত হুইরাছে। এই প্রভাবের কার্য্যকরী অংশ নিমে উদ্ধৃত করা হুইল,—

নিৰিপ ভারত-যোসলেৰ লীপের প্রধান উদ্ভেশ্ন সকল
হওয়ার এবং ভারত ছইট খাবীন ও সার্কভৌষ রাষ্ট্রে বিভক্ত
হওয়ার নিবিল ভারত মোললেম লীপের সংগঠন, উদ্ভেশ্ন
এবং মাতি পরিবর্ত্তন করা অনিবাব্য হইয়া উটিয়াছে।

ইহা সুম্পট্র যে, পাকিছান ও ভারতের মুললমাননৰ একই
রাজনৈতিক প্রভিচনের মধ্যে বাকিতে পারে না।

খুতরাং লীগ কাউলিল নিধান্ত করিতেছেন বে---

- ১। (ক) নিবিল-ভারত মোসলেষ লীগের পরিবর্জে পাকিস্থান ও ভারতীয় ইউনিয়নের ভঙ পৃথক পুথক দীগ সংগঠন থাকিবে।
- (খ) নিবিগ-ভারত মোসলেম লীপের যে সমস্ত বঙ্মান সদস্ত সাধারণভাবে পাকিছানের বাসিক্ষা ক্ইরা পড়িয়াছেন অথবা তথার বসতি ছাপন করিয়াছেন এবং পাকিছান গণপরিষদের যে সব মুসলমান সদস্ত মোসলেম লীগের প্রাথমিক সদস্ত রহিয়াছেন, তাঁহাদের সকলকে লইরা পাকিছান বোসলেম লীগ কাউলিল গঠন করা হইল।
- (গ) নিবিল-ভারত মোসলেম গীপের যে সম্ভ বর্জমান সদত্ত সাবারণভাবে ভারতীয় ইউনিয়নের বাসিকা ছইয়া পঢ়িয়াছেন অথবা তথায় বসতি স্থাপন করিয়াছেন এবং ভারতীয় গণপরিষদের যে সব মুসলমান সদত্ত মোসলেম লীপের প্রাথমিক সদত্ত রহিয়াছেন, ভাঁহাদের সকলকে লইয়া ভারতীয় ইউনিয়ন মোসলেম লীগ ভাউভিল গঠন করা হইল।
- (খ) পাকিহান মোসলেম গীগ ও ভারতীয় ইউনিয়ন বোসলেম লীগ প্রত্যেকের ছন্ত এক জন করিয়া
 আহ্বায়ক নিযুক্ত করিয়া তাঁহাদিগকে এই মর্গ্বে মির্জেণ
 দেওরা হইল বে, তাঁহারা উপরোক্ত সিভান্ত অস্থায়ী
 ঘণালন্তব শীল নিজ নিজ লীগ কাউনিলের অধিবেশন
 আহ্বান করিবেন। এই সভার কর্ত্বকর্তা নির্কাচন, গঠনভন্ন প্রচনা ও অভান্ত বিধ্যের মীমাংসা করা হইবে।
 - (৬) পাকিছাৰ বোললেৰ লীগের 🕶 বিঃ

নিয়াকং খালী বাব এবং ভারতীর ইউনিয়ন বোসলেয় লীগের খন্য যাত্রাখ প্রাথেশিক যোগলেয় লীগের প্রেলিভেট যিঃ মোহাগ্রদ এস্যাইল খাহ্যায়ক নির্কাচিত হইলেন।

- (৮) করাচীতে পাকিশ্বান যোসলেম সীগ কাউপিল ও মাত্রাকে ভারতীয় ইউনিয়ন বোসলেম সীগ কাউপিলেয় অবিবেশন হইবে।
- ২। নিধিগ-ভারত মোসলেম দীগের যে সব প্রাথমিক সহত পাকিছানের বাসিন্দা হইরা পভিরাহেন অববা তথার বসতি ছাপম করিগ্রাহেন, তাঁহারা সকলেই বাতবিক পক্ষে পাকিছান মোসলেম দীগের প্রাথমিক লগত হইবাহেন বলিরা মনে করা হইবে এবং নিবিদ্দারত মোসলেম দীগের যে সব সদস্য ভারতীয় ইউনিরনের বাসিন্দা হইরা পভিয়াহেন অথবা তথার বসতিছাপন করিগ্রাহেন তাঁহারা সকলেই বাতব পক্ষে ভারতীয় ইউনিয়ন মোসলেম দীগের প্রাথমিক সদস্য হইরাছেম বলিয়া বরিয়া লওয়া হইবে।

পাজিগান দীৰ 'লাশনাল' নাম এছণ করিলেও, লোকে এই ৰৌকায় ভূপিবে না। কারণ সাড়ে পাঁচ কোট মুসলমান षाषा (भष् कोडि चनुममयान (मवादन अवनव (वान एव चार्ड, ৰ্ষিও প্ৰশাস লক অনুসলমানকে পাকিছানীৱা ভাষাদেৱ পিত-শিভামব্যে দেশে থাকিভে দেয় নাই। এই নিচুৱভার প্রভি-क्न (नवा निवारक मम-भरवाक भूजनमानरवद कौवरन याकावा পূর্বা পঞ্জাব, দিলী ও যুক্তপ্রদেশ হইতে ভাড়িত হইয়াছে পাকিখানে বা ভয়ে পলাইয়া গিয়াহে ভাষপুর, ভূপাল, হারত্রাবাধ সামত রাজ্যে। ভারতথ্য বিভাগের এই ফলাফল बाँदन कवियारे जामारभव कांगरण क्रेटलर यानिक जानक কংগ্ৰেস-মেভা বিভক্ত ভারত আবার কোড়া লাগিৰে বলিয়া মাবে মাবে ভাঁছাদের ভাব-প্রবশ্ভার প্রশ্রন্থ দিয়া থাকেন। সাধারণ বৃদ্ধি বভূতার মুহুর্ছে বুমন্ত না বাংকলে তাঁহারা এরপ অনি তুলিভেন না। ব্যবহারিক শীবনে দেবা যায় যে ছই ভাই সম্পত্তি পুথক করিলে আর ভোড়া লাগে মা। এক ভাই যদি চীংকার করিতে থাকেন যে অপর ভাইকে ঠেকার পড়িয়া আবার একারভুক্ত পরিবারে কিরিয়া আদিতে হইবে ভবে অপর ভাইরের কেদ চড়িয়া যায় পুরক ব্যবস্থাটাকে কারেনি क्रिवाद। जाद नद नावादनजः (पना याद कृष्टे कारे अहक অভকে চিষ্ট কাটভেছেন, মামলা-মোক্ষ্মা ক্রিয়া চুই অনেই সর্বাপ্ত খইতেছেন আর পেট ভরাইতেছেন উকীল-ব্যারি-ষ্টারের। ভারতবর্ষ ও পাকিছানের মধ্যে যে বাঁটোরার। ब्रेन, वेशांत क्लाक्न कार्याक्क निवय गानित्य मा; इवे कर्य पूर्व-नाष्ट्रिष्ठ वाकिरव, अवन चाना चरनरकरे एवछ करवन। चाववा बच्छा चानावामी महिः

লেইজত ৰৰে করি বে মূললিয় লীগ কাউজিলেয় প্রভাবে

ভিছুই মীনাংসা হর মাই। পুৰগর ত হওবা গেল ঘটা कविदा। अरे छैरनत्वर (क्रंद चांद्रश्र चांत्रम किम চनित्य। কাৰণ দেড় কোট হিন্দু-শিৰ পাকিছান হইতে চলিয়া আসিতে পারে এবং ভারতবর্ষে মৃতন জীবন গভিয়া ভূলিতে পারে। কিছ লাভে ভিন কোট মুগলমান ভারতবর্ষে বর্তমানে আছে। ভাছাদের মধ্যে অনেকেই हिन्दू-মুগলমান "ছুই-নেশ্যন" এই বুলি লইবা ৰাভাষাভি করিবাছে; এবনও মনে মনে হয়ত এই বুলি ভূপ করে। কিঙ খুসলিম লীগের দিঙান্ত অথবাধী ভাহারা ও ভারতবর্ষের নেপ্রনের মধ্যে স্থান পাইজে পাৰে ৰা, মাগৱিকের মহ্যালার দাবি করিতে পারে না ৰৰম পাকিছান ভাশনাল লীগে অমুসলমানদের কোন খান মাই। হয়ত বা ভারতবর্ষের বুসলমানগণ এই শীভিতে বিশাস হারাইয়া কেলিয়াছেন কিছ বিখাণ পরিবত্তন লোকে সহজে ও আল সময়ে করিতে পারে না, পরিবর্ডমের ভান করিতে পারে। मिः स्त्रम मरीप प्रवादकी ७ २३ ७ कान प्रिम रिम् प्राणशास "बक-त्यभाग", बहे मट्ड विश्वामी इहेश छेठित्वन ; किन्ह बहे সাৰমা সময়-সাপেক। ওও দিন ভারতবংকর মুসলমান কি ক্রিবে, ভাহার নির্দেশ মুসলিম দীগ কাউজিল দিভে পারে मारे।

পূর্ব্ব বাংলার একটি চিত্র

কেন্দ্রীয় সরকার একটি বিবৃতিতে বলিয়াছেন যে প্রায় ছুই
লক্ষ লোক পূর্ববিদ্ধ হুইতে চলিরা আলিরাছে। এই ছিসাব
দেখিরা মনে ছর যে সরকার বিচ্ছেদের প্রথম কর মাসের
কথাই বলিতেছেন। একটা ব্যাপার দেখিতেছি যে উক্ত প্রেমীর
ছিন্দুরাই এই ব্যাপারে পথ দেখাইরা বাইতেছেন। গাঙীঝার
কথার এই ব্যাপারেটা পরিভার ছইয়া উঠিয়াছে—"বদি পূর্বর
বাংলা হুইতে চলিরা আলাই ঠিক ছয়; তবে ভাঞার, উকীল,
ব্যবসায়ী প্রভৃতি উক্ত প্রেমীর হিন্দুদের ইছা দেখা কর্তব্য যে
সরিব হরিজনেরাও অভাভ লকলে বেন আগে আসিতে পারে।
উক্ত প্রেমীয়া বেন আগে না আসিরা সকলের পেথে ছাম
ভ্যাপ করে।" বর্তমানে বে ভাবে স্থানত্যাপ চলিতেছে ভাছার
কল ছিন্দু সমাজের পক্ষে কল্যাপকর ছইতে পারে না। এই
কথাটিই 'দেশবিষ্কা' নামক সাপ্তাছিক প্রিকার প্রকাশিত
ছুইবানি পরে বলা হুইয়াছে। এক্থানি পত্র আলিয়াছে
চুইঞার ছুইতে আর এক্থানি নারায়ণগঞ্জ ছুইতে।

"…বিশেষতঃ হিন্দুৱা নিজেদের অসহায় মনে করছে। প্রান্ধে প্রান্ধ ছেছে হিন্দুরা চলে বাজ্যে—কোন প্রকার ভরে নর ভরু বাঁচবার আশার। মুসলমানের মধ্যে 'পাকিস্থানে'র কোন উৎসাহ নাই—ভারা কিছুই অস্থতব করতে পারছে না। সকলের ভরু 'হার বোলা, কি হলো' এই ভাষ।…

"---गरन्गागतिर्ध-मत्म अरे नातना वस्तृत स्टब्स निरहास स्व गरन्गानिर्वित्तव है विस चार्त्य स्टब्स ना "পরে হউক চলে বেতে হবেই বা ধর্মান্তর এইণ করতে ভবে।···"

দামোদর উপত্যকা

ভারত গৰমেণ্ট প্রায় ৬০ কোট টাকা বায় করিয়া দাযোদর নদীর শ্রোভ নির্মন্ত করিবার পরিক্লমা এছণ করিয়াছিলেন। ভারতীয় আইন সভার এই পরিজ্ঞানা ও তংগছৰে সমন্ত ব্যবস্থা খাঁকুত হইয়াছে। এই পৱিকল্পমা বিহারের হাবারীবাগ অঞ্লের প্রায় লক্ষ লোককে ভিটে-ছাড়া করিবে। কিন্তু এই পরিকল্পনার কলে যে লক্ষাদীণ **डेइ/जित चाम। कदा राहेरजहर, जाए। इहेरम अहे अक मफ** লোকের ক্ষতিপূবণ হইছা যাইবে, কিন্তু এই পরিকল্লনায় বিশেষ উপকার হটবে পশ্চিম বঙ্গের বর্তমান জেলা ও ভংসংলগ্ন ছামের। বাঁকুড়া, মেদিনীপুরে এই ব্যবস্থার প্রভাব কভটা কাৰ্য্যক্ৰী হইবে, ভাছা এখন বলা কঠিন ৷ কাৰণ দামোদৱেৱ বঙার অলকে নিম্নপ্রিত কবিতে পারিলে পার্থবর্তী নদী-নালার উন্নতি হইবে, এবং অপেকারত অমুকার স্থানে দাযোদরেন পলিমাট কিছু কিছু বিভার লাভ কবিবে, এই ভরদা করা যাইতেছে। এই কাজের স্থাব্যা সম্পর্কে "সংগঠ্য" পত্রিকার व्यवस्थित मरबाधि व्यवानक कानगरमानाम वामित किछ (वर्षा-পাত করিয়াছেন,---

"বিভিন্ন বাল ও বাউনের (বর্জমান জ্বেলার কল নিয়ে য-ওয়ার ছোট মালাকে 'বাউন' বলে) মানফত, এবং বাঁকা, বেহুলা ও মুভেররা প্রভৃতি পুগুলার শাবং-দ্বীর সাহায্যে গালোদরের কল চালিতে বর্জমান ও পাথস্থ ক্রোভালতে কিছু কিছু পেচের কার্যা এবনই হইয়া বাকে। তাহা প্রায় এক লক্ষ্ পঁচিল হাজার একর বা ভিন লক্ষ্ পঁচান্তর হাজার বিধা ক্ষমিতে এই ভাবে চায়ের ব্যবহা আছে বলে সরকারের হস্তরে প্রকাল। দামোদর পরিক্রনাহ্যায়ী এ ক্ষমিন্ডাতে ভ বটেই। আরও পাঁচ-ছর গুল ক্ষমিতে সেচের প্রবর্তন হবে। সর্বস্থেত ভার পরিমাণ দাঁভাবে ৭,৬০,৮০০ একর (২২,১১,৪০০ বিধা)।…

আর একট কথা হয় ত বলা বাহলাই হবে। বধার অবসানেও, বীত ও এীথব্যাপী সেচের জল পাইয়া কমিতে সারা বছর ধরে আল্টা, তরকারিটা অথবা রবি-শক্ত হতে বাকবে।…"

ইবার উপর আহে, বিহাৎ-শক্তি উৎপাদনের কথা। পদ্ধী-থানের গৃহাদি বিহাতের আলোকে উদ্যাসিত হইবে, এ কল্পনা উদ্ধট বহ। বিহাতের শক্তিতে নাম। কলকারখানা চালিত হইবে; নামা শিলের প্রতিষ্ঠা হইবে; লোকের বেফার সমস্যা বিটীবার সভাবনা বেখা বিবে, পশ্চিম বহু আবার শস্ত-ভাষণ, খাহ্যোক্ষল হইবা উঠিবে। এ কল্পনা করিতেও পুধ। "কম্লি নেহি ছোড়্তা"—

आधारमत अस्म नमा देखा एव विक्रेण वासनी छक्रापत লীলাবেলা ভূলিয়া যাইতে, কিন্তু কান্দ্ৰীয় ব্যাপাৱে বিলাভের পৰিকাৰ্ডাল বেরণ "পাকিছানী" মধোভাব দেধাইয়াছে ভাছাভে व्यायात्वय भारताम एटेएक एटेएर । "क्रीव्यम" ७ "बार्क्काय পার্ছেন" পঞ্জিকা হুইবানি উৎকট সাত্রাক্যবাদী নয়। ভাষারাও वर्षन अधाव कविशास (य कांग्रीत ७ क्यूटक हुई कांत्र कविश দিলে আমাদের পক্ষেম্পল, তথ্য বুরিতে চ্ইবে যে প্রিত क्यारवनारमव अवर्ष किंद निक्षे बहेब्रम श्रकाय कानिशास । कांत्रीय गण्डित गाकिशास्त्र कारम, क्यू गण्डित कांत्रक्रवर्रव । बरे वावश्राय विकेत्नव भार्य कि क्रिक बना बाहरफरक मा। य বাশিবাকে ত্রিটেন এত ভয় করিয়া আসিভেছে ভাহার দাপটে পাকিছানকে কেলিয়া দিবার সাধকতা কি ? এক ছইতে পাৰে যে কান্সীৰ "পাকিস্থানে"ৰ হাতে গেলে শত্ৰুৱাক্য ছাৱা ভারতবর্ণ আর একটু বেশী বেটিত হুইরা পড়িবে। সে যাহাই ষ্টক, মি: ক্লেমেণ্ট এটলি পভিত ক্ৰাছৱলাল মেহকুকে নিম্ত্রীণ করিয়াছেন: ভাষার কারণের অভুসদান আমাদের করিতে হইবে। ১৯৪৬ সালের ভিসেম্বর মাসে পভাষে নিষয়ণ করিয়া লইয়া বিঃ এটলি কি খেলা খেলিয়াছিলেন ভাষা আমাধের ছলিলে চলিবে না। কান্সীর সম্পর্কে সেরণ কোন চালাকীর প্রশ্রম দেওয়া উচিত হইবে না এবং উচিত হইবে ।। এটেনের সঙ্গে কোন পরিশ্বলৈ আবদ হইতে, যাহার আকর্ষণে আমরা আছকাভিক মুরপাকের মধ্যে **१७७७ शांतः। अक्षे क्या त्यामा वार्टाण्डः य शांकिश्वान्** चांद्रचर्य, बक्कापन, मानव, शिश्यन महेवा देशदाक अकडी मधन श्री कविष्ण काथ। कारन जाना केरलार्शनिया, चाडेनियाय वाल क्टेंट्व। এই वार्यक्ष ब्रिटिन अवन क्टेंट्क्टे क्रिया কেলিভেছে। মিশর ও প্যালেপ্তাইন হইতে ভাহার রণসভার দে আফ্রিকার পূর্বাক্ষে সরাইয়া আনিতেছে। ভূমব্যসাগরের উপর প্রভুত্ব সে ছাভিয়া দিতেছে, পশ্চিম এশিয়া হইতে সে সবিত্রা আসিতেছে। বিশ্ব কইতে আক্সানিভান পর্যাভ ভূবতে যে প্রভাব-প্রতিপত্তি দে ভোগ করিতেছিল তাহা খ-ইচ্ছায় সে ছাড়ে শাই। এই মুদলিম দেশসমূহকে এবন লোভিয়েট রালিয়ার মন জোগাইয়া চলিতে হইবে। তবুও ब्रिट्डिन शांकिश्वात्मत मान्ना शांकित्क शांतिरक्रत्य मा अवर कार्यक মহাসাগরের উপকৃলে সে ভাছার বাঁট দুচতর ক্রিভেছে। আফ্রিকার পূর্বাঞ্চ হইতে সিংহলে ত্রিনকমেলি বন্দর পর্যাপ্ত ভাৰার নৌবহর পুঞ্জিটিভ রাধিবার ব্যবহা হইয়াছে। বলোপসাগরের আন্দানান খীপ ভারতবর্বের ছাতে ছাভিয়া ছিলেও সে সিকাপুর বন্ধরের বাঁটি পুরুচ রাবিভেছে। এই উভোগ কার ভোগে লাগিবে খানি না।

স্বাধীন ভারতে কারা-সংস্কার ন্বাদ্বা গাড়ী দিলী সেকুলি কেনে স্বশীদের দ্বত এক্দিন ভাৰার প্রার্থনা সভার অস্থ্রান করিরাছিলেন। খাণীন ভার-ভের কারাগার কিরুপ হওয়া উচিত তংসধন্দে গানীকী বলেন—

"ধীৰ্ঘদিন বল্লিৱা ভিনি এই অভিয়ত পোষৰ ভৰিৱা चानिएएएस य. नम्छ वानी चनवाबीएक वानी बनिवा अवर কারাগারসমূহকে ভাহাদের চিকিৎসাগার ও আরোগ্য নিকেতন বলিয়া ব্ভিতে ছইবে। সৰ ক্ত্তিয়া কেছই অপত্নাৰ करद मा । चनदार अञ्चर मरनद मचन । वित्तर काम दार्शद कांवन अञ्चलकाम कविया जाना प्रव कविएक स्टेटन। अटे অপরাধীদের কারাগারকে হাতপাতালে রূপাছরিত করিতে त्रिया बाक्यामारभव थरबाक्न क्वरव मा। कान सम्बद्ध बहे ব্যবস্থা করিতে পারে না, ভারভের মত দরিন্ত দেশের ক্থা ভ केर्टरे मा । किन्छ क्लान्त क्यां हातीरवृत बृहिकती श्रातिवर्धन क्तिए इटेरन, छारारम्ब मृष्टिकी इटेरन राजनाखारमञ् চিকিৎসকের মভ। লোকায়ত সরকার ভলিকে প্রয়োজনীয় আদেশভারী করিতে হইবে। কিছ নিভেদের শাসন-ব্যবস্থাকে পরিবর্ত্তন করিতে জেল কর্ত্তপক্ষকেও যথেষ্ট উভোগী হইতে क्टेरव । अवन वन्नीरमञ्ज कर्छदा कि γ श्राञ्जन वन्नी विभारव छिनि এই উপদেশ দিতে পারেন যে, ভাষাদের উচিত আদর্শ বন্দীর মত ব্যবহার করা। বন্দীদের বে অভিযোগই পাকুক না কেন, ঘণোপযুক্ত বহুণে তাছা ক্প্ৰপঞ্চের গোচয়ীভূত করিতে হইবে। বন্দীদের মধ্যে তাহাদিগকে আদর্শ নাগরিকের मण हमारमदा कविरण स्टेर्स । जारा स्टेरमटे मूक स्थवात সময় তাহারা অনেক ভাল হইরা সাধারণের মধ্যে কিরিয়া আলিতে পাছিবে।"

ভারতবর্ষের ভারত বহু সম্প্রার ভার কারা-সমস্যাত লোকলোচনের অন্তরাপে রহিরা সিরাছে। অনশনে ষতীন দান্তের আত্মদানের পূর্ব্ধ পর্যাত্ত কেলের নিয়মকান্ত্রম ছিল ভ্রানক কড়া। রাজনৈতিক বন্দীদের সাধারণ দালী আসামী-দের সন্দে রাখা হইত এবং একই প্রকার হুব্যবহার তাঁহাদের সহিত্ত করা হইত। সাধারণ কচেদী এবং রাজনদীদের মধ্যে কোন বৈষ্মা রাখা হইত না। কারাগারে রাজনৈতিক বন্দীদের প্রতি এইরপ ব্যবহারের কন্য ভারতবাসীর মনো ঘোগ আকর্ষণ করিয়া উহাকে সান্দোগনের বন্ধ করিয়া তুলেন লাহোর ষভ্যন্ত মানলার অভিযুক্ত ভগং সিং, রাজ্যুক্ত ভক্তদের এবং বতীন দাস। বতীন দাস শেষ পর্যাত্ত অমশনে আত্মধান করিয়া এবিষরে ভারতবাশী এমন আলোচন কৃত্তি করিতে সক্ষম হন যে শেষ পর্যাত্ত ভারত-সরকার রাজনৈতিক বন্দীদের ক্ষম কভক্তী প্রবিধা করিয়া দিতে বাধা হয়।

পশ্চিম বাংলার উন্নয়ন ব্যবস্থা

পশ্চিম বন্ধের মন্ত্রীমঙলী সংবাদপত্র মারকত প্রচার করিয়া-ছেন বে তাঁহারা আর কালবিলয় না করিয়া এই প্রদেশের লক্ষালীণ উন্নতিকর কার্যাপছতি অবলয়ন করিবেন এবং এই উদ্বেশ্য বিভিন্ন বিভাগে নানাপ্রকার পরিক্ষানা (scheme) বিবেচনা করা ছইভেছে এবং একবিকবার ডাঃ বোষ ও তাঁহার সহক্রিনাণ উচ্চকঠে বোষণা করিরাছেন বে দেশের দরিস্ক জননাবারবের জন্মবারের জভাব চ্রীকরণ এবং খাছ্য ও শিকার ব্যবহা করিবার জন্য চেঠার ফ্রান্ট ছইবে না। জানাদের জানিতে ইছা করে যে, বে সকল উন্নতিকর ব্যবহার পরিক্রনা বাংলার মন্থিনণ বিবেচনা করিরাছেন বা করিভেছেন তাহাদের কি প্রকারে উত্তব হবল। উত্তরাধিকারছ্ত্রে বর্তমান মন্ত্রীমওলী এই প্রদেশে নির্ক্ত জানলাতপ্রের জংশ এবং কিছু নদীপত্র লীগ সরকারের নিকট হবতে পাইরাছিলেন। উন্নয়েমর পরিক্রনাঞ্চিও সেই সঙ্গে পাইয়াছেন, না তাহাদের নিজের জানতে প্রভ্ত হুইরাছে, জানিবার কোন উপার নাই।

লীগমন্ত্রীয়ঞ্জীর ও তৎকালীন কর্মচারিগবের কার্য্যতৎপরতার যে নমুনা আনরা দেবিয়াছি তাহার কলে তাহাদের
পরিক্রিত কোন ব্যবস্থার উপরে আনরা আস্থা স্থাপন করিতে
পারি না। কৃষি, শিক্ষা, শিল্প, স্বাস্থ্য ইত্যাদি জনহিতক্র
কার্যে তাহাদের কোন উৎসাহের পরিচয়্ন পাই নাই। সেই
আমলে "অবিক শশু ফলাও" আন্দোলন ব্যবতার সীমা
অতিক্রম করিয়া প্রহ্মন্দে পরিণত হুইয়াছিল। সরকারী
ব্যবহার হারা জনসাধারণের অভাব মোচন হইবে কিনা এই
চিন্তা তাহাদের ছিল না, কেবল কি শ্রেমীর পরিক্রনায় অবিক্
সংখ্যক কর্মচারী নিমুক্ত করা এবং কন্ট্রান্ট বিলি করিয়া আন্থীয়
ও আপ্রিভবর্গ প্রতিপালিত করা হুইবে তাহাই একমাত্র কল্যা
ছিল।

এই বিষয়ে অবিক আপোচনা করিয়া পাত নাই। কিছ
বর্তমানে যে মন্ত্রীমন্তনীর উপরে বাংগার রাষ্ট্র পরিচালনার
ভার ন্যন্ত আছে, উাহাদের নিকট আমরা নিশ্চিত প্রত্যালা
করিব যে, প্রত্যেক জেলার প্রতিনিবিদ্যানীয় চিন্তালিল ব্যক্তিগণের সহিত পরামর্শ করিয়া জনসাবারণের প্রয়োজন ও
কল্যাণের কৃষ্টিপাবরে বিচার করিয়া ধেন তাহার। কাহ্যপদ্ধতি
ভিত্র করেন।

লীগ আখলে ১৯৪৪.৪৫ সালে 'উন্নয়ন বিভাগ' ।Deterlopment Department) নাম দিয়া অকথাৰ একট ভূঁইক্ৰেড় বিভাগ গ্ৰাইয়া উটিয়াছিল, এবং সেই বিভাগের ভোট
বছ কৰ্মচারী পদপালের মত সমস্ত দেশ ছাইয়া ফেলিয়াছিল ।
ভাগার ধারা বাংলার কোনও অঞ্চলে যে কোনও উন্নতিকর
কাণ্য সম্পন্ন হইয়াছিল ভাগা আমরা আত নাঁছ। পরে
বোল্যাওগ্ কমিটর পরান্দ অস্থ্যারে এট বিভাগের বিলোপ
লাবন হর এবং প্রবান মন্ত্রীর ভত্তাববানে সরকারী দত্তরবানার
একট উন্নয়ন বিভাগ পঠিত হইল। রোল্যাওল্ কমিটির নির্দেশ
অন্নারে জ্লোর যাবতীয় উন্নয়ন কার্ব্যের ভার জ্লোর ম্যাজিটেটের উপার অপিত হইরাছিল এবং ভাগাকে খানীর অব্যাধ
বিব্যরে অবহিত ক্রিবার কন্য জেলার ক্লোর প্রামণ্ড স্টেড হইলাছিল।

তি কোর সম্ভাসমূহ কি প্রকারে মীনাংলা করা যাইতে পারে ভদ্বিষয়ে অবিবাসিগণের মতামত কর্তুপক্ষের গোচনীতৃত করিবার জন্য বাঁমুড়া জেলার একট বে-লরকারী
'জেলা উন্নরন সমিতি' গঠিত হইয়াছে। বাংলার মন্ত্রী
বাঁহুড়াবাসী প্রীযুক্ত কমলফুক রার মহালার ইহার পূঠপোষক এবং প্রীমিকেডমের প্রাক্তন কর্মী প্রীসুক্মার চটোপাব্যার ইহার সভাপতি। জেলার যে সকল লোক বহকাল ব্রিয়া দেশসেবার আত্মনিরোল করিয়াছেন এবং
জেলার অবস্থার সহিত বাঁহাদের সাজাং ও ঘনিষ্ঠ পরিচর
আছে তাঁহাদের জনেকেই ইহার সভা। কুমি, সম্বার ইত্যাধি
বিভাগের সরকারী কর্মচানিগ্রক্তেও স্বিভিন্ন অভ্যুক্ত করা
হইরাছে।

আলোচনা ও পরিকল্পনার সৌক্যাব নিম্লিবিত বিষয়-সমূহের জন্য সাভট উপশাবা গটিত ক্ইয়াছে—

(ক) কৃষি, (ব) সেচ, (গ) বন্ধকণ ও ভূমিলংককণ (anti-erosion), (ব) কৃষি সংশ্লিষ্ট ব্যবসায়, (ভ) গৃহশিল্প, (চ) সাহা, (ছ) সম্বায়।

দেশের শুরুতর সম্বাসমূদ্বে সমাবানের জন্য মন্ত্রীমন্ত্রীকে সাহায্য করিবার এবং খানীর অবস্থার উপথের্গর
পরিকল্পনা প্রশুত করিবার উদ্দেশ্তে বাঁকুড়া ক্রেলার নির্দ্ধন করি এবং ইন্থন
ব্যবস্থা করিয়াছেন ভাষা আমরা সমর্থন করি এবং ইন্থন
সম্বিতির প্রচেষ্টার সম্পাত্তা কামনা করি । কিছু কেবল উপর
হইতে সরকারী চেষ্টার কোনও খারী ও কলপ্রম উর্দ্ধিত সাবিত
হইতে পারে না—সে সরকার খন্দেশীই হউক বা বিদেশিত
হউকে । পেইক্র বাঁকুড়া উন্নয়ন সমিতি ক্লোর মধ্যে এই
সক্স বিষয়ে প্রচার কার্যা ও জনমত স্ঠনের জন্মও ব্যবস্থা
করিবেন । জনসাধারণের মধ্যে এই সক্স প্রয়োজনীয় বিষয়ে
কর্ম প্রসাবের ক্ল সমিতি একটি সাপ্তাহ্নিক প্রচারশন্ত প্রকাশ
করিতে মন্য ক্রিয়াছেন।

বাংলা ও আসাম ব্রাক্ষ-সন্মিলনী

বাংসা ও আলাম রাজ সন্মিলনীর ৫৬তম বার্থিক অবিবেশন বিগত ২৫শে হইতে ২৮লে অক্টোবর পর্যন্ত মেদিনীপুর জেলার অভগত কাবি সহরে ক্লমন্সর হইয়াছে।

২০শে অক্টোবর সভ্যার সাধারণ রাজ স্থাকের সন্পাধক তাঃ ধ্বেপ্রসাদ মিত্র প্রার্থিক উপাসনা করেম। তংপরে অভ্যধনা-সমিভির সভাপতি জীর্ভ বর্ষীবর দিলা তাঁহার স্থাবিত অভিভাবন পাঠ করেম। অভ্যাসত অভিবিশ্বন্দক সাধর সভাবন আপম করেম। অভ্যাসর সন্মিসনীর সভাপতি ভাঃ সরোভ্রমার ধাস তাঁহার তথ্যপূর্ণ অভিভাবনট পাঠ করেম। ভাঃ ধাস বলেম:

এই কাৰি শংবট---ব্যাৰ্থকে পদ্ধীশংবট---আয়তন বিসাবে কৃত্ৰ হইলেও অব্যাথসম্পাদে ও ঐতিহ্নোরবে মেদিনী- পুর কেলার হুংপদ্বস্থাপ । কাঁথির পথ বে কঠোপনিষদ গ্রোভ ৰৰ্ষের পৰ, সে বিষয়ে প্রবেশিকা পরীক্ষাপর্ব প্রাথমিক আমলাভ করিয়া আমহা এখানে আভিব্য এছন করিয়াছি। কিছ পরের **(मध्य क्षर्यमहादार्वे महरवद (भाष्ट्रपुळ, चानारमब छैपरामक्रिडे** যম ও আলা, পল্লীয়াভার স্নেছ স্থানিবিছ ভাষলাঞ্চ স্পর্নে বেন नरकीयम नाक कतिन। (य छेनात, छेनुक बाकारन पूर्यानिय ভঞ্জির পূজাঞ্জির মত নিত্যই প্রতিভাত হয় এবং যে নীরব সোমা গভীর আকালে ভুগাভ ভভের প্রণামের মতই অব-নমিত হয়, ষেৰানে দিগন্ত প্ৰসাৱিতা ব্বিত্ৰী পৰ্যও পাকাশের সহিত মিলিত হইৱা 'ছাবা পুৰিবী'—'ছোঃ পিভা, মহী মাভা' चाहि चनककमनीरक चार्चान त्वत्र, त्रवास वर्षकीयसव छैरती-ভূত অনভের বোৰ এত সহজ সরল ও সুখ্য, ভাষা বেন এই প্রথম প্রভাকজানে পাইলাম: ঐতিহাসিক পরিবেশও এই প্রাকৃতিক প্রিক্তির অবরপ। ইতিহাসপ্রসিদি আহে বে, ইটার দশন শতানীর শেষভাগে কিংবা একাদশ শতানীর ल्यमणात्त्र शक्तिम बर्द्यम् वहे विचार्य वोष्टर्यस्य अकान "বর্গ্ন লামে প্রচলিত ছিল। মরনাগড় ও ভরিকটবর্তী चार्यक द्वारम अवस्थ अहे "वर्ष्युकाव" अहमन चार्ट अरर जक्षकं तक्ष-शांहिरका "वर्षा वक्षण" नावक धरष्टद **जा**विकीय। বস্তুতঃ বৌশ্বমতের এই শ্বপান্তর ব্যতীত মেদিনীপুর কেলার খোগণছ নিৱশ্বন মত প্ৰভৃতি বিবিধ মতবাদ ও পূজাণছতি এবং भक्षिया बाहिन, वाहेन, प्रयुक्त मन्त्रपारिय भूकार्कमा । यज-ৰাদ প্ৰচলিত দেখা যায়। বিশেষতঃ উত্তরের আগা সভাতা ও দক্ষিণের জাবিভ সভ্যতঃ মিলিত হইয়া ষেদিনীপুর কেলায় দ্বিভাগ প্রবাগ ভার রচনা করিয়াছে এবং মেদিনীপুর কেলা वह विन भश्रेश्व क्षत्रश्रावशास्त्रत वादभव बाकात आदीमकत. बाबाइक बाबानम क्योब नानक टेड्ड बसाबजू बाइडि भक्तमात्र श्रवक्षक महाभूक्षयमित्रव हत्रमण्यत्न महीवान हरेबाटह । मर्वात्य देखन कति मन्ति (मरवसमान श्रेक्रतत मन्क्यी । সহবর্ষী সভা, শিব ও ফুলবের পূজারী শিবচন্দ্র দেব ও বাজ-भावास्य वश्व वर्षमायना ७ बटकाशामनातः विवस्यदारवर 'আলু-নিকা'ও 'ঐকভানবিশিই মন' সম্পর্কিত সাবনা এবং ভাবভক্তিপ্ৰবণ্চিত বাজনাবায়ণ বস্থৱ 'বশন্ত-কৃত্তন' ও গোপ-পিরিভে বসভকালে ব্রন্ধোপাসনা (এইাক ১৮৬০-১৮৬৫ পর্ব্যন্ত) व्यक्तिनेशृद्वतः जावाज्ञिक अन्तरतत्र ज्ञान्य निवर्णन । वर्ष সাৰ্যায় দিক ছইতে এই জেলাট যেখন মহাপুরুষ্থিগের পুণ্য-লাৰ লাভে লোভাগ্যবান ছিল, ভেমনই বৰ্ম ও কৰ্ডব্যনিঠার क्या देशांक मामाविव इ: गर इ:व इर्गिक मास्या मिन्द्रक्य সভিতে হইয়াছে। এপ্ৰীয় বোড়শ শভাষীর সধ্য দশকে ইভিহাসবিশ্রুত কালাপাহাড়ের লমর হইতে আরভ করিয়া विश्न मकाकोस शक्य मनक नर्ग्य इःव इनिक शोमःनुनिक বশ্বিকের মন্ত বারংবার এই বেদিনীপুর কেলার উপর আবাত করিয়াছে। "বেহিনী"র একট প্রতিশব্দ "গর্ঝংসহা" কেন

হুইয়াছে ইহাই বোৰ হয় একট ইণিছ। হুংখের খোনাবিপ্ত এই প্রদেশ বিশেষতঃ কাঁথি, বচ হুইয়াছে বর্তমান অগতের সর্প-শ্রেট মানবের চয়ণয়েগু স্পর্ণে, বিনি এই হুংখের তপভার কর লাভ ক্রিয়া-বিবাভার সাবর্গ লাভ ক্রিয়াহেন।

জার্মানীর ভবিষ্যৎ

बुक्कबाहे. (माण्टिके बाहे. बिटेंग ७ क्वांत्मव चार्ड्याण्टिक विकारभव कावलाल महिन्य मध्य समग्री एक काक दिन पिन स्टेन আলোচনা আরম্ভ করিয়াছেন কাপ্তামীর ভবিষাং প্রিত্ত করিবার का । बाहार वर्नत-- ১৯৪৫ সালে । बान स्टेट बाक नर्शक --- अहे विवय गरेवा चानक होना-(वैंडका क्रेन, किब क्यान बीबारमा इटेक्टिक् माः १७ अधिम मारम भरका मनबीटक इफ्:मिक्कित भवामर्ग ज्ञान एक कविता मि: मोर्गाम, मानाहेण, বেভিন ও বিবৌলভ সমর কাটাইলেন কিছ কোন হির সিদ্ধান্তে গৌছিতে পারিলেন না। কেন পারিলেন না ভাছার ভারণ সহত্তে অনেক কথা ভনিতে পাওরা যার। কিছ গোড়ার কৰা এক - যুক্তবাষ্ট্র ও ত্রিটেন যে ভাবে ভার্বানীয় ভবিষাং নির্দারণ করিতে চান, লোভিষেট রাষ্ট্রের ভাষাতে ধ্যুত্র আপত্তি আছে, যদিও উভর পক্ষ কার্যানীর উন্নতির का देगजीव विभाव काठांव करवेन । कांबीमी क्षेत्र वरणव मूक করিবা প্রমাণ করিবাছে ভাষার শক্তি কত বছ। একা সে হুত ক্রিয়াতে ইউরোপ-আমেরিকার সমবেত শক্তির বিরুতে। **बहे म**क्कियतरक हर्यन कवित्रा वाबिएक स्टेटन-- अ विश्वत মভজেদ নাই। ভাগানীর নিকট ভ্ইতে ভভিপুরণ আদার कतिए इटेरन-- अटे विषक्ष मण्डम माहे, यनि पण-পুরণের ভাগ-বাঁটোরালা সইছা ভর্কের অভ নাই। ভাতিপুরণ विट्यू इदेश कार्याभीत निब-वानिकात क्षत्रांत क्षरांकम । काचीनो यादा छैरभागन अविटव छाहा इटेट्छ (शरभंद वारावस ষিটাইয়া উচ্ ভ থাকিলে তবেই ভাষা সভব। কভিপুরবের ক্স উহ ক উৎপাধন করিতে গেলে যে শিল-কৌশলের প্রয়োজন ভাৰাতে উৎসাহ দিতে বুক্তবাপ্ল, সোভিবেট বাব্ৰ প্ৰভৃতি আনিজ্ক: কারণ কার্দ্রানীর উদ্ভাবনী শক্তির পরিচয় তাঁছারা পাইয়াছেন এবং সেই শক্তির পুনরভাগাবে ভাহাদের এবন একটা ভাতি দেবা দিয়াছে যে কাৰ্ম্মানীতে সমস্ত কৰ্ম-প্ৰচেষ্টা ব্যাহত হইয়া আছে। ভাৰ্মানীয় কলকারবানা ভাষায়া ভাষিয়া क्लिएलट्ड व। क्लिश्वरवद बाद्य विरम्प जानान विरल्टंड : ভার্নানীর শিল্পীরুল ও বৈজ্ঞানিক্ষিপকে প্রলোভন দেশাইরা লইয়া যাইতেছে। এই অবস্থায় ভার্মানীর উৎপাদন বাভাইয়া. উহত পিলসভার ও কুবিভাত ক্রব্যের উৎপাদন বৃদ্ধি করিলা. ক্তিপুরণ আদার যে কি করিয়া ভাহারা করিবে ভাহা এবলৰ ভিত্ৰ হয় নাই।

আবার বর্তমান বুবে শিল-বাণিকা ও রাই-ব্যবহার বে কেন্দ্রীর শক্তির প্রবোজন আর্থানীতে ভাষা পুন:-প্রতিঠা করিতে কেন্দ্র ইচ্চুক নর। কাইকার উইলিরম ও বিট্টলারের সময়ে এরণ শক্তির পরিচর ভাষারা পাই-যাহে: সাত কোট জার্দ্রানকে এক উথেতে, এক সংস্য প্রশোদিত করিয়া কি ভাবে তাহা জিল বংগরের মধ্যে ছইট বিশ্ব-সংগ্রামের আয়োজন করিরাছিল, ভাষার অংশলীপার हिस् चाक्थि रेडेरवार्शव बुरक् स्थल स्वर्त स्वर्त स्वर्ते प्रदेश ব্ৰবিয়াছে। ১৯৪৫ সালের যে মাসে বালিনের পটসভাষ পদ্মীতে যুক্তবাষ্ট্ৰ গোভিষেট বাষ্ট্ৰ ও বিটেনের প্রবানদের মধ্যে যে চুক্তি হয়, ভাহাতে এই বীকৃতিটা ছিল যে কাৰ্মানীর व्यवभीष्ठिक श्रीष्ठिम वा कार्रात्मा वकान वाबिए इटेरव। বিশ্বদ্ধী রাষ্ট্রপ্রলি ইছা করিতে পারে নাই। সোভিয়েট চলিয়াছে ভাষার সমাজভান্তিক প্রেরণা লইয়া: আর্থানীর शुक्रीकरण (म ममछ वावशास अमहेभागहे कविया निस्करभव প্ৰিৰামত গভিষা ভূলিয়া কেলিয়াছে। যুক্তয়াষ্ট্ৰ, ত্ৰিটেন ও ফ্ৰান্ত णाशास्त्र विश्वान-मरण वाक्क-णाहिक वावष्टात ठाँके वसाय वार्ष-बाब क्रिकें कविरक्षक । अवैवारमंत्रे विरश्नाय अवर अवे विरश्नाय नक्ष क्रमादिक प्रमाशीम इट्डिए मा. एयम गठ अधिन मारण, मरका कमकारकरक एक नावे अवर यक मिन अवे বিয়োবের শান্তি না হইবে, ভত দিন ইউরোপে কোন গঠনমুলক উट्ड जरून प्रेट मा: मानीन कल्लमानुवादी मार्किम দেশের টাকা ইউরোপের পুনর্গঠনের কচ নানাভাবে আসিভে পারে। কিছ ইউরোপ ও আছ এক ভাবের ভাবক নয়। ৰাষ্ট-ভন্ত ও নৰাজ-ভন্ত এই ছই মভেত্ৰ বিবোধের মধ্যে পড়িয়া কেই বার্ছিনের এই সাহায্য স্বাভাবিকভাবে প্রহণ করিতে পারিতেছে মা। ইছাই গোডার কবা। প্রথম বিশ্বর্থের পর ত্রিটের ও ক্রানের মধ্যে একটা প্রভিযোগিতা চলিয়াছিল। ভাশানী ভাষার প্রবাগ এবন করিয়া পরাভ্যের প্রানির যাভ হইতে বুজিলাভ করিয়াছিল হিটালারের নেড্রে। সেই ইভিছাসের পুনরভিনর যে হইবে না ভাষা কেহ নিক্ষয় ক্রিয়া বলিতে পারে না। প্রতিপক্ষ ছুই দেশের নাম বললাইরাছে মাজ। আজ মুক্তরাই ও সোভিবেট রাষ্ট্রের মধ্যে প্ৰভিষোগিতা চলিতেছে।

ফিলিস্তিন

ইউরোপের এই ভাষাভোলের মধ্যে ত্রথাসাগরের উপক্লে কিলিভিন লইবা একটা জটলভার স্কট হইতেরে। গত পঁচিল বংসর ব্রিটেন এই বেলের উপর কর্ড্ছ করিভেছিল জাভি সজের (League of Nations) পক্ষ হইতে ব্যাভেট নামে এক অতুত ব্যবহার কল্যাবে। এই ব্যবহার কিলিভিনবাসী আরবেরা স্থী হইতে পারে নাই। ভাহারা অধিকাংশই মুসল্নাম, ভাহারের বেলের উপর ব্রিটেন একটা মুভন রাষ্ট্রের গোভা-পভন করিল ইহবিছান" নাম হিয়া—ক্লাভে "Jewish Home" নামে এই প্রভিয়া আনিরা ক্তিরা বলা" ব্যবহাকে সম্ব ভ্রিতে পারিল না, ব্যিও চুই হাজার বংসর পুর্বেই ইছনিদের

পূৰ্বপুত্ৰবেৱাই এই ভূষিৰভেত্ৰ অধিবাসী ও অধিপতি ছিল। ভাগের ভাভনার ভালারা নানাছেলে ভভাইরা পভিযা-ভিল। অভবা অভাচার সভ ভরিরাও ভাষারা ভাষাবের প্রাচীন ক্রভূষির শ্বভি আঁকড়াইরা ধরিরা ছিল: এই ক্র-ভমিতে তাহারা কিরিয়া আসিবে এই আশা হুই হাজার বংগরের মধ্যে একদিনও ভাষারা ছাভিতে পারে নাই। প্রথম বিশ্বসংগ্রামের সময় ভালারা ব্রিটেন্ডে শালায়া ভবিরাছিল। উইজ্যান নাৰক একজন বৈজানিক এই সময়ে একট আবিভার ছারা ত্রিটেনের একটা আসম অভাব মিটাইতে সাহায্য করেন। কুতজতার মৃগারপ্রপ তিনি কিলিভিনে "ইছদিভান" त्रक्रेय कविवाद प्रविकाद प्रावि कविम । ১৯১৭ সালে विक्रिय क्रेड अधिकात श्रीकात कांद्रश नव । जबन किमिस्टिन वेस्पित भरबा क्षिम खानी-मन्दरे संबाद मात ! मेठ पॅहिन दरमदि जास বাভিয়াছে হয় শক্ষে। কিলিভিনের মঞ্চুমিতে ভাহারা বহ শস্ত-কামল কৃষি-কেন্দ্র ছাপিত করিয়াছে, ছুই হাজার বংসরের মৰো আরবেরা যাভা করিতে পারে নাই। এই কার্গের হারা ভাছারা নতন করিয়া প্রতিষ্ঠিত করিয়াছে নিজেমের অবিকার ভাষাদের বর্দ্ধের পুণ্যভূষিতে। আরক মুখলমানেরা এই অবিকার মানিয়া সইতে চাম না ৷ ভাহারা এই অবিকার ঠেকাইমা রাখিবার জন রঙ করিতে প্রস্তুত হইতেছে ৷ চড়ঙিকের আরব রাষ্ট্র হইতে ভাহার! সাহায়৷ পাইবার দাবি রাবে, সেই সাহায্যের আহ্যোভন আরও হইয়া গিরাছে। সুসলমান ইত্তি উভয়েই রণসজ্জার মাতিয়া বিয়াছে। সন্মিলিত ভাতিপুত্র প্রতি-ঠানের (United Nations Organization) বাবে ভাষার দায়িত অৰ্পণ করিয়া ত্রিটেম তাহার শাসন-বাবসা শুটাইতে আরম্ভ করিয়াছে। ভূষব্যদাগরের পূর্বা উপকূলে একটা যুগ পরিবর্তনের খচনা হইভেছে। "বেলাকং" আন্দোলনের পরিণতির কথা খরণ থাকিলে আহরা এই আহ্বানে সাভা বিভে পারি না।

আচার্য্য যোগেশচন্দ্র রায়

আচার্য্য বোগেশচন্দ্র রারের উননবভিতম ক্বভিধি উপলক্ষে বদীর সাহিত্য-পরিবদ এক সম্বর্জনা সভার আরোজন করেন। বীকুলা শহরে এই অস্থ্রীন সন্দার হয়। আচার্য্য বহুনার সরকার এই অস্থ্রীনে পৌরোহিত্য করেন। বানপ্রে বলা হয়—

"আপনার সুদীর্থ কর্মার জীবনের অধিকাংশকাল কঠোর আন-সাধনার অভিবাহিত করিরা আপনি যে গৌরবনার আদর্শ ছাপন করিরাছেন, ভাষা চিরদিন আবাদের অন্তক্ষণীর হইয়া বাকিবে; আনীর্কাদ করুন, নে আধর্শে আমরা বেন অন্ত্রাণিত হইতে পারি।

"আগনার ববিত্ন্য গরল জীবনবালা, শিক্ষারানে একনিঠ তংগরতা, ছানীর সর্কবিধ জনহিতক্তর কার্ব্যে পথ প্রধর্ণন আগনার প্রধান কর্মক্তের উচ্চিতা প্রবেশে চির্ম্বর্থীয় ক্ষরাছে; আগনি নেবানে বছ বছরের ভক্তির विगीए चान श्रिष्ठिछ । चानमात्र यहन्यनानी वाहानीटक ৰাভভাষার ছত্ত্বহ বিজ্ঞান বিষয়ে শিক্ষা দিবার শ্বন্ধ আপনার প্ৰথম কীৰ্মের একক সাধ্নাত্র কথা আৰু আহ্বা কৃতঞ্জ-চিতে শরণ করিভেছি। আপনার অক্লাছ লেখনী দীর্বকাল ধরিয়া কভ বিভিন্ন ক্ষেত্রে দেশবাসীদের শিক্ষিত, উচ্চত ও সভৰ্ক করিয়াছে এবং ভবিশ্বতেও করিতে পাকিবে। বিজ্ঞানকে সাহিত্যের জারারে পরিবেশন করিয়া জাপনি ভাৰপ্ৰৰৰ বাভাগী ভাতিকে নূতন পৰে উদ্বন্ধ করিয়াছেন। রসায়ন, পদার্থ বিজ্ঞান, জ্যোতিবিজ্ঞান, উল্লেখ বিজ্ঞান श्रमणि विकादनत विविध विकादन वहारिय भरवशन। कतिहा আপ্ৰি হাতভাষাৰ ভাষা লিপিবৰ কবিষাকেন ভাষাত্ত ইভিহাপ ও সমাত্রভারে নিবুঁত সতাওলি আপনার অপুর্বা প্রতিভাবলে বদ সাহিতে।র সম্পদ হইয়া উঠিয়াছে। আপনি বল-ভাষার মধ্য দিয়া আমাধের জাতীয় জীবনে ভাজৰীয়ার। প্রবাহিত করিয়াছেন। আপনার এই অধ্যক্তীতি খুৱৰ কবিয়া আখুৱা আপনাকে আভনন্দিত করিতে আসিয়াছি।"

এই যালপানের উত্তরে আচার্যা যোগেশচক্র তাঁহার জীবন-বাাপা সাধনার কথা বর্ণনা করেন । বলীর সাহিত্য-পরিষদের ক্ষম্বত্তাল্পের সঙ্গে তাহা সংস্কৃত । ১৯০১ সালে ইহার প্রতিষ্ঠা হর ,১৯০২ সালে যোগেশচক্র তাহার সদস্য নির্বাচিত হন । ১৯০৮ সালে রবীজনার বাংলা ভাষার ক্রিয়াপদ সংগ্রহ আরস্ত করেম ; পরিষদের সহকারী সম্পাদক ব্যোলকেশ মুস্তকী যোগেশচক্রকে অন্তরোর করেন 'বাকী বাদ যে সব শব্দ আছে ভাহা যোগ করে দিতে।" এইখাবে আরম্ভ হল ভাষাভত্তের আলোচনার স্বাহনা। বাংলার বর্ণনালার মুক্তাক্রর সমস্তা সহজ করিতে না পারিলে অন্য ভাষাভাষী লোকের পক্ষে বাংলা ভাষা শিক্ষা করিন হইতেছে। এই বাবা দূর করিতে হবৈ । "অক্সর-সংখ্যার" আরম্ভ হল। তাঁহার নিজের কর্ণার এই অবরার বর্ণনা দিতেছি—

বাংলা কটিন করেছে এর র্ভাকর। র্ভাকর নিখতে
নিখতে নিগুর প্রাণ বেরিরে বার। বিভালারর বহাশরের
প্রথম তার, বিতীর তার দেখলে তর হ'ত। অক্ষর
পরিবর্তন করতে না পারলে এক সহক তারা বলা বার
না। তাবলার, অত প্রদেশের লোক বাতে বাংলা তারা
সহকে নিখতে পারে একতে অক্ষর ও বানান সহক করতে
হবে। "অক্ষর-সংস্কার" নিখতে লাগলাম। অনেক
লোক আমার উপর বিরক্ত হলেন। বললেন কোথাকার
কে এক উভিয়া এলেছে। তারলপুর সাহিত্য সম্মেলনে
ললিতকুমার বন্দ্যোপাব্যার "বর্ণবালার অভিবোর" নারে
এক প্রবদ্ধে আমার পুর স্বালোচনা করেন। সম্মেলনে
বহু প্রোভার স্বার্গম হর। তারা ভবে হাসতে লাগল।
ভরতীন বহর করা বতর। তিনি আমাকে বিভালা

করলেন, 'আপনি कि বাংলা বানান বদলাতে চান ?' আনি বললান, না, 'বানান নয়, অকর।' এ ক্বাটা বোঝাতে আনার ২৪ বংসর লেগেছে।

ভারণর আরও হটল বাংলা ভাষার বৈজ্ঞানিক তথ্যাবলীর প্রচার। নিজের কর্ম্ম-জীবনের অভিজ্ঞতা হইতে ভিনি ব্রিয়াধেন ও ব্রাইতে চেপ্তা ক্রিয়াধেন থে ইলা সম্ভব। লেই অভিজ্ঞতা অর্জন করেন ভিনি কটক মেডিক্যাল স্থলে।

বোগেশচকের বঞ্জার যে বিবরণ সংবাদপত্তে প্রকাশিত হুইরাছে জাছা অসম্পূর্ব। উাহার সাহিত্যিক জীবনের পরিচয় সহছে তিনি আরও অনেক কবা বলিয়াছিলেন। এই উপলক্ষেরামানক্ষ চটোপাঞ্চার কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত নামা পত্রিকার সংশ্ তাহার ধনিই সহছের কবা বর্ণনা করিয়াছিলেন। "প্রদীপ", "প্রবাদী"র পৃষ্ঠার ভাষার মিদশন আছে। ৫০ বংসর পূর্বে যে পরিচরের ক্ষমপাত হয়, আঞ্চ ভাহা অটুট আছে। তাহার মিকট আমাদের গণ অপরিশোধনীর: বাঙালী ভাতি এই জাম-যোগীর নিকট যে কভ গণী ভাহার সম্যক্ষ বারণা আজ আমরা হরত করিতে পারিব না। কিছু বাংলা ভাষা আজ যে পূতন জীবনের বিক্স-ভেরী হইরা উঠিছাছে, ভাহার শন্ধ-সম্পদ্ধ যোগেশচক্ষের সাধনাল্ড।

<u> ত্রেন্দ্রনাথ বন্দ্রোপাধাায়</u>

ভরেজনাথের কথ-শতবাহিকী উংলব আরস্ত হটারাছে। আরু একুল বংলর তিনি দেহত্যাগ করিবাছেন। তাঁর কীর্তিকথা দেশের লোকে তুলিছা যাইতেছে। শতবাহিকী উংলব উপলক্ষে যদি তাহা আনাদের স্থতিপটে কুটাইবা ভূলিতে পারা যায়, তবে দেশের কলাপে ফটবে। শিত্যাত খণের মত প্রজ্ঞেনাশ সহছে আয়াদের একটা বাজিছ আছে। শতবাহিকী উংলব সভার সভাশভিরণে উচক্রবর্তী রাজা-গোলালারিয়ার গভ ১৩ই ভিলেখন এই খণের প্রকৃতি লবছে নিয়লিবিত কথাগুলি বলেন:

ভারতে জাতীয়তার প্রথম প্রভাত স্বরেজনাথের মধ্য বিরা বৃষ্ঠ ও প্রতিফলিত হটরাছিল। কি বর্ণ্ধ, কি সমাজনীজি, কি রাজনীতি, প্রত্যেকট কেন্দ্রে বাংলা বহু বিরাট পুরুষের জন্ম দিয়াছে। স্বরেজনাথের জীবনেতিছাল বাংলার গৌরবপ্রেট জন্যায়গর্ছের জনতন। কংপ্রেলের জন্ম হুইতে ১৯১৭ সাল পর্যান্ত কংপ্রেল বলিতে তাঁছাকেই বুবাইত। কংপ্রেলের যাহারা জনক, তিনি তাঁছালের জনতন।

এই কর্মী গংক্তির যথে। ভারতের প্রার এক শভ বংসরের ইভিহাস উহু আছে: সে ইভিহাসকে জানিলেই ভারতের দব-জাগরণের সম্যক্ বাহাত্ত্বা উপলব্ধি করা বাইবে। এই ইভিহাসের পুরোভাগে দেখিতে পাই রাজা রামমোহন রাখের বিরাট বৃতি। এক হাতে তিনি দেশের সামাজিক জ্ঞাস সব স্বাইরা কেলিবার চেষ্টা করিতেকেন, অভ হাতে করিতে-

(स्य कृष्यीणित (वक्षेयो स्ट्ल (प्रत्य यव-वृष्य वृक्षियाय । ১৮২০ সাল হউতে ১৮৭০ সাল পৰ্যাত মুক্ত-আত্ম ভারতের अक्डी सम (एविएक मारे। अरे ममरवद मर्या "देवर रामन". "ইয়ং বোদাই" দেশের অদেক সংখারের উপর আখাভ कतिवारक अध्यक भरकारवत्र रक्ष्य स्टेख्य स्थलव व्यक्त করিয়াছে। এই আঘাতের প্রয়োজন হিল দেশের মনকে যোহ-मुक्त कवित्र। पृथक्ष व्यवश्च स्टेट्ड बात्रादेवात वह । अहे बात्रत्वत **लाय जामका (क्विल्ड लावे वारलास्वरण 'विकृत्यला", छेखा-**ভারতে বুসলমান সমাজে বুতন শিক্ষার প্রতি আঞ্জন। এই কথাই विनिधारिकन (एमडी कहेन गार्ट्य छात "निष्ठ देखिया" नामक The Bengalee Baboos new rule public opinion from Peshawar to Chittagong."—ৰাভানী बाबू (भरनाबाद रुवेटल हाहेगी भर्गात छू-बर्क बनवल गर्भन करत. পতিশীল করে। এই বাঙালী বাবু নানা সৃষ্টিতে হিমালয় হইতে বিভ্যাচন পৰ্যাত ভূ-ভাগে নৰ-ভারতের নানা উপাদান ও केनकदन मध्यक कदिया प्रियादक - निक्रकदर्ग, चार्टनछद्रान, **हिक्टिश्क्बरण, भारवानिकबरण, वर्षक्षहात्रकबरण, जबाध-**লেবক ব্ৰেণে। এই সংগঠনের ইভিহাস ভারতবর্ষের উনবিংশ শভান্ধীর ইভিহাস :

बरे राहानी बाद्ध मत्या ध्याम हिल्म पूर्वक्रमाय । वारमा-ब्यटम छ। हात महकवी विद्यान चानस्ट्याहन तथु, निजनाव শাল্লী, শিশিরকুথার খোষ, মজিলাল খোষ। ভারত-পঞা (Indian Association) প্ৰতিষ্ঠা কৰিয়া তিনি খেৰাইয়া দেন আমানের সমগ্র রাজনীতির কর্ম-এচেপ্তার আদর্শ ও मका । करत्वाभन्न काथन इवं ररभन भूत्व वेश्विमन कामनाम কন্কাবেনের উদ্যোগ করিয়া সর্বভারতীয় রাজনীতিক কর্ম্বের তিনি নিৰ্দেশ দেন ৷ ভারপর ১৮৮৬ সাল হইভে কংগ্রেস ও प्रविक्षनाय व्येषः अधिकाम व्यक्तिम प्रविक्षनाय व्हेलन कर्रकारमञ्ज दानीमूर्छ : धरे मृष्ठि बाषा चात्र धक मृष्ठि विक উইহার। সেই বৃত্তি উত্থাসিত হইয়া উঠিয়াছিল কংগ্রেসনেড্ছ লাভের পূর্বে শিক্ষকরণে, ছাত্রসমাকের নেতারণে : কলিকাভঃ ও বাংলার ভাত্রসমাভ, থেশের ভবিষ্যুৎ চিত্তামার্ক ও কর্ত্ত-नायकवर्त छन्विरम मछाकोत वर्ष ७ मध्य धनएक शक्ति। छट्ट (क्षणवंध्या (अद ६ पूर्वां अन्याद्यं अन्याद्यं विकास । विवास के विवास के विवास । विवास के विवास के विवास । विवास के विवास । विवास के विवास के विवास । विवास के विवास के विवास । विवास के विवास के विवास के विवास । विवास के खड़ी बार्डिमान, गांतियम्बि, (मय बामगाद खड़े। खट (गांदिक-निरम्, ओरेक्फारचार चार्याम्य त्यम्याम वर्षे बहरखंडरम्य चौरन-कथा विवयः भागारभन्न भूक्षक्षरावयः भौवरम अक विश्वरवयः स्ट्री কৰেন প্ৰৱেজনাৰ। সেই ধুগের ধুনকক্ষেত্র স্বভিক্রায় পড়িয়াছি বে বাৰনীভিক উদ্দেশ সাধ্যের ক্ষম ধরসমিভিত্র প্রতিষ্ঠা प्रदेखनार्यक प्रधानभावरं अखन स्टेशिक । विभ न्राह्म भटक बांबीन-डेटभक्क-डेब्रामकत देशाटक सभाग करवम । ख्यम प्रदिक्तमाय रहेश देविशास्य करावन-(म्छा। किस जिमि विश्ववीरम्य मिक्श्मार करवन मारे ; मौतम वैश्वरूप

चनारका क्षेत्रच चारापक विशेष (स्म नारे। अरे विनिद्धे। इरक्कमार्थक विशेष

সুৱেন্দ্ৰৰাথেৰ যুগে যে সন্তাদায় দেশের বাজনীতিক নাম-ব্দবানের বাধার ক্রম্বইডেন দেশের ব্রভাব-ব্রভিবোপের প্ৰতিকার চেঠা করিতেন, দে সম্প্ৰদাৰ শ্ৰেণীবাৰ্থ প্ৰেণী-সংগ্রামের কথা ভামিতেন না। একটা সহজ, সরল সম্ভ্রমবোর ছিল তাঁহালের। দেই ভাব বিদেশী রাষ্ট্র ব্যবস্থার পদে পদে অপ্যানিত হইত। সেই অপ্যান তাঁহানের রাজনীতিক প্রতেষ্টার প্রেরণা কোগাইত : সেই বুগে জাতীর **ভাত্ম**গুল পুনকুৰাত্ত্বে বন্ধ বাৰ্থীতিক আন্দোলন ছিল একমাত্ৰ আছু ! বদতদ আন্দোলনে নেড্ড ক্রির' ব্রেরনাথ প্রমাণ করিরা-ছিলেন যে রাজনীতিক সংখৰ তি'ন ভয় করেন না बुट्न बाबनीजि मास्त्रमाविक बामा-बाकास्काद रावन व्हेदः মৈঠে নাই। সেইজনা ভালারা জাভিবৰ নিবিশেষে সকলের त्यवः कविट्ड भाविदा'स्टलन . वर्षाव खर्डन, भवद्यात रङ्गारकम् তাঁহাদের ক্রবাপ্থে কোন বাবার স্ষ্ট করে নাই। সাঞ বিভঞ্জার গ্রহের সেই সরল, সহজ রাজনীতির সভাব আহরা বহুতৰ কৃত্রি।

পরলোকে অধ্যাপক লভেলিমোহন মিত্র

वक्रवानी करणास्त्र वशासनमारत्व बाग्यनामा खनाशक लोफिल्ट्याच्य सिक साम ६६ वर्भत वस्टम मन्नाम (दाटन **पर्धालक्षेत्रम्य करियाद्यतः जापुनिक कार्ण मिकाळ**ो क्षिभाट्य बेक्स्या भाकना अञ्चन क्रियाब्रिटन छाहारम्ब হলে অব্যাপক লাভলিয়েছিল অঞ্জন। যৌবনে অঞ্নীলন সমিভিতে যোগধান করিয়া ভিনি ধেলের কাঞ্চে আত্মনিয়োগ করিবার সকল করেন এবং শিক্ষাক্ষেত্রে আপনার সর্বাদক্তি निर्देशन करतेन । करनक हिन छै। । श्रीन, खनत खर्गानकरण्य ছুট ছিল কিন্তু তার ছিল না। ছুটতে কলেছে আলিয়া তিনি স্যাবরেটরির সমস্ত ধোষক্রট সংশোধন করিতেন। পুর্বা-বলের সমস্ত ভূল-কলেজ ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ের অভভূতি হওৱার বাঙালী ছাঞ্জদের সম্মুখে যে সমদ্যা দেখা দের ভিনি ভাষাতে বিচলিত হম: যে সব ছাত্ৰকে হঠাং এই ভাবে **ঢाका विश्वविद्यानस्य अञ्चल्ल कता इटेन, बूनल: लाहाता** কলিকাতা বিশ্বিভালয়েতই ছাত্র; কলিকাভার কলেভে ভাল-দের স্থান বাহাতে হয় ভাহার কল ভিনি একান্ত আঞ্চায়িত হন। বলবাসী কলেকে সকালে ও সম্ভায় ক্লান বুলিয়া ভিনি আগত হাত্রদের শিক্ষার স্থবোগ করিয়া দেন। নিজে তিনি সকাল হইতে রাজি পর্যান্ত সমত বিভাগের কাল করিতেন।

অব্যাপক বিজের ন্যার নিলোভ বালুষ এ বুগে নিভাভ বিরল। তাঁহার লিবিভ ইন্টারনিভিবেট কেনিট্র বইবানি ভারভবর্ষের ও ভারভের বাহিয়ে র্যাক্ত-আফ্রিডা, নিংহল, প্রারা, ভাতা, ভাগান প্রভৃতির বহু কলেজে ও বির্বিভালরে পাঠ্য ব্ইরাছে। প্রারুভয় বভ বেবাচিক্র স্বেভ প্রারুগাভ শত পৃঠার পৃত্তকের দার তিনি বুদ্ধের বাজায়েও তিন দীকার বেশী করেন নাই। ইহার কারণ জিলাসা করিলে তিনি বলিতেন বে দরির ছাত্র হিসাবে পাঠ্যাবধার যে অপুবিষা তাঁহাকে সক্ষ করিতে হইরাছে ভাহা ভিনি ভূলিতে পারেন নাই। অবচ এই একবানি পৃত্তকের ছারা তিনি লক্ষ করুছে প্রকাশক কোল্পানীর প্রাক্তন মানেজারের নিকট ভনিরাছি পৃত্তক-প্রকাশের বল্লাট প্রভাবরার কন্য একবার তিনি উহার প্রকাশের হারিছ ঐ কোল্পানীকে দিতে চান এবং কেই মর্ম্মে চুক্তিশন্ত সম্পাধিত হয়। চুক্তি খাকরের সময় তিনি বলেন যে একটা বিষর ভূল হইরা সিয়াছে, পৃত্তকের দাম বাজানো যাইবে না এবং প্রতি বংসর এক শত ধাত্রকে তিনি যে পৃত্তক বিভারণ করিয়া থাকেন তাহা উহাকে কোল্পানী ইহাতে অসম্যত হয়।

• ভাই পরম্বন্দ

পঞ্জাবের উপর ছড়িনের খনষ্টা বিভার লাভ করিয়াছে हरर भिरे अबाध कर बावामशाको स्वलाद लिखाबान करू बुन-भारतकार भारतका विषया । त्य व्यापन थ कर्य-मद्रविषय ভাই প্রমানক আয়ুনিয়োগ করিয়াছিলেন পঞ্চাব বিভাগে **धाराद भाष्म्या राष्ट्रण द्रेशार्थ । श्रम्यम छीर्द्र जाश्रमाक** कंक नुष्टन कवारम्ड एष्टि कांद्रश शक्कारस्य स्मिष्ट अवाकरक मनक्षण पान करदा । युवन भवारित चलातार छत्र नानरकद শিখাগণ "ৰাজসায়" পরিপভ হয়। ইংগ্রেক শাস্ত্রের সময় प्रशासक दिन्त्रण काराभवारक काराबा कर जुलन वृहणः नाक करदा देशात (अहेथ क्षकान नाद नाला नाकनर बाद, স্বামী প্রধানক ও লাগা হংসরাজের জীবনে : ভাই প্রমানক देशास्त्र मध-निश र्शन्ति खड़ा छ एम ना । (भदेवस प्रिनिए भावे अवर कीवरनके विश्वविद्यालतात हैफ-लिकास हैक मना--भाष कृतिशः जिमि धार्याभभारकत भाषाय कीरम हैरमा करतन । णारमद भर्ष blace bare यादेख क्य काश्रदक भाक्त-আফিকায়, দক্ষিণ-আমেরিকায়, যুক্তরাষ্ট্র: লেখোক দেশে अभावी पक्षावीया अक्षेत्र कृत छेर्नात्वम श्रामन कृतिशाहिन। काशाम्बर भरगर्रेटन कार श्रद्धमानम् ১৯১२ भाग एकेए७ खबुछ धिरामन । ১৯১৪ সালে প্রথম মহার্থ আর্থ হয় 815 WK ও কানাভার পঞ্চাধীয়া ভবন রণোখাদনায় মাতিয়া উঠে: পদর পার্টি নামে এক বিজোহী দল সভিয়া উঠে লাল: হরদয়াল थ चारे भरमानत्मर (४७८७ । अरेक्ड यथन चारे भरमानम ভারতবর্ষে কিরিয়া আদেন তথন রাষ্ট্রফোলের অভিযোগে कांकां बागमरकत चारम का। अहे चारम क्रमाचिक रुप्त दावकोवम दौ**णांकरत । ১৯**২० मार्क करनक विद्ववीरक शक्ति। (१७४। २४; णारे भवतानक छाश्राध्य अक्कन।

ইজিলাভ ভবিষা তিনি অসহবোগ আলোলনে বাঁপাইয়া পছেন। এই আন্দোলন যবন হ্বাল হইল এবং গাছীলী হুট বিদ্-মুগলিব গৌহার্তা বুদ্ব্দের ছার উছিলা দেল, তবন ভাই পরমানক লাজায়াইক মেল-বছনে বিশ্বাপ হারাইয়া কেলিলেন, ভারতীয় মুসলমানের রাক্নীতিক বিশ্বভাৱ ও সাহচর্ব্যে আছা হারাইয়া কেলিলেন। ইহার প্রতিক্রিয়ারণে ভাঁহাকে দেখিতে পাইলাম হিলু মহাসভার নেতৃরপে। বিগত পঁচিশ বংগর হিলু সমাককে শ্বংসিদ্ধ করিবার ক্যা তাঁহার ডেটায় অভা হিলু সমাককে শ্বংসিদ্ধ করিবার ক্যা তাঁহার ডেটায় অভা হিলু সমাককে শ্বংসিদ্ধ করিবার ক্যা তাঁহার ডেটায় অভা হিলু সানাককে শ্বংসিদ্ধ করিবার ক্যা তাঁহার ডেটায় অভা হিলু সানাককে শ্বংসিদ্ধ

থধীরকুমার লাছিড়া

द्रशैत्रक्राद मारिकी वरानद्वत (परकादन "अवानी", "মঙাণ রিভিট" পত্রিকা মঙ্গীর একজন পরম সুস্তাদ হারাইয়া আমরা আন্তীয় বিয়োগ ব্যথা অনুভব করিভেছি। প্রথম योदरन छिन भरताल्यक भारताह आसमिरकृत करवम बरर পরিশত বর্গে সংগ্রেণ্ডিত লোকে সমন কবিয়াছেন। শোপালকৃষ্ণ গোৰলের সলে তাহার প্রিচ্ছ হয় ভা: নীল্ডভ্র भवकारवय भवार्जाय । दर्श मरादाहे (नक काश्व सर्व मह एवंद्रा अट्योरवंद्र अभाक्षमाम दर्याव भट्ट कार्यात ঘটাইয়া দেন এবং সুধীরকুমার এড্ভোকেট পত্তিকার সম্পাদকল্পে সংস্থা সমন করেন। ভারপর "পাঞ্চাবী" দৈনিক পত্রিকার সহযোগ সম্পাদক হইয়া লাছোরে গ্রন করেন: চার-পাঁচ বংসর পরে ভিনি লংছোরের "ট্রিবিটন" বৈণিকের সহযোগ সম্পাদক পদে বুভ হন , কাজীনাৰ রায় মহালয় তথ্ন ঐ পত্ৰিকার সন্পাদক: কাঞ্চিয়ান্তয়ালাবার रजाकारका भर भक्षार्व भाषात्व आहेन बाही वह: िके विकेश परिका भागदिककारक वक्ष एवेश बास अवर प्रशीध-কুমার ক্লিকাভা চলিয়া আদেন: ভ্রম বাংলাছেশের পাই-ব্যবসায়ে বেডাল ব্যাকের একচেট্টয়া আবিপ্তা ছিল। चिष्णा अवस्य बारकादावी रायमादीम्य कर ठक काकिएक कर्ता कार्यन : अधीरकुमात्र कहें कारक आधुनिरशात्र करवन बन्द शाहि-वावभारत कि कांद्रश्च: शाहि-कार्यात्मत विकल कहा एव खरमधास खाकाक कानमाध कारन । त्रवादां के खादे दिशास চিন্তা কারতেভিজেন, তবং যামিনীমোলন যিত সম্বায় প্রশায় भारतेद (वक्ष-त्कनांत्र वावश्च करवन: श्वीवद्ववात्र प्रतित्वत দেবার **এটা সুযোগ পাটয়া ধুইখানি সম্বায় প্রিকা**র (बारण: ७ वेरदेवकी) अन्तिकीय माहिक अवन कदवन। अक দিন সম্বায় প্ৰধার প্ৰঞ্জ পত্নীকং বাংগাধেশে স্ইভে পাৱে भारे । आंक पारीन बांद्धे स्थातक्षमादाद मानः पश्च भक्त **स्टेटल नार्य**ः

নরসিংহ চিন্তামন কেলকার

বলবন্ধ গলাধর উলক আমাদের ছাতীয় জীবনে যে কুগ-পরিবর্জন হচনা করেন তাহার শেষ সাক্ষা পুৰিবী হুইতে চলিঙা

र्भाजन : वनवण्डां बता महनिष्ठाय वर्षा महनिश्च हिचावन ক্ষেত্ৰতাৰ এক বিশিষ্ট সাম অধিকাৰ কৰিবাছিলেন ৷ জেলেব চিম্বাক্তরতে উন্নবিংশ শতাকীর শেষে যে আছ-প্রতিঠার ভাব সহল বারার উচ্ছুসিত হইরা উঠে, ভার বারক ছিলেন বছ करमद बर्या अक कम--- बनवक अमायद क्रिक । देशद शर्या बाद चिन-शक्य चामदा देश्टरको मकाकाद त्मक्रेड चौकाद कविया गरेवाबि, अवर देश्टबाक्य अञ्चलवनटक प्रवृत्त नाटक्य बाजूडे छेगाव रामिया अस्य कविवादि । वर्षि (पारवसमारवद জীবনে আমরা প্রথম দেখিতে পাই ইয়ার বিরুদ্ধে একটা বিলোহচেটা। উনবিংশ শতাখীর সপ্তম ঘশকে তার প্রকাশ পাই ভাৰত্ৰপতে ভাৰ্যসমাতে, বিয়োসফিক্যাস সোসাইটতে : বৃদ্ধিসচন্ত্ৰের "বৃদ্ধৰ্শনে", পুৰার বিফুশাল্পী চিপলুকারের "নিবছ-बानाव"। यनव्य जनावद कैनक बहादाहेरम्य विराम वहे বিজ্ঞোহের চিত্তানায়ক। "কেশরী" পত্রিকার কনপ্রিরভা ইছার সাক্ষী। আবেদন-মিবেদনের ভালা বছিয়া লইবার বে অপ্নাম আবাদের রাজ্মীতি ক্ষেত্রে সহজ হইখা উটিয়াছিল, এই পঞ্জিকা মহারাষ্ট্রে ভাষা প্রভ্যাব্যান করিছে শিক্ষা দেয়। প্রথম যৌবনে নরলিং চিছামন কেলকার এই বিজ্ঞান্তের चारमाण्टमत बटवा भरूम: बदर चाकीवम बहे मरमाणाटवत পভাকাবাহক ছিলেন। সাধীযুগে যে নৃত্য চিত্তাকগভের স্ট रहेन छारा पूर्व्यव देखवानिकाती एवेटनथ, हैनटकत नियावन ইহা অকুঠ চিত্তে এহণ করিতে পারেন নাই। অসবোগ আন্দোলনে, আইন অমাচ আন্দোলনে তাঁহারা সক্রিয় অংশ এখন করিলেও তাঁহাদের মন ও বৃদ্ধি ইহাতে সায় ও সাঙা দেয় ৰাই। নৱসিংখ চিন্তামন কেলকার তাঁহার ওকর দেহত্যাগের পত্ৰ অভীত ৰূপের চিন্তাৰারার সহিত বর্তমান মূপের সঙ্গতিসাধন क्षियांत अक्षे (हर्ष) करत्र "क्षित्री" पक्षिकात अल्पादक्षर । পাহিত্যশ্ৰষ্টাৰূপে কাবে। নাটকে প্ৰবদ্ধে। এই ভাবে তিনি মহারাই দেশের চিত্তানায়কদের মধ্যে এক বিশিষ্ট স্থান আ্ব-কার করিয়াছিলেন। ভিনি দেশের রাজনৈতিক খাবীনভার श्रद्धापत्र (प्रविश्वः नितारकन् देश्ये कार्यारक्त माञ्जना ।

চিমনলাল শিতলবাদ

বর্ত্তমান ভারতের রাজনীতিকসপের নিকট চিমনলাল লিভলবাদ অভ কোন নক্জলোকের অবিবাসী : কারণ উদ্বারা লিবিরাছেন যে বর্ত্তমান মূরে যে কলে ও কুলে আমাদের রাজনীতিক জীবন উচ্ছল হবরা উঠিয়াজে, ভাষার জভ কাহাকেও জমি চাধ করিতে হয় নাই; আপনা হবতে ইংবারা কুটরা উঠিয়াছে। ইংবারা ভূলিরা গিরাছেন যে, কোন জগতেই এরণ অঘটন ঘটে না; আমাদের গৃষ্টর অলন্ধিতে প্রকৃতির প্রজন-চেটা থামে না। সামাজিক জীবনে ও রাহ্বীর জীবনে দেশের মানব-মন ক্ষমও অক্ষিত থাকে না। আজিকার শভসভারের পশ্চাতে আছে বহু জনের জাঞ্জ চেটা; সেই বছু জনের

অনেকেই জ্ঞাত থাকিবা বাব। চিব্ৰলাল লিতল্বাদ এরণ ইতিহাসের অনু, এরণ ইতিহাসের স্পষ্টতে অংশ এহন করিয়া-ছেন। ভিনি যে সমূহে জ্বুৱাহৰ ক্ষেত্ৰ ভবন দেশের চিডা-স্থ্যতে ও কর্মকাতে পশ্চিম ভারতে দিক্পালয়ণে বিরাজিত बिल्म पापाणारे त्योद्याचि बराद्य त्याविक बामाद्य। কিরোক শাক্ মেষ্টা, মারায়ণ গণেশ চল্লভয়কর, গোপাল-🖟 ফ গোৰলে ইহাদের শিষ্য। চিন্নলাল শিক্তলবাদ ইহাদের বঃ:ক্ৰিষ্ঠ। বাজনীতিক জীবনে ইছাৱা ত্ৰিষ্টল লাসবকে ভগবানের মদলবিধান বলিয়া খীকার করিয়া লইরাছিলেন এবং এই বিধানের সঙ্গে সহযোগিতা করিয়া ভারতের স্বাধীনতা অৰ্জনে সাহায়া করা কর্ত্তবা বলিয়া মনে করি-(छन। माना क्वावशा, अवाहा आमारम व भगारम कीवमरक হুৰ্মল ও খণটু কৱিয়াছে। এই কুব্যবস্থা ও খব্যবস্থার সংস্থার সাধ্য না করিলে আমরা রাজনীতিক জীবনে প্ৰৱতিষ্ঠিত হইতে পাৱিব না। এই বিশ্বাসের বলে আয়ায়ের এই পূৰ্ব্বস্থাপ চিন্তা কৱিতেন, কৰ্ম কৱিতেন। যত দিন আমা-দের সমাজ জীবন সংস্কৃত ও শোবিত না হুইয়া পুগটিত ও भूभवद रहेशाटक, ७७ विन युक्रैन-माभटनत मुख्य खामाटकत মানিরা লইতে হইবে , মা হইলে দেশে আসিবে অরাক্ষতা ; উদাৰ জনগণ সভা জীবনের সকল আয়োজন ভালিয়া কেলিবে। बार बारे कार्या वर्ग वारमारमा ३००० भाग चार्चावचारभट বিকাশ দেবা দিল তবন এক দাদাভাই নৌরোভা দ্বাড়া কোন নেতথানীর ব্যক্তিই ইহাকে অভিনন্ধিত করিতে পারেন নাই। क्षि मामाचारेत्वत श्रीकृष्ठि श्रवान कृत्त त्य चाभारम्ब शृद्धकः গণের মন নবভাবের বিরোধী ছিল না যদিও কর্মাড়েয়ে ভার প্রমাণ দিতে ভাষা পরায়ুব ছিল। এই ভুর্মাণভার ৰুলা দিতে ঘটৱাছে ভাঁহাদের বিপত চল্লিশ বংসর ধরিয়া। স্থারস্ত্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যাধের মত স্বভাব-বিপ্লবী प्राप्त भारतावि काम कामित्रा (भारतन । बहेबन बक्रें। বিরাট পরিবর্ত্তন মালুবের মন সহজে স্বীকার করিয়া महेटल भारत नां। वियमणाम मिलमदाव विरामन स्वितिह আইন-ব্যবসাধী, রাজনীতিক নেতৃত্ব পাছী-পূর্ব্য-মূরে বাছাদের হাতে সহকে চলিয়া আগিত। তিনি আনেক বংগর ছিলেন বোঘাই বিশ্ববিভাগথের ভাইস্-চ্যান্সেলর, শিক্ষাক্ষেত্রে অট্টশ শাপক-পোঠার নবাবীর বিবোধী। ভাষার রাজনীভিক জীবনবাদ্রা সুক্র হয় উন্বিংশ শতালীর শেষ দুপ্তে: নেই वृत्तव वाक्नीलिक कर्चथाहरीय मत्या वेश्वतकत माम विद्वाव বেধানে অপথিভাগ্য ভইয়া পঞ্চিত সেধানে কিরোভ পাছ (वस्की अञ्चि (बज़र्व शकाश्यम स्टेक्स मा । क्रियमान শিতদ্বাদ এই কর্মপ্রায় বিবাসী ছিলেন : মুগবর্জালুযায়ী কোন কর্ত্ব্য তিনি অবহেল। করেন নাই। গাখীজীর জীবনে লে বুপের কোন প্রভাব নাই, এমন কথাও নিশ্চর করিয়া বলা यात ना।

বাঙালী ছাত্রদের কথা

শ্রীদেবেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়

আজকাল প্রায়ই শুনিতে পাওয়া যায় যে, বাঙালী ছাত্রদের বিজ্ঞাবৃদ্ধির দিক দিয়া অধঃপতন হইয়াছে, কেননা সর্ক-ভারতীয় পরীক্ষায় বাঙালী ছাত্রেরা আগেকার মত ক্বতিত্ব দেখাইতে পারিতেছে না। বিশ্ববিভালয়ের পরীক্ষকগণ নিশ্চয়ই বলিবেন যে, গত আট-দশ বংসর হইতে বাঙালী সাধারণ ছাত্রদের বিদ্যাবৃদ্ধির পরিমাণ মোটের উপর বেশ কমিয়াছে। যত দিন যাইতেছে পরীক্ষায় ছাত্রদের অধোগ্যতা ততই তীব্ৰত্ব ভাবে প্ৰকট হইতেছে। গড়ে ছাত্রদের বৃদ্ধি যে কমিয়াছে তাহা পরীক্ষক মাত্রেই স্বীকার কবিবেন। ছাত্রদের বৃদ্ধি কমিবার নানা কারণ বর্ত্তমান; ভাহার মধ্যে দেশের রাজনৈতিক অবস্থা, তু:খ-কষ্ট, উপস্থিত শাস্ত্র-ব্যবস্থার উপর ভীত্র অসম্ভোষ ও নানা ঘটনা উপলক্ষে ভাহার স্বাভাবিক ও অস্বাভাবিক প্রকাশ, ছাত্রদের নিজম্ব বাজনীতিক মতামত, দলাদলি, অছাত্রীয় ব্যাপারে তাহাদের উৎকট আগ্রহ ও খেলাধুলা, সিনেমা, থিয়েটার এবং সভা-সমিতিতে তাহাদের অত্যধিক সময়কেপ প্রভৃতি কারণ উল্লেখযোগ্য।

ছাত্র-আন্দোলন যে পথে গত কয়েক বংসর হইতে চলিতে আবন্ত হইয়াছে ভাহাতে আমরা শিক্ষক-সম্প্রদায় किक्टि विजास इरेशाहि। ছাত্রদের মধ্যে উৎসাহ বা উচ্ছাসের আধিক্য হেতু ভাহাদের সত্যকার মনের চিত্র খানিকটা বিকৃত ২ইয়া আমাদের চক্ষে পড়া স্বাভাবিক। তাহাদের আন্দোলন সম্বন্ধে বিকৃত ধারণাও অম্বাভাবিক নয়। কিন্তু যদি বলা যায়, ছাত্রেরা ঠিক পথে চলি-ভেছে না তাহা হইলে তাহাদের দিক হইতে তীবভাবে আপত্তি উঠিবে; অবশ্চ আপত্তিটা যুক্তি নয় ভাহা ছাত্রেরা স্বীকার না করিলেও ভাহাদের শিক্ষকগণ আশা করি স্বীকার করিবেন। ছাত্রবা বিশ্ববিদ্যালয়ের জনৈক ভাইস-চ্যাম্পেশর কর্ত্ত উৎসাহিত হইয়াছে। ভাহাদের অধিকার স্বীকার করা যে সঙ্গত ও কলেজ কর্ত্তপক্ষের উচিত ভাহাদের সহিত আলোচনা করিয়া কান্ধ করা, এই ধরণের কথা অধ্যাপক সম্মেলনে মি: কেলাস একবার বলিয়াছেন। অক্তান্ত দেশে ছাত্রদের এই অধিকার স্বীকার করা হয় কি না তাহার প্রশ্ন আজ তুলিব না। ছাত্রদের বাজনৈতিক জ্ঞান ও কশ্মপন্থার সমাগোচনাও করিতে চাহি না। পণ্ডিত ক্রাহ্রলাল নেহকর মত বলিভেও চাহি না ষে চাত্রদের রাজনীতি লইয়া মাথা ঘামাইবার প্রয়োজন নাই। কিন্তু ছাতেৱা বে ছাত্ৰছেব দিক দিয়া ব্যৰ্থ ও পছ

হইয়া যাইতেছে এবং বৃদ্ধি ও মনোবৃত্তির দিক দিয়। দেশের প্রকৃত মকলকে তাহাদের চাপলা ও অভ ভ বৃদ্ধি দিয়া ক্র করিতেছে তাহা ভাহাদের শিক্ষক হইয়া আমরা বলিতে বাধ্য হইতেছি। ছাত্রেরা রাজনীতি, আন্দোলন, দলাদলি, ট্রাইক প্রভৃতি বিষয়ে উংসাহ দেখাইলেও বা ভারতীয় বিশ্বরাজনীতি সথছে শ্রেষ্ঠ রাজনীতিজ্ঞদের সমত্ল্যভাবে সমালোচনা করিলেও ছাত্রদের উন্নতি, বিদ্যালাভের আগ্রহ প্রভৃতি বিষয়ে ভাহারা সন্মিলিত ভাবে কভটুকু কাল করিয়াছে তাহাই আমরা জানিতে চাই। সম্বতঃ দৃষ্টিভিন্নীর পার্থকাহেতু ছাত্রদের চক্ষু ও মন লইয়া আমরা ভাহাদের বিচার করিতে পারি না। সেইজনা ছাত্র-জীবন সমছে ছাত্রদের মতামত উল্লেখ করিলে আশা করি অনেকটা নিরপেক ভাবে এদেশীয় ছাত্রদের আশা আনাজ্যার কথা বা ভয়ের কথা স্পষ্ট রূপে বৃথিতে পারিব।

একটি পরীক্ষায় কলেজ-জীবন সম্বন্ধে কলেজের ছাত্র-দের লেখা প্রায় দুই শত হইতে আড়াই শত প্রবন্ধ পরীক্ষা করিবার সৌভাগ্য বা ছুর্ভাগ্য বর্তমান লেখকের হইয়াছে। ছাত্রদের ধাতা হইতে আমি অনেক অংশ লিখিয়া লইয়াছি, ভাহা দারা ছাত্রজীবনের আদর্শ, দোষ-গুণু প্রভৃতির একটি বেশ স্থার চিত্র আঁকিতে পারা यात्र । এই ছাত্রদের মধ্যে বুদ্ধিমান ও নির্কোধ, কংগ্রেসপন্থী क्यानिष्टे । माञानिष्टे, मनीय । अमनीय, नकन ध्वकारत्र ছাত্র আছে। কেহ বা নিষ্ঠুর ভাবে ছাত্রদের বাজনীতি ও ষ্টাইক-প্রীতিকে আক্রমণ করিয়াছে, কেহ বা ছাত্রজীবনের দলাদলি, চুরি, অসাধুতা প্রভৃতির কঠোর সমালোচনা কবিয়াছে। কেহ বা অমুতপ্ত; একটিমাত্ত ছাত্ত জাতীয় জীবনে উচ্চ আদর্শের কথা অবতারণা করিয়াছে; কাহারও বা ছাত্রদের রান্ধনীভিতে বিরাট দানের প্রসঙ্গে বেশ একটু গর্ববোধ আছে। মোটের উপর বে চিত্র পাইয়াছি ভাহাতে মনে আশা কাগে না।

শ্বন হইতে কলেকে আসিয়া ছাত্রেরা বৃহত্তর কগতেরও
শাধীনতার স্বাদ পায়। তাহাদের দায়িছও যে বাড়িয়া যায়
তাহা অধিকাংশ ছাত্রই ভূলিয়া যায়। ছাত্রেরা নানা সদ
ও দলে পড়িয়া তাহাদের পূর্বার্ক্তিত ধারণা ত্যাগ করিতে
থাকে। নানা মতবাদের ঘূর্লিপাকে পড়িয়া অনেকেরই মাধা
ঘূরিয়া য়ায়। ছলে শিক্ষকদের সাহচর্ব্য ও সভ্তর্ক দৃষ্টি
কলেকের অধ্যাপকদের নিক্ট পাওয়া য়ায় না। অধ্যাপকেরা

চাত্রদের অন্তরে প্রবেশ করিতে চাহেন না। তাঁগাদের কাল বক্তুতা দেওয়া, ছাত্রদের কাজ শুনিরা যাওয়া। স্থভরাং ছাত্রেরা অনেকটা স্বাধীনতা পায় ও অবাস্থিত সংসর্গে পড়িয়া তাহার অপব্যবহার করে। ক্লাস পলায়ন একটা নিভ্য নৈমিত্তিক ব্যাপার। অধ্যাপকদের সহিত ব্যবহার ঈষং অশিষ্ট। একটি ছাত্র বলিতেছে—

Now-a-days it is often seen that students do not talk politely with their professors. They try to oppose the very teaching of the professors.

ব্দপর একটি ছাত্র বলিভেছে—

What struck me much was the behaviour of the students towards our Venerable teachers. Most of them are so rough in manners that it is shameful for the student community.

আর একটি চাত্র বলিয়াছে—

College students cannot show unquestioned reverence to their professors and the principal and argue on points they do not know well.

সকল ছাত্রই অশিষ্টাচারী নহে। অধ্যাপকেরাও দোষ-শক্ত নহেন। একটি ছাত্র লিখিতেছে—

The professors do not mix with the students. They have superiority complex.

আবার সকল অধ্যাপকই ভাল শিক্ষক নহেন, একটি ছাত্রের ভাষায়—there are good scholars but bad teachers, এই কারণেই ছাত্রদের জীবন সম্পূর্ণ হইতে পায় না ও পাণ্ডিত্যের উপর প্রীতি গভীর হইতে পারে না। ছাত্র ও এধ্যাপকের মন কচি আদর্শ একমুখী না হইলে শিক্ষা সাৰ্থক হইতে পাৱে না। কলেজ, অধ্যাপক ও তাঁহাদের আবেষ্টনের উপর একটা মমন্তবোধ বা পর্ববোধ অতি অন্ন ছাত্রেরই আছে। প্রতি কলেজের একটা ঐতিহ্য আছে, প্রতিবার যাহারা কলেছে ভর্ত্তি হইতেছে ভাছাদের সেই ঐতিহের উপর অমুরাগ থাকা দর ার। বোধ হয় একটি মাত্র ছাত্র কলেছের মঞ্চলাকাজ্ঞা প্রকাশ করিয়াছে। ইহা যে ছাত্রখের একটা ধর্ম এ বেধি অনু I see that student polities is nothing but fanatic-ism. They are excited by some emotional speeches, কোন ছাত্রের মধ্যে দেখিলাম না। একটি ছাত্র ভাল face the lathi charges and firings and waste their lives. ছেলেৰের সময়ে লিখিয়াছে—I find in the scholars deep curiosity and hankering for knowledge. ভাহার৷ অধ্যাপকদের সহিক মিশিতে চায়, নানা প্রশ্ন উত্থাপন করে ও নৃতন নৃতন বই পড়িতে চায়।

অৱ ছাত্রই কলেজকে শিকার স্থান হিসাবে গণ্য করে। ভাহাদের ভবিশ্বং জীবনের ভিত্তি যে এম্বানে শ্বাপিত হয় ভাহার উল্লেখমাত্র পাই নাই। একটি ছাত্র বলিয়াছে, কলেভে—Thoughts and visions have been widened." ছাত্তদের মন জুড়িয়া বদিয়াছে রাজনীতি ও ভাহাকে অবঙ্গমন করিয়া দলাদলি। পরাধীন দেশের হৃদয়বান

ভরণরা যে দাসত্ব ও দারিদ্রোর কথাকে সকলের উর্চ্চে স্থান দিবে ভাহা অবশ্ৰই স্বাভাবিক। কিন্তু কলেকে 'ইউনিয়ন' লইয়া ছাত্রদের যে দলাদলি সে সম্বন্ধে তাহাদের মত প্রণি-ধানযোগ্য। ইউনিয়নের মধ্য দিয়া ছাত্রদের এক্য থাকে, তাহাদের চিন্তা দানা বাঁধিতে পায়, চিন্তা কার্য্যে রূপান্তরিত হইতে চায়। বক্তা, গায়ক, বসিক ও কবি যাহাবা ভাহাবা এই ইউনিয়নের মধ্য দিয়া আত্মপ্রকাশ করিতে পারে ও ভবিষ্যতের রাজনীতিক ইহার মধ্য দিয়াই রাষ্ট্রালনার প্রথম পাঠ শিধিতে পারে। একটি ছাত্র লিখিতেছে—

There was a union of our college. I am ashamed of writing that it did nothing. Students can do many things. They have a fresh mind and a wide outlook. But all the energies of the young students, all their potentialities are frittered away without guidance . We criticised political matters and the leaders foolishly, We did little to understand the things of the world. We did not study much. We only idled away time, I saw the students are divided into political and fanatical groups with no perfect idea of the situation. We are politically a dependent country hopelessly wasning our energy. . . . There are none to look after us. Those who look cannot either impress us or do only nominal duties.

আত্মস্বীক্ষতি হিসাবে ইহার যুগেষ্ট মূল্য আছে। সাধারণ ছাত্রেরা এতথানি বিনয় সহকারে আপনাদের ক্রটি স্বীকার করিতে চাহে না। নিজেদের সম্বন্ধে তাহাদের ধারণা বিশেষ উচ্চ। ভাষারা নিজেদের কেবল দেশের খাশাভরদা-স্থল হিদাবে গণ্য করে না, তাহারাও রাজনীতিতে পাকা রাজনীতিজ্ঞদের অপেকা কম নহে এ ধারণাও কাহারও কাহাবও আছে। এই ধারণার বশবর্তী হইছা একটি ছাত্র লিপিয়াডে---

In the practical life of a country students play the most important part.

অপর একটি ছাত্র ছাত্রদের রাজনীতি সহ**ছে** লিখিয়াছে—

অবশ্ৰ এই ক্যানাটিদিজমেই জাতি বড় হয়। যাহারা হাসিমুখে মৃত্যুবরণ করিতে পারে জাতির যৌবনকে গৌরবের মালোঁ তাঁহারাই ভূষিত করিতে পারিয়াছে। উপবে উক্ত ছাত্রটির কথাই ঠিক—There are none to look after us. এমন হীবার টুকরা ছাত্রদের ভাল নেতা নাই, তাই বেঘোরে ভাহাদের প্রাণ ঘাইতেছে। ভাহারা ঠিক পথে চলিভেছে না ; উদার হৃদয়বুদ্তি ভাহাদের দেশের

[†] বদি সে fanaticism ঠিক পথে ও ঠিক ভাবে চালিত হয়। নহিলে ফল সম্পূর্ণ বিপরীত হইয়া থাকে। ক্রুসেডের ইতিহাসে, চীৰ-प्रतित अपन क्रांज-आक्षानरन, **এवः जनान वर्ष (क्रां**ज जाहा दिशा निवाद्य ।--वः मः

ইহাই বর্ত্তমানে ছাত্রজীবনের ব্রব্তার প্রধান কারণ।—এ: স:

মুক্তির জন্ম ব্যাকুল করিলেও,মোটের উপর তাহারা অচাত্র-স্থলভ ব্যাপাবে এতই মত্ত যে ছাত্রজীবনের দায়িত্ব বহন ভাহারা কবিতে পারে না। হস্কুগে পড়িয়া অনেকে মাতিয়া উঠে : ইহারাই অধিকাংশ স্থলে আদর্শন্তট হইয়া আপনাদের ও দলের ক্ষতি করিয়া বসে।

ছ:খের কথা ছাত্রেরা বৃদ্ধিবৃত্তির দারা চালিত হয় না; व्यत्नक खरन है का प्राप्त का कारा कि वा बनी कि एक कि निमा যাহারা রাজনীতি করিতে চাহে ভাহাদের বাধা দিবার অধিকার আমার নাই কিন্তু ভাহারা কেন নাম্মাত ছাত্র থাকিয়া ঘাইতে চায় ? পড়াশুনার দায়িত্ব ভাহারা বহিবে না, অপরাপর ছাত্রকে নিজেদের দলভুক্ত করিতে চায়। মনে হয় ছাত্র**ভী**খনের দায়িত্বের উপর ইহাদের কোন মাথামমতা বা অন্তরাগ নাই। ছাত্র আন্দোলন সময়ে আমাদের আপত্তি এইখানে। খাওয়া-পরার ভাবনা পিতামাতার উপর ছাড়িয়া দিয়া বিশুদ্ধ দায়িত্বজানহীন রাজনীতি চচ্চা, ইহাই যদি ছাত্রেরা করিতে চায় তাহা হইলে ফুল-কলেজ বন্ধ করিয়া দেওয়াই যুক্তি-সঞ্চতঃ পড়াগুনা না করায় অধিকাংশ ছাত্র পরীক্ষায় অরুত-कार्या इष्ट, कल्लाइन भार्र जाह्म एक स्मार्थ इष्ट, जात्म मन-কলেজিয়েট হটয়া যায় ও শতকরা ২৫,৩০টি ছাত্র পরীক্ষায় পাস করিন্ডে পারে। অপরাপর ভাত্রদের দয়া-দাক্ষিণ্যের স্থােগে পাস করা সম্ভব হয়।

কলেজ ইউনিয়ন সম্পর্কে একটি ডার লিথিয়াছে—

It is the greatest place of party politics. There—Whenever a professor event against us we all are different political parties. It is natural that it united together and urged the professor to give (?) would create chaos and quarrel among the students, our demand.

In my coming the Students' Union about 1. The professor is professor to give (?) In my opinion, the Students' Union should be rectified (?) by selecting proper representatives who are free from fanatic and blind view about politics and free from communal passion . . . Party politics creates students were quite imprepared for it. They made an a bitter feeling. There are many leaders of different application to the Principal requesting him to stop the political parties who do not deserve to be called leaders. They do not lead the students but they take them astray. They rather disorganise the students. There should be one party.

এই ইউনিয়নের কাজ পর্যাবদিত হইয়াছে ছাত্রদের সঙ্ঘবদ্ধ করায় এবং দলাদলি ও ধর্মঘট চালানোতে। একটি চাত্র লিখিতেচে—

The students seem to be well-disciplined, but mostly in the case of holding strikes only.

ষ্টাইক বস্তুটি ছাত্রদের ব্রহ্মান্ত্র। সকল দলই ট্রাইকের নামে এক হয় এবং কারণে ও অকারণে এই অন্থ ব্যবহৃত हम् । পড়ाखना वस हम्, পথে পথে বিক্ষোভপ্রদর্শন চলে, কেহ কেহ সিনেমায় যায়। অবশ্য ছাত্র-সম্প্রদায় সময়-বিশেষে যে দুক্তা ও চরিত্রবল দেখাইয়াছে ভাহা সভাই ষাহারা সভাই চরিত্রহীন ও অপদার্থ ভাহারা পুলিস ও মিলিটারীর আগ্রেমান্তকে তৃচ্ছ করিয়া স্বাধীনভার দাবি এমন অকুণ্ঠ ভাবে ও দলাদলি বিসর্জন

দিয়া প্রকাশ করিতে পারিত না। যাহাদের মনোবল এত দৃঢ় তাহারা কেমন করিয়া নির্কোধের মত আত্ম-শক্তির অপবায় করে, দেশের মননশক্তিকে কুল করে বা বৃদ্ধিবৃত্তির অসমান করে তাহা ভাবিয়া উঠা যায় না। কিছ তাহাদের মানসিক অধ:পতন হইয়াচেই—ভাহা না হইলে অসংয্ম, দলাদলি, মারামারি, ইতর্তা কথনই প্রবল হইত না। ছাত্র-আন্দোলনের রন্ধে শনি চুকিয়াছে। ছাত্রেরা দলগত রাজনীতিকদের আওতা কাটাইয়া উঠক ইহাই আমরা চাই। ভাহাদের মধ্যে কেহ নিজ স্বার্থসিদ্ধির জন্ম ছাত্রদের অকাজে লাগাইতে পারিবে না। ছাত্রদের পড়ান্তনা, চিন্তাশক্তি, সহন্দীলতা অসম্ভব বৰুমে কমিয়াছে। বৎসবের মধ্যে কারণে-অকারণে মাসাধিককাল ধর্মঘট করিলে ইহা হইতে বাধা। ছাত্র হইয়া একার্য্য করা অবশ্রই গহিত। একটি ছাত্র ধর্মঘট সম্বন্ধে লিখিতেছে—

But the first thing that I consider to be the most hard obstacle in the path of attending lectures is the continual strikes. The students may strike for their grievances against the educational authorities. But such cause is one in a thousand, students' strikes are often political strikes, in sympathy for the labour movement. But these were so continual that the same thing happened day after day, for which every stu-dent's study was obstructed. It is not a surprise that 30 per cent of the students come out successful in a university examination when we consider these things as strikes.

এই ষ্টাইক কি কাজে লাগানো হয় ? একটি ছাত্ৰ ৰিখিতেছে –

• অপর একটি চাত্র লিখিতেচে—

The notice for the examination was served. The examination. The Principal paid no heed to them. They made an arrangement for a strike and said that they would not appear in the examination. In this way they stopped the examination.

ষাহারা ভালহৌদী অভিযান করে, ভিয়েৎনাম দিবস পতিপালন কবিতে গিয়া গুলি খায় তাহারা দল পাকাইয়া কত লজ্জাজনক ব্যাপার ঘটাইতে পারে ইহাই হইতেছে ভাহার প্রকৃষ্ট উদাহরণ। চাত্রদের শুভবৃদ্ধি কে হরণ ক্রিয়াছে ?

পড়াভনার ব্যাপারে ঘাহাদের আগ্রহ এইরূপ ভাহারা পরীক্ষায় পাস করে কেমন করিয়া ? একটি ছাত্র ইহার উত্তর দিয়াছে--

In the examination most of the students pass. It is because though they read nothing they are very apt to copy from their friends.

এই ব্যাপার এত পরিচিত যে ইহার সম্বন্ধে কোন মন্তব্য করা নিপ্রয়েজন। প্রশ্নপত্র চুত্রহ হইলেও ছাত্রেরা বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্ত্তপক্ষের আদ্যশ্রাদ্ধ পাকাইয়া তুলে। তাহাদের সন্মিলিত ঔদ্ধতোর কাছে শুধু কলিকাতা নহে, মফ: খলেও শিক্ষকগণ ভটস্থ হইয়া থাকেন। ভাছাদের আচরণ দেখিলে মনে হয় ভাহাদিপকে উন্মার্গপামী করিবার क्या (वन है दिक भवर्ग सके वह वर्षवाद भाग कविश मक अव्यन्देश्व हाजम्य हाफ्रिया मियाह । বৰ্ষ স্বাধীন: ছাত্ৰেবা ডো স্বার বলিডে পারিবে না---Education can wait. Swaraj cannot ও সেই অভুহাতে দিনের পর দিন ছুল বা কলেজ কামাই করিতে পারিবে না। অন্য সভ্যদৈশের ছাত্রদের সমকক হইতে হইলে, ভারতের স্বাধীনভাকে সার্থক করিতে হইলে ভাহাদের ভাল ছাত্র হইতে হইবে; বাজনীভিতে মাডিয়া স্মাপনাদের ক্ষতি করিলে চলিবে না। একটি বিষয় বড় আশ্র্বা লাগে যে এতগুলি ছাত্রসভ্য থাকিতেও অন্যায় আচরণকারী ছাত্রদের শান্তি দিতে বা ভাহাদের অসকত কার্যাবলী বার্থ করিতে কিংবা বিশ্ববিদ্যালয়ের মর্যাদা রক্ষা করিতে প্রস্তাব পাস ছাড়া বড় একটা কিছু তাহারা আঞ্বও ক্রিতে পারে নাই। এইজন্যই মনে হয় ছাত্রদের ভভ-বৃদ্ধির মূলে শনি লাগিয়াছে তাহা না হইলে কেমন করিয়া ছাত্রনেভাদের সহছে এমন কথা একটি ছাত্র লিখিতে পারে १—

The representatives of the Union are very selfish and they try to take money from the College Students' Funds.

একটি বিষয় অবাস্তর হইলেও তঃখের সহিত বলিতে বাধ্য হইতেছি। ছাত্রদের হৃদয় উদার, তাহারা ইন্দো-নেশিয়া বা ভিয়েৎনামের জন্য কাঁদিয়া ভাসায়: ইহাতে আমাদের বলিবার কিছু নাই। কিছু মুসলিম লীগ প্ৰৰ্থমেন্ট কলিকাডা ও নোয়াধালিতে যে অত্যাচাৱের বনা বছাইয়া দিয়াছিল. ১০০ নং হারিসন রোডের মত কত শত ঘটনা ভাষাদের আমলে ঘটনাছিল কিছু এক সম্প্রদায়ের ছাত্রেরা ইছা লইয়া মাথা ঘামার নাই। মিথাা উদাবতার মোহে বাংলার ছাত্রসমাজ অনেকধানি নামিয়া গিয়াছে। মুসলিম লীগের অহুষ্ঠিত অত্যাচার সাম্প্র-দায়িকতার প্রকাশ নম ; ইহার মূলে আছে ইংরেজ কুট-নীভির চক্রাস্ত। স্বভরাং ছাত্রদের প্রথম হইডেই লীগের তুষ্টবৃদ্ধিকে আঘাত দেওয়া উচিত ছিল বলিয়া মনে করি। ইহাতে হিন্দু ও মুসলমান ছাত্ৰসঙ্ঘ ভাডিয়া তুই দলে বিভক্ত হইয়া ছাত্র-আন্দোলনকে তুর্বল কবিত একথা মনে করা দুরদশিতার পরিচায়ক নছে। স্থামাদের দেশের তুঃখ বা সমস্ভার সমাধান করিব আমরাই। দেশ ও সমাজ হইতে विक्रित्र कविशा चामारमय मनरक विरम्नी जावानत ও विमयमी করিল কে ?

- ছাত্রদের উচ্ছ্র্রনতাকে সকলে ক্মার চকে দেখেন। ভাহাদের শান্তি দিবার কথা কেহ তুলেন না। ইহার পশ্চাতেও একটি গৃঢ় উদ্দেশ্ত আছে। নেতারা ভাহাদের কিছু না বলার কারণ দর্শাইয়াছে একটি ছাত্র ভাহার অন্তব্ধ ইংরেজীতে---Because of getting liberty no one tells them nothing. অসাধু উপায় দাবা সং উদ্দেশ্য লাভ করিডে গেলে যে মার খাইতে হয় নেতারা ভাষা কেমন করিয়া ৰে ভূলিতে পারেন তাহা ভাবিয়া পাই না। ছাত্রদের হাতে অসমান নেতারা পাইতেছেন ও বোধ হয় আরও পাইবেন। একটি ছাত্র বলিয়াছে—They are misled by political parties. ইহা ছাত্ৰেরা যদি ব্ৰিয়া থাকে তবে আশার কথা। কিন্তু রাজনীতির স্বাদ ছাত্রদের দৃষ্টিভঙ্গা বিকৃত করিয়াছে বলিয়াই মনে হয়। পেশাদার রাজনৈতিক নেতাদের সঙ্গে তাহারা ধেন প্রতিঘদিতা করিতে চায়। একটি ভাত্ৰ স্পষ্টই বলিয়াছে—In practical life the students play the most important ভাহারা কলেজে অধ্যাপক, অধ্যক্ষ প্রভৃতির বিরুদ্ধে ধর্মঘট করিয়া যে শক্তি অর্জন করিয়াছে দেশের নানা সমস্তার ভাহারই প্রয়োগ করিয়াবসে। অনেকে গবের সহিত উল্লেখ করিয়াছে যে তাহারা সামাঞ্যাদের বিকল্পে মরিয়াছে তব পুলিদকে ডবায় নাই। ভাহাদের ক্রভিত্ব দেখিয়া ট্রাম কোম্পানীর ধর্মঘটীরা, অমৃতবাজার পত্রিকার ধর্মঘটীরা তাহাদের সহামৃত্তি কামনা কবিয়াছে। ছাত্রদের দেশ-বিদেশের অবস্থার সঙ্গে ওয়াকিবহাল হওয়া বাঞ্চনীয়, কিন্ধু ডাই বলিঘা কারণে-অকারণে স্থল-কলেজ বন্ধ করিয়া ধত্রতত্ত্ব সহাহুড়তি দেখাইতে যাওয়া সমীচীন নহে।

मास्त्र कथा व्यत्नक वनिशाहि। श्वराव कथा **क**ह বলিতে হইবে। আঞ্জালকার ছাত্রেরা ক্লাসের পড়াশুনায় ভাল না इंडेरले एनम-विरम्हानंत्र थवत तार्थः, विरमय कविशा ক্স্যানিষ্ট ছাত্তের। এ বিষয়ে বিশেষ পরিপঞ্চ। ডবে ভাহাদের চিন্তা বেজিমেন্টাল ও একদেশদর্শী। ইংবেজীতে ষাহাকে বলে ইণ্টেলেকচুয়্যাল কিউবিয়সিটি অর্থাৎ জানিবার আগ্রহ--ভাহাদের ষথেষ্ট আছে। অনেকে আবার দলের কর্মী: দেশের অনেক কথাই তাহারা হাতে-নাতে আনে। পড়াওনায় ভাল ছাত্রও আছে, তাহারা কখনও বাজনীভির ধার দিয়াও যায় না। কলেকে অনেকে ভাল বক্তা ও তার্কিক। বাংলা-দাহিত্য সমিতির কথা একটি ছাত্র উল্লেখ করিয়াছে। অনেকে সেণ্ট জন্স এম্বলেন্স কোরের সদস্ত। তাহারা কলিকাতার গত প্রত্যক্ষ সংগ্রামে সেবাকার্য্য করিয়াছে। দেশের দাবি পর্বমেন্টের গোচর করিয়াছে, লাটি ও ভলি থাইয়াছে; ভাল খেলোয়াড়ও

হইয়াছে। একটি মাত্র ছাত্র বিবেকানন্দের কথা উদ্ধুত করিয়া ছাত্রদের উচ্চতর আদর্শের কথা তুলিয়াছে—

The duties of our boys are among the lowliest and the lost. What they need are muscles of iron and nerves of steel.

দেখিয়া আনন্দ হইল কয়েকটি ছাত্র কলেজের পড়াশুনা বিষয়ে সন্তঃ নহে, ভাহারা প্রচলিত রীতির পরিবর্জন চায়। একটি ছাত্র বলিয়াছে, প্রতি ক্লাসে ছাত্রের সংখ্যা অন্তাধিক। ছাত্র ও অধ্যাপকদের মধ্যে কোন সম্পর্ক এই কারণেই গড়িয়া উঠিতে পায় না। এইজন্য ছাত্রের সংখ্যা কমাইতে হইবে। অধ্যাপকরা দেন কেবল বক্তৃতা, ছাত্রদের কাজ শোনা। ইছাতে পড়াশুনা ভাল হয় না। একটি ছাত্র বলিয়াছে—

The college is only for show, only to make oneself a bonafide student of the university and to make one-self able to appear in the university examination. But if anyone wants to learn he must not depend upon the college.

ष्ट्रत्यक करमब-शृष्टकानारवद रेमरनाद कथा विमारह।

মোটের উপর ধাহা দেখিলাম ভাহাতে বলা চলে ধে বাঙালী ছাত্রণের ভাল অপেকা মন্দই অধিকতর প্রকট। পরীক্ষার ফলাফলে তাংগর পরিচয় পাওয়া যায়। স্বাধীনতা যতই নিকটবর্ত্তী হইতেছে দলাদলি ততই প্রবল হইতেছে ও ছাত্রদের মন পড়াওনা হইতে বিক্লিপ্ত হইয়া দলগত রাজনীতি, কলেজের বাহিরের আন্দোলন, সিনেমা, সভা প্রভৃতিতে ছড়াইয়া পড়িতেছে। জাতি ও জগং বৃদ্ধির
দিক দিয়া অধংপতন কমা করিবে না। বাধীন ভারতে
শরীর ও মনে হস্থ সবল যুবক দরকার। ছাত্রেরা ষাহাই
করুক জাতির সেবায় যেন এই রূপ হস্থ সবল বৃদ্ধিমান্,
বৈজ্ঞানিক, দার্শনিক, কর্মী, করি, ভারুক, রাজনীতিক,
সেবক অপর্যাপ্ত পাওয়া য়ায়। ভরুণ সময় সময় উয়ার্গগামী
হয়, কিছ ভাহার প্রাণের প্রাচুর্যা, আদর্শের উপর শ্রছাই
ভাহাকে বাঁচায়। প্রাণের দিক দিয়া, শ্রদ্ধার দিক দিয়া,
আদর্শনিষ্ঠার দিক দিয়া আমাদের ভরুণরা মাথা তুলিয়া
দাড়াক ইহাই আমাদের কায়া। দলাদলি, নির্বোধ আত্মসর্ব্বিতা, অহমিকা, আদর্শন্তিতা অনেক স্থলেই ভাহাদের
বিল্রান্ত করে। দিগলান্তরা দিশা খুঁজিয়া পাক, জাতির
আশাকে পূর্ণ করিয়া তুলুক ইহাই কাম্য।

•

বর্তমান প্রবাহ যে বিষয়ের অবভারণা করা হইরাছে, সমর্প্র হাল্ল স্বাহ্নের কল্যাণ এবং আভি-গঠন প্রচেষ্টার সাক্ষরের দিক হইতে ভাহা বিশেষ অক্রত্বপূর্ণ। শৃথলা, সংযম এবং শিক্ষার প্রভি অবিচলিত প্রভা হাল্লারের উন্নতির বৃদ্দে, কিছ হংবের বিষর, হাল্ল সমাক্ষে ইদানীং ইহার বছই অভাব পরিলক্ষিত হইতেছে। হাল্লারের অভিভাবক, শিক্ষান্রতী, শিক্ষক সম্মেলন, শিক্ষা-প্রতিষ্ঠাম এবং বিশ্ববিভালরের কর্ণবার-গণের এ বছছে বিশেষ চিন্তা করিবার সময় আলিয়াছে। আমরা এদিকে তাঁহাদের মৃষ্টি আকর্ষণ করিতেছি।—প্রবাদীর সম্পাধক।

বিদায়ী

শ্ৰীআশুতোষ সাক্যাল

বিদাৰ ক্ষত্যি !
আমি চাহি মাই—কোল থেকে ঠেলে
কেলে দিলে মোৱে তুমি।
ছিল বড় সাধ তব মাঠে বাটে,
বকুল-বিছামো পলীয় বাটে
বাপিব প্রবাস-ফ্লাড জীবন
তব পদরেণু চুমি' !

ভাবি নাই কোনো বিন—
ভোষার কৃষ্টিরে পঢ়িবে না ভাব
আমার পাষের চিন্।
ভাবি নাই কভূ—হরে গৃহহারা
সংলহীন যাযাবর-পারা
বেভাইব ঘুরে—হপন-সৌব
ধুলিভলে হবে লীন !

আদি চোধে আদে কল,

দূৱ—বহুদূৱ হ'তে ডাকে নোৱে

তোমাৰ কুঞ্জল।

তোমাৰ সিঞ্চ খন বটুহায়া

আৱ কোনো দিন জ্জাবে না কারা,
ভব মদীকলে দক্ষ জীবন

ক্ষিব না সুশীতল।

কিনে কিনে শুৰু চাই,—
ভাছাইয়া দিলে ভবু ৰাহাবিনী,—
ভব লাগি' ব্যথা পাই!
স্থিৱ শীভল কুলাহে ভোষার
নীছ-ছারা পাবী কিরিবে কি আর ?
লহ্যা-জাবারে নিছতে নীরবে
ভাবি আক ব'লে ভাই!

শহাদ

গ্রীসাবিত্রী ঘোষাল

মিসেদ্ ওয়া eাকে দব সময়েই তয়ে তয়ে একটা অন্তত অহন্তির ভিতর দিন কাটাতে হ'ত।

ইয়ানেক ধৰনই বাইরে যেত, তিনি তাকে সময় মত বরে কেরার কথা মনে করিয়ে দিতে কথনই ভূলতেন না। ছেলেকে নিম্নে তাঁর ছিল্ডার অন্ত ছিল্ না, তাই সব সময় খ্যান খ্যান করতেন, কোর করতেন, এমন কি কোন সময় অভিমানও করে থাকতেন।

কোন দিন হয়ত রাত হয়ে যাছে, ইয়ানেক ফিরছে না, বিলছিত যুহুওঁওলো অসহ অভ্যাচারের মত মায়ের বুকে বিঁবছে। প্রতিটা মুহুওঁ একটা নতুন বিভীধিকার অপ্ল বয়ে আনছে। কি রকম যেন একটা অহুত অয়ে মার মন অবশ হতে আনে, আক্ল মাতৃহদয় সন্তানের কল্যাণ-কামনায় অমুক্ত দেবতার পায়ে মাথা বুঁকতে বাকে।

কিন্ত মায়ের এই যে ছ্লিডা, এই যে ভয়, এটা মোটেই আগদত ছিল না। বাভবিক ওয়ারপ'র অবস্থা তথন এমন এক ভবে এগে পৌছেছে যে রাভায় ছ'জন পরিচিত পোকের দেবা হলে প্রথমেই মুব দিয়ে বেরোয়, 'কিহে এবনও ইকে আছ ?' আর সাঁব-বাতির সময় পার হয়ে গেলেও যদি কেউ যরে কিবে না আলে, তবে লে আর কিরবে না, সকলেই নিশ্চিত ববে নেয়।

মিশেস্ ওয়াভার বামী ছিলেন একজন আইনব্যবসায়ী।
লড়াই সুকু হওয়ার পরই তিনি একজন অকিসার হন আ্বার
দিন গুনতে থাকেন কবে তাঁর ঢাক পড়বে। ১৯৩১ সালের
সেপ্টেম্বরে অবশেষে ভাক এসে পড়ল। ববর পেরে সোজা
আপিগ থেকেই তাঁকে চলে বেতে হরেছে, খ্রী-পুত্রের কাছ
থেকে বিদায় নেবার অবসরটুকুও তিনি পান্ত, নি।

যুদ্ধ স্থক হওয়ার পর এক মাস পেরুতে মা পেরুতেই পোল্যা । হয়েছে ঠিক যেম নরকর্ও। এই ক্পেত অবস্থাটাকে কেট মেনে নিতে পারছে না, সকলেই মনে মনে ভাবছে একটা ছংবর্ধই কেটে গেল বলে। কিছু ছংখের দিনগুলো একখেরে ভাবেই চলেছে, এর যেম আর শেষ নেই। অছকারে দিক্-দিগল ছেরে গেল, মভুন স্থেয়ের র্ম্মি-সম্পাতে কবে যে আবার দিবিদিক উদ্রালিত হয়ে উঠবে। মিসেন্ ওয়াভা বছ চেটা করেও বামীর কোন খোঁল পেলেন না।

সাবেক বাজীর রাভাটা আক্রমণের প্রথম চোটেই ভেঙে পেছে। মিসেস্ ওরাভাকে উঠে আগতে হরেছে ছোট একটা ফ্র্যাটে। ফ্র্যাটটাতে একটা মাত্র খর, তবে বেশ বছ—মা আর ছেলের পক্ষে যথেইই। খরের দাবী ছিনিষপত্র একে একে সবই বিকিয়ে গেছে, একমাত্র কাল্য কোমমতে বাঁচার মত সংস্থান রাখা। মাবে মাবে প্রান্তে কোন আন্ত্রীরস্থান বা বন্ধান্তবের বাঞ্চীতে মা বেড়াতে যেতেন আর কেরার সময় বেশ কিছুদিনের মত বাবার-দাবার জোগাড় করে আমতেন। হঠাৎ এক এক সময় এই উপ্স্বভিত্তে তার মনে প্রচণ্ড বিভার আসত, মনে মনে ঠিক করতেন এই শেষ, আর ময়।

ক্রমে ক্রমে তিনি নিজেকে নানাভাবে বঞ্চিত করতে প্রক করলেন। ক্রম করে থেতেন বাতে সঞ্চর বেশ কিছু দিন ছারী হয়, ছেলেটর থাবার অভাব না ঘটে। এই ছেলেটই ভার জীবনের এক্যাত্র অবলয়ন—কেবল এর ছভেই তিনি কোন মতে নিজেকে বাঁচিয়ে রাখতে চেপ্তা করছেন।

ক্রমে ইয়ানেকও নিজেদের অবস্থাটা বেশ ভালভাবেই বৃক্তে পারলে। সলে সলে সে এমন ব্যবহার করতে লাগল যেন সে-ই বাড়ীর অভিভাবক। বয়সে যদিও সে নিভাছই ছোট, সবে মাটি কুলেশন ক্লাসে পড়ছে, কিছ ভার আচনবে মনে হতে গাগল যেন সে একজন বৃদ্ধ, কত দায়িত্ব ভার নাবায়। কিছ এই আঠার বছরের ছেলেটির মাবায় যত প্ল্যানছিল, সেঞ্লো কাজে লাগাবার আর কোন পবই বইল না। এমন কি পড়ান্তনাটাও বছ হয়ে গেল, চালাবার মত অব্ভালে না, আর ভা ছাড়া ভার্মানরা শহরের ভ্লঞ্জালা সব বছও করে দিরেছিল।

সেই সেক্টেম্বর আক্রমণের পর থেকে সমস্ত ওয়ারস
শহরটাই ব্যবসায়ে লেগে গেল—সঙ্গে সংগ্রহানেকও ভাতে
যোগ দিলে। সিগারেট দিয়েই ভার হাতে বভি হ'ল। মতুন
জীবন প্রথম প্রথম বেশ ভাগই লাগতে লাগল, আর লাভটাও
মক্ষ্ ক্রিলে না। ব্রচ-ব্রচা বাদ দিয়েও দিনে বেশ কিছু
আয় হ'ত।

ইয়ানেকের মন এই দিকে গেছে, তা মা জামতেন না।
এক দিন তিনি পথ দিরে বাচ্ছিলেন, হঠাং একদিকে চোধ
পভাতে পা যেন তাঁর মাটর সদে গেঁথে গেল! নিজের
চোধকেও যেন তাঁর বিশাস হচ্ছিল না। একটা গলির মোডে
ভাভিরে ইয়ানেক চীংকার করে গিগারেট ফেরি করছে।

সেদিন সংখ্যবেলা ছেলে খবে কিবতে, ছু:থে অভিমানে মা একেবাবে ভেঙে পছলেন; কেঁছে-কেটে ভার মন গলাভে চাইলেন, কিছ ছেলে নাছোছবালা। সে মাকে বার বার করে বোঝাতে লাগল, কেন এতে লোখের কি আছে, ভার পরিচিত কত ছেলেই ত এ রক্ম কোন ন। কোন একটা কাজ করছে। ভার মধ্যে ক্ষেক জন ত বেশ ভাল বংশের ছেলে। লবাই করতে পারে আর সেই বৃধি কেবল বলে বলে থাবে, সংসারের নাম বুজো মারের খাতে কেলে? ভার পরে আবার সে কাজের সলে সজে প্রাঞ্জনাও করছে। প্রমাণ করার কর্চ তথুনি দুসে একটা বই থেকে থানিকটা আওছে গিলে। বহু শেব হ'তে বেশী দেরি নেই, শীগ্রির কিরে আসবে পোলেরা আর ভালের সলে নিপ্রপক্ষ। আর—আর ভারপরে না দেববেন ইরানেক কেমন করে চলে যার ক্র্যাকাও বিশ্ববিভালতে, আর সেবান থেকে অল্পকোর্চে। ইরানেক হেসে মাকে আদর করে বললে, "কিন্তু এখন আনন্দ করবার সময় নেই। এখন বালি কাক্ষ আর কাক।"

গুয়ার স'র শ্রমিক ছেলেগুলোর সঙ্গে মিশে ইভিমব্যেই আইনকে বেশ কাঁকি দিতে সুক্র করেছে। সে আক্রাল ক্র্যাকাণ্ড যাচ্ছে ভড্কার কল, গুবলিনে ভাষাক-পাভার খোঁকে; এর মব্যেই ক্রিমণত্র বাছাই ব্যাপারে বেশ ওভাদ হরে উঠেছে।

देशास्त्रक कार्याचे अकल्यन शाका राजनाथी करत केर्राष्ट्र ।

মৰোই জিনিখপত্ৰ বাছাই ব্যাপাৰে বেশ ওভাদ হবে উঠেছে।

মাল কিনবার ফাকে দে ট্যাক্স ফাকি দিয়ে মাল চালান

নিব্ধে আগে। সে কানে একবার কোন রক্ষে ডেবলিন পার

হতে পারলেই, তার মাল ছুনো লাভে বিক্রী হবে। জার্মানগুলোর ঐবানেই বানাভল্লালীর যত কড়াকড়ি। ট্রেনের
কামরাগুলোতে ত বটেই, মার যাত্রীদের কাপড়-কামা বুলে

কৰ্মো কৰ্মো ইয়ামেকেরও ছুক্নি আসে। সেদিন ঘৰন সে ঘরে কেরে, ভার চোবের কোনে কালি, ভারি মুব, স্কালে আঘাভের চিহ্—প্রক্ষ মেশাক্ষ থাকে ঠিক রাত্রির মত ব্যব্যা। ভবে এ ব্যক্ষ ঘটে ক্যাচিং।

দেৰভেও কমুর করে না।

কিছু দিনের মধ্যেই মিসেদ ওয়াঙা, তার ছেলের জীবন-যাত্রা সক্ষে সন্দেহাতুল হতে উঠলেন। কেন না ছেলেরা এ বয়সে করতে পারে না এখন কাজ নেই। বিশেষ করে তার ছেলে মানা বরবের লোকের সঙ্গে মিশছে, আইনকে কাঁকি দিয়ে ব্যবদা করছে, বেখানে দেখানে পুরে বেড়াছে; মার কেবলই আলমা পাছে ছেলে কুসন্ধে মিশে ধারাণ হয়ে যায়।

বছ দিন ধরেই ইয়ানেক্ সন্থ্যাবেলায় ঠিক সময়বত বাছীতে কিরহিল, কিন্তু মা লক্ষ্য করতে লাগলেন গত কয়েক দিন যাবং আবার সে পোলমাল করছে— প্রায়ই আটটার কারকিউর ঘন্টা পড়ে গেলে তবে লে বাছী কেরে। এীম্ম কালে কারকিউর সময় যথন ছিল এগারটা তথন সে কিরত এগারটার পরে। কোন কোন রাতে হরতো ক্ষির্গই না। মা কানতেন কাক উপলক্ষে নহুরের বাইরে যাবার প্রয়োজন তার নেই। আর যথন গত্যি প্রত্যে প্রয়োজন হ'ত তথন প্রতিবারেই সে মাকে কানিষে যেত, সাবধান করে যেত যে রাতে সে বাছী কিরবে না; কিন্তু কি যে করবে সে সহুছে কোন রক্ষ উচ্চবাচ্য করত না।

এক দিন সভ্যায় হঠাং ইয়ানেক কিয়ে এল কি রক্ষ একটা মানসিক বিপর্যাভ অবস্থায়। আছচোধে একবার মারের দিকে চেরে লে আনমনে সারা খরে পারচারি করতে ছক্ত করতে। ইটিছে, আর মাবে মাবে লোটস্ জাকেটের পকেটটা ইটিকাছে। ভতে যাবার আগে জামা কাণভঙ্গো যথারীতি একটা চেরারের উপর গুলে রাখলে, কিছ চেরারটা টেনে একেবারে বিধানার পাশে নিরে এক। ভার পর মাকাগলপত্র নাভাচাভার বসবসানি শব্দ ভ্রমতে পেলেন।

আমার কাছ খেকে ও কি যেন প্কোছে—তিনি ভাবপেন। মায়ের মন গভাবতই ব্যথাভূর হয়ে উঠল। প্রথমে সন্দেহ, তার পরেই সেটা অভিমানে রূপান্তরিত হয়ে অঞ্ রূপে করে পড়তে লাগল।

সন্তানের অন্তত্ত আগতার মাধের মন সর্কাণাই ক্লিই থাকে, কিছ মিসেস ওয়াওা তো কেবল অগীক করনা নিয়েই থাকেন নি এ কথা একান্ত সত্য যে জাপ্মানর: ঢোকবার পর বেকেই ওয়ারস'র বাভাবিক জীবন্যাত্রা ব্যংগ হরে প্রেছ। সংসার ভেঙে গেছে, অগনিত গৃহহার: মরনারী পরে পরে ঘুরে বেড়াছে, তরুবেরা অভিভাবকহীন, বাভাবিক জীবন্যাত্রা থেকে হিটকে পড়েছে। ছুল-কলেজ নেই—পরে থাটে জিনিয়পত্র ক্লোন্বেচা চাল, তার ওপরে নানা রক্ম দলবলের ক্থাও লোকের মূর্বে শোনা যায়। মিসেস ওয়াভার কান্তে ত কত কথাই এসেছে, তাই এক্মাত্র সন্তানের ক্লভ তার এল তথ্য।

ইয়ানেক ঘূমিয়ে পড়লে মা টেবিলের পাশের আলোটার এক দিক আড়াল করে সেলাই নিয়ে বসলেন। ঘূম কিছুভেই আস্ছে না। ঘণ্টার পর ঘণ্টা কেটে যেতে লাগল, মা গুরু হয়ে বলে আছেন। মনের মধ্যে কে যেন অবিরাম ফিস্ কিয়ুক'রে বল্তে লাগল, ভোমার ছেলে কি করতে চায় বুঁকে বার করে।, ভূমি মা, ভোমার ছেলে কি করছে ভোমার আনবার অবিকার আছে।

ষা প্রাণপণে চেষ্টা করতে লাগলেন নিজেকে দমন করতে। এত কাল সাথী বাছেলের কোন কাজের প্রতি সন্দেহ প্রকাশ করা বা সে সম্বন্ধ কোন বোজ্ঞবর নেওরাকে তিনি বিশ্বাস্থাতকতার সামিল মনে করতেন। পরস্পরের প্রতি অকৃত্রিম বিশ্বাস ও নির্করতাকেই তিনি স্বামী-স্রী, মা-ছেলের মব্যে একমাত্র সম্বন্ধ বলে জানতেন। কিছু এবন প্রম ছংসম্ম, হয় ত তাঁর স্কানের সামনে সমূহ বিপদ, তিনি মা-ভাকে একটা ক্ষিত্র প্রতিকার করতেই হবে।

বীরে বীরে ভিনি উঠলেন, আনিচ্চুক পদক্ষেপে সম্ভানের বিরে বীরে বীজালেন। কথল বৃদ্ধি পৈছে ছেলে নিঃসাড়ে ঘুমোছে। যা নিঃশব্দে ইয়ানেকের কোটের পকেটে হাভ দিলেন, কল্পমান আধুল দিয়ে হাভভাভে হাভচাভে ঠাতা বীকা একটা কাঠের হাভল হাভে ঠেকল। হাভজটার মাধার একটা ছোট বিং। আজানা আশ্বার ভার সম্ভ দারীর শিউরে উঠল। ভার পর কাগজের গোছাটা ব্রলেন।

ষ্টেৰ মধ্যে কে যেন চুলি চুলি বলে চলেছে—ৰাই বুট্ক না কেন ভোনাকে আনৃতেই হবে ব্যালারটা কি ? কাঠের হাতলটা তিনি শক্ত করে চেলে বরলেন••। কাঁপতে কাঁপতে কোন রকমে টেনিলের কাছে এসে কিনিবটা বুলে বেবলেন। প্রতীপের আলোর বক্ বক্ ক'রে উঠল একটা কোন্ট রিভলবার আর এক ভাড়া কার্গক। আতকে নারের শরীরের সমস্ত শক্তি অবপৃপ্ত হবে গেছে। ক্ষেক বৃহূর্তের কচ তিনি আক্ষরের মত বলে রইলেন। অবসাদ্যাক্ষ মন কোন রক্ষ চিন্তা করতেও চাইলে না। টেনিলের ওপর হল্দ রঙের কার্গকের ভাড়াটার দিকে ভার ঘৃষ্টি নিবছ হয়ে রইল আর ক্লিভ আনুলগুলো ঘড়ির বীবন পুলতে চেটা করে চলল। অতি বীরে বীরে তাঁর মানসিক কচ্চা একটু একটু করে কমে আগতে লার্গল আর সদে সদে মরলা শক্ত কার্গকের ওপরকার লেখাওলো ফুটে উঠতে লাগল:—

"পোল্যাও মত্তে নি ।"—পোল্যাওের বাধীনভাকামীখের মুখপত্র (লাগুছিক)।

ভোরের আলো না কোটা পর্যন্ত মা সেই ছাপা লাইন-গুলোর সামনে গুরু হরে বলে রইলেন—কালো কালো অক্তর-গুলো বেন তাঁর চোবের সামনে নেচে বেড়াচ্ছে। বার বার করে লেবাটা পড়ছেন,কিন্ত তার অর্থের কোন পরিবর্তম ঘটছে না। ঠোট ছট চুপিচুপি অলাইবরে উচ্চারণ করছে, প্রথম লাইন ক'টাতেই গৃষ্টিটা আটকে র্যেছে। তেনিন সকালে ইয়ানেকের বর্ষন মুল্ল ভাঙল তথন সে গুণাক্ষরেও জানতে পারলে না মারের বুক্তের মার্থে কতবড় গোপন কবা চাপা রয়েছে।

নেইরানেককে আমি বছদিন বরেই আমতাম, সে ছিল
আমার ছাত্র। ১৯৩৯-এর সেপ্টেশরের পরে তার সঙ্গে বছবার
আমার দেবাগাকাং হয়েছে,মানা কারণে নানা পারিপার্থিকে।
তাকে আমার ভারি ভাল লাগত। আমাদের মধ্যে একটা
বিখাস ও বছুদের বছন ছিল।

বেজাইনী খবরের কাগক বিতরপকারী বলে ভার মধ্যে বেল একটা গর্মা ছিল—বিশেষ করে যথন একটা কোণ্ট রিভলবার সঙ্গে নিয়ে চলাকেরা করত। আমার সাবধান-বালী ভবে লামাত একটু হালত নাত্র। আমি যথন বলভাম যে সৈনিক-জীবনে সাবধানভাই হচ্ছে সর্মাধান শিক্ষা, ভবন সে কোণ্টটাকে নিরে স্নেহভরে একটু মাড়াচাড়া করে বলভ সে ভীতু নর আর এটা সঙ্গে থাকতে বরা সে কিছুতেই পড়বে না। লে নেছাত শিশু নয়।

তবুও এই নীলচোধ লখা স্থা বেলেটকে দেবলে নিভান্ত শিশু বলেই ননে হ'ত। শিশুর নভই লরল অকপট বিখানে সে স্বকিছুকে এছণ করভ। ভার দেশবাসী যে আসর খাবীনভা-সংগ্রামে অরমুক্ত হবেই ভাতে ভার বিজ্যাত্র সংশ্বহ ছিল না। ভার মুদ্ধ বিখানের কাষে আমি নিজেও কভ সময় তেলে নিষেত্র । ওর নকে এসৰ কৰা নিয়ে আলোচনা করার পর ওর বিধানের শক্তি বেন আমার প্রাণেও লকাছিত হরে বেড, নববলে নৃতন উভবে আমি সঞ্জীবিত হয়ে উঠতান।

সবিভিন্ন ভেতরেই সে আশার আলো বেবতে পেত , বেবানে মিরুপক চরম পরাক্ষকে বরণ করে নিত সেবানে ভাষত মিরুপক শত্রুদের অভে জাল পাতহে মারা। ওর নিকট বারাপ কিছু নেই। ক্ষরতা বাকলে সিকরেছির নামের আগে ও নিক্ষই 'সেন্ট' বসাত। পোলিশ ক্ষাভার-ইন-চীক্ষের মতলবের বুঁটনাট সব ওর জানা, যেন ও তার সহকারী। পোল্যাভের সৈত্রা কোবার কোবার মুদ্ধ করত্তে, রেজিনেন্ট সংখ্যা কত, তালের জন্ম আরু বিশেষ করে পোলিশ নৌসেনা ও বিনানবহুরের কথা সব ওর কঠন্তু।

আমি বদি কৰনো ওর দংবাদের সভ্যভার বিজ্যাত্র সংলছ প্রকাশ করেছি ভ, ও ভর্নি একজন কড়া ভূগোলের মাটারের মভ বলত—একধানা মানচিত্র কিছুম, কিছ পৃথিবীর মানচিত্র হওরা চাই ব্রলেন। একধানা পৃথিবীর মানচিত্র—ভা হলেই ব্রভে পারবেন আমাদের সৈচরা কোধার কি করছে। বাস, একদিন চা খেতে খেতে ইয়ানেক কিস্ কিস্ করে আমাকে বললে, আমার মনে হয় আপনি আমাদের মিত্রপঞ্চীর কাউকে কথনও দেখেন নি, না ? যেন ও নিজে কভ জনকে দেখেছে।

বসভের প্রথম দিকে এক দিন যে ব্যাপারটা ঘটণ, তার মৃতি আৰও আমার মনে অলঅল করছে। মনে হচ্ছে এই তো সবে সেদিনের কথা। হুর্য উঠেছে, ভাঙা বাটীওলোর আমালার সালিতে বাকা খেরে হুর্যের আলো চারদিকে টিকরে পড়ছে, বরক গলতে হুরু করেছে। রাভার হু'পালে গাছওলো সারি সারি ইাভিরে, রুক্ত মিশ্যম ভালপালার টিক ভিক্তের মত রিজ্ঞ। এক বাক চকুই পাবী ভালে ভালে কিচিরমিচির করে বেডাছে। কুরালা কেটে গেছে, মাহ্মব-ডলোকেও অনেকটা সভীব দেবাছে, ভাদের চলাকেরায় বেন একট্ট প্রাণস্কার হয়েছে বলে মনে হচ্ছে। বিভের চেরে বালাশ সময় আর কি আছে।

আমি তথন পথ দিরে বাচ্ছিলাম ইরানেকের সলে দেখা করতে, বেল-টেশনের কাছে একটা নির্জন কলিবাদার আবাদের দেখা হবার কথা। কতকগুলো বেআইনী খবরের কাগল নিয়ে আমাকে প্রদেশের বাইরে চলে বেতে হবে। সব বন্দোবন্ত করা ছিল, কেবলমাত্র ইয়ানেকের কাছ থেকে আমাকে জিনিয়গুলো সংগ্রহ করে নিতে হবে।

হঠাং রাভার ভলির শব্দ শোনা গেল। পথচারীরা সকলে ছুটল ঘোকান বা অন্ন কোবাও আপ্রায় নিতে। মুহুর্ভের মধ্যে রাভা একেবারে কাঁকা। নিক্ষর কোন অঞ্চল বেরাও করে থেপ্তার করা হচ্ছে, অথবা আনাদের শহরের নব আগভক্ষের রঙীন নেলার কোন একটা বেরাল।

গভীর ছলিন্তা আবাকে আছের করে বিলে। আবার অন্তর বলে দিলে কোন বাহুষকে থালি করা হ'ল। আবি আেরে পা চালালান, অবলেষে প্রায় এক রকম ছুটতে ছুটতেই কৃষিবানার কারে পৌৰ্গান। লেবানে ইভিম্বোই বেশ ভিড় জবে গেছে। ভেতর বেকে শোনা বাছে চিংকার, আদেশ— আর্থান পুলিশও চোবে পড়ল।

আমি সোকা ভিড় ঠেলে এগিছে গেলাম। ভার্মান পুলিসকে টোচরে ভিজাগা করলাম, 'ব্যাপার কি এবানে ? গোলমাল কিলের ?' বর্জরটা একটা ছাত দিরে মাটর দিকে ইন্সিত করে আর্থান ভাষার ভ্রাব দিলে, 'দেব, এই হতভাগাটাকে দেব।'

সিঁভির উপরে লখা হয়ে পঞ্চে আছে ইয়ানেকের দেই। আর কোন প্রাক্তির উপরে লখা হবে না।
ররেছে কোন্ট রিজ্পবারটা। পা ছটো শর খর করে কাঁপছে, নিসেস ওয়া
নাগা গেকে রজের বারায় মুখটোখ ভেসে বাছেছে। পুর - বসে আছেন।
জন্মুট খবে ঠোঁট ছটো খেন কি উচ্চারণ করছে, মুখের
ছ'পালে কেনা, চোবের ভারা হির।

• Majewski-

মূৰের ওপর বুঁকে পড়ে যাধার লাল লাগটার ওপর আছে আছে হাত রেবে কিস্ কিস্ করে বলতে লাগলার, ইয়ানেক বল, কি করে এ বটল, বল ইয়ানেক,…ইয়ানেক।

উঠে এস—একটা কাৰ্দ্ধান সাথী চিংকার করে উঠল।
আমি লালিয়ে টুটলাম টিক সেম একটা সকলে

ভাষি লাকিয়ে উঠলায়, ঠিক য়েন একট। কুরুরকে কেট
লাঠি দিয়ে বোঁচা মেরেছে। তীকু চিংকারটা য়েন ভাষার
কান কেটে কেটে বদে বাছে। উঠে ভাভে ভাভে ক্ষতার
ভিচ্চে মিলে গেলায়। ভাষি য়েন ভার সে মান্ত্র নই। কিছু
ভারতে পারছি য়া, কিছু বুরতেও পারছি না। দেহটাকে
কোমমতে টানতে টানতে গভাহীন ভাবে পব চলতে
লাগলাম—চবং-শক্তিহান এককন ছবিরেয় য়ত। ভাষার
ভার কোন প্রয়েজন নেই, কার্যুর সকে দেবা করতে
হবে না।

মিদেস ধরাঙা হরতে: তাঁর ছেনের অপেকার রাভ কেসেবস আছেন !e

● Majewski-ৰ Yanek the Distributor-এর অমুবাৰ

সত্য চেয়ে বড়

<u>শ্রীকুমুদরঞ্চন মল্লিক</u>

কাঠবিভাগেতে সাগৱ বেঁবেছে রামায়ণে লেশা মাই ভাতে কিবা আসে যায় ? কে বা ভা দেখিতে চায় ?

চিরদিন ববে আধর। সবাই বিবাস করি ভাই।

রামের হাতের ছাপ গারে ভার—আদরের ছাপ আহা,
এখনো মুছেনি কই ?

হাসি—বিশ্বিত হই বাষ্চলের গোহাগের বিনা কেমনে মুছিবে ভাহা ?

হয় ও অস্থানা সদয় ধাদয় ভক্ত বা কোনো কবি রয়েছে এ কথা ভাই, সক্ষেহ ভাতে দাই

क्स महत्त्व अक करत--- अक अं त्करण मध्य हित ।

বিন্নাট সাগৱৰৎদ কোৰা ? কোৰা ধ্ৰ্বলৈ প্ৰাৰী ?
আকাজন ভাৱ কত—
আপ- সাব্যমভ,
পুঠ ক্ৰেছে প্ৰিকল্প। কীৰ সাহায্য দানি।

ক্ষ হ'লেও মহাপুরুষের লভেছে আশীর্কাদ,
পেরেছে আদর ভার,
বাকি পেভে কিবা আর ?
• অরভোৎসবে পংক্তিভোকনে সেও পড়ে নাই বাদ।

বুপের বুপের বালক-বালিকা ওই কাহিনীর লাগি কাঠবিভালের প্রতি সদর সকলে অতি, রাথের হাতের হাপ্তুঁকে দেবে শিশু হিয়া অস্থানী।

হয় ত নেহাত কল্পনা উহ:- -সত্য নাহিক কিছু,
তবু বিশ্বাস করি,
তবু সূব পাই শ্ববি
কীবে দয়া নামে ক্রচিবান তারা--পদে মাধা করি নীচু।

মানুষকে বাধা মহন্তে পর----জগবানে করে প্রিম,
সে কাহিনী রচে যারা
কবি ও সাধক ভারা
ভারা যা বলেন সভাের চেরে বছ বেশী বর্ণীয়।

বাল্য-প্রতিভা

গ্রীদীনেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

ক্পতের বিশারক্ষক স্ক্ট-বৈচিত্রোর মধ্যে মানবক্ষাতি বুছিবলে শীৰ্যনাম অধিকার করিয়া রছিয়াছে বটে, কিছ মাসুষে মাসুষেও বৃদ্ধিবৃদ্ধির তারতমা পরিঞ্জ করিয়া বিশ্বযুগাণরে নিমর্থ क्हें एक क्या विशेष नामासिनीय मकामभाष्य पूर्ण वूर्ण अक একজন অসাবারণ বাজি জ্বএত্ণ করিয়া অতুত প্রতিভাষারা সকলকে চমংকৃত করিয়া পিষাছেন। ভারতবর্গেও শ্বতি প্রাচীনকাল ভইতে বহু মহাপুরুষের উদ্ধব হর্তথাছে গাঁহাদের প্রতিভার বিচিত্র ভূম্নি অভিলৈশবেই বঈশ্বাছিল ৷ পৌরাণিক ৰূপে অজিরার পুত্র বৃহস্ততি "বিভ" কাজেই অধ্যাপনা জারভ করেন-ছাত্রদের মধ্যে পিতৃবা, শিতৃবাপুত্র প্রতৃতি বয়স্ক আত্মীরপণকেও "পুত্রকাঃ" বলিয়া সংখাধন করার ভাঁছারা कृष एवेश (पर्वापद मिक्डे अक्यांत करहन: (प्रवलादा একবাকো বলিলেন, "শিশু ঠিকই সঙ্গেহন করিয়াছে" (মনুসংস্থিতা, ২র অধ্যার, ১৫১-২ প্লোক) । পিশু-প্রতিভার চুড়াছ উদাহরণ সুপ্রসিদ্ধ অপ্তাবক্ত মুনি। তিনি মাতৃগর্ভে থাকা অবস্থায়ই সাজবেদ ও সমস্ত লাঞ পিতার পাঠ শুনিরা শিবিয়া क्लाम बदर बक जिम माजनर्ज स्टेटिंड चरायमञ्ज विचारक মাতার প্রতি উপেকাভাবের কর তংগিনা করিতে যাওয়ায় निलाइ अकिनन्नाटल अहैरक रूदेशं कृतिहै रून। मन रहनद वद्यात समझ द्राक्षात यक्षत्रकात महोतत्कत विणावकमक वाधिकत बुखांच महाकादाल भावता यात्र (वमनर्का. २०२-४ व्य प्राप्त)। त्राक्षा अक श्वारम कीशास्क "स्वयंत्रक" विवेश मरवाश्म करवम ।

ঐতিহাসিক বুপে শিশু-প্রতিভার শ্রেষ্ঠ উদাহরণ শহরাচার্য্য। আম্মলত্রীর ৭৬ লোকে শহরাচার্য লিবিয়াছেন, ভরবভীর खमाभाम कतिया "स्विष्णिक" अभूस्य कविष्णिक माण कदवन क्रिकाकात्रास्य माण अहे स्विकृतिक त्रवर नक्रवाधार्यः। কৈবলাপ্রমণ্ডি-রচিত "সৌভাগ্যব্রিমী" দীকা হটতে এই "हिबचनाबारम"त नाताश्म हैहल स्टेन। महताहार्यात পর্ষেরহীকক্ত পিডা প্রতিধিন প্রামের বাহিরে এক মন্দিরে হাইয়া ছগ্ধবারা দেবীকে স্নান করাইয়া পূজা সারিয়া অবলিষ্ঠ किकिर इक्ष जरुठव श्रुवाक बाहेएल शिर्णम । श्रुवाब माम ভ্ইভ দেবী স্বংট ছক্ষ পান করেন, পীতাবলিট চক্ষ পিতা ভাঁছাকে দেন। এক দিন শিভার অনুপ্তিভিতে অশক্ত मालाव मिट्कॅटन वानक नेक्बरे इक्ष नरेश मनिद्व याम अवर ভগবভীর সম্পুৰে রাখিয়া বলেন, "বাও।" বিলয় দেখিয়া বালক কালিয়া উঠিলে অগবতী দরাবশতঃ আবিভূতি হইয়া इक् नवष्टी भाग करत्वम । भरत भाक मृत्र प्रश्विश वामक बावात কাঁদিয়া উঠিলে ভগবতী বয়ং কোলে লইয়া ভাঁহাকে ভয়-शांव करवम अवर छरक्षार छाहारछ मर्वाविशांव कृष्ठि एव

(তিতো ভগদবিকারা: ভন্যপানেন সর্কবিদ্যা ভদানীমেব স্থিকাং ভাতা — বলীর-দাহিত্য-পতিষ্দের ১৪০৭ সংখ্যক সংস্কৃত পুৰির ৭৪-৫ পত্র ফ্রষ্টব্য)।

বাংলাদেশেও হুগে হুগে এই ক্রণ অসাধারণ প্রতিভাসশার "দেবাংশ" মহাপুরুষ (prodicy) আবিভূত হুইরাছেন। উহিদের নাম বিশ্বতির অহকারে বিন্তুপ্রায় হুইখা যাইতেছে। আতীয় জীবনে অসাধানা প্রতিভার সমূচিত স্থতিরক্ষা হওরা কর্মবা। আমরা বর্জমান প্রবছে ৭ জন বাঙ্গালী দেবাংশের বিবরণ সঙ্কলন করিয়া প্রকাশ করিতেছি। আশা করি অভিজ হনীধিগণ এই জাতীয় বহুতর প্রাতঃমারণীয় ব্যক্তির নামোছার করিয়া বাঙ্গালীর পূর্বতন গৌরবোজ্বল চিত্র আবার ক্তম করিয়া প্রকাশ করিবেন।

১। রম্বনার লিরে:মণি (औ: ১৫ল লভাকী)

बच्चाटबंब कियमधीयलक औदभीब प्रमेश दारला-माबिट्छ। অনেকটা প্রচারলাভ করিয়াতে বটে কিন্ত বিভানসমূত প্রণালীতে ভাঁছার কথা এখনও প্রেষিত হয় নাই: ঋণচ বিগত সহল্ল বংগর মধ্যে বাংলাদেশে রঘনাথ লিহোম্পিক ন্যায় ভাগ্যান মহাপভিত আর কেছ জন্মগ্রণ করেন নাই : কারণ जाहात अवाम अध "अमुमामशीविकि" आहा aco तरशह यादर कांतजरार्द्य मर्ग्वस-कांत्राम क्वेट्ड शक्तां के खरा कांचीर হুইতে কোচীন প্রাপ্ত-ভারতীয় দুর্শনের উচ্চতম বিদ্যায়তম-সমূহে ছুরুহতম জাকরএম্বরণে প্রতিভাশালী ছাত্তের বুদ্ধির তীকুতা পরিমাপ করিয়া আসিতেছে। ইংরেছ-অবিকারের लाउछकाल्य क्रवात वृद्धि अहे विविध विमानित क्र छिएम মবধীপে অধিষ্ঠিত হিল-কবি ভারতচ্চের ভাষার নবছীপ তখন "ভারতীর রাজধানী, ক্ষিতির প্রদূর্ণীপ"। সিবোম্নির "নিক-দীপিকা" দীবিভিত্তত্বই এই সারস্বত উৎসের পর্য ট্রপাদান। শিরোম্পির বিষয়ে বছত্বা অনাত লিখিয়াতি (সাহিত্য-পরিষণ পত্রিকা, ১৩৪৯, পু. ১১৭-২৬ : ১৩৫০. পু. ৬-১৬; ১৩৫৩, পু. ১-৩)। ভিনি রাচীয় শ্রেণীর ত্রান্ধণ শুলপাণির দৌহিত্র ভিলেম, মহাপ্রভুর এক পুরুষ পুরুষভূষী ভিলেম এবং একমাত্র বাস্থদেব সার্ব্বভৌষের ছাত্র ছিলেম। ভিনি चरात्रमार्थ विधिनास याम नाटे अदर महाक्षेत्रक नहांगात्री हिट्लम ना । जानाव अक हकू महै हिल।

তাঁহার বাদ্যপ্রতিভার নিদর্শন তিনট উপাধ্যানে চির-প্রসিদ্ধ আছে। (১) নবহাঁপে বাস্থ্যের সার্ব্যভেমির টোলের নিকটে (প্রপানি মহানহোপান্যাহের) বিববা কন্যা ভগবতী পাঁচ বংসরের নিত ,সইহা বাদ করিত—সার্ব্যভৌন ভাঁহাকে "ভদী" বনিরা ভাকিতেন। এক দিন কার সিহ করিবার ক্ষয়

শিশুকে টোলে আগুন আনিতে পাঁঠাইল। সার্বভৌষের এক ছাত্র এক ছাত্র আগুন কাইলা বলিলেন—"বর্ বর্, ছাত পেতে আগুন নে।" শিশু ক্পমাত্র বিলয় না করিবা এক অঞ্চল ধূলা লইয়া আগুন লইল। বালকের ব্ছিমভা দূর হুইতে সার্বভৌম দোবহাছিলেন এবং সথ্য ভগবভীর নিকট আসিরা বলিলেন—"ওসা, ভঙ্গী, ভোর এই ছেলেট আমার দে।" বালকের মাভা তংক্ষণাং সন্মত হুইল।

(২) ভারতপ্রসিদ্ধ মহাপণ্ডিত বাস্থদেব সার্ক্তোর বালকের বিভাগন্ত করিতে সিল্লা মহাবিপদে পভিলেন। 'ক' আসে না বলিরা 'ব' আগে বলিলে কি দোর হয়, ছুইট 'ন' কেন, তিনটি 'ন' কেন প্রভৃতি প্রস্নদায়া বালক উাহাকে ব্যতিব্যক্ত করিয়া ভূগলা। অবাং বালককে ক, ব শিবাইতে সিদ্ধা সম্যা স্পাকরণই সংক্রেপে শিবাইতে হইয়াছিল। এই বালকই রন্ধ্যথ শিরেমেন।

(০) অতি অল বয়সেই মহুনাৎ পাঠ সমাপ্ত করিয়া অঞ্জাপন: আরও করেন এবং অবিদয়ে বাংলার সর্বাশ্রেষ্ঠ নৈগায়িত বলিয়া পারাচত হন। এই সমূত্রে মিশিলার স্থবিদ্যাত "भिषद 'भ" 'में बेक्क व वादशीय परिश्व नानार्यम् क्य कविद्यां मिन 'तक्यों राकाद भार ए। ए। (याका लक्ष भादक्रवर्तनक् बन्दीरिय कार्यम् ७ मन ऊदर वारमाद क्षाम - ब्रिएक महिल विधाद खार्यन करहर नवधीत्थद भारत्यमञ्ज्ञास साना द्रध्-লাখকেই প্ৰাণাল ব'লয়া উপস্থিত কবিলে পক্ষর মিশ্র বলিয়া উর্তেন--'অভ'গাং গোড়দেশভা গল ক'বে: 'শরোমণিঃ।" विकारिटेड 'वर्ड '६० "श्रामाकलक्ष्मा" मामक नाविभाष्ट्रमञ्जूष অংলাকিক সন্মিক্ষ : রবুনার চিচন্তন পঞ্চ বজ্ঞন পুর্বাক "मामान मक्ता" अर्थीकार कविद्वादे जल्दरहास छेन्। (१४१६४° ११ क्षर भिक्षाक भिक्रका कहिए अग्रथ एवस किराया। धरे 'वश्वकारण फ्रेंक्ट्रब स्ट्या (य क्य'-काहासाहि स्टेश्वांध्र ভথবো পরাঞ্চিত পঞ্চারের একট ভোষবাঞ্চক প্লোক বচল था हे । जा क क र बहार ह :---

বন্ধোঞ্চানকং কাণ। মংশয়ে স্বাঞ্চি স্কৃটং । সামান্যসন্ধান কথাদকখাদবস্বাত ।

(গদেশের মতে সামানাগক্ষণা ছাড়া ধুমাখিতে ব্যক্তিচার স্থায় হয় না: সামানাগক্ষণা প্রকরণের দীবিভি প্রস্থে "অতা বদন্তি" করে বস্থাতই শিরোমণি মৌলিকভাবে সামান্য-লক্ষণা ছাড়াও সংশরের উপপত্তি করিয়াছেন। বুরা যার, এই বিচারের সারাংশ পরে দীবিভিপ্রস্থে লিপিবছ ছইয়াছিল।) স্লোকে শিরোমণিকে 'কাণ' ও 'বক্ষোক্ষণানস্থং' (অর্থাং ছ্ছপোয়া শিশু) বলিয়া আবাত করা হয়। এই বিশেষ ওরুত্বপূর্ণ বিচারের কলে মিধিলার প্রায়া বিল্পু ছইয়া মবদ্বীপই নবাভায়চর্চার সর্বপ্রেষ্ঠ কেন্দ্র ছইয়া পড়ে। ইছা প্রায় ১৪৮০-৮৫ প্রীট্টাক্ষের ঘটনা—তংকালে পক্ষয় বিশ্বপ্র প্রবীণ ও ভারতের সর্বপ্রেষ্ঠ নৈছায়িক ছিলেন। মভাছরে, এই বিচার

মিৰিলাভেই ষটবাছিল, শিবোমণি গৌড হইডে নিমন্ত্ৰিত হইরা সিরাছিলেন। বাংলার সংস্কৃতির ইভিছালে শিবোমণির কৃতিত্বপূর্ণ মিৰিলাজয় প্রায় সহস্র বংসর মধ্যে এক অলামান্য ঘটনা। হংবের বিষয় এই মহাপুরুষের জীবনকবা ও শ্বৃতি অভাবনি সমুচিত আদরসহকারে আলোচিত হর নাই।

२। कविकर्गशृद (১४२५-१७ 🕂 🏥:)

মহাপ্রাপ্ত শ্রীন্তিচিতন্যদেবের অলোকিক বোলৈখর্বোর বছ
অকাট্য নিদর্শন বিভ্যান আছে। কবিকর্ণপুরের শৈশবকালে
অকৃত কবিওশন্ডির সঞ্চার এইরূপ একটি বিশ্বরুকর অবচ
প্রমাণসিত্ব ঘটনার হথোচিত চর্চা না করিয়া শিরোমনির
সহাব্যরুমানি অবান্তব এবং কলিত বস্তু অবস্থন করিয়া উাহার
পবিত্র চরিত-কথা কলন্তিত করিয়া পুলিতেছেন: পর্যানজ্যাস
কবিকর্ণপুর কলিনপানী নিবাপী ক্রিবান্ত চেডভপার্বন সেন
বংশীর শিরানজের তৃতীয় বা কনিন্ত পুত্র। সাত বংসর ব্রহ্মজ্য
কালে তিনি পিতার সহিত পুরীবানে সিন্তা মহাপ্রত্ম দর্শন লাভ
করিয়াছিলেন। মহাপ্রত্ম উল্লিই ভন্ধনের পরেই তংকালে
বালক্ষের মুখ্ হইতে মনুম রলাত্মক আর্যাভ্যনের রোক নির্গত
হয়। চরিতকারগন একটি প্লোক শিপিত্য করিয়াছেন:—

প্রবংশঃ কুবজগমক্ষ্যেরঞ্জনমূরকো মহেজনশিধাম। বুন্দাবন-রম্থীনাং মন্তনম্বিলং ছরিজগ্নজি॥

কৃষ্ণদাস কবিরাজ এই বিশ্বয়কর ঘটনা বৰ্ণনা করিয়া সিবিয়াছেন:---

সাত বংশবের শিশু, নাহিক ঋং। হয় । এছে লোক কংগ, কোক চনংকার মন । চৈত্ত প্রভুৱ এই কুপার মহিমা। ব্রুণাধ্যের বার নাহি পায় গীয়া। (চেত্ত্রুচরিতায়ত, অন্ত্যানানা, ১৬ পরিছেদ)

কৃষ্ণাপ কবিরাকের এই বর্ণনা অভিরন্ধিত বলিয়া এই বৈজ্ঞানিক মুসে উপোক্ষত হওয়া সাভাবিক। কিন্তু ইহা যে অভিরন্ধিত নহে এবং অন্ধিক সাত বাসর বছসেই যে মহাপ্রভূৱ রূপায় কবিকর্ণপুর কবিছ্লাক্তি লাভ করিয়াছিলেন ভাহার বিজ্ঞানসন্মত প্রমাণ বিভ্যান আছে। কবিক্পপুর বয়ং "চৈভন্নচক্ষোদ্য" নাটকের শেখে লিবিয়াছেন :—

যাসাফিইপ্রসাদাদয়য়দনি মম প্রোচ্ম। কাষ্যরুপী, ইত্যাদি।
প্রতরাং নিজের উক্তি অপুলারেই কবিকর্ণপুরের কবিছশক্তি বিনা অধ্যানে পুরিত হইরাছিল। এই ঘটনা ১৫৩২
নীইান্সের প্রথমার্ছেই সংঘটিত ছইরাছিল। উন্ধিবিত চৈতত্তচল্লোদর নাটকের দশমান্তের ঘটনাবাদীর মধ্যে শিবানন্দের
ছোট ছেগের লখনে বহাপ্রপুর প্রতি শিবানন্দের ভাগিন্মের
নীকান্দের উক্তিতে পাওয়া যায়—"ক্রীয়াংশ্ব মঃ লোহন্তুই—
নীচরণঃ"। অর্থাং শিবানন্দের প্রথম ছুই পুত্রকে তিনি পুর্কেই
দেবিরাছিলেন ("তে দুইপুর্কো"), কিছ হোট ছেলেকে এই

বাৰৰ দেবিলেন। দশবাকে বে বংসৱের ঘটনাৰলী চিত্রিভ দ্বৈরাছে রাজা প্রভাপরজের একট প্লোক চইতে জানা বার সে বংসর "মহাজৈটি" নামক অতি হুর্লভ এক পুণ্যখোগ সংবটত দ্বাছিল:—

"রাজ!—পঞ্চ, পঞ্চ, মহদিদমাশ্র্যং,

নহাকৈ জীযোগে ভবতি ভগবছেবকুলজা,

পতাকোদক্তীত্যতিস্থিদিতোরং জনম্বরঃ।"
অর্থাং ঐ বোগে পুরীর মন্দিরে পতাকা উজ্ঞীরমান হর। কারণ
স্বৃতিশাস্তাস্থানে এই পুণ্যতিধি পুরুষোভ্যক্তেই বিশেষভাবে
পালনীয়। মৈধিল বাচন্দতিমিশ্রের "কৃত্যচিভাষণি" এছে
পাওয়া বার:—(কানী সং, ১৮১৪ শক্, পু. ৮)

महादेकां हो। सदा पृष्ट्री श्रीवर्णः भूकरवास्त्रमः।

"উর্ব্যকাংশুকং" সর্বান্ পিভূংশুরয়তে প্রবন্ধ ।
বুবা যার শিবানক সেন এই মহাবোগ উপলক্ষেই তিন পুরকে
সক্ষে করিয়া পুরী সিয়াফিলেন। মহাক্রৈন্তী-পদের নানারকর
ব্যাবাা আছে। অভতর ব্যাবায় প্রহণ করিয়া মহাপ্রভূর পুরীঅবহানকালে হই বার মাত্র মহাকৈন্তীবোগ পণনা দারা পাওয়া
বার—২১ মে ১৫২১ (২৪ জৈচি, মফলবার, পুর্নিমাতিরি,
জ্যোচানক্ষর, রবি রোহিনী নক্ষত্রে এবং রহস্পতি বুলানক্ষরে)
এবং ১৮ মে ১৫৩২ বী: (২১ জ্যেচ, সনিবার, প্রিমা, অফুরাবা
মক্ষর, রবি রোহিনীতে এবং রহস্পতি অফুরাবার)। ভরুবা
মক্ষর, রবি রোহিনীতে এবং রহস্পতি অফুরাবার)। ভরুবা
মক্ষর, রবি রোহিনীতে এবং রহস্পতি অফুরাবার)। ভরুবা
বহন বর্ষ কর্মানছলে প্রহলীর মহে। কারণ, উক্ত নাটকের
বন্ধাকে মহাপ্রভূর ভিরোগানের অব্যক্তিত পূর্ব্যক্তী ঘটনা
চিত্রিত হইরাছে। ১৫৩২ সনের ক্রৈটি মালে ক্রিকর্ণপ্রের
ব বংলর বর্ষ হইলে তাহার ক্রমাক্ষ হর বিক ১৫২৬ সম।
ইহার সমর্থক প্রমাণান্তর পরে লিবিত হইতেছে।

সক্ষতি নবৰীপের ছহিবোলক্ষীর ছইতে "ঐ ঐপেট্যান্ধ-গৌরবগ্রছথছে" কবিকর্গপুরের "আর্থান্ডক" বঙ্ডিত পুথিদৃঙ্গে রুন্তিত ছইরাছে (৪৬১ গৌরাজ, ১০-১১৯ প্লোক)। এই বিল্প্রধার গ্রহের পুগাংশ হইতেই পুর্ব্বোদ্ধত মনোহর প্লোকটি উদ্ধত বলিরা অন্থনিত হয়। সাত বংগরের নিওর রচনা বলিয়া এই গাছের প্রচারে অগতের যে কোন সভ্যান্ধাকে একটা আলোড়ন পট্ট করিত। নহাপ্রত্ব করভ্রিতে নহাপ্রভ্র আলোড়ন মহিনার এই অভিনব নিয়র্শন করজনের চিত্ত আলোড়ত করিয়াহে, আল বছনরুক্ত দেশের সাহিত্যিকগণ গণনা ভ্রিরা বিশ্লেষণ করন।

কবিকণপুর "চৈভচ্চরিভার্ত" নামে একট পুণান্ন বিংশসর্গান্থক সংখ্যত মহাকাব্য রচনা করেন। ইহার রচনাকাল,
"বেলা রনাঃ প্রভার ইন্দ্রিভি প্রসিচে, লাকে..." অর্থাং ১৪৬৪
শক্ত (১৫৪২ এ:) গ্রহশেষে লিবিভ আছে। ইহা বহু পুর্কেই
বৃত্তিত হইবাছে। এই প্রস্থ মাত্র ১৬ বংসর বহুসে কবিকর্ণপুর
রচনা করেন, এক্সপ প্রবাণ আছে এবং প্রস্থরচনার নাত্র ও
বংসর পরে রূপ গোলানী বহুতে ইহার অন্থলিণি করিত্রা-

ছিলেন। এই বুল্যবান্ তথ্য ঢাকা বিধবিদ্যালয়ের পৃথিশালার সংগৃহীত একট প্রভিলিশির শেবে প্রাপ্ত হওয়া সিরাছে। ইহার নমাপ্তি বাক্য—"নমাপ্তমিদং এইকটেডচ্চরিতাগ্বতং কাব্য-মিতি। শকাকা ১৪৬৪। আবাচুক্কবিতীয়া সোমবারে।" তংশর রূপনোর্যামীর শিক্ষ বিক্লাস গোষামী-বির্ভিত ৪টি প্রোক আবে। তৃতীর প্লোকট এই:—

হৈতভচজ্ৰচরিতায়তমভুতাতৈ ব্যৱস্থিত ক'-বিরচিতং ক্ৰিকণ্ট্র: ।

त्रणान्त्रमञ्ज्यदेवः चकत्राच्चादेवः भारक चत्रक्रूज्यस्य विविष्ठः पृत्र) यर ॥

(অর্থাৎ হৈতভ্রচরিভারত কাব্য অভ্যুত্তরিক্স বোড়শবরত্ব কর্বি-কর্পন্নকর্ত্বক রচিত। মং-প্রাপ্ত রূপগোস্থামী ১৪৬৭ শক্তে ইহা পূর্বে কর্কীর করক্মলাপ্রে লিবিরা লইরাছিলেন)। 'ঘাইাজিক'-শক্তে বছরীছি সমাস ঘারা ১০ কিছা ১৬ বৃকার, ২৮ নছে। ২৮ ফ্রলে "অভ্যুত্ত" পদের সার্থকতা বাকে না। এছ মব্যেও এক ছলে ঘাইাজিক শক্ত ১৬ অর্থে প্রস্কুত্ত ইয়াছে। এতদক্ষ-সারেও কর্ণপূরের জন্মন হয় ১৫২৬ জ্বী: । ১৬ বংসরের বালক্তরিত সংস্কৃত মহাকাব্য বিশ্বসাহিত্যের এক আক্তর্য্য বস্তু বলিরা পরিগণিত হওরা উচিত এবং তরিমিত রূপগোধামী বার্ছক্যের অগ্নালিত হওরা উচিত এবং তরিমিত রূপগোধামী বার্ছক্যের অগ্নালিত হওরা উচিত এবং তরিমিত রূপগোধামী বার্ছক্যের অগ্নালিত হওরা উচ্চত এবং করিয়াছিলেন। কর্ণ-পূরের অভ্যান্ত এছ প্রবদ্ধে আলোচিত হউল না।

৩। রাষ্বেন্ত্র সভাবধান ভটাচাহ্য---(গ্রী: ১৭ল সভাষী) চিরঞ্জীব ভটাচার্ব্য রচিত "বিধ্বেল্যভর্কিনী" পুঞ্জিদ্ব मरक्ष कारा ৮ जद्रक ममाखा हेहाद अवग जद्रक अक्काद খবংশের পরিচয় দিয়াছেন। তাঁছার পিভা "মহাপুরুষ" वापरतरस्यव की विक्याव नावारन अवारम देश्वल स्वेम । वापरवस ভিন ভাইরের মধ্যে ওণোত্তর ও সক্ষমুভ ছিলেন। ভিনি বিষৎসমাজের প্রভুত আনন্দবিধানপূর্বক মাত্র ১৬ বংসর বছলে विन्तानबुक भाव ६ रेवा "क्षेत्रां जिल्लावान" देशांव भावेबा-ছিলেন ("লেভে যোড়শবাহিকঃ কুভিন্নভানান বুণাছুরো, ভটাচাৰ্য্যশভাবধানপদ্বীং যন্ত্ৰীৰ্-বিদ্যাৰ্থঃ।") তিনি বাল্য-কালেই শ্বহীপ্ৰিবাসী মহানৈহাছিক ভ্ৰান্ত সিহাছবাইলের 'নিকট সমস্ত শাস্ত অধ্যয়ন করিয়া বৃহস্পতিভূল্য বাদিবিভাষী এবং মহাকবি হইরাছিলেন। তাঁহার বিচিত্র উপাধির মধ্যে বে অসামাত কাৰ্যৱচনা শক্তি অন্তৰিভিত আছে চিব্ৰতীৰ ভাষা वााचा कविश व्यादेशास्त्र। अक्षम कवि अक्षे आक রচনা করিলে সেই প্লোকে এক একট অকর যে করবার बारवान स्वेवार्ड, वायरबस अभिवा थे अभव ठिक छछवाबरे প্ৰৰোগ কৰিব। ১০০ প্লোক বচনা কৰিতেন। এই ব্ৰীভিভে ১০০ কবির ১০০ প্লোক শুনিরা খরং ১০০ প্লোকে সমস্তা পূরণ ক্রিতেন-এই অন্ত্রাধারণ শক্তির বত তাহার "পভাবধান" উপাৰি হইয়াছিল। তাঁহায় শক্তিদৰ্শনে চমংকৃত হইয়া তাঁহায় প্ৰব্যাপক ভবাৰক ক্ষেতাবিশেষ বলিয়া ভাঁহাকে ব্যাপন ক্ষিয়াহিলেন:---

বিভৰ্মি ৷

চিরজীব তাঁহার পিড়কত চুইট এছের নামোরের করিয়া-হেন "মহাৰ্দীপ" ও "রামপ্রকাশ" ৷ প্রথমট এবনও আবিছত হয় নাই। "রামপ্রকালে"র ছইট প্রতিলিপি লভনে বক্ষিত चारह। चामता > वन्मत शृत्व "तामश्रकारम"त अक्षे चांछ ৰুলাবান প্ৰভিলিপি নবৰীপত্ব লাবারণ পাঠালাতে আবিভার করিবা পরীকা করিবাহিলাম। মাগরাক্তরে লিখিত এই विद्याष्ट्र पा अध्य विश्व विश्व विश्व विश्व किया (Indian Hist. Quarterly, XVII, pp. 6-10)। अबाहे नास्कारायव बाक्बकारम ১৭০৪ मधरल (১৬৪৭ मरन) हेरू। ब्रहिल एतः अध्कारवद मुर्ठरभाषक दाका भावारमय मारम देश প্রচারিত ঘইরাছিল। এই কুপারামের পৌত্রই চিরঞ্চীবের পোষ্টা "রাজা যণবস্তদিংহ"। এই "পৌড়"-ক্ষত্রির রাজ-বংশের রাজবানীর নাম প্রস্থমব্যে আবিভূত হওয়ার বহ कींन मक्षिण अवहें स्वयं प्रश्लाविक क्षेत्राटक । "स्वर्राक्ष्य" क्षकद्दन निविष्ठ चाह्य :--- (80) - २ शत्य) "अवक चर्रनाद्वार महात्राक्षक्रकर्शिमगरत यक्षक्षमभतिभिक्षा--- निरहच्चर्यम। २०-अमारत्नामस्य मिनाटस सर्गापुरत सर्वास्तरः। "'नास्तित'-महाि ७ পতি- ० भारामहाक्वाकाः शास्त्रधरेवहरू ।" वदीर কুপারামের রাজ্যানী 'লাখাছির' অর্গলাপুরের (তংকালীন মোগল রাজবানী আব্রানগরীর) সন্থিছিত ছিল। বর্তমানে লাভাইর ও ভরিকটবর্তী 'ইন্দুরখী' নগর (নবখীশের প্রতি-লিপিতে শেষোক্তখনে এছরচনার উল্লেখ আছে) গোৱালিরর बादकाव अक लाएक पष्टे एवं। त्मवादनके बाका कृषावादमव बाका श्रिक्तिक हिन लोक (बान्य कान कर्म मार् अपर তিনি অন্তকৰ্মা শতাবধান ভটাচাৰ্য্যকে সভাপভিত করিয়া আমরন করেন। তাহার পৌত্র রাজা যদবন্তের সমরে পভা-বৰানের যোগ্যপুত্র চির্মীর সভাপতিত ছিলেন। বিংলোদ-ভরদিণতে পাওরা যার, শতাবধান কাশীভে খগাঁ হইরাছিলেন अवर विवशीवश जरकारन कानीरकहे चन्नाभमा कविरकम। কিছ চিরভীবের মাৰবচন্দুর শেষে পাওয়া যার ভাঁছার ক্ষ क्रेबाधिन नवधौरम । अवीर भाषायशाम श्रवम कीवरम नव-'হীপেই অব্যাপক ছিলেন। পরে পিতা-পুত্র ২ পুরুষ বাংলার বাহিরে গিয়া অপুর্য কীঠি অর্জন করিয়াছিলেন।

শভাবধানের নিবাস ঝাম হগলির অন্তর্গত ভবিপাঢ়া। আমরা কুলগঞ্চীতে তাঁহার বংশপরিচর আবিদার করিবাছি। ভিনি অবগণী চর্টবংশীর রাটার রাজণ হিলেন। তাঁহার শেষ বংশবর হেনচক্র ভটাচার্ব্যের ১৮৯৮ সনে পরলোকপ্রাপ্তি হুইলে বংশলোপ হইয়াছে। তাঁহার অসামান্ত প্রভিভার কথা বাংলার ইভিহাসে চিরুসরবীর হওরা উচ্ছি।

৪। অভয়ানল ভৰ্বালভাৱ (মৃত্যু ১৮২২ বি:)

শব্যভাৱের চর্চা বাংলাদেশে বর্ণন চর্বলীয়ার পৌছিয়াছে সেই সময়ে এই আনামাত প্রতিভাগালী নৈয়ায়িক অপ্রতিষ্দী विकायमञ्जल जकनटक. क्यरकृष्ठ कविश्वा विश्वाविद्याम अवर বিভার উপাধি ব্যতীত জাঁহার একট বিশ্বয়ন্ত্রনক লৌকিক উপাৰি 'চৰংকায়' জনসমাজে প্রচারিত হইরাছিল। করিবপুর বিলার অবুনা নদীবর পুঞ্জনিত্ব 'কপ্লা' প্রায়ে এক পাশ্চাভা বৈদিক বংশে ইঁছার জন্ম হয়। ইঁছারা ৫ ভাই ছিলেন, সর্ব্ব জ্যেষ্ঠ রামানক ভাষবাগীল বিজ্ঞপুরের সক্ষণ্ডের পাঠক बिरनन । अरे शार्ठक वरम अवनश्व विषयान चारह । वैद्यासित বাছীতে দালান ও দীখি পৃষ্কৱিশী প্ৰভৃতি ছিল। কোনও ৰটনার ইহারা জপসা পরিভ্যাপ করিরা যান। পরে ইহাদের বাড়ীতে উত্তরশাহাবাজপুর নিবাসী হরচরণ সিভাভবাগীশ আাসয়া টোল করিয়া বহু ছাত্র পড়াইয়াছিলেন। ভংকালে নৰ্ঘীপের পণ্ডিত্রণ পূর্ববেদ যাতায়াত কালে অপসার বাব-ৰের আভিব্য প্রহণ করিভেন এবং সভান কইছা অভয়ানকের পবিত্র অন্তর্গুর পরিদর্শন করিতেন।

অভয়ানক ভণসার পশ্চিতবংশীর কালিকাপ্রসাধ চক্ত-বর্জীর নিকট সামার ব্যাক্রণ পঢ়িয়া নবছীপে আসেন। তথন শহর ভর্কবাদীশ অভি প্রাচীন, ভবাক্বিত একট 'অভ্যন পুডক' সমালোচনা করিতে দিয়া নবাগত পভিত কিয়া ছাত্রের পরীকা क्तिएम। अक्रशंसम के शृक्षत्कत नमस्य क्रिए नमर्ब क्रेबाकित्मम । माळ २० वर्णव वदाम ১৮১७ खेडीएक अक्षव ভর্কবাগীশের প্রলোক্প্যনের সহিত তাঁহার পাঠ সমান্তি হয়। তিনি নবধীপের তংকালীন সমস্ত পণ্ডিতকে বিচারে পুরাভ করিয়াছিলেন। তাঁহার অসামার প্রতিভা দেবিয়া নবধীপবাসিগণ নবধীপেই ভাঁছাকে চড়ুলাম করিতে বলার তিনি আর দেশে ফিরেন নাই। ওয়ার্ড সাকেবের এছে ১৮১৭ লনে নবছীপের প্রধান চড়পাঠিলযুহের তালিকামব্যে অভয়া-मास्य नाम ४७६ बाजगरका २० (जरवामणाळ (जकारणा কৰা, ১ম ভাগ, ২ম লং, পু. ৪২৩ এটবা)। ভিনি পরে ভট-शबीरण वाणी करवन अवर ১২২> जरनद ১১ दिनाव श्रविमादा वर्गण क्ट्रेटन क्येन्सी क्ट्रेटल शहरा छात्राद गर्दी नवगमन . করিরাছিলেন (ঐ, ঐ, পু-৪৬-৭)। আমরা স্বর্গত পঞ্চানন ভক্রত মহাশয়ের প্রত্থাৎ ভনিয়াছি অভয়ানক বেশ বলিষ্ঠ बिटनम अवर प्रक्रेंच निरम नवधील स्टेट्ड (श्रीत 80 मार्टन) জাটিয়া ভটপরীর বাভীতে ভাসিতেন। তিনি মাত্র ২৫ বংসর বহুলে স্বৰ্গী হুন এবং স্বকীয় ছাত্ৰদেৱ পাঠ পৰিসমাপ্ত কৰিয়া ষাইতে পারেন নাই। অধিকাচরণ বোধ-রচিত 'বিজ্ঞমপুরের . हेजिएान' (১२१६, पृ. ८৪-৫) स्टेटिं किश्रमश्य वेह्ना स्टेन : --- "অনেক দিন অতীত হইল বিজ্ঞানুর অপর একট পণ্ডিত-রতে বঞ্চিত হইরাছেন, ইহার নাম অভয়াচরণ (१) চমংকার। । इति এত जब नवद्वद वर्षा नश्कृष्ठ भारत विनयन बार्शिक क বিচক্ষণতা লাভ করেন যে, ভনিলে যারপর নাই চমংকভ

হইতে হয়। ইনি এই নিমিডই 'চমংকার' এই উপাধি প্রাপ্ত হম। তদৰ্শি এই মহালা অভয় চমংকার নামে বিব্যাত হইয়াছিলেন।'

₹8%

রাষণতি ভাররত্বের "গোঞ্জিবণা" হইতে ভাতার একট উৎকৃষ্ট পল ("পাঁঠা ভাঁড়াইয়া মহিব)" উদ্ধুত হুইল। "অভয়া-নক ভটাচাৰ্য্য বড় নৈয়ায়িক ছিলেন। একদা ভিনি কোনও সভার গর্ক করিয়া বলিদেন যে, আমার নিকটে যে কেছ পূর্ব্ব-পক্ষ করুক, একেবারেই ভাহার উত্তর করিব। বাহার বাটাতে भर्छः जिनि हेकाहेबाद छ। अक्सन चाम बदाां भक्तक हा बदार উপস্থিত করিয়া তাঁছার ধারা পূর্বপক্ষ করাইলেন: অভয়ানন্দ প্রাণক্ষকারীকে সামান্ত ছাত্র জ্ঞান করিছা যেমন ভাষার উত্তর করিলেন, পূর্ব্রপঞ্চারী প্রচনি সে উত্তরে দোহ দিলেন। তখন व्यवद्यानम प्रकिष्ठ प्रदेशम्य अदर द्विष्ट वेशि ष्टांड मर्ट्स---একজন ভাগ জংগাপক। তখন তিনি নে গোষের খড়ন করিয়া পুনর্বার উত্তর এদান করিলেন: সেবাবে আর পূর্বপক্ষকারী কোৰত লোহ দিতে পারিলেন না: তখন বাটার কর্তা ছাসিয়া करिएमन देव कहान्या भश्यका व प्रतिभक्त आध्यकात **देखा ब**दकराहा ७ रहेन में १ जन्मानन करिएन रात् । प्राप्त যে অঞ্চার করিয়াছিলে : ভূমি পাঁঠা ক্রীড়াইয়া মহিষ দিয়াছিলে क्य ? आर्थि लक्ष्य भीते। यदन कविया भीतिकाति। क्या भ मादिशाधिकामः। किंद्र भटत पूर्विकाम क मार्टा नटक मस्य ; ज्यम् भावभकाते। त्काम भाषिलाय - कार्मसः त्यमः।" (पू. ए०, ७७ भ्राम् के कर्ता

किनि कौरान पूरे बाद के व विकार भदा छ। इहेशांकरमन । कानी महदूर करणटक रिकारतूर माधका-"बनामी नरमग्र करा-নীঙ্ক স্থাতেই নিয়াট্ড চন্ত্ৰনাৱাহৰ ভাষ-প্ৰাণন দীৰ্কাণ (১৮১०-७७ छो:) अशांभक हिल्ला . अवशंतक भ्रेष्णाह গৰা করিছা বলিতেন 'টানা আখার ভাষে কাশতে পিয়াছে!'' পরে পাঠ সমাপন করিয়া কানীতে পিয়া তাহার পহিত বিচার कररम किन्न किन्नुएक्टे श्रदाख कदिए भारतन नाहे (वर्कन), काम ५७२५ मु.२६२ : श्रेवाओं (ह्य. ५७०२, मृ. १७३ महेदा)। চন্দ্রশারায়ণ ব'লালেন, 'ভূমি শিগু--এত অল বয়ণে পাঠ সমাও করিখে কেন ? তোমার যেলপ বৃদ্ধি ও বিচারশক্ষি, আরও কিছুদিন পড়িপে ভূমি বঙ্গের অভিতীয় পভিত হইবে ' অপর এক 'দেবাংল' লভিতের সহিত তাঁহার দিতীয় বিশ্বয়াবহ বিচার পরে জিখিত হইল। অভয়ানশ বিচারমল হইলেও অব্যাহনশীল ছিলেন এবং প্রাচীন গ্রন্থাদি সংগ্রন্থ করিয়া পড়িতেন। নদীয়া বহিরগান্তীর পুল্লসিত রবুমণি বিদ্যাভূষণের গৃহে একটি পুৰির পত্তে আম্বা নিয়লিখিত আৱকলিপি দেৰিয়াছি:-- "সন " ১২২৭ সাধ ১০ কাণ্ডিক নবদীপের জীযুত অভয়ানন্দ ভর্কালয়ার ভটাচার্য অনুষান্তভের আলোকপ্রস্থ মিশ্রকৃত প্রথা যান लिनिया जानिया निर्देश देखि।" नेवाकाय कर्फात अरे अर्व मून पहित्वरे प्रवताम काल एव। श्वत्याँ त्यां त्यांविक-

গৰী আলোকএছের নামও অবগত ছিলেন কি না সক্ষেত্র, সংএই করা ত দুরের কথা। অভ্যানকের বহু কথা আমর! হুপাসার সুপ্রসিধ ঐতিহাসিক ৵আনক্ষনাথ রার (১২৬২-১৩৪০ সন) মহাশ্রের নিকট জাত হুইরাছিলাম।

(विद्युष्ठ खर्क १ मानन (मुक्रा ३৮३৮)

ঢাকা বিলায় দোনারণা পরগণার "কৃষণুরা" আমে রাচীয় বাংভগোত্রীয় (শিশুলাল) ভটাচার্য্যবংশ পাভিড্যের क्रम विश्वाण दिल् । अहे वर्टन दिवनक्षित्रच्या देख्दवहस्य कर-अरुव कट्वम खरर ১२२४ भट्न २७ दरभंत वश्राम मास e दरभंत অব্যাপনা করিয়া (প্রবাদ অন্তপারে এক রাজ্যণের অভি-সম্পাতে) পরখোক গমন করেন। তিনি কাছারও নিকট বিচারে পরাভ হন নাই এবং নবালাছের যে কোন কুট-ল্লের **উ**ভর দানে সমর্থ ছিলেন। তাঁহার লগাটে একট "রাজনও" বেবঃ ভিল এবং শাস্ত্রীয় বিচারকালে ভাষা জ্বেশ: স্ফীত হইয়া তাঁহার অপরাজ্যে প'জের भक्षें (क अध्यक्ष क्रिया । छोश्द यह को हि दश्य अदस् कृष्टि উল্লেখযোগা: विकास प्रति एका नीखन लगान विश्व दिया विद्यां "प्रक्रिका"काद काल्यां व्यक्तिका १ -१६) ১৮৩০ খ্রাঃ) বিভারণকে ভৈতবচনের আচুপুরী ধরমেটিক (भवीरक विवास करबन । कामीनक्षद विहादमह स्टामन में) टेक्टबर्मक प्रतिकाम**म्याल सामारक यामन** "रक्रास्त्र अरमर रमाहर विदास भिद्रारक्षण ।। कवाते कालानकद्देव कर्नरभाष्ट्र रूका व ভিনি অবিদ্যে আদিয়া ভৈরবচ্চের সাহত লাহার বিভারে প্রবৃত্ত হন এবং প্রত্যেক ছলে শোচন্তভাবে প্রাহিত হলছ क कि **क क** क क ।

কালীশ্বর বৈম্নসিংছ প্রজের বিছোপাছী রাজ্য রাজ বিংছের (১৭৮৪-১৮২ জ্রীঃ) সভাপতিত জিলেন, কেবল কাবাল রাজ্য কছার কছার কছার করা উৎসব উপলক্ষে প্রক্রম রাজ্যালীশ্বরের চেষ্টাছ কোন উৎসব উপলক্ষে প্রক্রম রাজ্যালীশ্বরের চেষ্টাছ কোন উৎসব উপলক্ষে প্রক্রম রাজ্যালীয়ে অন্ধানন্দ ও জৈরবচন্দ্রের মধ্যে এক বিশ্বরাবহ শালীয়াবিচার সংঘটিত হয়—উভয়েই দৈবলজ্ঞিশপর মহাপুরুষ তিজারবচন্দ্র বিচারে ক্ষয়ী হইয়া রাজ্যালড হাতীর পূর্টে দেশে কিরিয়াছিলেন, কিছে কিছুকাল পরেই ধ্র্মী হন। সোনার্যার ভদানীয়ন এককন ক্রিতিক ক্ষাই দাস গান বাবিয়াছিলেন:—

ত্তক রাজার বাজী বিচার করি ধারে বাধ্য হাতী: তার মধ্যে পড়ে কত গঙার রক্ষা পেল আতি।
দে যে ভৈরবচন্দ্র তকপঞ্চানন,
সপরীরে কর্পে গোল করে রবে আরোহণ,
কাঁধলে কি আর পাবে রে দেকন ।

७। दरमध्य छहे। हार्या

উপীচ্য রাষ্ঠ্যক ভটাচার্য (ঐ: ১৭শ শতাধীর প্রথমার) রগুমন্দ্দের আর্ডমত সংশোষণ করিয়া "কৌমুদী" নামক বহু ভৃতির প্রস্থা করেম। উত্তরবদে তাহার মতই বহুল

পরিমাণে প্রচলিত ছিল। বলপুর ইটাক্ষারীর ভটাচার্য্যবহঁশে তাহার কর (বারেন্ডলেনী বাংভাগোত্র)। তাহার কর্তন ষষ্ঠ পুরুষ স্থানিত্ব মহামত্বোপাব্যায় বাদবেশব ভর্করত্ব মহাশয় ১০১৮ সমে সম্বৰ্ধিৰ্ণয়েৱ ভূতীৰ প্ৰিশিষ্টে তাঁহাদেৱ বংশৱস্বান্ত মুক্তিত করেন (পু. ১৬২-৮০)। তথ্নো বাসক কবি বনেখন-রচিত "বাংভবংশচ'রতম্" (পু. ১৬২-৭৭) মামে "লার্ক,ল-বিজীভিত" ছম্মের ৮৭ প্লোকাশ্বক এক শ্বতি বিশায়কর কুন্তকারা त्याद्य । इटरबंद विश्वस क्षेत्रे क्षणायास वसके कांचादश शक्के कांकर्रव कृतिशास विनश्न भारत अस ना । आध्वत वारनात मरक्रज्विर अध्यक्षिण्यं के प्रवासी क्षेत्र व्यवस्था विकास कर्मिक विकास ্দবিতে অনুবোৰ করি ৷ বনেবারের ছাত রাসেব্র ৮ সোকে "ग्रायद-४दिण" निविधार्यन (ঐ. পু. ১৭৮-১)। नातारम करे-डिनीटात कर लामीक रेट्यमत क्लामिन : गरम-দর ৮ লোকে (৭৯-৮৬) তাঁহার পাঙিতাকীর্ডন করিয়াছেন। টাহার জোঠপুত্র ব্যেখর শৈশ্বে কাডজের স্থির্ভি মাত্র প্রিয়ার্ডিদেন, এক রাজিতে নিজিত পিতার মুর্থনির্গত এক ময় र्जुमिया अपर भटनिम भिष्ठांत निकर्त के बाह्य हो किए हरेया তঠাং তাঁচার সমত লাছে জান করে। এক দিন বিভয়ী অভিতকে বিচারে পরাভ করিয়া তিনি অনুষ্ঠ প্রদর্শন করিয়া অপ্যান করিয়াছিলেন-জাহার অভিস্পাতে তৃতীয় দিন মাত্র ১৫ বং দর বয়ুদে ধনেশ্বর মৃত্যুমুখে পভিত হন। অনবিক ১৫ ংগরে তিনি কি অন্তত কবিত্বপঞ্জি লাভ করিয়াছিলেন ৮৭ ্ৰাকের প্ৰভোকটি ভাষার উদ্দ্র দৃষ্টাল্পরূপ। উদীচা রামকৃষ भवन्नजीव प्रमीय आक्त कविश्व रव शावेशक्तिमः। वरमश्रव ১১ ्रभारक (६०-७०) फेलीरहार ब्रखांख क्रियांटलम : वरमचरबद ভাগিনেয় ক্রন্থজন কাহালভার (মৃত্যু ১২৬০ সন) নবছীপের ज़ैदाय निर्दायनित कक श्रमान छात्र हिरमन। गरमपुराद कीर्छ कुलदोर ১৮२৫-८० हो: बट्बा श्रांभम कदा बांच .

५ । सम्भक्तांत साम्रहेश (१४०४-४२ औ:)

বাললাদেশে মধ্যমাৰে প্ৰতিভাৱ শেষ অবতার মক্ষার সর্গত ভ্রপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশবের সর্প্রভোষ্ঠ প্রাভা ছিলেন। "মহালীর ভট্টাহার্যবেংশ" নামক পারিবারিক প্রস্তে উল্লাহ অলামান্য কীর্মির বিবরণ মুদ্রিত হইয়াছে (পু. ১৮-২৬)। মাত্র ১১।১২ বংসর বয়সে ভিনি মাভামহ রামমাণিকা বিভাল্লারের প্রংক্ত কলেজের এলিস্টান্ট সেক্টোরী, মৃত্যু ১৮৪৬

थै:) मिक्के मयाभारात कृष्ठेविकात-ल्यामी भिवित्राधिरमम। दाममानिका सप्तर मनबोरभद भक्षत छर्करामिन रेमहामित मानिका ভৰ্কভূষৰ এবং মুৱসিদাবাদের ক্লফনাৰ দায়পঞ্চাননের নিক্ট भार्त श्रीकात कविदा जिम मल्लामाराद भडा चावक कविदा-ছিলেন এবং উপযুক্ত ছেছিত্ৰকে প্ৰাণ বুলিয়া ভাষা শিবাইয়া যান। তাঁহার মৃত্যুর পর সম্প্রুমার পিতার নিকট পছিয়া মাল ১৮ বংগর বয়লে পাঠ সমাপ্ত করেন। তাঁভার এই "অসাধারণ" (extraordinary) কৃতিত নভাইলের রতন রায়, বিভালাগর মহাশয়, বাজা রাবাকান্তদেব রয়াপ্রসাদ বার প্রভৃতি वह श्रवाम वाक्ति अभाष्य करिया गामिन करियाद्वा । विद्या-সাগর মহাশত তাহাতে সংস্তু কলেকের সহকারী অব্যাপক सिबूक्क करवन: जिनि क्षांच ६ वर्मत (১৮৫७-७० **द्धाः**) भरकुछ कटलट्क किटलन, भटत विलाभागत बकान्टरत क्रिक्षेत्र অৰিক বেডনে কানী খুলের হেড প্ৰিড হইরা যান, কিছ ১২৬> সমের কার্বিক মালে (১৮৬২ এ:) যাত্র ২৮ বংসর वदरम क्य द्वार्थ निःमस्त्राम श्रद्धाक्रम् कर्म। প্রভাব" নামে একটি কুম পুরুক (১৯১৬ সম্বং, পু. ২৮) ভিনি মুক্তিত করিয়াছিলেন---আব্নিক দৃষ্টিভঙীলে ব্রুভাষার উন্নতি বিবানের প্রয়েজন ইফালে যেভাবে প্রতিপায়িত ফইয়াছে ভাষা বস্তুত আক্র্যাঞ্চলক।

নচ্চকুৰার ছারশান্তের বিচাবে অতি অবুত ক্রতিত্ব দেখাইবাছেম। মবদীপের জ্রীরাম শিরোমণি ও তদীয় সর্বপ্রধান ছাত্র
পোলোকনাথ ছাররত্বকে তিনি মাত্র ১৯ বংসর বরসে বেভাবে
বিচারে পরান্ত কবেন তাছার বিবরণ "সংবাদভাদ্ধর" ছইলে
উদ্ভত ছইরাছে (সংবাদপত্রে পেকালের কথা, ১৯ আগ, ২য
সং, পূ. ৪২৭, ৪৭৭-৮)। প্রথম বিচারে বিষয় ছিল
"কেবলান্ত্রী গালাবরী"র একট পত্তি এবং দ্বিতীয় বিচারে
ছিল গদাধরের "শক্তিবাদে"র একট পত্তি । নক্ষকুমার জন্তনার্য্যক তর্কপঞ্চানমকেও বিচারে প্রান্ত করিহাছিলেম। ৪০০
বংসর পূর্বের প্রবীণ পক্ষর মিশ্রের সহিত্য তাকর রগ্নাথের
বিচারকাছিনী এবানে তুলনাজ্বলে অবইয়। বাংলার নব্যভারের সৌরবোজ্জ প্রতিষ্ঠা ও নব্যঞ্চারের প্রতার অবসাম
রন্ত্রাথ ও নক্ষর্যারের জীবনে যথায়থ প্রতিক্ষণিত ছইয়াছিল।
রন্ত্রনাথের খ্যাতি সম্প্রজ্ঞারতবর্ষে ছড়াইয়া হার, আর নক্ষকুমার
নিঃক অবছায় প্রামা বিদ্যালয়ে পশ্তিতী করিয়া হার। যান।

অতি-আদিম যুগের শিপ্পের ধারা

শ্ৰীকানাইলাল সাহা

প্রস্থাত্ত্বিদ্ পভিতের। বলেন: প্রস্তর-রূপে ইউরোপে তিনট সভ্যতা বিভার লাভ করে। প্রবন্ধকৈ বলা হয় আরম্নেশীর (Aurignasian), বিভীয়ট সন্ধ্রীর (Solutrian), আর ভূতীয়ট হ'ল ম্যাগ ভালেনীর (Magdalenlan)।

প্রভর-মুগের প্রথম থিকের আধ্বাদীদের ব্যবহৃত কিছু
কিছু অস্ত্রশন্ত পেওরা সেতে আরিগ্ ভাক (Aurignae) নামে
একটি পাহাছের অহায়। তাই এই মুগের সভ্যভাকে বলা
হর আয়রগ্নেশীর সভ্যভা। ফাল, বেলজিরম, শোনের উত্তর
ভাগ, পোল্যাভ, অস্ট্রিয়া প্রভৃতি হানে এই সভ্যভার কিছু
আভাস পাওয়া গেছে। তাই অনেকে অপ্নান করেন, ইউরোপের সর্ব্রেই এই সভ্যভার ধারা ছভিত্রে পঞ্ছেল।

এই যুগের অবিবাসীদের জীবনবারণের প্রবাম অবলয়ন ছিল্ শিকার। তাই তারা পাহাড়ের বারে বসে পাধরের অল্পন্ন তৈরি করত, আর শিকারে যাবার পূর্বে পাহাড়ের গারে বা গুলার করত। গারে বা গুলার কেতর জীব-জন্বর ছবি এঁকে পূজাে করত। তথম ওরা বেসব ছবি এঁকেছে সেগুলাে ছােট ছেলেদের আঁকা ছবির মতই। রেখা-চিত্রের আলিকের সঙ্গে তথমও ওদের ভাল করে পরিচয় হর মি বলেই বােব হন তারা গুলু বেইনী-রেখা (outline) দিরে কােম রক্ষে জন্মটকে বােবাতে চেটা করত। এই প্রাথমিক চিত্রগুলির শিল্পত সৌক্র্য বা মূল্য কিছু থাক বা না থাক ঐতিহালিক মূল্য একটা আছে, লে বিষয়ে সন্দেহ নেই।

বধ্কাল বরে ছবি আঁকতে আঁকতে ক্রমে ওরা অভ্যত্ত হয়ে উঠল রেখা-চিত্রের আলিকে এবং ওলের মনেও বীরে বীরে জাগল শিল্পবোধ। আর সেই সলে বেড়ে যেতে লাগল ওলের পর্য্যবেক্ষণ-শক্তি যা শিল্পের অভিযাঞ্জির অপরিহার্য্য অল। এই পর্য্যবেক্ষণ-শক্তির জঙেই কালক্রমে ওলের শিল্পহয়ে উঠল পূর্ণাল।

পরবর্তী যুগের শিল্প সবছে আলোচনা করলে আরও প্রাই-ভাবেই আমরা এ বিষয়টঃ বৃষ্ঠতে পারব i

আরগ নেশীর বুগের অবলানের পর মৃতন এক বরণের লভ্যভার আলো প্রভা-বুগের অবিবাদীদের মব্যে ছভিরে পছে। ফ্রান্ডের পল্টার (Solutro) লাবে একট ভারগার এই বুগের লিজের কিছু কিছু নমুনা পাওরা গেছে। গবেষকেরা ভাই এই হানটির নাম অধ্যায়ী এই বুগের সভ্যভার নাম দিরেছেন সল্টার সভ্যভা। ভারা অধ্যান করেম এই বুগের সভ্যভার আরগ্য প্রভিন্ন করেম এই বুগের সভ্যভার অরগ্ভ পশ্চিম এলিয়ার কেপ্ প্রদেশের এক অভিন্নানী লগ। বুব সভব ওবা ভূকীছান বা ভার কাহাকাছি কোন ভারগা বেকে পশ্চিম ইউরোপের হিকে অঞ্জনর হয়। ক্রমে

ওরা ফ্রান্সের দক্ষিণ-পশ্চিম দিকে উপস্থিত হবে আরগ্ছাকের অবিবাসীদের সলে বসবাস পুরু করে। ওরা কিন্তু অস্ত্র-শস্ত্র তৈরি করতে তত দক্ষ ছিল না। পরে আর একদল অভিযাত্রী ওবানে উপস্থিত হয়। এরা জারগ্যেশীয়দের অস্ত্র তৈরী করবার কারদাটুকু আমন্ত করে নিবে শেষে ওদের চেয়েও পুলর সুক্তর অস্ত্র-শস্ত্র তৈরি করতে পুরু করে দিলে।

আরগনেশীধদের মন্ত এরাও ছবি আঁকত পাছাছের গারে ও অংলা। তবে পূর্বপ্রচলিত আলিকের একটু-আবটু অদল-বদল করার এদের ছবিওলে। হয়েছিল কিছু উচ্চত বরণের। এরাও বেইনী-রেখা দিয়ে জীব-জন্তর ছবি আঁকত বটে, তবে দেওলোর চোব আঁকত সুট্কি দিয়ে। ছোট বড় রেখা দিয়ে ওবা ক্রমে পশুর গারের লোম আঁকাও করু করে দিলে। এই ছুই মুগের ছবি তুলনা করণে দেখা যার, আরগনেশীয়দের চেয়ে সন্দীরদের শিল্প-বোধ ছিল একটু উন্নত।

সন্ত্রীর মুদের অবসানের পর স্থান হর ম্যাগডালেশীর
মুগ। প্রভার-মুদের রেখা-চিঞ্জ ও চিঞ্জকলার চরম উরতি
হয়েছিল এই লময়। ১৮৬৩-৬৪ ইট্রান্তে লাতেকট (Lartet) ও
ক্রিস্টি নামে মুক্তম গবেষক লা মডেলা (La Madeleine)
ভহার এই মুদের শিল্পের কিছু নিচ্পনি আবিভার
করেছেন।

প্রত্ত্বিদ্ পভিতের। বলেন : এই যুগের শিল্প তথু ফ্রান্সের ভেতরেই সীমাবছ হিল। দক্ষিণে ইটালীর প্রিম্যাল্ভি নামক হামে আর একটি বতর সভাতা গড়ে ওঠে। একে বলা হয় প্রাভিটিয় সভাতা। মধ্য ইউরোপে কিছু প্রাভিটিয় ও ম্যাগ-ভালেনীয় সভাতার সংমিশ্রণে আর একটি নভুন ধরণের সভাতা গড়ে ওঠে। ওদিকে দক্ষিণ রাশিখায় তবন বিম্যাল্ভি সভাতার চেয়ে কিছু নিক্ট বরণের অভ এক সভাতা প্রচলিত হিল।

অভ্যসুগের শিশ্পের সলে মধ্যসুগের শিজের বিশেব কিছু
বিল দেখা যার না। এর প্রধান কারণ, এই সমরের শিজের
আলিকের আবৃল পরিবর্তন হয়েছিল। এই যুগের অধিবালীরা
যে মধ্যসুগের শিজের সলে পরিচিত ছিল তার প্রমাণ আছে।
উত্তর বুগের শিজের নমুনা একই আরগার পালাপাশি পাওরা
যার। এই যুগের শিলীরা কিছু সব সমর্যই নিজেদের বৈশিষ্ট্য
বন্ধার রাধবার চেষ্টা করত।

শিলীর। এই সময় শিলকর্ষের অম্যতম উপাদানকরণ শশুর হাত বাবহার করা ত্বল করে। পূর্ববর্তী মূপের লোকদের অমশন্তের অঞ্করণে ভারা হাতের বর্ণা ভৈরি করত। এই সব বর্ণাকে আবার ভুতুত করবার ছতে বাঁটগুলি চিন্তিত করত ধীব-ছঙ্কর মূর্তি বোলাই করে। এই বোলাই-শিলের আদিক পরীকা করে গবেষকরা বলেছেন, এওলি প্রভর-বুগের শেষ সময়কারই ভিনিষ।

প্রস্থাবিদ পভিতের। বলেন : ম্যাগভালেনীর মুগের অবিবাদীরা শিকারে তত অভ্যন্ত ছিল না। কালেই জীবখবারণের
অভে তালের বনের পশুর ওপর আলে নির্ভর করতে হ'ত না।
ভারা জীবনবারণ করত নদীর মাছ বরে। তাই ওরা করেকট
অস্ত্র তিরি করেছিল মাছ বরবার জভে। এইসব অস্ত্র-শস্ত্র
আবিষ্কার হ্বার পর গংবহকদের বারণা হ্যেছে যে, পশুশিকারের চেয়ে মংগুশিকারেই বোব হয় ওাদের আনন্দ ছিল
বেনী।

পুরুষরা তো গারা দিন ঘুরে বেছাত মধীর বাবে বাবে,
আর মহিলারা সময় কাটাত গুহার বাবে বলে পোলাফপরিচ্ছন তৈরি করে। চর্মকি পাধরের বারালো ছুরি দিয়ে
পক্তর চামড়া কেটে ওরা সুক্ষর সুক্ষর পোলাক তৈরি
কয়ত: অনেক সময় দেগুলিকে আবার চিত্রিত করত
ছোট ছোট ট্রেন-করা বিস্কুক বসিয়ে। এই থেকে এ মুর্গর
মের্যেনেরও শিরামনোর্ত্তির আভাস পাওয়া যায় এবং
শিল্প সম্বদ্ধে ওরা যে কড্টা সঞ্চার ছিল ভাও বেশ বোঝা
যায়।

নেয়েদের দেলাইয়ের স্টচন্ধলি প্রায়ই ছারিয়ে খেড, ভাই ওরা দেগুলি অভি যতে পানীর কাঁপ। ছাড়ের ভেতর পুরে রাবত। কামায় ওরা হাড়ের বোভামও ব্যবহার করত করনও করনও ছাতীর দ্বাভের ভৈরি আলপিনের মত এক প্রকার সংগ্রন্থিত কাম। আটকাবার করে ব্যবহার করত। এই দ্ব কিনিয়ের নমুনা লিউল মিইন্মিয়ামে অভি যতে রক্ষিত আছে।

প্রথ সন্থাবিদের বলেন, প্রভাৱ-মুরের অবিবাসীদের মব্যে মাাগ্ ভালেনীরদের শিল্প-রোব ছিল অভ্যন্ত উন্নত। অপরাপর শিল্পের চেন্নে ওদের চিত্র-কলাই আমাদের দৃষ্টি বেশী আকর্ষণ করে। পাহাছের পায়ে ও গুহায় আঁকা ছবিগুলি ওদের সংক্ষাত শিল্প-প্রবৃত্তির স্পষ্ট পরিচর দের। ইভিহাস ওদের সহতে বিশেষ কিছু না বললেও ওদের আঁকা ছবিগুলি, আঁকবার সরক্ষাম, ওদের ব্যবহার করা অগ্র-শন্ত্র ও পোশাক-পরিক্রণ ওদের জীবন্যাপন প্রবৃত্তির দের।

চক্মকি পাণরের ষত্রপাতি ও ব্যবহারহোগ্য জিনিষের উপর বোদাই করা ছবিঙলি দেখলে বেশ বোঝা যার, কত গভীর ছিল ওদের শিল্পাহ্যাগ। এওলো থেকে বুবতে পারা যার, ওরা ওবু চিত্র-কলার অপুরাগ ছিল না, ভাসুর্ব্যেও ছিল এদের দক্ষতা। ক্রমে ওরা ভাকুর্ব্যে এত নিপুণ হরে উঠেছিল বে, ওদের খোদাই করা চিত্রগুলির সদে জীবত প্রাণীদেহের কোন বৈসার্গ্য মকরে পড়ে না। সর্ব্য-মোটা আঁচড়ে খোদাই করা ছবিকে নির্ভ করবার করে ছিল ওদের অলাভ চেটা।

নীচের বুনো-মহিবের ছবিট (নং ১) ভাল করে লক্ষা করলে ওদের ভাতথ্যের আঞ্চিকটুকু লহছে কিছু বারণা জন্মতে পারে। এর গারের লোমগুলি আঁকা হরেছে কৃতকণ্ডলি বিভিন্ন বাড়া বাড়া আঁচড় দিরে। লোমগুলি এই ভাবে আঁকার জীব্টর



> भर किय

দৈছিক বৈশিষ্ট্য থ্য স্পষ্ট হবে উঠেছে। হোট হোট কাজগুলিকে নিগুঁত করবার ছতে ওরা সমরে সময়ে এত সুদ্ধ আঁচ্ছ বিরেছে যে, আজকালকার থ্য জোরাল বিজ্ঞা বাতির আলোতেও সেওলি স্পষ্ট দেবা যায় না।

কোন জীবন্ধ প্রাণী দেবদে আমাদের মনে তার আঞ্জির যে রেবাপাত হয়, সুসমল্পন রেবা দিয়ে ছবিজনি তেমনি সুষ্ঠ জীবন্ধ করবার জতে ওরা মবেই চেটা করত। নির্ভ রেবার টানে স্পট্ট হয়ে উঠত প্রত্যেকটি পশুর গতি-জলা ও প্রস্তুতির বিশেষ্য।

লা ম্যানেলা (La Madeleine) ঋষার ঋষা-জন্ত ও ম্যামধের ছবি ছটিকে ভাল করে লক্ষ্য করলে বোঝা যার, ভালুকট উত্তর প্রকৃতির, আর ম্যামধটি আক্রমণোগ্যভ (নং ২ ও ৩)। এই ধরণের ছবি এর চেয়ে নিধুত করে আঁকা ধুব



२ **न९ 15점**

কঠিন বলে মনে হয়। এই ছবিওলি দেখলে ওদের পর্যাবেক্ত্র-লক্তি ও নিপুণ রেবা!-সংযোজনা-লক্তির প্রশংসা করতে হয়।

চক্ষকি পাধরের ছবি দিয়ে পাধর বা হাভের ওপর নিবুঁত ছবি আঁকা বেশ একটু প্রম্পাব্য ব্যাপার। ভাই ওরা



অভ্যস্ত স্তৰ্ক হয়ে থাকত ছবি পাঁকবার সময়। ওরা कारण, जनजर्माह (कान जनाहाकनीत (रवान:ज राज जा ৰুছে কেন। কত কটদাব্য। এই সতৰ্কতার কলেই এদের विटि **चटाराच**नीय (यश वर्ष अक्टी (सर्थः यात्र मा ।

এর আরও একট কারণ আছে। কোন আগন বা মডেল খেকে ওরা ছবি আঁকত না। শিলী যে জীবটির ছবি আঁক্ৰার ইছে৷ ক্রভ সেই কীবটকে ঘটার পর ঘটা. क्षेत्र वा पित्मत शत पिन चलास मत्नात्वात पित्र (पर्वल । দেৰবার সময় পঞ্জীরভাবে চিত্তা করভ বেবার বরণ ও ভঙ্গী সম্বৰে। দেবতে দেবতে জীবটির সম্পূর্ণ ছবিট যখন মনে গভীর রেবাপাভ করত তর্বনই ওরা সেই জীংটর ছবি আক্তে বলত।

খুইখারল্যাতের কেদ্লারলকে শৃম্প ভক্ষরত ছবিশট প্রভার-বুসের ভাক্তব্যের একট অপূর্ব্ব নিদর্শন (ন ৪)।



8 मर कि

এই ছবিটভে একট নৃত্য আজিকের সধান পাওয়া যায়। (चार्ड वर्क महल-दिवाद वर्षाल काका-वाका दिवा मिरस मुर्विकेस अरहात लाम (मर्वाटना क्टाइटक । शाटका व्यवकाम (मर्टन व्यावता যায়, জীবট বীরে বারে অঞ্জলর হচ্ছে। যে-কোন শিলর দিক बाहे मुखिके (मर्ट की कांत्र कहारवन, बह रहरक निर्मुष्ट के व्यानवस्त वृद्धि (बाबारे कवा क्षक्रिन।

बीटात खविकेटल बनना एतिएनत निष्डत छैपत एतिएनत যে মুখখলি খোলাই করা হয়েছে খীবন্ত প্রাণীর বুখের সলে সেপ্তলির ভকাং আছে বলে মনে হর না (নং ৫)। একট জিনিষ কিছ এতে লকা করবার আছে। পাঁচট বুবের



क नर किया

কোনটর দলে কোনটর ফিল নেই অবচ প্রত্যেকট মুখেরই একট বিশেষত আছে।

বড় বড় ছবি আঁকিবার সময় ওরা যে পরিশ্রম ও সভর্কতা অবলখন করত ছোট ছোট ছবি আঁকবার সময়ও ভার এডটুকু লৈবিলা দেখা যায় নি । শিলাগুৱাগ যে ছিল এদের রক্তমক্ষাপত ভার প্রমাণ এই ছবিওলি। এই অম্রাগের কলেই ওরা কিছু আঁকবার সময় এছটুকু অবহেলা বা অগতর্কতা দেবাত না।

নীচের ছবিট লক্ষ্য করলে কেশ বোঝা যায় এট অভাত ভাভাভাভি যাত্ৰ কয়েকট রেবার সমাবেশে আঁক: হয়েছে : এতে কোন আত্থর না থাকতেও সৌণ প্রদেশের খোড়ার (भवनं के दिनिक्के हिंदू वकाद चार्ट्स (मा ६)।



দিন যভই যেতে লাগল ভিন্নীরা ভতই নিপুণ হয়ে উঠতে লাগল রেবাছনে। ক্রমে রেবার সাহায্যেই ওরা দেবাভে প্রক করে দিলে ভালো-ছায়ার (light and shade) বেলা। অ'কে-বাজে রেবা না টেনে সামার একটু ছোঁয়া · (touch) দিয়েই এই আলো-ছায়ার বেলা দেখিয়ে ওরা ছবিশ্বলিকে প্রাণবন্ধ করে তুলভ।

গভীর রেধাবিভাসে ছবি আঁকা ছিল আরগ্নেশীয় निबौरभव दिया-हिरक्षत अयान चाकिक। क्राय क्राय श्रापत শিল্প-বোৰ যভই পতীয় হতে লাগল ভতই ছবিওলিকে আকর্ষপ্রোপ্য করবার দিকে ওদের খোঁক বাছতে লাগল। স্ক্রশিল্পবোধ তথনও কিছ ওদের মনে ভাগে নি। তাই সৌন্ধ্যাঞ্জীভি ও শিল্পীমনের অভৃত্তির ভাতৃনার কোন এক অসত্ৰ মুহুৰ্ত্তে ওৱা বেখা-চিত্ৰের বেট্টণী-রেখার ভেডর ষং-লেপা ত্রত্ন করে দিলে ।

ম্যাগ ডালেমীয় মূগে কিছ সম্পূৰ্ণ পরিবর্তম হয়েছিল এই

আদিকের। বং-দেপা (Silhouette) ছবিওলি ওরা কিছ আঁকত রঙের কুট্কি দিরে। কোন কোন ছবিতে আবার সক্র-মোটা কুট্কি দিরে আলো-ছায়ার বেলা দেবাতে চেটা করেছে। এই জ্যোয়তি দেবে মনে হয়, রঙের ভূলি বয়ার পর রঙের যাছ দেবাতে ওরা যেন কুক করে দিরেছিল।

বে-কোন আলিকের ছবি ওরা আঁকুক না কেন, সব সময়ই ওণের লক্ষ্য থাকণ্ডে! ছবিটকে নির্ভ করার দিকে: কোন কোন ছবিতে হাল্কা রঙের ম্পর্লে বেষ্টনী-রেথাট এঁকে ভেতরেও লেপে দিত হাল্কা রং। এই সব ছবির ভারগার ভারগার আবার গভীর রঙের ম্পর্ল দিয়ে আলো-ছারার বেলা দেবিয়েছে।

কোন কোন হবির বছিবে ইনীটুকু কালে। রংগিয়ে এঁকে ভেতরে দিয়েছে অন্ত রঙের স্পর্ন। এই আলিকের ছবিগুলি এত আক্ষণযোগ্য যে সম্পূর্ণ ছবিটির ওপর দর্শকের দৃষ্টি প্রোপুরি আটকে যায়।

্এক-রড! ছবিগুলিভেও ক্রমে ওর! আলো-ছারার বেলা দেখাতে সুক্র করে দিলে। এই বরণের ছবিগুলিভে রঙ দেওয়ার পর চক্মকি পাধরের ছুরি দিরে জারগার জারগার টেচে হালক। করে রঙের পরশ দিয়েছে। কলে সমগ্র ছবিটতে শুষ্ট হয়ে উঠেছে আলো-ছারার বেলা।

বডের-নেশা ওদের এমন করে পেয়ে বদল যে, খোদাই-করা মৃতি থলিতেও রঙ দেওরার একটা খোক এদের চেপে দেল। এতে মৃতি থলি বেশ স্থারই দেখাত। রঙের স্পর্শে ছবি ও খোদাই করা মৃতি থলি যত স্থাক ছতে লাগল ততই ওদের নানা রং ব্যবহার করবার আগ্রহ উত্তরান্তর থেকে উঠল।

পে রুপের যে-ক'ট বহু-রঙা ছবি ও ভাক্ষর্যার সভান আৰু পর্যান্ত পাওয়া গেছে তার সব কয়টই অত্যন্ত আকর্ষণীয় ও শিল্প চাতুর্যাপূর্ব। এই সব ছবিতে ওরা বাবহার করেছে মাত্র চার-পাচট রং—সাল, কালো, পাটকিলে, আর হলদে।

বং ব্যবহার করতে করতে ওরা হঠাং আবিকার করলে—
কোন একট বিশেষ রঙের ওপর অভ রঙের ছারা দেওরাও
সন্তবপর এবং এতে ছবিভালির রূপান্তর সাধন হর । এই
আদিক আবিস্কৃত হবার পর শিল্পীরা পুরোনো গছা ছেড়ে
দিরে নতুন আদিকের ওপরই মনোযোগ দিলে। এই বরপের
কতক্ত ল ছবির অভিত্ব এবনও আছে। সবচেরে আক্রেরির
বিষর, আঁকবার সমর ওরা বেছারার রং ব্যবহার করেছিল
সেই রং এবনও কিছুমাত্র ক্যাকাশে হর নি।

প্রার্গৈতিহালিক বুগেই মিশরবাসীদের লিল বুব উর্বভিলাভ করেছিল। ওদের বিশেষ লক্ষ্য ছিল অলম্বরণের (Decoration) দিকে। বহু-রঙা ছবিগুলির শ্রেট্ডের দিক দিরে বিচার করতে গেলে ম্যাপ্ডালেনীয় শিলীদের ছবিগুলি অভ্যন্ত সাধালিদে হলেও মিশরীয় শিলীদের ছবির চেয়ে অবিক্তর আকর্ষণীর।

শেনের আগ টামিরা গুহার ভেতর করেকট বুনোমহিবের

ছবির সভান পাওরা গেছে। এবনও এওলি প্রায় অকত অবহাতেই আছে। কোনটির রং এতটুকু করে পঞ্চে নি বা ক্যাকাশে হয় নি।

ক্-ভ-গিয় গুড়ার গায়ে কতকগুলি সুন্দর স্থান শীব-শন্ধর ছবির সধান পাওয়া গেছে। এগুলির প্রায় সব কয়টিই বছ-রঙা।

এই বুপের শিল্পীরা মাটর মূর্তি তৈরি করতেও অভ্যন্ত ভিল। ড়াক্ লো'ছবেরর (Tuc d'Audoubert) ভবার কাদার তৈরি ছট বুনোমহিষের মূর্তি পাওরা পেছে। এ ছট দেখতে অনেকটা জীবছ মহিষেরই মত। এমন নিপুণ হতে এ ছট তৈরি করা হয়েছে যে হঠাং নেখলে জীবছ মহিষ বলেই ল্রম হর। বর্তমান মুগের শিল্পীরা ভাই এভলিকে মুংশিলের প্রেঠ নিদশন বলে শীকার করেন। এই মূর্তি ছটির কাছে আরও একট অসম্পূর্ণ মূর্তি দেখা যায়। এখনও এর গায়ে শিল্পীর আভ্রমের ছাপ বিদ্যামান। এ মুপের শিল্পীকের যে শিল্পের স্বাধ দিকেই সভাগ দৃষ্টি ছিল ভাবেশ বোকা যায়।

ক্যাপ-রাজ অহায় প্রায় লাভ কুট লখা করেকট চুনে-পাধরের খোদাই-করা বোভার মুর্ত্তি পাওয়া পেছে। অব্যাপক অস্থপ বলেন, এ ভলি ম্যাপ্ডালেনীয় লিজের শ্রেট নিধর্ণন।

এই বুগের শিল্পীদের শিল্প-বোৰ এত উন্নত ছিল যে কেবল গুছা-চিত্র বা ভান্তর্ব্যে ওরা সংষ্ট হতে পারে নি । ব্যবহারযোগা জিনিবের ওপরও শিল্প-চাতৃর্ব্য দেখাতে চেষ্টা করেছে। অস্ত্র-শত্তের বাঁটের ওপর খোদাই করেছে নামা জীব-জছর মৃতি। এই বরণের শিল্পকে বাংলার বলা যেতে পারে চলমান শিল্প। ইংরেজীতে বলে মোবাইল (mebile) বা চ্যাটেল (chattel) আট।

এই যুগের শিল্পীরা পশু-মূর্তি আঁকতে সিদ-হন্থ ছিল। ক্ষণও ক্ষণও ওরা মাছ, হাঁস, বক, বল-মোরগ প্রভৃতির ছবিও এঁকেছে। এওলি কিছ মোটেই শিল্পশ্যবাচ্য নর।

এই সম্পর্কে একট জিনিষ কিন্তু সম্পাক করবার আছে। এই সব শিকারী-শিল্পীরা কোন গাছের ছবি আঁকে নি বা বোদাইও করে নি। মাধুষের মৃতিও ওরা এঁকেছে বুব কম। যে করটর সম্বান পাওয়া গেছে নেগুলি আবার শিলস্ট ছিসাবে বুব উচ্চ দরের (মং ৭)। মাধুষের মৃতি আঁকবার কারদাটুকু বোধ হর





१ वर किय

ওরা ভাল করে আয়ও করতে পারে মি, অনেক গবেষকের এইরূপ অধ্যান। যে গব মাধ্যের ছবি ওরা একৈছে সেওদির বৈহিক গঠন মানুষের মৃত হলেও মুখে পশুর মুখোগ পরামো।
এখনির প্রায় সৰ কর'ইতেই আবার নাচের ভলী বিদ্যমান।
ভাই এখনিকে ব্যক্তিরের নমুনা হিসাবে ধরে নেওরাই ভাল
(মং৮)।

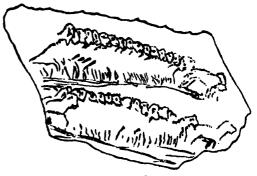


৮ वर हिब

সাধারণতঃ দেখা যার, মাাগ্ডালেনীর শিল্পীদের আঁকা যে
লব ছবির সন্ধান আৰু পর্যন্ত পাওয়া গেছে তার অবিকাংশই
জীব-ক্ষর ছবি। এর প্রধান কারণ, ওদের মব্যে প্রচলিত
ভাকিনী-বিজা বা যাত্-বিদ্যার অঙ্গ হিসেবে প্রায় সম্ভ শিকারীশিল্পীকেই পভার ছবি আঁকার অভ্যান্ত হতে হ'ত। জীব-ক্ষর
মুঠি ছাড়া আর যা কিছু ওরা এঁকেছে তা খেরালী শিল্পীর
অবসর বিনোদনের খেলা মাত্র। তাই এই সব ছবি আঁকবার
সময় তারা খুব বেশী যতু নিত না।

এই মুগের কোম কোম শিল্পী দৃষ্ঠচিত্রও (landscape) আঁকতে চেষ্টা করেছে। কিছু সেগুলি গুরা বিশেষ মনোযোগ দিয়ে আঁকে নি। যে কর্মী আবিষ্ণত হয়েছে, মনে হয় সেগুলি শিল্পীর এই বরণের ছবির প্রাথমিক ছবির নমুনা (মং ১)।

এই মুগের শিল্পের সবচেয়ে লক্ষ্মীর বিষয়—প্রায় সব ক'ট ক্ষীব-ক্ষম ছবির একদিকেরই প্রতিকৃতি (profile) দেখান হয়েছে। এর থেকে ক্ষমান করা যায়, ওরা ছবি জাঁকবার সময় ক্ষীবগুলিকে লক্ষ্য করত এক পাশ থেকে। এইভাবে



> नर हिन

দেশতে দেশতে ওরা শুবু এক পাশের প্রতিকৃতি আঁকতেই অভ্যন্ত হরেছিল। সামনে থেকে দেখে চিত্রে রেখাহিত করবার আদিকটুকু হয়ত ওদের একেবারে অজ্ঞানা ছিল।

হাতের ওপর বৃধি খোদাই করার বোঁক কেন যে ওদের চেপেছিল তা আল্টাবির। অহার ছবিটি দেখলে কডকটা হয়ত অস্থান করা যেতে পারে। এই গুছার ভিডর ইাডের ওপর খোদাই করা একটি হরিদের মৃতি পাওয়া দেছে। অহার গায়েও কিছু ঠিক দেই রক্ষের একটি মৃতি আঁকা আছে। গবেষকরা তাই অথুমান করেন, গুছার বাইরে বিশে শীবটিকে লক্ষ্য করবার সময় শিলীরা বোধ হয় হাডের ওপর তার একটি খসভা (skeich) করে নিভ। পরে গুছার গায়ে আঁকভ সেই ছবিরই অস্পিশি। ছাড়ের ওপর খোদাইকরা মৃতিটিকে ভর্মন বাবহার করত মড়েল হিসেদে।

ম্যাপ্তালেনীয় মুপের অবসাধের প্রায় সলে সজেই কিছ এই মুপের শিল্পের অবসান ঘটে : কালক্রমে শিলীদের খল্প শিল্প-বোবে ভাটা পভতে বাকে, ওদের শিল্পের স্থাবতাও মান হতে বাকে। তবে এই মুপের যে সব গুলাচিত্র ও ভাস্কর্যের স্থান পাওয়া গেছে ভার অবিকাংশই যে পৃথিবীর শিল্পক্লার ভাঙারে অমৃল্য সম্পদ হিসেবেই সণ্য হবে, সে বিষয়ে সন্দেহ নেই।

যুম শ্রীমূণালকান্তি দাস

ঐ চেরে দেব ভারার ভারার ভোষার আকাশে খপ্প হছার, মেল গো মরম ভন্তাভূর। মিশার ঘন্টা গুরে বেকে যার শোম কাম পেতে রাভের গাম। চেরে দেশ রাভ কি বে মোহমর, জ্যোৎসা করিছে দূর বনমর। উথাও সময়—বপ্প মিলার, মুমের গহমে রজনী বার, মোহমর মধু রজনী বার।

আজ—আগামী কাল

গ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

١.

কিবে এল প্রাপ্ত ক্লান্ত ক্লবসর দেছে। বাভিটা প্রান্তি দূর করবার যত নর -তবু এই হ'ল তার ক্লাপ্রয়।…

দোভদার উঠবার মূখে একট উচ্ছুদিত খাসির সদে আরও কয়েকট গলা শোনা গেল। বাইরের কেউ এলেছেন।

একট বড় মোষবাভি ছলছে বরে- বরটা বেশ আলোকিত হরেছে। মাছরের ওপর বলে ছ' তিন জন যুবক আর গুড়া একটা বড় কলাই করা প্লেট থেকে বাবার ভূলে নিয়ে বাছে—-পাশের প্রকাণ্ড লালপাতার ঠোঁটাতেও রয়েছে বাবার। বাবার নিয়ে চলছে ছেলেমাশ্রম—কাড়াকাড়ি—আর চলেছে পল আর হালি। অন্তর্গতার পরিমণ্ডলে বাতিটাকে তেলী উজ্লে মনে হক্ষে আর বরের লোকভঙ্গ নির্থনতাটা উপলব্ধি হক্ষে না

প্রশান্তকে দেবে ভজা কোলাহল করে উঠল, এদ কমরেছ বংস পছ। তার পর যুবক তিন্টর পানে কিরে ওর পরিচয় সাধন করিয়ে দিলে।

প্রশাস আসন মহণ করলে। বাতির আলোর অভ্যন্ত কল চেহারার মাম্ধকেও কিছু কোমল বোব হয়—একজনকৈ ওরই মধ্যে সম্পোত্রীয় মনে হ'ল প্রশাস্তর। আর তু'জন নিভাপ্ত পথে-বেড়ানো গোছের চেহারা। বেমন উপ্পুস্ক চুল - ভেমনি আব মরলা পাঞ্জারী সাহে- মুখ ক্রন্ত্র— আর খাবার খাওয়ার মুহুওে চোল মুটতে বাদ্য-লাললার চিক্র মুটে রয়েছে। অভীন আর চাক্র ওলের নাম। কমরেড অভীন—কমরেড চাক্র—পদবীপুজ্ব উল্লেখের প্রয়েজন নাই। কমরেড অবলীকে মোটের ওপর মন্দ্র লাগল না। বেলবাসে কচি আছে—আর মুবে আছে লালিভ্য। মাধার একপালে টেরি কাটা—ভেল কিংবা লাইমজুনের কল্যানে চুলগুলি চকচক করছে। তেল কিংবা লাইমজুনের কল্যানে চুলগুলি চকচক করছে। তেল কিংবা লাইমজুনের ক্র্যানে মুবে ভ্যাত্র—ম্বীনের মলে পভ্রের।

ক্ষতা বললে, এটাকে ভোজও বলভে পার। অবতী মীরাট বাছে কাল চাকরি নিষে— ভারই বাওয়া।

কোন আশিস ? বিজাসা করলে প্রশাস্ত i

অভীন বললে, বাঙালী না থাকলেই বা কি ? দিস ওয়ার্লভ ইক আওয়ার হোম।

চারু বললে, পার ভো আমাদেরও টেমে মিও: রুছের পর পুৰিবীটা বেশী অপাত হয়ে উঠেছে।

ভভা বললে, হোক অপাভ-নৰ বিধান রচনার পক্ষে

এই তো কুয়োল। আহে—হাত ভট্টরে বলে ব্রইলে কেন— নাও। ছবানা সিরাড়া ও প্রালান্তর হাতে ভূলে দিলে।

চাক বললে, সভো বেলার এই কলবাবার বেয়ে আমি কিও রাভ কাটাতে রাজী নই।

ততঃ বললে, আৰু রায়াখর খেকে হুট নিয়েছি ক্ষরেছ— উন্ন জ্ঞাবে নং।

চার বললে, বেল ভো—ভোষাকে ছুট দেওয়া রেল। কি হে অতীন কিচুড়িটা নায়াতে পাংবে গ

শ্বতীন বললে, কেন পারব না—কিন্ত কমরেভ-বিচ্ছি নয়—হীতি মত ধি চাই :

অবঙী বগলে, জনবিচ্ছি বল। তার চেয়ে বাবছা ধর্ম করবেই--জার একটু ওঠ : বি ভাত-- বাঁট বুজোরা রীভিতে। একটা হর্মনি উঠল : অতীন ছ্'লতে চাপভালে মেবে---চার দিলে করতালি--ছভা চাপভালে অবঙীর পিঠ। এলাছর মুব ইম্বর পঞ্জীর হ'ল। মনে হ'ল ওরা অভান্ত ছেলেমানুষ।

ভ্ৰুতা বফ গৃষ্টিতে প্ৰশান্তৱ পানে চেন্তে বললে,—বি ভাত তোমার মনংপুত নয়—প্ৰশান্ত প্

অহতে আর কার জর[্]চ।

ব্যস্ত্রস্ত্র অতীন আর একটা চাপড় মারজে মেবেজে।

প্রশাস্থ বললে, কিছ---রসনাকে প্রশ্রম দেওয় উচিত হবে কৈ ? যে কোন ছিল্লপ্রে---একটু আরাম প্রবেশ করলে----অবস্তী বললে, পিউরিটানদের মত কর্ম বদহ ক্ষরেন্ত।

অতীন বগলে, যা হাতে আসংহ— তাকে না নিয়ে কাক করব এত বড় বোকা আমরা নই। কাল হয়ত পাছা ভাত ভূটবে না---তা বলে আফকের ভোক ছেড়ে দেব। একটু থেমে বললে—আমরা হচ্ছি জানী লোক— বোকাদের টাকায় ভোক বালিয়ে বৃদ্ধি প্রকাশ করতে ভালবাসি।

গুড়া অবস্থার কাঁবে মুছ্ চাপড় মেরে বললে, গুনলে ভো----প্রকারান্তরে ও ভোমাকে বোকা বলছে।

চাঞ বলগে—কান্ধের কথা কণ্ড। একটা কাগক আর পেলিল দাও—কর্মচী করে কেলি চটুপট।

অবস্থী বুক্পকেট বেকে ছোট নোটবই আর ফাউন্টেন বার করে বললে, বল। কলম উভত করে সে বললে, কিছ ভাল চাল জোগাড় করবে কোবার ?

চাক বললে, সে জার আমার। রাশন হরেছে বলে ফলকাভার শোলাওরের চাল যেলে না— এ কথা ভূলে যাও। ব্যাক্ষাকেট ভো। ভাতে আহি রাজী নই। অবস্তী

(नाहेवहें वह कदल।

অভীন বললৈ, আরে—চালের অভাবে পোলাও বছ হবে—বাই নো মীন্স। এক ভারগার আছে চাল—ভাষ্য দামে পাওরা যাবে। আলো চাল—গভটা নেই।

ठाक वन्टन, ७८७३ १८व ।

শ্বৰী বদদে, যা ব্যাপার ভাতে রাঞ্জিতে বাছি কেরা সম্ভব বদে বোৰ হয় না।

७७। यमरम, मारे वा किवरम :

শভীন বললে, এর খালে খেন কোনদিন এবানে রাভ কাটাও নি ? তুমিও কম পিউরিটান নও কম্বেড। হাসভে হাসতে সে প্রশাস্তর পানে ফিরে চাইলে।

ভাবটা ভোষার হরে—প্রভাগেরটা আমিই দিলাম। একটু বেষে বললে, চাকরি করেম ভো ? প্রশাপ্ত বললে, মা।

'8---। भाष! हमरक (म अक्रवांत कामरम।

চারু বললে, আর একটা গাঁট পাওনা রইল অতীন, নোটবইয়ে টুকে রাব।

লশাভ বললে, চাক্ত্রি পাই যদি---

পাবেই চাক্রি, বাংলাদেশের পাস করা ছেলে চাক্রি পাবে না ত পাবে কে শুনি। চাক্রি ভূমি পাবেই।

চারের অন্তুত মুক্তিতে প্রশাস্ত হেসে কেললে। বললে, শুৰু বাংলার লোষ দিও না। কিছ ভূমিও ত চাকরি করছ না।

कदव देविक--करलक (बदक वाद रहे व्यारत।

কলের)—প্রশান্ত একটু অবাক হ'ল। এই ছয়ছাছা চেহারার ছেলেট কলেছে পড়ে ?—বিডহীন পবে-ধোরা ছেলে বলেই সে প্রথম দর্শনে এনক অবহেল! করেছিল।

কিছ কলেজ থেকে বেরিয়ে চাকরিই বা করবে কেন ভূমি ? বিশয়কে সে এইজাবে প্রকাশ করলে।

চাক বগলে, মহাজনদের পছাই জানি---ভাই বলেছি। হাঁ প্রবিধা হলে জন্ত কিছুও করতে পারি। ভবে নেই জন্ত কিছুটা যেহেতু জানি না কি---

ওঠ-- ওঠ-- যথেষ্ট বৰামো হয়েছে--। অতীন তাকে একট ঠেলা দিলে।

क्षंहै! किस शाहे मि। स्नात---

অবদ্ধী পকেট থেকে একখানি দশ টাকার নোট বার করে ভার ছাতে দিলে।

ভুজা বললে, সেরধানেক বি আর এলাচ লবল কিস্মিস সামান্য আনবে। অভীন বাজারটা ভূমি করবে আর চাল।

हैका नित्त इ'बर्ग यात एस तना।

মিটার ঠোঙাটা হাতে নিয়ে গুজাও ইাড়ালে। বললে, বুড়িকে মিটা বাইয়ে আসি---বোস কমরেড।

বাতিটা আধাআৰি পুড়ে গেছে---আগোৱ কোৱ বেছেছে। হ'ক্ষকে হ'ক্ষৰে স্পষ্ট দেবতে পাছেছ। চুগ কৰে বাকা অশোভন। ছ'ৰনের চিন্তার বারা ভিন্নবুৰী বলে করেকট মিনিট নীরবে কেটে পেল।

প্রশান্ত ভাবছে—অবস্থী ভাগ্যবান। আঞ্চলের রামিটা ওরই নিজম বলভে পারা যার।—এই দিরানক পুরীতে আনক্ষ-স্ট করেছে সে।

অবঙী ভাবছে, কাগকের কথা। নির্বাহ্ব ছ্রণেশ— একা—অভানা ভাগিদ। চাক্রির ভগতে এই ভার প্রথম । প্রবেশ—সন্থাহবে ভা

হঠাৎ সে প্রশান্তকে প্রশ্ন করলে, আপনি চাকরি করেছেন কথনও ?

প্রশান্ত একটু অবাক হ'ল তার প্রশ্নের বরণে। ছ'জনে মুবোমুনি বসেই—কবাহ সূত্র পালটে রেল। আপনি সমোধন এই প্রথম অবস্তীর মূব বেকে বেকল। এটা কি চাকরি পাওগ্রার স্থা— ভদ্রতার স্থান হ বললে, ইা—তবে বেশী দিন নয়।

অবস্তী বললে, চাকরি করা শক্ত — না চাকরি রাখা শস্তু, দ এ প্রস্তুত। প্রশাস্ত বললে, আমি দল-বার দিনের বেশী চাকরি রাখতে পারিনি। তবে সকলের বাত ত সমান নর।

অবস্তী মাধা নাড়লে। ঠিক বলেছেন আপনি। চাক্রিটা বলতে গেলে আমি নিচ্ছি না—সংসারই নেওয়াছে।

ভাই নেওয়ায়: সংসার স্বাস্থ্যের কাছে দাবি করে— পাওনার বেশী- অনেক বেশী! অভিজ্ঞানর মত প্রশাস্ত কবাব দিলে।

আপনার সংক আমার মিলছে। আপনার ভাইর। নিশ্চর ইন্থুল কলেকে পড়ে—বোনেরা বিবাহবোগ্যা। বাবা ইন্ভ্যালিড—আর মানেই। খরেআছেন বিববা পিলি আর নিম্পা কাকা।

প্রশান্ত হেলে বললে, সব না মিলুক কভক মেলে।

তা হলে আমিই বা চ;করি রাধব কি করে ? চিম্বায় ওর জু হুট কুঞ্চিত হয়ে উঠল।

ভা কামি না। ত ব দাকারর মাইনে হাতে না পেরেও ভোকের ব্যবস্থা করতে পারেন ঘবন—কবাটা বোঁচার মত নিক্ষের কানেই বেহুরো বাক্তে ও সহসা বেমে গেল।

অবতী বললে, প্রদার চেয়ে বছুবাছবদের দাবি অঞ্চপ্য নয় কি ? ওদের সদ থেকে বে আনক্ষ আমি পেরেছি তার মূল্যও অভত দেব না !

প্রশাস্ত চূপ করে রইল। মনে মনে বললে, পৃথিবীতে লব জিনিসেরই ধাম দিতে হয়। সে মূল্য ন্যাব্য কিংবা জনাব্য সে ত আর লাম্যবাদ ঠিক করে দিক্ষে না। বিশেষ করে এই প্রীতিভোজনের ব্যাপারটার।

শুভা কিরে এল। বললে, অবস্তী, যা ভোয়াকে ভাকছেন। অবস্তী শুভার সাহায্য না নিরে ভিতরে চলে গেল। অকর- মহল ভার অপরিচিত নয়—গুডার মারের সম্পেও প্রেহ্মব্র একট সম্বর্ড বে বিদামান সে অসুমান করা বিচিত্র নয়।

বাশার বগলে, আরু আমি আসি ভভা ?

আগবে ? কোৰার আগবে ? ইগ্ ভোষার মুধ এত ভকিয়ে গেছে ! শরীর বারাণ হ'ল নাকি ? শুভা এগিয়ে এগে ওর ডান হাতবানি তুলে নিলে।

তুমি নাড়ী দেবতেও জান ?

কানি—শত্যস্ত চঞ্চ তোমার নাছি—বায়্টা বেছেছে। পঞ্জীরভাবে শুভা বললে।

আর কিছু বুরতে প!রছ না ? কোমল খরে প্রশাস্থ প্রর করলে।

আরও কিছু ? হাঁ—ভাও আছে, কিছ সে রোগের নিধান বে শাজে আছে—ভার বাবপ্প আপাতত চলবে না। ভাঙা অতি কণ্টে হাগি ইংপ গঙীর ভাবে মুখ ফিরিয়ে নিগে।

প্রশান্তর বৃক্তে প্রবল রক্তোচ্ছাল নেখে এল—সহসা ও ভঙার হাতবানা চেপে বরে ভীষণ বেশে নিকের দিকে আকর্ষণ করতে করতে বলে উঠল, ভূমি জান ওভ!—ভূমি জান।

ভঙা সে বেশের টান সহ্ করতে না পেরে তার বন্দোগর হ'স : কিন্তু সে ক্রোর প্রকাশ করতে না—বা নিজেকে ছাভিরে নেবার জন্ম জ্বধা বলপ্রকাশের অভিনয় করতে না।

ক্ষেকট মুহুও। ওভার কপোলের উপর উঞ্চ নিধাপ অফুভূত হতেই সে অভ্যন্ত সহক ভাবে প্রশান্তর হাত ছাড়িয়ে পোলা হবে বসলে—বিহুত কাপভ্রানা গুছিরে নিয়ে বসলে, আমি জানি। দেহের দাবিটা অধীকার করে লাভ নেই কমরেছ কিন্তু মনকে ওর বেকে আলাদা করে রাবাই ভাল।

তার এই নির্মণ্ডাপ উত্তরে প্রশাস্তর রক্ত ক্ষেক ভিত্রি নেথে এল। এত বছ কথা বললে তথা। ভাষাত্তপুরের কোন বাভালী মেয়েই এ বরণের কথা উচ্চারণ ক্রতে পারে না। ও ভাষত হয়ে হাতথানি ওটারে নিলে।

ख्या व्यान कर छ्छा लगास्य भाग कि लिखिका कार्य । शृह्य वना या दावाय छ किनिश जात खर्ज् अ नय । --- मन दूक हार खात नारे हाक, शामिक किमाकशा पित्र मध्यभीत मस छेकादन-- क भारत मात्रकर या वीवम (शह्य कार्य केंद्रिक्ट । कर ममाक-वित्माह्यू कर कथा ख्यास माश्य हत्य केंद्रिक्ट । कर ममाक-वित्माह्यू कर कथा ख्यास कारम द्वारा भागाय है।

কি প্রশাস, আমার ক্যায় হুংগ পেলে ?

প্রশাস্ত সান হাগি হেলে বললে, এ ছাড়া ভূমি কি-ই বা বলতে পারতে ভঙা।

অভিযানের অর্থনিবিত সুর্বী। ততা বুবলে। কিছু এ নিয়ে আপাতত তর্ক করে লাভ নেই। অবস্তী কিরে আপছে।

चनश्री अरम श्राप्तत रिमक्ना मका कदान मा ; नमान,

ভোমার মার অঙ্ভ ক্ষেত্ ভাতা-বলেন-দূর দেশে নাই বা গেলে।

ওভা মাথা নেড়ে বললে, ঠাকুরমা কি বললেন 🤊

বগলেন—পশ্চিমে নাকি অনেক ভীৰ্ব আছে সেওলি বেৰতে ভুল না ক্রি।

ভঙা বদলে, ভূমি বৃবি বদলে--ভীৰ দেৰবার বয়স জাগে খোক---

প্ৰশাভ বদলে, যাই বল ভোষার তীৰ্ণহান নিয়ে এমন উপহাস করা ভাল নয়।

ওর খবে চমকে উঠল ছ্'কনে। অবভী বললে, দেবদেবীর ওকালভনামা নিকংই নেন নি !

ना, रिनरानवी ना स्थासन्छ धड़ी मानर्छ दाव इत आर्थिङ कक्षरव ना स्थ-रिमाधमर्ग अध्यक्षका वार्ष्ड-मानक्ष स्था।

তেমনি করে দেশভ্রমণ করি আমরা? কোন তীর্বে কবনও কি যান নি, না যা ঠাকুরহার মুখে সেবানকার গল শোনেন নি ? দেবভার নামে এই যে বিরাট ব্যবসা—

ভভা বলগে, প্রশাস্ত জানে বৈকি—ভবু তর্কের বাভিত্তে— প্রশাস্ত বেগের সলে বলগে, ভবু তর্কের ঘাতিরে নয়— ভূমি বয়সের কবাটা ভূগলে—

বয়পের কথাটাই তো আগল। শরীরের সামর্থ্য লেলে তীর্ণ করা ছড়র হয়ে ওঠে—এটা ভোমরা বলে থাক কিছ আমি জানি দেহের রক্ত ঠালা হয়ে না এলে যথার্থ বর্ণ--- অবস্ত বর্ণা বলাতে সাবারণে যা বোকে ভারই কথা বলাতি— মথার্থ বর্ণা সাবন হয় না। কেন ?—শক্তি প্রবল থাকলে—মন ভক্তির চেয়ে মুক্তিকে যেনে নিতে ভালবালে—কিছ শক্তিহীনের অবলম্বন যে অনুষ্ঠ শক্তি সে অবীকার করি কি ক'রে। স্তরাং প্রতি কেল, গলিত গভ, পরমির্ভরশীল বুড়োহুড়ীদের ওই ভোহ'ল একমাত্র আগ্রহ।

অবস্থা হেশে উঠে বগগে, তোমার তর্কে রুক্তি আছে— কিন্তু মুক্তির চেয়েও বেশী আছে বাঁক।

श्रमाञ्च वशास, वर्षाक सशीकांत कद---

অধীকার করণাম কোবার। ভঙা হাসিমূবে বললে, বর্ত্ত্ব-জার বর্ণের আচার আচরণ ছটকে মিলিয়ে গোল পাকাই
নি। সব মাহুযের সমান অধিকার—এও কি বিশেষ একটা
বর্ষ নয়। আমরা বর্ণের বিচার করি ভার pragmatic
value দিয়ে।

অবন্ধী বললে, বাস--বাস আর নয়। উপুনটায় এই বেলা কিছু কয়লা দিয়ে দাও---

ভভাবললে, আৰু আমার হুট বলি নি ৷

বলেছ—কিন্ধ রাষ্ট্রার উদ্যোগ করে দেবে না—এ ভ বল নি !

শভীন ও চাক তবু থি-ভাতের শিনিষ্পত্র নিয়ে কিরে এল না—ভার সলে এল হ'লন মহিলা শার ভিন ক্ষম পুরুষ বছু। কৈ-চৈ বীভিন্নত হ'ল—বালাও ক্রলে স্বাই নিলে। বাওৱাদাওলা শেষ হ'তে রাজি ছটো বেজে পেল। ভারপর পেই
ব্রেই নাছর, চট, সভরঞ্জি বিভিন্নে ঢালা বিছানা হ'ল। জীপুরুষ ভাষে পরুল পালাপালি। ভারে ভারে বানিক চলল পল -ভর্ক--পুঁজিবাদীদের নিষ্কে-জাচার প্রথা নিষ্কে হাসিঠাটা—
ভারপর একে একে স্বাই ছ্নিয়ে পঞ্ল।

ত্রশাধর চোবে তুম এল না। এক ধর লোকের নিধাল
পতনের ধরুন বরের বার্তর উক্ত হরে উঠেছে। এ রক্ষ
অভিন্ততা তার কীবনে এই প্রথম। যদিও ধরে আলো নেই
তবুলে কল্পনায় অনেক কিছু প্রত্যক্ষ করছে। নিদ্রার অগতক
মুহুর্ত্তে—মাত্র্য কত অগহায়—। আলোর লাসন কোন কোন
রভির পক্ষে পর্য কল্যাপকর—অভকারের আশ্রয়ে তার!
নিরহুল। ঘূমিরে পড়লে হ্রতো মভিছের রক্ত চালনা
বাভাবিক নিধ্রে ঘটে—কিন্তু মাধার রক্তে যদি কামনার
আগুন অলে তুম আগবে কোবা বেকে। ভভার সব কবা তবন
মুহুর্থ গেছে—ভবু কাগছে ওই কবাট:

(शर्ब पाविष्ठे। अथौकात करत लाख (सह कमरत्रेष्ठ । (शर्बर দাবি--- শুভাকে সে ভালবেসেছে ? এ ভালবাগার কি অর্থ ? সে অৰ্থ কি প্ৰৱ কথায় পৰিস্কৃত হয় নি ? তবু প্ৰশ্ন কাৰ্যে---মাহুষের মন কিছু কলে-ডোবা পল্পাতা নয়--কিংবা হাঁদের পালকও নয়। আন্তন নিয়ে বেগতে গেলে হাত পুড়বেই---অৰচ আন্তন নিয়ে বেলভে না গেলেও মনের অভ্ঞি খোচে मा। यम ना क्छित्र पश्रम (म अष्मृत्य अम रक्म न चाद काम (मरश्रक मा (हरद अकारक के का कामना करद (कन १ অৰ্চ ভভা-ব্যক্তিগত সম্পত্তি সক্ষেত্ৰ বিবোধী। মানুষ কি সম্পত্তি ? হাঁ---ওবা বগবে ভালবেসে যাকে ভাপন করে নিভে চাও ভার বাবীনতা হরণ করবার জন্মই ভোষার আবেগ--উজ্বাস-ভ্যাগ এ সবের কলকৌশল। ছট খাবীন মাত্র্য---ভাদের খাবীন মত নিয়ে মিলতে পারে ভবু সাময়িক ভাবে কতক ওলি সুবিধা— সুবিধা বলতে আপত্তি হয়--- সহযোগিত: বলভে পার-এই নিয়ে ভারং পরস্পরের সহযোগিতা করবে---बक्के महर क्षरहरी चर्नार कामवामा बाकरव बहे मिलरमर ब्राम । কিছ কাহার সামীপ্য থেকে মনের গভীরে যদি প্রদারিত হয় দেই মহৎ প্রচেষ্টা অর্থাৎ ভালবাসা-- ভা হলেই কি বলতে পারবে ভোষার খাবীন সভাকে অপহরণ করবার কৌশল। मास्यत्क मण्णिक मर्था गंगे करत (भए जिल्हे यक जानिक. অবচ-মানুষের মুখ্য বুলি এই একাভ করে পাওয়ার भावनारक भारा भीवन छैरभग करत शिख बना स्टब्स् । शुक्ति-পভিনা নিজেদের সুযোগসুবিধা কারেমি করবার জন্ধ যেমন रुष्टे करबर्ट चित्रानरीय प्रषा--किना क्षेत्रत-- एवमि स्वरूक আর মনকে এক সলে কিনে নেবার বচ সঞ্চারিত করেছে এই चार्यन चर्थार छामवामा । जेर्यस्त्रद मरम पर्यद सामार्यारम बहे बुखिदक । जाना निरहार वर्गीत मन्त्रम । जमान जम-

বাৰের বৃলে ইবরকে অবীকার করতেই হবে, কেননা বনিকভানাদের বে ক'ট দৃঢ় ভন্ত ভ্রিসাং না করলে সমভ্যিতে গাঁচিরে হাতে হাত মেলানো বাবে না—এট তার অভতম। প্রবানতমণ্ড বলা বার। কিছ বনিকভাবাদ থাক—আছ রাজিতে কিছুভেই কি যুম আগবে না। কিলের উভাগে মভিছের রঞ্জ প্রবাহ নিজার আগতে শীতল হচ্ছে না? কেন এ উদ্রেজনা ?

টং টং করে ভিনটে বাজগ—সাড়ে ভিনটে—চারটে।
প্রশান্ত বিহানার উঠে বসগ। নির্প্ত নরনারীর নিষাসে কেনদ
একটা গর ঘরের বাভাগকে করেছে ভারি। জত্যন্ত গাচ
হয়ে উঠছে চিন্তা—একমুখীন চিন্তা, উগ্র—কামনা-কল্বিত
চিন্তা। দেহলর শুভার দেহ-আবাদ-লোল্প চকল রক্ত
কণিকার ভরল আন্তন খেলে দির্ঘেশ যে মুহুর্ভ—তা যেন
নতুন আবেশে কিরে এল এই নিরোহীন প্রহরে। নিজেকে
সম্বন করা জত্যন্ত কঠিন।

গলা শুকিয়ে পেছে, ক্লপ তৃষ্ণায় ছাতি ফাটখে। একটু ক্লপ চাই--- আলোটা থালবে কি ? না শুভাকে ভাক্তে ?

তথনই মনে হ'ল এগবের ধরকার হবে না। জঙ্গের কুঁজোটা কোণের দিকেই আছে— যেদিকে সে ভারে আছে সেই কোণের দিকে। একটু হাত বাজাপেই কুঁজোটা হাতে ঠেকবে। কিছু ভালাও বেশী দূরে নেই। এক, হুই, তিন। ঠিক গোরের সামনে। শিষ্করের দিকে বালিশের নিশানা ধরে জনায়াগে গে ওখানেও গৌছতে পারে। এক, হুই, তিন। ওরা মুখুছে নিশ্চিত্ত—নিউরে। গভীর রাক্তি ওদের মভিত্ত-কোষে ঘুমের সিঞ্চাত ভারে ধিয়েছে।

বিছানা থেকে এগিয়ে গেগ প্রশাস্ত। এক, ছই, না
কুজাটাই ঠেকল হাতে। গ্লাগটাও রয়েছে কুঁলোর মুবে।
গ্লাগ ভরে গে জল নিলে—চক্ চক্ করে পান করলে আকও।
সেই জলে হাত ডুবিয়ে কপালে, গালে, বুকে, ঘাডে, পায়ের
পাতায় ও হাতের চেটোর ভাল করে লেপে লেপে দিলে।
তারণর বিছানায় ভয়ে ক্লানার টেনে আনলে নিজের প্রান্ধবানিকে। সেই সলে ভেগে এল অঞ্জেল্ল একবানি মুব—
প্রেই করশাস্থিয় মুববাদি জার কারও নয়—তার মায়ের।

এতক্ষণে প্রশাস্ত সভ্য সভ্যই ঘুমিয়ে পড়ল।

ঘুন ভাঙল পরিপূর্ব নিফার শেষে। এ ঘরে নমন্তের পরিমাণ করা বার না— অরকার অনেকথানি তরল হয়েছে এই
মাত্র। রাত্রি নেই বেল বোঝা বার। প্রশান্ত উঠে বলল।
চারদিকে চেয়ে দেখলে—খয়ে কেউ নেই। তবে কি বেলা
অনেকথানি হয়েছে ? অতঃপর সে কি করবে ? এ বাছিতে
এই তার প্রথম রাত্রি যাপন। কোধার কলতলা—কোধার
শোচাগার কিছুই তার জানা নেই। আভর্ষা—ভাকে কিছু না
ভানিয়েই ওরা চলে গেল।

শরীরে আলভ লেগে ররেছে—আরও বানিকটা ঘূর হি...
মন্দ হব না। কিছ এ বাজি বেকে আলই বিধার নিতে হবে।
এবানকার আবহাওয়া স্বাস্থ্যকর নর। মন্থ্যত্বের দাবি জানাতে
সিরে মান্থ্য হারিরে যার এর অভকারে। অভকারে বসে
আলোকের সাধনা।

নভ্ৰতে দঃকায় শব্দ হ'ল—কে এল বুৰি ? চোৰ চাইবায় আগেই সে ডাকলে, বুয় ডাঙল প্ৰশাস্ত ?

ভয়াক করে সে বিছানার সোঞ্চা হয়ে বলল। বলগে, কোণায় গেছলে সব १

অবস্থীকে তুলে দিতে হাওছা টেশনে গিয়েছিলাম প্রথমে— ভারপর—

হাওড়া টেশনে ? কিন্তু ক্যালকাটা-দিল্লী মেল ভো:—

ও পাট্নায় হণ্ট করবে—পাঞ্জাব এপ্পশ্রেসে পেল। একটু হেলে বললে, সারবাত জাগলে বেলার পরিমাণ ঠিক রাখা যায় কি কমরেড ?

কে ভোমায় বলছে আমি সারারাত কেপেছি ?

क्षाहै। भूम राम हि कि ?

ভাগ্যে খরটা সব সময়েই আলো-আবারি । মুবের ভাব পোপন করতে মুখ ফিরিয়ে নেবার দরকার হয় না। প্রশাস্ত বললে, তা হলে তুমিও গুমোও নি ওভা ?

(क्व धूरमाव ना—यदब्ध ध्विरह्मि ।

ভবে কি করে বুবলে আর একজন কেনে রয়েছে ?

অত্যপ্ত সোকা কিনিস। ঠাইনাড়া হলে শীগ্সির ঘুষ আসে না:।

আর সকলের এল কি করে ৷

ওদের অভ্যাস আছে। তা ছাড়া কালই প্রথম বাত কাটিরে সেল না এ বাড়িতে।

প্রশান্ত বললে, এ রক্ষ করে হল্লোড় করে লাভ কি ! এতে আসল কাকের ক্ষতি হয় না ?

কিছুমাত্র না। যে কাৰু আমরা হাতে নিয়েছি—তাতে মান্থ্যে মান্থ্যে যত হুদ্যতা বাড়ে ততই কাৰটা সহজ্ব হরে আসে। নিজয় একটা বাড়ি—নিজয় একথানি ধর—নিজের ফ্রচিমত শ্যা—এর মোহ না কাটলে অগংকে টেনে নিতে পারব কেন নিজের মধ্যে।

ৰূপংকে কোন দিনই এ ভাবে টেনে মেওয়া যাবে না। মানুষের প্রবৃত্তির ওপর ভূল্য পাটাতে পেলে—

ভঙা বললে, জুল্ম এর কোন্বানে দেবলৈ ? একটি ছেলেকে জ্বাবি বিলেতে রাবলে সে যদি কথার আচারে বাবহারে সারেব হরে ওঠে—ভার ভারতীয় রক্ত বারা বিজাতীয় প্রভাবে ভারতীয় সংস্কারমুক্ত হয়, তবে— বয় বাছিয়ে নেবার মন্ত্রটি সহজাত প্রবৃত্তির মত করে ক্রেম গড়ে ভোলা যাবে না ! বাস্থ্যের সহজাত প্রবৃত্তি বল্ল যাকে—সে প্রতিবেশ-স্ক্রিত ক্রুড্লি সংস্কার নাত্র। বুনিরাদি শিক্ষার হারা এ সংস্কার দূর করা **পভ্যস্ত** সহক।

প্রশাস্ত বললে, তেমনি যাদের এই রক্ম ব্নিয়াদি শিকার অভাব তাদের পক্ষে তা অজন করা শক্ত নয় কি ?

কেন শর্ক্ত । অভ্যাস—ভেষ্টা—বলতে পার সাধনা—এগুলি আছে কি করতে । আমাদের ভ্যাবের ছারা—সংহর ছারা গছে ভূলব এই রকম জগং । প্রথমটা সাম্য আনভে অনেক বাধা বাইরে থেকে আর ভেডর থেকে আসবে বইকি—ভবুসব বাধার শেষ আছে এ-ও আমরা জানি।

প্রশাস্থ করা কইলে না। সে ভাবতে সাগস। এবমও
সমর আছে। বরকে সে ভূসতে পারছে না। মীতিকস্থিত
আবহাওয়া- ই। বার বার তার মনে হচ্ছে এ আবহাওয়ায়
নৈতিক পরিত্রতা নেই। কাল রাত্রিতে নিজেকে লে স্পই চিনতে
পেরেছে— সর্বামানবীয় কল্যাণবোবের ধারা উর্ভ হয়ে
নয় নিজেরই কামনাকে পরিভ্র করতে সে এই পরে পা
দিয়েছে। বাইরে পার্বভ্যাগের বছাই করে লাভ কি— মনের
ভ্যামগ্রন্থ বার বার ভাকে প্রভন করছে।

ভঙা বললে, ওঠ শিশু মুব বোও---

রহস্তছণে বললেও লে খীকার করলে, সে শিশু। ছেলেরা টাদের লোভে আকাশে আঙুল তুলে বায়না ধরে—আর বৌবনের বর্মবশভ সে এসেছে এই পরিমণ্ডলে। ভভাকে সরিষে নিলে তার ত্যাপের কোন মুল্যাই থাকবে না।

সত্যিই সে কি অর্থেক পথ এগিয়েছে ? পিছু ছটে যাত্রা আয়ন্ত করা তার পঞ্চে আর সন্তব নয় !

١,

খিরাজ্যোহিনী মলরকে একাছে তেকে বললেন, তুমি আমার থরের ছেলের মত- হাঁ বাবা, সভ্যি করে বল ত— প্রশাস্ত কি সভিয়ই বয়ে পেছে ?

তার অশ্রু-সদসদ কঠমরে মলম বেদনা বোধ করলে।
মিধ্যা করে সাঙ্না দিতে তার মন সরল না। বললে,
কাকিমা, সত্যি কবা বলব রাগ করবেন না। কাকে
আপনারা বয়ে যাওয়া বলেন ? যে ছেলে চাকরি করতে চায়
না—ছেলের কাজে কেলবানায় যায়—যগায় তোগে—

বিরাক্ষোহিনী বললেন, লেখাপছা কানি না বলে কি
ভালমন্ত বুবতে পারি না বাবা । ও সব কাক করে অব্যাতি পেরেছে কেট সে কথা তো জানি না। অবভ—্যে ছেলে সংসার-ধর্ম কি উপাজন করে না ভাকে চ্নিয়ার বার বলে বাকি আর সেই ছেলের কছই যাহের মন পোড়ে বেলি।

মগ্য বললে, ভবে কি ভেবে আপনি বললেন ও কথা ?

বিরাজনোহিনী মনে মনে কি যেন হিসাব করলেন।
ক্বাটা বলা মুক্তিযুক্ত কিনা হয়তো ভাবলেন মুহুর্তকাল—
ক্তি মনের সন্দেহ ও বেদনাকে মুক্ত করে না দিলেও তো

निश्चात्र मारे। चरामार्थ वनातम, बारबद बरनद जाव-আহ্লাদের কথা তে। বুবতে পার বাবা, একট মনের ষড টুক্টুকে বউ পেলে সংসারটা ভালের ভরে ওঠে---

बनम्र रनल, हेक्ट्रेंटक बढे रूलिये एवा बस्बन मण एम मा काणिया ।

ভা না হোক---ছেলে পুখ হলেই ভার সমাজে নিজে না र्णिरे जायात्मत माणि। बक्ट्रे (याय बन्धन, क्रमाय बक्ड्रे মেষের সঙ্গে প্রশারর ভাব হয়েছে। আর মেয়েট নাকি আমাদের স্বভাতি নয়।

भंत शक्ष वाया वृत्रेष्ठ (भरत्य भन्य वन्ना, नार्या ए'न খৰাতি কাকীমা-প্ৰশান্ত যদি এতে সুধী হয়-

সমাজ সে মেয়ের মধ্যাদা দেবে কেন বাবা। এবনও ভো এটাৰ হই নি আময়া।

মলম বললে, আপনি ভাববেন না কাকীমা---হয়ত---এমনটা না-ও ঘটভে পারে। কিছ যদি ঘটেই-- ভো একট (स्टा जानेनांत--- जात कर अवाक साम्टा ना वा ना

না বাবা---আমাকেও পাচ জন আখ্ৰীয়-কুটুখ নিয়ে ধর করতে হয়। বছ মেয়ের বিয়ে হয়েছে--- ছোট মেয়েটকেও পার করতে হবে। আমি সমাকে চিরকাল মাবা উঁচু করে এসে কিসের বল খেনছা সইব সকলের বল ভো ৷ শেখের দিকে ৰৱে ভার দৃচতা কুটে উঠল।

মলয় বুখলে উনি মনে খনে অপখন্ত হয়েছেন। মায়ের মনে আৰু যুক্তির ঠাই নেই--পুরুষরা কালবর্শ্বের প্রোতে পা ৱেৰেও ঘৰন পরিবর্তনকৈ সর্ব্বাস্থ:করণ দিয়ে মানতে পারেন না---বুঞ্জির সারবড়া করেন না খীকার-- আচার-পদভিকে প্রকৃত বর্ষ বলে দামাজিক বিদ্রোহকে বলেন জনাচার—দে অনাচারের অনুষ্ঠাতাদের গালিগালাভ করেন নির্দ্ধয়তাবে ভদ্রভালেশহীম হয়ে—তথন অন্ত:পুরের বিবিতে ও সমাজের বিবানে অভ্যন্ত মেয়েদের কাছ বেকে কি বা প্রভ্যাশা করতে পারা যায়।

বিরাজমোহিনী পুনরায় অভ্নয়ভরা কঠে বলিলেন, সভিয করে বল ভো বাবা--- লে কি সেই মেয়েটকেই বিষ্ণে করবে ?

(नव।

ভবু বৌক মিলে হবে মা, এপিয়ে এলে ভিনি মলয়ের ছুট হাভ চেপে বরলেন, এর উপায় ভোমায় করতে হবে।

উপায় | কি উপায় করণ আমি ? মৃচ্চের মত প্রশ্ন क्टरल बल्ड ।

ষাভে এ বিষে না হয়---

ৰাপ করবেন কাকীষা, ভাগের মধ্যে যদি ভালবাগা হয়ে बाटक ... मा, भाषात्र मान कदरवन ।

বিরাখনোহিনী বানিকটা অভিভূতের মত চেয়ে রইলেন মৃদ্যের পানে। ভারপর মনে হ'ল--ও ভো হেম্পভারই (बर्ल । निक्रे अिंडरिनिमी-यात्रा नर्समारे बरवर्य क्राइ প্ৰভিবেশীর খিল্ল তাদের সভভায় বিশ্বাস রাধা কটিন--- অভ্যস্ত কটিম। প্রতিবেশীরা ভাল--একখা পাঁচীদের পিঠে খর ভূলে ৰীকাৰ কৰা কঠিনই ছো।

মূহ কঠে বললেন, ভা চলবে কেন বাবা, ভূমি ভো অভাতের মেয়ে খবে আন নি--সমাজে কোন নিজেও হয় নি ভোষাদের----

মগর ছয়োরের কাছ থেকে কিরে এল। শীচু গলার वनान, जापनि इष्यु भारित जानान अक्या क्यमहे यमणाम ন। কাকীয়া। কিন্তু এ-ও ক্লেনে রাধ্যেন-প্রশান্তকে যদি আমাদের সমাজ ঠাই না দেয়---আমার খরে ওদের জায়গা ব্দামি হোৰে দেব।

বিরাজমোহিনী এ কথায় সাত্ত্মা লাভ দূরে থাক---রীভিমত রুপ্ত হয়ে উঠলেন। মলয় ভাগ্যিস তার সামনে নেই---মা হলে ক্রোবের বশে ভাকে কটু-কার্টব্য করা তার পক্ষে একটুও অসম্ভব ছিল না। ক্রতপদে তিনি ছ্বামোহনের त्यावात्र परत करलन ।

কিছ ওই বাছক্য-পীড়িত শ্যাশামী মানুষ্টাকৈ তিনি কি বলতে পারেন। তার মনে যে বেগনা— সে কি ওঁর মনেও গুরুজার হয়ে নেই। উনি বার বার জুড় কণ্ঠে খোষণা করে-ছেন, প্রশান্ত তার ছেলে নয়---সে যদি অসবর্ণের মেয়ের পাণি-अपन करत- ७ परत जात थान परव न'-- क्रक कानाक' ७७ ভাকে দেবেন না উনি। পিতামাতার প্রতি কর্তব্য-উদাসীন খেলের প্রতি কিসের বা মমতা ৷

ছ্গীমোহন মাৰা ছুলে বললেন---এখন তো ওয়ুব বাবার শময় হয় নি---

না---এমনি দেৰতে এলাম ঘুমিয়েছ কি না ?

তুৰ্গামোধন একদৃষ্টে ভার পানে চেয়ে বললেন, কাঁদ্ছিলে বুৰি ?

বিরাজ্যোহিনী এভে চোবের কোলে ভর্জনীটা বুলিয়ে মিয়ে হাসলেন। বললেন, ভূমি শীগ্রির করে সেরে ওঠ দেবি---

আমি সেরে উঠলেও ভোমার চোধের কল ওকোবে না---মলর বললে, আমি বিশেষ কিছু কানি না কাকীমা, খোঁক - ওকোবে না—ওকোবে না। ছেলেমাপুষের মত তিনি ছেলে **উ**ঠলেশ।

> विवाकत्थारिनोत वृक्षामा (कॅरण छेर्रम । इनीरमाश्यक মাধার গোপমাল হয় নি ভো। সভ্যিই তার চোধের জল শুকিয়ে গেল। বেদশাকে ঢাকা দিতে ছশ্চিত্বার মত বস্ত ব্যার নেই।

> শিষরের টুলের ওপর বসে বললেন, মাধায় হাত বুলিছে (44 3

> ভাষাও। ভবে কিছুভেই কিছু হবার মর। বলে একটু र्ट्स विदान्ताहिभीत राज्यामि हिस्स ब्रास्त अनत वाचरम्य ।

বিবাজযোহিনী বললেম, আজও কি বুকে তেল হালিন করে দেব ?

না--- হাভবানা রাধ। তার হাভবানি চেপে বরলেন।

আর কোন কথা হ'ল না--- খডিটা টক্ টক্ করে চ্ট

অভরের মর্মব্যধা প্রকাশ করতে লাগল।

25

মলৰ বাছি এসে দেখল—হলমুল ব্যাণার লেগে গেছে। মা পা ছভিষে বলে কাঁদছেন, দোতলার ছুটোছুট দৌছাদে)ছি চলছে। বড় বউষের ফিট্ হয়েছে। খবরটা কাঁদতে কাঁদতে ম'-ই দিলেন।

এর বেশী কিছু ভানতে হলে প্রচিত্রা ছাড়া গতি নেই। ও এতক্ষণ বড় বউরের ভ্রুমায় সেগে রয়েছে। ছেলেরা গোলমাল করছে—হয়ত বা ভিড়ও ভ্রিয়েছে।

উপরে উঠে দেকে - সভ্যিত ব্যাপারট কিছু অরভর।
একটি ঘট কাত হয়ে ধারান্ধার রেলিভে ঠেকেছে—জল গড়াছে
লারা মেবের। পাখা খান হুট এপেছে - জার জলে ভিজে
লপ সপ করছে। রোগীর সারা দেহে আক্ষেপ ভো আছেই—
মাধার চূল আর বিশুঝল পরিবের দেকে জল পড়ছে গড়িয়ে।
৮ল বছরের ভার্নিটি শিয়রের দিকে ইাভিয়ে প্রাণপনে পাখা
নাভছে। হাতে রাতি রোগীর মাধায় লাগছে না—মেবের
লাগছে। ইতি রাতি লেকেছে রোগীয়। একটি মাঝায়ি
গোছের চাবি অভি কটে স্কৃতিলা ইতিতর মাঝামে বসাতে
পেরেছে। এবন সে ইাটু গেড়ে বলে রোগীয় হাতের মুঠো
খুলে দিছে—জার চাবিটা যাতে ইাভের চাপ খেকে আলগা
হয়ে মা পড়ে সেই চেটা করছে।

মলম বললে, হঠাং এ রক্ষ হ'ল কেন ? বলছি। তুমি ভাল করে হাওয়া লাগাও ভো মাবায়। কেন---মেলিং সপ্টের লিশিটা কোবায় গেল ?

বছদির হাট বুব উইক—এ্যাবোনিয়া চলবে না। ব্লটং পুভিয়ে বোঁরা দিভেও পারভায—সাহস হ'ল না।

মেয়েটির ছাত থেকে পাধাধানি নিবে মগর বাতাস করতে লাগল। কিছুক্ণ পরে আঁ-আঁ-—করে বোলী পাল ফিরল। ছাতের মুঠি নরম বোধ ছ'ল।

স্থৃচিত্রা বললে- তুমি ঘরে সিরে বোস—এখনি জ্ঞান হবে বড় দির।

---বাভির এই আবহাওয়া কোন কালেই ভাল লাগে মা
মলয়ের। বছ প্রাভন কটল রোগের ভীরভা না বাকলেও

---নিভ্য নৃভন উপদর্গে যেমন বিরক্তি ক্যার---ভেমনি মনে হয়
বাভিটাকে। করেক বিধা ক্ষির মালিক হয়ে-- মানা প্রকারের
আশান্তি বাসা বেঁবেছে এবানে। বাপ ঠাকুরলাগারা চেয়েছিলেন---উপার্জনের অর্থে ভাবী বংশবরদের বাওয়া-পরার
সুবাবহা করতে। লক্ষী যে চক্লা---বাদের ক্ষমি আব্যে--ভারা

এ প্রবাদবাক্যের মর্ম্ম বোবেম। আত্ম ভ্রমির স্বস্থ বেকে সংসার-যাতা নিৰ্কাহ হয় না- ভবিয় হালামা পোহাতে হয় ভবু । • • চাষার হাল বলন দিয়ে ক্ষমি চাষ দেয়—ভাগ আধাআৰি। কিন্তু সেই আৰাজাৰি ভাগের সিকিও ঘরে ওঠে না ঘৰাসমূহে তদাবক না করলে। ধাজনা মিটাবার দার তাদের---জ্বিতে দার দেবার বরচ পেও ভাদের—আবার কোন্ অমিতে কি ক্ষল দেওৱা কর্ডবা এ নির্দেশ দিতে পারলেও ভাল হয়। खावरन वा कारल बान रवाश (नव करने कारबंद कर्बना रने श्रद ना। कार्तिक अकरात स्वि (पर्वा प्रतकात---कि स्मन ছ'ল। তার পর পৌষে দিন প্রর ধরে গেই ফদল কাচী---जात वृत्त (मश्रद्या--- वर्ष विक्री कदा----वान (त्राजाबाज कदा---त्नन नांत यारमंत नांन नांत रमक्षा क्रसरबः... **जारमंत कांब** (बर्क वृत्व (मन्धा--- अ नव वह कड़ेन व्यानादाद जन्में । वाद कृष्टे मभश्यक अहे जव छमात्रक कदवात क्रम (वट्ड क्र्य-ছিল। বছদা থাকতে তিনি পোৱাতেন এদৰ হালামা। তাঁর অবর্ত্তমানে মেজদা প্রতি বছরে এই সময়ট এক মাল করে চুট নিতেন। কিন্তু একবার বিশেষ লক্ষরি কাল পড়াতে অফিসার **मिक्सिमारक हुई (स्व नि-चार अक्रांत देनि चन्न स्ट** পভেছিলেন। দেই ছু'বারের অভিজ্ঞতা-- সারাজীবনে ভূলভে भारत भा मनस। यनशास भूत्म चर्या--- या मार्टि मार्टि ভর। পোনার বান---মনে ছয়েছিল কবিদের অভ্যুঞ্জি। যে কবির কমি ছিল না-পাকা ধান ভরা মাঠের পোভা দেবে মুক্ত হওয়া তাঁৱই মানাভো। কিন্তু সৱল চাষীদের কাছে ভাগ বুবে নেওয়া ও হিদাব মিল করা-- বান কাটা---ভাছভানো---कण्णा वाम--- श्रूरमञ्ज विनाव--- भारत बन्नावि --- कांकि स्वात কচকচি --- এ সৰ বান্ধৰ ব্যাপাৱকে লন্ধীর আবাহন বলে **जुल केंद्र**रन न: (कड़े। চাধারা সরল ছ:श्री **जा**त निर्द्धांग्छ। বটে— তবে পয়সার দিক দিয়ে ভার; শক্ত। একট পয়সার ভঙ ভাৱা অত্য কথা বানিয়ে বলবে---রাভারাভি মাঠের মাড়াই बाब महिएस (क्लार्य--- मा (पर्वाल ए क्यारे (बरे। अव हासाब जकरक क कथा बाटि का--- जटर मनव चारभव अरण्यार्थ करणार्थ তাদের কথা ভোলা শক্ত। হয়তো অনেক দিনের অভ্যাচার সত্ত্ব--এই সংস্থার ভাগের মনে বঙ্কুল হয়েছে যে যারা হিসেব বুবে নিভে আসে তাদের সলে শঠতা না করলে সর্ববাছ হতে হবেই। হয়তো পাইকদের হাতে লাঞ্না সয়ে---नारम्यत्वत व्यक ७ कार्व बाहानी (शरद च्छावहै। अस्व व्यवसिर ছাভিয়েছে। গাঁভন ভবু দেহকেই পকু করে না-মনকে সভ্য বেকে বিচাভ করে— নীভি বেকে করে ভ্রষ্ট। ওরা ষা হতে পারত তা হতে পারে নি-লাঞ্চনা ও বঞ্চনা রয়েছে এর মৃলে। পেইকর প্রভু কাতীয় যে কোন লোককে ঠকাতে ওৱা সিভহন্ত। এই বঞ্না যে ঘুণার নামান্তর ময় ভাই বা কে বলবে १

वश्यिम (बदक अक्टी कवा कावाकावि रुष्ट्। विवश्यो

वत्कावच माकि बाकरव ना । यदावच्छात्रीत्वत प्रविवाहेक्छ আইন করে কেন্ডে নেওয়াছবে। যে নিজের ছাতে ছাল বলদ দিয়ে যভটুকু ভ্ৰমি চয়তে পারবে—ভারই সত্তে লে হবে ষম্বান। এতে করে প্রত্যেক রায়তের হাতে ভূমি আগলে---খণের দায়ে মহাখনের কাছে তাদের মাণা বিক্তিয়ে বাক্বে मा। সরকার বাছাত্ব আর প্রজা-মাববানে ছিস্যালার (क्षे वंक्टवनाः (क्षंक ना चार्टन--- मनश्च अटल चनका কিছুদেৰতে পায় না। লোকে বলে বটে—লক্ষী বসভি করেন ভারই খরে--যার ছ'বিখে আছে। পত মহা ছভিকে (म ज्ञां श्रमाणिक स्टार्ट्स । याद्यात्र व्यापित व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्यापत व्याप ভবে খেষেছে ভার সিম্পুক ভবে ভ্রমিয়েছে টাকা। সম্পন্ন চাষা দশ টাকা পাষের শাভি কিনে গৃহিণকৈ উপহার দিয়েছে, নিজের জন্ন কিনেছে সাইকেল। যারা জনমজুরি করে খায় इ' এक विषय क्षिएक कांका लाक्त छ। अध वनम व्यक्तिया कांच দেয়—ভারাই মরেছে ছভিকে। এই ব্যবস্থা ছলে—সামায় ব্দমির মালিকরা কিংবা যাদের ক্ষমি নেই ভারা অস্তভ বেয়ে পরে বাঁচবে। মধাধত্বপারেরা যাবে কোণায় ? জমির উপস্বত্ যাদের উপরি আয়ের সামিল—তারা করুক নাখা ৰ্শী। নিজের হাতে লাজন বরতে পারে জমি থাকবে হাতে---ৰা পাৱে যার শ্রম-—ভারই ধরে বিভরিভ হোক কমলার কুপা। এতে হুংৰ করবার কি আছে !

স্থ চিত্রা বরে এবে বলগে, একবার নম্ব-দাছর কাছে যাও ভো। তিনি নাকি বটু ঠাকুরের কি ববর এনেছেন।

দাদার ধ্বর ৷ কে বললে ভোমাদের ?

কেন—পটার মা এই মাত্র বলে গেলেন মাকে। ভা ভিনি যদি ব্যৱটা চুপি চুপি বলেনভো বছদির কিট্ হয় না।

কি বললে পটার মা ?

নাকি—মপুরা না বৃষ্ণাবন কোধার টেনে এক সাধুর সঙ্গে ওঁলের দেখা হয়। সাবু ওঁলের প্রানের নাম জিল্লাসা করে—আরও অনেক কথা ওবার। এক সময়ের নাকি বলেও কেলে-ছিলেন—তে-মাধা রাজার যে বছ বটগাছটা আছে সেটা এবনও আছে—না কেটে কেলা হয়েছে ? যেমন বলা নছ—দাহ চেপে ধরেন—তিনি জানলেন কি করে তে-মাধা রাজার বটগাছ আছে। সাবু একটু হেসে বলেন, ও প্রান্ধে আমি একবার সিরেছি। কবে ? কেন ? কত দিন ছিলেন সেখানে ? এই সব জিল্লাসায় সাবুকে জেরবার করে কেলবার পর নছ দাহ বৃক্তে পারলেন—এক বার নহ—হয়তো অনেক বার উনি ওবানে গেছেন আর অনেক দিন ছিলেনও ওবানে। কোন জংশনে গাড়ী বনল হতেই সাধুর সঙ্গে ছাড়াছাভি হয়—কিছ ভার আল্রমের ঠিকানা ওঁরা নিয়ে এসেছেন।

ও---ওঁদের বিখাস হয়েছে দাদাই সেই সাধু ? খুচিন্তা বললে, বিখাস কি সাবে হয়েছে। মামবার সময় সাধু আমাদের বাভির কে কেম্ম আছে বিজ্ঞাসা করে বেশে মিরেছেম বে।

ভারপর ?

ভারপর—ভোষার ভো অনেক বন্ধুবাছর আছে বছ ভারপায়—বোঁজ নাও।

আর বৌদ না পেলে নিবেকে দেই আশ্রমের টিকানা বুঁজে বার করতে হবে ?

কেন-লে কি ভোষার কর্তব্য নয় ?

কিছ দাদার বিরুদ্ধে বুনের চার্জ্জ উইবড় হয় নি। এয়াবস্কভারকে বুঁলে বার করার মানে বোক ভো?

সুচিত্র! ভঙ্ক খরে বললে, এত দিন পরেও কি--রাজার আইন কটিকে ক্ষমা করে না। কিন্তু মা যে কাঁদছেন।

कैंक्न ।

वक्षाव भीवनहै। नहे रुख यात् (भ क्या कारक कि !

মগর মাধা নেভে বললে, যদি কোন দিন আইন হর
ছুছুডিবান গানীকে হিন্দু-স্ত্রী অনায়াসে বর্জন করতে পারবে
—আমি সে আইন সমর্থন করব।

ভূমি তো আইন সভার কেউকেটা নও—ভোষার সমর্থনের মূল্য কি ! স্থাচন্ত্রা হাসলে।

কিছ এ নিয়ে প্রোপাগাঙা করতেও তো পারি। ক'রো—উপদ্বিত ববরটা নেবে কিনা ভাল করে ?

চট পায়ে দিয়ে মদর বগলে, এইবঞ্চ বাভিতে আসতে চাই না—একটা-না-একটা হালামা তোমরা বাধাবেই।

ছালামা। ভোমরা যে সদেশী কর—সেকি বিনা ছালামার ? মলম উওর না দিয়ে বার হয়ে গেল।

নছ-দাছর পুরো নাম নারায়ণ রায়। বয়স সত্তর দাভিয়েছে ––তৰু দেহের প্রান্থে যৌবনের পড়ত্ত রোদটুকু লেপে বয়েছে। এ বয়সে মাৰার চুল ক'গাছি পেকেছে খণে বলে দেওয়া যায়। চাল, ছোলা ভাৰা চিবোবার মত মৰবুত দাতের অভাব মেই। যৌবনকালে তিনি নাকি ছ:সাহসিক ছিলেন। লোকে বলত উচ্ছ, খল। এখন বছরের তিন-চার মাস ঘূরে বেড়ান তীৰ্বে তীৰ্বে। একই তীৰ্বে বহু বার গেছেন-তীৰ্বঞ্চ্য তাও নিষ্ঠার সঙ্গে সম্পন্ন করে থাকেন। সকালে আর সভ্যার পুরো ছট খন্টা কাটে তাঁব প্ৰছ-বাব ঠাকুবৰবে। যৌবনে বে উদ্যুমে একটও দেবভাকে মাথা সুইয়ে স্বীকার করেন নি---জ্বার অধিকারে এসে ভেমনি উদামে ভাদের ভেত্রিশ কোটকে ভীবনের ভূপমালার গেঁথে নিরেছেন। সংসার ভাকে সেভাগ্য দিয়েছে—আধাত দিয়েছে। নারায়ণ রায় আর এক দিক দিয়ে প্রামের অঞ্জী হয়েছেন বলা যায়। তাঁকে সেখো করে প্রতি বছর বহু নরনারী ভারতের বিভিন্ন ভীর্বে পুণ্য সঞ্চর করে বেড়ার। তাঁর আহার, গাড়ী-ভাড়া, পুৰ-হাজ্ঞা সব কিছুর দায়িত্ব বহন করে-- এই পুণ্যকামীরা।

ভা ছাড়া দেশ বিদেশের পঞ্জ বলার—পুরাণ-ইভিছাস মিলিরে সে গলকে মিঠ করার কৌশল ভিনি ছানেন। ভার বাইরের ঘরে ছোট ছোট ছেলেমেরে ছাড়াও সব রক্ষ বরসের মেরেপুরুষের ভিড় প্রায় সর্বক্ষণ লেগেই থাকে।

মলর ঘরে চুকে দেখলে ক'ট লিগুকে নিয়ে তিনি আসর কমিয়েছেন। ছেলেরা সব গরের চেরে ভূত পেত্নী রাক্ষ্য ব্রহ্মদৈত্য বা বুছের গল ভনতে তালবাসে। নছ-দাছ রামারণ মহাতারত বা পুরাণ থেকে গল বলেন—দৈত্য রাক্ষ্য আর বুছ এ সব প্রচুর থাকে তাঁর গলে।

ভিনি বলছিলেন, জানিস দাছ—ব্ৰহ্মার ব্যার ক্তক্র্প দিচ্চিলেন বুম। হ' মাস বুমের পর এক দিন ভিনি জাগেন— সেই এক দিনই মারা পৃথিবীতে হর্গে জার পাতালে গুলহুল কাও। বেমন তেমন রাক্ষণ ত নয়। যে ব্যার ভিনি ব্যোতেন—সেই খরটা লহায় হ'ল ব্রিশ বোজন জার চওভায় দশ যোজন। হুরোরের কাঁদ হ'ল চার কোশ—সে হুরোর উঁচু হু'ল আট যোজন—এই থেকে বোক কত বড় রাক্ষণ ভিনি।

মধ্যর খবে চুকে বললে, থাক দাছ—বেচারী কুন্তকর্ণকে আর অকাল নিদ্রা ভাঙিয়ে তুলবেন না—

তিনি ছেসে বললেন, বোস রে ভাই—বোস। ছেলে-ভলোর এই ত চেহারা কিছ ভীষণ ভীষণ বাক্ষস দৈত্য এ সবের গল্প না ভনলে ওরা ঘুমোভেই পারবে না।

ছেলেরা গল্পে বাধা পভাতে বিরক্ত হ'ল। বললে, গল্পী শেষ কর লাছ নইলে- -

নশ্ব-দাছ হেসে বললেন, না করলে কি যে হবে তা জানি। গাছের পেয়ারা কুল কি বাগানের আম একটও থাকবে না।

वाः त्व, व्यायवा वृत्व व्याययात्र शास्त्र शास्त्र १

কেন দিবি নে ভাই---কল ভ ভোদেরই ছাছে। কুল পেয়ারা ওসব বুড়ো বয়দের ছাল নয়--ভবে আমটা যদি ভাল হয়---

আহ্না দাছ--- আম আপনার একটও নই হবে না। দেশবেন পাকা আম পেঞ্চে কেমন না দিদিমাকে দিয়ে যাই।

পাকা আম গাওয়াবি এ মন্ত প্রলোভন বটে। মলরের পানে চেরে হাদলেন, কিছ কাঁচা আমন্তলো বদি ভোগের লোভ থেকে বাঁচে আহা হা—রাগ করিগ কেন ভাই—
বুড়ো হয়েছি বলেই কি চিয়কেলে বুড়ো আমি। আমাদেরও
হেলে বরল ছিল।

মলর বললে, গলটা সেরে নিন—কিছু কথা আছে দাছ।
থানিকক্ষণ মলরও সে গল শুনলে। ঘাছ বলেন ভারি
নিষ্ট করে—বলিবে রসিবে—কৌতৃহলকে কাঞ্রভ করে। মন্দ
লাগতে না গল।

ছেলেরা চলে ঘেতেই ও প্রশ্ন করলে, আছা দাছ, এমন আছগুবি গল গুনিয়ে কি লাভ। চার কোল বরে কপাটের পান্ধার যে রাক্ষ্য বাক্ত--তাকে আঁটতে গোটা লগা লহরটাই যে লাগে। আর প্রত্যেক রাক্ষ্যের সঞ্চেদল কোট বিশ কোট—বীর চলতো বৃদ্ধ করতে—বানরদের এক এক ছনের সলে আলি কোট মবনুই কোট সৈভ—এ সব সারা ভারতবর্ষে ধরে মা—লহায় ধরল কি করে!

দাহ বললেন, মুছের বর্ণনা আনেক বাড়ানো—নাতি! তোদের কালটারই কথা বর। এই যে ছুক্তিকে বাংলাদেশে লোক মরলে—কেউ বলছে দল লক্ষ—কেউ বলছে পনেরো—কেউ বা বলেন—ত্রিশ থেকে পঞাল লক্ষ। এ মহারুছের হিসাব-মিকাল এখনো হয় নি—গেল মহারুছে সবস্থভ আলি লক্ষ্য পোক মরেভিল—এটাও ঠিক বলে মেনে মেওয়া যার। মুছের ব্যাপারে কিছু উমিশ-বিশ হয়ই।

কিছু নয়----আকাশ-পাতাল তঞাং। আর এই আকগুৰি গল—]

দার বলদেন, পৃথিবীতে কোন্টা আকগুবি আর কোন্টা সভিয় কে বজবে ভাই। ছুটো বোমা থেরে ছুইব জাপান বাল হ'ল— একথা ভোমরাই কোন দিন বিশাস করতে কি ? অথচ ভাই হ'ল। যথন ভর্ক করার প্রবৃত্তি থাকে মাসুষের তথন বরস্টা থাকে জোদের কোঠায়— আমাদের কোঠার বরস্ গভালে বিশাসই হ'ল আসল বস্তু। দারুর কথার সুর স্বিং গভীর হ'ল।

বেশি দিনের কথা নয়—- সেকেও ইয়ারের প্রীয়ের ছুটতে মলয় তথন দেশেই রয়েছ। দাছর ছোট ছেলে মলয়ের বছুই ছিল সে—- নিশীথ তার নাম—— কাৰু করত একট মার্চেণ্ট আশিদে, এক শনিবারে জর নিয়ে বাছি এল। দায়ণ জয়, বেগুঁস অবস্তা। ডাক্রাররা কেউ বললেন, পয়——কেউ বললেন মালিগ্ নানে নালেরিয়া—-কেউ বা বললেন মেনিম—জাইটস্। মোট কথা তিন জনের য়তভেদ হওয়াতে সে রাত্রিতে ফিতার য়িক্চার ছাছা বিশেষ কিছু পছল না—— ভার পর দিন আসল রোগ ঠিক হ'ল বটে—রোগীকে কেরানো পেল না। সেইট দাছর শেষ ছেলে। ভার পরই দাছ য়য় নিলেন— নিয়ম করে গীতা, রামায়ণ, মহাভারত পছতে লাগলেন। কেউ তর্ক করতে এলে বলেন, ও সব পাট মিটয়ের দিয়েছ ভাই—আর কেন।

चार्थमात्र मत्मत्र यम कत्म त्रीष्ट माङ्।

ধেছের বলও কমছে ধে ভাই। কিছ লে কথা নয়।
আমরা থাড়া হরে দাড়াতে পারি একট অবলখন পেলে। নে
মাখ্রই হোক আর ঈশ্রই হোক। ডুলি তো বলবে ঈশ্রর
নেই ৷ তোমাটের কাক যথেই—নভুন পৃথিবী না হোক—
পৃথিবীতে নতুন বিধান তৈরি করবে এই আখালে আর
উৎসাহে মাহুথের বেশী কিছু খীকার করতে চাও না। কিছ
আমরা আমি পৃথিবী পুরাতন। নতুন মাশুথের বনে বার বার
নতুন হরে লে কিরে আলে—এই মাত্র।

কিছ দাছ আপনাদের ছেলেবেলাকার পুথিবীর সঙ্গে আছকের পৃথিবীর কত তফাং দেখুম তো। ইা—বিজ্ঞান পৃথিবীকে নতুন করে তৈরি করছে। আমাদের কালে যে পৃথিবী প্রকাণ্ড ছিল—আজ পে ছোট হয়ে
পেছে। তবু এ তার বাইরের সাজসজ্জা। আমার এই
মরলা কাপড়টার সঙ্গে তোমার ব্যবহরে বাধ্যরের পোয়াকটার
যেমন তকাং—তোমার দেহের সঙ্গে আমার দেহের গঠন
বিলবে না—তবু ভূমি মাহ্যয়—আর আমি মাহ্যয় ছাড়া আর
কিছু এও তো ঠিক নয়। বুড়ো হলেই মাহ্যয়ের লাঠির দরকার
হয় তর দিয়ে চলবার কয়। শিবরে বিশ্বাস আমার লেই
লাঠি দাছ।

এ সব তর্ক বছ বার হয়ে গৈছে। যুক্তির শক্ত পথ থেকে দাছ বিশাসের নরম ভূমিতে নেমেছেন; এ পরিবর্জনের গভীবে বয়েছে যে হেড়—ডা বিয়োগ-বেদনার বাপাক্ত। বেটি তর্ক করে তাকে উদ্ঘাটন করা চলে না। লোকে সাস্ত্রনা দেওয়া মামুলি প্রথা---তাতে আগ্রয় পাওয়াও প্রবঁট। নিজের মন থেকে সহজাত প্রবোধ-আগ্রাস না দিলে—কোন্ যুক্তিতে সে চিত্ত ধির করতে পারে!

মলম এক মুহুর্জে জনেফ কিছু ভেবে নিয়ে বললে, দাদার ধবর জানতে এলাম দাহ্— সভািট কি তাঁর সলে দেখা হয়ে-ছিল ?

দাছ বললেন, এরই মবে। খবরটা পাড়ায় রটে পেছে।
ভাল হয় নি দাছ। ভোষার মাকে সামলানো কঠিন।

মার চেয়ে বৌদিদির অবস্থা গারাপ—তাঁর ফিট হচ্ছে।
দাত্র বললেন, আমার কথা যদি শোন তো তাঁর বৌজ করো না ভাই।

(कब शाह ?

মাস্য এক বারই জনায় না ভাই - মৃত্যুও তার বচ বার খটে।

যদি বলি জ্লান্তর মানি না।

দাছ হেসে বললেন—দেহ বদলে যে জন্ম তার কথা তো বলি নি ভাই। তোমার মন—বৃদ্ধি—ক্ষিট—প্রস্থৃতি বা সংস্কার জন্ম থেকে মৃত্যু পর্যান্ধ বহু বার বদলাবে। তারই জলে ছেলে বেলার নাতিক—দাছ তোধের আভিক হয়েছে রে। একটু থেমে হেসে বললেন, রুভাবনে যাবার পথে যে সন্নাদীকে দেখে আমার সজেহ হয়—তাকেই আমি বিজ্ঞাপা করে-ছিলাম—স্বাহ্ছা আপনি তো সংস্কারমুক্ত পুক্রম—বিশেষ করে তই প্রামধানিত কথা কিন্তাপা করছেন কেন গু সন্নাপী ছেসে উত্তর দিয়েছিলেন—পূর্বে জনের সংস্কার হতেও পারে।

কিজাপা করলাম —কাতিখাররা শুনেতি পূর্বাক্ষরের কথা ঠিকমত বলতে পারেন।

সন্ন্যাসী বললেন -জাভিত্ৰত না হয়েও কি মানুষের জ্বাজ্য হয় না ? বিজ্ঞে ওঠে কি করে মানুষ ? জাপনার দল বছরের দেহে আর বিশ বছরের বেহু কি এক ? লেই সংস্থানত বোলদ বদল করছে বার বার ! লাংস করে বললাম—ভবু হারানো ক্রকে কিরে পেলে আশ্বীরবঙ্কা কম স্বী হয় না। ভালের মধ্যে বাল ক্রার বে শান্তি—

সহাাসী হেলে বললেন—শান্তির তরভেদ আছে ভানেন কি ? যে মধুর স্বাদ পেয়েছে—চিনিতে স্বভাবতই তার স্পৃহা বাকবে না—পরম সদ পেলে আসদলিকা তেননি কিকে বোধ হয়। আপনি জানী—সংসারের স্বাদ আর পরব্রজ্বের স্পর্ব—একের সদে অভের তুলনা—এ তো চলে না ভানেন।

মধ্য ক্জিমা করলে—ভাহণে তিনিই যে আমার দাদা- এ সক্ষে আপনার সন্দেহ নেই।

কিছ তিনি নবজন্ম লাভ কংবছেন--তার সলে সম্পর্ক টানতে গেলে তোমরা হয়ত ছ:খই পাবে ভাই। স্বপ্তত বড় বৌমাকে এ সব না শোনামত ভাগ।

किन माइ, मन्या छ। परि (शरहा

ভারা ভারা। দাছ একট গভীর নিখাদ কেললেন। যা ভাল বোর কর ভাই—না ভাল ভার আশ্রমের টকানাট দিকি, কিছু মেরেদের নিয়ে দেবানে যেও না। মানুষের ইচ্চা ব'লে যে কিমিগট আছে ভার প্রতিকৃলে কিছু করা মুক্তিসক্ত নয় ভাই।

মলয় বললে, তা কি সম্ভব দাছ। তবে আমাদের কণ্ডব্যে যেটুকু না করলে নয়—আঞা আদি— দাছ।

দাছ তার কাঁথে হাত রেখে সত্মেহ হাসি ছেলে বললেন, ইা রে—ডুই নাকি একবার জেল খেটেছিলি ?

মলর মাধা নীচু করে হাসলে, সে আর বেশী কি দারু।

কবে ?---আমি তো শুনি নি---

লে এমন কিছু নয় শোনাবার মত। ওই যে আগই মালে কুইট ইভিয়া'-রেজল্মান হ'ল না—ভারই ফলে ভারভবর্ষে একটা চেউ বয়ে বিষেধিল ভো—

বিশিষ কি—আগষ্ট মুক্ত্যেনটা গিপাহী বিজ্ঞোহের পর ও বরণের বিক্ষোপ্ত ভারতবর্ষে আর দেখা দেয় নি। ভুনি ভো বহুলোক রঞ্জ দিয়ে ভাগের ভূগ কাকের প্রায়ন্তিও করেছে।

মলশ্ব মাধা উচুকরে দ্বির দৃষ্টিতে চাইলে তার দিকে।
অসহাথ ক্লোব কিংবা বেদনা—করেকটি রেধার কুকনে মুধে
কুটরে তুলল মৌন প্রতিবাদ। তলিটা তার উদ্ধত নয়—উঙীপ্ত।
বৃহ—অবচ প্রতিবাদ বিলে, ভুল কাজের মন্ত্র দাছ—সমনের।
শেতাকীপ্ত তা হলে ভুল করেছিলেন বলতে চান ?

্বুল যারই হোক ভাই—রক্ত দিয়ে তার প্রায়শ্চিত্ত—

পাপের প্রায় কিন্ত করা যায়—ভূলেরও দণ্ড নিভে হয়, বারে বাবে যত রক্ত দিয়েছে ভারতবর্ষ তা প্রায়ক্তিত বা দণ্ড নয়। কর্মসত অধিকার কিরে পাবার ক্ষেত্র বার বার এপিয়ে আলে মানুষ—প্রাণ দেয়, নির্বাতন সয়— তার ক্ষম চুংব কিলের।

দাঙ্বপলেন, ভোষাদের বিশ্বাস---

আপনিট একটু আগে বললেন না---একট ছিনিলে নিৰ্ভৱতা না থাকলে---মামুষের জীবনের অর্থও থাকে না। আমাণের বন্ধদে শতুন পৃথিধী গভার সগ্র নিষ্টে আমর। মেতে
উঠেছি এ কথার চেন্ধে—নতুন পৃথিবীতে আমাণের সন্মান আর
পৌরব যাতে সবাই খীকার করে নেয়— দেই মহৎ চেষ্টার
জীবনপাত হ'ল সবচেয়ে বড় সত্য। পৃথিবীর ইতিহাসে
আমরা একটু ঠাই পেতে চাই—এ কি আমাণের অভায় ইছা ?
না রক্ত দিয়ে ছ' এক বার প্রায়ন্ডিও করণেই এই ভূল শুব্রে
যাবে ?

দাত্ অবাক হয়ে মলয়ের জালত চোৰ তৃটির পালে চেয়ে গ্রইলেন। তরুক বয়স—সংসারের বন্ধন পেছায় পলায় পরেছে। মামের স্নেহ -প্রিয়ার ভালবালা - জীবিকার সংখানে মিকিয় সংগারে লেবাপ্ডা লিবে জগংকে জেনেছে মোহমুক্ত বৃদ্ধির হারা—প্রিণাম-জনভিজ্ঞ উচ্ছোস-প্রবৃদ্ধ মাজ নয়—
একে প্রের নিদেশ দেবার ছলে কি উপদেশ দেবেন

ভিনি ? নির্দ্ধেশ দিতে যাবার গ্রহাও তার নেই। তার্ধে তীবে সংসারমুক্ত বছ সন্নাসীকে দেবেছেন দাছ—আর স্বাধীনভাকামী এদের করেকজনকেও দেবেছেন। সম্পূর্ণ জিন্দ্র ছই জাতের সাধনাতে আদ্যায় রক্ষের মিল তার দৃষ্টিতে পঞ্চ আরু। ছই সাধকই তো মৃত্যুকে তয় করেন না—ছই যোগিই ব্যাননিবর দৃষ্টিতে দেবভূমির মহিমা নিরীক্ষণ করছেন। এক জন দেবভার ভ্যোভিকে আর এক জন তার মহিমাকে আয়ত করতে চায়। এদের মধ্যে বছ ধ্যেট কেউ নেই।

where the result is the long of the real of the real property and the real of the real of

দাত্ প্রসন্ন পরে বলজেন, আমার ভুলটাই মেনে নিলাম আই---

মগর হেপে বগলে, ছি দাছ্ বুড়ো হয়ে আপনি সভিটই ছুর্বেগ হয়ে পড়েছের। মনের আনন্দে পাক বেয়ে সেখর বেকে বেরিয়ে গেল। জ্ঞান

বাস্তব ও কম্পনা

ঐ নৈলেশকুফ লাহা

বৈশ্যে অনেক মালা আকাশ-কুস্তমে,
সে সূল যে কোটে গুলু মনের আকাশে।
শিহ্রি কাহার স্পর্নে পেলে কি পাখা সে ?
সূল-বিহুজেরা পুর নীল নজ চুমে।
কি ক'রে প্রজেদ করি জালরণে গুমে ?
জাবন জালিয়া থাকে দে গুলের পালে,
অপ্রের পরিচয় পাই যে আভাদে,
একাকার হয়ে যায় ধর্ম মন্তাহুমে।

কল্পনা সে পায় রূপ। সেধা যায় দেধা,
অসীমের সীমা রচে দিগন্তের বেধা।
সপ্তব ও অসম্ভব কে ক'বেছে ঠিক,
যনের মায়ার সদে পারি মা আটিতে।
আকাশে কুলুম কোটে, নহে তা অসীক,
সে পুশতরুর মৃত্য মণ্ডোর মাটতে।

শাশ্বত বৰ্ত্তমান

ঐাশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

শ্বাবে দুরে থেতে ছবে।" কোণায়— কে জানে
দুরাপ্তরে লি লি করে পথের নিশানা,
সে পথের শেষ নাই, দে পথ অজানা,
ভাকিছে সে জনাগত সমুবের পানে।
"কিরে চাও, চলিয়াছ কিসের সভানে ?"
"আমারে চিনিতে পার ?" "লোন বলু মানা,
কেন যাবে যে-পথের নাই কো সীমানা ?"
কেবলি পশ্চাতে যোরে গত-কলা টানে।

আভীতে ক্টানো ক্ত আনক্ষ ও ব্যব্দ, আমার স্থৃতির মাবে তার অমরতা, ও যে সতা। সভ্যতর দে আসামী কাল কল্লে যে সাধক করে ক্ষতের যাব। স্থৃতি ও স্থাের তবে হিল্ল কর কাল, স্কলের চেয়ে সতা ভাবনের 'আক'।



ওহাবী আন্দোলন ও মুসলমান সমাজের রাজনীতি

এ যোগেশচন্দ্র বাগল

আমরা ছেলেবেলার কোন কোন মুসলমানকে 'করাজী' বা 'ক্রোজী' বলিতে ভনিয়াছি। তথম করাজী বলিতে বুবিভাম—আচারনিঠ ধর্মপরায়ণ মুসলমান। বলদেশে কিছ এই করাজীরাই সভ্যিকার ওহাবী। বাংলার জল মাটর ভণে ওহাবী আদর্শ যেমন খানিকটা বদলাইরা যায়, উহাদের মামেও তেমনি এইরূপ পরিবর্জন ঘটে।

অহাবী আমাদের দেশী কথা নয়। আরব দেশে ওহাবী আজোলনের উত্তব । অহাদশ শতাকীর প্রথম দিকে সেবানে আবহুল ওহাব নামক এক ব্যক্তির আবিষ্ঠাব হয়। ভিনিই **७ हावी जात्मानत्वद धर्वक् । जुर्वोद ज्योत्य ज्यहाय कारन** নামাদিক দিয়াই আরব জাভির বিশেষ অবনতি ঘটে। মুসল-মানগৰ ইস্লাম বৰ্ষের মূল ভত্ত ভূলিয়া গিয়া বাখিক আচার-অভুঠানের বশীভূত হয়। ওহাব এই সকল আবর্জনা দূর ক্রিয়া মহম্ম-প্রতিষ্টিত আচার-অমুঠান বর্জিত খাঁটি ইস্লাম ৰশ্বের পুনঃপ্রবর্ত্তমে সবিশেষ তংপর হইলেন। আরব সমাজের বিভর লোক ভাহার অমুবর্তী হইল। ওহাব দেবি-(मन छोड़ांद अहे नःश्वाद-कार्रांद क्षवान वावा कुकी-दाक । ভাই ভিনি খদল পুঠ করিয়া আরবের মঞা-মদিনা প্রভৃতি ভীৰ্মানভাল হইতে তুরঝ-প্রভুত্ব উচ্ছিয় করিতে বছপরিকর হইলেন। অপ্তাদশ শতাধীর শেষার্ছে সমগ্র আরবে আবহুল खरादिव श्राधाच **मरशां निष्ठ रहेंग**। हेम्नाव वर्षक मरग्रुष्ठ ছইল। কিছ ওছাবের কর্ত্ত বেশী দিন স্বায়ী হইতে পারিল না। তাঁহার মৃত্যুর কিষংকাল পরে তৃকী-রাক পুনরাস আরবের উপরে আবিপত্য স্থাপন করিলেন। কিছ ওহাবের আমর্শ আরব ভাতির মনে স্বায়ী আসন লাভ করে। বছিরাগত चौर्याबीदाश चानत्क बरे आपार्न छेव्य एव । श्रावी चामार्न অনুপ্রাণিত এইরপ এক ধন তীর্থাত্রী ছিলেন সৈয়দ আহ যেদ।

রার বেরিলীতে ১৭৮৬ ঐটাব্দে মহরম মাসে সৈধদ
আহ্মেদ ক্ষরহণ করেন। তিনি কৈশোরে মুধ্বিদ্যা শিকা
করিরা শিগারীদের ক্ষরীনে ক্ষরারোহী সৈনিকের কার্য্য
করেন। তথন উত্তর-ভারতে ইংরেক রাজ্য প্রতিষ্ঠিত হর
নাই। গুরারেন হেটাংস সর্ব্যপ্রথম শিগারীদের সঙ্গে সংঘর্ষে
লিপ্ত হন এবং উহাদের কঠোর হতে দমন করেন। শিগারীরা
ক্ষতঃপর বিভিন্ন হানে হড়াইরা শচ্চে এবং সূঠ-ভরাক করিতে
থাকে। সৈরদ আহ্মেদণ্ড প্রথম কীবনে এইরশ ক্জিরাসক্র
হইরা শচ্চেন। উন্থিংশ শতাক্ষীর প্রথম হইতেই উত্তর-পশ্চিম
ভারতে শিগশক্তি প্রবল হইরা উঠে এবং পঞ্চাবে শিগারালা
প্রপ্রতিষ্ঠিত হয়। তথন সূঠ-ভরাক, ভাকাতি, রাহাক্ষানি প্রভৃতি

সমাক্ৰিরোধী কার্য্যের ভেমন স্থবোগ আর রহিল না। পঞ্চাবে শিৰরাক্য তবা হিন্দু প্রভূত্ব প্রতিষ্ঠার সৈয়দ আহ্মেদের শীৰনে এক পরিবর্তন দেখা দিল। হিন্দুদের সংস্পর্শে আসিরা ইস্লাম ধৰ্ষে যে সৰ আচাৱ-অভুঠান ও পৌত্তলিক প্ৰভাব প্ৰবেশ করে ভংসমুদম বিধুরিত করিয়া ইহাকে সুসংস্কৃত করিবার উদ্বেশ্র रेनक्षभ चाक् स्मान विस्तव चारव ७९१व क्हेरभम । जिनि हेन्-লামের সার্থক্ উপলব্ধির খত কিছুকাল দিল্লাতে থাকিয়া योगानात्वत निकृष्ठे भूजनमान भाष खराह्म करहन । এই তুসংস্কৃত ও সংশোধিত ইস্লাম ধর্মের পুন:প্রতিঠায় তিনি अक्षिटक रायम मूनम्यान वर्षणाञ्चल প्रिक्टावर भूर्व अमर्यम লাভ করিলেন অভাদকে তেমনি সাধারণ মুসলমানগণও তাঁহার অভ্ৰতী হইতে লাগিল। সৈয়দ আহু মেদ যখন যেবানে গমন ক্রিতেন বিখ্যাত মৌলানাগণ তাঁহার সঙ্গে থাকিয়া ভূতোর ভার তাঁছার সেবা-যত্ত করিতেন। ইহাতেও সাধারণ মুসল-भाग भभाक छाहाद मित्क वित्मय चाक्ट शहेश शक्ति । अध्यद अक अवर मुगलमानमात्महे नमान- चाह (भएत अहे इहे करा সহজেই সকলের চিত্ত কর করিল।

লৈয়দ আহ্ মেদ ১৮২০-২২ সনে সমগ্র উত্তর-ভারত পরিক্রমা করেন। তিনি যে যে ছলে সমন করেন সেই সেই স্থলেই
বিভার লোক ভাঁছার শিশুও গ্রহণ করে। তিনি সর্ব্যন্ত উপযুক্ত
ও বিশাসী লোকদের প্রতিনিধি বা একেট নিযুক্ত করিলেন।
তাহার অভতম কার্যা শিশুদের নিকট হইতে 'বর্ম-কর' সংগ্রহ।
পাটনায় তাহার বর্মপ্রচারের একট প্রধান কেন্দ্র ছাণিত
হইল। এবানে তিনি চারি কন বলিকা নিযুক্ত করিলেন।
এই চারি কনের মধ্যে ইনাম্বেড আলি ও বিলায়েত আলির
নাম বিশেষভাবে উল্লেখবাস্য। ইছারা পূর্ব-ভারতে সৈয়দ
আহ্ মেদের মভবাদ প্রচারে প্রধান সহায়ক হইলেন। পাটনায়
প্রচার-কেন্দ্র ছাপনাত্তর আহ্ মেদ মৌকাযোগে কলিকাতায়
আগমন করেন। প্রিমধ্যেও তাহার বিভার শিশ্ব জোটে।
কলিকাতায় অবস্থানকালে তাহার মভবাদ বাংগার বিভিন্ন
অঞ্চলের মুসল্যান্দের মধ্যেও প্রচারিত হইবার স্থ্যোগ বটিলঃ

ইছার পর সৈশ্বদ আছ্মেদ মঞাতীর্ণে গমন করিলেন। এই লমর তিনি ওছাবীদের সংস্পর্শে আলেন। লৈশ্বদ এত দিন বর্ষ্থ-সংস্কারে মন দিরাছিলেন, এবার ওছাবীদের মতবাদে ও কার্য্য-কলাপের লক্ষে লাক্ষাংভাবে পরিচিত হইয়া ব্রিলেন, বর্ষ্থ-রাজ্য প্রতিষ্ঠিত না হইলে বিশুদ্ধ ইস্লান বর্ম্ম প্রবর্তিত হওরা অসম্ভব। তিনি স্বরং ওছাবী নলভুক্ত হইলেন। ওছাবী মন্ত্রে দীক্ষিত হইয়া বাঁটি ওছাবীরূপে তিনি বোছাইয়ের প্রে

अश्वी मजवाब बाहारवास्त्र क्षेत्रक चार राष ३४२८ गरम উত্তর-পশ্চিম দীমান্তের পার্বভা উপজাভিদের মধ্যে কর্মকেন্দ্র शानम कवित्वम । देशाव नव स्टेट धाराव धाराम नका হইল পাৰ্মতা অঞ্ল হইতে সম্ভল ভূমিতে আসিয়া মুগলমান প্ৰভূত্ব বা রাজত্ব প্ৰতিষ্ঠা। ভিমি ইভিপূৰ্কে সম্প্ৰ উত্তর-ভারতে যে কলীসভা গঠন করিয়াছিলেন এইবারে ভাহারারা ভাহার कांक शामिन कविएक देखक इरेटनमा कांशांव मिट्यंटन यमयन ७ चनवन मरवृशीच इटेट्ड नातिन। উर्द्रिज, निक्टेन्डी निर्व (वा किन्न) ब्राह्माब केल्ब्रन। ১৮২१ जन स्टेंट निर्व রাজ্যে উৎপাত-উপদ্রব আরম্ভ হইল। তাকাভি, নরহত্যা, নারী-ৰৰ্ষণ, ৱাহাৰামি, দুঠভৱাৰ প্ৰভৃতি অবাবে চলিতে বাকে। ওহাবী দল ক্ৰমণ: এত ক্ষতাশালী হইয়া উঠে বে. ১৮০০ সম मानाम পশ্চিম-পঞ্চাবের রাজ্যানী পেশোয়ার নগরী ইছারা অধিকার করিয়া কেলিল। তখন পঞ্চাবের অধিপতি রশব্দিং পিংছ উহাদের উপেকা না করিয়া দমন করিতে অএসর ভ্ইলেন: গৈয়দের শিক্তরণ ও শিংগৈত সন্মুধ সময়ে অবভীর্ণ रुदेश । किन्द त्मध शर्याच त्रियम-भिग्रमनदक त्राम चन पिटल एक । ১৮৩১ সনে এক निव সেনার খলিতে সৈম্বদ আছ্ মেদ देश्जीमा भरवत्व कविटलम ।

ভদববি উছার প্রধান শিশুগণ সাধারণের মধ্যে এই সংবাদ প্রচার করিতে থাকে যে, সৈরদ আছ্ মেদের বৃত্যু হয় নাই। তিনি গুণ্ডভাবে বিচরণ করিতেছেম, এবং শিশুবর্গ উছার উপরেশ মত কার্যু করিয়া সকলকাম হইলে তিনি আবার লশরীরে আবিত্ত হইবেন। নিরীহ মুসলমান জমনাবারণ এ কথার আহা ছাপন করিয়া, পূর্কাপেকাও অবিকত্য বনজন দিয়া বর্ম্মাজ্য প্রতিঠার কর্মীগংখকে সহায়তা করিতে লাগিল। পর্যাতের নিতৃত প্রদেশে সিতানার ওহাবী-দের হুর্গ ছাপিত হইল। শঞ্চাবের বিভিন্ন অঞ্চল হইতে রসদ সংগ্রহীত হইতে আরম্ভ হইল। বিট্লিশ অবিকৃত অঞ্চল হইতেও নামারপ লাহায়া সেধানে পৌছিতে লাগিল। অতঃপর বড় রক্ম কোন অভিযান বা আক্রমণ না চালাইলেও ওহাবারা শিবরাকো নানার্মণ উপরেব করিতে থাকে।

বলে করাজী বা ওছাবী আদর্শ যে তাবে শিক্ত গাছিয়া বলে লে এক বিচিত্র কাহিনী: ভিতুমিঞা বা ভিতুমিঞা বা ভিতুমিঞা না ভিতুমিঞা না ভিতুমিঞা নাম মন্য-বাংলার প্রার লকলেই গুনিরা বাকিবেন। ভিতুমির চারী গৃহছের পূজ ; ঘোটবাট এক জমিদারের কভার পাণিঞ্জ্প করার তাঁছার অবস্থার কিঞ্চিং উরভি হর। কিছু আরামের জীবন ভিনি পছল করিলেন না। কুছি, লাটি ও অসি বেলা, তীর ছোড়া প্রভৃতি শিবিরা র্জিন নদীরার এক জ্মীদারের বরকলাত হইলেন। মারপিটে লংগ্লিট হওরার অপরাবে তাঁছার একবার কারাদও হর। কারামুক্তির পর ভিতুমির দিলী গমন করেন এবং লেবান হইতে বাদশা পরিবারের ললে মন্তা যান। এবানে আদিরা বিধ্যাত বর্ষাপংসারক ও পরবর্ত্তীকালের ওহাবী

শেভা সৈয়ৰ আৰু যেবের সঙ্গে ভাঁহার পরিচয় হইল। সৈয়ৰ चार स्वरम्ब नरन्नर्म चानिया चिव्नमिरवद चौरस चार्क्या পরিবর্ত্তন ঘটে। বাংলাদেশে কিরিয়া ভিনি একান্ত মনে ওহাবী মতবাদ প্রচার করিতে আরম্ভ করিলেন। তবন বঙ্গে ইংরেজ শাসন পুঞ্জিষ্টিত হইয়াছে। ভিভূমির প্রথমেই ইংরেজের বিরুদ্ধে या अशा नबी हीन (वाद करतम मारे। अहा वी मछवार छवनकात व्यक्तिक रेम्नाम शर्यब्र विरवाशी हिन. अ कांत्रन जूननमान অমিদার বা প্রতিপতিশালী বুললমানগণ ইয়া সমর্থন করিতে शांतितम् मा। जिल्लीत वे दाविशत्क श्वर्ण जानियात जन ই্ৰাদের উপরও অত্যাচার চালাইতে ধিবা করেন নাই। উত্তর-পশ্চিম অঞ্চেও ওহাবীদের হতে প্রাচীমপন্থী প্রতিপত্তিশালী बुजनबाबनन कम निर्वाणिण इन बारे । किन्न अहारीया अर्द्धा बून नका नबूद्ध दाविदा हनिछ । छाहादा मस्म श्रीद्ध विधान क्विल, मूजनमाम वर्षवाका अलिकाश विक्वारे लावारमत अवन প্রতিম্বী। বলে তিতুমির দলবল সহ অচিরে হিন্দুদের উপর চড়াও হইলেন। হিন্দ আম দুঠ করিয়া, খর বাড়ী পুড়াইয়া দিয়া, দেবমন্দির কল্বিভ করিয়া ভিত্রিরের দলের লোকেরা মিজেদের বিধার্থী দলমান্তা চরিতার্থ করিতে লাগিল। গোবর-ভালা-নিবাদী ভ্ৰিদাৰ কালীপ্ৰসন্ন মুৰোপাব্যায় ও ভাল হিন্দুগৰ বিশেষ ভাবে এই দলের হত্তে নিপীড়িত হইলেন।

হিন্দু সমাজেও সদ্বর ইহার প্রতিক্রিয়া দেবা দিল। হিন্দু ক্ষিদারগণ ওহাবীদের দমন করিতে অঞ্জর হইলেনঃ ক্রে ওহাবীদের উংপাত এত বাভিয়া যায় যে, হিন্দের ভরকেও ভাছাদের উপর প্রভিলোধ গ্রহণের নানারপ ব্যবস্থা হয়। ওহাৰীরা দাভি রাবিত। বারাসভের অধীন মুড়াগড়গাছির ক্ষিদার ক্রফচন্ত রাম প্রতি ওহাবী প্রকার দাভির উপর আড়াই টাক্র। কর বসান। এই ব্যাপারে ক্ষিদারের গোক্তন এবং ওহাবীদের মধ্যে একট দালা হয় এবং বারাসতের ম্যাজিটেটের উপখিত হয়। ইহার পর विक्र हे हैं नहेश मामनाख ভিত্যির শিশুদের সভাবত করণাত্তর হিন্দুদের আমত্তি পুনরার আক্রমণ করিয়া সূঠতবাব্দ করিতে স্কুক্রমণ। ওহাবী-দের অভ্যাচারে শাসক্বর্গেরও ক্রমে কভকটা চৈভভোদর হুইল। ভিত্নির ও সরকারের মধ্যে শীমই সংঘর্ব বাবিল। এই সম্পর্কে ১৮৭০ সনের ১৫ই সেপ্টেম্বর ভারিখের 'অমৃভ ৰাজাৱ পঞ্জিকা'ৰ এই বিবৰণট পাওৰা ঘাইতেছে,---

"১৮০১ সালে একট বাওয়া দাওয়া উপলক্ষে ভিতৃ ভাহার সমুদ্র শিশ্ব একবিত করিয়া বাঁশ দিয়া কেব্রা প্রথত করে এবং ৫০০ লোক সম্ভিব্যাহারে পূর্ণ প্রায় সূঠ করে। ভাহার। ভাহারা ফুফ্নগর জেলার লাউবাটা প্রায় নুঠ করে। ভাহার। শেষে ক্রমেই অভ্যাচারের বাছাবাছি করিতে আরম্ভ করে। ভাহার পর গর্পমেন্ট ২০ জন সিশাহী, এক জন জমাদার ও এক জন হাবিলদার ভাহাদিগকে দমন করিতে পাঠান। এলেকজাভার নামক এক জন সাহেব দিপাহীদিগের ক্যাপ্টেন

भरवामणट्य (अकारनव क्या, २३ वंच, ण, ७१»।

হইরা বান। ভিনি দারগা এবং তাহাদের ললে বরকশাক প্রভৃতি ১২০ জন যোগা লন এবং এলেকলাভার ভিতৃমীরের হুন্তে পরাজ হন। তাহারা দারগাকে মারিরা ফেলে, লিপাহী বরক্লাজও বিভর মারা পড়ে। নদীবার মাজিট্রেটও তাহাদের নিকট পরাজ হন। ১৮৩২ এ: আ: এলেকলাভার আবার আবিক গৈছ সামজ লগরা ভিতৃকে আক্রমণ করেন। রুছে ভিতৃ এবং তাহার দল ধ্বংস হর এবং তাহার সেমাপভি গোলাম মুখুম গুত হুইয়া গোলীপুরে তাহার কাঁসী হয়।" *

তিত্যিরের পরাশ্বয় ও মৃত্যু ওহাবী বা করাশীদের বিশেষ আত্তরের কারণ হইল। 'অমৃত বাজার পঞ্জিকা' (৩ সেপ্টেম্বর ১৮৬৮) এই প্রসঙ্গে দেশ-প্রচলিত প্রবাদের উল্লেখ করিয়া লেখেন—

"কিবংগ ভিত্যির কামানের গোলা 'থাডলা' বলিরা উত্তর সহচরগণের উৎসাহের বৃদ্ধি করিয়া দেয়—কিবংগ কৃষ্ণির কেরার মব্যে থাকিয়া ভাষার সহচরগণ সেই সময়ে 'থলি থাডলা' বলিয়া গুহুষার কবে, কিবংগ ভিত্যির প্রথম গুলিভে হত হয় ও ভাষার সহচরগণ চতুদ্ধিকে পলায়ন করে, ও পরি-শেষে কিবংগ নাপিতকে ৫ টাকা পর্যন্ত দিয়া করাজীয়া খাঞ্জ মুখন করে, এ সমৃদ্ধ দেশমধ প্রবাদ আছে। তথনকার গোটা ছুই গান,—

"হায় কি বুজুরুগী বেছেছে
উত্তরে এক প্রায় জাছে নাম নারিকেল বেছে।
ফুটল এলে যাট হাজার দেছে।
দেছের নামে হুর।
বলে জল্দি জান গুর ।
ভারা সব গোলার চোটে কাছা বুলে
সিটকে মরে ররেছে।
ফ্কিরানি বলে ফ্কির রাভ পোহালি হাট,
দাভি কাইচি দিয়ে ছাট। ইভ্যাদি"†

এইরপে করাকী বা ওহাবীদের নিশীক্ষন ব্যাহত হইল বচে, কিও তাহা নিতান্তই সাম্যিক। ইহারা পুনরায় হিন্দু দলন কার্য্য আরম্ভ করিরা দিল। ১৮০৭ সন নাগাদ দেখা যাইতেছে, করিদপুর ও ঢাকায় সরিস্ক্রার নেতৃত্বে করাকীগণ জীয়ণ জনবর্ণর তৃষ্টি করিতেছে। এই সম্পর্কে 'কিলা ঢাকা . নিবালী দুংখী তাপিগণড' একবানি পত্র ২২শে এপ্রিল তারিবের 'স্মাচার দর্পণে' প্রকাশিত হয়। ইহার কিয়দংশ এবানে প্রণত হইল,—

ইদানীং বিলা করিদপুরের অভংশাতি নিবচর থানার সরহতে বাহাছর প্রায়ে সরিত্রা নামক এক কবন বাদশাহি লওনেজুক হইলা নামাধিক ১২০০০ কোলা ও মোদলমান দলবত করিলা সূত্য এক সরা কারী করিলা নিক মতাবলবী শোকদিবের মুবে দাভি কাছাবোলা কটদেশে চর্বের হজু ভৈল করিয়া তংচভূতিগছ হিন্দুদিগের বাটা চড়াও হইয়া দেব দেবীর পুৰার প্রতি অবেষ প্রকার আবাত করাইতেছে এবং **এই किन। ঢাকার অভ:পাতি মলকংগঞ্জ থানার সরহতে রাজ-**নগর নিবাসী দেওয়ান মৃত্যুঞ্জর রাজের ছাপিত ভাগণ-নিবলিক ভালিয়া নদীভে বিসর্জন দিয়াছে এবং ঐ ধানার সর্ভুদ্ পোড়াগাছা আমে একজন ভঞ্লোকের বাজতে রাজিযোগে চড়াও হটরা সর্বাধ হরণ করিছা তালার। গুছে অলি দিয়া অবশিষ্ট যে ছিল তথা ব্যাশ করিলে একজন ক্ষরন বৃত ভ্টয়া ঢাকার দওরায় অপিত হইয়াছিল আর শ্রুত হওয়া গেল তাহার 🕶 রায় অপিত হটয়াছে। আর এত হওয়া রেজ সরিভুদ্ধার দলভুক্ত ছাই কবনের। এ ফরিগপুরের অভ্যংপাতি পাটকান্দা আমের ভারিণীচরণ মলুমদারের প্রতি মানা প্রকার দৌহাত্ম অৰ্থাৎ ভাহাত্ৰ বাদীতে দেবদেবী পূজার আখাড জ্বাইয়া গোহত্যা ইভ্যাদি কুকর্ম উপস্থিত করিলে মুগুম্বার বাৰু ক্ৰন্দিগের সহিত সমূধ যুদ্ধ অসূচিত বোৰ করিয়া ঐ সক্ষ भोबाका कविष्णुरवद माकिट्यें जारहरवद एक्ट्र क्रिटिंग के नार्ट्य विहार्त्रपूर्वक कक्षक क्रम क्र्यमध्य काराजाता वह कतिशारम्य अवर अविश्वस्य विभक्त अञ्चनदान कतिराज्यम् । ए प्रम्मानक महानश्च हुई क्वरमद्र' मक:मर्ग क प्रकल खलाहांद्र ও দৌরাছ্যে काल मः स्टेश नदर निहाद शृष्ट् जाक्रम क्रिए **ध्यंत्र हरेग । ॐ रुखा (शन क**विष्युद्ध माक्टिक्के मार्ट्द्द হছুরে যে সকল আখলা ও খোন্ডারকারেরা নিযুক্ত আছে তাহারা সকলেই সহিত্যা ক্রনের মতাবদ্ধি ভাহারদিপের ত্ৰীতি এই যদি কাহার নামে মিখা! অভিযোগ করিতে হয় তবে কেহ করিয়াদী কেহ বা সাক্ষী হইয়া যোকধনা উপস্থিত করে স্তরাং ১২০০০ হাজার লোক দলবদ্ধ ইহাতে করিয়াদীর সান্দীর জট কি আছে। --- আমি বোধ করি সরিতুলা কবন যে श्रकात मनक एरेवा पेखतः श्रवण एरेएडए कल मिर्मे मर्ग हिन्दु वर्ष (भाग भारेका व्यकारन क्षत्रक स्टेर्क । मतिकृत्राव খোট পাটের শত অংশের এক অংশ তীভূমির করিয়া ছিল না। ⋯ইভি সন ১২৪৩ সাল ভারিখ ২৪ চৈতা।"●

সরিভূলার ভার করিদপুরে চূত্মিরা নামে আর এক জন ওহাবী-নেতা আবিভূতি হন। তাঁহার লগতে এখনও ঢাকা, করিদপুর, বরিশাল অঞ্চল নামারপ জনক্রতি আছে। চূত্মিরার আমলে বলের ওহাবী আন্দোলন কতকটা অর্থনৈতিক রূপ বারব করে। ৩ সেপ্টেম্বর ১৮৬৮ দিবলীর 'অয়ত বাজার প্রিকা' চুছ্যিয়া সম্পর্কে লেবেন,—

"করিদপুরের ছুত্মিয়া করাজীদিগের শুরু ছিলেন। কালে তাঁছার প্রভাব এডদূর বৃদ্ধি হব যে, তিনি মনে করিলে ৫০ গহুত্র লোক সংগ্রহ করিতে পারিতেন। ইহারা সমুদ্ধ যুদ্ধন্ত্র করিয়া শ্বমিদার ও কুঠিয়ালগণকে একেবারে শুগ্রান্ত করিয়া

প্রবন্ধ-লেথকের "ভারতবর্বের বাধীনতাও অক্তাক্ত অসল," পৃ, ১৮১-২ জটবা।

^{+ 3, 9. 399-11}

^{*&}quot;সংবাদ-পত্তে সেকালের কথা", ২**র বঙ**, পু. ৩৭৯-৮**০** ৷

কেলে। প্ৰৰ্থমেণ্টের বিক্লছে ভিনি কখন কিছু করেন নাই বটে, কিছ গ্ৰণমেণ্ট তাহাকে ভয় করিভেন।

শপরে ১৮৪৬ সালে শ্বিদারে ও কৃঠিরালে জুটিরা উাহার বারী পূঠ করেন, ও ১৮৪৭ সালে উাহাকে সেসন আদালভে দও দেন। ১৮৫৭ সালে যখন সিপাহী মুখ বড় শাঁকিরা উঠে, তখন হুছ্মিরাকে গবর্ণমেন্ট আশ্বাক্তমে করেন করিরা কিছুকালের নিষিত্ত আলিপুরের শ্বেলে বাখেন।"*

বলদেশে ওছাবী আন্দোলন ক্রমে শুড়ম রূপ বারণ করিল এবং বারাসত, সাভন্দীরা, যশোহর, ঢাকা, করিলপুর, বরিলাল, নদীয়া, পাবনা, রাজসাহী, রংপুর, এিপুরা, নোযা-বালি, ময়মনসিংহ, এছিট প্রভৃতি বলের বিভিন্ন ক্রেলার হুডাইয়া পভিল। কিন্তু নিভানা কেলে মুল উদ্দেশ্ত অস্থায়ীই কার্য্য হইভে লালিল। বাংলার বিভিন্ন অঞ্চল হইভেও বন-ক্ষম ও অঞ্চান্ত রসদপত্র বিভার প্রেরিভ হইভে বাকে। ১৮৪৮ সম নাগাদ পঞ্জাবে নিবশক্তির পতন হয় এবং '৫০ সনে সম্প্র পঞ্জাবই ইংরেজের অবকারে আলে। ওছাবীদের নিকট হিন্দু, শিব বা প্রাইন ইংরেজ সকলেই বিবর্মী, স্লেছ; বাঁটি ইসলাম বর্ম প্রভিটার সকলেই প্রভিত্রাটী। এক জম ইংরেজ

≠"ভা:ভববের সাধীনতাও অক্সাপ্ত প্রস্ক", পু. ১৭৮ জটুবা।

ফরাজী-নেডা ছ্ছুমিয়া সম্পর্কে ২০ এপ্রিল ১৮৭০ তারিখের "হেম্বু-হিতৈহিনী" সাধ্যাহিকেও অনেক ভব্য বাহির হয়। ইহার কিয়দংশ এই—–

"আজি প্রায় ২০ ২৫ বংসর হইল স্থ্যিয়া নামে একজন মোদলমান পূর্বে বাংলায় লাছ্ভূভ হইছা করিদপুর ও ঢাকার মুসলমান সমাজকে ব্যতিব্যস্ত করিয়াছিলেন ইতর শ্রেণীর মোসপ্রান মাত্রই কাছা পারত্যাগ করিয়া তাঁহার অধীনতা বা দাপত্ব করিয়াভিল। তুড়াময়ার মত মোদলমান বর্ত্মানের এবং প্রাচীন ভ বান্ধিক মোসলমানদিপের মতের সহিত সম্পূর্ণ একা হইত না ভজ্জ অনেক সম্রাপ্ত যোসসমান তাঁহার মত অস্মোদন করিতেন না। ওনা আছে, চুছ্মিয়ার সোরাহত পরি'মত একবানি বিনামার নাম 'পামাদার' ছিল, কোন শিখাদির ক্রট পশ্চিত অধবা কাছাকে শ্বহতে আনমুদ করিতে ছইলে উক্ত সামালার হারা পাসন এবং সাহসের সহিত অর্থদঙ করা হইত। ইহার অধীনে কয়েজন বলিকা নিয়ক্ত হয়, ইহার। জীহার মভের উপদেশক। ইহাদের সর্বাহ্ব ক্ষমতা ছিল। 🗳 সময়ে প্ৰায় ছলের বদমায়েদ যোললয়ান লোকই কাছা পরিভাগ পূৰ্ব্বক তাঁহার আমুগভ্য স্বীকার করিয়া খার্থ সাধনের বিলক্ষণ পুৰোগ পায়। তৰ্ম কভ স্ত্ৰীয় সভীত মাই, কভ স্ত্ৰী-পুৰুষের পভি-পদ্মী বিছেদ ঘটনাছে। কভ নিত্ৰীৰ লোকের প্রাণদঙ্ मण्याचि ज्ञान अन्याद बदर ज्ञान क्षेत्रादा यक्षण व्हेत्राट. ভাহা বৰ্ণনা করিভে গেলে হুদয় বিদীৰ্ণ এবং ছঃখে আপ্লুভ হইতে হয়। লোক প্রবৃতির অন্থরোবে হুছুমিয়াও সে সকল কাৰ্যাকে ধৰ্মসন্থ বলিয়া খীকার করাতে শিয়েরা সৰ্ব্যৱই তাঁছাকে ইবরপ্রেরিত মনে করিয়া তাঁহার বশোগান ও মত

লেখক সভাই বলিয়াছেন, গুৰাবী বিরোধিতা উন্ধাৰিকার ছল্লে শিপদের নিকট ছইতে ইংরেজেরা লাভ করে। ইংরেজ ঐতিহাসিকের এই কথা কয়ট যে কত দূর সভ্য তাহা ওহাবী দের পরবর্তী কার্যক্রম আলোচনা করিলে স্পষ্ট বুবা বার।

সৈয়দ আহ্ নেদের মৃত্যুর পর তাঁহার প্রধান শিশুবর্গ ওহাবী
মতবাদ স্বর্গুরপে প্রচারোদেক্তে নানা উপায় অবলম্ব করিলেন।
স্বৃত্র উত্তর-পশ্চিম সীয়ান্ত হইতে পূর্ব্ব-প্রান্থিক বাংলা—এই
হই হাজার মাইলের মধ্যে ওহাবীদের বিভিন্ন আছ্তা বা
শাখা কর্মকেন্দ্র ভাগিত হইল। এই সকল কর্মকেন্দ্রে ভাবী
প্রচারকদের শিক্ষাদানের ব্যবহা করা হয়। সাধারণ অভ্য
মুসলমানদের স্বয়তে আনরনের জল্ল এই প্রচারকপণ অনেকে
ভাহাদের মধ্যে গিয়া বস্বাস করিত, এমন্দি কোন কোন
ক্রেন্তে বিবাহাদি প্রান্থ করিয়া তাহাদের সলে একাল্ল হইরা
ঘাইত। কার্সী, উর্জু প্রভৃতি ভাষায় ওহাবী মতবাদ বিশ্লেষণ
ও ওহাবী আন্দোলনের উদ্ভেক্ত বিস্তুত করিয়া প্রচার-পত্রী রচিত
হইত এবং সাধারণের মধ্যে তাহা বিলি করিবারও ব্যবহা
ছিল। বহু পুক্তক ও পুক্তিক। এই দন্দ্যকে লিখিত হয়।

প্রচার করিত। সেই সময়ে এদেশে নীলকরদিগেরও জন্ধানক
আত্যাচার ছিল, কিছ ত্র্যিয়ার অত্যাচারে নীলকরের প্রভা
এককালীন মলিন ছইয়া পড়ে; ত্র্যেয়া সম্পত্তিশীন ছইয়াও
একাবে আবিপত্য বিভার করিছা কমিদারী ছাপন ও অনেক
বন সক্ষ করিয়াছিলেন। তবন লোক এরপ অত্যাচার প্রতিত
ছইয়াছিল যে অনেকে দেশ ত্যাপ করিয়াছিলেন। অত্যাচারের
প্রতিবিধান ক্ষপ্ত কোন মোকক্ষা করিলে তাহা নিজল এবং
অত্যাচারের বৃদ্ধি ছইত। কিছ কেহই পর্যোধানে প্রতিপক্ষ
ছইত না বরং লরীর পাতিয়া উছার পাত্যাচার সহাক্ষিত।

[®] "সামালার দ্বারা শাসিত হইয়া অথবা ইচ্ছাপ্রবিক কাছা ছাভিয়া যাহার৷ তুত্মিরার শিষ্যত্ব স্বীকার করিয়াহিল, ভাহার৷ 'কেৱাৰী'। পুৰ্বে যে ৰলিকার কথা বলা ছইয়াছে, ভাহাদের अक अक स्तित स्वीत्म यह क्यांकी शांकिल, क्यांकीएत উপর ভাহাদের সম্পূর্ণ প্রভুত্ব ছিল, তক্ষণ্ণ খলিকারা হতুমিয়ার लागाप अक अक बन वह माध्य मत्या नेना हहेश हैर्रि ! .. ছুছুমিয়া শিয়দিপের প্রবৃত্তির প্রতিকৃলে চলিতেম না; লোক প্রবৃত্তি যে দিকে যাইত স্বার মতকেও সেই দিকে চালাইতেন। ভিনি এইভাবে অনেক কাল অভ্যাচার চালাইয়া শেষ ধর্মের প্রভাবেই হটক অধবা গোকের অভিশাপেই হটক ভয়ানকরণে আক্রাপ্ত হন। অবশেষ পদ পচিয়া মৃত্যমূবে পভিত হইতে ছয়। পরক্ষণে তাঁহার অনেক সম্পত্তি নীলাম হইয়া যায়। কলক্ৰা হতুমিয়া মনিয়া বিরাছেন, কিছ তাঁহার অভ্যাচার क्रमिल जानक পরিবারের জ্বরে চিরছ: । সঞ্চিত রহিয়াছে, অনেক পরিবার উৎসন্ন পিয়াছে। অদ্যাপিও সেই ছভ্মিয়ার ধলিকা ও শিশু কেরাখীরা চর অঞ্চল থাকিরা অবসরজ্ঞায়ে লোকের প্রতি অত্যাচার ও চুরি ডাকাইতি করিয়া থাকে। এই অভ্যাচার নিবন্ধন অধ্যাপিও এদেশ ঠাঙা হর নাই ৷…"

विवर्णोक्षित विक्रास नगर-छेरछक्क व्यावक नाम रहना करा एत। ওহাৰী ৰলভূক্ত ৰুডন ৰুডন লোকদেৱ সন্মুৰে এবং ওহাৰী সেমাছলের কুচুকাওরাজের সময় এই সকল পান গীত হইত। ইহার মধ্যে যে গান্ট একট বিলেয় সময়-সলীত রূপে ভনপ্রিয় হইয়া উটিবাছিল ভাষার ভাংপর্বা এইরপ্----

"First I glorify God, who is beyond all praise;

I laud his prophet, and write a song on Holy War: Holy war is a war carried on for religion, without any lust of Power. In the Sacred Scriptures its glories are related: I mention a few.

War against the infidel is incumbent on all Musalmans;

make prevision for it before all things.

He who from his heart gives one farthing to the cause, shall rearafter receive seven hundredfold;

And he who both gives and joins in the fight, shall receive seven thousand fold from God.

He who shall equip a warrior in the cause of God shall obtain a martyr's reward.

His children dread not the trouble of the grave; nor

the last trump; nor the day of judgment. Cease to be cowards; join the divine leader, and smite

the infidel.

I give thanks to God that a great leader has been born in the thirteenth century of Hijra.

Oh friend, since you must sometime die, is it not better to offer up your life in the service of the Lord?

Thousands go to war and come back unhurt I thousands remain at home and die.

You are filled with worldly care, and have forgotten your Maker in thinking of your wives and children. How long will you be able to remain with your wives and children? How long to escape death?

If you give up this world for the sake of God, you enjoy the pleasures of Heaven for ever.

Fill the ultermost ends of India with Islam, so that no sounds may be heard but "Allah! Allah!"*

ওহাবীরা সাধারণ মুসলমানদিগকে এই বলিরা উভেজিত करत (घ, विश्वीत बाका नात-छन्-ए। इव । अवास्य वनतान कवा वर्षविक्रम कार्या। एव अरे बाकारक अकड़े नुवानुवि बुगनबाग बाद्धे পরিণত কর, নতুবা এদেশ ছইতে বাবীন ৰুসলমান রাজ্যে (দার্-উল্-ইস্লাম) চলিয়া যাও। ইতাতেও व्यविवासक्यी सूननवास नवाक चारचर्टर अकडे दुन्ननवास ় বৰ্ষৰাভ্য প্ৰতিঠাকৰে মাভিত্ৰা উঠে। পূৰ্ব্বেই মূল কেন্দ্ৰ সীভাষার উল্লেখ করা হইরাছে। পঞ্চাব অধিকারের পর **ভারত-গবর্ণমেণ্ট ১৮৫০-৫৮ লনের মধ্যে ওহাবীদের বিরুদ্ধে** (यानके बदर '७० जायत माना चनाम कृषिके चित्राम हानाम। সিপাহী বুছ-কালেও ওহাবীরা বেশ সক্রিয় ছিল। ভবে ১৮৫৮ मध्य विष्णातिर-- ७४४ मिनाही युद्ध अद्भवदित (चंद एव नारे- अश्वीतंत निकांकरणत देश्यक व्यव-कारबंद मर्था चार्विभेष्ठा विचारब श्रवांनी स्टेबा छैर्छ । अटे সময় পুদুর সিভানা কেন্দ্রে "বেহারের ও বালালার মধ্যে

বারাসভ, সাভভীরা, যশোহর, ভরিবপুর, বরিশাল প্রভৃতি ছানের করাকীরা ধন ও জন দিয়া বিশুর সাহায্য করে।"+

हेरदब्बता क्षवाम अशाबीत्मत मुक्ति शतिमाश कृतिए शादि मारे। किन्न देश्रातकारिकात यसम मणा मणावे जाकान स्टेन তথ্য তাহার। সর সিঙ্গি কটনের নেডুছে উপযুক্ত সংখ্যক সেনা শ্ৰেরণ করিয়া সন্মুধ মুদ্ধে ওহাবীদের পরাজিত করে। সীভানার ওহাবী হুৰ্যও ধ্বংস করিয়া কেলা হইল। কিছ তবু ওহাবীরা দ্মিলা গেল না। দীতানা হইতে কিল্লুৱে মহবান নামক পাৰ্ব্বভা প্ৰদেশে মল্কায় নিয়া ভাষারা আশ্রয় লইল।

ইহার পর কিরংকাল পর্যন্ত ওহাবীরা প্রকাভে ভেমন কিছ উৎপাতাদি করে নাই। তবে লোকজন ও রসদপত্র সংগ্রহ পূর্ববংই চলিতে থাকে। পার্বত্য-উপস্থাতিখের মধ্যে क्थन क्थन 'बर्च-क्व' जाशोव जरेवा ७ (काम (कान जाशिक প্রয়োজন লম্পর্কে মতবৈধ উপস্থিত হইত বটে, কিছ 'ধর্ম-রাজা' প্রতিষ্ঠা করিতে তাহারা সকলেই সমাম তংপর ছিল अवर यथानमास अरे जनन देलवाजीत्यवः अश्वीत्वत अश्व হইত। কয়েক বংগর চুপ্চাপ থাকিয়া ওছাবীরা ১৮৬৩ माम नुमताय विकित्मत विकृत्य छिचिछ एव। ১৮২৭-७० माम ভাষারা রণ্ডিং সিংখের রাজ্যে যেরুপ উপদ্রব স্থরু করিয়া विश्वाद्यिक ध्वादाक श्रीय जानावरि श्रीयादिक एरेन। ১৮৬० ল্মের লেপ্টেম্বর হইতে ওছাবী ও ব্রিটশ গেলার মধ্যে প্রকৃত প্রভাবে সংঘর্ষ ভারম্ভ ছইল। এবারকার সেমাব্যক हिल्म मद विक्रित हिचाबर्लमः चार्यमा निविभक्ति ষে শেষ সংগ্ৰাম হইল ভাহাতে ব্ৰিট্ৰ বাহিণী জয়লাভ করে वर्षे, किन जाशास्त्र जाशास्त्र विश्वत देशक श्वास्त्र स्थ। শেষ পৰ্যান্ত উপকাতীয় দলসবৃদ্ধের মধ্যে মতবিরোধ উপস্থিত ए अहार ७ अ विकेट नद सामक है। सुविदा ए देश दिन । सुके भी छ এ ক্ষেত্রে ভাহাদের বিশেষ দহার হয়।

ৰিভীয় বার সন্মুধ সমরে পরাবিত হুইয়াও কিন্তু ওহাবীরা আদে নিরভ হর নাই। এই দলট কতকটা গণতান্তর ভিতিতে প্রভিত্তিত হিল। এক ক্ষম নেতার মৃত্যুতে বা প্রধান কর্মকেন্দ্র क्षरम इटेलिटे जाहारमद कार्या वह इटेज मा । जानम छैरक সাধনের নিষিত্ব বিভিন্ন শাধাকেন্দ্র ছইতে প্রচারকার্যা এবং ৰম ও ক্ষৰৰ সংগ্ৰহ আগের মতই চলিতেছিল। ১৮৬৮ সংম পুনৱাৰ ত্ৰিষ্টপ ও ওহাৰীদেৱ মধ্যে সংঘৰ্ব বাবে। পাৰ্ব্বভ্য উপ-ভাতীৰেৱা পূৰ্ব্ব পূৰ্ব্ব বাবেৱ ভাষ এবাবেও ওহাবীৰের বিশেষ সাহায্য করিল। এবার ধাস জ্লীলাট বিটাশ সরকারের পক্ষে অভিযান পরিচালনা করেন। এবারকার মুখেও বিশ্বর विक्रेम (नमा एकाएक एव. किस (नम नर्गाप कारायबरे पर হইল। প্রাণপণ করিয়া লড়িয়াও উন্নত বৈজ্ঞানিক রণাম ও

^{*} The Indian Musalmans. By W. W. Hunter. 1871. Pp. 65-6.

 ^{&#}x27;অযুত বাজার পত্রিকা', ও সেপ্টেম্বর ১৮৬৮। "ভারতের মাধীনতা ७ व्यक्तक क्षत्रज्ञ", गुः ३१४ व्यष्टेग ।

লনৰকৌশলের নিকটে হুৰ্ছৰ ওছাবী লেমা ছাত্ৰ মানিতে বাৰা হয়।

সরকার ওহাবীদের কার্য্যকলাপের প্রতি প্রথমে তেমন
ক্ষমন্থ আরোপ করেন নাই, কিছ হিতীর বারের সংবর্ষের
পর কইতেই উছারা এ সম্বন্ধে নির্মিত অমুসরানে প্রয়ন্ত হন।
এইরূপ অমুসরানের কলে ওহাবীদের শক্তিসামর্থ্য, প্রচার-কৌশল, পৃস্তক-পৃত্তিকা, রগদ সংগ্রহ এবং মুদলমান ক্ষমলাবারশের সলে তাহাদের বোগাঘোগ প্রভৃতির বিষয় প্রকাশ
কইরা পড়ে। এ সকলের কভকটা আভাগ আমরা পূর্কেই
পাইরাছি। ১৮৬৪ সনে পঞ্চাবের আহালা শহরে বিষ্টিশ
বিচারাদালতে রাজপ্রোহাত্মক কার্য্যের অপরাবে ওহাবীদের
বিপ্রন্ধে লরকার পক্ষে নোক্ষমা রুপু হইল। এই নোক্ষমার
প্রধার ক্ষমের বিচার হয় এবং প্রত্যেকেই ক্ষারাদ্ধে দণ্ডিত
হয়। এই আসামীদের মধ্যে একক্ষম হিল মদারা ক্ষোর্থালি প্রাম-নিবাদী মুললমাম। বহু সরকারী মুললমাম
কর্মার্থালি প্রাম-নিবাদী মুললমাম। বহু সরকারী মুললমাম
কর্মার্থালি প্রাম-নিবাদী মুললমাম। বহু সরকারী মুললমাম
কর্মার্থাতি প্রাম্বানী দলের সলে মুক্ত ছিল তাহাও এই সমর
বিশেষ করিরা ভাষা পেল।

ইংর পর বংসর ১৮৬৫ সনে পার্টনার ওহাবীদের হিতীর মোকহম। হর। ১৮৬৯-৭০ সনে মালদং, রাজমহল, রাজমহল, রাজমানী প্রভৃতি স্থানেও বিচার আরম্ভ হইল। এবারে ছাব্দিন জন ওহাবীর বিচার হয়। ইহাদের মধ্যে পাঁচ জনের বাবজীবন দ্বীপাছর ও সম্পত্তি বাজেরাপ্ত হইল। এই বলের মধ্যে কল্টোলার বিব্যাত ব্যবসায়ী আমীর বাঁ ছিলেন প্রবান। আমীর বাঁ কলিকাতা হাইকোর্ট পর্যাত্ত লভিরাছিলেন। হাইকোর্টের আপীলে তাঁহার পদ্দ সমর্থন করেন বোরাই হাইকোর্টের বিব্যাত এডভোকেট এনেট্ট সাহেব। মনীয়ী বিপিনচক্র পাল মহাশর এই মর্জে লিবিরাছেন বে, এই মানলার আমীর বাঁর পক্ষে এনেট্ট সাহেব যে সওরাল করেন তাহা পাঠ করিয়া তর্লণ বয়সেই তাহারা বাবীনতার প্রায়ী হইষা উঠেন।

আমীর বাঁর মোক্ষমার বিচার করেন কলিকাভা হাইকোটের বিচারণতি নর্বান। ১৮৭১ সনে এই মান্সার চূড়ান্ড বিচার হইরা বার। বিচারে আমীর বাঁর মারজ্ঞবিন হীপাছর ও সম্পত্তি বাজেরাপ্ত হয়। ইহার অলকাল পরেই, ১৮৭১ সনের ২০শে অক্টোবর ভারিবে উক্ত বিচারণতি নর্বান সাহেব এক মুসলমান আভভারীর নির্দ্ধর আবাতে প্রাণ হারাইলেন। ইহার নাম তিন মান পরে ১৮৭২ সনের ৮ই কেব্রুরারী ভংকালীন বছলাই লর্ড মেও আন্মানান পরিপ্রমণ জালে পোর্ট রেবারে সন্ধ্যার অভকারে শের আলি নামক এক মুসলমান করেবার হতে প্রাণ বিসর্জন হেন। উভর আভভারীই ওহাবী ক্লভুক্ত বলিরা সন্দেহ হুটীভুক্ত হইল। ওহাবীদের লমনের ক্লভুক্ত বলিরা সন্দেহ হুটীভুক্ত হইল। ওহাবীদের লমনের ক্লভুক্তর তিন বার প্রভাক্ত করিবা বিচারাভর ভাহাদের কারাধ্যেও দ্বিত করা হের, রাজ-রোহাছক প্রচারকার্য্য বন্ধ করিবার ক্লভ কোবার অভ কোবারী আইনও সংশোধন করিবা

লঙাৰ হয়, কিছ এত কৰিবাও ওহাবীৰের দমন করা পেল
না। মাৰবান হইতে উহাদেরই ছুই জনের হতে ছুই জন
ইংবেজ বাজপুরুষের প্রাণ দিতে হইল। ভারতবর্ধে মুদলনান
রাজ্য প্রতিষ্ঠা কল্পে ওহাবীরা কিয়ণ ত্যাগদীকারপূর্বক মন্ত্রভিতি
সহকারে কার্য্যে রতী হয়, সে সম্বত্ত আহুত বাজার প্রিকা
১৮৭২ সন্মের ২৫ এপ্রিল তারিবে একটি স্থাচিভিত প্রভাব
প্রেম্ম। ইহা ছুইতে কিয়নংশ এখানে উদ্ধৃত করা হুইল,—

"পুৰিবীয় মধ্যে ৱাজনৈতিক ষ্ড্যন্ত ষ্বাদ হেৰাদে হইয়াছে, अक पद्म ना अक पद्म श्रकान एरेश श्रीशास, किस श्रहारी ষ্ট্যন্ত্ৰের অভিত্যের প্রমাণ আমরা পদে পদে পাইতেছি অবচ উহা ব্রিবার যো নাই। এই যভয়স্তের একট বিষয় দেবিয়া चाबदा चराक स्ट। वृह-श्रान्तिक भरत मावनी बर्ण्याचन्नु चकाणदा क्षांन मिरण शादा चन्छ कि क्ष क्षांन कहिरत मा এরণ লোক এক কোটর মধ্যে একখন পাওয়া কুক্টিন। এল্লপ লোক অভুসভান করিয়া বাহির করা কেবল অসাধ্য নহে. किছ जम्मदारम क्षेत्र स्टेटन जोशं क्षेत्रां मा स्टेशा योश मा। আমাদের রাজ-পুরুষদিপের ক্ষমতা বিভর সভেও ইছার নিগ্রচ कावन छांचावा च किया वाचित कविए शादित्वन मा। य यक्षयं अवन लाक यावा एहं यांश कवना हत्यन चहुत्र, यांशव প্রকৃতি এরপ অভেছ এবং যাহা সম্ভবত: ভারতবর্বের প্রতি লোমকূপে প্রবেশ করিয়াছে, ভাতা শাসম ভারা দমন করা जन्तृतं चत्रस्य ।···युजनशास्त्रां स्तृति देखिश्वाश्यः प्रत्यूत ভাষাদের ইলিরস্থবের পরাকার্তা, ভাষারা ইংরেজী অভ্যাদ करत मा। (कांतारन फाकारमत चाविक्रमिक विश्वाम अवर सह কাফের হত্যা করিলে ভাষারা মর্পপ্রবাতত অবিক ভোগ করিবে এই তাহাদের বিধান: তাহারা এক একট হত্যাকে অনত-স্থাৰীর দার বিবেচনা করে সুভরাং কোনরূপ শাসন ভাষারা লক্ষ্য করে না। প্রভাত অনুপ্রহের ছায় শাসনেও তাহাদিগকে আরও অবিক প্রতিজ্ঞান্ত ও উৎসাহী করিতে পারে।"+

ওহাবীদের মন্ত্রপ্তি এবং ওহাবী মতবাদের ব্যাপক
প্রচারের করু কর্তৃপক্ষ ইতিকর্ত্তব্য নির্ভারণে সহলা পারগ হন
নাই। পরে তাঁহারা ওহাবীদের নির্ভা করিবার করু উপায় ত
চিন্তা করিতে লাগিলেন। কিন্তু এ বিষয় এখন বলিব না।
বলদেশের পূর্যাকলে ওহাবী বা করাজীদের উংপীছনে ১৮৭০
সম নাগাদ কনদাবারণ কিরুপ উব্যন্ত হইয়া উঠিয়াছিল তাহার
কিঞাং বিবরণ ঢাকা হইতে প্রকাশিত ২৮ মে ১৮৭০ তারিবের
'হিন্তু হিতৈষিশী'তে প্রদত্ত হয়। 'হিন্তু হিতৈষিশী' লেবেন—

"বধন চুচ্মিরা এদেশে প্রাকৃতি হন, তথন হইতেই বোললমান বর্ণে—কেরাকী মত প্রচলিত হয়। চুচ্মিরার এমনই প্রভাগ ছিল বে একলাত্র লালাগার অসুবলে ঢাকা, করিগগুর, বাকরগঞ্জ, ত্রিপুরা এবং বোরাধালী কেলার প্রার ইভর প্রেমীর মোললমানই ভাহার বঙ্গতাও মত শীকার করে। বাহারা প্রথম

^{*&}quot;ভারতবর্ষের বাধীনতা ও **অভান্ত** প্রসঙ্গ," পৃ. ২২৬-৭ ৄ

আগত্য করিয়াছে তাহারা সামাদারের সুশাসনে তংপরক্ষণেই অবীনতা বীকার করিয়াছে। ইতর লোকেরা কোন উচ্চ গোকের বাহায় পাইলে নিতাছ ছুর্জ্ব ইইয়া উঠে: ছুছ্মিয়ার যত প্রতাণ বৃদ্ধি হুইতে লাগিল, ততই লোকের প্রতি বিষম অত্যাচার হয়। ছুছ্মিয়ার য়ত্যুর পৃথ্
লোকের সর্বনাশ হইয়াছে, তাহা বলা সুক্রিম। তাহার মৃত্যুর পর করেক বংসর লোকে এক প্রকার শান্তি ভোগ করে। প্রায় ৬।৭ মাস যাবং পুনরায় সেই ফকল মুর্ম্মিড করাজীরা মাদারিপুর সব তিগনের অত্যর্গত ছানসমূহে ভয়ানক অত্যাচার আরম্ভ করিয়াছে। আময়া পুর্ব্বেও এ বিষয় উল্লেখ বরিয়াছিলায়, অদা তংসহছে ছুইখানি পত্র প্রাপ্ত হইয়াছি, তাহার একখানি বধাছানে প্রকাশ করা গেল।

"মাদারিপুর সব্ভিবিদনের লোকেরা পভ ২২শে এঞিল वक्टाल्ट्यंव (लक्ष रहेट्यके भवर्षद छेटेलियम (अ मट्स्प्रिय मिक्के ছুছ্যিয়ার পুত্রমুখ্যের অভ্যাচার উল্লেখ করিয়া এক আবেদন করে: আৰু পৰ্যান্ত তাহার কোন পুকল হইল কি না কানা যায় না। কেহং বলেন, মালারিপুর সব্ভিবিসনে যখন স্থোগ্য ভেপুট মাজিট্রেট বাবু দীনবন্ধু মৌলিক ছিলেন, তবন ভাছার সুশাদ্ধে ফেরাজীয়া নিয়ন্ত ছিল, তংপর যথন তথায় একজন মুসলমান ভেপুট মাজিপ্লেট যান তখন হইতেই পুনৱায় ফেৱাজীয় প্ৰশ্ৰম পাইমা অভ্যাচার আরম্ভ করিয়াছে। ইহারা আলালভের জ:দেশও অবজ্ঞ। করে, ২।৩ মাস হইল ছোট আদালতের ডিক্রী জ্ঞান একজন গোমভাকে ধৃত করে, কেরাজীর: প্যাদাকে প্রছার ক্রিয়া দায়িককে কাছিয়া রাখে। বাম এক কৌৰদারী (माककम:व २ कम करन्द्रेयण **अ**श्वादिण श्रेशारक। এणस्ति **लका ७ भूगांक्काबीब मर्का व्यवर्ग वहारिया प्रश्नित कर व्यामार्**यत নানা বিদ্ধ ক্থাইভেছে: আদ্ধোর বিষয় এই যে আকি উনবিংশ শভাষীতে চড়ছিকের কোলাহল শুনিয়াও এরূপ অভ্যাচার অধিক দিন বর্ডমান রহিয়াছে। প্রণ্যেণ্ট অব্ক্রই এ সকল অভ্যাচার অবগত হইতেছেন, যদি এ অভ্যাচারের কোন প্রতিবিধান না হয় তবে বৃটিশ সুশাসন আমাদের কি উপকারে আসিল ? অন্যান্য হানের কথা বলিতে পাার না, মালারিপুর স্বৃতিবিস্কের এলাকার লোকেরা এ সকল অভ্যাচারে পরিবার ও সম্পত্তি আপনাদিপের গলএই মনে করিতেছে। কোথার রাখিলে নির্কিন্ধে থাকিবে ভালা ছির করিতে পারিতেছে না। নেরাজীদিপের বিক্লমে মোক্ষমা করা দ্বে থাকুক, কথা বলিলেই ভালার বিপদ ঘটে; অভিযোগ করিয়েও সুকল লাভ হয় না। যত ইতর শ্রেমীর মোস্থ্যান সমুদ্ধই কেরাজী, ভরব্যে ধাণ কন উল্লের ধর্মোপদেশক (খলিকা) আছে। মোক্ষমা উপস্থিত ইইলেই উল্বা সাক্ষী প্রভৃতির প্রতি অভ্যাচারের ভর প্রদর্শন করে, বোধ হয় সেইজনাই পার্য্যানে কেই প্রকৃত সাক্ষা প্রদান করিতে সাহস পায় না। । ।

ওহাবী তথা ফরাজীদের বৃল উছেও ভারতবর্ষের সর্ক্তম একট মুদলমান বৰ্দ্যহাজা প্ৰতিষ্ঠা, এ কৰা পূৰ্বেই বলা হুইয়াছে ৷ এই উদ্দেশ্য সাফল্যমভিত ক্রিবার পক্ষে বিটিশর: ছিল শবল প্রভিবাদী। ভাই ভাহাদের বিরুদ্ধে ছিল এই भक्त रुप्रत ७ मन्त्र पश्चिमन। किंद देश्ट्रक नका स्टेटन्ड **७** श्वीरमञ्ज अल्लाहाद-**উৎপ**कृत अल्लित्यो हिन्दूरमदद रिलाव ক্রিয়া সহা ক্রিতে হয়। হিন্দু (আক্রকাসকার ভাষায় অ-মুসলমান) স্থাক যে নিছক মুসলমান রাকা ভাপনে ভবিশ্বতে প্ৰতিবন্ধক হইবে তাহা তাহায়, জানিভ, এবং জানিও ব্লিয়াই ইংৱেজের বিরুদ্ধে ষ্ড্যর চালাইজের খিন্দেরই সম্পতি সুঠন, ধরবাজী পোভান, নারীর উপর **অভ্যাচার, মারপিট, মরহভ্যা প্রভৃতিতে পিও ছইত**ঃ ওহাবীদের কার্যক্লাপ ঠিক ১৬ই আগটের (১৯১৬ - মুগলিম লীগ পরিচালিত প্রত্যক্ষ সংগ্রামেয় কথা শরণ করাইয়া দেই ৷ বিষ্টাশগণ ওছাবীদের বিষ্টাশ বিধোধী মনোভাব বিধুরিত করিয়া किकाप जाशासिक हिन्सु विस्वयं अभाग बूजनमान अभारक स्कार्यकः দিতে সরকারী ও বেসরকারী ভাবে প্রবন্ত হয় সে এক অভিনৰ ব্যাপার। এই প্রচেষ্টার পরিণতি আৰু খডিত-ভারতে লক্ষ্য করি।

সমর্পণ

শ্রীঅমলেন্দু দত্ত

বিপুল উচ্ছাদ আদে অদরের গোপন কোঠায়:
ওই মদীমাধা নত— ভারি মাবে অধ্য ভারকা—
মোর চিন্তাকাশে ভারা কভ শত মুকুল ফোটার।
ওই দীর্ঘ ভাত্রোজ্বল ছারাপথ—দিগন্থবিসারী রেখা
অপূর্ম আবেগ ভোলে। আলো-ছারা স্থলর-ভীষণ
মিলিয়া আমার চোধে এরা দের অপরণ রূপে।
পৃঞ্জীভূভ খন মেখ বীরে বীরে ভাজি জ্বদাসন
দুরাভরে চলে যার জমেছে যা' মর্জ্বাবে চূপে।

কলনা-প্রবাহ মোরে নিয়ে চলে বরা হতে ধ্রে ফদর-মুকুল যেখা কৃষ্টে রয় বরে মা কবন, বাজব-সীমার শেষে বিচরণ করি কলপুরে। চিরস্করের ব্যানে মধু রাতে হই নিম্পন।

আপনারে কিরে পাই, জ্বান্তর-স্বৃতি ভাগে মন্দে নিংশেষে সঁপিরা দিছু ছেত্রন স্থান্তর-চরণে।

রসরাজ অমৃতলাল বস্থ

1500 - 1545

শ্ৰীপ্ৰজেন্দ্ৰনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

জন্ম : বৈশব-শিক্ষা

১৮৫৩ সনের ১৭ই এপ্রিল (১২৬০, ৬ই বৈশাব) খ্রীরাম নংমীর দিন কলিকাভার অনুভলালের জন হয়। ওাঁছার শিতার নাম—কৈলাসচন্দ্র বন্ধ; তিনি এক সমরে বধাক্ষমে তবিষেণ্টাল শেমিনরীর সহকারী শিক্ষক ও প্রধান শিক্ষকের কর্ম করিয়াছিলেন।

অন্তলালের শৈশব-শিকা ছক হয়—পিতৃপ্রতিষ্ঠিত কর্পার্টোলা বছবিদালের (বর্তমানে 'প্রামবাক্ষার এ. ভি. কুল'); এই সমধে অর্জেন্দুশেশর মুখকী তাঁহার সভীব বন্ধু বিলেম। এখানকার পাঠ সাল করিয়া তিনি ছই বংসর হিন্দু কলে অব্যয়ন করেন। ১৮৬১ সনে কেনারেল এসেমরিক নিষ্কারীকান হতে এনটাল প্রীকা দিয়া অনুতলাল বিভীর বিভাগে উত্তীব হুইয়াছিলেন।

বিৰাহ

এনটাল পরীক্ষা দিবার অব্যবহিত পূর্বের, ১৫ বংসর বরসে, অন্তলালের বিবাহ হুইরাছিল। পালী—শালিধার ভ্যাবিকারী জয়নারায়ণ খোষের পৌলী, বরল ১ বংসর। কৈলাসচন্দ্র পুত্রবধুর মুখ দেবিয়া যাইতে পারেন নাই; এই ঘটনার তিন বংসর পূর্বেট তাঁহার মুভ্য হুইরাছিল।

ডাক্তারি

ছেলেৰেলা হইতেই চিকিৎসা-বিদ্যার দিকে অন্তলাদের খোক ছিল। তিনি এনটাল পরীক্ষার উত্তীব হুইরা মেভিক্যাল কলেকে প্রবেশ করেন; এবানে রাবাগোবিদ্দ কর (আয়, জি. জর) তাঁহার সহাধ্যারী ছিলেন। অন্তলাল মাবে মাবে কাশি গিয়া পিত্বলু প্রনিছ হোমিওপাাব লোকনাব মৈত্রের নিকট অবস্থান করিতেন। মোটের উপর ছুই বংসর মেভিক্যাল কলেকে অব্যরনের পর, এলোপ্যাধির পত্থা পরিত্যাপ করিছা তিনি ছোমিওপাাবি চর্চার জক্ত কাশিতে রহিরা গেলেন।

কাশীতে অবস্থানকালে অয়তলালের ইংরেজী গড়ার মেণা অমিয়া উঠিয়াছিল। কুইল কলেজের এছাব্যক্ষ রাজ্যক্ত সাঙাল উাহাকে গাইরেরী হইতে ইংলপ্তের ও ফ্রান্সের ইতিহাপ, মাটক, উপভাগ ইত্যাদি অনেক বিষয় পঢ়িবার সুযোগ দাম করিয়াছিলেন। অয়তলাল বলিয়াছেন, "জীবনে যদি আমি কিছুমাত্র ভিত্তের পরিচয় দিয়া গাকি, তক্ষত সাভাল মহাশরের নিক্টে আমি অনেক অংশে ধনী।"

১৮৭২ সনের মাবামাবি, লোকনাথবাবুর পত্র লইরা, অযুত্তলাল বাঁকিপুরে ভাতারি করিতে বাম। কিছ মাগ-

কয়েক পরেই তাহ'র জীবনের গতি ভিন্ন দিকে প্রবাহিত হইয়াছিল। তিনি স্থতিকধায় বলিয়াছেন:—

"কাশী হইতে মধ্যে হধ্যে কালকাভায় আসিভাম। এখানে चवशनकारण जामारमद कश्रुणिशाक्रीणांत पूर्ण শিক্ষণতা করিতাম; বেতন গইতাম না। ভূপেঞ্চনাৰ বস্থু, চুৰীলাল বছু, প্রিয়নাথ দেন আমার ছাত্র। অর্ছেন্দুশেবর ও বর্মদাল স্থর তবন এই ছলে মাষ্ট্রারি করিত। আহার বাবা, काका, मामा, नकरमदे वेदूल-माडा व कविशाहरणन , जामिछ মাষ্টারি করিভাম: অর্থেন্দু বলিলেন-'ভূমি এলেছ ভালই श्टाश्रद , भीनावजीव अधिनय कवरण श्रव।' नरतक्षमाय বন্দ্যোপাধ্যায় সম্ভ ব্যবহা করিবার ভার লইলেন :...লীলা-বতীর রিহার্গাল চলিতে সারিল। অর্থেন্ আমাকে কোর করিয়া যোগজীবনের ভূমিকা পওয়াইপেন : অধানাদের রিহার্সাল হইত গোবিক পাতুলীর বাড়ীতে; পাতুলী হাই-(कार्टित कर्च्छाडी विरागन। ... अक पिन व्यामार्यास पृदा वक्षणिंग বসিয়াছে গোবিশ ছাইকোট ছইতে প্রত্যাগমন করিয়া অত্যন্ত शबीतश्रदा चामाधिशतक विशिष्टम-'(पर्व. हारेटकार्टी छत्न এলাম, সভ্য মিখ্যা বলিভে পারি না, লর্ড মেয়োকে না কি चाकामाम धीरण चून करदरह [४ स्वक्सादि ১৮१२]।' जिलिन मक्जिन वह एटेश (नन।...जानिस ८५७३) यथम (नथ एटेश) আলিল কাৰী হইতে লোকনাৰ বাবু কলিকাভাৱ আসিৱা অমিক কানীতে কিবাইয়া প্ৰয়া গেলেন। বনুৱা কভ কাকৃতি মিন্তি করিখেন; তিনি কাহারও কথায় বিচলিত क्ट्रें(अब ना : आधात आंध (केंद्र शिक्षान क्येंश ना ।

"১৮৭২ সাধের গোড়ায় কানী পরিভাগে করিখা বাঁকিপুরে আসিলাম। এ বংসরের নবেছর মাগে বাঁকিপুর হইতে ক্রিকাভায় আসিগাম। বাড়ীতে অগভাত্তী পুৰার উপলক্ষিত এই যে বাঁকিপুর ভাছিলাম, আর সেখানে ভাজারি করিবার ক্ষ কিরিয়া যাইতে হইল মা।

"কলিকাভার আদির) যেদিন প্রথম আমি আমাদের মূল দর্শন করিতে মাই, অর্জেণ্ড্ আমাকে দেখির। ক্লাস হইতে বাহির হুইরা আসিল। তথনই হেও মাষ্ট্রারের নিকট হইতে মুট লইরা আনাকে সলে করিয়া ভ্বন নিয়োগীর বাগবাআরের সলাতীরছ বৈঠকবানার সেল। সলাতীরে সেই স্থান অটালিকার কোমও চিহ্ন এখন নাই; পোট-ইটের কল্যাণে লেট প্রত হইরাছে। পথে যাইতে যাইতে অর্জেণ্ড্ আমাকে সকল ক্ষা খুলিরা বলিল। সিরিশবাব্র সলে মনোমালিত হইরাছে। তালিরিশবাব্ বলিরাছিলেন, 'বিরেটরের ক্ষা একবানা ভাল

वाशी मा कविता हैकि है (विहवाद वावशा कविता किहरे व्हेटव मा ; जारन जान वाजी, जान त्हेज कत्र, जादशद है कि विकश् क्य , मरेल लाटक क्रिकिक किमित्त (कम ?' कार्डक ७ मतिल বন্দ্যো বলিলেন—'আমরা ছোট বাড়ীভেই আরম্ভ ক্রি. (हार्डेशार्ड) (क्षेत्र कवि: अरकवाद्य वक्ष वाक्षी वक्ष (क्षेत्र कावाब শাওৱা যাবে ?' এই কৰা লইৱা দলাদলির ছত্রপাত হইৱা-ছিল। এ সকল বিষয় আমি কিছুই আমিভাম না : আমি ভবন ক্লিকাভার ছিলাম মা। যথম গলার ভীবে ভূবন নিয়োগীর বাড়ীতে উপস্থিত হুইলাম, তথ্য বুবিলাম সিহিশ বাবুকে বাদ ধিৱাই বিষেটর করিতে হইবে। --- বিভলের প্রকাও হলে আমরা নীলদর্শবের অভিনর চালাইভাম। আমার কোনও नार्हे नरेवाद वित्नश रेव्हा दिन मा; किन्न नकरन मिनिया हाशाहाशि कविद्या श्रवित्र , वित्रन—'कृषि रेशवि**द्यो**व शाहेहे। মাও , বেশী নর, ছ-এক রাত্রি তুমি প্লেকর , ভার পর না হয় আমরা অভ ব্যবস্থা করে যেবো।' সেই ছু-এক রাজি করিতে করিতে আৰু চুয়াল্লিশ বছর কাটয়া গেল।" ('পুরাভন প্রসদ্.' २व नर्शाव, नू, ३८-৯१)

র্জমঞ্চের পাদপ্রদীপে

১৮৭২ সনের ৭ই ভিসেবর শনিবার বিশেষভাবে শ্বরীর।
এই দিন কলিকাভার সাবারণ-রলালরের ('ভাশনাল
বিরেটারে'র) প্রতিঠা হয়। এই তারিবে শুভিনীত দীনবছু
বিশ্বের 'নীলদর্শন' নাটকে ১৯ বংসর বরস্ক শ্বযুতলাল সৈরিষ্ক্রীর
ভূমিকার সর্বপ্রথম পাদপ্রদীপের সন্মুধাম হন। তিনি বলিরাত্বেনঃ—

"বৰাসমধে ভৃতীয় বৃঙ্গে সীন উঠিল; আমি লৈৱিছ্ৰী বেলে ছেকের উপর উপবিষ্ট। চাহিয়া দেখি, আমার শুরুত্বানীর কৰেক ক্ষম ভদ্ৰলোক সন্মুৰ্বে বসিয়া আছেন। বৃহুৰ্ছের ভিড আমার বুক কাশিরা উঠিল; আমি বেন তবন সমাজ্চাত, ৰাভিচ্যত, ধর্মচ্যত হইয়া আমার ব্যর্থ জীবমের সমস্ত সজার ভার শিরে বহন করিয়া আমার গুরুজনদিপের সন্থবে নারী-त्वत्य छेनविडे स्रेशांचि , त्यन मत्य स्रेन, क्रैकिके त्विका ारिनिक (डेस्ट चिनद कदिया चामि चामाद नमाक्रक, বদেশকে, আত্মীয় বছুবাৰৰকৈ আৰু যে সজা দিভেছি ভাষার अक्षाय मांचि---रिकेश्व । जामाद जनमकाद मामद जार चाच चाननात। वृतिराज नातिर्यन मा। जनम नभाव दिन. সমাজ বছন হিল, স্থাজফোহিভার শাভি হিল। বৃহুর্ভের **খত আমার মাধা ছবিয়া গেল, পরক্ষণেই ভাবিলার এ যা** হ্ৰার ডাভ হ'ল; এখন যদি ভাল করিয়া প্লে করিভে না পারি, তাহা হইলে গঞ্জা লাজ্যার সীমা থাকিবে না। কান্ধ-यस्माबास्का नीमधर्गस्यव देनविक्की क्टेनाम । याक्वा ध्वनिक ভালে ভালে 'সীন' পরিবর্তিত হইয়া গেল। --- পর স্থাছে অৱত ৰাজাৱ পঞ্জিক৷ গৈৱিছ]ীয় স্বালোচনা ক্রিয়া লিখিলেন —'ভাষার রোদনখর অপূর্ব্ব বলিভে হইবে।"

অমুডলালের অবশিষ্ট জীবন কলিকাভার লাধারণ রলালয় ---ভাশনাল, এেট ভাশনাল, এেট ভাশনাল অপেরা কোম্পানী, বেদদ, প্রার, বিনার্ভা প্রভৃতির সহিত ওত্থোত হুইয়া আছে। नाह्यभीवत्म व्यवकारमञ्ज्ञासम् अत्र--वर्षमृत्नवत् पूष्की। ভিনি निविधा तिहारस्य. "क्विवत तिहिम्हळ नाशहन-मोडीमाना-शांभागद कलके। विद्याशैहे हित्नम, प्रलदार बक-बाब बरे चर्डभुरे कामानान विस्तिहास्त्रत ७१कानीय श्रूपक चिंदिन जिल्ला निका-भन्ना मर्नेशान अवस्य क्रिका कुरमा। भीनमर्गावद देनिव की, नवीन जनविभीत विकास अ मर-माडिक्स পুৰোহ প্ৰভৃতি প্ৰথম নাটাজীবনের ক্ষেকট ভূমিকা প্ৰহ্কার ইছারই নিকটে শিকা করেন" ('অম্বভ-মদিরা')। অকর ভার অযুত্লালও প্রকৃতপক্ষে প্রথম শ্রেণীর অভিনেতার গৌরব অর্জন করিয়াছিলেন। গিরিশচল্লের ভাষার-- 'হাছ-রদাভিনয়ে অর্জেন্বাবু, বেল বাবু এবং ভূমিবাবু (নাট্যা-চাৰ্ব্য খ্ৰীয়ুক্ত অয়ুত্লাল ৰকু) এই ভিন অনেই সৰ্ব্য-শ্ৰেষ্ঠ ৷ ... যে চৱিত্ৰে শ্লেষ আছে--ভাছার অভিনয়ে ভুনিবাৰু বছলনীয়।"

বৌৰনে অযুত্তলাল বাছাদের লছিত নাট্যক্রীড়ার বোগদান করিরাছিলেন, কালসভ্কারে উচ্চাদের অনেকে প্রতিষ্থী রলালয়ের সহিত হজ্জ হইলেও পরস্পরের মধ্যে একটা অপূর্বা প্রীতির আকর্ষণ ছিল। মহেক্রলাল বস্থুর মৃত্যু হইলে অযুত্তলাল বিরিশচক্রকে যে প্রধানি লিবিরাছিলেন ভাষা উদ্ধার-বোগ্য; প্রধানি এইরূপ:—

"মহেন্দ্ৰ সকলকে হাছিয়া চলিয়া গিয়াছে, আমার প্রাণে কি ব্যথা লাগিয়াছে, তাহা আপনিই বুবিবেন। আমাদের লেই কুল্বপত প্রথম নাট্যজীবনের খার্থপুত Romantic প্রেমের দুঠাত জগতে যে অবিক মিলিতে পারে, এমন বোর হয় না। গত মুহুলতিবারে আমার একট প্রায় তিন বংগরের মুবুরভাষী দৌহিন্দ্রী আমাদের ত্যাগ করিয়া গিয়াছে, কতা আমার ভৃতিকাগারে পড়িয়া কাঁদিতেছে, আমার বৃত্ত কট, তব্ বুবিতেছি যে, এ শোক সোভা গুৱাটারের ভূল্য; কিছ বেল, মতি, মহেন্দ্রের শোক সীভাকুতের ভার চিরদিন ভগুতায়ে কুটতে থাকিবে। কতবার বগভা করিয়াছি—লেই বগভার মধ্যেও কি মনুর মিলনাকাজনা ছিল।

"ভথাপি আপনার গিবিত মহেকের স্থতি-উপহারদরণ লবল সত্য বিবাদ-গাভীগ্যপূর্ণ অদরের কথা করট পঢ়িরা ইছা। হুইভেছে বে, আমি বেন আপে মরি, আপনি আনার মনে করিরা ছ্-কোঁটা চক্ষের জল কেলুন। অভি চনংকার লেখা— স্থাদেব আপনি সাবধানে অভরে রহিরা চক্ষকে কুটতে দিরা-ছেন; কিছ বে জানে, সে ব্বিভেছে বে—স্থর্গ্যে কিরপই চক্ষে প্রতিক্লিত হুইরা এত মনোহর হুইরাছে। প্রার অছ-ভারই এই আঁকা-বাঁকা লেখা। ১৭-৩-১৯০১।—ব্লেহের অরত।"

প্রাথমিক রচনা

অন্বতলাল শৈশবাবৰি বাংলা-সাহিত্যে অসুৱাই ছিলেন। ভাঁহার বাংলা রচনার—বিশেষতঃ 'প্যার্ডি' রচনার পোড়ার অফ্রট তিনি স্বতিক্থার এইরুপ বিরুত করিরাছেন:—

"আমার একজন ধ্রপশ্যকীয় কাকা ছিলেন; তাঁহার নাম প্যারিমোহন বস্থা--তর্থকার গুষ্টান পাদরীর স্থান বিদ্যালাভ



রসরাক অনুতলাল বস্থ

করিয়া তাঁহার। পঠি শায় বাংলা ভাষার চর্চা করিবার বড় একটা অবসর পান নাই, কিন্তু ল্যাটন এটক পড়িয়াছিলেন। তিনি আমাকে একটু একটু ল্যাটন এটক পড়াইতেন, আয়ি তাঁহাকে বাংলা বই পড়িয়া জনাইতাম; 'ভাষর' কাগধুবানা প্রায়ই তাঁহাকে জনাইতে হইত। একনা: তাঁহার বাংলা রচনার দিকে একটা প্রবল্গ বোঁক হইল। তিনি শ্লেষ-রচনায় শিক্তত হইতেন; 'ভাগরে' তাঁহার সেই সকল parody প্রকালিত হইতে আরম্ভ হইল। মাইকেলকে লইয়া তিনি parody করিতেন। মাইকেল লিবিয়াছেন—

আহা, শৈবাগের দলে শোভে যেই প্রথন্তানি, প্যারিকাকা লিখিলেন—

আহা, যুধভের ল্যাভে শোভে বেই পুঞ্রাভি,... পুনন্চ, মাইকেলকে অফ্করণ করিয়া ভিনি লিবিলেন—

আমি হমু, এ বিপুল বিখে কে না ডৱে থেৰি যোৱ লাক।

তাঁহার এই সকল শ্লেষ-রচনার ক্রমে আমি তাঁহার সাক্-বেদ হইরা উটিলাম: অনেক সময়ে তিনি আমাকে পাদপ্রণের ক্ষ আহ্বাম করিতেন। আমার রচমার তিনি সক্ষোষ প্রকাশ করিলে আমি কুতার্ব হইতাম। ইহার পূর্ব্বে কবিতা রচমার আমার হাতে খড়ি দিয়াছিলেন আমাদের এই ভামবাদার মুলের পণ্ডিত ব্রহ্মানন্দ চটোপান্যার মহালর।
ন্যালরে নানা ছলে কবিতা রচনা করিতে অভ্যাস করিলাম।
পরে প্যারিকাকার নিকটে অভয় পাইরা ব্রহ্মান্দ বংসর বরসে
আমার প্রথম চিত্রকাব্য রচিত হয়। আমার পেই প্রথম রচনাটি
মোটেই রসাল্প নহে, করেকটি ছলোব্য শব্দ মাত্র। আদ্যকরঙলি একত্র ভূডিলে আমার নামটি বানান করা হয়। এবনও
আমার সেটি মুবছ আছে....

জ্ঞজীহরণদে যে বা কররে খরণ।

জবনী ভিতরে সেই জানরের বন ॥

য়হাজর নাহি থাকে সদা জানকিত।
তপ ঋণ করে সদা মনের সহিত॥

লালসা নাহিক ধনে মোক প্রয়োজন।
লভিতে গালসা মাত্র ইখর চরণ॥

বন্দি ইখর চরণ বোকেশং।
স্থান বন্ধন তার শক্র হয় হত॥

এ কবিভাট লিখিয়া আমার মোটেই আনন্দ হয় নাই।
কোনও বকম করিবা মিল চাই; এ ত হটল শক্ষের গোঁলামিল
মাত্র। প্যারীকাকা ওলিলেন—'একটা ভাল ক'রে পদ্য লেখ
না।' তথন সবেমাত্র প্ররাধাকান্ত লেবের মৃত্যু। ১৯ এলিল
১৮৬৭ ইইয়াছে। তিনি বলিলেন 'স্তর রাধাকান্ত দেবের
উদ্দেশে একটা ক'বতা লেখ না।' আমি তাহার আদেশ
লিবোবার্য্য করিয়া মাইকেলের 'রেবো মা দাসেরে মনে'
কবিভাটির ছন্দে একটা পথ্য রচনা করিলাম। প্যারীকাকার
তাহা এত ভাল লাগিল যে তিনি ভাহা 'জাসরে' প্রকাশিত
করিয়া দিলেন। এই আমি প্রথম আমার লেখা ছাপার আকরে
দেশি। কবিভাট আমার নিজ্যেও বেশ পছন্দ্রুই ইয়াছিল।
কিন্তী শ্রেধ-রচনার দিকেই আমার প্রবণতা বেশী রহিয়া গোল।
আমার মধ্যে কিছু সহক সরসতা, native wit, ছিল; তিনি
ভাহা কটাইয়া ওলিলেন।…

প্যারীকাকার মৃত্যুর পথে আমার বাংগা রচনা দিন কতক বছ ছিল। ঘটনাচক্রে আমি একধানা প্রকৃত্যন দিবিরা কেলিলাম: আমাধের পাছায় একটা সধ্যের যাত্রার দল ছিলালাল একটা আমাধের পালা লিখে দিন।' আমি বলিলাম, 'আমি কিলিখে দেব ?' তাহারা গাঁভাণীভি করিতে লাগিল; একধ্য দান্তরায়ের পাঁচালি আমার কাছে রাখিরা গেল। আমি তথন সবেমাত্র পড়িয়াছি 'একেই কি বলে সভ্যতা ?' ভাছারই অন্তর্গর আমি একধানা Farce রচনা করিলাম; নামটা বছ ছোটবাট হইল না—'একেই কি বলে ভোলের বাংলা সাহিত্যের উন্নতি করা ?' এই রচনাটি এখন একেবারে শৃপ্ত।…

রস-সাহিত্য রচনার ব্রন্থ আমি আর একজনের নিক্ট অত্যন্ত ধবী। তিনি 'অর্ত বাজার পঞ্জিকা'র সন্পাদক নিশির বোষ। কাশীতে যধন পোকনাথ বারর বাসার ভিজার 'অন্বত বাজার পত্রিকা' পাঠ করিতান। তথন কাগজধানি বাংলা ভাষার পরিচালিত হইত; যশোর হইতে নিরমিতভাবে কাগজ বাছির হইত; কলিকাতা সহরে তথনও বড় একটা আহির হয় নাই। 'অন্বত বাজার পত্রিকা'র হাল্যোদীশক প্রসদ 'বিবিব' নামে প্রায়ই প্রকালিত হইত। তেমন সরস Comic titbits আমাদের সাহিত্যে অভ্যন্ত হর্লত। পঞ্চানন্দের প্রথম আমলে অনেকটা ইন্ধনাবে সেই বাঁটি রস উপজোগ করা যাইত। আমি পত্রিকার সেই অংশটার রসপ্রাচ্ব্যে মুগ্ধ হইরা যাইতাম।" - ('প্রাভন প্রসদ্ধ,' দিতীর পর্যাম, পু, ৮২-৬)

অন্তলালের থেঁকে লেখার প্রথম হাতে খড়ি 'মডেল স্ক্ল' নামে একটি নক্ষা; ইছা ১৫ জান্ত্রারি ১৮৭৩ তারিখে ভাশ-নাল বিষেটারে প্রথম অভিনীত হয়। এই প্রসঙ্গে তিনি লিখিয়াছেন :---

"লেকটেনান্ট গবর্ণন সার জন ক্যাবেলের মাধার চুকলো যে শিক্ষিত বাঙ্গালীর জন্ধ এমন একটা সাভিস তৈরি করতে হবে, যাতে এক-একজন এক-একটা বিদ্যাকলফ্রম হ'তে পারে। সাধারণ কেতাবি বিদ্যে ত বাকবেই, তার ওপর একটুকেমিট্র, একটুবোট্যানি, সারতেরিং, ক্রিম্লাটক, গাঁতার ইত্যাদি ইত্যাদি। সুরলিক শিশিরবারু ক্যাবেলি সম্বল্লকে রহুড কোরে তার 'অন্ত বাজারে' [২ মে ১৮৭২] একট কাটুনি হাপান, কিম্লাটকের পোযাক-পরা, কোমরে একট পেহন দিকে বোলান শিক্ষি আর কানে একট চিম্টে



ক্যা:খলের মডেল ডেপুট (ব্যক্ষিত্র)

ঐ কাটুনি দেবে-ই ও শিশিরবাবুর ইলিতে আমি এক নলা লিবি, জে:ডাসাকোর লায়াল-বাড়ীতে ভার অভিনর হয়; শাঞ্চবিহীন ছোকরা আমি, ভাতে প্রক্ষের আর বড় বড় বাড়ী গোক-পর। হিঁছ-মুসলমান হার, পরিছেদ শিশিরবাবুর কাটুনের অভ্রপে কানে চিম্টে কোমরে শিক্সি, বালি প্রকেদরের পেণ্ট্রলেম চাপকান। কচুপাভা কেটে 40 वं क'रत वृतिता पिठ्य, वज-दे वं वं वं कतिवादि, जज-दे कृत्राचा एटक्. अक्यांगांच क्लांगांचा एटक् मां, त्रव বোট্যানির কি আশ্চর্য মহিমা। দেশলাই ছেলে কেমিট্রর আকৰ্ষ্য শক্তি দেবিয়ে বলড়ম যে, দেব, দেশী আগুনের চেম্বে বিশিতী আথনের ভিতর কি খণ্ড ভেক, ভোমরা হাকিম হয়ে মক:খলে গিয়ে স্বাইকে বুবিয়ে খেবে, যেন সকলে বিলিভী আধন ধরে হরে রাবে : ভ্রমীভেই সাঁতার শেববার ক্সরভ হ'ত আর আমি নানা রকষ সেলামের উপর এক লখা লেক্চার বাঞ্ডুম। ঐ মডেল ছুলের "নজাই" বোধ হয় আমার টেজে লেবার প্রথম ছাতে বভি: আর-ও নানা বিষয়ে ७ दक्ष ৮।১० चाना नक्षा नित्य बका वा त्रिदिणवावृत भाषाया দে সময়ে বা ভার কিছু পরে পের। হয়েছিল; ২া১ বানা বোৰ হয় গিরিশ-প্রস্থাবলীতে স্থান পেয়েছে, আর সব কোথায় ("পুরাভন পঞ্জিক।": 'মাগিক বছমভী.' त्रिरश्रष्ट ।" देवनाव २००५)

অমৃতলালের রচিত প্রথম নাটক—'হীরকচ্ণ' ১৮৭৫ সনের ছুন মাসে প্রকাশিত হয়, তথন তাহার বয়স ২২ বংগর। "তথন মল্হার রাও গাইকবাড় ও কর্ণেল ক্ষেয়ার ঘটত বাাপার লইয়া দেশময় জলনা কলনা হইডেছিল; রেসিডেট সাহেবকে হীরকচ্ণের সহিত বিষ মিশ্রিত করিয়া খাওয়ান হইমাছিল; এই অপরাবে গাইকবাড় অভিযুক্ত। কৃষ্ণাস পাল 'হিন্দু পেট্রিয়ট' পত্রিকায় লিখিলেন—'আমরা এক শত গাইকবাড়কে হারাইতে প্রস্তুত আছি, কিন্তু একজন নর্ব্রেককে হারাইতে

প্রৱত নহি।'— স্থামি এই ঘটনা উপলক করিয়া 'হীরকচ্ন' নামে একবানি নাটক লিবিলাম ;
হাই,মি করিয়া কিছু হাসি ঠাটা করিলাম। নাট্যসাহিত্যে এই নাটকবানি আমার প্রবন্ধ রচনা।"
প্রকৃতপক্ষে, নাট্যকার-হিসাবে অমৃতলাল প্রতিঠাল লাভ করেন ইহারও ১ বংসর পরে —'বিবাছ বিলাট' রচনা করিয়া।

রঙ্গালয়ে অধ্যক্ষতা

শ্রেট ত্যাশনাল ।— ১৮৭৫ সনের শেষ
ভাগে অমৃতলাল ২২ বংলর বয়সে সর্বপ্রথম
রলালরের ম্যানেজার বা অব্যক্ষ নিমৃত্যু হন;
তথম তিনি তুৰনমোহন নিয়েগি-প্রতিষ্ঠিত প্রেট
চালনাল বিয়েটারে। এই সময়ে তাঁহার রচিত
প্রথম নাটক—'হীরকচ্ব' অভিনীত হয় (২৫

ভিলেম্বর); ইছাতে তিনি নিজেও একটি ত্যিকা এছণ করিয়া-ছিলেম। ইছার প্রায় ছই মাস পরে—১৮৭৬, ১৯এ কেক্য়ারি প্রেট চাশদালে যে অভিনয় হয় উহা বদীয় নাটাশালার ইতিহালে একটি শারণীয় ঘটনা; কারণ, এই অভিনয়ের কলেই স্বর্থেট নাট্যশালাকে দমন করিবার অভ আইন

करवन । पहेनांके बहे :- अखाहे अखम-ब्रष्ट श्रिण-चर-ওয়েশকপে কলিকাভার আসিলে ১৮৭৬ সনের ভালহাত্তি मार्गित (माणांच कांकेरकारहेंत सद्धारिक क्रेकेस क्रमायक মুখোপাব্যায় তাঁছাকে নিজের বাভীতে আহ্বান করেন। ৰুবৰাজ তাঁহার বাড়ীতে পদার্পন করিলে মুৰোপাধ্যায়-গৃহিণী ও অভাভ মহিলারা তাঁহাকে শথকানি ও হলুকানি করিয়া ভারতীয় প্রধায় বরণ করেন। এই ব্যাপারে কলিকাভার বাঙালী সমাৰে অভান্ধ আন্দোলন উপভিত হয় ৷ হেমচন্দ্ৰ বন্দ্যোপাব্যারের 'বাজীমাং" শীর্ষক কবিভা এই উপলক্ষেই लिया। এक न्याननान विस्कृतिक अहे न्यानात व्यवनवन করিয়া একবানি প্রহুসন অভিনয় করেন। প্রহুসনবানির নাম ---'গৰদানদ ও ব্বরাছ'। একজন সম্রাপ্ত ও রাজভক্ত প্রভাতে বাদ করিয়া হীন প্রতিপন্ন করিবার জন্য পুলিস হইতে এই श्रद्धश्रद्धा विकास विकास विकास किया । २७० क्या विकास 'कर्नाहेक्यात नाहेक' अवर 'शक्यानम ७ ध्वताक' श्रवणनहैरक 'হুলুমান চরিত্র' নাম দিয়া আবার উহার অভিনর করা হইল --ইছাও পুলিসের আদেশে বন্ধ ছইয়া পেল। ১লা মাচ ভারিখে পুলিসকে বাদ করিয়া 'The Police of Pig and Sheep' बार्य अध्यम ७ 'करवल-विर्वाणिनी' नाहेक चालिनील वहेंन। গবর্ষেণ্ট এক দিকে যেমন নাষ্ট্রালালাকে সংঘত করিবার জন্য আইন করিতে প্রবৃত্ত ছইলেন্ অপর দিকে তেমনই প্রেট-बानिबारमध कर्षांक्रशिमित्रक खना छैशास मास्ति पिरांत উদ্যোগ করা হইল। ৪ঠা মার্চ ধর্বন অভিনয় চলিতেছিল ভবন পুলিলের ভেপুট কমিশনার সদলবলে পিয়া এটে ন্যাল-নালের ডিরেক্টর উপেক্সনাথ দাস, ম্যানেক্ষার অমৃতলাল বত্তু, এবং মতিলাল সুৱ, বেলবাবু-প্রমুখ আট জন অভিনেতাকে এেপ্তার করিয়া আনিলেন। অপরাধ--পূর্বে অভিনীত 'সংরক্ত-বিনোদিনী' নাটক অল্লীল। ৮ই মার্চ ম্যাজিটের বিচারে ভিরেক্টর উপেজবাবু ও ম্যানেভার অমৃতগালের এক माभ कविशा विभाव्यम कावामर्भ्य चारम्भ इहेन : चना সকলে মুঞ্জিলাত করিলেন। এই বিচারের পর দিন ম্যাত্তি-(हेरहेत शास्त्र विकास हारेरकार्ट चालील स्टेल। चालील উপেন্দ্ৰনাৰ ও অমৃতলাল উভৱেই মুক্তি পাইলেন।

এই ঘটনার অল দিশ পরেই—অন্তত্পাল পুলিদের চাকুরী লইয়া পোর্ট রেয়ারে গমন করেন (এপ্রিল ১৮৭৭)। তথার এক বংগর কাটাইবার পর তিনি কলিকাতা কিরিয়া আবার রঙ্গালরে যোগদান করিয়াছিলেন।

ফার ।—পুর্বে যেবানে বনোবোহন বিরেটার অবহিত ছিল, সেই কমি ভাড়া লইবা, গুদুবি রার নাবে অনৈক মাড়োরারী প্রার বিরেটারের পত্তম করেন। ২১ জুলাই ১৮৮৩ (৬ প্রার্ব ১২৯০) ভারিবে গিরিশচক্রের বিক্ষয়ঞ্জ' লইবা এই রক্ষয়কের হার উদ্বাচিত হয়। অয়ভলালও এই দলে ছিলেম। বংসরাব্ধি থিরেটার চালাইরা ওপুর্ব অবসর এবণ করেন।
ইহার তিন বংসর পরে, যে জমির উপর প্রার রলমঞ্চ প্রতিষ্ঠিত
ভিল তথার 'এমারেন্ড থিরেটার' হাপনের মানসে গোপাললাল
শীল উহা ক্রের । প্রার-সম্প্রদায় ১৮৮৭ সনের মব্য তারে,
ইঞ্জিনীয়ার বোগেজনাথ মিত্রের পরিকল্পনা অসুসারে, হাতীবাগানে নৃত্র রলালর নির্দ্রাণে হওক্পে করেন; সিরিশচজের
'নসীরাম' নাটক লইয়া নবমিপ্রিত প্রার রলমকে প্রথম অভিনয়
হর—১৮৮৮, ২৫এ মে (১০ জাঠ ১২১৫) কুলবোলের থিন।
অন্ত্রতালেই প্রারের অব্যক্ষ (অভত্য বহাবিকারীও বটে)
নির্ক্ত হন। এই পদ তিনি ২৫ বংসর অলহত করিয়াছিলেন।

বকাপষের অবাক হিপাবে অয়তলাল অধ্যদম করিয়াছিলেন যে, উপযুক্ত নাট্যগ্রছের অভাবে কোন হলালয়ই
স্টুভাবে চলিতে পারে না। তাই ভিনি নব নব নাট্যগ্রছ
রচনা করিয়া হার বিষেটারের সে অভাব বহলাংশে পূর্ব
করিয়ছিলেন। 'নশীরাম' অভিনয়ের অল্প দিন পরেই হারে
'সরলা' অভিনীত হয়। 'সরলা' ভারহনাধ পদোপাধ্যায়রচিত 'স্বলতা' উপভালের অয়তলাল-ফুত নাট্য-রূপ। ইহার
অভিনয় কিরূপ সাকল্যমন্তিত হইয়াছিল, সেকালের পাক্ষিক
'অম্পদানে'র নিয়েছত মন্তব্য হইতে তাহার আভাস পাওয়া
যাইবে :—

"প্তার কোম্পানী সময় বুকিয়া—লোকের রুচির প্রতি সঞ্চা क्तिया नाहेक-हित्यव छैरवर्ष (प्रवाहेट्ड अधनव स्टेलन। কোম্পানীর সুযোগ্য অধ্যক্ষ ত্রীয়ত অহতলাল বস্থ মহাশহকেও यश्याम ना विदा पाका यात्र मा : जुलानिक 'वर्गनणा' देशशाम হইতে ভিনি বেশ দক্ষতার সহিত "সরলা"-চরিত্র নাটকাকারে क्षर्राष्ट्रिक कविशास्त्र । बर्णाव ८०४, श्विरवारमञ्जूष अवन কিছু মন্দীভূত হইতে চলিল। যে অভিনয় দৰ্শনে আগুহারা হইয়া অন্ততঃ কিছুক্ৰের ভ্রুও মন তগরত ভাবে বিভার হয়. ৰাছা দেৰিয়া মুগপং বিস্ময়, হৰ্ব, শোক, ক্ৰোৰ, বীভংস প্ৰভৃতি রনের আবিষ্ঠাব হইয়া থাকে, সেই ত অভিনর, দেই ত নাট্য-চিত্র। উপস্থিত 'সরলা' নাউকের অভিনয় দেবিয়া আমরা দে আশার সম্পূর্ণরূপে চরিভার্থ করিয়াছি। ই**হার কাহার্কে^{শিক}** কেলিয়া কাছাকে পুৰ্যাতি করিব গু---এ অভিনয়ে, সমাজের शासके देशकास प्रदेश जिल्लास (काम मान्य मार्ट) अरे অভিনয়ে আমরা কায়মনবাক্যে কোন্পানীর মদল প্রার্থনা कति।" (७० (नर्ण्डेचर, ১৮৮৮)

রকালরের উপযোগী নাটক রচনা সম্বন্ধে অমৃতলাল কিরুপ সন্ধাগ ছিলেন, ১৮১৫ সনে ঢাকার কালীপ্রাসন্ন বোষকে লিখিত তাঁহার একধানি পত্তে তাহার পরিচয় পাওয়া যার। পত্রথানি এইরূপ:—

"পরম প্রকাশেদ স্থাবরেয়,— …একবামি নৃতন নাটক শীগ্র নিবিতে হইবে একট খতান্ত চিন্তিত আছি। শেব নৃতন নাটক 'চজ্রশেশর' ও শেষ নৃতন প্রবদন 'একাকার' সাধারণের বিশেষ গভোষ বিবাম করিবাছে। এবার যাহা অভিনীত হইবে তাহা উচ্চ পুত্তকর অপেকা অদরপ্রাহী হওরা চাই। কলিকাতার দর্শকের নিকট নাটকের এগাঙৰ এইরপে বিচার হুইখা থাকে—কচুরি কচুরির মত ও রসগোলা রসগোলার মত অবাহু হুইলে হুইবে না। কচুরির পর রসগোলা আহার করিলে রসগোলার লববছের অভাবের অভিযোগ হুইবে এবং ঐরপ রসগোলার পর কচুরি দিলে কচুরির ভিতর শার্কর রস নাই বিদ্যা ভোজা মুব বিকৃত করিবেন। অনঙ্গতি হুইয়া চির-অভান্ড প্রধায় দ্যাময়কে বলিতেছি "হুরি –লেখনীতে আসিয়া অবতীর্ণ হুও —নাভির্গতিরবাধা।… ২ হৈটে ১০০২ ('ঢাকা রেভিউ ও স্থিলন্দ্র,' কার্ডিক ১০২৮)

অধ্যক্ষণে অয়তলাল টার রলমকে কিরণ নিরম-পৃথলা ও সংঘদের উচ্চ আধর্ণ স্থাপন করিয়াছিলেন, অপরেশচক্ষ মুখোপাধ্যায়ের ভাষার ভাষার বর্ণনা করিভেছি :---

"রলালয়ের অব্যক্ষ ছিলাবে অয়তলালের তুলনা নাই।
তিনি নিয়ম ও নিঠার বলে বিয়েটারে সর্ব্যবহুষের
উচ্ছ্মুখলতাকে নিবারণ করিয়া উচ্চার পরিচালিত প্রার বিষেটারকে এক সমরে আদর্শ বিষেটারে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিলেন। আয়মর্যাদা অক্র রাবিয়া, কি ভাবে বিষেটার
চালাইতে হয়, অতীত প্রার বিষেটার তাহার সাক্ষা। আমি
নিকে তাহার সময়ে প্রারে কায় করিয়া দেবিয়াছি, এমন অপুর্বা
নিয়মাম্রবিভিতা, এমন শৃত্যলাবছ কার্যপ্রশালী, পুঁটনাট
প্রত্যেক বিষয়ির প্রতি এমন অ্র দৃষ্টি, এমন ব্যবহার কৌশল
আর কোর্যায়ও দেবিয়াছি বলিয়া মনে হয় না। একাদিজমে
গ্রায় প্রতিশ বংলরকাল এই ভাবে বিষেটার চালাইয়া অয়্তলাল বিষ্টোবের কর্বরায়্য পরিত্যাগ করেন।" ("অমৃতলাল":
মাদিক বত্নমতী," প্রাবদ ১৩০৬)

এই প্রসঙ্গে কাণীপ্রসন্ন খোষকে গিৰিত অনুতগাণের একবানি পত্রও উদারযোগ্য। তিনি গেখেম :---

শ্রমঞ্জান্দদেয়,— একণে সংক্ষেপে এই মাত্র বলিতেছি যে আমি যদি আমার ব্যবদারকে — সম্প্রদারকে গুলা করিব, তিবে অপরে কেন সম্মান করিবে ? কর্নদীয়রের অপার কর্রণার আমার অটল নিবাস আছে, তাঁহারি পুণার আসনার ভার সাহিত্যগর্গনের প্রভাকরকে স্ক্রদর্মণে আমার অইবনে আলোকপ্রদানের ভঙ লাভ করিয়ছি। আমির্বাদ কর্মন্থেন আমি বিশুদ্ধ বাক্রির প্রায় হিব বিশ্বেটারের নাম হইতে বিশ্বেটারের ক্রম হোচন করিতে সমর্থ হই। সোঁভার দল বা বিশ্বেটারকে গুণা দেবান বাহাদের সাহ্রিত অভিত, ভাহারা তির অপর সমন্ত উচ্চ সম্প্রদারের নিকট প্রার বিশ্বেটার এক্ষনে সাবারণ বিশ্বেটার অপেকা স্পৃথলাসন্দার বিশ্বভাবে পরিচালিত মার্টালালা বলিরা সাদ্রের পরিচিত হইয়াছে। তাহাভিলায়ী— অন্ধ্রত। " গোকা রিভিট ও সম্মিলন," মার্থ ১৩২৭)

নার্দ্ধ শতানীরও অধিক কাল রলালরের সহিত সংশ্লিই থাকিয়া অন্বতলাল নানা ভাবে ইহার কল্যাণ সাধন করিয়া গিরাছেন। সাধারণ রলালয়ের প্রথম বুগে অভিনেতা ও রলালরের নামে লোকে নাসিকা কুঞ্ন করিত। অন্বতলাল 'অন্নত-মদিরা'র লিবিবাছেন :---

নিজ-প্রিবার-মাবে বিরক্তিকারণ।
কুট্ছগমাজে লক্ষা মিলার ভাজন ।
দেশের দলের পালে শ্লেষ ব্যক্ত ইাসি।
স'রে গেছে বাল্যপথা ভাজ্ঞিল্য প্রকাশি ।

অভিনেতা ও জনসাবারণের মধ্যে সেই অবাঞ্চিত ব্যবধান দ্রীভূত হইরাছে। এই সংযোগ-সেতু সংগঠনের মূলে অনুভলালের প্রভাব বহু কম ছিল না।

चटनी चाटनावन

অন্বতলাল স্বদেশপ্রেমিক ছিলেন; বলতল-আন্দোলনের সময় আমবা উচ্চাকে সুরেজনাথের সহিত কর্মক্ষেকে অথতীর্ণ দেবি। তিনি বঞ্চাদিও করিয়াছেন; উচ্চার ব্যক্তিতা-শক্তি ছিল। বলতল-আন্দোলন উপলক্ষে (ইং ১৯০৫) উচ্চার রচিত একটি পুশরিচিত গান উদ্ধৃত করিতেছি:—

(বাউলের প্র)

ওরা জোর ক'রে দের দিক না বঙ্গ বলিদান। আমরা রব অন্তর্মন, এক অঙ্গে মনের সদে মিশিবে প্রাণ।

আম্বা কাভ ৰাঙালী প্ৰেম-কাঙালী ---ভাৰচিস্ ভোৱা মন ভাঙালৈ,

ভানয়, জালিয়ে আগুন ক'রে থিগুল ব্যক্তিয়ে দিলি প্রাণের টান।

আমাদের চোৰ ফিরেছে মারের কুড়েতে, বিদেশী চিনির চেমে দেশের গুড়েতে,

আবার কর্বচেতে ছয়েছে ক্লচি, চাই নে তোধের লবণ দান। আখাদের ভাতের সলে তাঁত বজার বাক্, নাই বা দেখাই সাজের জাঁক,

ভোগের, ওই চক্চকান মধুর চাকে কর্বো না আর বিষ পান।

> ভোগের কাচের বাসন কাচের চ্ছি, কেপ্ৰো ভেঙে নেরে ভূছি,

ক'ৱে দেবতা সাকী খবের সন্মী শাঁধার আবার রাখবে মান। তোদের শাশে হ'ল আশীর্কাদ দুচ হ'ল মনের বাঁব,

এই, বিসংবাদে বদভেদে, আমরা হত্ম আবার তেজীয়ান্। পেরে মর্গ্রে আধাত, কর্গ্রে হাত বাক্যি হেডে দেবে বুরিমান্।

শ্যামবাজার এ. ভি. স্কুল

"অন্বতলাল ছিলেন শিক্ষকের পুত্র এবং তিনি নিকেও ছিলেন আজীবন শিক্ষক—কি সমাজে, কি রলালতে, কি বিদ্যালয়ে। সেইজ্ছ সকল শিক্ষাপ্রতিষ্ঠানের প্রতি তাহার প্রদালয়ে। কেইজ্ছ সকল শিক্ষাপ্রতিষ্ঠিত এবং তাহার বাল্যশিক্ষাহান প্রাথবাকার এ. ভি কুলটর প্রতি তাহার বেহজালবাসার অন্ত ছিল না। তিনি দীর্থ বাইল বংসরেরও অবিক কাল এই বিদ্যালয়টর প্রবাহ সহকারী সম্পাদক এবং পরে সম্পাদকের পদে অবিষ্ঠিত ছিলেন। বস্তুত: তাহারই বড়ে এবং চেষ্টার এই পুরাজন মধ্য-ইংরাজী বিভালয়ট উচ্চ-ইংরাজী বিভালয়ে উন্নাভ হয় এবং নিজম্ব পুছে স্প্রতিষ্ঠিত হয়য়া আলর্গ বিভালয়ে ইন্নাভ হয়। এই বিদ্যালয়টকে স্প্রতিষ্ঠিত করা অমৃতলালের শেব জীবনের কীন্তি এবং ইহার জ্মীক্রম্ব এবং বাটীনির্মাণ উপলক্ষে তিনি তাহার অভাভ সহকর্ম্মণবের সহিত জনসাবারণ এবং স্বর্গমেন্টের নিকট হইতে পক্ষাবিক টাকা টাদা সংগ্রহ করেন। ("অমৃতলাল বস্তু": ক্ষেত্রভূষণ বস্তু----'বিশ্বকোর,' ২য় সং.)

প্রতিভার সম্মান

অয়তপাল ধেশবাসীর প্রছা ও প্রীতি অর্জন করিয়াছিলেন।
দেশের অর্থ্যন-প্রতিষ্ঠানগুলিও তাঁছাকে সন্মান প্রদর্শন করিতে
ক্রুটি প্রদর্শন করে নাই। ১৩৩০ সালে (ইং ১৯২৩) বলীয়সাহিত্য-পরিষং তাঁছাকে অঞ্চতম সহকারী সভাপতি নির্বাচন,
প্রবং ১৯২০ সনে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয় তাঁছাকে 'কগভারিই
কর্বপদক' দান করিয়া গুণেরই সমাদর করিয়াছেন। তিনি
১৯২০ সনে বলীয়-সাহিত্য-সন্মিলনের ১৬শ অবিবেশনে
(নৈহাটী, ৮-৯ আয়াচ ১৩৩০) সাহিত্য-শাবার সভাপতি, ও
১৯২৬ সনে ১৭শ অবিবেশনে (সিউজি, বীরভূম, ২০-২১ চৈত্র
১৩৩২) মূল সভাপতি মনোনীত হুইয়াছিলেন। রসরচনার
অংশে তিনি রদেশবাসীর নিকট "রসরাক" মাথে পরিচিত
ছিলেন।

মৃত্যু

৭৭ বংগর বয়সে, ২ জুলাই ১৯২৯ (১৮ আঘাচ় ১০০৬) ভারিবে অমৃতলাল পরগোক্ষমন করিয়াছেন

রচনাপঞ্জী

রচিত প্রস্থ | — অমুভলাদের এখাবদীর একট কালাছ-ক্রমিক তালিকা দিতেছি। তালিকার বছনী-মধ্যে যে ইংরেজী প্রকাশকাল দেওরা হইয়াছে তাহা বেলল লাইব্রেন্নি-সম্বলিত মুদ্রিত-পুস্তক-তালিকা হইতে ধৃহীত।

্য। খীরকচূর্ণ নাটক। ১২৮২ সাল (১ জুন ১৮৭৫)। পু. ৬৮। কেটে ভাশনাল ২৫ ভিসেখর ১৮৭৫। প্রথম সংস্করণের পৃত্তকের আধ্যাপত্তে গ্রন্থকারের নামের ছলে "By an Actor" বুলিভ ছিল।

২। চোরের উপর বাউপান্ধি (প্রত্মন)। ১২৮৩ সাল (১১ নবেম্বর ১৮৭৬)। পূ. ৩৪।০০বেট চাশনাল ১৮৭৫।

ত। ভিনতর্প। (৪ কানুয়ারি ১৮৮১)। পু. ৪৩।

৪। অস্পীলা (নাট্যরাস্ক)। ১২৮৯ লাল (৩০ নবেশর ১৮৮২)। পূ.২৩।

১। ডিস্মিশ (প্রহ্মন)। ১২৮৯ সাল (২০ কেজয়ারি ১৮৮৩)। পৃ.৩১।…বেদল ১২৮১।

৬। চাটুজো ও বাঁগুজো। ইং ১৮৮৪ (१)।…ইার ১৬ এপ্রিল ১৮৮৪। ১৩০৪ সালে 'ব্রক্সীলা'ও 'চাটুজো ও বাঁগুজো' একত্রে প্রকাশিত হয়।

৭। বিবাহ বিজাট ১৯৯১ সাল (৯ ভিলেম্বর ১৮৮৪)। পু. ৬৯।--- ত্রার ১২৯১।

৮। নিমাইটাণ (গল)। (২২ সেপ্টেম্বর ১৮৮২)। পূ.২৪। ১। ভাজেব ব্যাপার (সাভিরজ)। ১২১৭ সাল (২ আবাই ১৮২০)। পূ.৩০।

১০। তরংবাল: (সামাজিক নাটক)। ১২৯৭ সাল (২ কেজয়ারি ১৮৯১)! পু.১৪৭ ৮-- টার।

১১। বিলাপ । বা বিভাসাগরের কর্গে আবাহন। ১২৯৮ সাল (২২ আগষ্ট ১৮৯১)। পূ. ২৮।… ট্রার ৬ জার ১২৯৮। ১২। রাজা বাছাছর (সং—রং)। ১২৯৮ সাল (ইং ১৮৯২)। পু. ৪৮।… ট্রার বছদিন ১৮৯১।

১৩। कालाभानि वा हिन्दुग्रास्त्र मध्य योजाः। ১२>> नाम (हेर ১৮२०)। १. ৫১। ... होत ১১ भीय ১२२२।

১৪। বিষাতা বা বিজয়-বসন্ত (পারিবারিক নাটক)। ১০০০ দাল (ইং ১৮৯০)। পূ.১৫১:--- ষ্টার ১১ ভাল ১০০০। ১৫: বাবু (সামান্ধিক নশ্মা): ১০০০ সাল (২৭ কান্থ্যারি ১৮৯৪)। পূ.৯১:--- ষ্টার ১৮ পৌষ ১৩০০।

১৬: একাকার। ১০০১ সাল (১৯ কাসমারি ১৮৯৫)। পু. ৯৫:--জার ১১ পৌষ ১০০১।

১৭: বৌ-মা (সামাজিক নক্সা)। ২৫ পৌষ ১০০৩ (১১ জাপুরারি ১৮৯৭)। পূ. ১০০ (০০ ষ্টার ১১ পৌষ ১০০৩।
১৮। জবলাবল (উপভাস)। (২৭ জাগই ১৮৯৭) পূ. ১৬২।
১৯। চকলা (উপভাস)। (২৭ জাগই ১৮৯৭) পূ. ১৬২।
২০। প্রামা-বিভাট (সামাজিক নক্সা)। মাধ ১০০৪।
(২ ফেক্সরারি ১৮৯৮)। পূ. ১১৫ ০০ শ্রীর ১৮ পৌষ ১০০৪।
২১। সাবাস জাটাশ (নক্সা)। জাবিন ১০০৬ শ্রিক্ট ক্রেম্বারি ১৯০০)। পূ. ৬৫ ০০ শ্রীর ৭ জাবিন ১০০৬।

২২। কুপাৰের ধন (প্রযোগ-প্রেছসন)। ১০০৭ সাল (৯ জুন ১৯০০)। পু. ৮০। কেঃর ১০ জৈঃই ১০০৭।

২৩। আদর্শ-বঙ্গু (নাটক)। বৈশাৰ ১৩০৭ (৫ আগষ্ট ১৯০০)। পু. ২১৪ !--- ষ্টার ১৬ বৈশাৰ ১৩০৭।

২৪। যাছকরী (প#রং)। ১৫ পৌষ ১৩০৭ (৩০ কাশুরারি ১৯০১)। পু. ৭৮ ।--- ষ্টার ১০ পৌষ ১৩০৭।

২৫। বৈজয়গু-বাস। মাথ ১৩০৭ (২ কেজয়ারি ১৯০১)। পূ. ১৭।…ইার। মহারাণী ভিট্টোরিয়ার খর্গ-সমন উপলক্ষে লিখিড।

২৬। নৰজীবন (মাতৃপুজা ও রাজতজ্ঞির উচ্ছানপূর্ণ একার

सांग्रेजीला)। ১७०৮ जाल (२६ सार्ठ ১৯०२)। शृ. ७६। ---डोब ১ चाल्याबि ১৯०२।

২৭। অবভার (প্র-পরা-অপ-সং-হসন্)। মাদ ১৩০৮ (২ এপ্রিল ১৯০১)। পৃ. ৯০ + ১ ৷ ে ট্রার ২৫ ডিসেম্বর ১৯০১। ২৮। অমৃত-মদিরা (কবিভা)। কার্ত্তিক ১৩১০ (২০ অক্টোবর ১৯০৩)। পৃ. ২৯০।

২৯। সাবাস বাসালী (সামাজিক মক্সা)। ১৩১২ সাল
(২৮ জানুবারি ১৯০৬)। পু. ৬২। তের ১০ পৌধ ১৩১২।
৩০। অয়ত-প্রহাবলী, ১—৪ জান। ইং ১৯০৬-৭, ১৯১১
(বহুমতী)। প্রহাবলীর ১ম জানে বৃদ্ধিত 'হরিশ্চন্ত্র' নাটক
(জাল ১৩০৬, পু. ১২৪) প্রকৃতপক্ষে নৃত্যানোপাল রাম কবিরন্থের রচনা; উহা "প্রজ্ময়তলাল বস্থ কর্তৃক প্রকাশিত"।
প্রহাবলীর ২য় জানে মুদ্রিত নাট্যরাসক 'সতী কি কলফিমী বা
কলক-জন্মন' নগেল্পনাথ বন্দ্যোপাব্যাহের রচনা। এই চুইটি
মাট্যপ্রছ অয়ত-প্রহাবলীর অজ্বর্ভুক্ত করা সমীচীন হম নাই।
এই প্রস্কেশ শনিবারের চিটি' আহিন ১৩৫২ ও কার্ত্তিক ১৩৫৪
স্কেইবা। চতুর্ব জানে মুদ্রিত 'সম্মতি-সফট', বিরাট মুহন্দতি,
বাহবা বাভিক ও আরও করেকটি রচনা সাময়িক-পত্রের পূঠা
হইতে পুনর্দ্রিত। সম্মতি-সফট মুর্গদান দে-সম্পাদিত 'মুক্রলিস'
প্রের ১ম বর্ষে (মার ও কান্ধ্রন ১২৯৭) প্রকাশিত হয়।

৩২। খাস-দখল (মাট্টালীলা)। १ (২৮ এপ্রিল ১৯১২)। পু. ১৪৩।---টার ১৭ চৈত্র ১৩১৮।

৩৩। নৰ-যৌবন (নাটকা)। ? (১৫ কেজয়ারি ১৯১৪)। পু. ২১১।--মিনার্ছা ২০ ডিসেম্বর ১৯১৩।

৩৪। পুৱাতন প্ৰসল, ২য় পৰ্যায়। ১৩৩০ সাল (১ ভিলেম্ব ১৯২৩)।

বিশিনবিছারী এপ্ত এই পুডকের ৬০-১৩৬ পৃঠার ১৩২২-২৩ সালে অন্বভলাল কর্তৃক বিবৃত খুভিকবা লিপিবছ করিয়াছেন। ৩৫। বিষরুক্ষ (নাট্য-রূপ)। १ (২৩ মার্চ ১৯২৫)।

ण्ड । विश्वत्रक (नामा-क्षण)। १ (२० माम ३०२४) मृ, ३०३।

৩৬। চন্দ্রশেশর (নাট্য-রূপ)। ? (১৫ সেপ্টেম্বর ১৯২৫)। পু. ১৭২।

৩৮। কৌছুক-যৌছুক (নরা ও গল)। ১৩০০ সাল (১২ জুন ১৯২৬)। পূ. ২৫৬।

হচী:—আবের ব্যধান, পভিত ডাক্ডার, কৌলিক ছর্গোৎলব, পারদা-মদল, বোদ্-দা, বিভা "অব্ল্য বন," রক্ষার আনন্দ,
মাড্ডক্ডি, গৃহিনী গৃহমুচ্যতে, বিশ্বকর্ষা পূলা, কবির ভাব
এনেত্রে, হিন্দুর মব নামকরণ, যন্তীর প্রভাত, প্রতাপের গল,
উমাকান্ডের গল, গো-গোলযোগ, ইলিশ, নলের নব কলেবর,
বিষ্ম সমস্তা, আগমনী, বিরেটারের শিশু, প্রেমের আবেগ।

७৯। व्यानिका-विषाद (अध्याप-अध्यम)। १ (३९ ১৯२७)। शृ. ৮२।...सिमाकी २४ चावाह ১७७७। ৪০। ঘদে মাতনম (হাজোংসব)। কার্ত্তিক ১৬৩৩ (১৭ মবেমর ১৯২৬)। পৃ. ৫০।…ধ্রীর ২৪ কার্ত্তিক ১৩৩৩। ৪১। মাজসেনী (নাইক)। জ্যৈষ্ঠ ১৬৩৫ (ইং ১৯২৮)। পৃ. ১৭৬।…মিনার্ডা ২২ বৈশাধ ১৩৩৫।

[মৃত্যুর পরে প্রকাশিত]

৪২। ভগৰাৰ জীত্ৰীয়াম^ককদেবের বাল্যলীলা (কাব্য)। ১৩৩৬ লাল। পৃ. ৪১।

পুত্তকাকারে অপ্রকাশিত রচনা।—পুরাভন সাময়িক-পদ্রের পৃষ্ঠার পুতকাকারে অপ্রকাশিত অমৃত্তনালের বহু রচনা আয়গোপন করিয়া আছে। এই শ্রেণীর রচনার নির্ভরবোগ্য তালিকা 'সাহিত্য-পরিষং-প্রিকা'র (৫৪ শ বর্ষ, ১ম-২য় সংখ্যা) এইবা।

অমৃতলাল ও বাংলা-সাহিত্য

নাট্যালয় ও রক্ষকের সহিত অভিনেতা হিসাবে প্রত্যক ও धनिश्रेष्ठात्व शुक्तः वाकिशः त्य पूरे वन भावक वारमारमण সাহিত্য-बार्गाण अर्कन कविशाहन, अञ्चलन छौराय्य ব্দন্তর। অপর কন মাট্যসঞাট্ গিরিশচল্ল-ভর-পৌরবে শাষ্ট্যসাহিত্যে প্ৰভিষ্টিত হইলেও সাধারণ সাহিত্য-ক্ষেত্ৰে তিনি অমুভলালের মত যশসী হইতে পারেন নাই। যাহাকে চৌকস বলা যায়, অমৃতলাল ভাহাই ছিলেন। কি প্ৰবন্ধে কি কবিতায় অমাবিল হাস্তে ও ব্যক্তে ও সরস রসিকতার তিনি একটি বিশিষ্ট আসন অধিকার করিয়াছিলেন—নাটক-প্রহসনের খ্যাতি ভ ছিলই। 'অয়ত-মধিৱা' প্ৰভৃতি প্ৰছে তিনি বে-কাতীয় ৱস পরিবেশন করিয়াছেন ভাহা অভুলনীর। ভাঁছার এই রসের বহু বচনা এখনও সাম্বিক-প্রের পৃঠার আত্মগোপন ক্রিয়া আছে ; সংগৃহীত হইয়া একত্ৰ প্ৰকাশিত হইলে আমৱা অমৃত-লাহিত্যের ধধাষৰ মূল্য নিরূপণ করিতে পারিব। 'বিবাহ-বিজ্ঞাট' ও 'ৰাবু'র অমৃতলাল এককালে যেমন বদীয় জন-সাধারণের হাদর কর করিয়াছিলেন, ব্যাদ ও হাভারসিক অয়ত-লাল ভেমনই স্প্ৰকাশিত হইলে বৰ্তমান ও অনাগত বাঙালী রসিক স্থাত্তে মর্ব্যাদা লাভ ক্রিবেন। রদমকের সহিত ওতপ্রোভভাবে বৃদ্ধিত হইয়াও তিনি সুবী সাহিত্যিক সমাব্দের একজন দিক্পাল হিসাবে নিজেকে প্রতিষ্টিভ করিভে পারিয়া-ছিলেন ঋণু তাহার বহুষ্থী প্রতিভার বলে। 'যৌতুক-কৌতুক', 'অমৃত-মদিরা' প্রভৃতি হইতে চিরজীবী অমৃতলালের প্রতিভার वह भिष्मिंग मिणिद्य ।

শরণাগতা

শ্রীস্থার সেনগুপ্ত

আধনাৰতি কাপভ্ৰানা পেয়েই ঠোটবানা একটু বেঁকিয়ে কিব্
করে ব্যেন কেলল। বিজ্যের গর্মেও পূত্ন পূর্বার লাভের
আনন্দে গ্রগার ক্রণাই বলে—নাচের শেষের দিকটার
গাঁওতালী চঙে পা-টা এগিরে বৃস্চিটা মাধার চারদিকে ঘুরিয়ে
এনে ঘ্যনি সামনে রাধল্য অধনি চাক-চোলের বাজনার
সক্ষে পড়ে পেল হৈ হৈ রব। গেজবার্ বসেছিলেন
পালেই একটা ইজি-চেয়ারে, কাণভ্রানা ছুড়ে দিলেন আমার
গাঁরে।

আয়নামতির বহ দিনের সাধ টকটকে লাল শাভীর একটা বোমটা মাধার টেনে পাড়ার বিজ্ঞার দিন ঠাকুর দেবতে যাবে। তাই বামীর পরে প্রকার একবার বুকে চেপে ধরে, আবার দ্রে রেবে চেমে বাড়ে, আবার নাকের কাছে এনে গও তাঁকতে বাকে। সামার প্রতিযোগিতার সাক্ষ্যা ও মৃতনের পর তরে দিয়েছে তার অপ্তর। আরনামতি ফুপাইর বা কাব বেকে গামছাটা টেনে নিরে ক্লান্থ খামীর মিশমিশে কাল গারের ওপরের শিলিরবিশুর মত খামগুলো পুঁছে দেয়, এগিরে দেয় হঁকোটা, আর কল্কেটাতে নিয়ে আনে করেক বও টকটকে লাল কাঠকরলার আন্তন। কলকের আন্তন মুঁয়োতে আরনামতির নিটোল গালের উপর পড়ে তার ভত্ত আতা, সেই কিন্কি হাসির রেশটুকু তবনও তার রক্তিম অবরে দেগেই আছে।

রূপাই । ইংকাটাতে টান দের, আর বলে, আগছে বছর দেবীর কুপা হলে নতুন নাচের চঙ দেবাব, বুবলি।

ন্বমীর শেষ আরভির সঙ্গে সঙ্গে অবিরত চাক-ঢোলের श्वभिष्ठ अकृष्टे। निश्चक्रजात यवनिका क्लाइ। अहे नश्चीत বাঝির নীরবতা ভব করছে গুরু ভারেই একটা প্রতি-ধ্বনি। আবিনের শেষ। আয়নামতি শত ছিল মাছ্রটার छेनत चाष्ट्रांट देकि त्यांकै। कांबाबामा विधित्य क्रिल । अक प्रत्यत পুঞ্জীপুত মুম্বলা যেন ভাকে বেশ প্রম করে রেবেছে। শিয়রে চটের লখা বালিশটার তৈলাক্ত ময়লা কমে কেলভেটের মতই চিক্চিক্ করছে। ভারই উপর আধ্নামতি ও রূপাই ক্লান্ত দেহ এলিয়ে দিলে। কি এক আনশ্ব-প্রবাহ তাদের হুম আৰু কোৰায় ভাগিষে নিয়ে গেছে। জেগেই আৰু দেখছে ভারা পুৰের খগ্ন। সুবের রাণপুরী গড়ে, ভাঙে, আবার গড়ে, যে সুবের ইয়ারত গড়ে উঠে সমান ভাবেই ধনীর পালকে আর দ্রিদ্রের জীৰ কছাৰ। বিগত বাধলের শেষ বৰ্ষণ মরের ছাউনির খাবে যাবে কতকটা অংশ উভিয়ে নিয়ে গেছে, তাই এই সুৰ-খন্তে বিভোৱ ছুইট প্ৰাণীর খন্তক্ষণ ভূনবার ক্ষেত শরতের ৰওমেধের কাঁকে কাঁকে টাল এলে উকি দেবার ক্ষোগ পায়।

বানিক পরে আকাশের বওবেধ যবন বরে চলে যার,
সুকুত্তি জ্যোৎসা এসে বিছয়ে দিয়ে যার শতকীর্ণ মলিন
বিছানাধানা চেকে একধানা এপালি বেমারদী। আরনামতি
ও রুণাই প্রকৃতির এই অষ্ণ্য সম্পদের অভ্যাত ম্পর্শে ঘুমিয়ে
পতে।

পুগভানধীর চর । নদী বেকে বহু দূরে ছোট বরধানি।
চরের উপর সুদ্ধপ্রসারী বানের কেত। নদী সেবানে পূর্বা থেকে দক্ষিণে বেঁকে সিয়েছে। ওপারের অনেকবানি বাশুভট যবন অপরাহের আভার রঙীন হরে উঠে সুগভানদীর ভরফের উপর লক্ষ মাণিক ছভিরে দেয়, এপারের ছোট কুরির-প্রাক্থের ভূলগীতলায় ভঞ্জি-প্রদীপটি ভবন ভার সফে দৃটি বিনিমর করে। প্রতি বছর মা-লগ্নী এই স্থবিভীর্ণ বানের ক্ষেত্রে সোনা কলিয়ে দিয়ে বান।

ক্ষির মালিক চৌধুরীরাই। রূপাই তার কতক অংশে চাম্বাস করে। রূপাইর ধরের ভেতর থেকে ঠিকুরে পণা আলো ধৌকারোহীদের দিক নির্পন্ন সাহায্য করে। গরীব রূপাইর চালাবরবানি চাধীদের বিশ্রামন্থল, শ্রাপ্ত কিষাণদের তামাক বাবার আভা। ধরের অভ্নত মাটর দেয়াল থেকে মাট পড়ে বিশ্বে বালের কলি বেরিয়ে পড়েছে। ছাউনি বানিকটা বছকুটার, বানিকটা শুকুনো পলাপাতার ঢাকা। ধরের বাইরে অগুরেই তুলসীয়ক। প্রতিদিন সকালে আয়নামতি একটা বা ছটো করবী নিয়ে তুলসীয়কে প্রণাম করে। বাছীতে করা ও করবীর গাছ অনেক। কোনো বিশিপ্ত সুগত্ত কুলের কৌলিভ সেবানে অলমতার স্কি করে নি। পালের বাছীর মুরলা পিনি রোক ভালা ভরে করা ও করবী নিয়ে যায়, বলে, ভোর শাবা-সিন্ধ অক্ষর হোক করাভি-বেন, আমার ঠাকুরিয়াত পুলার সূক্ত যে তোর এবান বেকেই হচ্ছে।

ভোৱে উঠে কণাই শাভাভাভ বেয়ে এক ছিলিম ভাষাক
টেনে ৰাঠে যায়, আয়নামতি বাঁ হাভে ভার লাল শাভীর
বোমটাটি ঈয়ং টেনে অপলক দৃটিতে চেয়ে বাকে য়পাইর
বিকে য়ভজন মা লখা লখা বানের শীমগুলো ভার সর্কাদ
চেকে দেয়। ক্রণাই ছপুরে ঘর্মাক্ত হয়ে কাভে হাভে ফিয়ে
আসে, আয়নামতি ভাঙা ভক্তাবামা এগিয়ে দেয় বসবার জ্ঞ,
ভামাক গেকে আনে, হাভে বাভিয়ে দেয় য়ুবে নল-লাগান
দভি বাঁবা ছোট ভেলের শিশিটা। ক্রমন্ত বা ক্রপাইর পায়ের
ও পরের কুলে-ওঠা শিরাগুলোর ভেল রগভে দেয়। বাওয়াদাওয়া শেষ হলে স্পাইর পালেই হেঁছা মাছ্রটার একটা

অংশ বিছিল্পে আন্ধনাৰভিত ভাৱে পাছে, নদীর তথার থেকে ছাত্তরা এলে চামর বুলিরে ধিরে যার।

রূপাই বিকেলে আর মাঠের কান্দে যার না। চৌধুরী বাজীর ছেলে মহলে ভার আসর কমে। পিপলিভার লাঠিবাল-দের গল, বাধনারার মগনুভা, রামনগরের হালফ্বাইন্দ্রীর নাচ, এই ভার গল্পের উপকরণ। ছেলেদেরও ক্তৃতি উচ্ছল হয়ে ওঠে ভবন থবন রূপাই-করাভি ভালের সাভ্য আসরে নামকের পদ নিয়ে বগে। গল্পে রূপাই কল্পক্রণ। চাহিদা মাক্ষিপ্র ভার মূবে লেগেই আন্তেন।

পুৰা এলে সনচেয়ে বেশী সাড়া পড়ে চৌরুথী-বাড়ীর ছেলেমছলে। প্রায় জিন মাস হ'ল মিলিটারী এনে মাঠের আর্দ্ধেক ইকারা নিয়েছে। গ্রপাইর মাঠের কাক আর নেই। ডাই এবন বেকে ছ'বেলাই ক্রপাইর আক্রে। ঐ ছেলেদের জ্বেরে। গেল বছরে আর্হির নাচে লে পেয়েছে লাল টুক্টুকে লাঙ়ী। তার রং ভার সন্ধ লে আক্রে জোলো নি। এবারের পুকার লে দেখাবে নুজন চঙ্কের নাচ। তাই ছেলেন্দের আসরে ভার গল্পের প্রবাদ বিষয় বিভিন্ন পাড়ার নুভাঙ্কদী ও ভার দোষক্রটী।

ওপাছার কাল্ নশীর দশ বছরের ছেলে নেচে নেচে বাজায় বৈশ—কিন্তু সে একটু তালকানা, ছোটু, সান্-দাসের সাঁনাই— ভন্তেই যেন জাপনা থেকে পা নাচতে মাচতে চলতে থাকে, কিন্তু মে ঘণন কের দম নেবার জঙে হাঁণ ছাড়ে তবন তাকে বেহুছ বেরসিক বলেই মনে হয়। হারান ঢাকি ওভাদ বটে, কিন্তু এই রূপাই-করাভির নাচের সলে ক্রুত চলতে পারে না —বুছো কিনা,—ভাই ভার ছাভ কাঁপে। সবচেয়ে জমিয়ে রাখে জমরী নটের কাঁপর বাজনা। বুকের উপর কাঁসরবানা রেখে ঘণন হাঁতের এক পাট বার করে ভাইনে বামে মাণাটা হেলিয়ে ছলিয়ে ৮ং চং করতে থাকে, তবন একেবারে বেভালা বুছো হন্দ ঠাকুরও তাঁর চুণকাম-করা পাকা দাছিতে ভাল বরতে থাকে।

- কণাই এই সব গন্ধ করে। আর মাবে মাবে তার প্রশন্ত বুক্থানার গভীর গহ্বর থেকে বেরিয়ে আদে ঋহছে-পড়া এক একটা দীর্ঘদাস, তার চোথের সামনে ভেগে ওঠে আরনামতির ক্লাগসার দেহ। আরনামতি মালেরিরায় ভূগছে আড়াই মালের বেনী। যথন তার অর আসে, সে মোটা কাঁথাথানা গারের 'পর কেলে দিরে রূপাইকে বলে ভার পরে চেশে বগতে। এ কাঁথাথানা যেমন লক্ষা নিবারণের সম্বল তেম্বনই অরেরও মহোষ্ট্র।

পেল বছবের চৌধুবী-বাজীর পুরস্কারের শাজীধানা এক বছরে এনে ছিয়জির হরে মাত্র শাজাই হাতে দাঁভিয়েছে। ক্রপাই যধন পেই ভাকভাটুকু পরে চৌধুরীদের বাজী যার, আয়নামতি পরে ধাকে ধরের ভিতর কাঁধাধানা ভভিরে। কিরে এলে, क्षभाष्ट्रिक कैंग्बाबामा बिट्य के शाक्कांच मध्या मिवाइन कट्ड বাইরে চলে আলে। আর্নামতি নিকেকে দিনের আলো (बरक पूर्व (नानवणाव गाका पिरव वाबरण गाव। गामिनी রাভ ভাঙা বেড়ার কাঁকে কাঁকে ভাকে পুঁজে বেড়ার, আরমা-মতি বেছার কাঁকে মুধ রেধে নীরব ভাষায় তাকে মনের কত বেদনা জানায়। কিছ দে খেন ভার প্রতিহানে পায় ভব্ বাঙ্গুপরিহাস। ভাই ভার ভাগ লাগে অমানিশার শ্বাট আঁধার। অঙ্কার যেন ভার কভ শাপনার। জেহমরী মাথের মভই সে নিজের আঁচল দিয়ে সন্তানকে ঢেকে রাখতে চায়। ভাই গভীরভর রাত্রে আঁধার য়খন খনিয়ে আঙ্গে ভাৰন ভাকড়াখানা ভড়িয়ে ছায়ানৃতির মতই দে বাইরে চলে আলে, প্রতাহের কাঞ্টি শেষ করে আবার ভোরের আলোর আগেই ধরে চলে যায়। যে বিশ্ব-(भवण) अरे भगावकात शृष्टि करतरहम **डाटकरे निर्वा**मन करत মনে মনে প্রাণের ঐকান্তিক কৃতঞ্জা। সে দিন রাজে ছায়া-মৃতি দেৰে সনাতন মিখ্ৰী নামে এক পৰিক ভয় পেয়েছিল, সেই লক্ষা সেই ক্ষোভ গে আৰও ভূলতে পাৱে নি।

পূকা যতই কাছে আসে আয়নামতি ও রূপাইর প্রাণে আশার মূহ হাওরা বইতে বাকে। এ বছরের আরতি-প্রতি-যোগিতার শাড়ী যে তাগেরই প্রাণ্য। এই আশায় আয়ন -মতির শুঙ্গ পাতৃর মূখ রক্ষাত হয়ে ওঠে। তাই ৯পাইও চৌবুরী-বাড়ীর ছেপেনের সল্মাঞ্তে চায় না।

সেক্ষবাবু বাজী এসেছেন। পূকার আর চার দিন বাকী:
কলকাতা থেকে তাদের থছ আকাজিত পুরস্কার ত এসেই
সেছে। রূপাই বাজীতে বসে শুরু একটা বুসুচি নিয়ে হাত-পা
ঘুরায়। আরনামতির মলিন মুখে বরাস্পের মতই হুাসি কোটে।
মবমীর দিন রূপাই তার এক বছরের সঞ্চিত নৃত্যকলার ভাঙার
উজাভ করতে কার্পা করবে না। আরনামতির শীর্ণ দেহে
অভিয়ে দেবে লাল শাজী। হয় ত তার জীবনে এই শেষ
পুরস্কার। আঞ্চাল ও বিষাদে তার চোখের কোণে অলভরা
হাসির ক্ষীণ রেখা লাই হয়ে ওঠে।

আৰু নবমী। সকাল সকাল ত্ৰণাই ভাৱ চাক্চাৰানা পরিকার করে নিষেছে। আয়নামভির আৰু হু'দিন এর নেই। কাঁৰাৰানা থেকে মূৰ বার করে দেবে এপাইর নৃত্যজনী। আর ভাবে ভার খামী আৰু রাজে ফিরে এলেই সে ভার হাড় ক'বানা নুভন কাপড়ে চেকে একবার টেনে নিয়ে যাবে চৌধুরীদের ঠাকুর প্রণাম করভে।

দেশতে দেশতে রাত ন'টা হ'ল। ঢাকি চুলি সামাইদার সব হাজির। প্রথমে ছেলের দল ছোট ছোট বুফ্চি হাতে যুরে যুরে দেবীর আরতি করে। পরে আসে পাড়ার অভাত প্রতিযোগীরা। এইবার রূপাইর পালা।

ধুষ্চি ছাতে ত্ৰণাই আলৱে পা দিতেই চার্লিক থেকে উঠল হৈ হৈ বব। ত্ৰপাই প্রধানে বীর ভালে পা কেলভে नारक । एक एएक कावाब क्रक्शिय नरक करन रम हक एव । অপাই বুৱে কিরে চুই হাতে বুহুচি নিয়ে মুভ্য করে, বাগকেরা ভাকে বিৱে চারদিক বেকে মুখ্যুত বুনো চক্ষ ওপ্তল 'নিকেপ করে। রূপাইর হাভের ধুছচি থেকে ভালে ভালে ৰোষাৰ কুখলী উৰ্ছে উঠে ছড়িৰে পড়ে। ঢাক ঢোল কাঁগৰ चकीय नर्द ७ वय वयकाय छेन्द्रिनिए म् ७१-शामन पूर्वतः। ৰব্যে মধ্যে রূপাই অর্কনিমীলিভ চোৰে মৃভ্যক্তীতে মাধা শীচু করে ভক্তিভৱে প্রণাম জামার জাবার চুই চোব বিস্থারিত ক্ষরে রক্তাখরভূষিতা প্রতিহার দিকে অপলক দৃষ্টি নিবছ করে ৰাকে। হাভ্যমী দেবীপ্ৰতিমা লন্ধী, সরস্থী, কার্তিক, नर्भि परिवृष्ठ इत्य द्या मकरमद नित्त चानिम् वर्षे कत्रद्य । শাৰ্বে কল'-বধু ভাৱ চওড়া লালপাড় শাড়ীভে দেহ আরুভ করে দেছখাত খোমটা টেনে সলজ্ব থাড়িয়ে। আরভির হুওলাকৃতি থ্যে ও মুহুমন হাওয়ায় ভার ঘোষটার মুহু কল্পন ৰুভারত রূপাইর বুকে এক অপুর্ব্ব পুলকের শিহরণ ভূলছে। চাকি চুলির ক্লাভি আদে, রূপাইর ক্লাভি নেই। ভার এক वहरवन कम्बल भर कड़ी है (प्रशांत क्राह्म । अवन (म अक একবার নৃত্যের বের সংযভ করে আর সেকবাবুর দিকে क्रांच ।

কিছুক্দ পরে বাজ্যা পেল থেমে। রূপাই বুছ্চিটা লামনে রেবে সেজবাবুকে প্রণায় করলে। সেজবাবু বললেম— কুজর ভোর নাচ, রূপাই। যা যেন ভোর নাচ থেকে হাসছেন। যা ভোর সর্বপ্রকার মূলল করবেন। এই মে ভোর বক্লিস। বলে রূপাইর দিকে একটা টাকা ছুঁছে দিলেম, আর বললেম, আলছে বছর ভোর মনের আলা বিটারে দেব। রণাইর মূবে রা-ট নেই। ধীরবে টাড়াটা কুড়িরে প্রধার করে বীরে বীরে বাড়ীর দিকে পা কেলতে লাগল।

আহনামতি এভক্ষণ কাঁথাখানা ক্ষিত্তে হুৱার বরে বলেছিল খানীর প্রভ্যাগমন-প্রভীকায়।

ৰপাইত বুক্ৰানা কেটে বেছিতে এল একটা দীৰ্ঘাস। বললে—এই নে ভোত্ত বক্লিস—বলে, টাকাটা কেলে দিল আননামভিত্ত গাতে।

এক ছিলিৰ ভাষাক টানতে টানতে ৱপাই বিষিয়ে পঞ্চল দেবালের 'পরে। আরনামতি হ্বারের অপর দিকে ঠেস্ বিরে বলে আকাশের বওমেথের ফ্রন্ড গতি নিরীক্ষণ করছে, আর অলক্ষ্যে ক্ষীণ হাত হ'বানি গুলে উর্জে প্রধান জানাজে।

বাজি গভীর। চাঁদ হেলে পড়েছে অনেককণ। পুজার তিন দিনের ক্লান্তি নিয়ে সম্বত্ত পাড়াই। পড়েছে বুমিরে। চৌধুরীদের চতীমতপের বছ আলোটা নিবিরে দিরে পুরোহিত এক কোণে নাক ভাকাছেন। ক্রমে অন্তকার গাচ্তর হয়ে আসে। হঠাৎ কিলের শব্দে পুরোহিতের মুম্ যায় তেতে। চেরে দেবেন সম্বাধ এক ছারাস্তি নরক্রাল।

পুরোছিতের বিহন চীংকারে বছনিরী রাজান্ধরী বাজীর ভেতর থেকে চুটে আসেন, প্রদীপের পল্ডেট। বাভিরে দিভেই দেখেন, এক করালসার নিরাবরণ ল্লা-মুর্ভি কলা-বৌরের ব্লাক্স আকর্ষণ করছে।

ভোর হয়ে এল প্রার। বাদীস্থ লোক ভেঙে পড়েছে চঙীমঙপের প্রাদশে। প্রভাতের বাদস্থ্য তার রক্তিম আবর্ধ-থানি বিছিয়ে দেবার সলে সলেই দেখা গেল রম্পীর দেহ দেবীর পদত্তে সুক্তিত, শাড়ীর আঁচলধানা তথ্যও তার মুষ্টব্ছ।

"রামানন্দ-জীবনী"

শ্রীঅবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর [শ্রীনাম্বা দেবীকে নিবিভ]

ৰপ্ত নিবাস বাহাকপুৰ ট্ৰাংক বোভ, শোঃ, বেলধন্নিহা, ২৪ প্ৰগণ। ২৭. ১০. ৪৭.

क्न्यावैश मान्त--

রামানশ বাব্র জীবনী আর ভোমার চিঠি ঠিক সময়ে পেরেছি, চোবের ভেজ কমে গেছে ভাই আগাগোড়া পড়ে জ্বাব দিভে দেরী হরে গেছে। বইবানি পড়ে মনে হ'ল—

এ যেন পুণাঠ পুৰণাঠ্য গলের বই অনেক দিন পরে হাতে
এলো।

ভোমার লেখা এমন সুক্র করে কৃট্রেছে—পৃথাপর বটনা— সম্ভ সংজ্ আর সরগভাবে যে আরম্ভ করলে হাড়া বার না লেখ পর্যান্ত না পৌছে। গলক্ষার যতো বছ সুক্ষর ও সহক করে ভূমি বলেলে বছুবরের জাবনের ঘটনাবলী,—সেকালের সব দিনগুলি একটি অপূর্ব দীপ্তি পেরে কুটেছে এই এছে—সেই ভরগান্ধ আশ্রম চিন্তামনি বাবু বামনদাস বাবু স্বাইকে মনে পড়ে, যেন সেই সময়েই আছি মনে করি। আমার ব্ব ভাল লেসেছে বই-বানি। ভোষার শিক্ষা-দীক্ষা সার্থক হয়েছে, এই বই গেঁবে বে ভূমি দিয়েছো দেশের মাহ্মদের, এতে ভোমার পূব্য করা এবং ভীর্থ করার কাক হ'ল। আমার আভ্রিক আশ্বিরাদ নিও।

ভোষাদেরই **শ্রীক্ষবনীম্রনাথ ঠাকু**র

পু:—একটা কৰা ভূলেছি; 'প্ৰবাদী' আৱ 'মডাৰ ৱিভিউ'র প্ৰথম বছতের ছ'ৰামা মলাটের ছবি বইবামিডে দিলে হভে, এবম আৱ উপার মাই।

কোতৃলপুর থানার স্বাস্থ্য

গ্রীরাখালচন্দ্র নাগ

বাঁকুছা জেলার পূর্বপ্রান্তে কোতৃলপুর থানা অবহিত।

ন্যালেরিরা-প্রশীভিত ছান বলিরা ইছা লব্বক প্রসিদ্ধ। বর্তমান

সমরে কোতৃলপুর থানার জনসায়ের অবহুণ দেখিলৈ অদর
আতকে পূর্ব হইরা উঠে। সম্প্রতি দেশে নবরুগ আসিয়াতে,
কংপ্রেসের মনোনীত মন্ত্রীমঙলী আরু পশ্চিম বাংলার ফর্ণবার।

এখন তাঁহাদের মনোযোগ আকর্বণ করিতে পারিলে কোতৃলপুর
থানার জনসাধারণ হয়ত সুহুদেহে বাঁচিতে পারে।

(काकुनपूर थानात करतक वरमदात क्य मृशुत-रिमाव:

` `		•••	
বংসর	₹ %	্বভা	
7 5 05	১২৭৪	39 b 3	
7580	70F7	ን	
7>87	7067	7845	
7982	3849	7860	
7980	7888	१७५८	
7>₽8	১০৩২	72-64	
7584	2570	2440	
>>84	>444	78:,0	

ৰোট সংখ্যা— ১০৭৩৮ ১২৮০

এই আট বংসরে ক্ষরের ক্ষণেকা মুন্তার সংখ্যা বেশী
হওরার কোতৃলপুর খানার ৫৪৭২২ ক্ষন ক্ষরিবাসীর মধ্যে
২০৬৭ ক্ষন ক্ষরা সিয়াছে। ১৯০২ হইতে ১৯০৮ সাল পর্যাক্ত
৭ বংসরের হিসাবে কোতৃলপুর খানার মধ্যে ক্ষর ১০৮২২ ও
রুত্যু ১১৪৪৬। ইহাতে দেখা যার এই ৭ বংসরের মধ্যে মোট
ক্ষমগুণ্যা হইতে ৫৬৪ ক্ষন ক্ষরিছে। গত ৭ বংসরের ক্ষনসংখ্যা ব্রাসের ক্ষপণত দেখিয়া বুঝা যাইতেছে যে বছমান
বংসরের হিলাবে ক্ষমগুণাত দেখিয়া বুঝা যাইতেছে যে বছমান
বংসরের হিলাবে ক্ষমগুণাত প্রায় চতুর্ভ ব ব্রাস পাইরাছে।
এই তাবে যদি কোতৃলপুর খানার ক্ষমগুণা ক্রমশুং ক্ষিতে
থাকে ভাহা হইতে ক্ষর দিনের মধ্যেই কোতৃলপুর খানার ভিন
পত পত্নী ক্ষশানে পরিণত গ্রহে।

ু মালেরিয়া এখানকার সর্প্রধান ব্যাধি। আর এই ম্যালেরিয়া হইতে কত রোগ যে হইতে পারে তাহার অভ মাই।

কোভূলপুর ধানার গভ ৮ বংসরে ম্যালেরিয়া খরে মৃত্যু:

বংসর	ম্যালেবিহার মৃত্যু
790Þ	४८ ४
>>80	464
7587	40)
>84	909
758.0	>>>9
7288	444
>>84	62
7586	888
যোষ্ট	4069

বর্তমান আট বংসরের হিসাব ও ভাহার পূর্ব্বেকার সাভ বংসর পর্যন্ত হিসাবে বেবা যার, ১৯৬২ হইতে ১৯৬৮ সাল পর্যন্ত ৫১৬৭ জন ম্যালেরিরা রোগে বরিরাছে। ব্যালেরিরা জরে বৃত্তসংব্যা ক্রমণঃ বাভিতেছে। বে বানার জনসংব্যা ৫৪৭২২ সেই বানা হইতে ৮ বংসরে যদি ৬০৮৯ জন লোক ম্যালেরিরার প্রকাশে বৃত্ত্যুব্বে পভিত হর ভাহা হইলে কোতৃলপুর বানার ভবিত্তং অবকারাক্রয় বলিরাই যনে হর। জাতীয় সরকারের সহযোগিভার যদি এই সমন্ত দরির পদ্ধীকে বাচাইবার জন্ত জনসাবারণ এখনো সন্তবহুভাবে চেটা না করে ভাহা হইলে এই পদ্ধীভলিকে কিছুতেই ধ্বংসের হাত হইতে রক্ষা করা বাইবে না

তবু ন্যালেরিয়ারই যে কোতৃলপুর উৎসন্ন যাইভেন্নে ভাষ্য নদে, জন্যান্য ব্যাবির প্রকোপও এ জঞ্চল কম নর। এখান-কার শিশুরুত্যর হারও ভরাবহ। এক বংসরের ক্ষবয়ক্ষ শিশু-মৃত্যুর হিসাব নিয়ে দেওয়া হইল:—-

বংশস্ত্র	এক বংগরবয়স্ক শিশুর মৃ	ভূ য়শংৰ্য
∡ ⊘< ⟨	~80	
228c	२५३	
2587	360	
>844	৩০২	
7>80	৩২৫	
3888	२ १ ७	
7284	₹ 6 0	
7584	225	
	(बार्डे २७४३	

এই আট বংসরে এক বংসরের ক্ষর্যক্ষ শিশু-মৃত্যুসংব্যাও ক্ম নয়--- ২৩৪৯টি। মাসুষ ক্ষিৰার আগে ক্রণামর প্রমেশর মাতৃতনে যে ক্ষীরবারা সঞ্চিত করিয়া রাবেন দারিব্রা-নিব্রুন আজ মাতা উদরপুর্ব করিয়া বাইতে না পাওরায় হততাগ্য সভান সেই অবিরবারা হইতে বঞ্চিত। গো-ছ্রু হারা শিশুসভানকে বাঁচাইবার উপায়ও আজ আর নাই: বাংলায় গো-ছ্রের অভাব আজ চরম সীমার গৌহিরাহে। এক টাকায় হোল সের বাঁটি হব বেখানে পাওরা ঘাইত আজ সে হলে টাকায় হুই সেরও হব পাওয়া যায় না। ঘাবীনতা লাভ হইলে কি হুইবে, দেশের ভবিত্তং আলাভরসায় মল এই লক্ল শিশুকে বাঁচাইতে না পারিলে সবই বার্প হুইবে। কোতুলপুর বানায়, বেবানে ৫৪৭২২ ক্ম লোকের বাল সেবামে এক ক্মও শিশুকা বাবী নাই। অনিক্তিতা বাবীয় হতে পভিষাক্ত শিশু যে অকালে বারা বাইতেহে ভাষায় ইয়ভা নাই।

উপর্ক পৃষ্টিকর থাদ্যের অভাবে, থাভ না পাওরার ও শিশু-পালনে অঞ্জাবশভঃ অনেক শিশু ভূষিত হইবার দিন করেক পরেই শেষ নিঃবাস ভ্যাস করে। অনেক শিশুর অননীও বজের অভাবে এবং বাঞীর অঞ্জাবশভঃ নারা যান।

কোতুলপুর থানার সভানজবের ১৪ দিন মধ্যে প্রস্তির মুকুর হিসাব নিয়লিবিত রূপ:

বংসর	এছতির মৃত্যু-সংখ্যা
>>o>	२७
3>80	2 >
7987	29
>>8€€	৩২
7980	೨೦
3588	39
>>84	જર
7>8#	
	শোট ২০৬

১৯০৩ হইজে ১৯৩৮ সম পর্যায় ছয় বংশরে ১৯৮ট প্রস্তি এই ভাবে অকালে কালপ্রাদে পভিত ভ্রয়াছে। ১৯৩৯-४७ এই ৮ वरमदा २०७३ सनमीत सकालग्रुष्ठा स्टेल। জীহুত জানাঞ্ব নিয়োগ কর্ত্তক সংগৃহীত একট চার্টে দেখিয়াছি, প্ৰতি ৮ মিনিটে এই গোনার বাংলা ত্ইতে একট করিয়া ৰাভা প্ৰদৰকালে বা প্ৰদৰ্শের অব্যৰহিত পরে মৃত্যুমুৰে পতিত হন। এই সব পরীপ্রামের ছতিকাগারের অবস্থা দেখিলে ভদরে আলের দকার হয়---যে দেশে সভানতত্ত্বে পর ভালাকে মহাব্য-वारभव चर्यामा मृत्य वाया एवं, तम त्मानव चविश्वर चयकांव, পুর্বালে কথনই এরপ ব্যবস্থা ছিল না। সে মুগে ত্রিকাল-मर्नी बार्शक्षित्रत्व निर्दिनाष्ट्रयात्री अन्तर्वत वहनृत्व शास्त्र-বিজ্ঞানসম্বত হতিকাগৃহ নিৰ্দ্ধাণ করা হইত। কিছ গৃহয় আৰু চরম দারিদ্রাপীভিত। ইচ্ছা থাকিলেও পদ্ধীবাসীরা অভাবের ভাঞ্নার পরিষ্ণার-পরিচ্ছয় ও বিশুদ্ধ বারু চলাচলের ব্যবস্থাযুক্ত ছতিকাগুং নির্মাণের ব্যবহা করিতে পারিতেছে মা। প্রস্থতি-**প**बिहर्यत-निकास अस्पन स्टेस्ड लाग गाँटेस्ड दिनहारि ।

ম্যাদেরিয়ার ভূনিরা ভূনিয়া যে লমন্ত লোক জীবনীশজ্ঞিনীন ক্ষরা পভিরাহে ভাষাদের মধ্যে সক্ষারোগ ক্রভ প্রধারলাভ করিভেছে। কোতৃলপুর থানার অধিবাদিগণের মধ্যে যঞ্চা-রোগে রুড্যার হারও ক্রমশং বাভিয়াই চলিয়াছে।

কোত্লপুর বানায় বন্ধারোগে স্বৃত্য---

CAISAIXH	ALAIR AMICRICA AST
বংসর	শ্বভূ্য-সংব্যা
4046	> %
7980	٤٥
7⊅ 8 2	२०
2886	77
>≥8≪	9
>>88	75
386C	20
7984	
	খোট ১২১

১৯৩৩ ছইতে ১৯৩৮ সম পর্যন্ত এই ছর বংসরে যন্তারোপে বছাসংখ্যা ছিল ১৭৫ জন। এর পরবর্তী ৮ বংসরে ১২১ জন বজারোগে নারা নিয়াছে। প্রকৃতির শ্রেষ্ঠ ছান প্রবৃতিরও ও বিভগ্ধ বাতাসের অভাব বেখানে নাই সেই পরীভেও এই তীবণ ব্যাধি প্রবেশ করিয়াছে।

বর্ত্তমান কালে যথেক আহার, রক্ষারোগীর সহিত মেলানেশা ইত্যাদি বন্ধা বিভারে সহায়তা করিভেছে। বন্ধা হাতা
দেহপীয়া ও অভাভ নানা ব্যাধিও শহর হইতে সকঃবলে
আদিভেছে। বন্ধারোগ সংক্রামক হইলে পদ্ধীঝানে অবিকাংশ
রোগী বিনা চিকিংলাভেই মারা যার। সংক্রামক রোগের মধ্যে
কলেরা এবং বসন্ধ রোগ মধ্যে মধ্যে এবানে দেবা দেব, তবে
সহপ্রের ভূপনার অনেক কম।

পভ ৮ বংসবের কলেরা ও বসম্ভ রোগে মুদ্যুসংখ্যা :

वरमञ		करमरा	বসস্থ
2 2 05		78	>
7580		>	>
7>87		२ 9	8
>>8<		34	•
>>8€		224	0
3864		.	•
7>84		٢	२२
7586		74	.
	শো	. .	૭ ૨

बरे ५ वरभटन करनना वा छनाउँठा ट्यारंग मृहाभरना। ২০৬। তথ্বো ১৯৪৩ সালে ইহার আক্রমণ ব্যাপক আকরি ৰাৱণ করে, ফলে উক্ত বংসরে কোডুলপুর থামার ১১৫ খন (माक करमदा (दारित्र भावा यात्र। त्रेष्ठ ১৯৩৩-७৮ वर्षास बरे यह वरमदा कलाहा हाल कुलारवा दिन ३), পদ্মীঞ্জামে অঞ্জভাবশভঃ অধিকাংশ ক্লেটে রোগ ব্যাপক ভাবে দংক্রামিত হইরা পড়ে। ১৯৪৪ সাল হইতে কলেরার **টকা** দিবার প্রচলন বেশী হওয়ায় মৃত্যুসংখ্যা অনেক কৰিয়াছে। পরীব রোগীরা অবিকাংশ ক্ষেত্রেই বিদা চিকিৎশায় মারা যায় ৷ অবশ্ব কোতুলপুর থানায় ভেছয়া পাড়ায় একট এমার্চ্ছেলী হাসপাতাল আছে ও তাহাতে কলেৱা ৱোগীকে ৱাৰা যায় কিছ বিশেষ কোন স্থবন্দোবন্ত সেধানে নাই। এবানকার অব্যবহা সহতে একট ঘটনার উল্লেখ করিতেছি। একবার একট রোগীকে দেখানে পাঠাইরাহিলাম, ভঞ্জান-কারিগণের লক্ষ্য না থাকার ইউরিমিয়া অবস্থার---সে शंभभाषात्मव वास्टिव हमिश्रा यात्रः अ वत्रत्येव व्याभाव বাহাতে না বটে গেৰুত প্ৰত্যেক ইউনিরনের ভরক হইভে বিহিত ব্যবহা করা ধরকার। আর একট মাত্র হাঁসপাতাল ছারা বিশেষ কিছই ছইবারও নয়।

কলেরার ছার বসন্ত রোগের বীকও শহর হইতে এবানে আনদানী হয়: বসন্ত রোগে মুন্ত্যসংখ্যা গত ৮ বংসরে ৩২ ও পূর্মবর্জী ১৯৩০-১৯৩৮ পর্যান্ত এই ৭ বংসরে ৫৭। এই ছিলাবে হইতে বেবা বার বে, বসভ রোগের প্রকোপ ক্ষমণ: ক্ষিত্রা আসিতেছে। অবঙ সময়মত টকা লঙরাই ইহার কারণ। রোগ-প্রতিবেধ ও চিকিংলাদির ব্যবহা কোতুলপুর বানার আশাহরণ নহে। সারা আম বন-ক্ষল, পচা ভোবার ভরিরা নিরাহে, দেশবাসী অরবম্বের চিভার বিরত হইরা এমম অবহার আসিয়া পৌহিরাহে বে ভাহাদের পক্ষে প্রাবের উন্নতির কথা চিভা করাই অসভব হইরা গাভাইরাতে।

মব্যে মব্যে পদ্ধী-সংস্কার কার্যের ক্ষম্য যা একটু আবটু সরকারী ব্যবহা হর ভাহা উল্লেখযোগ্য মহে। অধিকাংশ ক্ষেত্র মধিপত্রের মব্যেই সীমাবদ থাকিরা যার। ডাঃ এর্ক্ত গোণালচক্ষ চটোপাব্যার মহাশরের চেটার হানে হানে ব্যালেরিরা নিবারণী সমিভি প্রতিষ্ঠা হইয়াছিল, কিছ সরকারী লাহায্য ও বাঁকুড়া ক্ষেলা বোর্ডের দান বদ হওয়ার ঐ সমভ পদ্ধী সমিভি নিজির হইয়া পড়িরাহে। কোডুলপুর ক্ষেলা বোর্ডের একট দাতব্য চিকিংলালয় ছিল। বহুদিন আপে ভাহা উঠাইয়া দেওয়া হইয়াছে। ক্ষেলাবোর্ড দাতব্য চিকিংলালয় পুন:প্রতিষ্ঠার সিদ্ধান্ত প্রহণ ক্রিয়াহেন,

ভিত্ত হুর্তাগ্যক্ষরে ভাষা কার্যকরী হর নাই। প্রভ্যেক ইউনিয়নে একট করিরা লাভব্য চিকিৎসালর ও ভ্রুর হাসপাভাল থাকা একাভ আবক্তক। মেনিনীপুর জেলার বিরপাই পরীয়ালী প্রীয়ুক্ত অরলাঞ্চনার চৌধুরী যাত্য বিভাগের মরিপানে অনিষ্ঠিত হওরার ভঞ্জ্য পরীবাসীবের প্রাণে আশার সকার হুইভেছে। চল্লকোণা থানা ম্যালেরিরার প্রকাশ কোত্সপুর অপেকা কম মর। পরীয়ের সহতে যামনীয় মন্ত্রী মহাশরের পরিকল্পনা যত শীল কার্য্যে পরিণত হর ভত্তই মলল। কৃতক কর হাপন করিরা ইহা করা খুবই কঠকর হুইবে। একে ভোগানীয় মানাবিব করভারে প্রশীভিত, তহুপরি শিক্ষাক্রের বোরাও ভাগানের উপর চাপানো হুইরাছে। বাহুড়া কেলা বোর্ড এবানে শিক্ষা বোর্ড হাপনের অরৌজ্ঞিকভা প্রদর্শন করিরাও ভলানীন্তন সরকার ভাহাতে কর্ণগাত করেন নাই।

আমি পশ্চিম বাংলার ধ্বংলোগুৰ একট বানার চিত্র আঁকিবার প্রয়াল পাইয়াছি। এ প্রসংল একবা মনে রাখিছে ছইবে যে, এদেশের বন্ধ অঞ্চ এইভাবে আবিব্যাবির প্রকোশে ধ্বংলের পর্যে চলিয়াছে।

যুক্তরাষ্ট্রে কৃষিকর্মে বিমানের কার্য্যকারিতা

গ্রীনলিনীকুমার ভদ্র

ৰুজ্বাষ্ট্ৰের ক্যালিকোনিয়ার বান্য-উৎপাদকগণ বানের চাষের এক অভিনব এবং পুরাপুরি যান্ত্রিক উপার উত্তাবন করিয়াছে। ভাহাদের উত্তাবনীশক্তির দক্ষন বিমানঘারা ভাহাদের গৈনন্দিন ছীবনের বহু প্রয়েজন সাবিত হুইভেছে। এমন কি আবুনিক আবেরিকার অভতম ক্রমিয়ন্ত্রপেও বিমানের ব্যবহার চালু হুইরাছে এবং ইহার কার্যক্ষিতা অপ্রিমীম বলিয়া দক্ষিণ-আবেরিকার বানের আবাদে ব্যাপকভাবে ইহার প্রচলন ইইভেছে।

ক্যালিকোনিয়ার বাচকেএসমূহের কতকওলি বিশেষ অবহার অচই এই নৃতন পহা উত্তাবিত হয়। প্রচুর গবেষণাদির পর কৃষিবিদ্গণ ব্রিতে পায়েন যে, উক্ত টেটের বিরাট কৃষিকেএসমূহে যাজিক কৃষি-পছতি প্রবর্তন আবন্তক, উপরভ্ বানগাছগুলিকে আগাহার আক্রমণ হইতে রক্ষা করিবার ক্ষ এমন কোন উপায় অবলহন করা দরকার বাহাতে সমর ও প্রম হই-ই বাঁচিতে পায়ে। শেব পর্যায় দেখা গেল যে,
আগাহাওলির অবাবহৃত্তি নিবারণ করিবা বানের আবাহ বাজাইবার সর্বাণেকা কার্যকরী পছা হইতেত্তে বীক্ষ বপনের পূর্বে ক্রেমসমূহকে ক্লপ্লাবিত করিবা বেওয়া। এবন সম্বত্তা হাতাইল ক্লম্ম ক্রেমসমূহকে বাক্ষরতা বীক্ষপনের প্রকৃষ্ট উপায় কি ? ইহারও সমাবান হইতে দেরি হইল না। বিশেষজ্ঞান বলিলেন্দ যে, একথার বিধানের সাহায়েই এই কান্ধ স্থসম্পন্ন হইতে পারে। নিম্নে আমেরিকার বাল-উৎপাদনের সাম্প্রতিক পঞ্জির পূর্বান বিবরণ দেওয়া যাইতেছে।

প্রথমে কলের লাকল এবং মই দিরা ক্ষমি চাষ্ট্র করিবার পর বাহির হইতে কল আনিরা ক্ষেত্র প্রবিত করিবা দেওবা হয়। এই কলবারার উচ্চতা হর সাবারণতঃ আলাক হর কুটি (১৫ সেটিমিটার) পর্যন্ত। তারপর বুব নীচু দিরা উচ্চতীয়মান্দ্র বিমান হইতে কলে-ভিকানো, দিনেকের অন্তর বাহির হওৱা ধানের বীক্ষসমূহ নিক্ষেপ করা হয়। সেওলি কলে ভূবিরা বার এবং নীচেকার ক্ষমিতে লিক্ত গাড়ে। আগাছাওলি কলে ইভডতঃ তাসিরা বেডাইতে থাকে, মাটতে লিক্ত মেলিতে পারে না। কাক্ষেই তাহারা ক্ষমি হইতে সারভিবিতে পারে না। কাক্ষেই তাহারা ক্ষমি হইতে সারভিবির লইতে পারে না। ওলিকে ব্যবসমূর বানগাহতলির বাবা ক্ষমের লাহাব্য হাডাই পরিপুট এবং বৃত্তিপ্রাপ্ত হয়। লভকর্তনের ক্ষম্পতি বার কালা কাটিরা ক্ষমি নিক্ষা ক্ষমি কাটিরার ক্ষমিতানের আর্থা করা হয়। ভাবিকেরে গিরা লভকর্তনের বাহাতে

বছদে এবং অলাবাসে বানকাটা, ভূষবাড়া ইভ্যাদি কাজ সন্দন্ন করিছে পারে দেইকড এই ব্যবস্থা অবলয়ন করা হয়।

বাত উৎপাদনে এই বান্ত্রিক প্রতি অবলবিত হওরার র্ক্তরাট্টে বানের কলন বে কর হইতেছে তাহা নহে। আনেবিকার গড়গড়তা একর-প্রতি ২০০০
পাটও বান্য উৎপত্র হয়। দক্ষিণ অকলে
বরণাতির লাহায্যে ওকুনো ক্ষমিতে
বীক্ষবপন করিয়া যে পরিমাণ বান কলানো হয় তাহাও এই হিসাবের মধ্যে
বর্ষা হইয়াছে। ক্যালিকোনিয়ার বিমানবোলে বীক্ষবপন-প্রতি দ্বারা ক্ষিত্র একরপ্রতি গড়গড়তা অন্তত: তিন হাকার পাটও
বান করে। এই কারণে আনেরিকার

বিভিন্ন রাষ্ট্রের চাষীরা বিধানের সাহার্যে বীক বপনের অফুরারী হইরা উঠিয়াকে এবং এই পছতি তাহাদের মধ্যে ক্রুড প্রসারলাক করিভেলে।

প্রতি বংসর যে মাসে ক্যালিকোনিয়ার অন্তর্গত সেঞ্চা-মেন্টোর উত্তর দিকত্ব উপভ্যকা-অঞ্চলের রাভাষাটে দৈনিক-প্রহরীরা মোটর আরোহীদের অভিযোগ ভনিভে ভনিভে অভিঠ ছবরা উঠে। ভাষাদের মাধার মাত্র করেক ছাভ উপর দিরা উজ্জীৱমান যে-সকল বিমানের বিরামনীন পর্কন ভাষাদের কানে ভালা লাগাইয়া দেয় সেওলির বিক্লছেই ভাছাদের নালিশ। তাহাদের অভিযোগ যতই বৃক্তিযুক্ত বলিয়া প্রতীরমান হোক मा (कन, श्रीम विभागजानक अवदा हाभीश (भारकता (कहरे তাহাতে কৰ্ণণাভ করে না। কেমনা এই সমন্ত শভাগয়ঙ व्यविकारमहे वि-शक्विमिट्टे अवर छालारमञ्ज छ हालकरमञ्जरमञ ১৫ स्टेट्ड २० वः मध्यत यात्)---क्रमाम्बद्ध वारमत कीमक (irrigation lock), करनद नामन वा नंध-नर्धास्क-वरश्च মতই অপত্রিভার্যা ভ্রমা উঠিয়াছে। এই অভিনৰ ক্রযিন্ত্রের দৌলভে বিগত পাঁচ ঘটভে দল বংগরের মধ্যে সেক্রামেটো अवर कियांत्र मगीत मनावर्षी विताहे क्लाअवृत्य বেশী বাভ উংপর হইভেছে যে, ইহা আমেরিকার একট শ্ৰেষ্ঠ ৰাভাঞ্চল পরিণভ ভইরাছে। ক্যালিকোনিয়ায় ৰাভ উংপাদনের পরিবাণ যে কিব্লপ বুদ্ধি পাইরাছে ভাষা **अबकाबी कृषि-विचार्शब ১৯৪७-এव दिशाव पद्यारमा**हन। ভরিলে ব্রিভে পারা যার। সমগ্র যুক্তরাথ্রে একর-প্রভি যে ২০০০ পাটভ বাভ উংপাদনের কথা বলা হইয়াছে ভাষা গত সংস্তেরই হিসাব। উচ্চ বংসরে 'ক্যালিফোর্নিয়ার কোন কোন টংকুই বাচ্চাত্তে কিছ একর-প্রতি হর হাজার পাটত পৰ্বাভ বাব কৰিয়াছে। অবশ্ব একবা সভ্য যে উভ্য দাৱ



ক্যালিকোনিয়ার একট কেতে থানের বীক বপনরত একট বিযাম। ভান'দকের লোকট কেতের লীমানা নির্দেশক পভাকা হতে দকায়মাম

প্রয়োগ ছারা ক্ষির উর্জরতা বিবান এই উচ্চহারে উৎপায়ন বৃথির ক্ষম আংশিক্তাবে দারী, কিছু বিনানে বীক্ষবপন-ব্যবস্থা বে এই ক্লনম্বছির মুখ্য কারণ সে বিষয়ে কৃষি-বিশেষক্রমের মধ্যে মতবৈৰ নাই। হাত দিয়া চারা রোপণ করিবার বে প্রনো পচা পছতি মাছাতার আমল হইতে প্রচলিত ছিল বল্লের কল্যাণে তাছার আমূল পরিবর্ত্তন সাখিত হইরাছে। ইছা চামবাসের কার্যকে যে কতদ্র সহক্ষান্য করিরা তুলিয়াছে তাহা বলিরা শেষ করা যায় না। অবচ ইহার দক্ষ ক্ষেত্তর উৎপাদিকাশক্তি কিন্তু তিল পরিমাণ্ড হ্রাসপ্রাক্ত

বিচভেইলের প্লেম হাবিদ ক্যালিফোনিহার এই অভিমন্থ ক্ষিপছতি প্রবর্তকদের অন্যতম। এ প্রসদে তিনি বলিতেছেন --- "काशिक निश्चात बाबारमय कृषि-भवका दिल बहाड बक्न হুইতে আলাদা ধরণের ও বিশেষ ক্ষ্টল। কি ভাবে বানগাছের देशर क्रम एवं कर खनामा चार्शाक्षर चाक्रम मिरस करा যার তাতা লইরা আমরা অনেক মাধা খামাইরাছি। শেষ পর্যান্ত আমরা এই সিভাভে পৌছিলাম যে, বীজ বপন হইতে 🗝 -কর্ত্তমের সময় পর্যাত-এই কয়েক মাস যদি কেতগুলিকে জলম্ব রাধিবার ব্যবহা করা যার, কেবলমাত্র ভাছা হইলেই এই সমস্রার সমাধান হইতে পারে। এর পরে অলগ্লাবিভ ক্লেছে ভি করিয়া বীক বপন করা যায় ভাষা আর এক সম্ভা হইয়া হাভাইল। হাত দিয়া তো কিছতেই এগুলোতে বীভ বপন বা চারা রোপণ করা সভবপর নর। এখন কি করা যায় চ শেষে অনেক ভাবিরা চিত্তিরা আমরা দেবিলাম একমান কাৰ্যাকরী পদা হইতেছে বিমান হইতে কলপ্লাবিভ কেন্দ্ৰ বীক নিক্ষেপ করা। এখনি ভাবেই আবিয়ত হইল আয়াঙে-चित्रव देवकांविक वीक वनन नविक धवर माहै। या अर्थ জুড়িয়া বাচক্ষেত্রের উপর দিয়া যে সকল পর্জনশীল বিষা

উচিয়া বেডার সেওলি হারা আমাদের পরিকলনা কার্য্যে পরিণত হইতেহে।

বিবাদে বীক্ত বপদ চাল্ হওয়ার ক্যালিকোনিয়ার কৃষিকর্মের বারাই বললাইরা গিয়াছে। প্রনো আমলের গঞ্চে
আক্ষের ক্যালিকোনিয়ার কৃষির সাল্ভ কেবল এইটুকু যে
তথনকার ভার এবনো অলমর ক্ষেত্রেই নানগাছগুলি বাভিয়া
বাকে—অবঙ পছতিটি সম্পূর্ণ বিভিয়। রুজরাষ্ট্রের সর্বত্রে পর
এবং অভাল শভ উংশাদনে বিহ্যুংচালিত বল্পণাতির ব্যবহা
বেমন আমেরিকার কৃষিকর্মের একটি লক্ষ্মীর বৈশিষ্ট্য তেমনি
এই সাম্রতিক পছতিটিও সম্পূর্ণ তাহার নিজহ। ক্যালিকোনিয়ার কৃষির কভকওুলি বিশেষত্ব আছে। প্রথমত এবানে
বে বান গাছ উংপন্ন হয় তাহা বেশ বড় আকারের , দিতীরতঃ,
ক্ষেত্রসমূহে অলসেচের যে বিরাটি ও ব্যাপক ব্যবহা এবানকার রাষ্ট্র করিয়াছে তাহার দক্ষম একদা যে লকল জমি ছিল
উবর আক তাহা উর্বাহ ক্যান প্রণালীর সংমিশ্রণ হওয়ার
এখানে কৃষির চরম উন্নতি সাবিত হইয়াছে।

এই মৃত্য বর্ণের কৃষিকার্থের বছ ক্ষেত্রে প্রচ্য বল সরবরাত্ত্ব প্রবেশ হইর! বাকে। এই বিষয়ে শ্লেম হারিসের ক্থাই আবার উদ্ধৃত করিতেছি। তিনি বলেন—"আমানের এই মৃত্য প্রণালীর কৃষির বছ বলের আবক্তকতা অত্যবিক। আগাছার অবাহিত বৃদ্ধি নিয়ন্ত্রণ করা ধাইতে পারে একট মাত্র উপারে। পরীক্ষা হারা ধেখা গিয়াছে যে ক্ষেত্রে কল যদি গভীর হয় তাহা হইলে আগাছাভলা বাহ্নিতে পারে না, বানগাছঙলি কিছ সেই গভীর বল ভেদ করির! সুষ্ঠুভাবেই বাছিয়া উঠে।"

বংশরের প্রথম ভাগে সিয়েরা নেভাদা পর্বাভমালার ভূষা। পৰিতে ক্লক হইবার সলে দলে এই যাঞ্জিক পছতিতে ক্লেত্র-कर्यापित (जाएरबाए चातस रहा। এই सहरू यथन मार्फेन्ड লেসেন নামক আলেম্বলিরির নিকটবর্তী সাষ্টা বাঁৰের এবং অনেকণ্ডলি উন্নত উপভাকার বিরাট ক্লাবারসমূহ গলিত ্শ্রের জলধারায় কানায় কানায় পূর্ণ চ্টয়া যায়, তথন শীচেকার বিভীণ সমভল ক্ষেত্রসমূহ শুভুই থাকে। উচ্ছখন ভুষতে এছলিতে যে বাহি পণ্ডিত হয় ভাহার পরিমাণ বার্ষিক ১৫ হটতে ২০ ইঞ্চি মাত্র। এ গুলিতে ভ্রারণতন এবং ব্লপ্তিশাত এত কম হয় যে তাহা ক্ষাকে আর্ড্র করিছে পারে না। ভ্ৰি এত বটবটে ভক্নো ও শক্ত বাকে যে তাহার উপত্ৰ দিহা অনায়াসে ভাৱী যন্ত্ৰ চালাইয়া লওয়া যায়। क्षेत्रकीय केला नामन, यह अवर खकात यहनाजि वादा कवि চাষ্ মাটর ভেল: ভাঙা ইত্যাদি কার্ব্য সম্পন্ন হয়। চলমান বন্ধপার পিছনে ধুলির বড় ওঠে, কবনো কবনো সংহত ধুলিকণা ভন্তাঞ্জি মেৰের মত দুখ্যাম হয়। পাৰ্কভা বটকার গতিকে প্রতিহত করিবার ক্ষা বামকেতের প্রাপ্তে রোপিড

ইউকেলিপটান কৃষ্ণে আসিয়া অবশেষে সেই গুলিয়ালি আন্তঃ একং করে। এবিলের শেষ ভাগে অথবা যে মালের গোড়ার দিকে বাবের জীলকসমূহ গুলিয়া দেওরা হয়, আর শভ শভ বাল মালা ইত্যাদির ভিতর দিয়া সেই সন্ধিভ জলবায়া বান্যক্ষেত্রে সিয়া পভিত হয়।

আক্ষণ কৰনো ক্ষেত্ৰ ক্ষপ্লাবিত করিবার পূর্বের বীক্ষ বপন করা হয় না। আগে কিছ প্রথমে শুক্ষনা ক্ষরি উপর বীক্ষ হড়ানো হইত এবং তার পরে ক্ষমিকে ক্ষপপূর্ণ করা হইত। কিছ ইহার অপুবিবা হিল বিভার এবং ইহা হিল ক্ষতিকর। বহু বীক্ষ মাটির ভেলার কাটলের মব্যে চুকিয়া নিশ্চিক্ষ হইয়া যাইত, অথবা বীক্ষের গারে ইঞ্জিবানেক মাটির প্রলেপ লাগার তাহা অমুরিত এবং ক্ষপত হইতে বহির্গত হইতে পারিত না। আক্ষেরে দিনে কিছ একটি মার বানের বীক্ষ বপন করিবার আগেই ক্ষেত্রকৈ ক্ষলে ভালাইয়া দেওয়া হয়া।

সাধারণত: বে জল বেওরা হর ভাছার সর্ব্বোচ্চ পরিমাণ ছইভেছে প্রার হর ইকি। মোটাবৃটি সাধারণ আকারের ৩০০ একর একটি ক্ষেত্রের বাঁবের এক প্রান্ত ছবিতে জলর প্রান্ত পর্যান্ত জলানাবিত করিতে প্রার ছই সপ্রান্ত লাগে। এই কর দিন জনা ক্ষেত্রকর্মানি বিশেষ কিছু করা যার না—বেশী কিছু করিবার দরকারও ছব না; কেননা এই বাবছার দরকন আগালা বাভিতে পারে না, জমির উৎপাদিকালভিও সংরক্ষিত হয়। রুছের সময় এই ব্যবহার দরকন একই ক্ষেত্রে বংসরের এ মাধার এক বার এবং ও মাধার আর এক বার কসল কলানো সভবপর হইরাছিল। ইলা ঘারা আগালা ধ্বংস এবং জমির নার সংরক্ষণ তো হয়ই, উপরন্ধ এরোপ্রেন হইতে জন্তুরিত বীক বপন করিলে যাহাতে ভালা নই না ছইরা জচিরেই চারাগাছে পরিণত হইতে পারে জমিকে ভালার উপযোগী করিয়া তৈরি করিয়া রাধে।

এই কৃষি-বিমান চালানোর কচ পাকা বৈমানিকের প্রয়োকন। এওলি বুব নীচু দিয়া—কভকওলি মাট হইতে মাত্র পঞ্চাল কৃষ্ট উপরে—বটার পঞ্চাল এবং একল মাইল বেগে উড়ে। এওলি চালাইতে বিশেষ কক্ষণার প্রয়োকন। চালকদের মধ্যে ক্ষিকাংশেরই বরস কৃতির নীচে—ভাহারা সকলেই বুবের সময় বিমান-চালনা-বিভার গভীর বুংপত্তি লাভ করিয়াছে। এবন ভাহারা সকলেই উৎসাহী বৈমানিক। বিমান চালানোর যাবতীর কৌশল, এর ক্ষিকানি ক্ষিত্তেও বীজ্বপন বাদ না পড়ে গে কছ ইলেকট্রক পাওরার লাইনের উপর দিয়া ক্ষেম করিয়া বিমান চালাইতে হয়, কটকা-প্রভিয়োকক ইলেকট্রক কুঞ্জের উপর দিয়া কিরুপ কৌশলে বিমানকে সইরা বাইতে হয়, এ নবই ভাগের জানা। সকল সমর পতিবেশের একই যাত্রা রক্ষা করাও ভাগের আর একট বিশেষ ক্ষা

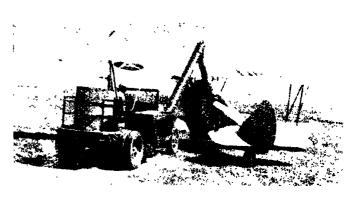
বাহু-প্রবাহের বাজার যতই তারতম্য হোক দা কেন, এই দকল বিমান-চালককে দর্বাবহারই একই গতিতে বিমান চালাইতে হইবে। প্রত্যেকটি বিমান অহত: পক্ষে ১,০০০ পাউও (৪৫০ কিলোঞান) বীক বছন করে। মার্বে মার্বে বোঝা ধালাস করা, উচ্চ হানে আরোহণ, রোভ কেরা, প্রত্যেক পাঁচ মিনিট পরে এক বার নাটতে নামিরা বীক্ষ দিয়া বিমান বোঝাই ক্রিয়া লওরা ইত্যাদির দক্ষন এই সকল বিমান চালানো অত্যক্ষর ও বিরক্তিকর ব্যাপার হইরা ইছাছার।

সমগ্র সেক্ষাবেণ্টো উপত্যকার পনর
হুইতে কৃত্বি ক্ম বৈধানিক কার্বের মালিকদের

কৃষিকর্শ্বে সাহায্য করিয়া থাকে। তাহারা শুধু যে কারিক পরিপ্রম ঘারাই তাহাদের সহায়তা করে তাহা দর, তাহারা মিলেদের বিমান পর্যান্ত দিয়া কৃষিকর্শকারীদের উপকার করিয়া থাকে। ১৯৪৬ শ্রীষ্টাব্দে তাহাদের মধ্যে ছই জন পাওয়ায় লাইন পরিপ্রার করিতে না পারায় এক সাংঘাতিক বিমান-ছ্বইনায় বিপন্ন হয়। জবত এ কবা সত্য যে হেলিকন্টারগুলো জ্বিক্তর নিরাপদ, কিছু এখালতে এরোপ্রেমের প্রপোলরের মত কোনো যথ্র না থাকায় বিশেষ জ্ববিশ্ব হয়।

यभित जाककानकात वीकावातकान विज्ञान जाकारवत मह বলিয়া এগুলির বীক বহুন করিবার ক্ষমতা বিশেষ সীমাবদ, **छवानि विवास वीव वृत्रन कविरन मन्त्र अवर अवन्ना इहे-हे** বাঁচে। শুক্ষে শ্বির উপর দাবারণ ভাবে যন্ত্র-সাহায্যে বীত্র বপন করার এমমূলঃ পড়িত একর-প্রতি ৪ শিলিং হুইতে ছয় শিলিং পর্যায় । কিছ আজকের দিনে বিমান্যোগে বাজ বপৰের খরচ পড়ে একর-প্রতি ১ শিলিং ছইতে দেভ শিলিং। বিমানছারা যে কৃষির পথ সুগম ও অপেক্ষাকৃত বলবারগাপেক হইতেছে ভাহাতে সঞ্চে নাই : কিছু মনে রাধিতে ছইবে ক্ষিয়ন্ত ক্লেপ বিমানের ব্যবহার জন্তকালের পরিকল্পনা বলিয়া ইহাতে কতকওলি অসুবিধাও আছে এবং সেওলির আন্ত প্রতিকার প্রয়োজন। প্রত্যেক কৃষি-বিমানকে প্রতিদিন ৬০০ একর পরিক্রমণ করিতে হয় ! কাৰেই ক্ৰমাগত বীক বোৱাই এবং খালাগ কৰিবাৰ ভঙ এক ভাষণায় বেশীক্ষ্ হাড়াইয়া থাকা বিমানগুলির পক্ষে बूमकिन रहेश शिषात । अवह अरम्भा ना क्वित छेनबुक পরিমাণ বীক বোঝাই করাও সভবপর হয় না:

এই সকল কারণে, কৃষিকর্মে বাবহারের জন বিশেষ বরবের বিমানের আবস্থাকতা উপলব্ধি করিয়া কালিকোনিয়ার বিমান প্রস্তাকারীগণ নামা পরিকল্পনা করিতেছেন। সাম্ভিগের 'কন্সোলিভেটেড ভালট এয়ারক্যাকট কর্পোরেন্দ্র' তাহাদের একিনিয়র-কার্মের বিশেষজ্ঞদের একট দলকে প্রস্তাক্ষ অভিন্ততা অর্জনের জন্ধ বাভাকসস্থ্রে পাঠাইরাছেন



একট টাক হইতে বিমানে বানের বাল থোকাই করা বইতেছে

এবং তাঁহারা বৃবই আশা করেন বে, এই এঞ্চীনিয়ারগণ অচিরাৎ এমন এক বরণের হেলিকণ্টার নির্দ্ধাণ করিছে পারিবেন বাহাতে বীক হড়ানোর কল একটি বিশিপ্ত ব্লাপ্ত প্রোপেলার বাকিবে। বীকাবারের যালবহন-ক্ষমতা বাড়াইবার কলও তাঁহারা চেঙা করিতেহেন।

বিমানবাহিত বীক্থলা কিছ ওকনো বীক নয়, এওলিকে বলা যাইতে পারে থানের চারার আণাবহা। বিমান হইতে কেতে বীক হছাইবার আগে পেওলিকে কতকওলো থলের ভিতরে পুরিরা, অলসেচের থাতে তিজাইরা রাথা হয়। চিন্দিশ বলী পরে বীক্তলি অনুরিত হয় এবং লে অবহায় এওলিকে আরো একটি দিন থাতের মধ্যে রাথা হয়। বিমান হইতে নিক্তিপ্ত হইবার পর এই কলসিক্ত বীক কেতেয় কলে ভূবিরা যায় এবং ছোট ছোট অনুরলমূহ শীষ্ট কলের নীচেকার ভিকা মাটতে শিক্ত গাড়িয়া বলে।

এর পর হইতে প্রকৃতির সাহায়েটে চারাগাছওলি ভল-তলে বারে বারে বাভিতে বাকে-মাণ্ডয় বা যন্তের সহায়তার আবস্তুক হয় না। এমনিভাবে প্রায় অর্ছ বংসরকাল ক্ষেত্তপ্রল যন্ত্ৰাদি-স্পৃষ্ট না হইয়া ক্যালিকোনিয়ার রোক্তকরোক্তল আকাশের নীচে পছিয়া থাকে, চারগোধন্তলি প্রকৃতির তথাবধামেই প্রতিপালিত ও র্ছিপ্রাপ্ত হয়। সেপ্টেছরের গোড়ার দিকে শশুকর্মনের প্রায় মাস্থানেক আধে ক্ষকের। ক্ষেতে পিয়া म्बानकार कन वरिषद्यांचे कम्टन्टर चाट्य कीनक वृत्रिया (मद्य: अमिकार्य गैर्श शेरत भवहेक् कल वाश्ति क्रेश यात्र। অক্টোবরের শেষে কিখা নবেম্বরের গোড়ার দিকে ভয়ি এত ভকনো হর যে তাহার উপর দিয়া অনায়াসে শভসংগ্রাহক-যন্ত চালানো হাইতে পারে। প্রথমে ক্ষেত্রকর্মের কর্মাই বিলেখ ভাবে তৈরি এক প্রকার যন্ত্র খারা চড়ুপ্পার্থের স্বাস কাট্টয়া ক্ষেত্রে মুখ বুলিয়া দেওয়া হয় : এমনিভাবে শভ-সংগ্রাহক যন্ত্রের এক পার্শ্বে একটি ধাসকাটা কল জুভিয়া দিয়া ক্ষেত্রকর্দ্ধ পুরু হয়। এই যন্ত্র ছুটকে কিছ কেবলমাত্র সমতল ভূমির উপর দিয়াই চালানো বার, বানক্ষেতে চছুপার্থত উচু বাবের উপত্র

এখনি দিয়া কোনও কাক হয় না। বাজ-সংগ্রাহক-যন্ত্র সংলগ্ন ক্ষেক বন্ধটি (cutting rig) ক্ষেত্রত চতুপার্থর ১২ হইডে ১৫ কুট জায়গার বাল কাট্যা লাক করিয়া উহার চলাচলের পর্বকে সুগম করিয়া দেয়।

শক্তসংগ্রহকারীদের সময়ের সদে পালা দিয়া অভ্যন্ত কিপ্রভার সহিত শক্ত আহ্বন করিতে হর। কেননা, কল ভাঁচা
পিচিবার সদে সদেই নানা প্রকার বাদ এবং আগাহা অভ্যন্ত
ক্রতসভিতে বাভিতে থাকে। কাকেই ভাহারা বৃদ্ধিপার্থ
হইরা শক্তসংগ্রাহক যন্তের মাটাইবের নাগালের মধ্যে আসিবার
আগেই বাহাতে বান কাটা সারা হইরা বার সেদিকে বিশেষ
অবহিত হইতে হয়। এই সমন্ত ভ্রাজার মধ্যে একনাত্র
বার্থইরার্ড বাসই এত ভাছাভাছি বাজে যে ভাহা শক্তসংগ্রাহক
বল্লের নাগালের মধ্যে আলিয়া পৌছে। ভবু এই ফেটটুক্
হাছা এই অভিনব বাভোংপাদন-পদ্ধতি আর সকল দিক দিয়াই
লাক্যম্বিত হইয়াছে।

এই প্রণালীতে আগাছা নিরম্বণ প্রবর্তিত হওরার আগেকার বিনে হন্ত সাহাব্যে আগাছা বাহিতে বে বরচ পাঁছত তাহার হাত হাইতে কৃষিকর্মকারীগণ রেহাই পাইয়াছেন। আর বরচও তবন নেহাত কম ছিল মা—একর-প্রতি ও লিলিং হাইতে ও লিলিং পাঁছত। বন্ধ হারা বান কাটার পর ক্ষেতেই চুম বাড়া লগাই হব বলিরা চাল ওকাইরা লইতেও বিশেষ বেগ পাইতে বা বরচ করিতে হব না। এ ছাড়া, আরও এমন কতকওলি যন্ধ উল্লাবিত হইয়াছে ষেওলির সাহায্যে বভার পুরিবার আগেই বানের গাঞ্জগর আছে বাছে বিনিষ্, পোকা ইত্যাদি চুর

করা বাইতে পারে। সাঞ্চতিক ব্যবহার বাজাংপাবনের শ্রমস্কাই বে শুরু কমিয়াছে ভাষা নর, বানের পরিমাণ এবং খণও বৃদ্ধি পাইরাছে।

এমনি ভাবে এই নুভন প্রচেটা অসামাত সাফলালাভ করাতে আলা করা বার বে, অনুর ভবিয়তে বুজরাট্রে বালোং-পাদনের এই পুরোপুরি বাল্লিক পঙ্জিই আনর্ল পঙ্জি হইরা দাঁভাইবে। কলে অনুর ভবিষাতে বাতক্তের হন্ত বারা বীক্ষ বপমরত লোক্ত্রের অবম্যতি বৃত্তিগুলি আর দৃত্তমান হুইবে না। দক্ষিণ অঞ্চলের টেক্সাস, গৃইশিরামা, আর্কামশাস এবং বুজরাট্রের অভাত প্রবাম প্রবাম বাভাঞ্চলসমূহে বাাপকভাবে এই ক্যালিকোনিরা-পঙ্জিই প্রহণ করা হুইতেছে।

अवन क्षिम श्राविरमव क्षा देवल कविवार खनरद्व छे पेमरहाव किविलिक्—">>>०० मान खानि खन्न विवास वास्त नीक वर्णन किवि अवर लावभव हरेल खिल वरमवरे और छेपाल चलन किवि अवर लावभव हरेल खिल वरमवरे और छेपाल चल्लः खार्शनक्लात हरेलल खानाव निर्म्च स्मान खनारेलिक। काणिकार्भिवाव स्मान—स्मान विवास क्षा खन्य-खिल खल्लः ১৮०० पाढेल मञ्ज छेरपाम करवा, लाहाव पर्म कृषि-विमान स्मान छेपाम लाहा विवास खन्य का याव ना। देश दावा लाहाव ममब ल खन्य हरेने वीकित—केविकीय अवर करणव मरेरवा मल देश खन्य हरेने वीकित—केविकीय अवर करणव मरेरवा मल देश खन्य हरेने वीकित जनके वालाविक अवर खनविहां कृषियन हरेवा हें। खानाव अव विचास स्मान विवास खनवीय वालाविक अवर खनविहां कृषियन हरेवा होणावेरव। खानाव अव विचास स्मान व्यवस्त किविका खनवा वालाविक खन्य हरे किविवा खानवा वालाविक स्मान स्मान विचास किविवास खनवार वालाविक। खनवालाविक स्मान स्मान विचास किविवास खनवालिक स्मान वालाविक किविवास खनवालिक किविवास सम्मान विचास किविवास खनवालिक स्मान स्मान वालाविक किविवास खनवालिक किविवास सम्मान वालाविक किविवास सम्मान वालाविक किवास सम्मान वालाविक किविवास सम्मान वालाविक किवास सम्मान वालाविक किविवास सम्मान वालाविक किवास सम्मान वालाविक किविवास सम्मान वालाविक किविवास सम्मान सम्मान वालाविक किविवास सम्मान सम्मा

আবেদন

শ্রীপ্রশান্তকুমার মিত্র

বাধীনতা-ভূষ্য বুৰি দেখা দিল পূৰ্ব্বাশার পারে,
ভাবতের দিগলনে, আরক্তিম স্থা-র প্রি-বাবে।
উৎক্ষ নথনে সংব নেহারিছে ক্রমুপ্তর শেষ—
প্রাচ্যের এ খাগরণে চেতমার নবীন উন্নেষ্
মুক্লিত আশা কত আৰু বুৰি ক্টিন উন্মুধ;
আনন্দ উধ্যে ভবা শভ ভগ্গ নিপাছিত বুক।
এর মাবে কোথা হতে অর্থনিয় বৃত্কুর দল
ভিকাপাত্র লয়ে হাতে টাছাইরা করে কোলাহল।
লক্ষ লক্ষ নর-নারী কার পানে বাছাইয়া হাত
ভানাইছে আবেদন, "ঘাও গুৰু এক মুঠা ভাত।"

'বাৰীনতা' নাম শুনি চাহে তারা বিশ্বিত মন্ত্রে ;—
'কি কল মিলিবে এতে, তাই বুলি ভাবে মনে মনে।
'মিলিবে কি অর মৃঠি' বঞ্জন লক্ষা নিবারনী ;
ভুচিবে কি ব্যাবি আলা, ভ্রম্ব রক্ষ বহিবে ধমনী ?
ঢালিয়া বুকের রক্ষ বিনিমরে কেন নাছি পাই ?
কোন পরে চলে যায়—মোরা শুরু শুল চোবে চাই। খাধীনতা দিবে মৃক্ত এই কুর নাগণাশ হতে;
বুগাভাগকিত কুবা মিটিবে কি বাবীন ভারতে ?'
ভাই যবে আর সবে নির্বিছে ন্বীন প্রভাত,
লক্ষ নরনারী কাঁলে, "দাও শুরু এক মুঠা ভাত।"

দংস্কৃত-দাহিত্যের প্রচার

ডক্টর ঐাযতাঞ্রবিমল চৌধুরা

এই প্রবদ্ধে আমরা প্রথমে (১) বর্তমান ভারতে সংস্কৃত-সাহিত্যের প্রতি অবজ্ঞাপ্রদর্শনের কারণ নির্ণয় করব, এবং ভারপর (২) সংস্কৃতসাহিত্যের উন্নতিক্ষে পরিকল্পনাদি বিষয়ে আলোচনা করব!

(১) বর্ত মান ভারতে সংস্কৃত-সাহিত্যের প্রতি অবজ্ঞ:-প্রদর্শনের কারণ-নির্ণয়

শতীৰ ছ:খের বিষয়, **নং**স্কৃত-সাহিত্যের প্রভি ভাৰঞ¦-প্রদর্শনে আমাদের দেখের কয়েক শ্রেণীর লোক সর্বদা তৎপর। (ক) এবনত: ইস-ভারতীয় সমাক্ষ: এ শ্রেণীর লোকেরা ভাৰতীয় সভাতায় সুশোভন কিছুৱই স্থান পানুনা, এবং পাশ্চাভা দভাঙাহ অভুৱাপ্ৰশতঃ পাশ্চাভা বর্ণের জীবন-যাপনে আনন্দ পান ৷ প্রবাং এরা যে সংগ্রুপিকার পক্ষপাতী নন, সংস্কৃতসাহিত্যে কোনও আনশ পান না, क्टिंड बाक्तर एनाव क्यूडे मार्छ। ७८४ जामरम्ब कवा, अवारीय (आरक्त भरवा) कालीय जारवात्रित मरक मरक अदनदर्भ। क्ष्य रक्ष आम्हा (य) क्रिकोस्क: (बक्कानिक ख वंतर् मध्यमारा ६ मध्यमारात वर्गरक कार्यन, वक्षा वर्षित अकाम करवन १४, क्वन राउभा-वानिका, कन-কারেখানরে শীর্দ্বিসাধনেই ভারতের মৃক্তি, প্ররুধা নয়, অভীত ভারতের মৃত অধি টেনে বাড়া করার প্রয়েজন আজু আর কিছুই নাই ৷ ফলতঃ বান্তিক সভ্যভার মোহে এঁরা আরণা সভাগার ভেতরে ভ্রকার প্রশাস আর কিছুই দেব : গ্রান मः । छातः भरम करदम १४, श्रद्भणविष्मा कूमस्याबाक्षत এবং প্রদাতবিরোধী কুপমপুর্ক। এচিন ভারতের অত্যুক্ত শিক্ষা সংখ্যে তাঁদের অধুত ধারন ; তাঁদের কাছে উপনিষদ বীজাবুরি, সংস্কৃত কাষ্য অলীল ; সংস্কৃত অটল, সংস্কৃত कामनाश्च कपर्य, चाइर्रान नाश्च कमरणव नाश्माञ । यान वान एछ।। हर्दम, अवाहर्दम, दुक्षां हर्दम, अमन कि, कछ आधुर्दम, কত পুৰাপ্ৰপুৰ বালোচন: আমাধের সংস্কৃত-সাহিত্য পুঠ করেছে-বার তুলনায় বত্মান পাশ্চাত্য ক্সংও অনেক পেছনে পড়ে আছে, তাঁরা ভাতে নিজেদের অপমান বলে মনে করেন। কাক্ষেই তাঁর। সংস্কৃতের প্রতি অবঞা পোষ্ণ করেন। তারা ভারতের অনুষ্ঠবাদ, নৈরাঞ্বাদ ভারতীয় দর্শনেরই শিক্ষা এলে মনে করেন এবং ভারতীয়দের যাবভায় চৈতভদ্তির কল ভারতীয় ধর্ণনকেই দোধারোপ করেন। (त्र) कृष्णीयकः, र्श्विक्स मध्यपात्रः अ मध्यपादात्र व्यास्टब्ह আক্ষাৰ ভাবেন যে মন্ যাজংক্য প্ৰভৃতি স্বভিশাপ্ৰকারণৰ এবং : ল্যানাবিক--লং ৬৩ শাস্ত্রকার থাত্তেই তাঁদের সামাজিক

অব্যাননার নির্দেশ (দ্বেছেন। উ:দের তাই বারণা যে সংগ্রতশাল সমার জলে যত দিন না নিমাজত হয়, তত দিন তাদের আর এ কল্ডলেশ থেকে মুক্ত হ্বার আশা প্রধান বাহত। (ব) চতুর্বতঃ, প্রাণেশিক ভাষার সম্প্রাতিবায়ক নল। প্রাণেশিক ভাষার উল্লেখ্য হিতকা,মগণ বলেন- সহ্ল সহল বর্ষ বরে সংগ্রতশালার বারা এ দেশে চলে এসেছে; তাতে তার প্রাণেশ গেছে ব্রেম। ততুপার এর কার্চিত্র হতু অতি কর্তের পারত্রে এ জ্বান্ডলে জল্ল করতে হয়, তার প্রয়োক্ষীয়তা ব্রহ।

আরা সময়ের মধ্যে এটোর প্রভাব সম্প্রধারের মুক্তির ব্যায়ধ বিছত এটাওর দেওয়: সপ্তব্যর নয়। তা হলেও আককে ভারতের জাতীর ছদিনে ঐক্যের মুল্য এত সমধিক যে এ সব বিষয়ে জালোচনা জতীব প্রয়েক্তির এবং এ দের কাছে সংস্কৃত্যাহিত্যের উৎক্য, সংস্কৃত্যাহার আদল এবং কাতীর সমুষ্টির দিক বেকে সংস্কৃত্যাহত্য পঠন-পাঠমের একাও এয়েক্ত্রীয়ত্ব সম্কৃতিরেশ্ব নিভান্ত প্রয়োজন। তাই সংক্ষেপে ছ্'একটা কবা বল ছি।

ইল-বল সমাজকে লক্ষ্য করে বলা যেতে পারে যে পরের মাকে মা বলে জনমে তৃত্তি ও গব অনুভব করার যে নিবা আছমরের অবতারণা, এতে কেবল নিজের পারেহ কুঠারাখাত করা হয়, সাভাকার লাভি এতে পাওয়া যায় না। নিজের ষা গুর মানুজনে প্রান্ত সম্পূর্ণ, তা আজি নিজ্ঞ, গরম আদরের সম্পূর্ণ, তাকে উপেকা করা নিছক অভ্নতা। আল দিকে সংস্কৃত-সাহিত্য জগতে সর্বধা অভ্নতার, প্রতরাং কিল্লু সোজাগ্য বেকে বক্ষিত হওয়ান গরেই ব্রন্তের প্রবাহক্ষ মাত্র।

বাবসায়ী ও বৈজ্ঞানিকনের সহোধন এক কথা
ফুল্লাই বল্ডে চাই—তাথের বিষয়ের বহলাংশ দংগুত সাহিত্যে
স্থাবিদ্যা আছে; নৃতন্ত্রে গবে সংগ্রের স্থাত রক্ষচ্ছ্
বা আনাগর প্রদর্শন নিজাপ্ত অলোভন ও আয়োভক।
বিতীয়তঃ, তালের শ্রেন রাধা কতা যে খুল বহিলাগতের
ক্যেতের নব নয়, অভজসং ও তার সম্ভা বহিলাগতের
ক্যেতের নব নয়, অভজসং ও তার সম্ভা বহিলাগতের
ক্যেত্রে সব নয়, অভজসং ও তার সম্ভা বহিলাগতের
ক্যেত্রে সব নয়, অভজসং ও তার সম্ভা বহিলাগতের
ক্যেত্র নব নয়, অভজসং ও তার সম্ভা বহিলাগতের
ক্যেত্র নব নয়, অভজসং ও তার সম্ভা বহিলাগতের
ক্যেত্র সব নয়, অভজসং ও তার সম্ভা বহিলাগতের
ক্যেত্র করিলাল লাগ্র করেনাল করেনের ভাষাকাল। কেবল উপরপ্তিতে
আরার পরিপ্তি সাধিত হয় না; তজ্জ সংগ্রেত প্রাক্ষত
করেলিদেশ ও গর্লানবালের প্রয়োজন সমাধক। লুন্তেরা বেদপাঠে অধিকারী ছিল না, ইত্যাদি বারণা সম্পূর্ণ ভূল। একটা
মাত্র উদাহরণ দিই। রাধায়ণে দশরণ-কর্ত্র নিহত সিত্ত্বমৃনির পুত্র করনের সভান হবেও নিভা বেদ পাঠ করে বেড়াত

— देश प्लंडेरे बाबाबरण नना चारकः । श्रांताचनाञ्चारत राम-विश्रवाधिक पूर्वां व पूर्व कराय, अवर कनकः पूर्वकाव ভাষেরও পারণত হওবা ধ্রাহেন-ইহা শালের বিবান। আমাদের বর্তমান বে বৃষ্টিভনী, ইহা সম্পূর্ণ আধুনিক ভারভের; খাৰীৰ সৰল আধনিষ্ঠ গরিষ্ঠ অভীত ভারভের ময়। একই মাত্রক্তে পুট সভানকে ভারতকননীর আনদীও জগন্বেণ্য সভামবুক উপেকার প্লানিতে কর্মরিত করার অওত विवास क्षेत्र (तम मि। क्लण: "চार्ड्रार महा एईर अन-क्वीरिकाशमः"--- अरे केकित नार्यक्का एत्क् अरे ए, अन् क क्य रिजार कर्ष्व विकाशित हैश्यकि, बाक्स वत दिल बाक्स, ক্তিয়ের সভাষই কেবল ক্তির হত যা, ৩৭ ও কর্ম অভুগারেই হ'ত। তা না হলে ত্রাহ্মণ দোণ---কৃত্রিয় অভুনিধির অলভক এবং এেট বোদারণে মহাভারভের জ্বজ্জোড়া বিংহাসন জুড়ে বলে বাকতে পারভ না। সভিত, আমাদের বর্তমান স্টেডদীর পরিবর্তন একাড প্রয়োজন; विषयी कारहत (काहत मिर्देश मार्थिक अपनी मुख्य हमनात ভেতর দিয়ে দেশবাড়কার দিবা বৃতি দর্শনই আব্দ সম্বিক दायांचन ।

বদভাষার হিতসাধকরকের অবহিত হওরা প্রয়োজন যে ব্যক্তের লিকড় ও কাও ব্যতীত বুজ বাঁচতে পারে না; রাইকেল, হেন, নবীন, বহিন, রবি—এরা সকলেই সংস্কৃত-রুক্তেরই সুপক কল। সমন্ত্র ভারতব্যাপী সংস্কৃতই মহানহীরুহ; মহারাই, গুজরাত, গাছার, মন্ত্র, চোল, কণাঁট, অল, বল, কলিদ, অবোব্যা, অবস্তী প্রভূতির ভাষা ভারই কলমাত্র। ঐ বুক্তের সরসভা ব্যতীত সবই শুক্ত হয়ে যাবে, কিছুই অবলিষ্ট থাক্বে না।

সমালোচকদের উত্তর দেওয়ার সলে সলে এই কয়ট চথা আমাদের মনে আগে—সভিত্য, সংস্কৃত্যকা প্রভিত্তর মধ্যে বা আন্ত কোবাও কি কোনও প্লানি নাই ? সে সব প্লানি কি এবং কিসে ভার প্রভীকার ?

পূর্বোক্ত সম্প্রদার-বিশেষের সংস্কৃতশিক্ষার বিপ্রদে রুক্তি
বৈধকে এটা সুস্পত্ত যে সংস্কৃতভাষ। ও সাহিত্যের বৈশিলা,
উৎকর্ষ, সভানির্দেশ প্রকৃতি বিষয়ে জনসাবারণ কেন, ভারতের
আনেক শিক্তি ব্যক্তিও একেবারে জন্ত উাদের জনতা
ভূরীকরণের জন্ত আনাদের প্রাদেশিক ভাষার কুটি বিষয়ক
প্রস্থাদি বিরচন, জন্ত্রাদের সাহায্যে সংস্কৃতবিষয়ক জান
বিভরণ নিভান্ত প্রয়োজন। নগরে নগরে প্রান্ধে প্রচারক
প্রেরণ পূর্বক বক্তৃভাদির বাবস্বাও জন্তাবিশ্বক।

বলা বাৰলা, বৰ্জমান সংস্কৃত শিকাপছতিও নিৰ্দোষ নয়।
এমন কি, বি-এ শ্রেমী পর্যন্ত বাতৃত্বপ, শক্ষণ, কারক-বিভক্তি
ও ব্যাক্তবের অভাত বিষয় নিয়ে এমন এক অপন্তান বিভী হিকার
ক্ষ্টি কর! হয়—যাতে হাত্র ও বাইরের লোকেরা সকলে সংস্কৃত
বল্তে একটাব্যাক্রনের বিভীষিকাই বোকে। এ বিভীষিকার

হাত থেকে হাত্রবের অব্যাহতি হেওছা সত্যি ররকার। তার পর উচ্চ শ্রেরতে বিষয়বৈচিত্র্য এবং তাবগাতীর্ব পুঞ্জুক্ট করার মিষিত তির বিবরাশ্বক এছ পাঠা করাও প্রবাদন। এ সব বিষর পরে আলোচনা করছি। কিছ বে কিনিষ্টা সর্বাপেকা প্ররোজন, সেটা হচ্ছে শিক্ষা-প্রধালীর বারার কিকিং পরিবর্তন। আমাদের ছলে-কলেকে লংডুড্শিক্ষা দেবার সময় ব্যাকরণের উপর এমন একটা অসম্ভব জোর দেওরা হয়, বার কলে কাব্যরস সম্পূর্ব উপেন্ডিড হয়, তংলভোগ থেকে হাত্রবুল সর্ববা বঞ্চিত হয়। কলড: পালাপাশি ইংবেনী ও সংস্কৃত এছ পাঠের এ অলামন্ত্রস্থা তারা মিজেরাও যেন কুর হতে বাকে। এর বিহিত বিবাদ মিতার প্রয়োজন। অভাত প্রতিকারও মিয়ে বিবেচিত হবে।

(২) সংস্কৃত-সাহিত্যের উন্নতিকল্পে যুদ্ধোত্তর পরিকল্পনা

কাৰ্যবাপদেশে মান্তাৰ, বোমে, রাৰপুভানা প্রভৃতি **ब्राप्तरम वर्षन निरम्भ, ७४२ जातक प्राप्त (मार्याय-**---ইংৱেকী ভাষার মাধ্যমিকভাষ কোনও কাক হয় না। আমা-দের দেশী আভ্রুংের সংখ ভাবের আদান-প্রদানের ক্ষ (मनीत अकि छ। यात मानाभिकण। पूँ (क त्वत कत्राण हे एता) বলা বাহলা, ভারতের সর্বত্র অগ্রবিত লোক আছেন, বীদের সঙ্গে সংস্কৃতভাষার মাব্যমিকৃতায় একার্য অভি সুচারুত্রপে সম্পাদিত হয়। ভারতের দর্বন্ন সকলেই আমাকে বলেছেন যে, যালয়ালয়, ক্যানারিদ, ভেলুও, ভরমুখী, উভিনা, বাংলা প্রভৃতি বিভিন্ন ভাষার আঞ্জি বিলেষ থেকে ভাষা-ক্ষনীকে উদার করে নিলেই ভারতের বেশীর ভাগ ভাষাই ভারতীয়নাঞ্জেই সহজে বোৰপন্য হয়। বিভিন্ন রক্ষের एवरकत क्षारे जायवा नर्वा वक विभन्त क्षा स्व । अ कवाही स्व কত বছ সভা, তা আমি পুৰিবীর সৰ্বদ্রেষ্ঠ প্রাচাঞ্ছাগার লঙনত্ব ইভিয়া অফিসের সাইএেরীর সংস্কৃতবিভাগের কর্মদচিব হিদাবে বিভিন্ন প্রাদেশিক অঞ্চরে প্রকাশিত সংস্কৃত-প্রস্থাদি পৰ্বালোচনা কালে বিশেষ কৰে ব্যক্তিগত ভাবে প্ৰদেশম করতে পেরে'ছ: আজে সে'দন এসেছে যখন জাতীয়ভাবের ও কার্স-কলাপের পবিভূষ্টি ও প্রদর্শাদ্ধার নিষ্ঠিত আমাদের স্বকীয় সাম্য্রিক অপুবিধা সহা করা গুরু প্রয়োজন নয়, একাছ কভব্যি। এ কৰা অগীকাৰ কৰাৰ কোনও উপায় নাহ যে, সংস্কৃত-ভাষ্টে প্রকারভিরে ভারতের একমাত্র সাইকনীন ভাষা। "প্রকারান্তবে" এ ক্যাট বলার উদ্দেশ্ত এই যে, সংস্কৃত-ভাষাবিদ্দের সংখ্যা ভারতে অভাবিক না হলেও এক ভাষিদ বাড়ীভ আধুনিক প্রভাক ভাষার ভেতরে সংস্কৃত প্রসংখ্যা এবং সাহিত্যাত্রণ রচনা এত সম্বিক্ যে, এ স্বের্যাব্যমিক-ভাষ ভারভের এক প্রদেশের লোকের অঞ্চ প্রদেশের ভাষা বুৰতে ৰুব অপুবিধা হয় না। আসমুস্তহিনাচল কচ্ছোপদাগর

বেন্দে মবিপুর পর্যন্ত ভারভের সর্বল একটা সভ্যভা ও ফুটর শাষ্টভ আছে, চিভার ধারার ঐক্য আছে, বাক্যবিভাগের প্ৰতি আছে। সংস্কৃতানুগ সংস্কৃতির একটা বিশিষ্ট ছাপ আহে—বার অবলখনে ভারতীয় মাত্রেই ভারতের বিভিন্ন হলের ভাষা ও ভাববারার সলে মিলেমিশে বেতে পারে, এবং এটা সংস্কৃত ভাষা ও সাহিত্যের মান্যমিকভা হেডু नकरणत रात्राह। अवन क् चार्टम विनि छेपनियन्, রামারণ, মহাভারত, পুরাণ, চরকসুঞ্ভ প্রভৃতির জড় পৰ্বামুখৰ না কৱেন ? ভারতের এমন কোন নামোলেৰ বোগ্য ভাষা আছে, যাতে এগৰ এছাদির অপুবাদ, এবং और भव अञ्चारमध्य वहम भरवद्या देश मि १ चूछतार वारेदाव किहू विमश्राम जाइक श्वितकारक (करव स्मर्ग) বাবে যে, সংশ্বত ভাষা ও সাহিত্যই প্রকৃতকল্পে ভারতীয়-মাত্রেরই মিলনের একমাত্র পুত্র এবং এক্টেই একে ভারতের রাষ্ট্রভাষারণে শীকার করা বেতে পারে: ভা হলে দর্ব-প্ৰথমেই কৰা উঠে,—এ যে অৰও ভাৱতভূমির রাষ্ট্রীয় ভাষা সংস্কৃত এর সর্বাঞ্চীণ উন্নজিবিধানের মিমিত বভ্রাম সুপে कि कि करवेश कि कि विशव नवीद्ध मानारशन विश्वश প্ররোজন। এ বিষয়ে কিঞিং আলোচনা নিভাভ কর্তব্য म्या कवि ।

বহিদ্টিতে কেন, বন্ধত, কাৰ্যতও এটা ঠিক বে বৰ্তমান बूर्ल मरक्ष्विष्ण (यस कार्षाणरशांत्री करत है है हि ना। ब জ্ঞ বাহিরের ও ভেডরের দিক থেকে এর বহুল সংশোধন অভীব প্রয়েজন হয়ে পড়েছে। বারাণসাঁ, কলিকাভা ও चडाड नर्वश्तव नरवृत्वभद्योकाल अक अक विषय चवनश्रम নেওয়া হয়। ভাতে ঘেষন এক দিকে বিষয়-বিশেষের প্রভি बर्गार्यात्र-मिवबन मध्य मरक्षण-माबिर्णात श्रेक्ट ब्रम म्हेर्शाह्य হয় না, ভেমনি পাঠা-ভালিকা থেকে আধুনিক বিষয়গুলি সম্পূৰ্ণ বিবৰিত হয়েছে বলে আমরা সংস্কৃত্বিদ্যাৰ্থীয়া যেন वर्जभास कारमाभरवात्री स्टब केंग्रेटल भावस् मा। देवसम्बन কাৰ্যকলাপের প্ৰযোগ-প্ৰবিধা সংঘটনের নিমিত কিছু আধুনিক ভাষা, কিছু গণিত ও বিজ্ঞান সংস্কৃত প্রভ্যেক বিষয়েরই প্রথম इ' भवीकाव बढ्छ: मश्याबिछ करत (प्रश्वत क्रांच कर्छ वा। অভত: ইংরেজী একট পত্র বোবার, বা একট টেলিপ্রাম ব্রতে পারার মত বিদ্যার্জন করা সংস্কৃতবিদদেরও কর্তব্য। এক তথাৰ সংস্তত-বিলাকে বভুমাৰ কালোপধোৰী ভৱার নিমিছ ষা বা করা প্রবোজন, ভদস্কণ পাঠ্য-ভালিকা ভৈরী হওয়া श्रीदर्शाचन ।

বর্ত বানে আমাদের সাবারণ শিক্ষা-প্রতিঠান গুলির (বুল-কলের প্রকৃতির) সলে সংস্কৃতের বাল বিশেষ শিক্ষা-প্রতিঠান-শুলির (টোলগুলির) বিশেষ কোমও সম্পর্ক নেই। আমার বনে হর, এ হ'প্রকারের শিক্ষাপ্রতির মধ্যে একটা সামগ্রন্থ-বিধান একান্ত প্রয়োজন। এদের হুটকে সম্পূর্ণ বিভিন্ন হুট বিভাগরণে পরিপণিত বা করে কিছু দূর পর্যন্ত একট সাধারণ বিভাগে পরিপত করা বিধের—যাতে পভিতেরাও অভাত বিবর-বিশেষে কিছু অধিকার লাভ করেন এবং সাধারণ হাজেরাও সংস্কৃত বিবরে অধিকতর শিকা লাভ করতে পারেন।

কিছুদ্ব অঞ্চল্ল হওৱার পরে অবভ হাত্রমঙলী ফলীর অভী ই পথে উভ্রোভর অঞ্চল হতে পারেম, এরপ ব্যবহারও প্রভাজন । নৃত্য নিকা-প্রণালীর প্রথমকালে দেশের নিকা-বিদেরা বেন এদিকে বিশেষ গৃষ্টপাত করেম, ভক্ষত আমি তাঁদের সনির্বত অভুরোধ ভাগন করছি।

হিভীরতঃ, আমাদের সংস্কত-শাস্ত্রের যে যে বিষয়ের অস্থাবনে আর্থিক সংস্থানের সুযোগ-সুবিধা ঘটতে পারে, বেষম আরুর্বেদ, কলিত জ্যোতিষ প্রভৃতি, সে সব বিষয়ের প্রতিবিশেষ মমোযোগ প্রধান অবঞ্চ কর্তব্য। সংস্কৃতবিদ্যার্থীদের আর্থিক চুর্বভিই চরম সমস্থা এবং এর থেকে এর কর্থকিং সমাবান সভবপর হবে নিশ্চয়ই। এটা অত্যন্ত ঠিক যে, এখনও পর্বন্ত আরুর্বেদ কর্গতের চিকিৎসা-পভতির মধ্যে অভতম প্রেট্ট-রূপে সর্ব্বর্ব ক্রিক্ত হর , এর প্রমাণের প্রয়োজন নেই, এ একেবারে প্রভাক্ত সত্য। কলিত জ্যোতিষের অস্থলীসনকারীদের অর্থাগমও প্রত্যক্ষ সত্য।

ধর্মকে ব্যবদায়ে রূপান্তরিত বা পরিগণিত করার কোনও চেষ্টা না করেও ধর্মসংরক্ষণের নিমিন্তই স্কুকঠোর আচার-ব্যবহার ও রীতি-নীতির প্রবর্তন ও অন্থবর্তনে ধর্মবাকী সংস্কৃতবিদ্দের কীবিকানিবাহ স্কুচারুরূপে চলতে পারে।

चामदा शूर्वरे तत्निह स्व वाखितका, भागला, ७३०, दश-পরীকা, কৃষি প্রভৃতি বহু বহু শিল্প শাস্তাদি আমাদের অনাদৃত অবস্থায় পড়ে আছে। ঐ সব এছে অমূল্য সারভত্ব নিহিত আছে। সে সৰ ভত্ত ভাষরকম ক'ৱে ভত্তবিষয়ে প্রকৃষ্ট অফুলীলন একাত কভব্য। ঐ দৰ অৰক্ষী বিদ্যায় পাৱদলিতা লাভ করতে পারলে অর্থাপম অনিবার্থ। সম্প্র অপতের ব্যার্জন निर्कत करत बत छेगराहे। चयह ब मरवत क्षेत्रहै विकाम আমাদের সংস্কৃত এছনিচয়ে নিবছ থাকা সভ্তেও অভীব পরি-ভাপের বিষয় যে এ সব বিষয়ের আমরা সম্পূর্ণ আনাদর क्राइ - यात्र करण जाबारमत मश्यूष विमा अकासरे छाष्ट्रिक বিদ্যা হয়ে পভেছে , ব্যবহারিক দিক আমরা ছেড়েই দিয়েছি। আমাদের এ সব দিকে অদূর ভবিশ্বতে বিশেষ দৃষ্টপাত একাছ श्रादाचन। এ महन मनोष, विश्वन, मृष्ण-विष्णि, चिन्नव প্রভৃতি ললিভক্লার যথোপরুক্ত অসুশীলনেও নানলিক আনক ও আর্থিক সাহস্যা—উভর দিক থেকে আমাদের বথেই সহারতা হতে পারে। তব্দ্র ভরিষয়েও অবহিত হওরা ৰভ ব্য।

ভৃতীরভঃ, ভারতবর্ষীরদের খ-হতে দেশের শাসনক্ষরতা এসে পড়ার আজ খতঃই আমাদের দঙ্গীতি প্রভৃতির প্রতি মজর দেওরা অবর্চ কর্তব্য-হরে পড়েছে। মহাভারতোক্ত

রাক্দীতি, দঙ্দীতি প্রকৃতি, অর্থ-পাস্লোক্ত প্রতির সম্যক্ পৰ্বালোচনা আৰু একাছ কভব্য। কালক্ৰমে আয়াদের चर: गण्टमद महम महम चायदा मादी-इदिह्व देविजिवास अवर পুর ও নারীকে সমপ্রারভুক্ত করে উত্তরকে হীন প্রতিপর করার উপার উত্তাবন করাকেই শাস্ত্রীর কান্ধ মধ্যে করেছিলাম। সৌভাগ্যক্রমে আৰু সেকালের অবসাম হরেছে এবং আবার मिर्मित नकरमत नम्कारित नर्व कार्रित त्यां व्यवसाय प्रशान-श्रविवा किरत अरमाक, चारेरमत वरम मध्यमात-विरम्यरक मण्यन ভাবে ক্ষভাচ্যুত করার দিন একেবারে তিরোহিত হয়ে পেছে। रमनवानीरे जामारमञ्ज अक्मांब छैनाचा : वास्त्रित्र चार्यज विरक রুকুপাত করার সময় আমাদের আজ নাই। পরের হাতে বাৰ্শীভির ভার চাণিয়ে দিয়ে নিজেরা গৃহকোণে বদে নিভিত্ত भिक्रदेश भीवमदाशास्त्र नमत्र आक हान (श्रंदे। श्रीवस्त्र সম্পূৰ্ণ সমৰ্থৰ করে "রাজ্মীতি"র অনুশীল্নে—অতীতের সঞ বর্ত মানের সংযোগ ও সামঞ্জ বিবানে আমাদের বছপ্রিকর হভে হবে।

চতুর্বতঃ, সংস্কৃত-সাহিত্যে বৈজ্ঞানিক, শিল্পকাবিদ্ প্রকৃতি অনেকেরই অনুরার আছে। এঁদের সহযোগিভার আহাদের প্রাচীন ভারতের তত্তবিষয়ক জানৱাশিত প্রকট জালোচনা अवर विषेत्रमास्य श्रामा चांक चांक सामाना । अल्लाम शर्वक गःश्रञ्जितिषद्याः देवछाभिकाषद्य जाक स्वातं प्रितः विरामस काक किहरे करवन नि । ४व श्रीमान काक स्टार्ट माळ, जाहे বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতবর্গের সঙ্গে সংস্কৃতপণ্ডিতমঙলীর বিশেষ সংযোগ স্থাপন অত্যাবক্ত। এ প্রদল্পে এও বলা দরকার যে শভিতৰঙলীর সদে পাশ্চান্ত্য ভাষাবিদ ভারতীয় বা অভারতীয় সংস্কৃতজ্ঞদের লক্ষে আরও নিবিভৃতর সম্পর্ক গড়ে তোলা আৰু चल्रांविक अद्योजन। (करन मश्कृष-काशंदिए दाँदा) काँवा আৰু ভাষায় লিখিত জাম আহরণে সমর্থ হম না--জগতের বিভিন্ন ভাষাবিদ পণ্ডিভমঙ্গীর সহবোগিতার তাঁরা সে জানের সদান পান: আচ দিকে পভিতৰঙলী পাকাতা ভাষাবিদ পণ্ডিতকৈ সংস্কৃতের গোপন মণিরাশির সন্ধান षिट् शास्त्रमः এ উভয় প্রকারের সংস্কৃতবিদের মিলন -- कर्बक्क शिन्य--- भर्वरा वाक्ष्मीयः वस्ट भतिलालय विषय (य. विष विशामाद्य भरकृत्य कि श्रीवादीया व्यव्यक्ति करे-ভোগ করেন বলে আমরা সংস্কৃতে ভেমন অভ্যুংকুঠ ছাত্র পাই না: অভ দিকে সংস্কৃতবিষয়ক পাভিত্যের প্রভি জনসাধারণের অনাদর ব্ছে আর তেখন বছ বছ প্রিতও নৃতন করে দেবা बिटक्स्त ना । अब (बटक इ: द्वेब विश्व चांब कि इंटि शांब १ এবনও যে সৰ প্ৰিতম্পলী তালের বিশাল পঞ্চপটে সংস্কৃত नाश्चरक कार्यप्र मान करव (दर्श्यम, कैर्पाद मर्गा) अरक्रारद कार आरमा । अर्थित जिताबात्मत नात जावन नारक्रजिन মনীয়ী যে ভারতবাম পূর্ববং সমলকৃত করতে পারবেম, আঞ্ আর তেমন মনে হয় বা।

ৰত মানে আমাদের অভাব-অভিবোগ কোষায় ভা বিশেষ চিত্তনীয়।

১। ইভিয়া অফিস লাইত্রেরীর মত একট বিশিষ্ট পাঠাগার ভাষাদের বিভাভ প্রয়েজ্য--- যাতে এক ভাষ্ণার वरन नकन क्षेकारबंद अन्न चारनाइमा कहा चार, जब क्षेकारबंद পুঁৰি যথাগন্তৰ দেবা বায়। আমানের কলিকাভা নগরী ভারতীর কৃষ্টির শ্রেষ্ট লংরক্ষণ-ছল: पेर्न ছানেও এমন কোৰও পুডকাগার ৰাই যাতে কোৰও এছ-বিশেষের इ-**जिन गोगोत (वनै अरक्**तन गोश्वा घातः, अवर अस्ट সহস্র বিশেষ উপযোগী সংস্কৃত এছ আছে---যা কলিকাভার কোনও লাইবেবীতে কোনও ধিন বক্ষিত হয় নি। একট উদাহরণ দিয়ে এ ক্বাট পরিষ্ঠার করা দবকার। ৰঞ্ন এমদ্ভগবদ্গীতাত কোনও বিষয়বিশেষে আমাত্র ছদত্তে काम अक न्जन हिन्ता यनि कार्त्र, आभाव नर्धमम काना मबकाब--- अन्र एक कान् वरद्या प्रशे अ विश्व कि वर्ण एन. क् कि चादर अ किनियहीएक (मर्ट्यहर्स, छ! मा एल मर्ट्यमा इश्व ना, नृष्ठम किनिष्ठ चाविकाद कता एटल शास्त्र ना । अ यनि জানতে হয়, ভা হলে মত হত প্তিত তীমদ্ভগবদ্গীত: নিয়ে या या काक करतरहम, चामात (सर्व (मध्या मध्कात: छ। यनि एव-- चामाव अक्री পार्शशास्त्र पत्रकात याए अर कश्री ভগবদুগীতার সংস্করণ অনুবাদ, বিষয়স্থচী, শবস্থচী প্রভৃতি এবং বিশেষত: ভগবদগীতার উপরে লিবিত সমন্ত এছের विवद्यन-मश्विज अञ्चलको अञ्चल द्वाराष । आक स्थारापद म्पान अपन कामन भारतियाद नारे घाएए अर किहरे भानदा যায়। ইভিয়া অঞ্চিদ লাইৱেরীতে ভগবদগীতার ৪১৮ট **अभूवाम-मरविम्छ विश्वित्र भरकृद्ध, ১७৪ট विश्वित्र मैक** खबर ছ'শভাৰিক অংশবিশেষের মৃত্রিত সংশ্বরণ আছে। তর্পরি ७०० विकित अनुवान अवर नवके विकित श्रकाद्यत पृष्ठी चारह । স্বভরাং চাওয়া যাত্রই ইভিয়া অকিদ লাইবেরী যে কোন পাঠককে ১৫০০ পদর পতের অবিক জীমন্তর্গরদগীতা এছ নিতে পারে, এবং ভছপরি অক্স গবেষণাবুলক এছ নাম वनाव जान जानरे बारन बिएल भारत। छाएमत जनस्याती काष्ट्रीलन, अञ्चानाजाबाक, अञ्चानाद्यत कननण्यम अञ्चल সব কিছুই আছে। সুতরাং ভারুশ একট গ্রহাগার পেলে বে কাজ ভিন-চার মালে ক্রে বার, আমালের ভাদুণ কাজ যাবজীবনেও হর না। ভছপরি সেবানে ব্যক্তিগভ হিংসা-दियोपि चार्शास्त्र जुननात्र मिछाच कर, चौकात कराउँ एव----चना बिटक ब्राष्ट्रीय माश्राया वाकिनंड माश्राया मन किहू नवाब बादा यन प्रति हान चारम । इःरबंद मान बीकाद कदाल इव বে আমাদের যদি কেট কিছু জানেনও, অনেক কেত্ৰে জাঁৱা বিভাৰ্ত্তকৈ ভৱিষয়ক সভান দিতে অনিচ্ছক থাকেন। ক্ৰিছ পাশ্চান্ত্য দেশে দেখেছি যে প্রকৃত জানপিপাস্থকে সাহায্য করতে দেবানকার পভিতৰঙলী অভীব উদ্ধীব। আৰু

আমরা ৬বু কল্পনা করতে পারি যে আমাদের দেশেও এছনি এক দিন ছিল; তা মা হইলে এ বিশ্ববিদ্ধী দর্শনশাল এদেশে তৈরী হতে পারত মা। যা হোক, ইণুশ প্রস্থানার আমা-দের আছ এ যুদ্ধোত্তর যুগে স্বাধ্যে প্রযোজন।

দেশের সর্বন্ধ যে সব এছ স্কারিত আছে, রাজা, মহারাজ, জমিলার বা বিশিষ্ট পণ্ডিতের গ্রন্থানরে যে সব গ্রন্থ ও
হন্তগিবিত পূঁবি ইতন্ততঃ বিভিন্ত হরে আছে তার মধায়ধ
ব্যবহারের নিমিল ঐ সব গ্রন্থ পূঁবির সঠিক বিবরণ,
প্রাপ্তিয়ান প্রভৃতি জানা বাকা দরকার। ইংসভের ভাশনাল
লাইত্রেরী এ কাল করে। এই জভাত প্রয়োজন।

ভারপর যত বিষয়ে যত কাজ হচ্ছে, ভার একট ছচী— বারাবাহিক ছচী, অভ্যন্ত প্রয়োজন। বলা বাহল্য, ভা না হলে উচ্চদরের অভিনব প্রেহণা অভি কইসাধ্য ও সময় সাপেক হয়ে পড়ে, অমেক ক্ষেত্রে সম্ভবপরও হয় না।

ভারতবর্ধের সর্বত্র এক শতাবিক প্রাচ্যতত্ত্ব বিষয়ক পরিকা সম্পাদিত হচ্ছে বর্তমানে। এ সব মাসিক, ত্রৈমাগিক, যাগাসিক ব: বার্থিক পরিকার অক্স মৃতন মৃতন বিষয় নির্ভয় প্রকাশিত হচ্চে। এ সব ভানেরও সংহতি প্রয়োজন এবং তজ্জ্ঞ একট বিষয়স্কটী অভ্যাবঙক। বে'থে থেকে এজাতীয় কাক কিছু কিছু হচ্ছে; আরও পূর্ণাল কাল আমাদের প্রয়োজন।

অত্যন্ত ছংখের বিষয়, এমন কি কালিদাস, ভবভূতি প্রভৃতির শবস্থাই, বিষয়স্থাই, বা তাঁলের উপরে লিখিত এছ ও প্রবদ্ধাবলীর নির্ণায়ক কোনও এছ অভাপি আমহা রচনা ভরি নি। এ অপরাধ নিশ্চয়ই অমার্কনীয়।

কণতের বিশাল সাহিত্যের সলে আমরা বিশেষ করে করে ইংরেজী সাহিত্যের মাধ্যমিকতার স্পরিচিত। ঐ সব সাহিত্যের বিশিষ্ট বিশিষ্ট প্রস্থ থেকে আগ্রুড জ্ঞান আমাদের সংগ্রুড সাহিত্যে অন্তর্ভু করার দিন আরু এলেছে। হারুণ এককালে বহু সংগ্রুড সাহিত্যের অন্তরাদের দারা কার্সী সাহিত্য সমূদ্ধ করেছিলেন। ভারভের মধ্যমূপে অর্থনিত সংস্কৃতপ্রস্থের অন্তরাদাদির দারা মহামতি সন্ত্রাট্ট আকবর ফার্সী সাহিত্যের সমৃদ্ধি সাবন করেছিলেম। আরু দিকে বহু কার্সী প্রস্থের সংস্কৃতান্ত্রাদ দারা ভংকালীন পঞ্জিলসমাল সংগ্রুড সাহিত্যের প্রিটি সাবন করেছেন। আরও এ জিনিবের নিভাত প্রয়োজন হুবের পড়েছে।

পরিশেবে আমাদের কর্তব্য এই যে, একার্য সুনংহত করার নিমিত্ত সমগ্র ভারতবর্ষের প্রভাবত প্রচাক প্রদেশে এক একট বিশ্ববিদ্যালয় এবং কেন্দ্রীর বিশ্ববিদ্যালয় সংস্থাপন অতীব প্রয়োজন। কিছু দিন পূর্বে আলোরারের মহারাজা একট সংস্কৃত বিভালর হাপনের নিমিত্ব বিভ্ত তৃথও এবং দশ লক্ষ্ণ টাকা লামের প্রতিশ্রুতি ঘোষণা করেছিলেন। লক্ষ্ণে থেকেও একট বিরাট পরিকল্পনা থোবিত হয়েছে। ঘাক্ষিণাত্য এবং পক্ষিয়ালের প্রবিশ্বের প্রবিশ্ব হংগালে হার্থেছেন। কেবল দিবালোকের প্রথমোনের স্থলেই অর্থাং আমাদের এ পূর্বভারতেই আনরা যেন অমালোকে নিম্মন্তিত হয়ে আছি, নির্কাব ও কিংকত ব্যবিষ্কৃ হবে পরমুবাপেক্ষী হয়ে অপেক্ষা করিও কংকত ব্যবিষ্কৃ হবে পরমুবাপেক্ষী হয়ে অপেক্ষা করেও সংস্কৃত সাহিত্যের সমাক্ উন্নতি সাহম করতেই হবে।

পূর্বেই উল্লেখ করেছি, পূর্বভারত এককালে সংস্কৃত সাহিত্যে বিশিষ্টতম দান করেছে। আজও পুনরার তার জঞ্চ আহ্বান এবেছ। আমগ্র যদি দেশমাড়কার মুখ উচ্ছল করতে চাই, আমাদের সর্বাত্রে প্ররোজন-- সংস্কৃত-সাহিত্যের প্রবৃদ্ধি সাধনের নিষিত্র বছপরিকর হওয়া, সভ্যবহ হওয়া, পরন্দার হিংসা বিদ্বেষ বিশ্বত হরে কেবল সন্দোর পশ্চাভাবন করা। এতেই আমাদের অপবর্গ নিহিত আহে।

কেন্দ্রীর সংস্কৃত বিভাগর ও প্রাদেশিক সংস্কৃত বিশ্ববিভাগর প্রকৃতি সংস্থাপনের এবং বর্তমান সময়ের ম্বাবর্তী অবস্থার আমাদের অবক্ত কর্তব্য--- বিশ্ববিদ্যাপরে সংস্কৃত-সাহিত্যের প্রতি যা অবিচার চলেছে, তার প্রতিবিধান করা এবং বিশ্ববিদ্যাপরের পরীক্ষান্তীর্প হাল্লের মধ্যমন মানম্বাদার প্রতিদ্ধি রাধা। ভ্রাক হাল্লের সমান সমান স্বোগ-স্থবিশ, রন্তিনির্বারণ প্রকৃতি আমাদের সংস্কৃতের হাল্লের ক্ষ নিতাভ প্রবিদ্ধান। প্রবেশিকা পরীক্ষার সংস্কৃতের প্রবিহার প্রবিভিন্ন প্রক্রিকার সংস্কৃতির প্রবিহার প্রবিভিন্ন প্রক্রিকার পরিবর্তে যে অপ্রভাগ সংস্কৃত হিল, তক্ষরও প্রচেষ্ট্রা অবঞ্চ ক্তব্য। প্রবেশিকা পরীক্ষার পাঠ্যস্ক্রীতে সংস্কৃতকে বাব্যস্কৃত্য মারেই হন্দ্রেশক বিষয়ে পর্যবিস্থিত করার যে প্রচেষ্ট্রা অব্লুক মারেই হন্দ্রেশক বিষয়েও আমাদের অভিযান মাতিবিলয়ে অবঞ্চ ক্তব্য।



বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

এবিনয়ভূষণ দাশগুপ্ত

চতুর্থ অধ্যায় ওয়াশিংটন

পটোম্যাক নদীতীরে উভ্তুদ ওরাশিংট্র-স্বৃতি-শুভ-চিহ্তিত স্থসজ্ঞিত ওরাশিংটন শহর। আকাশ হইতে শহরের মনোরম শোভা দেখিতে দেখিতে বিয়াম-খাঁটতে অবতরণ করিলাম। ख्यम रिकान नीक्ष्ठी। खनूनदान-(हैनिटन (बाँक नरेश ভাষিলাম যে ওয়ালিংটনত্ব ভারতীয় দুভাবাসের ক্ষৈক আহেরিকাম কর্মচারী আমার জনা ঘাঁটতে অপেকা ক্রিভেছেন। তাঁহার সাকাং পাইরা আখত হইলাম। মাল बानान कविट्ड निश (परि मान चारन नारे। वाहेत चात-প্ৰাপ্ত কৰ্মচাত্ৰীত নিকট এ বিষয় বলিলাম। তিনি তংকণাং किलाकान-त्यारम विकेटेश्च बदर बनाना शास क्या विनश मन विविद्धित बर्दा बाला भरताम भरताम करिक कतिका स्कारतम । দ্বিময়ে বলিলেন, 'আপনার মাল ভুলক্রমে নিউইয়র্ক হইডে ৰোইন চলিয়া গিয়াছে। আমৱা প্রবর্জী বিমানে বোইন হইতে মাল আমাইয়া রাত্রি দশটার মধ্যে আপানার ছোটেলে त्नीबाहेबा थितः जाननाव वृत्रहे जञ्जिति स्टेटतः जाबादमव বহু বন্ধুগড়েও কচিং এরপ ভূপ ঘটনা যায়। আশা कति चामारमत चवष्टा दिरद्यमा कतिया मार्कमा कतिरवम । चार्यात यालत मत्या हिल इट्डेड बिल। अक्ड (हार्ड ७ अक्ड বছ। কুর, ইাতের মাজন প্রভৃতি নিত্য ব্যবহার্য্য বস্তুঞ্জি একট कृत राज-न्यात्रद घटना हिन। त्मक्रीक रक पनित घटना वाविवाधिनाम । कारकरे अछ नथा जमरनद शव प्रचारने বছপরিবর্ত্তন প্রভৃতি কিছুই করিতে পারিব না মনে করিয়া বছই অহতি বেংব করিলাম। যদিও ইছারা বলিল, রাজি দশটা অৰ্থাৎ মাত্ৰ সাভে চাত্ৰি ঘণ্টার মধ্যে ইছারা আমার মাল পাঁচ শত মাইল দরবর্তী বোষ্ট্রন হইতে আনাইরা নিজেরাই ৰোটেলে পৌছাইয়া দিবে তথাপি ভারতবর্ষায় অভিজ্ঞতা-প্রষ্ট আমার মন এ কথার আছা তাপন করিতে পারিতেছিল না। অন্ন্যোপার হইয়া কুর ব্যে দুভাবাসের বন্ধটর সংল ভাঁহারই গাভীতে হোটেলের দিকে চলিলাম। এবানে কোন ভারতীয়ের जाकार विवन क्टेटर अ हिचाल महन देशिए क्टेन । पृष्ठाराहनव বছটর সলে আলাপ করিতে করিতে শহরের মধ্য দিয়া চলিয়াছি। তথন দিবালোক নিৰ্ব্বাণিভগ্ৰায়। ব্ৰব্যভা, মহণতা ও পৰিজ্ঞতা চোৰের ভৃত্তি উংপাদন করিল। লিক্ন-স্থতি-মন্দিরে আলোকোত্তাসিত লিক্সের মুধ-ৰানি ছবির মত চোৰের উপর বিষা ভাগিরা গেল। এক ক্ৰমা উভাদ-মৰাবৰ্জী রাভা অভিক্রম ক্রিয়া এক বিরাট হোটেলে উটিলাম। ভিভৱে চকিয়াই বেৰি অভাৰ্থনা-কক্ষে

শীৰ্ত বাৰাক্ষ্ণ ও বাৰাক্ষণ মুৰোপাৰ্যায় আমাত্ৰ সন্থে। ইহাদের অপ্রত্যাশিত দর্শনে মনের প্লানি অনেক্টা চুর হইল। সাড়ে দশটা বাজিতে বরে বসিয়া হোটেলের আপিস হইতে টেলিফোনে সংবাদ পাইলার বে বিমান-বাঁট হইতে আমাত্র কচ হইটা বলি আসিরাছে। হুই মিনিটের মব্যে বর্গুহে আমাত্র বোটন-ক্ষেত্রত বলিছয়-দর্শনে প্রির-মিলনের আমন্দ অস্তব্য করিলার।

পরদিন শনিবার, ১৬ই নভেছর ৩০লে কার্তিক। আবেরিকার সমভ সরকারী আপিস ও ব্যাহ বছ। কিছ ভারতীয় দূতাবাস খোলা। সকালে দূতাবাসে বিয়া শ্রীযুত বিরিজ্ঞাশহর বাজপেরী ও অভাভ কর্মচারিয়ুক্তের সহিত সাক্ষাং করিলাম। আমার শ্রহের অব্যাপক শ্রীযুত প্রশাভচন্ত মহলানবীশের বেঁজে সইতেছি, এমন সময় তিনি তদীয় সহক্ষী হাত্র শ্রীযুত পীতাছর পহের সহিত দূতাবাসে আগিবা উপস্থিত। তনিলান তাঁছারা শহরের কেন্দ্রহলে "মেলাওয়ার" নামক একটি হোটেলে আছেন। দূতাবাসের কর্ম্ম সমাপনাতে তাঁছাদের সহিত নিক্টবর্তী একট "কেনিটেরিয়া"র মধ্যাহুতোজন শেষ করিয়া তাঁছাদের হোটেলে বেলাম। মহলানবীশ মহালয় তিন-চারি দিনের মধ্যেই ওয়াশিংটন ত্যাগ করিবেন এবং শ্রুট ভারতবর্ষে কিরিবেন। এ কয়েক দিন তাঁছার সঙ্গে ওয়াশিংটনত্ব সরকারী কর্মচারিসমাত্বে পরিচিত ছইবার চেটা করিলাম।

শ্রীরুত মহলানবীশ-গৃহিণী তথম ওয়াশিংটনে। সেধিধ তিনি ভাজার ভেমিং-এর গৃহে আতিথাসীকার করিরা বাস করিছেলেন। ঐ দিন রাত্রে এতছপলকে ভেমিং এক ভোজের ব্যবস্থা করিলেন। আমিও সেই ভোজে নিমন্তিত হুইলাম। ভেমিং "বাজেট-ব্যুরোর" সংখ্যাবিজ্ঞান বিভাগে একজন বিশিপ্ত বিশেষজা। ঐ দিন ভোজে স্ত্রী-পুরুষে প্রার কুছি জন অতিথি ছিলেন। পুরুষগণ সকলেই প্রতিঠাবান সরকারী কর্মচারী। কেছ আপবিক গবেষণার, কেছ গণিতে, কেছ সংখ্যাবিজ্ঞানে, কেছ অর্থনীভিতে, কেছ বা বাণিজ্ঞান বিজ্ঞানে সুপণ্ডিত। সকলেরই মন সজীব ও সভেজ; সকলেই বিলিঠ আলাবাদী। ইতাদের ও ইতাদের পত্নীগবের সক্ষেপরিচিত হুইরা ও আলাপ করিরা পরম আপ্যারিত বোধ করিলাম।

সেষিশ অভিবিগণের মধ্যে নানা বিষয়ে ভর্কবিভর্ক হইরাছিল। গত নির্বাচনে রিপাবলিকান পার্ট চৌছ বংসরের পর—কংব্রেসে সংবাগরিষ্ঠতা লাভ করিরাছে। প্রেলিভেন্ট ভিমোক্রোটক পার্টিরই রহিয়া গিরাছেন। এ অবহার শাসন-ব্যবহার কিরুপ পরিবর্তন বটে—লে বিষয়ে সকলেরই বিশেষ

४९क्शे। अरदान ध्वितिष्ठ हाति वश्त्रदात प्रथ निर्द्धाहिए হন। কিন্তু কংরোল নির্বাচিত হর ছই বংগরের হৃত। কংরোল व्यितिएए केंद्र सम्बन्ध मरवानितिष्ठेषा मा वाक्तिम मानमकार्वा विखा है देशकि हरेवाद मद्यावमा । विमाणी क्षवाद शहन चत् क्वरण (व वन नरवानिविध इत, छारावरे (मछा ध्वानमञ्जी-রূপে শাসন-ভরবীর কর্ণবার হন। কালেই ভিনি বেভাবে শাসন-ভরণী চালাইতে চাহেনু ক্ষলগৰ ভাষা অমুমোদন করেন। আর যদি কৰমও মন্তিগণ কমলগণের অভুমোদম লাভে অসমৰ্থ হন ভাহা হইলে তাঁহারা তংকৰাং প্ৰভ্যাপ করেন। বাঁছারা ক্মলগণের অনুমোদন লাভ করিভে পারিবেন ভাহারা ভবন মন্ত্রী হন। কাজেই বিলাভে মদ্রিপ ও কমলগণের মধ্যে কখনও দলগত বা নীতিগত অলামলভ বা বিবোৰ উপন্থিত হয় মা। কিছু আমেরিকার প্রেসিডেন্ট ও কংগ্রেস খভন্নভাবে দেশবাসীর কোটে নির্বাচিন হন। কলে প্রেলিভেন্ট ও কংগ্রেলের সংখ্যাগরিষ্ঠ দল সমদলীয় নাও ছইতে शास्त्रमः। किन्न प्रथ व्हेडे बबाद्य बद्धम मिल्लमानी स्व यवम প্রেদিভেউ ও কংগ্রেদের যুগপং নির্মাচন হইয়াছে তথন ক্লাপি তাঁছাদের দলগত বৈষয়া হয় নাই। কিছ ধৰন কংগ্ৰেস প্রেসিডেন্টের কার্যাকালের ম্বাভাগে ামর্কাচিত হইয়াছে, তথ্য क्रबन क्रबन प्रमण्ड देवथया छेणश्चिक इहेयाएड. ध्वर घ्रवनहे এইরপ ছইशাছে তথ্নই প্রেলিডেক্টের শালন-ভর্তী চালনায় বিদ্রাট উপস্থিত হইয়াছে: প্রেলিছেও উইলসম ও প্রেলিছেও হতাবের শেষের ছই বংসর এইরুপ ঘটরাছিল। প্রেসিভেন্ট টেইলসন ১৯১৯ ঐটাব্দে লীগ অব্নেছন্স্ সংগঠন করিয়া আসিলে কংগ্রেস ভাষার মেম্বর ফটতে অধীকার করে, ইছা श्रुविषिण पर्छेगा। अवाद ८५०० विलाहे पर्हेटव किया अवर प्रहेटन ভি পরিয়াণে ভইবে ইছা বর্তমানে লকলের আলোচ্য বিষয়। পর্বেদেবা বিয়াছে এরপ অবহায় পরবর্তী নির্বাচনে গ্রেদি-্রেন্টের মল আর প্রেসিভেন্ট পদট রাখিতে পারেন নাই। এবাত্তে পত্ৰবৰ্ত্তী নিৰ্ব্বাচনে ত্ৰিপাবলিকান দল প্ৰেলিছেণ্ট পদ্ধীও खबिकाद कदिए किमा देश विक्रीय खाएलाहा विश्वय । देश হইতে ভর্কহলে আরও গুইট প্রশ্ন খত:ই উপস্থিত হয়। প্রেলি-ছেন্টের কার্যাকালের মধাবতী কংরোস নির্বাচন উঠাইয়া দেওয়া উচিত কিনা ? প্রেসিডেট ও কংপ্রেসের স্বতম্র নির্কাচনই ভালু না বিলাভী প্রধানত আইনগভার সংব্যাপরিট দল হুইতেই প্রেণিডেণ্ট বা মন্ত্রিসভা নির্বাচন ভাল 🤊 হিভীয় প্রশ্বটী অবর বর কমই আলোচিত হয়। কারণ এছেপের লোক সভ্ত बिर्खाहरन এ । चणाच य विमाणी खबायण च-चणक्ष निर्खाहरमङ হ্মতা সভদ ভাবিতে পাবে না।

আমেরিকার তথা পৃথিবার অর্থনৈতিক তবিয়তের অনিক্ষয়তা সম্বাচ্চ আলোচনা উঠিল: উর্থসতি বাণিজ্য-চক্ষ আর কত দিন উর্থ্যথাকিবে ? কত দিনে ইবার অবোগতি পুরু হইবে ? আমেরিকার রিপাব্লিকান মলের নীতি এই

চক্তগতি রোধ করিতে পারিবে কিনা? এই সধ বিষয়ে আলোচনা চলিল। ভখন মুল্যশালন সবে উঠাইরা লওরা रदेवारकः। वैकीदेवा नदेवांत चवावक्षिण शहत मुना श्रुव वाकिया গিরাছিল। কিছ যে সব এবা মূল্যণাসনের কলে বাজার रहेट चर्डाहर हरेबाहिन त्म मन सन्। चानांत (वर्ष) विभ : উৎপাদন বাভিয়া গেল; কলে দাম আবার ক্ষিয়া গেল। রিপাব্লিকান্ দল রুদ্ধ বাণিজা-খার্থের প্রতিনিধি। ভাছারা ৰ্ল্যশাসন, বা প্রেসিডেন্ট রুজ্ভেন্টের "নিউভিল্য" বা 'ন্তুম कांद्रवाद' शब्क कट्यन ना । कींशांद्रा क्रवाब छैरशांस्टनद शक-পাভী। ৰুল্যশাসন উঠাইয়া লওয়াতে ৰূল্য ক্লাপ পাওয়ায় ক্লন-সাধারণ ইছা পছৰ করিভেছে। তবে এ মৃল্য-ক্লাস কি বাণিজ্য-हरकत मिश्र चार्यर्थन चहमा कतिराज्य १ चरमरक मरन करतन যে জিনিষপজের এত চড়া দাম থাকিতে পারে মা। কারণ এত দামে যথেষ্ট ক্ৰেডা জুটবে না। কাজেই মূল্য-হ্লাস শনিবার্ব্য। তবে শ্বসাধাবিক বৃদ্যবৃদ্ধি ধ্ইলে বৃধ্য-দ্রাসও क्षण स्टेटन । करन यह वादभा की टेटण स्टेटन । की सांव कन प्रमुख्यनाती स्ट्रेंटिंग भारतः किन्छ ১৯২৯ সালে यसभ ব্রভ্যেকেই দায়িক ছিল, এবার সেরূপ নাই: কেছ কাছারও কাছে বিশেষ বারে না। কিভিবনীতে কারবারও বিশেষ नारे। (परभंद नांकश्रमित मर्गाश व्यक्तिकत महाराजिक) श्र শুখলা বিদ্যমান। কাকেই একক্ষের বিফলতা বা বিপদ খন লোকের উপর সংক্রমিত হুইবার স্থােগ কয় ৷ শুখলার সহিত ৰুদ্য ভবে ভবে নামাইরা আনিবার সুযোগ ও সভাবনা অনেক (वचै। चात्र अरे कृताविकत्रत्व ज्ञाक ज्ञाक विश्व विकास वि मारम यक्षणिक क्षेत्रणिक शांता केश्यामन-वास कमाहेरण शांता যায় ভবে ভো মুল্য-ছ্রাদ সত্ত্বেও ব্যবদায়ে বিষ্ণুলভার সম্ভাবনা পাঁকে না। আমহা আমেরিকার বাহ্নিরের লোক কিছু ভীত হইয়া পভিতেতি। এখন পুৰিবীর বাণিজ্যের উপর আমেরিকার বিশেষ প্রভাব ৷ আমেরিকার বাণিকাচঞ ঘর্ণ নিমুম্বে আৰ্ত্তিভ হইবে, ভাহায় বেগ ধনী আমেনিকা সাম্পাইভে পারিলেও আমর: পারিব না। ইংলভের মুক্তানীতি ও বাবিকা-মীতিতে এই জয় বিশেষ প্রভাব বিস্তার করিতেছে।

ইংগভের কৰা উঠিতেই ধেৰিলাম যে ইছালের প্রায় সকলেরই মতে ইংলভের জাগতির প্রবান জন্ধরার তাছার জাবুনিক যন্ত্রপাতির জভাব। যন্ত্রপক্তিতে পিলাইরা পাছিলে উংপাদন থবেই বাড়ে মা, তর্বন সকলের জাগই ক্ষিয়া যায়। ভাগ লইয়া টানাটানি জারস্ত ছয়। সম্ভ লম্ভার সমাবানই ছ্রাছ হইয়া পড়ে। বহু বিষয়ে জালোচনা চলিল। সম্ভ বিতর্কে সোংসাহে যোগান করিয়া বিশেষ জাম্ক পাইলাম।

আমেরিকান অতি ধগণকে ভারতীয় বাভে পরিভৃপ্ত করি-বাব উচ্চেক্তে ঐ দিন শ্রীরুক্তা মহলানবীশ-গৃহিদী পরং বালা করিয়াছিলেন। পোলাও, ভাল, কপির ভালনা, মাংল, চাটনী ও হানার পারস আমেরিকান ভন্তলাকগণ প্রম পরিভোষের সহিত আহার করিলেন। বছনিন পরে সুপক বদেশী বাজ পাইরা প্রচুর আহার করিরা কেলিগান। আহারাতে ভেনিং ও ভাহার বালিকা-কুভা গান সাহিরা অভিবিগণকে আণ্যারিত করিলেন। শিরানো বাজাইলেন অভিবিশের মধ্যে সর্বাণেকা বয়ঃক্ষিত্র মুক্তী। ইনি গণিতে পারদর্শী। মুদ্ধের সমর মুদ্ধ-আহাকের নব-নব ভিজাইন স্কৃতির ক্ষত বহু মুদ্ধ ক্ষত ক্ষিরা প্রতিষ্ঠা গাভ করিয়াছেন। বানি প্রাচ্ছার হোটেলে ক্রিকাম।

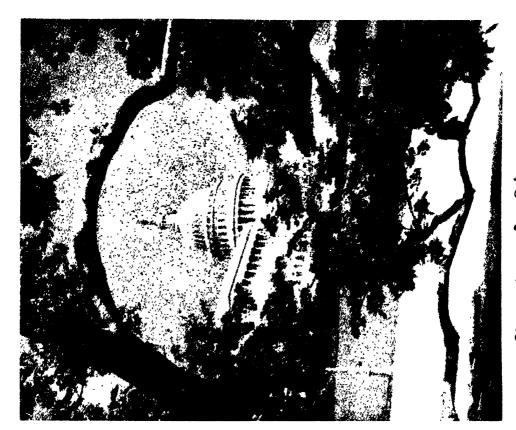
প্রবিদ্য রবিধার। দিন্টা ভাল না। টপ টপ র্ট্ট পড়িতে-ছিল। আমি যে হোটেলে ছিলাম ভাগার মাম শোরস্বাম্ (शाहिल। जनम के रशाहित मन-वात कम जातजीश विरामम। তাহার মধ্যে প্রায় সকলেই সুত ও এপ্রিকালচারাল্ অরগানাই-ক্রেলানে ভারতীয় প্রতিনিবিমঙলীর সভ্য: সন্মিনিত জাতি**-**পুলের অংশীভূত এই প্রতিঠানট পুবিধীর বাজ-সম্ভা সমাবাদে সচেষ্ট : সমস্ত জাতির প্রতিনিধিগণ ওয়াশিংটনে মিলিত क्रेश्राह्म । श्रीश्रहे कैश्राह्म ५७। क्रेटल्ट । जावलीय मरनव (नजा चू-अभिद्व चाहेनकोवो ७ क्राउत्प्र-(नजा खाळाड काहेकू। हैशालक (जाक्कोर्य) व्यक्ति वार्यन । व्यक्ति (मध्य-वामपृष्टि (बाखाटकत ठीक (भटकहोती), (भावधवाना (नटबत कारेनाम সেকেটারী), ভবিল, রাভ (ধৰাক্রমে বোধাই ও দিলীর ইক-ন্মিকৃনের অব্যাপক), রাধাক্ষল ১ুখাজি ও রাধার্মুদ बुवाकि ! काविश्वाहिलाय हुई व नियते। वैशासक काशदक जरक वृक्षिय। किन्न अञ्चल पूर्वित्न छोरः मस्टर रहेश मा। मकानही (बार्केटनरे काने रेनाम।

विवाह प्रशंक्ष इंटिन। क्वाबाध कान विषय कही मादे। मर्वाबरे आपूर्वा, (माण: ७ प्रतामावछ। महमकण ७ স্থানাগার পারপারীরপে বুস্কিত। নীচে প্রশন্ত ও সুস্কিত माध्यक्षे अभूत नवनावी मधानस्य मर्दाना चानस्ययः शिव्यन নাভিত্তং ইভান। ভাছাতে পাহচারি করার ও ব্দিবার বন্দোবন্ত আছে: সহত হোটেলটকে ইচ্ছাসুরূপ উত্ত बाबिबात वह क्ष्मीत डेबान-वावश बाह्य। बाद्दत वड भी ७३ इंडेक मा (कन किलाद अर्वाता १०० इंडेटल १०० किया जान हाना एतः। करन निवादन नौरज्य (शाहित्वत मर्या भाषाना अकरे। कथन शारव - प्रांम याव ভিনট: প্রত্যকটির মূল্য-ভালিকা প্রক। বাজ যেওপ वक्मा व (भरेक्षण लहुत । (कान किनिएश्वरे सकार रा अलहू-म्बा भारे: सम ७ इरक्ष वाक्षा । आहूर्या चढ़नभीता क्षांच्यात्म देशांचा क्षयायां कम यात्र । जावे चावेन अन जान সুখাছ ও বছে আনারসের রস পান করিলে প্রাণ ঠাতা হয়। अञ्चल कमला, त्लेल, वाखावि म्बद्, मधवजी त्वव् ध चनामा কলের রসও প্রচুর। কেং কেং নিগলিত বস পান না করিয়া কল हिवादेश बान । वार्काविकार ईशास्त्र विषेश सिवास्थि । (कर प्रशिक्ष कपनी ठाक् ठाक् कविश काष्ट्रशा पन इव ७ ठिनि

ज्ञरहारित वाहराज्यम् । वद्याकः (जाकरम वाह्यम (जाकरम অনেকে কল বান। সে গমম দেবিতেছে বরমুক্টাই বেশী চলিতেছে। ভিন্নাছ, মাংস, ভরকারি সৰই যথেছে ৰাওয়ার काम वारा मारे। जामात २१'व'६७ शट्यत मरश अरहार ७५ हिर्ण मांबरे स्विटिल्स । अनमा हिर्ण रेगावा अस्यक्ता भागारेकातीत मण्डे वाद्या करता । ७८व मावाही काहिता (क्लिया দেয়। ছোট চিংছি নিদ্ধ না ক্রিয়া ব্রক্তের মধ্যে ভিনিপার-সংযোগে কেলিয়া দেয়। বাইতে মৰু লাগে না! ভাষন मार्थित मानावश जान बारेशाबि। जारेमकीय दूव प्रवाहः। काँठ। बामां ७ (स्वेट्ड व अरमव (रम जिया। अक (श्रेष्ट काँठा ছানা, यानात्रम, चार्यम, क्रमा, हिर्दी अवृष्ठ मानावित स्मिहे ফল পহযোগে বাইভে বেশ লাগে। প্রাভরাশে ফলের পর **ठाउँ ज राज्य अकि वाक्र ठाल । अ शाम ७ रह दक्**रावि । क्र मुक्ति, क्रिट क्रवाझक, क्ष्य का भावन हेल्यानि इव च किसि मरद्यारम बाहेर७६६: **५७ ४७ (शाहेरम यरन এक हिं**। बुष्टि प्रिकारम एचन अवभ चाम्हरीहे एवेशिम। पूर्वीद वर्षेट अर्पाम वृद शिव: मिकारमात दोश्वात हुए बारत वह का किएक .सचित्रां खवाक् **एवेशां**छ।

খাধ্যক্রব্যের মূল্য এখানে খুব বেশী। তকট গল্লা চিংকি তিন ডলার বা দশ টাকা। এক প্লেট ছবিশের মাংল চার ডলার বা ভের টাকা সওয়া পাঁচ খানা। কল বরং সভা। এক প্লাস আনারস বা খালেশের রস কুছি-পাঁচল সেওঁ বা দশ বার খানা। ঐবপ এক প্লাস ফলের রস আমান্দের দেশে ঐ লামে এবন পাওয়া যার না! পাঁচল সেন্টে চারিট বছ বছ স্থাছ কলা এবং দশ বার সেন্টে একট খাণেল কিনিয়াছি: আপেলঙলি খুব বছ এবং প্রেই, মুবে দিলে সলিয়া যায়। ক্যালিকোলিয়ার বেজুবও বুব স্থাছ এবং লামও বুব বেশী নয়। ওয়ালিটেনে দৈনিক হার ভলার বা কুছি টাকা খর-ভাছা দিয়াছি। শিকালোতে খর-ভাছা ছিল খাবও বেশী। খাবার বরচ দৈনিক প্রায় খাট ডলার বা প্রায় সাভাইল টাকা প্রিয়াছে। লওনের প্রায় ভেনত্ত্ব খ্রন্ত খরচ আমেরিকার। ওয়ালিটেন ইনত লিকালো বা নিউ ইয়কে খরচ আমের বেশী।

এনেশে ছোটেল ভিন্ন আন্ত হই প্রকারের ভোকনালর আছে। কেন্টিরিরা ও জাল টোর বা ঔষব-ভাঙার। কেনিটেরিরার গৃহপ্রান্তে লখা মন্দের উপর সমন্ত বাদ্যান্তর) সাঞ্জাম থাকে। প্রব্যাক্তি বারকোষ, কাঁটা চামচ প্রভৃতি ও কাগজের সাভিয়ের বা কাগজ-ঢাক্নী। চুকিয়া একট বারকোষ ও প্রয়োজনমন্ত কাঁটা-চামচ ও সাভিন্নের সইয়া মন্দের পাল ধরিয়া অপ্রদর হইপাম। যাইতে যাইতে আমার ইছামত বাদ্য বাছিয়া বারকোষ বারকোষ। মন্দের শেষে একট লোক বান্ধ লইয়া বাসিয়া আছে। সে বারকোষ দেবিয়া বৃদ্য বলিয়া দিল। ভাছাকে মুল্য দিয়া বারকোষ লইয়া সামন্দ চলিয়া আসিলান। সেবান্দে টেবিল চেয়ার পাভা



मार्किम क्ष्मिवारहेव वांक्यांकी अवश्मिरकेरियद करहार म-खरम



याक्षरिकाट ठाक्नी-गृष्ट् वर्ष्ट्याय ठीर-व क्यूग्रिक भाष्टि द्वर काणीय भद्रकारबर्व कर्ज्यास्य भद्रिग्य-क्षण व्रष्टरस्य कांग्र निक्छिण क्रूर्टर

ভারতৰহের পল্লী



মহীশুরের পল্লীপথে



কাখীরের উত্তর দিকস্থ সুষকা অঞ্চের চাষীদের স্ক্রীর-সংগর শভক্ষের

রহিরাছে। ইচ্ছামত দেখানে বলিরা থাইরা চলিরা দেলাম। এবালে বেশ ফ্রুত থাওরা শেষ করা বার এবং দামও হোটেল অপেকা কম। নিউ ইয়র্কে কেলিটেরিরার এক প্রকার যান্ত্রিক সংক্ষরণ আছে। নাম "আটোমেটন" বা "ব্যংক্রিয়"। সেথানে অবিকাংশ থাদাই যন্ত্রের মব্যে থাকে। সামনে নাম ও দাম লেথা আছে। কোনটা পাঁচ সেন্ট, কোনটা দল সেন্ট, কানটা পাঁচল সেন্ট। যন্ত্রির সামনে সিরা নির্দিষ্ট ছিলে দামটি কেলিরা দিলেই এক প্লেট থাবার আপনা হইতেই বাহির হুইরা আলে। চা বা ককির যন্ত্রের সামনে বাট সাজান থাকে।

খাম কেলিয়া দিলেই যন্ত্রের সন্মুখের মুখ দিয়া চাব। কাফি শভিতে পুরু করে। বাটি পাতিয়া বরিয়া নিতে হয়। বাটি ভবিলেই আবার মুখ বন্ধ হইয়া হার।

ড়াগ টোরখলিতে খাদ্য আরও সন্তা, সেধানে একট মঞ্চের উপর বসিয়া লখা টেবিলে ধাইতে হয়। অল দাবে মোটাসুট ধাইবার পক্ষে এখলি বেশ।

হোটেলে বক্শিশ দিবার প্রথা আছে। খাদ্যব্ল্যের অন্ততঃ দশ্মাংশ বক্শিশ দেওয়া রীভিদ্মত। কেকিটেরিয়া বা ডাগ টোরে এ প্রথা নাই।

সারাদিন হোটেলে থাকিয়া বৈকালে শ্রীর্ত রামর্থি ও তকিল মহালয়ের সলে ভালনাল আট গ্যালারী বেধিতে পোম। প্রনিশাল প্রম্য প্রাসাদে প্রস্কিত ছবির মালা। প্রাসাদটি আট গ্যালারীরই উপর্ক্ত। পঠনতলীতে বৃচ্তা ও সৌন্দর্য্য রূপণং অভিব্যক্ত। দোতলার মবাছলে কৃষ্ণমর্দ্মরের বিরাট গুলমাণ পরিবেটিত জলের কোরারা। ছদিকে খরের পর ঘর ছবিতে লাজান। মুরোপীয় শিলীগণের ছবিই বেশী। যে সব লগবিখ্যাত ছবি লগুনে বেধিরাছি তাহাদের অনেক-শুলি এখানেও দেখিলাম। কোন্টি আসল কোন্ট নকল জানি না। আমেরিকান শিলীগণের অভিত কর্জ ওয়াশিংটন ও তাহার ক্রিরাকলাণ সম্পর্কে জনেক ছবি দেখিলাম।

পরদিন ১৮ই নভেশ্বর সোমবার। ব্যুরো অব্ দি সেলাসে লেলাম। আপিসট মেরিল্যাও রাষ্ট্রের অন্তর্গত পুটল্যাও নামক ছামে, ওয়াশিংটন হইতে দল-বার মাইল দূরে। যাইবার রাভা বেমন স্মিন্তিত তেমনি স্পোভন। পথে নগর-প্রান্তে বভি অঞ্চ দেবিলাম। বভির বাভীগুলি স্কর পরিছের এবং স্পাক্ষত। আমাদের দেশের অবস্থাপর লোকদের ফ্লাট অপেকা হীন বলিরা মনে হইল না। বিভীপ প্রান্তরের মধ্য দিয়া রাভা চলিরাছে। লোকের ভিছ বেশী নাই।

সেলাস আপিসে গেদিন প্রীর্ত মহলানবীশ মহাশরের বক্তৃতা হুইতেছিল। আপিসের ডিরেক্টর হুইতে প্রার সমস্ত কর্মচারী আগ্রহ সহকারে বক্তৃতা ভ্নিলেন। পরে তাঁহারা নানাবিব প্রার ক্রিলেন এবং মহলানবীশ মহাশর তাহার ক্রাব ছিলেন। আপিস-সংলগ্ধ একট কেফিটেরিরা আছে। এখানে

আগিসের প্রবানগণের সহিত নব্যাহ্যভাজন সমাপন ক্রিসাম।
প্রবানগণ হইতে কেরাই ও বেহারাগণ পর্যন্ত সকলেই একই
লাইনে ইন্ডাইরা বাভ সংগ্রহ করিয়া একই হরে পাশাপাশি
বিসরা বায় । ভাহাতে কোন মর্ব্যাদা অমর্ব্যাদার প্রশ্নই উঠে
না । এ যেন ব্র সহক ও হাভাবিক ব্যাপার । বৈকালে
মহলানবীশ মহাশরের সক্ষে বাজিয়া এদের সমন্ত কার্য্য পের্বিলাম । এরা আপিসের কান্ধে বহু প্রকারেয় যন্ত্র ব্যবহার
করে । একট প্রকাভ সহা বরে শ্রেইবছ ভাবে সন্ধিত শত
শত বন্ধ দেবিরা মহলানবীশ মহাশরও আশ্রুব্যাহিত হইলেম ।

পর দিন বহুলানবীশ মহাশবের সলে ব্যুরো অব্ এপ্রি-কালচারে গেলাম। সেগানেও তিনি বস্তুতা করিলেম এবং বস্তুতাত্তে সকলের প্রশ্নের ক্ষাব দিলেন। বৈকালে "আর-কাইত হলে" প্রীয়ত মহুলানবীলের সংখ্যাতত্ব-বিষয়ক একট বস্তুতা হইল। এট তাঁহার ঐ বিষয়ের তৃতীয় বস্তুতা। বহু বিশিষ্ট ব্যক্তিতে স্বর্ট পূর্ব।

महनामवीम महामय "नमूमा क्योल" विषय श्रव्या করিয়া প্রতিষ্ঠা অর্জন করিয়াছেন। বহু বছর পরিয়াণ বা গুণ নিৰ্ণয় ক্রিভে হুইলে সমন্ত জিনিষ প্রীকা না ক্রিয়া বিশেষ রূপে নির্বাচিত করেকট নমুনার পরীক্ষা ছারাই কাক চলিতে পারে। দেশে এবার কত ভ্ষতিত পাট বোষা হইয়াছে ইহা নিৰ্ণয়ের জভ সমস্ত পাটের জমি না মাপিয়া কয়েকট খনি নমুনাখন্ত্ৰণ দেখিলেই চলিবে: সম্পূৰ্ণ খনীপ ব্যয়গাধ্য এবং অনেক ক্ষেত্রে 🔧 নমুনা করীপ পুলক ও স্কর। অব্যাপক-মহাশয়ের মতে নমুনা দরীপ অপেকা সম্পূর্ণ শ্বীপ অধিকতর ভ্রমাত্মকও বটে , কারণ সম্পূর্ণ শ্বরীপে বছ-भरबाक बरर वह बकरमब लाटकब बिर्शाटिंब वेशब मिर्छब ক্ষিতে হয়, অৰচ ভাছাদের বিপোর্টের পভাভা নির্বয়ের কোন বৈজ্ঞানিক উপায় নাই। নমুনা করীপে অন্ন লোকের প্রয়োক্তম, সুতরাং ভাষাদের পটুতা ও সাবুতা সাবারণত: উচ্চতর হয় এবং বৈজ্ঞানিক উপায়ে তাছাদের বিপোর্টের সভাভা নির্বয়ন্ত সভব। নমুনা জরীপের ধারা সরকারের বহু কার্যা সুগম হইতেছে। আমেরিকায় ইহার ব্যবহার সর্বাপেকা বেশী: নমুনা জ্বীপে ইহারা বংসরে কোট কোট জলার ব্রচ क्विट्टिश यक्षि देशांवा मध्यूर्व क्वीट्यंव बावा मध्य वर्मव অভয় দেলাস বা লোকগণনা করে, তথাপি প্রতি বংসর নমুনা খ্রীপের ধারা নৃতন করিয়া লোকসংখ্যা নির্ণয় করে। क्रमान प्रियान निर्माय देशाया मधुना क्योप्या वहन ব্যবহার করে। খত:ই ইহারা নমুনা জরীপের অভভয় প্রবর্ত্তক মহলামবীশ মহাশয়ের বক্ততা প্রবণ করিতে বিলেষ উৎস্ক। অব্যাপকবরের প্রতিষ্ঠা এবং ইহাদের জানিবার ও আরও ভাগ করিয়া কাব্ব করিবার আঞ্জহ দেখিয়া বিলেষ আৰক্ষোৰ করিলাম। জ সময় মহলামৰীল মহালহ স্বিলিত ভাতিপুঞ্জের "ই্যাট্টিক্যাল ক্ষিণ্নের" নমুষ্ ভ্রীপ

সাব্ ক্ৰিটির সভাপতি নিৰ্বাচিত হন। ১৯শে দৰেম্বর ব্লুল-বারের পর তিনি ওয়াশিংটন ত্যাগ করেন।

২০শে নবেশর ব্যবার বাবেট ব্যুরোভে গিরা ভঞ্জ্য কর্মচারিগণের সহিত পরিচিত হইলাম। এবানে লি, আর, রোজেন নামক বাবেট ব্যুরোর কনৈক উচ্চপদহ কর্মচারী আমার কাবের সর্বা বিষয়ে সহায়তা করেন। তাঁহার আমার আমেরিকার কাক স্পান্ত হয়। বাবেট ব্যুরোভেই আমি আমার মৃদ কর্ম্মভা ছাপন করিলাম।

দক্ষিণ আমেরিকা ও চীনের করেকজন সরকারী কর্মচারী আমেরিকার বাবেট নির্মাণ প্রণাদী শিকা করিবার কর ভবন বাজেট বারোভে কাল করিভেছিলেন। এই শিকা সমাপ্ত कतिए छांशास्त्र इवे वरमद मानित्। (क्र वरमदाविक এবানে আছেন। ভাঁছারা সকলেই লরলচিত হবক। উরু-পরার ভার, ভে, বারু, পরাগরার ফ্লেরেন্টিন, কিউবার রোডল কো ভিমেগাস্, পানাখার এছ্রার্গ ম্যাক্কালা, মেজিকোর बहुबार्ल। त्वाष्ट्रीम् बदर हीरमद निरंदम देएहा-ईशांद्रा नकल्पर সদালাপী। দক্ষিণ-আমেরিকার ভদ্রলোকগণের মাড়ভাষা न्धामिन व्यवा पर्व निका नकरमर रेश्टर्सक कार्यम, ज्राद কথা ৰুব স্পষ্ট বা ফ্ৰন্ত নয়। চীনা ধুবকট সৰ্বাদা কৰ্মগভচিত। ট্ৰোৱীর কর্মচারিগণ পরে এক দিন আমাকে বলিয়াছিলেন যে बहे हीमा बूदकि छांशालाब बकायेत्केव मित्रम छांशालाब व्यापकार काम बाइक कतिशास्त्र । अक विन वैशासित महिक अकड़ किछेवान (काक्यांनदा मधारम (शांनाक-मरदादन) মব্যাক্তোক্ষ করিয়া পরিভুঞ্জ ক্ইয়াহিলার। ভিয়েগালের भए जावन इ-अक्षिन बनाक्तकाक्य कविदाहि। एक्नि-আমেরিকার দেশগুলির রাষ্ট্রক স্বাধীমতা সন্তেও শিলাদি বিষয়ে অসহায়ভার কথা ইহারা ছঃবের সহিত বিরুভ क्रिशादा। कांबलवर्षत लिल देशालय महक मधावलमा चारह बदर कारकदर्शन कथा स्थितिक देशायन पूर साजह। আমার ওয়াশিংট্য অবস্থান কালে নিউইয়র্কে সন্মিলিত ভাতি-পুঞ্জের সভার দক্ষিণ-আফ্রিকার ভারতীয় দলনের বিরুদ্ধে ভারত-সরকাবের অভিযোগ আলোচনার উপস্থিত হয়। গ্রীযুক্তা-বিষয়লন্ত্ৰী পণ্ডিত এই অভিবোগ সভাৱ উথাপিত কৱেন। **त्य**माद्रम चार्डेम चरूर अरे चिल्हाराध्रत उत्तर वियाद चर्ड উপপ্রিত হন। ইংরেছ সরকার ও মার্কিন সরকার দক্ষিণ-আফ্রিকার পক্ষে ভোষ্ট ধেন। তৎসত্ত্বেও ছই-ডভীয়াংল ভোষ্টে ভারতবর্ষের জনলাভে বিশ্ব বিশ্বিত হইয়াছিল। দক্ষিণ-আমেরিকার সমস্ত রাষ্ট্র তথ্য ভারত-সরকারের অভুকৃতে ভোট দেন। বৰৱের কাগকওয়ালারা লিবিল, বর্ত্তবামে ভাতিপুঞ্জের সভার অখেত ভাতিগণের একট ভোট ভ্টরাছে विन्दां वटन एवं।

পরে শিকাগোডে ত্রেজিলের একট সরকারী কর্মচারীর

সহিত আমার আলাপ হইবাছিল। ইনিও ব্ৰক এবং এ দেশের বাব্দেট তৈরির কাক শিবিতে আসিরাছিলেন। তিনি বলিতেন, ভারতবর্ব, চীন এবং ব্রেক্তিলের ভবিত্তং সহুক্ষল। ভবিষ্যতের পৃথিবী ইহাধেরই।

এদেশের দৈনিক ব্বরের কাগক দেখিরা আক্রব্য ক্ইরাছি।
সব শহরেই খবরের কাগক আছে। বড় শহরে একাবিক্
কাগক প্রকাশিত হয়। নিউইয়র্ক টাইয়্কই সম্বিক প্রসিছ।
ইহার গৃঠাসংখ্যা নিজিট নহে। যেদিন বেরূপ ছাপাইবার
উপযুক্ত থবর থাকে সেই অহুলারে গৃঠাসংখ্যা বাড়ে বা
ক্ষে। আমি ৪৮ পৃঠার কন্ত ক্রমণ্ড দেখি নাই। বছদিনই
৬৪ পৃঠা দেখিরাছি। রবিধারে ২৫০ পৃঠা দেখিরাছি।
একখানা ২৫০ পৃঠার খবরের কাগক আমাদের বিশ্বরক্র ত
বটেই, নাড়াচাড়া করাও কটকর। আমাদের দেশের টেইস্ব্যান
বা আমক্রাজার প্রিকা সাবারণতঃ আট-দশ পৃঠা রাত্র
থাকে। বিলাতের কাগকেও তাহার বেশী থাকে না। লখন
টাইয্স ব্যতীত অভাভ কারকের আয়তন তো আরও ক্ম।
আমেরিকার খবরের কাগকে প্রথম পৃঠার খবর থাকে, লখন
টাইম্সে প্রথম পৃঠার বিজ্ঞাপন থাকে।

अ विषय भाषात्मत त्मर्भत कानकश्रीन भूटक विनिष्ठि প্রথা অনুসরণ করিত, এখন আমেরিকান প্রথা অনুসরণ করে। পুথিবীর সব দেশের খবরই মিউইয়র্ক টাইম্সে থাকে। चावज्यस्य चंदव यात्वह बादकः चिट्मश्रदाद क्षयम अक्रि রবিবাসরীয় সংখ্যায় নেকের ও কিয়ার বভ বভ ছবি দিয়া काशास्त्र मधरक अकृष्टि चम्पत्र श्राव्य वावित्र स्टेशाधिन । প্রবন্ধকারের মতে কিয়া নিপুণ উকিলের ভায় খামতে অটল আর নেছের সর্বাধাই পরমতের সহিত নিজমতের সাম্লক্ত বিবানে প্রস্তুত সংবাদা পুতন সত্যে উপনীত হইবার আল ष्टेरच्याः अन्यक्रिष्ण । अन्यस्य विश्वोण-**धन-मूनक यह**ण् বিশদ ভাবে প্রদর্শিত হইয়াছে। সাধারণত: ইহাদের প্রকাশিত कारकरर्देश देवरह काम कुल सिंद नाहे। नाबरक चरतरामह ৰবর পাঠ করিভাষ: হিন্দ-যুস্পমানে বাকিয়া বাকিয়া দালা छनिएछ । क्न्बिट्टे खा भारत है बाद के का वार्यात का-সরকার সরকারী ভাবে ইছার কার্য্যের সাক্ষ্য কাম্মা করিয়া বাবী প্রেরণ করিলেন। নেছের জিয়া ও বলদের সিং সহ লও ওয়াভেল লওন হাত্রা করিলেন। সেখানে বিলাভি মন্ত্রিসভার সহিত তাঁহাদের আলোচনা বার্ব হইল। মন্ত্রিমিশনের প্রভাবের যে অংশের অর্থ লইয়া মভবিরোধ চলিতেছিল, বিলাভি ব্যৱস্থা ৬ই ভিলেখ্য ভাষিৰে ভাষাৰ निषय चारा बाहाद कवित्तम। शदा कर्रांकर क्षिष्टै (म कांचा चौकांत कविता नदेशना । भंतर वक्ष क ক্ষপ্রকাশনারারণ বিটাশের সহক্ষেত্র সক্ষান হয়র কংশ্রেদ ওরার্কিং ক্ষিট্ট হুইভে প্রভাগ করিলেন। ভারত-সরকার ও আমেরিকা-সরকার মুভবিনিমরে খীরুত হইলেন।

আসক আলি ওরালিংটনের ভারতীর দৃত নির্ক্ত হইলেন।
নেহেক বড়লাটের বছলে এসোলিরেটেড চেছার্স অব
কমার্সের কলিকাভাছ বার্ষিক অবিবেশনে বঞ্চতা করিরা
বাবীন ভারতে ইংরেজ ব্যবসাধারগণকে অভর নিলেন।
ভাঁহাছিগকে সামাজ্যবাদী মতবাদ পরিত্যাগ করিতে উপদেশ
নিতে সিরা বলিলেন যে, এমন বে ইইবর্স ভাহাও সামাজ্যবাদী সরকারের সম্পর্কে আসিয়া এক সমরে লোকর আহা
হারাইরা কেলিরাছিল। মন্তিমিশনের ১৬ই মে ভারিবের
প্রভাব কি সভাই সাব্তা-প্রত্ত, না উহা ইংরেজের প্রাতম
কপট-লীলার একট নৃতন প্রকাশ মাঞ্জ ইহা তথন ভারতবর্ষে
ব্ব আলোচিত হইতেছে। এই সব ধবর সাপ্রহে গুঁজিয়া
দেবিভাম।

এবানকার বাদে কণ্ডাক্টর নাই, টকিট নাই, ভাছার ভারতম্য নাই। এক দিকে যত দুরই যাই না কেন ভাছা পাঁচ সেন্ট! ঐ ভাছার একবার বাস বদলানও চলে। প্রবেশ-বারের পাশে একটি বাল আছে। ভার উপরে একটি ছোট ছিন্দ। যাত্রীগণ বাসে উঠিয়াই ঐ বাজ্বের মধ্যে একটি পাঁচ সেন্ট মুল্র! কেলিয়া দেয়। আমি প্রথম দিন বাসে উঠিয়া মিয়ন না জানার বাজে মুলা না কেলিয়াই বসিয়া পভিলাম! কোন কণ্ডাক্টর দেবি না। কেহ ভাছা চায় না। নামিবার সময় ডাইভারকে জিলাগা করিয়া বাজে পয়্রসা কেলিয়া নামিলাম। সাবারণ লোকের এই সাব্তা দেবিয়া বিস্থিত হইলাম। ভাবিলাম আমাদের দেশে এইয়প হইলে বাস কোন্পানী

ছদিনেই কেল পঢ়িত। বাধাদের বাস বন্ধলাইবার ধরকার তাহারা ছাইতারের নিকট হইতে একথানি টকিট চাধিরা লয়। উহা পরবর্তী বাসের ছাইতারকে দিয়া দিতে হয়। এই ব্যবহার ইহাদের বাস চালাইবার বরচ ক্য পড়ে।

বে চাকাটা বাঁচিল তাহা বারা ছাইভারকে বেশী সাহিদা দিতে পারে অথবা বালের ভাড়া প্রাস করিতে পারে। সামাত লাধুভার বারা কিরপে কম শ্রমে কাজ হর, লোকের আর বাড়েও থবচ করে ইহা ভাহার প্রস্তুট উচাহরণ।

সেদিন রাজে ডাক্তার কাট্ডুর সংল নানা বিষয়ে আলাপ হইল। তাঁহার হেলে এদেশে লেখাপড়া শিবিয়াছিলেন। পুৰের অন্থরোধে পিডা ভাষার বাল্যকালের একট সহ-পাৰ্টিনীর সঙ্গে দেখা করিতে পিরাছিলেন। ভিনি এখন বিবাহিতা। সামী লবপ্ৰতিষ্ঠ উকিল। তাহাদের অভুরোধ এড়াইডে না পারিয়া কাট্ছু মহাশয় ভাঁহাদের সদে ছু-এক দিন वान कविश्व कारायव यरक भवन भविष्ठ हरेशासन। काहेसू ৰহাশর উৎসাহের সহিত ইহাদের সুধ্যাতি করিলেন। তিনি বলিলেন, "আমরা দূর হইতে ভূমি আমেরিকামরা ভবু ছলার बार यहात श्रुकाती बारर वैवाहित शाविवादिक श्रीवम साहिते प्रत्येत नथ । किन्छ अक्षा मिष्या । देशायत प्रमुख शांत-বারিক জীবন এবং আভিবেয়তা দেখিয়া আমি বিশ্বিত হুইয়াছি। ইহাদের জানপ্রহাও অসাধারণ। ইহাদের লাইবেরিতে ভারতীয় আইনের যত বই দেবিয়াতি তত বই ভারতবর্ধের কোন লাইত্রেহিতেও দেখি নাই।"

এক প্রান্থে

এ. এন. এম. বজলুর রশীদ

অসহায় পথপ্রান্তে যারা পড়ে আছে,
যাদের প্রাণের লোমা ধুনি-পুসরিত
বাদের আকাশভরা অবকার প্রেভায়িত রাত,
ধুমারিত সকল বাসনা,
কে তাদের ভাষা দেবে,
অর দেবে—পথের সকর,
হর্ষের আলোক মুঠি মুঠি,
সবুজের ভাষল বিলাল ?
রুগে বুগে বঞ্চিত প্রাণের
ভ্রের অনেক ধুলা,

বহ অভিবোপ,
কলালের শত হিমালর
পৃথিবীর পথ ঢাকিরাছে—
রুক্তির আবাদ কোথা ?
কে আনিবে মছনের শেষে
প্রাণের অন্ত-মধু
বিপুল বিশ্বাল
উল্ক্ত-প্রসার বৃষ্টি ?
আজি ভার অবভাত নাম—
অভানা দে পাছ লাগি
এ কবির রহিল প্রণাম ।

প্রাগ্জ্যোতিষ

ডক্টর শ্রীবিমলাচরণ লাহা, এম-এ, বি-এল , পিএইচ. ডি ; ডি. লিট্

পুরাকালে প্রাপ্ত জ্যোভিষের অপর একট নাম ছিল কামরপ। বাগ জ্যোতিষ কামরণ অপেকা বৃহত্তর ছিল। ইহা পূর্ব-জ্যোতিয় শাম্বের একট কেন্দ্র। শাক্ষীপি ভাদ্ধণেরা কামরণে আসিয়াছিল। বল্লেশে ইহারা আচার্য্য বলিয়া विषिच बदर चानाय रेपवेळ वनिश्च शतिहिच । देशायत शर्क পুরুষেরা জ্যোতির শাম অধ্যয়ন করিত। প্রত্যেক রাজার একট ক্রিয়া জ্যোতিষি ছিল। জ্যোতিষির প্রবান কার্ব্য हिन अर्थितक शृक्षा कविद्या नव्हे वांचा। वामावन अर्थ মহাভারতে প্রাণ জ্যোভিষের উল্লেখ আছে। এই চুইট এছের মভে ইহারা সুবিব্যাভ ভাভি। মহাভারতে প্রাণ জ্যোভিষ একট ক্রেছ রাজ্য বলিয়া ববিত হইয়াছে। ইহার রাজা ছিল ভগদত। মহাভাৱত হইতে ভাৱও ভামরা ভানিতে পারি বে প্রাপন্যোতির নামে একট অনুর রাজ্যে নরক ও বুরু নামে ছুইট অপুর রাজত করিত। কিরাত এবং চীনদিপের রাজ্যের শীমান্তে প্রাগক্যোতিষ অবস্থিত। ভারতমূত্বে প্রাগক্যোতিবের রাকা ভগদত কুরুদিগের মিত্র ছিল। ভারভরুত্বে ভগদত চীন-षितित निष्ठ महेश्व वृद्ध करतन । अश्र श्रेष्ठ वर शृद्ध वन-**দেশ প্রাগজ্যোভিষ রাজ্যের অধীনে ছিল। বরাহ**মিহির शृक्ष पिक्छ य नकन व्यापन केरबर करवन छारायन मर्या প্রাণক্যোভিষ একট ৷ রখুবংশের মতে একপুত্র নদীর উত্তর দিকে প্রাপজ্যোভিষ দেশ অবস্থিত ৷ সেইকচ আমাদের মনে হয় কেবল কামত্রপ এই রাজ্যের অভত্তি ছিল তাহা নর। देखा वक अवर देखा विशासित जानक जारम देशांत जन्मज ছিল। হোপিনীভন্ন হইতে জানা যায় যে সমগ্র বন্ধপুত্র উপত্যকা, বংপুর এবং কুচবিহার সমেত কামরপের অভত্তি। হেষচজের অভিবানচিন্ধানণিতে প্রাপক্যোতিয় কামরপের উল্লেখ আছে। বছুবংশে ইহারা ছুইট বিভিন্ন ভাতি বলিয়া বৰিভ। মহাভারতে গৌহাটর নিকটছ কামাব্যার উত্তেপ আছে। কামাধ্যার মন্দির শাক্ত হিন্দুদিবের একট পবিত্র ছান। পুরাকালে বন্ধপুত উপত্যকা ভিন ভাগে বিভক্ত:

- (১) जाविश्व (পूर्व्य विका),
- (२) चानाम (मदा चिना),
- uat(७) कामब्रथ (भिन्म किमा)

কানরপের পশ্চিম বিভাগের অপর একট নাম ছিল ত্র্ণ-বিহার । এবানে রাজাবিগের প্রাসাদ ছিল এবং ইহার রাজবালী কামাতিপুর হইতে লম্প্র দেশের মানকরণ করা হইরাছে । বন্ধপুর মদীর দক্ষিণ তীরে অবস্থিত গৌহাট কাম-রপের প্রাচীন রাজবালী । ত্র্পবিহারের রাজবালী কামাতি-পুর পাবনা হইতে ১০০ নাইল দূরে অবস্থিত। গৌহাট পাবনা

হইতে ইহার দ্বিপ্তণ দূরে অবস্থিত। পূর্ব্ব দিকে চীমদিগের স্থ নামে একট দেশের দক্ষিণ পশ্চিম বর্বার ছাতির সীমান্ত দেশ-ঙলি পর্যন্ত কামরূপ বিভূত। দক্ষিণ-পূর্ব্ব দিকের জনসভলিতে হাতীর বাগ হিল। কাষরণে একট ব্রাহ্মণ রাকা ছিলেন। যদিও ভিনি ত্রাহ্মণ ছিলেন বটে, অভারে ভিনি বৌহবর্শ্বের প্রগাচ ভক্ত ছিলেন। কমৌজের রাজা হর্বর্ডনের সহিত ভাঁহার বৰ্মধাত্ৰায় তিনি মিলিত হন। পুৱাকালে কামরূপ পশ্চিমদিকে করতোয়া নদী পর্যন্ত বিভূত। সমুদ্রগুপ্তের এলাহাবাদ ভঙ্ক শিলালিপিতে ভণ্ড নাত্রাজ্যের বাহিরে একট নীমাছ দেশ বলিরা কামরপের উরেধ আছে। পুরাণের মভে রংপুরের অভযুক্ত করভোরা মদী হইতে পূর্ববিকে প্রাগ্রেলাভিষের রাজবাদী কামৰূপ বিভূত। মণিপুর, ক্রভিরা, কাছার, পশ্চিম আসাম, ষয়মনসিংহ এবং গ্রীহটের কতকভাল অংশ কাষ্ত্রণ রাজ্যের অন্তর্গত। বর্তমান হবে গোয়ালপাড়া হইতে গৌহাটী পর্যান্ত কামরপ বিভূত। পুরাকালে কামরূপ দেশ প্রায় দশ হাজার লি বিভ্ত ছিল। ইহার অমিওলি উর্বার এবং চাষের স্থবিধার ৰত প্ৰচুৱ ৰূপ পাওয়া যাইত। উত্তরে ভূটান কামরূপের অন্তর্য দক্ষিণে ব্রহ্মপুত্র এবং লখ্যার সভ্য পর্যান্ত কামরূপ-দেশের সীমা হিল। কালিকাপুরাণের মতে প্রাগ ক্যোতিষ এবং কামাব্যা কিংবা পৌহাটী অভিন। কামাব্যার নীপকৃষ্ট পৰ্ব্বতে কামাধ্যা দেবীর মন্দির আছে। তাত্তেখনী দেবীর मन्द्रित शाहीन कामकाश्वर देखत-शूर्व भीमात निकर्ते व्यवश्चि । রাজনেধরের কাব্যমীমাংসায় প্রাণ জ্যোভিষের স্থান পূর্ব্বদিকে (पर्वा यात्र ।

প্রাগ্ ছোতিব রাজ্যে আয়, বেল, বট প্রভৃতি অমেক কল এবং বৃক্ষ ছিল। প্রজাদের নিকট হইতে কর আদার করা হইত লা। দোবের কল দঙ্গ্রদানও বিরল ছিল। কামরূপে অমেক প্রকার চক্ষন, যুগ ও বুনা পাওরা যাইত। বর্ধন চৈনিক পরিবাক্ষক হরেন লাং কামরূপে আলেন তর্ধন এবানে তিনি দেবেন যে আম এবং নারিকেল প্রচুর। এবানকার কল-হাওরা ভাল ছিল। লোকেরা সং, বর্মভীরু এবং বৈর্মাণীল ছিল, তাহারা দেবতার পূজা করিত কিছ বৌহবর্মে তাহাদের আহা ছিল না। চৈনিক পরিবাক্ষক এবানে কোমও বৌহ্বাহার দেবেন নাই। এবানে অমেক দেবনন্দির ছিল, রাজা বিজ্ঞাংলাহী ছিলেন; বঙ্গুর হইতে ভাল ছাত্ররা এবানে অব্যবন করিতে আলিত। যদিও রাজা বৌছ ছিলেন না, তিনি বীশক্তিসম্পর্ম বৌছ প্রমণ্ডিগকে যথেই সন্মান করিতেন।

কাষরণের পূর্ব্ধ বিকে অনেক পর্বাভ ছিল। ইহার দক্ষিণপূর্ব্ধ দিকে বন্যহতী পাওয়া বাইত এবং মুদ্ধের ক্ষযুহতী পাঠান

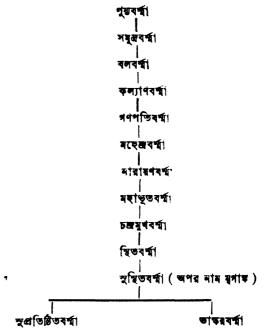
হইত। তৈনিক পরিত্রাক্ষের যতে বর্তমান কামরূপ এবং ক-মো-ল্-পো অভিন্ন। বর্তমান কামরূপের রাজবানী গৌহালী। উচ্চ রক্ষদেশের পশ্চিম দিকে কামরূপ ১৬০০ লি বিভূত। আলবেরুণির মতে কামরূপ কনৌজ রাজ্যের পূর্ব্যক্ষিক পর্ব্যক্ষ বিভূত। উত্তর-পূর্ব্যদিকে কামরূপ রাজ্য স্থাবীন বলিয়া মনে হয়। কামরূপের রাজা অপ্তমন্ত্রাট্ সমুক্তপ্তকে কর দিতেন। বহুলিন বরিয়া কামরূপে রাজ্যেবর প্রাবাভ ছিল। যদিও এই রাজ্য অপ্ত রাজ্যাদিগকে কর দিত, আভ্যন্তরীণ শাসনে ইহা স্থাবীন ছিল। হর্ষবর্জন কামরূপের রাজা ভাতরবর্জ্যবের সহিত একট পদি করেম। ভাতরবর্জ্যবের বিজ্যাক করেম। এই সন্থিতে গৌভদিগের ক্ষাতে হইয়াছিল। গৌডের রাজা শশাক্ষের,য়াজবানী কর্ণস্থবর্ণ ভাতরবর্জনের আর্ডাবীনে আরে।

হর্বচরিত হইতে জানা যায় যে, প্রাগ জ্যোতিষের র্বরাজ জাতরহাতি নামে একজন দূতকে হর্বের নিজ্টে পাঠান। যথন হর্বর্জন পণাকের সহিত বৃদ্ধ করিতে চান, কায়য়নের র্বরাজ ভাতরবর্জন কর্তৃক প্রেরিত হংসবেগ নামে একজন দূতের সহিত উল্লার সাজাং হয়। তাত্তরবর্জন হর্বের সহিত সভিহত্তে আবদ হইবার জন্ত অনেক উপঢৌকন পাঠান। হয়্ম এবং ভাতর বর্জন কর্তৃক পশান্ধ পরাজিত হন। কায়য়পের রাজা হর্বের আদেশ মানিতেন। কায়য়পের রাজা ক্রমার হর্বের মিয় ছিলেন। শ্রীহর্বের উৎসবে ভাতরবর্জন ধ্যোগদান করেন। কায়য়প পরে হর্বের হজ্যত হয়। কায়য়পের রাজা স্থিত বর্জনকে পরাজিত করিয়া মহাসেনগুল্প স্থাপ অর্জন করেন। স্থিতবর্জন বাজবিক একজন মৌবরি ছিলেন এবং তিনি কনৌজের প্রহ্বর্জন এবং অবজিবর্জনের পূর্ব্বপুর্ষয়।

যথন চৈনিক পরিত্রাক্ত হরেন সাং নালক্ষার ছিলেন কামরপের রাজা ভাত্তরবর্ত্মণ তাঁহাকে নিমন্ত্রণ করেন। সর্বা-প্রথমে এই নিমন্ত্রণ তিনি প্রহণ করেন নাই কিছ তাঁহার শিক্ষক শীলতক্রের অন্ত্রোধে তিনি কামরপে আসেন এবং ইহার রাজা ভাত্তরবর্ত্মণ তাঁহাকে সাধরে আহ্বান করেন। যথন ভাত্তরবর্ত্মণ তাঁহার ক্রমন্ত্রি সম্পর্কে প্রশ্ন করেন তিনি উভরে বলেন যে তিনি তাকু দেশের লোক।

যদিও ভাষর বর্ষণ ছাভিতে ব্রাহ্মণ ছিলেন, ভিনি নিছেকে ছবির কিংবা রাজপুত বলিরা মনে করিতেন। যথম ভাষর বর্ষণ বর্ষার শালভত কর্তৃক পরাজিত হন, কালীরের রাজা ললিভাবিত্য কামরূপ শ্বর করেন।

নরক কানত্রপদেশ কর করিরা প্রাণ্ক্যোতিবে বাস করেন। এখানে তিনি বিচারালর দ্বাপন করেন। ওাঁহার পুত্র ভগদভ পিতার সকল লদ্ধ্ব পাইরাহিলেন। ওাঁহার পুত্র বজ্লদভ কোত্রবংশের মর্যাদা অভ্ন রাখেন। ভাঁহার পুত্র রছণাল অভ্যন্ত বলশালী রাজা হিলেন। ওাঁহার পুত্র পুরুত্রন পাল বাশ্বিক ও কবি হিলেন। পুরুত্বগালের পুত্র ইল্লপাল বার্দ্ধিক এবং ভারপরারণ ছিলেন। ইম্পালের বোহর হইতে ভানা যার যে তিনি প্রাপ্ ছ্যোতিবের রাজা এবং নহারাজানবিরাক উপাবিবারী ছিলেন। কামরপের রাজা ব্রুছত শিবের উপাসক। রাজা বনমালদেবও শিবপুলা করিতেন। রাজা বীরবাছ বৃদ্ধে স্থলা অর্জন করেন এবং অস্থা নামে একট স্থীলোকের পানিএহণ করেন। নেপালের লিজবী বংশজাত বংলদেবী এবং শিবদেবের পূত্র জরুদেব কামরপের রাজা প্রহুদ্ধেবের কচা রাজ্যমতীকে বিবাহ করেন। রাজ্যমতী ভগদভরাককুল্পা নামে ব্যাত ছিলেন। কামরপের রাজা ভাস্করবর্দ্ধবের নিবনপুরে আবিস্কৃত তাত্রলিপি হইতে কামরশ রাজবংশের প্রিচর পাওয়া যার। তাহা নিয়ে প্রদত্ত হইল।



পালবংশীর রাজা বর্দ্মপালের পুত্র দেবপাল কাষরণ জর করেন। রামচরিতের মতে রামপাল নামে এক জন সীমান্ত মৃপতি কাষরপ জর করিরাছিলেন। সৌক্তর রাজারা উপর্গাপরি এদেশ জর করেন। কাষরপ রাজ্য বাংলার পালরাজানিদের রাজ্যের অন্তর্গত ছিল। ঐঃ বাদশ শতাজীতে কাষরপ শাসনের জন্ত ক্যারপাল তাঁহার মন্ত্রী বৈদ্যদেবকে যথেষ্ঠ জমতা দেন। বাংলার পালরাজারা আলামের অন্তর্গত প্রাপ্তে লাভিষত্তিকে শাসন করিত। রসপালের পুত্র বর্দ্মপাল কাষরপ জয় করেন। কাষরপের রাজা জরপাল বরেলির এক জন রাজ্যণকে নর শত পুরর্ণ মূলা দাম করেন। বৈদ্যদেবের কনৌলি দামপত্র হইতে জানা যার যে প্রমন্ত প্রামন্ত্রপ্রকাল করেন। বৈদ্যদেবের কনৌলি দামপত্র হইতে জানা যার যে প্রমন্ত প্রামন্ত্রিক কাষরপ্রমন্তর এক জন রাজ্যাতির ভূতিতে আবহিত। প্রাপ্তরের রাজা দেবপালের বঞ্চতা শীকার করেন। লক্ষণ্ডন্ম কাষরপ্রমন্ত জর করেন। লক্ষণ্ডন্ম কাষরপ্রমন্ত করেন। লক্ষণ্ডন্ম কাষরপ্রমন্ত্রণ করেন। লক্ষণ্ডন্ম কাষরপ্রমন্ত্রণ জয় করেন। লক্ষণ্ডন্ম করিকার করেন। লক্ষণ্ডন্ম করেন। লক্ষণ্ডন্ম করেন। লক্ষণ্ডন্ম করিন করেন। লক্ষণ্ডন্ম করিন করেন। লক্ষণ্ডন্ত্রিকার করেন। লক্ষণ্ডন্ম করেন। লক্ষণ্ডন্ত্রণ করেন। লক্ষণ্ডন্ত্রণ করেন। লক্ষণ্ডন্ত্রণ করেন। লক্ষণ্ডন্তন করেন। লক্ষণ্ডাক্রিয়

উমাপতিবর প্রাগজ্যোতিব-জর লক্ষরে একট কবিতা গেবেন।
শরণ নামে লক্ষণ সেনের আর একজন সভাকবি কাবরপ জর
বর্ণনা করেন। চন্দ্ররাজা বলচন্দ্রের পুত্র বিমলচন্দ্র কান্দর্যকরণ
শালন করেন। তিনি মালব রাজবংশীর রাজা ভর্তৃত্বির ভরীকে
বিবাহ করেন। তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার পুত্র গোবিন্দচন্দ্র
এবং তাঁহার পরে ললিভচন্দ্র কামরূপ শালন করেন।

বীঃ অবোহশ শভাষীতে বাংলা এবং বিহারের বিজেতা বৰতিরারের পুত্র মহম্মহ কাষত্রপ আক্রমণ করেন। করতোরা নদীর তীর দিরা তিনি উত্তর দিকে বাবিভ হন কিছে পরে পরাজিত হইরা প্রভ্যাবর্তন করেন। ১৮১৬ সাল পর্যন্ত কাষত্রপ নিজের বাবীনতা অভ্যুপ্ত রাধিয়াহিল।

রেখাগণিতে পণ্ডিত জগনাথ

🎒 বিজয়গোপাল বস্থ

ক্ষিত আছে, স্টেক্ডা ব্ৰহ্মা প্ৰকাদের সুবিধার ক্ষা বেখাগণিত আবিদ্যার করেন। তাঁহার নিক্ট হইতে বিশ্বক্ষা ইহা প্রাপ্ত হন এবং কালক্ষমে বিশ্বক্ষার এই শাস্ত্র বরণীতলে প্রচার করেন।

রেখাগণিতের আধুনিক বাংলা নাম জ্যামিতি। এক সময় ভবস্থা নামেও ইহা পরিচিত ছিল। (Reometry ইহার বৈদ্যেশিক সংজা। তিনট শব্দের বিশ্লেষণে একই অর্থ পাওরা বার।

শুল- ক শুলম্বতি বেবা পৃথিবীং পরিমাতি ক্ষতি বা ইতার্ব:।

জ্যামিতি—জ্যা (বস্থা)+মিতি (মানম্ পরিমাণন্।)
জ্ঞিমেট্রি (geometry)—জি (ge=earth—পৃথিবী)+
মেট্র (Metron=Measure—পরিমাণ)।

বৈদেশিক সংঘাতের ফলে ভারতবর্ষ হইতে এক সময় এই প্ৰতিবিজ্ঞান বিশ্ব হয়:

বুসলমান আবিপত্য কালে পাশ্চান্তা দেশ হইতে ৱেখাগণিত পুনৱাৰ ভাৱতে আমীত হয়। ইউক্লিডের এছাবলখনে আরবী ভাষার "মিলাভি" এছ রচিত হইরাছিল। এই এছ ভারতবর্বেও প্রচারিত হয়। ইহা অধ্যরন করিয়া লে মুদে কেহ কেহ জমিলার করিয়া করিয়া লৈ মুদে কেহ কেই জমিলার পর্যান্ত সহারভা করিয়াছিলেন। আক্ররের রাজ্যভার আন্যতম রড় মহারাজ টোভরমর ক্ষেত্রভ্-বিদ্যার প্রগাচ্ন পাতিত্য অর্জন করিয়াছিলেন। লাহজাহামের রাজ্যকালে বিনি বলাবিশ মুলিদক্লি বাঁকে ভুজ্ব ভাজ্যির করিছে লাহসী হইরাছিলেন লেই দর্শনারায়ণ কান্তনগো ছিলেম ক্ষেত্রভ্-বিদ্যার রাজ্যভার বিশেষ বুদ্ধেয়। এই বিদ্যা আরভ করিয়াছিলেন বলিয়া রাজ্যের জারগা-জবির সকল ভণ্য জার নধ্যপথি ছিল।

তৈলক দেশীয় সুপতিত জগনাৰ ক্ষেত্ৰতত্বিদ্যায় পানদৰ্শী

ছিলেন। তিনি ছিলেন বাদশাহ আগুরক্তেবের সভার অভতম বছ। অরপুরাবিপতি মহারাজ অরসিংহ এই ঋণী ব্যক্তিকে নিজ রাজ্যে আনরন করেন। মহারাজের উৎসাহে এবং প্রেরণার জগরাব ১৭৩৭ এইাজে সংস্কৃত ভাষার রেবাগণিত প্রণয়ন করেন। মুববছে এছকার ব্লিতেছেন—

অপূর্ব্ব বিহিতং শাস্তং যত কোণাব বোৰমাং।
ক্ষেত্রের্ কারতে সম্যক বাংশন্তির্গণিতে তথা।
শিল্পাস্ত্রমিদং প্রোক্তং ব্রহ্মণা বিশ্বকর্ত্বন।
পারশর্ব্য বশাদেতলাগতং বর্ষীতলে।
তছচ্ছিরং মহারাক কর সিংহাক্তরা পুনঃ।
প্রকাশিতং মরা সম্যক্ গণকামন্দ হেতবে।

বিন্দু, রেখা, ক্ষেত্র প্রভাত তাহার এছে এইরূপ দৃই হয়:—

য: পদার্থ দর্শনযোগ্য: বিভাগান্ত স বিন্দ্র্বাচ্য:। য: পদার্থ: দীর্থ: বিভাররহিত: বিভাগার্ত: স রেখাপদবাচ্য:। বিভার দৈর্ঘ্যয়ো যদ্ ভিদ্যতে ভর্মাভদং দেবক্ষেত্রং। ইত্যাদি।

রেবারণিতের অপর একট হত্তে গ্রন্থকারের রচনা-মাধুর্ব্যের এবং নীরস বিষয়কে চিন্তাকর্যক করিয়া বলিবার ক্ষমতার পরিচয় পাওয়া যায়। যধা—

যভ ত্রিভূম্প্য ভূম্বরং মত ত্রিভূম্প্য ভূমে: স্থানং ভবতি তথা ভস্য কোণত্রমদি মত ত্রিভূম্প্য কোণেরবঙং স্থানং ভবিষাতি।

এই প্রকার সহজ, সরল এবং প্রাঞ্চ ভাষার সম্পূর্ণ রেখা-গণিত-শাস্ত্রের ভাইল স্থেওলি বির্ত করিরা পণ্ডিত জগরাধ ক্ষেত্রভূকে সহজ ও স্থাবোধ্য করিরা গিরাছেন। ভারতের বিভিন্ন প্রধানে বিভিন্ন ভাষার যে জ্যামিতি-শাস্ত্র জবীত হইতেছে, ভাহা জ্বাবিভার জগরাধেরই রেখাগণিতের রূপান্তর।

কুষ্ঠীদের সেবায় আত্মবলিদান

🗐 রমণী কুমার দত্তগুপ্ত বি-এল্

খাওএই তাহার শিশুগণকে উপদেশফলে বলিরাছিলেন, "He that findeth his life shall lose it; and he that loseth his life for my sake shall find it. He that taketh not his cross and followeth not after me, is not worthy of me. Heal the sick, cleanse the lepers; freely you have received, freely give." অধাং—'যে ব্যক্তি নিজের জীবনের স্থাধের দিকে ভাকাইবে সে জীবন হারাইবে, ভার যে আমার জন্য জীবন বিসর্জন দিবে সে প্রকৃত ভীবন লাভ করিবে। যে ব্যক্তি ক্ৰুণ এখৰ কৱিয়া আমার অসুসরণ না করে সে আমার উপযুক্ত শিশু নর। পীড়িভের রোগ দুর কর কুঞ্জীদিপের সেবা কর। অ্যাচিতভাবে ভূমি যাহা পাইয়াছ তাহা মুক্তহন্তে দান কর। बीखद ममनामधिक नियमक्त्री अदर भववर्षी अञ्जामिनायत মবো হাছারা তাঁহার এই বাদী অনুসরণ করিয়া বছজনের হিড ও সুৰের জ্ঞ জীবন উৎসৰ্গ করিয়াছিলেন, ভদ্মব্যে পেবাধর্মের ৰুষ্ঠ প্ৰতীক কাদার ভাষিয়েনের নাম এইবর্ষের ইতিহাসে প্ৰাক্ষরে লিখিত থাকিবে। প্রহিতের মত এরপ একজন মহান সেবাব্রতীর আত্মবলিদানের আদর্শ সর্বাদেশে সর্বাচন অনুকরণীয়। 'কুগুদিপের পেবা কর'— যীশুর এই উপদেশট कोत्रायत मृत्रमञ्ज-भक्षण अहन कतिया छङ्गारा कीत्रनाछ कति-বার জঙ্ই যেন সহাত্মা ভাষিত্রেন ক্রুত্রহাতিলেন

প্রায় আশী বংগর পূর্বে ইউরোপে বেলজিয়মের অন্তর্গত এক গঙ্গামে যোলেক ভি ভিয়াপ্তার নামে এক ব্যক্তি জন্মপ্রণ করেন। তাঁছার বাগ্যজীবনের বিশেষ উল্লেখযোগ্য কোন ঘটনা পাওয়া যায় না। তিনি জ্যেষ্ঠ আতার সহিত একই বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিতেন এবং খীয় অসামান্ত প্রতিতাবলে নানা বিষয়ে জ্ঞানলাত করিয়াছিলেন। তাঁছার পরবর্তী জীবন আলোচনা করিলে দেখা যায় যে তিনি একই সমনে চিকিংসক, জ্ঞামাকারী, স্তর্গর, গৃহনির্ম্মাতা, শিক্ক, পাচক, উদ্যামরক্ষণ্ঠ চিত্রকর্মনে বিভিন্নমুখী কর্মনেচ্ছার পরিচয় দিয়াছিলেন—ইছা ছইতে বতাই অন্থ্যিত হয় যে যোলেক বাগ্যকাল হইতেই এই সকল বিষয়ে জ্ঞান ও অভিজ্ঞতা সঞ্চয়ের ক্ষত সচেপ্ত ছিলেন।

ভিনি বাল্যকালেই তাঁহার জীবনের পজ্য দ্বির করিরালইরাছিলেন। তাঁহার জ্যেঠ আতা পেশ্পিলাল প্রসিদ্ধ ল্ভেইন
নগরের মঠের বর্ত্মাক্ষক ছিলেন। বালক ভিরাঠার ল্ভেইন
মঠে থাকিরা বর্ত্পচারকের কার্যা শিক্ষা করিবার জন্য শিভার
জ্যুন্তি চাহিলেন। শিভা পুত্রের বৃচ্নংকর দেবিরা সম্বভি
দিলেন। এই মঠে বর্ত্মচারের শিক্ষা লাভ করিবা ভিরাঠার
ভ্যামিরেন নামে অভিহিত হইলেন।

এই সময়ে আমিয়েনের জার্চ জাতা পেশ্লিলালের বিদেশে বর্ষপ্রচারের জন্য যাইবার কথা ছিন্তীয়ত হয়। যাত্রার দিন নিকটবর্তী হইলে পেশ্লিলাস গুরুতর পীড়ায় আকাল হইলেন। ছই দিবস পর যে জাহাজ ছাড়িবার কথা দে জাহাজে যাত্রা করিবার তাঁহার কোন দন্তাবনাই রহিল ন', কারণ তিনি বথা-সমরে আরোগালাভ করিতে পারেন নাই। এই গুজ্লাবো বাধাপ্রাপ্ত হইয়া পেশ্লিলাস অতীব মর্মাহত হইলেন। জ্যেষ্ঠ আতাকে বিষয় পেশিয়া ভ্যান্তিয়েন বলিলেন, "ল্রাভ:, আপনার পরিবর্জে আমি যাইব—ইহাতে কি জাপনার মনে শান্তি ও আনল হইবে ?" পাঁজত লাত্য সামন্দে বলিয়া উঠিলেন, "আমি থিশ্চিতই সুখী হইব: ভূমি যদি আমার স্কলাভিষিক্ত হুখী বর্মপ্রচারের কার্যো বিদেশে গ্রন কর, তাহা হইলে আমি মনে করিব যে আমার মনোবাঞা পূণ হইয়াছে।"

ভ্যামিয়েন অনভিবিসমে আভার প্রভিনিবিরণে বশ্ব-প্রচারের করু বিদেশে সমন করিবার অভুমতি প্রাথম। করিবা সজনায়ককে - Elead of the Order) লিবিগেন। অভুমতি প্রকৃত ক্রম। ভ্যামিয়েন পরিবারবর্গের নিকট ক্রতে বিদায় প্রকৃত করিবা চির্লিনের করু থাক্ষণসমূজের উদ্বেক্ত যাজ্ঞা করিগেন।

প্রশাস্ত মহাসাগরের কভকত্বলৈ হীপ ১৭৭৪ প্রীপ্রাক্তে কাণ্ডেন কুক আবিষ্কার করেন: এই দ্বীপভোগ অভি মনোরম अपर विकिस कृष्यापि धाव। श्रुटमाण्डिः अभरना माविद्यका-রক্তিবিভূমিতে সগর্বে মন্তক উত্তোলন করিয়া দভাষ্যান चारह . अरे श्रांतिरे काराव छा। यरवन वर्षे श्रेष्ठारवेश कर अवन ক্রিয়া তথায় সুদার্থ নয় বংসর কাল হতভাগা কুটাদিলের শেবার আত্মনিয়োগ করেন। এই সকল ছীপের অবিবঃসিগ্র अक्षेत्रकारणकी । अक मण रत्मत भूद्य कण्णिक अहान विभवती धरे शास नम्म कविशे . जवाजा व्यविवाधिनगरक खेडेबर्ड দীব্দিত কারয়াছিলেন এই ধীপপুঞ্জের মধ্যভাগে অবস্থিত হাওয়াই নামক বৃহত্তম খীপে একট আধ্বেছপিরি আছে: এই আয়েরগির বিভয়ান পাকার ধীপের অধিবাসিকে এইবর্ত্তে দীব্দিত করিতে ঐটান মিশনরীদের অভিশয় বেগ পাইতে হইয়াছিল। এই আগ্নেরাগরির অগ্নাংপাতে মাবে মাবে भिक्ठेवची शमक्षित अफूड व्यमिक्षे मरमादिल स्टेबाएए । बीन-वानिशंश अरे अप्रकृत आद्यप्ततितिहरू स्ववी शिनित (Pele) আবাসস্থান বলিয়া বিশ্বাদ করিত। তাহাদের বৃচ বিশ্বাদ ছিল বে যদি ভাষারা দেবীর পূখা পরিভ্যাপ করে, ভবে দেবী কোপাৰিত৷ হইয়া আধেৰসিবি হইতে উক্ গলিত পদাৰ নিক্ষেপ করিবা ভাষাদের বিশাপ করিবেন: ভাষারা অবেক

বার ক্ষমবছল প্রায়গুলিকে এই আথেয়গিরির ভীষণ অর্ যুংপাতে একেবারে নিশ্চিফ্ হইতে দেবিরাছে। প্রভরাং ভাহারা সর্বাদাই সপ্রভ থাকিত এবং কেহই দেবী পিলির পূকা পরিভ্যাগ করিরা মিশমরীদের প্রচারিত গ্রীষ্টবর্দ্ধ প্রহণ করিতে সাহসী হইত না।

হাওয়াই বীপের রাণী বীপবাসিগবের এইবর্গে দাক্ষিত হইবার আব্রুক্তা উপদ্ধি করিয়া এক অভিনব উপায় উদ্বাবন क्तिएम । अक रिम वानै अकाकिमी चारश्वशिविव हर्ड़ क्रिक्ष বিত্তীৰ্ণ সমতলত্মি অভিক্ৰম করিয়া পৰ্বভেপাৰ্যে আরোহণ করিলেন। তিনি বছনিয়ে পৃঞ্জীভূত আধের পদার্থ দেখিতে পাইদেন: দেবী পিলির নিকট পবিত্র বলিয়া পরিগণিত এক রক্ষের শাখা রাণী আর্যেমসিরির মূর্বে নিক্ষেপ করিলেন बार छैटेक:श्रदा हीरकांव कविशा विनाम-"शिनि, यपि छुनि श्रक्तकशास्त्र कांश्रण (परी स्ट्रा बाक, जाहा स्ट्रेल बहे অপমানের প্রতিশোধ পও।" দেবীর কোপের কোন পরিচয় भाखका (नण मा , जूनर्स स्टेटिंड (कान नर्कन क्षंड स्टेन मा. বীরশ্বদরা রাশকৈ বিদাশ করিবার ক্ষত কোন গলিত প্রাবও নিৰ্মত হইল না। বীৱালনা ৱাণী বিজয়পৰ্বে প্ৰমতা হইয়া অক্ষতদেহে আগ্নেয়পিরি হইতে অবভরণ করিলেন এবং দীপ-বাসিগণকে আখাস দিয়া বলিলেন---"ভোমরা সকলেই দেবিলে দেবী পিলি শক্তিখীনা। এই এটান মিশমরীগণ যে পরমেশরের বার্ছা প্রচার করিতেছেন সেই পরমেশর ব্যতীত অন্য দেবতা নাট এবং এই ব্যতীত মানবভাতির অঞ জ্ঞাৰকণ্ঠা নাই।" দ্বীপবাসিগৰ এই অভ্যমুভ ব্যাপার প্রভ্যক করিয়া এবং রাশীর আখাস বাক্যে বিখাস ভাপন করিয়া এটান প্রচারকপণের নিক্ট পরমেখরের কথা শুনিতে আরম্ভ করিল এবং কাদক্রমে এইবর্ণ্ডে দীক্ষিত ঘটল।

প্রশাস্থ মহাসাগরের এই দ্বীপঞ্জী দেবিতে মনোরম হইলেও একটি দোমে এগুলি কলম্বিত এবং জীতির কারণ হইরা উঠি-রাছে। এই সকল দ্বীপের জবিবালিগণ জীবণ কৃঠ ব্যাবিতে জাঞ্জান্ত হইরা জনত যত্ত্বপাধি এত বিশ্বত হইরা পঢ়িরা-ছিল যে গবর্ণমেন্ট ইহার লংক্তমণ প্রতিবাধি-মানসে কৃষ্টিদিগের বাসের জন্ত একটি ক্ষুদ্র দ্বীপ পূথকরণে নির্দিণ্ট করিয়া দিয়া-ছিলেম। জন্সান্ত দ্বীপঞ্জিত হইতে ঘনকৃষ্ণ অভ্যান্ত গিরিশ্রেশীর দ্বারা সম্পূর্ণ বিভিন্ন একটি কৃত্র দ্বীপের চুইট পদ্ধীতে এই হুত্তাগ্য কৃষ্টিগণ নিঃসহায় অবস্থায় নিরানদ্দ জীবন যাপন করিত। ভাহাদিগের সদে কোন চিকিৎসক এবং বর্ম্মান্তক বাস করিতেন না। জন্তাভের নিরাপন্তার জন্য এই কৃষ্টিদিগকে নির্দান দ্বীপে চিন্তদিনের জন্য দির্মাণিত করা হইত।

দ্বীপঞ্চনির প্রধান বর্ত্মবাজক যথমই পারিতেন ভগনই কুট্টালিগকে দেখিতে যাইতেন। হতভাগ্য কুট্টালিগকে নিঃসহার অবস্থার দ্বীপে কেলিয়া যাইতে প্রধান বর্ত্মবাজকের প্রাণে হঃব

হইত। অন্যন্ত বৰ্মপ্ৰচাৱের কাৰ্য্য চালাইবার লোক বিশপের राष्ट्र चित्र चार विन : देश वाका क्षीप्रिश्व निर्ण यान করিবার জন্য কাহাকেও পাঠাইলেই সে নিল্ডিছপে কুঠ-ৱোগে আক্ৰান্ত হইবা পৱিণাৰে মৃত্যুমূৰে পভিত হইবে-এই আশহাও ছিল। কাজেই প্রবাদ বর্মবাজক বিষয় সম্ভায় পড়িলেন। কিন্তু হতভাগ্য কৃষ্টিদিগের জন্য ভ্যামিয়েনের জন্ম করুণায় বিপলিত হইল। এক দিন ইউরোপ হইতে কভিপত্ত ৰৰ্ম্মপ্ৰচাৱক আসিয়া উপত্তিত হইলে ভ্যামিয়েন ভংকণাং প্ৰধান वर्षमाक्रकव निक्षे त्रिया विश्वालन, "এই वर्षश्रकावक्रमवे একণে আমার কাক করিতে পারিবেন। আমাকেই মোলা-কাই যাইতে অমুমতি দিন।" ভামিয়েনের অগাবারণ আছ-ভ্যাপের ভাব দেশিয়া বিশপ বিশ্বিত ছইলেন এবং শ্রোলাকাই ধীপে বাইতে তাঁখাকে অনুমতি দিলেন। জামিরেন তখন ভেত্রিশ বংসরবয়ন্ত বলিষ্ঠ ও করিংকর্মা মুবক । তিনি তংক্ষণাং পিতামাতা, গৃহ ও আখ্ৰীয়ন্ত্ৰদদিগকে পুনৱাৰ দেবিবার আশা চিরতরে বিদর্জন দিলেন। এই কার্যা হইতে প্রতিনির্ভ ছইবার ভাবনাও তাঁছার মনে উপস্থিত ছইল না। কঠ যে কি ভাবে ব্যাধি এবং মোলাকাইয়ে পদন করিলেই যে ভিনি এই রোগে আঞার হইতে পারেন তিনি ইহা সমাক্রণে অবগত ছিলেন: মোলাকাইয়ে যাইবার ৩০ ভ্যামিয়েন এত দূর বাস্ত **ब्हेटलम एवं जिनि काबाबल निक्**षे ब्हेटल यटबाहिल विश्वास এছণ না করিয়া এবং কোনও সুতন পোলাক-পরিচ্ছদ সংগ্রহ না করিয়াই সেই দিবলই রওমা হইলেন :

একবানি কুল্ল নৌকা ডাামিয়েনকৈ জাহাজ হইতে সমুদ্র-তীরে লইয়া গেলে তিনি অসংখ্য নিঃসহায় কুলকে শ্রেণীবছ ভাবে দণ্ডারমান দেখিতে পাইলেন। ভ্যামিরেন ইছাতে বিচলিত হইলেন না। তিনি মনে মনে নিজকে বলিতে नानितन, "त्यात्मक, बरे त्याभाव भीवत्मव श्रवाम बच , बरे কুলিদের শেবারই ভোষার জীবন উংগর্গ করিতে ছইবে।" মোলাকাই দ্বীপে ভ্যামিছেন যখন প্ৰথম উপনীত হুইলেন তৰ্ম তাঁহার বাসহানের কোন বন্দোবন্ত ছিল না : তিনি এক প্রকাও ব্রক্ষের নীচে উর্জ্জ ছানে নিশ্রা যাইতেন। প্রায় আর্চ শত কৃষ্ট নিজেদের তৈরি জীর্ণ কৃষ্টীরে নিরাবন্দ জীবন যাপন করিত। ভ্যামিয়েন কালবিলয় না করিয়া কুট্টদিগের জন্ম খাখ্য-কর কুটার নির্মাণ করিতে আরম্ভ করিলেন। কাঠাদি প্রেরণ করিবার জন্ম প্রথমেন্টকে লিখিয়া পাঠাইলেন। তিনি বে কেবল গুল্মির্বাণের পরিকল্পনাই করিয়াছিলেন ভালা মছে। পুর্বে কুলীগণ সাম্য্রিকভাবে কভকটা ছু:খ-যন্ত্রণা ভূলিবার ভ্রু সুরাপান করিয়া সময় অভিবাহিত করিত। একবে जाबिरहरून वहीच अनुमन्न कविना क्किपिरमन बर्गा अस्मरकरे কুঠার, করাভ প্রভৃতি খন্ত্রণাভির সাহায্যে নিজেদের বালোপ-যোগী কুটীর নির্দ্ধাণ করিভে লাগিল। দেখিতে দেখিতে সারি লারি স্থলর স্বায়্যকর কুমীর নির্মিত হইরা গেল।

ক্ষীদের পদ্ধীতে প্রচুর জল সরবরাহের বন্দোবক্ত ছিল মা। জলের অভাবে পদ্ধীওলি পরিভার-পরিক্ষর রাবিতে পারা বাইত মা। কালার ভ্যানিরেন পাহাতে একট করণার কবা তনিরা কতিপর বালকের সহিত উহার অসুসভানে বাহির হইলেন। এক উপভ্যকার উপরিভাবে রহং একট করণা দেখিতে পাইলেন। করণাট প্রীত্মকালের প্রথম উভাবেও ভঙ্ক হইরা বাইত না; উহাতে সর্কালাই অসুরক্ত কল পাওয়া বাইত। ভ্যানিয়েন নললংযোগে বরণা হইতে ক্ষীদের পদ্ধীতে কল আন্ধান করিলেন। তদব্বি ক্ষীদিরের কলের আর কোন অভাব রহিল না;

এইব্লপে দিন ঘাইতে লাগিল। ভ্যামিয়েন প্রতিদিন প্রাতে निकास हिमान्या मधानय कविता देशसम्बद्ध काटक विश्वक परेट्या अहं देशिक छैंशांत्रमाहे छीश्रंक श्रीकिंग्स्य चनुर्व (श्रद्भा ७ मांक श्राम कदिए। श्रव्मणः, छिनि যোলাকাই খীপের পিত্যাত্তান শিশুদের ক্যা প্রভিষ্ঠিত অনাধ-ভবনে ঘাইডেন, পরে বালকবালিকাদের বিভালরে যাইয়া ভাহাদিগকে শিক্ষা দিভেন: ভংপর গৃহে ও ষাসপাতালে বোন্ধনিগকে ধেৰিতেন। এই সকল নিক্তি কাজ সমাপন করিয়া ভাষিয়েন যিন্ত্ৰীর কাজও কিছু কিছু করিতেন। শক্ত-সমর্থ কুঞ্জীদগের সমায়তার তিনি ক্ষুদ্র পিঞ্চির প্রিসর ভারও বাড়াইলেন। ছুইট মুতন পিঞ্চাও निर्विष्ठ १६ म । दर्बशक्त काल लाबित्वन क होका विवाह শভোষ্ট'ক্ৰয়' প্ৰভৃতি অমুঠানেও যোগদান করিতে ছইত। लक्षण कामात कावित्वन योगाकार बीटन क्षीपित्वत विष्ठांतक, निष्ठां, नानक ख बानकर्षा बिर्मन । "Come unto me, all ye that labour and are heavy laden, and I will give you rest" অৰ্থাং ভোমৱা যাহাৱা ছঃৰকটে ক্জারত আছ, আমার নিকট এস; আমি ভোমাদিপকে मासि विर"-शैक्बेटरेड अवे आधानवार नरेबारे कानाड ভ্যামিরেন কুজনিপের নিকট যাইতেন্ হভভাগ্যদের শারীরিক ক্লেশ দূর করিতেন এবং ভগবানের কথা শুনাইরা ভাছাদের बिहानम कोरान चानम ७ जामाह मकाह कहिएक। वह वरभव क्षेपन्नोए वाम कदिया क्षेपितनव स्ववास जिन (सप-मन-लाग नमर्गन कविवाधितन। छोशांव अहे चालाक-भाषाना निःवार्थ (भराव करन स्थानाकार भीरनव क्लीनिरमब च्रवशास्त्रका दृष्टि भारेशाधिन। अकामन यरभव अक्रिके (मराव পরও কুর্রব্যাবি তাঁহার শরীরে সংক্রমিত হয় নাই। কিছ ভিনি বেশী দিন এই সংক্রমণ হইতে নিজেকে রক্ষা করিতে পারিলেন না। ভিনি পাঁখত ও য়ত কুঠাদের খনিষ্ঠ সংস্পর্নে আসিয়াছিলেন প্রতহাৎ তাঁহার নিক শরীরে এই ব্যাবির সংক্রমণ অবপ্রপ্রাবী। অবশেষে ছনৈক ডাঞ্চার চিকিংলা वानामा वानाकारेख चानिया छामित्यत्मव मबीत्व कृष्ठे-ৰ্যাবিল্ল লক্ষণ দেবিতে পাইলেন। ব্যাবিল্ল আক্ৰমণ দেবিতে

পাইরা ভাজার ভাষিষেদকে এ বিষয়ে সন্তর্ক করিরা দিয়া-ছিলেন ।

জামিবেন হাসিরা উভর দিলেন, "আমি অনেক পূর্বেই ইয়া আশহা করিরাছিলাম। ভূমি যদি বলিভে এবামকার কান্ধ পরিভাগে করিয়া অন্যত্ত চলিয়া গেলে আমার এই गाबि भावश घाटत. जाना न्टेटम् बाबि ब धाव পরিত্যাগ কবিতাম না। আমি এই হতভাগ্য কুইলিবের শেবার ভার বেজার এছণ করিয়াছি-ইছাদের সেবায়ই আমি প্রাণ বিলক্ষ্ম করিব।" ভার প্রকলপতে ভিমি ভ্রীদের সেবায়ই প্রাণ বিসর্জন করিয়াছিলেন: 'কুণ্ডাদিবের সেবা कत'--- निष्ठनरवत विकर्ष शक् शक्त बर छे परम्य चक्क कामात णाभिरवन **काराव निक कौ**वरम सकरत सकरत शामम कविशा-ছিলেন। এই কাল ব্যাবিভেই ভাষিয়েনের অমুলা জীবন ভিলে ভিলে ক্ষপ্ৰাপ্ত হইল। তাহার কীবনের ব্রভ শেষ হইল। তিনি যে কার্যোর হুচনা করিয়াছিলেন, তাঁহার ভাতা উহা এহন ক্ত্ৰিলে অন্যান্য বৰ্ষ্যাক্ষণণ খেছাৰ এই কাৰ্য্যে যোগদান করিলেন। আক্কাল চিকিংশক ও ভঞ্জধাকাহিণীপৰ হাস-পাভালে কুন্তীদিগকে দেখিভেছেন, শিক্ষকগণ বিদ্যালয়ে কুন্তী বালক-বালিকাদিগকে শিকা দিভেছেন। কিছ কাদার ভ্যামিয়েন যথম প্রথম এই কার্য্যে আছমিয়োগ করেন ভখন কেহই তাঁহাকে উৎসাহ দেন নাই, কোন সহামুভূতি দেখান ৰাই। পুৰুৱ প্ৰশাভ মহাসাগৱহিত একট কুন্ত খীপে বেল-জিয়ৰবাসী কনৈক ধর্মবাকক হতভাগ্য কুটাদিগের সেবার আত্মনিয়োগ করিয়াছেন, বহির্চ্চগৎ এই সহত্তে সম্পূর্ণ অঞ ছিল। ক্রমে ক্রমে সমগ্র ইউরোপ এই মহাপুরুষের আলৌকিক আন্তৰ্জালামের কৰা ভানিতে পাবিল। ইংলভের সংবাদপত্ত-ৰ্জালতে মোলাকাই দ্বীপের কৃষ্ট-পদ্ধীর বিষ্ণুত বিবরণ প্রকাশিত ষ্টতে লাগিল। ইছার জন্ম অব সংগৃহীত হইতে লাগিল। ইউ-ভোপবাসিরণ ভ্যামিরেনের অলোকসামানা সেবাপরাধণভা ও স্বাৰ্ভনাপের কৰা ক্ষুমিয়া ছন্তিত হইলেন। তাঁহারা ভ্যামিয়েনের অপুৰ্ব্ব দেবাকাৰ্য্যের ভূষণী প্ৰশংসা করিয়া প্ৰভূত অৰ্থ সাহায্য *(सद्भ क्विएक नामिरनन । फामिरवन काश्व भीवक्नावरे* ইউরোপীয়গণের সভামুঙ্তি ও অধামুকুলোর কথা ভানিতে পারিষা পরম পরিভোষ লাভ করিয়াছিলেন। ইংলও ছইতে ম্যাভিক ল্যান্টাৰ্ মানচিত্ৰ, কলের গান, চিত্র প্রভৃতি বিবিধ स्रवा देनश्वत-भक्षण कामिरश्रत्वतः निक्रे खितिक स्टेशांकिन। क्ट नकल सरवात मरवा अकड़ मूनावान छेशहात छात्रिसन नवर्ष ७ भरम चापरव निक कृतिरव कका कविवादिसम- **ब**हे উপহার সাধ জ্রাজিদের মিকট প্রভুব আবিষ্ঠাবের কুত্র চিত্র-বানি। ইহা ইংলভের একজন বিশ্বাভ চিত্রকর কর্তক অভিভ। चक्र जाबिरस्य निच श्राकार्षे नेयाद नामरम्य श्रीहेशास এই চিত্ৰবাৰি প্ৰদ্বিত কৱিয়া বাৰিয়াছিলেন।

আৰকাল যোলাকাই কৃষ্ঠ-পঞ্জীর প্ৰভূত উন্নতি দাৰিভ

হইরাছে। ক্ষীনিগের সেবা ও ভড়াববানের জন্য ভাল বন্দোবভ হইরাছে। ভঞ্জানিরেনের জীবনব্যাণী ভপস্যা, বিভান সেবা ও আত্মত্যাগের কলেই কুটা-পঞ্জীর এরণ অভাৰনীয় পরিবর্তন সাধিত হইরাছে। পৃথিবীতে যত দিন নেবাবর্গ্লের বহিষা পাক্তিবে তত দিন তত ড্যামিরেনের নিডাম নেবা ও আয়বলিদানের কাহিনী পরিকীর্তিত হইতে থাতিবে।

আর্টের ত্রিধারা

শ্রীস্ব্যপ্রসন্ন বাজপেয়ী চৌধুরী

ভারতংক্রে চিত্রাহন, ভাগ্ণা, খাণতা ও অভাত পুত্যার কলা-শিল একদা সমগ্র বিবে সমাগৃত হরেছিল, কিব আজ ভার শোচনীর অবহা কদরে বেদমার সঞ্চার করে।

বর্ডমান সময়ে অনেকের একটা বারণা ক্রেছে যে, আট বা শিল্প-কলা তার আবর্শ বেকে বিচ্যুত হয়ে উন্নার্গনামী হয়েছে। আবৃনিক সভ্যতা বহুক্তের কলা-বিদ্যাকে উপস্কুত মর্ব্যাদা দিতে কৃষ্ঠিত হচ্ছে। আবৃনিক আটও তাই স্বর্দ্ধ ভূলে দিরে বিশ্বা আভ্যর ও দৌবীনতার আপ্রর নিয়ে আপনার বৈচকে ঢাকবার প্রবাদ পাছে।

ৰনে প্ৰশ্ন ভাগে, আট বৰ্ডমান অবস্থা থেকে কবে বুক্তি পাবে ? আৱ কলা-বিভাৱ অসুশীলনে মানবভাতির পাৰ্থিৰ উন্নতির অভ্যায়-বন্ধণ বলে যে একটা কথা মাবে বাবে শোনা বায় ভাগও কোন ভিত্তি আহে কিনা সেক্ষাটাও ভেবে দেখতে হবে।

ইউরোপের প্রায় সকল দেশেই ক্লা-বিভার প্রভৃত উরতি সাধিত হরেছে এবং তার কলে তদেশবালীর জীবন হয়ে উঠেছে আনক্ষয়, আর তাদের দেশের সর্ব্যন্ত কলা-বিভার প্রচার ও প্রসার হরেছে। অবস্থ প্রথম ও দ্বিতীর বিখ-রুছে ওলেশে শিল্পকলার যে অপার ক্তি হরেছে, সহক্ষে তা পূর্ব হওরা সভবশর মর। সাম্রতিক রাশিয়ার শিল্প ও কলা-বিভার প্রকৃত স্থল্প আবাভ আনাদের নিকটে পূর্ণতর পরিচ্ছের অপেকার আছে।

সভ্যতা ও কলা-বিভার সথদ গভীর। তার কারণ সভ্যতার আক্রেছল বড় বড় নগরী, আর দেওলোকে ক্লেক্স করেই কলা-বিভা ক্রমবিকশিত হরে উঠতে বাকে। শিল্পকা হচ্ছে সভ্যতার অলগার-স্করণ। দেশ সর্ভ হলে ক্লা-বিভা ক্রম-গবের নিকটে স্বাভ্ত হয়।

শিল-কলার বৃদ আদর্শ হ'ল সভাম, লিবন্, প্রকরবের লাবনা। সংফৃতির ক্ষেত্র এই উন্নত আদর্শকে উপলব্ধি করাই হিল ভারতীর শিল-সাবনার মর্ম্বকণা। ভবু ভারতের নব, ভগতের লকল দেশেরই শ্রেষ্ঠ প্রক্ষার কলা এই আদর্শকেই স্ক্রীর ক্ষেত্রে অপারিত করবার চেষ্টা করে আসহে। প্রথমে চিত্রকলার বিবর আলোচনা করা বাক্। চিত্রকলার প্রধান ভিনট বারা দেখা যায়। ভার মধ্যে একট হ'ল চীম ও জাপান দেশে প্রচলিত পদতি। বিভীয়ট হ'ল ইউরোপ ও ইউনানের চিক্রায়ন পদতি; আর ড্ডীয়ট হচ্ছে ভারতীয় চিত্রকলা। এর মধ্যে কোনট সর্বাণেকা প্রাচীম ও প্রেঠ দে সম্বন্ধে গবেষণাত্মক বা ডুলনার্লক আলোচনা এখানে আমরা করতে যাছি না।

চীনা ও কাশানী চিত্র বহু বংসর বাবং ভারতবর্বে ব্র সমান্ত। এওলো তবু যে আমাদের দেশে ধনী পোকদের বৈঠকবানার শোভারতি করে তা নর, এদেশের শিল্পী ও শিল্পরসিক্ষদের মধ্যেও এওলোর আদের ক্রমেই বেড়ে চলেছে। এ সব চিত্রে এমন একটা বৈশিষ্ট্য ও কনীয়তা রয়েছে যা প্রবীর অভাত দেশের চিত্রে পাওয়া যার না।

ভাগানী চিত্রকলা চীনা চিত্রকলার আদর্শে বিশেষভাবে প্রভাবিত। এই ছিসাবে চিত্রকলার ক্ষেত্রে ভাগানকে চীনের শিল্পহানীর বদা যেতে পারে। চীনা ও ভাগানী চিত্রকলাকে একই বুক্ষের চুটি লাখা বললে অসমত হয় না। ভাগানী চিত্র-কলার ওপর চীনা অহন-পছতির ছাপ সুস্পাঠ পরিলক্ষিত হয়। চীন ভাতি পৃথিবীর প্রাচীনতম ভাতিদের মব্যে একটি। নবীন ভাগান ভার চিত্রকলার ভ্রুভ চীনের নিকট খনী বটে, কিছু সে ভূর্ বার্গ অস্করণই করে নি, ভার চিত্রকলা স্কীয় বৈশিটো সমুজ্ল হ্রে উঠেছে।

ইউনাদের ভাষ্য্য অতি উচুদরের, কিছ তার চিত্রকলা ভারতবর্ব বা ইউরোপের ভার উন্নত মর। ভারতবর্বের ও ইউরোপের চিত্রকলা উচুদরের হলেও তার প্রাথাণিক ধারাবাহিক ইতিহাস বা পৃথাস্থপুথ বিবরণ পাওরা বার না। চার্লস হোর তার বিবকোষ প্রছে বলেছেন বে, চীনের চিত্রাসন-প্রথা বহু প্রাতম ও প্রেষ্ঠ। চীনের চিত্রাসন-বিদ্যার বার শত বংসরের প্রায়াণিক ইতিহাস আছে। পৃথিবীতে ভার কোম দেশে এরপ দৃষ্টাভ দেখা যার মা। যাভবিক চীনা সুকুষার শিলের প্রেষ্ঠ নিয়প্ন হ'ল তার চিত্রকলা।

হোম সাহেব আরও বলেছেন যে, চীমের চিত্রাছন-পছতির উচ্চেড হ'ল বস্তর আর্ডনিহিত পূর্ব সৌক্ষা প্রকাশ করা, ঘটনা চিত্রিত করা মর। তাই চীমবেশে চিত্রকে শক্ষীন কবিতা বলা হরে থাকে। তাই সে দেশে চিত্রকর ও কবি উভরেই সম্বর্ষী। চীনা শিল্পীয়া প্রাকৃতিক দৃঙ্গের চিজাবলী পুর বেশী করে আঁকেন। চিজাঙ্গন ও কবিভা-রচনা এই উভর ক্ষেত্রেই শিল্পী ও কবিরা প্রকৃতি থেকে প্রচুত্র উপক্ষরণ আহরণ করেম।

এই প্রাকৃতিক যুক্তর চিন্তাবলীতে আর একট বিশেষ উল্লেখবোগ্য বৈশিষ্ট্য চোবে পড়ে। এই চিন্তগুলিতে মাত্রম, পঙ, পাৰী ইত্যাদিও হান পেরেছে, কিন্ত প্রাকৃতিক দৃষ্টই তাতে রুখ্য হান অবিকার করে আছে। বেমন শিলী নীলাকাশের পটে খেতবলাকা আঁকে পটভূষিকার দৃষ্ঠ-সৌন্ধর্যকেই বাছিরে বেবার উদ্দেশ্যে—বন্ধত: চীনা চিত্রকর পাবী আঁকে তার আকাশের চিত্রকে আরও স্থমস্কৃত্য করতে। অনন্ত আকাশের সৌন্ধর্য তাতে অবিক্তর পরিকৃত্য হয়।

ভাগানের চিত্রকলাও অনেকটা এই কণ। এই কারণে চীনা ও ভাগানী চিত্রকলা, ভারতবর্ষ ও অভাত দেশের চিত্রাকন-প্রতি বেকে সভন্ত বরবের। বর্তমান সময়ে ভারতবর্ষর চিত্রকলা মাছমের প্রাত্যহিক জীবনের ঘটনার সহিত সংস্পর্শ-বিহীন হওরার যথোচিত আত্মপ্রতিষ্ঠা লাভ করতে পারে নি। প্রাকৃতিক দ্প্র-চিত্রাঙ্গনের যে সমস্ত নমুনা পাওয়া যার চীনা বা ভাগানী চিত্রের সহিত সেওলোর তুলনা করা চলে না।

ইউরোপের চিত্রেও প্রাকৃতিক দৃক্তের সৌন্দর্য্য দেখান হয়, কিছ তাতে প্রকৃতির অন্তর্নিহিত আনন্দের আভাস খুঁদে পাওয়া শক্ত হয়ে পড়ে। সে ছবি নরনানন্দকর বটে, কিছ তাতে দর্শকের শুধু চোধই ভোগে, মন ভরে ওঠে না।

প্রকৃতির অন্তর্গে বে অনত প্রাণ-গীলা আত্মপ্রকাশের কর ব্যাকৃল তার পরপ ইউবোপীয় চিত্রকর উপলব্ধি করতে পারেন নি। একমাত্র রেখুঁাকে বাদ দিলে আর সকলের সম্বন্ধেই একবা প্রযোজ্য। এ বিষয় ক্রক হোল্য বিশ্ববিভালতের প্রসিদ্ধ অব্যাপক সাইরেন সাহেব বলেছেন—

প্রাকৃতিক দৃষ্টের চিত্র বা চীনা নিল্লীরা এঁকেছে তত সুক্ষর
চিত্র ইউরোণের চিত্রকরপৰ আঁকতে পারে নি। চীনা
চিত্রকর প্রাকৃতিক দৃষ্ট আঁকতে গিরে ভূলির টানে এমন এক
সৌক্ষরিলোকের আভাগ কৃটিয়ে তোলে, যা ইউরোণের চিত্রশিল্লীদের চোৰে পছে না। প্রকৃতি-নিরীক্ষণ-ক্ষমতা চীনা
শিল্লীদের অসাবারণ—তা মানতেই হবে। প্রকৃতির রূপ-রসপত্ত, আত্মার নীরব সক্তি তার চিত্রে বরা পড়েছে।

কাপানীদের চিত্রেও প্রাকৃতিক দৃক্তের সৌক্ষর্য বিশেষ ভাবেই চোবে পড়ে। কিন্তু তা সল্পেও এই উভয় শিল্পে বৈষয়্য আছে।

এটা সুন্দাইরণে বোকা বাধ যে, জাগানী চিত্রকর চীমা চিত্রনিলীর ভার ভড়টা ভাবনা-প্রবণ ও ক্লনাপ্রিয় নর। জাগানী শিলীর প্রবাদভঃ সৌন্দর্যপ্রিয় এবং প্রাকৃতিক সৌন্দর্যই ভাবের আবর্শ সৌন্দর্য বা সৌন্দর্যের আবর্শ। চীমারা ভাবৃক্ ভাই জাকাশ ভাবের বুব প্রির। জাগানীরাও নীলাকাশ

ভালবাদে, কিছ চীনাদের ভার তাড়ে বিগছ-প্রসারী রূপ বিরে মহিবাঘিত করে না। ভাপানীদের অভিত আকাশ সাধা বঙ্-বেঘশোভিত ও ছর্ব্যের কিরণসন্দাভে সর্জ্বল—এববি নরনাভিরাম ছবিই ভারা প্রবানভঃ আঁকে। স্বভরাং দেবা যাছে ভাপানীদের মঙ্ন-শিলের (decorative art) দিকেই আকর্ষণ বেশী। ভাপানীদের ছবিতে বর্ণবিভাসের বৈচিন্ন্য চীনাচিত্রের চেয়ে বেশী লভ্কীর।

প্রসিদ্ধ কলা-সহাপোচক উইলিয়াম এভার্স ন লিবেছেন বে, চীনাদের রেখা-চিত্র আর জাপানীদের রঙীন চিত্র ভাষের সকীয়ভার ছতে সহজেই সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করে থাকে।

মানব-কীবনের দৈনক্ষিন ঘটনাবলী ও ঐতিহাসিক আব্যানকে বিষয়বস্ত করে চীনারা বহু চিন্ত এঁকেছে। প্রনো চিন্তপুলির মধ্যে যু যাবতত্বী (Wil Yotzi) অন্বিত বুক্তের বৃত্তি বিশেষ উল্লেখযোগ্য। এই চিত্রের অন্তন-পছতি সিংদলের 'ব্যানী বুক্তের চিন্ত বেকে নেওয়া হরেছে। ঐ বৃত্তি বর্তমান সময়ে নাঞ্চাক্ষের মিউন্নিরনে রক্ষিত আছে। এক সময় বৌছ প্রভাব সমগ্র এশিরার শিল্পকাক্ষে প্রতাবিত করেছিল—এই চিন্তা ভারই সাক্ষ্য প্রদান করছে। চীনে ও আপানে সেই প্রদূর কাল বেকেই বৃত্ত ও ভার কীবনের ঘটনাভলিকে বিষয়বস্তু করে ছবি আকার রেওয়াক্ষ চলে আসছে।

চীন ও জাপানের চিত্র-জগৎ ছেড়ে বর্থন ইউরোপের চিত্রশালার প্রবেশ করি তথন মনে হর বেন আমরা এক নৃত্য রাজ্যে, গুতন পরিবেশের মধ্যে উপস্থিত হরেছি।

ইউরোপের চিত্রকপার আলোচনা করতে গেলে প্রথমে ইউরোপীয় সভ্যতার আদি জননী গ্রীস দেশ ও তংগরে ইটালীর স্ববিধ্যাত চিত্রকলার অভ্যুদরের ইতিহাস অস্থাবন আবশ্রক।

ইউরোপের চিন্নাবলী অতি সুক্ষর ভাবে অন্ধিত, কিছ
তাতে একটা অতাব বিশেষ করে চোবে পড়ে। নিন্ধী তার
ছবিতে নরনারীর দেহসোঠবকে নির্ত ভাবে কুটরেছেন সভ্য,
কিছ তার আখার শ্বপ্রপকে উদ্যাইত করতে পারেদ নি।
ভাদের ছবিতে পাই ইল্লিয়প্রাহ্ম বাভব অগতের হবছ অহ্পরণ
কিছ তাতে ইল্লিয়াতীতের আভাস নাই, ইলিভ নাই, ব্যঞ্জনাই। 'মিনার্ভা'ও 'এপলো' নারী ও নরের শ্রেষ্ঠ নির্তৃত ও
কুক্ষরতম প্রতিকৃতি সন্দেহ নেই—ভাবের অলসোঠব, দেহলাবণ্য অভ্লনীয়, কিছ তাদের যে সৌক্ষ্য তা অবিনথর
নায়। ইটালীর চিত্রকরগণ চিন্নাহনে এই বাভবতার প্রভাব
এড়াতে পারে নি—যদিও তারা ভাদের বর্ষপ্রছে বর্ণিত দেবদেবীর ছবিই এঁকেছে পুর বেনী সংখ্যার।

রাফেলের 'নেভোনা', মাইকেল এঞ্জোর 'লেউ শল্,' প্রভৃতি চিত্র খ-খ বৈশিষ্ট্য ও প্রেষ্ঠতায় কালক্ষী হয়ে পাকবে নিঃসলেক।

কিছ এ ভো গেল চিত্রকলার এক দিক মাত্র, এর আর

এক বিকের বিকাশ হয়েছে ভারতে। ভারতের শিলী এ কৈছে আরও প্রশার, আরও প্রাণবান, আব্যাদ্থিক ভাববারার সঞ্জীবিত চিত্রাবলী। প্রাচীন ভারতে কলাশিলের উন্নয়নের ক্ষকে, বিশেষ করে চিত্রশিলের উৎকর্ব লাবনের ক্ষভ বারা প্রস্কৃত পদ্মার নির্দেশ বিরেছিপেন ভরব্যে কামস্ক্রপ্রশেতা বাংসায়নের নাম বিশেষ উল্লেখবালা।

শিল্পীদের উক্তেও ভিনি বলেছেন: প্রকৃতির মরমাভিরাম রূপ কবে কবে বল্লাছে—নব মব পরিবর্তিত মৃতিতে তা আমাদের আনক দিছে। শিল্পী যারা ভারা প্রকৃতির এই অপার সৌকর্বের বিবর্তন অহুসরন করে চিত্র আকরে। যে মৃতি গছতে হবে, যে চিত্র আকতে হবে, ভার রূপ চর্ম্মচন্দেরে ও মানসপটে কল্পনা করে, তুলির টানে বা ভাগুরের হাভুড়ি দিয়ে যথায়ৰ ভাবে ফুটরে তুলতে হবে।

ইউরোপের কৃপণা শিল্পীগণও গৌরব অর্জন করেছেন প্রকৃতি ও মাহুবের বাহ্নিক রূপের ব্যক্তনা তাদের চিত্রে কৃটিয়ে। কিছ ইলিয়গ্রাহ জগতের অন্তরালে যে বহুসময় শব্দাতীত অপণাতীত রূপলোক বিভ্যান, তাকে তার। তাদের চিত্রে রূপায়িত করতে পারেন নি—স্বতরাং তাদের চিত্রাবলী অতি উচ্দরের হলেও মাহুবের আদ্বার ক্রা মেটাবার উপথোদী নহে।

বাদওহা, অভন্তা ও ইলোরার পরম রমণীয় চিত্রাবদী সমর ধগতে অতৃগনীয়। তাতে অভাত থেলের চিত্রাবদ-পদ্ধির ভার রঙের সমাবেশ, অলহরণ ও রেবাহননৈপুণ্য সব কিছুই চোবে পড়ে, কিছ অভরের পতঃক্ষ্ ভাব-ব্যক্ষণা এই চিত্রসমৃত্রে এমনি প্রকার ভাবে রূপ পরিপ্রক্ করেছে যে সেওলো সমর পৃথিবীর শিল্পী-গোন্তীকে এবং শিল্পরাপিকলের ভাগু আনন্দই দের নি, তাদের বিশ্বিতও করেছে। একাবারে বাহ্রিক ও আভরিক, দৈহিক ও মান্সিক এই উভ্যবিধ সৌন্দর্ব্যের অপূর্ব্য সমাবেশ এই চিত্রাবলীকে একটা অতুলনীয় বৈশিষ্ট্য দান করেছে। ভারতীয় ও বিদেশীর চিত্রাহন-পছতির এই পার্বক্যের কথা ভাজার কুমারখামী এই ভাবে ব্যক্ত করেছেন—

অন্তর্জগতের সহিত ইউরোপীর শিল্পকার সম্পর্ক অতি অন্তর্ক চোবে পড়ে। ওবানকার চিত্রশিলীদের কল্পনাশক্তি বহিন্দ্রগতেই সীবাবদ। কিন্ত ভারতীয় চিত্র ও অভাভ কলা- শিরের দৃষ্টি ও রূপভাবনা চির্রাধনই অসীনের ও মানসিক সৌন্দর্য্যের অভ্সরণে ব্যরা। ভারতের পুরুষ ও মীর চিত্র তথু শারীরিক গৌন্দর্যা ও দেহসোঠন প্রদর্শনের করে অভিত হয় নি—তার ভেতরের, অভ্যন্তগতের উচ্চভাবের আদর্শকে তাতে রূপারিত করা হয়েছে। উদাহরণ-বরুপ বলা বেতে পারে—বেমন সরস্বতী, প্রভাগারবিতা ও তারার মৃত্তি আর নটরাক শিব ও ব্যানী বৃধের মৃত্তি।

বিশ্ববিশ্যাত কলাবিদ্ হাওয়েল সাহেব বলেছেন যে ব্যামী বুছের চিত্র বা সৃতিনির্মাণের পরিকল্পনাও ইউরোপে হওয়া অসম্ভব।

অনেক বিশ্ব-বিধ্যাত শিল্প-সমালোচক বলেছেন যে, মৃত্যেক্ট পিক্ষচার বা গতিব্যঞ্জক ছবির মধ্যে ভারতীর শিল্পীদের আঁকা শিবের তাঙ্ব-মৃত্যের ছবির স্থায় দ্বিতীয় ছবি আর পৃথিবীতে মেই।

ভারতীয় দর্শনের স্থাতত্ত্ব ও অমৃত্তি রূপ পরিপ্রচ্ করেছে শিবের বিভিন্ন বৃত্তিতে চিশ্রে। শিব সংখ্যরকণ্ঠা ও স্ট্রকন্ঠা চুই-ই। মটরাজ শিবের মৃত্তিতে যে ভাববাঞ্চনা প্রকাশ পেয়েছে তা অভুসনীয়।

ভারতের চিঞান্ধ ও ভারহা সক্ষে ভারো অনেক বলবার আছে, কিন্তু এবানে তার খানাভাব। এ প্রদেশ একটা কবা বলা একান্ত প্রয়োজন যে আমাদের এ অতুলনীঃ কাতীয় সম্পদ সন্থতে আমরা বেশারভাগট অঞ্জ ও উদাসীন। বহু শতাধীর পরাধীনতা আমাদের সৌন্ধয়বোধকে ও ক্ষ্ম দৃষ্টিকে বিল্প্ত করে দিছেছে। তারই কলে আমরা আমাদের অনেক গৌরবের জিনিষ, বিশেষ করে ভারতীয় চিঞানন, ভারহা ও খাপ্তোর মাহান্তা সন্থতে সমাক সচেতন নই।

কিন্ত আশার কথা এই যে অবনীস্ত্রমাৰ, কুমারস্থামী প্রভৃতি তথ্য জ্ঞানীদের প্রাণপণ চেপ্তায় ভারতীয় চিত্রকলা আৰু সম্প্র কথতে প্রতিষ্ঠা লাভ করেছে।

ভারতবর্ষ আৰু পরাধীনভার অভিশাপ থেকে মুক্ত হয়ে
বীরে বীরে পূর্ব স্থাধীনভার পথে এগিয়ে চলেছে। আশা
করা যায় চিন্নারন, ভাত্মহা, স্থাপভা ও অভাত শিশ্পকণা অদূর
ভবিয়তে পূর্বে গৌরবে পূন:প্রভিন্তিত হবে এবং ভারতীয় শিলের
এই মব অভ্যুদয় এ দেশবাদীর ভতে অশেষ কণ্যাণ বহন করে
আমবে।



সরলা রায়

[ক্ষাতিপি উপপক্ষে প্রধান্ধলি অর্থণ—২৬শে নবেশ্বর ১৯৪৭] শ্রীপ্রভাবতী রায়

মাতৃসমা যে পৃদ্যনীয়া মহিলার আৰু ক্ষতিৰি উহাৰ বিষয় কিছুই বলিবার বোগ্যতা আমার নাই। কিছু উহাহার নিকট আমি মায়ের স্বেহ্যপ্র পাইরাছি, অনেক শিক্ষা লাভ করিবাছি। তাঁহার প্রভাবে আসিয়া তাঁহারই শিক্ষার ওবে নিক্ষের পারে ইছাইতে পারিবাছি—তাঁহার প্রতি আমার হুদ্য চিরদিনই প্রয়োভক্তিতে পূর্ব। সেই প্রয়োভক্তির অঞ্চলি নিবেদন করিবার জন্ধই আৰু হুই-চারিট ক্ষা বলিতে সাহদী হুইয়াছি।

াব-এ পাস করিবার পরই আমি তাহার সংস্পর্শে আসি।
এক দিন মাহের সঞ্চে তাহার সহিত দেবা করিতে সিয়াছিলান। সেই দিনই তিনি মাহের নিকট আমান্তে তাহার
কোনও কাজে লইবার জন্ত আগ্রহ প্রকাশ করিলেন এবং
বাবাকেও অহুরোধ করিয়া চিটি লিবিলেন। তবন আমার
বহস অল, বাবা আমাকে চাক্রী করিতে দিতে ইচ্চুক নন;
নিজেও তেমন সাহস পাই না, কিছু মিসেল্ লায় এমন করিয়া
বাবাকে লিবিলেন হে, বাবা আলু আপ্তি করিতে পারিলেন
না।

যে কারণেই হোক, ত্রান্ধ ছুলের ভবন অভি বিশুখন অবস্থা। প্ৰব্যেক্টের হাতে দিবার কথা চলিতেছে নতুবা স্থল উঠিয়া যাইবে। এমন সময়ে ত্রাহ্মসমাক্ষের কাছারও কাছারও মনে হইল মিদেস্ রায়ের হাতে ছুলের ভার অর্পণ করিলে, প্রথমেন্টকে না দিলেও মুলটি পুনর্কার সুপ্রভিষ্টিত হইতে পারে। बाध-नमात्कत कर्ड्यक मिरमम द्वारयत्र निकृष्टे बहे श्रष्टांद नहेश्वा উপস্থিত হইলে তিনি ছলের ভার এছৰ করিতে সম্বত হইলেন। সেই দিন হইতেই তিনি ফুলের জল যে অক্লান্ত পরিশ্রম করিতে আরম্ভ করিলেন তাহা খচকে দেখিয়া বিশ্বিত হইলাম। আমাকে ত্রাক্ষ স্থলের প্রধান শিক্ষয়িত্রীর কাক্ত করিতে দিলেন। আমি তখন সৰে কলেক হইতে বাহির হইয়াছি, কান্দের কিছুই জানি না-মিদেস বাৰ নিজ হাতে আমাকে কাল শিৰাইতে লাগিলেন। শিক্ষিত্রীদের ভাষ ভিনিও ঠিক পাড়ে দ্পটার সুলে উপস্থিত হইভেন: ছল ও ছোৱেলের সব বিষয়ের বুটিনাট ষাৰতীয় সংবাদ দইতেন এবং ধেৰানে যে ভাবে ভাভ করিতে इटेर्टर, (ज विश्वरत नकनरक स्थायय छेन्। साम क्रिएक्म। স্কৃতা কাহাকে বলে, মিলেস্ রায় খানিতেন না। সকলের

সংক্রই সর্বাধা হাসিমুধে মিট্ট ভাষার কথা কহিতেন, কাজেই কেছ কথনও তাঁহার কথার মুঠ হুইত না। কেছ আপত্তিকর আচরণ করিলে জোধপ্রকাশ না করিয়া এমন দৃচ্ভাবে তাহাকে নিবের করিতেন যে, সে ঐ কাজ আর কথনও করিতে লাহল পাইত না। শিক্ষিঞীরা সকলে ছুলের কাজ শেষ করিরা গৃহে কিরিয়া যাইতেন, মিসেস্ রায়ের কাজ কিছ সভ্যার পূর্ব্বেক্ষণও শেষ হুইত না। সভ্যার পর বাড়ী করিতেন। এক এক দিন আমাকে সলে লইয়া যাইতেন, রাঞ্জি ১২টা স্বীত্ত আমাকে লইয়া কাজ করিতেন।

ক্লের বিশ্বল অবস্থাকে খুশ্ললায় আনিতে অনেক সময় অধ্যবসায়, বৈধ্য ও পরিপ্রমের আবতক হইছাছিল। বিদেস রার দিনের পর দিন অক্লান্ত প্রিত্রম করিয়া চলিকেন, সঙ্গে সলে বাহিরে তীব্র সমালোচনঃ চলিতে লাগিল। তলে সর্বা-বিষয়ে নিয়মানুবর্তিতা এবং শুখলা রক্ষা করিয়া চলাকে বাধান্তা-মুলক করাতেই এ ধরণের বিরূপ সমালোচনা কুরু ছইয়াছিল। একৰা খীকার করিতেই ষ্টবে যে, আমাদের দেশে নিয়মান্ত্র-ব্যতিভা এবং শৃথকার বছই অভাব। ইহা আমরা আছও ছোট বছ সকল কাজেই দেখিতে পাই এবং এ চুটর অভাবের বছই আমরা অনেক কাজে অনুভকাষ্য হই। তথাপি নির্মাত্ন-বভিতার মূল্য আমরা আজও ব্রিলাম না, জীংনে কৃতকার্য্য **च्टेट्ड क्टेट्ड नर्कश्यक (य कामार्मित नमहास्वर्धिण, निक्रमाय-**বর্তিতা এবং শৃহলা বন্ধা করিতে শিখিতে হইবে, ইহা আহরা আইও ছদয়ক্ষ করিতে পারিলাম না। উপরত্ত এইছলি সহতে কেছ পীড়াপীড়ি করিডে গেলেই কি গুছে কি বাহিরে-- সর্ব্বঞ পোলযোগ ও অলাভির স্ট্র হয়।

ত্রাক্ষ ভূলে ঠিক এরপই হটয়াছিল। মিসেস্ রায় ছিলেন বিলিডী ধরণে নিক্ষিতা, বিদেশী আবহাওয়ার প্রতিপালিতা। বিলিডী সমাক্ষের ভাল ছিলিমকলি তিনি এহণ করিয়াছিলেন। তিনি অল বয়স হইতেই উপরোক্ত তিনটি বিষয়ের মৃল্য ক্ষয়লম করিয়াছিলেন এবং জানিতেন যে ছুলে সময়াত্রবিতা, নিয়য়াল্ববিতা এবং শৃথলার রক্ষা না হইলে ছাত্রীদের প্রকৃত শিক্ষালাভ হইবে না—শিক্ষার প্রবান অলই বাদ পছিয়া বাইবে এবং ছুল পরিচালনা করাও অগন্তব হইয়া উঠিবে। ভাই

বিশুদ্ধ পুথজাত

বাসন্তা মৃত

টোলঃ--বাসস্তা যি ফোন--বি,বি, ১৭৩৮ পো: বন্ন ৬৮৩৬ কলি:

দি, স্থ্যারমার্চেন্টন, একন্পোটারস্, ইম্পোটারস্ ও জেনারেল অন্ডার সাল্লামারস্

প্রমথনাথ পাল এও সন্স্
২িদ, রামকুমার রঞ্চিত লেন, কলিকাতা—৭

তিনি সকল বিক্লম্ব সমালোচনা ও অপবাদ অঞাত্ত করিবা চলিতে লাগিলেন। কত লময়ে কড মিধ্যা অপবাদ ও নিকা ব্যভিগতভাবেও আমাদেরই কানে আসিভ, কভ ভীত্র সমালোচনা কাগজে বাহির হইড, আমন্ত্রা সৰই ভাঁহাকে বলিভাম , ভিনি হালিয়া উচ্চাইয়া দিতেন। ঐ সকল নিশাবাদ বে তাঁহার মনে কোনও রেবাপাতই ক্রিভ না, তাহা আমরা স্প\$ বুৰিতে পাৱিভাম। ভিমি বেষন কোনও দিকে দুকুপাভ मा कविशा चार्यम कर्षता मृह्णाद शामन कविशा यादेरलम, আবাদেরও ভেষ্বি উপদেশ দিভেষ। এই শিক্ষাটুকু ভাঁহার প্রভাবে আমরা বিশেষভাবে পাইয়াছিলার এবং তাহার সেই উপদেশই এ যাবং পালন করিয়া আলিভেছি—ভাহার জ্ন্যা আৰু পৰ্যাত অভ্তাপ করিতে হর নাই। তাঁহার হাবর ছিল चाकारनंत माथ छेवाब,विज्ञित नाम महिकू अवर ममुख्य माध গভীর। তাই তিনি অনাদ্বীয়কেও সহজেই আদ্বীয় মনে ক্রিভে পারিভেন, মামুষের দোষক্রটী সহক্ষেই ক্ষা ক্রিভে পারিতেন এবং নিন্দা, প্রশংসা বা অভ কোনও কারণেই नरक विष्ठाण स्टेटिय मा। **এ**ই भक्त अन ना बाकिस्त কোমও বৃহৎ কাৰ্য্যে কি কেহ সমসভা লাভ করিভে পারে ?

অভিভাবকেরা কোনও অভিযোগ করিয়া পাঠাইলেই ভিনি তাঁহাদের দেখা করিতে আসিতে বলিতেন। অনেক সমরে বেবিরাহি কেহ হয়ত অভিযোগ জানাইবার উচ্চেঙে বিশ্বপ ৰনোভাব সইবা উপছিত হইবাছেন, কিছ বিসেপ্ বাবের সদে আলোচনা করিবা নিজের ভূল ত ব্রিবাছেনই, উপরত্ত তাঁহার এতি প্রহা নিবেদন করিবা প্রসর চিতে বাড়ী করিবাছেন।

ভূলের কর্তৃপক্ষের কোনও ভূল বা ফ্রাই হইরা বাকিলে মিসেস্ রার ভাহা সরল ভাবে ভামিরা সইরা ভাহার প্রভি-বিবাদ করিবার প্রতিশ্রুতি দিতেন এবং ভদত্বামী কার্য্য করি-তেন। বাহার কাছে যে প্রকার সাহাব্য পাইবেন বলিরা বুরি-ভেন, ভাষার নিকটে লেইরপ সাহায্যই চাহিভেন। এই বিষয়ে ভাঁহার কোমও অভিযাম বা অহুকার ছিল মা। ভূলটী ব্ৰাহ্মসমাধ্যের, প্রভ্যেক শিক্ষাস্থলই কনসাধারণের মধুলের কচ, ভাষা কোনও ব্যক্তিবিশেষের সম্পত্তি নয়, ইছা মনে করিয়াই ভিনি কাহারও নিকট সাহায্য চাহিতে হুঠা বোৰ করিভেন না। ভাছার ব্যক্তিছের প্রভাব ছিল অসাধারণ। সেই প্রভাবের ব্বছ ভিনি সাধায্য চাহিয়া ক্ৰমণ্ড বিষুধ হন নাই। ত্ৰান্ম গাৰ্লস ছুলের আর্থিক অবস্থাও তথন শোচনীয়। সরকারী সাহায্য বন্ধ হইয়া গিয়াছে। ভূলের উন্নতি দেবাইতে না পারিলে আর পাওয়া যাইবে মা। অর্থ বিনা উন্নতি সম্ভবপর নয়, তাই মিসেস্ রার অর্থসংগ্রহ করিতে বাহির হুইলেন। কোনও স্থান হুইভেই তাঁহাকে ব্যৰ্থমনোৱৰ হইয়া কিবিতে হয় নাই। তাঁহার অদম্য উৎসাহ, উভয় ও নিঃবার্থ কর্মভংপরতা দেখিরা সকলেই তাঁহার মহান্ উদ্ভেজে সফল করিবার কল যুক্তহভে দান

निष्ठोब षनुभवत् :—

বাংলার বিখ্যাত স্থত ব্যবসায়ী শ্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার শ্রী" মার্কা স্থতের নূতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্প্রােজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জ্জন করিয়াছে, তাহা স্থত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

ষাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বসু

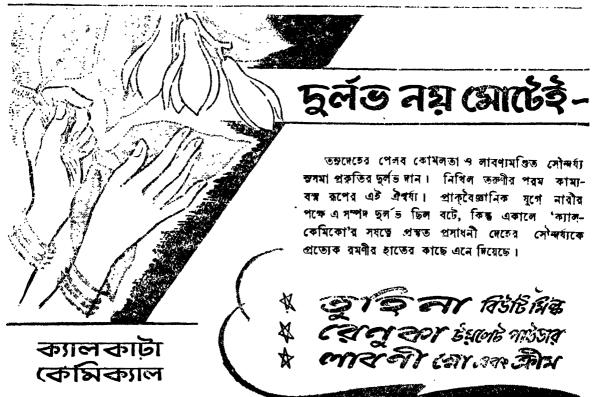


অনুমূপা কেমিক্যাল: কলিকাতা

করিতে সাসিলেন। এক বংসরের মধ্যেই ছুলের চেহারা বদলাইরা পেল। সেই রাজবালিকা বিভালরকে তিনি যে রূপ দিরাছিলেন, তিনি তাহাকে বে আফর্শে গছিরা তুলিরাছিলেন, সেই রূপ, সেই আদর্শ লইরাই উক্ত বিদ্যালরট আফ প্রতিষ্ঠিত। শ্রিশ বংসর যাবং বিভিন্ন ছুল ও কলেকে নিজানান কার্য্যে ব্যাপৃত থাকিরা কিছু অভিজ্ঞতা অর্জন করি-রাছি, সেই জন্য দৃঢ়ভার সহিত বলিতে পারি যে, রাজ সুলের মত মেরেদের শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান বাংলাদেশে বিরল। এই ছুলের মত নিরুমাত্বর্তিতা ও শৃথলা বাঙালা মেরেদের আর কয়ট পুলে আহে কানি না। ইহার নৈতিক আদর্শ অতি উচ্চ ভরের।

বংসর দেড়েকের মধ্যেই মিসেস্ রায় ঐ ফুলের ভার উাছার ম্বোগ্যা ভোঠা ভঙার হছে সমর্পণ করিয়া বিলাত গেলেন। সেখানে বছ ছান পর্যাটন করিয়া বিভ্ত অভিন্ততা অর্জন করিয়া দেশে ফিরিয়া আসিলেন ভিঙ্ক, রাজ ছুলের ভার আর গ্রহণ করিবোন না। তখন তিনি একই মূতন মূল জভ আদর্শে গঠন করিবার বিষয় চিল্লা ক'রভেছিলেন। লংগ্রেটা ছুলে বাঙালী মেরেদের ছান পাওয়া চিত্তদিমই কষ্টকর। পাশ্চাত্য শিক্ষার অহ্রায় বমীয়া ভাহাদের কলা বা আরীয়াদিগকে লরেটোতে শিক্ষা দিতে চাহিলেও ভর্তি করিবার সময় ভাহাদ্রের অনেককে নানা কারণে নিরাশ হইয়া ক্ষিরিতে হইত। ভাই মিসেস্ রার লরেটোর আদর্শে বাঙালী মেরেদের একট ন্তন ভুল ছাপন করিভে মনছ করিরা আগ্রীরবন্ধুদের সহিভ পরামর্শ করিভে লাগিলেন।

লী-শিক্ষা ভবন দেশের সকলেরই মনোযোগ আকর্ষণ করিয়াছে। আবর্ণ বিভিন্ন হইলেও, মেয়েদের শিকা দিয়া ভাছা-দিগকৈ গৃহ ও সমাব্যের কাব্যের উপযোগী করা তাহাদিগকৈ পরিবারে ও সমাবে সম্বানের অবিকামী করা যে প্রত্যেক चिकान कि विकास के विकास करें के किया करें कि कार्य कार्य के किया करें कि किया करें कि किया करें कि किया कि किया বুৰিভে বাকী নাই। মিসেস্ রায়ের খুতন ফুলের আদর্শের সহিত সকলের সহাত্ত্তি না থাকিলেও তাঁহাকে সমর্থন ও माशाया कतियात (माकश्व अदक्वात अखाव एव माहे। তাঁহার ব্যক্তিক, উংলাহ ও অসাধারণ কর্মফনতা লোককে এমনই আৰুষ্ট ক্রিয়াছিল যে, এ ক্লেডে জনে সবই তাহার জুট্রাছিল। অন্ন সময়ের মধ্যেই জিনি বহু অর্থসংক্রছ করিয়া क्लिलिन, बाळीवल चलाव व्हेल ना. निक्रिकीवल चल्ल ছইল না। এই ছলট তিনি ভাছার খনিষ্ঠ বন্ধ পর্গীয় গোপাল-क्क (नांच लिंद भाष छिरम्म कविद्या वेदाद बाय वानिलिय भाषाम (भाषाधिमान क्ला अहे अलहे भार कामक মিদেস বায়ের উদার জনত্বে লাদেশিকভার স্থান ছিল না। তাই তাঁহার হল ও কলেকে জাতি-বর্গ-নির্বিলেখে সকল প্রাদেশের ছাত্রী ও শিক্ষয়িতীদের সাধ্যর



শ্রহণ করা হইয়া থাকে। মেরেদের সুলগুলি মেরেদের হারাই পরিচালিত হওরা উচিত, এই বারণা লইবা মিনেস্ যার প্রথমে আফ পুলে ও পরে গোব লৈ মেরোরিরাল শিক্ষাপ্রতিষ্ঠানে কেবলমান্ত্র মহিলাদের হারাই শিক্ষাদানের ব্যবস্থা করিয়াছিলেন। তাঁহার বারণা যে আছ ছিল না, ভাহা আছ আর প্রমাণের অপেকা রাখে না। এখন মেরেদের প্রায় সব স্থল-কলেকে মেরেরাই শিক্ষাদান করিয়া থাকেন এবং ভাহার কলাক্ষণও আজ কাহারও অবিদিত নাই। এই প্রথা প্রচলিত করিয়া মিনেস্ রায় যে স্ত্রীক্ষাভির কি উপকার সাধন করিয়াছেন প্রেবিরে থেনী কিছু বলা নিপ্রয়োজন। তিনি শিক্ষিতা মহিলাদের একটি কর্মাক্ষের খুলিয়া দিয়াছেন।

তাহার চিছা সক্বিধ্যেত সংখীন ছিল। ইন্য্পেক্টেস্
বা ভিরেটর কড়ক অধ্যোদিও পুতক তিনি সকল শ্রেমীর
জল্প উপথোগী মনে করিতেন না। ইপরচন্দ্র, রজনীকান্ধ,
প্রভৃতি পুরাতন লেকক্দিপের ভাব ও ভাষা তিনি বছ
প্রক্ষ করিতেন এবং শিশু ও অল্পরস্ক বালিকাদের পক্ষে
উক্ত লেকক্দিপের পুত্রই উপথোগী মনে ক্রিয়া যথাসন্তব
ঐ সকল পুত্রকুই নিজের স্থানে জল নির্বাচন করিতেন।
ইংরেদ্রা সাহিত্য সম্বন্ধে তাই। তিনি নিজের প্রক্ষমত পুত্রক
নির্বাচন ও পাঠা নির্দেশ করিতেন। শিক্ষা বিভাগের কর্ত্ত-

পক তাহার এই দক্ত কাকে বছ এছটা হতকেণ করিতেন বা---নিলেন্ রাবের উপর তাহাদের প্রগাঢ় ভাষা বিদ।

এইরণে নানাভাবে শিক্ষাক্ষেত্রে তাঁহার দান যে কত বড়, তাহা বিচার করিবার সময় বোগ হর আকও উপস্থিত হর নাই। সবে মাত্র তাঁহার কর্মমন জীবনের অব-সান বটমাছে। এবনও তাঁহার অভাব আমরা ধবামব ভাবে হাধয়দম করিতে পারিভেছি না। কিন্তু এমন সময় আসিবে, যবন বঙ্গবাসী শ্রীশিক্ষা বিষয়ে এই মহীবসী মহিলার মহান্ অবদানের কবা ফুড্ডেডাপুর্ণ অভঃকরণে অরব করিয়া তাঁহার উদ্দেশে প্রধান জানাইবে।

রাচি ব্রন্ধচর্যাশ্রমাচার স্বামী স্ত্যানন্দ্রী পরিচালিত বিস্তীর্ণ জ্বলাশয় ও শালংন বেষ্টিত বাংলার মনোরম স্বাস্থানিবাসে ভারতীয় সাধনা ও সংস্কৃতিমূলক শিক্ষা, গ্রন্থাগার, সেবা, কুষি, শিল্প, গোপালন, খেলাধূলা প্রভৃতির ব্যবস্থাসহ ম্যাটি ক মানের আদর্শ ধূল ও বোর্ডিং—

(जवाश्रुष्ठन विकागनश

পোঃ ঝাড়গ্রাম (মেদিনীপুর) ভতির জন্ম সম্পাদকের নিকট লিখুন।

अधिशस सम्बर्ध

শিশুপালনের সমাক জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এভ ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক স্ববালীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ভি, বি১, বি১ব স্থিত মৃগ্যুবান উদ্ভিজ ও রাসাধনিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূণাল টানকটি প্রভাবে শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দভোলগমের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিম্নিখিত রোগে বিশেষ উপাকার:—শিশুদের মৃত্তের শীড়া, অঞ্চার্যা, হুধ ভোলা, পেট কাপা, কোটকাহিছ, বিজ্পুল্ভা, ক্রম্বভা, ব্রশ্বভা, ব্রশ্বভান, ব্যক্তির ইডাাদি।



ধনিধংসে ধনির জন্ম

শ্রীগিরিধারী রায় চৌধুরী

প্রাচীন ভারতীর আর্থ্যভাষার ধ্বনির ধ্বংসে ধ্বনির জন্মর কথা এখানে কিছু বলব। বিষয়বভূট কঠিন হলেও সহজ্বোধ্য করে বলবার জন্ম সাধ্যমত চেষ্টা করব।

সংস্থতে "প্রাচীন" আর "অর্থাচীন" বলে চুট শব আছে। ভাগের অর্থ যথাক্রমে, পুরামো ও নৃতন। "প্রাকৃ" অর্থাং পূর্ব্ব, আবার ভা বেকৈ "প্রাচী," অর্বাৎ পুর্বধিক। আর্ব্যদের দৃষ্টিভে পুৰণিক সৰচেয়ে আগের বা প্রাথমিক সেই অর্থই "প্রাচীন" পথে চলে গিয়ে ভাকে—খাগের বা পুরানো—এই অৰ্বহুক্ত করল। আবার, মৃতন কি পরবর্তী--বোবাতে बरे बाहीन मर्चन शृर्क नकर्क च राग करन "चबाहीन" न(चव एक्र र'न बदर श्रादान क्र मानन। श्राकृष-श्रणादव बूर्ल 'बाहीन' क्रिक खाहीनहें बदद (नन, वा (बन चथाहीन। 'মেটাখিসিসে'র বড়ে শব্দটির মধ্যেকার র-কলা রেক रख अन अनिरम, चार, "न"-है। (मार्हे। एस "न" वस तम। करन बन (वक्षन "बर्काहीय"। शक्ष्यहरू नीनवर्ग मुनारनद মত এই শম্টীরও বাহ্যিক ছল আবরণের মধ্যে ভার আসল क्षण मृक्तिक चारह। चावक बरे बक्रमव मीमवर्ग मृत्राम-খাতীয় শব্দ ভারতীয় আর্থ্য-ভাষাগুলিতে অনেক রয়ে গেছে। **डेमार्ड-च्छन्, त्रोद-मण्ड "स्रोमयान" चार्ड "बराबाट्य"ड** ইভিহাসটাই वनि । क्या इंग्रे चात्रल दिन "दौनळान", "बहाळान"-किमा, जाबाबा छेननिक चात बहान् छेननिक। প্রাচীন ভারভীর আর্থ্য ভাষার "জান" শব্দের উচ্চারণ ছিল "ब-कान"। "दौन" चात्र "भश" क्रिके त्रदेण, क्रिक विश्वाद ष्**ठेण 'कारम**त' (वणात प्यर्वार---"क्-काम"-अत क-श्रवि शन श्रातिता, गर्छ तरेन "क्।-म"। किश्वा এও वना करन (व "क"-त अचारव "क", ভाর वर्गीतक सातिरत "द" स्टा পদ্ল। অবর "ঞ"-র অমুনাসিকত্ত বুচে গেল। ফলে বেরিরে এল "যান" শব্দ ৷ প্রাচীন ভারতীর আর্যভাষার গাড়ী चार्व "वान" नायश बाहनम चार्त (बाहरे विम । प्रविद्यार কোনও অপুৰিবা হ'ল না। লোকে "হীনবান" ও "নহাবান" नरकत वर्ष करत मिल--- (हाई नाड़ो चार रह नाड़ी।

"ব্যাহ্মিহির" নামেও জনসাবারণের ভূল বোকার বেশ अकट्टे विटिएमोडी इस्त शिष्ट । श्रुवाकाल बाचन गिक्टरपर অনেকের "বিশ্র" উপাবি থাক্ত, তরস্বায়ী নাষ্চা আসলে ছিল "বরাহ্মিশ্র"। ধুব সম্ভব ভিমি সিংহলে ফলিভ-জ্যোভিষ্ কি সামুদ্রিক বিভা শিবতে গিয়েছিলেম,—কেমমা जनकात मित्न जिश्हाम के जक्त विश्वात बूवरे ठकी र'छ। क्ल, जिरहनो वा अन् काशास ७ जिरहनवाशीरमञ बृत्य बृत्य ভার "মিশ্র" উপাবি "মিহ্-র" হয়ে দাভাল। ভারপর তিনি घरन (क्यां जिस्तिक। निर्देश निर्देश करने करने करने करने তার হদেশবাসীর কাছে যৌগিক শব্দীর "মিহ্-র" অংশটা নেহাত নির্বক মালুম হওয়ায়, ভারা সেটাকে "মিহির" করে নিলে। মিহির কবাটা আগে বেকেই এতহেশে প্রচলিত হিল। "মিঅ" বা "মিষ্-র" শব্দের অমি-ধ্বংসের কলে শব্দট উৎপন্ন হয়েছিল যার অব করা হ'ত প্র্যা। বরাহ-পণ্ডিত ক্যোতিবিদ वरन लाएक तनहें छानहीं अहे छैनाधित मर्दा अखिरत निर्मा কলে ভিনি সমাজে ব্যাহমিহিত্র বলেই পরিচিত হতে লাগ-(जम । वतास्थिकित्वत अथद्यत वह चार्त्रत वृत्त देविक भर्थ्छ-ভাষী আর্ব্যেরা এতদেশের আদিম অধিবাসীদের "স্থুল" चर्नार हीम वा रहांके लाक चावा। पिरहर्मिंग। "कूस" नरसर উচ্চারণ তথন ছিল "কৃত্বদর।" পরে আর্থ্য অনার্থ্য-মিশ্র হিন্দু জাভির মূবে ভাই "শুদ্র" হয়ে ইাড়াল। ভাতে ব্যাপারটা হ'ল এই--- অঞ্চাতগাৱে ভাৱা নিজেৱাই নিজেদের ছোটলোক আব্যার অভিহিত করতে লাগল। "অক্ল" শব্দের উৎপত্তিও ভারি মভার। প্রাকৃত মুগের মাঝামাঝি কোন সময়ে উত্তর-পশ্চিমাঞ্চাবাদী আহ্যভাষী দলবিশেষের মুখে মহ্য-ভারভীয় আর্থ্যভাষার "সহত্র" শক্ষ-ন্যার অর্থ হাজার, উল্লন্থ হারিয়ে "হৰ স্-ৰ" হরে দাছার। তা বেকে কালজমে "অক্ষ্র" রূপের चवछत्रव पर्वेम । चार्वात शात्रध (बट्क "र्क्तुर्य" (बटक উদ্বভ 'হাজার' রূপ এলে ছুঠে ঐ একই সংখ্যাবাচক প্রকটকে त्वन चार्तिक करत प्रमुख । करण चार्यापत र'न विश्वम,---কাকে রাখি ভার কাকে কেলি !

বিশ্ববিশ্যাত "সোম মহাস্কক" দেবন ককন, ব্যাধি প্রাতন ও জটিল হইলেও ইহা পেবনে সম্পূর্ণ রোগম্জ বিশ্ববিশ্যাত "সোম মহাস্কক" কোরণগুলি নাল করিয়া অতিরিক্ত মৃত্তনিঃ দ্বলে স্থার ও এলব্মেন ব্রাস করে এবং দেহ্যন্ত্রকে স্বলও হুদ্ধ করে। বিনা ইঞ্জেক্শনে স্থায়ী ফলসাধনে "সোমমহাস্কক" অতুলনীয়। ইহা বৃদ্ধ ও চিম্বালীল ব্যক্তির শ্রেষ্ঠ টনিক। মৃল্য ৫০ (১০ দিনের), ১৫১ (১ মালের) মান্তলাদি ৮০ আনা। কবিরাক এম, ভট্টাচার্য কাব্যব্যাকরণতীর্থ ভিষ্পাচার্য—১২০।১১১, (পি) আপার সারকুলার রোড, কলিকাতা—১।

্পুগুঞ্চ - পার্চায়

প্রেমরাগ—এদেবেশচন্দ্র দাস। গুরুষাস চট্টোপাধ্যার এশু শব্দ, ২০৩।১:১ কর্ণভ্রালিস খ্রীট, কলিকাভা। মূল্য ভিন টাকা। কাব্য-সম্পর্কে চিরকালীন ধারণার পরিবর্তনের একটি বিশেষ আবাস কিছু দিন হইতে পরিলক্ষিত হইভেছে। সাহিত্যে তখনই

ন্তন যুগ আগে, বিশিষ্ট স্টি-প্রতিভা বধন খভ:ই ভিন্ন পধ বাছিয়া লয়। পরিবর্ত্তনের জন্যই পরিবর্ত্তন প্রকৃত সাহিত্যের লক্ষণ নয়। অভ্যস্ত সজান প্রয়াস সাহিত্যকে বিকৃত করে। 'প্রেমরাগে'র কবি নব ৰুগ আনিবার চেষ্টায় নিজের শক্তিকে বুথা ব্যবিত করেন নাই। যুগধৰ্ষের প্ৰভাব মানিয়া লইয়া ভিনি কাব্যে আত্মপ্ৰকাশ করিয়াছেন। জ্রীদেবেশচন্দ্র দাস পাঠকের নিকট স্থপরিচিত। 'ইয়োরোপা' লিখিয়া ডিনি সাহিত্য-খাতি অর্জন করিয়াছেন। 'প্ৰেমৰাপ' তাঁহাৰ প্ৰথম কাব্যগ্ৰন্থ। প্রস্থানি অনেকগুলি পীতি-কবিভার সমষ্টি। কবির অন্নভৃতি যথন পাঠকের হাদরে স্কারিত হয়, কারা ভখনই সার্থক হট্যা উঠে। প্রেম মানুষের মনের একটি মৌলিক বুণ্ডি। ইহা সকল দেশ এবং সকল কালের মানব-মনকে আলোড়িভ করে। এই প্রেমের অমুভূসিকে দেবেশচক্র নানা ভাবে প্রকাশ করিয়াছেন : 'কবিপরিচিতি'তে জীষতীক্রমোচন বাগটী বলিতেছেন, "কবিভা-গুলির অধিকাংশই ব্যক্তিগত বা আদর্শগত প্রণয়ধর্মী, কিন্তু সচরাচর দৃষ্ট প্ৰেমেৰ কৰিতাৰ ফণ্ড ৰূপ চইজে এগুলি শ্বতম্ব ও ভিন্ন-গোত্রীয়। মাত্র হঃশবিলাদ ময়, গুঠু বলিঠতায় ইহাদের জন্ম।" 'বদ্ব' কবিভাষ কবি বলিভেছেন,

"আমার জীবনে বিলায়ে জীবন ভব দিয়েছ আমারে ভোমার অমৃত আনি ." অন্যত্র বলিছেছেন,

> "न्त्रान्ति, खाला माठ, ऋत्रश्रातारा-তুমি বঁধু মম, তুমি মোর জবভাগ। "

'ভূমিকা'য় ঐকালদাস বায় লিশিতেছেন,—"কবি আত্মসদয় বিগলিত প্রেমরাগকে নিজে তদ্যত হউয়া উপভোগ করিয়াছেন এবং সেই উপভোগের আনন্দকে এই কবিভাগুলিতে বাণীরূপ দিয়াছেন ."

রাজজোহিভামূলক বলিয়া গভর্ণমেন্ট কর্ক 'বাজেয়াপ'

न न न

সম্বন্ধ : শ্রীসাবিত্তীপ্রসন্ন চট্টোপাব্যায়

"বদেশী" যুগ হইতে বর্জমান বাওলার নববুগ পর্যান্ত দেশের জাতীর সঙ্গীতের পরিবর্দ্ধিত অপূর্ব্য সঞ্চয়ন। বিশ্বজাতির জাতীয় সঙ্গীতের পরিগেক্ষিতে বাঙগার তথা ভারতের জাতীর সঙ্গীতের ক্রমপরিণতির তথ্যসবলিভ ৫২ পূর্চাব্যাপী ভূমিকা। খ্যাত, অখ্যাত, অঞ্চাত ও বিশ্বত কৰিদের অসংখ্য সঙ্গীতে সমৃত্ত। প্ৰকাশিত হইল মূল্য পাচ টাকা

> প্রকাশক—উষা পাবলিশিং হাউস ৩৪নং মহিম হালদার ষ্ট্রাট. কালিঘাট. কলিকাতা

'ভালবাসি' কবিভায় পাই. "আপন অস্তর হতে মধুরে উচ্ছাসি পুষ্প-সম বাণী ফুটে_।"

'স্প্নবাত্রি'ভে পাই

"त्रभू जृष्टि कथा, বাণীতে ধরিবে রূপ রাজ্রি-নীরবভা।"

কাব্য প্রাত্যহিক জীংনের আলোচনা নয়। ইহা মানস-জীবনকে প্রভিফলিত করে। প্রেম মনের গর্ম।

"জীবনে আলোক বেখা অন্ধকাৰে কৰেছিত্ৰ গ্যান, নয়নে অমৃতবর্ত্তি জালি' তুমি দিয়েছ স্কান।"

'ব্যথা'র আছে, "ছিল মক মালক করেছি চিহা;"

''অশ্ব কালিমা হতে বহু উদ্ধলোকে" কবি বাঞ্জিব দেখা পাইয়াছেন।

"এ হাদরে চিরকাল থেকো---মিশেছে ভোমার মাবে শেব কথা মোরে মনে রেখো।" অন্তবের সাড়া পাই বলিয়া "প্রেমরাস" সার্থক হইয়াছে। ৰু বিভাঞ্জলি পাঠকের-চিত্তকেও নম্বিভ করিবে।

ঐ শৈলেশ্রক্ষ লাহা



সঞ্সু ভট্টা চাষ্ট-প্ৰণীত করেকেটি উপনাস

'সঞ্জমবাব্য জড়িমাপুন্ত ভাষার গুণে ইভিছাসের গতির সজে নামক প্রতীপের ভাষধারার কোন সংঘাত ঘটে নাই। সঞ্জমবাবু বনেলী উপস্থাসিকের মনোরম সংঘল অকুর রাধিরাছেন। এই উপস্থাসধানি গতামুগতিক পৃত্তক-তালিকার বাছিরে একটি বিশেষ স্থান দাবী করিতে পারে।'—আমা নাক্ষ বা জ্ঞার

''করোল' স্বাধীন বাংলার নৃতন উপল্লাস। বিশ্লবের পটভূমিকার এই উপল্লাস্থানি

ক্**লেল**

লনের কাহিনী লইরা উপস্থাস রচনার এতদিন অনেক বাধা চিল, সে বাধা অপসারিত ইইরাছে বলিরাই হয়তো বাংলা-

সাহিত্যে এমন একথানি হুন্দর উপকাস পাঠের হুবোগ পাওরা গেল।

—যুগান্তর

'সপ্তরবাবু ভোটাগর আর উপস্থানের একটা সিন্ধেসিদ বের করতে পেরেছেন এট গ্রন্থে—আবিধ্যার করেছেন এক নতুন দর্ম্ম। অর্থাৎ অন্ধাপির সহর কোলাভার মধ্যে তিনি কৃটিয়ে তুলেছেন সারা ভারতবর্ষ, দেড় বছর কি তারও কম সমরের মধ্যে ছবি এ'কেছেন ভারতের তথা সারা পৃণিবীর চিবন্ধন অভিযানের—স্বাধীনভার পথে, শান্তির পথে, ইন্টেলেকচুয়ালিক মের পথে। আর 'কলোলে'র করেকটি মার চরিত্র চোবের সামনে উপন্থিত করেছে সারা ভারতের অর্থাতি দল আর মতের মানুবকে। ''কলোল' সতিনকারের সাহিত্য রূপ দিতে পেরেছে আরুকের রালনীতিকে।'— ব তুল ম তী 'This significant novel will make you think.' — Amrita Bazur

'The author displays unique gift for delving deep into emotional realities and portraying contrasting ঘিতীয় সংস্করণ characters.'--America ভিত্তিক সাড়ে ভিন্ন টাকা 'এই উপস্থান্থনি সঞ্জবন্ত্র পূর্বান্ধিত থাতি বৃদ্ধি করবে, এ ভবিস্থানী করা সহক্ষেই চলে। পাঠকগোড়াও যে উপস্থানীৰ যথাযোগ্য সমান্ত্র করতে ভোলেন নি.

ৰৰ্জমান বিভীয় সংস্করণই তার প্রমাণ।'—ব স্থাম তী '…altogether the book is an interesting reading and amply merits the popularity it has won.' —Hindustian Standard

The volume contains incidents & characters which will leave a deep impress on your mind. Mr. Bhattacharya wields a powerful pen and he does it with consciousness.

দিভীয় সংস্করণ ভিজ্ঞ টা কা

does it with consciousness. Every character in the book has its own distinct individuality... It is a novel which not only offer you entertainment but also make you think. — !mrita Bawa

বৃদ্ধ বেশ হরেছে। সন্তাবান-বনানীর
সক্ষটি পুলেছে ভাল। এরই বর্ণনার এমন
একাধিক সান আছে যেগানে তুমি সভাই
এক টাকা
সার্থক হরেছ। ডারাড়া বৃদ্ধটি বাল বুদ্রের
বাইরে, তার রঙীন পারিপার্থিকে। অর্থাৎ, সভাবান-বনানীর
সক্ষরের রেশ চল্চে, যদিও ভোমার হাত থেকে বেহালার
ছড়ি নাবানো। এইটাই stream of consciousness-এর
আজিক চার। বলা বাছলা ভোমার কাবাশক্তি ভোমাকে
সাহাযা
করেছে।— প্রক্ষটি প্রসাদ সুবোপাধ্যায়

স্বাম্বামিক প্রান্ত ভাবের সঙ্গে ভাবার অনুত্র বোগনাথন ঘটাইরাছে গল বলার সংল্প রীন্তি। নেপেক কোন সংল্প রীন্তি। নেপেক কোন সংল্প রীন্তি। নেপেক কোন সংল্প রার জন্ম ঘটানার প্রান্ত করেন নাই, সে যেন জনিত লাগল পেওরার সঙ্গে, কদল বোনার সঙ্গে, নিভাপ্রয়োজনীয় জিনিসপত্র কোনার সঙ্গে, কামাজিক কুল্প আনন্ত-উৎসব ছংখবেগনার সঙ্গে, আপনি জনিয়া উঠিগাছে। —প্রান্ত কামিক বিশ্বামিক কৃষ্ণ আনন্ত-উৎসব ছংখবেগনার সঙ্গে, আপনি জনিয়া উঠিগাছে। —প্রান্ত কামিক ক্ষামিক ক

'The psychology of our young men and women has been critically discussed in a unique way in the light of the present-day social and political idealism.'

- Hindusthan Standard

বিষয়বন্ধ এবং দৃষ্টিভঙ্গী এই উভয় দিক দিয়াই এই বিষাট উপস্থাসটির অভিনবত আছে। মনগুত্ব এবং মতনাৰ বিষেধণে লেগকের ক্ষমভার পরিচয় পাই এবং বর্জমান বাংলা তথা ভারতের রাজনৈতিক চিস্তা এবং কর্মকে ক্ষমবন্ততে পরিণত করিবার ক্ষমতা দেশিয়া মৃদ্ধ চই। • • • লেগক বে গাটি শিল্পীমনের অধিকারী ভাষার পরিচয় মেলে গাহার বতংক্ষির রিসকভাব, ভাষার প্রসাধন-নৈপুণ্যে এবং কবিতপুণ বর্ণনায়। • • শ্রাকাসী

লেখক ভারই রূপ পাঠক-'১৯৩৯-এর বৃদ্ধারম্ভ থেকে সুরু করে ১৯৪৩-এর ছুভিক্ পাঠিকাদের চোধের সামনে তুলে ধরতে চেকেছেন।… পৰ্যান্ত আমাদের জাতীয় ' ভীবনে যে দারুণ ছর্মিপাক আজ দু:খ-রজনীর শেবে নেমে এসেছিল 'বাত্তি'তে পা চ টা কা লেখক বিভিন্ন চরিত্তের মারকং আমাদের সমাজ-জীবনের দেই আলা-নিরাশা, গু:থ-ছল্পেরই পরিচর দেবার প্ররাস পেরেছেন। নি:সক্ষেচে বলভে পারি ভার সে প্ররাস সার্বক হয়েছে। আলোচা বিষয় নিয়ে এ-পথান্ত বাংলা-সাহিতো বে করথানি উপস্তাস লেখা হয়েছে, 'হাত্রি' তার মধ্যে শ্রেষ্ঠ আসন দপল করে।'—কু ষ ক 'অভিনৰত্বের দিক থেকে 'রাত্রি' অতুলনীয়। প্রভ্যেকটি চরিত্র বে অপরিসীম মমতার সঞ্লরবাবু কালন করেছেন, যে সহজ ক্ষর ভাবে তিনি ভার রূপ দিরেছেন ভাতে মৃগ হতে হর।'-- মু পা ভ র

পূৰ্বাশা-প্ৰকাশিত অংগাশ্য ৰইএর তালিকা সংগ্ৰহ করুল

পুৰাশা লিমিটেড—পি)৬, গণেশচন্ত্ৰ এভেন্না, কলিকাতা ১৬

কৈশ্রে দেবায়— শ্রীসঞ্জন ভট্টাচার্য। পূর্বাশা লিমিটেড, পি১৩, গণেশচন্দ্র এভিত্ন্যু, কলিকান্ধা। দাম ভিন টাকা। দিতীয় সংভ্রমণ।

উপন্যাসথানির পটভূমি— বাধীনভাকামী ভারতবর্ধ, ঘটনাম্বল
—বাংলাদেশ, পাত্রশাত্রী—বিভিন্ন রাষ্ট্রনৈতিক মতবাদী করেকটি
চরিত্র। বিভিন্ন মতবাদের সংঘর্ষে বিশ্লবী বাংলার করুণ মনে বে
বিক্ষোভ জাগিয়াছে—জাহার সঙ্গে স্বাধ্য ভাগবাস। আশা-অভিমান
শ্রভৃতি বৃদ্ভিত্বলি মিলিয়া এই কাহিনী সড়িয়া উঠিয়ছে। ছটি
নারী-চরিত্র এক কেন্দ্রে সংলগ্ন হইয়াও মিলিতে পাবে নাই;
আত্মকেন্দ্রকতার প্রাচীরে বাধা পাইয়া ভিন্নমূখী হইশছে। এই
কেন্দ্রাতিগ নারী-মনস্তত্বের স্ক্র বিশ্লেষণ লেখকের ভূলিকার প্রক্র
হুইয়াই ফুটয়াছে। দীপালী ও চিত্রা চরিত্র ছটকে আপাত-বিভিন্ন মনে হইলেও—প্রশাবের পারপ্রক। কোন কোন স্বলে
বিত্রক দীর্ঘ হওগায় সংলব বাধুনি কিছু শিথিল ইইয়াছে— বিদ্ধাধান চরিত্রগুলি অস্পাই হয় নাই।

<u>জীরামপদ মুখোপাধ্যায়</u>

হে বিহন্দ নোর—জীনরেজ দে। দিবুক হাউস, ১৫, কলেজ খোরার, কলিকাতা। মূলানর দিকা।

১৯৪২ চইতে ১৯৪৫ এর মধ্যে বাংলার সমস্যা সবচেয়ে ঘনীভ্ত হইয়া ওঠে। যুদ্ধ, বিপ্লব, দমননীতি, ছঙিক—এই চাবের সময়রে সমাজ-জীবন একেবাবে ওলট-পালট হইয়া বায়। এং চর্ম ছবিপাকের মধ্যে বৈপ্লবিক চেতনাই জাতিকে মাধা দিধা করিয়া দাঁড়াইতে সচেষ্ট করিয়াছিল, কিন্তু সে পূপ্ সফলতা লাভ করিতে পাবে নাই। সভবও ছিল না। সমাজের নৈতিক জীবনে এই দিক দিয়া ভাঙন ধরিকেছিল, এক দিকে নিদাক্র বৃত্ত্বা, এক মৃষ্টি অলের জন্ম লালায়ন, অঞ্চ দিকে চোবাবাস্থাবের অমোঘ আক্রণ, বাভাবাতি লক্ষপতি হইয়া উঠিবার লোভ এবং প্রবাধা।

এই পরিপ্রেক্তিতে উপনাস্থানি রচিত। লেখক বে বেশ দবদ দিরাই দেশের এই বেদনা অফুডব করিয়াছিলেন উাহার লেখার মধ্যে তাহার সমাক্ পরিচয় পাওৱা যায়। ঘটনার বর্ণনা তথা বিন্যাদের মধ্যে কুশলা শিলার ভাতের হাপ আছে, যদিও ভাষগার ভারগায় একটু কাটো।

লেখক আদর্শবাদী তো বটেই, সেই সঙ্গে বেশ সবলভাবে আশাবাদীও, বদিও পেজন্য কম বিয়ালিই নতেন। তাঁচার কাছে বিপর্যয় খুবই সত্যা, তব্ মামুবের সর্বজ্ঞী আত্মা তাঁচার অনেক উদ্দের্ব; তাহার আশা অনেক, গভি অকুষন্ত, শত প্রাক্তরের মধ্যেও সে অস্তিম বিভারের স্বপ্ন দেখিয়া চলে। পালেব নায়ক সুধানের মধ্যে এই সত্যাটি বেশ ভালো ভাবে ফুটিয়াছে।

বাংলার চরম ছ:থের দিনের এই আলেখাটুকুর পাঠকসমাজে কদর হওয়া উচিত।

শ্রীবিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

মহাত্মা গান্ধী—রোমা রোলা। অনুবাদক কৰি দাস। গুরিকেট বুক কোম্পানী, ৯, স্থামাচরণ দে ক্লিট, কলিকাডা। বঙ্গানুবাদ ১৯৪৭। দাম আড়াই টাকা। পৃ. ২০০।

১৯২১ সালের অসহবোগ আন্দোলনের পরে রোল া গাছীলীর সহজে একগানি পুস্তক প্রণয়ন করেন। এতদিনে তাহার বলাসুবাদ প্রকাশিত ইন্টারন্যাশনালের

পুতুলনাচের ইতিকথা

মানিক বন্ধোপাধ্যায়

অসংখা বিধিনিবেধের পেকলে বাঁধা আধুনিক কুত্রিম সমাজে মাসুবের চরম বিকাশের হুবোগ কোথার ? ছতাল আর ভাগোভ্তম সেই সব মাপ্রব-পুতৃলের বান্ত্রিক জীবনের অপরুপ কাহিনী। পরিমাঞ্জিত ও শোভন ছিতীর সংস্করণ। দাম পাঁচ টাকা

সমুদ্রের স্বাদ

মানিক বন্দোপাধায়

বা ভা লী মধ্যবিত্তের অংশা-ভক্তের করশ কাহিনী। কাট-হাসির অভ রা লে তুংথের ফগ্লধারার রসোন্তীর্ণ ক্লপারণ। দাম তিন টাকা আট আন্

ধানকানা

ননী ভৌমিক

বাংলার সমাজ-জাবনকে বিধ্বস্ত করে প্রত দশকে যুদ্ধ ও ত্রুক্তিক্ষের যে সবনাশা ঝড় বরেছিল ভারই সার্থক ছবি। জনগণের হংখ-তুর্দলার তুলনার মৃষ্টিমেরের বিলাসের কাহিনী। দাম তুই টাকা বারো আনা

षाधूनिक होना भन्न

লু ফ্ন, লাও চাঅ, ভিত্ত লিও প্রভৃতি চীনের আটজন আধুনিক সাহিতিচকের লেখা এগারোট পল। বর্তমান চীনের সামাজিক ও রাঞ্চনৈতিক গণডেতনার নিশূত ছবি। অমল দাশগুল্ডের অমুধা। দাম ভিন টাকা আট আনা

ডা ক

ইলিয়া এরেনপুর্গ ও অক্সান্ত আটিজন সেরা সোভিয়েট সাহিত্যিকের বাছাই করা গল্পের সংকলন। গল পড়ে চোথে গড়ে একটি পরিবর্ত নিশাল সমাজে গণমিছিলের প্রাণ ম্পান্সন যা আগামী রূপের প্রতিফলনে উল্কল। গাম এই টাকা আট আনা

পারীর পতন

ইলিরা এরেনপূর্ণের যুগান্তকারী উপস্থাস Fiell of Paris-এর বসামুবাদ। গত মহাযুদ্ধ ও তাব আগেকার সময়ের ফরাসী জীবনের নির্ভূলি ও বলিষ্ঠ চিত্র। পারীর বুলভার ও কাকে, কঁসাপোর বড়বিকুক সমুদ্ধ, মাারির বনানীচিন্তিত প্রান্তর, মাসাহিত্রর বিচিত্র জাবন, টোকের কালা আর উকুন, নিত্রদাপ শহরের বিভাত্তিও অন্তিরভা—বিভিন্ন দৃষ্ঠগুলো একটা আশ্চর্য ও ভরকের কবিভার অবকের মত অনস্থাধারণ। অনুবাদ করেছেন—অমল দালগুণ্ড, রবীক্রা মতুম্বার ও অনিলকুমার সিংহ।

সচিত্র ভালিকার জন্ম চিঠি লিখুন ইণ্টারন্যাশনাল পাবলিশিং হাউস লিঃ ১০, চৌরধী রোড, কলিকাভা—১৬ বর্তমান বইখানি লিখিবার সময়েও তিনি গান্ধীরীর নেতিবুলক কর্মপ্রচেষ্টাকে বেমন ভাবে এইণ করিয়াছিলেন, গঠনকমের ভিতর দিয়া
গান্ধীনী বে নৃতন জীবন রচনার প্রচেষ্টা করিতেছিলেন, তাহার প্রতি
ভীহার দৃষ্টি তত দূর আফুট হর নাই। তৎসন্থেও রোলার মত একজন
মনীবী ও প্রতিভাসম্পন্ন শিলীর দৃষ্টিতে গান্ধী এবং রবীফ্রানাথ কি ভাবে
প্রতিভাত হইরাছিলেন, তাহা আমাদের সকলের পক্ষে শিক্ষণীর।

অপুবাদকের দারিত অভিশন্ন গুরুত্বপূর্। যেথানে বিষয়বস্তই অভ্যন্ত পূচ্ বা জটিল, সেধানে ব্যাখ্যা না করিয়া পুরাপুরি লেথকের ভাব জ্ঞাপন করা কঠিন। অপচ অমুবাদকের পক্ষে সেরুপ অধিকার এইপ করা উচিত নর। এইরূপ নানা বিদ্ন সম্ভেও প্রীযুক্ত কমি দাসের অমুবাদ সার্থক ইয়াছে। ভাষার স্বাচ্চন্দোর জন্ম পাঠকের মনে কোন পীড়া জনার না।

গীতা-বোধ—বোহনদাস করমটাদ গানী। অমুবাদক ডাঃ
অক্লচন্দ্র বোব ও শ্রীকুমারচন্দ্র জানা। ওরিরেট বৃক কোশ্পানী,
১, ভামাচরণ দে ষ্ট্রাট, কনিকাডা। গুলামাতী সংস্করণ ১৯৩০, বলামুবাদ
১৯৪৭। পূ. ৪০-—১১০। দাম বার আনা, বিশেষ সংস্করণ, এক
টাকা।

গাছীলী লবণ-সভাগ্রেহের পর বগন ররোড়া জেলে বলী ছিলেন তথন আলে আলে গীতার একটি সরল উপক্রমণিকা লেপেন। প্রতি অধ্যারের তাৎপর্য অভান্ত সরল গুজরাতী ভাষার জনসাধারণের বোধের জলই লেখা উহার উদ্দেশ্য ছিল। ভক্তর ঘোষ এবং কুমার বাবু উভারে সেই লক্ষের প্রতি দৃষ্টি রাখিরা অমুবাদ করিয়াছেন। ভাষা সরল হইয়াছে, এবং পাড়িতে কোষাও বাবে না।

গান্ধীজীর ধর্ম্মতের সমাক্ পরিচয় গাঁধারা লাভ করিতে চান, অথবা দীতার শিক্ষাকে ভিত্তি করিয়া সরলভাবে নিজের জীবনকে নিয়ন্ত্রিত করিতে চান ভাঁহাদের পকে বইখানি পড়া বিশেষ দরকার।

শ্রীনির্মালকুমার বস্থ

গান্ধীজী কি চান---জ্ঞানিত্রণচন্দ্র বহু। সাহিত্যিকা, ১২৩,
আমহাষ্ট ট্রিট, কলিকাডা। পু. ৮০। মূল্য ১১ টাকা।

এই পুস্তকে প্রকাশিত ছয়টি প্রবন্ধ ধারাবাহিক রপে 'শনিবারের চিটি'তে প্রকাশিত হইরাছিল। মহাস্থান্ত্রীর কর্মপথা ও আদর্শ সথকে সাধারণ পাঠক এমন কি অনেক শিক্ষিত ব্যক্তিরও ভ্রান্ত ধারণা আছে। লেখক গান্ধীবাদের নানা দিক বিলেবণ করিরা এই ভ্রমাত্মক ধারণাগুলি দুর করিবার প্রহাস পাইয়াছেন। মহাপ্রান্ত্রীর গঠনমূলক কাব্যক্তে অনেকে পুরাতনের প্রতি অবাভাবিক আত্রহপ্রস্ত বলিয়া মনে করেন এবং উছোর কুটার-শিল্প-উন্নয়ন পরিকল্পনাকে প্রগতিবিরোধী বলিয়া ভ্র পান। অধ্যাপক বস্থ মহাশর অতি স্কট্ঠ আলোচনাহারা বৃধাইতে সক্ষম হইয়াছেন বে, বর্ত্তমান হজুগের সময় যাহা ভাল ও মানবকল্যাণকর বলিয়া চলিতেছে এবং আরও ব্যাপকভাবে চালাইবার চেষ্টা হইডেছে ভাহার মধ্যে অনেক গল্ল আছে। এই গল্প এড়াইয়া চলিতে পারিলেই তবে ভারতের প্রকৃত শ্রুক হইবে, অক্সথা নছে।

দেশের হিতকামী ব্যাক্তিমাত্রেই এই পুস্তকপাঠে উপকৃত হইবেন এবং প্রকৃত গান্ধী-দর্শনের মর্মার্থ উপলব্ধি করিতে পারিবেন।

ঞ্জিঅনাথবন্ধু দম্ভ

বিজ্ঞানী ও বীজাণু— এখণেত্রনাণ মিত্র। আওতোষ লাইরেরা, কলিকাতা, চাকা। পু. ৭৪; মূল্য দল আনা।

অনেকেরই ধারণা - যথেষ্ট অর্থ, বাচ্চন্দা এবং স্থসজ্জিত পরীক্ষাগার বাতিরেকে বৈজ্ঞানিক তথামুসন্ধানে সাক্ষণা লাভ করা তুরছ; কিন্তু সর্ক্ষেত্রেই একথা সতা নছে। আদল কণা হইতেছে—একান্ত অমু-সন্ধিৎসাপ্রবৃদ্ধি এবং অদমা অধ্যবসায়। ইণারই বলে জানাবেধী প্রবল বাণাবিদ্ধ অভিক্রম করিরাও সভাের সন্ধান পাইরা থাকেন। বিজ্ঞানের বহবিধ ক্ষেত্রেই এরূপ দৃষ্টান্ত বিরল নহে। সোড়ার বাঁহারা জীবাণু- জগতের সন্ধান পাইরাছিলেন এবং বাঁহারা ভাহানের রহক্তসন্ধানে বাণুত ছিলেন উহােদের সকলেরই কাহিনী গভীর কৌতুহলােদ্দীপন। "নাইক্রোব্ হাণ্টারস্" নামক বইথানিতে তাঁহাাদের অভিনব আবিজ্ঞার সম্পর্কিত ঘটনাবলী বিশনভাবে বর্ণিত হইরাহে। আলােচা পুত্তকথানিতে প্রস্থলার বাংলা ভাবার তাঁহাাদেরই কথা বেশ প্রাক্রলভাবে আলােচনা করিরাহেন। লেখার ভন্নী সহজ ও ক্ষরের। বইথানি পড়িরা প্রত্যেকেই তৃত্তি লাভ করিবেন বলিরা মনে হয়।

শ্রীগোপালচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

দেশ যাদের ডাকে — এশান্তিকুমার দাশগুর। মুধাজ্জী গুপ্ত এণ্ড কোং। ৪৫, ধর্মতুলা দেন, শিবপুর, হাওড়া। দাম ১৮/-।

ছেলেদের উপস্থান। যদিও প্লটের মধ্যে বিশেষ কিছু নৃত্যত্ব নাই তথাপি সহজ ভকাতে ৰদিবার কৌশল লেখকের আরও থাকার উপস্থাস্থানি ভাল লাগিল।

বিশ্বরাপী—সম্পাদক: এটিশনের নাথ সিংহ। এছিক নাইরেরী ২০৪, কর্পন্তয়ানিস ট্রাট, কলিকাতা। দাম সা

সকলন-প্রস্থা পাতি এবং অগাত বছ লেগকের পেবা গ্রন্থবানিতে তান লাভ করিয়াছে। তল্মধা অধাপক ফুনীতিকুমার চটোপাধার এবং অধাপক ফুকুমার সেনের প্রবন্ধ হুইটি বিলেশভাবে উল্লেখগোগা। গ্রন্থথানি তথু প্রবন্ধসকলন ছইলে সম্পাদনার বিশ্বছে বলিবার তেমন কিছু ছিল না। কিন্তু গল্প এবং কবিতাও ইহাতে তান লাভ করিয়াছে অবচ সেদিকে সম্পাদক মহালল্প বিলেখ দৃষ্টি দিয়াছেন বলিয়া ননে হুইল না। অক্সপ্র ছাপার ভূল বিরক্তিকর।

ঞ্জীবিভূতিভূষণ গুপ্ত

ফুদিরাম ও প্রফল্ল চাকী-— এ গোণাল ভৌমিক। বেদল পাবলিশার্স। ১৪ বহিম চাটুক্সে খ্রীট, কলিকাভা—১২, মুল্য এক টাকা।

ভারতবর্গ আৰু পূর্ণ সাধীনভার ধারপ্রান্তে উপনীভ হইয়াছে। আজকের দিনে ভারভবর্ষের স্বাধীনতা আন্দোলনে বাংলার অবদানের কথা বিশেষ ভাবে সর্ব করা উচিত। मुख्यिभागम वाकामी अकविन बिक्रिम मानत्वत प्रेट्यम कविदाव মত ৩৪ সমিতি ছাপন করিয়া সশম বিলোহের আয়োজন করিয়াছিল। এই বিপ্লব-আন্দোলনে বাংলার যে সমস্ত ভক্তণকে আত্মাহতি দিতে হইয়াছিল তাঁহাদের মধ্যে প্ৰসুদ্ধ চাকী ও কুৰিৱাৰ বহু বিশিষ্ট ছান অবিকার করিছা আছেন। মুক্তি-সংগ্রামে বাংলার প্রথম শহীদ ছওয়ার সৌরব প্রভুল চাকীরই প্রাণ্য--ভুদিরাম ছিলেন বিপ্লবী গুরু-সমিতির মেদিনীপুর শাধার কর্মী। দেধক সরকারী विश्निष्ठं अवर क्ष्मिवास्थव (कार्श क्षा क्ष्मिव) स्वीव वहमानि रुरेट উপকরণ সংএহ করিয়া এই এছ রচনা করিয়া-ছেন। ভণ্ড সমিভিত্র তার্যাঞ্জন ও স্বত্নপ বিল্লেখনে লেবক বাংলার বিপ্লৰ আন্দোলনের মর্ম্মকণাট অভুবাবন করিবার প্রবাস পাইরাছেন।

শ্রীনলিনীকুমার ভদ্র

५न-शिस्लाक कथा

বাঁকুড়া শ্রীরামকৃষ্ণ মঠ ও মিশনের ১৯৪৬ সনের সংক্ষিপ্ত কার্য্যবিবরণী

অক্তান্ত বংস্বের কার এ বাবেও বাঁকুড়া জীরামকৃষ্ণ মঠ ও
মিশন কেজে সেবা পূজা ধর্মালোচনা সভা ও বৈঠকাদি নির্মিত
ভাবে অন্থান্তিত ইইরাছে। বর্তমান বংস্বে সর্বসাধারণের জন্ত
ক্ষেক্টি ধর্মসভার এবং মঠ ও মিশনের অস্তেবাসিগণের মধ্যে
২৯৪টি ধর্মালোচনা বৈঠকের অধিবেশন ইইরাছে। মিশনের বিভিন্ন
বিভাগের সংক্ষিপ্ত বিবরণ নিম্নে দেওরা ইইতেছে। ইহার
পুস্তকাপারে মোট পুস্তকসংখ্যা ১৩৪১। মোট চবিবশধানা মাসিক
পত্রিকা ও ড্'বানা দৈনিক সংবাদপত্র নির্মিতভাবে পাঠাগারে
গুহীত হয়।

মশন কর্তৃক ভিনটি দাতব্য চিকিৎসালয় পরিচালিত হই-তেছে। আলোচ্য বং^ব মোট ৬৫৬২৭ জন রোগী চিকিৎসিত হইরাছে। তথ্যধ্যে মিশনের হাসপাতালে সর্বস্মেত ২১১৫ জন রোগীকে স্থান দেওয়া হইয়াছে। এবার মোট ১০ জন ছাত্র বিবেকানন্দ হোমিও বিশ্বালয়ে শিক্ষালাভ করিবাছে।

বামহবিপুর অবৈতনিক উচ্চ প্রাথমিক বিদ্যালয়ের কার্য নির্মিত ভাবে সম্পন্ন হইয়াছে। উহাকে মধ্য ইংরেজী বিদ্যালয়ে পরিণত করিবার চেষ্টা চলিয়াছে। মোট ছাত্র সংখ্যা ১২৩ জন।

কাল পাধব, আন্দার থোল ও গলাজলঘাটী থানার ১২টি প্রামের ৭২০টি পরিবারের ১৪০০ লোকের মধ্যে মোট ২৯১৯ সের চাউল, ৪০৮খানা কাপড় ও ৫৫টি কোট বিভরণ করা চইরাছে। এতথ্যভীত ব্যাপকভাবে আরো নানা জনহিতকর কাধ্য অস্কৃতিত হইরাছে।

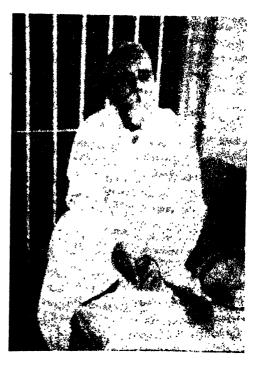
চাংড়ীপোতা গ্রামে প্রসূতি-সদনের ভিত্তি স্থাপন

গত ১৬ই নবেম্ব চবিংশ প্রগণার অস্তর্গত চাংডীপোতা প্রামে "রাজনম্মী প্রস্থৃতি ও শিওসদনে"র ভিত্তি প্রতিষ্ঠা উপলক্ষে মেজর জেনারেল এ. সি. চাটাজ্জিব পৌরোহিত্যে এক সভা হইয়া প্রিয়াছে। কালকাভার খ্যাতনাম। চিকিৎসক, 'ডাক্তার বস্থর লেববেটবী'ৰ স্বত্বাধিকাৰী ডাক্টাৰ শ্ৰীযুক্ত কাৰ্তিকচন্দ্ৰ বন্দ্ৰ মহাশয় তাঁহার মাতার শ্বৃতি বক্ষার্থে শতঃপ্রবৃত্ত হইয়া উক্ত প্রতিষ্ঠান নিৰ্মাণের সম্পূৰ্ণ ব্যৱভাব বহন ক্ষিতে স্বাকুত হইয়াছেন। পশ্চিম वरक्रव साक्षा ও व्यर्थमित बीवुक व्यवसाध्यमान क्रीयुवी এই नव-পরিক্ষাত জনহিত্তকর প্রতিষ্ঠানটির ভিত্তি প্রতিষ্ঠা করিতে গিয়া ডা: বস্থকে তাঁহার অনহিতৈবণার অভ অশেষ ধন্তবাদ জ্ঞাপন করেন এবং এই প্রভিচানটির জন্ত সরকারী সাহাব্যের প্রভিঞ্জতি দিয়া প্রামবাসীদেরও দেশের স্বাস্থ্যোছতির বাছ নিজ নিজ কর্ত্তব্য সম্বন্ধে অবহিত হইতে অমুরোধ করেন। ঐ অমুর্গানেরই অভতম আৰু চিসাবে ডা: থিকেজনাথ মৈত্ৰ মহাশয়ের সভাপতিত্বে ডা: বস্থকে তাঁহার ৭৪ বংসর পূর্ব হওরার খন্ত অভিনশিত করা হয়। ইভিপূর্বে পল্লী উন্নয়নের জন্ত তিনি যে অন্ধলকাধিক মূদ্রা দান ক্ৰিয়াছেন সভাপতি মহাশ্ব বস্তৃতা-প্ৰসংক সে কথাৰ উলেখ

করেন। স্বাধ্যধর্মকের পক হইতে জীযুক নরেজনাথ বকু সভায় উপস্থিত ছিলেন।



শ্রম্বতিসদনের ভিত্তিস্থাপন। দণ্ডায়মান দক্ষিণ দিক হইতে বিত:য়
ডাঃ কার্তিকচন্দ্র বন্ধ্



স্থ্যীরচন্দ্র লাহিড়ী ('বিবিধ অসংস' স্রাইব্য)



সদ্য বিশাভ-প্রাঠাগত শ্রীন্সশোক চট্টোপাধ্যারের সংবর্দ্ধনা। দ্বিতীর সারিতে উপবিষ্ট বাম দিক হইতে পঞ্চম শ্রীন্সশোক চট্টোপাধ্যার

শ্রীযুক্ত অশোক চট্টোপাধ্যায়ের সম্বর্জনা

সভ বিলাভ-প্রভ্যাপত শ্রীযুক্ত অশোক চট্টোপাধ্যাহের সম্বন্ধনার্থ খ্যাতনামা বাহামকুশলী প্রফেসর জীবিক্সর মল্লিকের উজোগে বিগত ২৩শে নবেশ্বর "মলিকস ছেল্থ হোম" নামক স্লাবে এক চাষের আদ্বের আয়োজন হয়। এই উপলক্ষো প্রফেসর ম্লিকের শিষাবৃশ্দ কর্তৃক বিবিধ ব্যায়াম কৌশল প্রদর্শিত হয়। এ সমস্ত শমুঠান শেব হইলে অশোকবাবু শারীরিক ব্যায়ামের প্রয়ো-জনীয়তা স্বধ্ধে ৰক্তৃতা করেন। তিনি বাঙালী যুবকদের সর্বাঞ্জে শ্রীর সামলাইবার ভক্ত অবৃত্তি হইতে অনুরোধ করেন। অশোকবাবু নিজে বিবিধ ব্যায়াম ও ক্রীড়াগিতে খনিপুণ। বাঙালী যুবকদের মধ্যে ব্যাপকভাবে মৃষ্টিযুদ্ধ শিক্ষা ও নানা ব্যাহাম-কৌশল প্রবর্তনের জন্ম তিনি এক সময় যথেষ্ট চেষ্টা করিয়াছিলেন। দেহামুশীলন সম্বন্ধে তাঁহার ব্যাক্তগত অভিজ্ঞতামূলক বস্তুতা শ্রোভুরুন্দের পক্ষে বিশেষ উপভোগ্য এইরাছিল। ডাক্তার কে. ডি. ঘোৰ, ডা: অমর মুখোপাধ্যার, ডা: আদিত্য গুল্ক, জীশিশির कुमात कर, बीमत्छारकुमात हम, बीधमध होबुबो व्यप्न विनिष्ठे ख्य भट्डाम्यर्गन ऐक मान्रत्य त्यानमान कविद्याद्धिनन ।

র াঁচিতে স্বাউট ক্যাম্প

থিতীয় কলিকাতা বয়স্বাউট এগোনিয়েশনের উনবিংশতি দল
শীকানাই বন্দ্যোপাণ্যায়ের অধিনায়কতে বিগত অক্টোবরের শেব
সপ্তাহে বাঁচিতে ক্যাম্পের অধুচান করে। ব্যারিষ্টার শীনাভানাথ
পালের বাঁচিন্ত ভবনে স্বাউটদের শিবির সংস্থাপিত চয়। হুডুও
জোনা জলপ্রপান্ত এবং অভান্ত প্রাকৃতিক দৃশ্য দর্শনে ব্রতীবৃন্দ
প্রভুত আনন্দ লাভ করে। সম্রাস্থ নাগরিক শীক্ষর্জুন আগরওয়ালা
ইণাদিগকে তাঁহার স্থবিস্তুত ভবনে নিমন্ত্রণ করিয়া চা-পানে

আপ্যায়িত করেন। বিহারের লাট-প্রাসাদেও অভিথিপণ সহ বতীবুল নিমন্ত্রিত কন। অবিলপে পাটনা যাওয়ের প্রয়োজন সন্থেও বিহারের গভর্পর প্রিজয়রামদাস দৌলভরাম সপরিবারে প্রায় জিল মিনিট কাল ইহাদের মধ্যে থাকিয়া আউট, কার ও রোভারদের কার্য্যাবলী পরিদর্শন করেন। উনবিংল গুপের বাহীবুল্ছাড়াও লাটপ্রাসাদের অভিধিস্নারের মধ্যে সেখানকার পুর্ণাক্ষ কাজা কপোরেশনের ভূতপুর্বর কৌলিসার প্রাথইকুমার চটো-পাধ্যার, প্রকালীকৃষ্ণ রায় প্রভৃতি উপস্থিত ছিলেন। গংশবের একটি নাভিলীর্ঘ ক্ষর অভিভারনের পর সেখানকার আধ ঘটার চিত্তাক্ষক কার্যুস্কী সমাপ্ত হয়।

পরলোকে হরেন্দ্রনাথ বহু

পত ১লা পৌষ (১৭ই ডিসেধর) বেলল কেমিক্যাল প্রতিষ্ঠানের অন্যতম জনপ্রির উৎসাহী কথা হবেজনাথ বংশ মহাশর পরলোকগমন করিরাছেন। ডিনি ১৯-২ সনে এট্রেল পরীক্ষার উত্তীর্ণ চইরা সরকারী কর্মে লিপ্ত হন। জীবনের শেষ আঠার বংসর কাল তিনি বেলল কেমিক্যালের সঙ্গে যুক্ত ছিলেন। হবেজনাথ থেলাগ্র্লাচ বিশেষ উৎসাহ প্রকাশ করিতেন। যৌহনে তিনি একজন ফুটবল খেলােয়াড় রূপে খ্যাতিলাভ করেন। সাহিত্যের প্রতিভ ভাষার অসামান্য প্রতি ছিল। ভাষার অমারিক ব্যবহার ও সৌকনাগুণে সকলেই মুঝ ছিলেন। কলিকাভার সল্লিকটন্থ সোদপুরে তিনি দীর্ঘকাল অবস্থান করেন। তিনি তথাকার বিভিন্ন ক্লাব ও প্রতিষ্ঠানের একজন উৎসাহী সভা ছিলেন।





ভান্ধর ও শিল্পী এদেবীপ্রসাদ হার চৌৰুবী কুত মালাবার-কবি কুমার আসামের প্রস্তুত্তি



"সভাৰ শিৰষ্ কুলৱৰ্ নাৱমানা বলহীনেন সভাঃ

8**9**79 ©131

সাঘ, ১৩৫৪

৪র্থ সংখ্যা

বিবিধ প্রসঙ্গ

মহালাজীর অনশন ব্রতের সমাপ্তি

মহাত্রাভীর দও দিল্লীত অনুসলমান অবিবাসীপণ মানিতা লওয়ায় তাঁহার অন্মন ত্রেত স্মাতি হইয়াছে। এই বাপোরে সারা জনতে সংখ্য পড়ে এবং ৮৮ ছিক হউতে এই মহামানবের अक्षालंड चक्र पश्चितिक जार्क्षण्या श्राकान एवं। चननम च्या সমস্ত ভারত এবং কগতের প্রীবর্গের এক বিশিষ্ট স্থাপ স্বভিত্র बिचान (करन: महाचाको निक्य कौवन (य विरम्ध महन ক্ষা স্বানর ঋণ পণ করিয়ালিখেন 🏬 ছা সকল ছইয়াছে अरर जन्दाटक विश्लीत कलान घरेटव 'उ विश्वमानदेव करक পাৰ্কীর মহান পাদেশ আবেও উ.চচ উঠিবেঃ কিন্ধ এবারকার জনপন এড় সমূত্ৰে কেবলথাত্ৰ মহাত্মানীৰ প্ৰতি ভক্তি-শ্ৰহা ও दियान बिट्रांच्य कदिश कांश्व इते क लागाएक शत्क कर्त्रदाव দারুণ আবহেলা করা হুইবে মুজরাণ প্রিধাবাদের সহজ भव शक्षिष्ठ। উ**राट कनाकन मश्रदक कर**ोठ वाखनवारमद क्षांश क्षेत्र ८८ (८६१६ क्(४८७ इंटेटर) आंक आंगवी शांखका লাভ করিয়াম এবং চু'নিন পতে সম্পূর্ণ পারীনভালাভ করিব च्यांचा कविटार्जिक । कल्डरार खादणदार्थेद खबाक्क अवन चार्या-(एव निक्ष्य शास्त्र, भर प्लाध देशदरक्षय अरब हालावेश निकाय পাওয়ার উপায় আর আমাদের মৃষ্ট, সেই কারণে ভারত-बक्रवार्यं कृत्वात राष्ट्रांकः काष्ट्रांत्रक काशायभौत व्यारमाह्ना, युक्त व्यक्षित प्रक्रिकः, व्यामार्थित क्रिट्टिक प्रदेश समिर्थ बर् নুভন রাষ্ট্রে সমূহ বিপদ ও অধ্যুদ্ধ অবঙ্গারী। কেবলমাত্র ভাবের উচ্ছাসে গদগদ হইখা, চকু মুদিয়া, সহজ পরে চলিয়া, আমাদের কতবার কি নিদারণ ছর্মশায় পঞ্চিরা দাসভবরণ করিতে হইরাছে ভাহার বিবরণে ইভিহাসের শভ সহস্র পুঠা ভরিয়া পিরাছে। আবার দেই পথে চলিলে ফল একই হুইবে।

মহাত্যজীর অন্দনের উপের মহান ছিল এবং তিনি আমা-দের সকলেব কল্যাপকামনা করিয়াই এই ব্রভ গ্রহণ করেন সে বিধরে কাহারও মনে কোনও সন্দেহের অবকাশ নাই। কিছ আমরা জানি অনেক ক্ষেত্রে কল্যাণ কামনা করিয়া যে কাশ করা হয় ভাহার ফল নিরবজিয় কল্যাণপ্রস্থ হয় না। যেমন চিকিংলার ক্ষেত্রে অনেক ঔষণ আবিদ্ধত হয় যাহা রোগ- বিশেষে অমোগ অন্তর্কণে বাবহুত হুইতে পারে কিছু যাহাতে রোগীর দেহে বিষম প্রতিক্রিয়া হুওয়ার অনেক সময় ভাহার প্রাণ বিশ্ব হুইয়া পছে। সে কথা মনে রাবিয়া আমাদের এখন বিচার করা প্রোক্তন যে এই আমরণ অনুপন প্রভক্ষণ ঔষধ প্রয়োগে সম্ম রাষ্ট্রের দেহে কলাকল কি ঘটনায়ে। কংজেসের আদর্শ যদি সভা হুয় ভবে ভারতযুক্তরাষ্ট্রের অনুসাবারণের অংশ রূপে রাষ্ট্রের মাল্ল-অয়ক্তন বিচারের অধিকার আমাদের সকলেরই সম্পূর্ণ আছে।

ষহাত্মজীর জনশন বতে উপকার হইবাছে নির্মীর বুসস্থান ও জমুগলমান অবিবাসীদিনের প্রত্যক্ষ ভাবে এবং পরোক্ষ ভাবে, দিল্লীর উদাহরণ দেবিয়া, সেই সকল অঞ্চলের লোকের যেবানে সাম্প্রদায়িক বিধেয়ের আঞ্চন এবনও অলিভেছে। ভারত্যযুক্তরাষ্ট্রের পনেরো আনা অংশে ঐ রোগ এবন মাই স্থভরাং ঐ ঔধবের দর্শন কোনও স্কল সেবানে হওয়া সভব নহে। এক কণার মহায়ানীর এই প্রচ্জপ্রযুক্ত ঔধব এবারে ব্যবহৃত হইয়াছে ভারত্যুক্তরাষ্ট্রের অভি ক্ষুদ্র অংশের ক্ষ

কিন্তু ঔষধের বিধন প্রতিক্রিয়া হইয়াছে সমস্ত রাপ্টের উপর, এ বিষয়েও লন্দেহের অবকাশ নাই। এবং সেই প্রতিক্রিয়ার কারণ নহাত্বাকীর ঔষধ ভাছাও নিঃসন্দেহ। কেমনা এবার তিনি অন্যাবাবকৈ পূর্বাহে বলেন নাই যে তিনি কি কারণে এইরুপ ত্রভ অবলয়ন করিতে যাইভেছেন, এবং কি সর্প্তেতিনি অন্যান ভঙ্গ করিবেন। উপরস্ক ত্রভাশের সময়ের উপযোগিতা বা ত্রতকালে আন্তর্জাভিক সাম্বিক প্রিভিতির বিচার করা তিনি প্রয়োক্ষ মনে করেন নাই।

অনশনের প্রথম প্রতিক্রিয়া আমরা দেবিলাম প্রিত নেহরুর পাকিতানকে পঞ্চার কোট টাকা দিবার সংক্রে। আমরা পরে একবাও শুনিরাহি যে, এই পঞ্চার কোটি টাকা দেওয়া বা না দেওয়ার সহিত মহাছাতীর অনশনের কোনও সম্পর্ক ছিল না, উহা প্রিত নেহরুর বিচাবের ভূল। কিছু যেহেভূ মহাত্মাকী অনশনের পূর্বে সবিশেষ সর্ভ জাপন করেন নাই—এবং পরেও ম্পাই কিছু বলেন নাই—সেইজ্রু আরু পাকিআনির দল সারা অগৎকে বুবাইতে সমর্ব হইয়াছে যে ঐ টাকা

ভাছাদের প্রাণ্য ছিল এবং এভদিন ভারতমুক্তরাষ্ট্রের মন্ত্রীসংসদ ভূমীতির আশ্রর করির। উচাদের বঞ্চিত করিতে চেট্টভ ছিল। এটভাবে পঞান কোট টাকা দেওখায় আৰু ভারতরাই প্রথমভঃ क्रमाज्य काक श्रीम श्रीजिम् श्रीम अवर विकीशकः भाकिकाम ভারতের বিরুদ্ধে প্রকান্ত ও গোপন মুদ্ধের ভন্ত অববল পাইল। অন্ন্ৰে দ্বিতীয় প্ৰতিক্ৰিয়া হইয়াছে সন্মিলিত ভাতি সংসদেৱ (I) N. ().) পরিষদে। ঠিক যে সময়ে সেবানে ভারতমুক্তরাষ্ট্র পাতিভানের বিরুদ্ধে কাশ্মীর সম্পর্কে অভিযোগ উবাপন करत. (जरे अमरभरे महाचाकी जनमन तल बादल करिया कर-তের কাছে সমগ্র ভারতীয় অধুসলমান্ধিগের মুসলমানের প্রতি অবিচার অনাচার ও অভ্যাচারের কবা সুপট্টভাবে প্রমাণিত कविशा फिल्म । छिनि जनमासब शृद्ध वरलन नाहे य छिनि কেবল দিল্লীর কৰা ভাবিতেছেন, পুতরাং সন্মিলিত জাতি-সংসদে ভারতযুক্তরাষ্ট্রের সথছে সন্দেহ ভবিয়াতে। ইবা ভির সর্ব্বাপেকা বিষয় প্রতিক্রিয়া হইয়াছে ভারতযুক্তরাপ্টের চালদার ব্যবস্থায়। চিন্তাশীল ব্যক্তিমাতেই এবার বুবিল যে মহাল্মানী কাৰ্যাভ: ভারতযুক্তরাষ্ট্রে একনায়কও (dictatorship) স্থাপন कविशास्था।

নৃত্ন মন্ত্ৰিসভা

পুতন প্রধান মন্ত্রী ডা: বিধানচন্ত রায় এবং তাঁহার মন্ত্রী-সভার এগার জন সদস্ত ২৩শে জাস্থারী কার্যাভার প্রহণ করিয়াছেন। পুতন মন্ত্রীদের মধ্যে নিয়ালবিত ভাবে দপ্তর বিভান করা হইয়াছে:

প্রধান মন্ত্রী ভাঃ বিধানচন্দ্র রার—খরাই, খাখা ও খানীর খারতশাসন।
ব্রীনলিনীরন্ধন সরকার—অর্থ, বাণিজ্য ও শিল্প।
ব্রার হরেপ্রনাথ চৌধুরী—শিক্ষা।
ব্রীপ্রস্কুচন্দ্র সেন - জাসামরিক সরবরাহ।
ব্রীযাদবেক্রনাথ পাঁজা—কৃষি ও পশু চিকিৎসা।
ব্রীনিকুল্পবিহারী মাইভি—সমবায়, চুর্গত্তরাণ ও পুনর্বসভি।
ব্রীবিমলচন্দ্র সিংহ—পূর্ভ ও বোগাবোগ।
ব্রীমোহ্নীমোহন বর্ম্মন—হিম ও ভূমিরাজ্য।
ব্রীনীহারেন্দু দন্ত মন্ত্রুমদার—বিচার ও আইন।
ব্রীক্রালীপদ মুখোলাবার—শ্রমিক।
ব্রীক্রালীপদ মুখোলাবার—শ্রমিক।
ব্রীক্রেচন্দ্র মন্তর্ম বন ও মংস্কা।

কার্যাভার গ্রহণের পর ডা: বিধানচল রায় একটি
লাংবাদিক সংখাদনে বলেন যে দেশের প্রয়োজন মিটাইবার
চেটাই তাছার প্রথম কওঁবা ছইবে। তিনি বলেন, বর্ত্তমানে
তিমটি সম্ভা তাছাদের সমূর্বে বিদ্যামান। প্রথমটি ছইভেছে থাদ্য, বল্প ও জীবন্যাত্রা নির্ব্বাহের পক্ষে আবঞ্চক
ক্রব্যাদির অভাব বিটামো। থিতীয় সম্ভা ছইভেছে গৃহ সহট,

বিশেষভ: পূৰ্ববদ হইভে যে বহু লোক এই প্ৰদেশে চলিয়া আনিরাছে ভাহাদের আশ্রয়ের ব্যবস্থা করা। কলিকাতা এবনও পঞ্চালের মধ্যুরের এবং ভাহার পরবর্তী মহামারীর বাকা কাটাইরা উঠিতে পারে নাই। ডতীয়ত: তিনি পূৰ্ববঙ্গের হিন্দুদের মন হইতে শকা দূর করিয়া তাহাদের মনে আন্থা কিৱাইয়া আনিতে চাছেন। পূৰ্বাৰণ হইতে বছ लाक (य भाक्त्रवरक हिन्सा चानियार छिनि लाहा चारनम । কৰ্মক্ষে হইতে বিচ্যুত হইয়া ভাহায়া যে ফ্লেশ ভোগ কবৈতেতে ভাষাও ভিনি অবগত আছেন। সীমান্ত রক্ষার निर्मिष्ठ बर्वर राशामीत यदन चान्ना मशादन छेट्या बक्छ বেসরকারী কিখা সরকারের উদ্যোগে গঠিত একট প্রাদেশিক সংগঠন প্রতিষ্ঠা যত শীল্প সম্ভব করা প্রয়োজন। এ বিষয়ে তিনি ইতিমধ্যেই ভারত সরকারের দেশরকা বিভাগের সহিত আলোচনা আরম্ভ করিয়াখেন: শীগ্রই তিনি এ বিধয়ে कार्यकर्यो रावश्व। अवश्वश्रदात क्या अविक्षण स्व अरहे इटेट्स । খাদ্য সম্ভা সম্পৰ্কে ডাঃ রার বলেন যে কৈ ভাবে বর্তমান অর্গ-নৈতিক বিশ্বলা হয় কয়া যায় সে বিষয়ে তিনি এবনও কোন মভামত স্থির করেন নাই। গাঙীকা কোনএপ নিয়ন্ত্রণের খোর বিরোধী। শেই নীত্রি পশ্চিববলে প্রয়োগ করা যায় কি না ভাষা তিনি বলিতে পারেন না। শ্রমিক সম্ভা সহতে ডাঃ রাম্ব বলেন যে সংগ্রতি নমাধিলীতে অন্তর্গুত সংখ্যান নিভাৱিত পৰেই তিনি চলিবেন।

মন্ত্ৰী সভার ডা: প্রকৃত্তক খোষ ভেণ্ট প্রধান মন্ত্রী হিসাবে যোগ দিবেন কিনা তাহা এখনও সঠিক বুরা যাইতেছে না। কাষ্যভার গ্রহণের প্রদিন এক সাংবাদিক বৈঠকে ডা: রায় বলিরাছিলেন যে মন্ত্রী সভায় যোগদান সম্পর্কে ডা: থোথের মভাষত চূড়াছ ভাবে জানা যায় নাই, তিনি দিল্লী হইভে কিরিলে জানা যাইবে। এই কথা সংবাদপত্তে প্রকাশিত হইপে ডা: খোষ নিম্নলিখিত বিবৃত্তি দেন—

"আমি ডাং রাষের মন্ত্রী সভায় যোগ দিব কি না সে
সম্পর্কে তিনি আমার নিকট হইতে কোন লেষ কথা পান নাই
বলিয়া পশ্চিমবন্ধের নৃতন প্রধান মন্ত্রী যে বিবৃতি দিয়াছেন
তাহা পাঠ করিয়া আমি বিশ্বিত হইয়াছি। তিনি যে আমাকে
মন্ত্রী সভায় সইতে চাহিয়াছিলেন সেক্ত তাহাকে বঙ্গাদ আমাইতেছি। কিছু আমি তাহার মন্ত্রী সভায় যোগ দামে
অক্ষম এবং ইহাই আমার শেষ কথা বলিয়া আমি স্কুল্ট্রভাবে
তাহাকে টেসিকোনে আনাইয়াছি। স্তরাং দিল্লী হইতে
ভিরিষা তাহাকে আর কোন পত্র দেওবা নিপ্রধ্যেকন।"

ডাঃ বিৰামচন্ত্ৰ রায়কে ডাঃ প্রকৃত্ন ৰোধের এই বির্ভি দেবানো হইলে তবনও তিনি বলেন বে ডাঃ বোধ নপ্তী সভার বোগদানে অক্ষতা আপন করেন নাই। দিল্লী হইতে কিরিয়া ডাঃ বোধ নথ্যী সভায় বোগ দিবেন বলিয়া ডাঃ রায় এখনও আশা রাবেন বলিয়া তিনি ভাষান।

বোষ-মন্ত্রীসভার অপস্থতি

শক্ষিমক ব্যবস্থা-পরিষ্ণের কংগ্রেস দলের অবিকাংশ সদস্য ডা: ঘোষের উপর অনাস্থা জ্ঞাপন করিয়া ডা: বিধানচন্দ্র রাষের মেতৃত্বে একট নৃতন মন্ত্রীমন্তল গঠনের দাবী জানাইলে কংগ্রেস পার্লামেন্টারী দলের সভায় উহা আলোচিত হয় এবং ডা: ঘোষ স্বেক্ষার প্রধানমনীত্ব ত্যাপ করিয়া ডা: রায়কে ঐ দায়িত্ব প্রত্বে আহ্বান করেন।

ভা: খোষ দেশবাসীর বহুলাংশের যে শ্রাধা ও বিখাস স্টরা কার্য্য আরম্ভ করিয়াছিলেন ভাছা অভি অন্ত লোকের ভার্য্যে বঙ্টিরা থাকে। কিন্তু ভংসন্ত্রেও কেন তাঁছ কে পাঁচ মাসের মধ্যে সরিভে হইল ভাছার আলোচনা আবঞ্চক। ঘটনাইকে কেবলমাত্র অবিমিশ্র দলগত চক্রান্তের পরিণতি ভাবিলে ভুল করা হইবে।

ডাঃ খোষের পদত্যাগে অনেক লোক "একট ভাল মাত্র বিদায় হইলেন" ভাবিয়া ছঃৰিভ হুইয়াছেন। যে ভাবে খোষ-মন্ত্রীসভার অপক্তি ঘটল ভাহা অনেক দিক দিয়াই সমর্থন-যোগ্য নহে, ভথাপি ভনসাবারণের ভয়ক হুইতে সভাস্মিতি বা সংবাদপ্রের মারফং খোষ-মন্ত্রীসভা বভার রাধিবার ভ্রু কোন দাবা উঠে নাই ইছা সভ্যু করিবার বিষয়।

ডাঃ বোষের প্রথম ভূল্ কন্সাধারণ শাসন্যস্ত পঠন সম্পর্কে তাঁহার নিকট যাহা আলা করিয়াছিল তাহার কোনটির ভ্ৰুট তিনি বিশেষ সচেষ্ট ছিলেন না। জালার প্রন্মেণ্টের উচ্চ-পদস্থ কর্মচারীদের নামের ভালিকা প্রণয়নের সংবাদে লোকে ইছাই আশা করিয়াছিল যে, যে সমন্ত সরকারী কর্মচারী ও পুলিদ ইংবেক এবং লীগ আমলে দেশবাদীকে লাঞ্না করি-য়াছে ভাহাদের অপস্তি ঘটবে এবং যে সব কর্মচাত্রী ঐ ছুই আমলে বিবেকবৃদ্ধি বা সদেশগ্ৰীতি বিগৰ্জন দেন নাই বলিয়া चित्र किल क्रेश कान काठाइशाह्य, छाहापित्र के प्रमुख পদে নিযুক্ত করা হইবে। কিছ তালিকা প্রকাশের পর দেখা পেল ইংরেজ ও লীগ **ভামলের ভা**ধ্যাত-কুধ্যাত কর্ম্ম-চারীদের অনেকেরই পদোর্ভি হুইয়ারে । ইছার অব্রান্তী পরিণাম এই ছইল যে, বহু কুতী কর্মচারী কুরু ছইল এবং বাৰীনতা পাতের পরেও দক্ষতা ও সততা উপেক্ষিত হওয়ার नाभगवास कार्डेल दक्षिण। छा: (बारवद नामगकारल खह সমধ্যের মধ্যে শাসন্যন্ত্রের ফ্রুভ অবন্তির ইহাই বুল কারণ। चापर्नवाषी विनया वारमारम्य वाहारक अहन क्रियाहिन अहे কার্য্যে ভাঁছার উপর প্রথম সংশর জ্বিল।

ডাঃ বোষের দ্বিভীয় ভূল, ক্ষমতকে উপেক্ষা করিয়া কেবলমাত্র বাবছা-পরিষদের সদস্যদের মধ্যে দলগত সংখ্যাগরিষ্ঠতার
কোরে মন্ত্রীও বকার রাখার চেষ্টা। ছারা মন্ত্রীসভাকে ধ্বন
তিনি পুনর্গঠন করেন তখন জীয়াদ্বেল পাঁজাকে যে ভাবে বাদ দেন তাহা বহুলোকে সভষ্ট চিত্তে গ্রহণ করিতে পারেন নাই।
ভাঃ বোষের বিয়োশী দল ক্ষতে বিশ্বাদ ক্ষম করিয়া যে ছই ক্ষম

আসিরা তাঁহার সহিত যোগদান করেন সেই ছুট অনকে ডাঃ বোষ মন্ত্ৰীসভায় সাম দেন কিছ জীযুক্ত পাজায় ভায় নিজপঞ্চ-हरित (माटकत प्राम (मबादम इस मा। अवादम णाः (वाय উাহার আদর্শবাদ অগ্লাম রাখিতে পারিদেন না। পদভ্যাপের পর এছজ শালা বে বিবৃতি দেন ভাচাতে পালা মহাশয়ের উপরেই লোকের এবা বাড়ে। অভয়াত্রমের জীব্রদ চৌবুরীকে মন্ত্ৰীসভাৱ স্থান দেওয়ার জল ডাঃ খোষ জিল ববেন এবং আনেকে हेर्। एक जान कि कर्तन । भारत्वम-भ्रम्भ एकत करेरा प्रम भारतिया ডাঃ খোষ ভাহার কোরে বছমান বিভাগের প্রভিনিবিদের ভীব विद्राविका भर्षक (भोवरी मशामश्राक महीमकाश अवन करतम । দল ঠিক বাৰিবার জল ডা: থোষকে বুগাল্লর দলের সহিত चालाय कतिया डाहारमय अक कमरक मन्त्रो अदर चन्द्र अक क्रमा के के के के परिष्य क्रिक क्रिक क्रमा अवारम छोड (चाथ क्रमभावादनीक प्रत्य दावाद (६८३ प्रम शाकात्माद উপর বেশ্ব ছোর দেন। কংগ্রেসের আদর্শ ইহাতে পুনর্কার क्त रुवा

ভাঃ বোষ বাংলায় চোরাকারবাব বা অলায় লাভ এইব দমনের ব্যবস্থা বা সবল চেটা করিভে পারেম নাই। দলগত চক্রাণ্ডের চালের উপর নকর রাবিভে তাঁহার সময় সিয়াছে এবং চাটুকার ভিন্ন আল সকলের উপদেশ বা প্রভাব অবহেলা করাম যোল্য পর্যান্দিশভার অভাব ভাঁহার ঘটে। কলে তাঁহার কার্যাক্ষমভার উপর লোকে আস্থা হারায়। বাংলাদেশ সকল প্রদেশের মবো মূর্ব্লাভা ও অভাব কনিভ ক্লেশে অবিক কর্ক্তবিভ। ডাঃ ধোষের মনীথের মধ্যে এই ক্লেশ উপশ্যের কোনও চিন্দ্ পাওয়া যায় নাই।

ডাঃ ৰোষ পূৰ্ববঙ্গ হইজে আগত লোকদের বসবাসের কোম থাবখা করেন নাই কেন্দ্রীয় সরকার তাঁহাকে সমাক खरहा कामाहेबाद कमा अश्रदात कवित्म लाकाल कामाम माहे. निक:-वावश पूनर्जित्वद अवव वावावक्षण विवृतिषानद अवर কলেভ্ছলির সভিত বিরোধ বাধাইরা তুলিয়াছেন, বাজ-अग्रजात (काम अग्रातान कतिएक शास्त्रन नावे, विशासन वारमा ভাষাভাষী অকলগুলি বাংলার প্রভার্পণের দাবী কেন্দ্রীয় अञ्चलात्क भिटक कानाम माहे. পশ্চিমবল পরিষদের জনৈক जबक्र बड़े भृत्यू प्रविद्यान बक्के क्षेत्रातित वाहिन पिरन जाए। উবাপিত ছইতে দেন নাট, এই সমুদয়ও তাঁখার বিক্তে বড় কম অভিযোগ নয়! অভয়াশ্রমের লোকদের অথবা বছ চাকুরি (मश्रम क्रेमारक अवः वेशालिश (मारक मचडे क्रेरल भारत মাই। পাব্লিক সাবিদ কমিশনের দেকেটারীর নাার ঋর माश्चिष परम अवस्थारक निश्च करा श्रेशां श्विम মানবেঞ রায়ের দলের জনভেম নামকরপে দীর্ঘকাল কংগ্রেস বিবোৰিত। করিয়াছেন। তাঁহার কি বিশেষ গুণ ছাঞার (थाय ८५वियाबिटनम जामता कामि मा ।

मृजनीय जीन भ सूत्रजीय जीन नगरवाकी यथन कलिकाका

অধিকারের অভিযাম চালাইভেছিল তথ্য শহরের যে দক্ল সাহ্নী হুৰক জীবন বিপত্ন করিছা দীগ প্ৰব্যেণ্টের এই আক্রমণ বার্থ করিয়া দিয়াছিল, ভাষাদের প্রতি ডাঃ **व्या**रित काठदेव क्षणरंभाव श्वामा नरहा अहे पूर्व कर्वा स्व সাহস ও সংগ্ৰামকুশসতা ধেৰাইয়াছিল ভাষাভে ইছাদিগকে পুলিদ সার্চ্ছেন্ট, সমগ্র পুলিদ এবং দীয়াছরক্ষী বাহিনীতে अरुव कदिएन (मानव माक्तिवृद्धि एवेफ, वेद्याप्तव बार्य) ষে কেহ কেহ বিপণগামী হইয়াছে ভাহারও সুযোগ মিলিভ মা। অফুরাও চটয়াও ডা: খোষ ইছা করেন নাই অবিক্র এই সব হুস্কের উপর গোয়েন্দা পুলিস সেলাইয়া দিয়াছেন। নিরাপঞ্জ বিদ্যু দেশকে যে ক্ষেক্ট সংখ্যাদিক বৈঠকে ডা: খোষ উপস্থিত ছিলেন ভাষার প্রভ্যেকটিতে ভাষার बारे बारनाचारहे कृष्टिश क्रिकेश एक एवं बूरकक्ष्मा कि विश्वल করাই তাঁছার উক্ত ক্ষতা গ্রহণের প্রধান অভিপ্রায়। পাকিস্তান কি করিবে তাহা জানা নাই। বাংলা এখন একট भौगांच लाएन , प्रमंतकात अक्षे रक् चार्याक्य अवास्य वाका भवकार अरु हेशार कत अर्थ एवंटिंग्डे पुरक्रान्य मामतिक निका (एउदा बकाब बारकक देश महेशा भरवायभाव क সভা-স্মিতিতে বহু আন্দোলন গত কয়েকমাপ যাবং হুটতেছে किन जा: त्याय निर्देदकात किलान। भाषातिक विकाद चारताकन বিশ্ববিভালত্ত্বে মারফতেও ভিনি করিতে রাজী হন নাই। দেশবভার ভাঁখার এই উনাসীনতা লোকে সম্বষ্ট চিত্তে মানিছা লইভে পারে নাই।

আদর্শরক্ষা এবং শাসন্যক্ষ্ম পরিচালনে দক্ষতা- এই ছুইটির একটিভেও ডাঃ থোষ উপযুক্ত দৃচতা, দূরদর্শিতা বা যোগাতার পরিচয় দিতে পারেন নাই।

কংগ্রেসের ভবিয়াৎ

ৰাভীয় মহাসমিভিত্ৰ ভবিত্তৎ লইয়া ইভিম্ৰোই নানা আলোচনা আরম্ভ হইরাছে। ভারভ রাষ্ট্রের সব প্রদেশেই करा अभी मधीनका नानस्कार्वा हामाहेरलाइ। ১৯৪७ नारन (य নিৰ্বাচন-সংখ্যাম চলিয়াছিল, কংগ্ৰেস ভাষাভে কালাভ করে। সেই অবিকারে আৰু ভারত রাষ্ট্রের শাসনকার্য্যে তাঁভার ক্ষতা নিরত্ব। এইরপ ক্যভার ব্যবহার ছাতীয় স্বার্থের পক্ষে উপকারী কিনা তৎসম্বদ্ধেই আলোচনা চলিতেছে। কারণ নিরম্ভুন ক্ষতার ব্যবহারে একট। মোহের স্ট করে যাহা কোথাও क्नाविकाक दश नारे। प्रक्रिय वारमाय खेळावू हार वार्यव মল্লীছের অবসানে আমরা ভাষার পরিচয় পাইরাছি। ভাষার विद्वारी कराखभी भणामन वीवस्थ निकारतन समयक साहाद উপর অকৃঠ আখা প্রকাশ করিয়াছিলেন। এক মাল যাইতে না খাইতে তাঁহারা প্রাপ্রচল বোষের মন্ত্রীগভার উপর আছা হারাইয়া কেলিলেন। নিকাচকমণ্ডলীকে মূর্য ও অসহায় বোৰে তাহারা এই পার্যপরিবর্তমের কারণ সধবে কিছুই জানাইলেন ৰা । ক্ৰমতের প্ৰতি শ্ৰহার কোনও পরিচয় এই ওওচফাতে

পাওৱা যায় নাই। মাদ্রাকেও এইরপ একটা ঘটনা ৰটীয়াছিল, যাহার ভৱ শ্রীপ্রকাশ্যের মগ্রীসভার পতন হয়, এবং একমানজ্ঞার বেভিড প্রধানমন্ত্রী পদে বৃত হন। মান্তাজের নির্বাচকয়খলীকে এই পরিবর্তনের কারণ সমূহে কিছুই বলা হয় নাই - মান্তাকের একবানি পঞ্জিকায় দেবিলাম যে একজন বিজ্ঞপ করিয়া বলিতেছে—কংগ্রেসপন্থীরা আজ एवं अऔं इटेंबार्ड मा इव इटेशार्ड (स्थानंत स्थाकारमंत्र মালিক। অস্ত্র দেশের প্রথীণভম নেতা ঐকোভা ভেছটিরয়া বলিয়াছেন যে ব্যবস্থাপক সভাব কংঞেশী সভারা জ্বন-সাধারণের ভাতির কারণ কটয়া উঠিয়াছে। আমাদের প্রতিবেশী বিহার প্রদেশের মন্ত্রীবর্গের কীর্ত্তি-কবা অনবভ। সেধানে **ध्रक्त कन्द्रोक्के अवस्था एकहे; (क्रालक्ष्यीय अक्के व्हेस्राह्य ।** মন্ত্ৰীদলের পোত্তবর্গ বাং বন্ধুবর্গের নামে ঋড়ের বাবসংয়ে প্রায় একচেটিয়া অবিকার দেওয়া হইয়াহিল। ডাঃ সৈয়দ মাযুদ ও জনাব আবহুল কায়ুম আনসারীর নামও এই সন্দর্কে দেখা मियारक। बारमाय करत्वभ-भका भः अरकत करक वाभाव এতই নীচ যে ভাষা চোরাকারবারীদের খারাইয়া দিয়াছে। সম্ভ্রতি আমাদের অপিসে উ।হার একট অন্ত প্রধাণ ডাকে আসিয়া উপায়ত হট্যাছে। কলিকাতার একবান ইংবেলী সাত্তাহিক পত্তিকাকে যে কাপজের মোড়হে জড়াইয়া দেওয়া इटेशांक छाटा अवसानि करा अन्न मणा-भरकार्य विभिन्न अनर **जाहाद छैभद बाधहार्ह द्वीहे (माई बाभिटमद शाँवी (मध्या)** खहे दिभएए प्रभीष आहमिक कराश्चम क'मनित भाषापाकद নাম আছে। ভ্নিতে পাই কংগ্রেপ-প্রা সংগ্রেকর কম র্পিদ বট পাওয়া কটিন , কিন্তু প্রবাদপত্র পরাক করিবার জন তাহা जरूकशांभा विभवा भरत क्या । १६ किन भरत सम्भाद (पाकारन्छ ভাছা দেখা দিবে। তথ্য ক্ষমালয়ত র চুকান্ত পরিচয় মিলিবে।

अहे चरशास चारमाक के मान कारतम । य कराजामा माना के अक्टी विद्यारी प्रज रुष्ट्री कथा श्रद्धाचन । अटे प्रज खविषा छ्य क्य (वयारेक्षा भरवे दावित काहारावत वाहारावत सार्व वर्डमारम সমস্ত ক্ষমতা চলিয়া পিয়াছে। তাহা সংক ব্লিয়া মনে করা সম্ভৱ নয়। কিছু এখন নিভান্তই প্রয়োজন। কংগ্রেস আজ দলগত বাবের প্রতাক না ভাতার জীবনের নিয়ামক ভাহাই भिक्षांत्रम कविटल एवेटन । वर्त्तमाटन याशादा करद्याम ध्वनान হইয়া আছেন, ভাঁহাৱা কোন একট দলের প্রতিনিধি বলিয়া মনে হয় न। । चल्लाः इटेंहि प्रम चापनांत मक्कि मरम्ख कविशा निक्ट एव श्रीवांना श्रापन कविशास । ১०३ चान्ट हेव शर्ख কংরেদের একমাত্র উদ্দেশ্ত ছিল বিটালের হাত হইতে ক্ষমতা কাভিয়া লওয়া। আৰু পেট ভগাকৰিত একপ্ৰাণতা বক্ষিত হইভেছে না। এই অবস্থার কংগ্রেদের মধ্যে নানা দলের উংপত্তি হুইতে পারে। যদি প্রাদেশিক কংগ্রেস স্থিতির ভিতরে মোডলদিগের চক্রাজের কোরে, ভাষ্য পঠন সম্ভব না इब छट्द प्रम काहिया रिक्ष काकीयकारारम्ब मार्थ अना प्रम

গছিতে হইবে। ইংবেজ শাসন যতদিন এদেশে ছিল, ততদিন কংগ্রেশের শিবোবিতা দেশন্তোহের নামান্তর ছিল। আছ দে কগছের আশহা নাই। স্থতরাং ভারত রাষ্ট্রে কংগ্রেশের অপ্রতিহত ক্ষমতার প্রয়োজন শেষ হইবাছে দে কথা উদ্ধারণ করিতেই দেশন্তোহী নামে পরিচিত হইতে হইবে না। বাংলা দেশ, মান্তাক, বিহার ও অন্যান্য প্রদেশে কংগ্রেশী মন্ত্রীয়ের যে পরিচয় পাওয়া গিরাছে, ভাছাতে মনে হয় যে কংগ্রেশের দলভূঞ ক্রমীদিশের বিরুদ্ধে একটা বিধোবী দল গঠিত হওরা প্রয়োজন। এরুপ পরিণতি আপাতত সহক হইবে বলিয়া মনে হয় না। কিছে এই পরিণতি অবক্সমাবী।

প্রাবাদীর সাম্রিক শিক্ষা

গভ ২৪লে পে!ধের "ভারত" (দৈনিক) পত্রিকার "নাগ-পুরের চিট্ট"তে নিয়লিখিত সংবাদট প্রকাশিত হয়।

"মধ্য-প্রদেশের বিভিন্ন কলেজের অস্ত্রপরিচালনা লিককেরা হায়দরাবাদ বেরার সীমান্তে সহস্রাধিক পদ্ধী-বাসীকে হাইকেল চালান লিক্ষা দিতেজেন। হায়দরাবাদন ন ্য-প্রদেশ সীমান্তের সাম্রতিক ঘটনাবলীতে পদ্ধীবাদীরা বিশেষ আত্তরিত হইয়া পদায় তাহাদের মধ্যে আত্তরিতা হইয়ালয় জ্যাত করার জন্য এই ব্যবস্থা করা হইয়াছে। ইহাদের আবংকাংশকে পরে জাতায় রক্ষিবাহিনীতে সভয়া হইবে। আব্যবক্ষার্থে পারাবাদীদের জ্ঞালয় লিক্ষাদানের কাক্ষ্যাত্তর আক্রিকারে।"

भवाक्षरपटन कर्राज्ञभ-मधीमकनी खिल्छित । खबान मधी পঙ্তিত হবিশহর শুক্ল শতর বংসবের বৃদ্ধ। হামদরাবাদ রাষ্ট্রের "পাকিভানী" মনোভাবের জনা ভাঁচাকে সর্বলা সাবধানে থাকিতে হয়। উপবোক্ত সংবাদট তার প্রমাণ। কংক্রেস মধীমঙদী পশ্চিম বঙ্গে আৰু পাঁচ মাস হইতে সুপ্ৰতিষ্ঠিত। এই बार्ट्रेड शूर्वाकरण "पाकिन्छामी" पापरहेड चन्छ नाहे। हर সরনদাব্র ও চর রারন্পর ভার সাক্ষ্য দিভেছে। করেক দিন পূর্ব্বে পশ্চিমবাংগার অলপাইগুড়ি জেলার সীমান্তে পূর্ব্ব-वर्ष्यद (७०) निश्व वानाव वार्षे वार्षे "भाविखानी" नामनान লার্ডের অমায়েতের বিবরণও প্রকাশিত হইয়াছিল। পশ্চিম বদের প্রবেটি কেবল অভয় দিভেছেন যে পুলিল বাটির अर्वा। পृत्वाकत्म वृष्टि कदा एटे(व: छाष्ट्रांत मत्वा सक्षवादी পুলিদও বাকিবে। আমরা কেবল দেবিতেছি যে এই সর-কারী ব্যবহায় দেশের পোকের, সীমান্তবাদীর, কোন क्छद्यात निष्मम नावे । भूभिम ७ रिम्मावाविनी काशास्त्र बका क्वित् बन्ध जाशास्त्र क्छना त्यथ श्रेत हेगाक्त्र पिया। ব্যক্তিগভ ভাবে বা সমষ্ট্রগত ভাবে তাহাদের কর্মীয় কিছু बाहे। श्रीक्ष यहमद शराब के खाशायत कामक्ष कर्षावाद बिट्यंन ब्रिट्ड शादिएडएम मा (यमम विद्यादम मनाश्राहरणव প্ৰৱেকি। এই পাৰ্থকোর কারণ কি ? পশ্চিম বঙ্গের অন-

গণকে ভাষা খুঁজিয়া বাহির করিতে ম্টবে। গবর্থে প্টের নিকট হটতে ভাষার জ্বাব আদায় ক্রিয়া লইতে ম্টবে।

चाक यथम देशताकत चार्फ मास हाशाहेश मिनात श्रायान नाहे बार आधारमद निरम्ब भन्दार्थ है हैरदब्द-कुछ नामा अधान ও অবিচারের শেষ করিতে দুচসংকল্পত্রন পশ্চিম বলের मानविक कीरामद अको। अवान क्लार कामाराव नर्रामाकेत भिक्ष इटेटल व अभव कटेश पृत करा छितिल किम । देश्टराक्य কলাবে বাঙালী কেৱাৰগিয়ি করিয়াছে তার আপিনে আপিলে: জল মাজিট্রেট হটমা ভাষার শাসন দড়ের পতিও অব্যাহত রাধিয়াছে। কিন্তু বাঙালী কোন্ধিন সৈধবাহিনীতে চুকিতে পারে নাই। দেও শত কাসাবের মধ্যে বাঙালীর মন হইতে भगक भागविक खेलिक पुष्टिश निशाहर । बारहेव स्थापति लाग्। শুকাইম গিয়াছে। চল্লিশ বংসর পুর্বের যথম "বিপ্লববাদ" বাংলা দেশে দেখা দেয়, তখন তার কারণ অনুস্থান করিতে পিয়া च्यानक व्रिक्षेत्र निर्वेशक विश्वासित्तम एव वाहाली सूर्वक व्यापा-বিভগবাৰের আশ্রহ গঠতে বাবা হুইয়াছে অপমানের আলায়। ভীক. অগ্যাহরিক জালি বলিয়া যে অপ্যানের ছাপ ইংরেজ শাসক ভার জাভিত্র কৃপালে দালিয়া দিয়াছে, ভার বিরুদ্ধে বৃদ্ধ খোষণা করিয়াছে বাঙালী বিপ্লবী বোষা বিভলবার, গোপন হত্যাকাভের আগ্রহ এছৰ কবিয়া। कड़े निर्भात्मक भरवा অনেক অত্যক্তি আছে, কারণ সাম্রিক ভাতিও গোপন হতাার भव व्यवस्था करिया भवरम्भि दार्द्धिय विकृष्ट पृष्ट (वायना करवा) क्षेट्रे एट्वर प्रत्या मला (यशास्त्रेट पाक्क क्रेट क्या श्रीकांद्र कतिएक इहेर्स स्थ है रिदाल स्थापित राक्षामी भाषात्रक বিভাগে খান পায় নাই। আৰু সেই বাবছা অন্তিবিদ্ধে छैल्डे। इंश पिटल स्ट्र ।

প্রব্ববঙ্গের হিন্দু

"পাকিভানী" প্রভিবেশীদের ভাব ভলাতে অভিঠ হইরা পূর্ব-বলের হিন্দু অনেকেই পিতৃ-পিতামহের স্থৃতিপুত বাসহান ত্যার করিয়া আসিতেকেন। ১৯৪৬ সালের অক্টোবর মাসে নোরা-খালি-ফিপুর) কেলাধ্যের ভাবে খানে যে তাক্তবের স্কচনা হয়, ভখন হইতে আৰু প্ৰাপ্ত কত হিন্দু চিত্ৰকালের জন্ম পূৰ্ববিদ ভাগে করিয়াছেন, ভাহার কোন হিসাব নাই। কেহ বলিভেছেন ২০ লক্ষ্যক্ষ বলিভেছেন ১০ লক্ষ্য পুৰ্ববেশ হিন্দুর সংখ্যা ১ কেটে ৩০ সক। পুতরংং বলিতে হয় জভি অল্লসংখ্যক हिक श्रविवक शांकिश ज्याभिएक शाविशास्त्र । अहे रिमादवद्व মধ্যে পশ্চিম বলে আগত বিশুর সংখ্যাই বরা হইসাছে : বাছারা বিহার, আসাম, অপুরা রাজ্যে যাইতে পারিয়াখেন এই হিসাবে काशास्त्र वर्ध म्य नार्वे । अवर शन्त्रम यण नवत्व किंव दिकृत्य অভিযোগ করা হইভেতে যে তাঁৰারা এই বিষয়ে মনোযোগ দিতেছেন না বা অবধার একত ব্রিতেছেন না। ভিদেশ্ব बारमब > जाबिर दर्शावज अक्षे मरवारम रमबा याद ख কেন্দ্ৰীয় পরিষদ এই বিষয়ে প্রয়োভর ছলে পুনর্মসভি সচিব

ঞ্জিভীশচন্দ্ৰ নিয়োপ পশ্চিম বদ গৰুৰে উক্তে মিৰ্কোষ প্ৰভিশঃ ক্রিভে পারেন নাই। যুক্তপ্রদেশের च-कश्राधनो (बणा बिसप्रकाद कृशक **बरे द्याप्राध**रत विस्थि আএহ দেখান। এই উপলক্ষেই আমরা কানিতে পারি যে ১০ই আগটের পরে পূর্ববঙ্গ হইতে পশ্চিমবঙ্গে আগতের সংখ্যা २ नक भाव, अवर कविकारम जालक्ष्मश्री निरक्रापत गुनर्वागण्डित ব্যৰম্ভা কবিজে সক্ষয়। সুভৱাং সাহায় ও পুনবাসভিত্র क्षांभ वाष्ट्रक वायहा करा एव माहे। **पार्क्रकर्रात खरमं**खित चक नित्र बड़े श्रदाखदा कियपरत छनिया पिनाय।

পণ্ডিত কৃষ্ণক পূৰ্ব্য-বাংদা হইতে আগ্ৰয়প্ৰাৰ্থীদেৱ চলিয়া আসার কারণ কি ?

ঞীযুত নিয়েণী-উংপীয়ন করা হুইবে এই স্বাতঃ হইতেই আশ্রমপ্রারীরা চলিয়া আসিতেছে। কতকঞ্জি ক্ষেত্রে সংখ্যাপরিষ্ঠ সংপ্রদায় কর্ত্তক অবনৈতিক বয়কটের करलरे जानश्चार्योता क्रिया चानिशास ।

পঞ্জিত কৃষ্ণকু— চুট মাসের অধিককাল ধরিয়া আশ্রয়-প্রাথীরা চলিয়া আসিতেছে। ভারত সরকার এখনও বিষয়ট পাকিভান সরকারের স্থিত আলোচনা করিবেন কি না, ইহা ভাবিষা দেবিতেছেন, ইহার অর্থ কি ?

গ্রীযুত নিয়ে বী-এই সমস্থার গুরুত নিরূপণ করা जन्मदर्क चामहा वहनारत्म शन्तिम-वारमा अञ्चलादार छैपर নির্ভৱ করি। পশ্চিম-বাংলা সরকারের নিকট হইতে এ পৰ্যন্ত আমৱা যে 'রপোট' পাইরাছি, ভাহাতে কোন बिक्टि कर्पाण्डा अव्यापत आर्थाक्नीयुक्तात क्या वला वह

পভিত কুঞ্জন-ভারত সরকার আশ্ররপ্রার্থীদের সঠিক अरचा। **खर्गछ म**र्दम (कम १

শ্ৰীযুত নিয়োগী--- আমৱা কয়েকদিন পূৰ্বে এ সম্পৰ্কে খোঁজ কৃত্রিয়াভিলাম এবং আমি ইহার কলাফল कानादेशकि।

প্ৰিত কুল্প---আপ্নি কি বলিতে চাহেন যে ভারত সরকার খৌৰ না করিলে পশ্চিম-বাংলা সরকার পূর্ব-বাংলা চুইতে বছদংখাক আত্রয়প্রাথীর আপ্রনের সংবাদ क्वांबिट्डिय वा १

শ্রীযুত নিয়োগী—এই প্রশ্নের সঠিক উত্তর (দওয়া আমার পক্ষে সম্ভৱ নছে। আমি এ বিষয়ে নিশ্চিত যে, পশ্চিম-বাংলা সরকার ভারত সরকারের সভিত থমির যোগাযোগ রকা করিতেছেন, কিছু পশ্চিম-বাংলা সরকার এ সম্পর্কে ভারত সরকারকে কোন বাবদা অবস্থন ভরিতে বলিয়া-ভেন কি না সে বিষয়ে প্রায়ি নিশ্চিত নছি।

নিষোগী মহাশয়ের উত্তরে সুস্পষ্ট বুকা যায় যে পশ্চিমবঞ্চ भवत्य त्येव कर्षवाङ्गाणि स्रेशात्य । त्यम त्यायीत भवत्य छे ভেষ্পি পশ্চিত্ৰবদ প্ৰথে কি চোৰ বুজিয়া চলিয়াজেন। বিপাদের

জ্ঞ প্রভাত না হওৱার পঞ্চাবে ঘটরাছে বিপর্ব্যর: সেইরূপে विशव पहेंदल श्रद शक्तियवक श्रवत्या के जाकावका कतिया कि कविद्यम ।

2048

कि पिक्रियर एवं किया पूर्वित हिन्दू किए के बर्वा আদেন নাই। আসামেও অনেকে চলিছা পিয়াছেন। ভাঁছাদের সংখ্যা কত আমৱা ভানি না। কিছ ইহা আমহা ভানি যে ১৫ই আগটের পূর্বে পূর্ববঙ্গের অবেক হিন্দু ব্রহ্মপুত্র উপভাকায় --- গোয়ালপাড়া জেলায়, শিলং-গোহাট সহরে, আসাবের চা বাগিচায় ভিক্রপভের ভেলের খনিতে নানা বৃত্তি অবলয়ন কবিয়া জীবিকা উপাৰ্জন কবিতেছিলেন। আৰু তাঁহাৱা "পাকিস্তানে"র কলাণে হট্যা পভিয়াছেন "বিদেশী"। ভারতীয় व्छिनियम बार्छ अनम्छ छाहाता आवेदनत हरक "विष्मी" विभाग भग इन नाहे। किन्न वास्त्र क्षत्र क्षत्र (स्व আসাম প্রদেশে তাঁহারা "বিদেশী"র মতন্ট ব্যবহার পাইতে-ছেন। আসামের গবর্ণর সার আক্রম হায়দ্রী ত এই বলিয়াই শ্রীষ্টের ছিলুকে পালি নিয়াছেন- যদিও গবর্ণত বাছাছুরের বাফী, বোৰ হয়, বোপাই প্রদেশে এবং "ছই নেশন" তত্ত্ব মতে ভিনিভ ভদপেক "বিদেশী"। আমরা জানি যে আসাম लामान्य अकृष्टि (अने कांश्व या वारमान्यशास्त्री (क्रव्ह (यन আলামে ভান পায় না। আলাম প্রদেশে বাঙালীর সংখ্যা প্রায় ২৬ লক্ষ এবং অসমীয়া ভাষাভাষীর সংখ্যা ২৫ লক্ষের ক্ষ। ৰাগিয়া প্ৰভৃতি খনা ভাষাভাষী লোকসংব্যা হিসাবের মধ্যে ব্রিলে অসমীয়া ভাষা আসাম প্রদেশের রাষ্ট্রভাষা হইতে পারে ন:। এই বিষয়েই বিরোধ বাবিয়াছে আগামে। এক সংব্যাদ্ধিষ্ঠ শ্ৰেণীর ভাষা ৪৫ লক্ষ্ লোকের উপর চাপাইয়া দিবার চেষ্টা চলিতেছে। এইজনই কথা উঠিয়াছে বর্তমান আগায়ের বাঙাগী-অব্যয়িত অঞ্চ দটয়া ভারতীয় ইউ-भिरुत्मद चनौत्म मुख्य अक्षेत्र अर्थन स्ट्री कदा रहेक ।

ত্রিপুরা রাজ্য অনরোধ

"পাকিন্তানীদের" কার্যা-কলাপ আৰু কাহারও অবিদিত ্ৰাই। কাশ্ৰীর লইয়া ভাবনার অন্ত নাই। ভারত ইউনিয়নের পৰ্ব্ব সীমাত্তে অবস্থিত ত্ৰিপুৱা বাজ্যে কি ঘটতেছে তাহার সটক কোন সংবাদ পাওয়া যায় না। নিম্নলিবিত সংবাদট ত্রিপুরা রাজ্যের বিপদের উপর কিছু আলোকপাত করিভেছে,---

"ত্রিপুরা রাজ্যের সর্বাপেকা ক্ষমক্র ডিবিসন কৈলাসহর টাউন গ্রীষ্ট কেলার অন্তর্গত সমলেরমগর রেল টেশন হইতে ১ মাইল পূর্ব্বে অবস্থিত। পূর্ব্ব পাকিন্তানের দক্ষিণ-শ্রীহটের योनवीवाकात नविधिविन्या नामारे ७ पूनिन किनात्रम् সম্রতি কৈলাসহর-সমপেরনগর লোকাল বোর্ড রাভার ৩ট ঘাঁট বণাইয়াছেন। এ রাভা শাকিভানের অভভুঞ এবং উহাই কৈলাসহর হইতে রেল টেশনে যাওয়ার একমাত্র রাভা। नक नक नवहांदी श्रकार के ब्राचाय हमारमया करत । अकरन

প্রত্যেক প্রকাষীকে সাপ্লাই ও পুলিল বাঁটিতে ভদ্ধানী করে এবং পরিকাশ বিশেষভাবে লাঞ্চিত হর। ব্যবসায়ীগণরেশ বা শৌকাষোগে যে সব মালপক্স ক্রিপুরা রাজ্যে আমনদানী করে ভাহাও আটক করা হয় এবং সময় সময় কিছু কিছু পুষের বিনিশ্বরে ছাভিয়া ধেওয়া হয়। স্থানীর ব্যবসায়ীগণ এই সম্পর্কে মৌলবীবাজারের এল-ভি-ও ও জ্রহটের ভেপুট কমিশনারের নিকট দর্মান্ত করিয়াও কোন স্কল পায় নাই। এবানে ইহাও উল্লেখযোগ্য যে, যে সব কিনিগ আটক করা হয় ভাহা সবই ভারভ ভোমিনিয়ন হইতে আসে। এ বিষয় ক্রিপুরা রাজ্যের কর্তৃপক্ষকেও জানান হইয়াছে। অবহাদৃষ্টে মনে হয় ত্রিপুরা রাজ্যে অর্থনৈতিক সয়ট ঘটাইনার ক্ষম্ন গভীর বছযার করা হইতেছে।"

এই ব্যাপার হইল ক্রিপুরা রাজ্যের উত্তর অঞ্চলের সথছে। রাজ্যের পশ্চিম ও দক্ষিণাঞ্চলের অবস্থাও এইকণ বিপংসপ্থল। হানাধারদৰ আক্রমৰ করে নাই বা আক্রমৰ করিছে সাহস পাইতেছে না। কিছু বিপদ যখন খনাইয়া আসিবে তখন দিল্লী ও লিলং হইতে সাহায্য আসিবে, তাহা জানিয়াও নিশ্চিছ হওয়: উচিত নয়। মহারাণী ও তাহার পরামর্শদাতাদৰ যদি পূর্বেবদের হিন্দুর অংশবিশেষকে এই রাজ্যে বসতি স্থাপন করিতে আক্রমান করেন, তবে পাকিতানী আক্রমণের বিরুদ্ধে একটা বিরাট প্রতিবোধ ব্যবহার আহোজন করিয়া তুলিতে পারিবেন। এই বিধয়ে পূর্ববদ্ধ ও শ্রীহটের হিন্দু সম্প্রদার নিশ্চের হইয়া ব্যিহা ধাকিলে চলিবে না।

পুনর্বাদতির বিরাট আয়োজন

কম্বেক্জিন পূৰ্বে ভনিয়াছিলাম যে, "পাকিন্তানী" হিংপ্ৰতাধ পাড়িত হইয়া যে লক লক বিলুও শিব পশ্চিম পঞাৰ হইতে চলিয়া আসিতে বাৰ্য হইতেছে, এবং তাহাদেয় স্বাক্সন্দোর কর্ম ভারত প্রথে টের দৈনিক বার হইতেছে বিশ লক্ষ টাকা। ভখন এট বিভাভিভদের সংখ্যা কানা যায় নাই। এখন এই সংখ্যার একটা ছিসাব পাওয়া গিয়াছে। ৪৫ লক क्नि निव जानगारम्य निक्नुक्रस्यत धव-वाको काल्या আসিয়াছে। ইহাদের মধ্যে প্রায় সাভে বার লক্ষ লোক ब्रवंग्स नामा बार्यामंत्र चाल्यसमितिया वात्र कृतिराज्यः এবনও সাভ লক্ষ লোক পূর্ব-পঞ্চাবের নানাছানে ভারুর ৰীচে বাস করিভেছে। ইহাদের বাসের 🕶 পূর্ব-পঞ্চাবের প্রায় পঁচিশট সহবের নিকটবর্তী অঞ্লে ছই লক্ষ্ লোকের वाटमां भट्यां में बांची-यह टेलबांद क्वेंट्य । अमा भारमंद्र भरवाटम अकान (४ अवेष्ण र:४ व्हेर कृष्टे (कांके हैं। का । अवे वर्ष-(कांक्र लाटकव कौविका-छेशार्थ्यत्मव शव वावश क^{र्}तवा मिवाव দায়িত্ব পঢ়িয়াছে ভারত প্রথে থ্টের উপরে। এবাষে বা সহরে হাছারা বদতি করিতে চাহেন, সক্লকেই সরকার কর্তৃক ধন দেওরা ভ্টবে। পূর্ব-পঞ্চাবের অনেক ছান ভ্টভে প্রায় সম-সংবাক মুলগমান ভাভিত ব্ইয়াহে "পাকিভানে"।

ইহাদের পরিভ্যক্ত কমি বিলি করিয়া দেওয়া হইয়াছে হিন্দু ও শিব চাষীর মব্যে। আগানী কলল কাটার সময় পরিছে ইহাদের পাল্য-সামগ্রা বিনাযুল্যে সরবরাহ করা হইবে; ইহাদের পাল্য বাদ্যাও সরকার হইতে দিবার বাবছা হইরাছে। শিল্পী, ব্যবসায়ী, দোকানদার, চিকিৎসক, আইম-ব্যবসায়ী সকলকেই ধন দেওয়া হইবে; চারি বংসরে ভাহা শোর করিতে হইবে। ঋণের পরিমাণ ক্ষপ্রভি ৫০০১ টাকার কম হটবে না।

ভারতবর্ধে আগত এই ১৫ সক্ষ সোকের মধ্যে প্রায় ৩২ সক্ষ প্রায়াক্ষরে লোক বলিছা হিসাবে বরা ছইরাছে।
ইহাদের মধ্যে প্রায় ১৫ সক্ষ মুসসমান-পরিভাক্ত পূর্ব-পঞ্চাবে ৭৮ সক্ষ ৬০ হাজার বিদা ক্ষিতে চাধ-বাদ আরম্ভ করিয়াছে।
ক্রি-অপের অন্ত মঞ্র করা হইয়াছে ১ কোটি ৫৭ সক্ষ ৫০ হাজার টাকা; ইহার মধ্যে শুখবীলের ক্ষর ৩২ সক্ষ ৫০ হাজার টাকা; চাধের বলদের ক্ষর ২৫ সক্ষ টাকা; পশুআত্মর ক্ষর ৫০ সক্ষ টাকা, এবং গৃহ নির্মাণ বা সংস্কার ও
কুপ খনন বা সংস্কারের ক্ষর ২৫ সক্ষ টাকা দেওয়া ছইবে।
আম্য শিলীদের ও ক্রিবিহীন মধ্রত্রেণীর আহে বাসস্থান
দিয়া রাখিবার ক্ষর একটা পরিক্রনা প্রস্ত হইয়াছে। ৫০টি
বয়ন-ক্রেক্ত ছাপনের ব্যবস্থা এই পরিক্রনার ক্ষয়।

পশ্চিম পঞ্চাবের ৫০ ছাজার ও বাহাওয়ালপুর রাজ্য ও সিছু হইতে আগত ৩০ ছাজার চাষী পরিবারের পুর-শঞ্চাবের দেশীর রাজ্যসমূহে বসবাসের ব্যবস্থা প্রায় সম্পূর্ হইরাছে। পাতিয়ালা রাজ্যে ৬,৩০,০০০ বিদা ক্ষাতে ১ লক্ষ ২০ ছাজার লোকের ব্যবস্থা হইরা সিরাছে; আরও এই পরিমাণ ক্ষাতে ১২ হাজার পরিবারের ব্যবস্থা হইবে। বিদ্যে ১ হাজার ১ লত ৬৯টি পরিবারের হান হইরাছে; নাজা রাজ্যে স্থায়ী বসতি স্থাপন করিয়াছে ১২ হাজার পরিবার। কপুরত্তায় বসতি স্থাপন করিয়াছে ১০ হাজার পরিবার। কপুরত্তায় বসতি স্থাপন করিয়াছে ১০ হাজার পরিবার; আরও ৩ হাজার চাষী-পরিবারের ব্যবস্থা হইরা আছে। ভারতব্যের আলাভ রাজ্যে ও প্রদেশে এইকণ ব্যবস্থা হইতেছে; আলোয়ার রাজ্য ৫০ হাজার লোকের ভার লইতে প্রস্তুত্ত ভ্রতপুর—১৫ হাজার, রেওয়া—১০ হাজার; মধ্যপ্রদেশ ও বেরার—১০ হাজার; উৎক্ল—২৫০০ শত; বিহার—৩ হাজার। এই ব্যবস্থার পরেও সহরবাসী হিন্দু শিবের ৫ লক্ষ লোক শ্বন্থ গৃহ পাইবে মা।

এই বিরাট আধোকনের বিবরণ সংক্ষেপে দিলাম আঞ একটা কারণে: যে হিংলার উন্ততা পঞ্চাব ও দিল্লী প্রদেশকে যেজাবে বিধ্বও করিবাছে তাহার প্রকৃতি আমাদের ব্রিতে হইবে, এবং প্রবেশে এইরপ বিশ্বয়ের ছঞ্চ প্রস্তুত ভাকিতে হইবে।

ভারতকর্ষের মুদলমান

লক্ষ্মে নগরীতে ভারতবর্ষের মুসলমান সম্প্রদায়ের একটি বিরাট সম্বেদন ছইয়া গেল। প্রায় ৬০,০০০ লোক নাজি এই সভার উপস্থিত বিধেন। যুসদীয় দীবের কল্যাণে ভারতবর্বের যুসদান যে ভাবে ধিশাহারা হইরা পভিষাছে, ভার গোলক-বাঁবা হইজে থাহির হইবার একটা পথ খুঁজিয়া দইবার জন্য এই সন্মেলন আহুত হইয়াছিল। সভাপতি মৌলানা আহুল কালাম আজাদ বলিয়াছেন যে ৩রা জুনের পর ভারতবর্বের নানা স্থানের মুগলীম লীগ এবং অ-লীগ ও অ-দলীয় মুগলমান নায়কর্গণ এইরপ একটা সন্মেলন আহ্বান করিবার জন্য নানা ভাবে তাঁহাকে অপ্রেরাধ জানাইয়াছেন; এবং এই সন্মেলন আহ্বান করিবার কি প্রয়োজন ছিল, ভাহা ভিনি তাঁহার বঞ্কুতায় পাই করিয়া প্রকাশ করিয়াছেন।

"একথা সভা যে, ভারভীয় মুসলমানেরা আমাদের সমাজের কভিপর নেতার ভাল্প নীতির পশ্চারস্থসরণ করার দরণ আৰু আমানিগকে এই প্রকার জয়াবহ ধংগলীলার সন্মুধে পজিয়া দিলাভারা ভইতে ভইয়াছে। কিন্তু সেজন্য चायि काशात्कछ जिबकाव कविव ना अवर चाशमापित्रतक উহা বৰ্ণ কবিতে অধুৱোৰ জানাইভেছি। আমরা কাহাকে ভিরস্কার করিব ? যাহাদিপকে ভিরস্কার করিব ভাহার। যে আমাদের ভাতা। স্তরাং এক ভাতার ভূপের দরণ যদি অপর ভ্রাত্মওগীকে পর্বধান্ত হইতে হয়, ভবুও ভাই হইখা ভাইকে তিরস্বার করা সঙ্গত হইতে পাবে মা। এইজনা আমি বলিতে চাহিতেছি যে, কাছারও चार्य । काम परणद भयारमाध्ना चनाहेयाद चना चायि আপনাদের সন্মুখে দভায়মান হই নাই। কোন্ উপায় व्यवजयम कदिएक विभएतत अहे घमावकारतत यदा व्हेटल মুক্তির পণ পাওয়া যাইতে পারে ভাহাই আলোচনা করিবার জন্য এখানে আসিয়াছি।"

খৌলানা আভাদের বঞ্জার যে চুম্বক সংবাদপত্তে প্রকাশিত হইয়াছে, ভাহাতে আম্রা ভারতবর্ধের মূললমান সমাজকে ষে "ভয়াবহ থংসলীপার" সমুখীন হইরা "(গণাহারা" হইতে হুইয়াছে বলিয়া শোনা যায়, তাহার গতি ও প্রকৃতি সম্বদ্ধে কোন নিৰ্দেশ পাই না। পাইলে স্থবিধা ছইত। আমৱা বুবিজে পারিভাষ ভারতবর্ধের কাতীয়ভাবাদা মুসলমান প্রবানগণ এই ধ্বংসলীলার কারণ সথকে কি মনোভাব পোষণ করেন এবং বিপদের হাত হইতে উধার পাওয়ার উপায় সকতে তারা 🗣 ভাবে চিন্তা ক্রিভেছেন। ১৯৪৬ সালের ১৬ই আগষ্ট হইভে যে ধ্বংসের আগুন দেশে অলিয়া উঠিয়াছিল, মিঃ হুদেন শহিদ সোরওয়ার্পির নেভূষ তাখাভে ইছন যোগাইয়া দিয়াছিল। এর बाद वन वरनत पूर्व स्टेटल पूजनीय भौतित स्वदर्ज धकाटक প্রচার করিবাহে যে হিন্দু কেবল "কান্দের" নয়, লে ভারতীয় बूपनमास्यत वित्यय मञ्जा । चाजीयजावानी बूपनमाम अहेकन প্রচারের বিষ-ক্রিয়া রোধ করিতে পারেম নাই। কেন পারেন মাই, সেই দহত্তে তাঁহাদের সুস্পই অভিযত আমরা ভাষি না। काशास्त्र मध्यमात्रव यत्नाकात्त्रव यत्ना अहे शिमू-विरवय अक

সহক্ষে সুটিয়া দাবানলের স্ক্রী করে কেন তংসদতে কোন আলোচনা তাঁছাদের মব্যে দেবি নাই। আর এই মনো-বিকারের মূল ব্রির। বাহির করিতে না পারিলে হিন্দু-মুসলনানের মব্যে যে বিরোধ দেশে আঞ্চন লাগাইয়াছে, সেই উরাদনার কোন চিকিৎসা হইতে পারিবে না। ক্ষেমাবেরা করিবা এই বিরোধের মীমাৎসা হর না, সহ্লদমভার কথা শুনাইয়া এই রোপের মূল চিকিৎসা হয় না।

ভারতীয় বৃণলয়ানের মনে এক নৃতন আগাধা ভরিয়াছে; শেই পাঙে যে কল দেবা দিয়াছে ভাহা বিষাক্ত। ভাহা' বাইয়া क्विन रिष्ट्र यदा भारे, यूनलयान यतिष्ठाष्ट अवर चात्रश्च यतिवात সম্ভাবনা দেবা দিয়াছে ব্লিয়াই ভারতীয় মুদলিম দীপ নেভাপন অনেক বৰ্মকৰ। আমাদের ভ্ৰমটিলেছে। কিছ যে চারা গাছ তাছাৱা বোপণ করিয়াছে পেট উপভাইষা ফেলিয়া নৃতন গাছ বোপৰ কৰিবাৰ চেষ্টা জ দেৰি মা: মুদলমানেৰ মনেৰ ক'মজে নুতন ক্ষল কলাইতে হইলে, আগাছা দৰ উপভাইয়া কেলিভে হউবে, পরগালা অমেক পুলাইয়া ফেলিতে হউবে। এই আগাছা পরগাছার মধ্যে অনেক কিছু আছে যা বর্গ্নগ্রের সকে কভাষো, যা অহ্যিকার কলে বঙ্কিত। কিন্দু সমাকের মধ্যেও তাহা আছে। আৰু এক শত বংগর পূব হ*ইতে* "সমাজ-সংস্থার" প্রচেষ্টার নানারপের মধ্যে ভার এমাণ পাওয়া যায়। यूननमान नभारकत मर्या लाज (कान राष्ट्रक (5ई) चामदा प्रिंग नारे । चालिनएकत टेनकम चारुश्वरमत (bit रार्व एटेशरक)। কারণযুগলমান সমাজ ভার যুক্তি ৩২ নীভি এছণ ক'ংতে পারে মাই। সেইকনা ভারতীয় মুগলমান নিজের সংগ্রাবের, স্থ-ত-কু-সংস্থারের, মুগোপযোগী কোন পরিবর্তন করিতে খীকার করে নাই। ভার ফল আমরা দেবিয়াছি কলিকাভায়, भाषाचा म-बिप्राप्त, विश्व-प्रकल्यामा, पक्षाव, पित्री, कामीब, পিছু ও উওর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশে। এই ফল যার ক্ষমিতে ফলিয়াছে, দেই মালিককেই ভার ধ্বংস করিতে হইবে। সেই পাহস ভারভীয় মুসলমান-সমাজের আছে কিনা ভাষার পরীক্ষা আৰু তাঁধের দিভে হইবে।

বাংলা বনাম উৰ্দ্

বাংলা বনাম উর্দ্ধ তর্ক রক্তারক্তিতে পরিণত ছইরাছে ঢাকা শহরে। জনাব করিদ আহাত্মদ ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ে ইংবেকী ভাষার অবাপক। তিনি বাংলার—নিজের মাড়-ভাষার—পক্ষ লইয়া উংলাহী ছিলেন বলিয়া পূর্বেবদ গবর্ঘে কের জনবাঙালা কর্ণবারবুদ্দের নিকট তিরপ্তত প্রথবার অপমানে পদত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহার পদত্যাগের আর একটা কারণ তিনি বিরাছেন। সরকারী ঢাক্রীতে প্রবেশ-প্রার্থীদের নামা ভাষার পরীকার ছাত আটট ভাষার নাম নির্কেশ ক্রিয়া ছিলেই আইনি ক্রিয়ার নাম নির্কেশ ক্রিয়া বিরাছেন। বাংলা ভাষার নাম এই নির্কেশনায়ার মধ্যে

मारे। धरे भवत्व विद्यास श्री हा मार्च प्रजीय जीत्र अकाने कि स्थानाथ चा क्राय थें। हा का विश्व विवाहित्य यहि पूर्व भीकिखात्य वार्डेकाया वारणा मा रहेंग्रा चक्र काम काया रहें, कर्त्व किम कारा विश्व का त्मांजरम स्थिक खरून कित्य । भूक्विक चन्द्र चन्द्र का त्यांजामा बड़े के किन्द्र के छेंग्र के छोंग्र का स्थानाथ विश्व के छोंग्र का स्थानाथ का स्थानाथ हिस्स । के हिस्स का का स्थान का स्

"মুসলীম সাহিত্যিকদের অনেকেরই ধারণ৷ বোৰ ছয় अक्रण (य. शाकिक्षान-युक्धवार्द्धेत वाक्यामी करत कवाठी किश कारकात अवर कामारकत वारका समि अहे मुख्क-গাড়েই অধ্নি একট প্রদেশহাত্রে পর্যাব্দিত ছয়ে স্বাক্তর । प्रज्ञार रश्रीक भाकिकात्मक बाह्यकायः स्टब छेक, अवर वारमा भाव अकते कुछ लाए। मिक कांग श्रा बाकरवा যানে, আমাদের সাহিত্যিকরা ধরে নিষ্টেছন যে, উদ্ रत्व वाला. जाव बारमा रूट्य छ।व शका दा त्रांमाव थ জাত্যা : ৷ স্থিতের গর্**জ-বেগর্জ** সূব র্ক্ত্রেরই বোকা वर्टेट शिलाम दोना चलदार माभ-बार**णाटक प्राव्य छे**र्फ, कार राज्योद करना धार्यन (बंटको ट्रेंडर राहा प्रदेशाया) यूमलीय मारिज्यिकालाह यान खरे पान-यानाद्धि श्रुकारकरे সঞ্জিধ হয়ে উঠছে। তাই তার। সপূর্ব জনাবঞ্জক ও পরিহাম্য আরবী-কান্টভার্পক দেলার বাংলা ভাষার চালিয়ে দিয়ে ভার ললাটে লোলামীর চিক্ত অনপনেম্ব করতে চাচ্চেন।"

"পাকিস্তানি" মনোভাগ

১৯৪৬ সমসের এলিল মালে দিল্লী নগরীতে ভারতবংগর বাবস্থাপক সভার মুগলীয় গভাগণের এক বিশেষ অধিবেশন হয়। সেই সময় সনে যাত্র মন্ত্রী-মিশন দিল্লী আসিয়া গৌষ্টি-মাছে। সেই সভার বড়তা উপসক্ষে বাংলা দেশের ভদানীয়ন প্রধান মন্ত্রী ক্ষাব হুলেন শহিদ গোরওয়াদি বলিয়াছিলেন যে "পাকিন্তান আমাদের শেষ দাবা ময়।" এই কথার অর্থ ব্রিভে আমাদের কোন কষ্ট হয় নাই; আজিও পাকিন্তানী-দের উক্তেই সহতে আমাদের কোন সঞ্চেই নাই। প্রায় বাইশ মাস পরে কলিকাভায় প্রকাশিত "পাকিন্তানী" পত্রিকাশ পরে কলিকাভায় প্রকাশিত "পাকিন্তানী" পত্রিকাশ আমাদের এই কথা মনে করাইরা দিয়াছেন স্কুলীয় লীগের লাহোর প্রভাবে (১৯৪০) মুসলীম সংখ্যাগরিষ্ঠ অঞ্চলে "পাকিন্তান" প্রতিষ্ঠার কথাই বলা ইইয়াছিল। ১৩ই

चक्षशंत्रत्वेत भरकातः "चाकाम" (मर्टे मानीत मूज्य नाना। कतिशास्थ्य वर्टे स्टाटन----

"... ভারতবর্ষের মুগলমান নিজেকে বিশুদের হইভে नुषक मध्य विभाव छेनलिक कविशास वाहे. कि থেছেত সে অভুগারে দেশ ভাগ করিতে গেলে ভাছাকে **নেলের এক-৮৬বাংশ দাবী করিতে হয় এবং বিভঞ** দেশের উভয় খংশ হইতে লোকবিনিময় প্রভৃতির দরণ কোট কোট জীবনের মুগজেদ ও বিপধায় ঘটাইতে হয়, লেহেড় মোছলেম দীগ কার্যাকালে দ্বি-ছাভিভত্তের অপুসারে দেশ বিভাগ দাবী করিতে ভাত রহি-ষাছে। সে সংখ্যাগরিষ্ঠতার ভিভিতে দেশ বিভাগেই সম্বভ হইয়াছে, তথ্য কি শেক্ষনা পাঞ্চাব ও ৰঞ্চ বিভাগত মানিয়া এইয়াছে: সংব্যাপরিষ্ঠতা অভযারী দেশ বিভাবে উভয় রাষ্ট্রেই উভয় সম্প্রদায়ের লোক রহিয়া-লিয়াছে। ভাষাদিগকে স্বাইবার কোনো বালীয় পরি-কল্পৰা হয় নাই , পাৱে দাল্লানায়িক অপাত্তির দক্তা কিছ লোকের সামায়ক অপনারণ হইরাছে দত্য, কিন্তু ভাষাও প্রায়ী ভাবে নছে ৷ অভএব বিজাতিভত্ত অসুযায়ী দেশ-विकान स्टेशार्ट, अ कथा वनः अन्तृतं त्रया ७ अन्ताहः। তবুও বাহারা ধি-ছাতিতত্ত্বে কথা তুলেন, এমন কি সে অঞ্হাতে হিন্দুখান হইতে মুছলমানদিপকে বিভালনের कथा नर्गाच र्यामधा पारकम, काशायत यात्र धावा है हिल যে তাহাদের কৰা মণ্ডো যদি কাজ করিতে হয়, তবে বৰ্তমান দেশবিভাগই চহম হুইয়া থাকিবে না। পাকিভান এলাকাকে ভবে বঙ্ঘান পরিবিভেই আবিদ্ধ রাখা চলিবে না, দশ কোট মুখলমানের হান দিবার মতো উহার প্রসার করিতে ছইবে।"

এট নুজন ব্যাব্যার জন্য ধন্যবাদ।

নিজের নাক কাটিয়া অপাণের যাত্রাভঙ্গ

সম্প্রতি আসামের বড়াবলৈ মন্ত্রীগভার ছুইবানি নির্দেশ আসাম সরকারের নানা বিভাগে প্রচারিত ছুইবাছে। বিগভ ১লা ভিপেন্তর মন্ত্রীনভা, বির করিয়াতেন, যেন প্রীষ্ট্রবাদী স্বেস্ব কর্মচারী বা প্রান্তরে সরকারী আপিস বা প্রতিষ্ঠানে স্বেস্ব কর্মচারী ভারত রাষ্ট্রে ((cst of india) চাতুরী করিবার সিছান্ত গ্রহণ করিয়াছিলেন, আসামে উহাদের স্থান হুইবে মা। থির ছুইয়াছে, যে পর কর্মচারাকে আসামের নানা বিভাগে নিযুক্ত করা সপ্তর নর, তাহাদের পেনসন বা "নগদ বিদায়" দিয়া সরাইয়া ফেলা হুইবে প্রতিষ্ঠান প্রতিষ্ঠান স্বাহ্র হুলের প্রান্তরে প্রেশ্ব আছি । ক্রান্তর্গরি ক্রিন ক্রেল্ডে রেইয়প অভিজ্ঞ পোকের মান আছে। ক্রান্তর্গরি ক্রিন ক্রেল্ডে বোটানি ও জিওলান্তি বিভাগের অব্যাপক পদও বালি আছে। এইয়প অনেক ছুল-ক্রেল্ড আছে বেবানে প্রীহুটবাদী বাঙালী ও অম্যান্য

বাঙালীর ব্যবহা করিতে পারা হার। ঞ্জিহটের বালিকা বিভালরের শিক্ষিত্রীদের হাড়াইরা দেওরা হইতেহে একটা অজুহাতে যার কোন অর্থ হর না। এই সম্বদ্ধে ভূক্তভোগী এক কনের নিকট হইতে একধানি পত্র নিমে উদ্ধৃত করিলাম---

"নুভন বাথ্রে নেতাদের মুব দিয়া যথন শিক্ষার আমৃত্য পরিবর্তনের কথা শুনি, নৃতন নৃতন পরিকল্পনার কথাও তাঁহারা বলেন, ঠিক সেই সময় অভিজ্ঞ ও শিক্ষিত শিক্ষ্য-দের "বাড়ভি" হিলাবে ইাটাইল্লের ব্যবস্থা চলছে। অভিনব ব্যবস্থা ৷ তিনি (কেন্দ্রীর পবর্ত্তের শিক্ষা মন্ত্রী) আরও বলিয়াছেন যে হয় হইতে এগার বংসর বয়স্থ বালক-বালিকার। সংখ্যায় তিন কোট ; ইহাদের ক্ষম্য নর কর্ম্ম শিক্ষিত শিক্ষকের প্রয়োজন। শেশিকা বিভাগের কর্ম্মঠ, সক্ষম ও অভিজ্ঞ কর্ম্মচারীদের আকু আর স্থাবীন রাঙ্কে প্রয়োজন নাই। শে"

এই বৈষ্মোর কারণ প্রদিত। গত ২রা শাহ্রারী তারিবে সর্ধার বলতভাই পাটেলের নিকট এই সহতে বহু আরক্লিপি উপস্থিত করা হয়। শ্রীহট সম্মেলনের পক্ষ হইতে যাহা বলা হয়, তাহা ক্নমতের প্রতিভূবলিয়া খীকার করিয়। লওয়া যাইতে পারে।

"পূমর্গন্তিত আসামের যে সব অবিবাসীর জ্বাহান পাকিভানে পঞ্চিয়াছে এবং বাহারা লোকবল ও অব দিয়া আসামের যে কোন নাগরিকের মতই আসামকে শিল-বানিজাে, আর্থিক সম্পাদে, শাসন বাবহায় ও অঙাত ক্ষেত্রে উন্নত করায় সাহামা করিয়াছেন, তাহা-দিগকে বিদেশী বলিয়া সণা করা হইতেছে, এবং (১) জীবিকা অর্জনের বিভিন্ন পেশা ; (২) সরকারী চাক্রীতে নিয়োগ ও পদোহতি ; (৩) ছাত্রদের রন্তিদান ; (৪) স্থল-কলেজে প্রবেশাধিকার ; (২) প্রম্পত্তি ক্ষয় ও ভোগদখল, ইঞারা প্রহণ ইত্যাদি ব্যাপারে ক্ষতকভালি নিয়েবাছক ও বৈষ্যামূলক ব্যবহা আসাম সরকার কর্তৃক অবস্থিত হইয়াছে।"

এই অভিযোগের উভরে স্থাত প্রাটেল সাপ্ত্রা দিয়াছেন ্ এই বলিয়া যে,

শ্রীষ্টের সংখাদখিও সম্প্রদার সংখ্যার প্রায় ২২ সক।
ভাহাদের মধ্যে যে কেং বিশেষতঃ ছিলুরা যদি আসারে
আসিয়া বসবাস করিতে চাছে, তাছা হইলে সাদরে এছণ
করা হইবে। ভাহাদের নাগরিক অধিকার সাভেও
কোন অস্থবিং। হইবে না, কারণ, কেবলনাত্র ঘোষণার
ছারা পাকিভানের প্রত্যেক লোকই ভারতীয় রাপ্তের
অধিকার গাভ করিতে পারে।"

এই ৰোষণা একটা বছ নথীয়। কিছ আগামের প্রথান-মন্ত্রী শ্রীমৃত গোপীনাথ বছদলৈর পশ্চাতে যে শ্রেণীর সমর্থন আছে ভাষারা এই প্রার্থিত খ্যবহা কি বানচাল করিবার চেটা করিতেছে না ? সর্বার বল্লভাই প্যাটেল কি এই কথা ভানেন না ? এবং জানিলে, আপনার নাক কাটয়া অপরের যাঞ্জেল করার যে নীতি বড়গলৈ মন্ত্রীপভা প্রহণ করিয়াছে এবং সহস্র সহস্র লোকের জনিষ্ট করিতেছে, তাহাতে তিনি কি করিয়া বাধা দিবেন ? সেই ক্ষমতা তাহার হরত আছে। কিছ কেন্দ্রীয় সরকারের সব নির্দ্ধেশ অমান্য করিয়া বড়গলৈ মন্ত্রীন সভা চলিতেছেন, এবং সর্বার প্যাটেলের নির্দ্ধেশ অমান্য করিতেছেন। কি উপায়ে এই মারাছক অন্যায় বিদ্রিত করা যাইতে পারে, ভাষা কেন্দ্রীয় গবদে তিকে বুঁজিয়া বাছির করিতে হইবে।

বস্ত্রমূল্য নিয়ন্ত্রণ

গাড়ীকী নিয়ন্ত্ৰণ প্ৰধান বিক্ৰছে। শিল্পতি ও ব্যবদায়ীনাও ইহার বিক্ৰছে। কিছ এই মতৈকোর কারণ এক নয়। চিনির নিয়ন্ত্ৰণ বদের কলে যে অবস্থার স্পষ্ট হুইয়াছে, ভাহাতেই প্রমাণিত হয় যে আমাদের দেশের শিল্পতি ও ব্যবদায়ীদের সভতার উপর, নিলোভের উপর নির্ভন করা যায় না। এই ক্লাটা প্রায় পনের দিন পুর্বে দিল্লীর হাভিন্ত কাইত্রেরীতে অস্তিত ব্যবসায়ীদের এক সভায় গাড়ীকী স্পাই ভাষায় বাজ্য করিয়াছিলেন।

"বাবদারীদের অসাবৃতা বা অভি-লোভের ভয়েই কন্টোলের উৎপত্তি। একজন মজুর সীয় পরিভ্রেষর মূল্য যাহা পায় একজন ব্যবসায়ী ওাহার চেয়ে বেশী পাইবে কেন ?"

দিল্লীর সভায় বাৰসায়ীরা এই প্রশ্নের কোন উত্তর দিয়া ছলেন বলিয়া ভূমি নাই। কিছ দেশের ভিক্ত অভিক্তা হঠতে ইহা বলা যায় যে শিল্পতি ও ব্যবসায়ীয়া এই প্রশ্নের সঙ্ভৱ দিতে পারিভেছেন না। তাহার ফলে দেশে রাষ্ট্র-বিপ্লবের পটভূমি প্রস্তুত হইতেছে। গাড়ীজীর প্রাণাম্ভ চেষ্টায়ত जारा चार्रकारेश बाचा शहरव ना अहे कवा मान कविशा আমাদের ধাৰীন রাষ্ট্রেড ভবিষ্যুৎ সম্বন্ধে দেশের লোকে নানং বিপর্যায়ের জন্য আশঙা করিতেছে। আর এক পরীকা আপিতেছে দেশের লোকের সম্ববে কাপছের নিয়ন্ত্রণ প্রবা রদ করার কলে। পশ্চিম বাংলার কাপছের কলওয়ালা ও কাপড়ের বিক্রম সমিতির নিকট মন্তুত সকল গাঁট কাপড়ের বিক্রম বন্ধ করা হইয়াছে; ভাহাদের ওদানে ভালা লাগাইয়া পুলিগের হেকাকভে রাধা হইয়াছে। চিনির সম্বন্ধেও এরপ করা হইয়াছিল। কিছ ইহাতে চিনির কলওয়ালার বা মজুত-দাবের হাতে সমান্তের পদা কাটবার পরে কোন কাটা পড়ে নাই। যে চিনি কলিকাভায় সাছে দল আনা দের হিসাবে পাওৱা ঘাইত, বিজ্ঞাপন দিয়া চিনির মতুতদার ভাতা এক চাকা পেরে বিঞাধ করিতেছে। লক্ষা বা ভয় তাছার করিবার নাই। ৰুণ্য নিষত্ৰণ বোৰ্ডের ভূতপূৰ্ব্ব সভাপতি মি: গোরওয়ালা, ৰলিয়াছেন যে এই যুগ্য নিয়ন্ত্ৰণ ৰূচে চিনির মনুভদারদের

হিলাবে প্রায় বিশ কোট টাকা অভিরিক্ত লাভ হইবে। কাপড়ের সথদেও আমরা একই বেলা দেবিব। ১৯৪০ সালে বাংলা দেশের এক জন কাপড়ের কলওয়ালা বলিয়াছিলেন যে এক কোড়া কাপড় ভাষারা চারি টাকা মূল্যে দিতে পারেম। দেই সময় আমাদের সাভ আটি টাকা দরে সেই কাপড় কিনিতে চইত। এই তিন চার টাকা মুনাকা যাইত কাপছের ব্যবসায়ীদের হাতে। আৰু যে ভাহার ব্যতিক্রম হইবে ভাছা মনে করিবার কোন কাবে নাট: ভাই আমরা ভাবি-্ভছি, ভারতের সংগীন রাষ্ট্রের কর্ণধারের। এরপ শোষণ ছইতে एएटम्ब (अ.कटक वैकिष्टिए शाहित्याध्य ना दक्य ? श्वनिश्वाधि ও দেখিতেছি যে গরকারী চাকুরিয়ারা প্রদোভনের ভার্ভনায় कारला वाकाद हालादेवात प्रश्वकरण वावक्ष कहरणाक . क्ट्रे নৈতিক অবনতি বোধ কবিতে পার! যাইতেছে মা, এবং এই অদাধুত: দামাজিক রীতিনীতির অপরিহার্য অদ্রতে भोकाद कतिथा लहेरात अठ्ठि (भट्षद (लग्टकर मन्न (**५**९) পিয়াছে। এই হ্রেলভার কারণ কি ? যাছারা ইংবেকের ज्ञाकारवार रिकट्ड खार । यहमन स्विधा भरश्राम कलिया तम्हण श्राशीयण, धार्णके; कदिम, छाहार: अनाहादाद अलिद्धाद করিতে পারিভেচে না কেন গ

ভারত-ইতিহাদের প্রেরণা

রবীন্দরার উছে:র দেশকে "মহামানবের সাপর ভীর" বলিয়া কভিনন্দিত ক্রিয়াখেন। এই দেশে নানা জাভি, নাৰা লেক মিলিত হটয়াছে ৷ এই দেশের চিন্তানায়কগণ विभागात्म त्य अहे देवित्रकात भाषा खेटकात श्रामिक का का ভারত ইতিহাপে প্রেরণা দিয়াছে : আছ বি-বভিত ভারতে এই কথা বলিয়া দিড়াইবার লোক বুব কম। ভারত-वर्षित (माक्रमाष्ट्रित अक दृष्ट् अरम् आंत्र प्रम (कांक्र आक् विश्रीम करत (य जारा अक्टी नृषक "(नमन", अवर अह त्मर्गद क्ष हार्ड मुक्क अक्टी बाहे। अर्ड चारमान्य পরিশতি লাভ করে ১৯১৭ সালের তরা জুন ভারিবে, যধন बिष्टित्मत चनका हार्ष शक्तिः करताम युमनीय मौरनत पानी মানির' শয়। ভারতবং ধিংভিত হইরা পড়ে। এই বিভাগে व्यामीन अमिन विमान दिश हा बन किल है एक है है रमाही। लाटकत बातवा दिन या. अहे विश्वविद्यालस्य अवग्रालकवृत्त প্রায় সকলেই খোর পাকিভানী। কিছ এবন দেখিতেছি থে बारे बादवा जुल। बार बारे जुल जानियाद्य जानीन दिय-বিদ্যালয়ের ইভিহাসের অব্যাপক মোহাম্মদ হবিব : ইভিহাস কংরেন্সের বিগত অবিবেশন বোঘাই নগরীতে অনুষ্ঠিত হয় बाबर प्यवाभिक स्विव जांत्र भणांभिजियात युख स्म ! बाहे উপদক্ষে তাঁছার অভিভাষনে ভিনি ভারতবর্ষের এই ঐকোর क्या आधारमञ्जय मान कत्रादेश वरमन त्य, कारवत बारका अहे ঐক্যের অপুভূতি ও জান আমাদের জীবনের প্রতি ভরে বাাপ্ত হইছাছে, রাষ্ট্র-ব্যবস্থার ভাষা বারে বারে খীকুভ হইরাছে

এবং ভারত-ইতিহাসে বর্ধকে রাষ্ট্রের নিরামক হইতে কবমও দেওরা হয় নাই; মুললমানবর্মী পাঁঠান মুখল ধবন দিল্লীর রাজতক্ষে বসিতেন তথমও নয়। এক বর্ষাবলগী বলিরা ভারতবর্ষজাত মুললীমগণ রাষ্ট্রে কোন বিশেষ ক্ষমতা বা অবিকার পাইতেন না। পাঠান মুখল এই দেশের মুললীমগণক তাহা হইলে এরপভাবে হেনভা করিভেন না। এই ভত্ত প্রতিষ্ঠা করিবার কর অধ্যাপক হবিব ভারত-ইতিহাসের বহু প্রমাণ উপ্থিত করিহাহেন। ওাহার বফ্ততার এই অংশ তাহার নিজের ভাষার উল্লভ করিয়া মিলাম, —

The Unity of India has been one of the fundamental postulates of Indian moral consciousness, and the longing for a centralized administration has been one of the most visible and persistent demands of the political spirit of Indians throughout the ages. The breaking up of India under two scharate States or law-making organizations with exclusive citizenship which creates a spirit of hostility not only aween the Covernments him also between the peop and the monstrosity of the establishment of state on purely religious and communal b en Lnowi to the history of our land.

"নঈ তালিম"—ন্তন শিকা

"নই তালিম" এই কথাটা কংগ্ৰেস মন্তিবৰের অন্যেক্তর মুখে শোনা যায়। সাধীন দেশ নৃতন করিয়া সভিয়া ভলিতে গেলে নৃতন মাধ্য স্ট করিডে হইবে: এই কার্গ্যে নৃতন শিক্ষার প্রয়োজন। আট ধশ বংগর হইতে এই নৃতন শিক্ষার একটা কাঠাখে। প্রথাত করিবার চেষ্টা চলিতেছে। গাছীলী ভার धार्यक ! ১>०१ भारत घरन भाक चाहित आस्मा कर्रकाभी মন্ত্রিমঙল প্রতিষ্ঠিত হয় তবন কয়েকটি কুল দ্বাপিত হয় এই निका १६७ भवीका कविवाद कहा। "Basic Education" अरे प्रहेष्ठे देश्यको नरस्य वारमा कविषा "वनिवामि निकात" भक्त व्याभारभद्र अदिहस एस । अदिहस एनि ६ वहेर् आरह नाहे । कांत्र १४०० माल्य चार्कान्य मार्म कराव्यम मक्रिम्बनी नम-ভ্যাৰ করেন এবং "বনিয়াদি শিক্ষার" পরীক্ষাপার প্রসিত্ত একে একে সংকৃতিত হয়। আৰু কংগ্ৰেদ নেড়তে দেশ সংগঠিত ছইতেছে। "ব্ৰিয়াদি শিক্ষা" নবত্ৰপ ধাৰণ কৰিতেছে "এই ভালিয়"রূপে। এই শিক্ষার ভাব ও রূপ সম্বন্ধে গাঙীভীর কৰাই প্ৰামাণা ৷ দিলীৱ এক ভাষণ হইতে ভাছা উদ্ধত করিয়া भिएक हि....

নদ্ধ তালিষের বর্ষণ মাত্র ৮ বংগর; একট নিখিল আরতীয় প্রতিষ্ঠানের পক্ষে নৃত্য ভিভিতে একটা স্থাতির শিক্ষাব্যাপরে সম্পর্কে এই অভিজ্ঞতা দীর্ষ নয়। নদ্ধী আলিমকে হাজের কান্ধের ভিতর দিয়া শিক্ষা বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে। এই বর্ণনা ঠিক, আর লোকে ইছা বুবিবে। ভবে ইছা এই সম্পর্কে সভাের একটা দিক যাত্র। এই নবশিকার বুল পিয়াছে আরও গভীরে, যাত্রবের সর্ক্রিৰ কার্য্যে সভ্য ও প্রেমের প্ররোগের মব্যে—সে কার্য্য ব্যক্তিন পত বা সমষ্ট্রগত যে কীবনেরই হউক না কেন। জীবনের সকল কার্য্যে সভ্য ও প্রেম অন্থংবিষ্ট হইয়া আছে, এই বাান হউতেই হন্ত-শিলের নব্য দিয়া শিক্ষার বারণার উপ্রব হইয়াছে। প্রেম চায় শিক্ষা সকলেরই সহজ্লভা হউক আর প্রামের প্রত্যেক পোকের প্রতিদিনের কীবনে ভাষা কাছে লাভক। এই শিক্ষা পুঁবি হুইতে আসে না এবং পুঁবির উপর নির্ভ্র করে না। সাম্প্রকাশিক বর্ণের সহিত ও ইবার কোন সম্পর্ক নাই। এই শিক্ষাকে বন্ধি বর্ণাহ্রপত বলা যায়, তনে সে বর্ণ্য সার্ব্যক্ষ নীন—লঙ্গ বর্ণ্যমূহ ভাষা হুইতেই আস্থার সহল করা হুইবে না, পুগরীতে কেইট জোর করিয়া কাছারও নিকটি হুইতে এই শিক্ষা কাছিয়া সাইতে পারিবে না।

এই নই ভালিষের গভীর ব্ল তত্ব সাহারণে ব্বিতে চেই।
করিলাছেন কিনা আনি না আনেকে না ব্বিয়াই কেবল
সাধীলীর প্পারিদ নিরোধার্য করিতে প্রস্তুত, অঞ্চেরা এ বিধরে
বৌদেই করেন নাই। এই নই তালিমকে কার্যাকরী করার
জন্ধ প্রতিধ বিক্রিল নিজাবিদ প্রায় আট সংগর যাবং অক্লাভ
পরিপ্রম ভরিষা একট প্রিকল্পনা পাত্তত করেন। কংপ্রেসের
কেজীয় সরকার এ প রক্তনাত্রক বাত্তর রূপ দানের জন্প প্রায়
এক বংসর পূর্বে তাল্যাকে পুনরায় আনমন করেন। সম্প্রতি
মৌলানা আজাদের নিকট কোনও উংলাক না পাত্রায় এবং
নানারূপে অবছেল। অসমানের ইনিত মনে করায় তিনি পদভ্যাপ করিয়া চলিয়া বিয়াছেন।

भोनाना बाबारपद वह गणा श्रद्धद अधार (मर्थ अस्पर् शास्त्रम अहे मिका शार पर नह हिनद निक्त ना कि ? निक्य বলে "ব্ৰিয়াদি শিক্ষা"-প্ৰেমিক ক্ষেক্ষণ ব্যৱস্থাত্ব বিয়াদি निकः" ्कटल शिक्षक रुडेशाहित्सन शंक्षश्चा भरवासभएक अवशे। विवद्य एपविषाम । जङ्गलएक शन्तिम एएकद जनसङ्खाद श्रवान-মন্ত্ৰী ত্ৰীৰুক্ত প্ৰকৃষ্ণচন্দ খোষ নাকি কলিয়াছিলেন যে তিনি শার্মেন্ট পরিক্রণা বুরেন না ু সামীশীর পারকল্পা বুরিতে शाद्यम ।" अहे कथात ग्रास्त्र अहे कृदे श्रीतकश्रमात किलात विद्याद বা পাৰ্বকোর ইজিক পাওরা যায়। দেশের লোকে ভাছাতে বিভ্ৰান্ত ঘটতে পারে। এই বিষয়ে কলিকাভার কোন ইংরেজী रिमिक पश्चिकाय "वांनशकि लिकाय" अक्टी विवाह पश्चिक्यना দিনের পর দিন প্রকাশিত হইতেছে ৷ বগরামপুর সভাধ ছির इदेशारक विन शकांत्र (माकरक "विनश्नामि निका"--मान्त्र क्या लिखाब कदिशा जहेल एटेंदि । देशाबा हटेंदिय "मर्के ভালিমে"র শিক্ষক। ছই হাজার "বনিয়াদি" ছুল বুলিভে ছটবে। এই সৰ বিৱাট প্রিকল্পনার কথা ভূমিতে ভাল লাগে। কিছ আমরা এ কথাও ভূলিভে পারি না বে বর্ডবানে পশ্চিম বাংলার পদ্মীগ্রামের বিভালতে প্রায় এক

লক লোক শিকাদান কাৰ্য্যে বুড আহেন। শিকার ব্যবস্থা মানিয়া উছোরা কাজ করিয়া যাইভেমেন। "বনিয়াদি শিক্ষা" চ যুগে ভাঁহাদের অভিজ্ঞতার দ্বান কোণায়, छ। शास्त्र विकासम्बन्धित श्रांन (काषाध-वर इटेके अप छेठि-য়াছে: শিক্ষামন্ত্ৰীর নিকট এই সহতে সমুত্তর ভাঁহারা পাইয়াছেন कि न कामि ना । প्राथिक निकाद देशदेव अवहै। निकाद वाग्यः अभिरक्ष ७३ निकाद भटक "दिनदानि निका" कि कविष्ठा थाल बालक रेका लखका स्ट्रिव वा अहे निकारक कि করিছা "বনিয়াদি শিক্ষা"র সকে খাপ বাওয়াইয়া লওয়া ঘাইবে जरमञ्चल अञ्चलां अक्षांत्रकार । विकारिन्त्रव **व्या**क्ष स्थाप श्रदेश **जा**रहन (परिटर्ड) १६७ वा **छ**।शासद क्रम क्रम স্মিতিকৈ দ্ৰাং কংস্থাৰে আলোচনা চলিতেছে: কিন্তু এই विद्राष्टि अविदर्शन मध्यक त्यान छिन्मारकर जीवन्त्र (सरमञ् ल्लाट्क्य बट्च १६ वट्ड पार्ट एक का । नाममोबीट आर्थक अद्योजिकाम काम काम काम परद क्रिके विश्वक सहिए। मर्मराष्ट्रण [प्रथा घ'शः निक कम्हण अक्टा विद्वाद (तथः क्रियाद) जर-मञ्जू (म् (म्) (कर् वृष्ट मक्ति वर् GET TO COM LUNG THE खहे निर्मादेखा एकर साधारण्य प्राप्तात (सारकट २०१४) । वहस कविला खरम्खार भाग श्रीनद्व यान हार सार्थः अलक्ष बर । अलियसम् दा भदकादी ए क्दिसार सेमद निका সম্মান্ত সৰা উল্লাভাবনার ভার দিয়া দেবেলা লোক যদি নিভিত্ত एडंटल प्राट्मन एटर रिट्मन शहर रिमार करोड माना उत्तर ।

বুহুৎ উৎকল

लाइ नकाम सरमद पूर्व बयुक्रमन मान ममल हेस्सि: काश- एशिएक एक मामनाशीरन उक्क करिया अक्क वृहर देशका हां है लिए की कतियान क्यान अवस्था प्रदेश के कि एक कि किस कनका (देखा নামে একটি সজ্ব গড়িয়া ভূজেন ৷ ময়ুরভঞ্জের মহারাজা, বর্তমান মহারাজের পিলা ঐবামচক ভঞ্চনত এই পবিকল্পনার উৎসাহী धिमान : ১৯৩৫ मालिट छाउड खारेन खनुमार्थ छेरकन পুথক এদেশের মর্গাদান লাক্ষ করে : ১৯৩৭ দালের নির্বাচনে কর লাভ করিয়া কংগ্রেদ পার্ট মন্তিওপদ এছৰ করে। উৎকল देष्ठैनियन कनकारदरभद्र जाना ए। हाराज कवकिल जार्दक एस। ১৯৪৮ সালের ১লা জালুয়ারী মাসে ইহা পূর্বভা লাভ করিয়াছে : ০টি উভিয়াভাষাভাষী অধ্যয়িত দেশীর রাজ্য खेरकम लापान्य भाष भरवुक वृद्धेत्। क्रक त्रवर **खेरका**लत स्**ष्ठि** क्षेत्राट्यः (क्राप्त माद्ध मगुद्धक दोका पृदद भदिवा चाट्य अवर সেরাইকলা ও বারশোরান রাজা লইয়া বিবাদ সাসিয়াছে উৎকল ও বিছার শবদে তির মধ্যে। এই বিবাদ মীলাং দার ছভ কেন্দ্রীয় প্ৰথেতি একট ক্ষিল্য ব্লাইয়াছেন। ভাছায়া অভুসভাষ कविश्र (परिदयन अहे धूरे बादका छेक्किश ना विश्ववीत क्रमशरका त्वी । चरुष्टा प्रविद्या मान एव त्य शक्तिम नामव निर्मीय श्रवाच के এই विवादि ''वांकित्र वाकि ककारक" अहे नौकि—वा नौकित

चकार--- चर्मक्रम कविया हिम्साबिट्सम अवर दक्षीय भरदर् है. "দিন গত পাপ ক্ষ্ম", এই মীতি অনুসরণ করিয়াছেন ভাষার ভিভিতে প্রভেশ গঠনের প্রশ্ন সম্বরে ৷ পঞ্জিত নেছের কেন্দ্রীয় পরিষদে এক আলোচনা প্রদলে বলিয়াছেন যে ভাষার ভিতির উপর ভারতীয় ইউনিয়নের নানা প্রদেশ পুনর্গঠন ক্রিবার নীতি ভারা এহণ করিয়াডেন, কিছ -: পাৰীদ্ধী এই 'কিছৱ' बार्चाः क देशाः छन । यु न्नीय जीटमत "मूर दनमन" "एएस मीभारमा कात्राट भक्षालाई विद्यात अहे मभरदाह छायाद शार्यकात कर नाना खकटन द्य विद्याप्त क्यांके वेहिन्छ। स् **जाहा अहेदा मध्या रामाहेनात अम्य बाहे . अधित स्टेट्स हेन्स्ट** ना । वैक्षित । अ विकास आरम्भा कर्याचन खाराभन्न द्रवेदां । रियाम अक्षरिएक भगाव मार्य । हेवा भरेष अक्षेत्र अग्राटीमहरू ব্যাপ্ত প্রতিষ্ক্ত তে, ছালা এই টিপ্রতাঞ্চ পাশ্চম ব্যাহর জনমন্ত क्षाक्षप्त विकादी मध्यपृष्ठि जनम तकाम अकति। राजान बहै।टे(क भोरत साह सक्षिप्तांक भारत वास वास (नत्रहिक्या) ख बाहरमासाम मध्रक अष्टी। मार्थी-माख्या (य बारल व) वाकिएड भारतः जामबर्क रककीए मन्दर्भ छित मार्च धामावेबाद कान कांत्रण (४६) जिल्ला का कांग्रेस के किनामान क्रि बहुद्द नांधांकीय खाला-बाकाकांत करा करायश जिल्ला ्छन । (अटाविसम् १९ अन्त्र(मार्यान द्राक्षा निर्म्पन्य क्रिमाद व्यक्षपुर्का असे विकास क्यांच द्वांच वर्दान वर्तालाहा मरनाह्य পরিও। কেন্দ্রে গবংখন্ট করেক নিযুক্ত ক'ম্পন পশ্চিয় বঞ্জে সঞ্জে ভাষাদের ভদাশ্বর একটা সথক আতে, এই কণা বিবেচনা कदिएरम किमा कामिमा । शक्तिम एक श्रद्धां के छहे दिश्राप्त विभवात कविकाद भावी मः कदिला कवास ककार कर्वत्यमः কেন্দ্রীয় প্রশ্রেটির শঙ্গে এই বিষয়ে বোকাপ্ত। করিবার সময় कि **बा**टम भारे ? ১৯১২ भारत सक्ष्य दर्भ समार বিহারের শাসন কার্যের স্থবিধার জড় প্রায় ১৫/২০ লক বাঙালীকে ভাষের শৈত্রিক ভিটে-মাটি সহ নুভন লাদেশে চালান দিয়াছিলেন বভলাট হাতিত্ব দর আলী ইয়ামের भवामार्ग । (परे भवद ध्रेट्ड वावू कारकक्षानारमञ्ज्ञ अधास्त्रिक खबादमबा करे वाक्षामीदम्ब भटम वावशाद क'ब्राक्टाबम विद्यालाब মত্র। প্রায় প্রিশ বংগর বিহারের সঙ্গে উংকলএক শাসনা-बीट्य मरहक्क छिन । अबे (यांत्रैक काक्तिशः यथम हिरक्स दहन मुश्र जिल्ले जर्बन भिष्मपुर किलाद ऐकिया चक्रम महिन्न अपके রেষারোধ চলিভেছিল বহারের সংক্ যেম্ন চলিভেছে (यप्तिमीश्रद किलाद राज्य जनम ने गापि महेदा श्रीक स राज्य भाष्ट्र । तक दरभव (दाव एवं धर धर धरान छरकन हेर्डे नियन कमकारदारभद्र अकृष्टि अविरवणम विभिन्ना छित्करभद्र भावीद একটা লাক্ষ্যপ্রধাণ তৈরার করিবার কল। তেলেও ভাষা-ভাষীর সলে উভিয়া ভাষাভাষীর একটা বিরোধ চলিভেছে ছক্তিৰ অঞ্চল লইয়া ৷ কোন কোন তেলেও অঞ্চল, মনে হয় छैरकृत्व चानिया विश्वादय ; मावी-श्रविमावी छे अ स्रेबा छैठिया-

ত্রেলাদেশের স্বাধানতা

বিগত ১৯শে পৌষ (গঠা জান্ত্যারী) এখনেশ বিটিশশালন হইতে মুক্তিলাথ করেল সংগ্রেছীয় সাধারণভন্তী
রাপ্ত বলিয়া সে খোষণা করিল। বিটিশ সাবর্গতি এই অধিকার
যানিয়া কইরাবেন। আপাতদৃহই ব্যৱহানের উপত্ত বিটেনের
তথ্য প্রভাব প্রভেপ্তি রহিল দা। কার্যভেঃ কলাকল কি
লেশ্ দিবে গাহা ভবিষ্যতের গর্ভে নিহিত আছে।

जन्मत्मन अध्यक्तरस्य विक्रमे अधित्यनी । जामादमय विन-निकान क्षणाह भरदेश जामाय-भीमान उत्तरमान मैगारश्वर দলে মিশিয়াতে। পুর্ববংশর সীমার ও অপ্রদেশের সীমান্ত পার ছট শত মাইল ব্যাপিয়া পরত্বর ক্লেপ্ত। প্রকৃতিদ্ভ खेरे निक्कें।ये अन्यामानात मान नामानात्व भथापत ए**हे क**रत बाहे। (बोध्युरभद्र शृत्य बहे अणिद्वनी कृष्टे प्रत्मत बहना कि भवन मृज्या हिर्दिश्चित जार काय काय क्रमानित रहेएजस । লে মাহাট হাউজ, প্রস্তুদেশ ঘৰন ছীন্যান বৌধনত্ত অবলয়ন করে, তথন হইতে শাকায়নির জনভূতির সতে ভাছার পরিচয় প্রপতিনিত হট্টছাছে। পরে এই পার্চীন স্কৃতি-কথার উপর वर्षभाग भूतिक भवत्वक चिति श्रामित कटेट्य सार ५৮৮१ হুইতে ১৯০৫ সালে প্রাপ্ত ভারতবহা ও ভ্রম্বরেল এক শাসন-चारशह सबीटन दिल । एक मनदार यहार अस लक सार्कारी लक्षाम्टम निःक्षात्व कोदम-शावाद अप मुक्तिया भादेशात्व । ১৯৪: সার্জর ডিলেরর মালে প্রায় ১২ লক্ষ্ম ভারতবাসী রক্ষ-तिरण कि भन । श्रांभार चाक्रम, गई **कार्य की (भन्न चर्डक** अजारिय, चार्मिय फिल्म बादलराम । ১৯৪८ मार्मिय स मार्म लक्षा, मरम दिक्षेत्र-माभव जायाद श्रीणिक्षेत्र २५। असम व्यासक ভারতবাদী ফিরিয়, দিয়াছেন। কিন্ত ভারাদের অবস্থা ত্রিশন্তর व्यवसार मध्य कुरूनीय । के.श.वा हरू दारहेद मामदिक एकेएल भारतम् मा । इक्षरमम् **भाष भारोन, भ्र**७द्रोर तक्क-शरामा ভারতবাদীকে একটা বাছিয়া দইতে হইবে। এই কার সহজ নম। ক্রত্মর ধারা কাটাইয়া সমস্ত সল্ভ ছেগন করিয়া ব্ৰন্ধদেশের নাগরিক জীবনের গৌরব ও দায়িত গ্রহণ করিভে নতুবা বিদেশীর মন্তন ত্রগ্ধদেশে থাকিয়া কোন

কোন শিল্প ও ব্যবসায় ক্ষেত্রে রক্ষীদের সলে জীবিক। উপার্জনের উপায় পুঁজিয়: কইতে হয়। ১৯৪১ লালের ভিলেশ্য বাসের পূর্বে মন্ত্র দেশের চেটি-সম্প্রদায়ের রক্ষদেশের আর্থিক জীবনে যে প্রজাব-প্রতিপত্তি ছিল, তাহা আরু সম্ভব নয়; রক্ষদেশের হাটে-বাজারে বোহাই ও স্থরাট বিশিক্ষ সম্প্রদায়ের যে প্রভাব ছিল, তাহা আকিতে পারে না; বাঙালী উকিল, ভাজার, সরকারী চাক্রীয়ার সংবাধ কমিবে; বিহারী, উভিয়া, বাঙালী, তেলেগ্র শ্রমিক রেজুন, আকিয়াবের বন্দরে রক্ষদেশ পূর্বের শ্বিকাপ্যাইবে না:

এই পরিবর্তন অপরিহার্য। আমাদের দেশে আমরা रमम याबीम बाह्रे प्रकृतिक ठाठे. त्मरेक्स स्कृत्मत्मव নাগরিকও এই সংগঠনের কাজে নিজেকে নিয়োগ করিতে চান ৷ পভ মহারুছে সে বিটিশের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করিয়াছে ইউ অটিল-সামের নেতৃত্বে: আবার আপানীর বিরুদ্ধেও গ্রন্থ कविदाद्य विक्रमादक माश्या कविदाद्य । भटन श्रदेशकिम, নিৰের দেশকে বৃত্তি আউছ-সাম আবার ব্রিট্রশ পঢ়ানত করিয়া किरमन। कि**च** कृषे दरमत गावेटण ना गावेटण अक्रामरमत বৈপ্লবিক মেত্ত আউল-সানকে অগ্লব্ধ করিয়া বিটিলের व्यक्तिक विवादेश महेल । त्यहे अञ्चलम (य्विन (बायना क्रिन, भिर काष्ट्रिम-भाग हर्क्त्रए भावे। जाक ত্রন্ধবেশ এক মহান আদর্শের পরে যাত। করিল। ত্রন্ধ-প্রবাস্থা ভারতবাসীকে ঐ খাবীন কাতির সঙ্গে সহযোগিত: ক্রিয়: ব্ৰহ্মদেশ ও ভারভবর্ষের মধ্যে এক নুভন সধ্বের স্ট্র করিছে इटेर । अजारमान प्रशिमण्-मिराम कावज्यर्थव अथान मही, পঙ্জি कंदर्रमान (नट्ट्य एवं कंद्रमा पिया हिटलन, जारा चार्यात्मद्र भार्षक कदिएक स्टेट्य। "दह मूत्र स्टेट्ड कावक ও ব্ৰহ্মদেশের মধ্যে খনিও সথত বর্তমান আছে। ভবিষাতে উভয় দেশের মধ্যে খনিঠতর সম্পর্ক স্থাপিত হইবে বলিয়া আমি আশা করি।"

খাত্য-সম্প্রা সমাধান

পার্টনা নগরীতে ভারতীর বিজ্ঞান পরিষদের পঞ্চারিংশং অবিবেশন শেষ হইডাছে। বিহারের গবর্গর শ্রীক্ষরহাষদাপ দৌলতরাম এই অবিবেশন উল্লোখন করিতে গির। "দরিপ্র, নগ্ন, ব্যাধিপ্রভ" জনগবের প্রতি বিজ্ঞানীদের কর্মব্য সম্বন্ধে নানা কথার উল্লেখ করিয়াছেন। এই সহতে ভারতীয় বিজ্ঞানীরা অধ্যতবিষ্যতে কি করিছে পারেন, এই দিজান পরিষদে ভাহার অনেক আলোচনা হইয়াছে। এই উপলক্ষে "বাছ ও বিশ্বের ক্ষমংখ্যা" সম্পর্কিত আলোচনা বৈঠক বসে। ভারত গবর্গেটর বাভ-বিশেষজ্ঞ শ্রীবোলচন্দ্র গুছ আলোচনার হ্মপাত করেন। তাহার বফুতার যে বিবরণ দৈনিক সংবাদ-পত্রে প্রকাশিত হইয়াছে ভাহা পাঠ করিয়া মনে হয় না বে ভারতবাসীর সমাবধাপর লোকেদের বাভ, বম্ব ও খাছ্য সধ্যে উন্নতির আশা অধুর ভবিষ্যতে দেখা বিবে। বর্ডবানে

পুৰিবার জনসংখ্যা ২৫০ কোট বলিয়া মনে করা হয়, এবং ১৯৬০ সালে ভাহা বাছিয়া যাইবে শভকরা ২০ জন করিরা। चर्बार ১৯৬c भारत नुविदोह लाक भरना हरेरव ७०० (कार्ड । ভাছা হইজে আগামী ১২৷১৩ বংসবের মধ্যে বাজ-শভের পরিমাণ শতকরা ২৫ ভাগ অভত: বাড়াইতে হইবে। ভাভার বীরেশ ওছ এই বৃত্তির নিম্নলিখিত ছিলাব পিয়াছেন: বাছ, নম ইডাংগি শতক্বা ২১ ভাগ ; মূল ও শিক্ষ্কাভ ৰাজন্ব্য শতক্ষা ২৭ ভাগ: শর্করা শতক্রা ১২ ভাগ: সেইপদার্থ শ্তক্রা ৩৪ ভাগ ; ভাগ ইত্যাদি শতক্রা ৮০ ভাগ ; ফল ७ मोक्सद्कि मणकदः ১०० छात्रः यास्त्र मणकता ३७ ভাগে ও ছগ্ন শতকর৷ ১০০ ভাগ ৷ এই বিরাট কার্যা সম্পাদন ভূৱিতে হুইলে জাতীয় বা আঞ্জাতিক নিয়ন্ত্ৰণ ব্যবস্থা অবস্থন করিয়া বৈজ্ঞানিক ভিডিতে অঞ্সর হইতে হইবে। छ।: ७४ जामा कटरन (व अहे छेनाट्स जाबाटनंद (परन जानासी দুৰ্ভ বংসাহের মধ্যে প্রতি একর। তিন বিখা। ছমিতে বাছপজের হার শতকরা ৩০ ভাগবুদ্ধি করা হাইতে পারে। তংগুর্কো व्यामारमञ्जूषे विभिनारसात अ, मूल एडिन्स्य क्विए स्ट्रेट । विश्वनेवीरमञ्जूषकां को काकाश (भरक व्यव्यः व्यव्येन अव খাতে ব্যয় করে ৪০০ কোট টাকা ্ আমানের করিতে হইবে खहात का का कि के कि । जो भी अवहत्व अनी एक श्रीप-स्थिति छ পরিবভন করিতে হইবে :

প্রবাদা বন্ধ-দাহিত্য সম্মেলন

বোদাই নগৰীতে গত ১০ই পৌষ ভাৰিবে প্ৰবাসী বল-भाक्षणा भाषामानद अकविरम अविदियमन खादक एवं । भाषामन উদ্যোধন করিতে পিয়া বোখাই প্রদেশের প্রধান মন্ত্রী ঐবলব্য রাও ্বর বঙ্গভাষায় তাঁহার ক্ষিভাষণ আরম্ভ করেন। তংপরে অবস্থ ইংরেজী ভাষার অভিভাষণ শেষ করেন। এই केननाक जिनि हेरदब्धै-मिन्नाक बाह्रजाश निकात छेनत चुनहे জোর দেন। "ইংবেকী ভাষার মাধামে এতাবং আমাদের কাক ভাল মতেই চলিয়াছে।" কিছ এই ভাষার প্রচলন এত দীমা-रक य त्राबीन कावल कनमानव बाह्र-वावशाव देशावनी काश होता काक हिल्द विनया श्रम एव मा। (महेक्डरे তিনি বাঙালীকে "হিন্দী" শিক্ষা করিবার কর আবেদন করেন। এগৰ কথাৰ মধ্যে কোন বৈশিষ্ট্য নাই। কিছ "সমসংস্থতি-দম্পত্ন ক্ষিবাদীদের স্বাভন্তা রক্ষার দাবী" এভ উএ হইয়া উঠিভেছে যে ভারতের "মুলগভ এক্যবোষ" বিপন্ন হইয়া পঢ়িতেছে। আমরা দেখিতেছি যে "নিক প্রদেশের প্রতি প্রীতি প্রদর্শন অক্সায় প্রদেশের প্রতি মুণা ও অবজ্ঞায়" পরিশত হইভেছে এবং ভারভবর্ষের ঐক্যবোধ লোকের মন হইভে विभीम एरेश यारे एएए। अरे विभए पत कथा मरम करारेश मित्रा यमवस्त्र ताल (मरनद छेनकाद कविशासन। (सम-वृद्धित क्षक्ष पित्न आभवा विनष्टे स्टेव, अटे कथा आमिवा ७ वृत्विवाछ আৰৱা এই বিষরুক্ষের বুলে কুঠারাবাত করিতে পারিতেছি না।

সন্মেলনের অভ্যর্থনা ক্ষিষ্টির সভাপতি ছিলেন শিল্পতি ञ्जीनिवहत्त वत्न्याभावासः जीवभवश्च दाश्व (वंदात हैदर्शवन चिकाशायद मार्च। अकर्तः हेकिल हिल एव वाहानी एव अर्पारम ধাকে সেধানকার অধিবাদীদের সঙ্গে অভরদ ভাবে মিলিতে भारत ना । राज्यांभावताव अवानव अहे "नामिन" भवाद चारणा-हमा अभरक अवसे। लग्न कर्तिश लाब देखा पिशाएम--- 'वारमा प्रतम् चाक विश्वी, मार्णाशाबी, मामाची ७ ७ वता है पारकन, কিছ ভাছারা সাধারণ বাঙালীদের সঙ্গে কভটা মিশেন ?" এই বিষয়ে আলোচনা করিলে দেবিতে পাওয়া যাইবে যে আমাদের —वाडानो, विहाती, शासाकी, डिकिश, अकताह, भाराष्ट्रि, পাঞ্চাবী, আদানীদের স্বাজ্ঞাবোধ এত প্রবল যে আমরা विरम्राम् कृत कृत वारमा, विश्व माताक, छेरकम, मराबाह, श्रक्षत, शक्षाव, जामाश्र एष्ट्री कविशा मारश्रुणिक देवश्यात নামে নিজ নিজ কুপের ভিতরে থাকিতে ভালবাসি। এই भरकीर्वजाद कादन अकहै। जारब निकारहे । (भरे कादन अप-সভান করিয়া বাহিত্র করিতে ক্টবে। আমানের প্রত্যেকর সামাজিক ট্রতিনীতি আচার-আচরণে ছংমার্গের মধ্যে जाए। जारहः

এই সন্মেলনের মূল সভাপতি ছিলেন বোধাই হাইকোটের অৰু ঐক্তিশচন্দ্ৰ সেন ৷ ডিনি বাঙালী জীবনের আশা-অংকাংকং সুখ-ছুব্ আনেগ-উত্তেশনা, বাংলা সাহিত্যের मासः। कि कविशा श्रकान शहिबाद्य अवर वाहानी भीवन পার্বত ও স্থার করিয়া ছলিয়াতে, তাহার পরিচয় দেন। অঞ अक छेललाक (याश्वाहेरस्य श्रवान मञ्जा विनिशाहिरलन स्य इहेकन यहादाक्षे अकम स्टेटल करत काका, डांशांत अस मिक्स कुरम महादाहेमक अक्षे : (जहेबाप पूर्व वन वाहानी अक्ष ছইলে "মিলিত ছইবার পূর্বেদলাদলি করিয়ালয়: পরে বয়স একট বাভিলে ভাহারা একটি কালী-বাড়ী ধাপন করে।" প্রক্তিম মূদে এই "কালী-বাড়ীর ম্বাদিয়া প্রবাদী বাঙালী বাঞ্চার সংস্কৃতি ও ঐতিহের সঙ্গে সংযোগ রক্ষা করিতে চেই। করিয়াছে।" কিছু আৰু যদিও সে ঘটা করিয়া পুর্বা পুরু করে, তবুও তাঁহার মন ভাতে যেন সঙ্গুই নয়। আয়েও কিছ চার যাত্য অবলয়ন করিয়া যাতৃভূমির সলে ভাতার সম্পর্ক আরও बिविष्ठ इश्व । अवाजी वांडांभीत शक्त वांत्म वांत्म आहिलाई टिव्हें আশ্রয়। সংসারের বিচিত্র অভিজ্ঞতার মধ্যে আর কোপাও ভাছার অন্ত:প্রকৃতির শে ক্ষা মিটে না। সভাপতি মহাশর সেই প্রকৃতির এই বর্ণনা দিয়াছেন, এবং দেই প্রকৃতির কল্যাণে দে কি ক্রিয়া নব-ভারত পঠনে সাহাধ্য করিয়াছে ভাষার ইঞ্জিত করিয়াছেন।

শ্নানা দেশ গ্রাম ও সহরের ক্ষিপ্রস্থত পলিষাট হইতে যেমন বাংলার মাটির ক্ষা, তেমনি নানা ঐতিহ্য, নানা ক্ষাতির বিভিন্ন সংখ্যার, নানা সংখ্যতি সংমিশ্রণ আমাধের ক্ষাতীর চিত্তের নানা ভরে নিহিত আছে। এই স্কুটসকর পজার বিষয় নতে, কারণ ইহা হইভেই আসিয়াছে चामात्मत किरकत भावनीन एक्टिशमात. सि:मरकांक अर्थ भागवा अमस्या (मन्द देमपूर्वा पृष्टिष मेख्नि छ পৌল্যে:র মিলন। আমরা বাহির হইতে এছণ করিয়াছি चानक, किन अवधर चानारात भननमचि ७ चन्द्र:खक्छित क'दक दान श्रविभाक कविशा निष्यंत कविशा नहेशाहि! हेशात पृक्षाच- दायरभाष्ट्र तात्र, भरूच्यन, विद्यानकः, विरवका-নশ্. রবীজ্ঞনাথ, চিত্তরঞ্জন । বাংলা ও ভারতের বাহিরের অনেক বস্ত ইহারা সাদরে গ্রহণ করিয়াছিলেন, কিছ ইংবার বাংলার একাভ আপনার, বাংলার সরস্ভীর বরপুত্র। বাংলার মাট লেটারাইট বা গ্রামাইটে ভৈরী নম্ব কালের প্রোভের সহিত উহা সংগ্রাম করিবে: करित जाशांव छेरा ज्वमा चुक्ना भनवच्यीचना, चव्छ অগীৰ শক্তির আধার ইছাই ভাষার বৈশিষ্ট্য-এক সঙ্গে কোমণতাও শক্তির আবার হওয়া। একচই ধরন পশ্চিম জগভের চিন্তাধারা এদেশে আসিয়া পঞ্চিল তখন বাংলাই প্রথম নিবিল ভারতের পথনিখেল করিয়াছিল--লিভায় সামাজিক প্রপতিতে, সাহিত্যে, রাজনীতিতে বর্দ্ধে **ও क**/₹ ."

बारे विश्विपारवर मार्था भूष्य कथा (वर्षी मारे। किसी পুৱাতন কৰা যাহা আছে তাহা মনে ক্রাইয়া দিবার প্রয়োজন আছে, মনে করিয়া রাধিবার প্রয়োজন আছে আজ যধন নানঃ বর্ষরোচিত আক্রমণে সমগ্র দেলের শীবন বিপর। আৰু ইছা মনে করিবার প্রয়োজন আছে যে নানা ভাবের সভ্যাতে যে আলোড়নের সৃষ্টি হইয়াছে, বাঙালী সাহিত্য-সাধকের সেই ক্ষণে নিক্তল হইয়া বসিয়া থাকিলে চলিবে না ; ভাছার বিশেষ সংস্থিত আলোকে নব-ভারতের পথে মৃতন আলোক রেখা क्षिक्षः (मरमद कक्ष-धाकाश योगमान कविरण व्हेरव । क्षेत्राभी বল-সাহিত্য সঞ্জেলনের সার্থকতঃ হইবে তথন যথন প্রবাসী বানালী নিজের সংস্কৃতি অন্ত-সংস্কৃতি প্রভাবিত অঞ্চলে অন্তবাদ করিতে পারিবে এবং অভ সংস্কৃতির বাণী নিজের লোকের बिकहे (ने। हारेश (भटल भावित्य । करें । यात्र-प्रक शामन करिया (मध्या क्ट्रेन क्षराभी वाहामीत कर्षरा। (महे कर्षरा भन्नत করিতে হটলে ভাহার মন হাবিতে হটবে আঞ্জভ ভাহার বুদ্ধি লাখিতে হইবে পর-মত আধাশীল ভাষার অভঃপ্রকৃতি বাৰিতে হটবে শুভদ্দ পদ্ধের মুভন মুর্য্যা**লোক পিয়াসী**। বৰ্তমান শতকের প্রথমে অনেক বাঙালী এই মননশীলভার ক্ষট ভারতব্যের মানসলোকের অনেক ক্লেজে নব-জীবন-প্রবর্তকরণে দেখা দিয়াছিলেন। আঞ্চও সে মেধা, বুদি ও कर्ज-मक्ति शक्तिलास स्टेश याद नारे।

বিশ্বের দরবারে ভারতবর্ষের স্থান প্রায় এক মাস পূর্ব্বে ভারতীয় বিমানবাহিনীর ক্ষর্মিয়কের এক সভায় পণ্ডিত ক্ষওহরলাল নেহেরু বফুভাপ্রসংক বলেম— "আষার গৃচ বিশ্বাদ, ভারত কোন্দিনই মন্যমশ্রেণীভূজ হুইরা থাকিবে না। ভারতবর্থ হয় একটি সুমহান বাষ্ট্রে পরিণত হুইবে, না হয় জতান্ত জুল্ল রাষ্ট্র হুইয়া পঢ়িবে। যদি আমরা যথামধ দৃষ্টিজগী কইয়া সমস্ভার সন্মুখীন হুইতে পারি এবং আমাদের মন যদি উদার হয় তাহা হুইলে ভারতব্য বিশের রাষ্ট্র-দর্বারে বিশিষ্ট স্থান জবিকার ক্রিতে পারিবে এ বিষয়ে আমার সন্দেহ নাই।"

কোন খণের অধিকারী হইলে ভারতবর্ষ বিখের দরবারে मचारमञ्ज्ञ भर व्यक्तिकात कतिरत, जाहा । भिष्ठकी वर्षमा करतन । **"ভারত কবনই একটি** সাম্প্রদায়িক রাষ্ট্র ছইবে না। আছক্তাতিক দ্বিভাগী দুইয়া ভারতবর্ণের কার্যা পরিচালিত ছইবে: সমীৰ্ণ জাভীয়ভাবাদের সহিত ইহার কোন সম্পৰ্ক बाकिरव भा।" अहे चामर्ग चन्नुयादी बाह्रे পরিচালনা चामास्वत রাষ্ট্র-চালকরক করিতে পারিবেন কিনা ক্রমি না। সন্মিলিভ ভাতিসভের দরবারে ত এই আদর্শের অভ্নযায়ী কোন কর্ম-लाइहार निवह भारे ना। প्रिजनी निवह क्लीय प्रिया विकाशिक्षा एवं प्रस्काता है । अभिष्य है बार हेव भरता विरवादन কোন পক অবলয়ন করিতে অনিজুক হওয়ায় ভারতবর্ষ चार्तको। "बक्धात" श्रेष: चार्ष: "बकारे निरस्त मानन ঠেলিয়া চলিয়াছে।" কিছ এরপ বরংগিছ হইয়া বেশী দিন हानाहेश यांश्रा मञ्चर स्टेटर मा। युक्तवारे चामारण्य राज ছটতে বহুদ্রে, প্রায় তের হাজার মাইল দরে। এটম বোহার बान बहे नवण किए नव । সোভিখেট दाहे अथाब बहे नवाणद অঞ্ছাতও টকে না। কাখারের মাধার আছে গোভিয়েট রাষ্ট্রে মুসলিম সাবীম সাবারণতান্ত্রিক রাষ্ট্রগুলি। সেইজ্ঞ जान क्रिके रिकारण जावस करियार क्रांची वित करियर भवटक लाजिएको बाह्रे निक्षाक्षेत्र वाकिएल भारत ना । काब्र्याक ভুতপুৰ্ব বিট্ৰপ দূত সৱ কেৱ ফ্ৰেকার ইটলার এক বক্তৃত! প্রসঙ্গে এই সন্থাবনার কথা পাই করিয়া বলিয়াছেন :

"অক্সাস নদীর অপর পারে সোভিষেট রিণারিক-ভলিকে শিলসমূহ করার পর রাশিয়া যে দক্ষিণে করাচীর দিকে গৃষ্ট নিবছ করে নাই, ভাষা অবিখাত । শীঘই হউক, বিলম্বেই হউক ককেশাল হইতে প'নীর পর্যন্ত দক্ষিণ সীমাতে উক্তলবিশিষ্ট একটি বন্দরের প্রয়োজন হইবেই । আফলানিয়ামকে হিবাবিভক্ত করিয়া যে হিন্দুকুল পর্বত-মালা গাঁডাইয়' আছে, সেই হিন্দুকুল পর্বত্যালার উপর মাহার অবিকার বাকিবে, ভারতে প্রবেশের চার্বি-কাঠিও ভাষার হাতে পাওয়া মাইবে।"

প্রকৃতি এই ভাবেই থিকের ধরবারে ভারতবর্ষের একটা ছান নির্দেশ করিয়া দিয়াছেন। বংলাপসাগরের পৃক্ষপ্রাঞ্জে ঘান নির্দেশ করিয়া দিয়াছেন। বংলাপসাগরের পৃক্ষপ্রাঞ্জে ঘাইচালকপর্বকে সভাগ থাকিতে ছইবে। সিলাপুর ও সিংহপের জিকমনেসি বন্ধরে ক্রিটালের নৌ-বাঁটি এখনও অব্যাহত আছে। বিটিশ রাষ্ট্রেয় সলে এবনও আমাদের একটা সপদ আছে। এ বন্ধন ছিল্ল করিয়া একটা নৃত্য সহতের পরিকলা নাকি সভ্জাইত্যাটেনের মাথার বেলিতেছে। বিটিশ রাষ্ট্রসভ্রাবিশ্বাটিনের মাথার বেলিতেছে। বিটিশ রাষ্ট্রসভ্রাবিশ্বাটিনের মাথার বেলিতেছে।

ছইবে। ত্রিটিশ রাজার নামে এই সজ্জের শাসনকার্য জার চলিবে না। ত্রিটেন, জারার, কানাভা, দক্ষিণ আফ্রিকা, জাইলিয়া, নিউন্নিলভ, ভারতবর্ষ, "পাকিভান" এই রাইগুলি স্বাধীন ছইরা যাইবে। কিন্তু সব সম্বন্ধ ছিল ছইরা যাইবে না। এই পরিকল্পনার ত্রিটিশ রাজার স্থান কোবার, তাছা এবনও লাই পেরা যাইতেছে না। গত মহারুছের সমর ত্রিটিশ রক্ষণনীতি (British scheme of Defence) বলরা একটা ক্যাভেনিরাছিলায়। এই রক্ষণ ও আক্রমণ নীতির ক্যাণে হ্রত একটা লম্বন্ধ গতিরা উঠিতে পারে, এই আদেশই বোধ হুর মাউন্ট্রাটেন পরিকল্পনার মুল ক্যা। লেইজভই সিলাপুর ও জিকন্মেলি বক্ষরের একটা মাহান্ত্রা প্রিয়া পাওয়া যায়।

ব্যাপার এখানেই শেষ নয়। ভারতবর্ষের পশ্চিমে গিন্ধু ও পশ্চিম পঞ্জাব হইতে ভারত করিয়া ভাক্লিকা মহানেশের মরকো পথাও প্রায় দশটি মুগলিম রাষ্ট্র বিভ্যান ভাতে। একক কোনটিই পরাঞাজ নয়, অনেক ওলিই মহারুপের চিভাবারার মধ্যে নিমন্তিত। এদের সথবে ভারতবর্ষ নিম্পৃত হইতে পারে না এইজ্ল খে, ভারতবর্ষের মধ্যে চারি কোটি মুসল্মান ভাঙে, যাহাদের ভাব ও ভাবেগ অনেক সময় এই সুসলিম দেশসবৃত্তর ঘটনার সঙ্গে ভাতাইয়া পড়ে, এবং ভানিছা সংগ্রত ভারতবর্ষকে এই সব দেশের ব্যাপারে স্ক্রিয় অংশ এছল কারতে হয়। শ্রেগকে কালেগনের সময় ভাতা এলাপিত ক্রয়াছে:

ওরু নামক মকায় গিয়াহিলেন

প্রয়াদের পাঞ্জিত ক্ষরভাগে ৪ঠা ছাল্লয়ারী ভারিবের "করি-জন" পত্রিকায় 'দ্র সপ্রদায়ের কন্ত্র; স্বর্ত্ত একটি প্র-ত मिरिशास्त्र शाकाको समान धार्वकत हाटन देशः सामिधा-ছেল। জ্লু ও মুসলমান কর্মের সময়ন্ত্র সংখন ক্রিবার _b21 कविशास्त्रम कर नामक . बहे ७१वात अविकेष्टिक अधिककी বৰ্তমান প্ৰবন্ধ লিবিয়াছেন বলিয়া মনে ছয় বক্ত নানকের "জীবনযাত্রা প্রবালী না ছিল হিন্দুবর্ত্বাসুসারী, না ছিল ইসলাম অফুগারী। তাহা ছিল উভঃ বর্ণের সংখিতান।" এই কবার প্রহান করিতে গিয়া পভিত্তী বলিয়াছেন লিখ-ধর্ম-গ্রন্তের নামকরণে "গংগত এছ' শব্দের সহিত আরবী 'সাছেব' শুক্ खुष्टियः (४७४। रहेशास्त्रः" अहे ममध्य (68) अतः नानत्कत कोबरनके त्यर इस नारे : ठांत्र भत्रवर्णी मिश्र अक्षप्रक अह ভাবের ভারুক ভিলেন। পভিডজী বলিয়াছেন, "অমুভদ্ধের খণম্পিরের ভিতি প্রতিষ্ঠা কাছার ছাতে করা হইবে প্রশ্ন উঠিলে অঞ্জাজ্ন দেব এই পবিত্র অমুঠানের পৌর্ছিভা করিতে মুদলমান ক্ষিত্র সাইন দিঞা মীরকে আহ্বান করিয়া-शिलन।" अर नानक সমদর্শী ছিলেন--- রামেখর-মতা উভয তীবে বিয়াখনেন এই কিখনতী তাঁহার আত্যত্তিক চেষ্টার পরিচর বলিয়া গৃহীত হইয়াছে। আরও অনেক विश्व সন্ন্যাসী মত। গিয়াছিলেন বলিয়া শুনিয়াছি। পঞ্চাল বংসর পর্বের বারদীর এমচারী লোকনার জীবিত ছিলেন। তাঁর মকা পর্যাটনের বৃত্তান্ত তার জীবনচ্রিতে ব্রিত হইয়াছে। পূর্ব্ব ৰুগের বিন্দু সল্ল্যাপীরা এই ভীব পর্যাটন অবস্তু কর্তব্য বলিয়া মনে করিভেন। কেন করিভেন ভার উত্তর নিশ্চরই একটা ছিল। আৰু লোকে ভাহা ভুলিৱা গিৱাছে।

পত্ৰাবলী

[রামানন্দ চটোণাগার মহালরকে লিখিত] রবীম্প্রনাথ ঠাকুর

বিশ্বভারতীর অনুসতিক্রমে প্রকাশিত

ê

শ্ৰদ্ধান্সদেযু-

আমার লিখিত ইংরেজি পত্রথানি Modern Review পত্রে ছাপাইবার যোগ্য বলিয়া স্থির করিয়াছেন, আশা করি বিচারে ভুল করেন নাই।

প্রুফে দিতীয় গেলির শেষ প্রান্তে একটি প্যারাগ্রাফ যোগ করিয়াছি। ইহার ভাষা, ব্যাকংণ ও পদচ্ছেদ সম্বন্ধে উদ্বিগ্ন আছি—দয়া করিয়া যথেচ্ছা সংশোধন করিয়া দিবেন।

নেপালবাবৃ কিছু দিনের জন্ত এথানকার অধ্যাপনার ভার গহণ করাতে অত্যস্ত আনন্দিত হইয়াচি। সেই কিছুকালের নেধাদ যদি ক্রমে বাড়িয়া চলিতে থাকে তবে আরও আনন্দের কারণ হইবে।

আশা করি খাপনার শরীর এক্ষণে ভাল আছে। ইতি ৯ই প্রাবণ ১৩১৭

ভবদীয় শ্রীরবীক্রনাশ ঠাকুর

পু: আজ ধবিবার বলিয়া প্রফ রেজিট্র ভাকে পাঠানো গেল না – ভাহাতে ক্ষতির আশ্বা আছে কি ? প্রবাদীর জন্ম চাক্ষকে গুটি ভিনেক ক্ষতিতা পাঠাইয়াছি, এপনো প্রাপ্রিদ্যবাদ পাই নাই।

Ġ

শ্রদ্ধাস্পদেযু-

কুমাবৰামী ব লাজনে আদিয়াছিলেন, তিনি প্রামার কডকগুলি কবিতা অন্ধবাদ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন। দেইজন্ম হাঁহাকে সাহায়া কবিবার উদ্দেশে আমি তাড়া-তাড়ি গোটা তিন-চার কবিতা নিতাপ্ত নীরস গদ্যে ভর্জ্জমা করিয়া দিয়াছিলাম। কুমারখামী যদি সেগুলি অবলঘন করিয়া লিবিয়া দেন তবে ... Modern levieu পত্রিকায় ছাপাইবেন। তাঁহার হাত দিয়া বাহির হইয়া আপিলে আমার আপজির কারণ থাকিবে না। অজিভ কতকগুলি ভর্জমা করিয়াছিল, সেও কুমারখামীর হাতে আছে। তিনি যাহা ছাপাইবার যোগা বলিয়া আপনার হাতে দিবেন তাহা আপনি প্রকাশ করিবেন। কিন্তু স্বকৃত ভর্জ্জমার বিজ্ঞ্জনা-গুলিকে কুমারখামী মাজিয়া ধ্যিয়া দিলে তাহাতে অন্থ্রাদক বলিয়া আমার নাম সংযোগ কথা সঞ্জত ইইবে না।

-)। (नश्रीमाज्य प्राप्ता
- २। वानम क्यांत्रवामी।
- ০। অজিতকুমার চক্রবড়ী।

ভাকার বহ' বলিভেছিলেন, Sister Nivedita আমার চুইটি ভোট গল্প (কাব্লিওয়ালা ও ছুটি) ইংরেজিতে ভর্জনা করিয়াছেন—ভাগ বিশেষ উপাদেয় হইয়াঙে, ভনিয়াছি সে চুটি আপনার কাগজে ছালিতে দিতে তাঁহার আপত্তি নাই। ইলি ৮ই ফাল্পন ২৩১৭

ভবদীয়

শীরবীক্রনাথ ঠাকুর

ě

শ্রদাম্পদেযু---

আমার জীবনস্থতি প্রবাসীতে বাহির করিবার পক্ষে আপনার অভুরোধ ভাড়া আর একটি কারণ ঘটিয়াছে। আমার বিদ্যালয়ের কোনো অত্যংসাহী শিক্ষক আমার ঐ লেখা নকল করিয়া মফম্বলে কোনো সভায় আমার জন্মোৎসব উপলক্ষ্যে পাঠ করিতে পাঠাইয়াছেন। প্রকাশ না করিবার জন্ম তিনি অন্সবোধ করিয়াছেন কিন্তু ইহার অষ্থা ব্যবহার হওয়ার আশ্রা যুগন আছে তথন বিক্তি লাভের পুর্বেই ওটাকে ছাপার জ্বন্সরে গ্রুব করিয়া রাখং ভাল। কিন্তু আগে অজিতের লেখাটা বাহির হইয়া গেলে ভাহার পরে এটা প্রকাশ হওয়া কি ভাল নয় ? ভাবিয়া ए शिर्वन । जामि ने लिशाहीत कांक जताहैया जावाद अक्रें भः स्थापन कविद्या नहेरछि । धथन हेळा करतन भाहेरवन । মাতা শাস্তা°র শরীর এখনো সম্পূর্ণ হস্ত হয় নাই শুনিয়া ত্রংগ বোণ করিতেভি, তাহার এই ম্বাস্থোর কল মানাদের আভিথা ধনি কোনো এংশে দাধী হয় তবে সে আমার পকে অভান্ত পরিভাপের কথা।

চারুণকে বলিয়া দিনেন, বড়দাধার লেখাটা কম্পোঞ্ হুইবামাত্র দেট। ছাপিবার জন্ম হেন তথুবোধিনীতে পাঠাইয়া দেওয়া হয়। ইতি ১ই জ্যৈষ্ঠ ১৩১৮

> আপনাদের শ্রিববীন্দ্রনাথ সাকুর

Ġ

निवाङ्ग। बद्रीका

শ্রদ্ধাম্পদেশু---

জীবনম্বতি কাপি করিতে দিলান। **কিন্তু** আমার মনে হয় অঞ্জিতের লেপার প্রথম কিন্তি অস্তত বাহিব

- ৪। জগদীশচন্ত্র বহু।
- । श्रेनासा (परी)।
- । ठोकठळ वं:का/প(वा)व ।

হইয়া পেলে এই প্রবন্ধ প্রকাশ হওয়া উচিত। অজিত আমার জীবনের সঙ্গে কাব্যকে মিলাইয়া সমালোচনা করিয়াছেন—তাঁহার লেখা পড়িয়া যদি পাঠকদের মনেকৌ তুহল জাগ্রত হয় তবে এ লেখাটা তাঁহার। ঠিকভাবে গ্রহণ করিতে পারিবেন। এবং অজিতেরই লেখার অফুবুজিরূপে এই জীবনম্বতির উপধােগিতা কতকটা পরিমাণে আছে। ইতিমধ্যে আমি ···কে বিশেষ করিয়া লিখিয়া দিতেছি তিনি আমার লেখাটাকে যেন প্রচার না করেন।

জীবনত্বতি অনেকটা পরিবন্ধিত ও পরিবর্তিত ইইতেছে—
সমস্টটাই আবার নৃতন করিয়া লিখিতে ইইতেছে। যখন
প্রবন্ধটা হাতে পাইবেন একবার ভাল করিয়া আগাগোড়া
পড়িয়া দেখিবেন যদি কোনোখানে লেশমাত্র অহমিকা বা
অনাবশ্যক প্রগল্ভতা প্রকাশ ইইয়া থাকে ভাহা নির্মান্তাবে
কাটিয়া দিবেন। নিজের কথা বলিবার সময় কথার ওজন
থাকে না। যে সব বৃত্তান্তকে অত্যন্ত উৎস্কাজনক বলিয়া
বোধ করি ভাহা সাধারণের কাছে তৃচ্ছ ও বিব্যক্তিকর
ইইতে পারে। ইতি ১৩ই জৈয়েই ১৩১৮

ভবদীয় শ্রীববীন্দ্রনাথ ঠাকুর

ė

শिमाइप। नपोग्रा

শ্ৰদ্ধাম্পদেযু---

প্রতীকা নামক লেখাটি অন্ন স্বল্প সংশোধন করিয়া দিলাম। গোড়ার দিকে তুই চার লাইন বর্ণনা ছিল যাহা বাছলা এবং নিভান্ত দস্তরমত, সেইগুলি বাদ দিয়াছি। শেষটুকুতেও অন্ধ একটু হস্তকেপ করিয়াছি।

সাময়িক পত্র যাহা পান তাহার বাবহার শেষ হইয়া গেলে আমাকে পাঠাইয়া দিতে অমুরোধ করিবার জল্প আজই আপনাকে চিটি লিখিতে ষাইতেছিলাম এমন সময়ে আপনার পত্রে তাহার উল্লেখ পাইলাম। অবশ্র, এখন নিজের সম্পাদকী দফ্তবের জল্পই ইহাদের প্রয়োজন শম্ ভব করিতেছি। তত্তবোধিনীর কচি এবং কুধা ত্ইই ন্দ্রীণ অতএব প্রবাসীর জল্পও কিছু উদ্ভ থাকিতে পারে এমন আশা করা ষায়। আপাততঃ কাগজগুলি এই টিকানাতেই পাঠাইবেন। এখানে আমার স্কলনকারী তুই একটি আছে।

কাল জ্ঞানে ব হাত দিয়া আমার জীবনস্থতির কাণি আপনার কাছে পাঠাইয়াছি, বোধ হয় পাইয়াছেন। আশা করি আমার এই লেখাটতে আমার শক্ত-মিত্র কোনো শক্তকেই উদ্বেজিত করিয়া তুলিবে না। যে পর্যান্ত পাঠাইয়াছি ইহার পরেও আরো খানিকটা লেখা আছে।

ভাহাতে ক্রমশ অধিক করিয়া আমার রচনার কথা আসিয়া পড়িয়াছে। আর একবার সংশোধন করিয়া লিখিয়া ভাহার পরে বিবেচনা করা ষাইবে সে অংশটা বাহির করা চলিবে কিনা। ইভি ১৮ই জ্যৈষ্ঠ ১৩১৮

> ভবদীয় শ্রীববীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Ğ

निनारेषा नषीत्रा

শুদ্ধাস্পদেশু---

আৰু সেই নিবেদিতা সম্বীয় লেখাটা শেব কবিয়াছি—
যদি সময় থাকে তবে আত্মই পাঠাইব কিন্তু বেজিট্রি
কবিবার অবসর যদি না পাওয়া যায় তবে মঞ্চলবারে
পাইবেন। নিতান্ত ছোট হইবে না প্রায় এক ফ্রা
হইবে।

একটা কথা বলিতে তুলিয়াছি। সেই যে পুন্তিকা প্রকাশের প্রভাব করিয়ছিলাম সে সম্বন্ধ আমার ইক্রার উপর লেশমাজ নির্ভর করিবেন না। যে সকল প্রবন্ধ জনসমাজের বিচারবৃদ্ধিকে আঘাত করিয়া উল্লেখিত করিবার উদ্দেশে লিখিত সেগুলি এইভাবে প্রচার করিলে যদি কোনো উপকার প্রত্যাশা করেন ভবেই চেষ্টা করিবেন। আর একটি কথা মনে রাখিবেন আপনি নিজে যে প্রবন্ধগুলিকে যোগা মনে করিবেন সেইগুলিই ছাপিবেন। আমি এ সম্বন্ধ কোনো বিচার করিতে পারিব না। আপনার মনে যেট। ভাল লাগিবে অর্থাৎ যাহ।তে কোনো উপকাবের সম্ভাবনা বৃত্তিবেন সেইটেই নিজের দায়িতে আপনি এইরূপ ছাপিবেন। আমার সকল প্রবন্ধ সম্বন্ধই আপনার এই অধিকার রহিল—যাহা প্রবাসীতে বাহির হইবে বা যাহা অক্সত্র।

কৈছ আপনি লেশমাত্র সংলাচ মনে রাখিবেন না। আপনি যদি কোনো প্রবন্ধ ত্যাগ করেন তবে আমি তাহাতে কিছুমাত্র রাগ করিব না।

নিবেদিতা আমার "কাব্লিওয়ালা"র যে ইংরেজি ভর্জমা করিয়াছেন তাহার পাণ্ড্লিপি পাওয়া গেছে। আপনি জগদীশের কাছে সন্ধান লইবেন।

Mrs. Shomeকে আপনি বোধ হয় জানেন। তাঁহারই এক কল্পাকে বৌমার শিক্ষয়্ত্রী নিষ্ক্ত করিবার কথা চলিতেছে—যদি তাঁহাকে না পাওয়া যায় তবে আপনাকে জানাইব। ইতি ১৮ই কার্ডিক ১৩১৮

আপনাদের শ্রীব্রীজনাথ ঠাকুর Ġ

বোলপুর

শ্ৰহ্মস্পদেষ্—

বিভালয়ের জন্য একটি অধ্যক্ষসভা স্থাপনের প্রস্তাব আপনাকে পূর্বেই জানাইয়াছি। আপনি ছাড়া আর কাহারও নাম মনে পড়িতেছে না। আপনার সঙ্গে রখীক্রপ ও স্ববেক্র কৈ স্থান দেওয়া যাইতে পারে—কেননা তাঁহাদের ছই জনের কাছ হইতে বিপদে আপদে অর্থের প্রস্তাাশা করা ধাইতে পারিবে।

আমি এগানে থাকিতে থাকিতে আপনি কি ছুই এক দিনের জন্য এথানে আসিবার অবসর করিতে পারিবেন গু আমি বোধ হয় আগামী বৃহস্পতিবার পর্যান্ত থাকিতে পারি। একবার যদি আসা সম্ভব হয় তবে আথিক ও অন্যান্ত অবস্থা স্বচক্ষে দেখিয়া যাইতে পারেন। যদি ব্যাঘাত না থাকে তবে কবে আসিতে পারেন জানাইবেন। ইতি ২৬শে মাঘ ১৩১৮

স্থাপনাদের শ্রীক্রনাথ ঠাকুর

è

भिमारेषा नहीवा

শ্রহ্বাস্পদেযু-

জীবনস্থতিব প্রফ্না হউক ফাইলটা আমার কাছে পাঠাইবেন কেননা কিছু কিছু বাড়ান চলিতেছে। আমার মেয়াদ ফুরাইয়া আসিল—আর ২০।২২ দিন লিগিতে পাইব ইহার মধ্যে সমস্ত ঠি কঠাক করিয়া দিয়া যাইতে হইবে। অভএব আপনি যদি "জীবনস্থতি"র সমস্ত কাপি আমার কাছে রেজিট্রি করিয়া পাঠান ভবে ভাহার উপর শেষ ভূলির পোচ দিয়া সমষ্টা সম্পূর্ণ করিয়া যাইতে পারি। সীভা>ণর ইচ্ছা জীবনৃত্বতি আবো খানিকটা অগ্রসর করিয়া দিই—ভাহাও নিভান্ত অসম্ভব নহে অভএব কাপিঞ্জলা একবার শীঘ্র করিয়া পাঠাইয়া দিবেন। ইতি ৮ই ফাল্পন ১০১৮

আপনাদের শ্রীব্রবী**জনা**থ ঠাকুর

Š

শ্রহাম্পদেযু---

আৰু প্ৰফ পাইলাম। ইহার শেষ প্যারাগ্রাফটার কিছু যোগ করিয়া দিতে হইবে। আৰুই ডাড়াডাড়ি লেখার স্থবিধা হইল না, কারণ হাতে এখন একটা **অন্ত** লেখার উপদর্গ আছে। "ভগ্নহাদয়" শীর্ষক এই প্যারা-গ্রাফটি বৈশাখের কিন্তিতে চালাইয়া দিবেন। সেই হইলেই ঠিক ভাল হয়—তৈত্ত্বের শেষে ওটা ঠিক সঞ্চত হয় নাই— ভাই এই প্যারাগ্রাফটা কাটিয়া রাখিলাম।

সেই বইটার নাম "পাঠদঞ্ম" দিলে কেমন হয় ? যে প্রবন্ধ ভলি পাঠাইয়াছি ভাহার মধ্যে কোনোটা যদি অন্পযুক্ত মনে করেন ভবে বাদ দিয়া দিবেন।

"শীবনস্থাডি"র শেষের কথাগুলা মোটাম্ট ভাবে লিখিয়া ফেলিতে ইচ্ছা আছে। কিন্ধ মেয়াদ ফুরাইয়া আসিল—ছুটি আর ত বাকি নাই! এই কয় দিনের মধ্যে কডটুকুই বা লিখিতে পারিব ? বিশেষতঃ ভারতবর্ষের ইতিহাদ সম্বন্ধ একটা বড় প্রবন্ধ লিখিতে হাত দিয়াছি—এটা লিখিতে দম্ম যাইবে বলিয়া আশকা করিতেছি: দেখা যাক কতদ্ব কি হইয়া দাড়ায়। ইতি ১০ই ফাল্কন ১৩১৮

আপনাদের শ্রিবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Ğ

শ্রদ্ধাম্পদেষু---

পাঠসফ্য লইয়া ত বিপদে পড়া গেল। গ্রন্থাবলী ঘাঁটিয়া ছেকেদের উপযোগী আর একটি প্রবন্ধও পাওয়া গেল না। একণে আমার প্রস্তাব এই যে, প্রবাসীতে কয়েক বংসর ধরিয়া যে সকল সকলন চলিয়াছে তাহার মধ্য হইতে আমার লেখা এবং মীরা 'ব ও হেমলতা 'ব বৌমার লেখা হইতে বাছিয়া যতগুলা প্রবন্ধ উপযুক্ত বোধ করেন ছুড়িয়া দিবেন। সেই প্রবাদীগুলি গাতের কাছে থাকিলে নিকেই দেখিয়া দিতাম। অবণশক্তির অবস্থাও এমন যে কখন কি লিখিয়াছি তাহা মনেও নাই। শিক্ষা সম্বন্ধ আমেরিকার হুই একটা ইন্ধুল সম্বন্ধ কিছু যেন লিখিয়াছিলাম। এমন আবো কিছু না কিছু পাওয়া যাইবে। ইহাতে যদি না কুলায় তবে আর ত উপায় দেখি না। তাহা হুইলে অগত্যা প্রাইভেট পড়ার জন্মই এই পাঠসঞ্চয়টা তৈরি করিতে হুইবে।

আমার প্রবন্ধ পাঠ সভায় সভাপতি কে হইবেন সেটা বিচার করিয়া স্থির করিবেন। আন্ত^{১৩}র কথা ত পুর্বেই নিথিয়াছি—মান্ত মুথ্যো মশায়ের কথাও চিন্তা করিয়া

৮। अविशीत्यमार्थ शक्ता।

[।] श्रात्यमाथ शक्ता।

১-। শ্ৰীসীভা দেবী।

>>। कन्ना क्रीमोत्रा (मरी।

১২ 1 ঐত্যেলতা ঠাকুর।

১৩। আগুতোৰ চৌধুরী।

দেখিবেন—তিনিও ত বিচারক মাহ্য। অবশ্য আমার মতামত তাঁহার কাছে কেমন ঠেকিবে তাহা জানি না। সভাশতির হাতে যেরপ কমতা আছে তাহাতে সমস্ত বক্তৃতার মাথায় ঘোল ঢালিং। দিয়া তিনি অক্ষত শরীরে বাড়ি চলিয়া যুইতে পাবেন এইটেই ভাবনার কথা। যাহার কথার জবাব চলে তাঁহাকে ভয় করা কাপুরুষতা, কিন্তু সভাশতে যদি বিমুগ হন তবে সভার শেষ মুহূর্তটা রামমোহন রায়ের গানের "শেষের সে দিন" এর মতই ভয়ত্ব—ক।রণ তথন "গত্যে বাক্য কবে কিন্তু তুমি রবে নিক্তর।"

শাগামী সোমবার চাট্গাঁ। মেলে কলিকাতা বাওয়া স্থির করিয়াছি। দেগা হইলে সকল কথা আলোচনা হইবে। ইতি ২৪শে ফাল্লন ১৩১৮

> আপনাদের গ্রিববীন্দ্রনাথ ঠাকুর

ġ

मिनारेमा

শ্ৰদ্ধাস্পদেশু----

কয়েকদিন থেকে থাবার অস্তত্বোধ করচি। জীবনশ্বতি শ্রাণণের কিন্তিতে শেষ করে দিয়েছি—দেখলুম আর
সেগবার সময়ও পাব না—ক্রমে জটিলভার অর্ণ্য ভেদ
করে কলমও চলবে না।

লোকেন^{১ হ}কে লিখে দেখব । আজকাল সে লেখায় অনভান্ত হয়ে পড়েছে বলে কি হয় বলা যায় না।

এখান থেকে १ই জৈচ কলিকাতায় ও বোধ হয় ১০ই বোধাই বওনা হব।

শান্তা ও সীতাকে আমার আশীর্বাদ জানাবেন।
সীতাকে বনবেন প্রাবণের জীবনস্থতির পাণুলিপিটা তাঁর
কাছেই পাঠাব—সেটা আর এক ব্যক্তির ধারা কাপি
করিয়ে নিয়েছি। ইতি ০০শে বৈশাধ ১৩১৯

আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Š

শ্রহ্বাস্পদেযু—

আমি ছাত্রদের এই প্রবন্ধটা বাংলা হইতে ইংবেজি করিয়া মুখে মুখে বলিয়া ঘাইতেছিলাম এণ্ডুজ, লিখিয়া লইতেছিলেন। ভারপরে দেইটেকে ত্রহু করিয়া ভিনি লিখিয়া দিলে আমি আবার ভাহার উপর কিছু কারিগরি করিয়া ভবে জিনিষটা দাড়াইয়াছে।

১৪। লোকেন্দ্ৰনাৰ পালিত।

জীবনশ্বতির তর্জমাটার প্রফ ্কাল সংশোধন করিয়া দেওয়া হইয়াছে সেটা পাইয়া থাকিবেন। মাঝে মাঝে হুরেন^১ ছই-এক জায়গায় ছাড়িয়া দিয়াছিল সেইগুলো পূবণ করিয়াছি ত্ব-এক জায়গায় কিছু বদল করিতেও হইয়াছে।

Ğ

আপনার শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

এখন হইতে আমার টিকানা C/o Prof. Seymour, Urbana, Illinois U.S.A.

শ্ৰহ্মাস্পাদেযু---

বিন্তালয়ের বত্তহান স্থাথিক অবস্থা আপনার পত্তে বিন্তাবিত্তরূপে ভানিতে পাবিলাম।

আমার মনে হয় বিদ্যালয়ের প্রয়োজন জানাইয়া অভিভাবকদের নিকট মাসিক আবো ওই টাকা বেজন দাবি
করার সময় আসিয়াছে। ইহাতে সকলেই সমত নাংইতে
পারেন কিন্তু বাহাদের অবস্থা ভাল তাঁহার। বিবেচনা করিয়া
দেখিতে পারেন। বর্জমানে যে সকল ছাত্র আছে ভাহাদের অভিভাবকেরা ইচ্ছাপ্রক ২০, টাকা বেজন যদি না
দেন তবে ভাহাদিগকে রাখিতেই হইবে কিন্তু ভবিষ্যতে
২০, টাকার কমে ছাত্র লওয়া হইবে না এইরপ নিয়ম করা
অবশান্তাবী হইয়াছে।

বিভালয়ের পক্ষ হইতে অধ্যাপকদের বেতন কম করিবার প্রপ্তাব করা আমি ঠিক মনে করি না। কিছ জাঁহারা ইচ্ছাপূর্বক নিজে হইতে কিছু কি ভ্যাগ করিবার কথা বলিতে পারেন না ? ভাঁহাদের মধ্যে কেহ একজন দৃষ্টান্ত দেখাইলেই পথ সরল হইতে পারে।

আমি জানি না আমাদের বিদ্যালয়ের বেভনের হার অন্তর অপেকা বেলি কিনা কিন্তু আমি ইহাদের কাহারও কাচে কিছু দাবি করিতে পারি না। ভ্যাগ করিবার দাবি একমাত্র আমারই উপর আছে—বিচ্চালয়ের আইডিয়া আমাকেই ভাক দিয়াছিল অভএব ষথার্যভাবে আমারই গরঙ্গ। যতক্ষণ আমার কিছুমাত্র সামর্থ্য আছে ভতক্ষণ আমি অন্তের কাছে হাত পাতিতে পারি না। অভএব বিচালয়ে অনটন যাহা কিছু ঘটিতেছে ভাহার মূলে আমারই অপথাধ আছে—দেজন্য আমি অন্তবে দণ্ডনীয় করিব কি করিয়া গুমধিক বেতনের অধ্যাপকদিগকে বিদায় করা একটা পন্থা বটে কিন্তু ভাহা হইলে প্রাণ নাই করিয়া ব্যয় বীচানোর চেষ্টা করা হয়। কারণ তাঁহারাই বিদ্যালয়ের মর্শ্বন্থান অধিকার করিয়া আছেন।

১৫। হয়েজনাথ ঠাকুর।

থেষন করিয়া হৌক একদিন ইহার সমস্ত দায়
আমাকেই স্বীকার করিয়া লইতে হইবে একথা মনে মনে
ভাবিয়াছি। অবশ্র আমার সামর্থোরও সীমা আছে সে
সীমা যে বেশি দূরে তাহা নহে—কারণ, আমি ঋণে মগ্ন।
ভা ছাড়া আমার আয়ুর চেয়ে বিভালয়ের আয়ু বেশি এই
কথাই ধরিয়া লওয়া উচিত—অতএব আমার আয়ের সঙ্গে
বিভালয়ের আয়কে এক করিয়া দেখিলে এক দিন বিপদ
ঘটবেই।

আসল কথা, যে জিনিষের প্রয়োজনকৈ সকলে সত্যভাবে স্থীকার না করে তাহাকে কুজিন উপায়ে বাঁচাইয়া
রাখা বিড়ম্বনা। ষেটুকু আমার শক্তির উপর নির্ভর
করিতেছে বিজালয়ের মধ্যে সেইটুকুই যদি সত্য হয় তবে
সেই শক্তির শেষ প্যান্তই চলুক। দেশলাই জলে বাতিকে
জালাইবার জন্ম, কিন্ধু বাতি যদি না জলে তবে দেশলাইয়ের
শেষটুকু প্যান্ত জলুক—তভক্ষণ ষ্ডটুকু পথ পার হওয়া ধায়
তত্টুকুই ভাল।

বিভালয়ের আথিক সহটের কথা শুনিয়া দেশে ফিরিবার জন্ম আমার মন টলিয়াছিল। কিন্তু আমার এখানকার বন্ধা বাবদার আমাকে আখাদ দিভেছেন যে আমার বই চাপার ভালগ্রপ বাবস্থা করিতে পারিলে বিভালয়ের আয় দখকে অনেকটা নিশ্চিন্ত হওয়া যাইতে পারে। সেইজ্লু আশাপথ চাহিয়া বদিয়া আছি। কিন্তু বই বিক্রী করিয়া কিছু পাইব এ কথা বিখাদ করিবার ভরদা আমার চলিয়া গিয়াছে।•••

আমেরিকা ষাইবার প্রস্তাব চলিতেছে। দেখানে কিছু স্ববিধা হইতে পারে কিনা দেখিব। কিছু ভিক্ষা করিবার বিদ্যা আমি একেবারেই জানি না—এবং দেশের কাজের জক্ত বিদেশে ভিক্ষার ঝুলি বাহির করিতে আমার অত্যন্ত লজ্জা করে। অত্এব আমার বিশ্বাস ঝুলিটা লুকানোই থাকিবে এবং ষপন ফিরিয়া আসিব তথন শূন্য হাতেই ফিরিব।

জোর করিয়া বলিতে পারি না তবে আন্দাক্ষে বলিতে পারি হয় ত হাজার থানেক টাকা নৃতন বাড়ি তৈরি করিবার জন্ত পাঠাইতেও পারি কিন্তু তাহাতেই কি সমস্যাপুবণ হইবে ? অন্তর্থামী যিনি অন্তরে বসিয়া বাহিরে ফল দিয়া থাকেন তিনি দেখিতেছেন আমাদের তপস্যা সম্পূর্ণ হইয়া উঠে নাই। তিনি মিথাাকে প্রশ্রেষ্ক দিয়া বাঁচাইয়া রাখিবেন না। খাহার আয়ু নাই তাহাকে মরিতে দিতেই হইবে। বাহিরে বে টানাটানি দেখিতেছেন দেটা অন্তরের টানাটানির বাহ্য লক্ষণ মাত্র। বাহির হইতে জ্যোড়াডাড়া

দিয়া একটা ইম্বলকে খাড়া করিয়া রাখা চলে কারণ তাহা প্রাণের জিনিষ নহে কিন্তু আশ্রমকে বাঁচাইয়া রাখা চলে না। অতএব যদি সামর্থ্য না থাকে তবে লোভ কারব না— আমাকে জবাব দিলেও তাঁহার সেবকের অভাব ঘটিবে না এই কথাই মনকে ব্যাইয়াছি। ইতি ২১লে আখিন, ১৩১৯

> আপনাদের শ্রীববীজনাথ ঠাকুর

Ğ

मिनाইमा नहीवां

শ্ৰদ্ধাম্পদেযু —

চোথের বালি ইংরেজিতে তর্জনা করা আমার পক্ষে বড় কঠিন। অগত এ কাদ করিতে আমার বিশুর সময় লাগিবে। Anderson: তাগের বালির বিশেষ ভক্ত—তিনি ঐ বইয়ের সমালোচনা উপলক্ষ্যে উহার একটি অংশ তর্জনা করিয়াছিলেন সেটুকু ফুন্দর হইয়াছিল। আমার বিশ্বাস তাগাকে অফুরোধ করিলে তিনি সাজি হইবেন। ইংরেজি করিতে হইলে যে যে অংশ বাদ দেওয়া দরকার ভাগা আমি দেখিয়া ঠিক করিয়া দিতে পারি। এবং তাঁহার ভক্তমা হইলেও আমি একবার দেখিয়া ঠিক করিয়া দিলে তাহার ব্রিবার ভূলের ক্রটি সংশোধন হইতে পারিবে।

আপনি শান্তিনিকেতন বিভালয়ের জন্য যে তিনটি ছাত্রের কথা লিথিয়াছেন ভাহার নধ্যে তৃতীয়টিকে ছাড়া অন্ত কাহাকেও লওয়া সক্ষত হইবে না। স্থানাভাব ঘটিয়াছে, এ মূলে অধিক বয়দের ছাত্র লইয়া ছোট ছেলেদের ম্থান জুড়িয়া ফেলা আমাদের পকে সকল প্রকারেই ক্ষতিকর। চতুর্ব প্রেণীডেও বাহিবের ছাত্র লওয়া আমাদের অনভিমত—কারণ ভাহাতে আমাদের চতুর্ব প্রেণীর অনিষ্ট হয়—অন্ত বিভালয়ের সঙ্গে আমাদের অধ্যাপনার পর্যক্ষা থাকাতে বাহিবের ছাত্রকে মাঝখানে লইলে আমাদের কান্ত বাহিয়া যায় ও অন্ত ছাত্রদের ক্ষতি ঘটে—এই জন্ম উনাপদ বাবুর দৌহিত্রটিকে বিদ্যালয়ে লওয়া সম্বন্ধে অধ্যাপকদের স্মৃতি পাওয়া কঠিন হইবে। এই সম্বন্ধে ভাহারা বারবার অনেক ছৃঃখ পাইয়াছেন বলিয়া বিশেষ স্তর্ক হইয়াছেন—বস্তুত বিনা বেতনে ছাত্র লওয়া তেমন গুকতর বাধা নহে। ইতি ২১ণে অগ্রহায়ণ ১৩২০

ভবদীয় শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

১৬। (स. ডि. এखार्मन।

वाकानौ-विदातौ विद्राध

শ্রীনির্মালা দাশগুপ্ত

সাজ্ঞবারিকভার বিষে দেশ আৰু এত কর্জরিত আর একট ছুই ব্যাবি যে বীরে বীরে মাধা ভূলিতেছে দেদিকে লোকের পরিপূর্ণ দৃষ্টি এবনও পড়ে নাই। দেশের নেত্বর্গও সাপ্র দারিকভার ঠেলা লামলাইতে ব্যস্ত। তবু এই নৃত্য বার্ণিক— প্রাদেশিকভা, এবন এমন পর্যারে পৌছিয়াছে যে প্রশিক্ষারে দেশে করেই বিপন্ন হইবে। যে অবও ভারতের স্বন্ধ দেশবাদী দেবিরা আনিতেতে, দে বন্ধ বুলার লুটাইবে

প্রাদেশিকভার মূল কারণ আর্থিক অভাব : বালালী চাকুরী লইয়া নানা প্রদেশে ছড়াইয়া পড়িয়াছে : ইহাতে সেই সব প্রবেশের অধিবালীদের মনে এই বলিয়া ক্ষোভ ও ইথার উপ্রেক হইভেছে যে ভাছাদের মূথের প্রান বালালী কাভিয়া লইল । প্রাণেশিকভা বালালীকে লক্ষ্য করিয়া বর্ষিত হইভেছে, যেহেতু সে চাকুরীলীবী । বালালী নিজের প্রবেশ ছাভিয়া অভ প্রদেশের চাকুরীভেও হাত বাভাইয়াছে । মাড়ওয়ারী, কল্পি, বোঘাইওয়ালা ইহারা প্রতি বংসর বিভিন্ন প্রদেশ হইতে লক্ষ্যক্রাট কোট টাকা লইয়া যায় তবু ভাছাদের লইয়া বিরোধ নাই ; ভাছারা যে ব্যবসায়ী । ভাছারা ব্যবসা করিয়া টাকা লইভেছে, ভেমনি ভাছাদের ব্যবসারে দেই সেই প্রদেশের লোকেরাও কালে লাগিতেছে । ভাছা ছাভা ব্যবসা চাকুরীর মত সহক্ষ ময় । সেইজ্ল চাকুরীগতপ্রাণ বালালীরাই এই বিরোধের ক্ষেত্র হইয়া উটিয়াছে ।

বুৰের সময় বহু মৃতন নৃতন কাজের স্ট্র হইয়াছিল, সেই জন্ম প্রাদেশিকভাও চাপা পড়িয়াছিল। মৃহপেষে বেকার-সমস্তা বাভিয়াছে, সেই সঙ্গে প্রাদেশিকভার ভীরভাও দেখা দিয়াছে।

ইহার উপর বিহার ও আসাবের লোকদের ক্তকটা 'ইন্-কিবিরট কন্প্রেল' বা হীন্দ্রকতা আছে। বালালীর বৃধি ও বিভাবভার অভ ভাহারা ভাহাকে ঈর্বার চক্ষে দেবে। ভাহারা মন্দে করে 'বিহার বিহারীদের অভ' 'আসাম আসামবাসীর অভ'—এইরপ রজা-ক্রচ না বাকিলে জীবন-র্ছে বালালীর বিকট ভাহারা হারিয়া যাইবে।

সপ্রতি কামশেদপুরের ব্যাণার লইরা তীব্র আলোচনা চলিতেছে এবং নৃতন করিরা আন্দোলন গছিয়া উঠিতেছে। তবু এ আন্দোলন নৃতন নর। বিহারে বিগত কংগ্রেদ বল্লিছের লগরই প্রাদেশিকতা প্রথম সুস্টভাবে আদ্প্রকাশ করিয়া-ছিল। মন্ত্রীয়া ক্ষরতা হাতে পাইবার সলে সলেই বালালীদের বিরুদ্ধে প্রতিকৃল আচরণ স্থর করেন। চাকুরী, চাকুরীতে প্রান্থি, কম্টাই, ভূল কলেজে স্থান্তি— লর্কবিষয়েই বালালীকে কমন করিয়া রাবিবার ব্যবহা করা হয়।

এই দমন-মীতির বিরুদ্ধেই ১৯৩৭ সালে বিহারে বালাগী সমিতি গঠিত হুইরাছিল। সমিতির উদ্দেশ ছিল প্রাদেশিকতা দূর করিবা আতীয়ভাবাদ প্রচার করা এবং বিহারে প্রাদেশিকভার প্রকোশে পজিয়া বালালীরা যাহাতে ক্ষতিপ্রভাব হয় সেক্ষর বালালীর সামাজিক, আধিক ও শিক্ষা সম্বতীয় উন্নভির ক্ষল চেপ্তা করা। সমিতির কাক্ষ বেশী দূর অঞ্সর হয় নাই, যদিও সমিতি এবনও বর্তমান আছে। বহু উচ্চ আদর্শ থাকিলেও ইহার কার্য্যক্ষেত্র চাকুরী ও ভোমিসাইল সার্টিকিকেট লইহা আন্দোলনেই সীমাবঙ ছিল। বালালীদের নিজ্ঞেদের যে সম্ভ গোষক্রট আছে সে বিষয়েও সমিতির লোকেরা বা সাধারণভাবে বিহার-প্রবাসী বালালীরা মোটেই সঞ্চাপ ছিলেন না।

चौकात भ! कतिश छेभाश माटे य विद्याद करे वालाजी বিধেষের কল বালালীরাও কতক অংশে দারী। বিহারীদের णाहांदा क्यंबल अध्हरक (प्रत्य माहे : वदश पदारदहे व्यवकांद eात्य (पविद्यारकः शृक्षाभाद्यवः छेश्यवाधिष्ठ वालामीका भावाद्यन्त्रः विश्वेतिषद चायश्चन कानाव ना : विश्वेतिषद স্থিত মেলা-খেলার তাহাদের বিশেষ আত্রহ নাই। আবর্চ ইছার বা'ভক্ষমও আছে ভবে সাধারণত: এইরূপই দেবা यात्र। विहादत व्यामक महादहे 'वाक्षानी भाषा' नाय भनी चारक। वाकामीका भग्रत्वत मानाम्वारम पाकरम् अर्थे বালালী পাভাতেট অধিক সংখ্যার থাকে। ভাষা ও जरप्रचित्रच बिन (यथारन चारक (भवारनके चनिर्व क्वेश बाका মাসুষের সভাব, সুভরাং বালালীদের এই একল-বাস-প্রীভিতে বিশ্বিত হইবার কিছু মাই। কিছু এই ভাবে এক ভারগার দলবছ হট্ডা বাকিয়া বালালীয়া সভীৰ্ণ গঙীতে আৰম্ভ হইয়া পভি-রাছে। ভাহাদের যেলামেশা, দায়াজিকভা বীর সমাজেই নিবছ রহিয়াছে। বিহারী-সমাজ হইতে ভাহারা দূরেই রহিয়া সিয়াছে। বিহারীরা বাদাদীর এই আত্মকেন্ত্রিকভা ভূলিভে পারে নাই। ভাৰাৱা ভূলিভে পাৱে না বে, বালালীরা ভাষাদের মধ্যে থাকিয়াও দূরে বহিয়াছে। বালাগী সমিভির দৃষ্টি এই मिटक श्राष्ट्र नारे। विशास बाकिया खबू वानानीयन वार्ष দেৰিলে বিহারীদের সহামুভুতি ও সমর্থন পাওয়া ঘাইবে 'वाक्रामीटक वाक्रामी या वाहाहरम दक वाहाहरव'---बरे मीछि वारना (मटम हनिएक भारत: किस विशास वाकिश ভবু ৰালালীদের বাঁচাইবার চেষ্টা না করিয়া উভয় সম্প্রদারের वार्वहे (प्रया छेडिल । विहाबीरमंत्र वार्व रमिवात अन विहाबीबाहे আছে সভা, ভৰু বালালীদেরও এ বিষয়ে সহযোগিতা एबिटन विचात वृत्तिरंग वाकानी चाचात पत मत, जायन।

এই বে বালালী-বিবোৰ কংগ্ৰেস মন্ত্ৰীকের আমলে প্রবল্ হইরা উঠিয়াহিল, বুছের সময় ইহা মন্ত্ৰীভূত হয়। বুছের মধ্যে বহু মূতন মূতন কাজের স্কট হইয়া বেকার-সমস্থা কামছা গিয়াহিল, সেইজন্ত প্রাদেশিকভাও চাপা পভিয়াহিল। হুছ-শেষে বেকার সমস্থা এবং সেই সলে প্রাদেশিকভাও বাড়ি-রাছে। ইহাতেই বুকিতে পারা যার বে, প্রাদেশিকভার জন্দ নারী আমাদের আধিক অবহা।

ৰুছাতে বেকার-সম্ভা বাছিবার সঙ্গে সঙ্গেই বিহার ভয় পাইতেছে বে, ভবিষাতে এই সম্ভা ভারও ভয়াবহ হইরা উঠিবে। সেই ভঙ কোন চাহুরীই বালালী পাইলে সে ভাবে একটি বিহারী যুবকের বিষয় ক্ষতি হইল। এই বেকার-সম্ভা বৃদ্ধির সলে সঙ্গে প্রাণেশিকতা ক্রমেই তীত্র হইতে তীত্রভর হই-তেহে। ভামশেণপূরের ঘটনা ত বালালীর বিরুত্তে বিহারীদের সংগ্রাম চালাইবার উপলক্ষা মাত্র। যে বিধেষ বহু দিন ব্রিহা স্কিত হইতেছিল তাহা এই প্রোগে ব্যক্ত হইয়; উঠিয়াছে।

ভামশেলপুরে বালালী সমিতি যে দাবি উপাপন করিয়াছিল তাহা অযোক্তিক নয়। ভাষা ও সংস্কৃতির ভিঙিতে প্রদেশ भूनर्गर्देश करा करा अराज्य स्थाप । । । अहे भी जि अनुशाबी বিভাৱের বাংলাভাষী মানভূম ও সিংভূম অঞ্চল বাংলাদেশে কিরাইরা দেওয়া হউক- এই ছিল বালালী সমিতির দাবি। विट्यस्य: अहे चक्ष्म शृद्ध वारमारामावर चक्षम हिम। ১৯১२ ब्रेक्टाट्स वेश्टबस नवन्याक अवस्थितिक वारमा एवए বিভিন্ন করিয়া বিহারের অন্তর্ভুক্ত করে। সুজরাং এই সব অঞ্লে যে সকল বালালী আছে ভাহার৷ আপনা হইভেই বিভারবাদী হইয়া পঞ্জি। ভাহার। বাহির হইতে বিহারে আদে নাই। ভৌগোলিক দীমা অনুধায়ীই ভাছারা বিহারী। खवानि इहारम्ब क्षत्र एविमाहेम मार्विक्टक है होने खरर চাক্রী, শিক্ষা ইভ্যাদি স্বাপারেও বিহারীদের সহিত ভাহ'-দের ভারতম্য করা হয়। ইং। ভারাদের পক্ষে অভাও ও:খের विश्व । अक्षित्क छाष्ट्रास्त्व (कांव कविश 'विश्व)' कवा इहेशाब् कि चार्कारक विद्यादी एक लागा प्रय-प्रविधा इहेरल ভাছাদিগকে বঞ্চিত রাখা হইয়াছে।

কিছ বাসালীদের এই দাবি পূর্ণ করা হইলে বিহারের অবস্থা অভ্যন্ত শোচনীয় হইবে। সিংভূম, মানভূম বানিজ সম্পদে পরিপূর্ণ। একে ত বিহার বাধ্য-বিষয়ে ঘাটভি-প্রদেশ। ইহার উপর এই বনিজ সম্পদ্ধ বদি তাহার চলিয়া যায় তাহা হইলে বিহারের অভিন্ন নামনাত্র হইনা পড়িবে। এইক্টই বিহার এই আন্দোলনে শুক হইনা উঠিয়াছে।

বাঙালীদের বিরুদ্ধে বিছারীদের এই সংগ্রাম এখনও চলি-তেছে। কাগজে-কলমে কঠোরভার কিছু হ্লাস হইপেও আসপে কিছুই হর নাই। পূর্বে নিরম্ব ছিল ভোষিসাইল সার্টকিকেট পাইতে হইলে বিহারে কমি বা বাভি অর্থাং ছাবর সম্পত্তি থাকা চাই। এমন কি ভনিনীর বাংগা দেশে বিবাহ হইরাছে কি না লে ব্যরগু লওরা হইত। অবচ ১৯১২ সালে বিহারে বাংলা হইতে বিজ্ঞির হইবার পর যে লব বাগালীকে বিহারে সরকারী কাধ্যবাপদেশে রাখা হইরাছিল ভাহাদের সকলের বাভী তৈরি করিবার সক্তি ছিল না। বর্ত্তমান নিরম্ব এই যে,

বিহারে কর বা দশ বংসর বাস হইলেই ভোমিলাইলড্ হইবে।
কিন্ত ভোমিলাইলড্ হইলেও বিহারে বালালীর চাকরী
পাইবার সভাবনা ক্রমেই প্রাস পাইরা আসিতেতে।

বালালীর প্রতি অবিচারের ক্ষেকট দৃষ্টাভ এই প্রসংক্ষিপ্রের করা যাইতেছে। বিহারে পঁচিশ বংসর আছেন এমন বালালী অভ্যারের এক ছেলে ভোমিসাইলভ্ সাটকিকেট পান নাই। অবচ এই ছেলেটর বিহারে অব্য ও বিহারে বিশ বংসরের উপর কাট্যাছে এবং বিহারে ভাহাদের বাড়ীও তৈরি হুইতেছে।

ষিতীয়, এই বংসরই এক বিহারী মহিলা বিহারে প্রবাসের অভাবে কানী হইতে ভোমেন্টক সায়েল (বরকরা বিদ্যা) পাগ করিয়া আসিরাছেন। সঙ্গে সঙ্গে যে বালালী মহিলাটি গত চার-পাঁচ বংসর বরিয়া পাঁটনার মেয়েদের কলেকে উচ্চ বিষয়টি পভাইতেন তাঁহার চাকুরী পেল। বিহারী মহিলাটি নেই ম্বলে নিযুক্ত হইয়াছেন। উপযুক্ত বিহারী পাওয়া গেলেই তাহার কও বালালীকে খান হাছিয়া গিতে বাব্য করা হয়—এইরূপ গুটাভ বিহারে বিরস নয়। ছাছাইবার ওমুহাত একটা দেখানো হয় অবগ্র।

ত্যু চাকুরীকেজেই নছে, শিকাকেজেও যে এইজ্বপ প্রাদেশিকতা আগ্রপ্রকাশ করিতেছে তাহা অত্যন্ত লজাক্ষকত প্রশোধনীয়। এ বংসর বিহারে ম্যাট্ট কলেশন পরীক্ষায় প্রথম দশট স্থানের মধ্যে আটটই বালালীরা অধিকার করিমাছিল। মাতৃভাষার ইতিহাস ভূগোল পরীক্ষা হওয়ার বালালী পরীক্ষকেরা বালালী ছাত্রদিগকে অধিক মধ্র ধিয়াছেন এই সন্দেহ করিয়া পাটনা বিশ্ববিভাগদের ম্যাট্ট কের শুটনি বোর্ড ইতিহাসের বাতা পরীক্ষকদের কাছে পুনরার পরীক্ষার্থ পাঠাইফা দেন। এই সকল বাতা পাঠাইবার আবে বালালী প্রধান পরীক্ষককে একবার কানানোও আবর্তক মনে করে নাই—তাহার সঙ্গে পরামর্শ করা ত ধ্রের ক্ষা। এই যে সন্দেহ ও অপ্যান তাহা ওয়ু পরীক্ষকের নম্ন, সম্প্রে বালালী জাতির।

এই বাদালী-বিহারী বিরোধের অবদান কিনে ? ইভিপূর্ব্বেই দেবা গিয়াছে প্রথম কারণ আর্থিক। দেশের আর্থিক
অবস্থা এখন ভাবে ঢালিয়া শূতন করিয়া সান্ধিতে হইবে
যে লোকের অভাব অন্টন থাকিবে না। ভাহা হইলে এই
বিরোধ দূর হইতে পারে। অভাবে স্থাব নই হয়। লোকের
অন্নবপ্রের অভাব থাকিপেই ভাহারা অভের উপর বিরূপ হইয়া
উঠে, ভাবে খে অপরেই ভাহারা বিক্ত করিয়া রাধিরাছে।
যেদিন অর, বরা ও শিক্ষা সকলেরই নিক্ট স্থলত হইবে সেমিন
প্রদেশে প্রদেশে এভ রেষারেষি থাকিবে না। ভবে সেমিন
করে আলিবে কেই বলিভে পারে না।

বর্ত্তমানে আমবা খাবীনতা লাভ করিয়ছি—যদিও
আংলিক। এই সভিক্ষণে পরস্পার কলহ করিলেই সকলেরই
সর্ব্যনান। খাদ্য ও বরের অভাবে সকল প্রদেশই দারুণ ছংবে
দিনাতিপাত করিভেছে। প্রাথেশিকতা তুলিয়া সকল প্রদেশ
একবোলে একপ্রাণ হইয়া না চলিলে অবও ধাবীন ভারতের
আলা ধপ্রই রহিয়া যাইবে।

আজ—আগামী কাল

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

٠. ن

বাড়িতে পা দিতেই হেমলতা একবানা পাঁজি এনে বললেন, এই মানে কবে ভাল যাত্রার দিন আছে দেব তো ? যাত্রার দিন। কেউ বাপের বাড়ি যাবেন বুবি। বার হাত বেকে পাঁজিবান নিয়ে—নলয় উপ্টাতে লাগল।

হেষলতা বললেন, আমি তীর্বে বাব। আর ভূমি আমাকে নিয়ে বাবে।

ভৱে বাপরে---এরই মধ্যে আমার তীর্বে বাবার বয়স হয়েছে !

षि इ:८४ (२४०७! ८२८न (४०८०४)।

আমাকে তীৰ্বে প্ৰিয়ে আনা তোমাদের উচিত নয় ? অধর্ম হয়ে পড়লে বর্ম কর্ম হয় ?

মদার বললে, মেক্টাকে চিটি লেব—ওসৰ কাম সে ভাগই পারবে।

হেমপভা গঞ্জীর হলেন। বললেন, বলতে গেলে এত বছ সংসারটা ভারই বাছে। সাহেবের আপিলে চাকরী—ধট্ বলতে কোবার নিয়ে বাবে শুনি।

আমিও এবার সাংহ্রের আশিসে চাকরী নেব মা।
মা হাসলেন না—গভীর বরে বললেন, তথন তোষাকে
কোন কথা বলব না— এখন তোচল।

রহত্ত ক্ষাট। উভিবে দেওরা গেল না। মা তীর্ণে বাবেনই। ভবু তীর্ণ করার আকাক্ষা থাকলে নিজেবের অপবিবাধন করে প্রেছাতুর মাকে নে প্রতিনির্থ্য করতে পারত, কিন্ত পুণ্যসকর এ ক্ষেত্রে উপলক্ষ মাএ। মন্ত-দাছর কাছে সহাাসী-ছেলের বার্তা পেরে মার মন ছুটেছে নেই দ্র-ভন্ম দেশে। যে স্নেছ পুণ্য-সম্বাকে বার বার প্লেটের লেখার মৃত্ত বুছে দেই সেই বাইরে বাবার ক্য টান দিরাছে। মা ভনবেন না।

স্চিত্র। বললে, ওবু মা নর দিনিও কাপত ভাষা গোছাছে। মলর বললে, ভাহলে আমার স্টকেসটাও আজ রাভিবে ভাহিবে লাও।

खरद (य रमरम याव ना ?

না নিয়ে উপায় আছে ? ভোষার ভো বলেছি—আলেয়ার পিছমে ছোটা আয়ার কর্ম নর। ইা করে ভাবছ কি--ভীর্বে যাব বা--কলকাতার পালাব।

স্কৃতিতা বললে, সৰ কথা খাকা মনে করে উভিরে বাও কেম।—মার ব্যবাচী বোক না।

प्रकार रकाक --- रवि वानरे **धें एक छो**र्स निरम्न बांच ना ।

আশা ভুল হলে সৰ মাজ্য কি সামলে উঠতে পাৱে। তথ্য বিদেশে আমি কি করৰ বল তো।

স্থচিত্রা বললে, সে কথা আমিও ভেবেছি। উপায় ভেবেছ কিছু ?

ভারপর হ'লনে উপায় উত্থাবন করতে লেগে গেল।
একের উপায় অভের রুক্তিতে কেটে যেতে লাগল। কোনটা
বুদ্ধির্বাস্থ হ'ল না—কোনটা মনে হ'ল ছেলেয়াস্থি—কোনটা
আবাত দেওবার মত পরিত্যক্ত হ'ল।

শ্বশেষে মলর বললে, শামার ছঠাং যদি ছার ছার ভো ভাল ছার।

স্চিত্রা হেলে বললে, সেটা ভো ভোষার হাত নর।

নিশ্চর আমার হাত। মলর সোংসাহে বিহানার উঠে বসল। খর না হয়ে এমন কোন অপুবন্ধ তো হতে পারে যা আছের চোবে বরা পড়ে না অবচ বিহানা হেছে ওঠা নিষেব। এমন কোন অপুবের নাম কর দিকি ?

পুচিত্রা বললে,- মাকে ঠকামো যেতে পারে কোন অপ্লবের গোহাই শা গিয়েও—কিন্তু সেটা উচিত হবে কি গ

ৰ্ণয় যাখা নেড়ে বললে, ঠিক বলেছ: একটু পরে বললে, আঞ্চের রাতটাও বড় ক্য সময় নয়---

স্তিত্র বললে, ভাহলে আঞ্চল হিন্দ-কৌজের গল বল । মণৰ বললে, সে ভো ভূমি কাগজে পভেছ। সুতিত্রা বললে, ভবু বল।

মগর বগলে, কাবুল থেকে রাশিরা দিরে বার্লিন গেলেন নেভানী। সেবানে প্রথমে আজাদ হিন্দ দল গড়লেন—সাড়ে ভিন হাজারের বেশী লোক পাওরা গেল না।— পাওরা বাবে কোবেকে। বেনগালী—এল্-আলেমেন মানে লিবিরা থেকে যুক্ত-বন্দী ভারতীর যে ক'জনকে পাওহা গেল—ভারাই নাম লেবালে দলে। ভারপর জাপানী সাবমেরিম করে নেভালী এলেন সিলাপুরে। লেবানে জাপানের সলে সর্ভ করে নভুম করে গড়লেন আজাদী দল। হাজারে হাজারে এল মাগুয়— লক্ষ কর্মিল টাকা।

অত্ত জীবন, অত্ত তাঁর কর্মপালী আর তেমনি বিভ্ত কর্মকেন। ইংরেজের নজরবলী থেকে পলারনকাহিনী কি কন বৈচিত্রাবহল। কোথার কাব্ল, কোথার বালিন—সিলাপ্র টোকিও—সাইগন—ও রেজুন। তাঁরই আজালী দল হুশো-বহরের পরাধীন ভারতের বাজিতে বভুন করে বুনলে বাধী-নভার বীজ। ইন্সালের বৃত্তিকার বাধীন বীরের ধল নিবে এল সর্ফের জোরার—বার আথাতে আজও কেঁপে উঠাহে এর মাটি—আর আকাশ। বে মাসুষ চরিশ কোট মাসুষের
বুকে জীবন এনে দেয়—জার মৃত্যু খোষণা করবে বিখে এমন
ছঃসাহসিক কে আছে।

গল শেষ হ'গ—নিভদ রাজির প্রক্রন্থলৈ শূন্য পথে চলে যেতে বেতে স্কৃতিত্বার জানালার বাবে নির্কাক বিস্পন্ধ বানিক উ কি দিরে পেল। সময়ের প্রোতে তারা কেনেই চলেছে। তারা জেনে যেতে যেতে উজ্জ্ল হয়ে উঠছে কোষাও—কোধাও জকুরাগলিও জারঞ্জ কপোলের মত স্কুক্ষার—কোধাও বা বিছাৎ-বিদীপ মেথের গায়ে জয়ি-তরবারির জাবাত করতে। কোম জাবর জাবাত করতে। কোম জাবর জাবাত করতে। কাম মহত্ত কারো জানের বর্ত্তিকায় একট নতুন শিবা জেলে দিতে দিতে চলেছে তারা। বর্ত্তমান বহে নিয়ে যাছে জতীতকে এক জনাগত কালের সমুদ্রসমীণে।

প্রছর খোষণা করে শুগাল ডেকে উঠল---এামের প্রান্তে। চমকে উঠে স্থাচিত্রা বললে, ছুমোও।

मनश्र मौर्च निषाम (करण दलरल, ग्रूथ व्यामरक मा। .

ার নয়—এক অভাবিত গটনা মগয়কে তীর্ণ থাতার দায় থেকে উদ্ধার করলে।

भकाम (बदके भाष्ट्रभाष्ट्र चांत्रस्थ ए स्वर्षः । शहे रमरमहे কিছু যাওয়া সপ্তব নয়। সহত্ৰটা শিকড়ে বনপতি আকছে शांद मरमादद माहि: छात (बदक प्रतिस अधिस अधिस विषक्ष इ.इ.ज.क भिट्नत याथात नव (छ। एत् (इम्मारा प्रान्य কাক ভাচাভাড়ি সার্গেন: রারা বাওয়ার উপদেশঞ্স সংক্ষেপে পিলেন-কাঠ বা কয়ল: কোন বীভিতে পোছালে অপ্তয় হয় না-ভাজা তথকাবিজ্ঞালার হিসেব করে তেল विवाद अनाभी कि-भक्र कृष्टिक क'वाद कावना खाद क'वाद গুকুনো বিচালী দিতে হয়---ছেলেদের স্থি কাসি ইংয়াদির लभव नकद (यार्थ--- भद्रश-र्शाक्त) क्रम भिनिष्ध श्रान कदारन'---श्रुर्विका भावाश्रत्वे क्लामानि कीहा जनव या नवप भरव দেওয়ার বিধান-কোনটাই বাদ গেল না-ভাষার ওছোতে पूर्वा अकि विभ वार्य। जान जान बून कनाई अर्थ जिनि थि यहरा यथना--- এक यारभन्न यख जानामा करत- जात (एरक हुटक मा (नटन चंत्रह (नभी एटन-व्हें हुट्स (भाकास महेल कवार । अभव (भारत ८५८क वार्ष)--- आमाम मण (नश्या बार्छा--- (बारम रम ख्यां --- नश्मारवद कि र्क्र कार्या (य रम गृहिवैटि भारत मा। कथात वटन नाः

चार्वे निर्देश ४५---

তো খোড়ার ওপর চড়।

সংসার হচ্ছে ভেমনি বছ-চার্টিকে চোৰ আর ছঁস বেৰে চালাতে হয়। এই সব গোহানোর কান্ধ পুরো দমে চলতে।

বেলা দুণ্টা আন্ধাৰ মলয় বাজাৱের দিক থেকে ফিরছিল

পীরের এক ছোকরা বদলে, মলমদা খাপনাকে একজন বুঁজছিলেন।

(4 ?

মনে হ'ল বিদেশী। কুলির মাধার মোট রয়েছে সঞ্চে একজন স্থীলোকও রয়েছেন দেবলাম — বললেন--বিদেশ বেকে আগছি।

কে এল কোখা খেকে ? নিকট বা দূরের বন্ধু আনেকের নাম মনে এল-- কিছ ভাদের কেট ছঠাং খোঁক করে এই বারেই বা আসবে কেন।

বাভি প্রাসভেই সন্দেহ গঞ্জন হ'ল। মনীল— তার কলেজবন্ধু; তারপর কর্মাক্ষেত্রেও ওরা ছ'লনে এক সলে নেমেছিল।
মুক্তের মবাই ওদের আলাণ-পরিচয় আবার মুক্তের মবোই
ছাড়াছান্তি। এই মুদ্ধে ভারত স্থাছ— ত্রিচিশের নীতি প্রাপ্ত রূপ না নেওরার কংগ্রেপ বোগ দের নি। সুভরাং কংগ্রেপ-সেবক হরে এদেরও মুদ্ধে যোগ দেবার যুক্তি ছিল না।
একদিন মনীল বললে, মুদ্ধ শেখা আয়াদের দক্ষার।

भन्य वन्नात्व किन्न कर्पात्र विद्यान

মনীশ ছেপে বললে, আথ্নানাং সভতং রক্ষেৎ-- এই নীতিই শবচেয়ে বভ: সে যুদ্ধে নাম শিবিয়ে রেজুন চলে গেল।

ভারণর প্রাচ্যে হুক হ'ল খেতকাভির ভাগ্যবিপধ্যয়। ভারতীর দেনাদলও দেই বিশ্বাহের মূবে পঞ্চা কিছু ভারা ভেসে পেল না। এক শক্তিশালী নেডা ভাগের একত্রিভ করলেন। এ মুখের প্রান্ত কর্ণ তার কাছ বেকেই ভারা कामाल-अधिभारक भीका एरवाराजा । विश्वीय जान दक्काध विष्ठादित मधाद्यांक कृत्य-कादा क्षष्ठां कदल बहे , मीवर काहिनौद्यः अक त्रामार्क (बदक बाद अक शामार्द्धा ... अ भव काटमत्रचे निविध त्रवट्य पर्वेण । युष्काश्वत क्रमण्ड धामिशायक জেৰে উঠল--বিচিত্ৰ ছলনালাল বছৰতাকী সঞ্চিত কাত। জার আর ভাকে যোহএও করতে পারছে না। সাস কেরায় विठाइलक्ष्म भाष र'म-- यभौदा खिकारमहे मुक्ति (भारतन--ষ্ট্রীশন্ত একি পেনে ফিরে এসেটিল কলকাভায়। এসব मार्क मार्गिव कथा। जाव अब रम ठरण याय---- अभिका रामध কোন একট ভেগা-লহতে: বাঁগীর রাণী দলের অভুকরণে মেয়েদের সামরিক লিকা দেবার প্রয়োজন অনুভব করেছিলেন শেৰানকার কংগ্রেপকথীর**া। তাঁদের নির্দেশ সে মেনে** নেয়া আতীয় সৈনিক ছওয়ার পুবিবাটুকু এই যে বিদেশীয় ্কান প্র'ভঠানের গলে অমবিনিময় করার প্রতি ভাগে না। ভালের দিক বেকে এই সব পোক অবাঞ্চিত ত বটেই। अवह काजीव रिश्मिक रा जांद जाशीवश्वरमद कीवन बकाव দায়িত্ব অধীকার করা যায় না। বাধীন আভি ছলে-এদের জীবিকা অৰ্জনের পথ--সসন্মানে বোলা বাকভ---কিছ দাৰীনতার দারদেশে পৌহলেও---ভারতবর্ষীয়দের সে অবিকার जनमञ्ज वर्षात्र मि ।

সেই জেলা-শহর থেকে হঠাং মনীশ কেনই বা এল--ভার সঙ্গে নিয়ে এল একট যেয়েকে – মলর বুরতে পারলে না।

স্থৃচিত্রার বাবহায়--- মেনেট অধ্যর মহলে জায়গা পেয়েছে--মনীশ ইভিমবোই হাত মুধ ধুরে এক কাপ চা নিরে বংগছে
বাইরের খরে।

প্রথম পরিচয়সবর্জনা সংক্ষেপেই শেষ ছ'ল। মনীশ বললে, আপাতত ছুই এক সপ্তাহের ভঞ্জানার দিতে ছবে।

কেন-এ গাঁৱেও কি বাদীর রাণ কৌন তৈরী হবে ? দরকার হলে হবে বৈকি। আমার ক্যাটা শোন ভবে। এবন নয়-নাওয়া-বোওয়া আহারাদি কর—

কিছ সব না ভানে ভূমিও আমাকে আশ্রয় দিতে পারবে কি ?

গেটা এমন কিছু গুরুতর কাশ নয়। যিনি আতার দেবার তিনি ত সব ব্যবস্থা করেছেন।

কিছ তিনি জানেন না---

না-ই বা কানজেন--

বাধা দিয়ে মনীশ বললে, যদি কোন গুরুতর অপরাধ করে এখানে এগে থাকি---

গুঞ্জর অণরাধ করা ভোষার পক্ষে বিচিত্র নয়—বেহেছু ভূমি লালকেরায় আটক ছিলে।

ताक्टेन्जिक चनदारवद क्वा वनकि ना--- नामाकिक---मनस चक्र करत रहरन फेठेन।

মনীশ জ কুঞ্চিত করে বলগে, যদি আমি মেয়েটকে ইলোপ করে নিয়ে আগি ?

मनस रनाल, देरनालरमचे ? स्वरक्षेत्र कारानिका ? चारेनरक कस कराव छ ?

ভয় করছি একটা বিত্রী ব্যাপার না ঘটে। ভোষরা অভিবি—ভোষাদের অসন্মান না হয় এটুকু দেবা অস্ততঃ আমার কর্মবা।

शिक्षत नामाकिक चनवानरक चन्न कर कर ना ?

মৃদায় ক্ষাব না দিয়ে হাগলে। বললে, এক মিনিট— আমি আসহি।

নিকের মনে বিচার স্থান হ'ল, মনে হয় না এরা সামাজিক কোন অপরাবে অপরাবী।

খোতলায় উঠবার মুবে মা ভাকলেন, মধ্—ভনে বা তো।
লে এলে বগলেন, ভনলাম বেলেট ভোমার বন্ধু। বউমার
সংল্ মেষেট ঘণন ওপরে যায় মনে হল সে কাঁদছে। ওর
লাভাটী কি ওকে বুব যগ্রবাদিত ?

মলয় বললে, জানি না ভো?

ৰাছের অধুগৰিংলা পরিত্ত হ'ল না। বললেন, বাই হোক—ব্যাপারটা ভাল করে জান। একে আহার কুপাল বজ্য-অবাভির ওপর না অবাভি জোটে।

मनव दनान, चाक्ना मा-- वडेडे मालकीय चलाहारव

ষদি পালিয়েই আলে—ভূমি ভাকে ভাষণা দেবে না বাছিতে ?

মা বললেন, ভারগা দেব না এমন কথা বলিনি ভো— ভবে ভাণাভি বিটমিট এ সব ভামি ভালবাসি না। ভামার শোকা-ভাণা শরীর—এভ হালামা পোরাভে পারব না বাহা।

আছা জেনে বলব ভোমার। মগর যাবার উভোগ করতেই তিনি বললেন, জিজেন কর বউটর বাঙ্যা হরেছে কিনা। আমাদের হজাতি ভো ?

মলম বললে, বছুটকে জানি ত খজাতি কিছ মেয়েই---

মা বললেন, আর আলাসনে বাপু! একটু চুপ করে থেকে বললেন, ভা কথাটা মন্দই বা বলেছি কি । আভ নিয়ে ভো ভোদের ভারি মাধা বাধা । আভাতের ধরে বিয়ে ধা হচ্ছে না—এই নিমেই ত বাপে-ছেলেয়—মায়ে-বৌয়ে এভ ধেয়াবেরি।

মগর নীরবে সেধান থেকে উঠে গেগ। কয়েক বছর
আগেকার কথা তার মনে পছগ। ক্ষু-সার্থের অভিগাতেই
—সাধাত্যাভিমান মার মনে কি প্রবণ হয়ে ওঠে নি ?
স্কিনাকে মানিয়ে নিভে এ সংসারে বেশ বছ রক্ষের ১৮উ
ওঠেনি জি।

স্ভিত্রাকে একাজে শেষে সে ওবোলে, ওদের কথা কিছু ভনেষ গ

क्रिका रमाम, अधन क्या किहू चार्य नाकि ?

ৰনীশ বদহিদ কিনা যে আমাদের কথা শুনলৈ ভোমরা হয়ত—

আশ্ৰয় খেব না । স্থানি সাধারণভাবে কথাটা শেষ করে। থিলে।

মণয় অবাক চোখে স্চিত্রার আপাধ্যস্তক নিরীক্ষণ করলে। বানিকক্ষণ পথে বললে, যদি ওরা সামাজিক কোন অভায় করে এবান্যে এসে বাকে—-

সে বিচার পরেই করব না হয়।

न। न।, यपि---मश्र देख्ख्छः कद्राल।

মলমকে আখন্ত করে ছচিত্রা বলে উঠল, ইলোপনেন্ট পথান্ত যেনে নেওয়া যেতে পারে—কি বল গ

মণর ওর হাত চেপে বরলে, স্মচিত্রা ভূমি তাহলে সব ভনেছ। আমি ঠাটা মনে—

pe । अरहे उर्क्सी (हरण ८म (हारबंद देशिक क्दरम ।

মেৰেট ততক্ষণে বাৰান্দাৰ বেৰিয়ে এলেছে। মদৰ ও
স্কৃতিআকে একজে দেবেও ও বাৰলে না—অকৃতিত গতিতে
ওলের সামনে এসে ইডাল। ইডিয়ে এক মৃত্তি কি ভাবলে।
ভার পর মদরের পারের কাছে ইেট হতেই ও বিত্রত ভাবে
সরে যাবার চেটা করলে।

মেৰেট ভভক্ৰে ওর পা ছুঁরে প্রণাম শেষ করেছে।

স্চিত্রা মূখ টিপে টপে ছাগছিল। বললে, সভায় করলে ভাই।

स्या इंद कृत्न वन्तन, चनाव क्रवनाय नामा ?

এ প্রশ্ন সরাসরি দে মলরকেই করলে। আর কুঠা প্রকাশ করলে থকে অলমান করা হবে। কঠে ওর সিমা করণ স্থা —প্রশ্নের ভলিতে স্বিচারের প্রত্যাশা। মলর চোণ হুলে বললে, মা—অভার করনি।

ছট বেরে পরস্পারের পানে চেয়ে ইকিতমর হাসি হাসলে। বেরেট বললে, কোন অভার করে আপনার বাছিতে চুকবার সাহস হ'ত না দাদা। তবুও অনেক কথা বলবার আছে।

আক্রা---বাওরা-দাওয়া ব্লে স্বাই এক শদে বঙ্গে

আছারাদি শেষে ওরা চারজনে মলয়ের শোবার বরে এক্তিড হ'ল। মলয় আপতি করলে, একটু বিশ্রাম কর।

মনীশ বললে, ধৰেষ্ট বিশ্ৰাম ছয়েছি--- এবার বস। বউদি আলনাকেও বসতে হবে।

(मरब्रेड फेर्ट परवर भवका वह करव निरम ।

পু'চতা বললে, ধরজা বন্ধ করার দরকার ছিল না ভোমরা রংহছ, এ যার কেউ জাসবেন না।

ষেধেট বললে, কেউ আমাদের কথা ওনলে কোন ক্ষতি ছবে না—ভবে ছেলেরা এদে গোল করতে পারে এই ভেবে — । সে অর্গল মুক্ত করবার ক্ষম্ভ এগিয়ে গেল।

প্রতিয়া বগলে, থাক- । ঠাকুরপো পুর সংক্ষেপে বগুন। উন্ন থাবার ভাগ বা মন্দ কোন কাকেরই ব্যাখ্যা গুনভে ভাল-বাসেন না।

মগ্য বল্পে, আর ভূমি ?

হেমপতা ভাকপেন-ছোট বৌমা শোন।

উপর থেকে সঞ্জর্পণে জেমে এল মন্দাকিনী। বগলে— ছোট বউকে এখন ভাকবেন না মা—গুরা চারকনে নিলে ছয়োরে বিল দিয়ে গল করছে।

किटभन्न श्रेष ?

কি কানি মেরেট কেন ওর বাষীর সকে চলে এসেছে— সেই পরই হবে হয় ত।

(एमण्डांत मूर्ययाना हक् हक् करत छेईल।

মন্দাকিনী বগলে—আপনার দোকা দেওয়া পান আর ক্ষা—

থাক বাছা—ভূমি বরং ণীচের ভাঁছার ওছিরে নাও— আমি একবার ছাদের বিছানাপভরতকে। রোভুরে উপ্টে দিরে আসি।

হাদে যাবার পথে—পুচিন্নার দরের পালে একবার উকি নারলেন। একটু এগিরে পেলেন—ওদের দরের দিকে। যে কালি ঢাকা বারান্দাটা ওবের ঘরের উভর কোণ বেঁগে—
সিঁছির পোড়ার যিশেছে—সেইবানে এসে বাড়ালেন।
দেওরালের একটু ওপরে বুলগুলি নত—কিংবা হাওরা
চলাচলের পথও বলা যার—সেধান দিরেই ঘরের ভেতরের
কথাঙলি অবিভিন্ন শব্দপ্রবাহে ভেনে আসহে। মনোযোগী
শ্রোভার পক্ষে সে ধ্বনির অর্থ উভার করা কটিন নয়।

খভৱাং হেমলভা ছালে যাবার কৰা ভূলে পেলেন।

নাৰাৱণত প্ৰণন্ধ-কাহিনী বেমন হলে বাকে, মনীশ-অনিমাৱ গল্পও সেই ববণের সামাজিক বাবা প্রবল না হোক—অল বাবা ছিল। আই, এন, এ সাত্রা দেশকে চু'লো বছরের ভূলে-যাওয়া অপুর্য এক বস্তর আহাদ দিয়েছে; অভাবিত বিনিস। এ কিনিদ শেয়ে আভি আল্লাদ্যানে প্রতিষ্ঠা সাভ করছে—আশা হচ্ছে ভাবের বঙা নিলিয়ে গেলেও বস্তর কাঠিল পুর্ত হবে না-- হয়ত নতুন কগতের মাবে --নতুন ভারত নভুন গৌরবে ছান নেবে—-নতুন মাহুধবা— নভুন সমাজ বিবিবিবানে অবও একট সভাকে রূপ দেবেন। কিছ আপাততঃ বভার বেগ প্রবল। চেউ দেবে স্বাই উল্লাপ্ত। এ চেউ কিরে গেলেও বে টান গভীরে আকর্ষণ করবে—ভার পরীক্ষা অভ্যন্ত ক্রিন।

मनीण चारे, जन, जब शोबर निरम्न किरव जल्छ-সামাজিক মহ্যাদার প্রতিষ্ঠিত হয় নি । সে উপার্জনশীল নয় ---- পুরাভন সমাজ---ভাকে সম্বর্জনা করলেও--- সংসার পরি-চালনার দারিত দে নিতে পারবে (क्रमा সে বিষয়ে সংশয়শীল। কাৰেই অনিমান সংখ তার মিলনটা জাতি গোতের দিক দিয়ে ना वाबरणक--- अरे निक पिरव वाबन। करन अरे रेरनाभ-(यके। धनाचीय नवनावीय मध्य निषय-मानुरश्व (यमन আলোচনার উৎসাহ নেই---ভেমনি সমাক্ষকে সে গড়েছে **किवैल करता अ क्रिकार वर्ष निधक शर्विक्रका नद्या** यांके एका जब चर्च-- मनीम --- निर्द्यत अविश्व (वर्ष ভেগে গিয়ে সমাজগহিত এমন বরণের কাকটা করতে পারে---चार बट्ड चारे बम ब.-त त्रीवर फूर एटड भारव... এটি ভার ক্রনাভেই আনে নি। আবধানি মাত্র---আর वायबानि जामाबिक निक्षा-- अमन छेनकत्व (म रुडे नश्व । अरे वााभारवत मूरण या तरसरह--(मह देवन--चात जारकहे ইলোপ্যেন্টের ছেতু বলা সকত।

অনিমাও কম হংসাহসী নয়। আগের দিন রাত্রিতে তাদের কথাবাভার ঠিক হরেছিল—দেশপোরভেটকে মুখ্য করে নিয়ে এই বিচ্ছেদ বেখনা, অনায়াসে না হোক, কণ্ডব্য ভেবেও গ্রহণ করবে ভারা। মনীশ ক্ষোভবে গিয়ে—গঠন-মুলক কাক করবে। অনিমা নেবে এখানকার ভার।

ভবনও ভোর হয় নি। গুরুণক্ষের প্রথম দিকের কোন একট ভিনি—শেষ রাজের অরকার আকাশ আর গাছের নাবার ক্ষিয়ে আছে; সপ্তবি দিকপ্রান্তে হেলে পঞ্ছে— ধ্ববভাষার ঠিক শীচের দিকে। নিষ্ঠ প্রায়। ছ'মাইল গেলে ভবে টেশন পাওরা যায়। একলা মাস্ত্রয় —প্রয়োজনীর বন্ধ ছাছেরে নিভে সময় লাগল না। একটা বাাপের মব্যে সবকিছু মিরে পিঠে পুলিয়ে দিল বাাগটি—ভার পর যাত্রা। নিজের পারের শব্দ মিরুপ্ত রাজপবে বেজে উঠল। বানিকচ্য এসে মমে হ'ল নিজের পারের শব্দী। মনে হজ্জে গন্তীর রাজির বৃক্তে ভার মৃত্ব প্রতিদ্বনি—ক্ষমণ্ড দূর বেকে মিলিয়ে যাজেছ দূরে—ক্ষমণ্ড দূর বেকে এগিয়ে আগছে কাছে। ইা—
এগিয়েই আগছে—কাছে—আর্ড কাছে।

অনিষা বদলে, আমিও যাব ভোষার সঙ্গে:

ষণীশ বিশিত হ'ল—জানশিত হ'ল। খাণার ওপর একটা তারা সহসা পুর জলমল করে কেঁপে উঠল। ওলের মনের খুগী এত্রে অস্তর স্পর্শ করেছে—তাই ছাতিমর হয়ে শিউরে উঠল লে। পুলক শিহরণ।

আন্ধবিস্থত মুহুর্ণ্ডে,মনীশ প্রশ্ন করণ তবু, এর অর্থ— বোক ? অনিমা মাধা নেছে স্বীকার করলে, বাব বা কলকের কথা। অনিমা এরিয়ে এসে ওর হাত বচ্ছে। ব্যক্তি, চগ। তাই চলে এসাম। সন্ধান্ধ করে মনীশ হাস্পো।

স্চিত্র বলসে, ঠাকুরপে। একটা কথা জিজাস। করি রাস করবেন না। লোকাচার রক্ষার দায়টা নিলে কি ভালবাসার অপস্থান হ'ত ?

মনীশ বললে, কোৰায় পেলাম গে অবলয়। ওতে আণ্ডি নেই আমার —না ক্লেও জোজ নেই। সমাজেও চোধে সমান অপরাধীই বেকে যাব ত।

श्रुष्टिका वनत्म, विद्युत्क वाद्यद नः ?

मनीय रमाम, रागत्य व्यक्तिमा ?

অনিষা মূব কিরিয়ে নিলে। রাজিনেধের তারার আলোয় প্র চলতে চলতে সেই উত্তর কি দেয়নি সে ?

হলর বগলে, যতাই দেশগ্রেষের সাটিফিকেট নিয়ে এল ভাই---সামাজিক লাজনা তোলাদের ৬৮বে ন।।

মনীশ ও অনিমা ছ'কনেই মূব তুলে চাইলে তার দিকে। মলর বললে, আশা করি সব কিছু সহু কঃবার মনোবল -নিয়েই ভোষতা—

মনীশ বগলে, না ভাই বৈধবণে আমরা মিলেছি—বৈধবের হাতেই আমাদের দিছেছি ছেছে। অনিমা টেনে আসতে আসতে আমাকে বগছিল যে আকাশের সুর্য্য নার দিখার পদ্ম থেষ্ম দৈববলে মেলে—

অনিয়া বগলে, আপনারা সাহস করেন আমাদের আএর দিতে ?

মলর বললে, স্থাটনা, উত্তর দাও।

স্থিতী বললে, সাহস করি। সেই সলে একটু নিবেদন আছে ভাই। যদি ভোষাদের কল আমাদের লাজ্যাও বটে ---ভোষরা ভোমাদের ধোষী মনে করবে না ?

যশীশ সপ্রশংস বৃষ্টিতে ভার পানে চেমে বললে, আপিনার কবার বছ আনক পেলাম বউদি, সেই সঙ্গে আক্রেণও।

মানে १

মানে—এডকণ আমাদেব লাঞ্চনার দিকটিই দেবছিলাম—
অঞ্চ দিকের কথা ভাবি নি। ঠিকট বলেছেম—অভের শান্তি
নষ্ট করে নিজের শান্তি অকুর রাখতে পারব না।

আমাদের আপনি আছীয় মনে করেন না ?

অপ্যোগের উভরে মনীশ হাসলে। বললে, মলরকে আনতাম---আপনার সলে আৰু মাত্র পরিচয় হ'ল। তবু আপনাকে বছলিনের চেনা বলে মনে হচ্ছে।

মগর বললে, এই আমেই ভোষার প্রচার-ক্রেক স্থাপন কর না।

মনীশ বগলে, কিছুদিন থাক। আইন মতে বিয়েটা চুকিয়ে কেলে—তার পর্— ও কি । চারজনেই চমকে ইঠল।

परवर यशित %क्षाद सर्ग भक्त व नक र'ल ।

সুচিমা বাইরে এল তার পিছনে মলয় । কোবাও কেউ নেই । তরং সি ভির বারে এগে দেবল - বছ দিনের পুরনো বাতার একাংশ কোবা বেকে পছিয়ে ভরের দেওয়ালে কাভ হয়ে পড়েছে। বাতার নেই---ছেলেরাও বারাকায় বেলা করছে না--অবচ---

স্থাচিত্রা বললে, ছালে কেই নেই ত — খেবে আসি। সিঁছি বেয়ে তর তর করে নে উপরে উঠে রেগ।

ংখনগভা ভারি ভোষকটা ছু' ছাতে উলেট দেবার চেটা করছেন দেবে প্রটিকা তার সাহায্যাণে এগিচে এল।

্ছ্যপ্তা গঙীর মুবে বল্লেন, ধাক থাক—— অ'মিট পারব'খন। তোধক উলটে পিয়ে তিনি ই।.।তে লাগদেনঃ

স্থান্ত: ২লকে, আমাদের ভাউকে ভাকলেন না কেন মা ? ভোষাদের ভেকে আমার লাভা । গভীর মুবে জবাব দিলেন হেম্পতা। এই অবেদায় ভোষক কাচলে ভকোবে ?

ভোষক কচিবেন কেন ?

এত কচি খুকীনও বউমা যে একখা বোক না; বলি এট: চ্টুহুৰ বাজি এটা মান ভো?

ক্চিত্রা অভিত হয়ে তার পানে চেরে রইল। কোবের আবেগে গুণা প্রকাশটা সহক হয়ে আসে। হেনলতা শেষ আখাত হানদেন। আমি তো পা বাছিয়েই আছি, কিছ ভোমাদের আজেলটা কি ? পরপুরুষের সঙ্গে যে মেরে বেরিয়ে আদে—তাকে তোমরা ভারগা দাও কে:নু সাহসে তনি ?

মণর হাবে আগতেই হেমলতা কারার তেঙে পড়লেন। বললেন, ওদের না তাভালে আনি হাতে কুটো ভাঙৰ না— আগুহুত্যে হব। ভোদের এত বড় আগপদা বে—

ৰাকে প্ৰবোৰ দেওৱা মলৱের সাব্যাতীত। মাৰা নীচু করে ওরা সিঁভি দিয়ে নীচে নাৰতে লাগল। বারান্দার পৌছে মলর বললে, ওদের বুবিরে বলো ছচিতা,
—আমি মুখ দেখাতে পারব মা। গে নীচের নেমে গেল।

রাজ্যের সক্ষা মাধায় নিয়ে স্থচিত্রা বরের মধ্যে এসে বাঁড়াল। প্রথমে কয়েকট বৃত্তুর্ত্তের মাধায় তর দিয়ে বাভাগ হ'ল নিক্ষল।

মনীল বললে, বউলি আপনাদের ছঃবের অভ নিজেদের দায়ী করছি না। এইটেই যে আমরা আলা করেছিলাম। পুরনো সমাজ বোলসের মত জভিষে আছে গায়ে। দেশের গৌরবের আলোয় ভার অহকার দূর হবেই—ভবে গে দিন আজ নর।

স্থানি মুখ তুললে না। ওর ছ' চোবের কোল নিক্ত খয়ে উঠল।

মণীশ বগলে, আমরা কলকাভার যাব। আকই। আপনার কাছে মাপ চেয়ে আপনার কট বাঙাব মা— তবু একটা কিছু বল: দবকার কেবলই মনে কর্তে। আপনাদের কি যে বলব—। দারণ অধ্ভিতে ও হু' হাত বুকে চেপে বরল:

স্চিত্র ওভক্ষণে শক্তি সক্ষ করে নিয়েছে। সহজ্ঞাবে বললে, বেশ ভ এক সক্ষেত্র যাওয়া আৰু ।

ধনীশ বললে, যাবেন বইকি—নিশ্চয় যাবেন। আবাক নয় বউদি, একটা আগ্ৰয় ঠিক করি আবেন—

গুণা প্রথম করলে ছচিয়াকে: মনীল হাত জোড় ক'রে—
আনিমা টেট হয়ে পায়ে হাত দিয়ে। কাউকে ও নিষেব করলে
না। কমা চাওয়া—দোষ পীকার কংা— ত্'পকের কাছে
ভাতার বাংবাবুলি আওচানো এ সব থাকুক। মাত্ম সহজ্
হলেও লাচরণে সরল হতে পারে না। কমাপ্রার্থনার মধ্যে
ভাতি পীকারের ভালি সব সময়ে স্কৃতি কি ? না, সংসারে
খাজাবিক নিয়মে যা আসবে— প্রকৃতির বিপর্যাহের মত,
ভাকেই অপুর চিত্তে গ্রহণ করতে হবে। ভোমার চোবের
ভাল আমার মায়ুকেক্সে যদি আখাত করেই—চোবের জল
করে নির্দেশ্যে পান্ধাত করেই—চোবের জল
করে নির্দেশ্যে থাটো করব কেন।

স্থাচিত্রার কাছে বিদায় নিয়ে ওরা নীচেয় নেখে এল এ বাছিতে আর যেন প্রাণী নেই—আর কারও কাছে বিদায় নিতে গেলে আঘাত না নিয়ে ক্ষিরতে পারবে না

এমন কি মলয় কোৰায় এ প্ৰসন্ধ নাত্ৰ ওৱা উথাপন করলে না।

বাইরের দরশার কাছে এনে অনিম: সহসা কিরে ইাড়াল। এগিরে এনে স্থাচিত্রার একবানি হাত পরম সমাদরে টেনে থিয়ে বললে, আপনি যাবেন ত দিদি ? আমরা চিটি দেব কিছা।

চোবের কোলে অবাধ্য অঞ্জকে আর সামলে রাখা পেল না—স্টিলা অঞ্চ গোপনের প্রয়াস না করে বরা সলার বললে, যাব। \ R

এই সংগারের মত ভারতের রক্ষঞ্চেও ভাগ্যবিপর্যায়ের পালা প্রক হয়েছে। ঠিক খাধীনতা নয়— তবে ভারত যাতে সেই পৰে ক্ৰন্ত অনসর হয়ে দক্ষো গৌহতে পারে ভার জ্ঞ বিলাভের অমিক প্রথমেণ্ট মন্ত্রী মিশন পার্টিছেছেন। জারা একটা কিছু দেবেন্ট-এই প্রতিজ্ঞা করে ভারতের মাটতে পা पिरक्रा विकिन प्रमान शिरम कार्य रिवर्ड देवर्ड देवर देवर विकास দিল্লীতে। পকাল বিকাল সন্ধায়- -বিভিন্ন শ্ৰেণীর লোক-- ভা তারা অল্ল নামজাদা বা অধিক খ্যাতিসম্প্র--- নরমু পর্ম কিংবা मदाभन्नी याहे (होन मा (कन---(मह महन कांत्रकतर्यत मव परभव शाया-वदा अभित्यक - - शहादांका किरता छ**भवेगी स्मर्**जा. नवाहरक नियस्य पत्र पाठातन । (जात्क चावल देवहा वर्षे क्ट्रिया नर प्रमादक क्षेत्र कट्य---वानामा व्यानामा जाटनत मज নিয়ে সুবিধা-অহুবিধা বুৱে খে শাসনভয়ের খসভা ছকে দিয়ে যাবেন সৰ্বা-কাতি-ংশ্ব ও মত সমস্বয়ে না কানি সে কি অপুৰ্বা বছট দাড়াবে। বিভন্ন দলের মত স্বাভন্তো বৈঠক টলমল করে উঠণ: দিল্লীর প্রমে তিইতে না পেরে মন্ত্রীরা পেলেন সিম্পায়, দেখানকার ঠাকা আব্দাওয়ায় মত্বিরোধ মিটল না। সল বা দীৰ্ঘমহাদী শাসন্তল নিয়ে বাবল পোলমাল। অবশেধে ভিনষ্ট জুগে ভাগ ধরা হ'ল ভারভ-दर्शक - पश्चारवद परम श्रीमान थात (वन्तिशास मान कूरक (मंदश ए'म-- कामाध्यत कैंग्स जामाध्या है'ल वारमारक। यञ्जी विमन (पाधना कडरमनः भाकिकारनद्व पानि खरगेकिकः ভবে সংখ্যাগরিষ্ঠর: যাতে সংখ্যাগলু দর নভাগ করতে না भारत कांत क्षेत्र ग्रह्मां केल वस्तान कराहत वावक वर्ग ্কান বাৰ্মীভিবিদ ক্লেন-বাঞ্চ পাকিয়ানকে অধীকার করে- কার্যান্ত জুপেন ধব্য দিয়ে জাকে সাঁকরে করেই নেয়া হ'ল, লাকি মুছোৱ পাকিছানী প্রলেশ লাগিছে বছটাকে हाटकत शहला त्यांविक कटत (प्रशेष कारका--- अ क्**यांव** वज्ञान (कर्षे क्रिकें। यक्षात्रशामी यथ वा'लल क्रबाल कर्राञ्चभ -- जीन क्षांकेटि स्थान निर्माः किन्छ मश्रीरमञ्जीका कर् अभाक का माना । । । क' एक पार । भारतके स्म-व খোষণার ভাষা-- টিক। ইতাদি সুরুহ'ল: কিন ইংরেনী ভাষাটাই এমন যে ববাল্লের মত যতই টেনে নেয়া যায়---रिভिन्न व्यर्भम्मार्भ जल्दे अहे क्षेत्रादिल इटल सार्क । अस्म-সমূহকে এক কোষালে ফুতলেও-- जानामा হয়ে যাবার ক্ষতা ওদের থাকবে। ভাছাটা অনিজ্ঞ কোন প্রবেশের খাড়ে वांशाकाबूनक विवास जानात्मा जनत्व माः हेटक कदरन अर्मभाष्ट्र श्रिर-अत वाहेर्त हरण त्यरण भारतः वररअरमत बिष्ठैर हमास क'तिन बदर । कि-एश कि-एश--- अहे छेरछक्नारण FOCE !

(कष्ठ वलायम, देनिम ल्या विश्वातित्यत कोश्या भारत्य

সদে বাক্ষেও—এবার হেন্তনেন্ত একটা করবেনই এঁবা।
এ, ভি, আলেকজাঙার জাঁদরেল লোক - তার সদে আজ্ঞান
ভারত সচিব প্যাধিক লরেজ। প্যাধিক লরেজকে দেবলেই
মনে হয়—লোকটা এ দেশেরই একজন —হালিমুধ—সারের
রংটাও উন্ন রক্ষের শাদা মর, হতে পারে ওটা ফটোপ্রাফির
বুঁং—কিল্ল ওঁর মুখের ছাগিট যে নির্বুং। ওট যেন
সমবেদনা-ভাতীর হাগি। যাই হোক—ভারতবর্ব যে পরিবর্তনের মুবে এ বিষয়ে সংশার নেই।

মদৰ ভাবছিল, আৰু বাজি কেরা অগতব। মারের বোষ কোন্পর্ধ বরবে সে আমে না---ভব্সে না বাকলে ভা হরত তেমন উঠানা-ও হতে পারে। নর-দার্র ওবানেই রাভটা কাটিরে দেরা যাক না।

ৰটত পাৱ পুৰ হৈ হৈ হচ্ছে। কোন সভা বলেছে—মা সভার প্রছতি ? জয় হিল্— বলেমাভরম্ হানি লোনা গেল— সেই সলে বাছা বাছা লোগান।

হঠাৎ কি হ'ল যে ওরা এমন করে আনন্দ প্রকাশ করছে ? কাছে আগতে-না-আগতেই একট ছেলে লাকিয়ে দল থেকে বেরিয়ে এল, মার্নদিস্ কেরা। মলরদা—কংগ্রেস লং-টার্ম আ্যাক্লেট করেছে। এই মাএ টেলিগ্রাম এল।

মলর ভিছের মধ্যে মিশে গেল। তারপর চলল জ্ঞানা-ক্রমা তর্ক উচ্ছাল। ভিছের মধ্য থেকে যথম বেরিয়ে এল দে—তথম ভারতের ভাগ্যবিপর্যায়ের চিন্তার বাভির ভাগ্রতি নিংশেষে মুছে গেছে

সভ্যার পর দে বাড়িতেই ফিরে এল।

নিভর বাভি — নিত্রলীপ। কংরেগের মন্ত্রী-মিশম-প্রভাব মেনে নেওয়ার পর ভারতের বৃহৎ অংশ যেমন কভির নিধাস কেপেতে ভেমনি কবে হ'ল বাভিটাকে। মনীশরা পেল কোথার ? স্বাই ঘুমিরেছে কি ?

স্থচিত্রার ব্যৱস্ত আলে! নেই—ব্যৱস্ত মাধুষ নেই—এমনি নিজক্তা।

আৰকাত্তে হাতভে হাতভেও যথের মাঝবান পর্যান্ত এপে ভাকলে, ঘুমুলে কি ? চিত্রা—

শান্তির খসু খসু শব্দ হ'ল--কে ষেন বিছানার ওপর উঠে বসল। দেশলাই খোলার শব্দ--কাঠি খবার শব্দ--কাঁাস করে আলো থলে উঠল। শিশুরের কাছে একটা টুলের ওপর মোনবাতি ছিল—সেটা থেলে দিয়ে স্ক্রিটা বিছানা থেকে বেবের এলে গাঁড়াল।

আৰুত আলো—এই যোমবাতির। কোমল আৰ-আলো আৰ-ছারার রহসময়। স্থানিরার তুম-ভাঙা চোবে লৈ আলো পড়ে ওকে গঙীর আর বিষয় বোব হচ্ছে। মুখবামাও ওর ভূলো কুলো—অকাল নিস্তাভল্জনিত কিমা কে জানে।

মনীশ কোণার ?

স্থচিত্রা অভুত চোৰে বলরের পালে চাইল। বনীশ

কোথার সে কথাটা ভার চেরে মলরই ভাল ভাবে না ? কার পরিচরে মনীশ এ বাড়িতে এসেছিলেন ?

७--- हरण (शरण द्वि १

चार्यक्ष्य--- पृथि योवात भएन भएन्हे ।

যোষবাভিটা কৰনও মান-কৰনও উল্ফল হয়ে উঠছে।

আর কিছু কিজাসা করবার নেই স্থচিত্রাকে। আলোর মান শিবার কাঁপতে অধ্যান। গতীর অবভিতে তর হয়ে আহে জানাগার বাইরে আকাশ---পৃথিবী তয়োবসনার্ভা।

ওকি স্থ চিমার চোৰের কোল চক্চক্ করছে না ? ছ' গাল বেরে ছটি বারা নামছে ? মোমবাভির কাঁপুনি স্থ চিমার ঠোটের কাঁপুনির সকে মিশে গেল এই মুহুর্ছে। মলর এগিরে এল স্থ চিমার দিকে।

সে রাজি ভ্রকারেই গভীর হ'ল। বাভাগ ভারি নিখাদের মভ—ভার বেকে বেকে পেঁচার ডাকটা বুক্চাপা কারার মভ। পুরিবী সমবেদনা কানাচ্ছে:

मनीनदा हरण १९८६--वर्ष बारम मि । अवस् विरय हरस স্থানিক এ বাড়িতে আদে সেদিনকার চাপা অসভোষ चाक भरन पढ़रह। शाश्रुरश्व यन (बरक किहूरे कि श्रुर शाश्र না ? কভকগুলি প্রবল বৃত্তির প্রতিযোগিতা চলছে মনের মধ্যে। কোনটা প্ৰযোগ পেয়ে কোনটকে ছটয়ে দেয়---(कामके) वा न्यमंकीतः, निःश्यास्य धुश्च क्य नः (कामकेर)। মাথ্যী-প্রবৃত্তির ভাতৃনায় মাতৃষ বুকি পূর্ণ ছতে পারবে না কোন बृहार्ड ? (य मानमाध्य हात भारन बारे बुखिकान भाक बारक. **ভাকে নিজ ই**। के ना शार वनाई मन्छ। अबहे मान्य मान्दह লে মানুষকে পৃথিবীকে--নৰ বিধানকে। যাই ছোক-- এ বাছি আৰু মূৰ কিৱিষেছে স্থাচিত্ৰার দিক থেকে। এক পক্ষে ভ ভালই হ'ল: শিভ্য অপসামের দার থেকে সে অভত বাচল। নিভ্য অসম্বানের দায় নয় ভো কি ? সুচিত্রার ভো মনে পড়ে না হেমলভা ভার হাতের নিরামিষ রালা বেরেছেন কোন দিন। রাহাববেই তার অধিকার লাব্যস্ত হয় নি। মন্দ্রকিনী বলে---ভোমরা ছেলেমাত্য---এবন সেক্ষেত্রকে হাসি-আহলাদ 'করে কাটাবে—হাভাবেভি খুভি ঠন্ ঠন্ এসৰ কি যানায় ভাই। কথাওলি স্নেহ-কোনল কিছ ওবান থেকে চুৱে ৱাৰাৱ প্ৰচেষ্টা ভাৱ মধ্যে নেই কি ? ৰাওৱাটাই ভাভ-विहादव क्रिपायव अ क्यांहै। चाक न्यहे क्दवरे वरमन नि कि হেমলভা ? ওৱা এ বাড়িভে বাকলে আমি বলম্পৰ্শ করব মা।

অভিযানে বার বার চোধের কোল ভিত্তে উঠছে।

আৰু কারও বাওহা হয় নি। বেলেওলোকে বৃচি মিটি, ও বেলার ভাত এটি বা অবলিট ছিল তাই বাইছে বৃষ পাঢ়ান হয়েছিল। স্থাচনাকে বাবার কচ অন্ধ্যান করেছিল মকাকিনী—ও উত্তর ধের নি। এ ঘটনার পর এ বাভিতে বাকা কিংবা এ বাভির অর বৃধে ভোলা ওর পক্ষে অসভ্তব নর কি ?

ভোর বেলা মন্দাকিনী হেমলভার পরকার বাকা দিয়ে ভাকলে, মা—-মা—-ভনছেন ?

হেমলতা কেগেই ছিলেন । বুব ভোরবেলাতেই তার ঘুম তেতে গেলেও বিধানা ছেতে তিনি ওঠেন মা। ঘরের বাইরে থেকে তার কণ্ঠয়র শোনা যায় — অক্ত ক্রময় উচ্চারণে ঠাকুর-দেবতার ওব পাঠ করেম— পঞ্চলাকে শরণ করে মহাপাতক ক্ষম করেম— আর যে দিম আগছে তাকে স্থাগত কানিরে তেত্রিশ কোটর কাছে সংসাল্পর কল্যাণ কামনা করেম। আলও কেগেছিলেম— তবে মম তাল ধিল মা বলে বিধানায় বসে ফিল ফিল করে ঠাকুরদেবতাকে শরণ করিছলেন।

८क—८म्बद्धेमां ... १

है। या- अक्वात ७५व छ ।

ওর কণ্ঠথরে ভয়ের আভাগ পেরে মন্দাকিনী বছম্ভ করে উঠে ছয়োর বুলে ব্যরান্ধায় বেরুলেন।

कि (मक्वकेंग।-- छत्र (भरबंध नाकि ?

না মা--- চোট বট আর ঠাকুরপোকে কোলাও দেবতে পাঞ্জিনা

(भ कि कथा— अध्यत घटत चुत्रु क्ष्म भ अता ? घटतत इसात (बाला वा जा कत्र का

वाहेददब भवकाहै। (शर्बक कि १

ना था, अकन्नः (सर्छ अञ्च-कश्च क्रद्राष्ट्र राम आश्वनारक छात्र-धिमायः আহ্ছা চল দেবে আলি।

হারিকেনের ধন বাড়িয়ে ক্রেনভা সদর দরভা পরীকা করতে চললেন।

সদর ধরজার টানা বিলট ছাড়া আর একট ছোট ঘূরনো বিল আছে—-ধেটা বাইরে বেকেও দেওরা যার। সেইটাই দেওরা রয়েছে।

হেমগতা কিন্তে এগে বললেন, কাল সংখ্যবেলায় সদৱের বিলটা বুকি দেয় নি কেট ?

ওমা--- সে কি কথা। অৱকারে ঠাকুরপো যথম আসে তথন ভ আমি কেগে। বিল দেওয়ার শব্দ স্পষ্ট ভনেছি।

ভাগ করে উটকে দেব ত বাইরের খর, ছাদ, বড়বোলের খর---

ওপর নীচে আলো হাতে করে হেমলতা নিক্ষেই থোলা-বুঁজি পুরু করলেন। এক-একট জামগা বালি দেবেন আর তার বুক ঠেলে ঠেলে কামা আগে। শেষে তিনি চীংকার করে ভাকলেন, মলম্মলম্মলম, ছোটবউমা--তরে মল্রে--

পূব ধিক কর্মা হতে সুকু হয়েছে, আমগাছে বসে
দোয়েল প্রভাতী শিস্ দিয়ে প্রভাতকে থাগত জানাছে।

মলরের ধরের মেকের ওপর বসে পড়ে পরিপ্রান্ত ছেমলতা আর্ত্তকঠে কেঁদে উঠলেন, ওরা চলে গেছে মেকবউমা—ওরা আর আগবে না।

ক্ষশ:

বাউলের সাজ

শ্রাকুমুদরঞ্জন মল্লিক

বাউল আমি, আমিই রাজা—
আমিই যুবরাজ রে.
আঞ্রাবা মোর সবের পোয়াক
অভিযেকের সাজ রে।
ওইট গারে, নুপুর পায়ে,
গান গেয়েছি বাদল বায়ে,
আমার সাবের 'গাব গুবাগুব'

भटक नार्दि चाक दा।

নাচের হিল ভলী কত,
মন্ত্র হিল চিত,
মন যে ভবন থেতের সাবে
করতো সধাই নৃত্য।

ক্ষতো নগাৰ স্তা।
বাকার ভালির আভ্রাথাতে,
লাগতো হাওরা সহ্যা প্রাতে,
হব হুগানির ইন হুনানি—
ভার হিল না কাল রে।

চংট নৃত্যন, বংট ছিল,
গৈৱিক এবং বৈৱী,
যেন ধুগের ক্ষাট পুলক
উল্লাসে লে তৈৱী।
লে কি ক্ষাৰ ক্তি তাহার,
যেখন ষ্ঠি তেমনি বাহার,
কালে তাহার শান্তিগুৱের
সাতিটা বাগের থাকারে।

ধাবার সময় বলতে আমার

নাই কো বোটেই লক্ষা।
কীৰ্ণ আমি, ওইট আমার
আসল আমির লক্ষা।
ওতেই আমি কড়িয়ে আছি,
ইচ্ছা যে হয় আবার মাচি,
মনের বাউল প্রিয়ে আছে
আক ও উহার মাব রে।

দেবীর বোধন ও বিসর্জ্জন

শ্রীরাজমোহন নাথ, বি-ই, তত্তভূষণ

পর্য প্রদাশন শ্রীর্ক খোগেশচন্দ্র রায় বিজ্ঞানিবি মহাশ্র ছুর্গাপুলা সম্পর্কে গবেষণামূলক ছয়্কট প্রবন্ধ বারাবাহিক ভাবে ১০৫০ সালের প্রাণী কান্তিক-৮ৈছে—ছয় সংখ্যাতে লিবিয়া-ছেন। প্রবন্ধ লিবিবার সময় প্রাচীন কাময়প্রের প্রাভত্ত সম্পর্কে কোম বিষয়ে অম্প্রহপ্রকি আমার সহিত পত্রবাগে আলোচনা করিয়াছিলেন এবং তাঁহার প্রবন্ধে এই সামাল বিষয়টির উল্লেখ করিয়া তিনি আমার প্রতি তাঁহার স্নেহের নিদর্শন প্রকাশ করিয়াছেন।

শ্রবীণ ওরাত্মগছিং অ বিদ্যানিধি মহাণ দ্বের ভধাপুর্ণ প্রবন্ধ পিতে ছুর্গাপুৰার উংপ্রি সম্পর্কে নানাদিক হইতে আলোচনাই করা হইয়াছে, ভরধ্যে ক্যোতিধিক আলোচনাই আবক। কিছ দেবীর বোধন সম্পর্কে তিনি লিবিয়াছেন—"আমি নব পত্রিকার উংপত্তি ও প্রয়োজন বিদ্যাত্র বুবিতে পারি নাই। নব পত্রিকা মবছর্গা, ইহার ছারা কিছুই বুবিলাম না।" (কাজন)।

তিনি আরও পিবিয়াছেন--"নাম নৰপত্ৰিকা, কিন্তু নয়ট বুক্ষের পঞ্জ না হবয়া নয়ত বুক্ষ কিলা নয়ত বুক্ষের পাৰা বজুৱ ঘারা বাঁৰিয়া প্রাণিত হয়: পে নয়ট বুক্ষ এই — রগ্ধা, ক১. ছরিয়া, জয়ভী, বিল, দাভিল, অংশাক, মান ও বাল।" (কাতিক): • • • "বোৰনের নিমিত এক পুৰক ব্য়পুছ নিশ্বিত করা হয়। এক বেদীর চারি কোণে শর পুঁতিয়া করেকবার অত্র বেষ্টন পূর্বেড় বত্রগৃহ নির্মাণ করা হয়। সেই ৰস্তপুত্ৰ মুগ্ম কলবিশিষ্ট বিল্লাখা ধাপিত হয়। বেদীতে चनक्क श्रम ७ है वे दाय! इस । कार्रिया (पविटन अरे वध-পুর্ ছাত্র গুরু, মুগা ফলের একট মাভার কৃষ্ণি, অপরট खन। नाकीटक्टरस्य निविष्ठ क्ष्रीय । नाकीयबटनय निविष्ठ प्रका অগঞ্জ শোণিতের দ্যোতক। ইতিপূর্বে প্রতিপদ হইতে भक्षी भवास प्रदेश एकीव निभिष्ठ क्य-भरकात खवा, स्वश्वात, " क्षवा, जनकात ७ मर्भर् धान्य क्षेत्रादक। १६ भक्षावना मा कविरम बरे भरवत श्रीकाम बारक मा। चल्का विश्वमाना ও ফলে দেবীর বোধন অর্থে বুরিতে ছইভেছে বিল্লাবার তুর্গাত্রণ অধিব আবিষ্ঠাব। বিশ্রক্ত দেবীর প্রতিত্রপক। • • • भाररकार्ण (यावभ अकाल (यावभ। भाररकाल কেন ? কারণ রাত্রি সন্তান প্রসবের কাল।" (কান্তন)

দেবী বিসর্জ্ঞন সম্পর্কে তিনি গিৰিয়াছেন—"নদীর স্রোতে প্রতিষা বিসর্জনের পর শবরোৎসব, কল ও কর্মন জীলা। সে সমর অপ্রাব্য, অক্ষা ভাষার গান হইত। ইহা ছুর্গোৎসবের অল, কালিকাপুরাণ ব্যবহা করিয়াছেন। ভাহাতে কেহ রুই হইত না। ১০০ আনার মনে হয় লোকের বিখাস ছিল, মৰ বৰ্ষের প্ৰথম দিন আলীল ভাষা শুনিলে দেহ শুচি হয়, যম রাজালে বংসর স্পর্শ করেন না।" (কাজন)

হুৰ্গাপুজার আছ্যদিক—বিলেখতঃ কাষরণে সম্বিক অচলিত--কুমারী পূজা সম্পর্কে—বিদ্যানিবি মহাশ্র প্রশ্ন করিয়াছেম—"কুমারী পূজার হেতু কি ?"

প্রধাপদ বিদ্যানিধি মহাশর কর্তৃক উবাংপত প্রস্তের যথা-সাব্য মীমাংসা করিতে হইলে প্রথমে প্রাচীন কামগ্রপের আদি অধিবাসী সম্পর্কে যংকিঞিং বিভূত আলোচনা করা প্রয়োজন।

অতি প্রাচীমকাতে আথ্নামিক ইঃ পূঃ ২৭০০ অব্দেবর্ত্ত্বান চীনদেশের মধ্য অঞ্চল হইতে এক জাতীয় লোক গলবাধ হইয়া চীনদেশের মধ্য অঞ্চল হইতে এক জাতীয় লোক গলবাধ হইয়া চীনদেশের দক্ষিণ-পশ্চিম অঞ্চল হইতে সমূখিত এক নদীপথ ধরিয়া বর্ত্তমান আগামের পূর্বপ্রান্ত গিয়া কামঞ্চল দেশে প্রবেশ করে। চীনদেশপ্তিত আবাসভূমিকে উহারা চাও-বিউদ্ (Chao-Thions) বা চোহ-বিস্ অর্থাং দেবতার দেশ বা ধর্গভূমি বলিত। স্থানীয় প্রথম শতকে এই নাবিক কন্তৃক লিখিত পেরিপ্রাস প্রথম প্রথম শতকে এই নাবিক কন্তৃক লিখিত পেরিপ্রাস প্রথম প্রথম শতকে বিস্ বেশ (Irand of This) বলিরা উল্লেখ করা হুল্যাছে। পেরিপ্রাসের ক্রিকাকার শ্বন্ধ লাহেবও খিস্ দেশ চীনদেশে অবস্থিত ছিল বলিয়াই প্রির করিয়াছেন। উত্তর প্রথমনেশ্র লোকের। এখনও চীনদেশকে বিয়স্ (স্ব উস্ক) বা স্বর্গ বলে।

যে নদীপৰ ব্যিষ্টা ঐ লোকগুলি আসিষ্টাইল, উহা কামরপে প্রবেশ ক্ষিয়া অভাত জল-প্রোতের সংযোগে ব্রহদাকার
বাবণ ক্ষায়, উহারা ইহাকে গাও-তু (ব্রহদায়তন জলরানি)
নাম দিয়াছিল। এই লাও-তুই পরবতীকালে পৃইত, গোহিত
বা গৌহিতা নামে পরিচিত হইশ্বাছে। চোহ-বিস্ পংবতীকালে জোহ-বিস্ রূপে উচ্চারিত হয় এবং ঐ দেশাগত
লোকেরাও অভদেশবাসীর নিকট জোহবিস্ আতিরপেই
পরিচিত ছিল। এই জোহ-বিস্ শস্ত্র প্রবর্তীকালে সংস্কৃত
জ্যোতিষ দ্বপ বাবণ ক্ষিয়াছে। আধুনিক নৃতত্বিদ্রণ এই
আতীয় লোককে অগ্রীক (অপ্রো-এসিরাইক) নাম বিয়াছেম।

লোহ-বিস্বা কাষরণে অনেক শতাকীকাল পর্যন্ত প্রভুদ্ধ বিভাব করিয়া বসবাস করিয়াহিল, এবং পরে লোকসংখ্যা বৃদ্ধির সলে সলে মধ্যভাৱত ও আকলানিয়ান পর্যন্ত হজাইয়া পছে। মৃত্তপ্রদেশে মধ্য ভাটিষ ও আকলানিয়ান উত্তর জ্যোতিষ দেশ এইতাবে স্ট হইয়াহিল। চাও, চোহ বা জোহ শব্দের অর্থ পরবর্তীকালে উচ্চভূমি অর্থে ব্যবহৃত হইত। ঐ আতীর লোকের। পার্ববিত্যভূমি বুঁতিয়া গর্ভ করিয়া উহাতে হল্লি, কচু, বান ইত্যাদির বীক্ষ বপন করিয়া শুভ উংপাদন করিত। ঐরপ কৃষিকে জোহ-মো (উচ্চভূমি কর্ষণ) বা ভূম্

ৰেভি বলিত। বৰ্ডধান কালেও বি+কোহ বা নিছু (সুসাই জাতি), যি (বা নেই – মাত্ৰ) + বিৱস্ বা নেইবাই (বিশিগুৱী জাতি) শক প্ৰচলিত।

সমতল ভূমিতে আসিরা জ্যোতিবজাতিরা বাছের চাবও করিত। ভারতবর্বে ইহারাই সর্বপ্রধান বাছের চাব প্রবর্তন করে। সলে সলে কচু, হল্দী, পান, সুপারির চাবও করিত। তাহাদের বিধাস হিল—পূথিবী হইতে যে সব শত উৎপন্ন হয় তাহা পূথিবীর গর্ভনাত সন্তান, কেমনা প্রত্যক্ষাবে দেখা বার এইওলি পূথিবী ভেদ করিয়া জাত হয়। নারীজাতির গর্ভ হত্তেও সন্তান উৎপন্ন হয়; স্থতরাং নারী ও পূথিবী সমবর্থা। এবং উভয়ের মব্যে ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক বিদ্যমান। এইজভ তাহারা নারীদেগকেই ক্ষিকার্য্যে নিয়োগ করিত এবং নিজেরা গৃংহ্রে জঙ্ক কার্যা ও পরাদি শিকারে ব্যন্ত থাকিত। বর্তমানেও উওব-পূর্বে ভারতে সাহারণ গোকের মব্যে একটি প্রবল বিখাস আছে যে একজন মেয়েগোক কোনও শভের বীজ বপন করিলে উহাতে ভাল কলল হয়। জন্তুচি রক্ষলা অবস্থার কোন নারী কোন কচি বৃক্ষে জল দিলে বা কোনও বৃক্ষের কল বা পূপ্য চয়ন করিলে ঐ বুক্ষ মরিয়া যায়।

এই বিখাদের বশবর্তী হইরা উহারা নিজের দেশকে মাড্সর্প জান করিত। প্রাচীন কামরূপ বা বর্তনাম আসামের
ভৌগোলিক অবস্থায়ারী ইহার মেরুদণ্ড রজ্পুত্র বা
লোহিত্য নদ; উত্তর-পূর্বা অঞ্চল সদিরা হইতে দরং জিলার
ভরালি নদা পর্যান্ত মন্তক; দরং হইতে রূপহি মদী পর্যান্ত
কঠও বক্ষ; রূপহি মদী হইতে গৌহাটির মিয়ে মানস
নদী প্যান্ত পেট ও কোমর এবং ইহার নিয়দেশ পদ। এই
ভাবে দেশকে নারীষ্টি কলনা করা হইরাছিল। পরবর্তী
কালে এইসব অঞ্চল য্বাক্রের সৌহার পীঠ, রক্ষপীঠ, কামপীঠ
ও ভর্মনিঠ নামে পরিচিত হইয়াছিল।

সৌহাট বা দেশমাত্কার কটদেশে মেরণও অন্ধাপ্তের দক্ষিণ তীর সংগর শিলামর পর্বত হইতে একট প্রাকৃতিক উংগ নির্গত হইত । যে খানে উহা নির্গত হইত ঐ হানে এক বিষত দীর্ঘ, একুশ অঙ্গুলি প্রস্থ, নাতিগভীর ত্রিকোণাকার একট গর্জ ছিল। গর্জের ভিতরখু শিলাবতের বর্ণ কিঞ্চিং রক্তাভ ছিল। আকৃতি, বর্ণ ও অবস্থিতি বিবেচনার উহা দেশমাত্ত্যার বোনিদেশরণে কলিত হইরাছিল। তাহারা নিকেদের ভাষার উহার নাম দিয়াছিল—কা-মাই-খা (মাতার প্রস্বধার বা মাতার স্বাভাবিক কলনির্গমন ঘার)। এই শক্ষ পরবর্তীকালে সংস্কৃত কামাব্যা এবং সভীর বোনিপীঠরণে পরিগণিত হইরাছে।

আসামে বৈশাৰের প্রথম হইতেই কৃষিকর্দ্রের আয়োজন আরম্ভ হয়। পুতরাং দেই সময়ই পৃথিবীকে পর্তথারণের ভঙ উদ্ধ করা প্রয়োজন। নারীও পৃথিবী সমবর্দ্ধা বিধার এই সময় পুরুষ্-মী, মুখক-মুখ্তী এক্স মিলিয়া নামাঞ্চলার কান- ভাষোদীপক বৃত্যবীতে বত হইছ। ইহা বারা নারীবিশের ভাষোদীপনা হইত এবং কাজে কাজেই পৃথিবীর ও ঐ ভাষ উদীপিত হইত। এই প্রধাই আসামের প্রচলত বিহুবীত ও বিহুনাচ। বর্তমানে অবঞ্চ ইহাতে অনেকে অস্নীলভা বেশেন, কিছ প্রাচীনকালে ইহা জাতীয় মললের জন্ই ধর্মাচরণকপে প্রবৃত্তিত হইয়াহিল।

পৃথিবী কামভাবে উৎীপিত হইয়াছেন; এবন তাঁহার পর্তাশয় সবল ও সুস্থ করিবার করু মেরুগও এগ্রপুত্রে যোনি-পাঁঠের নিকট অলোক পূলা ও পত্র ভাগাইয়া দেওয়া হইত এবং মেয়েবা নদীর কলে সাম করিত। অলোক গর্ভাশয়ের সর্ক্ষবিধ রোগের শ্রেষ্ঠ ও্ঠাব। এই আচারট পরবর্ভীকালে অলোকাইমী ক্ষপে পরিণত হইয়াছে। একপুত্র কিন্তু অল নদীতে অলোকাইমী সাম হয় না।

আষাচ মাসে অসামে বাছ বপনের সহয়। এই দময়েই পৃথিবীকে প্রকৃতপক্ষে গভারাপ করিতে হইবে। সভরাং গর্ভবারণের প্রকৃতপক্ষে গভারাপ হওয়া নিভান্ত প্রধানক। এইকছ বাছবপনের প্রকৃতিত চেল্মাড়কার ঘোনভানে—কা-মাই-বা ছামে পৃথিবীর রজোদর্শন উৎসব করা হইত। এই উৎসব বর্তমামে অস্থাচী নামে পরিচিত। এই সমর চারি দিম পৃথিবীতে কর্বণ নিবেব। কা-মাই-বা ছামের ভত্তাববায়ক বর্ত্মাকক সম্প্রদার বা-চাই, বাচাইরা বা বাসিরা (বার সভাম)। বর্তমানে বাসিরা বৃবতীরা এই উৎসবের সময় মানা বেশভ্যায় সজ্জিত হইরা সাম্বানে অভি বীর পদক্ষেণ এক প্রকৃত্ম মুত্তা করিয়া আনক্ষ প্রকৃত্ম নিয় বৃত্তা করিয়া আনক্ষ প্রকৃতি । বীর পদক্ষেণ দেবিয়া এই মৃত্যুকে অনেকে শিশ্পবিহিত। বীর পদক্ষেণ দেবিয়া এই মৃত্যুকে অনেকে শিশ্পবিহিত। বীর পদক্ষেণ করার নৃত্যে উদাম পাদক্ষেণ কোনমতেই অভীপিত নয়।

ভারণর শশু বপন করা হইলে, চার মাস অতীত হইল, বরনী গর্ভবারণ করিয়াছেন; বানের শীঘে ক্ষার সকার আরম্ভ হইয়াছে, এবন গর্ভবতীকে সাব তক্ষণ করান প্রথাকন। একটি ঘোট কদলা রক্ষকে গোলা করিয়া গাঁভ করান হইত, এবং ভাছার বক্ষে হুইট বিঅকল বাবিয়া গিরা নিয়ভাগে অর্থাং উদর্বদেশে কালকচু, হরিন্তা, মানকচু, বালগাছ এবং ক্ষতী, যাভিম ও আশোকের ভাল ও পাতা খেত অপরাকিভার লভা ঘারা (বিধ্যানিধি মহাশর রজ্গারা লিবিচাছেন) বাবিয়া দেওরা হইত, এবং পরে একবানা সাধারণ কাপড় ঘারা ঘোষটা দিয়া কদলীয়ককে একট পজাবতী গর্ভবতী মারীরূপে সাজাম হইত। ইহাই আধুনিক নবপ্রিকা বা কলা-বো।

লক্ষ্য করিবার বিষয়—কদলী, কালকচু, হরিস্তা, মানকচু ও বাজ ক্ষ্যোতিষ্কাতির প্রধান কৃষিকাত বস্তু, ভাহারা এই সব শক্তেরই চাব কানিত।

বিৰক্ষ কোঠকাটিভের প্রভিবেবক ; কংডী স্থতিকার, দাড়িয

ভক্তবোৰের, অশোক পর্করোবের এবং অপরাক্তি রেমা-বিক্যের ঔষব। স্তরাং পর্করারিধী এবং পর্তত্ব শিশুর মদলের ক্ষয় এই সব ওয়বি প্ররোগ করা হইত। তারপর এই পর্ক-বারিধীর উচ্চেক্ত ভাত, কচুর তরকারি ও পোড়া উপল বংস বেওয়া হইত। প্রসাবম-দ্রবাও দেওয়া হইত।

এই নবপত্রিকা বা কগা-বে ছুর্গাপুনার প্রধান দেবতা।
উাহারই বোবন এবং বিসর্জন হয়; বহু ছলে তথু নবপত্রিকারই পূলা হয়। এই নবপত্রিকাকে অনেক ছানে
প্রতিমা বলিরা অভিহিত করা হয়। অন্যাম্য ভোগের সঞ্চে
আদির অবিবাসীদের কচুও পোড়ামংডের তরকারী আধুনিক
কালেও একট অপরিহার্য অল।

পুতরাং গর্ভবতী নারীকে তৃতপ্রেভাদি হইতে রক্ষার বাদ করার বিশ্রনী দিরা, নাড়ীক্ষেদের ছুরি ও প্রভাদহ পূথক বছারত গৃহে ঘোষটা দিরা রাখা অভি র্ভিত্ত ব্যবহা। শত্ত-গর্ভা ধরিত্রীদেবী আৰু সাধ তক্ষণ করিবা আঁতৃত ব্যবহা। শত্ত-গর্ভা বির্ত্তিহেন। অন্যেরা আৰু আনক উৎসৰ করিতেহে। বে সব কুষারী এখনও রক্ষলা হর নাই বা গর্ভবারণ করে নাই, ভাহারাও পৃথিবীয় সমবর্ষা ও অংশহরণা, ভাহাদের আনক বিবান করিলে ভাহাদেরই অগর অংশ--- যিনি গর্ভবারণ করিবাহেন, তাঁহার মন্ত হবৈ। এইকটই কুষারী-পূকার ব্যবহা।

উংলব শেষ হইবার সময় আলেপালে বত তৃতপ্রেত বা পর্তম্ব সন্থান মইকারী অপদেবতা আহে তাহালিগকে গালাগালি দিরা ও কর্মন হিটাইরা তাড়ান প্রয়োজন। তাহারা মাধ্যকেই আশ্রয় করিয়া থাকে, আকাশে বাতালেও থাকে। স্তরাং ধেশক প্রায়্য তারার লোকে পরস্পারে পরস্পারের প্রতি তগলিল-বাচক শব্দ প্রয়োগ করিয়া অগ্লীল বাক্য ব্যবহার করিত, অগ্লীল নৃত্যনীত করিত এবং কর্মন হিটাইত। কালিকা প্রাণ-ভার ইহাকে মূর্গাপুভার বিসর্জনের অল বলিয়াছেন। বছতঃ বোর্মন তথা মূর্গাপুভাও শবর ভাতির ক্রি উংস্ব।

পার্বাভ্য নাগারা আধিন-কার্তিক নালে একট উৎসব করিছা সেনা পাবর প্রোবিভ করে। ইহা ভাহাদের বড় উৎসব। কচু, হল্ছ, সীন, ভূটা আদি শভের বীজ একত্র করিছা গক বা নহিবের রজে রঞ্জিভ করণান্তর দেনা পাবরের নীচে পুঁভিছা কেলে।

বানগাছে পোকা লাগিলে একজন নারী উলল ক্ইরা
জন্ত্রীল ভাষার গালাগালি দিতে দিতে বাতক্ষে প্রদক্ষিক
করিরা আসিলে পোকা ছাছিরা বার, আনার্ট্রইলে একজন নারী উলল ক্ইরা জন্তীল নৃত্যইত করিলে র্ট্রই ক্র-এই
বিশ্বাল অভালি অনেক পার্কত্য জাতির মব্যে আছে।
দেশের ভবিত্তং বিপদাপদ বদলাবদলের কথা বলিবার জ্ঞা
ক্রেব্যীর (বেব্ডার ব্রী বা নারী) উপার দেবতার আবেশ

হয়। বেৰভায় উদেতে উংসগীকৃত কুমারীর বৃভ্যে কেবভা নভঃ হন, নেইকভই কেবদানী-প্রবা।

नर्खवातिनेटक मान चक्कन कतान स्टेशाय, ভारात बाहुक ৰৱের সম্ভ ব্যবহাও করা হইয়াছে, বিছাদিও বিমাশ করা स्रेशारक-पूछवार बुस्थामीव अवस निकिष्ठ मतन शक निकारव वा मदा निवटम बाख्या छैक्छि। अदेवश्ये विक्यात शत विवन ৰুষ্যাত্ৰার বিবাম। কামরপের কোমও কোমও অঞ্লে প্ৰামবাদীৱা দলৰত হইয়া শুণাল বা শুক্র বধ কভিতে যায়। শভংশর ব্রিত্রীদেবীর সঞ্চানপ্রস্ব শর্ম। পৌষ মাসে বাছ কাটীয়া ঘৱে ফগল ভোলা হইলেই গর্ভবঙী পুথিবীর সভান প্রস্ব ছইল। শেষবাজে পুরুষ সবলে আন করিয়া ভঙ্চি र्रेश्यम । अर्थाञ्च शृंदर पश्च अधामिञ दावियांव पण मार्थ्य श्राम श्राम बक् भाजा, वीम धादा প্রস্তুত মেকি বা কেড়াবরে चाक्य वदारेश (पश्रः स्रेम। जातभा मधानत्क (कार्म नरेश পाछा-श्राज्यित गरिष्ठ भदन्भाव चानल-छरभव करव. অধাং কুষিকাত কমুল ঘারা পিঠাপুলি এন্তত করিয়া একে অপরকে ভোকন করাইয়া পৌষপার্কণ বা পিঠাপার্কণ উৎসব भागम करवा

স্তরাং দেখা যাইভেছে, মহাবিমুব সংক্রান্তির বিহু উৎসব, আযাচের অথুবাচী, শরংকালীন মবপত্রিকা, পৌষ-সংক্রান্তির পৌষ-পার্কাল—সরন্তই প্রাচীন অন্ত্রিক বা কোহবিস্ আতির কৃষি উৎসব। আর্থনিক কালেও আসামের পার্কাত্য জাতিরা বিশেষ কোনও মিনিঃ দিবলে ঐ উৎসব পালন করে মা। উৎসবের কাল উপত্রিত হুইলে প্রামণ্ডির নির্কেশ অস্থলারে সুযোগ-সুবিবামত যে-কোন দিবলে উহা পালিত হয়। প্রাচীন কামরূপে আর্যুকৃত্রি প্রবর্তিত হুইলে ভাহাদের জ্যোতিয় শাস্ত্র অন্থল্য স্থানির ক্রিমুব বিনে ঐ সর উৎসব প্রতিপালিত হুইতে আরম্ভ হয়। স্কুতরাং আদিন কাত্রির ক্রেটির ক্রিমুব বিনের সাক্ষে আর্যুক্তির জ্যোতিষিক তল্পের সামঞ্জ করা সন্তব্যর হুইরা পড়ে।

আসামের সমতল ভূমিতে বাঞ্চান্তরে পরম শক্র বছ মহিষ্, বঁছর এবং পকা। সূত্রাং এইগুলিকে বৰ করা অথবা বল করিবা রাধা আদিবালী কুষকদের প্রধান কাম্য ছিল। ব্রক্রো তীরবন্ধক বারা পক্ষী ভাঙাইত, হাতী বারা বাজ-ক্ষেত্র বঁছরের সর্ভ মাছাইরা বঁছর ভাঙান হইত। কিছ বছ মহিষকে বরম ও বড়া বারা বৰ করা ভিন্ন উপায়ান্তর ছিল না। সেইবাছ বরিত্রীদেবী নিক্ষে মহিষকে বৰ করেম এবং জাহার সভামগৰ বুঁহর ও ময়্বকে বাহমরণে খবলে রাবেম। ইহাই আদি করেন, পরে আর্যান্তিই এই কল্পাকে নানাভাষে রক্ষিত করিবা নানাল্য আঞ্চত করিবা লানাল্য ছাত্র করিবা নানাল্য হা

ঐপ্তর প্রথম শতকে ব। ভাষার কিছু পুর্বের দক্ষিণ-পূর্ব ইউরোপে নৈত্রক ফাভিরা বসম্বকালে একট বাঁড়ের উদর ছুরিকাবিত করিবা, সেই রক্তে সিকেরা মাত ধ্ইরা জীবনীশক্তি অর্জন করিত এবং ঐ রক্ত শহুক্তেরে উপর হিটাইরা দিরা পুৰিবার উংপাদিকাশক্তি বৃদ্ধি করিত। বৈত্রকগণ পশ্চিম ভারতে আসিরা বসবাস করার পর ঐ অঞ্চলে বসন্ত অনুতে কুমি আরম্ভ করার পূর্বে যাঁড় ববের পরিবর্জে, বেষবলির বিধান প্রবর্তিত করিল এবং রক্তের পরিবর্জে রক্তবর্ণ আবীর মাইতে এবং নারীদের অলে ছিটাইরা দিরা আদিরসাত্মক নৃত্য-গতের দ্বারা তাহাদিগকে কামভাবো-দ্বাপিত করার আয়োজন করিল। ইহাদ্বারা পৃথিবীও উণীপিত হইতেন। এই প্রবাই হোলিবেলা। একুফ মুবতীদিগকে রক্তরাপে রক্তিত করিয়া আদিরসাত্মক নৃত্য়নীতসহকারে দোল-বাত্রা করেন এবং পৃথিবীকে রক্তরলা করেন। সাত দিন পর

ভবু হলুদ রতে রঞ্জিত করিয়া পৃথিবীকে ভচি করা হয়। ইহাই পূর্ণবোল।

দক্ষিণ-ভারতীয় ভাগবতকার শ্বংকালে নিজ বেশের ফবির সময় স্রীকৃষ্টের রাগলীলার অবভারণা করিবাছেন। উত্তর-পূর্ব ভারতের সীভগোবিক্ষকার বসস্থকালে ঐ উৎসব করিবাছেন। ওকরাই অঞ্চলের সাধারণ ক্ষরির সময় হৈত্র-বৈশাব বাদে বলবার গোলিনীগণের সহিত জলবিহার করিবাছেন। ঐ সময় পরপ্রধালী ধারা জল নিয়াই কৃষি হয়, স্ভরাং হলগারা মধুনাকে আকর্ষণ করিবা বলবামকে ব্বতীদের সহিত আনক্ষেণ্য করিতে হইয়াছিল। কাজেই রাসলীলার বলেও আধিম ভাতির ক্রমি-উৎসব বলিয়া অভ্যান হয়।

স্বাধীন ত্রিপুরা

শ্ৰীম্বালপ্ৰকাশ সোম

ভারতের রাষ্ট্রার স্বাধীনতা অর্জনের অব্যবহিত পরেই ত্রিপুরা-রাজ্য ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রে যোগদান করে। তাহার পর হুইতেই পূর্ব্ব-পাকিস্থান রাষ্ট্রের মুসলমানগণ এ রাজ্যে নানাপ্রকার অরাজকতা ও বিশুখনা স্কার চেষ্টা করিতেছে। এই ত্রিপুরা-

রাজ্য অভি প্রাচীনকালে 'কির্দিয়া' বা কিরাভরাকা নামে অভিহিত ছিল। ইহা ভারতের পূর্ব্ব প্রাছে অবস্থিত। পুরাৰ-কারগণ বঙ্গের প্রত্যম্পর্যদেশত প্রাচীন ত্রিপরার শৌর্যাধীর্যাও রাজনীতিবিষয়ক বিবিৰ তথ্য বৰ্ণনা কহিছাছেন। ঐতি-হাসিক্রণ ক্রক্রভি ইভ্যান্তি উপর बिर्ख्य कविया 'वाक्याना' अवर क्यान এছনিচর বাংলা ভাষার সমলন করিয়া-(इम, किश्व व्यासक शामह अहे अग्रश्व উপাদান নিভ'ল হয় নাই। ষেষ্ ৰদদেৰবাগী সকল আভিই বাঙাগী, **উভিয়াবাশীরা উভিয়া, আলাম এলেশের** चनशैश অধিবাসীরা বাৰ্যাপ্ৰাপ্ত হইয়াছে--ভদ্ৰণ ত্ৰিপুৱাবাসী ভাতি-সৰুলকে 'ত্ৰিপুৱ' বা 'ত্ৰিপুৱী' আখ্যায় অভিহিত করা হইরাছে। ত্রিপুররাজ্যের খতীত গোৱবকাহিনী ও কীৰ্ত্তিকলাপ

শরণ করিয়া ত্রিপুরাবাসিগণ আজও গর্কা অহ্তব করে। ত্রিপুরার রাজপরিবার ও ঠাকুর-পরিবাবের লোকেরা নিজেদের 'ত্রিপুর ক্রিয়' নামে আব্যাত করেন। মহারাক্ষ ত্রিলোচনের পরবর্তী এবং মহারাক্ষ রত্মধাবিক্যের পূর্কবর্তী ভূপভিগণ 'কা' উপাধি বারণ করিয়াভিলেন। এই 'কা' শক্ষের অর্থ 'পিডা'। ইটান- সমাজে ধর্মবাজককে 'কাধার' বলা হয়। তাহারা ঈশ্বরকেও কাধার বলিয়া থাকেন। হিন্দু ও বৌচ সমাজেও এবছিব আধ্যার অভাব মাই। 'ফা' শক্ষর ব্যবহারও এওলির অধ্যান-জিপুরার রাজভঞ্জ প্রজারা প্রভারঞ্জক রাজাকে শিতা



চতুৰ্ব দেবভাৱ প্ৰাচীন মন্দির---উদৰপুর

বলিরা সংখাধন করিতেন। মধারাক রত্নাশিক্যের সময় হুইতে 'কা' উপাধির পরিবর্তে 'মাশিক্য' উপাধি-বারণ এই রাজবংশে প্রচলিত হয়।

ত্রিপুরারাক্য পর্বভসমূল বলিয়া অতীতে উক্ত অঞ্চল বিশেষ মুর্বর ছিল। রাজ্যের পশ্চিম ভাগ খলমর পাকার মুরবর্তী



ব্যবর্ণরতা কৃষ্ণি বালিকাখ্য

হানে বাজায়াত নিতাছই কটুনাব্য ও বিশক্ষমক ছিল বলিয়া জানা বায়। একচ তথ্যকার দিনে পার্থবর্তী রাজ্তবর্পের দহিত এখানকার রাজাদের এবং রাজপরিবারের লোক্চের ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক হালিত হওটা সন্তবপর ছিল না। রাজপরিবারে বহুবিবাহ-প্রথা অনেক দিন হইতেই প্রচলিত ছিল। ক্ষিত আহে, মহারাজ ত্রিলোচন শিল্পলা-মিপুণা ১৪০টি মহিলায় পানিপ্রহণ করিয়াছিলেন। মহারাজ উদর্মাণিক্যও যে ১৪০টি বিবাহ করিয়াছিলেন ভাহার ঐতিহাসিক প্রয়াণ আছে। প্রিপুরার ইতিহাসে ইহাই সর্ব্যোক বিবাহসংখ্যা। এতহাতীত জ্ঞাবিক পরিমানে প্রায় সকল রাজাই বহুবিবাহ করিয়াছেন। একাধিক মহিষী প্রহণ না করার দৃষ্টাভ জ্ঞিপুরেশ্বগণের মধ্যে বিবল।

ত্রিপ্রার নৃপতিবৃক্ষ প্রাচীম কৌলিক প্রথা বজায় রাখিতে সর্কাল সচেই ও বছবাম। কথিত আছে, মহারাক্ষ ত্রিলোচনের বিবাহকালে রাজবাটীর বহিংপ্রালনে মনোহর বেদিকার উপর উপর্যুগিরি এক্ষট চপ্রাতপ বাটাইয়া ভাষার চারি কোনে মাললাখচক কললবৃক্ষ, কাঠনিন্তিত কলগী স্থাপন করা হইমান্তিল এবং বেদিকার চন্তুপ্যার্থে কল-পূপ্য-পল্লব-মুশোভিত মনলগই প্রভিঠা করা হইমান্তিল। ত্রিপুরা রাজপ্রিবারে বিবাহন

ইংসৰে অভ্যাপি এই সকল নিবৰ
বৰাবিৰি প্ৰভিশালিত হইতেতা। প্ৰবাদ
আছে, প্ৰিলোচনের অন্ধালে ভাঁহার
বিনেত্র লক্ষিত হইবাহিল। ভদবৰি
বাৰপ্রিবার পুক্ষব্পর বিবাহকালে
ভাঁহাদের ললাইদেশে চক্ষম্বা একট
চকু আঁকিলা দেওবার বেওবাক হইবাছে।

शाहीयकान इवेटलवे ত্রিপরার রাকপরিবারে লোকেদের পিকার প্রতি বিশেষ অথবাপ ছিল। পেকালে যাতা-ছাতের পুরাবভার অভাব নিবৰন মিপুর-রাজ্যে শিক্ষা আশাহরণ প্রসারলাভ করে नारे वर्त, किस (यहेक विणाधकी (भवास ছিল ভাষাও নেহাভ উপেক্ষীয় নছে। আর পেকালে দেবানে ৩৫ যে প্ৰিগত বিভার অপুশীলন হইত তেমন নছে। दाक्नीलि भयाक्नीलि काहरवनीलि, মুখবিভা, সদীতশাল, আধাাত্মিক তত্ত ইত্যাদি সকল বিষয়েরট চটা ছিল। শাহীত্রিক স্বাছ্যের উন্নতি কলে মল-বিভারও অভ্যাস করিতে হইত। ত্রিপর-ভূপভিত্রশ বর্দ্ধ সধতে বিশেষ উদার মভাবলম্বী ছিলেন ; তাহারা সকলেই যে ৰশ্ববিশ্বাসের অভুসরণকারী ছিলেন ভাষা নছে। কোন কোন ৱাজা সীয় বিশ্বাসাত্রসারে শৈব,শাক্ত বা বৈক্ষব



এই কাষদায় বেদার হাতী হরা হয় মতাবল্যী হইয়াছেল এমন বুটাছ ত্রিপুরার ইতিহাসে দেবিতে পাওয়া যার। রাজবংশ প্রথমত: শৈব হিলেন্ পরে মত

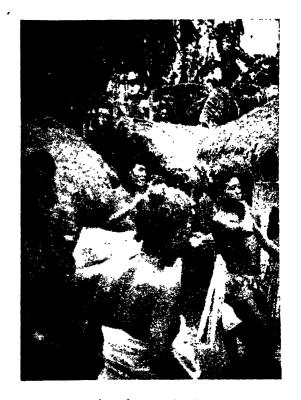


'কের' পূৰাৰ ত্ৰিপুৰাবাসীদের মৃজ্যোৎসৰ

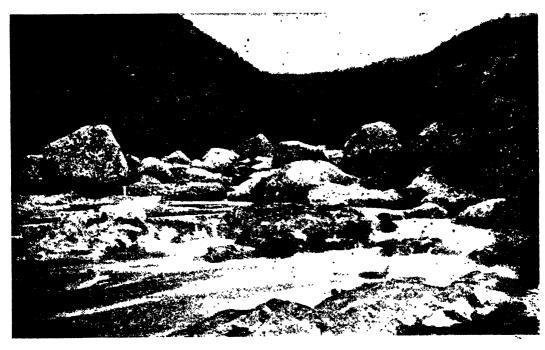
পরিবর্জনের দক্ষন বৈফব ধর্ম অবলহন করেন। কিছ তাঁহারা বৈফব চইলেও লৈব ও শাক্ত বর্ণের প্রক্রি চিরদিনই সমান আগাবান। তাঁহারা পুরুষামূক্রমে পীঠাবিঠানী ত্রিপুরামূক্রী , দেবীর সেবা করিবা আসিভেছেন; বিবিষ্ণতে ছাগাদি বলিদাম ছারা এই দেবীর অর্জনা করা হয়। রাজপরিবারে কুগদেবতালদের মব্যে শাক্ত, শৈব ও বৈফব সকল সম্প্রভাৱের উপাস্ত দেবদেবী আছেন। এই সকল দেবতার প্রীভার্বে আজিও ছাগাদি পক বলি দেওয়ার প্রথা আছে। এমন কি রাজার অভিষেক উপলক্ষের পাঁঠা বলি দেওয়া হইরা থাকে। এ দেশে রাজাদের প্রতিষ্ঠিত শিব ও শক্তিমুর্ত্তি এবং বিফুর্-বিক্রছ্ আনক আছে। চিরাচরিত প্রথামূসারে আজিও শিব ছুর্গাও বিফু ইন্ড্যাদি বিভিন্ন দেবদেবীর পূজার সমন্ত আহলাক্ষম পাশাপাশিই হইরা থাকে। রাজা সম্বং এই সকল পূজাপার্কবের পৃষ্ঠপোষক—ঘদির ব্যক্তিগতভাবে তিনি বৈফর বর্ষাবদ্দনী।

শিল্পকলার অভ ক্রিপুরারাজ্যের প্রশিদ্ধি আছে। এবানকার বল্লন্ধি বিশেষ উরত বরপের। এজল বাভবিকই ইছারা
পর্ব্ব করিতে পারে। প্রাচীনকালেই ক্রিপুরা রাজ্যে শিল্পকলার
বিকাশ হইরাছিল। বল্লনিল প্রথমতঃ ক্রিপুরা রাজ্যালাদেই
পৃষ্ট হয়; পরে উছা রাজ্যমর পরিবাপ্ত হইরা পছে। প্রকা
নামে এক রাজার চেষ্টার ক্রিপুরার শিল্পকলার বিভার উরতি
লাবিত হইরাছিল। কবিত আছে, কার্পান তছরারা বল্পবর্মের
প্রধা ভিনিই সর্ব্বেশ্বর ক্রিপুরার প্রবর্জন করেন। বল্প-শিল্প
ভালা আরও বিভিন্ন শিল্পকলার চর্চা প্রবর্জন করিয়াছিলেন। ক্রিপুরার প্রভীর অরণ্যলাগী কুক্

ও ইপত্না প্ৰভৃতি বিভিন্ন ছাতীয় প্ৰত্যেক আদিবাসার গৃহেই বাজিকা বু তী বুলা সকলকেই তাঁত বুনিতে দেখা যায়। ইহা-



'কল্পচা' পূজায় নাচ গান

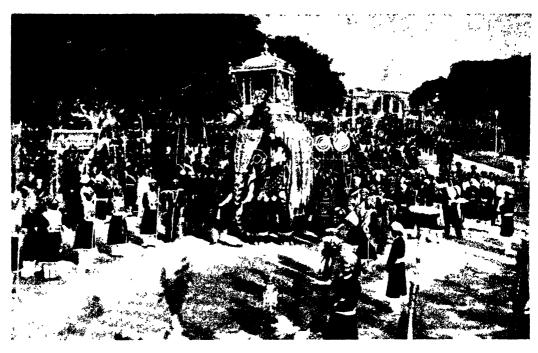


डेपश्रश्रक्त भरव

(वत वश्ववस्थित्र्वा अन्त्रभीतः। छावारवत नवारक वकात पृष्-कार्रश्व कात वत्रमविकां अवक्रिक्षेत्र । खिनुतात केनिनिके विश्वो प्रवादक्ष द्वम-निष्यं वित्वव शहनम चाट्य । बिश्वाय ব্যুম্পিলের প্রদার কিরুপ, নীচেকার হিসাব হইতে ভাষা বুঝা वाहेर्द। ১৯২১ खेड्रीट्स्व चाष्यस्थावी वटच बिन्दावाटका भार्कान्त भवीशित मृत्वत प्रत्या ०४৮८७। अहे भक्त मृत् छ। एउन जरना नर्सक्ष ७১४৮४। वस्त्रनित्र शका विस-नित्र, এবং ভক্পশিলের ক্ষও ত্রিপুরার ব্যাভি আছে। এমন কি. ৰাশ, বেভ ইভ্যাদি দারাও মিপুরাবাদীরা যে সকল এব্য बिर्माव करत (मध्मिष केषां (मद मिन्नदेवपूर्वाद भविष्ठां मध রাজ-গরকারের সাহায্যে যাহাতে এই সকল শিলের উভবোভর উর্ভি হর ভাহার চেটা করা দরকার। বর্তনান কালে ভারত প্ৰশ্যেটের ছত্ত্ব নিয়ন্ত্ৰণ বিশিক (yarn control order) দক্ষম অভি অৱ পরিমাণ হভাই এই রাজ্যে আসে। ইহার ফলে বৃহগংখ্যক ভাতী আৰু বেকার এবং চুর্ফণাঞ্জ। ইহাদের मर्या जरमरक्रे अवन प्रे (यम) (यह जिक्का बाहरण यात्र मा। রাজসরকার অবিলবে উপর্ক ব্যবস্থা অবলধন না করিলে পরিণানে ত্রিপুরারাক্যে তাত-শিলের সমূহ ক্ষতি হইবার नश्चारमा ।

ত্রিপুরারাজ্যের পূজা-অর্চনাধি বিশুপান্তের বিধান অস্থায়ীই অস্থৃতিত হইরা থাকে। আবাঢ় মাধ্যের ভক্লটায়ীতে এথানে বিপুল সম্বারোহে 'বাচি' পূজা হয়। ইহা চতুর্বপ খেবভার একট প্রবান উপেষ। এই পূজার পূর্বাধিবদ অপরান্তে চতুর্বপ

দেবতাকে নদীতে খান করান হয়৷ এই সময় শহরের মরমারী মানা বেশভ্যায় সজিত হইয়া দলে দলে দেবতাদের সাম্যাত্রা দর্শন করে। ইছার পরবর্তী শনি কিছা মদলবারে चार अक्षे विराम्य श्रृका एव, जाशास्त्र 'स्वथ' श्रृका वरण । अवे পূকা চতুৰণ দেবভাৱ পূকার সহিত ঘনিইভাবে সংলিই। हचारे बरे প्**वाद श्वान क्छा । প्**का चादछ रुरेवाद প्र्या পুৰাস্থান হিসাবে একট বিশেষ এলাকা খিৱীকুত হয়। ইছাদের বিবাস অর্চনাকালে সেই এলাকার মব্যে কাহারও ক্ষুবাৰুচা হইলে পুৰা পও হয়। এই ব্যাপারকে ভাহারা অভ্যন্ত অম্ললক্ষক ব্লিয়া মনে করে। একচ পূকা ভারত ষ্টবার পূর্বেই বিশেষভাবে অগুস্থান করিয়া আগর-প্রস্বা तमन वा मृष्टानशानाको श्रीपुरुषस्य अरे शीमामात वास्टित লইয়া যাওয়া হয়। পূজার সমর মাদুষ ও পৃহ্পালিত **পভ** ইভ্যাদি ৰাছাত্ৰ বাহিত্ৰ হুইভে পাত্ৰে না। এই সময়ে কেহই ভাষা, জুডা, বছৰ, পাৰচী ও ছাডা বাৰহার করিতে পারে ना। भेखवाळ कानाइन अधन कि डेकदर क्या वनाड 'কের' পূজার সময় নিবিছ। স্বয়ং মহারাজাকেও এই নিরম পুৱাপুরি মানিষা চলিতে হয়। এই সময়ে সকলকে এক দিন ছুই রাজি নিজ নিজ গুড়ে আবদ্ধ বাকিতে হয়। অবঙ বিশেষ প্রয়োজনীয় কাষ্য সম্পাদনার্থে কিয়ংকালের কচ নগর-ৰাসীদিগকে গৃহসীয়ানার বাহিরে যাইবার অধিকার দেওয়া হয়। বহিগমদের সময়টুকু ভোশকনি ছারা ছোষিত হয়। 🗳 সমূহে সকলে বাহিছে আসে এবং বে যাহ কাকে লিও হয়।



বিজয়া দশমীর মিরিলে হতীপুঠে ভূতপূর্ব্ব জিপুরার মহার'জা

प्नर्कात (जापक्षिम इरेटन प्रकारकरे गृह् बाराय क्रिए इत। প্রবাদ আছে, এই পূজার ফলে দৈবঞ্পার দেশে নিরাপতা বিবান হয় এবং এই পুৰা নির্মিয়ে সম্পন্ন হওয়ার উপর এক বংসবের খন্য রাজ্যের ভভাতত নির্ভর করে। প্রথম বারের পুৰায় কোনৱাপ বাধাবিল্ল ঘটলে, সপ্তাহমবোই শনি কিলা মলবারে পুনর্কার বিশেষ সভর্কতার সহিত পূজার অনুষ্ঠান कवा एव। बाक्यांनीत शृक्षा विवाशक मन्त्रत्र एदा প্রত্যেক পার্মত্য পরীতে পুর্ম্মোক্ত নিয়মে কের' পূজা হয়। তংকালে এই সব পঞ্জীতে প্রবেশ করা নিষিত্ব।

বৰ্ডমানে স্বাধীন ত্ৰিপুৱা যংন ভারতীয় ইউনিয়নে যোগদান ক্রিয়াছে তথ্য এই রাজ্যের আভাছরীণ অবস্থা সম্বৰে (एनवाभी(एव भवाक् काव बाका है किए। वर्डवान कारण (व সাম্প্রদায়িকভার বিধবাষ্প ভারভবর্বের ও পাকিছামের সর্বজ্ঞ ঘড়াইবা পভিষাৰে ত্ৰিপুৱাবাজ্যে ভাষার ছিটেকোটা প্রবেশ করিরা সেধানকার বাভাগকেও কলুষিত করিয়া ভূলিয়াছে। এ রাজ্যের মুসলমানগণ মুসলিম লীগের পক্পাতী-মদিও कांचारा जान्यपाक्षिक पाणा-शाणायात्र मिन्या करवम । बिश्वा-রাজ্য ভারতীর ভোমিনিরনে যোগদান করায় পূর্বা-পাকিছানের মুসলিম লীগ কাউলিল অগভঃ। ভূতপূর্ব মভারাজ বীর বিক্রমকিশোর মাণিক্য বাহাছর সংখ্যালবিষ্ঠ मच्चेमांवरक नर्वा वेषा क्यांच श्री क्यांचर विकासित्तम. ভাৰা সভেও কিঙ বহিৱাগত মুসলমানগৰ চকাভ করিবা এ ল্লাজ্যে নানা বিশুখনা ভটন চেটা করিতেছে। বর্তনানে মিপুরা



वर्षवनदव मिकाम चट्डबदव कुकि क्रका



টপরাদের মৃত্যাপত



শোণার্ভার করেকট পংখাতী বেলেনেরে

बांच्यात नर्ववधी कर्जी इटेटिएएस महातान काक्स्प्रका (पर्व)। তিমি বিশেষ কাউখিলের প্রেসিডেন্ট হপে শাসনকার্যা পরি-চালনা করিভেছেন। তাঁছার পুএই রাজ্যের উভবাবিকারী---ভিনি এবন নাবালক। প্রকাশ, রাজগরকারের কর্মচারীদের বেতম অধিকাংশ ক্ষেত্ৰেই সামাত বলিয়া অনেকে উণকোচ এমণ করিয়া বাকে। সাবারণ কেরার হুইতে আরম্ভ ক্রিয়া উচ্চপদস্থ वाककर्षाती भवाब अकामाबादायव निकंते एवंटल (कि मदेवा बाटकन । करन मामनवावश छेखरबाखब निविन घरेश निष्-एक । भाषाको अकारभद्र मत्या अविकारभद्र चल: स गतीय । ভাহাদের মব্যে অনেকেই পেট ভবিষা বাইতে পায় না, প্রনের কাপত ভূটাইতে পাবে না। ছোট এক টুক্রা কাপড অথবা হভার গোছা কোমৰে অভাইয়া কোনমভে পজা निवाबन करता महत्त्व चानक वाक्षामीत वाम---छाहारमञ মব্যে ব্যবসাদার, উকিল, মোক্তার ইত্যাদির সংবাা নেহাং क्य नद्र। अवायकाद (वश्वेद कान वाडालीहे পूर्वावक स्टेएक আগত। এ রাজ্যের অবিকাংশ বাড়ীতে বাঁলের ছাউনি, খরের বেছাও বাঁলের ভৈরি। ত্রিপুরার অরব্যে প্রচুর পরিয়ালে বাঁশ শবে। এবান হইতে ভারতবর্বের ভিন্ন ভিন্ন ভানের কাপভের कांत्रपानाय लहुत रीम हालान (पश्चा एवं। अपन्ये अपानकांत्र महीराष्ट्र कानधान रीएमंब लाहुका एवना यात्र। सकरण अक খৰিক বাঁপ বাকিতেও খাৰ পৰ্যাত্ত এ ৱাৰো কোনও কাগৰের कन शानिक एवं मारे। अ विषय वाकनवकाव अक श्रकाव हेवानीय वनित्नहे हत्न।

বিপ্ৰায় অভি স্থাত্ আনাৱদ প্ৰচুৱ পরিয়াণে পাওয়া বায় এবং বায়ও বেশ সভা। ইহা হাড়া আৰু কঠোল, দেবু ইত্যাদি

ব্দান ক্ষত এবানে বিভয় উৎপন্ন হয়। কিন্তু প্রকাসাধারণ **অভি দ্**ৱিদ্ৰ বৃদ্ধিয়া এগৰ ভাছাদের ভোগে লাগে না—বেশীর ভাগই রাজ্যের বাহ্নির চালান যায়। ব্যবসায়ীরা এই সব জিনিষ অভত লইয়া বিয়া বেশ ছু'পয়সা লাভ করে। ত্রিপুরায় व्यकृत बाच छैरभन्न एरेशा बाटक। अरे मन बान एरेटल रय চাউল হর ভাগা অভি ত্গরমূজ ও ত্রাছ। এবানে চোর'-कांत्रवांत भूवांवर्य हिनद्वारकः। त्रक्रमा हाष्ट्रत्व मूका ज गविक। (माद्योगीनिव जास्त्रपादिक भारू:-क्षामाद्य वाख-ভাগী প্রায় জিপ ছাজার নরনারী এ রাজে: জাপ্রয় প্রহণ करतः (महे नगर्य देशायत (प्रदेशिया ७ अवन्यार्थित जात এবানকার শিভিদ সাপ্লাইক ভিপার্টমেক্টের উপর পঞ্চে ৷ বর্তমান ल्यक ज्यम केंक विज्ञालय जिल्लाकेंग्र करण विभूगोदारका কান্ধ করিভেছিলেন। রেশনিং এবটিত করিয়া রান্ধ্যের মৰে৷ পুঠুভাবে ৰাজদ্ৰৰা সত্তবভাষ্টের ব্যবস্থা করা সত্তেও (हारा-कारवाध मंभून वह करा मछदभर एवं बारें। अ वाटकार পুলিদ কনেইবল ফইতে আরম্ভ করিয়া রাজ-পরিবারেরঙ क्ष्म क्ष्म भाकि काम मा काम प्रत्य करे निम्मीय गामाद्यव भिक्ष क्षित्र कार्या विश्व देश मन्त्र्वता विश्व करा नखरभव एस मार्वे। अवार्श्य श्रेष्ट्र यांना छैरभन्न एस स्म कथ। बार्त्रहे तिम्राचि । किन्ह हेशद रानीद कानहे बाबाउँका.

क्षित्रा ७ जामांव भौबांच निया वाशित्व ब्रश्नामी स्टेशा छेक মুলো বিক্তীত হয় ৷ ত্রিপুরার মন্ত্রীমঞ্জী অনেক চেঠা করিয়াও अर्थम पर्वाष्ट्र अर्थे अपहत्र निरांत्रम कतिए पादम मार्थे। अ दारकाद माजय-अया ध्रमानरयांत्री मरम्, हेम्। अवस्या श्वरमा পৰ ৰৱিয়া চলিতেছে, দেইজন্য বাজোৱ আজান্তৱীৰ ব্যাপাৱে অনেক বিশ্বলা পরিলক্ষিত হয়। সাধীন ভারতের অনাতম অঙ্গ দিশ'বে ত্রিপুরায় আণ্ড শাগন-সংস্কার প্রবর্তিত ছওয়া প্রাক্ষঃ সপ্রতি প্রকাশাধারণের মধ্যে এক অভিনৰ রাজ-নৈতিক চেতনার আভাগ পরিদক্ষিত হইতেছে। তাহারা রাজ-সরকারকে আধাইয়াহে যে ভাছাদের আন্তাজন প্রতিনিধি-(स्व भारकण मामनकाया প्रिकालका कृतिएक क्रेट्ट । विभूता রাজগরকারও এ বিষয়ে বাদপ্রতিবাদ না করিয়া একটা ক্ৰিডিট নীতি অবল্যনপূৰ্বক রাজোর লালন-বাবছার সামগ্রন্থ বিধান করিতে চেষ্টা করিতেছেন। ইয়া সর্বেও এ वाटकात वाकाष्ट्रतीय त्यामद्याय अवस्थ विटिन नार्वे । जीकृत-পরিবার ও রাশপরিবারের উন্নরাধিকারীদের মধ্যে রেঘারেথি, বিবাদ-বিগমাদ, গোপন মহয়ত্ত ইত্যাদি লাগিয়াই আছে: ু পুঠুজাবে শাসময়ত পরিচালন করা মতীদের এবং উচ্চপদস্ত বাৰক্ষচাত্ৰীদের পক্ষে কঠিন হটয়া Barre :

মুখ

শ্রীমণীন্দ্র হণ্ড

বু-বু-করা পথ রৌঞ-ছায়ায় এলছে
দুষোনো নগর বোলা-চোৰ তবু বন :
পূৰিবীটা ভবু মূৰ বুজে পৰ চলছে
রাজি বুনিবা অভিযানে কারো অর ।

তবু এবানে আয়ান নামলো একদা আকাশ বরানো কি যে তার নীগ মিনতি চোব ডুবে গেল—খুত্তিকা হ'ল বরদা আহকে সে তবু স্বপ্ন বরারি নিয়তি।

ভোমারো হরভো ভূল হরেছিল কিছুটা চির বদন্ত পাবেই ভেবেছো ভোমাকে; কুষ্ণর চোৰে দেখে। যি কো তাই পিছুটা — তা হলে হয়তে: দেখতেই তুমি আমাকে।

खबू खडीका (धानस्य करबंधि -- रक्य मा मर्स्स मरम मानि एका अपूर मध ; कृष्टेर्स कीवर्स स्ट (बारस कूल राम मां खादे एका यदा निरम्भक करबंधि मध ।

কেন যে এল না আকাশ-বার সে গোধুপি— কত প্রা তো ছাই হয়ে গেল বাতাসে ধু-ধু করা পথে অলগে যে আঞ্চ কি ধূলি; জোংখার মুখ কত দূরে- লৈ কি আকাশে ?

প্রাগৈতিহাসিক বাঙ্লাদেশ

শ্রী গিরিধারী রায়চৌধুরী

ভাতিতত্ব ও ভাষাতত্ব অধুধারী প্রাবৈতিহাসিক ও প্রাচীন-ভম বল-বিভাগ এই রক্ষ ছিল বলে বারণা হয়, যেমন---(১) "बाह" [=व्याहोन फेकादन, "बाह्न - बाह्म"]; (२) "स्व्रूक्" । [-- बाहीन উচ্চারণ বা শব, "श्रम्एस {-- Sumer}> श्रम्हत ~ হ্ৰষ্হ"]; (৩) "ডবাক্^২" [= প্ৰাচীন ● "ডব্ক"]; (৪) "বৰ" [= প্রাচীন, "মাড (=: Muong}>রাড >রড)"]; (e) "পুৰু" [= প্ৰাচীন শব্দ ও উচ্চাৱণ, "বুৰু" ● ও রূপজেদ "ৰুভু ● > ৰুভ"; (৬) গৌড় [>"গোড়্ড, ∗ গোভ<গোভু ∗ বা খণ্ড "--- ছিল প্রাচীনতমরণ]। এই রক্ষ বঞ্চ-বিভাগ भाके बाकरण बारत अवन (बाक बाह-इस सामात वहत আবে। অত্তিক জাতির সভ্যতা অধ্যায়ী প্রাচীন বাঙ্লার বিশেষ কোন অংশ বা অঞ্চ বিশেষ কোন উপঞাতির নামাত্যামী আব্যাত হ'ত। অবঙ আব্যমহলেও এরকম নাম-कत्रव अव। विम, (यमय-हिताव-देशाव-इ-(व्यर्गा/व्यार्गा-नाम"॰ (ः- "(मण वांकिशार वाह्नग्रम्", (यथन, "ध्यत-(कामना-नाभू"); " "Hellas=(अ९) "(इन्नप्तः" < अशाः / चार्शाः । ভৰণকার ঘিনের বাঙ্লার সীমাও আরতন কি ছিল ও কি রক্ষ ছিল তা বলাত্তর, তবে এখনকার দিনের অভুরূপ ও

षश्यात्री त्य विन ना--- अक्या षत्मकी त्यात्र विकार विश्व চলে। বুক্তি-তর্কের হারা যতটুকু আশাক করা যেতে भारत (भागे। एटम्ट बारे (य, वाड्मात छेखरत वियामक व्यर्गाए প্ৰাকৃতিক সীমা আৰও যেমন আছে, অতীতেও তেমনি ছিল, ধক্ষিণের বলোপদাগরও চির্দিন্ট বাঙ্গার দক্ষিণ সীমা। তারু পুৰ আৰু প্ৰিমের সীমা নিৰ্বিধ করাই লক্ত। মুগে মুগে এই ছটো দিকের সীমা পরিবত্তিত হয়েছে। ভারপর, পুর্ব্বোক্ত হুট অংশ বা অঞ্লের সামাও আয়তন কত দুর কি হিল चाक छाद प्रेष्टिनाहि दर्गना कदा इ:नामा ; छर् अटेट्रेक् मरव (सक्का (यरण शारत (य, "वम" (क्रप्र- "माक्ष्या •दाक्) वनएए यरबाद थानिकहै। ७ प्रकिर्णद खरनकहै। खक्रलवे निर्दिष्ठ क्'छ। "द्राह" (क्वार "बाह दा द्रारान्") वनरण कांध्रेरणेब উত্তর-পশ্চিম পারের ধানিকট। অংশ বোকাত: "পৌছ" (অবাং "e(গাড়্ড'' বা "নোঞ্ড''e - কি "নোঞ্ছ''e-- "ছঙ্ছ") বলতে বর্ত্তমানের পৌড়ও তার আশপাশের অফল নিণীত क्'छ । "पूछ " । खर्बार---"तृक् + या भूक -- कृष्ठ" , स्थम धिम উত্তর বলের কভক্টা ভূড়ে, হয়ত পুরাণ-হতিহ'লে বণিত "পৌঙু-বৰ্ষন" ৱাজ্য কি "পৌভ-বৰ্ষন-ভুক্তি"ৼ । বিভিন্ন মুগে পুৰক পুৰক ভাবে এই সৰ অংশ বা অঞ্চলের দীয়া ও আয়তন কি পরিমাণ গ্লাস ও রুদ্ধি পেয়েছিল তা বলা ছয়র।

এবন প্রাচীনতম বলের এই সব অংশ বা অফলগুলির আবা। বে-কোন গোকের কাছে নতুন বলে মনে হবে, সেক্ত এবানে ভার কিঞিং আগোচনা করা দরকার। মোটামুটিভাবে ভাষাভত্ব ও নৃতত্ত্বে সংগাত্ত ভাত্তিক

তারকা চিহ্ন অনুমান বোঝার। যে শব্দের আগে এই চিহ্ন থাকবে, বুকতে হবে যে সেই শব্দটি অনুমিত।

^{)।} इह्छ---"चुस्ह, चुस्हत, चुस्हत" व्यांशिल "ट्रह्स, चुह्सत, चुह्सत, चुह्सत, चुह्सत, चुह्सत,

২। "ভবক" শস্ব বেকেই witch কি sibyl অর্থক বাঙ্গা "ডাক—ডাকিনী" ও "ডাকু—ডাকাত" লব্দের উৎপতি। ভাক—ডাকিনী বাঙ্গার নিক্ষ ও বহু প্রাচীন, তাই শক্ষী অপ্লিক বলেই মনে ন্থর। কিছা "ডাক--ডাকা"র গলে এই লব্দের কোন সম্পর্ক নেই। তার সম্পর্ক বৃদ্ধ » "ঢক—ঢকা" লব্দের সলেই। বলা বাংল্য যে, বর্জমানের "ঢাকা" নাম ও লক্ষ ভবাক্ এরই অব্লিষ্ঠ।

৩। "ৰাধ্যানাম্"— ভঃ সুনীতিকুমার চটোপাব্যায় মহাশহের গবেষণার কল।

^{8। &}quot;Hellas" মং-প্রভাবিত। হিন্দু বৈয়াকরণেরা দক্ষটিকে "ব্লেমঃ" ধরে নিয়েছেন—অর্থাং দেশ বা ঘাণা বাচক দক্ষটিকে ছাতিবাচক হিগাবে। তাতে কিছু যার আগে না। কিছ জারা যে ভাবে শক্ষটকে বিচ্ছিন্ন করে দেবিয়েছেন, বেমন—হে অরয়:—হে অ লয়:>হেলর:—তা কিছ কৌতুক-কর (মাইব্য:—নীলকঠ-সম্পাধিত মহাভারতম্ প্রছের আধি পর্বের "কছুগৃহলাহ" পর্বাব্যায় ও পাতঞ্জন্মত মহাভায়ের প্রথম দিক)।

ক। "अक"র সকে আমরা "বক"র সম্পর্ক বীকার করি—
অর্থাৎ যে বারণাটা: গ্রাচীন হিন্দুদের মব্যে ছিল বলেই আমরা
এই রক্ষ কথার হারা প্রমাণ পাই যে—অক, বল, কলিল,
রাচ, স্থ্য প্রস্তুতি পক পুত্র দীর্ঘতমা খবি কঞ্চ বলিপত্নী
অধেফার গর্ভে উৎপন্ন হয়। তার উৎপত্তি হয়ে থাকতে পারে
এ দেশীর প্রাচীন অনসাধারণের মধ্যে প্রচলিত ঐতিহ্ন ও
কিম্বদ্ধী বেকে যার নিহিতার্প এই হতে পারে যে, পূর্ব্বোক্ত
উপভাতিভালি পরস্পর আভি সম্পর্কীয়—তা আমরা মানি।
এমন কি, নাগা একট জাতির নাম যার পূর্ব্বেপ ছিলক "নগগ
ব্যন্ত্র্ ব্যাত"—ভার ও এই মূল "মাত্ত-ব্যাত্" উপভাতিরই জাতি। মন্তব্তঃক "উজ্জ, বা, আঙ্" মূল শন্ধ
বেকে ওই "অফ" শন্ত উত্ত হরেছিল।

৬। "ভূভি" এখনকার "বিভাগের" অধ্রণ, shire বা "বেলার" চেয়ে বছ।

উপাদান থেকে এই আব্যাঞ্জি গুৰীত হয়েছে। "রাচে"⁹ ৰিল মুলতঃ বিৱাট অট্ৰিক-গোষ্ঠার উপকাতি-বিশেষের ও ভাবের ভাষা কি উপভাষার নাম: মূল "রাচে বা রাচ" ধ্বনির বিকৃতির কলে পরবর্তী কালে "রাচ়" রূপ ছাছিরেছিল। আবার তা বেকে 'র-লয়ে: । । লয়োরভেদ: " মির্মাস্থারী "লাচ্> माहण करणत पेंडर एश। थे अवहे मृश भन्न (परक चारात नान (= "नास्ट्र") भटका छेर्পछ एय। भक्षात्वा चक्न-विरमध "माम" नारम कथिए एव ७ अखबारहे "माम" नामीब व्यक्त आहर । "अम्रद्र-एम्ट्रव"-७ अक्क भरन्।।श्रविक केप-কাজি বিশেষের নাম। পুতরাং তাদের ভাষারও নাম বটে। धारे धारु नक (चटक "सूत्र्य" । "सूर्या "गर्या हैर शिख भक्ष राभव । विश्व सक्षा एटफ्ट करे (व. पुत्रह-ता विःभटक्टर প্রাচীনতম বা পারি তথানিক বাঙ্গার উপনিবেশ ছাপন-কারী একটা উপজাতি, নেই ছিলাবে অঞ্জি-পোটার অভভুজি। जानिक्टमद मटक अट्टब अक करत दक्ता हटन मां, कांबन ভাবে৷ খারও পরের মুগের উপনিবেশকারী: কিন্তু সুমের-দের অর্থাৎ Samerian-দের প্রভিত্তর অন্ত্রিক-গোণ্ডার উপ-ক্ষতি বাস ঠিক থীকার করেনানা- কর্মাৎ কলকটা সন্দেহ ८९१२९ करत्वा स्टब्स्ट्रिक ५८% छात्रिक्टल्स वर्थ विश्वत्य 63468 भ' एका पार्थ । यहस्य-त्मा-महस्या পারৈতিহাসিক সম্পদরাশিই হাছে মুসভঃ ভার প্রহাণ স্ব बिननेन। नामन्न फिक (बरक्छ । य यिन (बहे धमन बन्न, ८६मन नगद राउक द्रायबीस लक्ष करक् "वेद" (=-ar"), "बाद क्राविक्रोध ((श्राप्तिश्विकाटक) सम्म कटळ् "कुड" न - शां अन করে সাধ্য-্রগলিতে "পুর-পুরী" শক বিকাশ পায়। কাল্ডযোর क्या ग्राष्ट्र किस बहे ,या अधिक-,शक्षित आ:नक्ष्मि हैन-**चाराटि के अकरे "पे**त" संस्थानदादि राज्यक्त एवं । अ हाक्ष् এমন ফারও অনেক শব্দ আছে হা সুমেরীর ভাষাতে এবং শন্ত্রিক-পোত্রির উপভাষ্যকর্গেতে^{- ত}্বা ভানের কোন একটির মবোও) সমান ভাবে মেলে, এবং ডফা যা দেবা যায় তা नमनादे। अधनकः राह्माच अहे प्रमृष्ट हेन्छा केव मानाह

পুরাকালে যথ্য এশিখা খতে নাগরিক সভ্যভার পত্তন করেছিল। বলা বাছল্য, পরবর্তী কালে ঐ মূল "প্রমৃত্য ও পুমৃত্রে" শব্দের च वर्षों "व"-स्वि च श्रव्याच एरव या क्याच "मूप्र" मरस्व छेड्र হর, অ'বার ভা **বেকে প্রাকৃতে "পুব্ত" শংখর উদ্ব***হ***র।** যৌলিক ●"গোভ-৩৩়" ভাতি থেকে বর্ত্তমানে "গোল-" কাতির উত্তব । বর্ত্তমানে আমরা ভাদের ক্লাবিড় ভাষাভাষী-करण (प्रचाल भारे, (प्रवेषध लाएक सामादक साविध वरण मान করেন। কিন্তু আগলে তাঁরা কোন অন্তিক-উপজাতিই--- জ্ঞান্ত, থেমন, সুম্ছ, রাচ, বল প্রভৃতির অভুরপ। ভঙ্ চঙ বা ছঙ ("<•ছঙ়"), পুঙু বা •বুঙু, বা •বুঙু (=-"বুঙা") প্রভৃতি অব্রিক উপজাতির সমধানীয় ঐ "»(গালু: 5-৩৩ " (- "গোল") উপজাতি। এ প্রসঙ্গে এটকু বলে দেওয়া দরকার যে একেবারে দাতাতিক বা দর্বাবুদিক মতাভ্যায়ী '+দৃখিচ্" বা ''এদিন্তু-দৃশিন্তু'' (= জাবিড়) কাভি বৃদ ভট্লিক काणिक्रवे प्रमृत छेपनिविष्ठे मार्चः र विरम्धः। अक्षाः अरमक উপকাতির বংগ্রেকালে এট দলে-ভারী উপস্থাতিট সুলতঃ এফ সাধারণ বাসকেল খেকে বেরিয়ে পড়ে ভূমধ্যসাগরীয় তীরভূমিতে গিয়ে বসবাদ স্থক করেছিল। তার পর আবার তারা এই ধিতীয় পাবারণ বাসকেল বেড়ে ক্রমণঃ দক্ষিণ পুর্বের দেশগুলিতে বিভিন্ন দলে বিভক্ত হয়ে উপনিবিট্ট হতে ৰাকে। হয়ত মধ্য এশিধায় নাগরিক সভাতার পদ্ধন এই बुल काणिबर दियाय गाना करबहिल।

ভারপর দেখান থেকে ক্রমণঃ ভারা ভারভের সীমার বহিছুক্ কির ভারভের উর্ব-পল্টিম দিকর দেশগুলিতে উপনিবিঞ্জ হয় এবং দেখান থেকে ভারভে প্রবেশ করে। বলা বার্ডলা, এই কুই জাভির মধ্যে অমিলের চেয়ে বিল অনেক দেখা। দেই হিলাবে ভারভবর্ষে এমনও ঘটে বাকতে পারে যে, জাবিড় সাগ্রিষ্য ও সংস্পর্শে একভাবে বহু যুগ, বল্প পুরুষ মরে বাল করার কলে "লোন্দ" জাভি নিজয় ভাষা ভ্যাগ করে দ্রাবিড় ভাষা এইক করেছিল। ব্যাপাইটা দেহার আওভার চাপের কল আর এরকম ঘটনা ক্রমতে মানব সভাতার ইভিহাসে একেবারে যে বিরল ভাও নয়। ভা হাছা এইনও পর্যান্ত ভারতের যে প্রদেশে গোন্দরা সবচেয়ে সংখ্যাবিজ বলে দৃষ্ট হয়, সে প্রদেশট হচ্ছে ছোটনালপুর সম্যত্ত ম্বার্থদেশ। এই ম্বার্থদেশের পাশেই প্রাচীম কলিজ প্রদেশ। কলিক ধিল দাবিড় জ্বান্থিত ও ক্রাবিড় প্রভাবান্থিত। সংস্কোত-কলিক শক্ষ উত্ত হয়ে বাকতে পারে "ক্রো-১০

१। अधेरा---

Pre-Aryans and Pre-Dravidiums in India—by Jean Przyluski, Jules Bloch and Sylvain Levi—translated into English by Dr. P. C. Bagchi, page 23

৮। বিহাবের "বাচাবন বিহারের" "নাচা," বাঙ্লা
"বেড়া নেড়ি"র জাতি সম্পর্কীয় যেহেতু একই মূল শব্দ বেকে
উপ্ত ।

১। সংস্কৃত "কৃটি, কৃটিন" শব্দ ওই একই 'কুর' শব্দ থেকে
উত্ত । উপরঙ্জ "কৃটির কৃটিজ"ও ভাই।

५०। खडेवा---

Pre-Aryans and Pre-Dravidians in India—by Sylvain Levi, Jean Przylusky and Jules Bloch—translated into English by Dr. P. C. Bagchi (C. U. pub.) pages 146 & ff.

১১। ঐ র্গ "কগোভূ বা গ্রু" শক্ষ থেকে বাঙ্লা উপাবিবাচক "্রাড" ও "গুভা" শকের উৎপত্তি।

১২। কার্দ্মান-নৃতাবিকদের প্রেষণা ও মতাত্মারী ক্রাবিভ কাতি বৃদ্ধঃ অট্রকদের সদে অভিয়।

১৩। এই প্রদাদে বালি (Khasi) শব "Ka-lynkor"-এর উল্লেখ করা যেতে পারে যার শব্দ হয় "লালল"। সঙ্কা----

लक्" कि ''(काक-১० मह"--- खनावा नेस (वटक, अवर छाउ প্রাচীন উচ্চারণ ●"(কা-লিদ" ছিল বলেই মনে হয়। আনায়িক ''কো-লক্-কো-লঙ্"----শন্বের অর্থ হয়, রাজ-চিহ্ন। ''কোল"+ 'লক্বা লঙ্—"কোৱ-কু-কোৱঙ"ও ২তে পারে, কিন্ত এক্ষেত্রে তা না হওয়াই সম্ভব। রাজ্চিক সম্পন্ন काण्डिः (एम क्वरे कामारभन्न कार्य मध्य वरम र्वाव स्थ। व्यर्थार क्षारिक्टा विद्वारमध्य बोकाब काल राज मान कंबल---অর্থাং কিনা উচ্চাহ্য সম্পদ্ধ ছিল , তার প্রমাণ অভত বহু পাশ্রয়া যায়। যাই হোক, অন্তির "গোৰ্ভ বা ১৪৩৩"—-শক কাল-क्या परिवरिक स्टब्स भरक्ष काशाब 'त्रीक'क्रम बादन करवा। কেউ কেউ এই গৌড় শব্দে সংস্কৃত 'গৌর" শব্দের অপএই क्षपं वर्षा मर्ग करहन । अधन मर्ग कहात्व श्रव्हे कारन च।एड---- एकन ना, काश्चर्या-दिएनएक छ। परकेटक, एयमन, (नभोदा नाम । = "त्रोदी" रुट्स माफिस्स्टिक "त्रोकी" अवर छ। (बटक "গোডে" জলের উদ্ভব হয়। সাম্প্রতিক সুসে এই অঞ্তিম ''গোড়ে" কে অবহান বা ক্লান্তম ধরে নিষে পভিতের দল ভার नटक-"६ कः"---- श्राचात्रः (यात्रः कट्टः "(प्राप्तिष्ठा)" नवः (भ्राप-বিশেষের দাম ৷ তৈরি করে নিমেলেন ৷ এর অর্থ হ'ল "গোঁৱী" বা "শেড়ী নদীর ভীরা । ভান, কি এলম । সংস্কৃত ''লোকীয়ে" শব থেকে আংগুনিক 'গভিয়া" রূপের উৎপত্নি হয়েছে--- এমন যদি কেট মনে ভাবেন তবে তিনি নিৰ্বাত ভুল कदर्यन परम कामद्रा मध्य कदि । जनू लोएक्ट छेरपछि यपि (कि® कोटबन (त्री-वाक्तक (टेवा-भर)≦ "(त्रोद्र" भक् ८४८कहें र्दश्रष, ८कम मः ओ अक्षणिटिए रक्ष मक्त भूव ८२मी भाष्टा বেল, ভাৰ্তেও ভূল হ'তে পাবে ৷ যে হেড় আমিরা অলাভ অংশ বা অফলভাগির অংখ্যাহিনাবে ভিন্ন ভিন্ন উপজাতির নাম্ম পাচিত, সেই থেছু আমতা "⊌ভু⇒ গোভূ" শক্কেত গৌভ-এর व्यक्तिश्वा ग्रह्म यदा स्थक्षा गर्भाधीन म्रास्य कदि । धराक गर्भव भाव्भिक धरामव "छाका" रामध, क्रिक छाक:-अक्रमह পুৰ্বাকালে ভবাক নাথে ক্ষিত হ'ত কি-না সে বিষয়ে যথেষ্ট ग^{्र}देहन काट्या एक्ट कामना छर†क-व्यक्त विनेश कट्टल অশত। 'পুভুবাংবুভুবামুখা" আঞ্চল ছিল উত্ত-বলের राधिकहै।, कातन चाद यानिकहै। हिल कामझन, अन्नण: (य ক্ষ্পেটুকুর পরিচর মহাভারত পেকে লক্ষণ সেনের অস্পাসনে প্র।ত পাওরা যার, ভারের বিভিন্ন হুলে তার ভাল-রুদ্ধি

नरबछ। "भू•ु" नरबद>∉ উद्धिव दिविक नाविरछाध चार्टि, পুনর্মক্তির ক্ষেত্র অনেকের জানা আছে বলে এবানে আর ভা দিভে চাই না : বোৰ হয় "পুৰু" শব্দের ধারা বৈদিক আব্যিরা উপভাতিটকেই বোৰাত এবং "পৌৰূ" শব্দের দারা ক্ষপদ কি অবিদানটকেই বুবাভ। ঐ মৃদ অব্লিক ধ্যমিট সংস্কৃতে "পুতুও পৌগু" ৰূপে গৃহীত হয়েছিল—তার কারণ বোৰ হয় অম্লিক ও-কার ধ্বনি (ঠিক এখনকার মত ও-স্বর না হলেও) সংস্কৃতে ঔ-কার ১৫৭ পৃহীত হ'ত, ভাই "●৩ ● বা পোভ" ধ্বনির প্রিণতি হয়েছিল গৌড়-এ, 'পুডে "-এর পরিণতি হয়ে-हिल (भोकु-क्ष ; "४६० वा हूखु"--- नम (बरक छेडूड कान ४-খর মৃক্ত (ম্রাজ, ''চোল্ড কি, চুড্ড কি, চোড়)" শব্দের পরিণ ভি হয়ে ছল " চৌর"-এ: "মাঙ+ বা ব্যঙ" (Muong) একটি অন্তিক-পোণ্ডার উপজাতির ও ভাষা কি উপভাষার নাম। আংশলে ভাষ: কি, উপভাষার নাম বেকেই আমরা উপ-**ভাতির অভিত বরে নিষ্ঠে। ভালক্রমে "মাদ্" (মুখ্ড) ও** ভার রূপভেদ (=:৪ৢৢজ্ৼ) 'রেছে≉" যথাক্তমে 'মদ ও ব্ধ"-এ পরিবত হয়, আবের ভাষের সংখ "অল কৈ, আল" প্রভাষ খোল কংবে 'মজল" (-মোজল) ও "বজন-বল্ল" भट्याद रु**ड** ६४ : काद!६ के 'वशन-वज्रान"-काट्य हिन्सू माभटनंत्र (मध्यान (बटक यूमध्याम व्याव्यक्त यांचायाति अभरभद्र गरका -चा छ - ने भागाम-धाणाम (particle) स्वान कट्ट (मण्डिक "वाजामा" । "वाज मा" अवर वाजि-वाजक "বাসাদী" বা "বাঙালী" শক্তের উৎপত্তি হয়। কৈও সবার পুপরে আশ্চাধ্যের কব। হচ্চে এই ধে, "বাঙ্গা-বালাল।" व्याक्तांद बादा (बदार आक्रों) क बिकाहर वद करनहें बाह-स्रोध-সুন্ধ-ছবাক-বংগ-পুঞ্-সমেত প্রদেশই অভিধিত হতে বাকে अवर (शास्य-प्रका-अम्ब-छर्।क्-...छाध-वनव वा सनव-वक-ठ७-কাব্াড -বাহ্নর বা বাহ্নার-বেছা-সম্প্রত আইক আতি "বালানী" নাথে অভিহিত হতে থাকে।

অংশ্র, ছান ও নদী পরিচারক আরও কতকওলি
অন্ত্রিক শব্দ পাওয়া যায়, যেমন, "কামরূপ" (< "কাম্রক্ < ক্-রক্ < ক্ম-লক্" — কাম + লিক), "তমল্ক্," যার
সংক্তায়িত রূপ দাড়িছেছিল, "দাম-লিপ্তি" ও "তাত্রলিপ্তি", (তম হা দাম-লক্ — উপলাতি-বিশেষের বা পত্রবিশেষের চিহ্ন বা লিক।), "দামোদর" ১ (< "দাম্দাক্"),
কিপোতাক্ল ১ (< "ক্র্দাক্"), তিভা (< "দিভাং" ১৬)
—যার সংস্কৃতায়িত রূপ হ্রেছিল "ত্রি-ভোভা", "ক্লী" ১৭

Pre-Aryans and Pre-Diavidians in India—by S. Levi, J. Bloch and Jean Przyluski—translated into English by Dr. P. C. Begchi, page S.

১৪। ঐ মূল» "গোড়ু বা ভঙু" শদ থেকেই বাঙ্লা উপাৰি বাচক "গোড়" শংশার, "গোড়া" ও "ওভা" শক্ষে উৎপত্তি হয়েছে।

[্]র বৈঃ-সং ≕ বৈ দিক ৩ সংস্থত এবং বৈদিক বা সংস্কৃত।

১৫। ঐতবেধ রাখাণ—"অদ্ধা-পূত্রা-শবরা-পূলিকা-মূভিবা ইভূচালয়। বহুবো ভবন্তি" (৭৷১৮) মার্কভের পুরাণ—৫৭, বিষ্ণু-পুরাণ—২০০ ১৫, মহাভারত—৫২।১৬-১৯ ইভ্যাফি এইবা।

১৬। আহ্মানিক প্রাচীন রূপ্তলি ভঃ স্থনীতিত্যার চটো-পাব্যার প্রভাবিত।

১৭। মংপ্রভাবিত।

ইত্যাদি। পুরান-মাটি ও নতুম মাট-বোধক "ভাকড়" ২৮ ও "বাদাড়" ১৮-শক আম-বিশেষের নাম বিলাবে ভনতে পাওয়া যায়।

এ ছাড়া আয়ও বছ বাঙ্লাদেশের থানের নাম বিদাবে আট্রিক শব্দ প্রচলিত আছে, যেমন :---

- (ক) ["অভা বা আছা" প্রভার ১৯ দিয়ে,]
- २ । यत्नांत्र, यन्क्, यन्का [< 🖛 ४ 🕂 ऋकः ।]
- ৩ · সে:মড়া [<সুম্^{২ :} + **খড়া** ।]
- 8। दशमण [<६५ वा ६२(+ चणा !]
- । নাওয়¹? | <নাওড়! < লাও বালাব্ + অড়া = লাউটেয়
 খান বা (ড়য়।
- ७। (२७६ | <िभ् दा अम्+ खड़ा ।]
- १ : वै'नए! [<वै।ए+**च**रा ।]
- > · 회영명! | < 취소 + 교통! 1
- > । शहरण [<वाल+वणा ।]</p>
- ১০ বাকভি | ≪বাগভী ° ≪বাৰ + অভ্নে ই ।| বে) [ই-অণ-প্ৰতায় দিয়ে।]
-) . वामि [<्दार+वेषा ।]
- २। ८२८म. ८५३४ (< ४१९ + १४वर, ४१९ + छेवर)।
- 이 발매 국 항상: | < 행(十호회 < (((十호행 1)
- s : प्रंटम [<्रंभिका= प्रंर+ रेका।]

শ্বের দিক শেকে বা ভাষাভাৱিক দিক থেকে যথেঞ্জ প্রাণ্ডের দিক থেকে বা এবন দেখা যাক—ভাভিভণ্থ বা নৃত্রের দিক থেকে কভটা সংবাদ পরিবেশন করতে পারি!

্ঞকপাশকণেই বুকবেন যে কতকগুলি ঘর নিয়ে যেমন

একট পাড়া গড়ে ওঠে, কলকগুলি পাড়া নিষে আবার যেমন একট প্রাম গড়ে ওঠে ঠিক তেমনই ভাবে মাসুষের কভকগুলি দল নিয়ে একটা উপজাতি এবং কভকগুলি উপজাতির সম্বায়ে একটি জাতি গড়ে ওঠে। আমাদের দেশ প্রাকৈতিছাসিক আমলে কভকগুলি অন্তিক-গোটার উপজাতি-দের ঘারা অবিকৃত ছিল। ভাদের অনেকগুলির নাম পুর্বেই দিয়েছি।

এই উপকাতিভাগ মুগী গুপুড় কুকুর পুষ্ড কিছ (কোন কোন উপজাতি বা দল) পো-হতঃ৷ করত, পর-খ্রী হরণ করভ . বাঞ্লার মুদ্ধশানদের মধ্যে এই যে লেখোক অভ্যাসগুলি দেখতে পাওয়া হায় এখলি কিছু ভাদের বর্ণ-वरतत मध्याद अर्थाए वह लाहीन : प्रशुरतत र ह म्हा छ। एवत পরিচয় ছিল। তানের পণনার ধারার ছিল "পভা" (৪টি)। "কৃছি" ও "কড়!" (২০ ও 🚡), "পণ^{*} (৮০) প্রভৃতি বিশি**ষ্ট** সংখ্যার নাম ও স্থান। তারা চাক মাস ও চাক্ত বংসর প্রনা कडण, लाहे बायडा लास्तर काथ (बरक (बरक्र) "कहेल, नन, জোরাব, ভাটা" প্রভৃতি শব:। চঙী ? "কালী ছিল ভালের ্টপঞ্জি-বিশেষের) আরাধ্যা দেবী। হলুদ, পান, কলা, পিঁছর ছিল 🗽 ভাষের পণ্য এবং শিল্প-সঞ্চভার নিদর্শন। কঞ্চি ছিন তাদের মুদ্রা। "কার্ণাদ" বোধ হয় তাদেরই আবিছার। ভাদের সভ্যতা ছিল নদীয়াতৃক ও বুলত: গ্রামীণ: ভাদের রাইক কাঠামো ছিল প্রাচীন আখ্যদেরট মতন, অধ্য গোষ্ঠ-পভি বা পোত্ৰপভিত্ৰ অধীনে ছেম্ম এক-একটি দল থাকত, তেমনি কোন সভাৱের অধীনে বিশেষ একটি দল থাকত বা কাঞ্চ করত। অস্ত-শন্ত ছিল তাদের হাড়ের ও পায়াণের :

ধাক জামরা বাশালীর মধ্যে যে, "ভোম, কাওরা, গোন্ধ, বাগ্লী, মালাকার, গোন্ধ, প্র-কারম, পৌন্ধ, মালাকার, গোন্ধ, প্র-কারম, পৌন্ধ, মালাকার, গোন্ধ, মালাকার, গোন্ধ, মালাকার, গোন্ধ, মালাকার, মাল

১৮। মংগ্রেষ্টাবিত ও Prehistoric India by P. Mitra, page 72-74 জন্ম।

১৯ । ভঃ সুণীতিকুমার চটোপাধ্যায় মহাশয়ের মতে বুল।
"অভক" প্রতায় থেকে "অভা বা আভা"র উৎপত্তি হয়েছে।

২০। এইব্য : "ভারতের ভাষা ও ভাষা-সমগ্রণ": ২য় অ্ব্যায় --১৪ পু.। ডঃ স্থনীতিক্ষার চটোপাধ্যায়।

২১। "রম্" মূলত: "রম্ছ" শব্দ ছতে পারে এবং ভা যদি হয়, ভা হলে অর্থ হয়— কুম্ছদের বাসভান।

२२। वदक्क बाधनपत छेनावि "नाविको" मुनलः नाव् वानाध+जकः + में = "नाधको>नाव्को>नाव्को", ज्वाद नाधका वा नाव्का बाय्यव जविवानी ७ "लाङ्को" नम् मूनलः वार+जका + में = "वालको> वाक्को>नाव्को> जाङ्को"— कि मा, वाक्का बाय्यव जविवानी।

২৩। অনেকেই ভূগ করে "বক্দীপ" ও "ব্যাঘ্রভট্ন"কে এর প্রজনম্বিতা বলে করেন।

২৪। আট্রক • "এক্-তক্" শশ্ই তার প্রমাণ। একবা আছত্ত প্রমাণ করেছি। ঐ মুল খেকেই "এমূর" ও "বহু" উৎপন্ন হয়েছে।

২৫: বোৰ হয় বৈদিক "কুকুরি" শব্দ মূল আহি। ভাষার কোন শব্দ নয়। বিপরীতে ঋট্রিক হওয়াই সপ্তব।

২৬ . "চ্ৰ বা চ্ৰু" উপসাতির দেবী বলেই নাম "চৰী" ও "চৰিকা"— অবহা সংস্কৃতে, এবং "মুখা বা কোল" স্বাতির দেবী বলেই নাম 'কালী ও কালিকা"। এই সব দেবীর পূজার মধ্যে রয়ে গেছে মাড্কাডপ্রের (Matriarchate System) স্থতি।

२१। अहैरा---रामना त्मरणंत वेष्टिश्य--शृ: ४-३५ छ: त्ररमण्डस मञ्जूषरात ।

২৮। এইবা— "বাল্লার পুরার্ড" (বিশেষভাবে প্রথম অধ্যায়) প্রমধ্নার বন্ধ্যোপাধ্যায় ও "বালালীর পরিচয়" (শেষের দিক) মীথমার্থ বসু।

চাড়াল, ছাড়ি, হোড়, চূড়া, মাল, পোল"—- প্রস্থৃতি উপাধিবাচক শব্দ দেবতে পাই আসলে সেন্ডলি পূর্ব্বোক্ত প্রাটেশতিহাসিক উপজাতি গুলির নামের অপভ্রন্ত রগ। স্বভরাং বাঙালী
অন্ত্রিক জাতি। আক্রেক জাতি হিলাবে পরিচিত বাঙালীর
করোনীর মাপ-যোপ অন্ত্রিক উপজাতীরবের করোনীর মাপ-বোশের সলে হবছ মিলে যার। রক্ত পরীক্ষার কলও
এক। স্বভরাং বাঙালী "হোমো-আল্পিনাল" (HomoAlpinus)ও মর, "নিপ্রো-নিপ্রোবট্ট" (Negro-Negrito)ও
মর, "প্রাবিড, মোন্, খোর"-প্রভৃতি পক্ষাভির সংমিশ্রণও নর।
সরকারী প্রবন্ধান প্রেট নৃভাব্নিকের: যে প্রাচীন অন্ত্রিকপের্বার বিচরণ-পথ স্প্রতি অন্তল্গনান করছেন, তার কলে
দেখা প্রেছে যে ভারা আফ্রিকা মহাদেশ থেকে উঠে এলে
এলিয়ার নানা দেশ হয়ে ভারতে পঞ্চাবের উপর দিয়ে

২৯। স্তইবা -- "বংলালীর পরিচয়"- পু: ৪২-৪৪ মীননার্থ বস্থ "ব্লেলা ভাষাভত্ত্ব ভূমিকঃ" --ভঃ স্থীভিক্ষার চটো-পাব্যার ও ভাহার অলাল প্রবন্ধ। এলে বাঙ্লার হারিরে গেছে। অর্থাং ভাষের স্থলপথ এবামে এসেই শেষ হরে গেছে। ভারণর থেকে স্থল হরেছে জলপথে বিচরণ। ভাই বাঙ্লার আভিরা গিরে উঠেছে সূত্র অঞ্জেলিরা মহাবীপে, প্রশাস্ত-মহাসাগরীর ঘীণপুঞ্জে, লহা, আন্দামান, লাকাধীপ ও মাধবীপে।

শেষ কণা ছাছে এই যে, বাঙালীর প্রাচীন ইভিহাসের প্রধান সম্বল পাপুরে প্রমাণ এবনও পর্যন্ত সংবাই পরিমাণে পাওরা যায় নি, ভার কারণ বননের কাজ বাঙ্লা দেশে অভান্তই হয়েছে। নেহাং যেটুকু পুরুর বুঁজতে পিয়ে, কি লাললের মুখে, কি নদীর গোভায় পাওবা পেছে সেইটুকু বিভিন্ন যাত্বের রন্ধিত হয়ে আছে। রাবালদাস বাবু তাঁর বালদার ইভিহ্না বংগ দেশ ক'ট পাপুরে প্রমাণের উল্লেখ করেছেন সে ক'টর মধ্যে হগলী জেলার কুন্কুনে গ্রামে প্রাপ্ত পাপুরে (Boncher of telt) প্রমাণ্টিই একমাত্র হাঙ্লার কিনিস

৩০। বাজসার ইভিহাস : ১ম বর, ১ম অব্যায় পু:৬-৭।

"নিউ ইণ্ডিয়ান কাল্চরাল ড্যান্সারস্"

श्रीननीमाधव कोधूती

টিপটপে বৃষ্টি ও ংএী কুয়াসার মদ্যে সদীয় লগুন ছাছিল। দেশে কিরিবার জাগে ভাল করিয়া কনিনেট নেডাইবার ইচ্ছা ছিল কিয়া কপালথণে তাহাকে উর্দ্বালে চুটতে হইল জেনোয়া মুক্তে ভাহাক ধ্বিধার জল।

সারা ইউরোপ ভবন উপবগ করিয়া সুইতেছে। মিউনিকে স্বার ও বোমে ভূচের হজার ক্রমে চড়িতেছে। ক্রাজে মাসে মাসে মন্ত্রিপজার পরিবর্ত্তন হচতেছে। ইংল্ডে চেসারপেনের ছাতার দিকে সকলে সভ্তক নহনে চাবিরা আছে। যাহার্য্য ছাজর্রান বাতের লোক ভাছাপের মূর্বেও আসর কটকার বিহাং দত্ত বিকাশ দেবিয়া তক্রছাসির পরিবর্ত্ত কাঠহাসির উদয় ও বিলর হইতেছে। য্যাজেনে লাইন, হিভেন্বুর্গ লাইন, জার্মানীর সমর-প্রস্তুত্ত সঙ্গতে বিশেষজ্ঞগণের লহা লথা প্রবন্ধ বাহির হইতেছে। পোলাও, চেকোলোজাকিরা, বেলজিহমে সমর্থবিশারদ ও কুটমন্ত্রণাবিশারদ্বাক্র ছিটাছট চলিতেছে। আকাশে বিনানবাহিনী, প্রের ভলে সাব্যাহিনী, বছরে বন্ধরে জনীজাহাজের সারি, জ্বের ভলে সাব্যাহিনী বছরে বন্ধরে জনীজাহাজের সারি, জ্বের ভলে সাব্যাহিনী বছরে অপেন্ধার উদ্ধীব।

সগীনের ভাগা ভাল যে বহু চেঙার লে ভাহাভে ছান

সংগ্ৰহ করিতে পারিয়াছে: উজ্জে স্থাকিরণস্থাত ইতালীয় উপকৃত পিচনে কেতিয়া জাতাক গ্রন দক্ষিণ সমুদ্রের পর বরিল সদীয় স্থান্তর নিস্থাস ফেলিল।

ভাহার বিগাতে প্রবাদকীবনের কণ মনে হইল। কিসের একটা নেশার সমষ্টা কাটিয়া গিয়াছে। বাহিপ্তারী পভিবার কল দে বিলাভে আদিয়াছিল। পভান্তনা নামমাত্র, মিইং, ইন্টারভিউ, রিসেপশন, কাগজে লেখা, এই করিয়া ছুইট বছর কাট্যা গিয়াছে। করালী, জার্মান, কল, পোল, মিশরী, ভূলী, নিবো কভ কাভির লোকের সঙ্গে, বিশেষ করিয়া ছাত্র-ছাত্রীর বিশ্বে যে আলাণ-আলোচনা করিয়াছে ভাহার ইয়ভানাই। সকলের মুখে এক প্রশ্ন, ভোযাদের দেশ কি করিবে ?

ইউরোপের রাজনৈতিক আবহাওরার দিকে চাহিয়া দেশাই অনুভব করিরাছে যে ভারতবাদীর সংখুবে এক বড় সুযোগ উপপ্রিত হইয়াছে : বারটাও রাসেলের একটা কথা তাহার মনে পড়িত। লোকবল ও প্রাকৃতিক সম্পদে আমেরিকা, রাশিয়া, চীন ও ভারতবর্ষ এই চারিট মান্ত দেশ আছে পৃথিবীতে যাহারা নিজের পারে ইড়াইতে পারে। ঠিক কথা, কিছ চীন ও ভারত কোথার ? লবাই তাহাকে বলিরাছে যে—সুযোগ আছু আলিয়াছে তাহার সন্তাবহার করা সভব হইলে

ভারতবর্ষ শক্তিশালী কাতিসমূহের সভার নিকের প্রাণ্য আসম অধিকার করিতে পারিবে।

Conte Verde কাহাকে অবও অবসর, কোন কাকের বালাই নাই। জাহাকের ইতালীয়ান অফিলারদের উত্ত ভাব, জার্মান বালীদের নাটকীয় চালচলন, জাপানীদের হ্রন্ধ, নাংসল নাসিকার নীচে প্রতীরিয়র হালি, বিটিশদের ক্তন মুহ্ভাব, এ সব লইয়া মাধা ঘানাইবার প্রবৃতি ভাহার ছিল না। নিয়্ম্মা বসিয়া বসিয়া সগীম নানা রঙের ভুলি দিয়া নানা দিক হইতে ভাহার কলনার অবিশ্বং ভারতের চিত্র আঁকিবার চেটা ক্রিত মনে মনে। প্রদেশে প্রদেশে যে অবিশ্বাস ও ইবার দল্প দেবিয়া গিয়াহিলতে হল্পনিক্ষ মিটিয়া গিরাছে। প্রাদেশিক্তা, সাংপ্রদায়িকতা, ব্যক্তি বা দলগত বার্থান্ত্রণ জাতির বিক্রছে বিশ্বাস্থাত্তলা বলিয়া সকলের বোর হইয়াছে, আগ্রক্তিত্ব লাভ করিয়া ভারতবাসী গরের সমন্তা নিজেরা সমাবান করিয়া লইবার প্রতিশ্রেষ করেবে হটয়াছে।

বিদেশ ও বিদেশীদের মধ্যে বাদ করিয়া দূর ফ্টতে আর পাঁচটা দেশের সঞ্চে পালাপালি নিজের দেলের দিকে চাহিয়া তাহার দৃষ্টিকলীর পরিবর্ডন হটয়াছিল। আসর সমটের মুখে দেশের পোকের যাহা করা উচিত সরল বিশ্বাসে তাহাই তাহারা করিতেছে দেখিবে আশায় সসীম দেশে ফিরিভেছিল।

দেশে ফিডিয়া ভাছার কাঞ্ছইবে আগভ্রপায় ন্যযুগের বাণী প্রচার করা। বিরগ অবসর কর্মব্যস্ত জীবনের চিত্র সে আপনার চোবের সমুবে ভূলিয়া বরিল।

লোহিত সমুদ্র পার হইয়া এতেনের সাঁড়ালী মুব হইতে বাহির হইয়া জাহাক আরব সাগরে পড়িল। পল্চিম-উপক্লের দিকে জাহাক আগাইতে বাকিলে দেশের প্রিয়ক্ষণদের কবা সসীমের মনে পড়িতে লাসিল। একটি মুব প্রায়ই তাহার মনে উকি দিতে লাসিল। সে মুব ভেইকীর নহে। ডেইকীর কবা মনে হইতে আন হঠাং লে ভাবিয়া আল্বা্য হইল যে গত হুই বংসরের মব্যে প্রথম দিকে মাঞ ছই-তিমবানা চিঠি গে ভেইকীর কাছ হইতে পাইয়াছে, তার পর তাহাদের হুই জনের মব্যে চিঠিপত্র লেখা অলক্ষিতে বন্ধ হুইয়া রিয়াছে। অনেক ভাবিয়াও কে আরে চিঠি লেখা বন্ধ করিল, কি কছ বন্ধ ছইল সে মনে করিতে পারিল না। ভাহার পিতার চিঠিতে এইমাত্র জানিতে পারিয়াছিল যে দেশে ফিরিলেই বিবাহ অনুঠান লেখ করা তাহার অভিপ্রায়। ভেইকী পিতার নির্বাচিত ভাহার ভাবী পত্রী।

বোখাই বন্ধরে যেদিন আছাত ভিটিল সেদিন শহরে কি একটা উপলক্ষে হরতাল। ভকে থ্রাইক, সাবারণ যানবাহন বন্ধ। রাভার রাভার সশগ্র পাহারা, দোকানপাট বন্ধ, লোক্সনের চলাচল নাই বলিলেই হয়।

এক বছুর গৃহে সসীমের উঠিবার কথা ছিল। তাঁহার সাহায্যে কোন প্রকারে মালপত্র সহ সে তাঁহার বাড়ীতে পৌছিল। বছুট মানান, এক ইনপ্নানেজ কোল্পানীর উচ্চপদ্ধ চাক্রীয়া। বিজেশে আলাপ ও বিলেম ঘনিষ্ঠতা ছইনাছিল। চনংকার লোক, বাঁটি খনেশীজাবাপর। ছরতালের পরদিন বন্ধু বলিলেন বোধাইতে এক বাডালী নাচের দল আসিয়া খন নাম করিয়াছো। সসীম নাচ দেবিতে ইচ্ছা করিলে তিনি টকেট সংগ্রহ করিয়া আনিবেন। সসীম নাচের দলের নাম জিঞাপা করেলে তিনি সোদিনকার বোখে জনিকেলের বিজ্ঞাপনের পাতা দেখিয়া বলিলেন, Miss Daisy Sen Sarma's Troupe of New Indian Cultural Dancers. Directed by Pandit J. K. Sen Sarma. লেবনের উপরে কাচুলী বাবিয়া এক হাত মাধার উপরে অভ হাত যুরাকুঠ দেবাইয়া সমুধে প্রসারিত একট মেয়ের চিত্র।

নিস্ ভেইকী সেন শক্ষা নাচ দেখাইতে বোধাই আসিয়াছে ?
সসীম আপনাকে ক্ষিতা ক্রিল, টিকেট ক্রিয়া একবার
কাবী পত্নীর নাচ দেখিরা আগেনবে কি ? কথাটা মনে আসিতে
ভাহার বুব হাসি পাইতে সাগিল। ভাহার মা নাই, শিভা শেষ পর্যান্ত এই মেয়েকেই ভাহার খাডে চাপাহবেন ভির ক্রিয়া রাখিয়াছেন ? সাববান, মারাঠা বছু যেন কিছু না কানিতে পারেন। সে নাতে যাইবে না, চিঠিপত্র সেবার কাক সারিয়া একটু বেডাইয়া আসিবে বসিয়া সসীম উঠিয়া সেল।

বিলাতধানার কথেক দিন আগে লগীম ভেইকীদের বাড়িতে গিয়াছিল।

সদীম ফটকের মধ্যে প্রথেশ করিলে দোভণা ছইছে প্রমিত্রা ভাছাকে দোধতে পাইল । ধ্রুইয়া সে বছ বোন ভেইনীর ঘরে চুকিয়া চিংকার করিয়া বালল, —এই ভোর দণ্ড সাছেব এসে সেন্থেন, ভাছাভাছি করু।

ডেইছী তথন আয়নার সন্মুৰে সাগরের পোল নুত্যের মহড়া দিতেছিল। আগামী শনিবারে ইন্টিটউটের চ্যারিটি শো-তে প্রথম আইটেম তাহার নুত্য। সেমহড়া না বামাইয়া বলিল,—থে রক্ষ চ্ড্যাড় ক'রে খবর দিতে এলি ভাবলেম না আনি কি খবর আছে। তুই বলাগে যা, আমি আগছি একটু পরে।

সুখিত্রা ভতক্ষণে দিধির টয়লেট টোবলের কাছে পিয়া
কিপ্রহন্তে সাক্ষলভার ক্রান্ট সারিয়া দইতেছিল আর অনর্ধল
বকিতেছিল। সাগরের দোল মৃত্যে তরক তথ্য কুলিয়াকালিয়া উঠিতেছে, এই গর্জন করিয়া ভালিয়া পড়ে বৃধি।
কোন প্রশ্নের উত্তর দিবার অবসর নাই ভেইকীর। স্থমিত্রা
কাল সারিয়া নীচে নামিয়া পেল। মুহ্ গুর্মনে কি একটা
গানের কলি গাছিতেছিল সে।

সগীম বসিবার ঘরে চুকিয়া একখানি বছ চিত্র মনোযোগ দিয়া দেবিভেছিল। চিত্রের সন্মুবভাগে একটি বড়ের কুঁড়ে খর, উহার দাওয়ার নীচে একট কলাগাহ এবং ভাব ও আত্র

পত্ৰৰ মাৰাৱ মাটৱ ঘট। মৰাভাগে দীৰ্ঘন্তেশ, দীৰ শ্ৰক্ত নামাবলী গায়ে যোগাদনে উপবিষ্ট একক্ষ লোক। ভাছার সমূবে ত্রিভুক বেষ্টনে ত্রিখুলবারিণী স্নীষ্টি। সসীষ্টাল कविद्या (प्रचिन, विञ्च मरह, विञ्चाकात जात्रज्यर्थेव (त्रचा-চিত্র। চিত্রের পশ্চাদভাবে যেখের গারে করেকটি মুও। मुख्यभित जाल कारकक्षम वक्षणवास्मत मृत्यत जान्छ चाह्य श्रुरतक्षनाय, विभिन्नकक्ष भाग, औषवविष्य । वैशाहनव षाङ्गाहन इटेड बुक्ट अक्ट्रे के कि विवाद यक दान (वश्वा द्वेतावा) লে তুটট বালগলাধর ভিলক ও লক্ষণত রাম্বের। চিত্রের মীচে বড় বড় অক্ষরে লেখা, প্রথম লাইনে, ভারভমাতা ও প্ৰিত কে, কে, সেন শৰ্মা, বিতীয় লাইনে, আৰীৰ্মাদ।

এই চিত্রের কি অর্থ হইতে পারে দলীম চিত্রা করিতেছিল, বোন প্ৰমিকা।

--- ওত আফটার তুন সগীমদা, ইউ লুক চামিং।

স্পীয় হাসিল। পুষিত্রার স্বভাবের কোন পরিবর্তন হয় মাই বয়দ বাভিদেও। অবিশ্রান্ত কথা বলা, অসংলয়, অমূচিত কৰা বলা ভাষার অভ্যাপ। সনীয় ভাষার ভিকে চাহিয়া **विश्व विश्व ७ है। जामाव वेशवाब कर्षाः हे छै जुक ठामिर** সুধিকা।

ভাৰার স্বর্টা যেন ভাৰার নিজের কাছে সম্পূর্ণ পরিহাদের विशा यान श्रेम ना।

সম্ভ্ৰম্ভ ভ্ৰবার ভদীতে ঠোটে একটা আবুল চাপিয়া चुचिक्का चलिल,--- per, । खरेकी स्वनाम कृत्याक्यात (यात शारा) আপনাকে একটা টপ দিছি, যুখন এমনতর কৰা বলতে ইচ্ছে যাবে আমার কানে কানে বলবেন, বুঝলেন গ

দে হাসিয়া ফেলিল।

---ভেইজী কোৰাৰ? ভাকে দেবছি না যে ?-- সদীম विकाम करिन ।

--- कि करत (प्रचटिक भारतम भि: मख १ वश्रम (प्रचि काल ছেলের মত। বিলেত থাবার আনন্দে ধেশের বর্ত্তমান পরিস্থিতি भवद् कोन चर्त बार्यम मा। एक्टेकीय अधन मध्य नाम, सब्म শ্ৰেষ্ট পাইয়ে ও মাচিয়ে বলে! সে উপাৰি পেৱেছে चनगा छै।

-- क्रमाञ्ज कि ? क देशवि मिरबर्द ?

--(मारक वाश्माकाया जूल यात्र विरम्भ (बरक किर्द्ध, चार्गम (वर्षाव विराम यावात चार्य माज्ञाया पूर्ण (शरहन । প্ৰভন্ত নৃত্যুত্ৰী, জনসাত্ৰী, একৰা ছলো কোনদিন শোনেন নি 🤊 क्रमाञ्ज मात्न याद छेपविष्ठ क्रमाद म्हानीन अदिवि वर्ष त्नरे छक्षने परिना। रेक रेडे क्रियात ? **छे**नानिडे। पिरविस আমি। বাবার বক্তভা খনতে যেমন বুড়োরা ভিড় করে, দিদি বে জলদার বার দেখানে ছোকরাগুলো তেমনি ভিড় করে। "ৰাঙালী আছবিশ্বত ভাতি। বাঙালী ভাতির যে বৈশিষ্ট্য

বৰ্গৎ সভাব ভাষাকে উচ্চ সন্মানের আগনের ভাবীলার করেছে..." বাবা এই ব'লে বভুতা কুত্র করলেই শ্রোভারা একসলে হাওডালি দিভে, মাৰা মাছতে পুরু করে, ভোন क्षि बुद्धा चाराव काह काह करव कायल बादक। चाव ष्मनाञ्जी (छहेकी यवन---

क्षिया के कि विश्व (वार्य क्षेत्र (किकी व मार्टिय अक्ट्रे म्यून) मिरांत रेक्षांत प्रतकात पिटक पूर्व कितारेट एर्विक शतना সরাইয়া ডেইজী ঘরে চুকিতেছে। বপ করিয়া আসনে বসিয়া পঞ্চিয়া বলিল,---পারলে আসতে এত সকালে গ ছত্ত-সাহেবের অবস্থা দেবে ভোষাকে ভাকতে উঠছিলেম।

(धरेकी कठेमठे कविदा त्यात्मद मित्क शक्ति। मुखा-ভলিমার ইলিভটুকু ভাহার চোব এড়ায় নাই। লে ভানিভ रुठीर निम्मास राजित नास्य कितिया मिर्चन एक्टेकीय दशके -प्यूमिया अध्यान नविया अभीत्यत जरून क्रावें करिएण्यिन, व রক্ষ স্বভাবের যেয়ে সে। ডেইজীর ভাবত জনতা জনতার মুখ দৃষ্টি ও প্ৰশংসা ভাষাকে এভ উচ্চ আগনে উঠাইয়াছিল যে দে আসন হইতে ব্যক্তিবিশেষের প্রতি নিগ্রহ বা অপুরছ e**টি**পাত করিবার অবকাশ ব' প্রবৃত্তি তাহার হইত না। স্মিত্রার প্রগল্ভতা ভাষার অভাভ ইতর হলে ভ্রত :

> ভেইছীর চটবার বান্তবিক কারণ ছিল। সে বিশ্বাস কবিত মাচ ও গান ভাষার জীবনের মিশ্ম। নামা সভায় পিভার বঞ্জা হইতে ভাহার মনে বাঙালীর ছাতীয় বৈশিষ্ট। সম্বন্ধে পরিস্কার বারণ। ক্ষিয়াছিল। পিডার সম্পাদিত কাগভের "আমোদ প্রযোদ" কলমের ব্যাখ্যা হইভে সে ব্রিভে भातिशाहिल वादालीय अठे काजीय देविषादेशय अवही प्रिक वृद्ध स्टेशांट्स जोशांत मधील ७ नृत्जांत मर्या । जोशांत मानारम বাঙালী-আগ্রার সঙ্গীতময় ও নৃত্যময় অভিব্যক্তি হুইয়াছে। একচ নিকের নাচগান সহত্তে হালুকা আলোচনা গে সহ ক্রিতে পারিত না। কিছ সুমিন্সাটা--- ছোট মেয়ে বলিয়া পিতার শাসন তাহার সহতে বরাবর আলগা।

> স্থমিতার প্রতি উদ্যাত কোব দমন করিয়া ভেইকী সলীমের পালে বসিল। রওনা হইবার বন্দোবত সহতে তুইচারিটা প্রায়ের পর একটু স্থাসিয়া সে জিজাসা করিল,--বাবা ও রায়-সাংখ্য দত মিলে নৃত্য যাসিক পত্র বের করছেন ভান ?

স্পীম বিশিত হইল, ভাছার বাবা কার্যক বাহির করিবেন ? আভারসন কোম্পানীর কাম করিবার সময়ে কি একটা ছট কোরকাই না কি কাগজের ভার তাঁহার হাতে ছিল ভানে। करश्रक वरमद रहेम छिनि चरमद महेशार्यम । এवस शृक्षा करवन ७ कवानी विश्रावत देखिशांत्र शासन। कहे कान কাগজের কথাত শোনে নাই সে। বোৰ হয় চীকা জোগাইবার ভারতী ঋণু জাহার।

--কি কাগৰ ? সে জিজাসা করিল।

স্থমিত্রা এডকণ কোন মডে চুপ করিত্রা বলিত্রা ছিল। विविद्य क्या क्या विविद्य अवकाय ना विश्वा (म विविद्य উঠিল,— হার যীওরিই। কি কাগজ তাও জানেন না ? বাঙালীর বৈশিইা, বাঙালীর ছাতস্তা, বাঙালীর বীরত্ব, বাঙালীর শক্তি-উপাসনা, বাঙালীর জারও যেন কি কি এই বৃত্ন কাগজের মারকং প্রচার করা হবে। নৃত্যে, নীতে, হাতে, লাভে, বঞ্চার বাঙালীর বৈশিইা ইন্টারপ্রেট করবে এই কাগল, বাঙালী-নিশুক ভিরপ্রদেশীয়গণের বেঁতা মুব ভোঁতা করবে—

श्विका । - (कर्षे की श्राय कार्डिश शक्ति बारन ।

ভেইকীর কোৰ অঞাহ করিয়া স্মিত্রা বিল বিল করিয়া হাসিয়া উঠিল।

সদীর দেবিল ভেইজী ভরানক রাগিয়াছে। ভাছাকে শাভ করিবরে অভিপ্রান্তে বলিল,— প্রতিরা, এসব সীরিরাল ব্যাপার নিয়ে ভাষালা করা কি উচিভ ? যদি ভোষাদের বাবা ও আমার বাব। আসনাদের মত প্রচার করবার করু বাভবিক কোন কাগত বের করা ধির করে থাকেন এভাবে বিদ্রাণ করা তাঁলের অপধান করা নয় কি ?

প্রিয়া আকৃটি করিয়া স্থীমের মুবের দিকে কিছুক্ব চাহিঃ বাকিল। ভারপর মুহ হাসিয়া বলিল,—এটাকে বড্ড সাংহঃদে আপার বলে আপ্রিপ্ত মনে করেন নাকি? না মিস ডেইজীর মন গলাবার ক্ষা

সে উঠিয়া দাভাইল। ছই ছমের দিকে দৃষ্টিপাত করিছা একটু বস্তপুৰ হাসি হাসিয়া বলিল,—এক্সিউজ মি, বিদেশে যাছেন, নিরিবিলি আলাপ-আলোচনার একটু স্বোগ আপনাদের দেওয়া উচিত।

পে ধর হইতে বাহির হইখা গেল। ভাছার গমনপথের গিকে চাহিয়া সদীয় অঞ্মনত হইয়া কি যেন ভাবিতে লাগিল। ভাছার এই অঞ্মনততা ভেইনীর চোব এঞাইল না, ভাছার মুখে বিরক্তির কুশ্মিত রেখা দেখা দিল। কিছুদ্দশ পরে সমীয় ভেইনীর গিকে মুখ কিরাটয়া একটু হাদিল। বলিল,—স্মিনার কবার পুনি এত চট কেন ভেইনী, ও ত ছেলেবেলা বেকে ঐ বক্ষের।

—ছেলেবেলার বা মানিরে বেড বড় হলে ভা আর মানার
না। ভা খাড়া, বকামি ক'রে ক'রে ভাল জিনিল, বড় জিনিল
ধুববার শক্তিও সে হারিরেছে। সে কথা যাক। শনিবারে
ইন্টিটেটে চ্যারিটি শো-ভে আসছ ভ ় টকিট বোৰ হর
শেষ হয়ে গিরেছে। আমি কর্তৃপক্ষদের বলে রাখবো ভূমি
গেলে ভোমাকে বসিয়ে দেবেন। টকিটের বাবদ পঁচিদটা
টাকা তাদের হাভে দিয়ে দিও।

ভেইজী সদীমের দিকে চাহিয়া মিট হাসিল। বলিল,— আমার নাচ ও গানের প্রশংসা করে দেশের লোক। ভূমি মিজে দেবে ভনে বলবে এই প্রশংসা অভিরক্তি কিয়া।

আরও থানিকক্ষণ অভ কথাবার্ডার পরে স্পীন চ্যারিট শো-তে ঘাইবে ক্থা দিয়া উঠিল, তেইলীর নিষ্ট হালি পাওয়া একটু ব্যৱসাৰা ব্যাপার বলিরা ভাছার মনে হইল কিবা বলা কটিন।

ভাষার শিভার প্রভাব তেইজীর চরিত্র ও যত সঠনে আনেকথানি কার্যাকরী হইরাছিল। ভেইজীর শিভা পঞ্জি মুগলিকশোর বা কে, কে, সেনশর্মা প্রাট্ট্রই, সম্পাদক ও লীভার। বিশিনচন্দ্র পালের দক্ষিক ও গ্রীজরবিন্দের ম্যাজিক বা আব্যান্থিকভার সময়রে ভাষার রাজনৈভিক মভবাদ সঠিত। হাল আনশের রাজনীতির অভ্যুথর হইবার পর হইতে ভিনি রাজনীতিক্ষের হইতে অবসর লইয়াছেন, তবে মারে মারে আগবার্ট হলের ছই-একটা মিটতে সভাপভিত্ব করিবার ভাক পভিত্যে না করিতে পারের মা

রাজনীতি হইতে অবগর স্ইলেও প্তিত দেনপর্যা ভাঁছার चक्र देखम ७ म'क एमएनवार निर्देशक्त दाविशासम। ইউরোপের আহুবিক সভাভা ও বস্তভান্নিকভা ইউরোপের সামাজ্যবাদী প্রভুত্ত অপেকা ভারতবর্ধের বহু শত্রু দেশের चार्या कर पर व विश्व का का कर कर वार्वे कि के जिल कि ভাবে এ কথা বিখাস করিতেন। তাঁহার মতে উওর-ভারতে সাভ-জাট শভ বংসর ব্যাপী ভুকী, জাকগান ও চাখতাই-(য'ক্ল প্রভুত্ব ভারতবর্ষের যে ক্ষতি করিতে পারে নাই মাত্র চুই শভ বংসবের ইউরোপীয় প্রভুত্ব ভাষা অপেকা গুরুতর অনিষ্টের সন্তাৰনা ঘটাইয়াছে। হাট্ৰায় ক্ষ্মতা লাভের ক্ষ কাছাকাভি মারামারি করা অপেকা ভারতবর্ষের প্রাচীন ক্রট্ট ও আব্যাদ্রি-क्लाव श्रानवादारक वैक्रावेश द्वाचा व्यानक वक्र काक। আব্যান্ত্রিকতা ভারতবংগর বৈশিষ্ট্য, ভারতবর্গ পুরিবীতে এক মাত্র আব্যান্থিক দেশ। এই আব্যান্থিকতা রক্ষ্ করিবার অকুভার প্রিত সেন্ধর্মা আপনার প্রবীণ করে ছলিয়া जरेशार्थम ।

ইছা ছাড়া ভিনি বাঙালী জাভির ইভিছাসে স্থাক্রে বাছার কথা গিখিত থাকিবে এমন একট মহাৰ্গ্যবান ভব্য-রডের পুনরুধার করিয়াছেন বিশ্বভির অথকার গুলা হইভে। সে তথ্যট এই যে বাঙালী আত্মবিশ্বত জাভি। সভা-সহিভিতে, ব্যরের কাগজে, পুস্তকে এই তথ্য তিনি অবিশ্রাভ প্রচার করেন। এই তথ্য হইভে উংশন্তি হইরাছে অভি পরিচিত বাঙালীর আভীর বৈশিষ্ট্যবাদের। বাঙালীর বৈশিষ্ট্যের গর্মা আজ কোন বাঙালী করে না গ স্ভাবহর্মল বাঙালী চরিত্রকে সবল করিবার এই অবার্থ টনিক স্পত্ত ও গ্রুগ্রাছেন। প্রিভ সেনশর্মা দেশের ও দশের কৃত্তভাতাক্রন হইরাছেন।

প্ৰিত সেমপথার অভিঃছদর বাদ্যবদ্ধু কখুলীটোলার ভার সাহেব কার্তিকচল ঘত। তাহার জ্যেত পুত্র সসীবের সাদে তেইখীর বিবাহের কথাবার্তা অনেক দিন থির আছে। বিবাহ হইরা যাইত কিছ রার সাহেব বিদ বরেন ছেলে বিলেভ ভুরিরা না আদিলে বিবাহ হইবে না।

ভেইজী ইভিনব্যে জুনিয়ন কেবি জ পাস করিয়া ভাইও-

নিসাম হইতে বাহির হইল। বিশ্বারী ছুলে না বিলে বেলে-মেরের শিক্ষার বনিরাদ পোক্ত হর না এবং টেট্স্ব্যান কাগক না পঢ়িলে রাজনীভির জান করার না—বাংলাদেশের আপার নার্কেলের এই সনাভন মত পভিত লেনপর্বা পরিত্যাগ করিতে পারেন নাই।

ভেইজী ভাইওসিসান হইতে বাহির হইল। এক ৩৩ বৃহ্তে পূর্ব্য-ভারতের আকাশে এক এরারপকেটে বসিরা বিসান করিবার সময়ে ভগবান নটরাজের বৃষ্টি ভাষার উপর পঞ্চিল, তিনি বৃহ্ হাত করিলেন। তবন হইতে ভেইজীর জয়যানা সুক্র হইল। ববরের কাগজ, খূল কলেজের তক্তব-রুল, দরদী মব্যবয়ড্দিগের পূর্তপোষকভার ভাষার বিজয় রব্ধ হ্র্বার গভিতে হুটরা চলিল। সগীর বিলাতে তবন বার্ণাভ ল, প্রো: স্থারল্ভ ল্যাড়ী ও মি: ভি ভ্যালেরার সলে ইকারভিট, বিটপের ভারতবর্ষের নদল করিবার ইচ্ছার মধ্যে কত পার-সেন্ট বাঁটি ও কত পারলেক মেন্টা ভাষা নির্ণয় ও ইভিয়ান বছলিশে বক্তৃতা করিতে ব্যস্ত।

ভেইকীর ব্যাতি যত বাজিতে লাগিল প্রবাসী সসীষের কণাল তত ভাঙিবার আগের ষচ্মচ্ শক্ষ করিতে লাগিল। এফিকে নাচ্নে ভাষী পুত্রবধুকে লইরা সদীমদের পরিবারে অবভিত্র হাওয়া বহিতে লাগিল।

সদীবের শিতা রার সাহেব কার্তিকচন্দ্র দত্ত সামাত বেতবে আতারদন কোম্পানীর আশিসে চাত্রী আরক্ত করিয়া সততা ও অব্যবসারের ওবে ত্ট-সেক্সনের বছবারু হইরাছিলেন। তিনি শাক্ত মতে বিধাসী নিঠাবান হিন্দু। তাহার বাজীতে কালী পুলার সমরে কোম্পানীর হোট বছ সাহেবগণ নিমন্তিত হইরা প্রতিষা দর্শন করিবা প্রণানী দিতেন এবং মহাপ্রসাদ প্রহণ করিতেন। তাহাদের দত্ত বছবারু বিলাতী 'কারবে'র ব্যবস্থা করিতেন।

বার সাহেব সঙ্গাগরী আলিগের চাত্রীরা এবং সাহেব-ভক্ত হইলেও উাহার পারিবারিক আবহাওরা হিল লিকিত ও বাহ্নিত এবং অনেকবানি ঘদেনীরানাপুর্ব। বাল্যবর্ত্ত পাতে সেনপর্বার প্রভাব তিনি অতিক্রম করিতে পারেন নাই। বাঙালী আতি লক্তি উপাসকের আতি, বাঙালীর বৈশিষ্ট্য শক্তিসাবনা তিনি বৃচ্তাবে এই বত ব্যক্ত করিতেন এবং বৃষ্টাত দিবার প্রবাহন ইইলে নিক্রের বৃষ্টাত দিতেন।

রার সাহেব রাশভারী বাহুষ, দেহবানি শক্তি-উপাসকের উপর্কা। সকলে তাঁহাকে সরীহ করিত, তিনি সমীহ করিতেন একটি বাচাল বেরেকে। এই বেরেটি তাঁহার বহুকভা স্থিতা। হাসি ও কৌতুকলির এই বেরেটির সন্থবে রাশভারী রার সাহেব রাশ আলগা করিরা দিতেন। তাঁহার নিজের কভা ছিল না। ভেইজীর দর্শন বত হুর্গত হইতে লাগিল স্থবিত্রাকে তত তিনি কাছে টানিতে লাগিলেন। শক্তিসাবনা বাঙালীর বৈশিষ্ট্য আভ্যানিক ভাবে এই যতে বিশ্বাস ক্ষান্তেও বছুর আব্যাছকিতার বাবী রার সাংহ্ব বুবিতেন না, প্রকণ্ঠ করিতেন না। সভবত এই কারপার স্বিভার সংদ ওাঁহার নিল ছিল।

স্মিত্রা মিজের বাপকে এড়াইরা চলিত কিছ বাপের এই গভীর, কালীভক্ত, বিশালকার বন্ধকে চোধা চোধা বাক্যবাথে বিছ করিবার স্থােগ পাইলে ভাষার সহাবহার করিতে এটি করিত মা। কথন কথন স্থামিত্রার সন্দেহ হইত রার লাহের লেগ-পূলিং করিতেছেন, অর্থাং ইক্ষা করিয়া উঠাইরা দিভেছেন। এ সন্দেহ একেবারে মিখ্যা নয়। প্রকৃতই স্থামিত্রাকে চটাইয়া, ভাষাকে বোঁচা দিয়া ভাষার কথা শুনিতে ভাষার আনন্দ বোধ হইত। স্থামিত্রার একটা আলাদা দেখিবার ভদী ছিল, ব্যল্পিডেও ভাষার বেশ দখল ছিল। বোঁকের মাধার বকিতে বকিতে এই সন্দেহ একবার মনে উটিলেই স্থামিত্রার বাক্যবাণ-শ্বলি একেবারে নিজেক হইরা যাইত।

স্থমিত্রা আসিয়া তাহার কাছে বলিলে ভাহার মনের ভাব ৰুবিবা গঞ্জীৱভাবে ছই-চাৱিটা কৰায় তিনি তাহাকে উপাইয়া দিতেন, দিয়া মৰা দেবিতেন। সহণাতীত কাল হইতে বাঙালী শক্তিসাৰনা করিবা আসিতেছে এক দিন গঙীরভাবে এই মতের ব্যাখ্যা করিতে আরম্ভ করিলেন। কিছুক্ষণ চুপ করিয়া ভূমিবার পর স্থমিতা উগরুস করিতে লাগিল। পণ্ডিত দেনশর্মার अक्टे खरावत कवा ताम जाररतित चारन रहेन। जिनि विनष्ट नार्शितन, प्रमुखक्द्रववादिवा विक्यविनी कुर्तः वाहानी জাভির ইইদেবী, বাঙালী শক্তির সন্তান, আৰগ্ন শক্তির সাধক। প্ৰতিভাৱ বাগবন্ত আৰু বাধা মানিল না। বাদ হালা কৰিয়া (म विजन,—वाडाजीद मिक्क मावना चाद कान चिक्क नद কাকাৰাৰ, ভগু বাকৃশক্তির সাধনা। চারদিক থেকে পিটারে, बरमधारव देव्हरण स्मरत धवन बक्ना करत पिर्ट्य क्रिया क्किट्ड वांडानी छर्नामा मिश्यमिनीय छर कदाइ। शास्त्र ধুলো বেড়ে ভৰ্জনী ভূলে বলছে, একবার দেখে মোব, আর আকালন করছে। আবার দম নিয়ে শক্তিগাবনার বুকুনী বেড়ে नाचीकीय चिंदरनवायरक चंत्रदाव कानरक विकास कदाय ! करव इ'क्य (करन त्याया कांडेरव निर्काद कांछ शा केंक्रिविक গোটা বাঙালী ভাতি ভাই ভাঙিয়ে বাছে আছও।

বন জর নীচে রার লাহেবের বছ বছ ছই চোপ নিটমিট
করিভেছিল। স্থানিরা নিজের বোঁকে বলিরা চলিল,—দেহে
পক্তি নেই, চরিত্রে পক্তি নেই, পক্তির পরিচয় কেবল বাক্
বিভারে। এক জন বাঙালী জীবনে বাজে কথার বে পক্তি
ব্যর করে পাওরারে পরিণত ক'রে তাতে বোব হর
এক ভবন স্পার কোর্টেন হাওরাই টু ক্যালকাটা নন প্রশ উভতে পারে। লাবে কি জভ প্রবেশের লোকে বলে
বাঙালীর আছে ভগু নিকট অব দি ন্যাব ? বাঙালীর ভাতীর
বৈশিষ্ট্য। বছ বছ কথা, দলাদনি, পর্মঞ্জিভারতা, আছতছিতা, এই হ'ল বাঙালীর ভাতীর বৈশিষ্ট্য। গোটা ভারতবর্ষর লোক কেউ নয়, এ বোটা, ও বেভো, লে উড়ে, যাছব কেবল আপনার মনিব আভায়সন কোন্দানীর সাহেব গোটা আয় উহিছের বশহদ কেরাণীয় কাভ বাঙালী। শাল্ক চিনেছেন গোশালঠা হুর। আর কোন্ ভাত আছে ভারভবর্বে হাকে ভারভবর্বের সবঞ্চলো ভাতে মিলে কায়মনে দ্বণা করে ?

স্থিতার রাগ দেবিরা রার সাহেব হাসিরা কেলিলেন। বলিলেন,—আবার যদিব আভারসম কোম্পানীকে এর মধ্যে আবহু কেন মা ?

—আভারসন, মরিসন, সোরেনসন সব কোল্পানী এক।
বাঙালী সাহেব তাভার মুখে। সাহেবরা গেলে কার মন
বুগিরে কুতার্থ হবে বাঙালী ? ভারতবর্ধের কোন জাভ কি
আপনাদের দেখতে পারে ? কেন পারে না ? কোন্ত্রশে
আপনারা ভাদের চেরে বড় ? বুছি ? বুছির গোভার জল ঢেলে
ঢেলে বাঙালী মরছে, সে গাছ বঙ্যা, কল আর বরছে না।
বাঙালীর জাতীয় বৈশিষ্ট্যের বুলি নিছক ভঙামি। বৈশিষ্ট্যের
বুলি কণছে আর কভ খিন বোঁকা দেবেন ? লোকের চোঝ
নেই ? দিন আগছে যখন চোঝের জল কেলে ছাত জোড়
করে চেয়ে থাকতে ছবে পশ্চিমে বাংলার বাইরে বে ভারতবর্ধ
রয়েছে ভার দিকে।

রারসাহেব হালিয়া বলিলেন,—বক্তভার জোর ভোষারও ত কম নয় যেয়ে। রা ভনে পাবীর ছাভ চেনা বার।

সুমিত্রা কিছুক্দণ গুদ হইয়া বসিয়া রহিল। ভারণর ক্ষা ক্ষা হাসিতে গাসিল। বলিল,—নাঃ, আপনার মধ্যে এক কোঁটা সীরিয়াসনেস নেই। এত বড় মামুষ্টা শুধু ধোল, কাঁল নেই এক বিশু।

রার সাহেব ভিরত্বত হইরা সম্বেহ হাসি হাসিলেন। এই ভীকুর্ছি, বাক্চভুরা যেয়েট তাঁহার বিশেষ স্নেহের পানী হইরা উঠিতেছিল। বড় বোনের সদে ছবিত্রার ভুলনা করিরা ভিনি মনে মনে একটু আন্দেশ করিতেন।

এদিকে সসীমের কিরিবার সময় নিকটবর্তী হইরা আসিল।
ভাবী পূএবধ্র মৃত্য অভিযান সংযত করিবার হুভ রার সাহেব
বহুকে উপদেশ দিলেন। বহু তথন কছার কালচরাল দিবিজ্যের
উদ্দেশ্ত ভক্তমঙলীর সহায়তার অল-ইভিয়া টুরের পরিকল্পনা
করিতে ব্যস্ত। তিনি মুবে আখাস দিলেন ভাবনার কারণ
নাই, সসীম কিরিলে গুভকার্য শেষ করা তাঁহার অভিপ্রার,
ক্টার অভিপ্রায়ও তাহাই।

পণ্ডিত দেনপর্যার পার্ট খল-ইঙিরা টুরে বাহির হইরা পেল। একটু পোল বাবিরাছিল স্থান্তাকে লইরা। লে বরাবর শিতা ও ছোঠা ভরীর মৃত্য ও সদীভর্লক ভালচরাল নিশনের প্রতি উদাসীন। তাহার পঢ়াগুনার বাতিক ছিল। তাহা ছাড়া তাহার মানার বাড়ীর উঠা বরণের দেশপ্রীতির প্রভাব বোব হব তাহার মনের উপর পড়িরাছিল। শিতা ও ভরী টুরে বাহির হইবার খাগে দে মামার খাড়ী রিরা উঠিল। বেনারস, সড়েন, এলাহাবাদ, দিল্লী হইলা প্ৰিত সেনপর্বার পার্ট ভারতীর মৃড্যের পূর্বপোষক এক হিল হাইনেসের
আহ্বানে বন্যভারতে গেল। সেধান হইতে বোহাই।
পার্টির হক পাবলিসিট অফিলারের দক্ষতার মিস্ তেইকী সেনপর্বা পর্বভারতীর সেনসেনের প্রাারে উঠিল।

বোৰাইতে সেণপৰ্যা ললের আবির্ভাবের কথা আনিতে পারিরা সদীয় এতেবাতে যারাটি বছুর নিকট বিভার সইয়া কলিকাভার চলিয়া আদিল।

গৃহে কিরিরা সসীব দেখিল পিতা প্র্যাশারী, তাল করিরা কথা বলিতে পারেম না। মাস করেক আসে সন্ত্যাসরোপের আক্রমণ হইরাছিল, কোনমতে এ বালা রক্ষা পাইরা-ছেন। তাহার মধ্যম ভ্রাতা অদীবকে শান্তি ও শৃথলার রক্ষকাণ কোথার লইয়া গিরাছে আনা যার নাই। সে নাকি অপরাধ্যমক হ্যাত্বিল বিলি করিতেছিল।

শিতা হংশ কবিয়া জানাইলেন যে বছ ছেলের বিবাহ দিয়া যাইবার নাব ছিল, সে নাব আর পূর্ণ হইল না। তিনি এইরূপ ইলিভ করিলেন যে সংসাবের দিকে চাছিয়া ভেইজীয় সলে ছেলের বিবাহ দিবার অভিপ্রার আর ভাঁহার নাই, কিছ ভিনি কথা দিয়াছিলেন অনেক আরে।

পারিবারিক বিপর্বরের চাপে ইউরোপের আসর বটকা অভি দ্রের, নিঃসপর্কিভ ব্যাপার বলিয়া সগীবের মনে হইল। মনে হইল যে নবরুগের প্রভাতের আশায় সে বিদেশে বিম ভনিতে ছিল সে প্রভাত উদরের পথে ভভিত হইবা সিয়াছে।

সমীম একটু ভছাইয়া লইয়া কি ভাবে আপনাকে দেশের ভাবে নিয়োজিত করিবে ভাবিতেছে, বিভিন্ন দলের নেতাদের সজে দেবাসাজাং, আলাপ-আপোচনা করিয়া প্রকৃত অবস্থা বুবিবার চেঠা করিতেছে। ভেইজীর কথা ভূলিয়া পিতাকে ইদিতে জানাইবার চেঠা করিয়াছে বে তাহাকে বিবাহ করা বোব হয় সভব হইবে না।

ক্ষেক দিন পরের কথা। রারসাহেব সসীমকে ভাকিরা ভাহার হাতে একথানা পত্র দিসেন, একটু হাসিয়া বলিলেন,— মুগল লিখেছে, পভো।

পত্তে বাদ্যবন্ধ্য কুশদবার্ডা কিজাদা করিয়া পণ্ডিত দেনদর্শা দিবিরাহেন যে তিনি অতি ছংবিত যে বন্ধ্য নিকটে
বহদিন পূর্বে যে প্রতিশ্রুতি বিরাহিলেন তাহা রক্ষা করিতে
পারিলেন না। ভগবানের ইক্ষা অভত্রপ। শ্রীমতী ভেইবীকে
আপ্রমন্তীবন আকর্ষণ করিয়াহে। আব্যান্তিকভার সংকার
ভাহার রক্তে রহিরাহে, শ্রীমতী বন্ধমাত্র। তাহারা এক আপ্রমে
সিরাহিলেন মহাপুরুষের পূণ্যদর্শন লাভের আকাক্ষার।
আকাক্ষা আশার অবিক পূর্ণ হইরাহে। আপ্রয়েষের আমন্তবন
আব্যান্তিক প্রভাব শ্রীমতীকে ক্ষান্তিক ভূমি অভ্যন্ত মেহ
করিতে, আব্যান্তিক ক্ষীবনলাভের অভ ভাহার এই ভ্যাপ

খীকার ভোষাকে গভীর খামখ বাব করিবে সন্দেহ। বাই।

ক্লার সহতে এই সংবাদ দিয়া পশ্চিত সেমপর্যা ইহার পর দিবিয়াছেন আর্থিয়ত বাঙালী জাতির ল্পু স্থৃতি ও গৌরব উথার করিবার জ্ল জাবনের বাকী কয়ট দিন তিনি বোগসাধনার বায় করিবেন। এই উদ্দেশ্যে মহাবলিপুর্যের নিক্টে সাধনার পক্ষে অমুকূল মনোরম নৈস্থিক দৃষ্টের মধ্যে শ্রীহার্যিটেক নামে একট আশ্রম হাপন করিবার সহল করিয়াছেন। এই মহৎ প্রচেষ্টার সাক্ষ্যা সাধারণের, বিশেষ করিয়া ভোষার মত প্রাচীন আন্দর্শের জ্লুক্তিম অমুবায়ি বাজিল্পবের আনুক্ল্য ও লাজিব্যের উপর নির্ভর ক্রিভেছে। যংক্তিকং সাহায়ও ক্লুভেজভার সহিত পুহীত হইবে।

পত্র পড়া শেষ করিষা সসীম পিভার দিকে চাহিরা হাসিল। পিভার মনে বোৰ হয় তবনও একটু আপদার ভাব ছিল, ছেলের হাসি দেবিয়া ভিনি নিশিন্ত বোধ করিলেন। কিন্তু বাল্যবন্ধুর সহিত এই বিচ্ছেদে উচ্চার মনে একটা বাধা রহিয়া পেল। এই বাধা সুমিতার জল। রোগশ্যায় সুমিতার কথা উচ্চার প্রঃপুনঃ মনে পড়িরাছে। ভাতার কোন ববর ভিনি আক্ষকাল পান মা। এবার বোধ হয় ববর পাইবার পথও বছ ইয়া পেল।

ভেইকীর আত্রমকীবন এছণের ব্যাণার গইরা দিন ক্ষেক্
কাগকে মানা প্রকার আলোচনা হইল। কোন কোন কাগকের
উংসাহী নিজস্ব সংবাদদাভারা আশ্রমিকদিগের মধ্যে খ্যাভনামা
ব্যক্তিদিগের সঙ্গে ইকারভিউ করিয়া রিপোর্ট পাঠাইতে
লাগিলেন। ভালাদের বর্ণনাজ্যা ও মন্তব্যের সরগভার ধ্বে
রিপোর্টগুলি অভ্যন্ত প্রদয়প্রাহী হইত। সাধারণের অবগভির
ক্ষম অবশেষে শ্রহারমিটেক হইতে এক বিয়ভি প্রকাশ করিয়া
পভিত কে, কে, দেনশর্মা: কানাইলেন যে বিশুভ আবাান্তিক
প্রেরণা বাতীত শ্রমভী ভেইজীর আশ্রমকীবন গ্রহণের মূলে
আর কোন প্রেরণা নাই। সাধারণে এই বিয়ভিতে সন্তঃই
হইরা ভেইজীকে ক্রত ভূলিয়া যাইতে আরও ক্রিল।

সদীম ডেইজাকৈ ইছার পূর্ব্বেই পূজিতে আরম্ভ ক্রিয়াছিল।
ডেইজাকে সদীম যত পূজিতে লাগিল বিদেশে যাইবার
আগে ডেইজালের বাণীতে এক জনের ক্রিম সম্ভঙ্গলার সহিত
উচ্চারিত একটা কথা ভাছার তত মনে পভিতে লাগিল।
কিরিয়া আসিরা আর ভাছার সঙ্গে দেখা হয় নাই, ভাছার
কোন ব্যরও সে আনিতে পারে মাই। ভাছার কথাটা অভি
ছালকা কোত্তকের জন্নতে বলা ছইরাছিল কিন্তু কেন খেন
ব্যরে শোনা একটা সুন্দর গানের কলির মত কথাটা ভাছার
মনের এক কোণে গুলুরিত ছইত। এই গুলুনকে আন্তর্ম
ক্রিয়া একথানি কোত্তক্রিয়, মিই মূব ভাছার মনের আকাশে
উক্লিভি।

এক দিন পুলিগ আপিলে আভাৱ সহছে অসুসভান ক্রিভে

ণিয়া সদীম আমিতে পারিল শীম তাহার হাতা পাইবার লভাবনা আহে। বে আপভিজনক হাতবিল বিলি করিবার লভ তাহাকে বরা হইয়াহিল তাহা নাকি বাভবিক আপভিননক মহে। অনেকবানি উৎকুল হইয়া সে বাভীতে কিরিল। পিতা সংবাঘট পাইলে আনন্দিত হইবেন।

এ রক্ষ হাল্কা, উৎসুল মনের অবস্থা অনেক দিন হয় ৰাই সঙ্গীষের। হঠাৎ ভাহার কেনোর! আসিভে ট্রেন হইছে (एवं। अक्षे नहीतुरक्रद क्या भरन न'एन। नकाम (यना। বেল-লাইন হইতে অন্তেপুরে অলিভ ক্ষেত্রে মধ্যে একটা লাল वाको मछा-भाजा-कूलव (वर्ष्ठभीव मस्या। शिक्षस्य क्षि करम উচ ভ্ৰয়া পাহাভের সলে বিশিয়াছে। পাহাভের বাধার क्षानाव कान। अहाडप्रदेशि कारणा मधिश वाणे, (कड, বাগান সুল পাতা বিক'ষক করিতেছে। বাভীর ফটকে क्लूम बाढ्य कीकब विकास शाय कामार्डश अक्षे स्थाय भरको छ इरल शाकी इ भिरक है। दिशा आरधः कारणा हुन, अल्ब बर, चिं ऋक्षांत भूटचेद कोम । ताकी दर्शवराद सम दाव হয় বিধানা হটতে উঠিলা ছুটলা আসমাছে। আলোতে সমুজ্য পটভূমিতে এই বিদেশনী (কলোরীকে দেবিয়া স্পীম মুগ্র হইল। ভাহার নিকাহীন রাতের অভিযা नभरक मृत स्टेश (राज । सम्य मृश्विष्ठ ७ छात्रार विरक्षद छान-नाना मिनाहेशा अक्षे चनकर्ना हिन्न छ। हात महन च १३ देश बर्चिता (म (प्रविधारक (काम काद्रान यन कामका ७ छैरपून क्रेटल अरे विक्रि जाकात (bicबंद मणुट्य क्रुडिश फेट्टे, यह यम আৰক্ষের ছোপ লাগাইয়: ১৮৪।

পিভাকে ব্ৰৱট কানাইবার জন্ধ গে উপরে গেল : গিভিছে উটিবার সময়ে পিভার হাগের শব্দ কানে আগ্রয়া ভাহাকে বিশ্বিত করিল: আগ্রয়া অবহি গে তাবাকে আগ্রয় মত হালিতে দেবে নাই, ক্যাবার্তাত সুব অল্ল ও এছ হইয়া আগিয়া-ছিল: তাঁহার এতবানি পরিংগুন আগিল এমন কি ঘটয়াছে ইভিমন্তঃ ?

খবের সন্মুখে আসিয়া দে খম্কিয়া টাড়াইল। দরকার দিকে পিঠ করিয়া একট মহিলা পিতার শ্যার পাশে চেয়ারে ব্সিয়া উচ্চার সঙ্গে কথা বলিতেছেন। খর অন্ধ অভকার ক্ষয়াছে।

একটু ইতখত করিয়া সগীম বার প্রবেশ করিল। ভূতার শব্দে মহিলাট বাড় কিরাইয়া ভাষাকে দেবিয়া উটিয়া বাড়াইলেন।

সদীম তাঁহার মুখের দিকে চাহিরা ব্যবিত ও বিখিত হইল।
প্রমিত্রার চেহারা এ কি হইরাছে ? তাহাকে চেমা যার না।
কি অপ্র হইরাজিল ? বাহিরে সে উবেদ প্রকাশ করিল না।
একটু হালিরা বলিল,—কর্বন এলে প্রমিত্রা ? কেমন আছ ?

প্ৰমিলা হাসিরা ভাষাকে খমস্কার করিল, কোন উভয় দিল্যা। ষার সাহের বলিলেন, ভোমরা বলো ছ'বন। স্থমিতা ভার বাবার বাজীতে হিল এত দিন। ও নিকেও অসুর।

সুমিত্রাকে ভিনি বিহামার উপরে বলিতে বলিলেন। সুমিত্র! বাসলে ভাগার মাধার একবানা হাত রাধিয়া বালিলেন, —সুমিত্রা কিছুদিন আমার কাছে বাকবে। ও আমাকে ভাল ক'রে ভুলবে বলছিল।

সনীম প্ৰিন্ধার গুৰের ভাব ধেবিবার চেটা করিল, কিছ ভাহার মূব রার সাহেবের দিকে কিরামো, কিছু দেবা বেল মা। সে বলিল, প্ৰিন্ধা কি বাক্ষেন, বাবা ?

রাধ সাংখ্য হাসিধা বলিলেন,— বাপ ও বড় বোন ছ'লনে ছই অংশ্রমে চুকেছে। মা নেই। ও কি মামার বাড়ীভেই বারো মাস পড়ে থাকবে ? ভূমি একবার বলে দেখা না ?

পিতা হছড করিতেছেন কিনা সসীম বুবিতে পারিল না। একবার তাহার মনে হইল বোব হয় ছুই জনের মধ্যে ইহার আনে কোন রকম নোরাপাছা ছইয়াছে। কিছু স্থানিনা বাভাবিক এলানে বাভিবে কোন ? পিতা ভাছাকে স্নেছ করেম সেইজন বা'কবার কলা বলিতেছেন। স্থানিতাকে কাছে পাইমা পিতার পরিবর্তন সে চোবে দেবিতেছে। কিছু ভাছাদের আনহছে কি আনে যায় ? একটু বিরুভভাবে সেবলিল, —'সামি বললে যদি স্থানিনা বাকেন বাবা, আমি ভাগানার দিকে চোরে ভারে কাছে এক-শ'বার এ অপ্রোধ করব, কিছু এ ভাবে—

হঠাং ভাষার কথা কড়াইয়া গেল, মুখ লাল ঘইয়া উঠিল।
রায় সাহেব তীক্ষা ধৃষ্টিভে ভাষার দিকে চাহিলেন। কি
বুৰিয়া মনে মনে একটু ছাসিলেন। তিনি বলিলেন,—স্মিন্তা,
একটু মুখখানা ভোল ত মা, ছেলে আমার দিকে চেয়ে
ভোমাকে থাকবার কল এক-শা বার অপ্রোধ করতে
প্রেয়ত আছে। কথাটা একটু ভাল করে শোন। অনেক
গতীর অর্থ আছে বোৰ ঘ্য কথাটার মব্যে। একটু ভেবে
দেব ত মা। ভেবে ওকেই উভর দিও। ওর নিজের দিক থেকে
কিছু বলবার থাকলে সেটাভ ভনে নিও। সলীম, সুমিত্রাকে
নিয়ে যাও, ছাত-মুখ বুরে ও কিছু খেছে নিক। যাও মা।

পুষিতা উঠিয়া স্থীমের অঞ্সরণ করিল। রায় সাংহ্রের ঘরের পরে একটা প্রশস্ত হালান, ভারণর হেলেদের বর। এ বাজীর কোন কিছু স্থমিতার অপরিচিত মহে। বালানে আলিরা সদীব বলিল,—স্থিতা, একটা ক্থা বল্ব বলি কিছু মনে না কর।

পুষিত্রা দাভাইরা ভাছার দিকে চাহিরা বলিল,—বলুন।
সনীষ কথা বলিবার চেটা করিভেছিল, ভাছার ছই
চোৰ ব্যঞ্জাবে পুষিত্রার মুবে চোৰে কি বেন খুঁজিভেছিল।

সুমিয়া নতমুৰে ইাড়াইয়া। সসীন হঠাৎ বাকৃশক্তি হারাইয়াছে। ভাহার ব্যাকৃল, মুখর চোবের ভাষা হইছে সুময়া সম্ভবত কিছু অথ্যান করিয়া লইল। বীরে ধীরে ভাহার মুখে মুছ হাসির রেখা ধেখা দিল। সসীমের একটু কাছে সরিয়া আসিয়া মুছ কঠে দে বলিল,—যে কথা বলভে চাও ভূমি, দেটা বলভেও কি আমাকে সাহায্য করতে হবে ?

এতক্ষে দ্বীমের বাক্শকৈ কিরিয়া আসিল। সে অভ্যস্ত উৎকুল হইয়া হাদিয়া বলিল,—ব্যাকস স্থিতা, একটু সাহাষ্য কর।

- এবার ভোমার নিজের দিক হতে স্মিন্ধার কাছে কিছু অন্নরোব করবার আছে কিনা বল। আই নো সি ইজ এ জেনারাস ইয়ং সেডী।

স্থীয় হালিল। বলিল,—ছ্মি টপ দিয়েছ, সেটা কানে কানে বলব পরে।

ভাষার ইপ দিবার কথা গুনিরা সুমিতা প্রথমটা বিশ্বিত ছইল। ভারপর চকিতে প্রায় ভিন বংসরের আগের এক দিনের কথা মনে পঢ়িল। ভাষার সেদিনকার হাজা পরি-হাস সমীয় এইভাবে মনে রাধিয়াছে ? ভবে কি সমীয় ভথম ছইভে—?

ষ্ধ ভূলিয়া সে পূৰ্ণ কৃষ্টিতে সসীষেৱ দিকে চাহিল। সসীষ ষ্চ্ হাদিতেছে। কি জানি কি ভাবিয়া কৌতুকপ্ৰিয় সুষিত্ৰার চোধের পাতা একটু ভারী হইয়া আসিল, ছই-একটা কোঁটা গড়াইয়া পড়িল কিনা বলা যায় না।

সদীয় তাহাকে ধেৰিতেছিল। সে হাসিয়া বলিল,—বাস্ বাস্ স্থিতা, আৱ নয়। হাত ধুব বুরে এল ধিকি চট্ করে। রাজ্যপাটের ভার নাও, অভাগা প্রকার দল সুবার্ড।

क्षिकात शूर्य शांति कृष्टेश केंद्रित ।



নগেন্দ্রনাথ গুপ্ত

এবিজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

>>+0>->>80

জন্ম: বাল্য-লিকা

আত্থানিক ১৮৬১ সনে বিহারের মোভিহারীভে নগেল-মাৰের জন হয়। ভাঁহার পিভার নাম-মধুরামাৰ ওও, আদি নিবাদ ছালিশহর ১৪-পরগণ। মধুরানাথ বিহাতে সবজজ ছিলেন। তিনি যথন দিভীয় বার মোতি হারীতে বদলি হন, সেই সময়ে ভাঁহার পত্নীবিয়োগ হয় ় মধ্যম পুত্র নগেজনাবের ৰয়দ তৰন আট নয় বংগর। মধুৱানাৰ দ্বিতীয় বার দারপরি-এছ করিয়াছিলেন। নর্লেজনাথের বাল্য ও কৈলোর বিহারের যোভিছারী, ছাপরা, আরা ও ভাগলপুরে অভিবাহিত হইয়া-किल। कामबास करहामकारण, मध-मन दरमत दसरम, जिमि श्रामीय वेश्टबकी (क्ला-कृटल विका निका कविशाविद्यान। ১৮৭৮ সনের গোড়ার তিনি কলিকাতার আসিরা কেনা-दिन अम्बर्भ हेन्ब्रिक्टिन अविष्ठे एन अवर के वरभन्न अन्द्रोन পরীকা দিয়া প্রথম বিভাগে উতীর্ণ হম। পারিবারিক আবহাওয়া বিশ্ববিভাগয়ের উচ্চলিকা লাভে অভয়ায় হওয়ায় মগেন্দ্ৰনাথের ভাগ্যে কোন ভিত্ৰী লাভ ঘটে নাই। ভানেন্দ্ৰনাথ খণ্ড (কে. এন. ৬৫, আই সি এস) মৃতিকৰায় ছোঠতাত-পুত্র মধ্যের নাল্য-জীবন সহতে যাহা বলিয়াছেন ভাহা উদ্বভ করিভেছি:--

"আমার মেৰদার কৰা ছ-একটা বলি, ইনি বিব্যাভ সাহিত্যিক নগেল্পনাথ খণ্ড। কিছ যে সময়ের কথা বলছি তখন সাহিত্য-জগতে বছ কিছু করেছিলেশ ব'লে মনে পড়ছে মা। কেনারেল এসেমী কলেকে পছতেন। কগং-আলোক বিবেকানন্দ হয় তাঁর সহপাঠী নয় সেই কলেন্দের সহাব্যারী हिरमन। भ क्या सम्मानिक्ट अक्टी क्षत्र बरमहिन। বাভীতে মেৰদা এক রকম ভিক্টেটর ছিলেন। আমাদের সকলের অবিনায়ক ভ ছিলেনই ভাছাঞ্চা যা ধুনী ভাই कतर्णमा । ... व्यामि स्वकात श्रवाम (हला विलाम। लक्रात्व. মত তাঁর সঞ্চে সঞ্চে বুরে বেড়াতাম। এই সময়ে আচার্ব্য কেশবচন্দ্ৰ দেনের বাড়ীভে ছ-এক বার গিরেছিলাম এবং ভাঁদের বাভীতে শেক্দপিণরের "Merchant of Venice" आक्ष्मरे ब "गारेनरक"त शार्षे (यक्षा मिरविश्वन I··· यक्षात विरव स्वाद शद स्थलाय चंधववाणी श्रवनशाही धावरे ষেতাম। ষেত্ৰবৌদি ও তাঁর বোদ 'হেবি' ছত্ত্বন্দেই পুৰ ভালবাগভাষ। ষেজ্পার একটা কথা নিবে একবার আমার मा चूब ठीको करविधालय--जा चूव मध्य चारब । विराय इ-अक षिम भरत धर्मन (मध्या (वो निष्य वाष्ट्री किरत **अरन**म--- ७४म বল্লেন "কাকি, আৰু এখানে কেম্ম বাপসা বাপসা লাগছে ?" वा राह्म "ভা ভো नागरवरे, वारा, निवास नकरनूरे माना---

नकरनदे चूचत, अथारम चामता नकरनदे कारना।" त्वाव इत, अ कथा छरम स्वकृता अक्ट्रे चूनीदे स्टब्स्टिनम ।

"ষেজ্ঞার সাদে প্রিরবাব্র বাড়ী অনেক বার গেছি।
যেজ্ঞা তাঁর কাছ বেকে কত বই যে এনে পড়ডেন তার আর
ট্রিকানা মাই। মেজ্ঞার পড়ার বাইটা অসামার্চ ছিল।
বিটনস্ ডিক্সমারী প্রস্তৃতি ছুই চারিটা মোটা অভিনান
আগাগোড়া প'ড়ে প্রার মুবছ করেছিলেন। আর এই লমর
অনেক বার জোড়াসাঁকোর রবিবাব্দের বাড়ী যেতেন। আয়
প্রায়ই তাঁর সাকে যেতাম। মেজ্ঞা ও রবিবাব্র পুর বঙ্গুছ
ছিল। কিছ ওঁর কথা রবিবাব্ জীবন-মুভিডে কিছু কেন
যে বলেন নি—ভানি না। মেজ্ঞা সাহিত্যচর্চা পরজীবনে
অনেক করেছিলেন। তিনি লাছোর, করাচী, বোলে প্রভৃতি
প্রদেশে বাস করবার সমর ইংরাজী ও বাংলার অনেক উপভাগ,
কবিতা ও প্রবন্ধ লিবেছিলেন। মন্তর্গ বিভিউতে তাঁর লেখা
পড়বার জন্ধ আনেকে উৎস্কে হয়ে থাকডেন।" ('ম্বতি ও
চিছা,' পূ. ৩৪-৩৬)

সংবাদপত্ৰ-সেবা

বাইল-তেইল বংগর বরসে, ১৮৮৪ সনে, নগেজনাথ অকুমাং কলিকাতা পরিত্যাগ করিয়া ভারতের পশ্চিম সীমান্তে করাচি চলিয়া যান। তথার তিনি 'কিনিজ' (Phoenix) নামে একথানি ইংরেজী সাপ্তাহিক-পত্রের সম্পাদক হন। কলিকাতার অবহানকালে তাঁহার বিবাহ (ইং ১৮৮২ ?) ও একটি পুত্রসন্থান হইরাছিল। করাচিতে পৌছিয়া তিনি শিশুপুত্র সহ পত্নীকে আনাইবার ব্যবহা করিয়াছিলেন। তিনি মাবে মাবে কলিকাতার যে না আগিয়াহেন তাহা নহে। কর্মছল হইতে তিনি বন্ধু রবীজনাথকে হইবানি পত্র লিবিয়াছিলেন; উহা "প্রবাসের চিটি" ও "করাচির চিটি" নামে আনদানন্দিনী দেবী-সম্পাদিত 'বালকে' (ভাজ, মাব ১২৯২) প্রকাশিত হয়। "প্রবাসের চিটি" রবীজনাবের "বর্ষার চিটি"র (প্রাবণ ১২৯২) উভবে লিবিত। চিটিগুলিতে সিন্ধুদেশের—বিশেষ করিয়া করাচির স্থান্ত বর্ণনা আছে।

সাত বংসর বোগ্যতার সহিত 'কিনিল্ল' পরিচালন করিছা
নগেন্দ্রনাথ লাহোরের 'চুবিউন' পত্রের সন্পাদন-ভার এছথ
করিবার ক্ষণ ১৮৯১ সনের যে বালে সিমুদেশ পরিত্যাপ
করেন। তাঁহার পূর্বে শীতলাকাত চটোপাধ্যার 'চুবিউনে'র
সন্পাদক হিলেন। মগেন্দ্রনাথের আমলে পত্রিকাথানি ক্ষমতগঠনের বিশেষ সহায়ক হইরাহিল। প্রকৃতপক্ষে 'চুবিউন'
সন্পাদন করিবাই তিনি লাংবাহিকরণে বশবী হইরাহিলেন।

১৮৯৯ সনে তিনি বৰন কাৰ্য্যভাৱ ত্যাগ করেন, তবন 'ট্রবিটন' স্বাহে হই বারের পরিবর্জে ভিন বার প্রকাশিত হইত।

লাহোর হুইতে কিরিরা মধেক্রমাথ পাঁচ বংসর কলিকাতার অবহান করিরাহিলেন। এই সময়ে তিনি এজাবাহর
উপান্যানের সহযোগিতার 'টুমেন্টিরের সেঞুরি' নামে একবানি
ইংরেজী মালিকপঞ্জ পরিচালন করেন। ১৯০৫ সমে তিনি
এলাহাবাদে সফিলামক্ষ সিংছ-প্রতিষ্ঠিত 'ইভিয়ান শীপ্ল'
(Indian People) মামক সাপ্তাহিক-পঞ্জ সম্পাদন করিবার
ক্ষম আহুত হন। 'ইভিয়ান শীপ্ল' চারি বংসর পরে
এলাহাবাদের দৈনিক 'লীভারে'র (Leader) সহিত স্মিলত
হুইরা যার। যজেবর চিভামনির সহিত র্গাসম্পাদক-রূপে
নর্গেক্ষনার্ব প্রাত্তিলন করিরাহিলেন।

১৯১০ সনে নগেজনাথ পুনরার সাহোরের 'টুবিউন'
পশ্লিকার যোগদান করিয়া ১৯১২ সন পর্যন্ত ইহার সহিত সংশ্লিষ্ট ছিলেন।

১৯১০ সনে ভিনি আন দিনের জন্ম লাছোরের 'পঞ্চানী' পরের সম্পাদক হন এবং এই বংসরের প্রথম ভাগেই সম্পাদক-রূপে সাংবাদিকের কার্য্য হইভে অবসর এহণ করিয়া কলিকাভা প্রভাবর্তন করেন।

সাংবাদিকরণে মগেজনাবের ব্যাতি প্রবাদত: বদদেশের বাহিরেই বিছত ছিল। খদেশে তিনি সুসাহিত্যিকরণেই বিশেষভাবে পরিচিত। মাতৃতাযার উাহার অসাবারণ লিশিত্শগতা ছিল। 'চুবিউন' ছাভিয়া ১৮৯১ সনে কলিকাতার অবহানকালে তিনি বাংলা সামহাক-শত্র সম্পাধ্যে ত্রতী হন।

'প্রদিপি' ।— রামানন্দ চটোপাধ্যার অবসর এছৰ করিলে, ১৩০৬ সালের কান্তন মাস (ইং ১৯০০), ৩র ভাগ ৩র সংখ্যা, ছইভে নগেজনাব 'প্রদীপে'র সম্পাধনভার এছৰ করেন। এই সংখ্যার "সম্পাদকের নিবেদ্দে" প্রকাশ :—

"এই দংখ্যা হইতে প্রদীপের সম্পাদকীর ভার আমি প্রহণ করিলাম। রামানল বাবু প্রদীপের সম্পাদকতা পরিত্যাগ করিহাছেন বটে, কিছ তিনি পূর্ব্বের ভার মেংচক্ষে প্রদীপকে দেবিবেন আমর। সে আশা করি এবং সর্বাদা তাঁছার পরামর্শ পাইব লে ভ্রদাও আছে।

বালালা মালিক পজের ইতিহালে বহু পরিবর্তন ঘটনাছে।
আমাদের দেশে মালিক পজের যবন প্রথম স্কট্ট হয় তবন
লেবকের সংব্যা অন্ন, সম্পাদককেই পজের অবিকাংশ লিবিতে
হইত। এবন শিক্ষিত লোকে অনেকে বালালা পড়েন ও
লেবেন, বালালা ভাষার উন্নতিকলে এবন অনেকে রতী।
অভাত দেশে সম্পাদককে বাহা করিতে হয় কতক পরিমানে
এবন এলেশেও তাহাকে ভাহাই করিতে হয়। প্রবানতঃ
প্রবন্ধ নির্মাচন করাই. সম্পাদকের কর্তব্য। ভাহার অবিক বিশেষ কিছু করিতে হইবে না এই ভরলা পাইয়াই আমি
এট ওক্তর কার্য্যে হতকেপ করিতেহি। বাহান্য এত দিন প্রদীপকে অনুগৃহীত করিয়াছেন, বাঁহাদের রচনার এই পঞ্জের এতানুপ উন্নতি হইয়াছে তাঁহারা আমাকেও ফুপ! করিবেন ইহাই আমার প্রধান ভ্রসা।"



कर्मक्षमान कथ

শংগজনাথ মাত্র চারি মাস 'প্রদীপে'র লপ্পাদক ছিলেন।
১৩০৭ সালের আমাচ সংখ্যার প্রকাশক বৈত্র্থনাথ দাসের এই
বিজ্ঞবি প্রকাশিত হয়:—-

"এত কাল ব্যক্তিবিশেষের হতে প্রদীপ সম্পাদনভার ম্যত ছিল। ঐর্ক্ত রামানক চটোপাবাার ও ঐর্ক্ত নপেজনার ওপ্ত মহালর বিশেষ ধক্ষতার সহিত প্রদীপ সম্পাদন করিয়া প্রাহক্ষর ও লাবারণের প্রীতি বর্জন করিয়াছেন। আমরা সেইকন্য তাহাদের নিকট চিরগুলী। কিছু দেবিলাম একের অনুরাপ ও বছের উপর নির্ভর না করিয়া যদি প্রদীপ দশের সমবেত যত্ন ও পরিচর্যা লাভ করিতে পারে, তবে ইহার উন্নতি ক্রিতর হইবে। উদ্দেশ প্রদিত্ত ইবরে ইবরে। এই উন্নতির উদ্দেশ্ত করেকক্য লাহিত্যাগ্রালী লক্ষ্যতি প্রদানক লইয়া প্রদীপ পরিষদ পঠিত ইইল। এবন ইইতে প্রদীপ সম্পাদনভার এই পরিষদের হত্তে নাড হইল।"

প্রথম তিন বংসরের 'প্রদীপে' নগেজনাথের বছ রচনা— পর, প্রবছ, কবিতাদি প্রকাশিত হইরাছিল। এই সকল রচনার মধ্যে ১৩০৬ সালের পৌষ-সংখ্যার প্রকাশিত "নাথাবিনী" নামে প্রাট বিশেষ উল্লেখবোল্য। প্রভাত'—১৩০৭ সালের বৈশাব (१) বালে মধেজ-বাবের সম্পাদনার 'প্রভাত' নামে একবানি উচ্চাদের সাধাহিক পঞ্জিকা প্রকাশিত হয়। রামানন্দ চটোপাব্যার লিবিরাছেন :—

"ভিমি ট্রবিউনের কাক ছাছির। [ইং ১৮৯৯] বাংলা বেশে, কলিকাভার কিরিরা আসেন। এবানে তাঁহার প্রে ব্রীটার পৈতৃত পূহ হইতে 'কুপ্রভাত' নাম দিরা একট বাংলা সাঞ্জাহিক বাহির করেন। ইহাতে রবীজনাবের কিছু পেবা বাহির হইবাছিল, এইরপ ননে পভিতেছে। আমি তবন এলাহাবাদে কাক করিতাম, নপেজবাবুর কাগকটার পেবানকার সংবাদদাভা ছিলান। তাঁহার কাগকে ছাপা আমার ছ্-একটা সংবাদ-চিটি ("news-letter") পভিরা তিনি আমাকে ব্যক্তিগত চিটিতে এই 'সাটিকিকেট' দিরাছিলেন বে, আমার কর্ণালিটিক ইজ্ঞাইও (journalistic instinct) আছে। তাহাতে আমি উংলাহিত হইবাছিলান।" ("নপেজনাব ওওঁ": 'প্রবাসী', মাব ১০৪৭)

ৰজীয়-সাহিত্য-পরিষদের সেবা

নগেজনাৰ পরিষধের ছিভাকাজী বছু ও আনরণ সভ্য ছিলেন। ১৩০৮ ও ১৩১১-১২ লালে (ইং ১৯০১,-৪-৫) কার্বানির্কাছক-সভার সভ্যরণে তিনি এই প্রতিষ্ঠানের পরি-চালনা-কার্ব্যে বিশেষভাবে সহারতা করিরাছিলেন। এই সমরে পরিষদের যালিক অবিবেশনগুলিতেও তিনি অনেক পাভিত্যপূর্ণ প্রবন্ধ পাঠ করেন। করেকট্টর উল্লেখ করিতেছি— প্রোপদী ও সভ্যভালা সংবাদ—২১ কার্থিক ১৩১০ বিভাপতির প্রকাশিত ও অপ্রকাশিত পদাবলী ৮ ফাগ্রন ১৩১০ বৈভাব কাব্যে মিধিলার স্থান—১১ ভাল্র ১০১১ বিদ্যাপতি-প্রসদ—৩ পৌষ ১৩১১

শেষ-জীবন ঃ মৃত্যু

পূর্বেই বলিয়াহি, ১৯১০ সনে নগেজনার সংবাদপত্রসম্পাদকের কার্য্য হইতে অবসর এহন করিরাছিলেন। তিনি
কলিকাতার কিরিরা প্রার আছাই বংসর কাল (২৯ মার
১৩১৯—১ বৈশার ১০২২) কালিমবাজারের মহারাজা মনীজচল্ল ননী বাহাহরের প্রাইতেট সেক্টেরী-রূপে তাহার
রাজনীতি-কার্য্যে সহারতা করেন। তিনি 'বেসলী'র সম্পাদকীর
বিভাবেও কিছু দিন যুক্ত ছিলেন। ১৯১৭ সনে নগেজনার

টাটার ভেল-কলের সেকেটরী ধ্রমা বোধাই থাকা করেন।
১৯২২ সন্দে ভিনি এই কার্যালার ভ্যাগ করিয়। দ্বীবনের দ্বলিট্ট
কাল ই পিত লাহিত্য-দেবার আন্ধনিয়োগ করিয়াহিলেন।
আহ্মানিক ৭৮ বংগর বরলে, ২৮ ভিলেম্বর ১৯৪০, শনিবার
আভে, বোধাইরে ভাষার মৃত্যু হয়। দ্বীবনের শেষ দশ বার
বংগর ভিনি বোধাইরের বান্দোরায় কাটাইয়াছিলেন। ভাষার
মৃত্ত এলাহাবাদের 'গীভার' সম্পাদকীর ভভে লেখেন:—

"We deeply regret the death announced in Sunday morning's Leader, of Nagendranath Gupta at the age of 78 at a nursing home in Bombay, Mr. Gupta was a distinguished journalist. He first came to be known to the public as editor of the *Phoenix* of Karachi, But he rose to fame later as editor of the Tribune of Labore, whose proprietor, the late Sardar Dyal Singh Majithia, gave him his full confidence. The *Trabune* became so influential under Mr. Gupt's editorship that once the local Anglo-Ladran paper, the Civil and Military Gazette asked whether the province was being governed by Sir Dennis Fitzpatrick or by the editor of the Tribute! . . . In the autumn of 1905, he was brought over to Allahabad by Mr. See achidonanda Sinha to edit the Indian People. He did so for four years, after which that paper was incorporated with the Leader, Of this paper he was the first editor with Mr. Chintamani but he se eved his connection with it after seven months. . . . Mr. Cupta had commund of a fine literary style at I wrote still better on literary topics than on polit al. He was also a story-writer. poet and artist. Alto ether he was one of the most cultured of men and always lived a peaceful life." বচনাবলী

লৈপৰ ছইভেই বাংগ-সাহিত্যের প্রতি নরেপ্রনাধের অক্রমিষ অহরার হিল। কলিকাভার পাঠাবেহার তিনি কাবাচচালি প্রক্ করেন। ১২৮১-২০ সাপের 'ভারতী'তে ভাহার অনেকঙালি কবিতা হান পাইরাছিল। কবি বিহারিগাপের নিকট তাঁহার বজুত্ব ভারিছিল। ববীজনাথ ও প্রিয়নাথ সেনের সহিত তাঁহার বজুত্ব ভারিছিল। যে বজ্ঞ-সংখ্যক অভরত বজুকে বিবাহে রবীজনাথ আমন্ত্রণ করিরাছিলেন, মর্গেজনাথ ও প্রির্নাণ তাঁহাদের অভত্য। নরেজনাথ কাব্যচর্চা হবতে ক্রমে ক্রালহিত্যে আফুট হন। বাংলা-সাহিত্যের আলোচনার জন্য তাঁহাদের একট সাহিত্য-সমিতিও ছিল; রবীজনাথ, হীরেজনাথ গড়, জানেজনাথ ওপ্র প্রভৃতি ইহার সহিত সংশ্লিষ্ট ছিলেন।

বাংলা-গ্রন্থাবলী—মাতৃভাষার নিবিত নগেল-মাবের রচিত ও সম্পাদিত প্রস্থতির একট কালাস্ক্রমিক ভালিকা দিতেছি। বঙ্মী-মব্যে প্রদত্ত ইংরেশী প্রকাশকাল বেলল লাইবেরি-সফলিত মুল্লিত-পুত্তক-ভালিকা হইতে গুণীত।

১। বিসৰ্জন (ৰঞ্জনার)। (ইং ১৮৮১ ?) পু. ৩৪। চৈতন্য সাইত্রেৱিতে আধ্যাপত্র-বিহীন একবণ্ড 'বিসৰ্জন' আছে।

२। वर्गन-नकोछ (वैकिकारा)। १ (১৯ क्न ১৮৮২)। मृ. ७४।

প্রকৃতপক্ষে পরিকাথানির নাম—'প্রভাত'। 'ম।সিক্
বর্ষান্তী'তে প্রকাশিত (পৌব ১৩৪৭) নপেজনাথের মৃত্যু-দংবাদে
'প্রভাত' নামেরই উল্লেখ আছে। বঙ্গীর-সাহিত্য-পরিবদে বিক্
রমেশচল্ল দভের কাগছপত্তের মধ্যে ১০ কৈটে ১৩০৭ ভারিখের
'প্রভাতে' প্রকাশিত ভারার একটি প্রবদ্ধের প্রভিলিণি দেখিরাছি;
প্রবদ্ধির নাম—"ভারতব্যীর্দিগের দ্বিক্তর ও ছভিক্ষের কারণ"।

বাগবাজার বীভিং লাইরেরিতে একখণ্ড 'ব্রণম-লজীত' আছে। 'ভারতী' (বৈলাব ১২৮৯) সমালোচনা প্রসঙ্গে লিবিরাহিলেন :---"লেবকের হাত পাকে নাই। কিছ ইহার আমেক স্থানে যথার্ব কবিতা আছে, আমেক স্থানে লেবকের ক্ষমতার পরিচয় পাওয়া যায়।"

- ত। প্রবিভবাদিনী (উপন্যাস)। ১২৯০ সাল (ইং ১৮৮৩)। পু. ১৩৯। ১২৯০ সালের কান্তন-সংখ্যা 'বামাবোধিনী পত্রিকা'র সমালোচিত।
- ৪। অমরসিংক (লিপাকী-বিজ্ঞোক্ষ্ক উপন্যাল)।
 (১০ শেপ্টেখর ১৮৮৯)। পু. ১৭৫।
- ४९ अ९८ व्यक्त क्या क्या क्या । १२२२ म्या (२७ अ८के १४८०) । वृ. २१६।

খনী :— চুৱী মা বাহাছুৱী (ভারতী ও বালক, বৈশাধ ১২৯৪); ধরের জলজী (ভারতী ও বালক, আধাচ ১২৯৬); ছইবার (ভারতী ও বালক, বৈশাধ ১২৯৬); ভৈরবী (ভারতী ও বালক, প্রাবণ ১২৯৬); বিরিহম ও সোরাব (সাহিত্য, ভার ১২৯১); নুতন বাড়ী (সাহিত্য, বৈশাধ ১২৯৯); মুক্তি (সাহিত্য, ভারার 'কাহিনী'।

৬। লীপ' (উপন্যাস)। লাখ্যের ভার ১২১১ (১৫ নবেম্বর ১৮৯২)। পু ১৪৩। ফাস্কন ১২১০—আধাচ ১২৯১ সালের ভারতী'তে প্রথম প্রকাশিত।

৭। উপন্যাস সংগ্রহ ও রহজ (१ (লেপ্টেখর ১৮৯৯)। পু. ২২৫।

স্ফট :—হীরার বৃদ্য (প্রদৌপ, আধিন-কার্তিক ১৩০৫);
বর্জু (সাহিত্য, প্রাবণ ১২৯৯); বোষেটে (প্রদৌপ, পৌষ
১৩০৫); কাহার প্রম (সাহিত্য, প্রাবণ ১৩০০); কাল
ক্ষণাণ (সাহিত্য, বৈশাখ ১৩০০); বন্দী (ভারতী, বৈশাখ
১৩০১); রোশিনারা (সাহিত্য, মাব ১২৯৯); কাঠুরিফা
(সাহিত্য, আমাচ ১৩০০); হারা (ভারতী, ফাপ্তন ১৩০০)
গর ভ অর (ভারতী, কার্তিক ১৩০১)। রহ্ম :—চুলের
কলপ (সাহিত্য, আমাচ ১৩০০); কোঁচার কথা (সাহিত্য,
বৈচাঠ ১২৯৯); হিসাবে ভূগ (সাহিত্য, আধিন ১২৯৯)।

৮। ভমবিনী (উপভাস)। ১৩০৭ সাল (৫ মার্চ ১৯০১)। পু. ২৩৭।৩ ১৩০১ সালের কার্তিক, অত্রহারণ ও মাব সংখ্যা 'কর-ভূমি'তে ৭ম পরিজেদ পর্যাত্ত প্রথম প্রকাশিত।

১। জীবন ও মৃত্যু (সক্ষৰ্ড)। ১০০৭ সাল (৫ মার্চ ১৯০১)। পু.২৩০

১৩০০ সালের 'সাহিত্যে' প্রথম প্রকাশিত।†

১০। বিভাপতি ঠাকুরের পদাবলী (সঙ্গালি ও সন্পাদিত)। ১৩১৬ সাল (ইং ১৯০৯)। পু. ৪৬০ 🕂 ৫৫২ + ১০

"সাধারণ পাঠকের পক্ষেত্রভছ ছইবে এবং বিভাপতির কবিতার ১৩ প্রচার ছইবে, এই আশার" নসেজনাথ ১৩৪৩ সালে বস্থতী-কার্য্যালয় ছইতে বিভাপতি প্রধাবলীর আর একটি সংস্করণ সম্পাদন করিয়াছিলেন।

১১। মণেজ-গ্রহাবলী, ১ম-২য় ভাগ। (১৬ সেপ্টেম্মর ১৯২৫)। পৃ.৩১২+৩৮৬ (বসুমতী)

प्रहो: -- नीना, পर्वाजवानिमी, ज्यविमी, ज्यविभी, ज्यविभी, ज्यविभी, ज्यविभी, ज्यविभी, ज्यविभी, ज्यविभी, ज्यविभी, ज्यविभी, व्यविभी, व्यविभी,

পরিকারভাবে শেষ পর্যন্ত বলতে পারেন নি, সেই জনা জাঁর
নগাঁ-দেশান্তন্তান ভাব প্রকাশিত হয়ে বচনাটাকে লজ্জিত ক'বে
ভুলেন্ড। নগেন্দ্রবাবৃ তাঁর ঘটনা-বিনাদের স্বাভাবিক পরিবাদের
পূর্বেই হসাং থেমে গাওয়াতে বোঝা যাছে নিঃসংজাচ নিরাবরণ
ভার সেগনীর পলে সহজ নয়, ওটা ভিনি জ্বরপত্তি ক'বে ক্রেছেন।
ফর্ ইন্টাপা, দেই বিধবা মেয়েটার সঙ্গে একজন ছোক্রার ঘনিষ্ঠভাব কথা যদি উপাপন করলেন তবে তার অজ্যেষ্টি-সংকার না
ক'বে ছাড্লেন কেন গ ও রক্ম হলেন। হ'তে পারে সেটাকে সরল
ভাবে ভাব সম্পূর্ণ বীভাগ মুডিতে পরিক্ষৃট করলেন না কেন গ
এ সব জিনিয় তিনি ছ'তে ঘুণা করেন অবচ নাড়তে প্রাবৃত্ত হরেছেন,
সেই জনো সব কথা ভাল ক'বে প্রকাশ করতেও পারেন নি, ভাল
ক'বে গোপন ব্রতেও পারেন নি। 'পিক্রাবলী' : 'বিশ্বভারতী প্রিকা,' বৈশ্বে ১৩৫০, পু. ১৯৮)

ক স্বেশ্চন সমাজণতি 'বল্পিন-প্রসংক' (পৃ. ৩৪৯) লিখিরছেন:—"বল্পিন বাবু বলিলেন—'নগেন গুপুর 'মৃত্যুর পরে' উচু দরের লেখা। 'বল্পদর্শনে' এ রকম প্রবন্ধ ছাপা হয় নাই।' বল্পিনার জীযুক নগেক্রনাথ গুপু মহাশ্যের 'মৃত্যুর পরে'র বড় পক্ষপাতী ছিলেন। তিন চারি বার আমার নিকট উহার প্রশংসা করিয়াছিলেন। নগেনবাবুর style এরও তিনি প্রশংসা করিছেন। 'মৃত্যুর পরে' প্রস্থাকারে ছাপা হইরছে।"

^{*} ১২ আখিন ১৩-৭ তারিবে প্রিয়নাথ সেনকে লিখিত এবথানি পরে ববীক্ষনাথ 'তমন্বিনী' প্রসঙ্গে এই কপ লিখিয়াছিলেন ঃ
— "নগেল গুপ্তব তমন্বিনী পড়ে দেখলুম। ঠিক চয় নি। স্পাই
দেখা যাছে, বাললা উপলাসে তিনি উন্মুক্ত Itenlism এর অবভারণা
করতে চাছেন। তাতে আমি কিছুই আপত্তি করি নে। ভিত্ত সেটা পারা চাই। যেমন নাচতে ব'সে ঘোমটা সাজে না, তেমনি
এ রকম বিবর লিখতে ব'সে কিছু হাতে রাখা চলে না। সম্পূর্ণ
নির্ভীক নয়ভা ভাল, কিন্তু আল আবরণ রাখতে গেলেই আক্র নই
হয়। এ বইরে ভাই হরেছে। গ্রন্থকার সাহস্পূর্বক সব কথা

চলপীকের ঐপর্ব্য ; কুটবল কাইনাল (ভারতবর্ব, আখিন ১৩২০) ; ক্ষাল-ক্ষিল (বদদর্শন, প্রাবণ ১৩২০) ; মারাবিনী (প্রবীণ, পৌষ ১৩০৬) ; প্রতিশোধ (প্রদীণ, সাধ ১৩০৬) ; হোট বৌ (প্রবীণ, বৈশাধ ১০০৭) ; প্রক কণ্ডর (ভারতবর্ব, প্রাবণ ১৩২০) দেবরাত ও প্রসেন ; নবনগর (নাটকা) ; বেলাগরে ; নিভারিশীর রাজনীতি ; বিজ্ঞাট ।

১২। ব্যব্ধী (উপভাগ)। ইং ১৯২৯। পু. ১৭৫।
১৩২৯-৩০ সালের 'প্রবানী'তে প্রথম প্রকাশিত।
১৩। সভাপীরের ক্রা--- বামেশ্বর ভট্টাচার্গ্য-বিরচিত
(সম্বলিত ও সম্পাদিত)। ১৩০৬ সাল (ইং ১৯৩০)।
পু.১৯৫০-৮৪৭।

১৪। আরাভাষা (উপভাগ)। ইং ১৯৩০। পু. ২৭৯।
১৩০৪-৩৫ সালের 'প্রবাদী'ভে প্রথম প্রকাশিভ।
১৫। ব্রহ্মনাথের বিবাহ (উপভাগ)। ইং ১৯৩১।
পু. ১৭৮।

১৩৩৬ পালের 'প্রবাসী'ভে **প্রথম প্রকাশিভ**।

১৬। রথবারাও অভাত গর। ইং ১৯৩১। পৃ. ১৪৯।
স্চী:—রথবারাও প্রবাসী, কার্মন ১৩৩৬); প্রা পিলীয়া
(মালিক বস্মতী, বৈশার্থ ১৩৩৬); রাজবােয় (প্রবাসী, ভারা
১৩০৪); নির্কার (মালিক বস্মতী, আহ্মিম ১৩৩৬); বে
দেশে পারী মেই (মালিক বস্মতী, আহ্মিম ১৩৩০); পভিতের
পরাজর প্রবাসী, কার্মন ১৩৩৪); নিজ্কিক প্রবাসী,
অপ্রহায়ণ ১৩৩৬); না জলে, না স্থলে প্রবাসী, মান্ম ১৩৩৫);
বন্ধী (প্রবাসী, বৈশার্থ ১৩৩৭); প্যায়ীর মাসী (মালিক
বস্মতী, চৈত্র ১৩৩৬)।

পুস্তকাকারে অপ্রকাশিত বাংলা রচনা।—

পুরাত্ম মাসিকপঞ্জের পৃঠাত্ত মাসেজমাথের বহু সুলিবিত প্রবৃদ্ধ, কবিতা ও গল-উপলাগ বিশিল্প রহিরাছে। এই সকল রচনার অতি অলই পুতকাকারে প্রকাশিত ক্ইরাছে। আমরা পুত্কাকারে অপ্রকাশিত তাঁহার কৃতক্তলি গল-উপলাগ ও রগ-রচনার নির্দেশ দিতেছি:—

'ভারভী'—১২১৬: ভাষাঢ়—বৰিবের বাসনা; ভাজ— চিরকুমানী। ১৩০১: ভাজ-ভাঞারণ—চক্ষ (উপচাস); ভাষিন—সমূদ্রসংঘন। ১৩০৮: ভাৈঠ—গোমার কাঠি ও রূপার কাঠি।

'क्षभीभ'।-- ১७०७ : हेडज्र--- मिक्क व्यवदाय , बुक्रु ।

'প্রবাদী'।—১০০৮: জ্যৈষ্ঠ—সন্ন্যাদী; প্রস্কার্মাছাখ্য।
১০১০: আবিন—ক্ষালী; অর্থারণ—রন্থ মারি। ১৬১১:
আবাদু—ভেজা নিংছ; আবিন—মাকুকা। ১৬৬৬: প্রাবণ—
সাঁচ্চা ও বুটা। ১৬৬৯: আবাদু-টের—বাগভা (উপভাস)।
১৬৪০: আবাদু-প্রক্ষিন।

'সাহিত্য'।---১৩২০ : মাধ--- মপ্রপথে ।

'बामनी' ।-- ১७२० : खावन-- देश्याक ७ मार्जाम ।

'মানিক বন্ধতী',—১৩০> : আখিন—চতুরে চতুরে; পৌষ-কান্তন ১৩৪০—উইল (উপভাগ)। ১৩৪০ : বৈশাধ— দীভোষাদ; প্রাবণ—কোমং। ১৩৪১ : বৈশাধ-চৈত্র—পূল্ (উপভাগ); বৈয়ন্ত—ছবণ; ভাত্র—ভীভা; কার্ডিক—মানিমী; অগ্রহারণ—টিয়া পাষী; চৈত্র—বিদেশিমী। ১৩৪২ : বৈশাধ-ভৈত্র—পরীস্থান (উপন্যাস); বৈশাধ—ব্যর্থ প্রবাস; চৈত্র— অন্তভাগ। ১৩৪৬ : পৌষ—বিশদ ও বিবাহ।

ইংরেজী রচনা— মরেজনাথ ইংরেজী রচনাতেও
ভূল্য পারদর্শী ছিলেন। 'মভার্ণ রিভিয়'র পৃঠাঞ্জল অবেষণ
করিলে ভাষার বহু ইংরেজী রচনার স্থান মিলিবে। এই
সকল রচনার মব্যে তাঁছার নিজের ও সমসাময়িকদের স্থতে
ফুজিকথা (ইং ১৯২৭-৩০) ও A Planet and a Star
মামে নৃতন বরণের উপন্যাস (ইং ১৯৩২-৩৪) উল্লেখযোগ্য।
তিনি 'মভার্ণ রিভিয়ু'তে রবীজনাথের জনেক কবিতার তর্জমাও
প্রকাশ করিয়াছিলেন; তন্মবো "উর্ফাই"র প্রাস্থবাদট (জুলাই
১৯২৭) জনেকের নিকট আগৃত হুইয়াছিল। ইংরেজীতেও
তিনি করেকথানি পুত্তক প্রকাশ করিয়াছিলেন; গুটাভস্কশ
কেশবচন্ত্র দেন, রামঞ্চ্যু পরমৃহংস ও মহায়া গাঙী সম্বন্ধে
ভাছার পুত্তক-পুত্তিকার উল্লেখ করা ঘাইতে পারে।

নগেন্দ্রনাথ ও বাংলা-সাহিত্য

নগেজনাথ আৰ্ক পভাৰীয়ও আহিক কাল বাংল'-সা'হভোৱ পেবা ক'ৱয় গিয়াছেন। প্ৰাঞ্জলতা ও প্ৰদান্ধৰ উদ্যান্ত রচনার বৈশিষ্টা ছিল। কথা-শিলী হিদাবে সাহিত্য-ক্ষেত্র তিনি একট বিশিষ্ট হান অধিকার করিয়াছিলেন। অপবিচ্নের কলে আবুনিক বাঙালী উদ্যানে তুলিতে ব'সমাছেন। আজ-কাল প্রাচীন ও নবীন লেবকগণের রচনা-সমবায়ে অনেক গল্প-সংগ্রহ, গল্প-সক্ষম জন্মাত করিতেছে সভ্য, কিছ ভাষাদের কোনটতেই নপেন্দ্রনাথের নাম বুঁজিয়া পাওরা বায় না। অবচ্ উহার লিবিত "মুক্তি," "চুইবার" "নায়াবিনী," "রমালী," "ভামার কাহিনী" প্রভৃতি যে-কোম গল-সংগ্রহের গৌরব বুর্ভি বই হ্রাস করিত না। ইহা আক্ষেণ্ডের বিষয় সক্ষেদ্ধ নাই। পদাবলী-সাহিত্যেও নগেজনাথের নাম অবনীয় হুইয়া আছে। ভাষার সম্পাদিত বিভাগতি ও গোবিক্ষদাস কার পদাবলী পাতিত্যের কীর্ত্তিক্ত।

নগেজনাথ অক্লান্ত কৰ্মী ও মাতৃভাষার প্রতি অভ্যধিক প্রীতিদম্পদ্ধ হিলেন বলিরা ইংরেশী সাংবাদিকভার সঙ্গে ওতপ্রোভ বাকিরাও বাংলা-নাহিত্য ব্যাপারে প্রভূত কাল করিতে পারিয়াছলেন। তাঁহার শ্রেণীর লোকের মধ্যে বর্ত্তরানে এইজপ নাহিত্যনিষ্ঠা হুর্গত। এই অধুমা-বিস্মৃত সাহিত্য-সাবকের দৃষ্টান্ত বর্ত্তরান মূর্ণের সাহিত্যিক্ষরের নানা ভাবে অমুক্রণীর।

রবীন্দ্র-চিত্তের ভূমিকা

ঐবিমলচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

রবীজনাথের ছবির সহিত আমাজের যতটুতু পরিচর আছে তাহাতে তাঁহার শিল্পী-জীবনের জ্ঞ্ঞবিকাশের বারা নির্ণর করা চলে না। আমরা বলিতে পারি না তাহার শিল্পী-জীবনের ইতিহাস কোবায় আরম্ভ হইরা কোবায় শেষ হইরাছে এবং কি তাবেই বা ভাহা পরিণ'ত লাভ করিয়াছে। শেষ জীবনে সামাত কিছুকাল তিনি ছবি আঁকেন, সে ছবিভাল তাহার নিপুন হত্তের পরিচয় দেৱ। এ নৈপুন্য পরিণতশভ্তি কুশলী চিত্রকরের পক্ষেই সম্ভব। কিছু প্রস্ন এই, বাঙালী দর্শক কি সেই ভাবেই তাহার ছবি গ্রহণ করিয়াছে?

আৰু পৰ্যন্ত ভাৰার ছবির থে হল সমালোচনা হইরাছে তাহা ধেৰিয়া মনে হয় বাঙালী দর্শকের নিকট তাহা যবাঘোগ্য সমাধ্য লাভ করে নাই। ইহার কতক্তপি কারণ আছে।

প্রথমতঃ, প্রাচীন ভারতীয় শহুতির ছবি আমাধের সুপরিচিত ; এই জাতীয় ছবি আমাধের মৃষ্টিভাদকে অনেকটা গছিরা
তুলিয়াছে। কাজেই কোন ছবির সহিত প্রাচীন ভারতীয় ছবির
সংগৃত্ত না থাকিলে তাহা আমরা সহজে এহন করিতে পারি
না। লিলাচার্যা অবনীজনার প্রবৃত্তিত ও তাহার লিয়ার্ম কর্তৃক
অনুস্ত নব্যভারতীয় চিত্রকলার আম্লোলনের মৃলে প্রবানতঃ
ছিল প্রাচীন ভারতীর চিত্রকলার আম্লোলনের মৃলে প্রবার
আকাজনা। তাহাছের ছবিওলি আমাধের নিকট সহজেই আয়ৃত
হইয়াছিল। মব্যভারতীর চিত্রকলার আম্লোলনের সহিত
সংলিই থাকিলেও রবীজনাথ যে সময় ছবি আকা আরভ
করেন ভবন সে আম্লোলন প্রায় শেষ হইয়া আসিয়াছে।
ভাহার কোন বৈশিষ্ট্যই তাহার ছবিতে পরিলক্ষিত হয় না।
একিক বিয়া তিনি সম্পূর্ণ সভয়।

বিভীয়তঃ, চিত্রকলার ইতিহালে যে পছতিভাল আমাদের পরিচিত লে রক্ষ কোন পছতি অসুসারেও তিনি ছবি আকেন নাই। এদিক দিয়া গগনেজনাবও সভন্ত, এ বিষয়ে সম্পাম্মিক চিত্রকর্মের গহিত তাঁহার কোন মিল দেখা যায় না। কিছ গগনেজনাব নানা পছতিকে একাছ ভাবে নিজ্য করিয়া লইয়া ছবি আকিয়াছেন এবং এইবানেই তিনি অন্তল্পাধারণ প্রতিভার পরিচর বিয়াছেন। রবীজনাব ভাহা করেন নাই, তিনি নিজেই বন্ধীয় পছতি উপ্তাবন করিয়াছেন, কোন প্রচলিত টেকুনিকের সহিত ভাহার ভূলনা করা যায় না।

ভূতীয়ত;, বিষয়বন্ধর দিক বিয়াও তাঁকার ছবি ভিয় বরবের। তাঁকার অধিকাংশ ছবির বিষয়বন্ধই সাধারণ দর্শকের বিকট বাবিকটা অধাতাবিক বলিরা বোব হয়। বান্ধবের সহিত সাবৃত্ত অভ্যন্ত কম বলিয়া ভাহারা এওলির প্রতি সহজে আরু ই ইতে পারে মা।

ষোটাষ্ট ভাবে দেখিতে গেলে উপরোক্ত কারণগুলিই সাবারণের পক্তে রবী প্রমাধের ছবির রলোপলভির পরিপত্তী হইরা ইছিল। কিছ চিত্রকরের কাজ ও ছবির উদ্দেশ্ত সম্বদ্ধে অবহিত হইরা আমর। যদি রবীক্তনাথের ছবির আলোচনা করি ভালা হইলে তাঁহার চিত্রকলার প্রকৃত হয়প আমাদের মিকট উদ্বাহিত হইতে পারে। এই প্রবদ্ধে আমরা পেই কথাই বলিবার চেটা করিব।

চিমকরের কাজ প্রধানতঃ তিনট। প্রথম, তিনি বে বিষয়ের ছবি আঁকেন, কলনার তাহাকে উপলব্ধি করা; বিতীর, ভূলিকার সাহায়ে তাহাকে সূটাইরা তোলা। এই পুইট কাজ প্রায় একই সজে চলে। আমরা ঠিক করিয়া বলিতে পারি না, এমন কি চিত্রকর নিজেও নর, কোবার একট শেষ হইয়া আর একট আরম্ভ হয়। ছবির উৎকগাপক্য নির্ভর করে চিত্রকরের এই উপলব্ধি এবং উপলব্ধিগত বিষয়কে রূপ দান করিবার ক্ষমতার উপর। যেবানে অহুভূতি কীণ লেবানে চিত্রকরের প্রকাশ-ক্ষমতা যতই বাকুক না কেন, তাহার ছবি দলকের ভ্রিবিবান করিতে পারে না। আবার যেবানে প্রকাশ-ক্ষমতা হর্মক লেবানে বিষয়বন্ধর উপলব্ধি যত গভারই হোক না কেন, আবার হিমান বিষয়বন্ধর উপলব্ধি যত গভারই হোক না কেন, আবার হিমান বিষয়বন্ধর উপলব্ধি যত গভারই হোক না কেন, আবা ছবি চিত্রকরের বার্থতারই পরিচয় দেয়।

চিত্রকরের তৃতীয় কাঞ্চ—উপপ্রিগত বিষয়কে রূপ দিবার সময় এটা দেখা যে, যে ছবিখানি তিনি জাকিতেছেন চিত্র হিগাবে তাহা শয়ংসম্পূর্ণ কিনা এবং দর্শকের কাছে তাহার নিক্ষ একটি আবেদন আছে কিনা। অবাং 'কম্পো-জিপন' এবং রেখা ও রডের দিক দিয়া তাহার ছবির এমন সামন্ত্রত ও পূর্ণতা বাকা আবেক্সক যাহা অনারানে রসাক্ষ্যনী দর্শকের দৃষ্টি আক্ষণ করিতে পারে।

চিত্রকর রবীজ্ঞনাথ চিত্রকর্মের এই তিন্ট দিক সম্বন্ধের সচেতন। এক কথার তিনি চিত্রকরের সম্পূর্ণ দারিছই মানিরা সইয়াছেন। তাঁছার যে-কোন ছবি লইয়া আলোচনা করিলেই আমরা দেবিতে পাই, তাছা তাঁছারউপদক্ষিণত বিষয়ের নিখুঁত প্রতিচ্ছবি— তাহার নামঞ্চ ও পূর্ণতা তাছাকে একটি বিশিপ্ততা দান করিয়াছে। খাল্র-শ্বন্থ সম্বন্ধিত জাকুতিবিশিপ্ত রাম্বের ছবি কিংবা লোধুলির ছারাধুসরিত বনানীর ছবি— এককথার যে ছবিই বরি না কেন আম্বন্ধ ইহার প্রমাণ পাই।

এবানে বলা আবন্ধক উপলব্ধিত বিষয়ের সহিত বাতবের বে সম্পূর্ণ নিল বাড়িবে এবন কোন কবা নাই; কেননা চিত্র-

করের কাজ ছবি আঁকা, বা বের প্রতিলিপি আঁকা নয়। উাহার মনের 'চিত্রশালে' এক এক সময় এক একট ছবি সুস্পষ্ট হইয়া উঠে, এওলির খণ্ডির তাহার মনোকগতে অভ্যন্ত । ইছারাই চিত্রকরের উপল্ভিগত বিধর এবং তাঁছার অভিত हरित विषयवद्य। वन! वहिना, वृद्धिर क्रमाण्य नाना पूछ নামা ভিনিষ ভাহার মানসপটে ক্লাছরিত কইয়া এই সমভ ছবি শৃষ্টি করে। বহির্দ্দগতের কোন ত্রপ যদি চিত্র-করের চোৰে না পড়ে, তাঁহার অপুভৃতিকে সঞ্জিয় মা করে, ভাষা হইলে তাঁছার মনের 'চিত্রশালে' কোন ছবিই ভাগিছা উঠিতে পারে না। চিত্রকরের অনুভূতিদর বিষয়ওলির সন্থিত বাছবের সম্পূর্ণ যিল নাই সঙ্য, কিছ তাই বলিরা সেওলৈ একান্ত অবান্তবত নয়। ইহারা বান্তব-অবান্তবের মাঝামাঝি জিনিষ্, চিত্রকরের ভূলিকায় প্রতাক सरेबा हैर्छ । अरे कथाहै मत्य दाखिल दरीक्षमात्यह छरिद বিষয়বস্তুত্র বিরুদ্ধে যে অভিযোগের কথা ভনা যাত ভাষা সংস্প **िखिशीन विभिन्न (वाय एक्षा एक्ष्मान क्ष्मराक प्रवीक्ष**नाथ নানা ভাবে দেখিয়াছেন, ভাহার বিচিত্র ক্লপ উচ্চার মনকে अक अक ममञ्ज अक अक काट्य (भागा विशाहक, यासार भदिन्द পাওয়া যায় তাঁহার অসংখ্য সামে ও কবিভায় : আবার এট লম্ভ রূপ পরিবর্ত্তিত হইরা উাহার মনের 'চিত্রণালে' যে সকল ছবি কুটাইয়া ভূদিহাতে, তাহাই আত্মপ্রকাশ ক্রিয়াতে বেখার ও রভে। বাভবের শহিত ইহাদের মিল হয়ত तिभी मारे, किस हेश्वा मण्युंशात वास्त्रभण्य विकास्त्र मस ।

এই প্রসক্ষে রবীক্সনাথের রঙের ব্যবহারের উল্লেখ কর! প্রয়োজন। রঙ ছবির প্রধান উপাদান: রঙের উপযুক্ত ব্যবহারের উপর ছবির পূর্বতা অনেকাংশে নির্দির করে। ভাই সকল চিত্রকরই উপযুক্ত রঙের প্রয়োগধালা চিত্রের সোঠব সম্পাদনের প্রতি বিশেষ অবহিত থাকেন।

আমাদের দেশে ছবিতে সাবারণত: উপ্র রঙের বাবহার ধেবা বার না, এক সলে বিভিন্ন রঙের বাবহারও কম দৃষ্ট হয়। আমাদের চিঞ্জকরপণ প্রধানত: কোমল রঙই বাবহার করেন। কিছা রবীক্রমাণের ছবিতে তাহার ব্যতিক্রম নকরে পড়ে। তিনি কোমল রঙ খুব কমই ব্যবহার করিরাদেন। তাহার ছবির রঙ উপ্র না হইলেও বেল উদ্দল, এবং তাহার ছবিতে রঙের সমারোহ বিশেষভাবে উপ্লেখযোগ্য। রঙের উদ্দল্য এবং সমারোহ তাহার উপলব্বিগত বিষয়কে প্রকাল করিতে ও ভাহার ছবির পূর্ণতা সম্পাদন করিতে যথেই লহাতা করিয়াছে।

আমরা সাধারণতঃ পূর্বধারণার বশবর্তী হই । ছবি বেশি, মছুবা ছবি হইতে কোম অর্থ খুঁজি। এ ভা.ব রবীক্ত নাবের ছবি বেধা অসকত। এই প্রসদে তাঁহার নিজের উত্তি প্রনিধানযোগ্য:

People often ask me about the meaning of my pictures, I remain silent even as my pictures are. It is for them to express and not to explain. They have nothing ulterior benind their own appearance for the thoughts to explore and words desirable and if that appearance corries its ultimate worth then they remain, otherwise they are rejected and forgotten even though bey may have some scientific truth or ethical justification."

ভাংগবাঃ ভাষার ছবির অর্থ সম্পর্কে লোকে প্রায়ই আমাকে প্রার করে। আমার ছবির মতই আমি চুপ করিয়া থাকি। আমার ছবির মতই আমি চুপ করিয়া থাকি। আমার ছবির মতই আমি চুপ করিয়া থাকি। আমার ছবির মতই আমি করা নয়। চিন্তা থারা অবিধার এবং ভাষা ঘারা বর্ণনা করিতে হয় এমন কোন গুড় অর্থ ভাষাকের পিছনে নাই। ভাষাকের চরম সংগ্রেভা যদি ভাষাকের মহে। নিহিত থাকে ভাষা হইপেই ভাষারা উকিবে, পতুবা ভাষাকের মহে। কোন বৈকানিক সভা কিয়া মৈতিক যুক্তি যদিও বা থাকে ভাষা হইপেও ভাষারা প্রভাগান্ত ও বিশ্বত হুইবে।

একখা সকল চিত্রকবের ছবি সহছেই সমান আবে প্রযোজা। ছবির পিছনে কোন জগ থাকে ন: চিত্রকর ওপ্তকথা বলিবার জন্ম ছবি আঁকেন না, রূপস্থা করাই উচ্চার একমাত্র উদ্দেশ্য। তাঁলার যাখ্য কিছু প্রকাশ করিবার ভাষা ছবির জিতর দিরাই পরিকৃট হইয়া উঠে। রণীশ্রনার এক ভার্গায় বলিয়াকেন:

> "আপন প্ৰকাশ আপনাতে গত দেৱা ক্ষান্ত মনিনাৰে

নিয়ে সাথে নিজে দাও দেখা, বচনের মন্ত্রিনাথে ভাক্ষেপ কর না কড়।"

ৰণ্ডতঃ ছবির বড় কথাই হইতেছে এই -- আপন প্রকাশ আপনাতে। " ববীপ্রনাবের প্রায় সকল ছবিতেই ইছা পরি-লক্ষিত হয়।

তাঁহার ছবি হইতে যদি কোন আৰ্থ খুঁজিতে বাই তাছা
হইলে আনৱা নিরাণ হইব। আনদের প্রেরণার ছবি
আঁকা—এ ছাড়া তাঁহার তুলিকা বারণের শিহনে অভ
কোন উদ্দেশ্ত নাই। ছবি আঁকা তাঁহার বিচিত্র ব্যক্তিছের
একট বিশেষ দিক—গান বা কবিভার ভিতর দিরা যে
দিকের কোন প্রকাশ হয় নাই। যাহা গানে অববা
কবিভার ব্যক্ত করা যার না, স্তর কিংবা ছল যাহার
পরিচর দিতে পারে না, রেবার ও রঙে তিনি ভাহাই
স্টাইরা তুলিরাছেন। তাঁহার ছবি সহছে তাঁহার নিজের
কবাই মনে রাবা সমীচীন: "চিত্রকর গান করে না, বর্মকবা
বলে না, চিত্রকরের চিত্র বলে—'অরব্ অহ্ব ভো'—'এই যে
আনি এই'।"—এই আপনার অভিত্রেই তাঁহার ছবি স্কর
হইরা উটিরাছে।

"বলম্ উপাস্স্ব"

ত্রীবিমলাচরণ দেব

শ্বুজ্তে বাংলা" এই কগাটা অনেকেই জানেন। কিন্তু বোধ হয় সকলে জানেন না যে, ঐ ছটি কথা এককালে খুব প্রচলিত একটি প্রবচন-বাক্যের আছা অংশের বিকৃত রূপ। খার, বোধ হয়, ঐ প্রবচন-বাক্যের উৎপত্তির কারণত সকলে জানেন না।

পুরাকালের কথা—"বশান্তংখায় তরসা" বা বিজঃ
সিংহের লক্ষা ভয় প্রভৃতি ছাড়িয়া দিই। অপেকাকত
স্থানাতন সময়ের কথাই বলি। মুসলমানরা যে সময়ে
বাংলাঘ মাধিপতা স্থাপন করে, তথন ও তাহার পর অনেক
কাল প্রান্ত রাংলা প্রকৃতপক্ষে কয়েকটি অল্পবিশুর স্থাধীন
বাজ্যের সমন্তি ছিল। অথাৎ, সারা বাংলাটা কয়েক জন
রাজা ভাগ করিখা লইয়া যথাশক্তি দথল ও শাসন করিতেন। ইংলের মধ্যে বেশীর ভাগই কয়েছ। আইনইংআকর্বরিতে স্বা বাংলা স্থক্ষে বলা আছে (Gladwin's
translation) the zamindars (who are mostly
Koits: furnish also 23,330 cavalry, 801,158 infantry, 170 elephants 4260 cannon and 4400
boa's. সীতারাম, প্রতাপাদিত্যের কথা মনে পড়িবে।

তে সব রাজা (যাহাদের আইন-ই-স্মাকবরিছে "জমিদার" বলা হইয়াছে) স্বাধীন ভাবেই চলিতেন। নেহাং বাধা না হটলে পাঠান বা নোগলের প্রাধান্ত স্বীকাণ করি-ছেন না। ছাহাও যতদিন শক্তি অপেক্ষাকৃত কম গাকিত। এই কারণে নিতা বাংলায় হালাম লাগিয়া থাকিত। একটা হালাম ভাল করিয়া খামিতে না থামিতে আবার একটা হালাম আরম্ভ হটত। এই জন্ত উক্ত প্রবচনের উৎপত্তি হয়—''ছজ্জত-এ-বালালা, হিক্মং-এ চীন"। স্বাধাৎ যদি হালাম ছজ্জ্তের কথা বল, ভাহা হইলে বাংলাকে হারানে। শক্ত, যদি শিল্পীর শিল্পচাতুর্ব্যের কথা বল, ভাহা হইলে চীনে কারিগহকে হারানো শক্ত।

বাঙালীর এই যুদ্ধোৎস্কা বছকাল বন্ধায় ছিল। যে "লাল পন্টন" অবলখন করিয়া কাইভ মাতামাতি করিয়াছিলেন, সে "লাল পন্টন" প্রধানতঃ বাঙালীর দারা গঠিত। পলাশীর যুদ্ধক্ষেত্রে বে ছই জন "মুনের মর্বাদান" রক্ষা করিয়াছিল—মীর মদন ও মোহনলাল—তন্মধ্যে মোহনলাল বাঙালী, উত্তর রাটা ঘোষ কায়ন্থ। শান্তিপুরের গোড়গোয়ালাদের যুদ্ধোৎস্কা বিখ্যাত ছিল। কোনও উৎস্ব উপলক্ষে একটা "থগুমুদ্ধ" করা তাহাদের প্রথা ছিল, বিশেষ করিয়া চৈত্রসংক্রান্তির দিন। এইরূপে তাহারা

যুদ্ধের মনোরুত্তি জাগাইয়া রাখিত। প্রাচীন লোকেদের কাচে আমার লোনাযে এই যুদ্ধৌংস্থক্যের মূলে কুঠারাঘাত করেন Blacquire খাও নামে কলিকাভায় Blacquire Square. এই ব্লাকিয়ার, শিত্যাভূহীন ইংরেজ সন্তান, শান্তিপুরে এক ব্রান্ধণের গৃহে আশ্রয় পান ও কিছুকাল তাঁহার গুড়ে পোয়ারপে বাদ করেন: দেই সময়ে গোড়-গোচালাদের ভীষণ যুদ্ধ বছ বার দেখেন। বিলাভ গিয়া সেখান হইন্ডে কোম্পানীর চাকুরি সইয়া এদেশে আংসন। তাহার সামুক্তাবৃদ্ধি ও দুরদ্শিতার প্রশংসা এইজন্ম করি যে, তিনি ব্রিয়াছিলেন, এই ষ্ণপ্রিছে। সমূলে উচ্ছেল না করিকে ইংরেজলালা এলেশে স্থায়ী হইবে না। এই ব্যাহা ডিনি নানা কৌশলে এইরপ "গওয়ুদ্ধ" বন্ধ করিয়া দিচা লোচলোয়ালা ও অপর সমস্ত লোককে "শান্তিপ্রিহ" কবিয়া তুলিবার ব্যবস্থা করিলেন। সারা দেশময় এই নীতি অসুস্ত হটল। कार्ष्ट्रके ज्ञाम लारक "नाक्ष्मिष्टे" दर्देश पछिन। विभन আসিলে নিছকে বুজা ক্রিতে অসম্প্রইয় পালে এবং ভুগন সমূল হুইল , জুণ্ডিক উন্দেশ্যে "ত্ৰাহি ডাহি" আর্ত্তনাদ। (বর্ত্তমান সময়েও আমরা এইরূপ উপদেশ পাইতেছি—"আভভাষী ভোষাকে আক্রমণ করিলে do not take the law into your own hands" / <79-শক্তিও ইহাই চায়। ক্রমে বাঙালীকে non-martial race শ্রেণাভুক্ত করা হইল এবং ভাহাকে শুধু দৈরুবি হাগ নতে, মিলিটারী পুলিম ইইতেও বাবিত করা ইইল:

ইহার পর আদিল দিপাই যুদ্ধ।—বিদেশীয় আধিপত্য উচ্চেদের জন্ত ভারতীয়দের প্রথম বড় চেষ্টা। ইংরেজ দেখিল বে, তখনও যুখোলমের ইচ্চা ভারতীয় মনে বিলুপ্ত হয় নাই। যাংতে এই ইচ্চা সমূলে বিনাশ হয়, ভাহার জন্ত ব্যাপক চেষ্টা: আরপ্ত হইল। কৃট্ডম চেষ্টা—সুলের সাংহায়ে অভিসন্ধিমূলক (propaganda) শিক্ষা। আমাদের দৃষ্টি, আমাদের শ্রেজ নির্ভর দেখিতে ভানিতে লাগিল—"ভোমাদের দেশে যাহা কিছু ভাল, যাহা কিছু সভাতার, দেখিতেজ, ভাহা সমস্তই আমরা আনিয়াছি। ভোমরা আমাদের পরম কুপার পাত্র"। "ভোমরা আমাদের অপেকা বছ হীন, আমরা ভোমাদের বছ উপরে", "আমরা ক্রন্ড কোনও বুদ্ধে হারি নাই এবং ক্র্নেও প্রাধীন হই নাই। কিন্তু ভোমরা বছ বার প্রাজিত ও প্রাধীন হইয়াছ", "ভোমরা কৃশংস্কারে আচ্ছেন্ন, আমরা

আলোকে উদ্তাসিত", "যে পরিমাণে ভোমরা আমাদিপের অস্করণ করিবে, সেই পরিমাণে ভোমবা সভ্যতার, তথা মহুগ্রুবের, উচ্চতর স্তরে উঠিবে" ইত্যাদি।

415

এইরণে আমাদিগের মনে পরাভূত মনোবৃত্তি আনিবার উদ্দেশ্যে অভিসন্ধিমূলক পুস্তক রচনা হইতে লাগিল, বিশেষ ভাবে কুলের জন্ম। উদাহরণমূরণ তুই-একটি বলিতেছি। ইংবেজ God the Father, God the Son. God the Holy Ghost-এর নাম লইয়া দিবাঞ্জজৌলার দ্ভিত "ঝালিপুরের দৃদ্ধি" করিয়া প্রায় সঙ্গে সঙ্গে ভাহ। অবলীলাক্রমে ভক্ক করিয়াছিল — একথা কোনও ধুলুশাঠা বা প্রচলিত ইতিহাসে লেখে বলিয়া জানা নাই। মাহাদজি সিভিয়ার হতে যে সময়ে ইংরেজ দৈত্তের বিনাশ নিশ্চিত. ति प्रमा शात्व पार्व रवाषाहे ह Carnac नामक देशतक দের প্রধান বাজপুক্ষ Holmes নামক এক বাজপুক্ষকে "invested with full power to conclude a treaty" প্রেরণ করে এবং ভন্তদারে মাহাদজি সিন্ধিয়ার সহিত্ Convention of Wargaum নামক সৃদ্ধি Holmes স্থাপন করে এবং ইংরেজ দৈক্ত নিশ্চিত বিনাশ হইতে মুক্তি পায়। কিছ দৈত মৃক্তি পাইবার পরই ইংবেজ এই দল্ধি অধীকার করে এবং (Jarnac বলে "he granted the powers to Mr. Holmes under a mental reservation that they were of no validity". 4491 পুরাতন পুঞ্ক Grant Duff's "History of the Mahrattas"-এ आहा. कि का कान काना है। वा প্রচলিত ইতিহাসে আছে বলিয়া জানি না. আবার, Cunningham নামে একছন ইংবেজ পল্টনের অফিসার তাহার History of the Silihs-এ লিখিলেন যে ইংবেজ শিখদের সহিত কোন যুদ্ধে হারিহাছে এবং পঞ্জাব সম্বন্ধে ইংবেজের নীতি অক্সায়। ফলে সে পুস্তাকের দে সংস্করণ বাজেয়াপ্ত হইল ও "দোষী" অংশ বাদ দিয়া নৃতন সংশ্বন हरूम इहेन। উপयुद्ध Cunningham-ध्य চাকরি গেল এবং তিনি ভগ্নছদয়ে প্রাণ্ড্যাগ করিলেন। আবার, বরাবর ছেলেরা ভাহাদের স্কুলপাঠ্য ইভিহাসে পভিয়া আসিতেছে যে, ১৮৫৭ দালে কার্ত্ত জে চবি থাকার कथा (याहा लहेगा निभारो युक्त जावश्च हम्) यिथा। कि Roberts (পরে Lord Roberts)—িয়িনি সে সময়ে এদেশে ভিলেন--- তাহার Forty-one Years in India नामक भूखरक निविद्याह्म (य ঐ कथा मछा। इंश इरेन এক রূপ। অপের রূপ, আমাদের জাতির পরাজয় ও কাপুক্ষণার গল্প, কতক নিছক মিথ্যা, কতক অতিরঞ্জিত, আমাদের সামনে ধরা হইল।

এই ভাবে বছ ছলে সভ্যগোপন, তথাবিকৃতি ও

মিথ্যাস্টি ছার। আমাদের মনকে অভিভূত করা স্থল কলেজের মধ্য দিয়া ''পীটা দর পীটা" চলিয়া আসিতেছিল।

মিথ্যা বার বার বলিলে তাহা সত্যের আকার ধারণ করে, ইহা সকলেই জানে। এথানেও তাহাই হইল। মিথ্যা প্রচাবের পৌন:পুনিক আঘাতে এদেশের লোকের মন "সম্মেতিত" হইয়া গেল। আমরা যে অতি শীনহীন এবং ইংরেজের একাছ কুপাপাত্র, নেহাৎ Man Friday, ইহা আমাদের মনে বন্ধমূল হইয়া গেল। আমাদের অতীত নাই, আমাদের ভবিষাৎ ইংরেজের পাত্রকাতলে।

এই ভাবে ব্যাপক ও কালব্যাপী চেষ্টার ফলে আমাদের সাহস, আমাদের জাতীয়ভাবোধ, ক্রমে অংচেতনে নামিয়া গেল, এবং তাহার পরে অবচেতন হইতেও সম্পূর্ণ অছহিত হইয়া যাইবার মত হইল। আমবা একেবারে ইংরেজের 'কায়ার ভাষা' হইয়া প ড্লাম। এননই "সম্মোহন মম্ম' যে, আমবা যেন ইংরাজ ব্যতীত নিজেদের অভিত্ব ধারণ করিতে পাবিতাম না। ইংরেজের ক্রম আমাদের জ্যু, ইংরেজের লাভক্তি আমাদের লাভক্তি। একেবারে ''স্ক্ডেটেবং', বিদ্মন্গার, থানদামা। ''হজ্জ্তে বাংলার'' এই পরিণাম—হে দেশে নিত্য ক্রপের মন্ধ্র ''এদীনাং প্রাম্পরদং শত্রু"!

জাতির জীবনে এই বিপদের সময় এদেশে ছই জনের আবিতাব—কতকাংশ সমসামন্তিক। আমাদের মৃতপ্রায় জাতীয়তাবোধ পুনজীবিত ও উদ্ধ করিতে তাঁহাবা যাহা কবিয়াছেন, সে বিষয় মনে করিলে সন্দেহ থাকে না যে, আমাদের জাতীয় জীবনের ইতিহাসে তাঁহাদের নাম অক্ষয় হইনা থাকিবে।

এই ছই ছনের এক জন বিধ্নচন্দ্র। তাহাব "আনন্দ্রন্ত', "সীতারাম" আমাদের জীবনে দেশমাতৃকার পুনঃ-প্রতিষ্ঠা করিয়া দেগাইয়াছে আমাদের শক্তি কোথায়, আবং আর কেহ থাক বা না থাক, আমারা এখনও টিকিয়া আছি; এবং থাকিবার মত থাকিতে হইলে, আমাদের কি করিতে হইবে ও কি হইতে সাবধান থাকিতে হইবে। শুধু আর্প্রসাদে চলিবে না। তাহার পুশুক্তাল পড়িলে তাহার নিজয় সংযতভাবে দক্ত দেশার্থবাধ বাণী ও সাবধান বাণী পাঠকের সমন্ত সন্তাকে নাড়া দেয়।

অপর জন বিবেকানন্দ—বাঁহাকে দে সময়ে Englishnan কাগন্ধ নিপুণ ভাবে বর্ণনা করিয়াছিল. মাত্র তুইটি
ইংবাজী কণায়—"Militant Sanyasi".

তিনি সতাই "সন্ন্যাসী" ছিলেন। "সন্ন্যাস" অর্থে সম্যক্ ক্থাস, সমন্ত নাবাইয়া দেওয়া, ত্যাগ করা। কিছ পৃথিবী কর্মভূমি, হতকণ দেহ আছে, ততকণ আতাত্তিক সন্মাস অদন্তব। তাই "সয়াস" অর্থে বৃঝিতে হইবে—সমন্ত
অম্বাস, আগ্রহ, আকর্ষণ একটি বাতীত সমন্ত বিষয় হইতে
সরাইয়া লইয়া পূঞ্জীভূত ভাবে সেই একটি বিষয়ের উপর
স্থাপন। একাধারে পূর্ব, গভীর বিরাগ এবং পূর্ব, গভীর
অম্বাগ। তাই সয়াসীর সাংসারিক সমন্ত বিষয়ে তীত্র
বিরাগ এবং "দেহপাতের সঙ্গে সঙ্গে ব্রেম্ব লীন হইব" এই
ভাবনায় তীত্র অম্বাগ। ইহাই ক্রমে "নৈজ্ম্য" ও "নৈজ্ম্য"
সিদ্ধি"তে আসিয়া দড়ায়। ইহাই পৃথিবীতে "সম্ভব" ও
সর্বজনপরিচিত ত্রাজনসন্মত সয়াস।

কিন্তু ক্ষিষ্ণ বজোওপপ্রধান। বজোওপ নৈক্ষেত্রি একান্ত পরিপন্থী। এইজন্মই জন্মগত স্থ-ভাব বা রুজি বিবেচনায় ক্ষান্তিয়ের পক্ষে সন্ধাস ও দৈববাদি দিবিছ, যেমন যাচ এল নিষিদ্ধ। বিবেকানক্ষের মনে যে প্রাহ্মণ-সম্মত সন্ধাসের কথা জাগিত না, তাহা নহে। কারণ তাহার পুন্তকাদির মধ্যে একাবিক হুগে এই ভাবের কথা দেখা যায়।

কিন্ত প্রকৃতপক্ষে, মুনতঃ ও স্বভাবতঃ তিনি (তাঁহার অক্রেবের ভাষায়) "খাপথোলা তন ওয়ার"। ক্ষরিয়ের পক্ষে যে প্রকারের সন্মাস সম্ভব, তাহাই তিনি অবলম্বন করিয়াছিলেন, এবং তাহার বিশেষ অক্ররাগের বস্তু ছিল তাঁহার দেশ ও জাতি।

নি সংদেশ ও জাতির উপর তাঁহার অফুরাগ কির্পা গুড়ীর ভিল, তাহা তাঁহার প্রত্যেক লেগনে স্পষ্ট। তাহার মন্যে বেধি হয় "বর্তমান ভারত"-এর অভিম এংশে যাহা শাই, তাহাতে এই ভাব স্বাপেক। পরিক্ট। তাহা এখানে উদ্ধার করি—

(स् णांतण, अदे गंतास्वाम, गंतास्कतन, गंतवृंबारगंका, बरे बानजूनक हुर्रमण, बरे धुनिल क्यमा मिह्नेसला---बरे माज नवरण छूबि छैकाविकात लाख कतिरव ? अरे लब्दांकत কাপুরুষতা সহায়ে তুমি বীরভোগ্য বাবীনতা লাভ করিবে 🤊 হে ভাৰত, ভাৰত ৰা--ভোষার নারী কাভির আদর্শ সীভা সাবিত্রী, সময়তী, ভূলিও না--ভোমার উপাত উমানাধ সর্ব-ভ্যাপী শহর, ভূলিও মা--ভোষার বিবাদ, ভোষার বন ভোষার भौरम, ইলিমপুরের—মিজের ব্যক্তিগত পুরের জন্য नर्ए, जुनित ना-जूबि क्य स्टेएडरे ''बार्यय' क्या राज्यप्रह. ভূলিৰ না-ভোষার স্থাত লে বিরাট্ স্থামারের ছারা মাত্র ভুলিও না--নীচ খাভি, মুর্ব, দবিজ্ঞ, অঞ্জ, মুচি, নেধর ভোষার बक, (छाबाद णारे। (र रौद, जार्ज व्यवज्य कृद, ज्यार्ज বল-বামি ভারতবাদী, ভারতবাদী আমার ভাই, বল, সুর্ব ভারভবাসী, দরিজ ভারভবাসী, তাক্ষণ ভারভবাসী, চঙাল ভারতবাসী আমার ভাই; ভূমিও কটমাল বছারত হইরা जबार्य डाक्टिया वन-- चादचवांत्री चात्राद चारे, चादचवात्री আমার প্রাণ, ভারভের কেবদেবী আমার ঈবর, ভারভের

সমাজ আমার শিশুশব্যা, আমার বৌবনের উপবন, আমার বার্ধ ক্ষেত্র বারাণসী; বল, ভাই; ভারতের মৃতিকা আমার বর্গ; ভারতের কল্যাণ আমার কল্যাণ, আর বল দিন রাভ; "হে পৌরীনাধ; হে কাদকে; আমার মহন্তত দাও; মা, আমার হুবলভা কাপুরুষভা দূর কর; আমার মাহুব কর।"

তিনি দিবাচকে দেখিয়াছিলেন যে আমাদের এই হাতী পাঁকে পড়িয়াছে। সমগ্র দেশ ও জাতি ঘোর তমোপুণে আচ্ছয়। এই তমোপুণের প্রভাবে বিকারের রোগীর মত ভুল দেখিতেছে ও বলিতেছে। আংশিক চিকিৎসা বা স্থানীয় ঔবধ প্রয়োগে কিছুই হইবে না। সমগ্র সন্তা যথন অবসাদগ্রস্ত, বোগগ্রস্ত, তথন অধ্বিশেষের চিকিৎসা করা ভুল। পূর্ণ উন্থানে সমগ্র দেশ ও জাতিকে স্বাধীণভাবে তমোপ্রণ হইতে টানিয়া ভোলা দরকার। ইহা না হইলে দেশ ও জাতি দেই পাঁকে একেবারে ডুবিয়া মরিবে।

তাই তিনি চাহিয়ছিলেন এ কাতিতে রজোগুণ উদ্ধ হউক। তাহার "ভাববার কথা" (পু. ১৭তে) পাই—

চাই—দেই উচন, সেই স্বাধীনভাগ্রিয়ভা, সেই আছনির্ভন, সেই আটল বৈর্যা, সেই কার্যাকারিভা, সেই একভাব্ধন, সেই উরভিত্কা, চাই—দর্বন পশ্চান্ত্রী কিঞ্চিং ছলিত করিয়া অনম্ব সন্মুখনপ্রানির্ভন তৃত্তী, আর চাই—ন্তক, নিরায় নিরায় সঞ্জার-কারী রক্ষোণ্ডন শ

कारकरे militant-e वरहे !

রজান্তবের খাবাহন অর্থে বলের পূর্ণ উদ্বোধন ও

দার্বা। তাহা না হইলে ব্যক্তি বং সমাজ কাহারও সর্বাজীণ
কুশল হয় না। বাহার। বলে "একাজীন কুশল কবিলেই

কাজ হইল এবং পর পর এক এক অল ধরিয়া কাজ
করিলেই হইবে" তাহারা হয় মুর্থ নয় ধূর্ত্ত। একটিমাত্র

অলপ্ত যদি রোগগ্রন্ত থাকে, তাহা হইলে সমন্ত শরীরই

অন্ত হয়, কোন অলই ভাল থাকে না। ব্যক্তিই বল,
আর সমাজই বল, যগন সে মুখ্ থাকে, তখন সে যুপুপৎ

স্বাজীণ হল্প থাকে। কোনও অল অল্ড হইলে স্বাক্ষের
উপর দৃষ্টি রাবিয়া যদি প্রতীকার না কগা হয়, তাহা হইলে

রোগ স্বাক্ষে ব্যাপ্ত হইমা সমগ্র শরীরকে নাশ করে।

একটু চিন্তা করিলেই দেখা যায় বলের প্রয়োজনীয়তা কত। বল না থাকিলে বাকি সমন্তই নিরর্থক, "ছেলের হাতে মোয়া" যে কেই আসিয়া গালে চড় মারিয়া কাড়িয়া লইবে। বলাধান জন্ম আবার সব কিছুকে আগ্রাফ করিতে হইবে। গর্ভচেটরুত্তি যাহার মক্জাগত অর্থাৎ বাহার অবিচেছ্ছ মনোবৃত্তি চাকর, খানসামা, বিদমদ্পারের অর্থাৎ সর্বসময়ে এক জন অর্থান্ডা 'মনিব' আবেশ্রক; বা অর্থান্ডানবৃত্তি যাহার মক্জাগত অর্থাৎ বাহার মনোবৃত্তি এই বে এ কাজ করিলে বর্তমান সংসাবে আমার বে ভান আছে বা

অর্থ আছে তাহার হানি হইতে পারে—তাহাদের দারা কাজ ত কিছুই হইবে না, বরং সমূহ অনিষ্ট হইবে। এই রূপ "অর্থকরী রাজনীতিচর্চা"র ন্তায় সর্বনেশে জিনিস আছে বলিয়া ধারণা করিতে পারি না। এইজন্ম বলি—সব কিছু পণ রাবিয়া কাজে লাগিতে হইবে। "হতো বা প্রাপ্যাসি স্বর্গং জিন্ধা বা ভোকাসে মহীম্"।

এই ভাবের পরিচয় পাইলাম সে দিন যথন পড়িলাম এক জন কুদী সদার বলিয়াছেন—In the end we shall appeal to the Brother of Allah. এই Brother of Allah আর কেইই নহেন—ভগওয়ার। শ্রেষ্ঠ শান্তিদাতা আলা; শান্তিদাতা হিসাবে তাঁহার ঠিক নিম্নে গণ্য তাঁহার Brother. "বৃদ্ধা বিক্রমণেন চ"। প্রথমে কিছু চেটা করিবে যদি বৃদ্ধিদার। কাজ হাসিল হয়। যদি নাহয়, অগত্যা বিক্রম করিবে। অক্তথায় শান্তি নাই। এইজক্তই আরবদের মধ্যে একটি প্রবচন আছে—

"Peace dwelleth in the shadow of the sword"

সভাই, নিজ তলভ্যাবের ছায়া ভিন্ন অন্যকোধাও
শান্তির আশা করা ভূগ। বাহারা এই পরম ও চরম সভ্য
ভূলিয়া (বা ব্ঝিয়াও অপলাপ করিয়া) শান্তিকামী সাজিয়া
খানে অখানে "মেবেছ কলসীর কানা ভা'বলে কি প্রেম
দিব না" গাহিয়া নিজ জাতিকে আঅ্ঘাতের পথে
আগাইয়া যাইতে উপদেশ দেন, তাঁহারা (থাবার বলি)
হয় মূর্থ নয় ধূর্ত্ত।

শান্তি না হইলে অগ্রগতি হয় না। অগ্রগতি না হইলে পশ্চাদ্গতি অবশুন্তাবী, কি ব্যক্তির, কি সমাজের। পশ্চাদ্ গতি অথে মৃত্যুর কোলে ঢলিয়া পড়া। কিন্তু বদী না হইলে শান্তি ও অগ্রগতি অসম্ভব। এই ভাবিয়াই এক জন মনীয়া বলিয়াছিলেন—"Force is the midwife of progress, delivering the old pregnant with the new." অগ্রগতি, শান্তি, স্বাধীনতা, প্রস্পর সংস্ট। বল সকলেরই মূলে।

যাহার চকু, কর্ণ ও কিঞ্চিয়াত্র বিচারশক্তি আছে, তিনি একটু আশেপালে চাহিয়া দেখিলেই বুঝিবেন যে, বল কত আবশুক (অবশু যে লোক আত্মবাতী হইবে, তাহার পকে চাড়া)। যে বলী, সেই জীবিত থাকিতে সক্ষ হয়। যে হুর্বল, বলী তাহাকে পরাভূত করিয়া তাহার অন্তিত্ব পর্যন্ত লোপ করে। এইজনাই জীব মাত্রেই, সম্ভব অন্তিত্ব স্বর্ষ্থলেই, বল আশ্রেয় করিয়া থাকে। নিতাম্ভ অন্তায় কটি সম্বন্ধে ইংরেজী প্রবচন মনে পড়ে "Even a worm will turn." এ অবস্থায় যদি কেই উপদেশ দেয় "শান্তিকামী হও, তোমার আত্তায়ীকে প্রেম কর", কি বলিব গু এক জন আমার অন্তিত্ব লোপের জন্য ঘাত

করিতে উন্নত। পরামর্শ পাইলাম "তৃমি প্রতিঘাত করিও না।" এ কথা স্পষ্ট ভাবে বৃঝা দরকার—বলের জাধান এবং স্থানে বিশিষ্ট ভাবে প্রয়োগ ধদি না করিতে পার, ভোমার স্বৃত্য স্ববশ্যস্থাবী। আমিই ধদি মরিলাম, পৃথিবী থাকিল বা গেল, আমার কি আসে বায় ?

ইহাতে মনে হইতে পারে, বদ বুঝি তথু জীবন রক্ষার জন্য। তাহা নহে। বদ বাবতীয় কল্যাণের ভিত্তিপক্ষণ। এ কথা বৈদিক ঋষিগণ পূর্ণভাবে উপলব্ধি করিয়াছিলেন। ছান্দোগ্য উপনিষ্ধে পাই—যুগন সর্ববিভাবিশারদ নারদ সন্থকুমারের নিকট উপস্থিত হইয়া বলিলেন যে, তি'ন এত পড়িয়া তানিয়াও শোক পাইতেছেন, তখন সন্থকুমার বলিলেন যে, নারদ ঘাহা কিছু পড়িয়াছেন তাহা প্রকৃত সার পদার্থ নহে। তখন নারদ জিজ্ঞাশা করিলেন তাঁহার জ্ঞাত বস্তু অপেকা শ্রেষ্ঠ কিছু আছে কি না। সন্থকুমার বস্তু-বিশেষের উল্লেখ করিলেন—তাহারও অপেকা শ্রেষ্ঠ কিছু আছে কি না। প্রথম্বর বাব জ্ঞানে করিলেন—তাহারও অপেকা শ্রেষ্ঠ বিছু আছে কি না। প্রবর্তী অপেকা পরবর্তী শ্রেষ্ঠ, বলিতে বলিতে সন্ধকুমার যুগন চর্মে আগিয়া পৌছিলেন, তখন দেখা গেল যে, দে বস্তু হতছে "বল"। তিনি বলিলেন—

বলং বাব বিজ্ঞানাদ্ ভুরোংপি হ শতং বিজ্ঞানবতামু একো বলবান্ আকম্পরতে, স যদা বলী ভবতি অবোধাতা ভবতি, উভিঠন পরিচরিতা ভবতি, পরিচরর,পগতা ভবতি, উপসীদন্ এটা ভবতি, প্রোভা ভবতি, মন্তা ভবতি, বোঙা ভবতি, কথা ভবতি, বিজ্ঞাতা ভবতি। বলেন বৈ পৃথিবী ভিঠতি, বলেনা-হন্তবিক্ষং, বলেন ভৌর্বলেন পর্বতা, বলেন দেবমন্থ্যা, বলেন পশবদ্দ বন্থাংসি চ ভ্রমনম্পত্রঃ স্থাপধান্যাকীউপভঙ্গ-পিশীলক্ষ্। বলেন লোকভিঠতি বলমুপাস্বেতি। (হান্দোগ্য উপনিবং ৭, ৮, ১)

ঠিক ইহার পূর্বেই তৎকাল পর্যন্ত শ্রেষ্ঠতম বলিয়া সনৎ-কুমার নাম করিয়াছেন "বিজ্ঞান"-এর অর্থাং যাহার দারা বেদ, ইতিহাস, পুরাণ প্রভৃতি সর্ববিধ জ্ঞান এবং অপর সব প্রকার জ্ঞাতব্য বস্তুর এবং এই লোক ও ঐ লোক, এই সমস্তের অস্তরতম তথ্য নিপুণভাবে জানা যায়।

এখন বলিতেছেন—"বল" এই "বিজ্ঞান"-এর অংশক্ষাও শ্রেষ্ঠ। কারণ খুবই স্পাষ্ট। বলিতেছেন—এক জন বলবান্ ব্যক্তি এক শন্ত জন বিজ্ঞানবান্ ব্যক্তিকে কাঁপাইয়া দেয়। লোক যখন বলী হয় তখন সে উখাতা হয়, অর্থাৎ উঠিয়া দাড়ায়, বা তীব্রভাবে সক্রিয় হয়। উখাতা হইলেই সে তাহার শুক্রর বিশেষ ভাবে পরিচর্ষা করিতে সক্রম হয়। তাহা হইলেই সে শুক্রর নিকটে বসিত্তে পায়। নিক্টে বসিলেই সে সমাক্ ভাবে সমস্ত দেখিতে ও ভনিতে পায়। সমাক্ভাবে দেখিতে ও শুনিতে পাইয়াছে বলিয়াই শ্রুভ ও দৃষ্ট বস্তু সহক্ষে সে ঠিক ভাবে মনন করিতে পারে। ঠিক ভাবে মননকিঃ ঘারা সে বস্তুটি বেশ বৃঝিতে পারে। ঠিক বৃঝিতে পারার দক্ষন বস্তুটিকে সে কাজে আনিতে সক্ষম হয়। এইরুপে কাজে আনিতে পালায় সে "বিজ্ঞাতা" হয়, অর্থাৎ সে দেই বস্তুর স্কুতম তথ্য জানিতে পারে। বল আশ্রয় করিয়াই অস্তরীক্ষ, দোীঃ, পর্বত, দেবগণ, মহুষাগণ, পশু, পক্ষী, তৃণবনস্পতি সকল, কীট-পতঙ্গ পিপীলিকা ইইতে খাপদগণ পর্যন্ত বর্ত্তমান রহিয়াছে। বল আশ্রয় করিয়া লোক (অর্থাৎ দারা স্কৃষ্টি) বর্ত্তমান রহিয়াছে। বল আশ্রয় করিয়া

এই কণাগুলি কত সভা, বলা বোধ হয় নিম্পায়োজন। বল। বাইলা, এই ''বল' অর্থে সাম্থ্য নহে, সাহস। সাহসেই **শাম্ব্য আনে: শাহদের অভাবে প্রচণ্ড সাম্ব্যণ্ড লোপ** পায়। মনে পড়ে "হুজুভে বাংলা" বহুকাল পরে একবার यद्भेश भावन कविद्याछिन-स्थित ३००० भारत शोदोक्स्यक বাঙালীর ভেলে দৈত্ত-সামস্ত-লোক-লক্ষর-চাকর ধানসামা-বিদমংগার-পরিবত প্রবল-পরাক্রান্ত সাম্রাজ্যাভিযানী ইংরেছের সহিত প্রতাক প্রতিধন্দিতার অবতীর্ণ হইয়াছিল। তুই পজের মাধ্য "অন্তরং মহদস্তরম্"। ছেলেঞ্চনার সম্বল ভুগু সাহম। এই সাহম মাত্রে ভর করিয়াই Gil Blas কে ব্যবিত Licentiate Pedro Garcias এর soul স্থান করিয়া বাঙালী স্থির কবিল-"ইংবেজ Pedro Carcias-এর ছাত, তার soal তার পকেটে। দেখানে সবপ্রাণেন, সমস্ত সাহস ও ভজ্জনিত সামর্থোর সহিত আঘাত কর, শত্রু কাবু হইবে। ভাগাই হইয়াছিল।

এ স্থানে বিশেষ ভাবে শ্ববণীয় একটি কথা—বাংলার এই সিদ্ধান্তের বিবোধিতা তৎকালীন সমস্ত ভারতীয় নেভারা করিয়াছিলেন, এক জন ছাড়া—বাল গলাধর টিশক। সাধে গোখলে বলেন নাই—"What Bengal thinks today, India will think tomorrow."

এখন বোধ হয় "বল" আধান করিবার একান্ত আবশুক্তা সহকে কোনও সন্দেহ নাই। আধানের পর বিচাধ্য বিষয়— "প্রয়োগ", অর্থাৎ দেশকালপাত্র ও মাত্রা বিবেচনায় বলের ব্যবহার।

বলা বাহুলা, অস্থানে বা অকালে বল প্রয়োগ করিলে অকল্যাণই হয়। পাত্র ত আততায়ী, ব্যক্ত বা প্রচহন : ব্যক্ত ত বুঝিতে পারি, দে আমার নমস্ত কেন, প্রণমাও বলিতে পারি, কারণ দে নীচ ভাবে ছলের আধ্বয় গ্রহণ করে নাই। কিছ বে প্রচহন, অর্থাৎ হয় ত আমার

পাশের বাড়ীতে আশ্রম দইয়া এক জনকে আড়ান করিয়া আমাকে মারিবার চেষ্টা করিতেছে, অথচ সাহস নাই যে প্রভাকভাবে শক্রতা করে, তাহাকে কি বলিব ?

বাজ্জই ইউক, প্রাক্তরই ইউক, আতভানী আমাকে মারিবার উপজন করিভেছে, ভাহাতেই দেশকালপাত্রের নির্ধারন হইয়া গেল।

ভার পর "মাত্রা", অর্থাৎ শক্ত তোমাকে বে পরিমাণ আঘাত করিবে, তুমি ফেরত দিবে সহস্র গুণ। যগন ভবভূতির "মহাবীর>রিভম্" পড়িলাম, তপন দেখিলাম যে রামের এই সম্বন্ধে থেদ কত গভীর—

> "অনিক্যঃ পৌলভ্যো ব্ৰহ্মপু পরিবাদে! মন্ত্রিপুন-ব'তো বচে বৈয়ে বছঙ্কামনেন প্রতিকৃত্য।"

অর্থাৎ রাবণ চলিন্স সর্বপ্রকার নিন্দার অতীত ইইয়া, আর যন্ত নিন্দা আমার কপালে। কারণ, শক্রন্থ আহিও ইইতে আমি তার যা অনিষ্ট করিয়াছি, সে তার বহু গুণ আমার অনিষ্ট করিয়াছে।

রাম বহু সহস্র রাক্ষ্য মারিয়াছিলেন, কিন্ধু রাবণ এক ্ সীভাহরণ দারা যে ঘা দিলে !

এই "মাত্রা"র কথাই পাই বিবেকানন্দের "ভাব্বার কথা" পঃ ৪২এ, আমার একটা এই ঘটনার বর্ণনাম্ভর শোনা আছে। মোদা কথা একই, ভবে বোধ হয় আমার শোন। वर्गनाश्वद्रों। এकहें कालास, क्यांना इटेट्ड बरे-डूड बन পাড়াগেঁমে রাজপুত (ঠাকুর সাংহ্ব), মাথায় পাগড়া, হাতে লাঠি, জীবনে প্রথম অসিয়াছে রাজ্যানী লক্ষ্ণো-এ। লড়াই-ই জানে, লেখাপড়া নয়। তথন মহরম চলিতেছে বিখ্যাত ইমামবাড়ায়, সেটা শিয়াদের : শিয়াদের মহরম হইভেছে শোকের পর। হাদেন হোসেনের জন্ম 'মরশিয়া" পড়ে। মড়া কান্নার এমন নকল করে যে আগল বলিয়া ভুল হয়: ঠাকুর সাহেবরা ইমামবাড়ার ভিতর বেতে চাইলেন। পাহার। বললে "এই কাঠের মুর্ত্তিকে ধণি পাচ জুতা মাবো, ভাষা হইলে ভিতরে ঘাইতে দিব।"১াকুর সাহেবরা আশ্চয্য হইয়া বলিলেন "একে পাচ জুডা মারতে হবে কেন? আর, এ কে ।" পাহারা বলিল "এট। হ'ল এদিদের মৃত্তি, দে ছাসেন হোসেনকে মেবেছিল।" সাকুর সাহেবরা জিজ্ঞাস। করিলেন "কবে ১" পাহারা বলিল "প্রায় হাজার বংসর আলে।" এমন সময় ভিতর থেকে প্রাণকাপানে। মড়া কালা লোনা গেল। ঠাকুও সাহেবলা চম্কিলা উঠিয়া জিজাস। করলেন "মরিলে। কে ?" পাছারা বলিল "এখন কেউ মরে নি :" ঠাকুর সাহেবরা বালন "ভবে কালে কেন ?" পাহারা विक्रम "ह्या केंगिए हार्यन हिर्मित्व बना।" ठेक्दि সাছেবরা আশ্চর্য হইয়া বলিকেন "ভা'রা ভ মরেছে হাজার

বংশর আগে।" পাহারা বলিল "হাা, তাদের জন্যই কঁলছে।" তথন ঠাহুর সাহেবরা কোধায় এজিদের মৃত্তিকে জুতা মাণিবেন, না পাগড়ি খুলিয়া সেই মৃত্তির পায়ের কাছে নগুবং, আর ব্লেন—"বৈচে থ'ক্, ভাই, এমন মার মেবে'ছন্ বে, ভোর শক্ষর কার। আজ হাজার বংশবেও থামে নি।"

এর নাম "মাজা:"

এ'খানে বলি একটা কথা—আমরা নাকি "খাধীন" ইইটাছি। অভ শত "খাধীন" কথাটার বিচার না করিয়া বলিতে পারা ধায় যে, ইংরেজ আমাদের দেশ আংশিক ভাবে ছাড়তে বাধা হয়েছে। প্রকৃতপক্ষে, ক্তক্তপা বাঙালীর ছেলের বলের আধান এবং উপযুক্ত স্থানে ও উপযুক্ত মাত্রায় প্রধােগ করাই এই বাধা হওয়ার ভিত্তিতে —এটা অলাকার করলে বােধ হয় বিষম অবিচার হইবে। আব, সেই ছজ্জুতে বাংলা এখন কোঝায় ৮ এমন কি, অমন বাংলা ভাষা পর্যন্ত গাঁটে পাচ্ছে না। মনে হয় "অর্থকরী রাজনীতি"র প্রসার বাংলার ফাতীয় জীবনে ঘুণ ধ্রিয়া দিয়াছে। সে "ছজ্জুতে বাংলা" আবার পাকে

হাওয়ায় যেন গুনিতে পাইতেছি—"বলমুপাদ্বেডি"।

ইংরেজীর বাংলা অনুবাদ

পড়িবে না কি ?

অধ্যাপক এ চিন্তাহরণ চক্রবর্ত্তী

রাংলা ভাষা মূলে মূপে বিভিন্ন ভাষার শব্দসম্পলে সমৃদ্ধি লাভ করিবাছে। এই সম্পদকে লে এছণ করিবাছে প্রয়োজনমত নিজের উপবাদী করিবা। পরের জিনিমকে লে আগন করিবাছরে আদিরাছে—ভাছার আফুভি ও প্রকৃতিকে লে এমন ভাবে বনলাইরা দিরাছে যে আজ বাঙালীর মবো চলাকেরায় ভাছার কোন অপুবিধা নাই—ভাছাকে কোঝাও বেমানান বলিবা মনে ছর না। বছতঃ ছু-চার জন সহানী পভিত ছাড়া ভাষার বংশের পরিচয় আর কেছ আনে না—জানিবার দরকারও বোর করে না। অবস্থা এ বিষয়ে বাঙালীর যে কোনও মূতনত্ব বা বৈশিষ্টা আছে ভাছা বলা চলে না। এই ভাবেই এক লেখের ভাষা ধনিষ্ঠ সম্পর্কর্ক অভ দেশের ভাষার সাহায্যে উরতির পথে অর্থার ছইবা খাকে। ইহার অভবা ছইলে ভাষার সহক্ষার ভাষার সংক্রে

তুংৰের বিধর, ইংরেক কাতি ও ইংরেকী ভাষার সম্পর্কে আলিরা বাঙালী সকল ক্ষেত্রে এই চিরাচরিত নীতির সরাক্ লগ্রবেরার ক্ষরেত পারে নাই বা করে নাই। কলে ইংরেকী ভানা লিক্ষিত বাঙালী পরস্পরের সঙ্গে ক্ষাবার্তার অভ্যত্র হংরেকী শক্ষ নিশাইরা যে ভাষা বাবহার করে ইংরেকী না ভালা লোক ভাহার মর্ম্ম এহণ করিতে যথেষ্ট অত্বিবা বোষ করে। লিবিযার সময়ও অনেক ছলে ইংরেকী হাবভাব, ইংরেকী ছঙে বাংলার প্রকাশ করিয়া সে ভাষাকে কিছুত-ক্ষিরাকার করিয়া ভোলা। লাহ্মী বাংলার মত এই বাংলাও বাঙালীর তৃত্তিবিবান করিছে পারে না। এই বিধেনীয়ানা ভাষার পরিপৃষ্টিশাবন না করিয়া ভাহার বিঞ্জি সম্পানন করিয়া থাকে। প্রত্যেক ভাষারই একটা নিক্ষর বৈশিষ্ট্য ও প্রকৃতি ভাছে—বিধেনী উপক্ষর প্রহণ করিবার ও আল্বসাং করিবার

একটা বিশিষ্ট শক্তি সকল ভাষারই আছে। কিছু নিজের दिनिष्ठा উপ्लक्ष कृदिएन मिक्स वा मन्त्रम काम किक प्रिमार्क ভাৰার পাত হয় না। ভাৰা হাড়া কোন ভাষাভাষীই এ বিষয়ে কোনরূপ ওদাদীভ অবলয়ন করিতে রাজী হয় ম'় ইংতেজ ভাতি ও ভাহার ভাষা পৃথিবীর প্রায় সকল দেশে ১ড়াইয়া পভিয়াছে-- বিভিন্ন দেলের স্থিত ব্যবহারে ও ভাবের আদান-প্রদানে দেই সব দেশের ভাব ও শব্দ ভাষ্টে এইণ করিছে হইয়াছে। কিছ কোনৱপ বিদেশ ভাব ও শতের ছার। ইংরেছ ভাষার রাজকীয় ভাষাকে (King's English) অভিত্ত বা আছেল হইতে দেল নাই! জীবনের আভাভ জেতের মড ভাষার রাজ্যেও ইংরেক ভাষার স্বাভন্না সম্বন্ধে সর্ব্বদা সভাই। তাহার এই বাতন্ত্র সম্পূর্ণ অকুর হাবিয়া কিছু কিছু বিদেশী শস্ত্ ইংবেদী ভাষা এছৰ করিবাছে সভা কিছু ভাষার কোমত্রপ বিকৃতি ইংরেক কাতি মানিয়া লয় নাই। বিদেশীর বাবভারের कान अरे विकृषि कृष्टिर क्रवंग्य प्रदेश पाकित्न वेरत्व प्रेमारक চীনা ভারতীয় বা মার্কিন প্রয়োগ বলিয়া ব্যাহ বা উপেকা করিছে দ্বিশ বোৰ করে মা। সকল দেশের ব্যবহারের পুরিবার का देश्रवकोत अरक्षित अरखन (Basic English) अवर्धन कतिए देश्राबद जापिक नारे, किन्न देशास्त्र कथमहे (न ভাৰার খাতীয় ভাষার স্থান অধিকার করিতে দিবে মা। বখত: দেশারবোবের মতই ভাষার প্রতি একাভ মুম্ববোর ইংৱেছ ছাভির প্রকৃতিগভ।

দীৰ্থকাল ইংরেজের সহিত দমিঠ সম্পর্ক লড়েও আরহা ভাহার চরিজের এই বৈশিঠ্য অধিগত করিতে পারি নাই— ভাহার বাহ্যিক আচার-ব্যবহারের অহুক্তরণ করিবার ব্যব্ প্রহাস করিবাহি, কিছ ভাহার প্রেঠছের বুল উংসের সন্ধান করার প্রয়োজন বোৰ করি নাই। আমরা বংলাঞ্জীতর ওপ-গান করি বটে, কিছ দেশের প্রতিষ্ট জিনিবের প্রতি আমাদের গতীর মনত্ব-বোৰ নাই—পরস্পরের ক্তিবৃদ্ধিতে গরস্পারের প্রাণে বেদনা বা আমন্দের স্কার হর না। অভাত বিষ্কের কথা বাহাই হোক না কেন তাহা স্প্রত্থে কথা আদে। অহীকার ক্রিবার উপার নাই।

সভ্য বটে, আৰু আৱ আমৱা বাংলা ভাষা ও সাহিত্যকে অবজ্ঞার চক্ষে দেবি মা--- দভ্য বটে, আৰু আর বাংলা ভাষা পূর্বের মত কুত্র গঙীর মধ্যে আবদ্ধ নর-উচ্চশিক্ষিত অর-निक्छ (बार्ड वर्ड मक्टनरे चाक मार्टरकन, दक्षिम, ब्रवीसमाय, नंबरहरत्स्व नावनानमुद्ध वार्त्ना काश ७ जाहिएकाव श्रीवरव গৌৱবায়িত। কিছ ভ্ৰাপি বাংলা ভাষাকৈ আমৱা কাৰ্য্যভঃ ষ্ৰোচিত সন্থান দান কৱি না। বাংলা ভাষা এতদিন মুব্যতঃ चक्र: भूत हा ति वेहे विम-- शृहकार्यात कृत भविवित वाहिरत এবনও ভাহার স্কুল চলাচলের দাবি আলাসুরূপ স্বীকৃত হয় नाई--- नवन कार्य जाहारक निवृक्त कविरक जाबारमञ्ज विवा ও সংকোচের সীমা নাই। কেবলমাত্র বিদেশী শাসনের অক্টাত আঘাদের আচরণের সমত কৈফিয়ত বলিয়া মানিয়া লওয়া যায় না ৷ ভাষার প্রতি আছরিক অনুরাগের অভাব, इशाब नक्षि प्रवृद्ध खामारमब सविद्यान, प्रदर्शनिव यरबाहिछ পরিচয় ও খনিঠভার অভাবে ইহাকে যথায় বাবহার করিবার অক্ষতা--- আমাদের এই বিগরণ আচরণের বন্ধ দায়ী। তাই चायतः चानक क्लाब हेरताचीत चह चयुकतन कतिया वारमात প্ৰজন্ম প্ৰাঞ্চাবিক ত্ৰপকে বিক্ত করিতেছি--বিক্ত বাঙালী ৰৱণেও যে আবনিক ভাৰবারা প্রকাশে কোন অস্থবিবা হইছে भारत ना अ बादबा जरमरकदर नारे।

ইংরেছ ছাতির সহিত সম্পর্ক স্থাপনের সময় হইতেই আমরা বহু ইংরেজী প্রকে বাংলার রূপান্তরিত করিবা ভালিভেত্তি। কিন্তু ভ্ৰমণ্ড বাংলা ভাষা শিক্ষিত বাঙালীর मल प्रक्रि चाकर्रन करव मारे--- छारे काम मच चचव कि অপ্তলন্ত্র মানানসই কি বেমানান সে দিকে কেং ভেমন সভর (weste etalen (रांद करतन मार्डे । चाक रांश्ला कांधांत প্রচার ও প্রদার বৃদ্ধি পাইলেও ইংরেজীর অসুবাদে আমরা शक्कानका क्षरात्रद या माजायमाजिक भार हिनदाहि-क अब्बेड चय ठानाहरलहे मितिहास छानास्य चाक्छाहता बिदिए हि । अवकेंद्र मरन यांशांत शूर्वभविकत परि नारे छिनि इरतको बुन नथकेत नाशाया वर्ष वृतिता नन--- देरतको-ना-कामा लात्कव शक्क छेहाव वर्ष अहर कवा कठिन। कान-काम चामारमञ्जूषाम देशतकोत श्रीतमा यसम विमुख वा हान-প্ৰাপ্ত হটবে তথ্য এই ছাতীয় শব্দ হয়ত সাধারণ বাঙালীয় নিকট্ দংকভানভিজ ভিক্তীয়ের পক্ষে সংকৃত এছের প্রাচীন ভিক্তীয় অমুবাদ যেরপ হুর্বোব্য-সেইরপই হুর্বোব্য হইয়া निहरित । वष्टकः अवसरे क चामका वारणा नरवायनव.

भागाचा प्रचेत, विकास वा अक विद्रावत बारमा अब, असम कि ৰাংলা সাহিত্যের পাশ্চান্ত্য রীভি-লশ্বভ সমালোচনা-এছ সঞ্জলে পড়িতে পারি না-একবা অধীকার করবিার উপায় मारे। ७६ शांतिकाधिक मच मट्ट देश्टाकी वहरूक्ती देशांत অভতম মুখ্য কারণ। চলতি বাংলায়ও অনেক ক্ষেত্রে ইংরেছী-পৰী ভাষা উহাতে জীখীন না করিলেও লাবারণ বাঙালীয় मिक्ड इर्थाना कृतिका छुलिएछर । 'स्युष्ट विर्क्त देखा करा' 'আইন বহুতে লওয়া,' 'বোড়ার সামনে গাড়ী', 'চাষেয বাটতে ভুফান,' 'কোন পাধরই ওলটাতে বাকি না রাধা', 'চটবার কারণ দেওয়া', 'পাতৃকায় পদ এবিট কয়া'-- এছডি প্রবোদ সাহেবী বাংলার চরম নিমর্শন হইলেও বাঙালীর वावशांत्रदांशा नरहा जायता अथम रकवन 'शांतरनोकिक ভৃত্তি'তে সৰ্থ্ঠ না হইয়া বিদেশী মতে 'পরলোকগত আত্মান্ত তৃত্তি' কামনা করি-জবচ আমতা আনি আত্মার অংযুত্য नार्डे. ज्रूबंड्र बार्डे। 'बर्दावा (दावन क्रा' बाबादका प्रदिश গিরাছে, 'প্রবর্ণ স্থাবোদের' সন্ব্যবস্থারেও ভেম্ম আপত্তি নাই---কিছ 'উল্লু সভাকে' স্বীকার করা বা 'কুন্তীরাঞ্র মেচন করা' আমাদের পক্তে বিশেষ কটকর। 'সুপ্রভাতের' সহিত আমাদের নিভ্য প্রিচয় কিন্তু ভাই বলিয়া 'ওভরাত্তিকে'ঙ নিতা ব্যবহারে লাগাইবার চেটা লোভন বা সমীচীন নহে। 'कृतभवाा' एवरे व्यामारमञ अवशे वाका छे किल--- 'मनूक सिमा'त क्रम नानाञ्चित्र एउदा चामारम्य भर्म अभरमाय दिवद हरेरव না। খবর 'হ্নিমুনে'র বর কাহারও আরহাতিশব্য থাকিলে বাৰা দেওৱা সক্ত হইবে না।

বস্তুত: বাংগার প্রকৃতির দিকে লক্ষ্য না রাধিয়া, কর্বের অনুস্থান না করিয়া আক্রিক অনুবাদের রীভিতে বছল विकृष भाष्य एडे ७ धारान करा स्टेएएह। मजरूभ (tubewell), नामकृषिका (title-role), चानाभव (title-page), অইবাংস্তিক (half-yearly), পাৰপ্ৰদীপ (foot-light), পুৰ্মালন (re-union), পুৰ্মালবন (re-write). আত্র্যাতিক (inter-national), প্রাবৈতিহাসিক (pre-historic). গোল টেবিল বৈঠক (round table conference) প্ৰভতি শব্দের প্ৰচলন হইতেছে। স্থানবিশেষে আক্ষরিক चन्नवारम्ब श्रादाचन पाकिरमध चरिकारम स्मात चानान्यामहे সাধারণের পঞ্চে গ্রহণযোগ্য-ভাতা ছাড়া, ত্বত আছৱিছ অভুবাদ অনেক ছলেই বিসমুশ ও ছাক্ষকর হইয়া উঠে। উহার সাহায্যে সাধারণ সোকের কোন বিষয় বুর্বিবার পঞ্ विश्व (कान श्विवार एव मा: अश्वात्वव मृत्रीकृष्ठ जावात्र কোন শব্দ বা তাহার অংশ অবহীন বাকালেয়ার মাত্র হইছে भारत--- (कान भरभव शर्राम क्रष्ठ बाकिएल भारत। तम मब क्ति चाक्रिक चन्नारम्य (bi) वाष्ट्रमणायाम् । अक रार्मा ভাবধারা, রীভিনীভি, বচনবিভাগ-প্রণালীর সহিত খার দেশের প্ৰচুৱ পাৰ্থক্য দেখিতে পাওৱা যায়। সেইকচ এক কেশেছ

ভাষার পথকে অন্য হেপের ভাষার রূপাছরিত করিবার সময় এই সম্ভ বিষয়ে বিশেষ অবহিত না হইলে ত্ৰপান্তর বা অমুবাদ निवर्षक कावत्रवाप स्टेब! शक्षा जाहे देशदाकी paving guest-এর আক্ষরিক অনুবাদ হিদাবে 'অর্থদারী অতিবি' वनित्न त्नारक शनित्व : देश्टबरचब guest चाव वाक्षानीव অভিবি এক নৱ--অভিবিত্ত নিকট হইতে অৰ্থ এছৰ ভাৱতীয় সংস্থারের বিরোধী অবচ আত্মীর বছনের পূত্ে বাইবরচ দিরা বাকা একেবারে অপ্রচলিত ময়। অমান্তীর অপরিচিতের প্রে बहेबन वावश बन्न नेमाक श्राह्म श्राह्म स्थान मार्थ। प्रज्यार আত্মীরের বা বন্ধর বাড়ীতে আত্মীয় বা বন্ধ বাইবরচ দিয়া वाकिएछ भारतम. किन्न छोहारक व्यवसारी व्यक्ति वना हनिरव 'চক্ত থণ্ড' নাটকের চল্রগুরের ভূমিকাকে ইংরেজীর জহুকরণে নামভূষিকা (title-role) রূপে নির্কেশ করার বিশেষ टारबाक्न (मर्बा यांत्र मा. (tubewell)-अब नरन ननकृत्भव বিশ্ব-প্রতিবিশ্ব সম্বন্ধ থাকিলেও হাল-আমলের ব্যবহৃত 'পাতাল-কল' পথ বেৰী অৰ্থভোতক বলিয়া মনে হয়। অৰ্থ বাংগরিক শব্দ half-yearly-র অভ অপ্রকরণ মাত্র-যাথাসিক শব্দ বাংলভাষীর নিকট অবিকতর পরিচিত ও স্পষ্ট। প্রাণৈতিহাসিক, আন্তর্জাতিক প্রকৃতি শব pre-historic inter-national-अब अध्वृत्तिअवतः, किंद कांत्रजीव कांबाव बौजिबिद्धांबी। बेजिजान-পূর্ব pre-historie-এর স্থান জনায়ালে অধিকার করিতে পারে-এই কাডীর জনানা नास्त्र प्राम सम्बन्ध साराम हिमाल भारत । निर्देश सालिमिहे বা নিৰিল ভাতিগত বা চলভিকার নিৰ্দিষ্ট ভবিৱাহীর শব্দ আত্তপিতিক শব্দের কাল চালাইতে পারে কিনা সুধীগণ বিচার করিয়া দেখিবেন: আওজাতিকের দুর্ভাতে আত:-প্রাদেশিক, আন্তবিধবিভালয়, আঞ্চেডিমিনন প্রভৃতি যে সম্ভ বিকটাকার শব্দের আবিভাব বাংলাভাযাভাষীকে শবিত এক করিয়া তুলিতেছে ভাহাদের হাত হইতে উদার भारेबाद अकृष्ठे: वावश्र कदांत मध्य छेन्छि छ एरेबार्ट । अवश्र ভাষার দরবাবে যেরপ ইহারা ভাঁকিয়া বসিরাছে ভাহাতে हेशास्त्र प्रकार सार्वेह अहक नरकः अरम्बन्दक वाजिनः कदिश मिश्रा পूर्मीमन **भएकत अवर्ष्डरमद बांद्रा** re-union-अव कर्षकर बर्गामा दक्षांत ८०क्षा (मर्गा (गरमध बारमात (गीतव ৰশিত হইভেছে বাঃ অত্বাদ হিলাবে স্থহং শেতৃত্ব High Commandes অনুগত হইতে পাৰে, কিছ ৰুণ কৰ্ত্তপক বা মুখ্য মেতৃবৰ্গ বাংলা ভাষার মানার ভাল। যুগানলাধক প্রভৃতি যে সকল পদ joint secretary প্রভৃতির অথবাদ হিসাবে খ্যবন্ত হইভেছে ভাহাতে মুগ্ম শব্দের পূর্বাপদ ছিগাবে প্রবোগ বাংলার রীভিবিরোধী। বিভিন্ন ক্লেক্রে সংযোগ সম্পাদক বা সম্পাদকর্গল শব্দ পুরিধামত ব্যবস্থার कदा बाबेटल शास्त्र । Home Department, Home Minister बङ्खि भएक Home-बद बिर्णिनसवार 'पदादे'

পররাষ্ট্রের বিপরীত অর্থ প্রকাশ করে কিনা বিবেচ্য। অভরদ नरभव श्रादान अव्यान क्रमिएक शास्त्र किना काविया स्मर्था দরকার। একই শক্তের অভুবাদে বিভিন্ন জারগার বিভিন্ন শব্दের দরকার হইতে পারে-একই প্রতিশন সকল ছলে চলিতে পারে মা। Interesting শব্দের বিভিন্ন প্রতিশব্দ প্ৰসংক রবীজনাৰ ইহার কুলর দুষ্টাত দিয়াছেন। সপ্রতি সরকারী খণের বিজ্ঞাপনে এই বিষয়ে **অ**নবধানভার একট हमरकाद छेमाहदन भाख्या (नम । विळाभरनद जायाद सन मनम টাদার পরিবর্তে পাওয়া ষাইবে। সাধারণ পাঠক হয়ত স্বাধীন-ভার ৩৩ খুচনায় সরকারকে টাণা দেওয়ার কথার বিশিত হইবেন। টাদা দিয়া ধণ কিয়পে পাওয়া যায় তাহা ভাবিয়া इश्रु वा जाकून इटेर्टिम । कांद्रन वाक्षानी कार्य होता जाहाया ছিলাবেই দিতে হয়। নগদ চীকার পরিবর্তে ঋণপত্র পাওয়া याहेर्द हेकाहे लाबरकत बख्नवा--- हेश्टतकीत एवए असूबान বিক্রম বারণা জ্বাইবার কারণ। কলিকাভার অবিবাসীদের বেশন কৰ্ত্তপক্ষ মাৰে মাৰে ভাষাদের কাৰ্চ পুনলিখনের ক্ষ্যা क्या मिट्ड वटअय-क्नाबादन विकाशन सिवेश निक्टाबर কর্মবা নির্দারণ করিতে পারেন কিনা সন্দেহ : कार्षित शतिवर्छ मुख्य कार्छ निवाहरू, कार्छ मध्यायम कवाहेबा अहेट वा देशांक नुजन विश्व भरधाकन कथाहेबा লইতে অমুৱোধ করিলে কাছারও বুকিতে অমুবিধা হয় না। 'हिमक्क' मटकद बादा retrigerator ट्वानकट्ट व्यान গেলেও refrigeration, refrigerated প্রস্থাতি শব্দের বেলায় অহ'বৰাহ প'ড়তে হয়। শীতক্ষাল, শীতন, শীভিভ बरे जिम्हे मत्यव बाबा र्याव एवं मश्कारण जनम कार्याहे চলিতে পারে। Martyr-এর ছানে শহীর শব্দের বহুল প্রয়োগ চলিতেতে। উহার স্থানে আস্মোংসর্গী দক বাবহার করিতে কেহ সমত হইবেন কিনা জানি না-তবে শক্টর অৰ্থ বুৰিতে বাঙালী জনসাধারণের বিশেষ আয়াস খীকার कविष्ठ २वेरव मा त्वाव एक । Tear-gas-त्क कीइरव शान বলিয়া প্রচার করার ভাষাতত্ত্তিদ প্রীর্ক্ত বোগেশচন্দ্র রায় बरामत चार्राक कतिबार्यन-कांत्रन गांत्र क कांत्र मा। कांबारना गाम रनिरन এ चानकि अकान याहरू भारत। राजारमा नाज् laughing-gas-अब श्रीख्येक रहेरछ भारत। Air-tight-কে বায়ুক্ত না বলিয়া বায়ুৱোধী বলিলে সভত ७ (नाडन एक न! कि ? Public health, public instruction প্রভৃতি শব্দে public কবাটর বুব বেশী ভাংপর্ব্য আছে विनया भरत एव मा-- थाकिरमध छाहारक 'क्म' विवा अध्यान করার ভেষণ দার্থকভা দেবা যায় না-- হাছ্যবিভাগ, শিক্ষা-বিভাগ বলিলে বুবিবার কোনও অন্থবিধা হয় না। রবীজ্ঞনাৰ প্ৰবৃত্তিত লোকশিকা, লোকসাহিত্য শব্দ আৰু আমত্ৰা বাতিল করিব কি ? ছিভাবছা, গণপরিষদ প্রভৃতি করেকট শব্দের আলোচনা প্ৰবাদ্যরে করিয়াছি, কিছ লে আলোচনা

অপুকৃষতা বা প্রতিকৃষতা ভিছুরই স্ট্র করে নাই। ভাষা-বিষয়ে উলাদীন শিক্তিসমাজে এ আলোচনাও দেই ভাবেই উপেক্তিত হইবে বলিয়াই মনে হয়।

ভবে ৰেশ স্বাধীন হইবার পর দেশের ভাষা বিষয়ে আমাদের প্রতিকীর পরিবর্তন আবস্তক। এত দিন ভাষাকে উপেকা করিলেও বিশেষ কিছু আসিরা ঘাইত না। লেখক যাংগ ধুৰী লিখিলেন--পাঠক কভকটা বুৰিল, কভকটা বা অখুমান করিয়া লইল-ভাষাতে কাষারও বিশেষ কিছু ব্যস্ত হইবার কারণ ছিল মা। পভীর ভতালোচনা বাংলা ভাষার मानारम कविवाद लाखायन विल ना-वाहरमद ब्रैहिनाहै বিচার বাংলায় দরকার হইত না--শব্দপ্রোপের গুড় বহুত্ব বা ক্ষম তাংপর্যা বিশ্লেষণের উপযোগিতা বাঙালী পাঠক বা লেখককে তেমন অনুভব ক্রিভে হয় নাই। কিছু এবন অবস্থার পরিবর্তন হইয়াছে। এখন বাংলার মধ্য দিয়া বিভিন্ন বিভার অপুশীলন করিতে হইবে---দেশের আইন-কামুন বাংলা ভাষায় উপনিবৰ হইবে -বিচার-আচার-বাবসা-বাশিকা বাংলা ভাষার মৰা দিয়া চালাইতে হইবে-- ফলে প্ৰতিট লম্ব ওছন করিয়া বিশেষ ভাবিয়া চিভিয়া বাবহার ক্রিভে হইবে—শব্দের অপাঠত: ভাষার হ্রছতা প্রতি পদে নানা অপুবিধার স্ষ্ট করিবে। অনেক শব্দ আমরা ইংরেজী হইতে এছণ ভরিয়াছি আরও অনেক শব্দ অবিকৃত ভাবেই আয়াদিগকে লইভে हरेटर : किंख चार्मिक छार क्षकात्मत छेशरशाम भव मर्जन्त पाक्षिक्ष कम नय--- अक्रम चन्द्र भक्त व्यामानिश्व अर्रेन করিতে হইবে। অসীম শক্তি ও অতুল সম্পদের আবার সংস্কৃত ভাষা ও সাহিত্য হইতে এ বিষয়ে আমহা যথেই সাহায্য পাইতে পারিব। সে সাহায্য যাহাতে সম্পর্কণে কাভে मानोहेटल भावि (भक्क बार्यापिनटक मश्चवक कार्य काक করিতে হইবে, মুভন হাট শব্দ সধ্যক আলোচনা করিতে হইবে--ভাহার বিভঙ্কি ও অর্থ-প্রকাশ কমভা সহতে সাবধান **इटेट्ड इटेट्ट**। (करन शांतिकाधिक मञ्जू मश्कनम कतिलाई

চলিবে না—নীৰ্থকাল বাবং বিভিন্ন পণ্ডিত একক বা সমবেত তাবে এ বিষয়ে যথেষ্ট কাল করিবাছেন—বর্তমানে সমকারের দৃষ্টিও এবিকে পড়িয়াছে। কিছু যে অগবিত সাবারণ শন্ধ-রাশি আমরা অহরহ ব্যবহার করিতেছি কোন বিশিষ্ট শাস্ত্র বা বিভার সহিত যাহারের বিশেষ বোগারোগ নাই তাহারের সমতেও উলাসীনতা অবলয়ন করা মৃত্তিমুক্ত হইবে না, তাবার প্রাণসকারে তাহারের উপযোগিতা ভূলিলে চলিবে না। তাহারের অকচাপে তাহা যাহাতে বিরুত ও পছু না হইবা যার সেদিকে আমাদিগকে বিশেষ অবহিত হইতে হইবে। প্রসিদ্ধ ভাষাতত্ত্বিদ শ্রীমৃক্ত যোগেশচন্ত্র রায় বিভাবির মহাশয় বলীয়-লাহিত্য-পরিষ্টের সংবর্জনার উত্তর্জান কালে এই প্রসন্দে বাহা বলিয়াছেন তাহার দিকে বাংলা তাবার অধ্বাদী পরিপৃষ্টিকামী ক্ষমগাবারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করিবা প্রবছর উপসংহার করিতেছি—

'বাললা সাহিত্যকে ইংবেজীর আওতার রাধ্ব না— এ সংকর আয়াদের গ্রহণ করতে হবে। তথার যাহাতে বিশুদ্ধি রক্ষা হয় সে বিষয়ে আপনারা সাববান হবেন। তবেই এ ভাষা ঠিক থাকবে। তবলীয়-সাহিত্য-পরিষদ্ যদি ২।৪। ৫ জন লোক নিয়ে ভাষার বিশুদ্ধি রক্ষার জন্ত সমিতি গঠন করেন ভাল হয়। তাঁরা বানান ঠিক করে দিবেন— অর্থ ঠিক করে দিবেন। তাহিতি যাবে যাবে ভূল দেখিছে দিবেন। এতে কিছু কুর হওরার কারণ হবে না।'

কোন ব্যক্তি বা সমিতির নির্দেশ ভাষার পক্ষে সর্বধা মানিয়া চলা সভবণর না হইলেও উহা উপেন্দার যোগ্য নহে— যেহেছু এইরপ নির্দেশই সর্ব্যর ভাষাকে উচ্ছু খলভার হাত হইতে রক্ষা করে। তাই বাধীনতার উদ্ধান আবেগপ্রোতের মধ্যেও আলোকভণ্ডের মত এই জাতীয় নির্দেশদাতার প্রব্যেক্ষন আছে। প্রব্যোক্ষারী ও নির্দেশদাতার ঘাতপ্রতিভাষার কমনীয় রূপ বিক্লিত হইয়া উঠিবে।

ভূমার আবির্ভাব

শ্রীহেমলতা দেবী

ভূমার যাহার প্রগভীর প্রীতি

মান্তি ছুঁবে ভার আনন্দ
চিরদিন যে গো গছ-বিহীন

ভরা ভাহে এভ সুগর।

মান্তির খেরেছি মান্তিতে ভরেছি

থেবেছি মান্তির হর

মান্তি দিরে গভা এ দেহ আমার

গভিছে ভূমার বর।
ভূমা আসি বলি মান্তীর শিরবে

আলো করে কালো মান্তী

রাশি রাশি কুল ফুটায়ে সবাবে
স্থান্ধ দেয় বাঁট।
গৰ্মান্ধেয় আনন্দ যোর
অফে ক্টায়ে বয়
মাটাতে শরম বিছায়ে লে যে গো
আলোকের কথা কয়।
ক্ষণভত্ত দেহে বহি যোর
চরম পরম লাভ
শরমে স্থানে বাট ক্ষণে কৰে
ভূমার আবির্ভাব।

ৰতচারিণী

এইলারাণী মুখোপাধ্যায়

d 4

সে এক বছৰল হাসপাভালের নাস । আৰু পাঁচ বংসর
কর্মভার লইরা এই হাসপাভালে আছে, কিন্তু আৰু পর্যাত্ত
কেহ ভাষার কীংনকাহিনী কামিতে পারে নাই । কোম
বিন ভাষার 'ভিউট' পালনের ব্যতিক্রম হর নাই । কেহ
কর্মনা কাকে ভাষার আলন্য দেবে নাই । রোইদের প্রতি
ভাষার এত বন্ধ যে দেবিলে বনে হর বেন দে উহাদের
নিভান্ত আপন ক্রন । হাসপাভালের ভান্ধার্যপন ভাষার নাম
বিরাহেন নাইটিকেল । নামটা শুনিলে সে নাধা নীচু করিরা
হাসে, কোন উত্তর দের না ।

লহক শিবী নাস হৈর সহিত বাজে গল করিরা কেছ কোন বিল ত হাকে সমর নই করিতে কেবে নাই। ভাজারদের সহিত কাজের কথা ছাড়া দে কবনও ফালভো কথা কছে মা। এই সকল ফারণে আড়ালে ভাহার সহছে আলোচনা হয়। হয়ত দে আলোচনার ছুই-এক টুকরা কথম কথম ভাহার ফালেও আসিয়া পড়ে। কিছ বিরত্ত সমালোচনা ভাহার অটল গাজীবোর কাছে চুর্ব হুইরা যার।

মার্গের শুক্রবেশে বোগীর বিছানার পাশে ইড়াইবা সহাকৃত্তিপূর্ণ হরে যথম দে কিন্তানা করে, কেমধ আছেন— এবং রোগী থামিয়া থামিয়া কটে উত্তর দের, তাল না, বছ কট হচ্ছে—নে তথম ভাহার নাথার হাত বুলাইতে বুলাইতে হরহ-ভরা কঠে বলে, 'ভর কি ? ছুইএক দিমের মব্যেই আপনি লেরে উঠবেন।' রোগী হুই চোধের আকুল দৃষ্টি ভাহার মূখে ছাপিত করিয়া বলে, 'গভ্যি বলছেন ? আমি ভাল হব ?' নে কঠে কোর দিয়া বলে, নিশ্চর সেরে উঠবেন। কেন, আপনার কি এনৰ হরেছে যে লারবেন না ?

ওপাণের বিছাল। হইতে নাথা ভূলিরা একট র্বক তাহাকে ভাকে, 'গুনছেন, এখিকে আগ্নন ত একবার।' লে' ছুটরা গিরা বলে, 'কি বলছেন ? কিছু কট হছে কি ?' র্বক কাতর কঠে বলে, 'বড় নাথার কট, একটু যদি টিপে দেন।' হেলেটর মাধার হাত দিবাই লে চনকাইমা উঠে। অবের উভাপে বেন পুভিয়া বাইতেছে। তথনই সে আইস্ব্যাপের ব্যবহা করে। ছেলেট স্থবোধ করিয়া বলে, "আঃ! আপনার বড় হয়া। এর আগে যিনি এখান দিয়ে যাঞ্জিলেন তাকে কড ভাকল্ম, কিছ তিনি বয়ক দিয়ে বল্লেন, 'চূপ করে লোও।' আঞা, আপনার নাম কি বল্ল তো।"

(म मधीत चार्य करह, क्यक ।

—আপনি আনার বছবির মত দেবতে, আপনাকে আনি ছিবি বলে তাকৰ।

ম্বকের খেবে। দ্বাসের উভরে কমক বলে, বেশী কথা বলবেম মা।

ভাক্তার আগিলেন। কনক সসত্রমে উঠিরা বাঁড়াইল। তিনি প্রত্যেক বোধকে পরীকা করিরা টেবিলের নিকট গিরা চেয়ারে বসিলেন। নার্সরা রিপোট দাখিল করিল। কনকের বিপোট থলি পভিয়া ডাক্তার কহিলেন, বার নত্তর বোধীর অবস্থা ভাল নত্ত, তার ঠিক কেয়ার নেওয়া হচ্ছে ত ?

কি ভাবে কেরার সঙরা হইতেছে কৃষক তাহা বলিয়া পেল। প্রশংসমান কঠে ডাজার কহিলেন, আছা, তেতারিশ নহর ভাল আছে ? পদর নহরের পা টা কি রক্ষ ?

এবনিভাবে ব্যাধি আর বৃত্যুর সীলাক্ষেত্রের মধ্যেই
নিজেকে প্রতিষ্ঠিত করিয় লইয়াছে কনক । মকসলের হাসপাতাল বলিয়া তাহার শুশ্রধার প্রশংলা সুদ্রপ্রদায়ী হইয়াছে ।
ইহাতে হাসপাতালের বেশ স্থনাম বাভিতেছে । কত রোগী
স্থাহ হইয়া কনককে কত ভাল ভাল উপহার থিতে চেঙা
করিয়াছে, কিছ কনক কবনও প্রহণ করে মাই । মাধা
মাছিয়া বলিয়াছে, লে কি ? আমার কর্ছব্য আমি পালম
করেছি, এতে উপহার দেওয়া অনাবক্তর । সরকার আমাকে
মাইনে দেন, সেই আমার যথেও । আপনার মা-বোম যবন
লেবা করেম, আপনি কি তর্থন তাদের ভেট দিরে খণমুক্ত
হবার চেঙা করেম ? আমাকেও আপনার ভাননীর আগবে
হান দেবেম ।

ক্ষকের কথা শুনিরা রোপীর চোথ ছলছল করে। ক্ষক তথ্য আৰু রোপীর কাছে সিরা ইাড়ার। সকলেই ভাহাকে একান্ত আপনার ক্ষম বলিরা মনে করে অবচ সে বেল সকলকার ধরা-ইোয়ার বাহিত্র।

हरे

বৈকালে ফ্লাভ গেছে ক্ষক নাৰ্স-কোষাচাঁৱে কিছিল। ভবন বৰে নাৰ্সালের বেশ আজ্ঞা ভবিষাছে। ক্ষকতে দেখিয়াই ক্ষণা বলিয়া উঠিল, ক্ষক, ভোৱ ক্ষিত্ৰতে এত বেছি হল ? ভিউট ত অনেক্ষণ শেষ হয়ে গেছে।

পোশাক যাভিতে হাভিতে কৰক কহিল, একট বছুন পেসেউ এল, অবহা বুব সীরিয়ান। টেকে কিনা সন্দেহ। ভার কাছে একটু দেরি হল। আহা, কি কাভরোজি ভার হীর, চোবের কল রাধা বার না। ভাবহিল্য, বাহুব-বহি সব অহুব হাভ বুলিরে আরাম করে হিতে পারত।

কৰা শেষ কৰিতে বা কৰিতেই কমক ক্লাভিতে একটা ইজি চেয়ায়ে ভইয়া পঢ়িল। মীয়া হাসিয়া কহিল, ভূই বেধছি সভিচই অবাক করলি। অভ কিলের বাবা, চাকরি করতে এনেক, কাম বাঁচিয়ে সরকারকে বুলি কর।

ক্ষক কৰিল, বুবি লব। কিন্তু চাকরির উপরেও দর্শ বলে একটা কিনিল আছে মীরা; বা ভার্বের বার বারে মা এবং যেটা সভলকারই সমান নয়।

হেড মান একথানা নেট বুনিতে বুনিতে ঘরে আসিলেন।
কহিলেন, কি নিমে ভর্ক হচ্ছে ? এই যে কমক এলেছ।
আক এত দেৱি ?

করণা কহিল, ও কোন্ রোপীর যাধার হাত বুলোচ্ছিল আর বাছবিল।

ক্ষক কৰিল, ভাভে কি খভার হ'ল ? সকলের ছাব কি খাষারও ছাব ময় ?

আভা কৰিল, ভোৱ মত অভ দৱদী হলে আর চাকরি করতে হয় মা, বদে বদে ভবু কাদতেই হয়।

ক্ষেত্ৰাস' কহিলেন, যাক্ষে ওক্ষা। সভুন গিছিল গাৰ্জন আদহেন ওনেছ ভোষধা ?

করণা কহিল, ই। ভগৰিল্য বটে। কি জামি বাবা ইমি আবার কি রক্ম মেজাকের লোক।

মীরা কহিল, তার ধেলাজ নিয়ে ভোর কি হবে ? ছুই ভ থাকবি রোগীর কাছে।

কে আগিয়া হৈছ নাগ কৈ ডাকিতেই তিনি চলিয়া গেলেন।
করণা মীয়ার কথার উত্তরে কহিল, তা থাকলেও, তিনি
ত এক জন উপরওয়ালা মনিব।

আজ। কহিল, চাকরিরই উপরওয়ালা, আর ও কিছুর নয়। অত জয় কিলের ?

করণা ভাহাকে বাকা দিয়া কহিল, দুর খ্ৰপুছী, যা ভা বলিদ।

মেরেদের মধ্যে একটা হাসির রোল শভিষা গেল। আভা কবিল, আছো, মেরেওলো বিষে করে কেষণ করে পঞ্জের অধীন হয় বল ত ?

সাধনা এডকণ কৰা কছে নাই। এইবার সে মুব ভূলিয়া কহিল, ভূই যেষন চাকরি করে মনিবের অধীম হয়েছিস ভেষমি করেই।

লাৰনা বিধবা—সামী কি বন্ধ তাহা সে কানে। কালেই কৰাটা ভাহার গায়ে লানিয়াছিল।

করণা কহিল, আহা, সাধনা-দি খামী বেচারিকে নিরে অনেক মাড়াচাড়া করেছে কিঁ মা, ভাই প্রশ্নতী আঁতে খা দিরেছে।

মীরা কহিল, আছো, কনক ত কথনো বলে মা ভার বিষে হরেছে কি মা, বিষের প্রসদ উঠলেই চুপ করে বাকে। জিজেল কয়লেও ত কিছু বলে মা।

ক্ষক কহিল, বলব আবার কি ? আমায় দেবে কি মনে হয় ? करूना करिन, यान एवं निरंत कविन मि ।

-- खरा चल बिर्द्धन करिन रक्न ?

আছা কবিল, কিন্ত বিষে বা ক্যালেও, কায়ও লভে প্ৰেছিস্ এ আমি দশৰ করে বলতে পাবি।

কণক কহিল, বেশ তো, বল না চুই, কেট ভো নাৰা করছে না।

আত। কহিল, আছো, সভ্যি কমক, তুই এডনিম এবাৰে কাৰ কর্মিন, আমানের ভালবানিত টিক আলন বোষের মতই, কিছ কবনও ভোর বাজিগত কাহিনী আমরা কিছু ভ্রমণ্য না। তুই যেন ভূইকোড মেরে, ভোর আঙ্গিছু বলতে যেন কিছু নেই। মা ভাই ?

ক্ষক কৃষ্ণি, ঠিকই ব্রেছিস। আদি ভূইক্ষেট্, আঞ্চিচুবলতে কিছু নেই আমার।

অ.ভা কাহল, সভিা, বলবি না ?

— জাবে বলবার যে কিছু থেই। বাবা-মাকে মনে লেই।
একটা আপ্রথে মাথ্য হয়েছি। বিষে করি নি। হাসপাতালে
চাকরি করি। তোদের সহক্ষিণী। বাস্, তুমলি ড ?
ছোট আমি, তাই ভুছে আমার জীবনকা,হ্নাত।

তিন

বর্তনা দিভিগ-সার্জনের বিদার-সংবর্জনা-সভার প্রথিনই বৃতন দিভিগ-সার্জনের অভিনদ্দন উপলক্ষে হাসপাতালে একটা উংগব হইল। নৃতন দিভিগ-সার্জন ভাক্তার বোসের স্ত্রী প্রবং শিক্ষিতা বলিধা নাস্য বহলে জোর আলোচনা চলিয়াছে। ক্ষাক কোন কথাতেই বাকে না, নিজের কাক্ষিরিয়া যায়।

সকালে নিজের ওরার্ডে সে বাছ ভাবে কার্ক করিভেছে, এমন সময়ে ভাক্তার রাহের সহিত সিভিল সার্ক্তন ভাক্তার বোস রোসী দেবিতে ভালিলেন।

প্রত্যেক বেভের পাশে কিষংক্ষণ করিষা ইণ্ডাইয়া ভাক্সার মার রোগীর বিবরণ দিতে দিতে অপ্রসর হইতে লাগিলেন। হলের শেষের দিকে একট রোগীকে কণক কীডিং-কাপে করিষা পথা থাওয়াইতেছিল। ভাক্যার রায়ের সহিত ভাক্যার বোদ সেইখানে আলিয়া ইণ্ডাইলেন। কণক জাহাদের দেখিয়া উঠিয়া ইণ্ডাইল। ভাক্যার বোদের পানে চাহ্মাই কি-কানি-কেন সে কাশিতে কাশিতে থামিয়া উঠিল। ভাহার কন্দান হন্ত হইতে কীডিং-কাশটা মাটতে পভিয়া গেল। অনু বনু শন্দ হইতেই ভাক্যার-ছয় কনকের পানে চাহিলেন। মনে হইল যেন ভাক্যার বোসের চোবে বিশ্বর থনাইয়া উঠিয়াছে, কিছ সে ক্ষেণ্ডের জ্ঞার বোসের চোবে বিশ্বর থনাইয়া উঠিয়াছে, কিছ সে ক্ষেণ্ডের ভার কহিলেন, ইয়েস্ ভক্তর রায়, ভারণর স্ব

ক্ষক ফ্রুডপদে হল হইতে বাহিত্র হইয়া গেল। ডাক্ডার রায় ক্হিলেন, এই যে নাস উক্তে দেখলেন ভার, এর বিপুল স্থাম। রোগীদের এভ বত্ন দের যে ভাভে হস্পিট্যালেরও রেকর্ড ভাল হয়।

সিভিল-সার্জন অভয়নভ্যের মত উদ্বেশ্বীন তাবে কবিলেন, তাই নাকি ? সাম কি এর ?

ভাক্তার রায় উচ্চার পানে ভাকাইয়া কহিলেন, কনক বস্তু।

ভাক্তার বোদ অভ দিকে চলিতে চলিতে ভিন্ন প্রসদ ভূলিলেন। ডাক্তার বার তাঁহাকে সহস। উদ্যাভ হইতে দেবিরা অবাকু হইলেন।

কিরংকালের মধ্যে কনক ফিরিয়া আসিরা নুজন কীজিং-কাপে রোগীকে আবার থাওয়াইতে লাগিল। সহলা রোগী কনকেয়ুহাত ছুইখানা চাপিয়া কাতরস্থ্যে কহিল, মা, ভূমি আর ক্ষমে আমার গর্ভবারিণ ছিলে।

কনক ভাষার গায়ে হাত বুলাইতে বুলাইতে ক্ষিল, বাও হবেন না, কিছু ভয় নেই।

রোপী কহিল, মা, বাড়িছে তোমারই মত একট মেয়ে রেখে এগেছি, ভাকে দেববার কেট মেই।

এসব কাতৱোজি শুনিলে কনকের চোবে ক্লস আলে। হার রে ক্লহার মান্তব।

আর এক জন বিকারের বোরে ভরানক টেচাইভেছে।
ব্রহকে সাস্ত্রনা থিয়া কনক ছুটল ভাষার কাছে। পাশের
বেডের বোন্ধকে মীরা ওয়ব বাওয়াইভেছে। কনককে ছুটরা
আলিভে দেবিরা লে বিরক্তিভরা কঠে কহিল, আলিরে
মারলে। এরন বিকট টেচাছে কার সাবি। টেকে এবানে।

ক্ষক দেখিল যঞ্গায় রোগী দত্তে অধর কাটর। চিবুক আর গওদেশ রক্তে রঞ্জিত করিরা কেলিয়াছে। ধরদ-ভরা কঠে বলিয়া উঠিল, আহা-হা। তাহার পর ভিদা বোরিক দুলার ভাহার বুধ মুহাইতে সাগিল।

চার

দকালে কনক নিজের কাকে ব্যস্ত। সিভিল-সার্জনের আর্থালী আসিরা সেলায় দিয়া কছিল, ডাক্তার সাহেব আপনাকে ভলব করেছেন। তিনি আশিস-বরেই অপেকা করছেন।

ক্ষক কহিল, আহ্না, তাঁকে আমার সেলাম দিরে বল, আমি এখন ডিউটিতে আছি, কাজ শেষ হলেই যাব।

আরদাণী চলিয়া গেগ। একটু পরে প্রবেশ করিলেন ভক্তর ব্যানার্জি। বরস ত্রিশ-প্রবিজ্ঞান বংসর, উজ্জ্ঞল গৌরবর্ণ দ্বেই আই-সাট কোট-প্যান্টে সজ্জ্ঞিল, নাকের উপর সোনার ক্রেরওরাল! চশ্মা। কনকের উপর বৃষ্টি পড়িভেই হানিরা ক্রিলেন, সুপ্রভাঙ। ভার পর নাইইলেন, সুন্সুম নাকি আপনি প্রভাগ পর দাবিল করেছেন ?

কনক অভিবাদন করিরা কহিল, টিকই ভ্যৱেন, আপনি।

ডাক্তার রোপ দেখিতে দেখিতে কবিলেম, কিছ কারণ কি ?

---কারণ ধেয়াল ছাড়া আর কিছু নয়।

বে রোপীকে ডান্ডার পরীকা করিতেছিলেন সে আকৃত্ত কণ্ঠে কহিল, আপনি চলে যাবেন ?

কনক কছিল, না, সে এখন নয়, আপনি সুস্থ হয়ে বাড়ি ফিরে পেলে ভার পর।

রোগী আখত হইল। ডটার ব্যানার্ভি আর এক হুমকে দেবিতে দেবিতে কহিলেন, দেবুন ত, আপনি চলে সেলে এর প্রাণে কত বড় আঘাত প্রাবে।

কনক শীরব হইরা গছিল। ডাক্তার ক্ছিলেন, ছেড়ে দিন আপনার ও বেয়াল। সেবাত্রভাই যধন নিয়েছেন, একটা ধেয়ালের বশে ত্রভজ্জ করা ঠিক নয়।

কনক কৃষ্ণি, ত্ৰেভজন ত ক্রছি মা, ভট্টর ব্যানাজি । এখানে ধাকতে আর মন সরছে ন', ভাই অঞ্চ হাসপাভাগে যাব ঠিক করেছি।

ভাজনার ব্যামাজি কহিলেন, আপনার মূবে ভো ওকবা মানায় না। আপনার অভাবে এ হাসপাভালের কভ কভি হবে ভেবে দেবছেন কি ?

কনক ৰূব কিরাইয়া কহিল, আপনি কাজ শেষ করন, বাজে কর্মায় কাজের ব্যাঘাত হজে।

ভাক্তার হাসিয়া কহিলেন, ও ইরেস, বছবাদ ৷ কংকের ধেরি হচ্ছে বটে, ঠিক কথা ৷

ভিনি কাজ শেষ করিয়া চলিয়! গেলেন। ভিটটর শেষে কনক সিভিল-সার্জ্ঞেনের আপিস-কক্ষে উপস্থিত হুইল। আরদালীর হাতে একটা লিগে নিকের নাম লিবিয়া পাঠাইতেই ভিতরে প্রবেশ করিবার অহমতি আসিল। কনক লিভিল-সার্জ্ঞনের সন্মুবে উপস্থিত হুইলে, ভিনি ভাহার শুপ্রবসনা নিরাভরণ। সাজীব্যপুর ক্লান্ত মৃত্তির পানে ক্রপকাল নির্মাক্তাবে চাহিয়া রহিলেন।

ক্ষক অগ্ৰসন্ত্ৰ অভিবাদনপূৰ্বক অকম্পিত কঠে কহিল, ভাৱ, আমান্ত ডেকেছেন ?

ডাইর বোস্পলা ঝাছিয়া কহিলেন, ই।।

ভাছার বন্ধ টেবিলের বিপরীত পাশের একটা চেয়ার দেবাইয়া কৃছিলেন, বোদ।

ক্ষক বসিল। কিছংকণ মীয়ৰ থাকিয়া সিভিল-সাৰ্জ্ঞন কহিলেন, পদত্যাগণত্ৰ দাবিল ক্ষরেছ ক্ষেম জানতে পান্তি কি ? ক্ষক কহিল, এবামে আর চাক্তি কয়ৰ না, ভাই।

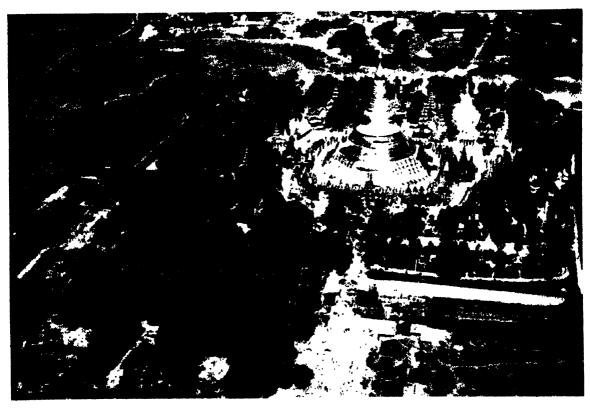
—কেন চাকরি করবে না, ভার কারবটাই ভ বিজ্ঞাত।

--- भाग कतरवन, कातन कानरण चानि चक्य ।

ভাজার গাহেব আবার কিরংকাল ক্নকের পানে নীরবে



রাভের ওয়াশিংটনের আলোক-সজা

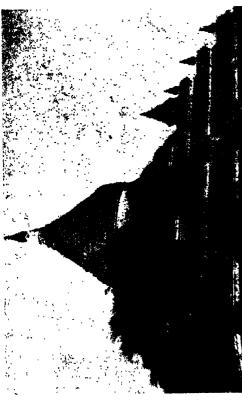


বেঙ্নের স্বনির্বিভ বৌদ্যন্তির সোরে ভাগো প্যাগোডা





পাগাহেনল দানপালা লফিল—একালশ শ্ভাকীভে লাভা নাছ্যা কৰ্ক ইয়া লাক্থানাদলণে ব্যব্ভত হইভ



बांका बांगाडिर जिल् कर्क्क ३১८८ ब्रेडीटक निर्मिक द्योक्ष्म



मांगाम मनबीव एकस--निषट्य ३३०३ श्रिक्षोटक विधिष्ठ चात्रम गांदर्गडा

চাৰিরা রহিলেন। ভাহার পর সহসা গভীর বরে ভাকিলেন, কনক।

কৰক চৰকাইত। জাঁহাত্ত পাৰে চাহিল। বাৰা নীচু কবিতা হত্ত কহিল, বনুন।

ভাজার কহিলেন, কিছ আনি আনি এর কারণ। ভূষি আনাকে টিনিভে পেরেছ বলেই এই হাসপাভাল ছেকে যেভে চাইছ। ভোষার জীবনের সকল ব্যর্বভা বেবানে চরন সার্বক-ভাষ ভরে উঠনে বলে মনে করেছিলে, সেইবানেই আনার আগমনে আবার ভোষার বুকে হাহাকার জাগল, দয় কি ?

কনক স্বৰ্থ কঠে কহিল, হয় তো ভাই। কিছ লাৱা পৃথিবীতে কোণাও কি হাহাকার বুচবে না ? ভা হয় ভো বুচবে, অভত চেঠার ফট কয়ব না।

ভাক্তার কহিলেন, কিঙ আমি ভোষার নারা পুৰিবী বুরে বেছাতে দেব না। আমি ভোষার স্বামী, ভোষাকে আমি চাই।

ক্ষকের বুবে বিজ্ঞপের হাসি কুটরা উঠিল। কহিল, আর তা হর না। ক্ষক গুরু বামীর উপাবিটার বব্যেই আরতির চিফ্ল বজার রেবেছে—আর সব-কিছুতেই সেকুষারী। তার মেই কোল কাষনা, নেই কোল অভিযান। সে এবন আর্তের বেদনা বুচিরে জ্যোভির্মর আনন্দ-লোকে বিচরণ করে।

ভাকার সহসা উঠিয়া আসিরা ভাহার হাভ ছুইবারা চাপিরা বরিয়া কহিলেন, কনক মার্ক্তনা কর আবাকে। সভিঃ, আৰি সুধী নই। ভোষার ছান পূর্ব হয় নি, ছবেও ৰা কোন দিব। যে দিব থেকে ভোষার হারাই সে দিব त्यक् चार्याव चौरत्यव जक्त चामक विशेष मिरबर्ट । वार्या ভোষার ছংবের কারণ, আমি মর। আমি তথম সূদুর রণ-ক্ষে জীবন-যুত্যুর সন্ধিছলে। ভোষার চিটি ববন পাই ভবন আমার উত্তর কেবার অবস্থা নর। ববন উত্তর পাঠাই ভার পর থেকে ভোষার কোন সাড়া পাই নি। কিরে এসে ভোষাকে অনেক পুঁৰেছি, কিছ কেট ভোষাৰ সংবাদ দিছে পাবে य। পরে ভাষা গেল, ভোষার বাবার মৃত্যুর পর ष्ट्रवि ना-कि कांधेरक ना कांनिया कांगाव हरन शब--- एव ভো তুল প্ৰেই। আমি কৰাটা বিশ্বাস কৰি নি, কিছ बाबा कर्यानम । जारे कांद्र (कार अवर नीह कामद कन्द्रवादन কের বিবে করেছি। ভবে এই সর্ভে বিবে করি যে ভোষার ভবিভতে বুঁকে পেলে আবার এখন করবো আবর করেই।

কদক কবিল, কেন, ভোনার বর্তনান স্থী ভো ভনেতি পুৰ কুন্দরী এবং শিকিতা। এঁকে পেরে আমাকে ভো মনে রাধ্যার কথা নয়। আমি ব্যের বউ, আমার বাবার একটা লামান্য কট এত বড় হয়ে উঠল বে ভোনার শিতা ভোনার অপুপরিভিতে বঞ্জে আমার পরিভাগে করলেন। একবার ভাষতেন না আমি কোবার কাছাব। ভাজার বোসের চোধ হল হল করিতে লাগিল। ভি'ল কহিলেন, কিরে এস কনক, ক্ষা কর এ ভাগাহতকে।

क्मक कर्न्डन, चांत्र छ। एत ना ।

- -- ज रल हाकवि (चर्डा या।
- --- मा जांध रह मा।
- —আছা, ভা হলে তুমি এবানেই বাক, আমি উপরিভ মুট নিয়ে অভ হালপাভালে বদলি হ্বার ভেটা করি।
 - ---छाक्ष स्य मा ।

ভাজার ব্যবিত চকু ভূলিয়া কবিলেন, তবে ভূবি কি একাতই আমাকে কমা করবে না ?

ক্ষক আর থাকিতে পারে না। অঞ্চিরগিত নরবে ভাক্তারের প্রপ্রাপ্ত বসিরা কহিল, এবন করে অপরাধ বাছিও না, প্রিয়তম ! ক্ষক তার খানীকে মনে মনে বিবারার পূজা করে ।

ভাজ্ঞার ভাষাকে উঠাইরা কছিলেন, আরি ভা জারি। ভোরার দে পূজার পর নিত্য আমার অবর পর্ণ করে। আজ্ হাসপাভালে সকলেই কাঁদহে ভোরার কভে। বেও বা, সজাই।

ক্ষক হাত হাড়াইরা কইবা কহিল, আহা, এবন তো আলি।

ভাভার কিছুই বলিলেন না, ভবু ছির ভাবে ইাড়াইরা রহিলেন।

পাচ

ভক তারা তথ্য আকাশে বল বল করিতেছে। উবার নীতল বারু প্রাণে কেমন একটা গাভীর্ষ্যের সঞ্চার করে। নার্ল কোরাটার বাহারা আহে তাহারা সকলেই নিজিত, তণু কনক বিনিজ্ঞ রক্ষী বাগম করিতেছে। সে গিছনে হাত চুইখানা রাখিরা আনতলিরে তথ্য হালানে প্রভারণ করিতেছে। সহসা রাখা চুলিরা মনে মনে কহিল, ঐ বে হাসপাতাল আলোকের চকু বেলিরা আর্তের আর্ল ক্ষমনে বক্ত তরিরা চুলিতেহে, ই। ঐ ত তাহার আনক্ষাম, মুক্তির তীর্ষ্যের, মহরের হুর্গলোক।

গহসা আকাশের পানে চোব পড়িল। রাজি ও প্রতাত্তর
সঞ্জিলে গগন বেন পাঙুর। সনে পড়ে পিডাকে, বিনি এ
জীবনে কোন দিন ভাষাকে জনাদর করেন নাই। অকালেই
লে মাড্হীনা। বা ভাষাকে ভূলিরাছেন, ভূলিরাছে সংসার।
কিছুদিন পরে ভূলিবে ভাষাকে এই হাসপাভাল, ভূলিকে
সহক্রিণীরা। হার, কাহারো অধ্যে ভাষার ছান হইল
না।

না, কনক আৰু ভাবিতে পাৰে বা। পেৰে কি পাগদ হইৱা বাইৰে? বাহিৰের প্রকৃতির পানে বৃষ্টপাত করিয়া সে চমকাইয়া উঠিল। আরু অল্লভবের মধ্যেই প্রভাত হইয়া পাছিব। হয়টা হইছে ভাহার ভিউট। আর বেরি নর, এখনই সকলে উঠিয়া পাছিবে।

নিঃশব্দরণে বরে পৃনঃ প্রবেশপূর্কক বাট ওলার প্রান্থে সভর্পণে ভাতাইল। ভাতার সুটকেস্টা ভূলিরা লইরা এদিক ভালিক চাহিতে চাহিতে একবারে রাজপণে আসিরা দাঁড়াইল। সন্ধিনীরা জানিতে পারিলে গোলরাগের স্পষ্ট হইভ। করুণা কাল বলিরাছে ভাঞার রায় আৰু সকালেই ভাতারে 'কল' দিয়া রাধিয়াছেন। ভাঞার রায়কেই ভাতার সব চাইতে ভয়। তাঁহার মুক্তিপূর্ণ বিনয়মধ্য বাক্যে যদি ভাতার সকল ভাসিরা বার।

সে শ্বরিভপদে রাজপথ ধরিরা চলিল। টাইন-টেবিলে দেবিরাছে সাড়ে হয়টার কলিকাভাগামী ফ্রেন আছে। কিন্তু পাছটো কেন চলে না ? পাঁচ বংসরের সাবনাশ্রম ব্রভ- চাহিনীকে খাতছানি বিহা ডাকিয়া বলে এল, এল, ভূনি যে, আর্তের পীভিতের দরদী সেবিকা তাই হোসীর অগং তোষার চায়। ৩কি । একে একে বানসপটে ফুটরা উঠিতেহে পাঁচ বছরের দেখা সব হোসীদের মুখগুলি। কে বেন বলে, যা। ঐ কে বলে, দিদি, দিদিমণি।…

না, মা—কনক গুনিবে মা। সে প্রায় ছুট্টয়া চলিল। কিছ পারে মা আর চরপ্রয় তাহার বেখনা-কাতর ক্লান্ত দেহকে বহন ক্রিতে। কনক হাপাইতে ইাপাইতে ক্রিয়া তাকায় হাল-পাতালের পানে। বৃষ্টিশারার ষত নয়নালারে তিকিয়া পেল তাহার গঙ্গেশ আর বক্ষঃস্থল। তথন কে পথে গাহিতে গাহিতে চলিয়াত্তে—

> ছাড়া পাওৱা নয়ত্তে আমার, সে যে বাঁধন চাওৱা।

বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

শ্রীবিনয়ভূষণ দাশগুপ্ত

২৩শে মবেষর শনিবার সকালে শ্রীরুত ভকিল ও রুবুজ্জে মহাশরের সদ্দে ক্যাপিটল ও হোরাইট হাউসে গেলান। হোরাইট হাউসে পেলান। হোরাইট হাউস প্রেসিডেন্টের সরকারী বাসত্বন। সেদিন প্রেসিডেন্ট টু,মাান ওবানে ছিলেন না। দর্শনপ্রার্থির বেশ ভিক। নীচের তলার একটি খবে রুক্তভেন্টের ছেলেনেরেদের বেলনা দেবিলান। ঘোতদার প্রের হলম্বরে পূর্ববর্তী প্রেসিডেন্টগণের বহু বহু ছবি দেরালে বুলিতেছে। মব্যছলে বহু একট আলোর বাছ। এট অভ্যবনা-গৃহ। ইহার পশ্চিরে পর তিনটি সুসন্দিত বাবার-বর। আরও করেকট সুসন্দিত প্রকোঠ দেবিলান। তিন তলার ঘর্শকপণের প্রবেশাবিকার নাই। সেবানে প্রেসিডেন্টের শরনকক ও বৈঠকবানা প্রভৃতি। কলিকাতা বা দিলীর পর্যব্রেক হাউসের ভূলনার হোরাইট হাউস অনেক ছোট। আর লারি দিলা লোক পর্যব্রেক হাউসের ঘূলনার বার্কির হাকির ঘূলনার বার্কির হাউসের ঘূলনার হাকির ঘূলনার হাকির ঘূলনার হাকির ঘূলনার হাকির ঘূলনার হাকির ঘূলির ঘূলনার ঘূলির ঘূলনার ঘূলির ঘূলির

ক্যাপিউলের সু-উচ্চ রহং গর্কট বহু ব্র হইতে দেখা বার।
এই গর্কের উপরে একট বাতি অলে। তিতরে অনেকজনি
বর। একটতে হাউদ অব্ রিপ্রেক্টেটজন্-এর এবং অভ
একটতে সেনেটের অধিবেশন হর। চুকিতেই গর্কের
নীচের হলগরে বহু হবি টাঙান দেখা বার। এই ছবিগুলি
এ দেশের ইতিহাসের বিশিপ্র ঘটনাবলী সইরা অভিত। ইঁহাকের খাবীনতা-রুছের শেষে ইংরেজ সেনাপতি সর্ভ কর্ণওরালিস
বেলিন কর্ম্ম ভারাশিংটনের নিকট আত্মনর্শন করেন সেনিন
ইঁহানের ইতিহালে একট শ্রেম্বর হিন। এই 'আত্মনর্শনে'র

একট বুব বছ ছবি এই ঘরে আছে। এই ঘরের পাশে একট ছোট ঘর। পেশামে পূর্ব্বে ছপ্রীম কোট বসিত। সেনেটের ১৬ জম সভ্য। ছোটবছ নির্কিলেমে প্রভ্যেক রাপ্তের ছই জম প্রতিমিধি দইরা সেনেট গঠিত। ছাউদ অবু রিপ্রেজেন্টেটজস্ এ জনসংখ্যা অহপাতে সভ্য নির্কাচিত হয়। সভ্যসংখ্যা অমেক বেশী, ঘরটিও বছ। এই ঘরে মুছের সময় চার্ফিল সেনেট ও ছাউলের সভ্যগণকে একলে ভাঁহার বক্তব্য নিবেধন করিয়া-ছিলেম। ঘোতলার একট বছ হস্পর্যের প্রভ্যেক রাপ্তের সর্ব্বরের বিভাব মর্শ্বরের্থি আছে। কোন্ রাপ্তের কাহার দ্বি বাকিবে ভাহা সেই প্রির করিয়াছিলেম। এই ঘরের গঠনকৌশল এইলে যে মব্যুছলে একট নির্দিষ্ট ছানে ইছাইলে ঘনের বে-কোন ছান হইতে বুব ছোট শব্দও পরিভার শোনা যার। বেবেতে একবামি নির্দিষ্ট পাণরে ইছাইলে নাকি মন্দ্রামনা সিছ হয়। এই ক্যাপিটল ভবন সম্প্র দেশের ঐতেরর প্রতীক এবং জাতীর মর্য্যালা-বোবের দ্যোতক।

পরদিন রবিবার : প্রাতরাশ সমাপন করিরা বাহ্রি হইরা পড়িলার । পরিকার আকাশ । বেশ রোক্র উঠিছাছে । পোজা ভরানিংটন বল্লেন্টে গেলার । আব ঘণ্টা পর পর লিক্ট্ ঘর্শকরণকে লইরা বল্লেন্টের শীর্বে উঠিতেছে, আবার আব ঘণ্টা পরে নামাইরা আনিতেছে । এই ভঙ্টি ভর্জ ভরানিংটনের জরক্ষরার যত আঞ্চালে মাবা ভূলিরা ইাডাইরা আছে । ভঙ্টির উপর হইতে চারিবিকের মুখ্য পরম রম্মীর । পান্টিরে লিখন-বেবোরিরাল । যদিণে ভেকারসন বেবোরিরাল । পূর্ক্ ক্যাণিটল ভবন। উত্তৰে ছোৱাইট হাউদ। সমভ দহরট দরল এবং সমাভ্যাল ভাজপধ্ঞেণীরারা সমভাবে বিভক্ত হুইয়া



चाखाहाश निक्रामद डेल्विडे चवशांत >> सूहे भीष भर्षतब्र्डि

স্বিক্ত উভানের মত শোভদান। পশ্চিমে পটোম্যাক নদী উত্তর হইতে দক্ষিণ দিকে প্রবাহিত। পরপারে দূরে পর্বত-শ্রেষ্ট। শহর্ট সভাই মনোরম।

লিছন মেহোরিহালে মর্শ্বরগৃহে লিছনের মর্শ্বরন্তি রক্ষিত আছে। চতুকোৰ উচ্চ ভবন। সামনে ভুল ভবের সারি। উচ্চ সোপানশ্ৰেৰ বাহিয়া গৃহে উঠিতে হয়। मरकामित मर्पदमिर्पिछ (ह्यादि भूगीवद्य निक्य छैमिरिडे। छैमस দিক হুইতে বুবের উপর বৈচ্যুতিক আলো আসিয়া পঞ্চিয়াছে। ষ্ঠিট বেন কীবন্ধ। পার্থ-লিখিত কথা করেকটর অন্থবাদ এইরপ: "যে জনগণের জ্ঞ এবাছাম লিখন যুক্তরাষ্ট্রকে বাঁচাইরাছিলেন্ ভাষাদের মনোষ্কিরের মত এই মক্রিও ভাঁছার স্বাভি চিরভরে প্রতিষ্ঠিত ছবল।" চারিখিকের দেয়ালে जिल्लाबाद (महिम्यार्ग वक्कणाद अश्य मेश्कीर्ग। अन्नार्ण कन्नार्गद সার্থে জনগণ কর্ত্তক জনগণের পাসন প্রতিষ্ঠিত কবিবার জন যে मम्ख बीद चार्यादकांद गृहमूख श्रांग विभव्यम (मम. बहे वकुणांद লিছৰ ভাঁছাদেৱ প্ৰতি ভাঁছাৱ সহৰ ওক্ষিনী ভাষাৱ অকপটে खंडा निरंत्रम कविद्यां हिल्लम । सार्यादिद्यां में प्रवेत प्रिक ব্রাস্তার পরপারে দীর্থ সরোবর ও সবুত্ব বৃক্ত্রেণী ওয়ালিংটন মছবেও প্রাপ্ত বিভ্নত।

ভরাশিংটন সম্মেত্তির পূর্ব্বে যুক্তপ্রেণী শোভিভ ন্যাল নামক রাভা ক্যাপিটল ভবন পর্যন্ত সিরাছে। বস্থান্তির উপরে ছোরাইট হাউস পর্যন্ত বোলা সর্ব্ মাঠ। মাঠের পরে বিভূত শহর।

ভাগিংটন শহর ক্যাপিটল ভবনকে কেন্দ্র করিবা চারি ভাগে বিভক্ত। উত্তর-পশ্চিম ভাগই জনবহল। ঐ দিকেই পটোমাক নদী পর্যন্ত শহর সম্প্রসারিত হইয়াছে। দক্ষিণ-পশ্চিমে, উত্তর-পূর্কো বা দক্ষিণ-পূর্কো শহর (মোটেই বাচে নাই। ওসব দিকে বলতি কম। প্রত্যেক জংশে রাভাগুলি সরল এবং সমান্তরাল। উত্তর-দক্ষিণে লম্বা রাভাগুলির নাম এক, ক্ই প্রভৃতি পর পর সংখ্যাঘারা ঘবাক্রমে নিষ্টিই হইয়াছে। পূর্বা-পশ্চিমে লম্বা রাভাগুলির নাম এ, বি, লি, ভিপ্রভৃতি বর্ণাম্ক্রমে রাখা হইয়াছে। যে-কোন ক্টট রাভার মধ্যে দূরত্ব লমান। কাজেই শহরটি কতকণ্ঠলি সমারতম জারতক্রেরে বিজ্ঞা। বড় বড় রাষ্ট্রের নামে কয়েকট প্রতিধিউ আছে। প্রভৃতি নিবা কোণাকৃশি চলিয়াছে। বাড়ীর মহরগুলিও বেশ কাম্বল করিবা লাকাম। ভারতীয় দূভাবাসের মহর ২১০৭



মৰ্শ্বর পাদেখীঠের উপর দশায়সান টমাস ক্ষেকারসমের ১৯ কুট উচ্চ প্রতিষ্ঠি

বালাচুলেটন এভিনিট। অবাং যেবামে বালাচুলেটন এভিনিট ২১ নং খ্রীটকে ছেদ করিবাছে দেবান হুটতে সপ্তম বাড়ীতে এই দূতাবাস। এইকপ যেবানে এক খ্রীট ১০ নং খ্রীটকে ছেদ করিবাছে সেবান হুইতে এখেনশ বাড়ীর নম্বর ১০১০ এক ফ্রিট। এইবানে গুয়াশিংটনের বৃহত্তম বইয়ের দোকান অবাহৃত; নাম বেকানো। আমেরিকার সম্বন্ধ



কৰ্জ ওয়াশিংট্ৰ বিশ্ববিদ্যালয়ে রাইনীতির ছাত্রছাত্রীপৰ

শৃত্রই এইবংশ সাজান। এখানে পথ ভূল করিবার সভাবনা এক গুকার নাই বলিলেই চলে। বাজীর নদর শুনিলেই বুবা যাইবে সে বাজী আমি বেধানে আছি সেধান হইভে কভ-ভূবে; কোন্ দিকে এবং কোন্ পথে সেধানে যাইভে হইবে। এবানকার আশিদ ও হোটেলের বরগুলির নহরও অন্তর্গ কাষদার দাজান। সাভ ভলার পাঁচ নহরের ঘরের নহর হউবে ৭০৫, ৮ ভালার ১১ নহরের ঘরের নহর দইবে ৮১১, এইবাপ।

গুরাশিংটন মন্ত্রেণ্ট হউতে উত্তর দিকে ভাকাইলে ক্লক্ষিত শহরের ক∾ও রূপই চোখের উপর ভাসিয়া উঠে।

মন্থানটের ঠিক দ'ক্ষণে জেকারসম মেমো'রহাল, এদিকে লোকালয় মাই মন্থানটের পরেই থানিকটা মাঠ ভারপর প্রশাস্ত বংগ বাজ ভারপর সোভোবহা সরোবর । ভারপর পদক্ষ সম্প্রকৃতি ক্ষান্ত সারোবর । ভারপর পদক্ষ সম্প্রকৃতি ক্ষান্ত স্থানার ক্ষেত্র ক্ষান্ত বাজা, ভার পাশ দিয়া প্রবহ্মাণ পটোম্যাক্ষা । একট বাল নদীর সক্ষেত্র ক্ষান্ত ক্ষান্ত

পৰিত্ৰ পাতীব্য অভুলনীর। ওয়ানিংটন বসুনেটের উপর হইছে **এই एण जायांत (प्रक्रमाक पूर्व क्षाकर्य क्रिज । यह प्रक्र** ৰত উপর হইতে নামিরা সিধা মেমেরিয়ালে গেলান। সরোবরের পাড় দিয়া দীর্ঘ মর্শ্বর সোপামশ্রেণী বাহিয়া প্রশন্ত মৰ্শ্বৱপুৰে প্ৰবেশ কবিলায় ৷ সন্মুখে কেফাৱসমের মৰ্শ্বৱস্থি হাড়াইরা ৷ কেফারসন হিলেন ভাকিনিরার অবিবাসী, তিনিই আৰেৱিকার বাধীনতা-বোষণাপত্তের বচরিতা। ভাবিনিয়ার ইহার স্থাবির উপর প্রভাষ্মকে নিবিত আছে, "আমেরিকার বাৰীনভা বোষণা-পঞ্জের রচয়িভা, ভার্জিনিয়ার ধর্মণত বাৰীনভা আইনের প্রণেতা এবং ভাকিনিরা বিশ্ববিভালরের প্রভিঠাতা ট্যাল জেফারলমকে এই ছানে ল্যাহিত করা হইয়াহিল।" এই আরক লিপি তিনি নিজেই রচনা করিবা রাবিবা গিবা-शिक्य । कांशांट खन्नश्वा कार्यांट याता **बहे किन्**डे कार्यांट कारे जिम विस्मवस्य প्रविष्ठि स्टेस्ट हास्याधिसम्। ক্ষোরসম আমেরিকার বাধীমভার পরিকল্পনা করিরাছিলেন। আর কর্ক ওয়া শিংট্র এবং পরে এরাহাম লিছন সে পরি-कश्चमात क्रम विवाहित्सम । अवासिरहेम मनवी आप आदम-विकास केट्कास छैरम, कााशिकेन खरम ७ (शहावेके ছাটদ ইছার পৌরবের প্রতীক এবং ভারত প্রহরীকরণ। ওয়াশিংটন মুদুমেন্টের উপর দাড়াইয়া এক দিকে কেকারসম-স্তিপুত্ অপর দিকে লিখন স্তিত্তবন এবং অপর এই দিকে कााणिकेन कर्तन, त्यासारेके याक्रेज ७ असानिएकेस समझी सर्नत्य মন স্বত:ই ভাবে অভিভূত হয় - উপরোক্ত তিন কম মহাপুরুষই अञ्चालिक्ष्ट्रिय मनती, क्यांनिष्टेन क्यम अ (शांशांदेष्टे शांकेटन्य সভ্যিকারের স্থপতি।

ষে বাৰীনভা-বোষণাপত্তের রচরিভা হিসাবে জেকারসন নিজেও গৌরব অভ্তৰ করিয়াছিলেন ভাছার বলাস্বাদ এটকণ—

"বভাব এবং বভাবের নিষম্ভা পরমেশ্বরের পরম বিধানে প্রভাব এবং বভাবের নিষম্ভা পরমেশ্বরের পরম বিধানে প্রভাক ভাতি বিশেষ শক্তিপুঞ্জের মধ্যে পৃথক এবং সমাম আসনের অধিকারী। অন্ত জাতির সহিত রাজনৈতিক বছমে আবন্ধ কোন জাতির পক্ষে বর্ধন সে বছম ছিল্ল করিলা তথীর সভ্জ এবং সমাম আসন এহণ করা আবন্ধক হইলা পক্তে তথম বিশ্বের বিচার বৃদ্ধির প্রতি কিঞ্চিং প্রদা থাকিলে যে সমন্ধ কারণে জাতি বৃত্তর আসম এইণে বাধ্য হইতেছে সেঞ্জলি বিশ্বের ধরবারে মিবেদৰ করা উচিত।

আম্বা এই সভ্যগুলি বভঃগিছ বলিয়া মনে করি :---

- ১। ভগৰাৰ সকল মনুত্ৰকে সমান করিবা শৃষ্ট করিবাছেন;
- ২। শ্ৰষ্টা ভাষাধিগকে কৰেকট অবিচ্ছেড অবিকার প্ৰদান করিবাছেন;
- ৩ ৷ জীবন, বাধীনতা এবং পুথাবেবণ এই অধিকারগুলির অভূপতি ;
 - a এই অবিকারওলিকে মিরাপদ করিবার কচই মহন্ত-

সৰাকে গৰণবৈক্টের প্রতিষ্ঠা এবং গবর্ণ-বেন্টের ভাষ্য শক্তিশুলি শাসিতের বীভতির উপরই প্রতিষ্ঠিত।

৫। হবন কোন গবর্ণনেন্ট এই
সমস্ত উচ্চেপ্ত সাবনের পরিপন্থী হবরা
উঠে ভবনই ভাছার পরিবর্ত্তম বা উচ্চেপ্ত
করিরা প্র্যোক্ত মীতির উপর প্রতিন্তিত
মূতন গবর্ণমেন্টের প্রতিন্তা করিবার
অধিকার জাতির আছে। মূতন গবর্ণমেন্টের রূপ ও গঠন এইরূপে নিয়ন্ত্রণ
করিতে হউবে যাহাতে গবর্ণমেন্টের উপর
ছস্ত ক্ষমভান্তলি ক্ষমগানারনের মূব ও
মিরাশন্তা বিবানের সর্যাপেক্টা উপ্রোধী
হয়।

সামার এবং ক্ষণিক কারণে দীর্থ-काल्य भवन्याक्ति भवि वर्षम चक्रवता वेशवे प्रवृष्टि वाकिशायत निर्देश। अवे ৰত সৰ্বাত্তৰ দেখা যাত্ৰ যে যত দিন তঃৰ অসহ বা হইৱা উঠে তত দিন মুদুষ্যুগৰ इ:ब मञ्च कविश्वादे हरमः চিবাভান্ত গ্ৰহ্মেটের উচ্ছেদ্সাৰ্ম পূর্ব্বক कः च- शक्तिकारवत् रहशे करत् मा । किस यथम अकडे फेक्स अल्याबिक सम्मनात অপব্যবহার এবং অপহরণ পরস্থরার মধ্যে দেশকে সম্পূৰ্ণ বৈৰভন্ন ব্ৰাষ্ট্ৰে পৰিবভ করিবার পরিকল্পনা পরিক্ষুট ছইরা উঠে তখন উক্ত প্ৰৰ্থমেণ্ডকৈ অপসাৱৰ কবিয়া **ভ**विষাৎ सिवाशहात मूखस्त्रीत वात्रश करा चाणित चिकात बर कर्सरा । बहे **উপনিবেশগুলি এইজপেট বৈয়ে। র** সভিত

হংব ভোগ করিবাছে এবং এইরপ প্রয়োজনেই আন্ধ ভাহার।
পূর্বাচন গবর্ণনেউ গুলির পরিবর্তম সাধনে বাব্য হইরাছে।
প্রেট ব্রিটেনের বর্তমাম রাজার ইভিহাস এই রাইগুলির
উপর প্রকা-শীভম-ভন্ত প্রভিচার প্রভাক উদ্বেপ্ত পূমঃ পূমঃ
অভ্যাচার ও অবিকার হরপেরই ইভিহাস। পক্ষপাভস্ত
অক্সাট কাভের বরবারে আম্বা প্রমাণবর্ষণ এই ঘটনাগুলি
উপরাশিত করিভেছি:—

ক্ষাহিতে অভ্যাবঙ্গক আইনে সন্ধতিদানে তিনি অবীকার করিবাছেন।

তিনি শাসকগণকে জন্মনী এবং শুনুত্বপূর্ণ আইনশুলিও তাঁহার সম্বতিলাভ পর্যন্ত চালু না করিতে নির্দেশ দিয়াদেন; অবচ শাসকগণ যবন আইনগুলিকে চালু করিবার জন্ম তাঁহার সম্বতি প্রার্থনা করিবাহে তথন সেওলির প্রতি কোন মনোযোগ দেব নাই।



মার্কিম যুক্তরাষ্ট্রের জাতীর কলাশালা, 'মেশছাল গ্যাধারি অব আটে'র গমুক্তযুক্ত-তবম (দক্ষিণে ৷, বামে উন্নত শুক্তের উপর 'গাধীমতা'র প্রতিষ্ঠি

আইন-স্ভায় প্রতিমিধি প্রেরণের অধিকার ছাভির পক্ষে অষ্লা, প্রকাপীয়ক রাজার পক্ষে ভয়াবছ।

এ অধিকার বর্জন মা করা পায়ন্ত তিনি বছ বছ জনপদকে রাষ্ট্রমধ্যে এছণ করিতে অধীকার করিয়াছেন।

আইন সভাৱ সহস্তগণকে হ্ররান করিবা তদীর ব্যবস্থা নামিরা লইতে বাব্য করিবার উদ্দেশ্যে তিনি আইন সভাগুলির অবিবেশন প্রধাবিপ্রক, কইদায়ক এবং সরকারী নথিশন্তাধি যে ছলে বক্ষিত হয় সেবান ইইতে দুর্বস্থিত স্থানে আহ্বান করিবালেন।

ক্ষমণপের অধিকারের উপর তদীর আক্রমণের দৃচ্ভাবে বিরোধিতা করে বলিয়া তিনি প্রতিনিধি-সভাতলিকে পুনঃ পুনঃ তালিয়া দিয়াকেন।

এইরণে প্রভিনিধি-সভাগুলি ভালিরা দিরা বহুদিন পর্যন্ত ভিনি পুননির্বাচনে বীকৃত হব বাই। ফলে অধিনর্বর আইন প্রশবনকারী শক্তি ক্ষমদাবারপের বব্যে কিরিয়া আসিরাছে। ইতিমধ্যে রাষ্ট্র বহিরাক্রমণ বা অন্তবিপ্লবে অরক্ষিত অবস্থার রহিষাতে।

ভিনি এই রাইখেলির জনবৃদ্ধি নিবারণ করিতে ষ্থাসন্তব চেটা করিবাছেন। এভচ্ছেডে ভিনি বিদেশীদিগকে স্বীক্রণ-বিষয়ক আইন প্রণয়বে বাবা দিয়াছেন, আগদ্ধকণণকে উৎসাহ্দান বিষয়ক আইন পাশ করিতে অধীকার করিবাছেন এবং মুভন করি চাব করিবার বিবিনিবেব গুলি কঠোরভর করিবাহেন। বিচারালয়গুলির ক্ষতা প্রভিঠাবিষয়ক আইনে সম্বভিনা দিয়া ভিনি বিচার-বাবছার বাবা দিয়াছেন।

কার্যাকাল এবং বেভনের পরিমাণ ও প্রাপ্তির কর ভিনি বিচারকর্গকে সম্পূর্বরণে তাঁহার ইচ্ছার উপর নির্ভরশীল করিয়া তুলিয়াছেন। জনসাবারণকে অভঃসারশৃত করিবার জন্ম ভিনি জনংখ্য নুভন পদ স্ট করিয়া বাঁকে বাঁকে নুভন কর্মচারী এদেশে প্রেরণ করিয়াছেন।

আমাদের আইন সভার সন্ততি না সইয়া আমাদের মধ্যে শান্তিকালে দ্বায়ী সৈহবল বাৰিয়াছেন।

তিনি দামরিক শক্তিকে স্বাধীন করিয়া অসামরিক শক্তির উর্দ্ধে স্থাপন করিয়াছেন—

व्यामात्मत कत्व प्रदृश्त जनत देनक्षम जानाहेवात कः

এই রা**ট্রগুলির অ**থিবাসিগণকে হত্যা করিবার অপরাধ স্ইতে কপট-বিচারের ঘারা বাতকগণকে বাঁচাইবার **অভ**:

বিষের অভাত সমন্ত অংশ হইতে আমাদের বাণিজ্যের বিলোপ সাধনের জভ:

আমাদের সম্বতি ব্যতীত আমাদের উপর করতার চাপাইবার জন :

বছছলে জুখীর বিচার হইতে আমাদিগকে বঞ্চিত ক্রিবার জল .

মিৰ্যা অপরাচে বিচারাৰ আযাদিগকে সমুদ্রপারে প্রেরণ করিবার জল:

পার্থবর্তী প্রদেশে নিশ্রশ আইনের সাধীন ব্যবস্থা হছিত করিয়া, দৈর শাসন প্রতিষ্ঠা করিয়া এবং সীমানা বাছাইয়া এই উপনিবেশগুলিতে অফ্রপ শাসন ব্যবহা প্রবর্তনের উপযুক্ত আদর্শ এবং উপায় স্থাপনের জন্য .

আনাদের অবিকার অপত্রপের ক্ষ্য, আমাদের স্কাপেকা মূল্যবাম আইমগুলি প্রত্যাখারের ক্ষ্য, এবং আমাদের প্রবশ্যক্তিভাবির ক্ষ্যতা আবুল পরিবর্জনের ক্ষ্য;

আমাদের স্বকীর আইন সভা বন্ধ করিবা দিয়া আমাদের উপর সর্কাবিষয়ে আইন করিবার ক্ষমতা তাহাদের উপর ন্যন্ত হুইরাছে বুলিয়া ব্যোষণা করিবার ক্ষমতা

আমাদের আইন বহিত্তি এবং আমাদের কণ্টট্যাপন (শাসনভন্ন) বিবোধী শাসনব্যবহার অধীনে আমাদিগকে আনিবার অমা , ভিনি অন্য লোকের সহিত বোগ দিয়া ভাহাদের প্রশীত কণট আইনে সহতি ভাগন করিয়াছেন।

আমবা উাহার রক্ষীর মর ইহা বোষণা করিবা এবং আমাদের বিরুদ্ধে মুদ্ধ চালাইরা তিমি এদেশের শালনভার পরিভাগে করিয়াছেন।

তিনি আমাদের সর্জ সুঠন করিয়াছেন; সর্জতীর বিধ্যত করিয়াছেন, নগরী পোড়াইয়া দিয়াছেন এবং জনগণের জীবন নাল করিয়াছেন।

অরাজোচিত এবং বর্ষরমূপেও অমূপমের নির্বৃতা ও কপটতার সহিত তিনি বে হত্যা, ধ্বংসলীলা এবং অত্যাচার পূর্বেই আরম্ভ করিরাছেন ভাহা সম্পন্ন করিবার জন্য বর্ডমানে দলে দলে ব্যবসাদার বিদেশী সৈন্য আমদানী করিভেছেন।

আমাদের সমধাগরিকগণকে সমুক্রমধ্যে বন্ধী করিরা ভাহামিগকৈ পদেশের বিশ্বছে অস্ত্রধারণ করিতে, বসু ও ভ্রাড়-গণকে হত্যা করিতে অথবা ভাহাদের হল্তে নিহত হইতে বাধ্য করিয়াছেন।

ভিনি আমাদের মধ্যে গৃহযুদ্ধ বাধাইয়াছেন এবং নিষ্ঠুর

যর্কার নিঞাপন যুদ্ধকালে আবালবৃদ্ধনিতা নির্কিশেষে

সর্কাবস্থার লোকলিগকে নির্কিচারে হত্যা করে ইহা আনিয়াও
ভাষ্যদিগকে আযাদের সীমান্তবালিগণের বিশ্লন্তে লেলাইয়া

দিয়াছেন।

এই সমস্ত অত্যাচারের পদে পদে প্রতিকার প্রার্থনা করিবা আমরা অভি বিনীত ভাবে তাঁহার নিকট আবেদন করিবাছি। প্নঃ পুনঃ আবেদনের উত্তরে আমরা ভবু বার বার শান্তিই পাইরাছি। বে রাজার চরিত্র এতাগুশ প্রকাণীয়ক কর্মসমূহ ঘারা ক্লভিত তিনি সাবীন জাতির শাসক হট্বার অবোগ্য।

আমাদের বিটেশ ভাতপ্রের প্রতিও আমরা কম মনোযোগ षिठे नाहे। ভाशास्त्र आहेन प्रका आशास्त्र छेपद अन्याप्त অধিকার বিভার করিবার ক্রনা যে চেইা করিবাছে সে বিষয়ে चामता जाकांपिनंदक बादव बादव नाववान कतिहा पिहाचि । चामता (य चरवार अप्यान चानिता वन्न चान्य करिया-ছিলাৰ ভাষা ভাষাদিগকে খন্তৰ করাইয়া দিয়াছি। ভাষাদের नर्क वर्षद्धि अवर छैशांद्रणात निक्रे मानिन कामादेशिक। बरे नमक परिकार एतन चत्रीकार कविवार बना जामारकर ও ভাছাদের সমান প্র্বা-পুরুষপর্পের নামে ভাছাদের নিক্ট আবেধন করিয়াছি। ইছাতে যে আয়াদের সম্পর্ক ও আদান-প্রদান বিভিন্ন হওয়া অবশুখাবী ভাষাও জানাইবাছি। কিছ ভাহারাও এই ন্যায় এবং রভের আহ্বানে বৰিৱতা অবলম্বন করিয়াছে। এতদবস্থার আমাদের शासरकाणित क्यामा करमदरे यण युवकारम मक अरर माकि-কালে বিত্র বলিয়া যথে করিতে আমরা বাব্য হইভেছি।

অভএব আমহা আহেহিকার বুক্তরাষ্ট্রের প্রতিবিধি রূপে

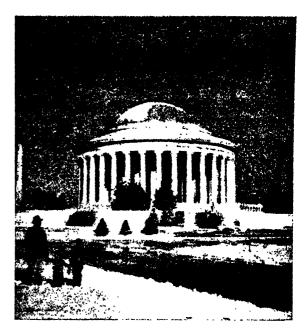
লাধারণ কংগ্রেসে মিলিত ক্টরা জগভের পরম বিচারককে আমালের উক্তের নতভার লাজী রাধিরা লয়ভ উপনিবেশ-বালী জনগণের মাথে ও ভাষাদেরট প্রয়ভ অধিকার-বলে বৃঢ় ভাবে প্রচার ও ঘোষণা ক্রিভেছি যে,

- (১) এই একতাবদ উপনিবেশগুলি মুক্ত ও সাবীন ইইল এবং সাধিকার বলে ভালাদের ভালুশ হওরাই উচিত;
- (২) বিটশ-রাজের প্রতি সমন্ত আলুগত্য হইতে ভাহারা মুক্ত হইল :
- (৩) ভাষাধের সহিভ এেট ব্রিটেনের সম্ভ রাজ-নৈভিক বছম সম্পূর্ণরূপে ছিন্ন ফুইল; এবং
- (৪) মুক্ত এবং বাৰীন রাইকণে মুদ্ধ ধোষণা, লাভি হাপন, ষৈত্ৰী সম্পাদন, বানিজ্য-সম্পৰ্ক প্ৰতিষ্ঠা প্ৰকৃতি হাৰীন রাষ্ট্ৰোচিত সৰ্ববিধ কাৰ্ব্য করিবার সম্পূৰ্ণ ক্ষমতা ভাহারা প্রহণ করিল।

এই ঘোষণার সমর্বনের ছভ ইবরের উপর বৃঢ় নির্ভর রাবিরা আমরা পরস্পারের নিকট আমাদের জীবন, সম্পাদ্ধ এবং পবিত্র আত্মসন্তান আবহু রাবিতেছি।"

৮ই ভিসেখন মবিবার অর্থ্য ওয়াশিংটনের বাড়ী দেখিতে যাই। বাড়ীটন নাম মাউন্ট ভার্পন। ইছা ওয়াশিংটনের নিজের বাড়ী, ভার্জিনিয়া নাট্রে অবস্থিত। এবানে তিনি সপরিবারে বাস করিতেন। ১৮৫৩ গ্রীপ্তান্দে মাউন্ট ভার্পন মহিলা সমিতি (লেভিক এসোসিয়েশন) এই বাড়ীট রক্ষা করিবার ভার নেন। ভদবনি ভার্মাই বাড়ীটন রক্ষণাবেক্ষণ করিতেক্ষেন। ওয়াশিংটন শহর হইতে ইহার সুরুষ ১৬ মাইল। বাসে বাভায়াতের ভাড়া ১ ভলার ১৫ লেন্ট।

भकारम बाख्वारमञ्ज भव वास्ति स्टेश भक्तिम। पृष्ठा-বাসের কর্মচারী এয়ত শিবেজনার বন্যোপাধ্যারকে मणी कविलाम। देनि चामात्र ममनत्रक अन्य अवानिर्देश नवान् । अवधिन रदेण विवी रहेए वन्नी रहेवा अवादम আসিয়াছেন। ক্ষতিপুরণ বাবদ "বিজয়ী" ভারতবর্ষ বিভিড ভাগানের নিকট কি কি সম্পত্তি পাইতে পারে ইনি লে বিষয়ে ভারতের পক্ষে তথির করেন। বছ পোই আপিসের নিকট **इटेल्ड बाउँके जा**र्गस्य वारम **ए**डिनाम । क्लाइनम स्याबि-बाल्ब चन्छित्रत भर्तियाक नमीत प्रतृष्ठ रम्छू चिक्रम ক্রিলাম। চৰংকার রাভা--- দদীর বার দিয়া ব্রাব্র बाउँके जार्बन गराज जिल्लाहरू। वादन नवी, प्रक्रिय शासना क्वन। क्वरन अन्य शबरे (वर्षे। इरेडे (बार्ड (बार्ड पद्व चिक्रम कविनाम। अवनि माकि अस्पान इव आहीन नक्त-- वर्गार एक मेल वरमहाबक्त विषे अएक वसमा भाकियाक मही (तम रक्। कनिकाणांत मनाव मण, कावान ভার চেরেও একটু বছ হইভে পারে। নদীতীরে একট \$লার উপর মাউণ্ট ভার্ণন অবস্থিত। নদী হইতে বাজীর बरः वांकी स्टेटक मशीव वृत्र कृमा क्रिकाकर्यक । वांकीक्र



ট্যাস কেফারগনের স্থতিভবন ওয়াসংটন

मालना, वारमा परवद बल बहेकाबुक छाप। छैनरव भीरह ছটা করিয়া খর। ওয়ালিংটনের সময় খেরপ ছিল ঠিক সেই ভাবেই রাধা হইবাছে। চুক্তিটে বৈঠকবানা ধর। ফ্রান্সের যোচন দুই ওয়ালিংটনকে একটা কার্পেট তৈত্তি করাইয়া পাঠাইয়াছিলেন। কার্পেইট বৈঠকধানায় পাতা বহিয়াছে। যে হাৰ্পসি কৰ্ছে ওয়ালিংট্ৰমের পোষ। নাডনী গান গাহিত ভাষা পাশের বরে সেই ভাবেই সাভাম আছে। এই বর্জনির সামনে বারাকা। ভাষাতে চেয়ার পাভা রহিয়াছে। যেন ওয়াশিংটন ও ভদীয় গৃহিদী এবনই আসিয়া বসিবেন। এবান হইতে নদীর হক মনোরম। উপরে যে খরে ওয়াশিংটন মারা যান পেটা ঠিক দেদিনকার মত সাজান রছিয়াছে। বিভানাট अक्षे शाल्य काय-क्या चल्य कांचा विश्वा हाका। व्यवस्थित बाबाधत । त्यथात्य बैंक्टि, करूर मुघल, कास्त्रिकिश अञ्चिष्ठ ভদানীত্ব বাস্বভলি পভিয়া আছে। ওবাশিংট্-পুছ্ৰীর হাতের ব্দর্শ বেন ভাহাতে লাগিয়া আছে। বাষ্ট্রীর চারিদিকে আনক ভয়ি ও বাগান। নামিধা মনীর ঘাট পর্যান্ত বাইবার পর আছে। সে গ্ৰাহা পৰ সেদিন যেহন ছিল আৰুও ভেষন আছে। আমেরিকার স্থনিপুৰ ইঞ্জিনীয়ারগৰ পথটকে আধুনিক পদভিয় कविवाद क्ष देशद शांद रथक्ष कदा गारे. मळकिए পাপ কাটাইরাই চলিরা গিরাছে। ওরাশিংট্র হইতে প্রমার বোলে আসিরা এই খাটে নামা যায়। খাটের অনভিদুরে ওরাশিংটনের সমাবি। বাড়ীটর বাহিত্রে আসিয়া একট হোটেলে ম্থাক-ভোজন স্থাপন করিবা ইতভতঃ পায়চারি কৰিতেহি। বেৰি একট হোট এল দ গাৰের ভলার একবল

ফলকে লেখা আছে যে, ব্যানাচুদেটন ৰাষ্ট্ৰে যে এল্য গাছের ভলার ওয়াশিটেন বিজোহী বাহিনীর দৈনাপভ্য এহন ক্রিয়া-ছিলেন এট লেই ব্যক্তরই প্রণৌজ।

বৈকালে কিরিবার পথে আনরা আলিংটনে জাতীর সমাধিক্ষেত্রের নিকট নামিরা পভিলান। বছ লৈত ও লৈতাব্যক্ষের
সমাধি এবানে আছে। পাহাছের গা বাছিয়া সমাধিশ্রের।
পাহাছট বুব উঁচু নর। পাহাছের উপরে সেনাপতি লি'র
বাজী। লেনাপতি লি আনেরিকার গৃহর্ছে ছক্ষিণের পক্ষে অয়
বারণ করিরা পরাজিত হন। ইহারই আলেপালে তথম অনেক
বুছ হইরাছিল—বাজীট এবন নিউলিয়মরপে রক্ষিত। এই
পাহাছের উপর হইতে পটোম্যাকের উপরে ওয়ালিংটন
বহরের চুত পরম রম্বীর হেবায়। বল্যোপাধ্যার মহালর ও
আনি ওবান হইতে হাটিরাই ওয়ালিংটনে কিরিলান। পাহাছের
আনতিচ্বে পটোম্যাক সেতু। সেতু পার হইলেই ওয়ালিংটন
বহর। আলিংটন সমাধিক্ষের শহরের পশ্চিমে, পদরক্ষে
সাঁকো পার হইবার সরম আলিংটন পাহাছের পিছন বিরা
অভগানী প্রব্যের লোভা আমাদের উভরের মনকেই পিছনে
টানিভেছিল।

अवाभिरहेम मनवी माकिम काजिब स्रात्मिक-प्रकृत , देश সমত বেশের ভাতীর এক্যের প্রতীক। বে ভাইচরিপট রাই লইবা যুক্তরাপ্র পটিত ওরাশিংটন ভাষাদের বহিতুতি। ইয়া नम् बाद्धेत कुना (नीवन्छन । अरे मस्दवत अवृधित क्ष वैश्वा नक्षा महारे। महकादी देशिमीयादश्य अधारम अपूरे विचनातीरे मम : कनकावध यहिम । সतकावी (भौवावनीव अख শোভা অভ কোন দেশে দেবি নাই। সরকারী বাড়ীভদির हबरकात छिकारेन : निर्द्वानकार्या नानावित बर्द्धरतत वावशत महामदक्षक । क्यां भिष्टेन चार्के श्रांनाडी, चार्कारेक-च्यम ध ट्याबार्डेड श्कित्व कवा शूट्सर विषयाधि। खेबाबी, ट्रेडे ष्टिभाडे (य.चे. चूथीय कार्ड, क्रांबरमद नारंदित, भाग-আমেরিকান ইউনিয়ন প্রভৃতি বাড়ীওলি সভাই ত্রপগোরবে অপ্রতিহ্নী। রাভাওনি সরল ও সমাভবান : প্রশভ্যা ও यप्रवात अस्तत पूजना मारे। प्रमुक्त मतकाती भीराख्यीत বিভাগ এবং গঠন সুপরিক্ষিত। এই আকাশচুখী প্রাসাধের रात भारत रकान रकान वाको चाकिवक केर्द केंग्रेश ननशैन হুঙ-সমভার হানি করে সেইকর ঘশ ভগার বেশী বাড়ী ভৈত্তি করা এবানে নিধিছ। নগরীর পৌৰ-সমভাই ইহার প্রমা বৃদ্ধি कविषाद्य ।

এক দিন (৭ই ডিলেখর শনিবার, ২১শে অএহারণ)
এবানকার চিভিরাবানা বেবিতে গিরাহিলান। উঁচু নীচু পাহাঞে
ভারগার চিভিরাবানাট অবহিত। ছরিরা কিরিরা বেবিতে
বেপ মনোরন। হাতী, সিংহ, জনহতী, গভার প্রভৃতি
ভানোরার এড়েশের সাবারণ লোকের নিকট বিশ্বরকর জীব।
আনার কাজে পাবীর বর্তনি স্কাপেকা ভাল লাগিল।

प्रश्तवत्वव प्रकावि भागी , अक अक्षेत्र पत्त त्यम प्राथनप्र উটিবাৰে। আয়াবের বেশের কাক কোকিল ও শকুন শ্বড়ে इफ्कि स्टेबार्ट । अकि बर्फेट त्वन अरबद देश्यांन ७ कीवनी-শক্তি সম্ভটিত হইৱা গিৱাহে। নিঃসদ নিৱাৰক কোভিল\$ বঁকিতেছে। অধন্য কাকও এবানে নীরব। এক রকবের काक दिविनाय , जाद बाह अवर यूक नावा । क्षेत्रन भावी । **डेडें नकी जानक कांग** हारियान । डेडेंगकोड किम खकांक : ক্ষেকট সাধান বহিষাছে। কথাৰ নামক বুব বড় একট बारनानी भकी (पविनाय। अक्षेत्र करक प्रक्रित (बक्ष-विवानी শেলুইন পঞ্চী বহিষাতে। ভূই পাষের উপর ভর দিয়া যাখা ৰাভা কতিয়া হাভাইয়া আছে। সাম্যের বিকে আরও চুইটা চামছা পাৰের যভ কুলিভেছে। জলে সাঁভার কাটবার সময় এই ছুইট ব্যবহার করিতেছে। শীভের বেশের পাবী বলিয়া ৰৱের মধ্যে বিশ্বর বরক রাখা হইবাছে। মাধে নাবে গাঁভার कार्द्भित क्रमक्रक । मुख्य कार्यादादात मर्या कामगाका छ সাদা বভ মহিষ বেৰিলাম। আলপাকা মেষকাভীর ; ভবে चाकांत अक्ट्रे रक अर्थ नेना नदा। रक प्रदिष चरमक রকমের আছে , তছব্যে একটার সর্বাদ ছব্যে মত সাদা।

আবার ওরালিংটনে পৌছিবার করেক দিন পরেই বেশব্যাপ্তি করলা-বনির মন্ত্র বর্ষণট আরম্ভ হয়। জন লুইল
মন্ত্রদের নেতা। মন্ত্রদের মধ্যে তাঁহার অসীর প্রতিপত্তি।
পূর্বের একট বর্ষণটের লমর বালিকদের হাত হইতে সরকার
মৃত্রনালের জন্ম বনিওলি পরিচালনার তার সহতে প্রহণ
করেন। সে সমর সরকারের সলে মন্ত্রদের বাহিনা এবং অচান্
বিষয়ে এক চুক্তি হয়। সে চুক্তির মেরান ১৯৪৭ প্রীটান্দের
৩১শে মার্ফ পর্যান্ত। ১৯৪৬ সালের মবেরর মানেই লুইল
পর্বন্দেইকে ১৫দিনের নোটশ দিরা বলেন বে তাঁহারা প্রাতন
চুক্তি পনর দিন পরে বাতিল করিরা দিবেন। ইতিমধ্যে
সরকার যদি মৃত্র চুক্তি না করেন তবে তাহার পর মন্ত্রপথ
বিনা চুক্তিতে কাল্পে বাইবে না। বনিওলির পরিচালনার
ভার তর্থনও সরকারের হাতে।

এই বর্গনটে সমর আমেরিকা ও ইউরোপ চকল ক্ররা উঠিল। শীত আগত। মন্য ইউরোপে ক্রলা নাই। বিলাভে ক্রলার উৎপাদন অপ্রচুর। বিলাভ, ক্রাল ও ইউরোপের অভাত দেশ আমেরিকার ক্রলার উপর অনেক্রানি নির্ভর করিরা বাকে। ক্রলার অভাবে দেশের বহু কার্যানার উৎপাদন বহু ক্রনা বাইবে। আগতপ্রার শীতে ক্রলার অভাব ক্রনে ত রাজ্যই ক্রিরা বাইবে।

১৯৪৬ সালে আমেরিকার বত বর্ষবট হইরাছে এলেশে এত বর্ষবট পূর্কো কথনও হর নাই। রুভোত্তর পুনর্গঠনের সময় ইহা স্বাভাবিক হইলেও স্মৃতিভিত ও বৃচ্নীভির আবস্তকতা স্ক্রা করে।

ववरवय कामक्किन क्वम वरे वर्षपटित चारनाव्याव करि ।

শ্রেলিভেক্ট ই ব্যান কিরপ ধনোভাব অবলধন করিবেন ভাষা লালাচনা চলিভেছে। তিনি কিছ তবনও নীরব। মুন্তের সময় দক্ষিণ-পশ্চিমের রাষ্ট্রগলি ছইতে নিউ ইরর্ক পর্যান্ত ছাজার ছাজার মাইল বড় তেলের পাইপ মাটির নীচে বসান ছইরাছিল। সেগুলি তবন বেচিয়া দিবার কথা চলিভেছে। সরকার এবন সেগুলিকে কোন কোম্পানীর নিক্ট ভাড়া দিতে রাজী ছইবেন কিনা এবং যদি হন তবে কোন কোম্পানী ঐথলি ভাড়া লইয়া পেটোলের বারা গ্যাস উংপাদন করিয়া পাইপ-সাছায্যে সেই গ্যাস নিউ ইয়র্ক পর্যান্ত আনিয়া দেশের নীত এবারের মৃত নিবারণ করিতে পারিবেন কিনা ইছা লইয়াও আলোচনা চলিভেছে।

মন্ত্রদের কোন কোন বিষয়ে অপ্রবিধা থাকিতে পারে, কিছ তাঁহারা উচ্চ হারেই বেতন পান। বিশেষতঃ লুইসের সঙ্গে সরকারের চুক্তি বিদ্যমান। প্রার এই—পেই চুক্তি একতরকা আদিরা দিরা কতিপর ব্যক্তির খার্থ সিছির ক্ষত সহসা সমপ্র আতির চুঁটি টিপিরা ধরিবার অবিকার স্বইসের আতে কি না ? যদি থাকে তবে আমেরিকার গণতন্ত্রে কি হইল ? সমপ্র আতিকে চাপে ফেলিরা ও তর দেবাইরা ব্যক্তিগত বা দলগত সার্থদিছির প্রচেষ্টা ত ক্যানিষ্ট পদ্ম। ইহা দক্ষ্যতার নামান্তর মাত্র। প্রমেরিকার কীবন্ধ গণতন্ত্র ইহা সহিবে কি ? যদি সহা না করে তবে ইহার বিক্রছে গণতন্ত্র-সন্ত্রত কি ব্যবহা অবলম্বন করিবে ?

ক্ষেক দিন নীৱৰ পাকিয়া প্রেলিডেট টুম্যান তাঁছার নীতি খোষণা করিলেন। জিনি বলিলেন, ভাতির সঙ্গে চুক্তি করিরা ভাষা এক ভরকা ভালিয়া দেওয়া বে-আইনী। কার্ব্যে যোগদান না করিয়া মজুরগণ বে-জাইনী কার্য্য করিভেছে। অভএব ভিনি মনুরদিগকে কার্য্যে যোগদান করিতে আহ্বান করিলেন। কল হইল না। তথ্য তিনি আদালতে অভিযোগ উপস্থিত করিলেন। योगिन इर्के---(১) वर्षप्रकेटिक कृष्टि--বিক্লম অভএব বে-আইনী ঘোষণা করা; (২) সুইস মন্ত্র-দিগকে বাহাতে এই বে-আইনী কাৰ্ব্যে লিপ্ত হুইতে নিৰ্দেশ না বেন ভজ্জ তাহার উপর নিষেবালা ভারী করা। সুইস জ্বাবে বলিলেন-আৰেৱিকার একট আইনে প্রত্যেক মন্ধরের वर्षपर्केत व्यविकाद श्रीकृष्ठ एडेबार्ट । এই व्यावेटमत वरम তাঁহার কাল বৈব। সরকার পক্ষের মতে সমগ্র জাভির প্রতি-निवि अवकारवय भरत पृक्षितकारशांत्र अ बारेन बार्थराका। বে জজের নিকট বিচার চলিল, তিনি পূর্বের আইন সভার সভ্য विरम् अवर अवे चारेन श्रायात्र अक्षन श्राम উत्पाद्धा हिल्म। देशांव शर्स्स मुदेश अकड़े यक वर्षपड़े-मरकाष्ट রামলার এই ভাভের নিক্ট ভিভিন্নাহিলেন। কিন্ত এবার রার ভাতার বিরুত্তে ত্ইল। লুইসের উপর এবং ইউনিয়নের केशव विन किनादि कवियांना वार्या क्रेन। वर्षकं हिन्द कविश्वामात श्रीवश्य (मर्टे शास वाक्रिय।

ইউনির্মের ভহবিলে মজুভ অবের পরিবাণ এবং সুইস্ ইউনিয়নের নিকট যে বেভন পাইভ ভাহা ভাষাবের কলনাতীত। আমার যত চুর মনে আছে সুইলের বেভন ছিল বাৰিক ২৫০০০ ভলাৱ বা ৮৩০০০ ছাজাৱ টাকার কিকিদ্বিক। এই রায়ের উপর প্রথীন কোর্টের মভানত শানিবার ক্র সরকার নিকেই সুপ্রীম কোর্টে আপিল দাৰিল ক্রিয়া নিবেদন ক্রিলেন যে ব্যাপারট ভাতীয় ঋপত্পূৰ্ণ এবং জন্মৱী, যাহাতে সৱকাৰ ক্ৰভ কাৰ্যাকরী পদ্ধ। অবলম্বন করিভে পারেন দেইজভ ভাষারা অবিলয়ে স্থপ্রীয় কোর্টের মভামভ প্রার্থনা করিভেছেন। সুইলের বিরুদ্ধে ভর্মন ব্দনমত বেশ গভিয়া উঠিয়াছে। মনুরদের বেতনের হার ব্যক্ত हिन मां। चक्रचः नृषियोत (य-काम (मानत मन्तरामत निक्र) সে হার কল্পনারও অভীত। উপরত্ত সরকারের সঙ্গে তাঁলের চুক্তি বিভয়ান। সে চুক্তির মেয়াদ যাত্র আর করেক মাস হিল। সে অবহায় একতরকা চুক্তি ভল করিয়া **ভাতী**য় গবর্ণমেন্টকে অবাভ করিয়া আভির উপর অবরদন্তি করা গণভন্ত-विद्यारी, चल्कद निक्लिल । नक्टबर्ट श्रीय कर कर ग्रा দুইস তখন সহসা এক দিন সকলকে বিশ্বিত করিয়া বর্গুৰ্ট প্রভ্যাহার করিলেন। বলিলেন-স্থপ্রীম কোর্ট বাহাতে বীরে সুত্তে শান্তিপূৰ্ণ আবহাওয়ায় এই অক্তবপূৰ্ণ মানলায় বিচার করিতে পারেন সেইজন ভিনি ধর্ম্বর্ট প্রত্যাহার করিলেন।

আমার ওয়াশিংটন পরিভ্যাপের করেকদিন পর্কেই বর্শ্বরট প্রত্যাক্ষত ঘটন। কাতি স্থতির নিঃধান কেলিন। প্রতন্ত্রের বিজয় স্থচিত হইল। আমার এণেশে অবস্থান কয়গার অভাবে ৰভিত বা অপুৰিবাঞ্জ হইবে না-- মনে করিয়া আমিও লাভি পাইলাম। কাগৰগুলি তখন লিখিল যে ইহাতে সম্ভাৱ সমাবান হইল না। আলোচনা ধারা মন্ত্রদের দাবিওলির মীমাংসা করিতে হইবে। নচেৎ বর্তমান চুক্তির মেরাদ कृबाहरण चर्नार ७५८म मार्कित भव भूनवाब ममका (मना पिरंत । লুইলের বিরুদ্ধে জনমত পুস্পই রূপে দেখা দিল। এক ব্যক্তি জন্যার রূপে বাহাতে জাতির টুটি টিপিরা না ধরিতে পারে ভক্ষনা আইন প্রণয়নের দাবি উঠিল। এ দেশের লোক আলোচনা ছারা বিরোধ-মীমাংসার পক্ষপাতী। নিয়োগ-কর্তারা দাবি করিলেন থে, মজুরদের যদি সঞ্বত্ত ভ্ইরা चालाहमा हामारेवात चिकाद बाटक ভবে ভाशास्त्रहे रा चालाहमा हालाहेबाव समा मध्यवस स्टेबाव स्विकात बाकित्वमा (कम। উण्ड शक्य चालाहमात कमा बनर আলোচনা বাহাতে কলপ্রস্থয় তজনা উপযুক্ত ক্ষেপ্রপ্রভ कदाहे भदकारवद कर्चवा । भदकारवद बहे कर्चवा भागम করিবার কন্য যথোচিত ব্যবস্থা আছে না ভাষার সংস্থারের প্রয়েখন ? এইরূপ নামাবিধ আলোচনা ভবন চলিভে नातिन ।

वादकी बृहदात वेदछन कईशरकत मस्वत बहुबहारत

আমার কার্য্য ক্রভগতিতে অঞ্জগর হইতেছে। প্রত্যেক বিভাগের প্রধান কর্মচারী সমত্বে ও সাদরে আমার কার্য্যে সাহায্য করিতেছেন এবং পুম: পুন: আলোচনা হারা আমার মমত হিবা ও প্রপ্রের নিরসন করিতেছেন। ইহারাই আমার আমেরিকার গোটা প্রোপ্রাম হির করিয়া সর্বহারে কর্তৃপক্ষের নিকট আমাকে সকল প্রকারে সাহায্য করিবার জন্য আখাগ দিলেন।

বাজেট ব্যুবোর কর্ম সমাপনাতে টেজারীতে যাই।
সেধানে করেকদিনের জন্য আমার বৃল কর্ম্মল ভাপিত
হইল। আমার বসিবার জন্য যে ধর নির্দিষ্ট হইমাছিল
ভাষার পাশেই হোয়াইট হাউস, মব্যে একটি রাভার ব্যবধান।
এবানেও উর্ম্ভল কর্ম্মচারিগণের মধুর ব্যবহারে আরুট্ট
হইলাম। ইহাদের কার্বা থেমন স্পৃত্তলাপুর্ব তেমনি
গভীর। ইহারা কোন বিষয়েরই একেবারে মর্ম্মতে প্রবেশ
না করিয়া এবং আদ্যোপাত না জানিয়া ছাতে না। ইহাদের
ট্যালা রিসাচ্চ ত্রাফ বা কর বিষয়ক গ্রেষণা শাখার
সংক্রই আমার ধনিষ্ঠ পরিচয় হইয়াছিল। এক একজন
কর্মচারী এক একটি ট্যালা বিষয়ে গ্রেষণাম রত আছেন।
পৃথিবীর কোধার ক্রিমণ পরিবর্জন হইতেত্বে সে সম্বের্ক ইহারা

সর্বাদা-সভাগ। এই কর্মচারিরলের মধ্যে একজন মহিলাও बिल्म। छिमि जावकरव विस्मब्द। अस्तरमञ्जू প্রকাশকগণের প্রচেষ্টাও আমাদের কল্পনাতীত। শিকাগোর क्यान क्रियादिर राहेन यायक श्रकामकन्त्रत्व अक्षे है। स-সার্ভিদ আছে। তাহারা পুরিবীর সমস্ত দেশের ট্যান্স সম্বন্ধে যাবতীয় ধৰৱ সংগ্ৰহ কৱিয়া প্ৰাহকগণকে নিয়মিত क्रांश भववदाष करवन। भवकावी अभिमधनित देशारमव গবেষণালক বিষয় মাবে মাবে সাধারণের অবগতির ক্ষ্য প্রকাশ করে। যে আপিদেই বিয়াছি দেখান্ডার लाटकतारे जारायत अकामिज वर यूमावान अह ७ तिरमार्हे বিনাৰুল্যে সাঞ্জছে আমাকে দিয়াছে। অনেক সময় আমি সবওলি নিতে পারি নাই-বাছিয়া দইতে হইয়াছে। वेशामद कार्यामकि एविशा मुक्ष इहेशाहि . हेशाएद অমাহিক ব্যবহার আমার হুদ্ধ পদা করিয়াছে: ইহারা बिरक्दा छ।करदहा पिता अस्मक शृक्षक निष्क्रिक करण अरमन्त्र अभिादक भाशिकेटल एक ।

১০ই ভিনেপত্ত সকল্পের নিক্ট (২৮লে অগ্রহারণ, মুখলবার) বিদায় গ্রহণ করিয়া হোটেলে ফিরিলায়। পর্যদন ওয়ালিটেন ভ্যাস করিব। আর এখানে ফিরিব না।

মহিলা-সংবাদ

ই, আই বৈদের ডেপুট চীক কথাসিয়াল মাানেজার ইয়িতীক্ষনাৰ দাদের কছা আহতী কলাটি গুছ এ বংসর কলিকাতা বিশ্ববিভালয় ছইতে ইংরেজীতে অনাস পরীক্ষায় মেহেদের মধ্যে প্রথম স্থান অবিকার করিয়াছেন। ইনি ম্যাট কুলেশন এবং ইণ্টারমিডিডেট পরীক্ষায় উচ্চ স্থান অবিকার করিয়া সরকারী রুভি লাভ করেন।



ঞ্জিকল্যাণী ঋষ্

পূৰ্ববঙ্গের হিন্দুর সমস্তা

শ্রীশশিভ্রণ দাশগুপ্ত

পূর্ববিদের क्षिपूर्णण চঞ্চ ছইরা উঠিহাছেন ; यूप যেরূপ বক্তির श्रमान, शिक्षमवत्र--विरम्भणः कत्रिकाणा अवर णाहात महद-ज्लीत मन्द्रक भक्ष चितिश शृक्षवत्रवानिगत्वत क्रमवर्षमाम क्न-चन्न । अहेक्पहे अहे छाक्राजात श्रमान । अस्ति साहात याहां है बाक को (कन, मृत्य कामरा करनटकड़े और हांकना-প্রস্তুত প্রধানী মলোহভিত্র যৌক্তিক্তা সহতে সন্দিহান। এট প্ল'দ্ৰী দৰোব্বতিকে কেছ কেছ অকারণ জীকতা বলিয়া অভিহিত কৰিণ্ডেছি, কেলকেং সঞ্চারণ অধুরদর্শিতা বলিভেছি, কেছ কেছ সঞ্জিকা মনোবৃতি বলিয়া বিক্ত করিতেছি। कार्वित कार्वित कार्य चार्वित बद्धन बक्टी छात्रत विष्याति, 'ब-काजीह शदितिमा' कहेत्व शकावा वीत्रव धजन 'কাডীর প্রিনেশে ওলিয় জাসিতে চার ভাষারা চলিয়া আপ্তক, যাহাতা অপারগ তাহারা আবার বীরের মতন সংগ্রাম करिकारे भन्द्र एक मनदौरत अनुष्ठांच करूक। बढे मणि बन्द भिर्ति संख्य प्रृष्टिकाले (य अकृष्टे) समस्य वीद्रश्च कि **खारत समुद्रा**ख ष काल भारत करू कुन्मान्दिन अहे प्रकोद तक्छित वर्षन শ্বান্তও মর্থ্যালাটন কবিতে পারে নাই ফলে ভাছারা পৃথি-পশ্চিম জুড়িয়া একটি বুহুৎ লোলায় নির্ভন পুলিয়া পুলিয়া আহিংমের স্থাপে আভিবাল করিতেছে :

গঞ্জীর সঞ্চাতারে ব্দিয়া পাছল প্লাতারের অধিবাদিসন সকছে অন্যেকই অনেক গবেষণা করিতেছেন; আমার ব্যক্তিগত অভিভাতা যাদ সতা হয় তবে এই গবেষণা হইতে যে নির্গলিতার্গট উপদেশ এবং মন্তবাদি রূপে প্রকাশিত হইতেছে তাহাতে প্রবিশের পিত-প্রকোশ বৃদ্ধি পান্ধয়া বাতীত আর বিশেষ তেমন কিছুই ঘটতেছে না। গতীরসূল ক্তের উপরিভাগে অভিশয় উংলাহসহকারে বানিকটা প্রশান্তিকর প্রকেশ কোরে ক্যানে ঘ্যানি দেবার চেপ্তা ক্রিলে যে কল হয়, এ ক্ষেত্রেও অনেক্যানি দেবার চেপ্তা ক্রিলে যে কল হয়, এ

বাহির ছইতে আমর। অনেকেই মনে করি, প্রবংশর হিন্দুগণের বর্তমান বিপর্যায় পাকিন্তান প্রতিষ্ঠার হলে একটা জাকমিক বিপর্যায় মাত্র , একটা উর সাম্প্রদায়িক রাষ্ট্রব্যবস্থা চার্ক্ইবার দর্দ্দ সমাজ-জীবন,জাবিক-জীবন এবং রাষ্ট্র-জীবনে নিম্পেষ্টিত হইরা যাহবার আশক্ষা। জারভবর্ষের বর্তমান পারিপার্থিক ঘটনাবলী লক্ষ্য করিয়া এই আশক্ষাকে একেবারে অমূলক বলিরা উড়াইয়া দেওয়া আৰু আর সন্তব্ন নয়। পূর্ববেদের ইক্রংহানি, ধর্ম শিক্ষা ও সংস্কৃতির ক্রম-বিলোপের আশক্ষাক্ষনিত উদ্যিতাকেও একেবারে অধীকার করা যায় না। কিছু সর্বাবেশ্ব বিজ্ঞান অভ্যানি অস্থার বোধ করি-প্রবিদের হিন্দুগণ নিক্রেদের এত্থানি অস্থার বোধ করি-

তেছে কেন ? সন্তাবিত বিপদের সন্থাৰ আদ্বহনার কর্ম দিয়াইবার সকল না লইয়া অবিকাংশ লোকই পলাহনের ক্ষোপ বুঁজিতেতে কেন ? ব্রিটিশ কুশাসনের বিক্রতে বাহার! এই অর্থ শতাকী ধরিয়া সর্বাস্থ পদ করিয়া যুদ্ধ করিতে পারিয়াছে তাহার! আৰু সন্থাবিত ছংশাসনের বিক্রতে সভ্তবন্ধ ছইবার সাহস পাইতেছে না কেন ? এই প্রপ্রাঞ্জির যে উত্তর মনে আসে ভাহাতেই প্রতীতি ক্ষে প্রবাদের হিন্দুগণের জীবনে নিশ্যই প্রকাণ্ড একটা ছ্র্মেসভা দেখা দিয়াছে।

আরও ভাবিবার বিষয় এই পাকিভান প্রভিষ্ঠার কলে পুरान्त जाभारा-कामारा अर्थक रा बक्ता आखाविक मांगः ता भरवा अल-अधानात्र कठक चाकाच करेतात चानवा चुत প্ৰবল হইয়া উঠিয়াছে ভাছা মনে হয় মা। আমাদের সাম্প্রতিক অভিজ্ঞত হইতে বলিতে পারি, পুর্ববেচের পরীর অনেক অঞ্চ ঘুরিয়াও আমাদের এ কণা মনে হয় নাই যে পরীবাসী হিন্ এবং ফল্ড্যান প্রভিবেশিরণের ভিভার বছগ্নিকার সম্বর্ভের এমন পরিবর্ত্তন ধটয়াছে বাহুংছে একে অপরের বৈরিভাভারে বিশিক্ত রক্ষমী যাপদ স্বরিভেছে। পুর্বের ভাষারা প্রভিবেশী রূপে ্যরাপ পরপ্রের পরন্পারের সহিত দৈননিম জীবনে জড়িত ছিল, अर्थे अश्व श्री के क्षेत्र के कार्य । अर्थे के मार्थि- भक्षा थे। किम्प-সভার সভল এটবা বাহির হইয়া মনে হইয়াছে, সভা ডাকিব काशादमत अक १ यानाता देसम्भिम कौराम भटन भटन भटन प्रा লচভভাবেই একে অপ্তের সৃষ্টিত মিলিত হট্যা বহিয়াত্ত হঠাৎ নুজন কবিয়া মিলন-গ্ডা ডাকিয়া ভাহাদের ভিতরে অমিলটাকে খোঁচাইয়া ভূলিয়া লাভ কি ? কিছ মলা এই এই সাম্প্রদায়িক মিলন সত্ত্বে এই সকল সুদূর পরী वक्रान्त हिन्द व्यविवानिशेष श्रेकार्ड वा व्यक्षकार्ड (प्रमण्डार्श्व कम १ क्षेत्र करेश केरिशास । एमन श्वात्वत व्यक्तिमिन्द्र সহিত একট খনিইভাবে মিলিবার স্থােগ পাইলে দেখা যাইবে, যাছারা বহু পুর্বেই নানা কায়। বাপদেশে পশ্চিদ বলে আসিয়া জান্তানা গাড়িতে পারিহাতে, লোকে ভাকাদিগকে বিধাভার বিশেষ নির্ম্বাচিত ভাগবোন বাক্তি বলিয়া মনে করিতেমে . যালারা এখনও আসিয়া খাটে মাঠে বাটে তাঁবু খাটাইয়া কোনকলে দিন কাটাইতেছে। ভালাদের বৃদ্ধিতা সম্বদ্ধে राहित्व (यहे या मान्य अवाम कराक ना कन, खिलाब **ভিভৱে অনেকেরই যেন ইছাভেও একট: সায় রহিয়াছে, এবং** भावित्म एवज जावादाच अरे भावत भविक एरेवि , वाववाकि त्य प्रम अभित्य आभित्य अत्करात्वरे समय छाष्ट्रांता एव নীরবে নিজ্পিগকে হতভাগ্য বলিয়া বিকার দিতেছে, নভবা বড় গলার গাল পাড়িবার চেষ্টায় আছে। আলা করি বলিয়া

থিতে হইবে না যে ইহার সবগুলিই একট। প্রকাভ চুর্বালভার লক্ষ্ম ।

আমাদের মনে হয়, এই পলায়নী মনোর্ভির কারণ সভাষ করিতে গেলে দেখা যাইবে ইহার পশ্চাতে রহিয়াছে আধিক জীবনের একটা বিরাট বিপর্যার। বঙ্গবিভাগ এবং পাকিছান প্রতিটা আর্থিক জীবনের সেই বিপর্যারকেই একটা শোচনীর পরিণতি দান করিয়াছে, আমরা এই প্রত্যক্ষ নিষিষ্টটাকেই একমাত্র হেতুর আগনে বসাইয়া লম্ভ সম্ভার বিচার করিতে বসি।

পূर्ववानव विमुख्य वर चार्विक विभवास्यव कथा छैठितार আমরা একবাক্যে একট কথা বলিতে শিবিয়াছি-ইহা শাকিতান প্রতিঠারই প্রত্যক্ষণ। আমরা যাহার। আর একট দূরদর্শিভার পরিচয় দিতে চাই ভাহারা আর একটু পিছনে किविया राजि. अहे वन दरनादात जीन नानामत कराजहे विन्द-गरनत अरे जार्निक विभवात । किन्न जामारमत वादि अदर ভাহার কারণ এত সহজ এবং এত অল্পকালের যনে হয় না। এই আৰিক বিপৰ্যায় পাকিসান প্ৰতিষ্ঠাৱ তিন চারি যাসের किछदबरे परि मारे-जीन भागमाब प्रभ वर्त्रदब भरवाछ परि माहे--- (कान चाकशिक बाबरेनिक कावर्गं पर्ट नाहे : बहे विभवात प्रदेशास र्गराचत बीत्रमहत चार्यस्य, विविव श्रीछ-ক্রিয়াশীল সামাজিক শক্তির মিরম্বর যাত-প্রতিবাতে এবং লেই বিপৰ্বায় ৰটাতেছে প্ৰায় পাঁচিৰ বংগর কাল ধরিয়া। ভাতীয় জীবনের ভাবর্ডনের ভিভবে যে বিপর্যায়ের বীক উঠাছিল, शक मण वरमदाव अकडी विट्यं बाह्रेवावचा अवर मर्वात्याय পাকিভান-প্রভিচারণ একট একাভ অপ্রভাশিত বিরাট পরি-বর্ত্তন সেই বিপর্যায়কে নানাভাবে সাহাথ্য করিয়া বর্তমান পরিণতি ভান করিয়াছে।

बरे क्वांक्रेरक शतिकांत्र कतिता वृत्तिए स्टेरल श्र्वारकत হিন্দগণের আধিক শীবদের কাঠামোট ভাল করিয়া বিপ্লেখণ कविवा (एवं। पवकाव। পূর্ববেলর ছিন্দু বলিতে এখানে चावता विरामय कतिया वदाविक हिन्दुनर्गत कथारे विनार्शिक : আৰ্থিক জীবনে বিপৰ্যান্ত হুইয়াছে ভাছাৱাই সৰ্ব্বাপেকা বেৰী-----এবং বাছভাগে করিয়া পশ্চিমবলে আভানা গাড়িভেছে মুখ্যভ: देशाबादे। अक्ट्रे बीवजाद नका कविदनदे द्विटिंग शाहेब. এই মধ্যবিভ হিন্দুগণের আবিক বিপর্বার ঘটতে আরভ कृतिशास वहत नैकिटनेक चार्य हरेए - चात जाहाराज বাৰভাগের সৰভাও আজিকার নর, এ জিনিষ্টিও আরম্ভ **एरेबाट्य १ हिम वरमद शूर्क एरेट्छ। माध्यमादिक बाका अवर** তব্দনিত রাজনৈতিক পরিছিভিতে আৰু আমরা একাছ অসহায় হইরা পঢ়িরাছি বলিয়াই সম্ভাট আৰু এত বঢ় করিয়া চোৰে शक्तिहास, चकीत बीत्रमस्य करण अक्षिम त्म चानारस्य पृष्टे এড়াইরাই চলিরাহে। বহুদিনের ধার্কাটা আৰু কেন্দ্রীভুত হুইরা ७२६ दिस्त अनुक स्टेश देशियात शाक्तिवात्त बानात ।

পূৰ্ববদেৱ মৰাবিভ হিন্দুগণের আর্থিক জীবদের কাঠাবোট বিশ্লেবণ করিতে পেলে প্রথমেই একটা জিনিস চোধে পড়ে. পূৰ্ববন্ধ কৃষিপ্ৰধান দেশ : এই বিংশ শতান্ধীর মৰাভাগ পর্যায়ও সেখানে উল্লেখযোগ্য কোম শিলপ্ৰতি**ঠান ও শিল-সম্পদ গডি**য়া ওঠে ৰাই, এমৰ কি কোন ধনিত সম্পদ্ধ আবিষ্ণুত হইয়াছে কিনা সন্দেহ (এখানে পূৰ্ব্যবদ বুলিতে আমি বৰ্ডমান পূৰ্ব্যক অৰ্থাং পাকিয়ান ৰাষ্ট্ৰভুক্ত পূৰ্ব্ববদ ও উত্তৰবদেৱ কৰাই বলি-তেছি)। স্থতৱাং প্ৰষ্টই দেখা যাইতেছে এখানকার অবিবাদি-গণের আর্থিক জীবনের বনিরাদ রুধ্যতঃ কৃষি-সম্পদের উপরে ছাপিত। কিছ যে উপার-পছভিতে পূর্ববাদের বর্ণছিলুগণ মধ্যবিত সম্প্ৰদাৱভুক্ত হইয়া পভিয়াছে ঠিক সেই উপার-প্ৰতিতেই তাহাৱা আছে আছে ভূমি-সংশ্ৰুৰবিহীন হইৱা পভিয়াছে। এইবানে গোভায়ই এই ম্বাবিত সম্প্রদায়ের আর্বিক বৰিয়াদে একটা কুমিমতা এবং তাহার কলে একটা চুর্বলতা त्वर्थ। पिन : वर्षार पृथ्वदानत काणीय कीवामत वार्षिक **किवि**त স্থিত এই মধ্যবিত স্প্রদায়ের আর্থিক ভিতির যোগ রহিল ना। कृषि-मश्यव ज्यान कविश्वा अहे मध्यमाश्रहे यक शूर्ववरक শিল্প-সম্পদ গভিষা ভূলিতে পাৱিত তাহা হইলেও সে পূর্ববৈদে শিকত গৰাইতে পাৱিত কিছ যে কারণেই হোক, পূর্ববেলর কৃতীৰণও ভাঁছাদের শিল্প-বাণিকা প্রভিভার বিকাশের ক্ষেত্র পাইয়াছিলেন বা নিৰ্বাচন কবিয়াছিলেন পশ্চিমবলে : আৰিক বনিয়াণ স-ভ্যাতে প্রতিষ্ঠিত না থাকিবার কলে এই মণাবিত্ত জীবনে একটা জাসিহা যাইবার প্রবণতা জাপনা হইতেই আসিয়া গিয়াছিল।

শ্বির মালিক ভ্ইলেও পূর্বেবলের হিন্দুগণ শ্বির সহিত সম্পর্কছেদ করিয়াছে অনেকদিন: এখন আমাদের ভ্রমির ष्टेश्राद याहा मानिकाना-चन्न जारा ७५ काश्राव-श्राद. युक्रदार প্রাণ্য যাহা ভাহাও আর চর্ম্বচক্র গোচরীভূত কোন পদার্থ নহে, ভাহাও ন ব-পত্তে। আসলে আমরা অমিকে ভোগ করিবার ৰুচ যতবানি উৎসাদী ছিলাম ছমির সহিত যোগ ৱকার হিলাম ততবানি উদালীন। যোগবিহীম ভোগের বিৰোবটাই আৰু বৃতিমত হইয়া আমাদিগকে দেশের মাট ষ্ইভে দূরে ঠেলিয়া দিভেছে। बाबदा बर्क बाबारबद হেলেবেলায় ছ'এক বর ভালুকদার দেবিয়াছি বাঁহারা বালে শ্বমি রাখিতেন এবং বাড়ীতে খাল-গত্র রাখিতেন : ক্রম্করণকে बब्द बाहारेबा निकारक छ्यारबारन कवि हाय कवारेख्य बदर निष्यदारे नन्तृर्व कन्नज्ञ वानिक हिल्ला। वहत भगत शुर्व्य बरे (अने हेश निः त्नार्थ विमृद्ध प्रेशार्थ । अयम चामरा चमि-चमा হর বিশিবভোবত করিয়া পতনি দিরা 'ভূঁইঞা' হইরা বলিয়াছি. ন্তবা ভ্ৰাভৰি বান-কড়াৱীতে বা বৰ্গাভাগে চাখ করাই। কলে ৰান্তে ৰাত্ত কমির বন্ধ মা হোক--ভাহার ভোগবন্ধ আনাদের ভাতে-অভাতে হডান্তরিত হইরা গিরাহে। 'ভূঁইঞা'-ভৱ, কালের আবর্তনে ভাহাই আৰু ৰেণা দিরাছে 'ভূৰা'ভদ্ৰ ৰূপে।

এই তুমি-সংশ্ববদীনভার কলে পূর্ববদের নব্যবিত হিন্দুগণের জীবন-বালা বুবাত: নির্ভন্ন করিত কতকভলি নব্যপদার
অর্জিত অর্থের বিনিমরে পরের প্রব এবং প্রবজাত করের
উপরে। মব্যবিত সম্প্রদারের এই আরের পদাওলিকে মোটাকৃষ্টভাবে নিয়লিবিতরণে বিশ্লেষণ করা বাইতে পারে,—

- (क) সরকারী এবং বে-সরকারী চাকুরী। ইংরেজ রাজত্ব কারেম হইবার পরে বর্ণছিন্দুগণই অঞ্জনর ছইরা ইংরেজী নিকা ও সংস্কৃতির প্রবাগ গ্রহণ করিরাছিল, কলে চাকুরীর ক্ষেত্রে ভাগাদের ছিল প্রায় একচেট্টরা অবিকার। কুসলমান-গণের রাজনৈতিক এবং অর্থনৈতিক চেতনা সঞ্চারের ফলে আতে আতে অল মুল মুসলমান উচ্চনিক্ষিত হইবা কিছু কিছু চাকুরী অবিকার করিলেও দশ বংসর পূর্বে পর্যন্ত এ-ক্ষেত্রে প্রাবাদ ছিল ছিলুগণেরই। লীগ-শাসনের আরম্ভ হইতেই এ ক্ষেত্রে ভাঁটা লাগিরাছে; পাকিস্থান প্রতিষ্ঠা এবং ভাগার আগ্র্যকিক কর্ম্বচারী-বিনিম্ম এই ভাঁটায় মুর্মিবার টান লাগাইরা ম্ব্যবিও জাবনের বাল্চর জাগাইরা দিয়াছে।
- (খ) জমিদারী ও তাল্কদারী। এই প্রধা বর্তমান বুগবর্গেরই বিরোধী; তাই বুগবর্গের খাতাবিক নিরমেই এই প্রধার
 বনিরাদ টিপিয়া উঠিয়ছিল। বর্তমানে অবস্ত তারতবর্গের
 প্রায় সকল প্রদেশের সরকারই এই জমিদারী ও তাল্কদারী
 প্রধার বিরোধী; কিছ এই সরকারী বিরোধ-নীতির বহু পূর্ব্ব ইইতেই জমিদারী-তাল্কদারী অনেক ক্ষেত্রে একটা খণাত্মক তারখন্নপ হইরা উঠিতেছিল। বর্তমানে একে জনমত তথা রাইমত জমিদারীর বিরুদ্ধে; তাহার পরে আবার মুগলমান জন-সমাজ বিশেষ করিয়া ছিল্ জমিদার-তাল্কদারগণের বিপক্ষে। স্তরাং এই লোকসানের ব্যবসা চলিতেছেও না, কেছ চালাইতে তেমন উৎসাহিতও হইতেছে না।
- (গ) এই ক্ষিদারী প্রধাকে অবলয়ন করিয়া অল-শিক্তিত বৰ্ণহিন্দুগৰের ভিভৱে একদল চাতুর।জীবীর স্ট হুইরা আলিভে-बिन, देशांवा नारवत-प्रश्वित पन । श्रही-चक्रान अहे (संवेत চাকুরীয়াই ছিল খুব বেশী এবং পদর-বিশ বংসর পর্বের দেখিয়াছি. ঞাবের স্বাঞ্জা এবং সম্বৃদ্ধি নির্ভৱ করিত এই শ্রেণীর **हाक्बीकोरीमर्थंद एमरदरे। कादन, बाहारम्ब रमरहद हुई** शास्त्र के कि निका बदर के का क्वीद कामा अकार्यदाहर के हादा যে একবার উভিয়া বহুদূরে চলিয়া বিয়াছেন, আর কিরিয়া चाकान नारे, काल बरे नकन 'डे॰-इंटेका' वा काल 'कर्डा-मभादे'त पनदे वितन मराविष्ठ नमात्कत मरामनि । ইহাদের ধুব বেশী ছিল না, উর্দ্ধে মালিক দশ বার চীকা ছিল বাজে আদারের উপরে, বেটার একটা গাল-ভরা ভদ্র নাম ছিল 'উপুরি'। সরল এবং অলিকিড প্রভারণ ভূমি এবং রাজ্য-সংক্রান্ত সকল ভট্টলভা বৃবিভে পারিভ मा , এই चळणांत प्रवास्त छेनति चानावात चरमक कचि-

কিকির বাহির হইরা পড়িত। কলে প্রকাঞ্চ বাহিক ছবিশ টাকার ভারকে ভবলধন করিরাই হর সাত ভন লোকের अक्षे भविवादात आया चढणा वकार वाविया कीवनयाता निकारिक रहेक। देशायत वार्षिक कीवामत बाह्य अक्ट्रे বাদর বহুলে প্রবেশ করিলে আরও তথ্য উদ্ঘাটত হইবে। প্রভাপান্বিত ক্ষিদারের প্রভাপ-রশ্বি এই সকল ব্যষ্ট-কেলের ভিতর দিয়াই প্রজা-সাধারণের সম্ববে প্রতিক্লিত হইত বলিয়া वाकाद्य देशायत अक्टी मर्गामा विम. याशाय देशदाकी नाम হইভেছে 'ক্ৰেডিট' : উপাৰ্কিত অৰ্থ ভাঙাইয়া বেশী দিন খাওৱা मा हनित्मक छेगार्किल 'क्लिके' काक्षादेवा करमक मिम हनिक। এই 'ক্ৰেডিটে'র বলেই ইহারা অভি দভা দরে বান চাউল, ভাল, নারিকেণ, লাউ-কুমড়া প্রভৃতি ভরি-ভরকারী 'কালে' দংএছ করিয়া রাখিভে পারিভ, ভার পরে মূল্য 'ষ্থম শ্রেষ তৰন দেয়'। এই প্ৰকারের দশ রক্ষ টাল-বাছনার ভিডর দিয়াই দিন একত্ৰণ ভালই কাইবা যাইত। কিছ 'তে দি ৰো দিবসা গভা:', অভএব মনাবিত হিন্দুর একট বৃহৎ অংশ বৃত্তিখীন।

এই অমিদারী-ভাগুকদারীকে অবলম্বন করিয়া মধ্যবিভ विकाशास्त्र बादा बानावन बादाद नहां दिन , जाराद नव-গুলির উল্লেখ সম্ভব এবং সম্বত মনে মা হইলেও কভকপ্রলির উল্লেখ প্রয়োজনীয় বলিয়া মনে করি। যেমন স্মৃত্র গওঞাম-ঙলির হাততে ডাক্তার-কবিরাক সম্প্রদার। বড় বড় ক্ষমিদারের কাছারীবাভীই ছিল ইহাদের আশ্রয়। কাছারীবাভীর সংলগ্ধ ৰাকাতে ত্বানমাহাত্য বদত: ভাহাদেরও একটা 'কেডিট' विन: चार्डी नर्दाम क्रिक नगम डीकाइ दिन ना : अक नश्राद्दर কুইনাইন মিকচার বা 'গুরান্তক বটকা'র মূল্য এক সের বানে ৰা সাভট হংগভিখেও চলিতে পাৱিত। এই এপ মাধুকরী বুছিতে যে আরু হইত তাহা দকিত হইলেই একটা উপদীবিকা পদবাচ্য হইয়া উঠিত। পূৰ্ববেদের মধ্যবিত হিন্দুগণের অর্থ-नौजिक कांश्रीरवादक पूर्वद्राप युक्तिक स्टेटन अरे नव क्रियांशी ভালুকদারী-পুর্বপোষিত ডাক্টার-কবিরাক্তপণের কথা ভূলিলেও চলিবে ন!। সৰুলে উংপাটিত বনস্পতির সহিত এই সব ছিল। मृत बच्छीत वर्षमान चवचा महस्वरे चन्नुरमञ्जा

(খ) মব্যবিত হিন্দুগণের ভিতরে আর একট সন্দ্রধার ছিল কুসীদলীবী। এই শ্রেপীট আতে আতে শিকত প্রসারিত করিবাছিল সমাজের প্রায় সকল ভরে। সংসারে যেষম এক আতীর বৃক্ষ রহিবাছে যাহারা অতি শিশু অবহারও যদি একবার কৃটিন-প্রভর-নির্দ্ধিত অইালিকাতেও শিকত সাহিতে পারে ভবে কালে দেই শক্ত লৌবেও ফাটল ধরাইবেই, ঠিক ভেমনই ছিল এই কুসীদলীবি-বাহাছা। বাংলা দেশের ছোট ছোট ভালুক্যারগণের ইভিহাস বুঁজিরা দেবিলে হেবিতে পাইব, ভাহাদের ভবু জীবৃদ্ধি নয়—ভাহাদের উদ্বরও ছিল এই লগ্নী-কারবারের সাহায়ে। বাংলা দেশের কুষ্কগণীই ছিল

ব্রথম থাজকসপ্রদার এবং তাহাদের সহিত মহাজ্মগণের মগদ চাকার লেনদেন চলিত—প্রথানত: জ্মাজ্মির বা ভিটামাটর বছকীতে। এই বছকী জমি বা ভিটানাট কিছুদিনের
ভিতরে প্রদের জারেই হস্তগত হইত। ইহা ব্যতীত জারপ্রধী
বছকীতেও বেল একটা তাপুক্দারী গভিষা উঠিত। দেশগাঁরে
প্রদের হার ন্যুনকল্পে টাকা প্রভি মালিক হু' পর্যা হইতে উর্দ্ধে
হু' জানা পর্যান্ত ছিল; প্রভরাং পল্লীবুলাবনের টাকার গোপালকে
উত্তমর্শ গৃহ হইতে জানিয়া জনমর্শ গৃহে একবার প্রতিপ্রত করিতে পারিদেই দেখিতে দেখিতে ভিনি প্রদক্ষণে কান্তিপুর
হইরা বাভিষা উঠিতে পারিতেম। খণ-শালিসী বোর্ড স্থাপিত
হইরার সলে সঙ্গে এই শ্রেইটির উৎখাত হইর; গিরাছে।

(७) विभूगत्वत व्यवीत्रायत व्यात अवहे शवा किन (कार्छ-बाटि। रावनाम । भूटक्ट विश्वाधि, भूक्तवरू अवानकः यान-বাহনের অন্তবিধা এবং বাণিজ্যকেন্তের অভাবে বড়ববেলা প্ৰভিয়া ভঠে নাই: প্রবিষ্ণের প্রসিদ্ধ কাঁচামালগুলির আম্দানী-রপ্তানিত কলিকাতার মারকতে: কিছ স্বানীয় ছোটখাটো ব্যবসাগুলি ছিম্বদের ছাডেই ছিল। কাপছের বাবসায়, চাউলের ব্যবসায় প্রণাতীর ব্যবসায়, অন্যান্য মুদি এবং মনোদারী দ্রবাগমূহের ব্যবসায় প্রভৃতিতে কিছু কিছু মুসলমান প্রভিত্তী থাকিলেও এগলি প্রধানতঃ ভিল্ বিভিত্ত ट्यिवेड (इक्शर्वह कार्डिं। पृथ्व व्यादक क्रेवात अर्ज मरक् बारबाषनीय पर्शासन। किंद्र तम इच्छापा रहेशा, किंद्र तमन भवकारी निरुद्धानंद काल क्य-भाषादानंद काल क्येटल क्रिया। স্থতরাং এ ক্ষেত্রত স্বাধীন ব্যবসায়ের পথ প্রহিত মান ব্যটক বাৰদায় চলিতেছিল ভাষার পিছনেও আবার প্ততি मानिशाहक मरमाध्यक्रमञ्ज्ञकारश्चराश्चर १ क एहे एक स्कृष्टि अकाई-অপ্রকাশ্ত অদহযোগের যনোবৃত্তি: কলে ব্যবসায়ী ভাছার বাৰণায় শ্বটাইতে বাব্য ছইতেছে। সরকারী নিয়ন্ত্রণে যে ব্যবসায় চলিতেতে সেখানে হিন্দুগণ দম্ভক্ট করিতে সক্ষ হইতেছে না: তাছাড়া কডকগুলি পণ্যার ফুপ্রাপা এবং নিয়ন্ত্রিত হইবার কলে হিন্দুপ্রে কতভাগ স্থাতি-ব্যবসায়ও বন্ধ মইতে ব্যিয়াকে : প্তা-প্রতাবে জাতা বা যোগার তাত চলে না ভিল সহিষা অভাবে তেলীর খানি চলে না ফিলিব **च्छाट्य ब**श्डाड शास्त्राञ्च रहा।

(চ) পূর্বব্যের হিন্দৃগবের আরু কতক ছবি ছিল তথাকণিত 'বাধীন ব্যবসায়'। এই বাবসাহিপণের ভিতরে ভিলেন
উকিল মোক্তার, ডাক্তার, অব্যাপক, বিভালয়ের শিক্ষক
ইত্যাদি। ইহার ভিতরে উকিল মোক্তার ছাক্তার প্রভৃতি পথছে
দেখিতে পাই, রাষ্ট্রীয় বাবস্থা পরিবর্জনের ফলে এবং মুসলমান
কনসমাক্রের মধ্যে একটা পৃথক জাতীরভাবোধের ক্রম-প্রসারের
ফলে বিশেষ প্রচার-প্রচেষ্ট্রা ব্যতীকট একটা আধিক বর্জননীতি দানা বাবিহা উঠিতেছে। ইহার ফলে এই প্রেণীর
হাবীন বাবলারিদধের বাবলার ইতিমধ্যেই বানচাল হাইয়া

উঠিরাছে। শিক্ষার ক্ষেত্রে দেখা যাইতেছে, কতকটা সম্বতিসম্পন্ন অধিকাংশ পূর্ব্যাকবাসীর অপলারণের কলে, কতকটা
ছিল্লু-সংস্কৃতির বিলোপের ভরে এবং কিরং পরিমাণে পূর্ব্যাকর
শিক্ষা-বাবধার অনিক্ষরতার আশ্বায় ছাত্রগণ ফুল-কলেজ
ছাভিয়া পলাইতেছে; অতএব ফুল-কলেজগুলির এবং সেই
সম্বে অধ্যাপক-শিক্ষক-প্রেটার পূরবধা অনিবার্যা। বাঁহারা
বিভাপরের শিক্ষক তাঁহারা স্বভাবতটে সরিব; স্থলের বল্প
বেতনের উপরে নিউর করা তাঁহাদের কোন দিনই পোষাইত
না: প্রামাক্ষের চন্ত্রিল-পঞ্চাশ টাকার উদ্বেশিক্ষকের বেতম ধুব
ক্ষা: স্বভাবং ইহাদেরও একটি পার্গস্থতি' ছিল—ইহা গৃহশিক্ষকতা। সম্বতিসম্পন্ন প্রাম্বাসিগণ নিজেরা এবন পর্যান্ত
সম্পূর্বভাবে প্রাম্ ছাড়িয়ণ না আসিলেও তাঁহাদের ছেলেমেরেদের ইতিমধ্যেই পশ্চিমব্যার হট্টা পঢ়িতেছেন।
ভ্রাং গরিব শিক্ষপণ্ড নিক্ষণার হট্টা পঢ়িতেছেন।

वशाविक किन-भगारकर आविक कीरानंत कातक शहिलन চিত্র পাইতে হঠতে সহাজ-ব্যবসার আরও পুরীনাটর ভিতরে अ(यम क्विट्ड इर्! हेपात । मुक्त अवान्ध-एश्वात चारणाहरू करा एवेल हेर, त्राचीच नाना रहायेश रिनागरवर जिल्ला कलक अणि अव्याणियुक्ति । हता अवयानवान व्यवस्था । উপায় জিল। যেমন, কুমার, নট, ধোপ, নাপিত, ভূটিয়ালী, मालाकत अञ्चि। देशारम्य चार्षिक क्षेत्रम कारात आध भन्पुर्वेहे जारवर्षिण एडेल भवादिल ्ड्येंट्रिक चार्यवर्ग कविशा । হিলুগণের বার মানের ভের পাক্ষণ হশ্ববেধা হুহতে সহাজ-वादशाद अभिज्ञे (वनी जात्व क्षिण . अहे दांच भारभद एक भारतम्, अतः कत्यारमय्, विदिधः भरक्षम-क्ष्मभूक्षेतः (क्षश्चाद्वसः, भागकदर, विश्वचिद्ध हैनाम्बन अञ्चि), विदार, आंक वेलाकि এবং ইছ। ব্ভীত গৃহপ্রেশ, বৃক্ষ-রোপণ, বৃক্ষ-বিবাহ, পুঞ্রিণ-অভিযেক প্ৰভৃতি বিভিন্ন জিলাকৰ্মকে অবলম্বন করিয়া মনাবিভ হিন্দুগণের অর্জিত অর্থ উপরি-উক্ত থবা ংসায়-নিষ্ঠ ভাতি এলির ভিতরে বটিত হইত। আমাদের বর্তমান নাগরিক জীবনে अर्थ (अधिभृष्य अकाल चन्द्रिश्या नर्थः किन्न किन्न किन পূৰ্ব্ব প্ৰস্থান্ত পঞ্জীৱ সংগ্ৰহ-জীবনের সমত জাচার-জন্মুঠানে हेशास्त्र किया-कर्ष अभिविद्यार्थके किल : अक्की प्रश्रीमुकीरन क्याद लिल्या जरूर पहे-महा लक्ष्ण मा जिल्ल (यम्रम हिन्छ मा তেহ্যি একজন নট জাগিয়া ঢোল না বাজাইলে উৎসব-च्छकीरनत कर चामीहेर एवेछ मां, आकरारत माछविरतायी व्यक्षामि प्रति । व्यापाद अक्षित्यद अक्षेत्र प्रदेश प्रति। प्रति व्याप्ति দেলিন মালাকর শোলার টোপত দিয়া যায় নাই বলিয়া এক বর বিবাহের জন যাত্রাই করিতে পারে নাই: গভীর রাজে সেই টোপথের ব্যবস্থা করিছা তবে যাত্রার আরোক্তম করিতে হইরা-ছিল। এই শ্রেণীর লোকেরা নগদ পর্যায় কাজ করিত কম, देशार्यं चार्यरक्तरे चावत्रेत वा ठाकवान विम । अरे चावत्रेत ব্যতীভ বিভিন্ন সময়ে ইহাদের কাজ-কর্ম্মের বিনিময়ে ইহারা

যথেষ্ঠ 'ভেট' বা 'দিৰা' এবং ইমান-বক্লিস পাইত। এই 'দিবা' জিনিষ্টি পুৰ নগণ্য জিনিস ছিল না; তাহাতে চাউল-ভাল, তেল-ভুন-জন্না, তাহিত্যকারী, নারিকেল মিট্ট প্রভৃতির প্রকার-ভেদ বা পরিমাণ কিছু কম ছিল না; এই 'ভেট' বা 'দিবা' যে কালেভনেই প্রাণ্য ছিল ভাষা নহে, এই প্রান্তিযোগের স্থোগ ছিল প্রায় ছামেনাই। যোটের উপরে এই ম্বাবিভকে অবলধন করিয়া জার তাহারই সলে জার একটু এটালেটা করিয়াই এই বিভিন্ন সম্প্রবিশ্বর লোকেরা এতনিম স্বলাতি বাবদায় অবলধনে বাচিয়া ছিল। ম্বাবিভ হিল্পপনের জালিক বিপ্রয়ের সলে সলে এই সকল জাজি হয় প্রান্তাত হইয়া প্রিমাছে, নতুবা স্থান্তাত ছইয়া প্রিমাছে। জামার পরিচিত পূর্ববলের বছ নালিতকে কলিকাভায় দেখুন' প্রাণম করিছে বা রাভায় জাভান। করিয়া বাবদায় চাল'ইতে লেখিয়াছি, বছ ধোপাকে কলিকাভায় জাগিয়া হালে বা প্রান্তাত ভ্রমা কালিছা আহা বা প্রান্তা বা বালায় জাভান। করিয়া বাবদায় চাল'ইত বেও ক্রিনিং'-এর বাবদা পুলিতে লেখিয়াছি।

अहे लाहार नावमारसङ करा यथन व्याल्याहमार व्यक्तिकरि जरून थार एक देल रावभारस्य कथा । अहे अभरू बारमाधिक হুট্ভে পারে তুল ওও পুরোহিত্রিরি! কিছু দিন পূর্ব **२२.५५ ६३ रादशाब ८२म व्यक्ती क्षिल, रादशाबीब** গুংখ্যাত নেছাত কয় ভিল মা: । পাঁচ-পাত খন শিল্প-থক্ষানকে अवलक्ष्य कविवाह अकृष्टि अव-पूर्वाहिक शवियात वैक्तिश ধার্কিত , অংখাংলের ভিট্নাকার এবং ক্রীকক্ষ্মক্ষ্মক বস্থাপ্রীন-क्षांत्रव म इंस र विव मान्द वदाश्र (मीम , असम के इंडिका!-ভ্ৰেষ্ট্ৰ ব্ডাইকাশ ৷ বাধ্ৰীটির চতীয়ত ৈ নটেয়ন্দির ত आ हिं) सर महमारमद अक्षे भाषांकिक ममाराज्य कर किन कक्षिण । जाह (प्रविद्वाल माहे, क्षत्राक कीवरमय एकह सर्वाक्ष दक्षा कृतिका तमह विरम्ध सहज खबरान कृतियाद क्रमें वासर कीर्त्य व्यवः महिण्ड करेगा छ सावभार व्यवस्थ । भन्तमन (भन भक्त भाग-भार्त्य अवर किहाकायक अनियान काक्काविस विश्वाच्याटकः। दयः स्थाकः श्वीदश्याः अधानस्त्रामः लातेटकः वर्धादः मा (अस किह्र जरू वर्णवा अव (माम-कूट्रांट मन्द्र वास अटक बाको सत्र। शृद्धिर विश्वप्रक्षि, अहे 'शृहिता कार्यद भगीय चृष्ठिश्वाद्य - जान्यके महाम नर्वाद्य संग्री के के एक देव लुद्धाविक्तितिद्वसः। अवे भय दम्भ ६६मी रमद्व चाकिश्राष्ट्र किलाम , इम्टब्रहक्त लाजनियास्त्रक सार्थित्यान्यद श्रापष्ट बावशा विमा टेलमंकिन मानशाम श्रृक्ति निश्चक পুরোছিত ত্রাহ্মণঙ দশ বাড়ী হইতে দিন দশ সের চাউল যোগাড় করিতে পারিতেম। কিন্তু ইতিমব্যে আতপ চাউল কাচক্ষাও ভবু ছবা লা নয় ছতাগাও ব্টয়া উঠিয়াছে বহকেত্র লাল্যাম শিলাও চুবি ছইয়া সিহাছে।

শ্বাশ। করি উপরের আধোচনা হউতে পূর্ববদের মধ্যবিত হিন্দুগণের আর্থিক জীবনের একট ঘোটাষ্ট চিম পাওর। হাইবে। এই চিজের পটভূমিকার উপরে যোগ করণ গত চারি-পাঁচ মাস বরিয়া মণপ্রতি চল্লিশ টাকা হইতে পঞ্চাশ টাকা চাউলের মূলা। তবেই স্পষ্ট থুকা যাইবে, পূর্ববদের হিন্দুগণ কেন বাস্তত্যাগ করিয়া পশ্চিমবঙ্গে বা আরও পশ্চিমে আশ্রহ প্রথমান করিতেছে।

বান-চাউপের মুর্বাভা এবং গুপ্রাপাতার সলে সক্ষেই
মুসলমাণণের কথাও উঠিবে: ভাছাদের ভিভরে সকলেই
চাষ্টা নয়, সুভরাং সকলের ঘরেই খান্যান্তর কিংবা বান-পাটের
মঙ্গন টাকানাই। সকলেই কিছু চাকুরীও পায় নাই, কটোলের
ভক্রবাভার এব কুচবাভারে সকলেরই কিছু সমান স্কীতিলাভও বয় নাই। মুসলমান এবং ভবাকবিত নিয়লোইর
ভিতরেও প্রহীন এবং চাকুরিদীন লোক মবেই আছে।
ভাছানিগকে ছাভিয়া বজনান ভাবিক বিপদ্ধায়ের এবং ছতিক্ষের
চাপ স্বটাই সহা মহাবিও ইন্দুগণের খাডে পভিভেছে কেন ?

ইহার জবাব এই, হুমিছান আশাক্ষত মুসলমান ও মিয়ত্রেণীর হিন্তা এবন পথান্ত দৈছিক পরিপ্রা করিছে পারে,
আর গভ ছাধের পর ছইতে পারের এবং জ্ঞান্ত নিতাপ্রয়োজনীয় দেবের মুলাও যেরূপ উভরোগ্র বৃত্তিপান্ত ছইয়াছে,
কারিক প্রমের মূলাও তেমনই বাছিয়া গিয়াছে; ইহার কলে
এই জালীয় বিশ্বহীন প্রমিকদের ভিতার একটা আধিক নামঞ্জ আপন্য আপনিই আসিয়া গিয়াছে। তা আছা এই শ্রেণীর
কানের বান-পাই জ্যাইতে না পারিলেও ফল-মূল, তরিতর্বারী শাক-সালী প্রচাত না পারিলেও ফল-মূল, তরিতর্বারী শাক-সালী প্রচাত লা করি উৎপন্ন করিতে পারে,
নাহ হারতে পারে, পোরা-পার্টা-ছাগল প্রতে পারে, ইাসসূত্রী পালিতে পারে; এই সকলের হারা সে নিজের
আন্তাহনক মিটাইতে পারে, অবরা আবরুক অন্থারী বিক্রী
করিয়া হছ কিছু জ্বণান্ত করিতে পারে

लक्षे: किल्म लक का का विशास । यू अंड शका (भव २५६) दे চর্ম ভূষণাগর ক্ষয়া বাহ্বাচিল ভূমিকীন অনুক্রী সম্প্রদায় अर्थान संग्रा हा है। जब साम कड़ीन असम दल्डन जा किया निवादण. ७ गय क्रक व्यूल, जो दलदक की, भाष-पूत्र, मान्भ-फिर अङ्ख्य कुला ঠিক স্থান অসুপ্তে বাভিয়া যাইতে পারে নাই ় আম্যাদিন-স্তুলের প্রের স্থাও সভরণ ভাতে ব্যিত **হ**য় কাই। এই ্ু ব্ৰু অ্নজাতিত এক এপ্ৰীর ক্ষম্প্রিবেশ্ব চর্ম ভূপান্তির ल्याम क दल अल किस एक मीठ-ध्य वर्गरेदंद विकटत क्षकें अकें के दश अहे अन्यूष्टि अल्बर्गान पूर्व श्रेडा (अ । कुरा मरश्रक कड़िए एमच यहित्य, कारूकाल भन्नी कक्षण हाउँ(लंद माम यथन मुख्यन वृष्ट नीड, ज्यहान ज्येकान अदा এবং মাছ-মানেদ, এধ-ভিম প্রভাতির মূলাও কার আমুপাতিক সমতা রক্ষা কহিয়াক বৃদ্ধি পায়: জন-মধুরের পারিত্রিষিকও चकुक् भारतह वाश्विकारमः। भाषात्वत्र श्राटम स्थन हास्टिनत দর চলিশ টাকা, অর্থাৎ স্বাঞাবিক মুলোর প্রায় আট धन इदेशास् ज्यम प्रियोसि स्वामार्थिय याशी रहेरज शीठ

বাইল দূরবর্তী সীমার টেশন পর্যন্ত নৌকাপথে ভালা লাগিরাছে পাঁচ আমার ছলে আলাই টাকা। পুভরাং বােটের উপরে এই সব গুরিহান কন-মনুরখের অবহার বর্তনানে কোন উরতি না হইলেও বিশেষ কোন অবনভিও ঘটে নাই। কিছ এককন মুগ-শিক্ষকের কথা ভাবিরা দেখুন। সাভ-আট বংসর পুর্বে আরা মুলের কমা বি-এ পাশ এককন শিক্ষক পাঁচিশ টাকাভেই পাওরা যাইভ; এখন লেখানে না হর চল্লিশ পঞ্চাশ টাকা। আর এই বে আর্থিক অসমঞ্জল বৃদ্ধি ভাহাও ভাহার কবল হইতে লবই ধসিরা পঞ্চিতছে।

উপরের আলোচনা হইতেই বুঝা বাইবে আর্থিক জীবনে প্র্বেদে আমরা একটু একটু করিরা কিরপে নিধিলবৃদ্ধ হইরা পছিরাছি। বাছির হইতে সকলেই আমাদিগকে যতই লাহল অবলবন করিতে বলিতেছে, আমরা ততই বে কেন হ্র্মাল হইরা পছিতেছি এইবানে তাহার বৃদ্ধ কারনের হৃদিন পাওরা বাইবে। হিন্দুদের পদাতীরে বছ দিন পূর্ব্ধ হইতে ভাঙন বরিরাহে, সেই ভাঙনে চড়া পড়িরাহে গলাতীরে; এবং তাহারই কলে 'বালিগঞ্জে' পূর্ব্বেদবালীদের উপনিবেশ গড়িরা উটিলছে। আমরা এই ভাঙনকে আগে কোন দিনই ঠেকাইতে চেঙা করি নাই; আজ যধন শেষ ভাঙনের বাড়া আগিয়াহে তথন আমরা নিজোশিতের ভার বিহ্নাল হইরা পড়িরাছি।

অনেক দিন বরিরা আন্তে আন্তে বে গাছের বৃদ্ধের বাটি কর হইরা শিক্ত বাহির হইরা পভিরাহে, এবং প্রবল বাত্যার সে বেমন তাহার প্রকাত কাও এবং বহুবিভূত লাখাবাহ সভ্যেও আন্তরক্ষা করিতে পারে না, বরক এওলির দক্ষন বাতাশের বাপটাটাই আসিরা বেশী লাগে, বিপর্যাত আর্থিক জীবন এবং শিধিলর্গ সমান্ধ-জীবনের উপরে একটা প্রচত সাক্ষরাহিকভার বড় আসিরা সেই ভাবেই প্রবেদের হিন্দুর উপরে আ্বাভ করিভেছে; কাওের প্রকাতত্ব এবং শাখাবাহার বহুবিভার তাহাকে আরও অসহার করিরা ভূলিরাহে।

কিছ এখন বিশাদ বে শুৰু মধ্যবিত্ত বৰ্ণহিন্দুৱই তাহা নহে;
আৰ্থিক সমভাৱ সহিত একটা সাম্প্ৰদাৱিক সমভা অভিতহইরা পভিবার কলে যে অটল অবহার স্টে হইরাছে তাহাতে
বিশাদ সমগ্র হিন্দু-সম্প্রদারেরই। মধ্যবিত্ত হিন্দুসকল বেশভ্যানী হইলে কৃষক এবং শ্রমিক হিন্দুগণ আর্থিক প্রতিষ্ঠা লাভ
করিতে পারিলেও হিন্দুসমাজের অভতম অল হিসাবে আত্মরকা
করিতে পারিলেও হিন্দুসমাজের অভতম অল হিসাবে আত্মরকা
করিতে পারিলে মা

কিছ প্রতিকার কোন্ পথে ? বাস্বত্যাগ এবং দেশত্যাগকেই একরার পহা মনে করিরা দেই দিকেই উদ্যোগ আরোজন চলিতেছে। কিছ ব্যাপারটাকে আপাতবৃষ্টতে বত সহক সমাবান বলিরা মনে হইতেছে আগলে পেটা তত সহক মহে। প্রথমেই আসে নিকের দেশ-প্রাম বাতীবর পাতা-প্রতিবেশী আত্মীর-সক্ষমকে অবস্থম করিরা একটা তাব-প্রবণ্ডার কথা:

কিছ এই বঢ় বাছৰ পারিপার্থিকের ভিতরে হয়ত এই ভাব-প্রবণতা বই পাইবে না। তা ছাড়া এ কবাও সত্য বে নাহুষের ্ প্রাণরকার প্রবৃত্তি তাহার সূত্যার হাষর্ভি অপেকা অনেক বেশী প্রবল।

কিছ সেই প্ৰাণৱঞ্চাৱ দিক হউতে ভাবিয়া দেখিলেও উত্তর এবং পর্ববদের লোৱা কোট হিন্দুকে পশ্চিমবদে খানাখরিত করিয়া রক্ষা করিবার সম্ভাব্যতা কতপুর প্রথমে সে প্রস্থানে। বিভীয়ত: মনে রাধা উচিত, বহু বংসর যাবং माडे स्टेर्फ तम मध्यस् ७ चारमा-वात् चवनवन कतिया य গাহ বৰ্জিভ হইয়াহে ভাহার শিবিল মূলে নুভন মাট ও छेनबीया श्राम कविश्व जाशांक मजीव वांचा यवन अरब. ভাছাকে উপভাইয়া লইয়া নৃতন মাটতে স্থাপন করিয়া রক্ষা করা তত সহজ নছে। সর্ব্বোপরি আর একটা কথা মনে রাখা উচিত, আমরা বে মধ্যবিত মনোরতি এবং জীবনযাত্রার ৰাৱাকে জীৱাইয়া ৱাৰিবার জঙ পূৰ্ববঙ্গ হইতে পশ্চিমবঙ্গে পদাইরা আসিতে চাই, পশ্চিমবদেও তাহা বেশী দিনের জভ নিরাপদ নছে। আমি পুর্কেই বলিয়াছি, মধ্যবিভের এই বিপদ ভুষুমাত্র পাকিভান প্রতিষ্ঠার ভিতর দিয়া ভালে নাই, আসিয়াছে বীরে বীরে হুগবর্ষের আবর্ডনে, বছ বাজিক এবং আভাৰত্ৰীৰ সামাজিক-শক্তির যাত-প্রতিহাতে। পশ্চিমবঙ্গে হিল্পাৰাভব্লক ৱাই যদি প্ৰতিষ্ঠিতও হইয়া থাকে, তবে তাহারও এই ম্বাবিত মনোর্ভি এবং জীবন্যাত্রাকে আর (दनी किन कीश्रादेश श्राविवात नावा नादे। इधित मूना अदर खायत बुना गर्यवरे वाकिया गारेत्व ; जात्वत मनाभद्दां अनिष ক্ৰমে লোপ পাইবে : ভৰ্ম আৰু যে সম্ভা দেবা দিয়াছে পূৰ্ববেদ ঠিক সেই সমস্ভাই আবার ছ'দিন পরে আসিয়া দেবা पिट्र अन्धिवर्ष । अनावेश अनावेश এव बवाविक बट्टाविक বক্ষা করার স্থান হইবে না হয়ত কোন রাষ্টেই।

ভাই সমস্তার সমাবানের বা ভাই আমাদের মনোর্থির এবং ভংগলে আমাদের কাবনবাত্রা পছতির অনেকবানি পরিবর্জন। নৃত্য মুপের নৃত্য বর্ষ ভাবার চারি দিকে বে সমস্তা লইরা আমিতেহে প্রানোর্পের মনোভাব লইরা আমরা কিছুতেই ভাবার সম্বান হইতে পারিব না। বৃত্য মুপে ভ্রির সহিত সমাবা-কাবনের অভিনব যোগ স্থাপন করিতে হইবে, এবং সর্কার কাবিব্রের সর্কাক্তেরে পরের প্রমকে অবলব্দ করিরা বাচিরা বালিবার আবর্শ এবং অভ্যাসকে বরলাইতে হইবে। এই সব কবা ভ্রিরা ব্যবহু সর্কাক্তেরে পরের স্থানকে বরলাইতে হইবে। এই সব কবা ভ্রিরা ব্যবহু সর্কাক্তেরে মনেই আল্কার স্কার হুইতেহে বে এবন উপাদেশ বেওরা হুইবে, স্বাই সক্ল শিকা-বীকা, সংখ্যার-সংস্থতি হাছিরা বার্ঠে নাম, অববা হাতিরার লইরা ক্র-মভ্র বা ক্লি-মভ্র হইতে আরম্ভ কর। এই আল্কাটাই মধ্যবিভ মনোর্ভিকাত। ক্রমি শিল্প বা অভাজ প্রমন্ত্রি প্রহণ করিতে হুইলেই বে শিকা-বীকা সংখ্যার-সংস্থতিকে

বৰ্জন ক্রিভে হৃইবে, এইরুণ পুরাতন মনোরুতি পরি-र्श्वा । इवि-निष्मव अस्ड कान-विकालक (य कावाउ কোন বিরোধ নাই, বরঞ্চ একে অভের পরিপোষক **এইটাই ভ नুভন খুগের বাবী। किन्छ चान्तर्धा এই, বাহারা** উচ্চ বৈজ্ঞানিক শিক্ষালাভের পর ক্রমিবিভার পারদর্শিতা লাভ করেন ভাহারও বাঁট মাটর সংস্রবে আসিতে চাহেন না. भवकाती कृषि-विकारन हाकृती बुंकिया विकास : य फेक-শিক্তি ব্যক্তি মংস্কের চাষ শিবিয়া আদেন, তিনিও আসিয়া চাৰুৱী বোঁৰেন, যিনি উদ্ভিদতত্ব শেৰেন তিনিও চাহেন বন-বিভাগে একটা চাতুরী। এইরূপ আমাধের সর্ববেদতে। আমরা আমানের জীবনযাতা নির্বাচের লৌকার্যাতে মানব-সমাজের ভিভৱে একটা জজ-অশিক্ষিত শ্রেণী পূথক করিয়া রাখিতে চাই--- चांगारमंत्र मजभव, जांशारभंतरे १८६ चारतास्य कतिशा আমরা বরাবর জ্ঞান-বিজ্ঞানের আলোচনা করিব এবং সভাতা সংস্তিকে সম্ভিন্না ভূলিব ; ক্ষাতের নববিধান এই কৃব্যবস্থাকে मानिश नरेट एथ अटकवादारे नाताक, अ कवाहाटक अवन ম্পাই করিয়া বৃবিতে ও স্বীকার করিতে হইবে। একবা वृतिवाद धाःबायन ७५ शृद्धवायद रिष्णुगानद नारः, भवानकारव युग्नमानगर्यदेश, काद्रव मधाविष्ठ भरनावृष्टि ७५ विनुव बावि

নয়, মুললয়ান সমান্ধকেও ভাহা হয়ত অধ্য় ভবিয়তেই আঞ্মণ করিয়া বসিবে।

প্ৰদক্ষমে মনে ৱাৰা উচিত, নৰবুপের ভাতীয় ভীবনে দুচ্পতিষ্ঠ হুইতে হুইলে ভবু আৰ্থিক বাবছার পরিবর্তন করিলেই **र्हालाय मां, भयाक-वावशायक क्षत्रक्षण शक्तिवर्छन अवर, भरकादिय** প্রয়োজন। বর্তমানে বর্ণহিন্দু বলিতে যে একটা সমাজ-বাবছা প্রচলিত আছে ভাষার অনেক বিধান যে আধনিক জীবনের বান্তব সভ্যের উপরে প্রতিষ্ঠিত নছে এবং ভাষার ভিতরকার এমন অনেক বিবান আম্বা নিকিরোবে মানিয়া চলিভেছি যাখা সাধানৰ মানবভাৱই প্রিপথী, একবা এখন আমরা বুরি কিছ প্রকারে ব্যাবার করিতেছি না। সমার-বাবলার এই ক্রিমভা व्यायां वित्रदक की राग-मध्यास्य निर्वाच करान कविशा विराण्डा । ভাই বাঁচিয়া থাকিতে হইলে প্ৰথমে চাই আন্তভ্জি। ভাৰাতে সমস্ভার সমাক সমাধান হইবে কি না বলিতে না পারিলেও हेना रणा याश्व (य भव्यक्षकात्र विभएपत भन्नुत्य कीयम-मरधारम আমহা সৰ্বল হট্যা উঠিব --- এবং সকলেবই পুৰিবীতে বাঁচিয়া থাকিবার অধিকারকে অকুঠভাবে খীকার করিয়া লইয়া ৰিজেৱাই বাঁচাত মত বাঁচিব।

দীতাকুণ্ড

গ্রীসূর্য্যপ্রসর বাজপেয়ী চৌধুরী

বর্তমান সময়ে মাহকের কর্মবহল জীবনে অবকাশের নিভাছই অভাব। কর্ম্মপ্ত ও পরিপ্রাপ্ত অবহায় ভার বর্ধন একটু অবসর মেলে, তবন সে ভার আবাসহল ও নিভাপরিচিত পরিবেশ ভ্যাপ করে বেরিয়ে পড়ে অভ কোবাও একটু নিশ্চিত্ত হয়ে সময় কাটাতে—যেবানে জীবনবারণের সমস্তাসমূহ বেকে কিছু কালের অভেও লে রেহাই পাবে, ভার দেহমনের প্রাপ্তি বিচিত্র শ্রমাভিরাম দৃশ্তাবলী দেবে অপনোহিত হবে।

বৈদন্দিন জীবনের এমনিধারা একখেরেমি থেকে মন যথন মুক্তিলাভের জন্যে ব্যাকুল হয়ে উঠেছিল তথন হঠাং দিন-কতকের জন্যে মুলেরে যাবার সুযোগ জারার ঘটে গেল।

গভ ২রা যে টেনে ভাষালপুর টেশনে নেমে ঘোটরঘোপে লাভ মাইল পথ ভভিক্রম করে মুলেরে গিরে পৌহলাম।

জাবালপুর মুদেরের অন্তর্গত একটা মহকুবার হেড-কোরাটার। বেশ বড় জাবগা বলে বোব হ'ল। এবানে এংলো-ইভিয়ান কলোমিও আছে। এটি রেলের একট বড় জংসম আর কারবারের জাবগাও বটে। বাল্যকালে কবি নেবেক্সনাৰ সেনের কবিভার পড়ে-হিলাম—"গুলেরের সীভাকুতে গিয়া কাদিলাম জানকীর ভূংৰে।" ভবন বেকেই জায়গাটীর ওপর কেমন একটা আকর্ষণ হিল, এবার এভকাল পরে অপ্রভ্যানিত ভাবে ভা দেববার প্রহোগ হয়ে গেল।

মুদের কেলা ভাগপপুর ডিভিসনের অন্তর্গত। বিহার প্রদেশে সহর হিসাবে পাটনা ও সমার পরেই ভাগপপুরের স্থান। দর্ভদা সহর্টিও ভূমিকশ্বের পর বেশ স্থক্ষর ভাবে গড়ে উঠেছে।

বিহারের প্রতান্ত অঞ্চলের ভূমি বাত্তবিক্ট স্থপ্রস্থা। প্রচুর শক্ত ও ধনিক প্রব্যের সমাথেশে এই অঞ্চাট বিশেষ সমূদ। কমলা, লোহা, ভামা, অত্র, ম্যালানিক—কত ধনিক প্রব্যায়ে এখানে ভূপতে নিহিত রয়েছে ভার আর অন্ত নেই।

এই প্রদেশের অধিবাসীর সংখ্যাও এখন তিন কোটর অনেক উপরে উঠে গিয়েছে। এখানকার শিক্ষা-প্রতিঠানের সংখ্যাবিক্য, কলকারখানার প্রসার, মোটর ট্রাক্টারের প্রচলন ইত্যাদি দেশে বনে হয় যে প্রদেশট সময়ের সঙ্গে



সীভাবু**ও (মৃঙ্গের**) ফটো ঃ শেবেক্স বা**জ**পেয়া চৌধুরী

মূলের সংরট ছোট হ'লেও ভারি স্থার। নদীর তীরেই বেলওয়ে টেশন। রাভাষাট বেল পরিধার পরিচ্ছর। জিনিগ-পত্রের মূল্যও বাংলাদেশের চাইতে চের সভা।

গভ বিহার ভূমিকশে মুদেরের প্রায় সব বাড়ীই ধ্বংস-প্রাপ্ত হয়েছিল, ভিঙ এবন সেই সব ভয়ন্ত পের উপর পুন্নিশ্বিত স্থান স্থান হর্ম্যরাজি সহরের শোভা বহুল পরিমাণে বৃদ্ধি করেছে।

মীর কাশিষের বিরাট ছুর্গট এই সহরের অন্যতম প্রধান জটবা। এই চুর্গেই কালেটরী, অজ-আদানত ম্যাজিট্রেট ও পুলিশ-ছপারের বাসভবন, উকীল-লাইরেরী ও অভাত সরকারী আপিস অবছিত। ভিতরে সুদ্ধর পার্ক, ক্রীড়াছল এবং বেভাবার ভারণাও আছে। কয়েক্তন ছানীয় জমি-ভারের বাটা এবানে বিধ্যান। এ দের মধ্যে ছ্-এক জন ইংরেক জমিদারও আছেন।

ষ্কেরে অনেক প্রবাসী বাঙালী আছেন। এঁদের বভ্ননান নেতা হচ্ছেন ঐনিরাপদ মুবোপাব্যায় এম-এল-এ ও ইঅবোধনার বন্দ্যোপাব্যায়। একদিন সৌকলসহকারে এরা আনাকে বাঙালীদের প্রতিষ্ঠিত সাহিত্য-সভার ও ক্লাবে নিয়ে গেলেন। সেবানে তব্ন মধ্যপ্রদেশ ও বেরারের প্রবান মন্ত্রী মাননীয় গঙিত রবিশ্বর ভক্ল ও খানীয় ভেঠব্যবহারী পঙিত উরুফ মিশ্রও গিয়েছিলেন।

বাংলাদেশের, বিশেষ করে পুর্ববংশর অনেক কথাই এরা জিজেস করতেন। সংক্ষেপে বাংলার বর্তমান পরিস্থিতির কথা তাঁদের নিকটে নিবেধন করে শেষে বল্লাম যে, বাংলা-দেশে এবং বাংলার বাইরে যত বাঙালী ভাছেন সকলে



সাত্ত কুণ্ডের পাধের দৃষ্ঠ ধনটাঃ রবি বাজপেয়া চৌধুর

সমবেত ভাবে বাঙালী ভাতির ঐতিহাও সংশ্বতিগত অবওয় বজার রাববার জন্ম মনোযোগী নাহলে পূর্ববন্ধক আসর মহতীবিন্দীর হাত বেকে রক্ষা করা যাবে না।

সভা ও সাবসৃষ্ট বেশ ফ্লর। পৃশাবাদীও রয়েছে। সাবে দাহিত্যালোচনাদি বেশ হরে থাকে। প্রবাসে থেকেও যে এবানকার বাঙালীরা নিকেদের দেশ ও সাহিত্যকে ভূলে যান্নি, তার পরিচর পাওরা বেল।

এক দিন আমর: ক্ষেকজন মিলে সীতাক্ও দেখতে পেলাম। পথে একট টিলায় (ছোট পাহাছের) উপরে এক বাঙালী ক্ষিণারের স্বৃষ্ণ বাস্তবনট দৃষ্টি আক্ষণ করল। মোটর চলাচলের রাডাট এঁকে বেঁকে উপরের দিকে চলে গিয়েছে। পাহাছের গাত্রিছিত গাছপালা বেয়ে উঠেছে মানা প্রকারের সভাগুছ, রাভার ছ'লালে ধুরপ্রসারী নিবিছ অরপ্রের ভাম পোজা। চারদিকের প্রাকৃতিক পৌক্র্যা টলাটির উপ্রে

কিছুদ্ব দিবেই মোটর খেকে নামতে হল। বছ রাভার পাশেই বয়েছে সীতাকৃত ও তংগংকর অভাভ কৃত্তপ্রতি। সব ক্ষটি কৃত্তই প্রায় চতুছোণ ও প্রাচীর দিয়ে বেরা। ভিতরে য'বার জভে বড় দরকা বা কটক আছে—কৃত পরিক্রমার জভে বাবানো রাজা বয়েছে।

স্বস্থ এই পাঁচট কুও আছে রাম্ড্র, সক্ষণ্ড্র, জরতকুর, পাঁতাযুক্ত ও সীতাত্ত। দব কুতের জলই শীতল, কিছ
সীতাকুতের কল বেশ উঞ্চ—কুইছ কলের ন্যায় কুতের বুকে
বিশ্বত কিটাত, কুতের বল গেন টগবগ করে কুটছে। কুতের
পার্থিশে লোহার বেলিড় দিরে ধেরা। হাতে পাত্র নিয়ে
লগ হুলতে হয়। বহু লোক জন নিয়ে যাছে। অনেকের
বার্থা এই ক্যাপ্ন করলে পেটের যাবতীয় প্রাথাম আরোধা
ক্যে যায়। আমিও এক পাত্র জল হলে নিলাম।

সীতা ক্ষমি নত চাইতে বছ। তার ক্ষম একটি নালী নিয়ে বাইরে বার হাজে, ঐ নালীর ক্ষলে বছ জী-পুরুষ মান করছে। অন্যান্য সীগ্রানের নারে এখানেও পাভাগের প্রকাচির হোল অন্যা, তাদের হাত এভাবার যো নেই। অন্যান্য এনে যান ভূতিক বরলে তারন তাদের কিছু না দিয়ে অবাহিনি পাত্যা কেল না। এই কুখকে কেন্দ্ৰ করে সীতাদেবীর পাতালপ্রবেশ, অন্নিপরীক্ষা এই সব নিয়ে লোকমুর্থে অনেক কাহিনী গছে উঠেছে। এবানকার কলে নাকি প্রচুর সালকার আছে। আরো কিছুলুর এপিয়ে আর একটি কুও দেবলাম। সেটুর বাহু আরুতি কুওের মত বটে, কিছ ভিতরটা গুড—এক ফোঁটা বল নেই। এই কুও কাটানোর কাহিনীটি বেশ চিডাকর্যক। কোন এক কেতাল— বোধ হয় তার নাম কিলিপ — এই কুওটি কাইয়েছিলেন। তার বাংশ; ভিল যে সীতাকুঙের নিকটবর্তী গ্রানে দুতন কুও ক্ষম ক্রেল তাতেও ঐ রকম ইফ কল পাওয়া যেতে পাবে। কিছ ভুগর্ত থেকে ইফ কল নিগতি হওয়া দুরে বাহুক, সাঙা বলও যথেই পরিষাধে সেকে না। অলস্কাধা বেকগ তাও বেশী দিন কুঙে স্থায়ী হতে পারস মা।

সীতাকুভের কল কেন সব সময় কৃষ্টি কলের নাম গরম থাকে, আর তার সন্ধিকটির কারে। কয়েকটি কুভের জ্বাই বা লীতল কেন, তার কাবে সভবত: ভবিয়াতে বৈজ্ঞানিকগণ সংবিদাবারণের গোচতীভূত করতে সক্ষম হবেন। আমরা কিছু আপাততঃ এই বহন্ত ভেদ করতে না পেরে ফিরে এলাম।

আলোচনা

কুফানন্দ আগমবাগীশ

অধ্যাপক লীকানেশচন্দ্র সরকার, এম-এ, পি এচ-ডি

ণ্ড অথহাতে মাসের 'প্রবাদীশতে উদ্ধাদ দীনেশচজ ভটাচাব্যের সমালেচেনার উল্লেখ আমি যাহা দিনিয়া-হিলাম, ভটাচাগ্য মধাশরের প্রভাতবদ্ধ তাহা প্রকাশিত হইয়াছে।

ক্ষমবন্দনা ধারা তপ্রদারের খুচনা করা হাঁকাছে থলিরা আমি প্রস্থলার কৃষ্ণান্দকে বিষ্ণুমন্ত্রনী ক্ষিত অর্থাং বৈদ্যব তান্ত্রিক বলিঙান্তিলার: ভটাচার্যা মহালয় প্রতিবাদে বলিলেন যে, লাঞ্জ কৃষ্ণবন্দনা ধারা প্রস্থারন্ত করিতে পারে! উাহার মন্তব্যে সভোষক্ষক কোন প্রমাণ মা পাইয়া আমি উন্তরে লিবিলার, "কৃষ্ণানল যদি গোঁড়া লাঞ্জ ছিলেন, তবে তিনি কেন কৃষ্ণবন্দনা ধারা প্রস্থাতনা করিলেন, ইহার ব্যাখ্যায় তিনি (ভটাচার্যা মহালয়) যে বুক্তি দিয়াহেন ভাহার আলোচনা বাইলামান্ত্র।" প্রত্যুত্তরে তিনি লিবিতেছেন, "গোঁড়াই হউক আর কোনলই হউক, 'লাঞ্জ' অর্থ শক্তিমন্ত্রনীকিত তান্ত্রিক, বৈষ্ণবন্ধস্থাক্ষিত তান্তিক নহে।" অর্থাং আনি লাই করিয়া কৃষ্ণানল্যকে বৈষ্ণব বলা সম্বেও ভটাচার্য্য মহালয় বিরা ভাইতেছেন যে, আমি ভন্তসার রচরিতাকে লাজ্ক বলিরাছি!

আমি মুল প্ৰবন্ধে যাহা লিবিয়াছিলান, ভাহার কর্ব এই যে, ১৮২০ ঐটাজে রাম্ভোষণ সম্ভবতঃ বুধ্বরূপে প্রাণ্ডোষ্ট্র রচনা করিহাছিলেন; স্থতবাং ওদীয় উর্ভন স্থ্য পুরষ ক্ষান্ত্ৰ বুধ্বয়পে জীছার প্রায় ১৮৮ শত বংগর প্রের ১৬৭১ এটান্বের নিকটবর্তী কোন সংযে তথ্যার রচনা করিয়া बांकिट्वन: छट्व यनि ১४৮० लकान व्यर्श १७४৮ अक्षेट्रिक অনুদিবিভ ভল্লপার পূর্বির বিবরণ সত্য হয়, ভাষা হইলে ক্ষানৰ যৌতনে সপ্তদল শতাকীর মধ্যভাগে এমুখানি লিখিয়া থাকিতে পারেন। ভটাচাধ্য মহাশয়ের প্রতিবাদে তল্পারের लाहीनज्य पूर्णिय উল्লंख बाकाय, बाध्य छेल्टर्स लिबियाधि (य. कुछानस्मत कोरमकान एपि ১৫৯৫-১৯৮० छोडीस असमान करा यात्र क्षवर यान बड़ा यात्र ८य. जिनि कीवरमद क्षबमार्क जन्नभात রচন। করিয়াছিলেন, ভবে আপত্তি করিবার কিছু নাই। कहें। हार्या महानश्च कामात मृत अवरकत "त्योवम" अवर 'हेलता'त "জীবনের প্রথমার্দ্ধ" কবঃ ছটভে ভালগোল পাকাইয়া স্থির কবিয়াছেন যে, আমার ঐ সিহাতে এক পুক্ষের গভপভতা ২০।২৬ বংস্থের বেশী হুইয়া পড়ে। কিন্তু ভাছার লক্ষ্য নাই যে, এই গড়ের হিসাবে রামভোষণের অজাত অবভারিবট একট অভ্যাবঙক অং। রামভোষণ অধ্যাদশ শভাকীর মধ্য-ভাবে ক্ষিয়াছিলেন বলিয়া যদি বরা যায় ভবে এক পুরুষের গড়ে ২৫।২৬ বংসরের বেশী ছইবে কোন ছিলাবে 🤊

ভটাচাৰ্য্য মহাশর বলিয়াহেন, বলীয়-লাহিত্য-পরিষদের একবানি তল্পার পুঁথির রচনাকাল ১৫৫৪ শকাক। আমি পুঁথিবানি পরীকা করিয়া বলিয়াছি যে উহার অলাই তৃতীয় এবং চতুর্থ অবের পাঠ অনিন্দিত। তাঁহার পাঠকে অনিন্দিত এবং কালনিক বলা সত্ত্বেও আনি অপর কোন পাঠ দেই নাই, এই বিষরের প্রতি তিনি এবার পাঠকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়া-ছেন। যাহার পাঠ অনিন্দিত, তাহার যা হোক একটা পাঠ দিলেই কালনিক পাঠের স্কট হয়। তাহাতে বর্তমান সমস্যা সমাবানে কোনই সহায়তা হইবে না।

রতুনার্থ শিরোমণির জন্মতারির জ্ঞাত । আমি ক্ষান্তের মতাহুগারে ১৪৭৭ বীটাক লিখিরাছিলাম। ভটাচার্য্য মহাশরের মতে উহা ১৪৬০-৬৫ বীটাকে হইবে। কিন্তু এই তারিবর্গ কালনিক, জ্বকটিয় প্রধাণসিদ্ধ নহে। এবার তিনি তাঁহার তারিবর্টকে "বিনা মুক্তি বিচারে জ্ঞাহ্য" করার উল্লেখ করিরাছেন। যাহার পক্ষে বিশেষ কোন মুক্তি আছে বলিয়া আমি মনে করি না, তাহার বিচার করিব কি ? বিশেষতঃ আমার প্রবদ্ধ ছিল কুফামন্দ সম্বন্ধে; রবুমাণ শিরোমণির ভারিব উহাতে প্রসক্ষমে উল্লিখিত হইয়াছে।

ভদ্ৰসাৱে খণ্ডিত পুঁথির সংখ্যাই বেশী। বলবাদী সংস্করণ ভন্নগারে ব্যবহাত সর্ব্ব্রাচীন পুঁথিতে পুর্ণাদন্দ এবং তদীয় এতত্ত চিত্তামণির উল্লেখকে প্রমাণকণে প্রহণ করিয়াও কেন আমি ঐ পূ বির ভারিবের ১৫৮০ শকার পাঠে সম্পেছ প্রকাশ করিরাজি, ইহাতে ভটাচার্য্য মহাশর কৌচুক বোধ করিরাছেন। অবচ দেধবিদ্যাবিং পভিতেরা সকলেই অবগত আছেম যে, সাধারণ দেখার পাঠোছার যত সহজ, অভের পাঠোছার ভদপেকা বহস্তদে কঠিন।

পরিশেষে ভটাচার্য্য মহালর ১৬০১ শকান্দে আর্থাৎ ১৬৭৯ প্রীপ্তারে অন্থানি পূর্বির ভারিব পরীক্ষার জন্ত ভদীর বাদগৃছে আমাকে আমন্ত্রণ করিরাছেন। দেকত ভাঁচাকে বছবাদ কানাইতেছি। কিছু এই ভারিব পরীক্ষার লাভ কি ? আমার বুল প্রবৃদ্ধে ভন্তগার রচনার যে কাল নিরূপণ করিয়াছিলাম, এ ভারিব ভ উহার পরবর্ত্তী। ভিনি অপর যে ঘটি পূর্বির উল্লেখ করিয়াছিলেম, উহার ভারিব প্রাচীমতর এবং পঞ্জিগণের পরীক্ষণীয়। তর্মবো বদীর-সাহিত্য-পরিষদের পূর্বিধানি পরীক্ষা করিয়া উলার ভারিব বিষয়ে আমার বক্ষর্য আয়ি পূর্বেই বালয়াছি। ভটাচার্য্য মহালয়ের পূর্বপূর্ষ নরসিংহ বাচন্দ্রির নার্যাক্ষিত হে ভন্তমার পূর্বির ভারিব ভিনি ১৫৬৮ শকার অর্থাৎ ১৬৮৬ প্রিটাক্ষরণে উরেখ করিয়াছিলেম, দে পূর্বির ভারিব আবাহি অবঙ্গ পরীক্ষীয়।

 এই সথছে আর কোন বাধান্থবাদ প্রকাশিত ছইবে না—প্রবাদী-সম্পাদক।

ঐতিহাসিক খননের কতিপয় সূত্র

গ্রীগোপীনাথ সেন

অনেকেই মনে করেন যেবানে সেবানে বনন করিলেই ঐতিহাসিক কোন নিদর্শন আবিদ্ধার করা সহক্ষাধ্য হইতে পারে। কিন্তু এইরূপ অবৈজ্ঞানিক ভাবে অপুসদ্ধান করিতে গিরা যে বিকলমনোরধ হইবার সন্তাবনা আছে সে কথা ভূলিলে চলিবে না। বিশেষ ভাবে অব্যয়নপূর্বক বৈজ্ঞানিক উপায় অবলম্বন করিলেই ভবে আবিদ্ধারকের প্রয়াদ সাকল্যন্তিভ হইতে পারে। কেবলমান্ত্র দৈবের উপর নির্ভ্তর করিয়া বননকার্য্যে পর্যন্ত হওরা উচিত নর। আমি নিম্নে করেকট প্রণালীর উল্লেখ করিলাম যাহা বননকারীদের সাহায্যে আসিতে পারে।

- (১) প্রশ্ববিরশী (Bibliography), মানচিন্নাফন বিভা (Cartography), মুনাবিজ্ঞান (Numismatics) এবং বাহ্বরের সংগৃহীত বস্ত হইতে প্রথমতঃ ধননবিভা আরম্ভ করিতে হইবে।
- (২) প্ৰাণৰিক ছাত্ৰগণকে নিকটভৱ কোন ছানে ধনম-কাৰ্বা করিবার জন্ম হাইতে ছইবে।

(৩) এই খননম্প্রগলিকে কার্য্যে পরিণত করিতে ছইলে যে হানট শিক্ষাবিদ্ধের মনে ধরিবে সেই হানট অমন করিয়া ঐ স্থানটির উপর এমন একটি চিন্দ রাখিতে ছইবে যাহাতে উডোলাহান্তের উপর হইতেও পরিভার ভাবে ছানট লম্পূর্ন দেখা যাইতে পারে। যে হানট হয়ত সভাই বুঁ ভিবার প্রয়েলন হিল, ভূলবশতঃ ঘূটির বহিত্তি হইরা গিরাহে তাহার উপর বিশেষভাবে মনোগোগ দিতে হইবে।

প্রাচীন ধ্বংসাবশেষসমূহের মধ্যে যদি কোন প্রনো দলিল পাওরা যায় ভাষা হইলে ইছার বিশুভভা, ভাবার্থ এবং প্রয়োজনীয়তা সহছে বিশেষ ষত্ম ও বৈর্ষ্য সহকারে অনুসভান করিলে প্রাচীন আমলের অনেক ঐতিহাসিক ভব্য জানিতে পারা যাইবে। প্রাচীন ভব্য জানিতে হইলে প্রাচীন পুঁধি ইত্যাদিও অভিনিবেশ সহকারে পাঠ করা আবশ্বক।

প্রাচীন ঐতিহাসিক গ্রন্থাবলী হইতে ধননকারীরা প্ররোজনীর সংবাদ সংগ্রহ করিতে পারেন। সর্ব্বাপেকা প্ররোজনীর বিষয় হইতেহে একট নির্দিষ্ট কোন ছানের এবং সেধানকার পুহাদি

নির্দ্বাণের কাল নির্ণয় করা। কোন ঐতিহাসিক, ভৌগোলিক किश्वा পরিত্রাক্তের বিবরণী হইতে এ সপতে তথ্য সংগ্রহ कवा घारेएछ शारत । वदा घाक, श्राठीम महाकारवात प्रशंत কথা। রামারণে বর্ণিত আছে রামচক্র অবোধাার রাজ্য করিতেন। সেই কাব্যে রাষারণী বুরে ছান্টর পারিপার্থিকের যে বৰ্ণনা আছে ভার সলে হয়ত বৰ্তনান অবোৰ্ণার কিছু কিছু যিল আছে। সকল শ্ৰেষ্ঠ কাব্যে বে সকল ছামের অভিরঞ্জিত বৰ্ণা আছে ভার বৃলহুত্র পাই আমরা সাধারণ বচতদার অল-मुलाद कावाश्रञ्ज अलिद भरता। त्रिश्क स्वीश महावश्य नामक পালিগ্ৰন্থের আধাান হইতে বহু ঐতিহাসিক তথ্য পাওয়া যায়। মহাভারতে অলু কলিল, সুন্ধু পুৰু প্ৰভৃতি বহ দেশের নাম আছে। পৌরাণিক কাব্যের বছ গলের মধ্যে ইভি ছালের মালম্পলা ভরপুর। ভারতবর্ষের ঐশ্বয়ের বর্ণনা পভিয়া বৈদেশিক রাজ্পণ এই দেশ জহু করিবার লোভ সংবরণ করিতে পারেন মাই ৷ প্রীসদেশীয় একজন ঐতিহাসিক লিখিয়াছেন---"ভারতবর্গে বহুজাতির বাস, তম্মব্যে গঙ্গারিড জাতিই সর্বশ্রেষ্ঠ (অথবা নর্বাপেক। প্রভাবশালী)। ইহাদের চারি সহত্র বুহুং কার পুস্ক্তিত রণহতী আছে, এই বছই অপর কোন রাজা बहे (अम क्य कतिएल शादन नारे। श्वर ज्ञारमक्काशादश এই সমুদ্য হন্তীর বিবরণ শুনিয়া এই জাভিকে পরান্ত করিবার ছরাশা ভাগে করেন।"

জি, এ, গ্রীরাস্ন 'মাণিকচন্দ্র রাজার গান' লংগ্রছ করিবা
উক্ত রাজার দেশ কোথার ছিল, কাব্যের বর্ণনা অন্থ্যরণ পূর্বাক
ভাষা জাবিকার করিবার প্রয়াস পান। ভিনি বুকামন-বর্ণিত
প্রণালীতে প্রথমে কাজ জারন্ত করিয়া দেন। সেই কাব্যে
গিবিত জাছে 'কোঁট জর্বাং বছ স্থাম ব্যাপিয়া রুপ্তিকার বছং
একটি গড়' বিদামান এই কথাটার উপর নির্ভ্তর করিয়া তিনি
রংপুরে উপরোক্ত স্থানট জাবিকার করিতে যান। ভিনি যাছা
পঞ্চিয়াছিলেন সে অন্থারী কোন চিহ্ন সেবানে দেবিতে
পাইলেন না। ভিনি ময়নামভীর পূর্ব্বে কোন প্রকার বাত
কিংবা দবজা দেবিতে পাইলেন না, কিছ ইছার চল্লিশ কূট
দ্বে এগুলি তাছার দৃষ্টিগোচর ছইল। নদীর মোহনা
রোনকে অব্যন্থিত বলিয়া কাব্যে বর্ণিত আছে তিনি টিক ভাছার
বিশ্রীত দিকে লেট প্রবৃহ্মাণ দেবিলেন। শহরের মূই
মাইল দক্ষিণে ময়নামভীর কোট তাছার নকরে পঞ্চিল।
তাছার পুন্তক ছইতে কিয়লংশ উদ্ধৃত করিলাম।

"It is in the form of a parallelogram rather less than a mile from north to south, and half a mile from east to west. The fellowing sketch taken in riding round it, will enable the reader more easily to understand it than my account. The defences consist of a high rampart of earth, which at the south-east corner is irregular, and retires back to leave a space that is much elevated, and is said to have been the house of

अगरशस सम्बंस

শিশুপালনের সম্যক জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এক ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অন্বিতীয়। জ্ঞিটামিন ডি, বি১, বি১৭ দহিত মৃল্যবান উদ্ভিজ্ঞ ও রাসায়নিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূণাঞ্চ টিনিকটি প্রত্যেক শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দক্ষোদ্যমের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিম্নাধিত রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুদের ষ্কৃত্তের পীড়া, অঞ্জীণতা, হুধ ভোগা, শেট কাণা, কোটকাঞ্চিন, রক্তশৃত্তা, ক্যাতা, ব্রন্থাইনি, রিকেটন ইত্যাদি।

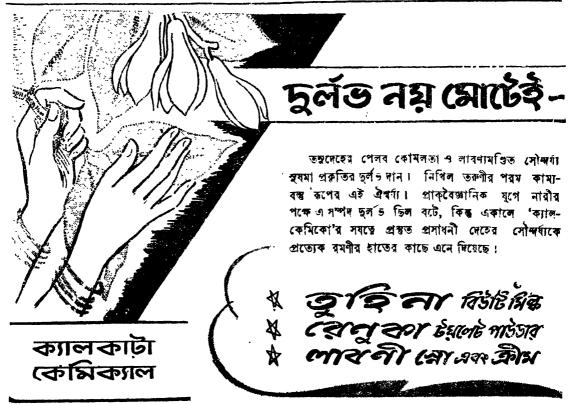


the Raja's minister (Divan-Khana). On the east side I observed no traces of a ditch, nor gate, but a ditch about 40 feet wide surrounds the other three faces. In the centre of each of these is a gate defended by outworks, and in these are a good many bricks. At each angle of the fort has been a small square projection, like a sort of bastion, extending however only across the counter scrap to the ditch; and between each gate and the bastion at the corner are some others of similar construction. The earth from the ditch has been thrown outwards, and forms a slope without a covered way. At the distance of about 150 yards from the ditch of the north-east and south sides, are parallel ramparts and ditches which enclose an outer city, where it is said the lower populace resided. Beyond these on the south is another enclosure, in which it is said the horses were kept. Parallel to the west side of the city at about the distance of 150 yards runs ; fine road very much raised but its ends have been swept away by changes that have taken place in the rivers." (T. R. A. S. B., 1778, pp. 136),

এই বিভ্ত বৰ্ণনা ছইতে সাধারণ খননকারিগণ আবিষ্কার করিবার প্রতিত্ত হলিস পাইতে পারেন।

শিলা, মুদ্রা, মৃথ্যি অথবা বাচুকলকাদিতে উৎকীর্ণ লিপি পুডকখলি (Epigraphie Texts) খব মনোযোগ সংকারে পরীক্ষা করা প্রয়োজন। শিলালিপি বাতীত ডাত্রকলক, বা পাহাডের গাত্রে লিখিত লিপি কিংবা স্বভিত্তে উৎকীর্ণ লিপি-পৃতকে কিছু তথ্য যদি পাওৱা যায় তাহা হইলে পাঠোছারের জন প্রাণপদ চেটা করিতে হইবে। বুলাগুলিতে ধব প্রাচীন আমলের রাজাদের সহতে বহু তথ্য উৎকীর্ণ থাকে। যেনন প্রশোকের শিলালিপি হউতে স্নাটু প্রশোকের প্রকাশ-প্রস্তির কথা জানা যায়। এই সকল শিলালিপি হউতে তংকালীন দেশের প্রবহা অহ্যান করিতে পারি। সমুস্তপ্তরে মুদ্রায় তাহার বীণাবাদনরত মুর্নি দেখিরা স্বতঃই মনে হর তিনি একক্ষম দলী চপ্রির নুপতি ছিলেন। মপ্রবাজ্ঞগণের শিলালিপিসমূহে বাংলার বহু পরাক্রান্ত নুপতির নাম পাওয়া যায়। পাহাওপ্রের খোদিত প্রভার কিংবা পোডায়াটির ক্ষক হইতে তদানীগুন স্বাক্রের বহু তথ্যের স্থান পাওয়া যায়।

প্রাচীন মুম্রাণ্ডলি হউতে দেশের সভাতার সর্মণ অবগত হওয়া যায়। অপ্তয়ুবের পরে সর্পমুদ্রার প্রচলন হয়। তংপুর্বের মৌলা এবং তাতারুলার প্রচলন ছিল। আবুনিক মুদে প্রচৌন ইতিহাস আবিষ্কার করিবার যে সকল প্রণালী সমূত্ত হইয়াছে তথালো শিলালিপি সমূত্রে পাঠোছারের বিশেষ অর্থ্য আছে। এই সকল লিপি যে স্থানে আছে সেই স্থানে কিংবা তরিকটাটো স্থানসমূহ যদ সহকারে পরিদর্শন ও পর্যবেক্ষণ করিলে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হউতে পারে। সকলপ্রধার শিলালিপি, তুল নক্ষা, মহাদুলাবলী (paporamas) এবং নানা প্রকার প্রাচীন চিত্রাবলী ইত্যাদি স্ইতে ব্যন্তর আবিষ্ঠার করিবার হুদিস নিলিতে পারে।



व्याष्ट्रीय मार्थिक अवर विश्वकत्रा वार्षिकायामारम एम-भ्याबद स्टेट बबार्य चात्रिक। जाशास्त्र काहियी श्री এক দিন ছিল ইভিহালের বিষয়বন্ধ, কিন্তু আৰু তাহা ঐভিহাদিক সভা ও ভবা হইতে বিচ্যুত হইয়া ক্লপকৰা, লোকসাহিত্য এবং সাহিত্যের পর্যায়ভুক্ত হইয়াছে। এই সমস্ত কাহিনী অনুধাবন কহিলে অনেক ক্লেত্ৰে বনন-কার্ব্যে বিলেখ সাহায্য পাইতে পারি। টাদসদাপর আমন্ত अपृष्टि म्थ्रांत्रद्रपत्र अधुस्रशासात्र कारिनी इटेट्ड बक्या (य ভারতের নিকটবতী ধীপপুঞ্জের সভিত ভাহাদের বাণিজ্ঞিক व्यानिधनान दिन छारा (तम तुवा याद्र। हेल्मानिभिन्ना, बकारमम्, निरम्भारमध्य आहीम काहिनी পश्चित एम पूर्व পেই **স্থানের সহিত পরিচিত হইবার জঞ্জত ভার**ত-সন্তান ধর ছাড়িয়া অস্থানার উদ্দেশে পাতি দিয়াছিল। পেই সকল *দেশে* প্রাচীন ভারতীয় প্রতিতে নিশ্বিত মন্দির **দেখিয়া অতীত ভারতবং**গর প্রভাব কতটা বিভাগ হইয়াছিল তাহা অধুমান করা যায়। একপ দেশের নামের ভালিকা (teponomy) হইভেও আবিধারের অনেক সাহায্য भावश याहेत्ज भारतः। द्या, त्रत्न, छुपाष्टेक विश्वारक्त--toponomy and topology remain useful auxiliary training but are inadequate. It is necessary to call in archaeology,' প্রাচীন খেশপ্রসির নাম चाविकात करा पूरवे कठिन, छात्रा क्टेटन ब दे विषय



निडाकीत जनुमत्रात :---

বাংলার বিখ্যাত স্বত ব্যবসায়ী শ্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার শ্রী" নার্কা স্থতের নূতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জ্জন করিয়াছে, তাহা স্থত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

KASARANDARANTAHAN KANTAN KANT

ষাঃ শ্রীস্থভাষচন্দ্র বস্থ

সমাকৃ বাংপত্তি লাভ করিতে হইলে প্রত্নতন্ত্র পড়া আবছক। লোকসাহিত্য কিংবা প্রাচীন কাব্যগুলি ধুব মৃত্র সহ-কারে পুখাহুপুখভাবে অধ্যয়ন করিয়া সেওলিভে লিপিবছ विकिन्न (एन अवर अक्ष्मभन्नद्व नाम अवर वर्गना क्रेट्ड লতুমানের উপর নির্ভর করিয়া মোটাযুট একট মানচিত্র আঁকিয়া वर्षमान मान्हित्बद महिल जुलना कदिएल अभव अपद अस्वके। স্টিক সিধাভে পৌছিবার পভাবনা আছে। আবিষারকার্ব্যে খানীয় উচ্চপদম্ব রাজকর্মচারী হইতে আরম্ভ कतिया आधा साम्म, क्षक, जार्जधानी, नियम, नियम अर चिक दृद्धा कि अकृषि भक्ति निकृष्ठे स्ट्रेलिये नाना वेदत সংগ্রহ করা যাইতে পারা যায়। যদি কোন ছানে লোকমুৰে ख्या अरबर कदिवाद अस्तावना ना बादक छारा सरेश स्त्रुन. ভগ্নপ্রাণাদ কিংবা অভ কোন হল অবসম্বন করিয়া চেঠা করা প্রয়েজন। প্রাম্য লোকদের মুখ হইতে নানা প্রকার তথ্য সংগ্রহ করিয়া ভাগাকে ঐতিহাসিক সভ্যের আলোকে যাচাই করিয়া লইবার চেষ্টাও করিতে হর। অবঞ্চ ভাহা-দের অনেক অবান্তর কথা ভনিতেও হইবে, কিছ ভাহাতে বিব্ৰক্তি বোৰ কবিলে চলিবে না। গল ভ্ৰিতে ভ্ৰিতে খানভলি কোৰায় আছে তাহা দেবাইয়া দিবার জয় ভাষাদের অমুরোধ করা প্রয়োজন। সেইস্থানে ট্রিক ভাষাদের এক খন হইয়া কাজ করিতে হইবে। তাহারের সহাত্তপ্তি আক্র্বণ করিবার জঙ গ্রাম্য পঞ্চায়েভের বৈঠক ও বিভিন্ন পূজাপাৰ্ক্ত ইভ্যাদিভে যোগদান করিয়া প্রমাণ করিভে ष्ट्रित जाविषादश्वाभी जाशास्त्रदेश अक करा। किष्ट किष्ट किकिश्मा-विश्वा निका कविए स्टेर्ट । विमानुरमा প্রামা লোকদের চিকিংসা এবং সেবা-শুক্রায়াদির ব্যবস্থা করিলে তাহারা কুভঞ্জাবশত: প্রাচীন ঐতিহাসিক তথ্য আবিদ্ধারে সাহায্য করিবে।

প্রাচীনকালে সমগ্র এশিয়ার বহু অঞ্চল এবং মিশর দেশের বড় বড় শহর ও গ্রায়গুলি ধ্বংলজুণে পরিণত হইয়াছিল। এই সমস্ত প্রত্নক্ষা বুবই চিন্তাক্ষ্বক। আভিন সাহেব ঐতিহাসিক বননের নিয়সিবিত আটট বারার উল্লেখ করিয়াছেন:—

- (১) সাধারণ নগর বা জেলার বিভূত বর্ণনা
- (২) কোন নিৰ্বিষ্ট স্থানের সংক্ষত
- (৩) ভূতত্ত্বের সঙ্কেত
- (৪) মান্তবের কার্যপ্রপালী
- (৫) ব্রক্ষের বর্জনের সংখ্য
- (৬) জ্মির রং
- (৭) চৌথক নম্বেড
- (৮) **ভীবিভদের** সম্বেভ

ঐতিহাসিকেরা ভর পাষাণ-ভূপের মধ্যে অভীত রুগের প্রাণশন্ম ভনিতে পান, ভরভূপ সরাইরা তাঁহারা অভীত রুগের আগাকে উদ্লাইত করেন।

চেটা থাকিলে ছূর্গম স্থানেও ধননকার্য্য করা যায়। জে. ভি.
মরগান মরুভূমিতেও কিরুপ প্রাগৈতিহাসিক ভব্য আবিদার
করা যায় ভংসথয়ে বলিয়াহেন—

Prehistoric and prautive cemeteries can be recognized in the desert where the ground shows a quantity of spots, of clear sand very near one another. The spots corresponding to the tombs of which the earth is heaped up are caused by a depression which the wind fills afterwards with fire sand. The tombs show the same external appearance as the vaults of an early historic period, it is necessary to make some investigations, then, once the cemetery is discovered, it is enough to attack all the points in which ar iron bar will easily pierce again."

আবিদারের কতকওলি মাত্র প্রণালীর উল্লেখ করা হইল।
তুগর্ভে প্রাচীন কৃষ্টি ও সভ্যভার অনেক সম্পদ নিহিত আছে।
বননকারীদের স্বরণ রাখিতে হইবে ভাষা আবিদার করিতে
হইলে বৈর্দ্ধা, অব্যবসার এবং শিক্ষা এই ভিন্টির বিশেষ
প্রয়োজন।



বিশুদ্ধ হুমজাভ

টেলি:--বাসজী বি

পো: বন্ধ ৬৮৩৬ কলিঃ

ষি, স্থপারমার্চেন্ট্রস্, একস্পোটারস্, ইম্পোটারস্ ও জেনারেল অর্ডার সাপ্লায়ারস

প্রমথনাথ পাল এও সন্স্ ২দি, রামকুমার বন্ধিত লেন, কলিকাতা—৭

পুশুক - পারচয়

স্বর্গাদপি গরীয়সী—(ভূতীয় ২৩) 🚇 বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়। জেনাবেল প্রি^{টা}স এয়াও পাবলিশাস লি:। ১১৯, ধর্মতলা খ্লীট, কলিকাভা। মূল্য---৪১ টাকা।

ভূতীর খণ্ডে এই স্থুকং উপ্ভাস শেষ কইয়াছে। বাংলা ও বিহাবের পটভূমিতে সেকালের সমাজ ও বীভিনীতি-পরিপুষ্ট এক **ওচিওজ জননী-**মূভিকে লেখক প্রিপূর্ণ মধ্যাদার প্রভিষ্টিভ কবিবাছেন। এই মতিমময় জীবন বাতিবের সংঘাতে চঞ্চল নতে — কিন্তু চঞ্চল নহে বলিখাই ধে বৈচিত্ৰ্যহান ভাচাও নহে। বিস্তীৰ্ণ ভারতের কুল্ল এক কোণে শান্তিময় নীড় বাঁধার মহোৎদব এর লাগিয়াই আছে। পুত্ৰকোৰক বৃদ্ভদগ্ন চইয়াও আলোককে আরুদাৎ করিয়। মখের উত্তাপে বেঘন বছ বর্ণরঞ্জিত হটয়া একাদন আগ্রপ্রকাশ করে—তেমনি স্লেচ-প্রীতি-প্রেম-স্পা- সঞ্জাত বু'তওলির বৈচিত্রে অস্তব-লাবণ্যে উদ্ভাগিত হইয়া প্রকাশ পাইয়াছেন এই মা। পলাভক কাল পুঠে কোন চিহ্ন বছন করে না-শ্ভিভাৱে দে লুব নয়, কিন্তু শ্ভি-দৌরভে ভার প্রভ্যেকটি মুহুর্ত্ত ক্ষভিধিক্ত। নিরবধি কালের পুঠপটে মাতৃ-কেক্সিক বছ ছবি বহু রীতি-আচার—বহু কাহিনী-সংলাপ ফুটিয়াছে। যে দাগ জীবনের অধ্যিক্ষায় আঁকা থাকে—দে দাগ এই কাহিনীর মধ্যে নাই--থাকিলেও একাহিনীর উপছীব্য তানয়। এর মধ্যে আছে সৃতু কমল-সৌরভ---:য কমলের চারিদিকে ঘিরিয়া আছে উশ্মিকম্পিত অপবাশি—কমলবৃত্তের প্রতি দণ্ডের—কাটার আখাত অদৃগ্য, জলের দাগও পাপড়িকে মান করে না। ভরু সম্পদে-বৈচিত্র্যে-ভরা এই কাহিনীও হাদয়ে কৌতুহল জাগায়---অন্তরকে আড়েশ্ন কবে--এবং মধুব বসে আপ্লুক্ত কবিয়া উর্দ্ধলোকে লইয়া যায়।

প্রভীর নিষ্ঠা ও বাস্তববোগের দায়িত্ব সুইয়া সেওক স্থর্গাদ্পি গ্রীয়সী বচনা করিয়াছেন। এই বচনা তাঁর সার্থক ও স্থশর ঙ্ইয়াছে।

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

নেতাজীর জীবনবাদ--- এখনিল রার। প্রেসিভেনী नारें(बरी, ७४, करनक द्वीहे, कनिकाला । श्रृही ১०७, मूना ১।० ।

পাঁচট অব্যাহে সংক্ষেপে অবচ পরিস্কার ভাবে সুভাষ-हरस्य जामर्ग ७ कर्मकीवरमद जारमाध्या कवा श्रेवारह। নেতাকী এক্দিকে যেমন মহাপ্রাকীর অন্থরক্ত হইয়াও ভিয় আঘর্ণের অমুগামী, অনাধিকে তেমনি ভাতার আঘর্ণ মান্ধবিদ ও নাংসীবাদ হইতেও পূবক। তিমি সমাজতন্ত্রবাদ মানেন অৰচ তিনি ছাতীয়ভাবাদী-নাংগী সম্প্ৰদায়েয় বিকৃত সমাজতল্পবাদী নহেন। ভারতীয় সংস্কৃতি ও ঐভিত্যের প্রভি ঐকান্তিক নিষ্ঠাই নেতাকীর জীবনের অপূর্ব্ব বৈশিষ্ট্য। সুভাষচজ্রের জীবনবাদকে এজন্য ভারতীয় সাম্যবাদ বলা চলে। সম্সাম্থিক সাম্প্রদায়িকভা ও নামা মতবাদের উর্দ্বেও বাহিরে থাকিয়া বালালী সুভাষ্চল যে আদর্শ দেশের সন্মুধে ধরিয়াছেন তাহা ছাতীয় ছীবনের অমূল্য সম্পদ। প্রস্কার অতি স্থার ভাবে নেতাজীর জীবনবাদ বালালী পাঠকের নিকট উপহাপিত করিয়াছেন। দেশের যুবকগৰ এই এছ পাঠ করিলে উপঞ্ভ হইবেন।

সমাজভন্তীর দৃষ্টিতে মাঞ্বাদ— ঐপনিদ বাষ। পুঠা ২১৬, মূল্য ২1০।

দমদম কেলে লেখক যে বফুডা প্রদাম করিয়াছিলেন তাহাকে ভিভি কৰিয়া বৰ্তমান এছ প্ৰকাশিত হইয়াছে। অনেকে মার্ক্সবাদ ও সমাঞ্জপ্রবাদকে একই জিনিষ বলিয়া ভূল করেন। মার্জের দর্শন পূর্ববর্তী সকল দর্শন হইতে পূর্ণক, ইহা ৰুড়বাদের এবং ইভিছাসের আর্থিক ব্যাখ্যার উপর প্রভিষ্ঠিত। শ্রেণীসংগ্রাম ইছার মূল কবা এবং এই দার্শনিক মতবাদ অভুসারে শেষ পর্যাত্ত শ্রেণীহীন ও রাষ্ট্রহীন সমাজই মানবন্ধাতির পরিণতি। সেবক বহু মুক্তিও প্রমাণ হারা ৰাৰ্ক বাদের অযৌক্তিক্তা দেখাইতে সমৰ্থ হইয়াছেন।

বিশ্বসাহিত্যে অমর দান

সৰ্জ লেখা 9 চারু ও হারু 2110 -নিখিল-ক্লাসিক বাংলার উপস্থাস – 🛭 ৪১ ··· বাংলার শাখত সাহিত্য ···

চিরাদনের রূপকথা ৬ ৰাংলার ব্রভকথা 9

সমগ্র দেশ-বিদেশে

দাদামহাশ্বের থলে

জগতের বাঙ্গালীর



ভাগ্ৰভ-ভাভি-গঠন বই ২।

बंच भार्क अरमरम वर्षमात्म वर्षम क्रांतिल माच वारमव প্রকৃত সরণ ও ভারতীর সভ্যভার উপর উহার প্রতিক্রিরা 🏞 🧍 ভাষা পুণরিস্ট হয়। একণ পুতকের বহল প্রচার বাহ্নীয়।

শ্রীঅনাথবন্ধু দত্ত।

সমাজ, সংস্কার ও সংগঠন--- নবভাব नारेटबरी. ১মং কাকুছগাছী ফার্ড লেন হইতে উ্রজানেজনাথ বিশাস कर्कुक क्षकानिज। २८ गृष्ठो। बुन्ता ।/० व्याना माज।

হিন্দ্-সমাজকে সংস্কৃত ও শক্তিশালা করিবার ব্রক্ত লইয়া এই পুভিকা প্রকাশিত। বর্ডমান মূরে যে প্রতিযোগিতার স্থাবে এই স্মান্ধ প্রিয়াহে ভাষাতে বিকরী হইতে হইলে चूमचंद्र इहेटल इहेटन, चटनक मध्य इहेटल इहेटन चाळ्यननीम । हिन्-जमाक अध्यक विन इहेट इत-कन। এই अमाक्टक মৃতন ভাবে সংগঠিত করিয়া ভূলিবার চেটা আরম্ভ হয় এক শত বংসর পূর্বে, রাম্মোছন রায়ের সময় হইতে। আঞ খাৰীন ভারতে দেই চেষ্টায় নৃত্য করিয়া ছাত দিতে ছইবে, এই পুত্তক ভার সহায়ক হইবে। নোয়াবালিতে সম্রদায়-বিলেষের বর্বারোচিত আক্রমণের পর সে সময়ে রক্ষণশীল হিন্দু-সমাজে যে প্রতিক্রিয়া দেবা দিয়াছিল ও এরণ আপদ নিবারণের জন্য যে ব্যবস্থাদি প্রভাবিত হইয়াছিল, ইছাতে তাহার বিবরণ দেওয়া হইয়াছে। এরপ সংগ্রহের একটা বৃদ্য षाए।

শ্রীস্থরেশচন্দ্র দেব

জনগণ-অধিনায়ক (নাটক)--- খ্রীগমর সরকার। এইচ, সরকার এও সন্স। ৩এ, লাইবেরী রোড, কলিকাতা। बुना--इरे ठीका।

(मटमत खानो, खने, कवि, मनौयी अवर मशान वाकिशक কেন্দ্র করিয়া জীবনী-মাট্য রচনার পথ প্রদর্শক সম্ভবত: 'বন্দুল'। 'ঊ্মবুস্দুদ্দ' এবং 'বিভাগাগর' বাংলা নাটকের বছ দিনের এই অভাব পূর্ব করিয়াছে। ইভিপুর্বের বাংলার প্রব্যাত্তনারা নাট্যকারেরা শীবনা-নাটককে প্রায় উপেক্ষা ক্রিয়াই পিয়াছেন। আনন্দের বিষয় পেৰক আমাদের এই

ৰৱণেৱ আৱ একবানি নাটক উপহার দিয়াছেন এবং বলিডে ৰিবা নাই তিনি সাকল্যলাভও করিবাবেন আশাতীত রূপে। বু\$ল-শাসনে নিশীভিড জাভিত্র পত্রবঞ্চার অবসাম ঘটাইবার ভভ 'আভাদ হিল কৌৰ' এবং তাহার সর্বাধিনায়ক **র**পে নেভালী সুভাষচজ্লের অলোক্তিক বীরত্ব এবং সংগ্রাম-কুপলভার কাহিনী আৰু কনসাবাৱণের চিতে বিপুল মৰ্যাদা লাভ ক'রয়াছে। ভারতের বাহিরে দেশের মুক্তি-সংগ্রামের এই অব্যায়ট এছকার অত্যন্ত অব্যাহী কবিয়া নাটকের মাধ্যমে পরিবেশন করিয়াছেন। স্থভাষ্চলের রাজনীতিক অজা, ভবিষাভৃত্তি, বৈষা, সাহল, সংগ্রাম-পরিচালনায় তাঁহার অপুকা দক্ষত!--- সৈনিকদের উপর তাঁহার মহান্ বাঞিছের অভুলনীয় প্রভাব-জাপানের সাহায্যগ্রহণ সভ্তেও 'আজাদ-हिल-नवर्गायके'टक कामार्यक डार्चाव हिनारव विनित्यान ক্রিতে না দিবার 🕶 তাহার দুচ্চা—আপন জীবননালে উষ্ণত শ্বপ্রাতকের প্রতি করুণাপ্রদর্শন প্রভৃতি নেতাশীর বিরাট ব্যক্তিছের বিভিন্ন দিক এবং আঞাদ হিন্দ ফৌকের লংগ্রাম-প্রচেষ্টার উদ্ধল রূপট ছোটবাটো ঘটন'-বিচাসের সাহায্যে কুৰলী নাট্যকার পাঠকের মান্দলোকে ভূলিয়া ৰৱিষাখেন। সাধীনতা-যুধের শ্রেষ্ঠ হোতা স্কাধচন্দ্রের 'নেভাঞ্চী' রূপটি ভিনি সার্থক ভাবে চিত্রিভ করিয়াছেন। সংগাপ মাৰে মাৰে একটু দীৰ্ঘ ছওয়া সত্ত্বে ভাষার মাৰুখোর গুৰে পঞ্চিতে কোৰাও বিৱক্তিকর মনে হয় না। 'জনগৰ-অবিনায়ক' আপন রসমাবুর্য্যে ক্ষ্চিতে আগন লাভ করিবে তাহা নিশ্চিত।

শ্রীমন্মথকুমার চৌধুরী

তশ্র তুরী — শ্রীশচীশ্রনাথ মিত্র। প্রবস্তক পাবলিশার্স। ৬১ বছৰাজাৰ ট্ৰাট, কালকাভা। দাম--৪৭০।

রাজনৈতিক পটভূমিকায় লিখিত, ৩৯৮ পুষ্ঠার সমাপ্ত একগানি শ্ববৃহৎ উপ্রাম। নানা প্রকৃতির বহু চরিত্র উপ্রামে স্থানলাভ ক্রিয়াছে, কিন্তু কোন একটি চরিত্রও বিশেষভাবে মনকে নাড়া দিতে সক্ষম ১৪ নাই। উপভাসের একটি প্রধান চরিত্র বিশু—কিন্তু ষে ক্রেপ উপ্রাসের স্ট্রায় ভার দেখা পাওয়া গিয়াছিল একটি গুপ্তসাম্ভির সভ্যদের সংস্পর্শে আসিয়া, বিশেষ কবিয়া

শি ৰ রা ম चिवत्रात्मत्र मास्त्र मास्य कात्मत्र क्या, ৰভীর তত্ত্ব, কীবনদর্শন, সমাঞ্চ-সচেতনতা, মানুষের হু:ধক্ট এবং তার জন্ম কাতরানি, टारुत्र वाक अवः टाक्षण पत्रप्, द्रह्यः বিশ্বর, কৌতুত্ব, রোমান্স এবং রোমাঞ্চ এ সবই হয়ত আছে, ওতপোডভাবেই রয়েছে হয়তো—খদিও সেটা সম্বেহগুল। কিন্তু একটি বিষয় একেবারেই সম্পেহাতীত বে ভার কেখা বেশ মলাদার--এমনি পড়ভেই এত আমোদের-পত্রে পত্রে এবং চত্রে চত্রে

চ জ ব তা র প্ৰ ক্ত - তা লি কা দেবতার জন্ম 9 (भरत्रथत्र। कं १ए। 2110 আত্মীয়তা বজায় রাখা সেকো নয় ২৷• প্ৰেমের বিচিত্র গতি **७**、 মেয়েদের মন **२॥•** বাড়ি থেকে পালিয়ে 2 বিনির কান্ডকারখানা 310 শিত্রাম চকর্বর্ডির মতে৷ কথা

এডই রস আর রসান যে কেবল পড়ে গেলেই কেমন ক্তি লাগে—যদি ভার গভীরে আপনি নাও ভলান। ভলিয়ে দেখলে হয়ভো বা উপরের ঐগুণগুলিও আপনার নঞ্জে ঠেকতে পারে—কিছু বিচিত্র নয় ৷ (যদিও সে এক রসাতল কাও !—ক্স ভাহলেও) এছাড়াও মুখ্য কণা, আপনার অবকালের মুহুত গুলি অফুরম্ব আনন্দে কাটাতে হ'লে শিবরামের এক সেট বইরের মডো এমন বন্ধু আর কিছুই হতে পারেনা।

কাটুন-লাঞ্ছিড म व 😘 नि हे স মা ন এ স্পোরিয়ম লিঃ—২২।১, কর্ন ওমালিস খ্রীট,

বলার বিপদ ১৩

ङेन्টात्रमाणमा*र*णद्वत्रङेङेन्টात्रमाणमारणद्वत्रङेङेन्টात्रमाणमारणद्वत्रङेङेन्টात्रमाणमारणद्वत्रङेङेन्টात्रमाणमारणद्वत्रहे

মানবিক ও পরমাণবিক

বিষ্ণু মুখোপাধ্যায়

মানবকল্যানে নিয়েছিত প্রমণ্ শক্তি নমগ্র পৃথিবতৈ কা অপাঠাত আলিকাণ্ট না বহন করে আনতে পারে। কিন্তু ইজ-মার্কিন সাম্রাজ্ঞাবনে পৃথিবাকে সেই আলীবনে থেকে বৃক্তিকরে আরু এক সংনালা বৃদ্ধের জন্ত প্রমাণু শক্তির একটেটিয়া মানিকানা অবিকারের যে হীন বড়বরে লিপু তারই চমকপ্রদ ও তথাপুর্ণ বিবরণ। দাম ৬ টাকা আট আনা

णवद्वाश

বিজন ভট্টাচার্য

ক্ষত্তি ধনিক শক্তি আর আগামী সভাতার ধারক নবজাগত শমিক শক্তি—এই ছুরের অন্তর্নিতি চ ছুন্দের ওপর ভিত্তি করে লেগা পুণাক্ষ নাটক। এই লেগকেরই লেগা কৃষক ভীবনের অপক্ষপ আলেখা 'নবাল্ল' নাটকের পর শ্রমিক সমস্তামুক্তক এই নাটক নাট নাহিত্যে নতুন পথের নির্দেশ দেবে। দাম ত টাকা আট আলা।

আধুনিক চীনা গল্প

লু কুন, লাও ঢাঅ, ডৈওলিও প্র চৃতি
নিইর বিদেশা শাসকের শোষণ ও অভ্যাচারে
রিজ্ঞ ও বঞ্চিত চানের সাধারণ নামুদ কি
অমান্ত্রিক টোগ ও অধাবদারের সজে নতুন
মানব-সমাঞ্জ গড়ে তুলেভে তা আজ জগতের
বিশার। নতুন চানের জনজাগরণের কালিনী
— অধ্যানক চীনা গল"। বর্জমান চীনের
লোগ লোগকদের আটি সমাজ-সচেতন
গল্পের সংকলন। অনুবাদ করেভেন: অমল
দাল্পের। দাম ভিন টাকা আট আনা।

भाबीब गठन

ইলিয়া এরেনবুর্গ

ফ্টালিনপ্লাইজপ্রাপ্ত ব্যাপ্তকারী উপস্থানের বজানুবাদ। গত মহাযুদ্ধ এবং তার আগ্নের ফরারী দামাজিক এবং রাজনৈতিক জীবনের নিথুতি চবি। একটি মহান জাতি ও দেশের মম্প্রদার ক্রোক্ত বালু মহানদার, অনিলকুমার সিংহ। দাম প্রতি পওঃ
হ, ৩, হ, । একত্তে দিন গগুল্দানা।

নবজাতক

ম্যাক্সিম গোর্কী

বত যুগের পুঞ্জীকৃত অবহেলার যার।
রান, যারা অবজ্ঞাত, তাণের আশাআকাজন, পুথ-চুথের ওপরে লেগা মান সিম
সোকীর সাতটি শ্রেল গলের সংকলন।
দক্ষিমান ও বিভ্লালীর বঞ্চনা যাদের
দাবিরে রাগতে পারল না, নতুন কালের
প্রণাকির বাহক দেই সব মান্তবের
বস্প্রাল। দাম দিন টকো চার আনা।

পুতুলনাচের ইতিকথা

মানিক বন্ধোপাধ্যায়

আক্তকের মানিকবাবুর সমাজ-সচেতন সাহিত্যের মূলপত্র বছেছে—"পুরুত্রল-নাচের ইতিকথা"র জটিল আধুনিক সমাজবানখার চাপে মান্ন্রের আশা-আকাজ্ঞাকে পদে পদে বাধা পেতে দেপে ওঁ।র মনে হংছছিল মান্ন্ যেন অদৃত্তের হাতে পেলার পুতৃল। সেই যান্ত্রিক মানুষের ভাঙ্গা-গড়ার অপকপ কথাচিত্র। দাম পাঁচ টাকা।

ব্ৰক্ষেনাথ ভট্টাচাৰ্য

সকল দেশের সেরা কোন্ দেশ ? সে তো আমাদেরই ভারত্বই। এ দেশের বঙ মণীবা আর আন্তর্গাণী বীর যে ভারত্বর্গকে ধ্যান করে আন্তর্গান করেছেন, তাদের সেই ধ্যানের ভারত্বর্থকে মৃর্তিম্যা করে ভোলার কাজে ভবিগাং নাগরিকদের পক্ষে এ বহু অপরিহার্থ। ছবি আর সরস লেপার গজের মত মনোরম হয়ে উঠেছে ভারত-বর্ষর পরিচয়। দাম দু টাকা চার আনা।

বুমতাড়ানী ছড়া

স্থকান্ত ভট্টাচার্যা, মঙ্গলাচরণ চট্টোপাধ্যায়, বিষ্ণু দে, জ্যোভিরিক্ত মৈত্র

চোটদের অপকপ চন্দার বই। ভারত-বর্ষের ইণিচাসের প্রধান কয়েকটি ঘটনার ওপরে চন্দা কেটেচেন চারজন কবি চার রকম ভাবে। পানোয় পাতায় স্যারারের অচপ্র ধ্রান ছবি। দ্বাম ভিন টাকা।

णन्माण

কুষণ চন্দর

দেরশ প্রদাশের ছডিকলা ইন্ত বাংলার মানবভার অপমৃত্যু ঘটাবার ক্ষয়ন্ত বড়বন্তের কাহিনী। কৃষণ চন্দাকের বলিট লেখনীতে প্রদানত জাবনবোধ ও নীতিবাদেও বীতংস বিকৃতির প্রতিফলন। অবস্তা সাম্ভালের অনুবাদ। দাম এক টাকা আট আনা।

ইংরেজী ও বাংলা বইয়ের ভালিকার জন্ম চিঠি লিখুন ইণ্টারত্যাশনাল পাবলিশিং হাউস লিমিটেড

৩০, চৌরঙ্গী রোড, কলিকাতা—১৬;

শাখা : 'নতুন বই' লালদীগির পাড়, চট্টগ্রাম। ডি, পি, চ্যাটাজি, ৭৬০ পাশি কলোনি, দাদার, বোথাই। পূম্পের সায়িব্য লাভ করিবার পর ভার সে চরিত্রবল, ভক্তভা, সভ্য আচরণ সবই টুটিরা পেল এবং ভার স্থানে আত্মপ্রশাশ করিল নারী-প্রসাদলোভী এক চুর্বলচরিত্র পূরুষ। পেশকের স্পৃত্র নারী-চরিত্রগুলিও উপ্তট। সংঘের কল্যাপের জন্য পূস্প নিজের দেহকে পর্যন্ত বিশুর কাছে বিকাইয়া দিতে প্রস্তুত হইয়াছিল! আর বন্দনা—সে ভো নর্দমার ছুর্গন্ধপূর্ণ আবর্জনা। এই ধরণের নারী-চরিত্র উপভাসে কেন যে স্থানলাভ করিল ভাগা আমাদের বাবণার অভীত। অপচ উপভাসের মধ্যে লেখকের ক্ষমতার পরিচয়ও বে পাওরা বার না, ভাহা নহে। রজতকে মোটের উপর ভাল লাগিল। লেখকের ভাষা সহজ্ঞ, বলার ভঙ্গী ভাল।

জাগ্রত-জীবন--- ক্রবেন রার। দেবশ্রী সাহিত্য সমিধ। ১৯এ, তারক আমাণিক রোড, কলিকাতা। পৃষ্ঠা ১২৭। দাম ছই টাকা।

আৰা ছাৰনের ক্ষেকটি সম্প্রাকে কেন্দ্র করিয়া উপস্থাস্থানি
লিখিত হইরাছে। যে সমস্থা আমা সামাঞ্জিক জীবনে একটা
মারাক্ষক ব্যাধিওরূপ—গ্রন্থ এক নুচন দৃষ্টিভঙ্গা লইরা ভালার বিচার
করিয়াছেন। স্থানে স্থানে উপস্থাস্থানি বেশ জীবন্ত হইর' উঠিয়ছে।
আগাগেড়া এই সতি অর্গাহ্ত থাকিলে আমরা একথানি ভাল উপস্থাস
পাইতে পারিভাম। কিন্তু ক্রক্তনি অ্বাঞ্চি, অশোলন পরিভিতির
স্ঠিকরাতে রদ কিছু দুর ইইয়াছে।

শ্রীবিভৃতিভূষণ গুপ্ত

জনকল্যাণে সোভিয়েট বিজ্ঞান (সচিত্র)— শীলতেজ্ঞচন্দ্র মুখোপাধায়। পুশুকালয়, ২> রামানশ চাটার্জি ট্রাট, কলিকাতা। ১৫৫ পৃষ্ঠা, মুলা ৩,।

কঃ পান্থা—এওধাংগুবিষল মুখোপাধার। বীণা লাইবেরী, ১৫ কলেজ খোরার, কলিকাতা। ১০৬ পূর্চা, মুলা ৩, ।

সোভিয়েট রাশিয়া সম্বন্ধে চুইখানি উল্লেখযোগ্য প্রস্থ, কারণ পুস্তক ছই খানি--রাশিয়া সম্বন্ধে যথেষ্ট চিন্তা করিয়াছেন ও উচ্ছ সি বা দলগত সংখ্যার হইতে বিষ্কু হইরা তথাগ্রমাণাদি সহযোগে বুঝাইতে চাহিয়াছেন এমন ছুই জন অধ্যাপক কর্ত্তক লিখিত। আমরা ইউরোপের মধ্যে পূর্বে জার্মানীকে বিজ্ঞান বিধয়ে সম্ধিক অগ্নসর ও শ্রেষ্ঠ বলিয়া জানিতাম, क्सि वर्श्वभारन विकारनंद्र माहार्या द्वाह्ने, मभाक ও দেশের विकिन विकारण সোভিয়েট রাশিলা যে বিপুল বিশ্বরকর উরতি ও জনকল্যাণ সাধন করিতেছে তাহা প্রথম প্রস্থুথানি পড়িলে জানিতে পারা যায়। 'এ নছে कोहिनो, এ नरह अभन', प्रजाहे द्वानियाद रेनखानिक भरवयेगा ও कीवरनद বিভিন্ন ক্ষেত্রে ইহার সার্থক প্রয়োগ বিশায়জনক ও পড়িতে কৌতৃহলের -উদ্ৰেক করে। প্রস্থের প্রথম অধারে বিজ্ঞান ও গোভিরেট, বিতীয় ও তৃতীর অধ্যারে রাশিরার ভৌগোলিক পরিচয় ও বুংতর রাশিরার সংস্থান আলোচিত হইরাছে। পরবন্তী অধ্যারগুলিতে রাশিরার শিক্ষের প্রসার, কৃষি-উল্লন, রাশিখার সমূত্র ও মত্রপণ, পশুসম্পদ্ ও চিকিৎসা বিজ্ঞানের উন্নতি ও শেষ অধায়ে যন্ত্ৰবাক্ষমীর কলাণী মূৰ্ত্তি বাাখাত হইয়াছে। मःबारुष ७ उपाध्यभागांति महकात्त्र वानिवात विकारमञ्ज्ञां महारा अहे সর্বাদীন উন্নতিসাধনের কাহিনী পদ্ভিলে মানুষের বিরাট কার্যাক্ষযতা ও উভ্তমের অনম্ভ সম্ভাবনা সম্বন্ধে একটা সুস্পষ্ট ধারণা জন্মে।

ষিভীর এছ 'ক: পছা'ও সোভিরেট রালিরার বিভিন্ন বিভাগের উন্নতি স্বকে লিখিত। কিন্তু বইখানির নামকরণ সমাটান হর নাই, কারণ ইহা কি কতকগুলি দার্শনিক, সামাজিক অথবা রাজনৈতিক বা অর্থনৈতিক প্রবছের সমষ্টি, ভাষা কিছুই বুঝার না, সোভিরেট রালিরা বা সোভিরেট সংস্কৃতি বিকলে, কঃ পছা' নাম দিলে প্রস্থকার ভাল করিতেন। এই প্রস্থে রাশিরার সভাতার প্রগতি, শিক্ষার বিস্তার ও সংস্কৃতি-বিমানের কথাই মুখ্যতঃ আলোচিত হইরাছে। প্রথম অধ্যারে বিপ্লবোদ্ধর রাশিরার রূপ-পরিবর্ত্তন, ছিতার অধ্যারে রাশিরার বর্ত্তমান রাষ্ট্র-রূপ ও প্রকৃতি, তৃতার অধ্যারে বহু জ্লাতি-অধ্যাবিত রাশিরার জ্লাতি-সমস্তার সমাধানের বিষয় আলোচিত হইরাছে। রাশিরার প্রম-শিল্প, কৃষি, বৈজ্ঞানিক উরতি ও পুনর্গঠনের প্রদক্ষে পঞ্চার্থিকী পরিকল্পনা সম্বন্ধে সংক্ষেপেই আলোচিত হইরাছে। শেষ অধ্যারে কঃ পত্না অর্থাং বিটিশ ও আমেরিকার পূঁজিবান বনাম রাশিরার বলশেভিজম বা সামারাদ্ধ, কোন্ পর্থ মহাজনের পছা' তাহাই প্রস্থ করা হইরাছে। এই প্রশ্নের উত্তর মহাকাল দিবে। তবে বর্ত্তমানে রাশিয়ার বিষয়কর সর্প্লাজীণ উন্নতি ও রাশিরা সম্বন্ধে রবীক্রনাবের উক্তি—"রাশিয়ার এসেছি, না এলে এ জ্লারে তীর্থ-দর্শন অত্যন্ত অসমাপ্র থাকত"—এ সম্বন্ধে খানিকটা ইক্সিত করে।

কবিতীর্থের পাঁচালী—জ্ঞালটার অধিকারী।—আগু-তোৰ লাইব্রেরা, ৫ বৃদ্ধিন চাট্জ্যে ষ্ট্রাট, কলিকাতা। ১২৪ পৃষ্ঠা, মুলা ২০০।

প্যার ভীরে শিলাইদহের কৃঠি কবিশুক রবীক্রনাপের সাহিত্য-সাধনার পীঠছান বা কবিতার্থ বলিয়া আগামীকালের সাহিত্যিকগণের নিকট পরিচিত হইবে, কারণ এখান কইতেই তিনি জমিদারি পরিদর্শন-বাপদেশে প্যার বক্ষে বোটে করিয়া জমিদারির অন্তর্গত নানাপ্তানে পলীতে পলীতে গুরিয়া বেড়াইতেন এবং দিগগুবিভ্ত প্যার ক্রোড়ে ভাসমান বোটের উপর বসিয়া উচ্চার এবিকাংশ শ্রেষ্ঠ কবিতা, ভোট গল্প, উপঞ্চাস ও সঙ্গীতাদি রচনার প্রেরণা লাভ করিতেন। প্রস্কুকার মহাশ্র ঘটনাপ্তলে খুরিয়া ও লোকমুবে শ্রিয়া বাণু মশার ও

চালা বাধিক সভাক: ৮১

যাণাদিক সভাক: ৪১

মাসিক বিশ্ববন্ধ

মুক্তির রঙীন প্রভাতে বিশ্ববর্ধ বিশ্বমৈত্রীর আগবাঁ নিয়ে জীবনের নব জয়গানে উপস্থিত হচ্ছে।

লিখছেন: কান্তনী মুখোপাধ্যার, তারাপদ রজোপাধ্যার, অচিত্যকুমার সেনগুপ্ত, নিশিকান্ত, শিবরাম চক্বতী, বিমলাপ্রদান মুখো-

পাধাার এবং আরো বচ বিথাতি সাহিত্যিক। প্রথম সংখ্যা হ'তেই প্রকাশিত হবে ফান্তনী মুগোপাধ্যান্তের নবতম উপক্সাস

"জয় ুহে"!

— ভুবৰ্ত স্থাৰ্যেগ —

বাঁরা যায় মানের শেষ অষ্ধি পাঁচ টাকা পাঠাবেন তাঁদের বার্ষিক আহক করে নেওরা হবে এবং ঐ সমরের মধাে গাঁরা একসঙ্গে বার টাকা পাঠাবেন তাঁদের ভিন বংসরের আহক করে নেওরা হবে।

কাগজের অভাবে নির্দিষ্ট সংখ্যক মৃত্রিত হবে। প্রথম সংখ্যা হ'তে পেতে হ'লে আন্তই ত্রাহক শ্রেণীভূক্ত হোন। এজেপার কল্প সম্বর আবেদন ককুন। বিজ্ঞাপনদাতাগণ ববতর আবেদনে বিজ্ঞাপন প্রচারের কল্প প্রতালাপ করুন।

नम्भावनात्र :---

শ্রীস্থপনকুমার দেব ও প্রীতপনকুমার দেব টেকানা:—কাধ্যাধ্যক, "বিশ্ববন্ধু" জাগ্রাভ-এশিয়া-প্রকাশিকা ৬৮এ, জয়চ্ছীপুর ট্রাংক রোড, পো: বন্ধর, ২৪ পর্মণা।

श्रीममात्राय्व व्यवनान-अभीष भाषा-माश्रिष

রাজনৈতিক ও অর্থনীতিমূলক সাহিত্য

গান্ধী পরিকল্পনা

'দেশের বর্তমান ছ্রবন্ধার কথা থারা **চিন্তা** করেন তাঁদের প্র ভ্যোক কে

তাদের অ তে। ক কে আনি এই বইবানি পড়ে দেখতে বিল।'— সহাত্মা গান্ধী 'বর্তমান গ্রন্থ আন্ধান করিরাছেন। এই প্রসঙ্গে তিনি পাশ্চান্তা দেশগুলির অর্থ-নৈতিক পরিকল্পনার সহিত লান্ধী-পরিকল্পনার তুলনা করিরা দেখাইরা-ছেন বে, উভরের মধ্যে প্রভূত পার্থক। গানিলেও পেবোডটিকে অবৈজ্ঞানিক বলা চলে না। পরন্ধ, অহিসে ভিত্তির উপর প্রতিটিত হওবার ইহাতে সমাজের সর্পাঙ্গান কল্যাপের সন্ধাননাই অধিক । পরান্ধী-পরিকল্পনার মন্ধ্র অনুধাবন করিতে বাহারা ইচ্চুক উহারা অধ্যক্ষ আগরওরালের এই গ্রন্থখনি পাঠ করিলে উপকৃত হইবেন।'— আনক্ষবাজ্পার

গান্ধীজীর রাষ্ট্র-পরিকপ্পনা

'পুশুকথানি রাজনৈতিক গঠন-মূলক কর্মে অনুরাগী, চিস্তাশীল পাঠকমাত্তের অবভাপাঠা। অনু-বাদের হতে হতে ভাষার উপ্র

লেথকের আধিপত্তার নিদর্শন রহিহাছে। এরূপ ত্রুত বিষয়ের এমন ক্ষত্তন্দ অনুবাদ কম কৃতিছের কথা নহে।'—প্রে বা সী

'In every chapter there are profuse references both pertinent and illustrative to the political and philosophical literature of famous westers scholars. All in all, the book may be regarded as an administrative biner runt of the free India of tomorrow.—
The Bengali translation is idiomatic, unpedantic, very timely; it speaks well for the translator's sincerity and fidelity '—Ilmdusthan Standard 'পাছাজার দশন সম্বাদ অধাক অগ্রবাল একজন শিশেষ্ট ।
বর্তমান পুত্তক উহার বিপাতে গ্রেম্বর জনুবাদ ।
অনুবাদ সরল ও মুলানুগ ।'—আ ন ক্ষ বা জা র

শিক্ষাৱ বাহ

'অধ্যক্ষ শ্ৰীমনানারারণ জন্ম-বালের পুত্তকটি সমরোচিত এবং মাতৃভাবার সাধাযো সংকাচচ শিক্ষাগানের সভাবনা আহে কি

না বা তা বাঃনীয় কি না সে সম্বন্ধ কোন ভয় বা অবিষাস যদি থাকে তবে তাকে দূর করে দিতে যথেষ্ট সাহাব্য করবে i'— মহাত্মা গান্ধা। 'Mr. Agarwal believes in education imported through the medium of the native language of the learners. The erudite author's arguments are commencing. Those who are pondering over the post-war educational scheme should do well to go through this excellent volume.' Amrita Bazar

ছাত্রেদের গ্রভ্নমূলক কার্য্যক্রম বারো আনা

'বইখানি ছাত্রকর্মীদের কাছে অমূল্য সম্পদরূপে বিবেচিত হবে। অমূবাদ বাতে বচ্ছ হয় সেদিকে অমু-বাদকের দৃষ্টি ছিলো।'——— হ র্ব 'উনিশ শতকের

নার্শনিক আঘর্ণবাদকে বেছে-

ৰুছে বিং শ পরিবর্জিত দিতীয় সংস্করণ বারে আমা শতকের আন্তর্জাতিক পরিপ্রেক্ষিতে ও ঐতিহাসিক জড়বাদের পটভূমিকার ভারতবর্ধের রাজনীতি, সমাজনীতি ও অর্থনীতি গড়ে উঠছে।
বৈব্যামর অর্থনীতিক কাঠামোকে উৎপাৎ করে ধর্মনিরপেক্ষ বৈব্যাহীন এক রাষ্ট্রনীতিক চকে ভারতবর্ধকে পরাধীনতার পাশ থেকে
মুক্ত করাই নৃতন সমাজ্যানসের ডাক। ধর্মের কিংবা সম্প্রদারের
নামে ঐতিত্যের লোগান দিয়ে সংস্কৃতিকে বাঁচিরে রাপার চেষ্টা
সমাজের মৃত্যার আবাহন করার নামাপ্তর মাত্র। সেধিক খেকে
বলতে বাধে না বে, ভারতবর্ধের কালাস্তরের এই সঞ্জিলে হুমায়ুন
ক্রিরের 'মোসলেম রাজনীতি' স্থিট আশাপ্রদ। একটা বৃংগ্তর
ভদারনীতিক দৃষ্টি নিয়ে কবির সাহেব সাম্প্রদারিক আবর্জনা ধড়ানোর
বিরুদ্ধে তাঁর প্রগতিশীল মনের বিজ্ঞাচ ঘোষণা করেছেন।

মিনু মাসানির

ছমায়ুন কবিরের

Sacialism Reconsidered পৃথ্যকৰ নুত্ৰ দৃষ্টিতে প্ৰাপ্তল বঙ্গান্থকাৰ। ভাৰতবৰ্ষের রাষ্ট্র-নৈতিক মহলে এই বইটির বস্তবা নিয়ে সূমাজ্তস্তবাদ বাদামুবাদের আর অন্ত নেই। মাসানি বারো আনা উার রচনার গান্ধীজির মত ও পথকে প্রোচন বাল প্রতিপন্ন করেছেন।

যুদ্ধকালীন অৰ্থনীতি কেমন ডাঃ লোকনাথন সম্পাদিত কৰে বুদ্ধান্তৰ অৰ্থনীতিতে হতে পাৰে ভাই এ গ্ৰন্থে বিশমভাবে আলোচিত বারেশ আনা হয়েছে। ভাষার প্রাঞ্জনতা বিষয়বস্তুকে সংশ্রেবাধা করে তুলেছে।

'প্রসিদ্ধ্য' Bombay Plan'তর বস্থারবাদ। --গাহারা
ত্রের বস্থারবাদ। --গাহারা
ইংরাজী প্রথমনি পড়িবার
স্থার পান নাই, অপচ ১ম গণ্ড --১
বোদ্ধাই পরিবল্পনার বিষয়বস্তু জানিতে আগ্রহনীল তাঁহারা এই
পুত্তকগানি পাঠ করিলে উপকৃত হইবেন।' আন্তর্মনারার

মিনু মাসানির

ऍ९क्टे।'—धान च वाचात्र

থ্যস্থকার আমাদের গাছসমস্তা তথা গাছসন্তর
প্রকৃতি ও রকমন্ডেদ, প্রকৃত থাছের শোচনার
জ্ঞাব ও তথ্যনিত স্বাস্থাতক এবং ভয়াবধ
মৃত্যুর হার প্রভৃতি বিষয়ে মৃত্যাবান গবেষণা কারো আমানা
করিয়াছেন এবং কি প্রকারে দেশকে এই শোচনীয় ধ্বংসের
হাত হইতে রক্ষা করা যাইতে পারে তৎসক্ষমে সবিশেষ
আলোচনা করিয়াছেন। এই গ্রন্থের বহলপ্রচার বাছনীয়।

ও ছাপা

পূৰ্বাশা-প্ৰকাশিত অন্যান্ত ৰইএর তালিকা সংগ্ৰহ করণ

ভাষা প্রাপ্তল

প্রকা**শ**ক ৪

পू वी मा नि मि ए ए- नि रेंग, न ति म ह स ब ए हा, क नि का छ। र

পলীমাতার বিভিন্ন চরিত্রের যে সকল নত্না ও চিত্র সহলিয়া ছন্দের কবিভার বাক্ত করিলাছেন ভাহা জনবন্দ চইরাছে, এগুলিকে তিনি সার্থক ভাবে 'কবি ভীর্বের পাঁচালি' নামে অভিহিত করিলাছেন। শিলাচার্যা নন্দলাল বহু পদ্মাবজ্ব, পদ্মার চর, ও পদ্মাতীরত্ব পলার যে করেকগানি ছবি জাঁকিলাছেন তাহা রবাক্রনাহিছে। নৃতন উপাধান যোগাইবে। পলালীবনের বিভিন্ন দৃষ্ঠ ও চিন্তরের আরও বহু চিত্র কবিভাগুলিকে শ্রীমাজিত করিলাছে। কবিভাগুলি পড়িলা দ্বিদ্য মবজাত পন্নীর বুক্তর রত্বনির মত কবি-উপজীবা নানা উপাদানের সাক্ষাৎ পাইয়া প্রেক আনম্ভিত ইইবেন।

জীবন ও যুদ্ধ--- এ অধিনীকৃষার পাল। প্রবর্ত্তক পাবলি-শাস, ৬১ বছবাজার ষ্টুট, কলিকাতা: ১৯১ পুঠা, মূল্য ৩ ।

অপম গ্রন্থের লেখক ইতিপ্রের 'মক এলীপ' নামক সল্ল-গ্রন্থে রেপুনে লাপানী বোমাবর্ধণের সময় বন্ধা প্রচাগত ভারতবাসার ত্র্নম অভিযানের কাহিনা লিখিলা পাঠকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছেন। এই ডপজানে ভারাই বিস্তারিত বিবরণ সহ একটি করণ কাহিনা বালাগার ১০০০ সালের পটভূমিকার রচিত হইরাছে। বিগত বৃদ্ধের সমর লাপানীদের রেপুন আক্রনণের সময় লক্ষ্ণ কলার ভারতি গানিতে সমর্থ ও হইলা যে ভারতে ছিরিয়াও বৃদ্ধের অবভারতি কিরিয়া আনিতে সমর্থ হর্মাছিল এবং ফিরিয়াও বৃদ্ধের অবভারতি কিরিয়া আনিতে সমর্থ হর্মাছিল এবং ফিরিয়াও বৃদ্ধের অবভারতি কিরিয়া করিয়াও বৃদ্ধের করে লগনীয় কর্ম ও ত্র্দ্ধিনার সম্প্রীন হইলাছিল, ভারার বর্ণনায় সেথকের লেগনী ছানে ছানে ভারতিল্যো উচ্ছা দের মাত্রা অতিক্রম করিলেও মোটের উপর উপজ্ঞানখানি ফ্রপাঠা হ্র্যাছে। পাগা ও সিপুবৌদির গ্রিন্ধ মধুর চরিত্র মনে রেখাপাত করে। বিগত স্বব্রাণী যুদ্ধ ও গ্রণমেন্টের বিরুদ্ধে বিছোহ খোবণা করিয়া স্বহারা অব্যানিতা হ্রাগনী মুক্তার জীবনাব্যানের বিয়োগান্ত কর্মণ ক্রিনী অপ্তর শেণা করে।

খিতীয় অন্ধ বন্ধা ও ভারতবংশন সামান্তে যুদ্ধের প্রায়োজনে গঠিত এক বিরাট সৈজালিবিরের পাটভূমিকায় রচিত হইরাছে। Women's Auxiliary Corps বাতীত অভ্য এক প্রয়োজনে বৃদ্ধক্ষেত্রে বহু ভারতীয় ও অভ্যান্ত জাতীয় নারীর সমাবেশ হয়—যাণা কর্মের অবকালে উচ্চাপদ্ধ কম্মচারীর অবস্কাবনোদিনী সঙ্গিনী হিসাবে। এইরুপ একটি কম্ম কাইরা একটি বাঙালীর মেয়ে খামার সহিত বনিবনাও না হওয়ায় এই পরিবেশের মধ্যে আন্মান্ত এবং ক্রপের জোলুনে, ফ্যাসাবে ও

রাজজে হিডামূলক বলিয়া গভর্গমেন্ট কর্ক 'বাজেয়াপ্ত'

সঙ্গকঃ শ্রীসাবিত্রীপ্রসন্ন চট্টোপাধ্যায়

"খদেশী" যুগ হইতে বর্তমান বাওনার নগযুগ পর্যাপ্ত দেশের কাতীর সঙ্গীতের পরিবৃদ্ধিত অপুকা সঞ্চরন। বিশ্বজাতির জাতীর সঙ্গীতের পরিশ্রেকিতে বাওলার তথা ভারতের ক্রাতীয় সঙ্গীতের ক্রমপরিপতির তথাসখলিত ৭২ পৃঠাবালী ভূমিকা। থাতে, অথ্যাত, অজ্ঞাত ও বিশ্বত ক্রিদের অসংগ্যা সঙ্গীতে সমৃত।

अका न : ३३न

মুল্য পাচ টাক।

প্রকাশক—উষা পার্ব**লিলিং ছাউস** ৩৪নং মহিম হলেদার ষ্ট্রাট, কালিঘাট, কলিকাভা চট্লভায় রক্ষিনাসমাজের শীর্ষান অধিকার করিল! কিন্তু মঞাপতির মত তার আলোক, প্রাচুর্যা ও ভোগবাসনার বিশুল সমাবোহের মধ্যে থাকিরাও অবলেষে স্বামী ও পুত্রের অস্তুর্গৃচ খুতি ও খরের মারা চ তাহাকে 'দিল ডাক' এবং সব ছাড়িচা গৃহে ফিরিয়া দে লামীর সহিত নুভন করিয়া ঘর বাঁথিতে মনত্ব করিল কিন্তু আরভেই গোরার গুলির আঘাতে শিশুপুর হারাইয়াও বাঁথনহারা জাবনের প্রোতে পুনরায় ভাসিয়া ঘাইতে অপীকৃতা হইল। মিভার চরিত্রে গ্রন্থকার মনগুরের স্থানিরা ঘাইতে অপীকৃতা হইল। মিভার চরিত্রে গ্রন্থকার মনগুরের স্থানিরা ঘাইতে অপীকৃতা হইল। মিভার চরিত্রে গ্রন্থকার মনগুরের মনিপুন বিলেশন করিয়াছেন, সৈল্লাবাসে ইংরেজ, আমেরিকান ও ভারতীয় বহু পুনুষ ও নারী চরিত্রের সভিত মিতার আলাপ ও সংলাপ উপভোগা। কিন্তু বে জল্প এই পুত্রক প্রশাবেদ দাবা করে তাহা এই—বে হতভাগিনী নারীগণ বহুর মন যোগাইতে পুরুষের কমিনার বিল্ডে গুনুফক্তের আল্লাহ্নতি দিল ভাহাদের অস্তরের কোণে গৃহকোণের প্রতি, শান্তিপুর্ব শান্ত জাবনের প্রতি নিক্ষক কামনা এবং বাহিরের উল্জেল্য পরিল ভোগবহুল জীবনের প্রতি বিভূকা সময়ে সময়ে রলিনীগণের জাবনে স্থাপ্রকাশ করিয়াছে এবং গ্রন্থকার দরদা মনের অন্তর্গিকীয়ালের জাবনে আছে লক্ষ্য প্রিরাছেন।

बोविष्ठायुक्तमः भीन

কলিকাতা-নোয়াখালি-বিহার — শ্বিস্ভিত্বৰ মুখো-পাধাার। কেনারের ফিটার এও পাবলিবার। ১০৯ ধ্যাওলা ট্রাট, কলিকারা। মুলা হুল টাকা।

কলিকান্ডা-নোয়াখালি-বিহার এই তিনটি নাম একদলে উভান্নিত হইবার সঙ্গে সঞ্চে মানস্পটে ভাসিলা ডেঠে হিংদা-ছেবে উন্নত্ত বাংলা ও বিহারের হিন্দুমূলমান উভয় সংপ্রায় করুক অনুষ্ঠিত ধানের তাওব-লীলা আর নরহত্যার নারকীয় দৃশ্যের ভরাবহ চিত্রমালা। সভা মানুষের এই টল্স বৰ্ষৰ হা বহু কৰি শিল্পী ও কপাদাহিতিকের লাব্যকে বিচলিত করিয়া উছোদিগকে সাহিত্যরচনায় অনুপ্রাণিত করিয়াছে। বিভতিবাব খাটি শিল্পীর নিয়াসক্ষ মন লইছা ঘটনাগুলিকে অনুধাবন করিয়াছেন এবং নিজের অভিজ্ঞতা ও এনুভতিকে 'বিধান', 'প্রায়ণিত' এবং 'সভ্যাপ্রহী' এই ভিন্টি গলে রূপায়িত করিবার প্রয়াস পাইয়াছেন। গলগুলিতে লেগকের মনের ঝাজ মিশে নাই বলিয়া সেগুলি রসোন্তার हरेंबारक। वहेंचानि (मध कब्रिटन এकि हिवि खन औवछ इडेंडा) cbicoa সাম্বনে ভাসিতে পাকে—'বিধান' গল্পের কাফের-হত্যার প্রধান নারক রহমান অগ্নিৰেষ্টিত বার্নাতে বসিধা দেখিতেছে, তাহার ভক্মে পরিচালিভ श्वशास्त्र वाता अव्यवश्व मना भक्त यक्षनिवाली-काल्य बालावक्ष পরেশ ভাহারই ক্যাকে নিশ্চি মৃত্যুর হাত হইতে উদ্ধার করিয়া নিরাপদ ছানে ব্যাকুল বাহবন্ধনে আত্রয় দিয়াছে। 'প্রায়শিতে' গলে সামেদের মৃত্যকালীন মন্মান্তিক উক্তি: "আমি মুসলমান—কিরণ নয় --- नारमप-- कि इरव - (क शांत्र "छल कतरव-- " नांत्र के मत्न अक অপূর্ব ভাবাবেগের সঞ্চার করে। সভ্যাত্রতী গল্পে লেখক একটি প্রশ্নের উত্তর উহ্ন রাধিলাভেন। নারীর উপর অত্যাচারকারীকে হত্যা করিয়া মহাস্থার মন্ত্রশিক, ত্রিশ বৎসর যাবৎ অহিংসারণী রগুবর সিংহ কি প্রাত্য इरेबाहित्मन ?···এর खरार नोबायामिएड महाया यहारे पिराहित्मन। তিনি বলিয়াছিলেন বে, নারীর সভীত রক্ষার জন্ম আভতাতী নিধন প্রায় – থহিংসার কাছাকাছি – "Nearest approach to nonvio-

এই পলপ্তকথানি তথু যে রসস্টে হিসাবেই সার্থক হুইরাছে তাহা
নয়, ইহাতে ভাবনার খোরাকও আছে প্রচুর। হিন্দু মুসলমান উভয়
সম্প্রদারের মধাে গাঁহারই দৃষ্টি সাম্প্রদারিক ভেলবুদ্ধি ছারা থাবিল হুইরা
আছে, তিনিই এই পুতকে আয়দর্শন করিবার প্রযােগ লাভ করিবেন।
এই আয়ধ্বংসা সাম্প্রদারিকতার অবসান এক দিন হুইবেই—এবং এহ
ধরণের সাহিত্যই খাপাত বিধিল্ল, পরশ্বর বিধনমান হিন্দু মুসলমান
উভয় সম্প্রদারকে বার্থীমালাের বন্ধনে আবন্ধ করিবে।

চায়নার সেরা কাহিনী—এববীজভুমার বস্থ। কো-সমারেটিক বুক ডিপো, ৫৪, কলেছ ট্রাট, কলিকাতা—মূল্য তিন ঢাকা

অত্তেম্ব্যার সঙ্গোপাধ্যার প্রমুখ শিলসমালোচকদের কল্যাণে চীনা চিত্রকলার বদের সভিত আমাদের অলাবস্তর পরিচয়সাধন ভইয়াছে, কিন্তু টীলা সাভিতা সম্বন্ধে বাঙালী পাঠক-সাধাওণের खळाडा चर्यातमोशः खर्ठ होत्राम्य अपन वर्षक्षन क्या-স্থাত্তিকের আবেভাব ভর্ষাতে যাঁতাদের রচনা বিশ্বস্থিতি স্থান পাহবার যোগ্য : সাম্প্র'ডক বাংল্-সাহিত্যের কার বস্তমান চীনা भाशिक्षात्व हर्य हिल्क्ष छात (हाई श्रंदा । मर्के अकार वाक्षा-বৰ্জিত চীনা চিত্ৰফলা, বেমন স্বৰ্গ বংও সামাণ ত-একটি রেখার টালে বিশেষ একটি লাবকৈ ফটাইয়া ভোগে, চ'না ছোট গ্রন্থ সেই প্রবেক-ভানাড়খন মিতবাক ও ভাবগর্জ ব্ৰবীপুকুমাৰ ২জ ক্ষেকটি খেওঁ চানা প্ৰত্ন ক্ষুবাদ কৰিয়া বাঙালী পাঠকদের উপতার দিয়াছেন। বর্তমান পুঞ্কে ইয়াও-শুয়ে-ইয়েন, मार्ड-हिट्यूर-अन् स्मन-४१ अस्मन हार-सिट्यून-के खडे हाव खन লেখকের চারিটি গল স্থান পাইয়াছে। তথ্যগো সাই-চিত্তে-খনের 'ক্ষ্ডিফ ১ক্ষমা' গল্পটি ভুধু চীনা সাহিত্যের নতে, বিশ্বদাহিত্যের অক্তম সেরা কাঠিনী বলিয়া সমানত চইবে। গলটি আগাগোড়া বার্থ কীংনের বেদনার্সে উচ্চল, অথচ ইচাতে সেশ্যাত্র আভিশ্য নাই -- কৰণ বসের এমন সংখ্য প্রকাশ ব্য-কোনো দেশের সাহিত্যে তুল্ল । 'হাফ বেকড' আৰু 'ঘ্নান্ধকাৰে' এই ছুইটি গরে ৮'ন-ছাপান যুক্তের নিপুণ স্থালেব্য ফুটিরা উঠিরাছে। এগুলির মধ্যে ভাতার ভাতার জীবনের স্পন্ধন আম্বা ওনিতে পাইতেছি। চা:-দিখেন-ক্র গ্রুটিতে চীনাদের সামাজিক পরিবেশের কথঞিৎ প্ৰিচয় প্ৰেয়া যায়। এই গল চাবিটিৰ ভিতৰ দিয়া চীনেৰ ভাতীয় আত্মার স্বরূপ যেন আংশিক ভাবে আমাদের নিকট উপ্যটিত হইয়াছে।

'ইতালির সেরা গলের' অথুবাদক রূপে রবীল্বাব্ যে ক্ষমতার পরিচয় দিয়াছিলেন বন্ধমান পুস্তকে তাহার ক্রমবিকাল, বিশেষতঃ সংলাপের ভাষাস্তরকরণে তাঁর কুললঙা আমা'দগকে আল'ছিত করিয়াছে। যে সকল দিকপাল চানা সাহিত্যিকের গলের অধুবাদ বর্তমান পুস্তকে স্থান পাইয়াছে, ভূমিকার লেগক সামাল ত্'চারটি কথার ভাহাদের সাহিত্য-বচনার মূল প্রেটা ধরাইয়া দিবার প্রয়াল পাইয়াছেন। বইয়ের নামটি সম্বন্ধে কিন্তু আমাদের আপত্তি আছে। চীনের সেরা কাহিনী হইলেই লোভন হইত—'চারনা' শুনিলে হোমিওপ্যাথিক উরধ বিশেষের কথাই আগে মনে পড়ে।

শ্রীশ্রীমঙ্গলচণ্ডী-পূজা ও কথা—এটবেশ চক্তবর্তী। প্রাথিহান—১২০।২, আপার সারকুলার রোড, কলিকাতা গ্রহকারের নিকট। মূল্য দশ প্রদা।

ইহাতে সংস্কৃতে জীজীমললচ্ছী ভোত্ত, ব্যান, প্রার্থনামন্ত্র এবং সরল বাংলার পরার ছব্দে লিবিত মললচ্ছী দেবীর পাঁচালীকথা পরিবেশিত হুইরাছে। প্রত্যেক বর্মপ্রাণ হিন্দু পরিবারে গৃহপঞ্জিকার ন্যার এই পুস্তকের আদর হুওরা উচিত।

লে মি'জেরবিল —ভিজ্ঞর হিউপো। অস্বাদক—শ্রীপবিজ্ঞ পজোপাব্যায়। সাহিভ্যিকা, ১২৩ আমহাই খ্লিট, কলিকাভা। মূল্য ২১ টাকা।

বাংলাদেশের সাহিত্যরসিক্ষের নিক্ট ফরাসী কথা-সাহিত্যিক ভিক্তার হিউলো আর তার অমর উপভাস লে शिक्तावरमत भूजन कविश्व পतिहत (पश्चाव श्रावन बाहे। পুতকৰানি বিশ্বদাহিত্যের অঞ্চতম শ্রেষ্ঠ রঞ্ছ হিদাবে কালক্ষ্মী হইরা আছে। বছপুর্বে মনোধোহন রায় কৃত ইহার এক-ধানি বাংলা অনুবাদ 'লা মিজাৱেবল' এই ভূল নামে প্রকাশিত হইয়াছিল। পেৰানি অক্ষ অসুবাদ। আয়াদের দেশের কোন কোন শিক্ষিত মহলেও যে, ঐ ভুগ নামই চলিভেছে সম্ভবত: উক্ত পুশুক্ৰানিই সেজন দায়ী। যাহা হোক বৰ্ডমান অপুৰাদ যিনি ক্রিয়াছেন বাংলা অপুৰাদ-সাহিত্যে তাঁহার প্রতিষ্ঠা আছে। পবিত্রবাবুর কুভিড এই যে, ভাঁহার অস্বাদে মুলের রস ও বৈশিষ্টা অফুর আছে, উপরস্ক তাহা সাহিত্যিক পৌন্দর্যো মণ্ডিত হইয়াছে। হিটপোর বিরাষ্ট্ স্ট্রী তাঁহার হাতে পভিয়া বিক্রত হয় নাই। এই উপস্থাসের নায়ক ক্ষত্ৰী কাঁ ভালকাঁর বিচিত্র জীবনকে কেন্দ্র করিয়া অপরিসীম দরদ দিয়া হিউপো যে বিয়োগান্ত কাহিনী রচনা করিয়াছেন ভাহা ধুগ যুগ ব্রিয়া বিশ্বের সকল দেশের সকল বয়দের পাঠকপাঠিকাদের আনক-বিবান করিয়া আলিতেছে। **प**िव्यवाव-वारमाद किट्नाद-किट्नादौरमद कम अहे अर्टक्रिक অমুবাদ প্রকাশিত করিয়াছেন। ইছার কল্যানে ভাছারা হিউপোর শ্রেষ্ঠ সাহিত্য-স্ক্রির সহিত পরোক্ষাবে পরিচিত ছইবার স্থােগ লাভ করিবে।

শ্রীনলিনীকুমার ভড়

५म-शिए(लव् रूथा

নিখিল-বঙ্গ আর্ত্তি প্রতিযোগিতা

বিগত ৫ই পৌষ উত্তৱপাড়া ভবিনাবায়ণ শ্বতি পাঠাগাবের উন্তোপে ৩র বার্ষিক নিনিল-বঙ্গ আবৃত্তি প্রতিযোগিভার অফুষ্ঠান ফুসম্পন্ন চইরাছে। সাহিত্য-পরিষদের সভাপতি প্রীময়ধমোহন বন্ধু এই অফুষ্ঠানে পৌরোহিত্য করেন এবং প্রবাসীর অঞ্চতম স্চতাবী সম্পাদক পীনলিনীকুমার ভ্রুপ্পান অব'ত্থিরপে ইতাতে গোগদান করেন। পাঠাগার-সম্পাদক শীপাচু মুখোপাধাারের ক্মতংপরভাষ অফুর্মানটি বিশেষ সংক্ষ্যান্তিত হয়। সভাপতি মতাশ্য এবং ন লনীবাব্র বিচাবে সংগারণ বিভাগে পাঁচু সাঞ্চাল, ভাত্তবিভাগে অকণ মুখোপাধ্যায়, এবং মতিগাবিভাগে মারা মুখোপাধ্যার প্রথম ভান অধিকার ক্রিয়াছেন।



ঝড়গ্রাম দেবারতন কর্মকেন্দ্রের আংশিক দৃষ্ট

ঝাড়গ্রাম সেবায়তন গত পোবের উত্তরারণ সংকামণকালে বাড়গ্রাম সেবায়তনে ভারতের নানা ছান হইতে আগত দর্শকমপ্তলা এবং ছানীর সহয়



সেবারতলে: উত্তবারণ উৎসব উপলকে বাবিক সভা



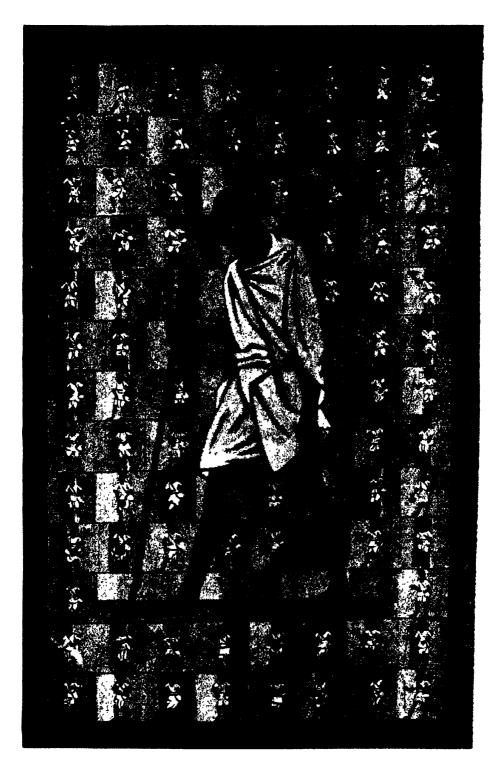
দেবায়তন চিকিৎসালয়

ও পার্থবর্তী পদ্ধীবাসী জনগণের সমাবেশ চুট দিবস্ব্যাণী বিভিন্ন
চিত্তাকর্থক ও শিক্ষাপ্রদ জমুঠানসঙ বার্থিক উৎস্ব স্পুল্পন্ন হয়।
সাধারণ সভার সভাপতিত্ব কবেন মেদিনীপুর জিলা বোডের
চেরারম্যান প্রীদেবেজ্নমোহন ভট্টাচাধ্য মহাশ্র। তিন বংসর
পূর্বের স্থামী প্রেমানন্দ কর্তৃক প্রতিপ্রিত এই আশ্রমে আচার্য্য স্থামী
সভ্যনন্দ গিরি করেকটি উৎসাহী কথার গাহাব্যে ভারতীয় সংস্কৃতিমূলক আদর্শ ও পদ্ধতি লইয়া বাংলার এই অভ্যন্ত অবহেলিত অথচ
স্থায়কর স্থানে কৃষি, গোপালন, শিল্প, চিকিৎসা, শিক্ষা ও
আধ্যান্থিক সাধনার ব্যবস্থাস্য এই আশ্রম পরিচালনা করিয়া
আসিতেছেন। জনগণের দেহ মন আস্থার উন্নতিবিধারক
ক্র্যান্থটানই এই আশ্রমের উন্দেশ্য। এই সমরোপ্রোগী কল্যাণপ্রথি প্রতিষ্ঠানটিকে ব্রথাসাধ্য সাহাব্য করা দেশবাসীর কর্ম্ব্য।

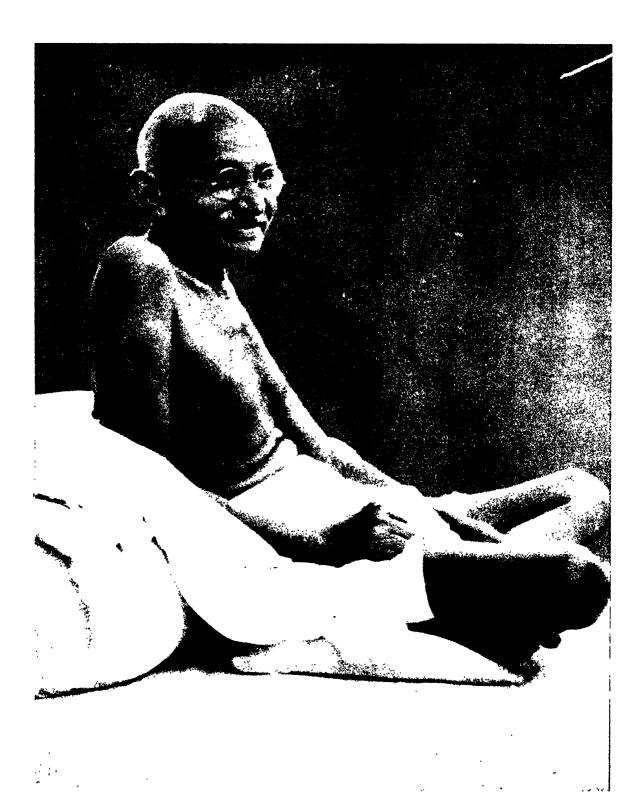
আয়ুর্কেদ সংস্কৃতি পরিষদ

সম্প্রতি ভারতীয় বুজাবাষ্ট্রের কেন্দ্রীয় সরকার জাতীয় চিকিৎসাকপে আয়ুর্বেদকে স্প্রপ্রতিতি করিবার প্রয়োজনীয়তা স্থক্তে
সচেতন হইয়া উঠিয়াছেন। কলিকাতার ক্ষেকজন বিশিষ্ট
আয়ুর্বেদ চিকিৎসকও উক্ত চিকিৎসাশাল্লের পুনক্ষনীবনকলে
বিশেষ তৎপরতার সহিত কাজ ক্ষ্ণ ক্ষিয়া দিয়াছেন। অষ্ট্রাল্
আয়ুর্বেদের প্রত্যেকটি বিষয় যাহাতে বর্জমান কালোপযোগী হয়
ও বংখাচিত উৎকর্ষপাত্ত করে সে উদ্দেশ্যে তাহারা "আয়ুর্বেদ সংস্থৃতি পরিষদ" (কার্যালয় ২২০ ,চিত্তরন্ধন এতিনিউ, কলিকাতা)
নামে একটি সমিতি পঠনে ব্রতী ইইরাছেন। আয়ুর্বেদের প্রচার ও প্রসায় ছাড়া একটি আয়ুর্বেদীয় প্রবেশাপার প্রতিটা করার সক্ষমত তাহাদের আছে। সম্প্রতি উক্ত পরিষদ বহু তথ্য সম্বালত একটি 'মারক পুত্তিকা'প্রকাশিত করিয়াছেন।

পশ্চিম বাংলা সৰকাৰেৰ পৃষ্ঠপোৰকতা লাভ করিভে পারিলে উপৰোক্ত প্রভিষ্ঠানটি যারা আর্ফ্রেন লাছের লুপ্ত গৌৰব পুনক্ষাবের বিশেব সহারতা হইবে।



বাপুড়া নিন্দ: 'ঃ ৴





"সতাম্শিবম্ফশংম্ নামোল: বল্থীনেন লভা:"

৪৭শ ভাগ ২য় খণ্ড

কান্ত্রন, ১৩৫৪

্য সংখ্যা

বিবিধ প্রসঙ্গ

গান্ধী মহাপ্রয়াণ

১০ই মাধ্ জ্বলবৰ্ ভারতেব প্রিন ৷ পানীজীকে হতচ कृदिया नाश्वराम दिनाशक शहरत अभाग कृदिया निन (स दिश्ताम পুলিবী আৰু উল্লুখ্যাই উঠ্যাতে, তাৰ প্ৰভাৰ ভারতৰ্বেও हा। व कर्त्रा, १० १ ११ मा १ ता १ ११ व अलाव किय অচনা হয় ক্লিকাৰাৰ বুকে, ভাহা আৰু প্ৰদাৱিত ইট্যাছে চুট্টাম ওচাৰ পুৰ্ণাঘাৰে ৷ ইছাৰ দাপটে কট লোকের প্রাণ বিষ্ণালে কর শিক পির-মার্থীন ইট্যাটে, কর সহত্র মহন প্রিলাকের স্থার নত ইইমারে এবং কার কোট हेक्ता अन्तरि वृक्ति के अपने कासीट्रक, डाट कियान क्या नाहे, কৰ্মও ২টকে ব্লিয়াও মনে হয় না: ্য ক্ষতি অসংক্রের ভ্ৰমন্ত পাত্ৰ আপের উপার বিষয়া পোলে আমানের মনে কোন ৴ভাভ থাকিত্ন: হয়ত । কিন্তু মুস্লিম্লীয় প্ৰবিতিত এই व्याप्त्रधारामीकि एवं व्यापार नवेश असन व्याप करिया जिल. দেৱ অপ্নাৰে ও বিৰাধের আবিধি সূত্র মাস পুতিয়া পুচিয়া লাজীকী আমানের মধা হটতে সরিষা গেলেন : তার নানি व्यक्तित्व भाषाक्रिक कीवनत्क वह निन क्रिष्टे कतिया वार्तित । नाकीकीत आरक्षत हैमलाक या कर्यनावक विन, ए।श जाक अवनान २३ माटका भगाटका भटन क्विट इहि धक्री

আমাদের কবি এক দিন হামানের শুনাইয়াহিলেন, "মোর তরে না করিও শোক।" গানীজীও তাঁর জীবনে এই শিক্ষাই আমানের দিয়া গিয়াছেন যে ভগবানের কারু চিনি করিয়া যাইবেছন, সেই কাজের প্রায়োজনেই তাঁহাকে বাঁচিয়া পাকিতে হুইবে এবং সেই কাজের প্রয়োজনে যাহ দিন তাহার উপস্থিতি প্রয়োজন, তত বিনই হিনি বাচিয়া পাকিবেন। তিনি অবক্স আমাদিগকে শুনাইয়াহিলেন যে এক শত পঁচিশ বংসর তিনি বাঁচিয়া থাকিতে চান তাঁর কল্পনার ও আকাক্ষার ভারতবর্ষকে গড়িয়া তুলিবার জন্ত। সেই কাল অপুর্ণ রাখিয়া গেলেন। ইহার কারণ আমরা খুলিয়া পাই না। একটা কৰ্ণা আমানের যথশ বিজেছে । যে হিংলার উল্লেখন পদর মাস ভারতবর্ত্তর বুকে উলোকে দেলিতে হইলাছে, তাংগর ফলে বাঁচিয়া **থাফিবার** স্পৃহাও উল্লেখন মন হইতে শিথিল হট্য ঘটিতেছিল ! **অনেক** সম্মত ই মনে হয়, নাপুরাম্কে নিনিখনগররপে ব্যবহার করিয়া উল্লেখ্য ভ্রমণের ভ্রমণের ভ্রমণের ক্রিলেন কি গ

আৰু গানীকীৰ পঞ্চুত্সমষ্টি সেহের অভুক্রার ভগ্ ভ'রতের নদ-নণীর জলপ্রে:তের বুকে ভাস্ট্রা দিয়া আমা-দের নেশেব লোক ফিরিয়াতে প্রথমন্দিরে। সাধারণ মাত্য এই দুলো অভিন্ত হইয়া প্রে: সাধক বাঁছারা ঠাঁছারা न मानिहर कार-मुखिब श्री ग्रहे। कार्यन । भावनाथ निमध क्रेया যান মৃতিকে প্রান্ময় কবিতে আৰু ভারতের দিকে দিকে (भर ब कृष्टे व्याकाकका का निष्ठ कहेरा हैहिनाद का (DE) ক্রিত্তভো ভারতত্র "মহাছা" যে আনেশের প্রতিষ্ঠার জ্বল আঞ্জীবন কপ্তঃ করিয়া নিয়াছেন, যে প্রেমধন্মের প্রতিষ্ঠার জল জীবনেৰ শেষ কয়েক মাস সীমাখীৰ আকৃতি এবং আসমা উৎসাহ লটয়া দিল্লীর প্রাদাদে-প্রাস্তবে প্রা<mark>দান্ত চেষ্টা করিয়াচেন,</mark> সেই এর আজও অপুর্ব। বে'ধন তিনি আরম্ভ করিয়া গিয়াছেন, হিংকুক তাংশর মঞ্চলবট ভাঞ্জিয়া দিয়াছে। অসমাপ্ত পুত্র আনে বৈর স্মাও করিতেই হইবে। এই প্রত ও এই পুরু। আমা-দের জাণীয় জীবনের মরণ-বাচন সম্ভায় পরিণত ভইয়াছে। এট সম্ভাস্থাৰ নাক্ষিলে আমাদের নব আজিত বাধীনতা বার্থ হটবে, অস্থিক হটবে। ভারতের স্মাঞ্জের বুকে থেষ ও অনেকা কিয়াইণ রাপিয়া এই স্থীনতা আমরা রক্ষা করিলে পাবিব না এট আংশগায় গালীকী আমাদের আধ্রন্ত করিতে প্রাণপাত করিয়াছেন। গুপ্ত ছত্যাকারীর গুলিতে তংহার সেই চেপ্তা বার্থ হইয়াতে। কিন্তা তাঁছার অপরীরী আত্ম कात व्यवस्थ अहे कहता निर्देश कतिर व्यव

আৰু এই নিৰ্দেশের কথাই আমাদের শৃতন করিয়া ধাাৰ করিতে হইবে: গাঙীশীর উপস্থিতির সমর এই নির্দেশ সংভ

चामता नाना प्रश्नम क्ष्मान कतिमाहि, এই निर्द्धन नहेमा नाना তর্ক করিয়াছি। এই নির্দেশের ও তার সাধকতার আলোচনা লইয়া সমাক্ষতন্ত্রের মহাভারত স্ষ্টি হইয়াছে। আৰু ভারতবর্বের হিন্দুকুল পর্কাত হুটতে চন্দ্রনাথ পাহাড় বেষ্ট্রত ভূ-বণ্ডের মধ্যে যে উন্মততার স্ট্র হইয়াছে, যে সমান্ধবিধ্বংসী কার্যাকলাপ অমুষ্ঠিত হইয়াছে, সেই অভিজ্ঞতার আলোকে আমাদের মৃতন করিয়া গান্ধীকীর নির্দেশের প্রকৃত মর্গ্র-কথা ব্রিয়া লইতে ১৯১৯ সালের মধ্যভাগে যথন তিনি আসিয়। আমাদের রাজনীতিক জীবনের পুরোভাগে দাঁড়াইলেন তখন আমাদের রাজনীতিক জীবন নানা কারণে ছঞ্জে। বিপ্লবী ও সম্ভাসবাদী প্রচেষ্টা বার্থ হইয়া পড়িয়াছে : বৈধ রাজনীতিক আন্দোলন বন্ধা বলিয়া প্রমাণিত হইয়াছে। দেশের জনগণের মন এই সব ভাবনা চিন্তা সম্বন্ধে নিরুৎস্ক : তাহা আপনার ভাবনার মর। সেই মন ছিল বৃচ, মান, বৃক; সে ভাবনা সহদে শিক্ষিত সম্প্রদায়ের কোন সম্যক্ জ্ঞান ছিল না। শিক্ষিত সমাজ নিজেদের অভিজ্ঞতার সাহাযো, সমাজ্জীবনের ক্রমবর্দ্ধমান দারিদ্রোর তাভনায়, জনগণ মনের ভাবনা-চিস্তার একটা অর্থ করিয়া তাহা প্রচার করিতেছিলেন। পরদেশী শাসন ও প্রমাণ করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। শিক্ষিত লোকের মনে ष्मभारनंत ष्माना, स्मर्भत बनजाबातरनंत्र मर्या मात्रिरसात তাড়না--এই ভাবের ও বাস্তবের চাপে একটা বিক্ষোভ ধনীভূত **इरेश अकार्यंत नृजन भथ गुँकिए जिला। गांभीकी (म**र्ड भव কাটিয়া দিলেন। গোপনতার, বিপ্লবী ও সন্ত্রাসবাদী গোপনতার, বন্ধ মরে মানব মন পীড়িত হইতেছিল : গানীজী ভাতিয়া দিলেন সে গোপনতার প্রয়োজন; রাজপথের মাঝে "প্রকাষ্ট ষড়যন্ত্র" (open conspiracy) খোষণা করিয়া সকলের মন-বুদ্ধিকে করিলেন মুক্ত : লোকের কর্মপ্রচেষ্টাকে করিলেন সহজ গতিশীল।

সেইকর দেখিতে পাই অসহযোগ আন্দোলনে আবালবন্ধ-বনিতা মুক্তিয়ানের মতন একটা সহক আনন্দ লাভ করিয়াছে। "বদেশী" রূপে, বিপ্লবী ও সন্ত্রাসবাদী রূপে আমাদের দেশের মেরেরা নানাভাবে সাহায্য করিয়াছিলেন নিকেশ্বের বভাবসিদ্ধ আবক্ষর পশ্চাং হইতে অভিভাবকদের অমতে ও অগোচরে। এই গোপনভার মধ্যে ছিল একটা ভর, একটা উদ্বেগ, একটা অনিক্ষয়তার আশকঃ। গানীকী-প্রবর্ত্তিত পথে এই ভয়, উদ্বেগ, আশকা দ্বীভূত হইল। মুক্ত আকাশের নীচে, মুক্ত প্রান্তরে দেশের মেরেরা নির্ভীক কর্ত্তব্যের একটা সধান পাইলেন। ভাহাও ভ্যাগের পণ, কীবনবাশী সাধনার পণ, নীরব, শান্ত্রপ্লী-পথের মত।

এই সাধনা আত্মগুছির; এই সাধনা সংস্কার বর্জনের, যে সংস্কার হিন্দু মুসলমানকে পরম্পর হইতে পৃথক করিয়া রাখিরাছে, হিন্দু সমাজের বুকের উপর দিয়া কালি কাটিরা সবর্ণ

অবর্ণ ডেদের স্ট্র করিয়াছে এবং ভেদকে বিস্তার করিয়া সহস্র ক্ষ ক্ষ গণীতে পরিণত করিয়াছে ভারতের হিন্দু-মুস্পর্মান সমাৰব্যবস্থাকে। এই সহত্ৰ গণ্ডী ভাঙিবার ৰভ গানীকী व्यादमन कतितन माञ्चरवत जाजुरवत नारम। जान्त्रमात्रिक প্রীতির ধ্বনি এই আফুতির বহিঃপ্রকাশ। ইংরেকের ব্যবসায় নীতির কলাণে ভারতবর্ষের নানা শিল্প বিনষ্ট হইয়াছে : গুহে গ্রহে সেই পিল্ল চলিত। এই ধ্বংসের ফলে কোটি কোটি লোক র্থিখীন হইয়া একমাত ক্রমিকার্যোর উপর নির্ভরশীল ছইয়া পড়িল, এবং বংসরের মধ্যে প্রায় চারি মাস কর্মাখীন, বেকার শীবন্যাপন করিতে বাধা হইল। ভারতের প্রাচীন অর্থনীতিক ব্যবস্থায় দরিশ্র, অপুত্রক বিধবার পর্যান্ত একটা বৃত্তি ছিল ; "চরকা আমার নাতিপুতি" বলিয়া সে নিশ্চিত্ত থাকিতে পারিত। ইংরেজ সে বৃত্তি, সে ভরসা তাহার কাঞ্জিয়া লইল : এই বুদ্তিহীনতার যন্ত্রণার কথা আমাণের কবি গাছিয়াছেন—"তাঁতি কর্মকার করে হাহাকার"—এই-ভাবে ছরবস্থার বর্ণনা করিয়াছেন ৷ এই দেশব্যাপী রুডিহীনতার প্রতিকার চেষ্টা অনেকেই করিয়াছেন কলক!রখানার প্রতিষ্ঠা করিয়া। কিন্তু যেখানে চারি-পাঁচ কে!ট লোক রতিহীন, বেকার, সেধানে এক কোট লোকের শুতন বৃতির বাবস্থা করিয়া সমস্তার সমাধান হয় না। সেইজল গানীকী চরক। তাঁতের পুনঃপ্রতিষ্ঠার কথা বলিয়া গ্রাম্য শিল্পের প্রতি দেশের শিক্ষিত লোকের কন্তবোর কথা মনে কর'ইয়া দিলেন: এই প্রভাবে উপার্জন হয়ত প্রচুর নয়, কিন্তু কর্মহীনতার যে গ্লান দেশের শরীর-মনকে আচ্ছন্ন করিয়া অপটু করিয়া তুলিতেছিল তাহাত দুর হইতে পারে। সেইজ্জ আপ্রশ্ব রূপেও এই মুতন সংগঠনের জন্ত আহ্বান করিতে গান্ধীজী ধিবং করিলেন ন। বর্ত্তমান যুগের যন্ত্রদানবের নানা ব্যবস্থার তুলনায় ১রকা তাঁত তুচ্ছ হইতে পারে। কিন্তু এই যন্ত্রদানবের কল্যাণে মাসুধ এত পরনির্ভরশীল হইয়া পড়িয়াছে যে তাহার আত্মবিশ্বাস কিরাইয়া আনিতে হইলে তাহাকে হইতে হইবে বয়ং-সিদ্ধ, .নিজের প্রয়োজন মিটাইবার জন্ত আন্ধনির্ভরশীল। এই ব্যবস্থার প্রভাব করিয়া গান্ধীকী যুগবর্গকে অস্বীকার করিয়াছেন বলিয়া অনেকে তাহা গ্রহণ করিতে পারিলেন না। শিক্ষিত অশিক্ষিত প্রায় কেহই এই নূতন সত্য মনে প্রাণে গ্রহণ করিতে পারিয়াছেন বলিয়া মনে হয় না।

ইংরেকের শাসন ও শোষণ ব্যবস্থা অসহ্যোগ আন্দোলনের আখাতে হুর্বল হইল, কিন্তু তাহার পুরাতন কাঠামোট। প্রায় আটুট থাকিরা গেল। ছিন্দু মুসলমানের মধ্যে এই সময় যে হানাহানি উপ্র হইয়া উঠিল, তাহার পূর্ণ স্থোগ ইংরেকে প্রহণ করিতে পল্চাংপদ হইল না। প্রায় আট বংসর ইংরেকের নানা কৌশল আমাদের সংগঠন শক্তিকে আঘাত করিরাছে। লর্ড বার্কেনহেড ভারতবাসীর প্রতিনিধিকে বাদ দিয়া আমাদের ভবিশ্বং রাষ্ট্রীয় ব্যবস্থার উপার উর্বাবনের করু পাঠাইলেন সাইমন

কমিশনকে। ভারতবর্ষের সমস্ত রাজনীতিক দল একত্র ছইয়া · ত্রাতে বাধা দিল : ফলে সাইমন কমিশনের রিপোর্ট বস্তাপচা ষ্ট্যা পরিষা রহিল। লাহোর কংগ্রেসে আফুঠানিকভাবে যথন পূর্ণ করাজের আদর্শ গৃহীত হুইল, তখন গাছীকী আর একবার রাজনীতিক ক্ষেত্রে নেতত্ব গ্রহণ করিলেন। লবণ আইন ভঙ্গ করিয়া ইংরেজের রাষ্ট্র শক্তিকে তিনি যে সংগ্রায়ে আহ্বান করিগেন তাহার মধ্যে দেশের লোকের যে সহযোগিতা পাওয়া গেল তাহা অভূতপূর্ব্ব। অসহযোগের গণবাগরণকে তাহা মান করিয়া দিয়াছিল বলিয়া মনে করিলে ভুল হইবে ন। মুসলমান জনসাধারণ ইহাতে তেমন সাড়া দেয় নাই। কিছ মুসলমান বাহারা এই জালোলনে যোগদান করিলেন ভাঁহার: গেলাফং আন্দোলনের ধর্মোগ্রাদনায় করিলেন না; একমাত্র রাষ্ট্রীয় প্রোক্নে, রাজনীতিক স্বার্থ উদ্ধারের জ্ঞা তাঁছারা কারাগার ও অলাল অভ্যাচার বরণ করিয়া লইলেন। এই भगरपुर मुभलभानग्रिष्ठ উত্তর-পশ্চিম भौमान्त शास्त्र यान ভাবছল গফুর বাঁর নেড়ছে এক অপুর্বে গণজাগরণ ক্ষুত্ত হইয়। উঠে। সভাবতঃ সীমাজের ছুর্ন্নর্ম পাঠানকে তিনি অহিংসা-মন্ত্রে দীক্ষা এক মৃতন কর্মধারার স্ট্র করিলেন: দেশ তাঁহাকে "সীমান্ত গানী" নামে অভিহিত ক্রিয়া এই মৃতন কর্মাবারাকে অভিনন্দিত করিল।

গানীকী ও ভারতবর্ষের বড়লাট লচ্চ আরউইনের মধ্যে একট: বোৰাপড়া হটয়। এই আন্দোলনের শেষ হয়। রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা ২৬গত করার পক্ষে এই আন্দোলনের প্রতাক্ষ কোন সাৰ্থকত। নাই। কিন্তু দেশের লোক গান্ধী-আর্টন চ্ক্তির বলে এই ভবসঃ পাইল যে তাহাদের সংগঠন শক্তি বাভিয়াছে এবং অদুর ভবিয়তে কংগ্রেসের হাতেই রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা গ্রন্থ ছটবার পটভূমি প্রস্তুত হইতেছে। লচ আরউইনের পরবর্টী বড়-লাট লড উইলিংডন কংগ্রেসের এই শক্তির্দ্ধির নিশ্চয়তঃ সহৰ মনে গ্ৰহণ ক্রিতে পারিলেন না। স্বতরাং হল আবার কুটিয়া উঠিল: বিতীয় আইন সমাত আংকোলন আবল্প চইল। দমননীতির দাপটে দেশের মনে যে বিদ্রোহের আঞ্চন বিকি বিকি করিয়া দলিতেছিল তাহা নৃতন পথে আত্মপ্রকাশ করিল ১৯৩৫ সালের আইন অফুসারে নির্বাচনের উপলক্ষে। এই নির্বাচনে সর্বাদল নিরপেক হইয়া এগারটা প্রদেশের মধ্যে স্বাটটায় কংগ্রেসের জয়লাভ হইল। কংগ্রেসের প্রভাব এইভাবে প্রমাণিত হইলেও বিরোধের অবসাম হটল না। ছুই বংসর ঘাইতে না যাইতে আবার বিরোধ (৮খা দিল।

প্রচারবিদ্ ইংরেজ মুখে প্রচার করিয়া দিল যে ভারতবর্ষের রাষ্ট্র বাবস্থার ভার হবাসীর ক্ষমতা লগুন ছইতে নিয়ন্ত্রিত হয় না যেমন হয় না কানাভা, অষ্ট্রেলিয়ার রাষ্ট্র ব্যাপারে। এই ছই রাষ্ট্র প্রকৃত পক্ষে স্থাবীন; লগুন-প্রবাসী রাজার নামে শাসনকার্যা চলিলেও, কানাভা ও অষ্ট্রেলিয়ার মন্ত্রিসভার কর্মন্ত্রেও পরামর্শে রাজাকে চলিতে হয়। বিটিশ বীপের

মগ্রী-সভার এই বিষয়ে কোন কথা বলিবার অধিকার নাই। এই বাবস্থার নাম Dominion Status । ইংরেজ বলিল, ১৯৩৫ সালের আইনে এইরপ অধিকারের কোন ইঙ্গিত না পাকিলেও ভারতবর্বে Dominion Status in action. ভারতবর্বে এই সাধিকার কার্যাতঃ প্রচলিত আছে ৷ এই কথাটা যে কত মিধ্যা তাহা প্রমাণিত হইল যখন বিংশ শতাকীর ৰিতীয় মহাযুদ্ধ বাবিয়া উঠিল। কানাডা, অট্টেলিয়ার রাষ্ট্র-সভা আলোচনা করিয়া, তর্ক করিয়া দ্বির করিল ভার্ন্থানীর বিরুদ্ধে ও ত্রিটেনের পব্দে তাখাদের মুদ্ধে যোগদান করা উচিত : দক্ষিণ অাফ্রিকার রাষ্ট্রসভায় এই বিষয়ে ভোট লইয়া টায়ে টায়ে ত্রিটেনের পক্ষেই যোগদান বাঞ্চনীয় মনে করা হটল : আয়ার (দক্ষিণ আধারল্যাও) ও ত্রিটেনের এই জীবন-মরণ সমস্রায় নিরপেক থাকাট খির করিল এবং তিটেন Dominion Status-এর এট সাধিকার মানিয়া লইল। কিন্তু ভারতবর্ষের বেলায় ইংরেজ এই সংয়ম দেবাইতে পারিল না। কোনও ভারতীয় নেতাকে বা কেন্দ্রীয় পরিষদকে জিজ্ঞাস্য না করিয়াই ব্রিক্লেন ভারতবর্ষের পক্ষে, ভারতবর্ষের অছিয়পে, জার্মানীর বিরুদ্ধে যুদ্ধ বোষণা করিয়া বসিল : ভারতবর্ষকে ইউরোপের यक्त र्(र्वास्था मिल ।

কার্ষ্যের ছার। ইংরেজ প্রমাণ করিয়। দিল যে ভারতবর্ষ তাহার বাস ক্ষমদারী। এই অপমান কংগ্রেস মানিয়া লইতে পারিল না: কংগ্রেস মন্ত্রীমন্তলী আটটি প্রদেশের শাসন কার্যোর দায়িত্ব ত্যাগ করিল ৷ আবার প্রমাণিত হুইল যে ভারতবধের জনমত পদদলিত করিয়া, দেশের জনমতের বিক্রদ্ধে ইংরেঞ্ছ শাসন ও ্শ'ধ্য কার্যা চ!লাইতেছে। গানীকী এই অপমানজনক ব্যবস্থার বিরুদ্ধে কংগ্রেস মন্ত্রী-মঙলীর পদত্যাগ বাঞ্চনীয় মনে করিলেও, ত্রিটেনের বিপদের সময় ভাষার মুদ্ধ-প্রচেষ্টাকে কোনরূপ বাধা দিতে অনিচ্ছুক চিলেন। তাঁছার ধর্মবৃদ্ধি এইরূপ কাক্ষের পক্ষে রীতিমত বিশ্ব ঘটাইয়া বসিল। বিপন্ন শঞ্র গায়ে হাত তোলা প্রাচীন রণ-নীতির মতে অবর্ম। এই ভাবাবেশে গান্ধীকী এই সমস্ভার সময় তাঁহার কর্ত্তবা ধির করেন নাই : তাঁহার চক্ষে ব্রিটেন শক্ত ছিল না, জার্মানীও মিত্র ছিল না, সমদর্শী তিনি ; কণ্ঠবা স্থির করিয়াছিলেন ধর্মবৃদ্ধির ও প্রেমধর্মের প্রেরণায়। পাশী অপাণী সমজ্ঞান, এই শিক্ষা যুগমুগান্ত ধরিয়া ভারতবর্ষের ক্তনগণকে চালিত করিতেছে এবং সে শিক্ষা ক্রীবনে প্রতিফলিত করিবার জল গানীজী সাধনা করিয়া যাইতেছিলেন। এই সনাতন ঐতিহ্য রাষ্ট্রীয় ব্যাপারে প্রবর্ত্তন করিয়া এক দ্বিধা ও অনিশ্চয়তার সষ্ট করিল যাহা কংগ্রেসের চিন্তা ও কর্মধারাকে অপচ্ছ ও কটিলত:সধুল করিয়া ওুলিল। গানীকীর এই মনো-ভাবের বিরুদ্ধে হুভাষচন্দ্র বহু প্রতিবাদের ধর্মন ওলিলেন: ইংরেজের বিপদ ভারতবর্ষের স্থযোগ-- এই বাত্তব বৃদ্ধির আলোকে চলিবার জন্ত তিনি বার্থমনোরও ছইয়া দেশ ত্যাপ

করিলেন এবং ইউরোপ ও পূর্ব্ধ-এশিয়ার ইংরেঞ্চের বিরুদ্ধে আরোক্ষন করিয়া প্রমাণ করিলেন যে, ভারতবাসী রাই গঠন করিতে পারে ও সৈতবাহিনী পরিচালনা করিতে পারে। "নেতাকীর" চেষ্টা বার্থ হইতে পারে। কিন্তু যথন "আকাদ হিন্দু সরকার" ও "আকাদ হিন্দু সৈতবাহিনীর" কথা দেশের লোক আনিতে পারিল, তথন কন-গণ-মনের উদ্ধাস গানীধীর আদর্শের অন্তুল ছিল না, এই কথা খীকার করিয়া লইতে হইতে।

গাদীকীর মহাত্তবতার সন্মান ব্রিটশ শাসক সম্প্রদায় দেখাইতে পারিজ না। যুদ্ধ-বিগ্রহের বিরুদ্ধে গাখী জীর মনে'-ভাব সর্বজনবিধিত। কংগ্রেসের নেত্মওলী সকলেই এই মনোভাবের সমর্থক ভিলেন না। ভারতবর্ষের রাষ্ট্রপরিচালনায় ভারতীয় জনগণের অধিকার ধীকৃত হটলে ডাঁং!র। ব্রিটিশের বিপদে সাহায্য করিতে পারেন এই ভাবের প্রস্তাব নিবিল-ভারত কংগ্রের কমিটির ১৯৪০ সালের জুলাই মাদের এক অবিবেশনে পাস হইয়াছিল। এই প্রস্তাব গ্রহণের ফলে গাখীপী প্রায় ছই বংসরের জ্ঞা কংগ্রেসের নেচুত্ব ২ইতে সরিয়া দীভান। কারণ ভারতার্বের নামে নৈতিক সাহাধ্য ছ**বি**চা অভ কোন প্রকার সাহায়া ত্রিটেনকে দিতে তিনি প্রস্তুত ছিলেন না। এই মতভেদের মীমাংসা কখনও হয় নাই: তাঁছার দেহতাাগের পূর্বে পর্যান্ত রাষ্ট্রবন্ধায় সংগঠিত সামরিক শক্তি প্রয়োগের সীমা কোথায় ভাছার কোন মীমাংসা হয় নাই। এই মুদ্ধের সময় কংতেস-নেতৃবর্গ ঘোষণা করেন যে তাঁছারা ইংরেকের হাত হইতে রাষ্ট্রীয় ক্মতা উদ্ধার করিবার জ্ঞ হিংসা ও বল প্রয়োগের পক্ষপাতী নন্ কিছ ভাহার৷ এই কথা मिटल भारतन ना य राधीन **कांद्र**ल तार्थेत तकांद्र कथ दल धारात्रव धाराक्त स्टार ना।

ভারতবর্ষের রাষ্ট্রকীংনের উপর ব্রিটশ কর্নতের অবসান হয় ১৯৪৭ সালের ১৫ই আগষ্ট। ভারপর সাচে পাঁচ মাস গাখীলী বাঁচিয়াছিলেন : নৃত্ন রাষ্ট্রপরিচালনায় তাঁখার শরামর্শ ও উৎসাহ পভিত জ্বাহরলাল নেহের প্রমুখ কে এীয় গবল্বে টের মন্ত্রিক লাভ করিয়াছেন। রাষ্ট্র লাসন ও রক্ষার वााशाद वलश्रद्धारमद श्रद्धाकरन (य नग्छ। मादीकीत মতকে কেন্দ্র করিয়া স্ত্রী হইয়াছিল, তাহার সুখীমাংসা হয় नारे। देश बीकार्या (य हिश्मा ও বলপ্রয়োগ ছারা কোন বিষয়ের বা বিবাদের চুড়ান্ত সমাধান হয় না: কিন্তু মাত্রধের বুৰি, রাজনীতিক বুদ্ধি আৰু পর্যান্ত এমন কোন অগ্র আবিকার করিতে পারিল না যার প্রয়োগে অবিচারের শেব হয়। माञ्चरवत्र रेमनिमन भीवत्न वलश्चरशार्वत्र स्नान नाहे : वाष्ट्रित শানীরিক বল সংযত করিয়াই মানুষের সমার গাঁহয়া উঠিয়াছে। কিছ সমষ্টির শীবনে এই সংখ্যের প্রয়োগ হয় না এই ত ইতিহাসের অভিজ্ঞতা। গত ত্রিশ বংসর হইতে দেবা ঘাইতেছে যে সমষ্টির ব্যবহারে একটা অধৈষ্য জ্মল: ব্যাভারে প্রকাশ পাইতেছে: ত্রিশ বংসরের মধ্যে ছইট। বিশ্বয়র ছইয়া গেল। ব্যষ্টির শুক্তবৃদ্ধি বা সমষ্টির অনিদ্ধা তাহা আটকাইতে

পারিল না। এক অপরীরী উমাদনা দেশে দেশে বিভারলাভ করিয়া মাপুষের সংজবুরিকে আছেল করিয়া কেলে, জাইনের বিচারবুরি ও সার্থবুরিকে হরণ করিয়া লয়। রণদেবতার পারে লক্ষ লক্ষ, কোটি কোটি লোক নিছেকে বলি দের; ভাতি-বৈরের আগুনে কোটি কোটি লোকের শ্রমলক ধন পুছিয়া যায় বন্দুক কামানের বারুর ও গোলাবর্ধণে। এই ধ্বংসের সার্থকতা কিছুই নাই, এ কথা মুর্থেও বোকে। কিন্তু রাইপ্রতি, ধর্মবেভা, চিভানায়ক, বৈজ্ঞানিক —কেইই এই ধ্বংসলীলার অবসানের কোন পথ আবিভার ক্রিতে পারিলেন না।

পরাধীন ভারতবর্ষের একজন লোক এই খুগস্থিক্ষণে মাক্ষের এট ছবুরি, এই লোভ, এই অপরাংধর বিরদ্ধে कीवनवराणी भरधाम क्रिया (ग्राजन) एम (म्राण्य माभक সম্প্রদায় ভারতর্ধের স্বাধীনতা হরণ করিয়াছিল, তাহারা অহিংসার বিখাসী নয় : জাহাতের সামাজা রক্ষার প্রয়োজনে हुने हुन्हों। स्थापुर हुने महा न्यमादत अक्षित लाइ/रमद ধনভাভার পুডিয়া লেন। ভারতবংখর উপর পাত্র অকুল রাখি-বার হুল ভাছারা নানা ভাবে অসায়ে রের বিলীয়িক। বিভার করিয়াছে । শেষে ভাষার পরাজয় স্বীকার করিয়ালে অবস্থার নিকট দিশীয় বিখয়ুদ্ধর সীমাধীন ক্ষতির নিকট। মহুয়া সমাজের যে আকৃতি মহাল্লা গাখীকে অবলম্বন করিয়া প্রকাশ পাইয়াছিল এই নতি সীকার তাহার নিকট হটলে পুথিবী আৰু স্থারাজো পরিণত হইর। স্থাবিখাসী আমরা আজাও ডাবিতে পারিতে ছি না যে আমেতের একজন ভাঁছার সাধনার বলে এই च्यमां बा भावन क त्रियाद्यन : हेर्टतक च्यहिरमात्र निक्र ने भताबश मानिया लहेपाट्य। এकक्रम दिएमी भारतानिक किन्न प्रकारत যুগের সমস্ত ছাল। পর্যালে। কেরিয়া এই তত্ত্ব প্রতিষ্ঠা कदिए ए है। कदिशाद्य एय शांधीशी खश्लाख करिया'त्यन অর্থবালের সাহাযো নয়, বলপ্রায়াগ দারা নয়, খুব স্কুসংগঠিত শক্তিশালী প্রতিষ্ঠানের সাহায়ো নয়। একট বিশ্বাসের প্রয়োগ ছারা তিনি বিভয়ী ২ইয়াছেন; মন মুখ এক ছবলে যে শক্তি লাভ করা যায় তাহার সাহায়েট তিনি অয়লাভ করিয়াছেন; উপায় ও আর্থের সহতা রক্ষা করিলে যে আধ্যাগ্রিক শক্তির উদ্ভব হয়, তাহার সাহাযোট তিনি বিটশ সাঞাজোর অভায়কে खक क्रियाट्यन दिस्त छ क्रियाट्यन । नूरे किमाट्य "गार्थी ও हालिन" এই दहेरबंद कथा छलि अधूबायन कदिरल এই তর্ই প্রতিষ্ঠিত হয়:

'Gandhi stood against the might of the British Empire—and won. He did it without money, without violence, without much organization. He did it with an idea, and through the power that comes from lionest means and honest words."

কংগ্রেদ সম্পর্কে মহাত্মা গান্ধীর শেষ রৎনা

'হরিজন' পত্রিকায় মহাত্মা গানী "Congress position"
শীৰ্ষক একটি প্ৰবন্ধ লেবেন। এইটই তাহাত্ৰ শেব রচনা।
প্রবন্ধীয় মন্ত্রীয়বাদ এবানে দেখয়া হইল:

ভারতীয় জাতীয় কংবেস দেশের সর্বপ্রাচীন রাজনৈতিক বৈতির্গন। কংবেস অহিংস নীতি অনুসরণ করিয়া বহুবার স্বাধীনতা-সংখ্যায় চালাইবার পর বর্ত্তয়নে ইহার অন্তির বিলোপ হইতে দেওয়া চলে না। একমাত্র জাতি নিশ্চিক্ত হইলেই কংবেস বাংস হইতে পারে। প্রাণবপ্ত বস্তু ক্রমবর্ত্তনলি অন্তথায় বাংস অবহারিত। কংগ্রেস রাজনৈতিক স্বাধীনতা লাভ করিয়াছে—স্বাধিক, সামাজিক ও নৈতিক ক্ষেত্রে ভাহাকে স্বাধীনতা লাভ করিছে—স্বাধিক, সামাজিক ও নৈতিক ক্ষেত্রে ভাহাকে স্বাধীনতা লাভ করিছে হইবে। রাজনৈতিক বহুন মুক্তি অপেক্ষা শোষকে ক্ষেত্রগুলিতে স্বাধীনতা প্রতিষ্ঠা অধিকতর কঠের। কারণ উলা সংগ্রাহাক্তন—ইঞ্জিন। স্প্রকারী বাংসাজের ইহার মধ্যোকিত্ব নাই। প্রকাশ গঠনমূলক পরিক্রমানেক ক্ষাক্রিবী করার ক্ষেত্রে দেশের নরনারী নির্বিশেষে সহযোগতা প্রয়েশন।

লক্ষান্তলে গৌছিলাব ্**কত্র অপরিহাব প্রাথমিক**অধিকার মাত্র কংজেগ লাভ করিয়াছে : অয়পরীক্ষা এবনও
বাকী । গ্রহণ প্রতিধিব হুকঠোর পথে মাত্র করিয়) কংগ্রেম
কার এনীতিপুর্ব প্রতিধি নামি গুলিয়াছে । এওলি নামে
মাত্র ১নীপ্রথম ও গ্রহণপ্রতার এই অব্যক্তির পরিবৃত্তি হাতে
আনা গ্রহণ লাভের উপায় বিষ্কৃ

লাংহদের প্রাথমিক সর্থ-সংখ্যা কেনেকালেই এক ুক হিল আধক লয় নাই। এক কোটি নবনারী সদক্ত হইয়াছেন ইহার অব্যাস্টিক ৬ টের নির্মাকরা চলে না ! একলে বংজেস সৰ্গ্লতাম সেই বিশেষ রেজিপ্তারট অবক্সই বাতিল क दिए ए इटेटव । या झार्यद एक । नक्षण श्रीत्राच का ना याच ना এইরূপ লক্ষ্ণক্ষ্ণ সদত্তের নামের তালিকাগছলিত অঞ্চত ্রকিট্রার আছে ৷ ভেটেকান ক্ষমত'সম্পন্ন নরনারীর তালিকার অভুরু ৩ তা এক্ষাণ কংলে সের রেজি প্রার বৈরি হত্যা কঠিব।। উহার মধো কোন ভূয় নাম না থাকে এবং কোন বাজির নাম বাদ না যায়, তংগ্রভিট কংগ্রেসকে লক্ষা রাখিতে ভটবে। এই বেজিপ্লারে জাতির সেবকদের তালিকা পাকিবে এবং উক্ত ক্রমীদের উপর যথন যে কার্যোর ভার প্রদন্ত হটবে তাহা छै।हार। सुभल्लम क्रिट्रिन । हुर्छाग्रिक्टः वर्धमार्ग मुक्राहः শহরবাসীদের লইয়া উজ তালিক। প্রস্তুত হইবে। তাঁহাদের অনেককেই হয়ত ভারতের পদ্মীগুলিতে কাঞ্চ করিতে ছইবে। পল্লী-অঞ্ল হইতে সংগৃহীত কর্মীর সংখা: জুম্শঃ दक्षि कदिएक स्टेट्य।

উল্লিখিত দেশদেবকদের আইনসমতভাবে স্ব-স্ব অঞ্চলের নরনারীর সেবায় আয়নিয়োগ করিছে ছইবে। বহু নরনারী ও বহু দল ওাহাদের খোদামোদে প্ররত হইবেন। খাঁটি ক্যাঁরাই সাফলালাভ করিছে সমর্থ হইবেন। যেরপ জত-গতিতে কংগ্রেসর মর্যাদা স্থাস পাইতেছে, একমাত্র উল্লিখিত নীতি অভুসর্পরার ইহা পুনরার স্প্রতিষ্ঠিত করা সম্বা। কিছুদিন পূর্বা পর্যাভ কংগ্রেস ভাতির সেবক ইখরের ভূতা

ছিল। আৰু কংগ্ৰেসকে খোষণা করিতে হইবে যে, ঈশ্বের ভূতাদের প্রতিষ্ঠান ব্যতীত ইংা অপর কিছুই নহে। কংগ্ৰেস যদি ক্ষমতালাভের অবাঞ্চিত দলাদলিতে লিপ্ত হয় তাহা হইলে অচিরাং দেখা যাইবে যে, কংগ্রেসের অভিত্ব লোপ পাই-য়াছে। ভারতের রাজনীতি-ক্ষেত্রে কংগ্রেস আৰু অপ্রতিষ্থী নহে।

এই সম্পর্কিত জালোচনার ইহা ভূমিকামাত্র—শরীর ভাল পাকিলে এবং সময় পাইলে দেশসেবকগণ কিভাবে দেশের পূর্ণবয়য় নরনারী নির্কিশেধের এলাভাজন হইতে সমর্থ হইবেন, সেই সম্পর্কে 'ছরিজনে' বিভারিত অংলোচনা করিব।

ধার্মীজীর প্রতি পণ্ডিত জবাহরলাল নেহরুর শ্রুমাঞ্জলি

বিগত ৩০শে জাত্মারি (১১৪ মাখ) গুক্রবার বৈকালে আততাথীর গুলির আখাতে মহাত্ম গামীর জীবন-প্রদীপ নিকাপিত হয় ৷ ঐ দিন সংগ্রায় দিলীর বেশার-কেন্দ্র হইতে পতিত জ্বাহরলাল নেহর প্রভোকগত মহামানবের প্রতিনিয়োক্ত ক্ষপ শুদ্ধাঞ্জলি নিবেদন করেন.—

ष्याभाव (मटनव ७)३-(वाटनदा, এक निगंबन इ:वटनाटकब অধকার দেশের চারিদিক ছাইয়া কেলিয়াছে। এই অবধায় আমি আপনাদেব কি কথা ওনাইব ? কেমন করিয়া আমি আপনাদের বলি যে, আমাদের বাপুনী সমগ্র আতির জনক আর ইংলোকে নাই। আর ত তাঁহাকে চকে দেখিব না ৷ লেশের নানা ছঃখ-ছবোলে আর ত উহার কাছে মন্ত্রণার কর ছুটিয়া ঘাইতে পারিব না। দেশের এই পরম ছুর্ভাগোর কথা চিন্তা করিতেও আমার মন সরিতেছে ন।। যে অনিকাণ দীপ্ৰিবা সুদীৰ্ঘকাল সমগ্ৰ পৃথিবীর দৃষ্টি আকর্ষণ ক্রিয়াছিল তাহা বর্ণুমানকে অতিক্রম ক্রিয়া ভবিষ্টের মাৰে বাংল্ল হইল: সেই আলোকই সভোর পথে, এই সনাত্র ভারতবংকে সাধীনতার পথে আগাইয়া দিয়াছে। ভারতের বর্মান গ্রেস্কল দিনে মধায়াশীর বাঁচিয়া থাকিবার ক হই না প্রয়োজন ছিল, অবচ তিনি নাই। এক উন্মাদ গাধীপীর জীবননালের কারণ হইল। যাহা হইবার তাহা হটল কিন্তু যে বাণী গাধীলী জীবনভোর আমাদের শুনাইয়াছেন ভাহাকে সমগ্ৰ জাতীয় জীবনে কুটাইয়া তুলিতে আমাদের দৃঢ়প্রতিজ্ঞ হইতে হইবে। একনিষ্ঠ সৈনিকের স্থায় তাঁহার দীপ্রতিকা জুট্যা আ্যানের অগ্রসর হটতে হটবে। আ্যানের टेम्बिन कीवतनत मार्च अपन कान चनन राम ना पारक যাহাতে তাহার আলাকুলব। বাধিত হয়। জাতির এই ভীষণ ছদিনে হিংদা, ভীকতা ও সকল ক্ষুদ্র কলহের চিন্নতরে অবসান হোক।

অনেকে গানীশীর দেহ কয়েক দিন রক। করিবার কথা বলিয়াহেন। ইহাতে ভারতের বিভিন্ন স্থান হইতে

শেষ দৰ্শনেকু অগণিত দেশবাসী আসিয়া তাঁহাদের শ্রদ্ধা নিবেদন করিবার প্রযোগ লাভ করিবেন। ভীবিতাবস্থায় গাৰীকী বারবার ইহার বিরোধিতা করিয়া মত প্রকাশ করিয়া-ছেন। সেইজন্ত বহু লোকের এই প্রকার অভিলাষ থাক।-সঙ্গেও গাৰীৰীর অভিয ইচ্ছাই পূর্ণ করিতে হইবে ৷ শনিবার সকাল সাড়ে এগারটায় শ্বযাত্রা যয়ুনার ধারে নীত হইবে। विकास ठाउँ। नाशाम छाँकात खट्डा है किया नवार करेटा। কোন্পৰ ধরিয়া এই শ্বযাত্রা যমুনায় পৌছিবে তাছার বিস্থৃত বিষরণ পরে স্থানান হইবে। দিল্লীর লোকেরা, বাহার। গানীলীর প্রতি শ্রদা নিবেদন করিতে চান, তাঁখারা যেন পথের ছুই বারে শীরবে শাল্পভাবে দাভাইয়া থাকেন। বিভলা ভবনে তাঁহারা যেন অথপা ভিড় না করেন। কোন বিক্ষোভ থেন না দেখান হয়। দিল্লীতেও বাহিরে সর্বত্ত প্রাথনা ও উপবাসত্রত পালিত হোক। বিকাল চারটা নাগাদ যখন যমুনার তীরে গাঞ্জীঞ্জীর অস্ত্রেষ্টিক্রিয়া হইবে সেই সময় দিল্লীর বাহিরে লোক যেন নদী অপবা সমুদ্রের তীরে গানীশীর উদ্ভেক্ত প্রার্থন। জানান। যে মহানু ব্রত উদ্যাপনের জ্ঞ গাখীখী জীবন হারাইলেন তাহাকে অন্তরে গভীরভাবে উপলব্ধি করিয়া শীবনপণ করিতে পারিলেই তাঁহাকে শ্রেষ্ঠ অর্থা নিবেদন করা হটবে। আৰু আমরা তাঁহার জীবনের সাৰ্বাকে শ্বৰ, মনন ও পালন ক্রিব।

সন্দার বল্লভভাই প্যাটেলের শ্রদ্ধাঞ্জলি পণ্ডিত ৰুবাধরলাল নেহক্তর পরে সন্ধার বল্লভভাই প্যাটেল উক্ত বেতারকেন্দ্র ২ইতে বলেন্—

আপনারা আমার প্রিয় ভাই জবাহরলালের বক্তৃতা এইমাত্র ভানিলেন। আমার বুক রাধায় ভরা—কি বলি, কি করি, কি না করি ঠিক বুবিয়া উঠিতে পারিতেছি না। আমার মুখে কথা আসিতেছে না। ভারতের আজ গুঃখ শোক ও লক্ষার দিন।

আৰু বিকাল প্ৰায় চারিটার সময় আমি গাখীলীর কাছে যাই। সেখানে তাঁহার সহিত আমার এক ধন্টা কাল কথাবার্ত্ত। হয়। তিনি ঘটি বাহির করিয়া বলেন যে, এখন প্রাধানার সময় হইয়াছে—আমাকে যাইতে দাও। তিনি যখন রওয়ানা হটলেন তখন আমিও বাড়ীর দিকে চলিলাম। বাড়ী পৌছিবার আগেই এক ভাই আমার নিকট আসিয়া বলিল যে, এক হিন্দু যুবক গাখীজীকে প্রাধনায় যাইবার সময় পিন্তল দিয়া তিন বার গুলী করিয়াছে। তিনি পঢ়িয়া গেলে তাঁহাকে উঠাইয়া বিচ্লা ভবনে লইয়া যাওয়া হইয়াছে।

খবর পাইয়া সেখানে গেলাম ! দেখিলাম শান্তি, সৌমা ও
ক্ষার মধ্যে তিনি শায়িত আছেন। সেই শান্ত চেহারা ! শ্বদয়ে
দয়ার প্রকাশে যে চেহারা তাঁহার দেখা যায়, সেই চেহারাই
দেখিলাম। আলেপাশে বছলোক ক্ষায়েত হইয়াছেন। কিন্ত
গানীকী চলিয়া গিয়াছেন।

সম্রতি অনশনের বুঁকি লওয়ার পরও গান্ধীলীকে বাঁচিয়া

উঠিতে দেখা গিরাছে। বোৰ হয়, ভারতের বছ তাঁহার কাষ্
তথনও অসমাপ্ত বলিয়া তাঁহার শীবনান্ত হয় নাই। কিছুদ্দিন হুইতে গান্ধীলীর মনে বেদনার ভাব লক্ষ্য করা নুমাইতেছিল।
গত সপ্তাহে এক উন্মাদ হিন্দু যুবক তাঁহার উপর বোমা
নিক্ষেপের চেষ্টা করে। তথনও তিনি বাঁচিয়া যান। কিছ
এবারে এক উন্মাদ যুবকের গুলীতে তিনি চিরবিদার লইলেন।
ইহা লক্ষার কথা যে পৃথিবীর সেরা মান্থাট তাঁহার শীবন
দিয়া শাতির পাপের প্রায়ন্তিও করিলেন।

কিছ কুছ হইলে ত চলিবে না। এখন কুছ হইলে তিনি সারাজীবন ধরিয়া যাহা শিবাইয়াছেন তাহা আমরা ভূলিয়া যাইব। গাজীজীর জীবিভকালে তাহার যে আদেশ আমরা মানি নাই, সে আদেশ তাহার মরণের পরে আমাদের অবগ্রই মানা কর্ত্রবা। আমার প্রার্থনা এই যে যত হুংখ বাধাই হেংক, আর যত ক্রোধই হোক, আরু ক্রোধকে সামলাইয়া লইতে হইবে। তিনি তাহার সারা জীবনে যাহা শিবাইয়াছেন, তাহার মরণের পরে সেই শিকারই পরীক্ষা দিন্তে হইবে।

শান্তি, ভাল বাবহার ও বিনয় সহকারে পরশ্বরের সহিত্ মিলিয়া মাটতে শব্দ হইয়া দাঁডাইতে হইবে। আমাদের উপর মহান্ দায়িত্ব বন্দ্রাইয়াছে। আমাদের এখন কোমর ভাঙিয়া গিয়াছে। হিন্দু হানের মহান্ পুরুষ, আমাদের বিরাট্ ভরসা চলিয়া গিয়াছেন। কিন্তু তিনি চলিয়া গেলেও শ্বংমাদের সঙ্গে সব সময়েই আছেন ও থাকিবেন। তিনি যাহা দিয়াছেন তাহা যাইবার নহে, তাহা চিরকালই থাকিবে। আগামী কাল চারটার সময় ভাঁহার দেহ মাটি হইতে পারে, কিন্তু ভাঁহার আগ্রা আম্রা কি ক্রিতেছি তাহা দেখিয়ার জন্ত জাগিয়া থাকিবে। তিনি ভ অমর।

যে মুবক পাগল হইয়া গাখীন্ধীকে হতা। করিল সেই মুবকের পাগলামি হইতেই হিন্দুখানের মুবক জাগিয়া উঠিবে বলিয়া আশা করি। গানীন্ধীর জীবন বিনিময়ে গানীন্ধীর সাধনাকে সার্থক করিবার জ্ঞাকে জানে ইশ্বর্য হয়ত এই মৃত্যু চাহিয়াছেন।

কিন্তু আংমাদের কান্ধ বাকী রহিয়াছে। আমাদের পিচাইয়া গেলে চলিবে না। একসঙ্গে দাঁড়াইয়া মিলিত ভাবে সকলকে বিপ্রায়কে রোধ করিতে হইবে। যে কান্ধ হয় নাই, তাহাই করিতে হইবে। ভগবানের কাছে প্রার্থনা, আমরা যেন গানীনীর আরম্ভ সাধনাকে সফল করিতে পারি।

ভারতীয় পালামেন্টে পণ্ডিত নেহরুর ভাষণ

মহাস্থা গান্ধীর মৃত্যুর পর গত ২রা কেব্রুয়ারি দিল্লীতে ইউনিয়ন পার্লামেন্টের প্রথম অধিবেশন হয়। এই অধিবেশনে ভারতীয় ইউনিয়নের প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত জ্ববাহরলাল নেহরু এই শোকাবহ ছুর্ঘটনার উল্লেখ করিয়া নিয়রূপ বস্তৃতা করেন—

এই ছুৰ্বটনা (গাৰীশীকে হত্যা) কোন উন্নাদ ব্যক্তির অনখ-

নিরপেশ্ব কার্যা নছে। দীর্থকাল ধরিয়া, বিশেষভাবে গত করেক মাস দেনে যে ছিংসা ও বিছেষের বিষাক্ত পরিবেশ বিরাক্ত করিতেছে এই ঘটনা তাহারই কল। এই পরিবেশ আমাদিগকে আচ্ছন্ন করিয়া আছে, ইহা আমাদের বেষ্টন করিয়া আছে। মহায়াকী আমাদের ক্যা থে কার্যা রাধিয়া গিয়াছেন, তাহা করিতে হইলে আমাদিগকে এই পরিবেশের সম্মুখীন হইতে হইবে। ইহার সঞ্চে সংগ্রাম করিতে হইবে। হিংসা ও বিদ্বেষরূপ অমঙ্গলের মূলোংপাটন করিতে হইবে। গবনে ন্টের পক্ষ হইতে আমি বলিতে পারি, তাহারা এক্যা কোন চেষ্টারই ঝাট করিবেনা। কারণ আমাদের হুর্বলতা বা অহা কোন কারণে আমরা যদি ইহা না করি, এই হিংসা ও বিদ্বেষ প্রচার যদি বন্ধ না করি তাহা হইলে আমরা এই গবনে ন্টে থাকিবার যোগ্য নই, উচ্চার অন্থগামী হওয়ার যোগ্য নই, মৃত মহাত্মার প্রতি শ্রহার বাদী উচ্চারণের যোগ্যতাও আমাদের নাই।

শত শত এবং লক্ষ লক্ষ বর্ষ পরে লোক এই সময়ের কথা মনে করিবে যে কগতে এই ইশ্বর-প্রেরিত মহামানব বিচরণ করিতেন। তাহার। হয়ত আমাদের কথাও ভাবিবে যে, যে-পবিএভূমিতে তাঁহার পদাঙ্ক পড়িয়াছে, আমরা যত ক্ষ্মই হই না কেন সেই ভূমিতে আমরাও বিচরণ করিয়াছি। আমরা যেন এই যোগাতা অর্জন করিতে পারি।

বিশিষ্ট ব্যক্তিদের মৃত্যুতে শ্রদ্ধাঞ্চলি জ্ঞাপন করা, তাঁহাদের জল প্রশাসাবাণী উচ্চারণ করা তাঁহাদের জ্ঞ শোক প্রকাশ কর। এই পরিষদের রীতি। আবদ এই দিনে আমাব প্রথব। এই পরিষ্টের অভ কাহারও বিশেষ কিছু বলার যোগতে। আছে কিনা, এ বিষয়ে আমি নিশ্চিত হইতে পারিতেছি না। বাজ্ঞিগতভাবে এবং গবর্মেটের কর্মকভা হিসাবে আমি বিশেষ লক্ষা অঞ্জব করিতেছি। জাতির সর্বশ্রেষ্ঠ সম্পদকে আমরা রক্ষা করিতে পারিলাম না। ইহা আমাদের বার্থতা। গত কয়েক মাসে বহু অসহায় নরনারীও শিশুকে আমরা ব্লহা করিতে পারি নাই। আমাদের পক্ষে অথবা যে-কোন গবন্ধে তের পক্ষে ইহা ছঃসাধা কর্ত্তব্য হইতে পারে কিন্তু তবুও ইছা ব্যর্থতা। যে মহামানবকে আমরা অপরিসীম সন্মান ক্রিতাম, ভালবাসিতাম, তিনি যে চলিয়া গিয়াছেন, আমরাই তাহার কারণ। একজন ভারতীয় তাঁহার বিরুদ্ধে হস্ত উবিত ক্তবিয়াছে সেক্স ভারতীয় হিস!বে আমি লচ্ছিত। এককন ছিল এই কার্যা করিয়াছে, সেজ্ঞ আমি ছিল হিসাবে লক্ষা জ্বস্থুভব করিতেছি। বর্ত্তমান যুগের তিনি সর্ব্বশ্রেষ্ঠ ভারতীয় এবং সর্বভাঠ হিশু ছিলেন।

প্রসিদ্ধ ও মহং বাজিগণের স্থতিগল্প ব্রঞ্জ ও মার্কেলে নির্দিত
ছইর। থাকে। কিন্তু ঔষরিক শক্তিবিশিষ্ট এই মহাপুঞ্জ লক্ষ্
লক্ষ্ হাদরকে তাঁহার কীবিতকালের মধ্যেই এমন ভাবে একাল্প
করির। লইরাছিলেন যে বছলাংশে ক্ষ্ম হইলেও আমরা
লক্ষেই বেন সেই একই উপকরণে গঞ্জিত হইরা গিরাছি। তিনি

আপনার প্রভাব বিভার করিয়ছিলেন—রাক্সাসাদে নয়, তথু নির্দিষ্ট ছানে নয়; জনসমাবেশে নয়; দরিয়দের কুটারে লাছিত ও নিশাভিতদের ভবনে তিনি আপনার ছান করিয়া লইয়াছেন।

গত ৩০ বংসর ধরিয়া এই দেশকে তিনিই প্রধানতঃ গড়িয়া
তুলিয়াচেন। আধুতাাগের এত উন্নত স্তরে তিনি উঠিয়াছিলেন
যে অহাত্র তাঁহার তুলনা বিরল। তিনি সকল হইয়াছিলেন।
কিন্তু পরিশেষে অবস্থা এমন দাড়াইয়াছে যে তিনি ইহার ক্রম্থ
পাড়া অহ্পত্র করিয়াছেন। ডাঁহার মুবে যদিও সর্বাদা হাসি
লাগিয়াই থাকিত, যদিও ক্রমণ্ড তিনি কংহারও প্রতি কঠোর
বাকা প্রয়োগ করেন নাই, তবুও যাহাদিগকে তিনি শিক্ষা
দিয়াছেন, তাহাদের ভূলক্রটির ক্রম্থ পাড়া অন্থত্ব করিয়াছেন
কারণ আমরা তাঁহার প্রদর্শিত পথ হইতে বিচলিত হইয়াছি।
পরিশেষে তাঁহারই এক সন্ধান তাঁহাকে হতা৷ করিল, কারণ
যেত্রকান ভারতীয়ই তাঁহার সন্ধান্যরূপ।

প্রয়াগে পণ্ডিত নেহরুর বফ্রতা

বিগত ১২ই কেজেরারি মহাথা গানীর দেহাবশেষ গলা,
যমুনা ও সরস্বতীর সঙ্গমস্থলে বিসর্জনের পর বিপুল জনতার
সন্মুখে পণ্ডিত নেহরু তাঁহার সম্পর্কে এক মর্মুম্পর্নী বস্তৃতা
করেন ৷ ইহাতে তিনি বলেন,—

মহাস্থা গানীর চিতাভন্ম বিসর্জনের সঙ্গে তাঁহার সহিত তাঁহাদের সম্পর্ক শেষ হটয়। যায় নাট, পক্ষাস্তবে যোগপ্ত জারও দৃঢ় হটল।

আমাদের সৌভাগা থে, মহাগ্ন গান্ধীর সমসাময়িক মুগে আমর। এই পৃথিবীতে জ্বিয়াছি এবং তাঁহাকে প্রতাক্ত করিয়াছি। পরবর্তী বংশধরণণ তাঁহাকে দেবিতে পাইবেন না, কিন্তু তাঁহারাও আমাদের ভাগ্ন তাঁহার নিকট হইতে প্রেরণা লাভ ক্রিবেন, তাঁহার মহান বাজিত অনস্কালপ্রায়ী।

তাঁছার মুড়ার পুর্বেষ্ট আমর। সর্বাদা তাঁছার নিকট যাইতে পারিতাম এবং তাঁছার পরামর্শ গ্রহণ করিয়। উপকৃত হইতাম। এক্ষণে আমরা আর তাঁছা করিতে পারিব না। আমরা এক্ষণে আর তাঁছাকে আমাদের বোঝার অংশ গ্রহণের ক্ষণ্ঠ অকুরোধ করিতে পারিব না। আমাদিগকে এক্ষণে তাঁছার সাছাযা বাতীত সব কিছুরই সন্মুখীন হইতে হইবে। কিন্তু তিনি আমাদিগকে যাহা শিকা দির। গিয়াছেন, তাহা সর্বদাই আমদিগকে অনুপ্রাণিত ও পরিচালিত করিবে।

ভারতের সাধীনতাসংগ্রাম পরিচালনাকালে গান্ধীনী ছিংসা ও সাম্প্রদায়িক তার বিরুদ্ধেও প্রচারকার্য্য চালান। কিন্তু ভারতবাসীর সাধীনতা অক্ষিত হুইবার অবাবহিত পরে তাহারা পরপার বিচ্ছিন্ন হুইয়া পড়িল এবং দেশ– ব্যাপী হিংসার তাওব চলিল। তিনি যেভাবে একট নিবীর্য্য লাতির বাধীনতা অর্জনে সহারক হন তাহা ইতিহাসে অভ্তত-পূর্ব্য। কিন্তু সম্প্রতিত বাধীন ভারতেই অগতের সমক্ষে অপদ্বস্থ হুইয়াছে এবং ভারতবাসীর অন্তরায়া ক্ষতবিক্ষত হুইয়াছে। দেশের বিষাক্ত আবহাওয়ার সাম্প্রদায়িকতা প্রাধান্ত লাভ ক্রিরাছে। অনসাধারণের মধ্যে করেকট সম্প্রদায় হিংস ক্রমণেরতা অবলম্বনের প্রতি ধোঁক দের এবং পরিণামে স্বাধিক প্রছাভান্তন বাপুশীই নিহত হুইয়াছেন।

এইন্ধপ হিংসাতংপরতা বন্ধ না হইনে অন্ধ্রিত সাধীনতার বিনাশ ঘটিবে। কাছেট হিংসার অবসান ঘটাইবার উদ্দেশ্ত লইয়া সকলকে গঙ্গাতীর হুইতে গৃহে প্রত্যাবণ্ডন করিতে হুইবে। ভারতের বহু যুবক হিংসার পথ আশ্রয় করিয়াছে: ভাহানের এবন নিষ্কেদ্যর অনুসত উপায়ের অধ্যোক্তিকতা উপলব্ধি করিয়া শ্রান্ত বুদ্ধি পরিহার করিতে হুটবে।

রাজনীতিক প্রতিপক্ষদের বিরুদ্ধে বলগুরোগ করিবার যে মনোভাব রহিয়াছে তাহা আমাদের নিকট অপ্রতিকর এবং আমাদের ভবিগতের পক্ষে বিপক্ষনক। আমাদের দেশে গণতান্ত্রিক গবমেণ্ট প্রতিষ্ঠিত হইবে বলিয়া আমরা সিরান্ত গ্রহণ করিয়াছি। শান্তির বিশ্ব না ঘটাইয়াও এগনে প্রত্যেক নাগরিকের ধীয় অভিমত প্রচারের অবিকার আহে। তবে যে গবরেণ্ট জনসাবারণের অবিকাংশের বিশ্বাস অর্জনকরিবে, তাহারাই শাসনকার্যা নিকাহ করিবে। এ ধরণের গবর্ণমেণ্ট বাহারা পছন্দ করেন না এবং বাহার। বলপ্রয়োগে সরকারী শাসন্যক্ষ অবিকার করিতে ইছুক, তাহানের থাবীন ভারতে কোন স্থান নাই।

এদেশে সাম্প্রনায়িক ঘৃণা ও হিংসায়ক কাষাতংপর গার প্রদার ঘটন কি করিয়া ? জনসাধারনের বিশ্বাসভাজন কৃতিপয় বাজ্জি যুব-সম্প্রদায়কে চালিণ করিয়া নিজেদের স্বার্থোকরি করিয়াছে। অভীতে হয়ত আমরা ইহার বিরারে ব্যবস্থা করিতে পারিতান না। কিন্তু আমাদের জাতির জনকের শেষক্রতা সম্পন্ন হইবার পরও কি কেহ হিংসা ও সাম্প্রদায়িকতার অবসান ঘটাইতে প্রতিশ্রুতিবন্ধ হইবে না ?

ইহার পর আমর। বিষাদক্লিষ্ট অন্তরে গৃহে প্রভাগের্ডন করিব। কিন্তু মহালা গান্ধীর হার বিরাট নেতাকে পাইয়া আমরা যে গর্কবোধ করিতে পারি, এই মনোভাবও আমাদের মর্শান্তিক বেদনার মধ্যে আনন্দ সঞ্চার করিতিছে। স্বাধীনতার মুদ্ধে তিনি আমাদের স্বতান অরের সন্ধান দেন এবং উহার ফলে আমাদের সংগ্রাম অহিংস ও শান্তিপৃথ হয়। তিনি আমাদের ক্রত যাহা করিয়াছেন তক্ষ্য তাহার প্রতি আমাদের কর্তব্য রহিয়াছে। তাহার আরেদ্ধ কর্মান্তর ক্রান্ত আমাদের সম্পন্ন করিতে হইবে এবং তাহার আদেশ অন্ত্যামী ভারতবর্ষ গছিতে হইবে। ভারতে ধ্যানিকিশেষে প্রত্যাককে সম্মান্তির দানের বাবস্থা হইবে এবং বিশ্ববাদীদের প্রতিও আমরা অন্তর্গ মনোভাবে উদুদ্ধ হইব। সর্বমানবের প্রতি সম-আচরবই হইল গানীধীর প্রদন্ত শিক্ষা। আমরা যদি ইংতে বিশ্বল হই ভাহা হইকে বুবা যাইবে যে, তাহাল মত

বিরাট নেতা লাভের যোগ্য আমরা ছিলাম না। বিগত ৪০ বংসরকাল ধরিয়া গান্ধীনীর করেবনি করা হুইতেছে। গান্ধীনী কখনও বাক্তিগত জয় কামনা করেন নাই। প্রকৃতপক্ষেতারতের করই ছিল তাহার কামা। তিনি সভাও অহিংসার স্নাচ তিনির উপর ভারতের বাধীনতা-সৌধ নির্মাণ করেম; এরপে অবস্থায় উংহার বিজয় সন্পর্কে নিঃসংশয় হুইতে হুইলে উহাকেই স্থায়ী করিয়া ধুলিতে হুইবে।

মহাত্মার্জীর প্রতি বড়লাটের প্রকাঞ্জলি

দিল্লীর বেতার-কেন্দ্র হইতে গত ১২ই কেব্রুয়ারী ভারতের বড়লাট লভ মাউণ্টবাটেন মহাল্লাগানীর প্রতি প্রদা নিবেদন করেন। তিনি পলেন্—

মহারা গাণীর মৃত্য-সংবাদে সমগ্র সভা জগতের লক্ষ্ণ লোক বাঞ্জিগত শোকের এবংনার মৃত্যান হইয়াছে। বাহারা সারাজীবন ভাষার কান্দেনী ভিলেন অথবা আমে ব মত বাহারা ভাষার সহিত্য আঞ্জিবনের পরিচিত ভিলেন, কেবল যে ভাষারাই বছুবিয়োগের বেগনা বোধ করিয়ালেন সংখ্যান লাই, বাহারা জীবনে গাণীলীর সহিত্য কখনও সাঞ্চাব রচনাবলীর একটি বর্গও প্রিকারেন নাই, ভাষাকে একবারাও লেগেন নাই কিংবা ভাষার রচনাবলীর একটি বর্গও প্রিকারেন নাই ভাষারাও ভাষার রচনাবলীর একটি বর্গও প্রিকারেন নাই ভাষারাও ভাষার রচনাবলীর

শ্রিষ বর্শ বলিয়া সর্বাণ; চিটিরেশ আমারের শিনি সভাষণ কবিতেন, আমিও আলাই করিতাল। তালেকে স্থাপ্রার ইছা অপেক্ষা বেলোরের কিছুবে ছিল না, তালারে সক্রেছ নাই। এই ক্ষাটিটে আমার প্রিবারের সক্রে এবং অন্থি স্বাদা মনে রাজিব।

গত বংসর মাজে মাসে গাঞ্জীর সহিত আমার প্রথম সাক্ষাৎ হয়। ভারতে পৌছিয়া আমার প্রথম কাঞ্চ হুট্যাছিল গানীথীর কাতে চিঠি লেগা, আমাদের উভয়ের মধ্যে যত শীল্প সক্ষর সংক্ষাতের প্রযোজনের বিষয় উল্লেখ করা। যে তুর্বহ সমস্তা আমানের সমাবের উপস্থিত হটয়াছে তাহার সমাবান করিতে হইলে আখাদের ব্যক্তিগত সংযোগ অবিচ্ছির রাধার বিশেষ প্রয়েক্ন---ইহা আমরা আমানের প্রথম সাক্ষাতেই স্থির করিয়াখিলাম। শেষ বার তিনি আমার সহিত সাক্ষাৎ ক্রিতে অ'সেন ঠিক এক মান আগে: যে প্রার্থনা-সভায় গাধীনী ঘোষণা করেন সাম্প্রদায়িক নিলন পুনঃপ্রতিষ্ঠিত না हरेल जिनि जायुहा जनगन कतिरान, जाहांत कर्यक निनिष्ठे পরেই ভিনি আমার কাডে ভাসেন। ভাষার অনশনের চতুর্ব দিবসে আমার গ্রীকে লইয়া তাঁহাকে দেখিতে ঘাই; শীবিত অবস্থায় গাধী জীকে উহাই আমার শেষবার দেবিতে যাওয়া। এই দশ মাস ধরিয়া আমরা পরস্পরকে জানিতে পারিয়া-ছिलाम: निजास मामूलि सहराद (पर्या-नाकः रजद भरवाहे আমানের পারশারিক আলাপ-আলোচনাগুলি শেব ছইত

না। সে সব যেন ছিল ছই বন্ধুর মধ্যে কথাবাছি। আমরা উভরেই উভরের প্রতি বিশ্বাস জ্যাইতে পারিয়াছিলাম। ছই জনেই ছই জনকে যেন বুবিতে পারিয়াছিলাম। ইহার মতিই এখন আমার কাছে চিরদিনের মত এক মূল্যবান সম্পদ হইয়া রহিল। ভারতের নবলক্ষ স্থাধীনভার দেহে যে মারাত্মক রোগের বীক্ষাণু ভাহার সর্বনাশ সাধনে উভাত হইয়াছে, সেই ধর্মোনাওভার বিক্রে সংগ্রাম করিতে গিয়া শান্তির অবতার, অহিংসার মৃথ্ প্রতীক গান্ধীন্ধী এক জিখাংশ্বর হাতে প্রাণ দিলেন, শহীদ হটলেন।

জাতিকে গভিয়া তুলিবার থে গুরুদায়ির বহিয়াছে, সেই ভার এইবার আগে জাতির দেহ ছটতে এই বিষাক্ত বীজাণুকে সঙ্গুলে উৎপাটন করিতে ছটকে—ইহা তিনি উপলব্ধি ক্রিয়াচিলেন

আমাদের মহাপ্রাণ প্রধানমন্ত্রী পঞ্জিত নেছের চিরস্থায়ী গণতান্ত্রিক রাঠের জাদেশ আমাদের সামনে তুলিয়া ধরিয়াছেন। এই রাপ্তের সকলেই সার্থক ও নব উবেষময় জীবন যাপন করিতে পারিবে। এই রাজে যধার্থ প্রগতিশীল সমাজ গড়িয়। উঠিতে পারিবে, যাহার ডিফি ছইবে সামাজিক ও অর্থনৈতিক সামা।

ত পাণীনতার ভিত্তি গাণীনী উত্থার জীবদশায় প্রতিষ্ঠা করিয়া গিয়াছেন, তাহার ্যাগা সন্মান রাগিতে হইলে সেই ভিতির উপরে এইক্রপ একটি সমান্ধ আমানের স্থাপন করিছে হইলে। আমানের অদহ মন ও কর্মের পরিবর্ভন করিতে হইলে। আশানাবহ ও মর্ম্মানাতী মূলতে গানীলীকে আমরা হারাইলাম, সেই শোকের আথাতে যদি আমানের সকল বিচ্চেদ দূর হটয়া খায়; যদি এগনট, এই মূলুভেই আমরা স্থামীভাবে সন্মিলিত চেষ্টায় এক হইতে পারি তবেই গানীনী যাহাদের এত ভালবাসিতেন সেই জনগণের প্রতিষ্ঠানিত চরম সেবার প্রযোগ আমরা করিয়া দিতে পারিব।

কেবল এই উপায়েই তাঁহার আদর্শ রূপায়িত খইতে পারিবে, ভারতবর্ষ তাহার পূর্ণ ঐতিহের অধিকারী হইবে '

গান্ধীজীর নির্দেশিত পন্থা ও ভারতবাসীর কর্ত্তব্য

ভারতের প্রধানমন্ত্রী পঙিত নেহর দিলীর বেতার ্কপ্র ছাচতে গত ১৪ই কেব্রুয়ারি জাতির উদ্দেশে একট বস্তৃতা ক্রেন। ইংগতে তিনি মহায়া গান্ধীর নির্দেশিত পথ ও ভারতবাসীর কণ্ডবা সম্বন্ধে স্বিশেষ আলোচনা ক্রেন। এই ব্যুক্তবার মর্শ্ম এই,---

যে শোচনীয় ঘটনার ক্ষা ভারতবর্ষের নাম কলঙ্কিত ক্ষরাছে তাহার পর হইতে ছই সপ্তাহ অতিবাহিত ক্ষরাহে। এই ছুইটি সপ্তাহ জাতির কীবনের হংগ্যয় অ্যানিশা, এই ছুই সপ্তাহ ব্রিরা ভারতের লক্ষ্ণ অধিবাসী বেগ্নাঞ্জিই অন্তরে আন্ধ্র বিস্কান ক্রিয়াছে। আ্যান্থা মহানু নেভার ক্ষা যে অঞ্ বিস্থান করিয়াছি তাছা ছারা কি আমাদের অভরের পৌর্বলা ও মানিগু বৌত হইরা যাইবে ? উহার কলে কি আমর ঠাছার এত টুক্ উপযুক্ত হইতে পারিব ? এই ছই সপ্তাহ পরিয়া পৃথিবীর বিভিন্ন স্থানের সাধারণ লোক ছইতে রাষ্ট্রের অবিপতি পর্যন্ত মহারার স্থাতর উদ্দেশে শ্রদ্ধা জ্ঞাপন করিয়াছেন। এই ভাবাবেগ ধীরে ধীরে হাস পাইবে, কিছু তাছা হইলেও আমরা পূর্দের অবং। ফিরিয়া পাইব না, কারণ তিনি আমাদের ছীবন ও মনের প্রশ্রুত ভবে তাহার হাপ রাধিয়া গিয়াছেন।

তাঁহার কর এেছে বাতৃ অবন্য মর্মবের প্রতিষ্ঠি অবন্য মৃতিন্তন্ত নির্মাণের এল অনেকে প্রতান করিয়াছেন। ইহার দ্বারা তাঁহাকে উপহাস করা হয় এবং নামীর মূলাকে হীন করা হয়। তাঁহার সন্মানযোগ্য কি মৃতিন্তন্ত আমর। নির্মাণ করিছে পারি! তিনি আমাদের জীবন বারণের ও জীবন উৎসর্গের পর দেখাইয়া গিয়াছেন। আমর। যদি সেই শিক্ষার মর্ম্ম উপলব্ধি করিতে না পারি। তবে তাঁহার জন্ত কোন অভিন্তন্ত নির্মাণ না করাই ভাল: মহাগ্রাকী আমাদের যে পর দেখাইয়া গিয়াছেন, প্রধাননাচিত্রে সেই পর অভ্যারণ করা এবং জীবনে ও মরণে আমাদের কর্তবাপালন করাই তাঁহার স্বৃতিরক্ষার এক্ষাত্র উপায়।

তিনি ছিলেন হিন্দু ও ভারতীয় ; বছকাল তাঁহার ভার মহং লোকের জন্ম হয় নাই। ভারতীয় ও হিন্দু হওয়ার লভ তিনি গর্কবোধ করিতেন। ভারতবর্ধ তাঁহার নিকট অতাভ প্রিয় ছিলে, কারণ বহু শতাক্ষী ব্রিয়া ভারতবর্ধ শান্বত সভাের প্রচার করিয়। আন্তর্ম প্রান্ত হা তিনি বর্মপ্রবণ ছিলেন এবং জাতির জনক বলিয়। অভিহিত হইলেও সঙ্কীর্ণ বর্মভাব অথবা সঙ্কীর্ণ জাতীয়তাবোধ তাঁহার মনকে আছেন্ন করিতে পারে নাই। এইজভাই তিনি আন্তর্জাতিক-মনোভাব-সন্পন্ন ব্যক্তিতে পরিগত হন। তিনি মাধ্যের ঐকোে বিশ্বাসী ছিলেন, প্রভাকে বর্মের অন্তর্নিহিত ঐকো তিনি আন্তর্বান ছিলেন এবং দ্বিজ্ব আন্তর্নির অন্তর্নিহিত ঐকো তিনি আন্তর্নানির ভিলেন এবং দ্বিজ্ব মানবের সেবায় আন্ত্রিয়াজিলেন।

উছের মূলির প্রতি জগণিত লোক শ্রমজ্ঞাপন করিয়াছে:
ইতিহাসে ইহার তুলনা নাই। পাকিস্বানের জবিবাসীরা
যেরপ সহংকৃতভাবে শ্রমা জ্ঞাপন করিয়াছে—ইহাতে তিনি
নোবছয় সর্বাপেকা আনন্দিত হইতেন। সেই শোচনীয় ঘটনার
পরনিন আমর। মূহতের কল সকল তিজতা ভূলিয়া বিয়াভিলাম, গত কয়েক মাসের বিবাদ ও মতানৈকা ক্লেকের জভ
আমর। বিশৃত হইয়াছিলাম—গানীলী আমানের মানসনেত্রের
সন্মুবে ভারতে বিভাগের পূর্বে অবও ভারতের অবিসংবাদী ও
প্রিম্ন নাল্যের প্রতিভাত ছইতেছিলেন।

মহাগ্রাঞ্জী ছিলেন ভারতের মিলনকারী; তিনি কেবল আমানের অপরকে সহু করিবার শিক্ষাই দেন নাই—পরছ তিনি আমানের সেই সকল ব্যক্তিকে বন্ধু ও সহকর্মী হিসাবে এবন করিবার শিক্ষাও দিরাহেন। তিনি আমানের ভূষ স্বার্থ ও সংস্থারের উর্দ্ধে উঠিতে এবং অক্টের মধ্যে শুভের লক্ষণ দেবিবার শিক্ষাও দিয়াছেন।

তাঁহার শীবনের শেষ কয়ট মাস এবং তাঁহার মৃত্যু স্ইতেছে ঐকা, উদারত। এবং পরমত সহিষ্ণুতার মূর্ত্ত প্রতীক। তাঁহার মৃত্যুর কিছু পূর্বে আমরা ঐ সকল আদর্শ অঞ্সরণ করিবার প্রতিশ্রুতি দিয়াছিলাম। আমর। সেই প্রতিশ্রুতি পালন করিব। আমাদের ইহা শরণ রাখিতে হইবে যে, ভারতে যাহারা বাস করে তাহারা যে ধর্মাবলম্বী হউক না কেন ভারত-বর্ষ তাহাদের মাতভূমি। তাহারা আমাদের মহান ঐতিহের সমান অংশীদার। তাহাদের বাধ্যবাধকতা ও অধিকারও সকলের সমান। সকল বিরাট জাতির গ্রায় আমাদের জাতিও विভिन्न मच्छामारस्त लाक लहेसा गठिए। मधीर्ग प्रक्रिस्मी भिया দেখিলে অথবা এই বিরাট জাতিকে কুম গতীর মধ্যে সীমাবদ্ধ করিবার চেষ্টা করা হইলে তাহার শিক্ষার অবমাননা করা ছইবে, উছার ফলে বিপদের সৃষ্টি হইবে এবং তিনি যে স্বাধীনতার জ্ঞা সারাজীবন সংগ্রাম করিয়া গিয়াছেন ও যে স্বাধীনত। তিনি আমাদের জন্ম অর্জন করিয়া গিয়াছেন সেই স্বাধীনতাও নষ্ট হইবে।

অতীতে ভারতের সাধারণ বাজিরাও গুঃখকষ্ঠ সহ্ করিয়া-ছেন। তাঁহাদের ত্যাগও গুরুত্বপূর্ণ। তাঁহাদের দাবিও বিবেচনা করিতে হইবে। কেবল নৈতিক ও মানবতার দিক হইতে নহে, পরপ্ত সাধারণ রাজনীতিক জ্ঞানের দিক ১ইতেও সাধারণ লোকের জীবনধাত্রার মানের উন্নয়ন কর। এবং তাহাকে উন্নত করিবার সর্ব্ব প্রকার স্থ্যোগ দেওর। অভাপ্ত প্রয়োজন। যে সমাজ-ব্যবস্থায় মাসুষ এই স্থোগ লাভ করিছে পারে না তাহার পরিবর্ত্তন করিতেই হুইবে।

মহাথাকী চলিয়া গিয়াছেন কিন্ত তাঁহার প্রভাব থামাদের অক্প্রাণিত করিতেছে। কর্ত্তবাঙার এখন থামাদের উপর বর্তাইয়াছে। সাব্যমত সেই কর্ত্তবা পালনে সচেষ্ট হওয়াই আমাদের সর্বপ্রথম কর্ষীয়। যে সাম্প্রদায়িকতার ক্রম বর্ত্তমান মূর্গের সর্বপ্রেট মানবকে জীবন বিসর্জন দিতে হইয়াছে সেই সাম্প্রদায়িকতারূপ বিধকে দ্রীভূত করিবার ক্রম সম্প্রথম করিতে হইবে। কোন বিপথগামী ব্যক্তির প্রতি বিহেষভাব লইয়া আমরা এই বিধকে দ্র করিব না, পরছ আমরা ঐ ক্রতিকর মনোর্ভির বিরুদ্ধেই সংগ্রাম করিব। গাদ্ধীকীকে হত্যা করিয়াই ঐ মনোর্ভির নির্ত্তি খটে নাই। গাদ্ধীকীকে হত্যার পর আনক্ষাম্ন্তান আরও কলকের বিষয়। যাহারা উহা করিয়াছিল অথবা যাহারা ঐরপ চিন্তা করে তাহাদের নিক্ষেত্র ভারতবাসী বলিয়া দাবি করার অধিকারও নষ্ট হইয়াছে।

আমি বলিয়াছি যে, এই সকট-সময়ে ৰাতির বাধের ৰঙ আমাদের সঞ্চবদ্ধ হইতে হইবে এবং যতদূর সম্ভব প্রকাঞ্চে বাগ -বিতঙা এড়াইরা প্রয়োজনীর ব্যাপারে সকলে যাহাতে একম্ড ছইতে পারি তাহাতেই গুরুত্ব আরোপ করিতে হইবে। এই প্রয়োজনীয় কার্য্যে সাহাযোর জঞ্চ আমি সংবাদপত্রসমূহের নিকট বিলেষ আবেদন জানাইতেছি। দেশে যাহাতে বিজ্ঞেদন্ত্রক মনোভাবের স্কট্ট হইতে পারে তাঁহারা যেন এইরূপ কোন সমালোচনা করিতে বিরত থাকেন। কংগ্রেসে জামার যে সকল সহকর্মী অনেক সময় ইতপ্ততঃ করিয়া মহান্মাজীর নেড্র অহ্নসরণ করিয়াছেন তাঁহাদের নিকটও আমি বিশেষ ভাবে আবেদন কানাইতেছি।

সংবাদপত্তে ও অক্তাক্ত মহলে সর্জার প্যাটেলের সহিত আমার মতানৈকা সধ্ধে যে আলোচনা হইয়াছে তাহাতে আমি বাধিত হইয়াছি। বহু সমস্তা সম্বন্ধে আমাদের মধ্যে প্রকৃতিগত ও মানসিক পার্ধক্য আছে। কিন্তু ভারতবাসীর জানা উচিত— আমাদের জাতীয় জীবনের প্রয়োজনীয় ব্যাপারে আমাদের মতের এক্য দেই মতানৈকাকে মান করিয়া দিয়াছে এবং পঁচিশ বংসর অধব। তাহারও অধিক কাল আমরা অনেক বড বড কাজ পরস্পর একযোগে করিয়াছি। আমরা পরস্পরের প্রথছঃখের অংশভাগী। কাতির এই সফটকালে আমাদের পক্ষে কি সঙ্কীর্ণচিত্ত হওয়া অধন: জাতির মধন বাতীত অঞ किছ 6िख: कदा मध्यव " मधात शाहिल काचित कीरनवाशी যে সেবা করিয়াছেন কেবল ভক্কল্য নহে পরস্ক শিনি ও আমি ভারত গবনে টের কার্য। পরিচালনের দায়িত এছণের পর ভইতে তিনি যে ক'⇔ করিয়াছেন ত**জ**ভ আমি ঠাহাকে অভি-নন্দিত করিতেতি। শান্তিও সংগ্রামের সময় সন্ধার পণাটেল ঞাতির একজন সাহসী অধিনায়ক। প্রস্তে যখন কোন কাজ করিতে ইতন্ততঃ করে তথন তিনি নিঃশঞ্চিত্তে সেই কাঞ্ সমাধা করেন। তিনি একজন শক্তিশালী সংগঠক। বছ দিন হুইতে আমি তাঁহার সংস্রবে আছি, যতই দিন যাইতেছে ডতই আমি তাহার গুণমুগ্ধ হইয়া পড়িতেছি এবং তাঁহার প্রতি আমার শ্রদ্ধা রদ্ধি পাইতেছে।

সম্প্রতি একটি বরোয়া সভার আমি যে বক্তৃতা করি সংবাদপত্রে তাহা প্রকাশিত হয়, তাহা অনমুমোদিত, উহার কলে
লোকের মনে এই ধারণার স্টে হইয়াছে যে, আমি পুরাতন
বন্ধুও সহকর্মী শ্রীকরপ্রকাশ নারায়ণের সমালোচনা করিয়া
কঠোর ও তীর ভাষা ব্যবহার করিয়াছিলায়। ঐ সংবাদ
ঠিক নহে। আমি বলিতে চাই যে, সমাক্তরী দল কর্তৃক
অক্সত কয়েকট নীতি আমি সমর্থন করি না এবং আমার
বিশ্বাস এই যে, ঘটনার চাপে পভিয়া অথবা ভাবাবেগের বারা
পরিচালিত হইয়া তাঁহারা ভান্ত পথে চলিয়াছেম। গ্রীকয়প্রকাশ
নারায়ণের কর্মশক্তি সম্বন্ধে আমার মনে কোন সন্দেহ নাই।
তাঁহাকে আমি বন্ধু বলিয়া মনে করি। আমার দৃঢ় বিশ্বাস
এই যে, এমন সময় আসিবে যখন ভারতের ভাগ্য নির্দারণের
কার্যে তিনি বিশেষ গুরুত্বপূর্ণ অংশ গ্রহণ করিবেন। হুর্তাগ্যবশতঃ সমাক্রত্মী দল দীর্ষ দিন হুইতে নেতির্কক নীতি

অন্থসরণ করিতেছে এবং যেসব বিষয়ে সর্ব্বাথ্যে বিবেচনা করা প্রয়োজন, সেই সকল বিষয়কে উপেক্ষা করিয়া আসিতেছে।

কাতীয় কীবনে প্রমতসহিষ্কৃতা ও সহযোগিতা করার ক্ষম্ব এবং বাহারা ভারতীয়দের একটি বিরাট কাতিতে পরিণত করিতে চাহেন তাঁহাদের সজ্ববদ্ধ হইয়া কাক করিবার আবেদন কানাইতেছি। সাম্প্রদায়িকতা এবং সঙ্কীর্ণ প্রাদেশিকতা দূর করিবার ক্ষম্ম সচেষ্ট হইতে আমি সকলকে অমুরোধ কানাইতেছি। ভারতবর্ষকে নুতনক্ষপে গড়িয়া তুলিবার ক্ষম্ম শ্রমিক-মালিক বিরোধ বন্ধ করিতে সকলকে আবেদন কানাইতেছি। আমি এই সকল কাক করিবার সঙ্গল প্রহান করিয়াছি। আমি বিশাস করি যে, এই কীবনেই আমরা মহারাজীর সম্প্র কিয়ৎ পরিমাণে সার্থক করিতে পারিব। ইহা করিনেই তাহার শ্বতিরক্ষার সর্বোত্তম পদা।

ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রের রাষ্ট্রবিধি

ভারতের রাষ্ট্রবিধি রচনা কমিটি গণপরিষদের সভাপতি ডাঃ রাজেলপ্রসাদের নিকট সাধীন ভারতের রাষ্ট্রিধির ধ্রমডা দাবিল করিয়াছেন। ধসভাটির মোটামুট বিষয় ছইতেছে---ভারতব্য একটি যুক্তরাষ্ট্র হৃচবে : আপংকালীন অবস্থায় প্রয়োগের জ্বন্য রাষ্ট্রপতির (প্রেসিডেন্ট) হাতে কতকগুলি বিশেষ ক্ষমতা থাকিবে: প্রাপ্তরমক্ষের ভোটাধিকার প্রবর্তিত **২**ইবে এবং প্রাদেশিক ব্যবস্থা-পরিধদসমূহের প্রতি এক লক্ষে এক জন করিয়া প্রতিনিধি থাকিবেন: মন্ত্রীমণ্ডল ব্যবস্থা-পরিষদের প্রতি দায়িত্বসম্পন্ন হইবেন। যুক্তরাষ্ট্রীয় সরকারের এবং প্রদেশসমূহের হাতে কোন কোন বিষয় থাকিবে এবং কোন কোন বিষয়ে উভয়েরই ক্ষমতা থাকিবে তাহা পুৰক পুৰক ভাবে বিবৃত করা হইয়াছে। সংখ্যালগুদের দশ বংসরের জ্বন্ত পরিষদে আসন সংরক্ষণের সুযোগ দেওয়। হইয়াছে, তার পর উহা উঠিয়া ঘাইবে। বণিক প্রতিষ্ঠান কমিদার প্রভৃতির স্বতম্ব নির্বাচন তুলিয়া দেওয়া হইয়াছে। রাপ্রবিধি রচনার জ্বন্ধ গণপরিষদের যে কমিট গঠিত হইয়াছিল নিয়লিখিত ব্যক্তিগণ তাছার সদস্ত ছিলেন: ডা: অাবেদকর (১৮য়ারম্যান), ঐগোপালবামী আয়েকার, আল্লাড়ী হুক্সামী আয়ার, কে এম মুন্সী, এন মাধ্ব রাও, ভি পি ধৈতান ७ रेनशम सङ्ख्यम भाष्ट्रहा ।

খগড়ার প্রথম অংশে ভারতীর মুক্তরাষ্ট্রের এলাকা সথছে আলোচনা কর। হইরাছে। উহাতে বলা হইরাছে যে আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ এবং অন্ত কোন অঞ্চল অবিকৃত হইলে তাহা ভারতীর মুক্তরাষ্ট্রের অন্তর্ভু হইবে। নুতন রাষ্ট্র গঠন ও নৃতন রাষ্ট্র ভারতীয় মুক্তরাষ্ট্রের অন্তর্ভু করিবার বিধানও বসড়ার আছে।

ভাষার ভিত্তিতে প্রদেশ গঠনের আলোচনা করিয়া উহার শেষে মুতন প্রদেশসমূহের একটি তালিকা যোজনা করা

হইয়াছে। উহাতে আজের নাম নাই। কারণ-স্বরূপ বলা হুইয়াছে যে জন্ধকে মৃতন প্রদেশরূপে গঠন করিবার পূর্কে কতকণ্ডলি প্রাথমিক ব্যবস্থা অবলম্বন করা আবস্তক । কেবল তালিকার নামোল্লেখ করিয়া লাভ নাই। এ বিষয়ে এই যুক্তি দেওয়া হইয়াছে ধে. ১৯৩৫ সালের ভারতশাসন আইন অনুযায়ী উভিয়া ও সিদ্ধর বেলারও ঠিক এইরপ ব্যবস্থাই করা হইরাছিল। তবে কমিট একট সীমানা-কমিশন গঠনের মুপারিল করিয়া বলিয়াছেন যে এই কমিশনে কেবল অক্সের ব্যাপারেই নহে, ভাষাগত ভিভিতে অক্তান্ত প্রদেশ সম্পর্কেও প্রয়োজনীয় বিষয়ে অনুসধান করা হইবে। প্রদেশ গঠনের এইরূপ ব্যবস্থায় আমরা সংগ্রে হইতে পারিলাম না। বর্তমান প্রদেশগুলি ইংরেকের দ্বারা তাহাদেরই স্থবিধাজ্ঞানে গঠিত হইয়াছিল এবং তাছারা নিজের প্রয়োজনাম্বসারে প্রাদেশিক সীমা অনেক বার রদবদল করিয়াছে। প্রাধীন ভারতের রাষ্ট্রবিধি রচনার সময় ভারতের মানচিত্র হইতে ইংরেজের দেওয়া লাল ও হলদে রং মুছিয়া কেলিয়া ভাষার ভিত্তিতে সম্পূর্ণ মুক্তন করিয়া প্রদেশ গঠনের বাবস্থা হওয়া উচিত ছিল। কংগ্রেসের গঠনতত্ত্বে ভাষার ভিত্তিতে প্রদেশ গঠন কর হইয়াছে: কাব্ৰেট কাব্ৰও এ বিষয়ে অনেকটা অগ্ৰসর ংইয়া আছে। বহু দেশীয় রাজা ইতিমবোই পার্থবর্তী প্রদে-শের অন্তত্তি হইয়াছে, পুতরাং তাহাদের স্বাতস্কাবোধক হলদেরং এখন আর মানিয়া চলিবার প্রয়োজন নাই। পসভায় প্রাপ্তবয়ক্ষের ভোটাধিকার এবং নাগরিকের মৌলিক অধিকার যেখানে স্বীকৃত হুইয়াছে সে সকল স্থানে রাজাদের দিক টানিধার প্রয়োজন শেষ হইয়াছে। ইংরেজ আমলে প্রতিক্রিয়াশীলতার অক্সম্বরূপ দেশীয় রাজ্যের রাজাদের এখন পেন্সন দিয়া রাজ্যগুলিকে সমগ্রভাবে এবং প্রদেশের সহিত সম্পূর্ণ সমান ভারে গুব্রুরাষ্ট্রের **এছ**ভূ ব্রু করা হুইলে **প্রভা**র অধিকারে পূর্ণ খীফুতি ২ইত। কিন্তু তাহা করা হয় নাই, দেশীয় রাজ্যগুলিকে খসড়ায় সাধারণ প্রদেশ হইতে ভিন্ন করিয়া ধরা হটয়াছে। চীক কমিশনারের কতকগুলি ছোট প্রদেশ বজায় রাখিবারও কোন আবস্তকতা আর আছে বলিয়া আমরা মনে করিতে পারিতেছি না। প্রদেশগুলিকে ছেট আধ্যা দেওয়া হইয়াছে, 'ভারত' উহার বাংলা করিয়াছেন 'অঙ্গরাষ্ট'।

রাষ্ট্রবিধির প্রথমাংশে বলা হইয়াছে যে ভারত একট যুক্ত-রাষ্ট্র হইবে। কমিটি 'কেডারেশন'-এর পরিবর্ত্তে 'ইউনিয়ন' শব্দ ব্যবহারের পক্ষপাতী। শব্দের প্রকারভেদে কিছু আসে থায় না বটে, তবু কমিটি মনে করেন যে ভারত ইউনিয়ন প্রকৃতপক্ষে কতকগুলি অঙ্গরাষ্ট্রের সমষ্ট্র হইলেও 'ইউনিয়ন' শব্দ ব্যবহারে একতার ভাব বৃষ্ঠিত হুইতে পারে।

মৌলিক অধিকারের বিশদ বিবরণ ধসভায় দেওয়া হইয়াছে। শিক্ষা, সংস্কৃতি, ধর্ম ও সম্পত্তির মৌলিক অধিকার খীকৃত হইয়াছে। মাত্রে মাত্রে ধর্ম বা বর্ণগত কোন ভেদ ভারতে থাকিবে না। অস্পুত্রতা দঙ্নীয় অপরাধরণে গণ্য হবৈ । রাজাের ধাধীনতা, সম্পর্চন ও সভা করার ধাধীনতা, দেশের সর্বত্ত অবাধ বিচরণের ধাধীনতা, সম্পত্তি অজ্ঞন রক্ষ: ও দান বিজ্ঞারের ধাধীনতা এবং ব্যবসা-বাণিজ্যে রত হটবার ধাধীনতা মৌলিক অধিকাররণে রক্ষা করিবার ব্যবহঃ হইয়াছে। এ বিষয়ে স্ব্রাপেকা উল্লেখগােয় এট কথা যে, মৌলিক অবিকার ক্র-হইলে পুশ্রীম কোটে নালিশ করিবার অধিকার দেওয়া হইয়াছে। গণতাজ্ঞিক সমাজে ইহ' খুব বছ অধিকার।

ভারত রাষ্ট্রে প্রধান হইবেন ইহার প্রেসিডেন্ট : যাক্তীয় শাসনক্ষরতাই প্রেসিডেন্টের থাকিবে এবং জিনি দায়িওশীল मश्रीरमञ्ज প्रवामनीकृषासी के भवन क्रमण। श्रास्थात क्रिट्यन : পার্লায়েন্টের উভয় পরিষ্ণাের সমস্ত এবং আইন সভার স্বত্তগণ सहेशा गठिए इंटनकरहे।दाल करनदक्त घेता त्थिभिएएक নির্বাচিত হইবেন। প্রেসিডেন্টের কার্যাকাল হইবে পাঁচ কংসর এবং তিনি কেবলমাত্র একবারের ক্ষণ্ড পুনর্নির্কাচিত ছইতে পারিবেন। প্রেসিডেন্টের বয়স ক্মপক্ষেত্র বংসর ছটবে এবং তাছার নিমু পরিধদের সদস্য হিসাবেও নির্বাচন-প্রাধী হইবার যোগ্তা থাকিতে হটবে ৷ রাট্রিধি-বিরোধী কার্য্য করিলে প্রেসিডেউকে দোধী সাধান্ত করিয়া বিচার করা চলিবে। ধুসভা রাষ্ট্রবিধিতে একজন ভাইদ-প্রেসিডেণ্টের পদও রাখা ছইয়াছে। তিনি পদাবিকার বলে রাষ্ট্রপরিষ্টের **(ह्यांत्रशांन इटेंट्वन ! উভয় প**রিষ্দের সদস্তদের দারা তিনি নিকাচিত ২ইবেন। সংখ্যামুপ।তিক একক ভোটের দারাই ভাঁছার নির্বাচন হংবে। ভাঁছার কার্য্যকাল হগ্রে পাঁচ বংসর। প্রেসিডেন্টের পদ শুক্ত হইলে তংক্তমে জাইস-প্রেসিডেন্টই প্রেসিডে ট হিসাবে কার্ড করিবেন। ভাইদ-প্রেসিডেণ্ট ও শ্রেদিডেণ্ট নির্বাচনের ব্যাপারে যাবতীয় গোলযোগের নিপান্তি করিবে সুপ্রীম কোর্ট। ঐ আদালতের রায়কেই চুড়ান্ত বলিয় মানিয়া লইতে হইবে।

থসভার মধ্যে প্রধানমন্ত্রীর নেতৃত্বে মন্ত্রিমণ্ডলীর কথাও উল্লেখ করা হইয়াছে। ইহাদের কাজ হইবে প্রেসিডেণ্টকে ভাঁহার যাবতীয় কার্য্যে সাহায্য করা। মন্ত্রিমণ্ডলী যুক্তভাবে জনগণের নিকট দায়ী থাকিবেন। ভারত-সরকারের যাবতীয় দাসনভান্ত্রিক কার্যা প্রেসিডেণ্টের মারকং হইতেছে বলিয়া ধরিয়া লইভে হইবে। প্রেসিডেণ্টের প্রয়োজনাম্যায়ী প্রধান মন্ত্রী ইউনিয়নের যাবতীয় কার্য্যকলাপ ও নৃতন বিধান রচনা সম্পর্কে প্রেসিডেণ্টকে সংবাদ ও তথ্য সরবরাহ করিবেন।

প্রেসিডে**ন্ট,** রাষ্ট্রসভা ও লোকসভা লইরা ইউনিয়ন পার্লামেন্ট গঠিত হইবে। রাষ্ট্রসভার সদস্তসংখ্যা হইবে ২৫০। তথ্যে ১৫ জনকে প্রেসিডেন্ট দেশের কলা, সাহিত্য, বিজ্ঞান প্রভৃতি বিষয়ে ফুড়ী ব্যক্তিদের মধ্য হইতে মনোমরণ করিতে পারিবেন । অপর সকলে অন্ধরাইসমূহের হারা নির্বাচিত হইবেন । লোকসভায় ৫০০ জন পর্যন্ত প্রতিনিধি থাকিবেন । প্রাপ্তবয়ধ্বের ভোটাধিকারে পাঁচ লক্ষ্ণ হউভে সাচে সাত লক্ষ্ণ লোকের জন্ত একজন করিয়া প্রতিনিধি লোকসভায় নির্বাচিত হউবেন ৷ লোকসভা প্রতি পাঁচ বংসর পর ভাঙ্গিয়া যাউবে এবং মৃতন নির্বাচনের হারা মৃতন করিয়া গঠিত হউবে । রাইসভা ঐ ভাবে ভাঙ্গিবেনা ; তবে হুই বংসর পর এক- ইতীয়াংশ করিয়া সন্ত্রপদ ত্যাগ করিবেন । কাজেই আর্থিক বিল সহত্বে বর্তমান পরতি উঠিছা যাইবে এবং তংগুলে ব্রিটিশ পার্লায়েন্ট অনুস্তুত পদ্ধতি প্রবৃত্তির হুইবে ।

একজন প্রধান বিচারপতি এবং সাত জন বিচারপতি লইয়া ভারতের সুপ্রীমকোট গঠিত হইবে: প্রয়েক্ষনবৈতে প্রধান বিচারপতি যে কোন কাইকোটের যে লোন বিচার-প্রিকে স্থামকে টের কোন মামলার বিচারের কল জাকিতে কানাড়ায় এই প্রথ আছে . चार्यातकात साम्र क्षामरकार्षे मामलात विधारत कार्यकार्षेत्र অবসরপ্রাপ্ত বিচারপতিবের আহ্বান কবিবার বাবস্থাত कता करेबाटक। अधायतकार्वे व। शहरकार्ट्स विजातभागकारभ কান্ধ করিবার পর কেহ আর আদালতে ওকালতি করিতে পারিবেন না: ক্লামকেটে মুল মামল, ও আপান ভনিতে এবং ভারত-সরকারতে পর।মণ্ড দিতে পারিবেন। কমিট মুগ্রামকোট সম্পর্কে একটি বিষয় উল্লেখ করিয়াছেন। আমেরিকার সুশ্রীনকোটের বিচারণতিগণ যে কোন নামলার বিচারে উপপ্রিত থাকিতে পারেন অর্থাৎ বিচারপতিগ্র ইচ্ছা করিলে প্রত্যেক মামল। সকল বিচারপতি লগমা গঠিত বেকে মেখানে ডিভিসন বেঞ্চ-এর প্রথ। নাই। হইতে পারে: ক্রিট প্রভাব ক্রিয়াছেন যে আমাদের দেশে অভতঃ হুই প্রকার মামলায় এই পর্বতি অনুসর্ব করা উচিত। যে সকল মামলায় রাপ্তবিধির ব্যাখ্যা-সংক্রান্ত প্রশ্ন উঠিবে সেইগুলির বিচারকালে এবং প্রেসিডেন্ট কোন বিষয়ে স্থপ্রীথকোর্টের পরামশ চাহিলে তাহার বিবেচনা কালে সকল বিচারপতি উপপ্রিত থাকিবার বিধান আমাদের গ্রহণ করা উচিত। ক্মিটর তুপারিশ স্ক্রো স্মর্থন্যোগ্য।

প্রদেশ বা অগরাষ্ট্রের শাসনকার্য্য পরিচালনার দায়িও
একজন গবর্ণরের উপর গুন্ত থাকিবে। গবর্ণর নির্ব্বাচনের
জগ্র ছইট প্রস্তাব বসভার করা হইয়াছে। গবর্পারিষদে এই
মর্গ্মে একট প্রস্তাব গৃহীত হইয়াছিল যে প্রাদেশিক ব্যবস্থাপরিষদ নির্ব্বাচনে যাহাদের ভোটাধিকার থাকিবে তাহাদের
ভোটে সাধারণ নির্ব্বাচনের ছারা গবর্ণর নির্ব্বাচিত হইবেন।
এ বিষয়ে ক্মিটির মত এই যে, গবর্ণর এবং প্রধান মন্ত্রী উভরেই
জনসাধারণ কর্তৃক নির্ব্বাচিত হইবেন কিছু ব্যবস্থা-পরিষদের
নিক্ট দায়ী থাকিবেন কেবল প্রধান মন্ত্রী। এই ব্যবস্থার

উভয়ের মধ্যে ঠোকাঠুকি হইতে পারে। স্নতরাং গ্রণর নিকাচনের ব্যবস্থা প্রধানমন্ত্রী নিকাচনের ব্যবস্থা অপেকা ডিল্ল হওয়া উচিত: তাহাদের প্রভাব এই যে প্রাদেশিক ব্যবস্থা-পরিষদ কর্তৃক গ্রন্থপদ-প্রাধীদের মধ্য হউতে চারি ভনকে নিকাচন করা হউক এবং প্রেসিডেন্টকে ঐ চারি ভনের মধ্ হুইতে একজনকে গ্রন্থ পদে নিযুক্ত ক্রিবার অধিকার দেওয়া ছুটক। গ্রন্থরের। প্রদেশের অধিবাসী না হুইলেও চলিবে।

প্রক্রেশ বা অঙ্গরেও একজন প্রধানমন্ত্রীর নেওছে একটি করিয়া মন্ত্রীমন্ত্রী থাকিবে। গ্রণর উছিদের প্রায়নাস্থ্যায়ী কাজ করিবেন কিন্তু কয়েকটি বিষয়ে উছিলের প্রায়নাস্থ্যায়ী কাজ করিবেন কিন্তু কয়েকটি বিষয়ে উছিলের নিজ বিবেচনাস্থ্যায়া কাজ করিবার স্বাধীন গা মাকিবে, হন্ধান্ত্রী এবং প্রায়েদিক প্রবিশ্বন আহ্বান করা ও ভাঙ্গিয়া দেওয়া এবং প্রায়েদিক পাবলিক সাদিস কমিশনের ক্রেয়াম্যান এবং চীক অভিটার নিয়োগ প্রদেশের আহির কালির ক্রেয়াজনবোধে গ্রণর মন্ত্রীমন্ত্রী ভাঙ্গিয়া দিয়া স্বহন্তে লাসনভার এছন করিছে পারিবেন ক্রিয়ালির জ্যানির ক্রিয়া ক্রিয়া করিবায়ার প্রেরিন ক্রিয়ালির ক্রিয়ার প্রেরিন ক্রিয়ালির ক্রিয়ার ক্রেরিন ক্রিয়ালিক মন্ত্রীয়ার ক্রিয়ালিক মন্ত্রীয়ার ক্রিয়ার ক্রেরিন ক্রিয়ালিক মন্ত্রীয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার প্রায়ার ক্রিয়ার ক্রেরিন ক্রিয়ার প্রায়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার প্রায়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার প্রায়ার ক্রিয়ার ক্রি

গ্রণর এবং করেকটি প্রদেশ ছুইট ও অধিকাংশ প্রদেশ একটি আইনসভা লাগ্র। প্রাদেশিক বাবহা-পরিষদ গঠিত হাবে। প্রাপ্তরহের ভোটে প্রতি এক নক্ষে একজন প্রতিনিধি হিসাবে প্রাপ্তরহের ভোটে প্রতি এক নক্ষেরহার হির হইবে, তবে কোন সময়েই ও সংখ্যা তিন শতের দেশী বা হাটের কম হইতে পারিবে না । অনেন্মের ক্ষেত্রটি থায়গুশানিত জ্লোম প্রতিনিধি নির্মাচন সম্পর্কে ভিন্ন বাবস্বা ইইবে। প্রাদেশিক নাবস্থাণক সভা, সম্বদ্ধে এই বিধান হইয়তে যে উহার সম্বভ্রন স্বাধ্যা ব্যবহা-পরিষদের সদস্তম্বারার এক-চতুর্বাহশের বেশী হইবে না। তর্মধা অক্ষেক বাবস্থা-পরিষদের সদস্তম্বা নির্মাচন ক্রিবেন এবং অক্ষেক গ্রবর কর্ত্তক মনোনীত হইবেন। ব্যবস্থা-পরিষদের আয়ুঞ্জাল হইবে পাচ বংসর কিন্তু ব্যবস্থাপক সভা কর্থনও ভাঙ্গিরে না, প্রাত্ত তিন বংসর অন্তর্জ উহার এক-স্তৃতীয়াংশ সমস্ত অবসর গ্রহণ ক্রিবেন।

প্রাদেশিক বাবস্থা-পরিষদের অবিবেশন বন্ধ থাকাকালে গবর্গর মন্ত্রীদের সহিত পরামর্শক্রমে অভিনাদ জারী করিতে পারিবেন। পরিষদের অধিবেশন আরম্ভ হওয়ার ছয় সপ্তাহ পর অভিনাদের মেরাদ শেষ হুইয়া যাইবে।

১৯৩৫ সালের ভারতশাসন আইনে অনেকগুলি এলাকাকে শাসনসংস্থার বহিভূতি অঞ্চলরূপে আলাদা করিয়া দেওয়া হইয়াছিল। প্রাদেশিক ব্যবস্থা-পরিষদে প্রতিনিধি প্রেরণের অধিকার তাহাদের ছিল না এবং পরিষদেরও তাহাদের উপর কোন ক্ষমতা ছিল না , গবর্ণর বয়ং মন্ত্রীদের সহিত পরামর্শ না করিয়া ঐ সব এলাকার শাসনকার্যা পরিচালনা করিতেন।
ইহার কল হইয়াছে এই যে, গত দশ বংসরের এই বাবস্থার
সরকারের চেষ্টায় স্থানীয় অধিবাসীদের কোন দিক দিয়া উন্নতি
হয় নাই কিন্তু উহাদের মধ্যে কংগ্রেসের প্রভাব ঠেকাইয়।
বংবা হইয়াছে মুসলমানদের হায় আদিয় অধিবাসীও
পাব্যতা জালি দের লইয়। অ'র একটা আলাদা শ্রেণীশ্বার্থ গড়িয়া
ভোলার জয় এই বাবস্থা প্রবৃত্তিত হইয়াছিল এবং উহার কল
সবেয়াত ফলিতে আরম্ম ক্রিয়াছে। আল্চর্যের বিষয়, বসভাব
এই বাবস্থা বহাল রালা হংমাছে

কেন্দ্রীয় সরকার ও প্রাদেশিক সরকারের আইন প্রণয়নের অধিকারের ক্ষেত্র গণপার্থদ যে ভাবে নিষ্ঠি করিয়া বিয়াছেল ব্যাহায় লাভাই রাখ্য হটয়াছে: ভবে ক্রিটি এই কথা নালগেছেন যে প্রাদেশিক ভালিকাভ্জ কোন বিষয় যদি এমন গুরুষসম্পন্ন হট্যা উঠে : (২)তে ভারতীয় স্থাৰ্থ উপায় উপায় নিভাৱশীল বলিয়া বিবেচিত হটতে পাৰে তবে তাহা আর প্রাদেশিক ভালিকাহুক না থাকিয়া ্কক্রীয় তালিকার অশ্বভু জি ২২বে। গবে এইরূপ ২৬**ক্ষেপের** পুর্বের কেন্দ্রীয় সরকারকে রাথ্রসভার ছা-তৃতীয়াংশ সদস্ভের मण लहरू इंद्रतः क्लोग्न भाकार्यने अवर खार्ष्यक বাবলা-পরিষণ নিকাচন যাহাতে হঠভাবে সন্পাদিত হয় ভাষার জন্ত ইলেকশন কমিশন নিয়ে(গের বাবস্থা হটয়(ছে। কে প্রায় পার্লামেটের জন্ত প্রান্তেট এবং প্রানেশিক ব্যবস্থা-প্রিষ্টের জ্বল গ্রপ্র এই ক্রিশ্নের সদস্ভ ম্নোনীত ক্রিবেন: নিস্তাচন কেন্তের সীমানির্দ্ধারণের ভার পালা त्यर चेद कारिक छाष्ट्रिया (मृद्या: क्वेंबार्ड)

সংখ্যালয়ুদের করু কয়েকট বিশেষ প্রবিধা, দেওয়া ছাইয়াছে । কেন্দ্রীয় লোকসভার এবং প্রাদেশিক ব্যবস্থা-পরিষদে
দশ বংসরের কঞ্চ মুসলমান, তপশালী হিপ্ত এবং মারাকাও
বোছাই-এ ইটানদের কঞ্চ আসন সংরক্ষিত থাকিবে । শিক্ষা
ও চাকুরিক্ষেত্রে এংলো-ইভিয়ানরা যেসব প্রবিধা পাইয়া
মাসিয়াছে দশ বংসরের ক্ষা সেওলিও বনায় রাখা হইয়াছে।
অনপ্রসর কাতিদের অবস্থা প্রস্থানের ক্ষা ইটানিয়ন এবং
প্রদেশ উভয়েই এককন করিয়া শোশাল অফিসার থাকিবেন।
তপশালী এলাকা ও কাতিসমূহের উন্নতি কতটা হইতেছে
ভাহা রিপোট করিবার ক্ষা একট ক্ষিশন গঠিত হুইবে।

রাষ্ট্রবিধির বসভার যে রিপোট সংবাদণতে প্রকাশিভ হুইয়াছে তাহা অবলয়ন করিয়া এই পর্যন্ত লিখিত হুইল। পূর্ণ রিপোট হন্তগত হুইলে বিশ্ব আংলোচনা সম্ভব হুইবে।

হায়দরাবাদী ব্যবস্থা

নিজাম বাহাছর নাকি ইতিমধ্যে এক বংসর বাাণ্ট চুক্তির দায়ে অস্থবিধা বোধ করিতেছেন। গভ ই৯শে নবেম্বর এই চুক্তি-পত্র স্বাক্ষরিত হয়। স্বাক্ষরকারী ভারত-রাষ্ট্রের পক্ষে লভ মাউটবাটেন, হারদরাবাদের পক্ষে নিজাম

মীর ওসমান আলী খাঁ। ছই মাস ঘাইতে না যাইতেই যে অমুবিধার স্ট্র হইয়াছে এই সংবাদে আমবা আদর্য্যাধিত হুই নাই। কারণ নিজাম বাহাতর যে খেলা খেলিতেছেন পাকিন্তানি পরামর্শদাতাগণের প্ররোচনায়, সেই ইতিহাস থাহার৷ জানেন, তাঁহার। এরপ একটা পরিণতির কথাই ভাবিতেছিলেন। নিজ্ঞাম বাহাছরের পূর্বাপুরুষ-এই রাজ্যের প্রতিষ্ঠাতা বিশ্বাস-শাতক মীর কমণ দিন ধাঁ--- যে সময় মুখল রাষ্ট্রের ধ্বংসে সাহায্য करतन , ज्यन इन्ट इशामतीयाम ताका माक्मिगारजात कीवरन একটা ক'টোর মতন যন্ত্রণাদায়ক হইয়া আছে। ইংরেজ শাসন প্রতিষ্ঠার পর ২ইতে উত্তর-ভারতের সমস্ত মুসলমান ভাগাাথেষী এই রাজ্যে আশ্রম পাইয়াছে এবং এই রাজ্যকে আরুসর্ববিদ মুসলিম স্বাধের কেন্দ্র করিয়া তুলিয়াছে। এই রাজ্যের জন-সংখ্যার মধ্যে মুসলমানের সংখ্যা শতকরা ১৩ জনের বেশী হইবে না। কিছ এমনি হায়দরাবাদী বিধান যে রাষ্ট্রীয় কার্যো এই নগণা জন-সংখ্যার প্রাধান্ত অটুট হইয়া আছে। একটা হিসাবে দেবিতে পাইলাম যে রাজোর নানা দফ্তরে মান্তবর্গের সংখ্যা ১৯ জন, ইহাদের শতকরা ৮১ জন মুসলমান; নানা দফ ভরে সেকেটরীর সংগ্রা ১৭, ইহাদের শতকরা ৮৩ জন মুসলমান ; गा। किटबें हे. भून (अकि भए । भूमलभारनत श्रंत ५० कन ; भूलिए भ শতকর৷ ১৫ জন মুসলমান ; সৈল বিভাগাদিতে মুসলমানের হার শতকরা ৯৫ জন , এই হিসাবেই হায়দরাবাদ রাঞ্চোর প্রকৃতি ও পাকিভানি মতিগতির হদিশ পাওয়। যায়:

নারা-উদ্ধারে বিপত্তি

অপসতা নারীদের উদ্ধারের জন্ম ভারতে এবং পাকিথানে চেষ্টা ৯২তেছে। ভারতবর্ষ হ*হ*তে যত নারী উদ্ধার করিয়া: পাকিস্থানকে কেৱত দেওয়া হটয়াছে পাকিস্থান হটতে তাহার ভলনায় খুৰ কম্নারী উদ্ধাব হুইয়াছে: এখচ ভারত হুইতে ক্মপক্ষে প্রাণ হাজার নারী অপহরণ করিয়া পাকিস্থানে লইয়া যাওয়া ২টয়াছে ইহা এখন সৰ্ব্বভ্ৰমীকত। নারী-উদ্ধারের ক্রন্ত একটি উদ্ধার সপ্তাহ খোষণা করা হটরাছিল এবং পাকিস্তানের বড় বড় নায়কের। বক্তগাও অনেক করিয়াছেন। কিছ ফল এয়াবং হাহা প্রকাশিত হইয়াছে তাহা আশাপ্রদ ন্তে। যত দুর বুঝা যাইতেছে তাহাতে ইহাই মনে হয় যে পাকিস্থানের মুসলিম সমাজপতিগণ তাঁহাদের কর্ত্বা পালন করিতে ষগ্রসর হন নাই। এ বিষয়ে পূর্ববঙ্গের একটি ঘটনা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। উহা হইতে হিন্দু-নারী উদ্ধার সম্বন্ধে পাকিস্থান-কর্ত্তপক্ষের মনোভাব অতি স্পষ্টভাবে জানা যাইবে। ঘটনাটি দৈনিক 'ভারত'-এর সম্পাদকীয় মূপে ১১ই কান্ধন তারিখে প্রকাশিত ইইয়াছে। উহা এইরূপ:

নারী উদ্ধারের একটি মহান্ প্ররাসে নিযুক্ত থাকিরা করিদপুরের জননায়ক (রাজনৈতিক নায়ক নহে, সমাজ-সেবক) জীয়ুক্ত চঞ্জকাত বস্ম মহাশরকে যে নিগ্রহ ভোগ করিতে হইতেছে, তাহা হইতে মনে হয় মারী-উছারে সহ-যোগিতা ও সহায়তা করিবার যে প্রতিশ্রুতি পাকিছানের নায়কেরা এবং রাষ্ট্রপরিচালকরা দিয়াছেন, তাহা ভগুই কথার কথা, উহার পিছনে কিছুমাত্র আভরিকতা নাই। শ্রীযুক্ত চক্রকান্ত বস্থ মহাশয় যে জালে জড়াইয়া পড়িয়াছেন তাহার বিবরণ এই:

গত বংসর মে মাসে ছুইটি নমঃশুল্ল খরামী এক সম্পত্তিশালী মুসলমানের বাড়ীতে কান্ধ করিবার সময় একটি অল্পন্ধকা মহিলা তাহাদিগকে বলে যে সে হিন্দু। মুসলমানরা তাহাকে মেদিনীপুর হইতে চুরি করিয়া আনিরাছে। খরামী হুইটি এই সংবাদ চন্দ্রকান্ধ বাবুর গোচর করে। চন্দ্রকান্ধ বাবু মুসলমানটকে ডাকিয়া পাঠাইয়া সংবাদটি সতা কিনা জানিতে চাহেন। বলা বাহুলা, মুসলমানটি বলে, সংবাদটি সর্বেবিমিপা, এবং সে সেই রাত্রেই অপশুতা নারীটকে পার্শ্ববুটী প্রামে প্রার একটি মুসলমানের আন্রয়ে রাপিয়া আসে। কিন্তু কথাটা জানাজানি হইয়া পড়ায় পর্যদিন বহু হিন্দু এবং বহু মুসলমান আন্রয়দাতা উ মুসলমানের বাড়ীতে উপস্থিত হয়! একটা দাঙ্গার উপশুম খটে। তথন উভস্ব পক্ষই চন্দ্রকান্ধ বাবুকে ডাকিয়া পাঠাইলে তিনি মেয়েটকে ক্রিয়া আনিয়া চন্দ্রকান্ধ বাবুর হাতে সমর্পণ করা হয়।

এই পর্যান্ত প্রশংসনীয়ভাবে কারু চলে। উহ। চালবার কারণ ঐ যে, ১জ্রকান্ত বাবু হিন্দু-মুসলমান-নিধিশেষে সকলেরই কল্যাণকর কাজে আগ্র-নিয়োগ করিয়াছিলেন বলিয়াই ঐ অঞ্লের হিন্দু-মুসলমান তাঁহার সন্মুখে কোনক্সপ অভায় কাৰু করিভে চাহে না। অপশ্রতা নারীটকে উদ্ধার করিয়া চন্দ্রকান্ত বাধু নিকটবর্ত্তী গ্রামসমূহ হইতে ৯ জন হিন্দু ও ১ জন মসলমান মনোলয়ন করিয়া একট কমিট গঠন করেন এবং এট ঘটনা লট্যা থাহাতে কোন প্রকার সাম্প্রদায়িক হালামার স্ট্র না হয় তাহাই দেবিবার ভার কমিটর উপর অর্ণণ করিবার . ৩৩ একট জনসভার আয়োজন করেন। উভয় সম্প্রদায়ের জনগণের **১ে**ষ্টায় ঘটনাটিকে সম্ভোষজনক পরিণতিতে টানিয়া লওয়া সম্ভব হইত, কিছ পাকিস্থানী পুলিস ঘটনাটকে খোলাইয়া তুলিল মেয়েটর নামে তল্লাসী পরোয়ানা বাহির করিয়া। 📆 তাহাই নহে, যে মুসলমানটির বাড়ীতে মেয়েটকে প্রথমে পাওয়া যায় পুলিস তাহাকে দিয়া একাহার লিবাইয়া লইল যে, চন্দ্রকান্ত বাবু ছুই সহস্র নমঃশুদ্র লইয়া তাহার বাড়ী খেরাও করিয়া সাত-আট জন সশস্ত্র লোকসহ তাহার বাড়ীতে বলপুর্বাক প্রবেশ করিয়া তাহার বৈধ-বিবাহিত পত্নীকে ভোর করিয়া হরণ করিয়া লইয়া গিয়াছেন।

তল্পাসী পরোয়ানা বাহির করিরাও পুলিস যেয়েটির সন্ধান পায় না। ওদিকে শান্তিরক্ষার ব্যবস্থা করিবার ক্ষ্ণ বে সন্থা আহুত হুইয়াছিল দারোগা এবং সাম্প্রদারিক বিরোধে উৎসাধী মুসলমানরা সেই সভার অধিবেশনে উপস্থিত হইয়। বলে, মেরেটকে সভায় হাজির করা হোক। তাহাকে নিজ মুখে তাহার জীবন-র্স্তান্ত প্রকাশ করিতে হইবে। মেরেটকে সভায় হাজির করা হয় না। দারোগা তখন বলে:

আৰু যদি হিন্দুরা চোৰ রাঙাইয়া মুসলমানের বাঙী হইতে উপভোগ্যা হিন্দু নারীকে উদ্ধার করিতে সাহস পার, তাহা হইলে ছ'দিন বাদে তাহার। যে মুসলমান মেয়েদের বরিয়া টান দিবে না, তাহাতে বিশ্বাস কি ? অতএব পাকিস্তানে হিন্দুদের এই আম্পন্ধা সহা করা হইবে না ।

পাকিস্থানী পুলিস তাই চন্দ্রকান্ত বাবুর নামে অপরের বিবাহিতা দ্বী বলপুর্বক হরণ করিবার অভিযোগে প্রেপ্তারী পরোয়ানা বাহির করিল। চন্দ্রকান্ত বাবু দেশতাাদী হইলেন। অপহৃতা মেরেটরে আগ্রীয়রা ইহার মারে এক সময়ে মেরেটকে লইয়া যায়। পাকিস্থানী পুলিস মেরেটকেও পাইল না, চন্দ্রকান্ত বাবুকেও পাইল না। তাহারা ক্ষিপ্ত হইয়া উঠিয়া নমঃশুদ্রুদের উপর উপদ্রব স্থক করিল। এই উপদ্রবের বিবরণ ভানিয়া চন্দ্রকান্ত বাবু গ্রামে ফিরিয়া গেলেন। পুলিস তাহাকে প্রেপ্তার কবিয়া হাকতে পুরিল। পনর দিন তিনি হাকতে রহিয়াচেন। জামিনে বালাস করিবার সকল প্রয়াস ব্যবহার হয়।

পাকস্থানী পুলিস, পাকিস্থানী গবছে কি যাহা করিয়াছেন, কাহাই সবিভাবে বর্ণনা করিলাম। এই ঘটনাটি হইতেই বৃধা যায়, অপহৃত্যা নারীর উদ্ধার সাধনের কল পাকিস্থানের পক্ষ হইতে যে সহযোগিতার প্রতিক্রতি দেওয়া হইয়াছে তাহা একান্তই অন্তঃসারশৃষ্ট উক্তি।

এরপ একটি ভরতর ঘটনা কেবল মার 'ভারত'-এ প্রকাশিত হইল। আর কেই ইহা লইয়া আন্দোলনে প্রবৃত্ত হটলেন না কেন আমরা তাহা বুকিতে পারিলাম না। 'ভারত'-এর ভার আমরাও প্রশ্ন করি :--বাংলা গবর্ণমেন্ট ও ইউনিয়ন গ্রথমেণ্টের এ সম্বন্ধে কোন কর্ত্তব্য আছে কিনা গ বাংলা গ্রণ্মেণ্ট এবং ইউনিয়ন গ্রণ্মেণ্ট উভয়েরই চন্দ্রকান্ত বাবুর ঘটন। লইয়া পাকিস্থান গ্রথমেণ্টের সহিত আলোচনার माश्रिष त्रश्यारह। यन छाँचाता छेका ना करतन अवर भिषाः অভিযোগের দায় হইতে ১৬কান্ত বাবকে মুক্ত করিতে নঃ পারেন তাহা হইলে অপহতা নারী-উদ্ধারের প্রয়াস পদে পদে ব্যাহত হইবে। ভারতবর্ষে রামরাজ্য প্রতিষ্ঠার কথা খুব খটা করিয়া শোনানো হয় এবং রামধুন জাতীয় সঞ্চীত করিবার কথাও কেহ কেহ বলিতেছেন। কিন্তু তাঁহারা ভূলিয়া গিয়া-ছেন বন্দিনী সীতার উদ্ধার না হইলে রামরাজ্য প্রতিষ্ঠা হয় না এবং সীতা উদ্ধারের জ্ঞারাম বলপ্রয়োগে বিন্দুমাত্র ছিলা করেন নাই। পাকিছানে বন্দিনী পঞাশ হাজার সীতার উদ্ধারের এবং সেই মহং কার্য্যে অগ্রসর হইয়া কেহ বিপদে প্রভিলে ভাছাকে রক্ষা করিবার শক্তি যে গবর্ণমেন্টের নাই. বামরাক্য প্রতিঠা তাহার কার্য্য নহে।

বাংলার বাজেট

পশ্চিমবঙ্গের বাজেট শ্রীনলিনীরঞ্জন সরকার ব্যবস্থা-পরিষদে পেশ করিয়াছেন। বাজেটে ১৯৪৭ সালের ১৫ই আগষ্ট হটতে ১৯৪৮ সালের ৩১শে মার্চ এই সাড়ে সাত মাসের এবং ১৯৪৮-৪৯ সালের হিসাব আলাদা ভাবে দেওয়া হটয়াছে। বাজেট বক্ততার প্রথমে অর্থসচিব বঙ্গবিভাগের ফলে পশ্চিমবঞ্চের আয়তন এবং উহার আধিক অবস্থা সম্বদ্ধে আলোচনা করিয়াছেন। বাংলা দেশের শিল্পাঞ্চলগুলি সবই পশ্চিমবঙ্গে পড়িয়াছে এবং বড় বড় শিল্পে নিযুক্ত শ্রমিকের সংখ্যা ৬ লক্ষের অধিক। ভারতে যত কারখানায় শ্রমিক কান্ধ করে তার শতকরা প্রায় ৩০ ভাগ একমাত্র পশ্চিমবন্ধে পড়িয়াছে। কলিকাভায় ভারতবর্ষের সকল প্রদেশের লোক আছে এবং জনসংখ্যা এখন প্রায় পঞ্চাম লাখ। সুতরাং পশ্চিমবঙ্গে শহরবাসীর সংখ্যা মোট জনসংখ্যার অন্তুপাতে ভারতবর্ষের সকল প্রদেশ অপেক। বেশী হটয়া পড়িয়াছে। পরিকল্পনা কার্যো পরিণত হইলে উহা আরও বাড়িবে ।

চলতি বংসরের সাড়ে সাঙ্ মাসে রাঞ্ব আদায় ছইবে প্রায় ১৭ কোট টাকা এবং সাধারণ রাজ্যবাতে ব্যয় হইবে প্রায় সাড়ে ১৪ কোট টাকা। প্রাদেশিক উন্নতির ক্ষম্ম কেন্দ্রীয় তহ্বিল হটতে ছুই কোটি টাকা পাওয়া যাইবে! বংসরাজে উঘত থাকিবে প্রায় আড়াই কোট টাক।। আয়ের দিকে বিলেষ উল্লেখযোগ্য বিষয় পাট শুক্ষ ও আয়কর বাবদ কেন্দ্রীয় সরকারের নিকট ২টতে যে টাকা পাওয়ার কথা তাহার পরিমাণ হ্রাস। নিমায়ার এওয়ার্ড অত্নসারে বাংলাদেশ পাট রপ্তানী ভক্তের শতকরা সাড়ে বাষ্টি ভাগ এবং স্থায়করের যে অংশ প্রদেশসমূহকে বর্তন করিয়া দেওয়া হয় তার শতকর ২০ ভাগ পাইত। বঙ্গ বিভাগের পর পশ্চিমবঙ্গের ভাগে কত পঢ়িবে তাহা এখনও পাকাপাকি স্থির হয় নাই. তবে যতটা দেওয়া হটয়াচে তাহা অভায় রকমে কম। चारा अविश्वक रारला এই ६३। किनियर द्रशानी कदिए, পুতরাং তখন উহাদিগকে এক পর্যায়ভুক্ত করিলে ক্ষতি ছিল না। কিন্তু এখন পূর্ববঙ্গ রপ্তানী করে কাঁচা পাট এবং পশ্চিমবঙ্গ চট ও ধলিয়া। 'গতএব এবার কাঁচা পাট ও পাটের তৈরি জিনিয়ে তারত্যা করা উচিত এবং তাহা ক্রিলে পশ্চিমবঞ্চের হিসাবে অস্তবঃ এক কোট টাকা পাওনা হয়। অপচ পশ্চিমবঙ্গ পাইয়াছে উহার অর্জেক। আয়করের ভাগত পশ্চিমবাংলাকে অভায় ভাবে কমাইয়া দিয়া শতকর৷ ২০ প্রলে শতকর। ১২ করা হটয়াছে। অবিভক্ত বাংলায় যে আয়কর আদায় হইত তার অধিকাংশ উঠিত কলিকাতা হুটতে : পূর্বেবঙ্গে বা পশ্চিমবঙ্গের মকঃম্বলে খুব কমই আদায় ছইত। স্থতরাং পূর্ববঙ্গ বাহিরে গিয়াছে বলিয়া আয়করের ভাগ শতকরা ৮ কম করিরা দেওরা যুক্তিযুক্ত হয় নাই। পুর্বাহ

হইতে যে পরিমাণ আয়কর আদায় হইত সেই টাকাটা বাদ দিয়া দিলেই যথেষ্ট হইত। ভৃতপূর্ব অংসচিব ঞীঅম্লা চৌধুরী এ বিষধে কিছুই করেন নাই বলিয়া ব্যাপারট: বিসদৃশ আকার ধারণ করিয়া রহিয়াছে। এনিলিনীরপ্তন সরকার বলিয়াছেন যে তাঁহার৷ এই অভায়ের প্রতিকারের জন্ত চেষ্টা করিতেছেন এবং ভারত-সরকারের সিদ্ধান্ত বদলাইতে পারিবেন বলিয়া আশা করেন। ডাঃ বিধানচন্দ্র রায় স্বয়ং এই আলোচনার জন্ম দিল্লী গিয়াছেন। ১৯৪৮-৪৯ সালে প্রায় এক কোটি টাকা খাটতি পড়িবে। বাজেটে মিতবায়িতার ক্ষেত্র কতবানি রহিয়াছে তাহা ভাল ভাবে দেখা ২ইয়াছে বলিয়া মনে হয় না। ভাতা এবং কণীটের দিয়াকাঞ করাইবার বরাদগুলিতে মিতবায়িতা অবলম্বন ও পরিদর্শনের কভাকভি করিলে অনেক টাকা বাঁচিয়া ঘাইবে ইহা আমাদের দচ বিশ্বাস : কৃষি শিল্প এবং পথঘাট *ইত্যাদি*র নাফে প্রতি বংসর কোট কোট টাকা বরান্ধ হয় এবং ধরচও বংসরাজে বরচের অতুপাতে কান্ধ কতবানি হয় পরবর্তী বাজেট বক্তভায় ভাহার সংক্ষিপ্ত বিবরণ দেওয়ার রীতি প্রবর্তন করা উচিত এবং তাহা হইলে অপচয়ও অনেক ক্ষিয়া আসে। যাখাদের হাতে খরচের ভার আছে তাহার; যদি বুৰিতে পাৰে যে বংসরাস্তে কাজের হিসাবও দিতে হুইবে তাহা হুইলে কাজ অন্তঃ এখনকার চেয়ে বেশী অঞ্সর হইবে: স্বাভাবিক অবস্থা সম্প্র বাংলার তুলনায় এখন পশ্চিমবঙ্গের আয়ুই প্রায় তিন গুণ হইবে, তথাপি বরচ কেন কুলায় না তাহ। বুকা কঠিন। গরীব দেশের গরীবের वाटकटि यमि कर इंटिंग्स दावश्री में इस एटव वाटके একেবারেই মায়লী বলিয়া মনে ছইবে। বর্তমান এয় ভক্ষট মধাবিত সমাধের পঞ্চে অভ্যন্ত পীয়নমূলক। বিলাস দ্রবোর উপর এয় তথ্য বহাল রাখিয়া বই, কাগজ, কাপড়, জামা, জুতা প্রভৃতির উপর হইতে উহা একেবারে তুলিয়া দেওয়া উচিত। শিক্ষা বিভার যেখানে একান্ত আবক্সক, সেধানে বইয়ের উপর ছুই বার ক্রিয়া এয় শুক্ত আদায় হইতেছে, একবার প্রেসে ছাপানো কর্মা ডেলিভারী দেওয়ার সময় আর একবার বাঁধানো বই বিএয়ের বেলার। বলাবাছলা গুটটা করই ক্রেভার খাড়ে গিয়া চাপিতেছে। কেন্দীয় সরকারের নিকট হটতে পাট রপ্তানী ভক্ত ও আয়করের ভাগ আলায় হটলে এবার হটতেই জয় ভ্রেরে অন্তর্গত বই এবং নিতাবাবহার্যা অবস্থ প্রয়োজনীয় জিনিষগুলি বাদ দিয়া অর্থসচিব দেশের निम्मश्रीवेष्ठ नमाबदक এक्ट्रे बिख मिट्ड शादान। स्वा হুল্য বৃদ্ধির তুলনায় ইংাদের আয় বাড়ে নাই, এই সামাঞ্চ সাহাযাটুকুও তাহাদের নিকট অমূল্য বলিয়া প্রতিভাত হইবে।

মিত্র সেবাসজ্ঞ

মিল সেবাসন্স (ক্লেওস সাভিস ইউনিট) একট

আন্তর্ভাতিক প্রতিষ্ঠান। আৰু ছয় বংসর ইইতে এই প্রতিষ্ঠানের সভারন্দ ব্যাপকভাবে ভারতবর্ধের ছর্গত জনের সেবাকার্যা করিয়া যাইতেছেন। ইহারা একটি ধর্মগোষ্ঠার-দেবক, যাহার সংখ্যা ২০,০০০-এর বেশী নয়। স্বদ্ধ ইহারা বিশ্ববাাণী হর্গতের সেবা করিয়৷ যাইতেছেন। প্রায় তিন শত বংসর পূর্বে এই ধর্ম-গোষ্ঠার প্রতিষ্ঠাতা কর্জ ফল্লের অন্থ্রাণনায় ইহার সেবাত্রত আরম্ভ ছয়। এই গোষ্ঠার একটি কার্য্যা-বিবর্থীতে এই ইতিহাস দেখিতে পাই। "ফল্লের মতে প্রত্যেক লোকের মধ্যেই ভগ্রানের অংশ আছে, তা ভাল-মন্দ-গরীব-বড়লোক যাই হউক না কেন:" গাঁহার সম্প্রদায় বলেন,

অস্তরের আলোক যীশুরই নির্দেশ, এবং তা সব কাজেই মেনে নেওয়া উচিত ৷ ক্রেডরের আলে মাসুষের মধ্যে জাঙ্গ স্থাপন করিবার নির্দেশ দেয়: এই আলোৰ বলে সজ্জের সভার। ধ্র-বিত্রহের বিবোধী।... মিত্র (দেবা) সমিতির সভারা প্রেণহিতের গাছাগো পুজায় বিশ্বাস করেন না ৷--- মাহুমের তৈরী রং, জাতি ও ৰৰ্মের বৈষমা ভারা সানেন না। এই কারণে মিঞ সমিতির সভার: বরাবরই সাম্রাঞ্চাবাদের বিপক্ষে : প্রায় এক ল' বংগর ভাগে, সিপাহী বিভোগের ঠিক পরেই স্মিতির প্রচার-পরে নিম্লিবিত কথাট প্রকাশিত হইয়াছিল: "সমস্ত পৃথিবীর ইতিহাসের মধ্যে একমাএ ভারতবর্ষেই এক শ' বছর ধরে সাম্বিক শাসন ও বাণিকা একসংখ চলতে দেখা যায় ৷ সাম্বিক শাসন ও বাণিজ্য এক্ষেত্রে পরস্পরকে সাহায়া করে। গৈরর। দেশ কর করে বাণিকোর ছবিধা করে দেয় এবং বানিকা-লক টাকায় সামরিক অভিযান চলতে থাকে। এই বরণের অত্যাধার কেবলম'ত্র ভারতেই সম্বর হয়েছে।"

ইংরেজ শাসনের গৃধুতা এই প্রতিব'নে শিধিল হয় নাই। আৰু স্বাধীন ভারতে ইংরেজ ও ভারতবাসীর সম্বন্ধ সহজ अ भवल इहेनांद्र मञ्जादना (पना निवार्ष्छ। সমিতির সেবাকাহা এই আদর্শ পথে চলিবার ক্ষেত্র প্রস্তুত করিতেছে বলিয়া আমাদের বিশাস। গত বিশ্বযুদ্ধের সময় মুত্ৰ ভাবে এই সজের সভাগণ ভারতবর্ষে কার্য্য আরম্ভ করেন। ভাপানী বোমার আক্রমণে ভারতংর্বের নাগরিক জীবন বিধ্বন্ত হইতে প'রে--সেই আপংকালে মিত্র সেবা পমিতির অভিজ্ঞ সেবার প্রয়োজনে তদানীল্লন গবলে ন্ট তাহাদের নিকট আমন্ত্রণ পাঠান। তার পর আসিল মেনিনীপুরে বড়ও বছার ধ্বংসলীলা; সঙ্গে সঙ্গে বাংলা দেশের উপরে ছভিক-রাক্ষ্মীর অত্যাচারে পটিল-ত্রিশ লক লে:কের প্রাণহানি হয়। এই ছই বিপদে মিত্র সেবা সম্পর সভ্য-রুম্ম ও সহায়কগণ যে সেবা করিয়াছিলেন ভাল ৰাঙালী কৰনও ভুলিতে পাৰিৰে দা।

পত্ৰাবনী

[রামানন্দ চটোপাধার মহাশয়কে লিখিত]

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

বিশ্বভারতীর অস্থ্যতিক্রমে প্রকাশিত

Ğ

শান্তিনিকেতন

শ্রহাম্পদেশু

খাদিয়া বালক ছটিকে লইতে আমার আপত্তি নাই। ব্যবস্থাপক সভাব হাতে আপনার পত্রখানি দিয়াছি তাঁহাদের অনিবেশনে ক ওবা স্থির হুইবে, কোনো বাবা হুইবে বলিয়া মনে হয় না। বর্তুনানে স্থানাভাব ঘটিয়াছে। ছুটির পরে জায়গা পাওয়া যাইবে বলিয়া আশা করিতেচি।

১০ই বৈশাপে ছাত্রগণ এচলায়তন অভিনয় করিবে—
আপনি আমার নাতাদের লইয়া আদিতে পারিবেন ত ?
তাঁহাদিগকে আমার ব্যারস্তের আশীর্মাদ দিবেন এবং
আপনি স্থীক আমার দাদর স্প্রায়ণ গ্রহণ করিবেন।
ইতি ০ বৈশাধ ১০১৫*

আপনাদের শ্রীরবী দ্রনাথ ঠাকুর

<u>ভ্র</u>ীনগর

विजनभौगठक ठाउँ।भाषात्वत्र वाहि

西新四代的

কাঝারে থাদির। পড়িয়াছি—বোধ করি ভালই লাগিবে। এ পরান্ত গিরিরাছের সন্ধ পাইবার অবকাশ পাই নাই—সম্মান সৌজন্তের বৃাহ যদি ভেদ করিতে পারি তবে কিছু আনন্দ স্কর্ম করিতে পারিব বলিরাই আশা করিতেটি।

ঠিক ঠা ওরাইয়াছেন, অন্ধবাদক আনি; কিন্তু ঢাক-বাদকের হাতে সে কথাটা সমর্পণ করিবেন না। আর কিছুই নয় এই সমন্ত ছোট ছোট ব্যাপারে শাণ লাগিয়া ঈর্ধার মুখ তীক্ষ হইয়া উঠে। ইহাতে সভোলেরই পক্ষেও ভাল হইবে না, মামার পথও কণ্টকিত হইবে। তা ছাছা কর্মাবন্ধনের আর একটা পাক বাড়িবে। অনেক বয়ু এবং অবয়ু আনার কাছ হইতে মন্তবাদ সরবে ও নীরবে দাবী করিবেন—সে দাবী পূণ না হইলেই বয়ুর তটে শিক্তি হইয়া অবয়ুর তটে পয়ত্তি হইতে থাকিবে। অমনি করিয়া জীবনের ভার কেবল ব্যা বাড়িয়া চলে। শরশ্যায় ত এতদিন কাটিল, একট্যানি অবসর-শ্যার সন্ধানে আছি জুটিবে কি না জানি না কিন্তু শরসংখ্যা আর বাড়াইতে ইচ্ছা হয় না।

আপনার শরীর অনেকদিন হইতে গারাপ আছে শুনিরা
মন উদিগ্র আছে। অবকাশই আপনার একমাত্র পথা,
কিন্তু জানি ভাহা আপনার পক্ষেত্রপত। তবু একথাটা
মনে রাথ: উচিত্র অর্থ সম্বান্ধ দেনা করাটা যেনন অনুচিত্ত
প্রাণ সম্বন্ধেও তাই। আপনি কিছুকাল হইতে প্রাণের
তহবিলে ঋণের দিকে সুঁকিয়া কাজ চালাইতেছেন—এ
সম্বন্ধ একেবারে কি কোনো জবাবদিহি নাই প

শাস্তা^ৰ গীতাকে^ত আমার আশীকাদ জানাইবেন। ইতি আজুমানিক ২০শে আধিন ১৩২২

> আপনার শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠা**কুর**

ã

শ্ৰহ্মাম্পদেয়ু .

ছাত্রশাসনের ইংরেজীটা। যে তর্জনা সে কথা বাদ দিলে
ক্ষতি হিল না—ক্রননা ইংরেজীতে কিছু কিছু বনল আছে
এবং রচনাটা প্রাঞ্চ আমার।

চাক ক ই ভিপুর্বের বিথিয়া দিরাছি যতনিন Modern Review-তে জীবনস্থতির অনুবান বাহির হইবে Yeuts-কে একখণ্ড ও বিয়া পাঠাইতে। আপনিও তাহাকে শ্বরণ করাইয়া দিবেন। ইতি ১৫ই চৈত্র ১৩২২।

আপনার শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Ġ

শান্তিনিক্তেন

শ্রহাস্পদেশ

নিধরের ওঞ্জ ম অন্ত একরে প্রবন্ধটি আর একবার শোধন করে নিথটি। কাল পশু ছ'নিন সময় লাগবে বলে বোধ হক্তে। প্রবানীর দেড় ফর্মার বেশি হবে বলে বোধ হয় না। ত্রিশ লাইনের চন্ডড়া কাগজের দশ পৃষ্ঠা ভর্তি হয়েচে—revise করবার সময় আমার যতটা ছাট পড়ে ততটা বাড়তি হয় না। এই জ্ঞে বলতে পার্রচিনে ক্তটা হবে। কাল এখানকার অব্যাপক সভায় পড়েছিলুম—

২। আশিখাদেবী ৩। এসীতাদেবী

^{+ &}quot;Indian Students and Western Teachers", The Modern Review, April, 1916.

৪। চারু বঞ্যোপাবায় ৫। আইরিশ কবি ভবলিউ বি ইয়েটস ৬। রীক ডেভিডস।

শকণেই নিরতিশয় উৎদাহিত ও উত্তেজিত হয়েছিলেন। ষদি আদৌ সভাস্থলে এটা পড়ি তা হলে প্রবাসী বাহির হবার शृर्स्स्ट। (भीव मात्र भवास विलय कदाल जान द्रव ना। অসানেই বাহির হওয়া চাই। Manchester (luardian শামার কাছে ভারতের আধুনিক সম্প্রা সম্বন্ধে লেখা চাকে। **এইটেকেই ইংরেদ্রী করে ভাদের দিলে ভাদের** এবং भाभारतत्र উष्मध्य निश्व इरव। वाश इय এ প্রবন্ধটা কিছু উপকারে লাগতে পারবে সেছতে আমি আপনার কাছে ক্লতজ্ঞ। আমি চাই ছুটি আপনারা মঞ্ব করেন না, সেটাতে পরিণামে আত্মপ্রসাদ লাভেরই কারণ ঘটে। কিন্তু তাই বলেই Theistic Conference-এর সভাপতিও আমার কর্তবোর একটা অঙ্গ এ আমি কোনো মতেই মানতে भावित्न। Social Conse ence-त्र छोकिमात्री क्त्रवात्र ছত্তে পশু দিন ভূপেনবাবুর পত্র পেয়েছিলুন। জানিয়েটি কোনে। কন্ফারেন্সের চৌকির মাপে বিধাত। আমাকে তৈরি করেন নি প্রতরাং তাতে আমারও কট, চৌকিটারও জ্বমের সম্ভাবনা। স্বতরাং সভাপতির সম্বন্ধে আমি চিরকৌমাথ্যে সভ্যবন্ধ হয়ে পড়লুয়— মামাদের দেশে আত্মকাল কন্তাদায়ের মতই সভাদায়টা খুব প্রবল হয়ে উঠেচে—অল্ল দিনের মধ্যেই অনেকগুলি ঘটকালি আমার কাছে এদেচে—তার মধ্যে প্রথমটি ত লগ্ন পর্যান্ত পৌছলই না অপচ তার ঘটক বিদায় করতে আমার প্রাণ গিয়েছিল আর কি ৷ আমার বয়সে এই সকল বিষয়ে খুবই সাবধান হওয়া উচিত। বোধ হচ্চে ছু'চার দিনের মধ্যে সম্ভত হু' চার দিনের ছক্তে আমাকে কলকাতা যেতে হবে। ইতি २२ कार्डिक २७२४।

> আপনার শ্রীক্রনাথ ঠাকুর

Ğ

প্রকাম্পদে;---

আপনি গল্প চান কিন্তু মনে ত হয় আমার বড় গল্প লেগবার শক্তি ফুরিয়ে গেছে। আদল কথা, ক্লান্তিতে আক্রমাল
মনটাবেন ঝুঁকে পড়েচে। ইচ্ছা করচে কলমের গোলামী
সম্পূর্ণ ত্যাগ করে এখানে ছেলেদের ক্লান্দে মান্তারিতে ভণ্ডি
হই। তুটো ক্লাশ পড়াতে স্কুক্ক করেচি—বেশ ভাল লাগচে।
সন্ধ্যার সময় মান্ত্রের ঘরে ফেরবার সময় আসে—তখন বড়
সংসারের কাজ আর চলে না। ছোট ছেলেদের মধ্যে
আমি সেই ঘরটুকু পাই। আর ত পারিকের হাটে কারবার
করতে একেবারেই ভাল লাগে না। আমার একদিন ছিল
মখন প্রকৃতির সঙ্গে আমার গভীর একটা মিল ছিল। মাঝে
এল লোকালয়। সেখানে প্রায় পঁটিশ বংসর ধরে ছটোগাটি
করেচি। আছু আবার দেখচি বিশ্বপ্রকৃতি আমার জানলায়

এসে উকি মারচে। বড় আকাশ থেকে আমার ডাক আসচে। পৃথিবী থেকে আমার বিদায়ের রান্তা ঐ দিক দিয়েই কোথায় চলেচে। এখানকার খাতাপত্র বন্ধ করে আবার আমাকে বেরতে হবে। জীবনের আরম্ভে বিষ আমার কাছে এসেছিল, জীবনের পরিণামে আমাকেই সেই বিশ্বের দিকে চলতে হবে, সেই দিকেই আমার কিছু পাবার আছে—হয় ত ঐখান থেকেই সমস্ভ ভাঙা জুড়ে নিয়ে, বেল্লর সেরে নিয়ে তবে আবার রাজার আরক দরবারে তালিম দিতে পারব।

এদিকে আবার ফেব্রুগারি মাসে বস্বাই এবং দক্ষিণ ভারতে আমার যাত্রা দ্বির হয়ে গেছে, নিমন্ত্রণ গ্রহণ করেচি। হয় ত মার্চের মাঝামাঝি প্রথম্ভ ঘুরতে হবে। এই ভ্রমণের পরে যদি আবার হঠাং কলমের মূর্যে জোগার আসে বলা যায় না। তা হলে আবার লিখতে বসব। কিন্তু এর মধ্যে বিজ্ঞাপন দেবেন না। এবার টাকাও না। দরকার হবে না। খ্ব সম্ভব ফেব্রুগারি মাসে বিলাত থেকে বইগ্রের টাক। আসবে। ওদিকে বল্পেতে কিছু অথোপার্জ্জনের আরোজন চল্চে। "কর্তার ইচ্ছায় কম্ম" প্রভৃতি প্রবন্ধগুলি ভাপতে যদি ইণ্ডিয়ান প্রেস নারাজ হন তা হলে আপনি প্রগুলি ছাপিয়ে নেবেন। সীতা আশা করি ভাল আছে। ইতি ২৬ পৌষ ১৩২৪

আপনার শ্রীশুনাথ ঠাকুর

Ġ

শ্ৰহ্মাম্পদেযু

ধৃতরাষ্ট্র ছর্য্যোধন সংবাদ 🕳 ১৬-৪ শালে, স্বভরাং বছর বাইশ পুর্বের, লিখিত।

যথারীতি জন্মোৎসব হয়ে গেল—সেদিন আমার নামের প্রথম অংশ বলবান ছিল—তার পর দিন থেকে দিতীয় অংশ আপন পালা স্তব্ধ করেচে। বেশ পেট ভরে বৃষ্টি হয়েচে।

সংযুক্তা⁹কে আমার সংযুক্ত আশীর্কাদ জানাবেন। ইতি ২৮ বৈশাগ ১৩১৬

আপনাদের শ্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর

ģ

প্রকাম্পদেষ

ইংরেজি "ঘরে বাইরে"র সমালোচনার cuttings আমার কাছে অনেকগুলি আদিয়াছে। স্কলগুলিতেই সাধারণত: সাহিত্য ও উপদেশ ও বিচারের তর্ক হইতে

- "গাছারীর আবেদন"—কাহিনী।
- ৭। এখাভা দেবী ও এসীতা দেবী।

বইখানির বিশেষ প্রশংসা প্রকাশ হইয়াছে। কেবল এক-খানি মাত্র কাগজে boycott সম্বন্ধে আলোচনা আছে এবং এই উপলক্ষ্যে গাঁধির চেষ্টার বিরুদ্ধে আমার মত থাড়া করা হইয়াছে। অনেক কাগজেই একথা বলিয়াছে যে এ বই-খানিতে প্রকাশিত তত্তগুলি মুরোপের বর্ত্তমান অবস্থা সম্বন্ধে বিশেষরূপে প্রযুদ্ধা। বস্তুত "ঘরে বাইরে" বইখানিকে বাঙালী পাঠক যেরপ অভ্যস্ত সঙ্কীর্ণ করিয়া দেখিয়াছিল বিলাতের পাঠকেরা তেমন করিয়া দেখে নাই—ইহাতে আমি অত্যন্ত তপ্তিলাভ করিয়াছি। আমি আমাদের দেশের পোলিটিক্যাল অবস্থাকে মুখ্য করিয়া সাহিত্য রচনা করিতে অক্ষম—অথচ দেই কুণো দুষ্টিতে আমার লেখা পড়িলে পদে পদে উন্টা বুঝিতে হয়। এই জ্বন্তই "মচলায়তন"কে কেবল হিন্দুদ্মাজের উপর আরোপ করিয়া ও এইটাকে অধিকাংশ পাঠক অত্যন্ত বাকা করিয়া দরে। অচলায়তন যদি দকল দেশে সকল সম্প্রদায়েই না থাকিত ভবে এ বই আনি কথনই লিখিতাম না। "ঘরে বাইরে"র মূল কথাটি রাষ্ট্রতত্ত্ব সমাজতত্ত্ব আকারে বর্তমান কালের সকল জাতির মধ্যেই চিন্তায় ও কর্মে ব্যাপকরূপে সংক্রানিত। সেই কারণেই এ বইটি আমার পঙ্গে লেগা সহজ ২ইয়াছে। অবশ্য গল্পের মূল ভাবটি যতই সর্ববিদ্ধীন হউক না তাংগর মর্মিট বিশেষ দেশকালকে অবলম্বন না করিয়া থাকিতে পারে না—সেই কারণে "ঘরে বাইরে" বাংলা দেশের স্বদেশী আন্দোলন আশ্রয় করিয়া আপন আখ্যায়িকার কাঠামো বানাইয়াছে। ইং। উপলক্ষ্য মাত্র. লক্ষ্য নহে।

স্থরেন দকে "গোরা" তক্জমা করিতে অন্থরোধ করিয়াছি। কিন্ধু ইহার তর্জ্জমা শেষ হইয়া প্রকাশ হইতে অস্তত আরো দেড় বংসর লাগিবে। অতএব "ঘরে বাইরে"র প্রতি-যেধকরূপে এখনি ফল দিতে পারিবে না। যাহা ইউক স্থরেনকে আর একবার তাড়া দিব।

আশা করি আপনারা ভাল আছেন। ইতি ৭ই ভাত্র ১৩২৬

> আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

ġ

প্রকাম্পদের

পায় বা অস্থবিধা ভোগ করে ইহা আমি ইচ্ছা করি না। আপনাকে প্রতিবেশীরূপে পাইবার লোভ মনে প্রবল ছিণ বলিয়াই এই কুটারটিকে কোনমতে আপনার হাতে পছাইয়া দিয়াছিলাম—ভাবিয়াছিলাম আপনাকে Intern করা গেল কিন্তু বন্দী করিয়া রাখিতে পারিলাম না। দীর্ঘ-কাল আপনার অন্তর্ধনি বশত যথন সন্দেহ করিতেছিলাম যে আপনি হয়ত এগানকার মায়া কাটাইলেন তথন আপনার এই ঘরটাকে, নিকটবন্ত্রী পেয়ারা গাছ সমেত, পুনশ্চ আশ্রমে পাদ করিয়া লইবার প্রস্তাব করিব বলিয়া স্থির ক্রিয়াছিলান, কিন্তু পাছে আপনার পুনরাবির্ভাবের কোনে। সম্ভাবনা থাকে এই সংশয়ে দিব। করিতেছিলাম। 'আমরা আপনার স্থলাভিষিক্ত কাহাকেও এই দ্বায়গায় প্রতিষ্ঠিত দেখিতে চাই না—হয় আপনারা, ন্য আশ্রুণ, এই ছিল আমার কামনা। ঠিক এগনি যদি এই কামনা পূর্ণ না হয় তবে অস্তত অনুববরী কোনো এককালে পূর্ণ হ'ইবে এই আশাকরি। ইতার মূলা কি হইতে পারিবে আমাকে জানাইতে সংগ্লাচ করিবেন না।

চিঠি লিখিয়া স্থরেনের কাছ হইতে জবাব পাওয়। কঠিন। ইদি কোনো মধ্যাহে তাহার আপিদে চাককে পাঠাইয়া দেন—তবে স্থরেনের কাছ হইতে গোরার জব্জমা সম্বন্ধে পাকা কথা দে আদায় করিয়া আনিতে পারিবে। এ সম্বন্ধে আমার সঙ্গে তাহার মোকাবিলায় আলোচন। হইয়াছে কিন্তু তাহার উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করিবেন না।

Autumn Festival তর্জ্জমার দম্মতি চাহিয়া আমার কাচে বিশুর পত্র আদিতেছে। দম্ভবত আপনার কাছেও আদিয়াছে বা আদিবে— মাপনি দম্মতি দিতে কৃষ্টিত হুইবেন না। ইতি ১ই এগ্রহায়ণ ১৩২৬

> আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Ġ

প্রকাম্পদেয়ু

এবার কংগ্রেসে যে প্রার্থনা মন্ত্র তিনটি পাঠাইয়াছি
মভার্ন রিভিয়্র জন্ম পাঠাইলাম। এবার ছাপিবার সময়
ও স্থান আছে কিনা জানি না। কাল ৭ই পৌষ সমাধা
হইয়া গেল—মাপনাদিগকে শ্বরণ করিয়াছি। আজও
অতিথি অনেকে আছেন—উৎসবের পরিশিষ্ট চলিতেছে।
শাস্ত্রা ও সীতাকে আমার আশীর্কাদ জানাইবেন। ইতি
৮ই পৌষ ১৩২৬

আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর Ġ

শ্রহাম্পদের্

সাংলি হইতে দেখানকার ভগিনী ও তাঁহার স্বামী শ্রীযুক্ত পটবর্দ্ধন জাহুঘারির আরস্থে আশ্রমে আদিবনে। পটবর্দ্ধন কেম্ব্রিজের গ্র্যাজুয়েট, তিনি আশ্রমের কাজে যোগ দিতে ইচ্ছা করেন। ইহাদিগকে বাদের স্থান দিতে হইবে। এখানে মৃতন ঘর নির্মাণ করিতে সাত আট মাস লাগে, বারম্বার ইহা পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছি। সেই জন্ম আপনার পরিত্যক্ত কুটীর্বিটকে শীঘ্রই তাহাদের বাসোপ্যোগী করিয়া মেরামত করিতে হইবে।

আপনার কূটারের মূল্য সম্বন্ধে এথানকার অধ্যক্ষণের মত থাচাই করিলাম। তাহারা তিন শো টাকা দাম ধরিতেছেন। আপনার কি এই মূল্যে সম্মতি আছে ? আপনি যাহা সম্পত বোধ করেন বলিয়া পাঠাইনেন। এবং যদি বিক্রয় স্থিরই করেন তবে আপনার আমনাবপত্র সরাইয়া লইবার ব্যবস্থা করিবেন। ৭ই পৌগের পূর্পেই নেরামত সারিতে পারিলে সে সময়ে আপনার এই ধর কাজে লাগাইতে পারিব। আজকাল এখানে স্থানের এত অভাব যে আমরা আভ প্রয়োজনের ফ তাঁবু কিনিগার চেষ্টা করিতেছিলাম। কিন্তু কিছুকাল হইল কানপুর এল্গিন মিলে পত্র লিখিয়াও ক্যাটালগ পাই নাই। শীদ্র যে কোথাও তাবু পাওলা যাইতে পারে তাহার থবরই পাইলামনা। এইজন্ম উহিয়া আছি। ইতি ১০ই অগ্রহারণ ১০২৬

আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

ĕ

প্রীতিনমস্বারপূর্ব্বক নিবেদন

মহেশবাবু র কথা আপনি স্মরণ করাইয়া দিয়াছেন ইছাতে শাখ্রী মহাশত্ব রুগ, ১১ এবং অক্সান্ত সকলেই

৯। মতেশচক্র খোর। ১০। ঐবিধুশেধর শালী।

১১। ञीत्रशीसनाय ठीकृत।

উৎসাহিত হইয়াছেন। তিনি এখানে আদিতে দক্ষত হইলে আমরা বিশেষ আনন্দিত হইব।

আমার মন্তিষ্ক ক্লান্ত হইয়া পড়িয়াছে এইজন্ত রাম-মোহন রায় সম্বন্ধে প্রবন্ধ লিখিতে কলম সরিতেছে না। ইতি ২বা আখিন ১৬২৮

> আপনাদের শ্রিরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Š

প্রীতিনমস্বারপূর্ব্যক নিবেদন

মহেশবাবু সম্বন্ধে আপনি যে কথা লিখেছেন আমার মনে লেগেচে। তিনি ঠিক বিশ্বভারতীর যোগ্য অধ্যাপক। শান্ত্রী মশানকে আনি তার কথা বলব এবং তাঁকে আনাদের এগানে পাবার জন্যে চেগ্রা করব।

রামমোহন রার শ্বৃতি সহার সভাপতিত্ব যাব কিনা
মনে সংশয় আসছে। কলকাতা আনার পঞ্চে শতাও
সকটের স্থান—আনি শান্তি ও বিশ্রামের জল্লে অত্যপ্ত
উংক্ক আতি। আর আনি নানা নিধ্যা তর্কের জালের
মধ্যে জড়িয়ে পড়তে ইচ্ছা করিনে। এতে আমার শরীরও
কান্ত হয়ে পড়চে, নিজের কাজের ক্ষতি হচ্চে। মন উদ্প্রান্ত
থাকাতে ভাল করে লিগতেও পার্ছিনে। হয়ত শেষ
প্রয়ন্ত লেখা হয়েই উঠনে না। মোটের উপর, কলকাতার
আবর্ক আমার পক্ষে আমুক্ষয়কর। কিছু না কিছু মিধ্যার
আবর্ক আমার পক্ষে আমুক্ষয়কর। কিছু না কিছু মিধ্যার
আবর্ক সমান সৃষ্টি হবেই। তাই আমি সেধানে কিছুকাল
নাব না স্থির করেছি। ইতিমধ্যে লেখা শেষ হলে প্রবাদীতে
পাঠাব। ইতি আখিন ১৩২৮

আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর



তন্ত্রের প্রাচীনতা

শ্রীযোগেশচন্দ্র রায়, বিত্যানিধি

ইং ১৯১০ সালে আমি কটকে ছিলাম। সে সময়ে বংপুর-নিবাসী মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিতরাজ যাদবেশ্বর তর্করত্ব মহাশর কটকে ছিলেন। তথন ভাষার একমাত্র পুত্র ১৪।১৫ বৎসবের বালক জারুলাবনচন্দ্র ভটাচার্য কর। তাহার স্বাস্থ্যোরতির আশায় তর্করত মহাশয় কটকে তিন-চারি মাস অব্ধিতি করিয়াছিলেন। কটকের দক্ষিণাংশে আমার বাধা ছিল। তাহার বাদাও নিকটে। প্রায়ই আমি তাহাঁর দর্শন পাইতাম। গ্রীয় ঋতু আদিয়া পড়িল। সন্ধ্যাকালে আমরা দশ-বার বন্ধ কটিজুড়ি নদীর পাযাণ-বাদা ঘটে বিদিল্লা দ্বিশিণ সমুদ্রের পর্বন উপভোগ করিভান, নানা বিষয়ে কথাবাতী হইত। তকরও মহাশয়ও দেখানে আসিয়া বিদিতেন। একদিন আমি একখানা ইংরেজী বইতে পতি, আমাদের দেশের এক বিদ্বানের রচিত, তিনি লিখিয়াছেন, তঃশাপ হাজার। বাব শত বংসরের অধিক পুরাতন নহে। আনার বিশ্বাস হইল না। কারণ বেদে যে শাষ্ট্রে মূল নাই, দে শান্ত এদেশে আদৃত হইতে পারিত না। আমি আনাদের কাটদুড়ি নদীঘাটের দান্ধা সমিতিতে তর্করত্ব মহাশদ্রের মত জিঞাদা করি। "দে কি? কে একথা वर्ण ? ना टक्टन एक्टन मध्या करा छिठि इयु नाहे।" ইহার পর তিনি তত্ত্বের প্রাচীনতা ও বাাপ্লি গুলিতে লাসিলেন, আৰু ঘণ্টা বলিয়া চলিলেন। আমি অন্নিকারী, যথোচিত মন দিলাও তাইার যক্তি ধরিলা রাখিতে পারিলাম না। তিনি আমাকে শ্বেহ করিতেন। আমার অভরোধে "তপ্তের প্রাচীনতা" এই নাম দিয়া তিনি কলিকাতার "সাহিত্য-সভা"র মাদিক পত্রিকার ১৩১৭ সালের আধিন সংখ্যায় অর্থাৎ ইংরেজা ১৯১০ সালের আধিন সংখ্যা "সাহিত্য সংহিতা"য় প্রবন্ধ লেখেন। তিনি তাইার প্রবন্ধের উপসংহারে আমাদের সান্ধ্য-সমিতির উল্লেখ করিয়া আমার অহুরোধ এই ভাবে লিখিয়াছেন—"এই অবশ্য জাতব্য বিষয়ের যুক্তিতর্কগুলি আপনি মুখে বলিয়া কাটভুড়ি নদীর श्रवन वागुवानिव हिल्लात्न ভामाहेश फित्वन ना. এहे विगरवत একটি প্রবন্ধ লিথিয়া দর্বত্র যাহার প্রচার আছে, এইরূপ একথানি পত্রিকায় প্রচারিত করুন, এই আমার অফুরোর।" প্রবন্ধটিতে "সাহিতা সংহিতা"র প্রায় বার পৃষ্ঠা পূর্ণ इरेग्राइ ।

শুনিয়াছি, Arthur Avalon সাহেব (হাইকোর্টের বিচারণতি উভরক সাহেব) তন্ত্রশাস্ত্র সম্বন্ধে তাইগর বৃহৎ ইংবেজী গ্রন্থের ভূমিকায় তর্করত্ব মহাশয়ের এই প্রবন্ধের ইংরেজী অন্থবাদ সন্নিবিষ্ট করিয়াছেন। সাহেব তাদ্রিক
মতে দীক্ষিত হুইয়াছিলেন। পণ্ডিত শিবচন্দ্র বিশ্বাপিব
তাহাঁর গুক্ত ছিলেন। নিজার্গর বিখ্যাত বৈদাপ্তিক ও
তাদ্রিক ছিলেন। ইনি প্রায় ২৫ বংসর পূর্বে কাশীতে
দেহরকা করিয়াছেন। তর্করম্ভ মহাশয়ের অগাধ পাণ্ডিতা
দর্শজনবিদিত। সেকালের সংস্কৃত পণ্ডিতেরা এক এক
গ্রন্থপালা ছিলেন। তাহাঁরা যাহা জানিতেন, সব তাহাঁদের
কণ্ঠপু থাকিত, আনাদের মতন তাহাদিগকে পূথী
হাতড়াইতে হুইত না। তাহাঁর বাদ্যালা রচনাও যেমন
মৃতিপূর্ণ কমেন মাজিত ও স্থাপার্চা ছিল। "ভারতবর্ধে"
তাহার ক্রেন্টে প্রবদ্ধ প্রকাশিত হুইয়াছিল। তিনি হাদ্যগ্রাহা বক্ততাও করিতে পারিতেন। তাহাঁর স্থৃতিপূদার
নিমাত্র তর্গধন্ধে যথকিধিং স্বলন করিতেতি।

তমু এক বিপুল শান্ত। ইহার অপর নাম আগম প ভান্তিক মত। ইহার সপুলগণ কীতিতি হইয়া থাকে। यथ:--रुष्टि, श्रांत्रस, त्मवार्डना, मर्वविव मानन, भूत्रक्तव (मञ्ज নিদ্ধির নিমিত্ত ইষ্ট দেবতার পূজা, মন্ত্রজ্প, হোম ইত্যাদিং, यहेक्य भागन (त्रागनाशि, वन्तकदन, खन्नन, विष्वयन, উচ্চाটन, মারণ), ও চত্রির ধাানযোগ। এই সপু লক্ষণের মধ্যে স্টি ও প্রলয় প্রবানেও আছে। এক প্রকার গ্যানগোগ পাতঞ্জন দর্শনে আলে। কিন্তু দেবাচন। বিনি ইত্যাদি প্রাণের বিশ্বীভূত নহে। আমরা দেবার্চনা প্রতাহ দেখিতেছি, আগরা রোগ ও গ্রহাদির শান্তি স্বস্তায়ন বুঝি, আর শুনি, लाबिक मानकिमरणब अलोकिक मुख्यि इस, छ। हाँ दा राष्ट्रका, বনীকরনাদি ব্যাপার করিতে পারেন। শুনি, তাইারা অমাবস্থার রাত্রে শুশানে ব্যায়া সাধনা করেন। কেই কেই শ্বাসন হট্যা ট্রন্ত মন্ত্র করেন। ট্রানীং ভারিক সাধনা হ্রাস পাইনাছে। কেই কদাচিং গ্রহে থাকিয়া তান্ত্রিক মাধনা করেন। অনিক দিনের কথা নয়, কাশীতে পূর্ণানন্দ সরস্বতী এক বিগাতি তন্ত্রসিদ্ধ ভিলেন। শতবর্ষ পূর্বের व्यत्तरक उन्नमाधना कविर्युत्त । ভাবতের সকল প্রদেশেই তন্ত্রের প্রভাব ব্যাপ্ত হইয়াছিল। কিন্তু বোধ হয়, আসাম ও বঙ্গে যত প্রতিপত্তি ইইয়াছিল, তত আর কোনও প্রদেশে হয় নাই। উপনয়নকালে দিজ বালকের বৈদিকী দীক্ষা हरा हेटा बाकी मीका। किस नाती, मूम ७ "मामाण" জাতি বৈদিক মঞ্জের অধিকারী ছিল না, এখনও নাই। পুরুম কাক্ষণিক মহেশ্বর জাতি-বর্ণ-নিবিশেষে সকলের নিমিত্ত তম্বশাস্ত্র বলিয়াছেন, সকলেই তান্ত্রিক মতে দীক্ষিত

হইতে পারে, হইয়াও থাকে। এমন কি, কিছু বয়দ হইলে বৈদিক দীন্দিত দ্বিদ্ধ তান্ত্ৰিকী দীন্দা গ্ৰহণ করিয়া থাকেন। এই দীন্দা তিন প্রকার—বৈষ্ণব, শৈব ও শাক্ত। কাহারও ইষ্ট দেবতা বিষ্ণু, কাহারও মহেশ্বর এবং কাহারও মহেশ্বরী। এই তিন দেবতার ভিন্ন লিন্ন নাম অন্থূদারে এই তিন দেবতার ভিন্ন লিন্ন নাম অন্থূদারে এই তিন দম্প্রদায়ের ইষ্ট দেবতা হইয়া থাকেন। যে তন্ত্রের বক্তা শিব, তাহা শৈব, শাক্তাব বক্তা শিবানী, তাহা শাক্ত। কে বৈষ্ণব তন্ত্রের বক্তা, তাহা আমি অবগত নহি।

তদ্বের মন্ত্র বীদ্বসংযুক্ত। অকারাদি বর্ণে অন্ত্রস্বারযুক্ত করিয়া বীদ্ধ হয়। মন্ধ্য ব্যা (রেথা-চিত্র) ও ক্রিয়া—এই তিনের বোগ করিয়া দেবাচনাদি হইয়া পাকে। সাধন-ক্রিয়া অতিশয় ত্রুর। এ বিষয়ের শান্ধ সন্ধা। ভাষায় লিখিত। সদ্ধা। ভাষায় তই অর্থ থাকে—লৌকিক ও নিগৃঢ়। সাধারণ লোকে নৌকিক অর্থ বোঝে, সাধক নিগৃঢ় অর্থ থকে। সে অর্থ গুকুমুখ বাতীত জানিবার উপায় নাই। গুরুক্ত যোহাকে অহাকে বিশ্ব করিয়া তাহাকে শিশু করেন না। তিনি বিশেষ পরীম্মা করিয়া তন্ত্র-সাধনের উপযুক্ত মনে করিলে শিশু করেন। প্র্যাচার, বিশাচার, কিন্তা মহু, মংস্ক, মাংস্ক ইত্যাদির অর্থ উপরে যাহা, ভিতরে তাহা নহে। কেবল গুরু সে নিগৃঢ় অর্থ জানেন। ভক্তশান্ত্র অতিশয় গুহু, "মাত্রজারবং গোপানীয়।"

ভগবদগীতায় ভক্তিযোগ, কর্মযোগ ও জ্ঞানযোগ,—এই জিবিণ যোগের বাগো আছে। ইঠযোগ তদ্ধের বিশিষ্ট যোগ। মন নিশ্চল ইয় না, বিষয়ের প্রতি গাবিত ইয়। ইঠযোগ দার। চক্ষণ মনকে বলপূর্বক নিশ্চল করিতে পারা যায়। মেকদণ্ডের দুই পার্থে ইড়া ও পিন্ধলা, মধাস্থলে স্বয়া নাড়ী আছে। তদ্ধশাস্ত্র বলেন—এই তিন বাতনাড়ীর ক্রিয়া ইচ্ছাধীন করিতে পারা যায়। স্বয়া নাড়ী মেকদণ্ডের নিম্ন স্থান ইইতে ব্রন্ধতালু প্রযন্ত্র বিস্তৃত। ইহার ছয়টি বিশিষ্ট স্থান মাছে। নাম চক্র। যিনি সেই ষ্ট্রক নির্মণ বা ষ্ট্রক ভেদ করিতে পারেন, তিনি ব্রন্ধের সহিত লীন হইয়া যান। তথন কেবল আনন্দ। প্রাণায়াম-অভাগে, অপ্তরণাতি প্রভৃতি ইঠযোগের অন্ধ। হঠযোগ অতিশ্য দ্বন্ধর। তন্ত্রশাস্ত্র মতে প্রন-বোধ দারা মৃক্তি ঘটিয়া পাকে।

অনেক বৌদ্ধ দিশ্ধাচার্য ছিলেন। মহামহোপাধ্যায় হর-প্রসাদ শান্ত্রী নেপাল হইতে "বৌদ্ধচর্য্যাপদ" নামে একখানি পুথী আনিয়াছিলেন। তাহা তান্ত্রিক সন্ধ্যা ভাষায় লিখিত। মীননাথ গোরক্ষনাথ তান্ত্রিক ছিলেন। আমাদের দেশে বে নাথ-সম্প্রদায় আছেন, তাহাদের গুক্ক শৈবতান্ত্রিক। এই কারণে সেই সম্প্রদায় বোগী নামে খ্যাত। "সহজ্ক মত"

বা "সহজিয়া মত" তান্ত্ৰিক মত। শতবৰ্ষ পূৰ্বেও বঙ্গে ও चामारम लागरन कानिका स्वतीत मन्मूर्थ नदवनि श्रमख হইত। ইহার পূর্বে প্রকাশ্রভাবে দেবার্চনার অপরুপে নরবলি হইত। তংকালে বলির নিমিত্ত যুবা কিনিতে পাওয়া যাইত। রাজারা বিপক্ষের রাজ্য হইতে বলি বল পূর্বক সংগ্রহ করিতেন। বোধ হয়, প্রথম প্রথম সে বলির মাংসভক্ষণেরও বিধি ছিল। কারণ দেবীর প্রসাদ সাথকের গ্রহণীয় ছিল। অধ্যের পদ্বীদের শুচি অশুচি ভেদ নাই। অল্প কয়েক বংসর পূর্বে এই বাঁকুড়া ছেলায় ইন্দাস থানায় শোনা গিয়াছিল, এক নর-পিশাচ মৃত শিশুর মাংস ভোজন করিত। অধিকাংশ তম্প্রসাধক অলৌ-কিক শক্তি লাভের নিমিত্ত সাধনা করিতেন, অনিমা, লগিমা ইত্যাদি অষ্ট্রসিদ্ধি লাভের মোহে জীবন ক্ষয় করিতেন। বিশেষতঃ, বশীকরণ মন্ধ সিদ্ধ হুইলে ধন লাভের ও মুখ লোগের পথ উন্মক্ত হয়। তান্বিকের এক প্রকার দৃষ্টি আছে। ওর্বল-চিত্ত ব্যক্তি সে চক্ষুর দিকে চাহিলে ভাহার চক্ষ্র 🗝 হুইয়া পড়ে। হৈত্তাদের আদিয়া কদাচার তারিকের হাত হটতে দেশ উদ্ধারের নিমিন প্রেমভক্তি বিতরণ করিয়াছিলেন। কিন্তু তাহার তিরোভাবের পর শতবর্ষ গত হটতে না হটতে ভাইার শিয়ের। সহজিলী তান্ত্রিক হট্টা পড়িয়াছিলেন। মহাত্রা রামমোহন রায় প্রথমে তারিক দীকা পাইয়াছিলেন। পরমহংস শ্রীরাম**রুষ্ণ**-দেব তাহাঁর ব্রাহ্মণী ভৈরবীর নিকটে তন্ত্র-সাধনা শিক্ষা করিয়াছিলেন। পরে তিনি তোতাপুরী নামক বৈদাস্তিক সন্ন্যাসীর নিকট ব্রহ্মবিদ্যা লাভ করিয়াছিলেন! যে সিবি লাভ করিতে ভোভাপুরী ৪০ বংসর কঠোর তপস্থা করিয়া-ছিলেন, জ্রামক্লফ তাহা তিন দিনে আয়ত্ত করিয়াছিলেন। ক্র্টার তন্ত্র-সাধনা ব্রন্ধজ্ঞান লাভের সহায় হইয়াছিল।

১৩২৫ বঞ্চান্দের কার্ত্তিক মাসের "সাহিত্য" নামক বারমাসিক পৃস্তকে পণ্ডিত শ্রীগিরিশচন্দ্র বেদান্ততীর্থ "তন্ত্রের
ইতিহাস" নামে এক মনোক্ত প্রবন্ধ লিথিয়াছিলেন।
তাহাতে পূর্ণানন্দ গিরি প্রণীত তন্ত্রের (১৪৯৯ শক - ১৫৭৭
গ্রীষ্টাব্দ) পরিচয় প্রদত্ত হইয়াছে। সে তন্ত্রে আছে,
"সংসার-সাগরময় জীবসমূহের উদ্ধারবাসনায় ভগবান্ পরম
শিব পরম দেবতার রহস্তপূর্ণ আরাধনার প্রতিপাদক তন্ত্রের
রচনা করিয়াছিলেন। একমাত্র তবক্তানই মৃক্তির কারণ।
বে পর্যন্ত তবক্তান না হয়, সেই পর্যন্ত জ্বপ, হোম, পূজা,
তীর্থসান আবশ্রক। এক সনাতন পরম ব্রন্ধই রসরূপী।
তিনি প্রকৃতি দারাই অভিবাক্ত হন। অতএব প্রকৃতিসংযোগই শীত্র ব্রন্ধ-প্রত্যাক্ষর উপায়। প্রকৃতি-ব্যাপার
ব্যতীত নিরাকার গুণাতীত ব্রন্ধকে বৃথিবার কোনও উপায়
নাই। গুকুর উপদেশ, ধ্যান, ধারণা ইত্যাদি যাহা কিছু

শবগতির উপায়, সমস্তই প্রাঞ্চিক ব্যাপার," ইত্যাদি। তম্বশাস্ত্র কত বিপুল হইয়াছিল, তাহা উক্ত প্রবন্ধে লিখিত নিবন্ধের নামসমূহ হইতে বৃঝিতে পারা যাইবে।

মহানিৰ্ব্বাণ-তন্ত্ৰ নামে একথানি প্ৰসিদ্ধ তন্ত্ৰ আছে।* এই তত্ত্বে পরমত্রন্ধের উপাদনা বিষয়ে উপদেশ আছে। ইহা ा किया कि एक एक परन कविवाहित्वन, **उद्य**थानि आधुनिक, মহাত্মা বামমোহন রায়ের সময়ে কোন ব্রহ্মজ্ঞানীর রচিত। এই অনুমান সম্পূর্ণ ভ্রান্ত। কারণ, ইহাতে ভন্তমতেই ব্ৰন্ধোপাদনা ক্থিত হইয়াছে। অবশিষ্ট একাদশ উল্লাদে প্রকৃতি-সাধনের উপদেশ আছে। আরও দেখা যায়, যে-कारन वश्राप्त हिन्दू द्वाष्ट्र हिन, मिहे कारनद উপযোগী বাজধর্ম ও ব্যবহার-বিধি বর্ণিত হইয়াছে। বোধ হয়, সে রাজা শৈব ছিলেন। এক স্থানে হণ জাতির উল্লেখ আছে। বোধ হয়, হুণ শদে তুকী দ্বাতিকে বুঝাইগ্রাছে। কিন্তু এই তম্ব বচনাকালে হুণেরা প্রবল হয় নাই। আরও কতিপয় কারণে মনে হয়, এই তম্ম দাদৰ খ্রীষ্টৰতাক্ষে প্রণীত হইয়া-ছিল। ইহাতে উল্লেখিত শাল মংস্তু ও পায়ানমনির হইতে মনে হয় বাটের পশ্চিমাঞ্চলে প্রণীত হইয়াছিল। ইহার ৮তুর্থ উল্লাসে প্রকৃতি ও ব্রন্ধের তত্ত্ব নিরূপিত হইয়াছে এবং বন্ধ-সাবক ও শক্তি-সাবক যে একট বস্তু, ভাহারও মীমাংসা পাচে ।

একণে মহামহোপাধ্যায় যাদবেশ্বর তর্করত্ন মহাশয়ের প্রবন্ধ হইতে ভয়ের প্রাচীনভার প্রমাণ যংকিঞ্চিং সঞ্চলন করিতেছি। তিনি তন্ত্রের বিরুদ্ধে নব্য শিক্ষিত সম্প্রদায়ের আপত্তি পণ্ডন করিয়াছেন। আপত্তিগুলি এই—(১) তল্পের প্রতিপত্তি ভারতের দর্বত্র নাই, একমাত্র বঙ্গদেশে আছে। তথন বুঝিতে ইইবে, তন্ত্র আবদাতির প্রাচীন ধর্মশান্ত্র নয়। উহা বাঙ্গালীর আদৃত, বাঙ্গালীর রচিত। (২) বৌদ্ধ মহা-যানদিগের মধ্যে তারা, বছ্রযোগিনী, ক্ষেত্রপাল প্রভৃতির পুজা প্রচলিত ছিল। সেই সেই দেবতার পূজায় 🕫 জপে বীজ-সংযুক্ত মন্ত্র আছে। ভন্তেও যথন দেই দেই দেবভার পূজা আছে, বীজমন্ত্রের বাহল্য আছে, তথন তম্ব মহাধান-দিগের ধর্ম-পুস্তকের আদর্শে রচিত। (৩) আদিম নিবাদীরা শক্তির উপাদক এবং ভূত, প্রেত, দর্প ও বুক্-বিশেষের পুদ্ধক ছিল। তত্ত্বেও যখন শক্তির উপাদনা আছে, ভূত, প্রেত, সর্প ও রুক্ষ-বিশেষের পূজা আছে, তথন বলা বাহুল্য, সেই অসভাদিগের নিকট হইতেই তত্ত্বের সেই সমন্ত পূজা গৃহীত হটয়াছে। (৪) যোগিনী তম্বে কোচবিহার রাজবংশের আদি পুরুষের নামোল্লেথ আছে। এইরপ তিন শত বংসরের ঘটনা তাহাতে থাকিলে, কি করিয়া তাহাকে প্রাচীন বলিব ?

প্রথম আপত্তির বিকল্পে তর্করত্ব মহাশয় বলিয়াছেন, কেবল বঞ্চদেশেই তন্ত্রের প্রভাব নয়, ভারতের সর্বএই তন্ত্রের প্রতিপত্তি আছে। শক্তিমন্ত্র, শিবমন্ত্র, বিকুমন্ত্র তন্ত্রোক্ত। শ্রীরামচন্দ্রের মন্ত্রপ্ত একমাত্র তন্ত্রেই উল্লেখিড আছে। কামক্রপে, মিথিলার, উৎকলে, কলিক্ষে, দক্ষিণা-পথে, কাশীতে, বৃন্দাবনে, উত্তর-পশ্চিমে ব্রাহ্মণ ও অন্থ উচ্চ জাতিরা শাক্ত, বৈক্ষব ও শৈব, এই ভাগত্রের বিভক্ত।

দিতীয় আপত্তির বিক্লন্ধে বলিতে পার। যায়, মতম্বয়ের সাদৃগ্য থাকিলে এক মতের অনুসরণে বা অন্তকরণে অপ**র** মত যে স্ট, তাহার প্রমাণ কট ? প্রথমের মঞ্করণে দিতীয়ের সৃষ্টি ও দিতীয়ের মতুকরণে প্রথমের সৃষ্টি বলিলে কিছুই বল। হয় না। বৌদ্ধ-সম্প্রদায়-বিশেষের মধ্যে তারা, হয়গ্রীব, বজ্ববোগিনী, ক্ষেত্রপাল প্রভৃতির পূজা, খ্যান ও বীক-সংযুক্ত মন্ত্র আছে। তন্ত্রেও তংসমন্ত আছে। এসলে আমরা বলিতে পারি, তল্পের বিষয় লইয়া সেই সম্প্রাদায়-বিশেষের সেই সমস্ত পদ্ধতি গঠিত। বৌদ্ধ ধর্মের হানয়স্পর্শী ভাবে যদি হিন্দুর মনে উন্নাদনা আসিয়া থাকে, আত্মার নির্বাণের জন্ম লালায়িত না হইয়া বৌদ্ধ প্রতিমার আদর্শে গঠিত প্রতিমার নিকটে ক্বতাঞ্চলিপ্রটে "রূপং দেহি, জ্বং দেহি, যশে। দেহি, দিয়ে। ছহি" বলিয়া "রূপ দেও, জুয় দেও, যশ দেও, এফ সংহার কর," এটরূপ প্রার্থনা বাসনা-বিলোপের জন্ম তাদৃশযোগ-দাধনা, আর কোথার বৈদিক গর্মের মত শত্রু-বিজয় ও এবর্ষ বৃদ্ধির জন্ম আরাণ্য দেবতার নিকটে প্রার্থনা ও কামনা। বৌদ্ধ ধর্মে কামনার উপদেশ, কি নিকাম ধর্মের উপদেশ আছে ? খদি বৌদ্ধ ধর্মে আকর্ষণের কিছু থাকে, তবে তাহা পশু-হিংসা-নিবারণ। দেটি বাদ দিয়া বৌদ্ধ মহাযান্ত-সম্প্রদায়ের কল্পিত দেব-দেবীর পূদ্ধা হিন্দুর **उन्नगाल ग्री ह इडेन, इंडा बालका बलिफार कि इडेए**ड পারে গশতবর্ষব্যাপী যজে দীকিত শৌনকাদি ঋষি স্থাতের মুথে শ্রীমদ্বাগবত শুনিতেন ও দেই যজে পশু-হিংদা করি-তেন। মহাভারতে যুবিষ্ঠিরের অশ্বমেধ গত্তে অশ্ব **আল**ঞ্চিত, তত ও ভুক্ত হইয়াছিল। যঞে পশু-হিংসা হিংসা নয়। পিতৃ-পুরুষের তৃপ্তির উদ্দেশে মুগয়ায় পশুবদ হিংসা নয়। "ললিভ বিস্থার" শাকাসিংহের প্রামানিক জীবন-বিবরণ। তাহাতে আড়ে (১২ অ:), নিগম, পুরাণ, ইতিহাদ, বেদে দর্বাপেকা তাহার বিশেষর ছিল। নিগম শব্দের অর্থ তন্ত্র। "ললিত বিস্তারে" (১৭ অ:) আরও আছে, ভিক্লদিগকে শাক্যনিংহ বলিতেছেন, "মুঢ়েরা ত্রন্ধা, ইন্দ্র, রুদ্র, বিষ্ণু, দেবী, কার্ভিকেয়

মহানির্ব্বাণতন্ত্রম্,—কুলাবধৃত এমং হরিহরানন্দ ভারতী-বিরচিত টকা এবং এমং পূর্ণানন্দ তীর্থনাথ-কৃত বলাল্বাদ ও
 টিয়নী সমেত। কলিকাতা ৩১ নং শিবঠাকুরের লেন। ১০২০।

কাত্যায়নী ও গণপতি প্রভৃতির আ্রান্তর গ্রহণ করে ও তাহাদিগকে নমস্কার করে। কেহ কেহ শ্মশান, চত্রর আর্র্ররে তপস্থা করে। পাষগুদিগের আচার উল্লেখ করিতে যাইয়া শাক্যদিংহের মুখ হইতে মন্থা, মাংস ও স্থরাও উল্লিখিত হইয়াছে। এই সমস্ত তল্পোক্ত উপাসনা পূর্বে না থাকিলে শাক্যদিংহ কি করিয়া জানিলেন ?

তৃতীয় আপত্তিটি অকিঞ্চিংকর। ভারতের সর্বত্র শক্তিপূদা ও স্থানিত শক্তিদেবতা দেখিতে পাই। শক্তি-পুজার বিধান আছে বলিয়া তপ্তকে আধুনিক বলিলে পুরাণ, মহাভারত, উপনিম^২, বেদকে আধুনিক বলিতে হয়। মহাভারতে দেবীর স্তোত্র আছে, শ্রীমদ্ভাগবতে উদা পূজার ব্যবস্থা আছে, মার্কণ্ডেয় পুরাণ, ক্ষন্দ পুরাণ, ব্রহ্মপুরাণ, ব্রদাও পুরাণ, ব্রদ্ধবৈবর্ত পুরাণ, ভবিগ্র পুরাণ, পর পুরাণ, দেবী পুরাণ ও কালিক। পুরাণে শক্তিপুজার প্রমাণ আছে। শারনীয়া ত্র্মাপুজার উল্লেখ অনেক পুরাণে আছে। যদিও বঙ্গদেশের মৃত ভারতের অগ্যর মুনায়ী প্রতিমা প্রস্তৃত করিয়া আড়ম্বরের সহিত ছুর্গাপুজা হয় না, তথাপি ঘটে দেবীর পূজা বা প্রসিদ্ধ স্থাপিত দেবী মৃতির দর্শন, ভাংাতে দেবীর পূজা, নবরাত্রিব্যাপী ব্রতধারণ, মহাষ্ট্রমীর দিবস উপবাস ও চণ্ডী পাঠ সর্বত্র হইয়া থাকে। কেন, তল্বকার প্রভৃতি উপনিষদে ইন্দ্রাদি দেবতা তেজঃপ্রঞ্জের ভিতরে হৈমবতী উমাকে দেখিয়া বিশ্বিত হইথাছিলেন। ঋগবেদে সরস্থতী-স্কু আছে, যধুর্বেদে লক্ষ্মী-স্কু আছে, ঋগবেদের দশম মন্তলে দেবী-স্ক্র আছে। অক্সান্ত দেশেও শক্তিপূচা প্রচলিত ছিল। শক্তিপু দার সমর্থক বলিয়া তন্ত্রকে আধুনিক বলিতে পারা যায় না। মনসা দেবীর পূজা তন্ত্রোক্ত নয়, পৌরানিক। তুলদী, বিৰ ও অখন বৃন্ধের পূজাও তথ্তে উল্লিখিত নহে, পুরাণে কথিত।

চৈত্রাদেবের সন্সাম্থিক সান্ত শিরোমণি রখুনন্দন ভট্টাচাবক্ষত স্থৃতি-তব্ ও আগমবাগীশ কৃষ্ণানন্দ তর্করঃকৃত তন্ত্রপারে যোগিনীতপ্ত শারদা তিলক স্বন্ধন-সংগ্রহ প্রভৃতি প্রস্থের নাম আছে। মূল গ্রন্থ-রচনার অনেক পরে সংগ্রহ-গ্রন্থ স্বষ্ট হয়। অন্ততঃ, সহস্র বংসরের ব্যবধান স্থীকার করিতে হয়। বেদের সায়ণ-মাধ্বীয় ভাল্যকার মাধ্বাচার্য সর্ব-দর্শন শাংগ্রহের পাতপ্তল দর্শনে তন্ত্রোক্ত দশ্বিধ সংস্থারের উল্লেখ ও তন্ত্রশাস্ত্রের অনেক বচন উদ্ধৃত করিয়াছেন। যড়-দর্শনের টাকাকার বাচম্পতি মিশ্র পাতপ্তল দর্শনের টাকার তল্পোক্ত দেবতার ধ্যান করিবার উপদেশ দিয়াছেন। ভগবান শহরাচার্যও শারীরক ভাল্যে তল্পোক্ত স্ব্র্টিচক্র উল্লেখ করিয়াছেন। বলা বাছল্য, এই তিন মহাপুক্রবের মধ্যে এক্জনও বান্ধালী নহেন। শ্রীমন্ত্রাগ্রতে (১১)ওাওণ স্থাছে, তন্ত্রাক্ত বিধান মতে কেশবের অর্চনা

করিবে। ত্রন্ধ পুরাণে আছে, একাম কাননে (ভ্বনেশ্বরে) বেদোক্ত তত্ত্বাক্ত বিধানে মহাদেবের পূজা করিবে। কুর্ম পুরাণে আছে, অনেক শাস্ত্র করাল ভৈরব ও যামল প্রভৃতি वाम गार्ग व्यवनम्दन ब्रिटिं। बानाग्रत्न (১।२२।১२,১७,১৫) বলা, অতিবলা বিভার উল্লেখ আছে। এই হুই বিভা তম্বোক্ত; তম্বদারে উদ্ধার প্রণালী লিখিত হইয়াছে। বরাহ পুরাণে আছে, বেদোক্ত বা আগমোক্ত বিবিধারা জনার্দন অর্চনীয়। পদ্মপুরানের উত্তর থণ্ডে আছে, বৈফ্বী দীকা ব্যতীত মহুয় ঽ করিয়া ভাগবত হইবে। নারদ পঞ্চরাত্রের তৃতীয় অধ্যায়ে ষ্ট্চজে চিন্তা করিতে বলা হ্ইয়াছে, চতুর্থাধ্যায়ে ''লক্ষীশ্ময়া কামবীজম্" ইত্যাদি ভয়্বোক্ত পারিভাষিক শব্দ আছে। পাতঞ্চদেশনৈ, ভগবদগীতায়, মহাভারতের শান্তিপর্বে (২০১৷১৭,১৯) তল্পোক্ত প্রাণা-য়ানের কথা আছে। মহাভারতের শান্তিপর্বে (২৫৯।৭,৮,৯) আছে, বেদসমূহ হইতে পুনৱার স্বতোমুগ (স্বতোবাপ্তি) বেদসমূহ প্রস্ত হুইয়াছে। সেই বেদসমূহ কি ? তর স্ব-বর্ণ সাধারণকে সমান অধিকার দিয়াছে। এই ত্রন্থ একনাএ তম্বই স্বতোমুখ। শান্তিপর্বে (২৮১।১২১-১২৪) দক্ষের প্রতি মহাদেব বলিতেছেন, "আমি সাজ বেদ ও সাংখ্য যোগ হইতে উদ্ধার করিয়া বেদাদি অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ, মঞ্চলময়, সর্ববর্ণ ও প্রশাশ্রমের অন্তকুল পাশুপ্ত ব্রত উংপাদন করিয়াছি।" এই পাঙ্গত শাস্ত্রত্তর্যুগু চিন্ন আর কিছুই হটতে পারে না। শাভিপর্বে (২৮৪।৭৪) তম্বের পারি-ভাষিক শাদ, "গতি, চক, চেলী, মিলী নিলী" গ্রহণ করিয়া মস্ত্রোদ্ধার প্রদর্শিত হইগাছে। অন্ধণাদন পর্বের মোক্ষ**র্মে** (৩৫০।৬৪-৬৮) "পাশুপত ও পঞ্জাত্রে"র উল্লেখ আছে। পঞ্রাত্র তান্ত্রিক গ্রন্থ। কেবল মহাভারত নয়, সকল পুরাণেই অন্নবিন্তর দেবী-মাহান্ম বর্ণিত আছে। অথব বেদের অন্তর্গত অনেক উপনিয়দে তল্তের কায় উপাদনা-প্রনালী লিখিত আছে। মন্ত্রসংহিতার টীকাকার কুলুকভট্ট ২।১ শ্লোকের টীকায় হারীত-বচন বলিয়া লিখিয়াছেন, "এতিহি দ্বিধা বৈদিকী তান্ত্ৰিকী চ।" [মেদিনীকোষে তন্ত্রশব্দের এক অর্থ শ্রুতির শাগাবিশেষ।]বুদ্ধ হারীত-সংহিতার তান্ত্রিক দীক্ষা পদ্ধতি, উশনঃ সংহিতার পঞ্চরাত্র ও পাশুপত ধর্মের স্পষ্টতঃ উল্লেখ আছে। কাত্যায়ন-সংহিতায়, ব্যাদ-সংহিতায়, শঙ্খ-সংহিতায় ইত্যাদি সংহিতায় তন্ত্ৰোক্ত বিধির উল্লেখ আছে। সমূদয় স্মৃতি-সংহিতাতেই পুরাণের মত স্পইতঃ ও ভাবতঃও তন্ত্রের উল্লেখ আছে ; কিন্ধ তন্ত্রে শ্বতি ও পুরাণের নামোল্লেখ নাই।

এইখানে ভর্করত্ব মহাশয়ের উদ্ধৃত প্রমাণ সমাপ্ত করি। তল্পের প্রাচীনতার বহুতর প্রমাণ আছে। একটা দিতেই। ছান্দোগ্য উপনিষং বৃদ্ধদেবের জন্মের পূর্বে প্রণীত হইয়াছিল। কড পূর্বে তাহা আমাদের জানিবার প্রয়োজন নাই। তাহাতে তন্ত্রোক্ত ষট্চক্রের অঙ্কুর দেখিতে পাওয়া যায়। অনেক উপনিষদে প্রাণায়ামের ব্যবস্থা আছে। ইহাও সত্য, অনেক বৌদ্ধ তান্ত্রিক ছিলেন। বৌদ্ধেরা এদেশেরই লোক। তাহারা হিন্দুর নিকট হইতে এবং হিন্দুরাও তাহাদের নিকট হইতে "রহস্ত" পাইয়াছিলেন।

তন্ত্রশাম্বের বহুল প্রচারের অনেক কারণ ছিল। পূর্বে কয়েকটির উল্লেখ করা গিয়াছে। মাহুষের স্বাষ্টর পর বথন সে ভয় ও ভাবনায় পড়িয়াছিল, তথন সে অসাধারণ ত্রব্য ও কর্ম ঘারা নিরুদ্বেগ হইতে যরুবান্ হইয়াছিল। এমন জাতি ছিল না, এখনও নাই, যে মণি, মন্ত্র ও ওয়ধির গুণে বিশ্বাস না করিত বা না করে। যথাবিহিত মন্ত্রপাঠ ও পূজা করিলে দেবতা প্রসন্ন হইয়া থাকেন, এই বিশ্বাস সকল জাতির আছে। মানব-চিত্তের স্বাভাবিক্ক কামনা হইতে যাহার উৎপত্রি, তাহার আরম্ভকাল নির্ণিয়ের চেষ্টা বাতুলতা মাত্র।

এই কথা শ্বরণ রাখিয়া আর্থ-শাস্ত্র অবলোকন করিলে দেখা যায়, ঋগ বেদের কয়েকটি স্তক্তে তন্ত্রযোগ্য মন্ত্র আছে। যথা—বিষঝাড়ার মন্ত্র (১০১৯৯), পক্রবিনাশের মন্ত্র (১০১৯৯), পপত্নীবশীকরণের মন্ত্র (১০১৯৪), গর্ভাবান সন্তানলাভের মন্ত্র (১০১৮০), মৃত-সঞ্জীবন মন্ত্র (১০৩৮) ইত্যাদি। অথর্ববেদে বিদ্ধান্ধ (বাতা) রোগ উপশনের নিমিত্র বাহুতে ও্যধি ধারণের বিনি আছে। এই বেদে বছবিধ আভিচারিক মঞ্চের ও ক্রিমার উল্লেখ আছে। তন্ত্রশাস্ত্রে যেরুপ যন্ত্র (চিত্র) নির্মাণের বিধি আছে, সেইরূপ অথর্ববেদেও আছে। জ্রীবশীকরণ মন্ত্রে (৩১৫০), পুরুষ-বশীকরণ মন্ত্রে (৬১৩০) প্রতিকৃতি লিখিয়া মন্ত্র আরুরি করিবার বিধি আছে। দ্যুত ক্রীড়ায় জয়ী হইবার মন্ত্রের (৭৫০।৫) ভারো সায়ণাচার্য্য চিত্রের উল্লেখ করিয়াছেন।

এ বিষয়ে মহীস্বে রাজ্যের পণ্ডিত রুপ্রপট্টন শামশাস্ত্রী মহাশয় ইংরেজী ভাষায় সবিশেষ আলোচনা করিয়ছিলেন। কলিকাতায় "একলিপি বিস্তার পরিষদ্" স্থাপিত হইয়ছিল। তাহার মুবপত্তের নাম 'দেবনাগর' ছিল। প্রথম ব্রের্বর দেবনাগরে (কলাজ ৫০০৯—১৯০৮ সালের) শামশাস্ত্রী মহাশয়ের ইংরেজী প্রবচ্চের হিন্দী অমুবাদ তিনটি প্রবচ্চে প্রকাশিত হইয়ছিল। আমি এই তিন প্রবন্ধ হইতে কিছু কিছু সঙ্কলন করিতেছি।

ভারতীয় অক্ষরমালার নাম আন্ধী। অষ্টমাতৃকার এক মাতৃকা আন্ধী। এই নাম কেন হইল ? দেবনাগরী নামই বা কেন হইল

ইহার উত্তর এই,—বর্তমানকালে বেমন প্রতীকোপাসনা হুইতেহে প্রাচীন ভারতে দেবীর চিত্রিত চিহ্ন পৃঞ্জিত হুইত। তৎকালে দেবীকে (প্রকৃতিকে) মাতা বলা হুইত, দে দেবীর সাংছতিক চিহ্ন (প্রতিক্তি) মাতৃকা নাম পাইয়াছিল। পাণিনি স্ত্রে কন্ প্রতায় বোগে নিশার রামক,
লক্ষণক শব্দের অর্থ রামের চিত্র, লক্ষণের চিত্র। তেমনই
মাতৃকা শব্দের অর্থ মাতৃচিত্র, মাতৃপ্রতিক্তি, অন্ত কোন
অর্থ হইতে পারে না। পরে একই নামে দেবী ও দেবীর
প্রতিক্তি ব্রাইয়াছে। বেমন অক্ষর শব্দ। দেব ছারা দেবী,
এবং দেবী ছার। দেব জ্ঞান হয়। কারণ দেব ও দেবী
অভিন্ন, এক ব্যতীত দ্বিতীয় নাই। পর্মাত্মা নপুংসক,
ত্রী পুরুষ উভয় চিহ্নবিশিষ্ট।

তামপত্রে কিম্বা বৃক্ষপত্রে প্রতীকোপাসনার পূর্বে মণ্ডল বা চক্র এবং ব্রিকোণ লিখিতে হয়। ইহার নাম যন্ত্র। এই যক্তের মণ্যে দেব কিম্বা দেবীর প্রতিক্রতি লিখিতে হয়। এই ছই মিলিয়া নাম 'দেবনাগর' অর্থাৎ দেবের বাসম্থান চক্র। ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণ তৈত্তিরীয় উপনিষ্দে (১০২৭) ও তৈত্তিরীয় আরণ্যকে (১০১) আছে; যথা—"দেবানাং নগরম্।" কতিপয় দেবনগর চিত্র দেবনাগরী অক্ষরমালায় পাওয়া যায়। তাহা হইতে সমৃদ্য মালার নাম দেবনাগরী হইয়াছে। যে বর্ণমালা দেবনগর হইতে উৎপন্ন হইয়াছে, তাহার নাম দেবনাগরী।

ঋগ বেদের অন্তিমকালে, অথববেদে ও উপনিষদে এক দিবর বা ব্রহ্ম ভিন্ন জগতে আর কিছুই নাই। অথববেদে (১১।৪।৩২) দেহধারী পুরুষকে (মাহ্মবকে) ব্রহ্ম বলা হইয়াছে, কারণ মহাস্থাদেহে দেবতার বাস আছে। তত্ত্বের পঞ্চতত্ত্ব মানবদেহে বিশ্বমান। শামশাশ্বী অন্থমান করেন দেবীর প্রতিমা-পূজা প্রচলিত হইবার বহুপূর্বে যন্ত্রে প্রতিক্ষতির পূজা হইত। মহাস্থান্ধপের অন্তর্মপ চিত্র করিয়া দেবতার পূজা হইত। সানিনির পূর্ব হইতে প্রতিমা নির্মাণ ও বিক্রয় হইয়া আসিতেছে। ঋগ বেদের দেবতার রূপ ছিল, কম্ম ও মক্রং দেবতার বর্ণনা পড়িলেই প্রতীতি হইবে। বক্লণের বর্ণনা দেখুন। বহুস্থানে তন্ত্র, বপু, রূপ, সদৃশ শব্ম আছে। ঋগ বেদে (৩।৪।৫) 'নৃপেশস্' মহাস্থা রূপধারী। দেবতার সাধারণ নাম 'দিবোনরস্"—স্বর্গের নর।

অথবঁবেদের দার্শনিক মন্ত্রে (৩৩৫, নাহ) 'কাম' এক আদিবীজ কামমদন। পরবর্তী মন্ত্রে স্ত্রীবশীকরণ মন্ত্র প্রয়োগে অথবঁবেদীয় কাম আর তন্ত্রশাস্ত্রের চিত্রিত যন্ত্র এক। কামের বাণ দ্বারা হৃদয় বিষ্ণুক্ত করিবার কথা আছে। এই মন্ত্র উচ্চারণের পূর্বে চিত্র লিখিত হইত, ধহুং বাণ ইত্যাদির প্রতিকৃতি করা হইত। দ্যুতক্রীড়ায় জয়লাভের নিমিত্ত পা৫০ মন্ত্র আবৃত্তি ও চিত্র করা হইত (৭০০০৫)। যাহাকে বল করিতে হইবে, তাহার চিত্র ও নাম লিখিয়া বশীকরণ মন্ত্র ধান ও আবৃত্তি করা হইত। গোরোচনা ও রক্ত, পরবর্তীকালে সিন্দুর ও আলতা দ্বারা চিত্র লিখিত হইত।

তত্র বিষয়ে গছ পছা স্কাম অগণিত গ্রন্থ আছে।
শিবশক্তির যুগল মৃতির পূজাই তল্পশাস্ত্রের মৃথ্য বিষয়।
আদিতে শিবলিক পূজা প্রচলিত ছিল। কারণ তল্পের
প্রামাণিক গ্রন্থে লৈকিক চিক্রারা শিবশক্তি স্চিত হইত।
প্রমাণ যথা—কাদিমত, জ্ঞানার্ণব, নিত্যাযোড়শিকার্ণব,
ইত্যাদি।

অভিচার-মারণ উচ্চাটনাদি হিংসাক্রিয়া, বেদের কাল

হইতে চলিয়া আদিতেছে। (ঋগুবেদ ৭।১০৪, ১০।৮৪, ১০।১২৮, ১০১৫৫)। এমন কি উপনিবদেও যেমন বুহদারণ্যক উপনিবদে (৬।৪।১২ উল্লেখ আছে।

্রেআমার অহমানে ঋগ বেদের দশম মণ্ডল ঞী: পৃঃ
৩৫০০—২৫০০ অব্দে এবং অথববেদ ঞী: পৃঃ ২৫০০—২০০০
অব্দে প্রণীত হইয়াছিল। ইহাদের পূর্বে মঞ্জতন্তে বিশাস
নিশ্চয় ছিল।

রামের টাকা

ঞ্জিজগদীশ গুপ্ত

মনে হয়, চারিদিকেই পরিপূর্ণতা---

আকাল পরিপূর্ণ নীল, তার আর চাই না; গৃছে গৃছে পরিপূর্ণতা—দেখানে আরও পাইবার ক্ষিত ক্রন্দন নাই; পথের ছ'বারে অগণিত পণালালা, দ্রবাসম্ভারে পরিপূর্ণ—আরও লইরা রাখিবার স্থান সেখানে নাই; গাছে গাছে কূল কৃষ্টিয়াছে, আরও কৃষ্টাইবার আকাক্ষা তাদের নাই; গৃহচ্ছার কপোতের কৃষ্ণ শুনিয়া মনে হয়, ক্ষাহীন পরিপূর্ণতায় তাহা বিহলে। শিশুর মুখে পরিপূর্ণ নির্দিপ্ততা, বালকের মুখে ক্রীড়াসক্তির পরিপূর্ণ আনন্দ, মুবকের মুখে পরিপূর্ণ শান্তি। সহস্র সহস্র লোক চলাচল করিতেছে—পরিপূর্ণতার গর্বে তাহার! দৃপ্ত; পরিপূর্ণতার বার্তা পরস্পরকে জানাইবার বাব্রতায় তাহাদের গাড়াইবার বৈর্ঘা নাই…

কেবল যত কুৰা রামের উদরে !

রামের হাতের ভিক্ষাপাত্র দেখিয়া লোকে আত্তিত হয়, তাদের মনে হয়, ইহার ভিক্ষাপাত্র এ জীবনে ভরিবার নয়— এই ত সেদিনও দিয়াহি।

কিছ সেদিন দিয়াও আৰু আবার দিতে চার এমন গৃহছও আছে। তাহাকে দেবিরা কি কারণে এই গৃহলক্ষীটর মমতা করে তাহা রাম কানে না—'মা' বলিরা ডাক্ দিরা হয়ারে দিরা দাঁচাইলেই তিনি মেরেকে ডাকিরা বলেন: "মাধু, রামকে দে তো, মা, হ'রুঠো চাল।"

মাধুই এক দিন বিজ্ঞাসা করিয়া রামের নাম**ট ভা**নিয়া লইরাছিল।

মাধু একবানা সরায় করিয়া চাল আনে; রামের কুলির ভিতর অতি সাবধানে ঢালিয়া দেয়—একট চাল মাটতে পড়ে না। রাম ভাবে, যেমন মা তেমনি মেয়ে—দেহু যেমন সুঞ্জী, মন তেমনি কোমল—টহারাই রেহনীলা অরপুর্ণার সম্ভান।

ওদিকে রামভন্ধন আগরওরালার আকৃতে গিরা দীভাইলেই তাকিরার উপর হুইতে খাড় তুলিয়া রামভন্ধন বলে: "সরকার ইস্কো পয়সা দেও একঁঠো।" আরও ওদিকে গালুলীর হোটেল; সেবানে গেলে ভাত থাকিলেই গালুলী খাইতে দেয়। কিছু যে দেয় ভাহারই কাছে নিতা ঘাইতে দক্ষা করে; যে দেয় না, লক্ষীর ভাভারগৃহে যে বন্দী, সে যদি দৈবাং দেয় এই আলাতেই দানকুঠের সংখুবেই নিতা হাত পাতিতে হয়—তাহাতে রামের ভিক্ষাপাত্র ভবে না। কিছু আৰু রামের প্রাতর্কনান সার্বক, ভিক্ষা ভালই মিলিয়াছে; মনে হইতেছে, আর চাই না—যে পরিপূর্ণতার আনক্ষ চতুর্দিকে তরক্ষে তরক্ষে ছুটতেছে তাহা যেন রামের অক ক্ষান্ন করিয়া হল হল করিতে লাগিল;

রাম ছাইচিত্তে সকাল-সকাল ধরে কিরিতেছিল—এমন সময় সদর রাভার উপর একটা স্থয়হৎ বাঁড়ীতে উৎসবের কলরব শুনিয়া সে-দাঁড়াইল।

ş

যার ভাগ্য ভাল তার এমনিই হয়। নীলকণ্ঠ মভ্মদারের বরাত ভাল—সোনার সঙ্গে মাটি মিলিয়াছে, অর্থাং জলীপুরের মাতৃল —সম্পত্তি তাঁহাভেট বর্তিরাছে। সে সম্পত্তির পরিমাণ টের— একটা কমিদারীই। নীলকণ্ঠ নিচ্চে অবসরপ্রাপ্ত রাজ্বর্লারী; বাছ্যের আনন্দের উপর মাসিক তিন শত টাকা শেনসন তিনি ভোগ করেন; শহরের বুকের উপর পাচটি ভাড়াটিয়া ইউকালয় তাঁহারই ভাগ্যগর্কো শির উচু করিয়া আছে; এক শত টাকার ডাক না দিলে সকলের ছোটটিও মাস্থবের, অর্থাং নীচের, দিকে দৃষ্টিপাত করে না। নীলকণ্ঠের একটি কভার বিবাহ হইয়া গেছে; প্রতরাং যে শক্রয়া বাঙালীর ভিটার ঘুরু ভাকিয়া আনে তারা নীলকণ্ঠের নাই। জামাই পশ্চিমের একটি কলেক্রের অব্যাপক; বড় জার মেল ছেলে বথেও লেখাপড়া শিথিয়া লাট-সপ্রের বড় ছ্থামি আসনের দিকে লক্ষ্য রাধিয়া বসিয়া আছে—শৃত্ত হইলেই

যাইয়া বসিয়া পড়িবে। নীলকণ্ঠ বড় ছেলের বিবাহ দিয়াছেন বীর কভার সলে সেই বৈবাহিক মহালয় এত বড় ডাজ্ঞার যে, ভিনিট্ছ' বংসরে ষোলগুল বাড়াইয়াও তার বিশ্রামের সময় নাই; মেল ছেলের য়তুর কোন্ এক স্বাধীন লুপতির রাজ্য-সচিব—সেই দৃপতি কলিকাভায় আসিলে কেলায় ভোপ পড়ে। আরও সুথের বিষয় ইহাই য়ে, নীলকণ্ঠ শোক পান নাই; আঁতুড় হইতে আল পর্যন্ত তার সন্তানেরা ভালই আছে। তার উপর তার ক্ষী এবং বড় ছটি রূপে গুণে উত্তম।

ভাগালখী মাছ্যকে আর কি দিতে পারে ! প্রথের উপর সক্ষাণী বিশুণ প্রথের কারণ সম্প্রতি ঘটিয়াছে—নীলকণ্ঠের বাড়ীতে আৰু প্রাতঃকাল হইতে রম্প্রেটিক বাকিতেছে—তাঁর বচ ছেলে শৈলেলর প্রথম পুরের আৰু শুভ অন্ধ্রপ্রাশন । কুটুছ আর অভাগতে বাড়ী পূর্ণ হইরা ভারি সমারোহ লাগিয়াগেছে । নালকণ্ঠের রান্ধা-বাড়ী হইতে বাহির-বাড়ী অনেকটাপে—এতটা কারগায় লোক একেবারে ঠাসা ; দেগিয়া মনেহম ন , এ বাড়ীব বাহিরে আর মাহ্ম আছে । এক কথায়, পৃথিবীর মর্শ্বগত মহানলক্ষনি যেন শত মুখে উৎসারিত হইয়ানীলকণ্ঠের গৃহের চভুঃসীমা পর্যান্ত ছড়াইয়া পড়িতেছে । উৎসব ক্ষিয়াচে বেশ, এবং খোকা স্বর্ণালকারে প্রায় আরুত হটয়া গেছে ।

্বেলা প্রায় ছটো। নীলকঠের বাজীতে ভোক আরম্ভ হইয়া গেছে; কোলাহল-বান্ততা আর ডাকইাক দৌজাদৌজির অন্ত নাই। প্রকাণ্ড আদিনা আর বারান্দা জুড়িয়া লোক বসিয়া গেছে—সব বড় বড় লোক; ধনে মানে নীলকঠের সমকক্ষ্ণ বার: তাঁরা সবাই স্গোষ্ঠী আর সবাধ্বে আসিয়াছেন।

নীলকণ্ঠ একধানা চেয়ার পাতিয়া রাবিয়া তাহাতে না বসিয়া সন্মুখেই দাঁড়াইয়া আছেন; শৈলেক তাঁর পাশেই হাজির আছে।

পিতা পুত্র উচ্চকণ্ঠে কেবুলি ইাকিতেছেন: ঐ পাতে, ঐ পাতে...

তাঁরা আরও বলিতেছেনঃ দাও, ঠাকুর…

আপত্তি দেখিয়া আপ্যায়নের তেজ জারও বাড়িয়া যাইতেছে; বলিতেছেন,—নষ্ট হবে বল্ছেন ? হা হোক । দাও ঠাকুর।

গ্রম পোলাও ঠাতা হুইয়া অরুচি ধরিয়া গেলে, গ্রম-গ্রম আরও চার হাতা লইয়া তার তিন হাতাই ঠাতা করিয়া কেলিয়া রাখিল—পেটে স্থান ক্ম।

নীলকণ্ঠ যদি বলেনঃ আর ছটো দিকৃ?— লৈলেজ ্বাড়াইয়াবলেঃ খেয়ে ফেবুন। ঠাকুর আর ছটো দাও।

কিন্তু ঠাকুর দেয় আরও চারটে। লোকে শেষে রস-গোলা প্রভৃতি মিষ্টার চিবাইরা ঢালিতে লাগিল দেখিয়া নীলকণ্ঠ আর শৈলেঞ্জের আনন্দের সীমা রহিল না—ইছারই নাম লোক-বাওয়ানো। প্রাচ্রের উল্লাসে ওঁদের নাসার্থ্য বিক্লারিত হইল।

এইবার বিদায়ের পালা — নিমন্ত্রিত ব্যক্তিগণ কন্ত্<mark>রীগন্ধক্ত</mark> পান লইয়া আর শিশুটকে আশীর্কাদ করিয়া একে একে দলে দলে প্রস্থান করিতে লাগিলেন।

যাইবার আগে সর্বাঞ্চণ্য রায় বাছাছ্র নিরঞ্জনশ্রসম সর্বাধিকারী নীলকঠকে কাছে ডাকিয়া বলিলেন,—ভায়া একবার ভেতরে চল !

বুৰা গেল, খোকাকে তিনি আশীর্কাদ করিবেন। ঘটনাও তাই; রায় বাহাছর একটি 'ফুল' গিনি দিয়া খোকাকে আশীর্কাদ করিলেন এবং অধিকন্ত খোকাকে আলক সম্বোধন করিয়া গৃহিনীকে তাঁহার অক্টে সমর্পণ করিবার নির্বাৎ প্রভাব করিয়া বসলেন। তাঁহার সাহস দেখিয়া খোকা বিচলিভ হুটল না; কিন্তু তাঁহার স্বার্থতা:গের প্রভাবে নীলকণ্ঠ প্রমুব সকলেই প্রচুর হাস্ত করিলেন।

পশ্চিম দেশীরা ধাই লক্ষীর মা প্রস্থান্তকে "ধালাস" করিয়াছিল; সেই গৌরবে সেঁ একথানি ছরিদ্রারঞ্জিত বস্ত্র পরিয়া, আর কৃষ্ণবর্ণ ছকের উপর ধানিক অনাবশ্রক তেল ঢালিয়া আসিয়াছে…সে কথাও কহিছেছে ঢের; রায় বাহাছ্রের কথার পর সে বলিল…ই মাগো; বাবুজীর কিকথা!…বলিয়া সকলের হাসির চতুওণ হাসি সে একা হাসিল।

রায় বাহাছরের গৃহিণাও সেখানে ছিলেন। খোকার সন্মুখন্ত রৌপাপাএ মামুলি রৌপামুকার পূর্ণ হইয়া গেছে; কে একজন একটি ধর্ণাপুরীয়ক নিয়াছে, তাহার আত্মানিক মূল্য পাঁচ টাকার বেশী নয়; কিছু গিনি পড়িল মাত্র ঐ একটি। অছিকা দেবী সেই কারণে হাফ-খোমটার আড়ালে গর্কা অভ্তর করিতেছিলেন। খোকার অঙ্গায়িনী হইতে তিনি মাধা নাড়িয়া রাজী হইলেন।

ইহাতেও সকলে লক্ষীর মাথের সঙ্গে প্রচুর হাস্ত করিলেন।

নীলকঠের খ্রী হৈমবতী একটি ছেলেকে দিয়া বলিয়া পাঠাইলেন, রায় বাহাছর গোক্রার একটি পছন্দসই নাম রাধ্ন

লক্ষীর মাসব কথাতেই আছে: বলিল: হাঁ বাবুকী, একটা প্রমন্ত নাম।

রায় বাহাপ্রের মূপে চোবে হর্ষ বিকশিত হইল; কিছ
গিনি দেওয়া যত সহন্ধ, নাম রাধা তত সহন্ধ নহে, অনেক
হাতড়াইতে হয়---বলিলেনঃ দেখে শুনে রাধব একটা।
চলো হে। বলিয়া তিনি নত হইয়া য়ট আছুলের হারা
বোকার চিবুক শর্ম করিলেন এবং নীলকণ্ঠকে হাতের একটা
ঠলা দিয়া ঘরিয়া দাঁভাইলেন।

লন্দীর মা বলিল: পরে রাখবেন, এখন না। বলিরা এমন আহ্লাদিত হইরা উঠিল যেন অবলম্বনের ক্ষন্ত ঢলিরা! কাহারো গারে পড়িতে চার।

নীলকঠের বহিব্বাটি হুইতে রাভার পৌছিতে একটা কক্ষ অতিক্রম করিতে হয়। সেটার উপরে নীলকঠের বৈঠকধানা, নীচেটা ভূতাবর্গের বিশ্রামকক। এই কক্ষ দিয়াই যাতারাতের পথ। পাঁচটা সিঁ ড়ি ভাঙ্গিরা উঠান হুইতে সেই ঘরে উঠিতে হয়। রায় বাহাছর নিরঞ্জনপ্রসর সর্বাধিকারী সেই সিঁ ড়ির ছু'বাণ উঠিতেই অপর যে ব্যক্তি সেই সিঁ ড়ি দিয়াই উঠানে নামিতে উভত হুইরা একেবারে দরকার মুখে আসিয়া দাঁড়াইল তার চেহারা বীভংস: হাড়ের উপর চামড়া ধালি; মুখে একমুখ দাড়ি গোঁক; চুলগুলি আন্দাকে আর অপটু হত্তে নিক্রেই কাটিয়াছে বলিয়া মাথাটা বড় অপরিপাট হুইয়া উঠিয়াছে; পরিধানে মলিন বয়ধও; কাবে ভিকার বুলি… অশেষ কীর্ণসংস্কারের দক্ষন তাহা বিবিধ বর্ণের আর বিবিধ আকারের কাপড়ে কাপড়-হাটার নমুনার মত দেখাইতেছে; হাতে একটি বান্দের লাঠি আছে।

এই মূর্ম্ভ সমূবে পড়ায় রায় বাহাছর বাবা পাইলেন... সিঁডির উপরেই তিনি ধমকিয়া গাড়াইলেন।

আন্তে যেমন ধার থাকে তেমনি রার বাহাছরের পাশেই ছিলেন নীলকণ্ঠ ; তিনি চীংকার করিয়া প্রশ্ন করিলেন…কে রে তুই ?

রাম বলিল: আজে, আমি রাম, ভিবিরী। - বলিরা রাম নিজের পরিচয় সসজোচে নিবেদন করিল, কিছ মতিএম-বলতঃ রাম বাহাছরকে পথ দিয়া সেশশবান্তে সরিয়া গেল না।

নাম-সম্পর্কে পিছন হইতে একটি ইছুলের ছেলে বলিল: ভূমি আরে রাম।

এই কথায় একটি হাস্তধ্বনি উঠিল…

রামের ধৃষ্টতার আগুন হইয়া নীলকণ্ঠ হাস্তধ্বনিকে জারত ক্রিয়া বক্ককণ্ঠে হাঁকিলেনঃ তেওয়ারী ?

তেওয়ারী নীলকণ্ঠের দারোয়ান; সে পোলাও পরিবেষণের প্রথমের পর গায়ের ঘাম মুছিয়া পৈতার ঘাম নিংডাইতেছিল; আহ্বান হ্বনিত হইতেই 'হছুর' বলিয়া সাড়া দিয়া সে ডোজ-পুরী বিক্রমে লাকাইয়া আসিয়া দাঁড়াইল। নীলকণ্ঠ তর্জনী নাডিয়া তাহার কাছে জানিতে চাহিলেন, বেতনভূক্ এত ভূত্য বিজ্ঞমান থাকিতে রায় বাহাছ্রের সন্মূবে এই লোক পড়ে কেন ?

কিছ তেওয়ারী কৈ কিয়ং গড়িয়া তুলিবার পূর্ব্বেই ততক্ষণে কাজ স্থুক হইয়া গেছে, অর্থাং নীলকঠের কোচম্যান শিউসেবক আসিয়া প্রশংসনীয় তংপরভার সহিত রামের গলদেশ চাপিয়া আর টিপিয়া ধরিয়াছে এবং রাম আর্ত্তনাদ করিয়া উঠিয়াছে।

রার বাহাছর এতক্ষণে কথা বলিলেন—কোচ ্যানকে

রামের গলদেশ হইতে হাত তুলিরা লইতে আদেশ করিলেন। আদেশ প্রতিপালিত হইল দেখিরা তিনি মুখ কিরাইরা নীল— কষ্ঠকে বলিলেন—আহা ভভ দিনে কেন হালামা করছ।

করিয়াদি মামলা তুলিয়া লইতেছেন দেবিয়া তংকণাং বিবাদের নিম্পত্তি ইইয়া শান্তি ছাপিত হইল, নীলকণ্ঠ রুত্তবৃত্তি সংবরণ করিলেন।

রার বাহাছর রামকে আরও কাছে ডাকিয়া পকেটে হাত দিলেন; বাাগ বাহির করিলেন, ব্যাগের ভিতর হইতে একট টাকা বাহির করিয়া তাহার হাতে দিতে গেলেন—

রাম তথন শর্পর্ করিয়া কাঁপিতেছিল; কম্পিত করতল পাতিয়া সে দান গ্রহণ করিল।

রায় বাহাছর নীলকণ্ঠকে পুনরায় বলিলেন, কিছু বাবারটাবার দিয়ে একে বিদায় কর। আহা, আৰু শুভ দিনে কি
মারবাের করতে আছে।—বলিয়া তিনি এবার নির্কিয়ে কক
অতিক্রম করিয়া রাভায় আর মােটরের কাছে পৌছিলেন।

છ

রায় বাছাছুরের ইচ্ছাছুরূপ ব্যবস্থাই নীলকণ্ঠ করিলেন। টাকার উপর নীলকণ্ঠের ছ'ধানা পুচি রাম পাইল।

বুলির ভিতর টাকা আর লুচি লইয়া রাম যথন নীলকঠের গৃহ হইতে নিক্ষান্ত হইল তথন তার চিত্ত আনন্দে আকুল; অশক্ত দেহে অপূর্ব্ব একটি শক্তি সঞ্চারিত হইয়াছে। জন—লোতের দিকে পুলকিত নেত্রে চাহিতে চাহিতে রাম পথ. চলিতে লাগিল···

পৃথিবী কেন আনন্দৰাম, এই প্ৰেলের উত্তরট এবং সানন্দে পথ চলিবার যে গৃচ কারণটৈ লুকাইয়া রাখিয়া মাতৃষ এত দিন তাহাকে ঠকাইতেছিল আৰু তাহা প্রকাশ হইয়া পড়িয়াছে; পৃথিবীর অর্ক্ষেক মাতৃষ আহরণ ক্রিতে ছুটতেছে—অপর অর্ক্ষে আহরণ ক্রিয়া ক্রিতেছে।

কিছ যে যতই আহরণ করুক তাহার মতও অব্ল্য সক্ষণ কাহারও নহে। নামের পা মুখানা ক্রততর চলিতে লাগিল — ঐ অবৃল্য আহরণ, অবাং টাকাটা, লইরা বরে পৌহিতে পারিলেই তাহা যেন তার সত্যকার আপনার হইবে। নতার মনে পড়িতে লাগিল সেই দাতাকে—চমংকার গৌরবর্ণ; বরস সাতচল্লিশ-আটচল্লিশ হইবে; চুল পাকে নাই, কিংবা প্রচুর চুলের ভিতর সাদা হু-এক খেই তার চোবে পড়ে নাই; গৌক ছু-একট্ট পাকিয়াছে; গারে বৃল্যবান কোট বক্বক করিতেছে; গঙ্হর ছুল, যেন গালের ভিতর গোল আর বড়পারা কিছু রহিয়াছে; পুণুই আছুলগুলি দেখিতে মোলারেম; একট্ট অভুলীতে অভুরীরক আছে—তাহার উপর উক্লে একখানি পাবর বসানো; পরিবানে জমাট-বোনা মিহি একখানি কোচানো বৃতি—থাকে থাকে ভাঁক পভিয়া প্রছে ক্রমণঃ বাছিয়া একট্ট পরিমাণ-পরিপাটো কোচাট পুলর দেখাইতেছে

—হুগাপ্রতিমার কার্ত্তিকের কাপড় ঠিক্ ঐ রকমই কোঁচান থাকে; বুকে কোটের উপর সোনার মোটা চেন্ বুলিতেছে— থানিকটা বহুকের মত বাঁকা, থানিকটা তাঁরের মত সোজা হইয়া বুলিতেছে—সোজা অংশের সঙ্গে আধুলির আকারের একটি চাক্তি রহিয়াছে; মাহ্মটির ঠোঁট ছ্থানি পাতলা, লাল; টোখ বড়—কিন্তু হাস্তময় নয়, গন্তীর, সরু, গাচ ফুফবর্ণ; পারের ভুতা দর্পণের মতো বছে।

এই খুপুরুষটি জামার পকেটে হাত দিলেন; ব্যাগ বাহির করিয়া টাকা বাহির করিলেন; তাহার মুখের দিকে চাহিয়া টাকাটা তাহার হাতে দিতে চাহিলেন। তাঁর হাত কাঁপিতেছিল; পাচটি আলুল কড়ো করিয়া ভিনি টাকাটা ধরিয়াছিলেন…টাকাটা তিনি ছাড়িয়া দিলেন—টাকা তাহার হাতের উপর পড়িল—শর্পা ঘটিল; ক্লেন্রে অপরিমেয় অম্ভূতি মন্তিম্ব হুটতে পদতল পর্যান্ত সর্বাঞ্চে এক নিমেষে ছড়াইয়া গেল…

ভাবিতে ভাবিতে রামের প্রাণে আনন্দ-রস উদ্বেল হইয়া উঠিল; কিছু বেলীকণ ভোগ করিতে পারিল না—সকল আনন্দ লুপ্ত আর সকল চিছাকে উদ্প্রান্ত করিয়া দিয়া হঠাৎ একটা বড় কঠিন কথা রামের মনে পড়িয়া গেল—যে দাতা তাহাকে টাকাটা দান করিয়াছে সে-ই আবার টাকাটা কাছিয়া লইতে পন্চাতে লোক ছুটাইয়া দেয় নাই ত ? এত বড় বছ দান করিয়া অকাতর নিশ্চিত্ত থাকিতে পারে এমন ত্যায় মহামুত্তব বাক্তি পৃথিবীতে নাই বোর হয়। শঙ্কায় রামের বুক চিপচিপ করিতে লাগিল; এমন সাহস হইল না যে পিছন দিকে একবার তাকায়। তেমনও ত অনায়াসে ঘটতে পারে যে, হিড়হিড় করিয়া টানিয়া লইয়া চোর বলিয়া পুলিসে দিবে। বিশ্বাস নাই—এমন হয়। আসে অছু হইয়া পলায়নের উদ্বেক্তে ছুটতে যাইয়াই রাম বাবা পাইল; কে যেন কোন্দিকে গর্জন করিয়া উঠিল: "এইও"…

সে পৌছিয়া গেছে—দয়াপু লোকটি দানের জন্ত অমৃতপ্ত হইয়া তাহাকে কিরাইয়া লইতে কি বরাইয়া দিতে যে বলবান্ আর অত্যাচারী ভোকপুরী হারবান্ পাঠাইয়া দিয়াছিলেন সে দৌভাইয়া আসিয়া তাহার নাগাল পাইয়াছে—

কিছ তা নয়, "চাপা পছলে যে"। বলিয়া সদয় কঠে ছৎ সনা করিয়া একট বাবু তাহাকে পালের দিকে টানিয়া লাইলেন। রাম দেখিল, সমুখেই গরুর গাড়ী—থামিয়া আছে। ক্ষুত্র গাড়ীর গাড়োয়ান এবং ছ-চার জন দর্শক দাড়াইয়া তাহাকেই লক্ষ্য করিয়া হাসিতেছে•••

গরুর গাড়ী চালিরা গেল; যাহারা দাঁড়াইরা পড়িরাছিল তাহারাও চলিয়া গেল; কিছ তীত্র ত্রাসের বিহাতে আহত হইয়া ক্ষণিক মূর্চ্ছার যে আঘাত স্কু করিয়া রাম এইমাত্র ভাগিরা উঠিয়াছে তাহার অবসাদ ঠেলিয়া সে তথনই নড়িতে পারিল না। কিছ তনিতে আক্ষর্যা, রামের বুকের এই ত্তহতা দেখিতে দেখিতে ফিলাইয়া গেল—ভরের কোন কারণই

বিভযান নাই জানিতে পারিরাই তাহার কট ছুচিরা ক্লান্তি দুর হইরা প্রাণে পুনরায় স্কৃতি দেখা দিল। জাবার রাম রওনা হইল।

ভৃতাশ্রেণীর একটি মুবক বাটতে করিরা সেরধানেক বি, আর পাতার ঠোঙার করিরা সেরদেড়েক ময়দা লইরা যাইতেছে দেখিরা রাম তাহাকে ডাকিরা দাঁড় করাইল—কানিতে চাহিল "বিষের কি দর আক্কাল" ?

রামের দিকে চাহিরা হাসিয়া সেই লোকটি দর জানাটবার পূর্বে জিজাসা করিল---মণের দর না সেরের দর ?

রাম বলিল, "সেরের দরই ভূনি"।

—সাত সিকে :

্রাম বলিল, "দাম বেড়েছে"। বলিয়া চলিতে লাগিল। রামের আন্ধ কিছুই অপ্রাপ্তব্য নাই—কোন ভোগ্যবন্ধ হন্তগত করিবার আশা আর ছরাশা নয়।

খরধানাকে রাম এখনো বাসোপযোগী মনে করে কি না বলা যার না, কিন্তু তাহাকে সে ভালবাসে।

মাইলদেড়েক পণ অতিক্রম করিয়া শহর হইতে বরে পৌছিতে আগে তার ইাঁটু ভাঙিয়া শরীর হুম্ডাইয়া পভিত, কিন্তু বুলির ভিতর হ'বানা পুচি আর টাকাটা লইয়া সে আৰু আপন গৃহে চলিয়াছে——দৈবদওস্পর্ণে রোগমুক্তির মত কি একটা শক্তিমন্ত্র কাছুর ধেলায় আৰু তাহার পা কাঁপিল না।

রাম গৃহত্ পৌছিল। ছয়ারে দাঁড়াইয়া একটা নিঃখাস সে ত্যাগ করিল; তারপর দরজার শিকল নামাইয়া খরে চুকিল; ঝুলিটা মেঝের মাটিতে নামাইতে যাইয়া তাহার জ্ঞান ক্রিল, মাটির সঙ্গে পুচি আর টাকার স্পর্শ ঘটান সঙ্গত নর—আর একটু আগাইয়া গিয়া রাম মাটির দেয়ালের পেরেকের সঙ্গে তাহাকে ঝুলাইয়া রাখিল।

তারপর বসিয়া বসিয়া খরের চারিদিকে চাহিতে চাহিতে
আপন মনেই অনেক হাসিল। ঐ টাকাটা যেন মন্ত্র জানে—
সে আসিতেই মাটির হাঁডিটা, সরাটা, এনামেলের ফুটা বাটিটা
পর্যন্ত যেন হাসির রক্ষতছেটা ছড়াইতেছে।

কিছুক্ণ এই হাসিটা উপভোগ করিয়া রাম উঠিল , বুলিটা পাড়িয়া আনিল ; বুলিটা কোলের উপর রাধিয়া তার মুধ খুনিল ; অতি সন্তর্গণে তাহার ভিতর হইতে বৃচি ক'বানা বাহির করিল ; এক হাতেই-গামছাধানা মেবের পাতিয়া তাহার উপর বীরে বীরে বুচিগুলি নামাইয়া রাধিল—ধেন রোণ্যনির্দ্ধিত একটি পরম উপাদের দৃশ্ধ তার পরিভ্ত আর অপ্র্ক একটা আলোকে উক্ষন দৃষ্টির সন্থবে উন্মাটিত হইরা রহিল ।

রাম তথন ক্ষতি; কিন্তু বৃচির দিকে চাহিরা চাহিরা আর টাকার কথা ভাবিরা ভাবিরা তার দিনব্যাণী ক্ষাবোধ অন্তর্হিত হইরা গেল। বুলির ভিতর হাত ভরিরা টাকাটা সে বাহির করিয়া আনিল—করতলে সইরা নির্নিষে চন্দে সেটর দিকে চাহিরা রহিল: টাকার গায়ে একটা মুখাবরৰ অভিত রহিয়াছে—মাস্থের মুখ বটে, কিছ কোন্ মাস্থের মুখ তাহা সে বল্লেও ভানে না। উল্টাইয়া দেখিল, এদিকেও ছবি রহিয়াছে; অভ্যন্ত প্রাক্ত কালা সে চিনিতে পারিল না।

একটা লেকে, ধর সে-ই, যদি এই রক্ম একটি টাকা তৈরি করিতে বসে তবে তাহাকে পরিশ্রম করিতে হইবে বিভার--্যন্তপাতিও অনেক লাগে বোধ হয়-ভাবিয়া রাম বিশিত হইল। টাকাটা অনুষ্ঠ আর তর্জনীর মাবে ধরিয়া রাম তাহাকে পরম স্নেহ আর সম্রমের সহিত একবার কপালে ছোঁয়াইল: তারপর তাহাকে মুষ্টর ভিতর আবন্ধ করিয়া ক্রমশ: মুষ্টি দচ্তর করিয়া তাহাকে অফুডব করিতে লাগিল ; হাত গরম হইয়া উঠিল। মুষ্ট খুলিয়া চাহিয়া দেখিল, টাকাটা রহিয়াছে: দেখিয়া শৃতন করিয়া আর একবার সে অবাক হইল। পুনরায় মুঠা বাঁধিয়া তার মনে হইতে লাগিল: যদি এইবার ছাত খুলিয়া দেখা যায়, একটি টাকা ছটি ছই-স্বাছে। রামের গা সিরসির করিয়া উঠিল। তাহা কি একে বারেই অসম্ভব ! ভগবান দয়ালুর হাত দিয়া একটা টাকা দিয়া-एक-- जिनिहे शुनदाश प्रशाशततम इरेश कि अकिएक इति क्रिंडि शासन ना ! अमन कि यहि ना ? पहिट शास ना, ভগবানের রাজ্যে এমন কিছু নাই। অমনি করিয়া টাকা যদি বাজিতে থাকে। রামের চক্ষু নিমীলিত হইয়া আসিল।

চোধ খুপিয়া খবের চারিদিকে চাহিয়া রাম হতাশ হইয়া ভাবিতে লাগিল, খবে এমন স্থান নাই যে অনেক টাকা রাধা যায়। কিছু পরক্ষণেই তাহার মুখ উদ্দল হইয়া উঠিল: টাকা হইলে সেই টাকাতেই ত ঘর হইতে পারিবে, সিমুক্ত হইতে পারিবে। রামের মনে অতঃপর টাকার প্রোত বহিতে লাগিল।

এক সময় সে মুষ্টি খুলিয়া দেখিল, টাকা একটাই আছে, দিওণ হয় নাই, দেখিয়া তার মনে হইল, একটাই যথেষ্ট। তারপর কি মনে করিয়া সে পরম লালসার সঙ্গে ভিছবা বাহির করিয়া টাকাটার এপিঠ ওপিঠ ছবার চাটল; তারপর তাহাকে লুচির ভূপের পাশে অতিশয় যঞ্চের সহিত নামাইয়া রাধিল।

একট একট করিয়া তুলিরা লুচি ক'খানা গণিয়া দেখিল—
ছ'খানা। একখানার এক টুকরা ভাডিয়া মুখে দিতে
মাইয়াই রাম হাত নামাইল; একবার অক্সহীন লুচির দিকে,
একবার টুক্রাটির দিকে চাছিয়া সে ভাত্তিত হ'ইয়া রছিল—
যেন নিজের হাতে নিজের পায়ে কুঠার মারিতে গিয়াছিল,
প্রলোভনের বভকে পরিহার করিতে এমনি শশব্যতে সে উঠিয়া
দাঁভাইল, এবং প্রকৃতিত্ব হউতে তার কিছু সময় লাগিল।
ভারপর সে লুচি ক'খানার কারা বরিয়া বহন করিয়া চভুর

জন্তরালে ইাজির ভিতর রাখিয়া দিল—ইাজির মূবে সরা চাপা দিয়া, আর টাকাটা ধ্ব মজবুত করিয়া টীয়াকে গুলিয়া পুনরায় সে ভিজায় বাহির হইল। নৃতন ইাজি আর সরা কিনিবার পরসা তাহার চাই।

8

আৰু রামের অদৃষ্ট সুপ্রসন্ধ—তার দিন আৰু সার্থক হইতে কিছু বাকি রহিল না।

বাখডাঙ্গার জীবাস সরকার পুত্রের বিবাহ দিয়া বধ্, বর এবং বছ অস্কৃত্র আর প্রচুর প্রাপ্তিসহ দেশে কিরিতেছেন : তার হিসাবরক্ষক হীরালাল ব্যতীত আর স্বারই বিশ্বাস, শ্রীবাস প্রসাওয়ালা লোক ; স্কুতরাং সেই বিশ্বাসটা যাহাতে ক্রুর না হয় সেদিকে লক্ষ্য রাখিয়া বৈবাহিকের টাকায় তিনি বিবাহে খটা করিয়াছেন আশাতীত।

যাছা হোক, তিনি ক্ষিরিতেছেন এবং বৈবাছিকের ব্যবহারে ধূনী হইয়াই ক্ষিরিতেছেন। খানিকটা পথ গো-হানে আসিয়াছেন, খানিকটা পথ রেলগাড়ীতে যাইতে হইবে। তিনি হাতে "কিছু সময়" রাখিয়া গাড়ীর সময়ের বহু পূর্বেই ষ্টেশনে পৌছিয়া সম্রুতি স্তীল টাক্ষের উপর আসন গ্রহণ করিয়া বিশ্রাম করিতেছেন।

শ্রীবাসের মন সম্ভুষ্ট হইয়া আছে।' বড়টি স্কুন্সরী এবং বৈবাহিক সংলোক, ইহা তিনি পুনঃ পুনঃ স্বীকার করিয়াছেন। আবার ইহাও সত্য যে, লোকে কম্মিনকালেও বলিতে প!রিবে না, শ্রীবাস সরকার গরীবের হরের 'হ!ভেতে' মেয়ে খানিয়াছে, কিংবা ধনীর হর হইতে কুংসিত বউ আনিয়াছে।

শ্রীবাদের এ কথার পুরোছিত দশর্থ তর্কবাদীশ, পর।মাণিক মুবিষ্টির এবং প্রতিবেশী স্ক্রীধর সমস্বরে এবং প্রবল কণ্ঠে সায় দিয়াছে—কদাচ না বলিতে পারে নাই।

রাম বীরে বীরে অগ্রসর হইরা তাঁহারই অদ্রে দাঁডাইরা ছিল। ভূঁড়ি-নাচানো হাসির শেষে একবার হঠাৎ মুধ ফিরাতেই রাম ঞীবাসের চোবে পড়িল।

শ্রীবাসের মন প্রকৃত্ম ছিল—বলিলেন, হঁ, বুবেছি। বলিয়া তিনি পকেটের ভিতর হইতে একটি চতুকোণ হু'আনি বাহির করিয়া রামের দিকে ছুভিয়া দিলেন। কিছু শুভের বিনিপ পুকিয়া লওমার তৎপরতা রামের নাই, হু'আনিটা তার হাত এওাইয়া মাটতে পভিল। রাম শ্রীবাসের পদতলে ভ্মিঠ হইয়া প্রণত হইল; তারপর হু'আনিটা তুড়াইয়া লইয়া বীরে বীরে প্রস্থান করিল।

টাকাটা ট াকে আছে, আর তার অভিছের অভ্তৃতি রামের রক্তে জীবন্ত হইরা আছে। তার উপর এই ছু'আনি। মাছবের প্রতি ক্লতজ্ঞতার রামের চোধ সক্ষ হইরা উঠিল।

শ্রীবাসের দেওয়া ছ'আনি ভাঙাইয়া রাম হাঁড়ি আর সরা কিনিল। মনে মনে অনেক তর্কবিতর্ক তোলাপাড়া আর লোড সংবরণের রথা চেষ্টার পর আবলার তামাক, ঐ বৃল্যের টিকে এবং ঐ বৃল্যের দিয়াশলাই এবং ঐ বৃল্যেরই একটি কলিকা কিনিয়া রাম যখন বাড়ীর দিকে পা চালাইল তাব বছ প্রেই তার মন যাইয়া পড়িয়াছে হাঁডির প্রিতেঃ যাইয়া দেখিতে পাইব কিনা ঠিক কি!

যথাসাধ্য ক্রতপদে যরে কিরিয়া রাম সর্বাগ্রে লক্ষ্য করিল দরকার মাধাটা —শিকল চড়ানোই আছে; শিকল খুলিয়া ঘরে চুকিয়া দেখিল, হাঁড়ির আবরণ ঠিক আছে এবং ঢাকনা তুলিয়া দেখিল, শুচিও আছে।

শান্তির, ভৃত্তির এবং স্বত্তির একটি গভীর নিংখাস ত্যাগ ক্রিয়া রাম বিশ্রাম ক্রিতে ব্সিল।

রামের দিন যাইতেছে।

চাল সিদ্ধ করিবার নৃত্ন হাঁভি আনা হইয়াছে; কাজেই লুচিগুলিকে স্থানন্তই করিতে হয় নাই। তিন রাত্তি না যাইতেই পরিকার প্রথাত লুচিগুলি পরস্পরের বুকে পিঠে সংলগ্ধ হইয়া একটা নিরেট পিণ্ডে পরিণত হইল; আগে পচিয়া তুর্গভ্জয়, পরে শুকাইয়া নির্গদ্ধ হইলা এবং তারপর আরও শুকাইয়া বরিয়া অরিয়া ওঁড়া হইয়া গেল; কিছে রাম সরা তুলিয়া আর তাহার দিকে চাহিয়া দেখিল না—আছে, তার নিজম্ব স্লেছা-ভোগা হইয়া তাহা মন্ত্রত আছে, ইহাই মনে করিয়। রাম ক্রার সময়ও প্রথ পায়।

কিন্ধ ৰাভূনিশ্বিত মুদ্রাটির দেহ কঠিন—ভাহার দেহ পচিয়া উঠিল না।

রাম প্রত্যাহই নিয়মিতভাবে ভিকায় বাহির হয়; বাহির হইবার পূর্বের চাকাটা হাতে লইয়া বহুকণ বরিয়া একাঞ্চিত্তে নিরীকণ করে—বিধ দিয়া আর ঠোট দিয়া তার হুই পিঠ বারংবার চাটে; তারপর তাহাকে আবার বুলিতে কেলে— আনকে তার পা অনায়াসে চলে।

টাকা পচিয়া উঠিল না; কিন্তু লেহনের ফলে তার ছ-পিঠের ছবি আর লেখা ধীরে ধীরে অস্পষ্ট হইয়া উঠিতে লাগিল।

এমনি মছর ক্ষমের রাভ্ঞাসে পভিয়া একেবারে নিঃশেষ হইয়া যাওয়া টাকার অনুষ্ঠের কথা নর, কাক্ষেই এক দিন বড় ছক্তৈব ঘটরা গেল। যে পেরেকটার সঙ্গে বুলি টালানো থাকিত সেই পেরেকটা বুলি বুলাইবার আর পাড়িবার টালা- টানিতে নোনা-লাগা মাটির ভিতর কবে দিলা হইয়া গিয়াছিল রাম তাহা দুগাক্ষরেও টের পায় নাই।

ঝুলি সেদিন ভারী ছিল।

পেরেকে থুলি ঝুলাইয়া রাখিয়া রাতে রাম ঘুমাইয়াছিল; বুলির ভারে পেরেক খুলিয়া পেরেক সমেত ঝুলি কখন ভূপতিত হুইয়াছে তাহা জানা যায় নাই। সকালে ঘুম ভানিয়: চোর মেলিতেই যে দুই রামের নজরে পড়িল বুলির ভূতলে পতন তার সবটা নয়; ঝুলির কেবল ধরাপুঠে পতনের কলও তেমন সাংখাতিক নয়; কিন্তু সাংখাতিক ব্যাপার এই যে, দেখা গেল, ঝুলির গা খেঁখিয়া ইছুরের মাটি রাভারাতি পর্বতাকার হুইয়া উঠিয়াছে।

রামের শরীর সেদিন ভাল ছিল না। বুলির ভিতর টাকা খাছে; সেই বুলি ইছরের গণ্ডের মূবে পড়িয়া আছে দেখিয়া আতংক উদ্বেগে রামের প্রাণ যত ফ্রন্তবেগে বডক্ষ করিতে লাগিল ভত ফ্রন্তগতিতে সে গা পুলিতে পারিল না। বীরে বীরে গারোবান করিয়া সে বুলির কাছে আগাইয়া গেল, বুলিটাকে টানিয়া পুলিল—বরবার করিয়া অনেকগুলি চাল ইছরের মাটির উপরেই ভুপীক্ষত হইয়া পড়িল —রাম তাহা অঞ্পলি ভরিয়া পুলিরা পুলির। পাশের দিকে রাবিয়া দিল।

টাকাটা ছিল চালের নীচে। রাম তাড়াতাড়ি থুলির ভিতর ছাত ভরিয়া দেখিল, টাকা নাই, ইছরের দাঁতের করা ছিল্ল রহিয়াছে—বুলি হাতড়াইতে যাইয়া ছিল্লের ভিতর আকুল চুকিয়া আট্কাইয়া গেল। ঝুলির ভিতরটা বাহিরে উপ্টাইয়া আনিয়া রাম ছ'হাতে করিয়া সেটাকে বাতাসের উপর আছড়াইতে লাগিল; চালের শুঁড়া হার চতুছিকে উড়িতে লাগিল—তার চোধে মুখে প্রবেশ করিল, কিছু টাকা পড়িল না।

রাম কুলি কেলিয়া পাগলের মত ছুটিয়া বাহির হইল; তার ভোঁতা দা-ধানা কোধার পড়িয়া ছিল, সেই দা আনিয়া ছই হাতে ইঁছরের মাটি সরাইয়া মেঝের মাটি খুঁড়িতে বসিয়া গেল।

অল্পন্ত হড়কের মূখ দেখা গেল; কিন্ত হড়ক কোন্
অতলে প্রবেশ করিয়াছে, ছই হাত গর্ভ খুঁড়িয়াও তাহা
আবিষ্ণত হইল না।

ক্লান্তিতে শরীর ভাকিয়া পড়িতে লাগিল; দা রাখিরা রাম অর্জনিমীলিত নেত্রে গহরের দিকে চাহিয়া বসিয়া রহিল নেবিসপিত রেখায় প্রবাহিত হইয়া অসংখ্য স্থানে নিজেকে ভেদ করিয়া সেই স্থভদের যেখানে শেষ হইয়াছে সেই অতি হুগম দূরে আয়ভাতীত একটা অঙ্কার স্থানে ব্যক্তবাহিত টাকাটা পভিয়া বক্বক্ করিতেছে, রাম প্রঃপুনঃ চক্ বুলিত করিয়া অবাধ বজ্ দৃষ্ঠিতে ভাহা যেন স্পাই দেখিতে লাগিল।

সুখ ও স্বস্তি

🔊 বিজয়কেতৃ বস্থ, এম্-বি, বি-এস্সি

স্থবের চেয়ে স্বন্ধি ভাল এ কথা প্রায়ই বলিয়া থাকি। বোধ হয় সাধারণ গৃহস্থ বাঙালীর এই স্বন্ধির চেয়ে বেশী আর কিছু শাশা করিবার নাই। এখন বাংলাদেশের অবস্থা এমন যে শীবনে স্থ তো নাই-ই, স্বন্ধিও মরীচিকার মত ক্রমশঃ মিলাইয়া এ দশা কেন? এ প্রপ্রের মীমাংসা করা দরকার। সুধ কি ? স্বন্ধিই বা কি ? কেন স্বন্ধি আমাদের কাম্য ? শিক্ষা, দীক্ষা এবং পূর্ণাঙ্গ দেহ সম্বেও কেন আমরা **লক্ষ্যভাষ্ট ? এই প্রশ্নগুলি বিচার করিবার সময় আসিয়াছে**। শাল্লোক্তি আছে—ভূমৈব প্ৰথং, কি অৰ্থে ইহা বলা হইয়াছে সে তর্ক না তুলিয়া আমরা যদি বরিয়া লই "প্রাচুর্যোই সুখ" बूद (वन्ने कुन करा हरेरा ना। किरात প্রাচুষ্য ?--कामा वस्तर প্রাচুর্ব্য। প্রাচুর্ব্য ও অপ্রাচুর্ব্যের বিচার প্রয়োজনের মানদণ্ডেই **হইরা থাকে। কিন্ত কেবল পর্যাপ্ততার মাতৃষ সুধী নয় কেন** ? কেন প্রাচুর্যা না হইলে মাহুষের মন তৃপ্ত হয় না? তাহার কারণ বান্তবিক স্থাটা প্রাচুর্ব্যের মধ্যে নাই, আছে প্রয়োজনীয় বস্তুটাকে ব্যবহার করার মধ্যে। কাজেই প্রয়োজনীয় বস্তু ষভ সুলভ এবং প্রচুর, তাহাকে ইচ্ছামত অবাবে ধরচ করিবার সুযোগও তত অধিক। প্রয়োজনীয় বস্তু যখন ছলভি তখন ভাহাকে ব্যবহার করিবার স্থধ হইতে বঞ্চিত থাকিতে হয়। প্রয়েজন বস্তুটা জাবার এমন যে মাসুষকে নিশ্চিত্ত থাকিতে **(एस मा, जाएना करता। এই खराशांस यपि अरासकनीय उन्ह** কিছু পাওয়া যাহাতে ভাড়না হইতে অব্যাহতি লাভ ঘটে, তবেই মাসুষ স্বন্ধি পার। যে অবস্থার মাসুষের প্রয়োজনের তাড়না নাই অথচ প্রয়োজনীয় বস্তুকে অবাথে ব্যবহার করার পুৰও নাই ভাছারই নাম 'বভি'।

এবার 'প্রয়োজন' কি দেখা যাউক। প্রয়োজন কি তাহা আমরা অভুডব করিয়া থাকিলেও তাহার সম্বন্ধে একটু चालांक्ना कतिल लाघ इटेरव ना। প্রয়োজনের সঙ্গে প্রাণের খনিষ্ঠ সম্পর্ক। প্রাণিমাত্রই ক্রিয়াশীল, প্রাণীর জাতি হিসাবে ক্রিয়ার ধরণটা নির্ভর করে বটে, কিছ প্রাণ বার্কিতে নিজিম হইবার উপায় নাই। বৈজ্ঞানিকেরা দেখিয়াছেন এই ক্রিয়াশীলতার মূলে প্রেরণা দিতেছে প্রয়োজনের তাড়না। প্রাণীর ক্রিয়াশীলতা বন্ধায় রাখিতে প্রতিবেশ শক্তি সরবরাহ করে। 'যে সমন্ত বস্তু শক্তির উৎস সেগুলির প্রতি প্রাণী প্রয়োজনের তাগিদেই আরুষ্ট হয়। প্রয়োজন আমাদের ৰাভাবিক ক্রিয়াশীলতার প্রপন্থী অর্থাৎ ইহার পরিবর্জন এবং পরিকুটনের সহায়ক। মাত্রবের এই ক্রিয়াশীলতা একাস্ত ৰান্ত্ৰিক ব্যাপার নহে বরং প্রত্যেক ক্রিয়ার মধ্যেই একটা খাহে---এ কথা প্ৰত্যক্ষদৰ্শী বৈজ্ঞানিকেরা হ্বাহ্ভূতি

বলিয়াছেন। এই খ্বের লোভও ক্রিয়াশীলতার প্ররোচনা দেয় অর্থাৎ প্রয়োজনের তাগিদ যেমন মানুষকে সক্রিয় করে, ক্রিয়াজনিত পুর্থও তেমনি মানুষকে সক্রিয় করে।

ক্রিয়াশীলতার প্ররোচক ছুই রক্মের উদ্বীপকের ক্থা বলিলাম। যখন কোন কারণ বশত: সুখের লোভে মাসুষ সাড়া দেয় না তথন স্বস্তিই একমাত্র লক্ষ্য হয় অর্থাৎ প্রয়োজনের তাড়না হইতে নিষ্কৃতি পাইলেই আমরা নিক্রিয় হইয়া পড়ি। ইহা স্বাভাবিকতার লক্ষণ নয়, ব্যাধির পরিচায়ক। এই ব্যাধি ছুরারোগ্য কিন্তু অধ্যবসায়ের সঙ্গে চিকিৎসা করিলেও আরোগ্য অসম্ভব এমন নয়। সুধ যখন ক্রিয়াশীলভার উদ্বীপক হয় সে অবস্থাই মান্ত্রের পক্ষে আদর্শরূপে কাম্য। প্রত্যেক ক্রিয়াতেই সুখ আছে বলিয়াছি, এমন কি যে ক্রিয়া মাসুধের বিনাশকর তাহাতেও সুধাহুভব সম্ভব। অর্থাৎ উদাহরণস্বরূপ বলা যাইতে পারে মাত্রুষ যদি নিজের দেহে নিজে অব্রাধাত করে তাহা হইলেও অবস্থা বিশেষে প্রধান্ত্রত তাহার পক্ষে সম্ভব। বাশুবিক অনেকেই লক্ষ্য করিয়া থাকিতে পারেন এমন অনেক পর্য্যটক সন্ন্যাসী আছেন বাহারা নিজ দেহে ক্ষত উৎপাদন করিয়া আনন্দ পান। এখানে অবশ্ত ক্ষতটা আনন্দ-षाञ्चक नञ्ज, क्रज উৎপাদনের ক্রিয়াটাই আনক্ষের কারণ। ক্ষতটা আসলে কপ্তপ্রদ, কিন্তু তাঁখাদের কাছে ক্ষত উৎপাদনের ক্রিয়াতে যে সুখ তার জাকর্ষণ ক্ষতক্ষনিত কষ্টকেও অতিক্রম করে। উদাহরণটা চুড়ান্ত বরণের, সাধারণ ক্ষেত্রে এতটা দেখা যায় না, তাহা ছাড়া এই সব মৰ্বকামীরা মোটেই স্বাভাবিক নহেন কেননা সকল প্রকার ক্রিয়াতে ইহারা খুধ পান না কেবল এক জাতীয় ক্রিয়াতেই সুখ পান। আদর্শ অবস্থায় সকল প্রকার ক্রিয়াতেই সুখ পাওয়া সম্ভব--দানেও খুৰ, এছণেও খুৰ, ধাইতেও খুৰ ধাওয়াইতেও খুৰ, আঘাত করিতেও হুখ, আহত হইতেও হুখ।

পুণত যদি মানুষের পূণ্তর লক্ষ্য হয় আমরা কেন নিম্বাইতর বন্তিকে আমাদের লক্ষ্য করিলাম ? তাহার কারণ
আমাদের কইভীতি ও ক্লৈব্য। প্রতিবেশের বৈচিত্র্য বশতঃ
স্থাপের আশার আমরা যে সমন্ত ক্রিরার প্রার্থত হই তাহাদের
কোন কোনটার অন্তানিহিত কটের সম্ভাবনাও কিছু আছে।
এখন আমরা যদি এই কটের ভয়ে পুণ প্রাপ্তির চেটা ছাড়িয়া
দিই তবে তাহা আমাদের হঃখভীতি। এই হঃখভীতি আনবিভার মানুষ মাত্রেরই আছে। যতক্ষণ তাহা সাধারণ গভীর
মধ্যে থাকে ততক্ষণ তাহা সাভাবিক। যখন সাধারণ গভীর
অতিক্রম করে তথন মানুষের স্বাভাবিক ক্রিয়াকলাণ বাধা
পার এবং তাহা চিন্তার কারণ। আবার যখন এই হঃখভীতি

মাছ্ৰের অজ্ঞাতসারে তাহার বুদ্ধি পর্যন্ত বিকল করিয়া দের তথ্য তাহার নাম ফ্লৈব্য। এই অবহা অতি আশ্বাক্তনক এবং-ইহার পরিণাম সম্পূর্ণ বিনাশ।

যদি এই বিপদ ছইতে উদ্ধার চাই তবে স্বস্তির পরিবর্তের প্রথকেই লক্ষা করিতে ছইবে। ক্লৈব্য না গেলে এ লক্ষা লাভ করা সন্থব নয়। হঃশভীতি নাগেলে ক্লৈব্য যাওয়া সন্থব নয়। হঃশভীতি নাগেলে ক্লৈব্য যাওয়া সন্থব নয়। হঃশভীতি মাথ্যের ক্লাগত রভি নয় হহা সংস্কারলকা। এই বিষময় সংস্কার ক্রানা ছারা অভিক্রম করা সন্থব। এই প্রথময় সংস্কার ক্রানা ছারা অভিক্রম করা সন্থব। এই প্রথময় কৃষ্টের সন্থাবনা প্রায়েও তাহা করিতে ক্রানিছা হইলেও অনিছে। চাপিয়া রাবিয়া কাক্ষ করিতে হুইবে— ইহাপ্রথম সোপান। অনিছেঃ সত্ত্বেও কাক্ষ করিতে ক্রিতে সেই কাজের মধ্যে ওপোপলাকি চেষ্টা করা—ইহা

ছিতীর সোপান। এক মনে যে কোন কাৰই করা যার তাহার মধ্যে একটা আনন্দ পাওরা যার। এই আনন্দ চর্চার ভারা বাচান সম্ভব।

পরিশেষে বক্ষরা আমরা যদি নিজিয়তা বর্জন করিয়া যে কার আমাদের মঙ্গলকারক মনে করি তাছার যত্তুকু সপ্তবা, হাং। যত অল্পই হটক না কেন, করিয়া যাই তবে নিক্ষর এই ক্ষাকর অবস্থা হটতে উদ্ধার পাইব। যদি অনিচ্ছা সত্তেও কাজে নানিয়া কাজের মধ্যে ছঃবের উপাদান যতটা আছে তাছাকে উপেক্ষা করি এবং স্থবের উপাদান যতটা আছে তাছা লাপ্ত চিত্তে গ্রহণ করি, হবে নিক্ষর অচিরেই আমরা প্রতিকূল ভাগাকে বংশ আনিতে সমর্থ হটব। হিন্দুর স্বতাও এই কথাই বলে না, ছঃপে কতেই লক্ষ্মেই না হটয়া, ফলাক্ষলে সমর্থ রি

প্রশাস্ত মহাসাগরের আদিম অধিবাসী

প্রীব্রজেক্সচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

এক কেটি তিশ লক্ষ্য বর্গ মাইল পরিবিলিপ্ট প্রশান্ত মহাসাগরের অগনিত দীপসমূহ লইয়া সান্তাজ্যবাদীদের কলহের
অন্ত নাই। মনোরম নারিকেল ক্ষ্ণ পরিবেটিত এই সকল
দীপের ভাষ্ণা প্রাঞ্জিক সম্পদ সকলেরই দীরির বস্ত।
অন্তেলিয়া ছাড়া এত দিন প্রশান্ত মহাসাগরে মার্কিন মুক্তরাট্র
ইংলও, স্পেন, ফালে, পর্তুগাল এবং স্থাপানের অনিবর্গতা
ছিল। স্থাপান ১৯৪৫ সালে এই অঞ্চল হইতে অপসত হট্যাতে
এবং মার্কিন মুক্তরাট্র ছাড়া অভাতদের ভাগাবিপ্রায়ন্ত

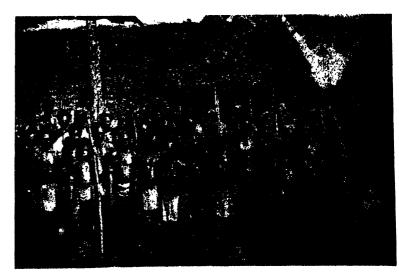
অসম্ভব নহে। মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র অবশ্য ক্রমশঃই কাঁকিয়া বসিতেছে।

প্রশাস্ত মহাসাগরের অংবিদ্ধারের কাহিনী অনুধাবন করিলে দেখিতে পাওয়া যায় যে, সর্বপ্রথম পড়ু ক্ষরাই ইহার বুকে ঘুরিয়া বেড়াইতেছে। ১৫১১ ঐপ্রান্তে পর্ত্ত ক্ষরেরা বেড়াইতেছে। ১৫১১ ঐপ্রেল পর্ত্ত ক্ষরেরা তথাকি এটনিয়ো ডি'এক ভারতবর্ষ ও ক্রমনেশ হুইয়া পূর্বাভারতীয় ধীপপুঞ্জে গিয়া উপস্থিত হন এবং তথায় পর্ত্ত ক্ষর পতাকা তথালেন করেন। এই কাহিনী ইউরোপে রাপ্র হুইলে অঞ্চার্ত ইউরোপীয় নাবিকগণও ঐ অঞ্চলে গমনকরিতে আরম্ভ করেন। আমেরিকার কথা তথানও ভালভাবে সভাকগতের গোচরীভুত হয় নাই। যোড়শ শতাকীর প্রারম্ভের মধ্যেই প্রশাস্ত মহাসাগরের যাবতীয় ধীপ

মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র ও ইউরোপীয় রাইসমূহের মধ্যে ভাগাভাগি হইয়া গেল। সেই সামাজাবাদী কলহ ও বার্থপরতার কাহিনী ভাষাদের বতুমান স্বালোচা বিষয়ের অস্তর্ভুক্ত নহে।

ধোচন শতাকীতে উট্রোপীয়েরা প্রথম বিশ্বতভাবে জ সকল দ্বীপে তথা ভূসদান করিতে থাকে। তংপুর্বে শত শত বংসব আলোও সভা নাগমিত ভারতের সঙ্গে প্রশান্ত মহাল সাগরীর অনেক দ্বীপের প্রাগানোগ ভিল।

কিন্তু তাহারও পূর্বের হাহার: প্রথম ঐ সকল দ্বীপে বাস



লংসাকে সঞ্জিত গুরাম খীপের এক দল আদিম অধিবাসী



সাতী জুক ধীপের একজন অধিবাসী। পাশ্চান্ত্য সভ্যতার সংস্পর্শে আসিয়া পাইপ টানিতে শিধিয়াছে

করিত সেই আদিবাসীদের সম্বন্ধে এবন আমরা আলোচনা করিব।

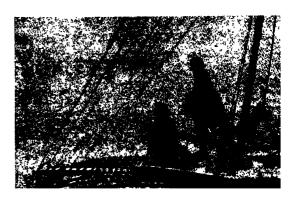
ঐ সকল আদিয় অধিবাসীর বীরত্বের কাহিনী পাঠ করিয়া আমরা বিদ্যিত না হট্যা পারি না। বর্ত্তমানে উন্নত বৈজ্ঞানিক মুগে পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ নাবিকেরাও প্রশান্ত মহাসাগর পাড়ি দিতে ইতন্তত: করিয়া থাকে। কিছু বহু সহস্র বংসর পৃর্বের ঐ সকল অস্থ্যত লোক কাঠের একধানি



আছিল অধিবাসীবের একজন সর্বার

ভেলামাত্র সংল করিয়া প্রশান্ত মহাসাগরে হাজার হাজার মাইল কি করিয়া যে খুরিয়া বেড়াইত ভাহা ভাবিলে বিশ্বিত হুইতে হয়।

বত দূর জানা যার প্রাকৈতিহাসিক জালে কৃষ্ণর, বর্মাকার, মাধার মেষের লোমের মত কৃষ্ণিত কেল, চেপ্টা নাক এবং পুরু ওঠবিলিপ্ট নিগ্রোজাতির একটি লাখা আব্রিকা হইতে আরব, ইরাণ ও বেপ্চিয়ানের উপকৃল বরিয়া ভারতবর্বে আসিয়াছিল। ইহারা প্রথম প্রথম ভারতের কোনো কোনো জঙ্গলে উপনিবিপ্ট হয় এবং ক্রমে দ্বীপময় ভারতের জানো কোনো জঙ্গলে উপনিবিপ্ট হয় এবং ক্রমে দ্বীপময় ভারতে ছড়াইয়া পড়ে। ইহাদের উৎসাহ ছিল অপরিসীম, উদ্পম ছিল অটুট। ক্রমে ক্রমে ইহারা নিউ গিনিতে গিয়া হাজির হয় এবং তথা হইতে মেলাননিমা,পলিনেলিয়া এবং মাইক্রোনেলিয়া দ্বীপপুঞ্জে গিয়া বসতি ছাপন করে। নৃতত্ত্বিদেরা ইহাদিগকেট প্রশাস্ত মহাসাগরের

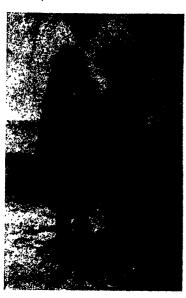


বংশশ্বারা নিশ্মিত এক প্রকার নৌক।। পালের সঙ্গে সংযোজিত রক্ষ্গুলি বিদ্নাৎ-বাহী তারের মত দেখাইতেছে

আদিম অধিবাসী বলিয়া মনে করিয়া থাকেন। সামাজ্যবাদী বেত জাতিদের ফুপায় এই আদিম অধিবাসীয়া আজ লোপ পাইতে বসিয়াছে। অট্রেলিয়ার মত একট মহাদেশে বেতালেয়া সংখ্যায় মায় ৭০ লক্ষ। কিন্তু পাছে ফুঞালদের অর্লের সংখ্যায় মায় ৭০ লক্ষ। কিন্তু পাছে ফুঞালদের অর্লের বিতসভ্যতা ধ্বংস হইয়া যায় এই ভয়ে অট্রেলিয়া হইতে আদিম অধিবাসীদের প্রায় উচ্ছেদ সাবন করা হইয়াছে। প্রশাভ মহাসাগরের দ্বীপসমূহে এবনও কিছু কিছু আদিম অধিবাসী আছে। তাহাদের কথাই আমরা বলিব।

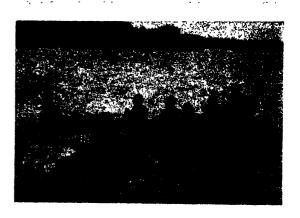
প্রশান্ত মহাসাগরের দ্বীপগুলিকে কতকগুলি অঞ্চলে বিভক্ত করা হইরাছে। আদিম অধিবাসীরা প্রধানতঃ (১) মেলা-নেশিরা অর্থাং কৃষ্ণকার দ্বীপ্রাসী; (২) পলিনেশিরা অর্থাং বছদীপের অধিবাসী এবং (৩) মাইক্রোনেশিরা অর্থাং ক্রু ক্রু দ্বীপের অধিবাসী। উপরোক্ত এক একট অঞ্চলে বহু-সংখ্যক দ্বীপ রহিরাছে। তবংধ্য মেলানেশিরার উল্লেখযোগ্য দ্বীপ হইতেছে নিউসিনি, নিউ আর্ব্যন্ত, কিন্তি, সলোমন এবং সান্টাক্ত্র ; পলিনেশিরার—নিউনিল্যাত, হাওরাই, তাহিটি এবং মাকু ইস দ্বীপপুঞ্জ; আর মাইকোনেশিয়ার—
মেরিয়ানা, গুয়াম, মার্শাল, গিলবার্ট এবং কেরোলীন দ্বীপপুঞ্জ।
ইহা ছাড়া প্রশান্ত মহাসাগরের মালরেশিয়া অকলে অর্বাং
ফিলিপাইন, যবদীপ, বোণিরো—এক ক্যার পূর্ব-ভারতীর
দ্বীপপুঞ্জেও কিছু কিছু আদিম অধিবাসী আছে। সমগ্র প্রশান্ত
মহাসাগরে এইনও দশ লক্ষ আদিম অধিবাসী বাস করে।

প্রথমতঃ এই সকল আদিম অধিবাসী বাতন্ত্রা বজার রাধিরা তাহাদের নিজ নিজ অঞ্চলে বসবাস করিত। কিছ ক্রমে ক্রমে তাহারা বিভিন্ন দলের মধ্যে বিবাহ প্রভৃতি সামাজিক সম্পর্ক স্থাপন করিল। কলে আদিম অধিবাসীদের সহজাত কুসংকারগুলি অনেকটা দূর হইরা গেল। ইউরোপীর শক্তিসমূহ গোড়ায় এই সকল আদিম অধিবাসীকে 'আগদ্বালাই' বলিরা ভাবিরাছিল। কিছ পরে তাহারা লক্ষ্য করিল যে, আধুনি চ শিক্ষার শিক্ষিত করিয়া ভূলিলে এই



মার্শাল বীপপুঞ্জের আদিম জাতীরা ছুইট বালিকা সকল আদিম অবিবাসীর হারা নিজেদের স্বার্থসিদ্ধির সহারতা হুইতে পারে। আমেরিকাহাসীদের কার্যা এই দিক দিয়া বুবই প্রাশংসনীর। তাহাদেরই চেপ্তার হাওয়াই দ্বীপপুঞ্জের আদিম অবিবাসীরা আধুনিক মানদতে অনেকটা উন্নতিলাভ করিয়াছে।

থে সকল আদিম অধিবাসী এখনও আধুনিক কেতাধুরন্ত হয় নাই তাহাদের আচার-বাবহার অনেকটা আমাদের দেশের পাহাড়িয়া কাতিদের মত। ইহাদের মধ্যে অসংখ্য গোঞ্জর পরিচয় পাওয়া যায়। প্রত্যেক গোঞ্জর লোকদের এক একজন করিয়া সর্ভার থাকে। এই সর্ভারেই হইতেছে তাহাদের রাজা, শাসক, পুরোহিত—সব কিছু। এই সর্ভারের নির্দেশই তাহাদের নিকট বেদবাকা। মাধ্যে মাধ্যে বিভিন্ন দলের মধ্যে



টাহিটীর করেকজন আদিম অধিবাসী কাঠের ভেলার সাহাযো ছন্তর সমুদ্র লব্দন করিতেছে সংঘর্ব বাধিয়া উঠে। তথন ইহা খণ্ডযুদ্ধে পরিণত হয়। তীর বস্থুক, বল্লম ও বর্ণা এই যুদ্ধের প্রধান অন্ত্র।

আদিম অধিবাসীরা সাধারণতঃ দ্বীপের অরণ্য অঞ্চলেই বাস করিয়া থাকে। অফলেবনজাত নারিকেল, কলা এবং নানাবিধ ফল ইছাদের প্রধান খাতা। পশুপক্ষী শিকার করিয়া কাঁচা মাংসও ইছারা খাইয়া থাকে।

আদিম অধিবাসীরা ধুবই সঞ্চীত এবং নৃতাপ্রিয়। ইছাদের ধারা প্রস্কৃত বিভিন্ন ধরণের বাছ্যস্কু আছে।

ইহাদের বিবাহপ্রথা বিচিত্র। শ্রী সাধারণতঃ ইহাদের নিকট অস্থাবর সম্পত্তির মত গণ্য হয়। কোন কোন শ্রেণীর আদিম অধিবাসীর মধ্যে সংহাদরা ভগ্নীকে বিবাহ করিবার রীতি প্রচলিত আছে।

আদিম অধিবাসীদের ধারা অন্ত্যত ধর্মের কোনরূপ সংজ্ঞা দেওয়া ধ্বট শক্ত। অরণা অঞ্চলে এবং সম্ভ্রুতীরে বাস করে বলিয়া ইহারা অহরহট নানাবিধ প্রাকৃতিক বৈচিত্রা লক্ষ্য করিয়া থাকে। ইহাদের প্রত্যোকটার মধ্যেই অপদেবতার অভিত্র কল্পনা করিয়া তাহারা ইহাদের উপাসনা করিয়া থাকে।



व्यख्यबद्धतः द्वा क्रिन्न कृतिया अध्ययन नाचा स्टेशाटक



মনোরম পাঞ্ডিক সৌন্ধা বেষ্টাত কেলোলীন দ্বীপপুঞ্জের আদিম অধিবাসীদের একটি গ্রাম

প্রশাস্ত মহাসাগরের তথা পৃথিবীর এই আদিয় অধিবাসী-দের ভাষা, আচার-ব্যবহার, জীবন্যাপনপ্রগালী প্রভৃতি বিষয়ক তথা সংগ্রহের জন্ত মার্কিগ-যুক্তরাষ্ট্র বর্তমানে স্বিশেষ যত্নবান। এইজন্ত ইহাদিগকে টকাইয়া রাগিবার জন্ম তাহাদের হেষ্টারও অন্ত নাই। কিন্তু এই ১৮৪। অনেকটা মৃত্যুকালে হ্রিনাম শ্রবণ ক্রাইবার মৃত্য প্রথম সাঞ্জ্য প্রতিষ্ঠা

কনিবার জন্ম যাছাদের ধ্বংস করা ছইয়াছিল এখন সংমাজ্য রক্ষা করিবার প্রয়োজনে তাছাদের ভাক পড়িয়াছে। যাহারা একদা ছিল প্রাণশক্তিতে উচ্ছণ, বন্তপশুর মত তাড়িত হওয়ার কলেই আন্ধ তাহারা নির্দ্ধীব। কাব্দেই সামাজাবাদীদের আহ্বানে যথোচিত সাড়া পাওয়া যাইতেছে না।

পদ্মানদীর চরে!

ঞ্জীপিনাকীরঞ্জন কর্ম্মকার

পদ্ম নদী খাটের পারে।
উঠছে টাদ অন্ধকারে।
তারই যাবে জাগলো মনে।
ছোট স্থতি ফুলের বনে।
টাদের হাসি গাছপালাতে।
কক্ককিলো জোগংসারাতে।
জাগতে জোয়ার কড়ের টানে।
ভাইনির খুর্নি গানে।

আব্ছা স্থান তেপান্তরে।
বাউড়ী হাওয়া নৃত্য করে
চলনা রে ঐ নিগন্তরে।
গাইছে পানী বালুর চরে।
স্থানোকের কর্ণা বারা।
অন্তরে দেয় পুলক সাড়া।

স্বরাজের সাধনা

🗃 অনাথবন্ধু দত্ত

আমরা ইংরেক্সের হাতছাড়া কতকটা হইলেও এখনও পূর্ণ-বরাজ পাই নাই। দেশের বড় বড় নেতারা বলেন আমরা পূর্ণ স্বরাজের দ্বারদেশে উপস্থিত হইয়াছি। বামপন্থী নেতাগণ বলিয়া পাকেন যে, স্থাজ এখনও বহু দূরে--এখনও জন-গণের হাতে রাষ্ট্র জ্বাসে নাই, প্রকৃত গণতন্ত্র প্রতিষ্ঠিত হয় নাই। তবে ইংরেজের পরিবর্ত্তে দেশবাসীদের হাতে যে ক্ষতা অংসিয়াছে তাহাতে আর সন্দেহ নাই। *অব*শ্<u>ঠ</u> যে ভাবে ক্ষমতা হন্তান্ত্রিত হইয়াছে তাহাতে বড় রক্ষের একটা ওলট্পালট্ হয় নাই। স্বর্থাৎকোন স্বহৎ বিপ্লবের ভিতর নিয়া আমর। সরাজ লাভ করি নাই। क्षत्राभी विश्वदव (১१৮৯) व। कम विश्लार्य (১৯১৭) याका इत्रेग्नाहिल आम्हान তেমন কিছুই হয় ন!ই। এজত হুংগ করিয়া লাভ নাই। যদি কোন ধ্বংসমূলক বিপ্লব বাতীতই আম্বা আমাদের রাষ্ট্রিক, সামাৰিক ও আৰ্থিক কাঠামো ঢালিয়া সাৰিতে পারি তাহাতে ইষ্ট ছাড়া কোন অনিষ্টের সম্ভাবনা নাই।

ইংরেজ কেবল আমাদের তাড়া খাইয়াই এ দেশ ছাড়িয়া গিয়াছে এরূপ আত্মপ্রসাদ অনেকের মনে জাগিলেও ইছা সম্পূর্ণ সভা নহে। ত্রিটিশ সাম্রাজ্যবাদের পতন বহু কারণে হটয়াছে। আমাদের সাধীনতা আদেশলন অবভা টছার একটি হেতু। আপাত দৃষ্টতে ব্রিটশ ভারত ত্যাগ করিয়া গিয়াছে मत्न इटेरल ७ देश धतिया लटेरल जुल ४टेर्न एव टेर्र रखन শাসনভার পরিত্যাগের সঙ্গে সঙ্গেই পুর্বেকার সমস্ভ অমঞ্জ দুর খইয়া গিয়াছে। পোজা কথায়, ইংরেজ ভারত ছাচিলেও এদেশে যে সকল সমস্তার সৃষ্টি করিয়াছে অথবা ইংরেজের আমলে যে সকল সমস্তার উদ্ধর হইয়াছিল সেওলির কিছুমাত্র সমাধান হয় নাই। অর্ণাৎ আমাদের উপরেই সকল সমস্তার সমাধানের ভার পভিয়াছে। এই সঙ্গটমর মহুর্তে বাঁহার। রাষ্ট্রের পরিচালক হইরাভেন তাঁহাদের দায়িত্ব কিঞ্প ভারতের ইছা হইতেই বুকা যাইবে। আৰু কাহারও পক্ষে বিশ্লম সমালোচনা করা খুবই সহক সন্দেহ নাই কিন্তু সমালোচনা অপেকা আৰু কাৰের দরকারই বেনী। যেখানে বছবিব সমস্তা বিজ্ঞমান সেগানে শুধু সমালোচনাতেই কওঁবা শেষ করা সমীচীৰ ৰছে।

অন্নাভাবের কথাই ধরা যাক। ইংরেন্ডের ভারত-শাসনের ইতিহাস ভারতে ক্রমবর্দ্ধমান দারিদ্রা ও ছঃখের ইতিহাস। আমদানী ও রপ্তানী বাণিজ্যের অন্ধ দেখাইয়া ইংরেক্ত এতকাল পৃথিবীর লোককে ভারতের ঐশ্বর্যা ও উন্নতির ভুল সংবাদ দিয়া আসিয়াছে। এই বিরাট দেশে কোটি কোটি অনাহারী ও অন্ধাহারী নরনারীর চিরদারিন্দ্রার কথা

ইংরেক্সের বিবরণীতে অতি নগণ্য স্থানই অধিকার করিয়াছে। বাহিরের চাক্তিকা খার। অন্তরের গভীর ছার ও দারিলা এই ভাবে ঢাকিয়া রাখা হইয়াছে। ফলে যখন পঁচিশ বংসরের মধ্যে পৃথিবীবাপী ছুইটি মহাযুদ্ধে ভারতের রাষ্ট্রক, সামাজিক ও আর্থিক কাঠামো ভাকিয়া পড়িল তথন ইংরেজের জার এদেশে থাকিবার উপায় রহিল না। নিভান্ত অবস্থার চাপেই ভাছাকে নিজ হ'তে গদা সাথাঞোর কর্ত্ত্তার পরিত্যাগ করিতে রাজী হইতে হইল। অবলা ইহাও ইংরেজের পক্ষে বাছাত্রী বটে। কারণ ইহাকেই ইংরেজ সাঞ্জাব্যদের আত্রবিলোপ বল। যাইতে পারে। ওলন্দাক ও ফরাসী সামাক্রবাদীর পক্ষে এরপ অাথুনিলোপ হইলে তাহাদের পক্ষেও ইছা গৌরবের হইত সন্দেহ নাই। শে দেশে একরপ অরাভাব ছিল না বলা চলে, ব্রিটিশ শাসনের ওনে সে দেশে অঞ্চাভাব কাষেয হটয়াছে। যে টুকু বাকী ছিল গ্রুমহাযুদ্ধে ভাহা পূর্ণ হটয়াছে। তথাক্ষিত সাধীনতা পাওয়ার সঙ্গে সঙ্গে ভারতকে ভিক্ষাপাত্র হাতে লইয়া পুৰিবীময় খুরিয়া বেড়াইতে হইতেছে। 'আরও খাঞ্চ উৎপাদন কর' রব সর্বাএ উঠিলেও খান্স কোথায় ? ক্ষুধা বাড়িতেছে, কিন্তু খাঞ্জের বরান্ধ কমিতেছে । বংসরে আমাদের ৭৫ ছইতে ১০০ কোটি টাকার খাল আমদানী করিতে হইবে ইহা শুনিলে আমাদের খাগু-পরিস্থিতি ব্রিতে কাহারও আর কষ্ট হইবে না। এই ভবের হাটে কি চড়া দায়ে আমরা ক্ষবার অনু ক্রয় করিনেটি নে সম্বন্ধে এই বলিলেই যথেষ্ঠ ছইবে যে কোপাও আমরা প্রচলিত দামের তিন-চার গণ বেশী না দিয়া খাখ্য সংগ্রহ করিছে পারিতেছি না। ভাষাদের দেশের বাজসঙ্কট বিশ্ব-খাজসঙ্কটের অংশমাত্র বলিয়া বিশেষজ্ঞগণ অভিমত প্রকাশ করেন। সে গ্রেট হোক, উৎপাদন বুদ্ধি করিয়া जामाभिगतक है औष्-ममुशाद मभागान कतिए इन्टिन। আন্দোলন করিয়া কুষা পাড়ান যায়, কিন্তু উৎপাদন বাড়াইয়াই প্রকৃত প্রস্তাবে পাজসঙ্গটের সমাধান হয়। অপচ আমাদের দেশে যাঁহারা চিন্তাশীল ভাঁহারা একমাত্র আন্দোলনকেই সমাধানের শ্ৰেষ্ঠ উপায় বলিয়া মনে করেন। ফলে কথা বাঙ্কিয়া চলে অ**থ**চ জভাব পাাকিয়াই যায়-- বরং বাড়ে। এইজ্খই "গ্রো যোর ফুড" আন্দোলনে যতটা অর্থ ধরচ হটল তাহার বেশীর ভাগই হুটল অপবায় এবং বাজ-সমস্তার সমাধান ছুট্ল গুবই কম। আমাদের কথা ও কাজে সামগ্রস্থ অবশু আমরা গুবই কামনা করি। কিন্তু তাহা অপেকাও বেশী দরকার কথা ক্যাইয়া কাজ বাড়ান। সাধারণতঃ যাহার। কথা বেশী বলে তাহার। कांक कम करता अकथा अकल (मर्मद अ अकल लिर्कित **भक्त्वे श्रायां का**। আমরা এতকাল ইংগেছের কা**লের**

সমালোচনা করিয়ছি। কান্ধ, অকান্ধ বা কুকান্ধ ইংরেজ করিয়াছে বা আমাদের মধোকার ভাড়াটিয়া লোকদারা করাইয়াছে। আমাদের এই পুরাতন অভ্যাস বেশ কিছু পাকা হইয়াছে বলিয়া আন্ধ পাবীনতার ছারপ্রান্তে বসিয়াও যতটা সমালোচক হইয়াছি কর্মা ততটা হই নাই; এবং কন্মী হই নাই বলিয়াই কর্মের কলও পাইতে দেরী হইতেছে। আন্ধ আমাদের একমাত্র লক্ষ্য হওয়া উচিত—কান্ধ। কথা বলিবেন, মাধা ধাটাইবেন মাত্র নেতৃত্বানীয় লোকেয়া—যাহাদের সংখ্যা পুরই কম হওয়া প্রয়োজন। গুরু অপেক্ষা চেলার সংখ্যা বাড়িয়া গিয়া যে সমজার উদ্ভব হইয়াছে তাহার সমাধান করা স্বাত্রে প্রয়োজন।

তার পর বন্ত্র-সমস্তা। হিসাবমত কাপড় ব্যবহার করিতে ছইবে কারণ এখানেও জপ্রাচ্যা। যে দেশে বস্তের উৎপাদন প্রচুর নছে সে দেশে সমস্থার সমাধান এরূপ ভাবেই করিতে হয় নতুবা বিভ্রণালী ব্যক্তীত অপরকে নগ্ন রাখিবার ব্যবস্থা কায়েম হইয়া বসে। আমাদের দেশে যে পরিমাণ স্থতার ও কাপড়ের কল আছে তাহার সংখ্যা এবং হাতে চালিত তাতেরও একটা হিসাব অনেকেরই জানা আছে। সব-খলিতে ক'জ করিলেও আমানের অভাব মিটে না। এ ক্ষেত্রেও উৎপাদন বাড়াইতে হইবে। দেশের লোকের ক্ষা দূর করিলেই চলিবে না, তাহাদের বঞ্জাব দুর করিতে ২ইবে। আমরা যদি সভাতাভিমানী হই তবে আমাদের সকল 'অভাবকে' জয় করিতে হইবে। সভাতার অভিযান হওয়া উচিত অভাব ৰুয়ে, কেবলমাত্ৰ অভাব স্কুনে नट । किन्छ वज्ञ-भश्चात मश्रावान भश्क नट । विटम्स इटेट कलकथा श्रानाहेए इंटेल शहर दक्षानी-वानिकार श्रासन. কিন্তু বংসরে ৭৫ হইতে ১০০ কোটি টাকার পাঞ্চ আম্দানী করিতে ২টলে আমাদের পেরূপ সচ্ছলতা কোণার। যদি এতগুলি টাকা খাল্পের জন্ম বিদেশে না খরচ ছইত তবে ঐ অর্থ দারা আমরা কলকজা আমদানী করিয়া বিরাট বস্ত্র-শিল ও অভাভ শিলের পত্তন ও উন্নতি করিয়া দেশের ছ:ব দুর ও শ্রীরদ্ধি সাধন করিতে পারিতাম। কাবে কাবেই থাছোং-পাদন-প্রচেষ্টা জোর চালাইয়া ঘাইতে হইবে এবং সঙ্গে সঙ্গে যত দুর সম্ভব এই অপুবিধার মধ্যে কিছু কিছু কলকজা আমদানী করিয়া শিল্পে: ছতি করিতে হইবে। অবস্থ এই সঙ্গে দেশের কুদ্ৰ কুদ্ৰ গৃহশিল্প--যাহা এখন পৰ্যান্ত বাঁড়িয়া আছে, তাহারও উন্নতি করিতে হইবে এবং সেগুলি যাহাতে দেশে পুনরুজীবিত হয় এরূপ কর্মপন্থ। গ্রহণ করিতে হইবে। সমস্তাটা পুর সহজ নহে। পাশ্চান্তা দেশে বড় বড় ধনতান্ত্রিক শিল্পের চাপে ছোট ছোট কুটারশিল্প ধ্বংস হইয়া গিয়াছে। আমরা কিন্ধপে আবার উভয়কে রক্ষা করিয়া জাতীয় জীবনে উভয়কে খাপ খাওয়াইয়া পরস্পরের সহায়করূপে দাড় করাইয় রাখিব ইছা খুবই একট ৰুটিল প্ৰশ্ন। গাছীৰীর অৰ্থনীতির সহিত বর্তমান হুগতের

অর্থনীতির সামঞ্জ বিধান সহক তো নহেই, বরং বেশ কিছু কটিল। আমাদের দেশের চিন্তালীল কননায়কেরা মনে করেন বড় বড় শিল্পগুলিকে রাষ্ট্রের কর্তৃত্বাধীনে ও নিয়ন্ত্রণে রাখিয়া শোষণের হাত হইতে কনগণকে যেমন রক্ষা করিতে হইবে সেইরূপ ক্টার-শিল্পের সম্প্রসারণ হারা জনগণের পারি-বারিক ও আর্থিক জীবনের পুনর্গঠন করিতে পারিলেই সমস্তার সমাধান সম্ভব। কৃষি ও শিল্পের পুনর্গঠন আছু মৃতন সমাজ-জীবনের প্রধান সমস্তা। ইংরেজের সামাজ্যিক শোষণের অন্তরালে যে বৈরাচারস্কাক ব্যবহা বা অব্যবহা এত দিন ভারতের জাতীর জীবনে প্রবল শোতে প্রবাহিত হইতেছিল আছু তাহার পরিসমাপ্তি করিয়া মৃতন জীবন-গঙ্গা বহাইতে হইবে। এই মুক্ত মন্দাকিনীর পুণা সলিলে স্পান করিয়া ভারতের জনগণকে স্বাধীন ভারতের মাসুষ হিসাবে মৃতন ভাবে জীবনযান্ত্রা স্বরুক করিতে হইবে।

আমাদের শিক্ষা-সমস্থাও বুবই কটিল। যুক্তরাষ্ট্র ইংলও প্রভৃতি স্বাধীন দেশে পুরাতন ধরণের শিক্ষা অচল হইয়া পড়িরাছে এবং দিন দিন এবিষয়ে নৃতন নৃতন গবেষণা ছারা নব নব আলোকপাত করা হইতেছে। আমাদের দেশের শিক্ষা এতকাল ইংরেশ্বের পুরাতন ও পরিত্যক্ত পদ্ধতির অন্ধ অকুকরণ মাত্র ছিল। ইছার উপর আবার ইংরেকী ভাষা শিকার বাহন হওয়ার দরুন এত দিন মুষ্ট্রমেয় দেশবাসীর কিছ কিছ জানলাভ হইলেও দেশের কোট কোট নরনারী অঞ্জানতার অৱকারে পাকিতে বাধ্য হইয়াছে। এই বিভাতীয় শিক্ষা সমাকে মৃতন কাতিভেদের স্ষষ্ট করিয়া কাতীয় খীবনকে খণ্ডিত করিয়াছে। ভাজ পুরাতন শিক্ষার রঙীন চশমা খুলিয়া কেলিতে হইবে তবেই আমরা দেশের প্রকৃত স্বরূপ দেখিতে পাইব। এখন সকলেই স্বীকার করিতেছেন--দেশীয় ভাষার মাধ্যমে যাবতীয় শিক্ষা হওয়া প্রয়োকন। আৰু সরকারী দপ্তরে দেশীয় ভাষার কদর বাড়িয়াছে। আৰু বক্তৃতার ভাষা, পুস্তকের ভাষা---দেশীয় ভাষা। আৰু ইহার প্রয়োজন দেশ-বাসীর এবং দেশের, ইংরেজের নহে। ভাবিয়া আক্র্যান্তিত হইতে হয় যে এই দেশের লোক হইয়াও এতদিন আমরা ইংরেকের চোধেই দেশের চেহারা দেশিয়াছি। ইংরেকের স্বার্থের মাপকাঠিতে নিঙ্গেদর প্রয়োজনের করিয়াছি এবং যেখানেই বটুকা বাবিয়াছে অমনি ইংরেজ-শুরুর বাবছা মানিয়া লইয়া নিজেদের মুকলকে ব্যাহত আৰু সাধীনতার দ্বারে উপনীত হইয়াও, আমাদের মধ্যে যিনি যতটা বেশী ইংরেজী শেঁষা তিনি নিকেকে ততটা অসহায় মনে করিতেছেন। তাই মাৰে মাৰে শোনা যায় ইংরেজী ছাড়া, ইংরেজ ছাড়া এটা ওটা কিন্ধপে হইবে। ইঁহারা তুলিয়া যান যে ইংরেজ চিরকাল এদেশে থাকিবে ইহা বিধাতার বিধান নছে। কাজেই এখন অতীতের মত পরের মন্তিকের সাহায্যে চিম্বা

করিবা লাভ মাই । আমেরিকার স্বাধীনতাপ্রাপ্ত নিগ্রো দাসদের মত নিজেদের অক্ষম মনে করিবারও কোন বুক্তিযুক্ত কারণ নাই । কারণ নিপ্রোরা থেতাকের আতুক্ল্যে স্বাধীন স্টতে পারিরাছিল আর ভারতবাসী নিজের ক্ষর্গত অধিকার লাভ করিতে সমর্থ হট্যাছে ।

সাস্থা-সমস্থাও আমাদের জাতীয় জীবনের অসতম প্রধান সমস্তা। ইহার স্থাধানের উপরে জাতীয় কর্মক্ষ্মতা ও ক্রমোন্ত অনেকটা নির্ভর করে। শরীরকে গড়িয়া তোলা যেমন দরকার, মনকে গঠন করাও তেখনই আবশ্রক। শিক্ষার অভাবেই আমাদের দেশবাসী দেশের বৃহৎ সার্থ সম্বন্ধে সচেতন নতে। দৈনন্দিন জীবনকে আরও স্কুডাবে পরিচালিত করিতেও শিক্ষার বিশেষ আবহাকত। আছে। শিক্ষায়ারা মাত্রধ ঘর্ষন নিজেকে প্রাকৃত মাত্রষ বলিয়া বুরিতে পারিবে, মুম্বাড়ের মুর্যাদা ততই বৃদ্ধি পাইবে এবং তথন মানুষ খীয় অধিকারকে মুপ্রতিষ্ঠিত করিবার ভ্রুত স্বাবলম্বী হইবে । ইংরেভ কেবল সম্পত্তি হরণ করিয়া আমাদিগকে নিঃস্ব করে নাই. অশিকাও কশিকার ছারা আমাদের মানসিক ও নৈতিক শক্তিও অনেকটা বিনষ্ট করিয়। দিয়া গিয়াছে। অবশ্র ভারতের প্রতিভা নানা অমুবিধা ও কুটচক্রের মধ্যেও নিজের শাখত সাধনা অস্ত্রান রাখিতে পারিয়াছিল বলিয়াই আৰু সে আবার পথিবীর জাতিসমহের মধ্যে স্থান লাভ করিতে সক্ষম হইয়াছে। এটপানেই ভারত তাহার অমর আত্মার এবং মরণজ্যী সাধনার প্রমাণ দিয়াছে। এই সাধনার পূর্ণতা আসিবে বিরাটভাবে निकारिखात धाता कनगंगरक छान-निकारनत ठकीय श्रव् করিয়া। শিক্ষাই ভাল চাষী, ভাল কারিগর, ভাল শিক্ষক, ভাল বৈজ্ঞানিক, ভাল শ্রমিক, ভাল নাবিক, ভাল বৈমানিক, ভাল চিকিৎসক এক কথায় সব কিছু উৎকৃষ্ট গভিয়া ভূলিবে। এইজন্ম স্বাস্থ্য-সমস্থা ও শিক্ষা-সমস্থা অঞ্চাঞ্চিভাবে মুক্ত। এবং ছইয়ের সহিত আবার জাতির কর্মক্ষমতা অচ্ছেদ্যভাবে গ্রথিত।

সরল কথার বাবীন ভারতে আমরা সর্বাদ্ধীণ উন্নতি চাই।
এই উন্নতি হইবে সার্ব্বজনীন। কোন শ্রেমী বা সম্প্রদায়
বিশেষের উন্নতি আমাদের কাম্য নহে। আমাদের বিখাস
ব্যক্তি ও সমষ্টির উন্নতি একমাত্র খাধীন দেশের পক্ষেই সম্ভব।
এইকট্ট আমরা বাবীনতা চাহিয়াছিলাম। আন্ধ এই
খাধীনতাকে সার্ব্বক করিতে হইলে এই নবলক শক্তিকে আর্থিক
উৎপাদন বৃদ্ধির কাকে লাগাইতে হইবে। ইহাকে ব্যাহত
করিলে চলিবে না। কেহ কেহ বলিবেন খাধীনতা মৃষ্টিমেয়
লোকের হাতে পড়িয়াছে, ইহাকে জনগণের হাতে দিতে
হইবে। এই মৃষ্টিমেয় লোক জনগণের প্রকৃত প্রতিনিধি কিনা
ইহাই বিবেচা। কোন দেশেই বিরাট জনগণ রাষ্ট্র পরিচালন
করে না, তাহাদের প্রতিনিধিরা করিয়া থাকেন। যত দিন
প্রতিনিধিরণ দেশের বার্ধে রাষ্ট্র পরিচালন করেন ও জনগণের

আছাভাত্তন থাকেন তত দিনই তাঁহার। রাই পরিচালনের অবিকারী অঞ্গা নহে।

আমাদের দেশে কংশ্রেস বর্তমানে কেল্পে ও প্রদেশসমূহে রাষ্ট্র চালনা করিতেছেন। দেশে অভাভ দলও রহিরাছেন কিছু রাপ্টের উপর ভাহাদের কর্তৃত্বাধিকার নাই অগচ সকলেই জনগণের প্রতিনিধি বলিয়া নিজেদের দাবি করিয়া থাকেন। গত নির্বাচনে কংগ্রেসই বিপুলসংখকে দেশবাসীর সমর্থন লাভ করিয়াছিলেন এবং এইজন্তই ইংরেজ নিজেদের প্রতিশ্রুতি অসুষায়ী তাহাদের উপরেই ভারতের শাসনের দায়িত্ব হুঙ্ভাগুরিত করিয়াছে। পূর্বেই বলা হুইয়াছে ইংরেজ হাতে নদল করিয়াছে কিছু কোন সমস্থারই সমাধান করিয়া যায় নাই। সমাধানের ভার প্রিয়াছে বহুমান রাই-পরিচালকগণের উপরেশ অবশু এই সকল সমস্থার সমাধান ইংরেজর প্রক্ষে সম্ভব ছিল না! খাধীন ভারত তাহার নিজের সমস্থার সমাধান করিবে ইহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। তবে সন্থার বিরাটত্বের কথা ভাবিলে ইহা সময়সাপেক স্বীকার করিতেই হুইনে।

अवस्थिर विभाशि मर्कारियक! उंदक्षे काकादा क्रमा দিয়াছে অন্ন ও বন্ত্ৰ-সমস্থা। অবস্থা অনুসমস্থা বন্ত্ৰসমস্থা হইতেও গুরুতর। কারণ বধের অপ্রাচ্থা ২ইলেও বরং ভারতের মত গ্রীমপ্রধান দেশে কিছুকাল বাঁচিয়া পাকা সম্ভব কিছ বাভাভাবে মহুগুমাত্রেরই মুড়া নিশ্চিত। সুতরাং সম্ভার সমাধান একমাত্র উৎপাদন বৃদ্ধিতেই। এখন প্রশ্ন ২ইতেত্ত না থাইয়া, না পরিয়া, রোগে ভুগিয়া কিরুপে আমর। খাড়া-শভের ও বর্গের উৎপাদনর্মন করিব। এই প্রশ্ন লট্যাই বর্তুমানে দেশের খাগ্র ও বন্ধোৎপাদন ক্ষেত্রে নানা ভৌগীর মধ্যে মন ক্ষাক্ষিও সময় সময় সংখাত চলিতেছে: এক দল বলিতেছেন খাত্ম ও বস্ত্রাভাবের অন্তত্ম কারণ দেশে এখনও भूँ कियामी थानश्वात श्रीठलन । हेइ 'त करलहें अक मल लाक विख्याली आत अधिकाश्य गतीय। अवश्र मुक्तियानी अधार ছোট-বড়র তফাং থাকিবেই---এক্ড সমাকতান্ত্রিক নীতি দ্বারা পুঁজিপতিদের নিকট হটতে অর্থ-সম্পদ আহরণ করিয়া স্মাজে সুষ্ঠুঙাবে বণ্টনের বাবস্থা করা হয়। এক বাবস্থা হইতে অঞ ব্যবস্থায় যাইতে হইলে কিছু সময়ের প্রয়োজন। হিংসা এবং বিপ্লব ছারাও পরিবর্তন আনা চলে, কিন্তু তাহাতে সমাক্রমঞ্জা বিপর্যান্ত হইয়া এরূপ সম্ভাসমূহের উদ্ভব হয় যে তাহাতে অনেক সময়ই জাতির কর্মক্ষমতার ও গঠনমূলক কার্যোর বস্ত অপচয় হয়। ইহাতে ধ্বংসের কার্যা ব্যাপকভাবে হয়, কারণ কায়েমী স্বার্থকে হঠাৎ ধ্বংস করিতে গেলে সেও বেপরে!য়া ছইয়া বিজ্ঞোহ ঘোষণা করে এবং ইহাতে এরূপ এক অবস্থার **স্ট্র হয় যে সাময়িক ভাবে গঠনমূলক কার্যোর পরিবটে ধ্রুগ্র**-बूलक कार्यारे छिलटल शांदक । अन्यत्मा यथन ১৯১१ भटनत বিজেত্বে পর রাষ্ট্রনায়কগণ ভূম্যবিকারী 'কুলাক'-দের উচ্চেদ ক্ষাতে চাহিয়াছিলেন তখন এরূপ এক অবস্থার উত্তব হইয়াছিল

এবং ইহার ফলয়য়প বহু গৃহপালিত পশুর বিনাশ সাধিত
হইরাছিল, শভোংপাদনেও তথন প্রভূত ক্ষতি হইরাছিল। একট
লেনিন সাময়িকভাবে এই শূতন ব্যবস্থা রহিত করিয়া দিরাছিলেন এবং ক্রমে ক্রমে কুলাকগণের সম্পত্তি ও ভূমি জাতীর
সম্পত্তিতে পরিণত করিয়াছিলেন। আমাদের রাষ্ট্রের কর্ণবারগণও সীকার করিয়া লইরাছেন যে ক্রমিদারীপ্রথা লোপ
করিয়া কৃষককে ক্রমির মালিক করিতে হইবে। বড় বড় শিল্প
ভাতির কর্তৃথাবীন হইবে। বছং বছং পুঁজীদারী কারবারকে
রাষ্ট্রের কলাণে বেশী করিয়া কর দিতে হইবে। এই সকল ও
অন্যান্য সমাজ কল্যাণমূলক ও ক্রমিত্রকর পরিক্রমনা যাহাতে
সহক্তে এবং স্কুভাবে কার্য্যে পরিণত হয় সেক্ড দেশের
নেতাগণ মালিক, প্রমিক ও ক্রমণের নিক্ট সাহায়্য ভিক্ষা
করিয়াছিলেন। কারণ বর্ত্তমান সঞ্চীময় মুহুর্ভে জাতির শক্তিকে
অপচয় হইতে রক্ষা করিতে হইবে যাহাতে আমাদের অর ও
বল্প সমস্কার অচিরে সমাবান হয়।

প্ৰায়ই জনা যায় এখানে ওখানে ধৰ্মঘট ছইতেছে। वर्डभारन रव क्रकिन कलिएडर्स्स अवर अवगामित भूना मिन मिन যেরপ বাড়িতেছে তাহাতে লোকের পক্ষে বৈষ্য হারান বুব অস্বাভাবিক নহে। কিন্তু কেবল ধর্মঘটই আমাদের অর্থনৈতিক সমস্থার সমাধানের একমাত্র পত্ন) নহে। আমাদের সকল রোগের ঐ একই দাওয়াই বাঁহার৷ ব্যবস্থা করেন তাঁহার৷ ঠিক রোগ ধরিতে পারেন নাই, স্বতরাং স্থচিকিংসকের গৌরবের অধিকারী নছেন। বরুন রুধকের। রীতিমত অন্নবর্ম পাইতেছে লা বলিখা যদি চাষের সময় ধর্মাণ্ট করে তাহা হইলে কি অন্ন বন্ধ বাড়িবে না তাহাদের ভাগে বেশী পঢ়িবে। এইরূপ वर्षाचर्छेत कल इहेर्स चार्छाएशाम्रत्न दावा खरीए थामा-श्रीम । ফল আরও অন্নাভাব। ব্যােংপাদনকারী ও অন্যান্য উৎপাদন-কারীর পক্ষেত্ত ঐ একই কথা। ঐ উৎপাদনরদ্ধি বন্ধ করিয়া নিজেদের ভাগ বাড়াইব—ইহার মধ্যে যেটুকু যুক্তি আছে তাহ। এই যে, পুँकीमादित छात्र कमादेव-- अना युक्ति नारे। किन्न শেষ পর্যায় উৎপাদন বাছিত ছইলে সকলেরই ভাগে কম পড়িবে ইছা নিশ্চিত। উৎপাদন ক্যাইয়া সকলের ভাগ বাড়াইব ইহা কোন যুক্তির কথা নয়, রাগের কথা। তবে এ কথা ঠিক যেখানে শ্রমিক ছর্দ্দাগ্রন্থ এবং জন্নবপ্তহীন সেখানে উৎপাদন মুঠভাবে হইতে পারে না। উৎপাদনর্দ্ধি সমাজের মদলের জনা, নিশেষভাবে কোন শ্রেণীবিশেষের সমঃভবিরোধী অতিরিক্ত খার্থের জন্য নহে। পুঁজিপতিদের

দেখা উচিত— যত দূর সম্ভব শ্রমিককেও স্থ সবল স্থী রাখা আর এই কার্য্যে অবহেল। করিলে রাষ্ট্রের কর্ত্তর্য তাহার বিহিত করা। এজন্য বর্তমানে শ্রমিক-মালিকে হল্ম উপস্থিত হুইলে আইনের সাহায্যে সরকার নিরপেক্ষ বিচারক হারা উহার মীয়াংসা করিয়া ,দন এবং বর্ম্মণট এভাইবার ব্যবহা করেন। নিরপেক্ষ বিচারকের নির্দেশমত যাহাতে বিরোধের মীয়াংসা হয় এবং উভয় পক্ষ ভদ্ম্যায়ী কার্য্য করে সরকারের ভাহাও দেখা প্রয়োজন।

বর্তমান সঞ্চল্পক অবস্থায় শ্রমিকগণকে দেশের ভবিন্ধতের দিকে চাহিন্না কোনরূপে উৎপাদন বাহিত করা উচিত নছে। ধনিকগণেরও দেশের মঞ্চলোর দিকে চাহিন্না যত দূর সম্ভব শ্রমিকগণের মুখ-খাচ্ছলা রিছর চেষ্টা করা উচিত। কারণ পরস্পরের সহযোগিতার উপরেই দেশের আথিক মঞ্চল নির্ভর করিবে। ভবিশ্বতে আমাদের সমাজে ধনিকপ্রেণী যদি আদে থাকে তবে দেশ ও দেশবাসীর সেবকরূপেই থাকিবে, দেশের আর্থকে বাহিত করিয়া বা দেশবাসীকে পীড়ন করিয়া কোন ধনিকশ্রেণীই সমাজে থাকিতে পারিবে না। সমাজতন্তার গতি অব্যাহত ভাবে সমাজ ও রাষ্ট্রে চলিয়াছে; ইহাকে বীরে ধীরে পথ ছাড়িয়া দিতে হইবে নতুবা প্রবল বিপ্লবের ভিতর দিয়া ইহা পথ করিয়া লইবে, কেছ ইহাকে রোধ করিতে পারিবেন।

এইজনাই এখন রাইপরিচালক, এবং শ্রমিক-নেতাদের দায়িত খুবই বেশী। কুলা দূর করিতে ঘাইয়া আহার্যা নষ্ট করা চলিবে না, বস্ত্রান্ডাব দূর করিতে গিয়া কারখানার কাঞা এল করিলে চলিবে না এবং উৎপাদনের ক্ষেত্রসমূহে কাক প্রাণপন চেষ্টায় চালু রাখিতে হইবে আর এই ব্যাপারে দেশের জ্ব-গণকে সহাদয়তার ও দৃচতার সহিত সাহায্য করিতে হইবে। কেবল হজুগে মাতিয়া সন্তা বাহবা লইলে চলিবে না। কুল্দেল একনায়কত্বের অধীনে কঠোরতার চরম পরীক্ষা দিয়া মহাতঃখের মধ্যেই তাহার লক্ষ্যে পৌছিয়াছিল-ভাষাদের দেশের পদ্ধা বিভিন্ন হটলেও লক্ষ্য এক। এই মহৎ কার্য্যে 'দেশের ও দেশবাসীর সর্বশক্তি নিয়োগের প্রয়োজন। বাহিরের শত্রু ও ভিতরের ব্রুহতা কাটাইয়া উঠিবার একমাত্র উপায় অবিচলিতভাবে নিফ নিজ কাজ করিয়া যাওয়া। দেশের সমুদ্ধির সঙ্গে সঙ্গেই খামরা যে যাহার কড়াগণ্ডা বুরিয়া পাইতে থাকিব, কারন আমরা এরপ স্বাধীন রাষ্ট্রের অংশীদার যেখানে, শোধন-বৃদ্ধিত শাসন কায়েম করাই আদুর্শ।

আজ--আগামী কাল

শ্রীরামপদ মুখোপাধাায়

٠.

এগিরে গেলে কেরা যার না…। নদীর স্রোভ সামনে চলে— দিন চলে যায় সামনে-জার সব ঘটনার গতিও সোজা। মাস্থ্যের বয়স—শৈশব থেকে কৈশোর—কৈশোর পেরিয়ে যৌবন—তার পর বার্দ্ধক্য– সেও সময়ের শ্রোতে সামনে চলছে ভেসে। সেরবর্ত্তন ভাসে দেহে সরিবর্ত্তিত হয় মন। উনিশ-শো বিয়াব্লিশ জার উনিশ-শো ছ'চল্লিশ এক নর। সেদিনকার জীপস দৌত্য নিয়ে ভারতে এসেছিলেন—ব্যর্থ হয়ে কিরে গিয়েছিলেন। স-চার্চ্চিল টোরিগোষ্ঠ আৰু ক্মতার শিশর থেকে নেমে পড়েছেন—শ্রমিক গবর্ণমেন্ট সেধানে সমাসীন। আৰও ক্ৰীপস এসেছেন দৌত্য নিমে-তবু উনিশ-শো বিয়াল্লিশের পটভূমিকায় --- কতকগুলি সীমাবৰ ক্ষমতা প্রদানের সর্গু নিমে যিনি এসেছিলেন—সে ব্যক্তির সঙ্গে এ ব্যক্তির অনেকথানি তফাং। 'ভারত ছাড়' এই স্লোগানের অন্তৰ্নিহিত শক্তি উনিশ-শে৷ বিশ্লাল্লিশে গণ-অন্ত্যুৰানে আগষ্ট-বিপ্লবের মধ্যে সার্থকভার পথ বুঁজেছিল। নেতাহীন সে বিপ্লব বন্দুকের গুলিতে বারুযান-বাহিত মেসিনগানের মৃত্যু-বীক বর্বণে গ্রাম ধ্বংসের লীলায়—পাইকারী করিমানার আবর্ত্তে কোপায় মিলিয়ে গিয়েছিল। বড় উঠলে সমুদ্রের কল্প চেউ---কুলে এসে সগর্জনে আছড়ে পড়ে—আবার ফিরে যায় সমুদ্রের গর্ভে। কিরে যায় বলেই কি সে লুপ্ত হয়ে যায় ? তবু ... এই পরিবেশে যুদ্ধোত্তর শোণিত-ক্ষরিত অবসন্ন পৃথিবীতে স্বস্থি-বাচনের প্রয়াস দেখা যাচেছ। যাদের মুঠি আল্গা হয়ে পড়েছে—তাদের থেকে যা কিছু পার ছড়িয়ে ছিটিয়ে দাও— যুদ্দত হতসর্বস্থ রাইগুলির দিকে। যারা পরাধীন তাদের শোনাও শান্তির ললিতবানী। মুদ্ধ ভাল নয়---মুদ্ধ রাষ্ট্রকে করে ধ্বংস, মাত্র্যকে করে নীতিহীন--শক্তিহীন। বিখ-মৈত্রীর বাণী নিষেই এসেছেন মন্ত্রী-মিশন—এশিয়ার পুণ্য-ক্ষেত্রে মানব-মহিমার জয়গান খোষিত হচ্ছে। আজিকার পট-ভূমিকার মুছোত্তর পরিকল্পনার মধ্যে নিজ নিজ নিরাপভার ব্যবস্থা না করে নিলে পরমাণু-শক্তি তোমাকে ক্যা করবে না। কালের শ্রেতি সামনে বয়ে চলেছে। ক্যাসিবাদের অবসানে—ভিমক্রেসির কাঁবে কাঁব মেলাতে এত দ্বিধা, এত সন্দেহ কেন ৷ সুপারিশ না হলে যেমন চাকরি মেলে না---ভেমনি মুব কেরালে মিলবে না বাধীনতা। পিছনে ভাকিও না--হাত বাভিও না--সামনে যা পাছ তাই নাও ছু'হাত ভরে। অঞ্চলি কিংবা মুঠিতে ভরে—বিনা রক্তপাতে—বিনা বিপ্লবে আরাম কেদারার ভরে চুক্রট টানতে টানতে যদি পেরে যাও এ জিনিয--পৃথিবীয় ইতিহাসে--সে কি অভিনৰ বলে সোনার অক্তরে কোদা পাকবে না ?

এই পর্যান্ত লিবে প্রশান্ত থামলে। ও লেখা মিটিতে পঞা চলবে না। রলমকে পটপরিবর্ত্তন প্রক্র হরেছে। তাই ব'লে অল্বল-পলার সততা নিয়ে গদ্গদ্ কৃতজ্ঞতা প্রকাশ চলবে না। এত দর ক্যাক্ষির পেছনে বণিক-মনোর্ন্তির বেলা—কি ভাই হয়ে ওঠে নি ? নতুন পরিছিতিতে সাম্রাজ্যবাদ ভিত্তি গৃচ করতে চাইছে—চতুঃখাধীনতাকে আপাতত ভাষায় কীর্ত্তন করতে কৃতি কি।

বাইরে গোলমাল হচ্ছে—কারা যেন আন্দোলন করছে। কলকাতা শহরটাই কোলাহলে ভরা।

হপ্দাপ করে সিছিতে পারের শব্দ শোনা গেল। চারু, অতীন আরও অনেকে আসছে বুবি। লেখাটা সে ভাড়াভাড়ি ভাষার পকেটে পুরলো।

পরা বারান্দায় এল--বরে চুকল না।

বিশিত প্রশাস্থ প্রশ্ন করলে, কে ?

বাইরে আহ্ন।—বাইরে আহ্ন। চার-পাঁচট কণ্ঠস্বর একসঙ্গে ধ্বনিত হ'ল।

এদের কাউকে প্রশাস্ত চেনে না। তবে এরা যে শুজার স্কল-গোত্রীয় নয়—এটা বুঝা গেল এদের উত্তেজিত হাবভাবে। এরা চায় কি ?

আপনার নাম কি ? আপনি মেরেটির কে হন ? এক সঙ্গে চার-পাচটি বর।

প্রশান্ত বললে, একে একে বিজ্ঞাসা করুন--কিছ স্থাপনারা কে স্থাগে তাই বনুন।

আমাদের পরিচয় পেলে ধ্ব ধুসি ছবে না যাছ। আর পরিচয় দিলেও চিনতে পারবে না।

ভদ্রলোকের পাড়ায় বসে গুব মজা মারছ তো। ভাবছ আইন বাঁচিয়ে চালাকি করে সুর্ত্তি করছি যখন কার কি বলবার আহে।

প্রশান্ত অভ্যানে বুবলৈ—ওরা ভঙাদের প্রতি প্রসন্ন নয়।
কৰাগুলিও ওদের ভঞ্জার সীমা হাভিন্নেছে। মনে স্থানা ভাগল—ক্রোধ হ'ল— কিন্তু এসব প্রকাশের ক্ষেত্র এ নয় ভেবে সে মুচ্বরে বলল, পরের বাভি চড়াও হবার ক্ষমতা কে দিলে ভাগনাদের ?

যেন ভীমরুলের চাকে বোঁচা পদল। স্বাই একসকে কোলাহল করে উঠলে, ইস্—খাবার রোয়াব দেব—এ্যাইসারছা লাগাব গালপাটা বসিয়ে দেব। পাদার মধ্যে বেলেলা-সিরি—এটা কি সোনাগাহি পেয়েছ যাছ।

নিক্লম্ব ক্লোধে কুলতে লাগল প্ৰশাস্থ—কোন উত্তর দিলে না।

ওরই মধ্যে বরসে প্রবীণ গোছের একজন ভিড় ঠেলে

এসিরে এসে বললে, মিডির মশ্মই আপনাকে ডাকছেন, আমুন।

প্রশান্ত বললে, কিছ এ ভাবে অভন্ত গালাগালি করছেন কেন এ রা !

সৰাই ছম্কি দিয়ে উঠতেই প্ৰবীন লোকট হাত উঠিয়ে একটা ধমক দিলে, এই—চুপ চুপ। একট কথা কয়েছ কি—
যাও নেমে যাও সিঁড়ি দিয়ে—যাও বলছি।

জ্পের প্রোতের মত হড় হড় করে সবাই নেমে গেল। নেমে তারা সহীর্ণ উঠোনে দাঁড়িয়ে কোলাহল করতে লাগল। প্রবীণ লোকট বললে, আমুন আমার সঙ্গে।

প্রশাস্ত বললে, আপনার মিন্তির মশাইকে আমি জানি না---

জানেন না! অভান্ত বিশ্বরে সে মিনিটগানেক চোধ কপালে তুলে রইল—তারপর একটু হেসে বললে, এ পাড়ার বলতে গেলে উনিই মাধা। পুলিসে কান্ত করতেন—এক একটা জেলা চড়িয়ে এসেছেন। ওঁর প্রভাপে বাবে গরুতে একঘাটে জল খেয়েছে। এখনই না হয় রিটায়ার করেছেন— তবু পুলিস কমিশনার…

প্রশান্ত অবৈর্থাকণ্ঠে বললে, কিন্তু আমি ওঁকে চিনি না— উনিও আমায় চেনেন না…

বিলক্ষণ ! তোমরা ওঁকে না চিনতে পার---কিছ ওঁর চোধ এডিয়ে কাকে পকীতে কিছু করতে পারে ন:--তা মাতৃষ তেগ মাতৃষ ! আহ্নন আহন।

প্রশান্তর ত্বা দেখা গেল না। ঘরের মধ্যে গিয়ে বসলে সে। বললে, আমার বোধ হয় আপনি ভূল করছেন—এ বাছি আমি ভাঙা নিই নি—ওঁর প্রতিবেদীও নই আমি। আমাকে উনি ভাকতেই পারেন না।

এই কথার লোকটির বৈর্যাচ্যতি ঘটল। গাঁত মুখ খিঁচিয়ে চীংকার করে উঠল সে, বটে—ইয়ারকি পেয়েছ। বাড়ি যদি তোমার নয় তো কি স্থবাদে এখানে স্থাস বলতে পার খাপু? মন্ধা দুটতে বুঝি ?

ওঁর চীংকারে নীচের লোকগুলি কলরব করে উঠল, কি হ'ল মেজদা—স্থামরা যাব কি ?

মেজদা গলা বাড়িয়ে বলল, না। প্রশান্তর পানে ফিরে বললে, সোজা আঙুলে দি ওঠে না জানি। তার ব্যবস্থাও করা আছে। বলি যাবে কি যাবে না ?

প্রশান্ত কোন উত্তর দিলে না।

মেক্সা গলা বাজিয়ে বললেন—ওহে কালীপ্দ—রায় সাহেবকে বল থে বাবু যাবেন না। তিনি যেন এর ব্যবস্থা করেন। স্থার শোন—পূলিস না আসা পর্যান্ত তোমরা পাহারা দাও—কিছু যেন সরাতে না পারে।

প্রশান্ত বিছাছেগে সোকা হয়ে দাঁড়াল। বললে—বাড়ি সার্ফ করাবেন মানে ? মানে—রার সাহেবের পেছন দিকেও ছুটো চোধ আছে। তাঁর নাকের ওপর বসে তোমরা ব্রিটশ সামাজ্যকে ধ্বংস করবার মতলব ঘাঁটবে—সেট বড় সোজা কথা নর। ওঁর নিজের একটা দায়িত্ব নেই ?

প্রশান্ত বললে, আমি যদি ওঁর সঙ্গে যাই তা হলেও বাড়ী সার্চ হবে ?

লোকটি আড়চোৰে প্ৰশান্তর পানে চেয়ে মনে মনে ছাসলে। ইা ঠিক জায়গাতেই পড়েছে আঘাতটা। সে অত্যন্ত উদাসীন ভাবে বলল—বাড়ী সার্চ্চ করা—না–করা রায় সাহেবের ইচছা। তোমার ইচছা না হয় যেও না।

এ বাড়ীর মালিক না আসা পর্যন্ত আমি কোবাও যেতে পারি না—আপনি সার্চ্চ ওয়ারেন্ট নিয়েই আসবেন।

লোকটি এই কথায় দমে গেল—কিন্তু মুগে বলল—
আছো যাছ—কুঁদের মুখে বাঁক ক জ্বন সোজা না হয় দেখা
যাক।

ওষরের জানালাটায় টক্ টক্ করে শব্দ হতেই লোকটি বললে— গাঁটি হয়ে বসে থেক না যাছ—-মেয়েরা ডাকছে ডোমাকে।

প্রশাস্ত উঠে গেল। শুভার মা উদ্বেগে আবুল হয়ে উঠেছেন— ওকে দেখেই কেঁদে কেললেন, তাই ত বাবা—কি হবে !

ভয় নেই, কিছুই হবে না। প্রশান্ত ওঁকে আখাস দিলে।
না বাবা — চুমি এঁদের জান না। আমাদের অবস্থা
খারাপ হওয়া ইন্তক ওঁরা কম গওগোল করছেন না। এপন
তো বাড়ীতে চিল পড়া বন্ধ হয়ে গেছে তবু।

বলেন কি - এরা আপনাদের প্রতিবেদী !

শুভার মা বললেন--প্রতিবেদীদের মত বন্ধুও নেই---শুক্রও নেই।

ও মশাই—বলি জমে গেলেন নাকি ? মেজদার কর্মল কণ্ঠ শোনা গেল।

শুনছ তো বাবা — আমাদের পুরুষ অভিভাবক কেউ নেই বলে—প্ররা যা বুসি তাই অপমান করে। শহরের লোক— খলো—

প্রশাস্ত বললে ---দেখি শহরের লোক বলে নয়, এক শ্রেণীর লোক আচে যারা এই ধরণের।

ভভার গলা শোনা গেল---কি চান আপনারা ? কাকে চান ? বিনা অসুমতিতে বাড়ী চুকেছেন, আইন ভানেন না ?

ভীভ মনে হ'ল—উঠোন থেকে পথের দিকে সরে গেল। সেই সঙ্গে শাসানিও কানে এল। আছো—আইন আমরাও জানি। দেখাছি—দাঁড়াও।

ভুভা গলির প্রান্ত থেকে তীক্ষ গলায় বললে—চলুন তো আপনাদের রায় সায়েবের কাছে—

टानांख वांत्रामांत्र अट्न (प्रनंदर्ग—दाक्रमा तम्हे—**উঠোনেও**

কেউ নেই। সভ্যিই কি শুভা রার সারেবের সলে বোঝাপড়া করতে গেল। এতগুলি লোকের বিরুদ্ধে ও এক। যুক্বে কি করে? যাদের ভদ্রতার বালাই নেই—তাদের কাছ থেকে ও কি-ই বা প্রত্যাশা করতে পারে। একটা বিশ্রী রক্ষের ব্যাপার না ঘটে।

ও ভাড়াভাড়ি নেমে বাড়ীর বাইরে এল।

বাইরের জনতা অভন্র ভাবে চেঁচিরে উঠল—মাণিকজোড় দেখেছিস—মাইরি !

ভঙা খাড় ফিরিয়ে বললে—তৃমি আবার কেন এলে প্রশাস্ত ?

রায় সায়েবকে দেখতে। মৃত্ব হেসে সে উত্তর দিলে।
ভাল করলে না। সংক্ষিপ্ত ক্বাব দিয়ে ভঙা হন্ হন্
করে এগিয়ে গেল।

26

বৈঠকখানা দেখে মনে হয়—রায় সাহেব ছ'হাতে উপার্জন করেছেন। যে লাইনে চাকরি করতেন, স্ব লাইনের সততাকে সাধারণে ভূলেও সত্য বলে মনে করে না অধচ সাধারণের চাটুবাদে তার বৈঠকখানা দিন রাত যে মুখারও থাকে—ক্ষমতার শিখর খেকে নেমে এলেও আৰু সে প্রমাণের অভাব হবে না। খেতাব আর চাকরী—ছইই পার্ষিব নিরাপতার মন্ত বড় সহায়, এ কথাটা সাধারণে বোঝে। তারা আরও বোঝে মরা হাতি লাখ টাকা—এ প্রবাদ বাক্যের সার্থকতা রায় সাহেবের পদমর্যাদায় নিহিত। ওঁর একটি কথা—গুরুতে বছদুরপ্রসারী।

ধাটো চৌকির ওপর ঢালা ফরাস পাতা আসর।
করেকটা তাকিয়। এদিকে ওদিকে গড়াচ্ছে—নক্সা-কাটা
ছঁকোদানে একটা ছঁকো—আর একটা ছঁকো ফিরছে—
লোকের হাতে হাতে। গড়গড়ার নলটা কখনও রায় সায়েবের
হাতে, কখনও বা তাকিয়ার ওপর—পানের ভাবরে এক ভাবর
সাজা পান আর বড় অ্যাশ-ট্রেটা ফরাসের মাঝখানে, চুরোটের
ছাইয়ে প্রায় ভর্তি হয়ে গেছে। কাপ ডিস জমতে পায় না
ফরাসের ওপর। সময় মত বেয়ারা ট্রেতে করে কাপ সাজিয়ে
নিয়ে আসে—আর চা খাওয়া হয়ে গেলে, কাপ ডিস গুছিয়ে
নিয়ে যায়।

ুসবচেরে দেখবার জিনিস হচ্ছে খরের দেওয়াল। নক্সাকাটা, সব্ধ রঙ দেওয়া দেওয়াল। কিন্তু নানান সাইজের
ছবির বাছলো, দেওয়ালটা যেন অলঙ্কারগুড়া সেকেলে
গৃহিনীর মত। রায় সায়েবের কর্ম্মণীবনের গৌরব আর
ইতিহাস বহন করছে ছবিগুলি। এগুলি দেখলে মনে হবে—
মহাবোধি হলের জাতক-কাহিনী। আল মেদভারবহল
ভিটামিন ক্যালসিয়ম পুষ্ট যে দেহখানি তাকিয়া আশ্রম করে,
মক্সলিসের মধ্যমণি-বর্মণ খরের শোভাবর্জন করছে—ছবিগুলি

ভারই পূর্ব্ধ জন্মের কাহিনীর মভই লাগে। রাজা-রাদীর ছবির
নীচের লেখা 'গড় সেড় দি কিং'। জার সম্প্রতি পশ্চিমের
দেওরালে একখানি ছবি মুক্ত হরেছে—ত্রিটিশ সাঝাল্য আশকারী চার্চিলের। শ্রমিক গবর্দ্ধেণ্টের চাপে টোরীগোজীসহ
তিনি নেগণ্ডো জবহিত হলেও—রাম সারেব আশা করেন,
সঙ্কট মুহুর্জে জাবার তাকে মঞ্চাবতরণ করতেই হবে। সব
দেশেই এমন একজন দবরদন্ত লোক সঙ্কট মুহুর্জের পরিজ্ঞাতা
হয়ে দেখা দের—বিনাশাম চ হুছুতাম্ আর কি। ক্রমকে
বছবাদ যে ক্রমতা হারিয়েও ইনি এখনও বেঁচে আছেন।

বৈঠকখানায় আগেই বহু লোক কমা হয়েছিল। ওভা আসতেই—পিছনেও রীতিমত ভিড় কমল।

ভঙা স্পষ্ট কঠে বললে, আপনিই হরিপদ মিত্র—? নমস্কার।

নমন্ধার নয়—মনে হ'ল যুক্ত কর বিচ্ছিত্র হয়ে সকোরে রায় সাহেবের ছটি গালে পড়ল। থরের মধ্যে অবঙ নিজকতা।

ভভার কণ্ঠবর দেওরাল থেকে দেওরালে প্রতিধ্বনিত হ'ল। সে বললে, শুনি আপনি লোকের অগ্রায়কে শাসন করেন, পাণীকে শান্তি দেন। জানতে পারি কি—কোন্ সাহসে পাড়ার লোকে কোন ক্ষতি বা অপরাধ না করা সন্ত্যে আমাদের ওপর অত্যাচার করেন ? একলা মেরেছেলের ওপর জুলুম করতে তাঁদের বাবে না—কি লক্ষা হয় না ?

দেওয়াল-খড়িটা টিক্ টিক্ করে শব্দ করতে লাগল শুধু— রায় সায়েব পর্যান্ত বাকাহীন বিশ্বয়ে শুভার পানে চেয়ে রইলেন।

শুণ একজন মূবকের দিকে আঙুল উঁচিয়ে বললে, ঐ লোকট কাল আমায় অভন্ত ইসারা করেছে—আমার বাড়ীর সামনে যখন তথন শিস্ দেওয়া কি সিনেমার গান গাওয়া এটাও বোৰ হয় ভয়ানক ভন্ততার অকা

রায় সাহেব এতক্ষণে গ্বলে উঠলেন। তাঁর মনে হ'ল থেয়েটি ধৃষ্ঠ—অসহ রকমের প্রগল্ভা। কথাগুলি তাঁকেই উদ্দেশ করে বলছে—আর তাঁরই ভদ্রতা নিয়ে বালোক্তিকরছে। গভীর কঠে বললেন, যারা নির্দোষী কেউ তালের কোন কথা বলতে সাহস করে না। পাড়ার এত লোক্ত রয়েছে—ভাড়াটে স্থায়ী বাসিন্দা কেউ ত তোমার মত তেড়ে এসে নালিশ করে নি আমার কাছে।

তাঁদের বাড়ীতে পুরুষ অভিভাবক আছেন তাই তাঁদের আসবার দরকার হয় নি :

না—তা নয়। পুরুষ অভিভাবক তোমারও কম নেই— কিন্তু সন্ত্রম-মর্ব্যাদা বোৰ তাঁদের আছে।

কি বললেন ? তীক্ষ কঠে ওভা প্রশ্ন করলে।

যা বলেছি—সবাই ওনেছেন। গন্তীর বরে বললেন রার সারেব। কথা হচ্ছে কি কান—তোমরা ক্যুনিষ্ট নর ? ভঙা খীৰা উন্নত করে বললে, ভাতে কি !

রার সারেব বললেন, ক্রুচনিটরা সমাজ মানে না রশ্ব মানে না, ঈশ্বর মানে না---

ভঙ্গা বললে, যে ক্ষর মান্ত্রের অর্থ সকরের নেশাকে বাভান—যে ধর্ম একজন মান্ত্রের দশজন মান্ত্রের মাধার ভোলে—সে সমাজ নিয়ে আমাদের মাধাব্যধা নেই।

কিছ আমাদের মাধাব্যথা আছে। এই সমাজের মধ্যে বসে তৃমি বা ধূদী তাই করতে পার না। রার সারেব বিচার নিশান্তির ভদিতে গড়গড়ার নলট হাতে তুলে নিলেন।

কিছ আমাদের সাধারণ নাগরিকছে বাবা দেবার কোন অধিকার আপনার নেই।

তাই নাকি ! ব্যঙ্গ ভরে রার সারেব একটু হাসলেন। সং নাগরিক হও—নিজের মর্ব্যাদা নিজে রাখতে জান—সেতা ভালই। কিছ যেখানে গাঁচ জন সং নাগরিক বাস করেন সেখানে ত্রখেল রাখবার আইন নেই…

ভঙা টীংকার করে কি বলতে যাছিল, পিছন থেকে প্রশান্ত এল এগিরে। বললে, কথা কাটাকাটি শক্তি পরীকার পথ নর। এখানে আর দাঁড়িও না।

রায় সায়েব বললেন, তুমি কে হে ? ওর আর্থীয় ?

মেক্সনা বললে ভিড়ের ভেতর থেকে, হাঁ-পরমান্ত্রীয়। বাকে বলে-হরিহর জান্ধা।

একটা হাসির টেউ ঘরের মধা খেকে বাইরে গড়িয়ে এল।
রায় সারেব বললেন, সামান্ত্রিক জনাচার বাদ দিলেও
রান্তনৈতিক জপরাধ তোমাদের গুরুতর। বাড়ী সার্চ্চ হলেই
বোকা যাবে।

আমাদের অপমান করা…

ভোষাদের আবার অপমান ৷ পথের থেরো কুকুরকে লাঠি পেটা না করলে নিকের বিপদ—কান ত !

খাবার একটা হাসির ঢেউ সন্মোরে খাহড়ে পড়ল।

সভ্যিই বাড়ীটা সার্চ হ'ল। আপন্তিকর পুন্তিকা ছুই এক- খানা পাওরা গেল—প্রশান্তর পকেট খেকে বেরুল একটু আগে
লেখা কাগকখানা। সেটা মারাত্মক প্রমাণ না হলেও প্রমাণ
ত বটে। তা ছাড়া সম্পূর্ণ অনাত্মীর যুবক অভিভাবকহীন
মেরেদের সঙ্গে বাস করলে সামান্তিক ও রাজনৈতিক ছুর্নামের
ভাষী হতে হবেই।

রার সারেবের পাশের বাড়ীতে থাকেন স্থনীতি কর—
কংগ্রেসের মাধা ধরা লোক। যদিও তাঁর সঙ্গে রার সারেবের
আদা-কাঁচকলাছাতীর সম্বদ্ধ—তবু সাক্ষ্য প্রমাণের ক্ষয়
ভাঁকেও আহ্বান করা হল।

আছুত হরে তিনি বললেন, কংগ্রেসের সঙ্গে ও পার্টির বছ দিন সম্বভ্রেফ হরেছে। উনিশ-শো বিরারিশে গণ-মুদ্ধের লামে সরকারকে সাহাব্য করেছিল ওরা। আগঠ বিরবকে পর্যান্ত থরা ক্যাসি বড়বছ বলতে বিশ্বা বোধ করে নি। কংগ্রেসকে ধ্বংস করবার করু সরকারের হাতে হাত মিলিন্ধে-ছিল যারা—ভারা কি কারণে হরোরানীর পদ থেকে সরে এল ভিনি বলতে পারেন না। কংগ্রেসের কোন শুপ্তনীতি নেই বলেই রাজনীতির চাতুরী বুরতে তিনি অক্ষম।

ভভা উত্তর দিলে, তা হলে রাজনীতি না করাই **ওঁ**র পক্ষে মদলজনক।

রায় সায়েব বললেন, দেশে এত বে বর্মবটের প্রসায়—এর বৃলে এরা।

শুভা বললে, ইা—ছুভিক্কে বেমন লক্ষ্ক লোক না বেতে পেরে কুকুর শেরালের মত পথে পথে মরে পড়ে ছিল অবচ আঙুলটি তোলে নি আক্ষও তাই হলে ভাল হয়। মুদ্দের আগেকার বাকার কিরিয়ে আত্মন না রায় সায়েব।

কিরিয়ে আনবার মালিক যেন আমরাই।

তবে কম খেরে একটু কম চর্বিব জমান দেহে—তাতেও শুটি করেক লোক বাঁচবে। একটি ছোকরা ভিড়ের মধ্য খেকে মন্তব্য করলে। হাসির উচ্চরব উঠল।

কর্ণন্ত আরক্ত হয়ে উঠল রায় সায়েবের। পুলিস আহি-সারের পানে চেয়ে বললে, আপনার কান্ত্রন—এদের—

পুলিস অফিসার রার সারেবকে একান্তে ভেকে চুপি চুপি বললেন, এত অল্প প্রমাণে ওদের অ্যারেষ্ট করা যাবে না। তা ছাড়া—আরও ফিস ফিস করে তিনি কি সব বললেন।

রার সারেব বিষণ্ণ স্থরে বললেন, যা খুঁসি করুন। তবে— ভদ্রলোকের পাড়া এটা—সবাই যাতে মান সন্ধান নিয়ে বাস করতে পারে···

শবক্ত—শবক্ত, এ ব্যবস্থা নিশ্চয়ই হবে। ওদের সতর্ক করে—শাসিয়ে হেছে দিলেন তিনি।

এই ঘটনার আর কিছু না হোক—এদের চারদিকে বাইরের পৃথিবীটার স্বরূপ ব্রুতে পারা গেল। প্রশান্ত নিজ চিত্তের দৃচতার সন্ধান পেলে। কোথা থেকে ও শক্তি পেলে অপরিমিত—লাহুনা অপমান অগ্রাহু করে ভভার পাশটতে গিরে ঘাঁডাতে পারলে ? বিধা সন্দেহে হুলছিল মন—অকমাং উংশীডনের আগুনে থাদ নিছাশিত হয়ে বাঁট সোনার জ্যোতি প্রকাশিত হ'ল। হুর্জালের পক্ষ নিয়ে অন্যায়ের প্রতিবাদ করা যোবনের ধর্ম্ব বলেই প্রশান্ত নবীন উৎসাহে সঞ্জীবিত হয়ে উঠেছিল বুঝি ?

ভিড় পাতলা হরে গেলে প্রশাস্ত দেখলে শুডার থেকে সে অনেকথানি পিছিরে পড়েছে। শুডার করেকজন বদ্ধু এসেছিল, তাদের ব্যুলীন হরে ও তর্ক করতে করতে এগিরে চলেছে। বাড়ির দিকে না গিরে ওরা ভিন্ন পথ বরলে। প্রশাস্ত ওবের অভুসরণ করবে কি ?

একট ছোকরা তার কাছে এসে বললে, স্থনীতি বাবু— আপনাকে ভাকছেন—ঐ বে—। অদূরে দাঁড়িরে ছিলেন স্থনীতি কর। ওনিকে চাইতেই তিনি হাত উঠিরে ভাকলেন তাকে। প্রশাস্ত সেই দিকে গেল।

প্রশান্তকে বেবে ভিনি বনলেন, আমার সংল একটু আসবেন—মানে আমার বাড়িতে।

প্রশান্তর ইভন্তত ভাব দেখে তিনি হেসে বললেন, ভর নেই আগনার—আমরা রায় সারেধ-ভাতীর ভীব নই— পুলিসের সঙ্গে বিশেষ সম্পর্কও রাখি না।

প্রশাস্ত বললে, পুলিসের সঙ্গে সম্পর্ক রাবলেই বা ভর করব—এ আপনি ভাবছেন কেন ?

না—তাও ভাবি না। আপনাকে ওদের মাৰ্বানে কেমন মিস্কিটেড মনে হতেই ডাক্লাম।

প্রশাস্ত আর একটু হেসে বললে, চলুন—কোণার বাবেন। বাইরের ঘরে প্রশাস্তকে বসিরে স্থনীতি কর আর সকলকে বাইরে থেতে বললেন। সকলে বাইরে গেলে বললেন, চা থাবেন ?

প্রশাস্থ বললে, না—থাক এখন। খরের চারদিকে সে
কৌতৃহলী দৃষ্টি বুলিরে নিলে। তিন-রঙা পতাকা—মহাদ্মা
গানী, জবাহরলালের ছবি—বস্মোতরম্ গানের চার লাইন
তুলোর অক্ষরে কাঁচের ক্রেমে আটকানো—একটা চরকা—
একরাল তুলো—বানিকটা কাটা হুতো জভানো ররেছে
লাটাইরে—তার তকলি গোটা কতক পড়ে রয়েছে এলোমেলো তাবে। মোট কথা খরটাই এলোমেলো—বিশ্বধন।

স্থনীতি কর বললেন, আপনি কত দিন হ'ল যোগ দিয়েছেন ওদের পার্টতে ? মাপ করবেন···

প্রশাস্ত বললে, এ জতাস্ত সোজা কথা—জ্বাবও এর সোজা। বুব জন্নদিন হ'ল…

তার কথা শেষ না হতেই পুনীতি কর সোংসাহে মাথা নেড়ে বললেন, আমি তা অস্থান করেছি।

প্রশাস্ত বললে, পার্টতে যোগ দিরেছি বললে তুল বলা হবে—ওঁলের কাজ আমার ভাল লাগে···

ত্মীতি কর বললেন, আপনাদের মত দেশভক্ত র্বকদের দেশের কাজ ভাল ত লাগবেই। কিছ কংগ্রেসে যোগ না দিয়ে…

প্রশাস্ত হেসে বললে, তাতে জার ক্ষতি কি—ওঁরাও ত ক্যাপিটালিক্ষের শব্দ।

সুনীতি কর হাসলেন। কানালার ধারে উঠে গিরে গলাচা পরিকার করে চেয়ারে এসে বসলেন। বললেন, কাতিবর্দ্ধ-নির্কিলেবে কংগ্রেসই হচ্ছে একমাত্র প্রতিষ্ঠান যার পঞ্জিকে শাসকরা দীকার করেন।

প্রশান্ত বললে, তাই বা কেমন করে বলি। মুসলিম লীগকে বাদ দিয়ে তা হলে ইন্টারিম গবর্ণমেন্ট গঠিত হ'ত।

সুনীতি কর বললেন, কিছ একখাও ত এাটিলি খোষণা

করেছেন—মেজরিটর জগ্রগতি মাইনরিট বন্ধ করতে পারবে না।

প্রশাস্ত বললে, তা ছলে—কংগ্রেস যধন ১৫ই মের ভাস্ত মেনে নিলে—তথন লীগকে এর মধ্যে পুরে দেবার চেষ্টা করছেন কেন ?

ত্মনীতি কর বললেন, এই চেষ্টার মধ্যে আমরা দেবছি বিটেশ ডিপ্লম্যাসি। গানীশী বলেন—ওদের আন্তরিক ইচ্ছাক্তে বিকৃত করে ধরা সত্যাগ্রহীর নীতিতে বাধে।

আপনি কি মনে করেন ?

শ্নীতি কর বললেন, ব্যক্তিগত মনে করা-করির কোন বুলা নেই—আমাদের চেষ্টা যাতে সকল হর—সমবেত ভাবে সেই চেষ্টা করাই হ'ল ঠিক পব। একটু বেমে বললেন, ভূমি বুদ্দিমান্—একবা নিশ্চর বুবেহ গানীলী আশাবাদী। রাজনীতির ক্ষেত্রে আশাবাদ হ'ল সবচেরে দামী কবা।

স্বিধাবাদ বলতে পারেন। প্রশান্ত হাসল।

যাই হোক—এখন কথা হচ্ছে ক্ষমতা যা হাতে পাছিছ তা আদায় করে নিয়ে আরও ক্ষমতা লাভের চেটা করা উচিত নয় কি। আর তা করতে হলে—একট শক্তিশালী দল গড়া উচিত—সব শক্তিকে এক কারগায় এনে—অধাং সহযোগিতায় ভারা ক্ষমতা লাভ…

প্রশাস্ত বললে, তা হলে কোন দলকে বাদ দিলে চলবে না। মাইনরিট বলে কাউকে অপ্রাহ করে সর্বভারতীর শাসন-পরিষদ গড়া যাবে না।

কংগ্রেস ত আপোষের জন্য বছদূর এগিয়েছে। বাজারদর ক্যাক্ষিকে এগুনো বলা ঠিক নর…

স্নীতি কর বিচলিত কঠে বললেন, তা হলে—পাকিছান কারেম হোক ভারতবর্বে এটই চাইব আমরা। দিতীর অল্টার কি প্যালেটাইন গড়ে ওদের স্থোগ দেব অছিসিরির ?

প্রশাস্ত বললে, মিশরও কত দিন আগে এই শাসন-সংকার মেনে নিয়েছিল—কিছ র্টিশ সৈন্য অপসারনের কথা উঠলে জাতির নাবালকত্ব নিয়ে আছও তর্কবিতর্ক হয়। মাপ করবেন কর-মশায়—বারা আমাদের সং ছেলে দেখে ভাল চরিত্রের সার্টিকিকেট দেবেন—কিংবা সাবালক বলে বোষণা করবেন—তারা যে জীবন—মরণের স্বার্থে জভিরে আছেন এর মধ্যে। আমরা শ্ববোধ হলেও—তালের নির্ম্বাছিতা কোন দিন প্রকাশ পাবে না।

স্নীতি কর বললেন, তা হলে বলছ নানান হলে নানাম
মতে ভাগ হয়ে থাকব আমরা। আমরা বুছ করব কিছু একভার
নীতি মানব না। বলব স্বাধীনতা চাই—স্থাচ রক্ষ রক্ষ
ভাসনতন্ত্র রচনা করব। হঠাং তিনি বললেন, কংপ্রেসকে
ভাজ্যান বলে স্বীকার কর কিনা ?

कति।

তা যদি কর-হঠাৎ তিনি চেয়ার হেন্ডে প্রশান্তর সামনে

এনে ওর একধানা হাত চেপে ধরলেন; তা হলে কংগ্রেসে যোগ দিতে তোমার আপন্তি কি !

প্রশান্ত কোন কথা বললে না। থানিক নীরবে ওঁর মুখের পানে চেরে হাতথানি তার মুক্ত করে নিলে। বললে, আমাকে মেঘার করে নেবার কন্ত আপনার এই চেষ্টাকে স্নেহ বলেট মানছি—কিছ…

এর মধ্যে কিছ নেই—তুমি মাত্র জন্নদিন হ'ল এ পাড়ার যাতারাত করছ—ছন মিকে ভর করতে বলছি না—কিছ জসত্যকে দ্বুণা করবে না কেন। সব বাঁধন কাটা মানেই স্বৈরাচার নয় এ যেমন স্বীকার কর তেমনি বাঁধন না কেটেও কন্ত্রিত জাবহাওয়ার স্ক্রী করা যায় এটাও মান তো ?

প্রশান্ত কিছুই না বুবে ওঁর পানে চেয়ে রইল। এ কথা বলার তাৎপর্য্য কি ?

সুনীতি কর বললেন, ওই মেয়েটির সম্বধে জনেক কণা শুনেছি। রায় সায়েবের মত নীতিবাদীশ আমি নই—তবু শুদের সমর্থন করতে পারি নি।

মাস্থ্রের রটনা সব সময়ে সত্য হয় না।

খুনীতি কর বললেন, প্রমাণ দেওরাটা আমার পক্ষে শস্ক নর, তবে সন্মানজনক নয় বলেই তা দেব না। ওদের বাড়ির ছ্থানা বাড়ি পরে—শৈলেশ্বর বোস থাকেন—তাঁর ছেলে মন্ট্—নিজের কথায় অসঙ্গতি বুঝতে পেরে তিনি সহসা চুপ করলেন।

প্রশাস্থ উৎস্ক হ'ল থবেষ্ট। ভণ্ডা সম্বন্ধে—নিঞ্ছে সে
নিঃসংশ্বর পীড়া অন্থভন করে কেন ? একাস্ত করে পাওয়ার
মধ্যেই কি এই ঈর্বাবাদ শুকানো থাকে। পুরুষের সম্পত্তি
নারী—এই পৌরুষ বোধের উত্রতায় তার যুক্তি হয়েছে
আবিল। নারীচিত্ত কয়ের সাধনা আর কিছুই নয়—ধন
সক্ষয়ের নেশার মতই এক আদিম প্রবৃত্তি।

চেরার ছেড়ে উঠতেই তিনি বললেন, কিছু মনে করলে না তো ভাই।

প্রশাস্ত মুগ্ধ চোখে তার পানে চেরে মাধা নাড়লে। এই ।
মিষ্ট সংখাধনের পর মনে করাচ লে না কিছু। ইচ্ছে হ'ল পা
ছুরে একটি প্রণাম কানিয়ে আসে। লক্ষায় সঙ্কোচে তাও
পারলে না।

29

অন্তমনক ইয়ে পথ চলছিল প্রশাস্ত। মনের মধ্যে বিচার চলছে—কোন্টা শ্রের। উনিল-শো বিরাল্লিশের আগঠে বোষাইরে 'কুইট ইন্ডিরা' প্রভাব পাশ হবার পরমূহর্ত্তে জেলের কটক খুলে গিয়েছিল—আন্দোলন চালাবার মত বাইরেছিলেন না কেউ। গেল বার এমনি সময়ে ভার্ম্বেনী ভেলে পড়েছিল—ভাগানের বুক লক্ষ্য করে প্রতিপক্ষ ভুলেছিল শক্তি-শোল। তার পর আগবিক বোমার প্রথম পরীক্ষা হ'ল হিরো-সীমার অর্থক ধ্বংস করে—আর করেক লক্ষ্য প্রাণ আহতি

নিরে। তার পর নাগাসাকিতে হানা দিল মৃত্যুল্ত; আপান নতজাত্ব হ'ল। জগৎ থেকে জ্যাসিবাল নিঃশেষিত হ'ল। জার্মেনী হ'ল চার টুকরো—জাপান গেল আমেরিকার উদরে। বিশ্বশক্তি-পরীকার প্রথম শ্রেষ্টতে উন্নীত হ'ল মার্কিন। কংগ্রেস তখন কারা-প্রাচীরের বাইরে। দেশের মধ্যে তার শক্তি ও প্রভাব বেড়েই চলেছে দিন দিন। নির্বাচন-মুদ্ধে কংগ্রেস হ'ল জরী। তার পর ইণ্ডিরান স্থাশনাল আর্দ্মি (আই, এন, এ-র) দিল্লীর লাল কেরার বিচার হ'ল যার নারকদের। লোকচক্র সামনে থেকে উঠে গেল রহস্তের যবনিকা—দীগ্র তেজে প্রকাশিত হলেন দেশবন্দিত নেতা স্ক্রায় বসু। ছ'শো বছরের ভূলে-যাওরা-স্থর কিরে এল কঠে—অবরুষ কণ্ঠ কিরে পেল ভাষা—ব্যানের দেবতা সৃত্তিতে উঠলেন জেগে।

কংগ্রেস ঘোষণা করলেন: আমরা স্বাধীনতার দার-দেশে। সামান্ত্রবাদ এখনও তৈরি হচ্ছে শেষ আঘাত দেবার কলা। শেষ আঘাতই সেটা, কারণ এর নাভিশ্বাস হয়েছে। সকলে এক হয়ে, ঠেকাও সে আঘাত, ধ্বংস হোক দানবটা।

দানবের মায়া, সে বড় ভয়কর। রাজনীতিতে সততার স্থান কডটকু সে বিচার ইতিহাস করেছে বার বার। নৈরাক্ত-বাদ রাজনীতির অঙ্গ নয়। আঞ্জকের ত্যাগ, আগামী কালের পাওরার সঙ্গে, লাভ-ক্ষতির ক্ষের টানছে। সে হিসাব-নিকাশের জের, এক পাতা থেকে আর এক পাতার, এক যুগ থেকে আর এক যুগে, টেনে চলেছে সবাই। তার সাক্ষ্য-প্রমাণও আছে ইতিহাসে। ভারতবর্ষ স্বাধীনতার সন্ধিক্ষণে দাঁড়িয়ে, পথ বেছে নিতে ভুল করলে সে অতলে যাবে তলিয়ে। বিশ্ব-বিপ্লবের ভূমিকায় আৰু যারা প্রধান ভূমিকা গ্রহণ ক'রে, নতুন বিশ্ব রচনার স্বপ্ন দেখছেন, তাঁদের সামান্ত-তম তুলও ক্ষমা করবে না মহাকাল। এক হাতে বর্ণর আর এক হাতে বরাভয় শাস্তির আশ্বাস কানাছে। কিছ এ বরাভয় বিশ্ব-পালিনীর মাতৃপাণি-প্রস্ত নয়, এ বঞ্চ নিক্ষেপের ভয় দেখিয়ে শান্তি রক্ষার প্রয়াস-মাত্র। চতুর রাজনীভিবিদ এই শুভ মুহুর্ডেই যথাসম্ভব ক্ষমতা বাড়িয়ে নিচ্ছেন: নিরাপন্তার নামে, সাম্রাক্যের শুখলে গেঁথে কেলছেন, স্বামীধীন ভূমি-ও সমুদ্র-স্বস্থ।

ভাবতে ভাবতে চলেছিল প্রশাস্ত। মাধার উপর কথন ধনিরে এসেছে মেদ, ও টের পায় নি। বর্ধাকালের আকাশ, বিনা সতর্কতার বর্ধণ ওর রীতি। হঠাং বৃষ্টি চেপে এল। পথের ধারে বড় মত একটা গাড়ী-বারান্দার নীচের ছুটতে ছুটতে আশ্রয় নিলে, মানুষ আর পশু। বারুবেগে বৃষ্টির হাঁট বতই অপ্রসর হচেছ, মানুষ আর পশুতে ততই ক্যাট বাঁবছে।

कि मामा, त्रालात्त्र द्वीरेक्टी चात्र र'म ना ?

না—সাড়ে চার টাকা ইণ্টারিম রিলিক দেবে, এয়াড-ভূডিকেশনে কতক বিষয় যাবে। পয়লা জান্বারী থেকে মাইনে বাড়বে। তবে আর কি, সাড়ে চার টাকার, সব ছঃখ হরিপাল বাবে তো ?

আমাদের পোষ্ট্যাল খ্রাইকের ঠেলাটা ব্রবে। এ আর রেলোয়ে ইউনিয়ন নয়, রীতিমত হাংরি ব্যাচ পরিয়ে খ্রাইক নোটশ দেয়া হয়েছে।

ট্রাম কোম্পানী কি বলে ?

সে দিন মুনিভার্সিট ইন্স্টটুট হলে আমাদের মীটং হবে—কলেজ শ্বোয়ারে ছ'দলে দেখা। বুব ইন্কিলাব জিন্দাবাদ করা গেল। ওরাবললে, দাবী ছেড় না ভাই, হমকি চালাও। লাখ লাখ টাকা কামিয়ে গাঁট হয়ে বসে খাকবে কোম্পানী, ইয়ারকি আর কি !

হবে কি, রক্তারন্তি কাও।

এমনিতেই না খেতে পেয়ে মরচি, না হয়-

শুনেছ দাদা, মুসলীম লীগ মন্ত্রী মিশনের খসড়া বাতিল করে দিলে।

কাগজে বেরিয়েছে ?

দেখে! আমার কথা যদি সত্যি না ২য়----

দৃশ্—তোরা সব ক্ষ্দে সত্যপীর কিনা ! বাজিল করাই উচিত। এ, বি, সি গ্রুপ করে ভারতবর্ষকে টুকরো করে কেলতে পারলেই তো—আরও ছুশো বছর রে দাদা।

একটা পাওয়ারফুল সেন্টার—

দৃশ্—পাওয়ারকুল ! পলিটকৃস্ এ আমরা তো নাবালক রে দাদা। ওদের ব্বতে পারবি ! বলে এক একটা আইনের ভাষা ব্বতেই বড় বড় মাধা সব ঘুলিয়ে যাছে। দশ-বারে। দিন ধরে মীটিং করে তবে রেজলুক্তন পাশ করছে। আমাদের মত গোলা লোকরা কি করবে শুনি ?

বাইরে যাবার উপায় নেই—বোলা গাড়ী বারান্দার
নীচেয়—সাধারণের রাজনীতির বিতর্ক জমে উঠল। বেশিক্ষণ
চলল না রাজনীতি। মাছ, আনাজপাতি, সরষের তেল,
আপিসের মাইনে, এইসব শুরে নেমে এল বাদাস্বাদ।
প্রশান্ত গীকার করলে, এই শুরেই আলোচনা বাশুব দ্বাপ
পেরেছে। স্বাধীনতার অর্থ সাধারণে বোঝে এই মাপকাঠির
সাহাযো। যুদ্ধে ক্ষতবিক্ষত দেশগুলিতে প্রাণ ধারণের
সমস্তা এমন তীত্র হয়ে উঠেছে কি? হাজার হাজার লোককে
বেকার বানাবার আয়োজন চলেছে। তারা বলছে এ কি
সর্ব্বনাশ। এ জগতে আমাদের টিকৈ পাক্বার অধিকার
দাও। তোমাদের ক্ষত্ত আমরা সর্ব্বস্থ দিয়েছি—আর
তোমরা—

विकास धरे कांत्रराष्ट्रे क्षरण स्टाइ ।

জীবন বাঁচাবার কোন পথ ? পেটে না খেরে বিপ্লব আনা সম্ভব কি ? মানি—বেরনেটের সামনে বুক পেতে দিলাম, লাঠি চার্ক্তকে উপেকা করলাম। উত্তেজিত মুহুর্তে লোগান আউড়ে গলা ভেলে কেলে মৃত্যুর মুবোমুধি দাঁভাতে বুক এক- বারও কাঁপল না। কিছ এই মৃত্যু—! অল্ল-বঞ্চনার অভিনর
বন্ধ-বঞ্চনার নীতি অভরালে চলছে সমূদ্ধ জীবন-প্রবাহ
কোটকে মেরে গুটির অতিকায় হবার সাধনা—এর প্রতিকায়
কোথায় ? শুধু মীটং করে ইব্যাত্মক শ্লোগান আউড়ে তাল
ঠকে অত্যন্ত অসহায়ের মত পথ দিয়ে শোভা যাত্রা করে
গেনেই কি বনিকতাবাদ বিপন্ন হবে ?

একদিন শুভার সঙ্গে এই নিয়ে কিছু আলোচনা হয়েছিল।
ও বলেছিল, ছলে বলে অধবা কৌশলে—এই নীতি নিতে
ছবে। উপাৰ্ক্ষন প্ৰাণ বাঁচাবার জ্বভ করতে হবে। ব্রিটিশ
সাম্রাজ্যবাদের কাছ থেকে সাহাথ্য নিয়েছিলে তোমরা।

নিয়েছি তো। পুঁজিবাদ ধ্বংস করবার সঙ্কল্প আমাদের— শক্তি সঞ্চয়ের দরকার নেই १

কিছ নীতিবিরুদ্ধ।

আমাদের নীতি হ'ল বেঁচে থাকা ও বাঁচিয়ে রাখা। ক্ষমতা লাভ হ'ল আসল বস্তু। ভাল কথারও দাম থাকে না—ক্ষীবনের সঙ্গে যদি তার তাল না মেলে।

যথা গ

'পরদ্রবা অপহরণ করিও না'—সর্ব্বোত্তম নীতিকণা। কিছ অনাহারপ্রভের কাছে এ নীতির কোন দাম নেই।

তা বটে—আমাদের কোন নেতা সেদিন বলেছেন ক্ষার্ছ মান্থ্যকে ভগবানের নাম দিয়ে ভোলান মিছে। কিছু এই ভাবে টেচিয়ে ওদের শাসন করতে পারবে ?

শুজা হেসেছিল, ভূল বুঝো না প্রশাস্ত—স্লোগান আর কিছুই নয়, সকলকে এক করার মস্ত্র। শোভাযাত্রার অর্থও হ'ল ওই। ধনী তার সব ক্ষমতা দিয়েও এ শক্তিকে ঠেকাতে পারবে না।

আমাদের দেশে—ধনীর। এতে কৌছুক বোধ করে না কি গ

হাঁ, তাদের আশরদাতা হ'ল সামাজ্যবাদী শক্তি। গুলি-গালা রাইফেল মেসিনগান বোমারু নিমে ওদের দগু। সংশয় এই নিমে তো ?

শুৰু প্ৰাণ দিয়ে লাভ কতটুকু…

শক্তি -- শক্তি প্ৰশান্ত।

ওর হাসিতে প্রশাস্ত কৌতুক বোধ করেছিল। কিছু সে
দিন আর এই দিনে তফাং অনেকথানি। মরলা ছেঁড়া ধৃতি
কামিক পরে থালি পায়ে এক মাধা রক্ষ চুল উড়িয়ে—শিরা
আকীর্থ-শীর্থ হাতে নিশান দোলাতে দোলাতে প্রাণ বারণের
দাবি কানিয়ে টীংকার করতে করতে রাক্ষপথ দিয়ে যায় যে
সব ছল্লছাড়া ছুর্গতের দল তারা আক প্রোতের মুখে স্থাওলা
কিংবা বড়ের মুখে তুলো নয়। তারা ক্যান্তরের পাপকে
অধীকার করে আর অদৃষ্ঠ মানে না। নিক্ষের কর্মের ফল
পুরোপ্রি ভোগ করতে চায়। স্থাংলা কুকুরের মত ছুকুকরো
মাংস বা ছাভের লোভে ল্যান্ড নেড়ে ছুটে আলে না আমাদের

বিভ্কীর ছ্রোরে। হাঁ, শক্তি ওরা লাভ করবে ক্রমশ:। ওলের চীংকারে কেঁপে উঠছে প্রাসাদ-ভিত্তি—মর্শ্বর হর্ষ্যের প্রথম্ব্যাপ্রিত লন্ধীর ছলালরা। ইতিহাসের পাতার সোনার অক্ষরগুলো অল্পষ্ট হরে এল। দিন আগত ঐ।

সামনে দিয়ে একটা ছোট মত শোভাষাত্রা গেল। কোন্ ময়দাকলের না পটারির শ্রমিকরা অভিযোগ জানাছে। কুড়ি টাকা মাইনেতে এরা ছদিন আগেও মালিকের সেবা করেছে, মাগ্গি ভাতা স্বরূপ চেয়েছিল জার পাঁচটি টাকা। মালিক সাক জবাব দিয়েছে। মুছের বাজারে তার এক লাখ দশ লাবে দাঁডিয়েছে—প্রতরাং মাস্থানেক কার্থানা বন্ধ রেখে এদের দাবিকে নরম করবার আশা সে করবে না কেন। শ্রমের মূল্য শ্রমিকদের জীবন ধারণ করবার জন্ত দেওরার রীতি নেই। ওরা বেশী চীংকার করলে—কার্থানার একাংশে একটা স্বরে ডাক্তার্থানার ব্যবস্থা স্থান একটা ব্যর ডাক্তার্থানার ব্যবস্থা স্থান আক্রার্থানার ব্যবস্থা স্থান মাত্র কন্সেশনে রেশন দেওরার প্রথা চালু করা হয়।

ছিটেকোঁটা দান্দিণ্যে—আকাশ-কোডা দারিক্তা নিবারিত হয় না। প্রমিক দেখার ধর্মবটের হমকি—ধনিক কাগজে বার করে তার দান্দিণ্যের স্থবিস্থত বিবরণ। জনসাধারণ নামক এক ভৃতীর পক্ষের সহাস্থভৃত্তি আকর্ষণ করবার জন্ত এই প্রচেপ্তা। জনসাধারণকে ভয় করবার হেতৃ—ওদের কাছ থেকে তিল কুড়িরে এরা তালে পরিণত হয় পাছে। মুনাকার নেশা যার লেগেছে—তার মৌতাতটুকু সে ছাড়বেকেন। শক্ত মুঠো খুলবার জন্ত হাতৃত্বির বা পাড়বে দমাহম—। এ মুছে কেছ নহে উন।

পথে দেখা হয়ে গেল পুরোনো এক বছুর সলে। জলে ছণ ছণ করতে করতে কোধার চলেছ হে? বছু জিজাসা করলে।

কোধার জানে না সে। কলকাতার নতুন রূপ হ'চোধ জরে দেবতে দেবতে সে চলেছে। সিনেমার গেটে তেমন ডিজ নেই, লোকানের পণ্যে নেই বৈচিত্র্য—ক্রেতার চোবে নেই ক্রয়ের কৌতৃহল। রুছোত্তর পৃথিবীর শান্তি—বভিবচন উচ্চারণ করলেই আসে না।

বছু ওর পথ রোধ করলে। চল—চা থেরে আসি।
চলতে চলতে বললে, কোন আপিসে কান্ধ করিস? রিটেঞ্চ— মেন্টের কাঁচির পাশ থেঁসে আছিস তো ?

ৰা---ওসৰ বালাই নেই।

সাবাস— । ধর্মবটের পাকে পড়বিনে তা হলে। ধর্মবট ধারাপ কিসে ? ও জিজেসা করলে।

 ধর্মদানীদের সঙ্গে পথে পথে হলা কলে বেড়াই নি—ওদের ইউনিরনে এক পরসা ঠেকাই নি—

थमांच रनल, ब्रांक मिन।

না—তাও নর। তবু প্রমাণ করে বিরেছি—আনী টাকাতেও আমার দিবিয় বলে—, কলে হ'শো টাকা মাইনে বেড়ে গেল। এটা সত্যি কথা বলার পুরস্কার—আরে ওদিকে কোধার ?

এই দিকেই যাব।

চা ধাবিনে ?

প্রশান্ত ততক্ষণে অনেকথানি এগিয়ে গেছে।

হাঁ, এরাও আছে। বেশী মাত্রার হরত আছে। এরা সর্বাদাই সুযোগ বুঁজছে—নিজেকে সংসারে সুপ্রতিষ্ঠিত করবার সুযোগ। এদেরও নেশা কমেছে। ক্ষমতা–মদের কিংবা ধন–মদের নেশা।

আর একজন বন্ধুকে মনে পড়ল। গেল বার কি যেন এক প্রতিবাদ-সভার যেতে লাল ঝাঞা ধরে অপরিমিত চীংকার করতে করতে শহর প্রদক্ষিণ করেছিল সে। তার পর সে হ'ল এক ইউনিয়নের নেতা। তার পরে নিলে রেল আশিসে চাকরি। সেখানকার ইউনিয়নে দাঁভাল পাঙা হয়ে। এক সপ্তাহ আগে দেখা হয়েছে তার সঙ্গে। পারে চকচকে ভূভো, পোষাক-পরিছেল কন্টোলে কেনা নয়, রীতিমত ক্রট-পরা নেকটাই আঁটা, হাটে বগলে, মুখে প্রকাণ্ড বর্দ্ধা, হাডে ইংরেজি কাগজ একখানা। নড করে বলেছিল, একটা ভঙ্ক সংবাদ দিছিং ভিণার্টমেন্টে আ্যাসিট্যান্ট স্থারিন্টেন্ডেন্ট অবক্ত অকিসিরেট করছি চ'—চা খাবি।

চা খাবার প্রবৃত্তি হয় নি প্রশাস্তর, বন্ধু এতকাল যা করেছে—তা নদীপারের আয়োজন মাত্র। শ্রমিকরা যা চার, ও চেয়েছিল তাই। ভাল খাকা, ভাল খাওরা, পোযাক-পরিছেদে সাছল্য জীবনের চারিপাশে প্রাচুর্ব্য। কিছ—প্রসৃত্তির সীমা টানছে কে? সে অস্তুত টানতে পারে নি। সাধারণকে ডিঙিরে ও তাই অসাধারণ হতে পেরেছে।

হাঁ এরাও আছে। যাত্রাপথের অনেক বাধা—লক্ষ্যে
পৌছানোর বিলভিত পদক্ষেপ। চলতে চলতে হাতছানি
দিয়ে ডাকে প্রাসাদ, মোটর তার সুধাসনের গর্ভে কৃটরে
তোলে যাত্রা–বিরতির স্থা। এরা ডিয় প্রোতে ডিয় দিকে
ভেসে গেলে কোন ক্ষতি ছিল না—তবে সাধারণ প্রমিককেক্ষে
প্রচন্ত আঘাত দিরে অবিশ্বাস আর সন্দেহকে থাড়া করে যাত্রা–
পথ বিদ্বিত করে—এই তো ভরের কথা।

অবশেষে পুরাতন মেসে কিরে এল সে। বছুরা অবাক হরে বললে, এ ক'দিন ছিলে কোশার হে ?

প্রশান্ত বললে, রারা না হরে থাকে তো ঠাকুরকে বল---বাব এ বেলা ৷ শোবার জারগা পাব তো ?

সুৰীল বললে, সেন্ধন্তে ভাবতে হবে না—আমার সীঠেই কুলিরে যাবে'ৰন। একবানা চিঠি এসেছে—ক'দিন আগে। চিঠিখানা পড়ে প্রশান্ত হাসলে ! সুশীল জিজাসা করলে, খবর কি ?

চাকরি ৷ বাব৷ মাসখানেক স্বাসে তার এক বন্ধুকে অনুরোধ করেছিলেন তার জবাব ৷ ইনি একটা বাাঞ্চের ম্যানেজিং ডিরেক্টার, আর এনামেলের কারখানা খুলেছেন বছর চারেক হ'ল ৷

(लार्श यार्थ ! भा—पू**ँ ख**राणीश म**रक**⋯

মাইনেটা বোধ হচ্ছে ভালই দেবে ! একবার ইক্টারভিট দিয়ে আসি !

এখনই ? ভড়গু :

যুদ্ধে কমলা বাদের কুপা করেছেন, ইনি তাঁদের অক্ততম । প্রকাণ্ড প্রাসাদ, গেটে রাইফেলধারী গুর্থা প্রহরী, বাইরের একতলা ধরগুলোতে আপিস বসেছে, টাইপ মেসিনের ধটাধট শব্দ । উদ্বিধা চাপরাসীরা কাইল বগলে, এক ধর ধেকে আর এক ধরে ছুটোছুটি করছে !

পদোচিত মহিমায় অকিসারের বাসকামরা বিরাক্ত করছে একধারে ! সুটং ্ডারের পাশে স্থান্ত ডেলভেট পর্দাটা গুটোনে। রয়েছে, চকচকে পালিশ করা কাঠের পার্টশন, পার্টশনের মাধায় কিকে নীল রডের ধোঁয়া আলক্তভরে নানা আফতিতে ভাসছে—মন্থর বায়ু মিষ্ট একটি গন্ধে নাসিকাকে করছে উতলা ! টুলে বসে চুলছিল একটা উদ্বিপরা স্থানী বয়, সে এগিয়ে এসে ভিজ্ঞাসা করলে, কাকে চাই ? কাড দিন ! কাড তো নেই, প্লিপে নাম আর পিতৃপরিচয় লিখে দিনে ! সঙ্গে সঙ্গে ডাক হ'ল !

একে অভার্থনা বলাই সঞ্চ ! বাপের বয়সী যাটোভী.
বৃদ্ধ, চেয়ার ছেড়ে উঠে এসে ওর হাত ধরে বিলাতী কারদার
বাক্নি দিয়ে আনন্দ প্রকাশ করলেন ! ওকে চেয়ারে বসিয়ে
নিজে বসলেন পাশের চেয়ারে ! চাপরাশীকে ছকুম করলেন,
চা আনতে অর্থাং টিফিন ! প্রশাস্ত অভিভূত হয়ে পড়ল !

তোমার মত উৎসাধী যুবক আমি চাই ! বিশ্বস্ত স্নেহভাজন । একটি চিরুণীর কারধানা খুলবার ইচ্ছে আছে,
অনিলকে পাঠয়েছি আমেরিকাতে । হাতে-কলমে কিছু
শিবে আসছে, আর প্লাণ্টিশ্ আপট্ট্ভেট মডেলের, ছটো
কারধানার জভেই চাই ! তার পর ভাবছি কাপড়ের কল—
অনর্গল বলে যেতে লাগলেন ! চা এল, কয়েকধানা
কেক, ভাজউইচ, অমলেট, টোঙ, মাধন এল । ভেলভেটের
পর্বাচী টেনে দিয়ে চাপরাশীটা বেরিয়ে গেল ! খেতে খেতে

তিনি ভবিশ্বং কল্পনার কথা বলে যেতে লাগলেন সোংসাহে। বাটোন্তীর্ণ বৃদ্ধ, জনার থাবা কোন প্রত্যকে স্পষ্ট নয়।

শ্বরত আটপাট প্র্ট, হয়ত কর্ম্মোৎসাহ, বনোপার্ক্তন এ সবে জনাকে ঠেকিয়ে রাখা চলে ৷ কিন্তু চেংখে খেলছে যে বিদ্যুৎ তা অনেক মুবকের দৃষ্টতে বিরল !

হুগামোহন অভাবত্রন। সংসার ভারী নয়, পেনসনের আরু সংসার চালিয়ে উদ্ভ হয়; খাওয়া-পরায় স্বাস্থা থাতে বজায় থাকে সেদিকে লক্ষা তাঁর তীক্ষা তবু ধাট তাঁকে ভিমিত করে আনছে। মেদবহুল দেহের মাংস শিথিল, চলাক্ষেরার বেগ মন্দীভূত, চোখের দৃষ্টতে ফ্লান্তি। অর্থ উপার্জনের উৎসাহুই কি মনের পর্য রসায়ন।

কেমন তোমাকে পাব তো ? স্থাপাতত এনামেল ক্যাক্টরীর চার্কটো বুকে নাও। ই:--কলকাতার বাইরে, মাইল দশেক ধূরে। ওপানেই কোয়াটার, মোটর পাকবে একশানা। যথন খুসি কলকাতায় স্থাসবে, বেড়িয়ে যাবে।

ভাজাতাজি প্যাড় থেকে একধানা কাগন্ধ টেনে নিয়ে কাউডেন পেন দিয়ে ধন্ ধন করে করেকটি অঙ্গাত করলেন ভাতে। তার পর প্যাড়সমেত গেধানা প্রশান্তের দিকে এগিয়ে দিয়ে বললেন, আপাতত এই তোমার মাইনে, প্লাস এগালাউন্স পার্টি পারসেক। কেমন, অহবিধা হবে ?

প্রশাস্ত সতা সতাই অভিভূত হ'ল। তিনশো টাকা বেতন আর নক্ ই টাকা ডিয়ারনেস আলোটজ । তা চাড়া কোয়াটার, মোটর এবং একটা গোটা ফ্যাক্টরীর দওমুঙের কর্তা। ব্যাপারটা আবৃহোসেনীয় জাতীয়। আলনাম্বারের দিবাস্থপ নয় তো ? ভান পায়ের জ্তোর ডগা দিয়ে বা পায়ের গোড়ালীতে আখাত করলে ঈষং জোরে। পেরেকওঠা ভূতোর খা খেয়ে পা'টা বৃত্তি কেটে গেল; খালা করছে।

সন্মতি জানিয়ে সে বাহরে এল। রূপালী জ্যাংসায়
নীচের রাজা চক্ চক্ করছে, গ্যাসের আলোর নীচের তারও
নিজ্য একটি রূপ আছে, অভাবিত মূহুতে সে সৌন্ধর্য স্থার
মতই চিত্তে উত্তেজনা সকার করে। সে যেন তারই জগতে
কিরে এসেছে। সাধা-সোলর্ঘো বলমল কগতে, প্রাচুর্ঘো
আর নির্ভাবনার মধ্যে। টুং টুং ঘটা বাজিয়ে বাঁ ফুটপাত
বেঁসে একখানা রিক্ষা থাছিল মন্থর গতিতে। প্রশাস্ত হাত
উঠিয়ে চীংকার করলে, এই রিক্ষা, বিক্ষা…

চালক রিশ্বা সুরিয়ে কাছে এসে বিজ্ঞাসা করলে, কাছা-পর যানে হোগা বাবুণ

মেটিয়া কলিজ কাপাশ! বলে দরদস্তর না করেই ও রিক্সায় চেপে বসলে!

विकाश्यामा वनत्न, এक स्राप्ता।

মিলে গা! বিজ্ঞান গুটানো হডেন আশ্রান্তন মাণা রেখে, আৰ-বোলা চোখে ও নিম্পৃহকঠে বদলে। ক্রমশঃ

কালীপ্রসন্ন কাব্যবিশারদ

10061-1009

শ্ৰিব্ৰজেন্দ্ৰনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

জন্ম : বংশ-পরিচয়

৯ জুন ১৮৬১ (২৮ জৈঠি ১২৬৮) তারিখে কলিকাতার সন্নিহিত ভবানীপুরে কালীপ্রসন্নের জন্ম হয়। তাঁহার পিতার নাম রাধালচক্র বন্দ্যোপাধায়। রাধালচক্রের আদি নিবাস ২৪-পরগণার অন্তর্গত ইহাপুর প্রামে। শৈশবে তিনি অগ্রজের নিকট ভবানীপুরে থাকিরা স্থানীয় মিশন-মুলে বিভাশিক্ষা করেন এবং উত্তরকালে ঐ বিভালয়েরই শিক্ষকশ্রেষ্ট হন। রাধালচক্র কালীধাটের কালীমাতার অপ্ততম সেবায়েং গিরিশ্চক্র ক্রাপাধ্যায়ের একমাত্র কপ্রা বেচামনি দেবীকে বিবাহ করেন এবং ভবানীপুরে বার্গী নির্দ্ধাণ করিয়া স্থায়ী হন। কালীপ্রসন্ন তাঁহার অপ্তম পুত্র। কালীমাতার প্রসাদে কর বিলিয়া তিনি পুত্রের নামকরণ করিয়াছিলেন—কালীপ্রসন্ন। শৈক্ষাক শিক্ষা

কালীপ্রসন্ধ লৈশবে স্থলিকা লাভ করিয়াছিলেন। ভবানীপুরের চড়কডালা বলবিভালয়ে তাঁহার লিকারন্ত হয়। কিছু
দিন পরে ইংরেজী লিকার জ্বন্ত তিনি স্থানীয় লগুন মিশনরী
সোসাইটির স্থলে প্রবিপ্ত হন। এই লিকা-প্রতিষ্ঠান হইতে
তিনি ১৮৭৬ সনে প্রবেশিকা পরীকা দিয়া প্রথম বিভাগে
উত্তীর্গ হইয়াছিলেন। কিছু দিন এক-এ পড়িবার পর
কলেজের লিকার বীতরাগ হইয়া তিনি 'সোমপ্রকাশ'-সম্পাদক
ঘারকানাথ বিভাভ্যপের নিকট কাব্য-ব্যাকরণাদি অব্যরণে
প্রবৃত্ত হন। সংস্কৃত শান্তে বুংপত্তি লাভ করিয়া তিনি বিভাভ্যপের নিকট হইতে "কাব্যবিশারদ" উপাধি লাভ করেন।

<u>সাহিত্যামুরাগ</u>

পঠছশা হঠতেই কালীপ্রসন্ন মাতৃভাষার অস্থ্য দিলেন।
১৮৭৪ সনে 'সোমপ্রকাশ'-কার্যালয় ভবানীপুরে স্থানান্তরিত
হয়; এই সময়ে কালীপ্রসন্ন পত্রিকা-সম্পাদনে বিভাভ্ষণমহালয়ের সহকারিত। করিতেন ('জয়ভ্মি' প্রাবণ ১৩০৮)।
তিনি 'সোমপ্রকাশে' কবিতাও লিখিতেন। তাঁহার প্রথম
পুত্তক—১৮৭৮ সনে প্রকাশিত 'সভ্যতা-সোপান' নামে সমাজচিত্র। গবর্ষেন্টের মতে ইহাতে রাজভক্তির অভাব স্থচিত
হঠয়াহিল ('ক্যালকাটা গেজেট,' ২৯-১-৭৯)। ইহার
প্রতিবাদে কালীপ্রসন্ন "নির্দ্ধোষীর অপরাধ (সভ্যতা-সোপান
প্রপেতার জন্ত লিখিত)" নামে যে কবিতাট 'সোমপ্রকাশে'
লিখিয়াহিলেন, তাহার করেক পংক্তি এইরপ:—

ভাবি নাই রাজকুল, এত দূর ভয়াকুল, সত্য বাক্যে রাজভুদে ভরের স্কার ! ন্ধানি নাই সত্যচিত্র
রাজনেত্রে অপবিত্র,
অসন্তোধ বৃদ্ধিকারী অজ্ঞান প্রজার।
স্বাধীন ইংরাজ মতি
বিচিত্র তাহার গতি
দেশী হওয়া বড় দোষ বৃধিলাম সার॥

সত্য বলিবারে হবে ছদরেতে ৬% ?
রাজারে কি ৬য় মম,
আহন পুঞ্বোত্তম,
তাঁর কাছে সত্য কথা বলিব নিশ্চম।
করুন মত্তকছেদ
করুন হুদম ভেদ
তাহাতে ডরিবে কেন নির্দোষ হুদয় ?
প্লীহা কেটে মক্বলে,
কত ভ্রাতা কাল জলে
ভেসে গেল, ভনেছি ত তাহার বিষয়।
সত্য যদি হয় ইহা,
আমারও ফাটুক শ্লীহা,
ভীক্ষ বাঙ্গালীর, সত্য, তথাপি আশ্রয়।
মনে জানি লোহী নই
জানি নাকো ভক্তি বই,

তবে কেন ডরিবে এ বঙ্গের তনর ?…('চিস্তাকুস্ম') এই সময়ে कालीश्रमः देखनाथ वत्नाभावादात मरन्मदर्भ আদেন। ১৮৭৯ সনে ইক্সনাথ ভবানীপুরে বাসা করেন; তিনি লিবিয়াছেন :--- "কলিকাতা হইতে ভবানীপুরে স্বামার বাসা উঠিয়া গেলে পর, ভ্ৰর গঙ্গোপাৰ্যায় ---প্রভৃতি কতকগুলি যুবক 'পঞ্চানন্দ' বাছির করিবার প্রস্তাব করিয়া আমাকে ধরিয়া বসিলেন। বোধ হয়, শ্রীযুক্ত কালীপ্রসন্ন কাব্যবিশারদপ্ত ठाँशामित मर्था अकवन विरागन। याश रुपेक, ठाँशांत्रा कांशव biलाहेरवन, शांवाहेवात ममल वावसा कतिरवन, **এहेन्न**ण शांधाम দেওয়াতে আমি লিখিতে সম্মত হইলাম" '(বঞ্চ-ভাষার लिबक')। ১৮৮० সলে खवानीशूत इंटेंटिक ১० সংখ্যা 'शकांनक' বাহির হইবার পর সাময়িক ভাবে উহার প্রচার স্থগিত থাকে। 👃 ইন্সনাথের নিকট প্রেরণা লাভ করিয়া কালীপ্রসন্ন এই সময়ে ব্যঙ্গ রচনার প্রব্রত হইয়াছিলেন। "ক্কিরটাল বাবাকী" নাম গ্ৰছৰ করিয়। তিনি 'পঞ্চানন্দে' ''বঙ্গীয় সমালোচক" নামে একট ব্যঙ্গ-কবিতা প্রকাশ করেন; উহা পুত্তিকাকারেও যুক্তিত হইয়াছিল।

১৮৮১ সনে কালীপ্রসন্ন ছল নামে আচার্যা কেশবচন্দ্রকে
কটাক্ষ করিয়া 'অবতার' নামে একথানি কুদ্র প্রহসন প্রকাশ
করেন। তাঁহার অপেক্ষাকৃত পরিণত বরসের রচনা 'মিঠেকড়া' (এপ্রিল ১৮৮৮)। ইহা রবীন্দ্রনাথের ১ম সংস্করণ
'কভি ও কোমলে'র কয়েকটি কবিতাংশের "প্যারভি"। রচনার
নিদর্শন-সরূপ ইহা হইতে কয়েক পংক্তি উদ্ধৃত করিতেছি:—

মপুরায়। মিশ্রকাফি-একভালা। (৩৪-৩৬ পঠা পড়িয়া) দারুণ দৈবের দোষে পড়িলাম "মধুরায়।" ত্ৰমধুর কথাগুলি ञ्चललिक भगाविल কড়ি কি কোমল বলি গ -- ঠিক করা হ'লো দায়। **माक्रम रेमरवंत स्मारम** পড়িলাম "মধুরায়" একে রবি তায় কবি, ভায় মধুরার ছবি তায় প্রাণ খায় খাবি বংশরী বাজে না তায়। বাৰু তোর পায়ে পড়ি বাজ রে কোমল কড়ি কচবনে গড়াগড়ি নহিলে যাইবি হায়। দারুণ দৈবের দোষে পড়িলাম "মধুরায়"। "একবার রাবে রাবে ডাক বাশী মনোসাৰে"---শুনে ব্যাকরণ কাঁদে হেন সন্ধি ভানি নাই। ব্যাকরণ হারায়েছে ভুগু এক বাঁলী আছে ভদ্ম হয় কবি পাছে হারাইয়া ফেলে তাই। এ খিড়া ছারালে পর কি করিবে কবিবর কি বাজাবে অতঃপর ভেবে ছঃখে হাসি পায়। माज्ञन देमद्वत सार्व পড়িলাম "মধুরায়" !!

সাময়িক-পত্ৰ সম্পাদন

'প্রকৃতি' | কালীপ্রসন্ন ১৮৭৯-৮০ সনে ভা: মহের-

লাল সরকার-প্রতিষ্ঠিত 'ভারতবর্ষীয় বিজ্ঞান সভা'র মন্দিরে স্বেচ্ছান্ত্রপ বিজ্ঞানের অনুশীলন করেন। বাংলায় বিজ্ঞান– বিষয়ক পত্রিকার অভাব অনুভ্ব করিয়া তিনি ১৮৮০ সনের ১৯এ এপ্রিল (বৈশাধ ১২৮৭) ভবানীপুর স্থাকর-যন্ত্র হুইতে 'প্রকৃতি' নামে একখানি মাসিক পত্রিকাও প্রকাশ করিয়া– ছিলেন। ছঃখের বিষয়, পত্রিকাখানি দীর্থনীবী হয় নাই।



কালীপ্রসন্ন কানাবিশারদ

এন্টি-প্রাষ্টিয়ান'— মিশনরীরা হিন্দর্শের নিন্দাছ্চক বক্তৃতা ও পুন্তিকাদি প্রচার করিয়া বেডাইতেন। ইহা কালী-প্রসন্নের নিকট অসহনীয় ছিল। তিনি খুষ্টরশ্মের দোষ প্রদর্শন করিয়া মাঝে মাঝে বক্তৃতা করিয়াই ক্ষান্ত হন নাই, ১৮৮২ সনের ১লা কেব্রুয়ারি ভবানীপুর হইতে Anti-Christian নামে ২৪ পৃষ্ঠার একখানি মাসিকপত্রও প্রকাশ ক্রিয়া-ছিলেন। পত্রিকা-প্রচারের উদ্বেশ্ত সম্বন্ধে তিনি প্রথম সংখ্যায় লেখেন:—

"Fully aware that the thunderbolts of hostile reception and adverse criticism will fall upon its devoted head, the Anti-Christian comes boldly forward to expose the absurdities, inconsistencies, errors, and immoralities of Biblical fictions,"

'এন্ট-খৃষ্টবান' অনিষমিতভাবে প্রায় ছই বংসর চলিয়া-ছিল; ইহার ২য় থণ্ড ৪র্থ সংখ্যার প্রকাশকাল—২ ডিসেম্বর ১৮৮০। পর-বংসর কালীপ্রসন্ন ইহার প্রচার রহিত করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। কালীপ্রসন্ন 'এন্ট-খৃষ্টিয়ানে' মুদ্রিত কতকশুলি প্রবন্ধ (Evils of Imparting Christian Education to Tender Minds, Eternal Damnation, The Faults and Frailties of Jesus Christ, the son of Mary and ◆ ◆ ◆ ? প্রস্তৃতি) পৃত্তিকাকারে প্নমুদ্ধিত করিয়া, এবং বাংলাতে 'অনন্ত নরক', 'খৃষ্টের চরিত্র' প্রস্তৃতি পুভিকা রচনা করিয়া বিনামূল্যে প্রচার করিয়াছিলেন।

কৃদ্মোপলিটান'—কালীপ্রসন্ন ১৮৯০ সনের আহ্মারি মাসে The Cosmopolitum নামে আর একখানি মাসিকপত্র প্রকাশ করেন। ইহা ভবানীপুরে স্থাপিত তাঁহার পার্থিব যত্ত্বে (Secular Press) মুদ্রিত হইত। 'কস্মো-পলিটান' আড়াই বংসর চলিয়াছিল। ইহার ৩য় খণ্ড ৬ঠ মংখ্যার প্রকাশকাল—২৪ জুলাই ১৮৯২।

কালীপ্রসন্ন এলাহাবাদ হইতে প্রকাশিত পণ্ডিত অযোধ্যানাখের (মৃত্যু: ১১-১-৯২) 'ইতিয়ান হেরক্ত' (১৮৮১ ?), এবং কলিকাতার 'হিন্দু পেট্রিয়ট' ও 'অমৃতবাজার পত্রিকা'র সম্পাদকীয় বিভাগে কিছু দিন কার্যা করিয়াছিলেন। তিনি জন্ম দিন 'বঙ্গ-নিবাসী' সংবাদপত্রও পরিচালন করিয়াছিলেন বলিয়া জানা যায়!

হিতবাদী' -- ১৮৯১ সনের ৩০এ (?) মে যৌথ মূলবনে 'হিতবাদী' নামে সাপ্তাহিক পত্র প্রথম প্রচারিত হয়। ''বাহারা ইহার জন্মদাতা ও অধ্যক্ষ ছিলেন উাহাদের মধ্যে ক্লক্ষমল বারু, স্থরেন্সবারু ও নবীনচন্দ্র বড়ালই প্রধান।'' জাচার্য্য ক্লক্ষমণ ভট্টাচার্য্য ইহার প্রধান সম্পাদক ও রবীন্দ্রনাথ সাহিত্য-বিভাগের সম্পাদক ছিলেন। কিছু দিন পরে পত্রিকান্ধানির অবস্থা শোচনীয় হয়। এই সময়ে কালীপ্রসন্ম, কবিরাজ্ঞ উপেক্রনাথ সেন চল্লোদর বিভাবিনোদ ও অমুক্লচন্দ্র মুখো-পাব্যায়ের সহারতায়, উহার পরিচালন-ভার গ্রহণ করেন। উাহার সম্পাদনায় 'হিতবাদী'র ১ম সংগা। প্রকাশিত হয়—২১ মে ১৮৯৪ (৮ বৈশাপ ১৩০১)। পরিশ্রম, অব্যবসায় ও কর্মতংপরতাগুণে কালীপ্রসন্ধ 'হিতবাদী'কে তৎকালীন শ্রেষ্ঠ সংবাদপত্রে পরিণত করিয়াছিলেন।

২৪ জুপাই ১৮৯৬ তারিখের 'হিতবাদী'তে "ক্র'চ-বিকার" নামে একটি প্রাপ্ত কবিতা মুদ্রিত করার রাজধারে তাঁহার বিক্রছে মানহানির অভিযোগ উপস্থিত হয়। কর্তবানিষ্ঠ কালী-প্রসন্থ "ক্র'চ-বিকার" রচয়িতার নাম আদালতে প্রকাশ না করিয়া সকল দায়িত্ব নিজ্ক ক্রংরে বরণ করিয়া লইয়াছিলেন। বিচারের কলে তাঁহার ৯ মাস বিনাশ্রম কারাদভের আদেশ হয়; কিছে ৫ মাস পরে—মহারাণী ভিক্তোরিয়ার ভায়মগু ভ্রিলী উৎসব উপলক্ষে (ভুন ১৮৯৭) তিনি মুক্তিলাভ করেন।

হিতবাদীর সংশ্রবে কালীপ্রসন্ন 'হিতবার্ডা' নামে একখানি হিন্দী সাপ্তাহিক ও হিতবাদীর একটি দৈনিক সংক্রমণ্ড প্রকাশ করিয়াছিলেন। তাঁহার মুড্যুর পর এগুলির প্রচার রহিত হয়।

সাংবাদিক হিসাবে কালীপ্রসন্নের বিলক্ষণ প্রতিষ্ঠা ছিল। তিনি নির্তীক ও স্পষ্টবাদী ছিলেন, বীয় মত প্রকাশে তেক্ষিতার পরিচর দিতেন। তাঁছার তীক্ষ বিজ্ঞপ-বাণ, কঠোর সমালোচনা ও তীত্র ভাষা প্রতিপক্ষ ও দেশ-বৈরীর চৈতন্ত সম্পাদনে তংপর ছিল। সুরেক্সনাথ আত্মজীবনীতে কালী-প্রসন্থ সম্বন্ধে বলিয়াছেন:—

. . . one of the ablest and most patriotic journalists, who wielded the resources of our language with a power that made him the terror of his enemics and of the enemics of his country.—A Nation in Making (1925).

'সাহিত্য-সংহিতা'—১৯০০ সনের ১২ই মার্চ রাজা বিনয়ক্ত্বক দেবের উভোগে 'সাহিত্য-সভা'র প্রতিষ্ঠা হয়। হচনা হইতেই কালীপ্রসন্ন সাহিত্য-সভার সহিত সংশ্লিষ্ট ছিলেন। ১৩০৭ সালের বৈশাব মাসে সাহিত্য-সভার মাসিক পত্রিকা 'সাহিত্য-সংহিত্যা' প্রকাশিত হয়। প্রথম সংখ্যায় প্রকাশিত "অবতরণিকা" সংশ তাঁহারই রচনা: তিনি লিখিয়াছিলেন :--

"দেশবিদেশের চিঞ্চাপ্রস্থত ফলে বঞ্চা।ছিতোর উন্নতি ও পরিপুঞ্জিসাধন কার্য্য বড়ই ছক্ষর। মহাদ্ধতমসে সমাচ্ছর কগতে ষধন গ্রীক ও বোমক জাতির সভাতালোক বিকীর্ণ হয় নাই. যখন আমাদিগের মুসভা ও মুশিক্ষিত রাজপুরুষদিগের পিতৃ-পিতামহবর্গ বিচিত্রবর্ণে অঞ্চ চিত্রিত ক্রিয়া ওকর্ক্ষের পূঞ্জায় স্থানন্দোৎসৰ করিতেন, তখন হিমালয়ের অভ্যানত শিখরদেশ হইতে কুমারীণ অন্তরীপের দক্ষিণ প্রাপ্ত পর্যন্তে সার্যা-ঋষিগণের সামগানে বিচলিত ছইয়াছে। তখন এই ভারতবর্ষে বিজ্ঞান গণিতের চর্চা হটয়াছে, নীতিএপ বির্চিত হটয়াছে, সর্বাপ্রকার সভ্যতার অঙ্কুর রোপণে ভারতের জানকেন ফুলে:ভিত ছইয়াছে। এবন সেদিন নাই, এবন আমরা খবংপতিত ছইয়াছি—জগৎ উন্নতির সোপানে উঠিতেছে ও উঠিয়াছে। তাই এখন আমাদিগের শিবিবার, চর্চা করিবার, অকুকরণের সময় আসিয়াছে। এ সময়ে, আম।দিগের পূর্ব্বসঞ্চিত পৈতৃক क्कोनयन, ७ देवरमिक भनीसिवर्णत अधुनीजरनत क्रम -- जमर्ख्ड আমাদিগের চক্ষে নৃতন বলিয়া প্রতিভাত হয়। সেই জন্ম এ -দেশে পরিশ্রম করিবার জ্ঞা, কার্যা করিবার জ্ঞা, আলোচনার পথ প্রসারিত করিবার জভ বাহারা চেষ্টা করেন তাঁহারা কার্যাক্ষেত্রে প্রতিধন্দী নহেন-সহযোগী ও সহচর। সেই ক্স আমরা সহচরবর্গের অফুগ্রহ ভিক্লা করিয়া যথাসামর্থা কার্বো প্রবৃত্ত হইলাম।"

কালীপ্রসন্ন 'সাহিত্য-সংহিতা'র ২য় বর্ষের দশ সংখ্য।
(আষাচ়-টৈত্র ১৩০৮) ও ৫ম বর্ষের (বৈশাধ-টৈত্র ১৩১১)
পত্রিকা সম্পাদন করিয়াছিলেন। এই ছই বর্ষের পত্রিকায়
তাঁহার গভ্ত-পত্ত করেকটি রচনা আছে।

রচনাবলী

কালীপ্রসদ্ধের রচিত গ্রন্থগুলির সংখ্যা নিতান্থ আরু নহে; আমরা যেগুলির সন্ধান পাইয়াছি তাহার একট কালাকুক্রমিক ভালিকা দিলাম। তালিকায় বন্ধনী-মধ্যে প্রদন্ত ইংরেনী প্রকাশকাল বেদল লাইত্রেরি-সঙ্গলিত মুদ্রিত-পুত্তক-তালিকা ইইতে গৃহীত।—

১। সভ্যতা-সোপান (প্রহ্মন)। ইং ১৮৭৮ (১৮ সেপ্টেম্বর)। পৃ.৩৬।

১৮৭৮ সনে ভাণাকুলের প্রেস এক ভারি হইলে ক্ষ কালী-প্রসন্ন এই সমাজ্ঞি প্রকাশ করেন। ইহা "প্রজাহিতা-কাচ্চিণাকেনচিদান্ধবনাভিপ্রশীতম্।"

২। দেশাচার (কাব্য)। ১২৮৬ সাল (২মে ১৮৭১)। পু. ২৪।

৩। পুকেশিয়া (খণ্ড-কাব্য)। ১২৮৬ সাল (৯ ডিসেম্বর ১৮৭৯)। পু. ৭২ + ৩ নির্বন্ট।

"গ্রন্থকার বি. এস্. এসোসিয়েশন হইতে বিদেশীয় রমণীর চরিত উপলক্ষ করিয়া এই কাব্য রচনা করায়, মেডাল পাইয়াছেন।"—'আর্থাদর্শন,' চৈত্র ১২৮৭।

৪। বিষাদ-প্রতিমা (নাটারীতি)। ১২৮৭ সাল (৪ গেপ্টেম্বর ১৮৮০)। পু. ২৪।

ইহার বিষয়---ক্রোপদীর বস্তুহরণ।

৫। বঙ্গীয় সমালোচক (কাৰা)। ১২৮৭ সাল (ইং ১৮৮০)। পৃ. ১৮।

"এফকিরটাদ বাবাঞ্চী বিরচিত।" বৃদ্ধিম, ছেম, ইপান প্রভৃতিকে কটাক্ষ করিয়া লিপিত।

৬। অবতার (প্রহুসন)। ইং ১৮৮১ (১০ অক্টোবর)। পু. ২০।

"স্বনামণ্যাত বাউল ঐক্তিরটাদ বাবাঞ্চী বিরচিত।" আচার্যা কেশবচন্দ্রকে কটাক্ষ করিয়া লিখিত।

৭। চিন্তাকুত্রম (খণ্ড-কবিজা)। ১২৮৮ স'ল (৬ ফেব্রুয়ারি ১৮৮২)। পৃ. ১২০।

ইছাতে "বিনা দোধে রাজরোষ," "সোমপ্রকাশের পুনর্জন," "নির্দোষীর অপরাধ" প্রভৃতি ৩১ট কবিতা আছে।

৮। মিঠেকড়া (বাহ্ণকাব্য)। १ (১৭ এপ্রিল ১৮৮৮)। পু. ২২।

"রাহ্-রচিত।" রবীঙ্গনাথের ১ম সংস্করণ 'কড়ি ও কোমলের (নবেম্বর ১৮৮৬) করেকটি কবিতাংলের "প্যার্ডি"।

▶ 1 Mrs. Besant in India. Her stratagem and foolishness exposed, 1894 (1 June), pp. 34.

১০। রুচি-বিকার (ব্যঙ্গকাব্য)। ভবানীপুর, ১৩০৪ সাল (ইং ১৮৯৭)। পু.৩২+২০

"হিতবাদী হইতে পুনমুদ্রিত।" ইহার পরিশিষ্টে ২১ জুন ১৮৯৭ তারিখের Calcutta Weekly Notes হইতে উদ্ধৃত হিতবাদী-মানহানি-মামলার বিবরণ (অভিমুক্ত "রুচি-বিকার" ক্রিডাট সহ) স্থান পাইয়াছে।

১১। মাইকেলের ও ছেমচক্রের জীবনরন্তান্ত। १ (১৪ আক্টোবর ১৯০০)। পৃ. ২০। বেদল লাইত্রেরির পুস্তক-তালিকার ১৮৯৬ সনের ২৫এ মে প্রকাশিত 'ন্যাশনাল কংগ্রেস' নামে কালীপ্রসন্নের একধানি ১৮ পৃষ্ঠার পুস্তিকার উদ্লেখ আছে।

কালীপ্রসন্ধ যে-সকল গ্রন্থ সঙ্গলন ও সম্পাদন করিয়াছিলেন তাহার সংখ্যাও বভ় অল্প নহে। এই শ্রেণীর গ্রন্থের মধ্যে নিমের ক্ষর্থানি বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য:—

১। প্রসাদ-পদাবলী অর্থাৎ রামপ্রসাদের সমগ্র রচনা সংগ্রহ। ১ আবাচ ১৩০১ (ইং ১৮৯৪)। পু. ১৯২।

কালীপ্রসন্ধ-লিপিত রামপ্রসাদের জীবনবৃত্তান্ত ও প্রছাদির বিবরণ সম্থলিত। ১৩০৬ সালে মুদ্রিত দ্বিতীয় সংস্করণের পুন্তকের বিজ্ঞাপনে প্রকাশ:—"বাগাটাড়া নিবাসী প্রীযুক্ত বাবু চন্তীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় রামপ্রসাদের যে সকল পদাবলী সংগ্রহ করিয়া সময়ে সময়ে হিতবাদীতে প্রকাশিত করিয়া-ছিলেন, এই সংস্করণে তাহার মধ্যে কতকগুলি সরিবিষ্ট হইল।"

২। বিদ্যাপতি বঙ্গীয় পদাবলী। ১৩০১ সাল (৩০ জক্টোবর ১৮১৪)। পূ.২৫০।

দ্বীকা, কবির জীবনরভান্ত এবং বালালা ও মৈখিলী ভাষার সংক্ষিপ্ত বিবরণ সহ। এই প্রস্থের ২য় সংকরণের (জাখিন ১৩০৫) বিজ্ঞাপনে প্রকাশ :—"এই সংস্করণে কতকগুলি নৃতন পদের সন্ধিবেশ এবং টীকার পরিশোধন ও পরিবর্জন করা হইয়াছে। টীকা বিষয়ে শ্রীযুক্ত বাবু মতিলাল চক্রবর্তী ও প্রীযুক্ত বাবু রবীক্রনাথ ঠাকুর স্বতঃপ্রস্ত হইয়া আমাকে কয়েকটি ক্ষোমন্দ দিয়া অস্থুগৃহীত করিয়াছেন। রবীক্র বাবু গাঁহার একখানি পুরাতন গাতা দিয়াও আমাকে বাবিত করিয়াছেন। তেক শ্রেণীর লোকে আমার প্রতি প্রতিবাহলা প্রকাশ করিয়! 'নবভোরত' নামক একখানা মাসিক পত্রে একটা বিশ্বেম্মূলক প্রবন্ধের প্রচার করে। এয়প অস্থতহের নিবারণ কামনায় আমি উক্ত প্রবন্ধ ও আমার উত্তর এই সংক্রবনের পরিশিষ্টে স্থিবিষ্ট করিয়াছি। "পূর্বভাষে" উদ্ধিবিত "বিদ্যাপত্র—বংশ শার্ষক প্রবন্ধগুলিও এবারে পুন্মুক্তিত হইয়া এই পুশ্তকের অপীভূত হইল।"

কালীপ্রসদ্ধের মৃত্যুর পর, ১৩১৭ সালে প্রকাশিত এই এছের ৩য় সংগ্রুরণের পরিশিষ্টে "বিহাপতির টীকা (প্রত্যুক্তর)" নামে একটি প্রবন্ধ সন্নিবিষ্ট হইয়াছে; ইহা 'প্রবাসী'তে মুক্তিত নগেন্দ্রনাথ গুপ্তের লেখার প্রতিবাদে 'সাহিতা–সংহিতা'য় (আধিন-কার্ত্তিক ১৩১১) প্রথমে প্রকাশিত হয়।

৩। পেলে প্রসঙ্গ। ১৩০৮ সাল (২৮ মে ১৯০১)। পু. ৫৯ ৮ ১২।

এই পৃস্তকে ১৮৯৯ ও ১৯০১ সনে সংঘটিত "ছাপরার মোক্তমা" ও "নোয়াবালির হত্যাকাণ্ডের মোক্তমা"র সংক্ষিপ্ত বিবরণ ও সেসজ জন্ধ পেনেলের রারের অংশ-বিশেষ প্রদন্ত হইরাছে। কালীপ্রসন্তের নিয়োত্বত উচ্চি পাঠ করিলেই ব্যাপারট পরিক্ষ্ট হইবে :—

"পেনেল সাহেবের স্থদীর্ঘ রায় পাঠ করিয়া দেশের লোকে যে কি পর্যান্ত বিশ্বিত হইয়াছে, তাহা বাক্যে প্রকাশ করিয়া বলা অসম্ভব । বিচার ও শাসন-বিভাগের অপবিত্র সন্মিলন যে নানা প্রকার জনিষ্টের আকর, এই অপূর্ব্ব রায় তাছার অন্যতম উদাহরণস্থল। পেনেল সাহেব ছাপরার মোকস্কমায় শাসন-বিভাগের যে কলঙ্কাহিনী জনসমাজে বিবৃত করিয়াছেন, নোরাখালির মোকক্ষায় তাহারই ষেন প্রমাণ প্রযুক্ত হইয়াছে। ছাপরায় রক্ষকেরা কিরূপে ওক্ষক হয়, তাহারই উদ্দল দৃষ্টান্ত পরিলক্ষিত হইয়াছিল। নোয়াধালিতে তাহার ঠিক বিপরীত দৃষ্ঠ পরিস্কৃট হইয়াছে। ছাপরায় রাজকর্মচারীরা নির্দেষের নিগ্রহে ক্বতিত্ব প্রকাশ করিয়াছিলেন, নোয়াধালিতে দোষীর পৃষ্ঠপোষকতাম তাঁহাদিগের পারদর্শিতা প্রকাশ পাইয়াছে। কোপায় ছট্টের দমন ও শিষ্টের পালন হইবে, না নির্দোষের নিগ্রহ ও হুর্জ্জনের সমর্থনে রাজপুরুষদিগের শক্তি প্রকাশ পাইয়াছে। এই ছুইট চিত্তের জ্বন্য আমরা পেনেল সাহেবের নিকট ঋণী ় ... অনেকে "প্রেষ্টিক" রক্ষার নিমিত স্থবিচারের পথ কণ্টকিত করেন, পেনেল সাহেব সে শ্রেণীর লোক নহেন। কর্তৃপক্ষের মূব চাহিয়া, বন্ধুত্বের মমতায়, পদোন্নতির লোভে, উর্ত্তন কর্মচারীদিগের অমুরোধে, তিনি বিচারাসন কলঞ্চিত করেন নাই। তাঁহার নাম এদেশের আবালব্ধবনিতা ক্বতজ্ঞতার সহিত বছকাল শরণ করিবে। এ ক্বগতে তাঁহার পুরস্কার নাই। তাঁহার দৃষ্টান্ত অমুকৃত হউক।" (পৃ. ১৬-১৭)

8। नक्क्इस्थ।

"স্থার রাজরাধাকান্তদেববাহাছুরেণ বিরচিত:। পূর্বগ্রন্থা-তিরিক্তৈবুঁ ংপত্তিবিশ্লেষণাদিভিঃ সহ ঞীকালীপ্রসন্ধ-কাব্য-বিশারদেন সংস্কৃত:।" আত্মানিক ১৯০৩ সনে ইহা হিতবাদী-কার্যালয়ে বলাক্তরে মুদ্রিত হয়।

ধ। স্বদেশ-সঙ্গীত। ১৩১২ সাল (১০ নবেম্বর ১৯০৫)।
 শৃ. ৬৮।

এই পুস্তকে অন্যান্য বদীয় কবির বদেশান্তরাগোদ্ধীপক পদাবলীর সহিত কালীপ্রসন্নের রচিত বদেশ-সঙ্গীতগুলিও ছান পাইয়াছে। ইহা ভবানীপুর বদেশসেবক সম্প্রদায়ের জন্য সঙ্গলিত; "বন্দেমাতরম্" ও অপর কয়েকটি গানের বরগ্রাম সন্থলিত। 'বদেশ-সঙ্গীত' কালীপ্রসন্নের পার্থিব যদ্ধে মুদ্ধিত; ইহাতে প্রকাশক-রূপে "যোগেন্তনাথ শর্মা"—এই ছল্প নাম আছে।

৬। লাঞ্চিতের সম্মান। ১৩১৩ সাল (৬ জুন ১৯০৬)। পু. ৯০।

ইহাও "যোগেজনাথ বন্দ্যোপাধাার" এই ছল নামে সঙ্গলিত। বেঙ্গল লাইত্রেরির তালিকার ইহা "৭০ কল্টোলা ব্লিট [হিতবাদী-কার্য্যালর] হইতে গ্রন্থকার কর্ত্তক প্রকাশিত" এটরূপ উল্লেখ আছে। পুস্তকের "পূর্ব্বভাষে" প্রকাশ :— "এই পুস্তকে সংগৃহীত লাছিডদিগের বিবরণ এবং বরিশাল

বিজ্ঞাটের সংক্ষিপ্ত ইতিবৃত্ত প্রধানত: ছিতবাদী, সঞ্জীবনী, চাক্লমিছির, বরিশাল হিতৈষী, প্রভৃতি সংবাদপত্র হইতে সঙ্কলিত হইরাছে। ইহাতে কয়েজ জন নিগৃহীত বল-সন্তান ও কতিপর স্বদেশী প্রচারকের প্রতিকৃতি সন্নিবিপ্ত হইল। অধি এই কৃত্ত পুত্তক পাঠে কাহারও স্বদেশী প্রব্যের ব্যবহারে অসুরাগ বৃদ্ধি হয় এবং দেশের জনা কপ্ত সহিবার প্রবৃত্তি মনে বঙ্কল হয়, তাহা হইলে শ্রমসার্থক ভান করিব। অধি। তালাক্ষনাধ শর্মা। তালাক্ষা

श्रदम्भी आटमानन

কালীপ্রসন্ধের নাম স্বদেশী আন্দোলনের ইতিহাসের সহিত বিশেষ ভাবে বিজ্ঞিত। ১৯০৫ সনের ২০এ জ্লাই বঙ্গবাবচ্ছেদের সংবাদ ঘোষিত হুইলে দেশে তুমুল আন্দোলনের স্টি হয় : বিদেশী-বর্জন পণ এই আন্দোলনেরই ফল। সদেশপ্রাণ কালীপ্রসন্ন স্বদেশী আন্দোলনে মাতিয়া, চারি দিকে সভা-সমিতি, বক্তৃতা করিয়া বেড়াইতে লাগিলেন। সদেশী সভায় তিনি একটি মৃতনত্বের আমদানী করেন : উহ:—সভার স্বচনায় ও শেষে স্বদেশপ্রেমোজীপক সঞ্চীতের আন্মোজন। নিজে স্থায়ক না হুইলেও সঙ্গীত-রচনায় তাহার সভাবসিদ্ধ ক্ষমতা ছিল। স্বদেশী সভায় যোগদানকালে তিনি ছুই জন বেতনভাগী স্বৃক্ত গায়ককে সম্বে রাখিতেন ; তাহার রচিত জাতীয় সঙ্গীত গায়িয়া তাহারা সভাস্থ শ্রোত্বর্গকে মোহিত করিতেন। কালীপ্রসন্ধের রচিত ক্রেকটি সদেশ-সঙ্গীত উদ্ধৃত করিতেছি :—

(বাউলের স্থর)

মা গো, যায় যেন জীবন চ'লে, ভাধু জগংমাকো তোমার কাযে **"বন্দে মাতরম্" ব'লে**॥ (যখন) মুদে নয়ন, করবো শয়ন শমনের সেই শেষ জাগে---তথন, সবই আমার হবে আঁধার স্থান দিও মা ঐ কোলে। (আমার) যায় যাবে জীবন চ'লে॥ (আমার) মান অপমান সবই সমান দলুক না চরণ তলে। যদি, সইতে পারি মায়ের পীড়ন, মানুষ হব কোন্ কালে ? (আর) (আমার) যায় যাবে জীবন চ'লে।। লাল টুপি কি কালো কোৰ্ডা, ভুজুর ভয় কি আর চলে ? (আমি) মান্ধের সেবাম্ব রইব রভ পাশব বলে দিক্ জেলে। (আমার) যায় যাবে জীবন চ'লে ॥

আমায়—বেত মেরে কি "মা" ভোলাবে ?
আমি কি মা'র সেই ছেলে ?
দেখে, রক্তারক্তি বাড়বে শক্তি
কে পালাবে মা কেলে ?
(আমার) যার যাবে জীবন চ'লে ॥
আমি, বস্ত হব মারের জ্ঞ
লাঞ্চনাদি সহিলে।
ওদের, বেত্রাখাতে, কারাগারে
ফাঁসিকাঠে ঝুলিলে॥
(আমার) যার যাবে জীবন চ'লে॥
যে মা'র, কোলে নাচি, শক্তে বাঁচি
ভ্ঞা জুড়াই যার জলে।

বিশারণ কয় বিনা কতে থ্থ হবে না ভূতলে। সে ত, অবম হয়ে সইতে রাজি উত্তমে চাও মুখ ভূলে॥ (আমার) যায় যাবে জীবন চ'লে॥

বল, লাঞ্নার ভয়, কার কোণা রয়

(আমার) যায় যাবে জীবন চ'লে ॥

সে মায়ের নাম শ্বরিলে ?

(রাগ ভৈরব তাল একতালা) সেই তরখেছ মাতুমি। কলকুলে খুশেভিতা স্থামা কৰভূমি। শিরোপরি গিরিবর সেই শুভ্র কলেবর পদতলে সেই সিদ্ধ আছে অপুগামী। তেমনি বিহলকুল কলরবে সমাকুল তেমনি ভনিতে পাই মধুপ-বকার----সেই ত সকলি আছে তবে মা সবার পাছে তোমার সম্ভান কেন, অধ:প্ৰগামী ॥ কোধা তব সে গৌরব সৈ সম্পদ কোপা সব সকলি হয়েছে আৰু নিশার স্বপন-ফিরিয়া আবার কি মা আসিবে গো সে মহিমা

গাইবে ভোমার কবি

ভোমারে প্রণমি।

কি জানি কি পাপফলে
পড়ি পর পদতলে
শক্তিহীন তব স্থত
ধুলাতে পুটার—
বিশারদ সে বিধাদে
হণ্ডাশ হৃদয়ে কাঁদে,
তারে আজি কে দেখালে
এ দশা দশমী॥

কালীপ্রসন্মের একটি হিন্দী গানও উদ্ধৃত করিতেছি; উহা ১৯০৬ সনে কলিকাতায় কংগ্রেস উপলক্ষে সগৌরবে শীত হইয়াছিল:—

ভেইয়া দেশ কা এ কেয়া হাল্।

থাক্ মিটি, জহর হোতি সব, জহর হোই জঞ্চাল।

থর ছোড় কে সব পরকে সেবে

ভাই কো দেত ভগাই।

সাগর পার সব ধন গয়া আওর

থরমে লছ মি নাই।

শীতল কাঁসা রহে ক্যায়সা

সোনা চাঁদি শেষ।

অব ইনামেল গিল্টি সীসা

থর্ ধর্মে পর্বেশ।

পাট রুই সব রুঁহাসে যাকর্

জাহাক্ষ ভর্কে আতে।

দেশ কা আদ্মি মুরধ্ বন্কর্

চাঁদি দে কয়্ লেতে।

গৌ শুররকে লছপে শোবিত্

চিনি নিমক্ ধাওয়ে।

সকেদি দেখ কর্ মন্ লল্চাতা

হাত মে মোক্স পাওয়ে।

গো-শালামে গৌয়ে কিত্নী

কিসিকো ইহ ন স্বে

টিন জরে যো হ্ব বিলাতী

উস্কো মিঠা বুবে।

দেশ কৈ ধন সব চৌপট্ করকে

লেত্ পরদেশিয়া

ইহাকে লোগ্ সব্ ফকির বন্ যায়

না পাওয়ে রুপেয়া।

বেনারসি আওর শাল্ দোশালা

রেশম পশম ছোড়ি। ছিট্ পাট্ নক্লি মধ্মপ্ গোটা মোল্ছি দৈকর্ কৌডি। গৌ শুরর্কে চক্ষি দেকর্

গৌ শৃষ্বকে চাকা দেকব্ যো বনাইলে বাস। পেছনে ওহি ভারতবাসী श्त्रम क्रमुटक नाम । পুণাস্থান ইছ আরিয়া বর্তমে নাহি মিলে কোই চিন্তু আদমি বৌরা মুরখ হোকর ছোড় দিয়া তব্ব বীৰু। অংখকে আগে সবৃহি পড়া খায় কোইনা পাওরে রুখা। षश्रक लाष्ट्रीय शहरक रमकब् भव (कांहे तह कुष!। দীন বিশারদ গনই বিপদ ভনো হ:খ কি গীত। হো মতিয়ান দেশ কে সম্ভান करता असम कि शैट।

কালীপ্রসন্ন প্রকৃত স্বদেশপ্রেমিক ছিলেন। দেশের কাৰে বছবার তাঁছাকে লাঞ্চনা নিএহ ভোগ করিতে হইয়াছে। বরিশাল-বিভার্টের ইতিরভের সহিত থাঁহাদের কিঞ্চিৎ পরিচয় আছে, তাঁহারাই এ-কথা থীকার করিবেন। রাজনৈতিক কেত্রে কালীপ্রসল্লের শুরু ছিলেন-সদেশহিত্ত্রত সুরেঞ্জনাথ। মাল্লাক অমরাবতী ও লক্ষে কংগ্রেস (ইং ১৮৯৪-৯৭-৯৯) এবং বরিশাল প্রাদেশিক সন্মিলন (এপ্রিল ১৯০৬) উপলক্ষে কালীপ্রসন্থ ছায়ার গ্রায় গুরুর সঙ্গে সঙ্গে ফিরিয়াছেন। স্থরেন্ত-নাৰ তাঁছার আয়ুজীবনী—A Nation in Making এছে তাঁহার সম্বন্ধে যাহা লিখিয়া গিয়াছেন, নিয়ে তাহা উদ্ভুত করিতেছি:--

We returned home from Madras (Congress, 1894) by the British India Steam Navigation Company's steamer Rewa..........Kali Prosanna Kavyavisarad, editor of the Hitabadi, was one of our party, and he used to entertain the European passengers on board with his card-tricks and his feats of jugglery. Visarad, whose versatility was wonderful, was a past master in this art.* One of the most genial of men, a brilliant Bengalee writer, a poet of no mean order, a composer of songs of exquisite beauty and pathos, which thrilled the audience at our Swadeshi meetings. . . (pp. 137-38).

In ill-health, suffering from a fatal ailment (Bright's disease), he was present at every Swadeshi meeting to which he was invited. He introduced a new element into the Swadeshi meetings, which is now largely employed in our public demonstrations. They usually begin with some patriotic song, appropriate to the occasion. Kavyavisarad had a fine musical talent. He himself could not sing, but he composed songs of exquisite beauty, which were sung

 পর্কেই বলিয়াছি, কালীপ্রসন্ধ ১৮৭৯-৮০ সনে ভারতবর্ষীয় विकास भणात समित्र विकास कि क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया কিছ দিন তাঁহার মন যাত্র-বিফার প্রতি আরুষ্ট হয়। তিনি কতিপর বন্ধর সহযোগে 'আর্ব্য ইন্দ্রকাল সমিতি' গঠন করিরা. (मन-विद्याद देखनान-क्रीण अपर्नन क्रिया (वण्डियाहितन। এই সময়ে সম্বোহন-বিভা বা মেস্মেরিজমেও তিনি পারদর্শিতা ভর্জন করিয়াছিলেন।

at the Swadeshi meetings and never failed to produce a profound impression. He had a natural gift for musical composition, and, though he had an imperfect knowledge of Hindi, his Hindi song (Deshki e kaya halat) was one of the most impressive of its kind. It was a fierce denunciation of the passion for foreign goods in preference to domestic articles, and, when it was song at the great Congress at Calcutta in 1906, attended by thousands of our people, it threw the whole audience into a state of wild excitement.

Kavyavisarad was always attended by two musical experts, who opened and closed the proceedings of Swadeshi meetings with their songs. They were taught, paid and maintained by him; and, though by no means rich, he sought no extraneous assistance for their upkeep. He was not much of a speaker, but as a writer he was the master of a vigorous and caustic style which he ruthlessly employed against the enemies of Indian advancement, A devoted patriot, he never spared himself in the service of the motherland: and I remember his attending the Lucknow Congress of 1899, with fever on him, and a warrant in a defamation case hanging over him. He was reckless of health and life; strong-willed, and even obstinate, above all advice and remonstrance, (p. 202).

^{*}(ছিতবাদী^{*} সম্পাদনের গুরুভার, কংগ্রেসের কাষা ও বদেশী-প্রচারে অতিরিক্ত শ্রম কালীপ্রসন্ধের স্বাস্থ্যের সম্ভরায় হইয়াছিল। তিনি কিছু দিন হইতে রোগে কণ্ট পাইতে-ছিলেন। এই সময়ে তাঁহার এক বন্ধ আহাজের ভাজার-ক্রপে জাপান যাইতেছিলেন। সমুদ্র-ভ্রমণে পীড়ার উপশ্ম ১ইতে পারে এই আশায় কালীপ্রসন্ন বন্ধুর পরামর্শে ভাপান থাতা করেন। কাপান হইতে প্রত্যাগমনকালে প্রথমবো ৪ জলাই ১৯০৭ (১৯ আষাচ় ১৩১৪) তাঁহার জীবন-প্রদীপ নির্বাপিত হয় ৷ দেশভক্ত কালীপ্রসন্ন মৃত্যুর পূর্বাদিনে ক্রমভূমির উক্তেশে যে কবিতাট লিখিতেছিলেন, তাহা উদ্ভুত করিয়া বর্ত্তমান প্রসন্ধের পরিসমান্তি করিতেছি:

এই কি জীবন শেষ ?

জীবন-রঞ্জিনি ! কোণা প্ৰিয় কৰভূমি ? কোপা আমি ? কোপা তুমি ? পড়িল কি যবনিকা সহসা এখনি ? **डेक जाना डेशरमन**् সকলেরি এই শেষ গ শীর্ণ ক্লিষ্ট চিম্ভাকুল রোগীর শয্যায় সমুদ্রে বাস্পীয়-পোতে-বারিচর প্রায়। তোমার মহিমা গাব, ওমা বঙ্গভূমি ! লাছিত তোমার নাম. দেখে তবু চলিলাম. এ দীৰ্ঘ জীবন হ্বথা দেখিলে ত ভূমি ৷ এ ছঃখ রহিল মনে. তোমার সম্ভানগণে, না দেখিয়া সমাদৃত,--শমন সদনে বেতে হ'লো-মন সাধ রছিল মা মনে ৷

বন্দদের স্বাধীনতা লাভ

💐 শ্বোধচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায়

এক শতালীর উদ্ধৃক:লের পরাধীনতার নাগপাল ছিল্ল করিয়া গত ৪ঠা জাহুয়ারী এক্ষালেল পূর্ণ স্বাধীনতা লাভ করিয়াছে। একারেন এই দিনট এক্ষালোট হিচ্ছাগে এক স্মর্থীয়া দিবসা যে স্বাধীনতালখন একারেন্দার ইতিছাগে এক স্মর্থীয়া দিবসা যে স্বাধীনতালখন একারেন্দার পশ্চিমাকাশে দীর্ঘ ১২০ বংসর পূর্বের সভ গিয়াছিল গত ৪ঠা জাভুয়ারী ভাছা সেদেশের পূর্বের সভ গ্রেমাকাশেকো নানা বর্গে ও প্রাক্রাকাশেকো নানা বর্গে ও প্রাক্রাকাশিকা উদ্বিত করিয়া প্রনায় উদ্বিত করিয়া প্রাক্রার উদ্বিত করিয়াল এশিয়ার স্বেড় কেটে নরনামীর সঙ্গ ভাততে পরাধীনতার কঠিন ও কঠোর শুলল ব্যাস্থা



রাজা থিবের কাই-নিথিত সিংহাসন

পজিরাছে। আজ তারা আনন্দে আত্মহারা। কারা-প্রাচীরের অস্করালে, একোর যে গুরু আত্মারাই অপমৃত্যু হইয়াছিল তাহানয়, বুটেন একারাসীর দেহকে পিপ্ত ও নিপাঙিত করিয়া সর্ক্তিকারে তাহার রস শুবিয়া লইয়াছিল। এই বাধীনতা প্রাপ্তিতে একারাসীর আত্মার মুক্তিলাভ হইয়াছে বটে, কিন্তু হাহার দেহের বিমুক্তি কবে হইবে তাহা এখনও অক্সাত। একারাসিগণের তৈলে ও ধনিক সম্পদ, বৃহৎ ববেসায় ও বাণিকা আক স্বাধীনতা লাভের পরও বিদেশীর করতলগত। তার যানবাহন চলাচলের উপরও তার কোন অধিকার নাই।

সে আৰু প্ৰায় দেড় শত বংসর প্ৰের কথা। ভারতের ভাগা-কাশে তখন ব্রিটশ-রাছ উদিত হইয়া বাবীনতা-স্থাকে গ্রাস ক্রিতেছে। লভ আমহার্ভ ভারতে ব্রিটশ শক্তির প্রতিভূমণে ভারত ও পূর্ব-এশিরার সাঞ্জাজা বিভারে অগ্রসর : ত্রশ্ধদেশের ভিতর দিরাই তগন ভারতবাসী এক দিকে চীন ও অপর দিকে ভাম ও মালয়দেশের সঙ্গে বেংগাযোগ রক্ষা করিয়া ভাসিতে-



তক্ষের শেষ গবর্ণর সার হিটবটে রয়ান্স এবং এক্ষের প্রথম সভাপতি সাও ফুট গুটক

ছিল। সেই সময় ব্রহ্মদেশে এক শক্তিশালী রাজ্যের প্রতিষ্ঠা করিতেছিলেন আলোন্দ্রা নামে এক রাজা। তাঁছার উত্তরাধিকারিগণ ব্রহ্মের বাহিরেও রাজা বিভারে অগ্রসর হন। তাঁছারা একে একে একে আরাকান, মণিপুর এবং আসম প্রদেশটকেও তাঁছাদের রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত করিয়ালন। আসাম ও আরাকানের বছ আন্তর্গরী বিটিশ রাজো আন্তর লইয়া সেখান হইতে ব্রহ্মদেশের উপর চছাও হইবার উত্তোগ করে। ব্রহ্ম-মনাপতি মহাবদুলও সেই সংবাদ পাইয়া বাংলাদেশ আক্রমণের আরোজন করেন (১৮২৪)। বাংলাদেশ তখন ব্রিটশের অধীন। মুতরাং বিটিশ ও ব্রহ্মবাসীর মধ্যে মুদ্ধ বাধিল। বিটিশ সৈত্র আসাম অধিকার করিল, কিন্তু আরাকানে রম্নামক স্থানে তাছাদের পরাজয় ঘটে। কিছুকাল পরে ব্রিটশ সৈত্র রেছুন অধিকার করিল এবং ব্রহ্ম-সেনাপতি মহাবদ্দ্য ওলির আঘাতে নিহ্ত



ছইলেন। তারপর এজরান্ধ বিটিশের সঙ্গে এক সন্ধিত্তে আবদ্ধ ছইরা (১৮২৬) আসাম, আরাকান, টেনেসেরিম উপকৃত্য এবং মার্ত্তাবানের কিরদংশের অধিকার বিটেশকে দান করিলেন। উপরন্ধ মুদ্ধের ক্ষতিপূরণ-স্বরূপ এক কোটি টাকা দিলেন। তা ছাড়াও তখনকার ব্রন্ধের রাক্ষানী আজা নগরীতে একজন বিটিশ রেসিডেট রাখা ছির ছইল। এই ঘটনাই ইতিহাসে প্রথম ব্রক্ষমুদ্ধ নামে ধ্যাত।

ব্রহ্মদেশের সঙ্গে ভিতীয় যুদ্ধ যথন বাবে তথন লভ ভাল-হোসী ভারতের বছলাট। ত্রন্ধে ব্রিটিশ বণিকসম্প্রদায়ের উপর নানাক্ষপ অত্যাচার ও উংশীখন হুইতেছে এই অকুহাতে লভ ভালহোসী নো-সেনাপতি ল্যাম্বাটকে ব্রহ্ম আক্রমণ করিতে পাঠাইলেন। ল্যাম্বাট ব্রহ্মদেশের একথানি কাহাক দখল করিয়া রেকুন বন্দর অবরোধ করিয়া বসিলেন। ত্রাপি ব্রহ্মবাক কিছুতেই ইংরেকের সহিত সন্ধি করিলেন না। তথন কৌশলী ইংরেক্ক উর্বার পেগু প্রদেশট অধিকার করিয়া (১৮৫২) চতুরতার পরাকাঠা প্রদর্শন করিল।

এতদুর করির। ইংরেজের লোভ জারও বাড়িরা গেল।
১৮৮৪ খুটান্দে এজের রাজা ছিলেন থিবো। এবার ইংরেজ
সমগ্র ব্রহ্মদেশট ব্রিটাশ করারত করিবার সকল করিলেন।
এবারও জভূষাত ব্রিটাশ বনিকের উপর ব্রহ্মবাসীর উংশীদন।
তত্ত্পরি সন্দেহ হইল—ব্রহ্মরাজ করাসীদের সহিত মিশিরা
ইংরেজের বিরুক্তে ব্দ্রহারের পরামর্শ করিতেহে। এই অহিলার
লাভ ভাক রিন ব্রহ্মের বিরুক্তে বৃদ্ধ বোবণা করিলেন। সঙ্গে সন্দে

রাজধানী মান্দালর অধিকৃত হইল ও এজরাজ থিবে। ভারতে নির্বাসিত হইলেন।
১৮৮৬ খৃষ্টাব্দে সমগ্র উত্তর প্রক্ষ ব্রিটপের
করারত হইল। সংক্ষেপে ইহাই পররাজ্যলোল্প ইংরেজের প্রক্ষ অধিকারের
ইতিহাস।

ব্রহ্মদেশের ব্যবসা-বাণিকা, তৈল ও বনিক সম্পদ, যানবাহন প্রভৃতি যাবতীয় সম্পদ ব্রিটশ করায়ন্ত করিয়া-ছিল। সম্প্রতি তাহারা ব্রহ্মের শাসন-ভার পরিত্যাগ করায় জনগণের উপর কঠোর নিপেষণের নির্ভি হইয়াছে বটে, কিন্তু ব্রিটশ শোষণ হ্রাসপ্রাপ্ত হয়

এখানকার প্রচুর ও উৎকৃষ্ট কার্চন সম্পদ, চাউল ও তৈল-সম্পদ, এখানকার টন রবার প্রভৃতি প্রথমেই ইংরেজের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াজিল, তত্বপরি এখানকার প্রভৃত শিল্পবিষয়ক ও বাণিজ্ঞাক সম্ভাবনা সম্বন্ধে গোড়ায়ই তাহার। সচেতন হইয়া উঠিয়াজিল। ইংরেজের এই দেশ অধিকার

করার দুষ্লে ছিল এদেশের অতুলনীয় ধনিজ্ঞসম্পদ অধিকার করিবার জন্ম তাছার লোভ ।

ত্রন্ধদেশের তায় এত অধিক পরিমাণ চাইল রপ্তানী
পূথিনীর আর কোন দেশ করিতে পারে না। নদীবছল
ব্রন্ধদেশে ধাড়ই প্রধান উৎপন্ন দ্রব্য। কিন্তু অপেক্ষাকৃত
বৃষ্টিহীন স্থানে গম, বাজরা, ডাল ও তামাক প্রচুর পরিমাণে
করে। বনবিভাগ হইতে প্রচুর সেগুন কাঠ বিদেশে রপ্তানী
হয়। ব্রন্ধদেশে ধনিক তৈল, টিন, রৌপ্য, সীসা, উলক্ষাস
প্রভৃতি পাওয়া যায়। উলক্ষাস যোগে লৌহ হইতে ইস্পাত
প্রস্তুত হয়। ব্রন্ধদেশ বৃল্যবান প্রভুর ও মণির ক্রন্থও
বিখ্যাত। কিন্তু ছংখের বিষয়, ব্রন্ধের ব্যবসা-বাণিজ্যের
শতকরা ৮০ ভাগ আকও বিদেশীয়ের করায়ন্ত। ব্রন্ধদেশ যদি
সেই আর্থিক স্থাধীনতা লাভ করিতে পারে তবেই তাহার
প্রকৃত স্থাধীনতা লাভ হইবে। রাজনৈতিক স্থাধীনতা লাভ
করিয়াও ভারতবাসীর ভায় ব্রন্ধদেশ যদি অয়বস্থান হইয়া
থাকে তবে তাহার স্থাধীনতার কোন বুল্যই থাকে না।

১৮৮৬ খুঠান্দে সমগ্র জন্ধদেশ অবিকার করিয়া ত্রিটিশ সরকার ইহাকে ভারতের অঙ্গীভূত করেন এবং ১৮৯৭ খুঠান্দে জন্ধশাসনের ভার একজন লেকটেন্ডান্ট গবর্ণরের উপর অর্পন্ করেন। ১৯২৩ সালে জন্ধদেশের শাসনভার পুনরায় ভারত-গবর্ণমেন্টের অধীন একজন গবর্ণরের হত্তে অর্ণিত হয়। তার পর হইতে ভারতীর জাতীয় কংগ্রেস ভারত ও জ্রন্ধের স্থাধীনতা-সংগ্রাম এক বোগেই পরিচালনা করিয়া আসিতেহিলেন। আ-ক্রন্ধ-ভারত একই সক্ষা ও উদ্বেক্তে মুক্তিসংগ্রামে লিপ্ত



গণপরিষদে ইউনিয়ন জ্যাকের অপসারণ ও বাধীন ব্রহ্মপতাকা উদ্যোলন উৎসব

ছিল। পরে ব্রক্ষের একটি রাজনৈতিক দল ভারত হইতে বিচ্ছিন্ন হইবার জন্ত আন্দোলন কুরু করেন। সাম্রাজ্যবাদী ইংরেজ ভারতের মুক্তিসংগ্রামকে হীনবল করিবার জন্ত এবং তাহাদের সাম্রাজ্যবাদের আয়ুক্ষাল বাড়াইবার জন্ত ১৯৩৫ সালের শাসন-সংকার দ্বারা ব্রহ্মকে ভারত হইতে বিচ্ছিন্ন করিলেন।

অতঃপর অধ্যাদেশ পরাক্রান্ত জাপানের "এশিয়া এশিয়া-বাদীদের জন্ত" এই আন্দোলনে উনুদ্ধ হইয়া উঠিল। দোবামা আন্দোলনে অধ্যাদেশের বুবশক্তি যোগদান করিল; তখন দেখা দিল এক বিরাট গণ-আন্দোলন। জাপান যখন মিত্র-শক্তির বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করে তখন অন্ধের প্রতিনিধি-পরিষদ মুদ্ধ-বিরোধী হইয়া উঠে।

ষিতীর বিষয়ুদ্ধের প্রারম্ভে রন্ধের প্রধান মন্ত্রী ছিলেন
মিওচিত দলের নেতা উ স । উ স যথন নিউইরর্ক হইতে
প্রত্যাবর্ত্তন করিতেছিলেন তথন তাঁহাকে গ্রেপ্তার করিয়া উত্তরআক্রিকার উপাতা প্রদেশে অন্ধরীণ করিয়া রাখা হয় । এই
অন্ধরীণের কারণ—আপানের সহিত তাঁহার যোগাযোগ আছে
এই সন্দেহ । তথন আউল সান ছিলেন দেশের সর্ব্বর্ত্ত ক্রপরিচিত ছাত্র-নেতা । তাঁহার সংগঠনশক্তি ও অপূর্বর
দেশপ্রেম তাঁহাকে নেতৃবর্গের শীর্ষহানীয় করিয়া তুলিরাছিল ।
ভাপানের সহায়তায় ক্রমণেশ হইতে ইংরেশ্বকে বিচুরিত

করিবার আশার তিনি টোকিওতে গমন করেন। সেখানে সামরিক শিক্ষালাভ করিয়া তিনি দেশে ফিরিলেন এবং এক সশর সেনা-বাহিনী গঠন করিলেন। তিনি আশা করিয়া-ছিলেন যে, জাপান ব্রহ্মকে ইংরেজের অধীনত'পাশ হইতে মুক্ত করিতে সহায়ত। করিবে। কিন্তু তাহার সে ভূপ ভাঙ্গিয়া গেল। তথন বা-ম প্রক্ষের প্রধান মন্ত্রী নিমুক্ত হন। ১৯৪০ সালে জাপানীরা প্রশ্নে জাপ কর্তৃত্ব প্রতিষ্ঠিত করিতে চেষ্টা করেন। তাহাতে জেনারেল আউদ্ধ সান তাহার মুক্তি-ক্ষেক্তে অতি গোপনে ও স্থকৌশনে গণকৌকে পরিগত করেন। ইংরেজ তথন আতক্ষে ব্রহ্মদেশ পরিত্যাগ করিয়াছে।

আউক সান গুপ্তভাবে দেশের মুক্তিকামীদের সংগঠিত করিতে লাগিলেন এবং সকে সকে ভাপানী সৈতদের অত্যাচার নিবারণের চেষ্টাও করিতে লাগিলেন। ভাপানী সৈত তবন প্রকাজে দোকানপাট বুঠ এবং নারীদের উপর অত্যাচার ইত্যাদি বর্করোচিত আচরণের অত্ঠান করিয়া চলিরাহিল। এদিকে রটশ সৈতবাহিনীর পুনরায় রেছ্ন প্রবেশের ছই দিন পুর্বে আউক সানের গরিলা সৈতবাহিনী উক্ত শহর দখল করিয়াছিল। এক্ষদেশ পুনরায় অবিকারের পর বিটিশ্বাহিনীর সহিত আউক সানের সৈপ্তদের সংঘর্ব উপস্থিত হয়। আউক সান তবন বাজনেশের অপ্রতিহ্বী নেতা। ব্যক্ষরে গ্রহ্ম



খাৰীন ত্ৰন্ধের গণপরিষদের প্রথম অবিবেশন

ভরমান স্মিপ ইছা পুনরাধিকারের পর এখানে কিরিয়া আসেন। তিনি আউল সান ও তাঁহার আট হাকার সহকর্মীকে কারারদ্ধ করিতে মনত্ব করেন। কিন্তু এই সময় পূর্ব-এশিয়ার সৈত-বাহিনীর সর্বাধিনায়ক লড় লুই মাউন্টবাটেন গবর্ণর ভরমান দিপকে পরামর্শ দেন যে সভনাগ্রত ব্রহ্মদেশে ব্রিটলের মামূলি स्याननीणि कार्याकती इक्टर ना। **छोक्।तक शतायर्ग ১৯**६८ সালের সেপ্টেম্বর মাসে আউক্সানের স্থিত চুক্তি অনুসারে তাঁছার ফ্যাসীবিরোধী সেনাব:ছিনীর এক অংশকে ব্রিটশ সেনানায়কের অধীন সশগ্র ত্রহ্মবাহিনীর অস্তর্ভুক্ত করা হয় এবং অবশিষ্ট সেনাবাহিনীকে ভালিয়া দেওয়া হয়। যুদ্ধের পর বিলাতে চার্চিল মন্ত্রীসভার পতন হটলে রক্ষণশীল দলের হাত হইতে ক্ষতঃ ধসিরা পড়িল। রটেনে শ্রমিক গবর্ণমেট প্রতিষ্ঠিত হইল। অতএব শান্তিপূর্ণ ভাবে ত্রন্ধের স্বাধীনত। লাভ সম্ভব হইবে এই আশায় আউপসান লড মাউণ্ট-ব্যাটেনের প্রভাবে সম্মত হইলেন। তিনি আরও মনে করি-লেন-ভাছার সেনাবাহিনীর এক অংশ ত ত্রন্ধবাহিনীর **অন্তত্ন ভাইবে**।

১৯৪৫ সালের অক্টোবর মাসে ডরমান থিব শাসন-পরিষদ পুরুষ্ঠিত করিতে অঞ্জর ক্টলেন। তিনি শাসন-পরিষদের ১৪টি আসনের মধো আউদ সাংনের দলকে ছয়টি আসন দিতে চাহিলেন। আউদ সাংন এই প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান করিলেন। কৌশলী ইংরেজ গবর্গর তথন শুন্তরীশংবর উ স—কে লইয়া মুত্রন শাসন-পরিষদ গঠনে উজোগী হইলেন। তথন আউদ সানের দল বিটিশ কুটনীতির বিরুদ্ধে এক বিরাট আন্দোলন স্বান্ত করেন। ব্রিটিশ গবর্গমেন্ট তথন জয়মান মিথের পরিবর্গে ছিউবাট রাজকে ব্রুদ্ধের গবর্গর করিয়া পাঠাইলেন। বুতন গবর্গর আউদ সানের দলকে শাসন-পরিষদে সংখ্যাগরিষ্ঠতা প্রদান করেন। আট্রদ্ধ সাংন গং-পরিষদের সহকারী সভাপতি নির্ব্বাচিত হইয়া ঘোষণা করেন যে, ব্রব্বের শাসনতন্ত্র রচনার কনা একটি সার্বভাম গণপরিষদ গঠন করিতে হইবে এবং ১৯৪৭ সালের ৩২শে ডিসেগ্বের মধ্যে ব্রহ্মকে পূর্ণ খাধীনতা (ডোমিনিয়ন টেপ্টাস নয়) দিতে হইবে।

এই বিষয়ে ত্রিটিশ গবর্ণমেন্টের সহিত আলোচন। চালাইবার জনা আউক সান বিভিন্ন দলের সদস্তগণের সহিত ১৯৪৭ সালের জাতুয়ারী মাসে লওন গমন করেন। সেখানে ২৭শে জাতুয়ারী ত্রিটিশ প্রধান মন্ত্রী মি: এটলীর সহিত তাঁহার এক চ্জি সম্পাদিত হয়। এই চ্জিনতে বার্যা হয় যে ত্রজের শাসন-পরিষদ আন্তর্করী জাতীয় গবর্গমেন্ট হিসাবে কার্য্য করিবেন।



্শেষ রটিশ গ্রণর মার হিবিটে রাজ্য ও তক্ষের প্রথম সভাপতি সাও স্কুই পাইক সৈয়গণের জভিবাদন গ্রহণ ক্রিতেচ্ছন

প্রপ্রিল মাসে গণপরিষদের নির্কাচনে ২০২ট আসনের মানে আউল সানের দল ১৯৬ট আসন লাভ করেন। বাকী ৬ট আসন কমিউনিষ্টরা লাভ করে। ১৯৪৭ সালের ১৬ই জুন গণপরিষদে এককে পূর্ণ স্বাধীন রাষ্ট্ররূপে ধোষণা করা হইল। ইহার এক মাস পরে ১৯শে জুলাই যথন আউল সান ও উহার সহকলী মন্ত্রিগণ সরকারী ভবনে মন্ত্রণায় নির্ক্ত, সেই সময় তাহাদের সহিত একোর এই জনপ্রিয় নেতা আততারীর হাওে অভান্ত নির্কুর ভাবে নিহত হুইলেন। এই অপরাধের ক্ষান্ত প্রাক্তন প্রধান মন্ত্রী উস প্রমুখ কয়েকজনকে মৃত্রাদত্তে দণ্ডিত করা হয়। এই শোচনীর ঘটনা যে দিন ঘটে সেই ভারিখেই রাত্রিকালে আইল সানের সহকারী নেতা থাকিন ত্ব প্রধান মন্ত্রীক্রণে ঘোষিত হুইলেন।

আৰু স্বাধীনতা লাভ ক্রিয়া ব্রহ্মবাসীরা তাহাদের মহান্ নেতা আউন্ধ সানকে মরণ ক্রিতেছে। ওাহার নশ্ব দেহ ভাহার দেশবাসী সসমানে সংরক্ষিত ক্রিয়াছে। তিনি আৰু ইহলোকে নাই, কিন্তু ওাহার সাধনা সম্বল হইয়াছে।

থাকিন স্থানা মন্ত্রী হইনা ইন-এক চুক্তি বাক্ষর করিতে লভনে গেলেন। ১৭ই অক্টোবর চুক্তি বাক্ষরিত হটল। এই চুক্তি কান্ত্রারী মাস হইতে কার্যাকরী হট্যাছে এবং একদেশ বিটিশ কমনওয়েলখের বাহিরে স্বাধীন সাক্ষ্যেরী রাষ্ট্রে মর্যাদ। লাভ করিয়াছে।

বিটিশ প্রধানমন্ত্রী মিঃ এটলী ও ব্রন্ধের প্রধানমন্ত্রী থাকিন মু-র মধ্যে যে চুক্তি সম্পাদিত হইয়াতে ভাষার একটি সত্ত এই যে, ব্রন্ধদেশে অসামরিক শাসন-ব্যবস্থা পুনঃপ্রবর্তনের জন্য ব্রিটেন যে ব্যয়ভার বহন করিয়াছে ভাষার জন্ম সে কোন লাবি করিবে না। তা ছাচা ব্রিটেন ব্রহ্মদেশকে যে দেও কোটি পাউও ঋণ দিয়াছে, তাহার উপরে ব্রিটেনের কোন দাবিদাওয়া নাই। ইহা বাতীত ব্রহ্মদেশের নিকট ব্রিটেনের আর যাহা পাওনা আছে তাহা ব্রহ্মদেশ ১৯৫০ সালের ১লা এপ্রিল হইতে ২০ট বার্ষিক কিন্তিতে পরিশোধ করিবে এবং এই ঋণের জনা কোন স্থদ দিতে হইবে না।

बक्षरमम बिटिंग्स निम्नलिथिक आशास्त्रलि পরিশোষ করিবে:--(১) চুক্তি বলবং হইবার পর ত্রঞ্জের অস্থায়ী গবর্ণমেন্ট ত্রন্ধপ্রবাসী ত্রিটিশ প্রস্কাদের প্রাপা পেনসন ও বেতন মিটাইয়া দিবেন, (২) ব্রিটশ সেনা-বিভাগীয় প্রবাাদির বিজয়-লন্ধ সমুদয় অর্থ ত্রগ্ধ-সরকার পরিশোধ করিবেন, (৩) বাণিজ্ঞা ও কাহাক চলাচল সম্পর্কে হথাসম্ভব শীল্প উভয় পক একটি চুক্তি সম্পাদন করিবেন, (৪) ক্ষমতঃ হস্তান্তরের পর यथामञ्जर नीख जिल्लि भवर्गात्मके जन्मतिन क्रेटक हेरतिक देवना मनाहेश लहेटवन, এवर खन्न-भवर्गरमणे जिएहेन हहेएछ ती. বিমান ও ছল-বাহিনী সংক্রান্ত একট মিশন আমন্ত্রণ করিবেন। কিন্তু ত্রগ্ধদেশ ত্রিটিশ কমনওয়েলধের বাছিরে কোন দেশ হউতে এরপ আমন্ত্রণ করিতে পারিবেন ন।। পূর্বে সংবাদ দিয়া উভয় দেশের জাহাত্রই উভয় দেশের বন্দরে প্রবেশ করিতে পারিবে এবং উভয় দেশের বিমান উভয় দেশের আকাশ-পথে চলাচল করিতে পারিবে। ক্রিটেন সম্প্রতি এক্সদেশকে ৩৭খানি কাহার ধারে প্রদান করিবে। দেশরক্ষা সংক্রান্ত চুক্তি ক্ষমতা হস্তান্তরের পর তিন বংসর বলবং থাকিবে, ভারপর এক বংসরের নোটদে উভয় পক্ষ এই চুক্তি বাতিল করিতে পারিবেন। চুক্তির ব্যাধ্যা ও

প্ররোগ সম্বন্ধে কোন মতভেদ হইলে আন্তর্জ্জাতিক আইন-পরিষদ তাহার মীমাংসা করিবে।

ব্রজ্ঞের গণপরিষদের শীর্ষে যে ইউনিয়ন জ্ঞাক এতদিন উচ্জীন ছিল গত ৪ঠা জাহুৱারী প্রভাতে তাছা জ্ঞপদারিত করিয়া সেই ছানে সাধারণতব্রের তারকালাছিত ত্রিবর্ণরঞ্জিত পতাকা উরোলন করা হয়। প্রভাত হইবার ছুই ঘন্টা পূর্ব্বে সেই জ্ঞপশ্রিয়মান ইউনিয়ন জ্যাককে ব্রজ্ঞের নেতৃত্বন্দ ও বিভিন্ন রাষ্ট্রের প্রতিনিধিগণ অভিবাদন করেন। তুর্যা, শথ ও ঢ্জানিনাদের মধ্যে ক্ষমতা হস্তান্তরের জহুঠান বোষিত হয়। ১৯৪৭ সালের ১৭ই অক্টোবরের চুক্তি এইদিন ব্রক্ষ ইউনিয়ন পার্লামেণ্টে জ্মুমোদিত হয়। ক্ষমতা হস্তান্তর পর্ব্ব শেষ হইবার পর গণপরিষদের জ্বিবেশন আরম্ভ হয়। ব্রক্ষ সাধারণতব্রের সঙ্গোপতি সাও স্থই থাইক জামুঠানিকভাবে কার্যভার গ্রহণ করেন ও স্বাধীন ব্রক্ষরাপ্র প্রতিষ্ঠার কণা বোষণা করেন।

জাতীয় সঙ্গীতের পর স্বাধীনতা-সংথামের প্রধান নেত।
জাউচ্চ সান ও জন্তান্ত নেতাদের প্রতি প্রদা নিবেদন করা হয়।
তারপর প্রেসিডেণ্ট থাকিন স্থু-কে প্রধান মন্ত্রী পদে নিরোগ
করেন।

ব্রন্ধের শেষ গবর্ণর সার হিউবার্ট র্যাক্স ৪ঠা কান্ত্রারী প্রত্যুবে বার্মিংহাম নামক ক্ষুকারযোগে রেকুন ত্যাগ করেন।

ব্ৰজের এই স্বাধীনতা-উৎসবে যোগদানের জন্ত ভারতের জাতীর কংগ্রেসের সভাপতি শ্রীযুক্ত রাজেক্সপ্রসাদ বিমানযোগে রেছুন গমন করেন। তিনি সারনাথ হইতে পবিত্র মহাবোধি রক্ষের শাখা ও পৃত গলোদক সেধানে লইরা যান। সোরে ডাগন প্যাগোডার প্রাক্তনে এই বোবিরক্ষের শাখা মহাসমারোহে বর্ষাস্থ্রানসহ নীত ও রোপিত হয়। উক্ত গঙ্গাবারি তহপরি সিঞ্চিত হয়। দিল্লীতে ভারতের বড়লাট লড মাউন্টব্যাটেন ধোষণা করেন যে, ব্রজের শেষ রাজা থিবোর কার্চনির্শিত সিংহাসন ব্রজকে প্রত্যবি করা হইবে।

চকিত চাহনি

🗃 শিবদাস চক্রবর্ষী

বেদিন প্রথম নয়ন স্থমুখে

উদর লভিলে তৃমি,
কচি তৃণভারে মুকুলি' উঠিল

মোর মনোমরুভূমি।

হৈরিছু তোমারে ওগো জনামিকা,
কিছু রূপে লিখা, কিছু প্রহেলিকা,
নদী বহু নিতি জলবির পানে

তোমার চরণ চূমি'।

আকাশ যে কথা কছে ইসারায়
বাতাসের কাণে কাণে,
তোমার ভাষণ-সঙ্গীতে তারি
বারতা লভি যে প্রাণে;
তুমি কিছু ভাব, কিছু বা ভাবনা,
কিছু আল্পনা, কিছু কল্পনা,
কখনো স্বের আড়ালে স্কাও,
কভু বরা লাও গানে।

ভোষার আঁথির চপলতা লবে
ভারা কাঁপে নীলাকালে,
সাহারা সহসা শিহরিরা ওঠে
কাঁচা স্থামা হাসে হাসে;
ভূমি কিছু হারা, কিছু ভূমি হবি,
কিছু ভৈরবী, কিছু বা প্রবী,
ভোষার মুখের হাসি চুরি করে
গাহে গাহে হুল হাসে।

ভোষার ললাট-লালিমা-লীলার
ভোরে ওঠে রাঙা-রবি,
বিধ্র বুকের বাণী হরি' নিয়া
গান গাহে রাক্কবি।
কিছু বা আভাসে, কিছু বা প্রকাশে,
কিছু বা বর্ণে, কিছু বা বিলাসে,
কখনো বা ভানে কখনো বা ধানে
ভোষার ধারণা লভি।

তোমারি বাসনা-উচ্ছাসে, বার্
বসম্ভ উতরোল,
তটনীর তট-নীরে ধীরে ধীরে
বাজে কলকলোল;
তৃমি কিছু বাই, কিছু বা বাহার,
কিছু সুর আর কিছু করার,
কধনো গতিতে কধনো বাধার
ছলের হিলোল।

ভাষার প্রাণের প্রতিষা—সে বেন
তব ভপরূপ ছারা,
ভাষার কামনা-সারর মধিরা
তৃষি বরিরাছ কারা,
তৃষি কিছু রূপ, কিছু ভারোপণ,
কিছু বা সতা, কিছু বা খপন,
কিছু বা মাহ্মী, কিছু বা মানসী
ভিছু যোহ, কিছু মারা।

খান্ত-সমস্থার ভূত, ভবিব্যৎ ও বর্ত্তমান

अक्खत्रहाम नानुशानी

ভারতবর্ষ কৃষিপ্রধান দেশ ; কিছ আশ্চর্যোর বিষয় হ'ল এই যে ক্ষয়িপ্ৰধান দেশ হওয়া সত্ত্বে ধাতাভাব আমাদেরই সব চেয়ে বেশী। বিরালিশের মহন্তর থেকে সুরু করে যে খাত-সমস্তা আমাদের দেশে দেখা দিয়েছে আৰু মুদ্ধোত্তর কালেও তার আশাকুরূপ সমাধান সম্ভব হচ্ছে না। ১৯৪২ সালের মার্চ মাস পর্যান্ত আমাদের খাজ-সমস্তা ছিল মূল্য-সমস্তা মাত্র। অর্থাৎ ১৯২৯ সালের বিশ্বব্যাপী মহাসঙ্গটের ফলে ক্রমিসামগ্রীর মুলা যে ভাবে কমে গিয়েছিল তার দরুন ১৯৪২ সাল পর্যান্ত ক্লষি-ব্যবসায়ে তেজির খুত্রপাত হয় নি। এইজ্লাই ১৯৪২ পাল পর্যাপ্ত কি ভাবে ক্রমিসামগ্রীর মূল্য বাড়ান **ধায়** তাই ছিল আমাদের সমস্তা। এখানে একবা বলা আবস্তক যে, ১৯২৯ সালের বিশ্বব্যাপী মন্দার প্রতিক্রিয়া পৃথিবীর প্রত্যেকট দেশে দেখা দিলেও আমাদের দেশেই তা সর্বাপেক্ষা গুরুতর আকার বারণ করে। কারণ আমাদের দেশে এক দিকে যেমন সুসমল্পস অর্থনৈতিক ব্যবস্থা কার্যেম করবার উপযোগী শিল্পের অভাব অন্ত দিকে ঠিক তেমনি বিদেশী সরকার নিক্রিয় খাকায় কোন উপযুক্ত অর্থনৈতিক পরিকল্পনাও এদেশে গুছীত হতে পারে নি। সব দিক থেকেই আমানের সমস্তা कृतिल হয়ে উঠল ় ব্যবসায়ে মন্দা আমাদের আধিক ব্যবস্থায় পাকাপাকি হয়ে বসল। তাই বলছিলাম, ১৯৪২ সাল পর্যন্ত আমাদের কৃষির প্রধান সমস্তাই ছিল মূল্য-সমস্তা---কি ভাবে কৃষিকে মন্দার হাত থেকে রক্ষা করা যেতে পারে, কি ভাবে আবার কৃষিকাত জবোর মূল্য রৃদ্ধি করে কৃষি-ব্যবসায়কে সমুদ্ধ করা যেতে পারে, তাই নিয়েই তখন ক্ষবিদ্যণ মাধা ধামাতেন। কিন্তু এর পর যে সমস্তা আরম্ভ হ'ল সে আরও জটিল, আরেও ভয়াবহ অদৃষ্ট-পূর্ব্ব এবং অভ্তপূর্বা। একণা অবশ্য ঠিক যে, ভারতে ব্রিটিশ শাসনের অভ্যুদয়ের পর খেকে ছোট বড় অনেক ছভিক্লের ক্ৰাই আমরা ইতিহাসে পাই, অনেক লোকক্ষয় তাতে হ্রেছে। প্রথম মহাসমরের সময়ও খাছ-সমস্তা কটিল আকার ধারণ করেছিল। কিন্তু এসব সত্ত্বেও বিতরণ-ব্যবস্থা মোটামূট অব্যাহত থাকার সমস্তা গুরুতর হলেও মাত্রা অতিক্রম করে নি,—অন্ততঃ আধুনিকতম অভিজ্ঞতার দৃষ্টিকোণ থেকে যাচাই করলে এ কথাই আমাদের মনে হয়। অস্বাভাবিক পরিস্থিতির क्या मा इस (इएएटे निर्माम। किस वास्त्रिक नमस्त्रिक আমাদের দেশ বাভণত সহতে বোল আনা ত্বরং-সম্পূর্ণ নয়। বিশেষ করে আমাদের চালের সরবরাহ চাহিদার অনুপাতে ক্ম বলেই যুদ্ধপূর্ব্ব সময়ে স্বাভাবিক অবস্থারও আমাদের এক-দেশ খেকে চাল আঘদানী করতে হ'ত। রক্ষদেশ বিটলের

হস্তচ্যত হবার পর আমাদের বাইরের সরবরাহেও ঘাটতি পড়ল। সেই সঙ্গে আডান্তরীণ বিতরণ ও যানবাহন ব্যবস্থার বিশৃথলা দেখা দেওয়ায় আমাদের খাঞ্চমস্থা আরও গুরুতর হরে দাঁড়াল।

युष-পূर्वकारल आभारमत बाज अत्रवतार अस्ताकत्वत চেয়ে কম হলেও একখ। স্বীকার করতেই হবে যে, সারা পুথিবীর হিসাব ধরলে খাগুসরবরাতের তথন ঘাট্তি ছিল না বরং কোন কোন দেশে প্রয়োকনাতিরিক্ত বাছণত উৎপন্ন ছওয়ায় বাড়তি মাল জমে উঠছিল। তাই গারা একথা বলেন যে, পুৰিবীতে কোন দিনই চাহিদার অফুযায়ী পর্যাপ্ত পরিমাণ খাল্প সরবরাছ ছিল না তাঁদের যুক্তি যাচাই করে দেখবার প্রয়োক্তন আছে। যুদ্ধপূর্বকালে অনেক দেশের পক্ষেই সমস্তা ছিল কি ভাবে বাড়তি সরবরাহ উপযুক্ত মূলো বিক্রয় করা যেতে পারে। মার্কিন দেশের কথাই ধরা যাক। মার্কিন দেশ শিল্পপ্রধান হলেও সেখানকার কৃষিসম্পদ্ত উপেক্ষ্মীয় নতে। প্রথম মহাসমরের পূর্বে মার্কিন দেশে গথের আবাদ মোটামুট স্থিতাবস্থায় ছিল, ফলে রপ্তানীর পরিমাণ ক্রমশঃ ক্ষে আস্ছিল। তারপর্ট এল মহাস্মর। ইউরোপের দেশসমূহ রণভাগুৰে এত মেতে উঠল যে তাদের পক্ষে উৎপাদন-বাবস্থাকে অক্ষ রাখা প্রায় অসম্ভব হয়ে দাঁড়াল । তাই এই সব দেশের আভান্তরীণ সরবরাহ কমে যাওয়ায় বিদেশ থেকে আমদানী ধাছশস্তের উপর নির্ভর করা ছাড়া আর গত্যস্তর রইল না। এই অবস্থায় গমের দাম বাড়তে আরস্ক হয়। ১৯১৪ সালে যে গমের দাম ছিল প্রতি বুসেলে ৯৮.৮ সেট, ১৯১৯ সালে তার দাম হ'ল ২.৩২ জলার। সাধারণ মূল্য-ছারও এই সময়ে ৬৮-১ থেকে ১৩৮-৬-এ দীড়াল। এই যে যুদ্ধকালীন তেজি এর স্থযোগে অ'বাদের প্রসার আরম্ভ ছ'ল। ১৯০৯-১৩ সালে যেখানে গমের আবাদী ক্ষির গড় আয়তন ছিল ৪৮০ লক্ষ একর, ১৯১৯ সালে সেই ক্ষমির আয়তন ছ'ল ৭৩০ লক্ষ একর। ১৯২০ সালের পর থেকে আবার মুল্যা আরম্ভ হয় এবং ১৯৩২ সালে এই মুল্যা চরম সীমার পৌছে। কিন্তু মন্দাব অনুপাতে আবাদ নিয়ন্ত্রণের কোন ব্যবস্থা না থাকায় আবাদী ভ্ৰমির পরিমাণ মোটের উপর অপরিবর্ত্তিতই থেকে স্বায়। এর ফলে ১৯১৪ সালের আগে मार्किन मिला य পরিমাণ গম উৎপদ্ন হ'ত, প্রথম মহাসমরের পর এর পরিমাণ সর্ব্বদাই শতকরা ৩৫ ভাগের চেয়ে বেশী किन।

উপরে মার্কিন দেশ সন্থনে যে কথা বলা হ'ল পৃথিবীর প্রায় প্রত্যেকটি কৃষিপ্রধান দেশের পক্ষেই সে কথা সমভাবে প্রবাজা। পৃথিবীর খাওসমন্তা বিষয়ক যে বিবরণী ব্যবস্থাপক পরিষদ পেশ করেছেন তাতে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশের মঙ্ক করা গম সম্বন্ধে যে তুলনামূলক সংখ্যা সংগ্রহ করা হয়েছে তা নীচে দেওয়া হ'ল। এ থেকে পৃথিবীর মোট বাড়তি গলের পরিমাণ সম্বন্ধে বেশ পরিকার ধারণা করা চলে।

যাকে আমরা থাদ্যশশ্রের বাঙ্তি বলে উল্লেখ করেছি বাজাধিক আর্থিক পরিবেশে তা বাঙ্তির বদলে বরং ধাটি বলেই প্রমাণিত হবে। যে হারে আমাদের লোকসংখ্যা বাড়ছে তার ক্রেড যদি উপযুক্ত পরিমাণ পাদ্যের ব্যবস্থা করতে হয় তা হলে আমাদের উৎপাদন রদ্ধি করতে হবে। দৃষ্টান্তসরূপ

(হাভার	টনের	হিসাবে)

(रामाम छद्यम (र्याद्ध)						
	ক।নাডা	আৰ্ছেন্টিনা	মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র	অষ্ট্রেলিয়া	ঝেটি	সার। পৃথিবীর মোট
	•					মজুত গম
১৯২২-২৬ গড়	2009	2920	৩২৬৬	ዓ৮ ৯	৬৭৭৭	>625
১৯२१− ० ১ शङ्	३७३७	২৩৯৫	<i>৫</i> ৮ ዓ ৯	7754	25877	25667
५ २०६ १	৩৭০১	7965	20485	১৩৫১	39890	> 9 b 3 c
2 2°50	@ > 0 0	\$087	१००५१	2859	72464	€0 87P
220B	\$ \$ \$ \$	७३८२	9849	२०५०	2F & O 9	এ ২২ ৭৮
7200	৫৮ ২৪	> 0 2 0	8007	2002	15%20	9 6 % E b
3 50 to	৩৪৫৬	১৭৮৯	৩৮৬৫	2290	20510	২
7509	2009	2 op p	2265	2226	4990	2385€
7 5.0F	460	3965	.857 2	2062	boos	29286
4346	३৮ ৫৮	8665	9858	2≥03	29285	14851
7580	4493	હહાર	9 6 7 8	2664	১২৩১৭	• 69 • 6

উপরের হিসাব থেকে একথা বোঝা যাচেছ যে, যুর-পুর্বকালে সারা পুথিবীর মোট মন্তুত গমের পরিমাণ নিতান্ত नगर्गा किल ना। ১৯৩৫ (११ ১৯৩৮ भाल भर्गाल जातान মষ্ট ছণ্ডয়ায় সঞ্চিত গমের পরিমাণ পূর্ব্বপূর্ব্ব বৎসরের অনুপাতে কমে গেলেও প্রয়োজনাতিরিক্ত গম কিছু ছিল। ১৯৪২ সাল পর্যান্ত প্রায় এই অবস্থাই চল্লা। ফলে, এই সময় মার্কিন युक्तबाक्षे व्यवर हेटेटबाटभन एकान एकान एकटन शरमन पन वकास রাখার জনা আবাদের নিয়ন্ত্রণও করতে হয়েছে। আমাদের দেশেও অরুরূপ ব্যবস্থ অবলম্বিত হয়েছে। আমাদের দেশে ধাদাশস্তের সরবরাহ চাহিদার অনুপাতে কম হওয়া সত্তেও ১৯৩১ সালের পর থেকে গমের মূল্য আশাতিরিজ্ঞরপে হ্রাস পায় এবং বিদেশ থেকে আগত খাত্তশন্তের উপর শুক্ত ধার্যা করা হয়। সবচেয়ে ছঃখের বিষয় ছ'ল এই যে, যুদ্ধপুর্বকালে একদিকে পৃথিবীতে যখন এই অবস্থা চলেছে তখন পৃথিবীর অনেক অন্প্রসর দেশের লেংকই উপযুক্ত থাদোর অভাবে खनमन ता अक्षीमनिक्षष्टे इत्स त्रत्युष्ट । এक नित्क व'न বিশ্বব্যাপী মন্দার সমস্তা: অত্যনিকে লেংকের আয় না থাকায় টাকার অভাবে বাজারের চাহিদা কমে গেছে। এই ভাবে যুদ্ধপূর্ব্ব কালের খাত্তসমস্তা ছিল সম্পূর্ণ বিভিন্ন রকমের।

উপরের আলোচনা থেকে একবা বেশ বোকা যাচ্ছে যে,
মৃদ্ধুপ্রকালে বাড় তি খান্যশশুর মৃদ্ধুত হওয়ার মৃলে ছিল
ক্রম্পক্তির অভাব—যায়্যরক্ষার উপযোগী বালের নিক দিয়ে
বিচার করলে কিন্তু এই বাড় তি শশুকে মোটেই বাঙ় তি বলা
চলে না। লোকের যদি যথোচিত ক্রম্পক্তি খাকত, তারা যদি
উপযুক্ত খালা আপন প্রয়োজন অমুসারে ক্রয় করতে পারত
তা হলে আর এ সমস্থা খাকত না। কিন্তু বর্তমান অর্থবৈতিক পরিবেশে তা হতে পারছে না। অর্থাৎ উপরে

বলা যায় ধুদ্পুক্ক পৈলের খাদাসরবরাহের চুথ্যে ১৯২০ সালে যে পরিয়াণ খাজসরবরাছ বাছাতে ছবে তার শতকরা পরিমাণ হ'ল নিম্নলিত প্রকার ঃ খাজপঞ্জ শহকরা ৩৯, চিনি ২৫, বৈজ্ঞাতীয় উপাদান ১১৩, ডাল ৮৪, ফল ও শাক্ষরতী ৩৩০, আমিষ জাতীয় উপাদান ৩০৫ এবং ছ্রুজ্জাতীয় পদার্থ ৬০। এদিক পেকে যাটাই করলে আমানের খাদাসরবরাহে যে যুক্পুর্ক্কালেও ঘাট্ডি ছিল একণা মানতে হবে। ফলকথা হ'ল এই যে, ১৯০০ সাল খেকে আরম্ভ করে আমানের লোকসংখ্যা বেড়েই চলেছে, কিন্তু ফ্যনের উৎপাদনে পরিমাণ রির হতে পারে নি। এই যে মৌলিক সম্ভা, মহাস্থটের চাপে এটা মাথা ভূলবার অবসরও পেল না। বাড়তি মজ্ত অবিক্রীত থেকে সম্ভাটির জ্ঞালত। আরও বাড়িয়ে ওলল।

এই চাপা পড়া মৌলিক সমস্থা মুদ্ধের স্থযোগে শুতন করে দেশং দিলে। এই নুতন সমস্থার হটো দিক অংছে। এক দিকে মুক্ষলালীন মুন্ধার্মীতির কলে এক দল লোকের আয়ে বাঙ্লা এবং পণামূল্য একাদিক্রমে অবাবে বেড়ে চলল, অন্যাদিকে উংপাদন ও বিতরণ বাবস্থার বিশৃষ্থলা উপস্থিত হওয়ায় বাজসরবরাহ ব্যবস্থাও ভেঙে পড়ল। অন্যানা দেশে এই সমস্থা গুক্ততর আকার বারণ করার আগেই কিছু না কিছু প্রতিকার্মূলক বাবস্থা অবলম্বিত হয়েছে। ইইরোপে বাছলম্ম উৎপাদন বাবস্থার উপর সরকারী নিয়ন্ত্রণ এবং নিয়ন্ত্রিত বাজ বিতরণবাবস্থা কায়ের করা হয়, সেই সক্রে দেশের উৎপাদন ব্যবস্থার যথেপাস্কু বাবস্থা অবলম্বিত হয়। আমাদের দেশে কিন্তু অন্যানা ব্যাপারের ন্যায় এ ব্যাপারেও অবাবস্থা চলতে থাকে। ১৯৪২ সাল পর্যাম্ব বাড়তে মুন্ধান্থীতি এবং সামরিক ব্রিদের জন্য প্রকৃত মূল্য বাড়তে

খাকে; কিছ এই অবস্থা যুদ্ধপূর্ব্ব মন্দার প্রতিকার হিসাবে গৃহীত হওয়ায় কোন ব্যবস্থা অবলধন করাই সম্ভবপর হয় নি। কোন কোন খাভশন্তের মূল্যনিয়ন্তর্ণের চেষ্টা অবস্থা করা হয়েছিল; কিছ সে চেষ্টা কার্য্যকরী না হওয়ায় সরকার কর্তৃক শরিত্যক্ত হয়। ১৯৪২ সালে জাপানীগণ কর্তৃক প্রন্ধ বিজ্ঞারে পর বাত্যপরিস্থিতি আরও সম্বটজনক হয়ে ওঠে। কারণ ক্রমদেশ থেকে প্রতি বংসর যে ১০ লক্ষ টনেরও অধিক চাল আমদানী করা হ'ত সেই চাল পাবার আর কোনও উপায় রইল না। সারাটা দেশ অব্যবস্থার যে কৃষল ভোগ করেছে সে সম্বদ্ধে বেশা কিছু বলা নিত্রয়োজন। এই সভ্যতাগর্মনি বিংশ শতান্ধীতে এত বড় একটা মন্তর্গর দেশের বুকের উপর দিয়ে যে অবাধে সংঘটিত হয়ে গেল এর আর তুলনা হয় না।

বহু তর্কবিতর্ক যুক্তিবিচার ও আলোচনার পর ভারত-সরকার ১৯৪০ সালে খাখশস্ত বিষয়ক পরিষদের পরামর্শ অমুযায়ী একটা খুল খাখনীতি গ্রহণ করতে বাধ্য হলেন। এই নীতির মূল উদ্ভেশ্ন ছিল নিম্নলিখিত প্রকার :—

- কে। বিদেশ থেকে খাছ-শশ্তের আমদানী থধাসম্ভব বাড়ানা এবং কোন আক্ষিক পরিস্থিতিতে খাছ সংস্থান কর!র জ্ঞা ৫০০,০০০ টন খাছাশশ্র মন্তুত রাখা।
- খে। দেশের আবাদ বাড়ানোর জ্ঞ উপযুক্ত ব্যবস্থা জ্বলখন—যেমন, বাড়শন্তের ফসল বাড়াবার জ্ঞাক্লে উৎসাহ প্রদান, জ্ঞাঞ কার্য্যের জ্ঞ জমির ব্যবহার ছগিত রেখে তাতে বাঞ্জনতের আবাদের বিভার, জলসেচন ব্যবস্থা, উৎক্টতর বীজধানের সরবরাহ, প্রভৃতি।
- (গ) কেন্দ্রীয় সরকারের নির্ছেশাসুযায়ী উপযুক্ত মৌলিক পরিকল্পন। গ্রহণ।
- (খ) বড় বড় শহরে নিয়ন্ত্রিত খাছ বিতরণ ব্যবস্থা কায়েম কর।।
 - (७) আইনধার। খাভশন্তের মূল্য নিয়ন্ত্রণ।

দিতীয় মহাসমরের অবসান হয়েছে বটে, কিছ আমাদের সমন্তার-সমাধান হ'ল কোপায় ? সত্য বটে, পৃথিবীয়য় আরু যে বাজসফট দেবা দিরাছে আমাদের বাজসফট দেবা দিরাছে আমাদের বাজসফট দেবা দিরাছে আমাদের বাজসফট করে কালির করেন আমাদের সমস্তাই সবচেয়ে কটিল। য়ুয়োত্তর আমলের প্রথম বংসরে অনার্ক্ট, কলপ্লাবন, ও বাডবালা ইত্যাদির দরুন আমাদের বাজসমত্যা গুরুতর হয়ে উঠেছিল। এ সময় বিদেশ থেকে চালের আমদানী একেবারে বয় ছিল; গম ও অভাত্ত বাজ-শত্তের সরবরাহও ছিল ধুব নৈরাজ্ঞনক। মোটের উপর, কীবন্যাতার বর্ত্তমান মান অমুসারে আমাদের বাজশত্তের বাট্তির পরিমাণ ১৯৪৫-৬ সালে প্রায় ৮০ লক্ষ্ টন ছিল। পৃথিবীর বাজসমত্যা সহুদে বিচার-বিবেচনা করার ক্ত একট আছর্জাতিক জরুরী বাজপরিষদ প্রতিষ্ঠিত হয়েছে। এই বাজ

পারধদের অধীনে করেকটি সমিতি গঠিত হয়েছে। খাছ সরবরাহ ও মৃল্যানিয়ন্ত্রণ ব্যাপারে এই পরিষদের কোন হাত নাই; তবে এই পরিষদের অস্থাদন অস্থারে মোটামূটিভাবে বাছশন্তের বিলিব্যবস্থা করা হচ্ছে এবং ক্রশিয়া ও আজ্জেনিনা ছাড়া পৃথিবীর প্রায় প্রত্যেকটি রপ্তানীকারী দেশই এই পরিষদের অন্মোদন অস্থারে কান্ধ করতে রানী হয়েছে।

এই সব আগ্রন্থাতিক ব্যবস্থা সত্ত্বেও আমাদের দেশের ধার্লগরিছিতিতে কোন উন্নতি পরিলক্ষিত হয় নি । ১৯৪৬ সালের শেষের দিকে থার্লগ্রের জভাবে নিয়ন্ত্রিত খান্ত বিতরণ ব্যবস্থা ভেঙে পড়বার জোগাড় হরেছিল। এই বংসর আমাদের ৪০ লক্ষ টন খাট্তির মধ্যে আমরা মাত্র ১৭ লক্ষ টন বিদেশ থেকে পাই এবং এর ক্তেও ভারত সরকারকে বিশেষ ব্যবস্থা করতে হয়। বর্তুমান বংসরেও খান্তপরিছিতি মোটেই সজ্যোষক্ষনক নয়। এই বিষয় নিয়ে খাত্র ও কৃষি সংসদ ১৯৪৬ সালের মে মাসে ওয়াশিংটনে বিভারিত আলোচনা করেন। এই সংসদ যে বিবরশ্র পেশ করেন তদস্সারে সারা পৃথিবীর খান্তশন্তর ঘাট্তির পরিমাণ প্রায় ১০০ লক্ষ টন রয়েছে এবং বর্তুমান ব্যবস্থা জন্থ্যায়ী এই ঘাট্তির সামান্ত জংশ মাত্র পূর্বণ হওয়া সম্ভব।

ভারত বিভাগের ফলে আমাদের বাঞ্জমখা আরও জটল হয়ে উঠেছে। ফ্সলের দিক থেকে বর্তমানে ভারতে প্রায় ১৭২ লক্ষ টন ঢাউল এবং ৪১ লক্ষ টন গম উৎপন্ন হয় এবং পাকিস্থানে এই ছুই ফসলের পরিমাণ যথাক্রমে ৫৩ লক্ষ্ টন এবং ২৭ লক্ষ টন। আমাদের প্রয়োজনের অমুপাতে এই কসলের পরিমাণ অনেক কম। এযুক্ত রাক্তেপ্রপ্রসাদের মতে প্রায় ১০০ কোট টাকার বাগ্যশন্ত আমাদের বিদেশ থেকে আমদানী করতে হচ্ছে। মুদ্ধের কয়েক বংসরব্যাপা অস্বাভাবিক পরিম্বিতির দর্মন বাখশস্তের চাহিদা বেড়েছে অনেকখানি; কিন্তু আবাদী কমির আয়তন সে অমুপাতে কিছুই বাড়ে নি বরং স্কসলের পরিমাণ অনেক কমে গেছে। विष्मि भववतारहत छेशत वदावत निखंद करा अर्योक्कि। এতে নিজেদের অর্থনৈতিক মুর্বলতাই স্থচিত হয় এবং মুক্রাসমস্থার জটলত। র্দ্ধি পায়। কারণ বিদেশ থেকে আমর৷ যখন খাঞ্চম্ম আনব তখন আমাদের তার পরিবত্তে किष्ट्र मिटल्डे २८४। नरेटन, বরবের বিদেশী মুদ্রার যোগান (मश्रम् यादव किथा (पदक ?

শাপ্তই প্রতীয়মান হচ্ছে যে আমাদের দীর্ব্ব মেরাদী সমস্তা ব্বই
কটিল। আমাদের বস্তমান পাগুসন্ধটি শুবু বস্তমানেরই সমস্তা
নর। আমাদের লোকসংখ্যা যেভাবে বাড়ছে এবং আবাদের
যা অবস্থা তাতে এ সমস্তা যে আমাদের অর্থনৈতিক ব্যবস্থাতে
কাম্মে হয়ে বসেছে তাতে কোন সন্দেহ নাই। বিদেশ
বেকে পান্তশন্ত আমদানী করে এ সমস্তার স্থায়ী সমাধান হতে

পারে না; এর কন্ত চাই আমাদের উৎপাদন ব্যবহার উৎকর্ষ সাধন যার কলে কসল বাড়বে এবং প্রয়োজনের অন্থপাতে খাড়শন্ত দেশের মধ্যেই উৎপন্ন হতে পারবে। কৃষিতে উৎপাদনের প্রসার একটা নির্দিষ্ট সীমারেধার বাইরে যেতে পারে না; কারণ কর্ষণযোগ্য ক্ষমি প্রকৃতির দান, তাতে মান্থবের হাত নেই। তাই বিদাপ্রতি কসল উৎপাদনের পরিমাণ বাড়ানই হ'ল আমাদের বর্তমান সমস্তা সমাবানের একমাত্র উপায়। এর জন্ত বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে চাধ–আবাদ স্থরু করতে হবে এবং একে সফল করতে হলে ক্লয়ি–ব্যবস্থার আমূল পরিবর্তন করতে হবে।

চীনের সাম্প্রতিক অর্থনীতি

শ্রীশান্তিরঞ্জন চক্রবর্ত্তী

ক্ষয়েক বংসর হ'ল দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধ শেষ হয়েছে। কিন্তু যে সব দেশ মুদ্ধে নেমেছিল তাদের সবাইকে প্রায় একই স্তরের অর্থনীতিক ত্রবস্থায় এসে পৌছতে হয়েছে। মুদ্ধে অপরিমেয় আর্থের প্রয়োজন হয়েছিল, তার যোগান দিতে গিয়ে বহু দেশকেই নিৰেদের মূদ্রানীতির স্বাভাবিক এবং সাম্যাবস্থ। ছারাতে ছয়েছে এবং তারই ফলে সে সব দেশের অর্থনীতিক ব্যবস্থায় একটা বিরাট ওলটপালট হয়ে গেছে। প্ৰে এ অবস্থাটা যেন অনিবাৰ্যা হয়ে উঠেছিল ৷ ১৯৩৬ সন থেকে জাপানের মত একটা বিরাট শক্তির বিরুদ্ধে চীনকে লড়ে জাসতে হচ্ছিল। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের পরিসমাপ্তিতে তারও ইতি হয়েছে, কিছু এই খুদীর্ঘ আট নয় বছর লড়াই চালিয়ে ষাওয়ায় চরম হুর্দশা ভোগ করা সত্তেও আধা সামস্কতন্ত্রী চীনের ভাগো শান্তি আসে নি। খরোয়া বিবাদ এখনও চলেচেই। ষ্বাধের প্রায়োজনেই অর্থের প্রায়োজন। এই অর্থ সংগ্রহ করা হয়-সাধারণত: সরকারের তরফ থেকে ধার করে, কর বসিয়ে ও ৰোট ছাপিয়ে বা টাকার পরিমাণ বাভিয়ে দিয়ে। **টলাষটকে যথাসম্ভব এড়িয়ে এবং সবগুলো নীতিই মিলিয়ে** থিশিয়ে এই টাকা যোগানোর কান্ধটা সারতে হয়। কিন্ত সরকারের গাফিলতি, উদাসীনতা ও অকর্মণাতার ফলে নানা কারণে সবচেয়ে অপঞ্চ ঐ তৃতীয় উপায়টিকে চীন গ্রহণ करत्राह । व्यर्थार (अरमरम व्यवाय मुखाक्की ए करमरह अरर প্রথম মহাযুদ্ধের শেষে কার্শ্বানীরই মত এবার চীন ধীরে ধীরে সর্বানালের অতলে তলিয়ে যাছে।

কিছুকাল আগে এক খবরের কাগজে চৃংকিঙে প্রচলিত অব্যশ্লোর একটা হিসাব দেওয়া হয়। তার থেকে এই অর্থনীতিক বিপর্যায়ের হয়প খানিকটা বোকা যাবে। নীচে ভালিকটি দেওয়া গেল।

একট কেপ্টের টুপি		. 600	ডলার
এক ৰোদা ছুতা		260	
এক প্রস্থ স্থাট		₹%00	97
এক বোতল হইষ্		₹800	**
এক পাউও মাখন		२७०	*
একটা লিপষ্টক		200	,,
	/ अञ्चीत्रज	SUPER PROPERTY	

সে সময়কার সংবাদপত্তে প্রকাশিত জার একটা ধবরও এ প্রসংশ উল্লেখযোগ্য। এক চীনা অব্যাপক বিজ্ঞানে নোবেল পুরস্কার পান। তাতে হিদাব করে দেখা যায় যে, তিনি বিপুল পরিমাণ ডলারই পেয়েছিলেন বটে তবে তার ক্রেমুলা আমাদের দেশের মাত্র পঁচিশ টাকার সমান! অবচ এই নোবেল পুরস্কারসক্রপ রবীক্রনার পান একলক্ষ কুছি হাজার টাকা।

বিশেষজ্ঞের। বলেন গভ ১৯৪৪ ও ১৯৪৫ সনে চীনে জিনিষপত্রের দর বেড়েছে ১৯৩৭ সনের মূলোর চেয়ে ৪১৫ গুণ বেশী। অথচ বিশাল চীনের অধিকাংশ অধিবাসীই দরিনে। আমাদের দেশের মত সে দেশের বেশীর ভাগ লোক পল্লীবাসী। শতকর৷ প্রায় আশী জনই গ্রামে খাকে, আর তাদের পেশা চাষবাস। আমের হত্তাক্তা বিধাতা হচ্ছেন দোর্কওপ্রতাপ সব অবিদার। এদের অনেকেরই আবার বড় বড় বাবসাও আছে: সেই খত্তে সরকারের সঙ্গে এদের গলাগলি ভাব। সরকার কর্ত্তক তাই সাধারণতঃ গরীব চাধীদের কল্যাণকর কাৰু বিশেষ হয় भা। সভ্যি কথা বলতে গেলে, চীনা সরকারের শিল্পনীতি, বাণিকানীতি মুদ্রানীতি--এক কথায় অধনীতিয় অভ্যক্ত যত নিয়মাদি আছে তার সবগুলোর সাহায্যে গ্রামগুলোকে শোষণ করে ছর্মশার নিয়তম সোপানে ঠেলে দেওয়া হচ্ছে। সেখানে চাষীদের মধ্যে সজ্জ সমিতি ইত্যাদি তেমন কিছুই নেই। পাকা সম্ভবও নয় যত দিন সামস্ভতন্তের প্রতাপ না কমছে। তাই দরদম্বরের প্রবিধামত একটা বন্দোবন্ধ করারও পদ্ধা নেই। এরা একদিকে যেমন কম দরে উৎপাদিত শস্তাদি বেচতে বাধা হয় অঞ্চদিকে তেমনি আবার বেশী দত্তে সব দরকারী জিনিষপত্র তাদের কিনতে হয়।

১৯৪৫ গনের জাহ্মারীতে চ্ংকিন্তে এক সিতান (প্রায় হু'মণু) ভাল চালের দাম ছিল ১৬৫০ চীনা ভলার। কেব্রুমারীতে তা দাঁড়ায় ২৪০০ ভলারে আর মার্চ্চে চোরা—বাজারে ৫৪০০ ভলার পর্যান্ত দর ওঠে। অথচ সরকারী নিরন্ত্রক অনুসারে এক সিতানের দর তথন ৪০০০ ভলার। জানা; যায় যে, যে মাসে চোরাবাজারে এই দর ৮০০০ ভলার অবধি উঠেছে। এর তুলনার আমানের দেশে আর কি হরেছে গুমণপ্রতি দেশশো হরেছিল; না হয়, হু'শই বরাং

যাক। তার বাজা সামলানোই দার। কথা হচ্ছে, আমাজের কতটুকুই বা আর। সে অস্থাতেই তো হবে কেনার ক্ষমতা ? আর সেদিক থেকে সাবারণ চীনা আর সাবারণ তারতীরের অবস্থা একই। চীনের প্রখা মত কমিদার প্রস্তৃতি বাঁরা ক্ষমি বর্গা দেন, তাঁরা থাজনাটা আদার করেন বানে-চালে। থাজনার হারও খুব বেশী। আজকাল এগুলা প্রার সবই বিক্রি হরে মোটা অঙ্ক হরে কমিদারের পকেটে কিরে আসে। দামও এখন খুব চড়া। ওদিকে সব দিয়ে খুরে গরীব চাধী নেজেদের পেট চালানোর ক্ষম্মে বড় কিছু থাকে না। এর উপরেও যদি বাজার থেকে কিনে থেতে হর তবে তার খরচ যোগাতে গিয়ে পরনের কাপড় সংক্ষিপ্ত করতে হয়। পেটের দায় বড় দায়।

বিশেষজ্ঞের। এ পব নিয়ে নানা রক্ষ তথা সংগ্রহ করেছেন ও করছেন এমনি অনুসঞ্জানের ফলে কাঁপা টাকার মহিমা প্রকাশ হয়ে পড়েছে। নীচে ভারই একট নমুনা দেওরা হ'ল:

	গ্রুর কোয়াংটুঙ জেলা । শতকরা হিসেবে)		
	€ e€,	7>85	ৰাড়তি কমতি
অ মিদার	75	74	+ '5
শনী চাষী	9	70	+ 9
মাৰা রি চাধী	80	₹0	- >0
গরীব চাষী	ec,	83	+ 9
দিনমজুর	Ŀ	70	+ 8

শ্পষ্টই দেখা যাছে গরীব এবং পছলোক ছয়েরই সংখা। বেছে । এমন কি, গানিকটা স্বাধীন মধাবিত্ত চাষীদেরও প্রায় অর্জেকসংগ্যককে সামান্তিক ও অর্থনীতিক অবনতির নিমুত্য সোপানে নেমে আসতে হয়েছে। বিশেষজ্ঞদের মতে এই একটি জেলার হিসাবকে মোটাষ্টি অস্তান্ত জেলার নমুনা স্বরূপ বলা চলে।

এরও উপর আছে আর এক মুশকিল। কমি বারবার হাতবদল হচ্ছে। অসাধ্তালক অর্থ ব্যাক্তে থাকিলে ধরা পড়ার সম্ভাবনা আছে। আসবাবপত্র, সোলা-গয়না বা কমিকেরাতে ওসব হালামাইজ্বত কম। তাই সামরিক কর্মচারী ও ব্যবসায়ীদের মধ্যে কমি কেনার হিভিক পড়ে গেছে। কাকেই জমির দরও ছ ছ করে বেড়ে যাছে। ১৯৩৮ থেকে ১৯৪৩ সনের মধ্যে কমির দর পাঁচ থেকে দশগুণ বেড়েছে। নৃতন কমিদার বেশী লাভের আশার অধিক থাকনায় নৃতন লোকের হাতে কমি তেড়ে দিছেন। তার কাছে প্রধান কথা হ'ল মুনাকা। সাধারণ চাধীবের তাই চুর্জনার অন্ত নেই। একজন বিশেষজ্যের মতে:

"What formerly was assessed at one dollar for land tax, is now assessed at thirty-three cattis (app. a seer) of unhusked rice. Together with land tax an equal amount of grain must be sold to the Government, for which only 30 per cent payment at the official price is given and 70 per cent in exchange for Government Treasury notes to be paid at some distant date. Thus a major part of the compulsory sale of grain merges into tax proper, and for one dollar of land tax before the war something like fifty dollars must now be paid."

আগে যেখানে ক্ষির খাকনা ছিল এক ডলার এখন সেখানে নেওয়া হয় প্রায় ৩৩ সের ধান। এর সঙ্গে সরকারকে আবার এই সমান ওজনের ধান বেচতে হয়। তার শতকরা ত্রিশ ভাগের দাম দেওয়া হয় সরকারী নিয়ন্ত্রিত দরে আর বাকী সত্তর ভাগের ক্ষন্তে দেওয়া হয় সরকারী বিল। এই ভাবে কোর করে যে পরিমাণ শত্ত বিক্রি করানো হয়, তার বেশীর ভাগই আসল খাকনার মধ্যে পড়ে, আর তার কলে, আগে থেখানে ১ ডলারে সারা যেত এখন সেখানে লাগে ৫২ ডলার।

গ্রাম ছেড়ে শহরে এলেও দেখা যায় একই অবস্থা—ভবু স্থানপরিবর্তন বা পটপরিবর্তন হয় মাত্র। শহরগুলির অবস্থা পর্যাবেক্ষণ করে মনে হয়, চীনের শিল্পের ভবিষ্যুৎ অন্ধকারাচ্ছন্ত । বর্ত্তমান যান্ত্রিক মুগে বড় একটা শিল্প-কারখানা চালাতে হ'লে कन्नमा जनविश्वार्थ। धीरन ১৮৬টা कन्नमात चनि जाहि। ১৯৪৪ সনের প্রথম দিকটাতে জানা গেল যে এই একশো छित्राभिष्ठी चनित्र गर्या हुत्राझिन्छ। चनित्र कांक वक रुख राख ; একশোটা কাজ কমিয়ে দিয়েছে: বাকীগুলি জাতীয় সম্পদ क्रिमात्वय माश्या निष्य हलाए। এই व्र्यमात अक्षी कार्य বোৰ হয় এই থে. ষে সব শিল্পদ্রবোর উৎপাদনে কয়লার সাহাযোর প্রধোক্তন হয় সেগুলির মধ্যে প্রায় পনর আনা ক্রিনিষের দর থখন (১৯৩৭-১৯৪৩) বেড়েছে তিনশো পঁচিশ ত্মণ, তখন কয়লার দর বেন্থেছে মোট একশো আঠারো ওপ। এই বাঙ্তির অনুপাতে কয়লার দর যদি অস্ততঃ টনপ্রতি ৩২১৪ ডলার অব্ধি বাড়তে পারত তো কিছু কাজ ঠিক মত চলতে পারত। কিঞ্জ সরকার ওদিকে কয়লার দর নিয়ন্ত্রিত করেছেন টন প্রতি ১১১৫ ডলারে। এতে শুধু চুং**কিঙের** কাছাক। ছি চয়ালিও নদীর পালের খনিওলিতেই মাসিক क्छि ছচ্ছে ১,৮০,০০,০০০ ডলার। কয়লা ছাড়া বৃহৎ শিল্পের মধ্যে রইল লোখা আর ইম্পাত নিন্মিত দ্রবাদি। এই শিল্পে পরচ এত বেড়েছে যে, মাঝারি ধরণের কারণানাগুলি পর্যান্ত বন্ধ করে দিতে হয়েছে। চীনে এখন লোহার কারখানা আছে আঠারোটা। গত ১৯৪৩ সনের এক নবেম্বর মাসেই তার মধ্যে চৌৰটার চল্লী নেবাতে হয়েছে। ইম্পাতের কারখানা-গুলির হিসাব নিলে দেখা যায়, ঐ সময়ের মধ্যে চারটে একে-বারে বন্ধ হয়ে গেছে; গেটো তিনেক কোন গতিকে কাৰ চালাছে আর বাকী চারটির মধ্যে ছটি বাজিগত ব্যবসা-প্রতিঠান এবং বাকী ছট কাতীয় কমিশনের স্বধীনে খেকে खान काक करत यारका।

তার পর ব্যবসা-বাণিকা। উনিশশো তেতারিশ সনে এক চুংকিঙেই এক হাকার দোকান গণেশ উন্টিয়েছে। সেই সময়ে হনানের হেংগিয়াঙ শহরের (ব্যবসা-বাণিকাের একটা বড় কেন্দ্র) প্রায় এক ড্তীয়াংশ দোকানেরও একই অবস্থা হয়। এক ড্তীয়াংশ কোন রকমে চলে আর বাকী এক ছতীরাংশ ভাল ভাবেই কাল চালিরে যায়। চোবের ওপর এই সব দেখে ভবে উনিশশো চুয়ালিশে কি হবে ভেবে না পেরে, চীনারা সে বছরটার নাম দিয়েছিল "শোকো নিয়েন" অর্থাং "দিন আনি দিন থাই বছর"। চুংকিঙের সবচেয়ে বড় তিনটে দোকানের একত্রে গড়ে যে লাভ-ক্ষতি হয়, তা থেকে এসব ব্যবসারের অবস্থা বোঝা যাবে। ১৯৪৫ সনের প্রথম ছ'মাসে এসব প্রতিষ্ঠানের দৈনিক বিক্রি হয় গড়ে ১১২০০০ ভলার, আর তার অর্দ্ধেক যায় দৈনিক ধরচ।

জিনিষপত্রের দর এমনি ভাবে বেড়ে যাওয়াতে ব্যাঙ্ক ব্যবসাতেও পরিবর্তনের ঢেউ লেগেছে। মুদের মাসিক হার এখন চলছে শতকরা দশ ডলার ; অর্থাৎ বছরে একশো কুড়ি ডলার। কাটকা কারবার চলছে পুরোদমে। তাকে ঠাণ্ডা করার চেষ্টা সরকারের বড় একটা দেখা যায় না। নামকা-ওয়াতে একটা আইন আছে—তাতে নুতন বাাঙ্ক খোলা বা মহাজনী কারবার-শুলোর ভোল বদলান নিষিদ্ধ। কিন্তু এই সামান্ত হুকুমদারীতে কি মামুষের মুনাফার লোভকে ঠেকানো থায় ? আর এইখানেই মাহুষের পাটোয়ারি বুদ্ধির চরম প্রকাশ দেখা গেছে। আইনে ব্যান্ত করা নিষিদ্ধ-বেশ ! দেশমুয় অমনি গজিয়ে উঠল হাজার বীয়া কোম্পানী। গত ১৯৪৪ সনের এক এপ্রিল মাসেই এমনিভাবে এগারোটা সূত্র কোম্পানী খোলা হয় ভবু চংকিঙ শহরে। কিসের এবং কাদের ধীমা এরা করে, সে প্রশ্ন উঠতে পারে। কিন্তু তেমন প্রশ্ন করার মত উৎসাহী ব্যক্তি সরকারে নেই। লোকে পুরোনো আইন বাঁচিয়ে কান্ত করে যাচেছ, তাতেই সরকার খুলী। নতুন আইনের করি পোহায় কে ? নতুন আইন বা 'ভার' চীনে তবু আছে এবং বিশেষভাবেই চলছে, আর তার লাম দেওয়া যায় মাংস্থ খায়। ছোট উবে গড়ে উঠল মাঝারি: আবার কতকগুলো মাঝারি লোপ পেয়ে মোটে কয়েকটা বড বড় কোম্পানী এখন চলছে। অন্ত কথায়, সমস্ত সম্পদ এবং শক্তি —যা দেশের লোকের মধ্যে এবং জাতীয় জীবনের নানা গুরে ছড়িয়ে ছিল তা মুষ্ট্রমেয় লে।কের হাতে গিয়ে কেন্দ্রীভূত হচ্ছে। ভধু মোটা পুঁজি যার আছে, সে-ই এখন ব্যবসায়ে বেশী লাভ করতে পারে। এদের সম্পর্কে চীনারা একটা কথা বাবহার করছে। বহুল বাবহারে তা একটা প্রবাদে দাঁড়িয়ে গেছে। কথাটা বাংলাতে তর্ক্তমা করলে দাঁড়ার--"থার আভিন যত লহা, সেই তত ভাল নাচে।"

এই তো দেশের অবস্থা। সতাি বলতে গেলে সরকারের ছরবছা আরও বেশী। তার খরে বাইরে সব জায়গাতেই হালামা। মুদ্ধ তো চলছেই; তার উপর এসব হালামা এবং রাজনীতিক বিভিন্ন দল ও প্রতিষ্ঠানের হুমকির বিরাম নেই। গত ১৯৪৪ সালের মে মাসে পাঁচটা প্রধান শিল্পসক্র সরকারের কাছে এক আরভি পেশ করেছে। তাতে দেশের বন, জন ও জীবনযাত্রার মানরকার জন্ত আহল আবেদন জানানো হয়েছে। চীনের অন্ততম প্রধান রাজনীতিক দল "ডেমোক্র্যাটিক পার্টি" (সরকারী ও সাম্যবাদী দলের মধ্যপন্থী) এক ফতোরা জারী করে সরকারকে কর্ত্ব্য সন্থকে সচেতন করার প্ররাস পেরছে। ক্তোরাতে ভাবি করা হয়েছে বে চীনের পক্ষে

এখন প্ররোজন হ'ল সব কুচক্রীদের সরিয়ে নতুন করে এংং সত্যিকারের গণতন্ত্র প্রতিষ্ঠা করা। জাতি হিসেবে মহাচীনের চরম অবোগতি হওয়ার আগেই যেন এই সতর্কবাদী সরকারের কানে পৌছার সে ইচ্ছাও জানানো হয়েছে।

সরকারের সভািই চেতনা হরেছে কিনা সে প্রশ্ন মনে উদিত হয়। চীনের সর্ব্বোচ্চ অর্থনীতিক পরিষদের উছােধন করতে গিয়ে সর্বাধিনায়ক চিয়াং কাই শেক বলেছেন,

We must not allow internal disturbances to make us lose sight of the basic need of the Chinese people for a higher standard of living than they have now . . . It is my intention to assume personally the direction of China's economic reconstruction and development. —Reuter, Nov. 26, 1946.

— চীনের জনসংধারণের জীবন্যাত্তার মান যে বাড়ানো দরকার, আমাদের নিজেদের মধ্যে বাড়াবাটিতে সে কথাটি যেন ভুলে বসে না থাকি। আমি ভাবতি কেমন করে চীনকে নতুন করে, উন্নত্ত করে গড়ে ভুলতে হবে, সে পথ আমি নিজেই বাতলে দেব।

ন্তন চীন গড়ে তোলার জ্ঞ চিয়াং কাইশেক ছটি নির্দেশ দিয়েছেন :

- (১) দেশময় থানবাহনের স্কবন্দোবস্ত করার একটা কর্ম-পছা গ্রহণ করিতে হবে।
- (২) চাষ-বাসের উন্নতির জ্বন্ত আরও মনোধোগী হতে হবে।
- (৩) চীনা শিল্পগুলোর উৎপাদন যাতে বাড়ে তার ব্যবস্থা এখনই করা হোক। বিশেষ লক্ষ্য রাখতে হবে আলানি, কয়লা, কাপড় ও বাড়ীখর তৈরীর শিল্পগুলোর ওপর।
- (৪) চীনের বহিবাণিজা ব¦জানোর জভে মুজন পথের সন্ধান করা হোক।
- (৫) মজিপরিষদকে জনপ্রস্থের দিকে বিশেষ নজর রাধকে ছবে।
- (৬) মন্ত্রী, স্থানীয় কর্মচারী ও উপযুক্ত শিক্ষিতসম্প্রদার থেকে লোক নিয়ে পঞ্চবার্ষিক পরিকল্পনার একটা কর্মস্থাটী এখনই গ্রহণ করা হোক।

েকোন বিশেষ কর্মপদ্ধতি অবলপ্থিত হয়েছে কিনা তার খবর এখনও পাওয়া যায় নি। তব্ও বলা যায় যে, কর্মপদ্ধা গ্রহণ করা সহজ —কাগজেকলমে অনেক ক্ষেত্রেই তা করা হয় কিছু আসল কাজটুকুই বাদ পড়ে যায়। জাপানী আক্রমণ ব্যাহত করতে গিয়ে চীনের আফিমের নেশা কেটেছে। কিছু আয়ুবাতী অস্তম্ব থেয় সর্বনাশা নেশা চীনকে পেয়ে বসেছে তার অবসান কবে হবে কে জানে? চিয়াং কাইশেক যতই চেষ্টা করুন, একথা অতি সভাি যে রাজনীতিক হৈব্য মা এলে অর্থনীতিক কোন স্থনিছিষ্ট পরিকল্পনা গ্রহণ করা যায় না। তাই তার নির্দেশে যে ধুব কার্যাকরী হচ্ছে এ কথা বলা যায় না। এই সে দিনের কাগজেও দেখা যায়.

China is in the grip of a fast developing trade-slump. Government sources admit that in Tsingtao, an important port of the Shantung peninsula and a former German con-

cession. 80 concerns have closed their doors in the last কীতি—বাড়তি চাকা। আর এর আসল ওযুধও জানা আহে two months and many more are expected to do so. .

(চীন বাবসা মন্দার কবলে পড়েছে। সরকার পর্যান্ত স্বীকার করেছেন যে সিংতাও-্য় (সিংতাও হচ্ছে শান-ডং हेर्भश्वीतभन्न अकृष्ठी वर्ष दक्षत : आत्र कार्यानत्मन भन्नत्म हिल. গত ৬'মাসের মধ্যে আশীটা বাবসা-প্রতিষ্ঠান কাজ বন্ধ করেছে। তা ছাড়াও আরো বেশ কতকগুলোর নাভিশাস छेटर्रेट्ड ।

বিলাতের মান্ডেষ্টার গাডিধান পত্রিকার এক সংবাদদাতা হিসাব করে দেখেছেন যে এক সাংখ্টারেই রক্ষারি কাজের প্রায় পাঁচশাটা কারখানা বন্ধ হয়ে গেছে। চংকিঙের অবস্থাও স্থবিধার নয়। এর কারণ নাকি এই যে বিদেশী জিনিষ সন্তায় বিক্রি হযে বাজার মাণ করে দিছে। তার উপর ভালানির অভাব, কাঁচা মালের অভাব, যানবাহনের অসুবিধা, জিনিমপত্রের চড়। দাম ইত্যাদি ত আছেই। কিন্তু এত সব হাসামা কিসের ভ্রন্থে ও কি মেটানো যায় না গ ইংরেজ সাংবাদিক এল কথায় সার সভাট স্থশ্র ভাবে বলেছেন

"The majority of these causes could be obvious: stop the Civil War."

(এক কথার যাব গার কারণের মূল কথা হচেছ: মুদ্রা-

--- (मिंग राष्ट्र, अंदे परताया यूरक्षत्र व्यवमान कता।)

ত। হলে দেখা খাচেছ ছ'বছর আগে যে অবস্থা ছিল আজও তার কোন পবিবতন হয়নি বরং অবস্থা ক্রমশঃ মন্দের দিকে এগিয়ে চলেছে। বাইরে থেকে সবাই এ সব দেখছে। চীলারা লিজেরাও দেখছে কিন্ধু প্রতিকারের চেষ্টা-নেই কেন গ এ কথার উত্তর দিতে গেলে অর্থনীতির দেউভি পেরিছে বিশ্বরাজনীতির প্রাঞ্চণে পা বাড়াতে হয়। **আর এ কেন্তে** প্রথমেট মোলাকাত হয় আমেরিকার সঙ্গে। রুশ শক্তির বিরুদ্ধাচরণের ও চীনের চল্লিল কোটি লোকের মাধার কাঁঠাল ভাঙ্গবার হর্ষমনীয় স্পৃহাতেই আমেরিকা অনবরত চিয়াৎ কাইশেককে অর্থ সরবরাহ করে যাচ্ছে। এমন কি, নানা অচিলায় প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষভাবে চীনের আভ্যন্তরীণ ব্যাপারে হতক্ষেপ করতে পর্যাত্ত দিয়া করছে না। চীন আৰু আমেরিকার হাতের পুড়ল মাত্র। স্বপচ চীনের খনিক সম্পদ অতুলনীয়। তার জনসম্পদও প্রচুর। চীনার। যেমনি বৈর্যাশীল ও পরিশ্রমী, তেম্নি কৌশলী। এসব সত্তেও চীন সান-ইয়াং-সেনের "সান-মিন-চু-আই"-এর আদর্শ ভূলে হাছে। সেই আদর্শে প্রণোদিত হয়ে মহাচীন এশিয়াতে তথা পৃথিবীতে তার থথাযোগ্য গৌরবের স্থান অধিকার করুক। ভারত-বাসীরা নিশ্চয়ই এই কামনাই করে।

বঙ্কিমচন্দ্ৰ

গ্রীবেণু গঙ্গোপাধ্যায়

তিশিলারত বরুর পথ কঞামুখর রাতি.. নাহি ধ্রুবতারা, কাণ্ডারী-হারা মরণোমুধ জাতি। সহসা রাতির তিমির বিদারি শোনা গেল কার বাণী, "जाबना जागांव जरूल इत कि ? कीवतनत अग मानि।"

শৃথল বাজে জননীর পায়ে, সম্ভান-বুক ফাটে। বন্দিতে যায়ে হাজারে হাজারে বীর সম্ভান জোটে। यश यानद्वत यिलन-चटळ कीवन चाहिंछ पानि. বুচাবে তাহারা স্কলা স্কলা জন্মভূমির গ্লানি।

इंडे एम्टन निर्ड भाजत्न चर्गवरात्री नाती। कामना भूना ७ ध-मामन व्यनश्च-भव-ठाती। ঞীকৃষ্ণ পারে নিবেদি সকল দূর করে সংশয়; এক চোখে তার ধ্বংসের জালা, জার চোখে বরাভর। সাহিত্য-রবী, স্বদেশ-প্রেমিক, ব্রান্ধণ-সনাতন, ক্ষাত্রধন্মী ভূমি বঙ্কিম, বীর্যাতে নিমগন! জ্ঞানদীপ খালি দিয়েছ উজ্জলি নিয়ত আপন পর। যুগের সারধী, সুধী সন্ধানী, ভূমি সে যুগদ্ধর।

রূচ কথাবাতে মিধ্যা শাসিয়া সতা করেছ খাড়া। নির্ভিত এই বাংলার বুকে জাগালে তীব্র সাড়া। কমলাকান্ত অতি প্রশান্ত মিঠে রসিকতা দিয়া, অমরতা লভি মুগ-সাহিত্যে, ক্রিনেছে প্রার ছিয়া।

মাতৃভক্ত, শক্তিসাধক, সত্যদ্রষ্ঠা ধ্রি। ভোমার মাত-মন্ত্র মোদের রজে গিয়াছে মিশি। কিছ দেবতা, পারি নি ঘুচাতে মারের পারের বেভি। ছাড়ি নি চেষ্টা, শিকল ছিঁড়িতে জানি না কৰ্ত যে দেৱী ৷

্যাধীন ত্রিপুরার রাজমালা

बीमोत्माव्य छ्ट्रां वार्या

পূর্বভারতের পূর্বদীমায় অবস্থিত স্বাধীন ত্রিপুরা রাজ্য আজ ভারতের নব্যুগারম্ভে অভিনব অঙ্গণালোকে রঞ্জিত হইয়া সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে। শ্বরণাতীত কাল হইতে আরম্ভ করিয়া যে রাজবংশ প্রায় অবিচ্ছিন্ন ধারায় নানা বিপর্যায় অতিক্রম করিয়া নাতিক্ষুদ্র রাজ্যের স্বাধীনতা আজ পর্যান্ত অকুল বাখিতে সমর্থ হইয়াছে তাংার কথা প্রত্যেক বাঙালীর হদয়ে এখন া গৌরবোজ্জল व्यानननहरी छेरशामन कवित्व मत्नर नारे। रेरतिक রাজত্বকালে সভ্যতার গতি পশ্চিমাভিমুখী হইয়া পড়িয়াছিল এবং ফলে শিক্ষিত বাঙালী প্রায় সর্বনাই পূর্বে প্রাস্তস্থিত ত্রিপুরা রাজ্যকে অবজ্ঞার চক্ষে দেখিতেন। ১৮৩৮ খ্রীষ্টাবেদ নবগঠিত জমীদার সভার (Landholders' Society) প্রথম অধিবেশনে সভাপতি রাজা রাধাকান্ত দেব বলিয়া ছিলেন ক্লফনগরের রাজবংশই বাংলার প্রাচীনতম জমীদার ("the most ancient landholder in Pengal") | এই অমূলক উক্তির প্রতিবাদে Friend of India পরের সম্পাদক স্মরণ করাইয়া দিয়াছিলেন যে ত্রিপুরার মানিকা রাজগণই বাংলার দর্বশ্রেষ্ঠ এবং প্রাচীনত্য রাজা দন্দেহ নাই:- "The noblest and most ancient chief in Bengal is, without doubt, the Raja of Tipperah, of the illustrious family of Manick" (Friend of India, 29 March 1838) ত্রিপুরা রাজ্যের ঐতিহ্য বিষয়ে ৰাংলার জনদাণারণের অজ্ঞতা বিগত এক শতাদীমধ্যে অনেকাংশে দুর হইয়াছে বটে, কিন্তু এখনও ক্য়জন বাঙালী অবগত আছেন যে ত্রিপুরার রাজবংশ কেবল বাংলার নহে, পরস্ক সমগ্র ভারতবর্ষের বর্ত্তমান রাজমণ্ডলীর মধ্যেই প্রাচীনতম? এই রাজ্যের প্রত্নমপদ আবিষ্কৃত মূদ্রা, শিলালিপি, তাম্রশাসন, প্রাচীন পুথি ও দ্লীলপত্রদারা এত প্রচুর পরিমাণে জ্ঞাত হওয়া যায় বে তাহার তুলনা অগ্রত্ত আছে কি না দন্দেহ। হঃধের বিষয়, মহারাজা বীরচন্দ্রমানিক্যের রাজত্বকাল হইতে আরম্ভ করিয়া বিগত অর্দ্ধশতাব্দীর মধ্যে রাজকোষের সহস্র সহস্র টাকা ব্যয় হইয়া থাকিলেও ত্রিপুরার ইতিহাস বিজ্ঞানসম্মত প্রণালীতে এথনও রচিত হয় নাই। ত্রিপুরার ইতিহাসের প্রধান উপাদান "রাজমালা" গ্রন্থ নাতিদীর্ঘ হইলেও সম্পূর্ণ মুক্তিত হয় নাই-বে তিন "লহর" বুহদাকার চিত্রাদি-শোভিত রাজমালা এযাবং প্রকাশিত হইয়াছে তাহা ন্ত্রমপ্রমাদে পরিপূর্ণ এবং বছলাংশে অপ্রামাণিক। তথাপি

গ্রন্থটি সম্পূর্ণ হইলে ত্রিপুরার ইতিহাসের একটিমাত্র উপাদান ঐতিহাসিকের হন্তগত হইতে পারে। রাজবায়ে মুদ্রিত উক্ত গ্রন্থের প্রচারপদ্ধতিও অতি বিচিত্র—ইহা বিনামূল্যে জনৈক রাজপুরুষের অভিক্রচিমতে বিতরিত হয়, বিক্রম रय ना। फरन, याङ्का कतिया तहकरहे हेश आमारमत সংগ্রহ করিতে হইয়াছে, যদিও আমরা দেখিয়াছি রাজ্যের অযোগ্য ব্যক্তির হস্ত হইতে ইহা মুদী দোকানের ঠোঙায় পরিণত ইইয়াছে ৷ ইংরেজশাসনের বিচিত্রবিধানে দেশীয় রাজ্যের রাজারা বহুস্থলেই বিদেশী অর্থগুণ্গু মোসাহেব দ্বারা পরিবেষ্টিত হইয়া থাকিত, ত্রিপুরায়ও ইহার ব্যতিক্রম ঘটে নাই। এইরূপ কতিপয় চক্রাস্তকারী মহারাজা বীরচক্র-মাণিক্যকে প্রতারিত করিয়া সংস্কৃতরচনায় সিদ্ধহন্ত এক পণ্ডিত দাবা "বাজবত্বাক্র" নামক এক ক্রতিম গ্রন্থ রচনা করাইয়াছিল। দ্বাদশদর্গে সম্পূর্ণ ইহার "পূর্ববিভাগ" ১৩০৫ ত্রিপুরান্দে (১৮৯৫ খ্রীষ্টান্দে) রাজবায়ে মুক্রিড হয় (নাগরাক্ষরে ১২৭ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ)। গ্রন্থমধ্যে ইহার ক্রজিমতার বহু অকাট্য নিদর্শন বিদ্যমান আছে। রাক্ষমালার সম্পাদক স্বৰ্গত কালীপ্ৰদন্ধ দেনগুপু মহাশয় অসত্যনিষ্ঠ বাজতন্ত্ৰের ভয়ে রাজরত্বাকরের ক্লমিতা অগ্রাহ্য করিয়া স্থানে স্থানে ভাহা হইতে বচন উদ্ধত করিয়া নিজগ্রন্থের প্রামাণা ব্যাহত করিয়াছেন। আমবা আশা করি বউমান নুতন পরি-স্থিতিতে ত্রিপুরারাজ্যের প্রকৃত তথ্যমূলক ইতিহাস রচনায় দকল বাধাবিদ্ধ দূর করিয়া শ্রীশ্রীযুক্তা মহারাণী ও তদীয় মন্ত্রিবর্গ বাংলার ইতিহাসের একটি অভাব পুরণ করিতে সমর্থ হইবেন।

প্রায় ৪০ বংসর যাবং আমরা ত্রিপুরার ইতিহাসের যে সকল উপকরণরাজি সংগ্রহ করিয়াছি তাহা হইডে সারসঙ্কলন করিয়া ত্রিপুররাজবংশের বিবরণের মূলস্ত্র লিপিবন্ধ করিতেছি।

পৌরাণিক যুগ:—ত্ত্রিপুররাজবংশের আদিপুরুষের নাম "দৈত্য"। প্রাচীন রাজমালার মতে তিনি চক্রবংশীয় বিখ্যাত রাজা য্যাতির বংশধর ছিলেন:—

চক্রবংশে মহারাজা যজাতি নূপতি।
নিজবাহুবলে সাপে সপ্তদ্বিপ ক্ষিতি।
তান বংশে জন্মিলেক দত্য নাম বলি।
বিধিমতে মেদনি সাদিল কুতুহলি॥
বিধাতা নির্কান হেতু সেই মহাজন।
অগ্নিকোণে দেসপতি হইল রাজন॥
(রাজমালা ২।১ পত্র)

বাজ্যালার প্রথমাংশ বে ধর্মমাণিক্য রচনা করাইয়াছিলেন তাহার প্রকৃত নাম "দৈত্যখণ্ড।" ১২৬৮ ব্রিপুরান্দে দুর্গামণি উজীর প্রাচীন রাজ্মালা সংশোধন করিয়া জনেক ভ্রমপ্রমাদপূর্ণ বিষয় সংযোগ করিয়াছিলেন। বর্ত্তমানে এই সংশোধিত গ্রন্থই মুদ্রিত হইতে: ইহাতেই সর্ব্বপ্রথম ক্ষত্ব নাম পরিগৃহীত হয়:—

"ক্রছা বংশে দৈত্য রাজা কিরাতনগর। অনেক সহস্র বংসর হইল অমর॥" (পু ৫)

পরে রাজরত্রাকর প্রভৃতি কৃত্রিম রচনাদারা জভ্যু হইতে দৈত্য পর্যান্ত ৩৮ পুরুষের কাল্পনিক নাম স্বষ্টি করিয়া রাজবংশের গৌরব (१) বন্ধিত হইয়াছে। প্রাচীন রাজ-মালার বহিভূতি বিষয়মাত্রই প্রমাণবিক্লন্ধ বলিয়া প্রত্যাখ্যান করিতে হইবে। দৈত্য হইতে "বুঝার ফা" পর্যান্ত (৭২ भूक्रय) १४ জন রাজার কাল অলৌ কিক কথায় পরিপূর্ণ পৌরানিক যুগ বলিয়া খ্যাপন করা যায়। ত্রিপুরারাজ্য ক্রমণঃ দক্ষিণে প্রদারলাভ করে। দৈত্যের রাজধানী ছিল কপিলানদীর তীরবর্ত্তা ত্রিবেগনগরে। তাহার পৌত্র ত্রিলোচন শিবের ঔরুদে "তিন চক্ষু" হইয়া জন্মেন এবং যুবিষ্ঠির কতৃক সম্মানিত হইয়াছিলেন। তৎপুত্র দাক্ষিণ বড়বক্রনদীর তীরে "থলংমা" নামক স্থানে রাজধানী করেন। তাহার ভাত। হেরধাবিপতির রাদ্য ও বংশ বহুকাল লুপ্ত হইয়াছে। বর্ণপুরুষ পরে প্রতীত রাজা হেরদের সহিত বিরোধ হেতু থলংমা ত্যাগ করিয়া "ধর্মনগরে" নৃতন বান্ধানী করেন। প্রতীতের অধন্তন হামতার ফা।

> হামথার ফার পুত্র পুনি জুঝার ফা হইল। বহু জুগ্দ করিয়া সে রাঙ্গামাটি লইল। (রাজমালা ১২।১ পত্র)

এই রাঙ্গামাটি অথাৎ রক্তমৃত্তিকাময় অধুনাতন উদয়পুর অঞ্চল জয় হইতেই রাজমালার দৈত্যথণ্ডে আধুনিক দৃষ্টি-ভঙ্গীতে ঐতিহাসিক যুগ আরম্ভ হইল বলিয়া ধরা যায়।

রাঙ্গামাটিদেশের লিকা নামক সামস্ত রাজা ও তাহার দশ হাজার সৈতা পরাজিত করিয়া "জুঝার নূপতি তথা হইল নরেদ" (১২।১ পত্র) এবং পরে দেখান হইতে "বঙ্গদেশে"র অন্তর্গত বিশালগড় আদি স্থান অধিকার করেন। অর্থাং যুঝার ফার সময় হইতেই ত্রিপুরারাজ্যের মূলাংশ প্রায় অবিক্কৃত অবস্থায় বর্ত্তমানকাল পথান্ত বিভানান রহিয়াছে। যুঝার ফার কালনিনিয়ের একমাত্র প্রমাণ প্রক্ষণণনা। রত্তমানিকা যুঝার হইতে অধন্তন ২৫ পুরুষ। রত্তমাণিকা হইতে অধন্তন ২৫ পুরুষ। রত্তমাণিকা হইতে বর্ত্তমানকাল পর্যান্ত রাজাদের রাজ্যকাল স্থনির্দিষ্ট আহে এবং তাহা হইতে রাজ্যকাল ও জন্মকাল ধরিয়া

গণনাঘার। এক প্রথের গড়পড়তা পাওয়া যায় ২৭ হইতে ৩১ বংসর। তদকুসারে যুঝার ফার রাজ্য আরম্ভ ঝাঃ সপ্তম শতাব্দীর শেষান্ধে কিছা অষ্টম শতাব্দীর প্রথম পাদে পতিত হয়। রাজ্যালায় পাওয়া যায় যুঝার ফার সময় হইতেই উদয়পুরে রাজাদের শ্বশান "বৈকুগপুরী" নামে পরিচিত হয় এবং যুঝার ফার শ্বশানোপরি মঠ নিশ্বিত হয়। এই মঠই ত্রিপুরা রাজ্যে ত্রিপুররাজগণের প্রাচীনতম কীর্তি, যদিও ইহার ধ্বংসাবশেষ বর্ত্তমানে চিহ্নিত করা অসম্ভব। বুঝা যায় রাজমালার দৈত্যপণ্ড রচনাকালে ধর্মমানিক্যের সময়েও প্রাচীরবেন্ধিত এই মঠের চিহ্ন বিত্তমান ছিল। ঝাঃ ৭০০ হইতে অবিচ্ছিন্ন ধারায় প্রায় ১২৫০ বংসর ধরিয়া একই রাজবংশ এক স্থানে রাজ্য করিতেছেন, ইহার দিতীয় উদাহরণ ভারতের কিম্বা জগতের ইতিহাসে পাওয়া যাইবে কিনা সন্দেহ। অথচ আমরা পৌরানিক যুগের পূর্বতন ৭২ পুরুবের নাম বাদ দিভেছি।

রম্মানিক্যের রুশ্রপ্রপিতামহ "ছেংগু ফার" সহিত গৌড়াবিপতির যুদ্ধ হইয়াছিল এবং সেই যুদ্ধে রাজমহিষী স্বয়ং যুদ্ধক্ষেত্রে অবতীর্ণ হট্টা অপূব্য বীরত্ব দেখাইয়াছিলেন। ত্রিপুরা জেলার অন্তর্গত মেহেরকুল পরগণার চৌধুরী হিরাবন্ত থার সহিত সংঘর্ষে এই যুদ্ধের স্ত্রপাত হয়। যদিও থা উপাণি হইতে গৌড়ের স্থলতানদের আহুগত্য স্থচিত হয়, তথাপি ''গৌড়রাজা" বলিভে রাজমালায় সমতটাধিপতি দামোদরদেব (১২০১-৪৪ খ্রী:) কিম্বা দেব-বংশায় অপর কোন নরপতিকে বুঝাইতেছে। কারণ ঞ্রী: ১৪শ শতাব্দীর পূর্বের কোন গৌড় স্থলতানের পক্ষে ত্রিপুরা-রাজা আক্রমণ করা সম্ভব ছিলনা। মহারাজা বীরচন্দ্র মানিক্যের রাজত্বকালে দিল্লবঙ্গচন্দ্র রচিত "ত্রিপুরবংশাবলী" নাম¢ গ্রহান্তুসারে উক্ত রাজমহিষীর নাম "ত্রিপুরাস্থন্দরী" এবং ৬৫০ ত্রিপুরাকে সেনরাজাদের সহিত ঐ যুদ্ধ হইয়া-ছিল। আমরা পরীকা করিয়া দেখিয়াছি, উক্ত গ্রন্থ ভ্রম-প্রমাদে পরিপূর্ণ একটি তুচ্ছ বস্তু, ইহার কোন উক্তিই বিনা প্রমাণে গ্রহণীয় নহে। উক্ত যুদ্ধের ফলে রাঞ্গামাটি "শ্বস্থির" হইল বটে, কিন্তু নেহেরকুল পরগণা ত্রিপুররাজের অবিকারে আদে নাই (হুগামণি সংশোধিত রাজমালার উক্তি এ**স্থলে** ভ্রমাত্মক)। কারণ, ধ্যুমাণিকাই সক্ষপ্রথম মেহেরকুল প্রভৃতি বন্ধদেশ জয় করিয়াছিলন, এইরূপ স্পষ্টনির্দেশ পরে পাওয়া যায়।

ভাগর ফার কনিষ্ঠপুত্র রত্নকা সর্বপ্রথম "মাণিকা" উপাধি ধারণ করিয়া ত্রিপুরারাজ্যকে স্থপ্রভিত্তিত করেন। ১৩১৪ ত্রিপুরাবেশ (১৯০৪ ঞ্জী:) উদয়পুরে মৃত্তিকাগর্ভ হইতে ৫০টি রৌপাম্দা আবিষ্কৃত হয়, তন্মধ্যে ২০টি এই রত্ন-মাণিক্যের রাজত্বকালীন বটে। রাজদরবারের ফ্রাটিতে

ত্তিপুরাধিপতিগণের এই সকল প্রাচীনতম গৌরবচিহ্ন নানা স্থানে নানা লোকের হওগত হইয়া বিলুপ্ত হওয়ার সম্ভাবনা হইয়াছে। আমরা সৌভাগ্যবশতঃ ৪টি মুদ্রা পরীক্ষা করিতে পারিয়াছি। তন্মধ্যে প্রাচীনতম মুদ্রার তারিখ ১২৮৬ শক (১৩৬৪-৫ র্মা:), ইহাই সম্ভবতঃ তাহার অভিষেক্ষুদ্রা। এই মুদ্রায় তাঁহার রাজ্ধানীর নাম "রত্বপুর" অঙ্কিত আছে। বুঝা যায় রাজা নিজ নামান্নসারে রাকামাটির নাম পরিবর্ত্তন করিয়াছিলেন। ১২৮৯ শকের অপর একটি মুদ্রার রাজমহিষীর নাম উৎকীর্ণ আছে "শ্রীলক্ষীমহাদেবী"। মুদ্রান্ত্সাধে দেবকুপায় তিনি বিজয়ী **হইয়াছিলেন ("এীএী**তুর্গারাধনাপ্তবিজয়ং")। অহুসারে তিনি গৌডেশবের সাহায্যে পিতা এবং ১৭ জন ভ্রাতাকে পরান্ধিত করিয়। রাজ্য উদ্ধার করেন এবং গৌড়েশ্বরই তাহাকে "মাণিক্য" উপাধিতে ভূষিত করেন। রত্নমাণিক্যের স্থাসনে আকৃষ্ট হইয়া বন্ধদেশের নানা স্থান হইতে ব্রাহ্মণাদি বহু জাতি এবং কতিপয় সম্লাম্ভ মুসলমান তাঁহার রাজ্যে আসিয়া অধিষ্ঠিত হইয়াছিলেন। ইহার বহু নিদর্শন আবিষ্ণুত হইয়াছে।

বত্বমাণিক্যের তৃই পুত্র প্রতাপ ও মুকুট এবং মুকুট-মাণিক্যের পুত্র মহামাণিক্যের নামোল্লেখনাত্র করিয়াই রাজ্মালার প্রথমাংশ দৈত্যপণ্ড সমাপ্ত হইয়াছে। ইহাদের এক-জনের সময়েই রাজা গণেশের পুত্র জালালুদীন ত্রিপুরা জয় করিয়াছিলেন, এইরূপ প্রমাণ আবিষ্কৃত হইয়াছে। আমরা বাহুলাবোধে বিবরণ দিলাম না। মহামাণিক্যের পুত্র ধর্মমাণিক্যের প্রথমাণিক্যের প্রথমাণিক্যের প্রথমাণিক্যের প্রথমাণাণিক্যের প্রথমাণাণিক্যান প্রতি হইয়াছিল। ইহাই বাঙ্গালাভায়ায় প্রাচীন্ত্ম ইতিহাসগ্রহ।

রাত্মমালার দিতীয়াংশ অমরমাণিক্যের রাজ্বকালে (১৫৭৭-৮৬ ব্রাঃ) রচিত হইয়াছিল এবং ইহার নাম রাখা হইয়াছিল "তুর্জ্জয়থও":—

ছ্যাখণ্ড বলিয়া পুত্তক নাম রাখে। শ্রীধর্মমাণিক্য হতে রাজা তাতে লিখে॥

(রাজমালা ৩৩।২ পত্র)

বস্তুত: এই নামকরণ সম্পূর্ণ সার্থক হইয়াছে, ধর্মমাণিক্য হইতে উদয়মানিক্য পর্যান্ত রাজগণের বৃত্তাপ্তই ত্রিপুরার ইতিহাসের সর্বশ্রেষ্ঠ যুগ বটে। তন্মধ্যে ধর্মমাণিক্যের পুত্র ধল্মাণিক্য (১৪১২-৪৮ শক) সর্বাপেক্ষা প্রতাপশালী ছিলেন। তাঁহার প্রধান কীর্ত্তি স্থাতান ছসেন শাহের সৈক্তগণকে পরাজিত করিয়া তিন বার চাটিগ্রাম অধিকার করা—প্রথম যুদ্ধ ১৪৩৫ শকে হইয়াছিল। ১১৪৪২ শকে তিনি স্বপ্রাদিষ্ট হইয়া চাটিগ্রাম হইতে আনিয়া 'ত্রিপুরা-ম্বনরী' মূর্ব্তি প্রতিষ্ঠা করেন। মূল শিলালিপিতে মন্দির প্রতিষ্ঠার তারিপ ১৪৪২ শক লিখিত ছিল। রামমাণিক্য ১৬০৩ শকে মন্দিরের জীণসংস্কার করিয়া শিলালিপি বোজনা করেন, তাহাতে উল্লিখিত মূল মন্দিরের প্রতিষ্ঠাকাল ("শাকে বহ্লাক্ষিবেধাম্থণরণিযুতে" অর্থাৎ ১৪২৩ শক) ভ্রমাত্মক।

ধন্মাণিক্যের পুত্র ধ্বজমাণিক্যের নাম অলীক, রাজমালার কোন প্রতিলিপিতেই ইহা নাই। দেবমাণিকাই
তাঁহার পুত্র ছিলেন। তাঁহার অভিষেকম্দ্রা আবিষ্কৃত
হইয়াছে, তারিথ ১৪৬৮ শক ও মহিষীর নাম "পদ্মাবতী"।
তংপুত্র বিজয়মাণিক্যের বিক্রমকথা এখন অনেকটা পরিচয়
লাভ করিয়াছে। তাহার অভিষেকমুদ্রার তারিথ ১৪৫৪
শক এবং ছই মহিষীর নাম "লক্ষ্মীবালা" (লক্ষ্মীরাণী নহে)
ও "সরস্বতী"। তাহার রাজ্যকালীন একটি তামশাসন
সম্প্রতি আবিষ্কৃত হইয়াছে। তাহার বিবরণ প্রবন্ধান্তরে
লিখিত হইবে।

বিজয়মাণিক্যের নাম আইন-ই-আকবরীতে উল্লিখিত হইয়াছে। তৎপুত্র-অনন্তমাণিক্য (অভিবেকমূলা ১৪৮৭ শক, মহিষীর নাম "রত্নাবতী") সেনাপতির হস্তে নিহত হইলে ত্রিপুরার সিংহাসন ১০ বংসরকাল রাজবংশের অধিকারচ্যুত হইয়া উক্ত সেনাপতি উদয়মাণিক্য (অভিবেকমূলা ১৪৮০ শক, মহিষী "হিরা") ও তংপুত্র জয়মাণিক্য (অভিবেকমূলা ১৪৯৫ শক) করতলগত হইয়াছিল। তৎপর বিজয়মাণিক্যের বৈমাত্রেয় ভ্রাতা অমরমাণিক্যের (অভিবেকমূলা ১৪৯৯ শক, মহিষী অমরাবতী) প্রবলপরাক্রমে রাজত্ব করিয়া মঘরাজা সেকান্দর সাহার হস্তে শোচনীয়ভাবে প্রাজিত হইয়া আত্মহত্যা করেন। তৎপুত্র রাজধরমাণিক্য (অভিবেকমূলা ১৫০৮ শক, মহিষী সত্যবতী)। রাজধরের পুত্র বশোমাণিক্য (মূলা ১৫২২ শক, মহিষী লক্ষ্মী, গৌরী ও জয়া) মোগলসৈত্রের হস্তে পরাজিত হইয়া রাজ্য ত্যাগ করেন

১। শ্রেষে শ্রীযুত কিতীশচন্দ্র বর্ষণ মহাশর এই মুদ্রা ভাবিকার করেন। তাঁহার সৌক্তে তাঁহার নিকট রক্ষিত ত্রিপুররাজগণের নবাবিদ্ধত মুদ্রাগুলি আমরা পরীকা করিয়া দেখিরাছি, বস্তমাণিক্যের মুদ্রার তারিথ প্রকৃতপক্ষে ১৪০৫ শক, ১৪৩৬ শক নহে (আনন্দবাকার, ১৯ পৌষ ১৩৫৪ সংখ্যা দ্রষ্টব্য) এবং রাক্ষমালার এম্বলে কোন ভূল নাই। প্রাচীন রাক্ষমালার পূথি দেখার মুযোগ পাইলে শ্রীযুত বর্ষণ মহাশর দেখিতে পারিতেন যে তাঁহার প্রদর্শিত জ্বমপ্রমানগুলির ভ্রিকাংশ মূল প্রছে ছিল না।

এবং ধর্মমাণিক্যের ধারা তাহাতেই সমাপ্ত হয়। রত্মমাণিক্য হইতে বশোমাণিক্য পথ্যস্ত মোট ৯ পুক্ষের রাজ্মকাল পাওয়া বায় ২৬০ বংসর অর্থাং একপুক্ষেরে গড়পড়তা হয় ২৯ বর্ষসর। রত্মমাণিক্যের বয়স অভিষেককালে ন্যনপক্ষে ২৫ ধরিয়া যশোমাণিক্য (জ্ল্মাক্ষ ১৫০১ শক্) পর্যাস্ত গণনা করিয়া একপুক্ষের গড়পড়তা হয় ৩০ বংসর।

১৫৯১ শকে (১৬৬৯ খ্রীঃ) গোবিন্দমার্ণিক্য রাজ্মালার ততীয়াংশ অমরমাণিকা হউতে কল্যাণমাণিকা প্রান্থ রচনা করেন—ইহার নাম "উত্তর্ত্≨র্থও"। কল্যাণ্মাণিকা (জনাক ১৫০২ শক) পর্মমাণিকোর ভাতা গগন থার অধন্তন ষ্ঠপুরুষ অর্থাং যুশোমানিকার "জ্ঞাতিভ্রাতা" ছিলেন—তাঁথার পিতার নাম বস্তু ও পিতামহের নাম ইন্দ্র। উদ্ধাতন তুই পুরুষের নাম পা এয়া যায় না। কল্যাণ-মাণিক্যই রাজবংশের বর্ত্তমান ধারার আদিপুরুষ এবং মোগল বিজয়ের পরে রাজ্যকে পুনরায় স্বাধীন করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। রাজমালার রচ্যিতা তাঁহাকে ত্রিলোচনের সহিত তুলনা করিয়া অপুর্ব সম্মান দেপাইয়াছেন। তাঁহার সময় হইতে বর্ত্তমানকাল প্রায়ত প্রত্যেক রাজার বিস্তৃত বিবরণ জ্ঞাত হওয়া যায়, কিন্তু ত্রিপুরার রাজদরবার হইতে তাহা প্রকাশের কোন বাবস্থা এযাবং হয় নাই। কলাণ-মানিকোর অভিযেকমূদার তারিথ ১৫৪৮ শক এবং ১৫৮২ শকে পূর্ণ ৮০ বংদর বয়দে তিনি স্বর্গী হন। ত্রিপুরা রাজবংশে ঐতিহাসিক যুগে তিনিই সর্বাপেকা দীর্ঘজীবী হইয়াছিলেন। আমরা ইংরেজ অধিকারকাল বাদ দিয়া অধন্তন বাজগণের নামমালা ও প্রকৃত রাজন্তনাল উল্লেখ করিয়াই প্রবন্ধের উপসংহার করিলাম।

গোবিন্দমাণিক্যের রাজত্বকাল ১৫৮২ হইতে ১৫৯৫ শক। তাঁহার বৈমাত্তের ভাতা ছত্ত্রমাণিক্য ১৫৮৬ শকে ক্য়েক

মাদ মাত্র রাজত্ব করিয়াছিলেন, তাঁহার রাজত্বকাল দশকে এষাবং মৃদ্রিত সমস্ত বিবরণই ভ্রমাত্মক। গোবিন্দের পুত্র वाममानित्कात त्राक्षचकाम ১৫৯৫-১७०१ मक, मत्था करवक মাদ নবেজমানিকা বিজোহী হইয়া রাজ্ত কাড়িয়া লন। রামমানিক্যের পুত্র রত্নমানিক্য (১৬০৭-১৬৩২ শক), মধ্যে ১৬১৫ শকে নরেন্দ্রমাণিক্য পুনঃ রাজত্ব অণিকার করিয়া-ছিলেন। এম্বলেও প্রচলিত গ্রন্থাদির বিবরণ ভ্রমাত্মক। ভাত্রোহী মহেশ্রমাণিকা মাত্র ছুই বংসর রাজত্ব করেন (১৬৩৩-৪ শক)। অপর ভাতা ধর্মমানিকোর (অভিষেক মুলা ১৬৩৬ শক) স্ময়ে ১৭২৮ औद्योदन নবাব স্কুজা था ত্রিপুরারাজ্য মধিকার করিয়াছিলেন। ধর্মমাণিকা রাজ্য দিতে স্বীকৃত হইয়া রাজা পুন: প্রাপ্ত হইয়া এক বংসর জীবিত ছিলেন। তাঁহার ভাতা মুকুনমাণিকোর রাজত্বকাল ১৬৫১-৬০ শক। তৎপর স্থদীর্ঘ ২০ বংসর ত্রিপুরারাজ্যের धात्रज्त अक्षकात यून, जन्मस्या देखसानिका, अध्यसानिका. উদয়মাণিক্য ও দর্ববেশ্বে বিজয়মাণিক্য সময়ে সময়ে রাজ্ত্ব করিয়াছেন। মধ্যে লক্ষ্ণমানিকাকে রাজা করিয়া ভাকাত সমসের গাজিও রাজ্যশাসন করিগ্রাভিলেন। ১৭৫৮ খ্রীষ্টাব্দে সমসের গাজি নিহত হইলে মুকুন্দমাণিকোর পুত্র ক্লফ্ল-মাণিকা রাজ্য অধিকার করেন—তাহার অভিষেক মুদ্রার তারিথ ১৬৮২ শক অর্থাৎ ইংরেজ অধিকারের স্ক্রপাত বংসর ১৭৬০ খ্রীষ্টাব্দ। স্বর্গত মহারাজা বীরবিক্রমকিশোর-মাণিকা রুঞ্মাণিক্যের ভাতা যুবরাজ হরিমণির অধস্তন অষ্টম পুরুষ এবং কল্যাণমানিকোর অধন্তন দ্বাদশ পুরুষ। এম্বেও রত্ন্যাণিকা ও কল্যাণ্মাণিকোর জন্মান হইতে গণনা করিয়া এক পুরুষের গড়পড়তা পাওয়া যায় ৩০ বংসর। যাঁহারা এক পুরুষে ২৫ বংসর ধরিয়া গণনা করেন তাঁহাদের মত ত্রিপুরার রাজবংশের ৬০০ বংশরের ইতিহাস দারা সমর্থিত হয় না।



আশ্রয়প্রার্থী

জীনলিনীকুমার ভজ

নোরাধালিতে সঞ্চাত আত্বিদেষের বিষবাপা দেখতে দেখতে পার্থবর্তা ত্রিপুর। কেলায়ও ছড়িয়ে পণ্টা এক শ্রেণীর খার্থান্থেমী লোকের অপপ্রচারের ফলে নিভত পদ্মীগ্রামগুলোতে হিন্দু মুসলমান উভয় সম্প্রদারের লোকেদের মনে পরস্পরের বিশ্বকে সন্দেহ আর অবিশ্বাস ক্ষমা হতে লাগল।।

প্রপুরের অংশার রায় ছিলেন বীর্যাবান তেজধী পুরুষ। তাঁর পরাক্রমের জন্তে লোকে তাঁর আখা। দিয়েছিল 'বাছ। রায়'। তিনি বিপত্নীক, সংসারে তাঁর একমাত্র বন্ধন খোল খছরের ছেলে টপু—তাকে নিয়ে প্রকাণ্ড বাঙীতে তিনি একল। থাকেন—বাড়ীতে অন্ত আগ্নীয়-বন্ধন আর কেউ নেই। অংশার রায় বিত্তশালী নন, কিন্তু বাক্তিত্বের গুণে আর চরিত্র-মাধুর্যো গাঁরের ছিন্দু-মুসলমান সক্লেরই শ্রহাভাজন।

নিজের বাঙীতে ছুই পক্ষেরই মাতকরে গোছের লোকদের ডেকে এনে তিনি যা বললেন, তার সারমর্শ্ব হচ্ছে এই বে, ভারে ভারে বাগড়া করা চলবে না, নূরপুরের শান্তিকে যেমন করেই হোক অক্র রাখতে হবে।

সকলেই তাঁর কথা অন্নোদন করলে, কিন্ত ছই দলেই এমন করেকজন ছিল বিবাদ বাধিয়ে তোলাই যাদের মনোগত অভিপ্রায়। তারা তাঁকে বিধনজরে দেখতে লাগন।

শাস্তি স্থাপন করতে গিয়ে অখোর রায়কে নানা প্রতি-বন্ধকের সন্মুখীন হতে হ'ল এবং অচিরেই তাঁকে এমন এক স্থানে যেতে হ'ল যেখানে সাম্প্রদায়িক কলছ নেই এবং যেখানে চিরশান্তি প্রতিষ্ঠিত।

একদিন সারারাত তিনি আর ধাড়ী কিরপেন না, ছু'তিন দিন পরে দেখা গেল যাছকাটা বালের পাড়ে তাঁর দীর্ঘ দিবভিত দেহ পড়ে আছে।

সকলের সঙ্গে থালের পাড়ে গিয়ে **ট**পুও পিতার বিকৃত বীভংগ শবদেহ দেখে এল।

অংশার রায়ের অপয়ভূার পর থামের স্বাভাবিক স্বীবনবারায় কেমন একটা বিপর্যায় দেখা দিলে। সকলেরই মনে
হতে লাগল যে, এটা যেন একটা আসর ব্যাপক ছ্র্বটনার
প্রাস্তনা। বড়ের প্রেকার প্রকৃতির মত পল্লীর বুকে
কেমন যেন একটা থমথমে ভাব বিরাক্ত করতে লাগল!
ন্রপুরে স্ফ হ'ল নীড় ভাঙার আয়োকন। ভাবী বিপদের
আশকায় বহু লোক ঘরবাড়ী ক্মিক্মা ছেডে যেদিকে হু'চোধ
যায় পালাতে স্ফ করলে।…

টপুর মাধার আকাশ যেন তেতে পছল। মাত্র যোল বংগর বরসে তার জীবনে যে ছর্ব্যোগ খনিরে এল বুবি তার তুলনা নেই। এ বরসেই সে হরে পছল সম্প্রতে নিরাশ্রর— যে নীয় আশ্রর করে সে এতছিন কাটরেছে আরু তা প্রবল ৰটকার ছিন্নভিন্ন হবার মূবে। এবন সে যায় কোধায়— এত বড় সংসারে কোধায় গিয়েই বা দাঁড়ায়। শেষ পর্যান্ত জাতি বুড়ো চক্রশেবর রায়ের কাছে গিরে সে পরামর্শ চাইলে।

তিনি তাকে সাস্থনা দিয়ে বললেন—"টিপু, তুই এক কাজ কর, চৌধুরীপাড়ার বিনয় আৰু যাছে কলকাতায়, তাঁর সঙ্গে তুই সেধানে তাের মামার বাসায় চলে যা। তাঁর সঙ্গে বিনয়ের আলাপ-পরিচয় আছে। ওবানে গেলে তাের মামা তাে ভাকে আর ফেলতে পারবেন না।"

মামাকে টিপু দেখেছিল মাত্র একবার মা বেঁচে পাকতে তার ছয় সাত বংসর বয়সে তারপর আর তিনি দেশেও আসেন নি, বা তাদের সঙ্গে কোনো যোগও রাখেন নি। তা হোক, তবু তো একটা জায়গায় গিয়ে মাথা ওঁজবার উপায় হবে—একথা ভেবে টিপু যেন অধুলে কুল পেলে।

নদীর খাটে নৌকা বাঁধা। নদীপথে চৌছ মাইল উকিরে নোয়াপাড়া ষ্টেশনে পৌছে টিপুদের কলিকাতাগামী ট্রেন বরতে ছবে।

পৈতৃক ভিটা থেকে চিরবিদার নিয়ে চলে যাবার সময় বেদনার টপুর সমস্ত শিরা-উপশিরা যেন টনটন করে উঠল।
আশৈশব সে মাতৃহীন—এই বাড়ীতে পিতার স্নেহছোরার ষোলট বছর তার কেটেছে। এ বাড়ীর গাছপালা, বাশবাড়
পচা পুকুর সব কিছুরই সঙ্গে তার নাড়ীর যোগ—এখানকার প্রতিটি খুলিকগার সঙ্গে মিশে রয়েছে তার পিতৃপিতামছের পদরেপুকণা। টিপু ভাবতে লাগল, তার জীবনের এই সর্ক্ষপ্রেষ্ঠ তীর্বৃমি থেকে কার অভিশাপে আহু সে চিরতরে নির্কাসিত হতে চলেছে। অভিমানে বুক্বানি তার ভরে উঠল, তারপর ভূরে লুটরে পড়ে সে একেবারে ছোট শিশুটর মত কুঁপিরে কাদতে লাগল। অক্স্থারার অঞ্চ বরে পড়ে তার কর্ম্বাটির বুক ভিক্রের দিলে।

ওদিকে বেলা গড়িয়ে যাচ্ছে—বিনয় এসে তাড়া দিলে
"টপু, উঠ ভাই, আর সময় নেই—এখনি নৌকো ছেঞ্চে দেবে।"

মন্ত্রচালিতের মত গাঁড়িয়ে উঠে সে বিনরের অন্থসরণ করলে। সে চলে গেল—কিন্তু তাঁর ক্মনিকেতনের মাটির বুকে মিশে রইল তার অঞ্চধারা—বাতাসে ভেসে বেড়াতে লাগল বান্ত্রতাদী হেলেটির সক্তরণ দীর্ষধাস।···

বাৰারারের বাজীর সীমানা ছাভিরে আমবাগান পেরিরে রাম্বলীবির পাড দিরে চলতে চলতে তারা নদীর ছাটে এসে নৌকার উঠল—মাঝি নৌকা ছেডে দিলে।

ছইরের উপর বলে উপু ভিডাস নদীর ভটভূমির ক্রমবিলীর-মান হবিটুকু নিজের নিজের মনের পটে এঁকে নিতে লাগল।

নদীর ঘাটে মালীপাড়ার বৌবিরা জল নিতে এসেছে---আবক্ষ-লম্বিত বোমটা কাঁক করে তার। কৌতুহলভরা চোবে তাদের নৌকার পানে তাকিয়ে আছে, গ্রামের ভেতরে বাশবাড়ের कांटक कांटक मर्रमिन्दात हुट्या नक्टत भट्या । नमीत अभादत সবুৰ ঘাসে ঢাকা সুবিভীৰ্ণ প্ৰান্তৱের স্থানে স্থানে সরষে ক্ষেতে হলুদবরণ অঞ্জ কুল কুটে রয়েছে—বর্ণবচিত সবৃত্ব মধমলের সাড়ী পরিহিতা পল্লীলক্ষী যেন হ্লাপের ছটার বলমল করছেন। এপারে একক দাভিয়ে আছে একট পুপ্রাচীন বটগাছ। শাৰাপ্রশাৰা তার জলের ওপর ঝুঁকে পড়েছে। গাঁরের ছেলের। এর কোলেপিঠে চড়ে মাতৃষ। এর কাতে দোলনা টাড়িয়ে তার৷ দোল খায়—এর ডালপালায় পলীর ছরস্ক इलालएम् प्राप्तामित जात जल बाटक ना। (नोका यसन তটভূমি ছেড়ে বেশ গানিকটা দূরে ভেসে এল তথ্য টপুর মনে হতে লাগল এই বুড়ো বটগাছ যেন শত শাধাবাহ প্রসারিত করে তাকে পল্লীর স্নেহজোড়ে কিরে আসবার ক্রন্তে আকুল আহ্বান কানাচ্ছে।...টপু আর ওদিক পানে তাকাতে পারে না, চোৰ ছট ৰূলে ভরে ওঠে-অবাৰ অঞ্জলে মঠ-মন্দির বাঁশবাড় নদীতট বটগাছ সব কিছু বাপসা হয়ে যায়।

নৌকা চলে উন্ধান ঠেলে—নদীর এপারে আমতরুশ্রেণীর ক্যাম সমারোহ—ওপারে শব্দারত প্রান্তরের অনস্ক প্রসার— নদীমাতৃক পূর্ববঙ্গের অপৃথ্য শোক্তা । · · ·

সন্ধা নাগাদ ষ্টেশনে পৌছে তারা কলিকাতাগামী টেন ধরলে।

কলকাতার পৌছে টপুকে নিম্নে বিনয় তাদের বৌবান্ধারের মেসে এসে উঠল। মহানগরীতে এসে টপু কেমন যেন দিশেহারা হয়ে গেল।

ছু' তিন দিন বাদে এক দিন সন্ধার পরে বিনয় টপুকে
নিয়ে হরিমোহন সাহা লেনে তার মামার বাসায় এপে হাজির
হ'ল। কভা নাডতেই মামা নীচে এসে হাজির হলেন।
ভদ্রলোককে দেবলৈ প্রথমেই মনে এই জন্মুভূতি জাগে ধে,
"এ বড় কঠিন ঠাই।" চোবে তাঁর তীত্র ক্রকুটি—মনে হয়
ভদ্রলোক সমন্ত বিশের উপর চটে জাছেন।

বিনয়ের দেখাদেখি টিপু তাঁকে প্রণাম করলে। মামা বললেন—"তার পর বিনরক্ক, দেশ খেকে কিরলে কবে? দেশের খবর কি বল। আরে, সদে এট কে হে? চেনা বলে মনে হচ্ছে না তো।"

বিনয় বললে—"দেশ খেকে এসেছি ছু' তিন দিন ছ'ল—
দেশের বছ ছর্ছিন মামাবাবু ! আপনি কোন ধবর পান নি
বুবি ? অবোর কাকাকে দিনকতক আপে কারা খুন
করেছে । উপুকে চিনতে পারলেন না—এ হচ্ছে অবোর
কাকার ছেলে । গাঁরের সবাই যে দিকে ছ'চোর্ব যার পালিরে
যাচ্ছে, কিছু এর তো আর যাবার ঠাই নেই, তাই আপনার
এবানে নিয়ে এলাম ।"

মামার ভাবান্তর দেখা গেল। দাতমুখ বিঁচিয়ে বলে উঠলেন—"ব্ব সংকর্দ করেছ। এদিকে রেশনের ঠেলা আর দালার ঝামেলা সামলাতে সামলাতেই প্রাণ অতিঠ—নিক্ষেদেরই না খেয়ে মরবার ক্ষোগাড়…ভার উপর আবার পৃথির্ছি…(একটু থেমে উপুর দিকে ভাকিয়ে) কি নাম বললে, উপু—তা একেবারে স্বয়ণ্ট উপু স্থলভানের আগমন, নামের বাহার আছে বটে—ভা ভোর মাধার এত লখা চুল কেন রে, ভূই কবি হয়েছিস না সাধু হয়েছিস ?"

টিপু চৃপ করে রইল—এ কথার কি উত্তর দেবে সে। মাকে টিপুর মনে পড়ে না…কিছ তার মারেরই তো জ্ঞাপন ভাই ইনি, কিছ এ কি ধরণের সন্থাবণ ।…

যাই হোকু, চক্ষ্লজ্ঞার গাতিরে মাতুল মছাশর অবাঞ্চিত আত্মীরকে আগ্রর দিতে বাধা ছলেন---বাইরের ধর থেকে টিপুকে অন্তঃপুরে চালান দেওয়া ছ'ল। সেধানে ছ'ল আর এক পালা অভার্থনা। মামীর বচনবিহাস আরও পরিপাটি—তার বাঁজ অনেক উত্ত---কাঁটিকেটে কথাগুলো যেন টিপুর একেবারে মর্শ্বছলে কেটে কেটে বসতে লাগল।---

কণীপ্রনাধের সংসার-তর্মীর কর্ণবারণ করে বেবেছিলেন তক্ত গৃছিণী ভরঙ্গিনী। কণীপ্রনাধ শুধু টাকারোক্ষণার করেই বালাস। সেই টাকা কি ভাবে বরচ হবে, কি উপায়ে সংসার বরচ চালিয়ে ছটো পয়সা বাঁচবে এই সমন্ত গার্হস্থা অধনীতির বিধানকর্ত্রী ছিলেন তরঙ্গিনী। কণীপ্রনাধও সকল ভার গৃছিণীর হাতে ছেড়ে দিয়ে 'যথা নিযুক্তোংকি তথা করোমি' এই নীতি অফুসরণ করে চলগুল—সাংসারিক কোন ব্যাপারে সমত প্রতিষ্ঠার চেষ্টা তিনি কথনো করেছিলেন এমন অপবাদ তাঁর শক্রন্তেও দিতে পারবে না। টপুর আগমনের দিনকতক পরে তরঙ্গিনী এক দিন স্বামীকে বললেন—"বাজার করা, রেশন আনা এ সমন্ত টেপাকে। তরঙ্গিনীক টিপুর অপত্রংশ। দিয়েই হবে—ছোকরা চাকরটাকে ছাড়িয়ে দিই কি বল গ্র

শ্বীক্তনাথ একেবারে সবিনয় নিবেদন হয়ে বললেন— "এর স্বার বলা বলি কি তুমি থখন···"

কাজেই তিনি যখন এটা চান তখন তড়িখড়ি ছোকরা চাকরটকে বিদায় করা হ'ল এবং এমন সব কাজের ভার বিহুকে দেওয়া হ'ল যা সম্পন্ন করতে গিয়ে ভূতাট পর্যাস্থ হিমসিম খেরে যেত।

তর্ক্লিণী ভেবে দেখলেন, বিছুকে দিয়ে যদি এক বেলা রামার পাট সারিয়ে নেবার বাবছা করা যায় তা হলে প্রচুর সময় পাওয়া যাবে। নভেল পড়েট হোক বা পরচর্চা করেট হোক সেই সময়টার বেশ সন্থাবহার করা যাবে। কাজেই বিছকে তিনি মহা উৎসাহে রামার পাট সবদে পাঠ দিতে হুরু,করলেন। কি ভাবে ঘুঁটে সালাতে হয়, উত্থন বরাতে হয়, কত চালে কত জল লাগে—এ সকল বিষয়ে বস্তৃতা আর হাতে কলমে শিক্ষা চলল সমান তালে। এত সব শিক্ষণীয় বিষয় যে সংসারে ছিল বিছু কি আর তা জানত।

প্রথম দিন উত্থনে আঁচ দিভে গিয়ে টপুর চোধের करन नाटकत करन अक इ'न। यह करहे छेकून वर्तात्नांत्र नत् ভাত যদি বা সিদ্ধ হ'ল তো কেন গালতে গিয়ে হাঁছি ভর্তি ভাত যেৰের ওপর পড়ে গিয়ে সব একশা হয়ে গেল। পুহস্থালিতে এটা অবশ্ৰ শ্ৰীতিমত বিপৰ্যায় কাও, কিছ তরদিণী होन होएलन नो---(कननो এখन देवर्ग बांत्रण कतरन আবেরে লাভ আছে: ঠাকুর-চাকর না রেবে আর নিব্দের গতর ঘণাসাধ্য ক্রম ধাটিরৈ সংসার-চক্রটকে সচল রাখা ষাবে। ভাগিনেয়কে পাক-প্রণালীতে পাকাপোক্ত করে তুলবার অঞ্চে তিনি প্রাণপণে তালিম দিতে লাগলেন। এদিকে টিপুর অপটু হত্তে বাদে-বর্ণে-গদ্ধে অভুলনীয় খে-সকল বাঞ্চনাদি বন্ধিত হতে লাগল, নিতান্ত পরমহংস অবস্থা না হলে সেগুলো গলব:করণ করা সম্ভবপর নয়। এক দিকের ক্ষতি আর এক দিকে পুষিরে নেওয়া যাবে এই ভেবে, মামী সান্থনা পেলেন, কিছ বেচারা ফণীস্ত্রনাথের অবস্থা কাহিল হয়ে উঠল, অবস্থ তর্লিণীর বিধানের বিরুদ্ধে মুখ ফুটে কিছু বলবার মত বুকের পাটা তার ছিল না।…

এমনি ভাবে কাটল মাস ছই। টপুর মন এখান থেকে
দিনরাত শুধু পালাই পালাই করতে লাগল। আদৈশব সে
ছিল ভাবপ্রবণ—কাজকর্মে একদম আনাড়ী। দেশে থাকতে
বড-কুটোট পর্যান্ত কখনও তাকে নড়াতে হয় নি, আর
এখানে এসে সে করছে কিনা বাসা-চাকরের কাজ। সে
ভাবলে, নিজের জীবনের সকল আশা-আকাজকা বিসর্জন
দিয়ে শুধু আহার আর আপ্রয়ের বিনিময়ে এমন ভাবে দেহের
রক্ক তিল তিল করে কর করে কি লাভ গ

মনে পদল বাবার কথা। তিনি তাকে মহাপুরুষদের দীবনী পদে শোনাতেন, মহন্তর দীবনের আদর্শে তাকে অহপ্রাণিত করে তুলবার হুলে তার চেষ্টার বিরাম ছিল না। তার মুখে দেশের মুক্তি-সাবকদের কাহিনী ভুনে ভুনে নিহ্নের দীবনকে তাদের আদর্শে গড়ে তুলবার হুলে কি ব্যাকুলতাই না তার মনে হুগত। কিন্তু মহানগরীতে এসে তার শীবনের ও দীবনীশক্তির কি শোচনীয় অপচয়ই না হচ্ছে। এই কি দীবন প এমনি ভাবে বেঁচে থাকার সার্থকতা কি।

জনেক ভেবে চিছে সে ছির করলে মামামামীর আশ্রয় থেকে চলে সে যাবেই—ভারপর যা হয়। বিরাট মহানগরীতে মাস্থবের মত বাঁচবার ঠাই কি তার একাস্কই হবে না !

নিকের মনের সঙ্গে অনেক বুরাপড়া করে নিয়ে ইতিকর্ম্বরা ।

হির করে সে কাল কর্মে চিলে দিলে। তরঙ্গিনী কাইকরমাস

বাটাবার অন্তে আর তাকে সমরমত ডেকে পান না।

সন্ধার সমর সে হেছুরার গিরে একলা চুপ করে বসে থাকু…

রাত আটটা নরটার সমর কিরে এসে কোন দিন রালা

চাপার, কোন দিন বা সটান নিজের বরে গিরে শুরে পড়ে।

সপত্যা তরভিনীকে সুব-শন্যা হেতে গুঠে এসে রালার

আরোজন করতে হর; ছপুর রাজে শেব হর রাত্তর ভোজনপর্ক। ···

শুধু তাই মর, সাত চঙ্গে বে কথা কইত না, এখন সে মুখে মুখে কবাব দেয়। তরঙ্গিনীর মেজাক গরম হরে উঠল। কনীপ্র-নাথকে একদিন তিনি বললেন—"আপদ বিদের কর"। পত্নীর ছকুম তার নিকট বেদবাক্য, তিনি অতি সংক্ষেপে তার কথার কবাব দিলেন, বললেন—"তাই হবে।"

বিদারের পালাও হ'ল অত্যন্ত সংক্ষিত্ত। শ্রোতের মুর্বে ত্বের মত ভাসতে ভাসতে টিপু এক দিন মাতৃল-পরিবারে এসে আত্রর নিম্নেছিল, ছ'দিন যেতে না যেতেই সে আত্রমণ্ড তার টুটল। নিজের ক্ষ্ম বিছানা আর কাপড়-চোপড়ের পোঁটলাধানা বগলে করে সে পথে বেরিরে পড়ল।

মাতৃল-পরিবারে বল্পকাল থেকে সে দেখে গেল মাছ্যের স্বার্থসরতার অভ্যুগ্র রূপ, সঞ্চয় করে গেল শীবনের প্রথম তিক্ত অভিক্রতা।

স্টান সে বৌবাজারে বিনয়দের যেসে গিয়ে হাজির হ'ল। বিনয় তখন আপিসে যাবার জভে তৈরি হচ্ছিল, অছাবর সম্পত্তি সহ টপুর অপ্রত্যাশিত আগমনে সে একেবারে হতভত্ত হয়ে গেল। খানিককণ নিৰ্বাক থেকে কিজেস করলে---"ব্যাপার কি টপু ?" টপু জোর করে মুখে ইষং হাসি (অবছ ভা কালার চেয়ে করুণ। কুটিয়ে ধবাব নিলে-"মামার বাড়ীতে ঠাই হ'ল না বিহুদা, সেখান থেকে চিরতরে চলে এসেছি: আপাতত: ভোমার এখানেই দিনকতকের করে আমার আশ্রর দাও।" ভূনে বিনয়ের মাধা বন বন করতে লাগল। সর্কানাশ, ও যদি এখন তার কাঁথে এসে চেপে বসে তা হলেই হয়েছে আর কি ! কাকেই গোড়ায় সাবধান হওয়া खान । वित्रक्तिशृर्व शत्त (म वलाल-"ना (र ! ७ भव खाडाक-টাশ্রম দেওয়া আমা হারা হবে না। বলে, আপনি শুতে পার না ঠাই শঙ্করাকে ডাকে। তোমার ব্যবস্থা তুমি করে। বাপু---ওদিকে আমার আবার আপিসের বেলা হ'ল।" বলেই সে हंग हन करत हरन शम। छिन् नितानाम वरम वरम निरमन অদৃষ্টকে বিকার দিতে লাগল।

নির্ম্মলবারু বলে এক ভদ্রলোক মেসে বেকে প্রামো-কোনের কারবার করতেন। একলা মাসুষ, একটা চাকর নিরে তিনি থাকেন। তিনি মেসের তিনটে রুম ভাঙা নিরে-ছিলেন। একটাতে তিনি থাকতেন ভার একটাতে তার রাল্লাবালা হ'ত, ভার একটা ছিল তার ভাপিস-খর।

চিপুর অবহা দেবে তাঁর দরা হ'ল। আপিস-বরে তিনি তাকে শোবার অহুমতি দিলেদ। কিন্তু রেশনের দিনকাল— চাল আটা যা কোটে তাতে নিজেরই হ' বেলা পেট ভরে বাওরা হর না। উপুকে আশ্রয় দেওরা যদি বা তাঁর পক্ষেসভব হ'ল, ভার আহার্ব্যের সংস্থান করা বে তাঁর সাব্যাতীত সে ক্যা ভিটি বোলাপুলি ভাবে তাকে সানিরে দিলেন।

কলকাতার এসে অবৰি টপুকেবল মছ্য-প্রস্থৃতির নিক্ট দিকটারই অভিব্যক্তি দেখেছে। এর বিপরীত দিকও যে এবানে আছে এটা তার নৃতন অভিক্তা। এই সামাচ্চ সমবেদনার স্পর্ণেই তার চোখে কল এল। নির্মান বাবুর কথার কোন কবাব সে দিলে না, উদ্ধৃত অঞ্চ রোধ করবার করে অক্তদিকে যুখ কিরিয়ে নিলে।…

বিচিত্র যেসের জীবন! ষার্ট সন্তর্মট প্রাণী এখানে বাস করে, সবাইকার জীবন যেন এক ছাঁচে ঢালা। সকালে সবাই নাকে মুখে চারটি ভাত গুঁকে আপিসে চলে বার, কেরে সখ্যার পর—তারপর স্থক হয় সপক্ষে তাস পেটা অথবা বাকে আছতা ইরাকি মারার পালা। আপিস আর মেসের সঞ্চীর্ব গতীর মধ্যেই আবদ্ধ এদের জীবন—বাইরের বহন্তর জগতের সঙ্গে তাদের কারুর কোন সম্পর্ক নেই। দারিদ্রোর নিম্পেষণে, কাজের চাপে আর সংসারের ধোঝার ভারে এদের আয়ার হরেছে অপস্থতা, পরিবার থেকে বিভিন্ন অবছার থেকে থেকে এদের ছদরের স্থুমার বৃত্তিগুলা মরে গেছে। ব্যক্তিগত স্বার্থ ছাড়া আর কোন কথা এরা ভাবতে চার না, পারে না—তাই অপরের দ্বংখ এদের মনে সমবেদনার সঞ্চার করে না, এমন কি নিজেদের আম্পোশেই কে বাঁচল আর কে মরল সে সম্বন্ধেও ভাদের কোন মাথাবাথা নেই।

কাক্ষেই পুরা তিন দিন অভুক্ত অবস্থায় থেকে টিপু যথন ক্ষার চোটে একেবারে নেতিয়ে পছল তথনো কারুরই দৃষ্টি ভার প্রতি আরুষ্ট ছ'ল না—তাদের নিকিকার ঔদাসীত সমানই রইল।

মেসে আসবার পর চার দিন কেটে গেল---আছ প#ম দিন্ এর মধ্যে পেটে এক কণা খাছও পড়ে নি। সন্ধার অন্ধকারে ছাদের উপর একান্তে বসে টপু আকাশ-পাতাল ভাবতে লাগল। কুবার ছালা যে এত মারাম্বক, এর চেয়ে যন্ত্রণাদায়ক যে সংসারে আর কিছু নেই তাকে ভানত ! चकीत भन्न चकी तम त्रिलिश बदन कीत्र बदम चाहि, मांचा विम বিম করছে: সমন্ত শরীর অবশ হরে এসেছে। পেটের ভেতরে একটা অসহ যন্ত্রণ!। তার আর সকল অহুভূতি যেন লোপ পেয়ে গেছে, কেবল একটা কথাই তার মনে স্বাগছে যে, যেমন করেই হোক বাম্ব তাকে যোগাড় করতেই হবে : কিছু কোৰা থেকে কি ভাবে তা সম্ভব হবে···হুর্বল মন্তিক ভার চিন্তা করতে পারে না। ভাবতে ভাবতে সব কেমন যেন গুলিরে যার। আচমকা বিছাৎচমকের মত একটা উপারের কথা ভার মনের মধ্যে বিলিক দিয়ে গেল। সকল ফ্লান্তি, সকল ফুর্বালতা আর অবসাদ বেড়ে কেলে দিরে সে সোজা হয়ে দাড়াল। কিছু দাঁভাবার সঙ্গে মনে হ'ল তার পায়ের তলা থেকে মাট বেন সরে যাচেছ, পৃথিবীটা ছলছে আর সব কেমন যেন चक्कारत चाव्हत रहत चानरह । यानिकमन वात्रामात *दिशि*क्ष ब्रुत (म निक्रिय तरेम, छात्रभव भनीतिव साम्ति भन

রাভার বেরিরে পঞ্চ কলেক ইটি বরে চলতে চলতে সে একেবারে হরিমোহন সাহা লেনে তার মামার বাসার সামনে এসে থামল। সদর দরকা খোলাই ছিল, চট্ট করে সে ভেতরে চুকে পড়ল। নীচের তলার রায়ার কায়গা, সেথানটার ঘুট্ছটে অফলার। ভাল করে সে এদিক ওবিক তাকিরে দেখলে—কেউ কোথাও নেই, কবীএনাথ বাড়ী কেরেন রাত আটটার পরে, ওদিকে পাশের বরে তর্হিবী নিবিপ্ত মনে সহীতচর্চার রত। সম্বর্গণে পা কেলে বেথানে চাল ভাল ইত্যাদি থাকত সেখানে গিরে অফলারে ইটিকাতে ইটিকাতে সে মুঠো মুঠো চাল ভাল পকেটে প্রতে লাগল, তার বুক চিপ চিপ করতে লাগল, সারা গা খামে ভিকে গেল; বুকের কাছ থেকে কি যেন একটা গলা পর্যন্ত ঠেলে উঠতে লাগল। ত্ই পকেট চাল ভালে ভরতি করে রন্ধ নিঃখাসে টিপিটিপি সে ঘর থেকে বেরিরে রাভার এসে ইটক হেডে বাঁচল।

বড় রাভার পা দেবার পর তার ছংপিভের গতি হাভাবিক হ'ল। একটু বাতছ হবার পর সে ভাবতে লাগল, এ বরণের হের এবং নিজের হভাববিক্ষ কাক তার হারা কিরুপে সম্ভবপর হ'ল, মনে হ'ল যেন অপ্রকৃতিছ অবস্থার এমন একটা কাক সে করে কেলেছে যার ক্ষেপ্ত সারা জীবন তাকে নিজের বিবেকের কাছে জবাবদিহি করতে হবে। উঃ ! স্থার তাড়নায় সে অবংপতনের কোন্ নিম্ন ভরেই না নেমে গেছে !…

হেছরায় অনেককণ কাটিয়ে যখন সে মেসে কিরে এল তখন রাত বেশ হরেছে। নির্দ্ধনবার্র চাকর উমেশ তালের রাল্লার পাট প্রার শেষ করে এনেভে। উমেশকে বলে করে সে তালের উত্থন চাল ডাল এক সঙ্গে কুটিয়ে নিলে, তার পর গপাগপ তা মুখে প্রতে লাগল। সেই অধান্ত তিন দিন উপবাসী তার রসনার নিকট অমুতাস্বাদনবং লাগল।

বাওয়াদাওয়ার পর ঘুমে তার চোব ছট অভিরে আসতে
লাগল। নির্মালবাবুদের আপিস-বরে মাটতে নিজের ছিল্ল
বিছানাবানি বিছিয়ে সে ভয়ে পড়ল···কেমন যেন একটা স্লিয়
প্রশান্তি তার স্লাব্যুগুলীকে আছেল্ল করে কেললে··ভাঃ কি
আরাম ! গভীর তন্ত্রাবেশে তার চোবের পাতা ছট বুল্লিত হয়ে
এল।

এমনিভাবে চাল চ্রির ব্যাপারটা চলল করেক দিন মন্দ নয় । · · · কিন্ত চার পাঁচ দিন পরে টিপু একদিন মামার বাসার সামনে গিরে দেখে সদর দরকা ভেতর খেকে বন্ধ; পরদিনও গিরে দেখে একই অবহা · · · বুবলে টের পেরে মাতৃলানী সাবধানী হরেছেন।

করেকদিন পেটে কিছু পড়বার পর আবার ত্রু হ'ল উপবাসের পালা। একদিন হ'দিন নর পুরো একট সপ্তাহ উপুর ভ্রুত্বল বেনে কাটল। নির্বাহ্নর নিঃসহল অবস্থার উপু নেসে মৃত্যুরই প্রতীকা করতে লাগল। এমন সময় মড়ার ওপর পড়ল বাঁড়ার ঘা। সেদিন ছপুর-বেলা ছাদের একান্তে বসে ক্ষার ঘালার ধ্ঁকতে ধ্ঁকতে দুঁপ্ ভার জীবনটাকে নিয়ে বিধাতার যে নিঠুর বেলা স্ফ হরেছে ভার শেষ পরিণতি কি ভাই ভাবছিল এমন সময় নির্মালবাবুর চাকর উমেশ এসে বললে, বাবু ভাকে ডেকে পাঠিরেছেন।

অন্তত ঘটনার আশ্বাই টিপ্র মত কর-অভিশপ্ত হুর্তাগাদের
মনে আগে জাগে তার বুক হ্রু হ্রু করে কেঁপে উঠল।
কেন তার ডাক পড়ল কৈ জানে! তার অবল পা'হুটো
যেন তার ক্লাভ দেহটাকে বহন করতে পারছিল না। অতি
কঠে সে আপিস-ঘরে নির্মালবাবুর কাছে গিয়ে হাজির হ'ল।
তিনি তার আপাদমন্ডক ভাল করে একবার নিরীক্ষণ করলেন
লারণ বৃত্তুকার হাপ তার মুখের প্রতিটি রেখার পরিক্ষৃট।
দেখলে মারা কাগে, কিন্তু যা দিনকাল পড়েছে মায়ামমন্তা
দেখাবার সময় এখন নয়—'আআনং সততং রক্ষেং' এইটেই
হচ্ছে আককের দিনের নীতি। একটু ইতন্তত: করে তিনি
বললেন—'ওছে ছোক্রা, আদ্ধ দেশ থেকে চিঠি পেলাম,
আমার এক আগ্রীর হু'একদিনের মধোই দেশ হেড়ে সপরিবারে
কলকাতার চলে আসছেন, আমার এই আপিস-ঘরেই তাঁদের
আশ্রের দিতে হবে। কাকেই এখন তুমি অন্তত্য তোমার বাবস্থ।
কর।" বলেই তিনি সাক্ষ-পোষাক নিয়ে বেরিয়ে গেলেন।

টিপুর চোবের সামনে সমন্ত পৃথিবীটা যেন ঘুরতে লাগল। টলতে টলতে খর থেকে বেরিয়ে এসে সে রালাখরের পালে ধপ করে বসে পড়ল। তার পর হাঁটুতে মুধ গুঁজে শুম হয়ে বসে রইল।

এমনি ভাবে কাটল বহুক্ষণ। টিপু ভাবনার অথৈ সমুদ্রে একেবারে ভলিরে গেছে। ওদিকে রাল্লাখনে উমেশ পাক করছে। রাল্লার হুগছ তার নাকে এসে পৌচে তাকে পাগল করে তুলভে। মনে হচ্ছে এই আহার্যা থেকে অস্ততঃ কয়েকট প্রাস্থাস যদি সে মুধে তুলতে পারত।

রায়ার পাট চুকিয়ে খরে শিকল দিয়ে উমেশ বেরিরে গেল। বেশ কিছুক্ষণ কাটল—তার পাড়া নেই। খরের ভেতরকার সভরনিত খাড়দ্রবোর কথা ভাবতে ভাবতে টেপুর রসনা লালায়িত হয়ে উঠল, একটি চিন্তাই শুরু তার সমশু সন্তাকে আছর করে রইল যে তার কিছু খাওয়া চাই—নইলে সে বাঁচবে না—বরের ভিতর রকমারি খাভবন্ত রক্ষিত অথচ আরু সাত দিন সে অভুক্ত! সে আর ভাবতে পারে না—তাকে বাঁচতে হবে, এমন ভাবে না খেরে মরা কিছুতেই চলবে না । তাকে বাঁচতে হবে, এমন ভাবে না খেরে মরা কিছুতেই চলবে না । তাকু বার ভালা তাকে কাওজানশৃত্ত পাগলের মত করে তুলল—সে এদিক ওদিক একবার তাকাল, তার পর গুটগুটী রায়াবরের দিকে এগুতে লাগল। তার হুংপিও এত ভারে চিপ চিপ করতে লাগল যে মনে হ'ল কে বেন তার বুকের ভেতর সলোৱে ছাত্তি পিটছে। কম্পিত করে শিকল খুলে সে বরের ভিতর গিরে ছুক্ল। ইাভিই্নির চাক্ষা

খুলে হরেক রকম বাঞ্চনের দিকে নজর পভ্যামাত্রই আনন্দে তার চীংকার করে উঠতে ইচ্ছা হ'ল। ভাবলে, মেস থেকে বিদারের সময় আসন্ধ—তার আগে সুযোগ যদি ঘটল তো যতটুকু সম্ভব রসনার তৃত্তি সাধন করে—পেটে রসদ বোঝাই করে নেওরা যাক।

ডেকচি আর কডাই থেকে থাবলা থাবলা ডাত তরকারী সে গোগ্রাসে গিলতে লাগল। আঃ কি ড্পি! এক সর্থ-গ্রাসী বৃতৃক্ষা যেন তাকে থাওরার নেশার মাতিরে তুলল— ইচ্ছে হ'ল থরে যত থাবার আছে সব নিঃশেষে সাবাড় করে দের। থাওরার নেশার সে জগং–সংসার ভূলে গেল। উমেশ যে, যে-কোনো মুছুর্জে কিরে আসতে পারে সে থেবাল তার রইল না।

ইতিমধ্যে নির্মাণবারু বাইরের কান্ধ সেরে কিরে এলেন।
উমেশের বোঁকে রান্নাখরে এসে তিনি দেখেন অপ্রত্যাশিত
কাণা। বছক্ষণ বাইরে খোরাঘুরি করে এসেছেন, ক্ষিধেও
পেয়েছিল বেকায়। রাগে আংগুন হয়ে তিনি দিলেন টিপুর
পিঠে বিরাশী সিকা ওক্ষনের এক প্রচণ্ড ঘুষি বসিরে, তারপর
"চোর চোর" বলে ভার সরে টেচামেচি মুকু করলেন।

ছটগোল শুনে মেসের আরো অনেকে নিশ্বলধাবুর রাল্লাঘরের নিকটে এসে কড়ে। ছলেন। নির্মালধাবু টপুকে কাণ
ধরে হিড় হিড় করে টেনে বাইরে নিয়ে এলেন। টপুর
অবস্থা অবর্ণনীয়—মুবে একদলা ভাত— গালে ইাড়ির কালি—
ভামার বুলে কোলের দাগ। দৃষ্টি মাটতে নিবদ্ধ। পৃথিবীকে
দ্বিশা হতে বলবার এর চাইতে শুরুতর প্রয়োজন বোধ করি
আর কারে। কগনো হয় নি।

নির্মলবাবু টিপুর কাণ ছটো আচ্ছা করে মলতে মলতে গলা সপ্তমে চড়িয়ে বলতে লাগলেন—"হতচ্ছাড়া ছোঁড়ার কাণ্ডটা দেশলেন মলাই—ব্যাটা ছিঁচকে চোর। দয়া করে আশ্রম দিয়েছিলাম, তার ফলটা এই—দিলে এবেলার বাওয়াটাই মাটি করে।"

তার পর চলল কিছুক্দণ বরে নানা ক্ষনের নানা মন্তব্য, গালিবর্বন, আর পাইকারী হারে প্রহার । টিপু টু শক্টিও করলে না, নীরবে নতম্বে সব সন্থ করতে লাগল । তার মুবের চেহারা এমনি বেদনাকরণ হয়ে উঠল যে তা দেবলে অতিব্রুড় পাষাণেরও বোব করি চোব কেটে কল বেরুড় । কিছু মেসের ভদ্রলোকের। সবাই তার জনাচারে এত উদ্ভেজিত হরেছিলেন যে, তার মুববানির পানে কুণা দৃষ্টিতে তাকাবার মত মনোভাব কারুর হ'ল না।

ক্রমে উত্তেশনা ক্মল, মারণিটের পালাও শেষ হ'ল ৷ তবন একজন বললেন—"ভদ্রলোকের মেসে এ সমন্ত চোর বাটপাড়বের আবার জারগা দেওরা কেন মলাই ৷ পাজী ক্রোভার একগালে কালি তো লেগেছেই—দিন না আরেক গালে চুণ লেপে রাভার বের করে ৷" নির্মাল বাবু ভার গালে চুণ লেপন করলেন না বটে, কিন্তু এই মুহুর্তে তাকে মেস খেকে বেরিয়ে যাবার নোটশ দিলেন।

পোষ্টলাট বগলে নিরে মাতালের মত উলতে উলতে উপু
সিঁছি বেরে নীচে নেমে গিরে মহানগরীর শক্ষমর জনাকীর্ণ
রাজপথে বেরিরে গড়ল, তার পর চলতে লাগল উদ্ভান্তের
ভায় লক্ষ্যহীন ভাবে । অপমানের আলা তার সমন্ত শরীরে
যেন অলুনি ধরিয়ে দিয়েছে—সর্বাঙ্গ কাঁপছে থর থর করে ।
সংসারে সে যে কত একা আৰু সমন্ত অন্তর দিয়ে তা উপলব্ধি
করলে।

সে চলতে লাগল কলেজ খ্লাট ধরে। সবে সে মেছুয়া বাজারের মোড় ছাড়িয়েছে এমন সময় অনতিদূরে একটা সোরগোল উঠল। একজন পথচারী ছুটতে ছুটতে এসে বললে, 'পালাও ভাই, আবার লাজা শুরু হয়েছে—গলির ভেতর থেকে গুডারা ছুটে আসছে।" সঙ্গে সঙ্গে স্বাই দিখিদিকজ্ঞানশৃঞ্জ হয়ে থে যেদিকে পারে ছুট দিলে—কটপট দোকানপাট বন্ধ হয়ে গেল।

ভাগ্যিস সামনে একটা প্রকাণ্ড বাড়ীর গেট খোলা ছিল—
ফটকে সঙ্গীনধারী গুর্বা প্রহ্মীরা দাঁড়িয়ে। টিপু এবং আরো
ক্ষেক জন ভেতরে চুকে পড়ল। সঙ্গে সংকটক বন্ধ হয়ে
গেল। ভেতরে আরো বহুলোক আশ্রয় নিয়েছে।

কিছুক্ল পরেই অকুস্থলে এল মিলিটারী লরী—পর পর শোনা গেল কতকগুলো বন্দুকের ফাকা আওয়ান।

ধন্টাখানেক পরে গেট খুলে দিলে। গুঙারা পালিরে গেছে। সবাই যে যার বাড়ীতে নিরাপদ আশ্রমে যাবার ক্ষম্তে ক্রমত পা চালিয়ে দিলে। টপুও তাদের সঙ্গে সঙ্গে চলল—খদিও কোখায় গিয়ে সে উঠবে তার কিছু ছিরতা নেই। আশ্রমের শ্রমেকন যথন সব চেয়ে বেশী সেই চরম সঙ্কট-সময়ে সে হয়েকে আশ্রমহীন।

চলতে চলতে চলতে শেষে হেছ্য়াতে গিয়ে একটা বেঞ্জির সে শুরে পড়ল। এদিকটার দালাখালামার বালাই নেই— ধীরে ধীরে গভীর নিস্তার সে আচ্ছর ছয়ে পড়ল—দুম যধন ভাঙল তথন সধ্যা সমাগতপ্রার।…শহরের বিভিন্ন এলাকার সাদ্য আইন জারী হরেছে...স্বাই এরি মধ্যে যোর দরে চলে গিরেছে, ভোয়ার প্রায় জনশৃত।

কোষাৰ হেড়ে টপু বিবেকানন্দ রোড বরে মাণিকতলা বাৰারের দিকে চলতে লাগল। বাৰারের ফটক তালাবদ, क्नरकानाहन अवह भर्या निर्माणिए। विरक्तानन द्वाछ আর সারকুলার রোডের সংযোগন্তলে এসে টিপু ব্যক্তে দাঁভাল। কারফিউর দক্ষন সারকুলার রোভের ওপর ঘানবাহন व्यात (लाकक्टनत हलाहल वक्षा तालात ध्वाराटक কেউ কেউ বসে গল্পজ্ব করছে, পথ দিয়ে চলছে ছু'একল্প পৰিকের আনাগোনা-কিন্ত ওপারে অন্ধকারায়ত নিশীপ নগরীর বুকে নেমেছে মৃত্যুপুরীর অগভীর নিশুক্তা-- মৃত্যুর দৃষ্টি চলে অন্যানবের চিহ্ন নেই। তমসচিত্র নিজন নগরী নিরুত্ব নিঃখাসে খেন এক চরম তুর্ঘটনার প্রতীক্ষা করছে। এই অন্ধকারের বুকে এখন হয়ত চলছে কত গোপন হতাালীলা মিলিটারীর গুলিতে কত নিরপরাব প্রাণ দিচেছ, দূরে কোপাও হয় তে৷ মরণাহত অসহায়ের আত্তনাদে মুখরিত হয়ে উঠছে রাত্তির আকাশ। হঠাৎ টিপুর মনে হ'ল যেন কুমুবের অন্ধকারের পটে ভেসে উঠেছে যাহকাটা খালের পাড়ে পিতার রক্তরঞ্জিত গলিত শবদেহের বীভংস দৃশ্র--সঙ্গে সঙ্গেই বিছ্যুৎচমকের মত বাবার কাছেই শেব। একটি প্লোকাংশ ভার মনে পড়ল---"বেনাম্ব পিতরে যাতা-----"; বান্তবিক্ই কি পিতা যে পৰে গিয়েছেন সেই পৰেই তারও খীবনের শেষ পরিণতি, অপয়তাই কি তারও অদৃষ্টলিপি ? সে ভাবতে লাগল এই নীর্দ্ধ অধকারের বুকেই আছে তার সকল ছংব অপমান বুভুক্ষার আলা--সব কিছুর শেষ--গৃহহারা গতিহীনের সকল হুর্গতির অবসান।

এই অন্ধকার যেন হ্বারভাবে তাকে মৃত্যু-উংসবে আহ্বান করতে লাগল, একদিকে বাঁচবার আশা অপর দিকে মরণের নেশ। এ হরের হন্দ চলল কিছুন্দণ—খানিকন্দণ সেন যথে নিত্তেই হয়ে দাঁভিরে রইলে শেষে তার সার্মগুলীতে জাগল এক উংকট উত্তেলনা—তার স্লবকান্ত চরণে সঞ্চারিত হ'ল গতিবেগ। এক পা এক পা করে সেই সর্ব্ঞাসী অন্ধকারের অভিমুখেই সে অগ্রসর হতে লাগল।

চিরস্থনী গীতি ঞ্রীধানেক্রক্ষ চক্র

সে দিনের চলা পথ পড়িকা পিছনে আজিকার পথ-প্রান্তে বাহু প্রসারিয়া আমারে বাঁবিতে চাহে; চরণে থিরিয়া পথরোধ করিবারে চাহে কণে কণে। সে দিন বসত্ত-প্রাতে বুকুলে ভরিয়া বৃক্ষণাথা-বাহু মেলি' পিক-কলবনে মধুপ্তঞ্জন-ভরা দক্ষিণ প্রনে ভরা পত্তে বিলাকের দ্বীতি মর্গরিয়া---

চলে গেল, বলে গেল—তব্ ভালবাসি পড়ে-থাকা পিছনের বিশ্বত গে শ্বতি, স্টে-ওঠা পুলে পুলে সুমধ্র হাসি; বরা-বচ্ছে বিকলিত লে দিনের প্রীতি আবার এ পথ-প্রান্তে উঠুক উদ্বাসি' মর্মনিরা মর্মে পুনঃ চিরঙ্গী শীতি।

ভরত, কণ্ব ও বিশামিত্র

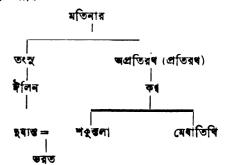
ডক্টর মূহম্মদ শহীগ্লাহ্

ম্ছাভারতের আদিপর্কের শকুভলোপাব্যানে শকুভলাকে বিশ্বামিত্রের গুরুসে মেনকার গর্ভজাত কঞা বলা হইরাছে। ইহা
লাইত: একটি উপকথা মাত্র। পুরাণ-ইতিহাস আলোচন।
করিলে দেখা যাইবে ধে শকুভলার পক্ষে করের গুরুসভাত কঞা
হওরাই সম্ভব; তিনি কথনই বিশ্বামিত্রের সহিত সম্পর্কিত ও
সমকালীন হইতে পারেন না। পাক্ষিটার সাহেব কালুক্জ
বংশের সহিত পুরুবংশের সমকালীনত্ব নিম্নলিধিতক্রপে নিষ্ঠি
করিরাছেন (ফ্রেইবা Ancient Indian Historical Tradition পৃঠা ১৪৪-১৪৬):——

	কা ধকুৰ	পৌরব
۱ ډ	হহোত	মতিনার
۱ ۶	•••	তংস্থ
७।	•••	•••
8 1	•••	•••
4 1	करू	•••
• (সূত্ৰহ	•••
9	क इक	•••
١ ٦	বলীকাৰ	•••
> 1	•••	•••
50 I	কু শ	•••
22 I	কুশাৰ (কুশিক)	•••
25 1	গাৰি	•••
201	•••	•••
78	বিশ্বামিত্র	•••
24 1	•••	•••
741	चंडेक	•••
241	***	•••
22 I	लोरि	•••
2> I	•••	•••
२० ।	•••	•••
32 1	•••	•••
२२ ।	•••	•••
२७ ।	•••	•••
₹8	•••	•••
201	•••	ছ্য্যস্ত
261	•••	ভরত

পান্দিটার সাহেবের গণনা অন্থসারে বিধামিত্র হইতে ছবাস্ত ১১ পুরুষ অধ্যন। এইকচ তিনি মনে করেন ছ্যাস্ত বিধামিত্রবংশীরা শতুরুলাকে বিবাহ করেন। তিনি শক্তলাকে আদি বিশামিত্রের কর্যা বীকার করেন না। অন্ত পক্ষে তিনি তংস্থ ইইতে ২০ পুরুষ নিমে ছ্যুন্তকে স্থাপন করিতেভেন। ইহা মহাভারত ও সমন্ত পুরাণের বিরুদ্ধ মত। ছ্যান্ত কিংবা ভরতের জীবনে বিশ্বামিত্রের আর কোনও প্রসঙ্গ দেখা যায় না। কিন্তু করকে আমর। দেখি শক্তলার পালক পিতার অতিরিক্ত ভরতের যজের পুরোহিতরূপে, হাহাকে ভরত প্রচুর বন দান করেন (মহাভারত আদি ৭৪, জোণ ৬৮, শান্তি ২৯ অধ্যায়)। এক্শে পুরাণ অনুযায়ী করের সমকালীন্থ স্থির করা যাউক।

বায়্ (৯৯।১০০-১), বিয়্ (৪।১৯।২), হরিবংশ (৩২।১৭।১৮), ভাগবত (৯।২০।৬-৭), ভাগি (২৭৮।৫) প্রভৃতি পুরাণে মতিনারের তিন পুত্র তংক্ষ, অপ্রতিরপ (প্রতিরপ) এবং স্থবাহ (ধ্বে)। অপ্রতিরপের পুত্র কর, করের পুত্র মেবাতিপি। মহাভারত (জাদি ৯৪।১৪-১৯; ৯৫।২৬-২৯) জন্মারে মতিনারের চার পুত্র, হংক্ষ, মহান, অতিরপ, দেহা। তংক্ষর পুত্র ইলিন, ইলিনের পুত্র হ্যান্ত, তন্ত্র পুত্র ভরত। মহাভারত ও পুরাণ মিলাইরা আমরা এইরূপ বংশ-হালিক। প্রস্তুত করিতে পারি—



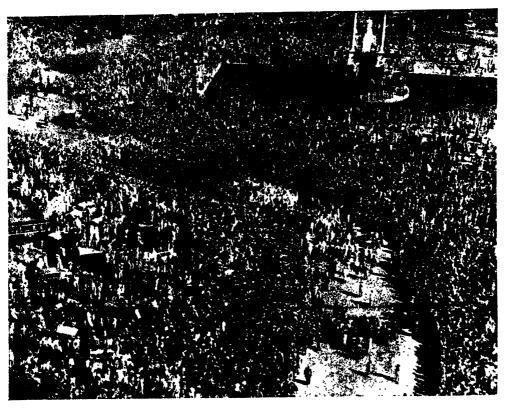
তংস্থর পুত্র যে ঈলিন, তাহা মহাভারতে (জাদি ৯৫।২৭) উদ্ভত প্রাচীন জম্বংশ প্লোকে উল্লিখিত হইয়াহে।

> তংস্থং সরস্বতী পুত্রং মতিনারাদকীবাণং। ইলিনং বনরামাস কালিস্যাং তংস্বাগ্তক্ষ্ম।

প্রতরাং পার্কিটার সাহেবের পক্ষে পুরুবংশ হইতে ইলিনকে বাদ দেওরা সঙ্গত হয় নাই। পার্কিটার কথকে ভরতের অবতান পুরুষ অক্ষমীচের পুত্ররূপে নির্কেশ করেন। তিনি তাঁহার প্রমাণে বায়ু (১৯০১৯-৭০), মংস্ত (৪৯৪৪৬-৭), বিফু (৪০১১০) ও গরুড় (১৪০১) পুরাণের উল্লেখ করিয়াছেন। কিছু আমরা দেখিয়াছি যে বায়ু ও বিফু পুরাণ আমাদের মতেরও সমর্থন করিতেছে। আমরা মহাভারতের অলুকুল পুরাণের উল্লেই এইণ করিয়াছি। পার্কিটারও হ্বাছের সমসামরিক শকুভলা-পালক এক করের ক্ষা



দিল্লীস্থ বিজ্লা-ভবনে অভিন শ্যাম মহাঝা গানীর শ্বদেহ—শিম্বরে একজন শিখ পুরেংহিং ধর্মগ্রিস্থ পাঠ করিতেছেন



বিড়লা-খবন হইতে যমুনাতীর পর্যান্ত মহাত্মা গান্ধীর শব লইয়া দীর্ঘ পাচ মাইলব্যাপী শোক্যাত্রা



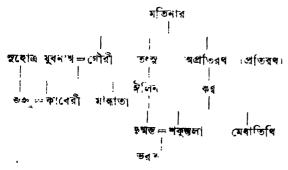
যম্নাজীরে গানীজীর জলস্ত চিত। সবলোকনরত (বঁ দিক হ'বছে) রাজক্ষারী অয়ত কাউর, লেণি মাউণ্টব্যাটেন, লড লুই মাউণ্টব্যাটেন, পামেলা মাউণ্টব্যাটেন, মৌলানা আবুল কালাম আজাদ এবং ৬৮ লোচিয়া লুয়েন



গত ২রা ফেলফারী দিল্লীর রামলীলা-প্রাঙ্গণে মহাত্ম গান্ধীর শোকসভায় পণ্ডিত জবাহরলাল নেহ্ক বস্তৃতা প্রদান করিতেছেন

করিয়াছেন ; কিছু উাহাকে কাস্তপ কর বলিয়াছেন (পৃ২২৭)।

পাৰ্জিটার কাখকুজ বংশকে চন্দ্রবংশীয় পুরারবার পুত্র অমাবত্রর বংশভাত নির্দ্ধেশ করেন। তাঁহার প্রমাণ-সন্ত্রপ তিনি সাতটি পুরাণের উল্লেখ করিয়াছেন—ব্রহ্মাণ্ড, বায়ু, ব্রহ্ম, হরি-বংশ, বিষ্ণু, গরুড় এবং ভাগবত (পৃঃ ১১, পাদটীকা ১)। অগ্নিপুরাণ মতে (২৭৭।১৬-১৮) কান্তকুজ বংশ পুরুবংশীয় প্রক্ষীটের পুত্র কংশুর বংশজাত। ব্রহ্মপুরাণ ও ধরিবংশের এক মত অগ্নিপুরাণের অহুরূপ।—মহাভারতের আদিপর্কের ১৪ অধ্যায় এবং অসুশাসন পর্ফোর ৪র্ব অধ্যায়ে কুশিক (কান্তকুজ । नः मत्कः ७.अभीत्। अ शृत् कश्च वरमञ्जाः तला १३ साटकः। উ'ংরেয় প্রাহ্মণ (পাততার) এবং শাংখায়ন স্লোরন্থত (১৫।২৫) বিশ্ব'নিত্রকে ভরত্রত বলির'ছে 🛊 ইহাতে তিনি যে ভরত-বংশায় জ্ঞার অধ্যন্ধ পুরুষ, তাহাই বুঝাইটেছে। গামর। পর'ণে তিন জন জপুর উল্লেখ দেখি। প্রথম জংগু পুরুরবার ৩০ খলাবছর বংশকংত। একাপুরাণ ও হরিবংশের মতে डाः ६० पुरुष।(एक करा कारवतीरक विवास करतम । **उन्नाख-**পুরাণের মতে কানেরী যৌবনাম্বের (মারাভার) পৌত্রী। বায়ুপুরাণের মতে তিনি যুবনাখের পৌত্রী। ইনি সৌহোত্রি ে সংখাতের পুত্র । ৩ জু। খবিবংশ, মংশুপুরাণ এবং বায়ুপুরাণ মতে মতিনারের কল। গৌরী যুবনাথের স্ত্রী, মাঞ্চাতার क्रमनी किरलन। এই মতে বংশ-ভালিকা निर्माणिक क्रम :



ধিতীয় কণ্ঠ অক্সীচের পুতা। এই ধিতীয় কণ্ঠুর সহিত প্রথম কণ্ঠুর গোলখোগে বিশামিত্তক পুরুরবাবংশীয় স্থির করা ছইয়াছে। ড়তীয় কণ্ঠুকুরর পুজা বিষ্ণুপ্রংণ প্রভৃতি মতে)।

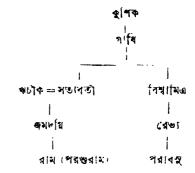
বিখামিএকে আমর। ঐতিহাসিক বাজি বলিয়। গণা করিব। তিনি ভরতবংশীয় বিখ্যাত রাজ। মুদ।সের পুরোছিত ছিলেন। ঋগ্বেদ (৩য় মঙল) তাঁহার সাক্ষী। তিনি ভর মণ্ডের ৩৩ স্বজ্ঞের ৫ ঋকে নিজকে কুশিকের পুত্র বলিয়া- ছেন "কুশিকস্ত হুলুঃ"। ঐ মণ্ডলের ৫৩ হুজ্জের ৯ খাকে বলা। হুইরাছে—

"বিখামিতে। যদবহৎ স্থাসমাপ্রায়ত কুলিকোভরিক্স:।"
অবাং বিখামিত যথন স্থাসের যজ্ঞ ক্রিয়াভিলেন, ইঞ কুলিক-বংশায়দিগের সাহত প্রিয় ব্যবহার ক্রিয়াভিলেন।

ঐ ৫৩ খন্তের ১৫ ও ১৬ খনে বিশাসিত জমদন্তির নাম উল্লেখ করিয়াছেন। দশন মগুলের ১৬৭ খ্রুটি বিশামিত ও জমদন্তি উভয়ের মিলিত রচন।। সুগানে এথ খনে *ইজের* উজ্জিতে থাছে

"হতে সাতেন যদাশ্যাং বাং প্রতি বিশ্বামিঞ্জনদ্ধী দুমে।"
স্থাং হে বিশ্বামিঞ্জ ও জনদ্ধি। তোমর। সোম প্রজ্জ করিলে আমি যখন ধন লহয়। তোমাদিগের গৃহে থাগমন করি, তখন তোমরা উভ্যক্তপে স্তব কর। এর্থেশ দঙ্গের অঞ্বাদ)

প্রতরাং এই বিশ্বামিত স্থাস ও জ্ঞাগায়র সমকালীন।
কিন্তু পাক্তিটার বিশ্বামিত ২০তে স্থাসকে ৩৬ পুরুষ অবস্তন
বিলয়া উল্লেখ করিয়াছেন। মহাভারত ও পুরাণের সর্ব্বাণা
মতে বিশ্বামিত ও জ্ঞাগ্যির সম্প্রক্তিক্সশ—



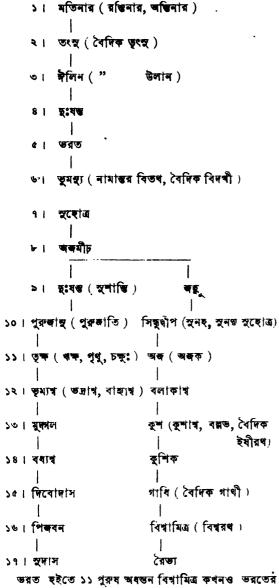
বায়ু, একাণ্ড, একা ও হারবংশ মতে কৃশিক পৌরুকুংসীকে বিবাহ করেন (১৫২ পূঃ)। পাজিটার তাহার আছে পৌরাণিক বিশোবলীর উপর নির্ভর কারয়। এই পৌরুকুংগীকে পুরকুংসের কলা না বলিয়া পুরুকুংসের গণ্ডন হও কলা মনে করিয়াছেন। কিছে কার্বেদের প্রমাণে পৌরুকুংসি অসদস্য স্থাসের সম্কালীন ছিলেন। সপ্তম মণ্ডলের ১৯ স্থান্ডটি বসিন্ধ তা বিশামিত স্থাসের পুরোছিত ছিলেন। স্থানার ক্রাং এই স্থান্ডটি ব্যক্তি ন্যসালয়িক প্রমাণপত্ত। ইহার ওয় খাকে উক্ত ইইয়াছে।—

থং ধুষো ধুষতা ধীতহবাং প্রাবো বিখাভিরাতিভিঃ কুদাসং।
প্র পৌরুকুংসিং অসদস্থানঃ ক্ষেত্রসাতা বৃত্তহেত্যযু পুরুং ॥
অবাং হে ধর্ষক । হব্যদাতা ক্ষমাসকে ধর্মক (বজের)
ধারা সমস্ত রক্ষার সহিত রক্ষা কর, রুদ্ধে তুমি লাভের ক্রম্থ পুরুকুংসের পুত্র অসদস্থাকে ও পুরুকে রক্ষা কর।

् त्राध्या ५८७त व्यक्ष्यामः)

্বদ, মহাভারত ও পুরাণ স্থালোচনা করিয়া আমরা নিয়-লিখিতক্ষপ বংশতালিকা প্রস্তুত করিতে পারি ৷—

ঐতবের আন্ধাণের ষষ্ঠ বঙে বিশ্বমিত্রকে কফ্বংশীয় বলা
 ফ্টরাছে।



ভরত হইতে ১১ পুরুষ অবস্তন বিধামিত্র কর্থনও ভরতের মাতামহ বা পূর্বাপুরুষ হইতে পারেন না। মৃতরাং ইহা অলীক উপক্থা মাত্র। ভরতের মাতামহ কর ইহাই ঐতিহাসিক সতা।

উপরি-উক্ত বংশতালিক। হইতে স্পষ্টতঃ বোধ হইতেছে যে অক্সীচ হইতে বিশ্বামিত্র নবম পুরুষ অবস্তন। আমরা ইহার পরিপোষক প্রমাণ পাইতে পারি। মহাভারতের শান্তিপর্কের ৪৯ অধ্যার অহুসারে বিশ্বামিত্রের পৌত্র পরাবস্থর সমকালীন ইইতেছেন কামদগ্রা রাম, পুরুবংশীয় বিহুরপ্শুত্র অক্ এবং বৃহত্তপ (মগৰরাজ)। বাক্ষ এবং বৃহত্তপ উভয়েই অক্ষীচ-বংশীর। মহাভারত এবং পুরাণ অক্সারে তাঁহাদের বংশ-পরিচয় এইরূপ—

M			
2 !	व्यक्त्रीह	অৰ্মী	অক্ মীচ
		. 1	I
٤ ١	य हू ्	47	44
७।	। সি দ্ ৰীপ	। সংবরণ	। সংবরণ
8	् अक	क्र	্ কুরু
¢	বলাকাখ	 অবিকিং	 ত্ৰ্যমূ
હા	 কুশ	। পরি ছি ৎ	খুহোত্র শুহোত্র
9	ুশিক কুশিক	। জনখেজয় '	 চা বন
۲ı	গ† ৰি	্ শুর্ থ	कृष
۱ د] বিশামিজ	∤ বিছ্রপ	∤ বসু
2 0 l	 ইর্ভা	4170	; বৃ হন্তপ
77 1	 পরাবহু		

কথকে শক্ষলার পিত। বলিয়া উল্লেখ না করার কারণ সম্ভবতঃ এই যে পৌরাণিকের নিকট এইরূপ সগোত্র বিবাহ ধর্ম্মবিগর্ছিত বলিয়া গণ্য হইত। কিন্তু বৈদিক মুগে এইরূপ সগোত্র বিবাহ নিষিদ্ধ ছিল না। শতপথ ব্রাহ্মণে আছে— "তম্মাদ্ বা সমানাদেব পুরুষদন্তা চাঞ্চ জায়তে। উত তৃতীয় সংগচ্ছাবহৈ চতুর্বে সংগচ্ছাবহৈ।" সেই একই পুরুষ হইতে ভক্ষক (স্থামী) এবং ভক্ষা (স্ত্রী) জাত হয়। পৌরাণিক উপাধ্যানে এইরূপ বিবাহের কোন নিদর্শন না থাকিলেও বৌদ্ধাতকে (৫০৯ নং) আমরা এইরূপ বিবাহ দেখিতৈ পাই—



সিন্ধি কবি শাহ্ আবত্তল লভিফ

এ এন এম বজ্বর রশীদ

সিদ্ধ অমর কবি ভাট শরীকের বিখ্যাত শাহ আবছল লতিক্ষেত্র জীবনকাল ইংরেজী ১৬৮৯ থেকে ১৭৫২ সাল পর্যান্ত। তার জীবন ও লেখার আলোচনার প্রের্ম সে সময়-কার সিদ্ধুর ইতিহাস কিছু জানা দরকার।

প্রান্ধ চার হাজার বংসর পূর্ব্বে সিছু উপত্যকা ও ইরাকের প্রসিদ্ধ বাগদাদ শহরের নিকটবর্তী অতি-প্রাচীন উর শহর ও তার প্রত্যক্তমিকে কেন্দ্র করে যে এক সভাতা গড়ে ওঠে তারই ভয়াবশেষ সিদ্ধুর অন্তর্গত মহেক্ষোদভোতে আবিষ্কৃত হরেছে। তার বহু পরে অর্থাৎ ঐইপূর্ব্ব ৩২৫ সালে দিবিজ্বী গালেকজাতার সিদ্ধুর নিয়ন্ত্রমি দিয়ে সিদ্ধুনদ অতিক্রম করে ভারত থেকে প্রত্যাবর্তন করেন। ৭১১ ঐটালে তরুণ আরবী যুবক রুহাম্মদ বিন কাসিম সিদ্ধু উপত্যকার নিয়ভাগে অবতরণ করে সর্বপ্রথম ভারতভূমিতে ইসলামের বিজয় পতাকা উজ্যোলন করেন। তারপর নানা বিপর্যায় ও ছংগ-বিপদের মধ্যেও সিদ্ধুপ্রদেশ আপন স্বাতন্ত্র্য ও স্বাধীনতা অক্ষ্ম রেপ্রেভিল।

সিদ্ধান্দ তথন ছ'ভাগে বিভক্ত ছিল।—উত্তর সিদ্ উপত্যকাও নিম্ন সিদ্ধু উপত্যকা। এই ছই ভূমিতে বিভক্ত হরেও সিদ্ধু প্রদেশের ঐক্যের হানি হয় নি। পূর্ব্ব দিকের বিশাল মরুভূমি ও পশ্চিমের উত্ত্ব পর্বতমালা দেশটকে ভারতের অভাগ প্রদেশ থেকে সতন্ত্র ও ব্যাতিষ্ঠ করে একটি বিশেষ একক সভা দান করেছে। ১৫৪২ সালে শের শাহ কর্ত্বক বিতাভিত হরে হুমার্ন সিদ্ধুর অমরকোটে আশ্রয় গ্রহণ করেন এবং এই ছানেই তার পূঞ্জ আকবরের ক্ষম হয়। আকবর দিল্লীর বাদশাহ হয়েই ১৫৯২ সালে সিদ্ধু অবিকার করেন। সে সমন্ত্র তাভাও বাধার এই ছই শহরই সম্বিক্ প্রসিদ্ধ ছিল। বর্ত্তমান সিদ্ধুর বিধ্যাত করাচী, হারদরাবাদ, শিকারপুর ও স্কুর শহর অষ্ট্রাদশ ও বিংশ শতকের মধ্যে গড়ে ওঠে।

যোগল শাসনাধীনে এলেও সিদ্ধুপ্রদেশ তার স্বকীরতা বন্ধার রাধতে চেষ্টার ফ্রাট করে নি। স্থানীর শক্তিশালী অধিবাসীদের মধ্য থেকেই সিদ্ধুর শাসনকর্তা নির্ক্ত হতেন। দিল্লীর সঙ্গে সিদ্ধুর সম্বদ্ধ ছিল রাজ্য আদারের। নির্মিত ধারাক (ভূমিকর) পেরেই দিল্লীধর সম্বন্ধ থাকতেন। কিছ সিদ্ধুর অধিবাসীদের শিক্ষা বা অস্তান্ত সুখসুবিধা বিধানের জন্ত তিনি এক পয়সাও ধরচ করতেন না।

সিশ্ব বিধ্যাত কালহোরা বংশ প্রথমে ভারন্টরদার রূপে ভাবিভূতি হরে বীরে বীরে দেশের রাজনৈতিক ভেজে বিশেষ প্রাবাদ্য লাভ করে এবং এই বংশের লোকেরাই মোগল বাদশাহ কর্ত্তক সরকারের শাসনকর্তা মনোনীত হতেন। ইরার মুহান্দ্রদ কালহোরা এই কালহোরা বংশের প্রতিষ্ঠাতা। তিমি নিজে হজরত মুহান্দ্রদের খুল্লতাত হজরত আক্ষাসের বংশবর বলে দাবি করতেন। দেশের শাসনতন্ত্র নিরন্ত্রণ করা হাড়া বর্ষের ক্লেন্তেও এই বংশ বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করে।

১৭০৭ এটাকে আওরক্তেবের মৃত্যুর সঙ্গে সলে মোগল সাত্রাব্যের চারিদিকে নানা বিশুখলা দেখা দিল: অতিমান্ত্রার কেন্দ্রীভূত শাসনতম্ব ও সামাজ্যের প্রাণকেন্দ্র দিল্লীর সামরিক শক্তি শিধিল হয়ে এল। ইউরোপীয় বণিকদের আগমনে তখন ভারতভূমিতে নৃতন ভাবধারা ও নানা অভাবনীয় সমস্ভার স্ট্রী হ'ল। এই নবজাগরণ ও চিজাধারার সঙ্গে তাল রেখে চলতে না পারায় যোগল সাঞ্রাজ্যের পতন অবক্সভাবী হয়ে উঠল। এই ছযোগে ১৭০৭ সাল খেকেই কালছোরা বংশ সিদ্ধর সার্বভোষত্ব ও স্বাধীনতা ঘোষণা করে দেশের পূর্ব-গৌরব ও স্বাতন্ত্রা ফিরিয়ে আনলেন। কিছু স্বাধীনতা লাভের সঙ্গে সিদ্ধুর বুকে শান্তি পুনঃপ্রতিষ্ঠিত হ'ল না। তবন এক হুগ সন্ধিক্ষণ দেখা দিয়েছে-পুরাতনের সঙ্গে মৃতনের বিরোধ স্থক হয়েছে। অশান্তি, অরাককতা ও আত্মকলহে দেশ উত্তপ্ত হয়ে উঠল। ১৭৩৮ সাল পর্যান্ত কালছোরা বংশ স্বাধীন ভাবে সিন্ত শাসন করলেন। ১৭৩১ সালে নাদির সাহের ভারত আক্রমণের ফলে সিদ্ধ আবার স্বাধীনতা হারিয়ে পারন্তের সামন্তরাজ্যে পরিণত হ'ল। ১৭৪৭ সালে সিমুকে আহমদ শাহ ইরানী কাবুলের অবীনে নিয়ে আসেন। ১৭৭৩ সালে আহমদ শাহের মৃত্যুর সঙ্গে সঙ্গে আবার বহিঃশক্তির হাত খেকে বিচ্যুত হয়ে আপন স্বাধীন সন্তা কিরে পেল। বৈদেশিক শক্তির প্রাধান্ত যথাসাধ্য অস্বীকার করে, বিদেশীদের প্রবেশ নিষেধ করে এবং षक्षीप्रम ७ छेनिवरम मठरकत्र नामा क्षणांव (बरक जाननारक রক্ষা করে চারদিকের হুর্গম অচলারতনের মধ্যে সিদ্ধু আপনার दिविता ७ दिनिष्ठारक अक्त (तर्राष्ट्रम । এमन कि केष्ठ वेशित्रा কোম্পানী সপ্তদৰ ও অষ্টাদৰ শতকে বাণিজ্যকৃতি নিৰ্দ্বাণ করা সত্ত্বে শাসকদের আত্মকুল্যের অভাবে সিদ্ধ ত্যাগ করে চলে ৰেতে বাধ্য হয়।

পাঠানদের হাত বেকে মুক্তি পাবার পর—কালহোরা বংশকে আর একট জনবর্জনান শক্তির সমূধীন হতে হ'ল।

সিদ্ধি কবি শাহ আবছল লতিক বাঙালী পাঠকের কাছে প্রার অঞ্চাত। প্রবের শ্রীক্ষিতিযোহন সেন মহাশর বিশ্ব-ভারতী পত্রিকার এক সংখ্যার তার জীবনী সহছে কিঞিং আলোচনা করেন

একদা শক্তির চরম শিবরে উঠে কালছোরা-রাজ মিয়া মীর মুহাম্ম উত্তরে অবস্থিত কক ও অমুক্র পর্বতমালার অবিবাসী বেল্চদের আপন রাজ্যে অতি সমাদরে আহ্বান করেন। শুধু ভাই নয়, এই মেষপালক বেল্চদের তিনি নানা উপহার দিয়ে বিশেষ ভাবে অমুগৃহীত ও আপ্যায়িত করলেন। তবন তিনি স্বপ্নেও ভাবেন নি যে এই নিরীহ বেল্চরা এক দিন সিদ্ধুর সাম-রিক ক্ষ্মতা লাভ করে তাঁরই বংশের বিলোপ সাধন করবে।

বিদেশী প্রভাব থেকে পরিজাগ পেয়ে কালছোরা বংশের প্রেষ্ঠ শাসক গুলাম শাহ দেশে আবার শান্তি ও শৃথাল। কতক পরিমাণে ফিরিয়ে আনতে সক্ষম হলেন। ১৭৭১ সালে তার মৃত্যুর পর জ্যেষ্ঠ পুত্র সরক্ষাক বাঁ সিক্ষুর সিংহাসনে আরোহণ করলেন। তিনি ছিলেন অধুরদশী ও স্বেচ্ছাচারী। তার প্রেরোচনায় বেলুচ শালপুরীদের এক কন নেতা মীর বাহরাম খান তালপুর নিহত হলেন। বেলুচ জাতির অগুতম বিশেষ একটি শাখা এই তালপুররা সিন্তুর রাক্ত-দর্যারে আশেষ শক্তির অবিকারী হয়ে পড়ে। এই হত্যা সংঘটিত হবার পর থেকেই কালহোরা ও তালপুরদের মধ্যে এক বিপুল রক্তক্ষরী ধরোয়া মুদ্ধের সক্র হ'ল এবং হার ফলে অষ্টাদশ শতকের প্রারম্ভে তালপুর-বংশ সিন্তুর সিংহাসন অধিকার করে বসল।

এই হ'ল সিদ্ধ প্রাদেশের সংক্ষিপ্ত গতিহাস । এখন মূল প্রাপ্তেক্ষ প্রামান । শাহা প্রবৃদ্ধল লতিফ ১৬৮৯ সালে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁর জীবনক'লের আরপ্ত থেকেই সিপ্তুর শাসনভার মোগলদের হাত হতে কালহোর।দের হাতে এসে পড়ে। আওরফজেলের মুকুর সময় সাবহল লতিফ ছিলেন আঠার বংসরের মুবক। তাঁর বয়স সখন পঞ্চাশ তখন নাদির শাহ দিল্লীর ধ্বংস সাধন করে সিদ্ধুকে পারন্তের সামন্তরাক্ষো পরিবভ্তন ভিলেন। মরণোশ্ব্রখ দিল্লীর সাম্রাজ্ঞাকে চুরমার করে দিয়ে আহ্মদ শাহ্ আধুনিক জাক্ষ্যানিন্তান রাজ্য স্ষ্ট ক'রে সিদ্ধুকে তার অন্তর্ভুক্ত করলেন। এর পাঁচ বংসর পরে এবং দিপ্ত ভার জন্মভূক্তি করলেন। এর পাঁচ বংসর পরে এবং দিপ্ত ক্রেমানির বাণিজাকুঠি নিশ্বাণের হয় বংসর পূর্বের শাহ্ লভিক্ক তের্ঘটি বংসর বয়সে পরলোকগ্র্মন করেন।

উপরের এই বিবরণ থেকে দেখতে পাই, শাহ লতিঞ্চের জীবিতকালে সিদ্ধু তথা মোগল সামাজ্যের বুকে নানা বিপর্যার ঘটে এবং তার দক্ষন থে বিক্ষোভ ও অরাজকতার স্ক্রী হয় তার চেউ এসে সামাজ্যিক ও রাজনৈতিক ক্ষেত্রে সকলের মনকেই স্পর্শ করে। এতে শাহ লতিকের কবিমন থে বিচলিত হবে তাতে আর বিচিত্র কি! কিছ বিশরের বিষয় এই থে, চারদিকের এই তিক্ততা ও অনিশ্যরতার মধ্যেও শাহ লতিক অচকল ও অপ্রথাও চিত্তে অসংখ্য গান ও কবিতা রচনা ক'রে সেই পর্যস্ক্র এক আলাহ র প্রতি তার ভক্তিও প্রেমার্থা নিবেদন করেছিলেন। বাইরের বটনাবছল ও পরিবর্তনক্ষিল জীবনযানাকে তিনি

বড় করে দেখেন নি। অন্তরের যে ভাবধারা চিরস্তন, যে সতা চিরকালের তারই সাধনার তিনি অন্তর্মুখী মন নিয়ে এক পরম নিভৃতি রচনা করেছিলেন। কালহোরা বংশের আত্মকলহ, রান্ধনীতিক্ষেত্রের নানা ভেদ-বিবেষ ও অভিনাত-বিলাসী শীবনের বিহৃত অভিবাক্তি তাঁর কবিতার বিষয়বন্ত না হয়ে আলাহ র বানে ও সহক বোধমর আনক্ষই ছিল তাঁর শীবন-প্রকাশের একমাত্র অবলম্বন ও উপশীবা।

শাহ লতিকের জীবন ছিল অনাভ্রর ও বৈচিত্রাহীন। কিন্তু তাঁর অন্তরের অপার ঐশ্বর্যা বিচিত্র ভাবমূর্ত্তিতে রূপান্তরিত হয়ে চিরস্থলর ও অমর হয়ে আছে।

তাঁর জীবনের অধিকাংশ কাল হায়দরাবাছ (সিপ্র)
জ্বোর উত্তরে অবস্থিত হালা হাবেলি, কোটো এবং ভিটশাহ
এই তিনটি প্রামের গভীর নির্ক্তনতার মধ্যে অতিবাহিত ২য়।
রাজনৈতিক বা সামাজিক কোন আন্দে'লনেই তিনি যোগদান
করেন নি।

বান্তবকে এ ভাবে অধীকার করার মধ্যে কোনও পলারনী মনোভাবের পরিচয় নেই। গারা গভীর জীবনের স্থান পেরেছেন জীবনের গভীরতাকে স্পান করেছেন তাঁদের চিও বস্তুজ্গতের চাঞ্চলা ও পরিবত্তনশীলতার অনেক উদ্বেধিরাজ করে। স্থায়ী জীবন তাঁদের কামা, স্থারী জীবনের স্থানল-বেদনা তাদের মনকে চঞ্চল করতে পারেনা।

বাল্যে ও থৌবনে তিনি লোকোন্তর প্রতিভার পরিচয়
দেন। পীর-দরবেশ ও সংধক-ফ্রনীরদের সাধ্চর্যা তার দাল
লাগত। নির্জনে চিন্তা করা—সকল কলকোলাইল ও জীব
নের সর্ব্বশ্লানি থেকে বছদূরে গভীর গোপনে বসে আলাহর
বান করাই ছিল তাঁর জীবনের একমাত্র আনন্দ। এক দিন
অক্সান্ত মুসলমান সংধকদের মত তিনি দেশভ্রমণে বার হলেন।
পথ তাঁকে ভাক দিয়েছিল। স্থার্য দিনের আকুল প্রতীক্ষা
ও অস্তরের একান্ত বেদনাবোধ তাঁকে এক দিন পথের বুকে
ভেকে নিম্নে এল। তাঁর অস্তরান্তা আলাহ র উদ্দেক্ত যেন
বাাকুল ধরে বলে উঠল—

'পাছ তৃমি পাছজনের সধা ছে—
পথে চলাই সেই তো তোমার পাওর;—
থাত্রাপথের আনন্দ গান যে গাছে
ভারি কঠে তোমারি গান গাওয়া।'

শেখ সাদী এক দিন এমনি করে পথে বার হয়েছিলেন।
আইন-ই-আকবরীর বিখাতে রচরিত। আবুল কল্পানে পূর্বাপূর্বাইন শেখ মুসাও এক দিন অলানার সন্ধানে পথকে বরণ করে
নিয়েছিলেন।

বাল্যকালের একট ঘটনার তাঁর ভগবং প্রেমের এক অপূর্ব্ব নিদর্শন পাওয়া যায়। আরবী বর্ণমালা শিধবার সমর বালক লতিফ 'আলিফ' বর্ণ ছাড়া অন্ত কোন বর্ণ শিধতে অধীকার করেন। এই আলিফ দিয়েই আলাহুর পবিত্র নামের স্থক।

শাহ্লতিক ছিলেন হিরাটের অধিবাসী এক বিধ্যাত ধর্মপ্রাণ সৈয়দ সাধকের বংশধর। সিদ্ধতে এই বংশের মহাজনগণ বৰ্দ্মগুরু বা পীরের সন্মানজনক আসন লাভ করে-ছিলেন। শাহ লতিফের পিতার নাম সৈয়দ হাবীব শাহ। প্রাচুর্যোর মধ্যে বাস করলেও শাহ লতিষ্ক কোন দিন শীবনের भर्कन्छ। बादाय बादाभ वा कै। कक्यक डानवां प्रदेश ना । তার জীবন ছিল অপুর্বভাবে সংযত। শাস্ত্রীর, মিতভাষী ও সৌজ্ঞাের আধার শাহ লতিকের প্রাণ ছিল অতাম্ভ কোমল। মানুষ এমন কি ইতর প্রাণীর ছ:খকণ্ঠ পর্যান্ত তিনি সন্থ করতে পারতেন ন।। সেই সময়কার অভিজাত বংশের উচ্ছ খল ও ভোগসর্বাধ জীবনযাত্রার পরিবেশের মধ্যে থেকেও তিনি যে অাত্মনংখ্যের পরিচয় দিয়েছেন তা বান্তবিকই বিশায়কর। গার এই সহজ ক্রমর ও নির্লিপ্ত সাধক জীবনের প্রতি অনেকেই শ্রমাশীল ২য়ে পড়ে। এক জন মুবকের এই জনপ্রিয়তা দেখে ব্যবসায়ী ধর্ম গ্রান্তারা নানাভাবে তাঁর অনিষ্টের চেষ্টা করতে লাগলেন। কালছোরা বংশের উপর সৈমদদের প্রভাব ভিল অঙুলনীয় ৷ ওাদেরই প্ররোচনায় মূর মুখামাদ কালহোরা উদারহাদয় শাহ লতিফের জীবন অতিষ্ঠ করে তুললেন। কিছ গালাধ্র প্রেম খার কামা মানুষের অসভটি বা অত্তেক ুরাষ তাঁকে কখনও বিচলিত করতে পারে না। সূর মুখাম্মদ অবশেষে তাঁর ভুল বুৰতে পেরে তরুণ সাধক কবি শাহ লতিফকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করেন। শুর মুহান্মদের কোন প্রসম্ভান ছিল ন।। জনপ্রবাদ যে শাহ লগিফের মানীকাদেই তার পুত্র গুলাম শাহ কালভোরার জন্ম হয়।

বীরে বীরে তিনি সাধনার পথে জন্সর হতে থাকেন। জাধাাত্মিক ভাবাবেগপূর্ণ কবিতঃ ও গান রচনা করে তিনি জনসাধারণের সপ্রশংস দৃষ্টি আকর্ষণ করেন। কিন্তু জনপ্রিয়তা ও প্রশংস। তার মনকে পীড়া দিতে থাকে। শেষে লোকালয় তাগ করে ভিট । সিদ্ধি শব্দ, অর্থ বাপুর পাহাড়। নামক একটি নির্জ্ঞন স্থানে তিনি তার কুটার নির্মাণ করেন। তার পার্থদেশ দিয়ে কিয়ার হ্রদের স্বচ্ছ বারিধার। প্রবাহিত হয়ে চলেছে, আর তার চারদিকের শ্রামল প্রান্তর ও তরুপ্রেণী সিম্বর রক্ষ প্রকৃতির মধ্যে বাতিক্রমের স্বষ্টি করেছে। ভিট শরীক শাহ লতিকের সাধনার উপযুক্ত স্থানই বটে। বীরে বীরে ভিটকে কেন্দ্র করে একটি গ্রাম গড়ে উঠল। শাহ লতিক নির্দ্বের হাতে ঘরবাড়ী নির্ম্বাণ করতে সাহায্য করলেন। কিন্তু নির্জ্ঞনতা চাইলে কি হবে, তিনি যে অব্যাথ্-সম্পদের অবিকারী হয়েছেন তার প্রতি আকৃষ্ট হয়ে ভক্ত জনগণ দলে ভাট শরীকে কড় হতে লাগল।

শাহ লতিফ ছিলেন স্কী সাধক। পারস্তের সাধকশ্রেষ্ঠ সুকী কবি মৌলানা কালালুছিন রুমী ছিলেন তাঁর অতান্ত প্রিয়কবি। শাহ লতিফের গুণমুগ্ধ নূর মুহাম্মদ কালছোর। তাঁকে রুমীর এ্কখণ্ড 'মসনভী' কাবাগ্রন্থ উপহার দিয়ে তাঁর প্রসন্ধ্রতা অর্জন করেন। তাঁর নিত্যসদী ছিল পবিত্র কোরান প্রস্থ, একখণ্ড 'মসনতী' ও সিদ্ধি কবি শাহ করীমের একখানি কবিতা-পুত্তক। আলাহ্র ব্যান ও অরণে আপনার ব্যক্তিসভা ভূলে তিনি দীর্ঘদিন এক রক্ষকোটরে বাস করেন। এই সময় তিনি বহিজগং থেকে একেবারে বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়েন। শাহ লতিকের এই বছকষ্টলন্ধ সাধনার অপূর্ব্ব ভাব ও আনন্দরসে তার সমন্ত রচনা রূপায়িত হয়েছে। সাধক মনের বেদনা ও সন্ধানপরতা চিরকালের ব'লে তাঁর কবিতা ও গান চিরদিনের সম্পদ হয়ে থাকবে।

১৭৫২ সালে তিনি অনম্বলোকে থাতা করেন। ভিট শরীকে তাঁর কবরের উপর গুলাম শাহ কালখোরা বহু অর্থবামে একটি অন্ধর সমাবিসোধ তৈরী করে দিয়েছেন। আৰুও প্রতি শুক্রবার শাহ লতিকের সমাবিস্থানে তাঁর কবিতা আর্ত্তি করা হয় আর তার চারদিকের গভীর নির্ক্তনতা ভেদ করে ধ্বনি ওঠে 'আলাহু—আলাহু'।

খুফী কবি শাহ লতিফের কবিতা সঞ্চয়ন (রিসালে জু মুন্তাপাব) সিদ্ধি ভাষার এক অমুল্য সম্পদ। আৰু পর্যান্ত তার সমকক কবি সিশ্বতে জন্মগ্রহণ করেন নি। সিধি ভাষা সংস্কৃত ভাষা থেকে উদ্ধৃত। সারবী, ফারসী ও উর্দ্ভাষার প্রভাব থেকে মুক্ত করে শাহ লতিক সর্বপ্রথম সিধি ভাষার প্রাণশক্তিকে পূর্ণকৃতি দান করেন। সিশ্বর নদী, পাংগড-পর্বত, রঃখাল বালক, কুমোর প্রভৃতি অতি পরিচিত ও সাধারণ বিষয়বস্তু বাবহার করে তিনি সিন্ধি ভাষার শক্তি বুদি করেন ও তাকে জনপ্রিয় করে তেলেন। সিদ্ধি জনগণের মুখে ভাষা দিয়ে, নতুন ভাবের বাঞ্জনা দিয়ে তিনিই সিদ্ধি ভাষার মধ্যাদা বৃদ্ধি করেছেন এবং সর্বাত্র তার সৌরভ हिरस पिरस्टब-— व कथा वलल अञ्चिक स्टब ना। বাংলার মরমী সাহিত্যের ভাঙারী প্রিতাঞ্গণা এদ্বেয় ক্ষিতিমোহন সেন মহালয় প্রদুর ভিট শরীকে গমন করে-ছিলেন। এই সঙ্গে শাহ অতিকের কয়েকটি কবিতার অসুবাদ দেওয়া গল :

তুর্গম পথ

আমার ত্র্বণত। সামারে দেয় সানন্দ — আল্লাহ্র কানে কানে ধ্রনিত হয় সামার প্রেমাও বেদনার সার্ক্রনাদ— কাসীর মঞ্চ-মুক্তে করেছি আরাদ (প্রেমের । ছঃণ আমার জ্ঞত নিয়ে এসেডে কি জপুর্ব্ব মহও ! কাসী-মঞ্চ আমার ভাকে—ওগে! আমার বন্ধ্রা তোমরা কেউ কি থাকে আমার সাবে ? প্রেমের নাম যার। কেনেডে আসরে শুরু ভারাই প্রেমের দায়ে। কাসীর কাঠ—ভার প্রলোভন দেয় বিছিয়ে, ভাকে প্রেমিকদের। প্রেমেছ কি সন্ধান—

(তোষার গবিতে) শিরের মূল্য দিও না কিছু— তবন কর জিল্পাসা প্রেমের অর্থ কি—তারপর বল কথা।

কাসীর কাস (বন্ধ-আবর্জন জালে তার জন্তিছ)
আলম্বত করে প্রেমিকদের। সৈরদ করে গান—
তারা দেখেছিল প্রেমের বর্ণা—কম্পিত হয়নি ভাতে
ছির পদে কাভিরে ছিল তারা।

প্রেম তাদের দিয়েছিল ডাক—তার। আপনাদের করে নি আরত প্রেমই তাদের সেধানে গেছে নিরে—প্রেমের আদেশ। নির্দ্ধম হাতে প্রেম ধর্বন নের ছুরি— তা ধারাল নর মোটে—বরং ধারে নেই তার তীক্ষতা। তাই প্রেমান্সদের হাত অনেকক্ষণ ধরে চল্বে তোমার উপর দিয়ে প্রেম কেন আসে—কি করে যে আসে কান কি তাহা ? ছুরি পড়ে যায়—মুবে বলো নাক' উছ ও আহা। কি কতে ভোষার বুক খলে যার ঋণর খনে— বলো না ভারা—মনের বেদনা মনেই রেখো।

সারি সারি দাঁড়ারেছে প্রেমিকের দল—
মন্তক প্রন্তুত করি—বির অচঞ্চল
ছিন্ন কর শির তাহে না হর অন্তব্ধ।
হয়ত লভিতে পার তার প্রসন্ততা—
ভূমিতে স্টারে পড়া রক্তমাবা শির
বার্থতার করিবে না অন্তর অবীর।
প্রেমের শরাব্বানে হত্যা অগণন
বন্ধান বন্ধানে হত্যা অগণন
বন্ধান বন্ধানে চলে অক্তমণ।
প্রেমের মদিরা বদি ভবু এতচুক
পান করিবারে চাহ একান্ত উংস্ক্ক—
পানশালা হবে তব একমাত্র নীড়;
পানপাত্র—পার্শ্বেত ব পড়ে আছে শির
মৃশ্য দিয়া কর পান উন্ধাদ অবীর।

শিশ্পশিক্ষা ও স্বাধান গাষ্ট্ৰ

গ্রীমণী স্ত্রভূষণ গুপ্ত

বাংলার স্বদেশী মুর্গের গোড়া হইতেই জাতীয় শিক্ষা বলিয়া
একটা কথা উঠিয়াছিল; এবং বাংলার স্থানে স্থানে জাতীয়
বিভালয়ও প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। ১৯২১ সনে মহাত্মা গান্ধীর
নেতৃত্বে অসহযোগ আন্দোলন প্রবর্ত্তিত হইলে সরকার পরিচালিত বিভালয়গুলি হইতে ছাত্রদের চলিয়া আসিতে বলা হর।
স্বদেশী মুগের আন্দোলন বিশেষভাবে বাংলায় আবদ্ধ ছিল, কিছ
অসহযোগ আন্দোলন সারা ভারতে ব্যাপ্ত হইয়া পড়ে এবং
ভারতের স্থানে স্থানে জাতীয় বিভালয় স্থাপিত হয়। জাতীয়তা—
বালী চিন্তানায়কগণ বলেন যে শিক্ষা আমাদের মনে লাসমূলত
মনোর্ভির প্রেট করে, তাহা আমাদের লাতীয় জীবনের
বিকাশের পরিপন্থী। ভারত আৰু স্বাধীন, আৰু বিকাশের
ঐক্ষপ চিন্তাবারার তাৎপর্ব্য আমাদিগকে অস্থাবন করিতে
হইবে।

আৰু আমার আলোচ্য বিষয় শিল্পশিকা, অৰ্থাং আট চিত্ৰ-কলা ভাত্ৰহ্য প্ৰভৃতি। আট প্ৰত্যেক কাতির সাংস্কৃতিক জীবনে বিশিষ্ট ছান অধিকার করে; অভএব সে সহত্বে বিশেষ আলোচনার প্রয়োজন আছে। সাধারণ শিক্ষা সহত্বে বছ আলোচনা হয়, কিছ শিল্পশিকা সহত্বে তেমন আলোচনা হয় না। এবন হাবীন ভারতের উপযোগী আট গড়িয়া ভোলার মরকার হাহাতে দেশের আশা-আকাকা, দেশের শিকা,

দেশের সংস্কৃতি আটের ভিতর দিয়া প্রকটিত হইতে পাংরে। এখন আট হওয়া উচিত যগোপযোগী।

ভারতের বাধীনতা-সংগ্রামে নানা জনের নানা অবদান আছে। শিল্পীর কোনো অবদান আছে কি ? বাধীন ভারতে প্রকৃত মর্ব্যাদা লাভ করিতে পারে, এমন চিত্র সে আঁকিরাছে কি ? এমন চিত্র সে আঁকিরাছে কি যাহা হইতে মাছ্ম প্রেরণা পাইতে পারে ? বহুক্ষেত্রে আমরা শিল্প স্কট্ট করিয়াছি ধনীর বাসনের কল। শিল্প হইয়াছে ভার ছ্রমিং-ক্রমের আসবাবপত্রের মত। যাহা হওয়া উচিত অভরের জিনিয়, তাহা হইয়াছে বাহিরের ভোগের বন্ধ। এক সময়ে আমাদের দেশে সমাক্রের সকে ছিল আটের অবিচ্ছেদ্য সম্বন্ধ। আমাদের দেশে সাহিত্য, সঙ্গীত, মৃত্য, ভারুর্যা, ছাপত্য সকলেরই যোগ ছিল সমাক্রেরে সলে। পাশ্চান্ত্য শিক্ষার আটি সে ছান হইতে বিচ্নাত হইয়াছে।

আজকাল সাহিত্য-শিল্প-স্থালোচকগণ ইউরোপ ছইতে একট মুতন কথার আমদানী করিয়াছেন, তাহা ছইতেছে স্যাজচেতনা, এ জিনিয় কি আমাদের দেশে ছিল না ?

আমি আমাদের দেশের বহু শিল্পী বিশেষ করিয়া আর্টের ছাত্রদের সঙ্গে মিশিয়াহি, অনেক ছানে তাহাদের তারতীয় শিল্প সহতে অঞ্চতা এবং অপ্রহা লক্ষ্য করিয়াছি। আৰু বাংলার সাহিত্যে, কাব্যে, সঙ্গীতে যে স্বাধীনতার বাণী ধ্বনিত ইইয়াছে, চিত্রে তাছা সম্ভব হইবে কি করিয়া? শিল্পীরা আজও তাকাইয়া আছে পশ্চিমের দিকে, তাহাদের মোহ আজও কাটে নাই; নবীন ভারতকে সে আজ কি বাণী দিবে? আজও সে যে আশা করিতেছে—রাজা মহারাজা, রায় সাহেব এবং খান বাহাছররা তাহাদের পৃষ্ঠপোষকতা করিবে। আটকে শুর্ তর্পার্জনের উপায়-স্বরূপ মনে করিলে চালবে না, আটিপ্রের প্রারও বড় দায়িত্ব আছে: এ কথা আজ তাহাদের স্বরণ করাইয়া দেওয়ার দরকার। কমলা লেকচারে ডাঃ এনি বেসাও বছ পূর্বের এ কথা বলিয়াছেন; আজ স্বাধীন ভারতে এই হীয়সী মহিলার বাণী শিল্পীদের আবার নৃতন করিয়া শোলানে প্রয়োজন তিনি বলিয়াছেন—

"Art as I have oftentimes said, must be no longer a lovary for the rich, but the daily bread of the poor. This is part of India's Dharma. For Beauty diversified into Arts is the true reliner and uplifter of Humanity. It is the instrument of culture, the broadener of the heart, the purifying Fire which burns up all prejudices, all pettinall coarseness. Without it true Democracy is impossible, quality of social intercourse an empty dream.

ছার্গণ, "আমি পায়্ট বলিয়াছি, আর্ট আর বনীর বিলাস চ্চারে না, টছা চ্টারে গরীবের রোজকার খোরাক। ইছা চ্টার ভারতীয় ধর্মের অঙ্গীভূত। কারণ সৌন্দর্বা যথন আর্টের গ্রে বিকীণ হয়, তথন তাহা মানবভাকে বিশোধন ও ট্রেয়ন করে। ইহা সংস্কৃতির বাহন এবং ইহা অভ্যাকরণকে ট্রের করে। ইহার পুত অগ্নিশিশা সকল কুসংস্কারকে, ভূমভাকে, ছুলভাকে দল্প করে। ইহা ছাড়া প্রস্কৃত গণভপ্র সসন্থব এবং সামাজিক সাম্য একটা মিধ্যা স্বপ্ন।" ডাঃ বেসাক্টের এই উজ্জির মূল আজ্ব সমধিক।

ভারতবর্ষের আট রুলসমূতে যে সব ছাত্র শিক্ষা পার, তাছাদের অধিকাংশেরই ভারতীয় ঐতিহের সঙ্গে কোনো যোগাথোগ নাই। বিলাত যাইতে পারিলেই তবে তাছাদের শিক্ষার সার্থকতা—অনেকে মনে মনে কল্পনা করিয়া থাকে। কিন্তু ক্ষম্পনের এমন বাসনা মনে জাগে যে, ভারতবর্ষটা ভ্রমণ করিয়া দেখি— অক্স্তা, এলোরা, কোনারক প্রভৃতি দেখি। ভারতবর্ষে ভ্রমণ করিয়া শিল্পাশ্চার কিছু স্থবিধা ছটবে একখা তাছারা কল্পনা করিতে পারে না। তাছারা ইউরোপীয় চিত্রের পুতকই পড়ে, ছবি দেখে; ভারতীয় শিল্প সম্বন্ধে তাছাদের এমনি ধারণা যে, তাছা সর্ব্ধে রক্ষে পরিত্যকা। লামাদের ছাত্রেরা ইউরোপে গিয়া ইউরোপের চিত্র-কলার সঙ্গে পরিচিত হোক, ইছার বিরুদ্ধ মত পোষণ করা অবক্স সমীচীন নয়; কিন্তু যে নিজের দেশকে জানে না, তার পরের দেশকে জানিয়া লাভ কি ?

বিদেশে শিল্পশিকার জন্ম রন্তি আছে, বর্তমানে ইহার কোনো সার্বজ্ঞতা উপলব্ধি করি না। অস্ততঃ ৫ বংসরের জন্ম এ রন্তি বন্ধ থাকা উচিত। এখন ছাত্রস্থতি দেওয়া উচিত ভারত জমণের
কল্প; শিলীরা ভারতের প্রাচীন শিল্পকলার নিদর্শনসমূহ পর্যাবেক্ষণ করিয়া জ্ঞান-ভাঙার রন্ধি করিবে। পরে যখন অবস্থার
পরিবঙ্ডন হইবে, বিদেশের রন্ডি পূনঃপ্রবর্তন করিলে চলিবে।
বিদেশে যাহার শিল্পনিকার কল্প যাইবে, তাহাদের ভারতীয় এবং
ইউবোপীয় শিল্পের ইতিহাসের একটা মোটামুটি জ্ঞান থাকায়
দরকার, তাহা হইলে তাহারা লাভবান হইতে পারিবে।
জ্যারি মাটস এখন ফ্রান্সের জীবিত শিল্পাদের মব্যে শ্রেষ্ঠ;
তাহার কাছে একজন এদেশীয় শিল্পী শিক্ষালাভ করিতে গেলে
তিনি বলিয়াছিলেন "এখানে ভাসিয়াছ কেন, তোমাদের
দেশে বড় ভাট ভাছে, সেখানে কিরিয়া যাও।"

সাহিত্যে, দর্শনে, বিজ্ঞানে রাজনীতিতে ভারত এমন বহু
মনীধীর স্ষষ্ট করিয়াছে, যাহারা পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ ব্যক্তিদের
সঙ্গে সমান আসন লাভ করিবার খোগা। কিছু সেই ভরের
শিল্পীর সংখ্যা বুবই কম। অবনীস্ত্রনাথ, নন্দলালকে বাদ দিলে
এমন কয়জন শিল্পী আছেন যাহারা ভারতের গৌরবকে
পৃথিবীর সন্মুখে উজ্জ্ল করিয়া ধরিতে পারেন ?

কবাহরলাল বলিয়াছেন, ভারত বছকালের পরাধীনতা এবং বড়বাপটার মধ্যেও টিকিয়া আছে ; কি প্রকারে আছে ? আছে তার নিকের ঐতিহ্যের কোরে।

সুভাষচন্দ্ৰ বলিয়াছেন,

"There is a continuity, historical and cultural continuity, extending from the ancient till the present day—which is in some ways a remarkable thing in history. Now in order to understand India this fundamental fact should first be understood, namely, that the India of the past is not dead. India of the past lives in the present, and will live on in the future."*

অর্থাৎ "প্রাচীন কাল হউতে আধুনিক কাল পর্যান্ত ভারতের ইতহি।সের এবং সংস্কৃতির একটি নিরবচ্ছিল্লতা আছে, যাহা ইতিহাসের এক অভিনব জিনিষ। ভারতকে ব্বিতে হউলে গোড়ার এই কথা ব্বিতে হউবে, অতীতের ভারত আজ মৃত নহে, এবং ইহা ভবিগাতেও বাঁচিয়া থাকিবে।"

শিশুকাল হঠতেই বালকবালিকাদের মনে ভারতীয় শিল্পের প্রতি শ্রদ্ধা জাগাইতে হইবে। চার বংসর হইতে বার বংসর বয়স পর্যাপ্ত—বাল্যকালে—মনে সহক্ষেই সব কিছুর ছাপ পড়ে, তর্গন মনে যাহা চুকাইয়া দেওয়া যাইবে, তাহা স্থায়ীভাবে থাকিয়া যাইবে। এখন স্থলের দেওয়ালে টাঙানো থাকা উচিত, প্রাচীন ভারতীয় চিত্র, ভার্ম্ব্যা স্থাপত্যের প্রতিলিপি। সরকার হইতে এসকল প্রতিলিপি ছাপানোর বাবস্থা করা উচিত। অধুনা ভারতীয় ইতিহাসে অক্ষা, এলোরা, যবনীপ এবং বৃহত্তর ভারতের উল্লেখ

[🗢] নবেম্বর, ১৯৪৪ সনে, টোকিওর বড়ুক্তা

দেখা যায়; ইং। খুবই সমীচীন। পুর্বে বালকদের বিভালয়পাঠা ইতিহাসে জাতির সাংস্কৃতিক জীবনের পরিচয়
থাকিত না বলিলেই চলে, থাকিত শুধু রাজা-বাদশাদের
মুদ্ধ-বিপ্রহের কথা। কিন্তু এখন ইতিহাসকে ঢালিয়া সাজা
উচিত। ছেলেরা যাহা ইতিহাসে পছিবে, চোবের সামনে
যেসব দেখিলে ভারতের ঐতিহ্ন তাহাদের কাছে দেদীপামান
হইমা উঠিবে, ল্যাকার্ধ-সাইড সাহায্যে বিশেষজ্ঞদের হারা
মাবো মাবো সেই সব প্রাচীন কীন্তিসমূহ সহছে বক্তৃত। দেওয়া
উচিত। প্রত্যেক বালকবালিকা আর্টিই হইবে এক্কপ আশা
করা যায় না, কিন্তু সকলেরই ননে সৌন্ধ্রিবোধ জাপ্রত হওয়া
উচিত।

ছুলে ছুইং ক্লাগ নামে যে ক্লাগ থাকে তাহা খোটেই চিন্তাকৰ্ষক নহে। বৰ্তমানের শিক্ষাপদ্ধতি এরপ যে, ছুইং মাষ্ট্রার ইহাকে চিন্তাকৰ্ষক করিতে পারেন না ; চিত্র সম্বন্ধে ছাত্রদের কোন ওংক্লফ জাগে না, তাহারা এই ক্লাসকে কাঁকি দিতে পারিলে বাঁচে। যদিও বা কাহারও চিত্র সম্বন্ধে ওংক্লফ থাকে ছুইং ক্লাসের বাঁতাকলে পড়িয়া তাহা নষ্ট হইয়৷ যায়।

কলে এই হয়, আট ছুলে যথন ছাত্রেয়া টোকে, তথন শিল্পকলা শিখিবার জন্ম প্রকৃত আগ্রহ ভাহাদের বড় একটা থাকে না। তাহারা শুর্পাস করিয়া উপার্কনক্ষম হইতে চায়। জবন্ধ ইহার ব্যতিক্রম যে নাই, তাহা নহে। কিছু অবনীজনাথ যে বহু পূর্বেল লিখিয়াছিলেন, 'আগে আটিট হও, পরে আট ছুলে ঢোক', কাধ্যক্ষেত্র ভাহা গছফত হইতেছে কি গ

অভিভাবকদের এবং শিক্ষাব্রতীদের এ বিষয়ে অবহিত্য হওয়ার প্রয়োজন আছে। অনর্থক এক দল আগ্রহ ও ঔংস্ক্রাহীন ছাত্রকে আট ছুলে পাঠাইলে শিল্পশিক্ষা ব্যাহত হয়, তাহাদের আট শিক্ষার জন্ম সময় ও অর্থের অপব্যয় না ক্রিয়া অঞ্চলাইন বাহিয়া লওয়া উচিত। মন্তিক, হৃদয় এবং হস্ত এই তিনের সংযোগে শ্রেষ্ঠ শিলের উৎপত্তি—অর্থাং ইহার ভিতর থাকিবে বৃদ্ধির্ন্তি, ভাবাবেগ এবং টেকনিক বা কলাকোশল এই তিনের সমন্তর। শিল্পীদের এই তিনটির দিকে দৃষ্টি দেওয়া উচিত, ভুগু টেকনিক বা বাাকরণের দিকে দৃষ্টি দিলে চলিবে না।

শিল্পীগোর্জ এবং রাষ্ট্রপরিচালকদের পারম্পারক সহযোগিত।
দরকার। গত যুদ্ধের সময় জাপানী আটিইদের যুদ্ধের প্রাচীরচিত্র আঁকিতে হইয়াছিল। আজ আমাদের শিল্পীরা স্বেচ্ছার
রাজনীতি, শিক্ষা এবং সংস্কৃতি বিষয়ক পোষ্টার আঁকুক না ?
কংগ্রেস শিল্পীদের সহযোগিতা এতদিন তেমনভাবে প্রার্থনা
করে নাই, আজ রাষ্ট্র অপবা কংগ্রেস স্বাধীনতার ও জাতীয়
সংস্কৃতির বাণী চিত্রের সাহায্যে ঘরে ঘরে পৌছাইয়া দিক,
যাহাতে নিরক্ষরেরাও স্বাধীনতার মর্ম্ম বুকিতে পারে সেই
ব্যবস্থা করক। শিল্পীরা এতদিন নিজেদের সঙ্গীর্গতির ভিতরে
আবদ্ধ ছিল, আজ তাহাদের শক্তি দেশসেবায় নিযুক্ত হোক!
জনগণের মধ্যে দেশের মর্ম্মবানী চিত্রের সাহাথের প্রতিটিয়া
দিক।

A man doe - not tive by bread alone. শাৰীন ভারতকে ভগু রুটির বাবস্থা করিলে চলিবেন: জনগণের জন্ত চাই সৌন্ধর্যসন্ধী, চাই আনন্দ। ভারতের মুক্ত আগ্না শিল্পেব ভিতর দিয়া আগ্রপ্রকাশ করক।

করাসী বিপ্লবের সময় দেখা গিয়াছে, শুধু সাহিত্যে সঙ্গীতে বিপ্লবের বাণী ধ্বনিত হয়, নাই, চিত্রেও তাহার প্রতিধ্বনি উঠিযাছে। নেপেণলিয়নের দায়ামা ধ্বনি, তাহার মুদ্ধবিরতির ধ্বনি
শিল্পীর কানে পৌছিয়াছে। সেননের বিধ্যাত শিল্পী গইয়।
দেশের নিপাড়িত শ্বনগনের বেদনাকে চিত্রে মুদ্ধ করিয়াছেন।

দিন আগত ঐ, ভারতীয় শিল্পী এখন কোধায় ? সে কি লুপ্ত পাকিবে ? সকলের পিছনে পডিয়া থাকিবে ? দেশের বিপুল ক্ষমতেখন সঙ্গেই যে তাছাকে চলিতে ছইবে !



বাপুজী

গ্রীধীরেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়

হিংসার সম্দ্র 'পরে শাস্তিময় প্রভাত-তপন তোমার পবিত্র আত্মা উজলিল মৃত্যুর আকাশ, কোতির্মালা ছলে জলে, উদ্ভাসিত নিবিল ভুবন, তোমার অমুতবিভা মতে গ্রভানে স্বর্গ-আভাস।

কত দেখ, কত নিন্দা, কত হীন সন্দেহ সংশ্র, তোমার নিমল হাস্ত প্রতিদিন গেছে তুচ্ছ করি, আপন ৯৮২-বলে সর্ববাধা করিয়াছ জয়, গ্রিলক্ষা চলিয়াছ আপন আদর্শ অসুসরি'।

ক্ষণস্থায়ী বত মান, কেনসম প্রয়ণ্ডি-সংক্ষোভ, আমর। তাহারি দাস, মিধ্যা মায়ামুগ্ধ অমুক্ষণ, শক্তিহীন নিঠাহীন,— আমাদের মৃচ শক্তি লোভ দীর তার পদতলে পুঞা-গ্রধা করিছে অর্গণ।

অাধংখীন মহাবীর, আস্তরা জি তেব পদতলে
সপ্রমে প্টায়ে পড়ে, মহায়ুদ্ধে চির রণজ্যী।
দেখায়েছ ভাঠে অাধ্য প্রতিজ্ন পায় মনোবলে,
উভাত অসির মারো চলিয়াছ প্রেম-বাত্রি বৃহি'।

বিদেশীর ষ্ড্যন্ত, উন্নত সে হত্যা-আয়োজন উপেক্ষিয়া চলিয়াছ নিত মূপে দক্ষিণাফ্রিকায়, সহিয়াছ কারাবাস, গুরু হুংখ করেছ বরণ, দচপদে চলিয়াছ আপন কঠোর সাধনায়।

মাথ্য মাথ্য হোক্, জীবনের একটি কামনা, অগ্রিদয় নোয়াধালি তাই তব হ'ল তীর্ণভূমি, ভয়াকুল দেশবাসী রুজগৃহে করেছে জল্পনা আগ্রঞ্জন ক'টি নিয়ে শৃত্তহন্তে ছুটে গেছ তৃমি।

মনোবল হ'ল জয়ী। তবু তানি কত নিন্দাবাদ, আরাম কেদারাশায়ী তরুণের বীরত্বাভিনয়, যাহাদের নেতা তুমি, তারা ধরে শত অপরাধ,— বিশুখল লক্ষ্যহারা দেশের শক্তির অপচয়।

তুমি নাকি ব্নিবন্ধ ! দ্র দেশে ক্ষিত্রত লয়ে
দীনজনসঙ্গে তুমি রচিলে আদর্শ পরিবার,
সংধ-জীবনের বাণী—বাণী নয়, মৃত সতা হয়ে
উঠেছে সে দিন হতে স্পীর্থ এ জীবনে ভোষার।

আজিকার অপমৃত্য — আক্সিক কুঞ্চিকাজাল

অকালে খনায়ে এলো, অক্রনাপে আঁখার নয়ন।

ছিন্ন হবে এ কুছেলি, ব্যাপ্ত করি সর্বদেশকাল

তোমার মহিমাদীপ্তি উত্তাসিবে শীবন-মরণ।

ক্ষমা-সুন্দর

শ্রমনোমোহন ছোষ

সংপর মত থল ধড়রিপু মন্ত্রনাহিত সুম
নতফণা থার চরণে ঠেকারে ফুকারিল, 'নমোনমঃ'
বিদম্ব-জনা থার এক-কণা পদরেণু-প্রত্যালী
বুদ্ধ যীশুর গোত্তীর সেই কৌপীনী সন্ন্যাসী,
নিরে হরিজনে মেলা বসাইল ভাঙী-বভীর মাঝে
পঙ্ক-মলিন সরসীতে দেন স্বর্গ-ক্ষল রাজে।
জাথো-শতাকী খোলা ছিল থার জীবনের খাতাখানি
থার বুসী সেই পড়িয়া জেনেছে জীবনই ওাহার খানী।

সে যে নিখিলের মর্শ্বের কোনে মূল্যবিহীন নিধি
ধরিত্রী যার চরণ-পরশে পবিত্র মানে হাদি।
ধরণীর ধূলি বন্ধ করিল অমরার ক্যোজি নামি'
বুকের শোণিতে ধ্য়ে মুছে দিতে এ ধরার পাপ, ধ্যামি ।
ছুলো কোট লোক যাহার ছায়ায় অর্জশতক ধরি'
বন্ধ হয়েছে; বংশধরেরা যুগে যুগে ভারে অরি'
জীবনের পথে লভিবে পাথেয় নিশ্চিত বিশ্বাসে
একপা ভাবিতে নয়নে আমার বাপা নামিয়া আসে।

এমন রত্ন সংহতে নারিল যে এভান্ধনের আন্ধিবিবাতা। তোমার কঠোর করণা বন্ধদতে বান্ধি'
তাদের অধ নমনে কোটাক মোহ মুক্তির আলো
লাপ-মোচনের অন্তে তাহারা চিত্তক মন্দ-ভালো।
যে হৃদ্ধে হিল তাহাদের তরে নিশ্চিত আশ্রম
আন্তিন্ধালিত বাত্-শুটিকায় তাহারই ঘটায়ে ক্ষয়
আশ্রমহার। ভ্রান্ত পবিক—দে বৃঢ়ন্ধনেরা লেখে
প্রারশ্ভিত করক এবার, মাহ্বেরে ভালোবেসে।
হাত-যোড-করা ক্ষমা-মুন্দর মৃত্যু-বরণ-ক্ষণে——
এর চেয়ে বড়ো কোনো অভিশাপ আসে না আমার মনে।

অন্ত-রবির তমোঘন ক্ষণে এ আমার সান্ত্রা তাঁহারে দেখিরা বন্ধ যাহার। আমি তারি এক ক্ষনা ! তাঁর ভাবে যবে ভাসিল ভুবন—প্রেমগদার বানে আমিও তর্বন ছিল্ল বর্বীতে—তাকারে সে মুখপানে !

মৃত্যু অমৃত করে দান

এ শৈলেজ কৃষ্ণ লাহা

সেদিন সহসা-ভব্তিত মাহুখের অন্তরের যে আকুল আঠনাদ হতিনার প্রান্তরে ধ্বনিত হ'ল তা রাজধানীর সীমা ছাড়িয়ে, দেশের সীমা ছাড়িয়ে, মহাদেশের সীমা ছাড়িয়ে সারা জগতে ছন্তিরে পড়ল। ভারতের বেদনা বিশ্ব-বেদনার রূপান্তরিত হ'ল।

গাধীকীর বিচেছদে বিষ্চ হয়ে পড়েছিলাম, ক্রমে সেই আছের ভাব সেই বিষ্চতা ধীরে ধীরে অপস্ত হছে। আৰু আমরা বৃষতে পারছি আরার মুঠা নাই, মহারা অমর। দেশের গণ্ডী, ভালের গণ্ডী পার হয়ে তাঁর প্রেরণা বিশ্বমানবকে উদ্ধ করবে।

গান্ধীকী কি শুরু ব্যক্তি-বিশেষ ? তা হলে সারা পূথিবীর লোক এমন করে সাড়া দিত না।

মহায়ার সাধনা মুক্তির সাধনা। কিন্ত খোকের সাধনা নয়।

তিনি জনসংবারণের মধ্যে এক জন নন, তিনিট জন-সাবারণ। চলিশ কোটি লোকের সঞ্চে তিনি নিজেকে একীভূত করেছিলেন। জনগণ হতে তিনি জনগ এই উ'র প্রধান বৈশিষ্টা।

জনগণের নানা ধর্মা, নান: ভাষা, বিভিন্ন আচার: তবু ভারা ভারতীয়, এত বিভেদের মধ্যেও ভারা এক। সেই এক, সেই ভারতের জনগণ মহাত্মার মধ্যে মুঠ্ হয়েছিল। ভাই মহাত্মা মুঠ্ ভারতের জনগণাবারণের প্রতীক।

ভাষা ভাতি বর্দ্ধ নির্কিলেথে সর্ক্রমাবারণকে নিজের মবো
অক্সতব করতেন বলেই হিন্দু-ম্সলমান শিখ-ক্রীশ্চানের কোন
প্রতেদ তাঁর কাছে ছিল ন।। সংখ্যাগরিষ্ঠ ও সংখ্যালবিষ্ঠ তার
কাছে এক হরে গিরেছিল। নানা বিষা, বিভিন্ন ভাব অস্তরে
উবিত হলেও মাসুষের মন যেমন এক, গান্ধীশ্বীর নিকটেও বর্ণবর্দ্ধ নির্কিলেথে কন্সাবারণ তেমনি এক। সেই জনসাবারণ
যা বৃত্ত ভাবে আরু-অগোচরে অক্সতব করতে মহাগ্রা তা সচেতন
ভাবে প্রস্কৃতিভাবে অক্সতব করতেন। তাই তাঁর
লবণ-আন্দোলন। তাই তাঁর অহিংস সত্যাগ্রহ। তাই তিনি
রাউও টেবল কন্কারেলে ভারতবর্ষের একক প্রতিনিধি
হরেছিলেন।

যিনি জনগণের আশা-আকাজন আনন্দ-বেদনা আপনার মধ্যে অঞ্ছব ক'রে ছন্দে ব্যক্ত করেন তিনি মছাকবি। যিনি ত: কর্মে প্রকাশ করেন তিনি মছামানব। গানীকী মছামানব

কবি বলে গেছেন, "এই সব মৃচ মৃক ক্লান মূখে দিতে হবে ভাষা!" কবি ভাষা দিয়েছিলেন, গে অন্তর্লাকের ভাষা। হল অনুষ্ঠির ভাষা। মহালা ভাষা দিলেন, তা কর্মকাতের ভাষা; মহালার ভাষা জনসাধারণের প্রতিদিনের ভাষা। সংক্ল সংক্লে সেই সব প্রান্ত শুক্ত ভগ্ন বুকে বিপুল জালা প্রনিত হয়ে উঠল।

चायता वांबीनण-चत्नांतन करति -- (अवेविरानार, विक्रित्त व्यक्त प्रांबीकी। वृक्त चयुक करत कान।

ভাবে। মহাপ্তার আন্দোলন সর্ব্বসাধারণকে নিয়ে। সকলের সহযোগে ব'লে অ-সহযোগ আন্দোলন এত বিপুল হরে উঠেছিল, এবং ভারতবর্ষ সাধারণভাবে হিংসাহীন বলেই সত্যাগ্রহ আন্দোলন আহিংস। হিংসার উন্নত্ত পৃথিবীতে ভারতবর্ষ চিরদিন হিংসা-বিরত থাকতে চেমেছে। পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ রাজা—সমাট অশোক তাই, ছানের উপর নয়, মাহুষের মনের উপর সাম্রাজ্য বিভার করেছিলেন। তাই মহাস্থা-প্রবর্ত্তিত মৃক্তির সংগ্রামণ্ড অহিংস।

শক্তি ছ-প্রকার। ছ:ব দেবার শক্তিকে আমরা সহকেই চিনতে পারি। সহনশীলতার মধাে যে অসীম শক্তি নিহিত আছে তা আমাদের দৃষ্টি এচিয়ে যায়। কগতের ছই কাতির লোক এই ছই বরণের শক্তির অবিকারী। পাশ্চান্তা কাতি আক্রমণাত্মক প্রস্তুত্ব-শক্তির সাধনা করেছে। ভারতবর্ধ সহনশক্তির ভাঙার। অপূর্বস্বিহিত আনবিক শক্তির মত এই বিপুল সঞ্চিত-শক্তিকে কাগতে পারলে অসাধা-সাধন করতে পারা যায়। গানীকী ভারতবর্ধের সেই বিশাল মুপ্ত-শক্তিকে কাঞ্জ প্রেরিত করতে পেরেছিলেন। সেই শক্তির আলোভনে শিধিল-ভিত্তি সামাধ্য ভেত্তে পড়ল।

ভারত্বর্ধের জ্ঞানের মধ্যে একটি কথা স্পষ্ট হয়ে আছে তা এই—ব্যর্থারিক কগতে কর্মা করতে হবে, কারণ কর্মা ভিন্ন আমাদের গতি নাই, তংসত্তেও প্রকৃত উপলব্ধিতে কৃপং মারা মাঞা। সত্যাথহ, অসহখোগ এবং সাধ্যিক প্রতিরোধের মধ্যা দিয়ে মহায়া এই সতাই আমাদের মনে প্রতিভাসিত করেছেন যে বিদেশীর শাসন একান্ধ মারা, সেই মিধ্যা আমাদের প্রাভিত্ন উপর প্রতিষ্ঠিত, সহযোগিতার অপসারণে সেই অসত্য-সামাজ্যা প্রভাত-কুহেলিকার মত অন্তর্হিত হবে।

প্রথম মহাযুদ্ধে যার আরম্ভ এবং ধিতীয় মহাযুদ্ধে যার শেষ সেট নিবিড় অধকার-মুগের নিক্ষকৃষ্ণ পটভূমিকায় নৈরাল্ড-প্রড়িও মানবের আতি ক্ষদ্যে মহাগ্রার অহিংসার বার্তা অয়ুত-বর্ত্তিকার উদ্ধৃত আলোক কৃটিয়ে তুলেছে।

বন্ধিমচন্দ্র মাতাকে বন্ধনা করতে শিবিষেদ্রেশ, গানীনী শিবিষ্কেন, বন্ধনা করতে হলে অন্তরকে শুদ্র শুচি নির্মান হিংসাহীন অস্থান্ত করতে হবে। একলা বাংলার এক সগ্রাসী শিবিয়েছিলেন ছুংমার্গ পরিহার ক'রে দরিন্দ্রনারায়ণের সেবার মধ্যেই আমাদের সার্থকতা, গানীন্দী সেই সেবাবর্দ্মের বিরাট্ যে বাধা অস্ত্রশুত। তা-ই দূর করতে আপনার সমস্থ শক্তি প্রয়োগ করেছিলেন।

সকল বিবাদের অবসান হোক। সকল বন্ধ দূর হোক।
মহাল্লার মধ্যে মুক্ত ভারতবর্ত্বের মহান আরাকে প্রণাম করি।
সমস্ত দ্লানিমা এবং গ্লানি বিবৌত করে অঞ্চ আৰু অন্তরকে
উদ্দল বিভাহ করক। মহাল্লার আবন অরহুক্ত হোক।
করতু গাড়ীকী। বৃত্যু অর্ভ করে সান।

বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

শ্ৰীবিনয়ভূষণ দাসগুপ্ত

টেনেসি উপত্যকা

১১ই ডিসেরর ২৫শে অগ্রহারণ বুধবার প্রভাবে ওয়াশিংটন বিমান ইডিলে। পৌছিলায়। পৌনে নাটায় বিমান উডিল। বিমানটার প্রতি চাল্লিন, ২৪টি আসন। পথে তিনটি প্রেশন জিকবাগ, রোয়ানোকে ও জনসন্ সিটি। কুয়াশার জন্ত বিমান শেষেরটিতে নামিল না। নীচে তথু জনবসতি-বিরল সীমাখীন শ্রান্তর। ফসল বিশেষ দৃষ্টিগোচর ছইল না। ক্রমশাং লাল মাটির দেশ ও ডোটি ছোটি ছ-একটা পাহাড় দেখা গেল। বেলা ১২টা ৪৯ মিনিটে নক্সভিল প্রেশনে অবতরণ করিলাম। চারিদিকে মার্চ ধু ধু করিতেছে। সেগান হইতে নক্সভিল শহর ১২ মাইল। টাাক্সিযোগে নগরে পৌছিলাম। এখানেটেনেসি উপভাকা কর্ত্বকের প্রধান আপিস। হোটেলে গিয়া মধ্যাঞ্জোজন সমাপনান্তে টেলিকোনযোগে আমার জাগমনবার্ন। ভাপন করিয়া আপিসে উপনীত হইলাম। সেখানে সারতে গৃতীত ছইলাম।

টেনেসি উপতাকার সুমি অন্ধুলর। বঙ্গুর পর্বত-সঙ্গুল দেশ। খাট লাল। দেন-স্পলী জমি নাই বলিলেই হয়। সূচী প্রধান ফসল। চায় পশুদ্বারাই হয়। গরুগুলি ক্ষীণ। ক্ষনবস্থি বিরল। দিসেগর হুইতে এপ্রিল পর্যন্তে ব্যক্তিলাল। বাষিক বারিপাত প্রায় ৬০ ইঞ্চি। ফ্রন্সনের পক্ষে বারিপাণ প্রচর। মেধ কালব্যা। জলসেটের দরকার নাই।

ছুই শতাধিক বর্ধ পুর্বের যথন ইউরোপায় জাতি এদেশে প্রথম বসতি স্থাপন করে তথন এ দেশের জনি উর্বর হিল। জমির পর জমি লাফলের নীচে স্থাসিল। জগল কটিয়া সাক করা হইল। ভবিষ্যৎ না ভাবিয়া জমির বেহিসাবী ব্যবহার চলিতে লাগিল। জমশা টেনেসি নদীতে বথা দেবা দিল। বখায় দেশ ভাসিয়া যাইত। জমির উপরের মাটি বখায় ধুইয়া গেল। বখার জলে মাটি কাটিয়া থাল হইয়া সেল। অনেক জমি চায়ের অহুপযুক্ত হইল। দেশ ব্যাপিয়া অহুর্বেরতার সমস্থা দেখা দিল। যে সব জমিতে সোনা ফলিও ভাহাদের এখন নিজ দেহের নগ্নতা ঢাকিবার মত বাস জ্বাইবারও জমতা রহিল না। নদী বর্ষাকালে বখাপ্লাবিত হুইত—গ্রীম্মকালে ভকাইয়া গালতে লাগিল। নদীপথে যানবাহনের চলাচল বন্ধ হুইয়া গেল। দেশ সর্বত্যভাবে সাম্বাবিত বিশ্ব সম্প্রীন হুইল।

তথন প্রথম বিশ্বযুদ্ধ চলিতেছে। সরকার আলাবাম।
ন্ধাষ্ট্রের মাস্ল শোলস্ নামক স্থানে একটি বারুদের কারখান।
ন্থাপন করেন। নিকটবর্ত্তী টেনেসি নদীতে একটি বাঁধ নির্দ্ধাণপুর্বাক বিদ্যাংশক্তি উৎপাদন করিয়া এই কারখানা চালাইবার

সিঞ্চ'ত করা হয়। বাধ নিশ্বাণকার্য্য ১৯১৮ সনে আরভ হইয়া ১৯২৪ সনে শেষ হয়। তথন যুদ্ধ শেষ হইয়া গিয়াছে। কাজেই কারখানা ও বৈছাতিক শক্তি উৎপাদন গৃহ অকেছো পড়িয়া রহিল। এগুলিকে বিজয় ক্রিবার চেষ্টা হইল। কিছ উচিত মুল্যের থরিকার জুটল না ৷ তখন সেনেটের নরিস প্রমুখ কতিপর দরদর্শী ব্যক্তি একটি স্বতন্ত্র কর্ত্তপক্ষের তত্ত্বা-বধানে ইহা পরিচালিত করিবার প্রভাব করিলেন। প্রভাবিত कर्छ्शक এই कांत्रशाना ७ वाँदित छात लहेदन, नमीएड প্রাঞ্জনমত আরও বাধ তৈরী করাইবেন এবং তছারা বভাশাসন, নদীর নাব্যতা সম্পাদনও বিছাৎ উৎপাদন করিয়া টেনেসি উপত্যকার সর্ধতে মুখী উন্নতি সাধন করিবেন। এই কর্ত্তপক্ষ সরকারের তত্তাবদানে সভস্ত ভাবে জনস্বার্থে কান্ধ করিবেন: লাভের উদ্দেশ্যে কোন কান্ধ করিবেন না। ১৯৩০ সনে প্রেসিডেণ্ট রুক্তভেন্টের চেষ্টায় 'টেনেসি উপতাকা কার্যাপরিচালনা আইন' পাস হয়। আইনে উক্ত সংসদ প্রতি-ষ্ঠার নিয়লিখিত উদ্দেশুগুলি লিপিবদ্ধ আছে ; যথা (১) টেনেসি নদীর নাব্যভাগাধন ও বঙাশাসন: (২) বন উৎপাদন এবং যে সমস্ত শ্বাস কৃষির অনুপযুক্ত হইতে চলিয়াছে সেওলির সহাবহার: ৩) টেনেসি উপতাকার কৃষি ও শিল্পের উল্লাচ সংগ্রা, এবং (৪) আলাবালার মাস্ল শোলাসের বারেদের কারেখানার ভাব লইয়া 🕬 শরকা বিষয়ে श्राप्त अपन्य प्राचा

১৯০০ খ্রষ্টাকের পর ১৩ বংসর স্বতীত হুইয়াছে । টে**নেসি** উপত্যকা কর্ত্রপক্ষ বাবের পর বাঁধ তৈরী করাইয়াছেন। বৰ্তমানে নদীতে ২৭টি বড় বাঁধে আছে। ১টি টেনেসি নদীতে : ১৮টি টেনেসির উপনসীসমহে। প্রত্যেক বাঁধের পন্চাতে স্বহৎ সরোবর এবং সম্পুর্ণ নীচে বিছাৎ উৎপাদন কেন্দ্র নিশ্মিত হুইয়াছে। এই কেন্দ্রসমূহে টারবাইনের বিপুল চক্তের অবিরত আবর্তনে প্রচর বৈঞাতিক শক্তি উৎপন্ন হইতেছে। বর্ষার জল যুখন প্ৰবল্পতো পাছাও ২০তে নামে তখন বাঁৰে বাধা পাইয়া পিছনের সরোবরে গিয়া পড়ে। বিপুল জলবাশি তথন উদায মত্তের পরিত্যার করিয়। সরোবরের মধ্যে আশ্রয়গ্রহণ করে। সার। বছর ধরিয়া জলপ্রবাহ ধীরে ধীরে বাঁধের নীচে দিয়া অপ্রতিহত গতিতে নামিয়া আগে এবং তত্ততা পাওয়ার ভাউসের বিরাটকার লৌহচক্রকে সঞ্জোরে মুরাইয়া দিয়া কেনায়িত অবস্থায় ফুসিয়া ফুলিয়া সগৰ্জনে নদী-খাদে চলিয়া যায়। শক্তি-গ্রহের বাহিরেও জল নামিবার একটি পথ থাকে। বেশী ৰুল নীচে পাঠাইবার প্রয়োজন হইলে এই পথটি ব্যবস্থত ছন্ন ! এইরূপ পাহাড়ের উপর হইতে নীচে পর্যান্ত নদীর ঘাটডে

ৰাটিতে বাঁধ। সমন্ত বাঁধ একটি কেন্দ্ৰীয় ব্যবস্থাবীনে ব্যবস্থাত হইতেছে। যত জনই পাহাড় হইতে নামুক না কেন, তাহাদিগকে বিভিন্ন সরোবরে আটকাইয়া রাধিয়া প্রয়োজন কত বিলি করা হইতেছে। রেলের সাহায্যে যেমন ইচ্ছামত ম্বাছানে ও যথাকালে মাল পাঠান যায় এই বাঁধগুলির লাহায্যে তেমনি জলরাশিকে ইচ্ছামূয়ণ গতিতে যথায়ানে পাঠাইয়া দেওয়া হইতেছে। টেনেসির বহন্তম বাঁধ অপেক্ষাও বড় বাঁধ এই দেশেই আছে। কিন্তু ৪০,০০০ বর্গ মাইল পরিমিত একটি সমগ্র উপত্যকার সমন্ত জলরাশিকে একটি কেন্দ্রীয় ব্যবস্থার অধীনে নানাবিধ জনকলাণে মুগপৎ নিয়োজিত করিবার উদাহরণ পৃথিবীতে আর নাই।

উপত্যক।–কর্ত্পক্ষের কার্য্যাবলীকে সাধারণতঃ তিন শ্রেণীতে বিভক্ত করা যায়। যথা—-

- (১) শক্তি উৎপাদন, নদীর নাব্যতা সাধন এবং বভাশাসন,
- (२) दोनांशनिक खवा छेरशामन,
- (৩) আঞ্চলিক উন্নতি বিধান।

প্রথম শ্রেণীর কার্যাবিলী সতাই বিশ্বরকর। ইহার কলনামহিমা, সম্পাদনচাতুর্যা, কল্যাণপ্রস্থ এবং ব্যাপকত্ব মূর্গপৎ
চিত্তকে অভিভূত করে। যে জলরাশি জমির সার ভাসাইরা
লইরা সমুদ্রে কেলিতেছিল এবং বভার স্কট্ট করিরা দেশকে
স্বংসের পথে লইরা চলিরাছিল আজ তাহা সম্পূর্ণরূপে
জনকল্যাণে নিরোজিত।

১৯৪৫ সনে উপত্যকা-কর্তৃপক্ষ বার শত কোট কিলোওয়াট

কটা পরিমিত বৈছ্যতিক শক্তি উংপাদন করেন। অর্থাৎ
তাহাদের মাসিক্ উংপাদনের পরিমাণ ছিল এক শত কোট

কিলো ওয়াট ঘণ্টা। পৃথিবীর কোন প্রতিষ্ঠানই একক এত
বৈছ্যতিক শক্তি উংপাদন করেন।

টেনেসি নদী কেন্টাকি রাষ্ট্রের পাছকা নামক স্থানে মিসিসিপি নদীর সহিত মিলিত হইরাছে। পাছকা হইতে নক্সভিল
নদীপথে ৬৫০ মাইল। টেনেসি নদীর এই ৬৫০ মাইল থাদে
বারমাস নর ফুট গভীর বল রক্ষা করা উপত্যকা-কর্তৃপক্ষের
একটি বিশেষ দায়িত্ব। এই দীর্ঘ পথে বারমাস প্রমার
চলাচলের বাবস্থা হওরার বাণিক্যের বিশেষ স্থবিব। ইইতেছে।

উপতাকা-কর্ত্তপক্ষ যে সরোবরমালা নির্মাণ করিয়াছেন তাহার ক্রলবারণশক্তি কাহ্মারী মাসে এক কে:টি কুড়ি লক্ষ একর-কূট এবং এপ্রিল মাসে এক কোটি পাঁচ লক্ষ একর-কূট। এই সরোবরশ্রেণীর ছারা টেনেসি রাষ্ট্রের ছাতাহুগা অঞ্চলের বৃহত্তম ব্যাজনের উচ্চতা অস্ততঃ ১৬ কূট নামাইরা দেওয়া সন্তব। এখন এই অঞ্চলে বছা অসম্ভব।

পুর্বেই বলা ছইয়াছে মাগ্ল শোল্সের কেমিক্যাল কারধানা লইয়াই উপত্যকা-কর্তৃপক কার আরম্ভ করেন। বর্তুমানে এখানে যে সমস্ত রাসায়নিক দ্রব্য প্রস্তুত ছইতেছে ভন্নব্যে কস্করাস, এমোনিয়ায়্ নাইটেট ও ক্যালসিয়ায় কারবাইড প্রধান। উৎপন্ন রাসায়নিক দ্রব্যসমূহ সামরিক প্রয়োজন মিটাইরা জমিতে সাররূপে ব্যবহারের জন্ত মথেই। ক্যালসিরাম কারবাইড ক্যতিম রবার উৎপাদনেই ব্যবস্থাত হয়।

আঞ্চলিক উন্নতি বিধরেও উপত্যকা-কর্তৃপক্ষের প্রচেষ্টা বহুমূখী; যথাঃ (১) কৃষির উন্নরন, (২) বনের প্রসার ও উন্নতি; (৩) খনিজ সম্পাদের শ্রীরৃদ্ধি, (৪) বিশ্রাম ও আমোদ প্রমোদের বাবস্থা, (৫) জনবাঞ্চা, (৬) মাছবরা ও শিকারের ব্যবস্থা, (৭) ভূপৃঠের উচ্চতার তারতম্য নির্দেশক মানচিজ্ঞ নির্দ্ধাণ; (৮) বিশেষ গবেষণা।

হতশক্তি ভূমির উর্বরতা কিরূপে পুন:প্রতিষ্ঠা করা যায় সে বিষয়ে উপত্যকা-কর্তুপক্ষের কার্যা বিশেষ প্রশংসাই । শাসন এবং বন প্রতিষ্ঠা পূর্বক ভূমিক্ষর নিবারণ করিয়া, ফুমরে ক্ষয়িত উপাদান যথাসন্তব বাতাস ২ইতে আহরণ করিয়া, এবং হিসাব করিয়া জমির বাবহার করতঃ কর্তুপক্ষ ক্ষয়ির যথেপ্ট উন্নতি বিধান করিয়াছেন। শুনিলাম ক্ষমির প্রয়োজনীয় যাবতীয় নাই-টোক্ষেন শুধু ফসলের পৌর্বাপর্য্য ধারাই পাওয়া যায়। সারের মধ্যে শুধু কস্করাসই ইহারা ব্যবহার করেন। জনৈক ক্ষয়িবশেষজ্ঞ আমাকে বলিলেন যে, ফসলের পৌর্বাপর্য্য নির্ণয়ই যে ব্যয়িত নাইটোক্ষেন পুন:প্রাপ্তির পক্ষে যথেপ্ট এ ধারণা তাহারা প্রাচ্য দেশ হইতেই পাইয়াছিলেন।

উপতাকা-কর্তৃপক্ষের যুদ্ধকালীন সাহায্য বিশেষ উল্লেখ-যোগা। যখন শত্রুপক্ষ এবং মিএপক্ষের এরোপ্লেন নির্দ্ধাণের আপেক্ষিক ক্রুত্তার উপর যুদ্ধক্ষয় সম্পূর্ণ নির্ভ্তর করিতেছিল তখন উপতাকা-কর্তৃপক্ষের চেষ্টায় উৎপন্ন অঙ্কুরম্ভ বৈছাতিক শক্তির সাহাযোহ অসংখা এরোপ্লেন ক্ষিপ্রভার সহিত নির্দ্ধাণ করিয়া যুদ্ধের গতি ক্ষিরাইয়া দেওয়া সম্ভব হইয়াছিল।

এখানে অকুরস্ত বিছাংশক্তি ছিল বলিয়াই টেনেসি রাষ্ট্রের ওক্রিক নামক ছানে আগবিক গবেষণা সম্ভব হইরাছিল। যে আগবিক বোমা জাপানে নিক্ষিপ্ত হইরাছিল তাকা এই গবেষণারই ফল।

উপত্যকা-কর্তৃপক্ষের কর্মাচারিগণ বিমানগৃহীত ছায়াচিত্র হুইতে ইউরোপ ও অক্সান্ত দেশের ভূমির উচ্চতা নির্দেশক্ষ মানচিত্র নির্দ্ধাণ করিয়া দেন। এই মানচিত্রগুলি আক্রমণ পরিচালনায় বিশেষ সহায়ক হইয়াছিল।

ছাঁচে ঢালা বাড়ী তৈরীর কার্য্যে উপত্যকা-কর্তৃপক্ষের অভিজ্ঞতা যুদ্ধের সময় বিশেষ কাব্দে লাগিয়াছিল।

মাস্ল শোল্স-এ খুদ্ধের জন্ম প্রচুর রাসায়নিক ক্রব্য তৈরী হইয়াছিল। ম্যালেরিয়া নিয়ন্তবের জন্ম ভি-ভি-টি ও অভান্ত সরঞ্জাম উপত্যকা-কর্তৃপক্ষের নিকট হইতে সৃহীত হইয়াছিল।

উপতাকা-কর্ত্তপক্ষকে অনেক হুর্গম পাহাড় ও ক্বলের মধ্যে বাধ নির্মাণ করিতে হইমাছে। সেক্ত সেইসব স্থানে প্রথমেই

মন্ত্রদের বসতি স্থাপনের ব্যবস্থা করিতে হইয়াছে। এই উপ-লক্ষ্টেই তাহাদের ছাঁচে ঢালা বাড়ী নির্দ্ধাণ এবং ম্যালেরিয়। নিরন্ত্রণের কার্যে বিশেষ মনোযোগ দিতে হইয়াছে।

উপত্যকা-কর্তৃপক্ষের উন্নতিমূলক কার্য্যবাবস্থাও বিশেষ উল্লেখযোগা। স্থায়ি প্রভৃতির উন্নতির কল কেন্দ্রীর সরকার তথা রাষ্ট্রীয় সরকারের নানা বিভাগ বর্ত্তমান। আকলিক কর্তৃপক্ষ কলাপি তাহাদের সক্ষে প্রতিযোগিতা করেন নাই; সম্পূর্ণ সহযোগিতা করিয়াই কাক্ষ চালাইয়াছেন। অখচ লোকে এখন নিঃসন্দেহে ব্রিতে পারিয়াছে যে, সরকারী প্রচেষ্টা হইতে সতন্ত্র আঞ্চলিক প্রতিষ্ঠানের প্রয়াস অধিক কলপ্রস্থা।

সমন্ত কগতের উৎস্ক দৃষ্টি বর্তমানে এই প্রতিষ্ঠানটার উপর নিবদ্ধ। বিভিন্ন দেশ হুইতে ইঞ্জিনিয়ার, ক্র্যিকর্মী, একাউট্যান্ট, অর্থনীতিবিদ, শাসনপরিচালক প্রভৃতি নান। শ্রেণীর বিশেষজ্ঞগণ ইহার কার্যপ্রণালী দেখিবার ক্রম্থ নক্ষভিলে সমাগত হুইতেছেন। আমাদের দামোদর উপতাক। করপোরেশন ইহারই আদর্শে পরিক্ষিত হুইয়াছে।

১২ই ডিসেম্বর রহম্পতিবার—প্রাতরাশের পর বাছির হইর।
পড়িলাম! উপতাক নকর্তুপক্ষের আপিসে ছইটি গ্রীক ওল্পলাকের সঙ্গে মিলিত হইলাম। তাঁছারা আমারই মত কর্তুপক্ষের কার্যাবিলী দর্শন-মানসে আসিয়াছেন। তাঁছাদের নাম
মাইকেলিডিস্ ও পেট্রিয়াস্। মাইকেলিডিস্ ইঞ্জিনীয়ার।
পেট্রিয়াস্ আন্ধিক, জলবিষয়ক অর্কে বিশেষজ্ঞ। আমরা
কন্টানা বাঁব দেখিতে ঘাইব। কর্তুপক্ষ জনৈক তরুপ
ইঞ্জিনীয়ারকে আমাদের সঙ্গে দিলেন। যুবকটি গাড়ী চালাইয়া
আমাদিগকে লইয়া চলিল।

সুন্দর মত্ত রাজা। বিশাল প্রান্তরের মধ্য দিয়া চলিয়াছি। মাটি লাল। লোকালয় বিরল। ছুই একটি গ্রাম্য নরনারী ক্ষচিং দৃষ্টিপথে পতিত হইতেছে। ছ'পাশের ক্ষেত **হ**ইতে ভূটা কাটিয়া লওয়া হইয়াছে। ওকুনা ভূটার ভাঁটা খাড়া হইয়া রহিয়াছে। কোন কোন ক্ষেত পুনরায় চাষ করা হইয়াছে। চাষে যন্ত্রশক্তির ব্যবহার দেখিলাম না। মাঝে যাঝে গরু বা খোড়া চরিয়া বেড়াইতেছে। দীতের প্রকোপ খেৰী নয়। ভাপ ৪০ ডিগ্রীর কাড়াকাছি হইবে। চমংকার রোদ উঠিয়াছে। মাৰে এক পশলা বৃষ্টি হইয়া গেল। মনে ছইতেছে যেন সাঁওতাল পরগণা বা ভুবনেখরের প্রান্তরের মধ্য দিয়া চলিয়াছি। মেরিভিল ও এল্কোয়া নামক ছইট ছোট শহর অতিক্রম করিলাম। শহর হুইটতে 'এল্যুমিনিয়াম কোম্পানী অব আমেরিকা'র কর্মচারিগণের বসতি বিভয়ান। কোল্পানীর নামের শব্দচভূষ্টরের প্রথমাংশ সন্মিবেশে দি তীয় শহরটির নামকরণ ছইরাছে।ক্রমশ: জমি উচু হইতে স্থক্ত করিল। পাহাড়ে উঠিতে লাগিলাম। ভোট টেনেসি নদীর পাশ দিয়া চলিয়াছি---इ'বিকে পাহাড়। রাভার পাশ দিয়া নদী সভ্যক্তদে

চলিয়াছে। পথে কল্ডার উড বাঁধ, চিওয়া হ্রদ এবং সেলিনেলের একটি পাওয়ার হাউস দৃষ্টপবে পতিত হইল। টেনেসি রাষ্ট্রের সীমা অতিক্রম করিয়া নর্থ ক্যারোলাইন রাষ্ট্রে মধ্যে পড়িলাম। চারিদিকে পাহাড়। এ অঞ্চলের সর্ব্বোচ্চ পাহাড়ের উচ্চতা নাকি প্রায় ৬০০০ ফুট। তরঙ্গায়িত পাহাড় ভেদ করিয়া চলিয়াছি। প্রায় ছ' হাজার কুট উচ্চে कार्कान। देश । कार्काना देश नकाखिल हटेए १० बाहेल। প্রায় দিপ্রহরে তথায় উপনীত হইলাম। ছোট নদীটির উপর একটি ছোট সেতৃ। সেতৃটি সম্পূর্ণ খোলা, ইষং বক্ত। প্রায় ১০০০ মাইল ব্যাসার্দ্ধের রুত্তপরিধির মত ইছার বক্ততা। এই বক্রতাটুকু সেওটিকে বেশ স্থদুর্ভ করিয়াছে। এপারে উচ্চ পাহাত। ওপারে পাহাডের গায়ে ইঞ্জিবিয়ারগণের আপিস। সেধানকার ভূটজন ইঞ্জিনিয়ারের সহিত মিলিত **হটলাম**। বাঁধের কার্যা শেষ হইয়া গিয়াছে ৷ এখন সামাশ্র টুকিটাকি কাল চলিতেছে। বাঁধটি সম্পূর্ণ কংক্রিটের। ৪৮০ ফুট উঁচু: অর্থাৎ মিশরের পিরামিডের সমান ইহার উচ্চতা। ইহার পিছনে স্বিশাল হদ কাটানো হইয়াছে: সন্মুখে বিরাট পাওয়ার ছাউসে সগৰ্জনে টারবাইন পুরিতেছে। স্থানীয় ইঞ্জিনিয়ারগণ প্রথমে চিত্র ও নক্সার সাহায্যে বাঁবের পরিকল্পনাট আমাদিগকে বুরাইয়া দিলেন। কিরাপ এই পর্বতসঙ্কল নির্জ্জন অরণাময় প্রদেশকে ম্যালেরিশ্বার কবলমুক্ত করা হইল; কিরুপে ছাঁচে ঢালা সুন্তর সুন্তর বাড়ী আনিয়া বসান হইল : কিরুপে নানাবিধ ভবিষা ও আমোদপ্রমোদের ব্যবস্থা করিয়া এখানে গ্রাম প্রতিষ্ঠা করা হইল ; কিরাপে সেই গ্রামে মজুর ও ইঞ্জিনিয়ারগণের বদ্রতি স্থাপন করা হইল : কিন্ধপে বাঁধের যাবতীয় উপকরণ এখানে জানিবার ব্যবস্থা করা হইল : স্থানীয় ইঞ্জিনিয়ারগণ এই সমন্ত বিষয় আমাদিগকে বলিলেন। তারপর আমাদিগকে भार्श्ववर्श्वी (भर्रे श्रीस लरेशा शिलन । हाँकि हाला वाष्ट्रीश्विन দেখিতে বেশ মনোরম। বাড়ীগুলির মধ্যে বাসোপযো**র** সমস্ত বাবস্থাই আছে। বাড়ীগুলি এখন খালি পড়িয়া আছে। ভ্রমণকারিগণ যাহাতে এ জায়গার প্রতি আরুষ্ট হয় সেজ্ঞ কর্ত্তপক্ষ চেষ্টা করিতেছেন। কিন্তু এখনও সফল হন নাই। লোকালয় হইতে বছদূরে এই নির্জন পর্বত্যময় স্থানে বাস করা আপাতত: কাহারও মন:পুত হইতেছে না। গত গ্রীমকালে এক নবদশ্যতি নাকি শিকাগো হইতে আসিয়া মাসাধিককাল এখানে অবস্থান করিয়াছিলেন।

গ্রামের কেন্ধিটোরিয়াট এখনও আছে। খাবার সাজাইয়া বিক্রয়ারিশ্বীগণ বসিয়া আছেন। ক্রেতা নাই। এখানে আমরা মধ্যাহুভোজন সমাপন করিলাম। অন্ত কোন ভোজনার্থী দেবিলাম না। আহার ভালই ইটল। আহারান্তে বাবে উঠিলাম। স্থানীয় ইঞ্জিনিয়ারগণ সোৎসাহে আমাদিগকে সব তন্ত্র তন্ত্র করিয়া দেখাইতে লাগিলেন। এই জনবিরল প্রদেশ আমাদিগকে পাইয়া ভাছাদের উৎসাহ ও আনক্ষের সীমা নাই। মাইকেলি ডিসের প্রশ্নে তাঁহাদের উৎসাহ বৃদ্ধি পাইতে লাগিল এবং আমারও বিষয়টি বৃধিবার অনেক স্থবিহা হইল। মাইকেলি ডিস বেল ইংরেজী বলেন। পেট্র রাস ভাল ইংরেজী বলিতে পারেন না, কাছেন তাঁহাকে প্রায়ই নীরব আকিতে হুইতেছে। বাঁবের উপর দর্শকগণের বসিবার জ্বন্ত একটি স্থন্দর ধর আছে। সেট গোল্ডেন বাফ বা স্থণিভ মর্ম্মরের নির্ম্মিত। এ প্রদেশে বহুবিধ মর্ম্মর পাওয়া হায়। তর্মবা স্থণিভ মর্ম্মরই সর্ব্যাপেকা স্থান্ত । এই কার্য্যে মর্ম্মরের বাবহার শুধু ধনপুবেরের দেশ আমেরিকারই সম্ভব। বাঁবের রক্ষী সোৎসাহে তাঁহার বইয়ে আমাদের সই লইয়া গেল। কলিকাতা হইতে দর্শক আসিয়াছে শুনিয়া তাহার উৎসাহ বিশ্বণ হুইয়াছে। দিনান্তে ক্লান্ত দেহে হোটেলে ফিরিলাম।

পরদিন শুক্রবার সকালে উপতাকা-কর্ত্তপক্ষের আপিসে পুনরায় হাডির হইলাম। এই দিনের মধ্যে আমার এখানকার কাৰ শেষ করিতে হইবে। কাৰ্কেই সমন্ত বিভাগ দেখা সম্ভব নয়। বাছিয়া বাছিয়া কয়েকটি বিভাগের কার্য্য দেখিলাম। প্রথমে বাজেট বিভাগের সি, ডরা, ফোস মহালয়ের সঙ্গে ইহাদের বাকেট সম্বন্ধে স্বিশেষ আলোচনা ক্রিলাম। পরে চলচ্চিত্রে কর্ত্তপক্ষের যাবতীয় কার্যাকলাপ ইছারা আমাকে দেখাইলেন। মধাাহুভোজনের পর হিসাব বিভাগ, বাণিজা বিভাগ, ক্বমি ইঞ্জিনীয়ারিং বিভাগ এবং ফুড ফ্রিজিং বা খাত জ্মান বিভাগের কার্য্যাবলী দেখিলাম। হিসাব বিভাগে करेनक माम्राकी अम्रात्मारकत माक्र माक्रार इंग्ला देनि মান্তাব্দের একটি হাইড়োইলেক্টি ক প্রতিষ্ঠানের সঙ্গে সংশ্লিষ্ট। কিরূপে বিছাৎসরবরাহের দাম নির্ণয় করা হয় তাহা দেখিবার ৰুষ্ট ইনি এখানে আসিয়া মাগাধিককাল আছেন। ভদ্ৰলোকটি व्याधारमञ्जू और एवं नियमानली भन्नत्व व्यन्त्रष्टे बावना क्रियाटि দেবিলাম। বৈছাতিক শক্তিকে স্থলাভ করিয়া ক্লয়কের সর্ব্বাঙ্গীণ উন্নতিকল্পে নিয়োগ করিবার জ্বন্ত ইহাদের জ্বনান্ত প্রচেষ্টা দেবিলে সভাই বিশ্বিত ২ইতে হয়। যে কয়েকটি ভদ্রলে।কের मक्त जालाश इंडेल मकत्लरे जमाधिक, मकत्लरे डीश्रापत কার্যাবলী আমাকে বুঝাইবার জন্ম উৎস্ক। ইঁহাদের মধ্যে कृषि-रेक्षिनियात अल, अन्, त्वकात रिन्पूश्य प्रश्रुक यर्किकिर জানিবার জয় আহহ প্রকাশ করিলেন। তাঁহাকে স্বামী বিবেকানন্দের শিকাগো বক্ততা ও সর্বাপল্লী রাধাক্ষনের "হিন্দু ভিউ অব লাইফ" পড়িতে পরামর্শ দিলাম।

পরদিন শনিবার। সংপিস আদালত ছুট। হোটেলে বসিরা কিছু কাজ করিলাম। পরে শহর দর্শনে বাহির হইলাম।

শহরের মধ্য দিয়া টেনেসি নদী প্রবাহিত। তাহারই অনতিদুরে আমার হোটেল। হোটেলটির নাম এণ্ডু জনসন্। এণ্ড জনসন এবাহাম লিঙ্কনের পরবর্ত্তী প্রেসিডেন্ট। তিনি টেনেসি রাষ্ট্রের অধিবাসী ছিলেন। হোটেলটি ১৭।১৮ তলা হইবে। আমি ১৬ তলার ছিলাম। শহরট ছোট। প্রার ৭৫ হাজার লোকের পাস। ১৭।১৮ তলা বাড়ী আর দাই।
১৬ তলার উপরে বসিরা আমি নদীর তীর দিয়া বহুদ্র বিভ্তত
শহরের অবিজ্ঞস্ত সৌবশ্রেণী দেখিতাম। সমস্ত আমেরিকান
শহরের মত এটিও সরল ও সমাস্তরাল রাজপ্বশ্রেণী হারা
পরিশোভিত। হোটেলের সম্মুখ দিয়া যে রাজাটি গিয়াছে
তাহাই শহরের বড় রাজা। হ'বারে শ্রেণীবদ্ধ দোকান।
বড়দিন আগতপ্রায়। তহুপলক্ষে দোকান ও রাজা অসক্ষিত।
আলো ও রঙীন কাগক প্রভৃতির সাহায্যে অন্যর সক্ষা রচনা
করা হইয়াছে। করুণাবতার সাজা ক্লকের শ্রক্তক ছবি সর্ব্বরে।
সাজা ক্লক সাজিয়া কেছ বড়দিনে ছেলেপেলেদের উপহার
দিবার জন্ম অর্থ সংগ্রহ করিতেছে। ছেলেবুড়ো সকলেই
বড়দিনে কিছু কিছু উপহার পাইবে। সর্ব্বরে আশা ও
আনক্ষের আভাস।

এখানে ভার্ক্তিনিয়া তামাকের একটি বান্ধার আছে। কৃষকগণ স্ব তামাক আনিয়া এখানে নিলামে বিক্রয় করে। সিগারেট প্রস্তুতকারকগণ আসিয়া এই তামাক কিনিয়া লইয়া যায়। এখানে প্রচুর ও রকমারি খাদাদ্রবা পাওয়া যায়।

১৩ সংখ্যাটির প্রতি ইহাদের কুসংস্কার নানা ব্যাপারে পরিস্ফুট। হোটেলে ১৩ নম্বরের কোন তলা নাই। বারোর পরেই চোছ। ১৩ ৩ল'য় থাকিলে নাকি ভাগাহানি হয়!

ঐদিন রাভায় অপর একজন ভারতীয়ের সঙ্গে সাক্ষাৎ
ছইল। ইনি মুক্তপ্রদেশের অধিবাসী। দিলীর ক্ষমিগবেষণাগারে কাজ করেন। ক্যমি-গবেষণা সম্বন্ধে ওয়াকিব্ছাল
ছইবার জ্বল্ল এদেশে কয়েকমাস যাবং সক্ষর করিতেছেন।
ইহার বয়স চলিশের বেশী হইবে।

পর দিবস রবিবার নক্সডিল তাগি করিয়া শিকাগো রওনা ইইব। ছপুরে প্লেন ছাড়ে। কোম্পানীর গাড়ী হোটেল হইতে স্থানাকে তুলিয়া লইয়া যাইবে। প্রস্তুত হইয়া লাউপ্লে বসিয়া স্থাছি। সেখানে মাইকেলি ডিস ও পেট্রয়াসের সংক্রে অনেক কথা ইইল। প্রাচীন কালে সভ্যতার উচ্চ শিবরে স্থারিটিত গ্রীস ও ভারতবর্ষ এই ছই দেশের যোগাযোগের কাহিনী ঞানিবার জন্ত ইহাদের আগ্রহ লক্ষ্য করিলাম। স্থানাদের তারিখযুক্ত ইতিহাস যে স্থানেকক্ষাগুরের ভারত স্থাক্রমণের কাল হইতে স্থারম্ভ ইইয়াছে এবং গ্রীকল্প মেগান্থিনিসের অমণরতান্তই যে তৎকালীন ভারতীয় সমাক্ষ সম্বন্ধে সর্ব্বাপেক্ষা প্রামাণিক গ্রন্থ ইহা শুনিয়া তাঁহাদের সাগ্রহ বর্দ্ধিত হইল। কথোপকধনের মধ্যে স্থলক্ষিতে ইহাদের সঙ্গে স্থানার চিত্রের যোগ স্থাপিত হইয়া গেল।

গাড়ী আসিরা আমাকে তুলিরা লইল। সে গাড়ীতে আর একট আমেরিকান ভদ্রলোক অন্ত একট হোটেল হইতে উঠিলেন। উভরে সীমাহীন প্রান্তরের মধ্য দিরা বিমান বাঁটর দিকে চলিরাহি। ভদ্রলোকট মধ্যাহুভোকনাদির পর একটু আলাপেচ্ছু হইয়া উঠিয়াছেন । নানা বিষয়ে কথা বলিয়া চলিয়াছেন, মাৰে মাৰে বলিতেছেন—"আমি বেশী কথা বলিয়া আপনার বিরক্তি উৎপাদন করিতেছি না তো?" স্থন্দর রৌদ্র । আকাশ পরিষ্কার । তাপ ৪০ ডিগ্রির কাছান্দাছি । ভদ্রলোকটি বলিলেন—"শীতকালে বসম্ভের আবির্ভাব ইয়াছে।" উপত্যকানকর্তৃপক্ষের কথা উঠিল । ভদ্রলোকটি বলিলেন—"পূর্বে লোকে বলিত যে উপত্যকানকর্তৃপক্ষ পাগলের মত বিহাৎ উৎপাদন করিয়াই চলিয়াছেন । এঙ

বিছাং কোন্ কাজে লাগিবে ? খুদ্ধ আসিল। সব বিছাং কাজে লাগিয়া গেল। কিন্তু উপত্যকা-কর্তৃপক্ষ এখন এক আর্ঘাতী নীতি অবলম্বন করিয়াছেন। এই বৈছাতিক শক্তিয় সাহাযো ওক্রিকে আগবিক গবেষণার ব্যবহা করিয়াছেন। যে দিন আগবিক শক্তি স্প্রতিষ্ঠ হইবে সেদিন তো বৈহাতিক শক্তিয় দিন স্থ্রাতিব। আগবিক গবেষণার ব্যবহা করিয়া উপত্যকা-কন্তৃপক্ষ নিজেদের মৃত্যুই ভাকিয়া আনিতেছেন।"

ভারতবর্ষে মজুর ধর্মঘট

बीमीनवक् माम

১৯৪৬ সালে ভারতবর্ধে মজুর ধর্মবটের বেজার হিড়িক পঞ্চিয়াভিল। যুদ্ধকালে মৃলার্ধির দক্ষন জীবনযাতার বার অভাবিক বাজিয়া গিয়াছিল, কিন্তু মজুরের মজুরি অথবা ভাতা সেই পরিমাণে বাড়ে নাই। যত দিন যুদ্ধ চলিয়াছিল তত দিন মাহ্মের মনে কেমন যেন একটা বারণা ছিল যে, যতই হোক মূলার্দ্ধিটা সাম্য্রিক, যুদ্ধ থামিয়া গেলে পরে মৃলাও পুনরায় কমিয়া যাইবে। এই বারণার কোন সভা ভিত্তি ছিল না। ১৯৪৫ সালের আগন্ত মাসে যুদ্ধ শেষ হইয়া গেল—অভংশর দিনের পর দিন যাইতে লাগিল, পুরাতন বংসর শেষ হইয়া নুভন বংসর আরম্ভ হইল, কিন্তু মূল্য কমিবার কোন লক্ষণই দেখা গেল না; বরং মূল্য আরও বাড়িয়া চলিল।

১৯৩৯ সালের আগষ্ট মাসকে ১০০ বরিলে বোথাই শহরে মজুরশ্রের জীবনযাত্রার ব্যয় ১৯৪৫ সালে ছিল ২২৪--সেই ছলে ১৯৪৬ সালের মার্চ মাসে ব্যয়স্থচী বাভিয়া ২৩৫ ছয়। জুন মাসে হয় ২৪৭, অতঃপর সেপ্টেম্বরে ২৫৭ এবং ডিসেম্বরে ২৬৬ ছইল।

যাহারা এতদিন হুদিনের আশার র্থশান্তির অপেকা করিতেছিল তাহারা নিরাশ হইল। মন্ত্রেরা আরও বেতন রুদ্ধির দাবি করিল। কোন কোন কোন কেত্রে মালিকের নিকট হইতে যংসামাগু পাইল; ক্ষেত্রবিশেষে তাহাও পাইল না। পেটে কুবা.রহিয়া গেল। তা ছাড়া, রুদ্ধের মধ্যে ছুনিয়ার বিভিন্ন রাজ্য-সাম্রাক্ষ্যের ভাঙা-গড়ার বিচিত্র লীলা প্রত্যক্ষ করিয়া মন্ত্রের। ইতিমধ্যে অনেক- খানি চেতনা লাভ করিয়াছিল, গাহারা নিজেদের সজ্বলভিদ্য সম্বন্ধ অনেক বেলী প্রতায়শীল হলল, নিজেদের মাস্থ্য বলিয়া ভাবিতে শিখিল এবং মালিকের নিকট হাইতে তদগ্রন্ধ বাবহার পাইবার স্বাশা পোষণ করিতে লাগিল। যেখানেই তাহাদের সেই নবলন্ধ আথ্যর্যাদান্তানে আঘাত পরিয়াছে, সেইবানেই তাহারা পাল্টা আঘাত দিয়া নিজেদের দাবি ও মর্যাদা প্রতিষ্ঠিত করিবার চেষ্টা করিয়াছে। এই দিক দিয়া দেখিতে গেলে, ছিতীয় মহায়ুদ্ধের পরবর্তী প্রথম শান্তির বংসর ১৯৪৬ সাল মন্ত্র আন্দোলনের ইতিহাসে বিশেষ শ্বরণীয়। ১৯৪৬ সালে অব্যাহ মন্ত্র ধর্মান্ট সম্পাকত বিভ্তত তথাবিলী ভারত-সরকারের মন্ত্রনমন্তর কর্তৃক প্রকাশিত "ইভিয়ান দোবার গেজেট" (ভারতীয় মন্ত্র বিবরণা। নামক মাসিক প্রিকার ১৯৪৭ সালের জুলাই সংখ্যার দেওয়া হইয়াছে।

বর্ষাঘট ও ধর্মাধটীদের সংখা। এবং বর্মাঘটজনিত ক্ষতি ১৯৪৬ সালে বিটিশ ভারতে ১৬২১টি বর্মাঘট হয়। '৩৯ সালে ৪০৬টি এবং '৪৫ সালে ৮২০টি ধর্মাঘট হয়: অর্থাং '৪৬ সালে পূর্ববংসরের দ্বিগুণ এবং '৩৯ সালের ৪ গুণ বর্মাঘট

'৪৬ সালে ১,৬২৯টি বর্ষখটে মোট ১৯ লক ৬২ হাজার মজুর যোগ দিরাছিল। পূর্ববংসর ৭ লক্ষ ৪৮ হাজার মজুর বর্ষঘটে যোগ দেয়। পূর্বে বংসরের তুলনায় এবংসর ২ ট্র শুণ বেশী মজুর ধর্মঘট করে।

এক कन शक्रतत्र अक पिटनत काकरक (3 × 3 =) 3 "कन-



(हेनि:--वाम्बी वि

कान वि,वि ६१७४

পো: বন্ন ৬৮৩৬ কলি:

ষি, স্থপারমার্চেটটস্, একস্পোটারস্, ইম্পোটারস্ ও জেনারেল অর্ডার সাপ্লায়ারস্

প্রমথনাথ পাল এও সন্স্ ২িগ, রামক্ষার বন্ধিত লেন, কলিকাডা—৭ বোৰা বলিয়া বরিলে, '৪৬ সালে মজুর বর্ষঘটের ফলে ১ কোট ২৭ লক্ষ "জন-রোক" নষ্ট হইয়াছিল। পূর্বে বংসর নষ্ট হইয়াছিল ৪০ লক্ষ ৫৪ হাকার জন-রোক। '৪৬ সালে পূর্বেবংসর অপেকা ৩২ গুল বেলী জন-রোক নষ্ট হইয়াছিল।

যুদ্ধপূর্ব্ব '৩৯ সালের পূলনার '৪৬ সালে বর্ণাঘটের সংখ্যা ৪ গুণ, বর্ণাঘটার সংখ্যা ৪৮ গুণ এবং জ্বন-রোজ হিসাবে ক্ষতির পরিমাণ ১২ গুণের কিছু বেশী হইরাছিল।

'৪৬ সালের মার্ক মাস হইতে ধর্মঘটের সংখ্যা ও ব্যাপকতা বাড়িতে থাকে। জুলাই মাসে ধর্মঘটের হিড়িক চরমে উঠে। আগপ্ত মাসেও আবহাওয়া খুব গরম ছিল, জতঃপর ক্রমে ক্রমে হিড়িক ক্রমিয়া যায়। '৪৬ সালের জুলাই মাসের ভারতব্যাগা ভাক ও তার বিভাগের কর্মচারীদের বর্মঘট বিশেষ শরণীয় ছটনা।

কোন শিল্পে কত ধর্মঘট হ'ইয়াছিল

এবারে কোন শিল্পে কত ধর্ম্মট হইয়াছিল, ও।হার ক্ষিত্রিভি দিতেছি।

সবচেয়ে বেশী ধর্ম্মট হয় বয়ন-শিল্পে। কার্পাস, পশ্ম ও বেশ্ম শিল্পের কারখানায় সর্বসমেত ৬৩১টি ধর্ম্মটি হয়। এই সব ধর্ম্মটে সাড়ে দশ লক্ষ মন্ত্র যোগ দিয়াছিল এবং প্রায় ৫৩ লক্ষ জন-বোজ নষ্ট হইয়াছিল। বয়ন-শিল্পে '৪৬ সালের ধর্ম্মটের ৩৮'৭ শতাংশ, ধর্ম্মটি সংখ্যা ৫৩'৬ শতাংশ এবং নষ্ট জন-রোজের ৪১'৭ শতাংশ ইইয়াছিল। বরন-শিলের পরেই ইঞ্জিনিয়ারিং শিলের ছান। এ বংসর ইঞ্জিনিয়ারিং শিলে ১৩৩টি বর্দ্ধনট হর, ১ লক্ষ বর্দ্ধনট এই সকল বর্দ্মনটে যোগ দিয়াছিল এবং ক্ষতির পরিমাণ হংয়াছিল ২৫ লক্ষ ৩৪ হাজার জন-রোজ। এ বংসরে ইঞ্জিনিয়ারিং শিলে ধর্ম্মনটের ৮২ শতাংশ, বর্ম্মনটি সংখ্যার ৫২ শতাংশ এবং নই জন-রোজের ১৯৯ শতাংশ হইয়াছিল।

এ বংসর পূর্ব্ব যংসর অপেক্ষা ৩ গুণ বেশী কন-রোক নষ্ট ইইয়াছিল, কিন্তু বনির কাজে পূর্ববংসরের তুলনায় ৩১ গুণ বেশী কন-রোজ নষ্ট হয়।

কোন্ প্রদেশে কত বর্ম্মট হইয়াছিল

'৪৬ সালে সবচেরে বেশী ধর্মধট হয় বোখাই প্রদেশে, জতঃপর বাংলায়। বোখাইয়ে ৫৪২টি ধর্মধট হয়, বাংলায় হয় ৩৬৯টি, মান্তাকে ২৭১টি, মধা প্রদেশে ১৩৭টি এবং যুক্ত-প্রদেশে ১০৮টি। এই সকল প্রদেশে এখাক্রমে ৭ লক্ষ্ণ ৮ হাজার, ৪ লক্ষ্ণ ৭৫ হাজার, ২ লক্ষ্ণ ২০ হাজার, ১ লক্ষ্ণ ১৬৮ হাজার এবং ১ লক্ষ্ণ ৫২ হাজার মজুর ধর্মধট করে।

বোপাই প্রদেশে ধর্ম্মন্ত সবচেয়ে বেশী হুইলেও ধর্ম্মন্তের ফলে জন-রোক নই হুইয়াছিল সবচেয়ে বেশী বাংলাদেশে। বাংলায় এ বংসর ধর্ম্মন্তের ফলে ৪৬ লক্ষ ৮২ হাজার জন-রোক নই হুইয়াছিল। বোখাইয়ে ৩০ লক্ষ্, মাঞাক্ষে ১৩ লক্ষ্, মুক্তপ্রদেশে ১১ লক্ষ্, মধা প্রদেশে ৮১ লক্ষ্ জন-রোক নই হয়।

निठाकी बनुजबर्ग :---

বাংলার বিখ্যাত স্বত ব্যবসায়ী প্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "প্রী" মার্কা ম্বতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিস্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'প্রী' ম্বতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থাতের ব্যরমপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে প্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা ম্বত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

ammananangingingangaganananginganginganginganginganginganginganginganginganginganginganginganginganginganginga

শাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বসু

এ বংসর ধর্মদটের ফলে সকল প্রদেশে একত্রে যত জন-রোজ নষ্ট হটয়াছিল, শুধুমাত্র বাংলায় ও ধোমাইয়ে নষ্ট হয় তাহার ছই-তৃতীয়াংশ।

বর্ষদটের কারণ

১৬২৭টি ধর্মবটের মধ্যে ৬০৪টি প্রধানতঃ মাহিনা-বিষয়ক, তা ছাড়া আরও ৭৯টি থোনাস বা লভ্যাংশ সংক্রাপ্ত। ২৮০টি ঘর্মবট ব্যক্তিবিশেষের আচরণ বা আহ্মদিক অভিযোগ হইতে উদ্ভূত, ১৩০টি ছুটি এবং কার্যাকাল বিষয়ক। বাকী ৫০৪টি ধর্মবিটের উদ্ভব অভাভ নানা কারণে হইয়াছিল।

'৪৬ সালে মাহিনাসংক্রাপ্ত ধর্ম্মটের অফুপাত ছিল ৩৭'১ শতাংশ, পূর্ববংসরে ছিল ৪৩'৭ শতাংশ। ব্যক্তি-বিশেষের আচরণসংক্রাপ্ত বর্ম্মলটের অফুপাত এই বংসর ১৭'২ শতাংশ ছিল, পূর্ববংসরে ছিল ১৭°৮ শতাংশ। "বিবিধ কারণ"-ঘটিত ধর্মানটের অফুপাত বাড়িয়া পূর্ব বংসরের ১৮°১ শতাংশ হুলে এ বংসর ৩২°৮ শতাংশ হুইয়াছিল।

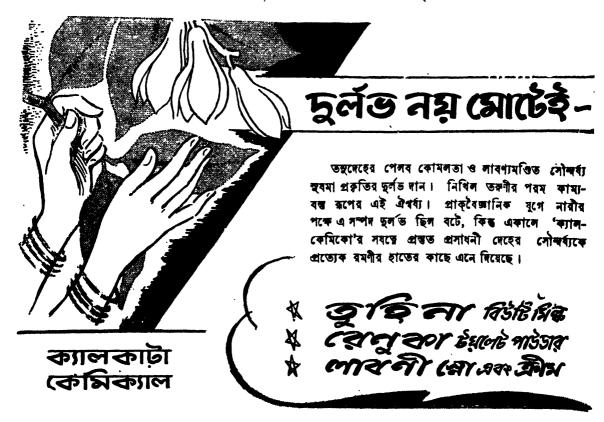
ধর্মঘটের ফলাফল

'৪৬ সালের ১৫৬৫টি বর্ষাঘটের ফলাফল বিশ্লেষণ করিয়া দেখা যার যে, ২৭৮টি বর্ষাঘট সম্পূর্ণ সফল হইয়াছিল, ২৭৪টি অংশতঃ সফল, আর ৬৯৬টি বিফল হইয়াছিল। বাকী ৩১৭টি ধর্মাঘটের ফলাফল সম্পর্কে ঠিক করিয়া কিছু বলা চলে না। সফল, অংশতঃ সফল এবং নিজ্ল বর্ষাঘটের অফুপাত যথাক্রমে ১৭°৮ শতাংশ, ১৭°৫ শতাংশ, এবং ৪৪°৫ শতাংশ ছিল। বর্মবটের কলাকলের দিক দিয়া পূর্বে বংসরের সদে এ বংসরের অন্তপাতের বিশেষ তঞাং হয় নাই।

বর্ষদটের স্থারিত্ব

নষ্ট জন-রোজ সংখ্যাকে ধর্মাণট মজুর সংখ্যা দিয়া ভাগ করিলে ধর্মাণটের গড়পড়তা হায়িত্বকাল পাওয়া যায়। এই হিসাবে '৪৬ সালে ধর্মাণটের হায়িত্বকাল ছিল ৬ৄ দিন। পূর্ব বংসরের হায়িত্বকাল ছিল ৫°৪ দিন। পূর্ব বংসরের তুলনার '৪৬ সালে ধর্মাণটের হায়িত্ব রুদ্ধি পাইয়াছিল, কিছ '৩৯ সালের তুলনায় ধর্মাণটের হায়িত্ব কমিয়া গিয়াছিল। '৩৯ সালে ধর্মাণটের হায়িত্বকাল ছিল গড়ে ১২°২ দিন।

বাংলাদেশেই ধর্মঘটের গড়পড়ত। পরমায়ু সবচেরে বেশী ছিল। '৪৬ সালে বাংলাদেশে এক একটি ধর্মঘটের ছারিছকলা ছিল গড়ে ৯°৯ দিন, বোষাইয়ে ৪°০ দিন আর মাল্রাজে ৫'৯ দিন। বাংলাদেশে ইঞ্জিনিয়ারিং-শিল্পে ধর্মঘট সর্ব্বাণেক্ষা দীর্ঘারী হইরাছিল। সমন্ত ভারতে সকল শিল্পে ধর্মঘটের গড়পড়তা পরমায়ু ছিল ৬ই দিন, কিন্তু ইঞ্জিনীয়ারিং শিল্পে প্রত্যেকটি ধর্মঘটের পরমায়ু ২৫ দিন করিয়াছিল। ধনিশিল্পে ধর্মঘটের ছায়িড় ছিল গড়ে ১০ দিন। ধর্মঘটের পরমায়ু স্ব্বাণেক্ষা কম ছিল রেল-শিল্পে। '৪৬ সালে রেল-শ্রমিকদের ধর্মটের গড়পড়তা পরমায়ু ছিল মাত্র ৩°৭ দিন।



পুশুক - পার্চায়

শেষ বসস্তে — গ্রীচপলাকাম্ব ভট্টাচার্যা। পুত্তকালর, ২৯ বাহুড্বাগান রো, কলিকাতা। মুলা হুই টাকা।

"শেষ বসন্তে" কাব্যগ্ৰন্থ। বইধানি কয়েকটি শীতি-কবিতার সমষ্টি। প্ৰথম কবিতা 'শেষ বসত্তে' ধে হুর উচ্ছ্সিত হটয়ঃ উঠিয়াতে তাহাই কাব্যের মূল হুর।

"বেলা যায়, বেলা যায়,

আপন অভাতে তোর জীবনের ঐশ্বর্য হারায়।"
এইটতে অথবা বসন্ত-প্রয়াণ, অতীত ও বর্ত্তমান, পূর্ব্ব-মৃতি
বিভ্রনা প্রভৃতি কবিতায় পশ্চাতে-কেলিয়া-খাদা জীবনের জন্ত নৈরাশ্রপীড়িত ছাদয়ের যে আর্থবর্নি শুনিতে পাই তাহাই
কিছু কবির শেষ কথা নহে। তিনি বার বার প্রশ্ন করিয়াছেন,

"বসন্তের প্রাণরস নিঙাড়িয়া যে নৌন্দর্য্য কোটে পলক কেলিতে কেন গর্ব্ব তার ভূমি পরে লোটে ?" প্রশ্ন করিয়াছেন,

"পাতাল-পুরীর মাকে যে রপসী ঘুমাইরা রছে
মাকে মাকে বরা দের যৌবনের মধুর বিরছে,
সে কি সুকাইয়া যাবে একেবারে জনমের মত ?"
আলের উত্তর কবি ক্রমে নিজের শাস্ত অস্তরের মধ্যে পাইয়াছেন।
বেলনা শীবনতারী শান্ধিত করে.

"মুগে মুগে অকারণ বঞ্চার ব্যথার কাতর মানবের অঞ্জল রচিতেছে লবণ-সাগর।"

'বাতাবী-সৌরভ-ভারে মদালস মধ্যাহ-প্রন' 'নিক্ঞ-ছায়ার তলে' আর সঞ্জন করে না, 'ফ্লর আৰু ধ্লায় ধ্সর লুঠিত'—-'কে বহে সর্ধায়হারা জীবনের সেই বিছম্বনা ?'

সকল জীবনেই এই সমস্তা উদিত হয়। কেছ সমাধান পায়, কেছ পায় না। সমস্তা আসে, 'জীবন সন্মুখে বায়, মন কেন ফিরি চায় পশ্চাতের পানে ?' কিন্তু তাই বলিয়া কি পরাক্ষয় মানিতে হুইবে ? না। 'নির্ভয় জীবন করে অবিশ্রান্ত রন।' হুদয় ক্ষত-বিক্ষত হয়, বলিতে হয়, 'যে দীপ নিভিয়া গেল, নামুক তাহারে দেরি বিশ্বতি-আধার।' কিন্তু সে ত বাধার বাদী। অন্ধ্যার গভীর হইয়া আসিলে আলোকের আবির্ভাবের সময় নিক্টবর্ত্তী হয়। অভয়ের বাদী শোনা যায়,

"আশা আছে ভীবনের শেষে

আবার ভিড়িবে তরী কোনো নর প্রভাতের দেশে।"
'আনাগত' কবিতায় কবি বলিয়াছেন,

"নবীন পৰিক নৃতন তন্ত্ৰী আগবে বেয়ে এই দেশে আমান চলা সাঞ্চ যথন হবে।"

ত্মতরাং 'প্রাণভরা দারুণ শিপাপা' লইয়া 'বিপুল উৎসব মাবে-

31173171 773718

শিশুপালনের সম্যক্ জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অভিতীয়। ভিটামিন ডি, বি১, বি১র সৃতিত মৃগাবান উদ্ভিশ্ব ও রাগায়নিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাল টানিকটি প্রভাকে শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দুযোদ্যমের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিয়নিকিত রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুকের ব্রুতের শীলা, অক্টাকা, মুধ তোলা, শেট কাণা, কোটকাটিয়, রক্ত্বতা, ক্যাতা, প্রহাইটন, রিকেট্য ইভালি।



অবরোধ

বিজন ভট্টাচার্য

শ্রমিকের তু:খ-তুর্দশা ও সংগ্রামকে কেন্দ্র করে লেখা পূর্ণাক্ত নাটক। ধনতন্ত্রের লোভ ও নিরক্তৃশ অবিচার শ্রমিকের জীবনের সমস্ত অগ্রগতির পথ রোধ করে যে অবরোধ গড়ে তুলেছে সার্থক নাটকীয় আদ্বিকে সেই প্রাচীরকে চূর্ণ করার তুর্বার সংগ্রামের বলিষ্ঠ স্বাক্ষর। দাম ২॥০

गानविक ও পর্যাণবিক

বিষ্ণু মুখোপাধ্যায়

মানব-কল্যাণে নিংগজিত পরমাণু শক্তি সমগ্র পৃথিবীতে
কী স্বপ্নাতীত আশীর্বাদই না বহন করে আনতে পারে।
কিন্তু সামাস্থাদীরা পৃথিবীকে সেই আশীর্বাদ থেকে
বক্ষিত করে আর এক স্ব্নাশা যুদ্ধের জ্ঞা পরমাণ্
শক্তির একচেটিয়া মালিকানা অধিকারেও যে হীন
বহুযন্তে লিপ্ত তারই চমকপ্রদ কাহিনী। দাম ২॥০

● ছোটদের বই ●

সকল দেশের সেরা

অভেন্তৰাথ ভট্টাচাৰ্য

ভারতের ভবিষাৎ নাগরিকদের সঙ্গে জ্বাভূমির আন্তরিক পরিচয়ের উদ্দেশে লেখা ভাংতের অপরূপ কাহিনী। মাড়র্ভূমিকে একান্তভাবে কানতে হলে এই বই অপরিহার্ব। প্রতি পাতায় সূর্য রাধের অজ্জ ছবি। দাম ২০

ঘুমতাড়ানী ছড়া

স্কৃত্যন্ত ভট্টাচার্য, মঙ্গলাচরণ চট্টোপাধ্যায়, বিষ্ণু দে, জ্যোভিরিক্ত মৈত্র

ছোটদের অপরপ ছড়ার বই। আধুনিক ভারত-ইতিহাসের প্রধান কয়েকটি ঘটনার ওপরে ছড়া কেটেছেন চারজন কবি চার ক্রম ভাবে। প্রতি পাতায় সূর্য রায়ের অঞ্জন্ন রঙীন ছবি। দাম ৩

পারীর পতন

ट्रेणी त्रमामिनाटलात

हे निया अदब्बव्यं

একটি মহান্ জাতি এ দেশের
সাময়িক অবনতির করুণ কাহিনী।
পত মহাযুদ্ধ এবং তার আগের
ফরাসী সামাজিক ও রাজনৈতিক
জীবনের নির্গৃত ছবি। অনুবাদ
করেছেন: অমল দাশগুল, ববীক্র
মন্ত্র্মদার, অনিলক্মার সিংহ।
দাম প্রতি ধণ্ড: ৪১, ৩১, ৪১।
ভিন ধণ্ড একরে: দশ টাকা।

পুতুলনাচের

ইতিকথা

যানিক বন্ধ্যোপাধ্যায়

আছকের মানিকবাব্র সমাজ সচেতন
সাহিত্যের মৃলস্ত্র ব্যেছে—"পুতৃল
নাচের ইভিকথা"য়। ভটিল আধুনিক
সমাজ-বাবস্থার চ'পে মান্থবের আশাআকাজ্রনাকে পদে পদে বাধা পেতে
দেখে তার মনে হ্যেছিল মান্তব
যেন অদৃষ্ঠের হাতে পেলার
পুতৃল। সেই মানুষ পুতৃলদের জীবন-

যাতার অপরুণ কাহিনী। সাম ৫

সন্দীপের চর

विकु (प

বিষ্ণু দে তাঁব কাব্য বচনার প্রতি পদক্ষেপ বিচিত্র ও বিতীর্ণ প্রান্থর পাব হয়ে চলেছেন। প্রতিটি নতুন কাব্য-জিঞ্জাসার উত্তর খুঁজতে গিয়ে তিনি নিজেকেও প্রকাশ ও বিকাশ করেছেন। তাই তাঁর প্রত্যেকটি কাব্য-গ্রন্থই আধুনিক বাংলা সাহিত্যের এক-একটি পদক্ষেপ। 'সন্দীপের চর' তাঁর সেই সার্থক কবিকর্ষের স্বাক্ষর—ভার অভিসাক্ষভিক বচনা-সংগ্রন্থ। দাম ২১

বি: জ:—ইডেন গার্ডেন্স্-এ নিখিল ভারত প্রদর্শনীর ৬নং বৃক্টলে আমাদের প্রকাশিত সমস্ত ইংরেজী ও বাংলা বই পাওরা যাবে

ইণ্টারক্যাশনাল পাবলিশিং হাউদ লিমিটেড

৩০. চৌরন্ধী রোড. কলিকাভা—১৬

ইণ্টারন্যাশনালের বই

্র্যান বিশ্বন ব

উপবাসী' থাকিবার প্রয়োজন নাই; 'ক্লিকের এই উপহার' 'একবার বহি গেলে এ জীবনে আসিবে না আর।' অতএব. 'বসজেরে করো পান যৌবনের প্রাপাত্র ভরি।' কেন-না.

"একট মুহুর্জ মাবে বৃদ্ধ হয় কাল অন্তহীন, জন-জ্যান্তের মৃতি—- বরা দের সব এক দিন।" অপেকার রহিও না, 'পরিপূর্ণ পানপাত্র এবনি অবরে' তুলিয়া লও।

ক্ষিতাগুলি আবেগ-শ্লমিত। সেই আবেগ পাঠকের জ্বর-ভন্তীতে আঘাত করে। যে বেদনা কবি অভ্তব ক্রিয়াছেন, ভাহা সকল মান্থবের। 'শেষ বসস্থ' সার্থক হইয়াছে।

গ্রীশৈলেন্দ্রক লাহা

স্বাধীনতার অভিযান যুগে যুগে— জীবামাপ্রদর সেনগুপ্ত এম, এ, বি, এল, এগাক্ষী গ্রন্থমন্দির, ১৫২, ল্যাকডাউন রোড, কলিকাতা। পৃঠা ১১৪, মূল্য হই টাকা।

এই এছের প্রথম দিকে অতি সংক্ষেপে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশের স্বাধীনতা-আন্দোলন সম্বন্ধে আলোচনা করা হইয়াছে। পরে অপেক্ষাকৃত বিভৃত ভাবে ভারতের স্বাধীনতা-আন্দোলনের ইতিহাস দেওয়া হইয়াছে। ভারত-ইতিহাসের প্রায় সমস্ত উল্লেখযোগ্য ঘটনাই ইহাতে আলোচিত হইয়াছে। লেখক ১৯৪৭ সনের জুন পর্যন্ত সকল উল্লেখযোগ্য ঘটনার একটি পরিশিষ্ট্রারা পুভক্রণানিকে স্থপাঠ্য করিয়াছেন।

বাংলিক বিশ্ব বাংলা বিশ্ব বাংলাক বাংলাক প্রাথ বিশ্ব বাংলাক প্রাথ বিশ্ব বাংলাক প্রাথ বিশ্ব বাংলাক প্রাথ বাংলাক প্রাথ বাংলাক বাংলা

এইরূপ স্বল্পরিসর প্রছে বছল ঘটনার স্থবিভাসে লেখক তাঁহার কৃতিত্ব প্রদর্শন করিতে সমর্থ হইয়াছেন। দেশের মূবকগণ এই প্রস্থাঠ করিয়া উপকৃত হইবেন।

মার্কসীয় অর্থ-শাস্ত্র — অধ্যাপক শ্রীকন্তরটাদ লাল্যানী এম, এ। কেনারেল প্রিকাস এও পারিসাস লিঃ, কলিকাতা। পৃষ্ঠা ১০৭। মূল্য ২, টাকা।

গ্রছের প্রথমে মার্কস লিখিত ক্যাপিটাল গ্রছের ভূমিকার কিয়দংশের অভ্বাদ দেওয়া হইয়াছে এবং পরে হাদশটি অধ্যারে মার্কসের অর্থনীতির আলোচনা করা হইয়াছে। আলোচনায় মার্কসের নিজের মতবাদের সহিত লেখক নিজের মতামতও স্থানে স্থানে দিয়াছেন। অর্থশাস্তের বাংলা পরিভাষা এখনও সর্বজনগ্রাহ্য হয় নাই এজন্য একই ইংরেজী শব্দের পরিবর্ত্তে নানা লেখক নানা প্রতিশব্দ ব্যবহার করেন। কলে পাঠকের অত্মবিধা হয় ও আলোচা বিষয়ের কটিলতা বাছে। সমালোচা গ্রন্থে বাংলা পরিভাষাগলি কোন্ কোন্ ইংরেজী শব্দের বদলে ব্যবহাত হইয়াছে উহার কোন ইঞ্চিত না থাকায় পাঠকের অত্মবিধা হইবে বলিয়া আশকা হয়। ভবিয়ৎ সংস্করণে এই ফ্রটি বর্জন করিলে পুত্তকথানি আরও ত্র্থপাঠ্য হইবে। পুত্তকের গাণিতিক উপমান্ডলি অনেক ক্ষেত্রে মুর্বের্ধাব্য হইয়াছে।

স্বাধীন ভারত — ঐবিরকাচরণ নন্দ। পৃঠা ৬৪ + ৬২, মুল্য ১০ জানা। গল্পে ও পল্পে উচ্ছোসপূর্ণ লেখার সমষ্টি।

আর্ক্রেনির স্বদেশসেবক পেরে 1— এদিলীপ-কুমার মালাকার। ডি, এম লাইবেরী, কলিকাতা। পৃঠা ২৪, মূল্য ৮০ আনা।

বিধাতে ফাসিষ্ট নেতার জীবনী। ইনি সমন্ত দক্ষিণ-আমে-রিকার দেশসমূহকে সভবেদ্ধ করিয়া ইংরেজ ও মার্কিনের আর্থিক দাসত্বের বিরুদ্ধে পরিচালিত করিতে চেষ্টা করিয়াছিলেন।

ক্রীডরীশ লিপ্ত ও জার্শ্মেনী— শ্রীবিনোদবিহারী চক্রবর্তী। শ্রীশুরু লাইত্রেরী, কলিকাতা। পৃষ্ঠা ৪৮, ব্ল্যা ১০ স্থানা।

বিধ্যাত কার্মান অর্থনীতিবিদের (জন ১৭৮৯: মৃত্যু ১৮৪৬) কীবনকাহিনী। যথন ইংরেক বন-বিজ্ঞানীরা অবাধ বাণিজ্ঞানীতি প্রচার করিতেছিলেন তথন এই মনীবী রক্ষণশীল-তার যৌজ্ঞিকতা (বিশেষতঃ শিল্পে অনপ্রসর দেশের পক্ষে) ঘোষণা করিয়া চিস্তাক্তগতে আলোডনের স্কষ্ট করিয়াছিলেন। তিনি এক বিরাট্ট কার্মানীর স্বপ্র দেখিয়াছিলেন এবং কাতিকে উদ্ধ করিয়াও গিয়াছেন। বিসমার্ক, কাইকার এবং ছিট্লার সকলেই লিপ্টের বাণী হইতে অহুপ্রেরণা লাভ করিয়াছেন। লিপ্ট কার্মানীর কাতীর কীবনের এক মহাসম্পদ। আমাদের দেশের মুবক্রন এই ক্ষুদ্র পুত্তিকা পাঠ করিয়া উপক্ষত হইবেন।

🗟 অনাথবন্ধু দত্ত

জীবনী ও মতবাদ সঞ্চয় ভট্টাচার্য্যের কার্ল্সাক্স স্থবোধ খোষের সিগ্মুগু ফ্রামেড অনিল বন্দ্যোপাধ্যায়ের ডাকুইন নগেন্দ্রনাথ সেনগুপ্তের কুন্দো

লোক শিক্ষার ব্বাডি-সংগঠন **पि**रप्र**रे** অঞানতার বাবরণ मध्यपद्र । পারলেই, আবাজিকাদার মাসুবের মন বাকুল र्षा ७७, সম্বৰে দায়িত ঈববের খাড়ে দিয়ে বলে থাকে না। রাক্ষেত্রিক পরাধীনতার চেলেও কলক্ষর চেতনাবিহীনতা অবুধবু ভীবনভার্তন। মাতুৰ ৰলে জান্তে হবে ।···চিন্তাশীল মনীৰিদের স**লে** বাংলাদেশের শিক্তি জনসাধারণকে পরিচিত করিরে ধেবার শুরু দারিছ পালন করার দিন এসেছে। পুলিবীর সংস্কৃতি ও সভাতার বাঁরা প্রথম্পক, বাঁদের মতবাদ স্থাপু কীবন-ধারাকে বিপ্লাবর পথ দিয়ে জাভতর উরত তারে নিবে গেছে বাংলাদেশের বছ জলার ভারাই সাহাসংবোদ করতে পাবেন। এবের সক্ষে জান্বার, এবের সক্ষে ভাববার **बर अंश्वर प्रकृत जाल्यानन-एडिर अस्त्रावन जारह। अछि ए७ এक होको इ' जाना।।**

গ্রেশ্বনার আবাদের থান্তসমস্তা তথা থান্ত-বস্তার প্রকৃতি ও রকমন্তেদ, প্রকৃত থান্তের শোচনীর অভাব ও ভজ্জনিত বাস্থান্তস্ব এবং ভরাবহ মৃত্যুর হার প্রভৃতি বিষয়ের বৃল্যাবান প্রবেষণা করিলাছেন এবং কি প্রকারে শোকে এই শোচনীর ধ্বংদের হাত হইতে ককা করা বাউতে পারে তৎসম্বন্ধে সবিশেষ আলোচনা করিলাছেন। এই প্রস্থের বঙলপ্রচার বাস্থানীয়। তাগা প্রাক্তন ও ছাপা উৎকৃষ্ট।'—ভ্যা ন ক্ষা বা জার। দাম বাবো আলো। ডাঃ লোকনাথন সম্পাদিত বৃহত্তর অবসানে ভারতবর্ধ

যুদ্ধাতির অর্থনীতি

ক্ষাবনার সমূখীন হরেছে।
ভারতবর্ধ একা নর, অক্টান্ত দেশেরও এ-ধরণের সমস্থান মাধান করবার
লাগিছ এনে গেছে। তাই বৃহকালীন অর্থনীতি কেমন করে বৃহ্ছান্তর
অর্থনীতিতে পরিণতি লাভ করতে পারে, সে মন্থান বিশম্ভাবে আলোকনা হওয়া একাল প্রবার করে করে। এই সমস্তার সমাধানকরে আল পর্বান্ত
বা-কিছু চেটা হয়েছে 'যুহ্ছান্তর অর্থনীতি'র প্রকাশ তাপের অভ্যন্তর।
ভাষার প্রাপ্তনাত বিষয়বন্ধকে চিন্তাকী করে তুলেছে। বাবো আনা।

প্রথম খন্ত।। এই সারকলিগিতে সংক্ষেপে ভারতবর্ষের আর্থিক ইরতি পরিকরিত হরেছে। জাতীর পরিকল্পনা কমিট বে সম্পূর্ণ এবং সর্কালীণ উন্নতির কথা চিছা করেছিলেন এ স্থারকলিগির ক্ষেত্র তত্টা বাপেক না হলেও ওই কমিটির অন্ধান্ত পরিশ্রমের কলেই জাতীর আর্থিক উন্নতির পরিকল্পনা স্থাকে মাংলাচনা করা সম্বাহ হরেছে। ভারতবর্ষের আর্থিক উন্নতির টাটা-বিড়লা প্রভৃত্তির বেক্সি-প্রিক্সন

পরিকলনা আলোচনা করবার সময় যে সকল আদর্শের কথা মনে রাখা অবস্থ কর্তব্য তা একটি প্রথি মা ও দ্বি তীয় বা ও বিবৃতির আকোবে দেশের সমূথে উপদাপিত করাই এ-এছের উদ্দেশ্য। তাই, কোন কোন দিকে উন্নতির কথা ভাবতে হবে বা সেলপ উন্নতির পরিকলনা দেশের পদ্ধি-সামর্থের ওপর কি পরিমাণে চাপ দেবে তা ই এ বিবৃতিতে প্রকাশ করা হয়েছে। দাম এক টাকা ॥ দ্বিতীয় হাস্ত । ভারত্তব্যে ক্লাল হোলেশে উৎপাদনের পরিমাণ অপেকার্কত কম সেগানে বিশেষভাবে উৎপাদন বৃদ্ধি না করলে অতি স্বত্ব বর্টন ব্যবহাও জীবন্যান্তার মান উন্নত করতে পারে না। কিন্তু এ-কথা সভা হলেও বৃদ্ধির নীতি যদি উপযুক্ত বটন-নীতির ভিত্তির ওপর প্রতিন্তিত না হয় তা হলে তা দারিলা প্রতিরোধ করতে সক্ষম হয় না। এই থণ্ডে বটন-নীতির ওপর দুটি দেওরা হয়েছে এবং পরিকলিত অর্থনীতিতে রাষ্ট্রের কি স্থান চাও আলোচিত হয়েছে। নাম এক টাকা।।

ছুমায়ুন কবিরের
ধর্মের কিংবা সম্প্রদারের নামে ঐতিহের মৌসলেম রাজনীতি
ক্ষো গান দি য়ে ছিতীয় সংস্করণ
সংস্কৃতিকে বাঁচিরে রাখার চেটা সমাজের মৃত্যুর জাবাহন করার
নামান্তর মাত্র। পেৰিক থেকে বলতে বাধে না বে, ভারতবর্ষের
কালান্তরের এই সহিক্ষণে হুমায়ুন কবিরের 'মোসলেম রাজনীতি'
সভিাই জাশাপ্রদ। একটা বৃহস্তর উদারনীতিক দৃষ্টি নিরে
কবির সাহেব সাপ্রেদায়িক জাব্দ্ধনা ছড়ানোর বিরুদ্ধে তাঁর
প্রবৃত্তিশীল মনের বিরোহ ঘোষণা করেছেন। দাম বারো জানা।।

কৃষ্ট ফিশারের স্থাই ফিশারের নাম আন্ধ আর কোনো
মহাজিত্রাসা কংলের কারেই অপরিচিত নর, তেমনি
অপরিচিত নর তার '7/hc Great
Challenge' বইটির নামও। 'মহাজিজাসা' ভারই অনুদিত
সংক্ষরণ। আন্তর্জাতিক ক্ষেত্রে রাষ্ট্রনৈতিক তথা সামাজিক বিবর্তন
যে গত মহাবৃদ্ধের সমর থেকে আন্ধ পর্যন্ত নানাপ্রকার অ'াকাবাকা
পথে এগিয়ে চলেছে তার ইতিহাস জানা প্রয়েজন আন্ধ সকলেরই।
কিন্তু বাংলা ভাষার এই ধরণের প্রস্থ এখনও প্রচুবভাবে প্রচারিত
হরনি। এই প্রন্থে পৃই ফিশার অত্যন্ত পাইভাবে তা-ই আলোচনা
করেছেন বলে বর্তনান কালে এ-বইএর প্রয়োজন অপরিহার্যা। ব্যস্থা।

পূৰ্বনাশা-প্ৰকাশিত অভাভা ৰই-এর ডালিকা সংগ্ৰহ করুন

2

পূৰ্বাশা निমিটে ড--পি)७, গণেশচল এছে ক্লু, কলিকাতা ১৩

নিম্মাক্ত বই চারখানি বাংলা ভাষায় অনুদিত হইয়া বাংলা সাহিত্যকৈ সভ্যই সমৃদ্ধ করিয়াছে নোবেল পুরুদ্ধারপ্রাপ্ত বিংল শভাকার শ্রেষ্ঠ উপস্থাস

গুড আর্থ

রচনা: পাল বাক্ অনুবাদ: পুশময়ী বসু

আঞ্জন অপুৰাদ, অপুৰ্ব গঠনসজ্ঞা, চমৎকার বাধাই। বুলা পাঁচ টাকা

আমাদের প্রতিদিনের পানীয় চা-কে কেন্দ্র করে সাহেৰী অভ্যাচারের পটভূমিকায় লেখ। এই উপস্থাস সবে প্রকাশিভ হলো

দু'টি পাতা একটি কুঁড়ি

রচনা: মূল ক্রাজ আনন্দ্

অমুবাদ: শ্রীনুপেন্দ্রক্ষ চট্টোপাধ্যায়
এই উপভাগথানিতে বর্তমান ভারতের দক অভ্যের হাহাকার আপনা
থেকে উট্কে, এর প্রভাকটি ঘটনার মধা দিরে মুধর হয়ে উঠেছে
আহত ভারতের রক্তনারা অভ্যের কাহিনী, বে-কাহিনীর আড়ালে
পাঠক বেধতে পাথেন, আজকের বুটন সাল্লাকাবাদী বার্থের নানার্থী

স্রোভধানার সঙ্গে ভারত-আত্মার সংঘর্ষ। বূল্য চার টাকা বারো আনা

বৃটিশ সরকার যে বই সম্ করতে পারে নি বলে ভার প্রকাশ নিষিদ্ধ করেছিল

कुिन

রচনা: যুল্ক্ রাজ আনন্দ্

অমূবাদ: ঐীনুপেন্দ্রক্ষ চট্টোপাধ্যার বৃটণ শাসনের কলে ভারতীর সমার কিভাবে ভিতর থেকে ভেলে পড়েছে, অন্তরীন, বন্তরীন কোটা কোন্তত্তবাসীর কি পরিণতি ঘটেছে তানই এক ভয়াবহু চিত্র মূলক্ বাল কুটিয়ে তুলেছেন এই উপভাবে। সাড়ে চার টাকা

গভ মুগের য়ুরোপের শ্রেষ্ঠ মিস্টিক্ লেখক মরিস্ মেভারলিছ-এর সাক্ষা ভাক্সা

वस्वान : शृष्णमश्री वस्

প্রেম হ'ল এ কাহিনীর মৃদ্ধ কেন্দ্র। 'বে প্রেম চলিতে চালাতে নাহি জানে' সে-প্রেম নর ।···বে-প্রেম সমর্বে বলে, 'নামি আমার অপমান সহিতে পারি, প্রেমর সহে না অপমান'—এ হ'ল সেই চির রুজ্জমর হুজ্জরের অপ্রভূত--মানবভার ধানবভা । ভাই কালিদাসের মেঘণুভের মুভন মেভারলিত্বের মারা ভারা' ভগতের প্রেম সাহিত্যে মেঘ-চুল্ছ হিম-লিরি-পৃক্ষের মতন বিধান করছে । মৃল্য ভিন চাকা
— পুস্তক তালিকার জন্য লিপুন —

ন্যাভিক্যাল বুক ক্লাৰ: ৬, ৰহিম চাটুজ্যে খ্লীট: কলিকাডা

মহাকাশ— একালীপুদ চটোপাধ্যার। স্বান্ধতোব লাইবেরী, ঢাকা ও কলিকাতা। পুঃ ৮৪ ; মূল্য দশ স্বানা।

হেলেমেরেদের পক্ষে সহন্ধবোধ্য করিকার বন্ধ প্রত্নার প্রকাশনিতে কথোপকথনচ্চলে মহাকাশের প্রহ-নক্ষর, চল্লহুর্য ও অন্তান্ত ক্যোতিক্ষওলী সহত্বে আলোচনা করিয়া-ছেন। ছেলেমেরেদের পক্ষে বইখানি ভালই হইরাছে; কিছ হই-একটি ক্ষেত্রে গ্রহ্কারের বক্তব্য সহত্বে প্রশ্ন ভাগা বাভাবিক। যেমন—২৮ পৃষ্ঠায় পৃথিবীর গোলভের প্রমাণ দিবার বন্ধ নদীর উপর পালভোলা নৌকার কথা বলা হইরাছে। দিগন্তবিভূত সমুদ্রবক্ষে আহাকের দৃষ্ঠান্তের হলে নদীবক্ষে পালভোলা নৌকার উদাহরণের একটা মিল থাকিলেও বান্তব ক্ষেত্রে তাহাতে ফলে মিলিবে কিনা পরীক্ষা করিলেই বুঝা যাইবে।

बीरगानामध्य ভট্ট हार्या

দীপশিথ — এসভোঞ্জনাথ চৌধুরী । 'আশ্রমিকা' বাগোয়ান। ধাসমিপুরাপুর, নদীয়া। দাম এক টাকা মাত্র।

ঙ্মিকার লেগক বলিয়াছেন, "কবি আমি নট, তবে কাব্যের মধ্যে যারা খুঁজে পেরেছে সাস্থনা, আমি তাদেরট একজন।" কারুকৌশলের প্রতি তাঁহার আগ্রহ কম, কিছ আছরিকতা গুণে কবিতাগুলি হৃদয় স্পর্ণ করে।

জাওয়াহির — ছৈম্বদ ক্ষত্রনল হছেন। ক্যাশনাল বুক এম্পোরিয়াম, করিমগঞ্জ, শ্রীহট্ট। মূল্য ১০০।

ভাব্যাত্মিক ভাবরসে বাহারা মতিথাছেন, সাম্প্রদায়িক তার গণ্ডি তাঁহাদের কাছে বিস্থা। বাংলাদেশের জনসাধারণ দীর্ঘকাল এই ভাবরস আসাদন করিয়া আসিয়াছে বাউল-ক্কির্নের গানে। তেমনি কতকগুলি গানের সমষ্টি এই বইখানি। হিন্দু-মুসলমান উভয় ভাব্ধারার এই সঙ্গমক্ষেত্রে ভাবের তীর্ঘাত্রী শান্তিলাভ করিবেন।

কল্পর — শ্রীললিত মুখোপাধার। বুক এন্পোরিরম। ২৪ বি, মুরমহম্মদ লেন, কলিকাতা। দাম বার খানা।

ক্ষরের মধ্যেও কুল কৃট-কৃট করিতেছে, ভাল করির। কৃটতে পারে নাই। ভাব সরল, কিছ প্রকাল সাবলীল নর। কবি সে বিষয়ে সচেতন; ভূমিকার বলিরাছেন, "অনুভূতিটুকু এক অপরিমিত কক্ষতার ক্ষিত্রে রয়েছে।" ভাল ক্বিতা লিখিবার ক্ষমতাও যে তাহার আছে, সে পরিচয়ও এই প্রছে মাবে মাবে পাওরা বার।

শ্রীধীরেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যয়

দি হাটলেস উওমান: বলজাক — অভ্যাদক:
শ্রীমণীজনাথ বোষাল। স্থাংভ সাহিত্য মন্দির। ২০৬ নং
কর্ণগুয়ালিস ষ্টাট, কলিকাতা। বৃল্য ৪১।

বর্ত্তমানে বাংলাদেশে অন্থবাদ-সাহিত্যের কদর বাঞ্চিতেছে।
ইহা আশার কথা। সর্বাদেশে সর্ব্বকালেই সার্বক সাহিত্যস্ক্রীর সমাদর আছে; এবং বিভিন্ন দেশের মধ্যে ভাববিনিমরের প্রয়োগনীরতাও অনধীকার্য। আজিকার দিনে
দেশ-বিদেশের চিস্তাধারার সঙ্গে আমাদের খনিও বোগাবোগ

ৰাকা একান্ত আবন্তক এবং মাতৃভাৰার মাধ্যমে তা পরি-বেশিত হওয়া উচিত।

"বলক্যাকের" দি হার্টলেস উওম্যান একথানি বিধ্যাত পুঞ্জ। বোষাল মহালর পুঞ্জবানির বলাহ্বাদ করিব। রসবোবের পরিচয় দিয়াছেন। লেথকের ভাষা এবং রচনা-ভলী ভাল, কিন্তু মাবে মাবে কিন্তিং ইংরেজী-গন্ধী হইয়া পড়িয়াছে। খোষাল মহালয় এই দিকে একটু দৃষ্টি দিলে ভারও ঢের বেশা আনন্দ পাইতাম।

পুন্তকের ছাপা ও কাগৰ ভাল। প্রচ্ছদপট মনোরম। শ্রীবিভূতিভূষণ গুপ্ত

ত্ঃস্থ — জীরামপদ মুখোপাধ্যায়। কেনারেল প্রিণ্টার্স এও পাবলিশাস লিমিটেড, ১১> ধর্মতলা ট্রাট, কলিকাতা। মূল্য আড়াই টাকা।

কমেক বংসর পূর্বের 'গলি গরু ও গৌরী' নামক গল্পটি লিবিয়া রামপদবাবু বাংলাদেশের পাঠক সম্প্রদায়ের মন বিভিন্না লইয়াছিলেন, তারপর বহু গল রচনা ছারা তিনি পাঠকচিত্তে খীয় প্রতিষ্ঠাভূমিকে দুচতর করিয়া লইয়াছেন। 'ছংবপ্ন' তাঁহার করেকটি ছোট গল্পের সঞ্চলন। ইহাতে রাজ্যাতা, বেমানান, বন্ধা, নীতিক্ণা, ছ:বন্ধ, সন্ধ্যার পূর্বের, দীপশিখা ও তৈল, নারী ও পরশু এবং বিনোদ অপেরা পার্ট এই নয়টি গল আছে। পুশুকের নাম-গল্পট এবং 'বল্লা', নীতিকথা' 'সন্ধ্যার পূর্বে' এই গল্প তিনটি বিগত মহাযুদ্ধের অস্বাভাবিক পরিস্থিতিকে পটভূমিকা করিয়া রচিত। যুদ্ধ থামিয়াছে ছঃধ্পের খোর কাটিয়া গেছে, কিন্তু তাহার ক্রের আঞ্ত মিটে নাই। কণ্টোলের লাইনে দাঁড়াইয়া এখনো, আমরা বৈর্ঘার চরম পরীক্ষা দিতেছি। উপরোঞ্জ গল্প কয়টিতে আমর মহানগরীর বিপর্যান্ত সমাজ-জীবনের হুবস্থ প্রতিচ্ছবি এবং নিৰেদের রেশন-কণ্ট্রোল-কণ্টকিত বিড়ম্বিত শীবনের প্রতিরূপ দেৰিয়া বিশ্বিত হই। রামপদ বাবুর লেখার সবচেয়ে বড় গুণ দরদ। এই দরদের ব্রুত তাঁহার স্ট্র চরিত্রগুলির সহিত পাঠকের এক গভীর মানসিক আত্মীয়তার সম্পর্ক স্থাপিত হয়। এই পুস্তকের অধিকাংশ গল্পই স্লিঞ্জ করণরসে আন্ত্র। এমন কি কৌডুকের পিছনেও যে যানব-জদয়ের কভ বঢ় বেদনা লুকানো থাকিতে পারে তাহার সার্থক রূপায়ন 'বেয়ানান' আর 'বিনোদ অপেরা পার্ট' এই ছইট গল্পে। 'নারী ও পরভ' এই গল্পথেহের শ্রেষ্ঠ গল। ইছাতে বীভংস ও করণ রসের এক অপূর্বে সমন্তর হইয়াছে। তিন তিনট খ্রীর উপর অবাভাবিক মনোবৃত্তিসম্পন্ন সন্দেহপ্রবণ বনস্থামের অমাভূষিক নির্ব্যাতনের কথা, পরশুদারা তার দ্রী-হত্যার বর্ণনা পড়িতে পড়িতে শরীর রোমাঞ্চিত হইয়া উঠে, অবচ ঘটনাবিভাস ও মনভত্ব বিশ্লেষণের এমনি মুখীয়ানা যে তার আচরণকে মোটেই অস্বাভাবিক বলিয়া মনে হয় না। ভাষার তীক্ষতার ও বর্ণনা-চাতুর্ব্যে গরের উপসংহারট যেন ঘনভামের শাণিত পরভর মতই ৰক ৰক করিতেছে।

কলোল — আসম্বর ভটাচার্য। পূর্বালা লিমিটেড। পি ১৩, গণেশচন্ত্র এভিছ্যু, কলিকাতা। মূল্য ৫, চাকা।

বহ দিন আগে সর আগুডোষ চৌধুরী বলিয়াহিলেন-"A subject nation has no politics"। সেদিৰ ভাৰ-নীতির সঙ্গে আমাদের দেশের জনগণের প্রত্যক্ষ যোগ ছিল না। কিন্তু ভাতীয় আত্মকর্ত্তর লাভ করার রাজনীতি এবন ভারতীর জনগণের অন্তরের বন্ধ হইয়া উঠিয়াছে, ইহার সহিত আপামর সাধারণের গভীর যোগ স্থাপিত হইতে চলিয়াছে। এই রাজনীতি-সচেতনতা হইতেছে বর্তমান মুগবর্ত্ত। মুগবর্ত্তের প্রভাবে বর্ত্তমান বাংলা-সাহিত্যের সহিত রাজনীতির মিতালি ঘটিয়াছে এবং বিগত কয়েক বংসরের রাষ্ট্রীয় আন্দোলন, এমন কি রাজনৈতিক আলাপ-সালোচনাকে পর্যান্ত কেন্দ্র করিয়া বাংলা-সাহিত্যে বহু গল্প উপস্থাস এবং সাহিত্য-গ্রন্থ (যেমন 'দৃষ্টপাত') রচিত হইয়াছে। বর্ডমান ভারতের রাজনৈতিক শীবনকে বাংলা-সাহিত্যে প্রতিফলিত করিবার সাধনায় বাঁছারা ব্রতী হইয়াছেন শ্রীসপ্তয় ভটাচার্য্য তাহাদের অক্তম। কতক-শুলি সাম্প্রতিক রাজনৈতিক ঘটনার উপর কল্পনার রং চড়াইরা তিনি বর্তমান উপভাসধানি রচনা করিয়াছেন। কাহিনীর যবনিকা উত্তোলিত হইয়াছে ২২শে নবেম্বর ওয়েলিংটন স্কোরারে ছাত্রদের উপর পুলিসের গুলিবর্বণ হইতে। তারপর সোদপুরে গানীকীর প্রার্থনা-সভার অনুষ্ঠান, নেতাকীর ক্যতিবিতে কলিকাতার শাহ নওয়াকের আগমন ইত্যাদি বিভিন্ন ঘটনার ভিতর দিয়া কাহিনীট সুঠু পরিণতির পথে অগ্রসর হইয়াছে। এই সকল ঘটনা আমরা অনেকেই প্রতাক্ষ করিয়াছি। কিছ সঞ্চয় বাবুর চোখ দিয়া এগুলিকে যেন শৃতন করিয়া দেখিলাম। তিনি এই সকল পরম্পরবিচিঃল্ল ঘটনাকে দেখিয়াছেন এক অখণ্ড সামগ্রিক দৃষ্টিভদীঘারা। এই বিপ্লব বিজ্ঞোহ বিক্লোভ ধর্মখট রক্তপাত ইত্যাদির ভিতর দিয়া ভাতি মুক্তিস্নান করিয়া পবিত্র হইতেছে, পুরাতনের ধ্বংসস্ত প হইতে জন্মলাভ করিতেছে মৃতন পৃথিবী-এই মূল স্বরট উপঠাসখানির মধ্যে আগাগোড়া অকুস্থাত। আদর্শবাদ এই উপহাদের কাহিনী এবং প্রায় সব-গুলি চরিত্রের সঙ্গে ওতপ্রোতভাবে বিশ্বড়িত। নায়ক প্রতীপ সেই আদর্শেরই বৃর্ত্ত বিগ্রহ, নায়িক। সুকাতার নিকট সে 'পাধরের ষৃত্তি'। সকলে মিলিয়া যে অত্তভেদী মহিমার অভ্যন্নত আসনে তাহাকে বসাইয়াছিল সেধান হইতে সাধারণ মালুবের ভবে নামিয়া আসিয়া জীবনের বাভাবিক সহজ দানগুলিকে উপভোগ করিবার অধিকার হইতে সে চিরতরে বঞ্চিত। সে মহাজীবনের সাধক, তাহার নিঃসঙ্গ একক জীবনের ট্রাজেডিও বিরাট। প্রতীপ-চরিত্রটি সম্ভন্ন বাবুর সার্থক স্কন্ট এবং তাছার অন্তর্ভ ব্যের বিশেষতঃ নিঃসঙ্গ নির্দ্ধন মুহুর্তে নিজের প্রক্রুত সন্তার সহিত তাহার মুখোমুখি পরিচয়ের বর্ণনায় তিনি মুলীয়ানার পরিচর দিরাছেন। কাহিনীটতে মাবে মাবে রোমালের রং ফলিয়াছে এবং লেখকের মনের উত্তাপ বর্ণনাকে আবেগমুধর করিয়া তুলিয়াছে বলিয়াই ক্য়ানিক্ম, মার্কসবাদ, গানীবাদ ইত্যাদি গুরু বিষয়ের আলোচন।-সমন্বিত এই **স্থদীর্ণ উপন্তাস**-বানি রসোভীর্ণ হইতে পারিয়াছে। স্থকাতা-চরিত্রটিয় ক্রম-विकाम लायक लायाहरू भारतन नाहे। हित्रबहिरक बुद জীবন্ত বলিয়া মনে হয় না। সে যেন কতকগুলি মতবাছের বাহনমাত্র-জাগাগোড়া কেবল বড় বড় বুলিই ক্পচাইতেতে।

বইবানি শেব করিবার পর একট প্রশ্নই সবচেরে বেশী করিরা মনে জাগে। ভারতের গণ-জীবনে এট যে মহা কল্লোল-ধ্বনি ক্রুত হইতেছে তাহা ভবিয়তের কোন্ বিরাট সভাবনার ইন্দিত বহন করিতেছে। সে কি জাতির সর্বাদীণ মুক্তির অগ্রহ্মনা নর ? কে সেই নবডগীরধ থিনি এই জভিনব মুক্তি-গঙ্গাকে দেশের বুকের উপর দিয়া প্রবাহিত করাইবেন ? উপসংহারে সুজাতা আর প্রতীপের আলোচনা-প্রসঙ্গে দেখক বলিরাছেন থে, জাতির সেই মহামুক্তি-সাবক মহাধ্যা গানী। জাতি যদি তাঁহার নির্কেশ না মানিরা চলে তাহা হইলে চরম
তুল করিবে। প্রতীপ বলিতেছে—"গারীকীর আশা কি আরু
ছেন্ডে দেওরা যার সুজাতা—তিনি আরু একটে একট প্রতিষ্ঠান।" লেবক ববন এই কবাগুলি লেবেন তবন গারীকী
জীবিত থাকিয়া হিন্দু-মুসলমানে সৌক্রাত্র, মৈত্রী ও অহিংসার
আরদ্প প্রচার করিতেছিলেন।

ইনলিনীকুমার ভজ

দেশ-বিদেশের কথা

কুতী ঐতিহাসিকের সম্মান

সম্প্রতি 'রহেল এশিয়াটক সোপাইট অব বেঙ্গল' গোয়ার কুতী ঐতিহাসিক শেভালিরে পাণ্ডুরঙ্গ এদ. পিথুরলেঙ্কারকে মধ্যযুগীয় ভারতের ইতিহাস সম্বন্ধে গবেষণার জ্ব্যু 'সর যতুনাধ সরকার ধর্ণপদক' পুরস্কার প্রদান করিয়া সন্মানিত করিয়াছেন।



পাণ্ডুরক এস. পিত্রকেছার

এই নবস্ট প্রভার ইনিই প্রথম লাভ করিলেন। উপরোক্ত
প্রতিষ্ঠান ইতিপ্রে ভারতীয় ইতিহাসের প্রাচীন আমল প্রত্তত্ত্ব
ভাতিতত্ব এবং বৈজ্ঞানিক বিষয়সমূহের কল্প পদক ইত্যাদি দিয়া
ভাসিরাছেন। কিন্তু গত বংসর ইহার সভাপতি প্রীয়ক্ত
বিমলাচরণ লাহা মহালয়ের প্রয়হে মুসলমান আমল ও
মারাঠা ইতিহাসের (১৩০০ ঞ্জঃ-১৮০২ জ্জঃ) গবেষণার কল্প
এই পুতন পদক-প্রদানের ব্যবহা হইয়াছে। ইহার মূল্য
৪৮০ টাকা। ইহার একদিকে আছে সর মহ্নাথের আবক্ষমৃত্তি এবং অভদিকে পদকলাভকারীর নাম বোদিত। মূল
পর্তৃত্তিক ভাষার হভলিবিত বিবরণী হইতে শেভালিয়ের
শিক্ষরলেয়ায়ের গবেষণার উপকরণ সংগৃহীত এবং ভারতবর্ষের সঙ্গে পর্তৃত্ত্তিক হারদের আলি ও উপু স্বলতান পর্যন্ত স্থানের পর্যক্তিক ভাষার হভলিবিত উপকরণ অবলহনে বাহারা

গবেষণা করিয়াছেন তরধ্যে অবিসংবাদিতক্সপে তিনিই শ্রেষ্ঠ। তিনি খননকার্যাধারা গোয়াতে কতকগুলি বিশ্বয়কর প্রত্নসম্পদও আবিষ্কার করিয়াছেন।

যতীব্ৰুমোহন বাগচী

গত ১৮ই মাঘ কবি যতী দ্রমোহন বাগচী ৬৯ বংসর বয়সে তাঁহার কলিকাতাস্থ বাসভবনে পরলোকগমন করিয়াছেন। ১২৮৫ সালের ১২ই অগ্রহায়ণ মূশিদাবাদ কেলার বাগড়া প্রামে যতী দ্রমোহনের কম হয়। বহরমপুর এস এম এফ ক্লেপ্রাথমিক শিক্ষালাভ করিবার পর তিনি উচ্চশিক্ষা লাভার্থ কলিকাতায় চলিয়া আসেন এবং যথাক্রমে কলিকাতা হেয়ার কুল হইতে প্রবেশিকা, প্রেসিডেন্সী কলেক হইতে এফ-এ এবং ডক কলেক হইতে ১৯০২ গ্রীপ্রাক্ষেবি-এ পাস করেন।

যতীক্রমোহনের প্রথম মুদ্রিত কাব্যপ্রশ্বের নাম 'লেখা'। রবীশ্র-মুগের কবিদের মধ্যে যতীক্রমোহন একটি বিশিপ্ত স্থান অধিকার করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। গদারচনায়ও গাঁহার ছাত ছিল। গাঁহার সর্বশেষ পুস্তক 'রবীশ্রনাথ ও মুগ্নসাহিতো' তার প্রমাণ পাওয়া যায়।

প্রথম জীবনে কয়েক বংসর তিনি মানসীও যমুনা পত্রিকার সম্পাদক ছিলেন। ইদানীং বংসরাধিককাল যাবং তিনি 'পূর্ব্বাচল' নামক মাসিক পত্রিকাখানি বিশেষ কৃতিত্বের সহিত্ত সম্পাদনা করিয়া আসিতেছিলেন। মৃত্যুর পূর্ব্ব পর্যান্ত তিনি ঐ পত্রের সম্পাদক ছিলেন। তাঁহার মত একজন স্ক্কবি, স্থসাহিত্যিক ও স্থোগ্য সম্পাদকের অভাবে বাংলা-সাহিত্যের অপুরনীয় ক্ষতি হইল।

পুষ্পকুন্তলা রায়

কলিকাতা কর্পোরেশনের কিউরেটার যোগেশচন্দ্র রায়
মহাশরের পরী পূস্পক্ষলা রায় গত ২৩লে পৌন সম্মাস রোগে
পরলোকগমন করিয়াছেন। মৃত্যুকালে তাঁহার বয়স ৪৫ বংসর
হইয়াছিল। স্ফালিল ও রঙ্কন-বিদ্যায় ওাঁহার বিলেম দক্ষতা
ছিল। এ সবঙ্কে তাঁহার লেবা বহু প্রবন্ধ বিভিন্ন মাসিক পত্রিকায়
প্রকাশিত হইয়াছে। চিত্রকলায়ও তাঁহার নৈপুণ্য ছিল। ১৭
বংসর পূর্বে তাঁহার অন্থরক্ত বন্ধ্বাধ্বেরা "পূস্পক্ষলা মিলনী"
নামে একটি আলোচনা-সভার প্রতিষ্ঠা করেন। পুস্ক্রলা
অবিকাংশ সময়ই প্রভা-অর্চনায় কাটাইতেন। দরিক্রনায়ায়ণের
সেবায় তিনি বিশেষ আনক্ষণাভ করিতেন।



মা ও ছেলে শ্রীসভোজনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

প্রবাসী প্রেস, কলিকাত:

ভারতের পল্লী



একটি পল্লীয় জীলোকেরা মনেশ্হর ভঙ্গীতে ভূষ ঝংড়িভেছে



পল্লীআমের একটি দৃষ্ঠ



"সতাম্ শিবম্ হৃদ্দরম্ নায়মারা বলহীনেন লভাঃ"

8**수**째 평기 고류 각영

হৈত্ৰ, ১৩৫৪

শ্ৰুষ্ট সংখ্যা

বিবিধ প্রসঙ্গ

পূর্কাবঙ্গে হিন্দুর ভবিষ্যৎ

প্ক বিষের হিন্দু আতরপ্রস্থ হওয়ার ফলে যে পরিস্থিতির উদ্ধান হারাহ আভ প্রতিকার প্রয়োজন। এই প্রতি- । কারের ছইটি মাত্র পথ আছে। প্রথমতঃ প্ক বিষের অমুসলমানের পুনর্বসতি ও পুনঃপ্রতিষ্ঠা এবং দিতীয়তঃ ভারতরাই ও পুর্ব পাকিস্থানের মধ্যে লোক-বিনিময়। তৃতীয় পয়্যা—যাখাকে বিপথ বলা উচিত এবং যাখা বর্তমানে অবলম্বিত ছইতেছে—সম্বন্ধে ইহা মাত্র বলা প্রয়োজন যে ইহা বাঙালী হিন্দুর পতন ও ধবংসের চরম পথ। আজ চতুর্জিকে কেবল এই পথেরই কথা চলিতেছে ইহা অতান্ত আক্রর্যের কথা। ইহার কলে পুর্বে বিষের অমুসলমান সক্ষর্যান্ত ছইয়া, আত্মসন্মান হারাইয়া পথে দাভাইবে, পশ্চিমবঙ্গবাসী বিত্রত ও অতিষ্ঠ ছইবে এবং শেষ পর্যন্ত সাম্প্রদায়িক আগুনে সকলেই পুড়িবে। অথচ পথের পাটে, সংবাদপত্রের পৃষ্ঠায় কেবল এই পথেরই আলোচনা চলিতেছে, পরিণামের কথা কেহই ভাবিবার সময় পাইতেছেন না বা বলিবার সাহস রাগিতেছেন না।

সত্য কথা এই যে, এক কোটি এিশ লক্ষ লোকের এক-ভৃতীয়াংশেরও পশ্চিমবঙ্গে—শুধু পশ্চিমবঙ্গে কেন সারা ভারত-যুক্তরাষ্ট্রে--পুনর্বসতি হওয়ার কোনও সস্থাবনা নাই, যদি-না সেই পরিমাণ লোক এই অঞ্চল হইতে পাকিস্থানে চলিয়া যায়। বাঁহারা এখানকার লোক না সরাইয়া ওদিক হইতে লোক আনিবার কথা বলিতেছেন বা ভারত-সরকারকে সেইরপ' ব্যবস্থা করিবার কথা শিখিতেছেন, তাঁহার৷ অঞ্-পশ্চাৎ বিবেচনা হারাইরা ভবিশ্বতে বিষম বিপদ ডাকিয়া আনিতেছেন। ভারত-সরকারকে এখন প্রথমে বিচার করিতে হইবে যে মি: বিলা ও ধাৰা নাবিযুদ্দিন পরোক্তাবে পূর্বা বলের অমুসলমানকে ভিটামাট ছাভিতে বাধ্য করিতে চাহেন কিনা। যদি পশ্চিমবঙ্গ-সরকার এবং ভারত-সরকার এ বিষয়ে বিশ্চিত প্রমাণ দেখেন তবে তাঁহাদের দুচ্তার সহিত भाकि ও भृषानात পবে লোকবিনিময়ের ব্যবহা করিতে হইবে. কেনদা অন্ত পথ নাই। যে পথে এ কাৰু এখন চলিতেছে তাছাতে পূর্ব্ব ও পশ্চিমবঙ্গের হিন্দুর ও মুসলমানের মধ্যে चड:কলহ ও বিবেষ ভাগিরা উঠিবে মাত্র।

যদি বাজা নাজিমৃদ্ধিনের গবর্ণমেন্ট লান্তির পব চাহেন তবে পশ্চিমবঙ্গ-সরকারের উচিত শ্রীযুক্ত সতীশ দাশগুপ্ত মহালয়কে সকল প্রকারে সাহায্য করা। বিগত ১৭ই চৈত্রের ভারতে তাঁহার নিধিত "পুনর্বাসতি কোন্ পথে" প্রবন্ধ পশ্চিমবঙ্গ-সরকারের এবং ভারত-সরকারের প্রত্যেক মন্ত্রীর বিশেষ প্রবিধানযোগ্য। স্থামরা তাহার কিছু অংশ উদ্ধৃত করিতেছি:

শ্ৰপ্ৰবন্ধ ইইতে লোক আতত্ত্বেই চলিয়া আসিতেছেন। ইহাদের বেশীর ভাগই মধ্যবিত্ত ভদ্রশ্রেণীর লোক। স্বমি বর্গা লইয়া ও চাকুরী বা ব্যবসা দ্বারা উপার্জ্জন করিতেন কিছ বর্ত্তমানে পাকিস্থানে সেইভাবে উপার্জন করা সম্ভব নয় বলিয়া তাঁহার। মনে করেন। এক্স বাড়ী ছাড়িয়া পশ্চিমবঙ্গে উপাৰ্জ্বনের জন্ম আসিতেছেন। গবর্ণমেন্টের কোনও কোনও কর্মচারীর অসন্থাবহারেও পীড়িত হইয়া কেছ নিরাশ হইয়া দেশত্যাগ করিতে বাধ্য বোধ করিতেছেন। কিন্তু বাধ্যতার ৰূলে কাৰ্যং বা প্ৰস্থপ্ত ঐ বোৰ আছে যে এদেশে আর ডাক্তারী, মোক্তারী ও ওকালতী, বাণিজ্য-বাবসাধা মহাজনী করিয়া উপাৰ্জ্ঞন করার দিন নাই। কাৰেই হার মানিয়া দেশ ছাড়িয়া চলিয়া আসিতেছেন। এই প্রক্রিয়া মধাবিত্ত শিক্ষিত হিন্দুর পক্ষে স্বাভাবিক হইয়া দাঁড়াইয়াছে। দেশের উপর ও সমাব্দের উপর কর্তব্যের প্রশ্ন হইতে বিচার করা হয় না।

"ইছা লোধের। সমান্ধ ও দেশের হিতাহিত সম্পর্কে বিচার-ছীনতাথারা মাত্ম নামিয়া যায়। পুর্বে বিদের হিন্দু নামিয়া যাইতেছেন। প্রবল সার্থবৃদ্ধির উপর নির্ভর করিয়া চলিলে সমূহ অমঙ্গলকেই ডাকিয়া আনা হয়। ছইতেছেও তাহাই।

"তবে গবর্গমেন্ট কি করিবে ? পুক্র বিদের ছিন্দুর ছ্র্মণার দিকে পশ্চিমবঙ্গ গবর্গমেন্ট চোধ বৃদ্ধিয়া থাকিবে ? ইছাবের ছঃখ দেখিরা কোনও প্রতিকার করিবে না ? ইছাও ত ছর না। বাংলা ভাগ হইলেও বাংলার ছিন্দু মুসলমান ভাই ভাই। পশ্চিমবঙ্গ গবর্গমেন্ট এই পরিছিতিকে অগ্রান্থ করিতে গারেন না। ইছার প্রতিকারই করিতে ছয়। কিছু প্রতিকার কি ? কতককে পশ্চিমবঙ্গে বসতি করাইয়া দিলে সম্ম্রা আরও কটিলই যদি হয় তবে করা কি ?

"করার রহিয়া গিয়াছে ইহাদিগকে যত অর্থবারই হউক বসতি করাইয়া দেওয়া, তবে পশ্চিমবদে নয়—পুক্ষবিদে।"

ঢাকায় মিঃ জিল্লা

মিঃ জিলা ঢাকার আসিরা প্রার এক সপ্তাহ কাটাইরা গিরাছেন। চট্টপ্রামেও তিনি গিরাছিলেন। বাংলা ভাষাকে পাকিছানের অভতম রাই ভাষা করিবার বভ পূর্ববদে যে তীর আন্দোলন আরম্ভ হইরাছিল থাকা নাজিমুখীনের গবর্বে ত তাহা দমন করিতে পারিতেছিলেন না বরং এই আন্দোলনে তাহার মন্ত্রীমণ্ডল বজার রাখা কঠিন হইরা উঠিতেছিল। সভবতঃ এই কারণেই মিঃ জিলার পূর্ববিদ্ধ আগমন।

ঢাকার আসিবার অব্যবহিত পরে মিঃ কিয়া এক কনসভার বক্তৃতা করেন। উহাতে তিনি দুচ্কণ্ঠে ইহাই জানাইয়াছেন त्य, "उर्क् शांकिशात्मत्र अक्यांव बांद्वे छाया रहेत्व हेराहे जामि চাই।" ইছা তাঁছার প্রধান বক্তব্য হইলেও হিন্দুদের লক্ষ্য ক্রিয়া তিনি যাহা বলিয়াছেন তাহাও উপেন্ধার বিষয় নহে। পাকিছানে হিন্দুরা ভারতীয় ইউনিয়নের বুসলমান অপেকা অনেক পুৰে আছে, তাহাদের ভারসঞ্চ কোনই অভিযোগ নাই, হিন্দুদের উপর অত্যাচারের যে সব বিবরণ ভারতীয় সংবাদপত্তে প্ৰকাশিত হইতেহে তাহা নিছক মনগড়া কল্পনা মাত্র, পূর্বেক হইতে বাস্বত্যাদী হিন্দুদের যে সংখ্যা প্রকাশিত হইয়াছে প্রকৃত সংখ্যা তাহার তুলনায় নগণ্য, পূর্ববলে পূজার সমর ৪০ হাজার শোভাযাত্রা বিনা বাধায় বাহির হইতে দেওয়া হুইয়াহে ইত্যাদি অনেক কণা মিঃ জিলা বলিয়াহেন এবং পূৰ্ব্ব-বলের কংগ্রেস নেভারা ছানীর গবর্ষে ক্টের বিরুদ্ধে মি: কিয়ার নিকট কভকগুলি অভিবোগ জানাইলে তিনি তাচ্ছিল্যভৱে উহা অগ্রাম্ব করিয়া বাঁহার বিরুদ্ধে অভিযোগ সেই বাঁকা নাজি-युक्तीत्वत निकर्ते दे विकितातार्थ याहेवात क्रम विनेता पितारहन । ঢাকার ও চটগ্রামে মিঃ বিদ্বা যে করেকট বক্তৃতা দিয়াছেন তাহাতে এই কথাই নি:সংশয়ে প্রমাণিত হইরাছে যে পূর্ববদ্ ছিন্দুদের অবস্থিতি ভাঁছার কাম্য নছে। নেতৃত্বানীয় ছিন্দুদের pressure tactics-এর খারা বিতাভিত করিয়া অসমত সম্প্রদায়কে যেরুদওবিহীন করিয়া কেলিয়া তাহাদিগকে মুসলমান বর্ষে দীব্দিত করিয়া লওয়াই পাকিস্থানী নেতাদের আসল অভিপ্ৰায়। মি: জিলা লাই ভাষাতেই কানাইয়া দিয়াকেন যে পাকিছান এলামিক রাজ্য হইবে, যে গণভন্ন সেধানে প্রবর্ত্তিত হইবে তাহা হইবে এফামিক গণতম্ব, আধুনিক মুগের ধর্ম নিরপেক গণভন্ন সেধানে চলিবে না এবং পাকিস্থানের প্রত্যেক অধিবাসীকে নিজেকে পাকিছানী বলিয়া ভাবিতে क्टेंदि । बि: क्रिन्नांत हाकांत वक्तकां नितन थाका क्टेन :

"আমাকে যে বিরাট অভ্যর্থনা জানান হইরাহে তক্ষত জামি এই প্রদেশের জনগণ, অভ্যর্থনা সমিতির চেরারম্যান ও ঢাকা-বাসীর প্রতি হৃতজ্ঞতা জানাইতেছি। ইহা না বলিলেও চলে বে, পূর্ববদ জমণে আসিরা আমি অভিশব আনন্দিত হইরাছি। পৃথিবীর অভাত হানের তুলনার একই হানে সর্বাণেকা বেনী বুললবাদের বাস হিসাবে পূর্ববদের অক্ষত্ব সম্বিক। ইহা

পাকিছানের একট শক্তিশালী খংশ। আমি বছদিন পূর্ব্বেই পূর্ববদ সকরে আসিব ভাবিরাহিলাম, কিছ হুর্ভাগ্যবশতঃ অভাভ গুরুতর প্রয়োজনের বাতিরে আমার আসা হইরা উঠে नारे। जाननाता अरे नकन अल्प्यूर्व विश्वतत किह किह অবগত আছেন। দেশ বিভাগের অব্যবহিত পরেই পঞ্চাবে যে ভয়াবহ ঘটনা সংষ্টিত হয় ও যাহার ফলে পূর্ব-পঞ্চাবের লক লক মুসলমানকে নিক বাসভূমি হইতে উৎবাত হইতে হয়। তাহার কথা আপনারা ভানেন। সদে দিল্লী ও প্রতিবেশী অঞ্লসমূহের নিরাপ্রর মুসলমানদের রক্ষা ও আশ্রয় দেওয়ার দায়িত্ব আমাদিগকে এবণ করিতে হয়। কোনও নবজাত রাষ্ট্র দক্ষতা ও সাহসের সহিত এইরূপ দারিত্ব এহণ করিতে পারিয়াছে পুথিবীর ইতিহাসে এরপ দেবা যায় না। আমাদের শক্রয়া ভাবিয়াছিল, পাকিছান শিশুকে গলা টিপিয়া হত্যা করিবে কিছ পাকিছান বিৰয়ী ও শক্তিশালী হইয়া উঠিয়াছে। ইছা কেবল বাঁচিয়াই নাই ইহার যে মহৎ উদ্বেশ্ত তাহাও ইহা সাধন করিবে।

"আপনাদের স্বাগত সম্ভাষণে এই প্রদেশকে কৃষি ও শিল্পে সমূহ করার উপর আপনার। জোর দিয়াছেন। ঐ সঙ্গে এই প্রদেশের যুবক-যুবতীদের পাকিছানের সেনাবাহিনীতে নিয়োগ, চট্টপ্রাম বন্দরের উন্নতিসাধন, পাকিছানের অভাত অংশের সহিত এই প্রদেশের সংযোগ সাধন, শিক্ষার সুব্যবস্থা এবং পাকিস্থান সরকারের সমন্ত কার্য্যে পুর্ববন্ধের যোগ্য অংশ গ্রহণের কথাও আপনারা উল্লেখ করিয়াছেন। আমি আপনাদিগকে আখাস দিতেছি বে, পাকিছান সরকার এই भक्त विषयात छेनत या है शक्त जातान कतित्व धवर পূৰ্ব্ব-পাকিছান যাহাতে যথাসম্ভব ফ্ৰন্ত তাহার সৰ্ব্বাদীণ পূর্ণতা লাভ করে তংগ্রতি সরকার দুষ্ট দিবেন। এই প্রদেশের লোকেরা যে সামরিক শক্তিসম্পন্ন ইতিহাসে তাহার নজির আছে এবং সরকার ইতিমধ্যেই এই দেশের ব্রক্দিগকে সামরিক বাহিনীতে গ্রহণোপযোগী শিক্ষা দেওয়ার স্থযোগ ও পাকিছান ভাশনাল গাড দলে ভর্মি ছওরার স্রযোগ করিরা দিয়াছেন। আপনারা নিচিত্ত থাকিতে পারেন যে, রাইরকা कार्द्धा अरे धारमान्य पूर्वकिमारक पूर्व प्राचान रमश्रम प्रदेश ।

"এখন আমি এই প্রদেশের কতকগুলি সাধারণ সমস্থা সম্পর্কে আলোচনা করিতে চাই। গত সাত মাস যাবং আপনারা যেরপে ভাবে কঠোর পরীক্ষার মধ্য দিরা কাল কাটাইরাহেন তক্ষন্ত আমি আপনাদিগকে ও আপনাদের সরকারকে অভিনন্ধন কানাইতেছি। পাকিছান প্রতিষ্ঠার পরে যে গোলযোগ ও বিশুখলা দেখা দের তাহা দমন করিরা যে ভাবে আপনাদের সরকার একটি কার্য্যন্ম শাসনব্যবস্থা চালু করিরাহেন তক্ষন্ত আমি সরকারী কর্মচারীদের বছবাদ জানাইতেছি। ১৫ই আগষ্ট তারিবে ঢাকার অব্ছিত প্রাদেশিক সরকারের অবস্থা নিজ বাসভূবে পরাশ্রমীর মৃত

ছিল। সরকারকে সঙ্গে সংক্ষে হাজার হাজার সরকারী কর্মচারীদের হুত বাসন্থানের ব্যবস্থা করিতে হয় অধচ দেশ विष्ठारंगत शूर्व्य छाका अकड़ कृष्ट मकश्य नदत दिल गांव । সরকার শাসনভাত্তিক সমস্ভার যথন সবেমাত্র হাত দিয়াছে ঠিক সেই মুমুর্ভেই দেশ বিভাগের কলে ভারত হইতে ৭০ হাজার রেলকর্মচারী ও তাহাদের পরিবারবর্গ জকমাং এই প্রদেশে আসিয়া উপস্থিত হয়। ইহা ছাড়া বিস্ফুকর্মচারিগণ চলিয়া যাওয়ায় যোগাযোগ ব্যবস্থা সাময়িক ভাবে বিকল হইয়া পড়ে। এই কারণে শাসন-সৃষ্ট এড়াইবার জন্ত সরকারকে অবিলয়ে শাসন সংক্রান্ত পুনর্গঠন কার্যো আত্ম-নিয়োগ করিতে হয় এবং এই কান্ধ প্রাদেশিক সরকার যথেষ্ঠ ক্রততা ও দক্ষতার সহিত সম্পন্ন করে। অব্যাহত গতিতে সরকারের কান্ধ চলিতে থাকে এবং সামান্তিক জীবনধারায়ও কোনপ্রকার বিশ্ব ৰুশায় নাই। কেবলমাত্র শাসনভান্ত্রিক পুনগঠন কাষ্যিই যে ফ্রুততার সহিত সম্পন্ন হয় তাহা নহে. এমনভাবে সকল ব্যবস্থা করা হয় যাহা ছারা আসন্ন ছভিচ্ছের হাত হইতে প্রদেশট রক্ষা পাইয়াছে। অবশ্র এই কার্ব্যের সাকল্যের জন্ত পূর্ব্য-বদ্বাসিগণ প্রশংসার পাত্র, বিশেষ করিয়া সংখ্যাপ্তরু সম্প্রদায়ের লোককে প্রশংসা করিতে হয় কারণ দেশবিভাগের ঠিক পরেই ভারতীয় যুক্তরাট্রে মুসলমানদের উপর অত্যাচার ও উহাদের নির্বিচারে হত্যা সম্ভেও ইঁহারা দারণ উত্তেজনার মধ্যে শাস্ত থাকেন। এই খটনা সত্তেও গত পূকার সময় হিন্দু সম্প্রদায় ৪০ হাজার শোভাষাত্রা বাহির করে কিছ একটি ক্লেও কোনরণ গোলখোগ দেখা যায় नारे. এवर সংখ্যালভূদের উপর মুসলমান সম্প্রদায় একবিন্দ অত্যাচারও করে নাই। নিরপেক সমালোচকণণ আমার সহিত এ বিষয়ে একমত হইবেন যে, ভারতীয় যুক্তরাথ্রের তুলনার পাকিছানের সংখ্যালঘুদের অনেক বেশী আছরিকতার সহিত রক্ষা করা হইয়াছিল। পাকিয়ানে শান্তিও দুখলা রক্ষিত হইরাছে। আমি সংখ্যালঘু সম্প্রদারকে বলিতে চাই य. (करन गंकाराज्ये नरक्-भाकिश्वातन प्रस्तावर प्रश्वामय-(मत तका कता स्रेतारह । जामता अकथा न्नाई छात्वर विम्ताहि ষে, পাকিছানে শান্তিভদ হইতে দেওয়া হইবে না এবং कान धकांत्र श्रष्ठामि त्रव कता स्टेट्य ना। এট य मुचलानुर्व শাসন-ব্যবস্থার প্রবর্তন, আসর ছডিক এড়াইয়া লক লক লোকের বাভ সংস্থান ও শাভি রক্ষা করা—ইহার প্রতি আমি जकरनत मु**डे** चाइडे क्विटिं होरे, कात्रन चरनरकरे विषय्रश्रिक তত শুকুত্ব দিতে চাৰেন না এবং ইহাকে ত্বত:সিত্ব বলিয়া यत्न करत्रम।

"সমালোচনা করা ও দোষ বাহির করা ধ্বই সহক কিছ প্রাদেশিক সরকারকে যে পরীকার মধ্য দিরা যাইতে হইরাছে । তাহা উপলবি করা প্রয়োজন। আমি বলিতেছি না যে, আপনাদের শাসন-ব্যবহা ফ্রাইনীন অধ্বা ইহার উন্নতি

সাধনের প্রয়োজন নাই। মুক্তিপূর্ণ সমালোচনা সর্বনাই বাছনীয় কিছ কোন কোন ক্লেজে আমি দেখিতে পাইরাছি যে, কেবল অভিযোগ ভানান ও দোষ বাহির করা কভিপর ব্যক্তির কাজ হটরা দাঁভাটরাছে। কিছু আপনাদের সরকার দিবারাত্র পরিশ্রম করিয়া যাহা করিয়াছে ভাহার জভ প্রশংসাম্বচক কিছু বলাও ত প্ররোজন। উইবারা যে সকল ভাল কাৰ করিয়াছেন তাহার প্রশংসা কানাইয়া উঁহাদের স্মালোচনা করুন। বিরাট শাসন-ব্যবস্থার খাভাবিক। আপনারা বলিতে পারেন না সবকিছ ফ্রেট্টীন हरेटव—रेश क्षेत्र हरेटा भारत ना। **जागारमंत्र रेह्ना** যে. ইছা যথাসত্তব ত্রুটিছীন ছউক। সরকারের একমাত্র উদ্বেশ্ত হইতেছে জনগণের সেবা করা—উহাদের মললসাধনের च्छारे नानाक्रभ भष बुँकिशा বাহির করিতে হটবে। মনে রাখিবেন, সরকার এখন আপনাদেরই হাতে-ভুতরাং বিশৃথলা স্ট্র করিয়া কিছু করিতে যাইবেন না। ক্ষমতা য়খন আপনাদেরই হাতে তখন উহাকে কিল্প ভাবে প্রয়োগ করিতে হয় তাহা শিখুন। শাসনযন্ত্র সম্পর্কে ভাপনাদের জ্ঞান থাকা চাই। নিয়মতান্ত্ৰিক ভাবে আপনারা এই সরকার বদলাইয়া অভ সরকার ত্বাপন করিতে পারেন. ব্দবক্স যদি আপনাদের ব্দসন্তোষ ততটা উত্তাই হইয়া পাকে। সমন্ত ক্ষমতা যথম আপনাদের হাতে তথন বাঁহারা রাষ্ট্র পরিচালনা করিতেছেন তাঁহাদিগের সহিত বৈর্যা বরিষা আপনাদের সহযোগিতা করিতে হইবে, তাহাদের প্রতি সহামুভূতিশীল হইতে হইবে। তাঁহাদের আপদে বিপদে সাহায্য করিতে হইবে, কারণ তাহারাই আপনাদের জভাব-অভিযোগ দূর করিবেন। তাহা না করিয়া আপনারা কি লম্ব পাকিস্থানকে নির্ব্দেছিভার হারা ধ্বংস করিতে চাহেন ? (না-না ধ্বনি।) আপনারা কি ইহাকে গড়িয়া ভুলিতে চাহেন ? (হা। হা। ধ্বনি।) তাহা যদি চাহেন তবে নিজেদের মধ্যে क्षेका ७ मश्र्विक स्ट्रीत क्रिके कर्मन ।

"আমি আপনাদিগকে বলিতে চাই যে, আমাদের মধ্যে ভাঙাটীয়া শত্রুচর রহিয়াছে। উহারা পাকিছানের মধ্যে বিভেদ স্ষ্টি করিয়া উহাকে নাশ করিতে চাহে। আপনা-দিগকে সতর্ক থাকিতে হইবে।

"আমি শুনিয়াছি ছিন্দুদের কেছ কেছ এই প্রবেশ হইতে চলিয়া গিয়াছে। অন্ধ লোকের এই খান ত্যাগকে বাড়াইয়া দশ লক্ষের একটা অবিখাভ সংখ্যারপে থাড়া করিয়া ভারতীর সংবাদপত্রসমূহে প্রচার করা হইতেছে ইহাও আমি দেখিয়াছি। এই সংখ্যা ব্ব বেশী হইলে ২ লক্ষ্ হইবে, সরকারীভাবে ইহাই বলা যায়। তবে আমি ইহা জানিয়া সভ্তঃ হইয়াছি যে মাইনরিটিদের উপর কোনয়প জভায় ব্যবহার এই খানত্যাপের কারণ নহে। তাহাদের উপর কোন উংশীয়ন তো হয়ই নাই, বয়ং ভায়তীয় ভোমিনিয়নে মাইনরিটিদের সহিত যে হ্বাবহার

হইতেহে এবানে সেরপ কিছুই হয় নাই : এবানকার মাইনরিটরা ভারতীয় ডোমিনিরনের মাইনরিটদের চেয়ে অংশক বেশী স্বাধীনতা ভোগ করিতেছে এবং তাছাদের প্রতি অনেক ভাল ব্যবহার করা হইতেছে। ভারত-পাক্সিয়ান মুদ্ধ সম্বদ্ধে ভারতীয় ভোমিনিয়নের কোন কোন সমরলিন্দু নেতার অবিবেচনাপ্রস্থত উক্তি, ভারতীয় ইউনিয়নে মাইনরিটদের উপর যে সব ছর্ব্যবহার হইতেছে পাকিস্থানে তাহার স্বাভাবিক প্রতিক্রিরার আশঙ্কা এবং আরতের কোন কোন নেতা কর্ম্বক পাকিছানের মাইনরিটির হরবছার কাল্পনিক বিবরণ প্রচার এই স্থানতাাগের প্রকৃত কারণ। এখানে ১ কোট ২০ লক হিন্দু শান্তিতে ও সুধে বাস করিতেছে এবং স্থান ত্যাগ করিতে অধীকার করিয়াছে, ইহার ঘারাই বুকা যায় পূর্ববেদ মাইনরিটির উপর অত্যাচারের কাছিনী কত বড় মিধ্যা। আমি আগে যাহা বলিয়াছি, এখনও তাহারই পুনরুক্তি করিতেছি:--মাইনরিট্টদের সহিত আমরা ছায়সঙ্গত ও ভাল ব্যবহার করিব। ভারতবর্বের মাইনরিটদের জীবন ও সম্পত্তি যতবানি নিরাপদ এখানকার মাইনরিটির জীবন ও সম্পত্তির নিরাপতা তার চেয়ে অনেক বেৰী। আমরা শান্তি আইন ও শুখলা রক্ষা করিব এবং জাতি-বর্গ্য-নির্কিশেষে সকল নাগরিকের অধিকার অজুর রাখিব।

"পূর্ববঙ্গের" অবাঙালী মুসলমানদের প্রতি কোন কোনও লোকের মধ্যে একটা বিরূপ মনোভাব বহিয়াছে। বাংলা অথবা উর্ম পাকিস্থানের রাষ্ট্রভাষা হইবে তাহা লইয়াও কিছু উত্তেজনার স্ঠি হইয়াছে। আমি আমার ছাত্রবন্ধুদিগকে বলিতে চাই যে, জাপনারা যদি রাজনৈতিক দল-বিশেষের ছারা পরিচালিত হন তাহা হইলে মারাত্মক তুল করিবেন। মনে রাধিতে হইবে যে. বৈপ্লবিক পরিবর্তন হইয়াছে। আপনারাই ত পাকিস্থানের ভরসায়ল। রাষ্ট্রের হিতার্থে আপনালের কর্ত্তব্য পড়ান্ডনায় মনোনিবেশ করা। আপনারা যদি ছাত্রাবস্থাতেই শক্তিকে অয়ধা ব্যয় করিয়া কেলেন তাহা হইলে রাষ্ট্রের সেবা করিবেন কিব্রুপে গ শত্রুরা প্রাদেশিকভার नाय विरुष एक्केंद्र राष्ट्री कदिए एर । त्रमाक्षण हरेए धरे প্রাদেশিকতার বীৰ দূর করিতে না পারিলে আমরা এক ছাতি গঠন করিব কিল্পণে ? বাঙালী, পাঞ্চাবী, সিমী, বালুচী প্রভৃতি হিসাবে নিজেকে পরিচর দিলে চলিবে না। ১ হাজার ৩ শত বংসর পূর্বের আমরা যে শিক্ষা লাভ করিয়াছিলাম তাহা ভূলিতে বসিয়াছি। আমি বলিতে চাই যে আমরা সকলেই এখানে বিদেশ। বাংলার আদি অধিবাসী কাহার।? আৰু যাহার। বাস ক্রিতেছে তাহারা নহে। ত্বতরাং 'আমি বাঙালী', 'আমি পাঞ্চাবী' না বলিয়া বলুন 'আমি মুসলমান।' ইসলাম আমাদিগকে এই শিক্ষাই দিয়াছে। যেখানে যে অবস্থাতেই পাকুন না কেন আপনি মুসলমান। আমরা এখন এক বিরাট কাতি: এক বিশাল অঞ্চলর অবিবাসী। ইহা কোনও সম্প্রদার-

বিশেষের বাসভূমি নছে। ইহা আমাদের সকলের। প্রাদেশিকতার মত সিয়া, স্মির্লাতীয় বর্মীয় বিভাগও অভিশাপ বিশেষ। আৰু আর আমাদের এই সরকার ইংরেকের হাতে নাই। তাহারা ভারতকে যথাসন্তব শোষণ করিয়া সিয়াছে। বর্তমানে সবকিছু আমাদেরই হাতে। আমেরিকার কথা ধরুন। আমেরিকা যথন স্থাবীন হয় তথন তাহাদের মধ্যে করাসী, আর্লাই, ইতালীয় প্রভৃতি কত আতিই না হিল। তাহারা অনেক বিপদ অতিক্রম করিয়া এক লাতি হইয়াছে। উহারা কেবল একটি কথাই বলে আমি আমেরিকান। অল্ক্রপ ভাবে আমাদেরও বলিতে হইবে আমি পাকিছানী।

"আমি পুর্বেই বলিয়াছি যে মুসলগানদের মধ্যে বিভেদ স্ট্রীর উদ্বেজ ভাষা সম্প্রা স্ট্রী করা হটরাছে। আমি আনন্দিত-আপনাদের প্রধান মন্ত্রী এই সম্পর্কে কোনও গোলযোগ ঘটতে দিবেন না বলিয়া দুচ্প্রতিজ্ঞ। বাংলা এই প্রদেশের রাষ্ট্রভাষা হইবে কি না তাহা নির্মাচিত জন-প্রতিনিবিদের বিবেচা বিষয়। আমার কোনও সন্দেহ নাই যে, প্রদেশবাদীর ইচ্ছামুসারে যথাসময়ে এই প্রশ্নের মীমাংসা হইবে। আমি স্পষ্টভাবে ধলিতে চাই যে, বাংলা ভাষার ব্যাপার লট্যা আপনাদের স্বাভাবিক জীবনহাতার বিপর্যয় ষ্টান হইবে-এই অভিযোগের মূলে কোনও সত্য নাই। **श्राप्त काश कान है** इट्टा काश काशनात्मत्रहे दिल्ला : তবে পাই জানিয়া রাধুন যে, পাকিস্থানের রাইভাষা উর্ফাছা चांत कि हे हरेत ना। याहात जब कि ह कतिए ठाटन তাঁছারা পাকেস্তানের শক্ত। পথিবীর অক্তান্ত জাতির ইতিহাস একটমাত্র রাষ্ট্র ভাষা ছাড়া কোন রাষ্ট্রের সংহতি বজায় থাকিতে পারে না। আমি আপনাদিগকে বিজ্ঞাস। করিতে চাই, 'আপনারা কি পাকিস্থানে বিশ্বাস করেন?' (हा। हा। क्षिन।) আপনার। কি পাকিস্থান পাইয়া সুখী (हैंगं, हैंगं श्वनि।) ज्वांभनाता कि চार्ट्न रा. পাকিস্থানের কোনও অংশ ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রের সহিত যুক্ত रुष ? (ना, ना क्वनि।) यपि हेराहे जाशनारमद जिल्लाय হয় তাহা হইলে শপৰ করুন যে, আপনি মুসলিম লীগ দলে যোগ দিয়া যথাসাধ্য পাকিছানের সেবা করিবেন।

"জনেকেই বলিয়া থাকেন যে পূর্ধবদ্ধ পাকিছানের জন্তান্ত জংশ হইতে বিচ্ছিয়। ইহা সত্য যে, পূর্ব ও পশ্চিম পাকিছানের মধ্যে যথেষ্ট দূরত্ব বর্তমান। কিছু ভাবিবেন যে, জামরা ঢাকার ও পূর্ববদের গুরুত্ব উপলব্ধি করিয়াছি। এবার জামি মাত্র এক সপ্তাহের জন্ত এবানে জাসিয়াছি কিছু রাষ্ট্র-প্রধান হিসাবে আমি এবানে প্রায়ই জাসিব এবং বছদিন থাকিব। পাকিছানের মন্ত্রিগণও এবানে সচরাচর জাসিবেন ও যোগাযোগ রক্ষা করিবেন। আপনাদের মন্ত্রীরাও পাকিছানের রাজ্বানীতে গিয়া নালাক্ষপ পরামর্শ করিবেন। বৈশ্য ধরুন। জ্বাপনাদের সহায়তার পাকিছান এক বিরাট শক্তিশালী রাষ্ট্রে পরিণ্ড হইবে।

পরিশেষে সকলের মঙ্গলের ব্রুত আমি আপনাদিগকে যাবতীর অভাব অপুবিধা সন্থ করার ব্রুত আবেদন জানাইতেছি। এইভাবে আপনার। পাকিস্থানকে কেবল ক্ষনজের দিক দিয়াই বে পৃথিবীর সর্ব্বরুৎ রাষ্ট্রে পরিণত করিতে থারিবেন তাহা নহে, পরস্ক ইহা এইক্সপ শক্তির আকর হইবে যাহা সকলেরই প্রভা আকর্ষণ করিবে। আপনাদের মঙ্গল ইউক।"

সাম্প্রদারিক প্রয়োজনে একজন রাষ্ট্রনায়ক কত দূর নির্জ্বলা বাজে কথা বলিতে পারেন, পূর্ববেজের মাইনরিটদের সপত্রে মি: জিল্লার মন্তব্য তাহারই পরিচয়।

পূর্ববঙ্গের প্রকৃত অবস্থা

পূর্ববঙ্গে হিন্দুদের ৪০ হাজার শোভাযাত্তা নির্বিবাদে যাইতে পেওয়া হইয়াছে এবং সেখানকার হিন্দুদের **ধর্মকর্মে** কোন বাধা দেওয়া যে হয় না ইহাই তাহার শ্রেষ্ঠ প্রমাণ-মি: জিল্লার এই উক্তির অসারতা রাজসাহীর জননায়ক শ্রীপ্রভাসচন্ত্র माहिकी भूक्वक वाक्या-भविष्ठानत व्यक्तिकाल एक्याहिया দিয়াছেন। পূর্ববঞ্চের বর্তমান নেতাদের মধ্যে সবচেয়ে তেজ্বিতার পরিচয় দিয়া আসিয়াছেন বরিশালের সভীন সেন এবং রাজসাহীর প্রভাস লাহিড়ী। একটি ছাঁটাই প্রভাব উখাপন করিয়া লাখিড়ী মহাশয় বলেন যে পূর্ববঙ্গের শাসন-ভার তিনটি শক্তির হাতে রহিয়াছে বলিয়া মনে হইতেছে. প্রথম গধর্মে উ. দ্বিতীয় মুসলিম ভাশনাল গার্ভ এবং ভূতীয় গুঙা। তাঁহার নিকের অভিজ্ঞতা এই যে শ্রাশনাল গার্ড এবং গুঙারা প্রবের্নেটর চেয়ে জনেক বেশী শক্তিমান। গ্রীযুক্ত माहिएी कर्डक 'थला' मक वावहादा श्रविष्टा कर्नक मुनलिय শীগ সদম্য আপত্তি করিলে তিনি তীত্রকণ্ঠে তাহার কবাব দিয়া বলেন যে খণ্ডা সব সমাকেই আছে। তারপর লাহিড়ী মছালয় বলেন, "ঢাকার আবহুমানকাল প্রচলিত জ্বাষ্ট্রমীর শোভাযাত্রা পবর্ণর, প্রধানমন্ত্রী এবং অভাভ মুসলিম নেতাদের উপদ্বিতিতে গুঙারা ছোর করিয়া বন্ধ করিয়া দিয়াছে। তাঁহারা শোভা-যাত্রীদিগকে অঞ্জসর হইতে দিতে পারেন নাই। রাজ্যাখীর সরহতী নিরম্পন শোডাযাত্রাও করেকটি গুঙার আপত্তির ভত বন্ধ করিয়া দিতে হুইয়াছে।

বরিশালে পটুয়াখালি শহরেও সরস্থতী নিরঞ্জন শোভাযাত্র।
বন্ধ করিয়া দিতে হইতেহে ইহাও আমি আনি। প্রবান
মন্ত্রী থাজা নাজিমুখীনকে সমন্ত ঘটনা জানানো হইয়াছে, কিছ
তিনি শোভাযাত্র। লইয়া যাওয়ার ব্যবস্থা করিয়া দিতে
পারেন নাই।"

পাকিছানে যাহারা বাস করিতে চাহিতেছে তাহাদের সহিত কিশ্পপ ব্যবহার করা হইতেছে তার একট উৎফুঠ বিবরণ দিয়াছেন শ্রীমতী নেলী সেনগুপ্তা। পূর্ববঙ্গ ব্যবহা-পরিষদে চট্টগ্রামের হিন্দুরের উপর উৎশীন্তনের নিদর্শন তিনি দিয়াছেন এবং অন্ত সমন্ত বিলাতেও উহাই ঘটতেছে।

ঞীমতী নেলী সেনগুৱা বলেন যে, সংখ্যালয়ু সম্প্রদারের ব্যবসারীদের উপর অসম্ভব চড়া ছারে আরকর বার্ব্য করা

ছইরাছে। যে ব্যবসায়ী গত বংসর আয়কর দিরাছেন ≥০ হাজার টাকা, এ বংসর তাহার উপর চাপানো হইরাছে 8 लक्ष होका। जांत्र अक्ष्मन गण वरनत निशाहन > होकांत. এবার তাঁহার উপর কর বার্য হইরাছে co হালার টাকা। এই অবস্থায় বহু ব্যবসায়ী পলাইতেছেন এবং তাঁহাদের সম্পত্তি নিলাম করা হইতেছে। সংখ্যালন্তদের যাহাদের নিজের বাদী আছে তাহাদের প্রত্যেককে বাদী হাদিতে বাধ্য করা হ্ইয়াছে। ইহাদের মধ্যে একুক্ন গুহুহার। হুইয়া আশ্রয় ৰুঁলিতে খুঁলিতে হৃদ্যৱের ক্রিয়া বন্ধ হইয়া মারা গিয়াছে ইছা তিনি নিজে জানেন। একজন কন্ট্রাক্টর বহু জনকল্যাণ প্রতিষ্ঠানে টাকা দিয়াছেন, তাহাকেও এক সপ্তাহের মধ্যে বাড়ী ছাড়িতে বাব্য করা হইয়াছে। ইহাদের মত লোকেরাই যদি এই ব্যবহার পান, তবে সাধারণ লোকের অবস্থাটা কি তাহা সহকেই বোৰা যায়। মুসলমান নেতাদের অনেকেই মুখে বলিতেছেন যে সংখ্যালগুরা দেশ ছাড়িয়া চলিয়া যায় ইহা তাঁহারা চা হেন না, তাঁহাদের আচরণ কিন্তু মুধের কথার সম্পূৰ্ণ বিপন্নীত হইতেছে।

পূর্ববেশের দূর্ছিত থামের হিন্দুদের অবস্থা কিরুপ নিয়-লিখিত পত্রধানি হইতে তাহা বুঝা যাইবে। পত্রপ্রেরক উংশীভি ত হইবার আশস্কায় নামধাম গোপন রাধা হইল,—

"সন্দীপের পরিস্থিতি বড়ই খারাপ হইরা পড়িরাছে। কাল রাত্রে চক্রবর্তী মহাশরের বাড়ীর ঘরের কপাট ভালিয়া একদল লোক টাকার হুল্প তাঁহাকে বেদম মারপিট করিয়াছে ও তাঁহাকে দা দিয়া কোপাইয়াছে। তাঁহার অবহা সংকটাপন্ন। তাঁহাকে টাউনে আনা হইয়াছে। মাধায় হাতে ও গায়ে বহু হুখম হুইয়াছে। গোলমাল শুনিয়া ঘটনাম্বলে দৌড়াইয়া আসিয়াছিল। কিছু সেও প্রস্তুত হুইয়া পুকুরে কাঁপ দিয়া প্রাণ বাঁচাইয়াছে।

এই ঘটনার তিন দিন আগে · · · · · বাবুর (আছত ব্যক্তির)

খরে সিঁদ দিয়াছিল কিছ কিছু নিতে পারে নাই। গত ৫ই মর্কট
মুছাপুর প্রামেও এক দালার্গতের বাড়ীতে একদল লোক রাত্রে
ছুকিরা খরের বেড়া কাটিয়া লোকজনকে মার্লিট করিয়া সমস্ত

জিনিষ্পত্র লইয়া গিয়াছে। এই ঘটনায় দালা-ছুগতেরা ভীব্দ
ভয় পাইয়া গিয়াছে। লোকের মনের বল নাই ছইয়া গিয়াছে।

লোকের মনের বল নাই হওয়াই পূর্ববাদের হিন্দুর সর্বাদের প্রধান কায়ণ গাঁডাইয়াছে। পূলিসে এজাহার দেওয়া ভর্ নিক্ষল নহে, অবিকতর বিপদের কারণ হইতে পারে ইহাই সাবারণ লোকের বারণা। পূলিস ও উচ্চতর অবিকারীবর্গের নিকট প্রতিকারের ক্রমাগত চেষ্টা করা এবং লোকের মনে দলগত সাহসের পুনঃপ্রতিষ্ঠা করা বাহাদের কর্ত্ব্যা, তাঁহারা তো সর্বাপ্রেই পলাইয়াছেন। এবন সেই সব পেশাদার "কংগ্রেসী" নেতার বদলে প্রস্কৃত সত্যাগ্রহী কর্মীর প্রয়োজন, নহিলে ভয়ার্ড লোক বিক্ষত ও বর্ষিত সংবাদে আরও ভয়াকুল হইডে থাকিলে।

যশোষ্ত্রের প্রকৃত ঘটনা এইরূপ :

গত ১৮ই মার্চ একলল বিহারী মুগলমান লাঠি ও ছোরা লইয়া দিবা বিপ্রহুরে বাজারের কতকগুলি দোকান আক্রমণ করে। ছান্ট কালেইরীর নিকটে। কিছু বাজালী হিন্দু ও মুগলমানের দোকান লুঠ হয় এবং করেকজন ছবম হয়। পুলিশ আসিলে ইহারা প্রহান করে।

ইহার কিছুক্প পরে আর একট বড় দল কালেটরীর সন্থা ক্যা হইরা লাটি ও ছোরা লইরা আক্ষালন করিতে থাকে। কর্ত্বপক্ষ তাহাদের ব্রাইরা ভ্রাইরা ঘরে কিরাইরা দেন। ইহাদের পারেভা করিবার কোন ব্যবস্থা হয় না।

সন্ধার দিকে ষ্টেশনে বরিশাল এক্সপ্রেস আসিরা পৌছিবা মাত্র ইহারা আবার আবিভূতি হয় এবং বেপরোয়াভাবে লাঠি ও ছোরা চালাইতে আরম্ভ করে। দ্রীলোক ও শিশুসহ ১১ ছন ক্ষম হয়, তর্মধ্যে একজন মারা গিয়াছে। বিহারী মুসল-মানদের আড্ডা হইতে বেআইনি আয়েয়াল্ল পাওয়া গিয়াছে কিছ কাহাকেও গ্রেপ্তার করা হয় নাই। ষ্টেশনে পুলিশ ছিল, তাহারাও গুভাদের বাবা দের নাই। ম্যাকিষ্ট্রেট বিহারী মুসলমান, তিনি ঘটনাটা চাপা দিবার চেষ্টা করিতেছেন এবং প্রধান মন্ত্রী নাজিমুখীন সাহেবও সেই চেষ্টাতেই ব্যন্ত।

পূর্ববদে বাঁহারা রহিরাহেন তাঁহাদের অবছা উপরোক্তরূপ। জীগতীন সেন, জীপ্রভাগ লাহিড়ী প্রমুধ নেতৃরন্ধ প্রাণপণ
চেঠা করিরাও কোন প্রতিকার করিতে পারিতেহেন না।
প্রধান মন্ত্রী নাজিমুখীন সাহেবও ঘীকার করিরাহেন যে চুরি,
ভাকাতি প্রভৃতি বড় বেশী চলিতেহে কিছু উহা বছ করিবার
ক্তু কঠোর বাবছা অবলঘন করিতে তিনি অপারগ। ট্যান্ত্র,
বাড়ী দখল প্রভৃতি সম্পর্কে জীমতী নেলী সেনগুপ্তা এবং আরও
অনেকে যে সব অভিযোগ করিরাহেন তাহারও প্রতিবিধান
হইতেহে না। উদ্ভুত পত্রধানি হইতে দেখা বাইবে যে হিন্দু
নারী নির্বাতন এবং হিন্দুর বাড়ী ভাকাতি হইলে লোকে
ঘানার এজাহার দিতেও সাহস পাইতেহে না। অবচ পূর্কবঙ্গে
এককন উপর্ক্ত দৃচ্চিত্ত ভেপ্ট হাই কমিশনার বসাইরা এই
অবহার প্রতিকারের চেঠাটুকু অভতঃ অবিলহে আরম্ভ হইতে
পারে।

উভ্যক্ত হইরা বাঁহার। চলিরা আসিতেছেন বা কার্য্য-ব্যপদেশে বাঁহাদিগকে অল্পদিনের জন্ত কলিকাতা আসিতে হইতেছে তাঁহাদের উপর রেলের ষ্টেশনে ষ্টেশনে অবর্ণনীর অত্যাচার ও স্বৃত্য আরম্ভ হইরাছে।

মরমনসিংক্রে একজন লোকের অভিজ্ঞতার নিয়লিখিত বিবরণ ভারত'-এ প্রকাশিত হইয়াছে:

ভূক্তভোগী ভদ্রলোক করেকজন মহিলাকে লইরা সিরাজ-গঞ্জের পথে কলিকাতা যাইতেছিলেন। প্রথম জগরাধ-গঞ্জে পুলিস তাহাদিগকে অভ্রশন্তের গোঁজে তদ্ধাস করে। দৌজাবোগে সিরাজগঞ্জে সিরাই ভদ্রলোক বিপদে পড়েন,

দাঁভাইবার যারগা নাই। তিনি একজন এ-এস-এম'কে বলিরা মহিলাদিগকে একটা খরের বারালার বসাইয়া অপেকা করিতেছিলেন এমন সময় অপর একজন আসিয়া গালাগালি করিয়া তাছাদিগকে সেধান ছইতে বাহির করিয়া দেয়। চিকেট করিতে গিয়া ভত্রলোক ইকীর ক্লাসের উক্টে পাইলেন না। উক্টে ভরিতে ছইল বার্ড ক্লাসের--ভাও কলিকাভার টকেট মিলিল না। দর্শনার টকেট পাওরা গেল। ইহার ভর অভিরিক্ত দক্ষিণা দিতে হইল ৫ টাকা। মাল বুক করার জন্তও অতিরিক্ত ৫ দিতে হইল। একজন ভাশনাল গার্ড আসিয়া দাঁড়াইলেন। তিনি নিলেন ৫ টাকা। ভারপর একটু আগে ট্রেনের দরজা খুলিয়া মেয়েদের বসিবার वावश क्रिया पिवात चन्न्राज द्विन এक्कामिनात निलन টিকিট পিছু একটাকা করিয়া। ভদ্রলোক অকুমান করেন, নানা প্রকারে হাজার টাকার উপরে টাকা আদায় করা হইয়াছে। 🗻

দীশ্বদীতে অবছা আরও ধারাপ। আগেই ধবর পাওরা গিয়াছিল যে, সেধানকার অত্যাচার অসহ। করেকজন যাত্রী গার্ড সাহেবকে কিছু টাকা গছাইয়া তাভাতাড়ি গাড়ী ছাড়িবার ব্যবছা করেন, যাহাতে অত্যাচারিগণ বেদী সময় না পায়। কিছু গাড়ী ছাড়িবামাত্র কয়েকজন খণ্ডা শ্রেণীর মুসলমান গাড়ীতে উঠে এবং কথা নাই বার্ডা নাই চারটি টাছ তাহাদের গাড়ী হইতে জানালা দিয়া বাহিরে কেলিয়া দেয়। সেগুলি নাকি ধানাতল্লাস করা হইবে। অথচ ঐ লোকগুলি কোন সরকারী লোক নয়। বাল্লগুলির মালিকগণ্ড নামিয়া পড়েন। মহিলা-গণকে একজন পরিচিত ব্যক্তির জিলা করিয়া দিয়া বিনি এই বর্ণনা দিতেছেন তিনিও নামিয়া পড়েন। উাহার বাল্পও নামাইয়া নেওয়া হইয়াছিল।

বে-সরকারী লোকগুলি জিনিয়পত্র রেল পুলিসের নিকট লইরা যায়। সেবানে একজন দারোগা ছিলেন। উাহাকে সকলেই ছোটবাবু ডাকিডেছিল। ছোটবাবু জানাইয়া দিলেন, যাহায়া জিনিব দানি করিবে তাহা-দিগকে প্রেপ্তার করিয়া নাটোর পাঠান হইবে। আর যাহায়া দাবীদাওয়া না করিবে তাহাদের মাল 'দাবীদার নাই' বলিয়া সরকারে জমা দেওয়া হইবে। আমাদের জন্তলোকট জিজাসা করেন পুলিস নিজেয়া জিনিমপত্র না বরিয়া বাজে লোক কেন জিনিম বরিয়া প্রধান মন্ত্রীর আদেশের জন্তথা করিতেছে? কলে ছোটবাবুট একট রুল দিয়া তাহাকে আঘাত করেন এবং সলে সলে প্রবান মন্ত্রীও জন্তলোকের উদ্বেক্ত কুংসিত জন্ত্রীল গালাগালি করেন। জন্তলোক তাহার জিনিমপত্রের মারা ছাভিতে পারিলেন না। জনেক জন্ত্রর বিনয় করিলেও ছোটবাবুর

করণার উদর হইল না। তিনি বলেন একট দিরাশলাই'র কাঠিও ভারতীর ইউনিয়নে নিচ্চে দেওরী হইবে না।

একজন জভিবোগ করিলেন, তিনি তিন দিন যাবং জাটক আছেন। তাঁহার এমন পরসা আর হাতে নাই বে, তিনি কিছু কিনিয়া মুখে দেন। আমাদের সংবাদদাতাট পনরট টাকা ছোটবাবুকে দিয়া আবার মরমন-সিংহে কিরিয়া আসিবেন, এই সর্জে মুক্তি পান। তাঁহাকে ময়মনসিংহের টকেট কিনিয়া টেনে উঠাইয়া দিয়া ছোটবাবু আবস্ত হন।

এক ভদ্রলোক তাঁহার বিলার ম্যাবিস্ট্রেটের আফিসের ° শীল দেওয়া ছাড়পত্র দেখাইয়াও মুক্তি পান নাই।

. পূर्वारामय हिन्द्रामय छविष्ठः मद्दाद् , छात्रछ-मत्रकात वा পশ্চিমবঙ্গ-সরকার কেছই পরিস্কার করিরা কোন কণা বলিতেছেন না। অনিশ্চিত ও সংশ্বাকুল অবস্থার উপরোক্ত পরিবেশের মধ্যে বাস করিয়া মাল্লুষ দিশাহারা হইতে বাব্য এবং ইহারই ফলে এক দল চলিয়া আসিতেছেন, অঞ্চেরা মেরুদ্ বিহীন হইয়া অত্যাচারীদের হাতে আত্মসমর্পণ করিতেছেন। বলা বাহুল্য এই ছুইটাই সমান ক্ষতিকর। এক কোট কুভি লক হিন্দুর এক পঞ্মাংশও চলিয়া আসিতে পারিবেন না ইছা নিশ্চিত। আবার তাঁহাদের নেতৃত্বানীয় মধ্যবিত্ত ও সমূদ্দিশালী হিন্দুরা চলিয়া আসিলে নিম শ্রেণীর হিন্দুরা শেষ পর্যান্ত মুসলমানবর্দ্ধ গ্রহণ করিতে বাধ্য হইবে ইহাও নিশ্চিত। মোলারা এখনই প্রায়ে এই উদ্বেক্তে খোরাকেরা ভারত করিয়া দিয়াছে। পাকিছান প্রতিষ্ঠা নেতারা মানিরা লইয়াছেন কিছ জনসাধারণ মানিয়া লয় নাই। নেতারা মানিয়াছিলেন এই আশাম যে উহাতেই হয়ত সাম্প্রদায়িক বিরোধ এবং হানাহানির অবসান ঘটবে। কিছু তাহা হইল না। পশ্চিম পাকিহান স্বলাভ করিয়াই তাহার অভভুক্ত সমস্ত ভিন্ন বর্ত্তীকে বিতাভিত করিল এবং কাশ্মীর আক্রমণ করিয়া পাকিছানের সীমানা বিভারে অঞ্জসর হটল। পাকিছানের উচ্চতম নেতাদের সঙ্গে আথোৰ অসম্ভব ইছা কাশ্মীরের ব্যাপারে প্রমাণিত হইরাছে।

এখন সমস্যা পূর্ব্বক। পূর্ব্ব বাংলার মুসলমানের। নিজেদের
পাকিছানীক্রপে কাহির করিরা পঞ্চাবের লাস হইরা থাকিতে
বীকার করিতেছে না, উর্কুকে একমাত্র রাইভাষা বলিরা
মানিতেও তাহারা রাজী নর—তাহারা বাংলা ভাষাকে রাই
ভাষা করিতে চার। এদিক দিরা পাকিছানের চেরে বাংলার
সহিত তাহাদের যোগ ঘনিষ্ঠতর। মিঃ ক্রিয়া ঢাকার আসিরা
বাঙালী মুসলমানদের বাঙালীত্ব লাইবার ক্রম্ভ অন্তন্ম-বিনর
এবং তর্জনগর্জন সবই করিরা সিরাছেন। ক্রিছ ঢাকা বিশ্ববিভালর সমাবর্ত্তবনে ক্রিয়া সাহেবের বক্তৃতার বিরুদ্ধে বাঙালী
মুসলমান ছাত্রেরা কারেদে আক্ষমের মুবের উপর প্রতিবাদ
করার ইহাই বুবা বাইতেছে বে শিক্ষিত মুসলমান ভর্মণ হল

কিয়া সাহেবের অভার ছতুম এবং কবরকতি নতশিরে মানিয়া লইবে না। ঢাকা সমাবর্তনের এই ছোট অবচ অর্বপূর্ণ ঘটনাটকে 'এন' পত্ৰিকা হিন্দুদের খাড়ে চাপাইয়া লিবিয়াছেন যে ছিন্দু হাত্রেরাই কারেদে আৰমের মুখের উপর তাহার কথার প্রতি-राम कतिया 'मा, ना' रिलदाहिल। रक्षणाया आत्मानत्व দারিত্ব হিন্দুদের বাড়ে চাপাইরা তাহাদিগকে পাকিস্থানের শক্ত বলিয়া খাড়া করিবার চেষ্টা খাখা নাজিমুখীন নিজেও করিয়াছিলেন কিন্তু শেষ পর্যন্ত সেই মনোভাব চাপা দিতে বাধ্য হইরাছেন। যশোহর প্রেশনের ঘটনাও ইহাই বুঝাইতেছে যে হিন্দুদের উপর দোষারোপ করিয়া ভাহাদের উপর चाक्रमण होगारेयात धारान कात्रण मुभनमानदण्य निद्याद्य অভর্কিরোধ চাপা দিবার প্রয়াস। পূর্কবৃদ্ধে হিন্দুদের উপর আক্রমণের অর্থ এত লাই যে ভারতীর ইউনিয়নের তর্জ হইতে উহার প্রতিকারের জন্ম এত দিন পুব জোরালো ভাবে রাষ্ট্রনৈতিক চাপ দেওয়া উচিত ছিল। নচেৎ মুসলমানদের প্রত্যেকট অন্তর্কিরোধ এবং দলাদলি চাপা দেওৱার খন্ত হিন্দুরা লক্ষ্যখানীয় হইয়া উঠিলে সেধানে তাহাদের वांज कता अज्ञ इटेटव । शूर्ववरकत हिन्दुरात कांना अवर বোৰা দরকার যে তাহার। অসহায় নহে, তাহাদের পিছনে ভারতীয় ইউনিয়নের প্রবল শক্তি রহিয়াছে, মুসলমানেরা ইহা উপলব্ধি করিলে হিন্দুর উপর অত্যাচারে সাহসী হইবে না। দক্ষিণ-আফ্রিকার বা সিংহলের ভারতবাসীদের ভঙ ভারত-সরকার যতটা মনোযোগ দেন, পুর্বাবদের হিন্দুদের জ্ঞ সেটুকুও দেওয়া হইতেছে না ইহা বস্তত:ই ছঃখের বিষয় এবং ভারতীয় ইউনিয়নের পক্ষে চরম দৌর্বল্যের পরিচয়।

পুৰ্ব্বক হইতে বাহারা বাস্তভিটা হাভিয়া আসিতেহেন এবং বাঁহারা আসিতে ইচ্চুক তাঁহাদের উভয়েরই কানা দরকার যে স্বাবলম্বন ভিন্ন বর্তমান অবস্থায় উপায় নাই, কারণ কেন্দ্রীর সরকার যে অর্থসাহায়্য করিবেন তাহা অকিকিংকর। যে কয়েক লব্দ লোক আসিৱাছেন তাহাদের মধ্যে ৫ কোট টাকা कांत्र कविश मिल कमर्थिण २०१०० है। का शएए । ३ काहि २० লক্ষ লোক ঐ টাকার উপর ভরদা করিয়া চলিয়া আসিতে চাহিলে ক্রপ্রতি পাঁচটা টাকাও পভিবে না। তার পর ভালে ভানাভাব। ইংরেক যাওয়ার সময় পশ্চিমবঙ্কের আয়ভ্তম এমন করিয়া দিয়া গিয়াছে যাহাতে পূর্ববঙ্গের সমস্ত ছিন্দু কিছতেই এবানে না আসিতে পারে। বিহার বাঙালী এলাকা षाणित ना वाव बात्कला वाप हेरा वृवाहेशा विश्वाद्य अवर তাঁহার অভুগত সেবক ডা: প্রকুল ঘোষ শাই ভাষার ভাষাইয়া-ছেন যে উহা হইবার নহে কারণ ইহাতে ওয়াকিং কমিটর মত নাই। বিহারে গিরা বাঙালীর পক্ষে বাঙালী বিসাবে বাস করা ছব্রহ হইবা উঠিতেছে। আসাম দরভা বভ করিতেহে। এই অবহার ভারত-সরকারের সাহায্য পাইলেও পূর্ব্ব বাংলার হিন্দু ভিন্ন প্রদেশে বসতি স্থাপন করিতে পারিবে

না, প্রাদেশিক সরকারগুলি তাহাদের কীবন নান। ভাবে ছর্বাই করিরা এবং কীবনবারোর পথ সভূচিত করিরা তাহাদের বাস অসভব করিরা তুলিবে।

পূর্ববদ হইতে বীহারা আসিয়াছেন তাঁহাদের আশ্ররদানের ঘর্ষায় ব্যবহা করিয়া দেওয়া উচিত এবং ভারত-সরকার ও পশ্চিমবদ-সরকার এত দিনে এ বিষয়ে কতকটা অগ্রণী হইয়াছেন। তবে এই সাহায্য অসহার ও অসমর্বরাই যাহাতে পার ভাহা দেবা প্রয়োজন। পঞ্চাবের ৪০ লক্ষ্ণ লোক ভারতে আসার ভারত-সরকার হিম্পিম্ বাইয়া গিয়াছেন এবং পৃথিবী-ব্যাপী একটা বিরাট হৈ চৈ পভিয়াছে। এদিকে পূর্ববদ হইতে লক্ষ লক্ষ্ণ বাঙালী পশ্চিমবদে আসিয়াছেন, কিছু কেন্দ্রীয় বা প্রাদেশিক সরকার কাহাকেও ইহাতে বিরত হইতে হয় নাই, একট পরসাও ভাহাদের ব্রচ হয় নাই। বাঙালীয় সহিষ্ণুতার ইহা কম পরিচয় নহে।

কলিকাতা কর্পোরেশন

পশ্চিমবন্ধ সরকার কলিকাতা কর্পোরেশন ভালিরা দিরা উহার পরিচালনভার একজন এডমিনিট্রেটরের হাতে অর্পণ করিরাছেন। এডমিনিট্রেটর নিযুক্ত হইরাছেন মিঃ এস, এন, রার। বলা বাহলা প্রবান মন্ত্রী ডাঃ বিধান রায়ের এই কার্ব্যে শহরবাসী মাত্রেই সম্ভষ্ট হইরাছে। মাত্র এক বংসরের জ্বত কর্পোরেশন এডমিনিট্রেটরের হাতে গিরাছে, ইহার মধ্যে উহার অনেক গলন দূর করিতে হইবে। কর্পোরেশনের ছ্নাভিপ্রায়ণ অফিসারদের কর্পোরেশন হইতে বিতাড়ন, ভবিশ্বতে ছ্নাভি বন্ধ করিবার পথ নির্দেশ এই ক্মিশনের কাজ হইলে লোকে আরও সম্ভষ্ট হইবে। ইতিমধ্যেই কর্পোন্ধেশনের সিট আক্তিটেক্ট, পলতা পাল্পিং ট্রেশনের গ্বয়াটার ইঞ্জিনিয়ার প্রভৃতি ক্রেক্তন ছ্নাভিপ্রায়ণ কর্ম্বাচারী বর্ণান্ত হইরাছেন।

দীর্থকাল যাবং কর্পোরেশন নাগরিকদের প্রতি কর্ত্তব্য সন্থাৰে উদাসীন। কলসরবরাহ নিভান্ত অসন্থোষকনক, পরিক্রত এবং অপরিক্রত উত্তরবিধ কলই প্রয়োকনের তুলনার ক্ষা। অবচ এদিকে শহরে লোক বাড়িয়াই চলিয়াছে। কলের কল সরবরাহ বাড়াইতে হইলে পাম্পিং প্রেশনে একট অভিরিক্ত কিল্টার এবং পলতা হইতে টালা পর্যন্ত একট অভিরিক্ত মেইন পাইপ বসানো একান্ত দরকার, অবচ এবিষয়ে আক পর্যন্ত কিছুই করা হয় নাই। কিল্টার বসাইতে অন্ততঃ ছুই বংসর দরকার অর্থাং এখনই উহার কান্ত আরম্ভ হইলে আগামী প্রীমের পরের প্রীমে লোকে কিছু বেশী কল পাইবে। বংসরাধিক কাল যাবং এই প্রভাব লইয়া কেবল আলোচনাই চলিতেহে, গত বংসর কান্ত আরম্ভ হইলে আগামী প্রীমেই বেশী কল পাওৱা যাইত, এখন ছুই বংসর অপেক্ষা করিতে হইবে। মৃতন মেইন পাইপ না বসাইলে পর্যাপ্ত কল সরবরাহ হুইতে পারে না, এখন বে তিন্টী মেইন পাইপ আহে সেগুলি দিয়া

আর এক গালন কলও বেশী দেওয়া সম্ভব নর। মুতন মেইন পাইপ বসাইয়া শেষ ক্রিতে প্রায় পাঁচ বংসর লাগিবে, স্বভরাং ৰত আগে কাৰ আৱন্ত করা যার ততই মদল। ডাইবিনের অমাট ময়লা পরিকার কিছুতেই নিয়মিত হুইতেছে না. প্রবৃচি পরিকার রাধা তো দূরের কথা। আগে ডোর না হইতে রাজা ৰল দিয়া গুইয়া দেওয়া হুইত. লোক পৰে বাহির হওয়ার আগে বল ওকাইরা যাইত। এখন বেলা আটিটা-নরটার বল দেওরা হয়, ফলে সারাটা রাভা খুইয়া সাফ হওয়ার পরিবর্তে কাদা रुरें वांत्र क्षांत्र कार्या रुप्त वांत्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र कार्या ্রাভারই আলে খারাপ, কতকাল যে মেরামত হয় নাই তার ইয়ভা নাই। কোথাও একটা বালব নষ্ট হইয়া गেल छेश रमनारेट मखारद भन्न मखार काहिया याथ। রাস্তাগুলির অবস্থা অতিশয় শোচনীয় ৷ প্রত্যেক রাভায় অসংখ্য গর্ভ। গাড়ী চালানে। যেমন বিপক্ষনক বাস যাত্রীদেরও তেমনি নির্ম্ম বার্ণি সহ করিতে হয়। র্প্তর দিনে কলময় রাভা পার হইবার সময় গর্ভে পা পড়িয়া পা ভাঙ্গিবার এবং মচকাইবারও বিলক্ষণ সম্ভাবনা থাকে। রান্তার পাশের শৌচাগারগুলি নরককুতে পরিণত হইয়া রোগের বীবাণু ছড়াইতেছে, বোৰ হয় এক যুগ ঐগুলিতে হাত (मध्या श्वर नारे। कान कान ज्ञादन मिलिहोती लतीत शाकांश्व ঐশুলি ভাঙ্গিয়া চূর্ণ হইয়াছে, তৎস্থানে নৃত্ন করিয়া নির্মাণ করা হয় নাই। ভূগর্ভথ ডেনগুলি ভাল ভাবে পরিষ্কার হয় না, ময়লা ক্রমিয়া ঐগুলির পরিসর ছোট হইয়া আসিতেছে। এইগুলির প্রতিবিধান অনতিবিলম্বে আরম্ভ হওয়া উচিত।

ভারের অবস্থাও তত্রপ। প্রতি বংসরই অর্থাওাবের কথা বলা হয় এবং বাজেটেও খাটতি হয়। কিন্তু যে সব টাকা কাউলিলার বা তাঁহাদের আগ্নীরস্বন্ধন ও অনুগৃহীতদের নিকট বাকী পভিয়াছে তাহা আঘায় হয় না। আমাদের বিশ্বাস বাকী টাকার পরিমাণ লাখ পঞ্চালের কম হইবে না। তার উপর কমাইয়া ট্যাক্স বরা তো আছেই। প্রথমে যে আ্যাসেসমেন্ট করা হয় একটু তথিরাদি করিতে পারিলেই আপন্তি দিয়া তাহা অনেক কমাইয়া লওয়া যায়। বিশেষ বিশেষ ক্ষেত্রে আ্যাসেসমেন্ট প্রথমেই অতান্ত কম ধরা হয়, পরে আপন্তি দিলে আরও কমাইয়া দেওয়া হয়। এই সম্ভ টাকা এখন কঠোরহুন্তে আদায় আরক্ত হওয়া দরকার।

কর্পোরেশনের অলসংখ্যক কর্মচারী ভিন্ন আর কেইই বড় একটা কাক করেন নাই, কাউনিলারদের তুই রাখিরা গতাহুগতিকভাবে চাকুরি বকার রাখিয়াছেন, অনেকে কাক না করিয়া বা অভার কাক করিয়াও উন্নতি করিতে পারিয়া-ছেন। সং ও দক্ষ কর্মচারীরা পদে পদে কাইজিলারদের আভার হতকেপের কণ্ড কর্তব্য পালনে বাধা পাইরাছেন, অনেক ক্ষেত্রে তাঁহাদিগকে বাধ্য হইরা হাত গুটাইয়া থাকিতে হইরাছে। এই অবহার প্রতিকাল একাছ আবর্ত্তক এবং সহকেই ইহা করা যায়। আমাদের মনে হর কর্পোরেশনের চীক এ রাক্টিটত অকিসার, চেপুট এ রিকিউটত অকিসার, চীক ইঞ্জিনিয়ার, সেকেটারী, আাসেসর, কালেকট্টর, সিট আকিটেট, ওয়াটার ওয়ার্কস ইঞ্জিনিয়ার প্রস্তৃতি ওয় দায়িষপূর্ণ উচ্চতম পরগুলি পার্বলিক সাভিস কমিশনের স্থপারিশক্রমে পূর্ণ করা উচিত। পার্বলিক সাভিস কমিশন এই সব পদের এক একটর ক্ষপ্ত ইই তিন বা চার কন প্রাণী বাছিয়া দিবেন, কর্পোরেশন তাহার মধ্য হইতে এককনকে নিযুক্ত করিবে। চাকুরি বা পরোরতির ক্ষপ্ত ইহাদিগকে কাউক্লিলারদের উপর নির্ভর করিতে না হইলে ছ্নীতির পথ অনেকটা বন্ধ হইয়া আসিবে। কর্পোরেশনের কর্ম্মচারীদের মনোবল কিরাইয়া আনিবার ইহাই সর্কাশ্রেট উপায় এবং তাহাদের মনোবল দৃচ করিতে না পারিলে কর্পোরেশন কর্মণ্ড ভাল ভাবে চলিবে না।

ক্যুানিফ পার্ট বেআইনি

পশ্চিমবঙ্গ সরকার ক্যুগনিষ্ট পার্টকে বেজাইনি ছোষণা করিয়াছেন এবং পার্টির ১৯৫ জন কর্মীকে গ্রেপ্তার করিয়াছেন। নামকর। ক্য়ানিষ্ট কর্মীরা সকলে ধরা পড়েন নাই, অনেকে আখুগোপন করিয়াছেন। কিছুদিন यांवर क्यानिहेटमब कार्याकलाटभब यांत्रा व्यहेरे बुवा याहेटल-हिल (य मिटनेत सार्व बार्यमा विटन्स अवहे वहि:मिक्सित স্বাৰ্থসাধন ভাঁহাদের প্ৰধান লক্ষা। কংগ্ৰেস গবৰে জ দেশে যাহাতে শক্তিশালী হইয়া উঠিতে, না পারে তাহার জন্ত ইঁহার। সর্বশক্তি নিয়োগ করিয়াছিলেন। क्यानिष्टेरमञ প্রধান লক্ষা ছিল ফ্রবায়লোর বর্ডমান হার বক্ষায় রাখা, কারণ ইহাতে লোকে কংগ্রেস গবমেন্টের উপর অসম্ভ ছইয়া থাকে। এই উদ্দেশসাধনের জন্ত ক্যানিষ্টরা কল-কারখানার সামান্তমাত্র অছিলার ধর্মঘট বাধাইরা উৎপাদনে বাৰা দিত এবং ঐ সঙ্গে মনুত্ৰী হৃদ্বিতে মালিককে বাৰা করিয়া উৎপাদনের বায় বাড়াইয়া তুলিত। তেভাগা चार्त्सामत्नद नार्य क्यांगरण्य चिम हार्य निर्वय कदिया এবং উৎপত্ন ক্ষদল না কাটিয়া উছা মাঠে পচাইয়া ক্ষমির মালিককে অব্দ করিবার নামে উৎসাহ দিয়া তাহারা প্রচুর খাত্ত নষ্ট করিয়াছে এবং এই উপায়ে খাদ্যসমস্থা সমাধানে বাধা দিয়াছে। শত সংগ্রহেও ইহারা গবছে টকে প্রবল ভাবে वांवा निवारक। अरह अरह ठिलायं कि चालमा अरखर कर दिले এবং লাল কৌৰকে অন্ত চালনা निकामात्मद चारहाबन। ইহারা তিন্ট বলনীতি অবলখন করিয়া কাল করিয়াছে:

(১) দেশের অথনৈতিক অসব্যেষ বন্ধার রাবিয়া জন-পণকে কংগ্রেস প্রথম টেগর ক্রমশঃ বিরূপ করিয়া ভোলা, (২) কংগ্রেস গ্রথম টেগর কোথাও কোন ক্রট-বিচাতি পাইলে তংক্ষণাং তাছাকে বড় করিয়া তুলিয়া কংগ্রেস-বিরোধী আন্দোলন স্কট্ট এবং নিজেদের জনগণের বল্লু বলিয়া প্রচার এবং (৬) সুযোগ প্রাপ্তি মাত্র কংগ্রেসকে

বিতাহিত করিয়া গবন্ধেন্ট দবল করিবার কর অল্লান, সুশিক্ষিত কৌৰ ও সুগঠিত দল লইয়া প্ৰস্তুত ৰাকা। ইছাদের কার্যাক্রযের এই তিনট বারা ক্রমেই পরিকার ছট্যা আগিতেছিল কিছ গবৰে'ট এ বিষয়ে একেবারেই নিকিকার ছিলেন। ডাঃ বিধান রায় ক্যুানিষ্ট মুবপত্র 'ৰাধীনতা'র উপর সামান্ত একট সতর্কতাবৃদক আংদেশ দিয়া इरे नित्नत मत्या छेक्। প্রত্যাধার করিলে ক্য়ানিপ্রবা উহাকে সরকারের চর্বলতা বলিয়া প্রকাক্তে প্রচার করে এবং ইহাতে ডাঃ রায়ের গবরে টের উপর ক্লাধারণের বিশাস অনেকটা আখাত প্রাপ্ত হয়। এীকিরণশঙ্কর রায় কঠোর হতে ক্যুনিষ্ট-দের দেশদ্রোহিতাবলক কার্যাকলাপ বন্ধ করিতে অঞ্চনী হওয়ার লোকে সম্ভষ্ট হইয়াছে। এই কার্যা আরও আরে ছওয়া উচিত ছিল, এখন তো আর দেরি করিবার কোন উপায়ই ছিল না। বোখাই ছইতে সোসালিও দল ক্য়ানিও-দের বিতাণিত করিয়াছেন : কানপরে শ্রীহরিহরনাথ শানীর নিকট ইহারা পদে পদে হটতে বাধা হইতেছে। এমতাবস্থার ক্য়ানিষ্ট দলের কেন্দীয় কার্যালয় কলিকাতায় স্থানান্তরিত করিবার আবোলন ছইতেছিল।

এখন একট বিষয়ে বাংলা সরকারকে বিশেষ ভাবে লক্ষা রাখিতে হইবে। খাভ বন্ধ এবং অভাভ নিতাব্যবহার্য দ্রবা क्रमशंबादावद निकृष्टे महत्रमञ्ज कृतिया विद्या छोहावित्रहक সপ্রমাণ করিতে হইবে যে ক্য়ানিষ্টদের ছালাতেই ইহা এভ দিন পারা যায় নাই। সমাজের শত্রু চোরাকারবারীরা যদি এখনও অভাব ভীয়াইয়া রাখিতে পারে তবে সমস্ত দোষ चात्रिया शिहत्व भवत्व लिय छेशत अवश लाटक क्यानिहेटनव প্রতি সহাত্ত্তিসম্পন্ন হইয়া পড়িবে। ক্যুানিইদের এ**কট** অতিশয় শক্তিশালী ও বৃহৎ অংশ ধর। পড়ে নাই। তাহারা **গুরু** সমিতি গঠন করিয়া কাল চালাইবে। সরকারের প্রতি আপাহর সাধারণের বিশ্বাস যদি টলিয়া যার তবে ক্য়ানিট গুপ্ত সমিতি ছুর্বার ছইয়া উঠিবে, দেশের সর্বনাশ হইবে। দেশে অসম্ভোষের ভায়সঙ্গত কারণ বভার থাকিলে গুপ্ত সমিতির মোহ হইতে তরণদলকে রক্ষা করাও অসম্ভব হইবে। গবদ্ধেক্ট যদি এখন তাঁছাদের কার্বোর ছারা প্রমাণ করিতে পারেন যে ক্যাপিটালিপ্রদের সহিত তাঁহাদের ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক র্হিয়াছে বলিয়া ক্যুদিষ্ট্রা যে বদনাম দিয়া থাকে ভাষা মিখ্যা কথা বস্তুতঃ এমন কোন সম্পর্ক উংহাদের নাই, কর্যু-निहेत्तत जास काि हिलिहेत्तत मत्या याहाता त्मत्नत चार्च বিরোধী আচরণ করিতেছে, তাহাদিগকেও তাহার৷ সমান ভাবে কঠে!র হতে দমন করিতেছেন ভাষা হইলে ক্যুটিনিই পার্টর ভবিহতে মাধা ওলিবার সমত পর নির্দ্ধল হইবে।

হরিণঘাটা পরিকল্পনা

रेपनिक शिक्षकात शृक्षीत अरे विषय नरेत्रा, अरे शिक्षकमात्र अश्वात महेत्रा किह्न जात्नाहना रहेतात्व। नमक वााशात्रहा

বুবিতে হইলে এই পরিকল্পনার কর-বিবরণ কানা পাকা চাই। ১৯৪৪ সালে মিঃ রবার্ট কেসি বাংলার গবর্ণর নিযুক্ত ছইরা আসেন। তিনি বাংলার নান। অভাব দূর করিবার বস্তু চেষ্টত इहेबाहिटलन । वांश्लाटलटलंब कृषित छेर्लालनलंकि वर्खमान बूटलंब चानक तम स्टेटल क्य: वांश्लारमध्य शा-मालि छात्रलवर्धत चकांक टाएएमंत्र अरक कुलनांत्र चनूडे ७ चनूच ; वारलाएएम ছুৰের আয়োকন প্রয়োকনের তুলনায় অত্যম্ভ অপ্রচুর। क्लिकाका नगतीय इरकत धाराकन मिठीहरात क्य रच राज्या খাছে, গরু ও মছিষের খাটাল যেরপু বিক্ষিপ্তভাবে কলিকাতার খাছ্যের হানি করিতেছে, তাহা দেখিয়া কেসি সাহেবের মাৰায় একটা বেয়াল বেলে। বাংলাদেশের গো-কাতির देविकित कर महीशा (क्लात स्तिनवाँ) जश्रत १,००० संकार বিখা ক্ষমি লইয়া একটা "গোকুল" তৈয়ার করিবার ক্ষ নিউ-किना । (पन इटेट जिन कन इधिनिए ७ (गा-रिक जानशन করেন। একটা পরিকল্পনার কাঠামো প্রস্তুত হয়। 🛍-নিকেতনের প্রতিষ্ঠাতা এলম্হার্ট সাহেবের নামও এই छेनम् (नाना यात्र ; प्रे-अक कन वाहामी कारे-मि-अरमद क्यना-पंक्रिष्ठ এই উদ্বেশ্ত नियां किए इरेशांकिन दलिशा मरन .ক্ষরিবার কারণ কাছে। লাট বাহাছরের ধেয়াল চরিতার্থ করিবার ভর অটেল টাকার ব্যবস্থা হইল। পুতরাং হরিণ-षाक्रीय "(गांक्राबार" बन्न और इटे-जिन वरमात वास स्टेसार्ड ৫৫ লক্ষ টাকা-কিছ আৰু পৰ্যান্ত একট গোরুও এ ছানে দেবা দেয় নাই। ৫৫ লক্ষ্ টাকা ব্যয় হইয়াছে কর্মচারী শ্রেম্বর মরবাড়ী তৈথার করিতে, বৈজ্ঞানিক পরিকল্পনাস্থায়ী মাত্র ৫০০ শত গোরু থাকিবার ব্যবস্থা করিতে।

এখন প্রশ্ন উঠিয়াছে-এই **५**त्रवाष्ट्री, बांग्रील लहेश कि ্করা থায়। ইছা পশ্চিম বাংলার গলায় কাঁটার মতন কটয়। चार्छ। देव्हा थाकिरमञ् स्क्रिया क्रियात छेशात्र नार्टे : ०० লক টাকা কলে কেলা যায় না। স্বভরাং প্রস্তাব হইয়াছে যে এই পরিকল্পনার পূর্ণ রূপ দিবার ব্যুচ আরও বিশ লক্ষ টাক। वाह्य कता প্রহোজন, এবং বাংগরিক নয় लक्क টাক। বার করিয়া এই স্থানকে "গোঞ্লে" পরিণত করিতে হইবে। হাজ্ব-মন্ত্রী জ্রীনলিনীরঞ্জন সরকার ইহার জ্ঞ এই পরিমাণ অর্থের ব্যবস্থা করিয়াছেন, এবং আমরা আক্রয় হইব না যদি थांगामी इहे-छिन दरमदात मर्या এই कार्य এक कांक्रिश वास ছয়। এই বায়ের সার্থকতা কোধায় এই সংশয় অনেকের मन्त्र (पना विश्वारकः। कांत्रण हेर्टतक आंगरणत वस वास्त्रांश পরিকল্পনা আমাদের অনুষ্ঠগুলে ব্যর্থ হ্টয়াছে। এই কথা ্ৰুৰিয়াই প্ৰায় আশি বংসর পুৰ্বেষ বড়লাট লড মেয়ো তাঁর অধীনত্ব কর্মচারিয়ুদ্দকে সাবধান করিয়া দিয়াছিলেন। তার मगरश्रे (कक्षीय गवर्ग्यार्णंत अक्ष्यक्षण अक्षे वावभाव ७ कृषि-,বিভাগ ছাপিত হয়। স্কৃষি বিভাগের কার্যা সমূদ্রে লড় মেয়ো बरे कथा वटलय---

"In connection with agriculture we must be careful of two things. First, we must not ostentatiously tell native husbandmen to do things which they have been doing for centuries. Second, we must not tell them to do things which they can't do, and have no means of doing."

ভবাং, ভারতবর্ষের ফুষি সহতে উপদেশ দিবার সময় ছইট বিষয়ে স্বধান হইতে হইবে। প্রথম, ধুব ঘটা করিয়া এমন কিছু বলা যা ভারতবর্ষের ক্রমক মুগ্রপান্ত হইতে করিতেছে; দিতীয়, এমন কিছু বলা যাহা ভারতবর্ষের ক্রমকের করিবার সক্তি নাই।

হরিণঘাটার পরিকল্পনা প্রস্তুতিতে লড় মেয়োর এই कथा छिल मत्न बांबिरल वांश्लादमत्मव शलाब अहे के है। ষাটকাইত না। এখন এই কথা লইয়া ছঃখ করিয়া লাভ भारे। देश्राक जामाला वह वावसा ७ जारमाक्नाक जामाला দেশের অবস্থার সঙ্গে ধাপ ধাওয়াইয়া লইতে হইতেছে : সেই জন্ত হরিণখাটায় যে অর্থ ব্যয় হইয়াছে, তাহার পিছনে আরও কিছু অৰ্থ কেলিতে হইবে। গো-ছাতির উন্নতি না হইলে স্থাবির উন্নতি হইতে পারে না। সেই জ্ঞা হরিণঘাটার পশ্চিম বাংলার কৃষির উন্নতি-কল্পে সম্ভ কর্ম-প্রচেষ্টাকে কেন্দ্রীভূত क्षिटल इश्रेष्ठ मूळन यूट्यां भट्यां श्रे बक्ते। चामनं कृषि-वावश्र গড়িয়া তুলিতে পারা যাইবে। এই পরীকাগারের ফল দিকে भिटक एकारेशः मिटक एरटन: मुक्त ब्यान धारीत श्वादत লইয়া যাইতে হইবে : তাহার সঞ্জিও সামর্থ্যের পক্ষে সহজ্ঞসাধ্য করিতে ছইবে , এই আশা বাংলাদেশের সরকারী প্রবিদ-দিগকে নূতন কর্ম্ব-ছলে আহ্বান করিতেছে। হরিনখাটার ৫০০ট शाक बाबित्न हिन्दि ना। किनकाजान त्य ७०,००० हासान গোর-মহিষ আছে, ভাহাদিগকে হরিণবাটার পল্লী পরিবেশের মধ্যে লইয়া যাইতে হইবে। ভাত গোয়ালাকে মুতন শিকা দিতে হইবে ; শৃতন "গোয়াল।" শ্রেণীর স্**টি** করিতে হইবে। भिक्तम सारवास कान कृषि विष्णानस नाहे। **इ**तिन्यातीस তাহার প্রতিষ্ঠা হইতে পারে। তার বস্ত চাই এই অঞ্লের নদী-নালার উন্নতি: সারা বংসর যেন এই অঞ্চলে জলের ব্যবস্থা থাকিতে পারে: যমুনা নামে যে নদী মরিরা গিরাছে. তাহাকে ভাগীরধীর সঙ্গে আবার সংযোগ করিয়া দিতে হইবে। হয়ত এমনও প্রয়োজন হইতে পারে যে মুর্নিদাবাদ, নদীয়ার নদী-সমূহের জল-শ্রোত সংহত ও স্থনিয়ন্ত্রিত করিয়া মধ্য বদের পুর্বের ক্রষি-সম্পদ ফিরাইয়া আনিবার চেষ্টা করিতে হুইবে। তথন হরিণঘাটায় যে অর্থ ব্যব্ত হইয়াছে, তাহা সার্থক হইতে পারে। কোন "ভদীরব" এই পুণ্য কার্ব্যে অঞ্জী स्टेर्डिन १

আমানের কাতীর জীবনে সর্ব্ব ক্ষেত্রে আৰু একটা রিঞ্চতা ও রুক্ততা পরিসন্ধিত হইতেছে। নানা কনে নানা ভাবে ভাহার প্রতিকার চেষ্টার কথা চিন্তা করিতেছেন। নানা ভাব ও নানা পরিকল্পনার হাটে আমানের হারাইরা যাইবার সভাবনা দেখা দিয়াছে। খাদ্যশঞ্জের কসল বাড়াইতে হইবে, শিল্প-ক্রব্যের উৎপাদন বাড়াইতে হইবে; মৃতন মৃতন শিকা দিয়া মাৰ্য তৈয়ার ক্রিতে হুইবে : তাহারা হুইবে আমাদের নব-লৰ খাৰীনভাৱ বারক ও রক্ষক। এই তিনটি কর্ডব্যের মধ্যে কোন্ট প্ৰথমে হাতে লইতে হইবে, তংসহছে নানা তৰ্কের উৎপত্তি হইয়াছে। এই তর্কের গুত্রকাল ভেদ করিয়া রাষ্ট্র-নামকদের অপ্রসর হইতে হইবে। থাছার নেড়ছে আমাদের (मण देश्दारक्त माजन ও माधरनंत्र भाग मुक्क इदेशांच्य. তাঁখার মনে এই সম্বন্ধে কোন দিবা ছিল না। তিনি খাওয়া পরার ব্যবস্থার কথা, এই সম্বন্ধে আগ্র-নির্ভরশীল হওয়ার কথা আমাদের প্রথম হইতেই শুনাইয়াছিলেন। নানা সংস্থারের বাধায় আমরা তাঁর নির্দ্ধেশাসুধায়ী চলিতে পারি নাই। তাঁর ভিরোধানের পরেও সেই কর্ত্তব্য অপূর্ণ হইয়া আছে। হরিণ-ঘাটায় যে কর্ম-প্রচেষ্টার ভিত্তি স্থাপিত হটয়াছে, তাহা সেই অপূর্ণ কার্ষ্যের ইঞ্চিত দিয়া আমাদের সামনে দাভাইয়া আছে। পশ্চিম বাংলার মন্ত্রি-মণ্ডলী, পশ্চিম বাংলার জন-মণ্ডলী মন ভির করিতে পারিলে পশ্চিম বাংলা খাদ্য-শক্তের জ্ঞা বিশ্বের দরবারে হাত পাতিতে যাইবে না। **হরিণঘাটা**য় প**ল্চিম** বাংলার শক্তি পরীক্ষা হ'ইবে।

পশ্চিমবঙ্গের মসলমান

শ্রীকিরণশঙ্কর রায় পশ্চিমবঙ্গের শান্তি রক্ষার ভার পাইয়াছেন; সরকারী ভাষায় তিনি বরাইল-সচিব; লোকের প্রাণ, মান, বনরক্ষার দায়িত্ব তাঁহার। পশ্চিমবঙ্গের ১৯৪৮-৪৯ সালের আয়-বায়ের বরাদ লইয়া আইন-সভায় বিতর্ক চলিন্মাছে। এই আয়-বায়ের মবো পুলিসের খাতে বিতর্কের সময় তিনি নাকি "আয় একদকা আখাসবাদী শুনাইয়াছেন" সংখ্যালিছি সম্প্রদারকে। "ইন্তেহাদ" পত্রিকা এই ভাষাই ব্যবহার করিয়াছেন; পড়িয়া মনে হয় পাকিছানী দৈনিক খানি পশ্চিমবঙ্গের স্বরাই্রসচিবের ক্ষায় "আখাস" পাইতেছেন না। আমাদের প্রতিবেশী সমাজের মনোভাব বুরিবার জন্ত নিম্নলিখিত ক্ষাগুলি উদ্ধৃত করিতেছি। গত ২য়া তারিখের সংখ্যায় ভাহা প্রকাশিত হইয়াছিল

ভারত বিভাগের পর উভয় ডোমিনিয়নের সংব্যালয়ু সন্দ্রদারের জীবন অভ্যন্ত বিভ্রিত হইরা পভিয়াছে। পশ্চিমবলের সংব্যালয়ু সন্দ্রদার যেমন নিজেলেরকে অসহায় 'বলীর ছাগ' বলিয়া ভাবিতেছে, পূর্ববঙ্গের সংব্যালয়ু সন্দ্রদারও ঠিক তেমনি নিজেলেরকে নিঃসঙ্গ এবং বিপদপ্রক্ত মনে করিতেছে। দেশের ব্রহন্তর রাজনৈতিক জীবনের রাজপবে শ্রমণ করা ত দ্রের কথা, দৈনন্দিন জীবনের অলিগলিতেই আত ভাহারা ঠাই পাইতেছে না। তবে পূর্ব্ব ও পশ্চিম বঙ্গের সংব্যালয়ু সন্দ্রদারের এই হতাশাব্যঞ্জক মনোভাব হইতে যদি কেছ মনে করে বে, উভয় বঙ্গে সান্দ্রহারিক অশাভির ভ্রকণই

এরপ ঘটতেছে, তাহা হইলে বুবই তুল করা হইবে। অত্যন্ত আনন্দের কথা উভর বলে সাক্ষদারিক অশান্তি আন্দ নাই, তবু কেন এরপ ঘটতেছে ? সংখ্যালঘু সক্ষদারের মান-সিক ভাবধারা আন্দ যে পর্যারে নামিরাছে, ভাহাতে সামান্ত বুঁটনাটি ব্যাপারই তালের নীবনে শেলসম বানিভেছে। ছোটখাটো মানসিক নির্বাতন আন্দ সংখ্যালঘু সক্ষদারের নীবনকে হুঃসহ করিরা তুলিরাছে।

व्याभारमञ्ज (मार्व्यत शांकिशानीत) कि मान कविशांकिरणन स्थ তথাকণিত সংখ্যালখিঠ সম্প্রদায় কেবলমাত্র ভাগবাঁটোয়ারার ফলেই খুব শান্তিতে থাকিবে গ রাতদিন চীংকার করিয়া "ইত্তেহাদ"-গোষ্ঠা ত মুসলম!নের চক্ষে হিন্দুকে ছুষমন বানাইয়াছিল, এই প্রচারণার ফলে মুসলমানের মনোভাব কোন ধারায় বহিয়াছিল এবং কোনু কর্ম-পছা তাহারা অবলম্বন করিয়াছিল তাহ। আৰু সর্বান্ধনবিদিত। হিন্দু ও শিব কলসীর কাণায় রক্তাক্ত হইয়া প্রেম দিতে পারে নাই, ইহা সত্য। ১৯৪৬ সালের ১৬ই আগষ্ট হইতে দেশে যে তাওবের স্টি হইল তার শ্রেষ্ঠ বলি গাখীনী। ওাহার আত্মত্যাগে মুসলমান সম্প্রদায়ের কেহ কেহ তাহাদের আত্মাতী নীতির ব্যৰ্থতা বুৰিতে পাৱিয়াছেন বলিয়া মনে হয়। কিছ হাত হইতে পাশা চলিয়া গেলে যেমন তাহা কিরাইয়া আনা যায় না, সেইক্লপ পাকিছানী ব্যবস্থার পরিবর্তনের কোন আশা নাই। অনেক পাকিছানী সংবাদপত গান্ধীনীয় প্রশাস্ত পাইয়াছেন তাঁহার দেহতাাগের পর। তাঁহাদের কারেদে আৰুম যে ভাষায় গানীলীর প্রলংগা করিয়াছিলেন তাৰা পাকিস্থানী মনোভাবের সর্বাপেকা শ্রেষ্ঠ পরিচয়। এইরূপ প্রশংসার মধ্যেও হিন্দু মুসলমানের পার্বকাই কুটাইয়। তুলিবার চেষ্টার অভ নাই। "পাকিস্থান টাইমস্" নামে একবানি পত্তিকা লাহোর হইতে প্রকাশিত হয়। গাছীভীর প্রতি শ্রহা জ্ঞাপন করিতে গিয়া যে ভাষার এই পত্রিকারানি ভাষার মনোভাব প্রকাশ করিয়াছে, তাহা প্রণিধানযোগ্য।

"There have been great heroes in history who lived and fought and died to preserve their own people from dangers that threatened and from enemies lying in wait. It would be hard to name any one who has fallen fighting his own people to preserve the honour of a people not his own. No greater sacrifice could be rendered by a member of one people to another . . ."

এই প্রশন্তিলেগকের মতে ভারতীর মুসলমান—যাহাদের জভ গানীলী দীবন বিসর্জন দিলেন—তাহারা তাঁহার আপনার দন নর; তাহারা প্রতিবেশী হইরাও পরদেশী। এই কথার মধ্যে যদি কোন সত্য থাকে, তবে ভারতবর্বের মুসলমান, পশ্চিমবলের মুসলমান, কথনও ভারতবর্বের বা পশ্চিমবলের আপনার হইতে পারে না। এবং পূর্ববলের হিন্দু তার প্রতিবেশী মুসলমানের আপনার হইতে পারে না, কথনও আপনার হইতে পারিবে না। "ইতেহাদ"—সন্পাদক পূর্ববলের

ঃর্ষদিনিংছ ধেলার অধিবাসী। তিনি পশ্চিমবঙ্গে বিদেশী, শরদেশী। পশ্চিমবঙ্গের মুসলমানদের পক্ষে ওকালতি করার প্রলোভন ছাড়িতে পারেন না। "পশ্চিমবঙ্গের শাসনযপ্তের নত্যেক বিভাগে, বিশেষ করিরা পুলিস ও সামরিক বিভাগে সংখ্যালমুদলের ভারসকত দাবি যদি খীকৃত হয় তবেই ভাহারা উপলব্ধি করিতে সক্ষম হইবে যে ভাহারাও রাষ্ট্রীর যজের সঞ্জির পরিচালক ।।" যে আপনার জন নয় ("a people not his' ০জন") তার হাতে পুলিস ও নামরিক বিভাগের জনতা কি ভাবে দেওয়। যাইতে পারে ? পাকিস্থানী মনোভাব যে জবস্থার স্কৃষ্টি করিয়াছে, ভাহারই কলভোগ পশ্চিমবঙ্গের যাট লক্ষ মুসলমান ও প্র্ববঙ্গের এক কোটি বিশালক্ষ হিন্দুকে আৰু করিতে ছইতেছে।

আজমীর দরগাহ্

প্রায় আট শত বংসর পূর্বে সাধক ধানা মৈনউদ্দিন চিস্তি আত্মীর শহরে এক দরগাছ ছাপন করেন, এবং ঐ ছানে তার দেহ রকা করেন। আরু পুথিবীব্যাপী মুসলিম সম্প্রদায়ের নিকট এই দরগাহ পুন্যস্থান বলিয়া সম্মানিত বেমন এইটের শাহ ভালালের দরগাহ। কালে হিন্দু मध्यमारवत बात्रकत निक्षे, উढत-छात्रत्वत बात्रक हिम्द्र निकर्ते. এर प्रत्नशास् श्रीत्रष्टान विविधा मन्त्रश्नेनलाच क्रियाटि । নত অক্টোবর মানে এই দরগাহ-র শান্তি নট হয়, যখন নিভিম পঞ্চাবে অভ্রন্তিত অমান্থবিক অভ্যাচারের ধবর দিকে দিকে বিশ্বত হয়। কেবল মুসলমান বলিয়া অনেকে অত্যাচরিত হন, যেমন পশ্চিম পঞ্চাবে হিন্দু ও শিবের। হইরাছিলেন। ভারতবর্ষের কেঞ্চীর গবমেণ্ট এই উন্নাদন। এতি শীঘ্ৰ কঠোৱহতে দমন করেন। গত ২৯শে ফাস্কুন তারিখের সংবাদপত্তে এই দরগাছর এমাম সৈয়দ গিয়াস-**ঐদিন খাজা সাহেব এক বি**রতি দিয়া ভারতবর্ষের গবন্দেওী नर्डक "नवशांक जिवक ७ जांबारनव चारम्य मञ्जूनारवत विरम्य তাবে যত্র নিতেছেন" এই কথা খীকার করেন। ভবিযুতেও এই শান্তি অব্যাহত থাকিবে এই বিশ্বাদে তিনি খোষণা ক্রিরাছেন বে খালা সাহেবের "ওরষ" আগামী ২**৭**শে বৈশার্থ (১০ই মে) হইতে আরম্ভ হইবে। এই সম্পর্কে াকিছান গবদে তের আচরণ লক্ষ্য করিবার বিষয়। "নান-⇒ाना जारहर" श्वक नामरकत क्य-हान, निर्व जल्लारात াবিত্ৰতম ভীৰ-স্থান। শুকু নানকের স্বর-দিবস উপলক্ষে বাহিত্রের কোন শিবকে "নানাকানা সাহেব" শহরে প্রবেশ ⊋রিতে দেওরা হর নাই। বর্তমানে এই ভী<-স্থানের অবস্থা কৈ তাহা আমরা আনি না: শিব সম্প্রদার বিনাবাধার 'নাৰকাৰা সাহেবে" যাইতে পারেন কিনা ভানি না। 'আৰুখীর সরিক ও নানকানা সাহেব" সহতে একটা বোৰা-াভা করা ভারতবর্ধের কেন্দ্রীর গববে ঠের কর্ধব্য।

পাকিস্থানীর প্রত্যাবর্ত্তন

গত ছুলাই মাদে তদানীস্থন ভারত গবদ্ধে ও ভারতবর্ষের भक्त टाएटनत कर्चातित्रक्टक छाएमत बाहे वाहिया महेवात অবিকার দেন। তথন দ্বির হুইয়া গিরাছে যে ভারতবর্ষে চুইট রাই প্রতিষ্ঠিত হইবে। রাই বাছিয়া লইবার অধিকার পাইরা কর্মচারীকে নিজ নিজ জান-বিশ্বাস জন্সারে রাষ্টের সেবা করিয়া নিক নিক সার্থকতা লাভ করিবার এই যে অবিকার পাইল, তাহা গণতত্ত্বের নীতি সন্মত। সেই বাবহা অভুসারে কেন্দ্রীয় পরবে টের অধীনম্ব প্রায় ৫০,০০০ হাজার কর্মচারী-রেল বিভাগ, ডাক বিভাগ ও তার বিভাগের কর্মচারীই তাহা-দের মধ্যে অধিকাংশ -পাকিহান রাষ্ট্র বাভিয়া লয়। এই বাবরা অনুসারে ৪০,০০০ হাজার কর্মচারী চিরকালের জন্ম পাকি দ্বান বাছিয়া লয়, এবং ১০,০০০ ছালার সাময়িক-ভাবে পাকিপ্তানে চলিয়া যায়। তাহাদের মত পরিবর্তন ক্তবিবার অধিকার থাকে। অর্থাৎ ভাচারা ভারত রুংপ্টের চাকুরীতেও কিরিয়া জাসিতে পারে। গত ৭ই মার্চ তারিখের এक के भरवादन काना यात्र (य श्रात्र ১२,००० कर्यकाती अह ভাবে ভারতবর্ষে কিরিয়া আসিবার বস্তু প্রস্তুত হটয়া আছে। এই সংবাদে দিল্লীর রাজনীতিক মহলে নানা সমস্তার আলোচনা হইতেছে। এই ১২.০০০ হাজার কর্মচারীর মনো-**ভাব किञ्च** १ हेट्ट (प्र मद्दाद कान मत्मद्द अवकाम नाहे : ইহাদের ভবিত্তং বিশ্বস্তুতা সমূহে কেহু কোন নিক্ষতা দিতে পারে না। এইরপ প্রভাব করা ছইতেছে যে বিশেষ কোন প্রতিকা দারা ইহাদের সততার পরীকা করিতে পারা যায়। এরপ প্রতিজ্ঞার কোন মূল্য আছে বলিয়া মনে হয় না ; কারণ পাকিছান রাষ্ট্রের প্রয়োজনে অনেকেই প্রতিজ্ঞা ভঙ্গ করিয়া প্রত্যবায় ভাগ হইবার ৰঙ প্রস্তুত হইবে। ভারতবর্ষের হিন্দু ৰুসলমান হুই "নেশ্ৰন" এই তত্ত্বের উপরেই ভারতবর্ষকে ভার করা হইয়াছে; কারণ ৰুসলিম লীগের মতে ছুই "নেশুন" এক রাষ্ট্রে ছায়াতলে বাস করিতে পারে না। এই ভব খীকার করিয়া এখন "পাকিছানী" ভাবাপন্ন লোকে কেন অপর রাষ্ট্রের সেবা করিতে আসিবে, তৎসক্তে নানা প্রশ্নের উদর হইতে-পারে ।

অপর পক্ষে ইহা বলা হইতেছে যে ভারত রাষ্ট্রের কর্ণবারগণ প্রতিজ্ঞাবছ হইয়া আছেন যে ছর মাসের মধ্যে, ১৯৪৮
সালের কেব্রুরারি মাসের ১৫ই তারিবের মধ্যে, যদি কোন
"পাকিহানী" কর্ম্মারী কিরিয়া আসিতে চার তবে ভাষাকে
ভাষার পূর্ব-পদে বহাল করিতে হইবে। পাকিছান রাষ্ট্র এরূপ
কোন প্রতিজ্ঞাবছ হইরাছিল কিনা ভানি না। মনে হয় না যে,
একতরকা ব্যবস্থার ভারত রাষ্ট্রের শাসক সম্প্রদার রাজী হইরাছিলেন। এই উপলক্ষে সেই পরীক্ষাটা হইয়া গেলে মক্ষ হয়
না। পাকিছানের অধিবাসী যাহারা ভারত রাষ্ট্রে চারুরী
ক্রিবার ইছা প্রকাশ ক্রিরাছিল, ভাষ্টেদরও ইছা পরিবর্ধক

করিবার অবিকার দেওরা হইরাছিল। সেইরূপ লোকের সংব্যা কত তাহা আমরা জানি না। ইহা জানি যে একমাত্র আইই জেলার অবিবাসী কর্ম্মচারী, যাহারা ভারত রাষ্ট্রে চাকুরি করিবার ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছিল, তাদের সংবাা ছিল প্রায় ৬০০ শত জন। ইহাও আমরা জানি পূর্ববঙ্গের গবরে উ তাহানের আমল দেন নাই এবং ভারত রাষ্ট্রের কর্ত্তপক্ষ এই অবিচারের কোন প্রতিকার করিতে পারেন নাই। ১২,০০০ পাকিস্থানীর প্রত্যাবর্ত্তন উপলক্ষে এই অবিচার সম্বন্ধে একটা হেল্ড-নেন্ড করা উচিত। পূর্ববিদ্ধ গবলে উক্তে চাপ দিতে হইবে। ভারত রাষ্ট্রের কর্ণবারগণ এই ক্রব্রে অবহেলা করিলে, লোকমত তাহা সহ্ম করিবে না। এই পরিণতির কণা মনে রাধিয়া নেহরু গবল্পে উক্তে কর্ত্তরা দ্বির করিতে হইবে। এই পুর্ব-সন্ধানী পাররাদের সম্বন্ধে বিশেষ সাববান হইতে হইবে।

মাতৃভাষ। ও প্রদেশ বিভাগ

মাতৃভাষার ভিঙ্তিত ভারতবর্ষের বিভিন্ন প্রদেশকে বিভক্ত করার নাঁতি জাতীয় মহাসমিতি বছদিন পুর্বের, প্রায় পঁচিশ বংসর পুর্বে, গ্রহণ করিয়াছিল। এই নীতি অনুসারে বিভিন্ন ভাষার ভিত্তিত প্রাদেশিক কংচেস কমিট গঠিত হটয়াছিল। এই সংগঠন ইংবেদ কাইক প্রদেশ বিভাগের বাবস্থা অসুসরণ कदा नारे। पृष्टीश्व-श्वाप वना यात्र (य माञ्चाक टाएएन চারিট ভাষাভাষী লোকসম্ভির আকাক্ষা অভুসারে চারিট প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিট সংগঠিত হয়-ঘণা, তেলুগুড়াখী আজ্ঞ কংগ্ৰেস কমিট, তাহিল নাদ (দেশ) কংগ্ৰেস কমিট, কর্ণাটক কংথেস কমিট ও কেরালা কংগ্রেস কমিট। এই कार्य योक्सक धारमा हेश्टरक निर्देश भीयानात याचा हातिहै স্বয়ংসিছ প্রদেশের গোড়াপড়ন হয়। সেইরূপ সুরুষা উপত্যকার অভতু জ এ ইও কাছাড় কেলা ইংরেছী বিধানে আসাম लामित अवर्षुक हिल, किन्न कराजभी गर्जन-उपा এह इरे জেলা বাংলা প্রাদেশিক কংগ্রেদ কমিটর অধীন ছিল। আজ কংতেসের হাতে শাসনক্ষতা আসিয়াছে, এবং দেশের লোকে মনে করে যে কংগ্রেসের এই প্রাচীন নীতির ক্লপ দিবার দাধিৰ কে∗ীয় গবলেতির উপর প্রিয়াছে। এই দায়িত ও কর্ত্তবা পালন করিতে হটলে দেশের চতুদিকে নানা প্রদেশের সীমানা পরিবর্ত্তন করিয়া কয়েকটি নৃতন প্রদেশের প্**ট** করিতে হটবে, এবং কোন কোন পুরাতন প্রদেশের সীমানা পরিবর্জনের প্রয়োজন হইবে। এই পরিবর্জন গণতত্ত্বের बुलभी छि अञ्चनत्र कतिरय--- नश्यहे बनगरनत जामा-आकाका ও वार्ववृद्धित भित्रत्भाषक करेत्व। এই भीजिएक ज्ञाभान ক্রিতে হইলে একডায়াভাষী জনগণের ভাবকে প্রাধার দিতে হটবে। আমরা আশা করিয়াছিলাম যে আমাদের কেন্দ্রীয় গবরে উ এই কর্ডব্যে করিংকর্মা হইবেন, নিজেরা উভোগ হইয়া কোট কোট লোকের বছৰুগস্কিত আবেগের প্ৰতি সন্ধান দেখাইবেন।

কিছ কাৰ্যাত: দেখিতেছি যে পণ্ডিত ছবাহরলাল নেহর প্রভৃতি কেঞ্রীর গবমে টের কর্ণধারতক এই বিষয়ে টালবাহানা ক্ষিতেছেন, এবং নানা স্থানে নানা বিক্লম্ব মত প্রকাশ ক্ষিমা সকলকে বিভ্রাপ্ত করিতেছেন। কেঞ্জীয় আইন সভার অধিবেশনে ভাষার ভিভিতে প্রদেশ গঠনের নীতির প্রভি সন্মান প্রদর্শন করা হয় : ভিকাগাণটুমে পভিত নেহক বোষণা করেন যে অন্ত্র প্রদেশের জন্ম অনুরবর্তী। কিছু ভেসুগু **ভাষাভাষী লোকসমষ্টিই কেবলমাত্র এই বিষয়ে আগ্রহনীল** নহে। তামিল, কর্ণাটক, কেরালা, মহারাষ্ট্র, এই ক্রাট প্রদেশ সখৰে প্ৰতিশ্ৰুতি আছে, এবং নব গঠিত পশ্চিমবঙ্গ প্ৰদেশের পশ্চিম সীম'লে বিহার ও উৎকলে অভভ্ত বছভাষাভাষী लाटकत मानि चाक नेर्राटम वरमत हरेट चनुन स्टेश चाटह । অপূর্ণ আশা-খাকাজা যে বিক্ষোভের সৃষ্টি করে রাথ্রের গঠনখলক কর্মপ্রচেষ্ট'কে ব্যাহত করে, ভাষা ভারত-রাষ্ট্রের নেতৃবর্গের অঞ্চাত নয়। পণ্ডিত জবাহরলাল নেহর এই বিষয়ের গুরুত্ব উপলব্ধি করিলে এই প্রশ্নের সুমীমাংসা করিবার বস্তু ব্যস্ত ইইতেন : নানা উপলক্ষে নানা পরস্পর-বিরুদ্ধ কথা বলিয়া ও কাজ করিয়া জনগণের মনে বিক্ষোভ স্ষ্ট্রর সম্ভাবনাকে এরপ ভাবে অবছেল। করিতেন না। তিনি বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন যে তেলুগু, তামিল, বাঙালী মারাঠিরণে এখন আর ভাবিলে চলিবে না ; ভারতবাসীরণে ভাবিতে হইবে, সক্ষারতীয় সম্ভা সমাধানের কথা অথে ভাবিতে হইবে :ভাহা হইলে এই প্রাদেশিক ক্ষুদ্রতা অবাস্তর হইয়া পঞ্জি।

এরপ কথার না আছে মাধা, না আছে মুও। তেল্ও, তামিল, মারাটি, কণাটি, বাঙালী ভাবে ভাবুক হইলে ভারতীয় হইবার পথে প্রতিবহক ক্যায় এরপ অপ্রহেম্ব কথার উচ্চারণ আমরা তাঁহার নিকট হইতে প্রত্যাশা করি নাই। গত এক শত বংসরের ইতিহাস এইরূপ কথার প্রতিবাদ করিতেছে। ব'ংলা দেশের ইতিহাস বরং ভার বিক্রম কথার সাক্ষ্য দিতেছে। যে পরিমাণে আমাদের বাঙালীয় বাঙালী সংস্থৃতির উপর শ্রহা ও মমতা বৃদ্ধি পাইয়াছে, সে অধুপাতে আমাদের ভারতীয় অহুভূতি সচেতম হুইয়াছে। এই সতা ধীকার না করিলে আমাদের এক শত বংসরের ইতিহাস অর্থীন হুইয়া পড়ে; তার মধ্যে কোন সহতি पुर्विद्या পাওয়া याहेर्य ना। अपन्य गर्ठन वा भूनर्गर्ठन কঠিন কাৰ্য্য হইতে পাৱে: বৰ্ডমানে এই কাৰ্ব্যে ছাভ षिवात अवभव नारे वा **এ**डे कार्या সময়োপযোগ नत् এहेस्रभ যুক্তিতে কোন লোক কান দিবে না। স্বাধীন রাষ্ট্রের শাসন কাৰ্য্য কঠিন, তাহা জানিয়া গুনিয়াই আমরা বাধীন রাষ্ট্র চাহিয়াছি ও তাহা আদায় করিয়াছি। ভারত রাট্রের চতুৰ্বিকে যে সব দেশীয় রাজ্য বিক্লিপ্ত ভাবে ছড়াইয়া ভাছে, ভাদের নৃপতিবৰ্গকে ভারত-রাষ্ট্রের সঙ্গে বাপ বাওৱাইয়া লগনা সহক কাক ছিল না। এই প্রায় ছয় শত নৃপতির ভয়-ভাবনা, আশা-আকাক্রা, শ্রেমী ও বংশের হার্বের সমহয় সাধন সহক কাক ছিল না। আৰু শুনিতে পাই তাহা সভব হইয়াছে সর্পার বল্পত ভাই পাটেলের কৌশলে, এবং বর্তমান কেন্দ্রিয় গবর্ত্বে নিয় হুটতে এই ফুতকার্য্যার কল্প প্রশংসার নাবী করা হুইতেছে।

প্রদেশ গঠন বা পুনর্গঠন এই কাজ হইতে কঠিন নয়। তবুও এই কাজে হাত দিতে কেন্দ্রীয় গবদে ঠি অনিক্রক বা অপারগ কেন, তার পক্ষে কোন যুক্তি আৰু পর্যন্ত আমরা শুনি নাই। নব-বন্ধ সমিতির আরক্সিপির উত্তরে ভারত রাষ্ট্রের প্রধানমন্ত্রী বলিয়াছেন যে পশ্চিম বন্ধ, বিহার ও উৎকলের মধ্যে সীমানা পরিবর্ত্তন করিবার সময় এখনও আসে নাই। কেন আসে নাই, এবং কখন তাহা অসিবে তংসম্বন্ধে পণ্ডিত নেছেরু নীরব। এদিকে ভারত রাষ্ট্রে গঠন-তন্ত্র প্রস্তুত হইতেছে : তার প্রভা প্রকাশিত হইয়াছে। এবং এরপ ছোমণা করা হইরাছে যে আগামী ভৈঠ বা আষাচ মাসের মধ্যে এই বসভার আলোচনা শেষ হইবে, এবং ভারত-রাপ্তের গঠন-তন্ত্র চূড়ান্ত ভাবে গৃহীত হুইবে। এই খসড়ার ১৫১ পুঠায় দেখিতে পাই কেবলমাত্র অন্ধ্রপ্রদেশের নাম: খস্চা প্রণয়ন কমিটি প্রভাব করিয়াছেন যে একটি অপুসন্ধান কথিশন নিযুক্ত করিতে হইবে. ভার কঙ্ব্য হইবে ভাষাগত সংগ্রেখর উপর ভিত্তি করিয়া মৃতন প্রদেশ গঠন বা পুরাতন প্রদেশের সীমানা পরিবর্তন বা পরি-বর্জন সংক্রান্ত সমস্ত ব্যাপারের অন্তুসদ্ধান করিয়া নিকের প্রস্তাব করা। এই প্রস্তাব অধুসারে নৃতন প্রদেশ গঠন বা পুরাতন প্রদেশের সীমানা পরিবর্ত্তনের উল্লেখ ভারত রাষ্ট্রের গঠনতত্ত্ত স্থান পাইবে। এত সব ব্যবস্থা বাকী তিন যাসের মধ্যে কি করিয়া সম্পূর্ণ করা হইবে তাহা কানি না। প্রদেশ গঠন বা পুনর্গঠন সম্বন্ধে এত দাবী দাওয়া আছে যে তাহার সমাবান गरक नद्र।

একট মাত্র দাবীর প্রতি মনোযোগ দিলে তাহা স্পষ্ট হইবে। যে বাঙালী অধ্যাধিত স্থানকে ১৯১২ সালে বিহারের মধ্যে চুকাইয়া দেওয়া হইয়াছিল, আৰু ৩৫ বংসরে তার সংশোধন হইল না। ১৯১২ সালের ভাত্যারি মাসে নব স্টে বিহার প্রদেশের করেকজন নেতৃত্বন্দ লিখিতে পারিয়াছিলেন যে,

"বাংলাভাষাভাষী অঞ্চলগুলি বাংলাদেশের সঙ্গে যোগ করিয়া বাংলাদেশের শাসন-ব্যবহার অধীনে আনিতে ইইবে; হিন্দীভাষাভাষী অঞ্চ বিহার প্রদেশের শাসনাধীনে থাকিবে। এই ব্যবহাত্মসারে মহানন্দ নদীর পূর্ব্ব তীরের পূর্ণিয়া ও মালদহের অংশবিশেষ···বাংলাদেশে যাইবে··৷ সেইস্বপ সাঁওভাল পরগণার যে সব অঞ্চল বাংলাভাষাভাষী লোকের বাসহান ভাহা বাংলার বাইবে··৷ ছোট নাগপুর সহছে এই ব্যবহা করা যার; সমগ্র মানভূম জ্বলা, সিংহভূম জ্বলার বলভূম পরগণা

वाशांकी च्याविष्य अवर अहे हुहे च्यक्त वारनारम्य याहेरवः।।"

আর ১৯৪৭ সালের ডিসেধর মাসে বিহুরের নেতা বাবু রাজেক্সপ্রসাদ কি উপদেশ দিতেছেন ? কোন কৌশলে বাংলা-ভাষাভাষী অঞ্চলকে হিন্দীভাষাভাষী অঞ্চলে রূপান্তরিত করিতে পারা যায় তাহাই ভং সনার ছলে তিনি বলিতেছেন:

"বিহার হিন্দী সাহিত্য সংখেলনের অক্ষমতার ক্ষই আৰু বাঙালীরা সিংহত্ম ও বলত্মের উপর দাবী করিতেছে…সিংহত্ম ও বলত্ম অঞ্লে হিন্দী ভাষার প্রচার করিতে হইবে; তবনই আমরা এই সব অঞ্ল হিন্দীভাষাভাষী বলিলা দাবী করিতে পারিব।"

বাবু রাক্ষেপ্রপাদ কংগ্রেসের সভাপতি। তিনি গাছীকী প্রবর্তিত সতা ও ভারের নিঠাবান সাবক এবং জননারক। বিহার হিন্দী সাহিত্য সন্মেলনে প্রদন্ত বক্তৃতার যে অংশ উপরে উদ্ধৃত হইরাছে, তার উদ্দেশ্য ঠিক সতা ও গারের সম্প্রাদিত নর। বাবু রাক্ষেপ্রসাদের মত নেতা ঘরন এমন কৌশলের উপদেশ দিতে পারেন, তগন প্রদেশ গঠন বা পুনর্গ ঠনের পরে বাবা কি, তাহা বুনিতে কট্ট হয় না। তবৃও এই কর্তৃবা পালন করিয়া যাইতে ইইবে। ভারত রাষ্ট্রের গঠনতন্ত্রে এই বাবস্থা পাকাপোঞ্জ করিয়া লইতে হটবে।

কলিকাতা বিশ্ববিচ্চালয়ের সমাবর্ত্তন উৎসব

কলিকাতা বিশ্বিভালয়ের বাংসরিক সমাবর্তন উংসব উপলক্ষে শুক্ররাটের চিন্তানায়ক ও হায়দরাবাদ রাজ্যে ভারত রাষ্ট্রের প্রতিনিধি শ্রীকানাইয়ালাল মূন্সীকে সমাবর্তন ভাষণ প্রদান করিবার আমন্ত্রণ করা হয়। ওাঁহার মূর্বে আমরা কোন নূতন কথা ভনিতে পাইলাম না। "স্ট্রী-মূলক শিক্ষার" ("Creative education") সম্বন্ধে তিনি ইন্সিতে মাত্র কিছু বলিয়াছেন এবং ইংরেজ আমলের শিক্ষাকে নভাং করিয়া মূতন কোন পথ দেখাইতে পারেন নাই। ইংরেজ "তায় শক্তি জিয়াইয়া রাখিবার জন্ম উকীল, মোক্তার, অকিসার স্ট্রীকরিত", এই কথা সত্য। কিছু ইংরেজী শিক্ষা ক্বাহরলাল নেহরু, সর্দার পাাটেল ও "নেতাজীর" মতন লোকেরও স্ট্রীকরিয়াছে। এই কথাটাও ঐতিহাসিকের মনে রাখিতে হুইবে।

বিশ্ববিদ্যালয়ের তাইস্-চান্সেলর জীপ্রমধনাধ বন্দ্যাপাব্যার নৃতন ছুল কলেক ছাপনের সংবাদ দিয়া ও অবাভাবের কথা নানা ভাবে, নানা হবে জানাইরা তাঁর বক্তৃতা
শেব করিরাছেন। বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্জুখাবীনে বাংসরিক
৫০,০০০ হাজার টাকা ব্যারে "কৃষি বিষয়ক গবেষণা" ও
কৃষির উরতিকরে একটা জারোজন চলিতেছে; একজন বদাভ
ব্যক্তির ৫০,০০০ হাজার টাকা দানে একট "সঙ্গীত বিভালর"
প্রতিষ্ঠা সন্তব হইরাছে; একজন "বিশিষ্ট সাংবাদিকের"
নিকট হইতে "পর্বাধি দানের প্রতিশ্রুতি" পাইরা বিশ্ববিদ্যালর

একট "সাংবাদিকতা শিক্ষা প্রতিষ্ঠানের" কার্য্য আরম্ভ করিবেন আগামী আধাচ মাসে। এই সব সংবাদের মধ্যে আমরা কোপাও বাধীন ভারতের নাগরিক স্কট করিবার হুছ কোন সার্থক আয়োজনের ইন্দিত পাইলাম না। গতাহুগতিক পরীকা, হুল ও কলেক প্রতিষ্ঠা, পরীকা শুধ্দ পাঁচ টাকা বৃদ্ধি— বাবসায় বৃদ্ধির এই সব কথার মধ্যে উৎসাহ পাইবার কিছু নাই।

ভারতবর্ষের "ঐতিহু"

चाक विकारनत त्रूगः विकारनत कलाएन नाना चिरहार কল্পনাতীত উন্নতি হইয়াছে। সেইকল্প বিজ্ঞান ও শিল্পের कथा बनिएक लाएक जाजुराता रहेशा भएए, এवर भागीन ভারতের জীবন-যাত্রা পুনর্গ ঠনের জন্ম বিজ্ঞানের প্রয়োজন, শিল্পের প্রসারের প্রয়োজন-এই কথা বেদ-বাক্যের ভার আমর) সকলে স্বীকার করিয়া লইতেছি । এরপ একতরকা আলোচনা কেঞ্জীয় আইন সভায় প্রায়ই পোন। যায়। গত ২৭লে ফাল্পন এই বিষয়ে ভারতের শিক্ষামন্ত্রী মৌলানা আবুল কালাম আকাদ বিতর্কের উত্তরে অনেক কথা বলিয়াছেন যাহা প্রণিবানযোগ্য,--"বিজ্ঞান ও শিল্প শিক্ষার উপর জোর দিলেই চলিবে না। মুগান্তবাংশী ভারতীয় ঐতিহ্নকে কোন ক্রমে উপেকা करा यात्र ना।" मनीज, कमाविषा, स्थाजिविषा, नार्क, দতা চিত্রবিজা এই ঐতিহ্নের বাহ্নিক রূপ। এই রূপকে বর্তমান মুগোপথোগী করিয়া ফুটাইয়া তুলিবার জ্বত ঋণী ও कानीत श्रास्त्र । এই উদ্ভেষ্টে সফো শহরের হিন্দুছানী সঞ্চীত বিভালয়**টকে** সম্প্রদারিত করিবার ব্যবস্থা হইয়াছে; দক্ষিণ-ভারতে কর্ণাটের সঙ্গীত চর্চার ব্রম্ভ আর একট সঙ্গীত বিখালয় প্রতিষ্ঠিত হইবে: একট "ৰাতীয় সংস্কৃতি টাই" গঠন করিবার চেষ্টা চলিতেছে : তাহার অধীনে ভিনট বিভা-লয় প্রতিষ্ঠিত হইবে। বিশ্ব-ভারতীর প্রসার কল্পে ব্যয়ের বাবস্থা করা হইরাছে: এই প্রতিঠানে কলাবিতা, হস্তনিমিত শিল্প নৃত্য, গাঁত ও "বুনিয়াদি" শিক্ষার বিরাট পরিকলনাকে ক্রপদান করিবার আয়োজন চলিতেছে। ভারতবর্বের ঐতিথের প্রামাণ্য ইতিহাস প্রণয়নও অবস্থ কর্তব্য। আচার্য্য সর্বাপন্তী রাধাক্তফনকে সভাপতি করিয়া ভারতীয় দর্শন শাঙ্কের ইতিহাস প্রথমন করিবার জন্ত একটি নৃতন কমিট গঠিত হইয়াছে। ভারতবর্ষের ইতিহাস প্রণয়নের জ্ঞত আর একট কমিট গঠিত ছইবে-এই সৰ সংবাদ যৌলানা আবুল কালামের বক্তভায় আমরা পাই।

সর্কোদয় সমাজ

গাধীকী জীবনে আচরণ করিয়া দেশের জনগণের সন্থুবে

ৰুতন সমাজ-ব্যবহার আদর্শ হাপন করিয়া গিয়াছেন;
উাহার তিরোবানের পর তাহার ভক্তগণের উপর তৎসহতে

মৃতন দারিয় আসিয়া পড়িয়াছে। এই বিষয়ে তাহারা

অবহিত হইরা আছেন বলিয়া মনে হয়। গত ১৬ই চৈত্র
ভরার্ছাগন্ধে অক্টিত সভার তাহার পরিচর পাওয়া যার।

তিন দিন এই সভার কার্যা চলিয়াছিল। তাহাতে গারীকী প্রচারিত "সর্ব্বোদয় সমান্তের" আদর্শের প্রতি আছুগত্য প্রকাশ कता रहा এই जामनीध्यादी नगांत्व (जमांजियद शान নাই : নিক নিক শক্তি অভ্যায়ী কর্ম করিয়া সমাজের সেবা-ধর্মের অফুশীলন করিলে জন্মগত শক্তির যে পার্থকা লইয়া মাতুষ ব্দাগ্রহণ করে, তাহা এক মৃতন একপ্রাণতার মৃছিয়া যায়। এই আদর্শ অনুযায়ী নিজের জীবন গড়িয়া ভূলিবার দায়িত্ব ব্যক্তির নিজের: সেইজন্ত ওয়ার্দ্ধাগন্তের সভায় ছির করা হইয়াছে যে গান্ধী-ভক্তংকের কোন কেন্দ্রীয় প্রতিষ্ঠান থাকিবে না বাহার চাণে পভিয়া মালবের ব্যক্তিত্ব ও স্বাধীনত। তুর হইতে পারে। একটা বিষয় লক্ষ্য করিয়া আমরা ভরিলাভ করিয়াছি যে গান্ধীলীকে মৃতন দেবতায় ক্সপান্তরিত করিবার मर्स्थ कात (हैशेटक निज्ञ शाहित कता इहेशारह ; अवह कल সহজে এই দেশে এক পুতন দেবতার প্রতিষ্ঠা করিয়া মৃতন মোহারশের স্ট্র করা যাইত। আর একটা বিষয় লক্ষ্য করিবার যে'গ্য। পণ্ডিত ক্ষবাহরলাল প্রমুধ কেন্দ্রীয় গবলে তির নেতৃত্বন গান্ধীভক্তির প্রযোগ গ্রহণ করেন নাই : প্রিত্তনী এই সভায় খোষণা করিয়াছেন যে তাঁহারা এই শুতন কাৰে-'সৰ্কোদয় সমাৰ' প্ৰতিষ্ঠার কাজে পাৰ্যচর (camp followers) হইয়া বাকিবেন। এই বোষণা যারা এই ভরসা আমাদের মনে উদয় হইয়াছে যে ভারতবর্ষের গঠনাত্মক কর্মপদ্ধতির সেবকরন্দ রাজনীতির জীড়নকরূপে ব্যবহাত হইতে শীকার করিবেন না : কংগ্রেসের নেড্রন্স এক্সপ क्षेत्रं अअध पिट्र ना .

এই সম্বল্প যদি সভা হয় তবে আচাৰ্য্য ভিনোবা ভাবের নেতৃথের মধ্যে একটা সার্থকতা লাভ করিবার আলা দেখা যায়। ওয়ার্দ্ধাগঞ্জের সভায় তিনিই গঠনাত্মক কন্মিরন্দের নেতা বলিয়া গুৰীত হইয়াছেন: কোন নিষ্ঠি প্ৰস্তাব পাস করিয়া এই মনোনয়ন অখীকত হয় নাই: আচার্য্য ভিনোবা মনোনীত ক্টয়াছেন আদেশনিষ্ঠার আকর্ষণে ৷ তিনি এই সম্মেলন উপলক্ষে অভিংসার উপর বিশেষ কোর দিয়াছেন। বাঞ্জিগত হিংসা-প্রবৃত্তি সংযত হইয়া সমাজ---সম্প্রগত জীবন প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। সমষ্ট্রগত জীবনে রাষ্ট্রায় জীবনে তাতা क्न श्राया करा ११८व ना अहे भरग्राय श्राप्त क्रिक কাৰ্য্যকরী হইবে না, তাহার কোন মৃক্তিসম্ভ কারণ দেওয়া ষাইতে পারে না। এই প্রস্ন ও তাহার উত্তর বর্তমান জগতের বৃহত্তম সমস্যা। বিজ্ঞানের অধুগ্রহে মাতুর প্রকৃতির উপর আবিপত্য প্রতিষ্ঠা করিয়াছে; প্রস্থৃতির শক্তিকেক হইতে নানা মারণাজ্যের রহস্ত সংগ্রহ করিয়াছে। মাসুষ এখন ইচ্ছা क्रिंग रहे खरम क्रिंग्ड भारत। এই अवश्रम अविरम ছাড়া পতান্তর নাই, এই হইল আচার্য্য ডিনোবার প্রতিপাদ্য বিষয়। ক্ষমতার লোভে মালুব বিতাহিত আন হারাইয়া আপনার বৃদ্ধি ও শক্তির অপব্যবহার করিতেছে। এই বিপর

হুইতে উদার পাইতে হুইলে সকল শক্তি বিকেক্স করিতে হুইবে। তথনই সম্ভব হুইবে সর্ব্বোদয় সমাজের স্বর্ম।

বি. এস. মুঞ্জে

মহারাষ্ট্রীয় নেতা ডা: বি. এস. মুঞ্জে ছিয়ান্তর বংসর বয়সে দেহতাাগ করিলেন। টলক যুগের একজন দিকপাল গাঙী হুগে বাঁচিয়া থাকিয়া, গাড়ী যুগের ভাব ও কর্ম প্রচেষ্টার বিরুৱে সংগ্রাম করিয়া, অনবনত মন্তকে কর্মক্ষেত্র ত্যাগ করিয়া গেলেন। বিয়াল্লিশ বংসর পূর্বে যথন তাঁছার সঙ্গে পরিচয় হয় তখন এই ক্ষাত্রধর্মী ত্রাহ্মণকে যে ভাবের ভাবুক রূপে দেবিরাছিলাম, নাসিকের শিবানী ভৌগলে সামরিক বিখা-লয়ের প্রতিষ্ঠাতা হ্রপে ভার পূর্ণ পরিণতি লক্ষা করিয়াছি। আৰীবন তিনি বিশ্বাস করিয়া গিয়াখেন যে ব্রিটিশ রাজ্পক্তির সম্মোহন নীতির বিরুদ্ধে সংগ্রাম করিয়া যাইতে ছইবে-্যে নীতি দেশের জনসাধারণকে "ভেড়ার পালে" পরিণত করিতে চেঠা করিয়াছে, দেশের মন হইতে সমন্ত সামরিক ঐতিহ্ মুছিয়া কেলিবার চেই। করিয়াছে। পেইৰভ আমরা তাঁহাকে দেবিতে পাই ব্যর যুক্তে-ভাক্তার রূপে সাম্রিক জীবন স্বত্ত জান অর্ক্তন করিবার প্রশ্নাসী। মহারাষ্ট্রীয় ত্রান্ধণকে সামরিক বিভাগের বাহিরে রাখিবার নীতি এই ভাবে কলে কৌশলে অভিক্রম করিয়া যখন তিনি দেশে কিরিয়া আসিলেন, তখন দেশের যনে নৃতন জীবনের স্পলন শিহরিয়া উঠিয়াছে। ইহার ছই-তিন বংসর পরেই বঙ্গভঙ্গ আন্দোলনকে আশ্রয় করিয়া **(मट्नेंद्र यन हरे-छिन वर्प्यद्र शकान वर्प्य आंगोरेद्रा (गल।** सर्वाताद्वेत ७ वारलाटम्टन विश्ववी ७ जडानवामीता এই यून-পরিবর্ত্তনের ধারক ও বাহক হিলেন। গানী যুগে এই ভাব ও কর্মধারার গতি পরিবর্ত্তিত হয়। মহারাষ্ট্রীয় নেতবর্গ এই পরিবর্তন লাম্ম দিয়া যোগদান করিতে পারেন নাই : যদিও ভাঁহারা গানী-প্রবর্ষিত সব আন্দোলনে যোগদান করিয়াছেন। দ্বিতীয় মহাযুদ্ধে ইংরেজ দায়ে পঢ়িয়া ভারতবর্বের জন-সাধারণকে অল্পবিভর সামরিক ভাবাপর করিয়াছিল : জ্ঞান অর্জন করিবার এই সুযোগ নষ্ট হইতে দিতে তিনি অনিজ্ঞক ছিলেন: গান্ধীনীর অসহযোগ নীতি এই আপদধর্মের পরিপদ্মী

ইছার বছ পূর্ব ছইতে কংগ্রেসের রাজনীতি মুসলমান সমান্তের সংকীণ মনোভাবের চাপে দিশেছারা ছইরা পরিতেছিল। সাত-মাট কোট লোককে বাদ দিরা রাজনীতি করা যায় না; আবার এই সাত-মাট কোট লোকের মনোভাব অহ্যামী চলিতে গেলে দেশের এশ কোট লোকের মন ছারাইতে হয়। এই দোটানার পরিয়া কংগ্রেসের সংগ্রাম নানাভাবে বাাহত ছইতেছিল। ব্রিটশ রাজশক্তি আমাণের অভ্যাহরের হ্যোগে নিজের বেলা বেলিতে লাগিল; মুসলমান সমান্তকে এই বেলার সহারকরণে পাইরা কংগ্রেসের লাবি-দাওরা অথীকার করিতে পারিল। কলে, কংগ্রেস-নিরপেক একট রাজনীতিক প্রতিষ্ঠানের অনুসর হইল। এই

প্রতিষ্ঠানের (ছিন্দু মহাসভার) প্রোভাগে দেখিতে পাই পঠিত মদনমোহন মালবীয়কে, লালা লাকপং রায়কে, ডাঞার মুপ্তেকে ও ডাই পরমানককে। এই প্রতিষ্ঠান কংগ্রেসের ভাব ও আদর্শকে দ্লান করিতে পারিল না; হিন্দু সমাকের একাংশের মনে যে বিক্ষোভ কমিয়া উঠিতেছিল ইহা তাহা প্রকাশ করিয়া দিতে পারিল মাত্র। আরু তাহার তিরোধান উপলক্ষে সে সকল কথার বিচারের অবসর নাই। আময়া এককন মহারাষ্ট্রীয় দেশগ্রেমিকের দেহত্যাগে আগ্নীয়কন বিয়োগবাধা অভ্যুত্তর করিতেছি।

ডাঃ বেণীমাধব বড় থা

কলিকাতা বিশ্ববিশ্বালয়ের পালি সাহিত্য বিভাগের অবাক डा: (वधियां वव प्रश्ना अकारल श्रद्धां क्रांचन क्रिलन ; বাংলাদেশ একজন পণ্ডিত হারাইল। আমাদের দেশের শীবনে ইতিহাসের নানা পরিহাস অফুটিত হইথাছে। যে বৰ্ষ ও সংস্কৃতি প্রায় হাজার বংসর দেশের ইতিহাস স্ক্রী করিল ও তার গৌরব ধারণ করিল তার চিক্ত আমানের দেশের শীবনে . ৰু কিয়া পাওয়া কটন। হরপ্রসাদ শাগ্রী মহাশয় নান। লেবায় প্রমাণ করিয়া গিয়াছেন যে বৌদ্ধর্ম ও সংস্কৃতির নানা ধারা আমাদের বীতিনীতির মধ্যে লুকাইয়া আছে এমন কৌশলে যে আমরা তংগছতে অবহিত নহি। কেন এরপ ঘটল, কি করিয়া ছিন্দুধর্ম এমন করিয়া বৌধ্বর্মের নানা বৈশিইকে গ্রাস করিয়া বসিল, তাছ। ইতিহাসের এক রহস্ত। দিংহল **২ইতে অনাগরিক বর্দ্মপাল আসিয়া এই মতি পুনরুদ্ধার** ক্রিতে সাহায্য ক্রিয়াছিলেন। ডা: বেণীমাধ্ব বহু য়া সেই ধারার শ্রোত অব্যাহত রাখিয়াছিলেন। ইহাই তাঁহার শীবনের শ্রেষ্ঠ দান। বৈদিক ধর্ম ও বৌদ্ধর্ম মিলিত ছইয়া বা পরস্বরের ঘাত-প্রতিঘাতে ক্ষিত্রণে বর্ধমান হিন্দু-ৰৰ্মে রূপান্তরিত ছইয়াছে, তার সমাক পরিচয় এখনও আমরা পাই নাই। সেই যুগের ইতিহাস না বুবিলে আমরা ভারতবর্ষের জীবনধারার গতি-পরিণতির সধান পাইব না। আমানের দেশ দক্ষিণ এশিয়ার কেন্দ্রনে অবস্থিত। এক দিকে পশ্চিমে আমাদের ইসলামের আকর্ষণ: अश्र দিকে शृद्ध चामारमत (तोच ভारतत चाकर्रन। २৫ (कांक्रे लांक्रित नव-कांगद्रश्वत कांक्रान: वक्र भिटक ২০ কোট লোকের আহ্বান: প্রাচীন যুগের সংস্কৃতির স্বতি ৩০ কোট হিন্দুকে আৰু এক মৃতন ৰগতের রুক্ত্মিতে আহ্বান করিতেছে। চীন জাপান প্রামদেশ, ব্রহ্মদেশ, মৃতন করিয়া আমাদের নিকটে আসিতেছে প্রাচীন পরিচয় বালাইরা মূতন সম্বর ছাপনের বত। এই ছই ভাব-কগতের मत्या माणारेया चावजवर्यक कर्तवा दिव कविटल स्टेटव। মুসদীম জগতের ও বৌদ্ধ জগতের মধ্যে ভারতবর্ষ করিবে দৃতিরাগী। সেই কার্যা হুঠু ভাবে সম্পন্ন করিতে হইলে চাই छाम । छाः विवैधाश्य वस्त्रा जामारमञ्ज वोच जगरण्य বাৰ্তা কিছু কিছু ওবাইয়া গিয়াছেন। তাহার অসম্পূর্ণ কাজ সম্পূর্ণ করিবে, ভাষার ছম্ম প্রতীক্ষা করিয়া হহিলাম।

পত্রাবলী

[वामानय চটোপাব্যার মহালরকে লিখিভ]

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

বিশ্বভারতীর অনুমতিক্রমে প্রকাশিত

Ğ

শ্রদাস্পদেধু

অল্লকালের মধ্যে যে গল্পের বই পড়িয়াছি তাহার মধ্যে The Charwomen's Daughter নামক বইধানি বড় ভাল লাগিয়াছে। গ্রন্থকার একজন আধুনিক কবি এবং তাহার গতরচনা ইংলণ্ডের পাঠকসমাজে প্রতিষ্ঠালাভ করিয়াছে। জানি না বাংলায় তর্জনা করিতে হইলে কাহারো অমুমতির প্রয়োদ্দন হইবে কিনা। গ্রন্থকারের নামটি James Stephen। র্থী ব কাছে এই বই আছে। ব্যী রাচি গিয়াছে--ফিরিলে পাওয়া যাইতে পারে। সতোল্ডে র চোধ থারাপ নহিলে তাহারই হাতে তর্জমা হইত ভাল। চারু[®]কে চেষ্টা করিতে বলিবে। **আবশুক** মত কিছু কিছু বাদসাদ দেওয়া দরকার হইতে পারে। গল্লটি ভাল সন্দেহ নাই-কিন্তু যাহারা গল্প পড়ে তাহাদের ভাল লাগিবে কিনা দে কথা বলা কঠিন। Joseph Conrad এখনকার কাগজের গল্পতেখকদের মধ্যে শীর্ষস্থানীয়—তাঁহার ছোট গল্প কিছু কিছু পড়িয়াছি-পড়িয়া ভাল লাগিয়াছে। ইতি ববিবার

> আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

ė

শ্রদাম্পদেযু

তন্ধবাধিনীতে আমার ও বড়দাদা র যে লেখা বাহির হইতেছে চারু তাহা প্রবাদীর জন্ম চাহিয়াছিলেন। সেই প্রবন্ধ ছুইটি কতক ছাপানো ফর্মা ও প্রদক্ষ এবং কতক কাপি আকারে পাঠাইতেছি। বৈশাখের তন্ধবোধিনীর সঙ্গে সংক্রই যদি প্রবাদীতে দিতে ইচ্ছা করেন ত দিবেন।

আমার বড় মেয়ে একট ইংরাজি গল্পের ভর্জমা করিয়াছেন পাঠাইতেছি যদি পছন করেন ত প্রবাদীতে দিবেন নচেং ভারতী প্রেদে পাঠাইয়া দিবেন।

আগামী :লা বৈশাথে আমাদের আশ্রমে নববর্ষের উৎসব হটবে সে জন্ম আপনাকে নিমন্ত্রণ রহিল। তথন Enster-এর ছুট আছে। মেয়েদের সঙ্গে দেখা হইয়াছিল—
তাহারা এই উৎসবে যোগ দিবার জন্ম উৎসাহিত হইয়াছে—
আপনি তাহাদের সহায় না হইলে তাহাদের গতি নাই—
এই কারণে আপনাকে বিশেষ করিয়া অন্থরোধ করিব
এইরপ ভরদা তাহাদিগকে দিয়াছি।

ব্যাকরণের প্রথমাংশ পুনরায় সংশোধন করিয়া লিখিতে হইবে এই জন্ম এবার দেওয়া সম্ভব হইবে না—জৈচে যাইবে।

বোলপুরে কলেজ স্থাপন সম্বন্ধে আপনাদের সঙ্গে আর একবার আলোচনা করিয়া দেখিব। ইতি মঙ্গলবার

ভবদীয়

শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

ė

শ্ৰদাস্পদেযু

হিন্দ্বিশ্ববিভালয় প্রবন্ধটি সংশোধন করিয়া পাঠাইলাম।
বোধ করি সবশুদ্ধ এক ফমারি অধিক হইবে না। আমার
ইচ্ছা প্রবাসীতে এই প্রবন্ধটি ছাপা হইলে দেই সঙ্গে চট্ট
আকারে ইহাকে বাহির করিয়া চার পয়সা দামে বিক্রয়
করা হয়। ছাপিবার খরচ বোধ করি বেশি হইবে না—
সে খরচটা বিক্রয়ের মৃল্য হইতে তুলিয়া লইতে পারিবেন।
এইরপ সাময়িক প্রসন্ধ লইয়া আমাদের বক্রব্য বিষয়ের
আলোচনা স্থলভ চট্ট আকারে প্রচার করিলে উপকার
হইতে পারে। যদি আমার এ প্রস্তাবে আপনার সম্মতি
থাকে তবে চেটা কবিয়া দেখিবেন। লাভের টাকা এইরূপ
স্থলভ পুত্তিকা প্রচারকার্যোই নিযুক্ত করা যাইবে।

এখনো নদীর উপক্ল পথ গুণ টানিয়া চলিবার পক্ষে
সর্বত্ত স্থান হয় নাই অতএব শিলাইদহের নিকটেই পদ্মার
চবে বোট বাধিয়া থাকিব। প্রফ ও পত্রিকা প্রভৃতি
"শিলাইদা, নদিয়া" ঠিকানাতেই পাঠাইবেন।

শান্তা ও সীতা ক আমার অন্তরের আশীর্কাদ জানাইবেন ইতি মঞ্চলবার

> আপনাদের শ্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর

💌। এগীতা দেবী

১। এরথীভ্রমাণ ঠাকুর ২। সভ্যেক্তনাৰ দত্ত

৩। চাক্ষচন্ত বন্যোপাধ্যার

^{8।} विद्यासमाथ शिक्स

[।] এশাখা দেবী

ě

धकान्भरमय्

সেই পাঠ্যবহিতির কাপি পাঠাই। ইহার দক্তে গোটা ছই তিন গল্প যোগ করিতে হইবে। তাহার মধ্যে "রাসমণির ছেলে" একটি এবং "গুপ্তধন" একটি। গুপ্তধন গল্পটি গল্পে" পাইবেন, আরও গল্প যদি দেওয়া দরকার বোদ করেন তবে দেই আটটি গল্প হইতে বাছিয়া লইবেন। বলা বাহুল্য মদি এই কাপির মধ্যে কোনো কারণে কোথাও কিছু পরিবর্ত্তন বা পরিবর্জ্জন আবশুক বোদ করেন তবে কৃষ্ঠিত হইবেন না। বইয়ের নাম কি হইবে যদি ভাবিয়া ঠিক করেন তবে আমি বাঁচি। নামকরণ আমার আদেন।

আপনাদের শ্রিরবীক্রাথ ঠাকুর

Ġ

বুধগয়া

শ্ৰদ্ধাস্পদেয়

চাক্রর ছুটি শেষ হইয়াছে কিন্তু এখনো তাহাকে আনি ছুটি দিতে পারিতেছি না। সোমবারে এলাহাবাদে যাইব মকলবারে পৌছিব সেখানে চাক্রকে আশ্রয় করিয়া ইণ্ডিয়ান প্রেসের কিছু কাজ সারিবার ইচ্ছা আছে। এই তুই তিন দিনের জন্ম প্রবাদীর কাজের যদি কিছু ক্ষতি হয় তবে সে অপরাধে আমাকেই অপরাধী করিবেন এবং ক্ষমাও করিবেন আপনার কাছে এই প্রার্থনা করি। ইতি রবিবার

আপনার শ্রীব্রবীক্রনাথ ঠাকুর

Ġ

শ্ৰদ্ধাস্পদেষু

আমার দৌহিত্তের জন্ম উপলক্ষ্যে আমাকে কলিকাতায় আসিতে হইয়াছে।

"রূপ ও অরূপ" বলিয়া একটি লেখা প্রবাসীর জ্ঞ্য পাঠাইরাছিলাম পাইয়াছেন কি ম

হেমলতা বৌমার কবিভাটি আপনার নিকট পাঠাইবার জন্ম জানের নিকট দিয়াছিলাম—পান নাই কি ?

আপনার প্রেরিত কাগদ্বগুলি টেশনেই পাইলাম স্থতরাং সঙ্গেই আসিয়াছে তাহার একটা সদগতি করিবার চেষ্টা করিব।

গল সহত্তে আপনার প্রভাব ত আমার কাছে ভালই

ঠেকিতেছে। ১১ই মাথের পূর্বের গল্প লেখায় হাত দেওরা ঘটিবে না। ইতি শুক্রবার ভবদীয় শ্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর

ě

শ্রদাস্পদেযু

দীর্ঘকাল কল্লার পীড়ার উত্তেগে Theistic Conference-এর জন্ম "ধর্মনিক্ষা" প্রবন্ধটি লিখিতে পারি নাই। এখানে আসিয়া সেট লিখিয়াছি। কিন্তু এখানে নিরুদ্বেগ অবকাশ এত বেশি যে প্রবন্ধট বিন। বাধায় যথেষ্ট দীর্ঘ হইমা শড়িয়াছে। এত বড় বাংলা প্রবন্ধ কনফারেন্স সভায় পাঠ कदा अञ्च इटेंदि विविधा भारत इटेंद्रिक्ट ना। यनि अभ्य খাকিতে লেখা শেষ করিতে পারিতাম তবে ইংরেজি অমুবাদের চেষ্টা করিয়া ওটাকে বিদেশীদের কাছে ব্যবহার-যোগ্য করিয়া তুলিতে পারা যাইত। কিন্তু আর ভাহার সময় নাই। অতএব ধদি আমাকে অব্যাহতি দেন তবে লেখাটা আর কোনো সময়ে বাঙালী শ্রোতাদের কাছে পড়িয়া চুকাইয়। দেওয়া যাইতে পাবে। মনে ভাবিয়াছিলাম লেখাট। পাঠাইয়া দিব তাহার পরে আপনারা যা খুসি করিবেন কিশ্ব তাহার চেয়ে নিজে উপস্থিত হইয়া পাপক্ষালন করাই ভাল। কাল সন্ধ্যার সময় কলিকাতায় পৌছিতে **टियो कविव। मक्नवाव जाननात्व महक् नवामनं कविया** यथाकर्छवा श्वित कदा याहेत्व। कि वालन १ मझलवाद সকালে আপনার সঙ্গে দেখা হইতে পারিবে কি ? যদি জোড়াদ কৈয়ে ইহার উত্তর পাঠাইয়া দেন তবে কাল সন্ধ্যার সময়েই পাইব। ইতি রবিবার

আপনাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

è

শ্রদাম্পদেযু

কবিতা প্রবাদীর জন্ম পাঠাইলাম। যে খুদি নাম
দিবেন। এক একটা লাইন বড় আছে, বোধ হয় তুই
কলামকে এক করিয়া যদি এটা ছাপান তবে স্থানাভাব
হইবে না। আমার বোধ হয় কবিতা সেইরূপভাবে
ছাপানো হইলে গদ্য প্রবন্ধের সহিত তাহার একটু বিশেষত্ব
রক্ষা হয়।

মার্কাস অরেলিয়াসের আত্মচিস্তা সম্বন্ধে সংক্ষেপে ছচার লাইনের বেশি লিখিতে পারিব না। মন এখন অভ কান্ধে ব্যস্ত আছে এবং বিশ্রামণ্ড অত্যাবশুক হুইয়া উঠিয়াছে।

আশা করি ভালো আছেন। ইতি ১৯ ফান্তন আপনার ভীরবীদ্রনাথ ঠাকুর Ğ

শাস্থিনিকেতন।

শ্রদাম্পদেষু

এই সজে একট ইংরেজ কবিতা পাঠাইতেছি। কবিতাট আমার বন্ধু Mrs. Seymour-এর রচনা। এট আমাদের সকলেরই বিশেষ ভাল লাগিয়াছে বোধ হয় আপনারও পছন্দ হইবে সেই আশায় পাঠাইলাম—যদি Modern Reviewতে ছাপান তবে এক কপি নিম্নলিধিত ঠিকানায় পাঠাইবেন—

Mrs. Seymour 909 Nevada Street Urbana, Illinois U. S. A.

প্রবাদীর জন্ম আমার থাতায় অনেকগুলি গান জ্বমিয়া উঠিয়াছে—কুঁড়েমি করিয়া কপি আর হইয়া উঠে না। শুনিয়াছি চারু পূজার ছুটতে শাস্তিনিকেতনে আদিবেন তিনি পছন্দ করিয়া বাছিয়া লইতে পারিবেন। আশা করি ভাল আছেন—ছুটতে কি কোথাও যাইবেন ?

> আপনার শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

6

শ্বশাস্পাদেষ্

কাল বৈশিষ্টি ভাকে আপনাকে দেই সংক্রিড ভ্ল বইয়ের কাপি পাঠাইয়াছি। ভাছার মধ্যে "বাসমণির ছেলে"র গ্রুটা দিতে বলিয়াছি। কিছু আমার বাধ হয় দেটা না দেওয়াই ভাল। কারণ এই ন্তন গরাট আর একটি বইয়ে ছাপান হইতেছে এবং এ বইটি বিভালয়ের সম্পত্তি ইহা পারিশারের হাতে দিই নাই—দে বই হইতে গল্প চুরি করিয়া আমাদের বিভালয় কেন নিজেকে নিজে ঠকাইবে? আপনি আটিট গল্প বই হইতে অন্ধিকার প্রবেশ, কার্লিওয়ালা, সাক্ষ্যদান প্রভৃতি তিন চারিটি গল্প বাছিয়া লইয়া এই বইয়ের মধ্যে পুরিয়া দিলে কোন ক্ষতি হইবে না এবং সেই ছোট ছোট গল্প ছেলেদের পড়িবার পক্ষেও স্থবিধা হইবে। কি বলেন ? জীবনম্বতির প্রফটা পাঠাইবেন।

আপনাদের শারবীন্দ্রনাথ ঠাকুব

Ġ

শ্রহাস্পদেয়

শাপনার অন্থরোধ মত স্বরেন চাথের বালির প্রথম
কিন্তি ওবানে পাঠাইয়াছেন। অত্যন্ত গোলমালের মধ্যে
আছি। একবার চোথ বুলাইয়া লইলাম। নাঝে মাঝে
ছটো একটা কথা পেন্সিলের লেথায় পরিবর্ত্তন করিয়াছি
মাত্র। মোটের উপর আমারও বোধ হয় ভালই হইয়াছে,
আপনি পড়িয়া দেখিলে ব্ঝিতে পারিবেন। আগামী
বুধবারে সায়াছে কলিকাতায় পৌছিব। ইতি সোমবার

আপনাদে

शिववीलनाथ

>। ছবেশ্রদাপ ঠাকুর

রামানন্দ চট্টোপাধ্যায়

ঞ্জীকুমুদরঞ্জন মল্লিক

প্রতিভা তোমার নহে সাধারণ—জানভূমিঠ মন
সাধকের মত ছিল তব আচরণ,
অক্রোধী, শুধু অসত্যে ক্রোধ, ভারের পক্ষপাতী,
ছর্ম্মাসা নর—কপিলের তুমি জাতি।
সহিতে নারিতে অতি প্রবলেরো অসাধ্তা অবিচার,
কটিন-কঠোর সমালোচক যে তার।
রাজহুরারেতে কখনো যাও নি চাওয়ার কিছুই নাহি
ভূমি নৈষ্টিক অপুত্র প্রতিপ্রাহী।
করিতে চেরেছ দেশ জাতি ভাষা শুচি ও সমূহত
পুত্র নির্মান করা হিল তব ব্রন্ত।

কিবালে জাতির দৃষ্টভদী দেখাইয়া ভূলগুলি
বিনয়-ববিরে চোখে দিরা অঙ্গুলি।
যাহা কুংসিত, মুগা, ছয়, সমাজের জঞ্চাল,
সরাইতে তব চেষ্টা যে চিরকাল।
ভূমি জানযোগ, কর্মবোগী যে, সদা দেহেমনে ভূচি
বদ্লিয়ে দিলে ভূমিই দেশের কটি।
সংস্কারক যে ছিলে ভূমি বড়, সমনিকাছতি
জাতিকে দিরাছ ক্ষ রসাহভূতি।
বে ছমবেশে দেবতা আসিয়া অভয়ের বাণী কম
ভূমি ছিলে দেই দ্বিত্ত ক্ষাৰণ +

সিন্ধু সভ্যতা ও মেশোপটেমিয়া

ঞ্জননীমাধব চৌধুরী

১৯২১ ব্রীষ্টাব্দে মোহেজোদারো ভূপের খননকার্যা আরম্ভ হুইবার বছপুর্বে মেশোপটেমিয়ার প্রাগৈতিহাদিক আমলের নগরসমূহের ধ্বংসস্ত পু গুলি ইউবোপের বিভিন্ন দেশের প্রাহ্ন তাত্ত্বিক পণ্ডিতগণ খনন করিয়া প্রভূত পরিমাণে মূলাবান নিদর্শন উদ্ধার করিয়াহিলেন। এইগুলি এবং মিশর প্রভৃতি দেশের প্রতাধিক নিদর্শনসমূহ সম্বন্ধে আলোচনার ফলে মেশোপটেমিয়ার বিভিন্ন যুগের প্রাচীন ক্লষ্টিগুলির মোটামুট ধারাবাহিক ইতিহাস স্থলিত হইয়াছে। त्यारहाक्षानारवात खुश श्रम कतिया य मकल निवर्तन পাওয়া যায় তাহার চিত্র ও বিবরণ দিয়া সর জন মার্শাল বিলাতী কাগভে প্রবন্ধ প্রকাশ করিবার পর মেশোপটেমিয়া, পশ্চিম ও মধ্য-এশিয়া, মিশর প্রভৃতি দেশে প্রত্নতবের কাজ যাহারা করিয়াছিলেন তাঁহাদের দৃষ্টি দিরু উপত্যকার লুপ্ত সভাতার প্রতি আরুই হইল। মোহেঞােদারো ও হরাপার निषर्भन श्वीत मर्था स्मर्गापि मियात निष्मित अञ्जल বস্তু কিছু পাওয়া গিয়াছে। মেশোপটেমিয়ায় প্রাপ্ত কয়েকটি নিদর্শনও সিদ্ধ উপত্যকার জিনিস বলিয়া স্বীকৃত হইয়াছে। এই প্রমাণের বলে প্রাচীন মেশোপটেমিয়ার সভ্যতা ও সিদ্ধু সভাতার মধ্যে ঘনিষ্ঠ সংযোগ ছিল পণ্ডিত-গণ এইরূপ মত প্রকাশ করিয়াছেন।

এ সম্বন্ধে তাঁহাদের মতগুলি পরীক্ষা করিলে দেখা যায় যে প্রাচীন মেশোপটেমিয়া ও তাম্মুগের দিন্ধু উপত্যকার অবিবাদীদিগের মধ্যে জাতিগত, বাণিজ্যিক ও কৃষ্টিগত সংযোগ ছিল তাঁহারা এইরূপ মনে করেন; বর্ত্তমান প্রবন্ধে এই তিন প্রকারের সংযোগ সম্বন্ধে পণ্ডিতগণ কি মত প্রকাশ করিয়াছেন এবং তাহার সমর্থনে কি প্রকারের মৃক্তিপ্রমাণ উপস্থিত করিয়াছেন অতি সংক্ষেপে তাহার আলোচনা করা হইবে।

এই তিন প্রকারের সংযোগ সম্বন্ধে আলোচনায় অগ্রসর হইবার পূর্ব্বে আলোচনার পটভূমি রচনা করিবার জন্ত মেশোপটেমিয়ার ইতিহাস ও তাহার প্রাচীন সভ্যতা সম্বন্ধে সাধারণ ভাবে কিছু বলা আবশ্রক।

মেশোপটেমিয়া ট্রাইগ্রিস ও ইউক্রেটিশ নদীর মধ্যবর্ত্তী সমতলভূমি। ইহার উত্তরে আর্মেনীয়া, কুর্দীহান ও তুকী, পশ্চিমে সিরিয়া ও আরব, দক্ষিণে পারশু উপসাগর এবং পূর্বে ইরাণ। তুর্ক জাতি এই অঞ্চলের আদিবাদী নহে। তাহাদিগকে বাদ দিলে দেখা বায় পশ্চিমে সেমিটিক শ্রারব জাতি ও উত্তর এবং পূর্বে ইরাণী গোঞ্জীর জাতি মেশোপটেমিয়াকে বেষ্টন করিয়া বহিয়াছে। দক্ষিণে মেশোপটেমিয়া ভারত মহাসাগরের সঙ্গে যুক্ত।

প্রাচীন ইতিহাসে ইউফ্রেটিস উপত্যকার দক্ষিণাংশ স্থমের नारम পরিচিত। বাইবেলে দেখা যায় বাবেল, এরেক, আকাদ ও কালনে দিনার বা স্থমেরের অন্তর্ক্ত। বলা हरेग्राह्म एवं मिनात हरेटल প্রস্থান করিয়া অস্তর নিনেছে, বেহোবোপ ও কালা নির্মাণ করেন (Gen. 10)। বাইবেলের মতে দেখা যাইতেছে যে উত্তর-মেশোপটেমিয়ার সভাত। দক্ষিণ অঞ্চলের সভাতার নিক্ট ঋণী। বাবিলোন নগর বাগদাদের ৬০ মাইল দক্ষিণে ইউফ্রেটিস তীরে অবস্থিত ছিল। কিন্তু বাবিলোনীগ্ৰা বলিতে উত্তরে আসিরীয়া, দক্ষিণে চ্যালডিয়া (কাল্ডু) ও পারশু উপদাগর, পূর্বের এলামের পর্বতমালা (দক্ষিণ-পশ্চিম ইরাণ), পশ্চিমে সিরিয়া ও আরব,—এই সীমানার মধ্যে অবস্থিত টাইগ্রিদ ও ইউফেটিদের মধ্যবর্ত্তী অঞ্চল বুঝাইত। প্রাচীন ম্যাপে দিনারের দক্ষিণে, ইউফ্রেটিস ও টাইগ্রিসের সঙ্গমের উত্তরে, চ্যালডিয়া অবস্থিত। স্থমেরীয় ইতিহাদে বিখ্যাত উর. এরেক প্রভৃতি নগর এই অঞ্চলে। চ্যালভিয়ার অনিবাদীরা চ্যালড় বা ক্যালড় নামে পরিচিত। নাবোপোলাগারের (Nabopolassar, ঞ্জী: পৃ: ৭ম শতান্দী) আমলে সমগ্র উত্তর ও দক্ষিণ বাবিলোনীয়া চ্যালডিয়া নামে পরিচিত হয়। স্থমেরের উত্তরে বাবিলোম, বাবিলোমের উত্তরে টাইগ্রিপের পশ্চিমতীরে ২০ মাইল ব্যাপিয়া অবস্থিত ছিল প্রথম সারগণের রাজধানী আকাদ বা আগেদ। আকাদের উত্তরে ট্রাইগ্রিসের পর্ববতীরে প্রাচীন অস্তব নগর। অস্তব হইতে টিগ্নেথপিলেসরের সাম্রাজ্যের নাম হইয়াছে আসিরীয়া। নিনেভে ছিল এই বাজ্যের রাজধানী। আজারবাইজান ও মিভিয়ার পশ্চিমে মেশোপটেমিয়ার উত্তর-পূর্ব্ব অঞ্চলের নাম আদিরীয়া। কোন কোন পণ্ডিতের মতে প্রাচীন আকাদজাতি পরবতীকালে আদিবীয় (Assyrians) নামে পরিচিত হয়।

মেশোপটেনিয়ার ভৌগোলিক অবস্থানের কথা বলা হইয়াছে। বর্ত্তমানে মেশোপটেনিয়া আরবজাতির অধ্যুবিত দেশ। পশ্চিমে আরব ও দিরিয়া হইতে আরব জাতির চাপ মেশোপটেনিয়া বা ইরাকের সীমানা অতিক্রম করিয়া ইরানের খ্রিস্থান, লারীয়ান প্রভৃতি অঞ্চলে প্রসারিত ইইয়াছে। সেয়িটিক গোটার প্রবাহ প্রথমে পশ্চিমের মক আক্রল হইছে আরিয়া দিরিয়া ও প্যালেটাইন প্লাবিত করিয়া মেশোপটে মিয়ার উত্তর অংশে পৌছার। অন্থমান করা হয় ইহা খ্রীইপূর্বে চতুর্থ সহস্রকের ব্যাপার। উত্তর-মেশোপটে মিয়ায় সেমিটিক প্লাবন আদিবার পূর্বের দক্ষিণে স্থমেরীয়গণ প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। অন্থমান করা হয় ইহা খ্রীইপূর্বে পঞ্চম সহস্রকে ঘটিয়াছিল। দক্ষিণ-মেশোপটে মিয়ার সমেরীয় সভ্যতা এবং স্থমেরের পূর্বের এলামের সভ্যতা প্রায় সমসামিরক বলিয়া কেহ কেহ মনে করেন এবং এলামাইট ও স্থমেরীয়গণ কোন কোন পণ্ডিতের মতে এক গোটী ভুক্ত বা সমগোদীয় জাতি ছিল।

প্রাচীন মেশোপটেনিয়া বছ গৌরবময় সভাতা ও সামাজের জনভনি। উত্তরে আর্মেনীয়ার উচ্চভূমি হইতে জমে ঢালু হইয়া দক্ষিণে পারস্ত উপনাগর পর্যন্ত ও পূর্বের জাগ্রোদ পর্বাতনালার দাত্বদেশ হইতে ঢালু হইয়া আরবের বালুকারাণি পর্যান্ত যে ভূপণ্ড বিস্তৃত সে দেশের মধ্যে এমন কি বিশেষর ছিল যে এতগুলি সামাজ্যের উৎপত্তি সেখানে সম্ভব হইয়াছিল ? ইউফেটিস ও টাইগ্রিসের জলে এমন কোন গুণ ছিল যে বিভিন্ন যুগে এতগুলি সভাতার উৎপত্তি নেশোপটেমিয়ায় সম্ভব হইয়াছিল? পৃথিবীর সভ্যভার ইন্হাদে প্রথম অধ্যায় আরম্ভ হইয়াছে মেশোপটেমিয়া, মিশর ও সিন্ধু উপত্যকা লইয়া। ইউফেটিন ও টাইগ্রিস, নীল ও সিদ্ধু নদ প্রায় একই যুগে সভাতার জন্মদাত্রী হইয়াছিল। তার পরের অধ্যায় ঈদ্বিগ্রান বা প্রাক-ছেলেনিক সভাতা। তৃতীয় অধ্যায় আরম্ভ হইল ইরাণকে লইয়া। আকাদ, বাবিলোন ও আনিরীয়ার সভাতাকে সেমিটিক সভাতা বলা হইয়াছে। বাবিলোন ও আদিরীয়ার সামাজা সেমিটিক গোষ্ঠার উত্তর শাখাতৃক্ত জাতির কীর্ত্তি। এই উত্তর শাখাভুক্ত আর্থীয়ান জাতি উত্তর মেশোপটেমিয়া ও দিরিয়ার মধ্যবন্তী আরম নগরে আপনাদিগকে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিল। প্রাচীন ম্যাপে ও বাইবেলে আরম পদন (Padan Aram) আরম ব্লিয়া উল্লিখিত। আরমাইক নিপি ও ভাষা বাবিলোন ও আদিরীয়ায় গৃহীত হয়। হিক্র জাতির এই শাগার দঙ্গে সংমিশ্রণ ঘটিয়াছিল। আরবগণ দক্ষিণ সেমিটিক শাথা ভুক্ত। সাসানীয়ান আমলের পূর্বের আরবজাতির কোনরূপ বৈশিষ্ট্যের প্রমাণাভাব।

মেশোপটেমিয়ায় প্রাচীন সভ্যতা বিকাশের ব্যাপারে উহার ভৌগোলিক অবস্থানের কিছু পরিমাণে হাত ছিল। মেশোপটেমিয়া ছিল মধ্য-এশিয়া হইতে স্থলপথে ও পূর্ব্ব-এশিয়া হইতে জলপথে ভ্রমধ্যসাগরীয় অঞ্চলের সহিত বাণিজ্যিক যোগাযোগের পথের মধ্যে। মেশোপটেমিয়ায় প্রাচীন সামাজ্যগুলির অভ্যুদয়ে এই বাণিজ্যিক সংযোগ যে অনেকথানি সাহায্য করিয়াছিল ভাহাতে সন্দেহ নাই। মেশোপটেমিয়া ও পারজে আরব অধিকার বিভ্তুত হুইলে

এই বানিজ্যিক সংযোগ স্থান করিবার জন্ত খলিফ ওমর পারতা উপসাগরের মুখে বস্রা বন্দর প্রতিষ্ঠিত করেন। ইরাণের স্থাইদ সমাট শাহ আব্বাস ঐ উদ্দেশ্যে বন্দর আব্বাস প্রতিষ্ঠিত করেন। সিদ্ধু সভ্যতার যুগে ভারতবর্ষের সঙ্গে মেশোপটেমিয়ার বানিজ্যিক সংযোগের কথা পরে বলা হইবে।

প্রাচীন-মেশোপটেনিয়ার সংক্ষিপ্ত রাজনৈতিক ইতিহাস পূর্ব্বের এক প্রবন্ধে দেওয়া হুইয়াছে। (প্রবাসী পৌষ, ১৩৫২)।

উত্তর নেশোপটেনিয়ায় আকাদীয় সাম্রাজ্য প্রতিষ্ঠিত হয় প্রথম সারগণের দারা। ইহা কোন কোন মতে এটি পূর্ব্ব ৩৮০০ সনের ব্যাপার। অক্তমতে খ্রীঃ পূঃ ২৮৭২ সনে আকাদীয় সাম্রাজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত হয়। সারগণের সাম্রাজ্যকে প্রথম দেমিটিক সামাজা বলা হইয়াছে। মেশোপটেমিয়ার দক্ষিণে স্থমেরের অভাদয়ের ছইটি যুগ লক্ষিত হয়। প্রথম युत्र आकारमत अज्ञामरयत शृक्तवती এই ऋण वला दय। পূর্বের এক প্রবন্ধে (সিদ্ধুযুগ হইতে বৈদিক যুগ, প্রবাসী অগ্রহায়ণ, ১৩৫৪) মার্শালের এই মত উদ্ধৃত করা হইয়াছে যে দিন্ধ উপভাকার দহিত মেশোপটেমিয়ার সংযোগের যে সকল নিদ্র্শন পাওয়া গিয়াছে তাহা সারগণের পর্কেকার বা তাঁহার সমসাম্যাক। স্থমেরের অভাদয়ের প্রথম যুগ অন্তে উহা আকাদীয় সামাজ্যের অন্তর্কু হয়। ইহার পর স্থমেরের অভাদয়ের দ্বিতীয় যুগ আসে। দ্বিতীয় যুগের স্থানরীয় সামাজ্য উত্তর ও দক্ষিণ মেশোপটেমিয়া, পূর্বের এলাম ও উন্তরে এশিয়া মাইনর পর্যান্ত প্রসারিত হইয়াছিল। ইহার পরে বাবিলোনীয় সামাজ্যের অভ্যাদয় হয়। হাস্ম্রাবি যথন বাবিলোনের সিংহাসন অধিকার করেন (এ: পৃ: মাইনরের হিটাইটগণ হাস্মুরাবির এশিয়া বংশকে বিভাডিত করিলে বাবিলোন কাসাইটগণের অধিকারে আদে। কাসাইটগণ পুষ্ট-ই-কোহর পার্বত্য অঞ্চলবাদী ছিল কেহ কেহ এইরূপ বলেন। পৃষ্ট-ই-কোহ লুরীস্থানের লুরীকুচাক বিভাগের মধ্যে। লুরীম্বানের অপর বিভাগ লুরীবুদ্ধর্গের অধিবাদী বক্তিয়ারীদিগকে কাসাইটগণের প্রতিনিধি বলিয়া কেহ কেহ মনে করেন। লুরীকুচাকের পশ্চিমে আশিরীয়ার সমতল ভূমি। বছকাল वाविरनारनद अधीन थाकिवाद भरद औः भः ১১२० चरक আদিরীয়ার টিমেথপিলেদর স্বাবীনতা ঘোষণা করিয়া বাবি-লোন বিজয় করেন। তাঁহার পরবর্তিগণের আমল আদিরীয় সামাজ্যের এবং মেশোপটেমিয়ার রাজনৈতিক ইতিহাসের গৌরবময় যুগ। মীভ ও বাবিলোনীয়দিগের আক্রমণে ष्मानितौषात ताक्षानी ध्वः म इहेन औः भूः ७०१ मत्न ।

षामित्रीय मामाना ध्वरम इहेवाद मर्व स्मर्गाभरहिशाद

44.

সৌভাগ্যহর্গ অন্তমিত হইল। পশ্চিম এদিয়ায় সেনিটিক প্রাণাগু লুপ্ত হইয়া ইরালয় গোয়ার প্রাণাগু প্রতিষ্টিত হইল। নিনেতে ধ্বংদের সময় হইতে (ঝা: পু: ৬০৭) কাদিসীয়াও নেহাভেন্দের মুদ্ধে (ঝাইাস্ব ৬৩৭ ও ৬৪২) সেমিটিক আরব জাতির হতে সাসানীয় রাজশক্তি বিধ্বন্ত হইবার সময় পয়্যন্ত ইরালয় সামাজ্যের রাজধানী পাদিপোলিস, একবাটানাও টেনিফোন (Cresiphon) হিন্দুকুশ হইতে হেলেস্পত ও পরে ইউক্টেশ এবং উত্তরে আর্শ্মেনীয়া, ককেশাস ও কাম্পিয়ান, দক্ষিণে পারশু উপসাগর পয়্যন্ত সমগ্র অঞ্চলের প্রধান রাজনৈতিক কর্মকেন্দ্র ছিল। আরদিকিতান ও সাসানীয় আমলে রাজধানী ছিলংটেদিফোন। পাদিপোলিস ধ্বংস হইয়াছিল বিজ্য়ী গ্রীক সৈত্যের হাতে। টেনিফোন ধ্বংস হর বিজ্য়ী আরব সৈত্যের হাতে।

হাকামণি সামাজ্য প্রণ হইলে বাল্প হইতে পশ্চিম
গ্রীস প্রয়ন্ত অঞ্চল গ্রীকদিগের দথলে বায়। সেলুসিড
রাজাদের রাজ্যানী ছিল আসিরীয়া ও বাবিলোনের মধ্যে
টাইগ্রিসের তীরে নির্দিত সেলুসিয়া নগরী। রোমান আমলে
ইউক্রেটিস ছিল ইরাণীয় ও রোমক সামাজ্যের সীমানা
নির্দেশক। আরবদথলে প্রায় হাজার বংসর থাকিবার
পর খ্রীষ্টায় ১৭শ শতাকীতে মেশোপটেমিয়া তুর্কদিগের
দ্বারা বিজ্ঞিত হয়।

উপরে বলা হইয়াছে মেংশাপটেমিয়া দক্ষিণ-পূর্ব্ধ এশিয়া ও ভূমধ্যসাগরীয় অঞ্পের সহিত বাণিজ্যিক সংযোগের পথের মধ্যে অবস্থিত। মেংশাপটেমিয়া ভারতবর্ষের এড নিকটে অবস্থিত যে অতি প্রাচীন যুগ হইতে ভারতবর্ষ ও মেশোপটেমিয়ার মধ্যে গে বাণিজ্যিক ও অক্সবিধ সংযোগ ছিল ইহা অহমান করা কঠিন নহে। এই সংযোগ সম্বন্ধে অনেক কথা বলা হইয়াছে, এখানে তাহার ছই-এক্টির উল্লেখ করা যাইতে পারে।

কোন কোন পণ্ডিত মতপ্রকাশ করিয়াছেন বে সিম্বু, সভ্যতার বাহকগণ মেশোপটেমিয়া হইতে সমুম্রপথে সিম্বু উপত্যকায় উপস্থিত হয়। কেহ কেহ বলেন যে মেশোপটেমিয়ার প্রাচীন স্থমের জাতি ভারতবর্ষ হইতে দক্ষিণ মেশোপটেমিয়ার গিয়াছিল। রমাপ্রসাদ চন্দের মতে যহ, তুর্কাশ, ভরত, পুরু প্রভৃতি প্রসিদ্ধ করেদীয় গোণ্ডী দিরিয়া ও উত্তর মেশোপটেমিয়া হইতে সমুম্রপথে ভারতবর্ষ উপস্থিত হইয়াছিল। একজন পণ্ডিত মত প্রকাশ করিয়াছেন যে, পশ্চিম-ভারতের সহিত মেশোপটেমিয়ার বাণিজ্যিক সংযোগ ঞাঃ পৃঃ ৪০০০ বংসরের প্রাচীন, ইহা ঞাঃ পৃঃ ৬০০০ বংসর অবেশন্ধ প্রোচীন হইতে পারে। ঝাঃ পৃঃ ৬০০০ বা ৪০০০বংসর পূর্বে এই ছই দেশের মধ্যে সেঞ্জন কাঠ ও মুসলিনের ব্যবসায় চলিত (J. R. A. S. X.X. 336,

337: XXI. 204)। এই প্রসঙ্গে বলা যাইতে পারে যে মিশবের গ্রী: পূ: ১৭০০ বংসবের প্রাচীন কবরে ভারতীয় মদলিন ও নীল (indigo) পাওয়া গিয়াছে (J. R. A. S. XX/206)। হিন্দুদিগের মধ্যে চান্ত্র মাস গণনার রীতি মেশোপটেনিয়া হইতে আসিয়াছে এইরূপ একটি মত প্রচলিত আছে। অফুমান করা হয় বে চল্লের উপাসনা ও চান্দ্র মাস গণার রীতি মেশোপটেমিয়া হইতে আসিয়া থাকিলে খ্রী: পূ: ৪০০০ বংসরের পূর্বের উহা আসিয়াছিল, কারণ দারগণের সময়ে উহা প্রাচীন বলিয়া পরিগণিত হইত। একটি মত অভুসারে "The trade records of the black-headed, perhaps Dravidian-speaking Sumris of the Euphrates mouth prove so close relation with the peninsula of Sinai and Egypt as to make a similar conection with India probable as far back as 6000 B.C." (/. R. A. S. $XXI,\,325,\,326)$ ৷ সেইস কতকটা এইরূপ মত প্রকাশ ক্রিয়াছেন। (Hilbert Lectures 33)। স্থলীয়ানার ম্ব নৌ (Sus or Saus) জাতীয় বনিকগণ বেলুচীস্থানের পথে ভারতবর্ষে প্রবেশ করিয়া পাতালে (দক্ষিণ সিন্ধু দেশ) বাস ক্রিতে আরম্ভ করে। পরে ইহারা উত্তর গুড়রাতে চলিয়া যায়। তাহাদের নাম হইতে সৌবাই নাম আসি-য়াছে। স্থানিগের পূর্বে চক্র উপাসক স্থমরীগণ পশ্চিম্-छातरक कारियाछिल अष्टेक्ष बला इहेगारछ।

দে নাহা হউক, মেলোপটেমিয়ার ইজিহাসের বে সংক্রিপ্ত বিবরণ উপরে দেওটা হইয়াছে ভাষা হইছে দেখা যায় দে, প্রাচীন মেশোপটেমিয়ার সভ্যতা বিকাশের যুগকে প্রাক্-সেমিটিক ও সেমিটিক এই ছই ভাগে বিভক্ত করা যায়। প্রাক-সেমিটিক সভ্যতার বিকাশ হইয়াছিল দক্ষিণে স্থানের, সেমিটিক সভ্যতার বিকাশ হইয়াছিল উত্তরে। সিদ্ধ্ সভ্যতার বাহক্দিগের সঙ্গে মেশোপটেমিয়ার সংযোগের কথা বলিতে প্রধানতঃ দক্ষিণের স্থেমর্দিগের সঙ্গে সংযোগ বুঝায়।

স্থমেরীয়গণ কোন্ গোর্জীর জাতি ছিল সে সম্বন্ধে বছু আলোচনা হইয়াছে। সংক্ষেপে বলা যায় যে নৃতত্ত্ব-বিজ্ঞানীদিগের মত এই যে স্মেরীয়গণের মধ্যে লখা মুগু ও গোল মুগু এই ছুই টাইপের লোক ছিল। প্রথম গোষ্ঠীর নাম ভ্রমধ্যসাগরীয় (Mediterranean) এবং বিভীয় গোষ্ঠীর নাম আর্মেনয়েড (Armenoid)। নৃতত্ত্ববিজ্ঞানীদিগের মতে লখা মুগু গোষ্ঠীর উৎপত্তিস্থান ভ্রমধ্যসাগরের উপকূল অঞ্চল ও গোল মুগু টাইপের উৎপত্তিস্থান আর্মেনীয়ার মালভ্নি। কিছু দেখা যায়, যে উচ্চভূমির পশ্চিম প্রাম্ভ ক্রীয়ান, আক্সারবাইজান হইয়া আর্মেনীয়ার পর্বতগ্রহিতে মিলিয়াছে, ভাছার পূর্বপ্রান্ত ইরাণ, বাল্থ ও বাদাক্ষান

হইয়া পামীরের পর্বতগ্রন্থিতে মিলিয়াছে। এই পূর্ব প্রান্থের অধিবাসীরাও গোলমৃটি গোষ্ঠীয়। এই গোষ্ঠাকে আলপাইন, পামীরীয় বা ইরাণো-পামীরীয় বলা হয়। গোলমুগু গোষ্ঠার এবং মোটামুগু এক ভাষা গোষ্ঠীর বিভিন্ন শাখা ভাষাভাষী হুই প্রান্তের অধিবাসীদিগকে হুইটি গোচীর নাম নৃতত্ত্বিজ্ঞানীরা দিয়াছেন। ইহা উদ্দেশ্যমূলক অথবা ইহার কোন প্রকৃত কারণ আছে কিনা পরে দেখা যাইবে। দেখা যায় যে বিভিন্ন দেশের প্রাগৈতিহাসিক আমলের ভূপসমূহ হইতে গোলমুও গোষ্ঠার লোকের অভিনের প্রমাণ যেখানে পাওয়া গিয়াছে দেগানেই ঐ গোটাকে व्यार्थनस्य विनिधा वर्गना कवा इट्टेशाइ। स्ट्रास्तव नश-মুণ্ড গোষ্ঠীকে কেহ কেহ দাবিড় বলিয়া মত প্ৰকাশ করিয়া-ছেন। কোন কোন পণ্ডিতের মতে ভাহারা দেমিটক। স্থমেরীয়গণের মধ্যে ভূমধ্যসাগরীয় ও আমে নিয়েড বাতীত অক্ত গোষ্ঠার লোকও ছিল, এইরূপ বলা হইয়াছে। কোন কোন নৃতত্ত্বিজ্ঞানীর মতে লখামুণ্ড Northern steppe folk অর্থাং প্রোটো নডিকি এবং পামীরীয় গোলমুগু গোষ্ঠার লোক স্থমেরে বর্ত্তমান ছিল।

স্থারের পূর্বের এলাম। স্থানেরীয় ও এলামাইট কৃষ্টি প্রায় সমদাময়িক এইরূপ মত প্রকাশ করা হইয়াছে। ল্যাংডন এবং আরও কেহ কেহ বলেন স্থানেরীয় ও এলামাইটগণ একই গোষ্ঠার এবং এই তুই কৃষ্টি মূলে এক। ডিকদন ও হেমীর (Hamy) মতে প্রকৃত স্থানেরীয়গণ (এবং এলামাইটগণ) গোলমুও গোষ্ঠার জাতি।

মোটাম্ও দেখা যাইতেছে বে দক্ষিণ মেশোপটেমিয়ার প্রাচীন অধিবাদী স্থমেরীয়গণের মধ্যে বিভিন্ন গোটার জাতি থাকিলেও অনেক নৃতত্ববিজ্ঞানীর মতে গোল মুও গোটার জাতি প্রকৃত স্থমেরীয়ান ও তাহারাই প্রাক্-দেমিটক নেশোপটেমিয়ার সভ্যতার বাহক।

সিদ্ধু উপত্যকা ও মেশোপটেমিয়ার প্রাচীন সভ্যতার বাহকদিগের মধ্যে জাতিগত সম্পর্ক সম্বন্ধে যে সকল মত প্রকাশ করা হইয়াছে তাহা তুই ভাগে ভাগ করা যায়। এক দলের মত এই যে লম্বা ও গোলমুও গোল্টার জাতি মেশোপটেমিয়া হইতে সমুদ্রপথে সিদ্ধু উপত্যকার আসিয়াছিল। ডাং হাটন প্রমুখ নৃতত্ত্ববিজ্ঞানীদিগের মত এইরূপ। অপর দলের মত এই বে স্থমেরীয়গণ সম্ভবতঃ সিদ্ধু উপত্যকা হইতে দক্ষিণ মেশোপটেমিয়ায় গিয়াছিল। ডাং হল প্রমুখ পণ্ডিতগণের মত এইরূপ। এই তুই মতের মধ্যে প্রথম মতটি বেশী প্রচলিত এবং সাধারণের মধ্যে এই ধারণা প্রচলিত বে প্রাক্-আর্য যুগে বিদেশ হইতে আগত ভূমধ্যসাগরীয় আমে নিয়েভ গোল্ডীর জাতি সিদ্ধু সভ্যতার পত্তন করিয়াছিল। সিদ্ধু সভ্যতার বাহকদিগের মধ্যে জাতি সংমিশ্রণ সম্বন্ধে আলোচনার সময়ে এ বিষয়ে বিষয়িতিভাবে বলা হইবে।

দিদ্ধু জাতি এবং স্থমেরীয় ও এলামাইট জাতির মধ্যে বাণিজ্যিক সংযোগের সহদ্ধে অনেক কথা বলা ইইয়াছে। এ সহদ্ধে মতবাদের ভিত্তি কতকগুলি নিদর্শন। দিদ্ধু উপত্যকার বৈশিষ্ট্যস্চক সীলের অফুরুপ কয়েকট সীল স্থমেরের (উর ও কিস) কয়েকট প্রাগৈতিংগদিক যুগের স্তৃপ হইতে পাওয়া গিয়াছে। এই সকল স্তৃপ গ্রীঃ পৃং ৩০০০ বংসর পৃর্বের ধ্বংসপ্রাপ্ত নগরের। দিদ্ধু উপত্যকার সীলগুলি ব্যবসায়-বাণিজ্য সম্পর্কে ব্যবস্থত হইত বলিয়া একট মত প্রচলিত আছে।

প্রাচীন মেশোপটেমিয়া ও সিন্ধু উপত্যকার বাণিজ্যিক সম্পর্কের কথা পূর্বের উল্লেখ করা হইয়াছে এবং বলা ইইয়াছে যে প্রাচীন বুগো মেশোপটেমিয়ার অভ্যাদয়ের অন্ততম কারণ এই যে, উহা দক্ষিণ-পূর্বে এশিয়া ও ভূমণ্য-সাগরীয় অঞ্চলের মধ্যে বাণিজ্যিক সংযোগের পথে অবস্থিত। একজন ঐতিহাসিক বলিতেছেন, "Babylon and Nineveh owed their greatness to their being entrepots of trade passing from the East to the West."

অভি প্রাচীনকাল হটতে তিনট পথে পশ্চিম জগতের সহিত ভারতের বহিবাণিজা চলিত, লোহিত সাগরের পখ. পারশ্য উপদাগরের পথ এবং উত্তরে দিন্ধু-কাম্পিয়ানের পথ। পারশ্র উপদাগরের পথে যে বানিজ্য চলিত দেই পথ মেশোপটেমিয়া হুইয়া বরাবর দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিয়া মাইনবের সিলিসিয়ান উপকৃল পর্যন্ত প্রসারিত ছিল। লোহিত সাগরের পথে যে বাণিজ্য চলিত ভাহার ঘাট ছিল মিশরের বন্দর। উত্তরের পথে সিন্ধু উপত্যকা হুইতে অক্সাস নদী পথ্যন্ত উটের পিঠে মাল চালান ২ইত। অক্সাস বাহিয়া এই মাল আরগ সমূত্রে পৌছিত এবং কাম্পিয়ান ও রুঞ্দাগরের তীরবর্তী অঞ্চল বিলি ২ইড। গ্রীক আমলে আলেকজান্দ্রিয়া প্রতিষ্ঠিত হইলে গোহিত সাগরের পথ প্রবল ও পারশ্য উপসাগরের পথ তুর্ফাল হইয়া পড়িল। ভূমধ্যসাগরীয় দেশসমূহে ভারতের মাল সরবরাহ করিত কার্থেত্রের বানিজাবাহিনী। রোমের অভ্যানয় হইলে এট বানিছোর অধিকার লইয়া প্রতিদ্বিতা আরম্ভ হইল: ফলে পিউনিক যুক্ত ঘটল। বোম নিশব ও আলেকজান্দ্রিয়া দখল করিয়া লোহিত্সাগরের বাণিজ্ঞাপথ দখলে আনিল। তারপর সিরিয়া দখল করিয়া ইউফেটিস পথ্যন্ত সামাজ্যের সীমানা প্রসারিত করিলে পার্য্য উপসাগরের পথও ভাহার আয়ত্তে আসিল। রোমের সহিত দক্ষিণ-ভারতের বানিজ্যিক সংযোগ প্রমাণিত হইয়াছে। কুশান আমলে অকসাস-কাম্পিয়ান পথেও ভারতের সহিত পশ্চিম জগতের সংযোগ ছিল। ইহার পর আরবগণ মিশর জয় করিয়া

লোহিতসাগরের পথের বানিজাঘাটি আলেকজান্তিরা দখল করিল। পারগ্র জয় করিয়া খলিফ ওমর ট্রাইগ্রিস্ ও ইউফ্রেটিসের মোহনায় বসরা বন্দর প্রতিষ্ঠিত করিলেন যাহাতে ভারতীয় বানিজ্য সম্পূর্ণরূপে অধিকার করা যায়। আলেক্জান্ত্রিয়া বন্দর যুরোপীয়গণের পক্ষে বন্ধ হইয়া গেল। ছইটি জলপথ এই ভাবে রুদ্ধ হওয়ায় আবার উত্তরের স্থল পথের দিকে দৃষ্টি পড়িল।

ইউবোপীয়গণ এই কছ জলপথ মৃক্ত করিবার চেষ্টায় সাফল্য লাভ করিল খ্রীষ্টায় ১৫শ শতাব্দীতে (১৪৯৮ খ্রীঃ অঃ) বখন উত্তমাশা অপ্তরীপ অতিক্রম করিয়া ভাস্থোগামার পরিচাননায় তিনখানি পর্ত্বীক জাহাজ ভারতীয় সমুদ্রে আবিভূতি হইল।

দে যাহা হউক, দিন্ধু উপত্যকার দকে প্রাচীন মেশো-পটেমিয়ার বানিজ্ঞাক সংযোগ ছিল তাহাতে সন্দেহ নাই। প্রশ্ন উঠে, এই বানিক্স চালাইত কাহারা ? যে বাণিক্সিক সংযোগের নিদর্শনের উল্লেখ করা হইয়াছে উহা পাওয়া গিয়াছে কিশ ও উরে। মোহেঞ্চোদারো, হরাপা ও বেল্চিম্বানের বিভিন্ন স্তুপ হইতে স্বমেরীয় ও এলামাইট বাণিজ্যের সংযোগের নিদর্শন কি পাওয়া গিয়াছে তাহার উল্লেখ দেখা যায় না। অবশ্য क्रष्टिমূলক সংযোগের নিদর্শন পাওয়া গিয়াছে পণ্ডিতগণ এ কথা বলেন। এই প্রসঙ্গে উল্লেখ করা যায় যে মিশরে গ্রী: পূ: ১৭শ শতাব্দীর কবর হইতে ভারতের সহিত বানিজ্যিক সংযোগের নিদর্শন যে মসলিন ও নীল পা ওয়া গিয়াছে তাহাও ভারতের জিনিস। অবশ্য ইহা হইতে এরপ অমুমান না করিলেও চলে যে এক পক্ষই বাণিজ্য চালাইত। আর একটি কথা শ্বরণ করা প্রয়োজন। মো:হঞোদারো ও হরাপ্লা, এই উভয় স্থানই সমুদ্রতীর হইতে দূরে অবস্থিত। ঘনিষ্ঠ বাণিঞ্চ্যিক সংযোগ রক্ষা করিতে হইলে সিদ্ধুর মোহানায় ঘাটি রক্ষা ক্রিবার প্রয়োজন হইত। এই ঘাটি এখনও আবিষ্কৃত হয় নাই। এই ঘাঁটি মাক্রাণ উপকুল, কাথিয়াবাড় বা কোষণ উপকুলেও হইতে পাবিত।

দিক্ উপত্যকার সহিত প্রাচীন মেশোপটেমিয়ার ক্ষষ্টিমূলক সংযোগ সম্বন্ধ কি বলা হইয়াছে এইবার দেখা যাইতে
পারে। এই প্রসঞ্জে বলা আবশ্যক যে, মেশোপটেমিয়ার
সঙ্গে দিক্ উপত্যকার ক্ষষ্টিমূলক সংযোগ সহক্ষে পরিষার
ধারণা করিতে হইলে স্থমের, আকাদ, বাবিলোন ও
আদিরীয়ার সভ্যতা বিকাশ ও রাজনৈতিক অভ্যদয়ের যে
ক্রম নির্দেশ ও মোটামূটি কাল নির্ণয় করা হইয়াছে ভাহা
শ্বন রাখা প্রয়োজন। আরও শ্বন রাখিতে হইবে যে,
কোন কোন পণ্ডিতের মতে আকাদ, বাবিলোন ও
আদিরীয়ার কৃষ্টির কাঠাম স্থমেরীয়। পণ্ডিতগণের অন্থমিত

প্রাচীনত্বের হিদাব করিলে দিক্কু উপত্যকার সহিত ক্লষ্ট-মূলক সংযোগ বলিতে প্রধানতঃ প্রাক্-দেমিটিক স্থমেবের সহিত সংযোগ ব্রায়।

এই সংযোগ সম্ব**র্দ্ধ** তিনটি মতবাদের উল্লেখ করা যায়। একটি মত এই বে, স্থমেরীয় কৃষ্টি সম্ভবতঃ সিদ্ধু কৃষ্টি হইতে উদ্ভত। ডা: হলের মতের উল্লেখ করা হইয়াছে। তিনি বলেন যে স্থমেরীয় ক্লষ্টির উৎপত্তি হইয়াছে প্রাকৃ-আর্য যুগের ভারতীয় কৃষ্টি হইতে। পূর্বের একটি প্রবন্ধে সর জন মার্শালের মতের উল্লেখ করা হইয়াছে। স্থমেরীয় প্রাচীন নিদর্শনের অফুরূপ নিদর্শন মোহেঞ্জোদারো ও হরাপ্পা স্তুপের উপরের শুরগুলিতে পাওয়া গিয়াছে। তিনি বলেন,—কেহ কেহ বলেন স্মেরীয়গণ অগ্র স্থান হইতে দক্ষিণ-মেশোপটেমিয়ার গিয়াছিল। এই মত গ্রাহ্য করিলে ভারতবর্ষ হ্মেরীয় ক্ষণ্টির জন্মভূমি হওয়া আশ্চণ্ট নহে। সরজন মার্শাল সাবধানী পণ্ডিত, ইহার বেশী অগ্রসর হওয়া তিনি সঙ্গত মনে কধেন নাই। তাঁহার মত কতকটা এই যে সিন্ধ কৃষ্টির কতকগুলি অপ মেশোপটেমিয়া হইতে প্রাপ্ত কিছ্ক উহার যথেষ্ট স্বকীয় বৈশিষ্ট্য ছিল। বাহারা বলেন যে সিন্ধুকুষ্টি মেশোপটেমিয়া হইতে আমলানী হইয়াছিল তাঁহাদের মধ্যে ডাঃ হাটনের নাম করিতে হয়। তাঁহার মত এই যে, সিন্ধকৃষ্টির প্রধান বৈশিষ্ট্য গুলি মেশো-পটেমিয়া হইতে আদিয়াছিল এবং উহা আনিয়াছিল ভূমধা-সাগরীয় ও আর্মেনয়েড গোষ্ঠার লোক।

ক্লষ্ট্রমূলক সংযোগের প্রমাণ হিসাবে যে স্কল নিদর্শনের উল্লেখ করা হইয়াছে তাহার তুই-চারিটর কথা বলা হইতেছে। সিন্ধু উপত্যকার স্থাপত্য সম্বন্ধে এথানে কিছু বলা হইতেছে না। মার্শাল ইহাকে দিন্ধু উপত্যকার নিজম্ব জিনিস বলিয়া মত প্রকাশ করিয়াছেন। ডাঃ ম্যাকে কিশ ও মোহেঞােদারোতে প্রাপ্ত পােড়ামাটির তৈজসের (ceramic wares) সাদৃশ্যের উল্লেখ করিয়াছেন। হান্মুরাবির সময়ের একটি মন্দিরের ধ্বংসন্তঃপের মধ্যে প্রাপ্ত একট সীলের সহিত মোহেঞোদারো ও হরাপায় প্রাপ্ত সীলের সাদৃশ্যের কথা তিনি বলিয়াছেন। নাগপুর দেউ লি ম্যুজিয়মে বক্ষিত বাবিলোনের প্রথম রাজবংশের আমলের একটি দীলের উল্লেখ এই প্রদক্ষে করা যাইতে পারে। হরাধায় প্রাপ্ত একটি প্রসাধন বা টয়লেট-দেটের গঠনপ্রনালী উর নগরের ধ্বংসন্ত,প হইতে প্রাপ্ত টয়লেট-সেটের গঠন প্রশালী হইতে অভিন্ন বলা হইয়াছে। এইরূপ আরও কতকগুলি খুচরা ছিনিদের নক্সা বা কারুকার্য্যে মেশোপটেমিয়ায় প্রাপ্ত অমুরূপ বস্তুর নক্ষার স্থিত সাদৃশ্যের কথা বলা হইয়াছে। ভারপর উল্লেখ করিতে হয় কতকগুলি অভুত অভর মূর্ত্তি খোদিত সীলের।

একটি দীলে মাহুষের মুখ কিন্ধ ছাগল বা ভেড়ার দেহবিশিষ্ট কাল্পনিক জন্তুর মূর্ভি দেখা যায়। আসিরীয় শিল্পের মাস্কুষের মুখ ও সিংহের দেহবিশিষ্ট কল্পিত জ্ঞুর সহিত ইহার তুলনা করা হইয়াছে। অদ্ধেক মানুষ ও অর্দ্ধেক যণ্ডের দেহবিশিষ্ট একটি সীলের সঙ্গে স্থমেরীয়ার এয়াবনি বা এলিড়ব তুলনা করা হইয়াছে। এয়াবনি স্থমেরীয় পুরাণের একজন রাক্ষস, গিলগামেশকে বধ করিবার জন্ম অরুরা দেবী তাহাকে সৃষ্টি করিয়াছিলেন। মোহে शामा दात्र मील प्रथा गात्र এই खडु छ छीव अकड़ শুৰধারী সিংহকে আক্রমণ করিতেছে। কতকগুলি সীলে শুপ্রধারী মানুষ মৃত্তি দেখা যায়। মার্শালের মতে "there is a strong presumption for connecting them with the Sumerian hero-god Eaboni." একট মৃত্তির গাত্রাবরণের নঞ্জা (trefoil patterning) কতকগুলি স্থমেরীয় মূর্ত্তির ("Bulls of Heaven") গাত্রাবরণের নঝা হইতে অভিন্ন বলা হইয়াছে।

উপরে যে সাদৃশ্যের কথা বল। হইয়াছে সেই ধরণের সাদৃশ্য সিদ্ধু উপতাকা ও মেশোপটেমিয়ার মধ্যে ক্ষষ্টিমূলক সংখোগের প্রমাণ ধলিয়া গ্রহণ করা হইয়াছে। বলা বাছলা এই প্রকার প্রমাণের বলে ইহার বেশী অগ্রসর হওয়া চলেনা, কিন্তু পণ্ডিতগণ অগ্রসর হইয়াছেন। সিদ্ধু উপতাকার ধন্মের আলোচনার সময়ে ইহা বিশেষভাবে দেখা যাইবে। এপানে সংক্ষেপে তুই-একটি কথা বলা হইতেছে।

বেলুচীস্থান ও অন্তর কতকগুলি সুপ হইতে বহু ক্ষুদ্র পোড়ামাটির ষণ্ডের মৃত্তি পাওয়া গিয়াছে। মোহেঞাদারো ও হ্রাপ্লার কতকগুলি সীলে যণ্ডের মূর্ত্তি দেখা যায়। বণ্ড প্রাচীন মেশোপটেমিয়া, মিশর, ঈজিয়ান সাগর অঞ্চলে পুদিত হইত। পৌরাণিক হিন্দুধর্মে যণ্ড শিবের বাহন ও অবতার রূপে পৃঞ্জিত। স্থতরাং অনুমান করা হইয়াছে শিদ্ধ উপত্যকায় ষণ্ড উপাদনা প্রচলিত ছিল এবং উহা বিদেশ, হইতে আসিয়াছে। পোড়ামাটির ক্ত ক্ত স্বীমৃতি মোহেঞোদারো, হরাপ্লা ও বেলুচীস্থানে পাওয়া গিয়াছে। উপরে উল্লিখিত দেশসমূহে স্ত্রীদেবতার উপাদনা প্রচলিত ছিল, পৌরাণিক হিন্দধর্মেও স্ত্রীদেবতার উপাদনা বহিয়াছে। অত্নমান করা হইয়াছে এই সকল অভুত স্ত্রীমৃত্তি সকলেই দেবীপ্রতিমা এবং স্ত্রীদেবতার উপাসনা বিদেশ হইতে আসিয়াছিল। সিদ্ধ ধন্মের বিভিন্ন অঙ্গের ব্যাখ্যায় মেশোপটেমিয়া, সিরিয়া, মিশর, আলডোলিয়া, প্যালেপ্তাইন, ক্রীট, সাইপ্রাস প্রভৃতি অঞ্চলের প্রাচীন ধর্মের নিদর্শন প্রমাণ হিসাবে দাড় করান হইয়াছে। সিদ্ধু ধর্মে জ্রীদেবতার উপাসনা সম্বন্ধে প্রচলিত মত শেষ পর্যন্ত এই দীড়াইয়াছে যে. গোড়ায়. শ্রীদেবতার উপাসনার উৎপত্তি হইয়াছিল আনাতোলিয়ার (ফ্রিজিয়ায়) এবং সেখান হইতে উহা সিরিয়া ও নেশোপটেমিয়া হইতে সিরু উপত্যকায় প্রচলিত হইয়াছিল। পণ্ডিত ডাঃ হাটন এ সম্বন্ধে এতটা নিঃসন্দেহ সে অসুলা নির্দেশ করিয়া তিনি বলিয়া দিয়াছেন যে দেবদাসী প্রথা, হিন্দু সামাজিক অফুষ্ঠানে মংশ্রু উপাসনা, সর্প উপাসনা, fire walking বা অয়ি সঞ্চরণ (যেমন চড়কপুজায়, দক্ষিণ ভারতের কোন কোন অঞ্চলে ধর্মপুজায় এই প্রথা প্রচলিত আছে) প্রভৃতি জাবিড় ভাষাভাষী ভ্রমধাসাগরীয় গোর্গার ছারা এশিয়া মাইনর প্রভৃতি দেশ হইতে আনীত হইয়াছি । ডাঃ হাটনের মতে এই গোর্গার লোকেই সিন্ধু সভ্যতা গড়িয়া তুলিয়াছিল। আমাদের অম্যান করিতে হইবে যে সিন্ধু ধর্মেও এই সকল বৈশিষ্ট্য ছিল এবং অন্থ প্রমাণাভাবে নৃতত্ববিজ্ঞানীর কল্পনা-বিশাসকে এক্ষেত্রে প্রমাণ বলিয়া মনে করিতে হইবে।

শিক্ষ ক্ল**টির সহিত মেশোপটেমিয়ার প্রাচীন ক্ল**টির সংযোগ সম্বন্ধে পণ্ডিতসমাজে যে বিতর্ক হইয়াছে উপরেব বিবরণ হইতে তাহার ধংদামান্ত ইঞ্চিত মাত্র,পাওয়া যাইবে। তিন প্রকারের সংযোগ সম্বন্ধে যে সকল মতের উল্লেখ কর। হইয়াছে তাহা হইতে বাস্তবিক এই সংযোগ কিরূপ ছিল সে সম্বন্ধে কোন পরিচ্ছন্ন ধারণা করা সহজ নহে। পণ্ডিত সমাজের এই বিতর্কের মধ্যে কয়েকট জিনিস দৃষ্টি আকর্ষণ করে। প্রথমতঃ এই বিতর্কের গোড়ায় যে বৈজ্ঞানিক ভিত্তিট্র আছে অতি সহজে পণ্ডিতগণ তাহা অগ্রাহ্ম করিতে প্রস্তুত। যদি একথা সত্য হয় যে স্থমেরীয় কুষ্টির সহিত যাহাতে সংযোগ প্রমাণ হয় সেই সকল নিদর্শন মোহেঞ্চোদাবো ও হরাপ্লার উপরের স্তরগুলিতে পাওয়া গিয়াছে এবং তাহার নীচে বহু শুর আছে তাহা হইলে সিন্ধ সভ্যতার উৎপত্তি বিচারের প্রদক্ষে যে প্রকার প্রমাণের সাহায্য লওয়া হইয়াছে তাহার অনেক্থানি অর্থহীন হইয়া যায় এবং বলিতে হয় যে এই সংযোগ শি**ন্ধ-সভ্যতার শে**ষ আমলের ব্যাপার। যদি সিম্ব-সভ্যতার যে কাল নির্ণয় করা হইয়াছে (খ্রী: পূ: ৩২৫০) নানা প্রকাব ক্রেটী সত্ত্বেও তাহাই আলোচনার ভিত্তি বলিয়া গ্রহণ করা হয় তাহা হইলেও দেখা যাইবে সংযোগ প্রমাণ করিবার জন্ম যে সকল যুক্তি ব্যবহার করা হইয়াছে ভাহার বারো আনা অগ্রাহ্য করিতে হয়। বিভীয়তঃ, যে কোন প্রকারে হউক সিদ্ধু সভ্যতা মেশোপটেমিয়ার নিকট ঋণী প্রমাণ করিবার প্রবল আগ্রহ। আগ্রহের প্রাবল্যে যে ধরণের যুক্তি ব্যবহার করা হইতেছে তাহার অসারতা নদ্ধর এড়াইয়া গিয়াছে। সম্ভবতঃ সিদ্ধু সভ্যতা ভারতীয় সভ্যত। বলিয়া মত প্রকাশে কোন কোন বৈদেশিক পণ্ডিতের বিবেচনায়

দায়িত্ববোধ লুপ্ত হইয়াছে বলিয়া মনে হয়। ইহা বৈজ্ঞানিক মনোভাব নহে। তৃতীয়তঃ, সিদ্ধু সভ্যতাকে বৈদিক থার্য সভ্যতার পূর্ববত্তী ও প্রতিছন্তী হিসাবে প্রাবিড় সভ্যতা বলিয়া প্রমাণ করিবার প্রয়াস। সিদ্ধু লেখনসমূহের পাঠোদ্ধার করা এ পর্যান্ত সম্ভব হয় নাই কিন্তু সিদ্ধু সভ্যতার বাহক গোষ্ঠাকে প্রাবিড় ভাষাভাষী বলিয়া প্রচার করিতে অনেক পণ্ডিতের বাবে নাই। এই গোষ্ঠা মেশোপটেমিয়া হইতে আসিয়াছিল, এজভ্য মেশোপটেমিয়াতে প্রাবিড় ভাষা প্রচলিত ছিল এরূপ অন্থুমান করা হইয়াছে। সংক্ষেপে বলা যায় যে, বিতর্কের মূল কথা বিভিন্ন পণ্ডিতের পূর্বগাঠিত মতবাদ প্রতিষ্ঠিত করিবার উৎসাহ। এই উৎসাহ প্রায় নিরক্কুশ।

অপক্ষপাত পণ্ডিতের বাহুল্য না থাকিলেও অভাব নাই।

সিদ্ধু সভ্যতার নিদর্শনসমূহের সহিত বাহাদিগের পরিচয়

ঘনিষ্ঠ এবং অপরের অপেক্ষা অবিক এইরূপ তৃই জনের
মতের উল্লেখ করা বাইতেছে।

দার জন মার্শালকে গাবধানী পণ্ডিত বলা হইগ্নাছে। মেশোপটেমিয়ার রুষ্টির সহিত সিন্ধু রুষ্টির সংযোগের প্রমাণ-গুলির উল্লেখ করিয়া তিনি সিন্ধু রুষ্টির বৈশিষ্ট্যের প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়া বলিয়াছেন বে, এই ক্লণ্টের স্বকীয়তার, অক্সাগ্র প্রাচীন যুগের কৃষ্টির সহিত পার্থক্যের প্রচুর প্রমাণ রহিয়াছে। দিন্ধ উপত্যকার স্থাপতা তাহার নিজ্ঞস্ব জিনিদ। উহার সাধারণ স্থানাগারগুলির মত জিনিস রোমান যুগের পূর্বের আর কোথাও দেখা যার না। সিন্ধ উপত্যকার শিল্পের স্বাভাবিকতা তাহার নিজস্ব জিনিস, এলাম, স্বমের বা মিশরের সমসাময়িক শিল্পের সঙ্গে উহার কোন নিল নাই। সিদ্ধ উপত্যকার পটারির নক্সা, এখানে তুলার কাপড়ের ব্যবহার, দিব্ধ উপত্যকার লিপিমালার উৎকর্ষ সিদ্ধু কুষ্টির বৈশিষ্ট্য। সিদ্ধু ধর্মের সম্বন্ধে যতটুকু থবর পাওয়া যায় ভাহাতে দিন্ধ ক্ষুষ্টর স্বকীগতার দাবি সম্পূর্ণ সমর্থিত হয়। এ দম্বন্ধে বিস্তারিত আলোচনা পরে হইবে। স্থামর বা বাবিলোনের দেবমন্দিরগুলির খাপভার মত কোন স্থাপত্যের নিদর্শন সিদ্ধ উপত্যকায় পাওয়া যায় নাই ইহা উল্লেখ করিয়া ডা: ম্যাকে বলিতেছেন এই এক মাত্র তথ্যের দারা প্রমাণিত হয় স্থমেরীয় ও সিদ্ধু দ্বাতির ধর্মের মধ্যে কোন নিল বা সংযোগ ছিল না, ("This alone would, in my opinion, suffice to show that the religion of the Sumerians and of the Indus valey people were dissimilar") (

ব্রিটিশ মিউজিয়মে রক্ষিত পুরাতন বাংলা পত্র-পত্রিকা

श्रीमास्टितक्षन वल्लाभागाग

অরচিন্তার সাত সমৃদ্র তের নদীর পারে আসিয়া পড়িয়াছি।
অবসর মিলিলেই ত্রিটিশ মিউজিয়মে গিয়া তাহার সম্বাহার
করিবার চেষ্টা করি। মিউজিয়মে রক্ষিত একট জিনিমের
প্রতি আমার দৃষ্টি বিশেষভাবে আরুষ্ট হট্মাছে; উহা
বাংলাদেশের পুরাতন পত্র-পত্রিকা। শুদ্রের শ্রীযুক্ত ত্রজেন্ত্রনাথ বজ্যোপাধ্যায়ের উপদেশে, উন্বিংশ শতান্দীর বাংলাসাহিত্যের ইতিহাসের উপকরণ-স্বরূপ, এই সকল বাংলা
সংবাদপত্র হঠতে প্রয়োজনীয় সংবাদগুলি সঞ্চলন করিবার
বাসনা বলবতী হইয়াছে। বর্তমান প্রবঙ্গে তাহার অচনা
করিলাম।

গৌরমোহন আটোর ওরিয়েন্টাল সেমিনারি ('সমাচার চন্দ্রিকা', ২২ জুলাই ১৮৩০। ৮ শ্রাবণ ১২৩৭)

বিখালয়। সকলকে জাত করা যাইতেছে যে মোকাম গরাণহাটার শ্রীয়ত কোম্পানি বাহায়রের ডাজ্ঞারধানার দক্ষিণ ৩২৮ নং বার্টাতে ওরিএনট্যাল শিমিনরি নামক বিভালয় ছই বংসর সংস্থাপিত হইরাছে তাহা প্রায় অনেকেই জ্ঞাত হইয়া থাকিবেন তথাচ ধনি গুলি বিশিষ্টশিষ্ট বর্ধিকু গুণগ্রাহক

यश्रामारसङ्गिरिशत निकृष्ठे **এই निर्द्यमन एय এ**ই विश्रामानिद्य আপনারদিগের পুত্র পৌত্রাদি প্রভৃতি অনেক ছাত্র ইংরেকী শাস্ত্র অধায়ন করিতেছেন এবং এঞ্চণে ঐ বিভাপির লেটন ফ্রানস ইংরাজী হিষ্টোরি জিওগ্রেফি এইনমি ফিলাসাফি মেবেমেটকৃস এ ज्ञान क्यूजी ज्ञां न्या अवर श्री हीन तारकात त्रहास छ ভূগোল ব্ৰতান্ত এবং কোতিষ বিদ্যা ও পদাৰ্থ বিদ্যা এবং অঙ্ক বিজা ইত্যাদি শান্ত পূর্ণব্ধপ শিক্ষার্থে জার্জ আলেগজেওর টরন-বুল এবং জার্জ এড়াড় মালিদ নিযুক্ত হইলেন এবং ঐ শিক্ষকেরদিগের নাম সকলেই প্রায় ক্রত হইয়া থাকিবেন কারণ ঐ প্রথম ব্যক্তি শ্রীযুত বাবু রামমোহন রায়ের বিগালয়ের প্রধান শিক্ষক এবং দিতীয় ব্যক্তি শ্রীয়ত মেষ্টর হের সাহেবের বিভামন্দিরের প্রধান শিক্ষক ছিলেন। পরস্ত ঐ পাঠশালাম্থ বালকেরদিগের তরক্ষা সন্বাবহার এবং সাধু ভাষাদি শিক্ষার নিমিত্তে একজন পণ্ডিত নিযুক্ত হইলেন এবং ঐ সকল বালকেরদিগের মধ্যে যিনি পারসী ভাষা অধারন করেন এবং করিতে ইচ্চুক হয়েন তাহারদের শিক্ষার্থে একজন মুনসি নিযুক্ত ২ইবেক ইহাতে ঐ ছাত্রেরদিগের নানাপ্রকার

বিছা উপাৰ্জ্জনে দ্যানতা হইবেক না এবং যছপি কোন মহালয়ের। আপন আপন পুত্র পৌত্রাদি প্রভৃতিকে নিযুক্ত করিতে ইচ্ছুক হয়েন তবে এই পাঠশালাতে পাঠাইলে নিযুক্ত করিতে করা যাইবেক এবং ঐ পাঠশালার নিয়মিত হার তাহাও টাকা পর্যান্ত ইতি বিজ্ঞাপনং প্রাবণস্থ শ্রীগোরমোহন প্র!টা। সাং শিমলা।

খ্যামবাজার-নিবাসী জয়নারায়ণ তর্কপঞ্চানন

('সমাচার চক্রিকা', ১৯ আখিন ১২৩৭)

পণ্ডিতের মৃত্য । আমরা মহা হংখিত হইরা প্রকাশ করিতেছি যে শ্রামবাঞ্চার নিবাসী ৺কয়নারায়ণ তর্কপঞ্চানন ভট্টাচার্য্য মহাশর গত ১৫ আদিন রহস্পতিবার পরলোক গমন করিয়াছেন ভট্টাচার্য্যের বয়ঃক্রম অহুমান ৫৫ রুৎসরের অধিক নহে ইনি নানা শাল্রে পণ্ডিত ছিলেন কিন্ধু শ্রায় দর্শনে বিশেষ পারগতা প্রযুক্ত তৎশাস্তাধাপনা করিতেন ইহাতে মহাখাতা। পদ্ধ ও মাত্ত হইয়া অনেক স্থানে অধ্যাপক নিমন্ত্রণ ও বিদায় করণের অধ্যক্ষতায় নিযুক্ত হইতেন অতএব তাঁহার মৃত্যু সংবাদ শ্রবণে হংখিত হইয়াছি এবং অনেকেই খেদিত হইবেন বিশেষতঃ অধ্যাপক মহাশ্রের। তর্কপঞ্চানন ভট্টাচার্য্যের গুণ অরণ করিয়া অবশ্রুই ভিন্তিত হইবেন।

ওরিয়েণ্টাল একাডিমি

('সমাচার চন্দ্রিকা', ১১ অগ্রহায়ণ ১২৩৭)

ওরিএন্টেল একাডিমি নামক বিঞ্চালয় মেং ই, বি, কেনজি
গাহেব বিনরপূর্বক কলিকাতাপু ও তৎ ইততত স্থানস্থিত
লোকদিগকে জ্ঞাত করাইতেছেন যে এতজেশীয় বালকদিগের
ইংরাজী বিদ্যা অভ্যাসের নিমিত এক্ষণে ওরিএন্টেল একাডিমি
নামক এক বিদ্যালয় খোলা গিয়াছে তজ্জ্য ছই জন পারগ
শিক্ষক নিযুক্ত হইয়াছেন একজনের নাম মেখিনস ইনি পূর্বে
গরাণহাটায় ওরিএন্টেল শিমিনরি নামক বিদ্যালয়ের নিযুক্ত
ছিলেন অল্ল এক জন সম্প্রতি ইংলঙ হইতে আসিয়াছেন। হিন্দু
কালেজের রীতাত্মসারে এই পাঠশালা চলিবেক। প্রধান
বালকেরদিগের মাসিক বেতন ও টাকা অল্প পাঠাখিদিগের
হ টাকা কিছে কেতাব ছাড়া। ঠিকানা হেদোপুক্রিনীর
ধানার নিকট।

শেরবোর্ণ সাহেবের ইংরেজী বিদ্যালয় ('সমাচার চন্দ্রিকা.' ২ চৈত্র ১২৩৭)

বিজ্ঞাপন। মেং সেরব্রোন সাহেব থাঁছার যোড়াসাঁকোর ইংরাজী বিদ্যালয় ছিল তিনি এই রাজধানীর তাবং বাদ্যালিদিগকে বিনয় পূর্বাক নিবেদন করিতেছেন যে ত্রিংশ বংসর গত হইল তিনি উক্ত বিদ্যালয় বিলক্ষণ রূপে সম্পন্ন করিয়াছেন এবং একণেও সেই মত চলিবেক সেই বিদ্যালয় একণে যোড়া-সাঁকো হইতে বছবালারে উঠিয়া গিয়াছে।

কালীপ্রসন্ন সিংহ

('সংবাদ প্রভাকর,' ২২ জ্যৈষ্ঠ ১২৭২) কলিকাতা পুলিসের প্রধান মাজিষ্টেট রান্সন সাহেব অস্ব হইতে পলিত হইয়া আপাততঃ বিচায়ালয়ে আগমনে আশজ্ঞ হওয়াতে উপযুক্ত অবৈতনিক মাজিট্রেট শ্রীমৃক্ত বাবু কালীপ্রসন্ত্র সিংহ তাঁহার কার্যা করিতেছেন। খিয়োদোর ডিকেন্সের যুত্যর পর ত্রান্সন সাহেবের নিমোগের পুর্বে এই বাবু কিছুদিন পুলিসের প্রধান আসলোপবিষ্ট হইয়া সন্থিচার বিতরণ ছারা বিলক্ষণ প্রশংসাভাজন হইয়াছিলেন।

"প্রথম"

('मरवाम প্रভাকর': मांच ১२৮२)

रेश्त्राक भागतन এ পर्याच य करत्रकृष्टि श्रवान चर्छना इरेता গিয়াছে, সমন্ত ঘটনাই প্রাহ্মণদিগের হারা সম্পাদিত। ভাল মন্দ উভয়ই সেই ব্রাঞ্চণবর্গের দ্বারা সাধিত। আমরা একে একে নিম্নে ক্রেকটি উদাহরণ দেখাইতেছি। বহুদেশের প্রথম বাহালী ব্দ বান্ধণ রার রমাপ্রসাদ রার। প্রথম গবর্ণমেন্ট উকীল বাবু বেণীমাধৰ বন্দ্যোপাধ্যার। প্রথম ইংলগুগমনকারী রাজা রামযোহন রায়। প্রথম বাঙ্গালী সিবিলিয়ান বাবু সভোজনাথ ঠাকুর। প্রথম বিখ্যাত বাঙ্গালী খুণ্টান বাবু ক্লফমোহন বন্দ্যো-পাধ্যায়। প্রথম বিধবাবিবাহকারী বাবু এ। শচন্ত্র বিদ্যারত্ব। প্রথম শবচ্ছেদক অর্দ্ধ ত্রাহ্মণ (বৈদ্য) বাবু মধুস্থদন গুপ্ত। প্রথম ভারতেশ্বরীর সহিত আহারকারী বাবু দারকানাথ ঠাকুর। প্রথম সি. এস. আই অর্থাৎ ভারতনক্ষত্র উপাবিধারীর নাম প্রসন্নকুমার ঠাকুর। প্রথম রেলওয়ের অধাক্ষ বাবু রামগতি মুপোপাধাায়। প্রথম ইংরাজের সহিত্যিলিত হইয়া "কারঠাকুর এবং কোম্পানি" নামক বাণিজ্ঞাগার স্থাপন কর্তা বাবু দারকা-নাথ ঠাকুর। প্রথম ইউনিয়ান বাজে স্থাপনকর্তা বাবু স্বারকা-নাথ ঠাকুর। প্রথম কৌনসিলের সভা বাবু প্রসন্নকুমার ঠাকুর। প্রথম গবর্ণর ক্রেনেরেলের সভার সভা রাকা রমানাথ ঠাকুর বাহাছর। প্রথম ক্লেছের নিকট বেদপাঠকারী পণ্ডিত সতাত্রত সামশ্রমী। প্রথম ইংলতে শিক্ষিত ডাক্তার স্থাকুমার চক্রবর্তী। প্রথম ইংলঙীয় যুবরাজের পাদপ্রধাকারী পণ্ডিত ভরতচন্ত্র শিরোমণি। প্রথম ভারতের ইংরাজ মিত্ররাজ্যের বিচারপতি বাবু নীলাম্বর মুখোপাধ্যায়। প্রথম বিজ্ঞাতীয় ধারায় উপভাস (लचक वाव विकार का को शामा । श्राप्त हरता की सत्राप्त "ল্যান্ড হোল্ডার্স এসোসিয়েশন" নামক সভার স্ক্রীকারী বাবু দ্বারকানাথ ঠাকুর। প্রথম শিক্ষাবিভাগের ইনস্পেষ্টর বাবু ভূদেব মুখোপাধাায়। প্রথম পদচ্যত সিবিলিয়ান বাবু স্থুৱেল্ডনাথ বন্দোপাধাায়। প্রথম বাঙ্গলা বিখ্যাত নাটক লেখক পণ্ডিত রামনারায়ণ তর্করত্ব। প্রথম অন্ত:পুরের ছার উদ্বাটন করিয়া বিশ্বাতীয়কে প্রকাশ্তরূপে বঙ্গকুলবতীদিগের মধ্যে আনমনকারী বাবু কগদানক মুখোপাধ্যায়। এই রূপ যত ভালমন্দ কর্ম, সকলই ব্রাহ্মণদিগের ছারা সম্পাদিত। 'अर्वाम अर्थाकत' अथम वामानी वातिष्ठीत कार्नकरभारम ঠাকুরের নামোল্লেখ করিতে তুলিরাছেন]

আজ-আগামী কাল

গ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

\ **L**

বাভিটাকে দেখলে মনে হবে—একটা বন্ধী-নিবাস। টানা ব্যারাকের মত লখা চলে গেছে—গলিটাকে পাকে পাকে বৃত্তির। আগে ছিল দোতলা—সম্প্রতি উপরে আর একটি তালা উঠেছে—আরও বেভৈছে হ'গুল। ঠিক ক্ল্যাট সিটেমে তৈরি হলে—কল, কল, আরও অনেক বিধয় নিয়ে মাহুষের সঙ্গে মাহুষের অহোরাত্র বিবাদ বাধত না। তা ছাড়া উহুনের বেঁারা—কচি ছেলের কান্ধা—তার চেয়ে বড়ছেলেদের বগড়া মারামারি—দৌরাব্রা—তা নিয়ে মারেদের কলহ—তার ওপর রেভিওর বিচিত্র অনুষ্ঠানে বছ কঠের বছ চঙের আর্ত্তি, গান, যন্ত্রসপীত, সংবাদ পরিবেশন—কি না আছে এখানে। উঠোন নেই, ছাদ নেই, কাপড় শুকোতে দেবার বারাক্ষা আছে—কিন্তু কাপড় মেলে দিয়ে ঠায় তার দিকে চেয়ে বসে পাকা ছাড়া গতান্তর নেই। এমনি একথানি বাভিতে আশ্রম নিয়েছে মলয়।

ভাল আশ্রয় অন্তত্ত মিলত—কিন্ত স্থতিত্রা আপ্রীয় বাড়িতে যেতে চায় নি।

বাড়ি থেকে বেরিয়েছি—সারাম আঁশা করে নয়। এই তো ভাল।

এ হাটের মাৰে খন পাততে পারবে ? আমার ধর
বাইরের কান্ধ আছে—পা মেলে বেড়াবার অঙ্গুরন্থ পথ আর
কাঁকা ভায়গা আছে—

আমাকেও তোমার কাজে টেনে নেবে। পারবে না ? তুমি যাবে ?

অবক্ত যদি তোমার মর্যাদায় না বাবে: ছষ্টামিভর। হাসি সুচিত্রার ওঠগ্রাক্তে মিলিয়ে গেল।

मनस रमाम ? किटमत मर्गाम ?

কেন—বাঙালীর অস্তঃপুরের একটি শুচিতা আছে তো ?

মলম উচ্চরবে হেসে বললে—পরীকা করছ ? অস্তঃপুর
কোণায় যে তার শুচিতা বঞ্জায় রাধবার ক্স্তু—

বা: রে, বেখানে অভঃপুরিক।—সেইখানেই কি অভঃপুর নর ? স্থচিত্রা কলকণ্ঠে হেসে উঠল।

মলয় বললে—রহন্ত রাব—স্ত্রিই কি তৃমি আমার সক্তে কাকে নামতে চাও ?

না হলে ভোষার সঙ্গে এগেছি কেন ?

কিছ এরও পরীক্ষা ভাছে।

বেশ, কর পরীকা।

প্র্যাকটক্যাল পরীকা। ছংগ কট---এসব সহু করার
ছুঠান্ত দেব মা---কারণ তাতে তোমরা অপরাক্ষের। ভবে

সম্ভ্ৰম শুচিত।—এ সৰ খুঁংখুঁতুনি মন থেকে মুছে কেলতে হবে। মোট কথা পৰ্দান্ত মধ্যে গৰান্ত যে সৰ সংকান—হয়ত ভাল—হয়ত মদলক্ষক —তাও ত্যাগ করতে হবে।

স্থানি বললে—মদলকনক যে সংকার তা ত্যাগ করবার প্রয়োজন হবে না। মেয়েদের হাতে দিব্য আর আছে— তার সন্ধান তোমরা রাখ না বলেই এত সতর্কতা—উপদেশ বর্ষণ।

(अ मिवा **अबि कि** ?

দিবা অস্ত্রের সধান অপর পক্ষকে দেওয়া নিষিদ্ধ।

সে তো শত্রুপক্ষকে।

তা হলে যারা কাঁথে কাঁথ মিলিয়ে একসকে ফ্যাসি শঞ্ ধ্বংস করলে—তারা দিব্যাগ্রের সন্ধান অপর মি্ত পক্ষকে কানাচ্ছে নাকেন ?

সন্দেহৰশত। ভাবছে —নীতিতে যারা ভিন্ন পথের পথিক — তারা মিত্র হলেও মিত্র নায়—এই ত্যে ? এ একটা কারণ বটে—কিন্তু নিন্ধেকে শুরুতের অরতার করে রাখা মান্থ্রের অক্তম অভ্যাস —

সে অভ্যাস রাধা চলবে না। বদ গভাগ। ছ'ৰনেই কৌতুকে হেসে উঠল।

স্বল্পরিসর ছরে মানিয়ে নিলে স্থচিতা।

প্রয়োজনের বাইরে এ তটুকু বিলাসকে কোন দিক দিয়ে ও প্রশ্রম দিলে না। আর ছোট খরে রাম্ম খাওয়ায় অল সময়ই তো বায় হয়। কোন কোন বাসিন্দার মত—কর্ত্তারা কার্যান্দেত্রে চলে গেলে—একধানা নভেল হাতে করে—বিছানায় শুয়ে শুয়ে পড়া—কিংবা ঘুয়—তাস বেলা বা গল এ সবে সময় কাটানো ছঙ্কাই ঠেকবে। একখানি ঘরে—রোক্ষকার রোক্ষ—একঘেরে কাক্ষ—বন্দী জীবনের অলুম্বতি ছাড়া কি? যেধানে মাঠ নেই—আকাশ নেই—নিন্তন্ধতা নেই—গাছপালা নেই—যেধানে দিনদিন খাওয়া-শোওয়া-গল্ল-কলহ চলেছে তো চলেছেই—বাইরের কাগং কচিং দেখা দেয়—কলীখাটে প্র্লো দিতে গিয়ে—দক্ষিণেশ্বরে বা বেপ্ত্ মঠে বেড়াতে গিয়ে কিংবা পর্ক্ষোপলক্ষে গলাম্বান—পথে ও গলার থারে। আর আছে প্রমোদ বিলাসের ক্ষ্ম মাসে ছটি কি তিনটি দিন—সিনেমা দর্শন।

কোনটই বন্দীর এক সেল বেকে আর এক সেল-এ বাবার পথ ছাড়া কি ? সেই ভীড—সেই কোলাহল—কলহ— ঠেলাঠেলি—মারামারি। পৃথিবী পরিপূর্ণ হরেছে বন্ধী-নিবাসে অথবা কনসংখ্যা বেড়েছে—বাতে সঙ্গীর্ণ হরেছে তার ভূমি! একটা কথা,শোনা গিরেছিল—বুছের পুরো বৌবনকালে। বোষাক্রর উংপাতে—অভিজ্ঞজনের। কতোরা দিরেছিলেন (কোন কোন ক্লেত্রে কার্যাত সে উপায় গ্রহণণ্ড করেছিলেন) যে, শিল্প-কেন্দ্রগুলিকে ছড়িয়ে দিতে হবে দেশের অভ্যন্তরে। অতি ক্লীত দেহের অংশে নিশানা করা সোজা—তার কলও অল্প আয়াসে মেলে। এখন মুদ্রের বিভীষিকা মিলিয়ে গেছে—ভৃতীয় মহায়ুদ্রের হুঃস্বপ্ন দেখলেও—আর তা নিয়ে সাবধান বাদী প্রয়োগ করলেও অতি সাবধানীর চিন্ত-উৎক্ষেপ বলে তা কানে ভূলহে না কেউ।

মলয়ের পাশটতে এসে দাড়াল স্থাচিতা। বাইরের স্বর্গৎ বিন্তীর্ণ এবং বিচিত্রও বটে। এ বগতে ছঃব যেমন স্বাসে অভাবিত-ছ:খ তেমনি ভেসে যায় নানা কর্মের প্রবাহে। আক-কাল-পরত প্রতিট দিন-সময়ের দারে দাগ মিলিয়ে খাসে আর চলে যায় না। একক জীবনের প্রবাহে-কর্মনা ষ্ঠাওলা--কখনো শতদল--কখনো তরল--কখনো তৃকান--এই বৈচিত্ত্য-বৈভবে ভেসে আসে ঘটনা। ভেসে চলে যায় দুরে-কেখনো শোভা কখনো বা সৌরভের স্পর্ণ দিয়ে। দাগে मां । याल ना - किছूरे पारक ना हित्र हात्रिए त थाला छन দেবিয়ে। আর তাতেই বুঝি মন ওঠে ভরে। সঞ্মকে একটি কায়গায় ভূপীভূত করলেই না মমতা। শ্লোতের কলকে খালের মধ্যে এনে জমা করা। লন্ধী ফুপাদৃষ্টিতে চান---অধাত্বাও ভালবেসে এগিয়ে আসে। সংসারে ঠাই বাঁবলে— স্থাণ থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে ধাবার সম্ভাবনা প্রচুর। স্বর ছাড়বার পর এই অর্ভুতি প্রবল হয়েছে স্থচিতার মনে—সম্পূর্ণকে পাওয়ার সাধনা সর্বাস্থকে বিলিয়ে দিয়েই করতে হয়:

মলম্বকে সে এক দিন বললে —তোমরা কংগ্রেসের সব নীতি মাননা তো ?

মানি— কিন্তু সমর্থন করি না। মন্ত্রী-মিশনের সঙ্গে এই আলাপ-আলোচনায় দেশের স্বাধীনতা আসবে না—এটা আমরা বিশ্বাস করি।

স্থচিত্র। বলগে—ভবে আলাপ না চালিয়ে দেশকে বিদ্রোহের পথে টেনে আনলেই কি ভোমাদের উদ্বেশ্ত সিদ্ধ হবে।

মলয় বললে—টেনে জানার কথা নয়—কিছ এটা সর্বাদা মনে রাধা দরকার—আমরা আগুন চাইছি—পাছি জালেয়া। জার তাতেই ভূলে সব পেয়েছি বলে যদি নিরুক্তম হই তো কোধার পিছিরে পড়ব ভাব কি ?

কংগ্রেসের নেভারা কি এ কথা বোবেন না ?

নিশ্চয় বোৰেন। কিছ তারা আশাবাদী। তারা হয়ত এ-ও বোৰেন যে যুদ্ধের বাকায় আমাদের সকল বভাবতই শিধিল হয়েছে কিছুটা। তা ছাড়া বিপ্লব বাবাবার উপস্কু সময়ও এটা নয়।

সে কথা কি তোমারও মনে হয় না ?

रहा। जरा-- अ क्यों कि जांत्र अ अरुग मह रव-- मूरफत

ইচ্ছাটা—মুদ্ধের কারণ সম্পূর্ণরূপে নিশ্চিক্ত না হওরা পর্যন্ত কাগিয়ে রাখা কর্তব্য ? কারও সংপ্রতিজ্ঞার অবিধাস করি না আমরা—

একটু থেমে হেসে বললে—কি স্থান—কালন্ত কুটলা গতি। এবন কি পরিবেশ স্কট করে ;—রাজনীতির রক্ষকে পটক্ষেপণ জার পটোডোলন—এ তো সাধারণের মত জহুসারে ঘটে না।

স্থানি বললে—লিখিত সৰ্গু অবস্থার চাপে এক মুহুর্ছে বাতিল হয়ে যায়।

মলয় বলগে—বিপ্লব বড়ের আগুন নয়—ওপরের একটু
দাহ্য পদার্থের সংযোগে দাউ দাউ করে খলে উঠলেই তার
উদ্বেশ্ত সিদ্ধ হয় না। মাসুষকে রাষ্ট্রসচেতন করতে হলে সমাক্র—
সংকার প্রথমে দরকার।

মোট কথা তোমরা বাম-পখী।

রক্ত গাচ হলেই মাসুষ যে পছা নেয়—ত। দক্ষিণ পছা নর

—ওটা আপোষ-নিপ্পত্তি—বিচার-বিবেচনা মানিরে চলার
একটি দিক।

মানিয়ে চলাটাই—অৰ্থাৎ সহযোগিতাই সবচেয়ে বড় কৰা নয় কি ?

তারও আধে কতকগুলি ধাপ আছে—যা উত্তীর্ণ হওয়া দরকার। তুমি তেতলা থেকে হাত বাঙ্গিয়ে দিলেই আমি একতলা থেকে কিছু সৈ হাত ধরতে পারি না।

তারই ব্যবস্থা তো হচ্ছে। সিঁডি—ইণ্টারিম গভর্ণমেন্ট হ'ল সেই সিঁড়ি যা দিয়ে এক তথার মাহুষ পৌছতে পারে ওপর তলায় কিংব। তেতলার মাহুষ নামতে পারে এক তলায়।

মলয় বললে, সিঁড়িটা তাই মৰবুত হওয়া দরকার। ও সিঁড়ি যদি পলকা হয় কোন উদ্দেশ্তই সিদ্ধ হবে না।

তাই বুৰি এত কথা কাটাকাটি---এক একটি ধারার ভাব ভাষ নিয়ে মাধা ঘামোনো চলছে।

ওসব সিঁ ড়ি তৈরির প্ল্যান—ওটাও দরকার। তার চেয়ে দরকার ভাল মশলার, ভাল ক'রিগরের। মশলা হ'ল ভারতের সব জাতির একসকে কাজ করার ইচ্ছা—কারিগর হলেন বারা কাজ করবেন, দায়িত্ব নেবেন—একসকে আর একমত হয়ে।

তা কি করে হবে। লীগ আপন্তি তুলছে।

কংগ্ৰেসও তুলেছিল। তবু কিছু ছেপে মানিয়ে না নিজে আসল কাৰ্কটাই পও হয়ে যাবে।

তা হলে মানিয়ে চলায় তোমাদের আপত্তি কেন ?

আমাদের আপত্তি হ'ল ভারতের বও সতার। আমাদের আপত্তি নকল পাবর হীরে বলে আদর করার। হাবীনতা পেরে গেলেই যে বভির নিঃবাস কেলে লঘা একটা ছুম দেওরা বাবে—ও বারণা জ্বানোর পক্ষপাতী নই আমরা। তবে কি করবে ?

কত যুগের অঞ্চাল আমাদের চারদিকে গৰিরে উঠেছে, তার উচ্ছেদ চাই। স্বাধীনতার প্রথম যুগে আত্ম-উৎসর্গের আরোজন চাই। আমাদের মুগটা কাটবে—উভোগ—প্রম — বিপ্লব আর গঠনের দায়িতে। পরিবর্তনের অগ্নি-পরীক্ষার উতীর্ণ হবার চেপ্লা করে যারা তাদের মুম মানার না।

কংগ্রেস যদি নরম পদ্মায় আপোষ করে ?

আমরা তা করতে দেব কেন।

কংগ্ৰেস যদি ভোষাদের কথা না শোনে ?

সত্যিই হাসালে চিত্রা। কংগ্রেস কি ? নানা জাতির মিলন-প্রতিষ্ঠান মাত্র। জাতি হা চাইবে কংগ্রেস তা অধীকার। করবে কেন ? তাই ত আমরা কংগ্রেস থেকে বেরিয়ে স্ষ্টি করব না নতুন দল---

তবু তোমরা নতুন দলই—বামপন্থী। বলে স্থচিত্রা ছেসে তর্কের পরিসমাধ্যি করলে।

এক দিন মণীশের সঙ্গে দেখা হয়ে গেল—শ্রদ্ধানন্দ পার্কে মিটিঙে যাবার মুখে:

স্থচিত্রা মণীশকে লক্ষ্য করেনি। মণীশই প্রণাম করে বললে, মাপ করবেন বউদি—প্রথমটা আপনাকে চিনতেই পারি নি।

অপরাধ মণীশের নয়—এ ধরণের পটভূমিকায় স্থচিত্রাকে ও আশা করে নি।

স্থচিত্রা নত নেত্রে বললে, অপরাধ আমারই—

यगैन वलाल, ना वडेमि---

মলর বললে, থাক অপরাধতত্ত্—কিন্ত কোধার ভূমি গা ঢাকা দিলে এত দিন কোন পাতা লাগাতে পারি নি।

গিনি হাউপে আমাদের আন্তানা—যদি বোঁঞ করতে অস্তত—

মলয় বললে, অণিমা কোপায় ?

ঐ যে ভায়াদের একবারে যেখানে মেয়েরা বদে। এস, ভোমাদের পেলে ও ভারি খুনী হবে।

মিটিং ভাঙলে—ওরা পার্কের একধারে ব্যন্তাকারে বসলে। তারপর চলল আলোচনা। মন্ত্রীমিশন আর কংগ্রেস— ভারতের মুগবিপ্লবী পরিবর্ভনের কথা।

মণীশ বললে, আলোচনা জার ব্যাখ্যা এ সবে স্বাধীনতা আসবে বিশ্বাস হয় ?

আলোচনা যদি আন্তরিক হয়---

বাৰা দিয়ে মণ্টাশ বললে, বিনা রক্তপাতে স্বাধীনতা কাভ শুনতে সোনার পাধর বাটর মত। তা হয় না—আমাদের তৈরি হতেই হবে।

বাড়ি এসে স্নচিত্রা বললে, ওঁরা তোমানের চেয়ে এক বাপ এগিয়ে গেছেন। তোমরা বিখাস কর না আলাপ-আলোচনায় বাবীনতার পথ প্রশস্ত হরে—ওঁরাও মনে করেন বাবীনতা হাটের ভিনিব নয়। তা হলে আমরা তো একই হলাম।

না—উরা ভানেন হাতে কলমে দেখিরেও দিরেছেন সে বস্তু কোন উপারে হন্তগত করা যার—তোমরা দেখছ বিপ্লবের ম্বপ্ন। সেদিন স্মাত্রাদির সঙ্গে কথা হচ্ছিল হিন্দু-মুসলমানের মিলন নিয়ে। স্মাত্রাদি বললেন, নাই যদি আসে ওরা আমরাই গণ-পরিষদে আইন তৈরি করব স্বাধীন রাষ্ট্রের। বললাম, সে কি করে হবে? দেশের সিকি ভাগকে বাদ দিয়ে—। উনি এটলির উদ্ধৃতি দিলেন সংখ্যালম্ সম্প্রদার বাধা ক্যাতে পারবে না সংখ্যাম্বিষ্ঠদের কাকে।

সে ভাষাও তে বদলেছেন এটল। সম্প্রদার সৰছে বে নিরম বাটত জাতি সথছে তা বাটবে না। ও—বুরেছি তোমার কথা। তুমি বলছ বাদ দেওরা যথন চলবে না কোন জাতিকেই তবন—'যে আসে আফ্রক' এ নীতি চলবে না। আই, এন, এ জাতিবর্শ্বনিবিশেষে একীকরণের যে দৃষ্টাভ্ত তুলে বরেছে দেশের সামনে—তাই বা স্বার্থান্ধ মাসুষ নিতে পারছে না কেন। এটি অপ্রগতি মানি কিছু কল হচ্ছে কই।

আর একটি শক্তিশালী দল করওয়ার্ড-রক। ওঁরাও আই, এন, এর নীতিতে আস্থাবান—এবং নেতাঞ্জীর আদর্শ মেনে চলেন। ওঁরাও বলছেন—দরাদরি করে জিনিধ কেনা যায়, স্বাধীনতা লাভ হয় না।

মলয় বললে, তুমি কি বলতে চাও স্কিতা স্পষ্ট করে বল ত।

স্থাচিত্র। বললে, স্পষ্ট করে কি বলব—মন্ত্রীমিশন যা বলছেন তারও মানে যেমন নানা রকম—তোমাদের নানা দলে যে মন্তব্য করছ তাও বিচিত্রধরণের। এই সব দলের মন্তব্য থেকে আমার মনে হয়—অবশু সেটি আমারই মত—যে কংগ্রেস রকা-নিপ্রতির মনোভাব নিয়ে সদিচ্ছার সঙ্গে এগিয়েছেন—ওদের মনোভাব বদলে দেবেন এই আশায়—তোমাদের বামপন্থী দলগুলি তা বিশ্বাস করছে না। অপচ তোমরা এক ধরণের বিশ্বাস নিয়েও দল আলাদা আলাদা। এটা আশ্চর্য বেধি হয় না।

মলর বললে, সোম্ভালিষ্ট আর ক্য়্যুনিষ্ট পার্ট যেমন… খানিকটা এক হয়েও সবটা এক নয়—আমাদের এই বিভিন্ন দলগুলি—

স্থানি বললে, আমার আশ্রেষ্য বোধ হয় ভোমরা এক হয়ে একটি সাধারণ কর্মণছা বেছে নাও না কেন। দল যত বন্ধ হয় তার ক্ষমতাও তত বেশি হয়—এ তো স্থান।

यनत छेखत ना पिरत सङ् शांतरन । वनरन, किছू बांधतारव १ विरम १९१८ ।

আমার কথা এভিয়ে যেতে চাইছ কিছ।

তা চাইছি। কারণ পব দলগুলিকে এক করার বিরাই ব্যক্তিত্ব আমাদের কারও নেই—আমরা তা পারি না।

স্কৃতিত্রা বললে, তা হলে তোমরা স্বপ্ন দেখবেই চিরকাল।

না চিত্রা। শহরে আন্দোলন করে ছাত্র আর প্রথিক বেপানো ছাড়া বিশেষ কিছু কল হর না, অধীকার করি না —ওটাও গণজাগরণের একট অংশ। তবে প্রকৃত কাল আরম্ভ করতে হবে প্রাথে—ক্রমক আর মধ্যবিত্ত প্রেণীকে নিয়ে। এর জন্ত চাই সংগঠন—সমালকে স্বস্থ ও সক্ষম করে গড়ে তোলার কাল। সে কালও আরম্ভ করেছি আমরা।

স্চিত্রা বললে, খাবার খেয়ে কিন্ধ খুলে বলতে হবে কি বরণের কাঞ্জারগু করেছ তোমরা।

١, ٥

শহরে বিক্ষোভ লেগেই রয়েছে। ডাক ও তার ধর্মঘট চলছে—প্রেস-ধর্মঘটের নোটিশ দেওয়া হয়ে গেছে। বাটা মঞ্জুর ইউনিয়ন চঞ্চল হয়ে উঠেছে। বেলুড়ে লোহাঢালাইয়ের কারধানায় অর্জভুক্ত শ্রমিকয়া করছে ঘন ধন
মিটিং: পৃথিবীর চার দিক থেকে খনর আসছে ধর্মঘটের।
ফুদ্ধের জোয়ার সরে গেছে—দেশপ্রেমের মোহ—জীবন ধারণের
সমস্তা সংঘাতে রূপ বদল করছে। য়ুদ্ধোভম মাসুধের চিত্তক্ষেত্র
অধিকার করে আছে, প্রকৃত মুদ্ধ বিশ্বশান্তি প্রতিষ্ঠার
আমোঞ্জনই আরম্ভ হ'ল বুকি!

ইতিমধ্যে কলকাতা বেশি রকম বিক্ষ্ হয়ে উঠল। কংগ্রেস মন্ত্রীমশনের দীর্ঘমন্ত্রাদী সর্ভ মেনে নেওরাতে—লীগ স্বল্প ও দীর্ঘ মেনাদী ছই সর্ভই বাতিল করে দিয়েছে। শুধু বাতিল করেই ক্ষান্ত হয় নি—অন্তর্বর্ত্তী গবর্ণমেন্টের বিরুদ্ধে প্রত্যক্ষ সংগ্রাম করার সঙ্কল্ল গ্রহণ করলে। ঐ সংগ্রাম প্রথম স্থরু হবে যোলই আগষ্ট। তেনতারা কেউ কেউ বলেছেন—অহিংস সংগ্রাম আমাদের নীতি নয়। সংগ্রামের আগের দিন ঘোষণা করা হ'ল— ঐ দিন পূর্ণ হরতাল পালন করা হবে। যারা যোগ দিতে চায়—তারা যোগ দেবে—যারা যোগ দেবে না—তাদের ওপর জুলুম করা হবে না। হাধাসম্ভব নিরুপদ্রবে প্রতিবাদ দিবস পালিত হবে। তবে যদিই কোন অপ্রীতিকর ব্যাপার ঘটে এইজ্ঞ ঐ দিন সরকারী ছুটি খোষণা করা হ্রেছে।

ছুট দেওয়ার বিরুদ্ধে থপেষ্ট বাদ-প্রতিবাদ হ'ল। সিন্ধুর গবর্ণর ছুটর ঘোষণা বাতিল করে দিলেন—বাংলার লাট তুফীন্তাব অবলম্বন করলেন। এমনি করে ষোলই আগষ্ট এল। ষোলই আগষ্ট এল অকল্পিত রূপে। সভ্যাতার পাদপীঠ থেকে গড়িয়ে পড়ল মাত্ম্য। গড়াতে গড়াতে চলে গেল তার। আদিম মুগের আশ্রয়ে। পশু-জগতেও হননরীতির একটি সীমানিশ্রিষ্ট আছে—জন্মবত্বে পাওয়া পশু-বিবেক বলা যায় তাকে। ধোলই আগষ্ট আরণা রীতিকেও অতিক্রম করলে অনায়াসে।

শহরের রাজ্পথ শবে আছের হ'ল—আকাশে উড়ল চিল আর শকুনেরা। আকাশে উঠল—নিরীহ যে-কোন-নীতি-অন্তিজ্ঞ দলনিরপেক হিন্দু-মুসলমানের মরণ আর্ডনাদ, উঠল প্রাসাদ ও বভি লেহনকারী আগুনের লকুলকে শিখা। বাতাসে বারুদের গন্ধ—রক্তের গন্ধ—শবের গন। গুণ্ডাদলের উগত চীংকারে মধিত হ'ল বারুমণ্ডল। মাতৃষ নয়—
গোটা শহরটাকে হত্যা করা হ'ল। নাদির তৈমুরের কীর্ত্তি
ইতিহাসের পৃঠা ধেকে আর একবার রটশ-শাসিত শহরের
বুকে বাঁপিয়ে পড়ল।

ধোলই আগষ্ট ঐ তারিবটতেই নিঃশেষিত হ'ল না—পর পর ভারিবগুলি তার কের টেনে চলন। জয় হিন্দ আর আল্লা-হো-আকবর ধ্বনি বার্ত্তর বিদীণ করে এক প্রান্তের জরাজকতাকে অন্ত প্রান্তে বিভীণ করে দিলে। মন্ত্রীমশন তখন বিলাতের ঠাওা আবহাওয়ায় ছল্চিন্তায়ক্ত চিত্তে স্নিদ্রার আরোজন করছে।

শহর ছং সপ্রণীড়িত, পথে খাটে লোক চলাচল নেই বললেই হয়। এক সম্প্রদায়ের এলাকা দিয়ে অক্ত সম্প্রদায় চলাকেরা তো করছেই না—সঙ্গীন উচানে। প্রহরার সামনে পাশাপাশি হই সম্প্রদায় দোকান বুলতে ভরদা পায় নি। ছ্থ সঞ্জীর অভাবে গৃহস্থের নাকালের অস্ত নেই—প্রচণ্ড আখাতে শহর মৃদ্রুণিহত। এমন সময়ে মনীশের সঙ্গে মলয়ের দেখা।

রেড জনের গাড়িতে ওরা আওঁ উদ্ধারে নিযুক্ত ছিল—এক পোড়াবন্তির গলিপথে ছখানা নোটর এসে দাড়াল।

ধবর কি মলয়—তোমাদের পাণাটা—
হাঁ—বরাজ্যে স্থ শরীরেই আছি। তুমি ?
বাসা বদল করা দরকার।
আসবে আমার বাসায় ?
আপণ্ডি নেই।

বাসায় ওরা কতটুকুই বা ধাকে। স্থচিত্রা কি স্থানিমা ওরাও অংহোরাত্র বাটছে। কাজের সীমা সংবা নেই। এত রকমের হুঃখ ও হুর্ভাগ্য আছে—যা কল্পনাতেও মানুষ আনতে পারে নি। সাম্প্রদারিকতার বিধ-নিখাসে শহর চুলে পড়েছে। কাগঞে কাগজে যে কাহিনী পরিবেশিও হচ্ছে---তাসতাকিংবাসতা-মিখ্যাজড়িত, অধ্বাকালনিক এ নিয়ে বিচার নেই মাহুষের মনে। মন বিভীধিকায় আছে। অবিশ্বাসে ও বেদনায় অনুভূতি উঞ, দৃষ্টিতে ধরেছে তারই রং, वारका श्रकाण शारु উर्छक्ना। সম্প্रদায়ে সম্প্रদায়ে যে কৃতজ্ঞতার বন্ধ---প্রতিবেশীমূলভ সৌদ্রাত্রবোধ--- ছঃখে মুম্মু-বোৰ ও ঐখর্ব্যে প্রীতি প্রকাশ মানব কর্তবার অঙ্গ ছিল তা বিলুপ্তপ্রায়। প্রতিবেশী দোষ না করেও পাড়া ছেড়ে পালাচ্ছে-প্রতিবেশী দোধী না হয়েও তাকে ভরসা দেবার সংসাহস দেখাতে পারছে না। পরস্পরের দীর্ঘ দিনের আলাপ আগ্রীয়তার মাট খেকে এতকাল রস শোষণ করেছে— এই ক'ট দিনের হাঙ্গামায় সে মাট শুকিয়ে গেছে: ভারা ছারিয়ে কেলেছে সে দৃষ্টি—সে মন। সৈনিক প্রহরায় পাড়া ছেড়ে পালাছে সেই প্রতিবেশী—জানালা খুলে দেখবার সাহসচুকু নেই প্রতিবাসীর। ছু' পক্ষের মাঝখানে অ্যান্বীর আচরণ উত্তরণ সমূদ্রের ব্যবধান স্কট্ট করেছে। সভ্যতার অগ্রগামী প্রোত—আদিম কালের গুহার কিরে চলেছে। এই লক্ষাকে কয় করা সহক্ষাধা নয়।

এই নিদারণ লক্ষার মধ্যেই আর এক পরম লক্ষাকর ব্যাপার ঘটল। ব্যাপারটি হ'ল হিসাব-নিকাশ। প্রথম উত্তেজনা কেটে গেলে কুরু হ'ল বাগবাঞ্চার আর ট্রেটবাঞ্চারের হিসাব-নিকাশ। মৌলালী-মাণিকতলা এরা বড়বাঞ্চার আর ক্ষামবাঞ্চারকে ছাপিয়ে থেতে পেরেছে কি? ডবানী-প্রের সঙ্গে মেটিয়াবুরুক্তের পালা দেওয়া চলল। প্রতিত সম্পত্তির মূল্য হিসাব আর নিশ্চিক্ত প্রতিবেশীর সংখ্যার গণনা কাগজে আর লোকের মূর্বে—পথে, বস্তিতে, ক্লাবে, বাড়িতে, আপিসে আর দোকানে প্রতিনিয়ত চলল। শহর শুক্তবের আবর্ত্তে পাক খেয়ে ঘুরতে লাগল— স্বাভাবিক অবস্থা ক্ষিরতে হ'ল দেরি।

ইতিমধ্যে হুগাপুকা এল—ইদ সমাধা হল। গুপ্ত ছোরা মারার সংবাদ—সংবাদপত্ত খুললেই চোখে পড়ে—কিছু ব্যাপক হালামা বাবল না। তবে বড় রক্মের একটা বিক্ষেভ পাক খেতে লাগল—হিসাব-নিকাশের অন্তরালে। তারপর এল দশই অক্টোবর। শহর থেকে বিক্র্ম টেউ সবেগে আহড়ে পড়লো নোয়াখালিতে। কলঙ্ক কাহিনার আর এক পৃষ্ঠা ইতিহাসে সংযোজিত হ'ল। আবার কাগজে কাগজে আর্রনাদ হিসাব-নিকাশ। বাংলা থেকে বিহারে আছড়ে পড়ল টেউ। বিহার থেকে তার গতিবেগ প্রবল হয়ে হালারার আঘাত করলে—তারপর সৈয়দপুর। গৃহযুদ্ধের পট্টছ্মিকা বিভ্ত হ'ল।

দোসরা সেপ্টেম্বর কংগ্রেস যোগ দিয়েছে মধ্যবর্ত্তী প্রবর্ণমেণ্টে। দিল্লীর বড় দপ্তরের সামনে বিক্লোভ প্রদর্শিত হয়েছে। একট চুকুট মধ্যবর্তী সরকারের-মহামাত সদভের মোটরে মাত্র নিব্দিপ্ত হয়েছিল, অগ্নিকাণ্ড ঘটে নি। কিছ সে আগুন ছড়িয়ে পড়েছে-রাজ্বানীর বাইরে। তারপর লীগের সদস্তেরা যোগ দিয়েছেন সরকারে তবু আগুন নেভে নি: একটা গোল বাবল যোলই মে-র ভাষা নিরে। গণপরিষদে যোগ দেবার প্রতিশ্রুতিতে দীগ নাকি মধাবন্তী जतकारत क्षर्यम करतिहाल-चर्या जीत वर्ष्यन कराल ११-পরিষদ। বভুলাটের মধ্যস্থতার বিবাদ মিটল না-ভিনি এ পক্ষের ছ'জন আর ও পক্ষের ছ'জনকে টেনে নিয়ে গেলেন বিলাতে মোকাবিলা করতে। গওগোলটা গ্রাপিং সম্বন্ধ। खनिक्क खामां वारलां प्रकार मांच यानां वा-- श्रांत আর সীমান্ত প্রদেশেও সেই সমস্তা। আর একটা বড় প্রস্ন উঠল--লীগ যদি গণপরিষদ বর্জন করেই আর ভার অনুপদ্বিতিতে সেধানকার অবিবেশন চলে ও আইনকাত্রন विविवक इत्--- (न जरिन भीग मानए वांवा कि ना।

৬ই দিসেম্বরে এটলি রায় দিলেন: অনিচ্চুক যে কোন

অংশের ওপর জোর করে শাসনবিধি চাপানে। চলবে না । গণপরিষদের অধিবেশন ঘধাসমরেই বসবে ও ঘণানিরমেই চলবে—তবে তার বিধিবিধান গ্রহণ বা বর্জন করার স্বাধীনতা যে কোন দলেরই থাকবে। ১৬ই মে-র ঘ্যর্ববাচক ঘোষণায় একটি গ্রন্থি পড়ল।

₹0

শহরতলীর এ জারগাটার জাগে খন হর্ডেদ্য বাঁশবন ছিল। প্রকাত-পড়ো ক্রমি-জাগাছা-লতাগুর আর ছোট ছোট ভোবায় ছিল ভর্মি। এখান খেকে এনোকিলিসরা ম্যালেরিয়া বীক বহন করে আলেপালের প্রামে দিত হানা--মালেরিয়ার ডিপো বলে অর্দ্ধয়ত গ্রামগুলি বসতিবিরল হয়ে **আস**ছিল ভঙ্গণে একাধিক কোম্পানীর নত্তর পড়ল এদিকে। বাংলায় অনাবাদী কমি কৃষিকর্মে যা এনে দিত সিন্দুকে—ব্যবসায়ে তা ভরিয়ে দিতে পারবে ব্যাক্ষের খাতাকে ৷ প্রথমে বড় একটা কাপড়ের মিলের জ্বন্স কয়েক শ বিষা জমি লীক নিয়ে জলল সাফ সুরু হ'ল। তার দেখা (परि--- जात्र कर्सककन वावनाशी वृर् क भएलन अपिटक। कल करत्रक वहरत्र मरश- इति काशर मेल- अकि এনামেল ও একটি প্লাস ফার্ক্টরী চাপু হয়েছে - আর একটা बिटलत क्य कवि पर्यल करा चाटि कोशत्क काशक (नरात বিক্রয়ের বিজ্ঞাপন বার হচ্ছে। ফলে হাজার হাজার বিষার জলল-বাঁশবন পচা ডোবা মশককুল সমেত নিশ্চিক হয়েছে—আশপাশের গ্রামে নবজীবনের স্রোত বইছে।

মিল বা কাছিরীর অবিকৃত শ্রমিক ব্যারাক ও মানেকার ইন্স্পেক্টার প্রভৃতির কোয়াটাস ও তৈরি হয়েছে। কোয়াটারে বৈহাতিক আলো—সংরক্ষিত ট্যান্ধ থেকে পাইপবাহী পানীর জলের ব্যবস্থা এ তো আছেই, মুদ্ধের শেষ ভাগে রেশন ব্যবস্থা চালু হওরাতে নিত্য প্রয়োকনীয় জিনিসপত্তের দোকানও পুলেছে কোম্পানী। ছট বাকার প্রত্যহ বসে। আর যেসব দোকান গ্রামের অভ্যন্তরে আছে—সেগুলোরও শ্রী কিরেছে। বিশেষ করে দেশী মদের দোকানের আয় বেভে গেছে অসম্ভবন্ধপে। শহর পারে পারে এগিয়ে এসেছে গ্রামের দিকে।

কলকাতার প্রতিক্রিয়া এখানেও হয়ত সুরু হ'ত—মিল কর্তৃপক্ষ ও প্রমিক ইউনিয়নগুলির চেষ্টার তা হয় নি। অত্যাচারের তালিকা, নিহতের সংখ্যা নিয়ে তর্কবিতর্ক ও মনোমালিক্স যে ঘটে নি তা নয়—তবে সেটা দেশী মদের দোকানের এলাকাতেই নিবছ ছিল।

দোতলার দক্ষিণ-গোলা বারান্দায় ইবিচেরারে দেছ
এলিরে খবরের কাগক পড়ছে প্রশাস্ত। সন্ধার মুখে এক
পোরালা চা ও টোষ্ট মাধম ডিম কলবোগ করে বিপ্রামের মুমুর্জে
কাগক পড়া তার নেলা। বিশেষ করে আক্ষালকার
অন্তর্বিপ্রবাদ্ধ ভারতবর্ব যথেষ্ট কৌতৃহল সকার করে মনে।
নেতারা বলেন—ছট বছর অন্তত ক্লাভি হানাহানি

কাটাকাটর মধ্য দিরে চললে তবে পরীকার প্রথম ক্ষেত্রট পার হওরা যাবে। স্বাধীনতা অমনি আসবে না—ব্ল্য দিতেই হবে।

প্রশাস্ত কাগন্ধ পড়ছিল। শহরে—শহরের চারপাশে এ প্রভিজে ও প্রভিজে বর্ম্বর্ট লেগেই আছে। যারা কলম পিষে দলটা পাঁচটা বকায় করে—তারাও বর্মবর্ট করছে। সাপ্লাই আপিসের চল্লিশ হাকার কেরাণী ছাঁটাই প্রভাবের বিরুদ্ধে এক দিন কলম চালনা বন্ধ ক্রেছিল—ইম্পিরিয়েল ব্যান্ধ এই তো সেদিন বর্মবর্ট সেরে কাকে যোগ দিয়েছে—শোষ্ট আর টেলিগ্রাক ওরাও কম দিন কাক বন্ধ করে বুবিয়ে দিলে না—য়ুছোভর মুগের সঙ্গে পা কেলে চলতে সক্ষম। রেল্পন ডক ধর্মবর্ট ভারপর সিলাপুর—জগংটা শ্রমিক আন্দোলনে পাক থেরে থেরে ঘুরছে। নাঃ—একদেরে এই সব ধবর ভাল লাগে না।

টিপরের ওপর কাগলবানা রেবে টনের কৌটো বেকে একটা সিগারেট টেনে নিয়ে ধরালে। শীতকালের আকাশে সাদা সাদা মেঘ ভাসছে। আবহাওয়ার রিপোর্ট বলে—পূর্বর ও পশ্চিম বঙ্গে সামাগ্র বারিপাত হবে। উদ্বিয়ার উপকৃষ ভাগে মেঘগুলি অভিযান সুক্র করছে। বাতাসের কাঁবে চড়ে ভারতবর্ষের কোন্দিকে কতদ্র ছড়িয়ে পড়বে তার মোটামুট ইকিত পাওয়া যাছে।

চেয়ারে পা ভূলে দিয়ে অলসভাবে একটার পর একটা সিগারেট ধরিষেই চলেছে সে। সোনালী মেখে সন্ধ্যা নামবে এখনই--- ত্রীক্তের আডভা বসবে নীচের হল খরে। ধেলার मध्य हा-भान-मिशादबर्ध खाद शब-मद्यारि दक्षीन खाला ভরা স্বাস্থ্রের মত গভীর রাত্তির দিকে উড়ে যাবে। এই শীবনের ডকাই কি তবে সাম্যবাদের অভ্যন্তরে বুকিয়ে ছিল ? হাঁ-সাৰ্বক হতে না পারায় কোভ স্ঠি করেছিল একট মতবাদ-অক্ষম ইবার আকেপ কিছটা--আসলে প্রাসাদের শোভায় আর মোটরের পালিসে অভিয়ে ছিল বাসনা। লৈলবে মা-ঠাকুরমার মুখে রূপকথাপায়ী লিও যেমন উত্তর জীবনের সমূদ ছবি কলনায় এঁকে বাসনাকে কথঞিং পূরণ করে-বছ কল্পনা সার্থক হলে আনন্দে দিলেছারা হর-তেমনি একটা ভাব---সার্থক হওয়ার ভাব সিগারেটের প্রতিট টানে---শিরার শোণিতে সকরণ করে কেরে আক্রকাল। ভভাকে মাৰে মাৰে মনে পড়ে। ওর সেই চন্ত্ৰ-ছৰ্ব্য-বঞ্চিত বাড়ি---चवर्क मिमिया चांत्र क्षशा या-एवां छाडे छ अरमद निरस्ट কাটিয়ে দেবে সারাটি কীবন! বেচারী ভভা! পার্টর মিটঙে ওর শাণিত যুক্তির সামনে প্রতিপক্ষ দাড়াতে পারে না--- অবচ বার সারেবের সামনে ওর মত অসহার ছট নেই। ওদের খত্যাচার উপেকা করবার মনোবল ওর আছে ∙∙•প্রচুর म्यानारमध्याद्य ।

थावरे रेम्स एवं ७७वंद थवान शिर्व थरक जान करव

ব্ৰিরে দারিদ্রের অবকৃণ থেকে টেনে নিরে আসে এই আলোর পৃথিবীতে। বৃদ্ধিনানেরা যদি ক্লগতের সম্পদ স্কট না করলে তো পৃথিবীর গৌরব কতটুকু! বৃদ্ধিনানেরা যদি ক্লানে হাছে চারুকলার সংক্তির শিখাকে উদ্ধল করে না ভূললে তো সভ্যতার উল্লেখ হ'ল কেন ? স্থা হবার অধিকার সকলেরই আছে, শুভারও আছে। শুভাকে সে বেচ্ছারত দারিদ্রা থেকে উদ্ধার করবে।

দক্ষিণের বারান্দার চেয়ারে পা তৃত্বে আৰ-বোজা চোখে চুরুটের দীর্ঘ শিথিল টানের সঙ্গে চিছাগুলি কল্পনার মধ্যে রঙ লাগায়—বাভবের মুখোমুখি দাঙালে সেই ধর আর সেই পরিজন আর শুভার সেই দারিদ্রাবহনের অটল সঙ্গল এতচুত্ব প্রশ্রম দেয় না অলস কল্পনার ৷ ওর বাঁকা ঠোটের কোণে শাধিত এক টুকরা হাসি—বিজ্ঞপে বলমল করে সর্বাদা ৷ মুজ্জির চেরে বড়—অন্থনরকে টুকরো টুকরো করে দেয় অনমনীর সেই পাতলা হাসি তার মত মারাত্মক অগ্র শুভার ভাঙারে বুঝি ছিতীয় নেই ৷ প্রশাস্ত মনে মনে হার শ্বীকার করে ৷

ুতবু প্রত্যহ মনে হয়—ভঙা একবার আগবৈ না এখানে ? প্রশান্তও পৃথিবীকে সৌন্দর্যালালিনী করতে পারে—প্রশান্তরও প্রক্রীক্ষতা কম নর। ক'টি মাসই বা এই ক্যান্তরীর ভার নিরেছে সে। চারদিকের আগুনের ছোঁয়াচ বেকে সে যে এটকে রক্ষা করতে পেরেছে—এ ক্রতিক্ষ তারই তো। হ' ছবার ঢেউ উঠেছিল। প্রভার বোনাস আর মাগ্ গি ভাতা বাড়ানোর দাবি। মালিক হাল ছেড়ে বললেন, যা ভাল বোর কর—কিছু টাকা মন্থুর করে দিছি।

অর্জেক মাইনে বোনাস—আর ছ' টাকা মাগ্রি ভাতা বৃদ্ধি—বর্দ্ধতের প্রগাচ ছায়া—ক্যাক্তরীর পাশ কাটরে গেল।

রতন কটন মিলের ম্যানেজার সর্কেশ্বর বাবু বললেশ— কান্দটা ভাল করলেন না প্রশাস্ত বাবু। যি দিলেই আগুন ছলবে—বারো মাস যি ঢালবার ব্যবস্থা করতে পারবেন তো ?

প্রশাস্ত বললে—অসম্ভই লোক নিয়ে কান্দের পড়তা হবে কেন সর্ব্যের বাবু। গো স্লো ট্যাক্টক্স্-এ ব্যবসা চলে না কর্বনো।

কিন্তু লাভের মার্ক্তিন কমে এলে—আমাদের অবস্থা কি দ্বীভাবে—

তাও কি ভাবি নি সর্বেশ্বর বাবু। টাকার টাকা লাভএ তো মুদ্রের বান্ধারেই সম্ভব হরেছে, টাকার সিকি লাভ এ
নিরেও তো না বাঁচবার কথা নর।

সর্বেশ্বর বাবু রাগ করে কথা বলেছিলেন কিছু, প্রশাভ রাগ করে নি। লাভের অংশ কমে গেলেই এদের মাধার আকাশ ভেকে পড়ে। এরা ছু' চোবের সীমানার যতটুকু পড়ে, তারই মাপজােশ নিরে ব্যতিব্যস্ত। কিছ দৃষ্টির দােষ, অহয়ারে আঘাত লাগলেই কেটে যার, নতুন করে রকা-নিশন্তি করে বেশি লাকসানই দিয়ে বসে এরা। সর্বেশ্বর বাবু

শ্রমিকদের দাবী প্রিরে এক দিন ছংগ করেছিলেন, মিল ছলে দেব, এত কম লাভে ভূতের বাটুনি থেটে পোষার না।

মিল তুলে দেন নি তিনি। ভূতের কাঁবে চেপে আছেন বলেই ভূতেদের নাচের ধকল তাঁকে সইতেই হয়।

নীচের হলবরে আলো অলে উঠল, কোলাহল স্থান হ'ল। চাকর এসে খবর দিলে বাবুরা এসেছেন।

সিগারেটের টিন আর চা নীচের খরে পাঠানোর হুকুম দিয়ে প্রশাস্ত নেমে গেল।

সর্কেশর বাবু বললেন, এই শুহুন এঁদের মুখে, ব্যাচীর। কি বলে।

লন্ধী গ্লাস ওয়ার্কস্-এর ম্যানেকার কমল মিত্র বললেন, টোরেনট-কাইড পারসেউ পে ইনফীক গ্লাস টোরেনট পার-সেউ এ্যালাউজ।. নিন ঠেলা, কি দিয়ে সামলাবেন সামলান।

আছে।, বসুন ছির হয়ে। একটা পরামর্শ করা যাক।

পরামর্শ আর ছাই। সব ক'ট মিল, ক্যাক্টরী এক জোট ছরেছে, ইউনিয়নের খু দিরে নোটশ দেবে পনেরো দিনের। একেবারে মেশ্লিম কাছিমের কামড়। হতাশ সর্বেশ্বর ভূটন খেকে একটা সিগারেট টেনে নিয়ে চেরারের হাতলে মাথাটা হেলিয়ে দিলেন।

বেদল কটন মিলের ম্যানেজার জনস্ক দোবে বললেন, পুরা মাহিনার ছুট, ক্যাজুরাল লিভ পনের দিনের, আউর মেডিকেল টুটমেণ্ট ভি ডিমাও করছে।

প্রশাস্থ বললে, ছট তো গ্রাডজ্ডিকেশনে যাবে, সেদিন মিল ওনাস এসোসিয়েশনে ঠিক হ'ল না ? আর মেডিক্যাল ট্রিটমেন্ট ! কেন ডাক্তার নেই আপনার মিলে ?

আরে ভক্টার আছে, দাওয়াই ভি আছে, লেকিন উ আদমী আছে। দাওয়াই মাংতা হয়।

বেশ ত---তাও কিছু রাধবেন। লাভের একটা সামাস্ত অংশ দিলেই তো ভাল ডাঞ্জারধানা ও ভাল ডাঞ্জারের ব্যবস্থা হতে পারে।

সর্কেশ্বর বাবু মুখ ভার করে বললেন, পারে ভো সবই মশার
ক্রেজি লাভের মান্তিন কমে গেলে
ভ্তের ব্যাগার
খেটে লাভ !

প্রশাস্ত হেসে বললে, ভ্তদের ঘর্বন ছাড়াই যাবে না, আর আদার করতে হবে ভাল কান্ত, তবন ওদের ভাল পাকা আর ভাল বাওয়ার বাবছা করতে হবে বৈকি ?

সর্বেশ্বর রাগ করে বললেন, আপনার তো ক্যাক্টরী নর, কান্ধেই ও কথা বলবেন বৈকি।

প্রশান্ত বললে, মালিকের মনের ইচ্ছে না কানলে কি এ কথা বলবার সাহস আমার হয়। তাল বাওয়া পরা আর ভাল বাকার দাবি আমার আপনার যেমন আছে, ওদেরও তেমনি আছে।

ক্ষল মিত্র বললেন, আছা সে না হয় বতদুর সভব ব্যবস্থা

করা গেল, কিছ পে আর এলাউজের দাবি মেনে নিলে, এই সর্বোধর বাবু যা বলেছেন, ভূতের ব্যাগার দেওরা ছাড়া, আর কিছুই হবে না।

প্রশান্ত সিগারেটের হাই বাদতে বাদতে বললে, কাল কি
পরত হপুর বেলায়—একটা মিটং কল করা যাক। তার আগে
মিলের আয়ব্যয়ের হিসেবটা ভাল করে পরীকা করা দরকার।

খনস্থ দোবে বললেন, খামেরিকা মাল ছাড়লে তো তেজ থাকবে না—বিলকুল ডাউন হয়ে যাবে।

হাঁ—সে হিসেবও মোটাষ্ট ক্ষতে হবে। তবে যাই বলুন—এ বাকার নামতে এখনও ছ' বছর তো যাবেই।

সর্বেশ্বর বললেন, তা হলেও তো বাঁচি। বাঞ্চার নামলে ব্যবসা তো শুটোতেই হবে। ভাববেন না একবার দাবি বাজিয়ে আবার তা ক্যানো যাবে।

প্রশাস্থ বললে, ষ্ট্যান্ডার্ড অব লিভিং ধেমন তেমনি আয়-বায় চলবে। একটা কম---আর একটা বেশি এ টপ্রি--টারভি কন্তিশনে পৃথিবী চলতে পারে না

ব্রিক্সের আসর বসল— অন্ত দিনের মত কমল না। সকাল সকাল খেলা ভেঙে সবাই উঠলেন।

কমল মিত্র বললেন, হিসেব-নিকেশ করতে ছু'চার দিন সময় নেবে—মিটিংটা আসচে সপ্তাহেই হোক।

সর্কেশ্বর বললেন, তাই হোক—ওরা তো এখনও নোটশ দেয় নি।

সবাই চলে গেলে প্রশান্ত আপন মনে থানিকটা হাসলে। मूर्फा मक करत ताबवात रुष्टा काबास (नहे। ठार्किन, (कत्वत्रान चार्डिम्—(शत्क कृत्नाप्कि प्रत्वव्यत्रवात् पर्याखः। সামাজ্যবাদ আর পুঁজিবাদে আঁতাত চিরকালের। সামাজ্যবাদ ना हिकाल पूँकियान वाटि कि करता अटकत मन्नान-रहित ৰূলে বছর ছুৰ্দশা ও দাসত্ব—এ কলত অপসারিত না হলে পুৰিবী হুত্ব হবে না। লোভের ত সীমা নেই—সে চার আরও। অনুষ্ঠ থেকে পর্বতপ্রমাণ। ইলষ্টয়ের সেই গলটা মনে পড়ল-একটা লোকের কতটা স্বমি আবস্তক। লোভের বলে অর্ব্যোদয় থেকে অর্থান্ত পর্যান্ত যে সব জমির উপর দিয়ে (भ हुएँ। हुएँ। ठलभ—मटन क्रतल भवरे छात व्यक्तित्त— তার ছরাশা তাকে সেই প্রতিশ্রুতিই দিয়েছিল। স্থ্যান্তের মুহূর্ত পূর্বে যেবানে সে বামল—চিরদিনের মত—সেই সাড়ে তিন হাত ক্ষিটুকু তার দেহকে দিলে যথার্থ আশ্রয়। প্রয়োশন মিটিয়ে বাইরে হাত বাড়ানোই ত অনধিকার। অৰচ পুঁজিবাদ তা খীকার করবে না-সাদ্রাজ্যবাদ ত যুক্তং त्मिक वत्म मिलियारक।

সুৰী হবার অধিকার সকলের আছে—এ কথা স্বীকার করে প্রশাস্ত কিন্ত কারো সুধ কেন্ডে নিরে সুৰী হওয়া নর। কারও দাসত্বে নিজের প্রভূত্ব কারেম করার বাসনাও তার নেই। এগুলি হ'ল মুর্জল—দান্তিক—ক্ষমতালোভীর বর্জর বাসনা। পাডটাকে সর্ব্বে ছড়িরে দেওরা দরকার—হাতের পাঁচটি আত্নুল সমান না হতে পারে—একটা রুগ্ন আর একটা অত্যন্ত ফীত হবে কেন ?

রোকই মোটর বিয়ে সে কলকাতার যার। মালিকের সক্ষেপরামর্শ করে। তিনি ওর কাকে অত্যন্ত সুখী। বলেন আমরা বাণগ্রন্থের যাত্রী—কিছু শুনিও না। কারখানা আর শ্রমিক ছটি পরস্পরের অবিচ্ছেদ্য অঙ্গ এট সর্ব্বদা মনে রাখবে।

আপনার প্রকিট কমলে---

ভাষ্য প্রকিট পেলেই যথেষ্ট। আত্মে রুদ্ধের কথা বাদ দাও—অবভা ইন্ফ্লেশনের ব্যাপারটা চট কলে নষ্ট হবে না— তবে তোমার হাতে জিনিস নষ্ট হবে না—

কিছ আমি ত নতুন।

নতুন বটে—আনাড়ী নও। আয়বায় আর চলতি বাজার টাডি করে নিয়েছ—কোন দিন তোমায় ঠকতে হবে না।

্একে অগাধ রিখাস বলা যায়। প্রশান্ত নিজের মতামত গাটাতে এতটুকু বিধাবোধ করে না। অর্থের স্থপরিচালনায় মান্থরের কলাাণ। খেরে পড়ে স্থদেহে সে যদি কান্ধ করে যায়—যে কান্ধের ক্রটি কোন দিক দিয়ে কোন মৃহুর্জেই প্রকাশ পাবে না। অভাব বোধ হতেই বিক্লোভের ক্রম্ন থে সম্ভাবনা সে উঠতে দেবেই বা ক্রম ?

হেড আপিসটা মুরে প্রশাস্ত এল ভভাদের বাছির সামনে। ঠিক সামনে নর—কেননা সে গলি পারে-ইটোর গলি—মোটর সেবানে অচল। বাঁধানো গলি চারবার পাক থেরে যেথানে শেষ হয়েছে—ভারই একপ্রান্তে ভভাদের বাড়িথানা। পারে পারে এগিরে গেল প্রশাস্ত।

ভেতরে অনেক কঠের যিশ্রস্বর—যেমন উদাম আলোচনা চলে প্রতাহ তেমনি চলছে। শহরের **আবর্জনার**ণী ওই বাড়ীখানিতে বসে—ভারতবর্ষের অসংখ্য শ্রমিক ও দরিদ্রদের মুক্তি চিন্তা করছে যারা—এ তাদের বিলাস না কেপামি! করেকট মিটঙে বক্তৃতা করলেই সাম্যনীতি চালু হবে না---किश्वा जित्नमात क्यांनी थकांत्र नाथ एक नाथ है। कांत्र इस्नि-নামার স্বাক্ষরকারিণী নায়িকার মুধনি:স্ত মন-ভাতানো বক্তাও কোন কল প্রসব করবে না। সে বক্ততা করতালির সমর্থনে প্রেক্ষাগৃহ কাঁপিয়ে তুলবে ওবু। কৌতুকলোভী পুঁ বি-বাদীর দল বন্ধের টিকিট কিনে মুচকি মুচকি হাসবেন সম্ভা ভাব-বিশাসিতার অভিব্যক্তিতে। বৈর শাসনের আওতার वर्ज खांत्र वहकान मर्क वा महलात এ वत्रानत वक्तका स्थान ভারা বিন্দুমাত্র বিচলিত হবেন না। এই সোজা কথাটা ভভারা ব্ৰতে চায় না। রাজনীতিবিদ্ মানেই ভো যে কোন সুযোগের সাহায্য নেওয়া একথা কত দিন বলেছে খভা খৰচ কার্যাক্ষেত্রে সে পিছিয়ে পছছে না কি।

ক্ষা নাগৰে কিনা ভাবছে—ওপর থেকে হাসির হল। গলির বুকে আছড়ে পছল। দীর্ব বিলম্বিত হাসি। হর তর্কে কেউ হেরে গেল নত্বা পুঁজিবাদের ওপর কটাক্ষ করে কোন শাণিত মন্তব্য বহিত হ'ল।

কে-কাকে চান ?

ঠিক মুখোমুখি দাঁড়িরে প্রশ্ন করলে একটি ছেলে। ছাতে তার বইরের গোছা—ছামা কাপড়ে তার সত্যকার পরিচর লেখা। বইগুলি কলেছের পাঠ্য হতে পারে, কমিউনিট লিটারেচারও হতে পারে।

প্রশাস্ত উত্তর দেবার আগেই সে বললে, বিশেষ স্থবিধা হবে না—এটা বুৰ্জোরাদের ক্লাব হর নর। সরে পভূন।

প্রশান্তর বেশবাস দেখেই ছোকরা আঘাত দেবার লোভ সামলাতে পারলে না। ওর অপরাব কি—বৃদ্ধির অপরিপক্ষ অবস্থার সামা-দর্শন স্বভাবতই অসহিষ্ণু ও উগ্র হরে বাকে।

ছোকরা চলে গেলে প্রশান্তও কিরে এল। বনের অহমিকার আর দারিজ্যের অহমিকার তকাং কিছু নেই; হুইই
ছুর্ভেড। আঘাত দেওরাই হ'ল তার প্রকাশ বর্ম। মার্বধানের
সেতৃবন্ধন কেউই বীকার করে না। তালবাসার প্রশ্ন তুললে—
পুঁজিবাদী ভাববে এটা সহজাত সেবার প্রশ্নতি—নিঃব ভাববে
ওটা বুর্জোরা বনবার একট পরিচিত ভলি। কিছু দিন আগে
তার ষ্টিভলী ও চিন্তারীতি ওই বরণেরই তো ছিল।

মোটারের কাছে কিরে এল প্রশাস্ত।

একট ছবেশ যুবক গ্যাসপোটের কাছে গাঁডিরে গাঁডিরে গাঁডিরে সিগারেট টানছিল—হরত প্রতীক্ষা করছিল প্রশাস্তর। প্রশাস্তক দেখে সে এগিরে এসে নমস্কার করে বললে, আপনাকে আমি চিনি—বিত্রিশ নম্বর বাড়ীটাতে দিন করেক আপনাকে দেখেছি। আর একদিন দেখেছিলাম মেরেটর পক্ষ সমর্থন করে যেদিন রাহ সারেবের সঙ্গে ঝগড়া তরলেন। কাড়া।

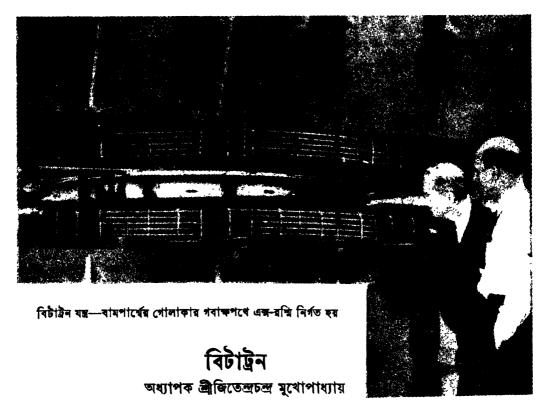
যুবকটি হেসে বললে, রার সারেব তো আপনাদের ভদ্রতা রেখে কথা বলেন নি। যাই হোক—ওই মেরেটির সহজে— প্রশাস্ত বিরক্ত হ'ল। তৃতীর ব্যক্তির মুখে ভ্রতাকে নিরে আলোচনা করতে সে রাজী নর। মোটরের ছ্রোরটা বুলে নিঃশকে সে তার ভেতরে আশ্রম নিলে।

মূবক এগিয়ে এসে বগলে, আপনি রাগ করবেন জানি—
তবু ও যে সাংঘাতিক মেয়ে সে কি আপনি বুৰতে পারেন নি ?
না—বুৰতে চাইনে। তীত্র ভর্ণসনায় প্রশান্ত প্রার টেচিয়ে
উঠল। ড্রাইভার ঠার্ট দাও।

যুবক সিগারেট কেলে দিরে ছেসে উঠল হো ছো করে। সে দিন তো পারে ইেটে এসেছিলেন—আৰু একখানা মোটর ছয়েছে—তবুও বলছি সাবধান। শৈলেশ্বর বোসের তিন-ধানা মোটর আছে—

শৈলেশ্বর বোস। কথাটি চাবুকের মত সপাৎ করে প্রশাস্তর পিঠে পড়ল। স্থতিশক্তি তার ছবল নয়।

ড়াইভারের পিঠের দিকে বুঁকে পড়ে বললে, রান্ডার ওপিঠে গাড়ী বামিও তো। এক কনের সকে দেবা করে আসি। ক্রিমশঃ



পরমাণুর অভ্যন্তরে অপরিমের তেজ পৃঞ্জীভূত হইরা রহিরাছে। অহ্বরূপ শক্তির অধিকারী না হইলে তার মধ্যে
প্রবেশ করা সম্ভব নয়। পরমাণুর উপাদান ইলেকট্রন,
প্রোটন ও নিউট্রন—নানা উপায়ে ইহাদের পরমাণু হইতে
বিচ্ছিন্ন করা যায়। কোনও প্রক্রিয়ায়ারা সংগ্রহ করিয়া
ইহাদের কোনটকে অপর কোন পরমাণুর অভ্যন্তরে প্রেরণ
করিতে চাহিলে ভাহাকে ভেজ্যুক্ত করিয়া দিতে হইবে, নতুবা
পরমাণুরাজ্যের সীমান্ত হইতেই সে বিদায় হইয়া আসিবে।
পরমাণুকেক্রের তথ্যাদি সংগ্রহ করিবার উদ্ভেশ্ন ও সেধানকার
ভেলোভাভারের চাবিকাঠির সন্ধান্মানসে অনেককাল ধরিয়া
চেটা চলিভেছে। এই জাতীয় প্রচেটার স্বস্থলিরই বুল
কর্মীয় ছিল পরমাণুলোকে হানা দিবার জন্ত ক্পিকাদের
অমিত শক্তিবর করিয়া ভোলা।

চলত পদার্থের শক্তির পরিমাণ হয় উহার বেগের পরিমাণদার।। কোন বন্তর বেগ যত বেশী হয় উহাতে সংশ্লিষ্ট শক্তি তত বেশী হইয়া থাকে। মৌলিক কণিকাদের বেগপ্রদান করিয়া উহাদের শক্তিসম্পর করিয়ার উদ্ধেশ্রেই নির্মিত হইয়াহিল পর্মাণ্ বিভাজন বস্ত্র সাইক্রাট্রন। সাইক্রাট্রন ভাবিক্রত হইবার পর মৌলিক কণিকা প্রোট্রন ও তংগোর্ট্রয় ভরেট্রয় কিংবা আল্কা কণিকাকে প্রচও বেগ

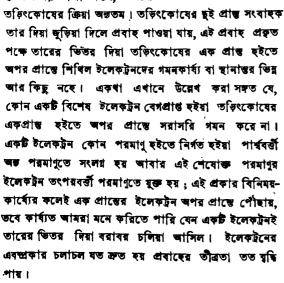
প্রদান করিবার ব্যবস্থা হইয়াছে। কিছু এই যগ্রও কার্যাকারিতায় সর্কাণা উপযোগী নহে। পজিটিভ তভিং-প্রস্ত ভারী
কণিকা ভিন্ন হালকা ও নেগেটিভ তভিং-প্রস্ত ইলেকট্রনকে এই
যন্ত্রহারা বেগর্ক্ত করা সম্ভব নহে। তাই সাইক্রোটন আবিফারের পরেও মৌলিক কণিকাকে বেগর্ক্ত করিবার প্রয়াসের
সমাপ্তি হয় নাই। ইলেকট্রনকে অস্ক্রপ বেগপ্রদান করিবার
জন্ত যে যন্ত্র নির্দ্ধিত হইয়াহে তাহারই নাম বিটাট্রন।

আলোর গতি প্রতি সেকেওে এক লক্ষ ছিয়ালী হাজার
মাইল, সে গতির বরূপ উপলব্ধি করা মাল্লের সাব্যাতীত।
অবচ মাল্লের হাতেই আরু ইলেকট্রন যে গতি পাইতেছে
তাহার পরিমাণ পুরাপুরি এক লক্ষ ছিয়ালী হাজার মাইল না
হইলেও অন্তত: উহার ১৯°৯৯৮°/. ভাগে পৌছিয়াছে। বিটাইন
যাজের ঘূর্ণিপাকে পড়িয়া ইলেকট্রন এক সেকেওের আড়াই
লত ভাগ সময়ের অবসরেই ঐ গতি পাইয়া বাকে, বাহার
কলে উহার ভর প্রায় হুই লত গুণ ব্রিত হয়।

ভড়িং-এন্ত পদার্থ ও চৌষকশক্তি এতত্ত্তরের মধ্যে একটা নিগৃচ সম্বদ্ধ স্থাতে। উহারা একে অন্তকে প্রভাবাহিত করে। ভড়িং-এন্ত ক্রিকা যদি গতিশীল হইরা কোন চুমকের প্রভাবে আসিরা পঞ্জে এবং চৌষকক্ষেত্রের সমকোণে চলিতে থাকে তবে চুম্বকের স্থাকর্ষণে ভড়িংগ্রন্থ ক্রিকা সরল রেখার না

চলিয়া ব্যন্তাকার পথে পরিক্রমণ कदा है है कि छैन कि গতিশীল করিয়া চৌমকক্ষেত্রে হাভিয়া দিলে উহারও অনুরূপ অবহা হয়।

সকল পদার্শের ভিতর দিয়া তভিংপ্রবাহের চলাচল সম্ভব হয় না। যে পদার্থের ভড়িংসংবছন করিবার উপযুক্ততা আছে তাহা-দের পরমাণুর একটি বৈশিষ্ট্য থাকে। উহাতে এমন কডকগুলি শিপিল ইলেক্টন পাকে যাছারা সহজেই পরমাণু হইতে বিচ্ছিন্ন ছইয়া যায়। কোন সংবাহক তারের ভিতরে এই স্বাতীয় हेटलक देन शिन वाहित **इहे**एज কোন প্রেরণা পাইলেই একটা বিশিষ্ট দিকে চলিতে আরম্ভ করে। কয়েকটি উপায়ে এই প্রেরণা স্ট্র করা সম্ভব, তথাবো



বদি কোন গতিশীৰ ইলেকট্ৰন মুক্ত অবস্থায় শৃত্তমাৰ্গে একটি নির্দিষ্ট ব্রভাকার কব্দে পরিক্রমণ করে তবে ঐ গতিশীল একক ইলেকট্রন ও তাহার কক্ষ কার্যাত তভিংসংবহনকারী তারের কুন্তনী (তভিংচক্র) বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে।

এই আলোচনা হইতে একথা সিদ্ধান্ত করা চলে যে কোন গতিশীল ইলেক্ট্ৰ চৌত্বক ক্ষেত্ৰে আসিয়া পড়িলে উহা চক্রপথে পরিক্রমণ করিবে এবং তংকালে উহাকে তড়িং-চক্রের সমতৃল্য বলিরা মনে করা চলিবে।

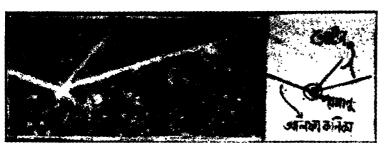
কোন ভঙ্গিংচকের ভিতরে যে কারণেই হোক চৌষক



সাইক্লোট্ৰন যন্ত্ৰ (ক্যান্ত্ৰিলণিয়া বিশ্ববিভালয়)

ইলেক্ট্রনেরা গতিশীল হইয়া উঠে এবং তব্দত্ত তংকালে চক্রে তড়িংপ্রবাহের উৎপত্তি হইতে দেখা যায়। ইছার নাম আবেশ। এই কারণে একটি তারের কুওলী লইয়া উচার ভিতরে একটি চৌম্বকদণ্ড প্রবেশ করাইতে থাকিলে কুওলীতে তংকালে ক্পন্থায়ী প্রবাহ উংপক্ষময়। চৌম্বকদণ্ড কুওলী-অভি-মুবে অগ্রসর বা কুওলী হইতে নির্গত হইতে থাকিলে চৌত্বকদও ও কুওলীর পারস্পরিক দূরত্ব পরিবর্তনে চক্রাভান্তরে চৌত্বক-প্রভাব বর্দ্ধিত বা হ্রাসপ্রাপ্ত হয় এবং ইহার জন্তই উপরোক্ত আবেশের স্ষ্টি হয়। চৌম্বকদণ্ড কোন বিশেষ অবস্থায় (কুওলীর অভ্যন্তরে বা বাহিরে) স্থির হইয়া থাকিলে কোন প্রবাহ পাওয়া যায় না. কারণ এই সময়ে চক্রাভ্যন্তরীণ চৌত্তপ্রভাব অপরিবর্ত্তিত থাকে। চৌম্বকপ্রভাবের পরিবর্ত্তনের ক্ষিপ্রভার উপর আবেশোভূত প্রবাহের তীব্রতা নির্ভর করে। চৌছক-দও বাবহার না করিয়া অন্ত কোন উপারে চক্রে চৌছক-প্রভাবের পরিবর্ত্তন করিলেও আবেশের উৎপত্তি সম্ভব।

পৰ্য্যবেক্ষণে ইহাও দেখা যায় যে, কোন ভড়িংকুওলীভে তড়িং প্রবাহিত হইতে থাকিলে তংকালে উহা স্বয়ং একখণ্ড চ্ছকের ভায় আচরণ করে। কুওলীতে প্রবহ্মান ভড়িৎ পরিবর্ত্তনশীল হইলে কুণ্ডলীতে সঞ্জাত চৌত্বকপ্রভাবও পরিবর্ত্তিত হয়। স্থাবার কুওলীর সভান্তরে এক খণ্ড লৌহ রাখিয়া দিলে এই চৌষকপ্রভাব ভীব্রতর হয়। জাবেশ স্ষ্ট করিবার জন্ত পূর্বে উলিবিত কুওলী সন্তিকটে চ্ছক আনমূন না করিয়া যদি উছাকে বিরিয়া একট লোহসহলিত তড়িংচক্র ছাপনা করা হর প্রভাবের পরিবর্ত্তন সংশ্রুত হইতে থাকিলে তারের আভাভরীণ এই শেখোক তড়িংচজে (ইহাকে অতঃপর মুধ্যচক্ত বলা



বিটাটনের রশ্মিপ্রভাবে পরমাণু চূর্ণীকৃত হইবার পর আলকা কণিকা ও প্রোটন বিপরীত দিকে যাইতেছে (উইলসন প্রকোঠে গৃহীত কোটো)

ছইবে) পরিবর্তনশীল প্রবাহ চালনা করিলে প্রথমোক্ত চক্রে (গৌণ) আবেশকনিত প্রবাহ পাওয়া যাইবে। একথা এখানে উল্লেখ করা সক্ষত যে মুখ্যপ্রবাহ পরিবর্তিত না হইয়াছির থাকিলে গৌণচক্রে প্রবাহ পাওয়া যাইবে না, কারণ মুখ্য চক্রে প্রবাহিত তড়িতের পরিবর্তনের ভিতরেই বহিয়াছে গৌণচক্রাভান্তরে পরিবর্তনের ভিতরেই বহিয়াছে গৌণচক্রাভান্তরে পরিবর্তনশীল চৌছকপ্রভাব তথা আবেশ উৎপত্তির হেতু। গৌণপ্রবাহের হল্প সম্পূর্ণরেশ মুখ্য প্রবাহের হল্প ও পরিবর্তনের ভিপ্রতার উপর নির্ভর করে, পরিবর্তনের বৃদ্ধিত হার আবেশকে তীত্রতর করিয়া তুলে। মুখ্য প্রবাহ ক্রমবর্তনান হইলা গোক।

এক্ষণে আবেশের উত্তবের করু প্রয়োকনীর পূর্বোক্ত সক্ষাকে একটু বদলাইরা লইলে অন্ত প্রকার প্রতিক্রিয়া পাওয়া বাইতে পারে। মনে করা যাক, গৌণচক্রে ব্যবস্থাত তারের কুওলীর পরিবর্ত্তে রুডাকৃতি কাচের আবারে রক্ষিত আম্যমাণ ইলেক্টনকে গ্রহণ করা হইয়াছে। ইতিপূর্ব্বে বলা হইয়াছে যে তারের কুওলী ও আম্যমাণ ইলেক্টন রচিত চক্রের মধ্যে তভিংপ্রভাব বিষয়ক প্রক্য আছে। এইরূপ সক্ষা করিয়া লইরা যদি মুখ্য চক্রে ক্রমবর্জমান প্রবাহ চালনা করা যায় তবে আবেশবশত 'প্রাম্যমাণ ইলেক্টন চক্রে'ও অন্ত্র্মণ গৌণ প্রবাহের উদ্ভব হওয়া সম্ভব, এই স্থলে ইহার স্বর্মণ কি হইবে দেখা যাক্।

সাধারণ তারের ভিতরে যথন প্রবাহ চলে তথন প্রবাহের বৃদ্ধি হইলেই ইলেকট্রনগুলি তারের অভ্যন্তরে বৃদ্ধিত বেগে চলিতে আরম্ভ করে। উপরোক্ত ইলেকট্রনচক্রে তভিং-প্রবাহের শক্তিবৃদ্ধি হওয়ার কলে চলমান ইলেকট্রনের গতি বাভিয়া যাইবে। কিন্তু এখানে মরণ রাখিতে হইবে, এই চক্রে একই ইলেকট্রন সমস্ত চক্র পরিক্রমণ করিয়া আসিতেহে; (তারের কুওলী নির্ম্মিত চক্রের সঙ্গে এখানে প্রভেদ রহিয়াছে)—মুতরাং প্রবাহের রদ্ধি সেই একই ইলেকট্রনকে বারংবার বৃদ্ধিত বেগ প্রদান করিবে। তাহা হইলে অবস্থাটা দাভাইতেহে এইরূপ যে, যুত্তপথে ক্রমণকালে মুখ্য প্রবাহের ক্রত পরিবর্তনের ক্রম্ভ ইলেকট্রম প্রতি মুহুর্তে বেগবৃদ্ধির প্রেরণা পাইতেহে

এবং এই কারণে একবার অমপশেষে
ইলেকট্রন যথন পুনরার যাত্রারভ্রতনে
কিরিয়া আসিতেছে তথন উহার বেগ
বহুগুল বাড়িয়া গিরাছে। যথন মুখ্যপ্রবাহ ক্রিপ্রাতিতে চরম মাত্রার উঠিতে
বাকে সেই অবসরে যদি ইলেকট্রন
বহুবার রভগণে পরিক্রমণ করিবার
উপযুক্ত হয় তবে প্রবাহের চরম র্ছির
মুহুর্ত্তে এই ইলেকট্রন প্রচণ্ড বেগরুক্ত
হইবার অ্যোগ পাইতে পারে। এই
বাবস্থার মুখ্যপ্রবাহের পরিবর্তনরীতি
যত ক্রিপ্রতর ইইবে ইলেকট্রনের বেগ

তত প্রচণ্ড হইবে। বিটাট্রন যন্ত্রে এই প্রক্রিয়া দ্বারাই ইলেক-ট্রনকে পূর্ব্বোক্তপ্রকার বেগ প্রদান করা সম্ভব হইয়াছে।

এই পরিকল্পনাকে রূপ দিবার ক্বন্ত বলরাকৃতি কাঁপা একটি কাচের পাত্র বা নল লওয়া হয়। একটি লাইফ বেন্টের আকৃতি করিলে এই নলের প্ররূপ উপলব্ধি হইবে। নলের ভিতরটা বার্বজ্জিত; ইহার এক পার্শ্বে ইলেকট্রন উৎপন্ন করিবার বাবস্থা আছে—বন্দুকের গুলির মতই ইলেকট্রনকে এই যন্ত্র হুইতে বেগে ছুডিয়া বাহির করিয়া দেওয়া হয় বলিয়া ইহার মাম দেওয়া হয় "ইলেকট্রন গান্"। সমস্ত নল বিরিয়া উপরে ও নীচে রহিয়াছে ১৮০ × ৭৬ × ১০৮ ইঞ্চি আকৃতিবিশিষ্ট



বিটাট্রন-সংশ্লিষ্ট উইলসন প্রকোষ্ঠ (পরমাণু চূর্ণীকরণ স্থান) ও আফুষ্টিক কোটো তোলার ব্যবস্থা

লৌহসম্বলিত তারের কুণ্ডলী—১২৫ টন ওকনের ইম্পাত ও তহুপরি কড়ানো সংবাহক তার—যাহার ভিতর দিয়া ২৪ হাজার ভোল্ট উদ্ভূত ১০০ এম্পিয়ার শক্তির পরিবর্তী প্রবাহ চালালে। হুইতেছে। এই প্রবাহ সেকেওে ৬০ বার



বিটাট্রন সম্ভাত রশ্মির ছবি তুলিবার ব্যবহা কর। হইতেছে

আন্দোলিত হয় অৰীং কমে বাড়ে এবং এক সেকেভের ২৪০ ভাগ সুময়ের মধ্যে শুশু হইতে চরম মাত্রায় পৌছায়।

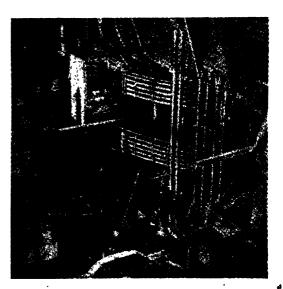
বেগযুক্ত ইলেকট্রন উৎস হইতে মুক্ত হইবার পূর্ব হইতেই নলবেষ্ট্ৰকারী কুওলীতে তড়িং চালনা করা হয় যাহাতে কুণুলীর অভ্যম্ভরম্ভিত লৌহ চ্ছকত্ব প্রাপ্ত হয়। নলে প্রবেশ করিয়াই ইলেকট্রন তড়িংচুম্বকের প্রভাবে পড়ে ও চক্রাকারে নলের ভিতর ঘুরিতে আরম্ভ করে। ইতিমধ্যে কুওলীতে প্রবহমাণ তড়িতের শক্তি বাড়িতে থাকে এবং আবেশক্রিয়ার ফলে নলমধ্য হ লেকটনের বেগও ক্রমে বাড়িয়: যায়। তড়িং-প্রবাহের শক্তি যখন চরম মানে পৌছায় সেই অবসরে ইলেকট্রন আড়াই লক বার নল পরিক্রমণপূর্বকে এক সেকেতের ২৪০ ভাগ সময়ে ৮০০ মাইল পথ অতিক্রম করিয়া প্রচত বেগপ্রাপ্ত হইয়া থাকে।

এট ভাবস্থায় ইলেকট্রনকে সহসা অপর কোন তড়িং-ক্ষেত্রের সাহাযো চঞ্চপথ হইতে সামার বিচলিত করিয়া আনিয়া নিক্ষেপ করা হইবে নলের এক পার্যে রক্ষিত এক বাড়ু-পদার্থের উপর। পরমাণুকেক্সের দিকে এই পদার্থের অগ্রসর ছ্ট্রার কালে ইলেকট্রনের সঙ্গে পর্মাণুক্রিকার সংঘর্ষ বাবে, তাহারই ফলে সেধান হইতে এল্প-রশ্লিকপে অমিত তেকোরাশির উদ্ভব হয়।

বেগরুক্ত ইলেকট্রনের আবাতেই এল্ল-রন্মির উৎপত্তি হইয়া बांदक, किन्छ अहे जकन नतन हैतनकवेनदक करतक शकांत ভোল্ট শক্তির তড়িংক্ষেত্রের প্রভাবে বেগপ্রদান করা হয়। সে তুলনার ব্রিটাট্রন হইতে ইলেকট্রন যে বেগ প্রাপ্ত হর তাহা দশ কোট ভোণ্ট হইতে উৎপন্ন তড়িৎক্ষেত্রের প্রভাবপ্রান্তির সমতুলা। মাত্র চবিশে হাজার ভোণ্ট ব্যবহার করিয়া এই শক্তি পাওয়া যায়। বিটাটনের কার্যকারিতার কলেই শক্তির এবন্দ্রকার অসাধারণ পরিবর্দ্ধন সম্ভব হুইয়াছে।

মান্থধের শরীরে যে শক্তির এক্স-রশ্মির নিরাপদ প্রয়োগ সম্ভব, বিটাট্রনসঞ্জাত রশ্মি তাহা হইতে প্রর হালার গুণ বেশা শক্তিশালী। রেডিয়ম হটতে যে তীব্রতম গামা রশ্বি উদ্ভত হয়, বিটাটনের রশ্মি তাহার চেয়ে অন্ততঃ বিশগুণ তীব্রতর। যে কব্দে এই বিটাট্রন সঞ্জাত রশ্মির স্ঠি হয় সেখানে সতৰ্কতামূলক ব্যবস্থা অবলগন না ক্রিয়া প্রবেশ করিলে মৃত্যু অস্বাভাবিক নয়। অমিত তেব্দুফ্ত এই রশ্বির অনেক প্রকার বাবহারিক প্রয়োগ আছে--- চুট-একটির উল্লেখ কর। যাইতে পারে। এই রশ্মির সাহায্যে বার ইঞ্চি পুরু এক খণ্ড ইম্পাতের ভিতরকার সকল অবস্থা মাত্র পাঁচ মিনিটে ভানিয়া লওয়া সভাব। চিকিংসাঞ্চেত্রে এই রশ্মির প্ররোগ অনক্তসাধারণ ফলপ্রদ। ইহারই সাহায্যে মান্তুষের দেহাভাস্তরীণ পরীকা কার্যাদি সুঠু ও স্বন্ধতরভাবে করা সম্ভব।

কিছ বিটাটনসম্ভাত রশ্মির প্রকৃত প্রয়োগক্ষেত্র রহিয়াছে পরমাণ বিষয়ক গবেষণা ব্যাপারে। কসমিক রশ্মির সঙ্গে যে



বিটাট্রনযন্ত্র (পিছনের দিক হইতে)

তেক সংশ্লিষ্ট থাকে বিটাট্নসঞ্জাত রশ্মির তেকসম্পদ তাহার 🕽 সহিত তুলনীয়। কস্মিক রশ্মি সম্পর্কিত ঘটনাবলী পর্যাবেকণ এই রুখি প্রচণ্ড শক্তিসমধিত। সাধারণ এজ-রুখি নলেও টুকরিবার বিবিধ সার্থকতা আছে, কারণ পরমাণুর গঠন বিষয়ে কস্মিক রশ্মি নবতম সম্ভা আনম্বন করিয়াছে। কস্মিক বন্ধির আঘাতে প্রমাণু হইতে মেসোম নামক কণিকা মির্গত

হয়, উহার বরূপ আব্দও রহস্যারত। কস্মিক বর্ষির উৎপত্তি
নিভান্ত অনিশ্চিত ও দৈবাবীন সেক্ত মেসোনের সাক্ষাংলাভ
করিতে হইলে গবেষণাকারীকে অনির্দিষ্ট কাল যান্ত্রাদি লইরা
অপেন্যা করিতে হয়। বিটাইনসঞ্জাত রবিষারা মেসোনের
উৎপত্তি সন্তব হইবে বলিয়া মনে করা হইতেছে। এই কার্য্যা
করিবার ক্ষত্ত বিটাইনকে আরও শক্তিশালী রাশ্য স্কট্ট করিবার
উপর্ক্ত করা প্ররোক্তন বলিয়া অক্তৃত হইয়াছে। নবতম
পরিকল্পনার উন্নত ধরণের বিটাইন নির্দাণের নানা উদ্যোগ
আরম্ভ হইয়াছে। তর্যব্যে রাশিয়ার ভেল্পনার পরিকল্পিত
সিনকোইন অভত্য।

অঞ্চাত রাজ্য হইতে আগত কৃসমিক রশ্বির তেকোভাঙার সম্প্রতি বৈজ্ঞানিক মহলে ওংশ্বক্যের সঞ্চার করিরাছে। অদূর তবিয়তে বিটাট্রন ফুদ্রিম কৃসমিক রশ্বির শৃষ্টি ভূরিণেও বিশ্বরের কিছু নাই। কৃসমিক রশ্বির সমতৃল্য তেলস্ক্রীর কৌশল মান্থবের ক্রায়ত হইলে ভাবীকালের পৃথিবী আবার কোন্ নবতম মারণাপ্তের সঞ্খীন হইবে কে ভানে? বিজ্ঞানের সাকল্য ও মানবের শুভর্ছি অবিচ্ছিন্নভাবে অঞ্জ্রর হইরা না চলিলে ক্ষ্মতার দান্তিক প্রতিযোগিতার ক্বলে পতিত বিজ্ঞানের পর্মপ্রাপ্তি হইতেই উদ্ভূত হইবে মানব সভ্যতার মন্ত্রিকিও অক্ষণ চর্ম পরিণতি।

ভারতীয় সঙ্গীতে সাত স্বরের জন্মকথা

স্বামী প্রজ্ঞানানন্দ

ভারতীয় সদীতে সাত স্বরের জনকথার পরিচয় দেবার আগে 'সদীত' শক্ট সম্বন্ধে আমাদের কিছু বলা দরকার। 'সঙ্গীত' শস্ক্রটর ভেতর তিন্টি কলার সমাবেশ পাওয়া যায় ও সে তিনটির নাম নৃত্য, বীত ও বাস্ত। সঙ্গীতের ক্লপই এ তিনট কলার একত সমাবেশে সার্থক হয়। কিছু 'সঙ্গীত' শক্ষর প্রাচীনত্ব ও ইতিকথা যতটুকু আমাদের জান্য আছে---মকরন্দকার নারদই বোধ হয় প্রথমে 'সঙ্গীত' এই শব্দটি সঙ্গীত-শাজে ব্যবহার করেছেন—"গীতং বাস্থং চ নৃত্যং চ ত্রয়ং সনীতমুচ্যতে"।^১ মকরন্দকার নারদের আগে নাট্যশাস্ত্রকার ভরত থেকে ভারত্ত ক'রে দণ্ডিল (বা দন্ধিল), রক্ষা, কর্তুপ, বাষ্ট্রক, ছর্গাশক্তি, কোহল, বিখাবিল, অখতর, বিখাবস্থ, তুর্ফ, শিক্ষাকার নারদ্র মতদ এবং এমন কি পার্থদেব পর্যন্ত এ 'সঙ্গীত' শব্দটি তাঁদের সঙ্গীতগ্রন্থের কোপাও উল্লেখ করে-ছেন ব'লে মনে পড়ে না। এ ছাড়া প্রাতিশাব্য ও শিক্ষার মুগে,--- ৰক্, ষজু, সাম ও অবর্ণ এ চার বেদের কোনটির প্রাতি-শাখ্যে অথবা নারদী, যাজবদ্যা, মাণুকী, মনঃসার প্রভৃতি শিকাগুলিতেও 'সঙ্গীত' শব্দটি ব্যবহার করা হয় নি। ব্রাহ্মণ, সংহিতা ও ধর্মসুত্রের ভেতরেও 'সঙ্গীত' শক্টির কোন উল্লেখ নেই। যা আছে তা বৰ্তমান সদীতকে বোৰাবার হুছে 'গান', 'মুভ' বা 'মুভি,' 'গাধা' হুধবা 'গাৰ্ব' শবশুলি ব্যবহার করা হয়েছে; অবচ বৈদিক সাহিত্যের সবস্থলিতেই বাজ্যন্ত যেমন বীণা, মুদঙ্গ, বেণু প্রভৃতি এবং মৃত্য ও গানের পৃথক পৃথকভাবে উল্লেখ ভাছে। বজুবেদীর

চারদিকে করতালি দিয়ে গৃত্য অথবা নৃত্যের সঙ্গে সঙ্গে বক্ছল গাধিক, সামিক ও অরান্তর প্রভৃতি অরযোগে গান করার উল্লেখ্ড বৈদিক সাহিত্যে পাওয়া যায়। তবে নাট্যশাস্ত্রকার ভরত নাট্যকলার পরিচর দিতে গিয়ে "এবং গানং চ নাটাং চ বাজং চ বিবিধাশ্রয়্ম" ৺ শক্ষরভার উল্লেখ করেছেন যদিও 'নৃত্যং' বা 'নৃত্তং' শক্ষের ভারগায় 'নাট্যং' শক্ষটিই সেখানে তিনি ব্যবহার করেছেন। নাট্যের সার্বকতা আদিক লীলায়িত গতি ও ছলকে নিয়ে, কালেই 'নাট্য' শক্ষটির ভেতর 'নৃত্য' শক্ষটির যে অন্তর্নিবেশ আছে এ কথা বরে নেওয়ায় কোন দোষ নেই। আর এ জন্তেই বলা যায়, ভরত সলীতের ত্রৌর্বিক রুগটের আভাস পাকেপ্রকারে দিয়েছেন যদিও তার লাট্ট উল্লেখ কিছু করেন নি। লাট্ট উল্লেখ একমাত্র ৭ম খেকে ১১শ শতালীর ভেতর মকরন্দকার নারদেই ভরেছেন বলা যায়।

মোট কথা ৭ম, ১১শ শতাখী বেকেই মুপাই ভাষার মৃত্য, গীত ও বাভের সমবেত স্থাপ হিসাবে আমরা সদীতের উল্লেখ পাছি। তার আগেও প্রাতিশাখ্যে 'গণগীতিভ্যং', 'উহগানে', 'ভোডক্চ সামাড্য' প্রভৃতি এবং শিক্ষাদিতে গান, গীতি, গাণা ও গাহুর্বগানের উল্লেখ সৃত্য ও বাভের সহমিলনে পেরে থাকি। এ হাড়া আর্বের ও সামবিধানরাক্ষণে এবং মামতন্ত্রে অরপ্যোগরগান, প্রামেগেরগান, উহগান ও ভ্যোড গানের মারক্তে সামগানের পরিচরও আমরা যথেই পেরেছি। তা হাড়া নাট্যশাল্র থেকে আরক্ত ক'রে যুহুক্দেশী, মকরক্ষ,

১। সদীত মকরন্দ ১।৩,১।

২। 'প্ৰবাসী', বৈশাৰ ১৩৫৩ (পূ. ৪৪-৫০) সংখ্যার লেৰকের "সঙ্গীত মকরন্দ ও শিক্ষাকার নারদ" প্ৰযন্ধ শ্ৰষ্টব্য।

৩। নাট্যশাল্প (কাৰী সং) ২৮।৭

৪। 'প্ৰবৰ্ত ক', কাৰ্ডিক ১৩৫৩ (পূ. ৩১৭-৩২০ সংব্যার লেখকের "গাছৰ্বশাল্লে সদীভ" প্ৰবন্ধ লাইব্য।

রত্বাকর, পারিকাত, রাগবিবোধ, সঙ্গীতদর্গণ-সদীত ও সময়-সারের সময় পর্বস্থ দীত, বাদ্ধ ও নৃত্যের প্রচলন অব্যাহত ছিল ব'লে মনে হয়। কিন্তু বর্ত মানে সঙ্গীতের কোঠায় এ তিনটির একত্র সমাবেশ একেবারে অপরিহার্ব ব'লে পরিগণিত নয় হদিও নাট্যকলার ভেতর তার প্রচলন এবনো রয়েছে।

প্রকৃতপক্ষে সদীতের সখনে কোন কথা বলতে গেলে
সঙ্গীতের উৎপত্তি বা জন্মকথার পরিচয় দেওয়া আগে দরকার।
সদীতশাপ্রকারেরা বেশীর ভাগই সদীতের উৎপত্তির কথা
বলতে গিয়ে বলেছেন "নীতং নাদাত্মকং", অবাং নাদ বা শহুই
নীত তথা সদীতের শরীর অথবা শহু থেকেই সদীতের উৎপত্তি
হয়েছে। নৃত্য ও বাজের বেলায়ও তাই—"বাজং নাদব্যক্ত্যা প্রকাশতে। তত্মরাস্থাতং নৃতং নাদাবীনমতম্বরম্।" এই নাদ অথবা শথকে আদি অথবা হল্ম শহু বলা হয়েছে যে শধ্দের ভেতর শাপ্রকার ও দর্শনকারেরা বিশ্বজন্মাঞ্জেও অন্তর্ভুক্ত করেছেন। এই আদি বা হল্ম শহুকে অনাহত ও আহত ভেদে ছুভাগে ভাগ ক'রে আহত শহু থেকেই সদীতের হল্মনুর্তির ক্ষম এ কথা সম্ভাতশাপ্রকারেরা বলেছেন।

কিন্ত এ গেল নিছক দর্শনের কথা। কারণ যে কোন শব্দ ছুলব্রণে প্রকাশ পাবার আগে হল্ম আকারে নাভিতে প্রথমে, তার পর হুদরে ও কণ্ঠে ও শেষে মুখে ছুল আকারে প্রকাশ পায়! বাতাগই শব্দের কারণ। শব্দ হবার আগে বাতাস অর্থে প্রাণবারু দেহের ভেতর পাঁচটি ছানকে অভিক্রম ক'রে ছুল শব্দরণে বাইরে প্রকাশিত হয়। এই প্রাণবারুকেই দর্শনশাল্রে শব্দরক্ষ, তল্পে ক্রেটিনী, কালী প্রভৃতি বলা হয়েছে।

কিছ দর্শনের কথা বাদ দিলে ইতিহাস ও ক্রমবিকাশের দিক থেকে সঙ্গীতের জন্মকথার একটি ইন্সিত আমাদের পেতে হবে। সঙ্গীত তথা সঙ্গীতের বর, স্থর বা রাগরাগিণী একেবারে আকাশ থেকে অকথাৎ স্ট হয় নি। সমাজের মাতুষ্ট প্রতিভা ও প্রচেষ্টা দিরে সদীতকে প্রকৃতির অন্তর থেকে আবিষার করেছে—তাও করেছে সকলে ধীরে ধীরে ক্রমবিকাশের ৰারাকে অমুসরণ করে। ভারতীর সংস্কৃতি যেমন প্রাগৈতি-হাসিক মুগের বিশাল ক্ষেত্রকে অতিক্রম ক'রে ঝরৈদিক মুগে চরম উৎকর্ব লাভ করেছিল: তারপর বৈদিক যুগেরও পরে প্রপনিষদিক যুগে বাহ্নিক ও আছর উভয় দিকেই সংস্কৃতি যেমন আবার বিকাশের পরাকাঠার উপস্থিত হয়েছিল, একেবারে নর বুগ-যুগান্তের ক্রযোহতির ধারাকে অনুসরণ ক'রে, সঙ্গীত-কলাও তেমনি অসভ্য আদিম বিকাশের ভেতর দিয়ে ৰীরে ৰীরে উন্নত হতে হতে দেশী ও মার্গ---অসংস্কৃত ও সংস্কৃত এ ছটি রূপের ভেতর দিয়ে ক্রমে রাগ্ অলভার, বৃছ্না, তান ও সঙ্গীতের বিচিত্র রূপভেদের সম্ভারে বত মান

উন্নত আকারে এসে উপস্থিত হরেছে। কাকেই ক্রমোন্নতির বারাকে অধীকার করার উপায় নেই। সঙ্গীতের পরিপূর্ণ রূপও এই ক্রমোন্নতি বা ক্রমবিকাশের পথে ধীরে বীরে প্রাথৈদিক ও বৈদিক যুগকে অভিক্রম ক'রে ঐভিহাসিক তথা হিন্দু, মুসলমান ও ইংরেজ রাজত্বের বিভিন্ন মূলে বিচিত্র রূপে প্রকাশ পেরেছে একথা আমাদের বীকার করতে হবে। নারদীশিক্ষা ও রত্বাকরের আর্চিক, গাধিক, সামিক, স্বাস্তর, ওড়ব, বাড়ব ও সম্পূর্ণ হরগুলির পরিচয় দিলেই সে ক্রমিক স্বরবিকাশের কথা আর্মাদের শ্বনণ করিরে দের।

একেবারে গোডাকার দিকে সঙ্গীত একট মাত্র স্বরকে নিয়েই পরিপূর্ণ ছিল আর সে রুগের নাম ছিল আর্চিক। সঙ্গীতের প্রাণই স্বর। সুর বা রাগ-রাগিনীর স্ক্রপও এই সংবর বিভাস-বৈচিত্র্যের ওপরই সংশৃর্ণ নির্ভর করে। আর্চিক রুগে বর মাত্র একট ছিল, কিছ্ক তা ষড্বা, ধ্বভ, গান্ধার, মবাম, পঞ্চম, বৈবত ও নিষাদ এই সাতটি বরের ভেতর কোন্ হরটি ছিল একথা এবনে। ঠিকরকম ভাবে আবিকার করা হয় নি। সঙ্গীতের বিকাশমুক্ত ঐতিহাসিক দিকটাও এবনো আমাদের কাছে অক্রাতই বলা যায়। তারপর সঙ্গীত কবন বেকে আমাদের সমান্তে প্রবেশলাভ করেছে তারও ঠিক ঠিক ইতিহাস আমরা ভানি নি। শুরু আমরাই বা কেন, পৃথিবীর সমন্ত জাতির ইতিহাসেই সঙ্গীতের ক্রমকথার তারিব এবনো পর্বন্ধ নির্ণর করতে পারে নি। পাশ্চাত্য সঙ্গীতবিদ্ এরিক ল্লোমও একথা খীকার ক'রে বলেছেন:

"We do not know when music became a consciously cultivated art in England, • • not can we tell how it first shaped itself."

রাশিয়ান সঙ্গীতবিশারদ ক্যাপ্ভোকোরেনীও স্বীকার করেছেন:

"As to the music, all that could be said would be merely conjectural." কেননা, "No actual example of primitive Russian music is known, • • "

ভারতীয় সঙ্গীতের কথাও তাই। সভ্যিকার ইভিহাসও ভারতীয় সঙ্গীতের নাই, কাব্দেই ব্লোমের মতই আমাদেরও বীকার করতে হবে:

"Unfortunately for history music was for centuries transmitted merely by ear and by tradition, and even when some system of notation was in use, it long remained so inexact as to serve merely as a rough remainder of what was already known to the performers from aural teaching."

a। अभीजबन्नाकत (Adyar ed.) pt. I, 9. २२

b | Vide Music in England, p.

যাই হোক, সঞ্চীতের ঐতিহাসিক গবেষণা থারা করেন তাঁদের ভেতর অনেকের অভিমত: মধ্যমই (মা) আদি স্বর বাকে আচিকের স্বর ও সূর ছুইই বলা বেতে পারে। অনেকে বলেন নিষাদই (মি) আদি স্বর। মিঃ শেষগিরি শাল্লী সামগান নিয়ে আলোচনা করার সময় উলান্ত, অঞ্লান্ত ও স্বরিত স্বর তিন্টির জারগায় নিষাদ, ষড় জুও অফ্লান্ত ও স্বরিত স্বর তিন্টির জারগায় নিষাদ, ষড় জুও অফ্লান্ত ও স্বরিত স্বর তিন্টির জারগায় নিষাদ, ষড় জুও অফ্লান্ত ও স্বরিত স্বর তিন্টির জারগায় নিষাদ, ষড় জুও অফ্লান্ত ও স্বরিত স্বর তিন্টির কারগায় নিষাদ, ষড় জুও অফ্লান্ত ব্ররণ সামিক যুগের কথাই টেনে এনেছেন বলতে হবে।

হুলুগার কৃষ্ণচারিয়ারও এই সামিক যুগের কথা তুলে উদাত, অনুদাত ও স্বরিত স্বর সম্বন্ধে আলোচনা করেছেন। তবে সেধানে তিনি গানে একটিমাত্র ধরের তিন রকম ভাবে উচ্চারণ-এশীর ওপরই বেশী জোর দিয়েছেন, তিনট পৃথক স্বরের কথা কিছুই বলেন নি। উদাহরণরূপে আখলায়ন শ্রেতস্থরের (১৷১৷১) একস্বরীগায়ন বা আর্চিকগায়ন— "একশ্রুতাম ল একশ্রুতিসত ভমস্বুমার। পর:সন্নিকর্ম:।" কথা-শুলির উল্লেখ করেছেন। তথানে শান্ত্রীন্দ্রী কিছু সাতস্বরের ভেতর কোন স্বরট এই "fixed one note" হবে তার কোন "পঙ্গীত" পত্রিকায় প্রকাশিত नाट्याटलचं कटवन नि। (Sangeeti) An Hypothesis of the Origin and Development of the 22 Stratis প্ৰবৰ্গে বিছ্যী শিল্পী রাগিন দেবীও এই আদি বা প্রথম স্বরকে নিধাদ (নি) বলতে চেয়েছেন, আর এর নঞ্জিরও তিনি দেখিয়েছেন সাম-পরিভাষার নাম দিয়ে। তিনি বলেছেন:

"In the Samaparibhasa, the note 'NI' is described as the starting point of the Saman scale."*

কিছ নারদী-শিক্ষাকার নারদ "যঃ সামগানাং প্রথমঃ স বেণোর্মহামঃ স্বরঃ" বলে যে মিলনের ইন্নিত দিরেছেন তাতে বোকা যায়, বৈদিক সরের অবরোহণ বারাকে (descending order) অটুট রেখেও মধ্যমকেই (মা) প্রথম স্বর হিসাবেগণা কর। যায়। সামবেদের ভাষোপক্রমণিকায় আচার্য সামণের মতে আবার প্রথম স্বর হয় বৈবত (বা), কেননা সাভস্বরের বিকাশভঙ্গীকে তিনি আরোহণ গতিতে (ascending order) স্বীকার করেছেন।

মি: সুকা রাও তাঁর A Plea for A Rational Interpretation of Sangita Sastra প্রবন্ধে সাভয়রের উৎপত্তি নিয়ে যে পাঙিত্যপূর্ণ আলোচনা করেছেন ভাতেও প্রথম স্বর হিসাবে মধ্যম স্বরকেই তিনি গ্রহণ করেছেন। > °

এ ছাড়া The Rignedic Culture of the Prehistoric Indus বইরের স্থান্ডিত লেবক ছামী শংকরানন্দও
বৈকালিক বারাকে অনুসরণ ক'রে বৈদিক দেবতাদের
উংগন্তির মতো সাত স্থরের উংগন্তির একটা দার্শনিক ওং
বৈজ্ঞানিক যুক্তি দেবিরেছেন। তিনি বলেছেন: "This.
evolutionary process of the musical notes is
very much the same as that of the Vedic deities
in the Arya society.">> তিনি বৈদিক দেবতাদের
ক্রমবিকালের মাতা স্থরের বিকাশ সম্বন্ধে বলতে গিয়ে বলে—
ছেন, বরুণ বা আকাশই স্ক্রীর প্রথম দেবতা। ব্যাহদসংছিতার
প্রথম মন্ডলের গোড়াকার দিকে এই বরুণ দেবতার উল্লেখই
করা হয়েছে, যদিও তা ছু'এক বারই মাত্র। স্বামী শংকরানন্দ
বলেছেন:

** We find that the Tantric division of

the sound reappears in the musical science." বরুণ বা আকাশের তান্ত্রিক বর্ণবীন্ধ (code) মধ্যম (মা) অপব: ঋষভ (রে)। কাজেই এখানেও আদিয়র হিসাবে মধামকেই (মা) পাওয়া যায়। এই মধান স্বরকে সোমনাথ ভার রাগবিরোধে সমস্তু ('unborn' and 'uncreated') খর বলেছেন। 🖰 শার্ম দেব তাঁর সঙ্গীতরতাকরেও (১৪৬) বলেছেন: "গ্রামে ভাদবিলোপিত্বাল্বব্যমন্ত পুরঃসরঃ"এবং কঞ্জি-নাথ তাঁর টাকায় "মধামান্তবিনাশিত্বমিতি" ব'লে প্রকারান্তরে মধ্যম স্বরেরই অবিনাশিত্বের তথা সমস্তুত্বের কথা উল্লেখ করে-ছেন। ভরতের সমসাময়িক দন্তিলও একথা স্বীকার করেছেন। টীকাকার সিংহ্ভুপালও দত্তিলের কথা উল্লেখ করেছেন। यमन--"मन्मभावानानिष्यकः मखिलन--'+ • भारतिनिष् বিশানীয়াৎ সৰ্বত্ৰৈৰ ভূ মধ্যমন্।" কাৰেই সকল অবস্থায় অধাৎ যাড়ব, ওড়ব ও সম্পূর্ণ ঠাটের বেলায়ও মধ্যমের লোপ নেই। সিংহভূপালও 'ষাভ্বিতত্ব উভ্বিতত্বে চ মধ্যমন্ত লোপো নান্তি' ব'লে একখা সমর্থন করেছেন আর একভে প্রশংসার ছলে 'দেবপুল উৎপন্নতাং'—দেবকুলে উৎপন্ন কথাগুলিও উল্লেখ করেছেন। আৰুকাল ভাই সম্পূর্ণ ঠাটের মাঝামাঝি হিসাবে মবাম স্বরকেই আমরা গ্রহণ ক'রে থাকি,আর উত্তরাক ও পূর্বাক রাগের নির্ণয়ও ঐ মধ্যম স্বরকে ধরে কর। হয়। বিশ্বত

আলোচনার ভেতর না গিয়ে সংক্ষেপে সকল দিক থেকে

বিচার করলেও দেখা যায়, আর্চিকরুগের বর নিযাদ, অধবা

৭। রামচন্ত্রন : The Ragas of Karnatic Music (1934), পু. ১৩

VI Vide The Journal of the Music Academy. Vol. 1, Jan. 1930, No. 1, p. 158.

>1 Vide Sangecia, Vol. June 1931, No. 3, p, 12,

demy, vol. IX, 1938, pts. I-IV, pp. 49-61

>>+ Vide Rigredic Culture of the Prc-historic Indus, vol 11, p. 50,

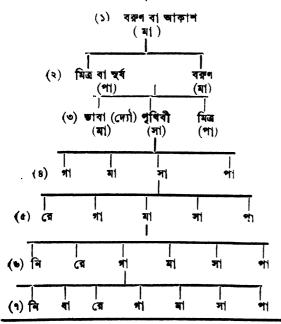
১২। শুধুমধাম বরকে নর, পঞ্ম ও বড়জ বর ছ্টিকেও রাগবিবোধকার বরজু ('unborn') বর বলেছেন।

বৈবত না হয়ে মধ্যমই বরং হওরা উচিত —বিকাশের বারা ও বিজ্ঞানের দিক থেকে অস্তত।

সঙ্গীতে আর্চিক্যুগের পর আমরা পাই গাধিক্যুগের বিকাশ। এই গাধিক্যুগের বর বৈদিক দেবতা মিত্র ও বরুপের মতো পঞ্চম ও মধাম (পা ও মা) বর ছট হবে, কেননা মিত্র ও বরুপের বর্ণবীক হবে পঞ্চম ও মধাম বর। এই রকম সামিক রুগ বা তিন বরের যুগে তিনটি দেবতা দোঁ (আকাশ) পৃথিবা ও মিত্রের বর্ণবীক অন্থ্যারী মধাম, ষড় জ্ব ও পঞ্চম (মা সা পা) বরের উৎপত্তি বুক্তে হবে। এই মধাম, ষড়জ্ব ও পঞ্চম অথবা 'সমপা' বর তিনটিই সোমনাথের মতে বয়ভূ— "কিং চ অভ্ব: সমপ" অথবা "সমপাঃ ষড়জপঞ্চমব্যমাঃ অন্যাদেব ভবন্তীতি বভ্ব: বপ্রকাশাঃ: নো তু কল্পিতাঃ।" পণ্ডিত হলুগার ক্ষণারিরারও এটকে সঙ্গীতের তৃতীর ভর ও সামিক রুগ ব'লে স্বীকার করেছেন। তা ছাড়া তিনি বলেছেন:

** it is clear that the Sumic scale was repeated in three ways—from স, ম, শ, which are the bases for the higher and lower registers or octaves."১৩। মি: সুকা রাওমের বীকৃতিও তাই:

"It must be remembered that basic note or Sadja was in the centre of the scale, ma the upper limit and p: the lower limit" তব রাগিন দেবীর সর তিন্টর সকে এই স্বর তিন্টর কোন মিল নেই। সামিকের পর বরান্তর বা চার স্বরের মুগ আর সে চার স্বর গান্ধার, মধ্যম, মড়ক ও পঞ্চম। এর পর ওড়ব, বাড়ব ও সম্পূর্ণ স্বরের মুগ। এই স্বরগুলির বিকাশ-পারম্পর্যক ঠিক এরকম্ভাবে বোঝান যায়.



Vide The Journal of the Music Academy, Vol. I, April 1930, No. 2, p. 159.
 Ibid., Vol. IX, 1938, pts. I-IV, p. 49.

অবশ্ব হুল্গার ফুক্মাচারিয়ার ও সুকা রাওরের বিকাশপারম্পর্য এই বারার সঙ্গে ঠিক মেলে না। এই রক্ম
ভাগ ও পারম্পর্য বৈদিক বিকাশের পারম্পর্যকে অন্ত্সরণ
করেই করা হয়েছে।

এ ছাড়া বৈদিক স্বর উদান্ত, অন্থান্ত ও স্বরিতের (এবং প্রচরের) প্রসম্বত আসতে পারে। উদান্ত বলতে উচ্চ স্বর, অন্থান্ত নিয় বা বাদ স্বর আর স্বরিত উচ্চ ও নীচ স্বর ছ্টীর সমতারক্ষক (balancing) স্বর! উদান্তাদি স্বর তিনটি ইতি-হাসের গোড়াকার দিকে স্বর ছিসাবে পরিচিত পাকলেও পরে "ত্রীণি মক্রং মধ্যমমূভ্যক"—মক্র (বাদ) মধ্য ও তার (উচ্চ) হিসাবে (স্বরোচ্চারণের স্থান বলেই পরিচিত হয়েছিল)। যাক্তবন্ধা, নারদী, পাণিনীয়, মাতুকী প্রস্তৃতি শিক্ষাণ্ডলি আবার উদান্ত, অন্থান্ত ও স্বরিত এই তিনটি (বৈদিক) স্বর থেকে লোকিক সাতটি স্বরেরও উৎপত্তির কথা বলেছেন। যেমন,

উচ্চো নিষাদগানারো নীচারষভবৈবতো। শেখান্ত বরিতা জেয়া: বড়ক্মধামপক্ষা: ।

অৰ্থাং (বৈদিক) উদাত প্ৰভৃতি তিন স্বর বেকে উৎপন্ন লৌকিক সাত স্বরকে বিভাগ করে দেখালে পাওয়া যায়,

বৰা সমপা নগা অফুদান্ত (মস্ত্র) স্বরিত (মধ্য) উদান্ত (তার)

কিন্তু সাত স্বরের ক্রমবিকাশের রীতিকে লক্ষ্য করলে উদাত্ত ও অফুদাভের সমতারক্ষক সর স্বরিত তথা 'সমপ' পরকেই আদিম বা সামিক মুগের স্বর বলা উচিত। ষড় জ-মধ্যম-পঞ্চম সর তিনটিকে সোমনাথ তার রাগবিবোধে সমস্ক ও অবিনাশী ধর ব'লে উল্লেখ করেছেন তা আগেই আমরা উল্লেখ করেছি। কাজেই এক স্বরিত স্বর থেকেই থদি অবিনাৰী ও অপরিবতনীয় বয়ড় তিনটি বরের উৎপণ্ডি সম্ভব হয় তবে শ্বরিতকেও সমৃত্ব ও অবিনাশী বলে গণ্য করতে হবে। কিছ শিক্ষাকারদের ভেতর কারো ইঙ্গিতেই তার ভাভাস পাওয়া যায় না ; স্বরিত স্বরকে তাঁরা উদান্ত ও অকুদান্তের পরে উৎপদ্ন হার ব'লেই বরং পরিচয় দিয়েছেন। কাজেই শিক্ষাকারদের অভিপ্রায়কে আমরা এখানে রহস্তপূর্ণ ব'লেই সাত স্বরের ক্রমবিকাশের রীতি অসুধারী স্বয়ন্ত স্বর তিনটির ভেতর মধ্যম তথা প্রথম স্বরকেই আমরা क्षरम हेर भन्न चन्न व'त्म भग कत्त्व । मशास्त्र भन्न **चनरनाह्य** গতিক্রমে পঞ্ম ও পরে ষড় জ বরের জনকেই আমরা শাস্ত্র ও বিজ্ঞানসম্মত ব'লে মনে করব। কাব্দেই শিক্ষাকারদের যদি সতাই অভিপ্রায় হয় যে, উদান্তাদি বর তিনট বেকে লৌকিক সাভট বরের উৎপত্তি হরেছে তা হলে শাল্লের সিদান অভ্যায়ী বরিত বরকেও সামিক যুগের বর ব'লে গণ্য ক'রে উদ্বান্ত ও অভুদাতকে আমরা পরিত তথা 'সমপা' অথবা 'পসমা' শ্বর ভিনট্টর অন্তর্নিবিষ্ট শ্বর ব'লে মনে করব।

নারদীশিকা, অপর্ববেদীয়া মাণ্ডুকীশিকা প্রভৃতি, সদীত-রত্নাকর, রাগবিবোধ, পারিকাত ইত্যাদি গ্রন্থে পশু-পক্ষীদের অন্তিম বর থেকে সপ্ত বরের জ্ঞান সাভ করার কথা আছে। মাণ্ডুকীতে দেখা যায় বদা হয়েছে,

> "ষড় কে বদতি মর্রো গাবো রগুভি চর্বন্তে। অবা বদতি গান্ধারে ক্রেকিন দন্ত মধ্যমে । পূলাসাধারণে কালে কোকিলঃ পক্ষে স্বরে। অবস্তু বৈধতে প্রাহৃত্পরন্ত নিষাদ্বান ॥১৫

রত্বাকরের দীকাকার কল্পীনাথ এসথন্ধে মন্তব্য করেছেন:
"লোকতোহণি বড় ভাদিস্বরন্ধরিজ্ঞানার মন্ত্রাদিপ্রাণিবিশেষধ্বনিং নিদর্শনাভিপ্রায়েণাছ— মন্ত্রেভি।" দীকাকার সিংছভূপালও বলেছেন: "মন্ত্র: বড় ভ্রমুচ্চরিয়ভি, চাউক থবভর্ষ,
ছাগো গাছারম্, ক্রোকো মধ্যমন্, কোকিলঃ পঞ্চমন্, দহুরে।
বৈবত্তম্, গলো নিষাদমিতি চ"। আমরা কিছু এ উদাহরণটকে
নিছক উপকথা বা পৌরাণিক কাহিনী (mythological)
ব'লেই মনে করি, কেননা আৰু পর্যন্ত এসব প্রাণীর
অন্ত বা শেষ শ্রুতি নিয়ে সাত স্বরের ধ্বনির সঙ্গে কোন
রক্ম মিলিয়ে দেখার চেষ্টা করা হয় নি। ভাঃ কুহুন্ রাজাও
সঞ্চীতরভাকরের ইংরেছী সংক্ষরণে স্বীকার করেছেন:

"The question of the correspondence in pitch among the sound of the seven birds and animals is an old one. It has to be tested." আসলে একখা সভ্য যে, পশুপক্ষীরা প্রভীকবিশেষ (symbol),—কোন-না-কোন বৈদিক দেবভাদের প্রভিনিধি ক্লপে এরা ব্যবহৃত হয়েছে মাত্র। এর সভ্যভা সহত্যে প্রাহুপুন্ধক্লপে গবেষণাও আরু পর্যন্ত হয় নি। সঙ্গীত-নাধকেরা নিষ্ঠার সঙ্গে সঙ্গীতের অফুশীলনই ক'রে থাকেন, কিন্তু সর, রাগ-রাগিনী অথবা শ্রুতি প্রভৃতির ভেতর দার্শনিক ও বৈজ্ঞানিক কোন রহন্ত আছে কি না অথবা ঐতিহাসিক উপাদানও তাদের ভেতর ক্রম-বিকাশের দিক থেকে কিছু থাক্তে পারে কি না সেসব নিয়ে সময় নই করতে ভারা মোটেই রাজী নন। অফুশীলনের অভাবে ভবু সঙ্গীতের কেন—অনেক বিষয়ের আসল তথ্যই আমাদের কাছে এখনও রহন্তময় হয়ে গুকোনো রয়েছে। নারদী ও মাভুকী প্রভৃতি কয়েকটি শিক্ষা আবার শরীরের

বিভিন্ন অদ থেকেও সাত স্বরের উংগন্তির কথা উল্লেখ করেছে। যেমন মাণ্ডুকী বলেছে,

> "কঠাছভিঠতে বড় জন্ময়তঃ শিরসভবা। নাসিকায়াত গানার উরসো মধ্যমন্তবা। উর:শিরোভ্যাং কঠাচ পঞ্চমঃ বর উচ্যতে। বৈবতক ললাটাবৈ নিয়ালঃ সর্বান্ধবান্।"

অৰ্বাৎ কণ্ঠ থেকে ষড় জ (সা), শির খেকে ধ্বয়ভ (রি) নাসিকা থেকে গাছার (গা), ভর থেকে মধ্যম (মা), छेत्र + नित्र + कर्श (बर्फ ११म (भा), मनार्ट (बर्फ देवरल (বা) ও সর্বক্লপবান বলতে সমন্ত আন্দের সন্ধি থেকে নিযাদ (नि) স্বর উৎপন্ন হয়েছে। এ রক্ম হাতের পাঁচট আকুল থেকেও আবার সাত স্বরের উৎপত্তির কথা মাগুকীশিক: উল্লেখ করেছে। কিছু সেগুলিকে সাত স্বরের উৎপত্তিস্থান ব'লে গণ্য না ক'রে বরং সাম্বেতিক চিহ্নজাপক প্রতীক ব'লে মনে করাই উচিত। তবে সাত্ররের উৎপত্তি সম্বধে नात्रमीकात नात्रम (य कथा वटलट्टन (प्रतिष्टे वतर युक्तिप्रक्रण ও বৈজ্ঞানিক ব'লে আমরা ধ'রে নিতে পারি। নারদ তাঁঃ শিক্ষার পঞ্চমী কভিকার ৭ম থেকে ১২ল পর্যন্ত শ্লোকণ্ডলিতে मांचि (शतक वांधू ऐर्ठवांत সময় श्रामिविष्मधतक न्यान कतांत জ্ঞাতে যে সমস্ত বিশেষ বিশেষ শব্দ বা ধ্বনি উৎপন্ন ক'রে সে ধ্বনিগুলির তর তম ভেদেই স্বরগুলির নাম হয়েছে ব'লে মস্তবং করেছেন। যেমন "নাসাং কণ্ঠসুরন্তালু জিহ্বাদন্তাংশ্চ সংশ্রিতঃ ষ্ড্ ভি: সঞ্চায়তে যখাৎ তখাৎষ্ড জ ইতি খুড়া।" এপাং নাভি থেকে বাতাস ওপর দিকে ওঠার সময় নাসা, কণ্ঠ্ উর্তালু জিহবা ও দম্ভ এই ছটি স্থানকে স্পর্ণ ক'রে শক উৎপন্ন করে ব'লে সে শধ্যের নাম ষড় । এই ভাবে পাষভাসি चरतत এবং বৈদিক প্রথমাদি বরগুলিরও একটা মুক্তিযুক্ত পরিচয় দিতে নারদীকার চেষ্টা করেছেন। শিক্ষাগুলিতে ষড় জাদি লৌকিক সাত স্বর ভিন্ন অভিনিহিত, প্রান্নিই, জাত্য, **ক্ষেপ্র, পাদর্যন্ত, তৈরবঞ্জন এবং তিরবিরাম** (বা তৈরবিরাম) এই সাতটি বৈদিক স্বরেরও আবার পরিচয় আছে 1^{5 ৬} এ ছাডা ছান্দোগ্য উপনিষ্দে (১।১২।১) সামগানের বিনর্দি, অনিরুক্ত, নিক্ত মৃত্, প্লকু, ক্রোঞ্চ ও অপধ্যান্ত এই সাত ব্যের উল্লেখ্ড পাওয়া যায়। কিছু এসবের প্রচলন বর্তমান সমাজ থেকে একেবারে লোপ পাওয়ার ছতে এওলি নিয়ে বিভূত আলো-চনায় ভার ভামরা প্রবৃত হলাম না।

১৫। মাপুকীশিকা >-১০; রত্নাকর (Adyar ed.), p. 91

১७। विकामरखर (कांबी मर), गुः ४७३ छः।

শুকতারা

গ্রীরমা সরকার

কান্তিক মাস। শিশিরভেনা ভোরের বাতাসে শীতের অন্ন
আমেক দিয়েছে। রিক্ত-বর্ষণ লম্ব-শুদ্র মেখের দল নীল
আকাশের কোণে কোণে ক্ষণিক বিপ্রামে ময়। দূরে কাঞ্চনক্ষরার ব্রুণালী চূড়া শরতের সোনালী কিরণে বলমল করছে।
কেল রোডের ছোট থক্ষা-ছাসপাতালের বাগানে সুটেছে
অক্স গোলাপ, চন্ত্রমন্নিকা; রং-বেরঙের ডানা-মেলে-দেওয়া
প্রকাপতির দলের ব্যন্ত আনাগোনার বিরাম নেই।

বেলা আটটা বাবে। ডাক্সারবাবুর পরিচিত, কালো यां हेत गांशीहै। करिक्त हिंद धांकारीका अब मिरम है दे अन এংলো-ইভিয়ান নাস হাসপাতালের দরকার সাম্বে। মিসেস সিম্পন দাঁড়িয়ে ছিলেন তাঁরই প্রতীক্ষায়- ডাব্ডার বাবুকে নিচু গলায় কিছু বললেন। ছ'লনে একটু ফ্রতপদে এগিয়ে চললেন সি'ড়ি বেয়ে তের নম্বর কামরার দিকে। লোহার রেলিং-দেওয়া বাটে ভয়ে ছিল মুদিত খেত কলিকার মত একট ক্লীণাক্লী মেয়ে। ডাক্তারবাবু ধীরে ধীরে তুলে নিলেন তার হাতের মধ্যে মেয়েটর তহিনশীতল ছোট হাতথানি। টে'ণিখোপ দিয়ে ভাল করে পরীক্ষা করলেন-कीवानत काम ज्यामन विलय ना काषाय । छाउनात, नाम হু'জনেই প্রতিদিনই দেবছেন জ্বয়তার খেলা-তবু আজ ভাক্তারবাবু কিছুক্ষণ ভব হয়ে দাভিয়ে রইলেন, প্রোচা মিসেস সিমসন পরম স্বেহভরে একটি চুর্ণ অলক সরিয়ে দিলেন মেয়েটর কপোলের উপর থেকে। মুহভাষিণী, বল্পাক্ এই মেরেটি যেন তাদের অস্তর স্পর্শ করেছিল। যে কয়দিন সে এখানে ছিল-বেশীর ভাগ সময় আয়ত চোখ ছট মেলে বাইরের দিকে চেয়ে থাকত, প্রাণ ভরে উপভোগ করত রূপ-রস-গদ্ধে ভর। ধরণার বৈচিত্র্য। বাইশ বছর ধরে প্রস্থৃতির কোলে হেসে খেলে আৰু যখন ঘুমিয়ে পড়ল-জ রেখে গেল না কারও প্রতি কোন অভিযোগ, কোন কুন অভিযান। `হাদপাতালের খাতায় লেখ। হ'ল—মালতী সাহার মৃত্যুর कथ। ।

মালতীর শিবিল হাতের তলার পড়ে ছিল একট বাম— সাগরপারের ঠিকানা বহন করে। ভাতে ছাপ পড়ে নি কোন ডাক্তরের।

ঐতিভাত্তনেযু•••

আমার এ চিট্ট যথন ভোমার হাতে পৌছবে, তথন আমি জীবনের মেরাদ শেষ করে অনেক দূরের পথে পাড়ি দিরেছি। তেল-কুরিয়ে-যাওরা প্রদীপের মত জীবন আমার বেশী দিন অলবে না জানি। এ চিট্ট লেখার প্রয়োজন হয়ত আজ শেষ হয়েছে—তবুও বাইরের নীল আকাশের দিকে তাকিমে আৰু তোমার কথাই বার বার করে মনে পড়ছে।
ছ' মাস হ'ল আমি এসেছি এই হাসপাতালে, ভাক্তার এবং
নাসের সব প্ররাস ব্যর্থ করে দিয়ে আৰু দাঁড়িয়েছি কীবনের
প্রাক্তনীযায়।

সাত বছর আগে এই দার্কিলিভেই প্রথম দেখা হয় তোমার সঙ্গে। অবসরপ্রাপ্ত অব্যাপক পিতা তার শেষ শীবনটা এখানে কাটাবেন বলে ফলাপাচাভের টেপর ছোট একটি বাড়ী করিষেছিলেন---"সাদ্ধানীড়" তার নাম। চার-দিকের খন পাইনবনের মাঝে আমাদের বাড়ীটা দেখাত হরিৎ সাগরে মাথা-তুলে-থাকা একটি ছোট দ্বীপের মত। কাচের জানালার মধ্য দিয়ে পরিষ্কার দিনে দেখতে পেতাম — বরকের পাহাড়ের চূড়াগুলো। পাশের 'কটেক'টা অনেক সময়ই বালি থাকত; क्लाहिए कान विषयी लाकक प्रयो যেত কয়েক মাসের ভাড়াটিয়া রূপে। সেবারও এক দিন (भवनाम, भारत हला अब मिरत भाराकी (मरतता निर्ट (वेंटब মোটখাট আনছে। প্রতিবেদী সম্বন্ধে আর কোন কৌতঽল জাগে নি। পর্বাদন সকালে চায়ের টেবিলের কাছে দাঁভিয়ে বাবার জ্ঞু কৃষ্ণি তৈরি করছিলাম। বাবা ভার আরাম-কেদারায় বসে পড়ছিলেন ববরের কাগজ; মা ছিলেন রাল্লাখনে নিজের কাজে ব্যস্ত। স্থামাদের জিমি কুকুরটা वश्चित कारक (मर्ट ह-अक बात एक छेर्ट हुन करत (मन। এমন সময় রাম্নাধরের দরকার কাছে অপরিচিত কর্প্তে কে ्यन वटल केंक्रेल-"गांभीयां, चूव त्य त्कार तन वन तक तक ! পেটুক মাত্র্য জামি, আসন পেতে বসে পড়ি এখানে।" মা স্লিম খুরে তাকে বললেন—"বেশ তো।" কাছে এসে দেশি শ্রামবর্ণের একটি ছেলে, বুদ্ধিদীপ্ত চেহারা হাসিতে উজ্জ্ল। পরিচয় হতে বেশী দেরি হ'ল না। তোমার মধ্যে স্বার সঙ্গে সংজ্ঞাবে মেশ্বার ক্ষমতা ছিল বিবিদ্ভা। তখন গরমের ছুটতে দাদাদের ছোট ছোট ছেলেমেয়ের৷ षार्क्षिणितः এসেছে-- निश्वयहत्न "यनिकाका"त मथावत সহঞ্জেই হ'ল। কথনও দেবতাম তোমাকে বাবার সঙ্গে রাজনীতি নিয়ে তুমুল তর্ক করতে; কখনও বা দেখতাম মায়ের কাছে রান্নাধরে আসন পেতে বসে কি কি তোমার খেতে ভাল লাগে তার লম্বা কর্ম দিতে।

আমাদের পরিবারে তিন ভাইরের পর অনেক দিন বাদে কমেছিলান আমি—একট বোন। আদরের হয়ত অভাব ছিল না, কিছ আমাদের পরিবারে উচ্ছাসের আভিশব্য জিনিষ্টা কোন দিন ছিল না। আমি একটু বড় হবার আগে দাদারা সকলেই ক্সতিবদ্য হরে জীবনে প্রতিষ্ঠিত হরেছে, বিদেশের বৈজ্ঞানিক শিক্ষা ক্থাম করেছে তাদের ক্রমোর্ছির পথ। তারা শাক্ত যে বার কাজের কারগার, কোন ছুটতে হ্রত দেখা হ'ত ওদের সকে। ছুলে পড়তাম, কিছু আমার কোন বিশেষ বছু ছিল না। কৈশোরের নিঃসদ দিনগুলো আমার কাটত বাবার লাইব্রেরিভে। বাবা ছিলেন ইংরেজী সাহিত্যের ব্যাতনামা অধ্যাপক, দেশ-বিদেশের কাব্য-সাহিত্যের বইরের অভাব ছিল না বাড়ীতে। অপরিণত কিশোর-মন হ্রত অনেক কিছুই বুবতে পারত না— তবু কি এক অহু আকর্ষণ অমুন্তব করতাম ওই প্রায়াহকার ঘরে আলমারিতে সালান বইগুলোর প্রতি। তুমিই প্রথম দেখা দিলে, প্রাণের সতেক চাঞ্চা নিয়ে আমার সরম-কুঠিত জীবনে।

ভূমি ছিলে বিজ্ঞানের ছাত্র—পদার্থবিঞ্চা ভোমার পাঠা বিষয়। সাহিত্যচর্চা ছিল তোমার অবসর সময়ের চিড্ড-বিলাস। কিছ বিদেশী কাব্যসাহিত্যে ভোমার গভীর জ্ঞান, তীক্ষ বিদ্লেশ-প্রভিত্য বে-কোন উচ্চদরের সাহিত্যরসিকের গৌরবের জিনিষ হতে পারত। আমাদের বেড়াতে যাবার কোন নির্দিষ্ট সময় ছিল না। কতদিন মেখমেছর অলস ময়াহেং বেরিয়ে পড়েছি অকল্যাও রোড দিয়ে "লুমে"র পথে। কণনও বা পিয়ে বসেছি পাহাড়ী বরণার থারে—যেখানে ছ্-পাশের লতাপাতা নত হয়ে চঞ্চল কলে টুকরো টুকরো হয়ে ভেঙে যাওয়া শ্রামছেবি কেলেছে। ভূমি পড়ে শোনাতে কোন প্রিয় কবিতা। কখনও বা 'ভিক্টোরিয়া কল্স্'-এর রাভাবের নেমে যেতাম পাহাড়ীদের কোন গ্রামের দিকে। কত সঙ্কা কেটে গেছে ওদের দেহাতি বাঁশীর ত্বর ভনে।

ছুলের পড়া শেষ হ'লে, কলকাতার কলেকে পড়তে এলাম। তৃমি তবন পঞ্ম বাধিক শ্রেমীর ছাত্র। ছুটর দিনে নিয়ে যেতে ট্রামে করে ডালহাউসি, রেড রোড, কিংবা লৈকের ধারে। কখনও কখনও বা ছ'জনে বেরিয়ে পড়তাম দক্ষিণেখর, বেল্ড, শিবপুরের পথে। তোমার সঙ্গে থাকত কেক আর ক্লাকে ভরা চা। বোডিঙে আমি কারও সঙ্গে বিশেষ কথা বলতাম না। চিরদিন একলা কাটিয়ে লোকের সঙ্গে ভাল করে মিশতে পারতাম না। মেয়েরা সেটাকে তুল করত ভাল মেয়ের অহলার বলে। সহপাঠিনী মহলেও নীয়স গ্রহকীট বলেই পরিচিত ছিলাম। তব্ তোমার কাছে আমি এত প্রগলভ হয়ে উঠতাম। পথে দেখা কত ছোটখাট ছিনিয়্ম নিয়ে, নিজেদের বোডিং এবং কলেকের ব্টিনাট ঘটনা নিয়ে অনর্গল বকে যেতাম। মন কোখাও বাধা পেত না।

ছ-বছর পর তুমি প্রথম শ্রেণতে প্রথম ছান অবিকার করে উত্তীর্ণ হরে গবেষণা স্থক করলে। বিভিন্ন বন্ধর বর্ণছেত্রের অনুশীলন ছিল ভোমার বিষয়। সারা দিনই ভোমার কাটত বিজ্ঞান কলেজের লেবরেটরিতে, গভীর রাত্তি পর্বান্ত বাভ বাকতে নিজের পঢ়াভুনা নিয়ে। তবু ছুটর দিনটা আমাকে

নিয়ে যেতে কৰনও তোমার ভূল হ'ত না। কত সময় শোনাতে ডোমার ভবিষ্যৎ কর্মপন্থার কৰা। মেধাবী ছেলের। অনেক সময় ভাল চাকরী পেলে গবেষণার পথ ছেড়ে দেয়—
এ নিয়ে ডোমার মনে ছিল একটা গভীর হুঃধ। ডোমার চেষ্টা সাক্ল্যমন্তিত হ'ল, তুমি ডি. এস-সি হয়ে বিলেত যাবার ক্ত্ত ষ্টেট্স্ ক্লারশিপ পেলে। যাবার সব আয়োকন সারা হ'ল ডোমার।

তৰন আমি ছিলাম দাৰ্জ্বিলিঙে। এসে সবাইকে শোনালে তোমার যাবার কথা---সকলেই বুব খুশী হলেন। তারপর এলে তুমি আমার পড়ার খরে। প্রথাত্বায়ী গুভেছা জানাতে সেদিন পারলাম না, ধবরটা ভবে চুপ করে বসে রইলাম। তুমি টেবিল খেকে একটা মাসিক পত্রিকা তুলে দেবছিলে। हिक् हिक् करत (यरक ठलिक छन परत এक है। (का है पि । আমার নিম্পন্দ ভাব তোমাকে বিশ্বিত করেছিল-হঠাৎ মুখ ভূলে চেয়ে দেখলে আমার নীরব চোখের জল। কাছে এসে সেই প্রথম সবল ছটি বাহুর আকর্ষণে টেনে নিলে আমাকে ভোমার বুকের মাবে, আমার জ্লভরা চোখের দিকে তাকিমে कि यन (पर्थाकटन। তোমার সদাচঞ্চল চোধে ছিল না সেদিন তার চিরাভান্ত হাসিটি, তোমার গভীর কালো নয়নে দেৰেছিলাম শুৰু বেদনার নিবিড় ছায়া। খুব বীরে আমার कर्त्भारल अकि हुन्न अरक मिरम रालिहाल- "इ:च करत! ना- जामि किरत जानव।" जाभारमत इ'क्टनत भरवा এ वतरणत কোন কথা এর আগে কোন দিন হয় নি, বিচ্ছেদের দিন যখন এগিয়ে এল ছু:সছ বেদনার মধ্যে উপলব্ধি করেছিলাম সেদিন-কত ভাল লাগে তোমাকে। সমস্ত মনপ্রাণ আচহয় করে তার খুতি আৰুও ভাগে, সেখানে আর কারও আসন हरत ना (कान मिन। (वनी कथा (प्रमिन ह'ल ना। आभाव कीन, ভীক হাত ছট তোমার মুঠোর মধ্যে নিয়ে অনেকক্ষণ বসে ছিলে। তোমার নীরব পরশ সকল মুধরতাকে অতিক্রম করে অতলম্পর্শ গভীরতার মাবে নিয়ে গিয়েছিল। পাশের ঘরে রেডিওতে বাঁলী বান্ধছিল আশাবরীর স্থরে। প্রিয় বিরছের কাল্লাবরানো ক্রের মূর্জনা সকালের সোনালী আলোয় বেদনার কাল বুনে চলছিল। তোমার সঙ্গে আর দেখা হয় भि।

তোমার বছনে ধরা দিয়ে, নারীজীবনের চরম সার্থকতা লাভ করতাম এ কথা জানি। কৈশোর-জীবনের ভাবনাবিহীন দিনগুলো কাটে হাজা হাওয়ার ভেসে-চলা মেখের মত; আত্মীরপরিজন থিরে থাকে চারদিকে। কিছ তারপর মন চায় একজনের নিবিভ সঙ্গ, মিলিত প্রেমে গড়ে তোলে শান্তিনীড়। জানি ভূমি আমাকে জপছল করতে না। কত দিন যধম জবাক হয়ে ক্সিজাসা করেছি—আমি এত সাধারণ মেয়ে—কেন ভোমার আমাকে ভাল লাগে? ভূমি হেসে বলতে—"সাধারণ ছেলের জন্ত তো সাধারণ মেয়েই ভাল।" তবু

ছর্শজ্য বাধা ছিল ছ'জনের মিলনের পথে। প্রাচীনপদ্মী পিতার একমাত্র সন্তান ভূমি। যা হার। ছেলেকে বুকে করে মানুষ করেছিলেন জননীর স্নেছে। এখনও আমার চোৰে ভাসে তোমার বাবার আভিজাত্যমন্তিত ব্ৰান্ধণ্য মহিমা-দীপ্ত বৃত্তিখানি। স্লেহের অভাব তার ছিল না---কন্তাধিক বাংসল্য পেয়েছি তাঁর কাছে। আমার মুখে মীরার ভজন শুনতে তিনি ধুব ভালবাসতেন। কত দিন আমাকে নিজে পড়ে ভনিয়েছেন উপনিষদের বাণী। তাঁর উদাত কঠের ধানি আত্ত আমার কানে বাতে। তবু তিনি কোন দিন আমাকে তোমাদের খরে বধুরূপে নিয়ে যাবার কথা কল্পনা করতে পারতেন না। এ শুবু ব্রাহ্মণ্যের অভ্যিকা নয় — অশিক্ষিত মনের অন্ধ বিশ্বাসও নয়! তাঁর মত বিদ্বান. মননশীল লোক কমই দেখা যায়। কিছ তিনি এ কথা প্রাণ দিয়ে মানতেন--- সমাজের কল্যাণ ব্যক্তিগত স্থব-ছঃবের অনেক উপরে। তার সমস্ত ব্যক্তিত গতে উঠেছিল এই সংস্থারের উপর। তার জীবনাদর্শের ভিতিমূলে নাড়া না দিয়ে আমাদের মিলন সম্ভবপর ছিল না। আর এত বড় আঘাত দিতে আমরা কিছতেই পারতাম না। কাজেই মিলন আমাদের र'ल ना, पृथि विलिख हाल शिला।

ইতিমধ্যে আমাদের সংসারের উপরে ছংখের কালো মেঘ

খনিরে এল। মা হয় ত তার স্নেহপ্রবণ মন দিয়ে আমার মনের
কথা বুরেছিলেন। একমাত্র মেরের বাধায় তার মন ভেঙে

গিয়েছিল কছুই করখার ছিল না। তার পর কয়েক
দিনের সামাপ্ত অস্তবে আমাদের চিরদিনের মত ছেড়ে চলে

গেলেন। বাবা এ চরম আখাতের ক্ষম্প প্রস্তুত ছিলেন না। তার

মুখের সদাপ্রসন্ন হাসিটি আর কোন দিন দেখি নি। কয়েক

মাসের মব্যেই মনে হতে লাগল—্যেন ক্ত বছর পার হয়ে

বার্জকার প্রাক্তসীমায় পৌছেছেন। আমাদের সংসারের সব

দায়িত্ব চির্ম দিন বছন করেছেন মা। শাঁখা-পরা ছটি ভ্রত্র

কল্যাণহন্তের স্পর্শে আমাদের সংসারে যে অপুর্ব্ধ সৌক্র্যা

কুটেছিল—তা নিচ্ছিত হয়ে গেল। বাবাও এক বছরের মব্যে

মারের পথ অন্থ্যরণ করলেন। মেরের নিরাশ্রহতার কথা মনে করে শেষ সময়েও তাঁর অঞ্চর বিরাম ছিল না। আমার পায়ের তলা থেকে আশ্রয় সরে গেল। আমাদের আনজন্ম্পরিত সাধ্যনীত একেবারে শ্ন্য হয়ে গেল, কেউ কোথাও নেই, এত বড় পৃথিবীতে নিজেকে একান্ত রিক্তা, বার্থ মনে হ'ল।

দাদারা আমাকে নিয়ে গেল তাদের বাড়ীতে—আমাকে অভ্যমনত্ব রাখতে চেষ্টা করল। কিন্তু একক জীবনে অভ্যন্ত আমি তাদের সংসারে একান্ত বেমানান ছিলাম। জাগে থেকেই ঘুসন্থসে জর হচ্ছিল। ডাক্ডার এসে রোগ নির্ণয় করলেন—উপদেশ দিলেন বারু পরিবর্তনের। ভাইয়েরা বললে আলমোড়া, নৈনীতালের কথা—আমি চাইলাম দার্জিলিং খেতে। যেখানে জীবনের সবচেয়ে স্থবের দিনগুলো কাটিয়েছি, যেখানে তোমার সঙ্গে প্রথম দেখা হয়— সহত্র স্থান্থতিবিজ্ঞতি সেই দার্জিলিঙেই যাত্র। করলাম। 'ডি, এইচ, জার'-এর ছোট গাড়ীতে চড়ে সেই চিরপরিচিত পথ দিয়ে চললাম।

তথন এপ্রিল মাস। লৈলিপিংক বর্বা এসেছে মঞ্জীর-রণিত
চরণে তার নীলাঞ্চল উড়িয়ে। তিন্তা নদীর গৈরিক জলে
কেগেছে উদ্ধাম কলকল্পোল। সেই পাহাড়ের বুকে আঁকাবাঁকা
পথ; কাঠগোলাপের বেড়া দিরে ধেরা ছোট ছোট বাড়ী,
রেল-লাইনের ছ'পালে দাঁড়িয়ে পাহাড়ী ছেলের দল। মাঝে
মাঝে এক একটা ছোট ষ্টেলন। জানতাম, এ পথ দিয়ে
আমি কোন দিন কিরব না।

আৰু হাসপাতালে দিনগুলো কেটে চলেছে একখের ভাবে। বাইরে তাকিয়ে দেখি আকাশের রং বদলার; প্রকৃতি দেখা দেয় ভার নিতা নবসাকে। ঐ দেখতে পাছি, রাত্রি শেষ হয়ে আসছে, ভোরের আকাশের শুক্তারা ক্লান হয়ে এল। তোমারও প্রবাসের দিন শেষ হয়ে আসছে। জানি এক দিন তৃমি ফিরবে গৌরবমণ্ডিত হয়ে—আমি সেদিন থাকব না।

বাট্র বিশ্ব রাসেলের সমাজ-দর্শন

🗃 উমা সেন

বার্ট্র বিরাসেল বর্ত্তমান শতাব্দীর অন্তত্ম শ্রেষ্ঠ চিন্ধাণ্ডর । পাজিতোর গভীরতা, চিন্ধার বচ্ছতা ও যুক্তির তীক্ষতা তাঁকে দর্শন-কগতে উন্নত আসনে স্প্রতিষ্ঠিত করে রেবছে । বর্ত্তমান শতাব্দীতে নবকাঞ্রত তরুণদের উদার ব্যাপক দৃষ্টিভঙ্গি গঠন করতে বাঁদের চিন্ধাবারা স্বচেরে বেনী প্রভাব বিভার করেছে, রাসেল তাঁদের মধ্যে একজন প্রধান চিন্ধাবারক ।

যুদ্ধোন্তর যুগে সামাজিক পুনর্গঠনের দিনে তার চিন্তা ও বাই বান্তবিকই অসুধাবনযোগ্য।

রাসেলের সমান্ধ-দর্শন বিভিন্ন হুত্রে তাঁর বিভিন্ন প্রবদ্ধে ও বক্তৃতার আলোচিত হরেছে। তবে এ বিষয়ে সবচেয়ে উল্লেখ-যোগা হ'ল তাঁর The Principles of Social Reconstuction নামক প্রস্থানি। প্রথম বিশ্বন্ত্রের আবহাওরার (১৯১৪-১৮) গ্রহণানি রচিত হলেও, সময়ের এই দীর্ঘ ব্যবধানে তাঁর মূল বক্তব্যের মূল্য বিশুমাত্তও প্রাস্থাপ্ত হর্মনি, বরং পরবর্তী ঘটনাম্রোতের নানা বৈচিত্ত্য তাঁর চিন্তাধারার উপর নতুন আলোক-সম্পাত করে তাকে আরও উদ্দেশ করে তুলেছে।

अष्या के दिवस करा अर्थाकन त्य. त्रारमल ज्याकिष्ठ বস্তবাদী চিম্বাবীরদের থেকে বহুলাংশে বতন্ত। তিনি বস্ত, বাহুতি ও সমাভের প্রভাবকে স্বীকার করেও তাদের সর্ব্বময় কর্তহকে অধীকার করেছেন। আর বার বার একণাই বোষণা করেছেন যে, প্রকৃতিতে ও সমাজে শতসহস্র বছন থাকা সন্তেও মানব-মনের স্বাধীনতা ও স্বরান্ধ বিদামান। এ প্রকৃতি তাকে বাৰা দিছে। প্ৰতি নিমেষে তার স্বপ্ন চুর্ণিত হয়ে যাছে স্বৰ প্রকৃতির নির্দয় আখাতে। তবুও মাতৃষ কল্পলোকে গড়ে তোলে আদর্শের স্বপ্ন আর তাকে বাস্তবে রূপ দিতে বিপুল ভাবে প্রয়াসী হয়। প্রকৃতির বছনের কাছে মাসুষ তার আত্মার স্বাধীনভাকে বিকিয়ে দেয় নি, সে নিজেকে প্রকাশিত করতে চেয়েছে শরণাতীত কাল থেকে। প্রকৃতির বছন সভেও সে বার বার গড়ে তুলেছে তার আদর্লের অন্তর্কুল অনুষ্ঠান ও প্রতিষ্ঠান। সে চেয়েছে বার বার বছন ভেঙে সম্বাধে এগিয়ে বেতে। কে দিয়েছে বাজা আর কার প্রেরণার সে ভাঙ্গতে চেয়েছে অপ্রগতি-পথের সহস্র বন্ধন আর্বিকাশের বিপুল উবাদনায় ? রাসেল এই বৃলগত উঘাদনায় সংজ্ঞা দিয়েছেন "Impulse of Growth"। একেই করাসী দার্শনিক ব্যর্গন रामहान "लाम" क ना की" व्यवीर "कीवानद्र शाका।" এই बाबा वा खेबापनारे भाक्ष्यक छित्न नित्त हालाक विवर्तन वा উন্নতির পথে। মানবের উন্নতির মূল চাবিকাঠি হ'ল এবানে। যারা বছবাদী অর্থাৎ বারা জড় থেকে চৈতত্তের বিকাশ হয় এই মতবাদী বা যারা চৈতত্তের চেয়ে ছড়ের প্রাধান্ত বোষণায় ভংপর রাসেল-দর্শন স্বভাবতই তাদের দার্শনিক মতের সপোত্র নয়।

রাসেল-দর্শনের গোড়াকার কথা হ'ল মান্ত্র ও তার স্বাধীন স্টেবর্মী মন। তার বিচারে বন্ধর চেরে ব্যক্তিব ক্, অন্ধ প্রকৃতির আবিপত্যের চেরে মানব-মনের লজান সাবনা বড়। সমান্তের গতি অন্ধ বা যান্ত্রিক নয়। মান্ত্রের ইচ্ছা, চিছা ও কর্ম্পের হারাই সামান্ত্রিক বিবর্তন বা বিপ্লব নিয়ন্ত্রিত ও পরিচালিত। প্রকৃতপক্ষে মান্ত্রই শেষ-বিশ্লেষণে ইতিহাসের গতিনিয়মক, নির্দারক ও শুষ্টা। সমান্তের কেলেছলে তার আসন। তাকে কেন্দ্র করেই রচিত হরেছে আইন ও কান্ত্রন, বর্ম্ম ও শার, সমাক্ষ ও রাষ্ট্র। এদের সকলের চেরে বড় হ'ল মান্ত্রের মহিমান্তিত

শীবন। প্রত্যেক শীবনের ভেতর স্বকীর স্বাতন্ত্র রয়েছে। তাকে পরিপূর্ণভাবে সুটয়ে তোলার জন্তই এ বিখের যত কিছু আৱোৰন। "The whole theory of the universe is directed unerringly to one single individual—namely to you." অৰ্থাং, "তোমার মত প্রত্যেকটি নরনারীর জীবনকে পরিপূর্ণভাবে বিকশিত ক'রে তোলার ক্সই এ পুথিবীর যত কিছু আয়োক্স ও তার সার্থকতা।" ওয়ান্ট ছইট্ম্যানের এই বাণীর ভেতর রাসেল-দর্শনের মর্ম্মবাণীও বাহুত হয়ে উঠেছে। মানুষকে বাদ দিয়ে এ সংসারে কোন কিছুর মূল্য কাণাকড়িও নয়। তার কল্যাণের আদর্শের সঙ্গে সব্কিছুর মহিমা অচ্ছেডভাবে ৰ্ভিত। যা তাকে কুদ্ৰ খেকে বৃহতে, বন্ধন খেকে মুঞ্জিতে, উপভোগ থেকে স্ষ্টিতে নিয়ে যায় অর্থাৎ যা-কিছু তার অভনিহিত Impulse of Growth-এর সহায়ক, তাই कन्गानद्यम ও সার্থক। এর ব্যাখাত ঘটলেই সব্কিছু ব্যর্থ ও আপন দীনতার পরু হয়ে যার।

বর্তমান সমাজ-ব্যবস্থা, তার পুঁথি ও শাল্ল, বিধি ও বিধান, সবকিছুই তার আপন গৌরব থেকে ভ্রষ্ট হয়ে পড়েছে। মাতুষকে ছাপিয়ে বড় হয়ে উঠেছে বস্তু, বাজ্ঞির চেয়ে বড় হয়েছে সমাৰ। মাকুষের ৰঙই সমাৰ, কিছু সমাৰের ৰঙ মাতৃষ নয়। মাতৃষ হ'ল লক্ষা, আর সমাক হ'ল উপলক্ষা মাত্র। অথচ মাতুষের ছুর্ভাগ্য এই যে, লক্ষ্য প্রায়ই উপলক্ষ্যের চাপে গৌণ হয়ে পড়ে। এ ছুর্ভাগা ঘটেছে মাহুষের ইতিহাসে বারে বারে। বর্তমানে সেই ছর্ভাগ্যের এক খতি বিকট মূর্ত্তি আম্মপ্রকাশ করেছে। বিজ্ঞানের वरम এখন দেশ ও কালের ব্যবধান অনেকখানি অবস্থ হয়েছে, প্রকৃতির উপর আমাদের কর্তৃত্ব বেড়েছে, সম্পদের দিক দিয়েও ঘটেছে আমাদের অভ্তপুর্ব বিপুল প্রাচ্যা। তবুও মামুষের মুগ-মুগ সঞ্চিত দৈয় মুচল না, তবুও মাত্রৰ আৰু অসহায় ও অভিশপ্ত কীবন কাটাতে বাধা হয়েছে। এ সাব্দাতিক অন্তবিরোধ কেন ? কোধার রয়েছে জীবনের মব্যে সেই অপূর্ণতা যার জন্ত মাতৃষ এত ঐখর্ব্যের মধ্যেও এমন चन्नी ও पतिस ? এ र'न वर्डमान काल्य चार्न्नामीएम हत्य কিঞাসা । বারা বলেন, ধনবৈষমাই এর কারণ, রাসেল न्नडेण: जारमद मनकुक नन । यमरेवयमा अञ्चलम कार्यन वर्षी, তবে একমাত্র কারণ নয় বা মূলগত কারণও নয়। মূলগত कांत्रव, तारमल महान करतरहन वाहरतत घटनारलारणत मरवा নর, মানব-মনে। মানব-মনের মধ্যে সহকাত যে অধিকার-ৰুলক বৃত্তি (possessive impulse) তাৱই প্ৰাৰাভ সমাৰ-भौवत्न पिटाराष्ट्र এই निषाक्षण प्रस्तनाम । वांशरतत परेना-স্রোতের পশ্চাতে রয়েছে মানব-মনের পতি। পরিবর্তনই রূপায়িত হয়ে ওঠে বাইরের পরিবর্তনে। রাসেল-দর্শনের প্রথম বক্তব্য হ'ল সমাজকে সুন্দর ভিন্তিতে সুগঠিত

^{*} Bertrand Russell: A Free Man's Worship (i.e. Mysticism and Logic, Chap. III.)

করবার জন্ত সর্কাত্তে প্ররোজন মানস-পটভূমির পরিবর্তন বা বিপ্লব । এ বিষয়ে মনীবী রাধাক্তকলের সলে রাসেল-কর্ণনের মিল আছে ব্যেষ্ট ।

মান্ত্ৰের অন্তরের গহন-গভীরে ররেছে বিচিত্র আশা ও আকাক্রা, আবেগ ও উন্নাদনা। এগুলিই তার জীবনে বৃহত্তর অংশ অবিকার করে ররেছে। বৃক্তি, বিচার, জ্ঞান ও বৃদ্ধির সীমানা অত্যন্ত অন্তর, তাদের শক্তিও অনেক কম। অন্ত আরেগ ও উন্নাদনাগুলিই কর্ম্মের মূল উৎস বা প্রেরণা। বৃদ্ধিবিচার দিয়ে আমরা তাদের বন্ধপকে নির্ণন্ন ও বিশ্লেষণ করি—আমাদের কর্ম্ম ও চিন্তাগুলিকে সমর্থন বা সমালোচনা করি। জীবনকে স্থানর করে গড়ে তোলার জন্ত বৃদ্ধিবিচারের অপেষ মূল্য নিক্তর্মই ররেছে, তবে স্টেকুই চরম নয়। সকলের আগে প্রেরাজন মানসলোকের পরিবর্ত্তন বা psychological revolution। মানসিক বিশ্লব সাধনের পূর্ব্বে মানস-পটভূমি সম্বন্ধে তাই স্থাপ্ত ধারণা অত্যাবশুক।

মান্ব-মন ক্ষমভাবে বিশ্লেষণ করলে দেখা যায় যে এর অন্তৰ্নিছিত প্ৰচছন্ন আবেগ ও কামনাগুলি বিচিত্ৰ ও অনেকাংশে পরম্পরবিরোধী। এই কামনা ও আবেগগুলিকে রাসেল ছু'ভাগে বিভক্ত করেছেন। এক শ্রে**ণী**র নাম তিনি দিয়েছেন "possessive impulse" বা অধিকারমূলক প্রায়ুতি আর নামকরণ তিনি করেছেন impulse" বা স্ষ্ট্ৰ্লক ভাবেগ। যা মাত্ৰকে মাত্ৰ খেকে দূরে সরিমে দেয়, নিজের রহৎ 'আমি'কে ক্স্তে 'আমি'র কারাগারে বন্দী করে রাবে, সেটা হ'ল possessive impulse-এর অন্তর্গত। পক্ষাস্তরে যা-কিছু, মানুষকে মাছথের নিকট বেকে নিকটতর করে তোলে, যা ক্স বেকে মাসুষকে মুক্তি দেয় বৃহতে, তাই হ'ল creative impulse-এর অভতু ক্ত। ক্রোব, অহংকার, পরত্রীকাতরতা, ক্ষমতাপ্রিয়তা ইত্যাদি হ'ল অধিকারমূলক বৃত্তির বিভিন্ন প্রকাশমাত। পকান্তরে ভালবাসা, ত্যাগ, ক্ষমা ইত্যাদি হ'ল স্চীমূলক ব্রভির বিভিন্ন রূপমাত্র। অধিকারমূলক বৃভির তাড়নায় মানুষের দৈত্ত, কুত্রতা ও বন্ধন : স্ক্রিয়নক আবেগের ধাকায় মানুষের ঐখর্যা, বিরাটিয় ও মুক্তি। বর্তমান সমাজ-ব্যবস্থা कुर्तिष्ठ ও कमर्या, कांत्रग এই প্রচলিত সমাজ-ব্যবস্থায় মাসুষের creative impulse-এর খেকে বড় স্বীকৃতি পেরেছে ভার possessive impulse। সমাজ-বিপ্লবীদের ভেতরও যারা cult of power বা শক্তিযোগের পূজারী, ভারাও শেষ পৰ্যান্ত possessive আদর্শেরই উপাসক। রাসেল চান এমন সমাজ-ব্যবস্থা গড়ে তুলতে বেবানে মানুষের স্টিবুলক क्रिकीर यक रूप केर्रवात स्वातंत्र भारतः

* Sir S. Radhakrishnan: East and West in Religion (Chap III: Chaos and Creation, pp. 90-92)

জীবনের প্রটমূলক দিক্টার প্রাথানের কলেই আদর্শ সমাজ-গঠনের সভাবনাও হবে ক্ষয়ক।

এই জ্যোতির্দ্ধ ভবিত্ত-সমাজ স্ক্রীর মূল ভিডি হতে কিসের ওপর ? বিজ্ঞানের ওপর না ঐশ্বর্যোর ওপর ? এ প্রান্তের উত্তর হচ্ছে এই যে, এ ছটির কোনটির উপরেই নয়। কেননা, বিজ্ঞান বা এখর্ব্য মান্ত্র্যের স্ক্রির পথে উপকরণ মাত্র। ভালের সাৰ্বকতাও বিপুল। তবে মহং আদর্শের ছারা অভ্নপ্রাণিত না হলে তারা অনেক সময় আশীর্কাদের পরিবর্তে অভিদাপই বহন ক'রে আনে। রাসেলের বিচারে ভবিত্য-সমাজের বুল ভিত্তি হবে অগাধ শ্ৰদ্ধা-নীতির ওপরে। শ্রদ্ধা মানুষকে সভাদু প্রদান করে আর সে দৃষ্টতে মাছুষ উপলব্ধি করে জীবনের অমর মহিমা। প্রতিট মাসুষের মধ্যে প্রচ্ছর ররেছে আছবিকাশের এক স্তীৱ স্বাকান্ধা, "something sacred, indefinable unlimited, something individual and strangely precious, the growing principle of life, an embodied fragment of the dumb striving of the world" it জীবনের এই মহান দাবিকে প্রথার স্বীকৃতি দেওয়া ছবে ভবিয়া-সমাজগঠনকারীদের প্রাথমিক কর্তব্য। শ্রদার দৃষ্টিতে যারা জীবনকে দেখতে পেরেছে তাদের পক্ষে অপরের অধিকারের প্রতি,---সামাজিক আর্থিক ও রাষ্ট্রক যে-কোন অধিকারই হোক না কেন, তার প্রতি-শ্রদাশীল হওয়া অতি স্বাভাবিক। এই মূলগত শ্রদার ज्ञान पर्टेटन कि विकान, कि अधर्ग कान कि<u>ष</u>्टर जीवतन স্ট্রমূলক আনন্দের স্থর আনমূন করে না।

वर्डमान नमान-वावद्यास (हरलरमरसरनत मन ও वृक्तिक रा ছাঁচে ঢালাই করা হয়, যে শিক্ষার বাণী তাদের কাছে পৌছিলে দেওয়া হয়, তাতে মাখুযের স্প্রযুলক ব্যক্তির গড়ে ওঠে না-মাতুষ হয়ে পড়ে কর্তৃথ্যস্পন্ন ব্যক্তিদের অন্ধ অঞ্করণের যন্ত্রমাত্র। নিজেকে উপলব্ধি করবার ও আপন ঐশ্বর্যো নিজেকে পূর্ণ করে তোলবার জন্ত অন্তরের যে গভীর কামনা তা হরে बादक (खने, पम वा बाद्धेव वृशकार्ष्ठ निपाकन छादव निःटमिछ। अता निक्दमत मन मिट्स छाटन ना : वृद्धि मिट्स विठात कटन না, হৃদয় দিয়ে অভুতৰ করে না। যন্তের মত অভ অভুকরণের মানসিক পটভূমিতে এদের শীবনের অভিব্যক্তি। এরা সারা শীবন অপরের কাছে নতি স্বীকার করে চলে, অপরের भजनाम् निकारमञ्जाम नाम वाम नाम कार्य अभावत সিদ্ধান্ত ও সতাকে নিজেদের সিদ্ধান্ত ও সত্য বলে এহণ করে। এধানেই ছ'ল বর্তমান শিক্ষা-ব্যবস্থার শোচনীয় ব্যর্বতা। মানুষকে অন্তরের দিক বেকে ক্রীতদাস বানিয়ে তার যথার্থ কল্যাণসাধন অসম্ভব। রাসেল তার Let the people think अरह अ अनम निरम वित्यकारव जालाच्या

t The Principles of Social Reconstruction, p. 147

করেছেন। শিক্ষার আসল উদ্ধেষ্ঠ হ'ল মাস্থকে আপন বাতজ্যে কুটারে তোলার পথ প্রশাস্ত করা। রাই ও সমাক্রের অভতম প্রধান সার্থকতাও এখানে।

মানসিক দাসত্বের নাগপাশ বেকে মাছুষের মনকে মুক্ত করা আৰু একান্ত প্রয়োজন। মান্তবের অন্তরে শিক্ষার মারকত সঞ্চরিত করতে হবে আত্ম-স্বাতন্ত্রের মহামন্ত্র, ভার চোবের সামনে তুলে বরতে হবে ্স্ট্রমূলক আনন্দের জ্যোতির্দায় স্বপ্ন। ত্যাগের মধ্যে, ভালবাসার মধ্যেই মাহুষের আস্তার যথার্থ जानमः। निर्मान जानत्मत ज्ञातिहे बाबूरवत क्रुव ज्ञाह बन অধিকারমূলক বৃদ্ধিগুলির তৃপ্তিসাধনে এত বেশী ব্যস্ত হয়ে পড়ে। এই বৃত্তির প্রাধান্তের দক্ষনই দিকে দিকে আৰু বর্ষরতা, ইবা ও পরত্রীকাতরতা এত নগ্নসূতিতে প্রকটিত। এই অবিকার-মূলক বৃত্তির প্ররোচনায়ই মামুষ যুদ্ধ চায়, প্রতিযোগিতা কামনা करत। विश्रम উद्योगना ७ जालाएतनत मरश रम जूरम পাকতে চায় তার শীবনের শতসহত্র ব্যর্থতা ছর্ডোগ ও ছর্মশা। এ পৰ আছ। আনন্দের উৎসকে আবিষ্কার করতে হবে শ্রদমের গভীরে। আনন্দ বাইরের কোন বস্তু নয়। ইহা একাছভাবে আপন অভরের ঐখর্য। বহু ত্যাগ, তপভা ও ছ:বের ছর্গম পবে সংগ্রাম করেই সেই ঐশ্বর্যাকে জাবিষ্কার করতে হয়। সাধনা ছাড়া নূতন স্ঠি অসম্ভব। জড়জগতের जन्मारमञ थार्ट्सात मरना भीवरनत यथार्थ **ए**शि तन्हे--निर्मरक আপন স্বাতন্ত্র্যে বিকশিত করে তোলার প্রয়াসেই মানুষের প্ৰকৃত আনন্দ। রবীজনাথ এক কায়গায় লিখেছেন.

"The abiding cause of our misery is not so much in the lack of life's furniture as in the obscurity of life's significance"

অবাং—আমাদের ছ্ঃবের চিরন্তন কারণ বস্তর বা উপকরণের অভাব ততটা নয়, যতটা হ'ল কীবনের প্রকৃত উদ্দেশ্ত সহদে উদাসীনতা। এ হ্মরেরই অস্থ্রণ হ'লাই ধ্বনি রাসেলের Scientific Outlook গ্রন্থের শেষ অব্যায়ে ভনতে পাওয়া যায়। শেষ অব্যায়টর নাম হ'ল "Science and values।" রাসেল সেবানে বলতে চেয়েছেন য়ে, প্রকৃতির সম্পদ বা বিজ্ঞানের ঐপর্যের মৃল্য আছে নিশ্চয়ই; তবে সব কিছুর মৃল্যই হচ্ছে রহতর কীবনস্টির পথে উপকরণ হিসাবেই, অঞ্চণা নয়। দার্গনিক্রেট রাধার্ক্ষন্ও বার বার এই মত বাক্ত করেছেন। তার নিয়লিবিত উক্তিসমূহ প্রণিবানযোগ্য: "Science and its inventions are concerned with the outer organisation, not the inward living. They can remove the hindrances to good life but cannot create it. They can diminish illness but cannot tell a man what he shall do with his health. They can remove poverty and cure unemployment but connot tell a man what he shall do with his wealth and leisure. While science gives us the capacity to control the conditions of life, it does not help us to use these conditions for fine living. We have to go beyond science to get the ideal values.*

এই ideal values-এর বল্প চুষ্টর সমূপে সদা কাতাত না बाकरन ग्रहें कीवनम् है अभस्य । त्रारान कांत्र Scientific Outlook গ্রন্থের শেষ অধ্যায়ে এ কথাই তার অনবভ ভাষায় ব্যক্ত করেছেন। তাঁর বিচারে এই ideal values-এর একমাত্র লক্ষ্যই হবে বৃহত্তর জীবন-স্কট্ট-যে জীবনে অধিকারমূলক বৃতির পরিবর্তে স্ষ্টমূলক আবেগের বিপুল প্রাধান্ত থাকবে। এই নব-স্ষ্টির পথে বিজ্ঞানের অকুরস্ত मानटक ष्योभारमञ्ज श्रीकांत कत्रदर्श्व इत्त । विकान रमग्र चामारमत्र विरम्भ कान, चात्र कानश मक्ति। তবে সেই कानक করতে হবে প্রেমের সঙ্গে সংযুক্ত — শক্তিকে করতে হবে भोमर्था ७ कन्नारनत्र जानर्त्तत चाता भक्ति । ७५ वृद्धित विश्वत पर्टलिंह यरपष्टे इरव भा। मिह विश्ववरक मार्थक ७ क्षयुक्त করে তুলতে হলে সেই সঙ্গে সংগ্রহাণ্ডির আমূল পরিবর্তন-সাধনও একান্ত প্রয়োজন। বুদ্ধিকে মার্জিত করার সঙ্গে সঙ্গে অন্তরের প্রচন্তর আবেগগুলিকে পরিমার্ছিত করতে না পারলে বহির্জগতের স্থায়ী বিপ্লব কখনই সার্থক হয়ে উঠবে ন। বাইরের অমুঠান ও প্রতিষ্ঠানকে ভেঙে চরে অভিনয রূপ দেওরাটাই একমাত্র বড় কথা নয়: সেই সঙ্গে মানসিক গঠনেরও আমৃল পরিবর্তন একান্তভাবে দরকার। সেক্ত যে অভিনৰ ব্যাপক দৃষ্টভদির প্রয়োজন, তারই সুলাই সভান পাওয়া থায় রাসেল-দর্শনে।

^{*} Sir S. Radhakrishnan: Progress and Spiritual Values (Philosophy, July, 1937.)

সিংহলের স্বাধীনতা লাভ

ঐস্ববোধচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায়

বাঙালী রাজপুত্র সাত শ' অফুচর সলে নিয়ে বাংলাদেশের সর্বশ্রেষ্ঠ বন্দর তান্তলিপ্ত থেকে এক দিন সমূত্রে তরী ভাসিরে-ছিলেন। মাসের পর মাস অকুল সমুদ্রে ভাস্তে ভাস্তে এক দিন তারা লঙ্কাছীপে এসে নামলেন। তার পর যক্ষি কুবেণীর সহায়তায় লভার রাজা কালসেনের বিবাহের রাজে বিৰয় সিংহের সাত শ' সঙ্গী কালসেনের অফুচরদের তাড়িয়ে मिट्स त्रोकशूती **मर्थल क**टत दअल। **श्रद्धिन श्र**क्षाटल **मध्य** দ্বীপে দোষণা করা হ'ল বাংলার নির্বাসিত রাবপুত্র বিষয় সিংহ লকার রাজা, জার নতুন রাজার নাম জনুসারে লকা-দীপের নাম হ'ল সিংহল। সিংহাসনে বসে বিশ্বর সিংহ ভারতবর্ষের দক্ষিণ প্রান্তে অবন্ধিত পাঙা দেশের রাজার কাছে রাজকভার পাণি প্রার্থনা করে দৃত পাঠালেন। দৃত সে রাজ্যে গিয়ে বিজয় সিংছের জ্বন্ত রাজকলা ও সাত শ' অফুচরের জ্ঞ সাত শ' সধী প্রার্থনা করলে। রাজা সন্মত হলেন। অতংপর বিজয় সিংহ ও তাঁর অসুচরবর্গ বিবাহ ক'রে সিংহল ধীপে মনের আনন্দে প্রায়ী ভাবে বসবাস করতে লাগল। তা ছাড়া অনেক বাঙালী বাবসারীও উক্ত দ্বীপে বসতি স্থাপন করেছিলেন। তাঁদের বংশবররা সকলেই সিংহলবাসী ছয়ে গিয়েছিলেন। সে-দেশে যে সকল প্রাচীন খোদিত লিপি পাওয়া গিয়াছে তার সঙ্গে প্রাচীন বঙ্গলিপির অনেক সাদৃত্ত আছে। স্থতরাং এই সিংহলের সঙ্গে বাংলার সম্বন্ধ শুধু রক্তের সম্বন্ধ নর, বাংলা কৃষ্টি ও সভ্যতার ইতিহাস তার সদে মিশে আছে। এইজন্মই সিংহলীদের সঙ্গে বাঙালীদের আরুতিগত ও ভাষাগত সাদৃশ্র আছে। প্রাচীন সিংহলী ভাষার অর্দ্ধেক শব্দ বাংলা শব্দ। তছুপরি ভারতের সঙ্গে সংহলের ধর্মগত সুদৃচ যোগস্তা বিদামান। মহারাজ অশোক তাঁর পুত্র মহেন্দ্র ও কছা সংখ্যিতাকে সিংহলে বৌদ্ধ বর্ষ প্রচার করবার জন্ত পাঠিয়েছিলেন। বৌধবৰ্শ্বই এখনও সিংহলবাসীদের श्रवान वर्ष ।

কাণ্ডি ছিল সিংহলের প্রাচীন রাজবানী। একট কৃত্রিম हদের তীরে সমুদ্র থেকে ২০০০ কুট উচ্চে এই শহরট অবস্থিত। এখানকার প্রসিদ্ধ বৌদ্ধ মন্দিরটির নাম দালাদা মালিগাওরা বা দত্তবিহার। এই বৌদ্ধ তীর্থহানটির মাহাত্ম অপরিসীম। পৃথিবীর সব জারগা থেকে বৌদ্ধগন এখানে এসে থাকেন। এই মন্দিরে বৃদ্দেবের একট গাঁত স্বত্নে রক্ষিত বলে সকলের বিশাস। বৌদ্ধর্শের ইতিহাস-পাঠকেরা জানেন ধে, বৃদ্দেবের মৃত্যুর পর তাঁর চিভাতত্ম এবং অস্থি, দম্ভ বা কেশগুছে ইভ্যানি রক্ষা করবার জ্বে তাঁর ভ্রুক্কেরা বৃত্ চৈত্য ও অপাদি নিশ্বাণ করেছিলেন। কাণ্ডির এই দালাদা মালিগাণ্ডরা বা দভবিহারে বছ হন্তলিখিত পুঁপি আছে। সিংহলের প্রাচীন আমলের রাজাদের



সিংহলের প্রধানমন্ত্রী মি: ডন ষ্টিফেন সেনানায়েক

সিংহাসন আরোহণের সমর এবানকার রাজপুরীতে বে সিংহাসন বাবহাত হ'ত সেট লগুনে নিরে যাওয়া হরেছিল। ১৯৩৪ সালে ভিউক অফ প্লষ্টার ঘবন সিংহলঅমণে আসেন তবন তিনি এই সিংহাসনটি সিংহলবাসীদের প্রত্যর্গণ করেন। ১৮১৫ জ্লীষ্টাকে কাভি ইংরেজ অধিকারে এসেছিল।

পর্ভন্তরা ষ্ঠদশ শতাকীর প্রারম্ভে বাবসায় খ্রে কলখোতে আসে। ১৫১৭ প্রীষ্টাকে তারা কলখো শহর অধিকার করে। সেই সময় পর্ভূগীকেরা বি ষ্টোকার কলখাসের নামাস্সারে এই বন্দরের নাম রেবেছিল কলখো। ১৬৫৬ প্রীষ্টাকে ওলন্দাজেরা পর্ভূপীকদের কাছ থেকে এই বন্দরেটি বলপূর্বক অধিকার করে। প্ররার সেই "লোর যার মূলুক তার" নীতিতেই ইংরেকেরা ১৭৯৬ প্রীষ্টাকে ওলন্দাজদের কাছ থেকে কলখো অধিকার করে। সম্রতি ১৯৪৮ সালের ৪ঠা কেব্রুরারী সমগ্র সিংহল বিনা রক্তপাতে স্বাধীনতা লাভ করেছে। প্রত্রাং দেখাযার, ১৫২ বংসর কলখো শহর ইংরেজদের অধিকারে থাকার পর মূক্ত হরেছে। কিন্তু এ কথা ভূললে চলবে না বে, কলখোলার বার্কার পর মৃক্ত হরেছে। কিন্তু এ কথা ভূললে চলবে না বে, কলখোলার বার্কার পর স্বাধীনতা হারিরেছিল ১৫১৭ প্রীষ্টাকে পর্ভূপীক



সিংহলের এসেমত্রি হলে ডিউক অব গষ্টার কর্তৃক স্বাধীনতা ঘোষণা।
বামে উপবিষ্ট প্রথম--প্রধানমন্ত্রী মিঃ সেনানায়েক

দস্মাদের কাছে। এ বিষয়ে ভারতবাসীদের অপেকা তাহাদের ছুর্ভাগ্য অধিক। কয়েক শতাব্দীর পরাধীনতার পর সিংহলের **এই সম্ম मुधलबुक्ति प**र्छल । পূর্বে ভারতবর্ষ, ব্রহ্মদেশ ও কলখো এক মহাজাতির অন্তর্গত ছিল। কিছু ভারতবর্ধের স্বাধীনতা-সংগ্রামের শক্তি উপলব্ধি ক'রে চতুর ও কৌশলী ইংরেজ একে একে সিংহল ও ব্রহ্মদেশকে ভারতবর্ষ থেকে বিচ্ছিন্ন করে কেলল। এত করেও এদের কাউকেও সে পরাধীন রাধতে পারল না। পত ৪ঠা ভাত্যায়ী বন্ধদেশ প্রধান মন্ত্রী থাকিন হুর নেতৃত্বে পূৰ্ণ স্বাধীনতা লাভ করেছে। সেই দিন সেধানে ব্ৰিটাশ পতাকা অবন্যতি হয়ে স্বাধীন ব্রন্ধের পতাক। উদ্রোলিত হয়। আর সেই দিনই ব্রন্থের বিষ্টশ শাসনকর্তা সার ছিউবার্ট ব্যাল ব্রিটশ পতাকা সঙ্গে নিয়ে ব্রহ্মদেশ পরিত্যাগ করেন। কিছু ভারত ও সিংহলের সে সৌভাগ্য লাভ ঘটে নি। সিংহলের ইংরেজ শাসনকর্ত্তা সার হেমরি মঙ্কবুর মেসনের গবর্ণর উপাধি পরিবর্ত্তিত र'न । তিনি গবর্ণর-জেনারেল হলেন । তার বেতন হ'ল বংসরে ৮০০০ পাউও। বর্তমান লাটপ্রাসাদ "কুইনস হাউস" তিনি অধিকার করবেন। আগামী ১৯৪৯ সালের ৪ঠা কেব্রুয়ারী তিনি অবসর এইণ করবেন এবং আশা করা যায় ভার স্থলে जिश्हान वर्षमान ध्रवान मन्त्री मिः छन हैकन जिनामादिक **११वर्गत-(क्यांत्रम विद्युक्त स्ट्या** ।

সিংহলের এই স্বাধীনতা-উংসব সারা দেশমর হুই সপ্তাহ-ব্যাপী আনন্দ অনুষ্ঠানের মধ্যে সম্পন্ন হরেছে। এই উংসব উপলক্ষে ডিউক অক এটার ইংলও থেকে সিংহলে স্বাগ্মন ক'রে ২০ই কেক্সবাবী ডোমিনিয়ন পার্লামেন্টের **केटबायन कटबन**। পার্লামেন্ট ভবনটি এই স্বাধীনতা-উংসৰ **হৰোচিত ভাবে** স**ম্পন্ন** তথ্যার উপযোগী টোরিংটন স্বোয়ারে রিজওয়ে গল্ফলিক্সের উপর এক বিরাট সভাগৃহ নির্দ্ধাণ করা হয়েছিল। পুরোপুরি প্রাচীন সিংহলী প্রবায় পরিকল্পনা করা অভুৱাৰাপুর, পোলন্নাক্ষা এবং কাণ্ডি প্রস্তৃতি সিংহলের প্রাচীন রাজ্যানীসমূহের দরবার--গৃহগুলির অমুকরণে এই সভাগৃহ নির্ম্মাণ করা হয়েছিল।

এই বিরাট দরবারগৃহে
পার্লামেন্টের সভাসমূহ, প্রধান
রাজকীয় কর্দ্ধচারিগণ, বৈদেশিক
পবর্ণমেন্টের প্রতিনিধিবর্গ এবং
বিশিষ্ট অতিথি প্রভৃতি ৬০০০
ব্যক্তির স্থান সঙ্কলানের বাবস্থা

হয়েছিল। এই দরবারগৃহের বাইরে ১২০০০ নিমন্ত্রিত অতিথির বসবার আসন ছিল। তাদের মধ্যে সমগ্র ঘীপের বিভালয়সমূহের ১৫০০ ছাত্রেরও স্থান ছিল। অস্প্রচানের পূর্বেদরবারগৃহের প্রধান প্রবেশ-ছারের সম্মুবে কাণ্ডির শেষ রাজা শ্রীবিক্রম রাজা সিংহের সিংহচিহ্নিত পতাকা উন্তোধন উৎসব সম্পন্ন হয়। পতাকাটির বর্ণ সম্পূর্ণ লাল—তার ওপর একটি হরিলা বর্ণের সিংহের থাবার একটি পতাকা অন্ধিত আছে। উনবিংশ শতাজীর প্রথম দশকে কাণ্ডির মুদ্ধের পর ইংরেজগণ এই পতাকাটি ইংলঙে নিয়ে যায়। সাম্রতিক স্থানীনতা উৎসব উপলক্ষে সেই পতাকাটি সিংহলে পুনরার আনীত হয়েছে। যদি সিংহলের সমন্ত রাজনৈতিক দলের ঐক্যমত থাকে তবে এটিই সিংহলের জাতীর পতাকারতে গণ্য হবে। কিন্তু এ বিষয়ে বিভিন্ন দলের মধ্যে প্রচুর মতভেদ আছে।

গত ৪ঠা কেব্রুয়ারী গবর্ণর-ক্ষেনারেলের বাসস্থান "কুইনস্
হাউস" থেকে ডিউক অফ এটার রাজ্যেচিত সন্থানে
দরবারগৃহে গমন করেন। স্বেথানে সভারত্তে তিনি ইংলণ্ডের
রাজার বাদী পাঠ করেন। এখানকার হুত্যশেষে তিনি কলখো থেকে ৭২ মাইল দ্রবর্তী মাহাওরেলি গলার তীরে অতি
মনোরম প্রাকৃতিক পরিবেশের মহের অবস্থিত পার্কত্য
রাজ্যানী কাতি গমন করেন। এই দীর্ঘ পথের শোভাবাত্রা
গাঁচ মাইল লখা হরেছিল। সেখানে তিনি সিংহল
বিশ্বিভালরের কনভোকেশন হলের ভিত্তি স্থাপন করেন।

এতহুপরুক্তে সিংহলে গত হুই সপ্তাহব্যাপী বিচিত্র উৎস্বাদির
অহুর্চান হয়। স্কুনেক সিংহলী বৈত্যদানবের বুধাবরণ পরিধান



৪ঠা ফেব্রুয়ারি সিংহলের এনেমরি হলের দুখ্য

করিয়া সারা শহরের রাজ্পণ পরিভ্রমণ করেন। তার পর আরম্ভ হয় বাজী পোড়ান উৎসব। এই আনন্দোৎসবে সেদিন সিংহলের রাত্তের আকাশ বিচিত্র বর্ণের আলোকে আলোকিত হয়ে উঠেছিল। এই উৎসবের পরদিন আরম্ভ হয় শোভাযাত্রা অমুষ্ঠান। তারপর ১৩ই ফেব্রুয়ারী সিংহলের প্রাচীন রাজ্বানী কাণ্ডিতে শতাৰিক অসচ্ছিত হন্তীর এক শোভাযাত্রা বাহির হয়। হন্তীগুলি স্বৰ্ণময় কাব্ৰকাৰ্যায়ক্ত লোহিতবৰ্ণ জলাবরণে শোভিত। এই অহাবরণের সঙ্গে সংযুক্ত শত খত ছোট ছোট ষ্ঠা। এই হভী-শোভাষাত্রার পুরোভাগে চলেছিল কাণ্ডির পবিত্র দল্প-মন্দিরের এক বৃহৎকায় সুশোভিত দ্বিদ। তার পর রাজ্পর দিয়ে সার বেঁবে চলেছিল শতাবিক হন্তী। পরের ছই পার্বে সিংহনের অগণিত নরনারী। কত দূরদূরান্তর থেকে, কত পল্লীপ্রাম থেকে তারা এসেছিল তাদের এই স্বাধীনতা উৎসবে যোগদান করতে। সিংহলের স্বাধীনতা দিবস ৪ঠা কেব্রারী প্রভাতে প্রাচীন অন্বরাবাপুর নগরীর বহির্ভাগে একটি মৰামাক্ততি হন্তীশাবক ৰৱা পড়ে। সিংহলবাসিগৰ এটাকে ভত্তকণ মনে ক'রে এই হন্তীশাবকটকেও সুসন্ধিত করে হন্তী-শোভাষাত্রার সহিত যোগদান করার। এই শোভাষাত্রার পশ্চাতে হিল দৈত্য-দানবের মুখাবরণ পরিহিত চারিশভ সিংহলবাসীর শোভাযাতা। শত শত ঢাক, বাদী ও অভাত

বাদ্যযন্ত্রের তালে তালে এই মুখোস-পরা নাচ দর্শকদের পরম উপভোগা হয়েছিল।

এই শোভাষাত্রার পর আরম্ভ হয় কাভি সরোবরের মধান্থলে অবস্থিত ক্ষুদ্ধ দ্বীপে নানা বর্গবৈচিত্র্যময় আলোকসজা অন্তর্গান ও আতসবাজি পোভান। ১৩২ বংসর পরে দালাদা মালিগাওয়া অথবা দভমন্দিরসংলয় আট-কোল-বিশিষ্ট স্থানে কাভি-সিংহচিন্ডিত পতাকা উত্তোলন উৎসব সম্পন্ন হয়। বায়ুহিলোলে যখন সেই পতাকা পত্পত্ শব্দে আকাশে উভতে থাকে তখন সিংহলবাসিগণের হৃদয় এক অপুর্ব্ব আনন্দে ভরে ওঠে।

১৩ই কেন্দ্রারীর প্রভাতে সিংহলের প্রধান মন্ত্রী মিঃ ডন ইকেন সেনানারেক এই পতাকা-উদ্ভোলন-উৎসব সম্পন্ন করেন। ডিউক অফ মন্ত্রীর ও গবর্ণর-জেনারেল সার হেনরি মঙ্গুর মেসন প্রমুখ সকলে সেই উৎসবে উপস্থিত ছিলেন।

এইরপে ছই সপ্তাহব্যাপী খাৰীনতা-উৎসব পরম জানক্ষয় পরিবেশের মধ্যে মহাসমারোহে সমাপ্ত হরেছে। তারপর হরেছে দেশবিদেশে এই অষ্ঠানের জকুরতি। লগুন, নরা দিল্লী ও কলিকাতার এই খাৰীনতা উৎসব সম্পন্ন হরেছে। ভারতে সিংহলের বিশেষ প্রতিনিধি মি: ডি সিলভা তার মৃতদ দিলীছ গুলে এই উৎসবের জারোজন করেন। ভারতের প্রধ্ন-

জেনারেল লর্ড মাউন্টব্যাটেন ও তাঁর পত্নী, পণ্ডিত জ্বাছরলাল নেহর, সর্বার প্যাটেল ও কেন্দ্রীর গবর্ণমেন্টের মন্ত্রিবর্গ এই উৎসবে উপস্থিত ছিলেন। এই সভার পণ্ডিত নেহরু সিংহলের প্রতি ভারতের প্রবাও ভভেছো জ্ঞাপন করেন। তিনি বলেন, ভারত ও সিংহলের অবিবাসিগণ একই রক্তসভূত নিকট জাল্পীর এবং তাঁহালের মানসিক গভনের মধ্যেও সাদৃষ্ঠ আছে।

অতঃপর লভ মাউক্টয়াটেন এক বস্তৃতায় বলেন, সিংহল সহতে তাঁর ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতা আছে। সেইকত তিনি সিংহলের এই পতাকা উত্তোলন উৎসবে যোগদান করতে পেরে যথেষ্ট আনন্দ অভ্তব করেছেন। বিগত যুদ্ধের সময় দেড় বংসরকাল দক্ষিণ-পূর্ব্ব এলিয়ায় তাঁর প্রধান বাঁটি ছিল কাণ্ডিতে। তিনি সে সময় এই দীপের বহু ছান পরিভ্রমণ ক'রে দেখেছেন; এমন মনোরম ছান ও প্রাফৃতিক দৃষ্ঠ পৃথিবীতে হুর্গভ।

তিনি আরো বলেন, সৌভাগ্যক্তমে তথন সিংহল ব্রুক্তের পরিণত হয় নি। ১৯৪২ সনে কয়েকট বোমাবর্গ বাতীত এবানে আর কোনো ধ্বংসলীলা হর নি। কাকেই আছাও মুছকেত্রের ভার সিংহল বিধ্বন্ত হর নি। স্থতরাং এবানকার আর্থনৈতিক পরিস্থিতির বিপর্যার বটে নি। তিনি সিংহলের উদ্দ্রল ভবিত্রতের জন্ত প্রার্থনা জানান।

সভার প্রারম্ভে মিঃ ভি সিল্ভা বিনা রক্তপাতে সিংহলের বাবীনতালাভে নিরতিশর আনন্দপ্রকাশ করেন। তিনি বলেন, বহু বংসর যাবং সিংহলবাসিগণ তাঁদের অবস্থার বাবীনতালাভের অভ চেষ্টা ক'রে আসহেন। পরিশেষে তিনি তুর্ রাজনৈতিক খাবীনতা নর, অর্থনৈতিক খাবীনতাও তাঁদের লক্ষ্য এই মন্তব্য ক'রে তাঁর বক্তব্য শেষ করেন।

সিংহলের ইতিহাসে ৪ঠা কেব্রুয়ারী এক শরণীয় দিন হরে থাকবে। এই দিন সিংহল ব্রিটিশ সাম্রাজ্যবাদের নাগপাশ থেকে মুক্তিলাভ করেছে। তার জব্দ হতে খন্সে পড়েছে সাম্রাজ্যবাদের কঠিন নিগড়। আজু সিংহল এক গণতাপ্তিক রাষ্ট্রে পরিণত হ'ল: সিংহলের ৬০ লক্ষ্ণ নিশীভিত নরনারী হাধীনতা লাভ করল। স্বাধীন সিংহল সমুদ্ধ হোক।

সাধ

अभीतिसकुष हस

ছগ্ম পথে যাত্রী যাহারা লব্দিল গিরি-বন্ধর্,
আঁষার-বন্ধ বিদারি ছুটল রচিতে মোহন মর্তা,
যক্ত-অনলে জীবনের হবি অনায়াসে দিল অর্থা,
বিজনে বিশিনে ভ্রৱে গহনে গুঁজিয়া ফিরিল বর্গ,
য়ত্য-শাসনে ব্যাকুল ছাদয় গরজি' জলদ-মঙ্গা,
নাগেরে পাকডি' মথিয়া জলবি উচ্চারে মহামন্ত্র,
সেই সাধনার শ্বাসন হ'তে ভেসে আসে শোনো হুর গো,
ছর্গম পথে যাত্রী চলেছে রচিতে অমর হুর্গ।

উষর মরুর ধ্সর ধ্লায় তাদের চরণ-চিহ্ন রঞ্জিত আব্দো রক্তের রাগে নিঃসত ফদি ভিন্ন ; সেই পথে তাই নিত্য রবির উদয় এবং অভ ; ধীর য়য় বায় ব্লাইয়া যায় ক্সম পেলব হভ ; ধ্য় মেঘের পথ বহি' আসে অঞ্চ-সকল স্টি হানি' ধ্লি-ভরা ধরণীর বুকে বক্ত-কঠোর দৃষ্টি ; ভবরু-নাদে মুর্জর কালে শোন শোন তার স্বর গো, রক্ত চরণ মুর্গম পথে ধুঁ কিছে অয়র মুর্গ। দিকে দিকে আৰু দানৰ অহন, জাগিয়াছে শত কংস, প্ৰলমেন ক্ৰা স্টিন হ্ৰা কনিতে চাহিছে ধ্বংস : জেগেছে ভন্ত, জাগে নিভন্ত, জাগিয়াছে মন্কৈটভ, মাতিয়াছে তানা হনিয়া লইতে দেবের বিভৃতি-বৈজ্ব, নাক্ষ্য হেৰা হইয়াছে জ্মী, নচিছে প্ৰলঙ্গা, দেবতানা বহু নক্ষ-পতাকা, অন্তমে জাগে শ্বা, চেয়ে থাকে তানা মৰ্ড্যের পানে—ধ্বনিছে কি সেই হ্লন গো, মানবের সাধ দানব-বিজ্বী নচিতে অমন ক্লা।

কাগরণী পুর ধ্বনিতেছে আৰু ভোমার আমার বক্ষে,
প্রত্যাশা-ভরা চাহনি কি তার দেব নি চক্ষে চক্ষে ?
বপ্র-পাগল মাহুষের সাব কবন হরেছে মিধ্যে ?
বুগে বৃগান্তে বুর্জনা তার রণিরা ওঠে যে চিত্তে।
দেবিরাছি সেই বাণী বহে চলে তরুল বতেক যাত্রী,
নির্ভরে চলে হুর্গন পথে ভেদিরা ভিমির রাত্রি।
ভর নাই আর, ভর নাই—শোন, ধ্বনিতেছে সেই পুর গো,
মানবের সাব ব্যর্থ হবে না, রচিবে জমর হুর্গ।

विष्कुलनान बाब

3240-3330

ব্রিব্রক্তেনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

जबः मिनव-निका

১৮৬৩ সনের ১৯এ জুলাই (১২৭০, ৪ঠা প্রাবণ) নদীয়া জেলার অন্তর্গত কৃষ্ণনগরে দিকেলালের জন্ম হয়। তাঁহার পিতা—কার্ত্তিকেয়চক্র রায়, ফুফনগরের মহারাজার দেওয়ান; মাতা—শান্তিপুরের অহৈত ঠাকুরের বংশবর কালাটাদ গোবানীর ভগিনী।

শৈশবেই মেধাবী বলিয়া স্থানগণ-মধ্যে ছিল্পেঞ্জলালের ব্যাতি ছিল। তিনি ১৮৭৮ সনে ক্ষানগর কলেজিয়েট ছুল হুইতে দিতীয় বিভাগে এনটাল, ১৮৮০ সনে ক্ষানগর কলেজ হুইতে দিতীয় বিভাগে এফ-এ, ১৮৮০ সনে হুগলী কলেজ হুইতে প্রথম বিভাগে বি-এ, এবং ১৮৮৪ সনে প্রেসিডেজী কলেজ হুইতে ইংরেজীতে ২য় প্রেণীর প্রথম ছান অধিকার করিয়া এম-এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হন।

থিকেন্দ্রলাল শৈশবাবধি প্রারই ম্যালেরিয়ায় স্থাতিতন।
এম-এ পরীক্ষা দিবার বংসর তিনি ম্যালেরিয়ায় শ্যাগ্রহণ
করেন। তাঁহার পিতা বায়ুপরিবর্তনের জ্ঞ তাঁহাকে দেওখর
যাইতে পরামর্শ দেন। সর আশুতোষ চৌধুরীর জ্যেষ্ঠা ভগিনী
প্রসন্তময়ী দেবীর সহিত থিকেন্দ্রলাল দেওখর যাতা করিয়াছিলেন; তাঁহাদের বাসা নির্দিষ্ট হইয়াছিল রোহিনী প্রামে।
প্রসন্তমন্ত্রী লিখিয়াছেন:—

"তা'র বাবা বলিলেন, 'ছর্গাদাস বাবুর মেয়ে-তামার দিদির সঙ্গে তুমিও দেওখনে যাও।' আমি, আমার মাসিম। এবং দ্বিসু, এই তিন জনে এক সঙ্গে গিয়াছিলাম। সেইবার দ্বিষু এম-এ পরীকা দিতেছে। এমন সরল ও শিশুর মত ৰভাব ছিল যে, কোন বিষয়ে কিছুমাত্রও সঙ্গোচ করিতে বানিত না.—ঠিক যেন ছোট ভাইট। -- আমরা প্রতাহ পাহাড়ে পাহাড়ে ঘুরিয়া বেড়াইতাম: আর সে কোন একটা পাছাছের উপর উঠিয়া, বসিয়া বসিয়া গাইত,— 'কানি না জননি. কেন এত ভালবাসি তোরে'। এ জননী-তাহার সেই স্বেহ্মরী মাতা ও জনজুমি। এই সময়ে পুঞ্চাপাদ রাজ-নারায়ণ বাবুর সঙ্গে তাহার প্রথম আলাগ। --- আমিই সেবানে ছিছুকে তাঁহার সঙ্গে প্রথম জালাপ করাইয়া দিই। তাহার পর তিনি সভত আমাদের কাছে আসিতেন, গান-গল-আলো- • চনায় ঘটার পর ঘটা কাটিয়া বাইত, --- বিজু প্রিয়-দর্শন ও গৌরবর্ণ ছিল, গানে স্থক্ষ্ঠ এবং সেই গান আবার নিজেই রচনা করিত। কাজেই রাজনারায়ণ বাবু তাঁছার নিজগুণে ভাছাকে বড়ই শ্লেছ করিতেন। আমরা তথন ছই ভাই-বোনে মিলিয়া, এক সদে বসিয়া ইংরাজী কবিতা পঢ়িতাম, জার (मनी, वांबबन, कीवृंज स्टेट्ड अक्वांच क्विंडांच।" (त्वन-क्वांव: 'विरम्बनान,' ग्र. ४७-४३)

দেওবরের প্রাকৃতিক সৌন্দর্ব্য হিজেন্সলালকে মুগ্ধ করিরা-হিল। "দেববরে সভাা দেবিরা" তিনি "শ্রশান সঙ্গীত" রচনা



विक्कितान त्राप्र

করিয়াছিলেন; উহা ১২৯০ সালের অগ্রহায়ণ (নবেশ্বর ১৮৮০) –সংখ্যা 'নব্যভারতে' মুক্তিত হয়। পরীক্ষার করেক মাস পূর্ব্বে তিনি কলিকাতায় কিরিয়াছিলেন।

. বিলাভ-যাত্রা

দিকেবলাল লিখিয়াছেন:—এম-এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইবার
"ব্যাবহিত পরেই অর্থাৎ ঐ বংসরে এপ্রেল মাসে আমি ক্বাহি—
লিক্ষার্থে প্রেই অর্থাৎ ঐ বংসরে এপ্রেল মাসে আমি ক্বাহি—
লিক্ষার্থে প্রেই কলারলিপ পাইয়া ইংলতে ঘাই এবং সেবামে
এম-আর-এম-এ-ই, এবং এম-আর-এ-সি, এই ছইট ডিল্লোমা
গাই।"…"বিলাতে গিয়া ইংরাকিতে কবিতা লিখিতে আরম্ভ করি এবং সেই কবিতাগুলি এক্তিত করিয়া ভার এভুইন আর্ণক্তকে উৎসর্গ করিবার অন্থমতি চাহি এবং তৎসঙ্গে কবিতাগুলির পাঙুলিপি পাঠাই। তিনি কবিতা প্রকাশ সব্বদ্ধে
আমাকে উৎসর্গ করিবার অন্থমতি চাহি এবং তৎসঙ্গে কবিতাগুলির পাঙুলিপি পাঠাই। তিনি কবিতা প্রকাশ সব্বদ্ধে
আমাকে উৎসর্গ করিবার অন্থমতি সাগ্রহে দান করেন। তবন
সেই কবিতাগুলিকে Lyrics of Ind আব্যা দিয়া প্রকাশ
করি [সেপ্টেম্বর ১৮৮৬]।" "তাহা বুই এক্থানি বিব্যাত
বিলাতী কাগতে (বেমন Westminster Review,

Scotsman প্রভৃতি) অলাধিক প্রশংসিত হয়।…বিলাত
প্রবাসকালে আমার মাননীর প্রাতা এআনেক্রলাল রাম কর্মক

সন্দাৰিত 'পডাকা' মান্ত্ৰী পঞ্জিকান্ত নিয়মিতক্সপ বিলাতের চিঞ্জি লিখি।"

বিবাহ; 'একঘরে'

বিলাভ হাঁতে কিরিবার পর যে হদেশে সামাজিক
অস্থিব। ভাগ করিতে হাঁবে, এ-কথা যাত্রার প্রাক্তালে
কার্তিকেরচন্দ্র প্রকে ব্রাইরা দিরাছিলেন; তিনি নিজে কিছ
প্রের উক্ত শিক্ষার পথে বাবা দেন নাই। হিজেলালা
বিলাতে অবস্থানকালেই পিতা-মাতাকে হারাইরাছিলেন।
১৮৮৬ সনের ২৩এ ডিসেম্বর বদেশে কিরিরা তিনি একবরে
হাঁলেন—হিন্দুসমান্ধ বিনা প্রারশ্চিত্তে তাঁহাকে অভে স্থান
দিতে অস্থীকার করিলেন। এই সমরে কলিকাতার হোমিওপ্যাধি ভাজার প্রতাপচন্দ্র মন্ত্র্মদারের জ্যেঠা কলা স্বরবালা
দেবীর সহিত হিন্দু মতে তাঁহার বিবাহ হয় (এপ্রিল ১৮৮৭)।
ক্রফনগরের যে করজন সপ্রান্ধ হিন্দু তাঁহার আতাদের সহিত
বরামুগমন করিরাছিলেন, সমাজের শাসানিতে তাঁহারা সহসা
কিরিরা আসেন।

"চীন গেলে ছাত যায় না, গোপনে অবাছ বাইলে ছাতি যায় না—প্রায়শিন্ত করিতে হয় না, তবন বিভাশিকার্থে বিলাত গেলে ছাতি যাইবে কেন ?" সমান্তের এই অনুধারতার প্রতি কটাক করিয়া কোতে ও অভিমানে হিক্তেলাল 'একছরে' নামে একবানি নক্লা প্রচার করিয়াছিলেন (ইং ১৮৮৯)। তিনি নিবিয়াছেন, "বিলাত প্রত্যাগত হইয়া… আমি 'একছরে' নামক একবানি সামাজ্ঞিক পত্র ছাপাই ও তাহার কল্প শত্রু মিত্র প্রায় সকলের কাছেই গালি বাই।" কিছ স্বর্ণকুমারী দেবী-সম্পাদিত 'ভারতী ও বালক' (ভার ১২৯৭) সমালোচনা প্রসঙ্গে নক্শাবানির প্রশংসাই করিয়াছিলেন। সমালোচনা প্রসঞ্জ :—

"পূর্কে শুনিরাছিলান, লেবক এই পুশুকে হিন্দুসমান্দকে অবধা আক্রমণ করিরাছেল, বইবানি পড়িরা আমাদের সে পুল ভালিল। ইহাতে হিন্দু সমান্দের প্রতি কঠোর প্ররোগ আছে সভ্য কিছ তাহা অসলত অমূলক শ্লেষ বাক্য নহে। বইবানি পড়িলে মনে হর হিন্দুসমান্দের শোচনীর অবস্থার লেবক মর্ম্ম-বীয়িত হুইরাই এরপ লিবিরাছেল, তাহার ইচ্ছা গালি দেওরা নহে, তাহার ইচ্ছা সমান্দের চক্ষ্দান। তবে বইবানিতে বেশ একটু বাট হাস্তরস আছে এবং কলমের জোরও বেশ একটু দেবিতে পাওরা যায়—ইহার প্রবান কারণ তিনি সত্য কথা বলিরাছেল।"

সরকারী চাকুরী

বিলাত হইতে কিরিয়াই বিকেন্দ্রণাল হোটলাটের সহিত সাক্ষাং করিয়াহিলেন। তিনি বেরুণ স্বাধীনভাবে ক্থাবার্ত। ক্রিয়াহিলেন ভাহাতে হোটলাট অভরে ধূলী হইতে পারেন নাই। বিকেন্দ্রনাল ভাল চাকরি পাইলেন না—ভেশুটগিরিতে নিরক্ত হইলেন। তিনি বিলাভে ক্রিবিভার বে অভিক্রতা

সক্ষ ক্ষিয়া আসিয়াছিলেন, কাৰ্যক্ষেত্ৰে তাহায়ও প্ৰয়োগ করিবার স্থবিধা পান নাই। আমরা ভাষার রাজকার্ব্যের ইতিহাস সরকারী এছ হইতে সম্বলন করিয়া দিতেছি :---জমির জরিপ ও রাজন্ব-নিরূপণ কার্য্য শিক্ষার জক্ত মধ্যপ্রদেশে গমন २६ फिरम्बत ३४४७ कलिन मार्ट्स्ट्र यथील, मश्चद्र-द्रका-अनाली আরম্ভ করিবার জক্ত মজ্ঞাকরপুরে গমন ২১ সেপ্টেম্বর ১৮৮৭ (क्रुंग्रि: २२-२-४१ इंहेर्ड विना-त्वडल २० प्रिन : ডাক্তারের সার্টিকিকেটে ১৭-১০-৮৭ হইতে ২ ব মাস) মঙ্গের ও ভাগলপরের অন্তর্গত শ্রীনগর ও বর্নোল রাজ-এষ্টেটের সেটেলমেণ্ট অফিসার ১ জাতুয়ারি ১৮৮৮ হইতে ১৯ জামুয়ারি ১৮৯৩ ডেপুটেশনে ··· ভেপুটি ম্যাজিট্টেট ও ডেপুটি কলেক্টর ২৭ অক্টোবর ১৮৮৮ खुलाई ১৮৯১ (ণম শ্ৰেণী) দিন।জপুর ২ ফেব্রুয়ারি ১৮৯৩ (७) (अरी, अश्रोत) ••• ८ मार्ट ३५२० বাকিপুর-পাটনা আবকারী বিভাগের ১ম পরিদর্শক ১৮ আগ্রু ১৮৯৪ **ह**िका ১৮ অক্টোবর ১৮৯৪ (🔰 🗐) >2 4/15 > Vac (প্রিভিলেজ লীভঃ ২৬ ৫ ৯৭ হইতে ২ সাস) ু বঙ্গীয় ভূমি, রাজ্য ও কুথি কলিকা হা বিভাগের সহ-ডিরেক্টর (অস্থায়ী) ১৭ মার্চ ১৮৯৮ , (৫ম শ্রেণী, অস্থায়া) ৮ ডিসেম্বর ১৮৯৯ " (**৫**ম এশূণী) ৩০ জামুয়ারি ১৯০০ (প্রিভিলের লীভ : ২১ ৪ ১৯০০ হইতে ২ মাস ২৯ দিন) २ जिल्ला है ३००० কলিকাঙা বঙ্গীয় আবকারা কমিশনরের পাস স্থাল আসিহান্ট (অস্থায়ী) ১০ অক্টোবর ১৯০০ ও পশ্চিম কেন্দ্রের আবকারী পরিদর্শক ১৩ নবেম্বর ১৯০০ > ख्नाइ >>०8 (৪র্থ শ্রেণী, অস্থায়ী) ••• ১৫ মার্চ ১৯০৫ (धर्थ (भागे) (প্রিভিলেজ লীভঃ ২০-৪-১৯০৫ হইতে ১ মাস) ও পশ্চিম-কেন্দ্রের আবকারী ধুলনা পরিদর্শক १ न्द्यम् ३२०६ (এতদাতীত মাজিট্টের কার্যা ১১-১৬ জামুরারি ১৯-৬) (ध्य (ध्री) ১ ফেব্রুয়ারি ১৯০৬ (वर्ष (अनी, अवश्री) २১ मार्চ ১৯०७ ১৭ এপ্রিল ১৯০৬ মূৰ্শিদাবাদ (धर्ष (अभी) २२ এপ্রিল ১৯০৬ কাদি-মূর্শিদাবাদ অস্থায়ী ভাবে সব-ডিবিসনের ভারপ্রাপ্তি ५ ८व २३०७ २ क्लाई ३३०७ গমা ৩০ মে ১৯০৭ জেহানাবাদ · · · ३१ खून ३००१ গশ্বা (काला : २४-४->०४ इटेल > वश्मत) --- ২৮ এপ্রিল ১৯০৯∗ ২৪-পরগণা (আলিপুর)

^{*} History of Services of Officers holding Gazetted Appointments under the Government of Bengal.

(FO

সরকারী কার্ব্যে দিন্দেললালের ভার হৃতী পুরুষের আশান্ত্রপ উন্নতি হয় নাই। স্বর্গিত জীবনীতে তিনি ইহার কারণ যেরপ নির্দেশ করিয়াছেন তাহা উন্নত করিতেহি:—

"বিলাত হইতে ফিরিয়াই সেটেলমেট কার্ব্য লিখিবার ৰত বেদল গবৰ্ণমেণ্ট আমাকে ভারতের মধ্যপ্রদেশে (Central Provinces) পাঠান। সেধান ছইতে কিরিয়া আমি উক্ত কাৰ শিবিতে আবার মোলাকরপুরে প্রেরিত হই। এই इरे कार्या १४४१ भारतद बरवा त्वर हरेला १४४४ माल আমি ত্রীনগর ও বনেলি এপ্রেটের আাসিপ্রাণ্ট সেটলমেণ্ট অফিসার হইয়া ভাগলপুর জেলার অন্তর্গত বাপার পরগণায় যাই। সেধান হইতে মুদ্ধের ও তথা হইতে পূর্ণিয়ায় উক্ত कांक (नव कतिया ১৮৯০) जात्म जामि वर्षमान (हेर्क चुकामूके) পরগণার সেটলমেণ্ট অফিসর নিযুক্ত হই। উক্ত কাল তিন বংসর কাল করি। উক্ত সেটপ্রেণ্ট সংক্রান্ত একটি ঘটনা বটে. যাহাতে বঙ্গদেশে একটি উপকার সাধিত হয়। আমার পূর্ববর্ত্তী সেটল্মেন্ট অফিসরেরা জরীপে জমী বেশী পাইলেই বাৰন। বেশী বাৰ্যা করিয়া দিতেন। আমি পুজাযুটা সেটেল-মেন্টে এই অভিপ্রায় প্রকাশ করি যে, এরপ খালনা বৃদ্ধি করা অক্লায় ও আইন-বিরুদ্ধ। প্রকার সহিত যথন পূর্বে ক্রমী বন্দোবন্ত করিয়া দেওয়া হয়, তথন মাপিয়া দেওয়া হয় না. আন্দার করিয়া সেই জমীর পরিমাণ হস্তবুবে লেখা হয়। এমন কি এরপ সম্ভব যে, সেই জ্মীই এখন জ্বীপে তাহা অপেকা অধিক বলিয়া প্রতীত হইতেছে মাত্র। তাহার ৰুত্ৰ তাহার নিকট বেশী খাজনা চাওয়া অভায়। অতএব রাজা যদি বেশী ক্ষমীর জন্ত বেশী ধাক্ষনা দাবী করেন ভ তাহার দেখাইতে হইবে যে, প্রস্না কোন বেশী স্মীটকু অধিকার করিয়াছে। আরও ডেনেজ খাল বন্ধ হওয়ায় জ্মীর বাংসরিক কসল কম হইয়া যাওয়ার জন্ত আমি প্রজাদিগের খাৰুনা ক্মাইয়া দিই। ঐ রায় হইতে ক্রের নিকট আপীল হয় এবং তাহাতে বৰু সাহেব উক্ত রায় উণ্টাইয়া প্রকাদিগের খাৰুনা বৃদ্ধি ক্রিয়া দেন। এই সময়ে শ্বর চার্লস এলিষ্ট বঙ্গদেশের লেপ্টেনাণ্ট গবর্ণর ছিলেন। তিনি উঞ্চরণ বিদ্রাট দেবিয়া উক্ত বিষয় তদত্ত করিয়া স্বয়ং মেদিনীপুর আসেন ও কাগৰপত্ৰ দেখিয়া আমাকে যখোচিত ভং সনা করেন। আমি আমার মত সমর্থন করিরা বহুদেশীর সেট্সমেন্ট আইন বিষয়ে তাঁহার অনভিজ্ঞতা বুঝাইয়া দিই। ছোট লাট ক্ষুদ্ধ হইয়া আমার পূর্ব্ব ইতিহাস জানিতে চাহেন ও তাহা অবগত হইয়া কলিকাতায় গিয়া ভবিয়তে সেটলমেণ্ট क्षकिमत्रपिरभद्र कर्खना निवस्त्र श्रक मीर्च मस्त्रा श्रकाम करतन এবং তাহাই আইনে চুকাইয়া দেন। ইতাবসত্ত্রে ছভের রায়ের বিরুদ্ধে হাইকোর্টে আপীল হয়: হাইকোর্ট ক্ষের রায় উন্টাইরা দিয়া আমার মতের সহিত এক্য প্রদর্শন করেন এবং সেই হাইকোর্ট "রুলিং" অভুসারে এবন সমস্ত বৃদ্ধেশে

সেটলমেন্ট কার্ব্য চলিভেছে। এখন স্বরীপে ক্ষমী বেশী
পাইলেই প্রকার অসন্থতিতে আর বাজনা বৃদ্ধি হর না।
ইত্যবসরে হাইকোর্টে আর একট আশীলে ভার চার্লসের
উক্ত মন্তব্যও নির্দরভাবে সমালোচিত হর। তাহাতে তিনি
সেগুলি সেটল্মেন্ট মাাসুরাল হইতে উঠাইরা লইতে বাধ্য
হন।



কবি-জায়া

উপরে সম্ভবতঃ আমার একটু অহমিকা প্রকাশ হইল। কিছ তাহা সত্ত্বেও এ কথাটি প্রকাশ করিবার প্রবল প্রলোভন অতিক্রম করিতে পারিলাম না। আমি সত্যই ইহা প্লামার বিরয় বিবেচনা করি বে, আমি এই ক্ষুদ্র ক্ষমতাতেই উক্ত কার্ব্যে নিকের পারে ক্ঠারাখাত করিলেও সমন্ত বদদেশবাদী একটি উপকার সাধিত করিরাহি—নিরীহ প্রস্থাদিগকে অভার করম্বন্ধি হইতে বাঁচাইরাহি। তবিয়তে একপ কার্ব্য আর বে করিতে পারিব, তাহার আশা নাই।

ঐ সেটল্মেন্টের পরে আমি সেটল্মেন্ট কার্ব্য হইতে অব্যাহতি পাই ও ডেপ্ট ম্যাজিক্টেট হইরা দিনাজপুরে প্রেরিত হই। এবং ১৮৯৪ সালে তথা হইতে বঙ্গদেশে আবকারি বিভাগের প্রথম পরিদর্শক (Inspector) নির্ক্ত হইরা আসি। সেই কার্ব্য অদ্যাবধি করিতেছি।" ('ক্ষভ্মি,' কার্ম্যক ১৩০৪)

পরবর্তী কালে বদেশী-আন্দোলনে বোগ বিরা বিভেক্তলাল

গবৰ্ণমেন্টের অধিকতর বিরাগভালন হইরাছিলেন। দেব-কুমারকে লিখিত তাঁহার একখানি পজে প্রকাশ:---

"ক্ৰমাগত transfer (বদলি) আমাকে যথাৰ্থই যেন আছির ক'রে তুলেছে। এত বদলি কছে কেন জান ? আমার বিবাস—বদেশী আন্দোলনে যোগদান, আর ঐ প্রতাপসিংছ নাটকই তার বৃল। কিন্তু, কি বৃদ্ধি। এমনি একটু হয়রান কর্পেই বৃদ্ধি আমি অম্নি আমার সব মত ও বিবাসকে বর্জন কর্ম্ব ?"

ন্ত্ৰী-বিয়োগ

স্ববালাকে লাভ করিয়া বিজ্ঞেলালের দিনগুলি সুধে বছলেই কাটতেছিল। এই ভাবে যোলট বংসর কাটবার পর বিনা-মেবে বজ্লাঘাতের ভার অক্যাং একদিন তাঁহার পত্নী একট মৃত কভা প্রসব করিয়া ইহলোক হইতে অন্তর্ধান করিলেন (২৯ নবেম্বর ১৯০৩)। কল্যানী গৃহলন্তীকে হারাইয়া, তছপরি মাতৃহারা শিশুসন্তানদের লইয়া, বিজ্ঞেল-লালের যে অবস্থা হইয়াছিল, "হতভাগ্য" কবিতার তাহার চিত্র আছে। তিনি লিখিয়াছিলেন:—

একখানি তার তরী ছিল বিজন শৃষ্ঠ খাটে বাঁথা;

একদিন হঠাং ভূবে গেল বাঁড়ে;

একখানি তার কুঁড়ে ছিল নদীর ধারে; পুড়ে গেল

একদিন হঠাং আগুন লেগে বড়ে।

একট ছেলে একট মেয়ে,—একট ডাইনে একট বাঁরে,

হাতে ধ'রে ঘূরে বেড়ার পাড়ার;

সারা বছর ঘূরে বেড়ার; জানে না সে হতভাগা

তাদের নিরে কোধার গিরে দাঁড়ার।

ছেলে যেয়ের ছিল না মা ; চ'লে গেছে আটট বছর,
দেশান্তরে—কাল-ম্রোতের টানে ;
যে দেশেতে মাহ্য গেলে আর সে কিরে আসে না-ক,
যে দেশ কোষার—কেই নাছি জানে।
ফালবাগ্ত ছেলে মেয়ের—যেমন সব মা ভালবাসে—প্রবল, গভীর, বিরাট, খন সেহে ;
এখন ভাদের রেখে গেছে ভাদের রন্ধ বাপের কাছে,
এখন ভাদের দেখেও না-ক চেয়ে।
ভবে কি না, যাবার সময় রেখে গেছে সেইটুক্
ছেলে যেয়ের বাপের কাছে জমা ;
হাতে সঁপে দিয়ে গেছে সর্বাহ্যমা।
এখন ভাদের বাপই আছে, বে-ই বাবা, সে-ই মা,—

বাপের চিন্ধার, মারের বড়ে রাথে ;—

দিনের বেলার মন্ত্র বেটে রোজগার করে আনে কড়ি ;
রাতের বেলার জড়িরে শুরে থাকে। ('আলেণ্য')

সে-ই ভাদের

পুন: পুন: অহমে হইরাও বিকেলনাস বিতীর বার দারপরিএই করেন নাই। তিনি বন্ধু দেবকুমারকে একখানি পত্রে নিধিয়াছিলেন:—"আমি আবার বিবাহ করিব কি? এ অভবের অভয়তম প্রদেশে, আমার মানস-মন্দিরে এখনও আমি সেই অল্পম বর্ণ-প্রতিমার ব্যান-বারণা, পুলা ও আরতি করিরা থাকি। স্থল-দৃষ্টি এই সব লোক বাহির হইতে তাহার কি ভানে—কিইবা বোকে!"

জীবিয়োগের পাঁচ বংসর পরে ছিক্তেলাল ২ নং নন্দকুমার চৌধুরীর লেনে একধানি স্থরম্য অটালিকা নির্দ্ধাণ করিয়া-ছিলেন। তিনি পত্নীর নামান্থ্যায়ী এই অটালিকার নামকরণ করেন—'স্থরধাম'। "তাঁরই যত্ন-সঞ্চিত অর্থের পুণ্যমন্দিরে, তাঁরই ভৃতির আশ্রম ছায়ায় শৃক্ত জীবন কাটাইয়া দিবার" অভিপ্রায়ে ছিক্তেলাল ১৩১৬ সালের ১লা বৈশাখ (১৯০৯, ১৪ এপ্রিল) গৃহপ্রবেশ করেন; তাঁহার বাকী দিনগুলি প্রধানতঃ স্থরধামেই কাটিয়াছিল।

পূর্ণিমা-মিলন

ছিক্ষেলাল বর্মহলে সদালাপী ছিলেন। কলিকাতার অবস্থানকালে, বিশেষ করিয়া পত্নীবিয়োগের পর হইতে, তাঁহার পৃত্বে বঙ্গুবাছব ও সাহিত্যিকের স্মাগম হইত। তাঁহাদের আনন্দবর্জনের ক্ষম্ম তিনি একটি অমুঠানের পরিক্ষানা করেন। দেবকুমারকে লিখিত তাঁহার একখানি পত্রে প্রকাশ :—

"এক নৃতন থেরাল মাধার আসিরাছে। তথামি। অংশং আমরা) ইচ্ছা করিরাছি, প্রতি পূর্ণিমার দেশ-শুদ্ধ সাহিত্যসেবী ও সাহিত্যান্থরীদের একত্র করিরা, এক-এক স্থানে এক-এক বার প্রতি 'পূর্ণিমা' উপলক্ষে 'মিগন' করা যাইবে। নাম হইবে, "পূর্ণিমা-মিলন"। ইহাতে কলিকাতান্থ সমুদায় সাহিত্যিকদের মধ্যে অবারিতভাবে মেলা-মেশা, ভাব-বিনিমর, প্রীতি-বর্জন ও পরিচয়াদি হইবে; আর তাহার সঙ্গে সেখানে (যেখানে যখন হইবে) গৃহ-স্বামীর প্রবৃত্তি ও সামর্থান্থসারে, অর কিছু জলযোগ,—এই বর যেমন চা, সরবং প্রভৃতি ও চুকট তামাকের (সিগারেটেরও !!) ব্যবস্থা থাকিবে। আগামী দোল-পূর্ণিমার সন্ধ্যার প্রথমে আমার গৃহে এই মিলন। তারপর প্রতি পূর্ণিমার (যদি কেছ চান ত তার বাড়িতে নইলে আমারই এখানে) মাতৃভাষার সেবকগণ—আমাদের জাতভাইরা—একত্র হুইবেন।"

১৩১১ সালে ছোল-পূর্ণিমার দিন (ইং ১৯০৫) ৫ নং পুরিরা ব্রীটে দিক্ষেলাপের জাবাসে 'পূর্ণিমা-মিলনে'র প্রথম জবি-বেশন হয়। এই দিন রবীক্ষনাথ উপস্থিত ছিলেন এবং স্বর্রাচত "সে যে আমার জননী" গানটি গাহিরা সকলকে মোহিত ক্রিরাছিলেন। 'পূর্ণিমা-মিলন' জনেক দিন চলিরাছিল। সদীত, আর্ডি, হাসির গান, রসরচনা পাঠ ইহার একট প্রবান আকর্ষণ ছিল।

শেষ-জীবন ; মৃত্যু

পত্নী-বিয়োগের সঙ্গে সঙ্গে দিকেজলালের দীবনের উদ্দল অধ্যারে যবনিকাপাত হইয়াছিল; ইহার পর তিনি বে কয় বংসর বাঁচিয়া ছিলেন, সে নামেই দীবনধারণ। বন্ধু দেব-কুমারকে তিনি লিখিতেছেন :—

"মাকে মাকে মনে হয় যে, আমার জীবনের উজ্জ অধ্যায় শেষ হয়ে গিয়েছে। এখন এ জীবন কেবল ধারণ করা মাত্র। পূত্র-কভা যদি না জ্বিত ত হয়ত এক দিন সন্থাসী হয়ে বেরিয়ে যেতাম। নিজের ভোগ-লালসা বড় বেশী নাই — যা আছে তা বোধ হয় বিনা বেশী আয়াসে ত্যাগ কর্তে পারি। তবে সাহিত্যিক যশ—এখনও আমার কাছে অতি প্রিয়, আর সর্কাপেক্ষা মণ্ট্র মায়ার মায়াই ত্যাগ করা শক্ত। সে টান বিষম টান। তাদের জন্মই আজো এই দাভ কছি।—গন্ধা, ২২ জুলাই ১৯০৬।

"আমি যতই ভেবে দেখছি, ব্ৰতে পাছিছ যে, 'এ জীবনটা কিছু না।'…এই অসার গথমর চাকরি। কোন অর্থ নেই। ঠিক 'সোনার তরী'। জীবন-পথে যতই অপ্রসর হচ্ছি, চারি দিক থেকে ভবুই ঔদান্ত আর অবসাদ আমার যেন বিরেকেল্ছে। 'অসার সংসার' আগে বিচারে ও অথমানে ব্রতাম,—এখন প্রতি পদে 'হাড়ে হাড়েই' ব্রছি। আপন মনের দিকে চেয়ে দেখি, সেখানে এ সংসারের উপরে অবিমিশ্র বিত্ফা ছাড়া আর তো কিছুই খুঁজে পাই না! আসম্ভি বা ভোগলিপা তিলার্জ নাই। তবে, কেন—কিসের জন্ত এই পুঞ্জীভূত বিভ্রনা নিরক্তর ভোগ ক'রে মরি গ" গয়া, ১৩ জান্থারি ১৯০৭।

এই ওঁদাত ও অবসাদ দ্ব করিবার বাত তিনি পরিমিত হুরাপানে অভ্যন্ত হুইয়া উঠিয়াছিলেন ; তিনি বলিতেন, "তোমাদের ত্রী আছেন, সংসারে অভ্যন্ত নানারূপ আশ্রহঅবলম্বন আছে ; কিছু আমার তা'র কোনটাই নাই, কিছুই নাই। এইক্ত, ভ্রানক ওঁদাত ও অবসাদ আসিরা যথন আমার দেহ-মনকে অভিভূত করিয়া, বভাইয়া ধরে তথন—
In order to shake off that lethargy, dullness and depression আমার একটু একটু পান করা দরকার বোধ করি। ওটা যে আমার পক্ষে তব্ একটা support or strength (সহায় ও বল) তা নর,—Necessityও (প্রয়োজনও) বটে।"

গরা হইতে কিরিয়া বিকেঞ্চলাল প্রায় চারি বংসর কলিকাতায় অবস্থান করেন। বদতক রহিত হইরা বিহার-উড়িয়া একট স্বতম্ভ প্রদেশে গঠিত হইবার প্রাকৃকালে তিনি ১৯১২ ২৯ কাছ্যারি বাঁকুড়ায় প্রেরিত হন। তথার তিন মাস কার্য্য করিবার পর মুদ্দেরে বদলি হন। মুদ্দেরযাত্রাকালে কলিকাভায় জাসিয়া ছিজেজলাল সম্মাস রোগে
শয্যাঞ্চণ করেন। পীড়ার উপশ্যের কোন লক্ষণ না দেখিয়া
তিনি এক বংসরের ছুট লইতে বাধ্য হইয়াছিলেন। কিছ
শরীর উত্তরোভর অপটু হওয়ায় এবং সরকারী চাকুরীতে
উম্নতির আশা না ধাকায়, তিনি ১৯১৩ সনের ২২এ মার্চ
অবসর গ্রহণ করেন।

অবসরগ্রহণের অল্প দিন পূর্বে হইতে থিকেন্দ্রলাল একখানি উচ্চাঙ্কের সচিত্র মাসিকপত্র প্রকাশের উদ্ভোগ করিতেছিলেন। পত্রের নামকরণ হয়—"ভারতবর্ব', গুরুদাস চটোপাব্যায় এন্ড সন্থ ইহার প্রকাশ-ভার প্রহণ করেন। প্রথম সংখ্যার (আষাচ ১৩২০) কন্ত তিনি প্রবন্ধ নির্বাচন করিয়া, "খুচনা" অংশও লিখিয়া দিয়াছিলেন, কিন্তু উহা প্রকাশিত হইবার অব্যবহিত পূর্বেই তাঁহার ভাক পড়িয়াছিল। ১৯১৩, ১৭ই মে (৩ ক্যৈষ্ঠ ১৩২০) অপরাত্তে 'সুরবামে' যুগন তিনি বান্ধ-সেবায় নিরত, সেই সময় অক্যাৎ সন্ন্নাস রোগে তাঁহার সংজ্ঞা লোপ পার: বিশুপ্ত সংজ্ঞা আর ফিরিয়া আসে নাই।

"রোগাক্তান্ত হইবার মাত্র ৪॥ ঘন্টা পরেই শুক্ল-ঘাদশীর
চক্রকরোজ্বল রাত্রি ৯॥ ঘটিকার সময় 'মহাসিদ্ধর ওপার থেকে
কি সঙ্গীত শুনে এসে' সতাই যেন ঘিজেন্রকে 'মধুর তানে
কাতরপ্রাণে' ভাকিল, 'আয় চ'লে আয়, ওরে—আয় চ'লে
আয় আমার পালে';—তিনি সেই ইপ্তিত আহ্বানে
'মহানন্দে'র সেহ-ক্রোড়ে ঢলিয়া পড়িলেন; তিনি গাহিয়াছিলেন 'এমন চাঁলের আলো মরি যদি সেও ভাল, সে ময়ণ
হরগ সমান' তাঁহার সে সার পূর্ণ হইল। তিনি কয়েক বর্ষ
পূর্বে তাঁহার লোকান্তরিতা গৃহলক্ষীকে সকাতরে আহ্বান
করিয়াছিলেন 'যখন আমার সাঙ্গ হবে খেলা, ভূমি আমার
এসো,'—কে বলিতে পারে—কবি যখন তাঁহার 'হেবার যাহা
কিছু প্রের' তাহা ছাড়িয়া যাইতেছিলেন তখন তাঁহার সেই
মহাযাত্রার অকানা আবার পথ আলো করিতে হরবালা
'হ্বরবামে' আসেন নাই ৷ বর্ষয় পূর্ব্ধ হইতে কবি করণ
হরে, আবেগ-কম্পিতকঠে গাহিতেছিলেন—

পরিহরি ভব ত্রথ হংগ যথন মা শারিত অন্তিম শরনে;
বরিষ শ্রবণে, তব জলকলরব, বরিষ ত্রথি মম নরনে।
বরিষ শান্তি মম শরিত প্রাণে, বরিষ অমৃত মম অঞ্চে
মা—ভাগীরবি, জাহুবি ত্রধুনি, কল কলোলিনি গলে।"

•

সাহিত্য-সাধনা

ছিকেন্দ্রলাল মাড্ডাষার প্রতি আন্দৈশন অন্তর্মক ছিলেন।
তিনি তাঁহার প্রাথমিক রচনাগুলি সহত্বে বলিরাছেন:—

"বিলাত যাইবার পুর্বে 'আর্য্যদর্শন,' 'নবাভারত' ইত্যাদিতে লিখিতাম ।···বাল্যকাল হইতেই সলীতে আমার

[•] नरकृक राव : 'विरम्जनान,' शृ. ७७७।

বিশেষ আগতি ছিল। আমার শিতা একজন স্বিব্যাত গারক ছিলেন। প্রত্যুবে উঠিয়া তিনি বর্বন ভৈঁয়ো, আশোরারি ইত্যাদির স্বর ভাঁজিতেন, আমি অভরালে থাকিয়া ভনিতাম। শৈশব হইতেই আমি গান ও কবিতা রচনা করিতাম। 'আর্ব্যাবা'র [১ম ভাগ, ইং ১৮৮২] প্রকাশিত নক্ষরবিষয়ক ইতি আমি হাদশ বর্বে রচনা করি।…১২ বংসর হইতে ১৭ বংসর পর্যাভ রচিত আমার ইতন্তালি ক্রমে 'আর্ব্যাবাণ' নামক প্রভ্রে আকারে প্রকাশিত হয়। তবন কবিতাও লিবিতাম। কিছ তবন কোন কবিতা প্রকাশিত হয়। কর্বতাও লিবিতাম। কিছ তবন কোন কবিতা প্রকাশিত হয় নাই। কেবল "দেবদরে সভ্যা" নামক মংপ্রাইত একটি ক্রিতা 'নব্যভারতে' [ইং ১৮৮০] প্রকাশিত হয়।"

১৮৮২ সনে ১ম ভাগ 'আর্ব্যগাধা' প্রকাশের ১১ বংসর পরে ১৮৯৩ সনে যথন উহার ২য় ভাগ প্রচারিত হয়, তথন বিজ্ঞেলালের "জীবনে রুগান্তর হইয়াছে"—তথন তিনি "আর সেই পাঠাধ্যায়ী, অন্চ, অগতের দ্রন্থ-পরিদর্শক বিমিত বালক নাই।

আৰু বেন রে প্রাণের মত কাহারে বেসেছি ভাল; উঠেছে আৰু সুতন বাতাস, সুটেছে আৰু মুতন আলো।"

ইহার পরবর্তী নর বংসর তাঁহার দান্পত্য-দ্বীবন পরম হবে দ্বিবাহিত হইরাছে। দ্বীবনের এই হুবকর দংশেই তাঁহার দ্বিবাহিত হইরাছে। দ্বীবনের এই হুবকর দংশেই তাঁহার দ্বিবাহেশ হাসির গান ও ব্যক্তবিতা, চারিধানি প্রহসন ('ক্ষি-দ্বতার', 'বিরহ','ত্র্যহন্পর্প', 'প্রায়ন্ডিড'), ব্যক্তবার—'দ্বাহাটে', দ্বীভকাব্য—'মল্ল', ও তিনবানি নাট্যকাব্য—'পাষান্ধ', 'সীতা' ও 'তারাবাই' রচিত হয়। 'তারাবাই' প্রকাশের হই মাস পরে পদ্বীবিয়োগে যেমন তাঁহার দ্বীবনে হুব-হুব্য দ্বভমিত হয়, দ্বুচ দিকে তেমনি তাঁহার নাট্যপ্রহু রচনার বারাও ভিন্ন ক্রপ পরিপ্রহুকরে।

নাট্যকার হিসাবে হিজেঞ্চলাল দেশবাসীর নিকট স্পরিচিত। কিছ কি কি ব্যাপার তাঁহার নাটক লিবিবার প্রস্থান্তির সহারতা করিরাহিল তাহা জানিতে মনে হতঃই কোঁতৃহল জবে। এ বিষয়ে তিনি "আমার নাট্য-জীবনের আরভ্য প্রবদ্ধে বাহা লিবিরা গিরাহেন, তাহা উদ্ধারযোগ্য :—

"বাল্যাববি কবিতা ও নাটক পাঠে আমার অত্যন্ত আসন্তিছ ছিল। এত অবিক ছিল যে বিভাত্যাসকালে বাইরণের Manfred ও Childe Haroldএর ছই Canto এবং মেবদূত ও উত্তরচরিতের কাব্যাংশ আমি মুখছ করিরাছিলাম। বিলাত গিরা ক্রমাগতঃ Shelley পড়িতাম এবং তথা হইতে প্রত্যাগত হইরা ক্রমাগত Wordsworth ও Shakespeare বার বার পড়িতাম; ও শেবোক্ত কবির নাটকের যে যে অংশ কাব্যাংশে শ্রেষ্ঠ বোধ হইত, মুখ্যু করিতাম।

বিলাতে বাইবার পূর্ব্বে আমি 'হেমলতা' নাটক ও 'নীল-দর্শন' নাটকের অভিনয় দেখিরাহিলাম মাত্র, আর কৃষ্ণনগরের এক সৌধীন অভিনেত্যল কর্ত্তক অভিনীত 'সৰবার একায়শী' ও 'গ্রছকার' নামক একবানি প্রহসনের অভিনয় দেবি, আর
Addisonএর Cato এবং Shakespeareএর Julius
Caesarএর আংশিক অভিনয় দেবি। সেই সময় হইতেই
অভিনয় ব্যাপারটতে আমার আসক্তি হয়। বিলাতে যাইরা
বছ রক্ষমকে বছ অভিনয় দেবি। এবং ক্রমেই অভিনয়
ব্যাপারট আমার কাছে প্রিয়তর হইয়া উঠে।

বিলাত হইতে কিরিয়া আসিয়া আমি কলিকাতার রদম সমূহে অভিনয় দেখি। এবং সেই সময়েই বদভাষায় লিখিত নাটকগুলির সহিত আমার পরিচয় হয়। •••

বিলাত হইতে কিরিয়া আসিয়া বাংলা ভাষায় হাক্তরসাত্মক কবিতার অভাব পূর্ণ করিবার অভিপ্রায়ে Ingoldsby Legendsএর অক্করণে কতকগুলি হাসারসাত্মক বাংলা কবিতা লিখিয়া, 'আষাচে' নামে প্রকাশ করি। সেই সময়ে আমি ইংরাজি গান পূব গাইতাম। ইংরাজি গান প্রায় বাঙালী শ্রোতারই ভাল লাগিত না। তখন ইংরাজি গান প্রায় বাঙালী শ্রোতারই ভাল লাগিত না। তখন ইংরাজি গান গাওয়া ছাভিয়া দিয়া বাজালায় গান রচনা করিয়া গাহিতে আরম্ভ করি। বিবাহান্তে অনেকগুলি প্রেমের গান রচনা করিয়া 'আর্য্যাগাণা' দ্বিতীয় ভাগ নাম দিয়া ছাপাই এবং কতকগুলি হাসির গানও রচনা করি। এই হাসির গানওলি অবিলম্মে অনেকের প্রিয় হয় এবং আমি কার্য্যোপলক্ষে কোন নগরে যাইলেই ঐ সকল গান আমায় হয়ং গাহিয়া শুনাইতে হইত। সেগুলি একত্রে গ্রন্থাকারে বহুদিন পরে প্রকাশিত হয়।…

প্রথমতঃ প্রহ্সনগুলির অভিনয় দেখিয়া সেগুলির বাভাবিকতার ও সৌন্দর্ব্যে মোহিত হইতাম বটে, কিন্তু সেগুলির
অল্পীলতা ও কুরুচি দেখিয়া ব্যথিত হই। ঐ সময়ে 'কন্ধিঅবতার' একধানি প্রহ্সন গল্যে পদ্যে রচনা করিয়া ছাপাই।
পরে আমার পূর্ব্ররচিত কতকগুলি হাসির গান একত্রে গাঁধিয়া
'বিরহ' নাটক রচনা করি। এবং জ্বেম সে নাটক প্রার
থিরেটারে অভিনীত হয়। তংপরে উক্তর্মপ 'ত্রাহম্পর্ণ' রচনা
করি এবং উহাও প্রারে অভিনীত হয়। পরে 'প্রায়ন্চিন্ত'
রচনা করি এবং সেধানি ক্লাসিকে অভিনীত হয়।

সক্ষে আমার গন্ধীর রচনাও চলিতেছিল। মংগ্রন্থীত 'সীতা' নাট্য-কাব্য 'নব-প্রভা'র প্রকাশিত হয়। পরে 'পাষাণী' নাটক প্রকাশ করি। তংপরে আমি 'তারাবাই' নাটক প্রকাশ করি।

বে কারণে আমি প্রহসন লিখিতে প্রবৃত্ত হইরাছিলার তাহার অন্থরণ কারণে আমি নাটক লিখিতে প্রবৃত্ত হইরা-ছিলাম। বাকলা ভাষার নাট্য-সাহিত্যে স্বাভাবিকতা ও আব্যানবন্তগঠনে অসাধারণ নৈপুণ্য দেখিতাম, কিন্তু তাহাতে ক্বিছের অভাব বোধ হইত। আমার কাব্যশক্তি (যাহা কিছু ছিল) আমি আমার নাটকে প্রকৃতিত ক্রিতে প্রবৃত্ত হইলাম্।

धाराय Shakespeare अव अवस्था Blank Verses

নাটক নিখিতে আরম্ভ করি। 'ভারাবাই' প্রকাশিত হইবার পরে স্বর্গীর কবি নবীনচন্ত্র সেনকে তাঁহার অনুরোধে এক কাপি পাঠাই। তিনি পড়িয়া এই মত প্রকাশ করেন যে এ শ্তন বরণের অমিত্রাক্ষর—মাইকেলের ছন্দোমাবুরী ইহাতে नारे-- अ व्याखाक्त हिल्द ना । (त्रहे मदक वर्गीय यारेटकन मधुचनत्मत्र रेमववांनी मत्न इहेन-त्य चिम्बाक्तत्र नार्टक अवन চলিতে পারে না। দীর্ঘ বক্ততা অমিত্রাক্তরে চলে। কিন্ত क्षण करपां भक्षर कथा ज शामात मज हरे (जरे हरत) Shakespeareএর অমিত্রাকর Miltonএর অমিত্রাকর হইতে পৃথক্। Of man's disobedience ইত্যাদির একটা বন্ধার আছে। কিছ To be or not to be that is the question--ইহা ত গদ্য বলিলেই হয়। তবে কবিতা বলিয়া ইহা চালান কেন? গদ্যে লিখিলে কি ক্ষতি ইইত। কিছ তংপরেই Who would bear the whips and scorns of time কিখা For in that sleep of death what dreams may come ইহা দশ্তর মত কবিতা ! দেখিলাম যে Shakespeared খানিক গদ্য খানিক পদ্য তথাপি ছুইট খাপ বাইতেছে। কারণ ইংরাজি ভাষায় সেক্সপ অবস্থা আসিয়া-ছিল। কিছ বাঙ্গলাতে "তুমি যদি আস সখি, আমি সেখা যাবো" ইহার পরে "নবীন নীরদ স্থাম নিকুঞ্ববিহারী" এক্সপ রচনা অসহ বিসদৃশ বোধ ছইবে। কিন্তু গদ্যে একত্তে উভয়ই চলে। গদ্যের এখন সে অবস্থা আসিয়াছে।

Carlyleএর মতে সামান্ত হাইতে গভীরতম এমন কোন ভাব নাই যাছা পদা অপেকা গদ্যে স্থলরতরক্সপ প্রকাশ করা না যায়। পদোর বক্ষার গদ্যে দেওয়া যায় কিন্তু গদ্যের স্বাধীনতা ও স্বেচ্ছগতি পদ্যে নাই।

বন্ধিমবাবুর গদ্য অনেক ছলে ত পদ্য। Schiller, Lessing, Ibres, Moliere ইত্যাদি মহা নাট্যকারগণের বহু মহা-নাটক গদ্যে লেখা আছে, তাহাতে ত তাঁহাদের মহিমা কমে নাই। Schillerএর গল্যের ভাষা ও রূপক অন্থপ্রাসে পদ্যের চৌহপুরুষ।

তহপরি নাটক অভিনয় করিবাছ জিনিষ। অভিনয়-বট্টনাগুলি যত প্রত্যক্ষবং হয় ততই ভাল। সেইজয় উক্তিগুলি যত স্বাভাবিক হয় (ভাষার মর্য্যাদা রক্ষা করিয়া অবস্ত) ততই শ্রেয়। লোকে কথাবার্ছা গদ্যে করে না, গদ্যে করে। অভএব পদ্যে নাটক রচনা করিলে উক্তিগুলি অস্বাভাবিক ঠেকিবেই।

এই সকল বিবেচনা করিয়া আমি তখন হুইতে নাটকগুলি গদ্যে রচনা করিতে মনত্ব করিলাম। সেইজত আমি আমার তারাবাইরের পরবর্তা নাটকগুলি (রাণা প্রতাপ, ছুরাদাস, ছুরজাহান, মেবারপতন ও সাজাহান) যথাক্রমে গদ্যেই রচনা করি। কিন্তু কবিতার আমার অত্যধিক আসক্তি থাকার আমি গদ্যের ভাষাকে কবিতার আসনে বসাইবার প্রলোভন

পরিত্যাগ করিতে পারি নাই। অবচ যেবানে সংস্কৃত শব্দ অপেকা প্রচলিত শব্দ বেদী কোরের সহিত ভাব প্রকাশ করে বলিয়া বোৰ হইয়াছে সেধানে প্রচলিত শব্দই ব্যবহার করিয়াছি।

যথন উক্ত গদ্য নাটকগুলি রচনা করিতেছিলাম তথন এক-থানি অপেরা (সোরাব রুস্তাম) পদ্যে গদ্যে রচনা করি। কারণ 'অপেরা'র কথাবার্ত্তা বাডাবিক হওয়ার চেরে ক্রুতিমধ্র করাই শ্রের বিবেচনা করিয়াছিলাম। সে অপেরাখানি অনেকস্থলে Shelleyর অঞ্করণে প্রণয়ন করিয়াছিলাম। বস্ততঃ তাহা কবিতায় আমার অত্যধিক আসক্তির কল। মাঝে মাঝে কবিতায় ছই একখানা নাটক লিখিবার লোভ সংবরণ করিতে পারি নাই।" ('নাট্য-মন্দির,' প্রাবণ ১৩১৭)

প্রাস্থাবলী ঃ শীবিতকালে বা মৃত্যুর পরে প্রকাশিত বিজ্ঞোলালের গ্রন্থগুলির একটি কালাছক্রমিক তালিকা দিতেছি। বন্ধনী-মধ্যে প্রদন্ত ইংরেশী প্রকাশকাল বেছল লাইব্রেরি-সঙ্গলিত মুদ্রিত-পুন্তকাদির তালিকা হইতে গৃহীত। পুন্তকে প্রকাশকাল নির্দেশের অভাব প্রশ্নচিক্ ধারা স্থচিত হইরাছে।

১। আগিগাধা (কবিতাও গান):

১ম ভাগ। ইং ১৮৮২ (৫ মার্চ)। পু. ১১।

২য় ভাগ। ইং ১৮৯৩ (২০ ফেব্রুয়ারি ১৮৯৪)। পু. ৬০ + ৪৬।

? I The Lyrics of Ind. London, Sep. 1886.pp. 79.

৩। একষরে (নক্শা) । १ (২ জাত্মারি ১৮৮৯) । পু. ৩৫

৪। সমান্ধবিভ্রাট ও কব্দি-অবতার (সামান্ধিক প্রহসন)। ১৩০২ সাল (১ সেপ্টেম্বর ১৮১৫)। পু. ১০৩।

৫। বিরহ (নাটকা)। ১৩০৪ সাল (ইং ১৮৯৭)। পৃ. ১০১

৬। আষাচে। বা গুটিকতক রহস্ত গল (ব্যঙ্কাব্য)। ১৩০৫ সাল (২২ ডিসেম্বর ১৮১১)। পূ.১৪৮

৭। হাসির গান। ১৩০৭ সাল (১৮ **জুলা**ই ১৯০০)। পু. ৫১।

৮। পাষাণী (গীতি-নাটকা)। আধিন ১৩০৭ (২৫ সেপ্টেম্বর ১৯০০)। পূ. ১২২।

১। ত্রাহম্পর্শ বা মুখী পরিবার (প্রহসন)। ১৩০৭ সাল (২৩ ডিসেম্বর ১৯০০)। পূ: ১৬।

১০। প্রায়ক্তিত (নাটক)। ৫ মাব ১৩০৮ (১৯ জাহুরারি ১৯০২)। পু. ৯৪।

ক্লাসিক বিরেটারে 'বহুং আচ্ছা' নামে প্রথমে অভিনীত।

১১। মহা (কাব্য)। ১৩০৯ সাল (১৯ সেপ্টেম্বর ১৯০২)। পু. ১০৪।

১২। তারাবাই (ঐতিহাসিক নাটক)। ১৩১০ সাল (২২ সেপ্টেবর ১৯০৩)। পু. ১৫৬।

"এই নাটকের উপাদান টড-প্রশীত রাজহান হইতে গৃহীত।"

১৩। প্রতাপসিংছ (ঐতিহাসিক নাটক)। ? (৮মে ১৯০৫)। পু.১৬২।

১৩১১ সালের 'নবপ্রভা'র প্রথম প্রকাশিত।

>81 The Crops of Bengal. Cal. 1906 (23 March), pp. 23+184.

· ১৫। ছুৰ্গাদাস (ঐতিহাসিক নাটক)। আশ্বিন ১৩১৩ (৫ নবেম্বর ১৯০৬⁻)। পু. ১৯৪।

১৬। আলেখ্য (কংব্য)। ১৩১৪ সাল (৮ জুলাই ১৯০৭)। পূ. ১১২। •

39 | Lessons in English:

Pt. i. (20 Dec. 1907), pp. 7+56.

Pt. ii. (2 May 1908), pp. 1+68.

Pt. iii. (20 Jany. 1909), pp. 1+80.

১৮। স্বৰাহান (ঐতিহাসিক নাটক)। ? (১ মার্চ ১৯০৮)। পৃ.১৭৬।

১৯। সোরাব রুভাম (নাট্যরঙ্গ)। ১৩১৫ সাল (২৩ অক্টোবর ১৯০৮)। পৃ. ৯২।

"এই নাটকের গল্পটি জামি কাড'ডিসির 'শাহনামা' নামক প্রস্থ হইতে লইয়াছি।"

২০। শীতা (নাট্য-কাব্য)। ? (৬ নবেম্বর ১৯০৮)। পু. ১২৮।

ফাস্কন ১৩০৭—পৌষ ১৩০৯ সালের 'নবপ্রভা'য় বারাবাছিক ভাবে প্রকাশিত।

২১। মেবার পতন (ঐতিহাসিক নাটক)। ? (২৭ ভিসেম্বর ১৯০৮)। পৃ. ১৭১।

২২। সাজাহান (ঐতিহাসিক নাটক)। १ (৮ আগষ্ট ১৯০৯)। পূ. ১৬১।

২০। চক্রপ্তার (নাটক)। ? (২৪ আগষ্ট ১৯১১)। পু. ১৬৭ চ

২৪। পুনর্জন্ম (প্রহসন)। १ (১৬ সেপ্টেম্বর ১৯১১)। পু. ৩৭।

২৫। পরপারে (সামাজিক নাটক)। ? (২৮ জাগ**ঃ** ১৯১২)। পু. ১৮১।

২৬। ত্রিবেণী (খণ্ডকাব্য)। ২৫ প্রাবণ ১৩১৯ (৫ সেপ্টেম্বর ১৯১২)। পু. ৮৫+২

২৭। আনন্দ-বিদার (প্যার্ডি)। १ (১৬ নবেম্বর ১৯১২)। পু. ৬৪।

[মৃত্যুর পরে প্রকাশিত]

২৮। ভীয় (নাটক)। ? (৮ জাত্রারি ১৯১৪)। পু. ২৩৬।

২৯। কালিদাস ও ভবভূতি (সমালোচনা)। ১৩২২ সাল (১০ আগষ্ট ১৯১৫)। পূ. ১৬১।

ইহা প্ৰথমে ১৩১৭-১৮ সালের 'সাহিত্যে' বারাবাহিক ভাবে প্রকাশিত হয়। ৩০। গান। ১ আখিন ১৩২২ (২ অক্টোবর ১৯১৫)। পু. ১৯৯।

অন্যুন ২৩০ট গানের সমষ্টি।

৩১। সিংহল বিজয় (ঐতিহাসিক নাটক)। ২৩ আছিন ১৩২২ (১৩ অক্টোবর ১৯১৫)। পূ. ২৩৬।

৩২। বঙ্গনারী (সামাজিক নাটক)। ১৩২২ সাল (১০ এপ্রিল ১৯১৬)। পূ. ১৪১।

"বর্গীর পিতৃদেব এই নাটকখানি তাঁছার মৃত্যুর ২।৩ বংসর পুর্বে প্রণয়ন করেন। ... তিনি ইছার এক অংশ লইয়া 'পরপারে' রচনা করেন।"

দ্বিজেন্স-গ্রন্থাবলী। বঙ্গীয়-সাহিত্য পরিষং:

১ম ভাগ (কবিতাও গান)। আহিন ১৩৫৩ (ইং ১৯৪৬)। পূ. ৭৩৬।

স্চী: আর্ম্যাপা, ১ম-২য় ভাগ; আযাচে; হাসির গান; মন্ত্র; আলেখা; ত্রিবেণী; গান; The Lyrics of Ind.

গান্ত-রচনাবলী ঃ সাময়িক-পত্রের পৃঠায় পুস্তকাকারে অপ্রকাশিত দিক্ষেলালের বহু গদ্য-রচনা বিক্ষিপ্ত বহিয়াছে। এগুলি সংগৃহীত ও পুস্তকাকারে প্রকাশিত হওয়া উচিত। এই শ্রেণীর রচনার একটি নির্ভরযোগ্য তালিকা আমি ১৩৫৪ সালের ১ম-২য় সংখা৷ 'সাহিত্য-পরিষং-পত্রিকা'য় প্রকাশ করিয়াছি।

প্রাবলী ও এম. এ. পরীক্ষাদানের প্রাক্তালে রাজনারায়ণ বস্থ ও তংপুত্র যোগীন্দ্রনাথ বস্থকে লিখিত হিক্তেলনাথের তুইখানি পত্র আমি ১৩৫১ সালের তয়-৪র্থ সংখ্যা 'সাহিত্য-পরিষং-পত্রিকা'য় প্রকাশ করিয়াছি। দেবকুমার রায় চৌধুরী প্রণীত 'হিক্তেক্সলালে'ও অনেকগুলি পত্র বা পত্রাংশ স্থান পাইয়াছে।

. বিজেন্দ্রলাল ও বাংলা-সাহিত্য

হিজেন্দ্রলাল প্রধানতঃ নাট্যকার এবং হাসির গান ও বদেশী গানের রচয়িতা হিসাবে ব্যাত। তিনি জীবিতকালে বীর বাজ্ঞিয়ের প্রভাবে কবি-ব্যাতির যে সৌবশিবরে জারচ ছিলেন, তাঁহার মৃত্যুর পর নানা কারণে সে প্রতিষ্ঠাভূমি হইতে তিনি বিচ্যুত হইরাছিলেন, প্রধান কারণ রবীজ্ঞনার্থ। রবীজ্ঞপ্রতিভার দীপ্তি অত্যবিক উল্ফল ছিল বলিয়া অপেন্দান্থত হীনপ্রত. স্থ্যোতিছেরা সাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে পারেন নাই। রবীজ্ঞনার্থ-ছিজ্জেলাল বিরোধের কলও ছিজ্জেলালের পক্ষে কতিকর হইরাছিল। ছিতীর কারণ, ছিজ্জেলালের অপ্রিয় সত্যভাষণের সর্ব্বনাশা অভ্যাস। তিনি বন্ধু মেরুদ্ধতের লোক ছিলেন, অত্যবিক নমনীয়তা বা ছাকামি বরহান্ত করিতে পারিতেন না; কঠোর হতে ইহার বিরুদ্ধে ভিনি ক্ষণাশাত

করিরাছেন, কলে তাঁহার শত্রুবৃদ্ধি হইরাছে। যে কারণেই হউক, 'আবাচে,' 'মজ,' 'আলেখ্য' ও 'হাসির গানে'র কবি যে প্রায় অপরিচিত থাকিরাই বিশ্বত হইতে বসিয়াছেন, ইহা বাংলাদেশ ও সাহিত্যের পক্ষে ছুর্ডাগ্য সম্পেহ নাই।

ধিক্ষেপ্রাল কবিভার ও গানে ছন্দের, ভলির ও খ্রের বিবিধ বৈচিত্রা সম্পাদন করিয়া গিয়াছেন। সাছিত্যের খনেক বিভাগে তিনি প্রথম পথপ্রদর্শকের গৌরবও দাবী করিতে পারেন। নাটকের গদ্য কিরূপ হওয়া উচিত সে সম্পর্কে তাঁহার নিজের গবেষণা আছে, এবং এই গবেষণার ফলে তিনি নিজম্ব এক ভঙ্গির প্রবর্তন করিতে পারিয়াছিলেন।

দিক্ষেলালের একান্ত বৈশিষ্ট্য তাঁহার পৌরুষ।
"কাপুরুষতার প্রতি যথোচিত দ্বণা এবং বিভারের দারা তাহা
গৌরববিশিষ্ট।" ইহাই প্রধানত: বিপরীত-প্রকৃতিবিশিষ্ট রবীপ্র-মুগের বাঙালী সমাকে তাঁহাকে অপ্রির করিয়াছিল। আৰু যুগপরিবর্ত্তন হইয়াছে। আশা করা যায়, স্বাধীন দেশে হিক্ষেপ্রলোল পুনরায় সমানৃত হইবেন।

আলোচনা

তুর্গাদেবীর বোধন ও বিসর্জন শ্রীযোগেশচন্দ্র রায়, বিভানিধি

গত মাধের প্রবাসীতে শ্রীরান্ধমোহন নাথ শারদীয়া পূজার অপীভূত দেবীর বোধন ও বিসর্জন সথকে আসামের বহু তথ্যপূর্ব বুডাক্ত লিখিরাছেন। বহুদিন পূর্বে তিনি "ময়নামতী গানে"র কদলীরাজ্য ও বিজয় নগর আবিক্ষার করিয়াছিলেন। তাইার সেই ওথ্যাত্মস্কানে আমি চমৎকৃত হইয়াছিলাম। কামকুল অত্মস্কান সমিতির ইংরেজী মাসিক পত্রিকায় তিনি আসামের নানা স্থানের পুরাতন অভ্যাতপূর্ব মন্দিরের বিবরণ লিখিয়াছেন। তিনি ইঞ্জিনীরার; আসামের নানাস্থানে পুরিয়াছেন, সামাজিক আচার-ব্যবহার জানিয়াছেন। সেই জ্ঞানেরই কিঞ্চিৎ মাধ মাসের প্রবাসীতে আমাদিগকে ভ্রনাইয়াছেন।

এই প্রবন্ধে তিনি বছবিধ কার্যের কারণ নির্দেশ করিয়া-ছেন। জামি আসামের পুরাতন কিংবা বর্তমান ইতিহাস কিছুমাত্র অবগত নই। কিছু তিনি তাহাঁর অনুমানের যে সকল হেতু প্রদর্শন করিয়াছেন, আমার নিকট সে সকল পর্যাপ্ত বোধ হুইল না।

১। প্রথমে বোধন দেখি। আখিন ভক্লা ষ্ঠার সায়ংকালে দেবীর বোধন হয়। মুগা বিশ্বকল-মুক্ত শাধার বোধন
হয়। পার্থে নবপত্রিকা স্থাপিত হয়। তথন তাহার স্নান,
পুজা কিছুই হয় না। সপ্তমীতে নবপ্রত্রিকা স্নানের পর
বস্ত্রায়ত করিয়া প্রতিমার পার্থে স্থাপিত ও পুজিত হয়।
অতএব সপ্তমী হইতেই নবপ্রত্রিকার প্রয়োজন আসিতেছে।
ষ্টার সায়াহে স্থতিকা-গৃহে কে ক্ষর্প্রহণ করে? নাথ মহাশয়
বলেন নাই। যে মুগা কল্মুক্ত বিহ্নশাধার বোধন হয়, পে
শাধা নবপত্রিকার অন্তর্গত নয়। ইইট মুক্ত বিহ্ন-ফলের
প্রয়োজন কি? নয়ট শাধা বা পত্রের মধ্যে রস্থা, কচু, হরিদ্রা,
মান ও ধাত্ত এই পাঁচটি ফ্রম্কাত। হরিদ্রা থাত্তরব্য
বলিতে পারি না। অত চারিটি,—ক্ষরত্রী, বিহ্ন, শাভ্রম ও

অশোক। নাথ মহাশয় ইহাদের আয়ুর্বেণীয় গুণ উল্লেখ করিয়াছেন। সে সময় আখিন মাসে বিশ্ব পাকে না। অপক বিশ্ব অতিশয় বারক; কোষ্ঠথদ্ধ করে। দাড়িমও পাকে না। দাড়িমের কষায় রস বারক। ছইটই গভিনীয় হিতকর নয়। অশোকও আয়ুর্বেদে কষায় ও গ্রাহী। জয়দ্বী আমার অজ্ঞাত। আসামের কোন্ কাতি এত দ্রব্যগুণ কানিয়া নবপত্রিকার অভ্যাত করিয়াছিল তাহা কানিতে কোতৃহল হয়। বোধন আখিন ভক্লা ষষ্ঠীতে হয়, তাহার হেতু কি ? সায়ংকালে হয়, তাহারই বা হেতু কি ? দেবীপুরাণে নবপত্রিকা নাই, নবছগা আছে। মনে হয় নবপত্রিকা বিশ্ববাসিনী দেবীর নয় মাসের নয়টি প্রতীক। দেবী নয় মাস গর্ভবতী থাকেন, এইয়প কোন ভাব হইতে নবছগার উৎপত্তি ছইয়া থাকিবে।

২। দেবীর বিসর্জন। প্রতিমার বিসর্জনের সহিত নব পত্রিকারও বিসর্জন হয়। যে সন্তান রক্ষার ক্ষা ভূতাপসরণ হইয়াছে, প্রস্থৃতির আবশুক ঔষণ সংগ্রহ হইয়াছে, সেই নব-পত্রিকা তিন দিন পরে কলে নিকিপ্ত হইল, তাহার সন্তানের দশা কি হইল ? ইংগর তুল্য নিঠুর আচরণ আর কিছুই হইতে পারে না। নবপত্রিকা হুগাখানীয় হইয়া পুক্তিত হইয়া থাকেন, ইহা বাঁকুড়ায় শুনিয়াছি। যাহার আবাহন ও বিসর্জন হয় তাহাকে ক্ষ্যিকর্যের অস্বীভূত করিতে পারি না।

নাথ মহাশর লিখিয়াছেন, "বছতঃ বোধন তথা ছুর্গাপুজাও শবর জাতির ক্র্যিন্টংসব।" আসামে শবর জাতি আছে কি ? আর যদি থাকে, উৎসব আরে না পুরা আরে, তাহা লাই না জানিলে কার্য-কারণ সম্বন্ধ ব্রিতে পারা যার না। কার্য-কারণ সম্বন্ধ ব্রিতে পারা যার না। কার্য-কারণ সম্বন্ধ না থাকিলেও ছুই-ই সমকালীন হইতে পারে। কে শবর জাতিকে আখিন মাস বলিয়া দিবে ? কে তাহা-দিগকে আখিন ভক্লা দশমী বলিয়া দিবে ? আরও অনেক তর্ক আছে; একটার উল্লেখ করি। কামরূপের পূর্বনাম জ্যোতিষপুর নর, প্রাগজ্যোতিষপুর। এই নাম কত বংসর হুইতে আসিয়াছে ? কারণ, মহাভারতে ও রামায়নে এক প্রাগজ্যোতিষপুরের উল্লেখ আছে। সে নগর ভারতের উল্লেখ বিকে ছিল না, উল্লৱ-পশ্চিম দিকে ছিল। ইতি।

নববঙ্গের বয়স্কদের প্রাথমিক শিক্ষার কার্য্যকরী পরিকম্পনা

ঞ্জীজীবনময় রায়

The measure of illiteracy is no adequate measure of the prevailing ignorance.—M. K. Gandhi.

া বাংলাদেশে তথা ভারতে বয়ম্বদের ভোটাবিকার লাভ
মাবীনতার একটি মৃল্যবান দান। এই ভোট যাতে মাহুষে
ম-ইছার, মছেম্দচিন্তে এবং খ-জ্ঞানে দিতে পারে, পরদৈশদী ভোটাহুগমন না হয়, তার ব্যবস্থা ভাতীয় গবর্ণমেন্টের অগৌণে
করা কর্ত্তব্য। কেন, কার এবং কিসের জন্তে ভোট দিছি,
তাতে কি লাভ বা ক্ষতি হবে, ভোটারের সে বিষয়ে স্থশাই
বারণা নিজের থাকা দরকার।

কিছ আমাদের দেশের জনসাধারণ যে গভীর অঞ্চানতার ব্দব্বকারে ভূবে ব্লাছে তা প্রায় ছর্ভেদ্য। এই জনসাধারণের মৰো লিখতে ও পড়তে অল্লাৰিক জানে এমন মাতুষও আছে। বোৰবার ক্ষমতা এবং সে বোৰকে করবার ক্ষমতায় আমাদের দেশের মাতৃষ কারো চেয়ে কম নয়। কিছ এই যে নানা বিষয়ে জান, সেই জানের অভাবে দেশের লোক সভ্যবগতের সম্পদসন্তার থেকে বঞ্চিত হয়ে রয়েছে। এ জ্ঞান যে মাত্র সামান্ত লেখাপড়া শিখিয়ে দেওয়া যাবে না তা আমাদের লেৰাপড়া শেৰা মান্থযদের পরীক্ষা করে দেবলেই বোৰা যাবে। মহাত্মা গানীর উক্তি "Literary itself is no eduication"—যে কত সত্য, কাৰু করতে গেলে পদে পদে তা বুৰতে পার। যায়। স্বতরাৎ বর্তমানে এই মোহনিদ্রায় অভিভূত বিপুল জনশক্তিকে জাগিয়ে দেশগঠনের কাজে লাগাতে হলে, তাদের লেখাপড়া শিখিয়ে জ্ঞানের আলোকের রাজ্যে পৌছে দিতে অসম্ভব দীর্ঘকাল অপেক্ষা করে থাকতে ছবে। চারদিকে শত্রুপরিবেষ্টিত অবস্থায় সে দীর্ঘস্ত্রতারূপ विलामित बाबादित बरमत (नरे। मच्छि वयस्पत शक्क. लियोगफोरक भीगञ्चान भिरम, जारमन मर्कावियस खळानजा দূর করার প্রয়োজনে শিক্ষা দেওয়া দরকার এবং সে শিকা থি আমরা মুখে মুখে দিই তাহ'লে বই পড়িয়ে (मर्गात्नोद्व क्रिय सम्बंध दिनी धवर धूवह जहत्व छ। त्मर्गात्नो

স্তরাং অক্ষর পরিচর করে, তাদের জ্ঞান দান করবার ছুল্চেষ্টা না করে মুখে মুখে, নিম্নলিখিত নানা উপারে তাদের অজ্ঞানতা পূর করাই প্রথম, প্রধান এবং অগোনে কর্ত্তর। এর উপর, তাদের নিজেদের উৎসাহ জাগলে, তারা অনেকেই তাদের জতে লেখা খবরের কাগলটুকু পছতে পারে এমন একটু লেখাপড়া শিখতে চাইবে এবং ততটুকু ব্যবস্থা অবস্থা থাকবে।

১। এই শিকা প্রচারের করে কাতীয় গবর্ণমেন্টকে প্রামে থামে বয়ক কনগণের শিকাকে নিয়ন্ত্রিত প্রমশিল্পের সঙ্গে যোগযুক্ত করতে হবে। ক্ষার্ত্ত, অন্নচেষ্টায় অনভচিত্ত কনগণের ক্যালান্তি এবং নিকেকে ও পরিকানবর্গকে স্থা রেখে সংসার্যান্ত্রার ব্যবস্থা করে না দিলে তারা শিকার দিকে মন দিতে পারবে না। এই উদ্বেশ্ত নিয়ে এবং বাধ্যতামূলক শিকাপ্রবর্তন করতে হলে:—

২। কয়েকট থাম নিয়ে এক একট মণ্ডল স্থির করতে হবে। প্রতি মণ্ডলের ক্ষমে একট করে শিক্ষা প্রচারকের দল থাকবে এবং তাদের এক একজন এক একট বিশেষ বিধয় সম্বদ্ধে শিক্ষা দেবে।

ভ। আপাতত প্রধান চারটি বিষয় শিক্ষা দিতে হবে।
 যথা—

(A) (i) দেশের কথা। তাতে থাকবে (a) দেশের অতীত গৌরবের ইতিহাস। (b) স্বাধীনতা ও কংগ্রেস। (c) দেশের কাব্দে কনগণের স্থান। (d) দেশের শাসনব্যবস্থা এবং বর্ত্তমান পরিস্থিতি। তার সমস্থা ও তার সমাধানের উপায়। (e) কাতীয় পতাকা এবং তার ইচ্ছৎরক্ষায় দেশের কনগণের কর্ত্তব্য। দেশের প্রতি মাস্থ্যব্যর মনে দেশের উপর ভালবাসা যাতে হয় এবং একতা ও নিয়্মান্থ্যপ্রতিতা যাতে বাড়ে সে দিকে প্রধান দৃষ্টি দিতে হবে। দেশের সংগঠনে দেশের ক্ষনগণই যে প্রধান, সেই বোধাইকু কাগাতে হবে।

- (ii) দেশের ভূ-বিবরণ এবং পৃথিবীর কথা মোটামুট। দেশের উদ্ভিদ, প্রাণী, সম্পদ।
 - (iii) দেশের শিলগঠন ও তাতে দেশের ব্দনগণের লাভ।
- (iv) চাষের উরতির কথা। বৈজ্ঞানিক উপারে ধান ও তরকারির চাষ।
- (B) (i) বাছ্যরকা ও শরীরুগঠনের উপার। পরিচ্ছন্নতা, নিমমান্ত্রবিতা, সময়ের জ্ঞান ও তার সন্থাবহার।
- (ii) ম্যালেরিরা, কলেরা, বসন্ত, টাইকরেভ প্রস্থৃতি থেকে বাঁচবার উপার।
 - (iii) নাগরিকের কর্তব্য ও দায়িছ।
 - (iv) সাবারণ বৈজ্ঞানিক তত্ব।
 - (C) बूट्य बूट्य पतकाती रिजाय-वात्र, विरवात्र, खन, खात ।

^{• &}quot;গাখীৰা ক্ৰায়, "by transmitting such general information by word of mouth, for one imparts ten times as much in this manner as by reading and writing." M. K. G.—Harijan 13. 7. 37.

- (D) (ii) দেশের প্রধান প্রধান মাস্থ্যদের পরিচয়। স্বাতীর সদীত।
- ৪। প্রতি থ্রামে ভাবশ্রক অন্থারী একাবিক রাতপাঠশালা থাকবে। সেধানে থাকবে ভাতীয় পতাকা;
 পড়া, লেখা এবং হিসাব শেখানোর ব্যবস্থা থাকবে। সামরিক
 ডিলের ব্যবস্থাও থাকবে। কাজ শেখ হলে ভারা রোজ
 ভাতীয় সঙ্গীত গান করবে পতাকার তলে সমবেত হয়ে এবং
 পতাকা অভিবাদন করে বাড়ী যাবে। এই কাজে মঙ্গের
 ক্লেও কলেজের ভেলের। সাহায্য করতে বাব্য থাকবে।
- ৫। (।) প্রত্যেকটি বিষয় চলচ্চিত্র থোগে প্রত্যক্ষ করে
 শেপানো হবে।
- (ii) বিজ্ঞানের প্রক্যেকট বিষয়ে সঙ্গে সঙ্গে পরীকা করেও দেখানো হবে।
- (iii) অতীত ও বর্ত্তহান, প্রধান প্রধান মাত্র্যদের পরিচয় আলোকচিত্র এবং চলচ্চিত্র যোগে বলা ছবে।
- (iv) দেশের রাজ্যবাবস্থা চলচ্চিত্রে অভিনয় সহযোগে প্রত্যক্ষ করানো হবে।
- ৬। দেশের বৈজ্ঞানিকদের এবং নির্বাচিত লেখকদের সাহাযো, গবরেণ্টের নির্দ্ধণ ও পরিচালনায় প্রত্যেকটি বিধরে স্নিষ্টি এবং সংক্ষিপ্ত অপচ আবস্তুক জ্ঞান দেবার মত যথেষ্ট বস্ত সরিবেশিত করে সরল, সর্বজ্ঞনবোধা ভাষায় বই লেখানো হবে। শিক্ষাপ্রচারকেরা এই বইয়ের সাহাযো কপকতা করবেন। এ সম্বন্ধে বৈজ্ঞানিকশ্রেষ্ঠ অধ্যাপক সত্যেক্সনাথ বস্তকে সভাপতি করে এবং বদীয় বিজ্ঞান-পরিষদকে এ বিষয়ে ভারার্গণ করে কাজ স্কুক্র করা যেতে পারে। ইন্ডিয়ান ই্যাটিষ্টিকালে ইন্সটিট্যুটে পরীক্ষিত সরল বাংলা শক্ষপুঞ্জ ব্যবহার করে বই লেখা আরম্ভ করা যায়।

প্রত্যেকট লেখার মূল হার হবে দেশের উপর নিষ্ঠা কাগানো। দেশের উপর নিষ্ঠা কাগলেই অন্তান্ত কাজ সহজ হয়ে আসবে এবং অপরাধপ্রবণতাও কমবে।

৭। গবর্ণমেন্ট লোকশিক্ষার উপযোগী করে এবং দেশ ও রাজ্যব্যবহা সম্পর্কে জনগণকে ওয়াকিকহাল রাধার এবং দেশের বিষয়ে উৎসাহ জ্যাবার জভে সরল সর্বজনবোধ্য বাংলার বড় বড় অক্ষরে ছাপা একটি ববরের কাগজ (আপাতত সাপ্তাহিক) প্রকাশ করন। এতে (i) দেশের মোটাম্ট ববর, (ii) চাষ-আবাদ, (iii) সরল বৈজ্ঞানিক প্রসঙ্গ, (iv) দেশের প্রমশিল ও বাণিকা এবং তাতে জনগণের জংশ ও অধিকার, (v) আদর্শ প্রাম গঠনের উপার ও তাই নিমে রচিত শিক্ষাপ্রদ গল্প। (vi) বিদেশের কথা ইত্যাদি থাকবে। বলীর বিজ্ঞান-পরিষদের উপর এর পরিচালনার ভার দেওরা যেতে পারে এবং শ্রেষ্ঠ সাহিত্যিক ও দেশের প্রেষ্ঠ চিন্তাশিল লেখকেরা একে উপর্ক্ত সংগঠনবৃদক বজ্লে পরিণত করতে পারেন। [ইতিয়ান ক্রাচিস্টিক্যাল ইন্টিট্টাটের শসরল শক্ষুক্ত এ

বিষয়ে ফালে লাগতে পারে; এবং পরে তাকে ব্যবহারের আবস্তকে জ্বেম বাভিন্নে, কমিরে পরিবর্তিত করে নেওরা যেতে পারে।

৮। ব্যাপক ভাবে ছায়াচিত্র, আলোকচিত্র এবং চলচ্চিত্র
দেশের সমন্ত শিক্ষার কালে ব্যবহার করতে হবে। নইলে
জ্ঞান চিরকাল যেমন ছিল তেমনই অবান্তব বেকে যাবে।
মুসম্বদ্ধ এবং মুপরিকল্পিত ভাবে বিশেষ্ঠ এবং মুলেবকদের
দিয়ে বই লেবালে তাকে চলচ্চিত্রে দ্ধুপ দিতে বেশী সময়
লাগে না। [এ সম্বদ্ধে, চলচ্চিত্রে প্রচারকার্ব্যে নিপুণ এবং
অভিজ্ঞ শ্রীযুত পি. এন রায়কে ভার দিলে কাক সহকে এবং
অল্প সময়ে হবে।]

১। প্রত্যেকটি নৈশ-বিভালয়ের নিজম্ব ছায়া-ছবির ব্যবস্থা থাকবে। বিশুদ্ধ আনন্দ দান ও জীড়া-কোড়ুকের ও নৃত্যন্তরেও ব্যবস্থা থাকবে। বেডিওর ব্যবস্থা রাখতে হবে, এবং গ্রামের লোকের শিক্ষার উপযোগিতাতে বিশেষ প্রোগ্রাম থাকবে।

১০। প্রত্যেকট প্রামে যথাপরিমাণে কুটর ও কাইরী শিল্পের ব্যবস্থা করতে হবে। যৌথ চাষী কার্পের ব্যবস্থা করে বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে চাধের উন্নতির উপায় শেখাতে হবে।

এইজন্ত পরীকাৰ্লকভাবে আপাতত কলকাতা থেকে প্রায় ৪০ মাইল দূরে দূরে, ব্যাপক বৈদ্যতিক ববেছা করে, তিনটি উল্লিখিতরূপ মঙলে কান্ধ প্রক্ত করে দেওয়া হোক। কান্ধ পুরু করে দিলেই তবে কান্ধের ক্ষেত্রে বাধাবিপত্তি এবং প্রযোগস্থবিধার ছদিস পাওয়া খায়। ভালায় বসে সাঁতার শিবে জলে নামতে গেলে জলে নামতে দেরি হবে এবং জলে নেমে জলে ভুবতে দেরি হবে না।

গবর্ণমেন্টের প্রধান লক্ষ্য থাকবে এবং প্রাথমিক কর্মণ্ড হবে এইটে দেখা যে পরীক্ষা সংক্রান্ত মন্তলে কোনো সক্ষম বয়স্ক (১৬ থেকে উর্ধ্ব) মাত্ম্য (প্রীও পুরুষ) যাতে বেকার বা জলস না থাকে। তাঁলের বিতীয় কর্ত্ব্য হবে—যাতে প্রত্যেকট শ্রমিক, তা সে যে ভাবেরই হোক; ১। উপযুক্ত মজুরী পাষ; ২। আহার্ষ্য ও বন্ধ পায়; ৩। ত্মন্থ থাকবার ত্থোগ পায়; ৪। শিক্ষা পায়; ৫। সন্মান পায়। এক্ষ্য প্রত্যেক প্রামে উপযুক্ত সংখ্যক শ্রমশিল প্রতিষ্ঠিত করতে হবে।

এই উদ্ধেশ্য প্রত্যেক মণ্ডলের প্রত্যেকটি ব্যক্তির মাম রেকিট্রিভুক্ত থাকবে এবং তাদের অভাব-অভিযোগ সম্বন্ধে গবর্ণমেন্টকে অবহিত হরে সেই মণ্ডলগুলির সমস্ত মাত্ত্বকে স্বচ্ছন্দে রাখবার বাবছা করতে হবে। আবার সেই সঞ্চে তাদের নিয়মান্থবর্গী, পরিচ্ছর এবং প্রতিবেশীর প্রতি সঞ্জনম থাকার অভ্যাস করাতে হবে।

গ্রামের যে সমস্ত বয়জেরা গবর্ণমেণ্ট প্রতিষ্ঠিত কলে, কার্দ্ধে বা গৃহশিলে নিযুক্ত না হয়ে অঞ্জ কাক করবে তারাও প্রত্যেকে রেশিষ্ট্রভুক্ত বাকবে এবং উক্ত সর্ব্ব বিষয়ে গবর্ণমেন্টের অভিভাবকৃতার আশ্রয় পাবে। ঐ মওলে কোনো সক্ষম মান্ত্ৰকে গ্ৰণ্মেক বৈকার বাকতে লেবেন না। অদ্য ভবিত্ততে, দেশের বিপদ নিবারণ এবং সম্পদহৃতির অভে, ব্যাপকভাবে উংপাদনের আবশুক্তা বানিরে এসেছে। এবন আর সেই পুরাতন দীর্বত্ততা বা চিরন্তন নিজিয় পরিক্রনা-বিলাসের সময় নাই। কোমর বেঁবে কাকে এবনি নেমে না পড়লে এত সাবের বাবীনতা সমূলে বিনক্তি। কাকে নামলেই কাক নিকের পণ্ দেখাবে।

ঐ মওলে ভিকার ব্যবসা একেবারে উচ্ছেদ করতে হবে।
দেশের মজাগত আলস্থ এবং নিকর্মতাকে আবস্তক হলে
কঠোর আইন করেও দূর করতে হবে। এই স্থ্যে বয়ক্ষম
যুদ্ধ এবং যে সমন্ত মেরে প্রমশিলে নিযুক্ত হবে না তাদের
খরে বসে করার মত হাতের কাকের ব্যবহা করে দিতে হবে,
এবং গবর্ণমেন্ট সেই সব কাক কিনে নেবেন। নিকের
উপার্জনে, আল্পসন্থানে এবং আল্পাক্তিতে নির্ভর করতে
শেখাতে হবে।

বছর্গাবধি পরম্থাপেকী বিশ্বল বভাবের অলসচিত্ত ভাতিকে কর্মপ্রস্তিতে ভাগাতে হলে কঠোর নিয়মান্থবর্তিতার আবক্তক। পর্বন্মেন্ট দেশের ভবিশ্বং কল্যাণের দিকে চেরে সামরিক বিধানে ঐ মঞ্জনগুলিকে পরিচালনের ব্যবস্থা করবেন। দেববেন, অতি অল্পকালের মধ্যেই তারা এই ডিসিপ্লিনে অভ্যন্ত হরে উঠবে এবং এরই অন্তক্তরণে প্রাম সংগঠনের চাহিদা চারদিকে বেভে যাবে।

প্রত্যেক মন্তলে অন্ধত শিশু, রোপী ও বৃদ্ধদের ছ্বের ব্যবহার অন্তে গবর্ণমেন্টের অধীনে পরিচালিত গোরাল এবং গোচারণ ক্ষেত্র অবস্ত থাকবে। প্রত্যেক মন্তর্গকে ব্যাবিম্কু করতে হবে এবং প্রত্যেক মাস্থ্যের ক্ষ্ত চিকিৎসার স্থ্যবন্ধ্য রাবতে হবে; নইলে সাধারণ ক্ষতির সঙ্গে শ্রমিকশঞ্জিরও অপচন্ন ঘটবে।

ছ' মাসের মধ্যে এই শিক্ষা সম্পূর্ণ হরে ববরের কাগক পভার মত বিছা তারা পেতে পারবে।

এ ব্যত্ত যে অর্থের আবস্তক হবে তা অনেক রকমে সংগৃহীত হতে পারে—করেকট প্রভাব করছি।

১। কর্মীনিবিংশেষে নিরোক্তগণ প্রত্যেক মকুরি বাবদ ২০০ ছই পরসা বেদী দেবেন। তাকে মঙলের স্বাস্থ্য চাদা বলা হবে। এর দারা উপযুক্ত চিকিংসাদির ব্যবস্থা হবে।

২। বাংলাদেশের প্রত্যেক বাস ট্রামের টকিটের মূল্য ধে এক পরসা করে বেশী দিতে হবে। তাকে বলা হবে সংগঠন চাঁদা।

 । গবর্ণমেন্ট বাংলার বৃত্ব বাজারে পুঁজি করা কোটি কোট টাকা বারের অভে চাইতে পারেন। উপর্ক্ত ক্ল কবুল করলে লে টাকাও কম হবে না। ৪। সভাবে অভত এক্দিন হু' ঘন্টা মঙলের প্রত্যেক সমর্থ (১৬ থেকে ৪৫) মান্ত্রকে প্রায় পরিভার পরিছের করার কাল করতেই হবে।

এই সঙ্গে বলা দরকার যে ১৮ বছর থেকে ৩৬ বছরের যত মাছ্য থাকবে, তাদের সামরিক শিক্ষা দিতে হবে।

কোনো অতিবিরাট পরিকল্পনার জন্তে বসে না থেকে এই রকম ছোট পরিকল্পনা নিরে কাব্দে নামবার উৎেক্তে এখনি প্রস্তুতির কান্ধ সূক্ষ করা হোক। এর ক্তে প্রস্তুত হতে ছ' মাসের বেশী লাগার কথা নয়।

এই च्रत्व वांश्लारम् मश्रिक्तत श्रवान चचतात्र मृत कतात्र ক্ৰা মনে রাবতে হবে। বাংলার চৌত্রিশ হান্ধার গ্রাম আৰু পরিত্যক্ত খাশান। গ্রাম যদি ক্রমে শৃষ্ক হয়ে যায় তবে সংগঠন হবে কাদের নিয়ে ? সামান্ত কলনাশক্তি খাটালেই আমরা দেশতে পাব যে কলকাতাটা সমন্ত বাংলাদেশের দেহে একটা বিষাক্ত কার্বাংক্লের মত ক্রমে ক্ষীত হয়ে সমন্ত বাংলার রস রক্ত স্বাস্থ্য বিভ এবং খাত আকর্ষণ করে বাংলাদেশকে শ্বাশানে পরিণত করেছে। পাগলের মত সকলে সব নিয়ে ছটেছে কলকাতার দিকে—টাকা টাকা টাকা। নীতিধর্ম মনগ্রন্থ रम्भ अवर मर्भन्न कन्गांग हुरलाम्न रामा। अमनि करन মানা প্রতিষ্ঠান, **বর্ষ ও** সংস্কৃতির জাধার এই কলকাতাও যে ধ্বংসের মুখে চলেছে তা আমরা চোর মেলে দেবি না। তারও সমস্তা এবং বিপদ क्रायह বেড়ে চলেছে। এমন কি শয়তানকে আমরা প্রস্কু করে তুলছি একদিন অকমাৎ একে হিরোশিনায় পরিণত করতে। দেশ সংগঠন এবং কলকাতার ক্রমবর্দ্ধমান পুঞ্জীতুত সমস্থা সমাধানের প্রধান উপায় কলকাতাকে বিকেক্সিড (decentralize) করা। অর্থাৎ কলকাডা শহরকে সমস্ত বাংলাদেশময় ছড়িয়ে দেওয়া। পাচ-সাতটি প্রাম নিয়ে এক একটি ছোট কৃষি শিল্প শহর (যাতে শহরের আরাম এবং প্রামের পরিবেশ থেকে কেউ বঞ্চিত না হয়) ক্ৰমে ক্ৰমে গড়ে ভোলা।

Back to the village—নর। এ কান্ধ এগনি সুরু করে দেওরা দরকার—কেননা এ বিরাট ব্যাপার কান্ধে পরিণত করতে সময় লাগবে। নইলে হঠাং একদিন একট আণবিক বোমার "কুংকারে কাটবে এই দশুমক্ধানি, কলবিছসম।"

সদে সদে কলকাতা তথা বাঙালীর থাত ও হ্র সমন্তা, বাসগৃহ ও খাহা, কলসরবরাহ, শহরের পরিচ্ছরতা, আদর্শ কলেক ও ছ্লের কর ভূমি প্রভৃতির সমন্তা এবং কলকাতার বনিক ক্ষিদারদের চিরদিনের লক্ষা—কলকাতার স্ক্রোগ ও পাপের আবার ক্রকভর্তী চার হালার বভি সমন্তা; ক্ষিচ নৈতিক, রাজনৈতিক, শাসন ও হুট্রের দমন প্রভৃতি আরও অনেক সমন্তার সমাধান সহজ হুরে আসবে!

क्लकांकांत्र विशव अक्ला वांश्लांत्र विशव नत्र, अ विशव

নিবিল ভারতের। অতএব কলকাতা বিকেঞ্জিত করার কাকে সমস্ত ভারতবর্ব থেকে ধন সংগ্রহ করে এবং অভাত উপায়ে অর্থ সংগ্রহ করে ভারত গবর্ণমেন্টেকে অবিলয়ে বাংলা গবর্ণমেন্টের সাহাব্যে অগ্রসর হতে হবে। নইলে আসর ড্তীর মহারুছে ভারতের স্বাধীনতা বিপদগ্রন্ত হবে। মোহমুক্ত মন নিরে, ভবিয়াং দৃষ্টিকে পরিচ্ছের রেখে স্থিরিচিন্তে
চিন্তা করে দেখলেই একণা হাদরক্ষম করতে ক্ষঃ হবে
না।

শিপী সুশীলকুমার মুখোপাধ্যায়ের ভাস্কর্য্য-শিপ

গ্রীনলিনীকুমার ভজ

উদীয়মান শিল্পী শ্রীস্থালক্ষার মুখোপাখ্যায়ের অন্ধিত বহু ছবি
ইতিপূর্ব্বে প্রবাসী ও মডার্ন রিভিন্ন প্রিকার প্রকাশিত হইয়া
শিল্পরসিকদের আনন্দদান করিয়াছে। Wilfrid S. Lynch
১৯৪৩-এর কেজয়ারী সংখ্যা মডার্ন রিভিন্নতে "Sushil
Mukherjee—An Artist" নামক প্রবছে স্থালক্ষারের
শিল্পকলার বৈশিষ্ট্য সম্বছে বিশদভাবে আলোচনা করিয়াছিলেন। ১৩৫২ সন্দের হৈতা সংখ্যা প্রবাসীতে 'বর্তমান
ভারতীয় চিত্রকলা ও শিল্পী স্থালক্ষার মুখোপাখ্যায়' নামক
প্রবছে এই কৃশলী শিল্পী সম্বছে আমরা মন্তব্য করিয়াছিলায়
যে, ইহার ভবিশ্বৎ বিপ্ল সন্তাবনায় পরিপূর্ণ। সম্প্রতি এই
রূপকারের প্রতিভার একট নৃতন দিক খুলিয়া যাওয়ায় আমরা
এঁর ভবিশ্বৎ সম্বছে অধিকতর আশান্বিত হইয়াছি।

স্পীলকুমারের কর্পক্ষেত্র এতকাল ছিল মাল্রাজে। বর্তমানে তিনি সিছিয়া পাবলিক স্থলের জুনিয়র বিভাগে শিল্পশিক্ষকরণে নিযুক্ত হইয়া গোয়ালিয়রে চলিয়া আসিয়াছেন এবং পাহাডের উপরিস্থিত গোয়ালিয়র ছর্পে বাসা বাঁবিয়াছেন। এই ছর্পে প্রাচীন ভাস্কর্যাশিল্পের যে সমন্ত নিদর্শন রহিয়াছে তাহা এই কলারসিকের বিমুক্ত দৃষ্টির সমক্ষে এক অভিনব রূপলোকের হার উল্বাটিত করিয়া দেয় এবং তাঁহাকৈ নব নব রূপস্টিয় প্রেরণার উদ্বৃত্ত করিয়া তুলে—বল্পকাল মব্যেই পাশ্বর কুঁদিয়া তিনি কতকগুলি চমংকার মৃষ্টি গড়েন।

্ম্যাৰ্ আৰ্গন্ধ বলিষাহেন, "Without sincerity no vital work in literature is possible"। একবা ভ্ৰু সাহিত্য নর, বাবতীর কলাবিভা সম্বন্ধই প্রবোজ্য। যে আছরিকতার আর্শ স্পানস্মারের চিত্রগুলিকে এমন প্রাণবন্ধ করিয়া ভূলে তাহা ভাহার ভাহার্ব্যেও স্পরিস্ট। স্পানস্মারের চিত্রে এবং ভারুর্ব্যে আরও একট বিশেষত্ব লক্ষ্ণীর—সেট হইতেহে ভাহার রচনার বলিচ্চা।

বর্ত্তমান প্রবাদ্ধ স্থালবাব্র কোদিত যে তিনটি প্রভরস্থির প্রতিছবি প্রকাশিত হইল তাহা হইতে তাঁহার ভাত্তর্গলিল-নৈপুণ্যের কথকিং আভাস পাওরা বাইবে।

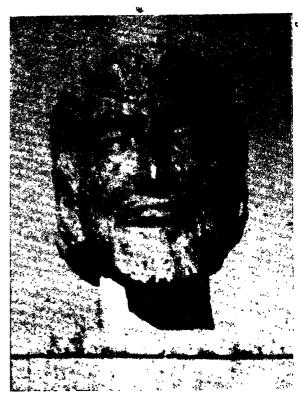
প্রথম বৃষ্টি 'উপবিটা রমণী'তে নারীদেহের গঠনসৌঠব ও প্রথমা অনিক্ষ্যভাবে ক্ষপারিত]৷ ুমহিলাটির বসিবার দৃঙা মনোহর ভলিট নয়নমনোমুগ্ধকর। শিল্পীর অপূর্বে দক্ষতা-ভবে নীরস পাষাবে নারীর দেহলাবণ্য পরিপূর্ণ মাধুর্ব্যে



উপবিষ্টা রমণী (১নং)

কুটিয়া উঠিয়াছে। 'মুখাবয়ব' (২নং) মুণ্ডিটিও চিন্তাক্ বি ছীলোকটির অন্তর্গু চি বেদনা ঘেন তার আননে প্রতিক্ষলিত। 'ধর্মোনাদ' (৩নং) মুণ্ডিটির মুখের প্রতিটি রেখার ধর্মোন্ততা-ক্ষনিত মুচতা কুটিয়া উঠিয়াছে। ক্ষমধীনতা, কঠোরতা এবং সমলের দৃচতা এই তিনের সংমিশ্রণ লোকটির চেহারাকে একটি লক্ষম খাতছা দান করিয়াছে। আধুনিক কালের সাম্রাদায়িক ভেদবৃদ্ধিসন্ধাত শোচনীয় বীভংসতার ইতিহাস যেন এই মুণ্ডিটিকে খিরিয়া বিরাক্ষ করিতেছে।





मुश्रीवद्यव (२नः)

ভারতীয় ভাত্তর্বার অতীত ইতিহাস গৌরবময়। ইহার প্রভাব একদা চীন, জাপান, এক্ষ, ইন্দোচীন এবং যবদ্বীপে বিভ্ত হুইয়াছিল। পাল সমাটদের আমলে বাংলার ভাত্মর্যা সুদ্র নেপালে পর্যান্ত সমাদৃত হুইয়াছিল। ছঃথের বিষয় নবা বাংলার চিত্রকলার তুলনায় ভাত্মর্যালিয়ের তেমন উন্নতি হয় নাই।বর্তমান বাংলার কৃতী ভাত্মরদের মধ্যে দেবীপ্রসাদ রায়-চৌধুরী, স্বীর বাভাগীর, স্নীলক্ষার পাল প্রমুখ মাত্র করেক-জনেরই নাম উল্লেখবাগা। দেবীপ্রসাদ স্থনিপ্র ভাত্মর। হিসাবে সর্বভারতীয় ব্যাতি অর্জন করিয়াছেন।

ধর্মোনাদ (১নং)

সম্প্রতি বাংলার ভাশ্বর্যাশিলের পুনঞ্জীবনের লক্ষণ দেখা যাইতেছে। ভাশ্বর স্থনীল পাল নেপালে গিয়া দীর্ঘকাল পরে আবার সেধানে বাংলার ভাশ্বর্যার বিজয়-পতাকা উজ্জীন করিয়া আসিয়াছেন। দেবীপ্রসাদের সুযোগ্য শিয়া সুলীল-ত্যারের পাধরে খোদাই করা প্রাথমিক কাজগুলি দেখিয়া মনে হয় ভবিশ্বতে ভাঁহার হাতেও ভূলির সঙ্গে সঙ্গে হিনি ও বাটালি সমান ভালে চলিবে এবং ভাঁহার সক্ষনীপ্রতিভার নব নব অবদানে আমাদের দেশের ভাশ্ব্য-শিল্পভার সম্বন্ধ হইবে।



সোনার সন্ধ্যা

এদেবেশচন্দ্র দাশ

সোনিয়াকে আমি ভাকতাম সোনা বলে। এমন একটা সার্থক-মনা বোৰ হয়, পৃথিবীতে কেউ তার প্রেয়সীকে-দেয় নি।

সোনিষার গারের রং ছিল সোনারই যত তুক্ষর ও উত্তাপের আভাসে ভরা। সাধারণ রাশিষানের যত রঙের আভাষীন সাদা নয়। ফ্রকসাগরপারের রোদ তার ভজ্জ সৌন্দর্যাকে স্লিক্ষ সোনালী রঙে রাঙিয়ে দিয়েছিল, জার তার বিমন্ত কেলরাশিতে মনে হ'ত বর্ষার জলগা নদীর স্বর্ণবারা করে করে পড়ছে। দেখলেই মনে পড়ে বৈক্ষর কবিতার জ্বয়র বর্ণনা—থির বিজ্বী বরণ গোরী। সোনার বরণী ছিল ভামার সোনা।

আর সোনাকে এ নাম দিয়েছিলাম আমি--স্বর্ণময় সেন্ यांत कथा वांश्मारम्य कांत्र औड़ जिम वहत भरत मर्स (नहे। যার বাপ-মা ছেলের এই নাম রাধ্বার সময় ভাবেন নি স্বধেও ভবিশ্বতে কত সুবিধা হবে এই নামে। তাদের সোনার চাঁদ ছেলে—কাঁচা সোনার মত ছিল রং. আমার ও আমাদের দেশের হিসাবে, আর চাঁদের মতই ছিল আমার गुर्विष्य--- সহ**रक** है । ति वटल विद्यार निर्वेदक हो निर्वेद দিখেছিল। নামটাও তথন সান ইয়াৎ সেনের পৃথিবীক্ষোড়া নামের কলাণে চীনে বলেই চলে যেত। আহা বাপ মার এত আদরের ছেলে হয়ে গেল ভববুরে -- ধর ছেড়ে বেড়িয়ে গেল বিশ বছর বয়সে, কেবল শুধু অনিভিষ্ট অজ্ঞাত এডভেঞ্চারের আলেরার পেছনে। সম্বল রইল ভবু বাঙালী-इर्लंख (पर्टार्कित ও विषिनी खांचा ठठे करत खात्रल कत्रवात हेल्हा ও ক্ষমতা। এই ছট মূলখন নিয়েই আমি কয়েক বছর মক্ষোতে একটা বিদেশী রাজদৃতাবাসে অত্বাদকের কর্ম নিয়ে ছিলাম। শুণু যে অন্থবাদক তা নয়, এত দিন পরে খীকার করতে লব্দা বা বিপদ নেই যে মলোলিয়ান চেছারা ও সানো মায় সেন এই নামের স্থবিধা নিয়ে সেই রাজ্ঞ লতা-বাসের হরে গুপ্তচরম্বৃদ্ধিও যে না করতাম তা নয়। কলে বর্ণময় সেনের পকেটে বর্ণের অভাব মঙ্কোতে কবনও হয় নি। ১৯১१-১৮তে মঙ্কোর কোন নাচবর, কোন বিয়েটার বা মাইট ক্লাব সেনন্ধিকে না চিনত গ

আৰু বাৰ্দ্ধকোর হ্রারে দীভিয়ে আমার সমবরসী কলেই বাঙালীদের কাছে বাভির কোণের পার্কে বসে রোক বিকেলে শুনি ওসব দেশের কাকে রন্তোর ।, নাচধর এসবের অসারতা আর মেকী সোনালী রঙের সমালোচনা। চূপ করে শুনি; আর চূপ করে শোনে দেবদার গাছগুলি। গুরা মাধা হুলিয়ে নীরবে প্রতিবাদ করে; আমি অতীতের সেন্থি তাও করি না। শুধু তাবি কি যে সোনার সন্ধান পেরেছিলায তা তোমরা বর্ণময় সেনের ঘদেশের লোকরা সন্দেহও করতে পারবে না। তোমরা অন্ধ্বারেই থাক; আমার সোনার দীপ্তি আমারই অন্ধরকে উদ্দল করে থাক সংগোপনে।

হোটেল মেটোপোল সেদিন শনিবার রাত্রিতে উৎসব-মন্ত হয়ে, আগ্নহারা হয়ে আনন্দের প্রোতে ভেসে যাছিল। এত ভালো, এত রং, এত সৌরভ। ছোট ছোট বোলানে। বারান্দা প্রকাণ্ড হলটাকে খিরে রেখেছে: তার কাঁকে কাঁকে দেখা যাচ্ছে ক্যাবিনেট অর্থাৎ নিভূত কামরাগুলি, যেখানে সকলের উৎত্বক সধানী নয়ন এড়িয়ে কবল (রাশিয়ার টাকা তগনকার দিনে ১৭০ আনা আন্দান্ধ মূল্য ছিল) ও ক্লাম্পেনের খেলা চলে, আর তার সঙ্গে ভাড়াটে প্রেমের লীলা। রেভোরার হলে গোলকবাবার স্ক্রী করেছে ছোট ছোট रहेविलश्ला होतकरनद (हेविलहे दर्गी: कि**व** दर्गी किव হচ্ছে ছু'জনের টেবিলগুলি: সেখানেই সদীত ভেসে আসে বেশী-- यमिश्र का कारन छाटक ना । अरम्भन जानम-नूष्ट्रम মাতোয়ারা হয়ে ওঠে যদিও ছ'লনের আত্মহারা আনন্দের তন্মতা অতিক্রম করে সে হুরা মধুরাধরে উঠাবার সৌভাগ্যই হয়ত পেলে না। কিছ শ্লেছোর ীর যত যুদ্ধ গুল্পন সবই ওঠে थरे किविल्थिन (बक्त । भानाशास्त्र क्ष क्षेक्न थ क्षेक्तक জ্ঞাই পানাহার আসে। সবাই ওদিকে চোরা চাহনিতে তাকায় যদিও মনে ছবে যে তাকিয়ে দেখছে না কেউই। ঘরের একটা প্রান্তে উঁচু বেদীর ওপর অর্কেঞ্জা পরিচালনা করছে এক শিল্পী। দেখে পুলিস মনে হয়। রাশিয়াতে विद्यामी ना इटल निष्ठीत जामत जर्बन र'छ ना ।

শিল্পেরও আদর হ'ত না বিদেশী না হ'লে। তাই একটা
যাযাবর-সদীত বাজান হছিল; তার করণ বৃর্জনা বেহালার
ছড়ের আঘাতে কেঁদে কেঁদে ধরমর বৃটাছিল আর আমি
হাতলওয়ালা কুলের সাজির আকারের একটা গরম রাষ্ট্রর
ওপর রাধা দামী "কাভিয়ার" খাছিলায়। সুরের করণতার
সঙ্গে মিতালি রেখে বরটকে প্রার অন্ধকার করে কেলেছে আর
তার মধ্য থেকে কুটে বের হছে হীরাজহরতের ছ্যুতি।
চারদিকে রূপসী নারী, তাদের অন্ধনারত ও দেহসোঁঠা
মদিরার মত সদীত ও সদীতের মত মদিরা, আমার সামনে
বিশ্ববিখ্যাত "কাভিয়ার"। স্বর্থয় সেন তবন কোখার ?
সেনকি স্বর্গমর হয়ে আবেশে চোখ বুকে জিপসী সদীতের তালে
তালে দামী কার্পেটে পা ঠুকছে স্বার অগোচরে। এমন সময়ে
তীর আওয়াজ হ'ল রিভলভারের। উপরের এক বুল বারাজার
একটা তীক্ষ আর্ডনাদ ও তার পরেই সামরিক বুটের আওয়াজ
সব কোলাহল ও কলকাকলি ছালিরে জেগে উঠল হলটাতে।

পুলিদের ও মিলিটারীর খানাতল্লাসী স্কুরু ছ'ত যথারীতি।
১৯১৭ সালের মন্ধোতে মোটেই এটা নৃতন জিনির নর।
ওলের সন্ধানের বাচতা ও ভীষণতা সাধারণ লোকের বেলা
বেমন ভাবে কুটে উঠত অভিজাত বা রাজপুরুষদের বেলা ঠিক
তার বিপরীত। বিদেশী রাজদূতাবাসের লোক বলে
আমিও নামমাত্র প্রশ্ন ও পরিচরের পরেই নিক্কৃতি পেলাম।
কিছু পেলে না সোনার বরণী এক তরুণী।

ওই বিরাট্ হলে তবু তারই সন্তোষক্ষক কোন পরিচয় বা ওবানে আসার উপযুক্ত কারণ বুঁজে পাওয়া গেল না। পাশের টেবিলেই সে একা বসেছিল, তা দেখেছিলায়; ভীরু হরিনীর মত চাহনি ছিল তার, সন্ধ্যাতারার মত শুদ্র কুতৃহলী দৃষ্টি তার এই অনভান্ত জনাবাদিতপূর্ব্ব সম্মেলনের উপর নৈর্ব্যক্তিক ভাবে ছচিয়ে পছছিল। প্রলোভন হচ্ছিল যে উঠে তার টেবিলে গিয়ে বসি, পরিচয় করি এই কুঠিত সলক্ষ বিদেশিনীর সঙ্গে, পরিচয় করিয়ে দিই তাকে এই আনন্দশালার গোপন রহস্তের সঙ্গে। কিছু পারি নি। তার কুঠার অবগুঠন উন্মোচন করে তপোবনবাসিনী শক্তুলাকে প্রমোদসভার জনাবয়ণ বিপণিতে নিয়ে আসার প্রলোভন সংবয়ণ করেই বসে ছিলাম।

এখন ব্ৰতে পারলাম যে, রাজনৈতিক গুগুছত্যার দায়ে এই নিরপরাধ তরুদী ধরা পড়েছে। অতএব একে পুলিপোলাও চালান যেতে হবে সাইবেরিয়ায়। ভাবতেই—ওই তুখারের মত চিরশীতল নির্দ্ধন নির্বাসনের কথা ভাবতেই মাধা গরম হয়ে গেল। এগিয়ে গেলাম দৃচপদে পুলিশের সামনে।

আমার বিদেশী রাজদূতাবাসের মর্যাদা ও তার চেয়ে বেশী কাকন্যুল্য সোনিয়া ছাড়া পেল সেই রাত্রেই। নিরাপরাধ বালিকা বিদেশে ইউনিভার্সিটতে পড়ে গুলারশিপের উপর নির্ভর করে। তারুণ্যের জনম্য কৌতৃহল তাকে এই নৈশ বিলাসশালার টেনে এনেছিল এক রাত্রির জন্ত। গোপনে সে একটি বার মাত্র হোটেল মেট্রোপোলের শনিবার রাত্রিটকে দেখে বাবে; এই জভিসার কেছ জানতে পারবে না এই ছিল তার জভিলাব। তার পরিবর্ত্তে হঠাং এল সাক্ষাং শমনের মত সাইবেরিয়ার নির্বাসনের সন্তাবনা, নিদেন পক্ষে চারদিকে জানাজানি, গুলারশিপ হারানো ও ইউনিভার্সিট থেকে বহিছার। কিন্তু সব কিছুর বদলে তরুণ উবার মত তার নিক্ষুর জীবনে উদর হ'ল সেনস্থি।

উষার অরুণরাগে ভরে উঠল ছট ভীবন।

ভার পরের দিনগুলির কাহিনী সেই অরপরাগে রঞ্জিত।
একই পৃথিবীতে আমরা ছ'লনেই দাঁদিরে আছি। সে বার
কলেকে, আমি যাই আপিসে, কিন্তু সন্ধাপ্তলি যেন রামবন্ত্র
মত বিচিত্র বর্ণে সন্ধিত হরে, আকাশকে স্পর্শ করে নেমে
আসে আমাদের ছ'লনের মধ্যে সেন্তু রচনা করে। সেই সেতু
বেরেই ত আমরা সারা দিনের ছ্তর বিরহ, ছই দেশের ছই

মনের ছরতিক্রম ব্যবধান সত্ত্বেও ছক্ষনের কাছে আনাগোন। করি গোপনে। এমন ভাবেই দিনগুলি চলছিল।

অপরাছের মিলন নিক্র নিঃবাসে আসর সারাছের পদধ্বনি তনতে তনতে ব্লান হরে আসে। ক্রণছারী সে ত্র্বচক্র চরণে আমাদের নিরে যার নাচধরে, অপেরার, রেভরীর। চারুহাসিনী সোনিয়ার মুবে হাসি কুটে উঠতে না উঠতেই বীর্জার যভি সচকিত করে তোলে তাকে। উপারই বা কি? আমাদের সমর কাটে পরে, না হর প্রমোদ-প্রহে।

তারই মধ্যে অবকাশ একটু বিস্তৃতি লাভ করে শনিবার-গুলিতে। ছুপুরের পরে আমার কাশ নেই, বিকালে নেই তার ক্ল!স। একদিন আমরা শহর ছেন্ডে অনেক দূরে চলে গেলাম বিপ্সী সদীত শোনবার জন্ত। "টুয়কা"য় (আরব বোড়ায় টানা গাড়ী) চড়ে আমরা পাড়ি দিলাম স্কুরে।

সে দিন বিকাল থেকেই বৃষ্টি পড়ছে। ক্রধার শীত আর মুমলধার বৃষ্টি ছয়ে মিলে মনে করিয়ে দিছেে থে যদিও আমি রুশীর মঙ্গোলীয়ান সানো-মায়-সেন, মঙ্গোতে সেনস্কি নামে অভিহিত, আমার উর্ভন চৌছ পুরুষ বাঙালী।

একটা কাচের প্রাসাদ—বরকে ঢাকা—তার ভিতরে গরম দেশের পামগাছ সাঞান। অঙুত, একেবারে প্রাচা ব্যাপার। কাঠের গনগনে আগুন দাউ দাউ করে জলছে ধ্রোলা 'কারার প্রেসে'। তার কাছে আমরা বহু দর্শক ও প্রোতা জমা হয়েছি। এক জিপসী গারিকার সঙ্গে এল চারজন বেদে রঙীন ট্রাউজার ও শাদা ব্রোকেডের স্থামা পরে ও চারজন বেদেনী রঙীন রেশমী রুমাল মাথায় বেঁধে। সামনে প্রকাণ্ড লখা প্রাসে ঢেলে দিলে চারোচকা নামে পানীয়। গান ভুনতে ভুনতে পান করতে হবে এক চুমুকে ও এক নিঃখাসে—কিছ কেবল তথনি যথন গারিকা এসে সামনে দ্রাভাবে। তারপর প্রাস উপুড় করে রেধে দেখিয়ে দিতে হবে যে একটি বিশ্বও বাকী নেই।

আমার মন কিছ ছিল না এ গানে। যদিও দরদী গলার আদিম বিষাদ ও আনত কারুণ্যে ভরা গান তারা গাইছিল, যদিও লাভ আতির বিশেষত্ব, বঞ্চিত মানবতার ব্যথা ছবির মত সোনে কুটে উঠছিল, আমি মনোবোগ দিতে পারি নি এ গানে। আমি অকুতব করছিলাম বে আনক্ষ-সভানের মধ্যে গোনিরার সঙ্গে আমার প্রথম পরিচয় ও এতদিন সাদ্যবিহার হ'ল হয়ত এই ছীগসী গানের স্থরের মতই শীমই হবে তার শোচনীয় অবসাম। বাইরে যুদ্ধে পরাজয়, ভিতরে বাভাতাব ও বিরাট অসভোষের কলে রালিয়ার রাইতরশী প্রায় বানচাল হয়ে এসেছে। বে-কোন সময়ে উল্টে গেলে আমরা সবাই একসঙ্গে ভূবে বাব।

সভ্য কথা বলতে কি, রাশিরা দেশটাই হচ্ছে বিবাদের দেশ। ওরা জন্ন থেকেই অভ্তব করে বিবাদ—বেষন ভাবে আমরা অভ্তব করি অবসাদ। কিন্তু যাযাবর পুর্ত্যাস সেন্ডির তো বর্তমান অবস্থার বিষাদ বা অবসাদ কোনটাই অনুভব করবার কথা নয়। সোনিয়ার সদ সোনালী আগুনের উদ্ভাপে ভরা, সে হচ্ছে আনন্দের প্রতিষ্টি। তার সঙ্গে পরিচয়ের পর থেকে তো ভার বিষাদ বা ভবসাদ কোনটারই প্রাবল্য হওয়ার কথা নয়। কিছ আমি যধন ওকে ভালবাসতে আরম্ভ করলাম এবং সলে সঙ্গেই বুরতে পারলাম যে সেও আমাকে আগে থেকেই ভালবাসতে স্থুক্ত করেছে তথন থেকেই আমি রাশিয়ান বিষাদের প্রভাবে পড়লাম। আৰু ভেবেছিলাম যে শহর থেকে অনেক দূরে নৃতন রকমের সন্ধ্যা যাপনের মধ্যে, হাসি গান কলরবের মধ্যে এ বিষয়তাকে বিদায় দিতে পারব। সে আশাতেই এখানে এসেছিলাম। জিপসীরা একটার পর একটা "চারোচ কি" গান গেরে যাবে আর শহুন্তে একটার পর একটা প্লাস ভরে দিরে যাবে চারদিকে। স্বাই হয়ে উঠছে মাতোয়ারা: প্রাণে কুটবে সুখের কোয়ারা আর চারদিকের ছড়ানো আনন্দ-कांकनित भरश आंभन्ना फूर्ट यांव।

গানের ঘরট বুব সরগরম হরে উঠেছিল; আন্তে আন্তে আমরা ছ'জনে বাইরে চলে এলাম। ছোট একটা হুদের পাশে এই জিপলী প্রাদাদ। বাইরের ঠাণা বাতাসে জলের ধারে আমার মনে আনন্দ ও বেদনা একসঙ্গে দোলা দিতে লাগল। অতি ধীরে সম্ভর্গণে আলগোছে আমার হাতে একটু চাপ দিরে সোনা প্রার করল, 'পুমি আজ অত কি ভাবছ'?'

'ना, कहे किছू छ जावहि ना।'

না, কিছু ভাবছ না ত করছ কি? বেদের গানে এত কি মজা পাছ তা হ'লে যে কথাও কইছ না। তা আমি তো ভেবেছিলাম যে তোমাদের অঞ্জেও বেদেরা আছে অনেক আর তাদের গান তোমার কাছে নৃতন নয়।'

'কিছ আমি তো মকোলীয় রূপ নই। আমি ভারতীয় আর কলকাতায় আমার বাড়ী।'

মধুর ভাবে হেসে উঠল সোনিয়া। বললে—সেনস্কি, তুমি বোৰ হয় প্তন একটা তামালা স্থান করলে আমার সঙ্গে। টালোরের ছবি আমি দেবেছি। তুমি যদি তার দেশের লোক হও তবে আমিও বৃতন একট দেশ বেছে নেব নিজের বলে চালাবার জন্ত।

আমি চঞ্চল হরে প্রতিবাদ করপাম। বলপাম—কীবনে বছ
মিধ্যার আপ্রয় আমি নিমেছি সোনা আমার ভবতুরেবৃত্তির
তাড়নার। আমি ভারতীর এ কথা কানাকানি হলে আমার
চাকরি নিয়েও টানাটানি হবে হয়ত এই য়ুছের বাকারে। তর্
তোমার কাছে আমি সভ্য প্রকাশ করবই। আমি রুশীর
নই, ভারতীয়।

চূপ করে রইল সোনা। চূপ করে নিজম হরে রইল ব্লেদর আচঞ্চল জলরাশি—তথু আমার ছদরের রক্তন্রোত অধীর চঞ্চল হরে সোনার মুখের কথার প্রতীক্ষার উত্তব হরে রইল। ধানিক পরে আমিই সে নীরবতা ভাঙলাম। বললাম— সোনা, সোনিরা, আমার দেশ আমাদের ম্ধ্যে কি কোন ব্যবধান আনল ?

কোন উভর নেই। ভগু টাদের আলো বিরাট কার গাছভালির কাঁকে কাঁকে বিষাদমর মারাজাল রচনা করে নীরব হরে রট্ল। আবার ভাবলাম, কিন্তু কোন সাড়া নেই।

বুঝলাম যে সে মায়া লোপ পেরে গেছে কোন কারণে; সে বীণার সোনার তার কেটে গেছে হয়ত অকারণে। কিন্তু আৰু, আৰু আর প্রশ্ন করে লাভ নেই। রাশিয়ান মন আব্দো আমি বুবে উঠতে পারি নি। না হলে সোনা শুণু একট তথ্য আবিধারের সঙ্গে এমন করে ভাবলেশহীনা হয়ে গেল।

'ট্রকা'তে চড়ে একসংগই কিরে এলাম। পথে যেতে যেতে আকাশপাতাল কত কি যে ভাবলাম তার ইয়ভা নেই। কেন সোনা এত নীরব রইল। সোক বিদেশী বলে বিষেষ করবে আমার? না, রাশিয়ার প্রত্যন্ত প্রদেশগুলি ত প্রায় বিদেশই বটে আর সে তো আমায় মকোলীয় বলেই বরে নিরেছিল? ভারতীয় কি ভার চেয়েও বেশী বিদেশী?

তবে কি ভারতীর বলে সে আমার হেলা করলে ? তাও ত নর। যে রবীক্রনাথের ছবি দেখেছে, তাঁর কবিতার অভ্নাদ পড়েছে সে ত এ রকম করতে পারে না। আর রাশিরানরা তো ভারতবিধেষী মোটেই নয়।

তবে ? প্রো একটা সপ্তাহ অভিযান ? প্রার্থ চিত্তে আমি চুপ করে রইলাম। রেজোরাঁ ও রাজপথ ছই-ই ছেড়ে দিলাম; আপিস থেকে বাসায় সোজা চলে এসে ডাকের প্রতীক্ষা করতাম। কিন্তু তার কোন সাড়াই পেলাম না। সারাটা সোনার সভ্যা বাাকুল প্রতীক্ষার থেকে থেকে অবীর হয়ে যখন পোশাক ছেড়ে কালো পাড় দেওয়া লাল রঙের কশাক পায়লামা পরে বিছানায় শুয়ে পড়তাম নিজেকে এত অসহায় মনে হ'ত। এতদিন প্রেমের কবিতা পড়িনি; ভাবতাম ওসব জিনিম মাছ্মের উন্তট কলনার ছবি। নিজের জীবনে যখন প্রেমের সত্যিকার অভ্তুতি এল তখন কবিতা পড়ার সময় বা প্রয়োজন ছিল না। ছই-ই এল তখন যখন প্রেম সোনালী সভ্যার মত জীবন থেকে বিদার নিয়ে যাছে।

ভাল লাগত না কিছুই। প্রেমের কবিতাও নর। শেষে এল অভিমান। বেশ শুব্ একটা সত্য কথা, যেটা অগৌরবের নয়, অপকারেরও নয়, তারই প্রকাশে যদি প্রেম উবে যায় কর্পুরের মত, তাকে যেতে দাও। এই রাশিয়ার বরকের মতই যদি তা সত্যের উদ্ভাপে গলে যায় তবে যাক। বুবে নিলাম যে রাশিয়ান প্রেম ভূষারশীতল, কিছা তা গলে প্রাণগদারণে প্রবাহিত হ্বার নয়।

কিছ হাম, অভিমানে ত মন মানে না। নিরভির মড

চিন্নন্তম যে প্রেম তাকে কি এত সহকে মন থেকে সরিরে রাধা বার ? সোনিরা না হর আর নাই দেখা করতে আসে, আমিও ত আর তার খবর নিই নি। কে আনে সে হয়ত এর মধ্যে আমার সভান করে কিরে বাচ্ছে কতদিন; সে নিজেও হয়ত কত কট পাচ্ছে আমার কথা ভেবে, আমি তার খবর নিচ্ছি না বলে। অথবা কে আনে হয়ত তার অসুখও করে থাকতে পারে সে দিনকার ছরন্ত শীতে নৈশ অভিযানের পর।

এ কথা মনে হবার পর আর চুপ করে থাকতে পারি
না। তার সঙ্গে টেলিফোনে কথা কইলাম এবং আবার দেখা
হওয়ার বন্দোবন্তও করলাম। যাতে ভাল ভাবে কথাবার্তা
হতে পারে এবং তার মন বুবতে পারার মত প্রচুর
সমর পাই তার হুল একটা ভাল সুযোগও মিলে গেল।
আমারই আপিসের এক বন্ধু ভাগিলি সপরিবারে শহরের
বাইরে একটা ভালা'র সপ্রাহান্ত কাটাতে যাচ্ছিল। তাদের
সঙ্গে সম্প্রতি সোনিয়ার পরিচয় করিয়ে দিয়েছিলাম।
বলা বাছলা, আমার সামাল ইন্ধিতেই ভাগিলি ও তার
লী সব বুবে মিলে। তাদের নিমন্ত্রণ সোনিয়া সানন্দেই প্রহণ
করলে। ভাগিলি বড় ভাল লোক আর দরলী বন্ধু।

তারই সহাত্ত্তির স্থোগ নিলাম আমরা। তারা সন্ধার দিকে বাইরে বেড়াতে গেছে এমন সময় এল বাড়বৃষ্টি। শুণু সোনিয়া ও আমি মুবোমুখি বসে আছি ছটো চেয়ারে। এর মধ্যে সেদিনের ব্যাপার সম্বন্ধে কোন কথা হয় নি, যথেষ্ঠ সময় আমরা পাই নি বলে। আৰু আমি সে কথা তুললাম। কিছু গৌরচন্দ্রিকা ছাড়া কোন কথাই স্থুক্ত করতে সাহস পাই না, বাঁশীতে ফাটল ধরেছে কিন। আগে একটু বাজিয়ে দেখা ভাল।

খরটার মাঝখানে দেওরালে হেলান দেওরা একটা আয়নার সামনে ঝড়ের হাত থেকে আশ্রয় নিয়ে বসেছে ছটো পাখী— চড়ুই পাখীর মত দেখতে। বললাম—দেখেছ সোনা, ওদের মধ্যে ঝগড়া হয়েছে; তাই ঠোটে ঠোটে ঠোকাঠুকি করে সরে যাচ্ছে আয়নার সামনে থেকে।

হেসে সে বললে—সেনন্ধি, তৃমি বোধ হর মধ্যের পাণীদের কথা ভাবছ; এরা কিন্ত হচ্ছে বনের পাণী। তাই ঠোঁটে ঠেকিয়ে ভাদর করছে; ঠোকাঠুকি নর।

'তা হ'লে আয়নার সামনে থেকে সরে যাচ্ছে কেন ?'

বাঃ রে, ওদের বৃথি লক্ষাসরম নেই; আরনায় নিকেদের কাও বেংব নিকেরাই কুঠার সরে যাছে, কিছু দেখ আবার এগিয়ে আসছে।

ওর কথার আশা ও আখাসের আভাস পেলাম, বললাম— দেব এই বড়ের মধ্যে পড়ে পৃথিবী থেকে বিচ্ছিন্ন হরে এসে আমরাও হরেছি বড়ের পাবী; আমার সোনা পাবী কিছ সে দিন শুবুই সরে সেল, আর এপিন্নে এল না। 'কে বলে সে সরে গিষেছিল ?'

'তবে তুমি এমন চুপ করে ছিলে কেন ?'

'বা: আমার বুঝি ভাবতে নেই ?'

'আর আমার বুঝি ভাবনাকে ভাগ করে নিতে নেই ?'

'কিছ সব কিনিষ ত ভাগাভাগি করে নেওয়া যায়
মা।'

'এ জিনিষটা নিশ্চরই নেওয়া যায়। আর তুমি ত জিজ্ঞেসও করলে না কেমন ভাবে আমি কাটিয়েছি এই কটা দিন।'

বাঁট রাশিয়ান প্রকৃতি তার। সে ছেসে বললে—যা কাটিয়ে দিয়েছ তার কথা থাক। কি করেছ তুমি তা আমি ভাল করেই জানি। ওই তোমার প্রির পুশকিনের কবিতা আওছেছ। এখনি হয় তো অভিযোগ করে বলবে:

When you're away, I yawn and mope; When you are here, I ache and prie: I recognise by every sign

I 've lost my heart beyond all hope.

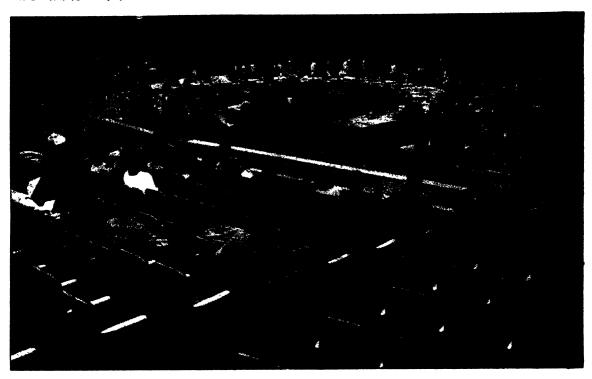
অভিযান করে বললায—থাক থাক, আমি কেমন করে কাটিয়েছি তার কথা থাক। তুমি ত পরমানন্দে আপদ চুকল মনে করে গুলারশ্রিপ পাবার পথটা ভাল করে তৈরি করছিলে। ধেমন মনের আনন্দে কবিতা আওড়াছে তাতেই বোকা যাছে।

সে ক্র হ'ল এ কথাতে; কিছ ক্লোভের চেরে বেশী ভার সহাত্ত্তি। স্বরে আড়াইতা নেই একটুও, কিছ প্রচ্র কারণা ভরে সে বললে—না তা নয়, আমি সব পথই আধার দেখছি। আমাদের দেশের চারদিকে যে অছকার খনিয়ে এসেছে, সমাকে রাষ্ট্রে যে বিপ্লব নির্বাত এসে পড়ছে ভার মধ্যে কোন আলো, কোন আশা গুঁকে পাছিছ না।

বাদের গর্জন আরো প্রবল হয়ে এল; বছগর্জনে মস্কোর আকাশ মুধরিত হয়ে উঠল; বছদ্রে ক্রেমলিন প্রাসাদের নীল ও সোনালী চুড়ার উপর বিহাতের আতসবাকী বেলতে লাগল। সোনিয়া তার চেয়ারটা টেনে এনে একটু নিবিদ হয়ে আমার পাশে বসল।

সে বলতে লাগল—কান, আৰু রাশিরাতে প্রত্যেক অল্পন্ন ব্যাহ্ব বা চিন্তালীল পুরুষ ও নারী হচ্ছে বিপ্লবী। আমরা এই অভ্যাচার, অবিচার ও অনাচার জরা রাজত্ব উচ্ছেদ করে দিতে চাই। যুছে আমরা হেরে যাছি, আমাদের অবস্থাপর লোকেরাও কাশা (সরু চাল ও মাংসের বোল) পর্যন্ত থেতে পাছে না ওই ত্রখোর তুণবরা রাষ্ট্র ও সমাজ-বাবস্থার জল। সব তো তুমি কান; তোমাদের রাজ্পতাবাসে কোন ব্যাহ্ব আজানা পাকবে না। একটু পেমে সে আবার বললে—ওই দেখ সূত্রে জ্বেলনের চূড়াগগুলের চার পালে বিহৃৎ চমকাছে। আমাদের পার্টর সভ্যোরা এই যুহুর্তে লোকদের মধ্যে প্রচার

খতি পরিবদে কাশ্মীর-প্রসঙ্গ



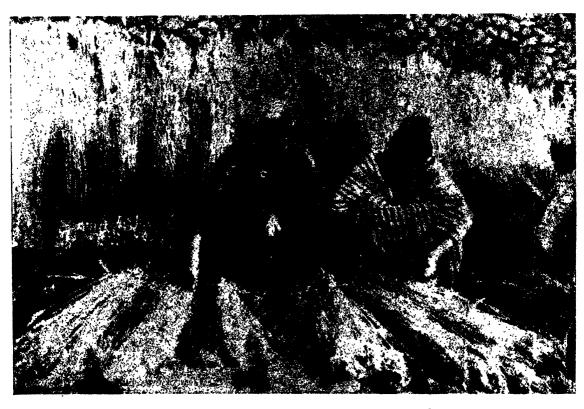
বন্তি পরিষদের একটি সভার অবিবেশন—(বামদিকে) ভারতের প্রতিনিধি ডা: পল্লনাভ পি পিল্লাই কাশ্মীর-প্রসঞ্চে বক্তৃতা করিতেছেন



স্বত্তি পরিষদের একটি সভার বন্ধৃতা প্রদানরত পাকিতানের রাষ্ট্রপূত এম. এ. হাসান ইস্পাহ।নী



কাশ্মীরের গিলগিট অঞ্চলে সন্ধারদের বাধিক সন্মেলনে একট আন্তর্জাতিক পোলো প্রতিযোগিতঃ



কাদ্মীরের হনতা অঞ্চে একট যবের ক্ষেতে শভ আহরণরত বালিকাছর

করছে যে ওই বিছাৎ চমকানতেই স্বার সারাজ্য যে ছারখার যাবে তার সুস্পষ্ট ইঙ্গিত দেখা যাছে।

বললাম—সে সবই ত জানি। চাকরীর থাতিরে আমি
নিরপেক হলেও তোমার মনকে যে এ সব ব্যাপার তোলপাড়
করে তুলবে তাও বুঝতাম। কাকেই বা না করে? কিন্তু
তুমি কি লেনিনের দলে সত্য সত্যই চুকেছ?

সন্ধ্যাতারার মত উচ্ছল অচপল চোণ ছটি আমার দিকে ভূলে সে বলল—হাঁা, সম্প্রতি আমি চুকেছি আর সেক্সই আমি তোমার ভালবেসে কষ্ট দিলাম ও পেলাম। ছাড়াছাড়ি আমাদের মধ্যে ত হবেই।

ক্লান চঞ্চল চোখে আমি তার দিকে তাকিয়ে রইলাম।
কি বলব ভেবে পেলাম না। আবেগে উদ্বেগে মনে হ'ল
খাসরে।ব হয়ে আসছে। সে বলে চলল—আমি ভেবেছিলাম, তোমাকেও আমাদের গোপন অগ্নিমন্ত্রে দীক্ষিত
করে নেব। কিছু তোমার ধা চাকরী তাতে তোমায় চাকরী
ছাড়তে হবে। তা ছাড়া হার তুমি ত বিদেশী এবং এ মন্ত্রে
অবিখাসী; তোমার ও আমার এক পধানর।

'সে কথা ঠিক। আমি কোনদিনই গোপন অগ্নিমন্ত্রে বিশ্বাস করি নি। ভবদুরে ডানপিটে হতে পারি কিছু গুপ্ত হতা ও গোপন প্রচার আমার মেরুদতে সইবে না। তা ছাড়। ভালবেসে সোনিয়া হয়েছে মরিয়া আর আমি চেয়েছি বাঁচতে, এবং এখন চাই তাকে বাঁচাতে।

তব্ বললাম—এখন ব্রছি ত্মি সেদিন কেন এমন করে চুপ করে গেলে আমি ভারতীয় শুনে। কিছু তাতেই বা কি ? তোমাদের মন্ত্র ত শুর্ রাশিয়ার কয় নয়, বিশ্বের কয়। কাজেই আমি তোমাদের দলে না গেলেও তোমার ভালবাসাত পেতে পারি। তুমি আর আমি যেমন আছি তেমনই থাকব। তুমি আমায় ভালবাস এমনি করে। য়ান অপচ বলিঠ একটা হাসির আভাসের মধ্য দিয়ে তার কথা কুটে বের হ'ল—তা হর না সেনকি। তুমি আমায় ভালবাসবে অপচ আমায় পর্বে আসবে না; আমাদের লোকরা তোমায় জারের বা শত্রুপক্ষের চর মনে করবে। তুমি আমায় পথে বিশ্বাস না করেও বিদেশী হয়েও আমাদের সলে নাম লেথাবে এমন অজ্যায় আমি হতে দেব না কিছুতেই। বলতে বলতে আত্মবিশ্বাসের দৃচতা তার মুখে একটা অপক্ষপ ক্যোতির আভাস এনে দিল।

সে আভাসে আমারও মন আলোর ভরে গেল। আমি সোৎসাহে বললাম—কিন্তু আমিও থদি তোমার পথে আসি, তোমার মন্ত্রে দীকা নিই তা হলে ত কোন বাধা নেই।

দৃঢ় ভাবে তার অধর চেপে একটুখানি চুপ করে রইল সোনিয়া; পরে বলল—তাতেও বাধা আছে। আমি তোমায় ভালবাসি এবং সেজ্জই ভালবাসার ব্যভিচার তোমায় করতে দেব না। তুমি আমায় ভালবাস কিন্তু আমার দেশকে নয়, আমার মতকে নয়। তবে, তবে আমাদের ভালবাসা কি এখানেই শেষ হবে ? ব্যাকুল প্রশ্নে আমার একটা হতাশা ও বেদনার স্থ্য সুটে উঠল !

যে উত্তর পেলাম তার কল্প আমি প্রস্তুত ছিলাম না। ইছ-লোকের বাসনা কামনা সব কিছুকেই আমরা ভারতীয় মনে অতীক্রিয় রূপ দিয়ে পরলোকের হিসাবের কোঠার তুলে দিয়েছি। সে প্রেমনিলনকে দিয়েছে মাধুরী, বিচ্ছেদকে দিয়েছে সাধুনা: কিছু রাশিয়ান চরিত্র অল্প বাতৃতে গলা। সোনিয়া তারই প্রাণময় ক্ষুরণ; তারই সবল সহক বাছব বিকাশের কলে সে আমায় ভালবেসেছিল। সে বললে—সেনন্ধি, তোমাদের টাগোরের প্রেমের কবিতা আমি পঙ্গেছ আগেই; তোমার মনের সকে তার চিন্তাবারার সামঞ্জ্য আমি অনেক দিন আগে থেকেই লক্ষ্য করেছি। কারণ অবক্ত আগে কানতাম না। তুমি রাগ করো না, ছংগ করে। না। নিরভিমান মন নিয়েই আমি বলছি যে তোমরা আকাশে মাথা তুলে হাঁট আর আমরা মাটিতে পা কেলে চলি। সবাই এগিয়ে হাই, কিছু আদর্শ আমাদের আলাদা।

বেদনার্ভ কঠে আমি বলে উঠলাম—না, না সোনা, আদর্শ কথনো আলাদা হতে পারে না। আমরা ভালবাসি, সেটাই সত্য, আলকের বাড়, বিপ্লব সবই ত শেষ হয়ে যাবে এক দিন; তোমার মনে রেখো ভালবাসা, আমার মনে রাখব আশা। সেটাকে আমাদের অবলম্ম হতে দাও। বলতে বলতে তার শীতল বিবশ হাত হট চেপে ধরলাম।

কণ্ড কণ্ডাৎ শব্দে একটা বন্ধ কাছেই ফেটে পড়ল !
বিশ্বাতের আলোর চকিতের ক্রন্ত উদ্ভাসিত তার মুখবানি
দেখলাম চোখের ক্লনে ভেনে যাছে। আর আমি ? লোকে
বলে পাধরের মত দেহের ভিতরে আমার পাধরেরই মত
মন; তাযে একবার মাধনের মত গলে গিয়েছিল তা কেহ
কানে না।

সোনা বললে—ত্মি নিশ্চয়ই এত দিনে বুকতে পেরেছ আমরা মাটির মাহ্ম, আমাদের প্রেম মাটির, যদিও আগুনের আভার তা সোনা হয়ে ওঠে। আমি তোমার মত ভালবাসার আশা নিয়ে মন বেঁকে বসে থাকায় সান্ধনা পাব না। আমার হাত ছটিকে সে সবলে নিজের আয়ভ করে বললে, বুকতে কি ত্মি পার না আমার কামনা আকাক্ষা সবই পেয়ালার শেষ তলানিটুকু পর্যান্ত আমি পেতে চাই। যাকে ভালবাসি তাকে ত্মু গুদরে নয়, গৃহে, তুর্ প্রিয়য়পে নয়, বামীয়পে পেতে চাই।

আমি মরিয়া হয়ে উঠেছি, ততক্ষণে বললাম আমিও ত ধর বাবতে চাই, এদেশেই এবানেই হবে আমার ধর। হও তুমি আমার সহবর্দ্মিণী।

বেদনাক্ত কণ্ঠে পোনা বললে —ন। না, আমার যে চাই সহক্ষী। যে নিজে থেকে নিজের বিবেক নিরে আমার পাশে এসে দীভাবে সেত তুমি নও। আর ভোমার বদলাবারও সমর নেই, মেদ জমে গেছে; বঙ্গণত হচেছ, বঙ্গ বইছে ছ'এক দিনের মধোই।

তা আমি জানতাম; কিছ এত শীব্র যে তা আমি কেন, জার থিতীয় নিকোলস নিজেও জানতেন না। ভ্যাসিনীরা এসে পড়ায় সেদিন আর কথাবার্তা হর নি। ওরা যদি ঘুণাক্ষরেও সোনিয়ার ইভি্ছাস জানত তা হলে তাকে পরদিনই ১১ নং সুবিয়ান্কাতে অর্থাং মস্কোর 'চেকা' পুলিসের অতিধি হতে হ'ত।

পরদিন সকালেই সরকারী আদেশে আমায় চলে যেতে হ'ল একটা প্রাদেশিক শহরে গুরু সংবাদ সংগ্রহের জন্ত । শুধু টেলিকোনে সোনাকে জানিয়ে যেতে পারলাম—আবার যেন দেখা হয়। বুকে তথন আসন্ন বঞ্চার পূর্বাভাস বইছে, বাজ্যতে গুরু গুরু গুরু রুব।

ইাা, জাবার দেখ। হয়েছিল বই কি। দিন সাতেকের
মব্যে জাদেশ পেলাম পত্রপাঠ কিরে জাসতে। কিরবার
পথেই দেখলাম জার পদত্যাগ করেছেন ও বিপ্লবীরা নৃত্ন
সরকার গড়ছে। জাপিসে ছুটে এসে পৌছাতেই জাদেশ
পেলাম যে জামাদের রাজ্যুতাবাসের করেকটি চিহ্নিড
লোককে রাশিরা থেকে বাইরে সরাবার বন্দোবন্ত করা হয়েছে,
এখনি জামার মোটর জাবেন উঠতে হবে। সমর পেলাম না;
বিদীত প্রার্থনা করেও সমর পেলাম না একটি দিন পরে রওনা
হবার; এমন কি চাকুরী ত্যাগ করে নিজের দারিতে থেকে
বাবারও জন্মতি পেলাম না। বাকী সবার মঙ্গলের
ভক্ত জামাকে এ দেশ থেকে হঠাৎ এমনি চলে যেতে
হবে।

বাইরে শত শত বংসরের বাঁধ ভেঙে রাশিরার জন-প্রবাহ বিপ্লব বভার দেশকে ভাসিরে নিয়ে যাচ্ছিল। যে লাল চৌকার (R d Square) আইভান দি টেরিবলের সমর থেকে বলশেভিকদের যে দিবস পালনের সমর পর্যান্ত সহস্র নির্বাতন হয়েছে সেখানে ক্রেমলিনের রক্তবর্ণের উচ্চ প্রাচীরগাত্তের পটস্থাকার চল্লিশ সহস্র বিপ্লবী সৈশ্ব সম্ভলন্ধ স্বাধীনতা ঘোষণা করে মার্চ্চ করে যেতে লাগল। তাদের পিছনে চলতে লাগল বৈপ্লবিক বাহিনী, ছাত্র, কেরাণী, আইন-ব্যবসায়ী, শহরে চিন্তাশীলের দল। স্বাই তাদের অভিনন্দন জানাচ্ছে টুপী উড়িয়ে; বিজয় গৌরবে, আদর্শের সাকল্যে তাদের মুখ উন্থাসিত। আমি কিন্তু প্রাণপণে চোব মেলে চারদিক দেবছি; কোধায় সোনা। সে যে আখাস দিয়েছিল আবার শীঘ্র দেখা হবে।

পরে দেখা হয়েছিল। বিপ্লবী বাহিনীর অভিযান প্রায় শেষ হয়ে এসেছে, তাকে দেখতে পাবার আশা প্রায় শেষ रुख अरमरह, बूरकत मर्या अकृषी इःमश रवलना मुर्क्छिण হয়ে রয়েছে এমন সুময় আমারই ভ্যানের পালে হঠাং সে বাহিনীর গতি ভঙ্গ হ'ল; কে একজন হঠাং পড়ে গেল; তাকে পিছনের কয়েক জন তুলে ধরল কিছু তার পা চলতে চাইছে না। বুৰলাম সে হয় আমার দৃষ্টি আকর্ষণ করবার জন্ত ইচ্ছা করে অধবা মানসিক উত্তেজনায় সে পা পিছলে পড়েছিল। তার সন্ধ্যাতারার মত দীপ্ত চোধ ছটি আমার দিকে তাকিয়ে আছে। তার পরেই মাটির মেয়ে সোনা তার মর্জ্যের স্বর্গ অভিমুখে জাবার মার্চ্চ করে এগিয়ে যেতে লাগল। বুক কেটে একটা আহ্বান বেরিরে আসছিল; কিছ মুখ কুটে তা বের হবার আগেই আমার সহক্ষীর। মুখ চেপে ধরল। নীরবে নতমুখে বিনা প্রতিবাদে আমি বসে পঢ়লাম। আমার নিজের ছদয়ের চেমে, আমার মানসী প্রতিমার চেয়ে আমার সহকর্মীদের নিরাপভার দাম অনেক বেনা।

সে দিন মকোর আকাশে কিছ মেব বা বিছাং কিছুই ছিল না। আসর সন্ধার সোনালী আলো লাল চৌকার লাল দেওরালে প্রতিক্ষিত হয়ে আরও বেশী অ্ব্যুর দেখাছিল। আর ভন্গার প্রোত্বারার মত সোনার সোনালী কেশ্রাশি সে আলোর মার্চের তালে তালে ছুল্তে ছুল্তে জ্বতার মধ্যে শেষবারের মত মিলিরে গেল।

শ্রী:যাগেশচন্দ্র রায়

श्रीशाभान नाम (फ

নগরীর প্রান্তদেশে স্বন্ধিপূর্ণ 'বন্ধিক' ভবনে, বিচ্ছা বয়োরন ক্ষি ক্ষেত শ্বক্রে, খেত উন্তরীয় ; তীক্ন অবধানী দৃষ্টি জানায়িতে নিয়ত হবনে, নিরন্তর ক্ষি যজে দীপ্ত করে আত্মা ভারতীয় :

বিলাস করেনি ভার্প, সম্পদ দিল না মলিনতা, দর্শহীন বিজা তার, দাহহীন জান সমুজ্জ ; ব্যাতির প্রশন্ত ক্ষেত্র রাজধানী হেলি' তাজিল তা', আদরে পশ্চিম রাচে আশ্রম রচিল স্ববিমল ; মৃত্তিকায় বাস ভার, মানস শুমিছে নভোগনে, ভাষা কহে আধুনিক, অতীত সাহিত্যে সঞ্চরণ; অবসরে নিরলস, শিক্ষা দের সারস্বতগণে, রাজা আসে নতশিরে বিনীত বিবৃধ অগণন।

হুষক, সরল শিশু জানে তারে বাছর স্বকীর, বুবর্গণ জানে তারে পণ্ডিতেরো জনির্বাচনীর।

মানুষ ও মুসলমান

শ্রীউমেশচন্দ্র ভট্টাচাগ্য

উদার এবং নিরপেক দৃষ্টি সকল ধক্ষের মূলেই এক শাশ্বত সত্য দেখিতে পায়। ইস্লামের মূলেও এই সত্যের অন্তিত্ব স্বীকৃত। এই শাশ্বত বস্তু মানবত্বের পরিপোষক, পরিপম্বী নয়। কিন্তু সকল ধর্ম্মেই এবং ইস্লামেও এমন সব ভথাক্থিত ধার্মিক আছেন বাঁহাদের নিকট এই শাশ্বত সতা অপেকা ধর্মের ব**হিরঙ্গ** আচার, অফুষ্ঠান প্রভৃতির মূল্য বেশী। এইখানেই ধর্ম মহস্করক অতিক্রম করিয়া—'মুসলমান' মামুষকে থকা করিয়া—বড় হইয়া পড়ে। কিন্তু ইহা একটি ভ্ৰম,—ভধু ভ্ৰম নয়, বিপক্ষনক ভ্ৰম। ইহার ফলে শুধু যে মান্তঃ হইতে ধর্ম বড় হইয়া পড়ে ্রাহা নয়, ধর্ম ২ইতেও সম্প্রদায় বড় ২ইয়া পড়ে। বর্ত্তমানে মুদলমান-দমাজে—বিশেবতঃ ভারতের মুসলমান-সমাজে এই ভ্রান্তির বিস্তৃতি ও প্রভাব দেখিয়া মনে হয় ইহার উৎপত্তি এবং উৎসাদনের কথা চিস্তার অধোগ্য নয়। *সেই* জনাই কথাটা তুলিতেছি। আর মাহুষ ও মুদলমানের মধ্যে যে একটা প্রভেদ সম্ভব, এই কথাটার উপরও আমাদের সেইজনাই জোর দিতে হইতেছে।

ঈশা মৃদঃ কিংবা বৃদ্ধ চৈতনা প্রভৃতির প্রচারিত ধর্ম মাহুষের সমাজের বাহিরে যার নাই, ইং দ্ব সময় মনে না রাখিলেও আমরা জানি। ইদলামও তেমনই মাহুষের বাহিরে কোন উদ্ভিদ্ বা প্রাণী গ্রহণ করে নাই। স্বর্গের ফেরেশতারা ঈশ্বরের আদেশে চলেন এবং তাঁহার প্রদত্ত ধর্ম অন্তুসরণ করেন, এরপ কথা কোন কোন ধর্ম বলে। আর জগতের দকল ধর্মাই একথা বলে যে উদ্ভিদ্ ও প্রাণী প্রভৃতিও ঈশ্বর-শাদিত। কিন্তু এই দমন্ত কথার অর্থ এই নয় যে, ধর্ম বলিতে যাহা বুঝায় মাহুষ ছাড়া আর কেহ তাহা অন্তুসরণ করিতে পারে। স্বভ্রাং ইদ্লামও মাহুষের মধ্যেই দীমাবদ্ধ; অর্থাং মুদ্লমান দকলেই মাহুষ।

সঙ্গে সজে ইহাও মনে করা উচিত যে, সকল মান্ত্যই
মুসলমান নয়। অ-মুসলমানকে 'কাফের' বলা চলে, এবং
আনক সময় বলা হইয়াও থাকে; কিন্তু তাহাকে অমান্ত্য
বলা চলে না। স্বতরাং মান্ত্য ও মুসলমানের তুইটি বৃত্ত
আকিলে দিতীয়টি প্রথমটির একাংশ থাকিবে, উহার সমান
হইবে না। মান্ত্য মাত্রেই মুসলমান নয় বলিয়া উভয়ের
মধ্যে একটা প্রভেদও বহিয়াছে; মান্ত্যম্ব ও মুসলমানম্ব
একত্র অবস্থান করিতে পারিলেও স্ক্রদাই একত্র থাকে না;
স্বতরাং উহারা পৃথক্-শুণ।

কেহ হয় ত ইহারই মধ্যে বিরক্ত হইয়া ভাবিতেছেন,

ইহা এমন কি একটা গুড় তত্ত্ব যে **উহাকে লইয়া এত** व्यानाहन ? भागात्मत्र श्राद्याक्रन এই त्य, मात्य मात्य गाञ्च ७ मूननभारनत मरभा विरताध रमथा रमग, ज्थन रकान्षि বড় তাহা প্রশ্ন হইয়া দাড়ায়। উভয়ের **প্রভেদ জানা না** পাকিলে সে প্রশ্নের উত্তর দেওয়া সম্ভব হয় না। যে যে-ধর্মের অন্নরণ করে, তাংগর কাছে সেই ধর্মাই শ্রেষ্ঠ ধর্ম, সনাতন সভ্য, এবং চরম আবিষ্কার। সেই **অহুসারে** প্রত্যেক বিশ্বাসীর কাছেই নিজের ধর্মের বাহিরের লোকেরা হিপদ ইইলেও মাহুষের যোল আনা মধ্যাদার অধিকারী নয়। প্রাচীন ভারতের খায্য খনায়্য, ও প্রাচীন ফিলিন্ডিনে ইস্রায়েল ও ইস্রায়েলের বাহিরের লোকেদের পরম্পরের প্রতি ব্যবহারে আমরা এই সত্য উপলব্ধি করি। তেমনই বর্ত্তমান ভারতের হিন্দু-মুসলমানদের মধ্যে ধাহারা অত্যুগ্র বিশ্বাসী ভাহাদের কথায় ও আচরণে আবার এই সতীের সাক্ষাৎ মিলে। এই মত অফুদারে ধর্মবিশেষ যে অফুদরণ করে সে ভিন্নধর্মী হইতে বড়।

প্রত্যেক ধর্মেরই প্রচারের প্রথম দিকটায় দেখা বায় যে, কতকটা আত্মরকার জন্য এবং কতকটা প্রচারের স্থবিধার জন্য সেই ধর্মের অম্বর্ত্তকেরা যথাসম্ভব সক্তবন্ধ হইতে চেষ্টা করে। বৌদ্ধদের মঠের এবং গ্রীষ্টানদের গীর্জ্জার সংগঠনের ইতিহাসে আমরা ইহা দেখিতে পাই। প্রথম বলিফাদের আমলে ইস্লামেও উহা দেখা যায়। এই ভাবে ধর্ম বৃদ্ধি ও প্রসার লাভ করে। তার পরের স্থরে দেখা যায়—রন্ম রাষ্ট্রের অধিকারী হয়, রাষ্ট্রশাসনের কৌশলও আয়ত্ত করে এবং দায়িয়ও গ্রহণ করে। ইস্লামের খলিফারা তাহা করিয়াছেন। বৌদ্ধর্মের ভিক্রা কিংবা হিন্দু সয়্মাসীরা তাহা করেন নাই সত্য, কিন্তু ঐ ধর্মাবলম্বী সম্রাটেরা তাহা করিয়াছেন, যেমন অশোক, চক্তপ্তথ প্রভৃতি। আর গ্রীষ্টান পোপের রাজশক্তি এখনও একেবারে লোপ পায় নাই।

মতীতে এইরূপ ধর্ম ও রাষ্ট্রের মিলিত ক্রমবিকাশে দেখা যায় যে রাষ্ট্রবোধ প্রবল হইলেই ধর্মের শাসন হর্বল হইমা পড়ে এবং ধর্ম রাষ্ট্রীয় ব্যাপাব হইতে ক্রমে সরিয়া পড়ে। আরপ পরে ধর্ম স্বয়ং রাষ্ট্রেই অধীন হইয়া পড়ে। ইউরোপের ইতিহাসে ইহার দৃষ্টান্থের অভাব নাই, আর ইস্লামেরণ্য পরবর্ত্তী ধলিফারা এবং আরও পরে বিভিন্ন দেশের বাদশাহেরা ধর্মকে অস্বীকার না করিলেও ধর্মের অধীনতাও স্বীকার করেন নাই। তাঁহারা নিজের ধর্মের

লোকদিগকে অতিরিক্ত স্থবিধা দিলেও অন্য ধর্মের অন্তিত্বও বরদান্ত করিয়াছেন এবং সেই দেই ধন্মের লোকদিগকে আশ্রম দিতে এবং রক্ষা করিতে পরাধ্যুথ হন নাই। ধর্ম অস্বীকৃত না হইলেও ধর্মের ভিত্তিতেই ঠিক রাজ্য প্রতিষ্ঠিত ও শাসিত হইত না। ধর্মপ্রচারের জন্ম রাজ্য দখল অনেক মুসলমানই করিয়াছেন। প্রীষ্টানদের মধ্যেও সে জিনিসটা একেবারে অজ্ঞাত নয়। মধ্য যুগে কিলিন্তিন ও জেকজালেন মুসলমানদের হাত হইতে ছিনাইয়ালওয়ার জন্ম যে কুজেড' বা 'জেহাদ' হইয়াছিল, তাহারও মূলে ঐ আকাজ্রমা বর্ত্তমানছিল। রাজ্য বিভ্ত করিয়া ধর্ম প্রচারের চেষ্টা সকলের অপেক্ষা কম করিয়াছেন বোধ হয় হিন্দুরা ও বৌদ্ধেরা। তাঁহারা ঐ কাজটি করিয়াছেন সন্ম্যাসী, পরিব্রাজক ও ভিক্তদের সাহায়ে।

কিন্তু রাজ্য বিস্তারের মৃল উদ্দেশ্য যাহাই হউক না কেন, রাজ্য বিস্তৃত হইয়া গেলে পর স্থাসক মাত্রেই পরধর্ম সফ্ করিতে শিথিয়া লইতেন। ভারতের মুসলমান শাসকদের মধ্যে আকবর ইহার একটি উজ্জ্বল দৃষ্টান্ত। ইসলামের ইতিহাসে এরূপ দৃষ্টান্ত আরও আছে।

ক্রমে মাত্র্য রাষ্ট্রের উন্নতিবিধানের জন্ম অনেক রক্ম চেষ্টা করিয়াছে, কিন্তু ভাহার মধ্যে ধর্মের স্থানই প্রধান ছিল না। ইংলণ্ডে পার্লামেন্টের স্থচনা, রাজার পদ্চাতি ও মৃত্যুদণ্ড প্রভৃতি অনেক বড় বড় ঘটনা মাম্ববের অধি-কারের দাবিতে—রাজার বিরুদ্ধে সাধারণ মাছুধের, উচ্চ শ্রেণার বিরুদ্ধে নিমু শ্রেণার অধিকারের দাবিতে ঘটিয়াছে, কোন ধর্মবিশেষ বা ধর্মসম্প্রদায়বিশেষের উন্নতির জন্ম । রোমান ক্যাথলিক ও প্রোটেস্টাণ্টদের মধ্যে যে মারামারি কাটাকাটি ইইয়াছে তাহা আমরা তুলিতেছি না। তাহার মধ্যেও অনেক সময় রাষ্ট্রীয় অধিকারের কথাও ঢুকিয়াছিল, কিন্তু খুব বেশী নয়, এবং উহা খুব বেশী দিন ছিলও না। অবশ্যই এখনও কোন রোম্যান ক্রাথলিক ইংলণ্ডের সিংহা-সনে বসিতে পারেন না। কিন্তু এই পর্যান্তই। অন্যান্য রাষ্ট্রীয় অধিকারে ধর্ম বা সম্প্রদায় অফুসারে পার্থক্য খবই কম। ম্পেনে এবং ফরাসী দেশেও ক্যাথলিক ও প্রোটেস্টাণ্টদের কলহ ইতিহাসের উল্লেখযোগ্য ঘটনা, এবং ইহাতে জয়-পরাজ্য রাষ্ট্রীয় অধিকারেও পার্থক্য ঘটাইয়াছে। কিন্তু করাসী ইতিহাসের সর্বাপেক। প্রসিদ্ধ ঘটনা যে অষ্টাদশ শতালীর রাষ্টবিপ্লব তাহা মাহুষের অধিকারের জনাই घिषा किल-- धर्म वित्नारवत स्वविधा वा नमुक्तित कना नय। আর আধুনিক যুগের প্রকাণ্ড ব্যাপার কল বিপ্লব ধর্মকে একেবাবে প্রকাশ্যে তিরস্কার ও বর্জন করিয়াই হইয়াছে। এই সব ব্যাপারে দেখা যায় যে, মাত্রুষ ও ধর্মবিশেষের অভুসরণকারীর মধ্যে একটা প্রভেদ আছে, স্বভরাং মাছুষ

ও মৃদলমানের মধ্যেও একটা পার্থক্য রহিয়াছে, আর এই পার্থক্য ধরিয়া বিচার করিলে দেখা যাইবে বে, মাহুষের চিস্তা মহুয়াত্ত্বকে ধশ্মবিশেষ অন্তুসরণ করা অপেক্ষা অনেক বড় মনে করিয়াছে।

মাকুষের অধিকারের আলোচনায় সকল ধর্ম্মেরই কমবেশী দান রহিয়াছে। যে ধর্ম্ম যথন আবিভূতি হইয়াছে,
তখন উহা মাকুষকে উন্নত করিবার জন্যই আসিয়াছে—
তাহাকে থর্ম করার জন্য নয়। পরে যথন ধর্ম্মে ধর্মে
কলহের স্পষ্ট হইয়াছে, তখন ধর্ম্মবিশেষ অন্য ধর্ম হইতে
নিজেকে বড় মনে করিয়াছে এবং সেইজন্যই অন্য
ধর্মাবলম্বীকে হেয় মনে করিয়াছে। এই ভাবেই কথনও
কথনও ধর্ম মাকুষের উপরে নিজের স্থান করিতে চেটা
করিয়াছে, এবং ঠিক এট ভাবেই ইস্লামও মাকুষ ও মুদলমানের মধ্যে প্রভেদ করিয়া মুসলমানকে মাকুষের উপরে
স্থান দিয়াছে এবং এখনও দিতে চায়।

ইস্লাম মাস্থকে কি কি দিয়াছে, তাহা একটা ঐতিহাসিক প্রশ্ন। মুসলমানের। সব সময় ভাবিতে না চাহিলেও ঐতিহাসিক ভাবিতে পারেন। তবে, খুব কৃষ্ণ বিচার না করিয়াও ইহা সহজেই স্বীকৃত হওয়া উচিত যে, মানবের বিরাট সভাতা-সৌধের স্বকিছু উপাদান্য ইস্লাম দেয় নাই। যেমন শুধু রোম, গ্রীসের সভাতাত জগতের সভাতা স্প্রিকরে নাই, অনোর দানও ইহাতে বহিয়াছে, তেমনই জ্বাং শ্রেষ্ঠ যাহা কিছু শিশিয়াছে, স্বই ইস্লামের কাছেই শিশে নাই, সব কিছু ভাল কোন এক বিশেষ ধর্ম জগংকে শিখার নাই, সকলের দানের স্মন্তরে, সকলের চেষ্টার স্ম্বারে, মানবসভাতা নামক বিশাল পদার্থটি উৎপন্ন হইয়াছে।

বর্ত্তনানে ভারতের অনেক মৃস্লগানই খ্ব গর্কা করিয়া বলেন যে, ইস্লামই জগংকে 'ডিমোক্রেসী' বা গণভন্ধ শিথাইয়াছে। অন্তরূপ উক্তি সকল ধর্মের অন্তর্ব্তকেরাই করিয়া থাকেন। সনাতনী হিন্দু বলিবে, যাহা কিছু সনাতন সত্যা, তাহা হিন্দু ধর্মই জগংকে শিথাইয়াছে। আঁইান ধর্মের অন্তর্ব্তকেরাও এরপ কথা বলিতে অধিকারী। এরপ মনোভাব ইতিহাসকে অভিক্রম করিয়াই বৃদ্ধি পাইতে পারে, অন্তর্মবাক করিয়া নয়। যারা ইস্লামের বাহিরে 'ডিমোক্রেসী' দেখিতে পান না, তারা ইস্লামও বেশী জানেন না, ইতিহাসও পড়েন না। 'ডিমোক্রেসী' কথাটার স্পৃষ্টি হয় ইস্লামের জন্মের হাজার বছরেরও বেশী আগে, এবং জিনিসটিও প্রথম গ্রীসের লোকেরাই আবিদার এবং প্রবর্ত্তন করে। তার পর স্বাধীনতা, সাম্য ও মৈত্রীর কথা প্রীষ্টান-জ্বগংও কম শুনায় নাই। প্রীষ্টের ধর্ম্মের ভিতরও এ সকলের বীজ নিহিত রহিয়াছে। ইস্লাম যদিও জাতি-

ভেদ কিংবা অস্পৃশ্যতা মানে না এবং সেই হিসাবে সব মুসলমানই---দ্ব মাত্র ঠিক নয়---দ্মান, তথাপি মনে রাগা উচিত যে, রাষ্ট্রে গণ্ডম বলিতে যাহা বুঝায়---অর্থাৎ জন গণের ভোটাণিক্যে শাসননীতি নিয়ন্ত্রণ-তাহা ইস্লামের ইতিহাসে খুব বেশী দেখা যায় না। ভারতে মুসলমান-শাসনে ঐ জিনিসটি মোটেই ছিল না, ভারতের বাহিরেও কম। এখনও কোন মুদ্রমান রাজাই থাটি গণতম্ব নয়। কামাল পাশার তুরম্বে যাহা ঘটিয়াছিল, তাহা ইউরোপের অত্বকরণে, থাটি ইসলামের শাসন অত্থায়ী নয়। অবশাই ङेभनास्पत्र अवर्खस्वत्र চत्रित्व धवः अथम थनिकास्पत्र क्षीवरन এমন সব বস্তু আমরা পাই যাহা ইতিহাস চিরকাল প্রশংসা করিবে। ইহাদের নিকট মানবসভাতার ঋণ কোন অন্নদারিংফু কিংবা জ্ঞানীই অস্বীকার করিবে না। কিন্তু তথাপি একথাট। আমাদের সর্ব্বদাই মনে রাখা উচিত যে, কোন এক ব্যক্তি বা কোন এক ধর্ম জগংকে সব কিছুই দেয় নাই। আরও একটা কথা আমাদের মনে রাখা উচিত যে, মহাপুরুষদের আবিভাবের উপযুক্ত প্রতিবেশ সমাজ আগে হইতেই সৃষ্টি করিয়া রাথে। পূর্ববন্ত্রী হিন্দু সামজের উৎস হইতেই জৈন ও বৌদ্ধ ধৰ্মের আবিৰ্ভাব হইয়াছিল এবং পুরোগামী মীহুদী ধর্ম ও স্নাজের শিক্ষা হইতেই ঐত্তির শিক্ষা উদ্ভূত হয়। ইহা ইতিহাসের সত্যা, নহাপুরুষ-দের প্রতি অগৌরব দেপাইবার জন্য নয়, তাহাদিগকে বুঝিবার জন্য, বলা হইভেছে। তেমনই ইহাও ত স্পষ্ট যে, মহম্মদের আদর্শ এবং শিক্ষাও যীত্রদী এবং গ্রাপ্তান ধর্মের পরিরেশের মধোই আবিভূতি হইয়াছিল এবং সেইজ্ঞাই উহ। উভয়ের নিকটই কম-বেশা ঋণী। মহম্মদ বাহাদিগকে প্রপশ্বর বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন তাহাদের মধ্যে যীছদী মুদা প্রভৃতি আছেন এবং ঈদাও রহিয়াছেন; আর প্রথম নর-মিথুন আদম ও হাওয়াকে তিনিও স্বীকার করিয়াছেন। স্থতরাং একান্ত মৌলিকত্ব দাবি করিবার অধিকার কোন ধর্মেরই বান্তবিক নাই। মাকুষের চিন্তা হাওয়ায় চলিয়া ফিরে, সমুদ্রের ঢেউয়ের মত কোথাও উহা উত্তর্গ হইয়া উঠে; দেখানেই আমরা দেখি মহাপুরুষ।

স্তরাং নিজেদের ধর্মের প্রতি প্রগাঢ় শ্রদ্ধা থাকিলেও
মুসলমানদের ইতিহাস অস্বীকার করা উচিত নয়। কিন্তু
ইহাই আমাদের একমাত্র বক্তব্য নয়। বর্ত্তমানে আরও
একটা চিপ্তাধারা ও কর্মপদ্ধতি নানা জায়গায় আত্মপ্রকাশ
করিতেছে যাহা দেখিয়া মনে হয়, 'মাহ্ম্য'ত্ব ও মুসলমানত্বের
তুলনায় শেষোক্রটিকেই বড় কল্পনা করা হয়। সোজা
বাংলায়, অনেকের মতে মাহ্ম্য হওয়া অপেক্ষা মুসলমান
হওয়া বড়। মুসলমান হইয়া জন্ম নিলেই কিংবা মুসলমান-ধর্ম
গ্রহণ করিলেই কেহু মহাপুক্ষর হইয়া যায় না, এবং মুসলমান

নয় অথচ উচ্চ চরিত্রের অধিকারী এমন মাহ্র আছে।
মানববের উচ্চ গুণ বিরহিত হুইয়া গুরু মুদলমান ধর্ম
মানিলেই কাহাকেও পূজা মনে করা বায় না। কথাটা
অতি সরল। কিয় এক শ্রেণীর লোক বর্ত্তমানে এদেশে
দেখা বায় থাহাদের মতে চরিত্র বেমনই হুউক না কেন, গুরু
ধর্মে মুদলমান হইলেই ভাহার মূল্য বে-কোন অমুদলমান
মহাপুক্ষ হুইভেও অধিক। এরপ ধারণার অদারত্ব প্রমাণ
করার জন্ম যুক্তি দেখাইতে গেলে শিক্ষিত লোকের বৃত্তিকে
অপমান করা হয়। কয়েকটা অন্ধ বিশাস গ্রহণ এবং
কয়েকটা অথ না জানা আচার অম্পরণ করিলেই মাহ্র্য
মহান্ত্র লাভ করে না। কোনও ধর্মের একান্ত মৌলিকত্ব
দাবি যেমন ইতিহাস-বিক্লম তেমনই ধর্ম অন্তুসরণ করাটাকে
মহান্তর অপেকা শ্রেষ্ঠ মনে করাও যুক্তি-বিক্লম।

ভারতে বহু মুসলমান যে অনেক সময় মাঞ্ষ হওয়া অপেক্ষা মুসলমান হওয়া শ্রেষ্ঠ মনে করে, তাহার একটা কারণ ভাহাদের চিত্তে একটা আহত আগ্রাভিমান বহিগছে। তাহারা একটা সামাজ্য হারাইয়াছে, নিজেদের দোষেট হারাইয়াছে, কিছু তথাপি হারাইয়াছে। বারা শাসক ছিল আজ তারা শাসিতের প্রায়ে নামিয়া আসিতেছে। দেই ক্ষোভ তাহাদিগকে বৈবাগ্যের দিকে না লইয়া আরও লুব্ধ করিয়া তুলিয়াছে। ইহার ফল ভাল লপ্ত বোমক গৌরব—বোমান সাম্রাজ্য— পুনজীবিত করিবার আকাজ্ঞা সেদিন প্রকাশ পাইয়াছিল মুদোলিনীতে: ভাহার সমাপি এখনও আগাদের চোথের সম্মুপে বহিয়াছে। লুপ আর্যামহিমা পুনংপ্রতিষ্ঠিত করার চেই। মৃতি গ্রহণ করিয়াছিল হিটলারে। ভাহারও পরিণতি আমরা দেখিয়াভি। কাহারও মহিমা লুপ হইলে ভাহার মনে বাসনা দিগুণিত না হইছ বৈরাগাও আসিতে পারে. যেমন সাশিয়াছিল হিন্দুর মনে। একটি প্রাচীন স্লোক বলি---

'যতপতে: ক গতা মথ্রাপুরী ?
রঘুপতে: ক গতা উত্তরকোশলা ?
ইতি বিচিন্তা কৃক্ষ মন: স্থির:
ন সদিদ: জগৎ ইতাবধার্য।"

বিভিন্ন বাজ্যের পত্ন দেখিয়া ইহাই দিদ্ধান্ত করা উচিত যে এই জগং সং নয়, এ জগতের মহিমা গরিমা চিরন্থায়ী নয়। ভোগের সময়ও এ কথা যে মনে রাখে সে ধীমান্; আর এ সকলের লোপের পর বাসনা উদ্রিক্ত না করিয়া বৈরাগ্যের দিকে ঝুঁকিয়া পড়িলে হয় বিজ্ঞ। কিন্তু সাধারণ ভাবে ভারতের মুসলমান-মন বাসনার লোপের কথা ত ভাবিতেই পারে না, উহার সংকোচকেও মনে করে কাপুরুষতা। সে চায় লুপ্ত গৌরব উদ্ধারের জন্ত বিশ্রণ উদ্যম করিতে। কিন্তু এরপ উদাম কদান্তিং স্কল হয়, প্রায় সর্বদাই বক্তপাত ঘটায়, এবং মাস্থ্যের নিকৃষ্ট প্রবৃত্তিগুলি উদ্রিক্ত করিয়। তাহাকে নীচের দিকে টানিয়া নামায়। আর মুসলমানশাসনই শ্রেষ্ঠ শাসন, সমাজে মুসলমানের কর্তৃত্বই সহনীয়, এরপ ধারণার মুলেও রহিয়াছে মাস্থ্য হইতে মুসলমানকে শ্রেষ্ঠ মনে করিবার প্রবৃত্তি।

এই প্রবৃত্তিরই একটা দিক অক্সভাবে প্রকাশ পায় 'মৃদলিম জ্বগৎ গঠনের' আকাজ্জায়। ইহাও ভারতে শিকড় জগতের মুদলমান দব এক হও-ইহাই ভাহার ধ্বনি। অর্থ কি ? দেশ, ভাষা চেহারা, আচার, পোশাক ইত্যাদি সমস্ত বিষয়ের প্রভেদ কিছু নয়, শুশু মঞ্চার দিকে মুখ করিয়া যারা নমাজ করে এবং মহম্মদকে আল্লার প্রগম্বর জানিয়া তাঁহার বিধান মাল করে তারা এক, অন্তেরা পৃথক। এই ভাবে মঞ্চোলিয়া হইতে আরম্ভ করিয়া মরোকো পর্যান্ত এবং তুরস্ক হইতে আরম্ভ করিয়া মলয় উপদ্বীপ পর্যান্ত যত মুসলমান আছে তাহাদিগকে সমগ্র অমুসলমান জগৎ ২ইতে পুথক করিয়া একটা বিরাট শংহতিতে পরিণত করিবার আকাজ্ঞা ভারতে এবং ভারতের বাহিরেও অনেক মুদলমানের মনে দেখা দিয়াছে। এই দংহতিই একমাত্র লক্ষ্য নয়। সংহতিবদ্ধ এই বিরাট জনসমষ্টি জগতের অন্ত সকল মান্তবের উপর প্রভুত্ব করিবে, এই ইচ্ছাও অস্ফুট নয়।

শুনিতেছি পাকিস্থানের রাজধানী করাচীতে শীঘ্রই একটা সর্ব-জাগতিক নুসলিম সম্মেলন হইবে। তাহা যদি হয় তবে উহার নূলে ঐ একই আহ্বান—জগতের মুসলমান সব এক হও, ক্লক্ষেও আরও একটু ইহার সঙ্গে যোগ করিয়া দিতে হয়—অনুসলমানদের বিক্লমে শংহত হও, সম্ভব হইলে তাহাদের উচ্ছেদ কর অথবা মুসলমান করিয়া লও, এবং ক্রমে এক ধর্মের ভিত্তিতে এক রাষ্ট্র স্থাপন কর।

মুদলমানকে সর্বজগতের মাহ্য হইতে পৃথক করিয়া
দেখার এবং দকল মাহ্য হইতে শ্রেষ্ঠ মনে করিবার গৃঢ়
প্রবৃত্তির আর একটা প্রকাশ দেখা যায় উরক্তজ্বের পরে
ভারতের দর্বাপেক। প্রভাবশালী মুদলমান মহমদ আলি
দ্বিদ্রার বাক্যে ও কার্যে। দ্বিদ্রার জীবন আলোচনার স্থান
ইহা নয়, আমাদের প্রয়োজনও নাই। তবে ভারতের
মুদলমানদের অনেকের মুখেই তনি তিনি একজন শ্রেষ্ঠ
মুদলমান এবং দেইজন্যই বোধ হয়, এক জন মহামানবও
বটেন। প্রকৃত ইদ্লাম অভি দামান্যই তিনি জানেন,
এবং বাহা জানেন তাহাও কার্যে, আচারে, পোশাকপরিচ্ছদে তিনি অম্পরণ করেন না। তথাপি ভারতের
মুদলমানদের ইতিহাদে তাঁহার একমাত্র তুলনা নাকি বাদশাহ উরল্পের। তিনি বে বর্ত্তমান ভারতের মুদলমানদের
তীত্র আকাজ্যা, গাজ্যলিকা, জিগীয়া—এবং বলিতে

যাইতেছিলাম, জিঘাংসার—মূর্ত্ত প্রতীক, ইহাও তাঁহার নিজের এবং অন্য অনেকের উক্তি হইতেই প্রমাণ করা যায়। ইস্লাম অহিংসায় বিশাস করে না, মুসলমান লড়াই করিতে জানে, ভেড়ার মত শুধু জেলে যায় না, ইত্যাদি উক্তি লীগপন্থী মুসলমানেরা একাধিকবার করিয়াছেন, আর, ইংরেজেরা শক্তিতে বিশাস করে, শক্তের ভক্ত, ইত্যাদি ধরণের বাণা জিন্নার শ্রীমুখ হইতেও নিংস্ত হইয়াছে। স্থতরাং মান্থ্য হইতে পৃথক্ মুসলমানদের বিজয়লিক্সা জিন্নায় মূর্ত্তি গ্রহণ করিয়াছে, ইহা অস্বীকার করা যায় না।

এই মহা মুদলমান এবং তথাকথিত মহামানব জগতের সর্বন্যেষ্ঠ মানব গান্ধীর মৃত্যুতে যাহা বলিয়াছিলেন, তাহা অনেকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে এবং আমাদেরও অমুধাবন-যোগ্য। বাহাকে জাপানের সমাট্ এবং আমেরিকার প্রেসিডেন্ট টুম্যান হইতে আরম্ভ করিয়। শহরের রিক্সা-ওয়ালা পধ্যম্ভ 'মহাত্মা' বলিয়া শ্রদ্ধ। দেখাইয়াছে—ধাঁহাকে সমন্ত পৃথিবীর বিভিন্ন দেশের লোক 'শতাৰীর শ্রেষ্ঠ মহা-পুরুষ,' যীশুর সমান এবং বুদ্ধের সমান প্রভৃতি বিশেষণে বিশেষিত করিয়াছে—কায়েদ-এ-আজম জিলা তাঁহাকে একজন বিশিষ্ট 'হিন্দু' নেতার বেশী ভাবিতে পারেন নাই ৷ জিলার ইতিহাস বুঝিবার এবং মূল্য মাপিবার শক্তি এত কম যে গান্ধীজী যে হিন্দুত্বের কত.উর্দ্ধে তাহা তিনি আন্দাজও করিতে পারেন নাই। সে দিন আবার পাকিন্তানের পার্লামেন্টে আরও একটু মুক্সিয়ানা করিয়া বলিয়াছেন, গান্ধী তাঁহার কর্ত্তব্য পালন করিতে গিয়া মরিয়াছেন। অর্থ টা অস্পষ্ট ; তবে বোধ হয় এই যে, ভারতের মুসলমান-দের রক্ষার চেষ্টা করা ত জাহার কর্ত্তব্যই ছিল। ইহার নির্গলিতার্থ এই—পাকিন্তানের অমুদলমানদের রক্ষা করা কাহারোই কর্ত্তব্য নয়—জিল্লার ত নিশ্চয়ই নয়।

জিলা নিজেকে খুবই বে বড় মনে করেন তাহার প্রমাণ দেওয়া চলে। গান্ধী তাঁহার সমকক্ষ, এ কথা তাঁহার মনের অন্ধকারে কোথাও প্রকাশ পায় না, তিনি গান্ধী হইতে বড়, ইহাই বরং তিনি ভাবেন। কিন্তু একথা আমরা লিখিয়া রাখিলাম, গান্ধী জীবনে এবং মৃত্যুতে জগতের যতথানি সম্মান ও শ্রন্ধা লাভ করিয়াছেন, জিলা জীবনে তাহা পান নাই, মরিয়াও পাইবেন না। ভারতের ধর্মান্ধ মুসলমানেরা তাঁহাকে বড় ভাবে ঠিক, কিন্তু এক মুসলমান ছাড়া আর ত কিছুর কথা তিনি ভাবিতে পারেন না। তাঁহার সমস্ত উজিএকত্র করিলেও মাহুরের হিতের কথা তিনি চিন্তা করিয়াছেন, এরূপ প্রমাণ মিলিবে না। ইদানীং আবার তাঁহার মূথে মুসলমান ধর্মের কথাও শোনা যায়, কিন্তু মাহুর তাঁহার বাক্য ও চিন্তার কোথাও স্থান পায় নাই। বেখানে ম্বেড জাতিরা অ-শ্বেত জাতিদের উপর প্রভৃত্ব কিংবা অত্যাচার

করে—বেমন দক্ষিণ-আফ্রিকায় কিংবা ইন্দোনেশিয়াঃ—
দেখানেও তিনি অবেত মুগলমানদিগকে অবেত অ-মুগলমানদের হইতে স্বতন্ত্র করিঃ। লইয়া মুগলমানদের জন্য একটু
পৃথক্ স্থবিধা আদায়ের কথা ভাবেন এবং সেইরূপ চেষ্টা
করেন। এই মনোভাব কি ইহাই প্রকাশ করে না যে মুগলমান হওয়ার মত মাসুষের পক্ষে শ্রেষ্ঠ অথবা প্রশংসার
বোগ্য আর কিছু নাই ?

জিল্লা এবং তাঁহার অক্চরদের মনে আরও একটা গুপু
আকাজ্রা আছে যাহা কথায় এবং কার্য্যে অনেক সময় প্রকাশ
হর্ট্যা পড়ে। ইহার। ভারতবর্ষকে আবার একটা মুসলকান
রাজ্যে পরিণত করিতে চান, যেমন ঔরক্তেবের সময় ছিল
ঠিক তেমনই। এই রাজ্যে অমুসলমানেরা হয় পবিত্র ইস্লাম
গ্রহণ কারবে, না হয় মুসলমানের পদানত হর্ট্যা থাকিবে।
গুই মনোবৃত্তিও প্রমাণ করে যে, মান্তবের অধিকার হ্ইতে
মুসলমানের অবিকার বড়, এবং মুসলমানত্ব মন্ত্র্যুত্বের
উপরে।

নুসলমান ধর্মে মেহেদিবাদটা কথনও কথনও দেখা গেলেও অবতারবাদ নাই। তথাপি ভারতের বহু মুসলমানের নিকট জিল্লা পয়গম্বরের সমকক্ষ ত বটেনই, হয় ত বা কিছু উপরে। স্থতরাং তাঁহার যে চিন্তা, সেটা মুসলমানসমাজের বহু লোকের চিন্তা, এরপ মনে করিলে কাহারও প্রতি অবিচার করা হইবে না। একটা কথা আছে, 'যথা দেব তথা ভক্ত,' অর্থাং যে যাহাকে উপাসনা করে, দে তাহার গুণাবলীও অন্তক্ষরণীয় মনে করে। উপাস্ত দেবতার প্রকৃতি হইতে উপাসকের প্রকৃতিও বুঝা যায়। তাই যদি হয়, তবে জিলাভক্তদের সম্বন্ধে আমাদের কি ভাবা উচিত ?

পৃথিবী হইতে বর্ষর ও বর্ষরতা এখনও লোপ পায় নাই অর্থাৎ স্কল মান্তুষ এখনও সমান সভা হয় নাই। বর্ষর জাতি প্রাচীন গ্রীদের চারিদিকে ছিল, আর, রোমক <u> পামাজ্যকে প্রংসও</u> 💠 : 🤏 পূর্ব্ব ইউবোপের বর্ববেরা। কিন্তু ইউরোপের এই বর্ববেরা খ্রীষ্টানধর্মের প্রভাবে সভা হইয়া ষায়, এবং তাহাদেরই বংশবর বর্ত্তমান ফরাসী ও জার্মান জাতি ইউরোপের তুইটি শ্রের্গ জাতি। মুদলমান-ধর্ম্বের প্রভাবে কোন বর্বর সভা হয় নাই, একথা উত্তর-আফ্রিকায় এবং নিজ আরবভূমিতে অজ্ঞান তিমিরে আচ্ছন্ন বর্ব্বরেরা ইস্লামের প্রেরণায় আলোক দেখিয়াছিল। তার পর পারস্তের আর্যাক্তাতি কর্ত্তক গৃহীত হইমা ইসলাম আরও বিকশিত হইমা উঠে এবং স্পেন হইতে ভারত পর্যান্ত বিরাট ভূখণ্ডে বছ জ্ঞানচর্চার কেব্ৰু উদ্ভূত হয়। কিন্তু এসব প্ৰাচীন ইতিহাসের কথা। বর্দ্তমানে ইস্লামের একটা প্রকাণ্ড অংশে যে মনোভাব প্রবল হইয়া উঠিয়াছে ভাহাতে মাতুষকে সভা করিবার জন্য

ইস্লামের দান অপেক। অমুগলমানের বিক্লজে মুসলমানকে উত্তেজিত করার জন্য ইহার ব্যবহার করিবার আকাজ্জানে থা যায় বেশী। মুসলমান মান্থয় হইতে শ্রেষ্ঠ, এই বিশ্বাস হইতেই এরপ আকাজ্জার উদ্ভব হয়। পার্বত্য অঞ্চলের বর্মর আফিদি প্রভৃতি জাতিরাও শুর্থ মুসলমান বলিয়া যে কোন অমুসলমান হইতে প্রেষ্ঠ—আইন্স্টাইনের মত য়ীহুদী কিংবা রবীক্রনাথের মত হিন্দু অপেকাও শ্রেষ্ঠ—এইরূপ বারণার আভাস পাওয়া যায় ভারতের অনেক মুসলমানের বাক্যে ও কায়ে।

বর্ত্তমান যুগে 'কম্যুনিজ্বম্' বা সামাবাদ প্রকাশো ধর্ম-বিরোধী। উহার মতে ধর্ম আফিমের নেশার মত—মাগুষের জ্ঞান ও বৃদ্ধিকে আড়াই করিয়া রাখে। স্কৃত্রাং ধর্মকে সমাজ ও রাই গঠনের বেলায় একেবারে বর্জ্জন করাই সামাবাদের অভিপ্রেত। বহু মিলে। ধর্ম সমাজের উপকার করিয়াছে, এ কথা অস্বীকার করিব না, কিন্তু অপকারও যে করিয়াছে, এ কথা অস্বীকার করিব না, কিন্তু অপকারও যে করিয়াছে তাহাও আমাদের স্বীকার করা উচিত। সামাবাদ যে একেবারে ধর্মকে বর্জ্জন করিতে বলে সে মত সকলে গ্রহণ না করিতে পারেন, কিন্তু ধর্মোন্মাদের অনিইকারিতা কেইই অস্বীকার করিতে পারিবেন না। ধর্মোন্মাদ বলিতে যাহা বৃঝি, এই বিংশ শতান্ধীতে তাহার সাক্ষাং ভারতের ম্সলমান সমাজের বাহিরে কমই মিলে। 'ভারতের' বলিলাম এইজনা, যে, তুর্ঝ, ইরাণ, ইরাক প্রভৃতি ম্সলমান দেশে ইহার প্রকাশ তেমন দেখা যায় না।

ভারতের কতক অংশের চিন্তায় এই যে মুদলমানকে মান্থবের উপরে প্রতিষ্ঠিত করিবার আকাক্ষা দেখা যায়, ইহা একটি বিষাক্ত জিনিস, ইহার ভিতর বিপদের বীঞ্চ নিহিত বহিয়াছে। ইহার প্রমাণ নানা ভাবে গত তুই বংসুরে এই হতভাগ্য দেশে দেখা দিয়াছে। ইহা যে অমুসলমানের পক্ষে বিপজ্জনক, তাহা প্রমাণ করা সহজ। কিন্তু মুদলমানের পক্ষেও যে ইহা নিরাপদ নয়, তাহা চিস্তাশীল মুসলমানেরা ও স্বীকার করিবেন, আশা করি। ইহা ধর্মোন্মাদেনই একটা স্ত্রাং নান্ত্যের সভাতার্দ্ধির মহয়ত্তকে অবহেলা করিয়া শুধু ধর্মবিশেষকে বড় করিয়া তোলার অর্থ বর্মরতার দিকে অগ্রদর হওয়া। প্রভ্যেক ধর্মট তাহার অন্ন্যুরণকারীর নিকট সর্বভ্রেষ্ঠ, স্থতরাং সকলের সম্বতিক্রমে সর্ববেশ্রেষ্ঠ ধর্ম আবিষ্কার করা সম্ভব নয়। যদি তাহা সম্ভবও হইত তথাপি উহাকে মানবংশ অপেকা ৰড মনে করা চলিত না। ধর্ম মাহুখের বিকাশের—তাহার সভ্যতার একটা অঙ্গ মাত্র, ধর্মই সব নয়। দর্শন, সাহিত্য, শিল্প প্রভৃতিও সভ্যতার পরিপোষক। শুধু ধর্মে মাহুষের পূর্ণ প্রকাশ হয় না। আর, ধর্ম ছাড়াও যে সভ্যতা সম্ভব,

ইহাও আজ মাছুষের চিন্তা স্থীকার করে। গুতরাং কোনও একটা বিশিষ্ট ধর্ম সভ্যতার পূর্ণাঙ্গ বিকাশ, এরূপ মনে করার মত সঙ্গীণতা আর নাই। কোন ধর্মবিশেষের শাস্ত্র কথায় অন্থান্তর না করিয়া কিংবা উহার বিহিত আচার সব পরিপূর্ণ ভাবে পালন না করিয়াও মাহুষ ধার্মিক হইতে পারে। আধুনিক জগতে তাহার প্রকৃষ্ট উদাহরণ মহায়া গান্ধী। গুতরাং মুশলমানত্বকে মানবন্ধের উপরে যাহার। স্থান দেন, তাহারা ভাল মুশলমান হইতে পারেন, কিন্তু পূর্ণাবয়র মাহ্য নন। মনে রাখা উচিত যে, মাহুষের পক্ষে মাহুষ হওয়া অপেক্ষা বড় আর কিছু নাই। হিন্দু অথবা মুশলমান হইয়া যেমন মাহুষ হওয়া চলে, তেমনই এ উভয়ের একটিও না হইয়াও মাহুষ হওয়া চলে এবং উহার কোন একটি হওয়া

অপেক্ষা মাহ্য হওয়ার দাম বেশী। যদি প্রশ্ন এই হয় বে হিন্দু হইব না মাহ্য হইব, অথবা মুসলমান হইব না মাহ্য হইব, তাহা হইলে চিন্তাশীল বাক্তিমাত্রেই নির্ভয়ে উত্তর দিবেন; মাহ্য হওয়াই শ্রেয়:। অবশাই, হিন্দুত্ব কিংবা মুসলমানত্ব ও মহ্যুত্রের মধ্যে এমন কোন বিরোধ নাই যে, উভয়ের একত্র অবস্থিতি সম্ভব নয়। কিন্তু সব সময়েই মনে রাখা উচিত যে, মানবত্বকে অবনমিত করিয়া শুধু ভাল মুসলমান বা ভাল হিন্দু হওয়ার যে ইচ্ছা সেটি ধর্মোয়াদেরই নামান্তর, স্তরাং বর্জ্জনীয়। আমাদের ভাবা উচিত যে, মানবর্ধা সকল ধর্মের উপরে এবং মানবজাতি সকল জাতির উপরে, "জগং জুড়িয়া এক জাতি আছে, সে জাতির নাম 'মানব জাতি'।"

বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

ক্রীবিনয়ভূষণ দাসগুপু

মধ্য-পশ্চিম

আমেরিকাকে পূর্ব পশ্চিমে চারি জংশে বিভক্ত করা হইয়াছে।
আটলান্টিক উপক্লে নিউ ইয়র্ক প্রভৃতি ছান পূর্বাঞ্চন।
শিকাগে ও তংপার্থবতী স্থানসমূহ মধ্য-পশ্চিমাঞ্চন। তাহার
পশ্চিমে পার্থতা জঞ্জা। প্রশাস্ত মহাসাগরের তীরবর্তী প্রদেশ
পশ্চিমাঞ্চন। এই চারিটি জঞ্চলে চারি প্রকার সময় জনুস্ত
হয়। ছইটি পার্শ্ববতী জঞ্চলের মধ্যে সময়ের পার্থক্য এক ঘন্টা।
নিউ ইয়কে থখন সকাল ১০টা, তখন শিকাগোতে সকাল
১টা, পার্থতা প্রদেশে সকাল ৮টা, এবং পশ্চিম প্রদেশে সকাল
৭টা। আটলান্টিক হইতে প্রশাস্ত মহাসাগর পর্যন্ত আমেরিকার
বিস্তার ৩০০০ মাইল।

নক্সভিল হাইতে শিকাগোর দূরত্ব সিধা পথে বেশী নয়। কিন্তু আমি ওয়াশিংটন হাইয়া বাইব। ওয়াশিংটনে বিমান বদল করিতে হাইবে।

১৫ই ডিসেম্বর রবিবার বৈকাল আড়াইটায় নক্সডিল বিমানখাট হুইতে বিমান উড়িল। বিমানট একঘণ্টা বিলম্বে চলিতেছিল। ওয়াশিংটনে গিরা শিকাগোর বিমান পাইব কি না সন্দেহ।

সাড়ে চারিটারও পরে ওয়াশিংটন বিমানবাঁটতে নামিলাম। শিকাগোর বিমান তখন প্রস্তত। সোজা সেই বিমানে গিয়া উঠিলাম। পাঁচটায় বিমান উড়িল। রাজিনরটা নাগাদ শিকাগো পৌছিবে। দূরত্ব প্রায় ৮০০০ মাইল। এর মধ্যে বিমান কোশাও নামিবে না। সঙ্যার অভ্কারে

পুৰিবী ও আকাশ আরত হইল। অধকার ভেদ করিয়া বিমান সগৰ্জনে ছুটিয়াছে। বাক্চতুর; ষ্ট্রার্ডেস যাত্রীগণের সক্ষে নানাবিধ আলাপ করিয়া ভাখাদের চিত্তবিনোদন ক্রিতেছেন: উ:ছার ধারণা তাক্ষহল একটি দেব-মন্দির। ইহা একটি স্ত্রীলোকের সমাধি-মন্দির ওনিয়া ভারতীয় খ্রীজাতির পোশাক-পরিচ্ছদ ও কাজকর্মাদি সম্বন্ধে বিশেষ কৌড়হল প্রকাশ করিলেন। ভারতীয় জীলোকেরা কাব্দের উপযোগ बाही काপए পরিয়া এরোপেনের প্রয়ার্ডেস্ হয় কিনা, অভিজ্ঞাত সমাজের রুচিসম্মত আভুমি-বিলম্বিত পোশাক-পরিবার স্থযোগই বা তাহাদের কিন্ধপ ইত্যাদি নানাবিধ প্রশ্ন - করিতেছিলেন। বিমানটি মাঝে মাঝে আলোকোছাসিত এক একটি সহর অতিক্রম করিতেছিল। তথবো পিটস্বার্গের দৃষ্ঠ সতাই অপরূপ। কি অপূর্বে আলোকসঙ্কা। রঙে ও উদ্দলতায় তাহা অতুলনীয়। রাভা ও বাড়ীগুলি স্থলপ্ত দেবা যাইতেছে। রাভা দিয়া আলো ছড়াইয়া মটর ছটতেছে। ব্যাৰে স্থানে আলোকমালা ম্বলিতেছে ও নিবিতেছে। যাত্ৰীগণ সে রমণীয় দৃষ্ঠ হইতে চোধ কিরাইতে পারিতেছেন না। অভকার মহাসমুদ্রে দ্বীপের মত জাগিয়া থাকা ক্লিডল্যাও প্রভৃতি আরও করেকটি সহর অতিক্রম করিলাম। যেন অনস্ত মহাশুভের মধ্য দিয়া উভিতেছি। মাবে মাবে এক একটা ব্ৰহ্মাণ্ড সেই মহাশৃত্তে ভাসিতেছে। ভারকাৰচিত আকাশের নীচে তাহাই কচিং কথনো দুখ্ঠমান হইতেছে, **আবার বিলী**ন ছইয়া যাইতেছে।

সহসা পরিভার আকাশে মেখোদর হটল। শিকাগোর নিকটবতী হইতেছি। প্রুরাডে স্ সকলকে বলিয়া গেলেন যে, শিকাগোতে বরক পঞ্চিতেছে। সেখানে বিমান নামিতে পারিবে না।

শতাধিক মাইল দক্ষিণে ইভিয়ানা পলিস্ বিমানবাঁটিতে বিমান নামিল। যাত্রীগণের মতো অনেকেই প্রভাতে শিকাগো পৌছিবার ক্বন্ত উর্থিয়। বিমানের কর্মচারিগণ ব্যর লইর বলিলেন যে শীঘ্রই শিকাগো যাইবার ট্রেন আছে। যাত্রীগণ ফ্রন্ত ব ব মাল বালাস করিরা লইলেন। বাঁটির কর্মচারিগণ ভাড়ার কিরদংশ যাত্রীদিগকে প্রভার্গণ করিলেন এবং বাসে ক্রিয়া ত'হাদিগকে ট্রেশনে পৌছাইয়া দিলেন।

মাল বালাস করিতে যাইরা দেবি আমার মাল আসে
নাই। বুবিলাম ওয়ালিংটনে সময়াভাবে মালের প্লেন বদল
সম্মন হয় নাই। এবার আমার কাগঞ্জপত্তের এবং প্রসাবনের
ধলিছর হাতেই রাবিয়াছিলাম। মনে করিলাম বড় ধলি
ছইট ওয়ালিংটন হইতে পরবর্তা প্লেনে লিকাবো পৌছিবে।
ভালই হউবে। খাটর আপিলে আমার লিকাবোর ঠিকানা
লিবাইয়া দিয়া অভাত যাত্রীগনের সঙ্গে টেলনগামী বাসে গিয়া
উঠিলাম, বাস আলোকোজ্জল নগরীর মধ্য দিয়া টেলনে
পৌছিল।

এখানে রেলের প্রধানতঃ ছুই শ্রেণী। কোচ এবং शुलगान । शुलगात्नत गर्वा पितन श्राटाकरक अक्षे कतिश्र সোকা দেওয়া হয়। এরপ সোকাসঞ্চিত গাড়ীকে পার্লার কার वा देर्क क्यांना गांधी वटम । बाटक मुलगादिन बद्या बक्यांवि বন্ধোবত থাকে। কোন গাড়ীতে ভবু ভইবার বার্থ থাকে। नीटात वार्थत छा हा किছ विनी। जितनत भाजीत कातरे ताटव বার্থে পরিণত হয়। কোন গাড়ী কতকগুলি বেড কুম বা শয়ন ককে বিভক্ত। এক একট ছোট ছোট শরনককে ছুইট করিয়া वार्थ এवर खालामा वाषक्ष्य। मित्न এই वार्थश्रेल भाकाव পরিণত হয়। সমন্ত টেনে একটি ক্লাব কার বা মিলনকক এবং একট রেষ্ট রাাণ্ট কার বা ভোকনকক থাকে। ক্লাব কারে যাত্রীগণ একত বসিয়া কথাবার্তা বলেন বা পুত্রকাদি পাঠ করেন। গাখীর মধ্যে পুস্তক ও মারিকপত্র ইত্যাদি থাকে। কোচে ওধু বসিবার স্থান। তবে প্রত্যেক আসনেই পুরুও कांशन गमि कांहा । वार्ष वा भवनक क कान्नानी जन्नूर्ग विद्याना (प्रश्न । काटा कान विद्याना नाई।

কোচ ভির অত কোন গাড়ীতে ছান পাওয়া গেল না।
কোচের প্রত্যেক যাত্রী ছইট করিয়া আসন পাইলেন।
কোশোনী কিকিং ভাড়া লইয়া কোচের যাত্রীগণকে বালিশ সরবরাহ করেন। এক ব্যক্তি কতকগুলি বালিশ আনিয়া গাড়ীর মধ্যে ইাকিয়া গেল—"ভাল ঘুয়, ভাল বল্প, চাই বালিশ"। একট বালিশ লইলাম বটে। তবে ভাল ঘুমও ছইল।
মা; ভাল বল্পও দেবিলাম না। টেন যখন শিকাগো পৌছিল তখন কস্ব হটরা আসিতেছে। ট্যান্সি লইরা হোটেলে চলিলাম।

সমন্ত শহর বেশ পুরু বরকে ঢাকা। রাজা দিরা বে মোটর গাড়ীগুলি ঘাইতেছে তাহাদের উপরে ৪।৫ ইকি পুরু বরক। সংরারাত্রি কাগিয়। মিউনিসিপাালিটর লোক রাজার বরক ঠেলিতেছে। তাহাতে রাভার ছই পাশে উচু বরকের লাইন স্কট্ট হইরাছে। মারে মোটর চলিবার মত খানিকটা রাজা। ভাহাও অবক্স বরকে আর্ম্র ও পিচিছল। এ বছর এই প্রথম বরক পিছল। তবে প্রথম দিনই মাত্রাটা একটু বেশী।

मिकारंश विद्या निष्य । हेकांत्र (लोकभः चा 80 लकः। সমগ্র আনেরিকার মবো নিউ ইয়বের পরেই ইছার শ্বান। ব্যবসায়কেন্দ্র হিসাবে নিউ ইয়র্ক অভিতায় ছইলেও শিল্পকেন্দ্র হিসাবে শিকাগোরই প্রাধান্ত অধিক। আমেরিকার বঢ় বঢ় কলক।রবান) এই অফলে এবং তাহাদের প্রধান कार्याक्षय श्रायहे निकारण नहरत । नीरख्त पिरन खाकान ছাতে পতিত যে রক্তভুত্র হিমকণা শংরটকে আরত ক্রিয়া কেলে তাহা শীঘুই এবানে বুল্লমলিন হইয়া যায়। हेहा चार्यादकात दृहर वारिकात अवहे मकिमानी किया। রিপাবলিকান দলের প্রভাব এব:নে ধুব বেশী। ইহা ইলিনয় রাজ্যের অন্তর্গত, কিন্ধু রাজ্যের রাজ্যানী অভতা। সরকারী আ'পস এবানে বিশেষ নাই। তবে কেন্দ্রীয় সরকারের পাবলিক্ ডেট্ জ্বাপিস এই শহরে বিভ্যান। নগরোপকরে বিশ্ববিভালমের বিরাট হর্মারাজি। চারিদিক হইতে অনবরত বৈগ্রতিক রেলগাড়ীগুলি যাতায়াত করিতেছে। ইহারা খনসন্ধিবিষ্ট ষ্টেশনসমূহে বিপুল জনপ্রোত ক্রমাগত কবলিত করিতেছে, আবার উদ্গীরণ করিতেছে। যাতায়াতের ইহাই প্রশন্ত উপায়। মাটর নীচে কোন লাইন নাই। এখানে খুব বড় বড় ডিপাটমেণ্টাল প্রেরস আছে। এই ষ্টোরগুলির ডাকে কারবার যথেষ্ট। বড়দিনের প্রাভালে এগুলির বিক্রয় পুরাদমে চলিতেছিল। এবার যুদ্ধের পর विकृत्यत हात बून वास्थि। शिशाधिल । थेवरतत काश्व दासह এ বিষয়ে তথাপ্রকাশ ও আলোচনা চলিতেছিল। এবানকার মার্শাল কিন্ডের টোর সমবিক প্রসিদ। প্রিংকিন্ডে এক পদত্ব ব্যক্তি কৰাপ্ৰসঙ্গে আমাকে বলিয়াছিলেন, "এ যেন মাৰ্শাল কিন্ডের বিল পরীকা করা। ইঁহার আয় যে ভরে সেখানে तिनी चामनानी मरदेश चाध-कर निशा कि हुई देव ए बारक ना। ইছার বিল পরীকা করিয়া সময় নষ্ট করা দুর্বতা।"

আমি যে হোটেলে ছিলাম তাহার নাম রাক্টোন হোটেল। হোটেলট স্থপ্রসিদ্ধ; শহরের শ্রেষ্ঠ রাজপথ মিসিগ্যান এভিনিটতে অবস্থিত। হোটেলট ১৮ তলা। আমি ছিলাম ১৪ তলার। প্রকাও হোটেল। ওরাশিংটন বা নক্ষভিলের হোটেল হুইতে এই হোটেলে কর্ম্বগ্রতা অনেক বেশী দেখিতেছি। ভোকনকক্ষের শোভা, পরিবেশন-নৈপুণা এবং খাড়প্রবেগর প্রাচুর্ব্য ভুলারপেই চিন্তাক্ষক। লাউপ্প কক্ষটি নাতিরহং; আসর বড়দিন উপলক্ষে অসম্প্রিকত। বড়দিনের সক্ষার ছইটি বিশেষতা—ক্ষিট্রমাস তরু ও সাভার্মকের বৃত্তি। মবাছলে একটি বড় প্রীট্রমাস তরু করি ও আলোকমালা হার। শোভিত। এটা একটা বড় পাইন গাছের ডাল; শীতে তাহার খনসবৃত্ব পাতা একটিও পড়ে নাই। পাতার উপর মাবে মাবে সালা রাঙতা বসান। মনে হইতেছে যেন পাতার উপর মাবে মাবা রাজ বরুক পড়িরাছে। নানা রভের আলো গাছের শাখা-প্রশাধার লয়। গাছটিকে খরের মবাছলে একটি বরক্ষের তুপের মধ্যে বসাইরা রাখা হইরাছে। অপর কোনে করণাবভার সাক্ষ্যিকক্ষের সহাক্ত প্রক্রেল বৃত্তি। নিশাকালে আলোকোন্তাসিত মুখখানি স্বতঃই ইবং আলোলিত হইরা যেন আগন্তক্ষিপ্রকর স্বাগত করিতেছে। খরটি ইতন্ততঃ-সঞ্চরমান অ্বদর্শন নরনারী সমাগ্রম পুলকোন্ড্রল।

ভোকনককে একট পরিবেশকের সঙ্গে আলাপ হইল। সে বিটিশ আমির সঙ্গে বোখাই গিয়াছে; কিছুদিন বিটিশ উপ-নিবেশ ট্রিনদাদে বাস করিয়াছে। ইহার মতে ত্রিটপরা যে-হারে বেতন দেয় তাহা তাহাদের মারাত্মক অবিবেচনা ও নির্মাতার পরিচায়ক। এদেশে বর্তমানে দারিক্রা-সমস্তা দেখিতেছি ।। বেকার কেহ নাই। মনুরীর সর্বনিয় হার मांजिक ১৭৫ छलांत वा बांस ७०० होका। ७५ जावांतन कांशिक পরিশ্রমেরই এই মূল্য। বাড়ীতে চাকর রাখিবার প্রথা নাই বলিলেই হয়। প্রত্যেকেই নিজ নিজ কাজ করে। তাহাতে लका वा गर्शामारानि रहना। ठाकरहर गरिना गानिक প্রায় ২০০ ডলার। সাধারণত: শ্রমিকগণ সপ্তাহে ৫ দিনে মোট ৪০ খণ্টার বেশী খাটে না। শনি ও রবিবার ছুই দিন পুরা 🕸 । অভ দিন ৮ ঘণ্টা করিয়া বাটিবার নিয়ম। যন্ত্রপাতির ব্যবহার এদেশে হব বেশী। নিকেরাও যথের মত নিয়মান্তবর্তী ও কঠোর পরিশ্রমী। অল পরিশ্রমে অবিক উৎপাদন করে বলিয়া ইছাদের মজুরীর হার এবং বিশ্রামের সময় উভয়ই পুব বেলী। এদেশের টেড ইউনিয়ন কদাপি যদ্ভের বিরোধিত। করে না। ইছারা কানে যে যন্ত্র বাতীত উৎপাদন বৃদ্ধি সম্ভব নর: আর উৎপাদন বৃদ্ধিনা করিয়া মনুরী ও বিশ্রামকাল বৃদ্ধির আশা করা মূর্যতা। বৃদ্ধিত উৎপাদনের উপযুক্ত অংশ হইতে মন্তুরগণ যাহাতে বঞ্চিত না হয় সে বিষয়ে অব≢ ইছাদেব কড়া নকর। টেড ইউনিয়নগুলি বড় ৰড় অর্থনীতিবিদ ও সংখ্যাতত্বিদ নিযুক্ত করিয়া সর্বাদা হিসাব রাবে কি হারে মন্ত্রের উৎপাদন-শক্তি বাড়িতেছে। তদকুসারে ইহারা यञ्रतीयुक्ति मानि करत। ১৯৪৫ সালের নবেশ্বর মাসে নিউ ইয়র্কের ১৮১৯ নং ভ্রডথয়েতে অবস্থিত ভাশভাল ব্যরো चव देकनियक विशार्व वार्किन निष्य खरमश्राक्त विवास अक्षी शृत्वयशायुमक निवद धकांच करतन। निवद्यक्ति नाम "लिवत সেভিং ইন্ আমেরিকান ইন্ডার্ট্র, ১৮৯৯-১৯৩৯"—লেথক সোলোঘন কেব্রিকানিট। তাঁহার হিসাবমত ১৮৯৯ হইতে ১৯৩৯ সাল পর্যন্ত আমেরিকার শ্রমিক-পিছু ছাতীর উংপাদন ৭০ শতাংশ বৃদ্ধি পাইরাছে। এই সমরে সাপ্তাহিক শ্রমকাল উংপাদন-লিল্লে পঞ্চমাংশ হ্রাস পাইরাছে। ফলত: প্রতি জনের ঘণ্টার উংপাদন শত শতাংশ বৃদ্ধি পাইরাছে বা ঠিক দ্বিগুল হইরাছে। অর্থাং এক ব্যক্তি এক ঘণ্টা গাঁটরা ১৮৯৯ সালে যত মাল উংপাদন করিত ১৯৩৯ সালে করিত তার দ্বিগুল।

এই দাবিদ্রাহীন দেশে ক্যুনিক্ষের প্রফাব নাই। ইহারা যে হারে মজুরী দেয় এবং এবানে মজুরগণ সপ্তাহে যত বিশ্রামকাল প্রাপ্ত হয় তাহা রাশিয়ার মজুরদের স্বপ্রাতীত। শিকাগো পরিত্যাগ করিবার পর একটি কাগকে দেবিয়াছিলাম যে শিকাগোর কনৈক বড় ব্যবসায়ীকে একটি কাগকে ক্যুনিষ্ট ভাবাপন্ন বলিয়া অভিহিত ক্রায় উক্ত ভদ্রলোকটি কাগকের নামে আদালতে মানহানির মোকক্ষা ক্রিয়া ডিগ্রি পাইয়াকেন।

শিকাগোর যে বাড়ীটতে আমার প্রধান কর্মখন ছিল তাহা পূর্বে ষষ্টিতম ট্রাটের ১৩১৩ নম্বর বাড়ী। বাড়ীট বিশ্ববিধালয়ের অনতিদ্রে, শহরের উপকর্প্তে অবস্থিত।এই বাড়ীটতে সাতট এসোসিয়েশন্ বা সমিতির মূল আপিস। তাহাদের নাম ও বিবরণ এইক্রপ:

- ১। কাউপিল্ অব ্ষ্টেট গবর্ণমেণ্ট বা প্রাদেশিক সরকার পরিষং । আমেরিকার ৪৮টি ষ্টেট গবর্গমেণ্ট সহতে তথাসংগ্রহ, আলোচনা ও গবেষণা চালানই এই পরিষ্দের কাঞা।
- ২। পাব লিক্ এাড মিনিট্রেলন সার্ভিস বা সরকারী লাসনপ্রণালীর সহায়ক সমিতি। সরকারী লাসনপ্রণালীর সংস্কার সাধনপূর্বক কিন্ধণে উহাকে উন্নততর করা যায় তাহাই ইহাদের গবেষণার বিষয়। ইহাদের নিযুক্ত স্থানিপুণ তথাবিশারদ ও তত্ত্বজ্ঞগণ রহিয়াছেন। ষ্টেট গবর্ণমেন্ট বা মিউনিসিগালিটিগুলি নিজেদের শাসনপ্রণালীর সংস্কার-মানসে এই সমিতির সাহায্য চাহিলে ই হারা গিয়া সমস্ত বিষয়ে অভ্সন্ধান করিয়া রিপোর্ট লাখিল করেন।
- ত। কেডারেশন অব্ ট্যাক্স অ্যাডমিনিষ্ট্রেটরস্ বা কর নিরামকদের সমিতি। আমেরিকার সমস্ত রাষ্ট্রের কর নিয়ন্ত্রণাদি সক্ষে সমস্ত তথ্য ও তৃত্ব এবানে সংগৃহীত হয়।
- ৪। ভাশনাধ এসোসিরেশন অব্ এসেসিং অফিসাস বা করনির্দারক কর্মচারিগণের জাতীর সমিতি। আমেরিকার সমস্ত নগরে মিউনিসিপ্যাল কর কিরুপে ধার্ম হর এবং ভদর্শে বাড়ীর মূল্য নির্দারণ কিরুপে করা হর ইঁছারা সে বিষয়ে তথ্যসংগ্রহ ও তত্বালোচনা করেন।
- গৈতিল সার্ভিস এসেম্রি বা সরকারী চাক্রিয়া সমিতি। সরকারী চাক্রীকে রাজনীতির প্রভাবমুক্ত করিয়া

কিন্ধপে তথু গুণৰ্দক করিয়া তোলা যায় ই হারা সেই বিষয়ে চিন্তা করেন।

- ৬। আমেরিকান সোসাইট অব্ প্ল্যানিং অফিসিয়ালস্ বা মার্কিন পরিকল্পনাকারী কর্মচারিগণের সমিতি। সর্বাদীণ পরিকল্পনা হারা কিন্ধপে রাষ্ট্রের উন্নতিসাধন করা যায় ই হারা সে বিষয়ে গবেষণায় রভ আছেন।
- ৭। পাব্লিক এডমিনিট্রেশন্ ক্লিয়ারিং হাউস বা সরকারী শাসন বিষয়ে সংবাদ সংগ্রহ ভবন। প্রথমোক্ত ছয়্কটি সমিতি ২ত গ্রন্থ প্রণয়ন বা নিবন্ধাদি রচনা করেন এই সমিতি পেগুলি প্রকাশ ও বিক্রয় করেন।

প্রত্যেকটি সমিতির সদস্ত-সংখ্যা সহস্রাধিক। সরকারী কর্ম্মারী, অধ্যাপক ও ব্যবসায়ীগণ ইহাদের সদস্থ। সদস্থ-গণের ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতা ও চিন্ধা ধারা প্রত্যেক বিষয়ের উপর যে অলোকপাত হয় তাহাতে দেশের প্রভূত কল্যাণ সাধিত হইয়া থাকে।

আমেরিকার বাহিরে এই স্থাতীয় গবেষক্যগুলী কুরাণি দৃষ্ট হয় না। ক্ষভিজ্ঞ বাজিগণের সহিত তত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতগণের আলোচনা থারা যে-কোন দৈনন্দিন কার্য্যের উপ্পতিসাধন চেষ্টা এদেশের একট বিশেষত্ব। এই সমস্ত সমিতির ক্ষিগণ স্থ-স্থ কার্য্যে পর্বদা মনোযোগী। প্রত্যেক বিষয়ের বুঁটনাট সংবাদ ইঁহাদের নথদর্শনে। ইঁহাদের সঙ্গে নানা বিষয়ে দিনের পর দিন স্থালোচনা করিয়া বহু জ্ঞানলান্ত করিয়াছি। ইঁহারাও জামাকে সমাদরে গ্রহণ করিয়াছেন এবং পরম যত্ব সহকারে জামার সকল প্রশ্নের সমাধান করিয়া দিয়াছেন। ক্রবন্ত ক্ষণও প্রশ্ন করিয়া ভারতবর্ষ সম্বন্ধে জনেক তথ্য জামার নিকট হউতে জ্ঞানিবার চেষ্টা করিয়াছেন। ইঁহারা এক দিন জ্ঞানিক বলিলেন, "এদেশে বর্ত্তমানে ভারতীয় ছাত্র পূর্বাপেক্ষা বেশী জাসিতেছে। তাহাদের দৃষ্টভালীরও পরিবর্ত্তন দেখিতেছি। পূর্বে ইঁহারা সাহিত্যা, দর্শন প্রভৃতি পড়িত; এখন কার্ক শিবিবার দিকেট ঝোক বেশী।"

১৩১৩ নম্বরের বাজীর অদুরেই বিরাট বিশ্ববিচ্ছালয়।
বহদ্র ব্যাপিয়া বিশ্ববিচ্ছালয়ের সৌধশ্রেমী। এখানে একটি
বইবের দোকানের শো রুমে জ্বাহ্রলালের "ভিস্কভারি অব্
ইণ্ডিরা" দেবিলাম। বিশ্বভালয়ের কেন্সিটেরিয়ায় প্রায়ই
মধ্যাহ্রভোজন করিতাম। আসম্ন বড়দিন উপলক্ষ্যে
কেন্সিটেরিয়ার প্রবেশকক জীপ্রমাস ভরুষারা সক্ষিত।

করেকট ভারতীর ছাত্র দেখিলাম। ১৩১৩ নং বাদীতে সন্ত্রীক মুক্তেন সাহেবের সঙ্গে আলাপ হয়। ইনি ব্রেজিল নিবাসী পদস্থ সরকারী কর্মচারী। ব্রেজিলের অনেক কথা ই হাদের নিকট শুনিতাম। মুক্তেন-পত্নী আমার দশবর্ষীরা ক্যার সমুক্তের প্রায়ই প্রশ্ন করিতেন।

১৯শে ভিসেম্বর বৃহম্পতিবার বৈকালে মার্কিন সরকারের পাবলিক ভেট আপিস দেখিতে বাই। যে বাজীর একাংশে আণিসট অবছিত তাছার নাম মার্চাণ্ডাইস্ মার্চ বিচ্ছিং। বাড়ীট শহরের কেন্দ্রছলে—নদীতীরে। সেতু পার হইয়াই ইহার সদর। অত্যক্ত বিরাট বাড়ী—১৮ তলা বিশিষ্ট। অসংখ্য দোকান ও আপিস এই বাড়ীতে অবছিত। এই বাড়ীট পৃথিবীর বৃহত্তম বাড়ী বলিয়া পরিচিত। নিউ ইয়র্কের ১০২ তলা এম্পায়ার প্রেট বিচ্ছিংও নাকি ইছা অপেকা ছোট।

মাত্র ১৮ তলা বাড়ীট পৃথিবীর গ্রহন্তম বাড়ী কিনা সে বিষয়ে আমার মনে অবস্থ কিছু সংশারের উদয় হইরাছিল, কিছ এই পাব্লিক ডেট আপিস যে পৃথিবীর গ্রহন্তম পাব্লিক ডেট আপিস যে পৃথিবীর গ্রহন্তম পাব্লিক ডেট আপিস সে বিষয়ে কেহ বলিয়া না দিলেও আমি নিঃসন্দেহ হইরাছিলাম। গত বিশ্বযুর চলিয়াছিল আমেরিকার টাকাষ। আর সেই টাকা সংগ্রহ করিয়াছিল এই পাব্লিক ডেট আপিস। বর্তমানে টাকাসংগ্রহের পর্ব শেষ হইরাছে। এখন স্থদ দিবার পালা। ভানিলাম মাসে ৫০া৬০ লক্ষ চেক এই আপিস হইতে বর্তমানে বিলি হইতেছে। স্থদ ক্ষা, চেক লেখা ও চেকগুলিকে যথানামে প্রেরণ কর। এক ব্রিরাট কাক্ষ। তংসহ বতের মালিকের নাম পরিবর্তন, উত্তরাধিকার লইয়া বিবাদ ইত্যাদি নানাবিধ আত্মধিক কাক্ষও কম নয়।

गांव वा शक्तांत कर्मांताती वह नमख कांक श्रृंकारत निर्मा र করে। অপিসের সমস্ত কাজেই যন্ত্র ব্যবহাত হয়। প্রথমতঃ এত খত রাখিবার স্থান নাই, কাজেই খতগুলির ফটো তুলিয়া ফিল্ম করিয়া কাটিমে জড়াইয়া অত্যন্ত সমীর্ণ স্থানের মধ্যে রাখা হয়। কোন থত লইয়া বিবাদ উপস্থিত হইলে ফিখটিকে ঘণাপ্রান হইতে বাহির করিয়া বহুওর আকারে পরিণত করিয়া কোটে পেশ করা হয়। প্রদের হিসাব তে। যথ্রে হয়ই, চেক লেখা, সহ করা, খামে পোরা, ঠিকানা লেখা প্রভৃতি সমস্ত কাজই যথ্রে ছইতেছে। যন্ত্রের বহুল ব্যবহার আছে বলিয়া অধ্ব লোকে এত বেশী কাজ করিতে পারে। সেজ্ঞ ইহারা কর্মচারীদের উঁচু হারে মাহিনা দিয়াও কম ধরতে কার্যনির্বাহ করে। নিউ ইয়র্ক ও মন্টিয়নের বিক্রয়-কর আপিসে দেখিয়াছি বেতনের সর্বনিম হার মাসিক ১৭৫ ছলার হওয়া সত্ত্বেও আদার-খরচ যাত্র সংগৃহীত করের ২ কি ৩ শতাংশ। আমাদের দেশে বেতনের সর্বনিয় হার মাত্র ৩৫১ হওয়া সম্ভেও আদায়-খরচ ভদপেক। অনেক বেশী। শিকাগোর পাবলিক ভেট আপিদের ডিরেক্টর মাইকেল ই, ম্যাক খোগান আপিসের যন্ত্রাবাক ভোলে মহালয়ের সকে পর্য বড়সহকারে আমাকে আপিসের যাবতীয় কর্মপদ্ধতি দেখাইলেন। আমি সবিশ্বরে ইঁহাদের কর্মকুশলভা দেখিয়া হোটেলে কিরিলাম।

পূর্বেই বলিয়াছি ইভিয়ানাপলিসে আমার মাল না পাইয়া বিমান কোম্পানীর নিকট আমার শিকাগোর ঠিকানা রাবিয়া আসিয়াছিলাম। একট মার্কিন যুবক আমার সেক্রেটারীয়ণে আমেরিকা ও ক্যানাভায় সর্বত্ত আমার সঙ্গে ত্রমণ করিয়াছিল। মুক্কট রুছের সময় প্যারাস্কট-বাহিনীতে ছিল। তহুপলক্ষে

ত্রীস ও রাশিয়ার গিয়াছে। স্পানিশ, এীক এবং রূপ ভাষায় কথা বলিতে পারে। ফ্রন্ড জিলিখনে খুব নিপুণ। মূবকট যেমন कर्मर्ठ (ज्यनि চরিএবান, नाम श्रदात होता। जाशास्क इह निन বিমান আপিসে পাঠাইলাম। মালের কোন পান্তা পাওয়া গেল না। পরদিন ধবর লইয়া জানিলাম যে, কোম্পানীর ছেড আপিস নিউ ইয়ৰ্ক হইলেও এখানে একট বড় শাখা আপিস আছে এবং সে আপিসের স্থানীয় অধ্যক্ষ কোম্পানীর ভাইস-প্রেসিডেন্ট। তাঁছার নাম কিং। ১৮ই ডিসেম্বর সকালে ওয়েব-ষ্টারকে মি: কিঙের নিকট পাঠাইলাম। ওয়েবহার আসিয়া विलल "रि: किर छनिया विलय इ:वश्रकान कवियाहन। এবং প্রতিক্রত হইয়াছেন যে যেত্বপেই হোক তিনি আত্মকর মৰো মাল সভাৰ করিয়া ছোটেলে পৌছাইয়া দিবেন। তিনি উপহার-স্বন্ধপ আপনাকে চুক্রট ও পানীয় দিতে চাহিয়া-ছিলেন। কিছু আপনি খান না বলিয়া আমি উহা প্রত্যাখান করিয়াছি।" ভতীয় দিবসেও মাল না পাওয়ার মি: কিঙের क्षाय बुव चांचा चांभन कतिए भाति नारे, मांद्रांनिन कांबकर्म क्रविश प्रकारत शत प्रश्नितात्मालिक हिटक (हाटिटल क्रिविनाम। অভ্যৰ্থনাককে ঘরের চাবি আনিতে গিয়া দেবি সমুবে चामात प्रान्त । अरबद्देशत्रक व्यानमाम, "भि: किर्क भव्यमिन टिलिटकानट्याटन विटमयब्रट्स बचवान निया निर्थ ।" পরে ওবেবটার কিং মহাশয়ের নিকট হটতে আনিয়াছিল যে মাল ভেটয়েটের মালগুগামে আবিছত ইইয়াছিল।

শিকাগোর কর্মবছল দিনগুলি ক্রত কাট্যা থাইভেছিল। বাহিরে তার ৰত। রবিবার বৈকালে যে খরক পঞ্জিছিল সোমবাথের মধ্যে তাহা অনেকটা পরিষ্কার করিয়া কেলিলেও রাভার বাহিরে সর্বএ বরক ভ্রিয়াছিল। ১৩১৩নং বাড়ী ও বিশ্ববিদ্যালয়ের মারখানে একটা খোলা কায়গায় বরকের মত্ত ক্ষেত্র প্রস্তুত করিয়া ছেলেখেরো স্থেট করিত। রাশী*ছ*ত ধরক বোলার দিয়া সমতল ক্রিয়া তাহার উপর মুধ্বারাধ কল कि हो देश मिरल हे (अहे भाष्ट्रला करलद भर्त हो। करिया क्या है সিমেন্টের মত শব্দ ও মত্ত্ব ক্ষেত্র প্রস্তুত হয় : আর বাহিরে যে ভাপ ভাষাতে বর্ম গলেনা। স্কেট-রত বালকবালিকাদের ভিড দেবিতে বেশ লাগিত। সোমবার ঠাছা বুব বেশী ছিল না। মুহলবার ইইতে খুব শীত পড়ে। তাপ ৫ ডিগ্রি ইইতে ১৮ ডিগ্রি পথার ওঠানামা করিছেছিল। পরে সর্ব্বোচ্চ তাপ ৬০ পৰ্যন্ত উটিয়াছিল। ছদিন বেশ উত্তরে ছাওয়াও বহিতে-ष्टिल । काटकत ठाण ७ वाहिटतत कावशाख्या ,कानिके वाहिटत বেড়াইবার পক্ষে অতুকুল নয়। কিছু আমার ছোটেলের নিকটবতী মিলিগান ছদ আমাকে অনবরত আকর্ষণ করিতে-ছিল। ১২শে ডিসেধর বৃহস্থতিবার পার্বলক ডেট আপিস হুইতে কিবিয়াই হদের নিকে গেলাম।

মিশিগান এভিনিটর উপর ংগটেল। রাভার অপর পারে অদুরে বিরাট সমুদ্রতুপ্য ক্রম। অপর পার দৃষ্টিপোচর হয় না। ছুনট আমেরিকা ও কানাডার মধ্যর্থ মহা হুদমালার অন্তম। ছুদের পারে বেড়াইবার প্রশন্ত হান ও চমংকার বন্দোবস্ত আছে। সেবানে একট একায়েরিরাম বা এহবর আছে। এগুলি পরম চিন্তাকর্ষক। কিছ বিতীর ব্যক্তি এবানে দেখিলাম না। শীতের আবিকো কেছ আর এবানে বেড়াইতে আসে না। এইফালীন জনসমাগম ও নরনারীর আনক্ষ-কোলাহল সহকেই অনুমান ক্রিরা লইলাম। সাঁতারের ফুলর বন্দোবস্ত আছে, কিছ এবন লোক্ষন নাই। ভ্রনিলাম পরদিন গ্রহুব্বে একট বক্ততা হুইবে।

পরদিবস ১৩১৩ নং বাদ্ধী হইতে কিরিয়াই গ্রহ্বরে বক্তৃতা ভানিতে যাইব মনস্থ করিলাম। টেন ইইতে নামিয়া ট্যান্সির করু অপেকা করিতেছি। গ্রহ্বরটি যদিও বুব দূরে নয়, তথাপি সময় অয় ছিল এবং আমার মত নবাগতের পক্ষেপর্থ চিনিয়া ইটিয়া যাওয়ায় সময় বেশী লাগিবার সভাবনা। কিছু ট্যান্সি পাইতেছি না। মাঝে মাঝে হ-একট ট্যান্সি যাত্রী লইয়া আগিতেছে। তৎক্ষণাং অপেক্ষমাণ জনতার মধ্য হইতেকেং কেং তাহাতে চাপিয়া বিগতেছেন। প্রতিযোগিতায় আমার মত নবাগতের সফল হইবার আলা কম। একটি পুলিন নিকটে দাঁভাইয়াছিল। সে এই বিদেশী লোকটকে হতেই সাহায্য করিল। আমাকে লইয় বছ রাভার ধারে গিয়া চলস্ক ট্যান্সি থামাইয়া আমাকে চাপাইয়া দিল। আমি বক্শিশ দিতে গেলে সিপাইটি বলল, "আপনি বিদেশী। আপনার নিকট হইতে বক্শিশ লইব না। আপনাকে সংহাহ্য করিয়াই আমি আনক্ষ বোর করিছেছি।"

গ্রহ-গৃহট দেখিবার জিনিষ। ছানে ছানে আকাশে গ্রহ-উপগ্রহের অবস্থান ফুদ্দর করিয়া ছবির সাহাযো দেখান আছে। ওটার বক্তত। পুরু ছইল। হরের মধ্যে মাধার উপর একটা কুরিয় আকাশ তৈরি করা হটয়াছে। সেই আকাশে সভিকোর আকাশেরই মত গ্রহ-উপগ্রহ চল্ল-ভূষ্য ও .ভারকারান্ধি উঠিতেহে আবার অন্ত যাইতেহে। মনে হইতেছে (यन भव मछा। अङ् अञ्चलादा अवर कालहरका चावहरून আক:শে তারকাবলীর সংস্থানের যে যে পরিবর্টন হয় তাহা দেবান হইল। খীলুর ছয়ের পর্বে জানিগণ যে একট উচ্ছল জ্যোতিষ্ক দেবিয়াছিলেন ভাষার একটা হৈছানিক ব্যাব্যাই ছিল অদ্যকার বস্তু তার বিষয়। বস্তুতার ভাষা অতি প্রাপ্তল। वक्ता विलियन (य. चड कविता मिना योत (य. शैक्त चराद সময় মীন রাশিতে বহুস্তিও শ্নির মিল্ল হইয়াছিল এবং মদল অংগিয়া ভাষাদের সঙ্গে মিলিয়াছিল। এক্সপ ঘটনা ৮০০ বছরে একবার হয়। বহুস্তি ও প্রির মিলন হয় ১০৫ বছর অভর। আর তিন এছের মিলন হয় ১০০ বছর আহর। বক্রার মতে আনিগণ হয়তো এই মিলন দেবিয়াই ঐপরিক ব্যাপার মনে করিয়াছিলেন। বচলিন আসর। এ

সমরে প্রথম বড়দিনের রাত্রিতে ক্রেক্সলালেমে আকাশের অবস্থা কিরূপ ছিল এবং সে আকাশে তারকাবলীর সংখানই বা কিরূপ ছিল ভাষা প্রত্যক্ষ করিয়া শ্রোহ্বর্গ পুলকিত ইইয়াছিলেন।

স্বামী বিবেকানন্দের কর্মক্ষেত্র শিকাগো নগরী ভারত-বাসীর নিকট ভীর্বস্থানস্বরূপ। প্রাত:কালে টেলিকোন গাইড দেবিয়া - স্থানীয় বেদান্ত সোসাইটির অব্যক্ষের সঙ্গে আলাপ করিয়াছিলাম। তাঁহার নাম স্বামী বিশ্বানন্দ। তিনি টেলিখোনে সহসা বাঙালীর কঠখরে বিশ্বিত হইয়াছিলেন নিশ্য। নৈশ ভোকনের পর ভাছার আশ্রমে যাইব কথা হইল। ভোকনান্তে ট্যাক্সিথোগে অত্যক্ষ্ আলোকমালা-শেভিত শহরের মধ্য দিয়া আশ্রমের দিকে চলিলাম। এক স্থানে বছ এইমাস তরু বিক্রয়ার্থ রাখা হইরাছে। তাহারই निक्**षे आध्याः नीरु क्लिश (वल छि** शिलाया। मान मान উপর হইতে ধামীকীও একটি বেল টিপিলেন। তাহাতে **पत्रकार এक छै भक्ष इंदेश এবং তৎक्षनार पत्रकार व्यर्गन मुख्य** হটল। তথন ধাৰা দিতেই দরজাটি খুলিয়া গেল এবং ভিতরে চ্কিতেই পুনৱায় বন্ধ হইয়া গেল। এদেশে সমন্ত ক্লাট বাচীতেই উপর হইতে বোভাম টিপিয়া নীচের দরকা বুলিবার যাপ্তিক বন্দোবস্ত আছে।

স্বামীক্ষার সহিত আমার পূর্বপরিচয় ছিল না। কিছ তাঁহার প্রমাথীয়ের মত ব্যবহারে পরিতৃপ্ত বোধ किरिलाम । উপরে ছইটি বর দেবিলাম । যেটতে আমরা কথা বলিতেছিলাম সেট বড় ঘর। স্বামীশীর অনেক বই ঘরের চারদিকে সাধান। একটি বড় ভৈলচিত্রে পরম-হংসদেবের সেই স্থাবিছ চিরপরিচিত মৃতি। স্বামীশী বলিলেন, একএন মুইভিদ ভক্ত চিত্ৰটি আঁকিয়াছেন টি ডিট ধুব ভাল ল'গিল। পাশের ছোট খরট পুৰার খর। সেখানে সংগ্রাক হয়: উৎসব উপলক্ষে এদেশের লেকেরা আসিয়া গৈরিক পরিহিত স্বামীনীর প্রভারতি দশন করেন। স্বামীনী বলিলেন এদেশে ভাহাদের মোট বারটি আত্রম আছে। निष्ठे देशक, रहेन ए अम् ८८६ माराज आक्षायत कथा दिएमध कतिया विनदमन। नार्निनक शक मिन (मदशस्त्र चाट्रद একজন ভক্ত। রাত্রি প্রায় ১১টা পর্বান্ত পর্যানন্দে সভালাপে কাট।ইয়া হোটেলের দিকে কিরিলাম। তীত্র শীতের মধ্যে স্বামীকী আমার সঙ্গে রাভা পর্যান্ত আসিরা ট্যাল্লিডাকিয়া আমাকে ভাহাতে ভূলিয়া দিয়া আশ্রমে কিরিলেন।

মিশিগান প্রদের দক্ষিণ প্রান্তে শিকাগো শহর অবস্থিত।
শহরটি বুব বছ এবং বিভীর্ণ। শহরটির একটি বিশেষ স্থপ
আছে। বিরাট ক্রদ। বিভীর্ণ উদ্যান ও বেড়াইবার জারগা।
মিশিগান এভিনিউর উপর শ্রেণীবছ বিরাটকায় ২০৷২৫
তলা সে'বাবলী। ক্রদ ২ইতে ক্ষীণকায়া শ্রোতবতী নির্গত হইরা
শহরের মধ্য দিয়া চকল চরণে চলিয়াছে। উভয় পার্যে বছ

বড় বাড়ী। বাড়ীগুলির উচ্চতা প্রম। কোন বাড়ী হঠাৎ
অন্ত সকলকে অসম্ভব রূপে ছাড়াইরা গিরা সে প্রমা ভল করে
নাই। মাপ্র সর্বাধা কর্মব্যন্ত। এখানে দক্ষিণের বর্ণ-বৈষম্য নাই। মাপ্র মাত্রই এখানে মাপ্র। শহরের এই বিশিষ্ট রূপ দেখিতে দেখিতে রাত্রি ১১টার পর হোটেলে ফিরিলাম। লিকটের মধ্যে একট ভন্তলোক আমার দিকে তাকাইতে তাকাইতে বলিরাই কেলিলেন, "আপনি কি ভারতবর্ষ হইতে অগিতেছেন ?"

আমি---"হা"

ভদ্রলোক—আমি আপনাকে করেকদিন যাবং লক্ষ্য করিতেছি; আর আপনি ভারতবাসী কি না একথা কিজাসা করিব ভাবিতেছি। আৰু প্রশ্নটা করিয়াই কেলিলাম। আমি বছবংসর ভারতে ছিলাম। বংগতে ভাক্তারি করিতাম। আপনি কত দিন এবানে থাকিবেন।

"আমি কাল সকাল ১১টায় এ শহর ত্যাগ করিব।"

"আমার ছ্রভাগা। আপনার সঙ্গে বেশী আলাপ হইল না। যদি অঞ্জঃ এখন একবার আমার ঘরে আদেন।"

ভদ্রলোকটির আগ্রহ দেখিয়া, নিদ্রাকর্ষণ হওয়া সত্তেও তাঁহার ধরে গেলাম। তিনি পরম আগ্রহে ভারতবর্ষের অনেক কথা ভিজ্ঞাসা করিলেন। বলিলেন, "ভূলাভাইয়ের ধরয় কি ? তাঁহার ধরর অনেকদিন পাই ন।।"

বলিলাম— "তিনি করেক মাস হয় মারা গিয়াছেন।" ভদ্রলোক বিশিত ও হঃবিত হ'লেন, বলিলেন— "তাই তার ববর পাই না। তাঁর পরিবারের সঙ্গে আম!দের কি সৌহার্দ্ধাইছিল। তাহার ছেলেকে আমি কালই চিটি দিব। আপনার কবা আমি তাঁহাকে লিবিব।"

আমি আমার একট কার্ড তাঁহাকে দিলায়। তিনিও তাঁহার কার্ড আমাকে দিলেন। ভদ্রলোকটির নাম ডাক্টার গালবার্ড একল:ও। বঙমানে আমেরিকার নেখাড়া রাশ্বোর রাশ্বানী রেনোতে ডাক্টারি করিতেছেন। তিনি বলিলেন, "আমি পরস্থ এ খান তাাগ করিব। এবার রেনোতে বছদিনে আমাদের একট পারিবারিক সম্মেলন হইবে। আমরা সমস্ত ভাতাভগিনী বার বংসর পর একএ মিলিত হইতেছি।

ভদ্রলোক অনেক কথা বলিলেন। রাজাগোপালাচারীর কথা কিলাসা করিলেন। বলিলেন, "তিনি আমার এককন রোগ ছিলেন।" ভারতবর্ষের রাজনীতির কথা কিলাসা করিলেন। তথন ভারতবর্ষের রাজনৈতিক অবস্থা ধুব সঙ্গীন। বলিলেন, "কিলা যে এত কেদ করিবেন তাহা আমরা কেহই পূর্বে ভাবি নাই।"

ভদ্রলোক একদিনও অস্ততঃ আমাকে বাওরাইতে পারিলেন না বলিরা হঃব প্রকাশ করিলেন। তিনি সঞ্জীক সিনেমার গিরাছিলেন। স্ত্রী নীচে লাউঞ্জে আছেন। শীমই আসিবেন। আমাকে অপেকা করিতে অন্থরোধ করিতে লাগিলেন। সুমে চোধ জড়াইরা আসিতেছিল—কিছুক্দ্ আলাপ করিয়া ধরে আসিলাম। প্রদিন প্রাতরাশের সময় ধাবার বরে ভদ্রলোক আমার টেবিলের নিকট উপছিত হইরা পুনরার কিজাসা করিলেন—'আপনার আৰু যাওয়াই কি

ঠিক ?'—ভদ্রলোকের আগ্রহ দেখিরা ভাল লাগিল।

মহাচীনের এক দশক (১৯২৭-৩৭)

बिन्धाः ७विमल म्राभाषाय

নব্য চীনের শ্রপ্ত ডাঃ পূন্ ইয়াট্ সেন ১৯২৪ সালে তৎপ্রতিষ্ঠিত ক্যুপ্তমিন্টান্ড দলকে নৃতন করিয়া গঠন করেন। এই সময় বরোজিন সোভিয়েট প্রতিনিধিয়পে চীনে অবস্থান করিতেছিলেন। তাঁছারই প্রভাব এবং পরামর্শে শ্লন্ ক্যুপ্তমিন্টান্ড দলকে ঢালিয়া সালিয়াছিলেন। এই বংসরই আক্ষ্ণানিক ভাবে চীনের ক্যুনিপ্ত পার্ট অবাং সাম্যবাদী দল গঠিত হয়। শ্লন্ ইয়াট্ সেন সাম্যবাদিগণের সহিত একট চ্জিতে আবদ্ধ হইলেন। এই চ্জি অক্সারে ক্যুনিপ্তগণ নিক্রেদের পৃথক সংগঠন বজায় রাখিয়া ক্যুপ্তমিন্টান্ড দলে প্রবেশ করিলেন। চীনের মহাবিশ্লবে (১৯২৫-২৭) ক্যুনিপ্তগণ একটি বিশিষ্ট গৌরবময় অংশ গ্রহণ করিয়াছিলেন।

কিছ মহাচীনের ছুর্ভাগ্যক্রমে ১৯২৭ সালের প্রথম দিকে ক্য়ানিষ্ট ক্রাওমিণ্টাভ উভয় দলের সন্মিলিত বাহিনী কর্তৃক সাঙহাই বিজ্ঞারে পর চীনের বিপ্লবী শক্তি দিবাবিভক্ত হইয়া পড়িল। বিপ্লবের অবসানে প্রতিবিপ্লবী শক্তি মাথা ভূলিয়া দাড়াইল। সৈকাব্যক্ষ চিয়াভ কাইশেক নান্কিভে জাতীয় সরকারের রাজ্যানী স্থাপন করিলেন। এই বংসর জ্লাই মাসে চীনে প্রেরিত সোভিয়েট প্রতিনিধি বরোডিন স্বদেশে প্রত্যাবর্ত্তন করিলেন। চীন-সোভিয়েট এবং ক্য়ানিষ্ট-ক্যুওমিণ্টাভ মৈত্রীবন্ধন ছিল্ল হইয়া গেল। এই ভাবে অতি অল্পনাল্য মধ্যে চীন-ইতিহাসের পট পরিবৃত্তিত হইল।

ক্যুওমিন্টাভের দক্ষিণ এবং বাম শাধার মধ্যে মিলন ঘটাইবার অন্ধ চিরাভ কাইশেক্ নান্কিভ সৈলাধ্যক্ষ এবং রাষ্ট্রপতির পদ পরিত্যাগ করিয়া আগষ্ট মাসে ক্যান্যান চলিরা গেলেন। ভিসেম্বর মাসে বদেশে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া তিনি ভা: স্থনের কনিষ্ঠা জালিকা মাই-লিভ স্থভের পাণিগ্রহণ করেন। ইহার পর তিনি পুনরায় নান্কিভ সরকারের সৈলাধ্যক্ষ এবং রাষ্ট্রপতির পদ গ্রহণ করিলেন। কার্যান্ডার গ্রহণ করিয়াই যে সমন্ত রণনারক তথন পর্যান্ত জাতীর সরকারের বক্তা বীকার করেন নাই, তাহাদের শক্তি চুর্গ করিবার উদ্বেক্ত তিনি সংগ্রামে অবতীর্ণ হইলেন। ১৯২৮ সালের প্রথম দিকে চীনের কাতীর কীবনের হুর্গ হ, রণ-নারকগণের প্রায় সকলেরই শক্তি চুর্গ হইলা গেল। মুখ্যতঃ ভাপানের

প্ররোচনায় পিকিড তথনও আগ্রসমর্পণ করিল না। জাপানের ভয় যে, চীন প্রকাবদ্ধ হইলে সাতৃত মুক্ডেনে তাহার স্বাধ বিপন্ন এবং মর্যাদা নাই হইবে। মে মাসের প্রথম দিকে একই সময় দক্ষিণ এবং পশ্চিম হইতে নান্কিড বাহিনী পিকিড অভিমূপে অগ্রসর হইতে থাকে। ইত্যেমধ্যে সাতৃতের বন্দর সিঙটাওর পথে জাপ সৈত্তের একটি শক্তিশালী দল চীনে আসিয়া উপস্থিত হইল এবং রেল লাইন ধরিয়া পিকিঙের দিকে অগ্রসর হইতে লাগিল। পিকিঙের অল্প দক্ষিণে উভয় বাহিনীর মধ্যে সংধ্রে নান্কিড বাহিনী প্রাজিত হইয়া সাম্যাক্ষিভাবে পশ্চাদপ্রস্থল করিতে বাবা হইল।

এই বিপর্যায়ের পর অল্প কিছুদিনের মধ্যেই পিকিঙের রণনায়ক চ্যাঙ সো-লিন্ নান্কিঙ সরকারের সহিত স্থবিশ্জনক সন্তে আপোষ করিবার আশায় জাপানের সহিত তাঁহার যে মৈত্রীবন্ধন ছিল তাহা ছিন্ন করিয়া সসৈপ্তে মাঞ্রিয়া চলিয়া
গেলেন। চীন-সীমান্ত অভিজ্ঞম করিবার পরই যে ট্রেনে তিনি
যাইতেছিলেন বিক্ষোরণের ফলে তাহা ধ্বংস হইয়া যায়।
ব্ব সন্তব জাপান কর্তৃক এই কার্য্য অফুটিত হইয়াছিল।
ভাঁহার পুত্র চ্যাঙ স্থয়ে লিয়াঙ জাপানের নিষেধ এবং জীতিপ্রদর্শন অপ্রাহ্ম করিয়া নান্কিঙ সরকারের সহিত সন্ধিবন্ধনে
আবন্ধ হইলেন। জুলাই মাসে পিকিঙ আত্মসমর্গণ করিল।
পিকিঙের নৃতন নাম হইল পিপিঙ।

এইভাবে বাহতঃ চীনে ঐক্য প্রতিষ্ঠিত হইল। প্রকৃত পক্ষে কিন্তু আৰু পর্যান্তও ঐক্য হাপিত হর নাই। পিকিঙের পতনের পূর্বেই দক্ষিণ-চীনের ক্যাণ্টনে একট বতন্ত্র সরকার প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। ক্যাণ্টন সরকার নান্কিঙের বক্ততা বীকার করিল না। এদিকে পিকিঙের পতনের পর উত্তর-চীনের কোন কোন রগনারক অভ্যন্তরীণ ছন্দে লিপ্ত রছিলেন। ইহারা মধ্যে মধ্যে পারস্পরিক মৈত্রীবছনেও আবছ হইতেন। কাগক্ষে কলমে নান্কিঙ সরকার ক্যাণ্টন ব্যতীত সমগ্র চীন লাসন করিতেন। আসলে কিন্তু দেশের অমেক ভারগাতেই এই সরকারের কর্তৃত্ব বীকৃত হইত না। এই প্রসঙ্গে দেশের অভ্যন্তর্যাপ্ত ক্যানিষ্টশাসিত বিরাট একট অক্সের ক্যা বিশেষ ভাবেই উল্লেখযোগ্য।

চীনে স্বিধাজ্যে সামাজ্যাধিকারী শক্তিসমূহের প্রবোচনার নান্কিঙ্ সরকার প্রথম হইতেই সোভিরেট বিরোধী নীতি অক্সরণ করিয়া আসিতেছেন। ১৯২৯ সালে নান্কিঙ সরকারের ইলিতে মাঞ্রিয়ার সোভিয়েট দ্তাবাস আক্রান্ত হয়। অতঃপর 'চায়নিক ইপ্রাণ' রেলপথের রুশীয় কর্মচারিদিগকে প্রেপ্তার করা হইতে থাকে। রুশিয়া এবং চীন এই রেলপথের সমান অংশীদার। নান্কিঙের অসকত গুরুতোর প্রতিকারের কন্ত সোভিয়েট রাষ্ট্র হইতে মাঞ্রিয়াতে সৈত্য প্রেরিত হইল। করেক মাস বিরোধ চলিবার পর নান্কিঙ সরকার 'চায়নিক ইপ্রাণ' রেলপথের পরিচালনা সংক্রান্ত পুর্বান্ত বজায় রাধিতে সন্ত হবৈলন।

ঞদিকে ক্য়ানিষ্টদের সহিত কাওমিন্টান্ড দলের বিরোধিতা তীব্র হইতে তীব্রওর হইরা উঠিতে লাগিল। নান্কিন্ড সরকারের আদেশে সামাবাদী ভাবধারা প্রচার করা এবং সামাবাদী দলভুক্ত হওয়া প্রাণদন্তবোগ্য অপরাধের মধ্যে পরিগণিত হইল। চীনের জাতীয়তাবাদের ছইট আদর্শ— সামাজাবাদ-বিরোধিত। এবং গণ-বিপ্লব—প্রকৃত প্রভাবে পরিত্যক্ত হইল। নান্কিন্ত সরকার কর্তৃক অভ্নতত প্রতিক্রিয়া-পদ্মী নীতির কল্প বাহারা এই সময় চীন হইতে চলিয়া গিয়া-ছিলেন, ভাহাদের মধ্যে মাদাম সুন্ ইয়াট সেনের নাম সর্কারে উল্লেখযোগ্য।

প্রয়েশ্বনীর অর্থের জন্ত নান্কিত সরকার প্রধানতঃ সাত্রহাই বন্দরের ধনকুবের ব্যাকারগণের মুখাপেন্দী ছিলেন। এই সরকারের অন্থাত বিভিন্ন সৈভাধ্যক্ষের অধীন বিমানবাহিনীগুলি অসহার ক্রথককুলের রক্ত শোষণ করিতে লাগিল। বহু প্রাক্তন সৈনিক জীবিকার অবেধণে দেশমর ঘুরিয়া বেড়াইতে লাগিল। ইহাদের মধ্যে অনেকেই নিরুপায় হইয়া দপ্রার্থি অবলখন করিল। পুরাতন রণ-নায়ক সম্প্রদারের ছলে অভিনব রণ-নায়ক সম্প্রদার আবির্ভূতি হইল। গৃহ-মুত্ত এবং ক্রেমবর্জমান ক্রথক-আন্দোলন দমনে সরকার সর্ব্বশক্তি প্রয়োগ করিলেন। সহস্র সহস্র মামাবাদী এবং ক্রথক ও প্রথিক আন্দোলন এবং সংগঠনের প্রাক্তন নেতারা সরকারের দমননীতির ফলে প্রাণ হারাইলেন। সর্ব্বপ্রাক্তর কলে প্রাণ হারাইলেন। সর্ব্বপ্রকার বিরোধিতার মূলোচ্ছেদ করিয়া একটি মাত্র রাজনৈতিক দলের সর্ব্বমর কর্ত্বত্ব (Totalitarian Dictatorship) প্রতিষ্ঠার চেষ্টা করা হুইতে লাগিল।

চিয়াও কাই-শেক্ পরিচালিত নান্কিও সরকার ক্রমশঃই বৈপ্লবিক নীতি এবং আদর্শ হুইতে দূরে সরিরা যাইতে লাগিলেন। জনসাবারণের আর্থিক অবছা এবং জীবনযাত্তার মান অতি-ক্রত নামিরা যাইতে লাগিল। পিপিও হুইতে প্রকাশিত 'ডেমোক্রেসি' নামক দৈনিকে, ১৯৩৭ সালের ১৫ই মে তারিধে প্রকাশিত একট সংবাদে দেখা যার যে চীনের বিভিন্ন অঞ্চল হুইতে সেলিতে ৪০০,০০০-এর অবিক, কর্নিস্লতে ১,০০০,০০০-এর অধিক, ছোনানে প্রায় ৭,০০০,০০০ এবং
কিয়াঙ চারতে ৩,০০০,০০০ জন বুভুক্ থাডাধেমণে আসিরা
আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছে। ঐ কাগজের একই সংখায় প্রকাশ
যে, কিয়াঙ চাঙ প্রদেশে ৬০টি জেলা ছভিক্লের তাওবে বিধ্বত
হইয়া সিয়াছে এবং বিগত এক শতাজীর মধ্যে এইরূপ প্রলয়ম্বর
ছভিক্ল আর হয় নাই। সরকারী সংবাদ সরবরাহ প্রতিষ্ঠান
'সেন্টাল নিউক এজেনি' কর্ত্তক এই সংবাদ সম্বিত হইয়াছে।

হার্কিন সংবাদিক ও গ্রন্থকার এভগার স্থোনর বছল-প্রচারিত গ্রন্থ (রেড ষ্টার ওভার চায়না' ১৯০৭ সালে প্রথম প্রকাশিত হয়। এই গ্রন্থে তিনি বলিয়াছেন যে, সেচোয়াঙ ও অক্সান্ত কয়েকটি প্রদেশে আগামী ৬০ বংসর বা তাহারও অধিককালের জন্ত রাজস আদায় করা হইয়া গিয়াছে এবং রাজব ও স্থদের হার অত্যন্ত বেশী বলিয়া বহু কর্ষণযোগ্য ভূমি মালিক কর্ত্তক পরিতাক্ত হইয়া অক্ষিত পড়িয়া রহিয়াছে।

একদিকে পদ্ধী অঞ্জের দরিন্ত এবং মধ্যবিত্ত অধিবাসিগণ থেমন দিনের পর দিন দেউলিয়া হইয়া যাইতে লাগিল, অপর দিকে তেমনই আবার দেশের যাবতীয় ভূসম্পত্তি এবং নগদ টাকা মুষ্টিমের ভূমাধিকারী এবং কুসীদলীবীর হাতে কেন্দ্রীভূত হইতে লাগিল। ইহারই কলে আধুনিক চীন-সমান্ধ হইতে মধ্যবিত্ত শ্রেণী প্রায় নিশ্চিক হইয়া গিয়াছে।

কয়ানিষ্ট নেতা মাও সে তুঙের ১৯২৬ সালে প্রদন্ত একটি বিরতিতে প্রকাশ যে, সমগ্র চীনের মোট কর্বণযোগা ভূমির শতকরা ৭০ ভাগই কমিদার, সম্পন্ন ক্রয়ক, সরকারী কর্ম্মচারী এবং কুসীদকীবী সম্পাধ্যের কবলিত হইয়াছে, অবচ পল্লী অঞ্চলের অধিবাসীদিগের মধ্যে শতকরা ৬৫ জনই দরিদ্র ক্রমক, রায়ত এবং ক্রেডফুর হইলেও মোট কর্বণযোগা ভূমির শতকরা ১৫ ভাগের বেলী তাহাদিগের অধিকারে নাই। নান্কিও সরকার কর্তৃক সামাজাবাদ-বিরোধিতা পরিতাক্ত হওয়ার ফলেই পল্লী অঞ্চলের অধিবাসীদিগের অবস্থার ফ্রন্ড অধনতি ঘটয়াছিল। কয়ানিষ্টগণও এই কথাই বলেন।

এদিকে নান্কিত সরকার যথন স্বীয় শক্তির দৃচ্তা সম্পাদনে ব্যাপৃত ছিলেন, ক্য়ানিষ্টগণ তথন নিচ্চিত্র বসিয়া থাকেন নাই। ১৯২৭ সালে ক্যুওমিন্টাভ দলের সহিত সম্পর্ক ছিল্ল হইবার পর তাঁহারা ইয়াংসি উপত্যকায় কিয়াঙ সি প্রদেশে প্রধান কর্মকেন্দ্র স্থাপন করিয়াছিলেন। এই বংসর নভেম্বর মাসে চীনে সর্কপ্রথম সোভিয়েট সরকার স্থাপিত হয়। কোয়ান্ট্র প্রদেশের অন্তর্গত হাইক্ষেড ক্লোতে প্রতিষ্ঠিত এই সরকার হাইকেও সোভিয়েট সাবারণতন্ত্র প্রায়েশ বর্ষকার হাইকেও সোভিয়েট সাবারণতন্ত্র প্রতিষ্ঠিত হয়। কিয়াঙসি প্রদেশের সীমান্তে অবস্থিত এই স্কৃই-চিন ইহার রাজ্যানী হইল। সোভিয়েটশাসিত অঞ্চল ক্রমশ: বর্ষিতায়তন হইতে থাকে। ১৯৩২ সালের মধ্যভাগে মহাচীনের প্রায় একষ্টাংশ পরিমিত ছান সোভিয়েট ব্যবহার

শাসিত ছইত। এই সময় ইহার আর চন ২৫০,০০০ বর্গমাইল এবং জনসংখ্যা ৫০,০০০,০০০ ছিল।

১৯২৮ সালে চীনে সর্বপ্রথম লালকৌক গঠিত হয়, এই সময় ইছার সৈত্ত-সংখ্যা ২,০০০-এর অধিক ছিল না। চু-টে এই বাহিনীর অবাক্ষ ছিলেন। আপ-মুদ্ধ কালে ইনিই সুবিখ্যাত 'এইটব রুট আর্থি'র সর্বাধিনায়ক ছিলেন। চু-টে গোরিলা রণনীতিতে বিশেষ পারদলী। তাঁছার সংগঠন-নৈপুণ্যে ১৯৩০ সালের মধ্যে লালকৌকের সৈত্তসংখ্যা ১০ গুণ বর্দ্ধিত হয়। ইছার ছই বংসর পর ১৯৩২ সালে চীনের লালকৌকের সৈত্তসংখ্যা আরও বাহিল্লা ৪০০,০০০ ছইরাছিল। লালকৌকের সৈত্তসংখ্যা আরও বাহিল্লা ৪০০,০০০ ছইরাছিল। লালকৌকের সৈত্তসংখ্যা হুই বংসর পর ১৯৩২ সালে চীনের ভালকৌকের সৈত্তসংখ্যা আরও বাহিল্লা ৪০০,০০০ ছইরাছিল। লালকৌকের সৈনিক্দিগকৈ সাম্বিক এবং রাক্টনতিক উভরবিধ শিক্ষাই দেওয়া ছইয়া থাকে।

সোভিয়েট বাবস্থায় শাসিত অঞ্চলসমূহে মৃতন করিয়া ভামি বন্টন করা হইল। কৃষক দিশের করভার স্থাস করিয়া ভামি বন্টন করা হইল। কৃষক দিশের করভার স্থাস করিয়া ভানেক যৌগ করি এবং শিল্প প্রতিষ্ঠান স্থাপিত হইল। ১৯০০ সালের মধ্যে একমাত্র কিয়ঙিলি প্রদেশেই ১,০০০-এরও অবিক সমবার পরতিতে পরিচালিত সোভিয়েট গঠিত হইয়াছিল। বেকার-সমভার সমাধানের বাবস্থা হইল এবং অহিকেন পেবন পতিভারতি, শিঙনিগের দাসর এবং বাঘ্তামূলক বিবাহ-প্রথার বিলোপসাধন করা হইল। শিক্ষাবিভারের উপর বিশেষ জ্যোর দেওয়া হইল এবং চীনের অভান্থ অঞ্চল অপেক্ষা লালটানে লবি কৃত্র ফ্রান্ডগতিতে শিক্ষার বিভার ঘটল।(১) যে সমন্ত অঞ্চলে মুক্রের আন্তন ছড়াইয়া পড়ে নাই সে সমন্ত অঞ্চলে প্রমিক এবং কৃষক দিশের জীবনযাত্রার মানের উরেধবোগা উরতি সাধিত হইল।

১৯৩০ সালের জুলাই মাসে কথানিপ্রগণ ছনান প্রদেশ আক্রমণ করিয়া ইহার রাজধানী অবরোধ করিলেন। ন'ন্কিঙে পৌছিবার কর তাহারা এই সময় বিভিন্ন দিক হইতে আক্রমণ চালাইতেহিলেন। চিয়াভ কাইশেকের ব্রিতে বাকী রহিল না যে, কয়ানিপ্রণশ ক্রাওমিন্টাভের প্রতিহন্দী হইয়া উঠিয়াছে এবং নান্কিভের সরকারকে আহ্রমনার প্রয়োজনে সমগ্র শক্তিকেরী হুত করিয়া কয়ানিপ্র দলনে প্রয়ন্ত হইতে হইবে।

১৯০০ হইতে ১৯০৪ সালের মবেং নান্কিও সরকার কাইক চীন লোভিয়েট সাধার তেন্ত্রের বিরুদ্ধে পর পর ৬টি অভিযান প্রেরিত হর, কিন্তু এত কারিয়াও চুছান্ত করপরাক্ষর নির্দারিত হল না। ক্যানিটগণের বিরুদ্ধে ষষ্ঠ অভিযানকালে নান্কিও-বাহিনী ভাহাদিগকে পরিবেইন করিয়া কেলে। শেষে বাজ্ঞ লবণের অভাবে চীন-সোভিয়েট সাধারণতত্ব এক ভরাবহ সঙ্কটের সন্মুবীন হইল। কিন্তু ক্যানিটগণ তবনই আল্লসমর্পণ না ক্রিয়া কিয়াঙাসি হইতে অধিকতর নিরাপদ কোন ছানে

সরিরা যাইবার সিরাভ এছণ করিলেন। কিরাওসি ছইচে কর্ননিষ্টগণের অপসরণ "লং যার্চ" নামে অভিহিত ছর। কিলিন্ন শতবর্ষ প্রেই ১৮০৬ সালে দক্ষিণ আফ্রিকার ব্যর ক্ষকগনের উত্তরভিম্বী অভিযানের সহিত এই "লং মার্চের" ব্য নিকট সানৃত থাকিলেও উভরের মধ্যে তুলনার প্রথমোঞ্চী নিঃসঞ্চে নিঅভ ছইয়া পরে।

১৯৩৪ সালের ১৬ই অক্টোবর কিরাঙসি হইতে উত্তর-প-ियाणिमृत्रं क्यानिष्टेग्रान्य योजा चात्र इरेन । योश्रायत ইতিহাদে এই অভিযানের তুলনা মিলে না। এই ছঃদাহসী অভিযাত্রীর দলে কেবল মাত্র সৈঞ্গণই ছিল না। সহস্র সহস্র কৃষকও দৈরবাহিনীর সঙ্গে যাত্র। করিল। নারী-পুরুষ যুবক-রেম্ব এবং শিশু সকলের সমবায়ে এই অভিযাতী पन गठि छ इरेथा दिन । रेशादित मध्या भक्त सरे कि क्रू क्या निहे हिल न।। क्रेकिन পরিতাগি করিবার সময় ক্ষুনিষ্টগণ অগ্নাগার हरेट गांव जोब अवनंत्र मदन कविया नहेश (शटन । कांद्रशंन!-সমূহ হইতে যাবতীয় যন্ত্রপাতি বুলিয়া লইয়া গাব। এবং বচ্চরের পিঠে চাপাইয়া দেওয়া হইল। এক কথায় বলিতে গেলে বহন করিয়া লইয়া যাইতে পারা যায় এমন কিছুই পরিতাক ছইল না। পরে অবশ্র বছ জিনিসই পথে কেনিয়া ঘাইতে **क्रेयाधिल । क्रमानिटेगन वालन य क्रियां ५ मि क्रेट ५ क**:न्यूद পথে বিভিন্ন হানে পৰিপাৰ্থে হাৰার হাৰার রাইফেন ও যেদিন-গান, প্রচুর যন্ত্রণাতি এবং রৌপা ভূগর্ভে প্রোধিত রাহ্যাছে।

অবর্ণনীয় ছংগক্ট ভোগ ক্রিয়া পশ্চারাবনকারী শত্রুর व्यक्तिम स्टेट्ड व्याध्यक्त क'त्र्टड क'त्र्टड करने व वा वावाय भक्कत चाक्रमण अहारेश वोश चान्दर्भ चाहातान अहे हैं: शाह्मी আভিযাতীর দল প্রথমে পশ্চিম দিকে চলিতে আরম্ভ করিয়া স্থার পশ্চিমে ভিকাত সীমারে উপরিত হইল। ছইতে অংবার উত্তর এবং পূর্ণে নিকেচলিতে সুরু করিয়া **এই पल चरानार राज्ञि अर्पाना छेउदाकाल छेशिए छ इहेल।** সাম্যবাদিগণ এই অঞ্চ নিৰেদের অবিকারসুক্ত করিয়া তথায় (माक्टियर मामन-वावदा श्रवित क्रिलन। সোভিয়েট চীনের শুতন রাজধানী ছইল। ইয়েনানের ভূমি বন্ধা এবং অৰ্থীতির দিক হইতেও ইয়েনান একান্তই অনগ্ৰসর। কিন্তু রণনীতির দিক ছইতে ইহার গুরুত্ব যোটেই উপেক্ষা করিবার মত নছে। ইপ্রেনানের পশ্চিমেই চীনের मुननमान-चपुषिण अक्षे अवान चक्ता। अहेबारन मूनलमाननन भरवाालवू इटेला उत्प मिक्रमानी। अन्भित छेखदा वित्रम-বসতি অন্তর্মলোলয়। ইহার বন্ধণ ব্যবহা অত্যন্ত চুকল ছিল। ভাপ যোটরবাহিনী ভল্লাথাসেই এই প্রদেশ ভবিকার করিতে পারিত। সেন্দির পূর্ব্ব দিকে শৈলভোগপরিবেট্টত সেন্দি প্রদেশ অবস্থিত। সেন্সি খনিক সম্পদে অত্যন্ত সমুদ্ধ। এই সম্পর গ্রাস করা ভাগানের চীন ভভিযানের ভরতম প্রধান উদ্বেশ্ব ছিল। সেন্সির ঠিক দক্ষিণে অবস্থিত সিয়ানের বিশ্বীর্ণ প্রান্তর চীনের একট অতিশর সাম্রিক গুরুত্পূর্ণ অঞ্চল।

ছূর্ণম প্রের এই অভিযাত্রিগণ প্রার ৮,০০০ মাইল প্র অভিক্রম করিয়া যুগন সেন্সিতে উপস্থিত ছুইল ভগন যাত্র।

^{(1) &}quot;Mass education made much progress in the stabilized Soviets. In some countries, the Reds attained a higher degree of literacy among the populace in three or four years than had been achieved anywhere else in rural China after centuries. This did not exclude even the Rockfeller-backed de luxe mass education experiment at Ting Hsien, run by "Jimonie" Yen. In Hsin Kuo, the Communists' model hsien, there was a populace nearly 80 per cent literatemuch higher than in the famous Rockfeller country."—Red Star Over China by Edgar Snow, pp. 183-84.

যাহার। আরম্ভ করিয়াছিল ভাহাদের মধ্যে অনেকেই আর বাঁচিয়া ছিল না। কিয়াঙসি, কোয়ান্টুঙ, কোয়াঙসি এবং ছনাদের ভিতর দিয়া চলিবার সময় কম্নানিষ্ট বাহিনীর প্রায় এক তৃতীয়াংশ মৃত্যুমুধে পতিত হইয়াছিল।

ক্য়ানিষ্টগণের এই অপসরণ নান্কিও সরকারের শক্তিব্রির সহায়ক হইয়াছিল। কোন কোন অঞ্চলের রণনায়ক ১৯০৪-১৯০৫ সাল পর্যন্ত নান্কিও জাতীর সরকারের আফুগত্য দীকার করেন নাই। এই সমন্ত অঞ্চলের ভিতর দিয়া ধ্বন ক্য়ানিষ্ট বাহিনী অগ্রসর হইতেছিল, তথন রণনায়কগণ আগ্রহার গরভে অনত্যোপায় হইয়া নান্কিঙের সরকারী বাহিনীর সাহায্য গ্রহণ করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। ইহারই কলে তাহাদিগকে পরে শাসন এবং অর্থনীতি সংক্রান্ত বিষয়ে নান্কিঙ জাতীর সরকারের কর্তৃত্ব খীকার করিয়া লইতে হয়।

এদিকে ক্য়ানিষ্ট-ক্তৃথিনিন্টাঙ বিবোধে চীন যথন বিব্রত, তথন জাপান দেগিল ইহাই তাহার চীনে সীয় কর্তৃত্ব প্রতিষ্ঠা এবং বিভারের প্রবর্গ প্রযোগ। কিয়াঙদির ক্য়ানিষ্টদিগকে দমন করিবার উদ্ভেশ্য ১৯৩১ সালে চিয়াং কাইশেক হথন সর্বলক্তি প্রযোগ করিয়া যুদ্ধ করিতেছিলেন, জাপান তথন মাঞ্চিয়া জবিকার করিয়া বসিল। চিয়াঙ আশা করিয়াছিলেন যে 'জাতি-সভ্য' এই অভায়ের প্রতিবিধান করিবেন। কিছ ছুর্বলের পক্ষ সমর্থন করিতে যাইয়া কোন বুদ্ধিমানই প্রবলের জনহোষ উপোদন করেন না। এই ক্ষেত্রেও এই নিয়মের জ্ঞাপা ছলৈ না। 'জাতি-সভ্য' প্রবল জাপানকে বাঁট।ইতে সাহস করিল না, নান্কিঙ সরকার মাঞ্রিয়ার উপর ছত ভ্রিকার পুনঃপ্রতিষ্ঠার কোন চেষ্টাই করিলেন না। ফলে জনমত সরকারের প্রতি কিছু বিশ্বপ হুইয়া উঠিল।

এই সময় হইতেই চিয়াঙ কাইলেক জাতীয় কেন্দ্রীয় বাহিনীর শক্তিবৃদ্ধি করিয়া ভাহার উন্নতি সাধন করিতেছিলেন। বিভিন্ন প্রাদেশিক বাহিনীগুলি এতদিন পর্যান্ত স্থানীয় সৈপ্রাধাক্ষ্যণের অধীনে শিকালাভ করিয়া তাঁহাদের ছারা পরিচালিত ছইত। সৈহগণ মনে করিত যে স্বস্থ প্রদেশের জ্বর যুদ্ধ করিলেই তাহাদের কর্তব্য শেষ হটল। সমগ্রভাবে দেশের প্রতি তাহা-দের যে কোন কর্ত্তবা আছে তাহা তাহার। বুবিত না। চিয়াঙ কাইশেক এই বিচ্ছির সামরিক শক্তিকে কেন্দ্রীয় সরকারের পরিচালনাধীনে স্থসংহত করিলেন অর্থাৎ সমস্ত প্রানেশিক বাহিনীর সমবায়ে একট ছাতীয় বাহিনী গঠন করিলেন। रिमञ्जार्गत मान এই योजना यक्त्रम क्रिया (मख्दा इहेन, দেশরক্ষার পবিত্র কর্ত্রভার তাহাদেরই উপর ক্লন্ত রহিয়াছে। ভ্ৰোদশ শতাৰী পৰ্যন্ত প্ৰতোক প্ৰাপ্তবয়ন্ত চীন নাগৱিককে বুছবিছা শিথিতে হইত। সংকারী আদেশে বাধ্যতামূলক সামরিক শিক্ষা পুনঃপ্রবর্ত্তিত হউল। ইউরোপীয় এবং আমেরিকান উপদেষ্টার সহারতার অল্পলের মধ্যেই আধ্নিক প্রধার শিক্ষিত বিরাট একট ব:হিনী গড়িয়া উটল। সাম্বিক

প্ররোজনে রেলপথ এবং রাভাষাটের উন্নতি সাথিত হওরার কলে যাতারাতের অনুবিধা বহল পরিমাণে কমিরা গেল। সৈতবাহিনীর পক্ষে প্রয়োজনীর বিবিধ পণ্যের উৎপাদনের কর বিভিন্ন প্রমণির প্রতিষ্ঠানকে সরকারী তহবিল হইতে অব এবং অভবিধ সাহায্য করা হুইতে জাগিল।

সুসক্ষিত বিমানবহর এবং সুশিক্ষিত বৈমানিকবংহিনী আধুনিক সমর-যহের অপরিহার্যা অন্ন। চিয়াও কাইশেকের আদেশে বিমানবহরের উন্নতির ক্ষা একটি ত্রেগাধিকী পরিকল্পনা গৃহীত হটল। বিদেশ ইইতে বিমান এয় কবিয়া শিক্ষিত বৈমানিক দল গঢ়িয়া তুলিবার বাবগা হটল। মুক্ত-রাষ্ট্রের কর্ণেল চিনন্ট নান্কিও সরকারের বিমানবহরের অবাক্ষতা গ্রহণ করিলেন।

চিয়াতের সমধকরন্দ বলেন যে, ভবিশ্বতে আঙ্জাতিক বুলের সময় কান্ধে লাগাইবার উদ্দেশ্তেই তিনি একট আধুনিক প্রধায় শিক্ষিত শক্তিশালী বাহিনী গঠন করিতে চাহিয়াছিলেন। নান্কিঙ সরকারের পরবর্তীকালের কার্যকলাপ কিছু এই মতের পোষকতা করে না।

সমরবিভাগের আধুনিকভা সম্পাদন, সৈত্যবাহিনীর প্রয়োধন মিটাইবার জন্ম বিবিধ শ্রমশিল্পের উন্নতিগাধন, জাতীয় অৰ্ণীতিক কাঠামোর সংস্থার, বাণিকা বিভার, বেকার-সমস্তার সমাধান, জনসাধারণকে রাজনৈতিক শিক্ষাদান---এই সমস্তই সময়সাপেক। युष्कदायत कम देशारात (कानिवेदे ज्यमद्रकादी नरह। िश्रारङ्य भगर्यकृश्य राज्य (य. स्मर्थकृष्ट প্রতিকৃল সমালোচনা এবং জাপানের তরক হইতে পৌনঃপুনিক উত্তেজনা সভেও তিনি জাপানের সহিত শক্তিপরীকায় প্রবৃত্ত ছন নাই। তিনি নিজেও একাবিক বার বলিয়াছেন যে চীনের তুর্বলতার ক্রট তিনি যুদ্ধবিগ্রহ এড়াইয়া চলিতে চাহেন। তুলনীয়:-- "We are still a weak people and we dare not provoke a war. But if we are forced to fight, we shall not stop until the last man has fallen, or until we are victorious." অৰ্থাং, "ৰাভি হিসাবে আমরা এবনও ছুর্বল, আমরা গায়ে পড়িয়া <mark>যুদ</mark> वांशाहेट माहम कृति ना। किन्तु यनि अधानिगटक यूद्ध করিতেই হয়, শেষ গৈনিকটির দেহে প্রাণ থাকা অথবা জয়লাভ নাকরাপর্যান্ত আমরা প্রতিনিরত ছইব না।" কিছু এক্থা বলা সন্তেও জাতীয় দৌৰ্ফলেণ্য অন্তৰ্য প্ৰধান কাৰণ অন্তবিরোধ দূর করিবার কোন চেটা করা দূরের কথা, ভিনি যে নীতি অবলম্বন করিয়াছিলেন তাহ'তে এই বিরোধ না মিটিয়া উভুরোতার বৃদ্ধিত হটয়া চলিয়াছিল।

ক্যানিই দলকে নির্মূল করিয়া কেলিতে চিয়াঙ কাইলেকের চেষ্টার বিরাম ছিল না, অবচ ১৯৩৬ সালেট কাপানের সহিত একটা আপোষ করিবার উদ্দেশ্তে তিনি বিভিত্ত সময়ে সাত বার আলোচনা চালাইয়াছিলেন, কিন্তু প্রত্যকে বারই আন্দর্শনের চেষ্টা বার্থ হটয়া যায়। কাপানের পরবাই দপ্তরের অন্মনীয় মনোভাবই এই বার্থতার করু দায়ী। কাপ প্রবাইন্সচিব যিঃ হিরোটা দাবি করেন যে চীন বলি ভাহার ভিনষ্ট

>1 Red Star Over China by Edgar Snow, pp. 183-208 2001

নীতি' মানিরা লইতে রাজী হর, আপোষ হইতে পারে। এই তিনট নীতি হারা দাবি করা হইল বে—

- (১) চীনকে জাপ-বিরোধী যাবতীয় সরকারী এবং বেসরকারী প্রতিষ্ঠান ভালিয়া দিতে হইবে এবং পাশ্চান্ত্য শক্তিপুশ্বকে জাপানের বিরুদ্ধে উত্তেজিত করিবার নীতি পরিত্যাগ করিতে হইবে:
- (২) মাঞ্কুত (মাঞ্রিরার জাপ-প্রনন্ত নাম) এবং জিহোলকে খাবীন (!) কিন্ত জাপ-তাঁবেদার রাষ্ট্র বলিয়া খীকার করিতে হইবে: এবং
- (৩) চীনে অবস্থানকারী স্থাপবাহিনীকে 'ক্য্যুনিষ্ট দম্য'-দিগের দমনে সহযোগিতা করিতে দিতে হইবে।

অভাগে কৰ্নিষ্ট-বিষেষ সত্তেও চিয়াঙ তথা নান্কিড সরকারের পক্ষে এই সর্বগুলি গ্রহণ করা সম্ভব হুইল না। আপোষের যাবতীয় প্রচেষ্টা যখন ব্যর্গ হুইয়া গেল, তখন আর কাহারও বুবিতে বাকী রহিল না যে চীন-কাপান সংবর্গ অনিবার্থ্য এবং আসর হুইয়া পড়িরাছে।

এদিকে দেশের কনমত দিনের পর দিন নানকিঙ সরকারের নীতির প্রতিকৃল সমালোচনায় মুধর হইয়া উঠিতে-ছিল। মহাচীনের ছাত্রসম্প্রদার বরাবরই আভান্তরীণ প্রতিক্রিয়া এবং বৈদেশিক আক্রমণের বিরুদ্ধে ভাতীয় আন্দোলনের পুরোভাগে রহিয়াছে। ১৯৩১ এবং ১৯৩২ সালে ছাত্রগণ মাঞ্রিয়া এবং সাংহাইয়ের ওপর বৈদেশিক আক্রমণের বিরুদ্ধে স্থানীয় প্রতিরোধ-প্রচেষ্টাকে সহায়তা করিবার ভন্ত দেশবাসীর निकृष्ठे चार्यपन कविश्वक्षित धर एममञ्ज कार्याभी प्रगा-বর্জনের আন্দোলন গঠন করিয়া তুলিয়াছিল। তাঁছাদেরই আহ্বানে দেশের বিভিন্ন অংশের প্রতিনিধিগণ নান্কিঙে সমবেত হইয়া সরকারী জাপ-তোষণ নীতির পরিবর্তন দাবি করিলেন। পরারাষ্ট্রসচিব ডাঃ সিং চিং ওয়াঙ একদল প্রতি-নিধির প্রশ্নসমূহের সম্ভোষকনক উত্তর দিতে সক্ষম না হওয়ায় নিজের দপ্তরধানার মধ্যেই প্রহাত হইলেন। ভয় পাইয়া ওরাঙ পদত্যাগ করিলেন। ছাত্র-আন্দোলন দমন করিবার আছ চিয়াঙ কাইশেক চওনীতির আশ্রয় গ্রহণ করিলেন। চীনের ছাত্রগণের পক্ষ হইতে প্রকাশিত একটি বিবৃতিতে দেখা यात्र (य ১৯२१ व्हेटल ১৯৩৫ সালের মধ্যে নাম্কিও ভাতীর সরকারের আদেশে ৩০০,০০০ তরুণকে গ্রেপ্তার এবং হত্যা করা হইরাছে। ১৯৩৯ সালের ডিসেশ্বর মাসে ছাত্রগণ विकास धार्मन कविया शांवि कविदान व सामात्व विकास ৰুছ ৰোষণা ক্ষিতে হইবে এবং অবিলয়ে লালচীনের বিক্লছে যুদ্ধ বন্ধ করিয়া দেশের সমগ্র সামরিক শক্তিকে সমস্ত দেশের শক্ত ভাপানের বিরুদ্ধে নিরোজিত করিতে হইবে।

১৯৩৬ এবং ১৯৩৭ সালের প্রারম্ভে দেশে ঐক্য ছাপন করিয়া জাতীর শত্রুকে প্রতিরোধ করিবার মনোড়াব সমগ্র সমাজদেহে পরিবাধি ইইরা পড়িরাছিল। সমাজের সর্ব্ধ জর ইইতেই এই দাবি উবাপিত হইল। জাপ-মালিকগণের কাপড়ের কলসবৃহের সহস্র সহস্র চীনা প্রমিক ধর্মঘট করিয়া কাজ বন্ধ করিল। ইহাদিগের সাহাব্যের জন্ম বিশিষ্ট এবং সমাভ

উদারনৈতিক ব্যক্তিগণের একটি কমিট গঠিত হইল। অবিলয়ে সাঙ্হাইরে এই কমিটর সাত জন গণ্যমান্ত সদন্তকে প্রেপ্তার ক্রিরা 'চীন সাধারণভন্তের নিরাপন্তা বিপত্ন করিবার অপরাধে' অভিযুক্ত করা হটল। এদিকে ভাশনাল জালভেশন এাসো-শিহেসনও ছাত্র এবং উপরোক্ত ধর্মঘটীদিগের দাবির অভরূপ দাবি উপস্থিত করিল। ক্যুওমিণ্টাঙ বাহিনীও সরকারী নীতিতে ক্রমশ: কুর হইয়া পড়িতেছিল, সৈরগণ বুব ভাল ক্রিয়াই জানিত যে জাতির অভিত, স্বার্থ এবং মর্যাদা রক্ষা করাই रिमहर्गाहिनीत अवान जवर जक्यां कर्डवा. यटल क्यानिक्षेत्रत्व সহিত সংঘর্ষের সময় কুপ্রমিণ্টাঙ সৈভদল সাঞ্জে মুদ্ করিত না। কখনও তাহারা দলে দলে ক্যুনিষ্টগণের সহিত যোগদান করিত। কিন্ত জাপানীদের বিক্রমে যুদ্ধে ইছারা প্রাণপণে ব্যালাভের চেষ্টা করিত। ১৯৩৩ সাল হইতে আরম্ভ করিয়া কেনারেল কেও ইউ সিয়াঙ, কেনারেল ক্যাঙ क्ति है अवर स्वनादान कि कह काटड़त स्वएट्ड कोशांत स्वरमत्न অবস্থিত দৈল্পবাহিনী নানকিও হইতে আদেশের অপেক্ষায় না पाकिया कार्पात्नय विकास यूप्य शिष्ठ थिल। এই ज्यादार **ক্ষেনারেল চি ক্যুত্তমিণ্টা**ভ সৈঞ্জের হাতে প্রাণ হারাইলেন। **क्वादिल का**डि श्रीनफ्टइ (क्लाजान क्दिट्ज वांश इंडेट्लन। ১৯৩৪-৩৫ সালে क्यानिष्ठेगरनंद 'लर भारक'त अभव छारादा চীনের কাতীয়তার নবমন্ত্র—'চীনের অধিবাদিগণের পরম্পরের সহিত যুদ্ধ করা অবিধেয়', 'জাপানকে প্রতিরোধ কর'---প্রচার করিয়া গিয়াছিলেন। এই প্রচার একেবারে নিরর্থক एस नारे।

আধুনিক চীনের ইতিহাসে ১৯৩৬ সাল একটি শ্বরণীয় বংসর। পিতার অপদাত-মৃত্যুর পর চ্যাঙ্গে লিনের পুত্র চ্যাঙ স্বরে লিয়াত মাঞ্রিয়ার কর্তৃত্বলাভ করিয়াছিলেন। আমর। পূর্বেই ইহার উল্লেখ করিয়াছি। নান্কিভের আফুগত্য খীকার করিবার পর তাঁহাকে চীন সাধারণতত্ত্বের উত্তর-পূর্ব্ব সীমান্ত প্রদেশের সৈভাধ্যক নিযুক্ত করা হইয়াছিল। চাাঙের সৈষ্টগণের অধিকাংশই মাঞ্রিয়াবাসীছিল। জাপান কর্ত্তক ১৯৩১ সালে মাঞ্রিয়া গ্রাসের পর হইতে তাহারা স্বদেশের মুক্তিসাধনের ৰঙ উংকৃক হইয়া উঠিয়াছিল। কিছ নানকি ৪-সরকার তাহাদিগকে ভাপানের বিরুদ্ধে নিয়োভিত না করিয়া ক্যানিষ্ট দমনে নিয়োজিত ক্রিয়াছিলেন। ইহার কলে চ্যাঙের অধীনত্ব সৈত্তবাহিনীর মধ্যে তীত্র অসভোষের স্থার হয়। এদিকে ক্যুনিষ্টগণের সংস্পর্ণে আসিয়া চ্যাঙের সৈভদল জ্মশঃ সাম্যবাদী ভাবধারার সহিত পরিচিত হইতে লাগিল। তাহাদের মধ্যে অনেকেই ইহার অন্ত্রনিহিত শক্তি এবং সভ্যের প্রতি আফুট হইরা পড়িল। ক্য়ানিট এবং চাাঙের বাহিনীর মধ্যে ভাবের আদানপ্রদান হইতে থাকে। চ্যাঙের সৈত্তগণ দেখিল যে সাম্যবাদিগণ রক্তপিপাস হিংল্র দহ্য মাত্র নহে। তাহাদের দৃষ্টভদীতে বৃদ্ধিনভার সুস্পই ছাপ রহিরাছে এবং ব্যক্তিগত লাভ-ক্ষতি বা দলীর রার্থ **অলে**ভা চীনের স্বার্থকেই তাহারা বভ মনে করে।

अमिरक ১৯৩०-७১ नाम स्टेर्फ क्युमिडेनन नुवाजन मीकि

পরিত্যাগ করিয়া অভিনব নীতি এবং কৌশলের সাহায্যে তাঁহাদের আদর্শকে ক্রপদান করিবার চেষ্টা করিতেছিলেন। ১৯৩০ সালের পূর্বে চীনের ক্য়ানিষ্ট্রণ মনে করিতেন যে গণতান্ত্ৰিক বিপ্লবের পর্যায় হুইতে ধুব ভাড়াভাড়ি সমাৰ-তান্ত্রিক বিপ্লবের পর্যায়ে উত্তীর্ণ ছত্তরা যায় এবং চীনে ইতিমধ্যেই সেই অবস্থান্তর আরম্ভ হুইয়া গিয়াছে। শিল্পের ক্ষেত্রে ইংদিগের সমাজতান্ত্রিক নীতি প্রয়োগ করিবার চেপ্তার ফলে শহরের ছোট ছোট ব্যবসায়ীরা পর্যান্ত বিরোধী হইয়া উঠিয়াছিল। এই ১৯৩০-৩১ সাল পর্যন্ত ক্যানিষ্টগণ কুত্রমিন্টাও দল এবং বিশুলালী সম্প্রদায়ের প্রতি অতান্ত বিদ্বেষভাবাপত্র ছিলেন এবং স্থােগ পাইলেই এই ছুই প্রতিপক্ষকে পর্যাদন্ত করিবার চেষ্টা করিতেন। কিছ ১৯৩১ সালে জাপান কর্ত্তক মাঞ্রিয়া অধিকৃত হুইবার পর ইহাদিগের ক্যুত্মিন্টাঙ বিধেষ জাপান বিধেষে পরিণত হইয়াছিল। ক্ম্যানিষ্ট্রণ এই সময় জাপানকে প্রতিরোধ করিবার জ্ঞ পর্বশ্রেণীর লোককে কাড্মিণ্টাঙ সরকারের পতাকাতলে সমবেত হইতে আহ্বান করিলেন।

১৯৩৬ সালের শেষের দিকে চীনের জনমতের জাপান-বিছেমী হইয়া উঠিবার কথা পূর্ব্বেই উল্লেখ করা হইয়াছে। গোডায় ঘাহারা সাম্যবাদ বিরোধী ছিলেন, তাঁহারাও এতদিনে বৃবিতে পারিয়াছিলেন জাপানই চীনের প্রকৃত শক্র। ক্যানিপ্রগণ তখন দেশের কেক্সস্থল হইতে প্র্নুর সীমান্তে সরিয়া যাওয়ার কলে এক হিসাবে পূর্বাপেক্ষা ত্বন হইয়া পড়িয়া-ছেন। তাঁহাদিগের পক্ষে সম্য দেশের রাষ্ট্রক্ষমতা হত্তগত করা তখন আর কোন ক্রমেই সম্ভব ছিল না। পক্ষান্তরে জাপান উত্তর-চীন আক্রমণ করিলে তাঁহাদিগেরই আক্রমণের প্রাথমিক বেগ প্রতিহত করিতে হইত।

চ্যাঙ খন্নে লিয়াঙের বাহিনী সেন্সি এবং কান্স প্রদেশের কয়ানিষ্টাদিগকে চড়ুদ্ধিক হইতে অবরোধ করিয়া রাবিয়াছিল। অবরোধকারী বাহিনী অবরুদ্ধগণের প্রতি অমুকৃল মনোভাধ পোষণ করিজ। স্থানে স্থানে উভয়ের মধ্যে প্রীভির সম্পর্কও স্থাপিত হইয়াছিল। উভয় বাহিনীর উচ্চপদস্থ সৈসভাধ্যক্ষ-গণের মধ্যে একটা অলিখিত আক্রমণ-চ্ক্তি সম্পাদিত হইয়াছিল। কলে সামরিক শৃথলা এবং নিয়মান্থ্বর্ত্তিতা রক্ষা করা একটি শুরুতর সমস্ভা হইয়া দাঁভাইয়াছিল।

এই সংবাদে বিচলিত হুইরা ১৯৩৬ সালের ডিসেম্বর মাসে চিরাঙ কাইশেক উত্তর-চীনের সিরান্ নগরে গেলেন। সিরানে পৌছিবার পরই করেক দিনের ক্ষম্ন তিনি শহরতলীতে চলিরা গেলেন। এখানে আসিবার পরদিন সকালবেলা তিনি অধ্যরনরত আছেন এমন সময় সদর দরক্ষার একটা গোলমাল শুনিতে পাইলেন। কতকগুলি লোক হল্লা করিতে করিতে বাড়ীর ভিতর চুকিরা পড়িল। চিরাঙ ব্বিলেন ইহাদের উদ্বেজ্ঞ কি। অসাধারণ প্রভূপেরমতিত্ব বলে থিড়কির দরক্ষা দিরা পলারন করিরা তিনি নিকটবর্ডী 'র্যাক্ষ হর্ণ হিলে' আরোহণ করেন। শত্রুগণ পশ্চাধানন করিয়া তাঁহাকে বন্দী ক্রিরা সিয়ানে লইরা আসিল। মান্তিঙ হুইতে যে সম্ভ

সেনানী তাঁহার সহগামী হইয়াছিলেন, তাঁহারাও অনেকেই
বন্দী হইলেন। চ্যাঙের আদেশেই চিয়াঙকে বন্দী করা
হইয়াছিল। চ্যাঙ দাধি করিলেন যে, চিয়াঙ কাইশেককে

- (১) ক্য়ানিষ্ট বিরোধিতা পরিত্যাগ করিতে হইবে;
- (২) নান্কিঙ জাতীয় সরকারকে ন্তন করিয়া গঠন করিতে হইবে : এবং
- (৩) স্থাপ আক্রমণ প্রতিরোধের জ্বন্ত উপযুক্ত ব্যবস্থা অবলম্বন করিতে হইবে।

চ্যাঙের দাবি মানিয়া লওয়া দ্রের কথা, চিয়াঙ তাঁছার সহিত দেখা করাও বন্ধ করিয়া দিলেন। স্বামী বিপন্ন হইয়া-ছেন এই সংবাদ পাইয়া মাদাম চিয়াঙ কাইশেক বন্ধুবান্ধর এবং আগ্রীয়সক্তনের নিষেব অগ্রাহ্ম করিয়া নান্কিও ছইতে বিমানযোগে সিয়ানে যাইয়া উপস্থিত হইলেন। ইছার পর যে বিশদ আলাপ-আলোচনা চলে, তাছাতে কয়ানিইগণের পক্ষ হইতে চৌ এন্লাই চিয়াঙের মুক্তি দাবি করিলেন।

চিয়াঙ মুক্তিলাভ করিলেন এবং সঞ্জীক বিমানযোগে নান্কিঙে প্রত্যাবর্ত্তন করিলেন। বলা বাহুলা চিয়াঙের মুক্তির পূর্বের চাাঙ এবং চিয়াঙের মধ্যে একটা আপোষ ইইয়াছিল। চ্যাঙের পক্ষ ইইতে একট বির্ভি প্রকাশিত ইইল। এই বির্ভিতে ছাত্র-সম্প্রদায়ের শ্রমিকগণের এবং 'ভাশনাল ভালভেশন এসোসিয়েশনের' দাবি সম্প্রিত ইইল। এই দাবি-শুলি নিয়ে দেওয়া ইইল—

- (১) জাপানের বিরুদ্ধে যুদ্ধ খোষণা করিতে হইবে;
- (২) গৃহযুদ্ধের অবসান ঘটাইতে হইবে:
- (৩) জাপ-বিরোধী রাজনৈতিক বন্দীদিগের মুক্তি দিতে ছইবে; এবং
- (৪) চীনের অধিবাসীদিগের পৌর স্বাধীনতা স্বীকার করিতে হইবে।

চিয়াঙ কাইলেককে এই দাবিগুলি মানিয়া লইতে হইল।
এই সময় চিয়াঙের সহিত ক্যানিপ্টগণের এই মর্ম্মে এক চ্প্তি
হয় যে, কয়ানিপ্টগণ জাপ-বাহিনীর পশ্চাদভাগে সংগ্রাম
চালাইবে এবং কৃষকগণের প্রতিরোধ-শক্তিকে সংগ্রামশীল
ক্ষু ক্ষু দলে সংগঠিত করিবে। জাপ য়ৢয়কালে দেখা
গেল যে জাপানীরা যতই চীনের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিতে
লাগিল, কয়ানিপ্টগণ ততই বেশী করিয়া ছড়াইয়া পভিয়া
বৈদেশিক আঞ্চমণকারীয় বিরুদ্ধে জনগণের প্রতিরোধ-শক্তিকে
সংগঠিত করিয়া ভূলিতে লাগিল। মহাচীনের একটি বিত্তীর্ণ
অঞ্চল আজ্ব কয়ানিপ্টগণের অবীনে থাকিবার ইহাই য়ুল কারণ।

চিরাঙ-ক্যানিষ্ট চুক্তির পর ক্যানিষ্টগণ ভ্রামী এবং বিভবান্
সম্প্রদায়ের ভূমি ও বিভ বাজেয়াপ্ত করিবার নীতি পরিত্যাগ
করিলেন। সামরিকভাবে হইলেও সমগ্র চীন এত দিনে
ঐক্যবহ হইল। জাপানের দীর্ঘলাল খোষিত অনারাসে চীন
জরের আশার বৃলে কুঠারাঘাত করা হইল। এই একতা
যাহাতে চীনের শক্তিবর্জনে নিয়োজিত হইতে না পারে সেই
জন্ত সিয়ানের ঘটনার করেক মাসের মধ্যে জাপান চীনের
বিক্লহে পূর্ণোভ্যে বৃদ্ধ আরম্ভ করিয়া দিল (জুলাই ১৯৩৭)।

মহিলা-সংবাদ



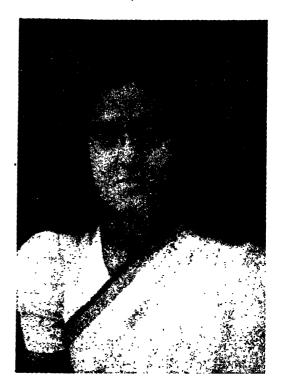
এইকা শাভা দেবী



এইকো সীতা দেবী

এবার কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে প্রবিত্যশা গল্প ও উপভাস লেখিকা শ্রীষ্ক্রা শান্তা দেবী এবং শ্রীষ্ক্রা সীতা দেবী যথা ক্রমে ভ্বনমোহিনী দাসী বর্ণপদক (১৯৪৭) এবং লীলা-প্রাইন্ধ (১৯৪৮) লাভ করিরাছেন। ই হারা উভয়েই প্রবাসী ও মভার্গ রিভিন্নর প্রতিষ্ঠাতা-সম্পাদক পরলোকগত রামানক্ষ চটোপাধ্যায়ের কলা।

প্রসিদ্ধ সাংবাদিক শ্রীযুক্ত মাধনলাল সেনের কলা কুমারী বাসনা সেন এবার কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে সংস্কৃত বিভাগে বেদান্তে প্রথম শ্রেমীর প্রথম স্থান অবিকার করিয়া এম-এ পরীকার উতীর্থ হইরাছেন।



ভূষায়ী হাসৰা দেব

'গোরা'র ভাবের আধুনিকতা

গ্রীগোপাললাল দে, এম-এ

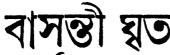
বর্জমান কালে জামাদের দেশে যে সকল প্রধান প্রধান ভাব জাতিশর প্রকট হইর। প্রতিনিয়ত জামাদের প্রকা ও বিময়ের ইন্তেক করিতেছে, তাহাদের মধ্যে 'ব্যক্তিরাতন্ত্রা', 'সর্ক-প্রকারের বন্ধন হটতে মুক্তি', 'বলাতি প্রেম', 'বাদেশিকতা', 'জহিংসা', 'সত্যাগ্রহ' প্রভৃতি সর্ক্রপ্রথমে উল্লেখযোগা। রবীক্সনাথের 'গোরা' উপপ্রাস্টিতে এই জাধুনিক ভাববারাসমূহের কি পরিচর পাওয়। যায় দেখা যাক। 'গোরা' রবীক্ষনাথের বৃহত্তম উপপ্রাস। ইহা ১৩১৪ সালের ভাজ মাস হটতে ১৩১৬ সালের চৈত্র পর্যন্তি 'প্রবাসী' পত্রিকাতে বারাবাহিক ভাবে প্রকাশিত হইয়াছিল। স্বতরাং এই গ্রেছে নিব্রম ভাবগুলি চল্লিশ বংসরেরও অধিক কালের প্রাতন।

গোৱা ও বিনয় ছই বন্ধ। কালেকে পাস করা যথন
একটাও আর বাকী রহিল না তথন তাহারা এক 'হিল্ফ্হিতৈষী সভা' করিয়া বসিল। আমরা পরে দেখিতে পাইব,
এই 'হিল্ফ' শব্দ কোনও সংকীর্ণ সাজ্ঞদায়িক অর্থে বাবজত
হয় নাই। সভার যে সভাপতি ভাহার নাম গৌরমোহন;
তাহাকে আত্মীরবন্ধরা গোরা বলিয়া ভাকে। বিনয় সে সভার
সেকেটারি। গোরা অভ্যাপ্ত উৎকট বদেশীভাবাপর। ভাহার
বদেশপ্রেম আপাতদৃষ্টিতে দেখায় জনেকটা গোঁভামির মত।
কিছ আনের অভাবে, বৃদ্ধির অল্লভায়, চিন্তার দীনভার সপ্রাত
যে গোঁভামি, সে গোঁয়ামি গোরার নয়। উচ্চতম পাশ্চাত্য
শিক্ষার যে বিপ্ল প্রভাব শিক্ষিত ব্যক্তিকে বদেশপ্রেম
অন্প্রাণিত ও বাজাভ্যাভিমানে গর্মিত করিয়া ভোলে গোরার
সেই বরণের দেশপ্রেম। 'বরাজ ব্যতীত জীবন ছঃসহ'; বাহারা
এই কথা বলিয়া উচ্চপদ, রাজসম্পদ এমন কি জীবন পর্যান্ত
বিসর্জন দিয়াছেন, গোৱা ভাহাদের সগোত্র।

হিন্দু জাতির বছবিধ ছুর্ভাগ্যের মধ্যে একটি এই যে এতাবংকাল বাঁহারা হিন্দু জাতির কোনও সংস্কার করিতে প্রন্থত হইয়াহেন, তাঁহাদের কেহ কেহ পূর্বাছেই আপনাকে হিন্দুসমাজ হইতে পৃথক বলিয়া ধরিয়া লইয়া কাজ আরম্ভ করিয়াহেন। হিন্দুসমাজও তংক্ষণাং তাঁহাদিগকে বীয় গঙীর বহিন্দু করিয়া দিয়া তাঁহাদের বিজ্ঞাতীয় প্রভাব হইতে নিজ দেহকে যুক্ত রাখিতে চাহিয়াছে। কলে তাঁহারা হিন্দুসমাজের

আশাহুরূপ উপকার ক্রিতে পারেন নাই, আবার অপর দিকে প্রচুর শক্তি সত্ত্বেও নিৰেদের বৈশিষ্ট্য হারাইয়া যেন কতকটা মান হইয়া গিয়াছেন। ত্রাক্ষসমাক্ষের প্রথম অবস্থা সম্বন্ধে এই কথা ধাটে। এ বিষয়ে গোরার জবানীতে রবীক্রনাথ যাহা বলিয়াছেন তাহা গভীর অর্থপূর্ণ। নব যৌবনের ভোয়ারের মুখে পোরা ত্রাহ্মদমাক সম্বন্ধে বলিতেছে, 'ত্রাহ্ম হয়ে বাহাছুরী করবার সধ যাদের আছে অব্রাহ্মরা তাদের সব कारकरे जुल बूर्स निरम कतरत, এरेट्रेक् जारमन मझ कतराजरे হবে। ইচ্ছামত সমাৰু ভেঙে বেরিয়ে যাওয়ার যতগুলো শান্তি আছে এও তার মধ্যে একটা।' গোষযুক্ত কানিয়াও म्हिन्द बाठांदविठांद महत्व शादा वह महर्क , स वहन, 'কোন ছুতোর হুচ্যঞা ভূমি ছাড়তে আরম্ভ করলে শেষ কালে कि इहे बाकी बाक्टर ना।' উপश्चित कर्षता अश्वत्य शोबा नरण, 'এवन खोमोरान अक्योज कांच अहे स्य घा-किছ यरार्वन, তারই প্রতি সকোচ্ছীন সংশয়খীন সম্পূর্ণ প্রকাপ করে मिल्य खिवां भीत्मत यान सिंह खबात मकात करत मिलता। (मर्मन मचर्ड मका करन करन जामन निरमन मनरक भागएकत विरव हर्कन करत स्कलिक । भागात वसकर्छ একখাও ধ্বনিত হইয়া ওঠে, 'আমার আপন দেশকে বিদেশীর আদালতে আসামীর মত বাড়া করিয়া বিদেশীর আইন মতে বিচার করিতে আমি দিবই না। বিলাতের আদর্শের সঙ্গে খুঁটিয়া খুঁটিয়া মিল করিয়া আমরা লব্দাও পাইব না, গৌরবও বোৰ করিব না। ... দেশের যাহা কিছু ভাষার সমস্তই সবলে ও সগর্কে মাধায় করিয়া লইয়া দেশকে ও নিকেকে অপমান হইতে রক্ষা করিব।' 'আমরা ভাল কি মৃশ্, সভ্য কি অসভ্য তাহা লইয়া কবাবদিহি কারও কাছে করিতে চাই না—কেবল আমরা ষোল আনা অস্ভব করিতে চাই যে আমরা আমরাই।' গোরার স্বন্ধাতিপ্রেম কোন্ ধরণের এই কথাগুলি তাহার পরিচায়ক।

এই ভাবের প্রণোদনেই তথনকার সেই নিরাকার উপাসনার জয়যাত্রার দিনেও গোরা সাকার উপাসনা সম্বদ্ধে আলোচনা প্রদক্ষে বরদাস্পরীকে বলিতেছে, 'আকার কিনিষ্টাকে বিনা কারণে অশ্রদ্ধা করব আযার যনে এয়নু



বিশুদ্ধ প্রথমাণ

পোঃ বন্ধ ৬৮৩৬ কলি

বি, স্থারমার্চেট্স, একস্পোটারস্, ইম্পোটারস্ ও কেনারেল অভার সাপ্রাধারস্

প্রমথনাথ পাল এও সন্স্ ২িন, রামকুমার বিদ্য দেব, বলিবাছা—৭ কুসংকার নেই। --- আকারের রহন্ত কে ভেদ করতে পেরেছে ?'
'অন্ত না থাকলে যে প্রকাশই হয় না। অনন্ত আপনাকে প্রকাশ
করবার ক্ষন্তই অন্তকে আশ্রয় করেছেন—নইলে তাঁর প্রকাশ
কোধায় ? যার প্রকাশ নেই, তার সম্পূর্ণতা নেই। বাক্যের
মধ্যে যেমন ভাব তেমনি আকারের মধ্যে নিরাকার পরিপূর্ণ।'
'নিরাকারই যদি যথার্থ পরিপূর্ণতা হ'ত তবে আকার কোধাও
ভান পেত না।'

পোর। বলিতে চায়, -নিরাকার ও সাকার একই মুদ্রার যেন ছইট দিক।

সাকার-নিরাকারবাদ সম্পর্কিত এই সকল তর্কাতর্কির উর্দ্ধে উদার রবীক্রনাথকে বোঝা যায় পরেশ বাবুর বন্ধ কথার, 'মতামত কিছুই নয়, অন্তঃকরণের মধ্যে পূর্ণতা, ভবতা ও আত্মপ্রসাদ ইছাই সকলের চেয়ে হুর্ল্ড। প্রান্তির মধ্যে যেটা সতা সেইটাই আসল।'

ভারতের এই অভি-প্রাচীন ভাব্যাপ্থিক আদর্শটি পাশ্চান্ত্য প্রভাবিত ভারতবাসী যেন ভুলিয়াই গিয়াছিল, আধুনিক কালে ভাবার যেন তাহা ভারতীয় মনে খান লাভ করিতেছে। চল্লিশ বংসর পূর্বের রবীক্ষনাধ দৃঢ়তার সহিত এই ভাবটি প্রচার করিয়া গিয়াছেন।

একদা আলোচনা কালে স্ক্রচিতার প্রাণে গোরার নিম্ন-লিখিত কথাগুলি গভীর সাড়া জাগাইরাছিল, 'আপনারা যাদের কুসংকার বলেন আমার সংকার তাই। যতক্রণ না আগনি
দেশকে ভালবাসবেন এবং দেশের লোকের সলে এক আয়গার
এসে দাঁড়াতে পারবেন ততক্রণ পর্যান্ত আপনার মুব থেকে
দেশের নিক্ষা আমি এক বর্ণও সহু করতে পারব না।' হারাণ
বাবুকে উদ্দেশ্ত করিয়া এই কথাগুলি উচ্চারিত হইয়াছিল।
হারাণ বাবু সংশোধনের কথা বলিলে গোরা গর্জিয়া উঠয়া
কহিল, 'সংশোধন। সংশোধন ঢের পরের কথা। সংশোধনের
চেয়েও বড় কথা ভালবাসা, শ্রদ্ধা। আগে আমরা এক হব,
ভা হলেই সংশোধন ভিতর থেকে আপনিই হবে। অই
আমার সকলের চেয়ে বড় আকাজ্রা।'
ভারতের শ্রের্ঠ মহাপুরুষদের যিনি একজন, তিনি এক দিন
গোরার মুবে নিজের আকাজ্রা। এমনি ভাবে প্রকাশ

অশিক্ষিত বলেন, আমি তাদেরই দলে—আপনারা যাকে

ভারতের শ্রেষ্ঠ মহাপুরুষদের যিনি একজন, তিনি এক দিন গোরার মূপে নিজের আকাজ্জা এমনি ভাবে প্রকাশ করিয়াছিলেন। গাঞ্জীর হরিজন-আন্দোলনের বীন্ধও যেন এইবানেই নিহিত আছে।

বিনয় বলিয়াছে, 'আমার বন্ধু গোরা ভারতবর্বের সেই আজুবোধের প্রকাশরূপে আবিভূতি হয়েছে।'

ক্ৰির সেই ভাবরূপের মূর্ত্ত বিকাশ কি গানীকী? না জ্বাছরলাল ? না সুভাষ্চশ্রং প্রধ্বা এরা সকলেই?

বিনয়, ললিতা, স্ক্চরিতা এবং পরেশবাবু এঁরা তিনজনেই বাজিফাতন্তার মৃথ্য বিগ্রহ। বাজিফাতন্তোর জ্ঞাই বিনয় পরম বন্ধু গোরাকে পরিত্যাগ করিতে উন্মত আর ললিতা এবং পরেশ গৃহ ও সমাজ ছাড়িতে বদ্ধপরিকর।

সমাজ-জীবনে নারীকে উপযুক্ত মর্যাদা না দেওয়ার ক্কল
সহকে বিনয় বলিতেছে, 'আমাদের বদেশপ্রেমের মধ্যে একটা
গুরুতর অসম্পূর্ণতা আছে। আমরা ভারতবর্ষকে আবখানা
করে দেখি।' 'আমরা ভারতবর্ষকে কেবল পুরুষের দেশ বলেই
দেখি, মেরেদের একেবারেই দেখি না।' 'মেরেমা প্রচহয়
থাকাতে আমাদের বদেশ আমাদের কাছে আর্দ্ধ সত্য হরে
আছে—আমাদের হাদরে পূর্ণ প্রেম ও পূর্ণ শক্তি দিতে পারছে
না।' কবি-ক্ষিত সেই অভাব আৰু পূরণ হুইতে চলিয়াছে।
ইদানীং জাতীয় সয়কার প্রদেশের শাসনকর্তা, রাইদ্ত,
গণপরিষদের সভ্য প্রভৃতি গুরুষপূর্ণ পদে মহিলাদের নিযুক্ত
করিষাছেন।

গোরা দেশ এমণে বাছির হইরাছে। 'সমভ বছন ছেদন ফ্রিরা তেখালা রাভার বাছির হইরা পড়িবার একটা প্রবল আনক তাহাকে পাইরা বসিল।'

চরবোষপুরে নীলকুঠির সাংহ্বেরা নিরীছ প্রামবাসী চাষী-দের উপরে অত্যাচার করিতেছে, তাহারা অধিকাংশই মুসলমান। তাহার প্রতীকারার ম্যাজিট্রেটের নিকট নিকল আবেরন করিয়া অবশেবে গোরা বলিল, 'আমি প্রামের



লোকদের নিজের চেষ্টার প্লিসের বিরুদ্ধে দীড়াবার জন্তে উৎসাহিত করব।'

চন্দারণে ও বারদৌলি তালুকে এই ক্বব্দ-সত্যাধ্রহের বিক্লিত রূপ আমরা দেখিরাছি।

উপরোক্ত চরবোরপুরের ঘটনার পরে আমরা গোরাকে হাজতে দেখিতে পাই। করেজজন হাত্রের সহিত সে প্রেপ্তার হইরাছে, পর দিন মাজিপ্রেটের নিকটে প্রথম একলাসেই তাহার বিচার হইবে। জামিনে খালাসের প্রভাবে গোরা বলিল, 'না, আমি উকীলও রাখব না, আমাকে জামিনে খালাসেরও চেষ্টা করতে হবে না।' 'দৈবাং আমার টাকা আছে আর বরু আছে বলেই হাজত আর হাতকড়ি থেকে আমি খালাস পাব সে আমি চাই না।' 'বিচারে যদি উকীলের সাহাযোর প্রয়েজন থাকে ত গবর্ণমেন্টের বিরুদ্ধ পক্ষ কেন নিজের উকীল নিজে জাটিতে বাধ্য হবে ? এ কি প্রজার সঙ্গেল শক্রতা ? এ কি রক্ষের রাজ্বর্দ্ম ?' 'কোন চেষ্টা না করে যে গতি হতে পারে আমার সেই গতিই হোক্। এ রাজের সম্পূর্ণ নিরুপান্তের যে গতি আমারও সেই গতি।'

স্তরাং দেখা যার বিচারে **আয়পক্ষ সমর্থন না করার** নীতির কথা গোরার প্রমুখাৎ রবীজনাথ ব**হু পূর্বেই আমাদের** ভনাইয়াছেন।

বাহির হইতে খাছাদি দিতে চাহিলে গোরা বলিল, 'বাইরে থেকে আমি কিছুই চাই না। হাৰতে সকলের ভাগো যা ভোটে আমি তার চেয়ে কিছু বেশী চাই নে।'

কেল হইতে গোরা মাকে পত্র লিখিরাছে, 'কারাবাদে তোমার গোরার লেশমাত্র ক্ষতি করিতে পারিবে না।' 'আরও অনেক মারের ছেলে বিনা দোষে কেল বাটিয়া থাকে, একবার তাহাদের কঠের সমান ক্ষেত্রে গাঁড়াইবার ইচ্ছা হইয়াছে।' 'আমি ইচ্ছা করিয়াই কেলে যাইতেছি। আমার মনে কোন কঠ নাই, কাহারও উপরে রাগ নাই। কেলে আমি আতিথ্য লইতে চলিলাম। ইচ্ছা করিয়া যাহা গ্রহণ করি সে কঠ ত কঠই নয়। কেলের আশ্রম্ম আৰু আমি ইচ্ছা করিয়াই গ্রহণ করিব।'

আরও লিধিয়াছে, 'আরাম ও সন্মানকে বিকার দিরা, মান্ত্রের কলকের দাগ বুকে চিহ্নিত করিয়া বাহির হইব, মা তুমি আমাকে আশীর্কাদ করে।।'

স্বেচ্ছার কারাবরণ করার যে কত আনন্দ গোরার চিঠিতে রবীক্রনার্থ তাহাই ব্যক্ত করিয়াছেন।

একথা গোরাও লিখিরাছিল, 'তোমার ছঃখই আমার দও, আমাকে আর কোন দও মালিষ্টেটের দিবার সাধ্য নাই।' ভাঁহার বিরুদ্ধে গোরার ক্রোধ বা বিষেষ ছিল না। ইহাই তো পরিপূর্ণ অহিংস নীতি।

গোরা উপভাসকে সভ্যাত্রহ নীভির ভার্যবন্ধপ বলা চলে।
এই প্রস্থের সকল পাত্র-পাত্রীই নিম্ম নিম্ম বারণা অনুযায়ী

সভ্যাগ্রহের পথে চলিরাছেন। ললিতা, স্চরিতা, বিনর সভ্যাগ্রহেন, বরদাস্থলী নিজ জানবৃদ্ধিতে সভ্যপথে চলিতে চেষ্টিত আছেন, ছরিযোহিনী নিজ শিক্ষাসংকার অনুযারী সভ্যকে আশ্রম করিরা অকুলে ভাসিরাছেন, কুকদরাল নিজ সাধনাশ্রমে ক্ষকক্ষে নানা যাগযোগের সাহায়েয় সভ্যলাভের নব নব পরীক্ষণে রভ আছেন, অবিনাশকে বৃচ বলা যার কিছ সভ্যাক্ষরণ বিষয়ে ভাহাকে কপট বলা চলে না; জার গোরার অন্তরে সভ্য আপনার পরিপূর্ণ বিকাশের পূর্বযুত্তে প্রলম্ম মন্থন আরম্ভ করিয়াছে। ভাই বিনয় লক্ষ্য করে, 'সভ্যের বাহকদের বাক্যে মনে ও কর্ম্মে যে একট সহজ ও সরল শান্তি থাকা উচিত ভাহা গোরার নাই।' কিছ ভাহার পূর্ণ আবিভাবের আর বিলম্বও নাই; অচিরেই সে যখন আগ্রায় পভিল ভখনই পরিপূর্ণভার অভল প্রশান্তির মধ্যে আখ্যায়িকারও ধ্বনিকা পভিল।

প্রাণর সত্যে জবিচলিত শ্রদ্ধা দেখা যায় আনন্দময়ী এবং পরেশবাবু এই ছুইটি চরিত্রে। গোরাকে থেদিন হুইতে আনন্দময়ী কোলে তুলিয়া লুইয়াছেন সেই দিন হুইতেই তিনি সকল সংখ্যারের উর্দ্ধে উঠিয়া একমাত্র সত্যকেই আশ্রুয় করিয়া আছেন; সে সত্য দেশকাল এবং বিশেষ সমাজবন্ধনের গঞ্জীর দ্বারা অবচ্ছিন্ন নয়। পুত্র ও পুত্রবষ্ তাঁহাকে দূরে সরাইয়া রাখে। স্বামী তাঁহাকে স্পর্শ করেন না, এমন কি গোরাও তাঁহার ছোঁয়া খাইতে বিবা বোব করে। আনন্দময়ী হাসিমুধে সকলই উপেক্ষা করিয়াছেন, ধরিয়া আছেন শুধু সত্যকে, অবচ এমনি গোপনে যে পৃথিবীর কেহু তাহা জানিতে পারেনা; তাঁহার আচারকে অনাচার এবং আচরণকে স্কুতা মনে করিয়া করণা করে।

আর পরেশবাব্ ? তিনি বলেন, 'আমি ইবরের কাছে সর্বাদাই এই প্রার্থনা করি যে ত্রান্ধের সভাতেই হোক আর হিন্দুর চতীমতপেই হোক আমি যেন সত্যকে সর্বাত্তই নত শিরে আতি সহকেই বিনা বিদ্রোহে প্রণাম করতে পারি—বাইরের কোন বাবা আমাকে যেন আটক করে না রাবতে পারে।'

পণ্ডিভ খরমানাথ চক্রবর্তী স্কলিভ প্রিক্রিভিটি ১০ বিসন্ধ্যা ১০

ভক্তি থ প্রীষ্টমেশ চক্রবর্তী প্রণীত ও প্রকাশিত শ্রীশ্রীমনসাপুরা ও কথা— ১/০ কলির দ্ধীচি শ্রীশ্রীমনসাপুরা ও কথা— ১/০ মহাদ্মা গাঁধী শ্রীশ্রীসভ্যনারায়ণপুরা ও কথা—১/০ এক টাকা শ্রীশ্রীশ্রিপ্রা ও কথা—১/০

প্রাপ্তিশ্বন-- বিশ্বন লাইবেরী, মহেশ লাইবেরী প্রভৃতি এবং প্রকাশকের নিকট-- ১২০1২, আপার সারকুলার রোভ, কলিকাতা। 'পরেশবাবু' চরিত্রটির প্রতি বিদশ্ধ সমালোচকগণও স্থবিচার করেন নাই। ভক্তর স্বোবক্ষার সেনগুপ্ত বলিরাছেন— ' পরেশবাবু আদর্শ কাঠের পুতৃল; ছর্মল চিন্ত পরেশবাবুর বক্তৃতা ভারগা ভ্ডিয়াছে, প্রেশবাবু ব্রেন নাই সত্য কোন চরম ছাবর বন্ত নর, তা একাভ ভাবে গতিশীল।

কিছ উপরে উদ্ধৃত পরেশবাবুর নিজের উক্তি তো এই মত সমর্থন করে না।

কিছ মনে রাধা উচিত, আমরা পরেশবাবুকে দেবিতেছি তাঁছার জীবনসারাতে, সমন্ত জীবন ব্যাপিরা অসংধ্য ভাঙ্গা-চোরার পথে তিনি বর্তমান অবস্থার উপনীত হইরাছেন। আর অস্বাভাবিক যদি হরও, তবু তাঁছার চরিত্র অসম্ভব নর, তাঁহার চরিত্রে মহর্ষি দেবেজনাথ ঠাকুরের চরিত্রের কিছু হারাপাতও হইরাছে বলিরা মনে হয়। মহান্ত্রা গাঙ্কীর মতই পরেশবাবু আছত সত্যাগ্রহী। তকাং ভব্—পরেশবাবু অনেকটা নিজ্জির ও এটা যাত্র।

সর্বাশেষে আসে গোরার সেই ছলন্ত দেশপ্রেমের কথা।
গোরা বলিরাছে, 'বদেশপ্রেম যেদিন আমার সন্মুধে
এমনি সর্বাদীণ ভাবে প্রভাজনোচর হবে সেদিন আমারও
আর রক্ষা নাই—সেদিন সে আমার সমন্তই আকর্ষণ করে
নিতে পারবে; বদেশের সেই সভ্য বৃত্তি যে কি আকর্ষা
অপরাপ, কি অনিন্চিত অগোচর, ভার আনন্দ ভার বেদনা যে
কি প্রচণ্ড প্রবল, যা বভার প্রোতের মত মৃত্যুকে এক মৃত্তুর্ভে
লব্দন করে বার ভা আৰু ভোষার কথা শুনে অল্পর্যন্ত পারছি।'

পভিতে পভিতে মনে হয় চল্লিশ বংসর পুর্বের গোরার মুবে রবীক্রনাথ যে কথা বলিয়াছেন তাহারই প্রতিধানি উঠিয়াছিল তিন বংসর পুর্বের ব্রন্ধের জরণ্যপ্রান্তে—নেতাকী স্কাবচন্দ্র বসুর মুখে।

निजाकी ब बनु जबर ?—

বাংলার বিধ্যাত স্থত ব্যবসায়ী প্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "প্রী" মার্কা স্থতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্প্রােজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'প্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে প্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা স্থত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

শাঃ শ্রীস্থভাষচন্দ্র বস্থ

পুশুক - পার্চায়

শারং চালের পাতাবিলী <u>জীব্রেজনাণ বন্দোপাধার কর্তৃক</u> সংকলিত। বুকলাও লিমিটেড, ১নং শহর খোধের লেন, কলিকাতা ৭×৫ ইঞ্চ, ১৯০ পৃষ্ঠা। মূল্য তিন টাকা।

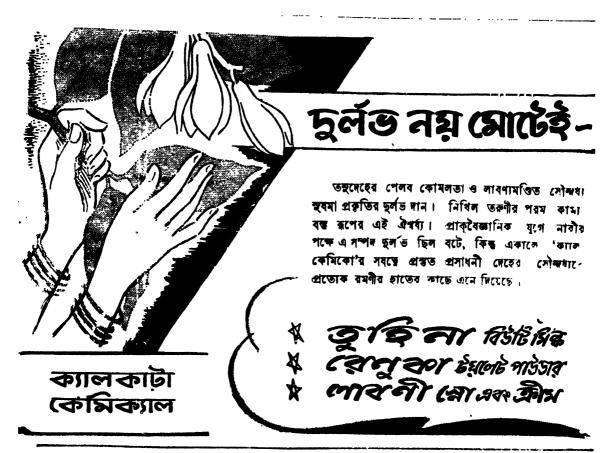
কীতিমানের শ্রেষ্ঠ পরিচয় তাঁর কীতি, আর কিছু না জানলেও আমাদের বিশেষ ক্ষতি হয় না। কিন্তু কীতিই সমগ্র পরিচয় নর, তাঁর আকৃতি প্রকৃতি পছন্দ অপছন্দ প্রভৃতিও লোকে জানতে চায়। বিশেষত বিনি জনপ্রির গ্রেলেথক এবং বিচিত্র চরিতাবলীর শ্রন্থা, তিনি স্বয়ং কি রক্ম সে সম্বন্ধে লোকের কৌঙ্হলের অস্তু থাকে না।

মৃত ব্যক্তির ঘনিদ পরিচয় পাবার শ্রেষ্ঠ উপায় তাঁর চিঠিপতা।
শর্ম চল্লের পতাবলাঁ তার গল্পের মত্ট চিতাকর্মক। এই চিঠিজনির
বেশীর ভাগ তিনি স্বচ্চলে বিষয় জনকে লিখেছিলেন, ভবিয়তে ছাপা
হবে এমন চিন্তা তার মনে ছিল না। সতর্মভাবে লেখা না হলেও এগুলি
তার বিশিপ্ত প্রতিভায় মণ্ডিত। এই সংকলনে আমরা যে ব্যক্তির পরিচর
পাই তিনি সরল, বন্ধবংসন, শ্লেমাকাজনী, একটু অভিমানী, বিনরী ও
পরিহাসপ্রিয়। তিনি খোলাগুলি মতামত প্রকাশ করেন, তীক্ত বিজ্ঞপ
করেন, পরের ছ্লপে কাতর হন, বাড়ির পাহপ্রশীর মৃত্যুও সইতে পারেন না।

প্রার অন্থপে ভোগেন, ছবি আঁকেন, বিশুর বই পড়েন, হার্বার্ট স্পেনসারের দর্শন সম্বন্ধে আলোচনা করতে ইচ্ছা করেন, 'আবগারী বাাটাদের হার মানিরেছিলাম' ব'লে গর্ব করেন, কারও কাছে অপরাধ করেছেন মনে করলে অসংকোচে মার্চ্জনা চান। তিনি জানিরেছেন বে তিনি । । এবি জানিরেছেন বে তিনি । । এবি জানিরেছেন বে তিনি । । এবাঝেন, কারও চেরে কম বোঝেন ব'লে মনে করেন না । শুধু গল্প নর, সকল বিবরেই ভিনি প্রবন্ধ লিখতে পারেন. কেবল পদ্ধ পারেন না । আবার লিখেছেন—'আমার বাঙলা ভাষার উপর দখল নেই বললেই চলে, শুসুসকর পুর কন, কাড়েই আমার লেখা সরল হয় ; আমার পক্ষে শুক্ত করে লেখাই অসম্রন । করেক জন চাড়া উচ্চালিকিডা—মহিলাদের উপর জার শ্রানা নেই। তার ধারণা'—মেরেদের মধ্যে সাড়ে প্রর আনাই ক্রমণা, কেবল সাবান পাউডার আর জানা-কাপড়ের ম্বারা আর নাকী থোনা গলায় কথা করে বত দূর চলে।'

শরং চন্দ্রের অনুরাগী মাত্রেই এই পত্রাবলী উপভোগ করবেন এবং সংকলনের জন্ম শ্রীবৃক্ত ব্রজেক্সবাবৃর কাছে কৃতক্ত থাকবেন।

রাজ্ঞশেধর বস্থ



দাঁ-গোঁসোই ও আরে। গল্প - শ্রীক্রেশচক্র মুখোপাখার সম্পাদিত। ক্যালকাটা বুক ষ্টোরস, ৪া০ সি, ছেরছ দাস লেন, কলিকাতা। পু: ১২১। মূল্য তিন টাকা।

শ্রীনোহিনীমোহন রায়, শ্রীক্রেশচন্দ্র মুখোপাধাায় ও শ্রীক্রেকনাধ গলোপাধায় লিখিত করেকটি গল্প এই সংগ্রহে আছে। বাংলা সাহিত্যে লেখকেরা অপরিচিত নহেন—গল্পগলিও ইতিপুর্বে বিভিন্ন মাসিক পত্রিকায় প্রকাশিত গলমাত্রই দ্বসোত্তীর্ণ এমন কথা বলা কঠিন হইলেও—এই সংগ্রহের গলগুলি ক্থপাঠ্য। শ্রীক্রেক্রনাধ গলোপাধ্যায়ের 'নান্তিক সদানন্দ' গল্লটি বছদিন পূর্বে সাময়িক পত্রিকায় প্রকাশিত হইলেও পাঠকের মন হইতে মৃছিয়া বায় নাই; 'ভত্তি বিলাদ' গল্পটি তে৷ পরিণত বয়সের অনবত্য দান।

গল্প-সংগ্রহথানি রসপিপাস্থ পাঠককে পরিতৃণ্ডি দান করিবে—এ বিখাস জামাদের জাছে।

ক্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

পথ নির্দেশ— এঅনরেক্রনাথ দন্ত। ষ্টাণ্ডার্ড বুক কোম্পানী, ২১৬, কর্ণভয়ালিস খ্লীট, কলিকাতা। পৃষ্ঠা ৮৫, মূল্য ১١٠।

ভারতবর্ধ খাধীনতা পাইয়াছে বটে, কিন্তু এখন পথান্ত উহাকে প্রকৃত খাধীনতা বলা চলে না। দেশের নেতারাও একধা খীকার করিয়া থাকেন। লেখক কংগ্রেসকন্দ্রীরূপে নিজের জীবনে যে ভিক্ত অভিন্ততা অর্জন করিয়াছিন তাহারই আলোকে খদেশের যুবকগণকে নেডাজীর পথে চলিতে অসুরোধ জানাইয়াছেন। ভাঁহার সিদ্ধান্ত এই যে, আজাদ হিন্দ ফোজ গঠন করিয়া সর্বনালীয় একতার ভিত্তিতেই ভারতীয় খ্রাজসাধনার সফলতঃ

আসিতে পারে। লেখক ভারতের অতীত ইতিহাসের শিক্ষার আহাবান্ এবং প্রাচীন কবিগণের প্রধাণত পথে চলার সার্থকতার বিধানী। লেখকের আদর্শ-ভারত প্রাচীনের সঙ্গে নবীনের সামঞ্জল্প বিধান করিবে এবং এরপ এক নৃতন ভারতবর্ধ রচনা করিবে বাহা শক্তি ও শান্তি উভরের প্রতিষ্ঠা ছারা পৃথিবীতে নব বুগ আনরন করিবে। লেখক ভারতের প্রাচীন সভ্যতা ও ঐতিহ্নের ভিন্তিতেই নৃতন ভারত গড়িতে চাহেন। কিন্তু ইহা সংঘণ্ড মহাত্মা গান্ধীর মতবাদ ও আদর্শের সহিত লেখকের মূলগত পার্থক্য রহিয়াছে। এই পার্থক্যের স্বরূপ লেখক ভাহার পূর্বপ্রকাশিত প্রস্থ—"গান্ধীনীর মত ও নেতান্ধীর পণ" নামক পুত্তকে ব্যক্ত করিয়াছেন। আমাদের বিধাস এরূপ পুত্তক পাঠকের চিন্তার বেগারাক যোগাইবে।

শ্রীঅনাথবন্ধ দক্ত

দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর, কালীপ্রসন্ন ঘোষ, নগেন্দ্র-নাথ গুপ্ত — সাহিত্য-সাধক চরিত্যালা ৬৬ : প্রীরজেন্দ্রনাথ বন্দ্যো-পাধায়। বলীয় সাহিত্য পরিধৎ, ২৮৩) আপার সারকুলার রোড় কলিকাতা। মূল্য এক টাকা।

সাহিত্যের দিক্পাল এই ভিন জনের চরিত একই প্রপ্তে নিবন্ধ হইয়াছে। তিন জনের নামই সাহিত্য-জগতে প্রপরিচিত, ভিন জনের রচনার পরিমাণও জ্বল নর, অথচ তিন জনের লেখাই লোকে জুলিতে বসিয়াছে। বিজেক্সনাথ ঠাকুর ও কালীপ্রসন্ন ঘোধ সমসাময়িক। বিজেক্সনাথ ১৮৪০ গ্রিষ্টাব্দে জন্মগ্রহণ করেন। বিজেক্সনাথ একাধারে কবি, দার্শনিক, গণিতবিৎ, প্রাবন্ধিক, জাতীয় এবং ব্রহ্ম-সঙ্গীত রচয়িতা, বাংলায় রেখাখন বর্ণনালার উদ্ভাবক এবং বাংলার এক শ্রেষ্ঠ গগ্রলেখক। কংগ্রেসের জ্বান্তুত চৈত্রখোলা বা ভিন্দুমেলা অনুষ্ঠানের প্রেরণা অনেকটা ভাষাইই।



মানবিক ও প্রমাণবিক বিষ্ণু মুখোপাধ্যায়

সমষ্টিগত বিজ্ঞান প্রচেষ্টার ফলে যে পরমাণু শক্তির আবিষ্কার, সাম্রাঙ্গবাদী শক্তি পৃথিবীব্যাপী সাম্রাজ্ঞা-বিস্তারের লোভে সেই আবিষ্কারের ওপর একচেটিয়া অধিকার কায়েম করে পৃথিবীবিরোধী চক্রাস্তে লিপ্ত। সেই চক্রাপ্তের সংঘর্ষে কে জয়ী হবে—পরমাণু শক্তিকে কেন্দ্র করে তার বিভিন্ন দিকের এই বিশদ আলোচনা ভার স্কুম্পন্ত নির্দেশ দেবে। দাম ২॥০

অবরোধ বিজন ভট্টাচার্য

শ্রমিকের চুঃপ তুর্দশা ও সংগ্রামকে কেব্র করে
লেখা পূর্ণান্ধ নাটক। নাটকের সাধারণ রক্ষণশীল
পরিমিতি ছাড়িয়ে 'অবরোধ' অনেক দূর অগুসর হচেছে
যেখানে জনসাধারণ নতুন সম্ভাবনার পথ কাটছে
— আপোষের ২ধ্য দিয়ে নয়, সংগ্রামের মধ্য দিয়ে,
যেখানে মারুষ বাঁচতে চায় দাক্ষিণাের প্রত্যাশা
নিয়ে নয়—সমানাধিকারের দাবী নিয়ে। দাম ২॥০

● ছোটদের বই ● সকল দেশের সের অভেজ্ঞানাথ ভট্টাচার্য

ভবিষাৎ ভারতের তরুণ নাগরিক যারা তাদের সঙ্গে এই মহান্ দেশের আস্তরিক পরিচয়ের উদ্দেশে লেখা ভারতবর্ষের অপরূপ কাহিনী। ভারতের সামাজিক অবস্থা, অর্থনৈতিক ভিত্তি, রাজনৈতিক দংগ্রামের ধারা আর তার শাসন-পদ্ধতি পরের মতো মনোরম ভঙ্গীতে বলে গিয়েছেন লেখক। প্রত্যেকটি পাতায় সূর্য রাধের জমকালো ছবি। দাম ২।•

ঘুমতাড়ানী ছড়া মুকান্ত ভট্টাচাৰ্য ও অভাভ

ছোটদের ঘুমভাঙার কাহিনী একালের ছেলে-মেয়েদের হাতে ছড়ার আকাবে পরিবেশন করেছেন চার মেন্ধান্তের চারজন আধুনিক কবি। পাতায় পাতায় সূর্য রায়ের অজস্র রঙীন মন্ধাদার সব ছবি। দাম ৩

পারীর পতন ইলিয়া এরেনবুর্গ

ইলিয়া এবেনবুর্গ-এব ধুগান্তকারী উপন্যাদের বাংলা অন্থবাদ। আশ্চর্য দক্ষতা ও অনন্যসাধারণ শিল্পোংবর্ষতার দক্ষে রূপায়িত একটি জাতির মর্মন্তদ অবনতির কাহিনী। ডিন থণ্ডে সমাপ্ত। অন্থবাদ করেছেন: অমল দাশগুরা, রবীক্স মন্ত্র্মদার ও অনিলত্নার সিংহ। দাম: ৪১, ৩১, ৪১। তিন থণ্ড একরে: দশ টাকা।

পুতৃলনাচের ইতিকথা শানিক বন্দ্যোপাধ্যায়

আন্ধকের মানিকবারর সমাজসচেতন সাহিত্যের মৃলস্ত্র রয়েছে
"পুতৃলনাচের ইতিকথা"য়। জটিল
আধুনিক সমাজ-ব্যবস্থার চাপে
যে মাসুযের আশা-আকাজ্জাকে
পদে পদে বাধা পেতে দেখে
তার মনে হয়েছিল ভাষা অদৃস্থের
• হাতে খেলার পুতৃল সেই সব
মাসুযদেরই যা দ্বিক জীবনের
রসোভীর্ণ কাহিনী। দাম •

কাবতার বই ●ফুল্ফীপের চর

স্ন্থাপের চর বিষ্ণুদে

आधुनिक कविटांत्र मध्यह। माम २,

ছাড়পত্ৰ

স্থুকান্ত ভট্টাচার্য নতুন মূগের সার্থক কবির ঘোষণার উৎকীর্ণ কোট কোট মাসুবের বলিষ্ঠ নালা। দাম ১৪০

রবীন্দ্রনামা

প্ৰভাত বস্তু সম্পাদিত প্ৰভাৱিশনৰ প্ৰবীপ ও নবীন কবিৰ নানা **হলে** ও নানাভাবে ৰচিত 'কবি প্ৰশক্তি'। দাৰ ১া০

ইংরেজী ও বাংলা বইরের তালিকার জন্ম চিঠি লিখুন ইন্টারস্থাশনাল পাবলিশিং হাউস লিমিটেড

৩০, চৌরঙ্গী রোড, কলিকাভা—:৬

শ্বিরাম চক্রবর্তীকে লেখা একখানি চিঠি

শ্ৰেদ্ধাম্পদেষু, আগনাব বইগুলো পড়ে পড়ে পুরনো আর হচ্ছে না। এত আনন্দ আপনি নিষেছেন যে দেজজে আগনাকে ধন্তবাদ দেওয়া আমার কর্ত্তবা। * * * *

অনিল মিত্র

১, অবিনাশ মিত্র লেন, কলিকাতা ১, ২. ৪৮

কোনো নামভাল। সাহিত্যিক, সম্পাদক বা সমালোচকের প্রশংসাণ্ড নার, বাংলাদেশের অন্তন্তি বই-পড়বাদের সাধারণ একজনের চিট্টি কিন্তু এই পদ্রমান্তা বল লেখকের আগেকার আলাপী না কন্ এবং এই চিটি লেখকের প্রোচনান্তেই না লেখা করে খাকে ভারলে ক্তঃপ্রগো দত এই সামান্ত কথাগুলির মূল্যই অসামান্ত মনে করে। বলিও ওই চিটিও বক্তবাকে অভিপ্রোক্তি বলে ধারণা হওরাই আভাবিক, কেনমান, পৃথবীতে বারস্বার পড়বার মক একটিমান্ত্র জিনাক্ট কেবল আছে, পুনাপুনা পড়লেও বা কথনো পুরনো হয় না —তা হচ্ছে প্রেম এবং শিববাহবাবুর লেখা বতই উপাদের হোক নড়ন কিন্তা কিয়া পুরণো প্রোমর সঙ্গে কথনই ভার তুলনা হতে পাবে না।

অবজি, হাদিও প্রার্'প্রেমের মতই জিনিস—বাব আংদেনও কথনো ফুরোবার নর: এবং শিবরামবাবুর গলে, প্রেম আর হাদি, এই ফুটি আদি এবং অনাদিরসকে, আশ্চর্ধ এক বসারনিক কৌশলে মিলিরে-মিশিরে একাকার করে যে নতুন ধরণের বস্নাহিত্য স্টি করা হরেছে বাংলা ভাষার ভার ভোড়া নেই বরেই হর এক শ' ভাগের মধ্যে এক ভাগও যদি সভিয় থাকে—লিবরামবাবুর গেলা একবারও যদ পড়া যার—মার একবার পড়েই আনন্দ মেলে— ভাহতেও নাজকের দিনে কিছা আগ্যাকালে ভাব দাম নেচাৎ কম স্থাকে আলোকে উজ্জ্য করতে, ছংগের বোবাকে হালকা করতে শিবরামের এক সেট বই বছুর মতই, একান্ত অপরিচার্ধ। নিত্য নতুন বসাখাদের অভ—প্রিয়মনের মতই ভার প্রচালকা —

দেবতার জন্ম—৩৻
মেরেধরা ফাদ—২॥৽
প্রেমের বিচিত্র গতি—৩
মেরেদের মন—২॥•
আত্মায়তা বজায় রাখা সোজা নয়—১•
বাড়ী থেকে পালিয়ে—২৻
শিব্রাম্ চকর্বর্তির মতো
কথা বলার বিপদ—১।•

কথা বলার ।বপদ—১। অভন কাটু ন-লাছিত গবঙলিই সমান হান্যকর

দি তুক এ স্পোরি আন লিঃ
২২/১, কর্ণ ওআলিস স্লীট, কলিক।তা—৬

'ভারতী'র তিনি প্রথম সম্পাদক। অনেক বিবয়েরই তিনি প্রথমেদণক। লেখার এবং জীবনে-ছিজেন্সনাথ একজন বাঁটি বাঙালী। তাঁহার 'বত্মপ্রয়াণ' এক অপূর্ব্ব কাব্যগ্রন্থ। আজ করজনই বা সেই কাব্যের সহিত পরিচিত ?

কালীপ্রসন্ন পূর্ববন্ধের প্রধান সাহিত্যিক। তাঁহার রচনারীতি অপুক। 'লান্ধি-বিনোদ', 'প্রভাতচিন্তা', 'নিভৃতচিন্তা', 'নিশীধ-চিন্তা' প্রভৃতি প্রস্থভাল এবং উাহার সমস্ত প্রবন্ধাবলীর মধ্যেই ভাবগান্তীয় এবং শব্দমাধ্যার একত্র সমাবেশ দেখিতে পাই। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত এবং সম্পাদিত "বান্ধব" বন্ধিম-মুগে বধেষ্ট প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছিল। তাঁহার বাগ্মিতা-শক্তিও ছিল অসাধারণ।

নগেন্দ্রনাথ গুপ্ত বয়দে এই ছুই জনের অনেক ছোট, তিনি রবীক্রনাপের সমবরদী। ১৮৬১ খ্রীষ্টান্ধ ভাঁহার জন্মকাল। নগেন্দ্রনাথের শক্তি বছমুর্যা। ইংরেজী এবং বাংলা রচনার তিনি সমান দক্ষ ছিলেন। এক শ্রেষ্ঠ সাংবাদিক এবং সম্পাদক রূপে তিনি ধ্যাতি লাভ করিয়(ছিলেন। তিনি মিধিলা হইতে বিভাপতির সম্পূর্ণ পদাবলী সংগ্রহ করিয়াছিলেন। উপজ্ঞাস এবং ছোট গল্প লেধক ছিসাবে নগেন্দ্রনাথের দান সামাক্ত নহে। তাঁহার অনেকগুলি গল্প বাংলা-সাহিত্যে বিশিষ্ট স্থান লাভ করিবার বোগ্য। এই স্থলিখিত, স্থনিদিষ্ট তারিথ সম্বলিত পৃস্তকথানি বহু জ্ঞাতব্য তথ্যে পূর্ণ।

গ্রীশৈলেকক ক লাহা

অসি বাজে ঝম্ ঝম্—জ্বীরেক্তলাল ধর। প্রগতি প্রকাশনী ১৮, পটলভালা ক্লীট, কলিকাভা। মূল্য ১৮০।

ঐতিহাসিক পট ভূমিকায় লিখিত ছেলেদের ওপস্তাস। ঝরঝরে ভাষা এবং চিন্তাক্ষক ঘটনাসংস্থানই পুতক্থানির বিশেষ আক্ষণ। বর্তমান (ছিতীয়) সংশ্বরণে পুত্তকথানি আরও অধিক সমাদৃত হইবে বলিয়া আশা করি।

বিহর্ত্তন — শ্রীসচিচদানন্দ পাঠক। ভারত সাহিত্য ভবন। ২০৩২, কণওয়ালিস ক্লিট। কলিকাতা। মূলা ছুই টাকা।

গঞ্জ-সংগ্রহ। ইহাতে ছয়ট গল্প স্থান লাভ করিরাছে। লেখক সাহিত্যক্ষেত্রে নৰাগত হইলেও গল্পপ্রলি মোটামুটি ভাল হইরাছে। বিশেষ করিয়া "বিবর্ত্তন" গল্পটি এবং "পাগল" শীর্ষক চিত্রটি আকর্ষণীয় হইরাছে। লেখকের ভাষা সহজ ও ধেগবান, কিন্তু স্থানে স্থানে উচ্ছুাস কিছু বেশী মাত্রায় আন্ত্রিকাশ করিরাছে। এদিকে লেখক একটু দৃষ্টিদলে গল্পপ্রতি আরও উপভোগ্য হইতে পারিত।

🎒 বিভূতিভূষণ গুপ্ত

অনাবশ্যক — শ্রীমাণিকলাল সিংহ। এস কে পালিভ এভ কোং। '৮, ভামাচরণ দে ব্লীট, কলিকাতা। মূল্য এক ভীকা মাত্র।

আধুনিক গতিকবিতা হইতে গতিপ্র বিদায় লইতে বিসিয়াছে। এখন দিনে এই বাঁটি গতিকবিতা করটি পড়িয়া: তৃপ্তিলাভ করিলাম ১

"ঐ যে তৃমি চেউ হয়ে যাও নগর গাঁরে গাঁরে সবার হুরে হুর বিলায়ে সবার পারে পারে" —জীবনের গতিচ্ছন্দ কবিতার মধ্র হুরে বাড়িয়াছে। শ্রীধী রেক্সনাথ মুখোপাধ্যায়

ফরিয়াদি — মতিউল ইসলাম। আলহামরা-লাইত্রেরী, ১৮ মুদলমান পাড়া লেন, কলিকাতা। মূল্য ২০ টাকা।

মহানগরীর বুকে সাম্প্রদারিক দাসার কলে ধ্বংসের বে তাওবলীকা অনুষ্ঠিত হয়, তাহা প্রত্যক্ষ করিরা কবির হলর নিবিড় বেদনার পরিপূর্ণ হইরা উঠিরাছিল। তাহার সেই অন্তর্গত বেদনাকে তিনি 'করিরাদে' কাব্যক্তন ক্রান্তিত করিরাছেন। শত শত নিরপরাধ নরনারী আঞ



শাসিক পত্তিকার জন্ম ১০০৯ সালে বাংলাদেশের পূর্বসীমান্তের একটি ছোট শহরে। তথন কলকাভায় 'কল্লোন' আর 'কালিকলম' নেই—ঢাকার 'প্রগতি'-ও বন্ধ হ'য় গেছে। বে একটা নৃতন হাওয়ায় বাংলাসাহিত্যের মন চঞ্চল হয়ে উঠেছিল—মনে হল, তা যেন পথিকহাওয়া স্বাস্টির একটা ক্ষণিক উৎসব জাগিয়ে দিয়ে উধাও হয়ে গেল। মাটির ফস্লের বেলায় তা হধত সতিত কিন্ধ এই নুন্ন হাপ্যাব সলে সাহিত্যের ফসলের সম্বন্ধ তেমন নয়। 'কলোন' 'কালিকলম' 'প্রগতি'র পর পূর্ববাশার আদিব্ভাব লাই প্রমাণ করে। প্রভ্রপত্তের উত্তরানিকার বেষন জীবুক্ত স্থীজনাথ দত্ত-সম্পাদিত 'পরিচর' বহন করেছে পেরি সাহিক্টোর নৃতন আন্দোলনের উত্তরাধিকার বহন করেছে 'পূর্ব্বাশা'। ১৩৩৯ ৪০-৪১-৪২ এ-চান বছর কুখানে 'মাধুনিক দাহিছো'র বাহন ছিল পূর্ব্বাশা ৷ কিন্তু '৪০ সাল থেকে '৪২ সাল পূর্ব্বাশা আর ছোট মফ:স্বল শহরের সরীর্ণ পবিধিতে প'ড থাকে নি—কলকাভার বিস্তৃত পরিমণ্ডলে 'আধনিক সাহিত্যে'র উত্তরাধিকার প্রাভিট্টি কর'ত সচেই হংকে নীতির ক্ষেত্রে তেম্লি ঠিক সাহিত্যের ক্ষেত্রেও আন্দোলন নামক বিষয়টি ব্রিটিশ সবকারের কোপদৃষ্টি কথনও এড়াভে পারেনি। আধুনিক সাহিত্যের সমর্থনে রচিত শ্রীযুক্ত বৃদ্ধদেব বস্থব 'কৃন্ধুবৃত্তি' শীর্ষক একটি প্রবন্ধ প্রকশ্য করে ১৩৪০ সালে পূর্বাশাকে বন্ধীয় দরকারের হাড়ে থানিকটা লাঞ্না ভোগ করতে হয়েছে। কিছু এ-লাঞ্না উপেক কববার শক্তি পূর্বাশার ছিল—কেননা সাহিত্যিকদ্বের কাছে যে আন্তরিক সহামুভুতি পূর্বাশা পেগ্রেছ ডার দামেন কাছে সরকারী লাঞ্চনার প্লানি অকিঞিংকর। বাংলাদেশের সাহিত্য লিল্লীলের স্লেছে ধন প্রবাশ এই তিনটি বছরের ক্ষেত্রে ঋণ ভুল্তে পাববে না। ববীজ্ঞানাথ, শরংচজ্ঞ, জ্ঞাকরবিন্দ, প্রামথ চৌধুরী, নরেশচজ্ঞ, বিভৃতি বন্দ্যোপাধ্যায়, ভারাশক্ষর, মনোজ বস্তু, শৈলজানন্দ, নজকল ইসলাম, নলিনী গুপ্ত, দিলীপ রায়, বুর্জ্জটিপ্রসাদ, প্রেমেন্ড মিত্র, অন্নদাশস্থর, সুধীন্ত দত্ত, অচিন্ত্য সেমগুরু, বৃদ্ধদেব বস্তু, অভিড দত্ত, প্রভূ গুহঠাকুরভা, জগদীশ গুপ্ত, মন্মথ রায়, দিনেশরঞ্জন, স্বরেশ চক্রবর্তী, অঙ্কর ভট্টাচার্যা, ছ্মায়ুন কবির, মানিক বল্প্যোপাধ্যায়, বিষ্ণু দ্লে-এদের সাহায্য লাভ কংই পূর্ব্বংশা তার দাহিত্ব পালান গরিত হয'ন। ন্তন যুগের সাহিত্য-প্রেরণাকে পাঠকের কাছে পৌছিয়ে দেওছা ছাড়াও সে সমন্বলার প্রবাশা মুদুলস্ট্রাব একটি অভিনব স্কৃচির পরিচয় দিয়েছিল। বাংলা অক্ষরের বিচিত্র রূপদান পূর্ব্বাশার মাধ্যমেই আছে ক্রমপ্তিয় হয়ে উঠেছে—রচনার শিরোনামা এবং অবয়ব ভুটি বিভিন্ন অধচ সঙ্গতিপূর্ণ বর্ণে মৃদ্রণ ১০৪১ দানের পূর্ববাশাকে অপূর্ব রূপমণ করে তুলেছিল। সাহিত্য পরিবেশনে পূর্ব্বাশার সৌন্ধর্বাবোধ তার সাহিতে।র প্রকি নিষ্ঠারই অপর দিক। পরবর্ত্তী কালে বাংলাসাহিত্যের বিশিষ্ট সম্পদ্ন বলে পরিকীর্ত্তিত বহু গর ও উপক্রাস এসম স্ক'ব প্রকাশাতেই প্রকাশিত হয়-বুদ্ধদেব বহুর 'রাধারাণীর নিজের বাড়ী'-অচিন্ত্যকুমার সেনগুলের 'ছইস্ল'-প্রেমেক্স মিতের 'অরণাপথ', 'ভূমিকম্প'—মানিক ব্যক্ষাপাধাায়ের 'প্রাগৈডিহাসিক' 'পল্মানদীর মাঝি'-র নাম আলাহবণ্ড উল্লেখ করা যায়। ডি-এইচ-লবেন্সের সঙ্গে বাংলাপাঠকদের পরিচয় করিয়ে দেবার সৌভাগাও পূর্বাশার্ট চয়েছিল। ১৩৪০ থেকে ১৩৪০ দাল পূর্ব্বাশা নিয়মিডভাবে প্রকাশিত হয়নি—লেশবাাপী অর্থসঙ্কা, যুগ এবং অপষ্ট বিপ্লবই ভার মুখ্য কারণ। তবু রবীন্দ্রনাথের মৃত্যুর পর তাঁর প্রতি প্রভার্ঘ। নিবেদন কবে 'ববীক্রম্বতি প্রবাশা'

নামে পূর্ব্বাশার একটি বিশেষ সংখ্যা প্রকাশিত হয়। এ-অর্ঘ্য রচনা কবেন বাংলাদেশের বিখ্যাত সাহিত্যিকরক্ষ।

১৩৫ - সাল থেকে পূর্ব্বাশা আবার নিয়মিডভাবে প্রকাশিত হয়ে চলেছে। ভারতীয় সংস্কৃতিকে আক্ষের দিনের নৃতন পরিবেশে নৃতন পরিচ্ছেদে প্রতিষ্ঠা করবার আদর্শই আজ পূর্কাশার। ভারতীয় রাজনীতি, অর্থনীতি, সমান্তনীতি, ইতিহাস, বিজ্ঞান, দর্শন এবং সাহিত্যের পতি ও প্রকৃতি আলোচনা করে ভারতীয় ঐতিহাকে নৃতন मित्नत चारनारक **উच्चन** करत रहानात चामर्न निराहरे शृक्ताभात এবারকার যাত্রা হৃদ। ভারতীয় সমাজ-রাষ্ট সংস্কৃতি নিয়ে বারা-ই নৃতনভাবে চিস্তা করছেন—পূর্বাশা **ভা**ছের চিস্তাধারা পাঠকের কাছে উপস্থিত করে দিকে উন্মধ। সাহিত্যের নৃতন আন্দোলনের স্পর্শে জন্ম নিয়ে পূর্জাশা আজ নৃতনের বিস্কৃততর ক্ষেত্রে আত্মপতিগতি লাভ করেছে। পুর্বাশার জীবনের সঙ্গে বছ সাহিত্যিকের পরিণ্ডির ইতিহাস জড়ত-নৃত্ন ভারতবর্ষের নৃত্ন মাহুবের জীবনে যদি পূর্ববাশার বিন্দুমাত্র দান থাকে তবে তার চেয়ে বড়ো সার্থকড। পূর্ববাশা করন। করতে পারে না।

আগামী বৈশাৰ মাস থেকে একাদশ বৰ্ব হুক হবে । অচিন্ত্যকুমার সেনগুঞ্জ বারাবাহিকভাবে লিখবেন 'কল্লোল যুগ'-এর ইভিহ'ল वार्षिक मूना मनिक्षारित वस है। का সঞ্জাদক : সঞ্জ ভটাচার্ব্য প্রকাশন : পূর্বাশা নিমিটেড, পি-১০, গণেশচন্ত্র এভিয়া, কলিকাতা

ব্দসহার শিশুর রক্তে রঞ্জিড রাজপথের দৃষ্ঠ দেখিয়া তাহার নর্মন্থল মথিড করিয়া 'করিয়াদ' উত্থিত হইয়াছে :---

> ---"ব্র্পাতুর শ্ব্যা হতে উঠি দেখিলাম পুষ্পগুৰু কীটের ক্রকুটি; নর-নারী শিশুদের শতথণ্ড অগণিত শব্ বিশ্ৰন্ত পথের প্রান্তে ঐশ্বর্যা বিভব রক্তাক্ত নগরী কলিকাতা। কোপায় বিধাতা ?"

আজিকার দিনের গভীর হ্রাথবেদনা কবির কাব্যে ছায়াপাত করিয়াছে, কৈন্ত কৰি মামুধের গুভবুদ্ধিতে আস্থাবান। তিনি মর্ম্মে মর্মে জানেন শাব্দতিক ভেদবৃদ্ধিসপ্লাত বিরোধ সাময়িক বিভ্রান্তি মাত্র; এই ছুর্দিনের **শ্বনান অচিরেই হইবে, এই অন্ধকার ভেদ করিয়া অদূর ভবিগ্যতে নৃতন** উৰার অরুণালোকে সারা দেশ উদ্ভাসিত হইয়া উঠিবে। তাই তো ব্যবধান ক্ৰিতায় তিনি ব্লিয়াছেন—

> "তবু অন্তরে আছে বিখাস আমাদের হবে জয় আমরা দেখছি প্রতিদিন প্রাত্তে আশার সুয্যোদয়। · আমাদের শত কোটি কন্ধালে ফুটবে রঙিন ফুল, সোণালী ফসলে স্থশেভিত ২বে বিস্তীর্ণ তরুমূল।"

কবির কঠে ভাবীকালের মিলনমন্ত্র উদ্বোধিত হইয়াছে—তাঁহার স্বপ্ন সাৰ্থক হইয়া উঠুক।

সমাজতা দ্ৰক বিপ্লব আজই নয় কেন ?— জ্ঞানায়ৰ বস্তা। প্রকাশক-শ্রীনীরেন লাহিড়ী। প্রগতি প্রকাশ ভবন, গৌহাটী, बागांग, मृता !- वाना।

লেখক বামপথী, বৈপ্লবিক রাজনৈতিক মতাবলম্বী। বর্ত্তমান পুস্তকে

প্রথিত্বলা লেখিকা শ্রীশান্তা দেবীর ভারত-মুক্তিসাথক রামানন্দ ও অন্ধ শতাব্দীর বাংলা

অবাসীর আকারে বছ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ, বহু চিত্রশোভিত, বাংলা-गाहिट्डा व्यक्तिनव कोरनध्त्रिक। देश ८काशास्त्र मनौगो ब्रामानक हट्छा-পাধাারের জীবনী এবং সমসামারিক বাংলার সাংস্কৃতিক প্রস্তির ইতিহাস। বিশ্বত পঞ্চাল বৎসরের বাংলার সাহিত্যিক, রাজনৈতিক ও সামাজিক ইভ্যাদি যাবভীয় আন্দোলনের অকৃত বন্ধপ উপলব্ধি করিতে হুইলে এই পুত্তকথানি অপরিহার্থা। মূলা হয় টাকা মাত।

শ্ৰীশান্তা দেবা ও শ্ৰীসীভা দেবী প্ৰণীড

সাভবাজার ধন (ছোটদের গঞ্চ) ষক্ষকে নানা রঙের মধ্যট, পাতার পাতার ছবি। শ্ৰীশান্তা দেবী প্ৰণীত

অলথ-বোরা (উপগ্রাস) ০ হহিতা (উপন্তাস) ১১ সিঁখির সিঁছর (গল) ১।• বধুবরণ (গল্প) ১৬٠ সচিত্র হিন্দুস্থানী উপকথা (৬৪ সং) ৩

প্রান্তিস্থান---

শ্রীশাস্তা দেবীর নিষ্ট-শি ২৬, রাজা বসম্ভ রার রোড, **डि. अम. नाइरअयो— ४२, कर्अ**धानिम द्वीरे, 🗃 🖙 नाहेर बरी- २०४, कर्न छानिन 👫 है, প্রবাসী কার্যালয় ও কলিকাভার অক্সার প্রসিদ্ধ পুস্তকালয়।

তিনি বাহা বলিতে চাহিন্নাছেন তাহা মোটামুট এই বে, ভারতীর কংগ্রেসের জাতীয়তাবাদ ধনতমের উপর প্রতিষ্ঠিত এবং আশু সমগ্র দেশব্যাণী ব্যাপক সমাজতাত্মিক বিপ্লব সৃষ্টি করিয়া ধনতন্ত্র তথা বর্ত্তমান রাষ্ট্রবজ্ঞের ধ্বংস-সাধনপূর্বক মজুর-চাধী বা পদায়েং-রাজ প্রতিষ্ঠার মধ্যেই দেশের সর্বাঙ্গীণ কলাণ নিহিত—এবং মঞ্জুর ধর্ম্মঘট প্রস্তৃতি এই বৈপ্লবিক প্রচেষ্টার প্রধান স্পন্ত । বিষয়টি বিতৰ্কমূলক—বামপঞ্চী অনেকেও মনে করেন যে, ধনতক্ষের আত উচ্ছেদসাধন ন৷ করিয়া বা সভালর রাইবছটি ভাঙিয়া না দিয়া ধন-তমকেই,ধীরে ধীরে সমাজতমে রূপান্তরিত করা অসম্ভব নয়। গান্ধীঙ্গীর রাষ্ট্র-পরিকল্পনায়ও বিকেন্দ্রীকরণের আদর্শের উপর প্রতিষ্ঠিত কুষক-মন্ত্রুর-রাজকে প্রাধান্ত দেওয়া হইরাছে, কিন্তু সেই 'রামরাজ্য' প্রতিষ্ঠিত হইবে রক্তপাত বা বিপ্লবের ছারা নয়—স্বাভাবিক নিয়মে ক্রমবিকাশের পথ ধরিয়া। বাই হোকু রাজনৈতিক মত ও পথ সম্বন্ধে বিস্তারিত আলোচনার স্থান ইহা নহে। তবে একথা সভা যে, যিনিই পুস্তকথানি পড়িবেন তিনিই লেখকের চিন্তার স্বন্দ্রতা এবং প্রকাশভঙ্গীর সাবলীলতা দেখিয়া মৃদ্ধ হইবেন। ভাঁহার যুক্তিগুলা জোরালো, বস্তব্য এবং ভাষায় কোথাও স্বস্ট্রতা বা ধোয়াটে ভাব নাই। উচ্ছাদের রাশকে আগাগোড়া টানিয়া রাখিরা তিনি যুক্তিতর্কের উপর নিজের সিদ্ধান্তগুলিকে প্রতিষ্ঠিত করিবার প্রয়াস পাইয়াছেন। লেখক সাহিত্য-ক্ষেত্রে নবাগত হইলেও রাজনৈতিক সন্দর্ভ-রচনায় যে মুন্সীয়ানা দেখাইয়াছেন তাহা প্রশংসার্হ।

বিপ্লবী শরংচন্দ্রের জাবন-প্রশ্ব—এলেশ বিশা। জ্যোতি প্রকাশালয়, ২০৬ কর্ণওয়ালিশ খ্রীট, কলিকা হা ৷ মূল্য ২১ টাকা ৷ লেখক অপরাজের কথাশিল্পী শরং চন্দ্রের সহিত ঘনিষ্ঠ ভাবে মিশিবার এবং তাঁহার স্বেহভাজন হইবার দৌভাগ্য লাভ করিয়াভিলেন, ১৯২১ হইতে ১৯৩৯ সাল এই জাঠারো বংসর কলিকাতার বিভিন্ন পদী এবং কলিকাতার বাহিরে বাজে শিবপুর, নবদীপ, কাশী, সিরাহণঞ্জ প্রস্তৃতি নানা স্থানে শরংচন্দ্রের সাহচ্য্য লাভ করিয়া এই সাহিত্য রথার ব্যক্তিগত জীবনের বহু পূটিনাটি ঘটনা প্রতাক্ষ করিবার হুষোগ তাঁহার হইয়াছিল। বর্ত্তমান পুস্তকে ডিনি যে সমস্ত ঘটনা লিপিবন্ধ করিয়াছেন তাহা শরং চঞ্জের বাজিন্থের উপর অভিনব আলোকসম্পাত করে এবং শিল্পী শরৎ চক্রের চেয়ে মাত্রৰ শর্ব চক্র যে অনেক বড় ছিলেন সে কথাই বিশেষ করিয়া প্রমাণিত করে। ব্যক্তিগত মৃতিকথাকে চিত্তাকর্ষক করিয়া বলিবার একটা বিশেষ আট আছে। লেখক ইতিপূর্ম্বে 'চিত্তকণা' লিখিয়া প্রমাণ করিয়াছিলেন বে, সেই কৌশলটি ভাহার আয়ন্ত। বর্ত্তমান পুস্তকে তাঁহার বলার ভঙ্গীটি আরও উৎকর্য লাভ করিয়াছে। শরংচন্দ্রের শ্বতিকপা লেখক এমনি আন্তরিকভার সহিত ৰলিয়াছেন যে, তাহা পাঠকমাত্ৰেরই মন্মন্থল স্পর্ণ করিবে, কিন্তু দুংখের বিষয় বইখানির কোনো কোনো জায়গায় লেখক শালীনতার দীমা অভিক্রম করিয়াছেন। ২৬-২৮ পুটার লক্ষ্ণৌ-র গ্রেটে ঘা-ওয়ালা

खीनवत नवकाव

'প্ৰবাসী' বলেছেন : নেতালীয় বিৱাট क्रनश्री-व्यापनाञ्चक २० वाक्तिर विकित मिन अवर भावार হিন্দ কৌজের সংগ্রাস-প্রচেষ্টার উজ্জল

क्रभिक द्विवारका बहेना-विकारमह महिरदा क्रमनी नाकाकात माउँदक्त মানসলোকে তুলিয়া ধরিয়াছেন।

'यूनाहत्र' राताहन : बारमाछ नाहेक्थानि वो ता प्र न गांगाबिक नाहेक।---नाहेकीइ बहेना-मरहात खिख्यश्वाकिला सबी ७ वनित्रे मःनान नाउँक्यानित्क श्रृहे कतित्रा जूनिप्राष्ट्र।

এই চ সর কার ৩এ, লাইব্রেরী রোড, কলিকাতা ২৬

ৰাইজীসম্পর্কিত যে শুৱারজনক বর্ণনাটি তিনি দিয়াছেন তাহার সঙ্গে শরং চক্রের জীবন অথবা জীবনপ্রগ্নের কোন সম্বন্ধ নাই। কাঞ্জেই বর্ত্তমান পুস্তকে সে প্রসঙ্গের অবভারণা অবান্তর হইয়াছে। নবদীপে শরং চন্দ্রের নিশিক্ষাগরণের কাহিনীটিও তাঁহার সম্বন্ধে অনেকের মনে ভাস্ত ধারণার পটি করিতে পারে। পুশুকের একটি দিক হইতেছে ব্যক্তিগত শৃতিকথার দিক—আর একটি হইতেছে তাঁহার জীবনদর্শন সম্বন্ধে আলোচনা। সারা জীবন কোন্ প্রঞ্জের সমাধান তিনি খুজিয়াছিলেন, তাঁহার স্ষ্ট বিভিন্ন চরিত্রের সমালোচনাচ্ছলে তারই বিলেশণ লেখক করিয়াছেন। ০**এই শেষোক্ত দিকটার আলোচনা**য় তিনি তেমন কৃতিত্ব দেখাইতে পারেন নাই। এই ছুটাকে গুলাইয়া না ফেলিয়া যদি বর্তমান পুত্তকথানিকে তিনি শুধু ব্যক্তিগত শুতিকখার মধ্যেই সীমাবন্ধ রাখিতেন তা**হা** হ^তা রস আরও দানা বাধিত।

রাষ্ট্রপতি কুপালনী—শ্রাগোপাল ভেমিক। পুস্তক প্রচার কেন্দ্র। ২৩, ওয়েলিংটন স্ক্রাট, কলিকাতা। মূল্য ।• স্থানা। একাদিক্রমে ১২ ধংসর কংগ্রেদের জেনারেল সেক্রেটারীরূপে আচায় কুপালনী যে নিরলস কর্মক্ষমভার পারচয় দিয়াভিলেন ভাগার তুলনা নাই। এই অক্লান্ত কন্দ্রী দেশদেবককে রাট্রপতিপদে নিন্দাচিত করিয়া জাতি ওঁহোর প্রতি চরম এদা এদশন করিয়াছিল। বর্তমান পুস্তকে ভাঁহার *জীবনের* প্রধান প্রধান ঘটনাবলী সংক্ষেপে বিবৃত হইয়াছে। **তাঁ**হার ঘটনাবহল জীবন উপস্থাসের মত চিন্তাক্ষক। লেখক কুপালনীর বহুমুখী ব্যক্তিছের বিশ্লেষণে সুভিত্ব দেখাইয়াছেন, নানা ঘটনার ঘাতপ্রতিযাতের ভিতর দিয়া ভাঁহার ব্যক্তিনান্স কিরূপে অকীয় বৈশিষ্ট্য লইয়া ফুটিয়া উঠিয়াছে তাহা বেশ গুছাইয়া বলিয়াছেন—এইজশু পুত্তকথানি কুক্স इंशलंड मूलावान ।

পাঁত কা- জানরেজনাপ মিত্র। পুকাশা লিমিটেড, পি ১৩ প্ৰপেশচন্দ্ৰ এভিমা, কলিকাতা। মূল্য ছুই টাকা।

আজ কাল সাময়িক পত্ৰিকায় প্ৰকাশিত যে ছু'একজন শভিমান **लिथक्त्र ६१** वेश मान व्यक्त नाशाह्या (५४ এवः ७५ लिथकार महि. বাংলাসাহিত্যেরও ভবিষ্যুৎ সম্বন্ধে হৃদয়ে আশার সঞ্চার করে এনিরেক্সনাথ মিত্র ভাঁহাদের অক্সভম । লেখক ইতিমধ্যেই বাংলা গল্পদাহিত্যের আদরে শ্রভিষ্ঠালাভ করিয়াছেন, এবং ভাঁহার শক্তির নব নব উল্মেষ আমাদিগকে আশাষিত করিতেছে। বংসর ছুই আগে 'অলকা' পাত্রকায় তাঁহার 'ক্রোঞ্চ মিবুন' নামক একটি গল্প পাড়িয়া মুগ্ধ হইয়াছিলাম। যে দরদ মাত্রা-বোধুও সংবত প্রকাশভঙ্গীর পরিচয় তাহাতে পাইয়াছিলাম তাহা বর্তমান বাংলা সাহিত্যে হল'ভ বলিয়াই গল্পট মনে গাঁপিয়া গিয়াছিল। বর্তমান পুত্তকে দেখিতেছি দেই গল্পটি স্থান পাইয়াছে। এ ছাড়া পদক, নাম, কুলপী বরুক, ঘুষ, পতাকা এই পাচটি গল ইংহাতে আছে। প্রত্যেক গলই আমাদের ভাল লাগিয়াছে। তবে যৈ গল্পের নামে পুস্তকের নামকরণ করা হইয়াছে সেই পতাকা সম্বাটির হ্বর যেন এই বইয়ের হ্রের সঙ্গে মেলে নাই। সবগুলি গল হৃদয় দিয়া লেখা, আর এটির প্রেরণা যোগাইয়াছে লেখকের বিচারপ্রবণ বৃদ্ধিজীবী মনে এবং এটিয় মধ্যে প্রচারও প্রচ্ছন্ন ভাবে রহিয়াছে। পতাকা ছাড়া জ্বন্তাক্ত গৰুগুলি অভি সাধারণ ঘরোয়া ব্যাপারকে কেন্দ্র করিয়া লিখিত। কলমের উপর নরেন বাবুর সংযম অসাধারণ।পাঠকের ক্লনাকে উচ্চীপ্ত করিয়া ঠিক কোপায় পামিতে হয় ভোহা তিনি ভালো করিয়া कार्नि । माध्य क्यानां रा यशेलांक प्राप्ता करत न व्यवस्था कहिल **ধরিয়া অকন্মাং কত সহজে তাহা বৃলিদাং হই**য়া বাইতে পারে ভাহা কুলপী বরফ আর ঘূব এই ছুটি গলে সার্থকভাবে রূপ। রিত করা হুইরাছে। নরেন বাবুর গলে মনস্তর-বিশেষণ আছে, কিন্ত তালা গঞ্জকে ছাপাইয়া উঠিতে পারে না। পুস্তক্থানি আধুনিক বাংলা ছোটগল্পের উৎকর্ষের व्यक्तकार प्रस्तिकारमाना निष्मंन विषया भगा श्रृद्ध मध्यश्च नाष्ट्र ।

নিম্বোক্ত বই চারখানি বাংশা ভাষায় অনুদিত হইয়া বাংলা সাহিত্যকে সভ্যই সমূদ্ধ করিয়াছে লোবেল পুরস্কারপ্রাপ্ত বিংশ শভাব্দার শ্রেষ্ঠ উপস্থাস

গুড আথ

রচনা : পাল বাক্ অনুবাদ: পুষ্পময়ী বসু

প্রাঞ্জল অনুবাদ, অপুর্ব গঠনসকলা, চমংকার বাধাই। বুল্য পাঁচ টাকা

আমাদের প্রতিদিনের পানীয় চা-কে কেন্দ্র করে সাহেৰী অভ্যাচারের পটভূমিকায় লেখা এই উপদ্যাস সবে প্রকাশিত হলো

রচনা: মুল্ক্ রাজ আনন্দ্

অনুবাদ: শ্রীনৃপেন্দ্ররুষ্ণ চট্টোপাধ্যায়

এই উপস্তাসধানিতে বর্তমান ভারতের দগ্ধ অস্তরেঃ হাহাকার আপনা (सरक किंद्र, अत अरकाकि वहेगात मधा निरत मुक्त करत करिक् আহত ভারতের রস্ত-বরা অভবের কাহিনী, বে-কাহিনীর আড়ালে পঠिक एक्ट भारतन, आकरकत वृष्टिम माञ्राक्षावामी चार्वित नानामुकी স্রোতধারার সঙ্গে ভারত-ৰাজার সংঘর্ষ। মূল্য চার টাকা বারো আনা

রটিশ সরকার যে বই সঞ্চ করতে পারে নি বলে ভার প্রকাশ নিষিদ্ধ করেছিল

ক্লাল

রচনা: মূল্ক্ রাজ আনন্দ্

অমুবাদ: শ্রীনুপেন্দ্রকৃষ্ণ চট্টোপাধ্যায়

বুটিশ শাসনের ফলে ভারতীয় সমাজ কিভাবে ভিতর থেকে ভেকে পড়েছে. অন্নহীন, বন্ত্ৰহীন কোটী কোটী ভারতবাসীর কি পরিণতি ঘটেছে ভারই এক ভরাবহ চিত্র মূলক্ রাজ কৃটিরে তুলেছেন এই উপস্থানে। সাড়ে চার টাকা

গভ যুগের য়ুরোপের 🕮 ঠ মিস্টিক্ লেখক মরিস্ মেতারলিক্ক-এর সরা ভারা

অমুবাদ: পুষ্পময়ী বসু

थ्यम र'न अ काश्नीत मृन (कवा: '(य (थ्यम हिन्छ हानाट नाहि জানে' সে-প্রেম নয় । • • বে-প্রেম সগর্বে বলে, 'কামি আমার অপমান সহিতে পারি, খেমের সহে না অপমান'-এ হ'ল সেই চির রহস্তম্ম ফুলবের অঞ্চ --- মানবভার ধানবস্ত। ভাই কালিদাসের মেঘণুভের ষ্টন মেতারলিকের 'মনা ভান্ন!' জগতের এেম-সাহিত্যে মেখ-চুদ্দি হিম-বিরি-শৃক্ষের মতন বিধার করছে। ৰুলা ভিন টাকা

— পুস্তক তালিকার জন্য লিখুন —

এনিলিনীকুমার ভল স্ক্রাভিক্যাল বুক ক্লাব: ৬, বহিম চাটুজ্যে স্লাট: কলিকাতা

५स-शिक्ष्यक् कथा

ডাক্তার ঐতহমেন্দ্রনারায়ণ রায়

কলিকাতা নেশক্ষাল মেডিকাল ইন্টিউটের ধাত্রীবিদ্যার অধ্যক্ষ ডান্ডার শ্রীহেমেক্সনারারণ রার সম্প্রতি বিলাতের এক আর সি ও জি উপাধি লাভ করিরাছেন। ইহা চিকিৎসকদের পক্ষে শ্রেট সম্মান। ডান্ডার রার কলিকাতা বিব্বিদ্যালয় ও ষ্টেট মেডিক্যাল ফ্যাকালটীর সদস্য। তিনি চিন্তরঞ্জন সেবাসদন ও বহু জনহিতকর প্রতিষ্ঠানের স্থিত সংশ্লিষ্ট আছেন।

श्रीविमलारमवी ठळवर्खी

বিমলাদেবী চক্রবর্ত্তী ১৯২০ খ্রীষ্টাদে লাহোরে এক পঞ্চাবী এাজণ পরিবারে জন্মগ্রহণ করেন। শৈশবে কিছুকাল বেলুচিন্তানে কাটাইয়া তিনি পিভানাতার সঙ্গে কলিকাতার আসেন। এথানে আসিবার পর ভাঁহাকে একটি বিভালয়ে ভর্ত্তি করিরা দেওরা হয় এবং ক্রমে ক্রমে তিনি



बिवियनाएको চক্রবর্ত্তী

শ্রবেশিকা ও আই এ পরীক্ষার উত্তীর্ণ হন। ১৯৪৫-এ সেভি
ব্যাবোর্থ কলেক্সে বি-এ পড়িবার কালে ফুল্মরবন ল্যাণ্ড হোন্ডার্স
ক্রেনাসিরেক্সনের তদানীন্তন সহকারী সম্পাদক শ্রীযুক্ত মধুফুদন চক্রবর্তীর
সহিত তাঁছার বিবাহ হয়। ঐ বংসরেই িনি সামরিক বিভাগের
চাকরিতে যোগদান করেন এবং বোম্বাইয়ে নৌবিভাগের কাকে তাঁছাকে
নিযুক্ত করা হয়। বংসরখানেক পূর্বের তাঁছাকে এই কর্ম্ম হইতে অবসর
ক্রেরার ক্ষন্ত ভারতার রেডক্রন্স সোসাইটি হইতে একটি বুলিলাভ করিতে
সমর্থ হইরাছেন। এই উদ্দেশ্যে ইতিমধ্যে তিনি বিলাত বাত্রা করিরাছেন।
এই আছেনির্ভরশীলা মহিলার উদ্যুষ্থ কর্মন্সক্রি প্রশাসনীয়।

সিংহলের স্বাধীনতা উৎসবে বাঙালা শিল্পীর স্ববদান

২৪শে ফেব্রুয়ারি সিংহলের স্বাধীনতালাভ উৎসব উপলক্ষ্যে পশ্চিম বঙ্কের গ্রবর্গর জীরাজ্যগোপালাচারীর নেতৃত্বে কলিকাতার যে সভা হইরাছে ভাহাতে শিল্পী শ্রীমণীক্রতুসণ গুল্ড নিজের জাঁকা তিনধানি চিত্র সিংহলবাসীদের দান করিয়াছেন। সিংহল গ্রব্ধনেটের পক্ষ হইতে এই দান তাঁহাদের প্রতিনিধি কলম্বোর ভাতীয় চিত্রশালার জল্প গ্রহণ করিয়াছেন। তিনথানি চিত্রের বিষয়বস্তু হইতেছে সিংহলের প্রাচীন ইতিহাস—স্বাহার সঙ্গে ভারতের বোগ রহিয়াছে। চিত্রগুলির নাম (১) বিজয় সিংহের লক্ষায় অবতরণ. (২) মিহিনতালে মহেক্র ও রাজা তিন্স, (৩) অমুরাধাপুরে ধোধিবৃধ্দের শোভাষাত্রা। এই তিনথানি চিত্রই প্রবাসী ও মডার্গ-রিভিযুত্তে প্রকাশিত হইয়াছিল।

ভারত ও সিংহল পাধীন হওয়ার পর তুই দেশের সাংস্কৃতিক মৈত্রী স্থাপনকল্পে এই দান উল্লেখযোগা।

বাঁকুড়ার ভাতুল গ্রামের শ্মশানগাটে মহাত্মা গান্ধীর চিতাভগ্য বিসর্জন অনুস্তান

অক্সান্ত স্থানের স্থার বাঁকুড়া জেলার ভাতুল প্রামেও গান্ধীজীর চিতাজম বিসর্জন অনুষ্ঠান যথাযোগ্য মহাদার সহিত সম্পন্ন হইরাছে। প্রামধানীর বহু আয়াদে গান্ধীজীর পূত চিতাজম কিয়ৎপরিমাণে সংগ্রহ করিতে সক্ষম হইরাছিল। ভাতুল পরীমঞ্জল সমিতির গুরকবৃদ্দের কল্মতংপরতার সমগ্র দিনবাাপী (১২ই কেব্রুমারী) অনুষ্ঠানটি সর্বাস্থান্দর হইরাছিল স্থানীর নারকেবর নদীর যে ঘাটে এই পবিত্র চিতাজম নিমজন করা হর সেই ঘাটের নাম পরিবর্ত্তন করিয়া "গান্ধীঘাট" আখ্যা দেওরা হইরাছে। জীলুত রণজিৎ সিংহ গান্ধীজীর পুণ্য স্থাতির উদ্দেশে শ্বাশানক্ষত্রে একটি পাকা ঘর নির্দ্ধাণ করাইয়া দিতে প্রতিক্রত ইইরাছেন।

নরেশর ভট্টাচ র্য্য

গত ১৬ই মার্চ স্থারিটিত গীতিকার ও উপজ্ঞাসিক নরেগর জ্ট্রাচার্য্য গরলোকগমন করিরাছেন। মৃত্যুকালে তাঁহার বয়স মাত্র ৪৩ বংসর হইরাছিল। গত দশ বংসর বাবং তিনি বিভিন্ন প্রামোজেন কেম্পানীর সহিত সংশ্লিষ্ট থাকিয়া বহুসংখ্যক রেকর্ড-সঙ্গীত রচনা করিরা একজন শ্রেষ্ট গীতিকাররূপে বাংলাদেশে প্রতিষ্ঠা অর্জ্জন করিরাছিলেন। নরেগর বাবু 'চিরকুমার সভা' ও 'দেবদাস'কে বিশেষ নৈপুণোর সহিত ক্লেকর্ড-নাট্যে রূপারিত করেন।

উপস্থাস-রচনারও তাঁহার হাত ছিল। তাঁহার 'পাবাণপুরী' নামক উপস্থাসখানি স্থপাঠা। সম্প্রতি তিনি 'মাতাজী চিত্র প্রতিষ্ঠান' নামক একটি সিনেমা কোম্পানী গঠন করেন এবং উক্ত প্রতিষ্ঠানের জন্ম একটি চিত্রনাটাও রচনা করেন।

মরেবরবাবু প্রীহট্ট জেলার বেজ্বডা গ্রামের অধিবাসী ছিলেন।